श्रीहरये नमः

पारदसंहिता

हिन्दीटीकासहित

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

श्रीहरये नमः

पारदसंहिता

हिन्दीटीकासहित

अग्रवालकुलभूषणअलीगढ़निवासी बा० निरंजनप्रसाद गुप्तेन संगृहीता

मरुदेशान्तर्गतजैसलमेरवास्तव्येन व्यासोपाह्वज्येष्ठमल्लकाव्यतीर्थेन

मनुष्यभाषायामनूदिता

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास™,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

सस्करण : दिसंबर २०१७ संवत् २०७४

मूल्य : ९०० रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

श्रीगौरीशंकराभ्यां नमः

भूमिका

प्रियमित्रो! इस समय महात्माओं, विद्वान् वैद्यों और गृहस्थों से प्रार्थना की जाती है कि वे मेरे इस तुच्छ लेख पर एक बार अवश्य दृष्टि दें। सज्जनो! इस बात को आप अवश्य ही जानते हैं कि वर्तमान समय में कला और विद्याओं में कितना उलट फेर हो रहा है, जिसके द्वारा प्रत्येक स्वतन्त्र राज्य के विद्वान् और धनाढ्य पुरुष अनेक प्रकार के सुख पा रहे हैं। इतना ही नहीं, देश के राजालोग भी अपनी २ प्रजा को सुशिक्षित और धनी बनाने के लिये अनेक २ उपाय कर रहे हैं। आप इसको ध्यानपूर्वक विचार देखिये कि एक भारतवर्ष के अतिरिक्त ऐसा कोई भी देश न होगा, जिस देश के मनुष्यों में स्वदेशाभिमान, मातृभूमि पर वत्सलता, ऐक्य और स्वदेश के प्रति भ्रातृभाव न हो, केवल यही हतभाग्य हिन्दुस्तान ही एक ऐसा देश है कि जिसके निवासियों के मस्तिष्क में इस हिस्ट्री ने ऐसा भाव भर दिया है कि न भारतवर्ष हमारा और न हम भारतवर्ष के। हम इन्हीं भावों के कारण इस विशालभारतवर्ष में उन्नति के समस्त पदार्थों के उपस्थित रहने पर भी अपनी उन्नति नहीं कर सकते। प्रत्यके देश में छः ६ प्रकार की प्रजा हो सकती है, धनाढ्य और दरिद्री, विद्वान्, और मूर्ख, सुखी और दुःखी इनमें दरिद्री, मूर्ख और दुःखी ये तीनों ही देश का उद्धार कर ही नहीं सकते, विचारे सुखीजन अपनी विलासता के सामने देशोद्धार का विचार करें सो क्यों? अपने धन से गर्वित होकर धनाढ्य पुरुष विदेशीय कम्पनियों तथा दरिद्री देशीभाइयों द्वारा व्याज पैदा कर अपनी आत्मा तथा देश को उद्धृत समझते हैं। अब रहे विद्वान् वह अवश्य देश का उद्धार कर सकते है परन्तु द्रव्य की सहायता के बिना अपने गाल पर हाथ रखकर विचारते ही रहते हैं। एसी अवस्था में देश का उद्धार होना कठिन है। ठीक यही दशा हमारे भारतवर्ष की हो रही है। यह प्राकृतिक नियम है कि किसी पदार्थ के एक अवयव की वृद्धि से उसकी उन्नति नहीं समझी जाती, जैसे मनुष्य के किसी अंश (हाथ पैर आदि) की वृद्धि से मनुष्य के शरीर की उन्नति नहीं समझी जाती, प्रत्युत उसकी विकृतावस्था ही समझी जाती है और यदि मनुष्य का प्रत्येक अंग पुष्ट होता जाय तो वह अत्यन्त दर्शनीय हो जायगा। इसी नियम के अनुसार भारतवर्ष का उद्धार प्रत्येक भारतीय प्रजा की उन्नति पर निर्भर है।

प्रियबन्धुगणों ! मैं आपके चित्त को उस उन्नति की ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि जिससे संसारभर की उन्नतियां स्वयं सिद्ध हो जायँगी। भला उसका नाम क्या है ? लीजिये उसका नाम है "आरोग्योन्नति" एक फारसी के कवि का कथन है कि 'एक तन्दुरुस्ती हजार निआमत' बिना आरोग्योन्नति के आप किसी प्रकार की उन्नति नहीं कर सकते। क्योंकि समस्त उन्नतियों की जड़ आरोग्योन्नति है इसी को चरक में लिखा है कि–

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम् ।।

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इनकी उत्तम जड़ आरोग्य है। किन किन कारणों से आरोग्योन्नति हो सकती है इसके जानने के लिये आयुर्वेदशास्त्र का पढ़ना पढ़ाना तथा आयुर्वेदीय औषधों का प्रचार करना या कराना प्रत्येक भारतीय प्रजा का कर्तव्य है। और जिन सज्जनों का ऐसा विचार है कि जब हमारे यहां सफाखानों में यूरोपियन दवाओं का प्रचार हो रहा है तो आयुर्वेदीय दवाओं के प्रचार की क्या आवश्यकता है ? क्योंकि हमको न क्वाथ (काढ़ा) बनाना पड़ता न चूरन कूटना पड़ता और न अन्य किसी प्रकार का परिश्रम ही करना पड़ता, तो भला आप ही बताइयेगा कि हम इस सरल प्रणाली को छोड़कर इस दुःखद चिकित्साप्रणाली का अनुसरण करें सो क्यों ? उन सत्पुरुषों से हम सविनय प्रार्थना करते हैं कि ऐ सम्यपुरुषों ! कब सम्भव हो सकता है कि ईश्वर हमको भारतवर्ष में उत्पन्न कर हमारे उपयोगी पदार्थों को युरोप में पैदा करता, इसी बात को पुष्ट करते हुए महर्षि अग्निवेशजी महाराज चरकसंहिता में लिखते हैं कि–

यस्य देशस्य यो जन्तुस्तज्जं तस्यौषधं हितम् ।।

अर्थात् देश के रहने वाले जो जीव हैं उनके लिये उसी देश में पैदा हुआ औषध हितकारी होता है तात्पर्य यह है कि अन्य देश में पैदा हुए औषध हमारे उपयोगी कभी सिद्ध नहीं हो सकते। हां, एक शंका आप लोगों के हृदय में अवश्य रहती होगी वह हम स्वयं आपलोगों को सुनाये देते हैं, आप इतने व्याकुल क्यों होते हैं ? सुनिये साहब ! आप अपने मन में यह अवश्य विचारते ही होंगे कि रसायनविद्या द्वारा जो औषध प्रस्तुति किये जाते हैं, वह किस प्रकार निर्गुण या हमारे अनुपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। ठीक है, साहब ! हम भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि रसायनविद्या औद्भिज्ज आदि पदार्थों के अंशों को पृथक् पृथक् करने में अत्यन्त उपयोगी है, परन्तु रुग्णशरीर में उसकी क्रिया के निर्धारणार्थ रासायनिक युक्तियों द्वारा (या ज्ञान से) सर्वथा शुभलक्षण की प्रत्याशा नहीं हो सकती। यहां तक कि चिकित्सा के समय अनेक स्थलों में रासायनिक युक्तियों द्वारा अनेक प्रकार के भ्रम उपस्थित होते हैं। जैसे मृत्पाण्डुरोग में लौह का व्यवहार करना, लौह पाण्डु रोग का नाशक होने पर भी परिपाकशक्ति को नष्ट करता है। यह अवश्य स्वीकार करना होगा कि रसायनशास्त्र बहुविध घटनास्थल में वास्तविक तत्त्व के निर्णय करने के लिये यथा कथंचित् उपयुक्त हो सकता है परन्तु रासायनिक विश्लेषण द्वारा कही भी औषधिनिर्णय नहीं हो सकता इसलिये आप समझ गये होंगे कि रासायनिक क्रिया द्वारा बनाई गई विलायती दवाइयां हमारे उपयोगी नहीं है इन क्षणिक सुखकारी औषधियों का भयंकर परिणाम होता है जैसे कुनैन; बस अब अधिक लिखने की कोई आवश्यकता नहीं आप स्वयं विचार सकते हैं कि इन युरोपियन दवाओं से धन धर्म और और नीरोगता नष्ट नहीं होती तो क्या होता है अतएव आप अपने धन धर्म* और नीरोगता की रक्षा करना चाहते हो तो आयुर्वेदीय दवाओं का सेवन कीजिये, मेरे विचार से परिश्रम की अपेक्षा धन और धर्म की रक्षा करना अत्यावश्यक है एवं धन तथा धर्म की रक्षा होने से देश का उद्धार होगा।

श्रीजगदीश्वर जगन्नियन्ता जगदुत्पादक सर्वशक्तिमान् परमकारुणिक सर्वहितकारी सच्चिदानन्द आनन्दकद यशोदानन्दन श्रीकृष्णचन्द्र हैं कि जिनकी कृपा से मैं इस ग्रंथ की भूमिका को लिखने के लिये आज उद्यत हुआ हूं उनको कोटिशः धन्यवाद हैं। एक दिन बाबू निरंजनप्रसादजी साहब कासरोग से पीड़ित होकर एक

---

* जैसे एडेश (सूअर की चर्बी), फेलबोनियम (बैल की चर्बी)

वैद्य साहब के पास गये और प्रार्थना की कि आप मुझको वह कासकर्तरीरस दीजिये कि जिसमें शुद्ध पारद हो परंतु वह अपने वांछित रस को न पाकर और दुःखी हो घर को लौट आये और वह रात अनेक प्रकार के विचार करते करते बीत गई। दूसरे दिन सूर्योदय होते ही मन में विचार करने लगे कि वह उच्च कोटि का प्राप्त हुआ हमारा वैद्यकशास्त्र जिसकी निष्पक्ष मिश्र फारिस और यूरोपियन लोग भी प्रशंसा करते थे, वह आज इतनी निकृष्ट दशा को प्राप्त हो गया है कि इतने बड़े नगर में ऐसा साधारण रस भी उपलब्ध नहीं होता तो अन्यरसों का कहना ही क्या है ? मेरी समझ में इस अवनति के तीन कारण हैं।

प्रथम कारण यह है कि जालिम बादशाह से हमारे उत्तम उत्तम ग्रन्थों का जलाया जाना। दूसरा राजकीय आश्रय का न होना। तीसरा वैद्यराजाओं का शिक्षित और अनुभवी न होना (क्षमा कीजिये समस्त वैद्यों के लिये मैं ऐसा कहना ठीक नहीं समझता हूं, परन्तु अधिकांश से मेरा कहना असंभव भी न होगा) अर्थात् गुरुद्वारा संस्कृतभाषा में वैद्यकशास्त्रों का अनभ्यास. औषधियों का अपरिचय और दूसरों (जौ कि वैद्य नहीं है या आजीविकार्थ जिन्होंने वैद्यकशास्त्रों का अन्यान्य भाषाओं में की हुई टीकाओं की सहायता से अनुवाद किया हो) के किये हुए भाषानुवादों के भरोसे से ही चिकित्सा का आरम्भ करना इत्यादि कारण है।

जब तक इन कारणों को दूर नहीं किया जायगा तब तक आयुर्वेद का उद्धार न होगा। आयुर्वेद की अवनति के प्रथम कारण को दूर करने के लिये यही उपाय ठीक हो सकता है कि प्राचीन प्राचीन पुस्तकों का अन्वेषण करना तथा प्रकाशित करना। तथा अवनति के द्वितीय कारण को दूर करने के वास्ते गवर्नमेण्ट से प्रार्थना करना यही एक प्रबल उपाय प्रतीत होता है, परन्तु वह कुछ कष्टसाध्य है। क्योंकि न्यायशील गवर्नमेण्ट के राज्य को अनुमान एक शताब्दी से अधिक समय बीत गया होगा, परन्तु इस भारतीय हितकारक आयुर्वेदिक चिकित्सा का कुछ भी उद्धार न किया, देखिये बनारस, कलकत्ता और लाहौर आदि प्रतिष्ठित प्रतिष्ठित नगरों में संस्कृत विद्या के अनेक विद्यालय हैं और उनमें प्रत्येक शास्त्र का पढ़ाना तथा उनकी परीक्षायें भी होना प्रचलित हैं। परन्तु बड़े शोक का विषय है कि उनमें न तो आयुर्वेदशास्त्र पढ़ाया जाता और न उसकी परीक्षा ही होती है। बस अधिक दृष्टांतो की कोई आवश्यकता नहीं हम अवश्य समझ ही गये हैं कि महारी गवर्नमेण्ट की इच्छा से इस शास्त्र के उद्धार की होती, तो क्या इन विद्यालयों में यह विद्या न पढ़ाई जाती। विचार करने से प्रतीत होता है कि इसमें भी हमारी गवर्नमेंट का कुछ भी दोष नहीं है, यदि दोष भी है तो हमारा क्योंकि हमने कभी भी उस विषय में गवर्नमेण्ट से प्रार्थना न की। इसलिये आयुर्वेदोद्धारणार्थ हमको स्वयं कटिबद्ध होना चाहिये और हमारी गवर्नमेंट को भी। अन्यथा इसका उद्धार होना दुःसाध्य है।

अवनति के तृतीय कारण को दूर करने के लिये एक महान् आयुर्वेदीय विद्यालय तथा उसके अनके शाखाविद्यालय खोलना, और उनमें प्राचीन शास्त्रानुसार औषध रचना अथवा औषधों का नवीन नवीन आविष्कार करना, औषध परिचय और चिकित्सा का अभ्यास इत्यादि प्रचार करना उचित है।

आयुर्वेद की प्राचीनता

यह एक और भी विचार का स्थल है कि क्या अन्य चिकित्साशास्त्रों की अपेक्षा हमारा आयुर्वेद शास्त्र प्राचीन है ? इसको तो जगत् के सभी सभ्य जानते ही हैं कि यदि संसार में सबसे प्रथम कोई पुस्तक लिखी गयी है तो वेद ही लिखा गया है इस कारर हमारा आयुर्वेदशास्त्र वेदों के समान अनादि होने के कारण नित्य और प्राचीन है, क्योंकि आयुर्वेद अथर्ववेद के उपवेद हैं प्राचीन अत्रि आदि महर्षियों ने वेदों में से निकाले हुए इस शास्त्र को अपने आचार्यो से ग्रहण किया है। सबसे प्रथम जगत्पितामह ब्रह्मा ने वेदों से विशेषतः अथर्ववेद से अपने नाम की संहिता बनाई। इसी बात को भावमिश्र ने अपने बनाये हुए भावप्रकाश में लिखा है कि–

विधाताथर्वसर्वस्वमायुर्वेदं प्रकाशयन् । स्वनाम्ना संहितां चक्रे लक्षश्लोकमयीमृजुम् ॥

अर्थात् अथर्ववेद के सारभूत आयुर्वेद को प्रकाशित करते हुए ब्रह्मा ने अपने नाम से एक लक्ष श्लोकवाली सरल संहिता बनाई और आयुर्वेद अथर्ववेद है इसको सुश्रुत में भी लिखा है–

इह खल्वायुर्वेदो नाम यदुपाङ्गमथर्ववेदस्य इति ।

सारांश यह है कि आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद है इसलिये आयुर्वेद अनादि और नित्य है, क्योंकि वेदों की नित्यता और अनादिता सर्वसंमत है।

औषधं त्रिविधं प्रोक्तं दैवं मानवमासुरम् । (रसमानसे)

हमारे यहां दैव मानुष आसुर भेद से औषध तीन प्रकार का वर्णन किया गया है। और इसी कारण वैद्य भी तीन प्रकार के कहे गये हैं–

रसवैद्यः स्मृतो वैद्यो मानुषो मूलिकादिभिः । अधमः क्षारदाहाभ्यामित्थं वैद्यस्त्रिधा मतः ॥

(रसार्णव)

वैद्य उसको कहते हैं कि जो रसादिकों के द्वारा चिकित्सा करता हो, अर्थात् वह वैद्य देव कहाता है, जड़ी बूटियों द्वारा जो रोगों को नाश करता है उसको मानुष कहते हैं और जो क्षार (तेजाब आदि) तथा दाह (गरम किये हुए लोहे से झुलसा देना) से चिकित्सा करते हैं उनको अधम वैद्य कहते हैं। इस प्रकार तीन तरह के वैद्य होते हैं। तात्पर्य इसका यह है कि जैसे औषध तीन प्रकार के हैं वैसे वैद्य भी तीन प्रकार के है। अब यहां शंका होती है कि क्षार और दाह से चिकित्सा करनेवाले की अधमसंज्ञा क्यों ? इस विषय भर गम्भीर गवेषणा करने से यही ज्ञात होता है कि जौ वैदिक प्रक्रिया से चिकित्सा करते थे उनको उत्तम और अन्य को असुर म्लेच्छ तथा अधम कहते हैं। इसी कारण क्षारादि से चिकित्सा करनेवाले वैद्यों की अधम संज्ञा हो गई, क्योंकि वेदों में क्षार और दाह का प्रयोग नहीं है। ठीक है, परंतु वेदानुकूल चिकित्सा करनेवाले वैद्यों में देव और मानुष भेद कैसा ? सुनिये साहब ! वेदों में खनिज और औद्भिज्ज भेद से दो प्रकार के औषध

वर्णन किये गये हैं। उनमें जो खनिज पदार्थों को प्रधान मानकर चिकित्सा करते हैं उनको देव कहते हैं। और जो वनस्पति आदि को प्रधान समझकर चिकित्सा करते हैं उनको मानुष कहते हैं। सारांश यह है कि औद्भिज्ज औषधियों की अपेक्षा खनिज (धातु, रसादि) औषधियां उत्तम हैं। क्योंकि एक महात्मा का कथन है कि–

अल्पमात्रोपयोगित्वादरुचेरप्रसंगतः । क्षिप्रमारोग्यकारित्वादौषधेभ्यो रसोधिकः ।।

अर्थात् औषधियां अधिक मात्रा में दी जाती हैं, स्वाद को बिगाड़ती हैं और चिरकाल में फल देती हैं, परन्तु रसादिक (खनिज) अल्पमात्र में दिये जाते हैं, अरुचि को उत्पन्न नहीं करते तथा शीघ्र फल करनेवाले होते हैं। इसलिये समस्त औषधियों के रस अधिक समझा गया है। औद्भिज्ज औषधियों की अपेक्षा खनिज औषधियां उत्तम है इसको श्रीवाग्भट्टाचार्य भी अपने बनाये हुए रसरत्नसमुच्चय में लिखते हैं कि–

काष्ठौषध्यो नागे नागो वङ्गेऽथ वङ्गमपि ताम्रे । शुल्वं तारे तारं कनके कनकमपि लीयते सूते ।।

(रसरत्नसमुच्चय)

काष्ठादिक दवाइयां सीसे में लीन होती हैं, सीसा बंग में, बंग तांबे में, तांबा चांदी में, चांदी सुवर्ण में और सुवर्ण पारद में लीन होता है अर्थात् यह उत्तरोत्तर अधिक गुणकारक हैं। इसलिये रसशास्त्र के उद्धार के लिये कुछ उपाय किया जाय तो अच्छा होगा। ऐसा विचार कर "पारदसंहिता" नाम का ग्रंथ रचना प्रारम्भ किया। यद्यपि उनके मन में प्रथम यह विचार हुआ कि शस्त्रानुसार रसादिक बनाकर विज्ञापन द्वारा विक्रय करने से देश का अत्यन्त लाभ होगा, परन्तु महामहिमाशाली कुछ विज्ञापन दाताओं के अविश्वास के कारण इस संकल्प को समाप्तकर ग्रंथ का ही संग्रह किया। श्रीमान् बाबू साहब ने ग्रन्थ के बनाने में जिन जिन शास्त्रों का आश्रय लिया उनकी नामावली हम नीचे लिखते हैं। जिससे पुस्तक पढ़नेवालों को स्वयं ज्ञात हो जायगा कि यह ग्रन्थ कितने गौरव का है और हमको इस ग्रन्थ का गौरव दिखाने की आवश्यकता भी न होगी।

जिनसे कुछ विषय उद्धृत किया गया है उनके नाम

१ रसार्णव	१९ रसररहस्य	३७ क्षीरसिन्धु
२ रसेन्द्रचिन्तामणि	२० रसकामधेनु	३८ टोडरानन्द
३ रसरत्नाकर	२१ रससारोद्धारपद्धति	३९ निघण्टुराज
४ रसरत्नसमुच्चय	२२ रसपारिजात	४० अजीर्णमंजरी
५ रससार	२३ रसेन्द्रकल्पद्रुम	४१ अभिधानकामधेनु
६ रसपद्धति	२४ रसराजपद्धति	४२ लोहपद्धति
७ रसहृदय	२५ रसराजशंकर	४३ वैद्यकल्पद्रुम
८ रसेन्द्रचूडामणि	२६ रसप्रदीप	४४ गोकर्ण
९ रसवाग्भट	२७ रससिन्धु	४५ देवीयामल
१० रसमार्तण्ड	२८ रसालंकार	४६ गन्धककल्प
११ रसमञ्जरी	२९ रसावतार	४७ काकचण्डीश्वर
१२ रससंकेतकलिका	३० रसप्रकाशसुधाकर	४९ धरणीधरसंहिता
१३ रसराजलक्ष्मी	३१ रसदर्पण	५० वैद्यभास्करोदय
१४ रसचिन्तामणि	३२ रसामृत	५१ धातुरत्नमाला
१५ रसरत्नप्रदीप	३३ रसप्रकाश	५२ कल्पसार
१६ रसायनसारसंग्रह	३४ नागार्जुन	५३ योगतरङ्गिणी
१७ रसरत्नदीपिका	३५ पुरंदररहस्य	५४ भावप्रकाश
१८ रसराजहंस	३६ लोपपद्धति	५५ शार्ङ्गधर

ग्रन्थ के बनाने का प्रयोजन

यह बात सबको विदित ही है कि मुसलमानों के राज्य के समय में उद्धत बादशाहों से हिन्दुओं के उत्तम २ ग्रन्थ हिमाम में जलवा दिये गये इसी कारण इस वर्तमान समय में उत्तम ग्रन्थों का मिलना असम्भव सा हो गया है। और जो कुछ उपलब्ध भी होते हैं वह खण्डित प्रतीत होते हैं। क्योंकि उनमें रस की प्रक्रिया पूर्णतया वर्णन नहीं की गई मालूम होती है। अतएव श्रीमान् बाबू निरञ्जन प्रसादजी वकील ने उत्कट परिश्रम और द्रव्यव्यय से जगत् के लाभार्थ इस पारद संहिता का संग्रह कर और मुझसे भाषानुवाद बनवाना आरम्भ कर दिया, परन्तु बड़े शोक का स्थल है कि जब तब भाषानुवाद का प्रारम्भ ही हुआ था कि श्रीमान् बाबूसाहव का सन्निपातज्वर से देहान्त हो गया। सज्जनो! यही एक भारतवर्ष के मन्दभाग्य का लक्षण है कि जो २ इसके उद्धार के लिये उद्योग करते हैं वह सब प्रायः अल्पायु ही होते हैं। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हे परात्मन्! आप स्वर्गीय श्रीमान् बाबूसाहव की आत्मा को शान्ति प्रदान करो। बाबूजी के मृत्यु के पश्चात् उनकी धर्मपत्नी श्रीमति अशर्फी देवीजी, उनके जामाता श्रीमान् साह रघुनन्दनशरणजी रईस ठाकुरद्वारे वाले श्रीमान् कृष्णदासजी (जो कि श्रीमति अशर्फी देवीजे के भतीजे हैं) बिसौलीवाले तथा बाबूसाहब के आम मुख्तआर मुं० चम्पारामजी साहब ने मुझको पुनः प्रोत्साहित कर इस ग्रन्थ के भाषानुवाद को समाप्त कराया। इस ग्रन्थ में ६० अध्याय हैं जिनमें रसशाला का बनाना, रसशास्त्र की उत्तमता, रस की उत्पति, रस के भेद, साधारणशोधन,

अष्टसंस्कार, यन्त्रकल्पना, कोठी, पुट, खरल और मूषा आदि बनाने का प्रकार, रससिद्धि के लिये सामग्री का संग्रह करना, गन्धकजारण, अभ्रकजारण, गर्भद्रुति, बाह्यद्रुति, जारण, सारण, क्रामण, वेध, भक्षणविधि, धातुभस्म, सत्त्वद्रुति, रस उपरसशोधन, भस्म, सत्त्व और उत्तमोत्तम रसों का संग्रह तथा जडी बूटियों का परिचय और भी अनेक प्रकरण अत्यन्त परिश्रम के साथ लिखे गये हैं।

आयुर्वेदीय इतिहास

सम्प्रति हम जिन चरक, सुश्रुत, नागार्जुन, शिव, रावण, मन्थानभैरव, गोविन्द, नागबोधि, व्याडि और माण्डव्य आदि वैद्यकाचार्यों के नाम सुनते हैं और उनमें से कुछ महात्माओं के बनाये हुए निबन्ध भी हमारे दृष्टिगोचर होते हैं परन्तु बडे शोक का स्थल है कि हमको उनके देश काल आदि के जानने के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन समय में अपने जीवनचरित्र के लिखने का प्रचार ही न हो? लिखे हुए भी नष्टभ्रष्ट हो गये हों? अथवा अपने पहिले बनाये हुए ग्रन्थों में कुछ इतिहास लिखकर अन्त के ग्रन्थों में केवल नाममात्र ही लिखना उचित समझते हों। इस विषय में अनेक प्रकार की कल्पनायें हो सकती हैं, परन्तु निश्चय यही हो सकता है कि प्राचीन काल में ग्रन्थाकार अपने इतिहास को लिखना उचित न समझते थे। यहां तक कितने ही ग्रन्थों में कर्ता का नाममात्र भी उपलब्ध नहीं होता। इसका कारण जहां तक विचार किया गया हो हृद्गत होता है कि संसारमात्र के महर्षिगण इसलिये ग्रन्थों को नहीं बनाते थे कि हमारा यश हो, गौरव बढै, यह द्रव्य की प्राप्ति हो। प्रत्युत वह जो कुछ कार्य करते थे वह संसारमात्र के उपकार के लिये करते थे। इसी कारण से अपना इतिहास अथवा कहीं २ अपना नाममात्र ही लिखना उचित न समझते थे। इन कठिनाइयों से प्राचीन आयुर्वेद शास्त्र का ठीक २ इतिहास जानना दुष्कर हो गया है, परन्तु अन्वेषण करना मनुष्य का स्वाभाविक धर्म है क्योंकि जो ढूँढता रहता है, उसको कुछ न कुछ मिल ही जाता है। जैसा कि कबीरदास ने कहा है–

"जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ।"

परन्तु भूल जाना भी मनुष्यमात्र की बुद्धि का धर्म है इसलिये मेरे विचार में जो कुछ त्रुटि रह गई हो उसको विद्वान् लोग सुधारकर मुझे सूचित करेंगे कि जिससे पुनर्वार मुद्रित करने में शुद्ध करा दी जाय।

१	रसार्णव		
२	रसेन्द्रचिन्तामणि	'रसश्च पवनश्चैव कर्मयोगो द्विधा मतः'इति रसार्णवे	
३	रसरत्नाकर		
४	रसहृदय	काकचण्डेश्वरीतन्त्र	तस्मात्किरातनृपतेः–विरचितवान् भऽगोविन्दः
५	रसकामधेनु	रसार्णव, रसमार्तण्ड, रससार, रसरत्नाकर, रसचिन्मामणि, देवीदयाल, रसहृदय,रसेन्द्रचूडामणि, रसवाग्भट, रसमंजरी, रससंकेतकलिका,निंघटुराज, रसराजलक्ष्मी,अजीर्णमंजरी,अभिधानकामधेनु, रसेन्द्रचिन्तामणि,रसपद्धति,रसामृत,लोहपद्धति,सोमनाथसंग्रह,वैद्यकल्पद्रुम, रसरत्नप्रदीप,रसायनसंग्रह, रसरत्नदीपिका,गोकर्ण,रसराजहंस,रसरहस्य	शाकद्वीपवासी चूडामणि
६	रससारोद्धारपद्धति	भावप्रकाश,रसमंजरी, रसराजलक्ष्मी,योगतंरगिणी, रसेन्द्रचिन्तामणि, रसरत्नसमुच्चय	सम्पूर्ण होने पर भी नाम नहीं है
७	रसराजलक्ष्मी	रसहृदय, देवीशास्त्र, काकचण्डीश्वर तंत्र	सर्वज्ञभऽ
८	रसपारिजात		वीसालदेशके राजाका मंत्री कोई कायस्थ
९	रसेन्द्रकल्पद्रुम	रसार्णव,रसरत्नसमुच्चय,रसमंगल,रसामृत,रसेन्द्रचिन्तामणि, रसवाग्भट, रसहृदय, संग्रहहृदय	नीलकंठात्मज रामेश्वरभऽ
१०	निघंटुरत्नाकर	काकचण्डीश्वर	
११	रसराजपद्धति	रसरत्नसमुच्चय,रसार्णव, रसमार्तण्ड, प्रश्नावतार, रससार, रसरत्नाकर, रसप्रकाश, रसहृदय, देवीदयाल, रसमञ्जरी, रसराजलक्ष्मी, रसवाग्भट, गन्धककल्प, रसचिन्तामणि	राजा लक्ष्मणसिहं वैद्य जम्बू से बनवाई म० रा० रनजीतसिंहजी की आज्ञासे
१२	रसकल्पतरु	अपूर्ण होनेके कारण कुछ पता नहीं चलता	
१३	काकचण्डीश्वरातन्त्र	अन्यशास्त्रप्रमाणेन	
१४	रसराजशंकर	रसेन्द्रचिन्तामणि, रसरत्नाकर,रसवाग्भट	
१५	रसपद्धति	अपूर्ण	कर्ता का पता नहीं
१६	योगसार	अपूर्ण	कर्ता का पता नहीं
१७	धरणीधरसंहिता	रसराजलक्ष्मी, रसप्रकाशसुधाकर, रसहृदय, टोडरानन्द रसकामधेनु, रससार, रससिन्धु, रसप्रदीप, रसदर्पण	ज्वालानन्दपुत्र धरणीधर
१८	रसप्रदीप	अपूर्ण	कर्ता का पता नहीं
१९	टोडरानन्द	रसराजलक्ष्मी,रससिन्धु, रसरत्नाकर, रसदर्पण, रसालंकार, रसार्णव, रसावतार, नागार्जुन, रससार, रसचिन्तामणि रसप्रदीप, रसराजहंस, पुरंदररहस्य, रसरहस्य, लोपपद्धति,क्षीरसिन्धु	महाराज टोडरमल विरचित
२०	रससार	सिंहपाद, धीरदेव	मोटजातीय–सहदेवाचार्य पौत्रगोविन्दाचार्य
२१	रसरत्नसमुच्चय	शिव,गोविन्द, व्याडि, चन्द्रसेन, शूरसेन, नरवाहन नागार्जुन, गोमुख, यशोधन, रावण इत्यदि	सारस्वत अन्तर्वेदी समुत्पन्न वाग्भटाचार्य

ऊपर लिखे हुए चक्र के अनुसार तथा पुस्तकों की रचनायें देखने से जैसे ग्रंथों का पूर्वापर क्रम प्रतीत होता है उसको हम आप लोगों के अवलोकनार्थ नीचे लिखते हैं। कृपया विचारकर भूल को सुधार लेंगे :–

१ रसार्णव	१४ रससार	२७ अजीर्णमंजरी
२ नागार्जुन	१५ रसचिन्तामणि	२८ रससंकतेकलिका
३ काकचण्डीश्वर	१६ रसप्रकाश	२९ रसामृत
४ रसेचन्द्रचिन्तामणि	१७ रसावतार	३० पुरन्दररहस्य
५ रसरत्नाकर	१८ गन्धककल्प	३१ रसकामधेनु
६ रसहृदय	१९ रसराजपद्धति	३२ अभिधानकामधेनु
७ रसरत्नसमुच्चय	२० रसराजहंस	३३ क्षीरसिन्धु
८ देवीदयाल	२१ लोहपद्धति	३४ टोडरानन्द
९ रसमंजरी	२२ लोहपद्धति	३५ रसपारिजात
१० भावप्रकाश	२३ रसपद्धति	३६ रसराजशंकर
११ योगतरङ्गिणी	२४ निघण्टुरत्नाकर	३७ योगसार
१२ रसराजलक्ष्मी	२५ रसरत्नदीपिका	३८ रससिन्धु
१३ रससारोद्धारपद्धति	२६ रसमंगल	३९ रसप्रकाशसुधाकर
		४० धरणीधरसंहिता

इस बात का पता लगाना अत्यन्त कठिन है कि, कौन ग्रन्थकर्ता किस समय में और किस देश में हुआ? निर्णयसागरयंत्रालय में सर्वांगसुन्दर टीकासहित छपा हुआ वाग्भट का पुस्तक जिन्होंने देखा होगा वह अवश्य जान गये होंगे कि मिस्टर डा० कुण्टेजी की बनाई हुई भूमिका में यह स्पष्टतया दिखा दिया गया है कि श्रीमान् वाग्भटाचार्य ईसा के सन् से अनुमान २०० दो सौ वष पहिले हुए हैं अर्थात् जिस समय बौद्धों का विकास और वैदिक धर्म का ह्रास प्रारम्भ हो गया था, इससे यह सिद्ध होता है कि वाग्भट से पूर्व की पुस्तकें अनुमान ३१ सौ वर्ष की पुरानी हैं अर्थात् २१ इक्कीस सौ वर्ष से पूर्व की बनाई हुई प्रतीत होती हैं। और टोडरानन्द को भी बने हुए अनुमान ३५६ बरस हुए होंगे कारण कि (टोडरानन्दग्रंथ) टोडरमल का बनवाया हुआ था और टोडरमल बादशाह अकबर के समय में हुआ था, अकबर को हुए ३५६ बरस हुए इसलिये टोडरानन्द से पूर्व के ग्रंथ ३५६ वर्ष के पुराने हैं। इससे अधिक समय का पता लगना कठिन है। यदि कोई सज्जन जानते हो तो कृपाकर सूचना दें।

ग्रन्थकर्ता का परिचय

श्रीमान बाबू निरञ्जनप्रसादजी साहब, रायबद्रीप्रसादजी वकील वैश्य अग्रवाल के कनिष्ठ पुत्र थे। आपका जन्म सम्वत् १९२२ श्रावण शुक्ल ५ का था। आपने ८ वर्ष की अवस्था में हिन्दी और उर्दूभाषा में अच्छा अभ्यास कर लिया था। फिर आपने पिता ने चरक, शुक्रनीति, पंचदशी आदि अनेक शास्त्रों के अनुवाद के श्रीमान् महामहोपाध्याय पण्डित मिहिरचन्द्रजी द्वारा संस्कृतव्याकरण का प्रारम्भ कराया। यद्यपि समयानुसार राजभाषा के पढ़ाना आवश्यकीय समझ गवर्नमेण्ट हाईस्कूल अलीगढ़ में अंग्रेजी पढ़ाना आरम्भ करा दिया था तथापि आपका संस्कृत पढ़ना बना रहा इस प्रकार पढ़ते २ सन् १८७९ में आप इन्ट्रेन्स में पास हो गये उसके बाद सन् १८८२ में आपने वकालत की परीक्षा पास की और अलीगढ के नामी वकीलों में आप प्रख्यात हुए। इस बीच में आपको सन् १८९७ में रसशास्त्र के उद्धार की धुनि सूझी। बाबू साहिब ने पुस्तकों द्वारा पारद का शोधन करना आरम्भ कर दिया और करते २, १० वर्ष के अन्दर स्वर्ण और अभ्रक जारण तक कार्य किया। अभ्रक जारण करते २ देहान्त हो गया। यद्यपि इस कार्य में आपको अत्यन्त कठिनाइयां पड़ती थीं तथापि आप उन सबको बड़ी सावधानी के साथ सहन करते थे। यहां तक कि आप सन् १९०१ में वकालत करना भी छोड़कर इस पारद के ही काम में लगे रहते थे। पारद विषय में आप इतने संलग्न थे कि आपको अपने इष्टमित्रों के साथ हास्य विनोद करना भी पारदसम्बन्ध से पृथक् न था। इसका अनुभव अक्षरशः इस पुस्तक में मिला दिया गया है। आशा है उक बाबूसाहब का अनुभव किया गया यह पुस्तक संसारमात्र की विशेषतः वैद्यों की तो अत्यन्त उपकारी होगी।

उपसंहार

जिस समय बाहर से रसग्रंथ आने लगे तो उनके प्रतिपक्ति में दश दश या १५ पन्द्रह २ पन्द्रह अशुद्धियों देखकर बाबूसाहब ने राजपूताना के अन्तर्गत जैसलमेर के रहनेवाले राजवैद्य तीर्थदासजी के पौत्र मुझे ज्येषमल्ल व्यास को इन पुस्तकों के शुद्ध करने का काम सौंपा। मैंने भी अपनी बुद्धचनुसार काम समाप्ति किया। बाबूसाहब के मरने के बाद उनके सम्बन्धियों ने मुझसे ही इसका भाषानुवाद कराया तथा अकराबाद निवासी सुयोग्य तथा अपने पूर्ण विश्वासपात्र पण्डित गंगाप्रसाद (उपनाम) गौरीशंकरजी को अपने लेखक बनाया श्रीमान् वैश्यकुलभूषण् सेठ खेमराजजी श्रीकृष्णदासजी को संसार के लाभार्थ केवल ५० पुस्तकें लेकर छापने तथा बेचने का समस्त अधिकार दे दिया।

भवदीय,

जैसलमेर निवासी–व्यास ज्येष्ठमल्ल काव्यतीर्थ,

हाल निवासी–अलीगढ़

श्रीगणेशाय नमः

संक्षिप्त जीवनचरित्र

श्रीमान् बाबू निरंजनप्रसादजी साहब एक योग्य विद्वान् और देशोपकारक पुरुष थे। आपका जन्म संवत् १९२२ मिति श्रावण शुक्ला ५ के दिन वैश्यशिरोमणि अग्रवालजाति में हुआ था।

आपके पिता राय बद्रीप्रसादजी साहब किसी कारण देहली को छोड़कर अलीगढ़ में आये थे, वहां उन्होंने वकालत करना आरम्भ किया। आप की बुद्धि इतनी तीक्ष्ण थी कि वे अलीगढ के समस्त वकीलों की श्रेणी में मुख्य समझे जाते थे। आपने संस्कृत भाषा की उन्नति के लिये एक पाठशाला की स्थापना कराई। परन्तु वह एक व्यक्ति की न होने के कारण स्थायी न हो सकी। इससे व्याकुल होकर आपने अपने द्रव्य से एक विशाल पाठशाला बनवाने की नींव डाली। और उसमें शामली जिला मुजफ्फरनगर के रहनेवाले महामहोपाध्याय पण्डित मिहिरचन्द्रजी को अध्यापक नियत कर विद्यार्थियों की छात्रवृत्ति का भी प्रबन्ध कर दिया। आपने जितनी नींव डाली थी उतनी इमारत न बनी हुई देखकर और अपने शरीर को रोगग्रस्त समझ अपनी सम्पत्ति के चतुर्थांश के अनुमान द्रव्य पाठशाल को दान कर दिया और उसका नाम धर्मसमाज पाठशाला रखा। अब इस समय पाठशाला एक बड़े हाईस्कूल का काम दे रही है। यदि दैव अनुकूल रहा तो शीघ्र ही कालेज हो जायगा। तदनन्तर इस असार संसार को संसार बनाकर आनन्दकन्द श्रीकृष्णचन्द्र की चरण सेवा के लिये श्रीवैकुण्ठस्थान को प्रस्थान किया।

राय बद्रीप्रसादजी के दो पुत्र थे उनमें बाबू निरंजन प्रसादजी छोटे थे। जब आपकी अवस्था आठ वर्ष की थी तब संस्कृत का पढ़ना आरम्भ किया और १६ वर्ष तक आपका संस्कृत का अध्ययन निरन्तर चलता रहा। इस बीच में राजभाषा अंग्रेजी का भी पढ़ना आरम्भ कर दिया, इस प्रकार संवत् १९३९ में आपने वकालत पास कर लिये यद्यपि आप अंग्रेजी भाषा के ग्रेजुएट न थे परन्तु आपकी योग्यता कुछ बहुत बढ़ी चढ़ी थी। पिताजी के समक्ष ही आप को वकालत से अच्छी आमदनी थी। और व्याज तथा जमींदारी से आपको अच्छा लाभ होता था।

इस प्रकार सांसारकि सुख भोगते हुए एक दिन आपके हृदयरूपी समुद्र में इस हीन दशा को प्राप्त हुए रसशास्त्र को उन्नत करने के लिये इच्छा तरंगें लहराने लगीं। "क्योंकि वे सोचते थे कि इस संसार में प्रायः समस्त पुरुष ऐसे हैं कि जो मरकर पुनर्जन्म लेते हीं हैं। परन्तु जन्म लेना उसका ही सार्थक है कि जिसके पैदा होने से घर, वंश, जाति, तथा देश के उद्धार हो" इस बात को लेकर किसी कवि ने कहा है कि–

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् । परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ॥

यदि मुझसे भारतवर्ष की सेवा न हुई तो बड़ी लज्जा की बात है। क्योंकि, सुभट कवि ने अपने बनाये हुए दूताङ्गद नाम के छायानाटक में लिखा है कि–

पितर्युपरेत यस्तु नोद्वहेत्पैतृकीं धुरम् । तेन नैवोपदेष्टव्याः स्वस्य वंशस्य पूर्वजाः ।

सुभटः।

जो मनुष्य पिता के मरने पर अपने पिता के उठाए हुए भार को नहीं धारण करता है वह अपने पूर्वजों को उत्तम कोटि में प्रकट नहीं कर सकता। इत्यादि अनेक विचार करने पर पारदशास्त्र पर कुछ लेख लिखना आरम्भ किया।

तदनन्तर पुस्तकों के अन्वेषण करने के लिये आपने काश्मीर की यात्रा की। और वहां श्रीमान् काश्मीर, नरेश की सहायता से रसार्णव, रसरत्नसमुच्चय, रसरत्नाकर, रसराजपद्धति, रससार, योगसार, रसमानस, टोडरानन्द, वैद्यभास्करोदय, धातुरत्नमाला, कल्पसार, रसकामधेनु, रसरत्नप्रदीप, रसहृदय, रसराजलक्ष्मी, रसपारिजात, रसेन्द्रचिन्तामणि, रसचिन्तामणि, रसमार्त्तण्ड, प्रश्नावतार, धरणीधरसंहिता, रसकल्पतरु, रसराजशंकर, रसप्रदीप, काकचंडीश्वर तंत्र, ये संस्कृत पुस्तकें और सय्यदपहाड आदि हिन्दी पुस्तकों का संग्रह कर निजस्थान को लौट आये। यद्यपि बाबू साहब वकालत तथा गृहकार्य करते हुए पुस्तकसंशोधन करते थे परन्तु पुस्तकों के अत्यन्त अशुद्ध होने के कारण वह कार्य राजपूताने के रहनेवाले पण्डित जेष्ठमल्ल व्यास काव्यतीर्थ को सौंपा गया। और उन्होंने उस कार्य को बडी योग्यता के साथ समाप्त किया।

रसशाला के बनवाने में जितना व्यय होता है इसको तो प्रत्येक मनुष्य भली प्रकार जानते हैं परन्तु बाबू साहब ने व्यय को सहन करते हुए पण्डितजी की सहायता से अभ्रकजारण के प्रारम्भ तक कार्य किया। इस अवसर पर अनेक वैद्य, महात्मा, नगरनिवासी तथा आसपास के मित्रगण पारदसम्बन्धी बातचीत करने के लिये आते थे परन्तु बाबूसाहब को पारदकार्य सम्पादन करते हुए सब विघ्नरूप मालूम होते थे। इसलिये आपने उन लोगों से मिलना ही छोड दिया। यहां तक कि वकालत के लिये न्यायालय का जाना भी छोड़कर पारद के कार्य में मग्न हो गये। और कार्य करते हुए अग्रिम संस्कारों के लिये श्रीमान् बाबूसाहब ने श्रीवेंकटेश्वर समाचारपत्र में एक विज्ञप्ति प्रकाशित की कि जो महानुभाव रसग्रन्थानुसार अभ्रकजारण आदि संस्कार करा सकते हों तो मैं उनकी सेवा के लिये ५००० पांच हजार रुपया करूंगा। यदि संस्कारयिताओं को मेरे स्थान पर आने में कठिनता समझ पडती हो तो मैं स्वयं उनके स्थान पर जाने को उद्यत हूं। परन्तु बड़े शोक के साथ लिखना पड़ता है कि आपको इस भारतवर्ष में कोई भी ऐसा न मिला जो कि आपसे इस पारितोषिक को लेता। यद्यपि इस बात से बाबू साहब का चित्त दुःखित सा हो गया था तथापि उसकी अन्वेषणा करते ही गये।

संवत् १९६६ मिती आषाढ शुक्ला १२ को आपको ज्वर आया और श्रावणकृष्णा ४ के दिन इस संसार को छोडकर श्रीवैकुण्ठपति के स्थान को प्रस्थान कर गये। परमात्मा बाबू निरञ्जनप्रसादजी की आत्मा को शान्तिप्रदान करे आपकी कन्या श्रीमान् साहू साहब ठाकुरद्वारेवालों के पुत्र श्रीमान् रघुनन्दनशरणजी को व्याही गई है जो कि एक धनवान् और विद्वान् मनुष्य हैं। बाबू साहब के देहान्त के पश्चात् आपकी विवाहिता स्त्री श्रीमति अशर्फी देवी ने बाबू साहब के संगृहीत और अनुभूत ग्रन्थ को प्रकाशित करने के लिये उक्त पण्डितजी से टीका बनवाकर श्रीवेङ्कटेश्वरप्रेस के अध्यक्ष सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी को इसके छापने विक्रय करने आदि का हक्क सदा के लिये सौंप दिया। इस कार्य में बिसौलीवाले श्रीमान् लाला श्रीकृष्णदासजी तथा बाबू साहब के कार्यप्रवन्धक बा० चम्पारामजी ने भी श्रीमती अशर्फी देवी को बड़ी सहायता दी। यदि भारतवर्ष में ऐसे ऐसे देशोपकारक जन पैदा हों तो देश का अवश्य उद्धार हो ऐसी परमात्मा से हमारी प्रार्थना है।

बाबू श्रीकृष्णदासगुप्त–
अचलताल,
अलीगढ़ सिटी

धन्यवाद !!

स्वर्गीय बाबू निरंजनप्रसादजी की धर्मपत्नी अशर्फी देवीजी को हम हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं कि आपने इस पुस्तक के पुनर्मुद्रण विक्रय इत्यादि का सर्वाधिकार सदा के लिये हमको दे दिया है। उक्त बाबू साहब ने अपना अधिक समय जो इस पारदसंहिता के बनाने में लगाया था और जम्बू कश्मीर आदि देश देशान्तरों से ग्रन्थ संग्रह कर आयुर्वेद शास्त्र का गौरव बढ़ानें में यत्न किया था। उसकी पूर्ति उक्त स्वर्गीय बाबू साहब की धर्मपत्नी आपने करके उक्त बाबू साहब के अर्द्धांग जीवित रहने का प्रमाण दे दिया। क्योंकि ग्रंथ संग्रह करने के पीछे भारतवर्ष के वैद्यों के घरों में राजा महाराजाओं के पुस्तकालयों में पारदसंहिता के एकमात्र मुद्रित ग्रन्थ के रहने से जो उपकार होगा और इसके अनुभूत प्रयोगों से असाध्य रोगों की यन्त्रणाओं से मुक्त होकर रोगी तो आशीर्वाद देंगे उसका फल आपकी ही इस लोकोपकारिणी बुद्धि और प्रकृति से स्वर्गीय बाबू साहब तक पहुंचेगा इसमें सन्देह नहीं।

खेमराज श्रीकृष्णदास
"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष–बम्वई

श्रीः

अथ पारदसंहिताहिन्दीटीकाविषयानुक्रमणिका

अध्याय १

अध्याय २

अध्याय ३

अध्याय ४

अध्याय ५

अध्याय ६

अध्याय ७

अध्याय ८

अध्याय ९

अध्याय १०

अध्याय ११

अध्याय १३

अध्याय १४

अध्याय १५

अध्याय १६

अध्याय १७

अध्याय १८

अध्याय १९

अध्याय २०

अध्याय २१

अध्याय २२

अध्याय २३

अध्याय २४

अध्याय २५

अध्याय २६

अध्याय २७

अध्याय २८

अध्याय २९

अध्याय ३०

अध्याय ३१

अध्याय ३२

अध्याय ३३

अध्याय ३४

अध्याय ३५

अध्याय ३६

अध्याय ३७

अध्याय ३८

अध्याय ३९

अध्याय ४०

अध्याय ४१

अध्याय ४२

अध्याय ४३

अध्याय ४४

अध्याय ४५

अध्याय ४६

अध्याय ४७

अध्याय ४८

अध्याय ४९

अध्याय ५०

अध्याय ५१

अध्याय ५२

अध्याय ५३

अध्याय ५४

अध्याय ५५

अध्याय ५६

अध्याय ५७

अध्याय ५८

अध्याय ५९

अध्याय ६०

इति श्रीपारदसंहिता विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

पारदसंहिता

हिन्दीटीकासमेता

प्रथमोऽध्यायः

रसवंदना

आधिव्याधिसमूहपाटनपटुर्दारिद्र्यविद्रावणो लोकद्विष्टजरापराक्रमहरः पापौघनिर्णाशकः । स्वेच्छाहारविहारसौख्यजननो दिव्याष्टसिद्धिप्रदः श्रीशंभोः करुणारसो रसवरस्तस्मै नमामो भुवि ॥१॥ (ध० ध० सं०)

अर्थ—इस संसार में जो अनेक आधि (मानसिक दुःख) और व्याधियों (देह के दुःख) के उखाड़ने में चतुर दरिद्रता को दूर करनेवाला, संसार का शत्रुरूप, जरा अवस्था के पराक्रम को नष्ट करनेवाला, अत्यन्त पापों का नाशकारक, अपनी इच्छा से किये हुए आहार विहार के सुख का देनेवाला, दिव्य आठ सिद्धियों का दाता, श्रीमहादेवजी का सब रसों में उत्तम जो करुणारस है इसको हम नमस्कार करते हैं॥१॥

यः श्लेष्मानिलपित्तदोषशमनो रोगापहो मूर्च्छितः पंचत्वं च गतो ददाति विपुलं राज्यं चिरं जीवितम् । बद्धः खे गमनः करोत्यमरतां विद्याधरत्वं नृणां सोऽयं पातु सुरासुरेन्द्रनमितः श्रीसूतराजः प्रभु ॥२॥

(ध० धं० सं– र० य०)

अर्थ—जो मूर्च्छित किया हुआ पारद कफ, वात और पित्त को शान्तकारक और रोगों को दूर करनेवाला होता है और मरा हुआ पारा बढ़े हुए राज्य और चिरकाल तक जीवन देता है और बद्ध पारद मनुष्यों को आकाशगति, देवतापन, विद्याधरपन को करता है, जिसको कि बड़े बड़े देवता और दैत्य नमस्कार करते हैं वो यह प्रभु श्रीसूतराज अर्थात् पारद हमारी रक्षा करे॥२॥

हरति सकलरोगान्मूर्च्छितो यो नराणां वितरति किलबद्धः खेचरत्वं जवेन । सकलसुरमुनीन्द्रैर्वन्दितं शंभुबीजं स जयति भवसिन्धोः पारदः पारदोऽयम् ॥३॥ (रसमंजरी)

अर्थ—जो मूर्च्छित हुआ पारद मनुष्यों के समस्त रोगों को दूर करता है बँधा हुआ खेचरत्व (आकाश में उड़ना) को शीघ्र ही देता है और जो सकल देवता और मुनीश्वर से नमस्कार किया हुआ श्रीमहादेवजी का वीर्य्य है, उस संसाररूपी समुद्र से पार करनेवाले पारद का जय हो॥३॥

रसमहिमा

हतो हन्ति जराव्याधिं मूर्च्छितो व्याधिघातकः बद्धः१ खेचरतां धत्ते कोऽन्यः सूतात्कृपाकरः ॥४॥ रसरत्नाकररसेन्द्रसारसंग्रहः ॥१४ (र० रा० प० २ र० सा० प० १) (र० रत्ना०)

अर्थ—मरा हुआ पारद बुढ़ापे के दुःखों (बिना समय केशों का श्वेत होना, त्वचा में झुरियों का पड़ना इत्यादि) को नाश करता है, मूर्च्छित पारद देह के रोगों को दूर करता है और बँधा हुआ आकाश गति को प्राप्त करता है इसलिये पारद के बिना कृपा करनेवाला और कोई दूसरा नहीं हैं॥४॥

मूर्च्छितो हरति रुजो बंधनमुपलभ्य खे गतिं धत्ते ।
अमरीकरोति सुमृतः कोऽन्यः करुणाकरः सूतात् ॥५॥

अर्थ—पारा मूर्च्छित होकर रोगों को दूर करता है और बंधन को प्राप्त होकर आकाशगति को देता है और स्वयं मरा हुआ दूसरों को अमर करता है। इसलिये पारद के सिवाय कृपा करनेवाला और कोई दूसरा नहीं है॥५॥

सुरगुरुगोद्विजहिंसापापकलापोद्भवं किलासाध्यम् । चित्रं२ तदपि च शमयति यस्तस्मात्कः पवित्रतरः सूतात् ॥६॥

(र० रा० सु० र० सा० प० र० र० स० र० हृ०)

१–दत्ते च खे गति बद्धः। २–श्वित्रं।

अर्थ–जो अनेक देवता, गुरु, गौ, ब्राह्मणों के हिंसारूप पापों से पैदा हुये असाध्य भी श्वेतकुष्ठ को नाश करता है उस पारद से पवित्र और कौन है॥६॥

तस्यास्तिस्वस्फुरति प्रादुर्भावः स शांकरः कोऽपि कथमन्यथा किलासं बिलसन्मात्राच्छन्नं नयति ॥७॥

अर्थ–क्योंकि उस पारद में कोई भी श्रीशंकर संबंधी प्रादुर्भाव है अन्यथा विलासमात्र से ही श्वेतकुष्ठ को तत्क्षण नाश कैसे कर सकता है॥७॥

पारदोत्पत्ति

शैलेऽस्मिञ्शिवायोः प्रीत्या परस्परजिगीषया। संप्रवृत्ते च संभोगे त्रिलोकी–क्षोभकारिणी ॥८॥ विनिनारयितुं बह्निः संभोगं प्रेषितः सुरैः। कांक्षमाणैस्त योः पुत्रं तारकासुरमारकम् ॥९॥ कपोतरूपिणं प्राप्तं हिमवत्कंदरोऽनलम्। अपक्षिभावसंक्षुब्धं स्मरलीलाविलोकिनम् ॥१०॥ तं दृष्ट्वा लज्जितः शंभुर्विरतः सुरतात्तदा। प्रचतश्चरमो धातुर्गृहीतः शूलपाणिना ॥११॥ प्रक्षिप्ते वदने बह्नेर्गंगायामपि सोऽपतत्। बहिः क्षिप्तस्तया सोऽपि परिदंदह्यमानया ॥१२॥ संजातास्तन्मलाधानाद्धातवः सिद्धिहेतवः। यावद–ग्निमुखाद्रेतो न्यपतद्भूरिसारतः ॥१३॥ शतयोजननिम्नां स्तान्कृत्वा कूपांस्तु पञ्च च तदाप्रभृति कूपस्थं तद्रेतः पंचधाऽभवत् ॥१४॥

(र० र० स० ६ अन० तरं०–र० रा० सुं०)

अर्थ–अब पारद की उत्पत्ति को कहते हैं–हिमालय पहाड़ पर प्रीति पूर्वक आपस में एक दूसरे को जीतने की इच्छा से संसारभर को चलायमान करनेवाला श्रीमहादेव और पार्वतीजी का संभोग प्रारम्भ हुआ, तब श्रीमहादेव और पार्वतीजी के ऐसा पुत्र हो जो तारकासुर को मारै, इस तरह से चाहनेवाले देवताओं ने संभोग को निवारण कराने के लिये अग्नि देवता को कबूतर रूप बनाकर भेजा, जिसका मनुष्य के तुल्य चित्त चलायमान हो गया है उस कपोतरूप कामदेव की लीला देखनेवाले अग्नि को देखकर श्रीमहादेवजी लज्जा को प्राप्त हुए और संभोग करने से शान्त हो गये तब श्रीमहादेवजी ने संभोगावस्था में पतित हुए अपने वीर्य्य को लेकर अग्नि के मुख में डाल दिया। अग्नि देवता भी उस वीर्य के तेज के मारे जलता हुआ श्रीगंगाजी में गिर पड़ा। शिववीर्य से जलती हुई श्रीगंगाजी ने भी उस अग्निदेवता को जलधारा से बाहर फेंक दिया। अब श्रीमहादेवजी के वीर्य के मैल के रहने से सिद्धि के दाता धातु पैदा हुए और जब कि भारी होने के कारण शिववीर्य्य सौ सौ योजन के गहरे पांच कुयें बनाकर अग्नि के मुख से पृथ्वी पर गिरा तब से वह पारद पांच प्रकार का हो गया॥८–१४॥

पांच प्रकार के पारद के नाम और गुण

रसो रसेन्द्रः सूतश्च पारदो मिश्रकस्तथा। इति पंचविधो जातः क्षेत्रभेदेन शंभुजः ॥१५॥ (र० र० स–र० रा० सुं०)

अर्थ–पृथक् पृथक् स्थान होने के कारण पारद पांच प्रकार का होता है, जैसे कि १ रस, २ रसेन्द्र, ३ सूत, ४ पारद और ५ मिश्रक ॥१५॥

रस

रसो रक्तो विनिर्मुक्तः सर्वदोषै रसायन।
संजातास्त्रिदशास्तेन नीरुजा निर्जरामराः ॥१६॥

(र० र० स०–र० रा० सुं०)

अर्थ–रसनाम का पारद लाल रंग का होता है, सर्व प्रकार के दोषों से रहित और रसायन है उसी पारद के सेवन करने से देवता राग, बुढापा और मृत्यु से रहित हो गये॥१६॥

रसेन्द्र

रसेन्द्रो दोषनिर्मुक्तः श्यावो रूक्षोऽतिनिर्मलः। रसायिनोऽभवंस्तेन नागा मृत्युजरोज्झिताः ॥१७॥ देवैर्नागैश्च तौ कूपौ पूरितौ मृद्भिरश्मभिः। तदा प्रभृति लोकानां तौ जातावतिर्दुर्भौ ॥१८॥

(र० र० स–र० रा० सुं०)

अर्थ–रसेन्द्रनाम का पारद स्वभाव से ही निर्दोष, श्याव (काला पीला), रूखा और अत्यन्त निर्मल होता है, उसी पारद भक्षण से नागलेग बुढापा और मृत्यु से छूट गये हैं। इस पारद को खाकर मनुष्य अजर अमर न हो जायँ, इस कारण देवता और नागलोकों ने उन दो कुओं को (जिनमें कि रस और रसेन्द्र नाम का पारा होता था) मिट्टी और पत्थर से भर दिया तब से दोनों जाति के पारद मनुष्यों को दुर्लभ हो गये॥१७–१८॥

सूत

ईषत्पतिश्च रूक्षाङ्गो दोषयुक्तश्च सूतकः। दशाष्टसंस्कृतैः सिद्धो देहं लोहं करोति सः ॥१९॥ (र० र० स– र० रा० सुं०)

अर्थ–सूतनाम का पारद कुछ पीला, रूखा और दोषों से मिला हुआ होता है जब कि सूतनाम का पारद १८ संस्कारों से सिद्ध होता है तब देह को लोहे के समान बना देता है॥१९॥

पारद

अथान्यकूपजः कोऽपि स चलः श्वेतवर्णवान्।
पारदोः विविधैर्योगैः सर्वरोगहरः स हि ॥२०॥

(र० र० स– र० रा० सुं०)

अर्थ–अब जो कि चौथे कुएँ में रहनेवाला पारा है उसको पारद कहते हैं। वह चंचल और सफेद रंग का होता है और अनेक प्रकार के प्रयोगों से समस्त रोगों का नाश करता है॥२०॥

मिश्रक

मयूरचन्द्रिकाच्छायः स रसो मिश्रको मतः।
सोऽप्यष्टादशसंस्कारयुक्तश्चातीव सिद्धिदः ॥२१॥

(र० र० स–र० रा० सुं०)

अर्थ–मिश्रक नामका पारद मोर के पर (पंख) की सी रंगत का और रसदार होता है। वह भी १८ संस्कारों से सिद्ध किया हुआ अनेक सिद्धियों को देता है॥२१॥

तीन प्रकार के पारदों की उत्तमता

त्रयः सूतादयः सूताः सर्वसिद्धिकरा अपि।
निजकर्मविनिर्माणैः शक्तिमन्तोऽतिमात्रया ॥२२॥
एतां रससमुत्पत्तिं यो जानाति स धार्मिकः।
आयुरारोग्यसंतानं रससिद्धिं च विंदति ॥२३॥

(र० र० स–६ र० रा० सुं०)

अर्थ–अनेक प्रकार की सिद्धि के देनेवाले तीनों सूतादिक (सूत, पारद, मिश्रक) अपने अपने कर्मों से सिद्ध किये हुए अत्यन्त शक्तिवाले हो जाते हैं, जो इस रसोत्पत्ति को जानता है वह धर्मात्मा आयु, आरोग्य, संतान और रससिद्धि को प्राप्त होता है॥२२॥२३॥

पारद ग्रहण करने का प्रथम उपाय

प्रथमे रजसि स्नातां हयारूढां स्वलंकृताम्। वीक्ष्यमाणां वधूं दृष्ट्वा जिघृक्षुः कूपगो रसः ॥२४॥ उद्गच्छति जवात्सपि तं दृष्ट्वायाति वेगतः। अनुगच्छति तां सूतः सीमानं योजनोन्मितम् ॥२५॥ प्रत्यायाति ततः कूपं वेगतः शिवसंभवः। मार्गनिर्मितगर्तेषु स्थितं गृह्णन्ति पारदम् ॥२६॥

(र० र० स०)

अर्थ–कुएँ का पारद; प्रथम मासिक धर्म में स्नान की हुई (अर्थात् जो प्रथम ही रजखला हुई हो), घोड़े पर सवार सजी हुई और अपने को देखती

हुई स्त्री को देखकर उस स्त्री को पकड़ने की इच्छा से बाहर निकल आता है और वह भी स्त्री के वेग के साथ आते हुए उस पारद को देखकर भाग जाती है, जब पारद सौ योजन तक उस स्त्री के पीछे चला जाता है और फिर वेग से अपने कुएँ को लौट आता है, बस इसी तरह जो पारद मार्ग के गढ़ों में पड़ा हुआ रह जाता है उसको मनुष्य ग्रहण करते हैं।।२४–२५।।

पारद ग्रहण करनेका दूसरा उपाय

पतितो दरदे देशे गौरवाद्वह्निवक्त्रतः। स रसो भूतले लीनस्तत्तद्देशनिवासिनः। तां मृदं पातनायंत्रे क्षिप्त्वा सूतं हरंति च ।।२७।। (र. र. स.)

अर्थ–भारी होने के कारण श्रीमहादेवजीका वीर्य्य जो अग्निदेवताके मुखसे पृथ्वी पर गिर पड़ा था वह उस पृथ्वी में ही मिलगया। अब उन उन देशों के रहने वाले उस मिट्टी को पातना यंत्र (यंत्राध्याय देखो) में रखकर पारद को निकाल लेते हैं।।२७।।

रसनिरुक्ति

रस्यतेऽमर्त्यमर्त्याद्यैर्भुक्तिमुक्तिप्रलिप्सुभिः । यतस्ततो रस इति प्रोच्यते पारदो बुधैः ।।२८।। (बृ० यो०)

अर्थ–भोग और मोक्ष को चाहनेवाले देवता और दैत्यलोग इस पारद का रस चखते हैं, इसलिये पंडितजन, पारद को रस कहते हैं।।२८।।

दूसरी और तीसरी निरुक्ति

रसनात्सर्वधातूनां रस इत्यभिधीयते। जरारुङ्मृत्युनाशाय रस्यते वा रसो मतः ।।२९।। (र. सा. प.)

अर्थ–जो कि समस्त धातुओं को खा जाता है, इससे पारद को रस कहते हैं अथवा जो बुढ़ापा रोग और मृत्यु के नाश के लिये चक्खा जाता है। इसलिये पारद को रस कहते हैं।।२९।।

रसेन्द्र की निरुक्ति

रसोपरसराजत्वाद्रसेन्द्र इति कीर्तितः।

अर्थ–रस और उपरसों का राजा होने से पारद को रसेन्द्र कहते हैं।

सूत की निरुक्ति

देहलोहमयीं सिद्धिं सूतेऽतः सूतकः स्मृतः ।।३०।।

(र. सा. प.)

अर्थ–जो पारद देह लोह की सिद्धि को देता है इससे उसको सूतक कहते है।।३०।।

पारद निरुक्ति

रोगपंकाब्धिमग्नानां पारदानां च पारदः।

अर्थ–रोगरूपी कीचड़ में फँसे हुए मनुष्यों को जो उस कीचड़ से पारकर देता है, इसलिये पारे को पारद कहते हैं।

मिश्रकनिरुक्ति

सर्वधातुमयं तेजो मिश्रितं यत्र तिष्ठति।
तस्मात्स मिश्रकःप्रोक्तो नानारूपफलप्रदः ।।३१।।

(र. सा. प. र. रा. सुं०)

अर्थ–जिसमें समस्त धातुओं का तेज मिला रहता है, इसलिये उस पारद को मिश्रक कहते हैं और वह नाना प्रकार के फलों को देता है।।३१।।

पारदनाम

शिवबीजं सूतराजः पारदाश्च रसेन्द्रकः। एतानि रसनामानि तथान्यानि शिवे यथा ।।३२।। (र. स. मं.)

अर्थ–शिवबीज, सूतराज, पारद, रसेन्द्र ये पारे के नाम है और जो श्रीमहादेवजी के नाम हैं, वे भी पारे का नाम हैं।।३२।।

रसेन्द्रः पारदः सूतः सूतराजश्च सूतकः। शिवतेजो रसः सप्त नामान्येवं रसस्य तु ।।३३।। (रसेन्द्र० सा० सं०)

अर्थ–रसेन्द्र, पारद, सूत, सूतराज, सूतक, शिवतेज, रस ये सात पारद के नाम हैं।।३३।।

पारदो रसधातुश्च रसेन्द्रश्च महारसः।
चपलः शिववीर्यश्च रसः सूतः शिवाह्वयः ।।३४।।

(आयु० बि०–बाच० कृ०)

अर्थ–पारद, रसधातु, रसेन्द्र, महारस, चपल, शिववीर्य, रस, सूत, और जितने शिव के नाम हैं, वे समस्त पारद के नाम हैं।।३४।।

रसेन्द्रः पारदः सूतो हरजः सूतको रसः। मुकुन्दश्चेति नामानि ज्ञेयानि रसकर्मसु ।।३५।। (शार्ङ्गध०)

अर्थ–रसेन्द्र, पारद, सूत, हरज, सूतक, रस और मुकुंद ये पारद के नाम रस कर्म में समझाने चाहिये।।३५।।

रसेन्द्र पारदः सूतो हरजः सूतको रसः। सूतराजो मुकुन्दश्च शिववीर्यश्च पारदः ।।३६।। महारसो रसराजः शंभुबीजश्च शंभुजः। रसेन्द्रराजो नाम्नासौ मिश्रकः शिवसंभवः ।।३७।। एतानि रसराजस्य नामान्युक्तानि तांत्रिकैः। नामैकं वा वदन्मर्त्यो मुच्यते पापकोटितः ।।३८।।

अर्थ–रसेन्द्र, पारद, सूत, हरज, सूतक, सूतराज, मुकुन्द, शिववीर्य, महारस, रसराज, शंभुबीज, रसेन्द्रराज, मिश्रक, शिवसंभव, ये सब तंत्रशास्त्र जाननेवालों ने पारद के नाम बताये हैं, जो इन नामों में से एक नाम को भी ले तो कोटि पापों से छूट जाता है।।३६–३८।।

दोहा

पारद कहि रस धातु कहि, पुनि रसेन्द्र कहि नाम।
नाम महारस चपल पुनि, शिवबीरज अभिराम ।।
शिवा नाम त्यों सूत भनि, रस तैसे ही जान।
रस पारद के नाम नव, कीने मुनिन प्रमान ।।
प्रथम नाम रस इन्द्र है, दूजो पारद जान।
सूतक तीजो हरज है, चौथो नाम बखान ।।
रस है पंचम नाम अरु, छठो मुकुन्द सु नाम।
ये सब ही रस कर्म में, बहुधा आवत काम ।।

(वैद्यादर्श)

शिव नाम से पारद का ग्रहण क्यों होता है?
आत्मा वै पुत्रानामास्ति न्यायादीश्वरनामभिः।
कीर्त्यते पार्वतीकांत इत्यादिभिरयं बुधैः।।३९।। (टो० नं०)

अर्थ–आत्मा पुत्र का नाम होता है, इस न्याय के अनुसार पडित लोग पारद को पार्वतीकान्त इत्यादिक श्रीमहादेवजी के नामों से वर्णन करते हैं।।३९।।

१– मृत्युवि २–गतं।

सीमाव[1] की अकसाम् (उर्दू)

सीमाव चार किस्म के होते हैं–अव्वल सीमाव उरफी यानी मादनी, दोयम सीमाव तलक सफेद, सोयम सोमाव तलक स्याह, चहारम सीमाव कसरुल्वैज पहली और दूसरी किस्म के पर होते हैं यानी आग पर रखने से उड़ जाते हैं, तीसरी और चौथी किस्म के पर नहीं होते और आग पर साबित रहते हैं. सुफहा १३८ अकलीमियां

तशरीह मुत अल्लिक अकसाम सीमाव (उर्दू)

(१) अव्वल सीमाव मादवी वे मेल का खालिस होना चाहिये जिसको हाथ में मलने से स्याही पैदा न हो (२) दूसरी सीमाव तलक सफेद वह है जो कि अभरक से निकाला जाता है और सीमाव मादनी के साथ मुनक्किद करके नुकर: बनाया जाता है, इसकी तरकीब रिसाल: किबरियत अहमर की साखी नं० ५९ व ६० में दर्ज है (३) सीमवा तलक स्याह वह है जो अभरक स्याह से निकाला जाता है और सीमाव मादनी के साथ अकद करके तिला बनाया जाता है, उसकी तरकीब रिसाल: किबरियत अहमर की साखी नं० ३० वा ५४ लगायत ५८ में दर्ज है (४) सीमाव कसरुलवेज उसको कहते है जो अंडे के छिलके से निकाला जाता है, इसकी तरकीब साखी नं० ५३ रिसाल: मजकूर के दर्ज है

(सफां १३८ अकलीमियां)

रस के भेद (जाति और वर्णद्वारा)

क्षेत्रभेदेन्त विज्ञेयं शिववीर्यं चतुर्विधम् ॥ श्वेत रक्तं तथा पीतं कृष्णं तत्तु भवेत्क्रमात् । ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रस्तु खलु जातितः ॥४०॥

(आयु. वे. वि. वा. बृ–श. क.)

अर्थ–स्थान भेद से पारद चार प्रकार का होता है, श्वेत, लाल, पीला, काला और वही पारद यथाक्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जाति का होता है।।४०।।

श्वेतारुणहरिद्राभकृष्णाः सूता द्विजादयः । देहे लोहे गदे पिष्ट्यां योज्या वा स्वस्वजातिषु ॥४१॥ (बृ० यो०)

अर्थ–श्वेत, लाल, पीले, काले वर्ण वाले पारद ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र जाति के होते है, श्वेत और ब्राह्मण जाति का पारद देह की सिद्धि में, लाल और क्षत्रिय जाति का पारद लोहे में (अर्थात् सोना चांदी बनाने में) पीला वैश्य जाति का पारद रोगों के नाश करने में, काला शूद्र वर्ण का पारद पिष्टी (पिट्ठी) के काम में लगाना चाहिये अथवा ब्राह्मणों में ब्राह्मण जाति का, क्षत्रियों में क्षत्रिय जाति का, वैश्यों में वैश्य जाति का पारद और शूद्रों में शूद्र जाति का पारद का प्रयोग करना चाहिये।।४१।।

जातिभेद से पारद प्रयोग

ब्राह्मणः कल्प्यते कल्पे गुटिकायां च बाहुजः ।
धातुवादे तथा वैश्यः शूद्रश्चेतरकर्मणि ॥४२॥

(नि०र०–यो०त०)

अर्थ–ब्राह्मण जाति का पारद कल्प[2] में (देहसिद्ध में) क्षत्रिय जाति का गोली बनाने में, वैश्य जाति का सोना चांदी बनाने में और शूद्र जाति का पारद दूसरे कर्मों में ग्रहण करना चाहिये।।४२।।

१–पारा ।

२–यद्यपि कोशों में कल्प शब्द का अर्थ देहसिद्धि नहीं है तथापि रसशास्त्र में देहसिद्धि का संकेत कल्पशब्द माना गया है।

दूसरा प्रकार

श्वेतः शस्तो रुजां नाशे रक्तः किल रसायनम् ।
धातुभेदे तु तत्पीतः खे गतौ कृष्ण एव च ॥४३॥

(आ. वे. वि–वा. बृ.–र. सा. प–र. स. क.)

अर्थ–श्वेत पारद रोगों के नाश करने में अच्छा है। लाल पारद रसायन है, पीला पारद धातुवाद में (सोना चांदी बनाने में) अच्छा है, खेचर गति में काला पारद लिया गया है।।४३।।

सीमाव के रंग (उर्दू)

सीमाव अरफी के चार रंग होते हैं, दो जाहर, दो मकफी रंग जाहरी सफेद और स्याह है, रंग मकफी सुर्ख और जर्द है, जो बाद अमल के जाहर होते हैं। (सुफहा अकलीमियां १३९)

पारद के षड्विधफल का वर्णन

त्वं माता सर्वभूतानां पिता चाहं सनातनः । द्वयोश्च यो रसो देवि महामैथुनसंभवः ॥४४॥ दर्शनात्स्पर्शनात्तस्य भक्षणात्स्मरणात्प्रिये । पूजनाद्रसदानाच्च दृश्यतेषड्विधंफलम् ॥४५॥ (र. चिं.–नि. र.)

अर्थ–श्रीमहादेवजी कहते हैं कि हे प्यारी पार्वती तुम सब जीवों की माता हो और मैं सम्पूर्ण जीवों का सनातन पिता हूँ, हम दोनों के प्रबल मैथुन से पैदा हुआ जो रस है, उसके दर्शन से, स्पर्शन (छूने) से, भक्षण करने से, स्मरण करने से, पूजा करने से और रस का दान करने से छः प्रकार का फल पैदा होता है।।४४।।४५।।

रसदर्शन का फल

केदारादीनि लिंगानि पृथिव्यां यानि कानिचित् । तानि दृष्ट्वा च यत्पुण्यं तत्पुण्यंरसदर्शनात् ॥४६॥

(र. चि.वि. र.–र.सा. प. र. राय रसेश्वरदर्शन, रसेन्द्र सा.सं.)

अर्थ–इस पृथ्वी पर केदारनाथ से लेकर जितने श्रीमहादेवजी के लिंग (प्रतिमा) है, उन सबके दर्शन करने से जो पुण्य होता है, वह पुण्य केवल रस के दर्शन करने से मिलता है।।४६।।

रस के स्पर्श करने का फल

चन्दनागुरुकर्पूरकुंकुमा[2]न्तर्गतो रसः ।
मूर्छितः शिवपूजा सा शिवसान्निध्यसिद्धये ॥४७॥

(र. चि. नि. र. र. रा. य.–रसे. सा. सं.)

अर्थ–चन्दन, अगर, कर्पूर, केशर और कस्तूरी के भीतर स्थित जो मूर्छित पारद है, वही शिवपूजा है और उसी से शिव के दर्शन होते हैं।।४७।।

रस के भक्षण करने का फल

भक्षणा[3]त्परमेशानि हन्ति पापत्रयं रसः । दुर्लभं ब्रह्मविष्ण्वाद्यैः प्राप्यते परमं पदम् ॥४८॥ (र.चि.नि.र.सा. प. र.री.प. र.सार.सं.)

अर्थ–हे पार्वती! जो पारद को भक्षण करता है, उसके मानसिक (मन के किये हुए) वाचनिक (वाणी के किये हुए) कायिक (शरीर के किये हुए) तीनों प्रकार के पापों को रस नाश करता है और जो पद ब्रह्मा, विष्णु, प्रभृति (वगैरः) को दुर्लभ है, उस परम पद को रस भक्षण करनेवाला मनुष्य प्राप्त होता है।।४८।।

रस भक्षण करने का दूसरा फल

उदरे संस्थिते सूते यस्योत्क्रामति जीवितम् । स मुक्तो दुष्कृताद्घोरात्प्रयाति

१– वादे। २– कस्तूरी । ३– तथा तापत्रयं हन्ति रोगान्दोषत्रयोद्भवान् ।

परमं पदम् ॥४९॥ (र.र. स.)

अर्थ–उदंर में पारद के रहते हुए जिस मनुष्य का प्राण निकल जाये तो वह मनुष्य घोर पापों से छूटकर परम पद को प्राप्त होता है॥४९॥

रस के स्मरण करने का फल

हृद्योगकर्णिकान्तःस्थं, रसेन्द्रं परमेश्वरि । स्मरन् विमुच्यते पापैः सद्यो जन्मान्तरार्जितैः ॥५०॥

(र० सा० सं–र० रा० प०–र० चिं० नि० र०)

अर्थ–हे पार्वती जो मनुष्य हृत्कमल में स्थित पारद का स्मरण करता है, वह अनेक जन्म के संचित पापों से तत्काल छूट जाता है॥५०॥

रस की पूजा करने का फल

विधाय रसलिंगं यो भक्तियुक्तः समर्चयेत् । जगत्त्रियलिंगानां पूजाफलमवापनुयात् ॥५१॥ (र. र. सस.)

अर्थ–जो मनुष्य भक्ति से रसलिंग (पारद के महादेव) बनाकर पूजन करता है, वह तीनों लोकों में जितने शिवलिंग हैं, उन सबकी पूजा के फल को प्राप्त होता है॥५१॥

रस की पूजा करने का दूसरा फल

स्वयंभूलिंगसाहस्रैर्यत्फलं सम्यगर्चनात् । तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद्भवेत् ॥५२॥

(नि०र०र०सा०प० र०रा०प०रसे० सा० सं०रसे०क०द्रु०)

अर्थ–सहस्रों शिवलिगों की पूजा करने से जो फल प्राप्त होता है उस फलसे कोटि गुणा फल रसलिंग (पारद के महादेव) की पूजा करने से होता है॥५२॥

दर्शनाद्रसराजस्य ब्रह्महत्यां व्यपोहति । स्पर्शनान्नाशयेद्देवि गोहत्यां नात्र संशयः । किं पुनर्भक्षणाद्देवि प्राप्यते परमं पदम् ॥५३॥

(र. रत्नाकर. र. सा. प.)

अर्थ–पारद का दर्शन करना ब्रह्महत्या को दूर करता है और स्पर्श करना गोहत्या को नाश करता है, इसमें सन्देह नहीं है, हे देवि! उसके भक्षण करने से यदि परमपद प्राप्त हो तो आश्चर्य क्या?॥५३॥

पांच प्रकार की रस पूजा

भक्षणं स्पर्शनं दानं ध्यानं च परिपूजनम् । पञ्चधा रसपूजोक्ता महापातकनाशिनी ॥५४॥ (र. र. स.)

अर्थ–रस का भक्षण, स्पर्श, दान, ध्यान, परिपूजन (नैवेद्य) यह पांच प्रकार की रस पूजा महापापों को नाश करनेवाली कही है॥५४॥

रस भक्षण फल

हन्ति भक्षणमात्रेण पूर्वजन्माघसंभवम् । रोगसंघमशेषाणां नराणां नात्र संशयः ॥५५॥ (र.र. स.)

अर्थ–जो पारद सम्पूर्ण मनुष्यों के पूर्वजन्म के पापों से उत्पन्न हुए अनेक रोगों को केवल भक्षण से ही नाश कर देता है, इसमें संदेह नहीं॥५५॥

१–हृद्वयोम वा तद्वयोम । २–स्मरणान्म० ।

रसस्पर्श का फल

पूर्वजन्मकृतं पापं सद्यो नश्यति देहिनाम् । सुगंधपिष्टसूतेन यदि शंभुर्विलेपितः ॥५६॥ (र.र.स.)

अर्थ–जिन मनुष्यों ने सुगंधित वस्तुओं के साथ पिसे हुए पारद से शिव की पूजा की है, उनके पूर्व जन्म में किये गये पापों को श्रीमहादेवजी शीघ्र ही नाश करते है॥५६॥

रसदान फल

रोगिभ्यो यो रसं दत्ते शुद्धिपाकसमन्वितम् । तुलादानाश्वमेधानां फलं प्राप्नोति शाश्वतम् ॥५७॥ (र.र. स.)

अर्थ–जो मनुष्य शुद्ध पाक (अर्थात् जो रस कच्चा न होय) से युक्त पारद को रोगियों के लिये देता है, वह निरन्तर तुलादान और अश्वमेधों के फल को प्राप्त होता है॥५७॥

रसध्यान फल

सिद्धे रसे करिष्यामि निर्दारिद्र्यगदं जगत् । रसध्यानमिदं प्रोक्तं ब्रह्महत्यादिपापनुत् ॥५८॥ (र.र. स.)

अर्थ–रस के सिद्ध होने पर मैं इस संसार को दारिद्र्य (कंगाली) और राग रहित करूंगा, यही रस का ध्यान है, जो ब्रह्महत्यादि पापों का नाश करनेवाला है॥५८॥

रसपरिपूजन (नैवेद्य) फल

अभ्रग्रासो हि सूतस्य नैवेद्यं परिकीर्तितम् । रसस्येत्यर्चनं कृत्वा प्राप्नुयात्क्रतुजं फलम् ॥५९॥ (र.र. स.)

अर्थ–पारद को अभ्रक का ग्रास देना है, उसी को पारद का नैवेद्य देना कहते है, इस प्रकार जो रस की पूजा करता है वह अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्त होता है॥५९॥

पारद भक्षण की उत्तमता

यावन्न हरबीजं तु भक्षयेत्पारदं रसम् । तावत्तस्य कुतोमुक्तिः कुतः पिंडस्य धारणम् ॥६०॥ (र. सा. सं. र. चिं.)

अर्थ–जब तक मनुष्य शिववीर्य पारद रस को नहीं भक्षण करता, तब तक उसकी मुक्ति नहीं होती और वह अपने शरीर की रक्षा भी नहीं कर सकेंता॥६०॥

पारद से अजरामर की प्राप्ति

अचिराज्जायते देवि शरीरमजरामरम् ॥ मनसश्च समाधानं रसयोगादवाप्यते ॥६१॥ (र. चिं. –र. सा. सं.)

अर्थ–हे पार्वती! रस भक्षण के योग से मनुष्यों का शरीर थोड़े ही समय में अजर अमर हो जाता है और उनका मन भी शान्त होता है॥६१॥

पारद भक्षण करने का उपाय

सत्त्वं च लभते देवि विज्ञानं ज्ञानपूर्वकम् ।
सत्यं मंत्राश्च सिध्यन्ति योऽश्नाति मृतसूतकम् ॥६२॥

(र. चिं.–र. सा. सं.)

अर्थ–हे पार्वती! जो मनुष्य पारद भस्म को खाता है, वह ज्ञान और विज्ञान सहित सतोगुण को प्राप्त होता है और उसके सिद्ध किये हुए मंत्र सब सत्य होते हैं॥६२॥

पारदज्ञान का उपदेश

स्वदेहे खेचरत्वं च शिवत्वं येन लभ्यते ।
तादृशे तु रसज्ञाने नित्याभ्यासं कुरु प्रिये ॥६३॥

अर्थ–हे प्यारी पार्वती! जिस पारद भक्षण करने से अपने शरीर में आकाशगति और शिव का रूप प्राप्त होता है, उस प्रकार के रस के जानने में तुम नित्य अभ्यास करो॥६३॥

यावन्न[1]शक्तिपातस्तु न यावत्पाशकृंतनम् ।
तावत्तस्य कुतो बुद्धिर्जायते भस्मसूतके ॥६४॥

(र. सा.सं. र. सा. य.)

अर्थ–जब तक शक्तिपात अर्थात् शरीर में निर्बलता न हो और जब तक मोह की फसी न कहे, तब तक पारद भस्म के विषय में मनुष्य को बुद्धि प्रवृत्त नहीं होती॥६४॥

कर्मयोगेन देवेशि प्राप्यते पिंडधारणम् । रसश्च पवनश्चेति कर्मयोगो द्विधा मतः ॥६५॥ मूर्च्छितो हरते व्याधिं मृतो जीवयति स्वयम् । बद्धः खेचरतां कुर्याद्रसो वायुश्च भैरवि ॥६६॥ (र० चिं०)

अर्थ–हे पार्वती! मनुष्य कर्मयोग से शरीर को धारण करते हैं, वह कर्मयोग रसयोग और पवनयोग के भेद से दो प्रकार का है, मूर्च्छित हुआ पारा वायु के शरीर के रोगों को दूर करता है और स्वयं मरा हुआ दूसरों को जीवित करता है और हे पार्वती! बंधा हुआ पारा आकाशगति को देता है॥६५॥६६॥

मोक्षके लिये यत्न करना मनुष्यमात्र का कर्तव्य है और मोक्ष पारद भक्षण से ही होता है। सुकृतफलं तावदिदं सुकुले यज्जन्म धीश्च तत्रापि। साऽपि च सकलमहीतलतुलनफला भूतलं च सुविधेयम् ॥६७॥ भूतविधेयतायाः[2] फलमर्थास्ते च विविधभोगफलाः । भोगाश्च संति शरीरे तदनित्यमतो वृथा सकलम् ॥६८॥ इति धनशरीरभोगान्मत्वा नित्यान्सदैव यतनीयम् । मुक्तौ सा च ज्ञानात्तच्चाभ्यासात्स च स्थिरे देहे ॥६९॥ तत्स्थैर्ये न समर्थं रसायनं किमपि मूललोहादि । स्वयमस्थिरस्वभावं दाह्यं क्लेद्यं च शोष्यं च ॥७०॥

(र. र. स. र. हृ.)

अर्थ–अपने किये हुए पुण्य का यही फल है कि श्रेष्ठकुल मे जन्म लेना और उस जन्म में भी बुद्धि का होना और वह बुद्धि भी ऐसी होने चाहिये कि जो सम्पूर्ण पृथ्वी तल की परीक्षा करनेवाली हो और पृथ्वी तल भी श्रेष्ठ होना चाहिये पृथ्वी तल की श्रेष्ठता का कारण अर्थ (द्रव्य) है अर्थात् द्रव्य से ही पृथ्वी तल श्रेष्ठ होता है और उन द्रव्यों से अनेक प्रकार के भोग होते हैं और वे भोग शरीर में रहते हैं और वह शरीर अनित्य है, इसलिये ये सब अनित्य हैं, अतएव धन, शरीर और भोगों को अनित्य मानकर मोक्ष के लिये उपाय करना चाहिये, मोक्ष ज्ञान से होता है, ज्ञान अभ्यास से और वह अभ्यास देह के स्थिर रहने पर होता है और देह के स्थिर करके के लिये कोई भी जड़ी और धातु (सोना, चांदी, ताँबा, लोहा, इत्यादिक) समर्थ नहीं है क्योंकि वे स्वयं (आप) अस्थिर स्वभाव वाले, दाह, क्लेद और सुखानेवाले हैं (इसलिये रस ही केवल शरीर को स्थिर रख सकता है) इसलिये पारद सबसे उत्तम होता है॥६७–७०॥

पारद में धातुओं का लय

अमृतत्वं हि भजन्ते हरमूर्तौ योगिनो यथा लीनाः ।
तद्वत्कवलितगगने रसराजे हेमलोहाद्याः ॥७१॥

(र.र. स.–हृ.)

अर्थ–जिस प्रकार शिव मूर्ति में मग्न हुए योगिराज मोक्ष को प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार अभ्रक धारण किये हुए पारद में सुवर्ण आदि धातु लीन हो जाते हैं, इससे यह अभिप्राय ज्ञात होता है कि अभ्रक जारण करने पर चारण सस्कार होता है और पारद में लीन किये हुए सुवर्णादि धातु भी देह को स्थिर कर सकते हैं॥७१॥

लयक्रम से पारद की ब्रह्मरूपता कहते हैं

काष्ठौषध्यो नागे नागो वंगेऽथ वंगमपि शुल्वे । शुल्वं तारे तारं कनके[1]कनकं च लीयते सूते ॥७२॥ परमात्मनीव सततं भवति लयो यत्र सर्वसत्त्वानाम् । एकोऽसौ रसराजः शरीरमजरामरं कुरुते ॥७३॥

(र. र. स. र. हृ.)

अर्थ–जड़ी और बूटियों सीसे में लीन हो जाती है। सीसावंग (रांगे) में, वंग तांबे में, तांबा चांदी में, चांदी सोने में और सोना रस (पारद) में लीन होता है, जिस प्रकार परमात्मा सकल सत्त्वों (जीवों) का लय होता है, उसी तरह जिस पारद में जिन समस्त सत्त्वों का अर्थात् जड़ी बूटि, सुवर्ण, आदि धातु और रस उपरसों का लय होता है, वह एक रसराज ही शरीर को अजर अमर कर देता है। (जिस प्रकार परमात्मा को तटस्थ और स्वरूप लक्षण से वर्णन करते हैं, इस प्रकार यहां भी पारद और ब्रह्म की समानता निरूपण करने के लिये पारद को भी तटस्थ और स्वरूप लक्षण से वर्णन किया है, 'काष्ठौषध्यो नागे' इस श्लोक में तटस्थ लक्षण और 'परमात्मनीव' इस श्लोक में स्वरूपलक्षण जानना चाहिये॥७२॥७३॥

पारद सेवन से ब्रह्मपद की प्राप्ति

स्थिरदेहेऽभ्यासवशात्प्राप्य ज्ञानं गुणाष्टकोपेतम् ।
प्राप्नोति ब्रह्मपदं न पुनर्भवबासजन्मदुःखानि ॥७४॥

(र.र. स.–र. हृ.)

अर्थ–पारद भक्षण से जब देह स्थिर हो जाये तब बार बार महावाक्य के विचारने से अष्टविध गुणों (बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष प्रयत्न, धर्म, अधर्म) से युक्त ज्ञान को प्राप्त होकर ब्रह्मपद को प्राप्त होता है। तदनन्तर जन्म मरण के दुःख को नहीं प्राप्त होता, जहां (न पुनर्वनवासदुःखेन) ऐसा पाठ है, वहां ऐसा अर्थ करना चाहिये कि केवल जंगल में रहकर अनेक दुःख भोगने से देह की स्थिरतारूप सिद्धि नहीं होती॥७४॥

देह के स्थिर करने की आवश्यकता

नहि देहेन कथंचिद्व्याधिजरामरणदुःखविधुरेण । क्षणभंगुरेण[2] सूक्ष्मं तद्ब्रह्मोपासितुं शक्यम् ॥७५॥ यज्जरया जर्जरितं कासश्वासादिविवशं च । योग्यं तन्न समाधौ प्रतिहतबुद्धीद्रियसरम् ॥७६॥ ब्रह्मादयो यतन्ते तस्मिन् दिव्या तनुं समाश्रित्य । जीवन्मुक्ताश्चान्ये कल्पान्तस्थायिनो मुनयः ॥७७॥ तस्माज्जीवन्मुक्तिं समीहमानेन योगिना प्रथमम् । दिव्या तनुर्विधेया हरगौरीसृष्टिसंयोगात् ॥७८॥ (र. र. स.–र. हृ.)

अर्थ–मनुष्य व्याधि, तरा, (बुढ़ापा) और दुःखों से युक्त क्षणभंगुर (शीघ्र नाश होनेवाले) शरीर से उस सूक्ष्म ब्रह्म की उपासना नहीं कर सकते क्योंकि दुःखित शरीर से ब्रह्म की क्या उपासना हो सकती है? इसलिये देह के स्थिर रखने की आवश्यकता है, जो कि बुढ़ापे से जीर्ण हो गया है, खाँसी आदि दुःखों से पीड़ित जिसकी बुद्धि और इन्द्रियो का फैलाव नष्ट हो गया है। ऐसे शरीर से समाधि नहीं हो सकती, कारण यह है कि ब्रह्मादिक देवता भी दिव्य शरीर को धारणकर परमात्मा की प्राप्ति के लिये उपाय करते हैं और एक एक कल्प तक जीवित रहनेवाले दूसरे मुनीश्वर भी जीवन्मुक्त हो गये। इस कारण जीवन्मुक्ति चाहनेवाले मनुष्यों का पारदभक्षण के योग से शरीर को पहले स्थिर बनाना

१–शक्तिपातसमये विचारणं प्राप्तमीश न करोषि कर्हिचित् । अद्य मां प्रति किमागतं यतः स्वप्रकाशनविधौ विलम्बसे ॥ (श्रीनगर)

२–श्रेष्ठतायाः ।

१–नियतम् २–वशमाप्तम्

चाहिये।।७५–७८।।

अजर अमर शरीर ही कल्याणकारक है

आयतनं विद्यानां मूलं धर्मार्थकाममोक्षाणाम् ।
श्रेयः परं किमन्यच्छरीरमजरामरं विहायैकम् ।।७९।।

(र.र.स.–र. ह.)

अर्थ–सम्पूर्ण विद्याओं का स्थान, धर्म, अर्थ, काम मोक्ष की जड़ और परम कल्याणकारी केवल अजर अमर शरीर ही है दूसरा नहीं।।७९।।

सीमाव को लोहे के बर्तन में रखना चाहिये (उर्दू)

अगर सीमाव आहन में रखा जावे तो उड़ने और जाय होने नहीं देता

(सुफहा अकलीमियां ५८)

सीमाव का बयान (उर्दू)

सीमाव इसको अरबी में जीवक, हिन्दी में रस और पारा कहते हैं। सिंग्रफ से और मोटे मोटे अभ्रक के वरकों से, अंडों के छिलकों से निकलता है, नहास पर लगाने से उसको सफेद करता है लेकिन सफेदी जाहिर हो जाती है और तिला व नुकरः पर लगाने से समा जाता है और दूसरी हालतों में भी समा जाता है और उनको शिकनान कर देता है। तमाम धातुओं को सिवाय लोहे के अपने साथ खमीर और मलगमा कर सकता है जिससे कि धातु मजकूर पिसने के काबिल हो जाती है। तमाम धातुओं को खाली करता है–(सफा अकलीमियां ५८)

पारद द्वारा देह स्थिर रहने की सिद्धि

पारदः सर्वरोगाणां जेता पुष्टिकरः स्मृतः ।
सुज्ञेन साधितः कुर्यात्संसिद्धिं देहलोहयोः ।।८०।।

(शार्ङ्गधरसंहिता)

अर्थ–रसवैद्य का बनाया हुआ पारद सम्पूर्ण रोगों को जीतनेवाला और शरीर को पुष्ट करनेवाला होता है, देह को स्थिर करता है, सुवर्ण और चांदी को भी बनाता है।।८०।।

अन्य औषधियों की अपेक्षा पारद में अधिक गुण ।

सूते गुणानां शतकोटिवज्रे चाभ्रे सहस्रं कनके शतकैम् ।।
तारे गुणाशीति तदर्धकान्ते तीक्ष्णे चतुष्षष्टि रवौ तदर्धम् ।।८१।।

(र.र.ला०)

अर्थ–तांबे में बत्तीस, कांत लोहे में चालीस, तीक्ष्ण लोहे में चौसठ, चांदी में अस्सी, सोने में सौ, अभ्रक और हीरे में हजार और पादर में शतकोटि अर्थात् एक अर्ब गुण है।।८१।।

सम्पूर्ण औषधियों से पारद अधिक है

अल्पमात्रोपयोगित्वादरुचेरप्रसंगतः ।
क्षिप्रमारोग्यदायित्वाद्भेषजेभ्यो रसोऽधिकः ।।८२।।

(र.सा.प. र.–रा. सु. रसेन्द्र. सा. सं.)

अर्थ–थोड़ी मात्रा देने से लाभकारी, अरुचि को नहीं करने वाला और शीघ्र ही आरोग्यकारक होने से पारद सम्पूर्ण औषधियों से अधिक है।।

तात्पर्य्यार्थे–जो रोग औषधियों से नाश होता है, उसको साध्य कहते हैं ओर जो साध्य से विरुद्ध हो उसे असाध्य जानना चाहिये, और असाध्य भी दो प्रकार का है। एक याप्य और दूसरा अप्रतिक्रिय अब विचार करना चाहिये कि साध्य रोगों के नाश करने के लिये औषधियों का प्रयोग किया गया है। असाध्य रोगों के नाश के लिये नहीं। पारद साध्य और असाध्य दोनों को नाश करता है।।८२।।

असाध्येषु भेषजं सर्वमीरितं तत्ववेदिना ।।
असाध्येष्वपि दातव्यो रसोऽतः श्रेष्ठ उच्यते ।।८३।।

(र. सा. प–र. रा. सु. रसेन्द्र. सं. सा.)

अर्थ–प्रश्न–जो रोग पारद भक्षण से नाश हो जाये, उसको असाध्य कैसे कह सकते है?

उत्तर–(सूते गुणानां शतकोटि०) पारद में सौ करोड़ गुण हैं, इसलिये असाध्य रोगों को भी नाश करे दे तो कुछ शंका नहीं, क्योंकि पारद असाध्य रोगों का भी नाशक है, इसमें प्रमाण श्लोक ६ देखो–इस प्रकार पारद असाध्य रोगों का नाश करता है तो अन्य औषधियों से श्रेष्ठ ही है, ये बात सिद्ध हो गई। यह पारद योग का साधन अनेक कार्यों का कर्ता और मुक्ति का भी दाता है, इन कारणों से पारद सम्पूर्ण औषधियों ही से नहीं किन्तु सम्पूर्ण पदार्थों से भी उत्तम है।।८३।।

त्रिविध चिकित्सा में रसचिकित्सा की प्रधानता

भैषज्यं त्रिविधं प्रोक्तं दैवं मानुषमासुरम्। रसचूर्णक्षारयोगैर्दैवमेषु वरं स्मृतम् ।।८४।। (रस मानस)

अर्थ–दैव, मानुष और आसुर भेद से औषधि तीन प्रकार की होती है और वह क्रम से रस, चूर्ण क्षार के योगों से की जाती है, अर्थात् रस के योग से दैवी, चूर्ण के योग से मानुषी और क्षार के योग से आसुरी औषधि कहलाती है। इन तीन प्रकार की औषधियों में दैवी औषधि उत्तम है।।८४।।

तीन प्रकार की चिकित्सा

रसादिभिर्या क्रियते चिकित्सा दैवीति सद्भिः परिकीर्तिता सा। सा मानुषी मंत्रहृता सिफाद्यैः सा राक्षसी शस्त्रकृतादिभिर्या ।।८५।। (रसरत्नाकर)

अर्थ–जो रसादिको से चिकित्सा की जाती है वह दैवी चिकित्सा (इलाज) कहलाती है और जो मंत्र पढ़कर उखाड़ी हुई जड़ियों से चिकित्सा की जाती है, उसे मानुषी कहते हैं और जो क्षारादिकों से की जाती है, उसे आसुरी चिकित्सा कहते है।।८५।।

पारदज्ञान के बिना चिकित्सा की निष्फलता

यो न वेत्ति कृपाराशिं रसं हरिहरात्मकम् । वृथा चिकित्सां कुरुते स वैद्यो हास्यतां व्रजेत् ।।८६।। (र.रा. सु.–र.सा. प.–आयुर्वेद वि०)

अर्थ–जो वैद्य कृपा के समुद्र हरिस्वरूप पारद को नहीं जानता, उसकी चिकित्सा निष्फल होती है और उस वैद्य की हँसी होती है।।८६।।

रसविद्या का अधिकारी

रसविद्या पराविद्या त्रैलोक्येऽपि च दुर्लभा । मुक्तिभुक्तिकारी[1] यस्मात्तस्माज्ज्ञेया गुणान्वितैः ।।८७।।

(र. चि. म. र. सा. प. र.–से. सा. सं. नि. र.)

अर्थ–रसविद्या परविद्या (ब्रह्मविद्या) है जिसका तीनों लोकों में प्राप्त करना दुर्लभ (कठिन) है, क्योंकि वह विद्या मोक्ष और भोग देनेवाली है, इस कारण गुणवान् को रसविद्या जाननी चाहिये।।८७।।

रसविद्या गुप्त रखने योग्य है

रसविद्यां दृढं गोप्या मातृगुह्यमिव ध्रुवम् । भवेद्वीर्यवती गुप्ता निर्वीर्या तु प्रकाशनात् ।।८८।। (टो० ड० नं० र० सा० प० र० र० स०)

१–भुक्तिं मुक्तिं करिष्यामि तस्माद्देया गुणाधिके–इत्यपि

अर्थ–माता की योनि से तुल्य रसविद्या को गुप्त रखना चाहिये क्योंकि गुप्त की हुई रसविद्या वीर्यवती (बल देनेवाली) होती है और प्रकाशित करने से शक्तिरहित हो जाती है॥८८॥

औषधि के वीर्य्यरहित हो जाने का कारण

न रोगविदितं कार्यं बहुभिर्विदितं तथा । रोगिर्भिबहुभिर्ज्ञातं भवेन्निर्वीयमौषधम् ॥८९॥ (र. सा. प.)

अर्थ–रोगी का जाना हुआ और अनेक मनुष्यों का जाना हुआ कार्य्य (औषधरूप) नहीं करना चाहिये क्योंकि रोगियों तथा अनेक मनुष्यों की जानी हुई औषधि वीर्य्य रहित होती है अर्थात् उस औषधि में गुण नहीं रहता॥८९॥

रसवैद्य की प्रधानता

मुक्त्वैकं रसवैद्यं तु को लभेत् महद्धनम् ॥ अन्यः पूजां च कीर्ति च तृणकाष्ठौषधैः किल ॥९०॥ (र० प०)

अर्थ–केवल रसशास्त्र के जाननेवाला ही वैद्य पूजा कीर्ति और धन को प्राप्त होता है और दूसरे वैद्य घासफूस की औषधियों से इनको नहीं प्राप्त कर सकते॥९०॥

रसवैद्य के सन्मुख रोगों का न ठहरना

किलासहृल्लासबलासकासश्वासत्रिदोषादिगदाः पलादाः ।
तावद्वलं यांतु न यावदेव वैद्याधिराजो रसचक्रपाणिः ॥९१॥

(टो. नं.)

अर्थ–किलास (बनरफ), हल्लास (उबकाई) कफ, खांसी, श्वास और त्रिदोष आदि रोगपुंज तब तक बल रखते हैं कि जब तक रसरूप चक्र को हाथ में लिये हुए वैद्यों का राजा सामने नहीं आता है॥९१॥

रससिद्धिवाले मनुष्य का लक्षण

रससिद्धो भवेन्मर्त्यो दाता भोक्ता च पालकः जरोन्मुक्तो जगत्पूज्यो दिव्या कांतिः सदा सुखी ॥९२॥ (र. सा. प.)

अर्थ–जिस मनुष्यों को पारद की सिद्धि होती है, वह दानशील, भोक्ता, रक्षक, बुढ़ापे से छूटा हुआ, जगत् का पूज्य, सुन्दर और सदा सुखी होता है॥९२॥

रस की निन्दा का दोष

यश्च निंदति सूतेन्द्रं शंभोस्तेजः परात्परम् । स पतेन्नरके घोरे यावत्कल्पविकल्पना ॥९३॥ (र. रत्न. स. र. र. क.)

अर्थ–जो सर्वोत्तम शिव के तेज पारद की निन्दा करता है, वह कल्प और विकल्प पर्यन्त घोर नरकों में पड़ता है॥९३॥

अन्यच्च

ब्रह्मज्ञानेन सोऽयुक्तो[१] यः पापी रसनिंदकः । नहि त्राता भवेत्तस्य जन्मकोटिशतैरपि ॥९४॥ (र० चि०)

अर्थ–जो रस की निन्दा करनेवाला पापी है, उसको ब्रह्मज्ञान नहीं होता है ओर कोटि जन्मों से भी उसकी रक्षा कोई नहीं कर सकता॥९४॥

अन्यच्च

आलापं गात्रसंस्पर्शं यः कुर्याद्रसनिंदकैः । जातजन्मसहस्राणि स भवेद्दुःख पीडितः ॥९५॥ (र० चि० नि० र०)

अर्थ–रस की निन्दा करनेवाले मनुष्य के साथ जो बातचीत करता है अथवा जो रसनिन्दा के शरीर को छूता है वह सहस्र जन्म पर्यन्त दुःखी रहता है॥९५॥

रससिद्धों के नाम

आदिमश्चन्द्रसेनश्च[१] लंकेशश्च विशारदः। कपाली[२] मत्तमांडव्यो भास्कर शूरसेनकः ॥९६॥ रत्नकोषश्च शंभुश्च सात्त्विको[३] नरवाहनः । इन्द्रदो गोमुखश्चैव कम्बलिर्व्याडिरेवच ॥९७॥ नागार्जुनः सुरानंदो नागबोधिर्यशोधनः। खंडः कापालिको ब्रह्मा गोविन्दो लम्पको हरिः। सप्तविंशतिसंख्या का रससिद्धिप्रदायकाः ॥९८॥ (र. र. स.)

अर्थ–(१) आदिम (२) चन्द्रसेन (३) लंकेश (रावण) (४) विशारद (५) कपाली (६) मत्त (७) माण्डव्य (८) भास्कर (९) शूरसेन (१०) रत्नकोश (११) शम्भु (१२) सात्त्विक (१३) नरवाहन (१४) इन्द्रद (१५) गोमुख (१६) कम्वलि (१७) व्याडि (१८) नागार्जुन (१९) सुरानंद (२०) नागबोधि (२१) यशोधन (२२) खण्ड (२३) कापालिक (२४) ब्रह्मा (२५) गोविन्द (२६) लम्पक (२७) हरि ये सत्ताईस महात्मा रस की सिद्धि देनेवाले हैं॥९६–९८॥

रसांकुशे भैरवश्च नंदी स्वच्छन्दभैरवः। मंथानभैरवश्चैव काकचंडीश्वरस्तथा ॥९९॥ महादेवों नरेन्द्रश्च रत्नाकरहरीश्वरौ ॥ कोरंडकः सिद्धबुद्धः सिद्धपादश्च कंथडी ॥१००॥ ऋष्यशृङ्गो बासुदेवः क्रियातंत्रसमुच्चयी । रसेन्द्रतिलकश्चैव भानुकर्मैरितस्तथा ॥१०१॥ पूज्यपादश्च कावेरी नित्यनाथो निरंजनः ॥ चर्पटो बिंदुनाथश्च प्रभुदेवश्च बल्लभः ॥१०२॥ बालकिर्यजनामा च बोराचोली च टिंटिनी ॥ व्यालाचार्यः सुबुद्धिश्च रत्नघोषः सुसेनकः ॥१०३॥ इन्द्रधूमश्चागमश्च तथा कामारिरेव च । बाणासुरो मुनिश्रेष्ठः कपिलश्च बलिस्तथा ॥१०४॥ इत्यादयो महासिद्धा रसयोगप्रसादतः । जीवन्मुक्ताः प्रशांताश्च स्वेच्छारूपधराश्च ये ॥१०५॥ भक्त्या स्मरणमात्रेण रससिद्धिप्रदायकाः । खंडयित्वा कालदंडे त्रिलोक्यां विचरंति ते ॥१०६॥

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसाद संकलितायां रसराजसंहितायां प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

अर्थ–(२८) रसांकुश (२९) भैरव (३) नन्दी (३१) स्वच्छन्द भैरव (३२) मंथानभैरव (३३) काकचंडीश्वर (३४) महादेव (३५) नरेन्द्र (३६) रत्नकर (३७) हरीश्वर (३८) कोरण्डक (३९) सिद्धबुद्ध (४०) सिद्धपादं (४१) कंथडी (४२) ऋष्यशृङ्ग (४३) अनेकशास्त्रों का संचय करनेवाला वासुदेव (४४) रसेन्द्रतिलक (४५) भानुकर्मा (४६) पूज्यवाद (४७) कावेरी (४८) नित्यनाथ (४९) निरंजन (५०) चर्पट (५१) विन्दुनाथ (५२) प्रभुदेव (५३) वल्लभ (५४) बालकि (५५) यजनामा (५६) बोराचोली (५७) टिंटिनी (५८) व्यालाचार्य (५९) सुबुद्धि (६०) रत्नघोष (६१) सुसेनक (६२) इन्द्रधूम (६३) आगम (६४) कामारि (६५) बाणासुर (६६) सब मुनियों में श्रेष्ठ कपिल (६७) और

१–संयुक्तो।

१–आगदेवश्चन्द्रसेनो। २–यत्तदेवं। ३–तांत्रिको ।

बलि इत्यादि शान्तस्वरूप अपनी इच्छानुसार अपने स्वरूप को धारण करनेवाले जो रससिद्ध रसयोग की कृपा से जीवन्मुक्त हो गये हैं, वे भक्तिपूर्वक स्मरण करने से ही रस सिद्ध के दाता है और कालदंड को तोड़कर संसार में विचरते हैं।।९९–१०६।।

इति श्रीजेसलमेरनिवासिपंडित मनसुखदासात्मज व्यासज्येष्ठमलशर्मकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां रसोत्पत्तिमाहात्म्यादिवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः ।।१।।

अथ द्वितीयोऽध्यायः २

पारद के दोषों की उत्पत्ति का वर्णन

एवंभूतस्य सूतस्य मर्त्यमृत्युगदच्छिदः । प्रभावान्मानुषा जाता देवतुल्यबलायुषः ।।१।। तान्दृष्ट्वाभ्यर्थितो रुद्रः शक्रेण तदनंतरम् । दोषैश्च कंचुकीभिश्च रसराजो नियोजितः । तदाप्रभृति सूतोऽसौ नैव सिध्यत्यसंस्कृतः ।।२।। (र. र. स. र. सा. प. र. रा. सु.)

अर्थ–श्रीमहादेवजी और पार्वती के संभोग से पैदा हुये और मनुष्यों के मृत्युरूप रोग को नाश करनेवाले पारद के प्रभाव से मनुष्य देवताओं के समान बल और अवस्था वाले हो गये, तब इन्द्र ने उन मनुष्यों के देवताओं के तुल्य बल और अवस्थावाले देखकर श्रीमहादेवजी की प्रार्थना की, तदनन्तर श्रीशिवजी ने कंचुकादिक दोष उस पारद में लगा दिये, तभी से यह पारद विना संस्कार किये शुद्ध नहीं होता।।१।।२।।

पंचविध दोषों के नाम और उनके अवगुणों का वर्णन

मलदोषो भवेदेको द्वितीयो वह्निसंज्ञकः । भूमिदोषस्तृतीयः स्यादुन्मत्तश्च चतुर्थकः ।।३।। पंचमः शैलदोषश्च पंचदोषाः प्रकीर्तिताः । मूर्च्छयेन्मलसंयुक्तो वह्नियुक्तश्च दाहकृत् ।।४।। भूदोषात्तेजसां नाशोन्मत्तादुन्मत्तता भवेत् । शरीरजाडचं गिरिणा पंच स्युः पंचदोषतः ।।५।।

(र. रा. प. –टो. नं०)

अर्थ–पहिला मलदोष, दूसरा वह्नि दोष, तीसरा भूमिदोष, चौथा उन्मत्तदोष और पाँचवा शैलदोष, ये पाँचों ही दोष पारद में माने गये है। मलदोषयुक्त पारद मनुष्य को बेहोश कर देता है, वह्निदोषयुक्त शरीर में दाह, भूमिदोष युक्त तेज का नाश, उन्मत्तदोषयुक्त पारद मनुष्य को पागल और गिरि (शैल) दोषयुक्त पारद शरीर को जकड़ देता है।।३–५।।

पांच दोषों का वर्णन

मलदोषो वह्निदोषो भूदोषोन्मत्तदोषकौ । शैलदोषश्च पंचैते दोषाः सूते समीरिताः ।।६।। (योगतरंगिणी)

अर्थ–मल, वह्नि, भूमि, उन्मत्त और शैल, ये पांच दोष पारद में कहे गये हैं।।६।।

तंत्रान्तरे

मलमग्निर्विषं चैव गुरुता तथा । नैसर्गिका। पंचदोषा रसविद्भिः प्रकीर्तिताः ।।७।। मलेन मूर्च्छा मरणं विषेण दाहोऽग्निना कष्टतरो हि देहे । शरीरजाडचं गिरिणा तदा स्याच्चांचल्यतो वीर्यसुतिश्च पुंसाम् ।।८।।(?)

अर्थ–पारद के ज्ञाताओं के मल, अग्नि, विष, गुरुता और चपलता ये पांच दोष पारद में स्वाभाविक माने हैं, मल दोष से मूर्च्छा, विष से मौन, अग्निदोष से शरीर में अत्यन्त दुःखदायी दाह (जलन), शैल दोष से शरीर का जकड़ना और चंचल दोष से मनुष्यों का वीर्य नाश होता है।।

तात्पर्यार्थ–एक शास्त्र में पारद के दोषों के नाम (१) मल (२) वह्नि (३) भूमि (४) उन्मत्त (५) शैल है ओर (१) मल (२) अग्नि (३) विष (४) गुरुता (५) चपलता, ये पारद के दोषों के नाम है, यद्यपि साधारण विचार से दोनों ग्रन्थों में परस्पर विरोध पाया जाता है क्योंकि दोनों ग्रन्थों में दोषों के नाम समान नहीं है, परन्तु गंभीर विचार से दोनों ग्रन्थों में परस्पर विरोध प्रतीत नहीं होता है, जैसे शैल दोष के स्थान में गुरुता, भूमि दोष की जगह विष दोष और उन्मत्त दोष की जगह चपलदोष माना गया है, क्योंकि इनके कार्य एकसे है, जैसे शैलदोष से जड़ता तैसे गुरुता दोष से भी जड़ता होती है, इत्यादि उदाहरण समझने चाहिये।।७।।८।।

दश प्रकार के दोष और उनके अवगुणों का वर्णन

विषं वह्निर्मलं चेति दोषा नैसर्गिकास्त्रयः । रसे मरणसंतापमूर्च्छानां हेतवः क्रमात् ।।९।। भूमिजा गिरिजा वार्जा द्वे च वै नागवंगजे । कथिताः कंचुकाः सप्त रसदोषा दश स्मृताः ।।१०।। भूमिजा कुरुते कुष्ठं गिरिजा जाडचमेव च । वारिजा वातसंघातं दोषा वै नागवंगजाः ।।११।। (ध० सं०)

अर्थ–मृत्यु, संताप और मूर्च्छा के देनेवाले विष, वह्नि और मल ये तीनों दोष पारद में स्वाभाविक हैं। पृथ्वी, पर्वत और जल से पैदा हुई हो और सीसे से और वंग से पैदा हुई सात कंचुकी की कही गई है, इस प्रकार तीन दोष सात कंचुकी मिलाकर पारद में दश दोष कहे गये हैं, पृथ्वी से पैदा हुई कंचुकी कुष्ठरोग को, पर्वत से पैदा हुई जड़ता (शरीर को जिकड़ना) को, जल से पैदा हुई कंचुकी की वात व्याधि को, नाग और बंग से पैदा हुई कंचुकी अनेक रोगों को करती है।।९–११।।

आठ प्रकार के दोषों के नाम और उनके अवगुणों का वर्णन

नागो वंगोऽग्निचापल्यमसह्यश्च विषं गिरिः । मलं तथैते जानीयाद्दोषाश्चाष्टौ रसे स्थिताः ।।१२।। जाडचं कुष्ठं दाहवीर्यनाशौ मूर्च्छा तथैव च । मृत्युः स्फोटो रोगपुंजान्कुर्वन्त्येते क्रमान्नृणाम् ।।१३।। (ध. सं.)

अर्थ–पारद में आठ दोष भी माने गये हैं और नाग, वंग, अग्नि, चांचल्य, असह्य, विष, गिरि और मल में उनके नाम हैं और वे आठों दोष जड़ता से, कोढ़, दाह, वीर्य्य का नाश, मूर्च्छा, मृत्यु, विस्फोटक और अनेक प्रकार के रोगों को करते हैं।।१२।।१३।।

आठ दोषों का वर्णन

स्वाभाविकाः सन्त्यगुणा रसेऽस्मिन्नागाग्निवंगादिकनामधेयाः । नागाद्भवेयुर्गलगंडरोगाः कुष्ठं च वंगान्मरणं विषेण ।।१४।। मलेन मूर्छा दहनेन दाहो वीर्यच्युतिः स्यादसकृच्चलत्वात् । स्यात्कंचुकाज्जाडचमथोदराणि ततो विशुद्धोऽभिमतो रसेन्द्र : ।।१५।।

(योगतरंगिणी)

अर्थ–इस पारद में नाग, अग्नि और वंगादिक नामवाले स्वाभाविक अवगण होते हैं। नागदोष से गलगंड रोग, वंग से कोढ़, विष से मृत्यु, मल से मूर्च्छा, अग्नि से दाह, चंचलता से वीर्यच्युति (अर्थात् वीर्य का स्खलित हो जाना) और अन्य कंचुकियों से जड़ता ओर उदरविकार होता है। इस वास्ते पारद शुद्ध लेना इष्ट है।।

विचार–जो कि योगतरंगिणी में पारद के आठ दोषों का स्वाभाविक दोष निश्चय किया है, वह ठीक नहीं क्योंकि अन्यान्य शास्त्रों में तीन दोषों का ही स्वाभाविक माना है।।१४।।१५।।

पारद के प्रधान तीन दोषों का वर्णन

वह्निर्विषं मलश्चेति मुख्या दोषास्त्रयो रसे । एते कुर्वन्ति संतापं मृतिं मूर्च्छां

१–संभवः इत्यपि (रा० राउ य०) । २–स्यात्तथोन्मत्तः इत्यपि ।

नृणां क्रमात् ॥१६॥ (वाच. वृ०) अन्येऽपि कथिता दोषा भिषग्भिः पारदे यदि । तथाप्येते त्रयो दोषा हरणीया विशेषतः ॥१७॥

(श. क.)

अर्थ–पारद में वह्नि, विष और मल ये तीन प्रधान दोष माने हैं और वह मनुष्यों को संताप, मौत और मूर्च्छा को करते हैं, यद्यपि वैद्यों ने पारद में और भी दोष कहे हैं तथापि ये तीनों दोष विशेषकर दूर करने चाहिये॥१६॥१७॥

तन्त्रातरे

मलशिखिविषनामानो रसस्य नैसर्गिकास्त्रयो दोषाः ।
मूर्च्छां मलेन कुरुते शिखिना दाहं विषेण मृत्युं च ॥१८॥

(यो. र. नि. र.)

अर्थ–मल, वह्नि, और विष ये तीनों पारद के स्वाभाविक दोष हैं, और वह पारद मल दोष से मूर्च्छा, वह्नि दोष से दाह और विषदोष से मृत्यु को करता है॥१८॥

अन्यच्च

विषं वह्निर्मलश्चेति दोषा नैसर्गिकास्त्रयः ।
रसे मरणसंतापमूर्च्छानां हेतवः क्रमात् ॥१९॥

(र. र. रा. स.–र. सुं. –नि. र.)

अर्थ–विष, वह्नि, और मल ये तीनों दोष पारद में स्वाभाविक दोष माने गये हैं और वे तीनों दोष, मरण, संताप और मूर्च्छा के करने वाले होते हैं॥१९॥

अन्यच्च

मलेन मूर्च्छां दहनेन दाहं विषेण मृत्युं वितनोति सूतः ।
मलादिदोषत्रयमेतदत्र नैसर्गिकं शुद्धिमतोऽभिधास्ये ॥२०॥

(योगरत्नाकर–नि. र.)

अर्थ–अशुद्ध पारद मल दोष से मूर्च्छा, वह्नि दोष से दाह, और विष दोष से मृत्यु को करता है, पारद में मल आदि तीन दोष स्वाभाविक है, इससे उसकी शुद्धि को कहूंगा॥२०॥

पारे के सात प्रकार के दोषों का वर्णन

मलो विषं वह्निगिरी चापल्यं च स्वभावजाः । दोषाः पंचाथ विज्ञेयो नागवंगावुपाधिजौ ॥२१॥ (बृ. त.) तेषु नैसर्गिका दोषाः पंच तौ द्वावुपाधिजौ । इति दोषाः सप्त सूते कंचुका अपि सप्त च ॥२२॥

(बृ०यो०त०)

अर्थ–पारद में मल, विष, वह्नि, गिरि और चापल्य ये पांचो दोष स्वाभाविक है और दो दोष नाग (सीसा) और वंग (रांगा) की उपाधि से पैदा हुए हैं, स्वाभाविक पांच दोष और बनावटी दो दोष इस प्रकार सात दोष पारद में है और सात कंचुकी भी है॥२१॥२२॥

औपाधिक दोषों का वर्णन

मिलितौ नागवंगाभ्यां क्षेत्रयोर्नागवंगयोः । अस्खलमादथवा पापैर्वणिग्भिर्मेलितो रसः । ताभ्यां ततो रसे दोषौ द्वौ स्यातां नागवंगजौ ॥२३॥

अर्थ–जब कि पारद, नाग (सीसा) और वंग (रांग) की खान में गिरकर नाग और वंग से मिलता है अथवा पसारी लोग अपने लाभ के लिये पारे में नाग और वंग मिला देते हैं तब पारद में नागदोष और वंगदोष पैदा हो जाते हैं॥२३॥

सात दोषों के अवगुणों का वर्णन

मलेन मूर्च्छा मरणं विषेण दाहोऽग्निना भूमिभृता तु जाड्यम् । वीर्यक्षयश्चापलतोऽथ वंगात्कुष्ठानि नागाद्लगंडरोगाः ॥२४॥

(बृ० यो०)

अर्थ–मलदोष से मूर्छा, विष से मृत्यु, अग्नि से दाह, शैल से जडता, चापल्य दोष से वीर्य नाश, वंग से कोढ और नाग (सीसा) दोष से गलगंड रोग होता है॥२४॥

आठ दोष और उनके अवगुणों का वर्णन

नागो वङ्गो मलो वह्निश्चाञ्चल्यं च विषं गिरिः । असह्यश्च महादोषा निसर्गाः पारदे स्थिताः ॥२५॥

(रसेन्द्रसा. सं.–आयु० वे. वि.–र. रा. प. नि. र.)

अर्थ–किसी किसी तंत्र में नाग, वंग, मल, वह्नि, चांचल्य, विष, गिरि और असह्य ये अष्टविध दोष पारद में स्वाभाविक स्थित है, ऐसा (रसेन्द्रसारसंग्रह) में लिखा है॥२५॥

अन्यच्च

नागो वंगो मलो वह्निश्चाञ्चल्यं च विषं गिरिः ।
असह्याग्निर्महादोषा निसर्गाः पारदे स्थिताः ॥२६॥
व्रणं कुष्ठं तथा जाड्यं दाहं वीर्यस्य नाशनम् ।
मरणं जडतां स्फोटं कुर्वन्त्येते क्रमान्नृणाम् ॥२७॥

(रसेन्द्रसारसंग्रह–र. रा. सु.)

अर्थ–नाग, वंग, मल, वह्नि, चांचल्य, विष, गिरि और असह्य ये दोष स्वभाव से ही पारद में स्थित है, व्रण, कोढ, जड़ता, दाह, वीर्य का नाश, मृत्यु और फोड़े फुंसी को करते हैं॥२६॥२७॥

अन्यच्च

नागो वंगोऽग्निचांचल्यमसह्यत्वं विषं गिरिः । मलान्येते च विज्ञेया दोषाः पारदसंस्थिताः ॥२८॥ जाड्यं कुष्ठं महादाहं वीर्यनाशं च मूर्च्छनाम् । मृत्युं स्फोटं रोगपुंजं कुर्वन्त्येते क्रमान्नृणाम् ॥२९॥ (र. मं.)

अर्थ–नाग, वंग, अग्नि, चांचल्य, असह्य, विष, गिरि, और मल ये आठ दोष पारद में स्थित है, ऐसा जानना और वे दोष जड़ता, कोढ, दाह, वीर्य्यनाश, मूर्छा, मृत्यु, फोड़ा और अनेक प्रकार के रोगों को करते हैं॥२८॥२९॥

अन्यच्च

नागो वंगोऽग्निचांचल्यमसह्याग्निर्विषं मलम् । गिरिश्चैते महादोषा रसेऽशुद्धे वदन्ति हि ॥३०॥ अशुद्धो जाड्यतां कुष्ठं दाहं वीर्यप्रणाशनम् । मूर्च्छा स्फोटं च मृत्युं च क्रमात्कुर्यान्मलै रसः ॥३१॥ (अनुपानतरं)

अर्थ–नाग, वंग, अग्नि, चाचल्य, असह्य, विष, मल और गिरि ये आठ दोष अशुद्ध पारद में हैं, ऐसा विद्वान् लोग कहते हैं, क्योंकि अशुद्ध पारद जड़ता, कोढ, दाह, वीर्य्य का नाश, मूर्छा, फोड़ा और मृत्यु को क्रम से करता है॥३०॥३१॥

अन्यच्च

नागो वंगो मलो वह्निश्चाञ्चल्यं च विषं गिरिः । असह्याग्निर्महादोषा निषिद्धाः पारदे स्थिताः॥३२॥ जाड्यं गण्डस्तनौ नागात्कुष्ठं वङ्गाद्व्रजो

१–मुख्यतमाः इत्यपि। २–पततात् इत्यपि।

१–तथा इत्यपि २–निसर्गात्पा० इत्यपि

मलात् । वह्नेर्दाहो बीजनाशश्चांचल्यान्मरणं विषात् ।।३३।। गिरिः स्फोटो ह्यसह्याग्निदोषान्मोहश्च जायते । (रसरत्नाकर–नि. र.)

अर्थ–सीसा, वंग, मल, वह्नि, चांचल्य, विष, गिरि और असह्याग्नि, ये आठ दोष स्वभाव से ही पारद में स्थित हैं। नाग से शरीर में जड़ता और गलगंड, वंग से कोढ, मल से अनेक रोग, अग्नि से दाह, चांचल्य से वीर्य्यनाश, विष से मरण, गिरिदोष से फोड़े असह्याग्नि दोष से मोह पैदा होता है।।३२।।३३।।

दोहा

पारद में मलदोष है, अरु विषदोष बखान । विह्निदोष त्योंही कह्यो, और गिरित्व प्रमान । कह्यो दोष ते सर्व अरु, पुनि चंचलता जोय । सप्तम अष्टम दोष भनि, नाग बंग है दोय ।। पारद जो मलयुत भखैं, तबै मूर्च्छा होय ।। भखै सुजो विष दोषयुत, तवै मरणही जोय । वह्निदोषयुत रस भखैं, होत कष्टतर देह । होते सर्मक दोष तें, दाहादिक को तेह । पारद के गिरिदोष तें, उपजैं जडता गात, चपलदोष से होत है, वीरज क्षय उत्पात ।। नागदोष तें पंढता, वंगदोष ते कुष्ठ । याते पारद होत नहिं, शुद्ध किये बिन तुष्ट । आठ दोष हैं रसविषें, तिन में तीन प्रधान । बह्निदोष विष दोष युत, हैं मलदोष सुजान ।। सर्वदोष जो नामिटैं, तऊ दोष ये तीन । हरे विना नहिं होत हैं, पारद शुद्ध प्रवीन ।। (वैद्यादर्श)

पारद की सात कंचुकियों के नाम

मृन्मयः कंचुकश्चैकोऽपरः पाषाणकंचुकः । तृतीया जलजोज्ञेयो द्वौद्वौ स्तो नागवङ्गयोः । रसस्य कंचुकाः सप्त विज्ञेया रससागरे ।।३४।। (टो. नं.–र. रा. प.)

अर्थ–प्रथम मिट्टी का कंचुक, दूसरा पत्थर का, तीसरा जल का, वंग से पैदा हुये दो कंचुक, (कपाली कालिका) नाग से पैदा हुए दो कंचुक (श्यामा और कापलिका) इस प्रकार पारद में सात कंचुक जानने चाहिये ।।३४।।

अन्यच्च

मृत्पाषाणजलाख्याश्च कालिकोपालिका तथा ।
श्यामा कापालिका चेति पारदे सप्त कंचुकाः ।।३५।।
(यो.–तं.–बृ. यो. र. सा. प.)

अर्थ–मिट्टी, पाषाण और जल, इनसे पैदा हुये कंचुक कालिका उपालिका, श्याम, और कापालिका ये सात कंचुक पारद में स्थित हैं।।३५।।

अन्यच्च

पर्पटो पाटली भेदी दावी मलकरी तथा ।
अन्धकारी तथा ध्वांक्षी विज्ञेयाः सप्त कंचुकाः ।।६।।
(रसेन्द्रसा. सं. आयु. बे. वि. र. र. स.–र. रा. सुं.)

अर्थ–पर्पटी, पाटली, भेदी, दावी, मलकरी, अन्धकारी और ध्वाक्षी ये सात पारद की कंचुकियां हैं।।३६।।

अन्यच्च

यौगिकौ नागवंगौ द्वौ तौ जाड्याध्मानकुष्ठदौ ।
औपाधिकाः पुनश्चान्ये कीर्तिताः सप्त कंचुकाः ।।३७।।
(र. र. स.–र. रा. सुं.–नि. र.)

अर्थ–जड़ता, आध्मान (अफरा) और कोढ के देनेवाले नाग और वंग से पैदा हुए ये और औपाधिक चार कंचुक और दूसरे तीन कंचुक इनको मिलाकर पारद में सात कंचक होते हैं।।३७।।

नाग और वंग में स्थित कंचुकियों का वर्णन

कापाली कालिका वंग नागे श्यामा कपालिका ।।३८।।
(टो.न.–र. रा. प.)

अर्थ–वंग में कापाली और कालिका नामवाली कंचुकी और नाग में श्यामा और कपालिका नामवाली कंचुकी रहती है।।३८।।

सप्तविधिकंचुक के रूपों का वर्णन

मृद्रूपश्चाश्मरूपश्च जलरूपः पयोनिभः । पंचवर्णः कृष्णवर्णस्तैलवर्णश्च कंचुकः ।।३९।। (योगतरंगिणी)

अर्थ–मृद्रूप, पाषाणरूप, जलरूप, दुग्धरूप, पंचवर्ण, कृष्णवर्ण और तैलवर्ण इस प्रकार सात रूप के कंचुक होते हैं।।३९।।

कंचुकदोषवर्णन

पांडुर्मृदो[1]ऽश्मनो जाड्यं खालित्यं जलकंचुकात् । कपोल्या गजचर्माणि कालिकाया रुजोदरे ।।४०।। श्यामायास्तु प्रमेहाः स्युः कपाल्या जठराणि वै । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन न सूतः शोध्यो विजानता ।।४१।। (बौद्धसर्वस्वात बृ० यो० त०–र. सा. प.)

अर्थ–अशुद्ध पारद खानेवाले जीवों के शरीर में मिट्टी के कंचुक से पाण्डुरोग, पाषाण के कंचुक से जड़ता, जलकंचुक से खालित्य (इन्द्रलुप्त), कपाली से दाद–खुजली इत्यादिक, कालिका से शूल, श्यामासे, प्रमेह, कपालिका से, उदर विकार होना है, इसलिये पंडित सम्पूर्ण यत्नों से पारद को शुद्ध करे ।।४०।।४१।।

अन्यच्च

भूमिजाः कुर्वते कुष्ठं गिरिजा जाड्यमेव च ।
वारिजा वातसंघात दोषोऽघं नागवंगयाः ।।४२।।
(र. र.–स. र. रा. सुं.)

अर्थ–भुमि से उत्पन्न कंचुक कोढ को, शैलज कंचुक जड़ता को, जलज कंचुक वातव्याधि को, नाग वंग से पैदा हुए चार कंचुक अनेक रोगों को करते हैं।।४२।।

अन्यच्च

[2]मृन्मयात्कंचुकात्कुष्ठं जाड्यं पाषणदोषतः । वलीपलितखालित्यं वारिदोषात्प्रजायते ।।४३।। दद्रूश्च गजचर्माणि करोत्येव कपालिका ।। कामलां पांडुरोगं च तथा कुष्ठं जलोदरम् ।।४४।। प्रमेहं श्वेतकुष्ठं च कुरुते श्याम कंचुकः । मर्मच्छेदं वस्तिशूलं काली कुर्यादसंशयम् ।।४५।। कपाली वीर्यहानि च कुरुते तान्निवारयेत (योगतरंगिणी–टो.नं.–र. रा. प.)

अर्थ–मिट्टी के कंचुक से कोढ, पाषाण कंचुक से जड़ता और जल कंचुक से त्वचा (खाल) में झुर्रियों का पड़ना और बालों की सफेदी होती है, कपालिका दाद और गजचर्म अर्थात् छाजन, कामला, पाण्डुरोग, कोढ और जलोदर को करती है, श्यामा कंचुक प्रमेह और श्वेत कोढ को करता है और काली मर्मस्थान का काटना तथा वस्तिशुल (मसाने का दर्द) को और कापाली वीर्य्य का नाश करती है, इसलिये कंचुकियों को दूर करना चाहिये।।४३–४५।।

सीमाव के उपविष यानी जहर (उर्दू)

सीमावत में सात जहर है, जो कि अयूब में दाखिल है, उनको सात हिजाब यानी पर्दे कहते हैं, यह सातों इल्लतें सीमाव में होती है, जब तक ये अयूब दूर नहीं किये जाते, कोई अमल ठीक नहीं उतरता और यह सबब है जो कि शख्श नाकिस कुश्ता खाता है, जहर मजकूर उसके बदन से फूट निकलते हैं और बजाय नफे के जरर होता है और बिलाखिर खानेवाले को

१–श्मनस्त्वान्धं। २–पृथवी इत्यपि

हिलाक कर देता है और अजसाद को भी सवग नहीं देता। सातों जहर के नाम यह हैं–पहला नाग यानी सांप के मानिन्द, दूसरा वंग यानी चरचर की आवाज, तीसरी अगिनि यानी सोजिश, चौथा चंचलिया यानी हरकत, अन्तरारी पांचवें अस्तत: यानी असवात छठा विष यानी जहर, सातवां तन यानी जिस्म–सफा–अकलीमिया ॥१३९॥

पारद के दोष निवारण करने की आवश्यकता

दोषमुक्तो यदा सूतस्तदा मृत्युरुजापहः । साक्षादमृतमेवैष दोषयुक्तो रसो विषम् ॥४६॥ (र. मं.)

अर्थ–जब कि पारद सम्पूर्ण दोषों से रहित होता है, तब मृत्युरूप रोगों का नाशक साक्षात् अमृत ही है और दोषों से मिला हुआ पारद विष के तुल्य है॥४६॥

तंत्रान्तरे

तस्माद्रस्य संशुद्धिं विदध्याद्भिषजां वरः। शुद्धोयममृतं साक्षाद्दोषयुक्तो रसो विषम् ॥४७॥ दोषहीनो यदा सूतस्तदा मृत्युजरापहः ॥ (रसेन्द्र. सा. सं.–र रा. सुं.)

अर्थ–दोषों से युक्त पारद विषतुल्य है और जब पारद दोषरहित शुद्ध होता है तब साक्षात् अमृतरूप होकर मृत्यु और बुढ़ापे को दूर करता है। इस कारण वैद्य पारद को शुद्ध करै॥४७॥

अन्यच्च

संस्कारहीनं खलु सूतराजं यः सेवते तस्य करोति बाधाम् । देहस्य नाशं विविधं च कुष्ठं कष्टं च रोगाञ्जनयन्नराणाम् ॥४८॥ (रसमंजरी)

इति श्रीअग्रवाल–वैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां पारद (रसराज) संहितायां द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

अर्थ–जो मनुष्य संस्कार रहित अर्थात् अशुद्ध पारद का भक्षण करता है उस मनुष्य के शरीर में वह अशुद्ध पारद दुःख को करता है और देह का नाश, अनेक प्रकार का कोढ और मनुष्यों के कठिन रोगों को पैदा करता है॥४८॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डित–मनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल–शर्मकृतायां पारदसंहिताहिन्दीटीकायां रसदोषोत्पत्त्यादि वर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

अथ तृतीयोऽध्यायः ३

अथ रसराजस्याष्टादशसंस्कारप्रकरणार्थं रसशाला सति विभवे कर्तव्या तां शालां विना रससिद्धिः सम्यङ् न जायतेऽतः शालारचनोच्यते ॥

अर्थ–यदि परमेश्वर ने विशेष धन दिया होवे तो पारद के अठारह संस्कार करने के लिये रसशाला बनानी चाहिये, क्योंकि रसशाला के बिना पारद की सिद्धि अच्छी तरह से नहीं होती, इसलिये रसशाला बनवाने की विधि को वर्णन करते हैं॥

रसशालानिर्माणविधि

आतंकरहिते देशे सर्वबाधाविवर्जिते । सर्वौषधियुते देशे शिष्टकूपसमन्विते ॥१॥ मनोरमे धर्मराज्ये समृद्धे नगरे शुभे । पवित्रोपवने रम्ये भूपत्याज्ञासमन्विते ॥२॥ सुविस्तीर्णे चतुर्द्वारे ह्येकद्वारेऽथवा दृढे । समानभूमिकादेशे कुड्यावरणसंयुते ॥३॥ तत्र शाला प्रकर्तव्या रससंस्कारसिद्धये । विस्तारे च तथा दीर्घे हस्तानां पंचविंशतिः ॥४॥ प्रमाणं कथितं तस्या भित्तिमानं करोन्मितम् । तत्रवै नव कोष्ठानि कर्तव्यानि समानि वै ॥५॥ तेषां मानं सप्तसप्त हस्तानां राजवैद्ययोः । बहिर्द्वाराणि शालायाः कर्तव्यानि च द्वादश ॥६॥ मध्य कोष्ठेपि द्वाराणि विधेयानि च द्वादश एकमेकं तथा द्वारं कोणादिक्कोष्ठसंधिषु ॥७॥ कपाटार्गलयुक्तानि द्वाराणि सुदृढानि वै । ईशानात्षष्ठकोष्ठानां गोपनं धूममार्गयुक्॥८॥ मध्यकोष्ठोपरि पुनः कुर्याद्द्वाराणि द्वादश । तदुपरि गोपनं कार्यं वितानं परितस्तथा ॥९॥ गोपनोपरि द्वाराणि सकपाटानि कारयेत् । कोष्ठभित्तिषु पत्राणां स्थापनार्थं च कारयेत् ॥१०॥ स्थानानि लघुदीर्घाणि परिलिप्तानि सर्वतः । शालायाः परिस्तस्याः स्थंडिलं कारयेत्समम् ॥११॥ तस्मादुदीच्यां प्राच्यां वा ह्यतिदीर्घ गृहं तथा । कुट्टनक्वथनाद्यर्थं स्थानानि तत्र कल्पयेत् ॥१२॥ एतादृशीं सूतशालां संपाद्याथ विधानतः । प्रतिष्ठां कारयेत्तस्याः शिख्यादिदेवतार्चनम् ॥१३॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्र सर्वस्थानेषु भक्तितः । कन्याश्च पूजयेत्तत्र वस्त्रालंकारभोजनैः ॥१४॥ शालायां पूर्वदिक्कोष्ठे स्थापयेद्रसनायकम् । वह्निकर्माणि चाग्नेये याम्ये पाषाणकर्म च ॥१५॥ नैर्ऋते शस्त्रकर्माणि वारुणे क्षालनादिकम् । शोषणं वायुकोणे च वेधकर्मोत्तरे तथा ॥१६॥ स्थापनं सिद्धवस्तूनां कुर्यादीशानकोणके । जपपूजादिकं मध्ये प्रोक्तस्थानेऽथवाचरेत् ॥१७॥ (धं.सं.–र.रा.सुं.)

अर्थ–जो रोग रहित और सम्पूर्ण दुःखों से वर्जित हो, जिसमें अनेक औषधियां मिलती हों, ऐसे देश में, जहां मीठे जल का सुन्दर कूप हो और धर्मराज्य अर्थात् निष्पक्ष राजनीति का प्रचार हो, ऐसे श्रेष्ठ नगर के पास राजा की आज्ञा लेकर एक बड़ा चौड़ा सुन्दर बगीचा बना हुआ हो, उस बगीचे के चार दरवाजे हों या एक ही दृढ (मजबूत) दरवाजा हो, जिसकी पृथ्वी समान हो अर्थात् ऊँची नीची न हो और चारों ओर दीवार का परकोटा खिंचा हुआ हो, वहां रससिद्धि के लिये रसशाला बनानी चाहिये। यह रसशाला पच्चीस हाथ लंबी हो और पच्चीस हाथ चौड़ी हो और उसकी भीतों का आसार एक एक हाथ होना चाहिये और २५ हाथ की लंबी चौड़ी रसशाला के बराबर (समकोण) नौ कोठे बनावे जिनकी लंबाई चौथाई सात सात हाथ हो और बाहर से उस रसशाला के १२ दरवाजे हों और बीच के कोठे के भी १२ द्वार हों और एक एक दरवाजा कोने और प्रत्येक दिशा के कोठे की संधि में (अर्थात् एक कोठे से दूसरे कोठे के मिलान की भीति में) होना चाहिये और जितने द्वार हों उतने ही चटखनीदार कपाट (किवाड) हों और ईशान दिशा से लेकर ६ कोठों की भीतों में धुआं रे (धुआं निकलने की जगह) सहित गोपन (रोशनदान) बनावे, बीच के कोठे के १२ द्वार हों और उनके ऊपर रोशनदान बड़े लंबे लंबे चौड़े बनावे और जितने रोशनदान बनवावे, उन सबके ऊपर चौखटदार किवाड, भीतो में अलमारियां बनवावे और छोटे बड़े स्थानों को चारों तरफ से लिपे हुए रक्खे। रसशाला के चौतरफा एक चौरस सुन्दर चबूतरा बनवाना चाहिये। उस रसशाला के उत्तर या पूर्व की ओर एक लंबा घर बनावे जिसमें औषधियों के कूटने तथा औटाने के लिये स्थान बने हों। इस प्रकार विधिपूर्वक रसशाला को बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा और अग्नि आदि देवताओं का पूजन करे और उस शाला के सम्पूर्ण स्थानों में उत्तम भक्ति से ब्राह्मणों को भोजन करावे और कन्याओं को भोजन कराकर वस्त्र आभूषण और दक्षिणा देवे। रसशाला के पूर्व दिशा के कोठे में रसनायक अर्थात् पारद को रक्खे। अग्निकोण में अग्निकर्म (तप्तखल्व इत्यादिक) रक्खे, दक्षिण की ओर पाषाण कर्म (सिल, लोढी, खरलादिक) रक्खे, नैऋत्यकोण में शस्त्रकर्म, पश्चिम में पदार्थों का क्षालन (धोना), वायुकोण में चीजों को सुखाना, उत्तर में वेधकर्म और सब कोठों के बीच के कोठे में श्रीशिवजी का जप और पूजन करे॥१–१७॥

रससिद्धि के निमित्त सामग्री का वर्णन

सत्त्वपातनकोष्टचश्च जलद्रोण्योऽप्यनकेशः । चतुष्टयं भस्त्रिकाणां नलिका

वंशधातुजाः ॥१८॥ मृदयोघोषशुल्वाश्मकुंडिकाश्चर्मकाष्ठजाः । कुंडिनी द्विविधा चैव लोहजा तृणजा तथा ॥१९। पेषणी दृषदुद्भूता खल्वा नानाविधास्तथा । आयसास्तप्तखल्वार्थं मर्दकाश्च तथाविधाः ॥२०॥ चतुर्विधा चालनी स्याच्चर्मजा केशजा तथा । वंशजा धातुजा चेति सुवस्त्रं सूक्ष्मगालने ॥२१॥ काष्ठमृद्वंशपात्राणि तुलास्तोलनकास्तथा । मूषा मृत्तुषतूलानि संपुटा विविधास्तथा ॥२२॥ उलूखलाश्च विविधा मुशलाश्चैव तद्विधाः । दीर्घाश्च लघवो दंशा अतिशुष्कं वनोपलम् ॥२३॥ वनोपलस्य नामानि प्रोच्यते कार्यसिद्धये । पिष्टकं छगणं छाणमुपलं चोत्पलं तथा ॥२४॥ गिरिंडमुत्पलं शाठी संशुष्कं छगणाभिधम् । क्वापिका कुचिका सिद्धा गोला चैव गिरिंडिका ॥२५॥ चषकं च कटोरी च वाटिका सूरिकास्तथा । कंचोली ग्राहिका चेति नामानि धगुणस्य वै ॥२६॥ शालासंमार्जनीत्यादि रसपाकांतकर्मकृत । तत्रोपयोगि यच्चान्यत्तत्सर्वं तत्र स्थापयेत् ॥२७॥ रसांकुशा हि या विद्या तया संमार्ज्य धारयेत् । अन्यथा तद्गतं तेजः परिगृह्णाति भैरवः ॥२८॥ एवं संपाद्य सामग्रीं रस संस्कारसाधिनीम् । रसलिंगार्चनं कुर्याद्येन सिद्धिर्निरंतरम् ॥२९॥ (ध. सं.)

अर्थ–सत्त्वपान की भट्टियां, जल भरने के अनेक पत्र, चार धोंकनियां, बांस या धातु की बनी हुई नलिका, मिट्टी, लोहा, कांसा, पत्थर, तांबा, चर्म और काष्ठ की कुण्डिका, (पथरोटे या कूड़ियां) दो प्रकार की डलियां, एक लोहे की और दूसरी तृणजा अर्थात् झाऊ, अरहर वगैरह की बनी हुई, पत्थर की बनी हुई चक्की, अनेक प्रकार के खरल, तप्तखल्वके निमित्त लोहे का खरल और लोहे का ही मूशला हो। चार प्रकार की चलनी होनी चाहिये, १ चर्म (चमड़े की), २ बालों की बनी हुई, ३ बांस की, ४ लोहा पीतल की बनी हुई सूक्ष्म (महीन) पदार्थ छानने के लिये बारीक कपड़ा, काठ मिट्टी और बांस के पात्र तराजू और बाट मूषा चिकनी मिट्टी, तुष, रुई, अनेक प्रकार के संपुट, तरह तरह के ऊखल (ओखली) और मूशल, बड़े और छोटे चिमटे. अत्यन्त सूखे हुए, जंगली उपजे जिनके नाम कार्यसिद्धि के निमित्त कहते हैं. पिष्टक, छगण, उपल, उत्पल, गिरिण्ड और उत्पल शाठी ये सूखे हुए उपलों के नाम है। कहीं कहीं गोल और चपटे बनाये हुए कंडो को भी गिरिंड कहते हैं, अब कटोरी के नाम कहते हैं, चपक, कटोरी, बाटिका, सूरिका, कचोली और ग्राहिका ये कटोरी या प्याले के नाम हैं और शाला की शुद्धि के लिये समाजिनी (झाडू) और जो जो पारद कर्म के उपयोगी पदार्थ हों, उन सबको रसशाला में रखना चाहिए और उन सब पदार्थो को रसांकुशा विद्या से पवित्र कर (छींटा देकर) ग्रहण करना चाहिये क्योंकि ऐसा न करने से भैरव उन पदार्थो के तेज को ले लेता है। इस प्रकार रस संस्कार करनेवाली सामग्री को इकट्ठी कर रसलिंग की पूजा करे जिससे कि विघ्न रहित पारद की सिद्धि हो॥१८–२०॥

अथ रसलिंग रचना प्रकार

हेमरूपा महादेवी सूतरूपः सदाशिवः । उभयार्योगजं लिंगं रसलिंगमितीरितम् ॥३०॥ सुवर्णेन विना यच्च रसलिंग विनिर्मितम् । केवलं पुण्यदं तत्र भुक्तिमुक्तिप्रदो नहि॥३१॥ तस्मात्तदादौ कर्तव्या रसकर्मसु सिद्धये । रसलिंगेऽर्चना शंभोर्गौर्य्याश्च ध्यानपूर्विका ॥३२॥ कन्याग्निक्षुद्रा त्रिफला सर्षपो राजिका निशा । अष्टावशेषक्वाथेन रसं मर्द्य दिनत्रयम् ॥३३॥ कांजिकेन तु प्रक्षाल्य शोष्य वस्त्रातपै रसम् । खल्वेकभागं कृत्वोर्द्धं स्खलितं ग्राहयेद्रसम् ॥३४॥ अवशिष्टं मलं त्याज्यं निर्मलं जायते रसः । निष्कत्रयं हेमपत्रं तद्रसं नवनिष्कलम् ॥३५॥ अम्लेन मर्दयेद्यामं तेन लिंगं च कारयेत् । दोलायंत्रे सारनाले जंभीरस्थं दिनं पचेत् ॥३६॥ (ध० सं०)

अर्थ–सुवर्णरूप श्रीमहादेवी और पारदरूप श्रीसदाशिवजी इन दोनों के योग से बना हुआ जो लिंग है, उसको रसलिंग कहते हैं॥ सुवर्ण के बिना जो रसलिंग बनाया गया हो, वह केवल पुण्य का दाता है, भोग और मोक्ष का दाता नहीं है, इसलिये प्रथम रसकर्म की सिद्धि के लिये श्रीशिवजी और पार्वती का जिसमें ध्यान मुख्य हो, ऐसी रसलिंग की पूजा सदैव करनी चाहिये. घीग्वार, चित्रक, कटेरी की जड़, त्रिफला, सरसों राई और हल्दी इनका अष्टावशेष काढा बनाकर तीन दिन पारद को खरल करे फिर कांजी से धोकर कपड़े से पोंछे और धूप में सुखाते तदनंतर खरल के एक भाग को ऊपर उठाकर, फैले हुए पारद को इकट्ठा कर ले और शेष मल को छोड़ देवे। अब तीन तोले स्वर्ण और इसी रीति से शुद्ध ९ तौले पारद इनको खटाई से एक पहर तक मर्दन कर रसलिंग बनावे और जंभीरी में रक्खे हुए पारद को कांजी सहित दोलायंत्र में एक दिन पचावे॥३०–३६॥

अथ रसलिंगपूजाविधिः

ईशानकोष्ठे लिंगं च सुमुहूर्ते च पूजयेत् । रसलिंगे सदा पूज्यौ पार्वतीपरमेश्वरौ ॥३७॥ करवीरैर्बिल्वपत्रैः पूजांते ध्यानमापठेत् । ॐ अष्टादशभुजं शुभ्रं पंचवक्त्रं त्रिलोचनम् ॥३८॥ प्रेतारूढं नीलकंठं ध्यायेद्वामे च पार्वतीम् । चतुर्भुजामेकवक्त्रामक्षमालांकुशे तथा ॥३९॥ वामे पाशाभये चैव दधती तप्तहेमभाम् । पीतवस्त्रां महादेवीं नानाभूषणभूषिताम् ॥४०॥ एवं ध्यात्वा पुष्पपुंजं दद्यादंकुशया नरः । रसलिंगं चतुर्दिक्षु गौर्यावरणदेवताः ॥४१॥ नंदी भृंगी महाकाली कुलीरां पूर्वदिक्क्रमात् । पूजयेत्तन्नाममन्त्रैः प्रणवादिनमोन्तकैः ॥४२॥ एवं नित्यार्चनं तत्र कर्तव्यं रससिद्धये ॥

(र० र० स०)

अर्थ–ईशान कोण में शुभमुहूर्त देखकर रसलिंग की पूजा करे और रसलिंग में श्रीमहादेव और पार्वतीजी की सदैव बेलपत्र और कनेर के फूलो से पूजा करे और पूजा के अन्त में इस ध्यान को पढना चाहिये।

ध्यान–अठारह भुजावाले जिनका श्वेत शरीर है, पांच जिनके मुख हैं. तीन जिनके नेत्र, बैल की सवारी वाले नीलकंठ श्रीमहादेवजी का ध्यान करे और श्रीशिवजी के वामभाग (बाईं तरफ) में स्थित चार भुजावाली जिनके एक मुख है और रुद्राक्ष की माला धारण किये हुए हैं. बांये हाथ में पाश और अभय को धारण करनेवाली है, तप्त स्वर्ण के तुल्य गौरवर्णवाली पीताम्बर वस्त्र धारण किये हुए अनेक आभूषणों से सजी हुई श्रीमहादेवी पार्वती का इस प्रकार ध्यान करके श्री शिव पार्वती को पुष्पांजलि चढावे और रसलिंग की चारों दिशाओं में नन्दी, भृंगी, महाकाली और कुलीर को पूर्व दिशा के क्रम से स्थापित कर उन उनके नामवाले मंत्रों से पूजन करे, इस प्रकार उस रसशाला में रस की सिद्धि के लिये नित्य पूजन करना चाहिए ॥३७–४२॥

रसलिंगपूजाफल

लिंगकोटिसहस्रस्य यत्फलं सम्यगर्चनात् । तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद्भवेत् ॥ ब्रह्महत्यासहस्राणि गोहत्यायाः शतानि च । तत्क्षणाद्विलयं यांति रसलिंगस्य दर्शनात् ॥ स्पर्शनात्प्राप्यते मुक्तिरिति सत्यं शिवोदितम् ॥४४॥ (र.र.स.)

अर्थ–करोड़ों शिवलिंगो के पूजने से जो फल होता है, उससे भी करोड़ गुना फल रसलिंग की पूजा करने से होता है, हजारों ब्रह्महत्याएं और सैंकड़ो गोहत्याएं रसलिंग के दर्शन करते ही नष्ट हो जाती है और रसलिंग के स्पर्श करने से मुक्ति होती है, यह श्रीमहादेवजी ने कहा है॥४३॥४४॥

अथ कोष्ठ लक्ष्मीपूजनविधि

आग्नेय्यां श्रीस्वर्णमयी कर्षमानां तदर्धकाम् । तत्रावाह्य महालक्ष्मी क्षीरेणाप्लाप्य पूजयेत् ॥४५॥ ऐं श्रीं क्लीं सौं महालक्ष्म्यै नमो मंत्रवरेण वै । प्रत्यहं पूजयेदेवं गंधपुष्पफलादिभिः ॥४६॥ आग्नेयकोष्ठे श्रीमूर्ति सर्वदा परिरक्षयेत् । उक्तपूजां विना नैव सूतराजश्च सिध्यति ॥४७॥

(धं० सं०)

अर्थ–एक तोले अथवा छः माशे स्वर्ण की प्रतिमा बनाकर अग्नि कोण में स्थापित करे और उस प्रतिमा में श्रीमहालक्ष्मी का आवाहन कर दुग्ध से

१–वृषारू० इत्यपि।

स्नान करावै. ॐ ऐं श्रीं क्लीं सौं श्रीमहालक्ष्म्यै नमः इस सर्वोत्तम मंत्र को पढ़कर सदैव गंधपुष्पादिकों से पूजन करै और अग्निकोण में श्रीमहालक्ष्मी की मूर्ति को भलीभांति रक्षित रक्खै क्योंकि पूर्वोक्त पूजन के बिना पारद सिद्धि नहीं होती है॥४५–४७॥

अथ यंत्र में पारदपूजा का वर्णन

अथ मध्यकोष्ठे यंत्रमध्ये पारदपूजामाह । परिलिप्ते मध्यकोष्ठे कुर्याद्वेदीं द्विहस्तकाम् । सिन्दूरेण च तन्मध्ये षटकोणं विलिखेत्ततः ॥४८॥ वृत्तं चाष्टदलं द्वंद्वं चतुष्पत्रं ततः परम् । भूपूरं परितो लेख्यं रससंस्कारकर्मणि ॥४९॥ तन्मध्ये लोहजं खल्वं पारदं तत्र निक्षिपेत् । पलानां शतकं वापि पंचाशत्पंचविंशति ॥५०॥ अत्रायं विधिः तत्रादौ पारदपात्रग्रहणे मंत्रः । ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः भवे भवेनाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥५१॥ इति मंत्रेण पारदपात्रं स्वहस्ते कृत्वा नत्वा लोहखल्वे सूतं क्षिपेत् तंत्र मंत्रः । ॐ ऐं श्रीं क्लीं सौं ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वतः शर्वसर्वेभ्यः सर्वान्तरेभ्यो नमस्तेअस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥५२॥ इति खल्वे पारदक्षेपस्तस्य पुना रसलिंगवत्पूजा कर्तव्या तत्रायमेव मंत्रः सर्वत्र रसकर्मणि रसपूजायां रसोपकरणसेचनादौ च ज्ञेयः । ततः षट्कोणेषु–वज्रवैक्रान्तवज्राभकांतपाषाणटंकणम् । भूनागः षटसु कोणेषु ततश्चाष्टदलेषु वै ॥५२॥ गंधतालककासीसशिलाकंकुष्ठभूखगम् । राजावर्तं गैरिकं च पूजयेत्पूर्वतः क्रमात् ॥५४॥ रसकं विमला ताप्यं चपला तुत्थम्नजनम् ॥ हिंगुलं सस्यकं पूज्या द्वितीयेऽष्टदले त्वमी ॥५५॥ ततश्चतुर्षु पत्रेषु पूजयेत्पूर्वतः क्रमात् । स्वर्ण रूप्यं पूर्वपत्रे दक्षिणे ताम्रसीसके ॥५६॥ पश्चिमे वंगकांतो च ह्युत्तरे मुंडतीक्ष्णकौ । पूर्वोक्तेनैव मंत्रेण पूजयेत्क्रमतो भिषक् ॥५७॥ विडं कांजिकयंत्राणि क्षाराम्ललवणानि च । कोष्टीं मूषां वक्रनालीं तुषांगारवनोपलाः ॥५८॥ भस्त्रिका दंशकाश्चैव शिला खल्वा उलूखलम् ॥ स्वर्णकारोपकरणं समस्तं तुलनानि च ॥५९॥ मृत्काष्ठधातुपात्राणि स्वस्वस्थानस्थितानि वै । प्रोक्षयेदुक्तमंत्रेण रससिद्धास्तनन्त्रतः ॥६०॥

ॐ आगदेवाय नमः १ ॐ चन्द्रसेनाय नमः २ ॐ लंकेशाय नमः ३ ॐ विशारदायै नमः ४ ॐ मत्तदेवाय नमः ५ ॐ मांडव्याय नमः ६ ॐ भास्कराय नमः ७ ॐ शूरकाय नमः ८ ॐ रत्नकोशाय नमः ९ ॐ शंभवे नमः १० ॐ तांत्रिकाय नमः ११ ॐ नरवाहनाय नमः १२ ॐ इन्द्रगाय नमः १३ ॐ गोमुखाय नमः १४ ॐ कंबलये नमः १५ ॐ व्यालवे नमः १६ नागार्जुनाय नमः १७ ॐ सुरानंदाय नमः १८ ॐ नागबोधये नमः १९ ॐ यशोधनाय नमः २० ॐ खंडाय नमः २१ ॐ कापालिकाय नमः २२ ॐ ब्रह्मणे नमः २३ ॐ गोविन्दाय नमः २४ ॐ लंपटाय नमः २५ ॐ हरये नमः २६ ॐ रसांकुशाय नमः २७ ॐ भैरवाय नमः २८ ॐ नंदिने नमः २९ ॐ स्वच्छन्द भैरवाय नमः ३० ॐ मंथानभैरवाय नमः ३१ काकचंडीश्वराय नमः ३२ ॐ ऋष्यश्रृंगाय नमः ३३ ॐ वासुदेवाय नमः ३४ ॐ क्रियातंत्रसमुच्चायै नमः ३५ ॐ रसेन्द्रतिलकायै नमः ३६ ॐ भानुकये नमः ३७ ॐ मेलिण्यै नमः ३८ ॐ महादेवाय नमः ३९ ॐ नरेन्द्राय नमः ४० ॐ रत्नाकराय नमः ४१ ॐ हरिश्वराय नमः ४२ ॐ कोरंटकाय नमः ४३ ॐ सिद्धिबुद्धाय नमः ४४ ॐ सिद्धपादाय नमः ४५ ॐ कंथडिने नमः ४६ ॐ पूज्यपादाय नमः ४७ ॐ कावेरिणे नमः ४८ ॐ नित्यनाथाय नमः ४९ ॐ निरंजनाय नमः ५० ॐ वर्पताय नमः ५१ ॐ विंडनाथाय नमः ५२ ॐ प्रभुदेवाय नमः ५३ ॐ वल्लभाय नमः ५४ ॐ बालकये नमः ५५ ॐ यजनाम्ने नमः ५६ ॐ घोराचोलिनिने नमः ५७ ॐ टिंटिनिने नमः ५८ ॐ व्यालाचार्याय नमः ५९ ॐ सुबुद्धये नमः ६० ॐ रत्नघोषाय नमः ६१ ॐ सुसेनकाय नमः ६२ ॐ इन्द्रधूमाय नमः ६३ ॐ आगमाय नमः ६४ ॐ कासारये नमः ६५ ॐ बाणासुराय नमः ६६ ॐ कपिलाय नमः ६७ ॐ बलये नमः ६८ ॥ संपूज्य रससिद्धानां गंधपुष्पाक्षतैस्ततः । योगिनीकन्यका विप्रान् भोजयेच्चातिथींस्तथा ॥६१॥ (धं. सं.)

अर्थ–अब बीच के कोठे में यंत्र बनाकर उसमें पारद की पूजा को कहते हैं–लिपे हुये बीच के कोठे में दो हाथ लंबी चौड़ी वेदी बनावे और वेदी के बीच में षट्कोण यन्त्र लिखे दो गोलाकार अष्टदलयंत्र तदनंतर चतुर्दलयंत्र को लिखकर चारों तरफ रस संस्कार की सिद्धि के लिये भूपुर लिखे वेदी के बीच में लोहे का खरल और उसमें सौ फल, पचास पल, अथवा पच्चीस पल पारद को स्थापित करे। अब पारद की स्थापना की विधि को कहते हैं। तहां (ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि०) यह मंत्र बोलकर पारद के पात्र को अपने हाथ में ग्रहण कर और नमस्कार करके लोहे के खरल में पारद को रखे और जिस समय पारद को खरल में रखे उसी समय (ॐ ऐं श्री सौं अघोरेभ्योथ०) यह मंत्र बोले जिस प्रकार रसलिंग की पूजा की जाती है उसी प्रकार उस पारद की भी पूजा करनी चाहिये, इस रसकर्म में जहाँ जहाँ पारद की पूजा अथवा रसकर्म की सामग्री का मार्जन करना हो, वहाँ वहाँ यही मंत्र बोलना चाहिये, तदनन्तर छओं कोणों में वज्र (हीरा) वैक्रान्त, वज्राभ्र (वज्रासंज्ञा का अभ्रक) कांत पाषाण (चुंबक पत्थर), सुहागा और भूनाग (वर्षाकाल में जो सर्पाकार जीव पैदा होता है जिसको कैंचुआ या गिरौया कहते हैं) उसका सत्त्व इनको स्थापित करे और गंधक, हरिताल, कसीस, मैनसिल, कंकुष्ट (उपरसभेद) भूखग (फिटकरी) राजावर्त (रेउटी या गोविन्दमणि) और गेरू इनकी पूर्व दिशादि क्रम से अष्टदल यंत्र में पूजा करे और अष्टदल यंत्र में रसक (खपरिया) सोनामक्खी, रूपामक्खी, चपल (परिभाषा) नीला थोथा, सुरमा, हिंगुल और सस्यक को दूसरे अष्टदल में स्थापित करे तदनन्तर चतुर्दलयंत्र में पूर्वदिशा के क्रम में सुवर्ण और चांदी को पूर्व दिशाके पत्र मे, तांबा और सीसे को दक्षिण दिशा के पत्र में, बंग और कांतको पश्चिम दिशा के पात्र में, और मुंड तीक्ष्ण (लौहविशेष) को उत्तर दिशाके पत्रमें, पूर्वोक्त मंत्रसे वैद्यराज पूजन करे और बिड़, कांजी, यंत्र, क्षार, अम्ल, लवण, कुठिया, मूषा, फूकनीं, तुष, कौले, जंगली उपले, भस्त्रिका (धौंकनी) चीमटा, सिललौढी,खरल, ऊखल, सुनार के शस्त्र, सम्पूर्ण बाट, मिट्टी, लकड़ी और धातु इनके पात्र जो अपने अपने स्थान पर रखे हुए हों, उनको पूर्वोक्त मंत्र से प्रोक्षण (छिड़कना) करे पश्चात् रससिद्धों को नमस्कार करे। १ आगदेव को नमस्कार हो २ चन्द्रसेन को नमस्कार हो ३ लंकेश को न० ४ विशारद को न० ५ मत्तदेव को नम० ६ मांडव्य को नम० ७ भास्कर को नम० ८ शूकर को नम० ९ रत्नकोष को नम० १० शंभु को नम० ११ तांत्रिक को नम० १२ नरवाहन को नम० १३ इन्द्रगको न० १४ गोमुख को नम० १५ कम्बली को नम० १६ व्याल को नम० १७ नागार्जुन को नम० १८ सुरानंद को नम० १९ नागगोधिको नम० २० यशोधन को नम० २१ खंड को नम० २२ कापालिक को नम० २३ ब्रह्मा को नम० २४ गोविन्द को नम० २५ लंपट को नम० २६ हरि को नम० २७ रसांकुश को नम० २८ भैरव को नम० २९ नंदीश्वर को नम० ३० स्वच्छन्दभैरव को नम० ३१ मन्थानभैरव को नम० ३२ काकचंडीश्वर को नम० ३३ ऋष्यश्रृङ्ग को नम० ३४ वासुदेव को नम० ३५ क्रियातंत्रसमुच्चय को नम० ३६ रसेंद्रतिलक को नम० ३७ भानुकर्मा को नम० ३८ मेलिणी को नम० ३९ महादेव को नम० ४० नरेन्द्र को नम० ४१ रत्नाकर को नम० ४२ हरीश्वर को नम० ४३ कोरटंक को नम० ४४ सिद्धवृद्ध को नम० ४५ सिद्धपाद को नम० ४६ कन्थडीको नम० ४७ पूज्यपाद को नम० ४८ कावेरी को नम० ४९ नित्यनाथ को नम० ५० निरंजन को नम० ५१ पर्वत को नम० ५२ विंडनाथ को नम० ५३ प्रभुदेव को नम० ५४ वल्लभ को नम० ५५ बालक को नम० ५६ यजनामा को नम० ५७ घोराचोली को नम० ५८ टिटिंनी को नम० ५९ व्यालाचार्य को नम० ६० सुबुद्धि को नम० ६१ रत्नघोषको न० ६२ सुसेनक को नम० ६३ इन्द्रधूम को नम० ६४ आगम को नम० ६५ कावेरी को नम० ६६ वाणासुर को नम० ६७ बलि को कपिल को नम० ६८॥ इस प्रकार चंदन पुष्प और

१-कर्मणि-इत्यपि।

अक्षतों से रससिद्धों का पूजनकर, योगिनीकन्यायें, ब्राह्मण और अभ्यागतों का पूजन करे॥४८–६१॥

पूजन की आवश्यकता।

इत्येवं सर्वसंभारयुक्तं कुर्याद्रसोत्सवम्। सर्वविघ्नप्रशांत्यर्थं सर्वेप्सितफलप्रदम् ॥६२॥ अन्यथा योऽतिमूढात्मासंप्रदीक्षाक्रमाद्विना। कर्तुमिच्छति सूतस्य साधनं गुरुवर्जितः ॥६३॥ नासौ सिद्धिमवाप्नोति जन्मकोटिशतैरपि। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन शास्त्रोक्तां कारयेत्क्रियाम् ॥६४॥ रसविद्या दृढं गोप्या गुह्याद्गुह्यतरा भुवि। भवेद्वीर्यवती गुप्ता निर्वीर्या च प्रकाशनात् ॥६५॥ न रोगिविदितं कार्यं बहुभिर्विदितं तथा। रोगिणा बहुभिर्ज्ञातं निर्वीयं मंत्रमौषधम् ॥६६॥ न क्रमेण बिना शास्त्रं न शास्त्रेण बिना क्रमः। शास्त्रं क्रमयुतं ज्ञात्वा यः करोति स सिद्धिभाक् ॥६७॥ एवं कृतक्रमो वैद्यो गणेशादीन्विसर्जयेत्। खल्वस्थं पारदं नीत्वा पूर्वकोष्ठेऽथ संविशेत् ॥६८॥ तत्राष्टादशसंस्कारान् कुर्याच्छास्त्रावधानतः। नृपाज्ञया समायुक्तः क्रियाभिज्ञो जितेन्द्रियः ॥६९॥

अर्थ–इस प्रकार जो सम्पूर्ण विघ्नों के नाश के लिये अनेक वाञ्छित फल दे देनेवाले सम्पूर्ण सामग्री युक्त रस के उत्सव को करे और जो गुरु रहित मूर्ख जन संप्रदाय की दीक्षा न लेकर इसके (पूर्वोक्त क्रम के) विपरीत क्रिया से पारद क्रिया को सिद्ध करना चाहता है,-वह सौ जन्म में भी पारद सिद्धि को नही प्राप्त होता है, इस कारण सम्पूर्ण प्रयत्नों से शास्त्रों क्रिया को करावे, संसार में रसविद्या को अत्यन्त गुप्त रखना चाहिये क्योंकि गुप्त ही हुई रसविद्या फल देती है और प्रकाश करने से निर्वीय होती है; यही बात अन्य शास्त्रों में लिखी है, जिस औपधि की क्रिया को रोगी जानता हो और बहुत से लोक जानते हो, उस क्रिया को न करे क्योंकि रोगी और अनेक जनों का जाना मंत्र और औपधि निर्वीय (शक्तिरहित) हो जाते हैं, जिसमें क्रमरीति न हो, वह शास्त्र नहीं और वह क्रम नहीं जो एक शास्त्र में लिखा हुआ न हो वह इस कारण जो मनुष्य क्रम से युक्त शास्त्र को जानकर पारद कर्म करता है, उसको सिद्धि होती है, ऐसे क्रमपूर्वक कार्य करनेवाला वैद्य गणेश आदि देवताओं को पूजनकर विसर्जन करे और खरल में पारद को निकाल पूर्व के कोठे में प्रवेश करे और वहां राजा की आज्ञा लेकर इन्द्रियों का जीतनेवाला और पारदक्रम का जाननेवाला वैद्य अष्टादश संस्कार करे॥६२–६९॥

अथ रसेश्वरीमंत्रविधिः।

ॐ अस्य श्रीरसेश्वरीमंत्रस्य महादेव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः श्रीरसेश्वरी पार्वती देवता रसकर्मसिद्धये जपे विनियोगः। बीजैः समस्तैश्च न्यासः। अथ ध्यानम्–अष्टादशभुजं शंभु पंचवक्रं त्रिलोचनम्। प्रेतारूढं नीलकंठ ध्यायेद्वामे च पार्वतीम् ॥७०॥ चतुर्भुजामेकवक्त्रामक्षमालांकुशे तथा॥ वामे पाशाभये चैव दधतीं तप्तहेमभाम् ॥७१॥ पीतवस्त्रां महादेवीं नानाभूषणभूषिताम्। रसेश्वरीं शंभुयुतां रससिद्धिप्रदां भजे ॥७२॥ वाणीस्मरः पुनर्वाणी लज्जावाणीरितो मतः। पंचाक्षरो रसेश्वर्याः सर्वसिद्धिविधायकः ॥७३॥ रसकर्मणि सर्वत्र शोधने साधने मृतौ॥ अष्टोत्तरसहस्रं वै जपन्कर्म समारभेत् (ध. सं.) ॥७४॥

अर्थ–(ॐ अस्य श्री) यहां से लेकर (जपे विनियोगः) यहां तक मंत्र को पढ़कर जल छोड़े और सम्पूर्ण बीजों से अंगन्यास करे तदनन्तर ध्यान करे, अठारह भुजा श्वेत वर्ण पांच मुख तीन नेत्र प्रेतों की सवारीवाले नीलकंठ महादेव का ध्यान करे, चार भुजा और एक मुख को धारण करनेवाली जिसको दक्षिणहस्त में रुद्राक्षमाला और अंकुश ओर वामहस्त में पाश और अभय को धारण किए हुए तप्त सुर्वण के तुल्य जिसका गौर वर्ण हो पीताम्बर वस्त्र को धारण करनेवाली और अनेक आभूषणों से सजी हुई शिवजी की मूर्ति के समीप रससिद्धि की देनेवाली ऐसी महादेवी श्रीरसेश्वरी का श्रीमहादेवजी के बांई ओर ध्यान करे॥७०–७४॥

रसांकुशविद्याप्रणवं कामराजं च शक्तिबीजं रक्षांकुशायै॥ आज्ञेया विद्यां रसांकुशां प्रणम्य पूजयेद्देवीमिमां कुशविद्याम् ॥७५॥७६॥ अथ मंत्रः ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं अष्टोत्तरपराफुट २ प्रकट प्रकट कुरु कुरु शमय शमय जात जात दह दह पानय पानय ॐ ह्लीं ह्लैं ह्लौं ह्लूं अघोराय फट् इति अघोरमंत्रः (ध. सं.)

अघोरमंत्रः

अघोरेणैव मंत्रेण रसराज्यस्य पूजनम्। ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः ॥(र रत्ना०–कामरत्न. रसेन्द्र. सा. सं.) पारदस्य पंचविधगतिस्तंभकः पारदस्थितिकारकः सिद्धिसावरमंत्रः प्रोच्यते।

पारद की पांच तरह की गति रोकनेवाले सिद्धि सावर मंत्र का वर्णन

मंत्र–ॐ पारापारा सहस्र धारा पारा राखे गुरु हमारा। बारा बरस की कन्या आई पारा रहिबो ब्रह्मांड समाई। पाराहस्तेन वाले यती हनुमान की दुहाई। अर्जुन की चकवाई श्रीराजा रामचन्द्र की आन फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥ **अस्य विधिः– यदा खल्वे पारदं निधाय तदुपरि एकविंशतिवारं मंत्रं पठेत् प्रतिसंत्रान्ते फूत्कारं कुर्यात्॥** तथा सप्तवारं पठित्वा पारदोपरि जलं सिंचेत्। **एवं कृते सिद्धिपारदो भवति** अस्यापि एकादशशतमितं जपं ग्रहणं सूर्य्यसंक्रांतिपुण्यकाले **कृष्णचतुर्दश्यां वा** पुरश्चरणार्थं[1] जपेत्॥

(ध. सं.)

अर्थ–अब पारद की पांच तरह की गति रोकने वाले सिद्धि सावर मंत्र को वर्णन करते हैं। पारद को खरल में रखकर उस पारे पर इक्कीस बार इस ऊपर लिखे (ॐ पारापारा सहस्रधारा इत्यादि) सिद्धसावर मंत्र को पढ़कर पारद पर सातवार जल छिड़के जो मनुष्य इस मंत्र को सिद्ध पढ़े और प्रत्येक मंत्र की समाप्ति पर पारद को फूंकता जाये, इसीप्रकार सात वार मंत्र को करना चाहें वह सूर्य चन्द्रमा के ग्रहण में सूर्य की संक्रान्ति के पुण्यकाल में या कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन पुरश्चरण के दिन पुरश्चरण के लिए एक २ हजार जप करे तो यह मंत्र सिद्ध होता है।

रसलिंगार्चनं नित्यं रसेश्वर्या जपं तथा। कुर्वन्रहस्ये धर्मात्मा रससिद्धो भवेन्नरः (ध. सं. ॥७७॥)

अर्थ–पूर्वोक्त रीति से पुरश्चरण करने के पश्चात् एकान्त स्थान में नित्य रसलिंग की पूजा और रसेश्वरी का जप करता हुआ धर्मात्मा मनुष्य रससिद्ध होता है॥७७॥

मंत्रदीक्षा मूहुर्त

अथ मंत्रदीक्षायां विदंबराकल्पोक्तमासादिफलानि प्रोच्यंते–मेषेऽर्के च प्रतापः स्याद्वृषगे भास्करे सुखी॥ मिथुनेऽर्के बंधुनाशो दुःखवान् कर्कटे रवौ ॥७८॥ सिंहे भानौ समृद्धिः स्यात्कन्याऽर्के च समृद्धयः। तुलार्के धनलाभः स्याद् वृश्चिकेऽर्के च कष्टवान् ॥७९॥ धनुष्यर्केच सौभाग्यं मकरेऽर्के धनी भवेत्॥ आयुर्वृद्धिः कुंभगेऽर्के मीनेऽर्के राजवल्लभः ॥८०॥ अश्विनी रोहिणी चार्द्रा तथा पुष्योत्तरात्रयम्। हस्तश्चित्रा स्वातिमैत्रे विशाखा च धनिष्ठिका ॥८१॥ पुनर्वसू रेवती च प्रशस्ता मंत्रसंग्रहे। पूर्णिमा पंचमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा ॥८२॥ त्रयोदशी च दशमी प्रशस्ता मंत्रसंग्रहे॥ तृतीया विहिता नित्यं षष्ठी सर्वत्र निंदिता ॥८३॥ द्वादश्यां मयि कर्तव्यं मंत्राणां ग्रहणं तथा। मध्याह्नांतः शुभः कालो निषिद्धा रजनी तथा ॥८४॥ शुक्ले सर्वसमृद्धिः स्यात्कृष्णे तु मध्यमं फलम्। सूर्यग्रहं विना प्रोक्तामलमासे कदापि न ॥८५॥

अथ शिष्यशुभप्रदोऽपि सूर्यग्रहणकालस्तथापि मंत्रदातुरत्यंतानिष्टफलद

१–पुरश्चरणं कृत्वैवं जपं कुर्यादिति भावः।

त्वमाह महाभवचतुर्दश्यामुपरागेषु च द्वयोः मैत्रे किल भवेन्मंत्रो दरिद्रः सप्तजन्मसु ॥८६॥ योगाश्च प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनः शुभः ॥ सुकर्मा च धृतिर्वृद्धिः ध्रुवः सिद्धिश्च हर्षणः ॥८७॥ वरीयांश्च शिवः सिद्धिर्ब्राह्मश्चैन्द्रश्च षोडश ॥ मंत्राणां ग्रहणे श्रेष्ठाः कथितास्तंत्रकोविदैः ॥८८॥

अथ लग्नफलानि

मेषलग्नं तु शिष्याणां धनधान्यप्रदं भवेत् ॥ वृषलग्ने तु मरणं युग्मे चापत्तिनाशनम् ॥८९॥ कर्कटे सर्वसिद्धिः स्यात्सिंहे मेधाविनाशनम् । कन्यालग्ने महालक्ष्मीस्तुलायां सर्वसिद्धयः ॥९०॥ वृश्चिके सर्वसिद्धिः स्याद्धनुर्ज्ञानविनाशम् ॥ मकरः पुत्रदः प्रोक्तः कुंभे धनसमृद्धयः ॥९१॥ मीनलग्ने भवेद् दुःखमित्थं लग्नफलं प्रिये ॥ एवं विचार्य मतिमान्मंत्रदीक्षां समाचरेत् ॥९२॥

(ध. सं.)

अर्थ–अब मंत्र की दीक्षा लेने के लिये विदेवरा कल्प में कहे हुए महीनों के फल को कहते हैं। मेष की संक्रान्ति में दीक्षा लेने से मनुष्य का प्रताप बढ़ता है, और वृष की संक्रान्ति में सुखी होता है, मिथुन की संक्रान्ति में बंधुओं का नाश, कर्क की सक्रान्ति में दुःखी, सिंह की संक्रान्ति में समृद्धिवाला, कन्या की संक्रान्ति में भी समृद्धिवाला, तुला की संक्रान्ति में धन का लाभ, वृश्चिक की संक्रान्ति में कष्ट, धन की संक्रान्ति में सौभाग्य, मकर की संक्रान्ति में धनी, कुंभ की संक्रान्ति में दीर्घायु और मीन की संक्रान्ति में दीक्षा लेने से राजा लोगों का प्यारा होता है॥ अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, तीनों उत्तरा, (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ, उत्तराभाद्रपद) हस्त, चित्रा स्वाती, अनुराधा, विशाखा, धनिष्ठा, पुनर्वसु, और रेवती, ये नक्षत्र मंत्र की दीक्षा लेने में शुभ हैं, तथा पौर्णमासी, पंचमी, द्वितीया, सप्तमी, त्रयोदशी, दशमी, ये तिथि मंत्र लेने में शुभ है, और तृतीया तो नित्य शुभ है, तथा षष्ठी (छठ) सब जगह निन्दित है, कोई कोई कहते हैं कि द्वादशी को भी मंत्र लेना शुभ है, प्रातःकाल से मध्याह्न काल तक समय मंत्र लेने में शुभ है, रात्रि का समय तो सर्वथा निषिद्ध (मना) है, यदि शुक्लपक्ष में मंत्र लिया जाय तो अनेक आनंद होते हैं, और कृष्णपक्ष में फल मध्यम होता है, और सूर्यग्रहण के बिना मलमास में कदापि मंत्र नहीं लेना चाहिये॥८५॥ यद्यपि ग्रहणकाल में मंत्र लेना शिष्य को अत्यन्त लाभकारी है तथापि गुरुजी महाराज को उसका फल अच्छा नहीं होता है प्रमाण लिखते हैं, प्रमाण–जो गुरु चर्तुदशी या सूर्य, चन्द्रमा के ग्रहण में शिष्य को मंत्र देता है, उसको अत्यन्त भय होता है, और अनुराधा नक्षत्र में मंत्र देने से सात जन्म तक दरिद्री होता है। प्रीति, आयुष्मान, सौभाग्य, शोभन, शुभ, सुकर्मा, धृति, वृद्धि, ध्रुव, सिद्धि, हर्षण, वरीयान, शिव, सिद्धि, ब्राह्म, और ऐन्द्र इन सोलह योग में मंत्र ग्रहण करना पंडितों ने शुभ कहा है। अब लग्नों के फलों को कहते हैं–मेष लग्न में मंत्र का दान शिष्यों को धन धान्य का देनेवाला होता है, वृष लग्न में मृत्यु को मिथुन में दुःख का नाश, कर्क लग्न में सम्पूर्ण सिद्धियों को, सिंह लग्न में बुद्धि के नाश को, कन्या में बहुविध लक्ष्मी को, तुला और वृश्चिक लग्न में समस्त सिद्धियों को, धन लग्न में ज्ञान के नाशक, मकर पुत्र के दान को, कुंभ लग्न में धन की वृद्धि और मीन लग्न में दुःख होता है, हे प्यारी पार्वती! विद्वान् मनुष्य इस प्रकार लग्न के फल को विचार कर मंत्र दीक्षा ग्रहण करें॥७८–९२॥

मंत्र ग्रहण का दूसरा प्रकार

अथ सर्वमंत्रग्रहणे गुरोरभावे कल्पान्तरोक्तप्रकारेणोपायविशेषो लिख्यते– गुरोरभावे मंत्राणां ग्रहणे विधिरुच्यते । कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां दक्षिणामूर्तिसन्निधौ ॥९३॥ लिखित्वा राजते पत्रे तालपत्रेऽथवा पुनः ॥ मंत्रं तं स्थंडिले स्थाप्य पूजयित्वा महेश्वरम् ॥९४॥ नैवेद्यं पायसं दत्त्वादंडवत्प्रणिपत्य च । शतकृत्वः पठेन्मंत्रं दक्षिणामूर्तिसन्निधौ ॥९५॥ सर्वेषामेव मंत्राणामेवं ग्रहणमिष्यते ॥

(ध. सं.)

अर्थ–अब मंत्र ग्रहण करने के समय जहां गुरु महाराज नहीं मिलते हों, वहां पर कल्पांतर के कहे हुए प्रकार से मुख्य उपाय लिखते हैं–गुरुजी के नहीं मिलने पर मंत्रग्रहण करने के लिये विधि कहते हैं, कृष्णपक्ष में त्रयोदशी के दिन दक्षिणामूर्ति अर्थात् श्रीमहादेवजी के निकट चांदी के पत्र अथवा तालपत्र पर उस मंत्र (जिस मंत्र को लेना चाहे) को लिखकर वेदी पर रखे श्रीमहादेवजी की पूजा कर दूध का बना हुआ प्रसाद चढ़ाकर और दंडवत् प्रणाम करके श्रीशिवाजी की मूर्ति के समक्ष उस मंत्र को सौ बार पढ़े, बिना गुरुजी के सब मंत्रों का ग्रहण इसीप्रकार कहा गया है॥९३–९५॥

मंत्र ग्रहण का तीसरा प्रकार

नद्यास्तु सिंधुगामिन्यास्तीरे चोत्तरसंस्थिते ॥ स्थंडिलं कारयेत्तत्र शुचौ देशे शुभे दिने ॥९६॥ राजते तालपत्रे वा मंत्रं तत्र निधापयेत् ॥ आवाह्य भास्करं तत्र यथाविधि प्रपूजयेत् ॥९७॥ तत्सन्निधावष्टशतं पठेदेकमनाः सुधीः ॥ एवं गृहीतमंत्रः स्यादपूर्वोऽयं विधिः स्मृतः ॥९८॥ (ध. सं.)

अर्थ–उत्तम दिन देखकर समुद्र जाने वाली नदी के उत्तर की तरफ के किनारे पर श्रेष्ठस्थान में वेदी बनावे और उस पर चांदी या ताल के पत्र में मंत्र को रखे वहां पर सूर्य देवता का आहावन करके विधिपूर्वक पूजन करे और उस सूर्य देवता के सामने विद्वान् मनुष्य मन को एकाग्र करके एक सौ आठ बार पढ़े, इस प्रकार मनुष्य दीक्षित हो जाता है, यह मंत्र लेने की एक नई विधि है॥९६–९८॥

शालाया रचने हीना निर्धना सूतशोधनम् ॥ वांछंति प्रीत्यै तेषां वै प्रकारः प्रोच्यतेऽथवा ॥९९॥ श्रीशिवउवाच–सूतस्य साधनमतः शृणु पर्वतनंदिनि ॥ गुह्याद्गुह्यतरं कर्म वक्ष्ये त्वत्प्रियकाम्यया ॥१००॥ पारदंसाधयेद्धीमानेकान्ते गुह्यमेव हि ॥ न कस्यचित्प्रकथयेत्पारदं साधयाम्यहम् ॥१०१॥ बने वा गृहकोणे वा ह्येकान्तस्थानमाचरेत् । तत्स्थानमुपलिप्यादौ पुनर्गोमयलेपनम् ॥१०२॥ स्थानसंशोधनं कृत्वा गृहीत्वा शुद्धमार्जनीम् ॥ भूतापसर्पणं कुर्यादिति मंत्रेण बुद्धिमान् ॥१०३॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ १०४॥ मंत्रमुच्चारयेदेनं प्रदद्यान्मार्जनीं बुधः ॥ गोदुग्धं गोमये क्षिप्य पुनर्गोमयलेपनम् ॥१०५॥ पृथ्वि त्वया धृता लोकास्त्वं च वै विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥१०६॥ इति मंत्रं समुच्चार्य आसनं तत्र कल्पयेत् । तत्रोपविश्य गणंपं जपेन्मृत्युंजयं तथा ॥ १०७॥ पारदस्य सुसिद्धचर्थमष्टोत्तरशतं जपेत् । माला रुद्राक्षसंभूता तथैव च रसेश्वरीम् ॥१०८॥ आदाय पारदं ताम्रे पात्रे निक्षिप्य पूजयेत् । पाद्यार्घाचमनं स्नानं रक्तचन्दनमाक्षतान् ॥१०९॥ पुष्पं धूपं च दीपं च नैवेद्यान्तेम्बु दक्षिणाम् ॥ प्रदद्यान्मूलमंत्रेण मासमेकं बलिं तथा ॥११०॥ अथ मूलमंत्रः– ॐ ह्रूं ह्रौं नमः ॥ शिवाय शांतरूपाय अनाथाय नमोनमः ॥ अमूर्ताय नमस्तेऽस्तु व्योमरूपाय वै नमः ॥१११॥ तेजसे च नमस्तेस्तु अनंताय नमोस्तु ते ॥ तेजोरूप नमस्तेऽस्तु सर्वगाय नमो नमः ॥११२॥ ॐ अमृताया स्वाहा ॐ अनाथाय स्वाहा ॥ ॐ शिवाय स्वाहा ॐ व्योमव्यापिने स्वाहा ॐ रुद्रतेजसे स्वाहा ॐ जीवात्मने स्वाहा ॐ भूः स्वाहा ॐ भुवः स्वाहा ॐ स्वः स्वाहा ॥ मूलमन्त्रेण सूतस्य पूजा कार्यैकमासि च ॥ ततस्तुष्टो महादेवः स्वप्ने वदति साधकम् ॥११३॥ तव पारदसिद्धिश्च भविष्यति ममाज्ञया ॥ इति स्वप्नवरं लब्ध्वा रसकर्म समारभेत् ॥११४॥ जितेन्द्रियो भूमिशायी शिवपूजापरायणः ॥ भक्ष्यभोजी नक्तभोजी कुर्यात्कर्माणि शास्त्रतः ॥११५॥ इति पारदशोधनमारणार्हस्थानकल्पने द्वितीयः प्रकारः ॥ (ध. सं.)

अर्थ–रसशाला के बनवाने में असमर्थ जो निर्धनी मनुष्य पारद की शुद्धि को चाहते है अब उनकी प्रीति के लिये पारद शोधन के प्रकार को कहते हैं,

श्रीमहादेवजी बोले, हे पार्वती! अत्यन्त गुप्त पारद कर्म को मैं आपकी प्रसन्नता के लिये कहूंगा, इस कारण तुम पारद के साधन को सुनो, बुद्धिमान एकान्तस्थल में पारद को गुप्त रीति से सिद्ध करे, मैं पारद को सिद्ध करता हूं, इस प्रकार किसी को भी प्रख्यात न करे, वन में या घर के एक कोने में एकान्त स्थान करे प्रथम उस स्थान को चिकनी मिट्टी से लीपकर फिर गोबर मिट्टी से लिपवावे मार्जनी (बुहारी) से स्थान की शुद्धि करके इस मंत्र से भूतोंको अपसर्पण (हटाना) करे जो भूत पृथ्वी पर ठहरे हुए हैं, वे हट जाओं और जो भूत विघ्न करनेवाले है, वे भी शिवजी की आज्ञा से नष्ट हो जावे, पंडित इस मंत्र को पढ़कर झाडू लगावे और गोबर से दूध मिलाकर फिर दूसरी बार चौका लगावे। हे पृथ्वी तुमने सम्पूर्ण संसार को धारण किया है और तुमको श्रीविष्णुभगवान् ने धारण किया इसलिये हे पृथ्वीदेवी, तू मुझको धारण कर और मेरे आसन को पवित्र कर इस मंत्र को पढ़कर उस स्थान में आसन बनावें और उस आसन पर बैठकर श्रीगणपति तथा मृत्युंजय का जप करे। पारद की उत्तम सिद्धि के लिये एक सौ आठ २ बार जप करे। माला रुद्राक्ष की लेनी चाहिये, इसी प्रकार रसेश्वरी का भी जप करे पारद को लाकर और तांबे के पात्र में रखकर पूजन करे, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, लाल चन्दन, अक्षत, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य और दक्षिणा को मूलमंत्र पढ़कर चढ़ावे, इस प्रकार एक मास तक पूजन करे। मूलमंत्र इस प्रकार का जानना– ॐ ह्लूं ह्लौ नमः इत्यादि शांतस्वरूप जिसका कोई मालिक न हो ऐसे श्रीशिवजी को नमस्कार हो निराकार स्वरूप आपको नमस्कार हो, आकाशरूप परमात्मा अनंत तेजवाले आपको नमस्कार हो, और अनन्त रूपवाले आपको नमस्कार हो, हे ज्योतिस्वरूप आपको नमस्कार हो और हे सर्वव्यापक शिव आपको नमस्कार हो। एक मास तक मूल मंत्र से पारद की पूजा करे फिर श्रीमहादेव प्रसन्न होकर स्वप्नावस्था में साधक को यह वाक्य कहते है–मेरी आज्ञा से तेरे पारद की सिद्धि होती, इसप्रकार स्वप्न में वरदान को पाकर रसकर्म का प्रारम्भ करे। इन्द्रियों के जीतनेवाला जो कि पृथ्वी पर सोता हो श्रीशिवपूजन में तत्पर हों, अपने भक्षण योग्य पदार्थो का खानेवाला और रात को जो भोजन करे वह मनुष्य शास्त्ररीति से रसकर्म करे॥९९–११५॥

पारद के प्रारम्भ में पूजन की विधि

कर्मारंभे रसेन्द्रस्य गणेशं गिरिजां हरम् । दिक्पालान्भैरवान् मातृर्योगिन्यः पारदं ग्रहान् ॥११६॥ एतांश्च रससिद्धांश्च प्रत्येकं पूजयेत्तथा । जितेन्द्रियः सूतसिद्धिं लभेच्च गुरुवाक्यतः ॥११७॥

(ध. सं.)

अर्थ–पारद कर्म के प्रारम्भ में श्रीगणेशजी, श्रीमहादेवजी, दिक्पाल, भैरव, षोडश मातृकायें, चौसठ योगिनी, पारद और नवग्रह, इनकी तथा रससिद्धों की भी पूजा करे, इन्द्रियों को जीतनेवाला मनुष्य गुरुजी के वचनों से पारद की सिद्धि को प्राप्त होता है॥११६–११७॥

अन्य तंत्र से पूजन प्रकार

नत्वा गुरुंभैरवकं कुमारिकां द्वैपायनं सिद्धमनुष्यदेवताः ॥ अंतः सुनीलं बहिरुज्जवलं रसं निवेशयेत्खल्वतले शुभे दिने ॥(ध. सं.) ॥११८॥

अर्थ–गुरु, भैरव, कन्यायें, वेदव्यास, सिद्ध, मनुष्य और देवताओं को नमस्कार करके और शुभ दिन में भीतर से नीले रंगवाला और बाहर प्रकाशरूप पारद को खरल में रखे॥११८॥

(मुहूर्त पूजन)

शुभेह्नि ढूंढिं परिचिन्त्य सम्यक् कुर्यात्कुमारीवटुकार्चनं च । विधाय रक्षां विधिमंत्रपूतां कर्मारभेदस्य रसस्य तज्ज्ञः ॥११९॥ (योगतरंगिणी)

अर्थ–रसशास्त्र के जाननेवाला वैद्य शुभदिन में ढुंढि (गणेश जो कि श्रीकाशीजी में प्रसिद्ध है) का अच्छी प्रकार ध्यान करके फिर कन्याए तथा बटुक की पूजा करे विधिपूर्वक मंत्र से पवित्र की हुई रक्षा बनाकर इस रसकर्म का प्रारम्भ करे॥११९॥

रसशास्त्र के गुण का लक्षण

रसेश्वरी महाविद्या रससिद्धैरुपासिता ॥ तद्विद्या ग्रहणे शिष्यगुरुलक्षणमुच्यते ॥१२०॥आचार्यो ज्ञानवान्दक्षो रसशास्त्रविशारदः॥मंत्रसिद्धौ महाधीरो निश्चलः शिववत्सलः ॥१२१॥ देवीभक्तः सदाचारो विष्णुयागपरायणः ॥ सर्वान्नायविशेषज्ञः कुशलो रसकर्मणि ॥१२२॥ गुरुभक्त्या लब्धविद्यः कृपालुः कृपणो न च ॥ एवं लक्षणसम्पन्नो रसविद्यागुरुर्भवेत् ॥१२३॥

(ध. सं.)

अर्थ–रसेश्वरी नामक एक महाविद्या है जिसकी रससिद्धों ने उपासना की है, उस विद्या के ग्रहण करने के लिये शिष्य और गुरु का लक्षण कहते हैं, आचार्य अर्थात् गुरु ज्ञानवान्, चतुर रसशास्त्र का पंडित, मंत्र के सिद्ध करनेवाला, महाधैर्यवान् और निश्चल हो, शिवजी जिस पर प्रसन्न हों देवी का भक्त हो, श्रेष्ठ आचरणवाला हो, विष्णु के यज्ञ में तत्पर हो, समस्तसंप्रदायों की विशेषता को जानता हो और रसकर्म में चतुर हो, गुरुभक्ति से विद्या पढ़ी हुई हो, कृपालु हो और कृपण (कंजूस) न हो, इस प्रकार के जिस मनुष्य में लक्षण हों वह रसविद्या का गुरु होता है॥१२०–१२३॥

अन्यच्च

मंत्रसिद्धो महावीरो निश्चलः शिववत्सलः ॥ देवीभक्तः सदा धीरो देवतायागतत्परः ॥१२४॥ सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः कुशलो रसकर्माणि ॥ एतल्लक्षणसंयुक्तो रसविद्यागुरुर्भवेत् ॥१२५॥

(रसमंजरी र. रा. सुं.)

अर्थ–जिसको मंत्र सिद्ध हो और बड़ा वीर पुरुष हो जिस पर महादेवजी वत्सल हो देवी का भक्त हो, धीर हो, और देवता का यज्ञ करनेवाला हो, सम्पूर्ण शास्त्रों के तत्व का ज्ञाता और रसकर्म में चतुर हो, इस प्रकार जिसमें लक्षण हों वह रसविद्या का गुरु होता है॥१२४–१२५॥

शिष्य का लक्षण

शिष्यो निजगुरोर्भक्तः सत्यवक्ता दृढव्रतः ॥
निरालस्यः स्वधर्मज्ञो देव्याराधनतत्परः ॥१२६॥

(रसमंजरी. र. रा.सुं०)

अर्थ–शिष्य अपने गुरु का भक्त हो, सत्य बोलनेवाला हो, दृढ़व्रत (अर्थात् जब तक फल प्राप्ति न हो, तब तक कार्य को नहीं छोड़नेवाला) हो, आलसी न हो अपने धर्म का ज्ञाता हो और जो देवी की पूजा करनेवाला हो॥१२६॥

अन्यच्च

गुरुभक्ताः सदाचाराः सत्यवंतो दृढव्रताः ॥ निरालस्याश्च धर्मज्ञा सदाज्ञापरिपालकाः ॥१२७॥ दंभमात्सर्यनिर्मुक्ता ; मन्त्राराधनतत्पराः॥ निंदाद्रोहविरहिताः शिष्याः स्युः सूतसिद्धये ॥१२८॥(ध. सं.)

अर्थ–गुरु के भक्त, श्रेष्ठ, आचरणवाले, सत्यवक्ता, दृढ़व्रत, आलस्य रहित, धर्म के ज्ञाता, गुरु की आज्ञा के पालन करनेवाले, कपट और मात्सर्य्य (पराई संपत को देखकर जलना) से रहित, मंत्र के सिद्ध करने में तत्पर, निंदा और द्रोह बिलकुल नहीं हो, रससिद्धि के लिये ऐसे शिष्य होने चाहिये॥१२७॥१२८॥

निषिद्धशिष्य के लक्षण

नास्तिका ये दुराचाराः सुविद्याचुम्बकाः परात् ।। विद्यां ग्रहीतुमिच्छंति चोर्यच्छद्मबलोत्सवात् ।।१२९।। न तेषां सिद्धचते किंचिन्मणिमन्त्रौषधादिकम् ।। लोकेस्मिन्न सुखं तेषां परलोके गतिर्न च ।।१३०।। (ध. सं)

अर्थ–नास्तिक यानी वेद शास्त्र को न मानने वाले जिनके आचरण नष्ट हो गये हों और जो मनुष्य पराये मनुष्यों से श्रेष्ठ विद्याओं के चुम्बक (अर्थात् हरेक मनुष्य से थोड़ी–थोड़ी विद्या को लेनेवाले) चोरी, छल और बल से विद्या को ग्रहण करना चाहते हैं, उनके मणिमंत्र और औषधि वगैरह सिद्ध नहीं होते हैं, इस लोक में उन मनुष्यों को सुख नहीं मिलता और परलोक में श्रेष्ठ गति नहीं होती है।।१२९।।१३०।।

उत्तम गुरु शिष्य के लक्षण

अध्यापयंति यदि दर्शयितुं क्षमन्ते सूतेन्द्रकर्म गुरवो गुरवस्त एव ।। शिष्यास्त[1] एव रचयन्ति गुरोः पुरो ये शेषाः पुनस्तदुभयाभिनय भजन्ते ।।१३१।।

(रसेन्द्रचि०)

अर्थ–जो गुरु पारद कर्म को पढाते हैं और उसको करके दिखा भी सकते हैं, वे ही सच्चे गुरु हैं और जो गुरु के प्रत्यक्ष पारद कर्म को सिद्ध करता है, वही शिष्य है और बाकी के मनुष्य केवल गुरु शिष्य की नकल करनेवाले हैं।।१३१।।

रसविद्या देने का कारण

रसशास्त्रं प्रदातव्यं विप्राणां धर्महेतवे ।।
राज्ञे वैश्याय वृद्धचर्थ दास्यार्थमितरस्य च ।। १३२।।

(र०सा०प०)

अर्थ–धर्म करने के लिये ब्राह्मणों को रसशास्त्र देना चाहिये। राजा और वैश्यों को धनवृद्धि के लिये और शूद्रों को दास्यकर्म अर्थात् नौकरी (टहल) करने के लिये देना चाहिये।।१३२।।

गुरु सेवा के बिना कर्म करने का निषेध

गुरुसेवां बिना कर्म यः कुर्यान्मूढचेतनः ।।
स याति निष्फलत्वं हि स्वप्नलब्धं यथा धनम् ।।१३३।।

(र.र.सुं.)

अर्थ–जो मूर्ख मनुष्य गुरु की सेवा के बिना पारद कर्म को करता है वह स्वप्न में मिले हुए धन के समान निष्फलता को प्राप्त होता है।।१३३।।

अन्यच्च

गुरुभक्तिं बिना यो वै मणिमन्त्रौषधादितः ।। सिद्धिमिच्छति मूढ़ात्मा स विज्ञेयो हि जारजः ।। १३४।। कुर्वन्ति यदि मोहेन नाशयन्ति स्वकं धनम् ।। इह लोके सुखं नास्ति परलोके तथैव च ।।१३५।। तस्माद्भक्तिबलादेव प्राप्य विद्या सुतीर्थतः ।। हस्तमस्तकयोगेन वरं लब्ध्वा प्रसाधयेत् ।।१३६।।

(र.सा.प.)

अर्थ–जो मूर्ख गुरुभक्ति बिना रत्न, मंत्र, औषधियों से सिद्धि को चाहते हैं, उनको जारज (अपने पिता से पैदा न हुआ) जानना चाहिये। यदि मोहित होकर पारद कर्म को प्रारम्भ करते हैं तो वे अपने धन का नाश करते हैं और इस लोक और परलोक में सुख को नहीं भोगते हैं। इस कारण भक्ति के बल से ही श्रेष्ठ गुरु से विद्या प्राप्त कर हस्तमस्तकयोग (गुरु का प्रसन्न होकर शिष्य के मस्तक पर हाथ रखना) से वरदान पाकर पारद कर्म को सिद्ध करे।।१३४–१३६।।

विद्या प्राप्त करने के तीन प्रकारों का वर्णन

गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा ।।
अथवा विद्यया विद्या चतुर्थं नैव कारणम् ।।१३७।।

(र.सा.सुं.)

अर्थ–प्रथम गुरु की सेवा करने से, द्वितीय गुरु को धन देने से विद्या प्राप्त होती है और तीसरा विद्या प्राप्त करने का कारण यह है कि एक विद्या को पढ़ाकर दूसरी विद्या को पढ़ना और चौथा विद्या प्राप्त करने का उपाय कोई नहीं है।।१३७।।

गुरु की प्रसन्नता से कार्य की सिद्धि का वर्णन

गुरौ तुष्टे शिवस्तुष्टः शिवे तुष्टे रसस्तथा ।।
रसे तुष्टे क्रियाः सर्वाः सिध्यन्ते नात्र संशयः ।।१३८।।

(र.सा.प.)

अर्थ–श्रीगुरुजी के प्रसन्न होने पर श्रीमहादेवजी प्रसन्न होते हैं और श्रीशिवजी के प्रसन्न होने से पारद प्रसन्न होता है और पारद के प्रसन्न होने पर समस्त क्रियायें सिद्ध होती हैं।।१३८।।

रससहाय का लक्षण

सहायाः सोद्यमास्तत्र यथा शिष्यास्ततोऽधिकाः ।।
कुलीनाः स्वामिभक्ताश्च कर्तव्या रसकर्मणि ।।१३९।।

(ध.सं.)

अर्थ–रस कर्म की सिद्धि के लिये सहायक शिष्यों से भी अधिक उद्यम करनेवाले कुलीन और अपने स्वामी के भक्त होने चाहिये।।१३९।।

पारदकर्म की सिद्धि के उपाय

अर्थाः सहाया निखिलं च शास्त्रं हस्तक्रिया कर्मणि कौशलं च । नित्योद्यमस्तत्परता च वह्निरेभिर्गुणैः सिध्यति सूतकेन्द्रः ।।१४०।।

(योगरत्नाकर)

अर्थ–द्रव्य, सहायक, सम्पूर्ण शास्त्रों का संग्रह, हस्तक्रिया, कर्म में चतुरता, नित्यप्रति उद्यम करना, पारद कर्म में लगे रहना और अग्नि इन गुणों से पारद सिद्ध होता है।।१४०।।

पारदसिद्धि का लक्षण

रसशास्त्राणि सर्वाणि समालोक्य यथाक्रमम् ।
शास्त्रं क्रमयुतं ज्ञात्वा यः करोति स सिद्धिभाक् ।।१४१।।

(र.सा.प.)

अर्थ–यथारीति सम्पूर्ण रसशास्त्रों को देख और जिसमें रस के संस्कारों को क्रम से वर्णन किया हो, ऐसे शास्त्र को जानकर जो मनुष्य कर्म को प्रारम्भ करता है, वह सिद्ध होता है।।१४१।।

रससिद्धि के साधन करनेवाले अधिकारियों का वर्णन

सम्यक्साधनसोद्यमा गुरुयुता राजाज्ञयालङ्कृता नानाकर्मपराङ्मुखाःरसपराश्चाद्याजनैश्चार्थजः । मात्रायंत्रसुपाककर्मकुशलाः सर्वौषधीकोविदास्तेषां सिध्यति नान्यथा विधिबलाच्छ्रीपारदः पारदः ।।१४२।। (र० सा० प०)

इति श्री अग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां तृतीयोऽध्यायः ।।३।।

अर्थ–श्रेष्ठ साधन और उद्यमवाले जो कि गुरु करके सहित हों, जिनको राजा की आज्ञा हुई हो, रसकर्म को छोड़ अन्य कर्मों में बहिर्मुख हों, रसकर्ममें तत्पर और मात्रा, यंत्र और परिपाक कर्मों में कुशल हों और जो मनुष्य सम्पूर्ण औषधियों के जाननेवाले हों उनके प्रारब्ध के बल से संसार के पार देनेवाला श्रीपारद सिद्ध होता है।।१४२।।

१–शिष्यास्तु ते च र०इत्यपि।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडित–मनसुखदासात्मजव्यास ज्येष्ठ–
मलशर्मकृतायां पारदसंहितायां हिंन्दीटीकाया
रसशालादिवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

चतुर्थः परिभाषाध्यायः ४

धवन्तरिभाग का वर्णन

अर्धं सिद्धरसस्य तैलघृतयोर्लेहस्य भोगोऽष्टमः संसिद्धाखिललोहचूर्णवटिकादीनां तथा सप्तमः ॥ यो दीयेत भिषग्वराय गदिभिर्निर्दिश्य धन्वन्तरिं सर्वारोग्यसुखाप्तये निगदितो भागः स धन्वन्तरेः ॥१॥ (र.र.स.)

अर्थ–समस्त आरोग्य और सुख की प्राप्ति के लिये धन्वन्तरि भगवान् का नाम लेकर रोगी मनुष्यों से सिद्ध रस का आधा हिस्सा तैल, घृत और लेह (चटनी) का आठवां हिस्सा सिद्ध किये हुए लोह (धातु) चूर्ण और गोलियों का सातवां हिस्सा जो वैद्यराज को दिया जाता है, उसको धन्वंतरिका भाग कहते हैं॥१॥

रुद्रभाग का वर्णन

भैषज्यक्रीतद्रव्यस्य भागोऽप्येकादशो हि यः । वणिग्भ्यो गृह्यते वैद्यै रुद्रभागः स उच्यते ॥२॥ (र. र. स.)

अर्थ–वैद्य औषधि के बेचनेवाले (अत्तार) लोगों से बिकी हुई दवाइयों के धन का जो ग्यारहवां भाग लेते हैं, उसको रुद्रभाग कहते हैं॥२॥

भावनाविधि

दिवादिवातपे शुष्कं रात्रौरात्रौ निवासयेत् । शुष्कं चूर्णीकृतं द्रव्यं सप्ताहं भावनाविधौ ॥३॥ द्रवेण यावता द्रव्यमेकीभूयार्द्रतां व्रजेत् । द्रवप्रमाणं निर्दिष्टं भिषग्भिर्भावनाविधौ ॥४॥ भाव्यद्रव्यसमं क्वाथं क्वथ्यादष्टगुणं जलम् । अष्टांशशेषितः क्वाथो भाव्या तेनैव भावना ॥५॥
(भैषज्यरत्नावली)

अर्थ–सूखे हुए द्रव्य को पतले द्रव में घोटकर दिन में तो धूप में सुखावे और रात को ओस में रक्खे, सुखाकर उस द्रव्य का चूर्ण करे, इसी प्रकार सात दिन करे, इसको भावना कहते हैं। सूखा पदार्थ जितने पतले पदार्थ से मिलकर गीला हो, वैद्यलोगों ने भावना देने की विधि में उतना ही पतला पदार्थ मिलाना कहा है, जहां क्वाथ से भावना देनी हो, वहां जिसको भावना दीजिये, उस द्रव्य के समान क्वाथ करने की वस्तु लेकर अठगुने पानी में औटावे, जब आठवां हिस्सा बाकी रहे तब क्वाथ होता है उससे भावना देने योग्य पदार्थ को भावना देनी चाहिये॥३–५॥

हिंगुलाकृष्टपारद का लक्षण

विद्याधराख्ययंत्रस्थादार्द्रकद्रावमर्दनात् ।
समाकृष्टो रसो योऽसौ हिंगुलाकृष्ट उच्यते ॥६॥

(र.र.स.)

अर्थ–हिंगुल (शिंग्रफ) को अदरख के रस में घोट कर विद्याधर यत्र से जो पारद निकाला जाता है, उसको हिंगुलाष्टक पारद कहते हैं॥६॥

कज्जली का लक्षण

धातुभिर्गंधकाद्यैश्च निर्द्रवैर्मर्दितो रसः ।
सुश्लक्ष्णः कज्जलाभोऽसौ कज्जली सा स्मृता बुधैः ॥७॥

(र.र.सा.)

अर्थ–जिसमें कि गीलापन न हो, ऐसे गंधक आदि धातुओं के साथ घोटा हुआ जो पारद अत्यन्त चिकना कज्जल के समान हो, उसको कज्जली कहते हैं॥७॥

रसपंक का लक्षण

सद्रवा मर्दिता सैव रसपंक इति स्मृतः ॥८॥

(र.र.स.)

अर्थ–कज्जली को पतले पदार्थों के साथ घोटने से रसपंकसंज्ञा होती है॥८॥

पिष्टी का लक्षण

अर्कांशतुल्याद्रसतोऽथ गंधान्निष्कार्धतुल्यात्तृटिशेभि खल्वे । अर्कातपे तीव्रतरे विमर्द्यात्पिष्टी भवेत् सा नवनीतरूपा ॥९॥ (र.र.स.)

अर्थ–पारद से बारहवें हिस्से की बरावर या दो माशे गंधक से खरल में पारद को गेरकर तेज घाम में घोटता जावे तो मक्खन के समान पिष्टी होती है॥९॥

पिष्टी का लक्षण

खल्वे विमर्द्य गंधेन दुग्धेन सह पारदम् ।
पेषणात्पिष्टतां याति सा पिष्टीति मता परैः ॥१०॥

(र.र.स.)

अर्थ–खरल में पारद को गंधक के साथ मर्दन कर फिर दूध के साथ घोटने से पारद चिकनाई को प्राप्त होता है। मनुष्य उसको पिष्टी कहते हैं॥१०॥

पातनपिष्टी का लक्षण

चतुर्थांशसुवर्णेन रसेन घृष्टपिष्टिका ।
भवेत्पातनपिष्टी सा रसस्योत्तमसिद्धिदा ॥११॥

(र.र.स.)

अर्थ–चतुर्थांश (चौथाई) सुवर्ण के साथ पारद को मर्दन करने से जो पारद की पिष्टी होती है, उसको पारद की उत्तम सिद्धि देनेवाली पातनपिष्टी कहते हैं॥११॥

नष्टपिष्टी का लक्षण ।

स्वरूपस्य विनाशेन पिष्टत्वाद्बंधनं हि तत्[1] ।
विद्वद्भिर्निर्जितः सूतो नष्टपिष्टि स उच्यते ॥१२॥

(र.र.स.–र.रा.प.)

अर्थ–वैद्यों से जोता हुआ अर्थात् प्रत्येक कार्य में लाने योग्य बनाया हुआ अन्य पदार्थों के साथ घोटने से अपने रूप से अत्यन्त नाश के कारण बंधनावस्था में स्थित जो पारद है वह नष्टपिष्टी कहाता है॥१२॥

अन्यच्च

स्वरूपस्य विनाशेन पिष्टत्वापादनं रसे ।
विषाग्निवर्जितस्यापि नष्टपिष्टः स उच्यते ॥१३॥

(टो.नं.र.रा.प.)

अर्थ–अपने रूप के नाश द्वारा विष और अग्नि के योग से रहित पारद का जो सूक्ष्म चूर्ण करता है, वह नष्टपिष्ट कहता है॥१३॥

उमायोनि का लक्षण

गंधकेन समं सूतमूर्ध्वमायसपात्रके ॥
सजले पातितः सूत उमायोनिरिति स्मृतः ॥१४॥

(टो.नं.)

अर्थ–समभाग गंधक और पारे की कज्जली बनाकर नीचे के पात्र में रक्खे ऊपर जलसहित लोहे के पात्र में जो पारद उड़ाया जाता है वह उमायोनि कहलाता है॥१४॥

बिड का लक्षण

क्षारैरम्लैश्च गंधाद्यैर्मूत्रैश्च पटुभिस्तथा ॥
रसग्रासस्य जीर्णार्थं तद्विडं परिकीर्तितम् ॥१५॥

(र.र.स.)

अर्थ–पारे में ग्रास दी हुई अर्थात् खिलाई हुई चीजों के जीर्ण (हजम) करने के लिये क्षार, अम्लद्रव्य, (खट्टी चीजें) गंधक आदि पदार्थ, मूत्र (गोमूत्रादि) और लवणों से जो पदार्थ बनाया जाता है, उसको बिड कहते हैं॥१५॥

१–पादनं हि० इत्यपि । २–जितसूतोसौ न० इत्यपि । ३–हि यत् इत्यपि ।

धान्याभ्र का लक्षण

चूर्णाभ्रं शालिसंयुक्तं वस्त्रबद्धं हि कांजिके ।
निर्यातं मर्दनाद्बद्धाद्धान्याभ्रमिति कथ्यते ॥१६॥ (र.र.स.)

अर्थ–शुद्ध किये हुए अभ्रक का इमामदस्ते में भली प्रकार चूर्ण कर और धान के साथ मिलाकर उसको उत्तम वस्त्र (टाट या कम्बल) में बांधकर कांजी में रखे फिर कांजी में मर्दन करने से जो अभ्रक बाहर निकलता है. उसको धान्याभ्र कहते हैं॥१६॥

सत्त्व का लक्षण

क्षाराम्लद्रावकैर्युक्तं ध्मातमाकरकोष्ठके ।
यस्ततो निर्गतः सारः सत्त्वमित्यभिधीयते ॥१७॥

(र.र.स.)

अर्थ–जिसका सत्व निकालना हो, उसको क्षार, अम्ल, (खट्टे पदार्थ) और द्रावक अर्थात् गलाने योग्य पदार्थों के साथ मिला टिकिया बनाकर कोष्ठक (कोठी) नाम के यंत्र में रखकर धोंकने से जो सार निकलता है, उसको सत्व कहते हैं॥१७॥

सत्त्व का अर्थ

अभ्रादिसर्वधातूनां भवेदौषधयोगतः ।
ध्मातश्च निर्गतः सारः सत्त्व इत्यभिधीयते ॥१८॥

(टो.नं.)

अर्थ–औपधियों के योग से अधिक अभ्रक आदि समस्त धातुओं को धोंककर जो सार निकाला जाता है, उसको सत्त्व कहते हैं॥१८॥

द्रुति का लक्षण

निर्लेपत्वं द्रुतत्वं च तेजस्त्वं लघुता तथा ॥
असंयोगश्च सूतेन पंचधा द्रुतिलक्षणम् ॥१९॥

(र.र.स.)

अर्थ–जिसका किसी द्रव्य पर लेप न हो सके और पतलापन हो, चमक हो, हलकापन हो, पारद के साथ भी नहीं मिलता हो, ये पांचो द्रुति के लक्षण हैं॥१९॥

अन्यच्च

औषधाध्मानयोगेन लोहधात्वादिकं तथा ।
संतिष्ठते द्रवाकारं सा द्रुतिः परिकीर्तिता ॥२०॥

(र.र.स.)

अर्थ–औपधि और अग्नि के संयोग के विना जिस प्रकार के पतले पदार्थ का आकार होता है, इसी प्रकार से जब धातु आदि ठहरने लगे तब उसको द्रुति कहते हैं॥२०॥

बीजलक्षण

शुद्धं स्वर्णं च रूप्यं च बीजमित्यभिधीयते ॥२१॥

(र.र.स.)

अर्थ–जब कि सुवर्ण और चांदी अत्यन्त शुद्ध होते हैं, तब उनकी बीज संज्ञा होती है॥२१॥

वारितर का लक्षण

मृतं तरति यत्तोये लोहं वारितरं हि तत् ॥२२॥

(र.र.स.)

अर्थ–शास्त्र की प्रक्रिया से भस्म किया हुआ जो लोह (धातु) जल पर तरने लगता है, उसको वारितर कहते हैं॥२२॥

ऊनम का लक्षण

तस्योपरि गुरुद्रव्यं धान्यं चोपनयेद्ध्रुवम् ॥
हंसवत्तीर्य्यते वारिण्यूनमं परिकीर्तितम् ॥२३॥

(र.र.स.)

अर्थ–जल के भरे हुए कटोरे में सिद्ध किये हुए लोहभस्म (धातुभस्म) को बुरक उसके ऊपर गुरुद्रव्य (अर्थात् बृहत् परिमाण से लेकर सूक्ष्म परिमाण तक जिसकी जल में डूबने की शक्ति ठीक वैसी ही बनी हुई हो) उसके सूक्ष्म टुकड़े अथवा जौ, गेहूं आदि धान्य छोड़ दो तो वह भस्म इन पदार्थों को अपने ऊपर धारण कर हंस के समान तैरने लगता है, तब उसको ऊनम कहते हैं॥२३॥

रेखापूर्ण का लक्षण

अंगुष्ठतर्जनीघृष्टं यत्तद्रेखांतरे विशेत् ॥
मृतलोहं तदुद्दिष्टं रेखापूर्णाऽभिधानतः ॥२४॥

(र.र.स.)

अर्थ–जो धातु की भस्म अँगूठा और तर्जनी (अंगूठे के पास की उँगली) से घिसी हुई अँगूठे और उँगली की रेखाओं में भर जाय, उस भस्म को रेखापूर्ण नाम से कहते हैं॥२४॥

अपुनर्भव का लक्षण

गुडगुञ्जासुखस्पर्शमध्वाज्यैः सह योजितम् ।
नाऽऽयाति प्रकृतिं ध्मानादपुनर्भव उच्यते ॥२५॥

(र.र.स.)

अर्थ–जिस धातु की भस्म हो गई हो उसको गुड़, चौंटली, सुहागा, शहद और घृत इनके साथ मिलाकर अग्नि में धोंकने से अपनी असली दशा को नहीं प्राप्त हो अर्थात् सोने की भस्म का सोना चांदी की चांदी नहीं बने तब उसको अपुनर्भव कहते हैं॥२५॥

अन्यच्च

रौप्येण सह संयुक्तं ध्मातं रौप्येण चेल्लगेत् ।
तदा निरुत्थमित्युक्तं लोहं तदपुनर्भवम् ॥२६॥

(र.र.स.)

अर्थ–लोह (धातु) भस्म को चांदी के साथ मिला कर घरिया में रख अग्नि के ऊपर धोंकने से जो यह भस्म चांदी के साथ गल जावे तो उस अपुनर्भव लोह को निरुत्थ कहते हैं॥२६॥

उत्थापन का लक्षण

मृतस्य पुनरुद्भूतिः संप्रोक्तोत्थापनाख्या ॥२७॥

(र. र. स.)

अर्थ–भस्म किये हुए लोहादि धातुओं को पूर्वोक्त गुडादि द्रव्यों के साथ मिलाकर अग्नि में धोंकने से फिर अपने अपने रूप को धारण करने लगे अर्थात् चांदी की भस्म की, फिर चांदी बन जाय उसको उत्थापन कहते हैं॥२७॥

कृष्टीलक्षण

रूप्यं वा जातरूपं वा रसगंधादिभिर्हतम् । समुत्थितं च बहुशः सा कृष्टी हेमतारयोः ॥२८॥ कृष्टीं क्षिपेत्सुवर्णान्तर्न वर्णो हीयते तया । स्वर्णकृष्ट्या कृतं बीजं रसस्य परिरंजनम् ॥२९॥ (र.र.स.)

अर्थ–पारा, गंधक आदि धातुओं से भस्म की हुई चांदी अथवा सुवर्ण को

बार बार पूर्वोक्त गुड़, गुंजादि, द्रव्यो से उत्थापन कर फिर भस्म करे, उसको हेमकृष्टी तथा ताराकृष्टी कहते हैं।। अग्नि में डाल कर गलाये हुए सुवर्ण में उस कृष्टी को डालै और उसके डालने से सुवर्ण का रंग नहीं बिगड़े अर्थात् पूर्ववत् बना रहे तो वह स्वर्णकृष्टी का उत्तम लक्षण है; उस स्वर्णकृष्टि से बना हुआ बीज पारद का रंजन (रंगना) करता है।।२९।।

सिद्ध शुल्वनाग का लक्षण

माक्षिकेण हतं ताम्रं दशवारं समुत्थितम् । तद्वद्विशुद्धं नागं हि द्वितयं तच्चतुष्पलम् ।।३०।। नीलांजनहतं भूयः सप्तवारं समुत्थितम् । इति संसिद्धमेतद्धि शुल्वनागं प्रकीर्त्यते ।।३१।। (र.र.स.)

अर्थ–सोना मक्खी के साथ तांबे को भस्म करे फिर पूर्वोक्त गुडादि द्रव्यों के साथ उत्थापन करे। इस प्रकार दशवार भस्म और उत्थापन करे। इसी प्रकार शुद्ध किया हुआ नाग (सीसा) ये दोनों चार पल अर्थात् दो पल तांबा और दो पल सीसा इन दोनों को नीलांजन यानी तूतियां के साथ भस्म करने फिर गुड़ादि द्रव्यों में मिला कर उत्थापन करे। इस प्रकार सात बार भस्म और उत्थापन करने से शुल्वनाग कहाता है।।३०।।३१।।

शुल्वनाग का गुण

साधितस्तेन सूतेन्द्रो वदने विधृतो नृणाम् । निहन्ति मासमात्रेण मेहव्यूहमशेषतः ।।३२।। पथ्याशनस्य वर्षेण पलितं वलिभिः सह । गृध्रदृष्टिलसत्पुष्टिः सर्वारोग्यसमन्वितः ।।३३।। (र.र.स.)

अर्थ–इस शुल्वनाग से सिद्ध किया हुआ पारद केवल एक मास पर्यन्त मुख में रखने से मनुष्यों के अनेक प्रमेहों को नाश करता है; अपने शरीर को हित देनेवाले पदार्थो के सेवन करनेवाला मनुष्य यदि एक वर्ष पर्यन्त इस सिद्ध पारद का सेवन करे तो बली (त्वचा का सुकड़ना) और पलित (श्वेतकेश) को नाश करता है और उसकी गीध के तुल्य दृष्टि दीप्यमान कान्ति और सम्पूर्ण आरोग्य से संयुक्त होता है।।३२।।३३।।

वरनाग का लक्षण

तीक्ष्णं नीलांजनोपेतं ध्मातं हि बहुशो दृढम ।
मृदु कृष्णं द्रुतद्रावं वरनागं तदुच्यते ।।३४।।

(र.र.स.)

अर्थ–कान्त लोहे को तूतिया के साथ मिलाकर तेज अग्नि से बार–बार धोंकते धोंकते जब वह कान्त लोहा का माल कृष्ण वर्णवाला और शीघ्र गलनेवाला हो जावे तब उसको वरनाग कहते हैं।।३४।।

चपल का लक्षण

त्रिंशत्पलमितं नागं भानुदुग्धेन मर्दितम् । विमर्द्य पुटयेत्तावद्यावत्कर्षावशे–षितम् ।।३५।। न तत्पुटसहस्रेण क्षयमायाति सर्वथा ।। चपलोयं समादिष्टो वार्तिकैर्नागसंभवः ।।३६।। इत्थं हि चपलः कार्यो वंगस्यापि न संशयः । तत्स्पृष्टहस्तसंस्पृष्टः केवलो वध्यते रसः ।।३७।। स रसो धातुवादेषु शस्यते न रसायने । अयं हि खर्वणाख्येन लोकनाथेन कीर्तितः ।।३८।।

(र.र.स.)

अर्थ–तीस पल सीसे को अर्क (आक) के दूध से घोटे और घोटकर तब तक पुट देता जावे कि जब तक एक तोला शेष रहे–शेष रहे एक तोले सीसे को चाहे हजार पुट क्यों न दिये जायें तो भी नष्ट नहीं होता है। बस इसी को वार्तिककारों ने नाग से पैदा हुआ चपल कहा है। इसी प्रकार वंग (रांगा) का भी चपल बनाना चाहिये। इसमें कोई संदेह नहीं है; केवल चपल के छुए हुए हाथ से पारद को स्पर्श किया जाये तो पारद बद्ध होता है परन्तु वह पारद धातुवाद में अर्थात् सोना चांदी बनाने में उपयोगी है, रसायन में नही है, इस चपल की विधि को खर्वण नाम महात्मा ने वर्णन किया है।।३५–३८।।

धौताख्यरज का लक्षण

भूभुजंगशकृत्तोयैः प्रक्षाल्यापहृतं रजः ।
कृष्णवर्णं हि तत्प्रोक्तं धौताख्यं रसवादिभिः ।।३९।।

(र.र.स.)

अर्थ–केंचुओं का मल (केंचुओं की गुदा से निकली हुई मिट्टी) को जल से धोकर रेत निकाले, उस श्याम वर्णवाले रेत को धौताख्य रज कहते हैं।।३९।।

धौत का लक्षण

विष्ठां भूनागसंभूतां प्रक्षाल्य बहुभिर्जलैः ।
समाहृत्य रजः कृत्स्नं धौतमित्यभिधीयते ।।४०।।

(टो० नं०)

अर्थ–केंचुओं की विष्ठा को जल से अनेक बार धोकर काले रेत को निकाल कर रक्खे उसको धौत कहते हैं।।४०।।

घोषाकृष्ट का लक्षण

स्वल्पतालयुतं ताम्रं वंकनालेन ताडितम् ।
मुक्तरंगं हि तत्ताम्रं घोषाकृष्टमुदाहृतम् ।४१।।

(र.र.स.)

अर्थ–तांबे में थोड़ी सी हरताल डालकर तब तक वंकनाल से धोंकता जावे जब तक कि रंग नष्ट होकर केवल ताम्रमात्र ही शेष रहे उसको घोषाकृष्ट कहते हैं।।४१।।

हेमरक्ती का लक्षण

ताम्रं तीक्ष्णसमायुक्तं द्रुतं निक्षिप्य भूरिशः ।
स गंधलकुचद्रावे निर्गतं वरलोहकम् ।।
तेन रक्तीकृतं स्वर्णं हेमरक्तीत्युदाहृतम् ।।४२।।

(र. र. स.)

अर्थ–तांबे में कांतिसार लोहा मिलाकर और अग्नि में डालकर गंधक और लकुच (बड़हर) रस में बार बार बुझा कर निकाले वह वरनाग कहाता है। उस वरनाग से लाल किया हुआ जो स्वर्ण वह हेमरक्ती कहाता है।।४२।।

निक्षिप्ता सा द्रुते स्वर्णे वर्णोत्कर्षविधायिनी ।
तारस्य रंजनी चापि बीजरागविधायिनी ।।४३।।
एवमेव प्रकर्तव्याताररक्ती मनोहरा ।
रंजनी खलु रूप्यस्य बीजानामपि रंजनी ।।४४।।

(र. रं. स.)

अर्थ–गलाये हुए स्वर्ण में छोड़ी हुई यह हेमरक्ती स्वर्ण का उत्तम रंग बनाती है। चांदी तथा अन्य बीजों को रंगने वाली है, इसी प्रकार सुन्दर ताररक्ती भी बनानी चाहिये क्योंकि वह चांदी तथा अन्य बीजों को भी रंगती है।।४३।।४४।।

चन्द्रार्क का लक्षण

भागाः षोडश तारस्य तथा द्वादश भास्वतः ।
एकत्राऽऽवर्तितास्तेन चन्द्रार्कमिति कथ्यते ।।४५।।

(र. र. स.)

अर्थ–चांदी सोलह भाग और तावा बारह भाग इन दोनो को मिलाकर मूषा (घरिया) यंत्र में रख अग्नि में धोंकने से जब गलकर चक्कर खाने लगे तब उसको अग्नि से बाहर निकाल ले। बस इसी को चन्द्रार्क कहते हैं।।४५।।

चन्द्रानल का लक्षण

मृतेन वा बद्धरसेन चान्यल्लोहेन वा साधितमन्यलोहम् ।
सितं च पीतत्वमुपागतं तद्दलं हि चन्द्रानलतः प्रसिद्धम् ।।४६।।

(र. र. स.)

अर्थ–मृत पारद अथवा बद्ध पारद या अन्य किसी लोहे (धातु) से सिद्ध किया हुआ लोह (धातु) सफेदी या पीली रंगत को प्राप्त होता है, तब उस पत्र को चन्द्रानल कहते हैं।।४६।।

पिंजरी का लक्षण

लोहं लोहान्तरे क्षिप्तं ध्मातं निर्वापितं द्रवे ।।
पांडुपीतप्रभं जातं पिंजरीत्यभिधीयते ।।४७।।

(र. र. स.)

अर्थ–मर्दन (घोटना) या अग्नि में धोंक कर गलाने से जो दो द्रव्यों का मेल होता है उसको द्वदंन (द्वंद्वान दोनों का) अनिति (जिवाता है) कहते हैं।।४८।।

द्वंदान का लक्षण

द्रव्ययोर्मर्दनाध्मानाद् द्वंदानं परिकीर्तितम् ।।४८।।

(र. र. स.)

अर्थ–मर्दन (घोटना) या अग्नि में धोंक कर गलाने से जो दो द्रव्यों का मेल होता है उसको द्वदंन (द्वंद्वान दोनों का) अनिति (जिवाता है) कहते हैं।।४८।।

ढालन का लक्षण

द्रुतद्रव्यस्य निक्षेपो द्रवे तड्ढालनं मतम् ।।४९।।

(र.र.स.)

अर्थ–अग्नि में गलाये हुए द्रव्य का किसी चीज पर ढाल कर यंत्र बनाना हो उसको ढालन कहते हैं।।४९।।

निर्वापण का लक्षण

साध्यलोहेऽन्यलोहं चेत्प्रक्षिप्तं वंकनालतः । निर्वापणं तु तत्प्रोक्तं वैद्यैर्निर्वाहणं खलु ।।५०।। लिपेन्निर्वापणं द्रव्यं निर्वाह्य समभागिकम् । आवाह्यं वापनीये च भागे दृष्टे च दृष्टवत् ।।५१।। (र. र. स.)

अर्थ–साधन करने योग्य लोह में संस्कृत किये हुए लोह को डालकर अग्नि में वंक नाल से धोंक कर गलावे उसको निर्वापण कहते हैं।।५०।।५१।।

बीज का लक्षण

निर्वापणविशेषेण तत्तद्वर्णं भवेद्यदा । मृदुलं चित्रसंस्कारं तद्बीजमिति कथ्यते ।।५२।।

(र. र. स.)

अर्थ–धातुओं का मुख्य निर्वापण कर्म द्वारा जो जो वर्ण उत्पन्न होना कहा है वही वर्ण जब लोहादि धातुओं में उत्पन्न हो और कोमलता या मनोहरता हो जावे तब उसको बीज कहते हैं।।५२।।

उत्तरण का लक्षण

इदमेव विनिर्दिष्टं वैद्यैरुत्तरणं खलु ।।५३।।

(र. र. स.)

अर्थ–वैद्य लोगों ने इसी को उत्तरण भी कहा है।।५३।।

ताड़न का लक्षण

संसृष्टलोहयोरेकलोहस्य परिनाशनम् ।
प्रध्माय वंकनालेन तत्ताडनमुदाहृतम् ।।५४।।

(र. र. स.)

अर्थ–मिले हुए दो धातुओं में से किसी एक धातु को वंकनाल से धोंक कर जो नाश करना है उसको ताडन कहते हैं।।५४।।

भंजनी का लक्षण

भागाद्द्रव्याधिकक्षेपमनुवर्णसुवर्णके । द्रवैर्वा वर्णिकाह्रासो भञ्जनी वादिभिर्मता ।।५५।।

अर्थ–उत्तम वर्ण बनाने योग्य सुवर्ण में जब अधिक भाग से हेमकृष्टी डाली जाती है तब द्रव पदार्थों से उसके वर्ण का जो ह्रास (विनाश) किया जाता है उसको भंजनी कहते हैं।।५५।।

चुल्लका का लक्षण

पतङ्गीकल्कतो जाता लोहे तारे च हेमता ।
दिनानि कतिचित्स्थित्वा यात्यसौ चुल्लुका मता ।।५६।।

(र. र. स.)

अर्थ–(पतंगी) रतन जोत के कल्क से लोह तथा चांदी में जो सुवर्णपना मालूम देने लगता है, यह कुछ दिन बीतने पर चला जाता है, बस यही चुल्लका कहलाती है।।५६।।

आवाप प्रतीवाप का लक्षण

द्रुते द्रव्यान्तरक्षेपो लोहाद्यैः क्रियते हि यः ।
स आवापः प्रतीवापस्तदेवाच्छादनं मतम् ।।५७।।

(र.र.स.)

अर्थ–अग्नि योग से गले हुए धातु में जो अन्य धातु डाला जाता है, उसको आवाप प्रतीवाप और आच्छादन कहते हैं।।५७।।

अभिषेक का लक्षण

द्रुते वह्निस्थिते लोहे विरम्याष्टनिमेषकम् ।
सलिलस्य परिक्षेपः सोऽभिषेक इति स्मृतः ।।५८।।

(र. र. स.)

अर्थ–अग्नि में रक्खा हुआ लोह (धातु) जब गल जाता है तब उसको दो तथा चार पल तक अग्नि पर ही रख कर जो जल छिड़का जाता है उसको अभिषेक कहते हैं।।५८।।

अन्यच्च

वह्नितापितलोहानामौषधीभिः सुसाधिते ।
सलिले तु परिक्षेपः सोभिषेक इति स्मृतः ।।५९।।

(टो० नं०)

अर्थ–अग्नि में तपाये हुए धातुओं को औषधियों से सिद्ध किये हुए जल में बुझाने को अभिषेक कहते हैं।।५९।।

निर्वाप का लक्षण

तप्तस्याप्सु विनिक्षेपो निर्वापः स्तपनं च तत् ।
प्रतीवापादिकं कार्यं द्रुते लोहे सुनिर्मले ।।६०।।

(र. र. स.)

अर्थ–निर्वाप उसको कहते हैं जो तपा तपाकर जल में बुझाया जावे और उसी को स्तपन भी कहते हैं और निर्मल गलाये हुए लोहे में प्रतीवापादि कर्म

करना चाहिये।।६०।।

प्रतीवापादि का अर्थ रसार्णव में

आवर्तिते तु लौहादौ प्रतीवापं प्रचक्ष्महे ।
प्रतीवापो निषेकश्च अभिषेकस्तथैव च ।।६१।।
प्रतीवापः पुरा योज्यो निषेकस्तदनंतरम् ।
क्षालनं तु प्रतीवापो निषेकं मज्जनं विदुः ।।६२।।
अभिषेकं तदिच्छंति स्तपनं क्रियते तु यः ।
उष्णेनैव हि कांक्षति न शीतेन कदाचन ।।६३।।

(टी० न०)

अर्थ–गलकर चक्कर खाते हुए धातुओं में जो बीज का प्रक्षेप (डालना) करत हैं, उसको प्रतीवाप कहते हैं, प्रतीवाप, निषेक और अभिषेक ये तीन क्रियाएं हैं। प्रतीवाप को प्रथम करना चाहिये, उसके पीछे निषेक कर्म तदनंतर अभिषेक करना चाहिये। क्षालन को प्रतीवाप और निषेक को मज्जन (निर्वाप) कहते हैं; जो वैद्य स्तपन कर्म को करता है, वही अभिषेक कर्म को भी करना चाहता है। इन कर्मो को उष्ण पदार्थ से ही करना चाहते हैं। शीतल (ठंडे) पदार्थ से नहीं।।६१–६३।।

उद्‌घाटन का लक्षण

सिद्धद्रव्यस्य सूतेन कालुष्यादिनिवारणम् ।
प्रकाशनं च वर्णस्य तदुद्घाटनमीरितम् ।।६४।।

(र. र. स.)

अर्थ–सिद्ध किये द्रव्य की मलिनता को पारद से दूर करना और उत्तम वर्ण का प्रकाश करना हो, उसी को उद्घाटन कहते हैं।।६४।।

शुद्धावर्त का लक्षण

यदा हुताशो दीप्तार्चिः शुक्लोत्थानसमन्वितः ।
शुद्धावर्तस्तदा ज्ञेयः स कालः सत्वनिर्गमे ।।६५।।

(र.र.स.)

अर्थ–जब अग्नि तेजशिखावाला सफेद लुक्के जिसमें निकलती हों तब शुद्धावर्त (असली ताउ) जानना और वही काल सत्त्व के निकलने का है; अर्थात् जब अग्नि में से सफेद झलझलाती हुई लुक्के निकलें तब समझ लेना चाहिये कि सत्त्व निकल गया।।६५।।

बीजावर्त का लक्षण

द्राव्यद्रव्यनिभा ज्वाला दृश्यते धमने यदा ।
द्रावस्योन्मुखता सेयं बीजावर्तः स उच्यते ।।६६।।

(र. र. स.)

अर्थ–अग्नि के धोंकने के समय जिस द्रव्य को गलाना हो, उस द्रव्य के समान ज्वाला निकलने लगे तब समझ लेना कि यह ज्वाला गलानेवाली हुई है, बस इसी को बीजावर्त कहते हैं।।६६।।

स्वांगशीतल का लक्षण

वह्निस्थमेव शीतं यत्तदुक्तं स्वांगशीतलम् ।।६७।।

(र. र. स.)

अर्थ–अग्नि के भीतर रखा हुआ अपने आप शीतल हो जाय तब उसको स्वांगशीतल कहते हैं।।६७।।

बहिःशीतल का लक्षण

अग्नेराकृष्य शीतं यत्तद्बहिःशीतमीरितम् ।।६८।।

(र. र. स.)

अर्थ–किसी पदार्थ को अग्नि में संतप्त कर फिर बाहर निकाल कर ठंडा करने को बहिःशीतल कहते हैं।।६८।।

स्वेदन का लक्षण

क्षाराम्लैरौषधैः सार्धं भांडं रुद्ध्वाऽतियत्नतः ।
भूमौ निखन्यते यत्नात्स्वेदनं संप्रकीर्तितम् ।।६९।।

(र. र. स.)

अर्थ–क्षार तथा अम्ल वर्गोक्त औषधियों के साथ पारद को एक मजबूत बासन में रखकर जो पृथ्वी में गाड देता है, उसको स्वेदन कहते हैं।।६९।।

संन्यास का लक्षण

रसस्यौषधयुक्तस्य भांडरुद्धस्य यत्नतः ।
मंदाग्नियुतचुल्ल्यंतः क्षेपः संन्यास उच्यते ।।७०।।

अर्थ–औषधियों से मिले हुए और यत्नपूर्वक दृढ बासन में भरे हुए पारे का उस चूल्हे पर रखना जिसमें मंदाग्नि दी जाती हो उसको संन्यास कहते हैं।।७०।।

स्वेदसंन्यास का फल

द्वावेतौ स्वेदसंन्यासौ रसराजस्य निश्चितम् । गुणप्रभावजनकौ शीघ्रव्याप्तिकरौ तथा ।।७१।।

(र. र. स.)

अर्थ–पारद के स्वेदन और संन्यास ये दोनों कर्म निश्चय से पारद के गुण और प्रभाव को पैदा करनेवाले और शीघ्र व्याप्त, (अन्यवस्तु में फैलना) करनेवाले होते हैं।।७१।।

कालिनी का लक्षण और गुण

कुंचिताग्रास्तु ये केशा या श्यामा पद्मलोचना । विस्तीर्णं जघनं यस्याः संकीर्णं हृदयं भवेत् ।।७२।। कृष्णपक्षे भवेद्यस्या युवत्याः पुष्पदर्शनम् । कालिनी सा समाख्याता उत्तमा च रसायने ।।७३।। आलिंगने स्पर्शने च मैथुनालापयोरपि सर्वरोगविनिर्मुक्तो वलीपलितवर्जितः ।।७४।।

(रसार्णवात्, टी० नं०)

अर्थ–जिस श्यामा स्त्री के अगाड़ी के केश सुकड़े हुए हों, कमल सदृश नेत्र हों जिसका जघन (जांघ) लंबा चौड़ा हो और जिसका हृदय सुकड़ा हो और जिसको कृष्णपक्ष में पुष्पदर्शन (मासिकधर्म) हो उसको कलिनी कहते हैं, वह रसायन कर्म में उत्तम है, उसके आलिंगन (चिपटाने) और स्पर्शन (छूने) में तथा मैथुन और आलाप (बातचीत) करने में जो आसक्त हो वह समस्त रोगों से छूटकर वलीपलित से रहित होता है।।७२–७४।।

तस्कियापुट लक्षण (उर्दू)

तस्किया जिसको पुट आफतावी (भावना) कहते हैं। यह है कि दवाको इस कदर शीरा अर्क से भिगोवे कि अजजाइ (पदार्थ) अच्छी तरह तर हो जावे और उसको धूप में सहक करते करते सुखावे फिर अर्क डालकर सहक करना शुरू करे, यहां तक कि दो प्रहर दिन तक अर्क डाल कर खरल करता रहै और दो प्रहर के बाद धूप में शाम तक रहने देवे कि जिसमें तपिशआफ्ताब से रतबत दवाई की बिल्कुल सूख जावे (अकलीमियां २४)

छलबेध की क्रिया वा लक्षण (उर्दू) मुलगमा को छलवंध करना कहते हैं। उसका तरीका यह है कि किसी जश्तमस्लत जैसे सुर्व या जश्त वगैरह को पिघला दे और जब जमने के करीब हो तब पारा उसमें डाल दे, ख्वाह पारे को पानी के अन्दर छोटे मुंह के बंद बर्तन में रक्खे और जशद जिसका मुलगमा पारे से करना मंजूर है, गुज करने पारे में छोड़ दे और बर्तन का मुँह उसी वक्त बंद कर दे। इससे जश्त मजकूर का (चूरा) काबिल सहक के

हो जायेगा। इसे तकलीसहुक्मा भी कहते हैं। दवा इससे कुश्ता नहीं होती। पीसने के लायक हो जाती है और यही गरज छलबंध से है।

(अकलीमियां ८२)

अयार के मुतल्लिक [वान (वा) वर्ण के अर्थ] वा एतबार खरे या खोटे होने के हुकमाइ हिन्द ने अबार–सोने के बारह हिस्से.फर्ज किये हैं, बारहे अयार का सोना कुन्दन या बड़ और कामिलुल अयार कहाता है, इससे कर्म दर्जे का खराब रंग का और निकम्मा समझा जाता है

(अकलीमियां २५)

संधान का लक्षण

द्रवेषु चिरकालस्थं द्रव्यं यत्सन्धितं भवेत् ।
आसवारिष्टभेदैस्तु प्रोच्यते भेषजोचितम् ।।७५।।

(आयुर्वेदवि०)

अर्थ–पतले पदार्थ में चिरकाल तक ठहरने योग्य जो पदार्थ मिला हुआ होता है, औषधि के योग्य उस पदार्थ को आसव, अरिष्ट कहते हैं।।७५।।

तुषाम्बु लक्षण ।

तुषाम्बु संधितं ज्ञेयमामैर्विदलितैर्यवैः ।।७६।।

(आ. वे. वि.)

अर्थ–कच्चे और दले हुए यवों का जो सिरका बनता है, उसको तुषाम्बु कांजी कहते हैं।।७६।।

काञ्जिका का लक्षण

संधितं धान्यमण्डादि काञ्जिकं कथ्यते जनैः ।।७७।।

(आ० वे० वि०)

अर्थ–सड़ाये हुए धान्य (अन्न) और मंड (मांड) आदिको मनुष्य कांजी कहते हैं।।७७।।

आरनाल का लक्षण

आरनालं तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः ।।७८।।

(आ. वे. वि.)

तुषरहित किये हुए कच्चे गेहूओं से जो सिरका बनाया गया है, उसीको आरनाल कहते हैं।।७८।।

शुक्त का लक्षण

कंदमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च ।
यत्र द्रवेऽभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते ।।७९।।

(आ. वे. वि.)

[अभिषूयन्ते द्रवेणाप्लाव्य सन्धीयन्ते]

अर्थ–जिस पदार्थ में कंद, मूल, फल, तेल और नोंन इनको पानी में डालकर सडाये जाते हैं, उसको शुक्त कहते हैं।।७९।।

भवेत्पठितवारोयमध्यायो रसवादिनाम् ।
रसकर्मणि कुर्वाणो न स मुह्यति कुत्रचित् ।।८०।।

(र. र. स.)

इति श्री अग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनु बाबूनिरंजनप्रसाद संकलितायां रसराजसंहितायां चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

अर्थ–जो रसायन बनानेवाला वैद्य इस परिभाषा अध्याय को प्रतिदिन पढ़ता है, वह रसकर्म को करता हुआ कभी मोह को नहीं प्राप्त होता।।८०।।

इति जैसलमेरनिवासिपंडित मनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमलशर्मकृतायां रसराजसंहिता हिन्दीटीकायां रसोत्पत्तिमाहात्म्या-दिवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

पंचमोऽध्यायः ५

अथ मागधमानपरिभाषा

न मानेन विना युक्तिर्द्रव्याणां जायते क्वचित् ।
अतः प्रयोकार्यार्थं मानमत्रोच्यते मया ।।१।।

(भावप्रकाश)

अर्थ–मान अर्थात् तोल के बिना कहीं भी द्रव्यों की युक्ति ठीन नहीं होती है। इस वास्ते प्रयोगकार्य के अर्थ भावमिश्र मानका वर्णन करते हैं।।१।।

मागध परिभाषा की श्रेष्ठता

चरकस्य मतं वैद्यैराद्यैर्यस्मान्मतं ततः ।
विहाय सर्वमानानि मागधं मानमुच्यते ।।२।।

(भा० प्र०)

अर्थ–अर्थात् बिना तुली औषधि लेनी अयोग्य है, इस वास्ते तोल कहते हैं और जिस कारण से पहले वैद्यों ने चरकजी का मत माना है। इसी वास्ते सब प्रकार के मानों को त्याग मागध मान का वर्णन करते है।।२।।

परिमाण का क्रम

त्रसरेणुर्बुधैः प्रोक्तस्त्रिंशता परमाणुभिः ।
त्रसरेणुस्तु पर्य्यायनाम्ना वंशी निगद्यते ।।३।।
जालान्तरगतैः सूर्य्यकरैर्वंशी विलोक्यते ।
षड्वंशीभिर्मरीचिः स्यात्ताभिः षड्भिश्च राजिका ।।४।।
तिसृभी राजिकाभिश्च सर्षपः प्रोच्यते बुधैः ।
यवाष्टसर्षपैः प्रोक्तो गुंजा स्यातच्चतुष्टयम् ।।५।।
षड्भिस्तु रत्तिकाभिः स्यान्माषको हेमधान्यकौ ।
माषैश्चतुर्भिः शाणः स्याद्धरणः स निगद्यते ।।६।।
टङ्कः स एव कथितस्तद्द्वयं कोल उच्यते ।
क्षुद्रको वटकश्चैव द्रंक्षणः स निगद्यते ।।७।।
कोलद्वयं तु कर्षः स्यात्स प्रोक्तः पाणिमानिका ।
अक्षः पिचु पाणितलं किंचित्पाणिश्च तिन्दुकम् ।।८।।
विडालपदकं चैव तथा षोडशिका मता ।
करमध्यो हंसपदं सुवर्णं कवलग्रहः ।।९।।
उदुम्बरञ्च पर्य्यायैः कर्षमेव निगद्यते ।
स्यात्कर्षाभ्यामर्द्धपलं शुक्तिरष्टमिका तथा ।।१०।।
शुक्तिभ्यां च पलं ज्ञेयं मुष्टिराम्रं चतुर्थिका ।
प्रकुञ्चः षोडशी बिल्वं पलमेवात्र कीर्त्यते ।।११।।
पलाभ्यां प्रसृतिर्ज्ञेया प्रसृतं च निगद्यते ।
प्रसृतिभ्यामञ्जलिः स्यात्कुडवोर्धशरावकः ।।१२।।
अष्टमानं च स ज्ञेयः कुडवाभ्यां च मानिका ।
शरावोऽष्टपलं तद्वज्ज्ञेयमत्र विचक्षणैः ।।१३।।
शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थः चतुष्प्रस्थस्तथाढकः।।
भाजनं कांस्यपात्रं च चतुष्षष्टिपलश्च सः ।।१४।।
चतुर्भिराढकैर्द्रोणः कलशो नल्वणोऽर्मणः ।
उन्मानं च घटोराशिर्द्रोणपर्य्यायसंज्ञितः ।।१५।।
द्रोणाभ्यां सूर्प्पकुम्भौ च चतुष्षष्टिशरावकः ।

सूर्प्पाभ्यां च भवेद्द्रोणी वाहो गोणी च सा स्मृता ।।१६।।
द्रोणीचतुष्टयं खारी कथिता सूक्ष्मबुद्धिभिः ।
चतुः सहस्रपलिका षण्णवत्यधिका च सा ।।१७।।
पलानां द्विसहस्रं च भार एकः प्रकीर्तितः ।
तुला पलशतं ज्ञेयं सर्वत्रैवैष निश्चयः ।।१८।।

(भा० प्र०)

अर्थ–जो छिद्र में सूर्य्य की आभा से रजकण उड़ते दीख पड़ते हैं उसके तीसवें भाग को परमाणु कहते हैं, सो तीस परमाणु एक त्रसरेणु होता है, इसी का पर्य्यायवंशी कहाता है, छः वंशी की एक मरीची होती है, छः मरीची की एक राई होती है, तीन राई की एक सरसों होती है, आठ सरसों का एक यव होता है, चार यवों की एक रत्ती होती है, छ:रत्ती का एक माशा होता है, सोई है और धान्यक कहाता है। चार माशे का एक शाण होता है, वही धरण और टंक कहाता है। दो टंक का एक कोल होता है, वही क्षुद्रक वट द्रंक्षण कहाता है। दो कोल का एक कर्ष होता है, उसी को पाणिमानि का अक्ष, पिच पाणितल किंचित्पाणितिन्दुक, बिडालपदक, पोडशी, करमध्य, सुवर्ण, कवलग्रह, उदुम्बर, ऐसे कहकर बोलते हैं अर्थात् पाणिमानि का आदि ये सब कर्ष के पर्य्याय कहे हैं। दो कर्षों का अर्द्धपल होता है और इसी को शुक्ति अष्टमिका कहते हैं। दो शुक्ति का एक पल होता है और इसी को मुष्टि, आम्र, चतुर्थि का, प्रकुञ्च, षोड़शी, बिल्व, ऐसे कहते हैं, ये सब पल के पर्याय कहाते हैं और दो पल की एक प्रसूति होती है और इसी का पर्याय प्रसृत कहाता है और दो प्रसृती की एक अंजली होती है, इसी को कुडव, अर्द्धशराव अष्टमान कहते हैं और दो कुडव की एक मानिका होती है और शराव अष्टपल या मानिका के पर्य्याय हैं। दो शराव का प्रस्थ होता है और चार प्रस्थ का आढ़क होता है, इसी आढ़क को भाजन कांस्यपात्र चतु:षषष्टिपल इन नामों से भी बोलते हैं और चार आढ़कों का एक द्रोण कहाता है, इसी द्रोण को कलश, नल्वण, अर्मण, उन्मान, घट इन नामों से बोलते हैं और दो द्रोणों का सूर्प होता है, इसी को कुंभ चौसठी शराव इन नामों से बोलते हैं और दो सूर्प की द्रोणी होती है, इसी को वाह व गोणी कहते हैं और चार द्रोणी की एक खारी होती है अर्थात् चार हजार छानवे पल की खारी संज्ञा है और दो हजार पल को भार कहते हैं और सौ पल अर्थात् चार सौ तोले को तुला कहते हैं।।३१८।।

माषटङ्काक्षबिल्वानि कुडवप्रस्थमाढकम् । राशिर्गोणीखारिकेति यथोत्तरचतुर्गणम् ।।१९।। मागधपरिभाषायां षड्रत्तिको माषश्चतुर्विशतिरत्तिकः टङ्कः षण्ववतिरत्तिकः कर्षः अयं चरकस्मतः सुश्रुतमते तु पंचरत्तिको माषो विंशतिरत्तिकः टङ्कः अशीतिरत्तिकः कर्षः अयमेव कलिङ्गपरिभाषायामपि यतः तत्राष्टरत्तिको माषो द्वात्रिंशद्रत्तिकः टङ्कः सार्द्धटङ्कद्वयमितः कर्षः ।।

(भा० प्र०)

अर्थ–माशे से चौगुना टंक होता है। टंक से चौगुना अक्ष होता है। अक्ष से चौगुना बिल्व होता है। बिल्व से चौगुना कुडव होता है। कुडव से चौगुना प्रस्थ, प्रस्थ से चौगुना आढ़क, आढ़क से चौगुना द्रोण, द्रोण से चौगुनी गोणी होती है–गोणी से चौगुनी खारी होती है, ऐसे एक से एक चौगुना होता है।।१९।। मागध परिभाषा में छः रत्ती का माशा होता है और चौबीस रत्ती का टंक होता है और छानवे रत्ती का कर्ष होता है, यह चरक मुनि का मत है। सुश्रुतजी के मत में पांच रत्ती का माशा होता है और बीस रत्ती का टंक कहाता है। अस्सी रत्ती का कर्ष कहाता है। कलिंग परिभाषा में आठ रत्ती का माशा होता है और बत्तीस रत्ती का टंक होता है और अढ़ाई टङ्क कर्ष होता है।

गुंजादिमानमारभ्य यावत्स्यात्कुडवस्थितिः । द्रवार्द्रशुष्कद्रव्याणां तावन्मानं समं मतम् ।।२०।। प्रस्थादिमानमारभ्य द्विगुणं तद्द्रवार्द्रयोः । मानं तथा तुलायास्तु द्विगुणं न क्वचित्स्मृतम् ।।२१।। मृद्वृक्षवेणुलोहादेर्भाडं यच्चतुरंगुलम् । विस्तीर्णं च तथोच्चञ्च तन्मानं कुडवं वदेत् ।।२२।।

(भा. प्र.)

अर्थ–रत्ती से लगाय सोलह तोले तक पानी आदि से पतले किये हुए पदार्थ आली औषधि सूखी औषधि इन्हीं के समान अर्थात् बराबर तोल लेना व सोलह तोले से लगाय के चार सौ तोलों तक आली औषधि व पानी आदि से पतले पदार्थ ये सूखी औषधि के निस्वत दुगुने लेने उचित है, चार सौ तोलों से ऊपर सूखी औषधि पतले पदार्थ इन्हीं के समान तोल होता है अर्थात् ये सब समान लेना उचित है और चारि अंगुल लंबा चौड़ा समान वासन वास लोहादि किसी का हो उसकी कुडव संज्ञा है।।इति मागधमान ।।२०।।२१।।२२।।

कलिंगमानम्

यतो मंदाग्नयो ह्रस्वा हीनसत्त्वा नराः कलौ । अतस्तु मात्रा तद्योग्या प्रोच्यते सुज्ञसम्मता ।।२३।। यवो द्वादशभिर्गौरसर्षपैः प्रोच्यते बुधैः । यवद्वयेन गुंजा स्यात् त्रिगुञ्जो वल्ल उच्यत ।।२४।। माषो गुंजाभिरष्टभिः सप्तभिर्वा भवेत् क्वचित् । चतुर्भिर्माषकैः शाणः स निष्कष्टंक एव च ।।२५।। गद्याणो माषकैः षड्भिः कर्षः स्याद्दशमाषिकः । चतुष्कर्षैः पलं प्रोक्तं दशशाणमितं बुधैः । चतुष्पलैश्च कुडवः प्रस्थाद्याः पूर्ववन्मताः ।।२६।। (भा० प्र०)

अर्थ–कलियुग में मदं अग्निवाले ह्रस्व के शरीरवाले बलहीन ऐसे मनुष्य होते हैं, इस वास्ते सज्जन वैद्यों का मत है कि मात्रा रोगी को यथायोग्य देना। बारह गौर सरसों का एक यव होता है। दो यवों की एक रत्ती होती है। तीन रत्तियों का वल्ल होता है, आठ गुंजा तथा सात गुंजा का माशा होता है। चार माशे का शाण होता है। उसीको टंक व निष्क कहते हैं, छः माशे का गद्याण होता है, दश माशे का कर्ष होता है। चार कर्ष का पल होता है। चारि पलों का कुडव होता है, प्रस्थ आदि सब तोल मागध मान के समान जान लेना ।।२३–२६।।

औषधि का मात्रा का निर्णय

स्थितिर्नास्त्येव मात्रायाः कालमग्निं वयो बलम् ।।२७।।
प्रकृतिं दोषदेशौ च दृष्ट्वा मात्रां प्रकल्पयेत् । नाल्पं हन्त्यौषधं व्याधिं यथाम्भोऽल्पं महानलम् । अतिमात्रं च दोषाय शस्योपस्थे बहूदकम् ।।२८।।

इति रसराजसंहितायां मानपरिभाषावर्णनं नाम पञ्चमोऽध्यायः ।।५।।

अर्थ–मात्रा का कुछ प्रमाण स्थित नहीं किया समय, अवस्था, अग्नि, बल, प्रकृति, रोग, देश इन्हीकों देखि विचारि वैद्य मात्रा का प्रमाण करे। जैसे अल्प जल महा बढ़ी हुई अग्नि को बुझा नहीं सकता तैसे अल्प औषधि भी बढ़ी हुई व्याधि को नाश नहीं कर सकती है और जैसे बहुत ज्यादा पानी खेती के अन्न को बिगारि देता है, ऐसे अधिक औषधि भी दी हुई रोग में दोषों के उपजे रोगों को बिगाड़ देती है, इस वास्ते योग्य मात्रा औषधि की देनी चाहिये।।२७।।२८।।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदातात्मजव्यासज्येष्ठमलकृतायां
रसराजसंहिताया भाषाटीकायां मानपरिभाषावर्णनं
नाम पंचमोऽध्यायः ।।५।।

अथ षष्ठो यन्त्राध्यायः ६

समालोक्य समासेन रसशास्त्राण्यनेकशः ।
निरंजनप्रसादेन यंत्राध्यायो निरूप्यते ।।१।।

अर्थ–मैं निरंजन प्रसाद संक्षेप से अनेक शास्त्रों को देखकर इस यंत्राध्याय को निरूपण करता हूं।।१।।

यंत्रनिरुक्ति

स्वेदादिकर्म निर्मातुं वार्तिकेन्द्रैः प्रयत्नतः ।
यंत्र्यते पारदो यस्मात्तस्माद्यंत्रमिति स्मृतम् ॥२॥

(र. रा. सुं., र. स.)

अर्थ–स्वेदन आदि कर्म करने के लिये जिससे यत्न पूर्वक पारद संकुचित किया जाय वार्तिककारों ने उसको यंत्र कहा है॥२॥

खल्वयंत्र दो प्रकार का कहा है

खल्वयंत्रं द्विधा रसादिसुखमर्दने ।
निरुद्गारौ सुमसृणौ कार्यौ पुत्रिकया युतौ ॥३॥

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–रसादिकों के सुखपूर्वक मर्दन करने के लिये दो प्रकार का खल्व (खरल) यंत्र कहा है और वह यंत्र निरुद्गार (जिसमें से वस्तु बाहर न जाय) और चिकना तथा पुत्रिका (मूशला) से युक्त होना चाहिये॥३॥

खल्व किसका होना चाहिये

खल्वयंत्रं त्रिधा प्रोक्तं मर्दनादिषु कर्मसु ।
पाषाणं दारुसंभूतं तृतीयं लोहसंभवम् ॥४॥

(टो. नं.)

अर्थ–मर्दन आदि तथा अन्य कार्यों में खल्वयंत्र तीन प्रकार का कहा जाता है, पत्थर तथा लकड़ी का और तीसरा लोहे का बना हुआ होता है॥४॥

अन्यच्च

खल्वं लोहमयं शस्तं पाषाणोत्थमथापि वा ॥५॥

(कामरत्न) (र. सा. प.)

अर्थ–खल्वयंत्र लोहे का अच्छा होता है अथवा पत्थर का भी अच्छा होता है॥५॥

कैसे खल्व में पारद को घोटना चाहिये

मृन्मये लोहपाषाणे अयस्कान्तमयेऽथवा ॥६॥ पाषाणे स्फटिके वाथ मुक्ताशुक्तिमयेऽथवा ॥७॥ कृते कान्तायसे खल्वे भवेत्कोटिगुणो रसः । स्फटिके काचजे खल्वे सूतस्त्वेकगुणः स्मृतः ॥८॥

(ध. ध. सं.)

अर्थ–मिट्टी के खरल में लोहे तथा पाषाण (पत्थर) के खरल में, कान्ति सार लोहे के खरल में अथवा बिल्लौरी के पत्थर के खरल में या मोती की सीप के खरल में पारद का मर्दन करे। यदि कान्ति लोहे के खरल में पारद मर्दन किया जाय तो कोटिगुना पारद होता है। बिल्लौरी तथा कांच के खरल में पारद एकगुना उत्तम होता है॥६–८॥

खल्व किसका उत्तम होता है

खल्वो लोहमयः श्रेष्ठस्तस्माच्छ्रेष्ठश्च सारजः।कान्तलोहभवस्तस्मान्मर्दकश्च यथाविधि ॥९॥ अभावे लोहखल्वस्य स्निग्धपाषाणजः शुभः । तादृशः स्वच्छमसृणमर्दकेन समन्वितः ॥१०॥

(नि. रं. र., रा. सु. र. सा. प)

अर्थ–लोहे का खरल अच्छा होता है और उससे अच्छा कान्तिसार लोहे का खरल है और मूशल भी वैसा ही कान्त लोहे का होना चाहिये, जहां लोहे का खरल न मिल सके, वहां चिकने पत्थर का खरल लेना चाहिये जो कि साथ चिकने वैसे ही पत्थर के बने हुये मूशल से संयुक्त हो, इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिये कि जैसा खल्व हो उसी पदार्थ का मूशल भी होना चाहिये॥९–१०॥

लोहखल्व के लक्षण

लोहखल्वे चतुष्पादे पिण्डिका च दशाङ्गुला । मुंडतीक्ष्णादिलोहानां खल्वस्तु मर्दकस्तथा ॥११॥ (ध. ध. सं.)

अर्थ–चार पाये वाले लोहे के खरल में दश अंगुल का मूशल होना चाहिये। मुण्ड और तीक्ष्ण आदि समस्त लोहों का खरल तथा मूशल बनाने चाहिये॥११॥

खल्व का लक्षण

उत्सेधेन दशाङ्गुलः खलु कलातुल्यांगुलायामवान् विस्तारेण दशांगुलो मुनिमितैर्निम्नस्तथैवांगुलैः।१ पाल्यां द्व्यंगुलविस्तरश्च मसृणोऽतीवार्ध–चन्द्रोपमो घर्षो द्वादशकांगुलश्च तदयं खल्वो मतः सिद्धये ॥१२॥

(ध. ध. सं. र. रा. प.)

अस्मिन्पंचपलः सूतो मर्दनीयो विशुद्धये । तत्तदौचित्ययोगेन खल्वेष्वन्येषु योजयेत् ॥१३॥

(ध. ध. सं. रस. चू. र. रा. प. टो. नं.)

अर्थ–जिसकी ऊँचाई १० अंगुल हो, लंबाई १६ अंगुल हो चौड़ाई १० अंगुल और गहराई ६ अंगुल हो, किंनारों में २ अंगुल चौड़ा और चिकना हो, आकार जिसका आधे चन्द्रमा के समान हो, मूशला जिसका पाव अंगुल का हो ऐसा खरल क्रिया की सिद्धि के लिये कहा है। ऐसे खरल में पांच पल पारद को घोटना चाहिये, बस इस रीति के अनुसार पारद के प्रमाण से खरल बनाकर पारद की शुद्धि करनी चाहिये॥१२॥१३॥

अन्यच्च

खल्वयोग्या शिला नीला श्यामा स्निग्धा दृढ़ा गुरुः । षोडशांगुलकोत्सेधा नवांगुलकविस्तरा ॥१४॥ चतुर्विंशांगुला दीर्घा घर्षणी द्वादशांगुला । खल्वप्रमाणं तज्ज्ञेयं श्रेष्ठं स्याद्रसकर्माणि ॥१५॥

(र. र. स.)

अर्थ–जो पत्थर नीला या काला चिकना मजबूत और भारी हो, वह पत्थर खरल बनाने योग्य होता है, सोलह अंगुल ऊँचा नौ अंगुल चौड़ा चौबीस अंगुल लंबा और बारह अंगुल लंबा जिसमें मूशल हो उसको खल्व कहते हैं अथवा बीस अंगुल लंबा दश अंगुल ऊंचा यह खल्व प्रमाण रस कर्म में श्रेष्ठ जानना॥१४॥१५॥

वर्तुलखल्व का लक्षण

द्वादशांगुलविस्तारः खल्वोतिमसृणो पलः५। चतुरंगुलनिम्नश्च मध्येऽतिमसृणी कृतः ॥१६॥ मर्दकश्चिपिटोधस्तात्सुग्राह्यश्च शिखोपरि । अयं हि वर्तुलः खल्वो मर्दनेऽतिसुखप्रदः ॥१७॥

(र. र.स. र.रा. प.)

अर्थ–जिस खरल का विस्तार १२ अंगुल हो अत्यन्त उत्तम और चिकना हो और चार अंगुल गहरा हो और बीच में जिला किया हुआ हो और मूशला जिसका भलीभांति पकड़ने में आवे तथा नीचे से चपटा हो ऐसा गोल खरल घोटने में सुखदाई होता है॥१६॥१७॥

अन्यच्च

द्वादशांगुलविस्तारः खल्वो भवति वर्तुलः ।
चतुरंगुलनिम्नश्च मर्दकोऽष्टांगुलायतः ॥१८॥

(टो. नं.)

अर्थ–बारह अंगुल चौड़ा, चार अंगुल गहरा जिसका मूशला आठ अंगुल लंबा हो, उसको गोल खरल कहते है॥१८॥

१–वस्थितैरित्यपि ।२ लोत्र कथितः इत्यपि । ३ श्रेय इत्यपि । ४ मर्दने इत्यपि । ५–वरः इत्यपि । ६–होऽष्टांगुलायतः इ० ।

तप्तखल्व का लक्षण

लौहो नवांगुलं खल्वो निम्नत्वे[1] च षडंगुलः । मर्दकोऽष्टांगुलश्चैव तप्तखल्वाभिधोप्ययम्[2] ।। कृत्वा खल्वाकृतिं चुल्लीमंगारैः परिपूरिताम् ।।१९।। तस्यां निवेश्य तं खल्वं पार्श्वे भस्त्रिकया धमेत् ।.तदन्तर्मर्दिता पिष्टिः क्षारैरम्लैश्च संयुता । प्रद्रवत्यतिवेगेन स्वेदिता नात्र संशयः ।।२०।।

(र. र. स., ध. ध. स.)

अर्थ–जो नौ अंगुल चौड़ा और छः अंगुल गहरा लोहे का खरल हो और मूशला जिसका आठ अंगुल लंबा हो उसको तप्तखल्व कहते हैं।। जिस प्रकार खल्व चूल्हे पर स्थित हो जावे वैसा ही चूल्हा बनाकर अंगारों से भर दें, उस पर खरल को स्थापित कर पास में धोंकनी से धोंकता जावे तो उसके भीतर क्षार तथा अम्ल से मर्दन की हुई तथा स्वेदन की हुई अत्यन्त शीघ्र ही पिघल जाती है, इसमें सन्देह नहीं है।।१९।।२०।।

तप्तखल्व किसका होना चाहिये

लोहेन च भवेद्यस्तु तप्तखल्वः स उच्यते ।
कृतः कांतायसालोयः भवेत्कोटिगुणो रसः ।।२१।।

(र. र. स., र. रा. प., २ टो. नं.)

अर्थ–जो लोहे का खरल है, उसको तप्तखल्व कहते हैं और वही खरल यदि कांतलोह का बनाया जाय तो कोटिगुण उत्तम है।।२१।।

तप्तखल्व की विधि

अजाशकृत्तुषाग्निश्च भूगर्ते[3] त्रितयं क्षिपेत् । तस्योपरि स्थितं खल्वं तप्तखल्वमिति स्मृतम् ।।२२।। (र. सा. सं. ध. ध. सं., र. रत्नाक. यो., र. टो. आ. बे. वि. र. रा. प. र. सा. प. र. मं. कामरत्न.)

अर्थ–बकरी की मेंगनी बाजरे के ऊपर का तुष और अग्नि इन तीनों को धरती के भीतर गढ़ा खोदकर रखे, उस पर रखे हुए खरल को तप्तखल्व कहते है।।२२।।

मर्दक का लक्षण

सुदृढं मर्दकं कार्यं चतुरंगुलकोटिकम् ।
सर्वलोहमयं शैलं चायस्कान्तमयं तथा ।।२३।।

(ध. सं.)

अर्थ–मूशला मजबूत और चार अंगुल के घेर का होना चाहिये, जो कि सप्त धातु का अथवा पहाड़ी पत्थर का या कान्तलोहे का हो।।२३।।

दोलायंत्र

अथ द्रवेण भांडस्य पूरितार्धस्य तस्य।च मुखे तिर्य्यक्कृते दंडे रसं मूत्रेण लंबितम् ।। तं स्वेदयेज्जलगतं दोलायंत्रमिति स्मृतम् ।।२४।।

(टो. नं. ध. ध. सं.)

अर्थ–प्रथम पतले पदार्थों से बासन को आधा भरकर उसके मुख पर तिरछी लकड़ी रख दे, उसमें डोरा बांध पारद को ऐसा लटकावे कि वह जल में डूब जाय फिर अग्नि देकर स्वेदन करे, उसको दोलायंत्र कहते है।।२४।।

अन्यच्च

कै कराह कै हांडी लेई । भरि किनारि पुनि पानी देई ।
तिरछी एक सांट धरवाई । तासों वस्त्र बांधि उरमाई ।।
पातालसो बांधे सोय 1 अधभर रहे ऐसी विधि होय ।
दोलायंत्र यह कह्यो बखानि । घटत नीर दीजिये आनि ।।

अन्यच्च

द्रवद्रव्येण भांडस्य पूरितार्धोदरस्य च । मुखस्योभयतोद्वारद्वयं कृत्वा तयोः[2] क्षिपेत् ।।२५।। काष्ठादित्रिगुणं दंडं तन्मध्ये रसपोटलीम्। बद्ध्वा तु स्वेदयेदेतद्दोलायंत्रमिति स्मृतम् ।।२६।। (र. रा. प. र. र. स.)

अर्थ–पतले पदार्थों से आधे भरे हुए बासन के मुख के दोनों तरफ छिद्र करके उनमें एक लकड़ी लगा देवे और उसमें रस की पोटली को बांध कर स्वेदन करे, बस इसी को दोलायंत्र कहते है।।२५।।२६।।

अन्यच्च

निबद्धं सौषधं सूतं भूर्जे तत्त्रिगुणेम्बरे। रसपोटलिकां काष्ठे दृढं बद्ध्वा गुणेन हि ।।२७।। संधानपूर्वकुम्भान्तः स्वावलंबनसंस्थिताम् । अधस्ताज्ज्वालयेदग्निं तत्तदुक्तक्रमेण हि ।। दोलायंत्रमिदं प्रोक्तं स्वेदनाख्यं तदेव हि ।।२८।।

(यो. त. र. रा. सुं. र. रा. म.)

अर्थ–प्रथम औषधि सहित भोजपत्र में बंधे हुए पारद को तिल्लर किये: हुए कपड़े में बांध देवे. उस पर पारद की पोटली को दृढ़ डोरे से लकड़ी में बांध कर कांजी से भरे हुए गड़े के भीतर बीच में लटकी हुई पोटली के नीचे यथोक्तक्रम से अग्नि का जलावे, इसको दोलायंत्र या स्वेदनयंत्र कहते हैं।।२७।।२८।।

स्वेदनयंत्र

साम्बुस्थालीमुखे बद्धे वस्त्रे स्वेद्यं[3] निधाय च ।
पिधाय पच्यते यत्र तद्यंत्रं स्वेदनं स्मृतम् ।।२९।।

(र. रा. प. र. रा. सुं. र. रा. महो.)

अर्थ–जिस पात्र में स्वेदन करना हो उसमें जल भर मुख पर कपड़ा बांध देवे और उस पर जिस पदार्थ को स्वेदन करना हो, रखकर ऊपर से शकोरा या हांडी से मुख बंदकर अग्नि से पचावे, उसको स्वेदन यंत्र कहते है।।२९।।

कंदुकयंत्र वा स्वेदनयंत्र

स्थूलस्थाल्यां जलं क्षिप्त्वा वासो बद्ध्वा मुखे दृढम् । तत्र स्वेद्यं विनिक्षिप्य तन्मुखं प्रपिधाय च ।।३०।। अधस्ताज्जालयेदग्नि यंत्रं तत्कंदुयंत्रकम् । स्वेदनीयंत्रमित्यन्ये प्राहुरन्ये मनीषिणः ।।३१।। यद्वा स्थाल्यां जलं क्षिप्त्वा तृणं क्षिप्त्वा मुखोपरि । स्वेद्यद्रव्यं परिक्षिप्य पिधानं प्रविधाय च ।।३२।। अधस्ताज्ज्वालयेद्वह्निं यंत्रं तत्कंदुयंत्रकम् ।।३३।।

(र० र० स०)

अर्थ–एक मोटी हांडी में जल भर और मुखपर कपडा बांध देवे, उस पर स्वेदन करने योग्य पदार्थ को रख ऊपर से हांडी का मुख बंदकर नीचे से अग्नि जलावे तो उसको कंदुयंत्र कहते है अथवा हांडी में जल भर मुख पर घास भर देवे उस पर स्वेदन करने योग्य पदार्थ रख और मुख को बंद कर नीचे से आंच जलावे, उसको कंदुक यंत्र कहते है।।३०–३३।।

नालजंत्र (ऊर्दू)

नालजंत्र को भावीजंत्र टिकटीजंत्र भी कहते है। उसको बयान हो चुका है। उसमे तीन शलोकों की टिकटी होती है, उस पर जर्फ जिसको चोया देना मंजूर हो रखना चाहियें, आग नरम देकर जोश न जाने पावे अगर अहतियातन माप ज्यादा हो जावे तो नाल का मुंह खोलकर निकाल दे।।

(किताब अकलीमिया)

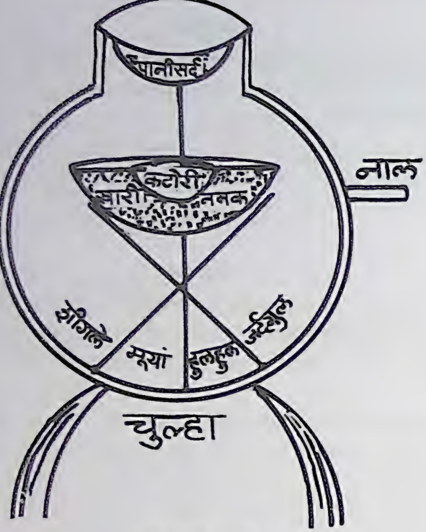
१–लोत्वेचा इ०। २–सल्वार्थमायसः इत्यपि । ३–यसे खल्वे इत्यपि ।

४–क्षालयित्वा भुवि।खानयित्वा भुवि।खनित्वा भुवि भावयेत्।भूगर्भे इ०।

५–पूर्वोक्तं मर्दयेद्रसम्।तप्तखल्वमिदं स्मृतम् तप्तखल्वं तदुच्यते।तप्तखल्वं जगुर्बुधाः खल्वं विनिर्दिशेत् इ०।

१–प्रयत्नतः इ०। २–तयोस्तुनिक्षिपेत् । ३–वाक्यं निवेशयेत्–इ०।

४–यत्रस्वेदिनीयन्त्रमुच्यते–इ०



विद्याधरयंत्र

अधः स्थाल्यां रसं क्षिप्त्वा निदध्यात्तन्मुखोपरि । स्थालीमूर्ध्वमुखीं सम्यङ् निरुध्य मृदुमृत्स्नया ॥३४॥ ऊर्ध्वस्थाल्यां जलं क्षिप्त्वा चुल्ल्यामारोप्य यत्नतः । अधस्ताज्ज्वालयेदग्निं यावत्प्रहरपंचकम् ॥३५॥ स्वांगशीतात्ततो यंत्रादुगृह्णीयाद्रसमुत्तमम् । विद्याधराभिधं यंत्रमेतत्तज्ज्ञैरुदाहृतम् ॥३६॥

(र.रा.म., र. रा. सुं., र. रा. प., यो. तं.)

अर्थ–नीचे की हांडी में पारद को रख उसके मुख पर दूसरी हांडी रख दे जिसका मुख ऊपर को हो अर्थात् सीधा हो और उस पर कपरौटी करके ऊपर की हांडी में जल भर तथा चूल्हे पर चढा नीचे पांच प्रहर अग्नि जलावे। जब यंत्र अपने आप ठंडा हो जाय तब उस उत्तम रस को निकाल लेवें। यंत्र के ज्ञाता मनुष्य इस यंत्र को विद्याधर यंत्र कहते हैं ॥३४–३६॥

विद्याधर और पातन यंत्र

स्थालिकोपरि विन्यस्य स्थालीं सम्यग्निरोधयेत् । स्थालीमूर्ध्नि[१] जलं दत्त्वां बह्निं प्रज्वालयेदधः ॥ एतद्विद्याधरं यंत्रं पातनायंत्रमित्यपि ॥३७॥

(रसे. सा. सं., र. र. स.)

अर्थ–हांडी के ऊपर हांडी को रखकर अच्छी तरह कपरौटी करे और ऊपर की हांडी में जल भर नीचे से आंच लगावे। इसको विद्याधर यंत्र और पातनायंत्र भी कहते हैं।।३७।।

विद्याधर और कोष्ठी यंत्र

यन्त्रं विद्याधरं ज्ञेयं स्थालीद्वितयसंपुटात् । चुल्लीं चतुर्मुखीं कृत्वा यन्त्रभाण्डं निवेशयेत् ॥३८॥ तत्रौषधं विनिक्षिप्य निरुन्ध्याद्भाण्डकाननम् । कोष्ठी-यन्त्रमिदं नाम्ना तन्त्रज्ञैः परिकीर्तितम् ॥३९॥

(र. र. स.)

अर्थ–दो हांडियों के संपुट को विद्याधर यंत्र कहते हैं। चारों तरफ ज्वाला निकलनेवाले चूल्हे पर यंत्र के बासन को स्थापित करे और उसमें औषध को रखकर बासन के मुख को कपड़ा और मिट्टी से बंद कर दे उसको यंत्रज्ञों ने कोष्ठी यंत्र कहा है।।३८।।३९।।

१–ऊर्ध्वस्थालीजलं क्षिप्त्वा इत्यपि। २–हिंगुलाकृष्टिहेतवे इत्यपि।

डमरूयन्त्र

यन्त्रं डमरुसंज्ञं स्यात्तत्तत्स्थाल्योर्मुद्रिते मुखे ॥४०॥

(र. रा. महो.)

अर्थ–दो हांडियों के मुख को घिस और मिलाकर ऊपर से कपरौटी कर दे उसको डमरूयंत्र कहते हैं।।४०।।

अन्यच्च

यत्र स्थाल्युपरि स्थालीं न्युब्जां दत्त्वा निरुध्यते । कृत्वालवालं तत्पृष्ठे केनाप्यत्र जलं क्षिपेत ॥४१॥ अधस्ताज्ज्वालयेदग्निमूर्ध्वगं रसमुद्धरेत् । यन्त्रं डमरुकं त्वेतदूर्ध्वपातनकारकम् ॥४२॥

अर्थ–जहां कि हांडी पर दूसरी उल्टी हांडी लगाकर दृढ कपरौटी कर दे और उसकी पीठ पर गोल कूंडा बनाकर थोड़ा थोड़ा जल डालता जाय और नीचे से आंच जलावे तदनंतर ऊपर उड़ कर लगे हुए पारद को निकाल लेवे। इसको ऊर्ध्वपातन करनेवाला डमरूयंत्र कहते हैं।।४१।।४२।।

अन्यच्च

यत्र स्थाल्युपरि स्थालीं न्युब्जां दत्त्वा निरुध्यते ।
यन्त्रं डमरुकाख्यं तद्रसभस्मकृते हितम् ॥४३॥

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–जहां हाँडी के ऊपर उलटी हाँडी को लगाकर मुख बंद किया जाता है, उसको डमरूयंत्र कहते हैं।।४३।।

अन्यच्च

द्वे हांडी लै मुख घिसि धरै । ता ऊपर द्वे मुद्रा करै ॥
आगि देहु ज्यों ग्रन्थन कही । डौरू जन्त्र जानिये सही ॥

(रससागर)

बलभी यन्त्र

यत्र लोहमये पात्रे पार्श्वयोर्वलयद्वयम् । तादृक् स्वल्पतरं पात्रं वलयप्रोतकोष्ठ कं ॥४४॥ पूर्वपात्रोपरि न्यस्य स्वल्पपात्रे परिक्षिपेत् । रसं सम्मूर्छितं स्थूलपात्रमापूर्य कांजिकैः ॥४५॥ द्वियामं स्वेदयेदेवं रसोत्था पनहेतवे ॥ एतत्स्याद्वलभीयंत्रं रसषाड्गुण्यकारणम् । सूक्ष्मकांतमये पात्रे रसः स्याद्गुणव त्तरः ॥४६॥ (र० र० स०)

अर्थ–लोहे के पात्र में दोनों ओर एक एक कड़ा लगवावे और जैसा नीचे का पात्र हो वैसा ही दूसरा छोटा पात्र जिसकी कोठी में सांकल लगी हुई हो, बनवावे, फिर बड़े पात्र पर छोटे पात्र को रखकर दृढ़ता से सांकल तथा कड़ों में बांध दे और छोटे पात्र में मूर्छित रस को रखकर नीचेवाले बृहत्पात्र को कांजी से भरकर रस से उत्थापन के लिये दो प्रहर निरंतर स्वेदन करे–यह रस के उत्तम गुण का देनेवाला बल भी यंत्र है, यह यंत्र कान्तलोह का हो तो श्रेष्ठ है।।४४–४६।।

पातनायंत्र

उपर्यापो ह्यधो वह्निर्मध्ये च रसपिष्टिका ।
क्रमादग्निर्विदध्यात्तत्पातनायंत्रमुच्यते ॥४७॥

(कामरत्न)

अर्थ–नीचे के पात्र में रस की पिष्टी पर ऊपर ऐसे पात्र से मुख बंद करे कि जिसमें पानी भरा हो और क्रमूपर्वक अग्नि ने उसको पातनायंत्र कहते हैं।।४७।।

ऊर्ध्वपातनयंत्र

मृन्मयी स्थालिका कार्या चोच्छ्रिता तु षडंगुला ।। मुखे सप्तांगुलायामा परितस्त्रिंशदंगुला ।।४८।। इयन्माना द्वितीया तु कर्तव्या स्थालिका शुभा । क्षारद्वयं रामठं च तथा हि पटु पंचकम् ।।४९।। अम्लवर्गेण संयुक्तं सूतकं चापि मर्दयेत् । लेपयेत्तेन कल्केन तलस्थास्थालिकातलम् ।।५०।। ऊर्ध्वस्थाली मुखे चास्या मुखं सम्यक् प्रवेशयेत् । भसितं लवणेनैव मुद्रां तत्र प्रकारयेत् ।।५१।। चुल्ल्यां स्थालीं निवेश्याथ धाम्याग्निं तत्र ज्वालयेत् । तस्योपरि जलं सिंचेच्चतुर्यामावधिं कुरु ।।५२।। स्वांगशीतलतां ज्ञात्वा ग्राहयेदूर्ध्वगं रसम् । ऊर्ध्वपातनयंत्रोऽयं साधकैः परिकीर्तितः ।।५३।। (र. प.)

अर्थ–मिट्टी की हांडी इस प्रकार बनवानी चाहिये कि जो छः अंगुल ऊंची हो। मुख की चौड़ाई सात अंगुल हो, तीस अंगुल जिसका घेरा हो और इसी प्रकार एक सुंदर दूसरी हांडी बनावे। फिर सज्जीखार, जवाखार, हींग तथा पांचो नोंन और पारद को अम्ल वर्ग से मर्दन करे। तदनंतर उस कल्क से नीचे की हाँडी के तले में लेप कर दे और ऊपर की हांडी के मुख में नीचे की हांडी के मुख को प्रवेश करे दे फिर दूध में पिसी राख और नोन से मुद्रा करे तदनंतर यंत्र को चूल्हे पर रख नीचे से आंच लगावे और ऊपर की हांडी पर पानी को सींचता रहे। इस प्रकार चार प्रहर अग्नि लगावे। जब अपने आप यंत्र शीतल हो जाये तब ऊपर लगे हुए रस को ग्रहण करे। बस इसी पारद सिद्ध करनेवालों ने उर्द्धपातन यंत्र कहा है।।४८–५३।।

अधःपातनयंत्र

**अधोर्ध्वभाजने लिप्तस्थापितस्य जले सुधीः ।
दीप्तैर्वनोपलैः कुर्यादधः पातं प्रयत्नतः ।।५४।।**

(र. र. स.)

अर्थ–ऊपर रक्खे हुए बासन के तले में रस की पिष्टिक लेपकर और नीचे के पात्र में जल भर दोनों के मुख को कपरौटी के बन्द कर दे तदनंतर विद्वान मनुष्य यत्पूर्वक जलते हुए अरने कंडो से रस को अधःपातन करे।।५४।।

अन्यच्च

पूर्वोक्ता स्थालिकां सम्यग् विपरीतां तु पङ्किले ।। गर्ते तु स्थापितां भूमौ ज्वालयेन्मूर्ध्नि पावकम् ।।५५।। यामत्रितयपर्यन्तमधः पतति पारदः । अधःपातनयंत्रोयं कीर्तितो रसवेदिना ।।५६।।

अर्थ–कीचड़ से भरे हुए गढे में एक हांडी को रख और दूसरी हांडी को (जिसके तले पर रस की पिष्टि लगायी गयी हो) उलटाकर नीचे की हांडी के मुख से मुद्रित करे और ऊपर से तीन प्रहर पर्यन्त आंच जलावे तो पारद का अधःपात (नीचे गिरना) होता है। बस इसी को रसवेत्ता अधःपातन यंत्र कहते हैं।।५५।।५६।।

अन्यच्च

ऊर्ध्वभांडतलं लिप्तं रसकल्केन धीमता । अधोभाण्डमुखे तस्य मुखं सम्यक् प्रवेशयेत् ।।५७।। कृत्वा डमरुवद्यत्रं संधिं लिप्त्वा च पूर्ववत् । निधाय पंकिले गर्ते यंत्र भूमिसमीकृतम् ।।५८।। दीप्तैर्वनोपलैः कुर्यादधः पातनकं बुधः ।।५९।। (र. प.)

अर्थ–पंडित ऊपरवाले बासन के तल को रसकल्क से लिप्त कर उसके मुख को पानी भरे हुए नीचे के बासन के मुख में घुसेड़ देवे और डमरूयंत्र के समान बनाकर दोनों की संधि को कपड़ा तथा मिट्टी से लेप करे तदनंतर खाली बासन की कीचड़वाल गढे में रख ऊपर से धरती को बराबर कर दे और ऊपर से तेज बन के कंडो की आंच देवे। इसको अधःपातनयंत्र कहते हैं।।५७–५९।।

तिर्यक्पातनयंत्र

घटे रसं विनिक्षिप्य सजलं घटमन्यकम् । तिर्यङ्मुखं द्वयोः कृत्वा तन्मुखं रोधयेत्सुधीः ।।६०।। रसाधो ज्वालयेदग्निं यावत्सूतो जलं विशेत् । तिर्यक्पातनमित्युक्तं सिद्धैर्नागार्जुनादिभिः ।।६१।।

(र. रा. सुं., र. सा. प.)

अर्थ–एक घड़े में रस को भरे तथा दूसरे घड़े में जल को भरे और उन दोनों के मुख को टेढ़ा कर कपरौटी से बंद कर देवे और जिस घड़े में पारद भरा था, उसके नीचे तब तक आंच जलावे कि जब तक पारा जल में प्रविष्ट न हो जाये। बस नागार्जुनादि सिद्धों ने इसी को तिर्य्यक्पातयत्र कहा हैं।।६०।।६१।।

अन्यच्च

क्षिपेद्रसं घटे दीर्घे नताधोनालसयुते । तन्नालं निक्षिपेदन्यघटकुक्ष्यन्तरे खलु ।।६२।। तत्र रुद्ध्वा मृदा सम्यग्वदने घटयोरधः । अधस्ताद्रसकुंभस्य ज्वालयेत्तीव्रपावकम् ।।६३।। इतरस्मिन्घटे तोयं प्रक्षिपेत्स्वादु शीतलम् ।। तिर्य्यक्पातनमेतद्धि वार्त्तिकैरभिधीयते ।।६४।।

(र० र० स०, र० रा० प०)

अर्थ–जिस घड़े की गर्दन लंबी हो, उस गर्दन के नीचे एक लम्बी नाल लगी हो, ऐसे घड़े में पारद को डालकर उस घड़े की नाल को दूसरे घड़े के पेट में छेदकर लगा देवे। तदनन्तर दोनों घड़ों के मुख तथा अन्य संधियों को कपरौटी से बन्दकर उस घड़े के नीचे आंच जलावे कि जिसमें पारद भरा हुआ हो और दूसरे घड़े में प्रथम से ही मीठा और ठंडा जल भरा हुआ हो। वार्तिककारों ने इस यंत्र को तिर्यक्पायनतंत्र कहा है।।६२–६४।।

अन्यच्च

पूर्वोक्तैरौषधैः सार्द्धं रसराजं विमर्दितम् । दत्त्वा तिर्यग्घटे तस्य मुखमन्यघटानने ।।६५।। क्षिप्त्वा तस्य तलच्छिद्रे नालिकां योजयेदनु ।। नालिकां जलपात्रस्थां कारयेच्च भिषग्वरः ।।६६।। अधस्ताद्रसयंत्रस्य तीव्राग्निं तत्र ज्वालयेत् । यामद्वितयपर्यतं तिर्यक्पातो भवेद्रसः ।।६७।।

(र. प.)

अर्थ–पहिले कही हुई औषधियों से मर्दन किये हुए पारद को तिरछे घट में रख उसके मुख को खाली घड़े के मुख पर रखे फिर उस घड़े के तले में छेदकर एक नाली लगावे तदनन्तर उस नाली के दूसरे मुख को जल से परिपूर्ण घट में प्रवेश करे और उस रसयंत्र (जिसमें पारा हो) के नीचे दो प्रहरपर्य्यंत आंच जलावे तो पारद का तिर्य्यकपातन होना है।।६५–६७।।

अन्यच्च

**और यह यत्र सुनिये वीर । सो समुझै जाकी मति धीर ।।
ऐसी ही करि डौरु धरै । हांडी फूंखि जो टोंटी करे ।।
लोहनारि गजभरि के लेई । लोहनारि में टोंटी देई ।
दूजो मुख जो नारिको करै । नीरभरी गागरि में धरै ।।
तुजक पताल है याको नाम । याते होय सूत को काम ।।**

(रससागर)

पालिकायंत्र

**चषकं वर्तुलं लौहं विनताग्रोर्ध्वदंडकम् ।
एतद्धि पालिकायंत्रं वलिजारणहेतवे ।।६८।।**

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–लोहे का गोल प्याला जिसके आगे से नमा हुआ ऊपर को उठा हुआ डंडा हो उसे पालिकायंत्र कहते हैं। यह गन्ध के जारण में काम आता है।।६८।।

इष्ट का यंत्र

मध्ये गर्तसमायुक्तामिष्टकां कारयेद्भिषक् । गर्ते चैव समास्थाय तस्यां सूतादिकं न्यसेत् ॥६९॥ दत्त्वोपरि शराबं च संधि मृल्लवणैर्लिपेत् । तदूर्ध्व सिकतां किंचिद्दद्यादेवं पुटं लघु ॥७०॥ इष्टका यंत्रमेतद्धि जारयेद्गंधकादिकम् ॥७१॥ (र. रा. सुं.)

अर्थ–वैद्य ऐसी ईंट बनावे जिसके बीच में एक गड्ढा हो उसमें पारद को रख ऊपर शकोरे से ढक संधि को राख और नोंन से लीप दे तदनंतर ईंट को गड्ढे में रख ऊपर से बालू रेत बिछा देवे फिर आरने कंडों का लघु पुट देना चाहिये। यह इष्टिकायंत्र गंधकादिका जागरण करता है॥६९–७१॥

अन्यच्च

विधाय वर्तुलं गर्तं मल्लमत्र निधाय च । विनिधायेष्टिकां तत्र मध्यगर्तवतीं शुभाम् ॥७२॥ गर्तस्य परितः कुर्यात्पालिकामङ्गुलोच्छ्रयाम् । गर्ते सूतं विनिक्षिप्य गर्तास्ये वसनं क्षिपेत्॥७३॥निक्षिपेद्गंधकं तत्र पात्रेणास्यं निरुध्य च । पात्रपालिकयोर्मध्ये मृदा सम्यङ् निरुध्य च ॥७४॥ वनोपलैः पुटं देयं कपोताख्यं न चाधिकम् । इष्टिकायंत्रमेतत्स्याद्गन्धकं तेन जारयेत् ॥७५॥

(र. र. स.)

अर्थ–एक गोल गड्ढा खोदकर उसमें मल्ल (मलडा मिट्टी का एक गोलपात्र) को गाड़ देवे। फिर उसमें ऐसी एक ईंट रक्खे कि जिसके बीच में एक गोल गड्ढा हो और उस गड्ढे के चारों तरफ एक एक अंगुल की ऊंची पाली (मेड) बांधे तदनंतर उस ईंट में किये हुए गड्ढे में पारद को रख फिर गड्ढे के मुख पर बंद कर राख और नोंन से संधि का लेपकर वर्ना कंडों से आंच देवे और वह आंच कपोत पुटकी हो उससे अधिक न हो क्योंकि अधिक अग्नि के लगने से पारद के क्षय की सम्भावना है। यह इष्टिकायंत्र है, इससे गंधक जारण करे॥७२–७५॥

कच्छपयंत्र

नदीपयसि शराबोदरकुहरनिविष्टलोहसम्पुटगः ।
हरजो निरंतरमयं चरति गगनगन्धादिकं च ॥७६॥

(र. प.)

अर्थ–मिट्टी का एक लंबा चौड़ा शकोरा बनवावे, उसके भीतर लोहे के संपुट को रक्खे तदनंतर उस संपुट में स्थापित किया हुआ पारद निरंतर अभ्रक और गंधक वगैरह को भक्षण करता है अर्थात् अभ्रक और गंधक जारण होता है॥७६॥

अन्यच्च

खर्परं पृथुकं सम्यग् विस्तृतं तस्य मध्यतः । आलवालं ततः कृत्वा तन्मध्ये पारदं क्षिपेत् ॥७७॥ ऊर्ध्वाधस्तु बिडं दत्त्वा मल्लेनारुध्य यत्नतः । ऊर्ध्वं देयं पुटं तस्य यन्त्रं कच्छपसंज्ञकम् । जारणार्थं रसस्योक्तं गन्धादीनां विशेषतः ॥७८॥ (टो. नं., र. रा. सुं.)

अर्थ–प्रथम चपटा मिट्टी का खपडा लेना चाहिये। तदनंतर खपड़े के बीच में विस्तृत थामला बनावे और उस थामले में पारद को रक्खे। पारद के ऊपर तथा नीचे बिड देकर शकोरा से ढाक दे और संधि लेपकर ऊपर से आंच जलावे। पारद में गंधक जारण के लिये ये कच्छपयंत्र कहा है॥७७॥७८॥

अन्यच्च

जलपूर्णं दृढं पात्रं सुविशालं समाहरेत् । तदन्तः खर्परं दद्यात्सुविस्तीर्णं नवं दृढम् ॥७९॥ बिडं दत्त्वा तदुपरि क्षिपेद्बीजभुजं रसम् । उपरिष्टाद्बिडं दत्त्वा ततो लोहकटोरिकाम् ॥८०॥ अयस्कान्तमयीं वापि पित्तलीभूतविग्रहाम् । उपरिष्टादधोवक्त्रां दत्त्वा सम्यग्विलेपयेत् ॥८१॥ खटी पटुं शिवां भक्तं सम्यङ्निष्पिष्य मुद्रयेत् ॥ उपरिष्टाद्वनोत्थानैरङ्गारैः खर्परं भवेत् ॥८२॥

(टो. नं., से. रा.)

अर्थ–जल से भरे हुए लंबे चौड़े एक दृढ पात्र को लेवे। उसके भीतर नवीन और विस्तृत एक खपड़े को रक्खे और उस पर बिड़ को देकर बीज के खानेवाले पारद को स्थापित करे फिर उस पारद पर बिड़ को रक्खे। तदनंतर लोहे की कटोरी अथवा कान्तलोह की बनी हुई कटोरी जो कि माँजते माँजते पीतल के समान हो गई हो उसको ऊपर से उलटा मुखकर रक्खे। तदनंतर संधि लेप करे या खडिया नोन हर्र और राख को अच्छी तरह पीसकर मुद्रा करे। ऊपर से जंगली कंडों की आंच से धोंके। इसको कच्छपयंत्र कहते हैं॥७९–८२॥

अन्यच्च

जलपूर्णपात्रमध्ये दत्त्वा घटखर्परं सुविस्तीर्णम् । तदुपरि बिडमध्यगतः स्थाप्यः सूतः कृतः कोष्टयाम् ॥८३॥ लघुलोहकटोरिकया कृतषण्मृत्सन्धिलेप याच्छाद्य । पूर्वोक्तघटखर्परमध्येऽङ्गारैः खदिरकोलभवैः ॥८४॥ स्वेदनतो मर्दनतः कच्छपयंत्रस्थितो रसो जरति । अग्निबलेनैव ततो गर्भे द्रवन्ति सर्वसत्त्वानि ॥८५॥ (र. र.स., र. रा. प.)

अर्थ–जल के भरे हुए पात्र से एक लंबा चौड़ा घड़े का खीपर रख उसके बीच मे छोटी सी कोठी बनावे और उस कोठी में प्रथम बिड फिर पारद को रखे फिर जिस पर छः वार कपरौटी की हुई हो, ऐसी हल्की लोहे की कटोरी से ढककर संधि लेप करे और ऊपर से खैर और बेर के अग्नि से स्वेदन करे तो कच्छपयंत्र में स्थित पारद जारित होता है और उस कच्छपयंत्र में अग्नि के बल से सम्पूर्ण सत्त्व द्रव होते हैं॥८३–८५॥

अन्यच्च

तुलाद्वयं जलाधारं मृत्तिकापात्रमाहरेत् । आगलं तं न्यसेद् भूमौ वारिणा पूरयेत्ततः ॥८६॥ तदास्यै खर्परं नूलं जले लग्नं न्यसेद् बुधः । सौधभूषणमादाय वारिणा पेषयेद्दृढम् ॥८७॥ तेन कुर्यात्तु तन्मध्ये भित्तिं च वलयाकृतिम् । रसगोलानुरूपां तां तन्मध्ये रसगोलकम् ॥८८॥ अष्टमांशबिडसंयुक्तं सग्रासं धारयेत्ततः । पृष्टोपदेहयुक्तेन तनुना लोहोद्भवेन च ॥८९॥ शरावाकृतिपात्रेच्छादयेद्रोधयेत्ततः । अङ्गारैः सन्धमेत्सूतो ग्रासं ग्रसति तत्क्षणात् ॥९०॥ हेमतारसमावर्तो यावत्कालेन जायते । तावत्कालेन सूतेन्द्रे ग्रासौ वै जीर्णतां व्रजेत् ॥९१॥ अनेन कच्छपयन्त्रेण जारणं स्याद्यदृच्छया ॥९२॥

(र.प.)

अर्थ–दस सेर जल जिसमें आवे, ऐसे मिट्टी के पात्र को उसके कंठ पर्य्यंत धरती में गाड जल से भर दे फिर उसके मुख पर नये खपरे को इस तरह रक्खे कि जिसका तल पानी से लगा रहे। तदनन्तर चूने को पानी से पीसकर महीन कर उस चूने से खीपर के बीच में कड़े के समान उतना बड़ा थामला बनावे जितना कि रस का गोला हो और उसमें आठवाँ हिस्सा बिडपारद तथा वह पदार्थ जिसका ग्रास दिया जाय, रक्खे और जिसकी पीठ पर मृत्तिका का लेप किया हुआ हो, ऐसी लोहे की बनी हुई पतली शकोरे की आवृत्तिवाली कटोरी से पारद को बंद कर मुद्रा करे फिर ऊपर कोयलों से धोंके तो पारद शीघ्र ही ग्रास को ग्रस लेता है। जितने समय में सुवर्ण और चांदी में ताव लगता है, उतने ही समय तक पारद में ग्रास जीर्ण होता है, इस कच्छप यंत्र से इच्छापूर्वक जारण होता है॥८६–९२॥

अन्यच्च

विस्तृतमुखामेकां हंडिकां जलेनापूर्य तन्मुखोपरि तज्जलमग्नपृष्टं कपालं संस्थाप्याथ तत्र कपालमध्ये पाषाणभस्मना जलपरिपेषितेन मेखलां चक्राकारा तेनैव परिलिप्त मध्यभागां कृत्वा तत्र सूताष्टमांशबिडस्यार्द्धं संस्थाप्य तदुपरि सूतस्य गोलं धृत्वा तदुपरि अष्टमांशबिडस्यावशिष्टार्धं

दत्त्वा तद्गोलोपरि लघुलोहमयीं सूक्ष्मां भृंद्वत्तलिप्तां कटोरिकां दत्त्वा तत्संधि जलपेषितभस्मना रुध्वा तदुपरि सहस्राभ्यां परिलिप्य तदुपरि दीप्तांगारैः कपालं संपूर्य यावत्स्वर्णं द्रवति तावत्कालं कपालेगाराणि स्थापयेत्पश्चादंगाराणि निःसारयेत् ततः शीतं विधाय सूतं तोलयेत् । यदि सूतमानं पूर्णं स्यात् तदा कांजिकेन प्रक्षालयेत् यद्यधिकं स्यात्तदा पुनर्विडं दत्त्वा पूर्ववज्जारयेत् एवमेवाऽभ्रकसत्त्वं द्विगुणादिकं जारयेत् अथवा वनोपलचूर्णैः सतुषैः कपालं संपूर्यात् पूर्वोक्तविधिना ।।(धं. सं.)

अर्थ–चौड़े मुख की एक हंडिया को जल से भर उसके मुख पर ऐसे खीपरा को रक्खे कि जिसकी पीठ हंडिया के पानी से लगी हुई तो तदनंतर उस खीपरा में जल से पिसे हुए चूने से गोल गोल मेखला बनवावे जिसका मध्यभाग उसी पिसे हुए चूने से लिपा हुआ हो, उसमें पारद का आठवाँ हिस्सा बड़ लेकर उसेक दो भाग कर, उसेमें से उस पारद के अष्टमांश का आधा भाग रख उस पर पारद का गोला स्थापित कर देवे फिर निम्बू का रस थोड़ा सा निचोड़ ऊपर से बचे हुए आधे बिड़का देकर जिसकी पीठ पर कपरौटी की हुई हो, ऐसी पतली लोहे की कटोरी को उन पारद के गोले पर लगाके उसकी संधि का जल से पिसे हुए राख और नोन से लेप करे और ऊपर से कोयलों की इतनी आंच लगाता रहे कि जितनी देर में स्वर्ण गलता हो। तदनंतर कोयलों को निकाल स्वांग शीतल होने से पारद को निकाल कर तोले, जब पारद तोल में ठीक बैठे (अर्थात् बीड, बीज तथा पारद इन तीनों की तोल में केवल पारद की ही तोल रहे) तब कांजी से धो डालना चाहिये। यदि पूर्वोक्त रीति के अनुसार अधिक पारद हो तो फिर बिड देकर जारण करे। इस प्रकार ही दूना तथा चौगुना अभ्रक सत्व जारण होता है।। अथवा कायलों की बजाय तुस मिले हुए अरने कंडों से चूर से खीपरा भर पूर्वोक्त रीति से अग्नि लगावे।

दीपिकायंत्र

कच्छपयंत्रातर्गतमृन्मयपीठस्थदीपिकासंस्थः ।
यस्मिन्निपतति सूतः प्रोक्तं तद्दीपिकायंत्रम् ।।९३।।

(र. र. स.)

अर्थ–कच्छपयंत्र के भीतर मिट्टी के पीढे ऊपर दिये में रखे हुए जिस पात्र में पारा गिरता है, उसको दीपिकायन्त्र कहते हैं।।९३।।

सोमानलयंत्र

ऊर्ध्वं वह्निरधश्चापो मध्ये तु रससंग्रहः ।
सोमानलमिदं प्रोक्तं जारयेद् गगनादिकम् ।।९४।।

(र. र. स.)

अर्थ–जिस यंत्र के ऊपर अग्नि तथा नीचे जल और बीच में पारद की सामग्री हो उसको सोमानल यंत्र कहा है। इस यंत्र में अभ्रकादि का जारण होता है।।९४।।

अन्यच्च

पुनि षट संपुट सात बखानि । यहै जुगति सबहीकी जानि ।।
करि लोह की कराही ऐसी । गगरी नीरुमाइ उहि जैसी ।।
चुंबक की जु लुहेंडी करै । बारबार भरि उलटिकैं धरै ।।
मुद्रा मैनकि कीजे गुनी । जैसी हो गुनिन पर सुनी ।।
यहै यंत्र सोमानल नाम । आवे सो पारे के काम ।।

(रससागर)

जलयंत्र

अधस्ताप उपर्यापो मध्ये तु रसगंधकौ । यदि स्यात्सुदृढा मुद्रा मंदभाग्योपि सिध्यति ।।९५।। यदि कार्यमपो यंत्रं तदान्तर्मूषयान्वितम् । पूर्ववज्जारणा तत्र गंधकादेरपि स्मृता ।।९६।। (बृ०यो०)

अर्थ–नीचे अग्नि ऊपर जल तथा बीच में रस और गंधक हो, बस इसी को जलयंत्र कहते हैं। अगर जलयंत्र की मुद्रा दृढ़ हो तो मंदभाग्य की भी सिद्धि होती है, जलयंत्र बनाना हो तो यंत्र के भीतर मूषा बनवावे, तदनन्तर पूर्ववत् गंधक आदि की जारणा होती है।।९५।।९६।।

अन्यच्च

अथ सर्वप्रयोगयोग्यतया रसेन्द्रमारणाय शांभवीमुद्रामभिदध्मः–
अधस्ताप उपर्यापो मध्ये गंधकपारदौ ।।९७।। यदि स्यात्सुदृढा मुद्रा मंदभाग्योपि सिध्यति । यदि कार्यमयो यंत्रं तदा तन्मृत्स्नया लिपेत् ।।९८।। (रसेन्द्रचिं र. सा. प., र. रा. स.)

अर्थ–अब समस्त प्रयोगों के योग्य होने के कारण पारद मारण के लिये शांभवी मुद्रा को कहते हैं।

पारद और गंधक को सपुट के बीच में रखकर ऊपर जल तथा नीचे से अग्नि को रक्खे तो उसको जलयन्त्र कहते हैं, यदि इस यन्त्र की मुद्रा दृढ हो तो मन्दभाग्य की भी सिद्धि हो जाती है। यदि लोहे का यंत्र बनाया जाय तो मिट्टी का लेप करना चाहिये।।९७।।९८।।

अन्यच्च

अधस्तापो जलं तूर्ध्वं मध्ये तु रसगंधकौ ।
मेणमुद्राप्रयोगेण सद्यः कांचनमुत्तमम् ।।९९।। (नि. र.)

अर्थ–नीचे आंच, ऊपर जल और बीच में पारद, गंधक तथा मोम की मुद्रा हो तो शीघ्र ही सोना होता है, अर्थात् पारद भस्म होता है।।९९।।

अन्यच्च

उपर्यपस्तले तापो मध्ये च रसगन्धकौ । जलयन्त्रमिदं गोप्यं यन्त्रं श्रेष्ठं समीरितम् ।।१००।। अस्मिन्स्वर्णादिभूसत्त्वं गंधकादि च जारयेत् । कृत्वा लोहमयीं पात्रीमधोमुखसमन्वितम् ।।१०१।। मुखमध्ये क्षिपेद्द्रव्यं पात्रवक्रं निरोधयेत् । लोहचक्रिकया रुद्ध्वा तत्संधिं साधु लेपयेत् ।।१०२।। तस्मिन्कोष्ठे क्षिपेदस्रे छागं लोहरजोन्वितम् । पुनः पुनश्च संशुष्के पुनरेभिश्च लेपयेत् ।।१०३।। लेहवत्कृतबब्बूलक्वाचूर्णसमन्वितम् परिमर्दितम् ।जीर्णेष्टक सूक्ष्मगुडचूर्णसमन्वितम् ।।१०४।। लेपयेत्खलु तत्प्रोक्तं दुर्भेद्यं सलिलैः खलु । खटिकं लोहकिट्टैश्च महिषोदुग्धमर्दितैः ।।१०५।। एतया मृत्स्नया रुध्वा न गन्तु क्षमते रसः ।। विदग्धवनिताप्रेम्णा बद्धः प्रौढः पुमानिव ।।१०६।। ततो जलं विनिक्षिप्य वह्निं प्रज्वालयेदधः । अथवा कारयेन्मूषापात्रलग्नामधोमुखीम् ।।१०७।। लोहानामनुरूपाश्च तन्मूषामुखरोधिनीम् । दत्त्वा चान्या तयोः संधिं विलेप्याजासृगादिभिः ।।१०८।। जलमूर्ध्वं विनिक्षिप्य निःसंदेहं विपाचयेत् । जलयंत्रं तु बहुभिर्दिनैरेव हि जायते ।।१०९।।

(र. रा. सुं.)

अर्थ–यन्त्र के बीच में पारद और गंधक को रखकर ऊपर जल भर नीचे से आंच लगावे। यह जलयंत्र सम्पूर्ण यंत्रो में श्रेष्ठ होने के कारण गुप्त रखने के योग्य है। इसी यंत्र में स्वर्णादिभूसत्त्व तथा गंधकादिक को जारण करे। इस यंत्र के निर्माण करने की यह रीति है प्रथम लोहे का एक ऐसा पात्र बनाऐ जिसका मुख नीचे को हो और उसके मुख में जारणयोग्य पदार्थ का साथ पारद को भर देवे फिर लोहे की टिकिया से यंत्र के मुख को बन्द कर दोनों की संधि को युक्तिपूर्वक लेपन करे। तदनंतर लोहे के चूरे को बकरे के खून से घोटकर उस यंत्र पर लेप करे। जब वह लेप शुष्क हो जाये तब उस पर फिर भी लेप करें। इस प्रकार सात बार लेप करें। इसके पश्चात ऐसा बबूल का (पत्ता, फल छाल) क्वाथ करे कि वह क्वाथ लेही के समान हो जाय। उस क्वाथ से पुरानी ईट का चूरा गुड़ और चूने को घोटकर उस यत्र पर लेप करे तो वह मुद्रा जल में बिगड़ती नहीं है। अगर खरिया मिट्टी लोह की कीट को भैंस के दूध से मर्दन कर लेप करे तो पारद चतुरा स्त्री के प्रेम से बँधे हुए जवान मनुष्य की तरह बाहर नहीं जा सकता है। फिर जल भर के नीचे से आंच जलावे अथवा एक ऐसी मूषा बनावे कि जिसका तल यंत्र के

तल से मिला हो। लोहे के पात्र से मूषा के मुख को बांध कर दोनों में पूर्वोक्त लेपों से लेप करे और ऊपर से जल डालकर नीचे से निःशंक होकर आंच जलाकर पचावे। यह जलयंत्र बहुत दिनों से सिद्ध होता है॥१००–१०९॥

नाभियंत्र

मल्लमध्ये चरेद्गर्तं तत्र सूतं सगंधकम् । गर्तस्य परितः कुड्यं प्रकुर्यादंगुलोच्छ्रितम् ॥११०॥ ततश्चाऽऽच्छादयेत्सम्यग्गोस्तनाकारमूषया ॥ सम्यक् तोयमृदा रुद्ध्वा सम्यग्यंत्रोच्यमानया ॥१११॥ लेहवत्कृतब्बूलक्वाथे न परिमर्दितम् । जीर्णेष्टिका रजः सूक्ष्मं गुडचूर्णसमन्वितम् ॥११२॥ इयं हि जलमृत्प्रोक्ता दुर्भेद्या सलिलैः खलु । खटिकापट्किट्टैश्च महिषीदुग्धमर्दितैः ॥११३॥ वह्निमृत्स्ना भवेद्घोरवह्नितापसहा खलु । एतया मृत्स्नया रुद्धो न गंतु क्षमते रसः ॥११४॥ विदग्धवनिताप्रेम्णा रुद्धः प्रौढ़ः पुमानिव । नंदी नार्गार्जुनश्चैव ब्रह्मज्योतिर्मुनीश्वरः ॥११५॥ वेत्ति श्रीसोमदेवश्च नापरः पृथिवीतले । ततो जलं विनिक्षिप्य वह्निं प्रज्वालयेदधः ॥११६॥ नाभियंत्रमिदं प्रोक्तं नंदिना सर्ववेदिना । अनेन जीर्यते सूतो निर्धूमः शुद्धगंधकः ॥११७॥ (र० र० स०, र० रा० प०)

अर्थ–एक मलेरे में गड्ढा बनावे और उसमें पारे तथा गंधक को रखे। गड्ढे के चारों तरफ एक अंगुल ऊंची पाली बांधे, फिर ऐसी मूषा से मुख बंद करे कि जिसका आकार गाय के स्तन के समान हो, जो जल यंत्रों की संधि लेप करने में योग्य हो, ऐसी मिट्टी से लेप करे। वह मिट्टी इस प्रकार बनाई जाती है; प्रथम लेही के समान गाढे लिये हुए क्वाथ से पुरानी ईट का महीन चूरा और चूने के पीसने से तैयार होती है। यह जलमुद्रा पानी में टूटती नहीं है अथवा खरिया मिट्टी, नोंन तथा लोह कीट को भैंस के दूध से मर्दन करे तो यह मिट्टी दृढ हो जाती है और इस मिट्टी से रुका हुआ पारा चतुर स्त्री के प्रेम से रुके हुए नौजवान की तरह बारह नहीं जा सकता। इस यंत्र को नंदी, नागार्जुन, ब्रह्मज्योति मुनीश्वर तथा श्रीसोमदेव ही जानते हैं और नहीं। तदनंतर जल को ऊपर से डालकर नीचे से आंच जलावे। इसको नंदी नाम के मुनीश्वर ने नाभियंत्र कहा है। इससे गंधक निर्धूम जारण होता है॥११०–११७॥

इक मुखिया यंत्र (जलयंत्र भेद)

करै लोह के तरै छेवाई । मांझ गाढ को नीपै कोई ॥
तर ऊपर द्वै ऐसे ताई । ढिग ढिग लोह एक ह्वै जाई ॥
आस पास ताऊपर जरै । ऐसी जुगति कराही करै ॥
मांझ छेद ता करें विचारी । सुजिना के उनमान जु डारी ॥
वस्त मेलि त· पच्ची करै ॥ तामें कील लोह की धरै ॥
तब सुकराही चूल्हे धरै । अग्नि प्रजारे नीरसों भरै ॥
ज्यों ज्यों नीरजु सोखतु जाई । त्यों त्यों वामें और कराई ॥
इकमुखिया जंत्र है येहु । पुनि संपुट चारि गन सेहु ॥

(रससागर)

अर्थ–लोहे के दो तवे बनावे, जो गहरे हों उन दोनों को मिला किनारों को ताव देकर चिपका दे। फिर आस पास तवे जड कढाही बना. ऊपर लिखे अनुसार काम में लावे ॥

ककूरमयंत्र (एक प्रकार का जलयंत्र जान पड़ता है)

कूपा पहिले कहै बखानि । तैसे करै कराही वानि ॥
बड़ो छेद ता करै बनाई । जैसे ता में लेखनि माई ॥
बारह आंगुल कपियनुभनै । अस प्रमाण या यंत्रहि गनै ॥
बार बार कूपधा हरेई । टोंटी ह्वैके औषध देई ॥
बहुरि कराही जलसों भरै । ज्योंज्यों निघटै त्योंत्यों करै ॥
या जंत्री है कक्रूरम नाम । बहु आगि पानी सों काम ॥

(रससागर)

चौमुखिया यंत्र (जलयंत्रभेद)

ऐसे ही वे जारिये चारी । करै कराही माहिं विचारी ॥
पत्रानिकी करि चारि बनाई । जैसे नीरजु बहुत समाई ॥
पुनि तीनि संपुट बाबर भरै । पहली सी विधि मुद्रा करै ॥
संख्या ता किरियामें कही । तैसी आगि दीजिये सही ॥
याको चौमुख भाषें गुनी । संपुट पांच पांच मुख भनी ॥

(रससागर)

जारणायंत्र

रसोनकवलां भद्रे यत्नतो वस्त्रगालिताम् ॥ दापयेत्प्रचुरं यत्नादाप्लाव्य रसगन्धकौ ॥११८॥ स्थालिकायां पिधायोर्ध्वं स्थालीमन्यां दृढां कुरु ॥ संधिं विलेपयेद्यत्नात्मृदा वस्त्रेण चैव हि ॥११९॥ स्थाल्यंतरे कपोताख्यं पुटं कर्षाग्निना सदा ॥ यंत्रस्याधः करीषाग्निं दद्यात्तीव्राग्निमेव वा ॥१२०॥ एवं तु त्रिदिनं कुर्यात्ततो यंत्रं विमोचयेत् ॥ तप्तोदके तप्तचुल्ल्यां न कुर्याच्छीतलक्रियाम् ॥१२१॥ न तत्र क्षीयते सूतो नच गच्छति कुत्रचित् ॥ अनेन च क्रमेणैव कुर्याद्गंधकजारणाम् ॥१२२॥

(र० र० स०)

अर्थ–कपडे के छने हुए लहसुन के रस से गंधक और पारद को खूब तर करके एक हंड़िया में रक्खे और उसके ऊपर एक हांडी को स्थापित कर दोनों के मुख की संधि को कपड़ा और मिट्टी से लेपकर हंड़िया के ऊपर कर्सी की अग्नि अथवा कंडों की तेज आंच देवे। इस प्रकार तीन बार करे तब यंत्र में पारद का क्षय नहीं होता और न कहीं जाता है। इस क्रम से गंधक जारण करे॥११८–१२२॥

तुलायंत्र

वृताकाकारमूषे द्वे तयोः कुर्यादधः खलु । प्रादेशमात्रां नलिकां मृदा लिप्तां सुगंधिकाम् ॥१२३॥ तत्रैकस्यां क्षिपेत्सूतमन्यस्यां गंधचूर्णकम् ॥ निरुध्य मूषयोर्वक्त्रं वालुकायंत्रके क्षिपेत् ॥१२४॥ गंधाधो ज्वालयेदग्निं तुलायंत्रमुदाहृतम् ॥ तालगंधाश्मताराणां जारणार्थमुदाहृतम् ॥१२५॥

(टो. नं., र. र. स.)

अर्थ–लंबे और गोल बैंगन के आकार की दो मूषा बनावे और उन दोनों मूषाओं के नीचे प्रादेशमात्र (एक बालिश्त) लंबी नली लगावे और नली को मिट्टी से चिकनी करे। तदनंतर एक मूषा में पारद और दूसरी में गंधक को स्थापित करे और दोनों के मुख को बांधकर वालुकायंत्र में रक्खे। फिर गंधक के नीचे अग्नि को जलावे। बस इसी को तुलायंत्र कहते हैं। इस यंत्र से हरताल गंधक और चांदी का जारण होता है॥१२३–१२५॥

विचार–कहीं तार की जगह सार का पाठ है सो ठीक नहीं क्योंकि तार बीज जारण के लिये ग्रहण है और सार का जारण कहीं नहीं है॥

अन्यच्च

लोहमूषाद्वयं कृत्वा द्वादशांगुलमानतः । ईषच्छिद्रान्वितामेकां तत्र गन्धकसंयुताम् ॥१२६॥ मूषायां रसयुक्तायामन्यस्यां तां प्रवेशयेत् । तोयं स्यात्सूतकस्याधः ऊर्ध्वाधो वह्निदीपनम् ॥१२७॥ (र. र. स.)

अर्थ–बारह अंगुल की दो लोहे की मूषा बनावे। उनमें से एक में छोटा सा छेदकर गंधक भरे और दूसरी मूषा के भीतर पारा रख देवे। फिर संधिलेप करे जिसके भीतर गंधक रक्खा था, उसके नीचे आंच लगावे तथा पारदवाली मूषा के नीचे जल रक्खे (जो इसे तुलायंत्र समझना ठीक है, ऐसी इस ग्रंथकर्ता की सम्मति है)॥१२६॥१२७॥

अन्यच्च

मूषा नालान्विता ऊर्ध्ववक्त्रा स्याद्द्वादशांगुला । वृत्तां लोहमयीं कुर्याद्घनया

सदृशीं पराम् ॥१२८॥ एकस्यां निक्षिपेत्सूतमन्यस्यां गन्धकं समम् ॥ सूतमूषामुखमध्ये गन्धमूषामुखं क्षिपेत् ॥१२९॥ लिप्त्वा मृल्लवणैः सन्धि गन्धकाधः पुटं ततः । रसस्याधो जलं स्थाप्य रसो गन्धं पिबेत्पलम् ॥१३०॥ जीर्णे गन्धे पुनर्गंधं सूततुल्यं प्रदापयेत् । इत्येवं षोडशगुणं गन्धं जार्यं पुनः पुनः ॥१३१॥ जारितः सूतराजोऽयं बालनामुखितो भवेत् ॥१३२॥

(र० प०)

अर्थ–नलीदार ऊंचे मुखवाली एक मूषा बनावे जिसका विस्तार बारह अंगुल हो और ऐसी ही एक दूसरी मूषा बनावे फिर एक में गंधक और दूसरी में पारद भर दे। यह पारद तथा गंधक समान भाग हो और दोनों के मुख को मिलाकर मुद्रा करे। फिर गंधक के नीचे आंच जलावे तथा पारद के नीचे जल रक्खे तो पारद गंधक को पी जाता है। जब गंधक को पारा पी जाय तब फिर भी उतना गंधक डालकर जारण करे। इस प्रकार छःगुना गंधक जारण करे। इस रीति से पारद बुभुक्षित होता है॥१२८–१३२॥

कूपिकायंत्रम्

निरवधिनिपीडितमृदंबरारिलिप्तामतिकठिनकाचघटीमग्रे वक्ष्यमाण-प्रकारान्तररसगर्भिणीमधस्तर्जन्यंगुलितच्छिद्रायामनुरूपस्थालि कामारोप्य परितस्तां द्वित्र्यंगुलिद्वयांशेन लवणे निरन्तरालीकरणपुरस्सरं सिकताभिरापूर्य वर्धमानकमारोपणीयं क्रमतस्त्रिंचतुष्पञ्चवासराणि ज्वलनज्वालया पाचनीयमेक्यंत्रम् ॥१३३॥

(र० प०)

अर्थ–प्रथम कपड़ा तथा मिट्टी को निरतंर (लगातार) कूट कूटकर कठिन अतिशी शीशी में लेप करे फिर उसमें आगे कही हुई विधि के अनुसार आदि पदार्थों को भरकर उस शीशी को तर्जनी (अंगूठे के पास की अंगुली) की बराबर पेंदे में छेद की हुई ऐसी हँड़ियां में स्थापित करे जो कि अनुमान से शीशी रखने योग्य हो। तदनन्तर शीशी के आस पास दो दो तीन तीन अंगुल नोंन भर फिर बालूरेत भर देवे और उस हँड़िया को भट्टी पर चढ़ा क्रम से तीन चार तथा पांच दिन तक अग्नि की ज्वाला से परिपाक करे। यह एक प्रकार का कूपिका यंत्र हुआ॥१३३॥

अन्यच्च

काचताम्रयुता कूपी दृढा रम्याकृतिस्तथा । प्रलिप्य तूलमृत्स्नाभ्यां लेप्या शोष्या पुनः पुनः ॥१३४॥ इत्थं तु संस्कृता कूपी तत्र सूतं प्रवेशयेत् । तन्मुखं मुद्रितं कृत्वा यन्त्रे सिकतामिधे पचेत् ॥१३५॥ अथवा पाटवे यन्त्रे यन्त्रे वाप्युभयात्मके । कूपियन्त्रंसमुद्दिष्टं तदशोकगुणावहम् ॥१३६॥

(र.प.)

अर्थ–कांच तथा तांबे को मिलाकर सुन्दर आकृति (शकल) की शीशी बनावे और उस शीशी को कुटी हुई रुई और मिट्टी से लिपकर सुखावे, इस प्रकार कई बार लेप करे फिर उस कांच की शीशी में पारद को रखे और उस पर मुद्रा (ईंट को घिस २ कर ऐसा डाट बनावे जो कि शीशे के मुख में ठीक आती हो, उसको वज्रमृत्तिका से लेप दे) करे बालुकायंत्र में पकावे अथवा लवण यंत्र में तथा दोनों में से किसी यंत्र में पकावे तो उसको प्रीतिरूप गुण के दाता कूपिका यंत्र कहते है॥१३४–१३६॥

कवचीयन्त्र

नातिह्रस्वां काचकूपीं न चातिमहतीं दृढाम् । वाससा कर्दमाक्तेन परिवृत्य समंततः ॥१३७॥ संलिप्य मृदुमृत्स्नाभिः शोषयेद्भानुरश्मिना । निधाय भेषजं तत्र मुखमाच्छादयेत्ततः ॥१३८॥ कठिन्या वृढया वापि पचेद्यंत्रे त्रिधानतः । कवचीयन्त्रमेतद्धि रसादिपचने मतम् ॥१३९॥

(र. रा.सुं.)

अर्थ–दृढ़ कांच की शीशी जो कि न बहुत छोटी और न बहुत बड़ी हो, उसको कपरौटी से चारो ओर लपेटकर और कोमल चिनकी मिट्टी से लीपकर सूर्य की किरणों से सुखावे तदनन्तर उस शीशी में औषध रखकर मुखपर खरिया से दृढ मुद्रा करे फिर विधिपूर्वक परिपाक करे तो इसको रसादिकों के पचाने के लिये कवचीयंत्र कहते हैं॥१३७–१३९॥

कवचीयंत्र यानी शीशी उतारने के मुतल्लिक

(उर्दू)

शीशे या जर्फ जिसमें दवायें अकसीरी है, उसको अव्वल खुला रखना चाहिये ताकि जुमलः रतूवत उसकी खुश्क हो जावे बल्कि मुनासिब है कि अव्वल उसका मुँह रुई से बंद कर दे जब तक बुखार का असर रुई पर पहुँचता रहे उस वक्त तक उसका मुँह खुला रहने दे जब रतूवत शीशी के अन्दर से निकल जावे, उसमें मुहर सुलेमानी या दूसरा मजवूत मुद्रा लगावे ताकि अदविया बाहम् चक्कर मुनक्किद हो जावे रतूवत जब जर्फ से निकल जाती है तो जर्फ कम शकिस्त होता है और अकसीर तैय्यार हो जाती है॥ (अकलीमियाँ सफा २१)

बालुकायन्त्र

भांडे वितस्तिगंभीरे मध्ये निहितकूपिके । कूपिकाकण्ठपर्यन्तं बालुकाभिश्च पूरितम् ॥१४०॥ भेषजं कूपिकासंस्थं वह्नितो यत्र पच्यते । बालुकायन्त्रमेतद्धि यंत्रतंत्रबुधैः स्मृतम् ॥१४१॥

(र.रा.म., र.रा.सुं.)

अर्थ–एक बालिश्त गहरे बासने के बीच में शीशी को रखकर इतना रेत भरे कि शीशी का गला रेत में डूब जाये और दवाई को शीशी में भर देवे फिर अग्नि से पकावे तो इसको यंत्र मंत्र के जानने वाले पंडितों ने बालुका यंत्र कहा है॥१४०॥१४१॥

अन्यच्च

माटी की हांड़ी बडी, पक्की एक मंगाय ।
पैसा भरिये पेंदे विषै, तामें छेद कराय ॥
शीशी लीजे आतिशी, कपरौटि करि सान ।
ताको धूप सुखाय के, औषध भरे सुजान ।
फिर शीशी हांडी विषे, नीके धरे जमाय ।
तब वा हांडी में भरै, बालूरेत जमाय ।
शीशी की गर्दन रहे, बारुते निकसाय ।
शीशी को पेंदो सबै, बारू में दबि जाय ॥
शीशी मुख मूंदै किते, किते न मूंदे जाय ।
यहै लेख अनुसार है, जानि लेहु सब कोय ।
कह्यो ता ताको कीजिये, हांड़ी पेंदे छेद ॥
बिना कहे नहिं कीजिये, यहै मुनिन को भेद ॥
ऐसी विधिते कीजिये, जन्त्रबालुका नाम ।
नीचे आंच लगाइये, कर लीजै बहु काम ॥

(वैद्यादर्श)

लवणयन्त्र

(बालुकायन्त्र क्रिया)

एवं लवणनिक्षेपात्प्रोक्तं लवणयन्त्रकम् । अन्तः कृतरसालेपात्ताम्रपात्रमुखस्य च ॥१४२॥ लिप्त्वा मृल्लवणेनैव संधिभांडतलस्य च । तद्भांडं पटुनापूर्य क्षारैर्वा पूर्ववत्पचेत् । एवं लक्षणयन्त्रञ्च रसकर्मणि शस्यते ॥१४३॥

(र० र० स०)

अर्थ–जिस प्रकार वालुका यन्त्र में रेत भरी जाता है, उसी प्रकार नोंन के भरे से लवणयंत्र कहलाता है, अथवा तांबे का पात्र में पारद का लेपकर मुख पर बासन की पेंदी तथा तांबे के पात्र के मुख को मिट्टी नोंन से लीप और उस बासन को नोंन अथवा क्षारों से पूर्वक समान भर पकावे, इस प्रकार सिद्ध किया हुआ लवण यंत्र रसकर्म में श्रेष्ठ होता है।।१४२।।१४३।।

खारिकावालुकायंत्र

सुनो गुनोअब दूजो भेद । नाँदमांह जो कीजे छेद ।।
ता में शीशो सूधी धरै । पुनि यह शीशी साम्हर भरै ।।
कहै खारिका यासों लोई । बारू भरै वालुका होई ।।

(रससागर)

चूल्हौ करौ भलोविधि बानि । तापर नाँदी धरौ सुजानि ।।
सो भरजै साम्हर बटवाई । जैसे नोन सेर दश माई ।।
नोनुगाडिक बली धरै । गाडे कंठ लोन मुँह परै ।।
औषध जैसे पचवन कहै । वलीयंत्र में ये गुन लहै ।।

(रससागर)

कवचीयंत्र (एक प्रकार का लवणयंत्र)

सरवा औषध धरै बनाई । सरवा हांडी में होंधाई ।।
होई साम्हरि धरै बटाई । पारी मुद्रा करै बनाई ।।
कवचीयंत्र याको है नाम । सुनो सयाने लोग सकाम ।।

(रससागर)

नलिकायंत्र

लोहनालगतं सूतं भांडे लवणपूरिते ।
निरुद्धं विपचेत्प्राग्वन्नलिकायन्त्रमीरितम् ।।१४४।।

(र.र.स., र. रा.प.)

अर्थ–लोहे की नाली में पारद को भरकर मुखपर दृढ़ मुद्रा करे, तदनन्तर नाली को नोंन से भरी हुई हांडी में रख अग्नि से परिपक्व करे, इसको नलिकायंत्र कहते है।।१४४।।

पुटयंत्र

शरावसम्पुटांतस्थं करीषेष्वग्निमानवित् ।
पचेच्चुल्यां द्वियामं वा रसं तत्पुटयन्त्रकम् ।।१४५।।
(र.र.स.)

अग्नि के प्रमाण को जाननेवाला वैद्य पारद को दो शकोरों में भरकर कंडों की आंच में अथवा चूल्हे पर चढ़ाकर पकावे तो इसको पुटयंत्र कहते है।।१४५।।

भूधरयंत्र

वालुकागूढसर्वांगां गर्ते मूषां रसान्विताम् ।
दीप्तोपलैः संवृणयाद्यंत्रं तद्भूधराह्वयम् ।।१४६।।

(र. सा. सं., र. रा. म.)

अर्थ–मिट्टी की मूषा में पारद भरकर गड्ढे में रख ऊपर से वालूरेत भर देवे और रेत के ऊपर आरने कंडों की आंच देवे बस इसको भूधरयंत्र कहते हैं।।१४६।।

अन्यच्च

गाडी औंडौ करै गज आधु । उतनो चकरौ कीजै साधु ।।
अंगुल आठ मेलिजे रेतु । यहै जानि भूधर को हेतु ।
अंडा कुकरी खाली करै । कपरौटी कै तामे धरै ।।
टारि रेत को घरिया मांझ । जैसे गर्भ दुरावै बांझ ।।
ऊपर बारू अंगुरु द्वै । ऐसे मूंदे उत्तम ह्वै ।।
पांचसेर आरने मँगाई । अल्प आगि ता देइ बनाई ।।
यह मरजाद ग्रंथ में कही । भूधर नाम यंत्र को सही ।।

(रससागर)

वलीयंत्र

यह कवि हाथमगाड करेई । मानो दूरथूनी को देई ।।
बह रेत भरजे निकुताई । तले महाऔषधि धरवाई ।।
ऊपर आग आरने भनी॰। जैसे रीति आंगी तर तानी ।।
यहै जंत्र जु परै वली नाम । विन देखे यह होय न काम ।।

(रससागर)

गर्भयंत्र

गर्भयंत्रं प्रवक्ष्यामि पिष्टिकाभस्मकारकम् ।। चतुरंगुलदीर्घां तु अंगुलोन्मित-विस्तराम् ।।१४७।। मृन्मयीं सुदृढां मूषां वर्तुलं कारयेन्मुखम् । लवणस्य विंशतिर्भागा भाग एकस्तु गुग्गुलोः ।।१४८।। सुश्लक्ष्णं पेषयित्वा तु तोयं दत्त्वा पुनः पुनः । मूषालेपं दृढं कृत्वा लवणाद्यं मृदादिभिः ।।१४९।। कर्वे तुषाग्निना भूमौ स्वेदयेन्मृदुमानवित् । अहोरात्रं त्रिरात्रं वा रसेन्द्रो भस्मतां व्रजेत् ।।१५०।। (र० रा० सु०, र० र० स०, र० रा० प०)

अर्थ–अब मैं पारद की पिष्टी के भस्म करनेवाले यंत्र को वर्णन करता हूँ। चार अंगुल लंबी और तीन अंगुल चौड़ी मिट्टी की दृढ़ (मजबूत) मूषा (घरिया) बनावे, उसका मुख गोल बनाना चाहिये। फिर बीसभाग नोंन और एक भाग गुगल इन दोनों को जल दे देकर महीन पीस बार बार उस मूषा पर लेप करे। उस मूषा में पारद एक तोले रखा जाय फिर धरती में गड्ढा खोदकर उसमें मूषा को रख अग्नि के प्रमाण का जाता वैद्य आठ प्रहर वा तीन दिन तक मंद मंद तुपाग्नि देवे तो पारद भस्म हो जाता है। इसको गर्भयंत्र कहते है।।१४७–१५०।।

ग्रस्तयंत्र

मूषा मूषोदराविष्टामाद्यन्तसमवर्तुलाम् । चिपिटा च तले प्रोक्ता ग्रस्तयंत्रं मनीषिभिः । सूतेन्द्ररंधनार्थं हि रसविद्भिरुदीरितम् ।।१५१।।

(र.र.स.)

अर्थ–एक मूषा को दूसरी मूषा में रखकर चारों तरफ से बराबर गोल बनावे और पेंदें में चपटी बनावे। बस इस यंत्र को रसवेत्ता महर्षियों ने रससिद्धि के लिये ग्रस्तयंत्र कहा है।।१५१।।

चक्रयंत्र

गर्तवाह्ये भवेद्रक्तो मध्ये गर्ते रसं कुरु ।।
चक्रयंत्रमिदं सिद्धं बाह्ये गर्ते बृहत्पुटम् ।।१५२।।

(र.रा.सुं.)

अर्थ–प्रथम एक छोटा सा खड्ढा खोदे, फिर उसी गड्ढे के आसपास खाई के आकार का दूसरा गड्ढा खोदे तदनन्तर बीच के गड्ढे में पारद भरे और उस खाई वाले गड्ढे में अग्नि जलावे, इसको चक्रयंत्र कहते है।।१५२।।

गजकूपयंत्र

और यंत्र औंडो गज दोय । ऊपर भीतर गज भरि होय ।।
पुनि चाकरौं चारि गज करै । इतनोही ऊपर तर धरै ।।
माटी भांति जु करै विचारि । मांझ आनौरी दीजै नारि ।।

आसपास लेडी परिजारि । सावधान ह्वै गर्व विलारि ।।
गर्वयंत्र की औषधि धरै । बहुरि फेरि सब लेडी करै ।
गुनी आगि तब देइ बनाई । राख सानिकै दौ चकुराई ।।
छवा छेद निकास कवि कहै । आगि सिसीवह जीवति रहै ।।
याकौ नाम कहै गजकूप । यहै जुगति करि सकै जु भूप ।।

(रससागर)

चौकीयंत्र

एक ईंट काची करवाई । तापर औंधा धरे बनाई ।।
ता औंधा के टूटे छेद । माइछि गुरु या यहई भेद ।।
वहै ईंट कोने में धरै । तामें वस्त पाचनी करै ।।
ठेंठी मुंहदे मुद्रा करै । फोरि ऊपरा तापर धरै ।।
करसी सेरु एक तब लेह । ऐसी विधिके आगि करेह ।।
चौकीयंत्र कहै सब कोई । यामें पारो उत्तम होई ।।

(रससागर)

वडवानल यंत्र

चूल्हेकी ढिग कोठी धरै । वा कोठी किवलिनसों भरै ।।
सबर एक गज तांको करै । पवन वाहि कूप मुख धरै ।।
उतनिये पोली कीजै सोई । नवनि मांहि ताके मुख होई ।।
तिनही सो धरि कोठी मांझ । कोठी धवैं कला इतलांझ ।।
तरहर आगि कराही जरै । आसपास जल कूपा भरै ।।
पारौ कूपा माह करेई । नयनि माह ह्वै औषधि देई ।
वडवानल नाम यंत्र को कहै । गुरुप्रसाद विन कोई न लहै ।।

(रससागर)

नाग यंत्र

तवला एक नाग को लेई । वस्त मेलि तामें रस देई ।।
अल्प आगि ता देइ सुजानि । नागयंत्र यह कहौं वखानि ।।

(रससागर)

कनकसुन्दरी यंत्र

एक मूसि लागी आकार । ऊंची आंगुर पांच विचार ।।
तामें कनक कटोरी धरै । मुद्रा करि कपरौटी करै ।।
आगि कुकर पुट देइ बनाई । क्रिया सुगति करै गोराई ।।
कनकसुन्दरी यंत्रहि नाम । याते होय रसायन काम ।।

(रससागर)

मदन यंत्र

वस्तु पकावै चाहै जिती । लोह कराही मेलै तिती ।।
रसु दैकेही औटे ताहि । एक यंत्र पुनि ऐसो आहि ।।
मदनयंत्र यह कहौ सुजान । रीझौं जाहि भूपपति मान ।।

(रससागर)

हंसपाकयंत्र

खर्परं सिकतापूर्णं कृत्वा तस्योपरि न्यसेत् ।। अपरं खर्परं तत्र शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ।।१५३।। पंचक्षारैस्तथा मूत्रैर्लवणं च बिडं ततः ।। हंसपाकं समाख्यातं यंत्रं तद्वार्त्तिकोत्तमैः ।।१५४।।

(र.रा.सुं., र.र. स., र.रा.प.)

अर्थ–वालू रेत से भरा हुआ खिपरा लेना चाहिये और उस पर दूसरा खिपरा रख दोनों की संधि को दृढ़ लेपर कर दे, उसमें पारद को पंच क्षार नोंन तथा विड के योग से पकावे इसको वार्तिककारों ने हंसपाक यंत्र कहा है।।१५३।।१५४।।

विगर्भीनाम यंत्र (एक प्रकार का वाटरवाथ)

शीशी एक उघारी लेई । गाठी के हाठी में देई ।।
घटी एक जु गागरि तनै । शीशी में द्वै हांडी बनै ।।
हांडी भरि जल कवियनु कहै । शीशी नारि उघारी रहै ।।
बराबरु करि जल तार सुकरेई । जैसो सोखे तैसो देई ।।
यही विगर्भी यंत्र गनेई । यासौं अपनो काज करेई ।।

(रससागर)

नारी यंत्र

लूधी एक कराही चढै । तामें नीरु आगिसौं कढै ।।
धातु नारियर बराबर भरै । सो ले बा पानी में धरै ।।
सात धातु में कौन्नों होई । काढि जु नारियर कीजै लोई ।।
नारी नाम यंत्र यह कहों । जैसे गुरुप्रसादते लहौं ।।

(रससागर)

चूना यंत्र

संपुट एक लोह को करै । औषधि भरि चूनामें धरै ।।
ऊपरते तु छिरकिये नीर । तामें आगी दे बलवीर ।।
एक जुगति यह कही बखानि । चूनायन्त्र नाम यह जानि ।।

(रससागर)

चौरसागर यंत्र (चोवा देने का यंत्र)

एक लुहेंडा औषधि करै । बूंद बूंद रस ता में परै ।।
ज्यों ज्यों सोखै त्यों त्यों देई । चौरसागर नाम भनेई ।।

(रससागर)

धूपयन्त्र (स्वर्णजारणोपयोगी)

विधायाष्टांगुलं पात्रं लौहमष्टांगुलोच्छ्रयम् । कंठाधो द्वचंगुले देशे गलाधारे हि तत्र च ।।१५५। तिर्यग्लोहशलाकाश्च तन्वीं तिर्यग्विनिक्षिपेत् । तनूति स्वर्णपत्राणि तासामुपरि विन्यसेत् ।।१५६।। पत्राधो निक्षिपेद्धूमं वक्ष्यमाणमिहैव हि । तत्पात्रं न्युब्जपात्रेण च्छादयेदपरेण हि ।। १५७।। मृदा विलिप्य संधिं च बह्निं प्रज्वालेयदधः । तेन पत्राणि कृष्णानि हतान्युक्तविधानतः ।।१५८।। रसाश्चरंति वेगेन द्रुतं गर्भे द्रवंति च । गन्धालकशिलानां हि कज्जल्या वा मृताहिना ।।१५९।। धूपनं स्वर्णपात्राणां प्रथमं परिकीर्तितम् । तारार्थं तारपत्राणि मृतवंगेन धूपयेत् ।।१६०।। धूपयेच्च यथायोग्यैरन्यैरूपरसैरपि । धूपयन्त्रमिदं प्रोक्तं जारणाद्रव्यसाधने ।।१६१।। (र.र.स.)

अर्थ–आठ अंगुल लंबा चौड़ा तथा ऊंचा लोहे का पात्र बनावे, उस पात्र के कंठ के दो अंगुल नीचे पतली पतली लोहे की सलाइयों को तिरछी रखे और उन पर सोने के पत्रों के नीचे आगे कुछ कहे हुए धूयें का लगावें उसको एक उलटे पत्र से ऐसा ढांके कि धूआं बाहर न जाय फिर मिट्टी से मुख की मुद्रा कर नीचे से आंच जलावे, इस क्रिया से मृत और कृष्णवर्ण वाले स्वर्ण के पत्रों को पारद विधिपूर्वक शीघ्र रचता है और वह स्वर्ण गर्भ में द्रव होता है, अर्थात् शीघ्र ही गर्भद्रुति होती है। प्रथम गंधक, हरिताल और मैनसिलकी कज्जली से अथवा मृतनाग से स्वर्ण पत्रों को धूपन करना चाहिये, चांदी के लिये चांदी के पत्रों को मृत वंग से धूआं देवे और भी योग्य उपरसों से धूपन करे। जारण द्रव्य (जिसको जारण किया जाय) को सिद्ध करनेवाले इस यंत्र को धूपयंत्र कहते है।।१५५–१६१।।

कोष्ठी का लक्षण

सत्त्वानां पातनार्थाय पातितानां विशुद्धये । कोष्ठिका विविधाकारास्तासां लक्षणमुच्यते ।।१६२।।
(र० र० स०)

अर्थ–सत्त्व पातन के लिये या पातन किये सत्त्वों की शुद्धि के लिये नाना प्रकार के कोष्ठिका यंत्र बनाने चाहिये, सो मैं उसके लक्षणों को कहता हूं।।१६२।।

अंगारकोष्ठी लक्षण

राजहस्तसमुत्सेधा तदर्धायामविस्तरा । चतुरस्रा च कुडचेन वेष्टिता मृन्मयेन च ।।१६३।। एकभित्तौ चरेद्द्वारं वितस्त्या भोग संयुतम् । द्वारं सार्धवितस्त्या च संमितं सुदृढं शुभम् ।।१६४।। (र० र० स०)

अर्थ–एक राजहस्त (राजहस्त) ऊंची और आधे हाथ लंबी चौकोन भीत बनावे और उसको चिकनी मिट्टी से लीपे फिर एक भीत में एक बालिश्त या डेढ़ बालिश्त दृढ़ दरवाजा बनावे इसको अंगारकोष्ठी कहते हैं।।१६३।।१६४।।

कोष्ठिकायंत्र

षोडशांगुलविस्तीर्णं हस्तमात्रायतं समम् । धातुसत्त्वनिपातार्थं कोष्ठिका परिकीर्तितम् वंशखादिरमाधूकबदरीदारुसंभवैः ।।१६५।। परिपूर्णं दृढांगारैरधो वातेन कोष्ठके । मात्रया ज्वालमार्गेण ज्वालयेच्च हुताशनम् ।।१६६।।
(र० रा० सुं०, र० र० स०)

अर्थ–धातुओं के सत्त्व पातन के लिये जो कोष्ठिका यंत्र बनाया जाता है, वह विस्तार से सोलह अंगुल तथा चौड़ाई में एक हाथ होना चाहिये, उसमें खैर, महुआ तथा बेर की लकड़ी के कोयलों से कोठी को भरकर नीचें से धोंकनी के मार्ग से धोंकता जाय तो इसको कोष्ठिका यंत्र कहते हैं।।१५।।१६।।

अंगारकोष्ठी लक्षण

देहल्यधो विधातव्यं धमनाय यथोचितम् । प्रादेशप्रमिता भित्तिरुत्तरङ्गस्य चोर्ध्वतः ।।१६७।। द्वारं चोपरि कर्तव्यं प्रादेशप्रमितं खलु । ततश्चेष्टकयाऽऽरुध्य द्वारसंधिं विलिप्य च ।।१६८।। शिखित्रैस्तां समापूर्य धमेद्भस्त्राद्वयेन च । शिखित्रान्धमनद्रव्यमूर्ध्वद्वारेण निक्षिपेत् ।।१६९।। सत्त्वपातनगोलांश्च पञ्च पञ्च पुनः पुनः । भवेदङ्गारकोष्ठीयं खराणां सत्त्वपातनी ।।१७०।। (र० र० स०)

अर्थ–एक हाथ लंबी ऊंची कोठी बनानी चाहिये देहली के नीचें धोंकने के लिये मार्ग बनाना चाहिये उसी कोष्ठीयंत्र को उत्तर की ओर नीचे की धरती से एक बालिश्त ऊंचा तथा उतना ही लंबा चौडा दरवाजा बनावे और ऊपर से कूएँ के समान एक गड्ढा बनावे जिसका छिद्र उत्तर की ओर भीत के बीच में किये हुए दरवाजे से मिला हो और इस गड्ढे के नीचे मिट्टी की बनाई हुई एक जाली लगावे फिर उत्तर की तरफ के द्वार को ईंट लगाकर मुद्रा करे तदनन्तर कोयलों से कोठी को भर दे, धोंकनीं से धोंके, जब कोयले तथा सत्त्व निकालने योग्य पदार्थों को डालना हो तो ऊपर के द्वार से डाले जिसका सत्त्वपातन करना हो उसके पांच गोले बार बार डाले तो अंगारकोठी कठिन पदार्थों के भी सत्त्व को पातन करनेवाली है।।१६७–१७०।।

पाताल कोष्ठिका

दृढभूमौ चरेद्गर्तं वितस्त्या संमित शुभम् । वर्तुलं चाथ तन्मध्ये गर्तमन्यं प्रकल्पयेत् ।।१७१।। चतुरंगुलविस्तारं निम्नत्वेन समन्वितम् । गर्ताद्धरणिपर्यन्तं तिर्यङ्नालसमन्वितम् ।।१७२।। किंचित् समुन्नतं बाह्यगर्ताभिमुखनिम्नगम् । मृच्चक्रकीं पञ्चरन्ध्राढ्यां गर्भगर्तोदरे क्षिपेत् ।।१७३।। आपूर्य कोकिलैः कोष्ठीं प्रधमेदेकभस्त्रया । पातालकोष्ठिका ह्येषा मृदूनां सत्त्वपातनी ।।१७४।। (र० र० स०)

अर्थ–कड़ी पृथिवी पर एक बालिश्त भर सुन्दर गोल गड्ढा बनावे और उसी गड्ढे में छोटा एक दूसरा और गड्ढा बनावे, जो कि विस्तार तथा निचाई में चार चार अंगुल हो और उस नीचे के गड्ढे पर पांच मुखवाली मिट्टी की चक्रिका (चकई) बनाकर रखे और बाहर से एक ऐसा नलिका बनानी चाहिये जो कि धरती से लेकर ऊपर के गड्ढे में पहुँच जाय और उस नलिका का मुख नीचे का होय, फिर कोठी में कोयलों को भर एक धोंकनी से धोंके, यह कोष्ठी कोमल पदार्थों के सत्त्व को पातन करनेवाली है, इसको पातालकोष्ठी कहते हैं।।१७१–१७४।।

वंकनालगारकोष्ठी

ध्मानसाध्यपदार्थानां नंदिना परिकीर्तिता । द्वादशांगुलनिम्ना या प्रादेशप्रमिता तथा ।।१७५।। चतुरंगुलतश्चोर्ध्वं बलयेन समन्विता । भूरिच्छिद्रवतीं चक्रीं बलयोपरि निक्षिपेत् ।।१७६।। शिखित्रांस्तत्र निक्षिप्य प्रधमेद्वङ्कनालतः । मूषामृद्भिर्विधातव्यमरत्निप्रमितं दृढम् ।।१७७।। अधोमुखं तु तद्वक्त्रे नालं पञ्चाङ्गुलं खलु । बङ्कनालमिदं प्रोक्तं दृढं ध्मानाय कीर्तितम् । गारकोष्ठीयट माख्याता मृष्टलोहविनाशिनी ।।१७८।।

(र० र० स०)

अर्थ–जो कोष्ठी कही है, उसको हम लिखते हैं। बारह अंगुल नीचे कोठी बनावे, उस कोठी की पृथिवी से चार अंगुल ऊंचे एक कडा लगावे और उस कडे पर अनेक छेदवाली चक्रिका स्थापित करे तदनन्तर ऊपर से कोयलों को रख वंकनाल से धोंके अरत्नि (अर्थात् कौनी से लेकर कन्नी अँगुलिया तक) लंबी मिट्टी की मूषा बनावे, जिसका मुख नीचा हो, उसके मुख में पांच अंगुल का नाल हो दृढ धोंकने के लिये इसका वंकनाल कहते हैं। यह शुद्ध धातुओं के सत्व को पातन करनेवाले गारकोठी कही जाती है।।१७५–१७८।।

झझरी यंत्र (सत्त्वपातनोपयोगी)

लाझन कैसी पिंडी करै । सत्त्व काढिकै औषध धरै ।।
सतु काढै इहि भाँति बनाई । आगिलखलाइतसौं जु धँवाई ।।
एक मूसि माटी की करै । दूजी मूसि मांझ ता धरै ।।
तामें नान्हे नान्हें छेद । करै गुनी जो जाने भेद ।।
जो सतपातन चाहे कियो । औषधि सो जु मूसि में दियो ।।
धवेंखलाइतकिवलिनभरै । सतु चुचाइ तरहरिको परै ।।
यहै यन्त्र जु झझरी नाम । आवै सत काढन के काम ।।
औषध पाचन यन्त्र अपार । कछु कछु कहे जु सैदपहार ।।

(रससागर)

बोतः मुरबूत की तरकीब (उर्दू)
(सत्त्वपातन यन्त्र)

बोतः मरबूत–बोत की तह में चन्दहन सूराख करके दूसरे बोतः या कुलिया पर इस्तरह रखे कि सूराख बोतः वाला की कुल्हिया के मुँह के अन्दर हो और उसमें जिन अजसाद को इस्तजाल करना मंजूर हो रख करके धोंकनी से धोंके और कोयला चारों तरफ ढांक दे हरारत खूब असर करे। दोनों बातों को गिले हिकमत देना चाहिये जसद मजकूर महलूल होकर बोतः जेरीन में चला जायेगा बोतः मजबूत होना चाहिये क्योंकि तेज आग की जरूरत होती है। सुफहा ५६ किताब अलजवाहर ।

मृदुद्रव्यविशोधिनी कोष्ठी का लक्षण

कोष्ठी सिद्धरसादीनां विधानाय विधीयते ।।१७९।। द्वादशांगुलकोत्सेधा सा

१–यन्त्रमितिशेषः ।

बुध्ने चतुरंगुला । तिर्यक् प्रधमना स्याच्च मृदुद्रव्यविशोधनी ॥१८०॥
(र० र० स०)

अर्थ–बारह अंगुल नीची और उसके नीचे का गड्ढा चार अंगुल गहरा हो तथा धोंकनी का मुख नीचा हो तो यह मृदुद्रव्यशोधिनी नाम की कोष्ठी सिद्धरसों के बनाने के लिये कही है॥१७९॥१८०॥

सारंग यंत्र (द्रुतउपयोगी)

और यन्त्र औंडो जग पांच । द्वै जानिये चाकरौ सांच ॥
महायन्त्र सो भरिये लादि । आली लेइ तुरत की गादि ॥
यहै यन्त्र गजसारंग मानि । और यन्त्र अब कहों बखानि ॥
(रससागर)

चाहतअजीन (उर्दू)
(द्रुतिउपयोगी यन्त्र)

चाहतअजीन की तस्वीर एक गोल गड्ढा ज्यादा से ज्यादा दो हाथ चौडा और तीन हाथ गहरा खोद कर चूने से गच कर दे जिसमें दूसरी शै दवा में न मिल जावे बादहू दवा को किसी वर्तन में रखकर ऊपर से तख्त गड्ढे के दौर की बराबर हो ओंधा बंद करके ऊपर से घोडे और गन्ध की लीद चोटीदार भर कर बराबर दाब दे और हर हफ्ते ख्वाह पन्द्रहवें रोज लीद तबदील कर दिया करे और रोजाना चंदवार पेशाव और सर्दपानी ख्वाह गर्म पानी उस पर गिरा दिया करे और ऊपर से कोई नाँद वगैरह ढांक दे चाहतअजीन में दवा गर्मी और तरीकी मदद से परवर्दः की जाती है जिस तरह मुर्गी अंडे को सेवती है, बेहतर यह है कि चाह् मजकूर में दवा रखने के केवल चाह मजकूर को लीद से भर दे, ताकि जगह गर्म हो जावे और दो चाह ताजीन बाहम मुत्तलिस बनावे तो और अच्छा है क्योंकि लीद के बदलने के रोज जर्फ निकाला जावे यह सर्द न होने पावे और दवा के जर्फ को अगर जस्त के जालीदार कठहरे के अन्दर रख दे तो और बेहतर है, क्योंकि लीद वगैरह महफूज रहेगा, सिर्फ हरारत पहुँचती रहेगी।
सुफहा अकलीमियाँ ॥८९॥

आलातहलील (उर्दू)

आलातहलील–इसकी बहुतसी सूरते हैं लेकिन सबसे आसान और जल्द हल करनेवाला तरीक हमाम आलेया का है जिसको हमाम मारयः भी कहते हैं उसकी तसबीर यह है, कि मटकी या देग संगी में बैल या भैंस का ताजा गोबर भर दे और दवा का शीशा उसमें गाड़ दे इस तरह से कि कहीं से शीशे का मुँह खुला न रहे और शीशे मे मुहर लगा दे जिसमें रतूबत गोबर की उसमें असर न करने पावे और मटके मजकूर के नीचे नरम आग खुश्क लीद की जलावे और रोजाना दो तीन बार गरम पानी गोवर मजकूर मे गिरावें जिसमें सूखने न पावे तीस रोज या कम व जियादह दिन में दवा महलूल हो जाती है अगर कुल दवा महलूल न हुई हो तो जिस कदर महलूल हुई हो उसको शीशे से निकाल ले, माव की फिर हल करने के वास्ते दफन कर दे ताकि तमाम दवा हल हो जावे । सुफहा अकलीमियाँ ॥८७॥

गर्तवारियंत्र (द्रुतउपयोगी)

गज चाकरौ गज औंडो करे । नीचटु होय नीर नहिं झरै॥
वह गाडो वाख्सों भरै । गगरी एक माह जल परै ॥
जो चाहो हलकाठो कियो । सो सीसी भरि तामें दियो ॥
सीसी के मुख दीजे मेन । रेतु गाडियो लखै न केन ॥
यहै जंत्र कहि जे गजवारि । यामें हल्ल होइ सब मारि ॥
(रससागर)

गजकुंभ यन्त्र

गाढौ एक पौन गज करे । तामें कुंभ गाडिके धरे ॥
ऊपर गाड़ि पाउ गज रहे । छाबिलेइते कवियनु कहै ॥
ओंठ बाहिरे कविता भनै । जा मुख ऊपर औंधी बनै ॥
और नाद तब घर में धरै । जामें डेढ़ कलश जल परै ॥
देइ नाद में लेंडी इत्ती । वा पानी में बूडे जित्ती ॥
भीजी रहन देइ दिन एक । छानि लेइ जल यहै विवेक ॥
वह रस वा गागरि में करै। तापर औंधा मुधो धरै ॥
ऊपर लेंडी राखे एत्ती । बाह ओंधा में अमेहैं जेत्ती ॥
वापर आगि रहे दिनमान । फिर फिर लेंडी देइ सुजान ॥
जब सोखे गागरिको नीर । तब करि नाद बेइ बलबीर ॥
यह राजकुंभ यंत्रको नांउ । याको चहिजे उत्तम ठांउ ॥
(रससागर)

आलातअकीद (यानी अजजाइ महलूलको फिर मुञ्जमिद करने की तरकीब) (उर्दू)

दबाई महलूल को शीशी में रखकर उसको गिले हिकमत कर दे और मुहे चूना व सफेदी बैजः मुर्ग से मजबूत बंद कर दे और शीशी के अन्दाज पर जमीन में गड्ढा खोदकर शीशी मजकूर उसमें रखकर मिट्टी डाल दे और थोड़ा सा पानी उस मिट्टी पर छिड़क दे और उसको दवा दे इस तरह कि बोतल मजकूर टूट न जावे बादहू थोड़ा सा खुश्क गोबर या लीद उस पर रखकर आग जलावें जब सर्द हो जावे निकाल ले। (सुफहा अकलीमियाँ ॥९०॥९१॥

कोठी यंत्र (एक प्रकार का तनूर है)

गजपुट जेती कहे बखानि । पै रूमी सम और न जानि ॥
काठ एक जु द्वै गज करै । तरछी में धरती में धरै ॥
तामे डुंडु खैर को घालि । पाछे आगि देइ प्रज्वालि ॥
जब बरिकै वे होहि अंगार । क्वैला काढि बाहिरे डार ॥
तीन डीम माटी के करै । आले ता कोठी में धरै ॥
गोली तीन कोठी सी करै । ता कोठी पर औषध धरै ॥
पुनि पहिना दीजे सरकाई । सँधि पहिना की मूंदि बनाई ॥
पहिले काठ जु धरे अंगार । ते दीजै पहिनासों टार ॥
कोठीयंत्र या यंत्र को नाम । तहां करे जहाँ होइ न घाम ॥
(रससागर)

लूमीयंत्र (एक प्रकार का तनूर)

गाढो गजभरि करे सवाँरि । तासो कहैं विहर की नारि ॥
गाढे के मुंह पिहना देई । माटी सांधि मूँदि सब लेई ॥
पहिनामांह थाहरो करो । तापर एक सकोरा धरो ॥
ढिग ढिग छेद करे ता तीनि । असिवर कैसी मुदरी कीनि ॥
पुनि वह कोठी लीजे पाटि । संधि मूंदि नीकीकै डाटि ॥
नारि सामुहो उत्तम करै । पहिना ऊपर कोठी तरै ॥
जिमि मुख मांझ सकोरा माई । पहिना ऊपर धरै बनाई ॥
जो कछु वस्तु चाहिजे करी । घालि सकोरी भीतर धरी ॥
लूमीयंत्र कहे संसारु । गुरुमुख विनु कोइ लहे न पारु ॥
(रससागर)

पाताल यंत्र

हस्तप्रमाणं निम्नं च गर्त कृत्वा प्रयत्नतः । तस्मिन्भांडं च संस्थाप्य तथान्यं पात्रमाहेत् ॥१८१॥ तस्मिन्नौषधवर्गं च दत्त्वान्यं च शरावकम् । मुखे संस्थाप्य च्छिद्राणि कृत्वा चैव शरावके ॥१८२॥ शरावसहितं पात्रं गर्तस्थे

भाजने न्यसेत् । संधिलेपं ततः कृत्वा गर्तमापूर्य मृत्स्नया ॥१८३॥ पश्चादग्निं च प्रज्वाल्य स्वांगशीतं समुद्धरेत् । पश्चात्तत्पात्रमध्यस्थं पात्रं युक्त्या समाहरेत् ॥१८४॥ तदधस्थं च तत्तैलं गृह्णीयाद्विधिपूर्वकम् । पातालाख्यमिदं यंत्रं भाषितं शंभुना स्वयम् ॥१८५॥

(रसराज सुन्दर)

अर्थ–एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उसमें बड़ें मुखवाला पात्र रखे तथा और दूसरे बासन में औषधियों को भरकर ऐसा शकोरा रखे कि जिसके मुख में छेद हो, फिर गड्ढे में स्थापित किये हुए पात्र में उस औषधिपूर्ण पात्र का मुख उलटा कर संधिलेप कर देवें, तदनन्तर मिट्टी से गड्ढे को भरकर ऊपर से आंच जलावे तो अग्निद्वारा तेल अथवा अर्क खिंचकर नीचे के पात्र में रह जाता है। युक्ति से बाहर निकाल ले, बस इसको पातालयंत्र कहते है, इस यंत्र को श्रीमहादेवजी ने कहा है॥१८१–१८५॥

अन्यच्च

और जंत्र गजे औंडो होइ । डेढु चाकरौ जानों लोई ॥
तामें दर कीजे निकुताय । एके गजभरि औंडों आय ॥
तामें बासन धरे बनाय । जैसे धूम न वामें जाय ॥
ताके मुख में सूधो देइ । औंधा टूटे छेद करेइ ॥
तापे धरे बाँस की नारि । तरहर संधि मूदिये सम्हारि ॥
पुनि दारु भरि राखसों सानि । तरुवादर की समसरि जानि ॥
नरु वाके मुख औंधो देइ । टूटो नरुवा वाम करेइ ॥
औंधा के टूँटे में छेद । यहै जानिये याको भेद ॥
औंधा पर धरि कुम्हे बनाइ । बाखरु भरिके छेदु कराइ ॥
तापर धरै आरने टारि । इहै जुगतिकै देइ प्रजारि ॥
पातालयंत्र यहि जानो लोई । याकी जुगति ऐसी विधि होई ॥
और जंत्र हों केहों तैसे । गुरुप्रसादते देखे जैसे ।

(रससागर)

चाकी यन्त्र (पाताल यंत्र भेद)

गाडु एक चाकीको लेइ । पाड खोदिके दूर करेइ ॥
बहुरि नाग की सीसी करै । वस्तु मेलि मुख झंझरी धरै ॥
सीसी उलटी रोपे तहां । कीलको छेदु बन्यो है जहां ॥
ऊपर देइ आरने फोरि । चाकी जंत्र देहु जिनि खोरि ॥
चोवा आदि तेल जे रहै । सब काढनको यह विधि कहै ॥

(रससागर)

ढेकी यन्त्र

भांडकंठादधश्छिद्रे वेणुनालं विनिक्षिपेत् । कास्यंपात्रद्वयं कृत्वा संपुटं जलगर्भितम् ॥१८६॥ नलिकास्ये ततो योज्या दृढ़ तच्चापि कारयेत् । युक्तद्रव्यैर्विनिक्षिप्तः पूर्वं तत्र घटे रसः ॥१८७॥ अग्निना तापितो नालात्तोये तस्मिन्पतत्यधः । यावदुष्णं भवेत्सर्वं भाजनं तावदेव हि । जायते रससन्धानं ढेकीयन्त्रमितीरितम् ॥१८८॥ (र०र०स०, र०रा०प०)

अर्थ–जिस औषधि का रस खींचना हो उसको तथा जल को एक पात्र में रखकर और उस पात्र के गले में छेदकर उसमें बांस की नली लगावे तथा कांसे का संपुट बनाकर उसमें नली के दूसरे हिस्से को लगावे और उस संपुट को जल के भीतर रखे तथा औषधिवाले बासन के नीचे अग्नि जलावे जो वह रस भाफ बनकर उस नाली के द्वारा कांसी के पात्र में आ जाता है। रस आ जाने की यह परीक्षा है कि जब बासन उष्ण हो जाय तब समझ जाना चाहिये कि अर्क निकल आया है, बस इसीको ढेकीयन्त्र कहते हैं॥१८६–१८८॥

नाडिका यन्त्र (मिट्टी का भबका)

विनिधाय घटे द्रव्यं कनीयांसमधोमुखम् । घटमन्यं मुखे तस्य स्थापयित्वा द्वयोर्मुखम् ॥१८९॥ मृदुमृद्भिः समालिप्य नाडिकां विनिवेशयेत् । यंत्रात्कुंडलितां भित्वा जलद्रोणीं महत्तमाम् ॥१९०॥ आधारभांडपर्यतं ततश्चुल्लचां विधारयेत् । अधस्ताज्ज्वालयेद्वह्निं यावद्वाष्पो विशेदधः ॥१९१॥ गृह्णीयादाधारगतं निर्मलं रसमुत्तमम् । नाडिकायंत्रमेतद्धि मुनिभिः परिकीर्तितम् ॥१९२॥

(र.रा.सु०)

अर्थ–एक घडे में औषधि भरे और उसके मुख पर एक छोटा सा दूसरा घड़ा उलटा रखे, दोनों के मुख को मिट्टी से लस दे, फिर उस यंत्र में से एक गोल नल देकर जल के पात्र में से निकाल दूसरे आधारपात्र में डाले अर्थात् जिसमें अर्क लेना हो उसमें लगा देवें फिर पूर्वोक्त यंत्र को चूल्हे पर चढ़ा रख नीचे से अग्नि जलावे तो अग्नि के ऊपरवाले घडे में जो द्रव्य भरा है, वह भाफरूप होकर नाली द्वारा जल के पात्र में शीत तथा संग्रह होकर नीचे के पात्र में आकर गिरता है जब तक भाफ निकले तब तक नीचे अग्नि जलाता जाय और उस पात्र में इकट्ठे हुए उत्तम निर्मल रस को ग्रहण करे, बस मुनीश्वरों ने इसको नाडिकायंत्र कहा है॥१८९–१९२॥

ऊर्ध्वनालिका यन्त्र (भबका)

भांडकण्ठादधश्छिद्रे वेणुनालं विनिक्षिपेत् । समानं करकां वापि भांडवक्त्रे निवेशयेत् ॥१९३॥ संधिं लिप्त्वा च नालाग्रे काचभांडं निधापयेत् ॥१९४॥ अधस्तात्प्रज्वलेद्वाष्पं टंकयंत्रमिति स्मृतम् ॥१९५॥ (र० रा० सुं०)

अर्थ–एक घड़ा लेकर उसके कंठ के नीचे छेदकर नाली का मुख लगावे और ऊपर घड़े के मुख के आकार का शकोरा घड़े के मुख को बंदकर मुलतानी से संधि को लेस देवे और उस नाली के दूसरे मुख को शीशी के मुख में लगाकर उस शीशी को पानी में रख देवे, फिर इस यंत्र को भट्टी पर चढाय अग्नि लगावे तो भट्टी पर चढे हुए घडे में जो औषधि भरी हुई है, उसका अर्क खिंचकर दूसरे पानी में रखे हुए कांच के पात्र में संचित हो जाता है। उसको ग्रहण करे बस इसीको टंकयंत्र भी कहते हैं॥१९३–१९५॥

तेजो यन्त्र (भबका)

भांडे चार्द्धप्रमाणेन द्रव्यं स्थाप्यं प्रयत्नतः । तन्मुखं द्विनलीयन्त्रं संस्थाप्यं च निरोधयेत् ॥१९६॥ पश्चान्मंदानलं दत्त्वा जलं दत्त्वार्ध्वपात्रके । तत्तप्तनलिकाद्वारा निःसार्य च पुनः पुनः ॥१९७॥ नीचस्थनलिकावक्त्रे भांडं स्थाप्यं द्वितीयकम् । तस्मिन्नर्कश्च सन्धायागृह्णीयात्तु विशेषतः ॥१९८॥ तेजोयंत्रमिति ख्यातं तथान्यैर्लवकं मतम् ॥१९९॥ (र.रा.सुं.)

अर्थ–एक बासन लेकर उसमें आधा अर्क खींचने योग्य पदार्थों को भरे और उसके मुखपर दो नली का यंत्र रखकर कपरौटी करे, पीछे मंदाग्नि देकर ऊपर के पात्र में जल भरे और तपे हुए जल को नाली द्वारा निकाल देवे और दूसरा ताजा पानी भरे फिर नीचे का नली के नीचे एक दूसरा पात्र रखे उसमें खास कर जो अर्क आता है, उसको ग्रहण करे, इसे तेजोयंत्र और कोई कोई लवकयंत्र भी कहते हैं॥१९६–१९९॥

करंबीकयन्त्र

इक शीशी तो गडही करै । तापर शीशी ओंधी धरै ॥
ऊपर काठि कोडरी होय । तासों टोंटी लागे लोय ॥
शंखद्राव तिहि टोंटी बहै । कलविसहू सो कवियनु कहै ॥

(रससागर)

वारुणी यन्त्र (शराब का भबका)

ऊर्ध्वतोयसमायुक्तं जलद्रोणीविवर्जितम् । तोयसंवेष्टिताधारमृजुनाडीसमन्वितम् । यन्त्रं तद्वारुणीसंज्ञं सुरासाधनकर्मणि ॥२००॥ (रसराज सु०)

अर्थ–यंत्र के ऊपर जल हो और उसके पास जल की कोठी नहीं हो, जिसकी नली पानी से भीगी हुई हो तथा जिसकी नाली सूधी या लंबी हो, उसको सुरा (शराब) बनाने के लिये वारुणीयंत्र कहते हैं॥२००॥

अन्यच्च

बीजद्रव्यं घटे दत्त्वा संछाद्यान्येन तन्मुखम् । मृदा मुखं विलिप्याथ नाडी वंशादिसंभवाम् ॥२०१॥ यन्त्रादाधारगां कृत्वा स्रावयेद्विधिना रसम् । वारुणीयन्त्रमेतद्धि सुरासंसाधने सुखम् ॥२०२॥ (र.रा.सुं.)

अर्थ–यह भी एक प्रकार का सामान्य वारुणीयंत्र है, घडे में बीज द्रव्य (लाहन) को डालकर ऊपर से घड़े के मुख को किसी शकोरे से बंदकर कपरौटी करे, तथा बाँस की सूधी नली को लगाकर दूसरे बासन (जिसमें दारू खींचना हो) में नली को लगा दे और उस पात्र के चारों तरफ जल भर देवे तो अर्क खिंच आवेगा इसको वारुणी यन्त्र कहते हैं॥२०१॥२०२॥

बक यन्त्र (शीशे का भबका)

दीर्घकण्ठकाचकुप्यां गिलयेत्काचभाण्डकम् । तिर्यक्कृत्वापचेच्चुल्ल्यां बकयन्त्र-मिदं स्मृतम् ॥२०३॥ (र.रा.सुं.)

अर्थ–लम्बी गर्दनकी कांचकी शीशी लावे उसकी गर्दन को दूसरी कांच-की शीशी में प्रवेश करे तो उसको बकयन्त्र कहते हैं। बड़ी शीशी को जिसमें द्रव्य भरा हुआ है उसे वालुकायन्त्र रखे और दूसरीको जल में रखे तो द्रव्य में से रस निकल भाफरूप हो ऊपर की छोटी शीशी में इकट्ठा हो जाता है, उसको ग्रहण करे, इसको बकयंत्र कहते हैं॥२०३॥

ठेकी यन्त्र

औरो यन्त्र सुनौ परवीन । कपरौटी करि शीशी तीन ॥
शीशी एक काखि कोरिये । दूजी नारि तामें मेलिये ॥
वाके मुखतर जो मुख देई । इहिविधि ठेकीयन्त्र करेई ॥
औंधी शीशी गाडी रहै । वह चूल्हे के ऊपर कहै ॥
ठेकीयन्त्र कहे यह जाति । शंखद्राव कीजै इहि भांति ॥

(रससागर)

नलनी यन्त्र

शीशीमें दे शीशी दोई । मुखमें मुखदै मूँदे कोई ॥
एकभरी इक रीती करै । भरी जु चूल्हे ऊपर धरै ॥
नलनीयन्त्र भांति इह करो । और यन्त्र भाषौं तीसरो ॥

(रससागर)

गर्भ यन्त्र

स्थूलभांडस्य गर्भे तु इष्टिकां स्थापयेत्ततः । पात्रं स्थाप्यं चेष्टिकोर्ध्वे द्रव्यं स्थूले च भाण्डके ॥२०४॥ पश्चान्मुखे चान्यभाण्डं घटिकासदृशं ददेत् ॥ संधिलेपं ततः कृत्वा जलं दत्त्वोर्ध्वपावके ॥२०५॥ अग्निं प्रज्वालयेन्मन्दं तप्तं नीरं पुनस्त्यजेत् । पुनः शीतं जलं दत्त्वा तप्तं चेत्तत्त्यजेत्पुनः ॥२०६॥ एवं कृते चोर्ध्वभाण्डलग्नं तैलादिकं स्रवेत् । अन्तस्थे सूक्ष्मपात्रे च तच्च ग्राह्यं प्रयत्नतः ॥२०७॥ गर्भयन्त्रमिदं ख्यातं सुगन्ध्यर्कादिसाधने ॥२०८॥ (र० रा० सं०)

अर्थ–एक बड़े घड़े को चूल्हे पर चढ़ाय उसकी पेंदी में एक ईट का छोटा टुकड़ा रखे उसपर एक दूसरा छोटा पात्र अथवा चीनी का प्याला रखे फिर उसके आसपास औषधि भर देवे तदनन्तर उस घड़े के मुखपर एक हांडी रख उसमें पानी भर देवे दोनों के मुख को मुलतानी से बंद कर उसके नीचे मंदाग्नि जलावे जब जब ऊपर का पानी गर्म हो जाय तब तब निकाल देवे और दूसरा शीतल जल भर देवे, इस प्रकार बार बार उष्ण जल निकालता रहे इस प्रकार करने से ऊपर के बासन में जो तेल आदि लगता है वह बासन में रखे हुए कटोरे में आ जाता है उसको ग्रहण करना चाहिये, यह गर्मयन्त्र सुगंधित अर्क निकालने के लिये उत्तम है॥२०४–२०८॥

घट यन्त्र

चतुष्प्रस्थजलाधारश्चतुरंगुलिकाननः । घटयन्त्रमिदं प्रोक्तं तदाप्यायनकं स्मृतम ॥२०९॥

(र.र. स., र.रा.प.)

अर्थ–जिस पात्र में ४ सेर जल आवे और मुख चार अंगुल ऊंचा तथा चौड़ा हो और उसका आकार गोल हो उसको घटयन्त्र कहते है और इसका दूसरा नाम आप्यायनयंत्र है॥२०९॥

स्थाली यन्त्र

स्थाल्यां ताम्रादि निक्षिप्य मल्लेनास्यं निरुध्य च । पच्यते स्थालिकाधस्तात्स्थालीयन्त्रमितीरितम् ॥२१०॥ (र.र.स.)

अर्थ–स्थाली (बटलोई हांडी इत्यादि) में तांबा, आदि पदार्थ को रखकर और उसके मुख को मल्लरेसे ढककर स्थाल्यों के नीचे आंच जलाना चाहिये इसीको स्थालीयन्त्र कहते हैं॥२१०॥

जरूफगिली सें कांच या शीशा भरने की तरकीब (उर्दू)

यह है कि शीशे या कांच को बारीक चक्की में पीसकर छान ले और दो हिस्से लेकर सुहागा सुनारी साईद में जो एक हिस्सा हो चावल की पछके हमराह मिलाकर मिट्टी के जर्फपर जो खाम हो लपेट करके अवह में कुम्भारों के बदस्तूर पकावे ख्वाह आतिश तनूरमें हो जिसमें धुआँ निकल गया हो रख दे ताकि कांच मजकूर गुदाज होकर गिलाफ की तरह हो जावे तरकीबसानी की तरह आग देने से धूआँ जर्फ में लगकर खराब नहीं होता मिट्टी दिल्ली की लेनी चाहिये जो बोतः बनाने में मुतहम्मिल है बाजे सफेदी बेजामुर्ग या खमीर गन्दुम जो बजाइ चावल के पेच के मिलाकर अमल करते हैं और बाजे जर्फ सुहागा सुनारी को तनहाजमाद करके मजज्जिज करते हैं॥ (सुफाहा ५२ किताब अलजवाहर)

तरकीब बरतन पर चीनी फेरने की (उर्दू)

साफ शीशे या काच को बारीक बारीक चक्की में पीसकर छान ले ओर दो हिस्सा लेकर सुहागा सुनारी साईदः में जो एक हिस्सा हो चावल की पेच या सफेदी वैजाःमुर्ग के हमराह मिलाकर मिट्टी के जरूप पर जो खाम हो लपेट करके धूप में खुश्क कर ले और आतिश तनूर में जिससे धुआं निकल गया हो रख दे ताकि कांच मजकूर गुदाज होकर गिलाफ की तरह चढ़ जावे और धूआं जरूफ में लगकर खराब न हो आतिश तनूर या भट्टी में, चूंकि लकडियों का खर्चा ज्यादह था लिहाजा कुम्हारों के आवे में जरूफ मजकूर रखकर आग दिलवावे लेकिन् इसका नतीजा यह हुआ कि मसाला बिलकुल सोख्त होकर स्याह हो गया और इस नाकामी की वजह से भट्टी में शीशा गरके जरूफ मजकूर रखवाये गये और मुताबिक ख्वाहश के जजाजी हो गई कि अब इनमें बेतकल्लुफ अक्स चहरे का नजर आता है और चिकनी शक्काफ और सुथरे हैं, इसमें यह अमर खास तौरपर ख्याल रखना चाहिये कि जरूफ का लगाव जमीन या दीवार से न हो और जिस जगह पर मजबूरन जमीन वगैरः से लगाव रखना पड़े वहां पर किते आत अवरके बिछा देना चाहिये वरनः जरूफ मजकूर जमीन या दीवार से मलसिक होकर टूट जावेंगे और बगैर टूटे हुए इस भट्टी से नहीं निकल सकेंगे लेकिन जिस जगह शीशः गरों की भट्टी है मुमकिन है वहां बतरीक जैल तनूर बनाकर आतिश तनूर देने से भी शीशा चढ़ सकता है चुनांचि हकीम खलीलुद्दीनखां साहब मरहूम इलाहाबादी इस्तरह से जजाजी जरूफ महज आसानी के ख्याल से कम खर्च में तैयार कर सकते थे। चाहिये कि एक मदव्विर दीवार एक हाथ लंबी चौड़ी बांबी की तरह बनाकर उसके चारों तरफ चार चार अंगुल सेराख मुहीत में दीवार के कर दे और जरूफ पर बतरीक कांच फेर कर उसके अन्दर रख दे बादहू एक बालिश्त और छः

अंगुल याने पौने दो हाथ कुतर को गोल चारों तरफ और उसमें भी चार चार अंगुल के सूराख कर दे इन दोनों दीवारों के वसेत में कोयला भरकर ऊपर से छत की तरह पाट दे और आग दे मगर आग पुख्तः कोयलो की तेज होना लाजिम है वरनः जरूफ मुखल्लिल होंगे और मसाला सोख्त हो जायेगा (सुफहा ७ अखबार अकलीमियाँ १६/१०/१९०६)

मूषा यन्त्र

मूषा हि क्रौंचिका प्रोक्ता कुमुदी करहाटिका । पाचनी बह्निमित्रा च रसवादिभिरिष्यते ।।२२१।। (इति नामानि) मुष्णाति दोषान्मूषा या सा मूषेति निगद्यते ।। (इति व्युत्पतिः) उपादानं भवेत्तस्या मृत्तिकालोहमेव च ।।२१२।। (इति कारणम्) मूषामुखविनिष्क्रांता वरमेकापि काकिणी । दर्जनप्रणिपातन धिग्लक्षमपि मानिनाम् ।।२१३।। मूषाषिधानयोर्बध बंधनं संधिलेपनम् । अंधृणं रंध्रण चैव संश्लिष्टं संधिबंधनम् ।।२१४।।

(र.र.सं.)

अर्थ–मूषा (घरिया) क्रौञ्चिका, कुमुदी, करहाटिका, पाचिनी, वह्निमित्रा ये मूषा के नाम रसविद्या के ज्ञाताओं ने कहे हैं, जो पदार्थों के दोषों को हर लेती है, उसको मूषा कहते हैं और उस मूषा का उपादान कारण लोह तथा मिट्टी है अर्थात् मूषा लोह तथा मिट्टी की बनाई जाती है। रसायनविद्या से जीविका करनेवाले वैद्यों को मूषा (घरिया) के मुख से निकली हुई एक कोड़ी का मिलना तो अच्छा है परन्तु दुष्ट मनुष्य के नमने से लक्ष रुपये के मिलने को भी धिक्कार है। दो मूषाओं के योग को बन्धन कहते हैं और छेदों को चिकना २ बंद करने को संधिलेप कहते हैं।।२११–२१४।।

सम्पुटमान

सम्पुटं सूततुल्यं स्याच्छास्त्रदृष्टेन कर्मणा ।।२१५।।

(र.रत्नाकर)

अर्थ–रसशास्त्रोक्त कर्म से पारद के समान सम्पुट होना चाहिये।।२१५।।

मूषोपयोगी मृत्तिका

मृत्तिका पांडुरस्थूला शर्करा शोणपांडुरा । चिराध्मानसहा सा हि मूषार्थमतिशस्यते । तदभावे च वाल्मीकी कौलाली वा समीर्यते ।।२१६।। या मृत्तिका दग्धतुषैः शणेन शिखित्रकैर्वा हयलिद्दिना च । लौहेन दंडेन च कुट्टिता सा साधारणा स्यात्खलु मूषिकार्थे ।।२१७।। श्वेताश्मानस्तुषा दग्धाः शिखित्राशणखर्परैः । लिद्दिकिट्टं कृष्णमृत्स्ना संयोज्या मूषिका मृदाः ।।२१८।।

(र.र.स.)

अर्थ–जो पीली मिट्टी हो अथवा लाल पीले रंग का रेत हो और अग्नि के योग को सहनेवाली हो वही मिट्टी मूषा बनाने के योग्य होती है। यदि ऐसी मृत्तिका नहीं मिल सके तो वाल्मीक अर्थात् बमई की मिट्टी या कुम्हार की मिट्टी लेनी चाहिये अर्थात् जो मिट्टी तुष भस्म पटसन को ले और घोड़ो की लीद बगैरह को लोहे के हथोड़े से कूटकर बनाई जाती है, वह मूषा के लिये साधारण मिट्टी होती है, जिस मिट्टी की मूषा बनानी हो उसमें सेलखरी जले हुए तुष, कोयले, पटसन, खिंपरा, घोड़े की लीद, लोहकीट, काली मिट्टी इतनी चीजें मिलानी चाहियें।।२१६–२१८।।

मूषादिउपयोगी मिट्टी

चिक्कणा पिच्छिली गुर्वी कृष्णा मृत्सर्वपूजिता ।
पीता वा तद्गुणैर्युक्ता सिकतादिविवर्जिता ।।२१९।।

(शैवालभक्ष, टो.नं.)

अर्थ–जो काली मिट्टी चिकनी और भारी हो, वह सर्वोत्तम है या चिकनी तथा भारी पीली मिट्टी हो वह भी उत्तम है और रेतीली वगैरः वर्जित है।।२१९।।

तरीक साख्तन बोतः हिन्दी (उर्दू)

बोतः हिन्दी–वियार गिलकलां नीम आसार–गूगल यकदाम–अंगष्टदो[1] दाम नमक सांभर यक नीम दाम–पवः कुहनः या पारचः कुहनः मिकदारी सरगीगावदान दकै (सुफहा १२ किताब मुजरवात अकबरी)

तरकीब साख्तन बोतः यूनानी (उर्दू)

बोतः यूनानी–गिलेकलां अंगुश्तं[2] नमक सांभर–मूए सर आदमी–मूए बजवर्ग ताम्बूल–पेवः कुहनः या पार्चा कुहनः–पोस्तशाली विरियां–पोस्तशाली खाम । (सुफहा १२)

तरकीब बोतःमहबसान (उर्दू)

बोतः महवसान गिले कलां मुलतानी खरीबान चारपाई कुहनः मिकराजजर्द अंगुश्त मूए बुज, पंवः कोहनः ।
(सुफहा १२ किताब मुजरवात अकबरी)

वज्रमूषा

द्वौ भागौ तुषदग्धस्य चैका बल्मीकमृत्तिका । लौहकिट्टस्य भागैकं[3] श्वेतपाषाणभागिकम् ।।२२०।। नरकेशं समं पश्च छागीक्षीरेण पेषयेत् ।। याममात्रं दृढं पश्चात्तेन मूषां प्रकल्पयेत् ।।२२१।। शोधयित्वा तु संलिप्य तत्कल्कैः संधिलेपनम् वज्रमूषेयमाख्याता[4] सम्यक्पारदसाधिका[5] ।।२२२।।

(रसेन्द्र सा सं., र. रा. सुं., र. रत्नाक., टो. नं.)

अर्थ–दो भाग तुष भस्म, एक भाग बल्मीक (बमई) की मिट्टी, एक भाग लोहे की कीट, एक भाग सेलखरी, एक भाग मनुष्य के बाल, इन पांचों को एक प्रहर बकरी के दूध से घोटे फिर उसकी मूषा बनावे। उसको घाम मे सुखाकर, फिर उसी मिट्टी के कल्क से, ल्हेसे, संधि का लेप करे। बस यही पारद मारण के लिये वज्रमूषा कही है।।२२०–२२२।।

अन्यच्च

वल्मीकीमृत्तिकाभागं गवास्थितुषभस्मनोः ।
भागं रसं समादाय वज्रमूषा विरच्यते ।।२२३।।

(कामरत्न)

अर्थ–बमई की मिट्टी एक भाग गाय की हड्डी तथा तुषभस्म एक भाग को पानी से मिलाकर वज्रमूषा बनाई जाती है।।२२३।।

वज्रमूषादिउपयोगी मसाले

गारा दग्धा तुषं दग्धं वल्मीकमृत्तिका । गजाश्वानां मलं दग्धं यावदाकृष्णतां गतम् ।।२२४।। पाषाणभेदीपत्राणि कृष्णमृत्सा समासमम् । वज्रवल्लया द्रवैर्मर्द्यं दिनं चापेषयेद्दृढम् ।।२२५।। तेन काष्ठीं बकनालीं वज्रमूषां च कारयेत् ।।२२६।। (टा. नं.)

अर्थ–जली हुई गारमूषा, (गारमूषा आगे कही जायेगी) तुषभस्म, जलाई हुई बल्मीक (बमई) की मिट्टी तथा जली हुई हाथी घोड़े की लीद (अग्नियोग से जब ये कृष्ण वर्ण हो जाय तब इनको दग्ध हुआ जानना)

---

१. मुजरवात अकबरी उर्दू में अंगुश्त की जगह गुड लिखा है (देखो सफा १६) इसी किताब मे दूसरे नुसखे में अंगुश्त की जगह पुरानी खिश्त ली है (सुफहा १६)
२. मुजरबात अकबरी उर्दू में अंगुश्त की जगह पुरानी ईंट और वर्ग ताम्बूल की जगह पान लिखा है। (देखो सुफहा १६)
३. रस क्षिप्त्वा इत्यपि । ४. मूषा समाख्याता इत्यपि । ५. सूतस्य मारणे इत्यपि

पाषाणभेद, सन ये समस्त काली मिट्टी की बराबर हो, इनको वज्रवल्ली के रस से चार पहर तक खूब घोटता रहे और उसी से कोटीयन्त्र बंकनाल वज्रमूषा बनावे।।२२४–२२६।।

कपरौटी का लक्षण

काचकूपी लोहकूपश्चतुष्पंचनवांगुला ।
सप्तधा लीपता शुष्का सेव कर्पटमृत्क्रया ।।२२७।।

(टो. नं.)

अर्थ–चार अंगुल, पांच अंगुल तथा नौ अंगुल लम्बी कांच की शीशी हो या लोहे की, उसको सात बार ल्हेस ल्हेस कर सुखावे। बस इसी को कपरौटी कहते हैं।।२२७।।

वज्रमूषा (रसबंधन के लिये)

तुषं वस्त्रसमं दग्धं तत्पादांशा तु मृत्तिका । कुर्यात्पाषाणपादांशं वज्रवल्लया द्रवैर्दिनम् ।।२२८।। मर्दयेत्कारयेन्मूषां वज्राख्यं रसबन्धने ।।२२९।।

(टो. नं.)

अर्थ–तुषभस्म एक भाग, पुराना कपड़ा एक भाग, काली मिट्टी अर्द्धभाग और चौथाई सेलखरी को वज्रवल्ली से रस से चार प्रहर घोटे और उसी से पारद बंधन के वास्ते वज्रमूषा बनावे।।२२८।।२२९।।

वज्रमूषाविवरण (सत्त्वपातन के लिये)

मृदस्थिभागः शणलद्विभागौ भागश्च निर्दग्धतुषोपलादेः । किट्टार्धभागं परिखण्डच वज्रमूषां विदध्यात्खलु सत्त्वपाते ।।२३०।। (र. र. स.)

अर्थ–तीन भाग काली मिट्टी, एक भाग पटसन, एक भाग लीद, एक भाग तुषभस्म, एक भाग सेलखरी, आधा भाग लोहे की कीट, इन सबको खूब कूटकर सत्त्वपातन के लिये मूषा बनावे ।।२३०।।

योगमूषा

दग्धांगारतुषोपेता मृत्स्ना वल्मीकमृत्तिका । तत्तद्विडसमायुक्ता तत्तद्विडविलेपिता ।।२३१।। तया या पिहिता मूषा योगमूषेति कथ्यते । अनया साधितः सूतो जायते गुणवत्तरः ।।२३२।। (र. र. स.)

अर्थ–कोयले, तुषभस्म, बमई की मिट्टी तथा जिनसे सूत जारण होता है, उन उन विडो से युक्तकर मूषा बनावे और उन्हीं विडों से मूषा को ल्हेस देवे तो उसको योगमूषा कहते हैं। इससे सिद्ध किया हुआ पारद अधिक गुणवाला होता है।।२३१।।२३२।।

क्रौंचिकाविवरण

गारभूनागधौताभ्यां शणैर्दग्धतुषैरपि ।। समैः समा च मूषा मृन्महिषीदुग्ध–मर्दिता ।।२३३।। क्रौंचिका यंत्रमात्रें हि बहुधा परिकीर्तिता ।। तया विरचिता मूषा वज्रद्रावणकोचिता ।।२३४।। (र. र. स.)

अर्थ–नाले, तालाव और दंदल प्रभृति स्थानों की चिकनी मिट्टी और केंचुओं की मिट्टी (जो कि केंचुओं को दबाने से मिट्टी निकलती है), इन दोनों की बराबर सन और धानोस के तुषों की राख लेकर भैंस के दूध से घोटे फिर उसकी मंत्रानुसार मूषा बनावे तो इससे हीरा भी गल जाता है।।२३३।।२३४।।

गारमूषा

दुग्धषड्गुणगाराढ्या किट्टाङ्गारशणान्विता ।। कृष्णमृद्भिः कृता मूषा गारमूषेत्युदाहृता ।।२३५।। यामयुग्मपरिध्मानान्नासौ द्रवति वह्निना ।। (र.र.स.)

अर्थ–लोहे का कीट, कोयले और सन इनसे छः गुने (जो कि बरसात का जल किसी नदी, नाले, तालाव और दंदल में जमा होकर जाता है, उसमें जो मिट्टी नीचे जमती है उसको गार कहते हैं) और लेकर कूटे उसमें कार्योपयोगी चिकनी मिट्टी मिलाकर मूषा बनावे उसे गारमूषा कहते हैं, वह दो प्रहर तक अग्नि को सहन करती है।।२३५।।

वरमूषाविवरण

वज्राङ्गारतुषातुल्यास्तच्चतुर्गुणमृत्तिका ।। गारा च मृत्तिका तुल्या सर्वैरेतैर्विनिर्मिता ।।२३६।। वरमूषेति निर्दिष्टा याममग्निं सहेत या ।।२३७।।

(र. र. स.)

अर्थ–थूहर के कोयले धान के तुषों की राख इन दोनों से चौगुनी चिकनी मिट्टी और मिट्टी के बराबर गारा इन सबको मिलाकर मूषा बनावे। उसको वरमूषा कहते हैं, वह एक प्रहर तक अग्नि सहन कर सकती है।।२३६।।२३७।।

वर्णमूषाविवरण

पाषाणरहिता रक्ता रक्तवर्णानुसाधिता ।। मृत्स्नया साधिता मूषा क्षितिखेचरलेपिता ।।२३८।। वर्णमूषेति सा प्रोक्ता वर्णोत्कर्षे नियुज्यते ।।२३९।। (र. र. स.)

अर्थ–बिना कंकर की मिट्टी को कसूम, खैरसार, लाख, मजीठ, रतनजोत, लालचंदन, गुलदुपहरिया और कपूर कचरी इनके क्वाथ तथा रस से एक तथा दो दिन तक घोट मूषा बनावे और उसके सूखने पर सुहागे का लेप कर अग्नि में पकावे उसे वर्णमूषा कहते हैं। जब किसी धातु का उत्तम वर्ण करना हो, तब इस मूषा का प्रयोग करना चाहिये।।२३८।।२३९।।

रूप्यमूषाविवरण

एवं हि श्वेतवर्गेण रूप्यमूषा समीरिता ।।२४०।।

(र. र. स.)

अर्थ–इसी प्रकार श्वेतवर्ग तगर, कुडाकी की छाल, कुन्द, सफेद चौंटनी, जीवन्ती और सफेद कमल की जड़, इनके क्वाथ और रस से जो मूषा बनती है उसे रूप्यमूषा कहते हैं (इससे ज्ञात होता है कि वर्णमूषा का नाम सुवर्णमूषा है)।।२४०।।

बिडमूषाविवरण

तत्तद्भेदमृदोद्भूता तत्तद्विडविलेपिता ।।
देहलोहार्थयोगार्थं बिडमूषेत्युदाहृता ।।२४१।।

(र. र. स.)

अर्थ–जिस पृथ्वी में जिस प्रकार का लवण हो, उसकी मिट्टी मिट्टी से बनी हुई हो और उसी बिड़ से लिपी हुई हो इसमें वह पदार्थ सिद्ध करना चाहिये जो कि शरीर को लोहे के समान दृढ़ करता हो। इसको विडमूषा कहते हैं।।२४१।।

तारशोधनभस्ममूषा

तिलभस्मद्विभागं स्यादेकांशा च तथेष्टया ।
तत्कृता भस्ममूषैषा तारसंशोधने हिता ।।२४२।।

(टो. नं.)

अर्थ–एक भाग ईट का चूरा, दो भाग तिलभस्म इनसे बनी हुई मूषा को भस्ममूषा कहते हैं। यह मूषा चांदी की शुद्धि करने के लिये उत्तम है।।२४२।।

वृन्ताकमूषाविवरण

वृन्ताकाकारमूषायां नालं द्वादशकांगुलम् । धत्तूरपुष्पवच्चोर्ध्वं सुदृढं श्लिष्टपुष्पवत् ॥२४३॥ अष्टांगुलं च सच्छिद्रं सा स्याद्वृन्ताकमूषिका । अनया खर्परादीनां मृदूनां सत्त्वमाहरेत् ॥२४४॥ (र. र. स.)

अर्थ–धतूरे के फूल के समान ऊंची तथा सुकड़े हुए धतूरे के फूल के समान दृढ़ आठ तथा बारह अंगुल नालवाली जो मूषा होती है। उसको वृन्ताक मूषा कहते हैं। इस मूषा से कोमल खर्पर आदि रसादिक को सत्त्व को निकालते हैं।।२४३।।२४४।।

गोस्तनीमूषाविवरण

मूषा या गोस्तनाकारा शिखायुक्तपिधानिका ।
रत्नानां द्रावणे शुद्धौ मूषा सा गोस्तनी भवेत् ॥२४५॥

(र. र. स.)

अर्थ–जो मूषा गौ के स्तन के आकारवाली तथा जिसका ढ़कना चोटीदार हो, वह गोस्तनी नाम की मूषा सत्त्वों के पातन तथा शुद्धि में उत्तम है।।२४५।।

मल्लमूषाविवरण

अथ मूषा च कर्तव्या सुरभिस्तनसन्निभा । पिधानकसमायुक्ता किंचिदुन्नतमस्तका ॥२४६॥ निर्दिष्टा मल्लमूषा सा मल्लद्वितयसंपुटात् ॥ पर्पट्यादिरसादीनां स्वेदनाय प्रकीर्तिता ॥२४७॥ (टो. नं.)

अर्थ–दो मलरा लेवे उनमें से एक के ऊपर मिट्टी लगा लगा कर गौ के स्तन के आकार की मूषा बनावे तथा जिसका कुछ ऊपर का भाग उठा हुआ हो ऐसा ढ़कना हो उसको मल्लमूषा कहते हैं। इसका मल्लमूषा नाम रखने का कारण यह है कि यह मूषा दो मलसों के योग से बनती है। वह पर्पटी आदि रसों के स्वेदन के लिये श्रेष्ठ है।।२४६।।२४७।।

पक्वमूषाविवरण

कुलालभांडरूपा या दृढा च परिपाचिता ।
पक्वमूषेति सा प्रोक्ता पोटल्यादिविपाचने ॥२४८॥

(र. र. स.)

अर्थ–कुम्हार के बासन के समान आकार की जो दृढ़ पकाई गई है वह पोटली आदि पदार्थों के निमित्त पक्वमूषा कही जाती है।।२४८।।

अन्यच्च

कुलालभांडरूपा या दृढ़ा च परिपाचिता । पक्वमूषेति संप्रोक्ता सा सर्वत्र विपाचने । सैव क्षुद्रा मता मंदा गंभीरा सारणोचिता ॥२४९॥

(टो. नं.)

अर्थ–जो कुम्हार के बासन की सदृश आकृतिवाली और दृढ़ पकाई हुई हो, उसको समस्त पदार्थों के सिद्ध करने के लिये पक्वमूषा कहते हैं और वही मूषा छोटी और गहरी हो तो सारण के योग्य होती है।।२४९।।

गोलमूषाविवरण

निर्वक्रगोलकाकारा पुटनद्रव्यगर्भिणी ।
गोलमूषेति सा प्रोक्ता सत्वरद्रवरोधिनी ॥२५०॥

(र. र. स.)

अर्थ–संपुट में द्रव्य रखकर ऊपर के मुख रहित जो गोल आकार बनाया जाता है, उसको गोलमूषा कहते हैं। इसमें पदार्थ शीघ्र ही बंद हो जाता है।।२५०।।

महामूषाविवरण

तले या कूर्पराकारा क्रमादुपरिविस्तृता ॥ स्थूलवृन्ताकवत्स्थूला महामूषेत्यसौ स्मृता ॥२५१॥

(र. र. स.)

अर्थ–जो मूषा पेंदी में कुछवे के समान चपटी तथा ऊपर को धीरे धीरे फैलती हुई हो और मोटे बैंगन के समान मोटी हो, उसको महामूषा कहते हैं।।२५१।।

मण्डूकमूषाविवरण

सा चायोऽभ्रकसत्त्वादेः पुटाय द्रावणाय च ॥ मंडूकाकारमूषा या निम्नतायामविस्तरा ॥२५२॥ षडंगुलप्रमाणेन मूषा मंडूकसंज्ञका ॥ भूमौ निखन्य तां मूषां दद्यात्पुटमथोपरि ॥२५३॥ (र. र. स.)

अर्थ–जिसका गहराई में विस्तार न हो तथा छः अंगुल जिसका प्रमाण हो, ऐसी जो मूषा बनाई जाती है, उसको मड्डूकमूषा कहते हैं। उस मूषा को धरती में गड्ढा खोदकर स्थापित करे। ऊपर से अग्नि जलावे तो वह मण्डूक मूषा लोह तथा अभ्रक सत्त्वादिकों के पुट के वास्ते या गलाने के वास्ते उत्तम है।।२५२।।२५३।।

मूसलाख्यमूषाविवरण

मूषा या चिपिटा मूले वर्तुलाष्टांगुलोच्छ्रया ॥ मूषा सा मुसलाख्या स्याच्चक्रिबद्धरसे हिता ॥२५४॥ (र. र. स.)

अर्थ–जो मूषा जड़ में चिपटी हो तथा ऊपर से आठ अंगुल ऊंची और गोल हो, वह मुसलाख्य नाम वाली मूषा चक्रिबद्ध पारद के निर्माणार्थ उत्तम है।।२५४।।

रसनिगड

स्नुह्यर्कसम्भवं क्षीरं ब्रह्मबीजं ज गुग्गुलुः ॥ सैन्धवं द्विगुणं मर्द्यं निगडोऽयं महोत्तमः ॥२५५॥

(रसेन्द्र सा. सं., र. चिं.)

अर्थ–थूहर का दूध, आक का दूध, ढाक के बीज, गूगल और सेंधा नोंन, इन सबको मिलाकर पारद से दूना लेवे फिर मर्दन करे तो यह उत्तम निगड़ बनता है।।२५५।।

निगड बनाने की तरकीब (उर्दू)

गूगल, टेसू के बीज; और इन दोनों के बराबर नमक सेंधा सबको थूहर और आक के दूध में खरल करके इसको बड़ा निगड कहते हैं। जिस घरिया पर इसका लेप होगा, उसमें से पारा न उड़ेगा।

(सुफ़्हाखजाना कीमिया ॥१६॥)

रसनिगड

स्नुह्यर्कसंभवं क्षीरं ब्रह्मबीजानि गुग्गुलुः ॥ सैंधवं द्विगुणं दत्त्वा मूषामध्ये रसं क्षिपेत् ॥२५६॥ मूषालेपे प्रदातव्यं दग्धशंखादिचूर्णकम् ॥ मूषां तस्य दृढं बध्वा लोहमृत्तिकया पुनः ॥२५७॥ कारयेच्च सुधालेपं छायाशुष्कं च कारयेत् ॥ युक्तो निगडबंधोऽयं पुत्रस्यापि न कथ्यते ॥२५८॥

(टो. नं.)

अर्थ–थूहर तथा आक का दूध, ढाक के बीज, गूगल और सेंधानोन इस सबको पारद से दूना लेकर मर्दन करे। उस निगड तथा पारद को मूषा में रखे। मूषा के लेप के लिये चूने आदि का प्रयोग करना चाहिये और लोहे मे मैल से पारद की मूषा को दृढ़ बंदकर फिर चूने का लेपकर छाया में सुखावे। इस निगडबंध की क्रिया को अपने पुत्र को भी नहीं कहना चाहिये।।२५६–२५८।।

अन्यच्च

स्नुह्यर्कसंभवं क्षीरं ब्रह्मबीजानि गुग्गुलुः ॥ सैन्धवं द्विगुणं दत्त्वा मर्दयित्वा

विचक्षणः ।।२५९।। पिष्टवेष्टनकं कृत्वा कल्केनानेन सुंदरि ।। बिल्वप्रमाणां कुरुते मूषामतिदृढां शुभाम् ।।२६० ।। ऊर्ध्वाधो लवणं दत्त्वा मूषा मध्ये रसं क्षिपेत् । मूषालेपं प्रदातव्यं दग्धशंखादिचूर्णकम् ।।२६१।। मूषां तस्य दृढां बध्वा लोणमृत्तिकया पुनः । कारयेच्च सुधालेपं छायाशुष्कं तु कारयेत् ।।२६२।। तुषकरीषाग्निना भूमौ मृदुस्वेदं तु कारयेत् । अहोरात्रं त्रिरात्रं वा पुटं दत्त्वा प्रयत्नतः ।।२६३।। एवं मूषा महेशानि रसस्य खोटतां नयेत् । शोध्यतां खदिरांगारै रसेन्द्रं खोटतां नयेत् । उक्तो निगडबन्धोयं पुत्रस्यापि न कथ्यते ।।२६४।। (नि० र०)

अर्थ–थूहर तथा आक का दूध, ढाक के बीज, गूगल और पारद की अपेक्षा दूना सेंधा नोन मिलाकर मर्दन करे और हे प्यारी पार्वती! इसी कल्क से मूषा के बाहर लेप करे। मूषा बेल के समान लंबी चौड़ी और दृढ़ होनी चाहिये। ऊपर और नीचे नोंन लगाकर घरिया में पारद को रक्खे और जलाये हुए शखादि के चूने से मूषा पर लेप करना चाहिये। पारद की मूषा को नोन और मिट्टी से दृढ़ बाँधकर अर्थात् लीप कर फिर चूने का लेप करे और सुखावे तदनंतर तुषा तथा कर्मी की आंच से पृथ्वी पर दिन रात या तीन दिन कुक्कुट पुट देकर यत्नपूर्वक कोमल स्वेदन करे, हे पार्वती! इस प्रकार मूषा पारद को खोट बनाती है कि जब उस पर खैर के कोयलें गलायें जायँ, वह कहा हुआ निगडबंध पुत्र को भी न कहना चाहिये।।२५९–२६४।।

अन्यच्च

स्नुह्यर्कसम्भवं क्षीरं ब्रह्मबीजानि कोकिला । कनकस्य तु बीजानि लोहाष्टांशेन मर्दयेत् ।।२६५।। लवणं टंकणं क्षारं शिलातालकगन्धकम् । तथाऽम्लवेतसं ताप्यं हिंगुलं समभागकम् ।।२६६।। स्नुह्यर्कपयसा युक्तं पेषितं निगलोत्तमम् । पिष्टिका वेष्टयेच्चानेनैकेन निगलेन तु ।।२६७।। तेषां मूषागतं पक्वं खोटं कृत्वा तु वेधयेत् ।।२६८।।

(नि. र.)

अर्थ–थूहर का दूध, आक का दूध, ढाक के बीज, कोयल और धतूरे के बीज, इनको अष्टमांश लोहे के साथ मर्दन करे फिर नोंन, सुहागा, यवक्षार, मैनसिल, हरताल, गंधक, अमलवेत, सोनामक्खी और सिंग्रफ को थूहर तथा आक के दूध से घोटे तो यह उत्तम बनता है। इस एक ही निगड से पारद की पिष्टी को लपेटे और उन से बनाई हुई में रख परिपाक करे तो पारद खोट होता है।।२६५–२६८।।

अन्यच्च

पलाशबीजं निर्वासं कोकिलोन्मत्तवारिणा । शूलिनीरससंयुक्तं पेषयेत्सैन्धवान्वितम् ।।२६९।। पिष्टकावेष्टनं कृत्वा निगडेन तु बन्धयेत् । मूषायां निगडे देवि लेपितं शिवशासनात् । रसस्य परिणामोऽयं महदग्नौ स्थिरो भवेत् ।।२७०।। (नि. र.)

अर्थ–ढाक के बीज, ढाक का गोंद, कोयल और सेंधा नोंन को धतूरे के रस और शूलिनी (हींग) के रस से मर्दन करे और इसी निगड से पारे की पिष्टी को लपेट कर निगडयुक्त मूषा में बंद करे और मूषा में उसी निगड का लेप भी करे तो श्रीशिवजी की आज्ञा से पारद का यह परिणाम होता है कि वह पारद अग्निस्थायी हो जाता है।।१६९–२७०।।

अन्यच्च

द्वितीयं निगडं वक्ष्ये पिष्टिकास्तंभमुत्तमम्। द्विपदीरसमूत्रेण सैंधवाभ्रं च गुग्गुलुम् ।।२७१।। पिष्टिं संवेष्टच कल्केन मृदा तु पुनरष्टधा । तुषीकरीषाग्निना भूमौ मृदु स्वेदं तु कारयेत् । अहोरात्रं त्रिरात्रं वा पूर्ववत्खोटतां व्रजेत् ।।२७२।। (नि. र.)

अर्थ–अब मैं दूसरे निगड को कहता हूं जिससे कि पारद पिष्टी का उत्तम रूप से बन्धन होता है। सैंधव, अभ्रक तथा गूगल को वनवेरिया के रस से अथवा गोमूत्र से घोटकर उस कल्क से पारद की पिष्टी पर लेप कर फिर मिट्टी से आठ बार लेप करे। तदनतर उस गोले को भूधरयंत्र में रखकर करसी की आंच से दिनरात या तीन दिन तक मृदु स्वेदन करे तो पारद खोट होता है।।२७१।।२७२।।

अन्यच्च

बाकुची ब्रह्मबीजानि गगनं विमला मणिः । सौवर्चलं सैंधवं च टंकणं गुग्गुलं तथा ।।२७३।। द्विपदीरजसा सूत्रं सुधान्तं च प्रमर्दयेत् । पिष्टीं संवेष्टच कल्केन पूर्ववत्खोटतां नयेत् ।।२७४।। (नि. र.)

अर्थ–बावची, ढाक के बीज, अभ्रक, सोनामक्खी, मोती, स्याहनोंन, सैंधव, सुहागा और चूना इनको स्त्री के रज से तथा गोमूत्र से मर्दन करे। फिर उसी कल्क से पारद की पिष्टी को लपेटकर पूर्वोक्त प्रक्रिया से मृदु स्वेदन करे तो पारद खोट होता है।।२७३।।२७४।।

अन्यच्च

अभ्रकं कमलपत्रेण वज्रार्कक्षीरसीधुना । तापेन लोहकीटेन सिकतामृन्मयेन च ।।२७५ एतैस्तु निगलैर्बद्धः पारदीयो महारसः । नातिक्रामति मर्यादां वेलामिव महोदधिः ।।२७६।। (नि. र.)

अर्थ–अभ्रक को कमल के रस से, थूहर और आक के दूध से, कांजी से, सोनामक्खी से, लोहे की कीट से भस्म करे। उससे बद्ध हुआ पारद जिस प्रकार समुद्र अपनी मर्यादा को नहीं छोड़ता है, उसी प्रकार अपनी जगह को नहीं छोड़ता है अर्थात् उड़ता नहीं है।।२७५।।२७६।।

निगड बनाने की तरकीब (उर्दू)

अवरक, नमक, सेंधा, सोनामक्खी, बालूरेत, लोहे का मैल इनको आक और थूहर के दूध में एक पहर खूब खरल करके रख ले। इसमें से भी पारा नहीं उड़ सकता (सुफहा खजाना कीमियाँ १६)

अन्यच्च

तैलार्कक्षीरबाराहीलांगल्या निगलोत्तमम् ।।२७७।।

(नि. र.)

अर्थ–तिल, बाराहीकंद, लांगली, (कलिहारी या जलपीपल) को आक के दूध से घोटे तो उत्तम निगड होता है।।२७७।।

अन्यच्च

काकविड्ब्रह्मबीजानि कुक्कुटास्थीनि सुन्दरि ।
सामुद्रं सावरं चैव लवणं निगलोत्तमम् ।।२७८।।

(नि. र.)

अर्थ–कौवे की बीट, ढाक के बीज, मुर्गी के अंडो की सफेदी, समुद्र नोंन, साम्हर तथा सैंधव को घोटकर रख ले तो उसका उत्तम निगड बनता है।।२७८।।

अन्यच्च

स्वर्णभागं भवेदेकं द्विगुणं मृतभास्करम् । रसकं पञ्च भागाश्च षष्ठभागा निधौतमृत् ।।२७९।। आटरूषजले पिष्ट्वा संपुटं तेन कारयेत् । मूषां च रचयेत्सत्यं रसस्य निगडो भवेत् ।।२८०।। वह्निमध्ये न गच्छेत पक्षच्छेदीव तिष्ठति । काचकूपी द्वितीयश्च तृतीयो लोहसंपुटः ।।२८१।। (टो. नं.)

अर्थ–एक भाग सोना, दो भाग ताम्रभस्म, पांच भाग रसक (रस खपरिया) और छः भाग धुली हुई मिट्टी को अडूसे के रस में पीसकर उसका संपुट बनावे फिर उस मूषा में पारद का स्वेदन करे तो रस का निगड होता है वह पारद अग्नि में उड़ता नहीं है और परकटे हुए की तरह रहता है। प्रथम मूषा द्वितीय काचकूपी (शीशी) और तीसरा लोहसंपुट करना चाहिये। यह निगडयंत्र कहाता है।।२७९–२८१।।

अन्यच्च

सोना एक भाग, तांबा फूँका हुआ दो भाग, रसक पांच भाग; मुल्तानी छः भाग, सबको अडूसे के रस में खरल करके घरिया बना ले। इसमें से पारा उड़ता नहीं उसको निगड़ कहते हैं।। (खजाना कीमियां)

सर्व आग्नेय का निगड

सुंदररस, नीलाथोथा, मुश्ककपूर, सफेदा काशगरी यह चीज समभाग कुआरगंदल के रस में खरल कर जिस पर लेप करके अग्नि में रखोगे सो सम (बराबर) वजन अग्नि सह होवेगा। लेप तोले पर तोला तीन लेप करना। एक सूखे तो दूसरा लेप तीन बार में सम वजन लेप करना। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

निगडबंध

शिका १०, लोहमयल १० तोले, पुराना गुड़ ५ तोले, गूंद दोवेवाली ५ तोले, सिकात लोहा, दानों का चूर्ण करना महीन करके रख छोड़ना। गुडत गूंद दोनों को कडछी बिच पाके डालना, जब इक जान हो जावे तब वह दोनों पादेणे पाक गोला बणाके कुट्टणा निगडबंधोयः वरः ।।

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

सर्वआग्नेय का निगड

शरपुंख की खार, बणाकर शोरे के साथ रलाकर आग देणी शोरा सम वजन अग्नि सह निकलेगा। उस शोरे को जिसके ऊपर देके आग दोगे सो अग्नि सह होवेगा।।

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

मदनमुद्रा

सिक्थमाढकमादाय तत्षोडशगुणे जले । प्रक्षिप्यावर्तयेल्लोहे कटाहे चण्डवह्निना ।।२८२।। यावत्तिष्ठेत्तदुरि जलमंगुलपंचकम् । ततोऽन्यत्क्वाथ्य मानं तु जलं तत्र गतं क्षिपेत् ।।२८३।। एवं पुनः पुनः कुर्याद्यावत्तज्जायते घनम् । मुद्रायोग्यमतिस्वल्पं गृह्णीयात्तत्प्रयत्नतः ।। २८४।। तेन मुद्रा विधातव्या जलयंत्रस्य साधकैः । न भिद्यते जलैरेषा वर्षेणापि कदाचन ।।२८५।। (बृ. योगतं)

अर्थ–चार सेर मोम को सोलह गुने अर्थात् चौसठ सेर जल में डालकर लोहे के कढाव में तेज अग्नि से औटावे। जब उसके ऊपर पांच अंगुल जल बाकी रहे तब फिर और ओटे हुए जल को ऊपर से डाल देवे। इस प्रकार बारंबार मोम के कठिन होने पर्य्यंत जल डालता रहे, जब वह घन (कठिन) हो जाये तब मुद्रा देने योग्य अत्यंत स्वल्प उस मोम को लेकर उसी के साधकजनों को जलयंत्र की मुद्रा करनी चाहिये। यह ऐसी मुद्रा हैं कि एक वर्ष में भी जल में नष्ट नहीं होती ।।२८२–२८५।।

अन्यच्च

एक कराही ऐसी लेई । ता में नीर कलश द्वै देई ।।
तापर मैनटकोरा धरै । तातर आगि बहुतसी बरै ।।
आठ पहर जो आग करेई । निघटै पानी ता में देई ।।
मैनटकोरा उत्तम होई । दसयें अंश बैठि है सोई ।।
तहतर लगै सुलीजौ लोई । एक जु मैन ऐसी विधि होई ।।

(रससागर)

अन्यच्च

ले पल पांच अलसिया तेल । मैनकटोरा द्वै पल मेल ।।
मैनकराही ऐसि पचाई । जैसे नहीं तेल बरिजाई ।।
मन्दी आगि पहर दै चारि । होय मैन ता करछी टारि ।।
जब जब चाहे मुद्रा कियो । तब तब नेक आंच धर लियो ।।
दुर्लभ मैन सकल संसार । प्रगट करै कहि सैद पहार ।।
मिथ्या कै जिन जानो गुनी । गुरुप्रसादते सांची भनी ।।

(रससागर)

अन्यच्च

मैनकटोरा लीजै छानि । चूनो छिपका जीये बानि ।।
तवे लाख चावरी लेई । तीनो समकै जोखि करेई ।।
मेन चावरी लुहँडा धरै । तरहर आगि अलपसी करै ।।
पिघल जाइ दोऊ छिन मांह । चूनौ माह मिलै जै ताह ।।
चूनौ मिलै जु मुद्रा करै । पुनि तेही छिन चूल्हे धरै ।।
पानी मेल्हि देइ ता आगि । नृपजन की लागी ता भागि ।।

(रससागर)

अन्यच्च

औदुम्बरार्कवटदुग्धपलं पलं च लाक्षापलं पलचतुष्टयभूर्जपत्रम् । संकुट्य सर्वमतसीफलतैलमिश्रं श्रीपारदस्य मरणे मदनाख्यमुद्रा ।।२८६।।

(यो. चिं., र. रा. सुं.)

अर्थ–गूलर का दूध एक पल, आक का दूध एक पल, बड़ का दूध एक पल, लाख एक पल और भोज पत्र चार पल । इन सबको अलसी के तेल में मिलाकर कूटे तो पारद मारण के लिये उत्तम मदनाख्य मुद्रा होती है।।२८६।।

विचार–रसराज पद्धति में भोजपत्र की जगह चुंबक लोह का गेरना लिखा है सो भी ठीक है क्योंकि इसी के आगे के श्लोक में या भाषा के भी किसी किसी ग्रंथ में चुंबक का ग्रहण है।

अन्यच्च

दूजौ मैन सुनो रे लोई । औटि छानिकै लीजो कोई ।।
जोखै मैन होई पल पांच । पाउ पाउ पल औषध सांछ ।।
भोजपत्र पुनि चुंबक लेई । बांटि छान ताही में देई ।।
पुनिवट दूध लेइ पल एक । औटि मिलैजै यहै विवेक ।।
पुनि अहिरन घन कूटे इसे । एक प्रहर जो जाने जिसे ।।
इहि विधि छीर सात पुट देय । ऐसे मैनसिद्धि करि लेय ।।

(रससागर)

अन्यच्च

नागेन्द्रसिक्थकमयोमलसर्ज्जकाभिर्लाक्षा[1] च चुम्बकमधूफलभूर्जपत्रम् ।। संकुटचमानमतसीफलतैलमिश्रं श्रीपारदस्य मरणे मदनाख्यमुद्रा ।।२८७।।

(यो. चिं.)

अर्थ–नागेश्वर, लोहे का मैल, राल, चुम्ब, मधुफल और भोजपत्र इन सबको अलसी के तैल में मिलाकर कूटे तो पारद मारण के लिये उत्तम मदनमुद्रा बनती है।।२८७।।

अन्यच्च

संजानितं सिक्थकिट्टं पलं शुभ्रो पलं पलम् । पलं सर्जरसं तैलेऽतसीजे भर्ज्जयेत्त्रयम् ।।२८८।। भूर्जपत्ररजस्तत्र लोहकिट्टरजस्तथा । पृथक् षट् शाणतुलितं प्रक्षिपेत्सर्वमेकतः ।।२८९।। वज्रीक्षीरेण सम्मर्द्य गाढं तन्मदनोपमम् । मुद्रेयं मदनाख्या च जलयन्त्रार्थमीरिता ।।२९०।।

(बृ. यो.)

अर्थ- जले हुए मोम की कीट एक पल, सेलखरी एक पल, राल एक पल,

[1] १–यहां नागेन्द्र शब्द से सीसे का बना हुआ सिंदूर लेना चाहिये।

इन तीनो को अलसी के तेल में भूने फिर उसमें भोजपत्र का चूरा और लोह का चूरा, ये पृथक् पृथक् दो दो तोले मिलावे तदनंतर इन सबको थूहर के दूध से मोम के समान घोटे तो यह मदनाख्य मुद्रा की मुद्रा जलयंत्र के लिये उत्तम कही है॥२८८–२९०॥

अन्यच्च

लोहचूर्ण २ तोले, चीनीमिट्टी २ तोले, पीपल की लाख ५ तोले, आक का दूध ५ तोले, बोढ का दूध ५ तोले, गूलर का दूध ५ तोले, कूटणा ४ प्रहर वा जब तक सिक्थोपम होवे॥ (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

अन्यच्च

षड्विंशभागलवणं चतुर्विंशतिरभ्रकम् ॥ शुक्तिर्द्वादश भागा च गृहीत्वैतद्भिषग्वरः ॥२९१॥एतत्त्रयम् जारयित्वा खाटेबद्धं तु कारयेत् ॥ तत्खोटं पंचपलिकं द्विगुणं छागमांसकम् ॥२९२॥ एतद्द्वयं भर्जयेत्तदलसीतैलमध्यगम् ॥ विधिना भर्ज्जयेत्तावद्यावत्स्याद्गुडपाकवत् ॥२९३॥ पश्चादपररालस्य चूर्णं पंचपलान्वितम् ॥ वज्रिक्षीरं दशपलं त्र्यं सम्यक् प्रमर्दयेत् ॥२९४॥ तावल्लोहघनैः कृत्वा यावत्सिक्थकसन्निभम् ॥ एषा मदनमुद्रा च कथिता रसवादिभिः ॥२९५॥

(बृ० यो०)

अर्थ–नोन छव्वीस भाग, अभ्रक चौवीस भाग, सीप बारह भाग लेकर श्रेष्ठ वैद्य इन तीनों को जलाकर खोट बद्ध करे। वह खोट ५ पल, बकरे का मांस दस पल। इन दोनों को अलसी के तेल में तब तक भूनता रहे कि जब तक उनकी चाशनी गुड़ के समान हो। फिर पांच पल राल का चूर्ण मिलाकर थूहर का दूध दस पल लेकर तीनों को घोटे और लोहे के घन (हथोड़े) से ऐसा कूटे कि वह कूटते कूटते मोम के समान हो जावे। बस इसी मुद्रा को रसवादियों ने मदनमुद्रा कहा है॥२९१–२९५॥

अन्यच्च

लोहसिंहाणजं चूर्णं पटगं कुडवद्वयम् ॥ लवणं तच्चतुर्थांशं तत्तुर्याशं च सिक्थकम् ॥२९६॥ दृढं छागयकृत्खंडरुधिरेण प्रमर्दितम् ॥ कालसीकरसेनैव लेपः स्याद्यंत्रसंधिके ॥२९७॥ जलाग्नियोगतो नेयं भिद्यते मदनाभिधा । मुद्रेयं वारियन्त्रस्य कथिता रसवेदिभिः ॥२९८॥

(बृ. यो.)

अर्थ–कपड़छान किया हुआ लोहे का मैल का चूरा एक पाव, नोंन एक छटांक और मोम सवा तोला, इनको बकरे के जिगर के रक्त से दृढ़ मर्दन करे फिर अलसी के रसे से संधि पर लेप करे तो रसवादियों ने इसको मदन–मुद्रा कहा है। यह मदनमुद्रा अग्नि और जल के योग से भेद को नहीं प्राप्त होती है॥२९६–२९८॥

अन्यच्च

शुद्धांजननिभं किट्टं किट्टार्द्धां समितां कुरु ॥ सुवर्णपुष्पनिर्यासं समितार्द्धं नियोजयेत् ॥२९९॥ दक्षांडजजलद्रावैर्मर्दयित्वा दृढ भिषक् ॥ सर्वत्र मुखमुद्रेयं पुत्रस्यापि न कथ्यते ॥३००॥ एनां मुद्रामम्बुयंत्रसिद्धचर्थं दुर्लभां कुरु ॥ जलाग्नियोगतो नैव भिद्यतेऽसौ कथंचन ॥३०१॥ (बृ० यो०)

अर्थ–अजन के समान कृष्णवर्ण लोहे की कीट (मैल) कीट से आधी समिता (मैदा), मैदा से आधा सुवर्ण पुष्पनिर्यास (ढाक का गोंद) लेवे फिर उनको मुर्गी के अंडो के रस में खूब घोटकर सब स्थान पर मुखमुद्रा करे। यह मुद्रा पुत्र को भी न कहनी चाहिये। इस मुद्रा को भी जल यंत्र के लिये सिद्ध करे। अग्नि और जल के योग से यह मुद्रा नष्ट नहीं होती है॥२९९–३०१॥

अन्यच्च

पलं बब्बूलनिर्यासं समितां तत्समां कुरु ॥ तयोस्तुल्यं लोहकिट्टं शुद्धमंजनसन्निभम् ॥३०२॥ मुद्रां च वारियन्त्रस्य सिद्धचर्थं दुर्लभां कुरु । जलाग्नियोगतो नैव भिद्यतेऽत्र कदाचन । सूतराजो न संगच्छेत् प्रलयाग्निजवेन वै ॥३०३॥ (धं० स०)

अर्थ–बबूल का गोंद एक पल, मैदा एक पल, दाना के तुल्य लोह मैल इन सबको मुर्गी के अंडों के रस से घोटकर दुर्लभ मदनमुद्रा बना लेवे। इस मुद्रा का जल और अग्नि के योग में भेद नहीं होता है और तीव्र अग्नि के योग से भी पारद कहीं नहीं जा सकता है॥३०२॥३०३॥

सम्मति–दोनों मदन मुद्राओं में शमिता शब्द है उसका अर्थ कोई कोई पंडित छींकर का गोंद कहते हैं और कोई कोई शमिता की जगह समिता शब्द का पाठ सिद्ध करके समिता का अर्थ मैदा करते हैं–अब विचारवान् पुरुष दोनों शब्दों को विचार के अपना कार्य सिद्ध करें, मेरी समझ में तो मैदा लेना ठीक है॥

अन्यच्च

मंडूरचूर्णं विमलं मधूकैर्विमर्दितं किञ्चिदुमाम्बुसिक्तम् । विलेपितं यन्त्रविधौ ततस्तैर्न भिद्यते नैव च दह्यतेऽग्नौ ॥३०४॥ (बृ. यो.)

अर्थ–मंडूरभस्म और सोनामक्खी को मुलहठी के रस मे घोटकर कुछ अलसी के रस से घोटे फिर यंत्र में उसका लेप करे तो यह मुद्रा जल में बिखरती नहीं और अग्नि में जलती नहीं है॥३०४॥

हठमुद्रा

अब हठमुद्रा कहों बखानी । पारे की विधि नीकी जानी ॥
माटीको जलयन्त्र जु करै ॥ तब हठमुद्रा ऐसी धरै ॥
लोह सिंहासन कंटि कराई । कै करि दो बर लीजै राई ॥
कै मुरारको चूरण होई । इनमें एक लीजिये कोई ॥
अजा स्रोत सों सानि लगाई । तेही छिन दीजिये चढाई ॥
आगि करै दे तातो नीर । यह हठमुद्रा जानो धीर ॥
चारि भाँति यह मुद्रा कही । जैसी गुरु ग्रंथन में लही ॥
सबही ग्रन्थन कही न बात । चारि जाति में अन अन भांत ॥

(रससागर)

जलमुद्रा

इन्द्रगोप बीरबहूटी इति प्रसिद्ध उनका पाताल यन्त्र से तैल निकाल लेना उस तैल में श्वेत संखिया मर्दन करना फिर केले के खगों की अग्नि देणी, शंखिया सिक्थोपम हो जायेगा। उसकी जलमुद्रा करणी (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

अन्यच्च

तूलं[1] च कलिका चूर्णं निरम्बुक्षीरमर्दितम् ।
जलमुद्रेति कथिता कैश्चित्पारदवेदिभिः ॥३०५॥

(बृ. यो.)

अर्थ–सेमल की कुछ लिखी हुई डोंडी और चूने की निपनियां दूध से मर्दन कर मुद्रा करे तो इसको कुछ रसवैद्यों ने जलमुद्रा कहा है॥३०५॥

जलमुद्रा की तरकीब (उर्दू)

अर्थ–अगर किसी मादनी चीज का रोगन निकलता हो तो दवा को

१–३ फरवरी सन् १९०८ को सेमल की मुहमुंदी बिलकुल हरीकलियों को जिनकी शकल फलकासी थी कोई शकल फलकी न थी दूध में पीस जल यन्त्र पर लेप किया तो थोड़ी ही देर में खुश्क हो यन्त्र फट गया (मुद्रा फट गई) इसमें कोई ल्हस या चिपक न थी (एक बार ऐसी कली से जिसमें फूल देख पडे मुकर्रर इम्तहान हो)

कराही में रखकर ऊपर से मोटे लब का कटोरा ढांक दे और पाव भर (आर्द्रलहसोडा) को चारों तरफ डाल कर आग की हरारत से खुश्क करे। बादहू पानी ऊपर से भर दे. उमदा जलमुद्रा होती है। जलमुद्रा की जरूरत रोगन निकालने में अकसर पड़ती है। यह मुहर न आग से जलती है न उस पर पानी का असर होता है।। (सुफहा अकलीमियाँ २११)

सुलेमानी मुद्रा

खाली राखै शीशी नारि । कपरौटी बिन अंगुर चारि ।।
पुनि बाखर शीशी में भरे । आसपास ता आगि जु करै।।
जितनी बिन कपरोटी कही। गाडे ऊपर राखे सही ।।
आसपास खैरकी आगि । अंगुर चारि चारि धरि लागि ।।
झपकि बीजना ऐसी आँच । शीशी मुँह को पिघले काच ।।
गहि जु सँडासी तामुख मोरि । ऐसी भांति साधिये जोरि ।।
ता ऊपर ओषधि औंधाई । धरतीही में जाइ सिराई ।।
तब मुखको कपरौटी करै । सूखन को जु छांह में धरै ।।
मुद्रा यह सुलेमानी नाम । याते होई भलो सब काम ।।
याते होइ जु रसको काज । यह मुद्रा कीन्ही तिहि काज ।।

(रससागर)

भस्ममुद्रा

अतिस्वच्छं काष्ठं गृहीत्वा तुल्येन लवणचूर्णेन सह खल्वे सततं मर्दयेत् यावन्नवनीतवत् श्लक्ष्णं भवति तेन संधिमुखरोधादिकमतिदृढ़ं भवति ।।३०६।। (र.सा.प.)

अर्थ–अति उज्ज्वल लकड़ी की भस्म एक भाग, लवण एक भाग इन दोनों का खरल में डालकर निरंतर जल से घोटता जावे और घोटते घोटते जब माखन के समान हो जाय तब उससे मुद्रा करे तो संधि मुख दृढ़ बंद होता है।।३०६।।

पुटसंधि बंध की क्रिया

वल्मीकमृत्तिका गारा लवणं लोहकिट्टकम् । श्वेतपाषाणकं चैव तत्सर्वं चूर्णयेत्समम् ।।३०७।। सर्वतुल्यं तुषं दग्धं सर्वं तोयैर्विमर्दयेत् मूषादिसंपुटं कुर्यात्सर्वसंधिप्रलेपनैः ।।३०८।। (टो.नं.)

अर्थ–बमई की मिट्टी, गारा, नोंन, लोहे की कीट, खरिया, ये सब तुल्य भाग लेने और सबकी बराबर जले हुए तुष लेकर सबको जल से मादत करे, इनसे मूषादिकों के मुखपर लेप करके सम्पुट बनावे।।३०७।।३०८।।

संधिबंधन क्रिया

इष्टकाचूर्णभागैकं समभागा तु मृत्तिका । मूषादिबन्धः कर्तव्यो धमनाद्वज्रतां व्रजेत् इति ।।३०९।। (ध.सं.)

अर्थ–एक भाग ईंट का चूरा और उसकी बराबर बमई की मिट्टी इन दोनों को पीसकर मूषा वगैरह के बंधन को करे तो धोंकने से वज्र के तुल्य होता है।।३०९।।

सम्मति–जहां मिट्टी के कूटने का प्रकरण आया है, वहां चार प्रहर बराबर घोटना चाहिये क्योंकि जब मिट्टी चार प्रहर तक न घोटी जायेगी तब तक मुख बंद करने के लायक न होगी।।

अन्यच्च

लोहकिट्टं तुषं दग्धं शुक्तिचूर्णं च शर्करा । एतानि समभागानि तावद्भागेन मृत्तिका ।।३१०।। कर्पटेन समायुक्ता सा हि वज्रोपमा भवेत् ।।३११।।

(ध.सं.)

अर्थ–लोहे की कीट, तुषभस्म, सीप का चूना और शर्करा (शक्कर) इन सबको समान भाग लेकर इन सबकी बराबर मिट्टी लेवे और कुछ कपडा मिलाकर कूटे तो वह मिट्टी वज्र के समान होती है।।३१०।।३११।।

वज्रमुद्रा

स्निग्धं लोहरजः स्निग्धमयस्कांतरजः समम् । शाकं पक्वं च रुधिरं वज्रिक्षीरेण मर्दयेत् ।। लेपनं तु प्रयत्नेन वज्रमुद्रा प्रजायते ।।३१२।। (बृ.यो.)

अर्थ–लोहे का सूक्ष्म चूर्ण, चुम्बक पत्थर का चूर्ण, बकरे का जिगर और रक्त इनको थूहर के दूध से मर्दन करे फिर संधि मुखपर लेप करे तो व्रजमुद्रा हो जाती है।।३१२।।

वज्रमुद्रा (उर्दू)

मसाला यह है कि सिंदूर १ तोला, काश्तकारी सफेदा १ तोला, लोहे का मैल ६ माशे, बकरी की नली में या मुर्गे के अंडे की सफेदी में रगड़ कर बनावे तो आग लगने से मजबूत होगा, दो आदमी बैठकर बनावे मुवक्किल बिगाड देंगे हवा न लगने पावे (सुफहा खजाना की मियाँ ३५)

दो प्यालों के जोड बंद करने के लिये
अजजाइ (उर्दू) संधिलेप

दोनों का मुहँ सरेश या साहूज यानी चूने व सफेदी बैजः मुर्ग व खाकस्तरी वस्ल कर दिया जाता है।।

(सुफहा अकलीमियाँ ९३)

शीशी की डाट की मुद्रा (उर्दू)

चूना व सफेदी बैजः मुर्ग और गुड और गेहूं की लेही को बाहम मिलाकर वस्ल कर दे। (सुफहा किताब अकलीमियाँ)

मुहर की तरकीब (उर्दू)

मुहरका आसान और उमदा नुसखा यह है कि नमक लाहौरी को मुर्गी के अण्डे की सफेदी में खरल करके शीशेकी डाटपर अच्छी तरह थोपकर खुश्क कर ले ।।

(अलजवाहर)

कपरौटी की क्रिया

खटिकालवणं माषचूर्णं गुडपुरौ तथा । अतसी च दृषच्चूर्णं मृल्लेपादिषु पूजितः ।।३१३।। (टो.नं.)

अर्थ–खडिया, नोंन, उर्द का चून, गुड, गूगल अलसी और पत्थर का चूरा इनको पीसकर लेप बनावे तो यह लेप सब लेपों में उत्तम है।।३१३।।

कठिन मुद्रा

खारी खरी और गुडगादि । बीसै हीसा दीजिये लादि ।।
डौरू जंत्रहि लेउ करेई । यहै जु मुद्रा कठिन भनेई ।।

(रससागर)

कूपी आदि की कपरौटी का मसाला

तुषं भागद्वयं ग्राह्यं भागैकं वस्त्रखण्डकम्।। मृदं तु त्रिगुणं कृत्वा जलं दत्त्वा प्रमर्दयेत् ।।३१४।। नरकेशसमं किंचिद्दत्त्वा तावत्प्रकुट्टयेत् । यावत्सिक्थसमाभासं मृत्पिंडं जायते तदा ।।३१५।। यथा न शुष्कतां याति तथा यत्नं समाचरेत् ।। एवं सप्तदिनादूर्ध्वं मृदा योगे प्रयोजयेत् ।।३१६।। कूपिकादिविलोपार्थं सर्वार्थं च भिषक्तमः ।।३१७।। (टो० नं०)

तुषभस्म दो भाग, कपडा एक भाग इनसे तीनगुनी मिट्टी में जल डालकर मर्दन करे फिर मनुष्य के केशों को डालकर तब तक मर्दन करे कि जब तक वह मोम के समान हो जाय उसको गीले कपड़े से ढाँककर रखे क्योंकि वह सूख न जाय इस प्रकार सात दिन के पश्चात् वैद्य शीशी आदि के लेप के लिये प्रयोग करे।।३१४–३१७।।

वज्रमृत्तिका

दग्धतुषस्य भागैको मृद्भागत्रयमेव च । सकर्पटं टंकणं च वज्रमृत्स्नेति कथ्यते ।।३१८।। (ध.सं.)

अर्थ–तुषभस्म, एक भाग, मिट्टी तीन भाग, कुछ कपडा और सुहागा इनको कूटकर जो मिट्टी तय्यार की जाती है, उसको वज्रमृत्तिका कहते हैं।।३१८।।

वज्रमुद्रा

मुद्रा चारि भांतिकी गनी । जे कहि गये अचारज मुनी ।।
न्यारी न्यारी कहौं बखानि । जैसी जैसी कीजै बानि ।।
पाकी ईट पुरानी लेई । द्वे मुख घसिकें दीजै बनेई ।।
बस्तर नवो मिंहीसो आनि । शीशी सूख दीजिये बानि ।।
माटी बैठि गोका तब देई । ऊपर कपरौटी जु करेई ।।
कपरौटी माटी वर येहु । एतो धस्तु सबै मिलि देहु ।।
माटी तो कुम्हार को लेई । हाथ पोंछनी कुंड में दई ।।
सो सूखी पल लेइ पचास । पीसि लेई एक पलमास ।।
वान पुरानी ईंट मँगाई । रुई परसनु सब देहु बनाई ।।
गुरु जु पुरानो सनको बीज । काचुगादि लिक एकत कीज ।।
आधु आधु पल लीजै साधु । अरु निखारि लीजै पलु आधु ।।
पाथर परजु काठ मोंगरी । कूटै द्वै दिन रहै न घरी ।।
तब कपरौटी करै सुजान । मुद्रावज्र जु कहो बखान ।।
सीसीकी कपरौटी तीन । तीनवस्त अरु लेपन तीन ।।

(रससागर)

छै अग्नियों के नाम और लक्षण

धूमाग्निश्चैव मंदाग्निर्दीपाग्निर्मध्यमस्तथा । खराग्निश्च भटाग्निश्च तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ।।३१९।। विज्वालो यो धूमशिखा धूमाग्निः स उदाहृतः । द्वाभ्यां तस्य चतुर्थाभ्यां योऽग्निर्दीपाग्निरुच्यते ।।३२०।। चतुरांशेन तेनैव मंदाग्निः स प्रकीर्तितः । अर्द्धीकृताभ्यां द्वाभ्यां तु मध्यमाग्निरुदाहृतः ।।३२१।। अर्द्धैस्तैः पंचभिः प्राक्तः खराग्निः सर्वकर्मसु । मस्तकावधि पात्रस्य चतुर्दिक्षु क्रमेण च । प्रसरन्ति यदा ज्वालाः स भटाग्निरुदीरितः ।।३२२।।

(अर्कप्रकाश)

अर्थ–अग्नि छः प्रकार की है, उनके नाम ये हैं–धूमाग्नि १, मन्दाग्नि २, दीपाग्नि ३, मध्यमाग्नि ४, खराग्नि ५ और भटाग्नि ६। अब हम इनके लक्षणों को कहेंगे–ज्वाला रहित जो धूमशिखा है उसको धूमाग्नि कहते हैं, धूमाग्नि से दूनी या चौगुनी अग्नि को दीपाग्नि कहते हैं। दीपाग्नि से चौगुनी आंच का मंदाग्नि कहते हैं, ढाईगुनी मंदाग्नि मध्यमाग्नि कहते हैं और ढाई गुनी मध्यमाग्नि को खराग्नि कहते हैं। जब पात्र की चोटी तक ज्वाला चारों तरफ निकले तो उसे भटाग्नि कहते हैं।।३१९–३२२।।

पुटशब्दार्थ

रसादिद्रव्यपाकानां प्रमाणज्ञापनं पुटम् । नेष्टान्यूनाधिकः पाकः सुपाकं हितमौषधम् ।।३२३।। लोहादेरपुनर्भावो गुणाधिक्यं ततोऽग्रता ।। अनप्सु मज्जनं रेखा पूर्णता पुटतो भवेत् ।।३२४।। पुटाद्ग्राव्णो लघुत्वं च शीघ्रव्याप्तिश्च दीपनम् । जारितादपि सूतेन्द्राल्लोहानामधिको गुणः ।।३२५।। यथाऽऽत्मनि विशेद्वह्निर्बहिस्थः पुटयोगतः । चूर्णत्वाद् द्विगुणावाप्तिस्तथा लोहेषु निश्चितम् ।।३२६।।

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–रसादिकों के प्रमाण के अनुसार पुट बनाना चाहिये और वह पुट न तो छोटा हो और न बड़ा हो क्योंकि, पुट के छोटे या बड़े होने से पाक ठीक नहीं होता और पाक का ठीक होना ही हित है। पुट देने से धातु जल में डूबता नहीं है और अंगूठे तथा उंगलियों की रेखाओं में प्रविष्ट हो जाता है। पाषाणों को पुट लगाने से हलका शीघ्रव्यापी और दीपन होता है। भस्म किये हुए पारद से धातुओं का गुण अधिक है, जिस प्रकार बाहर की अग्नि पुट के योग से आत्मा में प्रविष्ट हो जाती है, ऐसे ही धातुओं में चूर्ण होने से गुण दूना होता है।।३२३–३२६।।

महापुट लक्षण

निम्नविस्तरतः कुंडे द्विहस्ते चतुरस्रके।। बन्योपलसहस्रेण पूरिते पुटनौषधम् ।।३२७।। क्रौच्यां रुद्धं प्रयत्नेन पिष्टिकोपरि निक्षिपेत् । बन्योपलसहस्रार्धं कौष्ठिकोपरि विन्यसेत् ।।३२८।। वह्निं प्रज्वालयेत्तत्र महापुटमिदं स्मृतम् ।।३२९।। (र. रा. प.)

अर्थ–दो हाथ लंबा चौड़ा और दो हाथ गहरा जिसमें कि एक हजार जंगली कंडे आ जावें, ऐसा कुंड बनवावे फिर दो शकोरों में औषधि रख ऊपर से कपरौटी कर सुखाय उस गड्ढे में रखे जिसके नीचे पांच सौ कंडा रख उस पर औषध रख फिर पांच सौ कंडा ऊपर रखे तदनंतर आंच लगा देवे। स्वांगशीतल होने पर औषधि निकाले तो इसको महापुट कहते हैं।।३२७–३२९।।

गजपुटलक्षण

राजहस्तप्रमाणेन चतुरस्रं च निम्नकम् । पूर्णं चोपलसाठीभिः कंठावध्यथ विन्यसेत् ।।३३०।। विन्यसेत्कुमुदीं तत्र पुटनद्रव्यपूरिताम् ।। पूर्णच्छगण–तोऽर्धानि गिरिण्डानि विनिक्षिपेत् ।।३३१।। एतद्गजपुटं प्रोक्तं महागुणविधा–यकम् ।।३३२।। (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–एक हाथ लंबा तथा एक ही हाथ चौड़ा और एक ही हाथ गहरा चौकोन गड्ढा खोदकर कठपर्यन्त उपले भर देवे। उस पुट के बीच में छोटी कुलिया में औषधि को रखकर आधे ऊपर आधे नीचे उपला भर देवे तो इसको उत्तम गुणदाता गजपुट कहते हैं।।३३०–३३२।।

वाराहपुट लक्षण

इत्थं चारत्निके कुंडे पुटं वाराहमुच्यते ।।३३३।।

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–इसी प्रकार अर्थात् गहराई तथा लंबाई चौड़ाई में पौन हाथ हो, उसके बीच में औषधि रख ऊपर नीचे उपले रख आंच लगा देवे। बस इसको वाराहपुट कहते हैं।।३३३।।

गजपुटप्रकार

सपादहस्तमानेन कुंडे निम्ने तथायते ।। बनोपलसहस्रेण पूर्णे मध्ये विधारयेत् ।।३३४।। पुटनद्रव्यसंयुक्तां कोष्ठिकां मुद्रितां मुखे ।। अथार्धानि करंडानि चार्द्धान्युपरि निक्षिपेत् ।। एतद्गजपुटं प्रोक्तं ख्यातं सर्वपुटोत्तमम् ।।३३५।।

(र. रा. म.)

अर्थ–मिट्टी की कुटिया बनाकर उसमें औषधि भर मुख पर मुद्राकर सुखावे। उसको सवा हाथ लंबे तथा चौड़े और गहरे कुंड में पांच सौ कंडे नीचे रखकर उस पर औषधि रख फिर पांच सौ कंडे ऊपर से रखकर आंच लगावे। यह गजपुट सब गजपुटों में उत्तम है।।३३४।।३३५।।

(र. रा. म.)

सम्मति–मेरी समझ में यह महापुट आता है क्योंकि महापुट में एक हजार अरने कंडों का लेख श्रीवाग्भट महाराज ने अपने बनाये हुए रसरत्न

समुच्चय में किया है।

गजपुट के १३ भेद और १ प्रकार

गजपुट की हैं तेरह जाति । न्यारी न्यारी बरने ख्याति ॥
एक एक गज ओंडा होय । ये द्वे गज जु चाकरे सोय ॥
इह जंत्रहि जाने संसार । और जंत्र है विकट अपार ।
एक एक गज ओंडा जानि । बडौ आधगज कीजै बानि ।
कूखिडंठ गजु मानी रहे । तर आधु गज कवियनु कहे ॥
यहै यंत्र विधि शोधन कियो । और यंत्र अब सुनो बियो ॥

(रससागर)

गजमौरयंत्र

तिरछो गजभारे करे सम्हारि । ओंडी धरै डेढ गज नारि ।
तरहर नोंन बांटि बिछवाय । तापर शीशी धरे बनाय ॥
गाडे तै आधु गज छांडि । ऊपर गजु भरि लीजै डाडि ॥
दे पिधान मुद्रिजे बनाय । जैसे सासन तरहर जाय ॥
गरै गजभरि खाली रहै । लेंडी भरे पंच कवि कहै ॥
दिनप्रीति आगि देह इह रीति । संख्याकी किरियामें प्रीति॥
या यंत्रे जु नाम गज मौर । गुरु विन यहि कर सके न और ॥

(रससागर)

गजसंपुटयंत्र

और यन्त्र ओंडौ गजतीनि । पुनि चाकरौ बराबरि कीनि ॥
संपुटनाद धरै ता मांझ । भरै द्योस पर जोरे सांझ ॥
लीजै बीनि आरने कोई । चेंटी जीव न तामें होई ॥
या यन्त्रको गजसंपुट नाम । करै आरने न करै धाम ॥

(रससागर)

गजभरयंत्र

और यन्त्र कीजै गज चार । चारचो गज कीजै विस्तार ॥
ता में गजभरि गाडो करै । गर्भ खोद के मथना धरै ॥
ता मथना में शीशी मेलि । ऊपर लेंडी भरै सकेलि ॥
शीशी को मुद्रा करि धरै । मथना बांधि लोनसों भरै ॥
मथना मूँदि दीजिये आगि । सोरह द्योस रातिदिन जागि ॥
बाखर किरिया कहिये ताम । है गजभँवर यन्त्र को नाम ॥

(रससागर)

कुक्कुटपुटलक्षण

पुट भूमितले यत्तद्वितस्तिद्वितयोच्छ्रयम् ।।
तावच्च तलविस्तीर्णं तत्स्यात्कुक्कुटकं पुटम् ॥३३६॥

(र. र. स., र. रा: प.)

अर्थ–पृथ्वी पर एक बालिश्त गहरे और उतने ही लम्बे चौड़े गड्ढे में औषधि रखकर आंच लगावे तो उसको कुक्कुटपुट कहते हैं।।३३६।।

कपोतपुटलक्षण

यत्पुटं दीयते भूमावष्टसंख्यैर्वनोपलैः ।
बद्धसूतार्कभस्मार्थं कपोतपुटमुच्यते ॥३३७॥

(र. र. स.,–र. रा. प)

अर्थ–जो कि बद्ध पारद और ताम्रभस्म के लिये पृथ्वी पर ही आठ अरने उपलों की जो अग्नि दी जाती है, उसको कपोतपुट कहते हैं।।३३७।।

गोबर तथा गोबरपुट का लक्षण

गोष्ठान्तर्गोखुरक्षुण्णं शुष्कं चूर्णितगोमयम् । गोबरं तत्समादिष्टं वरिष्ठं रससाधने ।।३३८।। गोवरैर्वा तुषैर्वापि पुटं यत्र प्रदीयते । तद्गोवरपुटं प्रोक्तं रसभस्मप्रसिद्धये।।३३९।।

(र. र. स.–र. रा. प.)

अर्थ–गोष्ठ (गौओं के चरने का स्थान) में गाय बैलों के पावों से खुदे हुए तथा सूखे हुए गोबर को शास्त्र में गोमय कहते हैं और वह रस साधन के लिये श्रेष्ठ है। जहां उक्त संज्ञावाले गोबर से या तुषों से पृथ्वी पर ही जो रसभस्म के लिये पुट दिया जाता है, उसको गोवरपुट कहते हैं। (गोबरपुट के स्थान में गोमयपुट का पाठ रखना उत्तम है।) ।।३३८–३३९।।

भांडपुट लक्षण

स्थूलभांडे तुषापूर्णे मध्ये मूषासमन्विते ।
वह्निना विहिते पाके तद्भांडपुटमुच्यते ।।३४०।।

(र. र. स., र. रा. प., र. रा. सुं.)

अर्थ–एक बड़े गगरे में तुष भरकर बीच में औषधि पूर्ण मूषा रख देवे और उसके नीचे अग्नि लगाने से जब पाक ठीक हो जाये तब स्वांग शीतल होने पर औषधि निकाले उसको भांडपुट (कुम्भपुट) कहते हैं।।३४०।।

भांडपुट स्वरूप

बड़ी मथनिया के विषे, तुषपूरन भरिलेय ।
सम्पुट धरि अधबीचमें, फेरि अग्नि भरिदेय।।
मथनी मुख को ढांकि कै, तापै दीजै बाम ।
कह्यो भाण्डपुटको मुनी, यह स्वरूप अभिराम ।.

(वैद्यादर्श)

वालुकापुट लक्षण

अधस्तादुपरिष्टाच्च क्रौञ्चिकाऽऽच्छाद्यते खलु ।
बालुकाभिः प्रतप्ताभिर्यत्र तद्वालुकापुटम् ।।३४१।।

(र. र. स., र. रा. सुं.)

अर्थ–मूषा के ऊपर तथा नीचे बालू रेत भरकर जो पुट लगाया जावे उसको वालुकापुट कहते हैं।।३४१।।

भूधरपुट लक्षण

वह्निमित्रां क्षितौ सम्यङ् निखन्याद्द्व्यङ्गुलादधः ।
उपरिष्टात्पुटं यत्र पुटं तद्भूधराह्वयम् ।।३४२।।

(र. र. स., र. रा. प., र. रा. सुं.)

अर्थ–पृथ्वी में दो अंगुल के नीचे वह्नि मित्रा रखकर जो पुट बनाया जाता है उसको भूधरपुट कहते हैं।।३४२।।

लावकपुटलक्षण

ऊर्ध्वं षोडशिकामूत्रैस्तुषैर्वा गोवरैः पुटम् ।
यत्र तल्लावकाख्यं स्यात्सुमृदुद्रव्यसाधने ।।३४३।।

(र. रा. सुं.)

अर्थ–जिस पुट के ऊपर षोडशिका का मूत्र, धान की भुस अथवा गोबर रख के बनाया जाता है, उसको लावक पुट कहते हैं।।३४३।।

अनुक्तपुटलक्षण

अनुक्तपुटमाने तु साध्यद्रव्यबलाबलात् । पुटं विज्ञाय दातव्यमूहापोह–विचक्षणैः ।।३४४।। (र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–जहां पुट का प्रमाण न हो वहां सिद्ध करने योग्य पदार्थ का बल और अबल विचार कर विचारशील वैद्यों को पुट देना चाहिये।।३४४।।

कुंभयंत्र (एक प्रकार का पुट)

एक मूसि लंबीसी करै । कंडाभरि गगरी मैं धरै ।।
इह विधि गगरी करे बनाई । मांझ मूसि धरिये हरवाई ।।
कूखि छेद गागरि करवाई । कुंभयंत्र यह जानो राई ।।

(रससागर)

नादी यंत्र (एक प्रकार का पुट)

नादी एक कुलालह तनी । गागरि नीरु माई सो भनी ।।
मांह सकोरा ओंधो धरै । बस्तमाह दै आधी करै ।।
हांडीमुद्रा कै मूंदे ताहि । नादीयंत्र नाम यह आहि ।।

(रससागर)

छगण के नाम

पिष्टकं छगणं छाणमुत्पलं चोपलं तथा । गिरिण्डोपलसाठी च वराटी छगणाभिधाः ।।३४५।।

(र. र. सं., र. रा. प.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबू–
निरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां
यन्त्रनिरूपणं नाम षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

अर्थ–पिष्टक, छगण, छाण, उपल, गिरिण्ड, उपलसाठी तथा वराटी ये कंडों के नाम हैं।।३४५।।

जलमुद्रा सुर्वसे (उर्दू)

सनदेसी ३ जुज रेजः रेजः नमूदः सुर्व एक जुज एक लाख चोट से जलमुद्रा बन जाती है। अजवियाज हकीम मुहम्दफतहयाबखां सोहनपुरी।

मुतअल्लिक कवची जंतर यानी शीशी चन्द्रोदय वगैरः के मुतअल्लिक (उर्दू)

शीशी या जर्फ जिसमें दवाई अकसीरी है, इसको अव्वल खुला रखना चाहिये, ताकि जुमले रतूवत इसकी खुश्क हो जावे, मुनासिब है कि पहले मुंह इसका रुई से बंद कर दे जब तक बुखार का असर रुई पर पहुंता रहे उस वक्त तक उसका मुँह खुला रहने दे अकसीरी नुसखे में रतूव्रत शीशी के अन्दर से जब निकल जावे उसमें मुद्रा ख्वाह मुहर सुलेमानी लगावे ताकि अदविया वाहम चक्कर खाकर मुनअक्लिद हो जाय। रथूवत जब जर्फ से निकला जाती है तो जर्फ कमशिकस्त होता है और अकसीर तैयार हो जाती है (सुफहा २३ किताब अखबार अकलीमियाँ १६/३/१९०५)

आतिश हुकमाई (उर्दू)

दवा को किसी बर्तन में बंद करके आग में दो। सर्द होने पर इसी कदर और आग देते जाओ इसी तरह उस वक्त तक अमल करो जिस कदर कि उसके लिये लिखा है–मस्लन डेढ़ सेर आंच पांच रोज तक लिखी है पस डेढ़ सेर उपलों की आग में दवा को रखो जब आँच सर्द हो जावे तब डेढ़ सेर उपले और डाल दीजिये इसी तरह पांच रोज तक अमल करना चाहिये (सुफहा अखबार अकलीमियाँ १/६/१९०५)

आतिशहुकमा (उर्दू)

अगर गजपुट की आग मुद्दत मजकूरः तक देना मंजूर है तो इससे आतिशहुकमा मुराद है, स्लाहफन में इसी तरह है कि दवा बोता मुअम्मा में रखकर गोला यानी गड्ढे में रखकर मामूलन अग्नि पुट दे जब सर्द हो जावे फिर इसी कदर कर्सी या कंडे या भूभल भरकर इसी तरह आग देकर सर्द करे मामूली गजपुट में जो एक हाथ मुकम्सर होता है, अगर इसमें कंडे भर दिये जावें तो कम से कम आठ पहर यानी एक दिन रात भर इसमें आग रहती है गर्ज यह कि इसी तरह आग मुकर्रर कंडे भर भरा कर दिया करे। ताकि मुद्दत मुअय्यनः पूरी हो जावे और दवा को इस अर्से में खोले नहीं, न बोता से निकाल कर देखें (सुफहा २४ किताब अखबार अकलीमियाँ १६/३/१९०५)

इति श्रीजैसलमेंनिवासिपंडितमनसुखदातात्मजव्यास–
ज्येष्ठमलकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां यंत्रानि–
रूपणं नाम षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

अथ सप्तमो वर्गाध्यायः ७

पंचमृत्तिका

इष्टका गैरिकाः लोणं भस्म वल्मीकमृत्तिका ।
रसप्रयोगकुशलैः कीर्तिताः पंच मृत्तिकाः ।।१।।

(र. र. स.)

अर्थ–पारद कर्म में चतुर वैद्यों ने ईंट, गेरू, नोंन, राख और वल्मीक (वमई) की मिट्टी ये पांच मिट्टियां पारद कर्म में उपयोगी कही हैं।।१।।

अन्यच्च

वल्मीकमृत्तिका धूमगैरिकं चेष्टिका खटी ।।
इत्येता मृत्तिकाः पंच प्रोक्तस्थाने प्रयोगिकाः ।।२।।

(टो.नं.)

अर्थ–वमई की मिट्टी, भाडका धूआं, गेरू, ईंट, खरिया ये पांच मिट्टियां अपने अपने स्थानपर काम में लानी चाहिये।।२।।

धातु प्रकार

सुवर्णं रजतं ताम्रं त्रपु सीसकमायसम् ।।
षडेतानि च लोहानि कृत्रिमौ कांस्यपित्तलौ ।।३।।

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–सोना, चाँदी, तांबा, रांग, सीसा और लोहा ये छः धातु असली है और कांसा और पीतल ये दोनों क्रृत्रिम (नकली) हैं।।३।।

विषवर्ग

शृङ्गीकं कालकूटं च वत्सनाभं च सक्तुकम् । पित्तं च विषवर्गोऽयं संवरः[1] परिकीर्तितः ।।४।। रसकर्माणि शस्तोयं तद्बद्धेन विधावपि । अयुक्त्या सेवितश्चायं मारयत्येव निश्चितम् ।।५।।

(र.र.स.,र.रा.प.)

अर्थ–सीगिया, कालकूट, वत्सनाभ और चार (सर्प विच्छू आदि) सहित पित्ता यह विषवर्ग है। यह विषवर्ग पारद कर्म तथा पारद बंधन में भी उपयोगी होता है और वह बिना युक्ति से अर्थात् अधिक मात्रा या विरुद्धानुपान के साथ सेवन किया हुआ मनुष्यों को मार ही देता है, इसमें सन्देह नहीं ।।४।।५।।

१–मचरः इत्यपि । २–तद्वन्धन इत्यपि।

उपविषवर्ग

लांगली विषमुष्टिश्च करवीरजयास्तथा ॥
नीलकः कनकोऽर्कश्च वर्गो ह्युपविषात्मकः ॥६॥

(र. र. स.)

अर्थ–लांगली (कलिहारी), कुचला, कन्हेर, जया (भाँग), नीलक (कंचनोन), धतूरा और आक इनको उपविष कहते हैं॥६॥

सम्मति–नील का अर्थ कोशों में कचनोंन कहा है परन्तु कचनोंन का उपविषों में कहीं भी लेख नहीं है, इसलिये थूहर का वाची (सेहुण्ड) का पाठ होना उचित है॥

अन्यच्च

स्नुह्यर्कौ करवीरश्च धत्तूरो लांगली तथा ॥
पंचैवोपविषा मुख्याःरक्तवर्गमतः श्रृणु ॥७॥

(र. प.)

अर्थ–थूहर, आक, कन्नेर, धतूरा और कलिहारी, ये पांच उपविष प्रधान माने गये हैं॥७॥

पांचो नमक के नाम (उर्दू)

पांचो नमक यह होने चाहिये। १ सैंधा, २ सांभर, ३ खारी, ४ नमक मोंचर, ५ नमक पांगा जिसको हिन्दी में अद्भुतलोन और पामालोन और फारसी में नमक नफती कहते हैं(मुफ्हा अकलीमियाँ १५२)

लवणपंचक

सामुद्रं सैन्धवं काच चुल्लिका च सुवर्च्चलम् ।
मूलिका च नवक्षारा ज्ञेयं लवणपंचकम् ॥८॥

(कामरत्न)

अर्थ–समुद्रनोंन, सैंधव, कचलोन, खारी नोन और काला नोंन ये लवण पंचक है॥८॥

लवणषट्क

लवणानि षडुच्यंते सामुद्रं सैंधवं विडम् ।
सौवर्चलं रोमकं च चूलिका लवणं तथा ॥९॥

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–समुद्रनोंन, सैंधव, बिडनोंन, कालानोंन, रोमक (रुमदेश की नदी से पैदा हुआ) और खारी इन छहो नोनों को लवणषट्क कहते हैं॥९॥

लवणवर्ग

लवणानि च कथ्यन्ते सामुद्रं सैंधवं विडम् । सौवर्चलं रोमकं च चूलिका लवणं तथा ॥१०॥ (रसेन्द्र–सा. सं.)

अर्थ–लवणों का वर्णन करते हैं सामुद्र, सैन्धव, बिडनोन, नोनस्याह, रोमक और खारीनोन ये छः लवण हैं॥१०॥

क्षारद्वय

स्वर्जिका यावशूकश्च क्षारद्वयमुदाहृतम् ।

(कामरत्न)

अर्थ–सज्जीखार और जवाखार को क्षारद्वय कहते हैं॥

क्षारत्रय

त्रिक्षारष्टंकणक्षारो यवक्षारश्च स्वर्जिका ॥११॥

(कामरत्न)

अर्थ–सज्जीखार, जवाखार और सुहागे को क्षारत्रय अर्थात् तीन क्षार कहते हैं॥११॥

अन्यच्च

क्षारत्रयं समाख्यातं यवसर्जिकटंकणम् ।

(र. र. स.)

अर्थ–सज्जीखार, जवाखार और सुहागें के फूले को क्षारत्रय कहते हैं॥

क्षाराष्टक

पलाशवज्रिशिखरिंचिंचार्कतिलनालजाः । यवजः स्वर्जिका चेति क्षाराष्टकमुदाहृतम् ॥१२॥

(र. रा. प.)

अर्थ–पलाश (ढाक), थूहर, ओंगा, इमली, तिलनाल, आक, जव और सज्जी इनके क्षारों को क्षाराष्टक कहते हैं॥१२॥

वृक्षक्षार

तिलापामार्गकदलीपलाशाः शिग्रुपौंड्रकौ ॥ मूलकार्द्रकचित्राश्च सर्वमन्तः पुटे पचेत् ॥१३॥ समालोडच जलैर्बद्धा वस्त्रे ग्राह्यमधोजलम् । शोधयेत्पाचयेदग्नौ मृद्भाण्डेन तु तज्जलम् । ग्राह्यं क्षारावशेषं तु वृक्षक्षारमिदं स्मृतम् ॥१४॥ (कामरत्न)

अर्थ–तिल, ओंगा, केला, ढाक, सैजना, पोंडा, मूली, अदरख और चीता इनमें से जिसका क्षार बनाना हो, उसको सुखा किसी मिट्टी के पात्र में भर ऊपर से मुख बंद कर अग्नि में जलावे फिर उस राख को जल में घोलकर एक टिकड़ी में कपड़ा बांध उस जल को अनेक बार चुआकर साफ कर ले और उस जल को मिट्टी के पात्र में डालकर चूल्हे पर रख नीचे से अग्नि लगावे फिर जल के सूखने पर जो क्षार नीचे जमता है उसको वृक्षों का क्षार कहते हैं॥१३॥१४॥

श्वेत[1] (शुक्ति) वर्ग

शंखशुक्तिवराटैश्च स्याच्चूर्णं शुक्लवर्गकः ॥

(र. प.)

अर्थ–शंख, सीप और कौड़ियों के चूर्ण को श्वेतवर्ग कहते हैं॥

अम्लपंचक

कोलदाडिमवृक्षाम्लचुल्लिकाचुक्रिकारसम् ।
पंचाम्लकं समुद्दिष्टं तच्चोक्तं चाम्लपंचकम् ॥१५॥

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–कोल (बेर), अनार, वृक्षाम्ल (अम्लवेत), चूल्लिका और चूका इनको (पंचाम्ल) अम्लपंचक कहते हैं॥१५॥

अम्लवर्ग

जम्बीरं नागरंगश्च मातुलुंगाम्लवेतसम् ।
चांगेरी चणशुक्रश्च अम्लवर्गः प्रकीर्तितः ॥१६॥

(कामरत्न)

अर्थ–जंभीरी, नांरगी, बिजोरा, अम्लवेत, चांगेरी (खट्टालौनिया) और चने का खार इनको अम्लवर्ग कहते हैं॥१६॥

---

१ मेरी राय में यह शुक्तिवर्ग है, शुक्लवर्ग नहीं है।

अन्यच्च

अम्लवेतसजंबीरनिम्बुकं बीजपूरकम् । चाङ्गेरी चणकाम्लं च ह्यम्लिकं कोलदाडिमम् ॥१७॥ अम्बष्ठा तिंतिणीकं च नारङ्गं रसपत्रिका । करवन्दं तथा चान्यदम्लवर्गः प्रकीर्तितः ॥१८॥

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–अमलवेत, जंभीरी, नींबू, विजौरा, लौनिया, चने के वृक्ष की खटाई, इमली, बेर, अनार, स्योनाक (जरस्क), नारंगी, खट्टापालख और करोंदा इनको भी अम्लवर्ग कहते हैं॥१७॥१८॥

अम्लगण

अम्लवेतसजम्बीरलुङ्गाम्लचणकाम्लकाः । नागरङ्गन्तिन्तिडीकं चिञ्चापत्रञ्च निम्बुकम् ॥१९॥ चाङ्गेरी दाडिमञ्चैव करवर्द तथैव च । एव चाम्लगणः प्रोक्तो वेतसाम्लसमायुतः ॥२०॥ (रसेन्द्र–सा. सं.)

अर्थ–अम्लवेत, जंभीरी, विजौरा, चने की खटाई, नारंगी, तिंतिडीक (स्योनाक), इमली, निम्बू, अनार, खट्टीलौनिया और करोंदा इनको अम्लगण कहते हैं॥१९॥२०॥

चणकाम्ल और अम्लवेतसप्रशंसा

चणकाम्लश्च सर्वेषामेक एव प्रशस्यते । अम्लवेतसमेकं वा सर्वेषामुत्तमोत्तमम् ॥ रसादीनां विशुद्धयर्थं द्रावणे जारणे हितम् ॥२१॥

(र. र. स. र. रा. प)

अर्थ–सब खटाइयों में चने की खटाई उत्तम गिनी जाती है या अम्लवत ही समस्त खट्टे पदार्थों में उत्तम है। रसादिकों की शुद्धि गलाने और जारण करने में भी उत्तम माना गया है॥२१॥

मधुरत्रय

घृतं गुडो माक्षिकं च विज्ञेयं मधुरत्रयम् ॥

(र. र. स., र. रा. प.)

घी, गुड और शहद इन तीनों का मधुरत्रय कहते हैं॥

दुग्धवर्ग

हस्त्यश्ववनिताधेनुगर्दभीछागिकाविका । उष्ट्रिकोदुम्बराश्वत्थभानुन्यग्रोधतिल्वकम् ॥२२॥ दुग्धिकास्तु गणं चैतत्तथैवोत्तमकण्ठिका । एषां दुग्धैर्विनिर्दिष्टो दुग्धवर्गो रसादिषु ॥२३॥ (र. र. स.)

अर्थ–हथिनी, घोडी, स्त्री, गौ, गधी, बकरी, भेड़, ऊँटिनी, गूलर, पीपल, न्यग्रोध (बरगद), लोध, दुद्धी, थूहर दुग्धवर्ग है। कहीं कहीं कटेरी को भी इसी वर्ग में माना है। रसादि कर्मों में जहां दुग्धवर्ग लिखा हो वहां इन पदार्थों के दूध से काम करना चाहिये॥२२॥२३॥

मूत्रवर्ग

मूत्राणि हस्तिकरभमहिषीखरवाजिनाम् ॥
गोजावीनां स्त्रियां पुंसां मूत्रवर्ग उदाहृतः ॥२४॥

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–हाथी, ऊँट, भैंस, गदहा, घोड़ा, गाय, बकरी, भेड़, पुरुषों के स्त्रियों के मूत्र को मूत्रवर्ग कहते हैं॥२४॥

समालोचना–रसरत्नसमुच्चय में (मूत्रवर्ग उदाहृतः) इस पाठ की जगह (पुष्पबीजं तु योजयेत्) ऐसा जो पाठ है, इसका अर्थ यह है कि स्त्रियों के पुष्प अथवा पुरुषों के वीर्य का प्रयोग करे। यद्यपि लौकिक व्यवहार में मूत्रवर्ग में स्त्रियों के रज तथा पुरुषों के वीर्य का मूत्र शब्द से ग्रहण होने के कारण रज और वीर्य का पाठ मूत्रवर्ग में होना संभव हो सकता है तथापि मेरी सम्मति में रसरत्नसमुच्चय का पाठ असंगत (अशुद्ध) है क्योंकि स्त्रियों का रज तो शास्त्रों में अनेक स्थलों में उपयोगी लिखा है परन्तु पुरुषों का वीर्य औषधोपयोगी नहीं लिखा है, इस कारण रसेन्द्रसार संग्रह का पाठ ही ठीक है॥

विड् (विष्ठा) गण

पारावतस्य चाषस्य कपोतस्य कलापिनः । गृध्रस्य कुक्कुटस्यापि विनिर्दिष्टो हि विड्गणः ॥ शोधनं सर्वलोहानां पुटनाल्लेपनात्खलु ॥२५॥

(र. र. स)

अर्थ–रसकर्म में कबूतर, पपीहा, गीध, मोर और मुर्गा इनकी विष्ठा को विड्वर्ग कहते हैं। इन विष्ठाओं के पुट देने से अथवा लेप करने से समस्त धातुओं की निश्चय शुद्धि हो जाती है॥२५॥

पुष्पबीज

गोजावीनां स्त्रियः पुंसां पुष्पं बीजं तु योजयेत् ॥२६॥

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–रसकर्म में जहां रजशब्द या बीजशब्द का पाठ हो वहां क्रम से स्त्रियों के मासिकधर्म का रक्त और पुरुषों के वीर्य का ग्रहण करना चाहिये॥२६॥

सम्मति–इस विषय में भी मूत्र वर्गोक्त में की हुई समालोचना समझनी चाहिये।

पित्तपञ्चक

नराश्वशिखिगोमत्स्यपित्तैः स्यात्पित्तपञ्चकम् ॥२७॥

(र. मं.)

अर्थ–मनुष्य, घोड़ा, मोर, गौ, और मत्स्य (मछली) इनके पित्तों को पित्त पंचक कहते हैं॥२७॥

पित्तवर्ग

पित्तं पञ्चविधं मत्स्यगवाश्वनरबर्हिजम् ॥२८॥

(रसेन्द्रसा. सं.)

अर्थ–मत्यस्य, गौ, घोड़ा, मनुष्य, और मयूर से पैदा हुआ पांच प्रकार का पित्त होता है॥२८॥

अन्यच्च

वाराहच्छागमाहिषमात्स्यबर्हिणपित्तकम्। पञ्चपित्तमिति ख्यातं सर्वेष्वेव हि कर्मसु॥२९॥

(रसेन्द्रसा. सं.)

अर्थ–इन समस्त रसादि कर्मों में सूअर, बकरा, भैंसा, मत्स्य और मोर इनके पित्त को पंचपित्त कहते हैं॥२९॥

वसागण

जम्बूकमंडूकवसा वसा कच्छपसंभवा । कर्कोटी शिशुमारी च गोसूकरनरोद्भवाः ॥ अजोष्ट्रखरमेषाणां महिषस्य वसा तथा ॥३०॥

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–गीदड और मेढ़क की चर्बी, तथा कछुवे से पैदा हुई चर्बी, कर्केटाकी चर्बी, शिशुमारी (गोह जो अकसर बालकों को पानी में खींच लेता है) की चर्बी तथा गौ, सूअर और मनुष्य से पैदा हुई चर्बी, बकरा, ऊँट, गदहा और मेंढा और भैंसे की चर्बी इनको वसागण कहते हैं॥३०॥

तैल

कंगुणीतुम्बिनीघोषाकरीरश्रीफलोद्भवम् ॥ कटुबीजार्कसिद्धार्थसोमराजीवि

१–पुष्पबीजं तु योजयेत् -इत्यपि।

भीतजम् ॥३१॥ अतसीजं महाजालीनिम्बजं तिलजं तथा ॥ अपामार्गाद्दिवदालीदंतीतुम्बरुविग्रहात् ॥ ३२॥ अङ्कोलोन्मत्तभल्लातपलाशेभ्य-स्तथैव च ॥ एतेभ्यस्तैलमादाय रसकर्मणि योजयेत् ॥३३॥

(र. र. स.)

अर्थ–कंगुनी (मालकंगनी या कंगई), तोबी, घोषा (सौंफ या मोथा), कन्हैर और नारियल से पेदा हुए तैल को तथा पीपल, आक, सरसों, सोमराजी (बावची) और बहेडे से पैदा हुए तैल को, अलसीका तैल, महाजाली (घियातोरई) और नीमका तैल तथा तिलके तैलको और ओगा, देवदाली (सोनैया बन्दाल), दन्ती (दतोन) तूंबा, अंकोल, धतूरा, भिलावा और ढाक इनसे तैल को निकाल कर रस के कर्म में लाना चाहिये।।३१।।३३।।

क्षार, अम्ल, विष, तैल का उपयोग

क्षाराः सर्वे मलं हन्युरम्लं शोधनजारणम् ॥
मान्द्यं विषाणि निघ्नन्ति स्नैग्ध्यं स्नेहं प्रकुर्वते ॥३४॥

(र. र. स.)

अर्थ–समस्त क्षार मैल को नाश करते हैं और अम्ल पदार्थ रसादिकों का शोधन और जारण करते हैं। विप शक्ति को बढ़ते हैं और स्नेह चिकनाई को पैदा करते हैं।।३४।।

शोधनीयगण

काचटंकणशिप्राभिः शोधनीयो गणो मतः ॥
सत्त्वानां बद्धसूतस्य लोहानां मलनाशनः ॥३५॥

(र. र. स., र. प.)

अर्थ–कांच, मुहागा और शिप्रा (मोती की सीप), ओंसे शोधनगण कहते हैं और वह शोधनगण सत्त्वबद्ध पारद तथा समस्त धातुओं के मल का नाश करनेवाला है।।३५।।

लोह् काठिन्य नाशनवर्ग

कापाली कंगुणध्वंसी रसवादिभिरुच्यते ॥
महिषीमेषशृङ्गोत्थकलिंगो धवबीजयुक् ॥
शशास्थीनि च योगोऽयं लोहकाठिन्यनाशनः ॥३६॥

(र. र. स.)

अर्थ–भैंस और मेढ़े के सींग के भीतरी रवे, धौ के बीज और खरगोश की हड्डियां यह वर्ग लोह के कड़ापन को नाश करता है।।३६।।

द्रावकपञ्चक

गुंजाटंकणमध्वाज्यगुडा द्रावकपञ्चकाः ॥३७॥

(रसेन्द्र सा. सं.)

अर्थ–चौटनी, सोहागा, घी और गुड़ ये पांच द्रावक अर्थात् धातुओं के गलानेवाले पदार्थ कहे गये हैं।।३७।।

अन्यच्च

गुडगुग्गुलुगुंजाज्यसारघंटंकणान्वितैः ॥
दुर्द्रावाखिललोहादेर्द्रावणाय गणो मतः ॥३८॥

(र. र. सः)

अर्थ–गुड, गूगल, चौटनी, घी, शहद, और सुहागा ये द्रावकगण अतिकठिन लोहों को भी गलानेवाला है।।३८।।

मित्रपञ्चक

मध्वाज्यं टंकणं गुंजा गुडः स्यान्मित्रपञ्चकम् ॥३९॥

(र. प.)

अर्थ–शहद, घी, सुहागा, चौटनी और गुड़ यह मित्रपंचक है यानी मृतधातुओं के मिलानेवाला पदार्थ हैं।।३९।।

अन्यच्च

मधुघृतगुग्गुलु गुंजा टंकणमेतत्तु पञ्चकं मित्रम् ।
मेलयति सत्त्वधातूनंगारग्नौ तु धमनेन ॥४०॥

(र. सा. प.)

अर्थ–शहद, घृत, गूगल, चौंटनी और सुहागा यह मित्रपंचक कहाता है। यह अंगारों को अग्नि पर रखकर धोंकने से समस्त सत्त्व और धातुओं को मिला देता है।।४०।।

श्वेतवर्ग

तगरः कुटजः कुन्दोः गुञ्चा जीवन्तिका तथा ॥
सिताम्भोरुहकन्दश्च श्वेतवर्ग उदाहृतः ॥४१॥

(र. र. स.)

अर्थ–तगर, कुटज (इन्द्रजौ का वृक्ष), कुन्द, चौंटनी, जीवन्तिका, (जिसका गुजरात में शाक होता है) तथा श्वेत कमल और कमलकंद इनको श्वेत वर्ग कहते हैं।।४१।।

कृष्णवर्ग

कदली कारवल्ली च त्रिफला नीलिका नलः ।
पंकः कासीसबालाम्रं कृष्णवर्ग उदाहृतः ॥४२॥

(र. र. स.)

अर्थ–केला, करेला, त्रिफला, नील, नल (नरसल), कीचड, कसीस और आम इनको कृष्णवर्ग कहते हैं।।४२।।

पीतवर्ग

किंशुकः कर्णिकारश्च हरिद्राद्वितयं तथा ।
पीतवर्गोऽयमादिष्टो रसराजस्य कर्मणि ॥४३॥

(र. र. प.)

अर्थ–ढाक के फूल, कर्णिकार (गेंदे का फूल), हल्दी तथा दारुहल्दी रसराज के कर्म में इसको पीतवर्ग कहते हैं।।४३।।

अन्यच्च

कुंकुमं किंशुकनिशापतङ्गमदयन्तिकाः ।
पीतवर्गोऽयमुद्दिष्टः श्वेतवर्गमतः शृणु ॥४४॥

(र. प.)

अर्थ–केसर, ढाक के फूल, दोनों हल्दी, पतंग (रतनजोतिं), मदयन्ती, इनको पीतवर्ग कहते हैं।।४४।।

रक्तवर्ग

कुसुंमं खदिरो लाक्षा मञ्जिष्ठा रक्तचन्दनम् । अक्षीवबन्धुजीवश्च तथा कर्पूरगन्धिनी । माक्षिकं चेति विज्ञेयो रक्तवर्गोऽतिरञ्जनः ॥४५॥

(र. र. स.)

अर्थ–कसूम के फूल, कत्था, लाख, मजीठ, गुलदुपहरिया, लाल, चन्दन, अक्षीव (सेंहजन का वृक्ष), बंधुजीव (दुपहरिया के फूल का वृक्ष), कर्पूरगन्धिनी (कपूरकचरी) ये रक्तवर्ग अत्यन्त रंगनेवाला हैं।।४५।।

अन्यच्च

मञ्जिष्ठा कुंकुमं लाक्षा दाडिमं रक्तचन्दनम् ।
बन्धूकं करवीरं च रक्तवर्गोऽयमीरितः ॥४६॥

(र. प.)

अर्थ–मजीठ, कसूम, लाक, अनारके फूल, लालचन्दन, गुलदुपहरिया, लालकनैर, यह रक्तवर्ग कहाता है॥४६॥

रक्तवर्गादिप्रयोग

रक्तवर्गादिवर्गैश्च द्रव्यं सञ्जारणात्मकम् ।
भावनीयं प्रयत्नेन तादृग्रागाप्तये खलु ॥४७॥

(र. र. ल.)

जिस द्रव्य को जारण करना हो उसी द्रव्य को रक्तवर्ग आदि वर्गों से सावधानी से भावना देनी चाहिये जिससे मन चाहे रंग की प्राप्ति हो जाये॥४७॥

माहिष और छागलपंचक

महिषाम्बु दधि क्षीरं ताज्यिवारं शकृद्रसः ॥
तत्पंचमाहिषं ज्ञेयं तद्वच्छागलपंचकम् ॥४८॥

(र. रा. प.)

अर्थ–भैंस का मूत्र, दधि, दुग्ध, घृत और गोबर का रस इसी को माहिष पंचक कहते हैं। इसी प्रकार छागपंचक भी जानना चाहिये॥४८॥

किस कर्म में कौन ईंधन ग्राह्य है

द्रावणे सत्त्वपाते च माधूकाः खादिराः शुभाः ।
दुद्रावे वंशजास्ते तु स्वेदने बादराः शुभाः ॥४९॥

(र. र. स.)

अर्थ–धातुओं के गलाने या सत्त्वपातन में महुवे के तथा खैर के कोयले श्रेष्ठ है और स्वेदन में बेर की लकड़ी के कोयले उत्तम होते हैं॥४९॥

दिव्यौषधिगण

गजकर्णी शंखपुष्पी रुदंती काकतुण्डिका ॥ हंसपादी व्याघ्रनखी चांडाली क्षीरकंदकम् ॥५०॥ वंध्याकर्कोटकी रंभा गोजिह्वा कोकिलाक्षकः ॥ शाकवृक्षो हेमवल्ली पातालगरुडी शमी ॥५१॥ कटुतुम्बी वज्रलता शूरणं वनशूरणम् । मेषश्रृंगी चक्रमर्दो जलकुम्भी शतावरी ॥५२॥ गुंजा कोशातकी नीली आखुपर्णी त्रिपर्णिका ॥ कुक्कुटी कृष्णतुलसी पुंखा श्वेतापराजिता । ॥५३॥ गुडूची लांगली ब्राह्मी चाङ्गेरी पद्मचारिणी । अजामारी काकमाची देवदालीन्द्रवारुणी ॥५४॥

अर्थ–गजकर्णी (हाथी चक्र) शखाहूली, रुदन्ती (उसको कहते हैं जिसके पत्ते चने के पत्तों के समान होते हैं), चौटनी, हंसपादी (लाल रंग की छुई मुई), व्याघ्रनखी, चांडाली (लिंगिनी पंचगुरिया), क्षीरकंद (दूधविदारी) वांझ ककोडी, केला, वनगोभी, तालमखाना, शाकवृक्ष, (सेगुनवृक्ष), हेमवल्ली (पीलीजूही), पातालगरुडी (छीरहता), शमी (छोंकर), कडवी, तूंबी, वज्रलता (हुडसंकरी), जमीकंद, जंगली जमीकन्द, मेढ़ासिंगी, चक्रमर्द (पमार) जलकुंभी, सतावर, श्वेतचौंटनीं, तोरई, नील, मूषाकर्णी (उस कन्द का नाम है जिसके तीन तीन पत्ते होते हैं), कुक्कुटी (सेमर का वृक्ष), श्यामतुलसी, शरपुंखा, सफेद फूलवाली कोयल, गिलोय, कलिहारी, ब्राह्मी, चांगेरी (खदा लौनिया) पदमचारिणी (गेदे का वृक्ष), अजामारी, काकमाची (मकोय कवैया), देवदाली विंदाल) इन्द्रवारुणी (इन्द्रायन) ॥५०–५४॥

काकजंघा शिखिशिखा सर्पाक्षी नागवल्लिका ॥ मत्स्याक्षी कृष्णधत्तूरो बलो नागबला जया ॥५५॥ मुण्डी महाबला भृंगी त्रिविधं चित्रकं निशा॥ मूर्वा काचाननः कन्या पटिका समवर्तकः॥५६॥ विष्णुक्रान्ता कारवल्ली बाकुची सिन्धुवारिका। स्वर्णपुष्पी खण्डजारी मंजिष्ठा पीलुकं वचा ॥५७॥ स्नुही रक्तस्नुहीं बिल्वः कार्पासः कंगुनी तथा ॥ पालाशं कोलबीजं च मेघनादार्कलर्षपाः ॥५८॥ ब्रह्मदंडी महाराष्ट्री श्वेतरक्ता पुनर्नवा । उदुम्बरः सोमलता कुम्भी पुष्करमूलकम् ॥५९॥

अर्थ–काकजघा (ममी) शिखिशिखा (मोरशिखा) सर्पाक्षी (सरहटी) नागवल्लिका (नागरवेल), मत्स्याक्षी (मछेली), काला धतूरा, बला खिरैंटी), नागवला (गंगरेन), जया (अग्निमन्थ) मुण्डी महाबला (सहदेवी), भृंगी (अतीस या बरगद), तीन प्रकार का चीता, हल्दी, मूर्वा काचानन, घीग्वार, पेटिका (पेटारी का वृक्ष), समवर्तक, विष्णुक्रान्ता (कोयल), करेला, बाकुची, सिंधुवारिका, स्वर्णपुष्पी (पीछे फूल की केतकी, खण्डजीरी, मजीठ, पीलू, वच, थूहर, लाल थूहर, बेल, कपास कगई, ढाक, बेरकी मींग, चौलाई, आक, सरसों ब्रह्मदंडी, महाराष्ट्री (जलपीपल) सफेद या लाल फूल की सीठ, गूलर सोमलता कुम्भी (पाथरवृक्ष), पोहकरमूल॥५५–५९॥

तिलपर्णी कृष्णजीरा वृश्चिका वनकोलिका। करंजश्चाग्निधमनी बृहती भूमिपाटली ॥६०॥ यवचिंचेन्द्रवल्ली च मर्कटी बनराजिका । अपामार्गो भूकदम्बो विषपुष्पैकवीरिका ॥६१॥ गोरम्भा बदरी जाती मूसली सहदेविका । एरंड सैन्धवं शुंठी पथ्या मंडूकपर्णिका ॥६२॥ मर्वबो बालकं हिंगु लक्ष्मणा हस्तिचारिणी ॥ क्षीरवृक्षाश्च सर्वे ते तथा नानाविधौषधी ॥६३॥ दिव्यौषधिगणः ख्यातो रसराजस्य साधने । व्यस्तं वाथ समस्तं वा यथालाभं प्रजायते ॥६४॥ तीव्रगधखरस्पर्शैर्बिविधैस्तु बनोद्भवैः । मर्दनात्स्वेदनात्सूतो म्रियते बध्यतेऽपि वा ॥६५॥

(र. प.)

अर्थ–तिलपर्णी (लाल चन्दन), स्याहजीरा, वृश्चिका(विछुआ घास), वनकोकिलाका (झरवेरिया) कञ्जा, अग्निधमनी, बडी कटेरी, भूमि पाटली, इन्द्रवल्ली, मर्कटी (कैंच के वीज), जंगली राई, ओंगा, भूकदंब जिसको बंगाल में कसिसम कहते हैं), विषपुष्पी (नीलकमल), एकवीरिका एकलकण्ठो (गुजराती भाषा), बेर, जायफल, दोनों मूशली सहदेवी, एरण्ड (अंडौआ) सैंधव, साठ, हर्र, मण्डूकपर्णिका (ब्राह्मीभेद) मरवा, नेत्रवाला, हींग, लक्ष्मणा (लक्ष्मणाकन्द) हस्तिचारिणी (वडाकंजा), ये दूधवाले वृक्ष तथा और उत्तम उत्तम औषधियाँ रसराज के साधन में दिव्यौषधिगण कहा है। इनमें से थोड़ी सी वा समस्त जितनी मिल सके उनको प्रयोग करे। जिन औषधियों की तीव्र गन्ध हो अथवा स्पर्श करने में जो खरखरी हो ऐसी अनेक जंगली जडियों के साथ मर्दन करने से या स्वेदन करने से पारद मृत अथवा बद्ध हो जाता है॥६०–६५॥

अन्यच्च

सर्पाक्षी क्षीरिणी वंध्या मीनाक्षी शंखपुष्पिका । काकजंघा शिखिशिखा ब्रह्मदंडयाखुपर्णिका ॥६६। वर्षाभूः कंचुकी दूर्वा सैरीयोत्पलशिंबिका । शतावरी वज्रलता व्रजकंदाग्निकर्णिका ॥६७॥ मंडूकपर्णी पाताली चित्रकग्रीष्मसुन्दरा । काकमाची महाराष्ट्री हरिद्रा तिलपर्णिका ॥६८॥ श्वेतार्कशिग्रुधत्तूरं मृगदूर्वा रसांकुशा । रंभारक्तालुनिर्गुंडीलज्जालुसुरदारिकाः ॥६९॥ जाती जयन्ती श्रीदेवी भूकदम्बः कुसुंभकः । कोशातकी नीरकणा लागली कटुतुंबिका ॥७०॥ चक्रमर्दोऽमृताकन्दः सूर्यावर्तेषु पुंखिका। वाराही हस्तिशुंडी च अपामार्गः कुमारिका ॥७१॥ ईश्वरी बृहती वृद्धी विदारी कृष्णसारिवा । लक्ष्मणा तुलसी दंडी गोजिह्वा चापराजिता ॥ अष्टाष्टकगुणो ह्येष भिन्नोप्यस्ति क्वचित्क्वचित् ॥७२॥

(ध. ध. प.)

अर्थ–सर्पाक्षी (सरहटी), क्षीरिणी (दुद्धी), वन्ध्या (बाँझ ककोडा) मीनाक्ष (मछेछी), शंखाहूली, काकजघा (मसी), शिखिशिखा

(मयूरशिखा), ब्रह्मदन्डी, आखुपर्णी (मूसाकर्णी), सांठ, कंचुकी (अगर), दूब (सैरीय) कटसरैया (उत्पल) कमल, (शिम्बिका) बनमूंग, (शतावर, वज्रलता) हडसंधारी (वज्रकन्द) शकरकन्द (अग्निकर्णिका) मंडूकपर्णी' (ब्रह्मी का भेद), पाताली (छिरछिटा), चीता, ग्रीष्मसुंदरा (गूमा का शाक), काकमाची (मकोय केवैया), महाराष्ट्री (जलीपीपर), हल्दी, तिलपर्णिका (लालचन्दन), श्वेतआक, सैंजना, धतूरा, मृगदूर्वा, रसांकुशा, केला, निर्गंडी, लज्जालु (छुईमुई), सुरदालिका, जायफल, जयती (जैतपुष्पवृक्ष), श्रीदेवी, भूकदम्ब (जिसको बंगला में कसम कहते हैं) कसूम, तोरई, जलपीपल, कडवी, तोरई, कलिहारी, पमार, अमृताकंद, सूर्यावर्त (हुलहुल), शरपुंखा, बाराहीकंद, हस्तिशुंडी (हाथीशुण्डी), ओंगा, घीकुमारि, ईश्वरी (शिवलिंग), बृहती (बडीकटेरी), वृद्धि (अष्टवर्ग के भीतर की एक औषधि), विदरीकंद, कालीसर, लक्ष्मणा (लक्ष्मणकंद), तुलसी, दतौन, वनगोभी, कोयल ये आठ आठ चीजों का गण कहीं कहीं पृथक् भी काम में आता है। इनको दिव्यौषधिगण कहते हैं।।६६–७२।।

नियामकवर्ग

सर्पाक्षी वन्यकर्कोटी कंचुकी यमचिञ्चिका । शतावरी शंखपुष्पी शरपुंखा पुनर्नवा ।।७३।। मंडूकपर्णी मत्स्याक्षी ब्रह्मदंडी शिखण्डिनी । अनंता काकजंघा च काकमाची कपोतिका ।।७४।। विष्णुक्रांता सहचरा सहदेवी महाबला । बला नागबला मूर्वा चक्रमर्दः करञ्जकः ।।७५।। पाठा तामलकी नीली जालिनी पद्मचारिणी । घंटा त्रिकंटा गोजिह्वा कोकिलाक्षो घनध्वनिः ।। आखुपर्णी क्षीरिणी च त्रपुषी मेषशृङ्गिका ।।७६।। कृष्णवर्णा च तुलसी सिंहिका गिरिकर्णिका । एता नियामकौषध्यः पुष्पमूलदलान्विताः ।।७७।। (रसेन्द्रसा० सं०)

अर्थ–सर्पाक्षी (सरहटी), वनकरेला, कंचुकी (अगर), घोंघची, शतावर, शंखाहूली, सरफोंका, सोंठ, मण्डूकपर्णी (ब्राह्मीभेद), मत्यस्याक्षी (मछेछी), ब्रह्मदंडी, शिखडिनी, जुही, अनंता (गौरीसर), काकजंघा (मसी), काकमाची (मकोय केवैया), कपोतिका, विष्णुक्रांता (कोयल), सहचरा (पीयाबासा), सहदेवी (पीले फूल का दंडोत्पल), महाबला (सहदेवी), बला (खरैंटी), नागबला (गंगरेन), मूर्वा, चक्रमर्द (पमार) कंजा, पाडल, तामलकी (भुई आंवला चित्रकूट देश में प्रसिद्ध), नीली (नील), जालिनी (नेनुआ तोरई), पद्मचारिणी (गेंदे का फूल), घण्टा (कठपाडर), त्रिकण्टा (तिधारा), गोजिह्वा (वनगोभी), कोकिलाक्ष (तालमखाना), घनध्वनि (नागरमोथा), आखुपर्णी (मूषाकर्णी), क्षीरिणी (दुद्धी), त्रपुषी (खीरा), मेढ़ासिंगी, काली तुलसी, सिंहिका (कटेरी), गिरिकर्णिका (सफेद किणहीवृक्ष), फूल, जड़ और पत्तों सहित ये वृक्ष नियामक औषधियों के नाम से कहाते हैं।।७३–७७।।

अन्यच्च

नियामकास्ततो वक्ष्ये सूतमारणकर्मणि । सर्पाक्षी क्षीरिणी वन्ध्या मत्स्याक्षी शरपुंखिका ।।७८।। काकजंघा शिखिशिखा ब्रह्मदंडचाखुपर्णिका । वर्षाभूः कन्चुकी मूर्वा पटुकोत्पलचिञ्चिका ।।७९।। शतावरी वज्रलता वज्रकंदा त्रिकर्णिका । मंडूकपर्णी पाटाली चित्रको ग्रीष्मसुन्दरः ।।८०।। काकमाची महाराष्ट्री हरिद्रा तिलपर्णिका । श्वेतार्कशिग्रुधुस्तूरमृगदूर्वा हरीतकी ।।८१।। गुडूची मूषली पुंखा भृंगराड्रक्तचित्रकम् । तगरं सूरणं मुंडी मलङ्कापोतकोकिलम् ।।८२।। सैन्धवं श्वेतवर्षाभूः साम्बरं हिंगुमाक्षिकम् । विष्णुक्रान्ता सोमवल्ली व्रणघ्नी यक्षलोचनम् ।।८३।। व्याघ्रपादी हंसपादी वृश्चिकाली कुरण्टकम् । स्वयम्भूकुसुमं कुञ्ची हस्तिशुंडीन्द्रवारुणी ।। बीजान्यहस्करस्यापि सर्व्वश्चैते नियामकाः ।।८४।।

(र. र.)

अर्थ–अब पारद के मारने के लिये नियामक औषधियों को कहते हैं। सर्पाक्षी (सरहटी), क्षीरिणी (दुद्धी), वन्ध्या (बांझककोडा), मत्स्याक्ष (मछेछी), सरफोंका, काकजंघा (मसी, शिखिशिखा), मयूरशिखा), ब्रह्मदंडी, आखुपर्णी (साढ, कंचुकी) (अगर), मूर्वा, पटुका, कमल, इमली, शतावर, वज्रलता (हडसंघारी), वज्रकंदा (शकरकंद), त्रिकर्णिका, मंडूकपणी (ब्राह्मीभेद), पाटाली, चीता, ग्रीष्मसुन्दर (गूमा का शाक), काकमार्ची (मकोय केवैया), महाराष्ट्री (जलपीर), हल्दी, तिपर्णिका (लालचन्दन), सपेद आक, सैंजना, धतूरा, दूब, हर्र, गिलोय, मूशली, सरफोंका, भोंगरा, लालचीत्ता, तगर, जमीकंद, मुंढी, कबूतर और कोयल का मल, सैंधानोंन, सफेद साठ, सामर, हींग, शहद, विष्णुक्रान्ता, (कोयल), सोमवल्ली, व्रणघ्नी (घावपत्ता), यक्षलोचन (लोहवान), व्याघ्रपादी (गर्ज्जाफल), हंसपदी (लाल रंग का लज्जालु), वृश्चिकाली (बिछुआघास), कुण्डक (पीली कटसरैया), स्वयम्भू (मापपर्णी), कसूम, कुञ्ची (घुघची), हस्तिशुंडी, इन्द्रवारुणी (इन्द्रायन) और आक के बीज ये सर्वत्र नियामक माने गये हैं।।७८–८४।।

एताः समस्ता व्यस्ताः वा देया ह्यष्टदशाधिकाः । मारणे मूर्च्छने बद्धे रसस्यैतानि योजयेत् ।।८५।। अप्रसूतगवां मूत्रैः पिष्ट्वाः पूर्वनियामकाः । तद्द्रवैर्मर्दयेत्सूतं यथापूर्वोदितं क्रमात् ।।८६।। (र.रत्नाकर)

अर्थ–पारद के मारण मूर्च्छन तता बद्ध करने में पृथक पृथक या समस्त अठारह से अधिक इन औषधियों को काम में लाना चाहिये। प्रथम बिना ब्याई गौओं के मूत्र से नियामक औषधियों को पीसकर उनके रसों से स्थान स्थान पर कहे हुए क्रमपूर्वक पारे को मर्दन करे।।८५।।८६।।

दिव्यौषधियों के नाम

१, सोमवल्ली २, जलपद्मिनी ३, अजगरी ४, गोनसो ५, त्रिजटा ६, ईश्वरी ७, भूतकेशी ८, कृष्णवल्ली ९, रुद्रवन्ती १०, सर्वरा ११, बाराहीकन्द १२, अश्वत्थपत्री १३, अम्लपत्री १४, चकोरनासा १५, अशोकनाम्री १६, पुन्नागपत्रिका १७, नागनी १८, क्षेत्री १९, संवरी २०, देवीलता २१, वज्रवल्ली २२, चित्रक २३, कालपर्णी २४, नीलोत्पलो २५, रजनी २६, पलासतिलका २७, सिंहिका २८, गोष्ठाङ्गी २९, खदिरपत्री ३०, तृणज्योति ३१, रक्तवल्ली ३२, ब्रह्मदण्डी ३३, मधुतृष्णा ३४, पद्मकन्दा ३५, हेमदण्डी ३६, विजया ३७, अजया ३८, जया, ३९, तली, ४०, श्रीनाम्री ४१, कीटभारी ४२, तुंबिका ४३, कटुतुंबी ४४, मयूर शिखा ४५, हेमलता ४६, आसुरी ४७, सप्तपर्णी ४८, गोमारी ४९, पीतक्षीरा ५०, व्याघ्रपादलता ५१, धनुर्वल्ली ५२, त्रिशूली ५३, त्रिदण्डी ५४, श्रृंगा ५५, वज्रनामवल्ली ५६, महाबल्ली ५७, रक्तकन्दवती, ५८, बिल्वदला ५९, रोहिणी, ६०, बिल्वतंकी, ६१, गोरोचना ६२, कन्दपत्रिका ६३, विशल्या ६४, कन्दक्षीरी

(र. रा. सुं.)

औषधिग्रहणस्थाननिर्णय

वल्मीककूपतरुतलरथ्यादेवालयश्मशानेषु ।
जाता विधिनापि हिता औषध्यः सिद्धिदा न स्युः ।।८७।।

(र.स० शं.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यकुलावतंसरायबद्रीप्रसाद सूनुबाबूनिरंजनप्रसाद–संकलितायां रसराजसंहितायां वर्गनिरूपणं नाम सप्तमोऽध्यायः ।।७।।

अर्थ–बमई, कूआं, वृक्ष के नीचे का स्थान, सड़क, देवता का मंदिर और श्मशानों में दैवयोग से उत्पन्न हुई औषधियां चाहे जितनी ही क्यों न हित हो तथापि वे सिद्धि के देनेवाली नहीं है।।८७।।

इति जैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मज–व्यास ज्येष्ठमलकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां वर्गनिरूपणं नाम सप्तमोऽध्यायः ।।७।।

अथाष्टमोऽध्यायः ८

रसारम्भ में प्रार्थना श्लोक

एकदन्तं शिवं गौरी वाणीं धन्वन्तरिं गुरुम् ।
प्रणौमि सूतराजस्य संस्काराणां सुसिद्धये ।।१।।

अर्थ–मैं पारद के संस्कारों की सिद्धि के लिये श्रीगणेशजी, महादेवजी, पार्वती, सरस्वती और गुरु श्रीधन्वंतरिजी को नमस्कार करता हूं।।१।।

रस संस्कार की आवश्यकता

तस्य हि साधनविधौ सुधियां प्रतिकर्मनिर्मलाः प्रथमम् । अष्टादश संस्कारा विज्ञातव्याः प्रयत्नेन ।।२।। (रसदर्शन) युक्तं द्वादशभिर्दोषैर्यश्च हन्याद्रसेश्वरम् । ब्रह्महत्यादिकं पापं लभते स पदेपदे ।।३।। [1]मुक्तं द्वादशभिर्दोषैर्यस्तु हन्याच्छिवात्मकम् । ऐहिके तु स पूज्यः स्यात्परत्र स्वर्गतो भवेत् ।।४।। (र. रा. प.)

अर्थ–संस्कारों से अतिशुद्ध किये हुए पारद की सेवा से मनुष्य जीवन्मुक्त होता है और वह पारद की सेवा विना संस्कारों के किये सफल नहीं होती इसलिये प्रथम पारद संस्कारों को ही यत्नपूर्वक गुरुपरम्परा से जानना उचित है, जो मनुष्य बारह दोषों से युक्त पारद को भस्म करता है, वह एक एक पद पर ब्रह्महत्यादि पाप को प्राप्त होता है और जो द्वादश दोषों से रहित पारद को भस्म करता है, वह इस लोक में पूजनीय होता है और मरने के बाद स्वर्ग को प्राप्त होता है।।२।।३।।४।।

सीमाब की स्लाह की जरूरत (उर्दू)

सीमाव में सफेदी कसरत रतूबत की वजह से है जब उसकी अस्लाह होकर एतदाल पर आ जाता है तो अजसाद को नुकर कर सकता है और अजसाम से तमाम अमराज बलगमी मस्लन फालिज व लकवः व सरअ व सकतः वगैरः हजारों अमराज जो खरावी की वजह से पैदा होते हैं, दफै करता है और स्याही पारे में जो कसरत अहतिराक की वजह से है जब मौतदिल हो जाती है तो परा मजकूर अजसाद को तिला कर सकता है और तमाम अमराज वदनी जो अहतिराक खून व गलवः पोदा की वजह से आरिज होते हैं, मस्लन जजाम व बुर्स व सिलदिक वगैरः उनको जाइल करता है और सैंकड़ों अजीब गरीब कवाइद उससे सरजद होते हैं, दोनों ओर इस्तख्वाँ में मजबूती आती है, कुव्वत वाह की कसरत होती है और इनजमादमनी और नऊज में शिद्दत होती है, भूख बढ़ जाती है, बालों में स्याही आँखों में रोशनी, हवासवदन में तरक्की होती है गरज कि जिस कदर सीमाव का एतदालकवी होगा। कवाइद में ज्यादती होगी। इस किताब की हिदायतों पर अमल करके उसको मुश्त ही किया जाता है, कुव्वत मुनफैला यानी कबूलित खवास की तासीर इसमें पैदा होती है, लिहाजा जैसी आलाबूटियों में अमलकीमियाई करके तादील सीमाव पैदा की जावेगी वैसे ही उससे खास्से (गुण) जाहिर होंगे।

(सुफहाअकलीमियाँ १३८)

अष्टसंस्कारों के नाम

स्वेदनमर्दनमूर्छानोत्थापनपातनरोधनियमनदीपनानीत्यष्टौ संस्काराः ।।

(र. प.)

अर्थ–१, स्वेदन २, मर्दन ३, मूर्छन ४, उत्थापन ५, पातन ६, रोधन ७, नियमन ८, और दीपन, ये पारद के शुद्धि के लिये आठ संस्कार कहे हैं।।

अन्यच्च

स्वेदनं मर्दनं चैव मूर्च्छनोत्थापनं तथा ।।५।। पातनं रोधनं चैव नियामनमतः परम् ।। दीपनञ्चेति संस्काराः सूतस्याष्टौ प्रकीर्तिताः ।।६।।

(र. सा. सं)

अर्थ–१, स्वेदन २, मर्दन, ३, मूर्छन ४, उत्थापन ५, पातन ६, रोधन ७, नियामन ८, और दीपन, ये पारद के आठ संस्कार कहे हैं।।५।।६।।

अन्यच्च

स्वेदामर्दनमूर्च्छनोत्थितिरतः पातोऽपि भेदान्वितो रोधः संयमनं प्रदीपन–मिति स्पष्टाष्टधा संस्कृतिः ।। अस्याः सर्वरसोपयोगिकतया त्वन्यो न विन्यस्यते ग्रन्थेस्मिन्प्रकृतोपयोगविरहाद्विस्तारभीत्याथवा ।।७।। इत्यष्टौसूत संस्काराः समा द्रव्ये रसायने ।। शेषा द्रव्योपयोगित्वान्न ते वैद्योपयोगिनः ।।८।। इत्यष्टौ सूतसंस्काराः समा द्रव्ये रसायने । कार्यास्ते प्रथमं शेषा नोक्ता द्रव्योपयोगिनः ।।९।।

(र. र. स., नि. र., रा. सुं., र. सा. प.)

अर्थ–स्वेदन, मर्दन, मूर्च्छन, उत्थापन, अनेक प्रकार का पातन, रोधन इन संस्कारों को ही लिखते हैं और अन्य संस्कारों के रसादिकों के उपयोगी न होने के कारण अथवा शास्त्र बढ़ने के कारण हम इस रसरत्न समुच्चय ग्रन्थ में नहीं रखते हैं। ये आठों संस्कार रस (चन्द्रोदयादि) और रसायन के तुल्य उपयोगी है और शेष दश संस्कार केवल रसायन के ही उपयोगी है, इसलिये वे दश संस्कार वैद्यों के उपयोगी नहीं हैं। इसी बात का समर्थन करते हुए रसरत्नसमुच्चय ग्रंथ में कहा है कि ये आठों संस्कार रस और रसायन बनाने के लिये समान उपयोगी है। इसलिये प्रथम इन आठों संस्कारों का करना उचित कहा है और दूसरे संस्कारों को नहीं कहा है।।७–९।।

अष्टसंस्कारप्रयोजन

सूतस्यैते तु संस्काराः कथिता देहकर्मणि ।
तथा च दश संस्कारा देहलोहकराः स्मृताः ।।१०।।

(ध. सं.)

अर्थ–शरीर के नीरोग रखने के लिये ये आठ संस्कार पारद के कहे हैं और शेष दश संस्कार रसायन (सोना, चांदी बनाने) के लिये कहे गये हैं।।१०।।

अष्टसंस्कारफल

स्वेदनादिनवकर्मसंस्कृतः सप्तकंचुकविवर्जितो भवेत् ।
अष्टमांशमवशिष्यते तदा शुद्धसूत इति कथ्यते तदा ।।११।।

(र. रा. सुं., र. रा. सं.)

अर्थ–स्वेदन आदि नव कर्मों से संस्कृत किया हुआ पारद सप्तकंचुक दोषों से रहित हो जाता है और शुद्ध हुए पारे की यह परीक्षा है कि, जितना पारद का ध्यान शोधन के लिये गेरा हो उसमें से आठवाँ हिस्सा शोधते शोधते रह जाय, तब समझना चाहिये कि पारद शुद्ध हो गया।।११।।

सम्मति–इस लेख में यह विदित होता है कि, इस ग्रन्थ के कर्ता ने यह समझा कि, सात दोष दूर होने पर सात भाग पारद भी नष्ट हो जायेगा और अवशिष्ट एक भाग शुद्ध होगा परन्तु अनुभव से यह बात ठीक नहीं निकली।।

पारदसंस्कार के अठारह नाम

अष्टादशैव संस्कारा ऊनविंशतिकाः क्वचित् ।

१–मुखमेधते–इत्यपि।

१–बुधैः इत्यपि।

सम्प्रोक्ता रसराजस्य वसुसंख्याः क्वचिन्मताः ॥१२॥

(र. रा. सु. र. र. सु., र. रा. सं, नि. र.)

अर्थ–पारद के अठारह ही संस्कार है और किसी जगह उन्नीस संस्कार कहे हैं और कहीं कहीं आठ संस्कार ही माने गये हैं॥१२॥

पारद के अठारह संस्कारों को नाम

स्यात्स्वेदनं तदनुमर्दनमूर्च्छनं च स्यादुत्थितिः पतनरोधनियामनानि । संदीपनं गगनभक्षणमानमत्र संचारणं तदनुगर्भगतिर्द्रुतिश्च ॥१३॥ बाह्यद्रुतिः सूतकजारणा स्याद्रागस्तथा सारणकर्म पश्चात् । संक्रामणं वेधविधिः शरीरयोगस्तथाष्टादशधात्र कर्म ॥१४॥

(र. रा. सु., र. र. स., र. रा. सं., नि. र.)

अर्थ–१,स्वेदन २,मर्दन ३,मूर्च्छन ३,उत्थिति ५,पातन ६,रोध ७, नियामन ८, संदीपन ९, गगनभक्षण (अभ्रजारण) का प्रमाण १०, चारण ११, गर्भद्रुति १२, बाह्यद्रुति १३, पारदजारण, १४, राग १५, सारण, १६, संक्रामण १७, वेध, १८, और शरीरयोग (पारदभक्षण) ये अठारह पारद के संस्कार हैं॥१३॥१४॥

अन्यच्च

१, स्वेदन २, मर्द्दन ३, मूर्छो ४, पातन ५, निरोधन ६, नियमांश्च ७, दीपन ८, । गगनग्रासन ९, प्रमाण १०, मथचारणा विधानं च ॥१५॥ ११, गर्भद्रुति १२, बाह्यद्रुति १३, जारणा १४, रसरागसारणं चैव १५, क्रामण १६, वैधौ १७, भक्षण १९, मष्टादविधमिति रसकर्म ॥१६॥

(ध. ध. सं. र. क., वा.)

अर्थ–१, स्वेदन २, मर्दन, ३, मूर्च्छन ४, उत्थापन ५, पातन ६, निरोधन ७, नियमन ८, दीपन ९, गगनग्रासप्रमाण १०, चारण ११, गर्भद्रुति १२, बाह्यद्रुति १३, जारण १४, रसराग १५, सारण १६ क्रामण १७, वेध १८ और भक्षण, ये अठारह प्रकार का रसकर्म है॥१५॥१६॥

सम्मति–अवश्य ही–यहां ग्रास और मान दो संस्कार भूलसे माने गये किन्तु ग्रासमान (अर्थात् बुभुक्षित) एक ही संस्कार है और राग सारण यह एक संस्कार भूल से माना गया–राग और सारण २ संस्कार अलग हैं।

अन्यच्च

मर्दनं स्वेदनं चैव मूर्च्छोत्थापनपातनम् । बोधनं च ततो ग्रासोदीपनं चाभ्रभक्षणम् ॥१७॥ प्रमाणं चारणं युक्त्या गर्भद्रुतिबहिर्द्रुती । जारणं रसरागोऽपि चात्र सारणमेव च ॥ क्रामणं वेधनं भक्ष्यं चैतेऽष्टादशधा क्रमात् ॥१८॥ (र. पा.)

अर्थ–स्वेदन, मर्दन, मूर्च्छन, उत्थापन, पातन, बोधन, नियमन, दीपन, अभ्रकभक्षण, प्रमाण, चारण, गर्भद्रुति, बाह्यद्रुति, जारण, रसराग, सारण, क्रामण, वेधन और भक्षण, पारद के ये अठारह संस्कार क्रम से कहे हैं॥१७॥१८॥

अन्यच्च

स्वेदनमर्दनमूर्च्छनोत्थापनपातबोधाख्या । नियमश्च दीपनमथ ग्रासप्रमाणमथ चारणाविधानम् ॥१९॥ गर्भद्रुतिबाह्यद्रुतिजारणरसरागसारणं चैव । क्रामणवेधनभक्षणमष्टादश कर्मसमुदायाः ॥२०॥ (र. प.)

अर्थ–स्वेदन १, मर्दन २, मूर्च्छन ३, उत्थापन ४, पातन ५, बोधन ६, नियमन ७, दीपन ८, ग्रासप्रमाण ९, चारण १०, गर्भद्रुति ११, बाह्यद्रुति १२, जारण १३, रसराग १४, सारण १५, क्रामण १६, वेधन १७ और भक्षण १८, ये अठारह संस्कार पारद के है॥१९॥२०॥

१–बोधन–इत्यपि।

पारद के उन्नीस संस्कारों के नाम

स्वेदनमर्दनमूर्च्छनोत्थापनपातनबोधननियमनसन्दीपनानुवासनगगनादिग्रासप्रमाणचारणगर्भद्रुतिबाह्यद्रुतियोगजारणरञ्जनसारणक्रामणवेधनभक्षणाख्या ऊनविंशतिसंस्काराः ॥ सूतसिद्धिदा भवन्ति दीपनान्ता अष्टौ संस्कारा वा देहसिद्धिदा भवन्ति ॥ (र० रा० सुं०, र० रा० शं०)

पारद के बीस संस्कारों के नाम

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सूतः शोध्यो विजानता । तत्साधकाः प्रकथ्यते संस्काराः किल बिंशतिः ॥२१॥

(बृ. यो., र. चिं.)

अर्थ–पारद में दोष मिले हुए हैं, इस कारण यत्नपूर्वक विद्वान पारद का शोधन करे इसलिये पारद की शुद्धि के लिये साधक बीस संस्कारों को कहते हैं॥२१॥

पटसारण १ संमर्दन २ मूर्च्छन ३ मुत्थापन ४ स्वेदौ ५ । पातन ६ बोधन ७ नियमन ८ दीपन ९ मुखकरण १० जारण ११ सविड १२ मानम् १३ ॥२२॥ गर्भद्रुतयो १४ रञ्जन १५ मथवेधनं १६ बहिद्रुतयः १७ ॥ सारण १८ मपि च क्रामण १९ मारण २० मिति सूतसंस्काराः ॥२३॥

(बृ. यो. शिवागम)

अर्थ–पटसारण १, संमर्दन २, मूर्च्छन ३, उत्थापन ४, खेदन ५, पातन ६, बोधन ७, नियमन ८, दीपन ९, मुखीकरण १०, जारण ११, बिड १२, मान १३, गर्भद्रुति १४, रंजन १५, वेधन १६, बाह्यद्रुति १७, सारण १८, क्रामण १९, मारण २०, ये बीस संस्कार पारद के है॥२२॥२३॥

पारद के अन्तिम दशसंस्कारों के नाम

ग्रासप्रमाणचारणगर्भद्रुतिबाह्यद्रुतिजारणरससारणमारणक्रामणवेधनभक्षणानीति दश संस्कारा आमयदेहलोहेषु करणीया एव ॥

(र. प.)

अर्थ–ग्रासप्रमाण १, चारण २, गर्भद्रुति ३, बाह्यद्रुति ४, जारण ५, रसरंजन ६, सारण ७, क्रामण ८, वेधन ९, भक्षण १० ये दश संस्कार रोगों के नाश के लिये वाजीकरण के लिये और सोना, चांदी इत्यादि बनाने के लिये करने चाहिये॥

स्वेदन लक्षण

क्षाराम्लैरौषधैर्वापि दोलायंत्रे स्थितस्य हि । पाचनं स्वेदनाख्यं स्यान्मलशैथिल्यकारकम् ॥२४॥

(र. र. स., र. रा. प., र. सा. प.)

अर्थ–पारद को दोलायंत्र में रखकर क्षार तथा अम्ल (खट्टी) औषधियों से पकावे तो इसके मल का नाश करने वाला स्वेदनसंस्कार कहते हैं॥२४॥

मर्दनलक्षण

उदितैरौषधैः सार्धं सर्वाम्लैः कांजिकैरपि । पेषणं मर्दनाख्यं–स्याद्बहिर्मलविनाशनम् ॥२५॥

(र. र. स., र. रा. प., र. सा. प.)

अर्थ–कही हुई औषधियों से सम्पूर्ण खट्टे पदार्थों से अथवा कांजी से पारद के घोटने को मर्दन कहते हैं और वह मर्दन बाहर के मल का नाश करने वाला है॥२५॥

मूर्छनलक्षण

मर्दनोद्दिष्टभैषज्यैर्नष्टपिष्टत्वकारकम् । तन्मूर्च्छनं हि वंगादिभुज-कंचुकनाशनम् ॥२६॥

(र. र. स., र. रा. प., र. सा. प.)

अर्थ–मर्दन संस्कार में कही हुई औषधियों से जो पारद का नष्टपिष्टी हो जाना पानी औषधियों के साथ मिल जाना उसको मूर्छन कहते हैं और वह मूर्च्छन वंग तथा नाग आदि कंचुको का नाश करता है॥२६॥

उत्थापनलक्षण

स्वेदातपादियोगेन स्वरूपापादनं हि यत् ॥ तदुत्थापनमित्युक्तं मूर्छा-व्यापत्तिनाशनम् ॥२७॥

(र. र. स., र. रा. प., र. सा. प.)

अर्थ–मूर्छित पारद का स्वेदन आतप (घाम) आदि उपायों से जो अपने रूप में लाना अर्थात् तरल पारद की दशा में लाना उसका उत्थापन कहते हैं और वह उत्थापन मूर्छावस्था की व्यापत्ति को नाश करता है॥२७॥

पातनलक्षण

उक्तौषधैर्मर्दितपारदस्य यंत्रस्थितस्योर्ध्वमधश्च तिर्यक् ।
निर्यातनं पातनसंज्ञमुक्तं वंगादि संपर्कजकंचुकघ्नम् ॥२८॥

(र. र. स., र. रा. प., र. सा. प.)

अर्थ–अपने अपने स्थल पर कही हुई औषधियों में मर्दन किये हुए पारद को यंत्र में रख कर जो ऊपर नीचे या तिरछा निकालना है उसे पातन कहते हैं और इस पातन संस्कार के करने से वंग नागादि के मेल से पैदा हुये कंचुक को नाश करता है॥२८॥

रोधनलक्षण

जलसैन्धवयुक्तस्य रसस्य दिवसत्रयम् । स्थितिरास्थापिनी कुम्भे योऽसौ रोधनमुच्यते ॥२९॥

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–जल में सैंधव लवण को छोड़कर एक घड़े में भर देवे फिर पारद को तीन दिवस तक उस घड़े में स्थापित करे तो इसे रोधन (बोधन) कहते हैं॥२९॥

नियमनलक्षण

रोधनाल्लब्धवीर्यस्य चपलत्वनिवृत्तये । क्रियते पारदे स्वेदः प्रोक्तं नियमनं हि तत् ॥३०॥

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–रोधन संस्कार से पारद को एक प्रकार की चपलता, रूप वीर्य की प्राप्ति होती है, उस चपलता की निवृत्ति के लिये जो पारद में स्वेदन किया जाता है उसको नियमन कहते हैं॥३०॥

दीपनलक्षण

धातुपाषाणमूलाद्यैः संयुक्तो घटमध्यजः । ग्रासार्थं त्रिदिनं स्वेदो दीपनं तन्मतं बुधैः ॥३१॥

(र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–जब पारद को ग्रास देना हो तब धातु पाषाण (खनिज पदार्थ) और कन्दमूलादि पदार्थों से युक्त कर एक घड़े में भर ऊपर से औषधियों का रस भर देवे फिर तीन दिवस तक स्वेदन करे तो उसको वैद्यलोग दीपनसंस्कार कहते हैं॥३१॥

रस की पांच गति

जलगो जलरूपेण त्वरितो हंसगो भवेत् । मलगो मलरूपेण सधूमो धूमगो भवेत् ॥३२॥ अन्या जीवगतिर्दैवी जीवोण्डादिव निष्क्रमेत् । स तांश्च जीवयेज्जीवांस्तेन जीवो रसः स्मृतः ॥३३॥ चतस्रो गतयो दृश्या अदृश्या पंचमी गतिः ॥ मंत्रध्यानादिना तस्य रुध्यते पंचमी गतिः ॥३४॥

(र. र. स)

अर्थ–यदि पारद का जल में संस्कार करे तो जलरूप होकर नष्ट हो जाता है अर्थात् जल के ऊपर सूक्ष्मरूप में आकर वह जाता है और जो हंसगः (सूर्य के प्रकाश में) संस्कार किया जाय तो सूर्य की तेजी से भाप बनकर उड़ जाता है। यदि किसी पदार्थ के साथ शुद्ध किया जावे तो उस पदार्थ की मैल द्वारा निकल जाता है अथवा किसी यंत्र द्वारा शोधा जाय तो धूमे के रूप में परिणत होकर निकल जाता है। जिस प्रकार अंडे में से जीव निकलता है और उसके निकलने की कोई गति नहीं मालूम होती, इसी प्रकार पारद की भी पांचवीं[1] दशा जीवगति है। इनमें चारों दशाओंको तो वैद्य देख सकता है और पांचवीं दशा अदृश्य है इसलिये वह पांचवीं गति मंत्रध्यानादि से रोकी जाती है॥३२–३४॥

इति भिन्नगतित्वाच्च सूतराजस्य दुर्लभः । संस्कारस्तस्य भिषजा निपुणेन तु[2] रक्षयेत् ॥३५॥ (र. र. स.)

अर्थ–इस तरह नाना प्रकार की दशाओं के होने से पारद का संस्कार दुर्लभ है अतः एव वैद्य निपुणता से उसका संस्कार करें॥३५॥

संस्कार में सावधानी की आवश्यकता

[3]तस्मात्सूतविधानार्थी सहायैर्निपुणैर्युतः ।
सर्वोपस्करमादाय रसकर्म समारभेत् ॥३६॥

(र. र. स., नि. र.)

अर्थ–इस कारण विद्वान पारद सिद्धि के लिये चतुर सहायकों के साथ सम्पूर्ण सामग्री को लेकर पारदकर्म को प्रारम्भ करे॥३६॥

मुहूर्त

सुमुहूर्ते सुनक्षत्रे सानुकूलग्रहे दिने ।
गुरूपदिष्टः कुर्वीत रसकर्म यथाविधि ॥३७॥

(र. प.)

अर्थ–जिस दिन श्रेष्ठ मुहूर्त नक्षत्र, श्रेष्ठ नक्षत्र और अपने अनुकूल ग्रह हो उस दिन गुरु की आज्ञा लेकर विधि से रसकर्म को करे॥३७॥

उत्तरायणे सूर्ये रसकर्मारभेद्बुधः ।
शुभेऽह्नि शुभनक्षत्रे ताराचन्द्रबले तथा ॥३८॥[4]

(टो० नं०)

अर्थ–जब कि सूर्य उत्तरायण में हो तब शुभ मुहूर्त, शुभ नक्षत्र तथा गुरु और चन्द्रमा के बल में रसकर्म का प्रारम्भ करे॥३८॥

अन्यच्च

शुभेहनि प्रकर्तव्य आरंभो रसशोधने ।
एकांते सद्मनि पुरोभ्यर्च्यार्याढुंढिभैरवान् ॥३९॥

(बृ. यो. नि. र.)

१–पांचवीं जीवगति है वह ऐसी है जैसे देह से जीव निकल जाता है। (इसी गति से पारद मेरे पातन में निकल गया)। २–न विधीयते–इत्यपि । ३–दोषनिवृत्त्यर्थम्–इत्यपि। ४–नैर्भिषक्–इत्यपि।

अर्थ–श्रेष्ठ दिन में अपने सम्मुख देवी गणेश और भैरव को पूजनकर एकान्त स्थल में रसशोधन का आरम्भ करे।।३९।।

रसकर्मारंभ

शुभेह्नि विष्णुम्परिचिन्त्य कुर्यात्सम्यक्कुमारीवटुकार्चनं च । सलौहपाषाणसमुद्भवेऽस्मिन्दृढे च वेदाङ्गुलिगर्भमात्रे ।।४०।। सुतप्तखल्ले निजमंत्रयुक्तां विधाय रक्षां स्थिरसारबुद्धिः। अनन्यचित्तः शिवभक्तियुक्तः समाचरेत्कर्म रसस्य तज्ज्ञः ।।४१।। (रसेन्द्रसारसं)

अर्थ–सारवस्तुओं में जिसकी बुद्धि लगी हुई है और जिसका चित्त पारद से अन्यत्र से कहीं नहीं लगा हुआ है, ऐसा श्रीशिव का भक्त पादर कर्म का ज्ञाता वैद्य शुभ दिन में श्रीढुण्ढि का चिन्तन करके और कुमारी तथा भैरव का पूजनकर उत्तम लोहा तथा पत्थर के वन हुए तप्त खल्ल में पारद को स्थापित करे। फिर उसको अपने मंत्र से रक्षा कर पारद कर्म को प्रारम्भ करे।।४०।।४१।।

संस्कारार्थ ग्राह्य पारदलक्षण

अन्तः सुनीलो बहिरुज्ज्वलो यो मध्याह्नसूर्यप्रतिमप्रकाशः । शस्तोऽथ धूम्रः परिपाण्डुरश्च चित्रो न योज्यो रसकर्मसिद्धयै ।।४२।। (ध. सं., र. रा. प., आ. वे. वि., र. मं., र. सा., यो.त., यो. र.नि. र., र.रा.सुं., र.रा.प.)

अर्थ–संस्कार करने के लिये कैसा पारद लेना और कैसा नहीं लेना चाहिये इसलिये प्रमाण कहते हैं। भीतर से उत्तम नीली रंगत का और बाहर से उज्ज्वल जिसकी चमक और जो (कृष्ण लोहित) धूम्र अथवा रंगविरंगा हो, उस पारद को रस कर्म में ग्रहण नहीं करना चाहिये।।४२।।

संस्कारार्थ अग्राह्य पारदलक्षण

आरजीर्णं विजानीयात्सूतकं पित्तकोपनम् । श्वेतं च विविधं युक्तं गुरुभाजनभेदिनम् ।।४३।। श्लेष्माणं नागजीर्णं च पारदं प्राणहारणम् । सर्वरूपधरं सांद्रं मलिनं शीतकल्पितम् ।।४४।। जीर्णे च रसके यत्र रसेन्द्रे सान्निपातकम् । रसेन्द्रं वर्जयेद्यत्नादीदृशं साञ्जनं गुरुम् ।। म्रियते जंतवः सर्वे भक्षणादपरीक्षणात् ।।४५।।

अर्थ–श्वेत पारद चिकना पित्त को कोपित करनेवाला, भारी, पात्र को भक्षण करने वाला है और उसमें पीतल जीर्ण हुआ समझना चाहिये। श्लेष्मा को बढाने वाला जो कि सीसे का भक्षण किये हुए है और अनेक रंगत का हो, गढ़ाहो और जो अत्यंत ठंडा हो वह पारद प्राणों को नाश करनेवाला है। जिस पारद में खपरिया मिला हुआ हो उसका रंग अनेक प्रकार का होता है। इस कारण रंगविरंगे, घन और गुरु पारद का परित्याग करे क्योंकि ऐसे पारद के सेवन से जीव मृत्यु को प्राप्त होते हैं।।४३–४५।।

ईदृशः पारदोतःसुनील इत्यादिशुभलक्षणयुक्तोपि सघनश्वेत्तदा तमपि वर्जयेदित्यर्थः ।। (ध. ध. सं., र. रा. प.)

अर्थ–इन प्रमाणों से ज्ञात होता है कि जो पारद भारी हो, वह उत्तम वर्ण का ग्रहण करने योग्य नहीं है।।

बंग, नाग, पीतल, रसक (जसद) से जीर्णपारद के प्रयोग में अग्राह्य

आकृष्णश्चपलो रूक्षः कपिलः कालिकावृतः ।
बंगसंश्लेष्मदोषेण रसेन्द्रो वातलः स्मृतः ।।४६।।

(र. चि., र. रा. प.)

अर्थ–जिस पारद में बंग मिलाया गया है वह पारद चारों तरफ काला, चपल, रूखा, पीला, कालिका दोष से मिला हुआ और वात को बढाने वाला होता है।।४६।।

तथा

आपीतकपिलश्चैव कृष्णराजिकया वृतः ।
आरजीर्णं विजानीयात्सूतकं पित्तकोपनम् ।।४७।।

(र. चि., र. रा. प.)

अर्थ–चारों तरफ दीपक की ज्योति के समान पीला, काली लकीरों से युक्त पारद को पीलत भक्षण किया हुआ जाने और वह पित्त को कोपित करता है।।४७।।

तथा च

श्वेतं च विद्धि सुस्निग्धं गुरुभाजनभेदिनम् ।
श्लेष्माणं नागजीर्णं च पारदं प्राणहारिणम् ।।४८।।

(र. चि., र. रा. प.)

अर्थ–जिस पारद ने सीसे का भक्षण किया हो उसको श्वेत, चिकना, भारी, कफ का वर्द्धक और प्राणों का नाशक जानना चाहिये।।४८।।

सर्वरूपधरं सांद्रमतिशीतमकल्पितम् ।
जीर्णेपि रसकं यस्य रसेन्द्रं सान्निपातकम् ।।४९।।

(र. चिं., र. रा. प.)

अर्थ–जिस पारद में खपरिया जारित हो उसको विचित्र रंग तका गाढा अत्यन्त ठंडा और सन्निपात का पैदा करनेवाला जाने।।४९।।

रसेन्द्रं वर्जयेद्यत्नादीदृशं च घनं गुरुम् ।
म्रियन्ते जन्तवः सर्वे भक्षणादपरीक्षणात् ।।५०।।

(र. चि., र. रा. प.)

अर्थ–बिना परीक्षा किये हुए पारद के भक्षण करने से जीवों की मृत्यु होती है इसलिये भारी और गाढे पारद को भक्षण न करे।।५०।।

सीमावखालिस की जरूरत (उर्दू)

सीमाव बाजारी जो एमाल कीमियाई में काम आता है, वह असली होना चाहिये क्योंकि सुरमा या सीसे की खाक इसमें अकसर आमेज होती है, उमदा होने की अलामत यह है कि कपड़े में छानने से कपड़ा स्याह न हो और हथेली पर रगड़ने से स्याही न पैदा हो

(सुफ़हा अकलीमियाँ १३६)

पारदलक्षण

स च मुख्यो रसेन्द्रोऽस्ति नीलोन्तर्बहिरुज्जलः ।
चित्रो धूम्रः पांडुरस्तु निंदितः सप्तकंचुकैः ।।५१।।

(रसमानस)

अर्थ–अनेक प्रकार के पारदों में जो बाहर से उज्ज्वल और भीतर नीला हो वह उत्तम है ओर रंगविरंगा धूम्रवर्ण (काला और लाल) पांडुर (श्वेत और पीत) और सात कंचुकों से युक्त पारद ग्रहण करना निन्दित है।।५१।।

संस्कार के निमित्त पारद का प्रमाण

द्वे सहस्रे पलानां तु सहस्रं शतमेव वा ।
अष्टाविंशत्पलान्येव दशपञ्चैकमेव वा ।।
पलार्द्धेनैव कर्तव्यः संस्कारः सूतकस्य च ।।५२।।

(र. र. स., ध. सं., र. रा. प.)

अब रसार्णव से पारद शोधन के लिये रस के प्रमाण को कहते हैं, दो हजार पल, एक हजार पल, सौ पल, अठ्ठाईस पल, दश पल, पांच पल, एक पल, या अर्धपल से भी पारद का संस्कार करना चाहिये।।५२।।

अन्यच्च

रसो ग्राह्यः सुनक्षत्रे पलानां शतमात्रकम् । पञ्चाशतपञ्चविंशदा द्वादशं चेकमेव वा ॥५३॥ पलाद्न्यूनं न कर्तव्यं रससंस्कारमुत्तमम्[२]। बहुप्रयासासाध्यत्वात्फलं स्वल्पतया भवेत् ॥५४॥ (र० रत्नाक० र० म० र० सा० स० र० रा० सुं० र० रा० प० नि० र० दो०)

अर्थ–पारद के संस्कार की सिद्धि के लिये उत्तम नक्षत्र देखकर सौ पल पचास पल, बीस पल, दश पल, पांच पल अथवा एक पल ही पारद ग्रहण करना चाहिये। एक पल से न्यून पारद का संस्कार नहीं करें कारण कि परिश्रम की अपेक्षा फल अत्यन्त ही कम होता है॥५३॥५४॥

अन्यच्च

शतं पंचाशतं वापि पंचविंशद्दशैव च । पञ्चैकं वा पलं चैव पलार्द्धं कर्षमेव च ॥५५॥ कर्षान्न्यूनो न कर्त्तव्यो रससंस्कार उत्तमः । प्रयोगेषु च सर्वेषु यथालाभं प्रकल्पयेत् ॥५६॥ (रसेन्द्रसा. सं., र. रा. सुं.)

अर्थ–संस्कार के लिये सौ पारद पल, पचास पल, पच्चीस पल दस पल, पांच पल, एक पल आधा पल, अथवा एक ही कर्ष (तोला) पारद हो, एक तोले से न्यून पारद का संस्कार करना ठीक नहीं है फिर संस्कृत (संस्कार किये हुए) पारद का सब जगह प्रयोग करना चाहिये॥५५॥५६॥

अन्यच्च

पलाद्न्यूनस्य सूतस्य शतपल्यधिकस्य च ।
न संस्कारः प्रकर्तव्यः संस्कारः स्यात्ततोऽपरः ॥५७॥

(यो. र., बृ. यो. नि. र.)

अर्थ–इक पल से न्यून (कम) तथा सौ पल से अधिक पारद का संस्कार नहीं करना चाहिये, यदि सौ पल से अधिक पारद हो तो उसका पृथक संस्कार करना उचित है॥५७॥

कांजी की विधि

राई लै द्वै सेर, अरु चार सेर लै नोन ।
एक सेर हरदी सहित, पीस मिहीं एकोन ॥
आठ सेर मण तोल के, गरम नीर करि सोइ ।
तामे भली प्रकारते, भिषजन देइ भिजोइ ॥
फिर ऐसी विधि कीजिये, तीन दिन उपरांत ।
उरद बड़ा ताके विषै, दै भिजोय गुणवंत ॥
एक पसेरी उरद की, दार धोय पिसवाय ।
सुन्दर सरसों तेलमें, ताके बरा बनाय ॥
बरा भिजोये पै जबे, तीन दिवस ह्वै जाय ।
पारद के शोधन अरथ, यह कांजी जु बताय ॥

(वैद्यादर्श)

अर्थ–मेरी समझ में यह कांजी पारद के काम में नहीं आ सकती, कारण कि जिसमें तैल का संयोग है, वह चिकनाई की वजह से मल को काट नही सकती, इसलिये स्नेहरहित पदार्थो (राई को छोड़कर) की कांजी होनी चाहिये।

साधारण कांजिक साधन कांजिकलक्षण

सन्धितं धान्यमण्डादि काञ्जिकं कथ्यते जनैः ।

अर्थ–मुख बंदकर किसी पात्र में रखे हुए धान्य और मंडादिक को मनुष्य कांजी कहते हैं॥

तुलामितं षष्टिकतण्डुलञ्च प्रगृह्य चान्नं विधिवद्विधाय । द्रोणेऽम्भसि क्षिप्तमथ त्रियामास्तत्सप्त रक्षेत्पिहितं प्रयत्नात् ॥५८॥ ततस्तु कल्कं सकलं निरस्यात्तत्कांजिकं कथ्यत आरनालम् । तद्भेदि तीक्ष्णं लघु पाचनं च दाहज्वरघ्नं कफवातनाशि ॥५९॥ (आ. वे. वि.)

अर्थ–पांच सेर साँठी चावल को लेकर एक मन पानी में विधिपूर्वक डालकर ऊपर से मुख बंदकर तीन दिन तक यत्न से रक्षा करे तदनंतर उसमें से कल्क को निकाल सेवे बस इसी को ही कांजी कहते हैं। यह कांजी दस्ताव तीक्ष्ण, हल्की, पाचन, दाहज्वर को नाश करनेवाली और कफ को भी नाश करनेवाली है॥५८॥५९॥

साधारणधान्याम्लसाधन

प्रस्थं षष्टिकधान्यस्य नीरप्रस्थद्वये क्षिपेत् । आधारभांडं संरुध्य भूमेर्गर्भे निधापयेत् ॥६०॥ पक्षादश समुद्धृत्य वस्त्रपूतञ्च कारयेत् । ततो जातरसं योज्यं धान्याम्लं सर्वकर्म्मसु । धान्याम्लं शालिचूर्णाच्च कोद्रवादिकृतं भवेत् ॥६१॥ (आ.बे. वि.)

अर्थ–एक सेर चावल तथा दो सेर जल को चिकने घड़े में भरकर ऊपर से मुख बंद कर धरती में गाड देवे। १५ दिन के पश्चात् निकालकर कपड़े से छान लेवें तो सम्पूर्ण कार्यो में देने योग्य उस निकले हुए रस को धान्याम्ल कहते हैं और धान्याम्ल चावलों का चूर्ण तथा कोदों आदि धान से भी बनता है॥६०॥६१॥

सम्मति–वैद्यक में धान्याम्ल कैसे बनता है इस बात के दिखाने को यह लिखा, पर जब साधारण धान्याम्ल की क्रिया को जाने तब पारद कर्म संबंधी धान्याम्ल को ठीक बना सके।

पारदोपयोगी धान्याम्ल

नानाधान्यैर्यथाप्राप्तैस्तुषवर्जैर्जलान्वितैः । मृद्भांडं पूरितं रक्षेद्यावदम्लत्वमाप्नुयात् ॥६२॥ तन्मध्ये भृंगराण्मुण्डी विष्णुक्रांता पुनर्नवा । मीनाक्षी चैव सर्पाक्षी सहदेवी शतावरी ॥६३॥ त्रिफला गिरिकर्णी च हंसपादी च चित्रकम् । समूलं कुट्टयित्वा तु यथालाभं विनिक्षिपेत् ॥६४॥ पूर्वाम्लभाण्डमध्ये तु धान्याम्लकमिदं स्मृतम्। स्वेदनादिषु सर्वत्र रसराज्यस्य योजयेत् ॥ अत्यम्लमारनालं वा तदभावे प्रयोजयेत् ॥६५॥ (वै.क.रा.सुं., र..सा.प. बृ.यो.,र.रा. प., बाचवृ. श. क.)

अर्थ–अनेक प्रकार के धान्य जितने मिल सकें उनके ऊपर के छिलकों को दूर कर एक चिकने घड़े में डालकर ऊपर से जल भर देवे फिर उसका मुख बंदकर तब तक धरती में गडे रहने देवे जब तक कि उसमें अच्छी तरह से खट्टापन न आ जाये, तदनंतर उस कांजी के वर्तन में जलभर, मुंडी, कोयल, सांठ की जड़, मछैली, सर्पाक्षी (नागफणी), सहदेवी, शतावर, त्रिफला, गिरिकर्णी (जवासा), हंसापादी (लालरंग का लज्जालु) चीता इनमें से जो जो जितने जितने मिल सकें उनको मूलसहित कूटकर भर देवें तो उस पूर्वोक्त कांजी को धान्याम्ल कहते हैं। उसको पारद के, स्वेदनादि संस्कार के लिये प्रयुक्त करे अगर यह धान्याम्ल नहीं मिले तो खट्टे आरनाल प्रयोग करे॥६२–६५॥

धान्याम्ल

सर्वधान्याम्लसन्धानं तुषवर्ज्यं तु कारयेत् । ततस्तत्रैव सन्धाने निक्षिपेदोषधीरिमाः ॥६६॥ गिरिकर्णी च मीनाक्षी सहदेवी पुनर्नवा । उरगा त्रिफला क्रान्ता लघुपर्णी शतावरी ॥६७॥ तेन युक्तं रसं स्विन्नं त्रिदिनं मृदु वह्निना । दोलायन्त्रेण तीव्रेण मर्दयित्वा पुनः पुनः ॥६८॥

(ध० ध० संहिता)

अर्थ–प्रथम तुषरहित सम्पूर्ण धानों का संधान बनावे फिर उसमें गिरिकर्णी (श्वेतहर्मल), मीनाक्षी (गोरखपान), सहदेवी, सांठी, त्रिफला, विष्णुक्रान्ता, मूर्वा, शत्तावर इन औषधियों को यथालाभ डाले। फिर उसमें पारद को कोमल अग्नि से तीन दिवस तक दोलायंत्र से स्वेदन करे॥६६–६८॥

१–रसराज समादाय–इत्यपि । २–संस्कारविधिसिद्धये–इत्यपि ।

कांजी बनाने की तरकीब (उर्दू)

चाँवल को सिरकः तुर्शमुकत्तर या दही के पानी में जिसको अरबी में माइउलराइब कहते हैं, खूब पकावे जिसमें गलकर चावल का पेट फट जावे बादहू उसको घोटकर छान ले और शीशे में रखकर चालीस रोज तक धूप में रहने दे निहायत उमदाः सिरकः काबिल एमाल कीमियाँ हो जावेगा।

सुफहा (किताब अकलीमियाँ ९९)

पटसारण

चतुर्गुणेन वस्त्रेण बद्ध्वा संगलितो रसः ।
विमुक्तो नागवंगाभ्यां जायते पटसारितः ॥६९॥

(बृ. यो.)

अर्थ–चौलर किये हुए कपड़े में पारद को बांधकर (कम से कम २१ बार) छाने तो इस पटसारण क्रिया से पारद नागवंग के दोष से मुक्त होता है.।६९।।

स्वेदन संस्कार विधि

लहसन राई पीसके, द्वै घरिया बनवाय ।
पहिली घरिया के विषै, पारद देइ धराय ॥
दूजो घरिया लेइके, घरियापै चुपकाय ।
गोला सो करि च्यारि तह, कपरा विषै बँधाय ॥
हँडिया में कांजी भरै, गोला दे लटकाय ।
दालयन्त्रकी सी तरह, नीचे अग्नि जराय ॥
मन्द मन्द स्वेदन करै, या विधि निसदिन तीन ।
संस्कार स्वेदन यहै, वर्णन कियो प्रवीन ॥

(वैद्यादर्श)

अन्यच्च

रसं चतुर्गुणं वस्त्रे दिनं दोलागतं पचेत् ।
वराव्योषाग्निकन्याक्ते काञ्जिके स्वेदनं त्विदम् ॥७०॥

(रसेन्द्रसारसं.)

अर्थ–त्रिफला, त्रिकुटा, घींग्वार और चीते के लेप किये हुए चौलर कपड़े में पारद को बांधकर कांजी में रखकर दोलायंत्र द्वारा पकावे तो इसको स्वेदन कहते हैं।।७०।।

अन्यच्च

दिनं व्योषवरावह्निकन्याकल्के सकांजिके ।
रसं चतुर्गुणेवस्त्रेण दृध्वा दोलाभिधे पचेत् ॥७१॥

(र. रा. प. टिप्पणी)

अर्थ–त्रिकुटा, त्रिफला, चित्रक और घीकुमार के कल्क से लेप किये हुए चौलर कपड़े में पारद को बांधकर और उसको कांजी में रख दोलायंत्र से पकावे तो इसको स्वेदन कहते हैं।।७१।।

अन्यच्च

त्र्यूषणं लवणासूर्य्यौ चित्रकार्द्रकमूलकम् ।
क्षिप्त्वा सूतो मुहुः स्वेद्यः कांजिकेन दिनत्रयम् ॥७२॥
(र.र.स., र.रा.सुं., र.रा.शं., र.सा.प.नि.र., र.रा.प)

अर्थ–सोंठ, मिर्च, पीपल, सेंधानोंन, राई, चित्रक, अदरख और मूली इनको पीसकर कपड़े पर लेप करे। फिर लेप किये हुए उस कपड़े में पारद को बांधकर दोलायंत्र द्वारा कांजी में तीन दिन स्वेदन करे।।७२।।

अन्यच्च

आसुरि पटुकटुकत्रयचित्रार्द्रकमूलकैः कलांशैश्च । सूतस्य तु कांजिकेन तु त्रिदिनं मृदुवह्निना स्वेदः ॥७३॥ (ध० ध० सं० रसेन्द्रक)

अर्थ–राई, सेंधानोंन, सोंठ, मिर्च, पील, चित्रक, अदरख, और मूली इनको पारद से षोडशांश लेकर और कांजी से पीसकर लेप किये हुए कपड़े में पारद को बांधकर मृदु अग्नि देकर कांजी में तीन दिन स्वेदन करे।।७३।।

अन्यच्च

मूलकानलसिंधूत्थत्र्यूषणार्द्रकराजिकाः । रसस्य षोडशांशेन द्रव्यं युंज्यात्पृथक्पृथक् ॥७४॥ द्रव्येष्वनुक्तमानेषु मतं मानमितं बुधैः । पटावृतेषु चैतेषु सूतं प्रक्षिप्य कांजिके ॥७५॥ स्वेदयोद्दिनमेकं च दोलायंत्रेण बुद्धिमान् । स्वेदात्तीव्रो भवेत्सूतो मर्द्दनाच्च सुनिर्मलः ॥७६॥

(ध. ध. सं.र. रा. प.)

अर्थ–मूली, चित्रक, सैंधव, सोंठ, मिर्च, पीपल, अदरख और राई इनको पारद से षोडशांश पृथक पृथक ग्रहण करे। जहां द्रव्यों का प्रमाण निश्चित नहीं किया हो वहां षोडशांश लेना चाहिये और कांजी में डालकर पंडितजन दोलायंत्र से एक दिन तक स्वेदन करे। स्वेदन करने से पारद तीक्ष्ण होता है और मर्दन से निर्मल होता है।।७४–७६।।

अन्यच्च

त्र्यूषणं लवणं राजीरजनीत्रिफलार्द्रकम् । महाबला नागबला मेघनादः पुनर्नवा ॥७७॥ मेषश्रृंगी चित्रकं च नवसारं समंसमम् । रसस्य षोडशांशेन सर्वं युंज्यात्पृथक् पृथक् ॥७८॥ एतत्समस्तं व्यस्तं वा पूर्वाम्लेनैव पेषयेत् । प्रलिंपेत्तेन कल्केन वस्त्रमंगुलमात्रकम् ॥७९॥ तन्मध्ये निक्षिपेत्सूतं बद्धा तत्त्रिदिनं पचेत् । दोलायंत्रेम्लसंयुक्तं जायते स्वेदितो रसः ॥८०॥

(वैद्यक० द्रु०, र० रा० सुं०, र० रा० प०, र० रां० शं०)

अर्थ–सोंठ, मिर्च, पीपल, सैंधव, राई, हल्दी, त्रिफला, अदरख, महाबला (सहदेवी), नागबला (गंगेरन), चौराई, सोंठ की जड़, मेढ़ासिंगी, चित्रक, और नवसार इन सबको पृथक पृथक पारद से षोडशांश (सोलहवां हिस्सा) ले इनमें से जो कमती बढ़ती हो या समस्त हो उन सबको पूर्वोक्त कांजी से पीसे फिर उससे कपड़े पर एक एक अंगुल मोटा लेप करे। तदनंतर चौलर किये हुए उस कपड़े में पारद को बांधकर खट्टी वस्तु से युक्त दोलायंत्र में दिवसपर्यन्त पचावे तो पारद का स्वेदन संस्कार होता है।।७७–८०।।

अन्यच्च

राजिका चित्रकं हिंगु लवणं व्योषसंयुतम् । सूतपादमिदं सर्वं स्वर्ज्जिकाक्षारसंयुतम् ॥८१॥ शिग्रुपत्ररसेनैव पिष्ट्वा कुंडलिकाकृतिम् । कुर्य्याद्भूर्जदले सम्यगथवा कदलीदले ॥८२॥ संपक्वे सदृढे वापि वस्त्रखंडे चतुर्गुणे। रसं मध्ये विनिक्षिप्य बध्नीयात्तस्य पोटलीम् ॥८३॥ क्षाराम्लमूत्रवर्गेण स्वेदयेच्च दिनत्रयम् । तथा स्वेदः प्रकर्तव्यो मंज्जिता पोटली तथा ॥८४॥ मृण्मयस्यैव भाण्डस्य तलस्पर्शी भवेन्न च । दोलायंत्रेण संस्त्रेदः कर्त्तव्यो मृदुबह्निना ॥८५॥ (ध. सं.)

अर्थ–राई, चीते की छाल, हींग, सोंठ, मिर्च, पीपल और सज्जी खार ये सब पारद से चौथाई भाग हो इनको सेंजने के पत्तों के रस से घोटकर भोजपत्र अथवा केले के पत्तेपर कुंडल के समान गोल टिकिया बनावे फिर गाढे चिकने चौलर कपड़े में उस टिकिया की पोटली बांधे तदनन्तर क्षार

१–त्रिफलार्द्रकचित्रकैम्लर्गायाश । २–एकाशीतिगुणेम्ले दोलायन्त्रे दिनत्रयं स्वेद्यः ।

१–पूर्वोक्तेषु च द्रव्येषु–इत्यपि । २–तन्मध्ये रसमादाय बध्नीयात्पोटलीं शुभाम्–इत्यपि।

अम्लवर्ग और मूत्रवर्ग से तीन दिवसपर्यन्त स्वेदन करे। स्वेदन करने की यह विधि है कि, पारद की पोटली रस के भीतर डूबी रहे और पात्र के पेंदे से चिपटी हुई न रहे और दोलायंत्र द्वारा कोमल अग्नि देना चाहिये।।८१–८५।।

अन्यच्च

ततश्च स्वेदनं कुर्याद्यथावत्तु शुभे दिने । सूतस्य स्वेदन कार्यं दोलायंत्रेण वार्तिकैः ।।८६।। क्षारौ चाम्लेन सहितौ तथा च पटुपंचकम् । त्रिकुटा त्रिफला चैव चित्रकेन समन्वितम् ।।८७।। पुष्पकाशीससौराष्ट्रीसर्वाण्येव तु मर्दयेत् । औषधानि समांशानि रसादष्टमभागतः ।।८८।। अंधमूषा कृता तेषां तन्मध्ये पारदं क्षिपेत् । त्रिगुणेन सुवस्त्रेण भूर्जपत्रेण वेष्टयेत् ।।८९।। त्रिगुणेन च सूत्रेण बद्ध्वा तु रसपोटलीम्। लंबायमानां भांडे तु तुषिवारित्रिपूरिते।।९०।। त्रिदिनं स्वेदयेत्सम्यक् स्वेदनं तदुदीरितम् ।।९१।। (ध० ध० सं०)

अर्थ–अब शुभ दिन में विधिपूर्वक स्वेदन संस्कार करे और वैद्य दोलायंत्र से पारद का स्वेदन करे। सज्जीक्षार, यवक्षार, जंबीरी का रस, पांचों नोंन, सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफला चित्रक, पुष्पकासीस (पीलाकसीस), खडिया मिट्टी इन सबको पारद से आठवां हिस्सा लेकर महीन पीस लेवे तदनन्तर उसकी अंधमूषा बनाकर उसमें पारद को रखे और उसको तिल्लर भोजपत्रमें लपेटकर फिर तिल्लर कपड़े में बांध कांजी से भरे हुए घड़े में उस पोटली को लटकाकर तीनदिन लगातार पारद का पाचन करे तो इसको स्वेदन कहते है। यह स्वेदन की दूसरी क्रिया है।।८६–९१।।

अन्यच्च

कार्पासपत्रनिर्यासैः स्विन्नस्त्रिकटुकान्विते। सप्तकंचुकनिर्मुक्तः सप्ताहाज्जायते रसः ।।९२।। स्वेदनं मर्दनं त्वंते क्षालनं तप्तकांजिकैः ।।९३।।

(ध. सं.,रस. क. द्रु. रसार्णव.)

अर्थ–सोंठ, मिर्च, पीपल से मिले हुए कपास के पत्तों के रस में पारद को स्वेदन करे तो पादर सात दिवस में ही सातकंचुकों से रहित हो जाता है. इसे स्वेदन कहते हैं और मर्दन के अंत में तपाई हुई कांजी से धो डालना चाहिये।।९२।।९३।।

अथ स्वेदन की परिभाषा

रसस्य षोडशांशेन द्रव्यं युंज्यात्पृथक्पृथक् । द्रव्येष्वनुक्तमानेषु मतं मानमिदं बुधैः ।।९४।। त्रिदिनं स्वेदने प्रोक्तमेकैक च निरन्तरम् । स्वेदयेद्रसराजं तु नातितीक्ष्णेन बह्निना ।।९५।। (र. सा.प., नि.र.र.रा.प.)

अर्थ–पारद के स्वेदन करने में जहां औषधियों का मान नहीं लिखा है वहां पारद के प्रत्येक औषधियों का षोडशांश ग्रहण करना चाहिये यह पंडितों का मत है। जहां स्वेदन करने का समय निर्धारित न हो वहां तीन दिन स्वेदन करे अथवा तीन दिन स्वेदन न कर सके तो निरंतर एक ही दिन स्वेदन करे और स्वेदन करने में तीव्राग्नि नहीं देना किन्तु मंदाग्नि देना उचित है।।९४।।९५।।

स्वेदन संस्कार

अथातः स्वेदनं वक्ष्ये यथा तीव्रो भवेद्रसः । आयसे मृन्मये पात्रे स्वेदस्तत्र विधीयते ।।९६।। दिव्यौषधिकषायाम्लैः शिग्रुमूलैः सराजिकैः । लवणत्रिकटुक्षारैर्विषोपविषमूत्रकैः ।।९७।। कलांशमानः कर्तव्यो मृद्वग्निस्वेदने विधिः । एकविंशदिने चैव जायते सोतितीव्रकः ।।९८।। (र. प.)

अर्थ–जब जिस प्रकार पारद तेज हो जाय उस स्वेदन संस्कार को कहता हूं। दिव्यौषधियों का कषाय (काढा) अम्लवर्ग सेंजने की जड इन सबका पारद से पृथक पृथक सोलहवां हिस्सा लेकर मंदाग्नि से इक्कीस दिन स्वेदन करे तो पारद अत्यन्त तीव्र होता है।।९६–९८।।

स्वेदन की अवधि

स्वेदनादिक्रिया कार्या गुणाधिक्याय पंडितैः । एकादिसप्तपर्य्यंतं स्वल्परोगेऽथवा सकृत् ।।९९।।

(र. सा. प)

अर्थ–पंडितों का चाहिये कि, पारद के गुण की अधिकता के लिये एक बार से लेकर सात बार तक स्वेदन करे यदि रोग अल्प ही होवें तो एक ही बार स्वेदन करे।।९९।। इति स्वेदन संस्कार।

अथ मर्दन संस्कार

एवं कृते स्वेदने तु मर्दनं कारयेत्ततः ।
तथा प्रक्षालनं कार्यं यथा न क्षीयते रसः ।।१००।।

(ध. सं.)

अर्थ–इस प्रकार स्वेदन संस्कार को करके फिर मर्दन संस्कार को करे और स्वेदन के पीछे जो कांजी से क्षालन करते हैं, उसको बड़ी सावधानी से करना चाहिये, क्योंकि उसमें पारद का क्षय अधिक होता है।।१००।।

मर्दन–दोहा

लीजै चूनाकी कली, बहुरि ईंट का चूर ।
दधि गुड सैंधेलवण जुत, रस घोटै भरिपूर ।।
तीन दिवसपर्यन्त लों, फिर कांजीते धोय ।
इस पारदको शुद्ध करि, सकल दोष दे खोय ।।

(वैद्यादर्श)

अन्यच्च

निशेष्टिकाधूमरजोम्लपिष्टो विकंचुकः स्याद्दिवसेन सोर्णः ।।१०१।।

(यो. तं.)

अर्थ–ऊन, हल्दी, ईंट का चूरा, घर का धूआँ इनके साथ पारद को जंभीरी के रस से घोटे तो पारद कंचुक रहित होता है।।१०१।।

अन्यच्च

इष्टिकाचूर्णचूर्णाभ्यामादौ मर्द्यो रसस्ततः । दध्ना गुडेन सिंधूत्थराजिका–गृहधूमकैः ।।१०२।।

(वै.क., वा. बृ. श. क., र. र. स., र. रा. प.)

अर्थ–प्रथम ईंट का चूरा और चूने से पारद को मर्दन करे तदनन्तर सैंधव, राई, गुड, घर का धुआँ और दही के साथ मर्दन करे।।१०२।।

गृहधूमेष्टिकाचूर्णं तथा दधिगुडान्वितम् । लवणासुरिसंयुक्तं क्षिप्त्वा सूतं विमर्दयेत् ।।१०३।। षोडशांशं तु तद्द्रव्यं सूतमानान्नियोजयेत् । सूतं क्षिप्त्वा[1] समं तेन दिनानि त्रीणि मर्दयेत् ।।१०४।। जीर्णाभ्रकं तथा बीजजीर्णसूतं तथैव च । नैर्मल्यार्थं हि सूतस्य खल्वे धृत्वा तु मर्दयेत् ।।१०५।। गृह्णाति निर्मलो रागान् ग्रासेग्रासे विमर्दितः । मर्दनाख्यं हि यत्कर्म तत्सूते गुणकृद्भवेत् ।।१०६।। (र.रा.शं., नि.र.र.र.स., र.रा.सुं.ध.सं., र.रा.प)

अर्थ–घर का धुआं, ईंट का चूरा, दही, गुड, सैंधव और राई इनको पारद के साथ तीन दिन मर्दन करे, यहां जितना पारद हो उसको सोलहवां हिस्सा प्रत्येक औषधि का लेना ठीक है और जिस पारे में अभ्रक जीर्ण किया हो य बीज (सोना चांदी) का जारण किया हो उसको निर्मल करने के लिये पारद को खरल में डालकर मर्दन करे तो प्रत्येक ग्रास के अंत में निर्मल हुआ पारद वर्ण को प्राप्त करता है। यह मर्दन संस्कार पारद में उत्तम गुण को देता है।।१०३–१०६।।

१–भ्रबीजजीर्णं वा ग्रासेग्रासे पुनः पुनः । इत्यपि ।

अन्यच्च

गुडदग्धोर्णालवणैर्मंदिरधूमेष्टिकासुरीसहितैः । रसषोडशांशमानैः संकांजिकैर्मर्दनं त्रिदिनम् ॥१०७॥

(ध. ध. सं., रसे. कल्प.)

अर्थ–गुड, ऊन की राख, सैंधव, घर का धूआं, ईट का चूरा और राई इनमें से प्रत्येक औषधि का पारद से सोलहवां हिस्सा लेकर कांजी के साथ तीन दिवस तक पारद का मर्दन करे॥१०७॥

अन्यच्च

गृहधूमेष्टिकाजाजीदग्धोर्णागुडसैन्धवैः । सकाञ्जिकैः षोडशांशैर्मर्दनं त्रिदिनं शुभम् ॥१०८॥

(रसेन्द्रसारसं.)

अर्थ–घर का धुआँ, ईट का चूना, राई, ऊन की भस्म, गुड़, सैंधव ये प्रत्येक पारद से सोलहवां हिस्सा लेकर कांजी के साथ पारद को तीन दिवस तक मर्दन करे॥१०८॥

अन्यच्च

धूमसारगुडव्योषरजनीश्वेतसर्षपैः । इष्टिकाकांजिकोर्णाभिस्त्रिदिनं मर्दनं ततः ॥१०९॥ निर्मलो जायते सत्यमात्मभावं प्रकाशयेत् ॥११०॥

(र० प०, नि० र०)

अर्थ–भाड का धुआं, सोंठ, मिर्च, पीपल, हल्दी, सफेद सरसों, ईट का चूरा, कांजी और ऊन से पारद को तीन दिवस तक मर्दन करे तो निर्मल हुआ पारद अपने भाव को प्रकाश करता है॥१०९॥११०॥

अन्यच्च

रक्तेष्टिकनिशाधूमसारोर्णाभस्मचूर्णकैः । जंबीरद्रवसंयुक्तैर्मुहुर्मर्द्यो दिनत्रयम् ॥१११॥ दिनैकं वापि सूतः स्यान्मर्द्दनान्निर्मलः परम् । ऊर्ध्वपातनयंत्रेण गृह्णीयाच्च पुनः पुनः । पट्टसारणतो वापि क्षालनाद्वारनालतः ॥११२॥

(र० रा० सुं०, र० रा० शं०, र० रा० प० नि० र०)

अर्थ–लाल ईट का चूरा, हल्दी, भाड का धूआं, ऊन की भस्म और चूने की जंभीरी के रस में डालकर पारद को तीन दिवस तक वार वार मर्दन करे अथवा एक दिवस तक ही मर्दन करे तो पारद निर्मल होता है और वार वार ऊर्ध्व पातनयंत्र से पातन द्वारा ग्रहण करे, कपड़े से छान लेवे अथवा अम्लपदार्थ से धोना चाहिये मर्दन करने के पश्चात् पृथक् करने के लिये यह क्रिया उत्तम है॥१११॥११२॥

अन्यच्च

पटवः पंचचूर्णोर्णसिष्टिकागृहधूमकम् । क्षारत्रयं कांजिकं च कलांशेन सह क्षिपेत् ॥११३॥ जंबीराद्यम्लयोगेन मर्दयेत्तं दिनत्रयम्। स्वाभाविकत्रिदोषस्य शांत्यर्थं मूर्च्छयेद्रसम् ॥११४॥ (र० प०)

अर्थ–पांचों नोंन, चूना, ऊन ईट का चूरा, घर का धुआं, तीनों क्षार (जवाखार, सज्जीक्षार, सुहागा) और कांजी इनमें से प्रत्येक औषधि का षोडशांश लेकर जंभीरी आदि अम्ल पदार्थों से तीन दिवस तक मर्दन करे तो पारद के स्वाभाविक तीन दोष (विष, वह्नि, और मल) नाश को प्राप्त होते हैं॥११३॥११४॥

सम्मति–यद्यपि पाठ में मूर्च्छित कहा गया है किन्तु रसपद्धति ने इसको मर्दन ही मान है और सब पुस्तकों को मिलाने से मर्दन ही निश्चय होता है 'मूर्च्छयेत्' का अर्थ यहां यह है कि उपरोक्त मर्दन कर आगे मूर्च्छित करे।

अन्यच्च

पंचपटुक्षारत्रयचूर्णोर्णाभस्मचुल्लिधूमतो मृदितः ।
सिद्धार्थराजिकारजनीष्टिकागुडव्योषतोऽम्लतस्त्रिदिनम् ॥११५॥

अर्थ–पांचों नोंन, सुहागा, जवाखार, सज्जीखार, चूना, ऊन की राख, चूल्हे का धूआं, सरसों, राई, हल्दी, ईट का चूरा, गुड़, त्रिकुटा और खटाई इनसे तीन दिन दिवस तक पारद को मर्दन करे॥११५॥

अन्यच्च

प्रक्षाल्य कांजिकैः सूतं तस्मादाय मर्दयेत् । गृहधूमेष्टिकाचूर्णं दग्धोर्णा लवणं गुडम् ॥११६॥ राजिका त्रिफला कन्या चित्रकं बृहती कणा । बंध्या कर्कोटकी चैव व्यस्तं वाथ समस्तकम् ॥११७॥ क्वाथयेदारनालेन मर्द्यंमर्द्यं त्र्यहं रसम् । प्रक्षाल्य कांजिकेनैव तमादाय विमूर्छयेत् ॥ (र० प०)

अर्थ–स्वेदन कर्म के पश्चात् पादर को कांजी से धोकर ग्रहण करे। तदनन्तर घर का धूआं, ईट का चूरा, ऊन की राख, सैंधानोंन, गुड़, राई, त्रिफला, घीकुमारी, चित्रक, कटेरी की जड़, पीपल और वांझककोडा अलग अलग या एक साथ क्वाथ करके अम्लवर्ग के साथ पारद को तीन दिवस तक मर्दन करे फिर कांजी से ही धोकर मूर्छन करे॥११६–११८॥

अन्यच्च

कुमारिकाचित्रकरक्तसर्षपैः कृतैः कषायैर्बृहतीविमिश्रितैः ।
फलत्रिकेणापि विमर्दितो रसो दिनत्रयं सर्वमलैर्विमुच्यते ॥११९॥ (वै. क. द्रु. वाच. बृ. र. रा. सुं. नि. र. श. क.)

अर्थ–घीकुमारी, चित्रक, लाल सरसों, कटेरी की जड़ ओर त्रिफला इनके किये हुए क्वाथ से तीन दिवस पर्यन्त मर्दन किया हुआ पारद सम्पूर्ण मलों से मुक्त हो जाता है॥११९॥

विचार–वाचस्पत्यबृहदभिधान, शब्दकल्पद्रुम इन ग्रंथों में इस संस्कार को केवल मदर्न ही माना है परन्तु रसराजसुन्दर तथा निघन्टुरत्नाकर वालों ने मूर्च्छन संस्कार माना है और उसका पाठ इस प्रकार है "**फलत्रयं चित्रकसर्षपानां कुमारिकन्याबृहतीकषायैः । दिनत्रयं मर्दितसूतकस्तु विमुच्यते पंचमलादिदोषैः ॥**"

अन्यच्च

घिवकुमार चित्रक बहुरि, लीजै सरसों रक्त ।
बड़ीकटेरीके सहित, त्रिफला लीजै फक्त ॥
ये समान सब तोलिके, काढा अष्टम अंस ।
तीनि दिवस या क्वाथते, पारद घोटि प्रशंस ॥

(वैद्यादर्श)

अन्यच्च

स्नुह्यर्कोन्मत्तकन्याभिस्त्रिफलाचित्रकेण च ।
लवणेन समं सूतं मर्दयेन्मूर्छनौषधैः ॥१२०॥

(र. प.)

अर्थ–थूहर का दूध, आक का दूध, घीकुमारी, त्रिफला, चित्रक, और नोंन इस औषधियों के साथ पारद को मर्दन करे॥१२०॥

अन्यच्च

क्षाराम्लैर्लवणैर्मूत्रैर्विषैरुपविषैस्तथा । दिव्यौषधिसमूहेन मर्दयेद्दिवसत्रयम् ॥१२१॥ पारदस्य कलांशेन भेषजेन प्रमर्दयेत् ॥१२२॥
(टो. नं., ध. ध. सं ,र. रा. सुं.)

अर्थ–क्षार, अम्ल, लवण, मूत्र, विष, उपविष, और दिव्यौषधि पारद से

पृथक पृथक षोडशांश लिये हुए इन पदार्थों से पारद को तीन दिवस तक मर्दन करे॥१२१॥१२२॥

प्रत्येक संस्कारान्त में मर्दन

दिनैकं मर्द्दयेत्सूतं कुमारीसम्भवैर्द्रवैः । तथा चित्रकजैः क्वाथैर्मर्दयेदेकवासरम् ॥१२३॥ काकमाचीरसैस्तद्वद्दिनमेकं च मर्दयेत् । त्रिफलायास्तथा क्वाथै रसो मर्द्यः प्रयत्नतः ॥१२४॥ ततस्तेभ्यः पृथक्कुर्यात्सूतं प्रक्षाल्य कांजिकैः । भवैदेकैकसंस्कारस्यान्ते सुदृढमर्दनम् ॥१२५॥ मर्दितं स्थापयेद्घर्मे यावच्छुष्कतरो भवेत् । तक्रेण कांजिकेनाथ सूक्तेनोष्णोदकेन वा ॥१२६॥ ततः सर्वं समानीय शालयेदतिबुद्धिमान् । तथा प्रयत्नं कुर्वीत यथा न क्षीयते रसः ॥१२७॥ (ध. स., टो. नं.)

अर्थ–प्रत्येक संस्कार के अंत में मर्दन के विधान को कहते हैं। पारद को घीकुमारी के रस से एक दिन मर्दन करे अथवा चित्रक क्वाथ से मर्दन करे या काकमाची (मकोय, केवया) के रस से एक दिन मर्दन करे अथवा त्रिफला के रस से यत्नपूर्वक एक दिवस मर्दन करे फिर उन औषधियों से पारद को कांजी से धोकर ग्रहण करे, इसी बात को शास्त्रकारों ने भी कहा है जैसे प्रत्येक संस्कार के अन्त में पारद को दृढ़ मर्दन करे और मर्दन किये हुए पारद को घाम में सुखा लेवे। फिर मट्ठा, कांजी, सिरका या गरम जल से ही धो डालना चाहिये लेकिन धोने के समय पारद क्षय न हो ऐसा विचार अवश्य करना चाहिये॥१२३–१२७॥

विधि–प्रथम कोई संस्कार करके उसके पीछे घीकुमारी आदि चार चीजों से चार दिन तक मर्दन कर फिर कांजी वगैरह से धो डालना उचित है, यह मेरी सम्मति है।

तप्तखल्व में मर्दन करना

युक्तं सर्वस्य सूतस्य तप्तखल्वे विमर्दनम् ॥१२८॥

(र. मं. कामरत्न., र. रा. प.)

अर्थ–समस्त प्रकार के पारद का तप्तखल्व में मर्दन करना चाहिये अन्यथा फल की सिद्धि नहीं होती है॥१२८॥

मर्दन के लिये औषधि का मान तथा तप्तखल्व में मर्दन की आज्ञा

पारदात्षोडशांशं तु मिलित्वा सकलं भिषक् ।
चूर्णं प्रदेय च पलं मर्दने तप्तखल्वके ॥१२९॥

(योगर)

अर्थ–जहां पारद के विषय में कोई औषधियों का प्रमाण नहीं लिखा हो वहां सम्पूर्ण औषधियों को पारद से सोलहवां हिस्सा लेना चाहिये और सोलह पल पारद में एक पल औषधि चूर्ण डालना उचित है और उसको तप्तखल्व में मर्दन करे॥१२९॥

मर्दनोपयोगी उपदेश

भिषग्विमर्दयेच्चूर्णं मिलित्वा षोडशांशतः । प्रमर्द्योष्णारनालेन क्षालयेत्काच भाजने ॥१३०॥ उष्ण एव रसः कार्यः शीतं सर्वात्मना त्यजेत् । शीते च बहवो दोषाः षंढाद्याः संभवति हि ॥ दृढ़ं प्रमर्दयेत्सूतं रक्षितं द्वित्रिसेवकैः ॥१३१॥

(टो. नं.)

अर्थ–पारद को षोडशांश औषधि चूर्ण के साथ मर्दन करे कांच के पात्र में उष्ण, आरनाल से धो डाले पारद को उष्णपदार्थों से मर्दन, स्वेदन या क्षालन करे। शीतकर्म को सर्वथा त्याग दे क्योंकि शीतकर्म में बहुत से षंढादि दोष हैं। दो तीन नौकर रखकर अत्यन्त दृढ़ मर्दन करावे॥१३०॥१३१॥

मर्दन और मूर्च्छन

विशालांकोलचूर्णेन वंगदोषं विमुंचति । राजवृक्षो मलं हंति पावको हंति पावकम् ॥१३२॥ चांचल्यं कृष्णधत्तूरस्त्रिफला विषनाशिनी । कटुत्रयं गिरिं हन्ति असह्याग्निं त्रिकंटकः ॥१३३॥ प्रतिदोषं कलांशेन तत्र सूतं सकांजिकम् । सुवस्त्रगालितं खल्वे सूतं क्षिप्त्वा विमर्दयेत् ॥१३४॥ उद्धृत्य चारनालेन मृद्भांडे क्षालयेत्सुधीः ॥ सर्वदोषविनिर्मुक्तः सर्वकंचुकवर्जितः ॥१३५॥ जायते शुद्धसूतोऽयं योजयेद्रसकर्मसु ॥१३६॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ–पारद को इन्द्रानयन के फल तथा अंकोल के चूर्ण के साथ घोटने से वंगदोष नष्ट होता है। अमलतास पारद के मल को नाश करता है, चित्रक अग्निदोष को, कालाधतूरा, चंचलदोष को और त्रिफला विषदोष को नाश करनेवाला है। त्रिकुटा गिरिदोष को, गोखरू का क्वाथ असह्य (अग्नि को न सहनेवाला) दोष को नाश करता है। प्रत्येक दोष के नाश करने के लिये पारद से औषधि का सोलहवां हिस्सा लेकर और उसको कपड़े मे छानकर तथा खरल में पारद और दवाइ को डालकर कांजी के साथ मर्दन करे तदनन्तर पारद को निकाल आरनाल अर्थात् कांजी से धो डाले तो पारद सम्पूर्ण दोष तथा कंचुकों से मुक्त होकर अतिशुद्ध होता है और उसको रस के कर्म में प्रयोग करे तो कुछ दोष नहीं है॥१३२–१३६॥

विधि–प्रथम पारद को एक पदार्थ के साथ मर्दन कर सायंकाल को धो डाले फिर दूसरे दिन दूसरे पदार्थ के साथ घोटे इस प्रकार आठ दिन तक घोट घोट कर नवम दिन तप्तकांजी से धोकर सुखा लेवे फिर जिस रस में पारद डालने का काम पड़े वहां पारे को डाल देवें तो अवगुन नहीं करता है।

मर्दन और मूर्च्छन

इष्टिकारजनीचूर्णैः षोडशांशं रसस्य च । मर्दयेत्तं तथा खल्वे जम्बीरोत्थद्रवैर्दिनम् ॥१३७॥ कांजिकैः क्षालयेत्सूतं नागदोषं विमुंचति । विशालांकोलचूर्णेन बगदोषं विमुञ्चति ॥१३८॥ राजवृक्षो मलं हंति पावको हंति पावकम् । चांचल्यं कृष्णधत्तूरस्त्रिफला विषनाशिनी ॥१३९॥ कटुत्रयं गिरिं हन्ति प्रसह्याग्निं त्रिकंटकः । प्रतिदोषं पलांशेन तत्र सूतं सकांजिकम् ॥१४०॥ सुवस्त्रगालितं खल्वे सूतं क्षिप्त्वा विमर्दयेत् । प्रत्येकं प्रत्यहं यत्नात्सप्तवारं विमर्दयेत् ॥१४१॥ उद्धृत्य चारनालेन मृद्भाण्डे क्षालयेत्सुधीः ॥ सर्वदोषविनिर्मुक्तः सर्वकंचुकवर्जितः । जायते शुद्धसूतोऽयं योजयेद्रसकर्मसु ॥१४२॥ (रसमं. आयुर्वे. वि. र. रा. प.)

अर्थ–ईट का चूरा, हल्दी और चूना, इनको पारद से षोडशांश लेकर जम्भीरी के रस से एक दिन घोटकर कांजी से धो डाले तो पारद नागदोष से रहित होता है। इन्द्रायन का फल था अङ्कोलफल के चूर्ण के साथ वंगदोष को, अमलतास का गूदा, पारद के मल को, तथा चित्रक का क्वाथ अग्निदोष को, काले धत्तूरे का रस चंचलता को, त्रिफला का क्वाथ, विषदोष को, कटुत्रय (सोंठ, मिर्च, पीपल) गिरिदोष को और गोखरू का काढ़ा असह्य (अग्नि को न सहनेवाला) दोष को नाश करता है। प्रत्येक दोष के दूर करने के लिये षोडशांश औषधि को कूट कपर छानकर फिर पारद को कांजी के साथ खरल में मर्दन करे। पारद को प्रत्येक औषधि के साथ सात सात बार मर्दन करे फिर मिट्टी के वर्तन में कांजी से धोकर रख ले तो पारद समस्त दोष तथा सब कंचुको से रहित होकर अत्यन्त शुद्ध होता है और उस पारद को रसकर्म में डालना उचित है॥१३७–१४२॥

अन्यच्च

इष्टकारजनीचूर्णे षोडशांशे रसस्य तु । मर्दयेत्तप्तखल्वे तु जम्बीरोत्थैर्द्रवैर्दिनम् ॥१४३॥ कांजिकैः क्षालयेत्सूतं नागदोषं विमुंचति । विशालांकोलचूर्णेन वंगदोषं विशोधयेत् ॥१४४॥ राजवृक्षस्य मूलेन सकन्येन मलं हरेत् । चित्रमूलस्य चूर्णेन सकन्येनाग्निनाशनम् । १४५॥ कृष्णधत्तूरकद्रावैश्चांचल्यं विनिवर्त्तते । त्रिफलाकन्यकाद्रावैर्विषदोषं विमुंचति । १४६॥ कटुत्रयं गिरि

हन्तिअसह्याग्निं त्रिकंटकः । प्रतिदोषं कलांशेन तत्र चूर्णं सकन्यकम् ॥१४७॥ सवस्त्रगालितं सूतं खल्वे क्षिप्त्वा यथाक्रमम् । प्रत्येकं प्रत्यहं यत्नात्सप्तरात्रं विमर्दयेत् ॥१४८॥ उद्धृत्य चारनालेन मृद्भाण्डे क्षालयेत्सुधीः । सर्वदोषविनिर्मुक्तः सप्तकंचुकवर्जितः । जायते शुद्धसूतोऽयं योजयेद्वैद्यकर्मणि ॥१४९॥ (र० सा० प०)

अर्थ–षोडशांश ईंट और हल्दी का चूरा तथा पारद को तप्तखल्व में डालकर जंभीरीके रससे एक दिन मर्दन करे फिर पारदको कांजीसे धोवेतो नागदोष नष्ट होता है। इन्द्रायन का फल तथा अंकोल के चूर्ण के साथ मर्दन से पारद का वंगदोष दूर होता है। अमलतास की जड़ तथा घीकुमारि के रस के मर्दन करने से पारद का मलदोष जाता रहता है। घीकुमारि और चित्रकके साथ मर्दन करनेसे अग्निदोषका नाश होता है। श्यामधतूरे के रस से चांचल्यदोष की निवृत्ति होती है। घीकुमारि का रस तथा त्रिफलाके साथ मर्दन करनेसे पारदकाविष दोष जाता रहता है।सोंठ, मिर्च, तथा पीपल, गिरिदोष को दूर करते हैं। गोखरू तथा घीकुमारि का रस असह्याग्नि को नाश करता है। प्रत्येक दोष दूर करने के लिये पारद से षोडशांश औषधि को कूट पीस कपड़छान कर प्रत्येक औषधि के साथ सात दिन मर्दन करे और घुटाई तप्त खल्व में दिन भर होती रहे। फिर कांजी से धो डाले तो पारद समस्त दोष तथा कंचुकों से रहित अत्यन्त शुद्ध होता है और उसको पारद कर्म में लगाना चाहिये॥१४३–१४९॥

मर्दन और मूर्च्छन

अथातः संप्रवक्ष्यामि दोषाष्टकनिवारणम् । इष्टकारजनीचूर्णैः षोडशांशं रसस्य तु । मर्दयेत्तप्तखल्वे तं जम्बीरोत्थद्रवैर्दिनम् ॥१५०॥ खल्लं लोहमयं वाथ पाषाणोत्थमथापि वा ॥ काञ्जिकैः क्षालयेत्सूतं नागदोषस्य शांतये ॥१५१॥ विशालाङ्कोलचूर्णेन वङ्गदोषं विनाशयेत् । राजवृक्षो मलं हंति चित्रकं वह्निदूषणम् ॥१५२॥ चाञ्चल्यं कृष्णधत्तूरैस्त्रिफला विषनाशनम् । कटुत्रयं गिरिं हंति असह्याग्निं त्रिकंटकः ॥१५३॥ प्रतिदोषं कलांशेन तत्र चूर्णं सकन्यकम् ।सुवस्त्रगालितं सूतं खल्ले क्षिप्त्वा यथाक्रमम् ॥१५४॥ प्रत्येकं प्रत्यहं यत्नात्सप्तरात्रं विमर्दयेत् ॥ उद्धृत्योष्णारनालेन मृद्भांडे क्षालयेत्सुधीः ॥१५५॥ सर्वदोषविनिर्मुक्तः सप्तकंचुकवर्जितः । जायते शुद्धसूतोऽयं युज्यते वैद्यकर्मणि ॥१५६॥

(र. र. क., र. रा. शं., नि. र.,)

अर्थ–अब आठ दोषों की निवृत्ति कहते हैं–पारद के षोडशांश ईंट का चूरा, हल्दी और चूने के साथ पारद को जंभीरी के रस से एक दिन तप्तखल्व में मर्दन करे और वह तप्तखल्व लोहा अथवा पत्थर का होना उचित है। फिर कांजी से धोवे तो पारद का नागदोष दूर होता है। इन्द्रायन के फल तथा अंकोल से वंगदोष का नाश होता है। अमलतास मलदोष को नष्ट करता है। चित्रक अग्निदोष को शान्त करता है। काले धतूरे के रस के साथ घोटने से चांचल्यदोष दूर होता है। त्रिफला से विषदोष की हानि होती है। त्रिकुटा गिरिदोष को भक्षण करनेवाली है और गोखरू असह्याग्नि को नाश करता है। प्रत्येक दोष के दूर करने के लिये पारद से षोड़शांश इन औषधियों को लेकर कूट पीसकर कपड़छान करे, तदनंतर पारद को प्रत्येक औषधि के साथ सात दिन तक मर्दन करे और घुटाई दिन भर होती रहे फिर गरम कांजी से पारद को धो डाले तो पारद सम्पूर्ण दोष तथा कंचुकों से रहित होकर अत्यन्त शुद्ध होता है और उसका चिकित्सा में प्रयोग करना उपयोगी होता है॥१५०–१५६॥

अन्यच्च

रक्तेष्टिकानिशाधूमसारोर्णाभस्मचूर्णकैः । जम्बीरद्रवसंयुक्तैर्नागदोषापनुत्तये ॥१५७॥ विशालांकोलमूलानां रजसा कांजिकेन च । शनैः शनैः स्वहस्तेन वङ्गदोषविमुक्तये ॥१५८॥ राजवृक्षस्य मूलोत्थचूर्णेन सह कन्यया ॥ मलदोषापनुत्त्यर्थं चित्रको वह्निदूषणम् ॥१५९॥ चांचल्यं कृष्णधत्तूरो गिरिं हन्ति कटुत्रयम् । त्रिफला विषनाशाय कन्यका सप्तकंचुकान् ॥१६०॥

(यो० र०, नि० र०)

अर्थ–नागदोष दूर करने के लिये वैद्यराज जंभीर के रस के साथ मिले हुए लाल ईंट के चूरा, हल्दी, घर का धूंआ, ऊन की भस्म और चूने के साथ पारद को घोटे इन्द्रायन और अंकोल की जड़ का चूर्ण तथा पारद को कांजी के साथ घोटने से वंगदोष दूर होता है। घीकुमारी तथा अमलतास की जड़ के चूरे के साथ घोटने से मलदोष को नाश करता है। एवं चित्रक वह्निदोषको, काला धतूरा चांचल्यदोष को, त्रिकुटा गिरिदोष को नाश करती है। त्रिफला विषदोष को तथा घीकुमारि सातों कंचुकों को नाश करती है।॥१५७–१६०॥

सम्मति–योगरत्नाकर ने इसको पृथक पृथक रहे मर्दन और मूर्च्छन दोनों से भिन्न दिया है, जिससे आशय यही निकलता है कि इस क्रिया में मर्दन और मूर्च्छन दोनों मिले हैं।

अन्यच्च

रक्तेष्टिकानिशाधूमसारोर्णाचुल्लिभस्मकैः ॥ सजम्बीरद्रवैर्मर्द्यो नागवंगोपशांतये ॥१६१॥ राजवृक्षस्य मूलस्य चूर्णेन सह कन्यया । मलदोषापनुत्त्यर्थं मर्दयेत्पारदं भिषक् ॥१६२॥ कृष्णधत्तूरजद्रावैश्चांचल्यविनिवृत्तये । त्रिफलाकन्यकातोयैर्विषदोषापनुत्तये ॥१६३॥ चित्रकस्य तु चूर्णेन सकन्येनाग्निशांतये । आरनालेन चोष्णेन क्षालयेत्प्रतिमर्दनम् ॥१६४॥ रसं तत्र प्रयातं तु शोषयित्वोर्ध्वपातनात् । गृहीत्वा प्रक्षिपेत्सूते स्यादेवं पारदः शुचिः ॥१६५॥ पारदात्षोडशांशं तु मिलित्वा सकलैर्भिषक् । चूर्णं प्रदेयं चपलं मर्दने तप्तखल्वके ॥१६६॥ अजाशकृत्तुषाग्निं च खनित्वा भूमिमावपेत् । तस्योपरिस्थितं खल्वं तप्तखल्वं जगुर्बुधाः । एतन्मर्दनमाख्यातं रससंशुद्धये बुधैः ॥१६७॥ (बृ० यो०)

अर्थ–प्रथम नाग तथा वंगदोष दूर करने के लिये लाल ईंट का चूरा, हल्दी, धूमसार और उनकी भस्म इन औषधियों तथा पारे को खरल में डालकर जंभीरी के रस में मर्दन करे। वैद्य घीकुवार सहित अमलतास की जड़ के चूरे से पारद को मलदोष की शांति के लिये मर्दन करे। चांचल्यता की निवृत्ति के लिये त्रिकुटा और घी कुमारी के रस में मर्दन करे। और अग्निदोष की शांति के वास्ते घीगुवारसहित चित्र के चूर्ण के चूर्ण के साथ पारद को निवृत्तिके लिये काले धतूरे के रस से मर्दन करे। विषदोष की शांति के लिये त्रिफला तथा घीकुमारी से घोटे। गिरिदोष दूर करने के लिये त्रिकुटा और घीकुमारी के रस से मर्दन करे। और अग्निदोष की शांति के वास्ते घीगुवारसहित चित्रक के साथ पारद को घोटे और प्रत्येक मर्दन के पीछे गरम कांजी से धोना चाहिये जो पारद इस मर्दन में क्षय हुआ हो तो उस पदार्थ को सुखाकर ऊर्ध्वपातन यंत्र से उड़ाकर पारद में मिला देवे तो पारद शुद्ध होता है। सोलह पल पारद में मिली हुई औषधियों का एक पल डालकर तप्त खल्व में मर्दन करे। तप्त खल्व का लक्षण यह है धरती में गढ़ा खोदकर बकरी की मेंगनी तथा तुंबो को भर ऊपर से अग्नि जलावे। उस पर खरल को रख दवाई को घोटे तो उसको तप्त खल्व कहते हैं। रस की शुद्धि के निमित्त यह मर्दन संस्कार कहा है॥१६१–१६७॥

अन्यच्च

संपूज्यं श्रीगुरुं कन्यां बटुकं च गणाधिपम् । योगिनीः क्षेत्रपालांश्च चतुर्धा बलिपूर्वकम् ॥१६८॥ सूतं हरस्य निलये सुमुहूर्ते विधोर्बले । खल्वे पाषाणजे लौहे सुदृढे सारसम्भवे ॥१६९॥ तादृशस्वच्छमसृणं चतुरंगुलमर्दके । निक्षिप्य

---

१. दोषं विमुंचति–इत्यपि।

सिद्धमंत्रेण रक्षितं द्वित्रिसेवकैः ॥१७०॥ भिषग्विमर्दयेच्चूर्णैर्मिलित्वा षोडशांशतः । सूतस्य गालितैर्वस्त्रैर्वक्ष्यमाणद्रवादिभिः ॥१७१॥ मर्दयेन्मूर्च्छयेत्सूतं पुनरुत्थाप्य सप्तशः । नागो वंगो मलं वह्निश्चांचल्यं च विषं गिरिः ॥१७२॥ असह्याग्निर्महादोषा निसर्गात्पारदे स्थिताः ॥ रक्तेष्टिकानिशाधूमसारोर्णाभस्मतुम्बिकैः ॥१७३॥ जम्बीरद्रवसंयुक्तैर्नागदोषापनुत्तये । राजवृक्षस्य मूलस्य[1] चूर्णेन सह कन्यया ॥१७४॥ मलदोषापनुत्त्यर्थं मर्दनोत्थापने शुभे । कृष्णधत्तूरकद्रावैश्चाञ्चल्यविनिवृत्तये ॥१७५॥ विशालांकोलचूर्णेन वंगदोषविशुद्धये । त्रिफलाकन्यकातोयैर्विषदोषोपशांतये ॥१७६॥ गिरिदोषे त्रिकटुना कन्यातोयेन यत्नतः । चित्रकस्य च चूर्णेन सकन्येनाग्निनाशनम् ॥१७७॥ आरनालेन चोष्णेन प्रतिदोषं विशोधयेत् । एवं संशोधितः सूतः सप्तकंचुकवर्जितः ॥१७८॥

(र० चिं०, र० रा० शं०)

अर्थ–श्रीगुरुमहाराज, कन्या, भैरव, गणेश, योगिनी और क्षेत्रपालों को बलिदान देकर श्रीमहादेवजी के मंदिर में और शुभ मुहूर्त में लोह अथवा पत्थर के दृढ़ खरल में सिद्धमंत्र पढ़कर पारद को स्थापित करे और दो अथवा तीन सेवकों से उसकी रक्षा करे। फिर पारद से षोडशांश ली हुई औषधियों को कूट पीस और कपर छानकर आगे कहे हुए द्रव पदार्थों से पारद को मंर्दन करे अथवा मूर्च्छित करे फिर सात वार उत्थापन करे क्योंकि पारद में नाग, वंग, मल, वह्नि, चाञ्चल्य, विष, गिरि और असह्याग्नि महादोष ठहरे हुए हैं। लाल ईट का चूरा, हल्दी, धूमसार, ऊन की भस्म और तुम्बीशन के चूर्ण में जंभीरी का रस मिलाकर पारद को घोटें तो नागदोष दूर होता है। अमलतास की जड़ के चूर्ण के साथ पारद का मर्दन करने से मलदोष जाता रहता है। चांचल्य दूर करने के लिये काले धतूरे के रस से घोटे । वंगदोष की निवृत्ति के लिये इन्द्रायन तथा अंकोल के चूर्ण से घोटे। विषदोष निवारण के लिये त्रिफला तथा घी कुमार के साथ घोटे। गिरिदोष दूर करने के लिये त्रिकुटा और गुवारपट्ठे के साथ मर्दन करे तथा अग्निदोष दूर करने के लिये चित्रक के चूर्ण के साथ मर्दन करे और प्रत्येक मर्दन पश्चात् गरमकांजी से धोना चाहिये। इस प्रकार शुद्ध किया हुआ पारद मूर्च्छनसंस्कार होता है इसलिये इसको मूर्च्छनसंस्कार माना जाय तो सात कंचुको से रहित हो जाता है॥१६८–१७८॥

सम्मति–पूर्वोक्त सात क्रियायें कुछ कुछ अन्तर होने पर भी प्रायः एक सी ही प्रतीत होती हैं। विशेषकर रसेन्द्र चिंतामणि से उद्धृत अंतिम क्रिया ही अत्युत्तम है। यद्यपि वह तो ग्रंथकारों ने इन क्रियाओं को मर्दन संस्कार में ही लिखा है परन्तु सर्वरस ग्रंथों में प्राचीन होने के कारण शिरोमणि रसेन्द्रचिंतामणि ग्रंथ तथा उसके अनुसार चलनेवाले योगरत्नाकर और रसराजशंकर ने भी इस क्रिया को मर्दन और मूर्च्छन इन दोनों क्रियाओं के करनेवाली मानी है। वास्तव में इस क्रिया के करने से मर्दन और मूर्च्छन ये दोनों संस्कार हो जाते हैं अथवा मर्दन द्वारा भी मूर्च्छन संस्कार होता है। इसलिये इसको मूर्च्छन संस्कार माना जाय तो भी कुछ दोष की बात नहीं है।

मूर्च्छन का रूप और फल

तच्च मूर्च्छनं द्विविधं मर्दनकृतं किन्नरयन्त्रकृतं च तत्र मर्दनकृतस्य लक्षणमाह।

कज्जलाभो यदा सूतो विहाय घनचापलम् । दृश्यतेऽसौ तदा ज्ञेयो मूर्च्छितः सूतराड् बुधैः ॥१७९॥ (ध० ध० स०)

अर्थ–मूर्च्छन संस्कार दो प्रकार का है–एक मर्दन द्वारा और दूसरा किन्नर यंत्र द्वारा (देखो यंत्राध्याय)–तहां मर्दन द्वारा किये हुए मूर्च्छन का लक्षण कहते हैं। पारा घन और चपलता को छोड़कर कज्जल के समान सूक्ष्म होता है तब पंडितजन उस पारद को मूर्च्छित कहते हैं॥१७९॥

मूर्च्छन

मलशिखिविषाभिधाना रसस्य नैसर्गिकास्त्रयो दोषाः । मूर्च्छां मलेन कुरुते शिखिना दाहं विषेण मृत्युं च ॥१८०॥ गृहकन्या हरति मलं त्रिफलाग्निं चित्रकश्च विषम् । तस्मादेभिर्मिश्रैर्वारान्सप्त मूर्च्छयेत्सूतम् ॥१८१॥

(धं. ध. सं., रा. क.)

अर्थ–मल, शिखि (अग्नि) और विष ये तीनों पारद के स्वाभाविक दोष हैं। मलदोष मूर्छा को, वह्निदोष दाह को तथा विषदोष मृत्यु को करता है और उनके नाश करनेवाली घीकुमारी, त्रिफला तथा चित्रक का मूल ये औषधि हैं। इस कारण इन तीनों औषधियों को मिलाकर सात बार पारद का मूर्च्छन करे। (आयुर्वेदविज्ञान में इसको मुख्य दोष का नाशक कहा है) ॥१८०॥१८१॥

अन्यच्च

मलं विषं तथा वह्निर्दोषा नैसर्गिकास्त्रयः । मरणं दाहमोहौ च यथासंख्यं प्रजायते ॥१८२॥ कुमारीत्रिफलावह्निजटाभिर्दितमूर्च्छितः । प्रकाशते स्वरूपं च रसः परमदुर्लभः ॥१८३॥ (र. ब., टो. नं., ध. सं.)

अर्थ–मल, विष और वह्नि ये पारद के स्वाभाविक दोष हैं, और वे क्रम से मृत्यु, दाह और मोह को करते हैं अतएव कुमारी, त्रिफला और चित्रकमूल के साथ घोटने से मूर्च्छित हुआ पारद अपने स्वरूप को प्रकाश करता है और वह रस परम दुर्लभ होता है॥१८२॥१८३॥

सम्मति–यहां पर यथासंख्य से दोषों को गुण ठीक नहीं लिखा गया क्योंकि अनेक ग्रंथों के संवाद से (मल से मूर्छा, विष से मौत और वह्नि से दाह होता है), ऐसा निश्चय हुआ है।

अन्यच्च

वरावह्निकुमारीभिः सप्तधा मूर्च्छितो रसः ।
पात्यः पातनयन्त्रेण मूर्च्छितो भवति ध्रुवम् ॥१८४॥

(र. सा. सं.)

अर्थ–त्रिफला, चित्रक और घीकुमारी से सातबार मर्दन किये हुए पारद को ऊर्ध्वपातन यंत्र से उड़ावे तो पारद मूर्च्छित होता है॥१८४॥

अन्यच्च

वायसीव्योषकन्यार्कपयोवह्नियुतं रसम् ।
मर्दनान्मूर्छयेत्सूतमथवा मर्दनौषधैः ॥१८५॥

(र. प.)

अर्थ–वायसी (कठूमर या कौआठोडी), सोंठ, मिरच, पीपल, घीग्वार, आक का दूध और चित्रकके साथ अथवा और मर्दन की औषधियों के साथ मर्दन करने से पारद को मूर्च्छित करे॥१८५॥

अन्यच्च

त्र्यूषणं त्रिफला वन्ध्याकन्दक्षुद्राद्वयान्वितैः । चित्रकोर्णानिशाक्षारकन्यार्ककनकद्रवैः ॥१८६॥ सूतं कृतेन क्वाथेन वारान्सप्त विमर्दयेत् । इत्थं स मूर्छितः सूतो जह्यात्सप्तापि कंचुकान् ॥१८७॥ (नि. र., शं. क., यो. र., आयु. वि., र. रा. प., वाच. बृ. वै. क., बृ. यो.)

अर्थ–त्रिकुटा, त्रिफला, बांझककोडा, दोनों कटेरी, चित्रक ऊन, हल्दी, क्षार (यवक्षार) घीग्वार, आक के पत्तों का रस तथा धतूरे के पत्तों का रस इनमें से रसों के व अन्य औषधियों के काढे के साथ पारद को सात बार मर्दन करे। इस प्रकार मूर्च्छित किया हुआ पारद सातों कंचुकों को छोड़ देता है॥१८६॥१८७॥

---

[1]. मूलेन मर्दयत्–इत्यपि ।

अन्यच्च

छप्पै–

सुंठी पीपरि मरिच आँवरा हरड विभीतक।
बांझ ककोडीमूल कटेरी द्वै पुनि चित्रक ॥
भेडीके लै ऊन और जवखार प्रथम धर।
काडा अष्टम अंश सबन के जुदे जुदे कर।।
पुन एक एक काढाविषे क्रमतें पारद धोय दिय।
दिन तीन तीन परियंतलो फिर कांजी ते धोय लिय ॥

दोहा-

फेर धतूरा रसविष, तीन दिवस परियंत।
घीकुमार रस घोटि पुनि, तीन दिवस परियंत ॥
या विधि मर्दन कर्मते, होय मूर्छित सूत।
सप्त कंचुकी हू तजे, लिखी सु करि अनुभूत ॥

(वैद्यादर्श)

अन्यच्च

स्वर्जिका यावशूकश्च तथा च पटुपंचकम्। अम्लौषधानि सर्वाणि सूतेन सह मर्दयेत् ॥१८८॥ खल्वे दिनत्रयं तावद्यावन्नष्टत्वमाप्नुयात्। स्वरूपस्य विनाशेन मूर्च्छनं तदिहोच्यते ॥ निर्मलत्वमवाप्नोति ग्रंथिभेदश्च जायते ॥१८९॥ (ध. सं.)

अर्थ–सज्जीखार, जवाखार, पांचो नोंन और सम्पूर्ण अम्ल औषयों को पारद के साथ खरल में डालकर तीन दिवस तक ऐसा घोटे के छोटते घोटते पारद नष्ट पिष्ट हो जाय बस इसी को मूर्च्छन संस्कार कहते हैं। यंहा पर मूर्च्छन का यह लक्षण है कि पारद अपने स्वरूप में स्थित न हो। और किसी प्रकार की गांठ भी न रहकर निर्मल हो जाय।।१८८।।१८९।।

किन्नरयंत्र द्वारा मूर्च्छनसंस्कार

मूर्च्छनं रसराजस्य कर्तव्यं वेदिभिः सदा। विषैस्त्रिफलया पूर्वं बृहत्योपविषैस्तथा ॥१९०॥ कर्कोटीक्षीरकंदेभ्यश्चित्रेण गृहकन्यया। एतेन चाथ संमर्द्यो याममेकं तु पारदः ॥१९१॥ ततस्तं किन्नरे यंत्रे यामं दीपाग्निना पचेत्। शीतं कृत्वा रसं यंत्रादुद्धरेन्मूर्च्छितो भवेत् ॥१९२॥

(रससार, ध. ध. सं.)

अर्थ–अब किन्नरयंत्र द्वारा मूर्च्छन को कहते हैं। रसज्ञाताओं को पारद का मूर्च्छन अवश्य करना चाहिये। विष, उपविष, त्रिफला, कटेरी की जड़, बांझककोडा, क्षीरकंद, चित्रक और घीग्वार इन समस्त औषधियों से एक प्रहर तक पारद को घोटे फिर उसको किन्नर यंत्र में एक प्रहर तक दीपाग्नि से पचावे, शीतल होने पर यंत्र से पारद को निकाले तो मूर्च्छित होता है।।१९०–१९२।।

उत्थापनलक्षण

मृतस्य पुनरुद्भूतिस्तत्प्रोक्तोत्थापनक्रिया ॥१९३॥

(टो. न.)

अर्थ–मृत यानी मूर्च्छित पारद के अपने स्वरूप में प्राप्त होने को उत्थापन क्रिया कहते हैं।।१९३।।

अन्यच्च

तत्रादौ मर्दनेन मूर्च्छितस्योत्थापनविधिः प्रोच्यते।अथोत्थापनकं पारदस्य भिषग्वरैः। करणीयं प्रयत्नेन रसशास्त्रस्य वर्त्मना ॥१९४॥ दोलायन्त्रेण तत्स्वेद्यं पूर्ववद्दिवसत्रयम्। सूर्यातपे मर्दितोऽसौ दिनमेकं शिलातले। उत्थापनं भवेत्सम्यङ् मूर्च्छादोषविनाशनम् ॥१९५॥

(ध. ध. सं, र. रा. सुं., र. रा. प., टो. नं.)

अर्थ–अब मर्दन द्वारा मूर्च्छित किये हुए पारद की उत्थापन क्रिया को कहते हैं। वैद्य रसशास्त्र के मार्ग से पारद के उत्थापन कर्म को अत्यन्त यत्नपूर्वक करे। पूर्व (पहले स्वेदन) के तुल्य दोलायंत्र द्वारा तीन दिन तक पारद का सेवन करे फिर सूर्य की तेजी से एक दिन खरल में घोटे तो मूर्छन दोष को नाश करनेवाला उत्थापन संस्कार अच्छी तरह से होता है।।१९४।।१९५।।

(ध. ध. सं, र. रा. सुं., र. रा. प., टो. नं.)

अर्थ–अब मर्दन द्वारा मूर्च्छित किये हुए पारद की उत्थापन क्रिया को कहते हैं। वैद्य रसशास्त्र के मार्ग से पारद के उत्थापन कर्म को अत्यन्त यत्नपूर्वक करे। पूर्व (पहले स्वेदन) के तुल्य दोलायंत्र द्वारा तीन दिन तक पारद का सेवन करे फिर सूर्य की तेजी से एक दिन खरल में घोटे तो मूर्छन दोष को नाश करनेवाला उत्थापन संस्कार अच्छी तरह से होता है।।१९४।।१९५।।

उत्थापनसंस्कार

ततस्तप्तेन खल्वेन चाम्लेनोत्थापयेद्रसम्। क्षारा मुखकराः सर्वे ह्यम्लाः सर्वे प्रबोधकाः ॥१९६॥

(ध. ध. सं., र. रा. सुं., र. रा. प., टो. नं.)

अर्थ–पारद को तप्तखल्व में डालकर अम्लवर्ग से मर्दन करे क्योंकि सब क्षार मुख के कर्ता हैं अर्थात् पारद को बुभुक्षित करते हैं और सब अम्ल बोधक हैं।।१९६।।

उत्थापन

तत उत्थापयेत्सूतमातपे निम्बुकार्दितम्। उत्थापनं विशिष्टन्तु चूर्णं पातनयन्त्रके। धृत्वोर्ध्वभांडे संलग्नं संग्रहेत्पारदं भिषक् ॥१९७॥

(यो०र०, र० रा० शं०,बृ० यो०, र०सा०प० नि०र०र० र०,चिं०, र०रा०सुं०)

अर्थ–वैद्य मूर्च्छन के बाद पारद को नींबू के रस से भिगोकर निकाले और उत्थापन से बचे हुए पारद के चूर्ण को पातनयंत्र में रखकर ऊपर के बासन में लगे हुए पारद को ग्रहण करे तो पारद शुद्ध होता है।।१९७।।

अन्यच्च

**अस्माद्विरेकात्संशुद्धो रसः पात्यस्ततः परम्।
उद्धृतः कांजिकाक्वाथात्पूतिदोषनिवृत्तये ॥१९८॥**

(र. र. स., र. रा. सुं., र. रा. शं.)

अर्थ–मूर्च्छन किये हुए पारद को कांजी से धोकर दुर्गंधि दूर करने के लिये पातन यंत्र द्वारा पातन करे तो पारद शुद्ध होता है।।१९८।।

अन्यच्च

आरनालेन चोष्णेन क्षालयेत्प्रतिमर्दनम्। रसं तत्रप्रयातं तु शोषयित्वाऽथ पातयेत् ॥ गृहीत्वा प्रक्षिपेत्सूते स्यादेवं पारदः शुचिः ॥१९९॥

(यो.र)

अर्थ–मूर्च्छित संस्कार में प्रत्येक मर्दन के बाद गरम कांजी के साथ पारद को धोवे फिर चूरे में मिले हुए अवशेष पारद को घास में सुखाकर पातन करे और उसको पूर्व धोकर निकाले हुए पारद में मिला दे तो पारद शुद्ध होता है।।१९९।।

अन्यच्च

मर्दयेत्कन्यकाद्रावैश्चूर्णितै रात्रिपादिकैः।

पातयेत्पातनायंत्रे इत्युत्थापनमीरितम् ।।२००।।

(रसेन्द्रसारसं.)

अर्थ—पारद से चौथाई हिस्सा हलदी का चूरा तथा पारद को घीकुमारी के रस से मर्दन करे। तदनंतर पातन यंत्र से पातन करे, बस इसी को उत्थापन क्रिया कहते हैं।।२००।।

अन्यच्च

प्रक्षाल्य काञ्जिकैस्साम्लैस्तमादाय विमर्दयेत् ।। प्रक्षाल्य कांजिकेनैव तमादाय विमूर्च्छयेत् ।।२०१।।जलैः सक्षारनालैर्वा क्षालनादुत्थितो भवेत् । अथवा पातनायंत्रे पातनादुत्थितो भवेत् ।।२०२।।

(र. रा. शं., नि. र., र. सा. प.)

अर्थ—अम्लवर्ग सहित कांजी से पारद को धोकर मर्दनोक्त औषधियों से मर्दन करे। फिर कांजी से ही धोकर मूर्च्छित करे। तदनंतर जल तथा गरम कांजी से पारद को धोवे तो उत्थापन संस्कार होता है।।२०१।।२०२।।

किन्नरयंत्र द्वारा मूर्छित पारद का उत्थापन

किन्नरयन्त्रेण मूर्च्छितस्योत्थापनविधिः—

रसस्योत्थापनं कार्यं विधिस्तस्य निरूप्यते । अमूर्छितस्तदा देयः कलांशो मूर्छिते रसे ।।२०३।। सिंधूत्थटंकणाभ्यां च मर्दयेन्मधुसंयुतम् । दोलायन्त्रे ततः स्वेद्यः क्षाराम्ललवणैः सह ।।२०४।। दिनैकेनोत्थितः सूतस्तं प्रकुर्याच्चतुर्गुणम् । पुनरुत्थापनं कुर्यादेवं कुर्यात्पुनः पुनः ।।२०५।।

(ध. सं.)

अर्थ—अब किन्नरयंत्र द्वारा मूर्छित किये हुए पारदके उत्थापनसंस्कारको कहते हैं। मूर्छन के बाद पारद का उत्थापन संस्कार करना उचित है, इस कारण उत्थापन की विधि को कहते हैं। मूर्छित पारद में बिना मूर्छित किये हुए पारद का सोलहवां हिस्सा डालकर सैंधानोन और शहद के साथ मर्दन करे। तदनन्तर क्षार अम्लवर्ग और लवण के साथ पारद को दोलायन्त्र में एक दिन तक स्वेदन करे तो पारद उत्थित होता है। इस प्रकार बार बार पातन करे।।२०३।।२०५।।

शेषदोषहारी स्वेदन

स्विन्नो वराद्यैरथ दोलिकायां दिनं मलाद्यै रहितस्त्रिभिः स्यात् ।।२०६।।

(यो. त.)

अर्थ—पारद को त्रिफला के क्वाथ में दोलायमान यंत्र द्वारा एक दिन स्वेदन करे तो पारद मलादि तीन दोषों (मल, वह्नि, विष) से रहित होता है।।२०६।।

उत्थापनानन्तर स्वेदन

रसं चतुर्गुणे वस्त्रे बद्ध्वा दोलाकृतं पचेत् । दिनं व्योषवरावह्निकन्याकल्के सकांजिके ।। दोषशेषोपनुत्त्यर्थमिदं स्वेदनमुच्यते ।।२०७।।

(आ० वे० वि० र० रा० शं०, र० रा० सुं०)

अर्थ—पारद को चौलर कपड़े में बांधकर त्रिकुटा, त्रिफला, चित्रक का क्वाथ, घीगुवार का रस और कांजी इनमें एक एक दिवसपर्यन्त दोलायन्त्र द्वारा शेष दोष दूर करने के लिये पचावे तो इसको स्वेदन कहते हैं।।२०७।।

अन्यच्च

रसं चतुर्गुणे वस्त्रे सरसोनशरावके । नियंत्र्य दोलायन्त्रे तु प्रकल्प्य दिवसं पचेत् ।।२०८।। सव्योयत्रिफलावह्निकन्याकल्के तुषाम्बुनि । शेषदोषापनुत्यर्थ-मिदं स्वेदनमीरितम् ।।२०९।।

(र. रा. शं., बृ. यो., नि. र.)

अर्थ—एक शराव अर्थात् आठ पल लहसन में रखकर फिर चौलर कपड़ में बांधकर त्रिकुटा, त्रिफला, घीग्वार का गूदा और कांजी इनमें एक दिन दोलायन्त्र द्वारा शेष दोषों के दूर करने के लिये स्वेदन करे।।२०८।।२०९।।

पातनसंख्या

अथातः पातनाख्यः पंचमः संस्कारः स च त्रिविधः—अधः पातनोर्ध्वपातनतिर्यक्पातनभेदात् उक्तं च रसहृदये—

अध ऊर्ध्वं तथा तिर्यक्पातनस्त्रिविध उच्यते ।

यत्र तिष्ठति सूतेन्द्रो बह्निस्तत्रान्यथा जलम् ।।२१०।।

(ध. सं.)

अर्थ—अब पातन नाम का पांचवां संस्कार है और वह पातन अधःपातन ऊर्ध्वपातन और तिर्यकपातन इन भेदों से तीन प्रकार का है और यही बात रसहृदय में लिखी है कि अधःपातन, ऊर्ध्वपातन और तिर्यक्पातन इन भेदों से पातन तीन प्रकार का है, जहां पारद स्थित है, उसके नीचे अग्नि जलावे और जहां पारद का ग्रहण है, वहाँ जल रखा जाये।।२१०।।

रसप्रकाशसुधाकरे—

पातनं हि महाकर्म कथयामि सविस्तरम् । त्रिधा पातनमित्युक्तं रसदोषविनाशनम् ।।२११।। ऊर्ध्वपातस्त्वधःपातस्तिर्यकपातः क्रमेण हि ।।२१२।। (ध. सं.)

अर्थ—रसप्रकाश सुधाकर में भी यही लिखा है कि इसके आगे महाकर्म पातन संस्कार को विस्तारपूर्वक कहता हूं। रसदोष दूर करने के लिये पातन तीन प्रकार का कहा है और उनके नाम क्रम से ये हैं, ऊर्ध्वपातन, अधःपातन और तिर्यक्क पातन ।।२११।।२१२।।

पातनफल

मिश्रितौ चेद्रसे नागवंगौ विक्रयहेतुना । ताभ्यां स्यात्कृत्रिमो दोषस्तन्मुक्तिः पातनत्रयात् ।।२१३।। (ध. सं., र. रा. शं., रसेन्द्रचिं., नि. र., टो)

यदि बेचने के कारण पारद में सीसा या रांग मिला दिया है तो उनसे पारद में कृत्रिमदोष पैदा होता है और वह दोष तीन पातनसंस्कारों से छूटता है।।२१३।।

सीमाव की तंसईद में छः आमूर का खासकर लिहाज रखना चाहिये (उर्दू)

अव्वल—यह कि दोनो प्यालों के वस्ल यानी जोड़ तक शौहला आग व पहुंचे, ताकि हरारत का नफज हो, हालांकि तमाम अहलसिनाइने इसके बरखिलाफ लिखा है लेकिन तजरुबे से खासतौर पर यह बात खुली है सिवाय तसईद सीमाव के दूसरी अरवाह की तसईद में अगर आग का शौंहला प्यालों के जोड़ तक न पहुंचे तो बेहतर है, सर्द होने के बाद जोड़ को खोले, क्योंकि भाप से कतई परहेज करना चाहिये।

दोयम—सहक और खरल करने में मुबालगा करना चाहिये।

सोयम—नीचे का जर्फ मुस्तह और ऊपर का मुखरूती होना चाहिये।

चहारम—रफ्तः रफ्तः आग तेज करना चाहिये लेकिन बहुत तेज आँच न हो।

पंजुम-सीमाव की तसईद में तसईद का जर्फ जिस कदर ऊँचा हो बेहतर है अफलातून ज्यादह नौ बालिश्त तक लिखा है मगर यहाँ दो बालिश्त से ज्यादह होना चाहिये और दूसरी अरवाह की तसईद में बहुत ऊँचा जर्फ गैरजरूरी है।

शशुम-पानी का लगाड आलात तसईद में न हो, बाजवक्त नफूज करके अन्दर गिरता है और सीमाव को उड़ने से बाज रखता है (सुफहा अकलीमियाँ ८५)

हिदायत मुताल्लिक तसईद सीमाव बजरिये डौरू जंतर (उर्दू)

तजरुबे से यह साबित हुआ है कि हांडी वगैरह में पानी का लगाड न होना चाहिये, जैसा कि बाज किताबों में तहरीर है, क्योंकि पानी के लगाड से अकसर पानी मजकूर मसामात से नफूज करके पारा वगैर: में मिल जाता है और पारा अच्छी तरह तसईद नहीं होने पाता, खाली और बेलगाव पानी के बखूबी तसईद होता है (सुफहा अकलीमियां १४१–१४२)

हिदायत मुतल्लिक तसईद सीमाव और पारे का कम हो जाना (उर्दू)

मुतरज्जिम ने जरूफगिली बनवाकर उसमें तसईद सीमाव का अमल किया और कोई तरद्दुद नहीं पड़ा बल्कि बहुत आसानी हुई, अलबत्तः मिट्टी के बर्तन में पारा जज्ब होकर कमकरूर हो जाता है

(सुफहा अकलीमियां १४४)

पातनसंस्कारताम्रद्वारा

ताम्रेण पिष्टिकां कृत्वा पातयेदूर्ध्वभाजने[1] । वंगनागौ परित्यज्य शुद्धो भवति सूतकः । शुल्बेन पातयेत्पिष्टिं त्रिधोर्ध्वं सप्तधा त्वधः ॥२१४॥ (र. र. स. रं. रा. सुं., रसेन्द्रक)

अर्थ–पारद में तांबा मिलाकर पिष्टी बनावे फिर उसको डमरूयंत्र में रखकर ऊर्ध्वपातन करे तो पारद नाग और वंग के दोषों को छोड़कर शुद्ध होता है। पातन करने के समय इस बात को याद रखना चाहिये कि जिसमें पातन किया जाय वह ताम्र का पात्र और ऊपर का पात्र मिट्टी का हो। इस प्रकार तीन बार ऊर्ध्वपातन और सात बार अधःपातन करना चाहिये॥२१४॥

पातनसंस्कार

हरिद्रांकोलशंपाककुमारीत्रिफलाग्निभिः । तंदुलीयकवर्षाभूहिंगुसैंधवमाक्षिकैः ॥२१५॥ पिष्टं रस सलवणैः सर्पाक्ष्यादिभिरेव वा । पातयेदथवा देवि ब्रह्मघ्नीयक्षलोचनैः ॥२१६॥ इत्थं ह्यधोर्ध्वपातेन पातितोऽसौ यदा भवेत् । तदारसायने योग्यो भवेद्रव्यविशेषतः ॥२१७॥

(र. र. स., र. रा. प)

अर्थ–हल्दी, अंकोल, अमलतास, घीग्वार, त्रिफला, चित्रक, चौलाई, वर्षाभू (सांठी), हींग और सेंधानोंन इनसे अथवा लवणसहित सर्पाक्षी आदि के रस से अथवा ब्रह्मघ्नी (घीग्वार) यक्षलोचन के साथ पारद को घोटकर जब पातन करे तो पारद विशेषकर रसायन के योग्य होता है॥२१५–२१७॥

ऊर्ध्वपातन ताम्र द्वारा

पुनः पिष्टी प्रकर्तव्या दत्त्वाम्लं ताम्रसंयुतम् । तं पिंडं तलभांडस्थमूर्ध्वभांडेन रोधयेत् ॥२१८॥ संधिं मृत्कर्पटैर्लिप्य चुल्लीमारोपयेत्ततः । शनैर्वह्निं दहेद्यत्नादूर्ध्वभांडे जलं क्षिपेत्॥२१९॥ कृत्वालवालं पंकेन त्रियामात्सूत-मुद्धरेत् ॥२२०॥ (ध० स०)

अर्थ–अब ऊर्ध्वपातन की क्रिया को कहते हैं। पारे में तांबा डालकर अम्लवर्ग से घोटते घोटते पिष्टी बनावे और उस पिष्टी को एक हांडी के तले में रखकर ऊपर से हांडी को लगाकर कपरौटी कर दे फिर उनको चूल्हे पर चढाकर यत्पूर्वक धीरे धीरे आंच जलावे और ऊपर के बासन में मिट्टी से आलवाल (कोडुआ) बनाकर जल भर देवे तो तीन प्रहर में पारा निकल आता है॥२१८–२२०॥

सम्मति–जहां ताम्र के साथ पारद की पिष्टी की जाय वहां पारद में ताम्र का चौथा ही हिस्सा लेना उचित है।

ऊर्ध्वपातन

भागास्त्रयो रसस्यार्कचूर्णमंशं सनिम्बुकम् । एतत्संमर्दयेत्तावद्यावदायाति पिंडताम् ॥२२१॥ तलपिण्डं तलभाण्डस्थमूर्ध्वभाण्डे जलं क्षिपेत् । समुद्रचाग्निमधस्तस्य चतुर्यामं प्रबोधयेत् । युक्तोर्ध्वभाण्डसंलग्नं गृह्णीयात्पारदं शुभम् ॥२२२॥ (बृ. यो.)

अर्थ–तीन भाग पारा और एक भाग तांबे का चूर्ण इनको नींबू के रस से घोटते घोटते पिंड बनावे और उस पिंड को नीचे का बासन में रखकर ऊपर के पात्र में जल भर देवे, जलावे फिर उन दोनों पात्रों की सन्धि को कपरौटी से लेप कर नीचे से चार पहर तक अग्नि जलावे। तदनंतर ऊपर के पात्र में लगे हुए श्रेष्ठ पारद को ग्रहण करे॥२२१॥२२२॥

अन्यच्च

भागास्त्रयो रसस्यार्कभागमेकं विमर्दयेत् । जम्बीरद्रवयोगेन यावदायाति पिण्डताम् ॥२२३॥ तत्पिण्डं तलभांडस्थमूर्ध्वभांडे जलं क्षिपेत् । कृत्वालवालकेनापि ततः सूतं समुद्धरेत् । ऊर्ध्वपातनमित्युक्तं भिषग्भिः सूतसाधने ॥२२४॥ (र. रा. सुं.)

भागास्त्रयो रसस्यार्कचूर्णवंशं सनिंबुजम् । मर्दयेच्छ्रावयोगेन यावदायाति पिंडताम् ॥२२५॥ तम्पिण्डं तलभांडस्थमूर्ध्वभांडे जलं क्षिपन्[1] । कृत्वालवालं केनापि ततः सूतं समुद्धरेत् ॥२२६॥, ऊर्ध्वम्पातनमित्युक्तं भिषग्भिः सूतशोधने । ससूतभांडवदनमन्यदिग्गेतिभांडकम्॥२२७॥ तथा संधिर्द्वयो कार्यः पातनत्रययन्त्रके ॥२२८॥ (रसेन्द्रचिं)

भागास्त्रयो रसस्यार्कभागमेकं विमर्दयेत् । जम्बीरद्रवयोगेन यावदायाति पिंडताम् ॥२२९॥ तत्पिंडं तलभांडस्थमूर्ध्वभांडे जलं क्षिपेत् । कृत्वालवालं केनापि ततः सूतं समुद्धरेत् । ऊर्ध्वपातनमित्युक्तं भिषग्भिः सूतशोधने ॥२३०॥ (रसेन्द्रसा. सं.) पादेन वा त्रिभागेन दशांशेनाथ वा रसात् ।

ताम्रचूर्णं समादाय पिष्टिं कृत्वाथ पातयेत् ॥२३१॥ सूताधिक्याद्यदा नैव पिष्टी साधु प्रजायते । तदा विनिक्षिपेत्तुत्थं संप्रदायपरायणः ॥२३२॥ (टो. नं., र. प.) संरुध्यभांडद्वयगर्भमध्ये पिष्टिं ततः सम्पुटमव्रणान्तरम् । निवेश्य चुल्ल्यां सुशनैः प्रदीपप्रमाणमस्याथ तले विदध्यात् ॥२३३॥ अग्निं शिरस्थस्य जलार्द्रमेकं वस्त्रं क्षिपेदल्पमनुष्णमेवम् । वारत्रये नोरगवंगसंज्ञौ नस्तः प्रदिष्टो ह्ययमूर्ध्वपातः ॥२३४॥

(रसार्णवात्, टो., ध. सं.)

तत्त्र्यंशताम्रेण विमर्द्य सूतं जंबीरनीरेण ततः प्रगाढम् । संरुध्य भांडद्वयगर्भमध्ये पिष्टिं ततः सम्पुटमव्रणं तत् ॥२३५॥ निवेश्य चुल्ल्यान्तु शनैः प्रदीपप्रमाणमग्निं च तले प्रदध्यात् । ततः शिरस्थस्य जलार्द्रमेकं वस्त्रे क्षिपेदल्पमनुष्णमेव ॥२३६॥ वारत्रयेणोरगवंगसंज्ञौ नस्तः प्रदिष्टो

---

१ त्र्यंशेनोर्ध्वं निपातयेत्–इत्यपि ।

१ दिगलति भां० इत्यपि ।

ह्ययमूर्ध्वपातः ॥२३७॥

(यो. त.)

अर्थ–पारद से चौथाई, तिहाई, नवांश या दशांश ताम्रचूर्ण को निंबू अथवा जंभीरी के रस से घोटकर पिष्टी बनावे फिर उस पिष्टी को एक हांडी में रखकर ऊपर से दूसरी हांडी का मुख मिलावे और उन दोनों के मुख को कपरौटी से ऐसा बंद करे कि किसी प्रकार का छिद्र उसमें न रहे। (किसी किसी जगह ऐसा लेख है कि नीचे की हांडी के मुख पर ऊपर की हांडी का पेंदा रख संधिलेप करे) फिर ऊपर की हांडी के पेंदे में आलवाल (थामला) बनाकर जल से भरा हुआ कपड़ा रक्खे फिर तीन पहर या चार पहर धीरे धीरे आंच जलावे। तदनंतर ऊपर के पात्र में स्थित पारद को युक्ति द्वारा ग्रहण कर ले तो पारद शुद्ध होता है। वैद्यों ने पारद की शुद्धि के लिये इसको ऊर्ध्वपातन संस्कार कहा है। संधिलेप में इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि ऊपर से पात्र का मुख नीचे के पात्र के मुख में आ जाय और लेप करने पर किसी प्रकार का छिद्र न रहे और यदि नवांश तथा दशांश ताम्र के साथ पिष्टी न हो तो गुरुरीति से थोड़ा सा तूतिया डालना उचित है।।२२३–२३७।।

अन्यच्च

काकमाची जया ब्राह्मी चाङ्गेरी रक्तचित्रकम् । अंकोलो राजवृक्षश्च तिलपर्णी कुमारिका ॥२३८॥ मंडूकी चित्रकं पाठा काकजंघा शतावरी । भूपाटली देवदाली निर्गुंडी गिरिकर्णिका ॥२३९॥ शंखपुष्पार्द्रकं भृंगी गोजिह्वा क्षीरकंदकम् । नीली चासां समस्तानां व्यस्तानां वा द्रवैर्दिनम् ॥२४०॥ ताम्रपादयुतं सूतं मर्दयेदम्लकैः सह । तत्पिष्टिं पातयेद्यंत्र ऊर्ध्वपातनके पुनः ॥२४१॥ आदाय मर्दयेद्यावत्ताम्रचूर्णेन संयुतम् । पातयेन्मर्दयेच्चैव ताम्रं दत्त्वा पुनः पुनः ॥२४२॥ इत्येवं सप्तधा कुर्यान्मर्दनं पातनं क्रमात् । ऊर्ध्वलग्नं समादाय अधःपातेन पातयेत् ॥२४३॥ (र. प.)

अर्थ–काकमाची (मकोय कवैयां), जया (अग्निमन्थ, ब्राह्मी, चांगेरी, लालचीता, अंकोल, अमलतास, तिलपर्णी (लालचंदन), घीगुवार, मंडूकी (हुलहुल), चित्रक, पाढल, काकजंघा, (मसी) शतावर, भूपाटली (भुईपाढल दक्षिणीभाषा), देवदाली (बिंदाल), निर्गुंडी, गिरिकर्णिका (विष्णुक्रांता, शंखाहुली, अदरख, भंगरा, वनगोभी, क्षीरकंद (विदारीकंद) और नीली (नील), इन समस्त अथवा एक एक औषधियों के रस से और अम्ल पदार्थों से तीन भाग पारद और एक भाग ताँबे को एक दिन घोटे फिर उस पिट्ठी को पातनयंत्र में उड़कर पारा निकाल लेवे। तदनंतर उसी पारे को तांबे के साथ घोटकर फिर पातन करे। इस प्रकार सात बार पातन करे। ऊर्ध्वपातन के पश्चात् अधःपातन करे।।२३८–२४३।।

अन्यच्च

मयूरग्रीवताप्याभ्यां नष्टपिष्टीकृतस्य च । यंत्रे विद्याधरे कुर्याद्रसेन्द्रस्योर्ध्वपातनम् ॥२४४॥

(वै. क., र. रा. शं., आयु. वे. वि., वाच. बृ. नि. र.)

अर्थ–पारा तीन भाग तूतिया और सोनामक्खी दोनों मिलाकर एक भाग खरल में डालकर घीग्वार के रस से इतना घोटे कि पारद औषधियों से पृथक् न दीखे अर्थात् पारद की नष्ट पिष्टी हो जाय फिर विद्याधर यंत्र में पारद को उड़ा लेवे तो पारद सर्वदोषों से रहित और शुद्ध होता है।।२४४।।

अन्यच्च

अथेह विशदं सूतं काकिनीरजसा दिनम् । मर्दयेत्सततं गाढमूर्ध्वपातनहेतवे ॥२४५॥ स्याद्भृंगशृंगवेराभ्यां हरिद्रामार्कवार्द्रकैः । उत्थापनावशिष्टं तु पात्यं पातनयंत्रके ॥२४६॥

(र. प.)

अर्थ–अत्र बहुत सा पारद लेकर काकिनी के रस से पारद को एक दिवस तक दृढ मर्दन कर ऊर्ध्वपातन यंत्र से उड़ा लेवे और उड़ाने से जो शेष रहा पारद है, उसको भांगरा और अदरख अथवा हिन्दी भंगरा और अदरख के साथ घोटकर फिर पातनयंत्र में उड़ा लेवे तो पारा विशेष शुद्ध होता है।।२४५।।२४६।।

समालोचना–ऊपर के पाठ को रसपद्धतिकार ने रसमंजरी का बताकर लिखा है कि हमने रसमंजरी की कई प्रतियां देखी परन्तु यह पाठ किसी पुस्तक में नहीं देखा गया अतएव रसपद्धतिकार का कथन भ्रममूलक है।।

ऊर्ध्वपातन क्षार द्वारा

ऊर्ध्वपातनयंत्रस्य लक्षणं तदिहोच्यते । मृन्मयी स्थालिका कार्या चोच्छ्रिता स्यात्षडंगुला ॥२४७॥ मुखे सप्तांगुलायामा परितस्त्रिंशदंगुला । इयन्माना द्वितीया च कर्तव्या स्थालिका शुभा । २४८॥ क्षारद्वयं रामठं च तथा वै पटुपंचकम् । अम्लवर्गेण संयुक्तं सूतकं च विमर्दयेत् ॥२४९॥ लेपयेत्तेन कल्केन ह्यधस्थां स्थालिकां शुभाम् । उपरिस्थामधोवक्त्रां संपुटं तत्र कारयेत् ॥२५०॥ मर्शितं लवणेनैव मुद्रां तत्र प्रकारयेत् । चुल्ल्यां स्थालीं निवेश्याथ धान्याग्निं तत्र धापयेत् ॥२५१॥ तस्योपरि जलं सिंचेच्चतुर्यामावधिं कुरु । स्वांगशीतलतां ज्ञात्वा चोर्ध्वगं ग्राहयेद्रसम् ॥२५२॥ ऊर्ध्वपातनकं यंत्रमेतदेव हि कीर्तितम् ॥२५३॥ (धं. सं.)

अर्थ–अब ऊर्ध्वपातनयंत्र को कहते हैं। छः अंगुल ऊंचा मिट्टी का पात्र बनावे जिसका मुख सात अंगुल चौड़ा हो और जिसका घिराव तीस अंगुल हो। इसी प्रकार की दूसरी हांडी बनवावे फिर दोनों खार (जवाखार, सज्जीखार) हींग और पांचो नोंन और पारद को अम्लवर्ग के साथ मर्दन करे। फिर उसी कल्क से नीचे की हांडी में लेपकर ऊपर से दूसरी हांडी के मुख को मिलाकर कपरौटी कर देवे। तदनंतर चूल्हे पर हांडी को चढाकर चार पहर दीपाग्नि दे और ऊपर की हांडी के पेंदे पर जल छिड़कता जाये। स्वांगशीतल होने पर ऊपर की हांडी में लगे हुए पारद को ग्रहण करे। बस इसी को पातनयंत्र कहा है।।२४७–२५३।।

जैसे–दोहा

सुन्दर हँडिया लेय द्वै, तिन में हिंगुल पाय ।
नीचे को हांडीविषे, पारा धरै जमाय ॥
पारा ऊपर दाबिकै, सैंधा नोन भरेय ।
हांडी लेके दूसरी, हांडी पर धर देय ॥
दोनों हाँडी मुख घिसे, नीके संधि मिलाय ।
वृढ मुद्रा करवाय के, दीजै धूप सुखाय ॥
चूल्हे पर धरि जंत्र यह, नीचे अग्नि लगाइ ।
ऊपर की हांडीविषे, पानी च्यावत जाय ॥
तीछन अग्नि जराइये , तीन प्रहर परमान ।
नवरस उडि उरध लगै , हँडियाविष सुजान ॥
ऊरध को हांडी विषै, पारा लग्यो सु होइ ।
ताहि जतनसों पोंछि के, लेइ भिषक जन लोय ।
संस्कार यह जानियो, ऊरधपातन नाम ।
याते पारा होत सब, दोषरहित अभिराम ॥

वार्तिक–एक डमरू प्रति मासा अथवा मासा शुद्ध पारद धरनो लवण पारदते चौगुणों और जा डमरू में मासा पारद होय ता में आंच प्रहार तीन की देनी और मासा बारे में चार प्रहर आंच देनी इति संकेतः। सर्व दोष नागवंगादि प्रभृति ॥ (वैद्यादर्श)

अधःपातन

भागत्रयं रसस्यार्कचूर्णं पादांशसंयुतम् । दत्त्वाम्लं मर्दयेत्तावद्यावत्पिष्टी प्रजायते ॥२५४॥ यदा न जायते पिष्टी किंचित्तुत्थं तदा क्षिपेत् । कटाहं

नूतनं कृत्वा तस्याधो लेपयेद्रसम् ॥२५५॥ द्विगुणेन सुवस्त्रेण जुटयेबुध्नकादयः । वस्त्रान्तानि मृदा लिप्त्वा जलस्थाल्युपरिन्यसेत् ॥२५६॥ स्थाली-कटाहयोः संधिं लेपयेत्सुदृढं मृदा । कटाहोपरि कर्तव्यमुपलाग्निप्रदीपनम् ॥२५७॥ जलमध्ये रसो याति शुल्बं तिष्ठति बुध्नके । शुल्बाद्रसो रसात्ताम्रपातनेन पृथक्कृतम् ॥२५८॥ ससूतभांडवदनमन्यद्गिलति भांड–कम् । तथा संधिर्द्वयोःकार्यः पातनत्रययंत्रके ॥२५९॥ जलस्थाने कांजिकं च दापयेन्नात्र संशयः ॥२६००॥ (टो. नं., ध. सं.)

अर्थ–ऊर्ध्वपातन के बाद अधःपातन संस्कार को करे इसलिये टोडरानंद का प्रमाण देते हैं। तीन भाग पारद एक भाग तांबे का चूर्ण इन दोनों को अम्लवर्ग से इतना करे कि दोनों की खूब पिष्टी हो जाय अगर पिष्टी उत्तम न हो तो गुरुरीति से तुतिया मिलाकर पिष्टी बनावे अब अधःपातन की विधि का वर्णन करते हैं। एक बड़ा और नया कड़ाह (लोहे की बड़ी कड़ाही) बनावे और उसके पेंदें में उस पिष्टी का लेप करे। फिर पारद की पिट्टी के नीचे दुल्लर का कपड़ा बाँध दे तदनंतर कपड़े के किनारों की मिट्टी से लेपकर कडाह से मिलाकर दृढ चिपटा देवे और कढाई के ऊपर कंडो की आंच जलावे और कढाई के नीचे जल का पात्र रख देवे तो पारद नीचे रखे हुए जल के पात्र में आ जायेगा। इस प्रकार ताम्र से पारद का तथा पारद से ताम्र का पातन करे। जल के स्थान में काजी देना उचित है। तीन बार, सात सात बार या इक्कीस बार पातन करे। अथवा तीन बार ऊर्ध्वपातन और सात बार अधःपातन करे।। ॥२५४-२६०॥

अधःपातन क्षार द्वारा

मृन्मयी स्थालिका कार्या चोच्छ्रिता तु षडंगुला । मुखे सप्तांगुलायामा परितस्त्रिंशदंगुला ॥२६१॥ इयन्मिता द्वितीया च कर्तव्या स्थालिका शुभा । क्षारद्वयं रामठं च तथैव पटुपंचकम् ॥२६२॥ अम्लवर्गेण संयुक्तं सूतकं परिमर्दयेत् । लेपयेत्तेन कल्केन चोर्ध्वस्थाल्यंतरं बुधः ॥२६३॥ अधोमुखीं सकल्कां तु कृत्वा डमरुकं चरेत् । गर्ते तु पंकिले स्थाप्यं कौ दद्यान्मूर्ध्नि पावकम् । यामत्रितयपर्यन्तमधः पतति पारदः ॥२६४॥ (ध. सं.)

अर्थ–छः अंगुल ऊँची मिट्टी की हंडिया बनवावे जिसका मुख सात अंगुल चौड़ा हो और जिसका घिराव तीस अंगुल हो बस इसी प्रकार की एक दूसरी हाँडी और बनवानी चाहिये। तदनंतर सज्जीखार, जवाखार, हींग, पाचोंनोंन और पारद इनको अम्लवर्ग से मर्दन करे। फिर उसी कल्क से ऊपर की हँडिया को ल्हेस दे और उसका नीचा मुख करके दूसरी जल से पूर्ण हँडिया को मुख से मुख मिलाकर कपरौटी कर डमरू यन्त्र बनवावे और नीचे की हँडिया को कीचड़ वाले गढ़े में रखकर ऊपर की हंडिया (जिसके पेंदे पर पारद का लेप किया गया है) पर तीन प्रहर बराबर आंच लगाना चाहिये तो पारद का अधःपातन होता है॥२६१–२६४॥

समालोचना–इसी धरणी पर संहिता के रचयिता ने ऊर्ध्वपातनसंस्कारके प्रकरण में इस क्रिया को लिखा है और वही धरणीधर संहिताकार इसी क्रिया का पाठ परिवर्तन कर रस प्रकार सुधाकर ने नाम से लिखा है और क्रिया भी ठीक नहीं मालूम होती क्योंकि बिना किसी रुकावट के ऊपर की हांडी में लगाई हुई पारद की पिष्टी अग्नि के योग से सूखकर नीचे की हांडी में गिर पड़ेगी। इसलिये यह अधःपातन की क्रिया धरणीधर संहिताकार की अनुभूत नहीं है। मेरी समझ में तो गोल नलिका के समान मिट्टी का पात्र बनवावे जिसका मुख दोनों तरफ खुला हुआ और ग्यारह अंगुल के अनुमान चौड़ा हो उसको नीचे की जल भरी हुई अथवा कीचड़ में रखी हुई हांडी में रखकर ऊपर लोहे की जाली लगाकर ऊपर से पारद का लेप की हुई हांडी का मुख लगाकर यंत्र चढावे तो अधःपातन ठीक होगा।

अन्यच्च

फलत्रयाग्न्यासुरिसिग्रुसिन्धुजैः कुर्वन्तिसूतं भृशनष्टपिष्टिकम् । तेनैव भांडस्य पिधानपात्रकं लिंपेदधस्तात्तदधः स्थितेऽपि ॥२६५॥ जलं क्षिपेत्तत्र पिधानभांडकादुपर्यथाग्निं ज्वलयेद्यथाधः सूतः पतेन्नूनमथोर्ध्वपातस्तद्वैपरीत्येन भवेद्रसस्य ॥२६६॥ वह्निं खदिसारेण मध्यं यामद्वयं कुरु । (टो. न.)

अर्थ–चित्रक, त्रिफला, राई, सैंजना और नोन, इनसे पारदे की नष्ट पिष्टी करे फिर हांडी के ढकने पर उस पिष्टी का लेप करे नीचे की हांडी में जल भर देवे और ऊपर के ढकने पर आंच जलावे तो पारद का अधःपतन होता है। यदि इस यन्त्र को उलटा करे अर्थात् नीचे की हांडी में पारद और ऊपर की हांडी में जल रख नीचे आंच जलावे तो पारद का ऊर्ध्वपातन होता है।।२६५।।२६६।।

अन्यच्च

त्रिफला राजिका शिग्रु व्योषं लवणचित्रकम् । सूततुल्यं तु तत्सर्वं कांजिकं मर्दयेद्दिनम् ॥ २६७। तेन लेप्यमूर्ध्वभांडं देयं तत्र पुटं लघु । अधःपातनयंत्रेण पातितं तत्समुद्धरेत् ॥२६८॥ (र. प.)

अर्थ–त्रिफला, राई, सैंजना, सोंठ, मिर्च, पीपल, सैंधव, और चित्रक, ये पारद से बराबर लेकर कांजी के साथ एक दिन मर्दन करे उससे ऊपर के बासन पर लेपकर लघु पुट देवे फिर इस अधःपातन से पातित पारद को ग्रहण करे।।२६७।।२६८।।

अन्यच्च

त्रिफलाशिग्रुशिखिभिर्लवणासुरिसंयुतैः।नष्टपिष्टं रसं कृत्वालेपयेदूर्ध्वभाजनम् ॥२६९॥ ततो दीप्तैरधःपातमुपलैस्तत्र कारयेत् । यंत्रे भूधरसंज्ञे तु ततः सूतो विशुध्यति ॥२७०॥

(आ. वे. वि., बै. क. द्रु., र. र. स., ध. ध. सं.)

अर्थ–त्रिफला, सैंजना, चित्रक, लवण, राई इनसे पारद की नष्ट पिष्टी कर ऊपर के बासन में लेप कर फिर भूधर यंत्र में जले हुये उपलों से अधःपातन करे तो पारद शुद्ध होता है।।२६९।।२७०।।

अन्यच्च

त्रिफलाशिग्रुशिखिभिर्लवणासुरिसंयुतैः । नष्टपिष्टं रसं कृत्वा लेपयेदूर्ध्व–भांडके ॥२७१॥ ऊर्ध्वभांडोदरं लिप्त्वा चाधोभांडे जलं क्षिपेत् । संधिलेपं द्वयोः कृत्वा तद्यंत्रं भुवि पूरयेत् ॥२७२॥ उपरिष्टात्पुटे दत्ते जले पतति पारदः । अधःपातनमित्युक्त सिद्धाद्यैः सूतकर्मणि ॥२७३॥ (र. रा. सुं., र रा. शं., र. रा. प., र. सा. प., नि. र.)

अर्थ–त्रिफला, सैंजना, चित्रक, सैंधव, राई इनसे पारद की नष्टपिष्टी कर ऊपर से बासन में लेप कर और नीचे के बासन में जल भर देवे फिर दोनों की संधि को कपरौटी से ल्हेसकर यन्त्र को धरती में गाड देवे और ऊपर से आंच जलावे तो पारद जल में गिर जाता है। सिद्धों ने इसी को अधःपातन कहा है।।२७१–२७३।।

अन्यच्च

नवनीत[१]ताभ्रकं सूतं घृष्ट्वा जम्ब्वाम्भसा दिनम् । वानरीशिग्रुशिखिभिः सैन्धवासुरिसंयुतैः ॥२७४॥ नष्टपिष्टं रसं कृत्वा लेपयेदूर्ध्वभाण्डकम् । ऊर्ध्वभाण्डोदरं लिप्त्वाऽधोभाण्डं जलसंयुतम् ॥२७५॥ संधिलेपं द्वयोः कृत्वा तद्यन्त्रं भुवि पूरयेत् । उपरिष्टात्पुटे दत्ते जले पतति पारदः । अधःपातनमित्युक्तं सिद्धाद्यैः सूतकर्मणि ॥२७६॥ (नि. र., रसेन्द्रचि., रसेन्द्रसा. र. रा. शं., बृ. यो.)

अर्थ–नोनियां गंधक, अभ्रक, कौंच, सैंजना, चित्रक, सैंधव और राई

१–यहां केवल नवनीत का अर्थ नोनियागंधक है अभ्रक से अभ्र और लेना।

इनसे पारद को पीसे फिर पारद नष्टपिष्ट (अर्थात् एकजीव) जानकर ऊपर के बासन पर लेप करे और नीचे के पात्र में जल भर और दोनों की संधि को कपरौटी से दृढ ल्हेसकर फिर उस यंत्र को धरती में गाड़ देवे तदनंतर ऊपर अग्नि की पुट देवे तो पारद का अधःपातन होता है। बस इसी को अधःपातन यंत्र कहा है।।२७४–२७६।।

सम्मति–अनेक ग्रंथों में 'अधोभांडे जलं क्षिपेत्' ऐसा पाठ है। इस पाठ से यह बात सिद्ध होती है कि संपुट के नीचे के पात्र में जल भर देवे यह बात गुरुसंप्रदाय से विरुद्ध है क्योंकि पारदकर्म में शैत्य पदार्थों का प्रयोग करना उचित नहीं है क्योंकि जल शीतगुण से युक्त है और शीतपदार्थों में पारद को रखने से अनेक षण्ढादिक दोष पैदा हो जाते हैं, "शीते च बहवो दोषाः षण्ढाद्याः सम्भवन्ति हि" टी० नं० पृ० नं०–श्लोक १३१ ऐसा शास्त्रकारों ने लिखा है इसलिये जब जब भूधरयंत्र द्वारा अधःपातन करे तब तब नीचे के पात्र को जल वा कीचड़ में रक्खे ऐसा सम्पूर्ण अधःपातनकर्मों में जानना चाहिये। ऐसा रसरा० प०, र० मा० प० की टिप्पणी में लिखा है और तिर्यक् पातन में भी घड़े में किसी जल से भरी हुई नाद में रखना चाहिये और घड़े में जल भरना उचित नहीं है।।

तिर्यक्पातन

घटे रसं विनिक्षिप्य सजलं घटमन्यकम् । तिर्य्यङ्मुखं द्वयोः कृत्वा तन्मुखं रोधयेत्सुधीः ।।२७७।। रसाधो ज्वालयेदग्निं यावत्सूतो जलं विशेत् । तिर्य्यक्पातनमित्युक्तं सिद्धैर्नागार्जुनादिभिः।।२७८।। (आ. बे. वि., रसेन्द्रसा. सं., र. रा. प., ध. सं. बृ. यो., नि. र.)

अर्थ–एक घड़े में पारद और दूसरे में जल भर देवे और तिरछे घिसे हुए दोनों घड़ों के मुख को मिलाकर संधि पर कपरौटी करे। तदनंतर जिस घड़े में पारद हो उसके नीचे आंच जलावे तो पारद जल में प्रविष्ट हो जायेगा। बस इसी को नागार्जुन आदि सिद्धों ने तिर्य्यक्पातन यंत्र कहा है।।२७७।।२७८।।

अन्यच्च

घटे रसं विनिक्षिप्य सजलं घटमन्यकम् । तिर्यङ्मुखं द्वयोः कृत्वा तन्मुखं रोधयेत्सुधीः ।।२७९।। रसाधो ज्वालयेदग्निं यावत्सूतो जलं विशेत् । तिर्यक्पातनमित्युक्तं सिद्धैर्नागार्जुनादिभिः ।।२८०।।

(टो. नं. द., रसार्णव., ध. सं.)

अर्थ–एक घड़ा लेकर उसमें पारद भर दे और उसी प्रकार दूसरे घड़े में जल भर दे फिर तिरछे रखकर दोनों के मुख को मिला कपरौटी से बंद कर देवे और पारेवाले घड़े के नीचे आंच जलावे जब तक कि पारद उड़कर जलवाले पात्र में न आ जावे। इसको नागार्जुनादि सिद्ध तिर्य्यक्पातनसंस्कार कहते हैं।।२७९।।२८०।।

मिश्रितौ चेन्नागवंगौ रसे विक्रयहेतुना । ताभ्यां स्यात्कृत्रिमो दोषस्तन्मुक्तिः पातनाश्रयात् ।।२८१।। एवं सुसंस्कृतः सूतः पातनावधि यत्नतः । सर्वदोषविनिर्मुक्तो जायते नात्र संशयः ।।२८२।।

(र. रा. सुं., नि. र. र. चिं, ध. सं., र. सा. प.)

अर्थ–रेचने के लिये पारद में जो नाग और वंग मिलाये गये हैं उनसे पारद में एक प्रकार का कृत्रिम दोष पैदा होता है, वह दोष पातन से दूर होता है। इस प्रकार पातन तक यत्नपूर्वक संस्कृत पारद दोषों से रहित होता है, इसमें सन्देह नहीं है।।२८१।।२८२।।

अन्यच्च

धान्याभ्रं च रसं तुल्यं मर्दयेदारनालकैः ।
नष्टपिष्टुस्तु तत्पात्यस्तिर्यग्यन्त्रे दृढाग्निना ।।२८३।।

(र. रत्नाकर., र. प.)

अर्थ–पारद के तुल्य धान्याभ्र को लेकर कांजी से पीसे जब तक पारद को नष्टपिष्टी नहीं हो जाये तब तक तिर्यक्यंत्र द्वारा पारद का पातन करे।।२८३।।

अन्यच्च

अथवा दीपकयन्त्रे निपातितः सर्वदोषनिर्मुक्तः । तिर्यक्पातनविधिना निपातितः सूतराजस्तु ।।२८४।। श्लक्ष्णीकृतमभ्रदलं रसेन्द्रयुक्तं तथारनालेन । खल्वेदत्त्वामृदितं यावत्तन्नष्टतामेति ।।२८५।। कुर्यात्तिर्यक्पातं पातितसूतः क्रमेण दृढवह्नौ । संस्वेद्यः पात्योऽसौ न पतति यावद्दृढश्चाग्नौ ।।२८६।। तदासौ शुद्ध्यते सूतः कर्मकारी भवेद्ध्रुवम् । (र. र. स.)

अर्थ–अथवा तिर्यक्यंत्र की विधि से तिर्य्यक्यंत्र द्वारा पतित पारद सम्पूर्ण दोषों से मुक्त होता है। अभ्रक धान्याभ्रकर उसका एक भाग तथा पारद एक भाग इन दोनों को खरल में डालकर इतना घोटे कि घोटते घोटते पारद की नष्टपिष्टी हो जाये। तदनन्तर तिर्यक्पातन द्वारा पारद का पातन करे तो पारद जल में पतित होता है। इस प्रकार दृढाग्नि के देने पर भी पारद न उड़े तो अच्छी प्रकार स्वेदन करना चाहिये तो पारद समस्त कर्मोपयोगी शुद्ध होता है।।२८४–२८६।।

रोधन

एवं कदर्थितः सूतः षण्ढत्वमधिगच्छति ।तन्मुक्तयेऽस्य क्रियते[1] रोधनं कथ्यते हि तत् ।।२८७।।

(र. चि., र. रा. सुं., र. रा. शं., बृ. यो., र. रा. प. र.सा.प.नि.)

अर्थ–इस प्रकार मर्दन, मूर्च्छन और पातन संस्कारों से दूषित किया हुआ पारद षण्ढत्वदोष (नपुंसकता) को प्राप्त होता है। उस नपुंसकता को दूर करने के लिये पारद का बोधनसंस्कार कहते हैं।।२८७।।

रोधनावश्यकता

मर्द्दनैर्मूर्च्छनैः पातैर्मरणांतो भवेद्रसः ।
शत्त्युत्कर्षाय बोध्योऽसौ गुरुदर्शितवर्त्मना ।।२८८।।

(र. प., नि. र.र. सा. प.)

अर्थ–मर्दन, मूर्च्छन, और पातन से पारद के मृत्यु की अवस्था निकट आ जाती है। इसलिये पारदशक्ति की उत्कर्षता करने के निमित्त गुरुदेव के दिखाये हुए मार्ग से पारद का बोधन करे।।२८८।।

अन्यच्च

कदर्थनेनैव नपुसंकत्वं प्रादुर्भवेदस्य रसस्य पश्चात् ।
बलप्रकर्षाय च दोलिकायां स्वेद्यो जले सैंधवचूर्णगर्भे ।।२८९।।

(र. सा. प., नि. र.)

अर्थ–मर्दनादि संस्कारों के पश्चात् पारद में एक प्रकार की नपुसंकता पैदा होती है अतएव पारद के बल बढ़ाने के लिये सैंधवचूर्ण में दोलायंत्र द्वारा पारद का स्वेदन करे।।२८९।।

जैसे–दोहा

कर्ममर्द्दनादिकनकी, कदर्थता को पाय ।
षंढ होता है, सूत सो, फेर बली ह्वै जाय ।।
संस्कार बोधन किये, सो अब कहत विधान ।
करि स्वेदनवत पोटरी, पारद धरि गुनवान ।।
वह पुटरी हांडीविष, दोलयंत्रकी रीत ।
लकरीतें लटकायकै, राखै विद्याधीत ।।
सैंधोनोन समेत जल, हांडी में भरिलेय ।
मंद वह्नि चौपैहरी, ताके तर करि देय ।।
फिर पारद सबजतनते, पुटरीते जु निकारि ।
संस्कार बोधन यहै, कियो मुनिन निरधार ।।

(वैद्यादर्श)

---

[1]–कर्तव्यत्रोधनं तद्यथोच्यते । इत्यपि ।

अन्यच्च

छागमूत्राणि संगृह्य वानरी च बलात्रयम् ॥ क्षाराम्लेन समायुक्तं कान्ते च स्वेदयेद्रसम् ॥२९०॥ एकविंशदिने पूर्णे शुद्धो भवति पारदः ॥ रेतस्वी जायते सूतः षण्ढत्वं नश्यति ध्रुवम् ॥२९१॥ (र० प०)

अर्थ–कौंच के बीज, तीनों बला (बला, नागबला, महाबला), बकरी का मूत्र, क्षार और अम्लवर्ग से पारद को लोहे के पात्र में इक्कीस दिवस तक स्वेदन करे तो पारद तेजस्वी और नपुसंकत्व दोष रहित होता है॥२९०॥२९१॥

अन्यच्च

एवं कदर्थितः सूतो षंढो[1] भवति निश्चितम् ।
बह्वौषधिकषायेण स्वेदितः स बली भवेत् ॥२९२॥

(नि. र., श. क., र. प, वै. क. द्रु., र. रा. शं., वाच.बृ.)

अर्थ–इस प्रकार कदर्थित पारद निश्चय नपुसंक होता है, इसलिये पारद को ब्राह्मी[2] के काढ़े से स्वेदन करे तो पारद बली होता है॥२९२॥

अन्यच्च

राजिका चित्रकं हिंगु लवणं व्योषसंयुतम् ॥ सूतपादमितं सर्व स्वर्जिकाक्षारसंयुतम् ॥२९३॥ शिग्रुपत्ररसेनैव पिष्ट्वा कुंडलिकाकृतिम् ॥ कुर्याद्भूर्जदले सम्यगथवा कदलीदले ॥२९४॥ सुघने सुदृढ़े वापि वस्त्रखण्डे चतुर्गुणे । तन्मध्ये रसमादाय बध्नीयात्पोटलीं शुभाम् ॥२९५॥ क्षाराम्लमूत्रवर्गेण स्वेदयेद्दिवसत्रयम् । वीर्यवाञ्जायते सूतः षण्ढभावो विनश्यति ॥२९६॥

(र. प.)

अर्थ–राई, चित्रक, हींग, नोंन, सोंठ, मिर्च, पीपल, सज्जीक्षार इन सबका पारद से चौथाई भाग लेकर मैंजने के रस मे पीसकर भोजपत्र पर अथवा केले के पत्ते पर गोल टिकिया बनावे। फिर चिकने दृढ़ चौलर कपड़े में पारद की पोटली बाँधे। तदनन्तर क्षार अम्लवर्ग तथा मूत्रवर्ग से तीन दिन स्वेदन करे तो पारद षण्ढ (नपुसंक) भाव को छोड़कर वीर्यवान् होता है॥२९३–२९६॥

अन्यच्च

अथातः संप्रवक्ष्यामि वीर्यवाञ्जायते रसः । आदाय शिग्रुमूलानि राजिकाव्यूषणानि च ॥२९७॥ आरनालेन संपिष्य कुर्यात्पिंडस्य कुल्लडीम् । नवसारकलांशेन दत्त्वा सूतं विमर्दयेत् ॥२९८॥ चतुर्गुणेन वस्त्रेण बध्नीयात्तस्य पोटलीम् । निंबुकस्य रसं क्षिप्त्वा जंबीररससंयुतम् ॥२९९॥ चूर्णजं स्वर्जिकावारि चिंचाद्रावं च कांजिकम् । स्थालीमध्ये क्षिपेत्तं च कंठे काष्ठं विमुच्यते ॥३००॥ काष्ठे च पोटलीं बद्ध्वा कांजिकं या स्पृशेद्यथा । द्वारे च मल्लकं दत्त्वा ज्वेलदग्निमहर्निशम ॥३०१॥ कांजिकं च क्षिपेत्तत्र क्षीणेक्षीणे पुनः पुनः । प्रत्यहं नूतनं पिंडं कुर्यात्तेनैव कुल्लडीम् ॥३०२॥ नवसाररसे क्षिप्त्वा बध्नीयात्पोटली ततः । दोलास्वेदः प्रकर्तव्य एकविंशदिनावधिः ॥३०३॥ स्वेदितः सूतराजस्तु ततो बलमवाप्नुयात् ॥३०४॥ (र. प.)

अर्थ–अब मैं उस विधि को कहता हूं जिससे पारद वीर्य्यवान् होता है। सैंजने की मूली, राई, त्रिकुटा, इनको कांजी से पीसकर एक मलसिया बनावे फिर षोडशांश नौसादर को पारे में डालकर घोटे तदनन्तर उस पारद को औषधियों की बनी हुई मलसिया में रखकर चौलर कपड़े में पोटली बांधे फिर निबूं का रस जंभीरी का रस, चूना, सज्जीक्षार, इमली का रस और कांजी इनको एक घडे में भर देवे और घडे के मुख पर टेढी लकड़ी लगाकर उसमें रस की पोटली को इस प्रकार लटकावे कि वह कांजी से स्पर्श करती हो और घड़े के मुख पर ढक्कन लगाकर रात दिन आंच जलावे। रस के क्षीण होने पर कांजी को बार बार डालता जाये। प्रतिदिन नवसादर के साथ पारद को खरल करे तथा पूर्वोक्त औषधियों की नई नई मलसियां बनाकर पोटली बांधे। इस प्रकार इक्कीस दिन तक स्वेदन करे तो इस स्वेदन से पारद बलवान् होता है॥२९७–३०४॥

अन्यच्च

दिक्पलं सैंधवं चूर्णं जलं प्रस्थत्रयं तथाः । धारयेद्घटमध्ये च सूतकंदोषवर्जितम् ॥३०५॥ रुद्ध्वा तस्य मुखं सम्यङमर्दितं मृत्स्नया कुरु । निर्वाते निर्जने देशे धारयेद्दिवसत्रयम् । अनेनैव प्रकारेण रोधनं कुरु वैद्यराट् ॥३०६॥

(ध. सं.)

अर्थ–तीन सेर जल में दस तोले सैंधव नमक घोलकर एक घड़े में भर देवे उस घड़े में पारद रख सकोरे से मुख बंदकर कपरौटी करे और उसको तीन दिवस तक जहां वायु न लगे ऐसे निर्जन स्थान में रखे वैद्य इसी प्रकार पारद का बोधन संस्कार करे॥३०५॥३०६॥

अन्यच्च

लवणेनाम्लपिष्टेन हंडिकांतर्गतं रसम् । आच्छाद्याम्लजलं किंचित्क्षि–प्त्वा स्रावेण रोधयेत् ॥३०७॥ ऊर्ध्वं लघु पुटं देयं लब्धश्वासो भवेद्रसः ॥३०८॥

(रसेन्द्र. चि. र. रा. शं., बृ. यो., र. रा. प. नि. र.)

अर्थ–एक हांडी में पारद को रखकर और उसके ऊपर निंबू आदि से पिसे हुए नोंन को रखे। तदनन्तर ऊपर से कुछ जल डालकर सकोरा से हांडी का मुख बन्द कर कपरौटी कर देवे फिर ऊपर से लघुपुट की अग्नि जलावे तो पारद बलिष्ठ होता है॥३०७॥३०८॥

अन्यच्च

सूरणेनाम्लपिष्टेन हंडिकान्तर्गतं रसम् । आच्छाद्याथजलं किंचिद्दत्त्वा पात्रेण रोधयेत् ॥ ऊर्ध्वं लघुपुटं देयं लब्धश्वासो भवेद्रसः ॥३०९॥

(र. प.)

अर्थ–हाँडी के भीतर पारद को अम्लवर्ग से पिसे हुए जमीकंद से बन्द करे फिर ऊपर से कुछ और जल डालकर और शराव से ढ़ककर कपरौटी कर ऊपर से लघुपुट की आंच लगावे तो पारद जीवित होता है॥३०९॥

अन्यच्च

अथवा कूपिकामध्ये सूतं सैन्धवसंयुतम् ।
भूगर्भे च ततः स्थाप्य एकविंशदिनावधि ॥३१०॥

(ध. सं.)

अर्थ–अथवा कांच की शीशी में सैंधा नमक और पारद को भरकर धरती में इक्कीस दिन तक गाड़ देवे तो पारद वीर्यवान् होता है॥३१०॥

अन्यच

अथ सूतं समुद्धृत्य काचकुप्यां विनिक्षिपेत्, रक्ताम्लेनाथ संपूर्य द्वारे मुद्रां[2] प्रदापयेत् ॥३११॥ स्थापयेद्भूधरे यंत्रे स्वेदयेद्दिनसप्तकम् । स्वांगशीतं

१–षढभावं प्रयाति हि । इत्यपि । २– वैद्यकल्पद्रुमका टीकाकार बह्वौषधि का अर्थ ब्राह्मी लिखता है।

१–प्राप्तपुस्त्वो रसो भवेत्–इत्यपि। लब्धपुस्त्वो भवेद्रसः–इत्यपि ।
२–यहां कुछ पाठ अवश्य रह गया है जिसका अर्थ यह होता है "लवण और अम्लकांच कूपी में डाले"।

समुद्धृत्य कषायैः स्वेदयेत्पुनः ॥३१२॥ (ध.सं., टो. नं.)

अब पारद को पातन से लेकर कांच की शीशी में रखे और ऊपर से सिरका या अम्लवर्ग का रस डालकर कपरौटी कर दे, फिर भूधरयंत्र में रखकर सात दिन तक स्वेदन करे तदनंतर स्वांगशीतल होने पर तीक्ष्णकषायों से स्वेदन करे॥३११॥३१२॥

अन्यच्च

काचकूपीं मृदा लिप्य तन्मध्ये च रसं क्षिपेत्[१] ॥ कलांशटंकणं दत्त्वा मध्ये किंचित्प्रदीयते ॥३१३॥ द्वारे मुद्रा प्रकर्तव्या वज्रमुद्रिकया दृढ़ा । भूगर्भे कूपिकां स्थाप्य सिकतया गर्भपूरणम् ॥३१४॥ करीषाग्निः प्रकर्तव्य एकविंशतिवारकम् । अयं निरोधनो नाम वह्नेरत्यन्तकारकः ॥३१५॥

अर्थ–कपरौटी की हुई शीशी में पारद को रखकर उसमें षोडशांश सुहागा डाले फिर वज्रमिट्टी से शीशी के मुख पर मुद्रा करे और उसको धरती में गाड़कर ऊपर से बालू रेत भर दे और उस पर इक्कीस बार कंडों की अग्नि जलावे, यह निरोधननाम का संस्कार पारद को बुभुक्षित करता है॥३१३–३१५॥

अन्यच्च

उत्तराशाभवस्थूलरक्तसैंधवलोष्टकः ॥३१६॥ तद्गर्भे रंध्रकं कृत्वा सूतं तत्र विनिक्षिपेत् ॥३१७॥ ततस्तु चाणकं क्षारं दत्त्वा चोपरि नैम्बुकम् । रसं प्रक्षिप्य दातव्यं तादृक्सैंधवखाटकम्॥३१८॥ गर्त्तं कृत्वा धरागर्भे दत्त्वा सैंधवसम्पुटम् । धूलिमष्टांगुलं दत्त्वा करीषाग्निं च सप्तकम् ॥३१९॥ वह्निं प्रज्वाल्य तद् ग्राह्यं क्षालयेत्कांजिकेन च । अयं नियमनो नाम संस्कारो गदितो बुधैः ॥३२०॥ अभावे चणकक्षारस्यार्प्ययन्नवसादरम् । स्वर्जिका वा प्रदातव्या न्यूनमित्याह भास्करः ॥३२१॥

(र० रा० शं० बृ० यो० र० रा० प०, नि० र०, रा० सुं०)

अर्थ–उत्तर की दिशा में लाल रंग के सैंधेनोंन का पाषाण होता है, उस पत्थर के बीच में एक गड्ढ़ा करके पारा भर देवे तदनन्तर उसी लाल सैंधव के पाषाण से बनाये हुए ढ़क्कन से मुख वंद कर धरती में गड्ढ़ा खोदकर उसमें पारद भरे हुए सैंधव के पाषाण को स्थापित कर ऊपर से आठ आठ अंगुल रेत बिछा देवे फिर उस मिट्टी पर दिन पर्यन्त (अथवा दस दिन तक) करसी की आंच जलाकर पारद को निकाल कांजी से धोड़ा ले पंडित इसी को नियमन संस्कार कहते हैं। जहां चनाखार नहीं मिल सकता है वहां नोसादर ड़ालना उचित है या थोड़ी सी सज्जी ही डाल देनी चाहिये॥३१६–३२१॥

अन्यच्च

रक्तसैन्धवघोटेन मूषाद्वंद्वं प्रकल्पयेत् । तत्संपुटे रसं क्षिप्त्वा नवसारं सनिम्बुकम् ॥३२२॥ तत्संपुटं प्रयत्नेन लेपयेत्संधिमुत्तमम्। वज्रमृत्स्नास–मादाय वेष्टयेत्तत्प्रयत्नतः ॥३२३॥ छायाशुष्कं च तत्कृत्वा भूगर्भे स्थापयेत्ततः । अष्टांगुलप्रमाणेन मूषार्द्धं तत्र पूरणम् ॥३२४॥ त्रिसप्तदिनपर्यंत करीषाग्निं च कारयेत् । दिनेदिने प्रकर्तव्या मूषा सैन्धवनूतना ॥३२५॥ स्वेदयेत्तत्प्रयत्नेन भूगर्भे स्थापयेत्ततः । अथवा कूपिकामध्ये सूतं सैन्धवसंयुतम् ॥३२६॥ (धं० सं०)

अर्थ–लाल सैंधेनोंन के पाषाण की दो मूषा बनावे उनके सम्पुट में पारद नौसादर और नींबू के रस को भरकर यत्नपूर्वक दोनों के सम्पुट को करे और वज्रमिट्टी से दोनों सम्पुटों को अच्छी प्रकार से ल्हेस दे फिर छाया में सुखाकर और भूधरयंत्र में रखकर ऊपर से आठ अंगुल रेत बिछा दे तदनन्तर सात दिवस पर्यंत करसी की आंच जलावे। प्रतिदिन नवीन सैंधव की मूषा बनाकर भूधरयंत्र में स्वेदन करे॥३२२–३२६॥

अन्यच्च

सृष्टचम्बुजनिरोधेन ततो मुखकरो रसः । स्वेदनादिवशात्सूतो वीर्यं प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥३२७॥ (र० र० स०)

अर्थ–सृष्टचम्बुज (स्त्री का रज या मूत्र अथवा गोमूत्र) में पारद का रोधन संस्कार करे तो पारद के मुख होता है और स्वेदन से पारद उत्तम वीर्य्य को प्राप्त होता है॥३२७॥

अन्यच्च

मर्दनमूर्च्छनपातैः कदर्थितो मन्दवीर्य्यत्वम् ।
सृष्टचम्बुजैर्निरोधं लब्ध्वा प्रायो न षंढः स्यात् ॥३२८॥

(टो० नं०)

अर्थ–मर्दन, मूर्छन और पातन से निर्बल किया हुआ पारा हीन वीर्य होता है और उसी पारद का यदि सृष्टचम्बुज में रोधन किया जाय तो षंढभाव को छोड़ देता है॥३२८॥

अन्यच्च

काचकूप्यादिके सूतो न्यस्तः सृष्टचम्बुजेन हि । पूरयेत्त्रिदिनं भूम्यां षंढभावं विमुंचति ॥३२९॥ (रं. ला. प.)

अर्थ–एक कांच की शीशी में पारद तथा स्त्री के आर्तव को भरे फिर एक हाथ गहरी धरती में उस पारद सहित शीशी को गाड़ देवे और इसी प्रकार तीन दिन तक गड़ी रहे तो पारद षण्ढभाव को छोड़ देता है॥३२९॥

अन्यच्च

विश्वमित्रकपाले वा काचकूप्यामथापि वा । सृष्टचम्बुजं विनिः क्षिप्य तत्र तन्मज्जनावधि ॥३३०॥ पूरयेत्त्रिदिनं[१] भूम्यां राजहस्तप्रमाणतः॥अनेन[२] सूतराजोऽयं षण्ढभावं विमुञ्चति ॥३३१॥ (र० चिं० म०, र० रा० स० र० रा० सुं०, र० रा० शं०, बृ० यो० त०)

अर्थ–नारियल के भीतर की गिरी को निकालकर खाली किये हुए उस पात्र में अथवा कांच की शीशी में पारद के डूबने योग्य स्त्री के मासिकधर्म से पैदा हुए रक्तसहित पारद को भर देवे फिर धरती में सवा हाथ (अथवा जहां तक नीचे हवा न पहुंचती हो) गड्ढा खोदकर उस शीशी को गाड़ देवे तो इस क्रिया से पारद पण्ढभाव को छोड़ देता है॥३३०॥३३१॥

सृष्टचम्बुजरूप

गोजाविनरनारीणां मूत्रं शुक्रं च शोणितम् ।
सृष्टचम्बुजाः[३] समाख्याताः षंढदोषविनाशिकाः ॥३३२॥

(ध० सं०)

अर्थ–गौ, बकरी, भेड़, मनुष्य, और स्त्री इनके मूत्र वीर्य और रक्त को सृष्टचम्बुज कहते हैं और वे सृष्टचम्बुज पण्ढदोष के नाशक हैं॥३३२॥

नियमनफल

अधुना कथयिष्यामि रसनियमनकर्म च ॥
यत्कृते चपलत्वं हि रसराजस्य शाम्यति ॥३३३॥

१–यहां भी कुछ पाठ अवश्य रह गया है जिसका अर्थ यह होता है कि "लवण और अम्ल कांचकूपी में भरें"।

१. स्थापयेत्त्रि० इ०। २. एवं कृतः सूतराजः इ०।
३. रसराज पद्धति में सृष्टचम्बुज का अर्थ लवण किया है।

अर्थ–अब मैं पारद के उस नियमन संस्कार को कहूंगा कि जिसके करने से पारद की चपलता शान्त होती है।।३३३।।

नियमनसंस्कार

अतः परं नियमनं वक्ष्यामि पारदस्य हि । जलसैंधवयुक्तश्च घटस्थो यो रसोत्तमः ।।३३४।। कर्कोटी लशुनं नागं मार्कवं चिंचिका पटुः ।एभिस्त्रिदिनं स्वेदाद्वीर्यवाञ्जायते रसः ।।३३५।। (ध. सं.)

अर्थ–इसके आगे पारद के नियमसंस्कार को कहूंगा। जिस पारद को जल और सैंधव से भरे हुए घड़े में रखा था उस पारद को बाझककोडा, लहसन, नागफणी, जलभांगरा, इमली और नोंन इनसे तीन दिन तक स्वेदन करे तो पारद वीर्यवान् होता है।।३३५।।

अन्यच्च

इति लब्धवीर्यः सम्यक् चपलोऽसौ नियम्यते तदनु ।
फणिलशुनाम्बुजमार्कवकर्कोटीचिंचिकास्वेदात् ।।३३६।।

(रसहृदय, ध. सं. र. रा. प.)

अर्थ–निरोधन संस्कार से पारद वीर्यवान् होता है परन्तु चपलता दूर नहीं होती। इस कारण चपलता दूर करने के लिये रोधन के पश्चात् नागफणी, लहसन, नोंन, भांगरा, बांझककोड़ा और इमली के क्वाथ के साथ तीन दिन स्वेदन करे।।३३६।।

अन्यच्च

नियम्योऽसौ ततः सम्यक् चपलत्वनिवृत्तये । कर्कोटीफणिनेत्राभ्यां वृश्चिकाम्बुजमार्कवम् । समं कृत्वाऽऽरनालेन स्वेदयेच्च दिनत्रयम् ।।३३७।।

(र. र. स.)

अर्थ–रोधन (बोधन) के बाद पारद चपलता दूर करने के लिये बांझककोड़ा, नागफणी, बिछुआघास, नोंन, भांगरा और कांजी इनके साथ तीन दिन तक स्वेदन करे।।३३७।।

अन्यच्च

कर्कोटीकम्बुकीवह्निसर्पाक्ष्यम्बुजमार्कवैः ।
दिनत्रयं चारनालैः स्वेदश्चापल्यशांतये ।।३३८।।

(टो. नं., ध. सं.)

अर्थ–बांझककोडा, असगंध, चित्रक, सर्पाक्षी (सरहटी), नोंन और भांगरा को कांजी में मिलाकर फिर उसमें पारद को तीन दिवस तक स्वेदन करे तो चपलता शीघ्र ही शान्त होती है ।।३३८।।

अन्यच्च

सर्पाक्षीचिंचिकावन्ध्याभृङ्गाब्दकनकाम्बुभिः । दिनं संस्वेदितः सूतो नियमात्स्थिरतां व्रजेत् ।।३३९।। (र. रा. सुं., बृ. यो. आ. वे. वि. र. रा. प. र. सा.प. र.नि. र.)

अर्थ–सर्पाक्षी (सरहटी), इमली, बांझककोडा, भंगरा, नागरमोथा, धतूरा, नोंन इन सबको कांजी में पीसे। फिर उसमें एक दिवस पारद को स्वेदन करे तो इस नियम से पारद स्थिर होता है।।३३९।।

अन्यच्च

सर्पाक्षीचिंचिकावन्ध्याभृङ्गाब्दैः स्वेदितो बली ।
निरस्तषंढभावोऽसौ जायते हि रसोत्तमः[१] ।।३४०।।

(र. रा. शं., र. रा. प., नि. र.)

अर्थ–सरहटी, इमली, बांझककोडा, भंगरा, नागरमोथा इनके क्वाथ से स्वेदन करे तो पारद बली और षण्ढभाव को छोड़कर सब रसों में उत्तम होता है।।३४०।।

नियम और दीपन

वन्ध्याहिनेत्राम्बुजमार्कवाणां सतिक्तकानां दिवसं प्रपक्वे ।
खिन्नस्थिरत्वं लभतेग्नितोये सकाञ्जिके दीप्तियुतोऽतितीक्ष्णः ।।३४१।।

(यो. त., त. र. र. प.)

अर्थ–बांझककोडा, नागफणी, नोंन, भंगरा और इमली के क्वाथ में स्वेदन करने से पारद में स्थिरता प्राप्त होती है तथा चित्र का क्वाथ और कांजी में स्वेदन करने से पारद अतितीक्ष्ण और दीप्त होता है।।३४१।।

अन्यच्च

सर्पाक्षी वृश्चिकाली च वन्ध्या कर्कोटिराजिके । कन्याकनकधत्तूरभृङ्गाब्जकनकाम्बुभिः । दिनं संस्वेदितः सूतो नियमात्स्थिरतां व्रजेत् ।।३४२।।

(र. प.)

अर्थ–सर्पाक्षी (सरहटी, सरफों का), असगंध, बांझककोडा, राई, घीग्वार, पलास, धतूरा, भंगरा, नागरमोथा, कनक (कालीयक) और नोंन इनमें जिनका रस निकले उनका रस तथा औरों का क्वाथ लेकर एक दिन स्वेदन करे इस नियमन से पारे की स्थिरता होती है।।३४२।।

अन्यच्च

कर्कोटी क्षीरकन्दं च सर्पाक्षी यवचित्रकम् । पटुं निम्बुं भृङ्गराजं व्यस्तं वाथ समस्तकम् ।।३४३।। कल्कयेदारनालेन तद्द्रावैः पाचयेद्रसम् । दिनं नियमने यन्त्रे तमादायाथ दीपयेत् ।।३४४।। (र. प.)

अर्थ–बांझककोडा, क्षीरकंद, सरफोंका, इमली, नोंन, निंबू और भांगरा इन सबको अथवा जितनी मिलें उनको कांजी मे पीसे और उसी रस में पारद को एक दिन नियमन यंत्र में पकाकर फिर दीपन संस्कार करे।।३४३।।३४४।।

जैसे–दोहा

लेय देवदाली सहित, अगली सैंधो नोन ।
दूबगठीली निंबदल, करिये भँगरा कोंन ।।
फिर मकोय करिकै सहित, कन्दविलाई आन ।
ये औषध समभाग लै, पारदसम गुनवान ।।
कांजीते फिरि पीसिकै, कपरा चौतह लेय ।
अंगुरभर तापै भिषक, कपरौटी करिदेय ।।
ता कपराको घाममें, अधसूको करवाय ।
पारद धरि ताके विषै, पुटरी ले बँधवाय ।।
पुटरीते पीसी गई, ते सब औषधि लाय ।
करते मथिके नीरमें, घोरे भिषक बनाय ।
पूरचो तो वह नीर सब, हांडी में भरवाय ।
डोल जन्त्रवत पोटरी, पारद की लटकाय ।।
मंद आंड तरतर करै, एक दिवस परियंत ।
ता पुटरीते सूत फिर, ले निकास बुधवंत ।।
संस्कार नियमन यहै, भाष्यो मुनि जन लोय ।
सूत न यातै उडिसकै, अग्नि स्थाई होय ।।

(वैद्यादर्श)

अन्यच्च

मेघनादरसैरेवं सर्पनेत्ररसैरपि । मार्कवाद्भिश्चिंचिकाद्भिर्मूषाकरणिका–

१–शास्त्रकार इसको बोधन मानता है परन्तु यह नियम नहीं है, ऐसा हमारा विचार है।

१–इस शास्त्रकार ने कंचुकी हरण से लेकर यहां तक के कर्म से शुद्धि मानी है।

रसैः ॥ वंध्याकंदरसैश्चैव पीतवर्णरसैस्तथा ॥ ३४५॥ लांगलीकहंसपादीरसै- श्चामलकीरसैः । मासत्रयस्य पाकेन रसो वह्निसहो भवेत् ॥३४६॥

अर्थ–नागरमोथा का रस, गंधनाकुली का रस, जलभंगरे का रस, इमली का रस, मूसाकन्नी का रस, बंध्याकंद का रस, पीयाबांसा का रस, कलिहारी का रस, लाललज्जालू का रस, और आँवले का रस, इन रसों से तीन मास पर्यन्त पारा को शुद्ध करने से अग्नि को सहने लगता है॥३४५॥३४६॥

नियमन किये हुए पारद के लक्षण

शुद्धं तलस्तंभगतं नियमिकनियोजितम् । नियामिते प्रयात्येव तथा धूमगतिः प्रिये । कणिकाजालरहितो बुद्बुदस्थायिवर्जितः ॥३४७॥ (र. प.)

अर्थ–हे प्रिये! शुद्ध किया, तलस्तंभ में प्राप्त हुआ, नियामक का योजित किया पारा नियमन करने में चला जाता है और तैसे ही धूमगतिवाला हुआ कणिकाजाल से रहित एवं बुद्बुदस्थायी से वर्जित हो जाता है॥३४७॥

दीपन

भूखगटंकणमरिचैर्लवणासुरिकांजिकैस्त्रिदिनम्। स्वेदेन दीपितोऽसौ ग्रासार्थी जायते सूतः ॥३४८॥

(ध. सं., र. क. द्रु., र. रा. प.)

अर्थ–फिटकरी, कसीस, सुहागा, मिरच, नोंन, राई और कांजी से पारद को तीन दिन स्वेदन करे तो दीपित हुआ यह पारद ग्रासार्थी होता है॥३४८॥

जैसे–दोहा

मरिच सुहागा केंचुआ, राई सैंधोनोंन ।
पीसें सहँजनबीज जुत, नींबूरस एकोन ॥
फिर पारामें डारि सब, नींबूरस के संग ।
तीन दिवस परियंतलों, घोटकरे इकअंग ॥
फिर चौतह कपराविषै, येही औषधि लेय ।
नींबूरस पीसी भई, तिन्हैं लेप करिदेय ॥
फिर पारा ता वस्त्रमें, धरि बांधे सुज्ञान ॥
पुटरी करिके घामके विषै सुकाय सुजान ॥
तब वह पुटरी लेयके, हांडीमें लटकाय ।
डोलजंत्रकीसी तरै, फिर कांजी भरवाय ॥
मंद आंचतें तीन दिन, स्वेदन करिये तास ।
संस्कार दीपनसु इम, कीनों मुनिन प्रकाश ॥
यातें पारद होत है, अतिभूखो गुणवान ।
अब अनुवासन कर्मकी, विधि सब सुनो सुजान ॥

(वैद्यादर्श)

अन्यच्च

मरिचैर्भूखगयुक्तैर्लवणासुरिशिग्रुटंकणोपेतैः ।
काञ्जिकायुक्तैस्त्रिदिनं ग्रासार्थी जायते स्वेदात् ॥३४९॥

(र. र. स.)

अर्थ–मिरच, फिटकरी, कसीस, नोंन, राई, सैंजनेकी मूली और सुहागा इनको कांजी में पीसे फिर उसी कांजी में तीन दिन तक स्वेदन करे तो पारद बुभुक्षित होता है॥३४९॥

अन्यच्च

अथेदानीं प्रवक्ष्यामि रसराजस्य दीपनम् । बुभुक्षा व्यापकत्वं च येन कृत्वा प्रजायते ॥ ३५०॥ राजिका लवणोपेता मरिचैः शिग्रुटंकणैः । काशीशसंयुता कांक्षी कांजिकेन समन्वितैः ॥३५१॥ दिनानि त्रीणि संस्वेद्य पश्चात्क्षारेण मर्दयेत् । अनेनैव प्रकारेण दीपनं जायते ध्रुवम् ॥३५२॥

अर्थ–अब मैं रसराज के उस दीपन नाम के संस्कार को कहता हूं कि जिसके करने से पारद बुभुक्षित होता है। राई, मिर्च, सैंजना, सुहागा, कसीस और फिटकरी को कांजी में पीसे फिर उसमें पारद को तीन दिन स्वेदन करके पश्चात् क्षारवर्ग से मर्दन करे। इस प्रकार से पारद का दीपन संस्कार होता है॥३५०–३५२॥

दीपनफल

तीव्रत्वं वेगकारित्वं व्यापकत्वं बुभुक्षितम् ।
निर्मलत्वं विशेषेण कृते दीपनकर्मणि ॥३५३॥

(र. प्र. सुं.)

अर्थ–दीपन संस्कार किये हुए पारद का यह लक्षण है कि, पारद तीव्र वेगकारी, व्यापक, बुभुक्षित और विशेषकर निर्मल होता है॥३५३॥

दीपन

काशीशं पंचलवणं राजिका मरिचानि च । भूशिग्रुबीजमेकत्र टंकणेन समन्वितम् ॥३५४॥ आलोड्य कांजिके दोलायंत्रे पाकाद्दिनैस्त्रिभिः। दीपनं जायते सम्यक्सूतराजस्य जारणे ॥३५५॥ (र.सा. सं., र. रा. शं., र. रा. सुं., नि. र., र. चिं., बृ. यो. त. आ. वे. वि. र.सा. प)

अर्थ–हीराकसीस, पांचों नोंन, राई, मिर्च, फिटकरी, सैंजन के बीज और सुहागे को कांजी में घोलकर दोलायंत्र द्वारा तीन दिन तक पारद को स्वेदन करे तो पारद का दीपन संस्कार होता है॥३५४॥३५५॥

अन्यच्च

क्षौद्रांशं लवणक्षारं भूखगोषणशिग्रुभिः । राजिकाटंकणयुतैरारनालैर्दिन- त्रयम् । स्वेदनाद्दीपतो देवि ग्रासार्थी जायते रसः ॥३५६॥

(रसार्णव, र. प.)

अर्थ–सैन्धव, सज्जीक्षार, फिटकिरी, कसीस, मिरच, सैंजनें के बीज, राई और सुहागे से मिली हुई कांजी में पारद को तीन दिन स्वेदन करने से पारद दीपित तथा बुभुक्षित होता है॥३५६॥

अन्यच्च

त्रिक्षारसिंधुखगभूशिखिशिग्रुराजीतीक्ष्णाम्लवेतसमुखैर्लवणोषणाम्लैः ॥नेपाल- ताम्रदलशोषितमारनाले साम्लासवाम्लपुटितं रसदीपनं तम् ॥३५७॥

(र. र. स.)

अर्थ–जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, कसीस, चित्रक, सैंजने के फल, राई, चव, अमलवेत, सैंधव, मिर्च, अम्लवर्ग तथा नेपाल के तांबे से बुझाई हुई कांजी और सुरा (मदिरा) के नीचे जमे हुए मसाले में पारद को पुट देवे तो दीपनसंस्कार होता है॥३५७॥

अन्यच्च

स्वेदयेदासवाम्लेन वीर्यतेजः प्रवृद्धये ।
यथोपयोगः स्वेद्यः स्यान्मूलिकानां रसेषु च ॥३५८॥

(र. र. स.)

अर्थ–अथवा वीर्य्य और तेज की वृद्धि के लिये पारद को आसवाम्ल (खट्टे आसव) में स्वेदन करे और जहां पारद का उपयोग जैसा हो, वैसा ही सर्पाक्षि (र. र. स. पृ. ९१ का लेख देखो) इत्यादि औषधियों के रस में स्वेदन करे॥३५८॥

अन्यच्च

त्रिक्षारं पंचलवणं भूखगं शिग्रुमूलकम् । स्वर्णपुष्पी च काशीशं मरिचं राजिका मधु ॥३५९॥ क्षीरकंदं जया कन्या विजया गिरिकर्णिका । काकजंघा शंखपुष्पी पातालगरुडी कणा ॥३६०॥ वंध्या कर्कोटकी वह्निर्व्यस्तं वाथ समस्तकम् । पेषयेदम्लवर्गेण तेनैव मर्दयेद्दिनम् ॥३६१॥ दिनान्ते बंधयेद्वस्त्रे दोलायंत्रे त्र्यहं पचेत् । पूर्वद्रावैर्घटे पूर्णे पूर्णे ग्रासार्थि जायते ॥३६२॥ (र० प०)

अर्थ–त्रिक्षार (सुहागा, जवाखार, सज्जीखार,), पांचो नोंन, फिटकरी, कसीस, सैंजने की जड़, स्वर्णपुष्पी, केतकी, मिरच, शहद, क्षीरकंद (विदारी), अग्निमंथ, घीग्वार, जयन्ती, गिरिकर्णिका (विष्णुक्रान्ता), काकजंघा (मसी, कौआकोड़ा), शंखाहुली, पातालगरुड़ी (छिरहिटा), पीपल, बांझककोड़ा, चित्रक इनको यथालाभ लेकर पूर्वोक्त औषधियों के रसों से भरे हुए घड़े में दोलायंत्र द्वारा तीन दिवस तक पचावे तो पारद बुभुक्षित होता है॥३५९–३६२॥

अन्यच्च

लवणं राजिका हिंगु कन्या क्षारचतुष्टयम् । त्र्यूषणं लशुनं चैव मातुलुंगरसाप्लुतम् ॥३६३॥ पिंडिमध्ये रसं कृत्वां स्वेदयेत्सप्तधा पुनः । अनुद्गारी भवेत्तेन ग्रासो जीर्णोऽपि जीर्यति ॥३६४॥ अनेनैव भवेच्छुद्धः सर्वदोषविवर्जितः । निश्चलः स्वच्छरूपश्च कांजिकादिविशोधितः ॥३६५॥ क्षाराः सर्वे मलं घ्नंति लवणं ग्रंथिभेदनम् । स्वेदोप्यजीर्णतां हंति षंढत्वं पटुकाम्लकम् ॥३६६॥

(टो० नं०, ध० सं०)

अर्थ–नोंन, राई, हींग, घीग्वार, क्षारचतुष्टय, (सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, तिलखार), सोंठ, मिरच, पीपल और लहसन इनको बिजौरा के रस में पीसकर एक पिंडी बनावे। फिर उसमें पारद को रखकर ७ बार स्वेदन करे तो पारद दीप्त होता है और खाया हुआ ग्रास जीर्ण होता है। इस क्रिया से पारद सम्पूर्ण दोषों से रहित होकर शुद्ध होता है। विशेपकर कांजी आदि से शोधित पारद निश्चल और स्थिर होता है। समस्त प्रकार के क्षार पार के मल को नाश करते हैं। नोंन पारद के ग्रन्थि भेद को करता है। स्वेदन भी पारद के अजीर्ण को हरता है और नोंन तथा अम्लवर्ग पारद की नपुसंकता को नाश करते हैं॥३६३–३६६॥

अन्यच्च

रामठं पंचलवणं तथा क्षारचतुष्टम् । त्रिकटुं श्रृंगवेरं च मातुलुंग रसाप्लुतम् ॥३६७॥ पिंडमध्ये रसं दत्त्वा स्वेदयेत्सप्त वासरान् । सारनाले तु मृद्भाण्डे ग्रासार्थी जायते ध्रुवम् ॥३६८॥ (कामरत्न)

अर्थ–हींग, पांचोनोंन, सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, तिलका, खार, सोंठ, मिर्च, पीपल और अदरख इनको बिजौरे के रस से पीसे फिर उस पिंड में पारद को रखकर सात दिन कांजी के पात्र में स्वेदन करे तो पारद निश्चय ही बुभुक्षित होता है॥३६७॥३६८॥

अन्यच्च

स्वेदनं रसराजस्य क्षाराम्लविषगंधकैः । बीजपूरकमादाय वृन्तमुत्सृज्य कारयेत् ॥३६९॥ तन्मध्ये च क्षिपेत्सूतं कलांशक्षारसंयुतम् । द्वारं निरुध्य यत्नेन वस्त्रमध्ये निबंधयेत्॥३७०॥दोलास्वेदः प्रकर्तव्य एकविंशदिनावधि । दिनेदिने प्रकर्तव्यं नूतनं बीजपूरकम् ॥३७१॥ लेलिहानो हि धातूंश्च पीडयमानो बुभुक्षया । अनुनैव प्रकर्तव्यं रसराजस्य दीपनम् ॥३७२॥ त्र्यहं सप्तदिनं चाथ चतुर्दशैकविंशतिः । संस्काराः सूतराजें तु क्रमात्क्रमतरं वरम् ॥३७३॥ (ध. सं.)

अर्थ–बिजौरा को लेकर उसके पीछे के वृंत (डांठुरा) को उखाड़ देवे, फिर उस बिजौरे में पोडशांश क्षार सहित पारद को डालकर ऊपर से उसी बिजौरे के डांठुरे को, तदनन्तर उस बिजौरे को कपड़े में बांधकर इक्कीस दिन पर्यन्त स्वेदन करे। प्रतिदिन बिजौरा नया बदल देना चाहिये। इस रीति से जो पारद का दीपन किया जाय तो भूख से घबराया हुआ पारद सब धातुओं को खा जाता है और इस प्रकार अनुक्रम से तीन दिन, सात दिन, चौदह दिन और इक्कीस दिन पारद के संस्कार श्रेष्ठ कहते हैं॥३६९–३७३॥

अन्यच्च

अथवा चित्रकद्रावैः काञ्जिके त्रिदिनं पचेत् । ततः सपावकद्रावैः स्विन्नः स्यादतिदीप्तवान् ॥३७४॥ अथवा चित्रकद्रावैः काञ्जिकेन दिनं पचेत् । दीपनं जायते तस्य रसराजस्य चोत्तमम् ॥३७५॥ (वै. क. द्रु., र. चिं. बु. यो आ. वे. वि., र. रा. प., र. सा. प., र.रा.शं.नि.र)

अर्थ–अथवा चित्र का रस तथा कांजी में पारद को तीन दिन स्वेदन करे तो पारा दीप्त होता है। इसी प्रक्रिया को वैद्यकल्पद्रुम, रसराजशंकर, रसपद्धति, और निघंटुरत्नाकरवाले ने भी कहा है॥३७४–३७५॥

अनुवासन संस्कार

दीपितं रसराजं तु जंबीररससंयुतम् ।
दिनैकं धारयेद्धर्मे मृत्पात्रे वा शिलोद्भवे ॥३७६॥

(र. रा. सुं. र. चि.)

अर्थ–दीपनसंस्कार के बाद पारद को पत्थर या मिट्टी के पात्र में स्थित जंभीरी के रस में रखकर एक दिन घाम में रखे तो अनुवासन नाम का नवम संस्कार होता है, ऐसा किसी ने माना है॥३७६॥

जैसे–दोहा

निम्बूरस जम्बीरस, दोऊ लेय मिलाय ।
चीनीके प्याला विषै, धरि पारद भरवाय ॥
वह प्याला धरि घाममें, तीन दिवस परिमान ।
संस्कार नवमो सु यह, है अनुवासन जान ॥

(वैद्यादर्श)

अनुवासन को किसी किसी ने रोधन का भेद ही माना है

अन्येषां मंते तु अनुवासनस्यापि रोधनभेदत्वादष्टावेव संस्काराः

(र. प.)

अर्थ–औरों के मत से अनुवासन को भी रोधनान्तर्गत मानने से आठ ही संस्कार होते है॥

संस्कारों की प्रणाली दीपन अनुवासन की क्रिया

उक्तौषधिरसैर्वस्त्रे दोलायन्त्रे विपाचयेत्। अवशिष्यरसैः पश्चान्मर्दयेत्पात–येदपि ॥३७७॥ मर्दनाख्यं हि यत्कर्म तत्सूते गुणकृद्भवेत् । पुनर्विमर्दयेत्तस्माच्चतुर्दशदिनान्यमुम् ॥३७८॥ इत्थं पातनया नपुसंकममुं यत्नेन रुद्ध्वांबरे सिन्धुत्र्यूषणमूलकार्द्रहुतभुग्राज्यादिकल्कान्विते । भांडे कांजिकपूरिते दृढतरे भव्ये शुभे वासरे दोलायन्त्रविधानवित्त्रिदिवसं मन्दाग्निना स्वेदयेत् ॥३७९॥ स्वेदनदीपनतोऽसौ ग्रासार्थी जायते सूतः । दीपितमनः सूतं जम्बीराम्लेन धारयेद्धर्मे ॥३८०॥ दिनमनुवासनमेवं नवमं संस्कारमिच्छन्ति ॥३८१॥ (र. रा. सं.)

अर्थ–पारद को पूर्वोक्त औषधियों (जलभांगरा, लौनियां, गोमा और जलपीपल) के रसों में दोलायंत्र द्वारा पाचन करे। और स्वेदन करने से बचे हुए रसों के साथ मर्दन करे। मर्दन संस्कार पारद में गुणकारी है, इस कारण चौदह दिन बार बार मर्दन करे इस प्रकार पातन के बाद सैंधव, सोंठ,

मिरच, मूली, अदरख, चित्रक और राई आदि के कल्क में लिये हुए कपड़े में बांधकर कांजी के घड़े में शुभ दिन देखकर दोलायंत्र द्वारा तीन दिन तक मंदाग्नि से स्वेदन करे। इस स्वेदन द्वारा पारा बुभुक्षित होता है। और दीपित किये हुए इस पारद को जंभीरी के रस में डालकर एक दिन घाम में रखे तो इसको नवां अनुवासन संस्कार कहते हैं।।३७७–३८१।।

नवसंस्कार में पारद का अष्टमांश रहना

स्वेदनादिनवकर्मसंस्कृतः सप्तकंचुकविवर्जितो भवेत् ।
अष्टमांशमवशिष्यते सदा शुद्धसूत इति कथ्यते तदा ।।३८२।।

(र. रा. सुं.)

अर्थ–एक सेर पारा शोधन की क्रियाओं से शुद्ध किया हुआ जब आध पाव बाकी रह जाये तब और जब एक सेर पारद स्वेदनादि नव संस्कारों से संस्कृत किया हुआ आधा सेर बाकी रह जाये तब उसको सात कंचुकों से रहित और शुद्ध समझना चाहिये।।३८२।।

शुद्धि में पारद का अष्टमांश रहना

यदा सम्यक् शोधितो रसराजोऽष्टमांशोऽवशिष्यते । तदा सप्तकंचुकोज्झितः शुद्धरसराजो ज्ञातव्यः । यथा पूर्वं स्थितस्तादृशोऽस्ति सप्तकंचुका-सम्बन्धिनस्सप्तभागा गच्छन्ति सप्तकंचुकास्सप्तावरणानि शिव-शापाज्जातानि तद्विमुक्ततया शुद्धरसराजो बुधैरुच्यते ।। (र० प०)

अर्थ–जब शुद्ध करते करते पारद अष्टमांश बाकी रह जाये तब सात कंचुकों से रहित अति शुद्ध पारद होता है। क्योंकि सात कंचुक। से सात भाग होते हैं। वे स्वेदनादि नव संस्कारों से नष्ट हो जाते हैं, इस कारण आठवाँ हिस्सा ही बाकी रहता है। सात कंचुक और सात आवरण श्रीशिवजी की आज्ञा से पारद में पैदा हुए हैं, उनसे रहित पारद को पंडित लोग शुद्ध कहते हैं।

नवसंस्कारों का फल अर्थात् अग्निस्थाई हो जाना

स्वाभाविकद्रवत्वे सति वह्निनानुच्छिद्यमानत्वं मूर्तिबद्धत्वम् । बन्धनन्तु नियमनान्तैः संस्कारैर्भवति ।।(र. सा. प.)

इति श्रीअग्रवालवैश्यकुलावतंसबाबूनिरंजन
प्रसादवकील संकलितायां रसराजसंहितायामष्ट
संस्कारविधिवर्णनं नामाष्टमोऽध्यायः ।।८।।

अर्थ–जैसी पारद की वास्तविक द्रवता (पतलापन) है, वैसी द्रवता पारद में हो और अग्नि लगाने पर पारद उड़े नहीं तो उसको मूर्तिबद्ध पारद कहते हैं और बंधन स्वेदन से लेकर नियमनान्त संस्कारो से होती है।

सम्मति–ऊपर लिखा हुआ पाठ रसेन्द्रचिंतामणि ग्रंथकार के संस्कार प्रारम्भ होने से पहले ही लिखकर फिर संस्कारों को कहा है, तदनन्तर जारण का विषय लिखा है, इससे यह स्पष्ट विदित होता है कि इन नौ संस्कारों से पारा अग्निस्थाई होता है और उसकी मूर्तिबद्ध संज्ञा है और इसी बात का रससारोद्धार पद्धति का निर्माता भी समर्थन (ताईद) करता है।

इति श्रीरसराजसंहितायां व्यासज्येष्ठमल्लकृतभाषावि
वृतियुतायामष्टमंस्कारविधिवर्णनं
नामाष्टमोऽध्यायः ।।८।।

अथ नवमोऽध्यायः ९

अष्टसंस्कार सम्बन्धी अनुभूत कर्म

पारद कर्म के आरम्भ में एक वैद्य के आगमन का वर्णन

ता०२८/१२/१९०३ आज वैद्यराज शाम को ४ बजे के समय पधारे। ता० २९ दोपहर को बातचीत हुई कि किस रीति से पारद शुद्ध होगा, लियाकत बहुत थोड़ी है, कुछ कर्म जानते हैं मगर लाचारी के लिये बहुत मुनासिब समझे गये। ता० ३० सिर्फ दोपहर को कुछ जड़ी बूटी की बातचीत हुई और सिंग्रफ वगैरः तलाश कराया गया कांजी का सामान गया।

ता० ३१ आज ३ सेर १३ छटांक सिंग्रफ आया कांजी में पानी डाला गया, विडके लिये मूली आई, गंधक के नमूने आये और आज सुबह ही अभ्रक और दो मुलाजिम वैद्यजी के पास सत निकालने के लिये आये मगर वैद्यजी वैद्यकल्पद्रुम देखा करे अभ्रक का काम आरम्भ नहीं किया।

१/१/१९०४ आज वैद्यराज ने अभ्रक को आंच पर चढ़ाया और आप ११ बजे बाजार को घूमने चले गये–३–४ बजे शाम को लौटे फिर गपशप करते रहे। ५ बजे बाद अभ्रक को आंच पर उतार १ सेर दूध उसमें डाल दिया और १ सेर आप पी गये।

२/ आज वैद्यराज ने अपने नाती को हाथरस भेजा अपने बड़े लड़के को बुलाने के लिये जो आकर सिंग्रफ से पारा निकालेगा और यहां पर केवल अभ्रक कुटता रहा–वैद्यराज ने कोई कर्म नहीं किया–शहर में किसी का ईलाज करने गये थे।

३/ आज वैद्यराज सुबह से ही शहर को चले गये यहां तक कि अभ्रक भी कूटने को निकाल कर नहीं दे गये मालूम होता है कि हमारे काम का कुछ भी ख्याल नहीं है–दोपहर को आकर अभ्रक कूटने को दिया गया और जड़ी जो सुखाकर कांजी में डालने को दी गई थी वह भी दोपहर बाद सुखलाई गई–आज वैद्यराज का नाती आ गया और उसने आकर कहा कि वैद्यराज के लड़के कल आवेंगे।

४/ आज दिन भर में वैद्यराज ने सिर्फ अभ्रक में चौलाई का रस डलवाया और कुछ नहीं किया।

५/ आज वैद्यराज पारे का काम न कर सकने की वजह से भाग गये।

हिंगुल से पारद का निष्कासन का अनुभव

ता०४/१/१९०४ को रूमी सिंग्रफ को जो पुराना पड़ा हुआ था खट्टे के रस में घोटा गया चूंकि रस अधिक पड़ गया था और सिंग्रफ सूखा नहीं था अतएव–

आज ता० ४/३ को फिर घोटा गया और दोपहर बाद जब सिग्रफ करीब करीब खुश्क हो गया था उसको दो हांडी के डौरूयंत्र में भरकर जोड़पर कपरौटी कर दी गई।

ता०८/१ को करीब दोपहर के उस डौरूयंत्र को आंच दी गई– ठंडा हो जाने पर खोला गया तो आधे के करीब पारा ऊपर उड़ गया था।

ता० ९/९ को सिंग्रफ के शेष चूर्ण को खाली बारीक पीसकर फिर डौरूयंत्र से ३ प्रहर की आंच दी गई तो बाकी पारा भी उड़ गया तोलने से यह पारा कुल ३ छटांक हुआ।

---

१ यह कर्म केवल अनुभव के लिये किया गया था, इसीसे साबित हुआ कि यदि यत्नपूर्वक पारे को उड़ाया जाये तो कठिनाई न होगी। हांडी कम पकी होनी चाहिये और आन्च बंद मकान में अच्छे चूल्हे पर प्रथम मंद फिर मध्य फिर तीक्ष्ण देना चाहिये और ऊपर मोटा कपड़ा तोलिये के समान हर वक्त भीगा हुआ रखना चाहिये और नीचे की हांडी का पेट बड़ा होना चाहिये।

उपरोक्त क्रिया का पुनः अनुभव

(१) ता० १०/२/१९०४ तो ऽ।। सेर उत्तम सिंग्रफ रूमी को करीव दो प्रहर के खट्टे और जंभीरी के रस में खरल किया गया लेकिन न सूखने के कारण यंत्र में बंद न किया (आज गिरधारीलाल वैद्य ने आकर मुलतानी को मूंज की रस्सी के खुले हुए वान से मला तो मुलतानी बहुत जल्द मिल गई)

(१) ता० ११/१ आज उक्त सिंग्रफ को जो करीब करीब सूख गया था थोड़ा डौरूयंत्र में बंद करके कपरौटी कर दी गई और हांडी के नीचे लोहा लगा दिया गया। यह हांडी वही है जिनमे पहले सिंग्रफ उड़ाया जा चुका है बवजह देर हो जाने के आज यंत्र चूल्हे पर नहीं चढ़ाया गया।

(२) आज १ सेर सिंग्रफ रूमी और लेकर उसको नींबू के रस में घोटा गया (आज २ और हांडी में जो गिरधारीलाल वैद्य ने भेजी थीं उनको घिसकर उनका मुँह मिलाया गया)

(१) ता० १२/४ आज उक्त ऽ।। सेर खिंग्रफ को आचं दी गई १० बजे से ६ बजे तक हांड़ी चटक गई इस वास्ते उसके नीचे से आंच निकाल दी गई (हांडी जो गिरधारीलाल ने भेजी थी उनमें एक हांडी पर से धोकर की तह मुलतानी से चढ़ा दी गई)

(१) ता० १३/१ सुबह को डौरू जो रात को चटक गया था खोला गया तो ९।। तोले पारा निकला और बहुत सा पारा सिंग्रफ में रह गया (चटक जाने मे कुछ माल खारिज नहीं हुआ) (एक नई बात देखी गई कि चटखी हांड़ी के पेंदे में एक गोलाकार चक्र में कुछ सिंग्रफ चिपटा हुआ रह गया उसको छुटाया गया तो वह नम निकला उसकी गोली सी बधती थी यह न मालूम हुआ कि कौन चीज पिघलकर तर हो गई थी)

(२) ता० १४/१ आज सवेरे उक्त १ सेर सिंग्रफ को ९ बजे से रात के ८ बजे तक ११ घंटे आंच दी गई।

ता० १५/१ को खोला तो १५ तोले पारा निकला। आंच बहुत थोड़ी लगती है, इस कारण पारा अच्छी तरह नहीं उड़ता। अतएव आज चूल्हा बड़ा बनाया गया ओर इस तरह पर कि आंच सब तरफ जलती रहे (आज ऽ।। सेर सिंग्रफ) सात नीबुओं के रस में घोटा गया।

१६/१ चूंकि आज चूल्हा सूखा नहीं था, इस कारण कर्म बंद रहा (कल का ऽ।। सेर सिंग्रफ ही कुछ देर घोटा गया)

(१+२)। ता० १७/१ को ऽ।। सेर सिंग्रफ व+१ सेर सिंग्रफ को जिसमें से ९।। तोले व १५ तोले पारा निकल चुका था फिर सूखा घोट आज सुबह १० बजे से शाम के ८ बजे तक आंच दी गई तो २६ तोले पारा और निकला अभी ओर पारा बाकी है।

अबकी बार आंच भी तेज दी गई, चूल्हा भी बड़ा था, हांडी पर ३ कपरौटी थी, ऊपर की हांडी बडी थी और उस पर गोबर रखा गया और पानी का भीगा कपड़ा भी रखा गया।

(३) ता०२०/१ को १ सेर सिंग्रफ और लेकर नींबू के रस में खूब घोटकर और सुखाकर ता० २१/१ को ११ घंटे आंच दी गई तो १५ तोलें पारा निकला।

(१+२)) ता० २२/१ को उपरोक्त ऽ१।। सेर सिंग्रफ को जिसका दोबारा आंच दी जा चुकी थी और जिसमें से ५०।। तोले पारा निकल चुका था सूखा ही करीब १ घंटे घोटा गया बाद को आज ता० २३/१ को कुछ कम ४ प्रहर की आंच दी गई तो २२।। तोले पारा और निकला।

(३) ता० २३/१ को उपरोक्त १ सेर सिंग्रफ को जिसमें से १५ तोले पारा निकल चुका था उसको सूखा ही इकट्ठा घोट कर ४ प्रहर की आंच दी गई तो १७।। तोले पारा निकला।

ता० २५/१ को (१+२+३) उक्त ऽ।। सेर + १ सेर+ १ सेर सिंग्रफ को जिसमें से (५०।।+२२।।+१५+१७।।=१०५।। तोले पारा निकल चुका था उसको सूखा ही थोड़ा घोट कर ४ प्रहर के करीब आंच दी गई तो ३१।। तोले पारा और निकला आंच आज पूरी दी गई यानी ३ मामूली लकड़ियों की।

(४) २६/१ को ऽ।।=ढ़ाई पाव सिंग्रफ और लेकर उसको सात नीबू के रस में करीव १ प्रहर के घोटकर और सुखाकर दूसरे दिन डौरू में ८।। बजे सवेरे से आंच दी गई ४ बजे शाम के हांडी चटकने की आवाज हुई जिसके कारण आंच बन्द कर दी गई–खोला गया तो १२।। तोले पारा निकला और बहुत सा पारा बाकी रह गया आज के कर्म से अनुभव हुआ कि, ७ घंटे की आंच किसी तरह काफी नहीं है, ४ प्रहर की आंच होना चाहिये और चूंकि कल पारा अधिक निकला था, उससे अनुभव हुआ कि ज्यादा माल रखने और करीब ४ प्रहर के आंच देने ओर आंच भी तेज अर्थात् ३ पतले चहले की देने से पारा ठीक निकलता है–आज जो हांडी चटकी थी उसको साफ करके देखा गया तो मालूम हुआ कि उसके पेंदे में बाल पड़ गया था किन्तु पारा उस ओर जारी नहीं हुआ था और न कुछ हानि हुई थी इससे फिर भी अनुभव होता है कि अगर हांडी चटकने पर आंच बन्दकर दी जावे तो पारद के एकदम निकल जाने का भय उड़ाने का भय उड़ाने में नहीं है लेकिन हांडी नीचे की हो। आज हांडी को आंच अवश्य चार या पांच लकड़ी की दी गई थी और कपरौटी सिर्फ ३ ही की थी। हांडी तोड़ने से यह भी पाया गया कि हांडी के नीचे पेंदें में करीब आधी मुटाई तक श्यामता आ गई थी गालिबन यहां तक पारा प्रवेश कर गया था।

(५) २९/१ ऽ।।=ढ़ाई पाव सिंग्रफ ओर लेकर उसको ७ नींबू के रस में करीव दो प्रहर खरल कर सुका ३ लकड़ियों की करीब ४ प्रहर आंच दी गई, खोलने पर १८।। तोले पारा निकला।

२९/१ (१+२+३+४+५) ऽ।। सेर+ १ सेर+ १ सेर १+ ऽ।। = ढाई पाव + ऽ।। = ढाईपाव ऽ३।।। सेर सिंग्रफ जिसमें से १४९।। तोले पारा निकल चुका था उसको सूखा घोट कर करीब ४ प्रहर के आंच दी गई तो २३ तोले पारा निकला।

३०/१ (१ २ ३ ४ ५) ऽ।। सेर १ सेर १ सेर १ ऽ।। ढ़ाई पाव ऽ।। ढ़ाई पाव ऽ३।।। सेर सिंग्रफ, जिसमें ४९ तोले पारा निकल चुका था उसको सूखा घोटकर करीब ४ प्रहर आंच दी गई तो २३ तोला पारा निकला।

३१/१ (१+२+३+४+५) ऽ।। सेर+१ सेर+१ सेर+ऽ।।=ढ़ाई पाव+ऽ।।= ढ़ाई पाव=ऽ३।।। सेर सिंग्रफ जिसमें से १९१ तोले पारा निकल चुका था उसे फिर सूखा घोटकर×० आंच दी गई तो २४।। तोले पारा निकला अबकी बार बहुत सूक्ष्म पारा शेष रह गया अर्थात् जो कुछ शेष रहा चूर्ण की दशा में रहा चकती की सूरत न रहीं कुल वजन पारे का २१५ तोले ६ माशे अर्थात् २ सेर ११ छ० ६ माशे हुआ ६ तोले पीछे से और निकला यानी ३।।। सेर सिंग्रफ में से सब २ सेर १२ छ० १ तोले ६ माशे पारा निकला और पहले सिंग्रफ में से ३ छटांक निकला था।

कुल २ सेर छटांक १ तोले ६ माशे हुआ।

अब शेष सिंग्रफ के चूर्ण को जिसमें से ऽ२।।ऽसेर १।। तोला पारा निकल आया था फिर ३ प्रहर की आंच दी गई तो ६ तोले पारा बाकी नहीं रहा। चूर्ण जो शेष रहा उसकी सूरत सफेद कत्थे की सी हो गई और वजन में १ छटांक हुआ लेकिन इसमें जो मैला ९ माशे था उसको पृथक कर लिया गया, उत्तम स्वच्छ ९ माशे की शीशी में, रखा गया और मध्यम ३।। तोले को अलग रखा गया।

ॐ शिवाय नमः

स्वेदन संस्कार

संस्कार अध्याय के ७२ से ७६ वें श्लोक तक की क्रिया से ।

आज ४ फरवरी सन् १९०४ बृहस्पति बार फाल्गुन बदी तीज को २०० तोले पारद हिंगुलाकृष्ट को स्वेदन में डाल ।।आने गज की मारकीन १ गज को चार तहकर और उसमें ढ़ाई ढ़ाई छटांक सोंठ, मिरच, पीपल, चीता, राई, सैंधानोंन, अदरख, मूली, इन आठ चीजों को कूट छान कांजी में उसने उसकी ओखरी सी बना उसको कपड़े चौतह में रख उसमें पारा भरा तो पारा ओखरी के नीचे निकल गया लाचार पारे और दवा की लुगदी को चौतह कपड़े में बाँध उसकी पोटली बनाई गई लेकिन बहुत बड़ी हुई चकोतरे की बराबर और हांडी का मुंह छोटा था इसलिये चौथाई के करीब लुगदी निकाल पोटली बांध सन की सुतली से बांस की खपच्च में लटका एक हांडी में जो गोल थी और जिसमें १८ सेर कांजी आई बीचो बीच लटका दोलायंत्र किया गया ऊपर हांडीके सरवा ढ़का गया। जो सब लुगदी रखते तो विलांद भर चौड़े मुंह की २५ सेर पानी वाली हांडी की जरूरत होती।

(१० बजे के करीब जब पारद को स्वेदन के लिये लेकर चले तो पैर टेढ़ा पड़ने से कमरे की सिढ़ी पर से गिरते गिरते बच गये श्रीशंकर ने रक्षा की नहीं तो बड़ी चोट आती।)

१२ बजे दोपहर से इसके नीचे मंद आंच दी गई। कांजी कम होने पर दो दफे कांजी शाम तक डालनी पड़ी—जब जब कांजी कम हुई और डालते रहे। इतवार के १२ बजे तक अर्थात् तीन दिन रात बराबर आंच दी गई। बाद में कुछ ठंडा होने पर पोटली निकाल खोला गया तो पारा नीचे था और लुगदी ऊपर, हां कुछ रवे पारेके जो लुगदी में मिला दिये थे (मिलाना तो चाहा था कि सबही मिल जावें पर मिला नहीं था) दोलायंत्र [illegible]ते वक्त वह कांजी के अन्दर भी थोड़े से मौजूद थे—पारे को जो खुद अलहदा कपड़े में छानकर तोला गया तो ऽ२।॥। दो सेर साढ़े छः छंटाक निकला लुगदी को उसी गरम कांजी से धोया गया और नितारा गया तो पारे के बारीक रेजे इकट्ठे हुए इनको छाना गया तो भी ये बाहम इकट्ठे नहीं हुए फिर इनको चीनी की रकाबी में सुखा दिया गया तो सवेरे वह रवे हिलानें से आपस में मिल गये तोलने से यह छटांक भर बैठे अर्थात् स्वेदन में आधी छटांक पारा छीज गया बाकी रहा ऽ२।≡।

स्वेदन का अनुभव

१—द्रव वस्तु जिसमें स्वेदन हो, मैंने कांजी में किया सो ठीक ही था। और का अनुभव करने पर दूसरा हाल ज्ञात हो सकता है। कांजी २०० तोले पारद के स्वेदन के लिये मन भर तो चाहिये जितना जल आदि में चढ़ाया जाता है उतना ही और तीन दिन में जलाने की वजह से डालना पड़ता है।

२—औषधी जिनके संग स्वेदन हो। आठ वस्तु जो मैंने ली है वह साधारण रीति से बहुत मतों से ग्राह्य हैं किन्तु मैंने मूली को पीसकर डाला था उसका रस ही औषधियों में डाला जाता तो ठीक होता और सब औषधी निहायत बारीक कपरछान होनी चाहिये। इन औषधियों को स्वेदन में डालने के लिये मतान्तर बहुत हैं।

१ कांजी में डालना, २, पोटली में डालना, ३, कपड़े पर लेप करना, ४ गोला बना उसमें पारा रखना, ५ मूषा बना उसमें पारा रखना किन्तु नागबला आदि के प्रयोग में अर्थात् किसी लसदार वस्तु में तो मूषा बनना सम्भव है और इन औषधियों से मूषा बनना असंभव है और गोला बनाकर पारा भरना तो सर्वथा असंभव है क्योंकि पारा भारी होने से उसे भेद जाता है। लेप भी गफ कपड़े पर ठीक नहीं हो सकता और फिर फिरफिरे पर किया भी जावे तो गीले में पारा निकल जायेगा और सूखने पर लेप तड़का जावेगा।

पोटली बाधना संभव है, किन्तु पोटली में जब यह औषधियां पारद से पृथक रहती है तो कांजी में इन औषधियों के डालने में भी कुछ हानि नहीं जान पड़ती और सुगमता अधिक है। यदि पोटली से लाभ हो तो इतना हो सकता है कि कांजी में डालने से औषधी का रस जब कांजी में मिल जायेगा और पोटली में रहने से उसका रस प्रथम पारे पर गिरेगा फिर जल में मिलेगा।

३—दोलायंत्र, हांडी, स्वेदन के लिये चौड़े मुँह की होनी चाहिये जिसमें बड़ी पोटली आ जावे और चूंकि पोटली बड़ी होती है, इस लिये हांडी का पेट भी बड़ा होना चाहिये। २०० तोले के लिये २५ सेर जल की हांडी योग्य है। इसके मुँह पर सरवा ढ़का रहना चाहिये और हांडी के किनारे खांद उसमें बाँस की खपच्च रख उसमें रस्सी का छींका लटका उसमें पोटली रखनी चाहिये।

४—आंच इसके नीचे बहुत मंदी दीपक अग्नि के समान लगनी चाहिये।

५—धोने में गरम कांजी से धोने से पारा कम छीजता है (ठंडे जल से धोना मना है और उससे पारा छीजता भी अधिक है)

मर्दन संस्कार

(अष्टम संस्काराध्यायश्लोक १३४ से १५६ श्लोक की क्रिया से)

तारीख १० फरवरी सन् १९०४ फाल्गुन बदी ९ बुधवार १० बजे से तप्त खल्व द्वारा मर्दन संस्कार प्रारम्भ—रसरत्नाकर की क्रिया से।

पुरानी पक्की ककैया ईंट का चूरा और हल्दी समान भाग मिलाकर दोनों मिलकर सोलहवां अंश अर्थात् ढ़ाई छटाँक को खरल में डाल उसमें जंभीरी का रस और बिजोरे का रस जल और पारद १९७)॥ तोले डालकर रात के ७ बजे तक मर्दन किया गया रस कम होने पर और डाला जाता रहा। जंभीरी १० ही मिली। वह भी सूखी सिर्फ पाव भर से कम रस निकला—३ बिजौरों में कोई १ तोला ही रस निकला (कारण कुऋतु होने से ताजी बिजौरे न मिले थे) लाचारी में नींबू का रस काम में लाया गया।

तप्त खल्व के लिये १ लंबा चूल्हा बनाकर जो  इस आकार का था और चार या पांच अगुल ऊंचा था और जिसमें ४ अंगुल नीचे गढा भी कर लिया था उस पर लोहे का खरल रख नीचे बकरी की मेंगनी और गेहूं के भूसे की आंच जलाई गई खरल इतना गर्म रखा गया जिसमें हाथ से खरल छू सकें—और जिसका मूसला भी गरम मालूम होता था।

ता० ११ फरवरी बृहस्पतिवार आज प्रातः ९ बजे से मर्दन आरम्भ होकर रात के ७ बजे तक किया गया ८ बजे से आरम्भ होकर रात के ८ बजे तक कर्म चलता है किन्तु वास्तव में १० घण्टे मर्दन होता है।

ता० १२ फरवरी आज भी ८ बजे से रात के ७ बजे तक तप्त खल्व में मर्दन हुआ। इन तीन दिन के मर्दन में ५ सेर नींबू जो गिनती में १२० थे, उनका रस पड़ गया।

ता० १३ फरवरी आज खरल से पारद जुदा किया गया। पारद स्वयं जुदा ही था वह तोला गया तो २।≡) हुआ और जो रवे लुगदी में मिले थे उनको निकालने के लिये सब लुगदी को तप्त कांजी में घोल नितारा और धोया गया तो १ छटांक पारा और निकला कुछ बहुत सूक्ष्म रवे रह गये उनको रकाबी में सुखा दिया गया तो वह भी इकट्ठे हो गये—सब पारा ऽ२।। सेर में १ तोला कम हुआ।

स्वेदन की तोल में कुछ गड़बड़ हो गई होगी अबकी बार दो दफे तोला गया तो १ तोला कम २।। सेर पारा बैठा।

मर्दन का अनुभव

१—इष्टिका और रजनी (हल्दी) के चूर्ण मिलकर पारद से १६ वाँ अंश होना ही ठीक है। पाठ से भी ऐसा ही अर्थ निश्चय होता है और यही उचित भी जान पड़ा। पृथक पृथक लेने से पारद की अपेक्षा बहुत अधिक प्रमाण हो जाता है। मैंने पहले पृथक पृथक सोलहवाँ अंश लिया।

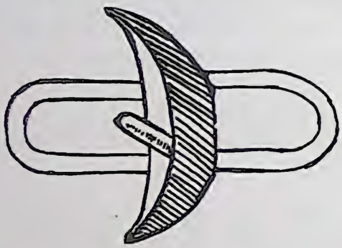
२—इन रसों में घोटने में नीबूं का रस इतना डाला गया जिससे कढ़ी सी हो गई कम डालने से हाथ ठीक नहीं चल सकता था और पीछे तो इसमें

इतना लस हो गया था कि बिना रस डाले मूसला चिपटा ही जाता था। हां, जो प्रथम से ही इतना कम रस डाला जाता कि चूर्ण सूखा सा ही रहता तो शायद घुट सकता। कम रस डालने से कोई लाभ भी नहीं जान पड़ता।

३–खल्व जो मेरे यहां है, वह २०० तोले के योग्य ही आकार का है, अर्थात् बड़ा लोहे का खरल १० गिरह लंबा ४ गिरह चौड़ा, २८ गिरह गहरा वजनी नौका के आकार का है– (आकार)



चुलयुपरिस्थित खल्व आकार



४–तप्त खल्व की किया के निमित जो चूल्हा बनाया जाता है वह ठीक ही था।

५–अग्नि भी भूसे और मेंगनी की ठीक पड़ती है। आदि में मेंगनी भूसे से सहारे जलती है, पीछे चूल्हा गरम होनेपर ठीक जलने लगती है।

६–श्रीशंकर–स्वामी की कृपा से पारद अब तक छीजता भी बहुत ही कम है। (पहले जो परीक्षा के लिये कर्म किया गया था उसमें बहुत छीजता था) दो कारण इसमें जान पड़ते हैं (अ) पारद हिंगुलाकृष्ट होने से शुद्ध है, इसलिये मैल कम निकलता है–(क) गरम कांजी से धोने से पारा पृथक हो जाता है। पहली बार शीतल जल से धोया गया था इसलिये पृथक नहीं होता था–(ख) तीसरा कारण और भी हो सकता है कि खरल का कुछ अंश पारद में मिल गया हो क्योंकि गौर से देखने से खरल में बारीक बारीक गढ़े दीख पड़े।

ॐ शिवाय नमः

२ मर्दनमूर्च्छन–(अंकोल में)

१५/२/१९०४ ता० १५ फरवरी फाल्गुन बदी १४ सोमवार १२ बजे दोपहर से १९९ तोले पारद को अंकोल की जड़ की छाल के सूखे हुए चूर्ण १। छटांक और सूखे फरकेंदुए के गूदे के चूर्ण (जिसमें छिलका और बीज निकाल दिये थे) १। छटांक के साथ घीग्वार के पाठे के गूदे के रस सहित हल के तप्त खल्व में ८ बजे तक अर्थात् ८ घंटे घोटा गया–२॥ सेर के १६ घीग्वार के पट्ठों का रस पड़ा।

अनुभव

१–चूर्ण बारीक होना चाहिये–कपरछान हो तो अच्छा है मोटा चूर्ण खरल में बारीक मुश्किल से होता है।

२–घीग्वार का रस ही डालना चाहिये गूदा घोटने में ठीक नहीं आता।

ता० १६/२ सवेरे के ८ बजे से रात के ७ बजे तक पारद का तप्त खल्व में मर्दन किया गया। ८ घीग्वार के पट्ठों का रस डाला गया–किन्तु आज खरल कम गरम रखा गया क्योंकि दवा गाढ़ी गाढ़ी थी कहीं जल न जावें–दवा और पारद खूब घोटने में आवे इस कारण दवा गाढ़ी रखी गई।

शाम तक सब पारद औषधि में मिल गया–आशा है कि भलीभांति मूर्च्छित हो जावेगा। जय श्रीशंकर स्वामीकी।

१७/२ सवेरे देखा तो खरल में करीब आठवें हिस्से के पारा पृथक् हो गया था ८ बजे से रात के ८ बजे तक १२ घंटे घोटा गया। तीसरे पहर दवा गाढ़ी हो जाने से करीब एक चौथाई के पारा जुदा हो गया। फिर रस डाल घोटने से सब पारद लीन हो गया। साबित हुआ कि रबड़ी सा गाढ़ा घुटना ठीक है ज्यादा गाढ़ा होना ठीक नहीं ज्यादा गाढ़ा होने पर पारद पृथक भी होता है और घोटने में पारद उछटता भी है।

१८/२ आज सवेरे के ९ बजे से रात के ८ बजे तक ११ घंटे घोटा गया और घीग्वार का रस खूब डाला गया, जिससे रबड़ी सा पतला रहा और खरल भी ठीक गर्म रखा गया। सवेरे इस ख्याल से कि पारद भलीभांति लीन नहीं होता। २ तोले अंकोल का चूर्ण और डाला गया, शाम को देखा गया तो पारद बिलकुल लीन हो गया था, अर्थात् औषधि में मिल गया था छोटे छोटे रवे होकर।

१९/२ आज सवेरे के ८ बजे से रात के ८ बजे तक १२ घंटे पारा तप्त खल्व में घोटा गया, घीग्वार का रस खूब डाला गया, खरल भी ठीक गरम रखा गया, पारद अब जरूर लीन हो गया किन्तु गौर से देखने में बहुत बारीक रवे जरूर दीखते थे, यदि पारद कम होता और औषधि अधिक हो तो कुछ अधिक मूर्च्छन होने की आशा हो सकती है।

२०/२ को भी इसी प्रकार घीग्वार का रस डाल १२ घंटे घुटाई की।

२१/२ आज भी पारे का सवेरे ८ बजे से रात के ८ बजे तक १२ घंटे मर्दन किया गया आज सातवां दिन था, आज दो पहर तक रस डाला गया, बाद को रस डालना बंद रखा गया। रस न पड़ने से औषधि गाढ़ी होती गई और पारा छुटता गया।

निष्कासन

२२/२ आज सवेरे उस पारे को जो खरल में जुदा हो गया था निकाल लिया गया और दवा को धूप में घोटा और सुखाया गया। सुखा कर घोटा गया तो शाम के ३ बजे तक २। सेर और १। तोले पारा निकल आया, बाकी सफूफ जो ७ छटाँक था सूखा रह गया, इसमें से पारद निकालने के लिये इसको डौरूयंत्र में बंद किया गया।

२३/२ आज सवेरे ८ बजे से रात के ८ बजे तक १२ घंटे डौरूयंत्र को आंच दी गई, ऊपर गोबर और भीगा कपड़ा रखा गया।

२४/२ आज डौरूयंत्र खोला गया–१५॥ तोले पारद निकला, नीचे की हांडी में बाल पड़ गया था लेकिन कुछ हानि नहीं हुई, इस हांडी पर ४ कपरौटी मुलतानी शीरा पड़ी हुई की गई थी।

कुल पारद ऽ२।ᴕऔर १।॥ तोले हुआ यानी १९६।॥ तोले हुआ। मूर्च्छन में डाला गया था १९९ तोले घटा २। तोले ।

तीसरा मर्दन मूर्च्छन

(अमलतास में)

२४/२ आज १२ बजे से मर्दन प्रारम्भ हुआ।

१९६।॥ तोले पारद को २॥ छटांक अमलतास की फली के गूदे के साथ घीग्वार के रस में ८ बजे से रात तक घोटा गया तो पारद सब मिल गया, तप्त खल्व में।

२५/२ आज भी पारद को सवेरे ८ बजे से रात के ८ बजे तक घोटा गया, पारद सब लीन हो गया, इस अमलतासमें पारदके अंकोल से अधिक लीन हुआ अर्थात् अंकोल की अपेक्षा अमलता से पारद के परमाणु अधिक सूक्ष्म हो गये। पारद लीन तो हुआ लेकिन औषधि थोड़ी होने से पारद का रूप नष्ट नहीं हुआ, सफेदी चमकती रही। २६/२७/२८/२ को बिसौली चले जाने का कारण काम बंद रहा।

२९/२ आज ९ बजे से रात के ८ बजे तक मर्दन हुआ, तप्तखल्व में रूप नष्ट न होने के कारण २ छटांक गूदा अमलतासकी फली का और डाला गया तो पारद कुछ अधिक लय हुआ।

अनुभव

१/१६ की जगह १/८ औषध डालनी योग्य—अवश्य अवश्य

१/३ आज ८ बजे से शाम के ६ बजे तक पारद तप्त खल्व में घोटा गया, एक नौकर बीमार हो जाने से काम कम चला। पहले २४ X २९ का अरक बहुत पड़ा अब कम खिपता है, औषधि की मात्रा भी अब पूरी थी। पारद लीन तो हुआ किन्तु रूप नष्ट नहीं हुआ।

२/३ आज धूल अर्थात् होली की वजह से काम बंद रहा।

३/३ आज ८।। बजे से ६।। बजे तक पारद तप्तखल्व में घोटा गया मुरली नौकर के बीमार हो जाने से काम बंद चला।

४/४ आज ८।। बजे से ७ बजे रात तक पारद का मर्दन हुआ, पारा मिल अवश्य गया लेकिन अदृष्ट नहीं हुआ बाबू हनुमानप्रसाद साहब ने कहा कि मैंने जो अंकोल की जड के काढे में मर्दन कराया था तो अदृष्ट हो गया था।

५/३ आज ८ बजे से रात के ७।। बजे तक मर्दन हुआ, पारा मिल गया अर्थात् बारीक २ रवे हो गये किन्तु अदृष्ट नहीं हुआ।

निष्कासन

६/३ आज पारद को ८ बजे से १० बजे तक तप्त खरल में घोटा गया चूंकि सात दिन तक पूरे हो गये थे इसलिये आज रस न डाला गया। इस न डालने से पारद १० बजे पर दवा से पृथक हो गया। फिर भट्टी पर खरल को उतार घोटा गया। धूप न थी इसलिये फिर आंच की गर्मी से खरल को कुछ गर्म कर घोटा गया। शाम के ३ बजे तक करीब २। सेर के पारा निकल आया बाकी दवा में गया। दवा चमचोडसी होकर रह गई।

इस दवा को जो कुछ गीली थी और बादल होने की वजह से सूख न सकी थी डौरूयंत्र में बंदकर दिया गया।

७/३ को ९।। बजे से डौरूयन्त्र को आंच दी गई रात के ९।। बजे तक।

८/३ को डौरूयंत्र खोला गया तो १५। तोले निकला। कुल पारा मिलाकर तोला ऽ२।ऽसेर हुआ यानी १९५ तोले हुआ और डाला गया था १९६।। तोले अर्थात् १।।। तोले घटा कुछ पारा अवश्य चूर्ण में मिला रह गया उसको निकालना चाहिये। आज डौरू खोलते समय कुछ पारे के रवे एक तरफ कपरौटी की पट्टी पर मिले जिससे साबित हुआ कि दर्ज हांडी की ठीक नहीं मिली या हांडी उठाने में उपर की हांडी पकड़ कर उठाया गया जिससे दरज पड गई।

आयन्दा ख्याल रखा जावे हांडी में बाल पड़ गया। बाकी सफूफ को फिर उड़ाया गया तो ७ माशे पारा और निकला सब हुआ १९५।। तोले और डाला गया था १९६।।। तोले बस १। तोले घटा।

चौथा मर्दन (चीते में)

९/३ आज १९५ तोले पारद को २।। छटाक चीते के बारीक चूर्ण के संग घीग्वार का रस डाल तप्तखल्व में ८ बजे प्रातः काल से रात्रि के ८ बजे तक घोटा गया। रस खूब डाला गया किन्तु पारद बिलकुल पृथक ही रहा। चीता फूली चीज होने से सोलहवां अंश ही अर्थात् २।। छटांक ही काफी था।

१०/३=८ बजे सबेरे ७ बजे तक घुटा तप्तखल्व में अरक खूब पड़ा पारद बिलकुल पृथक रहा।

११/३= ० १२/३ – + ० आज ७ माशे पारा जो सफूफ में से और निकला था आज खरल में डाल दिया गया।

पारद चीते से बिलकुल नहीं मिलता, इससे सिद्ध हुआ कि यह कर्म मूर्छित नही है केवल मर्दन है।

१३/३ = + ०

१४/३ = + ०

१५/३ = + ०

१६/३ आज कुछ देर तप्त खरल में पारद घोटा गया, फिर धूप में घोटा गया तो आधी छटांक कम दो सेर पारद जुदा हो गया, बाकी चूर्ण में मिला रहा। उसको डौरूयन्त्र में बन्द कर दिया गया। चूर्ण का वजन ११ छटांक था।

१७/३ को ८।। बजे से डौरूयन्त्र चढाया गया और ९।। बजे रात तक आंच लगी। १८/३ को ७ छटांक पारा निकला कुल पारा २ सेर ६।। छटांक हुआ।

पांचवा मर्दन (धतूरे में)

१८/३ को १२ बजे दोपहर से १९२।। तोले पारद को १२।। तोले धतूरे के बीजों के चूर्ण के साथ घीग्वार के रस से तप्त खरल में घोटा गया रात के ८ बजे तक।

१९/३—८ बजे सबेरे ७।। बजे रात तक मर्दन हुआ

२०/३ = + ०

२१/३—+ ० आज १। छटांक धतूरे के बीजों का चूर्ण और डाला गया।

२२/३=७ बजे सवेरे से ७ बजे शाम तक मर्दन हुआ।

२३/३=६ बजे से ६ बजे तक मर्दन हुआ।

२४/३=७ बजे से ७ बजे तक मर्दन हुआ।

२५/३ आज ७ बजे से पारद का तप्त खल्व में मर्दन हुआ १० बजे से अधिक गाढ़ा होने पर धूप में मर्दन हुआ, जब खूब गाढ़ा हो गया तो पारद कुछ लुगदी में मिला (पहले तप्त खल्व में पतला पतला घुटने से इस धतूरे में पारद बिलकुल नहीं मिला था) फिर ३ बजे पर चूर्ण सूख जाने पर पारद पृथक हो गया जो तौल में (२। सेर १।। तोला हुआ) अर्थात् १८१।। तोले।

२६/३=डौरूयन्त्र में ४ प्रहर की आंच दी गई (आज मुरली के पहरे में गोबर जो हांडी पर था उसमें आग लग गई)

२७/३—८।।। तोले पारद निकला डौरूयन्त्र में से सब पारद कांजी से धोया गया १९०। तोले हुआ रखा गया था १९२।। तोले २। तोले घटा।

छठा मर्दन (त्रिफला में)

२७/३=१९१ तोला (ठीक तौल) पारद को २।। छटांक त्रिफला चूर्ण से घीग्वार के रस से ४।। बजे शाम से ७ बजे तक घोटा गया।

२८/३=७ बजे से ५ बजे तक घोटा गया गाढ़ा गाढ़ा।

२९/३—७ बजे से ७ बजे तक घोटा गया गाढ़ा गाढ़ा।

३०/३+०

३१/१=७ बजे से ७ बजे तक घोटा गया आज १।। छटांक त्रिफला उसमें और डाला गया अबकी बार त्रिफला के मर्दन में पारद बिलकुल पृथक रहा।

१/४=७ बजे से ७ बजे तक मर्दन हुआ।

आज खरल में पारद पर से दवा हटाने पर पारद पर सफेद कांचली नजर पड़ी जब उगली से उस कांचली को हटाया सगया तो टूट कर ऐसी जुदी हो गई जैसे कलई की नाद जब रखी रहे और कलई नीचे बैठ जावे तब उसके पानी के ऊपर एक कांचली सी पड़ जाती है, लेकिन दूसरी अप्रेल में देखने से केंचली की रंगत पहले दवा हटने पर थोड़ी जगह में कुछ ऊंदीसी दिखाई पड़ी बाकी सफेद ही थी २/४=७ बजे से ७ बजे तक पारद घोटा गया।

३/४=आज ७ बजे से ७ बजे तक पारद घोटा गया। ७ दिन ४/४ आज खरल को धूप में घोटा गया और सुखाया गया तो २ सेर ५।। छ०=१८७।। तोले पारद पृथक हो गया। बाकी चूर्ण में रहा । चूर्ण को डौरूयंत्र में बंद किया गया।

५/४ को डौरू को ३ प्रहर की आंच दी गई ।

६/४ पारद डौरूयंत्र को ४।। तोले निकाला। कुल पारद १९२ तोले हुआ इकट्ठा तोल करने मे पारद ठीक ८२।=सेर हुआ यानी १९० तोले हुआ। इसको गर्म कांजी से धोया गया और कपड़े से छाना गया फिर तोल की गई तो १९२ तोले हुआ।

७/४–काम कन्हैयालाल नौकर की बीमारी की वजह से बंद रहा । अब की मरतबे कन्हैयालाल ने कहा कि ५० रुपये १० तोले पारे के गिरधारीलाल वैद्य बनवारी (वह भी पारे के काम में नौकर था) को देते थे इसलिये पारे में शुवहा पड़ा। रंगत ठीक रही। कपड़े पर स्याही भी न थी। तोल में थोड़ा शक पड़ा और पूंछ पारे में रहती थी यह एक बड़े शक की बात थी लेकिन मुमकिन है कि खरल लोहा मिलने से ऐसा हुआ हो, क्योंकि अबकी बार त्रिफला में खटाई का योग होने से लोह का अधिक योग पारे में आना मुमकिन है।

सातवाँ मर्दन (त्रिकुटा में)

१०/४ आज ८२ सेर ६ छ० २) भर = १९२ तोले पारदको २।। छटांक त्रिकुटा में घीग्वार के रस से तप्तखल्व में ९ बजे से ७ बजे तक बरामदे में घोटा गया। ११/४ ०७ बजे तक घोटा गया। त्रिफला में घुटने पर पारद पर कांचली सी दीख पड़ी थी, आज कल नहीं दीखती–इससे ख्याल होता है कि त्रिफला मे खटाई होने से पारदं ने खरल से लोहे का अधिक अंश चाटा, वही कांचली रूप दृष्ट पड़ता था और शायद इसी वजह से तोल भी बढ़ी हो पर फिर तोला तो अभी तक अधिक है इसलिये अंश लोहे का मौजूद है तो कांचली कहां गई? (उत्तर) मुमकिन है कि जो अंश पारद में लय हो गया वह अदृष्ट हो गया जो उस वक्त घोटते मे नया लोहा खरल से आता हो वह जब तक पारद में लीन न होता हो उस समय तक ऊपर दीखता हो किन्तु पारद की तोल बढ़ने से लोह का ग्रमित होना सिद्ध होता है लय होना नहीं।

१२/४ आज ७ बजे से रात के ७ बजे तक घुटाई हुई ।

१३/४=७ बजे से ७ बजे तक घुटाई हुई, आज १। छटांक त्रिकुट और डाला गया।

१४/४=७ बजे से ७ बजे तक मर्दन हुआ।

१५/४=७ बजे से ७ बजे तक मर्दन।

१६/४=७ बजे से ६ बजे तक मर्दन हुआ (इस त्रिकुटा के मर्दन में भी पारा पृथक् ही रहा)।

१७/४=आज पारद को खरल से पृथक कर लिया गया। प्रायः सब पारा स्वयं पृथक हो गया था। लुगदी को सुखाकर घोटने से २ तोले के लगभग पारा और निकला। सब पारा करीब ८२ सेर ६ छटांक के निकल आया। चूर्ण को डौरूयंत्र में बंद कर दिया गया।

१८/४ आज डौरू को ९ बजे से आंच दी गई। ४ बजे तक फिर ६ बजे ठंडा कर काम बंद कर दिया गया।

१९/४ डौरू से कोई १। तोले पारा निकला। कुल पारा १९१ तोले हुआ जो १ तोले घटा वह छीजन है मैल हो तो ज्यादः घटे। कुल पारे को कांजी से धोया गया। पारद में पूंछ अब भी दिखाई पड़ती थी। छानने से कपड़े पर स्याही नहीं थी।

आठवाँ मर्दन

१९/४=आज ८२।=१ तोले पारद=१९१ तोले को २।। छटांक गोखरू के चूर्ण से घीग्वार के रस से तप्तखल्व के रस से तप्तखल्व में ४ बजे शाम से ७ बजे तक घोटा गया ।

२०/४ आज ६।। बजे से ६।। बजे तक मर्दन हुआ।

२१/४ आज ६।। बजे से ६।। बजे तक मर्दन हुआ।

२२/४ आज ६।। बजे से ६।। बजे तक मर्दन हुआ।

२३/४ आज ६।। बजे से ६।। बजे तक मर्दन हुआ।

२४/४ आज ७ बजे से ७ बजे तक मर्दन हुआ।

२५।४ आज धूप से खुश्क कर घोट पारद निकाला गया तो १८९ तोले हुआ।

२६/४ डौरूसे बाकी सफूफ उड़ाया गया तो २ तोले पारा निकला।

२७/४ सब पारा १९१ तोले हुआ।

एक बरतन से दूसरे बरतन में करने पर पारे में पूंछ जरूर रहती है। अब तक छानने में जब जब तोले के करीब पारा बाकी रह जाता है तब उसके निचोड़ने से उसके संग कुछ मैल छनकर नीचे पारे पर दीखने लगता है, इससे जान पड़ता है कि पारे का मैल पीछे रह जाता है और शुद्ध पारा पहले छन जाता है। अगर इस पिछले भाग को अलग कर दिया जाय तो अच्छा हो।

ॐ शिवाय नमः

मूर्च्छनसंस्कार

(अष्ट–संस्काराध्याय के श्लोक १८६ से, १८७ की क्रिया से)

व्यूषणं त्रिफला बंध्याकंदैः क्षुद्राद्वयान्वितैः । चित्रकेण निशाक्षारकन्यार्कैकनक - द्रवैः ॥ सूतं च तेन यूषेण वारान्सप्ताभिमर्दयेत् ॥ इत्थं मूर्च्छितः (योगरत्नाकर वैद्यकल्पद्रुम) ।

त्रिकुटा १।। छटांक त्रिफला १।। छटांक (ककोड़े की जड़ नहीं मिली) कटेरी एक ही तरह की मिली वह हरी १।। छटांक चीता १।। छटांक, हल्दी १।। छटांक। इनको ३ सेर पानी में औटाया गया। तीन पाव पानी रह गया तब छान लिया गया। घीग्वार का रस १ छटांक, आक के पत्तों का रस १ छटांक, धतूरे का रस १ छटांक, कटेरी का रस १ छटांक लिया गया और यवक्षार १ तोला २७/४/०४,

पहले १९१ तोले पारद का १ छटांकधतूरके रसमें २ घंटेघोटा गया तो बिंदु पृथक् पृथक हो गये। फिर आक के पत्तों का रस डाला गया तो पारा इकट्ठा हो गया। इसमें भी ३ घंटे घुटा फिर कटेरी का रस डाला गया तो इसमें फिर पारे के बिंदु पृथक् पृथक हो गये। इसमें भी ३ घंटे पारद घुटा। अर्थात् आज ८ घंटे पारद शीतखल्व में धतूरे, आक, कटेरी के रस में घुटा।

२८/४/०४ आज ६ बजे से १२ बजे तक ठंडे खरल में पारद उपरोक्त काढे में घुटा और १२ बजे से ६ बजे तक खल्व में पूर्वोक्त काढे में घुटा। आज पारद काढे से पृथक ही रहा। ३ बजे पारद में १ तोले जवाखार भी डाला गया।

२९/४ आज पारद ६ बजे से ६ बजे तक घोटा गया और उसमें घीग्वार का रस और कटेरी का रस डाला गया। तप्तखल्व में घोटा गया किन्तु पारद पृथक् ही रहा। चिन्ता हुई कि मूर्च्छन कैसे हो।

३०/४ कर्म बंद रहा, मूर्च्छन के लिये काढा और बनाया गया।

१/५ पारद को खरल से धूप में सुखाकर पृथक् किया गया तो २।८।=२ भर हुआ अर्थात् १८७ तोले हुआ, रखा गया था १९१ तोले, ४ तोले पारा

१-कोर्णानि॰ इत्यपि ।

दवा में रह गया। यह चूर्ण बिलकुल काला बुरादा सा रहा इसलिये इसमें जो ४ तोले पारद है उसको मूर्च्छन कह सकते हैं, किन्तु इसमें कुछ रवे पारे के करीब १ तोला के पृथक् होंगे यह सफूफ जुदा रख दिया गया।

2nd part दूसरा भाग

३०/४ पौन पौन छटांक त्रिफटा, त्रिफुला, चीता, हल्दी का चूर्ण को यानी ३ छटांक सब मिलाकर चूर्ण को तीन पाव घीग्वार के रस, आधसेर आक के पत्तों का रस और डेढ पाव कटेरी के रस और आधपाव काले धतूरे के रस में अर्थात् सब १।। सेर रसों में रात भर भिगोकर ता० १/५ को सवेरे पहर भर आंच दी गई और औटते में १ छटांक आक के जड़ की छाल की लुगदी और १ छटांक धतूरे के पत्तों की लुगदी और २ तोले जवाखार भी डाला गया। गाढी कढी सी हो जाने पर उतार लिया गया। ३ बजे तक शाम के इस कढी में आधी खरलमें डालकर उसमें १। तोले भेड़ के ऊन की राख डालकर आध सेर पारा डाला गया तो घोटने से वह पारा रवे रवे होकर मिल गया।

२/५ पारा खरल का बदस्तूर मिला हुआ था उसमें ऽ। पारा और डाला गया तो १ घंटे में वही भी वैसा ही मिल गया, फिर इसको शाम के ६ बजे तक खूब घोटा गया। शाम तक घोटने से पारा बहुत बारीक रवे होकर मिल गया। आज ऽ।। पारा तीन पाव शीतखल्व में १२ घंटे घुटा।

३।५ आज भी ६ बजे से ६ बजे तक मर्दन हुआ। ठंडे खरल में आवश्यकता पर अर्थात् अधिक गाढा होने पर काढा जो रक्खा था उसमें आक का दूध मिलाकर मर्दन हुआ। ठंडे खरल में ३–४ बार डाला गया और गाढा कढी सा घोटा गया। अब पारा खूब मिल गया, यहां तक कि बहुत गौर से देखने से यह जान पड़ता है कि औषधि में पारे के बारीक परमाणु मौजूद हैं।

४/५ आज भी पारद ६ बजे से ६ बजे तक मर्दन किया गया, आज केवल एक बार प्रातःकाल इसमें बचा क्वाथ डाला गया, आज पारद वास्तव में लीन हो गया यहां तक कि अब गौर करने से भी पारा नहीं दीखता। हां कहीं कहीं शुबहा पड़ता है कि पारे के बहुत सूक्ष्म अणु हैं।

बस यही मूर्च्छन कहा जा सकता है। जय श्रीशंकरस्वामीकी

अनुभव

मूर्च्छन के लिये पारद से चतुर्थांश औषधि के प्रयोग की आवश्यकता है वह भी काढा बनाकर डाली जावे और काढे के केवल जल न लिया जावे किन्तु सब औषधि बिना छाने डाल दी जावे। इस खरल में ३ पाव पारा और ३ छटांक औषधि का क्वाथ ही एक दफे घुट सकता है। मूर्च्छन के लिये लसदार वस्तु की आवश्यकता है। आक का रस कम पड़ना चाहिये उसमें लस भी नहीं है और वह पारद को बखेरता भी नहीं है। दूध डाला जाय तो और भी अच्छा।

५/५/ आज ६ बजे से १० बजे तक पारद को घोटा फिर ज्यादा गाढा और खुश्क हो जाने से घोटना बंद हो गया फिर इस खरल को धूप में रख दिया गया। धूप आज बदली की वजह से कम रही इसलिये दवा सूखी नहीं।

६/५ इस दवा को धूप में सुखाकर सूखा घोटा गया तो करीब तीन छटांक के पारा जुदा हुआ। १५ छटांक सफूफ बच रहा।

७/५ को फिर इस दवा को पीसा गया तो १ छटांक पारा और निकला सब छटांक ४ हुआ, जो सफूफ बचा उसमें ता० १/५ वाला चूर्ण भी मिला दिया गया।

3rd Part तीसरा भाग

आज त्रिकुटा, त्रिफला, चीता, हल्दी का चूर्ण १२ तोले, कटेरी की जड़ सूखी २।। तोले, आक के जड़ की लुगदी १ छटांक, धतूरे के पत्तों की लुगदी २ छटांक को धतूरे का रस २ छटांक, कटेरी का रस ६ छटांक और आक का ८ छटांक (सब १ सेर रस) में भिगो दिया गया।

६/५ आज ऊपर भीगी हुई दवा में कटेरी के फल की लुगदी २।। तोले धतूरे के बीज सूखे हुए पिसे हुए २।। तोले, घीग्वार का रस ऽ।।/तीन पाव, आक का रस ऽ।ऽडेढ़ पाव और डालकर २ घंटे औटाया गया। दो प्रहर बाद इस काढ़े वा लुगदी में से आधे के करीब खरल में डालकर उसमें १ सेर पारद डाला गया और थोड़ी देर मर्दन हुआ।

७/५ आज शीतल खल्व में ६।। बजे से ६।। बजे तक १२ घण्टे पारद का मर्दन हुआ आज ९ बजे तक सब पारा दवा में दाखिल हो गया था और शाम तक पारे के रवे बारीक हो गये थे आज ४।। बजे इसमें (जवाखार न मिलने की वजह से) १ तोला मूली का क्षार डाला सगया और थोड़ा घीग्वार का रस भी डाला गया।

८/५-आज ६।। बजे से ६।। तक पारद का मर्दन हुआ सवेरे खरल में ९ छटांक पारा जो बचा हुआ था डाल दिया गया इस खयाल से थोड़े से के लिये और बान डालना पड़ेगा और डालने से यह तजुरबा भी हो जायेगा कि एकबार में कितना मूर्च्छन इस खरल में हो सकता है, आज ३ घण्टे घुटने पर पारा खरल में मिल गया शाम तक पारद के रवे बारीक हो गये।

९/५ आज भी पारद ६ बजे से ६ बजे तक शीत खल्व में घोटा गया, घीग्वार का थोड़ा रस डाला गया आज पारद के रवे इतने बारीक हो गये थे कि गौर के बाद नजर आते थे।

१०/५ आज पारद ६।। बजे से ६।। बजे तक घुटा, थोड़ा घीग्वार का रस डाला गया अब पारद नजर नहीं आता।

११/५ आज पारद को थोड़ा तप्त खल्व में घोटकर खुश्क किया और फिर शाम तक धूप में सुखाया, जब दवा के टुकड़े बिखरने माफिक हो गये तो खरल में घोटे गये घोटने से ८।। छटांक पारा जुदा हो गया।

अनुभव

बिलकुल सुखाकर घोटने से पहले दवा जब बिखरने लायक खुश्क हो जावे तब पारा घोटकर जुदा कर लेना मुनासिब जान पड़ता है पीछे सुखाकर फिर निकाले।

१२/५ आज फिर कल वाले सफूफ को जो कुछ और सूख गया था लेकिन नर्म तो था थोड़ा २ घोटा गया तो डेढ़ पाव पारा और निकला फिर बाकी सफूफ को सुखा दिया।

1st & 2nd Part पहला व दूसरा हिस्सा

पहले दूसरे टुकडे के मूर्च्छन के सफूफ को १ बोतल नींबू का रस डाल कर २ घंटे घोटा गया फिर ५ घंटे धूप में रखा गया बाद को ३ घंटे तप्त खल्व में घोटा गया।

१३/५ आज भी पारद को कुछ तप्त खल्व से सुखाया–धूप आज बादल की वजह से कम रही।

१४/५ आज भी तप्त खल्व से दवा को सुखा कर बारीक किया गया तो १ छटांक पारद और निकला।

अनुभव

नींबू के रस में घोटने से ३–४ दिन की मेहनत से सिर्फ १ छटांक पारा निकला इसलिये उड़ाकर ही निकालना ठीक है, अगर नींबू में घोटने की आवश्यकता समझी जावे तो निकालने के बाद घोट लिया जावे।

फिर इसी पहले और दूसरे टुकड़े को नींबू से घोटा था डौरूयन्त्र में बन्द कर दिया गया।

१५/५ आज डोरूयन्त्र को ७ बजे से ७ बजे तक आंच दी गई। १६/५ऽ६।। छटांक पारा निकला।

3rd Part तीसरा भाग

तीसरे भाग के सफूफ (चूर्ण) आज डौरू में बन्द कर दिया गया।

१७/५ आज ७ बजे से ५ बजे तक आंच दी गई ७ बजे तक कोयलों की आंच रही।

१८/५-९ छटांक पारा निकला।

१२२ भाग में डाला गया– ८+४+१+१३ छटांक निकला ३+१+६।।= ११।।छटांक बाकी १।। छटांक

३ भागमें डाला गया १६+९ = ऽ१।। सेर निकला ८।।+६+९ =ऽ१। ≡ ।।सेर बाकी १।। छटांक।

सब पारा था १९१ तोले ।। मौजूद कुल ऽ२≡बाकी ३ छटांक १ तोले लेकिन सब मिलाकर तोलने से बैठा–ऽ२। सेर बाकी है २ छटांक १ तोले।

१८/५ दोनों डौरू की राख को मिलाकर खरल में बारीक पीसा गया तो उसमें पारा दिखाई नहीं दिया। फिर जंभीरी का रस ऽ। पाव भर डाला जिससे दवा कढ़ी सी हो गई २ घंटे तप्त खल्व में घोट तप्त खल्व में छोड़ दिया गया। ११ बजे, ३ बजे देखने से दवा माजून से गाढ़ी हो गई थी और पारे के रवे दीख पड़े और कुछ थोड़ा सा पारा बीज में आ गया दवा को मूसले से दबाकर कुछ पारा इकट्ठा कर जुदा कर लिया गया। फिर खरल को १ घंटे भर धूप में रखा गया तो दवा बिखरने लगी। रवे पारे के नजर पड़ते थे पर इकट्ठे नहीं होते लिहाजा दवा को सुखा दिया गया।

अनुभव

पारा जब किसी चीज में अदृश्य हो जावे तो उसको नींबू से पतला कर पहर भर घोट कुछ पतला ही रहे धूप में रख देने से पारा कुछ इकट्ठा हो जाता है कुछ अपने रूप को ग्रहण कर रवे रवे हो जाता है खुश्क होने पार सब रवे तो इकट्ठे नहीं होते, मगर नजर पड़ने लगते हैं।

१९/५ दवाको डौरूकर ३ पहर आंच दी गई तो ४ तोले पारा निकला १ तोला पहले धूप में निकला था।

२०/५ कुल पारा तोलने ऽ२।८हुआ पानी ६ तोले घट गया।

1st Part द्वितीय मूर्छन

२०/५–३ छटांक त्रिकुटा, ३ छटांक त्रिफला, २।। छटांक ककोडे की जड़ जो कासिमपुर (तहसील सिकंदराराऊ) से आई, २।। छटांक चीता, २।। छटांक हल्दी सबको पृथक् पृथक् कूटकर तार की चलनी से छानकर मिला दिये गये। इस चूर्ण में चौथाई चूर्ण को अर्थात् ३ छटांक चूर्ण को ९ छटांक घीग्वार का रस, ८ छटांक आक के पत्तों का रस, ७ छटांक कटेरी के पंचांग के रस में शाम को भिगो दिया गया ओर १/२ छटांक आक की जड की लुगदी, आधी छटांक कटेरी के फल की लुगदी, १/२ छटांक धतूरे के बीज भी डाले गये।

२१/५-आज पूर्वोक्त औषधि को २ घंटे औटाया गया और इसमें २ छटांक धतूरे के पत्तों का रस भी डाला गया ज्यादे पत्ते न मिले १० बजे से इस काढ़े को गाढा कढ़ी सा होने पर उतार खरल में डाल उसमें ऽ१=+१ तोले पारा डाला गया, १२ बजे उसमें १।। तोले ऊन की राख, १ तोला मूली का खार भी डाला गया, शाम के ४ बजे तक घोटते रहने पर पारा पहले की तरह नहीं मिला, शाम तक घुटा।

२२/५ आज ७ बजे सवेरे से पारद घोटा गया। तप्तखल्व में घीग्वार का रस डाला गया, परन्तु पारा न मिला। लाचार ४ बजे शाम के पारा निकाल लिया गया तीन पाव से कुछ ज्यादा हुआ।

अबकी बार पारद लीन न होने के कारण तीन हो सकते हैं।

(१)नींबू से उत्थापन खरल से किया गया था पर उस खरल को धोया नहीं गया। मुमकिन है खटाई का अंश खरल में रहने से दवा की आकर्षण शक्ति जाती रही।

(२) तहकीकात से मालूम हुआ कि अबकी बार कन्हैयालाल ने कटेरी आदि का रस निकालने में जल डाल दिया।

(३) दवा में एक नई चीज भी पड़ी यानि ककोड़े की जड़ जो कासिमपुर से आई।

२३/५ आज दवा धूप से सुखाकर पारद जुदा किया गया तो सब मिलकर १५ छ० १ तोले हुआ डाला गया था। साढे अठारह छटांक यानी दवा में रह गया। ३।। छ० यह बिलकुल काला सफूफ बना इसको डौरू में बंद किया गया।

२४।५ आज डौरू को आंच दी गई।

२५/५ आज डौरू खोला गया तो एक नई बात निकली यानी हांडी के अन्दर नमी थी। इसको धूप में सुखानेको दो पहर तक रखा, लेकिन दोपहर बाद ३ घंटे ठंडे में रहने से नमी बदस्तूर मौजूद थी। मालूम होता कि कोई खार पारे के संग उड़ गया है, वह आज पुरवाई हवा से शीतल है। कुछ पारा इधर उधर से हांडी से पोछकर निकाला जो ११ तोले हुआ। घंटे भर फिर धूप में रखकर नमी कम होने पर और पारा निकला, पर नमी और चिपकाट की वजह से बीच का पारा नहीं छुटा। इसके चिपकाट दूर करने के लिये नींबू का रस हांडी में डाला तो चिपकाट जाता रहा। रस से धो धोकर हांडी तोड़कर पारा निकाला गया।

एक कारण और भी चिपकाट नमी का हो सकता है यह कि अबकी दफे डौरू के नीचे रात को कोयले नहीं रहे और हर बार रहते थे इस वजह से गर्मी हांडी को नहीं लगती रही, इस वजह सें ऊपर की हांडी पर जो गोबर पानी था, उसकी तुरी खुश्क न हुई, अन्दर असर कर गई।

कुल पारा डौरू से २।। छटांक+१॥भर निकला + १५ छटांक १) भर पहले निकला। कुल हुआ १७।। छ० २) भर डालागया था १८ छ० १) भर यानी १।।)भर कम हो गया।

इस क्रिया में जो २।। छटांक १ तोले पारा मूर्च्छन मान गया और जो उड़कर डौरू से निकालागया उसी को मूर्च्छन माना गया और वह जुदा रख दिया गया।

2nd part द्वितीय मूर्छन

२६/५–त्रिकुटा, त्रिफला, ककोड़े की जड़, चीता, निशा, का सफूफ ३ छटांक, ऊन की भस्म १। तोले, घीग्वार का रस १० छटांक, आक का रस १० छटांक, धतूरे का रस १।। छटांक, कटेरी की जड़ की लुगदी १/२ छटांक, कटेरी का रस ९ छटांक (रस इसलिये डाल दिया कि सर्वांग डालने से कांटे काढे में रह जाते थे और पिसना मुश्किल था) धतूरे का बीज १/२ छटांक, धतूरे के पत्ते १/२ छटांक (ये पत्ते इसलिये डाले गये कि रस कम मिल सका था) इन सबको इकट्ठा कर रात को हांडी में भिगो दिया गया। सवेरे पहर भर औटाकर गाढा होने पर उतार लिया गया।

४ बजे शाम के इसमें पारा डाला गया। १५ छटांक १) भर घोटने से यह पारा दवा में नहीं मिला। दवा पतली रबड़ी सी थी इसलिये और औटाकर गाढी की गई।

२७/५ खरल में की पतली दवा ऊपर से जुदा कर रकाबी में रखी गई। इसमें कुछ पारा भी मिला था और बाकी दवा और पारे में गाढा दवा जो गाढी माजून या खमीरा दवा और पारे में गाढी माजून या खमीरा-सी थी, डालकर घोटी गई तो २ घंटे में सब पारा मिल गया। (आगे से ध्यान रखा जावे) आज ठंडे खरल में ७ बजे से ७ बजे तक मर्दन हुआ पारा शाम तक करीब करीब अदृश्य हो गया

२८/५ आज भी ६।। बजे से ६।। बजे तक पारद का मर्दन शीत खल्व में हुआ। सवेरे ७ बजे इसमें सज्जीक्षार अर्थात् सोडा १/२ छटाक डाला गया, आज पारा बिल्कुल अदृश्य हो गया जो दवा पतली जुदा कर ली थी वह सब आज खरल में पड़ गई।

२९/५ आज ७ बजे से ६ बजे तक पारे का मर्दन हुआ। घीग्वार का रस गाढा होने पर डाला गया। शाम के ३ घंटे खरल तप्त भी किया गया।

३०/५ आज १ पहर तप्तखल्व में पारद घोटा गया। अधिक अधिक गाढा होते जाने पर पारद छूटता गया। वह जुदा कर दोपहर को खरल धूप में रख दिया गया। ३–४ बजे घोट कर और पारद निकाला। अभी दवा गीली है सब पारा १३।। छटांक निकला था। १५ छटांक १) भर इसलिये २ छटांक ३।।) भर दवा और रहा फिर दवा को बिलकुल खुश्क कर बारीक पीस लिया। खूब सूखने पर इसमें से और पारा नहीं निकला इसको डौरू में बंद कर दिया गया।

३१/५ डौरू को ३ प्रहर आंच दी गई।

१/६ डौरू खोला गया आध पाव १) भर हुआ सब पारा मिलाकर तोला गया तो १४ छटांक ३।। रुपये भर हुआ और 2nd part में डाला गया। १५ छटांक १) भर पस २।। भर कम हुआ।

और दोनों 1st & 2nd part मूर्च्छन में डाला गया ऽ१– १) भर और सब दोनों का हुआ १ सेर १ छटांक २ रुपये भर पस ४ रुपये पर कम हो गया दोनों पार्ट में।

3rd part द्वितीय मूर्च्छन

१/६/०४–त्र्यूषण, त्रिफला, वन्ध्याकंद, चित्रक, निशा का ३ छटांक, ऊर्णभस्म १।। तोला, सज्जीक्षार २।। तोला, कन्यारस ९ छ०, आक का रस ११।। छटांक १ कनकरस ४ छटांक, वीज १/२ छटांक, कटेरी की जड़ १/३ छ० रस ९ छटांक। इनको मिलाकर रख दिया गया।

२/६ पहर भर करीब आज दवा को औटाकर गाढा होने पर उतार लिया गया। दो पहर १२ बजे इसमें ऽ१=४) भर पारा डाला गया और शीतखल्व में घोटा गया। २ बजे तक पारा थोड़ा मिला सब नहीं मिला २ बजे से ५ बजे तक तप्तखरल में घोटा गया पर वही दशा रही।

३/६ आज ७ बजेसे ११बजे तक और ३ बजे से ७ बजे तक पारे का शीत खरल में मर्दन किया। आज गाढा होने पर घीग्वार का रस भी डाला गया और धतूरे का रस भी डाला गया। कुछ ऊनभस्म भी बुरकी गई किन्तु पारा कुछ थोड़ा सा और बाकी मिला। बाकी वैसा ही पृथक रहा। ७।। छटांक जुदा रहा।

४/६ आज इस ७।। छटांक पारद को जुदा कर लिया गया और यह समझा गया कि औषधि केवल अवशेष ११ छटांक पारद को ही ग्रहण कर सकती है। बस इसी को घोटा गया और जरूरत पर घीग्वार का रस भी डाला गया, पारे का शीतखल्व में ७ बजे से ६ बजे तक मर्दन हुआ।

५/६ आज तप्त खल्व में पारद का ७ बजे से ६ बजे तक मर्दन हुआ। घीग्वार का रस भी डाला गया किन्तु थोड़े से पारद का भी अबकी बार पूर्ण मूर्च्छन नहीं हुआ। कुछ रवे दीखते रहे। यह बात ठीक समझ में न आई कि अबकी बार ठीक मूर्च्छन न होने की क्या वजह हुई हालांकि यह छठी कोशिश है।

६/६ आज पारद को तप्त खल्व में ४ घंटे घोटा गया। गाढा हो जाने पर पारा निकल आया फिर ५ घंटे धूप में सुखाकर घोटा गया तो कुछ पारा और निकला। सब ७।। छटांक हुआ।

७/६ आज पारे के चूर्ण को जो बिल्कुल सूख गया था बारीक पीसा गया तो २ तोला पारा और निकला, आदमी कम होने से आगे काम न चला।

१५/६ आज इसके चूर्ण का डौरू चढाया गया।

१६/६ इस डौरू को खोला गया तो जैसा एक बार पहले हुआ था वैसा ही अबके भी हुआ अर्थात् ऊपर की हांडी में पानी की तरी ज्यादा पहुंच जाने से पारा हांडी से सब नहीं छूटा। चिपकाट पैदा हो गया था। २।। छटांक पारा तो निकल आया और कुछ चिपटा रह गया फिर हांडी को धूप में रख दिया तो सूखकर बारीक पारा और निकला। सब पारा ७।। छटांक+७।। छटांक २)+२।। छटांक+१) भर=१८ छटांक हुआ। डाला गया था १८ छ०+ ८) भर कम, हुआ ४) भर।

4th part चौथा हिस्सा

१०/६ उपरोक्त दवा का चूर्ण ३ छटांक आक का रस ४ छटांक कटेरी का रस १० छटांक धतूरे का रस ४ छटांक, घीग्वार का रस १२ छटांक लुगदी आक के जड़ की १/२ छटांक, धतूरे के पत्तों की लुगदी १/२ छटांक, कटेरी की लुगदी १/४ छटांक, धतूरे के बीज २ छटांक। सबको रात को भिगो दिया गया। सबेरे औटाकर खूब गाढा होने पर उतार खरल में डाल घोटा गया (दो पहर हो जाने से छुट्टी हो गई) ४ बजे शाम को इसमें ७।। छटांक पारा जो शेष अमूर्च्छित रहा था डालकर शीत खरल में घोटा गया तो १ घंटे में पारद औषधि में मिल गया। ७ बजे तक पारद का मर्दन कराया गया।

११/६ शीत खल्व में पारद का ७ बजे से ७ बजे तक मर्दन हुआ, घीग्वार का रस भी डाला गया। पारद लीन तो हुआ पर अदृष्ट नहीं हुआ।

१२/६ आज भी ७ बजे से ७ बजे तक शीत खल्व में पारद का मर्दन हुआ। ५ बजे इसमें १।। तोले सज्जी पीसकर डाली गई। घीग्वार का रस भी पड़ता रहा। आज पारद पूरी तरह मूर्च्छन हो गया अर्थात् अदृष्ट हो गया।

१३/६ आज भी पारद का तप्त खरल में मर्दन हुआ। १२ घंटे आज प्रातः इसमें ७।। छटांक २ रुपये भर पारा जो 3rd part मूर्च्छन में निकला था। इस कारण से खल्व में डाल दिया कि वह भली प्रकार मूर्च्छन न हुआ था। यह मिल तो शीघ्र ही गया किन्तु अदृष्ट नही हुआ।

१४/६ आज तप्त खल्व से सुखाकर औषधि से १० छटांक पारा पृथक् हुआ और फिर धूप से सुखाकर २ छ० पारा पृथक् हुआ।

१६/६ 4th part की औषधि चूर्ण को डौरू में ३ प्रहर की आंच दी गई।

१७/६ खोलने से ३।। छटांक पारा निकला।

सब पारा १० छटांक-छ०+३।। छ०=१५।। छटांक निकला और डाला गया ता। ७।। छ,+७।।+२) भर=१५+२) भर अर्थात् कुछ घटी न पड़ी पर अबकी तोल ठीक न थी।

3rd & 4th part में डाला गया था–) १=४ भर और सब हुआ ऽ१ -२ भर अर्थात् २) भर कम हुआ –से छ० रु०

कुल पारे की तोल अब–

१–१–२ 1st & 2nd part

१–२–२ 3rd & 4th part

२–३–४

पर इकट्ठा तोलने पर २ सेर ३ छटांक ३।। रुपये भर हुई=१६०+१५+३।। कुल १७८।। तोले। पहाड़ पर चले जाने से आगे काम बंद रहा।

ॐ शिवाय नमः

पारद का तृतीय मूर्च्छन

1st part पहला भाग

(त्र्यूषणं त्रिफलावंध्या) की रीति से

सोंठ, मिरच, पीपल, हर्ड, बहेड़ा, आंमला, चित्रक, निशा, सब आधी आधी छटांक अर्थात् ४ छटांक को घीग्वार का रस ८ छटांक, आंक का रस ७ छटांक, धतूरे का रस ७ छटांक, कटेरी का रस ७ छटांक में भिगो दिया।

२४/८ आज इसमें कटेरी के फल की लुगदी १/२ छटांक, आक की जड़ की लुगदी १/२ छटांक और धतूरे के कच्चे फल की लुगदी १।। छटांक डाल कर औटाया गया। ३ घंटे खूब गाढा रबड़ी से भी ज्यादा गाढ़ा हो जाने पर

उतार ठंडा कर थोड़ी देर खरल में घोटा गया। ४ बजे तक शाम इस दवा में से ३/४ दवा में थोड़ा पारा डाल घोटा गया तो ६ बजे तक १ सेर पारा मिल गया।

२५/८ आज ८ बजे १/४ बची हुई दवा खरल में और डाली गई और काले धतूरे के कच्चे फलों के बीज की लुगदी १/२ छटांक और डाली गई ९।। बजे तक घुटने के बाद ४ छटांक१) भर पारा और १।। तोला ऊन की राख और १। तोले जवाखार और डाला गया। ११ बजे तक घुटने से पारा मिल गया। ११।। बजे सलूनो की वजह से छुट्टी हो गई।

२६/८ आज ८ बजे से ६ बजे तक पारा घुटा। शीत खल्व में बहुत ही बारीक रवे हो गये थे।

२७/८ आज ७ बजे से ६ बजे तक पारा घुटा, दोपहर गर्म खरल में और बाद को थंडे खरल में गरम खरल में घोटने से खरल के किनारों पर जो दवा खुश्क पकड़ती थी, उसमें पारे के रवे पड़ जाते थे। इस खयाल से दो पहर बाद गरम खरल न रखा गया। दो पहर तक जो रवे पारे के पड़ गये थे वह वैसे ही रहे।

२८/८ आज ७ बजे से ६ बजे तक पारा शीतखल्व में घुटा। सब पारा यद्यपि पूर्ण अदृष्ट नहीं हुआ परन्तु करीब करीब हो गया किन्तु जो रवे काले मोटे हो गये थे वह वैसे ही रहे।

२९/८ आज दवा गाढी हो जाने से पारा छूटने लगा। खरल को गरम कर घोटने से)१ =सेर पारा जुदा हो गया। १२ बजे तक फिर घोटना बंद करना पड़ा। ज्यादा गाढा हो जाने से हाथ नहीं चलता था। लाचार होकर धूप में सुखाया गया। शाम तक ऽ–छटांक पारा और निकल आया।

३०/८ आज पारे को सुखाकर घोटने से चूर्ण हो गया। आज पारा बहुत थोड़ा निकला। कुल पारा वजन कर ऽ१≡सेर २ पैसे भर कम हुआ अर्थात् सवा या डेढ छटांक पारा दवा में रह गया। अबकी बार पारा अदृष्ट नहीं हुआ।

2nd part दूसरा भाग

३०/८ आज रस निकाले गये।

३१/८ आज त्र्यूषण, त्रिफलादि के ४ छटांक चूर्ण को और कटेरी के फल की लुगदी १ छटांक जड़ की लुगदी १ छटांक, धतूरे के कच्च फलों के बीजों की लुगदी १ छटांक, आक के जड़ की लुगदी १/२ छटांक, घीग्वार का रस ११ छटांक, आक का रस ८ छटांक, धतूरे के पत्तों का रस ८ छटांक मिला पहर भर औटाया गया और आज ४ बजे दवा तैयार की हुई में आधी छटांक कम एक शेर पारा डालकर घोटा गया। शाम के ६ बजे तक सब पारा मिल गया।

१/९ आज ७ बजे से ६ बजे तक पारे का ठण्डे खरल में मर्दन हुआ। पारा मिल गया पर बारीक रवे मौजूद रहे यानी अदृष्ट नहीं हुआ। आज १।। तोले. ऊन की राख पारे में डाली गई।

२/९ आज ७ बजे से ६ बजे तक शीत खरल में मर्दन हुआ। १। तोले जवाखार डाला गया ऽ=आध पाव घीग्वार का रस भी डाला गया। पारा अदृष्ट आज भी न हुआ।

३/९ आज भी ७ बजे तक शीतमर्दन हुआ। घीग्वार का रस २ छटांक पड़ा। अदृष्ट आज भी न हुआ।

४/९ आज पारा ४ बजे तक गरम खरल में घोटा गया। शाम को गाढा हो जाने पर कुछ पारा जुदा हो गया।

५/९ आज खरल को धूप में सुखा पारद जुदा किया गया। कुल पारा १२।। छटांक हुआ। ३ छटांक पारा दवा में मिला रह गया।

अनुभव

अबकी बार दोनों भागों में पारा मिल तो शीघ्र गया और रवे भी बहुत बारीक हो गये मगर अदृष्ट दोनों बार नहीं हुआ। जहां तक खयाल होता है "पारा ज्यादा पड़ता है" केवल ऽ।॥ पाव पारा इस खरल में भलीभांति मूर्च्छन हो सकता है मगर १० मई वाले मूर्च्छन में १।। सेर पारा करीब करीब मूर्च्छन हो गया था (निश्चय ही थोड़ा पारा डालने से अच्छा मूर्च्छन होता है)।

इस क्रिया से मूर्च्छन करने से निम्नलिखित बातो का खयाल रहे।

(१) कटेरी का रस और (जड़ और बीज की) लुगदी भी डाली जावे। पत्ते और डण्डों में कांटे होते हैं इसलिये उसका रस ही ले सकते हैं। (कटेरी एक प्रकार की मिली दूसरी की तलाश होनी चाहिये)

(२) आक का दूध लेना चाहिये। रस बहुत पतला और कम पकड़वाला होता है कुछ जड़ की छाल की लुगदी भी ले सकते हैं। (अवश्य दूध लेना चाहिये)

(३) धतूरें के पत्तों का रस फल की लुगदी लेनी चाहिये।

(४) कुल औषधियों का काढ़ा इन रसों में बनाना चाहिये। जल न मिलने पावे।

(५) ऊन और जवाखार पीछे खरल में डालना गालिबन ठीक होगा।

(६) काढ़ा खूब रबड़ी से भी ज्यादा गाढ़ा होना चाहिये। पतला ज्यादा रहने सा पारे को ग्रसता नहीं है।।

(७) पारद खरल में थोड़ा खिपता खिपता डालना चाहिये और दवा ठण्डी होने पर पारा डाला जावे।

(८) शीत खरल में घोटना ठीक होगा। पारा मिल जाने पर यदि चाहो गरम खरल में घोट सकते हो पर गर्म घोटते समय दवा को पतली रखो, ज्यादा सूख जाने से पारे के रवे किनारों पर पैदा हो जाते हैं।

६/९ आज दोनों भागों के चूर्ण को डौरू में बंद कर ३ पहर की आंच दी गई।

७/९ आज डौरू खोलने से ३।। छटांक पारा निकला और डोरू के ऊपर की हांड़ी गीली निकलने से कुछ पारा उसमें लगा रह गया। नीचे की हांडी में भी पारा उड़कर ऊपर की तरफ इधर उधर किसी चिकटी हुई चीज के साथ लगा हुआ रह गया। कदाचित् जवाखार का ही यह असर हो ऊपर की हांडी में कुछ तराई अधिक पहुंचने से भी सील रहना मुमकिन है हांडियों को धूप में रख दिया गया और जो कुछ पारा खुश्क होने पर निकला वह मिला दिया गया। कुल पारा तोलने से २ सेर ३ छटांक २ रुपये भर हुआ और था २ सैर ३ छ० ३।। रुपये भर सो १।। रुपये भर पारा अभी और बाकी है। ऊपर की हांडी में कुछ बाकी नहीं रहा। नीचे की हांडी से पारा नहीं छूटा चिकट गया इसलिये उसको नींबू के रस से धोकर पारा छुटाया गया फिर उस पारे और रस को धूप में सुखाकर पारा जुदा किया तो कुछ कम तोले भर निकला कुछ रवे गूदे में मिले रह गये। अब कुल पारा २ सेर ३ छ० ३ रुपये भर समझना चाहिये।

७/९ आज उक्त पारद को गरम मट्ठे में खूब मलकर धोया गया।

चतुर्थमूर्च्छन

(अष्ट संस्काराध्याय के श्लोक १८८ से १८९ की क्रिया से)

८/९=८ से १० तक ३ दिन –ऽ। पाव भर+१३।। तोले पारे को सज्जी, जवाखार, खारीनोन, साम्हरनोंन, सैंधानोंन, कालानोंन, नींबू का रस, इमली से घोटा गया। शीत खल्व में १।। दिन फिर गरम खरल में फिर दो तोले हींग डालकर घोटा। मगर पारा मिला नहीं, लाचार रहे।

११/९ को पारा जुदा किया गया तो गाढ़ा होने पर पौने चार छटांक पारा निकला फिर दवा को धूप में सुखाया गया तो १।। तोले पारा और निकला फिर दवा को धूप में सुखाया गया तो १।। तोले पारा और निकला, बाकी दवा में रह गया इकट्ठा तोलने से पारा ऽ। पाव भर हुआ, १।। तोले पारा दवा में बाकी रहा, यह दवा आगे खरल में मिला दी गई।

११/९ आज १।। सेर ३ छटांक पारे को सज्जी २ छटांक, सैन्धव २ छटांक, खारी २ छटांक, कालानोंन २ छ० साम्हार २ छ० नमक में नींबू और इमली का रस डाल शीतखल्व में ३।। बजे से घोड़ा गया ६ बजे

तक।

१२/९ आज ६ बजे से ६ बजे तक घुटाई हुई, नींबू का रस और डाला गया, दो पहर तक शीत खरल में, दोपहर बाद तप्तखरल में मर्दन हुआ, शाम को पहले हिस्से की दवा का सूखा चूर्ण भी इसी में डाल दिया गया।

१३/९ आज भी पारा तप्त खरल में ६ बजे से ६ बजे तक घुटा। रस नींबू का और पड़ा।

१४/९ आज दो पहर तक तप्त खरल में पारा घुटने के बाद दवा गाढी हो जाने से आधपाव कम दो सेर पारा निकला। पहला था ऽ। पाव भर सब हुआऽ२=

१५/९ आज ३) रुपये भर पारा सूखी दवा में और निकला। सब २ सेर+ २ छ०+३ रुपये भर हुआ यानी १ छटांक दवा में रह गया।

१६/९ आज डौरूयंत्र से पारा को प्रहर की आंच दी गई।

१७/९ आज डौरू खोलने से १ छटांक पारा और निकला लेकिन कुल इकट्ठा तोलने से पारा २ सेर ३ छटांक ही बैठा यानी ३) रुपये भर कम हुआ, लेकिन दवा में खफीफ पारा रह गया और कुछ बादल होने की बजह से और कुछ नमक का प्रयोग होने की बजह से सील पैदा हो जाने से निकालने में छीज गया।

१८/९ आज कल के डोरू की निकली राख को फिर डोरू में चढ़ाया गया और तीन प्रहर की आंच दी गई तो ॥) भर पारा और निकला सब पारा २ सेर ३ छटांक ॥) भर हुआ अर्थात् २॥) भर घट गया।

२०/९ आज मुर्ली नौकर छुट्टी ले गया।

अनुभव साधारण मूर्छन

२२/९ हरड, बहेडा, आंवला, चीता, सबका चूर्ण आधी आधी छटांक यानी सब आध पाव को ऽ१।–सेर घीग्वार के रस में रात को भिगो सबेरे पहर भर के करीब औटा कर रबड़ी हो जाने पर उतार लिया गया। कुछ मोटा दीखने से खरल में ३ घंटे घोटा गया।

२३/९ आज खरल में ऽ। पाव भर पारा हिंगुलोत्थ डाला गया। डालते ही आध घंटे में मिल गया। ६ घंटे घुटने में प्राय: नष्ट पिष्टी हो गया। देखने से भी रवे नहीं दीखते, हां बहुत गौर के बाद बहुत बारीक रवे बहुत रोशनी में दीखते थे।

२४/९ आज भी पारा ७/८ घंटे घुटा। शीतखल्व में रवे कुछ और बारीक हो गये किन्तु बहुत गौर से फिर भी दीखते हैं।

२५/९ आज भी ७/८ घंटे घुटाई हुई। आज पारद मेरी समझ में नष्टपिष्टी हो गया था किन्तु रामेश्वरानंद राजवैद्य ने खरल से किंचित् औषधि पोरुवेपर लेकर उँगली और अँगूठे से किंचित् मसली तो उँगली पर पारे के परमाणु दीख पड़े और उन्होंने कहा कि अभी मूर्च्छन में कसर है। मेरी राय में उनका कहना ठीक है और अब तक जितन मूर्च्छन हुए हैं उनमें कोई मूर्च्छन इससे अधिक नहीं हुआ अर्थात् पूर्ण मूर्च्छन नहीं हुआ किन्तु इससे अधिक होने की आशा भी नहीं है।

२६/९ आज भी पारा दिन भर ११ घंटे खरल में घुटा। जरूरत पर घीग्वार का रस पड़ता रहा किन्तु अधिक मूर्च्छन न हुआ। शूद्धी के मूर्छन में इससे अधिक मूर्च्छन होना संभव नहीं दीखता।

२७/९ आज सुखाकर पारा निकाला गया। २॥ छटांक निकला बाकी दवा को सुखा डौरूयंत्र में भर दिया।

२८/९ आज डौरू को ३ प्रहर की आंच दी गई।

२९/९ आज डौरू से १॥ छटांक पारा निकला। सब ऽ। पाव भर पारा निकल आया। इतना ही डाला था।

नक्शा मर्दन संस्कार

नम्बर	तारीख	तोलपारद जो रखा गया	नामऔषधि जिनके साथ मर्दनकियागया	तोल औषधि	नामद्रव जिसके साथ घुटा	तोलद्रव	खल्व प्रकार	समय मर्दन	तोल पारद जो निकला	तोल पारा जो घटा	विशेष वार्ता
१ मर्दन	१०।२।०४	१९७)॥तो०	इष्टिका चूर्ण +हल्दी	१।+१।छ० =२॥छ०	जंभीरीनींबू विजौरा–	५सेर नीबुंओं का रस	तप्तखल्व	९ घंटे	+	+	ये मर्दन संस्कार रसरत्नाकर की क्रिया से किया गया इष्टिकाचूर्ण व रजनी दोनों मिलाकर पारद से षोडशांश डाली गई थी। कर्म ८ बजे से ८ बजे तक १२ घंटे चलता है किन्तु वास्तव में १० घंटे ही मर्दन होता है
	११/२/०४	+	+	+	॥						
	१२/२/०४	+	+	+	॥		॥	१० घंटे	+	+	
	१३।२।०४	+	÷	÷	+		॥	११ घंटे	+		
						+	+	+	१तोला कम	ऽ२॥सेर÷	
२	१५/२/०४	१९९तोले	अंकोलकेजड़कीछाल फरफेंदुए का गूदा	१।+१।–२॥ छटांक	घीग्वारकारस	+२॥पट्ठों-का रस	तप्तखल्व	८ घंटे	+		
	१६।२।०४	+	+	+	॥	८पट्ठोंका रस	अल्पतप्त खल्व	११ घंटे	+		आज खरल इस कारण अल्प तप्त रखा गया कि दवा गाढी थी, कहीं जल न जावे और गाढी इस कारण रखी कि पारद और औषधि घोटने में खूब आवें।
	१७/२/०४	+	+	+	॥	॥	॥	१२ घंटे	+		दवा ज्यों ज्यों गाढी होती जाती थी पारा जुदा होता जाता था–जब फिर रस डालने से पतली दवा हो जाती थी तो पुन: पारा मिल जाता था। इस वास्ते रबड़ी सा गाढा घुटना ठीक है।

नम्बर	तारीख	तोल पारदजो रखा गया	नामऔषधि जिनके साथ मर्दनकियागया	तोल औषधि	नाम द्रव जिसके साथ घुटा	तोलद्रव	खल्व प्रकार	समय मर्दन	तोलपारद जो निकला	तोलपारद जो घटा	विशेष वार्ता
मर्दन	१८/२/०४	+	अंकोलकाचूर्ण	२ तोले	॥	॥	॥	११ घंटे	+		इस ख्याल से कि पारद भलीभांति लीन नहीं होता २ तोले अंकोल का चूर्ण और डाल दिया गया।
	१९/२/०४	+	+	+	॥	॥	तप्तखल्व	१२ घंटे	+		पारद अब जरूर लीन हो गया किन्तु गौर से देखने से बहुत बारीक बारीक २ रवे जरूर दीखते थे। यदि पारद और औषधि हो तो कुछ अधिक मूर्च्छन होने की आशा हो सकती है।
	२०/२/०४	+	+	+	॥	॥	॥	१२ घंटे	+		आज सातवां दिन था–दो पहर तक रस डाला गया
	२१/२/०४	+	+	+	॥	॥	॥	१२ घंटे	+		
	२४/२/०४	+	+	+	॥	॥	॥	+	१९६।।।तो० पातन द्वारा निष्कासित	२।तोले	पारद का निष्कासन डौरुयंत्र द्वारा किया गया।
३	२४/२/०४	१९६।।।तोले	अमलतासकी फलीका गूदा	२।।छ०	घीग्वारकारस	॥	तप्तखल्व	८ घंटे			
	२५/२/०४	+	+	+	॥	॥	॥	१२ घंटे	+	+	इस अमलतास में पारद अंकोल से अधिक लीन हुआ।
	२६+२७+२८	+	+	+	॥	॥	॥	+	+	+	बिसौली जाने के कारण काम बंद रहा।
	२९/२/०४	+	अमलतासकीफली फलीकागूदा	२ छ०	॥	॥	॥	११ घंटे	+	+	पारद का रूप भलीभांति नष्ट होने के कारण अमलतास की फली का २ छटांक गूदा और डाल दिया गया तो पारद कुछ अधिक लय हुआ। १/१६ की जगह १/८ औषधि डालनी योग्य है।
	१/३/०४	+	+	+	+	+	+	१० घंटे	+	+	एक नौकर बीमार हो जाने से काम कम चला–रस भी अधिक न पड़ा–औषधि की मात्रा पूरी थी। पारद लीन तो हुआ किन्तु रूप नष्ट नहा हुआ।
	२/३/०४	+	+	+	+	+	+	+	+	+	धूल यानी होली की वजह से काम बंद रहा।
	३/३/०४	+	+	+	॥	॥	॥	१० घंटे	+	+	नौकर बीमार हो जाने से काम कम चला।
	४/३/०४	+	+	+	॥	+	॥	११।। घंटे	+	+	पारा मिल जरूर गया किन्तु अदृश्य नहीं हुआ जो बड़े भ्राता बाबू हनूमानप्रसाद साहब ने कहा कि मैंने जो अंकोल की जड़ के काढ़े में मर्दन किया था तो पारा मिलकर अदृश्य हो गया था।
	५/३/०४	+	+	+	॥	+	॥	११।। घंटे	+	+	
	६/३/०४	+	+	+	+	+		३ घंटे	१९५।।तोले	१। तोले	खरल में स्वतः पृथक् होने से शेष रहा पारद डौरू द्वारा पातन कर निकाल लिया जाता था।
४	९/३/०४	१९५ तोले	चीतेकाचूर्ण	२।। छटांक	घीग्वारकारस		तप्तखल्व	१२ घंटे			पारद दवा से बिल्कुल पृथक् रहा, रस खूब पड़ा।
	१०/३/०४	+	+	+	॥		॥	११घंटे			पारद पृथक् रहा–रस खूब पड़ा।
	११/३/०४	+	+	+	॥		॥	११ घंटे			
	१२/३/०४	७ मासे	+	+	॥		॥	११ घंटे			आज जो ७ माशे पारा डाला गया था वह पातन के निकले चूर्ण में निकला था।

नम्बर	तारीख	तोलपारद जो रखा गया	नाम औषधि जिनकेसाथ मर्दनकियागया	तोल औषधि	नाम द्रव जिसके साथ घुटा	तोलद्रव	खल्व प्रकार	समय मर्दन	तोलपारद जो निकला	तोलपारद जो घटा	विशेष वार्ता
मर्दन											पारद चीते में बिल्कुल नहीं मिलता इससे सिद्ध हुआ कि यह कम मूर्च्छन नहीं है केवल मर्दन है।
	१३+१४+१५	+	+	+	॥		॥	३३ घंटे			
	१६/३/०४	+	+	+	+		+	३ घंटे	१९२)॥तोले	३ तोले	
५	१८/३/०४	१९२ तोले	काले धतूरे केबीजोंकाचूर्ण	२॥ छटांक	घीग्वारकारस		तप्त खल्व	८ घंटे			
	१९+२०	+	+	+	॥		॥	२३ घंटे			
	२१/३/०४	+	काले धतूरे केबीजोंकाचूर्ण	१। छटांक	॥		॥	११॥ घंटे			पारद औषधि में न मिला इस वास्ते आज १। छटांक धतूरबीज चूर्ण और डाल दिया किन्तु तब भी न मिला।
	२२+२३+२४	+	+	+	॥		॥	३६ घंटे			
	२५/३/०४	+	+	+	+		+	८ घंटे			
	२७/३/०४	+	+	+	+		+	+	१९०। तोले	२। तोले	
६	२७/३/०४	१९१ तोला	त्रिफला चूर्ण	२॥ छटांक	घीग्वारकारस	+	तप्तखल्व	२॥ घंटे			
	२८+२९+३०	+	+	+	॥	+	॥	३६ घंटे			
	३१/३/०४	+	त्रिफलाचूर्ण	१। छटांक	॥	+	॥	१२ घंटे			
	१+२+३ अप्रेल	+	+	+	॥	+	॥	३६ घंटे			इस त्रिफला के मर्दन में पारद बिल्कुल पृथक् रहा। ता० १ आज खरल में पारद पर से दवा हटाने से पारद पर सफेद कांचली नजर पड़ी जब उंगली से उस कांचली को हटाया तो टूट कर ऐसे जुदा हो गई जैसे कलई की नाद रखी रहने पर इसके पानी के ऊपर एक कांचली सी पड़ जाती है।
	४/४/०४	+	+	+	+	+	+	३ घंटे			
	६/४/०४	+	+	+	+	+	+	+	१९२ तोले		गरज कांजी से धो कपड़े में छान तोलने पर भी तोल में बढ़ा–अबकी दफे कन्हैयालाला ने कहा कि ५० रुपये आधपाव पारे के गिरधारी लाल वैद्य बनवारी (जो पारे के काम में अर्थात् घोटने पीसने वालों में नौकर था) देते थे–इसलिये पारे में शुबहा पड़ा, रंगत ठीक रही। कपड़े पर स्याही भी न थी। तोल में थोड़ा शक पड़ा और पूंछ पारे में रहती थी–यह एक बड़े शंका की बात थी लेकिन मुमकिन है कि खरल का लोहा मिल जाने से ऐसा हुआ हो क्योंकि अब की बार त्रिफला में खटाई का योग होने से लोहे का अधिक योग पारे में आना मुमकिन है।
७	१०/४/०४	१९२	त्रिकुटा चूर्ण	२॥ छटांक	घीग्वारकारस	+	तप्तखल्व	१० घंटे			
	११/४/०४	+	+	+	॥	+	॥	१२ घंटे			
	१२+१३+१४ +१५+१६		त्रिकुटाचूर्ण ता० १३ में	१॥ छटांक	॥	+	॥	६० घंटे			
	१९/४/०४	+	+	+	+	+	+	+	१९१ तोले	१ तोले	त्रिफला घुटने से पारद पर कांचली सी दीख पड़ी थी। आजकल नहीं दीख पड़ती इससे खयाल होता है कि त्रिफला में खटाई होने से पारद ने लोहे से अधिक अंश चाटा, वही कांचलीरूप दृष्टि पड़ता था और शायद

नम्बर	तारीख	तोलपारद जो रखा गया	नाम औषधि जिनकेसाथ मर्दनकियागया	तोल औषधि	नाम द्रव जिसके साथ घुटा	तोलद्रव	खल्व प्रकार	समय मर्दन	तोलपारद जो निकला	तोलपारद जो घटा	विशेष वार्ता
मर्दन											इसी वजह से तौल भी बढ़ी हो पर फिर तोला तो अभी तक अधिक है, इसलिये अंश लोह के मौजूद है तो कांचली कहां गई? उत्तर–मुमकिन है जो अंश पारद में लय हो गया वह अदृश्य हो गया जो उस समय घोटने में नया लोहा खरल से आता हो वह जब तक पारद में लीन न होता हो उस समय तक ऊपर दीख पड़ता हो किन्तु पारद की तोल बढ़ने से लोह का ग्रसित होना सिद्ध होता है लय होना नहीं।
८	१९/४/०४ २०+२१+२२ २३+२४	१९१ तोला +	गोखरूका चूर्ण +	२॥ छटांक +	घीग्वारका रस ॥	+ +	तप्तखल्व ॥	३ घंटे ६० घंटे			
	२५/८/०४	+	+	+	+	+	+	+	१९१ तोले	+	एक बर्तन से दूसरे बर्तन में करने से पारे में पूंछ जरूर रहती है अब तक छानन में जब २ तोले के करीब पारा बाकी रह जाता है तब उसके निचोड़ने से उसके संग कुछ मैल छन कर नीचे पारे पर दीखने लगता है। इससे जान पड़ता है कि पारे का मैल पीछे रह जाता है और शुद्ध पारा पहले छन जाता है। अगर पिछले भाग को अलग करा दिया जाय तो अच्छा हो।

ॐ शिवाय नमः

नक्शा मूर्च्छन संस्कार–(यो० र० वै० क०)

त्र्यूषणात्रिफलावन्ध्याकन्दैः क्षुद्राद्वयान्वितैः।चित्रकेण निशक्षारकन्यार्ककनकद्रवैः।।सूतं किं तेन यूषेण वारान्सप्ताभिमर्दयेत्।।

नम्बर	तारीख	तोलपारद जो रखा गया	नाम औषधि जिनकेसाथ मर्दनकियागया	तोल औषधि	नाम द्रव जिसके साथ घुटा	तोलद्रव	खल्व प्रकार	समय मर्दन	तोलपारद जो निकला	तोलपारद जो घटा	विशेष वार्ता
मर्दन			त्रिकुटा त्रिफला कटेरीचीता हल्दी यवक्षार	प्रत्येक १॥छ० सब ७॥छ० १ तोले	त्रिकुटा– त्रिफला कटेरीचीता हल्दीक्वाथ	ऽ॥।					त्रिकुटा आदि औषधियों का काढा चतुर्थवशेष अर्थात् ३ सेर पानी का ऽ। आज तैयार कर लिया गया किन्तु आज काम में नहीं आया।
	२७/४/०४	१९१ तोले			(घीग्वारका) अर्कपत्र का धतूरेका कटेरीका रस	प्र०१छ सब ऽ।	शीत खल्व	८ घंटे			पहले उक्त पारद को १ छ० धतूरे के रस में २ घंटे घोटा गया तो बिन्दु पृथक् पृथक हो गये फिर आक के पत्तों का रस डाला गया तो पारा इकट्ठा हो गया इसमें भी ३ घण्टे घुटा फिर कटेरी का रस डाला गया तो इसमें फिर बिंदु पृथक पृथक हो गये इसमे भी २ घण्टे घुटा। घीग्वार के रस में आज न घुटा।

नम्बर	तारीख	तोलपारद जो रखा गया	नाम औषधि जिनकेसाथ मर्दनकियागया	तोल औषधि	नाम द्रव जिसके साथ घुटा	तोलद्रव	खल्व प्रकार	समय मर्दन	तोलपारद जो निकला	तोलपारद जो घटा	विशेष वार्ता
मर्दन	२८/४/०४	॥	यवक्षार	१ तोले	उपरोक्त क्वाथ		शीत तप्तखल्व	१२ घण्टे			आज उपरोक्त काढे के साथ ६ घण्टे शीथखल्व में और ६ घण्टे तप्तखल्व में घुटा। पारा काढे से पृथक पृथख रहा। ३ बजने पर १ तोले जवाखार भी डाला गया।
	२९/४/०४	॥			(घीग्वारका) (कटेरीका रस)	+		१२ घण्टे			
	३०/४/०४	॥	+	+							
	१/५/०४	॥	+	+	+	+	+	+	१७ तोले १	४ तोले सफूफमें मिलारह गया	पारद पृथक रहा। चिन्ता हुई कि मूर्च्छन कैसे हो काम बन्द रहा मूर्च्छन के लिये काढा और बनाया गया।
१।२	२/५/०४	४० तोले	भेडके ऊनकी राख	१। तोले	क्वाथ	+	+	+	+		४ तोला पारा सफूफ में मिला रह गया उस सफूफ को अलग रख दिया। यह क्वाथ उपरोक्त औषधियों का इस प्रकार तैयार किया गया कि पौन पौन छटांक त्रिकुटा त्रिफला चीता हल्दी इनका चूर्ण यानी सब मिलाकर ३ छटांक चूर्ण को ऽ॥।घीग्वार के रस ऽ। सेरे आक के पत्तों का रस ऽ।=कटेरी का रस और ऽ=काले धतूरे के रस अर्थात् सब ऽ१॥। सेर रस में रात भर भिगो दूसरे दिन पहर भर आंच दी गई और औटते में १ छटांक आक की जड़ की छाल की लुगदी और १ छटांक धतूरे के पत्तों की लुगदी ओण २ तोले जवाखार भी डाला गया। गाढी गाढी कढी सी हो जाने पर उतार लिया गया। इस क्वाथ में १। तोले भेड़ के ऊन की राख डाली गई, रवे रवे हो कर पारा मिल गया।
	२/५/०४	२० तोले	+	+	घीग्वारका रस आकका दूध	+	शीत खल्व	१२ घण्टे	+		तारीख २–पारा खरल का बदस्तूर मिला हुआ था। उसमें पाव भर पारा और डाला गया तो ६ घण्टे में वह भी वैसा ही मिलगया
	३/५/०४	+	+	+	उक्तक्वाथ–घीग्वारका रस	+	शीत खल्व	१२ घण्टे			जरूरत पर यानी ज्यादा गाढा होने पर काढा जो रखा था उसमें आक का दूध मिला कर ३–४ बार गाढा, गाढा कढी सा घोटा गया। अब पारा सब मिल गया। यहां तक कि बहु गौर से देखने से यह जान पड़ता है कि दवा में पारे के बारीक बारीक रवे मौजूद है।
	४/५/०४	+	+	+	उक्त क्वाथ	+	॥	१२ घण्टे	+		आज सिर्फ १ दफे सवेरे बचा हुआ क्वाथ डाला गया। पारद आज वास्तव में लीन हो गया यहां तक कि अब गौर करने से भी पारा नहीं दीखता, हां कहीं कहीं शुबहा पड़ता है कि पारे के बहुत सूक्ष्म अणु है। बस यही मूर्च्छन कहा जा सकता है जय श्रीशङ्कर स्वामी की।
	५/५/०४	+	+	+	+	+	॥	४ घण्टे	२० तोले २	४० तोले सफूफमें मिलारहा	अनुभव–मूर्च्छन के लिये पारद से चतुर्थांश औषधि के प्रयोग की अवश्यकता है वह भी काढा कर डाली जावे और काढे से केवल जल न लिया जावे किन्तु सब औषधि बिना छाल दी जावे। इस खरल में जिसका आकार पहले लिख चुके हैं ३ पाव पारा और ३ छटांक औषधि का क्वाथ ही एक दफे घुट सकता है। मूर्च्छन के लिये लसदार औषधि की आवश्यकता है। आक का रस कम पड़ना चाहिये। उसमें लस भी नहीं है और वह पारद को बखेरता भी नहीं है। दूध डाला जाय तो और भी अच्छा।

नम्बर	तारीख	तोलपारद जो रखा गया	नाम औषधि जिनकेसाथ मर्दनकियागया	तोल औषधि	नाम द्रव जिसके साथ घुटा	तोलद्रव	खल्व प्रकार	समय मर्दन	तोलपारद जो निकला	तोलपारद जो घटा	विशेष वार्ता
१/३ मर्दन	६/५/०४	८० तोले	+	+	क्वाथ	+	शीत खल्व	२ घण्टे	+		यह क्वाथ इस प्रकार तैयार किया गया–त्रिफला, त्रिकुटा, चीता, हल्दी का चूर्ण १२ तोले, कटरी की जड़ सूखी २॥ तोले। आक की जड़ की लुगदी १ छटांक, धतूरे के पत्तों की लुगदी आध पाव। इनको धतूरे का रस ऽ कटेरी का रस ऽ। आक का रस ऽ में भिगो दिया दूसरे दिन उन भीगी हुई दवाओं में कटेरी के फल की लुगदी २॥ तोले धतूरे के बीज सूखे पिसे हुए २॥ तोले, घीग्वार का रस ऽ। आक का रस ऽ। और डालकर २ घण्टे औटाया गया।
	७/०५/०४	+	मूलीखार	१ तोले	घीग्वारका रस	+	शीत खल्व	१२ घण्टे	+		आज ९ बजे तक सब पारा दवा में मिल गया और शाम तक पारे के रवे बारीक हो गये थे। आज ४। बजे इसमें (जवाखार न मिलने की वजह से) १ तोला मूली का क्षार डाला गया।
	८/५/०४	४५ तोले	+	+	॥	+	॥	१२ घण्टे	+		आज खरल में जो ९ छटांक पारा बचा हुआ था डाल दिया गया, इस ख्याल से कि थोड़े के लिये और धान डालना पड़ेगा और डालने से यह तजरुबा भी हो जायेगा कि एक दफे में कितना मूर्च्छन इस खरल में हो सकता है। आज ३ घण्टे घुटने पर पारा खरल में मिल गया। शाम तक पारद को रवे बारीक हो गये। आज पारद के रवे इतने बारीक हो गये थे कि गौर के बाद दीखते थे।
	९/५/०४	+	+	+	॥	+	॥	१२ घण्टे	+		
	१०/५/०४	+	+	+	॥	+	॥	१२ घण्टे	+		अब पारद दृष्टि नहीं पड़ता।
	११/५/०४	+	+	+	+	+	+	+	१४॥ छ० ३	५१ तोले सफूफमें रहा	ता ११ व १२ को थोड़ा तप्त खल्व में घोट खुश्क कर दवा के टुकड़े बिखरने माफिक हो जाने पर घोट पहले दिन ८॥ छ० और दूसरे दिन ६ छटांक पारा निकला। बाकी चूर्ण में मिला रह गया। ५२॥ तोले अनुभव–बिल्कुल सुखा कर घोटने से पहले जब दवा बिखरने लायक खुश्क हो जावे तब पारा जुदा कर लेना मुनासिब जान पड़ता है पीछे सुखाकर फिर निकाले।

पारद का संस्कार पुनः आरम्भ

३१/१०/०४–पारद संस्कार जो रामेश्वरनंदजी वैद्य मुम्बई के आने से और चन्द्रोदय और गंधक जारण के अनुभव प्रयोग करने से बंद हो गया था पुनः आरम्भ हुआ। पारद का मकोय में मर्दन आज तक कभी नहीं हुआ था और मकोय में मर्दन करना ध० सं० साधारण शोधन किया सप्त सागर से अवश्य जान पड़ा।

३१/१०–इसलिये आज पारद को तप्त खरल में मकोय के रस से घोटा गया पारद २ सेर ३ छटांक था ।।) भर तोल पहले लिखे से कम बैठी गालिबन यह सन्दूक के उठाने से पारा सन्दूक में गिर गया।

१/११–आज भी पारद तप्त खरल में मकोयरस से घुटा।

२/११–आज भी गाढा हो जाने पर २ सेर १/२ छटांक पारा पृथक् हो गया।

३/११–आज खरल को धूप में सुखाया तो १।। छटांक पारा और निकल बाकी सफूफ ३।। छटांक रहा जिसमें १ छटांक पारा है, पर यह पारा भी मूर्च्छित न था। बारीक बारीक रवे थे जो संग्रह नहीं हो सकते।

४/११–३।। छटांक उपरोक्त चूर्ण को डौरू में बंद कर दिया।

५/११–सबेरे ८ बजे से आंच दी गई ५ बजे तक तो २।। तोले पारा निकला। पर आंच मंदी दी गई इसलिये गालिबन कुछ पारा रह गया टिकिया बाकी कुछ सख्त थी, इसमें भी पारे का रह जाना साबित होता है सब पारा २ सेर ३ छटांक से कुछ कम था।

पातन संस्कार[1]

(अष्टसंस्काराध्याय के श्लोक २१५ से २१७ तक की क्रिया से)

हरिद्रांकोलशंपाककुमारीत्रिफलाग्निभिः।
तण्डुलीयकवर्षाभूहिंगुसैंधवमाक्षिकैः ।।

(रसरत्नसमुच्चय)

हल्दी, अंकोल की जड़ की छाल की लुगदी, अमलतास का गूदा, हरड, बहेडश, आंवला, चीता, चौलाई की लुगदी, सांठ की लुगदी, हींग सब समान भाग सूखी चीजों को कपरछान कर गीली चीजों की लुगदी बना, घीग्वार का रस डाल तप्तखरल में घोटा गया। सब पारा २ सेर ३ छटांक डाला गया। ३ दिन तक तप्तखरल में पारा घुटता रहा, घीग्वार रस पड़ता रहा, मगर पारा जुदा ही रहा।

११/११ को पारा लाचार जुदा कर लिया गया तो २ सेर जुदा निकल आया बाकी तो तप्त खरल में घोटा गया तो गाढ़ा होने पार जो ३ छटांक पारा खरल में मोटे मोटे रवों में था वह खरल की दवा में मिल गया तब तो और ३ छटांक पारा फिर डाला गया वह भी मिल गया ३ छटांक और डाला गया फिर ३ छटांक पारा तप्त खरल में डाला गया यह भी मिल गया अब १५ छटांक पारा दवा में मिला हुआ है, रवे भी बहुत बारीक है।

अनुभव

मूर्च्छन के लिये आवश्यकता है कि दवा बारीक हो और किसी ल्हसदार चीज के साथ औटाई जाकर या घुटाकर उनमें कुछ लस पैदा हो गया हो, और खूब गाढी हो जो पारे को बखेर सके अबकी मरतबे गाढा गाढा घोटा गया था पर खूब गाढा जब तक न हुआ कुछ नतीजा न निकला यह भी जरूरी है कि पारा थोड़ा थोड़ा कई दफे में डाला जावे।

१३/११–आज दिन भर तप्त खरल में पारे को घोटा गया रवे बारीक खूब हो गये पर अदृष्ट नहीं कह सकते। रस घीग्वार भी डाला गया।

१४/११–आज रस डालना बंद रखा गया दोपहर तक तप्त खरल में घुटा फिर ज्यादा गाढा हो जाने से पारे के रवे इकट्ठे होने लगे लाचार हो घोटना बंद कर धूप में सुखाया गया धूप आज कम थी।

१५/११–बराबर धूप में सुखा धूप बहुत कम रही।

१६/११–आज भी सुखा, धूप कुछ लगी।

१७/११–आज दवा करीब करीब सूख गई। मंगोडी सी तोड़ ली गई थी पारे के रवे चकमते थे १४ तोले पारा जुदा होकर खरल के नीचे था उसको जुदा रख लिया गया। बाकी १। सेर हुई उसमें से आधी यानी १० छंटाक डौरू में बंद कर दी गई। (कुल १५ छटांक पारा दवा में था अब १२ छटांक १ तोला होगा)

१८/११–आज डौरू को ३ छटांक की आंच दी गई और आधी बची हुई दवा को दूसरे डौरू में बंद कर दिया गया।

१९/११–आज दूसरे डौरू को आंच दी गई ३ प्रहर और पहला डौरू खोला गया तो ३।। छटांक पारा और १ छटांक दवा निकली।

२०/११–आज दूसरा डौरू खोला गया तो ४ छटांक पारा और २ छटांक दवा निकली दोनों दफे का पारा ७ छटांक २ रुपये भर है और दोनों दफे की दवा २१ तोले है। आज उक्त २१ तोले दवा को और पहले ५/११ की राख को जिसमें कुछ पारा रह गया था और जो ७ तोले थी सबको मिलाकर डौरू में बंद कर दिया गया।

२१/११–आज डौरू को आंच दी गई ३ प्रहर की।

२२/११–आज डौरू मे ३) भर पारा निकला, कुछ पारा उड़ा हुआ ७ छटांक २) भर+३ भर=८ छटांक है और बिना उड़ा १+६ छ० है यानी कुल पारा १।।।=सेर है ५ छटांक घटा जिसमें १ छटांक छीजन हो तो भी ४ छटांक चोरी गया।

अर्थात् ५ छटांक पारा चोरी गया (गालिबन चोरी गया था कदाचित्)

अबकी बार कंडे की आंच से खरल तप्त किया गया था, इस कारण से किसी समय में अग्नि अधिक लग जान से पारा उड़ गया।

आगे के लिये इंतजाम

(१) शास्त्रोक्त विधि से विरुद्ध जहां तक हो न चलो। तुषाग्नि की जगह कंडे देने से नुकसान हुआ।

(२) अब पारद थोड़ा रह गया है। आगे कर्म बहुत सावधानी से और खुद अपनी निगरानी में कराओ।

(३) पारे को हर समय ताले में बंद रखो और ताली अपने पास रखो।

(४) पारे को धूप में सुखाने के लिये शीशे के सन्दूक में बद करके रखो।

(५) पारे की हांडी रात को चूल्हे ही पर रखी रहे तो वहां एक आदमी हिफाजत के लिये सोवे।

2nd Part

२५/११ हल्दी १/२ छटांक–अंकोल १/२ छटांक–अमलतास १ छ०–हर्ड १/२ छ०–बहेडा १/२ छ० बहेडा १/२ छ०–आँवला १/२ छ०–चीता १/४ छ०–सांठ की लुगदी १ छ०–हिंग छ०–सैंधानोंन १/२ छ०–शहद १ छटांक–चौला–औटाया गया–गाढ़ा होने पर उतार लिया गया–गाढ़ा माजूनसा हो गया।

२६/११ आज उपरोक्त औषध को खरल में डाल ६ छटांक पारा डाला गया और एक ही नौकर होने से केवल ५ घंटे घुटा-पारा डालते समय थोड़ा थोड़ा डाला गया और आध घंटे में दवा में मिल गया–शाम तक रवे बारीक हो गये–आज आवश्यकता पर थोड़ा थोड़ा घीग्वार का रस भी डाला गया–पारा मिल जाने के बाद भूसे और मेंगने से खरल तप्त भी किया गया।

१–पातन संस्कार के पूर्व उत्थापन के लिखने की आवश्यकता थी परन्तु प्रत्येक मूर्च्छनसंस्कार के साथ उत्थापन होने से पृथक् नहीं लिखा गया।

२७/११–आज भी तप खरल में रस डाल डाल कर ६ घंटे पारा घुटा (२८/११+)

२९/११ आज दो नौकर (एक नत्था नौकर और रखा गया) हो जाने से पारा ९ घंटे तप्त खल्व में।

३०/११ आज दोपहर तक तप्त खरल में घोट गाढ़ा हो जाने पार खरल में ज्यादे खुश्क न कर खरल में दो पहर से धूप में रख दिया गया।

१/१२ आज दिन भर खरल धूप में सूखा।

२/१२ आज १० बजे तक धूप में खरल सूखा–फिर दवा खरल में चीने के बर्तन में निकाल ली गई खरल खूब खुरच लिया दो पहर बाद दवा चीनी के बर्तन में सूखी।

३/१२ आज दवा सूखी अब खुश्क हो गई।

४/१२ आज इस दवा में १।≡भर पारा जो जुदा हो गया था निकाल कर बड़े पारद के समूह में डाल दिया गया, बाकी दवा को हांडी में भर अपने सामने कपरौटी करा दी गई।

५/१२ आज डौरू को ८ बजे से ६ बजे तक आंच दी गई।

६/१२ सबेरे डौरू अपने सामने उतारा और खोला जोड़ पर कपरौटी ज्यादे चौड़ी पट्टी की कर देने से फूल गई थी एक तरफ अन्दर खोलते समय हांक्ष की संधि भी एक तरफ से खाली निकली। उसमें से कुछ पारा कपरौटी की पट्टी पर आ गया था पर ज्यादा उड़ा नहीं मालूम पड़ा। नीचे की हांडी में बिलकुल पारा नहीं निकला (पहले दोनों दफे पारा कुछ नीचे की हांडी में भी मिलता था जो ऊपर से गिर जाता होगा अबके सम्हाल कर देखने से नहीं गिरा) दवा २ छटांक निकली ऊपर की हांडी में ५।। छटांक पारा निकला १।।≡भर पहिले खरल में से निकल आया था केवल १= भर पारा कम बैठा दवा में चमक अभी है शायद थोड़ा पारा इसमें हो।

८/१२ और ११–१२ इस राख को और **1st part** की राख को मिला नीबूं के रस में घोट सुख डौरू में बंद कर ३ प्रहर की आंच दी गई तो नाम मात्र के भी पारा डौरू खोलने पर न निकला इससे सिद्ध हुआ कि इन राखों में कुछ पारा नहीं रहा।

3rd Part

१/१२–हल्दी १/२ छटांक, अंकोल १/२ छटांक, अमलतास १/२ छटांक हर्ड १/२ छटांक, बहेडा १/२ छटांक, आँवला १/२ छटांक, चीता १/४ छटांक, सांठ की लुगदी १ छटांक, हींग १/२ छ०, सैंधव १/२ छ०, शहद १ छ०, चौलाई का रस ५ छ०, घीग्वार का रस १६ छ०, सब को भिगो दिया गया।

२/१२ आज इसको औटाया गया खूब गाढ़ा माजून कढी सी हो जाने पर उतार लिया गया दोपहर बाद दवा को खरल में डाल १ घंटे खूब घोटा गया।

३/१२ आज औषध को तप्त खरल में डाल १ घंटा घोट ६ छटांक पारा डाला गया थोड़ा थोड़ा पहले तो कुछ मिला फिर जुदा हो गया वह खयाल कर कि दवा गाढी है, घीग्वार का रस और डाला गया तो भी कुछ नतीजा न निकला लाचार पारा जुदा कर लिया गया मगर जो थोड़ी बाकी रहा वह भी न मिला।

४/१२ आज दोपहर तक ठंढे खरल में पारद घोटा गया परन्तु कुछ नतीजा न हुआ फिर धतूरे के पत्तों का रस डाल (१० तोले ओर कुछ लुगदी भी) घोटने से कुछ पारा मिल गया।

५/१२ काम बंद (दूसरे काम डौरू में रहे)।

६/१२ आज फिर जो पारा निकला था वह डालकर और धतूरे के रस डाल ठंढे खरल में ३ घंटे पारा घोटा गया पारा मिल गया पर रवे मोटे रहे।

७/१२ आज ८ बजे से ५ बजे तक पारा घुटा पहले तप्त खरल में घुटना शुरू हुआ तो १० बजे तक पारे के रवे इकट्ठे होकर आधे से अधिक पारा जुदा हो गया दवा ज्यादा: गाढी नहीं हुई सिर्फ तप्त खरल की गरमी से ही जुदा हो गया फिर खरल ठंढ़ा कर घोटा गया तो पारा मिल गया २ बजे तक। ५ बजे देखा तो रवे खूब मिल गये।

अनुभव

2nd part में पारा जल्दी मिला था और उस समय भी शीत खल्व में आदि में पारा डाला गया था इस बार गर्म खल्व में पारा डाला गया पर कुछ थोड़ा मिलकर फिर जुदा हो गया और आज तो साफ ही जाहिर हुआ कि गर्म खरल में मिला हुआ पारा भी छूटकर पृथक् हो गया और ठंढे खरल में छुटा हुआ मिल गया इसलिये मूर्छन शीत खरल ही में होना चाहिये और शास्त्रकारों ने भी लिखा कि तप्त खल्व द्वारा उत्थापन करे इससे भी यही बात सिद्ध होती है।

८/१२ आज ८ बजे से ५ बजे तक शीत खरल में पारा घुटा आज अदृष्ट हो गया रवे बहुत ही बारीक हो गये।

९/१२ आज खरल धूप में सुखाया गया।

१०/१२ + ०

११/१२ + ०

१२/१२ + ०

१०/१२ ता० में बची हुई राख का डौरू किया गया था उसकी संधि कपरौटी से पहले मुलतानी से बंद कर दी गई थी वह बहुत ठीक रही–आगे हमेशा कपरौटी से पहले संधि मुलतानी से बंद हो और कपरौटी की पट्टी बहुत चौड़ी न हो।

१३/१२ आज शाम तक सुखाकर दवा को डौरू में भर मुलतानी से संधि बंद कर कपरौटी अपने सामने करा दी ।।।)भर पारा दवा में से छुट गया वह पृथक कर लिया गया।

१४/१२ आज डौरू को ४ प्रहर की आंच दी गई।

१५/१२–आज डौरू खोला गया तो खोलते में मालूम हुआ कि हांडियों की संधि के बीच पारे के रवे मौजूद थे और कुछ रवे कपरौटी पर आ गये थे। पारा तोला गया तो ४ छटांक ३ भर हुआ डाला गया था ६ छटांक पहले खरल में से छुट गया था ।।। भर यानी ३० भर में से २३।।। भर हुआ ६। भर घट गया अफसोस अवश्य हण्डियों का जोड़ न मिलने से यह नुकसान हुआ और मुमकिन है कि **1st part** के नुकसान की भी वजह यही हो। जोड़ हाँडियों के बहुत साफ कराकर खुद अपने हाथ से मिलाओ वरन काम बंद रखो।

4th Part

१३/१२–१/२ छटांक, अंकोल १/२ छटांक, अमलतास १/२ छटांक, हरड १/२ छ०, बहेडा १/२ छं०, आंवला १/२ छं०, हींग १/२ छं०, सैंधव १/२ छटांक, घीग्वार का रस१ सेर, चौलाईका रस ४ छटांक सोंठ के पत्तों की लुगदी १ छ०, शहद १ छटांक शाम को सबको मिला रख दिया गया।

१४/१२ आज दवा औटाई भई दोपहर तक और दोपहर बाद खरल में डाल घोटी गई।

१५/१२ आज दोपरहर से पारा डाला गया२७।। तोले ५।। छटांक, और शीत खरल में घुटा।

१६/१२ आज शीत खरल में ९ घंटे पारद घुटा पर मिला नहीं। ७/१२ को जो यह निर्णय किया गया था कि शीत खरल में पारा मिल जाता है आज गलत सावित हुआ।

१७/१२ आज धतूरे के पत्तों का रस एक छटांक डाला पारा घोटा गया तो तीसरे पहर तक ३/४ मिल गया, तीसरे पहर थोडी ही छटांक भर के करीबं धतूरे के पत्तों की लुगदी भी डाली गई शाम तक सब पारा मिल गया कोई तोले भर रह गया।

१८/१२ आज सवेरे फिर शीत खरल में पारा घुटना प्रारम्भ हुआ, घंटे भर में पारा फिर जुदा हो गया (वास्तव में मूर्छन की क्रिया अभी समझ में नहीं आई) फिर धतूरे के पत्तों का रस डालना आरम्भ कया पर कुछ फल न निकला। शाम तक घुटा।

१९/१२ आज फिर सवेरे से शाम तक परा तप्त खरल में घोटा और अमलतास को घीग्वार के रस में घोलकर डाला पर कुछ नतीजा नहीं हुआ। आज ९ घंटे घुटा।

२०/१२ आज थोड़ी देर घोटने के बाद लाचार हो पारा जुदा कर लिया गया। २४।। रुपये भर हुआ बाकी दवा को खरल समेत धूप में रख दिया गया।

२०/१२ आज खरल धूप मे सूखा।

२१/१२+० आज खरल में दवा निकाल ताश में सुखा दी।

२३+२४+२५+२६+०+०

२७/२८+२९+३० – को मथुरा चले जाने के कारण काम बंद रहा।

३१/१२ आज दवा को डौरू में बंद किया इस समय १)भर पार पृथक् हुआ निकला। २४।।)भर पहले निकला था कुल २५।।)भर निकल आया–२) भर बाकी रहा कपरौटी अपने हाथ से की।

१/१ आज डौरू को आंच पर चढ़ाया गया। घण्टे भर आंच लगने के बाद जाकर देखा तो दवा की बू हांडी में तेज निकल रही थी। शुबहा होने से गौर किया तो हांडी के जोड पर कपरौटी पसीज रही थी और गौर किया तो मालूम हुआ कि एक तरफ कपरौटी फूल भी आई थी दराज खुली जान हांडी उतार ली गई।

अनुभव

कपरौटी खूब उमदा घुली हुई मुलतानी शीरा पड़ी हुई से अपने हाथ मे की थी फिर भ दर्ज खुल गई, कारण इसका यह जान पड़ता है कि जाड़े का मौसम होने से कपरौटी रात में सूखती नहीं गीली रहने से चूल्हे पर भाप के जोर से खुल जाती है, पर आगे से कपरौटी खूब सूख जाने पर आंच दी गावे। गालिबन इसी नुस्ख की वजह से दराज खुलकर पारा निकल जाता है चोरी का शुबहा होता है।

१/१ आज शाम को फिर अपने सामने कपरौटी करा दी ता० ३+३ को कपरौटी बादल होने की वजह से सूखती ही रही।

४/१ को ८ बजे से ६ बजे तक आंच दी।

५/१ को खोला गया तो १) भर पारा निकला २५।।) भर पहले निकला था। सब २६।।) भर हुआ १) भर छीज गया।

5th Part

२२/१२–हल्दी,अंकोल,अमलतास,हरड़,बहेड़ा,आंवला,चीता,हींग,सैंधव आधी आधी छटांक, घीग्वार का रस १२ छटांक, चौलाई का रस ४ छटांक, सौंठ की लुगदी १ छटांक को आज ४ बजे शाम को मिलाया गया गाढा कढ़ी सा हुआ फिर हांडी में भरकर १० कंडों के दहरे पर जब आंच लग गई १ घण्टा औटा कर उतार लिया गया गाढ़ी माजूमसी हो गई।

२३/१२ आज सबेरे ८ बजे से दवा हांडी में निकाल ठंढे खरल में डाल पाव घंटे घोट उसमें आधी छटांक शुद्ध सोनामक्खी डाल ५ मिनट घोटकर उसमें ४९ तोले पारा थोड़ा थोड़ा कर डाला गया १५ मिनट में सब पारा मिल गया। जय शंकर। जय शंकर जय शंकर ।

अनुभव

इतना शीघ्र मिलने का कारण

(१) शहद का न पड़ना जिससे दवा चिकनी हो जाती है।

(२) सोनामक्खी का पड़ना।

(३) सूक्ष्म कारण दवा में रस का बहुत न पड़ वाजिबी पड़ना जिससे दवा बहुत न फूलकर बेअसर न हुई।

(४) दवा का पारे से पेश्तर खरल में बहुत न घुटकर बहुत चिपटा नहीं जाना।

आज ९ बजे से ५ बजे तक (बीच में २ घंटे की छुट्टी) ६ घंटे तक पारा शीत खरल में घुटा घीग्वार का रस भी पड़ा।

२४/१२ आज घीग्वार का रस डाल डाल ८ बजे से ५ बजे तक ९ घंटे पारा निरन्तर तप्त खरल में घुटा रवे बारीक हो गये हैं। (२५/१२ + ० + ०)

२६/१२+०+० रवे बहुत बारीक हो गये।

२७/१२ आज दोपहर तक बिना रस तप्त खरल में घोट छोड़ दिया।

२८/२९/३० मथुरा जाने से ३० तारीख तक काम बंद रहा घर में खरल सूखता रहा।

३१/१२ खरल में धूप में सूखा।

१/१+२/१ बादल होने से धूप नही निकली।

३+४+५+६+७ खरल धूप में सुखाया गया।

८/१ आज दवा को हांडी में जो सबसे बड़ी थी भरा गया (भरते समय १ छटांक पारा जुदा हो गया यानी ४४ तोले पारा दवा में है) हांडी खूब घिल ली थी मगर फिर भी गौर से देखने से जान पड़ा कि संधि खुली है उस संधि को "लुह्यार्कसंभवं क्षीरं ब्रह्मबीजं च गुग्गुलुः। सैधवं द्विगुणं मर्द्य निगडोयं महोत्तमः।।" इस निगड मे बंद कर और एक पट्टी भी इसी निगड़ से चढ़ा रख दिया।

९/१ आज हांडी की संधि पर ४ पट्टी मुलतानी की जिसमें मैदा की लेही मिली हुई थी गंजी के नये कपडे से चढ़ाई गई २ दफे में और डौरू सुखाया गया।

१०/१ आज डौरू सूखता रहा।

११/१ आज डौरू को नई भट्टी पर ४ प्रहर की आंच दी गई।

१२/१ डौरू खोला गया तो ऊपर की हांडी में ३।। छटांक और नीचे हांडी में जो ऊपर की हांडी ही मे से गिर पड़ा था ३ छटांक सब ६।। छटांक ३२।। रुपये भर पारा निकला था ४४ भर यानी ११।।) भर पारा और बाकी रहा।

अबकी बार जो वज्रमुद्रा की उसमें कोई बड़ा लाभ नहींहुआ क्योंकि हांडीग्बोलने पर मालूमहुआ कि वज्रमुद्रा जलकर हांडी की संधि खुलकर पारा कपड़े की पट्टी को तोड़कर दूसरी तह तक आ गया था किन्तु मुलतानी मजबूत पट्टी पारे को आगे ने जाने से रोक दिया था। जो दवा बची थी उसको और दो दफे की पहली राख को आज हांडी में भर ४ कपरौटी मे बंदकर दिया गया कपरौटी मजबूत गजी से लेही पड़ी मुलतानी से दो दफे में करी गई।

१३/१ आज हांडी को ३ पहर आंच दी गई।

१४/१ डौरू खोला गया तो दराज खूब बंद निकली वज्रमुद्रा की दराज से यह दराज अच्छी रही पारा २।।) भर+१ पैसे भर निकला।

पारा डाला गया था ९ छटांक ४) भर और निकला (६।। छटांक+ १/२ छ०+ १ पैसे भर)= ७ छटांक+ ।।) भर = अर्थात् १ छ० ३।।) भर घटा–इतने पारे घटने का स्पष्ट कारण नहीं जान पड़ता।

पातन के ५ भागों का नकशा

तोल पारद जो डाला गया		तोल पारद जो जुदा हो गया		तोल पारद जो उड़कर निकला		तोल पारद जो घटा		कैबारमें उड़ा	विशेष वार्ता
छ.	तो.	छ.	तो.	छ.	तो.	छ.	तो.		
१५	४	२	४	८		५		तीन बार	अवश्य संधि खराब होनेसे निकल गया चोरीका भी शुबहा हुआ
छ.६	०	०	१।।)	५	२।।)	०	१)	एक बार	
६	०	०	।।।)	४	३)	१	१।)	एक बार	फिर यह नुकसान ढीला कपरौटीसे ही हुआ या चोरी मुमकिन है
५	२।।)	५	।।)	०	१)	०	१)	एक बार	अबकी बार मूर्छन न हुआ था यह खराबी पड़ी।
९	४)	१	०	७	।।)	१	३।।)	दो बार	अबकी बार इतना नुकसान होने की वजह न मालूम हुई
					मीजान से छ० तो० १ –९ –२ +०–१–।) पीछे से पातित १–१०–२।)				बाकी रस बिना उडा १ छ० १) तोले – पीछे यह भी पातित होकर ५।) भर रह गया।

नतीजा पातन की प्रथम क्रिया

१ सेर १० छ० २।) भर पारा पातित है और १ छ० १ तोले पारा बिना पातित है, इस पातन में ८ छ०+२)भर घट गया यह घटी बहुत ज्यादा हुई और या तो इसमें से कुछ चोरी हुआ या हांडी की संधि में से निकल गया या तप्तखल्व में से उड़ गया।

१७/१ आज उक्त १ सेर १० छटांक २।)भर पारे को अम्ल मठे से धो डाला गया (पीछे तजुर्बे से मालूम हुआ कि तेज आंच लग जाने से यह पारा नुकसान हुआ)

९/२ हल्दी. अंकोल आदि पाव पाव छटांक चीजों की आधपाव रस चौलाई और डेढ़ पाव रस घीग्वार में डाल औटाकर हमेशा के नियमानुसार शीत खल्व में गोट ६)भर अपातित पारद ३ बजे डाला गया तो मुशकिल से घंटे भर में मिला वजह हुई कि सोनामक्खी डालना भूल गये थे, ४।। बजे पाव छटांक मक्खी डाली गई तो फौरन ठीक मिल गया।

१०/२ आज दोपहर तक शीत खरल में घुटता रहा। गाढ़ा हो जाने पर दो पहर बाद सुखा दिया गया चीनी के वर्तन में खूब अच्छा मूर्च्छन हो गया दवा अधिक और पारा न्यून होने से पूर्ण मूर्च्छन हुआ।

११/२ और १२/२ दो दिन सूखने पर खूब खुश्क होगया।

१३/२ आज दवा को जिसने पारा बिलकुल नहीं छोड़ा था हांडी में भर जोड़ के ऊपर खरिया से खूब संधि बन्द कर एक पट्टी गजी की और दूसरी मारकीन की चढ़ाई गई।

१४+१५+१६ दो कपरौटी जोड़ पर और कर सुखा १७/२ को ३ प्रहर की आंच दी गई।

१८/२ आज खोला गया तो पारा जोड पर नहीं था बल्कि ऊपर हाँडी के पेंदे पर था कारण यह मालूम होता है कि अबकी दफे गोबर के बीच में जगह ज्यादा रखकर पानी की तराई खूब रखी गई लेकिन हांडी खोलने पर गीली निकली इसलिये धूप से दोपहर तक सुखाकर पारा निकाला गया तोल में ५।) भर हुआ। अबकी बार छीजन कम हुई जिससे सिद्ध है कि हांडी की संधि और तप्त खरल से ही पारा उड़ता है।

दूसरा पातन 1st Part

१६/१/१९०५ हल्दी, अंकोल जड़ की छाल, अमलतास का गूदा, हर्ड, आंवला, चीता सब आधी आधी छटांक घीग्वार का रस पावभर, सांठ के पत्तों की लुगदी १ छटांक, हींग १/२ छटांक, सैंधानोंन १/२ छटांक सबको मिलाकर कण्डों की आंचपर औटाकर गाढा माजूनसा औटाने पर उतार लिया गया।

१७/१ आज १० बजे इस दवा को खरल में डालकर इसमें १/२ छटांक शुद्ध सोनामक्खी डालकर आध घंटे घोटा गया बाद को इसमें ८ छटांक पातित पारा थोड़ा थोड़ा डाला गया जो १/२ घंटे में मिल गया दो पहर से खरल के नीचे तुषाग्नि भी दी गई शाम तक पारे का मर्दन हुआ।

१८/१ आज ८ बजे से ५ बजे शाम तक पारद तप्त खरल में घीग्वारस का रस डाल २–३ प्रहर घोटा गया।

१९/१ आज ७ घण्टे पारद तप्त खरल में घुटा रस घीग्वार डालकर शाम को खरल कुछ ज्यादा तेज हो गया था।

२०/१ आज भी ६ घण्टे पारद तप्त खरल में घुटा रस घीग्वार डालकर पारा मूर्च्छन हो गया।

२१/१ आज रस विना डाले तप्त खरल में पारद घुटा ३ घण्टे फिर शीशे के बकस में बन्दकर धूप में सूखा, धूप कम थी।

२२/२३–१.धूप में सूखा पर धूप कम थी या न.थी शीशे के बक्स में बन्द सूखा बहुत सी भाप उड़ उड़कर शीशे पर पानी बन जाती थी वह पोंछ दी जाती थी दिन में ३–४ बार।

२४/१ आज भी धूप में सूखा आज खरल में से निकाल चीनी के बर्तन में किया गया शीशे के बकसे में बन्द ही सूखता है।

२५/२६/२७/२८–१ पारा चीनी के बर्तन में सूखता रहा शीशे के बकस में।

२९/१ आज शीशे के बकस को देखने से मालूम हुआ कि शीशे पर कुछ सफेद सफेद चीज जमी है गौर किया तो मालूम हुआ कि पारा उड़कर जमा है थरमामीटर लगाकर देखा तो शीशे के बकस से अन्दर १२२ फ. की गरमी थी किन्तु बाहर धूप में सिर्फ ९८ फ. की गर्मी थी और छत के नीचे ६८॰फ. ही थी। बड़ा तअज्जुब है कि इतनी हल्की गर्मी में पारा उड़ गया फिर तप्त खरल में भी अवश्य उड़ता होगा यही पारद की अदृश्य गति कही जा सकती

है यह तजरुबा करना चाहिये कि खालिस पारा भी इतनी गरमी से उड़ता है या कि दवा में घुटा हुआ ही पानी की भाप के संग उड़ता है।

३०/१ आज दवा सूख गई उसमें से १/२ छटांक पारा जुदा हो गया बाकी जो दवा रही उसको तोला गया तो १३ छटांक १ तोले हुई (पारा ८ छटांक थी अर्थात् १३ छटांक डाली गई थी सांठ की लुगदी १ छटांक डाली गई थी १) भर वजन उसका बढ़ा होगा बाकी रसों का वजन बढ़ा उतना जितना कि (पारा१/२ छ. जुदा हो गया) इस दवा में से आधी दवा डेढ़ पाव आधी छटांक १ पैसे भर को हांडी में बंद कर उस पर (टोडनरानदोक्त) खरिया १ छटांक, नोंन १ तोला गुड़ १ तोले, अलसी १ तोले को खूब बारीक पानी डाल के पीसा गया और उससे हांडी की संधि बंदकर ऊपर लेही पड़ी मुलतानी से कपरौटी नई गजी के कपड़े से ४ तह चढ़ा सुखा दिया गया।

३१/१ आज हांडी सूखती रही।

१/२ आज ८ बजे सबेरे से ६ बजे तक आंच दी गई।

२/२ आज हांडी अपने सामने खुलवाई गई खोलने में कपरौटी की दो तह तक कोई खराबी नहीं निकलीं, ३ और ४ तह पार हांडी के एक तरफ पारे का रवे दीख पड़े हांडी खुलने पर मालूम हुआ कि उस तरफ हांडी का जो आपस में ठीक नहीं मिला था खरिया से जो दर्ज बंद की गई थी उसने कुछ पकड़ अवश्य की और जहाँ दर्ज कम थी और खरिया जहां ठीक बैठ गई थी वहां दरज खूब बन्द रही। पारा तोलने से २ छटांक हुआ हालाँकि (८ छटांक डाला गया था उसमें से आधी छटांक छुट गया बाकी ७॥ छटांक दवा में था उसमें आधी दवा भरी गई थी जिसमें) ३॥। छटांक पारा होना चाहिये इस हिसाब से १॥। छटांक घटा अफसोस! वह संधि में निकला या तप्त खरल से उड़ गया या धूप में से उड़ गया दवा में बाकी नहीं रहा दवा १॥ छटांक है।

२/२ आज बाकी आधी दवा को ६॥ छटांक १ पैसे भर थी हांडी में भर उस हाँडी और ऊपर की हांडी के मुँह पर जुदा जुदा खरिया पतली पतली लगा दोनों हांडी मिला दवा दी गई और रिगड़ दी गई तो आपस में ऐसी वस्ल हो गई, कि छुटाने से न छूटी फिर दोनों हांडियों की दर्ज पर भी खरिया खूब चढ़ा सुखा दी गई फिर ४ कपरौटी कर दी गई।

३/२ हांडी सूखती रही।

४/२ को ८ बजे से ६ बजे तक पातन किया गया।

५/२ आज डौरू खोला गया तो दराज खूब बंद थी पर कहीं कहीं बाल पड़ गया था पारा केवल १ छटांक ३ पैसे भर निकाला दवा १ पैसा कम १॥ छटांक निकली अबकी बार नुकसान का कुछ ठीक नहीं रहा हांडियों के बीज में खरिया लगाने से कुछ फायदा नहीं हुआ बल्कि नुकसान हुआ उसकी वजह से कुछ दराज रह गई पहली दफै ज्यादा और अबकी मरतबे पारा कम बहने से साबित हुआ कि हांडी से जरूर निकल जाता है, इस आध सेर के पातन में आधी छटांक खरल से जुदा हो गया और ३ छ० ३ पैसे भर उड़कर निकला यानी ४ छटांक १॥ पैसे भर अर्थात् आधे से अधिक उड़ गया।

2nd Part

२२/१ आज हरिद्रा, अंकोल की जड़ की छाल, अमलतास का गूदा, त्रिफला, चीता, हींग सैंधव, प्रत्येक आधी छटांक हर एक के चूर्ण को और सांठ के पत्तों की लुगदी १ छटांक को ३ छटांक चौलाई के रस और १२ छटांक घीग्वार के रस में मिला हांडी भर के दहरे पर खटका कर माजून साकर उतार लिया।

२३/१ आज दवा को खरल में डाल उसमें १/२ छटांक शुद्ध सोनामक्खी का चूर्ण डाला १/२ घण्टे घोट दोपहर के २ बजे उसमें आधे सेर पारा थोड़ा थोड़ा डाला गया १५ मिनट में मिल गया फिर तप्त खरल में घीग्वार का रस डाल घोटा गया ५ बजे तक।

२४/१ आज ८ बजे से ५ बजे तक ३ प्रहर तप्त खरल में घीग्वार का रस डाल पारा घोटा गया (२५/१+)

२६/१ आज दो पहर तक बिना रस डाले तप्त खल्व में और १ बजे बाद धूप में बैठ कर पारा घुटा ४ बजे तक खूब गाढ़ा होने पार छोड़ दिया गया।

२७ २८/१ पारा खरल में धूप में सूखा किया–खुला।

२९ ३०/१ पारा चीनी के वर्तन में शीशे के वकस में सूखा किया।

१ २ ३/१ को सूख गया था इसलिये कटोरे में रखा रहा।

४/२ –१३ छटशंक दवा हुई और २ पैसे भर पारा जुदा हो गया उस पारे को जुदा रख दिया और १३ छटांक दवा को बड़ी हांडी में भर खरिया जोड़ों के बीच में और बाहर लगा धूप में रखा दिया ३ घण्टे सूखने पर फिर खरिया चढ़ाई गई २ घंटे सूखने पर २ कपरौटी मामूली गजी की कर दी गई और सुखा दी गई सब काम अपने सामने हुआ पर कपरौटी अपने सामने नहीं हुई।

५/२ आज दो कपरौटी कैची की खूब गफ १)॥ गज की मारकीन की गई।

६/२ आज दो कपरौटी और भी उसी मारकीन की गई।

७/२ आज ८ बजे से ६ बजे तक आंच दी गई।

८/२ आज हांडी खोली गई तो मारकीन की ४ तह तक पारा नहीं दीख पड़ा गजी की कपरौटी ऊपर के रवे थे इसलिये आगे से मारकीन की कपरौटी होनी चाहिये। कपरौटी के अन्दर खरिया खूब जम रही थी लेकिन उसमें दराज भी थी हांडी खोलने पर रवे हांडियों के जोड़ो में भर गये थे यह खराबी खरिया को हांडी के बीच में लगाने से हुई। आगे से हांडियों के बीच में कोई चीज न लगाकर खरिया बाहर से जोड़ों पर लगाई जाया करे।

पारा २॥ छटांक ऊपर की हांडी में और कुछ कम नीचे की हांडी में निकला कुल तोलने पर १ पैसे कम ४॥ छटांक हुआ और था २ पैसे कम ८ छटांक यानी ३ छटांक+३॥ पैसे भर घट गया। पहले आध सेर में से ४ छटांक १॥ पैसे भर घट गया दवा तोल में ३ छटांक १ पैसे भर हुई इसमें रवे पारे का कहीं कहीं चमकते थे।

अनुभव

चूंकि अबके दूसरे पातन में ३ बार उड़ाने में नीचे मुताबिक पारा बैठा अर्थात् वजन में अन्तर रहा इससे स्पष्ट सिद्ध है कि पारा हांडियों के जोड़ में से जरूर उड़ता है, इसका भी इंतजाम अवश्य होना चाहिये।

१ बार	२ छटांक भर
२ बार	१ छटांक ३ पैसे भर
३ बार	४॥ छटांक भर

(२)

१८/२ तोलने पर पारा इस समय १ पैसा भर कम ११ छटांक पारा एक बार पतित २ पैसे भर (२२/२) १ रुपया भर कम ८ छटांक पारा दो बार पतित है अर्थात् १ सेर छटांक ४॥ भर है।

२२/२ जो दवा पातन की हांडियों में से निकली थी और ठीक जली न थी उसको (१२ छ० को) डौरूयन्तत्र में बन्द कर ३ प्रहर की आंच दी गई तो २ पैसे भर पारा निकला और दवा ११ छटांक रही अभी तोल दवा की अधिक है, इसलिये शायद पारा और हो गालिबन तेज आंच देनी चाहिये थी एक बार और डौरू करो।

चूंकि पातन में बहुत नुकसान हुआ इसलिये इस पारद का पातन बंद कर दूसरे पारद का पातन से अनुभव किया गया।

पातन का अनुभव हिंगुलोत्थ पारद पर

१/२ आज उपरोक्त हरिद्रा, अंकोल इत्यादि पाव पाव छटांक चीजें और घीग्वार का रस ऽ। सेर और चौलाई न मिली और सांठ आधी छटांक को मिला औटा दिया गया।

११/२ औषध को शीत खरल में डाल घोट पाव छटांक सोनामक्खी डाल १७) रुपये भर पारा हिंगुलोत्थ डाला गया जल्दी ही मिल गया ९ बजे से शाम के ५ बजे तक शीत खरल में धूप में घुटता रहा, खूब मिल गया।

१२/२ आज भी धूप में ८ बजे से ५ बजे तक घुटा रस भी पड़ा बहुत अच्छा मूर्च्छन हुआ इतनी औषधि में इतना ही पारद ठीक है अर्थात् पाव छटांक सब चीजें हों तो १५ तोला पारद ठीक होगा (जितना पारद हो उससे तीन तिगुनी औषधि का हिसाब बैठता है) परन्तु बहुत अधिक गाढ़ा (ऐसा कि दोनों हाथों से जोर लगाने पर घुटता था) हो जाने पर पारे के वे चमक आये।

१३/१४/१५–२ चीनी के वर्तन में सूखा (१४/१५ को धूप न निकली)

१६/२ चूंकि रखा रखा सूख गया लिहाजा आज हांडी में वंद कर डौरू कर दिया। १ भर पारा छूट गया (जो ज्यादा गाढ़ा होने तक न घुटता तो पास न छूटता) दवा १ पैसा कम ६ छटांक हुई हांडी के ऊपर जोड़ पर खूब खरिया की दवा लगाकर १ कपरौटी गजी की दूसरी पारकीन की कर दी गई।

१७/२ आज दो कपरौटी और कर दी गई।

१९/२ आज हांडी को ३ प्रहर की आंच दी गई पानी भी ऊपर खूब रखा गया।

२०/२ आज हांडी खोली गई तो नीचे की हांडी में पारा नहीं था दवा ६।।)भर निकली ऊपर की हांडी में पारा था और हांडियों के जोड़ पर बहुतसा पारा बीच में आ गया था पारा सब ९ तोले निकला १ भर पहले निकला था १७)भर यानी ७।। भर कम हो गया।

अबकी दफे तप्त खरल में नहीं घोटा गया फिर भी बहुत ज्यादा घट गया जिससे जाहिर है कि हांडीयों में से ही उड़ जाता है। तप्त खरल में से उड़ता होगा तो इतना नहीं जरूर हांडियों के दर्ज न मिलने से यह नुकसान होता है क्योंकि जब दराजों में पारा मिला तभी नुकसान हुआ दराज मिलने का बन्दोबस्त अवश्य कर्तव्य है चूंकि हांडियों में पातन करने से पारा बहुत छीजता है बहुत बार सब तरह का यत्न कर तजुरुबा हो चुका और बहुत पारा छीज चुका पस आगे ऊर्ध्वपातन वंद किया गया (हा अंग्रेजी रिटार्ट) (भवका) मंगा उससे पातन का अनुभव करो। किन्तु यह बात समझ में न आई कि मर्दन संस्कारों में उत्थापन के निमित्त जो २४/२/०४ और ८/३/०४ २७/३/०४ को न पातन किये गये उनमें अधिक कमी क्यों न हुई और मूर्छन कर्म के पातन में कमी पड़ी जो १७/५ व १८/५ को हुआ नीचे लिखा नकशा देखो।

इतना समझ में आया कि हांडियाँ ठीक घिसी न गई और उनमें दराज रही इसी वजह से पारा निकल गया पहले हांडी उमदा घिसी गई अफीमी के हाथ से।

पुनः पातन का अनुभव गंधक से

गंधक पाव भर को घी में गलाकर सेर भर दूध में बुझाकर शुद्ध कर लिया गया। बाद को गर्म पानी से धो कपड़े से पोंछ साफ कर लिया गया।

नक्शा मर्दनमूर्छनान्तर्गत पातन का

कर्म	तारीख	पारा जो उड़करनिकला	पारा	विशेष वार्ता
मर्दन	८/३/१९०४	१५।)		
	१८/३/०४	३५)		
	२७/३/०४	८।।)		
		४।।		
		१।)		
		२)		
		६६।।।)	९)	
मूर्च्छन First	१६/५/०४	३२।।)		
	१८/५/०४	४५)		
	१९/५/०४	४)		
		८१।।)	६)	
मूर्च्छन 2nd		१३।।)	१।।)	
		११)	२।।)	
		१३।।)	४)	
		१७।।)	+	
		५५।।)	८)	
मूर्च्छन 3rd	७/९/०४	१८)	।:)	
मूर्च्छन 4th	१७/९/०४	६)	२।।)	
मकोयमर्दन	५/११	२।।)	१)	
मूर्च्छनका अनु० दूसरे पारद २० तोले पर	२९/९	७।।	+	

४/३/०५ आज ३ तोले गंधक और ३१।। तोले पारे बाजारी को (जो जाहिरा साफ था और जिसको कपड़े से ४ बार छान लिया था) तप्त खल्व में डाल जंभारी के रस के साथ घोटा गया ४ घंटे पारा बहुत कम मिला।

५/३ आज दिन भर (९ घण्टे) तप्त खरल में मर्दन हुआ दिन भर में आध सेर रस पड़ गया होगा दो पहर तक करीब करीब सब पारा मिल गया था शाम को किनारों पर रवे जरूर थे और मिला हुआ था।

६/३ आज सवेरे खरल को अपने सामने घोटकर देखा तो गाढ़ी दवा हो गई थी दवाकर घोटते ही पारा छुटने लगा दोपहर तक १३।।) पारा छूट गया और बाकी दवा की पीठी सी हो गई उसको खरल में से निकाल रकाबी में सूखा दिया गया आज खरल को गरम नहीं किया गया।

७/३ इस शुबहा से कि गंधक में चिकनाई रह गई इससे पारा नहीं मिला। आज गंधक को खरल में डाल गरम पानी से खूब धोया १३।।।)भर उक्त पारे को तप्त खरल में डाल १।) तोले गंधक डाल कांजी डाल डाल कर घोटा गया पतला रहने से पारा कुछ मिलता था गाढा होने पर छूटने लगता था।

८/३ आज उक्त पारे में १।) तोले गंधक की बुरकी दे देकर घोटा गया शाम तक मगर वही हाल रहा शाम को पतली दवा थी और पारा कुछ मिला हुआ था।

९/३ खरल की दवा पतली थी मगर और न घोट वैसा ही धूप में सूखा दिया। दोपहर को गाढ़ा होने पर ८।) तोले पारा छूट गया बाकी दवा को खरल में से निकाल चीनी की रकाबी में रख दिया गया सूखने को।

पहली दफे ३) गंधक में १७।।।) भर पारा निकला।

दूसरी बार ३) गंधक में ५) भर पारा मिला।

१०–११–१२–१३/२ को यह दवा सूखती रही। ८/३ की दवा तो ११/३ ही तक खुश्क हो गई मगर ९/३ वाली दवा १३ ता० तक भी पूरी खुश्क नहीं हुई।

१९/३ दवा बराबार सूखती रही मगर आज तक नरम ही रही धूप भी उमदा नहीं थी कभी कभी बादल हो जाता था एक दिन खूब बारिश भी हुई थी लाचार आज दो हांडी चकले पर घिस खूब दराज मिला मुलतानी से सांस बन्द कर १ गंजी की और १ मारकीन की कपरौटी कर दी गई।

२०/३ आज डौरू को ३ पहर की आंच दी गई।

२१/३ को धूल की वहज से काम बन्द रहा।

२२/३ आज डौरू को खोला गया तो देखने से बहुत थोड़े रवे ऊपर की हांडी में नजर आते थे मगर कुल हांडी नीलगू (नीली) रंगत से रंगी हुई थी जब हांडी को चाकू से खुरचा गया तो राख की शकल में एक चीज निकली जो इकट्ठा करने से और दबाये जाने से पारे के रवे होती गई। आखिरकार ९।) भर पारा और ९) भर राख रह गई अभी पारा इस राख में अवश्य है क्योंकि राख बहुत भारी है कुछ खफीफ पारा नीचे की जली हुई दवा की छूंछ में भी हो सकता है क्योंकि रंगत से ऐसा ही जान पड़ा और तोल भी उसकी ५।) भर है।

उक्त ९) भर राख को नींबू के रस से घोटा गया तो ३) भर पारा और निकला सब पारा १२।) भर हुआ नीचे की हांडी को खुरचने से कहीं कहीं रंगत सुरख पड़ गई मिसल सिंग्रफ के जिससे साबित है कि उस जगह पारद मूर्च्छित होकर सिन्दूर बन गया।

अनुभव

पहले जब चन्द्रोदय के अनुभव के समय नाल कच्ची रह जाने से उस कच्ची गंधक मिले पारे को जो मूर्च्छित दशा में था उत्थापन के लिये उड़ाया गया था तब भी हांडी में ऐसी ही रंगत हो गई थी पर उसको सिर्फ कागज से रगड़ कर छोड़ दिया था (देखो ता० १७/१०/१९०४ में) इसलिये उस समय कुछ पारा हाथ नहीं आया यदि चाकू से खुरच की अबकी तरह अमल किया जाता तो अवश्य कुछ पारद हाथ लगता—गंधक से मूर्च्छित कर उड़ाने में पारा गंधक दोनों उड़ते हैं और इसी कारण से पारद ऊपर की हाँडी में भी रेत की शकल में जम जाता है।

२४/३ अब ६) भर राख बची और कुछ ऊपर ५, भर नीचे की राख थी सब ११) भर को फिर डौरू में बंद कर दिया गया नींबू के रस में घोटकर।

२७/३ आज ३ प्रहर की आंच दी गई।

२८/३ आज खोला गया तो राख सी ऊपर की हांडी में निकली जिसमें सूक्ष्म रवे भी थे मलने से १।) पारा निकला फिर राख धोकर ।) भर और निकला सब १।।) भर हुआ नीचे की राख भी ७) भर निकली।

पहले पारा १२।)४१।।) भर हुआ यानी १४) भर हुआ था, २२।।) भर घटा ८।।) भर बहुत घटा यह नुकसान कुछ इस कारण से भी हुआ कि गंधक से पारद मिलकर हांडी में चिपट जाता है, छुटता मुश्किल से है। हर तरह के पातन में हानि बहुत होती है। अंग्रेजी रिटौर्ट से अनुभव कर देखो।

लहसन में मर्दन का अनुभव

१०/३ जो हिंगुलोत्थ पारा २०/२ का हरिद्रांकोल के पातन से निकला था उसको आज ९) भर को १) भर सैंधव डाल लहसन के पाव भर रस में (जो आध सेर लहसन में निकला) थोड़ा थोड़ा रस डाल तप्त खरल में ८ बजे से २ बजे तक घोटागया सब ऽ। रस खुश्क होकर गाढ़ा लाट सा हो गया और आगे हाथ न चला बड़ी भारी चिपक पैदा हो गई ७) भर पारा जुदा हो गया २ तोले दवा में मिला रह गया उस खरल को धूप में सूखा दिया गया।

११/३ आज खरल धूप में सूखता रहा। शाम को किनारों पर खुश्क हो जाता था बीच में कुछ गीली थी किन्तु बड़ी चिपक और सख्ती थी बड़ी मुश्किल से खुरच कर इकट्ठा किया गया मगर खरल में ही रखा रहा।

१२/३ दूसरे दिन सबेरे जो देखा तो खरल में दवा पसीज गई थी लाचार जिस कदर निकल सकी निकाल लाट सी चिपकती हुई रकाबी में निकाल सुखा दी और बाकी खरल सुखा दिया शाम को खरल सूख गया था उसको खुरच कर साफ कर लिया गया और उसी रकाबी में शामिल कर दिया गया। १३/३ तक पहली लाटसी दवा नहीं सूखी बहुत गीली थी।

२२/३ तक यह दवा सूखी नहीं, चमचोड़ ही रही लाट सी ४।) भर थी।

२४/३ लाचार आज डौरू में बन्द कर दी गई हांडी छोटी छोटी चकले पर घिसी हुई थी कपरौटी मुलतानी की दो कि गई एक गजी की दूसरी मारकीन की।

२५/३ आज डौरू को ३ प्रहर की आंच दी गई।

२६/३ आज खोला गया तो १=) भर पारा निकला कुल पारा तोलने पर ८=) भर हुआ–डाला गया था ९) भर घटा ।।।=) भर।

पुनः पातन का अनुभव

२/४ मामूली पारे को गन्धक से घोट ऊर्ध्व पातन किया गया था १४।) भर था और अध पातन किया गया था, नवनीताभ्रसे ३) भर था सब १७।) इस १७।) तोले पारे को हरिद्रांकोलशपाक सब १/४ छटांक, दवा डालकर सोंठ की लुगदी १/२ छटांक, चौलाई का रस १–१/२ छ० घीग्वार का रस यथावश्यकता डाल (विना औटाये) शीत खरल में घोटा गया २ घण्टे।

३/४ आज ५ घण्टे घुटा।

४/४ आज भी घुटा।

५/४ आज भी घुटा फिर कपरौटी कर हांडी में बन्द कर दिया गया।

१६/४ आज डौरू को आंच दी गई ३ प्रहर की।

१७/४ आज खोला गया तो ७।। तोले निकला था १७।। तोले यानी १० तोले घट गया संधि उमदा बन्द निकली हांडी खूब घिसी गई कपरौटी ठीक हुई सिवाय इसके कि भट्टी में तेज आंच लग जाती हो और तो कोई बात समझ में नहीं आती (दवा की राख ७। तोले निकली)

आगे २६/४ के अनुभव से सिद्ध हुआ कि आंच मन्दी लगने से पारा ठीक उतरा इसलिये जरूर यह नुकसान तेज आंच से ही हुआ।

लहसन में मर्दन

१७/४=७।। तोले पारे को ५) भर लहसन के रस में जो पाव भर में निकला १ भर नमक डाल घोटा गया ३ बजे से ६ बजे तक ५) भर अरक शाम को और पड़ा शीत खरल में घुटा।

१८/४=१०) भर लहसन का रस और डाल कर शाम तक घुटा ४ बजे तक फिर गाढ़ा हो गया २।) भर पारा जुदा हो गया।

१९/२०–४ को धूप में सूखता रहा।

२१/४ आज खरल में छुटाया गया तो १=)भर पारा और निकला बाकी दवा में मिला रह गया ४।=) तोले दवा चमचोड थी।

२५/४ आज ४।=) भर दवाको डौरू में बन्द कर दिया गया कपरौटी दोनों मारकीन की गई।

२६/४ आज डौरू को ७ बजे से ५ बजे तक हल की आंच दी गई जो पहले से आधी से भी कम थी एक मशाल की आंच के बराबर होगी।

२७/४ आज डौरू खोला गया तो ३।=)भर पारा निकला ऊपर की हांडी में नीचे की हांडी में केवल दवा की राखमें २।=)भर कपरौटी पर या हांडी की दराज पर कहीं पारा न था।

फल—कुल पारा ७।।) था निकला (२।) + १=) + ३।=६।।।) यानी।।।) भर घटा जो छीजन कही जा सकती है यह उमदगी अवश्य आंच कम देने से हुई जब से भट्टी बनी तबसे आंच तेज लगी इसीसे इतना कसीर (अधिक) नुकसान हुआ। आयन्दा आंच मन्दी लगे कपरौटी दोनों कैंची की मारकीन की हों, हांडी चकले पर घिसी जावे।

१०/२ से २७ तक का सिद्ध पारद एक शीशी में एकत्र भर दिया गया।

पुनः पातन का अनुभव

अबकी बार २७/४ को जान पड़ा कि तेज लगने से ही पारद क्षय होता था मन्द अग्नि से नहीं होता इस बात का पूरा निश्चय करने को पुनः तजुरुबा शुरू किया जाता है।

२८/४ हरिद्रांकोलादि सब चीज आधी आधी छटांक सांठ की लुगदी १ छ०. चौलाई का रस ३ छटांक, घीग्वार का रस ८ छटांक सबको आज मिलाकर खरल में ओस में रख दिया।

२९/४ आज इसमें पाव भर ३ पैसे भर पारा थोड़ा थोड़ा रस डालकर घोटा गया घण्टे भर में सब मिल गया ६ या ७ घण्टे घुटा दो दफे रस घीग्वार और पड़ा शीत खरल में घुटा।

३०/१ १/४ को भी शीत खरल में ६६ घण्टे घुटा।

२/३ को धूप में सूखता रहा।

४/५ को पीस डाला गया।

५/५ तोला गया तो ३ पैसे कम १० छटांक दवा हुई इसमें से आधी दवा को डौरू में बन्द कर मारकीन की कपरौटी की गई सूख जाने पर दूसरी भी मारकीन की कपरौटी की गई।

६/५ आज डौरू को मन्दी आंच पतली चीरी हुई एक दो लकडी की दी गई। ७ बजे से ५ बजे तक।

७/५ आज डौरू खोला गया तो २ छटांक और १ धेले भर हुआ कुल पारा पाव भर ३ पैसे भर था जिसमें से आधी दवा डाली गई सो आधा पाव और १।। पैसे भर पारा था इस हिसाब से केवल १ पैसे भर पारा छीजा। जय श्रीशंकरस्वामी की। पारा सब ऊपर की हांडी में ही मिला दवा की राख ६।।)भर हुई। अब निश्चय हो गया कि तीव्र अग्नि ही से पारा उड जाता था

पुनः पातन का अनुभव अंग्रेजी तरीके के मुंबई से मँगाये रिटोर्ट द्वारा

८ से १२/५—(१) सिद्ध हुआ कि इन रिटोर्ट में लैम्प की पूरी आंच देने पर भी इतनी गर्मी पैदा नहीं होती जो पारा नली द्वारा दूसरे पात्र में जा सके किन्तु पारा थोड़ा तो उड़कर रिटोर्ट के गोलभाग में ही रह गया और पारे का अधिक भाग उड़ा ही नहीं।

(२) यह भी निश्चय हुआ कि लैम्प की आंच को रिटोर्ट भलीभाति सह सकता है।

(३) यह भी साबित हुआ कि रिटोर्ट से काम लेने में रिसीवर (पहुँचानेवाला) के साथ रिटोर्ट को रबर की नली द्वारा मिला नहीं सकते मिलाने से रबर और डाट निकल जाती है। रिटोर्ट और रिसीवर का मेल खुला ही रहने देना चाहिये जो पारा उड़कर रिटोर्ट के ऊपर वा नीचे भाग में मिला उसको लकड़ी और कपड़ा और पानी द्वारा निकाला गया तो मुश्किल से निकला वह भी सब नहीं तोलने से १।। पैसा कम छटांक भर हुआ धेले भर रिपोर्ट में लगा भी रह गया इससे सिद्ध हुआ कि पारा करीब छुट तो गया पर उड़कर नली के बाहर न आ सका और न शीशे में ऊपर ठीक ठहर सका और रिटोर्ट नीचे से खुरदरा हो गया गालिबन आंच से दो दिन बाद देखने से रिटोर्ट चटका हुआ भी मालूम पड़ा। पारा जो रिटोर्ट से निकला वह गाढ़ा सा था और उस पर जाली सी पड़ी हुई थी बहुत छानने और साफ करने से दूर हुई।

१४/५ उसी चौथाई दवा को फिर दूसरे डौरू में बंद कर हलकी आंच से उड़ाया गया तो १ छ० भर) कम पारा निकला था दवा में १ छ० पौन पैसे भर यानी १ पैसे भर घटा। जय श्रीशङ्करस्वामी की।

७/१२—१४ मई तीनों बार का निकला पारा मिलकर इकट्ठा कर दिया गया तो १९)भर हुआ।

तीन बार ऊर्ध्वपातन (२७/४—७/५—१४/५) कर निश्चय हो गया कि मंद अग्नि से १०)—१९)भर पारा तीन प्रहर में उड़ सकता है और इस प्रकार अधिक नहीं छीजता। जब जय जय जय श्रीशङ्करस्वामी की।

अधःपातन संस्कार
अष्ट संस्काराध्याय के २७४ श्लोक से २७६ तक की क्रिया से

नवनीताभ्रकं सूतं घृष्ट्वा जृम्भावसादिनम् । वःनरीशिग्रुशिखिभिर्लवणासुरि-संयुतैः ।। नष्टपिष्टिरसं कृत्वा०

१३/३/१९०५ गंधक नोनिया ६ माशे, अभ्रक चूर्ण ६ माशे, केंच १ तोला, सँहजने के जड़ की छाल १ तोला, चीता १ तोला, नमक सैंधा १ तोला, राई १ तोला, साधारण पारद ६ तोले को शीत, खरल में नींबू के रस के साथ घोटा गया ४ बजे से ६ बजे तक पारा खूब मिल गया।

१४/३ आज आठ बजे से ५ बजे तक शीत खरल में नींबू का रस डाल डाल घोटा गया। सब आधी बोतल रस पड़ा। पारा बिलकुल नष्टपिष्टी हो गया पूर्ण मूर्छन यही हुआ।

१५/३ एक हांडी के मुंह की ढक्कननुमा ३ सेन लेकर घिसकर हांडी के मुख से मिलती हुई कर उन सेंन की यह पारे की पिष्टी लेप ही गई पहली में कम दूसरी में ज्यादा तीसरी में और ज्यादा सुखा दी गई। १६—१७ ता० तक सूखती रही।

१७/३ को हांडी के गले में बांस की खपच्च के घेरे पर झीना कपड़ा चढ़ा उसको हांडी के गले में फँसा दिया हाँडी में पहले से कांजी १/४ भाग में भर दी थी, हाँडी के ऊपर पारा भरि सैंनक उलटी करके रख दी गई और दोनों की दराज मुलतानी से बन्दकर कपरौटी कर सुखा दी गई।

१८/३ आज उस हांडी को गढ़े में गाड जमीन से ६ अंगुल नीचा रख २ अंगुल रेत भर ऊपर एक बिलंद ऊँचा दहरा लगा दिया गया ऐसे कई दहरे ५—६ शाम तक लगते रहे।

१९/३ आज हाँडी को निकाल खोला तो बहुत थोड़ा १/४ पारा कांजी में मिला और ज्यादा ३/४ हांडी की गर्दन में लगा हुआ मिला लेकिन पारा ६ माशे हुआ रकाबी वह थी जिसमें कम से कम दवा लेपी गयी थी दवा की राख १ तोले निकली।

२२/३ आज दूसरी रकाबी को जिसमें सबसे अधिक दवा लेपी गयी थी हांडी पर उलटा रख कपरौटी कर दी गई कांजी भर दी थी १/२ हिस्से में कपड़ा लगा दिया गया।

२३/३ आज दिन भर दहरे की आँच दी गई। गढे में हांडी रख ऊपर बालू रख ऊपर कडे रख कर।

२४/३ आज खोला गया तो सैनक की दवा कुछ चटक कर कपड़े पर गिर गई और हांडी खोलने में कपड़ा और कुछ दवा हांडी में गिर गये थे लेकिन निकल आया, पारा बहुत थोड़ा कांजी में मिल बाकी हांडी के किनारों पर था कुल पारा १।।) निकला। दवा की खाक २।=) भर निकली।

२५/३ तीसरी सेनक को उसी तरह कपरौटी कर (मगर हांडी अबकी दफे कांजी से भर दी गई थी) आज आंच दी गई तो १) पारा निकला। राख १।) भर निकली अबकी दफे भी पारा कांजी में बहुत कम निकला किनारे जो खाली थे उन्हीं पर मिला। हांड़ी सिर्फ ४-५ अंगुल

राख १) भर निकली जो खाली थे उन्हीं पर मिला। हांडी सिर्फ ४-५ अंगुल खाली थी, इससे अधिक भरना ना मुमकिन है। सब दवा में से पारा ३) भर निकला था। ६) भर आधा हाथ आया। अब की दफे चटकी हुई सैनक चढाई गई थी वह उसी जगह से बड़ी आवाज से चटकी थी। आगे से टूटी चीज काम में न ली जावे।

२८/३ को ३।।) भर राख को जो तीनों दफे की थी। आज डौरू में बन्द कर दिया गया। ठीक मुलतानी से।

३१/३ आज ३ प्रहर की आंच दी गई।

१/४ आज डौरू खोला गया तो ऊपर की हांडी में कुछ सफेद सी चीज जमी थी मगर उसमें कुछ पारा न था, नीचे की हांडी में २।।)भर गुलाबी रंग की राख निकली, इससे साबित हुआ कि पारा जो कुछ था वह पहले ही अधःपातन से उड़ गया था मगर छीज गया हाथ नहीं आया।

अधःपातन की क्रिया का पुनः अनुभव

१६/५ "नवनीताभ्रक" गन्धक १) भर कैच के बीज १) भर, सँहजने की जड़ १) भर, चीता १) भी, सैंधव १) भर, राई १) भर को जंभीरी के रस से घोट् उसमें थोड़ा थोड़ा कर १२) भर पारा डाला गया और घोटा गया तो पारा मिल गया।

१७/५ आज ७ भर पारा और ड़ाला गया तो दो प्रहर तक ठीक नहीं मिला। दोपहर को संहजना, चीता, राई १)-१) भर डाले गये फिर भी अच्छा मूर्च्छन नहीं हुआ।

१८/५ आंज घोटा गया तो सामान्य मूर्च्छन हो गया, एक एक रुपये भर दवा में १५) भर पारे का मूर्छन हो सकता है। दोपहर बाद इस दवा में आधी दवा तो सुखा दी गई और आधी एक हांडी के पेंदे में लेप कर दी गई। (इस हांडी पर कपरौटी कर दी गई)

१९/५ यह हांडी धूप में सूखती रही।

२०/५ आज इस हांडी को दूसरी हांडी के साथ डौरू कर दिया गया। दो कपरौटी कैंची की मारकीन की की गई मुलतानी से।

२१/५ इस डौरू की आज इस प्रकार आंच दी गई कि (अपनी बुद्धि से) एक पानी भरी नाद में एक हांडी मूढे के तौर पर रख दी गई। उसको पानी से भर दिया गया कि जिससे वह हांडी तैर न आवे। फिर उस हांडी के ऊपर डौरू इस रीति से रखा गया कि खाली हांडी नीचे रही और पारेवाली हांडी उलटी ऊपर रही। नाद का जल डौरू की संधि से नीचा रहा, ऊपर की हांडी पर एक परात लोहे की बीच से पैदा काट कर रखी गई और उस परात में ४ कंडो की आंच दी गई यह आंच ८ बजे से ६ बजे तक बांरबांर दी जाती रही। दोपहर कुछ विक्षेप भी हुआ। आंच आधे घंटे में ठंडी पड़ जाती थी। पानी नांद का गरम नहीं हुआ।

२२/५ आज डौरू खोला गया तो ऊपर की हांडी की बगल में विशेष पारा मिला, कुछ पारा पेंदे में भी मिला वह लेप में उबल के वहीं रह गया था। नीचे की हांडी के किनारों पर बहुत थोड़ा पारा मिला। (नीचे की हांडी में कुछ पानी मिला) १) भर होगा। यह पानी नांद के पानी में से हांडी में प्रवेश कर गया होगा क्योंकि यहां की मिट्टी बर्तन बनाने के लायक चिकनी और मजबूत नहीं होती। कुल पारा १ छ० २ पैसे भर हुआ, अभी और पारा दवा में मिला रह गया। आंच कम लगी आगे आंच ज्यादा दी जावे।

२२/५ आज ही उस हांडी को जिसमें पारा निकला ता फिर डौरू कर दिया गया।

२३/५ आज फिर पहले की तरह आंच दी गई मगर कुछ तेज यानी मामूली रीति से परात भरकर।

२४/५ आज डौरू खोलने से बहुत थोड़ा ऊपर की हांडी के किनारों पर और ज्यादातर नीचे की हांडी के किनारों पर पारा मिला। सब पारा २ पैसे भर निकला। राख ४।।) भर निकली। पहले परा निकला था १ छटांक २ पैसे भर सब मिलकर १ छटांक ४ पैसे भर हुआ होना चाहिये था १९/२) भार अर्थात् ९।।)और हुआ ७।)भर यानी २।) भर कम हो गया वह कमी फिर ज्यादा है पूरा तजुरबा इसका बाकी आधी दवा में उड़ने पर होगा।

२४/५ आज बाकी आधी दवा को डौरू में बंद कर गया, ऊर्ध्वपातन के लिये।

२५/५ आज ३ प्रहर की आंच दी गई।

२६/५ आज खोला गया तो ७।=) भर पारा निकला। राख ६) भर निकली। पारा सब ऊपर की हांडी में निकला। कुल पारा मिलाकर तोलने से १४।।=) भर हुआ। इस हिसाब से ४।=) भर पारा घटा। नवनीताभ्रक क्रिया द्वारा अधःपातन और ऊर्ध्वपातन दोनों तरह से करीब करीब एक ही सा नतीजा निकला यानी २।)-२।) भर घटा यह भी घटी ज्यादा है। यानी ४।।=१/४ के करीब-इस तरह एक बार के पातन में चौथाई छीज जावेगा। १९ यह सब पारे जो पातित किये गये, इकट्ठे कर दिये गये २९) भर हुए।

ॐ शिवाय नमः

संस्कृत पारद का संस्कार पुनः प्रारम्भ

पातन[1]

२९/५ सोमवार को 'हरिद्राकोलशंपाक' क्रिया से १ बार पातित पारद का (अर्थात् पारे के उस भाग को जिसका दूसरा पातन नहीं हुआ था) जो ११ छ०+ १।) भर था, उसका दूसरा पातन प्रारम्भ किया। हल्दी, अंकोल के जड़ की छाल, अमलतास, हर्ड, बहेड़ा, आंवला, चीता, हींग, सैंधव, सोनामक्खी, सब आधी आधी छटांक, साँठ की लुगदी १ छटांक, चौलाई का रस ६ छ०, घीग्वारका रस ६ छटांक डालकर शीत खरल में घंटे घोट उसमें पातित पारद पाव भर थोड़ा थोड़ा कर डाला गया तो घंटे भर में सब मिल गया फिर आधा पाव और डाला गया तो वह भी मिल गया। आज पारा २ घंट घुटा।

३०/५ आज घीग्वार का रस डाल ८ घंटे पारा घुटा शीत खरल में।

३१/५ को १ घंटे घोटकर छाया में सूखने को छोड़ दिया।

१/६ देखने से मालूम हुआ कि दवा नरम है अतएव आज ३ घंटे फिर घोटा गया जब हाथ रुकने लगा तब बंद कर दिया।

२/६ आज शीशे के बकस में खरल धूप में सूखता रहा।

३/४/६ को खरल से निकाल चीनी के बर्तन में रख शीशे के बक्से में बंदकर बरामदे में पत्थर पर सूखता रहा। बीच में हाथ से तोड़ छोटा छोटा कर दिया गया था।

५/६ आज इसको लोहे के इमामदस्ते में कूट दलिया सा कर दिया गया। १।।) पारा जुदा हो गया बाकी १।।) कम ६ छटांक पारा दवा में मिला रह

---

१ हिंगुलोत्थ पारद पर आदि के ४ संस्कार कर रख दिया पुनः बीच में बाजारी पारे पर पातन का अनुभव करके पुनः ४ संस्कारों से संस्कृत पारद पर पातन करना आरम्भ कर दिया

गया। यह दवा चीनी के कटोरे में करके रख दी गई क्योंकि नत्था नौकर छुट्टी पर जाने वाला था। कुल दवा ११ छटांक २ पैसे भर थी।

१४/६ आज इस दवा के बराबर के टुकड़े कर यानी ५।। छटांक १ पैसे भर एक डौरू में और इतनी ही दूसरे डौरूम में बंदकर दी गई। डौरू दोनों नये थे, जोड़ खूब चकले पर घिसकर मिला दिया गया था कपरौटी कैंची मारकीन की एक ९ बजे मेरे सामने और एक दोपहर बाद नत्था नौकर ने कर दी।

१५/६ आज हांडी को आंच देना आरम्भ किया तो तेज खुशबू फैली। इस ख्याल से कि डौरू टूटा तो नहीं उसको आंच से उता दूसरा डौरू रख दिया गया। ८ बजे इस डौरू में भी वैसी ही गंध निकली तब यह ख्याल करके कि दोनों डौरू टूटे नहीं हो सकते, आंच दी जाती रही। आज ६ बजे शाम तक दी गई मंदी आंच पतली डेढ लकड़ी की लगी।

१६/६ आज डौरू खोला गया तो ऊपर की हांडी में १ छटांक पारा निकला और नीचे की हांडी में १।। छटांक पारा निकला। सब पारा २।।) छटांक में से ।) कम हुआ और पारा था ६ छटांक १।।)=छटांक ३।।।)=२ छ० ४।) निकला २ छटांक २। छटांक घटा २) राख १।। छटांक रही थोड़ा २ बहुत होगा।

१६/६ जो डौरू १५ तारीख को घंटे भरम पीछे ही उतार कर रख दिया गया था उसको आज खोला गया तो उसमें कोई खरावी नहीं दीख पड़ी। कुछ पारे के रवे ऊपर उड़कर पहुँचे थे और नीचे की हांडी में दवा में पारे की रंगत और डलियांसी पैदा हुई थीं। इस डौरू को फिर ज्यों का त्यों वंद कर दिया गया।

१७/६ आज इस डौरू को ६।। बजे से ५ बजे तक मंदी आंच दी गई मगर पहले कुछ तेज बबूल की अंगूठे सी पतली डंडियों की आंच दी गई।

१८/६ आज डौरू खोला गया तो कुछ कम १ छटांक पारा ऊपर की हांडी में और कुछ कम १।। छटांक नीचे की हांडी में निकला। सब पारा २ छटांक २) भर हुआ और था (६छ० १।।)/२ = ३ ।।।) भर लिहाजा २।) छ० घटा–राख १।।) छटांक है।

2nd part

२/६ हरिंद्राकोल क्रिया मे सब आधी आधी छटांक और सब चीज उपरोक्त २९/५ के अनुसार ले मिला घंटे भर घोटी गई।

३/६ आज इसमें ५ छ० और २ पैसे भर पारा डाला गया तो शीघ्र ही मिल गया। ६ घंटे घुटा। शीत खरल में घीग्वार का रस पड़ा।

४/६ आज ७ घंटे घुटा–घीग्वार का रस पड़ा।

५/६+६ घंटे घुटा–गाढा हो जाने से छोड़ दिया। खूब मूर्च्छन हो गया।

६/६ से यह दवा खरल में सूखती रही। शीशे के बक्से में तोल में बंद नत्था के ब्याह की वजह से काम बंद रहा।

१८/६ को आधी दवा को जो ५।। छटांक थी, डौरू में बंद कर दिया गया।

१९/६ को ७ बजे से ५ बजे तक मंद अग्नि दी गई। बबूल की डंडियों की दिन भर एक सी।

२०/६ आज डौरू खोल गया तो ऊपर की हांडी में १ छटांक+१।।) भर और नीचे की हांडी में १छ० ।)भर पारा निकला। कुल पारा २ छटांक ३ पैसे भर हुआ था डाला गया था ५ छटांक + २ पैसे= २।। छ० २ पैसे भर २।। पैसे भर घटा।

२०/६ आज बाकी आधी दवा को दूसरे डौरू में वंद कर दिया गया।

२१/६ आज डौरू को ७ बजे से ५ बजे तक मंदाग्नि (जिसको मशल की अग्नि कहना उचित होगा) बबूल की डंडी दी गई।

२२/६ डौरू खोलने के ऊपर की हांडी में १ छटांक और नीचे की १ छटांक ३ पैसे भर पारा निकला। नीचे की हांडी की गर्दन पर कुछ रवे थे और बहुत सा यानी करीब १ छटांक पारा एकत्र नीचे की हांडी में मिला ४ दफे के पातन में भी ऐसा ही हुआ अर्थात् नीचे की हांडी में बहुत सा पारा एकत्र मिलता रहा। गालिबन खयाल यह है कि ऊपर नीचे की हांडी समान होने से पारा ऊपर की हांडी में ठहर नहीं सकता। नीचे गिर जाता है। हांडी जो ४ बार काम में ली गई वह इतनी बड़ी थी जिनमें ५ सेर पानी आ जाता था और इनमें तीन तीन छटांक के करीब पारा चढाया गया। आगे से ऐसा



हिसाब रहे तो ठीक होगा कि नीचे की हांडी तो इसी अन्दाज से रहे लेकिन ऊपर की हांडी दुगुनी बड़ी हो अर्थात् प्रत्येक छटांक पारे के लिये नीचे की हांडी १।। से पानी वाली हो और ऊपर की हांडी ३ सेर पानी वाली हो यानी ५ छटांक पारे के लिये ७।। सेर पानी की नीचे की हांडी और १५ सेर पानी की ऊपर की हांडी हो, दोनों हांडियां चपटी हों, खड़े किनारे की हों, छोटी हांडी में पारे के भाप एकत्र न होकर नीचे गिर पड़ती है और कुछ बाहर भी निकल जाती है (देखो २८ जून के थोड़े पातन की कामयाबी को) पारा मिलाकर तोलने से २ छटांक ३ पैसे भर हुआ डाला गया। २ छ० ५।। पैसे भर यानी पैसे भर घटा। ठीक इतना ही पहले घटा था। राख १।। छटांक थी।

२४/६ चारों दफे की राख को इकट्ठा कर पातन किया तो ।।) भर पारा और निकला।

२८/६=१।।) भर पारा जो छूटकर वाकी रह गया था उसे फिर दवा में घोट मूर्च्छन कर पातन किया तो १।।)भर निकला।

पातन का अनुभव

(१) हांडी का रूप मनादि ऊपर कह चुके हैं तदनुसार ग्रहण करे।

(२) हांडी की संधि चकले पर घिसकर मिलाई जावे और नीचे की हांडी पर चार चार कपरौटी कर ली जावें।

(३) दवा भरकर डौरू के जोड़ की संधि (वज्रमुद्रा से न कर) कैंची की मारकीन और मुलतानी की जावे जो एक बार में दोहरी आ जावे इसके सूख जाने पर दूसरी ऐसी ही पट्टी और चढा दी जावे।

(४) डौरू के जोड़ की पट्टी खूब सूख जाने पर डौरू आंच पर चढ़ाया जावे।

(५) आंच बबूल की डंडी की मन्दी मन्दी अर्थात् एक मसाल की बराबर दी जावे। तीव्र अग्नि बहुत हानिकारक है, तीव्र अग्नि से ही दोबारा पातन में आधा पारा उड़ गया।

(६) पातन के समय पर ऊपर की हांडी पर गोबर का घिरोला बांध बीच में खाली रख मोटा चौहरा कपड़ा डाल खूब पानी से तर रखा जावे।

(७) यह अभी पूर्ण निश्चय नहीं हुआ है कि थोड़ा थोड़ा पातन करने में छीजन अधिक होगी या कम क्योंकि तोले दो तोले छीजना एक बार में सामान्य बात है यदि छटांक छटांक में २ तोले छीजे तो भी बहुत ही होता है।

(८) २८ जून के १।। तोले के पातन में छीजन बिलकुल न जाने से निश्चय होता है कि थोड़ा थोड़ा ही पातन ठीक है क्योंकि जगह पूरी मिलने से पारे की भाप अच्छी तरह जमा हो सकी, उड़ी नहीं।

(९) यह बात भी विचारणीय है कि पहले साधारण पारद के परमाणु

स्थूल होने से वह कम छीजता था। अब पारद के शुद्ध हो जाने से परमाणु सूक्ष्म हो गये होंगे। इस कारण उनका क्षय होना अधिक संभव है।

नक्शा पातन का

जो ११ छटांक ॥) भर पारद १ बार पातित को पुनः पातन करने से हुआ।

तारीख पातन	पारा जो डाला गया	पारा जो छूट गया	पारा जो ऊपर की हांडीमें मिला	पारा जो नीचे कीहांडीमें मिला	कुल पारा दोनों हांडियों का	घटी	विशेषवार्ता
१६/६/०५	२ छ० ५)	।।।)	१ छ०	१ छ० २)	२ छ० २।)	−२)	इस बार अग्नि कुछ तेज लग गई
१८/६	२ छ० ५)	।।।)	१ छ० से कम	१ छ० ।)	२ छ० २)	−२)	
२०/६	२ छ० ३)	+	१ छ० १॥)	१ छ० १॥)	२ छ० १।।।)	−१।)	
२२/६	२ छ० ३)	+	१ छ० ।)	१ छ०+१)	२ छ० १।।।)	−१।)	
	११ छ०१)	१॥)	४+१॥)	५ छ०+१)	९ छ० २।।।)	−६।।।)	
२४/६	चारों दफे की राख को पुनः पातन किया तो ॥) पारा और निकला−						
२८/६	१॥)	+	१॥)	+	१॥)		
	११ छ० १)				९ छ० ४।।।)	१ छ० १।)	
२८/६/०५	समग्र तोलने से पातित पारा १ सेर १ छटांक ४) भर हुआ−						

जय श्री शंकर स्वामी की

प्रथम प्रकार से बोधन संस्कार

(संस्काराध्याय श्लोक ३०५ से ३०६ तक की क्रिया से)

दिक्पलं सैंधवं चूर्णं जलप्रस्थत्रयं तथा । धारयेद्घटमध्ये च सूतकं दोषविसर्जितम् । रूद्ध्वा तस्य मुखं सम्यङ् मर्दितं मृत्स्नया कुरु । निवाते निर्जने देशे धारयेद्दिवसत्रयम् ॥

(ध० सं० प० ३०)

२९/६ की शाम को एक घड़े में (जिसमें १२ सेर पानी आता था) ६॥ सेर पानी और १ सेर सैंधानोंन डाल और सब पारा डाल शकोरे से मुंह ढक मुलतानी और कपरौटी से दर्ज बंद कर दी गई और घड़े को चीनी की नाँद में रख ऊपरवाले खाने में रख ताला लगा दिया।

३/७ ४ दिन बाद आज सबेरे घड़ा मँगवाया गया तो घड़े के ऊपर के आधे भाग पर सफेदी छा गई थी और घड़ा बरफ की तरह नजर आता था। वास्तव में लवण घड़े के बाहर निकल कर जम गया था जो कहीं कहीं सफेद परातों में छूट सकता था। घड़ा खोल पारा तोला गया तो १ सेर १ छ० ३॥ रुपये भर ही हुआ अर्थात् ठीक हुआ। आगे नत्था नौकर के भाई के मर जाने से काम बंद रहा।

२२/७ संस्कृत पारे पर सोने का वरक डाल कर देखा गया तो बरक तुरंत पारे में जब्ज हो गया किन्तु दूसरे पारे पर जो हिंगुलाकृष्टस और दो बार पातित था, डालकर देखा गया तो वहां भी यही दशा थी और करीब करीब यही दशा केम्पकों से आये पारंद पर दीख पड़ी, इससे ज्ञात हुआ कि पारद षंढ ही है।

दूसरे प्रकार से बोधन

(संस्काराध्याय श्लोक २८२ की क्रिया से)

कदर्थनेनैव नपुंसकत्वं प्रार्दुर्भवेदस्य रसस्य पश्चात् ।
बलप्रकर्षाय च दोलिकायां स्वेद्यो जले सैंधवचूर्णगर्भे ॥

(र० चिं० ११)

२३/७ उक्त १ सेर १ छ० ३ रुपये भर पारे को कैंची की मार्कीन की (एक तहती पोटली में बांधा गया किन्तु झटका लगने से पारे के रवे कुछ नीचे निकल गये इसलिये) दो तह की पोटली में बांध पोटली को सूत की सींक बराबर मोटी डोर से बांधकर एक मटके में जिसमें २५ सेर पानी आता २० सेर पानी भर ३ सेर सैंधा नमक डाल उसमें लटका दिया गया और मटके को भट्टी पर ७ बजे स रख मंदाग्नि देना आरम्भ किया। ८ बजे मटका चटक गया। लाचार आंच बंद कर दी गई पर दोला उसी प्रकार स्थित रहने दिया गया। शाम को ४ बजे ठंडा हो जाने के कारण पारद की पोटली निकाल ली गई। मटके पर लेहा वा कपरौटी न थी इस कारण और ३ मटकेमंगवाकर १ पर लेहा चिकनी मिट्टी का जिसमें एक तह कपड़े की भी थी, लगाया गया। बाकी २ हांडियों पर मुलतानी से दो दो कपरौटी कर दी गई। पीछे उन दो हांडियों से एक पर तीसरी कपरौटी और कर दी।

२७/४ आज लेहा लगी हांडी में वही पानी लौट और जितना पानी पहली हांडी पी गई थी उतना पानी और डाल और ऽ। सेर नमक और डाल ७ बजे से अग्नि दी गई। ८ बजे के करीब यह हांडी भी चटक गई तुरंत दूसरी हांड़ी कपरौटी करी बदल कर अग्नि जारी रखी गई । २ बजे यह हांडी भी कुछ चटकी लेकिन नत्था ने वही थोड़ा कपड़ा और मुलतानी लगा काम जारी रखा। अवश्य यह बड़ी मटकी खराब मिट्टी की बनी है जो अग्नि नहीं सह सकती। दोलायंत्र के लिये भी उत्तम मिट्टी के बर्तन तैयार कराने चाहिये।

७ बजे शाम तक यह काम जारी रखा। एक घड़े में ५ सेर जल और ऽ। सेर नमक भर रख छोड़ा था जब पानी की जरूरत हुई उसमें से पड़ता रहा। दिन भर में ४ सेर पानी पड़ गया। रात को ७ बजे आंच बंद कर दी गई। १० बजे रात को देखा तो खूब गरम था। सबेरे ६ बजे देखा तो कुछ गुनगुना अब तक भी था।

२५/७ आज ७ बजे से फिर उसी मटकी के नीचे आंच जलाई गई। आधसेर नोंन और डाल दिया गया। (नमक हांडी को भेदकर बाहर आ गया है) घड़े में १ सेर पानी पहला बचा था और १ सेर पानी और ऽ। पाव भर नमक और डाल रख छोड़ा। उसमें से पानी पड़ता रहा। रात के सात बजे तक आंच दी गई। बाद में आंच बंदकर मिट्टी पर ही छोड दिया। प्रातःकाल तक पानी गुनगुना था।

२६/७ (आज सबेरे देखा गया तो मटकी पर नमक बहुत निकल आया था) इस मटकी को बदलकर नई ३ कपरौटी करी मटकीचढाई गई (खाली हुई मटकी को देखा तो नमक ने कपरौटी को हांडी से जुदा कर दिया था,

जरा से इशारे से कुल कपरौटी हांडी से जुदा छूट पड़ी और हांडी और कपरौटी के बीच में नमक की चौअन्नी भर मोटी तह जम गई थी) पानी जो पुरानी हांडी का ता वह कुछ मैलाा दीख पड़ा इसलिये ताजा पानी २० सेर भरा गया। ३ सेर नमक सेंधा डाला गया फिर वही पारे की पोटली उसमें उपरोक्त रीति से डाल ७॥ बजे से आंच बहुत मंदी आरम्भ की। १० बजे देखा तो पानी हांडी का केवल इतना गर्म हुआ था जिससे हाथ जलता न था। लिहाजा कुछ आंच और बढ़ा दी (चूंकि हांडी बड़ी होती है पानी भी बहुत होता है) ३ बजे से यह हांडी चटक गई और टपकने लगी लिहाजा फौरन बदलकर वही हांडी जो आज सबेरे बदल दी थी और जिस पर इस समय कपरौटी न थी पर हांडी साबुत थी, भट्टी पर रख दी गई और पानी लौट दिया गया और ४ सेर पानी और १ सेर नमक १ घड़े में गरम कर हांडी में और डाल दिया। (क्योंकि लौटते में कुछ पानी गिर गया था कि दोलायंत्र की खपच के किनारों से रस्सी बांध छत के कड़े में लटका दिया था ताकि एकाएक हांडी टूट जाने से पारद की पोटली जमीन पर वा भट्टी में न गिर अधर रह जावे।)



विशेषबात—यह आगे के लिये बड़ी जरूरी है कि स्वेदन के लिये खूब दृढ मिट्टी के बरतन बनवाकर कहीं बाहर से मँगवाये जावे और यदि चीनी करी के तली बड़ी मिल सके तो उनसे काम लिया जावे क्योंकि मिट्टी के बर्तन कुछ मैल मिट्टी छोड़कर पानी को गंदला कर देते हैं, यदि मिट्टी के बर्तन हों तो मजबूत मिट्टी के हों, कपरौटी भी हो और बहुत से तैयार रखे जावें क्योंकि क्षार, नमक आदि उनको जल्दी खराब कर देते हैं। इतने पारे के लिये २० सेर की मटकी कुछ बड़ी थी। १५ सेर के घड़े में भी काम हो सकता है।

आज रात के ७ बजे तक आंच दी गई। ९ बजे देखा तो खूब गरम था। भाप उठती थी रात भर भट्टी पर रहा सबेरे तक पानी गुनगुना था।

२७/७ आज पारे की पोटली निकाल खोली गई तो पहली तह में ही सब पारा मिल गया। पानी जुदा कर तोलने से १ सेर १ छ० २) भर पूरा उतरा। पारे को चीनी के ताशा में घुमाने से पूंछ रहती थीं और ज्यादा ढालू बरतन में करने से वह पूँछ निचुड़कर पारा निकल जाता था और कुछ सफेद चीज पीछे रह जाती थी। गालिबन यह नींबू और नमक का अंश हैं।

इस पारे को जंभीरी के रस से धोया गया अर्थात् चीनी के ताश में डाल हाथ से मला गया तो पारे के रवे रवे से हो गये फिर रस को निकाल पारद को ताश में रख कपड़े से ढ़क धूप में रख दिया। आज थोडी देर यानी दो तीन घंटे ही धूप लगी, सब पारा सूखा नहीं।

२८/८ आज पारे को धूप में सुखा जुदा किया तो १ सेर १ छ० २॥) भर पारा जुदा हो गया। ताश सील जाने से कुछ पारा उसमें लगा रह गया फिर धूप में सुखा खुरच खुरचकर मुश्किलसे ६ माशे पारा निकाला। नींबू और नमक का अंश जो पारे के साथ लगा रह गया था वह ताश में चमचोड़ हो जम गया था इसलिये पारे को नहीं छोड़ता था। गालिबन थोड़े नींबू के रस से धोने से यह नतीजा हुआ जो बहुत सी कांनी में धोया जाता तो यह खराबी न पड़ती।

सब पारे को निकाल बरतन में हिलाने से पूंछ बहुत सी मालूम पड़ी और उस पर मैल स्याही भी दीख पड़ी, बड़ा सन्देह हुआ फिर पारे को चार तह मलमल में दो बार छाना तो पूंछ रफै हो गई, कपड़े पर देखने से स्याही दीख पड़ी। पहले पारा कपड़े पर स्याही न देता था अब नींबू और नमक का अंश जो पारे में रहा उसी की स्याही कपड़े पर आई और इसी अंशा की वजह से पारे में पूंछ रहती थी। जब कपड़े में छानने से यह अंश निकल गया तो पारा साफ हो गया और पूंछ बंद होगई। आगे कांजी से धोने का इंतजाम किया जावे तो पारा १ सेर १ छ० ३ रुपये भर है।

तीसरे प्रकार से बोधन
साधारण पारद पर

यह क्रिया कठिन होने से पारे पर इसका अनुभव आरम्भ किया गया।

२९/७ साधारण पारद जो 'हरिंद्राकोल' क्रिया से एक बार ऊर्ध्व पातित और फिर नवनीताभ्रक क्रिया से आधा ऊर्ध्व और आधा अधः पातित हो चुका था (अर्थात् मामूली पारा जिसके २ पातन हो चुके थे) १४॥=) भर (२८/४ से २६/५ तक) और हिंगुलोथ पारद जो हरिंद्राकोल क्रिया से १ बार पातित हो चुका था और फिर लहसन में घुट चुका था १४॥=) भर सब २९) भर को एक सैंधे नमक की ओखली में जो ६ सेर भारी थी और जिसके बीच मे २। इंच गहरा २॥। इंच चौड़ा गढ़ा था और जिस ओखली की किनारी १॥ इंच मोटी थी और जिसका तला २ इंच मोटा था उसमें उक्त २९ तोले पारा भर (पहले आधा पारा भरा तो सब ओखली में न फैला इसलिये इतना भरना पड़ा) २ तौले नौसादर का चूर्ण डाल २ तोले नींबू का रस ऊपर से डाल ऊपर से नमक की डाट लगा डाट की किनारी पर मुलतानी से दराज बंद कर एक गढे में जो १५ इंच चौड़ा और १२ इंच गहरा था २ इंच गंगारज डाल उस पर वह नमक की ओखरी रख ऊपर से और रज डाली गई। रज थोड़ी होने से काम आगे न चला और रेत प्रभूला के बाग से पास से मँगवाया गया और गीला होने से सुखा दिया गया।

२०/७ आज ओखली को निकल कर देखा तो नींबू के रस ने कोई खराबी ओखली में नहीं डाली थी। ओखली बदस्तूर मौजूद थी लिहाजा फिर डाट को मुलतान से बंदकर गढे में रख नीचे और बराबर में मामूली रेत दे ऊपर गंगारज दे दी गई। १२ इंच गहरा गढा था जिसमें १॥ इंच रेत देकर ओखली रखी ४॥ इंच मोटी ओखली थी ६ इंच ऊपर रेत रहा सबसे ऊपर ऽ॥। गोबर के चूरे की आंच दी गई। ८ बजे सबेरे से तीन तीन पाव चूरे की आंच हर घंटे दी गई। शाम के ७ बजे तक १२ दफे आंच दी गई। ९ सेर सूखे गोबर का चूरा जला १ घंटे में आंच झीनी पड़ जाती थी। उसी समय दूसरी आंच गोबर के चूरे की रख दी जाती थी।

३१/७ आज सबेरे ७ बजे देखा गया तो राख थोड़ी गरम थी। राख हटा रेत देखा गया तो खूब गर्म थी मगर हाथ जलता नहीं था। रेत नीचे तक गरम निकली, सैंधव का डेला भी गरम था। रेत हटा डेला निकाल खोला गया तो उसमें आध के करीब नींबू का रस मौजूद था और नौसादर रेत की तरह नजर आता था अर्थात् नींबू के रस में हल नहीं हुआ था। पारा निकाल तोला गया तो २९ तोले पूरा मौंजूद था, कुछ छीजन नहीं गई। ओखली में कोई खराबी नहीं आई थी। केवल जहां तंहा नींबू का रस था वहां तक चौड़ाई में एक रुपये की मोटाई की बराबर खांचा सा पड़ गया था।

---

१ इसको वृहत् योगतरंगिणी, रसराजशंकर, रसराजपद्धति आदि ग्रंथों में नियमन माना है।

मेरी राय में इसी ओखली में ७ दिन कर्म चल सकता है किन्तु रस और नौसादर रोज नया दिया जावे।। आंच भी इतनी काफी समझनी चाहिये।

उपरोक्त क्रिया का पुनः अनुभव

३१/७/०५ फिर इस पारद को उसी प्रकार उसी ओखली में भर २ तोला नौसादर डाल १० बजे से ७ बजे तक एक सेर कण्डों की ८ आंच दी गई। कोई १। घंट में दूसरी आंच लगती थी। थोड़े गेंहूं रेत में डाल दिये थे।

१/८ आज सबेरे ७ बजे खोला गया तो रेत कल से अधिक तप्त था। हाथ से न निकाल कर शकोरे से रेत निकाला गया। सैंधव का डेला भी खूब गुनगुना था, गेंहू जो रेत में डाले गये ते वह बिल्कुल ज्यों के त्यों निकले, इससे ज्ञात होता है कि आंच की गरमी यद्यपि पारे को काफी हो पर गेंहुओं को जला या भून न सकी। तोल में पारा ठीक बैठा—नींबू का रस ४ तोले निकला नौसादर ७ तौला निकला।

उपरोक्त क्रिया का तीसरी बार अनुभव

१/८ आज सबेरे फिर उसी पारे को उसी ओखली में भर १ तोला नौसादर डाल १ छटांक नींबू का रस डाल बंद कर भूधरयंत्र में धर १। सेर कंडों की आंच दी गई। ९।। बजे से ७ बजे तक ८ आंच लगी।

२/८ आज सबेरे ७ बजे खोला गया तो राख भी गरम थी। बालू खूब गरम थी, लवण का ढेला भी गरम था। पारा तोलने से २८।।≈) भर हुआ। यह पारे की ।≈) भर की कमी तीन दिन की छीजन में गई । नींबू का रस १ छटांक हुआ। आखली में जहां तक नींबू का रस पड़ता था वहां तक खांचा पड़ गया था।

उपरोक्त क्रिया का चौथी बार अनुभव संस्कृत पारद पर

(अर्थात् संस्कृत पारद का पुनः बोधन संस्कार
रसराज सुन्दर की क्रिया से)

उत्तराशाभवः स्थूलो रक्तसैंधवलोष्टकः । तद्गर्भे रंध्रकं कृत्वा सूतं तत्र विनिक्षिपेत् ।। ततस्तु चणकक्षारं दत्त्वा चोपरि नैम्बुकम् । रसं क्षिप्त्वाथ दातव्यं तादृक्सैंधवखोटकम् । गर्तं कृत्वा धरागर्भे दत्त्वा सैंधवसंयुतम् । धूलिमष्टांगुलं दत्त्वा कारीषं दिनसप्तकम् ।। वह्निं प्रज्वाल्य तद्ग्राह्यं क्षालयेत् कांजिकेन तु । अयं निरोधनन्नाम संस्कारो गदितो बुधैः । अभावे चणकक्षारस्यापर्यन्नेवसादरम् ।

(रसराजसुन्दर–३३)

२/८ सैंधव डेले मे खुदी ओखरी (जिसकी तोल ऊपर की डाट के अलावा ८ सेर गहराई २।। इंच चौड़ाई ऊपर १।।।इंच नीचे ३ इंच थी किनारे ओखली के २ इंच से ३ इंच तक मोटे थे। ओखरी की तह की मोटाई २ इंच थी) में उक्त १ सेर १ छटांक ३) रुपयें भर पारे को भर १ नौसादर उड़ा हुआ भर १ छटांक जंभीरी का रस डाला गया तो ओखली की एक तरफ से रस निकलने लगा, टेढा किया तो पारा भी निकलने लगा अतएव सब को चीनी के वर्तन में लौट लिया। (इस नमक के डेले पर एक परत थी जो दूसरे परत से छूट गयी और दराज में रास्ता हो जया। आग ऐसे डेले काम में आवे जिनमें परत न हो)। और दूसरी ओखरी में भरा गया तो उसमें भी जहां परत था वहां से निकल गया। लाचार इस समय मुहूर्त ठीक न समझ काम बन्द रखा गया।

३/८ आज एक तीसरी नमक की ओखली में (जो ११ सेर भारी ओखरी की गहराई ३ इंच चौड़ाई ४ थी, मुँह चौड़ा ३ इंच था। डाट ३ इंच मोटी थी। तह की मुटाई ३ इंच थी और जिसमें १ रस नींबू का रात भर भरा रखा रहा था और निकला नहीं था) १ सेर १ छ० ३) रुपये भर संस्कृत पारद भर २) रुपये भर नौसादर उड़ा हुआ डाल १/२ छटांक नींबू का रस और डाल डाट लगा मुलतानी से बन्द कर भूधरयंत्र में रख एक अंगुल रेत नीचे दो वा ३ अंगुल इधर उधर ओखली के ऊपर ८ अंगुल लेकिन डाट ऊपर के ५ अंगुल था। १ सेर कंडों की आंच ७। बजे दी गई। आगे घंटे घंटे में आंच लगती रही। शाम के ७ बजे तक १२ आंच लगी।

४/८ आज सबेरे ७ बजे खोला तो रेत खूब गरम थी, खोलने पर संपुट ठीक निकला। पारा तोलने पर १ सेर २ छटांक ३ रुपये भर हुआ।

दूसरी बार

४/८ आज पुनः उसी ओखली में पारा भर २ तोले नौसादर बाजारी जो धुले कपड़े के सदृश श्वेत था डाल २ छटांक नींबू का रस डाल डाट लगा भूधरयन्त्र में रख एक एक सेर की आंच ८।। बजे से आरम्भ की ७।। बजे तक १२ आंचें दी गई। राख निकाली, नहीं जाती दहरे के ऊपर दहरा लगा दिया जाता है।

५/८ आज सबेरे खोलते समय मालूम हुआ कि गड्ढे की रेत डेले की एक तरफ गीला है शुबहा हुआ कि डेला रिस गया अहतियात से निकाल खोला गया तो पारा और रस मौजूद था गालिबन गरमी से रस उबलकर थोड़ा सा डाट के जोड़ में होकर निकल गया होगा, पारा तोलने पर पूरा १ सेर १ छटांक ३ रुपये भर उतरा।

तीसरी बार

५/८ उसी नमक की ओखली में (जांच कर कि रस रिसता तो नहीं) फिर पारा भर २ तोले नौसादर डाल १।। छटांक रस जम्भीरी ओर नींबू का मिला हुआ डाल डाट भूधरयन्त्र में ९।। बजे से आंच सेर सेर भर की दी गई ६।। बजे तक १० आंच लगी।

६/८ आज खोला गया तो १।। छटांक रस निकला पारा पूरा हुआ डेले के एक तरफ कुछ खांचा सा है उसमें कुछ रेत चिपट गयी था इससे फिर डेला रिसने का शुबहा हुआ पर कोई बात ठीक समझ में नहीं आई, तोल रस और रसराज की पूरी हो गई नौसादर अलबत्ता १ भर है।

चौथी बार

६/८ आज पारे को फिर उसी ओखली में भर २ तोले नौसादर डाल १।। छटांक नींबू और जम्भीरी का ताजा रस डाल डाट बन्दकर भूधरयन्त्र में ८।। बजे से आंच दी गई ७ बजे तक ११ आंच लगी एक एक सेर की आंच काफी लगती है क्योंकि नौसादर उड़कर डाट के किनारों पर जम जाता है और डेला प्रातःकाल के समय भी गरम निकलता है।

७/८ आज सबेरे निकाला गया पारा पूरा ही है किन्तु कुछ ठण्ढी खिंचने लगी थी चढ़ाने पर एक अठन्नी आगे चढ़ गई यह कमी थोड़ी थोड़ी चार दिन की छीजन से हुई।

पांचवी बार

७/८ आज फिर उसी ओखली में उक्त पारा और १।। तोले नौसादर १।। छटांक रस नींबू और जम्भीरी भर भूधरयन्त्र में रख ८।। बजे से एक एक सेर की आंच आरम्भ की ७ बजे तक ११ आंच लगी।

८/८ आज खोला गया तो पारा ठीक उतना ही अर्थात् १ सेर १ छटांक २।। तोले हुआ।

छठी बार

८/८ आज फिर उसी ओखरी में उपरोक्त रीति से उक्त पारद रखा गया ८।। बजे से ६।। बजे तक ११ आंच लगी।

९/८ आज सवेरे निकालने पर पारा पूरा १ सेर १ छटांक २।। रुपये भर हुआ।

सातवीं बार

९/८ आज फिर उसी ओखली में उक्त पारे को भर २ तोले नौसादर ३ छटांक जम्भीरी का रस डाल (रस इसलिये अधिक डाला गया कि ओखरी में गड्ढा ज्यादा गहरा हो गया था) ८।। बजे से आंच लगी ७।। बजे तक ११ आंच लगीं।

१०/८ आज सवेरे निकालने पर पारा पूरा १ सेर १ छटांक २।। रुपये भर हुआ।

आठवीं बार

१०/८ आज ओखली बदल दी गई ७ दिन काम में आने से ओखरी में इधर उधर खांचा एक एक अंगुल बढ़ गया था (लेकिन मुंह ठीक रहा था और तला ठीक रहा था) खांचा बढ़ जाने से दल कम रह गया था और सात दिन भी हो चुके थे इसलिये ओखरी बदल दी गई दूसरी ओखरी जो खूब सुर्ख नमक की थी और २२ सेर भारी थी मुंह पर २ इंच चौड़ी नीचे ३। इंच चौड़ी गहरी ३ इंच. मुटाई ४ इंचतले के नीचे की मुटाई ४ इंच थी उसमें १ सेर १ छटांक २।। रुपये भर पारा भर २ तोले नौसादर डाल २ छटांक नींबू और जम्भीरी का रस डाल. डाट लगा (जो ऊपर से ५।। इंच चौड़ी थी और जो १।। इंच मुंह के इधर उधर चढ़ी रहती थी और १।। इंच मोटी थी) मुलतानी से दराज बन्द कर भूधरयन्त्र में धर रेत भर डेले से ८ अंगुल ऊंचा रेतकर (डाट से ६।। अंगुल ऊंचा रहा) १०।। बजे से आंच देना आरंभ किया। पहली ३ आंच १। सेर की आगे एक एक सेर की दी गई ८ आंच लगीं।

११/८ आज सबेरे खोलने से डेला नमक का गरम था पारा निकाल तोला तो पूरा १ सेर १ छटांक २।। रुपये भर हुआ।

नवीं बार

११/८ आज फिर उसी ओखली में रख २ तोले नौसादर २ छटांक नींबू का रस डाल बन्दकर भूधरयन्त्र में ८ बजे से एक एक सेर की आंच दी गई ७ बजे तक १२ आंच लगीं।

१२/८ आज खोलने पर डेला खूब गर्म निकला। पारा निकाल तोला तो पूरा १ सेर १ छ० २।। रुपये भर हुआ।

दसवीं बार

१२/८ आज फिर उपरोक्त विधि से उसी ओखली में पारा भर १२ आंच एक एक सेर की दी गई।

१३/८ आज पारा निकालने पर पारा पूरा १ सेर १ छ० २।। रुपये भर हुआ।

ग्यारहवीं बार

१३/८ आज फिर उसी प्रकार ९। बजे से ऽ१= सेर की ११ आंच लगीं।

१४/८ आज रेत देखी तो इतनी गर्म थी जो हाथ नहीं रखा जाता था पारा पूरा उतरा।

बारहवीं बार

१४/८ आज फिर उसी प्रकार रख दिया गया। नौसादर आज एक ही तोला डाला, इस ख्याल से कि लवण का असर कम पड़ता होगा अब गढ़ा नमक में इधर उधर को बढ़ गया है। ८। इंच हो गया है। डाट के नीचे भी कुछ खांचा सा पड़ गया है। आज ८ बजे से १। सेर की आंच दी गई। शाम के ७ बजे तक १० आंच लगी।

१५/८ आज निकाला तो पारा ठीक निकला, इतनी आंच कुछ हानिकारक नहीं हुई।

तेरहवीं बार

१५/८ आज फिर उसी ओखली में उपरोक्त विधि से उक्त १ सेर १ छ० २।। रुपये भर पारद को भर, २ तोले नौसादर और ३ छटांक रस जंभीरी डाल घर (गढा) बड़ा हो गया था, इसलिये रस बढ़ा दिया। बंद कर ८।। बजे से ७ बजे तक एक एक सेर की ११ आंच लगीं।

१६/८ आज पारा ठीक निकला, नौसादर उड़कर डाट के इधर उधर खांचे में जम जाता है।

चौदहवीं बार

१६/८ आज फिर उक्त १ सेर १ छ० २।। रुपये भर पारद को उपरोक्त विधि से उसी ओखली में भर, २ तोले नौसादर ३ छ० रस जंभीरी डाल बंदकर भूधर में उपरोक्त रीति से रख ८।। बजे से ७ बजे तक सवा सवा सेर की ९ आंच लगीं।

१७/८ आज सवेरे खोला गया तो रेत खूब गरम निकली, हाथ नहीं रखा जाता था, डेला भी ज्यादा गरम था मगर कोई खराबी नहीं हुई थी लिहाजा १। सेर की आँच ज्यादा न थी इतने बड़े ढेले को इतना ही आंच देना मुनासिब है। पारा निकाल तोला तो ठीक हुआ, खांचा चारों तरफ ज्यादा हो गया है। ३। इंच असली चौड़ाई थी सब ४।। इंच हो गई है अर्थात् १।। इंच बढ़ गया है लेकिन जितने ऊंचे तक पारा उठा उतने ऊंचे तक खांचा बढ़ा नहीं न तली में कोई विकार हुआ क्योंकि तली भी पारे से ढकी रही। डाट के नीचे मुंह की चौड़ाई उतनी ही रही। गरम डाट के जोड़ पर जहां मुलतानी गलती थी वहां नींबू और नौसादर का असर मुलतानी के साथ नमक पर पड़कर खाँचा सा पड़ गया है।

पन्द्रहवीं बार

१७/८ आज फिर उसी ओखरी में उक्त १ सेर १ छ० २।। रुपये भर पारा भर २ तोले नौसादर ३ छ० रस जंभीरी भर बन्दकर भूधर में ८।। बजे से ७ बजे तक सवा सवा सेर की ९ आंच लगीं।

१८/८ आज पारा निकाला तो ठीक निकला, डेला खूब गर्म था।

सोलहवीं बार

१९/८ आज फिर उसी तरह उक्त पारद रखा गया और ९ बजे से ७ बजे तक ९ आंच सवा सवा सेर की दी गई।

१९/८ आज खोलने पर पारा १ सेर १ छ० २।। रुपये भर हुआ।

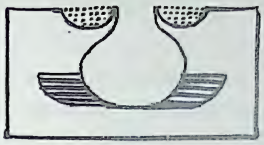
सत्रहवीं बार

१९/८ आज फिर उपरोक्त विधि से उक्त १ सेर १ छ० २।। रुपये भर पारद को रख ९ आंच सवा सवा सेर की दी गई।

२०/८ आज पारा निकाल तोला तो पूरा हुआ।

अठारहवीं बार

२०/८ आज नमक की ओखली को आधा इंच गहरा और कराया गया इसलिये कि इधर उधर तो नींबू और नमक के असर से खांचा बढ़ गया था मगर नीचे तह में कोई असर नहीं पड़ा था, ऊपर भी जो नुकतों का निशानवाला खांचा पड़ गया था उसी के मुताबिक बीच में छठवां कर हम बार करा दिया गया और फिर उसी प्रकार उक्त पारा और २ तोले



नौसादर ३ छ० रस जंभीरी डालकर बंदकर ९। बजे से ८ बजे तक ८ आंच सवा सवा सेर की दी गई। २१/८ आज पारा निकाल तोला तो पूरा १ सेर १ छ० २।। रुपये भर हुआ।

उन्नीसवीं बार

२१/८ आज फिर उक्त पारद को उपरोक्त विधि से रख ८।। बजे से सवा सवा सेर की ९ आंच लगीं।

२२/८ आज पारा निकाल तोला तो पूरा निकला।

बीसवीं बार

२२/८ आज फिर उपरोक्त रीति से पारद को रख सवा सवा सेर की ९ आँचे दी गईं।

२३/८ आज पारा निकाल तोला तो पूरा हुआ।

इक्कीसवीं बार

२३/८ आज फिर उसी तरह पारा रखा गया और ८ बजे से ७ बजे तक सवा सवा सेर की आंच दी गई।

२४/८ आज ठीक निकला। तोल पारे की अब ठीक ठीक १ सेर १ छटाक २) भर है पहले शोधन संस्कार के आरम्भ में तोल १ सेर १ छ० ३) भर थी यानी १) भर घटा (१ सेर १ छटांक २) भर पारद है)।

(जय श्री शंकर स्वामी की, बोधन बहुत ही बढ़िया हुआ।)

ॐ शिवाय नमः

नियमनसंस्कार

(अष्ट संस्काराध्याय के ३३४ से ३३५ तक के श्लोक की क्रिया)

कर्कोटी लशुनं नागं मार्कवं चिंचिका पटुः । एभिस्त्रिदिवसैः स्वेदाद्वीर्य्यवाञ्जायते रसः । इति लब्धवीर्य्यः सम्यक् चपलोसौ नियम्यते तदनु । फणिलशुनाम्बुजमार्कवकर्कोटीचिंचिकास्वेदात् ॥

(ध० स०)

३०/८/१९०५—वनक कोड़े की बेल, पत्ता, फल, फूल, ६।। सेर का रस १ सेर।

नागफनी————————४ सेर का रस १।। सेर
भांगरा—————————२ सेर का रस १=सेर
लहसन कांजी में भिगो रस निकाला १ सेर का रस ऽ।। सेर
इमली पकी हुई का गाढा पन्ना————ऽ=का १ सेर
ये रस ४ आदमियों ने दिन भर में निकाले———ऽ५=सेर

३१/८ लहसन का रस आज सवेरे निकाला गया सब मिलाकर ५=सेर रस और १० तोले लवण एक कपरौटी करी हांडी में जिसका पेट कम चौड़ा था और गर्दन ऊंची थी भरकर (हांडी इतने रस से भर गई सिर्फ किनारे से ३ अंगुल खाली रही) उस हांडी में एक तह की कैंची की मारकीन की पोटली में उक्त १ सेर १ छ० २ तोले पारे को बांध दोलायंत्र की विधि से लटका कर पोटली (हांडी की तह से २ अंगुल ऊंची रही) हांडी को सरवे से ढक— ९।। बजे से मंद अग्नि दी गई। ६।। बजे रात भर तक रात के ८ बजे और १० बजे और भी आंच का दहरा देखिया १० बजे रात तक खूब गरम था। सवेरे ६ बजे भी गुनगुना था दिन में ककोड़े का रस ऽ।=और भांगरे का रस ऽ।।=और लहसन का रस १ १/२ छटांक इमली के पत्तों का रस ६।। छटांक सब मिलाकर १।।। सेर रस पड़ा।

१/९ आ सवेरे ७ बजे फिर आंच आरम्भ कर दी गई। रस हांडी का घटकर पोटली की ऊपर की गांठ तक रह गया था, इसलिये ८ छटांक रस ककोड़ का और डाला गया। बाद को आवश्यकता पर नागफनी का १० छटांक, भांगरे का ६ छटांक, लहसन का ऽ१ सेर और इमली का (फल और पत्तों दोनों का) १० छटांक नोंन २ छ० आज पड़ा। रात के १० बजे तक आंच जलाई गई, आज दो दिन में लहसन का रसऽ१।।=सेर और बाकी सब चीजों का रस २ सेर २ छटांक पड़ चुका था।

२/९ आज हांडी के नीचे जो गाद बैठ गई थी उसको निकाल दिया गया और रस रहने दिया। ७ बजे से आंच आरम्भ की २ छटांक नोन और १ सेर छ० ककोड़े का रस १२ छटांक, नागफनी १२ छ०, भांगरे का इमली का पन्ना और पत्तों का रस १२ छ०, लहसनका रस ऽ।। सेर-सब ऽ४=से रस पड़ा। रात को १० बजे तक आंच लगी, इन तीन दिनों में १४। सेर रस पड़ा।

३/९ आज पारे को तीन दिन हो जाने से हांडी से निकाल पोटली से खोल कांजी से धोया गया तो १ सेर १ छटांक २) भर पारा हुआ। जय श्री शंकर स्वामी की।

नियमन का दूसरा प्रकार

अष्ट संस्काराध्याय के श्लोक ३४५ से ३४६ तक की क्रिया से)

मेघनादरसैरेवं सर्पनेत्रारसैरपि । मार्कवाद्भिश्चिंचिकाद्भिर्भूषाकरणिका-रसैः । वंध्याकन्दरसैश्चैव पीतवर्णरसैस्तथा। लांगलीकहंसपादीरसश्चामलकोरसैः । मासत्रयस्य पाकेन रसो बह्निसहो भवेत् (र० रा० ल०)

१ चौलाई, २ नागफनी, ३ भांगरा, ४ मोथा, ५ इमली, ६ मूषाकर्णी, ७ बांझककोड़ा, ८ हल्दी, ९ जलपीपल (वाको वा कलिहारी), १० छुईमुई ११ आंवला इनके रस में ३ मास पकाने से पारद अग्नि को सहनेवाला हो जाता है।

३/९ आज (१) चौलाई का रस ८ छटांक, (२) नागफनी का ८ छटांक, (३) भांगरे का ८ छ० (४) (मोथा हरा नहीं था), (५) इमली के फल का काढा ८ छटांक (६) (७) बांझ ककोड़े का रस ८ छटांक (८) हल्दी हरी नहीं मिली (९) जल पीपल का रस ८ छ०, (१०) (११) आंवले का काढा ८ छटांक, (हल्दी नागर मोथे की जगह धतूरे का रस ८ छटांक और लहसन का रस २ सेर सब ६ सेर रस आज निकला

४/९ आज उक्त ६ सेर रस में से ५ सेर रस एक कपरौटी करी हांडी में भर (जो गर्दन तक भर गई) उसमें उक्त १ सेर १ छ० २ रुपये भर पारा एक तह कैंची की मारकीन की पोटली में बांध दोलायंत्र के प्रकार से लटका ९ बजे से आंच दी गई। पीछे से १ सेर बचा हुआ और आज निकाला हुआ छुईमुई का रस ८ छ० मूषाकर्णी ८ छटांक सब ३ सेर रस शाम तक और पड़ा। फिर ककोड़ा, नागफनी, भांगरा, चौलाई, मूषाकर्णी, छुईमुई जलपापर, आमला, इमली, धतूरा इन १० औषधियों का आध आध सेर रस निकाल इकट्ठा कर दिया गया। ५ सेर हुआ यह शाम से पड़ा काम रात भर चलता रहा। सवेरे तक २।। सेर रस पड़ा।

५/९ आज भी आंच बराबर जारी रही। शाम तक बचा हुआ २।। सेर रस पड़ा फिर उपरोक्त १० औषधियों का रस पाव भर निकाल २।। सेर हुआ। शाम से सवेरे तक रात में पड़ गया। रात दिन काम चला ५/९ आज भी दिनरात काम चला और उपरोक्त १० औषधियों में से छुईमुई छोड़ (मिली नहीं थी), बाकी ९ चीजों का आध आध सेर रस निकाला गया। सब ४।। सेर हुआ उसमें से आधा दिन में पड़ गया और आधा रात में।

७/९ आज तीन दिन हो गये इसलिये और रस नहीं पड़ा, हांडी भरी हुई थी, उसी में आंच दी गई १२ बजे दिन तक आंच लगी शाम को ४ बजे

निकाल तोला गया तो पूरा उतरा अर्थात् १ सेर १ छटांक २ रुपये भर।

दूसरे प्रकार से नियमन समाप्त। जय श्री शंकर स्वामी की।

इस क्रिया में ६+१+५+२।।+४।।=१९ सेर रस पड़ा।

नियमन का तीसरा प्रकार

स्वेच्छा गृहीत नियामक औषधियों से दो प्रकार से नियमन हो चुका परन्तु उग्र औषधियों से हुआ रसायन औषधियों का प्रयोग कम हुआ इसलिये "रसार्णव में" कही हुई नियामक वर्ग से नीचे औषधियां छांट कर फिर नियमन आरम्भ किया–

७/९ रस निकाले ६।। सेर।

८/९ आज भी रस निकाले ८।।। सेर सब १५। सेर जिनका प्रमाण निम्नलिखित है–

भांगरे का रस १।।। सेर, आंवले का काढ़ा १ सेर, मिसी या काकजंघा का रस १ सेर, मकोय का रस १२ छटांक, नीली और सफेद धनत्तर का ६ छटांक, सोंठ का १।। सेर, गोभी का १ सेर, पियांबांसे का १। सेर, गेंदे का १ सेर, कंघी का १ सेर, सितम्बर का १ सेर, मछेछी का ६ छटांक, ब्रह्मदंडी का २।। छटांक, जलपीपल का ८ छटांक, धतूरे का १० छटांक, ककोड़े की जड़ का १ सेर, बस १५। सेर रस निकला।

इन सब रसों में से ८ सेर रस हांडी में भर (यह हांडी पहली हांडियों से बड़ी थी और ८ सेर रस से भरी ३ अंगुल खाली रही) दोलायंत्र की विधि से ९ बजे दिन से आंच दी गई। दिन रात काम चला, ४ सेर रस दिन में और पड़ा और ३। सेर रस रात में पड़ा। सब १५। सेर रस समाप्त हो गया।

९/९ आज भी आंच जलती रही, गोभी का रस १० छटांक, इमली का काढा ८ छ०, आमले का काढा ८ छ०, पियाबांसे का रस ८ छ०, सितावर का काढा ८ छ०, कंघी का रस १ सेर, तालमखाने की जड़ का स्वरस १।। सेर, धतूरे का रस ८ छटांक, जल पीपल का १० छ०, सब ६। सेर रस निकले। यह रस सवेरे से दिन भर और रात भर में पड़ गये। रात दिन आंच दी गई।

१०/९ चूंकि यह तीसरा नियमन अपनी राय से किया गया था इसलिये इसको बहुत दिन तक करना उचित न समझ आज यानी दो दिन पीछे ही बंद करना उचित समझा पर हांडी में रस बहुत था इसलिये इसको और रस डाले बिना ही दोपहर १२ बजे तक आंच दी गई फिर बंद कर दी गई। इस नियमन के तृतीय प्रकार में सब २१।। सेर रस पड़ा। तीसरे पहर पारा निकाल तोला गया तो ठीक १ सेर १ छ० २) भर हुआ। जय श्री शंकरस्वामी की।

११/९ आज गरम कांजी से पारद को धोया गया तो तोला ठीक १ छ० २) भर बैठी।

इति श्री जैसलमेर निवासी प० मनसुखदासात्मजव्यास–
ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायां
स्वानुभूताष्टसंस्कारसंवन्धिपारदकर्मवर्णन
नाम नवमोऽध्यायः ।।९।।

बुभुक्षितीकरण वा मुखीकरणाध्याय १०

शुद्ध और बुभुक्षित पारद की महिमा

दोषैर्विहीन विहतं रसेन्द्रं सशोधितं स्वेदनमर्दनाद्यैः ।।
यदौषधीनां मुखजातदिव्यं दारिद्र्यरोगाखिलहारि दिव्यम् ।।१।।

(र० पा०)

अर्थ–स्वेदन मर्दन आदि संस्कारों से विधिपूर्वक शुद्ध किया हुआ इसी कारण दोषों से रहित और औषधियों से जिसका मुख हो गया है ऐसा पारद सम्पूर्ण दरिद्रता रूपी रोगों का नाश करता है ।।१।।

अन्यच्च

धातून्मुखे समुत्पन्ने यदा भुंक्ते रसोऽखिलान् ।।
तदा मृत्युदरिद्राणां भयं नैव भृशं भवेत् ।।२।।

(र० पा०)

अर्थ–मुख उत्पन्न होने पर पारद जब समस्त साधुओं को भक्षण कर जाता है तव मृत्यु और दरिद्रता का लेशमात्र भी भय नहीं होता है।।२।।

मुखीकरण दीपन

वस्तुतस्तु दीपनस्यापरपर्य्यायो मुखकरणमिति न पृथक् संस्कारः तत्साधकान्यूनविंशतिकर्माणीति नियमभंगात् ।।३।। (र० रा० शं०)

अर्थ–मुखीकरण, पारद को कोई भिन्न संस्कार नहीं है क्योंकि मुखीकरण दीपन का ही दूसरा नाम है। यदि दीपन का दूसरा नाम मुखीकरण न माना जाय तो उन्नीस संस्कारों के नियमन का भंग होता है, ऐसा उन लोगों का मत है जो पारद सिद्धि के दाता उन्नीस संस्कारों को मानते हैं, जैसे (रसराज शंकर प्रभृति) ।।३।।

बुभुक्षितीकरण

सहस्रनिंबूफलतोयघृष्टो रसो भवेद्वह्निसमप्रभावः ।।४।।

(टी० न०)

अर्थ–एक हजार नींबू के रस में घोटने से पारद अग्नि के समान प्रभाववाला होता है अर्थात् बुभुक्षित पारा होता है।।४।।

अन्यच्च

सहस्रनिंबूफलनीरघृष्टो रसो भवेद्वह्निसमप्रभावः ।
समस्तरोगक्षयकृत्प्रभूतवर्णायुषी संविदधाति पुंसाम् ।।५।।

(र० प०)

अर्थ–एक हजार नींबू के रस में घोटा हुआ पारद समस्त रोगों का नाशक और अग्नि के समान प्रभाववाला होता है और वह पारा मनुष्यों के उत्तम वर्ण और आयु को बढ़ाता है।।५।।

अन्यच्च

सहस्रनिंबूफलतोयघृष्टो रसो भवेद्वह्निसमप्रभावः । सव्योषराजीलवणस्सचित्रः सरामठो विंशतिवासराणि ।।६।।

(यो० त०, र० चि०, र० रा० सुं०, नि० र०)

अर्थ–सोंठ, मिर्च, पीपल, राई, सैंधव और चित्रक इन सबको मिलाकर पारद के षोडशांश के तुल्य ग्रहण करे फिर प्रतिदिन पचास नींबू के रस से २० दिन तक घोटे तो एक सहस्रम नींबू के रस की घुटाई पूरी हो जाती है, वस इसी क्रिया से पारा बुभुक्षित होता है (निघण्टुरत्नाकरने इस क्रिया को अनुवासन संस्कार माना है और रसराजशंकर ने दीपन और वस्तुतः यह दीपन ही है, ऐसा हमारा मत है)।।६।।

मुखी करण

अथवा सपटुक्षारनवसारकटुत्रिकैः ।।
रसोनशिग्रुराजीभिरुदक्खल्वेऽम्लाकांजिकात् ।।७।।

(रसमानस०)

अर्थ–अथवा सैंधव, जवाखार, नौसादर, सोंठ, मिर्च, पीपल, लहसन, सैंजना, राई और कांजी से पारद को खल्व में घोटे तो पारद का मुखीकरण होता है॥७॥

अन्यच्च

अथवा त्रिकुटक्षारौ राजीललवणपंचकम् ॥ रसोनं नवसारश्च शिग्रुश्चैकत्र चूर्णितैः ॥८॥ समांशैः पारदादेतैर्जंबीरस्य द्रवेण च ॥ निंबूतोयैः कांजिकैर्वा तप्तखल्वे विमर्दयेत् ॥ अहोरात्रत्रयेण स्याद्रसे धातुचारं मुखम् ॥९॥

(धं० सं०, र० रा० शं०, र० रा० सुं, शार्ङ्गधर, यो० त०, र० सा० प०)

अर्थ–अथवा सोंठ, मिर्च पीपल, जवाखार, राई, पांचो नोंन, लहसन, नौसादर और सैंजना इनका चूर्ण कर पारद के तुल्य ग्रहण करना चाहिये फिर जंभीरी के रस मे अथवा नींबू के रस में या कांजी के रस में तीन दिन रात तप्तखल्व में मर्दन करे तो पारद के धातुओं को खानेवाला मुख होता है॥८॥९॥

अन्यच्च

द्वौ क्षारौ त्रिकुटाश्चापि राजिका नवसादरम् । हुताशनश्च शिग्रुश्च रसोनः पटुपंचकम् ॥१०॥ रसात्समांशकरेभिर्मदयेन्निम्बुकद्रवैः ॥जंबीरस्वरसैर्वापि कांजिकैर्वा प्रयत्नतः ॥११॥ तुषवह्निस्थके खल्वे अहोरात्रैस्त्रिभिर्भवेत् । बुभुक्षितो रसो बाले सर्वधातुचरो भवेत् ॥१२॥

(अनुपानतरंगिणी)

अर्थ–जवाखार, सज्जीखार, सोंठ, मिर्च, पीपल, राई, नौसादर, चित्रक, सैंजना, लहसन और पांचो नोंन इन सबको पारद के समान लेकर नींबू के रस से अथवा जंभीरी के रस से या कांजी से पारद क तीन दिन तक तप्त खल्व में मर्दन करे तो हे पार्वती! पारे के धातुओं को खानेवाला मुख होता है॥१०–१२॥

सुगमप्रकार से सिद्ध रस का मुखकरण

जवाखार पुनि त्रिकुटा लेय । पंच लवण साजी हू देय ॥
सँहजन लहसन जुत नवसार । ये सब सम पीसे निरधार ॥
यह चूरण पारद सम लीजै । निंबूरस में मर्दन कीजै ॥
तथा जँभीररसि घुटवाय । अथवा कांजीनीर पिसाय ॥
या प्रकारते घोटिये, उष्ण खल्व के माहिं ॥
तीन अहोनिसलों गुनी, रस भूखो ह्वै जाय ॥
या विधि पारा के त्रिषै, मुख प्रगटत है आय ।
तब स्वर्णादिक धातु सब, भलीतरेंते खाय ॥

(वैद्यादर्श पृष्ठ नं० १२)

मुखीकरण

सास्यो रसः स्यात्पटुशिग्रुतुत्यैः सराजिकैः सोषणकैस्त्रिरात्रम् ॥ पिष्टस्तथा स्विन्नतनुः सुवर्णमुख्यानयं खादति सर्वधातून् ॥१३॥

(यो० त०, र० रा० सुं०, यो० र० बृ० यो०)

अर्थ–पारद का नोंन, सैंजना, राई, सोंठ, मिरच, पीपल के साथ तीन रात पीसे और स्वेदन करे तो पारा सुवर्ण आदि समस्त धातुओं का खा जाता है॥१३॥

अन्यच्च

कर्पूरसदृशं श्वेतं खल्वे शोषय[1] तत्पुनः ।
क्षारैर्लवणासाम्लैश्च बिडैस्तीक्ष्णैर्मुखार्थतः ॥१४॥

(र० प०)

१–शोधय–इत्यपि

अर्थ–कपूर के समान श्वेत पारद को मुख करने के लिये अम्लसहित तीक्ष्ण विड़ों से अथवा लवण और क्षारों से शोधन करे (स्वेदन करे) ॥१४॥

अन्यच्च

अथवा षड्बिन्दुकीटैश्च रसो मर्द्यस्त्रिवासरम् ॥
लवणाम्लैर्मुखं तस्य जायते धातुभक्षकम् ॥१५॥

(बृ० यो०, यो० र०, र० रा० सुं०, नि० र०)

अर्थ–षड्बिन्दुनाम का कीड़ा, नोंन और खटाई के साथ तीन दिन मर्दन किये हुए पारद के धातुओं के खानेवाला मुख होता है॥१५॥

सम्मति–पारद से षोडशांश षड्बिन्दुकीट को लेकर नोंन तथा अम्लवर्ग मे पांच दिवस तक दो दो घड़ों के अन्तर से मर्दन करे तो पारा धातु भक्षक होता है। यदि इस प्रकार नहीं किया जायेगा तो नहीं होगा। ऐसी प्रक्रिया शिवागम नाम के शास्त्र में लिखी है।

षड्बिन्दुकीट की परीक्षा–यह कीड़ा वर्षा ऋतु में दो तीन अंगुल का लंबा और मोटे शरीर का होता है और मोटे मोटे ६ पाँव होते हैं और इसके शरीर के दोनों ओर तीन तीन बूँदे होती हैं। इसकी परीक्षा रियासत जैसलमेर राजपूताने के राजा राजवैद्य व्यासमलजी दासजी शास्त्री से सुनी थी।

अन्यच्च

कुमार्याः करवीरस्योन्मत्तस्यापि त्रिसप्तधा ॥
प्रत्येकं भावितः सूतो विधत्ते मुखमुत्तमम् ॥१६॥

(र० पा०)

अर्थ–घीग्वार, कन्हेर, धतूरा, इनमें से प्रत्येक के रस से इक्कीस बार भावना दिया हुआ पारद उत्तम मुख को धारण करता है।

मुखीकरण के लिये विषोपविष में घोटने की आज्ञा

वार्तिक–दीपन अनुवासन संस्कार से पारा बहुत भूखो होत है परन्तु गंधक को खाय नहीं सकै है जब पारा में मुख होय कहा ग्रसन सामर्थ्य होय तब गंधक को खाय और हू धातुन कों खाय ताते पारा में मुख होयवे निमित्त विष उपविष घोटे (वैद्यादर्श पृष्ठ नं० १२)

अन्यच्च

विषोपविषकैर्मर्द्यः प्रत्येकं दिनसप्तकम् ।
मुखं च जायते सूते बलं वह्निश्च वर्द्धते ॥१७॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ–पारद का ७ दिवस पर्यंत विष और उपविषों से मर्दन करे तो पारे में मुख होता है। बल और वह्नि भी बढ़ती है॥१७॥

अन्यच्च

विषैरुपविषैः सोथ सुमुखो जायते स्थिरः ।
अपक्वधातुग्रसनस्तीक्ष्णाग्निः सर्वकार्यकृत् ॥१८॥

(र० मानस०)

अर्थ–विष और उपविषों के साथ मर्दन किया हुआ पारद स्थिर, बुभुक्षित, अपक्व (कच्चा), धातुओं को भक्षणकर्ता और तीक्ष्णग्निवाला पारद समस्त कार्यो के उपयोगी होता है॥१८॥

अन्यच्च

अर्कसींहुडधत्तूरलांगलीकरवीरकाः । गुंजाहिफेना चेत्येताः सप्तोपविषजातयः ॥१९॥ एतैर्विमर्दितः सूतश्छिन्नपक्षः प्रजायते । मुखं च जायते तस्य धातूंश्च ग्रसते द्रुतम् ।२०॥

(यो० चिं०, नि० र०, रा० सुं०)

अर्थ–आक, धतूरा, तूहर, कलिहारी, कनेर, चौंटनी और अफीम ये सात जाति के उपविष हैं. इनसे मर्दन किया हुआ पारद पक्ष रहित हो जाता है और उसके मुख होकर समस्त धातुओं को शीघ्र ही खा जाता है।१९।।२०।।

नवविष

कालकूटो वत्सनाभः श्रृंगीकश्च प्रदीपनः ।। हालाहलो ब्रह्मपुत्रो हारिद्रः सक्तुकस्तथा ।। सौराष्ट्रिक इति प्रोक्ता विषभेदा अमी नव ।।२१।।

(र० रा० सुं०)

अर्थ–कालकूट, वत्सनाभ, सींगिया, प्रदीपन, हालाहल, ब्रह्मपुत्र, हारिद्र, सक्तुक और सौराष्ट्रिक ये नौं प्रकार के विष हैं।।२१।।

विषोपविष

श्रृङ्गको वत्सनाभश्च कालकूटः प्रदीपनः ।। सौराष्ट्रिको ब्रह्मपुत्रो हारिद्रः सक्तुकस्तथा ।।२२।। हालाहल इति प्रोक्ता विषभेदा अमी नव ।। अर्को वज्री तथोन्मत्तो लांगली हयमारकः ।।२३।। गुंजाहिफेनमित्येते भेदाश्चोपविषस्य हि ।। एतैः संमर्दितः सूतश्छिन्नपक्षो भवेद् ध्रुवम् ।। बुभुक्षा जायते चास्य धातूनन्यांश्चरत्यपि ।।२४।।

(अनु० तर०, ध० सं० र० रा० शं०, शार्ङ्गधर)

अर्थ–सींगिया, वत्सनाभ, कालकट, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, ब्रह्मपुत्र, हारिद्रक, सक्तुक, और हालाहल ये तो विष हैं तथा आक, थूहर, धतूरा, कलिहारी, कनेर, चौंटनी और अफीम ये सात उपविष हैं। इन सबसे तीन दिवस तक तप्तखल्व में मर्दन किया हुआ पारद पक्षरहित होकर बुभुक्षित होता है, इसी कारण समस्त धातुओं को खा जाता है।।२२–२४।।

विषभेद कथन एलाछंद

कालकूट और बत्सनाभ शृंगिक विष जानों । बहुरि प्रदीपक नाम फेरि हालाहल मानों ।। ब्रह्मपुत्र हारिद्र फेरि सक्तुक विष लीजै । सौराष्ट्रिक जु समेद भेद इन नवहु कहीजै ।।

दोहा

पृथक् पृथक् इन विषन में, पादर घोटि सुजान ।
सब न मिलै तो एक ही, विषै घोटि गुनवान ।।
जो विष एक हि लेय तो, श्रृंगी विष गुनवन्त ।
काढा करि रस घोटिये, सात दिवस परियन्त ।।

उपविषकथन–बरवैछन्द

अर्कछीर अरु थूहरछीर मँगाय । रसधतूर कलिहारीरस पुनि लाय ।
अश्वमारजडरस पुनि चिरमी क्वाथ । त्यों अफीमगनि लीजै इनकेसाथ ।।
सात कहे ये उपविष पृथक् मंगाय । तीनतीन दिन इनमधिरस घुटवाय ।।

दोहा

या विधि बिष उपविष विषैं, जब पारद घुटिजाय ।
छिन्न पक्ष ह्वै जाय तब, मुखताकैं प्रगटाय ।।
मुख प्रगटै तब होत है, धातुग्रसनसामर्थ्य ।
अग्निस्थाई होत इम, सिद्ध करै बहु अर्थ ।।

(वैद्यादर्श १२)

अथ सौम्य अष्टविषों का पृथक् पृथक् लक्षण
(सक्तुक विषलक्षण)

चित्रित उतपन कमलवत, जाकी आभा जान ।
पिसै सक्तुसों होय सो, सक्तुक विष पहिचान ।।

मुस्तक विषलक्षण

ह्रस्ववेग रोगहि हरे, मोथा आकृत होय ।
मुस्तकविष ताकों कहैं, मुनिजन गुनिजन लोय ।।

कर्मविष (दार्विकविष) लक्षण

कच्छप आकृति होय सो, कूरम विष है नाम ।
होय सर्पके फण जु सम, दार्वीक जु गुनिधाम ।।

सैकतविषलक्षण

स्थूल सुसूक्षम कणसहित, श्वेत पीत आभास ।
रोमरहित सकैत जु विष, करे ज्वरादिक नाश ।।

वत्सनाभिविषलक्षण

गोथन के सम होत अरु, तैसो ही आकार ।।
पंचम अंगुतरे नहीं, दीरघ अधिक निहार ।।
वत्सनाभि लक्षण यहै, वरन्यो बुध जन लोय ।
श्वेत रंग में होत के, पीत रंग को होय ।।

श्रृंगीविषलक्षण

श्रृंगीविष गोश्रृंगवत, सोहू है परकार ।
श्वेत होता है रंग अरु, हरित रंग निरधार ।।

(वैद्यादर्श पृष्ठ नं० २७)

विषों में घोटने से दोष

वार्तिक–तुम ऐसा लिखो जो सात दिन में घोटे सो परंपरा ग्रथन की प्रणालिनुसार तो ठीक है परन्तु पारद को बहुत विषसों घोटें ताको चन्द्रोदय बनावे सो चन्द्रोदय गर्मी बहुत करत है, सुकुमार मनुष्यों को गरम औषधि हित नहीं आवै है बहुत गर्मी के खायेते भूख नहीं बढै है सो तातें सात दिन विष तैं न घोटे जो कदाचित् घोटे तो एक दिवस घोटे और उपविषन में लिखे प्रमान घोटे। उपविष के घोटे तैं नियमन संस्कार होता है। तातें पारा अग्निसह होता है और दीपन हूं संस्कार पारे में होत है जातें पारा भूखो होत है और पारद में मुख होत है तब गंधकादि धातून को खात है इति बादगर्वित भावार्थ (वैद्यादर्श पृष्ठ नं० १२)

श्रृंगीकविषशोधन

महिषीगोवरमूतमें, श्रृंगी विष औटाय ।
एक प्रहर की आंच करि, फेरि नीरधुलवाय ।।
पीछे घाम सुखाइये, सब योगन में डार ।
विषशोधन ऐसे करै, कह्यो जु प्रथम प्रकार ।।
अथवा छेरीदूध में बांधि पोटरी डार ।
एक प्रहर औटाय के, नीर धोय निरधार ।।
इति उभयरीत्या विषशोधन (वैद्यादर्श प० नं० १३)

बुभुक्षितीकरण

वज्रकंटकवज्राग्रं विद्धमष्टांगुलं मृदा । विलिप्य गोविशामग्रौ पुटितं तत्र शोषितम्।।२५।। त्र्यहं वज्रे विनिक्षिप्तो ग्रासार्थी जायते रसः। ग्रसते गंधहेमादि वज्रसत्त्वादिकं क्षणात् ।२६।।

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०)

अर्थ–कांटेदार थूहर की दृढ शाखा में आठ अंगुल के प्रमाण का छेद करके उसमें पारा (गंधक) भरकर मिट्टी से लेप करे फिर अग्नि से पुट दे। इस प्रकार तीन दिन तक थूहर के छेद में भरकर रखने से पारे में स्वर्ण के ग्रास की शक्ति उत्पन्न होती हैं और मुहूर्त में हीं गंधक, सुवर्ण और अभ्रक सत्त्व

का ग्रास करता है। मूर्च्छाध्याय में कहे हुए षड्गुणगंधक से जारित पिष्टी में से उत्पन्न हुआ पारद खरल में रक्षित होने पर भूखा होकर अभ्रक, सुवर्ण और धातु का ग्रास कर लेता है। अनेक वैद्य इन दोनों रीतियों का व्यवहार किया करते हैं।२५।।२६।।

अन्यच्च

मूर्च्छाऽध्यायोक्तषड्गुणबलिजीर्णः पिष्टिकोत्थितरसः खल्वेऽत्यन्तबुभुक्षितो घनहेमवज्रादि त्वरितमेव ग्रसतीति प्रकारः ।२७।। एतत्प्रक्रियाद्वयमपि कृत्वा व्यवहरंत्यन्ये ।।

(र० चिं०)

अर्थ–मूर्च्छाध्याय कहा हुआ षड्गुण गंधक जारित पारा तथा पारद और गंधक की पिष्टी द्वारा निष्कासित पारद खरल में अभ्रक सुवर्ण वज्र आदि धातुओं की शीघ्र ही ग्रस लेता है। कुछ वैद्य एक ही क्रिया से बुभुक्षित करते हैं और अन्य वैद्य दोनों क्रियाओं से बुभुक्षित करते हैं।२७।।

अन्यच्च

संस्थाप्य गोमयं भस्म पक्वमूषां तदोपरि ।। तन्मध्ये कटुतुम्बयुत्थं तैलं दत्त्वा रसं क्षिपेत् ।।२८।। काकमाची द्रवं देयं तैलतुल्यं पुनः पुनः ।। गंधकं व्रीहिमात्रं तु क्षिप्त्वा तां च निरोधयेत् ।।२९।। (तत्पृष्ठे श्रावकं देयं पूर्णं चावह्नि–खर्परम्।।) स्वांगशीतलतां ज्ञात्वा जीर्णतलं च गंधकम्।काकमाचीद्रवं चाग्निं दत्त्वा दत्त्वा तु जारयेत् ।।३०।। मूषाधो गोमयं सार्द्धं दत्त्वा चोर्ध्वं च पावकम्। षड्गुणं गंधकं जार्य सूतस्यैवं मुखं भवेत् ।।३१।।

(र० रा० शं०, र० रत्नाकर; नि० र०)

अर्थ–पृथ्वी पर गोबर रखकर ऊपर से पक्व मूषा पक्की घरिया को रखे उसमें कड़वी तूंबी के तैल को भरकर पारे को डाल देवे फिर उसी तैल में काकमाची (कवैया, मकोय) के रस को भर देवे और चावल के समान गंधक को डालकर मुख पर सकोरा रख मुद्रा करे फिर ऊपरवाले सकोरे में आंच रखे जब गंधक तथा तैल जला हुआ ज्ञात हो जाय तब स्वांगशीतल होने पर खोल लेवे। इसी प्रकार तूँबी तथा मकोय का रस दे देकर गंधक जारण करे, प्रक्रिया में गोबर को नीचे रखे और मूषा पर धरे हुए सकोरे या खिपड़े में आंच रख देवे और इसी प्रकार षड्गुण गंधक जारण करे तो पारद के मुख होता है।।२८–३१।।

अन्यच्च

[2]नदीशुक्तिपुटान्तःस्थे सप्तरात्रं च पारदे ।
गंधकं च चतुर्थांशं जारयेद्यावदिच्छया ।।३२।।

(र० पा०)

अर्थ--पारद से चौथाई गंधक लेकर नदी से पैदा हुई सीप में भरकर सम्पुट करे फिर उसको सात दिवस तक अपनी इच्छानुसार जारण करे तो पारा बुभुक्षित होता है।।३२।।

बिड़ द्वारा बुभुक्षितीकरण

कदलीकंदवर्षाभूशिग्रुवन्ध्यापटोलिका । देवदाली च सूर्याख्यरसैरेषां विभावयेत् ।।३३।। बिडानीशतशोवारं रसराजस्य जारणम् । पश्चादम्लैः [3]परिघृष्टो रसराजाय दापयेत् ।।३४।। समांशैश्च बिडैर्जीर्णैः सूतास्यं संप्रजायते । हेमादिधातून्भुंक्ते समुखेनापि न संशयः ।।३५।।

(र० पा०)

अर्थ–पारद के चारण करनेवाले बिड़ों को केले की जड़, सोंठ, सैंजना, वांझककोड़ा, पटोलिका (सफेद फूल की तोरई), देवदाली (बंदाल) और आक इनके रसों से सौ बार भावना दे फिर अम्लवर्ग घोटे उस बिड़ को पारद से तुल्य लेकर तप्तखल्व में जीर्ण करे बस इसी क्रिया से पारद बुभुक्षित होकर स्वर्णादि धातुओं को सुखपूर्वक खा जाता है।।३३–३५।।

मुखीकरण

हरितालोत्तमतेलेन गन्धकेन विषेण च । त्रिदिनं मर्दितः सूतो रज्यते कुरुते मुखम् ।।३६।। गोमयाग्नौ सुमूषायां विपक्वा दिवसत्रयम् । हेमादिधातून्वै भुक्ते गंधकं च विशेषतः ।।३७।।

(र० पा०)

अर्थ–हरिताल का उत्तम तेल, गंधक या विष के साथ पारद को तीन दिन तक मर्दन कर फिर पक्व मूषा में रखकर तीन दिवस तक कंडो की आंच में पकावे तो पारद बुभुक्षित होकर स्वर्ण आदि समस्त धातुओं को खा जाता है और विशेषकर गंधक को खा ही जाता है।।३६।।३७।।

बुभुक्षितीकरण

आम्रवल्लया१ रसेनापि सिद्धगंधसं रसम् ।
मर्दितं सर्वलोहानि सुखं जीवेन्न च क्षयः ।३८।।

(र० पा०)

अर्थ–अथवा आम्रवल्ली के रस से पारद के तुल्य गंधक को पीसकर गोमयाग्नि में जारण करे तो पारद बुभुक्षित होता है।।३८।।

बुभुक्षितीकरण गंधकजारण से

संसर्पितः सैंधवकोटरे भृशं विधाय पिष्टिं सिकतासु तापितः । विशुद्धगंधादिभिरीषदग्निना समस्तमश्नात्यशनीयमीशजः ।।३९।।

(र० चिं०, र० रा० शं०)

अर्थ–शुद्ध गंधक के साथ पारद की पिष्टी बनाकर गढा किये हुए सैंधव के ढेले पर वालुकायंत्र में मंदाग्नि से पकावे तो पारद भक्ष्य पदार्थो को अच्छी तरह खा जाता है।।३९।।

यातुधानमुखीकरण

ताप्यसत्त्वं कलांशेन स्वर्णतो द्विगुणेन वा ।। चुल्ल्यामायसखल्वेन तप्तेनाथ विमर्दयेत् ।।४०।। युक्त्या रसं च चुक्रेण क्षारेण चणकस्य हि । चूलिकालवणेनाथ स्वर्जिकालवणेन वै ।।४१।। जंबीरपूरकजलैर्मर्दयेदेकविंशतिम् ।। बासरान् याममेकं हिं प्रत्येकं च विमर्दयेत् ।।४२।। यातुधानमुखं सम्यग् यात्येवं हि न संशयः ।। द्वितीयो दीपनस्यैवं प्रकारः कथितो मया ।।४३।। (धन्वंतरिसंहिता)

अर्थ–सोने से दूना अथवा बराबर सोनामक्खी का सत्त्व लेकर तप्तखल्व में चूके के रस या चने के खार से अथवा सज्जी के खार से यद्वा जम्भीरी के रस से इक्कीस दिन तक एक एक पहर पारा को मर्दन करे तो पारद के मुख होता है इसमें सन्देह नहीं है। यह दीपन ही का एक दूसरा प्रकार मैंने कहा है।।४०–४३।।

१–कोष्ठक में बंध किया हुआ पाठ निघण्टुरत्नाकर में नहीं है।

२–अर्थ में शंका है मुखीकरण के विषय में ग्रंथकार ने यह श्लोक दिया है किन्तु गन्धक जारण है, गंधक जारण से भी मुख होता है।

३–पूर्वोक्तगंधकविडम्–इत्यपि

१–विड़ का जीर्ण होना तप्तखल्व में भी संभव है क्योंकि तप्तखल्व में गंधक का जारण होता है।

१–इसका ऐसा अर्थ समझ में आता है कि, आम्रवल्ली के रस से मर्दन किया हुआ समानगंधयुक्त पारद सम्पूर्ण लोहों को सुखपूर्वक खा जाता है (संपुट में वा कच्छप में अग्नि देने से) और क्षय नहीं होता।

मुखीकरण ग्रास देकर

मुखस्योत्पादनं कर्म प्रकाशाद्दीपनस्य हि ।। कथयामि समासेन यथावद्रससाधनम् ।।४४।। अष्टादशांशभागेन कनकेन च सूतकः ।। निंबूरसेन संमर्द्यो वासरैकमतः परम् ।।४५।। क्षारैश्च लवणैरम्लैः स्वेदितः कांजिकेन च ।। क्षालितः कांजिकेनैव वक्त्रं भोक्तुं प्रजायेत ।।४६।।

(धं० धं० सं०)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंशावतंसरायबद्रीप्रसाद
सूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां
रसराजसंहितायां बुभुक्षितीकरणं
वा मुखीकरणं नाम
दशमोऽध्यायः।।१०।।

अर्थ–रस की सिद्धि होने योग्य मुखीकरण कर्म को कहता हूं। इसी कर्म को रसप्रकाश ग्रन्थ में दीपन कहा है। प्रथम पारद में सुवर्ण का अठारहवां हिस्सा डाल कर नींबू के रस में एक दिन घोट तथा क्षार लवण, अम्लपदार्थ और कांजी से स्वेदन करे फिर कांजी से ही धो डाले तो धातुओं के खाने के लिये पारद के मुख होता है।।४४–४६।।

इति श्रीजैसलेमर निवासी पं० मनसुखदासात्मज व्यासज्येष्ठमल्ल–
कृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां बुभुक्षितीकरणं वा
मुखीकरणं नाम दशमोऽध्यायः ।।१०।।

स्वानुभूतबुभुक्षितीकरणाऽध्यायः ११

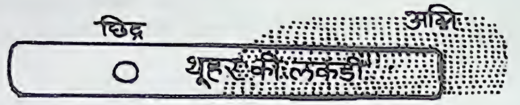
बुभुक्षितीकरण (थूहर में)

इस शंका से कि षड्गुण बलिजारण से पारद उत्तम बुभुक्षित हुआ है वा नहीं और इस अभिप्राय से भी कि, रसेन्द्रचिंतामणि में जो कहा है कि, "एतत्प्रक्रियाद्वयमपि कृत्वा व्यवहरन्त्यन्ये" वह भी कर्म पूरा कर लिया जावे। षड्गुण बलिजारित उत्थापित पारद के (जो सब १२ तोले ८ माशे २ रत्ती था और जिसमें से ५ तोले स्वर्ण जारण के लिये पहले लिया जा चुका था) अवशेष भाग ७ तोले ८ माशे २ रत्ती को रसेन्द्रचिंतामणि में कही हुई (वज्रकंटक वज्राग्र इत्यादि) क्रिया से बुभुक्षित करना आरम्भ किया।

थूहर में बुभुक्षितीकरण की क्रिया का १ अनुभव

आज ता० २५/९/०७ को १५ गिरह लंबी और करीब २।। वा ३ इंच मोटी कांटेदार थूहर की हरी लकड़ी के ऊपर की तरफ ८ अंगुल छोड़कर बरमें से आधी दूर तक छेदकर और कील में कुछ गूदा निकाल थोड़ी जगह पोली बना ली उस खाली जगह में ७ तोले ८ माशे २ रत्ती संस्कृत षड्गुण बलिजारित पारद भर थूहर की ही डाट लगा ८ अंगुल चौड़ी कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २६ को छिद्र के पास ७–८ अंगुल छोड़ नीचे की तरफ प्रथम ३ आंच दो दो सेर की फिर २ आंच १।। सेर १। सेर की फिर ३ आंच एक एक सेर की अर्थात् सब ८ आंच दी गई।



ता० २७ को देखा तो पारे भरे छिद्र से आठ अंगुल के फासले तक लकड़ी जल गई थी। पारे को निकाला तो पूरा निकल आया। पारे पर कोई विकार नहीं दीख पड़ा और ये शंका रह गई कि पारे तक गर्मी भली भांति पहुंचती है वा नहीं।

दूसरी आंच

ता० २७ को करीब १२ गिरह लंबी और करीब २।। वा ३ इंच मोटी थूहर की लकड़ी के ऊपर की तरफ ४ अंगुल छोड़ पूर्वोक्त विधि से छिद्रकर उक्त ७ तोले ८ मा० २ र० पारद भर थूहर की डाट लगा कपरौटी कर सुखा लिया।

ता० २८ को छिद्र के पास ६ अंगुल छोड़ नीचे की तरफ ऽ२ सेर ऽ१।। सेर ऽ १। सेर की ४ आंच और एक एक सेर की ६ आंच कुल १० आंच १२ घंटे में दी गई और अंतिम आंच पर कपरौटी किये भाग को भी भूभल से ढक दिया। आंच ठंडी हो जाने पर रात के ९ बजे लकड़ी को निकाल अलग रख दिया।

ता० २९ को सवेरे देखा तो पारे भरे छिद्र से ६ अंगुल के फासले तक लकड़ी जल गई। पारे का निकाल तोला तो ७ तोले ८ माशे हुआ। २ रत्ती कम हो गया और पारे के ऊपरी भाग पर कुछ श्यामता आ गई थी। इससे ज्ञात होता था कि आज अग्नि का कुछ असर पारे पर पड़ा। छानने से यह श्यामता कपड़े पर रह गई और पारा साफ हो गया।

सम्मति–इस शंका से कि इस क्रिया में पारे को पूरी अग्नि पहुंचती है या नहीं आज एक दूसरी थूहर की लकड़ी में छेद कर और उस छेद को खुला रख लकड़ी को उपरोक्त विधि से आंच देनी आरम्भ की। तीन चार आंच लगने तक छिद्र में कोई उष्मा नहीं प्रतीत हुई किन्तु जब छिद्र के ४ अंगुल दूरी तक अग्नि का असर पहुँच गया तब छेद में उंगली देने से साधारण उष्मा प्रतीत हुई। इससे यह शंका हुई कि क्रिया जो की जाती है वह ठीक नहीं क्योंकि लंबी लकड़ी लेकर नीचे की तरफ से आंच देने से लकड़ी के अंदर के गूदे का रस छिद्र की ओर नहीं दौड़ता, किन्तु गूदा पोला पोला होने से रस जहां का तहां शुष्क हो जाता है। अतएव जंबू से आई हुई भाषा की पुस्तक में लिखी करील की लकड़ी की क्रिया के अनुसार जो यहां पर इस श्लोक के यह अर्थ लगाये हैं (कि, एक लंबी लकड़ी में ऊपर की तरफ ८ अंगुल छोड़कर छेद करके नीचे की तरफ से अग्नि दी जाय) सो अनुभव से ठीक सिद्ध नहीं हुए। अब ऐसे अर्थ ठीक समझ में आते हैं कि ८ अंगुल का ही टुकड़ा लिया जावे और उसके बीच में छेद कर पारा पर सब पर कपरौटी कर उसको अग्नि दी जावे और प्रगट अग्नि देने में पारद के उड़ने की शंका है अतएव भूधर से अग्नि देना उचित होगा।

थूहर में बुभुक्षितीकरण
(अग्नि देने का प्रकार बदलकर भूधर में)

सम्मति–निम्न क्रिया का अनुभव साधारण पारद पर दो बार किया गया, पहली बार में लकड़ी के ऊपर ४ अंगुल रेत रखा गया और एक एक सेर की डेढ डेढ घंटे बाद ८ आंच दी तो लकड़ी के ऊपर की तरफ की छाल सूख गई थी और गूदा उसीज गया था। अग्नि तीव्र करने के लिये दूसरी बार में केवल दो अंगुल रेत ऊपर रख एक एक सेर की घंटे घंटे भर पीछे ९ आंच

१–पहले एक बार इस क्रिया का अनुभव साधारण पारद पर कर लिया गया जिसको विस्तार भय से न लिखा गया।

दी गई तो लकड़ी का ऊपरी भाग झुल गया था और अन्दर का गूदा शुष्क हो गया था। पारे की तौल पूरी रही थी। श्लोक में "तत्र गोपितम्" पाठ है इसलिये इतनी अग्नि ठीक समझी गई और इसी के अनुसार आगे कर्म किया गया। आगे जो क्रिया लिखी जायगी उसी के अनुसार अनुभव हुआ था। इसलिये अनुभव को सविस्तार नहीं लिखा गया।

तीसरी आंच

आज ता० ३/१०/७ को ९ अंगुल लम्बी और २॥ इञ्च मोटी थूहर की लकड़ी के बीच में गर्त कर पूर्वोक्त ७ तोले ८ माशे षड्गुण बलिजारित पारद भर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ४ को १२ अंगुल लम्बे चौड़े और गहरे गढ़े में गंगारज भर लकड़ी को इस प्रकार रखा कि दो अंगुल रेत लकड़ी के ऊपर रही बाद को एक एक सेर की आंच ११ बजे से हर घण्टे पर दी गई। ७ बजे तक ९ आंच लगी।

ता० ५ को सवेरे निकाला तो लकड़ी ऊपर की तरफ जल सी गई थी। अन्दर का गूदा सूख गया था। पारे को निकाल तोला तो पूरा ७ तोले ८ माशे निकल आया।

चौथी आंच

ता० ५/१० तो ९ अंगुल लम्बी और ३ इञ्च से कुछ अधिक मोटी थूहर की लकड़ी के बीच में गर्त कर पूर्वोक्त ७ तोले ८ माशे पारद भर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ६ को उसी गड्ढे में इस प्रकार रखा जो २ अंगुल रेत ऊपर रही। ११ बजे से एक एक सेर की आंच हर घण्टे पर दी गई। ७ बजे तक ९ आंच लगी।

ता० ७ के सवेरे निकाला तो लकड़ी ऊपर की ओर झुलस गई थी। अन्दर का गूदा उसीज गया था, पारे को निकाल तोला तो १ रत्ती कम ७ तोले ८ माशे निकला।

पांचवी आंच

ता० ७ को ९ अंगुल लम्बी और ३ इञ्च से कुछ अधिक मोटी थूहर की लकड़ी के बीच में गर्त कर पूर्वोक्त १ रत्ती कम ७ तोले ८ माशे पारद को भर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ८ को उसी गढ़े में इस प्रकार रखा जो २ अंगुल रेत ऊपर रहा, बाद को ७ बजे से ६ बजे शाम तक १२ आंच दी गई।

ता० ९ को सबेरे निकाला तो लकड़ी ऊपर की तरफ जल गई थी। अन्दर का गूदा सूख गया था, कहीं कहीं कुछ कुछ गीला भी रह गया था। पारे को निकाल तोला तो ७ तोले ७ माशे ४ रत्ती हुआ।

पारद अग्निस्थाई

माईआत के अंजमाद का दर्जा (उर्दू)

नाम माएह	शोरा	सिरका	दूध	पानी	रोगनजैन	सीमाव	रोगन
दर्जा सफर के ऊपर	२६	२८	३०	३२	३६	३९	५०

(सुफहा किताब अकलीमियां ३९)

माईआत के जोश देने का दर्जा (उर्दू)

नाम माएह	पानी	तेजाब शोरा	रोगन जैतून	तेजाब गंधक	सीमाव
दर्जा	२१२	२१०	६००	६१०	६६२

(सुफहा किताब अकलीमियां ३९)

आंच पर रखने से सीमाव की हालत (उर्दू)

सीमाव व नौसादर उड़ जाते हैं और कसरत दहनियत की वजह से जलते नहीं लेकिन जब कायमुल्नार हो जाते हैं तो आग पर पिघलते हैं और जलते भी नही यही हाल गंधक और हरतालका है कि पाक हो जाने के बाद आग पर पकते हैं और उड़ते हैं लेकिन अगर पाक नहीं होते तो सोख्त हो जाते हैं (सुफहा अकलीमियाँ ७९)

सीमाव कायमुल्नार के दर्जे (उर्दू)

लेकिन वाज हो कि कायमुल्नार के तीन दर्जे हैं–अव्वल नारतश्विया वतवखका। दूसरा नारतसईदका। तीसरा नारअजावतका सीमाव अगर ६६२ डिगरी की हरारत पर जो सीमाव जोशखाने का दर्जा है कायम आग पर रहे वही सीमाव अकसीर के काम में आयेगा।

(काली सुफहा २८ अखवार अकलीमियाँ १६/५/१९८५)

और भी (उर्दू)

जब पारा तजुरबे में ६६२ डिगरी की हरारत तक कायमुल्नार रहता है तो फिर वह आग से नहीं उड़ सकता।

(सुफहा अकलीमियाँ १६१)

कीमियाई सीमाव वह है जो कायमुल्नार है (उर्दू)

सीमाव कीमियाई इस्तरह का, कि उसमें कुव्वता फरारा बाकी न हो और आगर पर कायम हो।

(सुफहा अकलीमियाँ ७९)

और भी (उर्दू)

सीमाव तहनशीन निर्धूम फीनफसा अकसीर है एक रत्ती सीमाव मजकूर लेकर तोला भर कलई पर तरह करे नुकरा हो जावेगी।

(सुफहा अकलीमियाँ ११०)

सीमाव कायमुल्नार होने की जरूरत (उर्दू)

एमाल अकसीरमें अरवाहका कायमुल्नार होना जरूरियात से है वरन: अकसीर कामिल न बनेगी और जुमला अरवाह में सीमाव का कायमुल्नार होना सख्त मुश्किल है अगर सीमाव कायमुल्नार हो जावे तो गोया निस्फ अकसीर बन गई इसलिये कि, कुश्ता, खाल, गुटका बाद इसके व आसानी बन सकता है लेकिन अकसीरी खासे उस वक्त जाहर होंगे जब बूटी से कायमुल्नार हो और बूटी भी एमाल अकसीर के काम में लाई जाती हो।

(सुफहा अकलीमियाँ १६०)

नुकता कयाम सीमाव (उर्दू)

अहलफन के नजदीक सीमाव में सात हिस्से रतबूत हैं–जिस बूटी में दश हिस्से खुश्की होगी समझना चाहिये कि यह बूटी सीमाव को कायम करनेवाली है और इसकी शनाख्त यह है कि बूटी तेज होगी और तेज बूटी में खुश्की का होना जरूरी तसलीम किया गया है। मस्लन कुटकी, पीपल, मिर्च स्याह और मिर्च खुरासानी, करनफल, मेंढासिंगी वगैरः वगैरः जैल की तलख बूटियों में पारा मुंजमिद और कायम हो जाता है। नाली, पित्तपापड़ा, जलनींबू, हुलहुल सफेद, नीम, मिसीघास, जलकमनी, गोवीतलख, बकाइन, कंदश, रोगन, चाकसू, रोगन पलास। एक साहब नाजरुल कीमियाँ तहरीर फर्माते हैं कि शीरानीम में सीमाव कायम करके देखा गया है। सीमाव बिल्कुल कायम हो जाता है। (सुफहा अखबार अकलीमियाँ १/१२/१९०६)

सीमाव को कायमुल्नार करने की तरकीब बजरिये लकड़ी करील (उर्दू)

सीमाव बाजार से लाकर उसको पहले किसी तरकीब मारूफ से साफ कर लें, बादहू करीर की लकड़ी जो एक या डेढ गज के तूल में हो और मुटाई में भी बाफ्ता हो इसके एक तरफ खोदकर उसमें सीमाव मुसफ्फा डालें और खिला को बुरादा करीर से भर दे। उसके ऊपर गिले हिकमत करके दूसरी तरफ आंच दे और गिले हिकमतवाले जर्फ को जिस तरफ कि सीमाव रखा हुआ है बालू रेत में दबाए रखे ताकि धुंआ बंद रहे। जब लकड़ी जल जलकर करीब गिले हिकमत के पहुंच जावे फौरन आग से अलहदा करें और दर्मियान से सीमाव निकाल लें। यह सीमाव बिलकुल कायमुन्नार होगा। ख्वाह सौ मन की आंच में दे दे, हरगिज फरार न होगा। (सुफहा अखबार अकलीमियाँ १६/१२/१९०६)

तरकीब कायमुल्नार करदम सीमाव बजरिये चोयाअर्क बैंगनजगली (फार्सी)

अगर जीव का दरशीर बांदजान दश्ती खारदार चारपास सहक कुंनद व चहाबार बर आतिश नरम निहादः चोवहदिहद कायमुल्नार गर्दद। (अजगुलशन हिकमत नुसखा कलमी बाबू प्यारेलाल बरौठा)

उकद सीमाव बजरिये चोया गीदर तमाकू (उर्दू)

तोला पारा किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर आग पर रखो, उस पर गीदड़ तम्बाकू का अर्क बजरिये चोया पाव भर जज्ब कर दो। फिर सादे पानी से धोकर पारा निकाल लो जो गाढा हो गया होगा उस पर फिर पाव भर और अर्क जज्ब कराओ अब वह सख्त हो जायेगा। (सुफहा १६ अखबार अकलीमियाँ ८/२/१९०९)

पारा कायमुलनार करने की तरकीब बजरिये चोया अर्क कसोंदी (उर्दू)

कसोंदी एक दरख्त मशहूर है जिसके बर्ग मुशाबः बर्ग तिमरहिन्दी के होते हैं और कद उस दरख्त का बकदर आदम या उससे कुछ कमोबेश होता है। जायका तलख अगर उसके पत्तों का पानी डेढ सेर के करीब निकालकर किसी कड़छी आहनी में सीमाब एक तोला पर कड़छी देगदाव पर रखकर थोड़ा थोड़ा चोया देवें और वह तमाम पानी जज्बकर दिया जावे। सीमाव मुतहर्रिक कायमुल्नार हो जायेगा, ख्वाह कितनी ही ज्यादा आंच में उस सीमाव को रखें आग पर से फरार न होगा। (सुफहा किताब इसराहल कीमियां २९)

तरकीब सीमाव कायमुल्नार बजरिये चोयाअर्क आकाशबेल व अर्क दूधी खुर्द (उर्दू)

सीमाव १० तोले, अर्क आकाशबेल सुर्ख, अर्क दूधीखुर्द नीम आसार (जिसका फूल सफेद हो) अव्वल अर्क आकाशबेल का चोवा दिया जावे। जब अर्क आकाशबेल खतम हो जावे तो पारा संबुलम का हो जावेगा। बादहू इस पर अर्क दूधीखुर्द का बजरिये चोहा खतम करें। सीमाव कायमुल्नार है और कारामद है। (सुफहा अखबार अकलीमियाँ १ व १६/११/१९०४)

सीमाव नीमकायम बजरिये चोया जड़ी केतरी (उर्दू)

मुझको जिस तरह कायमुल्नार पारा बूटियों के जरिये मालूम है, हदिया नाजरीन करताहूं गो वह पूरा पूरा कायमुल्नार तो नहीं लेकिन फिर भी बहुत अच्छा है कि कुठाली में डालकर कोयलों में रख दो। कुठाली सुर्ख हो जावेगी और पारा मौजूद होगा। अलबत्ता ज्यादा आंच नही सहार सकता। तरीका यह है बूटी हाथीचिंघाड़ जिसको देशी केवड़ा भी कहते हैं उसके पत्ते बहुत लंबे लंबे घीग्वार की तरह होते हैं, हरेक पत्ते की नोंक पर सख्त कांटा होता है, अलगरज पत्तों को कूटकर अर्क निकाल लें और उस अर्क में दूधक हजार दाने कूटकर दुबारा अर्क मुकत्तर कर लें पस पारे को लोहू के कड़छे में डालकर उस अर्क का चोया दें, पारा कायम हो जावेगा दो तोला पारा के लिये एक सेर अर्क हाथीचिंघार पाव भर दूध के हजार दाने काफी हैं। (सुफहा १६–१७ अखबार अकलीमियाँ २४/१/१९०९)

सीमाव को गैर मुनक्किद और लरजां कायमुल्नार बनाने की तरकीब बजरिये चोयाअर्क शाहतरा व अर्कसिर्स (उर्दू)

मुजर्रिवः हकीम संगेजखां मुदर्रिस हाईस्कूल रावलपिंडी जो उन्होंने बजवाब मेरे इस्तफसार के अखबार अकलीमियाँ मजरिया १९, जून सन् १९०५ ईसवी में तहरीर फर्माई। पारे के कुश्ते के वास्ते बारहा उन्होंने सीमाव को बजरिये बूटी शाहतरा (पित्तपापड़ा सुखवर्ग के) इस तरह कायमुल्नार किया है कि तोला भर सीमाव बाजारी को करछः आहनी में रखकर दस तोले आवशाहतरा में चोया दिया और नीचे बेरी की लकड़ी की चराग की तरह आंच दी। बाद उसके १० तोले आवसिर्स का लेकर उस सीमाव मअमूला पर चोया दिया। ६६२ डिगरी तक कायमुल्नार हो गया। इस नुस्खे में तरद्दुद यह है कि सिर्स की पत्ती से शीरा नहीं निकलता क्योंकि बिलकुल बेरतूवत होती है इसके बाबत हकीम साहब मौसूफन लिखा है कि सिर्स का शीरा सख्त मिहनत से निकलता है और सिवाय माह जेठ वैसाख के और जमाने में निकल आता है अलबत्ता खास बात यह है कि शीरा फौरन सूखता जाता है। निकलते ही अमलचोये का होता जाए, सिर्स का अर्क निकालने में तरददुद हो तरोटक घास जो किनारे किनारे गिरहदार जमीन पर बिछी हुई खेखली होती है और जो दूब की किस्म से है और उसको बेलिया दूब कहते हैं, दस तोला उसका अर्क इस्तेमाल किया जावे। शाहतरा जब रसीदः हो जाता है तब पञ्जे में सुर्खी आती है। (सुफहा अकलीमियाँ १६१)

कायम करना पारे का चोयाशाहतरा या चोया सिर्स से हकीम संगेजखां मुदर्रिस डेन्स हाईस्कूलसदर रावलपिंडी (उर्दू)

बजवाय मौलवी हसीनुद्दीन अहमद साहब सेक्रेटरी केमीकल सोसोइटी तहरीर फर्माते हैं कि यह मैंने बारहा कुश्ता पारा पारे को बजरिये बूटी शाहत्तरा (पापड़ा) के पानी में इस तरीके से कायमुल्नारकिया है कि दस

तोला पानी पापड़ा और एक तोला सीमाव बाजारी लेकर एक करछ आहनी में तैय्यार खाम को रखा। नीचे आतिश सराजी बजरिये लकड़ी बेरी दी और पानी शाहतरा का चोया दिया और खतम किया। सीमाव कायमुल्नार हो गया और रीतक पारा कायमुल्नार हो सकता है। मुजर्रिलमुजर्रिब है मगर मुतहर्रिक होगा। (सुफहा ५ अखबार अकलीमियाँ १६/६/१९०५)

सीमाव कायमुल्नार बजरिये अर्क शाहतरा व सिर्स (उर्दू)

४० तोले अर्क शाहतरा मुरब्बिका एक तोला सीमाव मुसफ्फा कर्छे आहनी में रखकर चोया दे फिर इसके बाद बीस तोला अर्कवर्ग सिर्स का चोया दे। अगर सिर्स स्याह दस्तयाव हो तो फिर अकसीर आता है वरना मामूली सिर्स का चोया देकर अमल तमाम हुआ। सीमाव[1] ६६२ डिगरी तक तैयार है और यह नुसखा किसी पर्चः अकलीमियाँ ही का है मगर इसका तजरुबा हो चुका है। (शाहतसव्वरहुसेन) (सुफहा १७ अखबार अकलीमियाँ ८/३/१९०९)

सीमाव को कायमुल्नार बनाने की तरकीब बजरिये पुट अर्कपत्ता आक सफेद (बादहू धतूर में अकद या अकसीर) (उर्दू)

मुदार सफेद फूल के पीले पत्तों के अर्क में २१ मर्तवः पारा हल करने में जज्ब हो तो कायमुल्नार होता है, इसके बाद स्याह धतूरे के पत्तों के अर्क में पारा पकाया जावे तो काफी दवा की है।

(सुफहा १५ अखबार अकलीमियाँ १६/१२/१९०६)

तरकीब सीमाव कायमुल्नार (मयतरकीब कुश्ता) बजरि अर्क अस्पन्द व अर्क बिसखपरा (उर्दू)

एक खुदा रसीदः फकीर ने बतलाया अर्क अस्पन्द (हरमल सफेद) नुल में सीमाव दो रोज खरल किया जावे और फिर दो पहर चोया दिया जाव। बादहू बूटी अटसट (बिसखपरा जिसको मुलतानकी तरफ दमा भी कहते हैं शीरा एक सरम सीमाव मजकूर डालकर आग पर पकाया जावे जब पानी पाव भर रह जावे तब उतार लिया जावे, सीमाव का हाथ से गोला बन जावेगा। यह गोला आग पर से फरार न होगा। बादहू इस गुटका को बूटी नकछिकनी के नुगदे में देकर गिले हिकमत करके पाचक दश्ती में आग दी जावे। सीमाव शिगुप्त: व कलनग होगा।

(अखबार अकलीमियाँ १/१/१९०७)

सीमाव को कायमुल्नार करने की तरकीब बजरिये चोया अर्क बथुआ कीमियाई (उर्दू)

लेकिन कीमियाई सुर्ख बथुा व रंग सुर्ख और कड़वा होता है और पत्तियां गोल औ पुरआब कंगूरादार पोदीना के बराबर दरख्त बालिश्त भर से कम व वेश होता है और फूल भी सुर्ख होता है। यह कामयाब है अगर यह मिल जावे तो सीमाव को कायमुल्नार और गाढा और अकसीर करता है यानी अगर इसके अर्क में सीमाव को सिर्फ दो तीन चोयादे गाढ़ा हो जायेगा और चार बार और चोया दे तो खील यानि शिगुफ्तः हो जायेगा और एक रस्सी सौ तौले को अकसीर कर देगा। (सुफहा अकलीमियाँ २०८)

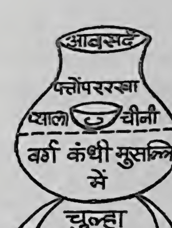
१–अखबार अकलीमियां १६ फरवरी सन् १९०७ सुफहा १३ पर दर्ज है कि स्पन्द के चोया और सहक से २३/६२२ दर्जे तक समान कायमुल्नार होने का तजरुबा हो चुका है। मुमकिन है कि ज्यादा अमल करने से और ज्यादा नतीजा निकले। यह सीमाव गाढा नहीं होगा, अपनी शकल में रहेगा।

सीमाव को कायमुल्नार करने की तरकीब बजरिये अर्क कंघी[1] (उर्दू)

केनी यानी गग्हथी या कंघी खुर्द या कला जो मुमकिन हो, लाकर शीरा निकाले और सीमाव को उसके शीरे में एक रोज सहक करके पहर भर तक चोया दे, सख्त गाढ़ा हो जायेगा।[2] यह तजरुबात से ओलिया अल्लाह के हैं इसलिये कि गाढ़ा और कायमुल्नार सीमाव दस्तयाव होना मुश्किल अमर है इस तरकीब से सीमाव गलीज और कायमुल्नार होकर खुद अकसीर हो जाता है अगर शिगुफ्त: करे तो नूरअली नूरकलंग यानी अकसीर आजम हो जायेगा और चावल खाने मे साल भर कोई मर्ज न पैदा होगा। (सुफहा अकलीमियाँ २२८)

तरकीब निकालने अर्क कंघी को मुतल्लिक सीमाव कायम (उर्दू)

अर्क निकालने की तरकीब यह है कि वर्ग कंघी को लाकर निस्फतक देगे में भरे और उसके ऊपर चीनी का प्याला रख दे और मुँह देग का सरपोश मिसी से ढककर बन्द कर दे और मुंह को आटे से बंद करके कि भाप न निकलने पावे और पोश में सर्द पानी भर दे और आहिस्ता आहिस्ता आंच करता रहे। ऊपर का पानी जब गर्म हो जावे बदल दिया करे। सात बार पानी को बदले। शीरा कंघी का प्याले में मुकत्तर होगा आखिर में आग तेज मिस्ल खिचड़ी तमाम अर्क निकल आवेगा। तस्वीर भवका मजकूर की यह है। जोड़ सरपोश का गिलेहिकमत शुदः है। (सफा अकलीमियाँ २२८)



सीमाव कायमुल्नार बजरिये अर्क कंघी (उर्दू)

यकम अक्तूबर सन् १९० ई० के अखबार अलकीमियां में सराहत मजहूललइस्मबूटी के लिये कि जिससे सीमाव कायमुल्नार हो जाता है तवज्जह दिलाई गई थी आज उस बूटी के मुतअल्लिक जनाब मुहम्मद हबीबुल्लाह साहब लाइनदार लकड़ी अमृतसर कटरा शेरसिंह से तहरीर फर्माते हैं कि अव्वल बूटी कंघी जर्द गिले हिकमत का अर्क हस्बतशीह किताब अकलीमियाँ हिस्सा अव्वल निकाला जावे फिर उस अर्क को जदीदवर्ग बूटी मजकूर में डालकर घोट कर निचोड़ लिया जावे। यह अफशुर्द:गलीज सब्ज जदी माईरू होगा। इस अर्क में कम अजकम चार पहर कामिल और जियादह से जियादह छः पहर सीमाव बाजारी खरल किया जावें मगर खरल उमदा हो बादहू कामिल दो पहर अर्क मजकूर का चोया बतरीक इन्दराज किताब अकलीमियाँ दिया जावे। गुटका कायमुल्नार और नरास होगा।

(अखबार अलकीमियाँ १/१/१९०७ सुफा ८)

१–शीरावर्ग कंघी का मामूली तौर पर नही निकल सकता लिहाजा आगे उसकी तरकीब दर्ज की गई है।

२–यह दोनों बातें अभरकजारणे से पैदा होती है जिसको हमारे शास्त्रकारों ने मुकद्दम साना है।

तरकीब सीमाव कायम बजरिये अर्क कंघी (उर्दू)

हाल में जनाव मौलवी मुहम्मद हवीवुल्लाह साहव मुतवतन मौजा शेखभट्टी डाकखाना अजनाला जिला अमृतसर ने अर्क कंघी (शाना) का हम्मामारियः के तरीके से बमूजिब तरकीब मुन्दरज सफा २२१ अकलीमियाँ शरह अलकीमियाँ के अर्क निकाला क्योंकि इस बूटी का अर्क मामूलन नहीं निकल सकता है अर्क बदस्तूर बरंग सफेद निकला चूँकि मेरी राय में वर्ग कंघी जर्द गुलमजकूर में मिस कीमियाई है क्योंकि इसका शीरा सुर्ख तीरा निकलता है इस वजह से सीमाव इससे मुनक्किद हो सकता है लेकिन अर्क मजकूर जो बतवसुत हम्माम मारियः के निकला वह सफेद मुखतर था लिहाजा वादी उलनजर में जुजबमिस का इसमें शामिल नहीं था। विनाइ अलिया मगरी अलिया मौसूफ को हिदायत की गई कि अर्क सफेद मुकत्तर मजकूर को जर्दीवर्ग कंघी से मिलाकर बारीक कूटकर इसका शीरा बदस्तूर निचोड़कर निकाल लेवे और इससे सीमाव को सहक करें और चोया दें जैसा कि सुफा २२८ की किताब अकलीमियाँ मजकूर में लिखा है उस पर अमल करने से ऐसा अर्क भी निकल आया जिसमें मिस कीमियाई शामिल है और सीमाव को खरल कर ले और चोया देने से उसके कायमुल्नार बनाया अलहम्दुल्लाह अलीजालके इल्म कीमियाई में महज मामूली बूटी के जरिये सीमाव को कायमुल्नार करना ख्वाह गुटका बनाना जैसा मुश्किल है वह माहरफन और शाइक तजरुवा से मुखफी नहीं क्योंकि इसके तमाम एमाल कीमियाई के आसान और सरी अउल इन्तनाज हो जाते हैं, अब कमेटी में नमूना सीमाव कायम मजकूर का मँगवाया गया है ताकि काइदा कीमियाई की रूसे भी इसको जांच लिया जावें कि आया वह ६६२ डिगरी थरमामीटर की हरारत तक कायम है या नहीं। मूमी अल्लाह के इस तजरुबे से यह नतीजा भी सावित हुआ कि नुसखा मुन्दर्ज सुफा २२६ के बमूजिब अमल करने से भी सीमाव कायमुल्नार हो सकता है और हर मेम्बर अंजुमन के वास्ते यह जर्रीन उसूल जाहर हो गया कि हर खुश्क बूटी का अर्क अगर निकालना मद्दे नजर है तो हम्माद मारियः के तरीके से अर्क निकालकर उसे अर्क मुकत्तर बरंग सफेद को जदीद बूटी में मिलाकर खुश्क से खुश्क बूटी का अर्क निकल सकता है और एमाल कीमियाई में लाया जा सकता है और सुफहा २२६ किताब अकलीमियाँ सतर की १४ की इवारत मुजमुला यही मतलब है क्योंकि पानी निकालकर शीरा निकालने में शीरा मजकूर किसी अमल कीमियाई में कारामद नहीं होता है।

(सुफा ६ अखवार अकलीमियाँ १/ व १६/११/१९०६)

सम्मति—अखबार अलकीमियाँ मुवर्रिखः १६/२/१९०७ के सुफहा १३ पर दर्ज है कि आमदः नमूने का तजरुवा किया गया तो सीमाव सिर्फ २१०/६२२ दर्जे तक कायमुल्नार सावित हुआ यह सीमाव कदरे गाढा भी था। उम्मीद कि, आग ज्यादह अर्से तक सीमाव अकद हो जावे तो जरूर पूरा कायमुल्नार हो जावेगा।

सीमाव को कायमुल्नार करने की तरकीब बजरिये कंघी (उर्दू)

ग्रंथी को अरवी में सत्तउलफोन फार्सी में शाना और हिन्दी में कंघी कहते हैं। दो किस्म की होती है एक सफेद गुल दूसरी जर्दगुल। अगर आखिर उलजिकर का शीरा जोश करके निकले और सीमाव को उसमें सहक करे और दिन में धूप में और रात को जमीन में दफन करके ऊपर से आग जलावे। इस तरह कि तहजमीन में थोड़ी हरारत पहुंचती रहे तो सीमाव चंद अमल में कायमुल्नार हो जाता है। इसका दरख्त दो गज तक ऊंचा होता है और जर्द सफेद दो गजन का फूल होता कुवा के बीज उसका तुख्म होता है। (सुफहा अकलीमियाँ २२६)

अगर सफेद गुल दस्तयाब हो तो एक तोला अर्क उसका पांच तोले सीमाव में डाल खुली हुई बोत में आग पर रख। नुकरा फूटक हो जायगा। दो रत्ती फूटक मजकूर मिस गुदाख्तः पर तरह करे तिला हो जायेगा। मुतारीज्जिम—बाज किताबों में ग्रंथी जुदा गाना जड़ी मानी गई है।

सीमाव को कायमुल्नार व मुसफ्फा करने की तरकीब बजरिये पुटआफ्तावी व चोया बूटी मुतहद्दिद (उर्दू)

अमलशमशी या कमरी के वास्ते सीमाव को मुसफ्फा और साबित आगर पर रख करना चाहिये और एक सौ बीस पुट आफ्तावी शीरा नाई तलख का दे अगर शीराबूटी मजकूर मैस्सर न हो तो जो शायद किसंत का जिसको चूक भी कहते हैं लेकिन दो प्रहर तक दिन तक सहक कर और दो प्रहर से शाम तक खुश्क करे इसी तरह से एक सौ बीस पुट जोशाँयंदः मजकूर मजकूर में दे। वाद उसके आठ पहर चोया शीराः राम पीपल यानी बकन का और इसी तरह आठ पहर चोया शीरा गोमा का दे और ब्यालीस रोज शीरा जकूम में तर रखे मगर हर हफ्ते में शीरा ताजा बदलता रहे। कायमुल्नार भी हो जायेगा बाद उसके सोना या चांदी बनाने के अमल में काम में लावे। (सुफहा अकलीमियाँ १५९)

सीमाव को कायमसुल्नार और बादहू कुश्ता करने की तरकीब बजरिये अर्कधतूरा स्याह (उर्दू)

अव्वल सीमाव को एक रोज पुट आफ्तावी अर्कवर्ग धतूर स्याह में और एक रोज चोयाअर्क मजकूर से दिया करे। यहां तक कि वह कायमुल्नार हो जावे। बाद उसके लुवंदी में धतूरा स्याह के मजकूर की रखकर गिले हिकमत करके गजपुट की आग देकर फूंक दे उस वक्त अलबत्तः कुश्ता हो जायेगा मगर यह अमल मुतरिज्जम में तजरुवे में नहीं आया है बल्कि जुबानी एक मुतहक्किक के सुना गया है। इस कुश्ते से चांदी बन सकती है अगर एक चुटकी तोले भर कलई पर तरह किया जावे।

(सुफहा अकलीमियाँ २१४)

सीमाव को कायमुल्नार करने की तरकीब बजरिये धतूरा जर्दगुल के फल ३० आंच (उर्दू)

अकसीर कमरीसर धतूरा जर्दगुल जिसका फूल तोरई के मुसन्निफ ते से दाल खे बे से मुतरिज्जम दाल हे ते वाउ रे हे—फूल से नुशावा होता है, बड़ा फल लेकर सर उसका काटकर अन्दर से खाली करके उसमें सीमाव भर दे उसके ऊपर पलगूवः जो फल मजकूर को खाली करने के वक्त निकला है पुर कर दे और अगर जरूरत हो तो दूसरे फल से निकालकर कूटकर भर दे बादहू सरपोश उसी की तराशा का बंद करके थोड़ा कपड़ा लपेट दे और जर्द में मिट्टी में थोड़ी सी रुई मिलाकर खूब कूटकर उससे गिले हिकमत कर दे और बड़े उपले को कुरदकरे फल मजकूर उस पर रख दे और सवा सेर कटी हुई कर्सी उसके चारों तरफ रखकर आग दे और खुद बखुद सर्द होने से बादहू निकाल दूसरे फल में इसी तरह अमल करे हत्ता कि तीस मर्तबः तीस फलों की नौबत पहुँचे। मगर हर बार पाव भर कर्सी ज्यादा करते जावे। चालीस मर्तबे में दस सेर कर्सी को नौवत आवेगी और सीमाव कायमुल्नार हो जायेगा। बादहू मिसके पत्तर कंटक वेधी बनाने और सीमाव मजकूर को हाथ से मले हत्ताकि पत्तरों की बातन में सीमाव नफूज कर जाए। बादहू पत्तरों को एक शकोरों में रखकर दूसरा शकोरा उस पर ढांककर मुअम्मा

कर ले और तीन सेर उपले या सूखी लकड़ी में रखकर आग दे चांदी हो जायेगी और यह कुलिया है (सुफ्हा अकलीमियाँ २६७)

विचार–अखबारं अलकीमियाँ १/५/१९०६ सुफहा ५ में मुन्दर्ज है कि महाराज बनारस के बागवाँ के बनारस में धतूरा जर्दगुल मौजूद है और नीजकिला बाकै मुकाम कपिल में मौजूद हैं।

पारद अग्निस्थाई महदी और वस्मे से १४ आंच में

मेंदी सवासेर कच्चा वसमा १। सेर कच्चा दोनों दवाई कूटी हुई रात को सेर पक्के पानी में भिगो छोड़नी प्रातःकाल जोश देकर पानी निकाल लेना। उस पानी में पारा १० तोले खपाकर खरल करना १ दिन भर रात को सब नुगदी लेकर उसमें खरल किया हुआ पारा रख कर बारह बारह सेर पक्के गोहे की खुली आग देनी। प्रातःकाल पारा निकाल कर तोल लेना बराबर निकलेगा, ऐसे प्रतिदिन १४ दिन तक आग देनी, अग्निसह पारद होवेगा–(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारद स्थिर बड़ के दूध से शीशी में १ आंच

पारा कायम इस तरह करना चाहिये। पारा ४ तोले, वट का दूध २० तोले, दोनों को खरल करना और इमामदस्ते में पाकर खूब कूटना अनवरत ४ पहर फिर उसको शीशी में पाकर बालुकायन्त्र में आग देनी। मीठा दुग्ध जल जायेगा और पारा स्थिर हो जायेगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

सीमाव को कायमुल्नार करनेवाली बूटियों और अजजाइ की फहरिस्त (उर्दू)

१	२	३	४	५	६	
भिलावाँ	देखकनेर सफेद	तुख्मढाक	तेजाववैजामुर्ग	रोगनतुख्मधतूरा	घूंघची	(सुफ्हा अकलीमियां २०६)

सीमाव कायम बजरिये चोयाशीर गाय वगैर: (उर्दू)

बकरी, गाय, ऊंटनी, भेड़ हरेक का दूध सेर भर ५ तोले पारे पर अलग अलग चोया दो आग पर कायम होगा।

(सुफ्हा १६ अखबार अकलीमियां ८/२/१९०९)

(उर्दू)

तुख्म ढाक–यंहा भी रोगन से मुराद है क्योंकि रोगन तुख्म में सहक करते करते अव्वल सीमाव मस्का की तरह होता है। बादहू रफ्तः रफ्तः आग देने से कायम होता है। रोगन वलादर से भी सीमाव सहक करते करते मस्का हो जाता है। (सुफ्हा अकलीमियां २०८)

कायम मर्दन सीमाव–बजरिये रोगन सरफोका (फार्सी)

कायम नमूदन सीमाव–बिगरिन्द रोगन सरफोक व सीमाव हमचन्दवः व हरदोरा बाहम साइतै हलकुनन्द व दरबोतए गिली अन्दाजन्द बादहू बिगीरन्द बोताः आहनी व ओरा अजनमक सांभर पुर साजन्द बदरमियान ईमनक आं बोतए गिली निहन्द पस सरपोश आहनी बाला दिहन्द बोतः आहनी निहन्द बवायद की शिकम् सरपोश नीज अज नमक सांभर पुर बाशद यानी तहवबाला बोतः गिली कि दर बोत आहनी अस्त हमः नमक बाशद यानी तहवबाला बोतः गिली कि दर बोत आहनी अस्त हमः नमक बाशद पसता शश पास आतिश दीपकदिहन्ह बबकार बरंग तरीक रोगन कशीदन सरफों का आनस्त कि सरफोकः राअजन बर्ग व बेस गिरफ्तः दर शीशः अन्दाजन्द व आंशीशः रामौहर बलेप दिहन्द व बतरीक डोलजन्त रोगन ओ विवस्तानंद। (सुफ्हा ७ मुजरबात अकबरी फार्सी)

पारद स्थिर कसूम के तेल से

फकवाड़े के पत्रों से कुसंभे का तेल निकालना पारद को कायम करता है। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

सीमाव कायम बजरिये रोगन अजवाइन (उर्दू)

हरमल २ तोला देशी अजवाइन खुरासानी अजवाइन दल हरेक डेढ पाव सबका तैल निकाल लो, इसमें पारे को खरल करके तख्यिया दो जब सब तेल जज्ब हो जावेगा, पारा शुद्ध हो जावेगा। (सुफ्हा १६ अखबार अकलीमियां ८/२/१९०४)

सीमाव कायम बजरिये घूंघची व रोगन तारा मुराइ जैतून (उर्दू)

एक आहनी करछी में ५ तोला घूंघची सफेद का सफूफ निस्फ तले निस्फ ऊपर दर्मियान एक तोला पारा रखकर ऊपर ५ तोला तारः मीरां का तेल और ५ तोले रोगन जैतून डालकर तले आग जला दो जब दो पहर के बाद अजखुद आग लगकर सब कुछ सड़ जावे तब पारा निकाल लो जो कुछ होगा। (सुफ्हा १६ अखबार अकलीमियां ८/२/१९०२)

पारद स्थिर कर्पूरादि तैल से

मुशकपूर १, सज्जी १, शोरा २, नवसादर ३, सुहागा ४, फिटकरी ५, प्रत्येक निंबूरसेन मर्दितं कर्पूरोपरि लिप्तं शुष्के लेपान्तरं क्रमेण शुष्केषु सर्वेषु कोकिलाग्नौ मंदमंद धमेत्, दग्धेषु सर्वेषु कर्पूरम्" तिजाब फारूकी से लेपकर "पाचे निधाय आतपे खरे निदध्यात् । तैलं भवेत् । अनेन पारदगन्धकसिंग्रफस्थिरं भवेत् ।"

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

विचार–कुछ गलती है, ऐसा जान पड़ता है कि ५ चीजों से तेजाब फारू की बना उसके योग से धूप में कपूर का तेल बना उसमें पारा अग्नि स्थाई करे।

सीमाव कायम बजरिये नमक व मिर्च स्याह (उर्दू)

एक सेर नमक, एक सेर काली मिर्च, हर दो बारीक पीसकर दर्मियान पाव भर पारा देकर बर्तन का मुँह बंद करके पहिले दिन ४ प्रहर, दूसरे दिन २ प्रहर, तीसरे दिन एक प्रहर आग दो, मगर आग चराग की बत्ती की हो, स्वच्छ हो। (अखबार अकलीमियाँ ८/२/१९०९)

सीमाव कायम करने की तरकीब नमक कायम से (उर्दू)

नमक लाहोरी हस्बख्वाहिश लेकर उसका दसवां हिस्सा जबदुलजर (संमदरझाग) नमक में शामिल करके किसी लोहे के बोते में डालकर कोयलों को सख्त तेज आग में गलावे जब गल जावे तो ठंडा करके वजन करे, जिस कदर असली वजन अव्वल से कम हो उस कमी को ताजा और जबदुलरजर से रफे करे यानी समंदर झाग और मिलावे। मसलनकुल दस

पोटली निकाल लें फिर और चूना में इसी तरह अमल करे इसी तरह ११ बार करे, पारा स्वच्छ हो जावेगा। (सुफहा १६ अखबार अकलीमियां ८/२/१९०४)

तोला अव्वलमें था, बाद गलानेके सात तोला रहगया तो ३तोला समंदर और मिलाकर फिर गलायें। इसी तरह यहां तक अमल करे कि अपने असली वजन १० तोले पर पूरा उतरे। बादहू सीमाव मसअद हम वजन नमक कायम दोनों को मिलाकर बैज: मुर्ग की जर्दी के तेल में दिन में तमाम तसकिया और रात को तश्विया चन्दवार इसी तरह अमल करने से सीमाव कायम होगा। एक तोला को तीस तोला कलई पर तरह करें कमर खालिस होगा। अगरइसकी एक चावल मुनासिब बदर के साथ मरीज तपेदिक को खिलावें तो निहायत नाफः हैं। (सुफहा १३ अकलीमियाँ १६/६/१९०५)

सीमाव कायमुल्नार बजरिये नमक आर्क (उर्दू)

अगर आक के नमक में हमवजन सीमाव को शामिल करके मदार के मुकत्तर रस में दिन में तस्किया और रात को नरम तश्विया देते चले जावे, इक्कीस तश्वियों के बाद सीमाव कायमुल्नार हो जाता है जो अमल अकसीर के काम आता है। (सुफहा ४ अखबार अकलीमियाँ १/२/१९०७)

तरकीब सीमाव कायमुल्नार सज्जी से (उर्दू)

सज्जी के नमक से पारा कायमुल्नार जरूर होता है मगर उलमाइ अकसीर मगरीब इस पर अजमाइ है सेरो और मनों पारा सज्जी के नमक (सोडा) से जरूर कायम होता है मगर तादात नमक और तवख की मालूम नहीं है तरकीब यह है सज्जी का नमक पानी में घोलकर सीमाव को उसी पानी में पकाना शुरू करो जब पानी जल जाये और पानी डालो फिर और फिर और डालो और जर्फ किसी धातु का हो आखिरकार जरूर पारा कायमुल्नार होगा, मुझे याद आता है कि यह तरकीब मेरे किसी तन की है और कामयाब हुए (सुफहा नं० १४ अखबार अकलीमियाँ १/६/१९०७)

स्थिर पारद सज्जी से

पांच तोले लोटाखार १ तोले पारा बोते विचहेठ ऊपर खार रस के पारे दे सेर पक्का गोहेदी आग देनी फिर दूसरी सवासेर की तीसरी डेढ सेर की, चौथी पौने दो सेर की पांचवी दो सेर पक्के की, फिर ढाई सेर की फिर साढे चार सेर की, फिर पांच सेर की पर बोता निर्धूम अंगारों में रखना यदि कुछ कसर हो तो और भी दे देनी ऐसा पारा निश्चय स्थिर हो जायेगा।
(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

तरकीब सीमाव कायम बजरिये चूना (फारसी)

कि अव्वल सीमावरा बिशोयन्द व बाअलकमः साख्तः व दरपार्चः पेचीदः दरखानः चूनापुँजा विपुजन्द वक्ते कि चूना अजंतूबरायद दरवः निहन्द आबबराँ विपाशन्द कि बूदबुखार अजाँ जाइदशवद तमाम चूना शिगुख्तः गर्दद सीमावर अंजावेरू बरआवुर्दः हमचुनी तादह दवाजदः बार अमल आदत कुनन्द सीमाव हरगिज अज आतिश गुरेजां नशवद हमचुनीं कि बिरीत बजरनेखव उकाव बलस्बुल बइमलाह हमः कायम मेशवद अम्मा गुदाज आंन बाशद चूइ आंरा बा आवहा अव्वैज व बाहरह तश्मीअ कुनद नमूदः अमल कुनन्द काबिल तरह बाशद ई अस्त तदवीर हजरत उस्तादे खैरुल्लाहशाह साहब हक्वानी रहमतुल्लाह अलेहः (सुफहा १० किताब इसरारुल कीमियां)

सीमाव कायम–बजरिये चूना (उर्दू)

पारा २५ तोले एक डबीज और गफ कपड़े में पोटली बनाकर एक सेर अनबुझे चूने के दर्मियान देकर ऊपर कदरे पानी डाल दें, जब चूना सर्द हो

सीमाव कायमुल्नार–चूना से (उर्दू)

सीमाव को बिला अकद किये चूना आबनारसीद में देकर ऊपर पानी छिड़के। सीमाव मुतहर्रिक कायमुल्नार हो जायेगा, इसकी मुफस्सिल तरकीब मुलाहिजा हो (सुफहा अलकीमियां १/१/१९०९)

पारद कायम चूने और बालिकामूत्र से

पारा अनब्बुज चूना पारे के हेठ ऊपर देके ऊपर से लड़कियों को मूत्र पाते रहना। मूत्र ४ अंगुल ऊपर रहे कढ़ जाय तो पांणा जोश देना गोली हो जायेगी और कायम होगा (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारद कायम, शहद, सुहागे और नौसादर से

पारा तथा शहद तोला तोला लेकर दोनों को खूब खरल करना फिर गोली बनाकर रखनी फिर नौशादर ६ माशे सुहागा में दोनों को पीस बोते विच पारे दे हेठ ऊपर रखकर बंद करके ऊपरो त्रय कपरमिट्टी करके खूब सुखाकर भूभलविच नरम आंच देनी सरद होवे तो निकालना कायम होगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

सीमाव कायमुल्नार मुतहर्रिक रोगन नौसादर से (उर्दू)

नौसादर का तेल निकालने की तरकीब यह है कि नौसादर १० तोले चूना आबनारसीद पांच सेर में देकर एक मिट्टी के बर्तन में बंद करके पन्द्रह सेर की आंच दे–जब सर्द हो जावे निकाल लें फिर उसे एक खुले बर्तन में दाखिल करके चहारचन्द पानी दाखिल कर दें, चौथे रोज मुकत्तर लेकर पकावें जब तमाम पानी जल जावेगा तो नौसादर तेल हो जावेगा। (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १६/१२/१९०७)

अव्वल सीमाव को पहले ईंट के बुरादे में एक पहर तक खरल करें ताकदूह स्याह केचली से स्याह हो जावे, बादहू नौसादर के तेल दो तोल में नरम नरम आंच पर एक घंटे तक लगावट दें, इस कदर अमल से सीमाव मुतहर्रिक कायमुल्नार हो जावेगा।

चूना और नौसादर स्थिर से पारद को स्थिर तदनंतर भस्म

कुक्कुटांड का चूना बनाना कुक्कुटांड के चूने में बराबर नौसादर मिलाकर खरल करना फिर उसको आग देना, बट्टी गोहे की और वहां से निकालकर तोलना जितना घट जाय उतना और नौसादर पाकर पूर्ववत् खरल कर आग देना एवं जब तक नौसादर बराबर उतरे जब नौसादर घटने से रह जावे तो फिर उनके साथ समभाग पारा पाकर आग देना, उसी तरह जब पारा घटने से रह जावे तब फिर शंखिये की फुलावट देनी चाहिये। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

सीमाव कायम करने की तरकीब बजरिये अर्क नौसादर व चूना कलसवैजा मुर्ग व बाल (उर्दू)

सीमाव मुसफ्फाशुदः को प्याले चीनी में डालकर अगर सफेद अर्क का चोया दिया जायेगा तो वह सीमाव आला दर्जे का कायमुल्नार हो जाता है।

मेरा तजरुबा शुदः अर्क यह है। कलसबैजः मुर्ग २, जुज, नौसादर २ जुज, आबचूना ३ जुज, बोलसभयान ४ जुज, मुएआदम ६ जुज, तरकीब यह है कि बालों को अच्छी तरह चिकनाई से साफ कर लेवे और मिकराज से बहुत बारीक कतर लेवे फिर सब अजजाइ को मिलाकर शीशी में डालकर बंद कर लेवे, बादहू गजपुट गढ़ा जमीन में खोदकर उसमें लीद अस्पताजा भरकर शीशी को दर्मियान में रखकर गढ़े को बंद कर दें, बीस रोज के बाद निकालकर कुरअंबीक में डालकर जो काचका होगा बतरीक मारूफ अर्क कशीद करें जब तक सफेद अर्क आता रहे उसको अलाहदा रखें। (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १६/६/१९०७)

सीमाव कायमुल्नार करने की मुजर्रिब तरकीब बजरिये गंधक कायम (उर्दू)

गंधक आँवला हस्बजरूरत लेकर लोहे की एक कटाही में डाले और चूल्हे पर रखकर नीचे नरम आच दे और अर्क सत्यानाशी बूटी या अर्क पनवाड़ जिसको तरूठः कहते हैं, डालते जायें, इसी तरह २४ प्रहर के चोय में गंधक कायम हो जायेगा मगर ख्याल रहे कि बाद १२ पहर आगे की जरा सी डली आग पर डालकर देखें, अगर गंधक का शौला बंद हो कर आग को सर्द कर दे तो उतार लेवें। अगर ज्यादा पक जायेगी सन्द हो जायेगी। इससे अमल बराबर नहीं होता, इसके बाद सुहागे को अर्क कंघी में कायम करे और इसी की कुठाली बनाकर सीमाव मुसफ्फाकुठाली मजकूर में भर दें; ऊपर गंधक कायम शुदः इस कदर डाले कि सीमाव नजर न आवे फिर कोयलों पर पाँच या दस मिनट रखें जब गंधक तेल हो कर बहने लगेगी तो सीमाव कायमुल्नार गुलाबी रंग का खंजर हो जायेगा, उस वक्त आग से अलहदा करके निकाल लें। (मुहम्मद अब्दुल हफीज हफीज आमिल हकीम अलवर जिला कुश्ता) (सुफ्हा ११ अखबार अकलीमियाँ १६/६/१९०५)

तदबीर गलीज कर्दन सीमाव वा अभ्रक सफेद वियारद अभ्रक सफेद व धनाव सफेद साजदवआँ (फार्सी)

दुहनावरा व सीमाव बाबतर्ब पुस्तः यकजाकर्दः सहक कुनद व दर डौरू जंतर आतिश दिहद सीमाव बुरीदःवाला गीरद व कलस अभ्रक बाई मांद हमींतरीक हफ्त अमल कुनंद सीमाव गलीज गर्दद बदर वजन दहदवाजदह पासंजदह तलकदिंहद जियादह गरां कुनन्दं अजहमः औलाबुवद यानी अगर सीमाव यकसर ब्राशद सफेद तलक यकब नीम सेर दरहर अमल। (सुफ्हा ११ छोटी कितबियानुसखा सिद्धरसकिताब जवाहर उलसिनात)

सीमाव को बिछिया घात करने की तरकीब बजरिये अभ्रक (उर्दू)

सीमाव ख्वाह तनहा हो या मयगंधक के मगर सिर्फ सीमाव के हमवजन अभ्रक स्याह दुहनाव की कुई मिलाकर कांजी या सिरका मुकत्तर या अर्कलैमूं में बदस्तूर सहक करे यानी सुबह से दोपहर तक खरल करे और दो पहर से शाम तक धूप में सुखलावे, बादहू डौरू जंतर या सुराही या शीशीगर्दन दराज या दो प्यालों में तसईद करे।ताकि सीमाव अभ्रक से जुदा होकर शीशा के अतराफ में चस्पा न हो जावे। यह सहक और तसईद सात बार करे, हम अमल में कुछ सीमाव तसईद और कुछ तहनशीन होता जायेगा। सातवीं बार बिलकुल तहनशीन हो जायेगा।

(सुफ्हा अकलीमियाँ १४९)

मुतरज्मि—तहनशील सीमाव जो अभ्रक के साथ रह जाता है वह खुश्क सहक करके मुँह से आहिस्ता आहिस्ता फूंकता रहे जिसमें अभ्रक उड़ जावे और सीमाव बेवजह गरानी वजन के रह जावें।

यदि न स्यादभ्रसत्त्वं बज्रकाभ्रकचूर्णिताम्[1] यमचिंचाम्लपुटितां पिष्टिकां कारयेद्रसे ॥१॥ संधानाम्लादियोगेन चणकाम्लप्रयोगतः । तुल्यसंपर्कतो व्योमचूर्णपिष्टी भवेद्रसः ॥ एवं युक्त्या रसं यंत्रे प्रोत्पात्य स्थैर्यमानयेत् ॥२॥ (रसराजलक्ष्मी)

अर्थ—यदि अभ्रकसत्त्व न मिल सके तो वज्राभ्रक के चूर को तुल्यभाग पारद में गेर तप्तखल्व द्वारा यमचिंचा के रस से अथवा चने के क्षार का योग और धान्याम्लक के योग से पिष्टी करे अथवा कुछ तूतियां मिलाकर काजी से घोटे तो अभ्रक पारद की पिष्टी हो जायेगी॥१॥२॥

सीमाव को कायमुल्नार करने की तरकीब बजरिये कुश्ता अभ्रक

खाकिस्तर अभ्रक सीमाव को कायमुल्नार करती है तरकीब यह है कि खाकिस्तर मुन्दर्जः जैल छः माशे सीमाव एक तोले एक जगह खरल में डालकर तमाम दिन रगड़ाई करें फिर दोनों को शिकोरें में डाल कर आंच दे दें, जब आंच बाहर निकालें कैफियत मालूम होगी।

(सुफ्हा १० किताब अखबार अकलीमियाँ)

तरकीब खाकिस्तर अभ्रक, नमक लाहौरी ३ माशे, नमक शोरमकड़ा १ तोला, कफेदरिया ३ माशे, अभ्रक स्याह १ तोला, इन सबको बारीक पीसकर अर्क आकाशबेल में जो करीबन आधपाव के हो और अर्क लेंमू २ तोला इसमें शामिल करके अदविया मजकूर को उसमें खरल करें, टिकिया बना कलवगिली के मुंह बंद करके सात सेर की आंच दें। सर्द होने के बाद जो खाक बरामद हो उसको अहतियात से रख लें।

पारद को अभ्रक भस्म से कायम

(अभ्रक किलस ४ तोला, एक बेरी उड़ाया हुआ ४ तोला, जराबंद तहवील और जोखार दोनों को पीसकर सिरके में भेवकर जोश देवे। पांच वा छः उबालें आवें फिर रुई रखकर नितार लेवे उसमें किलस कुश्ता अभ्र पारद को खरलकर शीशी में पाकर सत तश्विये देवे सिद्धमताभ्रे रंग (कुस्ता अभ्र) ६० तोले पर एक तोला पावे। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

पारद स्थिर कसीस ओंगाक्षार शोरा नौसादर के जल से

अपामार्गक्षार १ तोला, शोरा ३ माशे, नौसादर ३ माशे, लूण ३ माशे, काहीश्वेत (कासीसश्वेत) ३ माशे, चारों चीज अपामार्ग के क्षारके रसबीच खरल करनी ४ घड़ी फिर सब चीजों को कड़छे में पाके सुखालेनीयां फिर ठंडे स्थान पर रखनी। जल हो जायगा उस जल नाल से पारद खरल करना स्थिर हो जायेगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

सीमाव कायमुल्नार करने की तरकीब बजरिये चोया अर्क–लोहा नौसादर (उर्दू)

जनाब सालिगराम साहब ठेकेदार खरीदार अकलीमियाँ कोटकपूरः इलाका रियासत फरीद कोट से तहरीर फमाते हैं कि बोलतिल्फ नीम आसार नौसादर एक सेर शाही लोहचून एक सेर–शाही बोलमजकूर में दो रोज तक पड़ा रहने दे। बादहू नितारकर अजजाइ मस्बूरा को बोतः आहनी में एक सेर शाह सीमाव डालकर साफ पानी का चोया देवें, बादहू वर्ग तंबूल के पानी को चोया दें। सीमाव कायमुल्नार हो जायेगा। आबसादह और आबवर्ग तंबूल का जुदा जुदा वजन एक एक पाव भर का होना चाहिये। (बजाइ बोल सिरका ले सकते हैं) (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १/१६/१९/१९०६)

---

[1] अंजनाभ्रकचूर्णितम्–इत्यपि ।

उकद सीमाव बजरिये हलफौलाद (उर्दू)

चार रतल खट्टे अनार के पानी में आधार तल बुरादा फौलाद डालकर धूप में रख दो, जब चन्द रोज में फौलाद हल हो जावे तब आधापाव पारा करछी में डालकर इस अर्क का चोया दो। वह सख्त उकद हो जायेगा। (सुफहा १६ अखबार अलकीमियां ८/२/१९०९)

सीमाव नीमकायम बजरिये फौलाद (उर्दू)

एक आहनी करछे में एक तोला बुरादा जदीद (पका लोहा या फौलाद) बिछाकर उस पर ९ माशे सफूफ गंधक बिछावे। उस पर २ तोले पारा वा आहिस्तगी तमाम रखकर उस पर एक तोला सफूफ गंधक ढक दें। ऊपर बुरादा जदीद एक तोला देकर रोगन जंतून इस कदर डालें कि तमाम अदविया से दो अंगुल ऊपर रहे, कच्छें के नीचे नरम नरम आग जलावें, जब तेल सूखकर दवाओं के बराबर आ जावे तब आंच तेज कर दें कि दवाओं के अन्दर आग लग जावे जब सब अदविसा जल जावे तब पारा अन्दर से निकालें, जो कदर गाढ़ा हो गया होगा यह भी इस कदर कायमुल्नार होता है कि कुठाली में डालकर कोयलों की आंच मे रख दे, कुठाली सुर्ख हो जावेगी, मगर पारा नहीं उड़ेगा, मेरा जाती तजरुबा है। (सुफहा १७ अखबार अलकीमियाँ २४/१/१९०९)

बूटी से शिलाजीत स्थिर उससे पारद स्थिर

"ऊषरभूमौ मेथीसदृशपत्रा अम्लरसा औषधिर्भवति तत्पत्रैः श्वेतशिलाजतु स्थिरा भवति तत्र च पारदः स्थिरो भवति सम्नरसासौषधि"
(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारद स्थिर नीले थोथे के तैल से

नीलाथोथा कुक्कुटांड की पीतिमा से खरल करना और लिद्दम दाव छोड़ना सब तैल हो जायेगा वह तैल पारे को स्थिर करता है।
(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारद को अग्निस्थाई करना-संखिये से

पारे को निआजबोके के रस में खरल करके उसी के रस में काढ़ना फिर शंखिया जर्द बराबर वजन लेकर पारे के हेठ ऊपर देके बोते में बंदकर बीस प्रहर नरम आग में रखना स्थिर कायम हो जायेगा।
(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारा कायमुल्नार बजरिये बोतः बीट कबूतर व अर्कटेस् (उर्दू)

जनाव मुहम्मदबखश साहब जमादार तोपखाना रियासत खैरपुर सिन्ध से तहरीर फर्माते हैं कि पैखाल कबूतर सहराई से पचास बोतः तैयार किये जावेंस, इस तरकीब से तीन पाव गुलटेसूके पानी में पैखाल कबूतर को खरल करें फिर पचास बोतः तैयार करके हरबोते में सीमाव १० तोले यकेबात दीगरे दाखिलकरें इसी तरह पचासवें बोते तक अमल करते हुए सीमाव कायमुल्नार हो जायेगा। गुलटेसूके पानी निकालने की तरकीब यह है कि गुलटेसू को पानी में दाखिल करके आग पर जोश दे पानी बकदर हाजत काफी है। (सुफहा नं० ४ अखबार अलकीमियाँ १/६/१९०७)

सीमाव कायम सुर्मा से (उर्दू)

सुर्मा स्याह १ तोला, पारा १ तोला, शोरा कलमी २ तोला, रोगन कुन्जद १ सेर अंगारों पर रख कर देखो, जब शोरा उड़ जाय पारा कायम हो जावेगा।
(अज बियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी)

सीमाव कायमुल्नार बजरिये अजसाद अदना (उर्दू)

मिस जस्त कलई सुर्व हर एक ५ तोले इनको लेकर एक कुठाली में डाल कर चर्ख देकर कालिब में डिबिये की शकल जरगर से तैयार करा लेवें और सरपोश भी इन्हीं चार अशिया का तैयार करा लेवें जब यह डिबिया और सरपोश तैयार हो जावे तो एक माशा शोरा, २ माशे सुहागा, एक माशा मुश्क काफूर, एक माशे सम्मुलफार सफेद, हर चहार अदविया खूब खुश्क खरल २ घण्टे करके फिर रसलेमू डालकर दो घण्टे खरल करके इस डिबिया में सीमाव एक तोला डालकर ऊपर सरपोश के अन्दर करके इस डिबिया में सीमाव एक तोला डालकर ऊपर सरपोश देकर कर दे गिले हिकमत करके अखंगरों की बहुत नरम आग में या गरम तेज भूभल में रात को दफन कर रखे, शुबह निकालें तो सीमाव गिरहशुदः और कायमुल्नार पाओगे। ख्वाह कितनी मर्तबः चर्ख दो सुर्व की तरह कुठाली में चक्कर लगाता रहेगा, जब सर्द होगा तो फिर गिरह हो जावेगा और अगर कुछ एक मर्तबः कमी रही तो दूसरी दफेः फिर डिबिया में रखकर नरम अखबारों की आग में दफन कर दो, जरूर ही उमदा कायमुल्नार हो जावेगा। तजरुबा शुद्ध चन्दमर्तबः का मेरा है अगर कायम न हो तो जिस कदर आपका खर्च हो मैं दूंगा मगर मैं शर्त नहीं करता कि जिस मतलब के वास्ते हकीम साहव सीमाव कायमुल्नार ख्वाहा है इस मतलब में काम देगा या नहीं; हां कायमुल्नार जरूर हो जावेगा, अगर न हो तो अखवार अलकीमियां की मारफथ लिखो। हरजानः वक्त और खर्च जिस कदर होगा, मैं देने का जिम्मेदार हूं।
(सुफहा २० व २१ अखबार अकलीमियाँ २४/१/१९०८)

सीमाव कायमुल्नार (उर्दू)

ढाई पाव पारा लेकर रुई से एक कूंडे में डालकर खूब साफ हो जावेगी और एक बड़े कराह में डालकर एक कटोरा आहनी सितह बराबर करके सीसा से जलमुद्रा करके कराह को खूब पानी से भर दे और २ मन लोहा भी डाल दें, तीन रोज तक बराबर आग जलावें, पारा तमाम कायमुल्नार हो जावेगा।
(आज वियाज हकीम मुहम्मदफतहयावखां सोहनपुरी)

तरकीब रोगन सीमाव कायमुल्नार (उर्दू)

सीमाव को सिल्फरिक एसिड यानी गन्धक के तेजाब में डालकर धीमी आंच पर गर्म करें, तेजाब जज्ब होकर सीमाव का सफूफ बन जावेगा फिर उसको हमवजन तेजाब के साथ इसी तरह गर्म करें मगर पहले से जरा ज्यादा आंच दें और उसके धूएँ से मुँह और नाक को बचायें, जब फिर तेजाब खुश्क हो जावे तब और हमवजन तेजाब डालकर फिर आग दें मगर दोनों वक्तों से ज्यादा तेज हो उस वक्त भी सीमाव जम जावेगा, बादहू और तेजाब डालकर आग दें उस वक्त कितनी भी आग दो जमता नहीं, तेल की तरह गाढ़ा जमा रहता है और ऐसा कायमुल्नार व तेज होता है कि उसको कितनी ही आग दो उड़ता नहीं, इसी तरह से दूसरी धातुओं का भी तेल निकालना मंजूर हो तो बना लो।
(सुफहा ७९ किताब कुश्तैजातहजारी)

सीमाव को कायमुल्नार करने के मुतल्लिक हिदायतें (उर्दू)

अर्थ—मुतरज्जिम मुसन्निफ रहमतुल्लाह अलिया ने सिर्फ फहरिस्त अजजाइ मुजकूर की लिखी है और तरकीब कोई बयान नहीं की। इन अजजाइमेंन्मुनकर्दन भी और मुश्तरकन भी ऐमाल जैल करने से सीमाव रफ्तः रफ्तः कायमुल्नार हो जाता है, अव्वल सीमाव को किसी जुज्ब के शीरा या रोगन में बतरीक पुट आफ्ताबी के सहक करे बादहू शीरा का इन

अजजाइ में जिसका मुमकिन हो चोया दे अगर सिर्फ रोगन भी हो तो चोया दे अगर सिर्फ रोगन भी हो तो सिर्फ खरल करता रहे, यहां तक कि सीमाव मसका होकर कायमुल्नार हो जावे–दोयम सीमाव को अजजाइ मजकूर में से जिस जिस में मुमकिन हो बतरीक मजकूर खरल करके बादहू खुश्क होने तक तसईद करे, यह अमल खरल और तसईद का यहां कत करे कि कायमुल्नार होकर सीमाव तहनशीन हो जावे–सोयम सीमाव को अजजाइ मजकूरा के साथ सहक बतरीक मजकूर इस कदर करे कि बिलकुल मसकह और रेजः रेजः खाक की तरह हो जावे बाद उसके बोतःमुअस्मा में रखकर रफ्तः रफ्तः तदरीजी आग भडकाकी इसी तरह दे कि अव्वल रोज भूभल गरम में गिले, हिकमत करके सुखलाकर बोतः मजकूर को रख उसके बाद एक कंडे के बुरादे की आग दे जिसका बजन आध पाव हो बादहू पाव भर बादहू डेढ पाव बादहू आध सेर बुरादा पाचक दस्ती को आग दे, इसी तरह से रफ्तः रफ्तः आग बढ़ाता जावे अगर वजन सीमाव का कुछ कम हो जावे उसको पुरा करके बदस्तूर सहक करके आग दिया करे, कायमुल्नार और कुश्ता हो जायेगा।

चहारम सीमाव को बदस्तूर सहकबलेग करके बतरीक बालूजंतरके आग दे यानी आतिशी शीशी में रखकर मुँह बंद कर दे बादहू गिले हिकमत करके मजबूत और गिले हिकमत शुदह हांडी में रख दे और इसमें बालू इस कदर भर दे कि आतिशी बोतल मजकूर छुप जावे और नीचे तदरीजी आंच करे यानी अव्वल दीपक अग्नि दे, बादहू भात अग्नि दे और आखिर को गोश्त अग्नि दे, दूसरे रोज आग देने के पहले सहक बदस्तूर कर लिया करे यहां तक कि कायम हो जावे।

पंजुम अजजाइ मजकूर के शीरे में जो अजजाइ खुश्क का जोश देकर निकाला गया हो और तरस बदस्तूर मअरूफ निकाला हो बतरीक डोल जंतर के पकावे, इस तरह भी कायमुल्नार हो जाता है मगर ज्यादः अर्सा लगता है। सुफ्हा अकलीमियाँ २०६)

पुनः पारद अग्निस्थाई

यदि न स्यादभ्रसत्त्वमंजनाभ्रक चूर्णितम्। यमचिंचाम्लपुटितं पिष्टिकां कारयेद्रसे ॥१॥ संधानाम्लादियोगेन चणकाम्लप्रयोगतः। तुत्थसंपर्कतो व्योमचूर्णैः पिष्टीभवेद्रसः। एवं युक्त्या रसं यंत्रे प्रोत्पात्य स्थैर्यमानयेत् ॥२॥

(१७/१०/०८)

ता० १७ को ५ तोले कैन का साधारण शुद्ध पारद और १ तोले उत्तम कृष्णधान्याभ्रक को लोह खरल में डाल प्रथम २ तोले इमली का ५ तोले गाढ़ा पन्ना डाल (५ तोले से कम पन्ना डालने से अभ्रक घोटने लायक आर्द्र न हुआ) घोटा। फिर नींबू बिजौरा जंभीरी के दो दो तोले रस से बने ६ तोले द्रव में से थोड़ा थोड़ा डाल गाढ़ा गाढ़ा घोटते रहे। १॥ घंटे घुटाई की ५ तोले इमली का पन्ना, ४ तोले नींबू आदि का द्रव कुल ९ तोले पड़ा।

ता० १८ को बचा २ तोले नींबू आदि का द्रव डाला और फिर कबल जंभीरी का सात तोले रस डाल २ घंटें घुटाई की कुल ९ तोले रस पड़ा। पारा अभी तक पृथक् रहा।

ता० १९ को जंभीरी का रस डाल डाल ६ घंटे घुटाई की १० तोले रस पड़ा। सायंकाल को देखा तो अधिक अंश पारद का अभ्रक में मिल गया था किन्तु कुछ रवे बाजरे से बाकी भी थे, नष्टपिष्टी होने की आशा हुई।

ता० २० तो अभ्रकप्रमाण थोड़ा जान ६ माशे धान्याभ्रक और डाल और जंभीरी से रस डाल डाल घोटा। शाम तक ६॥ घंटे घुटाई हुई, ८ तोले रस पड़ा। आज पारा कुछ और मिला, अब बहुत थोड़े कण राई राई से बाकी रह गये हैं, जो खल्वकी तली में भली प्रकार दीखते हैं और सब मिल गया किन्तु जो मिला है उसके भी सूक्ष्म सूक्ष्म कण दीखते हैं अदृश्य नहीं हुए हैं।

ता० २१ तो ६ माशे धान्यभ्रक और डाल घुटाई की, शाम को देखा तो पारे के जो सूक्ष्म रवे दवा में मिले, खरल की बगलियों से लगे दीखते थे, सो अब न दीखते थे किन्तु तली में अब भी दीखते थे। शाम तक ७ घंटे घुटाई हुई तो १३ तोले रस पड़ा।

ता० २२ को ३ माशे पिसे तूतिये की चुटकी दे रस डाल घोटा। तूतिया पड़ चुकने पर पारे के बड़े बड़े रवे बन अधिक अंश पारे का इकट्ठा होने लगा। इस समय पिष्टी कुछ पतली थी। पिष्टी के कुछ गाढ़े होने पर देखा तो पारद मिलकर अपनी पहली हालत पर फिर आ गया तभी ३ माशे पिसा तूतिया और डाल दिया, घुटाई होती रहने के बाद शाम को देखा तो पारे का कहीं कोई रवा दिखता था वरन् सब मिल गया था। शाम तक ७ घंटे घुटाई हुई, ८ तोले रस पड़ा, पिष्टी गाढ़ी हो गई।

ता० २३ को उस पिष्टी को खरल से खुरच आक के पत्ते पर रख लिया जो पिष्टी खरल के किनारों पर लग खुश्क हो गई थी उसके खुरचने में पारे के छोटे छोटे रवे अलग हो गये किन्तु उन सबको उस पिष्टी के ऊपर जमा दिया और धूप में सूखने को रख दिया।

ता० ३१ को सूख जाने पर तोला तो १० तोले ७ मासे हुई। उसको दहली के बने लोहे के डौरू में रख जोड़ पर भस्ममुद्रा बंदकर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ५ को चूल्हे पर ८ बजे से मृदु, मध्य, तीव्राग्नि दी गई, रात के १२ बजे तक अर्थात् १६ घंटे।

ता० ७ के सवेरे खोला तो ऊपर के पात्र में लगा ४ तोले २ माशे पारा निकला, ४॥ तोले जली दवा रह गई।

पारद अग्निस्थाई दूसरा घान

ता० २५/१०/१९०८ को चिर्मिटियों की २॥ तोले दाल को मलसे में जिसमें करीब सेर भर पानी आता था प्रथम आध सेर पानी में ८ बजे से अग्नि पर चढ़ाया गया वह पानी खतम हो चला किन्तु दाल बिल्कुल न गली तो उतना ही पानी और डाल दिया। इस प्रकार ५ बार में जब २॥ सेर पानी पड़ा और दाल तब भी न गली तो दो तीन बार मसला ऊपर तक भर दिया। शाम के ५॥ बजे दाल को निकाल उंगली से मला तो दाल गल तो गई थी किन्तु मिली न थी अतएव उसे उतार ठंडाकर दाल को मथ छान लिया करीब १० छटांक के काढ़ा तैयार हुआ।

ता० २५ को ५ तोले कैन का साधारण शुद्ध पारद और २॥ तोले उत्तम कृष्णधान्याभ्रक दोनों को लोहखल्व में डाल उपरोक्त १० छटांक काढ़े के साथ ४ घंटे घुटाई की। १ घंटे बाद देखा तो पारा अभ्रक में बिलकुल मिला हुआ मालूम हुआ किन्तु जब शाम को देखा तो खरल की तली में पारे के रवे दीख पड़े अतएव ६ माशे तूतिया डाल घोटा तो कोई विशेष अंतर न दीख पड़ा।

ता० २६ को सवेरे पिष्टी कुछ कड़ी हो गई थी। अतएव थोड़ा ही घोटने से अधिक भाग पारे का इकट्ठा हो अभ्रक से पृथक् हो गया, बाद को जंभीरी के रस के साथ ५ घंटे घुटाई की। १० तोले रस पड़ा। पारा कलकासा फिर मिल गया, रवे अब भी थे।

ता० २७ को जंभीरी रस के साथ ६ घंटे तक घुटाई हुई, १५ तोले रस पड़ा।

ता० २८ को जंभीरी के रस के साथ ७॥ बजे से घुटाई आरम्भ हुई ११ बजे देखा तो बहुत सा पारा खल्व में पृथक् दीखने लगा, इसका कारण पिष्टी में कुछ गाढ़ापन आया हुआ समझ थोड़ा थोड़ा रस डाल पिष्टी को पतला किया तो ज्यों ज्यों पिष्टी पतली होती गई, पारा पृथक होता गया यहां तक कि प्रायः सभी पारा खल्व की तली में इकट्ठा हो गया। अतएव शाम तक और रस न डाल घुटाई करते रहे फिर पिष्टी में जब दुबारा गाढ़ापन आने लगा तो पारा मिलने लगा और शाम तक सब मिल गया जिससे सिद्ध हुआ कि जब अभ्रपिष्टी नियम से अधिक पतली हो जाती है या अधिक गाढ़ी हो

जाती है `जब अ... का अधिक अंश खल्व की बगलियों पर चढ़ जाता है तब पारद पृथक् हो जाता है। आज १० घंटे घुटाई हुई। १९ तोले रस पड़ा।

ता० २९ को सवेरे देखा तो पारद करीब करीब मिला हुआ था इस परीक्षा के लिये कि ठीक तौर पर घुटाई करने से पारद निरंतर मिला हुआ रह सकता है वा नहीं, अपने रस क्रिया के परिचारक पंडित गौरीशंकर की निगरानी में २ घंटे घुटाई और कराई, ये घुटाई थोड़ा थोड़ा रस दे हल्के हाथ से इस प्रकार की गई है कि अभ्रक अधिक पतला या गाढ़ा न होकर खूब गाढी लेही सा घुटता रहा और ये भी सावधानी की कि जहां तक हो पिष्टी पेंदें में ही रहे, इधर उधर न चढ़ने पावे तो पारद भली भांति निरतंर मिला रहा। आज ३ तोले रस और पड़ा, बाद को उस पिष्टी को खरल से खुरच आक के पत्ते पर रख धूप में सुखा दिया।

ता० ९ को सूखी पिष्टी को तोला तो १३॥ तोले हुई उसको उक्त लोहे के डौरू में भर संधि पर भस्ममुद्रा लगा बन्दकर कपरौटी कर सुखा क्रिया।

ता० ११ को बजे से १० बजे तक रात तक १४ घंटे मृदुमध्य, तीव्राग्नि दी गई, बाद को जैसा तैसा डौरू को रखा छोड़ दिया।

ता० १२ को खोला तो अधिक अंश पारे का ऊपर के पात्र में था और ऊपर का गिरा हुआ कुछ नीचे के पात्र में भी था, दोनों पात्रों में से कपड़े से पोंछ पारे को निकाल छान तोला तो ४ तोले ५ माशे हुआ, जंली दवा ६ तोले २ माशे निकली।

पारद अग्निस्थाई पहले और दूसरे घान की अवशेष भस्म का पुनः पातन

ता० १३/११/०८ को उक्त दोनों बार के पातन से निकले १० तोले ८ माशे अभ्रक को वारीक पीस उक्त लोहे के डौरू में भर उपरोक्त विधि से बंद कर दिया।

ता० १४ को ८ बजे से रात के १० बजे तक १४ घंटे अग्नि दी।

ता० १५ को खोला तो ऊपर के पात्र में पेंदें में लगा हुआ १॥ माशे पारा निकला राख ९ तोले रही। ऊपर के डौरू को देखा तो उसके चारों तरफ चिपकदार चीज में मिला हुआ पारा चिपटा हुआ था, उसको गरम पानी से धो नितारा तो ४ रत्ती पारा और निकला अर्थात् २ माशे पारा निकला।

पारद अग्निस्थायी (दूसरा पातन)

ता० १६/११/०८ को उक्त पहले, दूसरे और तीसरे पातन के निकले ८ तोले ९ माशे पारद और ८ तोले ९ माशे ही उत्तम कृष्णधान्याभ्रक दोनों को लोहखल्व में डाल कांजी नं० १ (जो पार साल की बनी रखी थी) के साथ घोटना आरम्भ किया। आज १/२ घंटे घुटाई हुई। १/४ बोतल कांजी पड़ी। पारद अभ्रक से पृथक रहा।

ता० १७ को ७॥ बजे से घुटाई आरम्भ हुई। ९ बजे देखा तो सब पारा अभ्रक में मिला हुआ था केवल रवे चमकते थे। ४ बजे तक ये रवे बहुता ही सूक्ष्म हो गये जो खस के दाने से भी बहुत छोटे ते, आज ७॥ घंटे घुटाई हुई। १/४ बोतल कांजी पड़ी।

ता० १८ को ७॥ बजे से कांजी डाल घोटना आरम्भ किया। १० बजे देखा तो अभ्रक फूलकर फैन की शकल का हो गया था और पारा अदृष्ट था। ९ बजे से ११ बजे तक झाग रहे। दोपहर की छुट्टी में रखे रहने पर झाग बैठ गये फिर २ बजे से ५ बजे तक कांजी डाल डाल धूप में घोटना आरम्भ किया। फिर झाग नहीं आये। शाम को पिष्टी बना रख दी। अबकी बार पारा बिल्कुल नष्ट पिष्टी हो गया। कुल कांजी आधी बोतल पड़ी।

ता० १९ को पिष्टी इकट्ठी सूखती रही।

ता० २० को पिष्टी को तोड़ बखेरकर सुखा दिया। बखेरने पर भी पारा अदृश्य था।

सम्मति–जान पड़ता है कि साधन उत्तम होने से अबकी बार अभ्रक और पारद की उत्तम पिष्टी बन गई।

ता० २१ को सबेरे दलिया सा कर सुखा दिया, पारा अदृश्य था।

ता० २२ को ३ बजे तोला तो १९ तोले हुआ, डौरू में बंद कर दिया।

ता० २३ को आंच दी, ८ बजे से १० बजे रात तक।

ता० २४ को खोला तो ७ तोले २ माशे पारा निकला और १ तोले ५ माशे पारे और अभ्रक की चीकट सी राख निकली जिसमें दबाने से पारा दीखता था। ९ तोले राख सादी निकली। सब जोड़ा १७ तोले ७ माशे और हुआ था। (८ तोले ९ माशे। ८ तोले ९ माशे) १७ तोले ६ माशे अभी तोल तो पूरी है यदि पारद हाथ आ जावे तो कोई हरज नहीं है।

ता० २५ इस कुल राख औ चीकट को फिर डौरू में बंद कर दिया।

ता० २६ को ४ प्रहर की आंच दी।

ता० २७ को खोल तो ८ माशे ४ रत्ती पारा और निकला और ५ माशे ४ रत्ती चीकट निकली जिसमें पारा अभी दबाने से खूब चमकता था और जो बिलकुल चीकट सी थी, सब पारा ७ तोले १० माशे ४ रत्ती हुआ। अभी १० मा० ४ रत्ती पारा और चाहिये। राख ९ तोल निकली।

चीकट को पानी में घोल धोया तो २ माशे पारा और निकला। राख को धोने से कुछ पारा न निकला। सब पारा ८ तोला ४ रत्ती हुआ। इकट्ठी तोल ८ तोले थी, ८ तोले ९ माशे घटा।

पारद अग्निस्थायी (तीसरा पातन)

ता० २८/११/०८ को तोले पारद और ८ तोले धान्याभ्रक को कांजी से ४ घंटे घोटा मिल गया, खस खस से रवे दीखते हैं।

ता० २९ को ७ घंटे घुटा, सवेरे धूप में घोटने पर ११ बजे फूल गया फिर बैठ गया, शाम तक रवे बारीक बारीक दीखते रहे।

ता० ३० को सवेरे तक रवे दीखते थे इसलिये कुछ गाढ़ घोटा तो घुटाई में दवा अच्छी तरह आई। रवे दो पहर तक गायब हो गये फिर कुछ पतला कर धूप में घोटा तो फिर फूल गया। ३ बजे अब पूर्ण रूप से नष्टपिष्टी है, शाम तक घुटा, शाम को बहुत ही फूल रहा था, इकट्ठा कर दिया।

ता० १/१२ को इकट्ठा खरल में सूखा दोपहर को तोड़ा तो बड़ी फुसफुसी पिष्टी थी।

ता० २ को खूब बखेर सुखा दिया।

ता०३ को दो पहर के ३ बजे डौरू में बन्द कर दिया, तोल १७ तोले थी।

ता० ४ को ८ बजे से रात के ९ बजे तक आंच दी।

ता० ५ को खोला तो ६ तोले ९ माशे पारा निकला और १ तोले ३ माशे चीकट औ ८ तोले राख निकली सब १६ तोले डौरू को धोया तो १॥ माशे पारा और निकला। फिर इस ८ तोले राख और १ तोले ३ माशे चीकट को फिर बंद कर दिया।

ता० ११ को ८ बजे से रात के ८ बजे तक आंच दी।

ता० १२ को खोला तो ८ माशे पारा निकला। २ माशे चीकट निकली ८॥ तोले राख निकली, सब पारा ७ तोले ६॥ माशे हुआ। पहले था ८ तोले, घटा ५॥ माशे।

ता० १४/१२ को इस बार और पहली बार दोनों की १९ तोले राख को लवणयुक्त जम्भीरी के रस में दोलाकर १२ घंटे अग्नि दी।

ता० १५ को निकला तो कुछ पारद पृथक् न था फिर इस राख को सुखा

रख दिया। प्रश्न—कांजी अम्ल है उसी में मर्दित हुए को जम्भीरी रस में जो अम्ल ही है दोला किया गया, क्या क्षार अर्थात् गोमूत्र में दोला करना हितकर होता?

पारद अग्निस्थायी (चौथा पातन)

ता० १६/१२/०८ को ७ तोले ६ माशे ४ रत्ती पारद को ४ तोले अभ्रक के साथ (जिसको पहले दिन चिर्मिटी के कांजियुक्त स्वरस से ३ घण्टे घोटा था) कांजी डाल २ घोटा, शाम तक ७ घण्टे घुटा, पारा मिल गया पर नष्टपिष्टी नहीं हुआ।

ता० १७ को ९ बजे से अभ्रक फूल गया। दो पहर को खूब फूला था और पारा नष्टपिष्टी भी हो गया। शाम तक ७ घण्टे घुटा फूला ही रहा, कांजी आधी बोतल पड़ी।

ता० १८ को १० बजे तक घोटा। बिना कांजी के गाढ़ा होने पर फूलना कम होता गया। १० बजे तक इकट्ठा कर सुखा दिया—ता० २० के दोपहर तक सूखा।

ता० २० को खरल में पीसा तो २ तोले पारा छूट गया। बाकी १२ तोले चूर्ण रहा उसको डौरू में बंद कर दिया।

ता० २१ को ४ प्रहर आंच दी।

ता० २२ को खोला तो ४ तोले ९ माशे पारा निकला। कुछ चीकट निकली। ५ तोले राख निकली। पारे को कांजी से धो डाला और चीकट को भी कांजी से धोया तो ४ माशे पारा और निकला, चीकट की सूखी राख १० माशे रह गई। सब पारा ७ तोले १ माशे, सब राख ५ तोले १ माशे।

पारद अग्निस्थायी (पांचवाँ पातन)

ता० २३/१२/०८ को ७ तोले १ माशे पारे को ५ तोले धान्याभ्रक सहित सिरके से घोटना आरम्भ किया। ३ घण्टे घुटा। पारा मिल तो गया पर नष्टपिष्टी न हुआ।

ता० २४/२५/२६ के १० बजे दिन तक घुटा। ३/४ बोतल सिरका पड़ा। पारद नष्टपिष्टी होने में कुछ कसर रही, समान अभ्रक होने से नष्टपिष्टी हो जाता। अभ्रक किसी समय फूला नहीं जिसे जान पड़ा कि फुलान का गुण कांजी में ही है।

ता० २६ को दो पहर से सूखता रहा।

ता० २८ को सूखने पर घोटा तो २ तोले ८ माशे पारा जुदा हो गया, बाकी ११ तोले राख रही उसको डौरू में बंद कर दिया।

ता० २९ को ८ बजे से आंच दी। ९।। बजे नीचे के पात्र के वन्द की संधि में होकर वाष्प द्वारा पिघली हुई चीकट सी निकलने लगी, अतएव डौरू को उतार ठंडा कर खोल देखा तो एक जगह सांस था उसको फिर भस्ममुद्रा से बंदकर डौरू वन्द कर दिया।

ता० ३० को ४ प्रहर आंच दी गई।

ता० ३१ को खोला तो ४ तोले पारा निकला और था ४ तो० ५ माशे, घटा ५ माशे, राख ६ तोले निकली, इकट्ठी तोल पारे की ६ तोले ७।। माशे है।

चौथे और पांचवे डौरू की निकली ११ तोले १ माशे राख को खरल में पीस डौरू में बन्द कर दिया।

ता० १/१/०९ को १० घंटे आंच दी।

ता० २ को खोला तो ६ माशे पारा और निकला। राख ११ तोले निकली, चीकट धो सुखाया तो ३ रत्ती पारा और निकला, सब पारा ७ तोले १ माशे ७ रत्ती हुआ।

पारद अग्निस्थायी (छठा पातन)

ता० २/१/०९ को ७ तोले १ माशे ७ रत्ती पारद और ७तोले१माशे ७ रत्ती ही धान्याभ्रक दोनों को मूली की जड़ के रस में ११ बजे घोटना आरम्भ किया। १५ मिनट घोटने से पारे के मिलकर केवल बाजरे से रवे दीखने लगे। शाम तक ये रवे और बारीक होकर खसखस हो गये। शाम तक ४ घंटे घुटाई हुई। ४। छ० मूली का रस पड़ा।

ता० ३ को ८ बजे से घोटा, शाम तक पारा करीब करीब अदृश्य हो गया था। आज ७ घंटे घुटाई हुई २ छटांक रस पड़ा।

ता० ५ को धूप में सूखने को रख दिया।

ता० ७ को खरल से खुर्चा गया तो कठिन खुर्चा

ता० ९ को पीसा गया तो १ तोला १०।। माशे पारा पृथक् हो गया।

ता० १० को फिर सूखता रहा।

ता० ११ को वर्षा की सर्दी से सीला समझ खल्व को आंच पर तपा थोड़ा और पीसा तो ३ मा० ५ रत्ती पारा और पृथक् हो गया अर्थात् सब २ तोले २ माशे १ रत्ती पारा पृथक् हुआ। बाकी १५ तोले चूर्ण रहा उसको डौरू में बंद कर दिया।

ता० १२ को ८ बजे से रात के ८ बजे तक १२ घंटे आंच दी।

ता० १३ को खोला तो ४ तोला ४ माशे ६ रत्ती पारा निकला। पारद मिश्रित चीकट ७ माशे ६ रत्ती और सादा राख ९ तोले रही। चीकट को धोया तो १ माशा पारा और निकला। चीकट की राख ४ माशे ३ रत्ती रह गई। डौरू को धोया तो उसमें से भी ३ रत्ती पारा निकला अर्थात् सब ६ तोले ८ माशे २ रत्ती पारा मिला. ५ मासा ५ रत्ती घटा।

पारद अग्निस्थायी (सातवां पातन)

ता० १५/१/०९ को उक्त ६ तोले ८ माशे २ रत्ती पारा और ९ तोले ४ माशे ३ रत्ती उपरोक्त राख और चीकट सबको कांजी नं० १ के साथ ९ बजे से घोटा। १५–२० मिनट में करीब करीब सब पारा मिलकर रवे चमकने लगे। शाम को देखा तो अभ्रक कुछ फूला हुआ दीखने लगा। आज ६ घंटे घुटाई हुई १/३ बोतल कांजी पड़ी।

ता० १६ को कांजी डाल शाम तक ६ घंटे घोटा गया। ११ बजे अभ्रक खूब फूल गया था और पारद नष्टपिष्टी हो गया था किन्तु तली में कुछ रवे पारे के चमकते थे। शाम को देखा तो अभ्रक और भी अधिक फूला हुआ था जैसा पहले कभी नहीं फूला और पारा पूर्णरूप से नष्टपिष्टी था कोई रवा कहीं नहीं था।

सम्मति—इससे पहले मूली के रस में मर्दन करने से अभ्रक फूला न था अतएव ये समझकर कि पारद अभ्रक का भलीभांति मेलन होने से अभ्रक के सत्त्व को पारद ने ग्रहण नहीं किया और अभी सत्त्व अभ्रक में विद्यमान है अतएव उसी अभ्रकभस्म से पुनः कांजी द्वारा मर्दन किया गया और आशानुसार अबकी बार अभ्रक खूब फूला और पारद नष्टपिष्टी भी हुआ।

शंका—क्या अबकी पातन करने के बाद पुनः कांजी से मर्दन किया जावे तो फिर भी यह अभ्रकभस्म फूलेगी?

ता० १७ को सवेरे देखा तो अभ्रक कल का सा ही फूला हुआ था फिर घोटने पर अधिक गाढ़ा होने पर झाग बैठ गये, दो पहर तक पिष्टी सी हो जाने पर सूखने को रख दिया अभी तक उसने पारे को नहीं छोड़ा है।

ता० २२ को खूब सूख जाने पर पीसा तो १ तोला २ माशा ४ रत्ती पृथक् हो गया। शेष १६ तोले भस्म को डौरू में बंद कर दिया।

ता० २३ को १२ घटे आंच दी।

ता० २४ को खोला तो ४ तोले ८ माशे ४ रत्ती पारा निकला, पारद मिश्रित चीकट ८ माशे और सादा राख ९ तोले निकली। चीकट को और डौरू को धोया तो ६ रत्ती पारा और निकला। चीकट की धुली राख ६ माशे रह गई अर्थात् सब ५ तोले ११ माशे ६ रत्ती पारा हाथ लगा—८ माशा ४ र० घटा।

ता० २६ को उक्त ९ तोले ६ माशे राख और चीकट को फिर डौरू में बंद कर दिया।

ता० २७ को ८ बजे से शाम ६ बजे तक १० घंटे आंच दी।

ता० २८ को खोला तो ७ माशे पारा और निकला अर्थात् दोनों बार में ६ तोले ६ माशा ६ रत्ती पारा हाथ लगा, १ माशे ४ रत्ती घटा, राख ९ तोले रही।

सम्मति—उपरोक्त शंकानिवारणार्थ इस ७वें पातन से निकली अभ्रकभस्म को ६ घंटे कांजी नं० १ से घोटा गया परन्तु तनक भी फुलावट न आई।

२ सम्मति—इस समय तक ७ बार के पातन में ३ तोले ५ मा० २ रत्ती पारा घटा किन्तु पश्चात् पारद गंधक के पातन में जान पड़ा कि डौरू सांस देता है, इसलिये सिद्ध हो गया कि इस घटी का मुख्य कारण पारद का डौरू की मांस द्वारा उड़ जाना है।

चिर्मिटी से भावित अभ्र

ता० ९/९/०९ को ऽ। सेर कृष्णधान्यभ्रक में चिर्मिटी के कांजिकयुक्त ६ छटांक रस (जो चिर्मिटी के वृक्षों की कुट्टी कर धो स्वतः रस न निकल सकने के कारण कांजी डाल डाल निकाला गया) की भावना दे २ घंटे घोटा—इस ६ छ० रस से अभ्रक ठीक पतला न हुआ।

ता०१० को १० छटांक कांजी और डाली जिससे अभ्रक कढी सा घुटने लगा। ७ घंटे घुटा।

ता० १२ को ८ बजे से १२ बजे तक और घोट सुखाने को रख दिया।

दूसरी भावना

ता० १३/१/०९ को ऽ।। चिर्मिटी के पंचांग को ऽ।। कांजिकयुक्त कूट पीस छान निकाले ऽ।। रस की दूसरी भावना दे ७ घंटे घोट रख दिया।

ता० १४ को सूखता रहा

ता० १५ को ४ घंटे और घोट सुखाने को रख दिया

तीसरी भावना

ता० १६/१/०९ को ऽ।।≠चिर्मिटी के पंचांग को कूट पीस छानऽ।।≠ कांजिका योग से निकले। ऽ।।≠रस की तीसरी भावना दे ६ घंटे घोटा।

ता० १७ को थोड़ी देर घोट सूखने को दिया।

ता० २५ को खूब सूख जाने पर पीस चलनी मे छान बोतलों में भर दिया। तोल में १० छ० १।। तोले हुआ अर्थात् ११।। तोले तोल बढ़ गई।

पारद अग्निस्थायी (आठवाँ पातन)

ता० ३०/१/०९ को उक्त ६ तोले ६ माशे ६ रत्ती पारद और ६ तोला ६ माशे ६ र० चिर्मिटी से भावित उक्त कृष्णाधान्याभ्रक दोनों को कांजी नं १ के साथ १० बजे से मर्दन प्रारम्भ किया। १२ बजे देखा तो पारद मिल गया था किन्तु कहीं कहीं बड़े रवे दीखते थे। शाम तक ये रवे और बारीक हो गये किंतु और बार की भांति अभ्रक फूला नहीं, आज ५ घंटे घुटाई हुई। १/३ बोतल कांजी पड़ी।

ता० ३१ को कांजी डाल ८ बजे से घुटाई आरम्भ की। शाम तक ७ घंटे घुटा, पारा नष्टपिष्टी हो गया, अभ्रक फूला नहीं जिसका कारण अधिक शीत का पड़ना या अभ्रक का चिर्मिटी से भावित होना हो सकता है।

ता० १/२ को २ बजे से घोटा (जरा कड़ा घोटा) ३ बजे देखा तो अभ्रक में कुछ फुलावट मालूम हुई। शाम तक और अधिक फूला पारा इस बार बहुत ही भलीभांति नष्टपिष्टी हुआ। आज ३ घंटे घुटाई हुई।

ता० २ को धूम में बैठकर घोटा गया। धूप अच्छी थी तो दो पहर तक खूब फूल गया। अब फूलने में कोई कमी न रही। आज ७ घंटे घुटाई की। दो प्रहर पीछे शाम तक गाढ़ा होकर अभ्रक बैठ गया।

ता० ३ को सुखा दिया कुछ सूखने पर पारे के छोटे छोटे रवे चमकने लगे।

ता० ५ को उसके छोटे छोटे टुकड़े कर दिये और सूखता रहा।

ता० ८ को खरल से खुरच पुड़िया बांध रख दिया जो तोल में १५।। तोले था, डौरू के दुरस्त न होने से काम बंद रहा।

ता० १३ को उक्त १५।। तोले दवा के चूर्ण को डौरू के बंद की संधि में पीतल की झाल लगवा बंदकर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १४ को आंच दी तो एक घंटे बाद ऊपर के पात्र के बंद की संधि में हो वाष्प निकलने के कारण उतार ठंडाकर खोलडाला। दवा के लोट पोट होने से १ तोले ८ माशे ३ रत्ती पारा पृथक् हो गया और १२ तोले ४ माशे औषधि चूर्ण रह गया। १ तोले ५ माशे ५ रत्ती तोल घटी।

ता० २० को डौरू को दुरस्त करा उक्त १२ तोले ४ माशे दवा को फिर डौरू में कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २१ को ४ पहर अग्नि दे डौरू को ज्यों का त्यों रखा छोड़ दिया।

ता० २२ को खोला तो नीचे का पात्र सूखा हुआ था किन्तु ऊपर के पात्र में बिल्कुल चीकट ही जम रही थी जिसमें बहुत भाग पारद का मिश्रित था। २ तोले १० माशे पारद स्वतः पृथक् हो गया बाकी चीकट में मिला रहा अतएव चीकट को गर्म पानी से धोया तो १ तोले १ माशे ७ रत्ती पारा और निकला अर्थात् पहले पृथक् हुए १ तोला ८ माशा ३ रत्ती पारद समेत सब ५ तोले ८ माशे २ रत्ती पारा हाथ लगा। १० माशे ४ रत्ती घटा चीकट धुली सूखी १ तोले और राख ६ तोले रही।

ता० २३ को उक्त ७ तोले राख और चीकट को सुखाकर फिर डौरू में वन्द कर दिया गया।

ता० २९ को १० घण्टे आंच दे ज्यों का त्यों डौरू को छोड़ दिया, अवकाश न मिलने से दूसरे दिन भी न खोला गया।

ता० १/४ को खोला तो ३ माशे २ रत्ती पारा और निकला अर्थात् पहली और अबकी बार सब ५ तोले ११ माशे ४ रत्ती पारद हाथ लगा, ७ माशे २ रत्ती घटा, चीकट १ माशेऔरराख ७ तोले रही।

उत्थापन उद्योग

ता० २/४/०९ को पारद का अधिक अंश क्षय हुआ समझ इस शंका से कि कदाचित् कुछ अंश पारे का नीचे की भस्म में मिला रह जाता हो, उक्त ७ तोले भस्म को तप्तखल्व में पानी के साथ २ घण्टे मर्दन कर नितार सुखाने को रख दिया।

ता० ३ को खरल के बीच से राख को हटा देखा तो ज्वार सा एक रवा पारे का दीख पड़ा जिससे सिद्ध हुआ कि कि राख में अभी पारा और है अतएव आज फिर उसी प्रकार उस राख को २ घंटे तप्तखल्व में और घोट ठहरा नितार सुखा तली में देखा तो बाजरे सा एक रवा और निकला—दोनों बार में १ रत्ती पारा निकला।

ता० ४ को उक्त राख को डौरू में भर करीब १।। सेर जल डाल मंदाग्नि से १ घण्टे औटा जैसे का तैसा छोड़ दिया।

ता० ५ को पानी नितार सुखा हाथों से मीड़ बारीक कर तस्तरी में ढलकाया तो एक रवा बाजरे सा और निकला अर्थात् अब सब पारा ५ तोले ११ माशे ५ रत्ती हुआ। इकट्ठी तोल पारे की ५ तोले ११ माशे ४ रत्ती हुई। राख ५ तोले रही।

सम्मति–इस उत्थापन उद्योग से यद्यपि केवल १ रत्ती पारा निकला किन्तु यह विदित हुआ कि दो बार पातन में भी कुछ पारा शेष रह जाता है।

चिर्मिटी की काँजी

ता० १६/२/०९ को चिर्मिटी की २ सेर दाल को १ मन १४ सेर पानी से भर देग में डाल भट्टी पर ९।। बजे से सामान्य अग्नि से औटाना आरम्भ किया। दाल की तरह उबलती रही। ७।। बजे शाम को देखा तो दाल फूल गई थी और हाथ से अच्छी तरह मिड़ जाती थी अतएव लकड़ी निकाल कौयले भरी भट्टी पर रखा छोड़ दिया

ता० १७ को इस क्वाथ को जो करीब आधे के अवशेष रहा था, ३ भाग कर ३ कैनों में भर दिया और उस फूली हुई दाल के ३ भागकर तीनों कैनों में डाल मुख बंदकर कपरौटी कर धूप में रख दिया २० दिन बीतने पर।

ता० ८/३ को खोल देखा तो दाल साबूत ही थी और लिटमस पेपर डाला तो नीले से सुर्ख हो गया। इससे जान पड़ा कि खटाई तो आ गई फिर दाल को पानी से पृथक् कर मलकर फिर मिला भर दिया और कपरौटी कर दी।

ता० ४/४ तक रखा रहा।

ता० ५ को १ कैन को नितार छान डाला तो ऊपर हलकी फुई निकली और नीचे खड़ी सी गाद जो साफी में छन न सकी, करीब १।। सेर के निकली, उसे पृथक् कर कैन को धो उसमें कांजी को भर कपरौटी कर दी।

ता० २५ को उक्त शेष रही दो कैनों को छान एक कैन मे दोनों की कांजी और एक में गाद भर मुख बंद कर कपरौटी कर दी–अर्थात् अब दो कैनों में उत्तम कांजी और १ कैन में गाद है।

पारद अग्निस्थायी (नववों पातन)

ता० ३/४/०९ को उक्त ५ तोले ११ माशे ४ रत्ती पारद और ५ तोले ११ माशे ४ रत्ती ही वे भावित उत्तम कृष्णधान्याभ्रक दोनों को चिर्मिटी की कांजी (जिसके बनाने की विधि पीछे लिखी है) के साथ ४ बजे से मर्दन किया। करीब १ घंटे घोटने से पारा रवे रूप में मिल गया। ६ बजे तक २ घंटे घुटाई हुई। १/३ बोतल कांजी पड़ी।

ता० ४ को ७ बजे से धूप में बैठ घोटना आरम्भ किया–११ बजे तक पारा भली भाँति मिल गया किन्तु अभ्रक फूला नहीं अतएव २ बजे से कांजी नं० १ के साथ घुटाई की। अभ्रक अब भी नहीं फूला। आज ८ घंटे घुटाई हुई, १/३ बोतल चिर्मिटी की कांजी और १/४ बोतल नं० १ की कांजी पड़ी।

ता०५ को ७बजे से नं० १ की कांजी डाल धूप में घुटाई आरम्भ की। १० बजे से अभ्रक फूलने लगा, पारा बिल्कुल नष्टपिष्टी हो गया–२ बजे से फिर चिर्मिटी की कांजी के साथ ६ बजे तक घुटाई की, इस कांजी के पड़ने से भी अभ्रक फूला रहा। आज ८ घंटे घुटाई हुई। १/४ बोतल नं० १ की कांजी और १/३ बोतल चिर्मिटी की कांजी पड़ी।

ता० ६ को बिना कांजी डाल १ घंटे घोट फेन रूप में ही सुखा दिया।

ता० ७ को सूखता रहा।

ता० ८ को उसका दलिया सा कर तोला तो १४ तोले हुआ। बाद में उसे डौरू में बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ९ को १६ घंटे आंच दे ज्यों का त्यों चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० १० को खोला तो इस बार ऊपर के पात्र में चीकट बहुत थी जिसमें अधिकांश पारद मिश्रित था। पारद के पृथक् करने पर ३ तोले ११ माशे ४ रत्ती पारा स्वतः पृथक् हो गया, बाकी चीकट में मिला रहा। चीकट को गर्म पानी से धोया तो ११ माशे पारद और निकला अर्थात् ४ तोले १० माशे ४ रत्ती पारा निकला। १ तोले १ माशा चीकट में और राख में मिला रह गया। चीकट ६ माशे और अवशेष भस्म ७।। तोले रही, शेष चीकट न धूप में सूखती थी न गर्म पानी में घुलती थी। ता० १५ को उक्त ८ तोले चीकट और राख को मिला पीस सुखा भस्ममुद्रा से बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २५ को १२ घंटे आंच दे, जैसे का तैसा डौरू को चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० २६ को खोला तो ऊपर के पात्र में पतली चीकट जम रही थी, जिसमें पारद मिश्रित था, स्वतः पारद कुछ भी पृथक् न हो सका–चीकट को निकाल गर्म पानी से धोया तो ३ रत्ती पारा पृथक् हुआ अर्थात् पहली और अबकी बार सब ४ तोले १० माशे ७ रत्ती पारा हाथ लगा। १ तोला ५ रत्ती घटा। चीकट को जिसमें कुछ पारे का अंश था, सुखा तोला तो २ माशे ३ रत्ती हुई और सादा राख ७ तोले हुई।

उत्थापन उद्योग

इस शंका से कि कदाचित् पारद का कुछ अंश अग्निस्थायी हो डौरू में ऊपर को न जा नीचे की भस्म ही में मिला रह जाता हो उक्त ७ तोले राख को बड़ी कड़ाई में करीब १५ सेर पानी में घोल ४ घण्टे ऐसी अग्नि दी जिससे पानी खौलता रहा, बाद में भट्टी पर ही रखा छोड़ दिया। ३ घण्टे बाद ठहरा हुआ पानी नितार नीचे की राख में देखा तो सरसों की बराबर एक रवा पारे का निकला (जो अग्निस्थायी न था) सूखी राख ६। तोले रही।

सम्मति–दो बार उत्थापन उद्योग हो चुका, दोनों बार रत्ती आध रत्ती से अधिक पारा न निकला, इसलिये आगे से उत्थापन उद्योग करना वृथा है।

ता० १० को खरल को धो पानी ठहरा नितार सुखाया तो ५ रत्ती पारा उसमें निकला, इस प्रकार अब सब पारा ४ तोले ११ माशे ५ रत्ती है।

चिर्मिटी का कांजी से भावित अभ्र

ता० ३/५/०९ को कांजिकयुक्त चिर्मिटी के रस से भावित उक्त ९ छ० अभ्र में (जिसका नोट पत्र पर है और जो १० छ० १।। तोले का खर्च होकर ९ छटांक रह गया था), १ बोतल अर्थात् ऽ।। चिर्मिटी की कांजी की जिसके बनाने की विधि पीछे पत्र पर लिखी है, भावना दे ३ घण्टे घोट सुखा दिया।

ता० ४ कोऽ।≶कांजीकी दूसरी भावना दे ४ घण्टे घोट सुखा दिया। ता० ५ को ऽ।। कांजी की तीसरी भावना दे ३ घण्टे घोट सुखा दिया अर्थात् इस ९ छटांक अभ्र में १ सेर १० छटांक चिर्मिटी की ३ भावना दे ११ घण्टे घुटाई की।

ता० ६ को सूखता रहा।

ता० ७ को सूख जाने पर खुरच पीस चलनी में छान तोला तो ९ छ० १ तोला हुआ जिसे बोतलों में भर रख दिया।

सम्मति–"यमचिंचिकाम्लपुटितम्" इसका अर्थ धान्याम्ल के अनुसार चिर्मिटी की कांजी ही हो सकता है पहले यमचिंचिका और अम्ल दो पदार्थ पृथक् पृथक् समझ कांजिकयुक्त चिर्मिटी के रस से अभ्र को भावना दी गई थी। अब दूसरा अर्थ चिर्मिटी की कांजी समझ में आने पर उससे भावना दी गई।

पारद अग्निस्थायी
दूसरे भाग का पहला पातन

ता० ११/५/०९ को १० तोले नया साधारण शुद्ध पारद और १० तोले

ही चिर्मिटी की कांजी से भावित उक्त धान्याभ्र दोनों को ८ बजे से कांजी नं० १ के साथ घोटना आरम्भ किया। करीब १० मिनट घोटने से पारा रवे रूप में मिल गया। ३ बजे देखा तो पारा बिल्कुल अदृश्य था। आज ५ घण्टे घुटाई हुई। १/२ बोतल कांजी पड़ी।

ता० १२ को कांजी डाल ७ बजे से घुटाई की। १० बजे देखा तो अभ्र में कुछ कुछ फुलावट मालूम होती थी। शाम के ५ बजे बाद अभ्र फूला हुआ देखा और पारद भलीभांति नष्टपिष्टी था। आज ८ घण्टे घुटाई हुई। १/२ बोतल कांजी पड़ी।

ता० १३ को कांजी डाल ७ बजे से घुटाई की। अभ्रक फूला रहा। शाम के ६ बजे तक खूब फूल कर फैन की शकल का हो गया था फिर और रस न डाल फैन रूप ही सुखाने को रख दिया। आज ८ घण्टे घुटाई हुई। १/४ बोतल कांजी पड़ी।

ता० १४–१५–१६ को सूखता रहा।

ता० १७ को सूख जाने पर पीसा तो कुछ भी पारा पृथक् न हुआ, तोला तो २२ तोले हुआ जिसको शीशी में भर रख दिया।

सम्मति–इस बार पीसने पर भी पारा कुछ भी पृथक् न हुआ, इससे पहले जब जब सूखने पर पिष्टी पीसी गई तब कुछ न कुछ पारा छूट गया, इससे सिद्ध हुआ कि अभ्र पारद के पूर्ण आलिंगन के लिये अभ्र का यमर्चिचिकाम्ल से भावित होना आवश्यक है। यमर्चिचिंकाम्ल का अर्थ चिर्मिटी का कांजी ही है क्योंकि चिर्मिटी के स्वर से भावित अभ्र कांजी न० १ के साथ घुटने पर भी पारद को ऐसा आलिंगन न करता था।

इति श्री जैसलमेरनिवासी पं० मनसुखदासात्मजव्यास
ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायां
स्वानुभूत–बुभुक्षितीकरणं पारदग्रिस्थायिकरण
वर्णनं नामैकादशोऽध्यायः ॥११॥

गगनग्रासमानाध्यायः १२

गणधिपं शिवं गौरीं लक्ष्मीं नारायणं गुरुम् । श्रीव्यासं दक्षिणामूर्तिसूतसिद्धि गण रसम् ॥१॥ प्रणम्य शेषसंस्कारान्देहलोहकरान्भृशम् ।[१] गगनग्रासनामादीन् वक्ष्येहं पारदस्य हि ॥२॥

(ध० सं०)

अर्थ–श्रीगणेशजी, श्रीमहादेव, पार्वती और लक्ष्मीनारायणजी गुरु वेदव्यास दक्षिणामूर्ति पारद की सिद्धि करनेवालों के समूह और पारदको नमस्कार कर मैं पारद को गगनग्रास आदि देह तथा लोह की सिद्धि करनेवाले शेष संस्कारों का वर्णन करता हूं ॥१॥२॥

गगनग्रासलक्षण

इयन्मानस्य सूतस्य भोज्यद्रव्यात्मिका मतिः ।
इयतीत्युच्यते यासौ ग्रासमानं समीरितम् ॥३॥

(र० र० स०)

अर्थ–कितने पारे के लिये कितना भक्षण योग्य पदार्थ देना चाहिये इस प्रकार जो विचार किया जाता है, उसको ग्रासमान संस्कार कहते हैं॥३॥

नवम ग्रासमानसंस्कार

यद्यपि मानकर्म गगनग्रासान्तरभूतमेव तथापि पूर्वाचार्यैर्भिन्नतया गणना कृता तस्मान्मयाप्यष्टादशसंख्यापूर्त्यर्थं लिख्यते–

अथ मानं प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा कर्मकृद्भवेत् । चतुःषष्टचंशतो बीजं पारदान्मुखकारकम् ॥४॥ पश्चाद्द्वात्रिंशभागेन दातव्यं बीजमुत्तमम् । षोडशभागेन बीजस्य कवलं न्यसेत् ॥५॥ रसादष्टमभागेन दातव्यं बीज मुत्तमम् । चतुर्थेनार्धभागेन ग्रासमेवं प्रदीयते ॥६॥ तथा च समभागेन ग्रासेनैव सुसाधयेत् । बिडेन षोडशांशेन क्षुधितो जायते रसः ॥७॥ यदा जीर्णो भवेद्ग्रासपातितश्च बिडेन हि ॥८॥

(ध० सं० पत्र ४५)

अर्थ–यद्यपि अभ्रक ग्रासमान अभ्रकजारण संस्कार के अन्तर्गत ही है तथापि पहले वैद्यों ने इस अभ्रमान को पृथक् लिखा है इसलिये मैं भी अठारह संस्कारों को पूरा करने के लिये अभ्रकग्रासमान को पृथक् लिखता हूं।

अब मैं अभ्रक ग्रासमान को कहता हूं–वैद्य इस मानको जानकर पारद कर्म श्रेष्ठ रीति से कर सकता है। पारद में बीज का चौसठवां हिस्सा जारण करे तो पारद के मुख होता है फिर बत्तीसवें हिस्से का उत्तम बीज जारण करे, तदनंतर सोलहवें हिस्से के बीज का ग्रास देवे और उसके पीछे आठवें हिस्से बीज का जारण करे फिर चार भाग से तदनंतर दो भाग से ग्रास देवे, इसके पश्चात् पारद के सम भाग ग्रास को जारण करे और प्रतिसंस्कार में षोड़शांश बिड देना चाहिये। उसे बिडा पचाया हुआ ग्रास जीर्ण होता है तब पारा बुभुक्षित होता है॥४/८॥

ग्रास का मान

चतुःषष्टचंशकः पूर्वो द्वात्रिंशांशो द्वितीयकः । तृतीयः षोडशांशस्तु चतुर्थोऽष्टांश एव च ॥९॥ अन्यद्दुज्जरित्वा न लिखितम् ।

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–पहला ग्रास चौसठवें हिस्से का होता है और दूसरा बत्तीसवें हिस्से का तीसरा षोडशांश का और चौथा ग्रास अष्टमांश का होता है (और कठिनता के कारण तीन ग्रासों को हमने नहीं लिखा है) ॥९॥

सम्मति–यह रसेन्द्रचिन्तामणि वाक्य है इससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि चार ग्रास तक ही अभ्रसत्त्व वा बीज का जारण करना उचित है आगे नहीं क्योंकि उनका जारण कठिन है।

मतान्तर से ग्रास की सख्या और मान

भगवद्गोविन्दपादास्तु कलांशमेव ग्रासं लिखन्ति यथापंचभिरेभिर्ग्रसैर्धन--सत्त्वं जारयित्वादौ । गर्भद्रावे निपुणो जरयति बीजं कलांशेन ॥१०॥ तन्मते चतुः षष्टिचत्वारिंशत्रिंशद्विंशतिषोड़शांशाः पञ्चग्रासाः ।

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, बृ० यो०, र० रा० प०)

अर्थ–भगवतगोविन्दपाद ने तो अपने ग्रंथ में षोडशांश ग्रास का ही प्रमाण इस प्रकार लिखा है कि प्रथम पांच ग्रासों से अभ्रकसत्त्व को जारण करके फिर गर्भद्रुति में निपुण (चतुर) वैद्य षोड़शांश से स्वर्ण को जारण करे, बस इनके मत में चौसठवां, चालीसवां, तीसवां, बीसवां और सोलहवां इस प्रकार पांच ग्रास समझने चाहिये॥१०॥

अभ्रजारित पारदलक्षण

चतुःषष्टचंशकाद्ग्रासाद्दंडधारी भवेद्रसः । जलौकावद्द्वितीये तु तृतीये काकविट्समः ॥ ग्रासेन च चतुर्थेन दधिमण्डसमो भवेत् ॥११॥

(र० सा० प०)

अर्थ–चौसठवें हिस्से के जारण करने से पारद दंडधारी होता है और द्वितीय ग्रास में जोंक के समान तीसरे ग्रास से कौवे की बीट के समान और चौथे ग्रास में दंधिमंड के समान होता है॥११॥

१–मानार्थान्–इत्यपि ।

१–अर्थात् अभ्रग्रास के पीछे स्वर्ण का पहला ग्रास ही १/१६ दे और इतने ही देता चला जाये।

ग्रासानन्तर पारद दशा का वर्णन

चतुःषष्टचंशकग्रासात्कुंडधारी भवेद्रसः । जतुका च द्वितीये तु ग्रासयोगे सुरेश्वरि ॥१२॥ ग्रासेन तु तृतीयेन काकविष्ठासमो भवेत् । ग्रासेन तु चतुर्थेन दधिमण्डसमो भवेत् ॥१३॥

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, वृ० यो०)

अर्थ—चौसठवें हिस्से के जारण करने से पारद दंडधारी होता है और हे पार्वती! दूसरे ग्रास में जोंक के समान तीसरे ग्रास में कौवे की बीट के समान और चौथे ग्रास में दही के समान होता है॥१२॥१३॥

अन्यच्च

चतुःषष्टचंशके जीर्णे दण्डधारी भवेद्रसः । चत्वारिंशद्विभागैश्च ग्रासैः स्यात्पायसाकृतिः ॥१४॥ जलौकाभिस्त्रिंशाशैर्विंशांशैर्विप्लुतो रसः । छेदी च षोड़शांशैः स्याद्दधिवद्द्वादशांशतः ॥ अष्टांशैर्नवनीताभः पादांशैर्बध्यते रसः ॥१५॥ (र० प०)

इति श्रीअग्रवालसवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसाद—
सूनुबाबूनिरंजनप्रसाद—संकलितायां
रसराजसंहितायां गगनग्रासमानवर्णनं
नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

अर्थ—चौसठवें हिस्से के जारण करने से पारद दंडधारी होता है, चालीसवें हिस्से के जारण करने से खीर के समान होता है और तीसवें हिस्से के जारण करने से जोंक के समान होता है तथा वीसवें हिस्से से पारा विलुप्त, षोडशांश के जारण करने से पक्षच्छेदी, द्वादशांश के जारण से दधि के समान अष्टमांश के जारण से मक्खन के तुल्य और चौथाई से पारद बद्ध होता है॥१४॥१५॥

इति श्री जैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां
रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायां गगनग्रासमानवर्णनं
नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

बीजसाधनाध्यायः १३

पारद वन्दना

विश्वबीजं सदा नित्यं वन्दे सूतमिहामरम् ।
रोगदारिद्रचतमसामर्कं वै नाशने स्थितम् ॥१॥

(र० पा०)

अर्थ—नित्य अविनाशी संसार का कारणरूप रोग और दारिद्रचरूपी अन्धकार के नाश करने के लिये सूर्य के समान अवस्थित पारद को मैं नमस्कार करता हूं॥१॥

बीज की सिद्धि किये बिना केवल शुद्ध लोहादि जारण करने में दोष

आरोटलोहजीर्णः स्यात्पतंगी पारदेश्वरः । तद्विद्धो न लभेल्लोहः स्थिरदेहः कदाचन ॥ तस्माद्बीजं प्रयुंजीत परिभाषोक्तलक्षणम् ॥२॥

(रसांकुशात् टो० नं०)

अर्थ—अशुद्ध लोह से जारित पारद पतङ्गी नाम का होता है और उस पारद से विद्ध लोहा सुवर्ण नहीं होता तथा उसके भक्षण से देह कभी स्थिर नहीं होता है, इस कारण परिभाषा में जिसके लक्षण कहे हैं, ऐसे बीज का जारण करना चाहिये॥२॥

स्वर्णबीजसाधन

ताम्रं सुमारितं कृत्वा सुवर्णं च सुमारितम् । मूषायां मित्रवर्गेण पुनरुज्जीवयेत्ततः ॥३॥ एकीकृत्वा चाधरोर्ध्वं ताप्यं दत्त्वा समं भवेत् । अन्धयित्वा हेमशेषमेवमेव विधेः शतम् ॥४॥ वारांस्तद्वुत्तमं बीजं पंचाशन्मध्यमं स्मृतम् । अधमस्तत्र यस्त्रिंशद्दश चैवाधमाधमम् ॥५॥ महारसेषु सर्वेषु सत्यं शतगुणं भवेत् । लोहभस्म यथासिद्धं रसानां ये महारसान् ॥६॥ सम्प्रदायविदासाक्षाच्छतमेवावपेद् बुधः । सर्वथैवाप्य-शक्तश्चेत्सप्तवारं मृतोत्थितम् ॥७॥ अन्यथा सर्वथा सिद्धिर्न भवत्येव निश्चितम् ॥८॥

(रससिद्धान्तात् टो० नं०)

अर्थ—वैद्यराज प्रथम श्रेष्ठ ताम्र की भस्म करे और इसी प्रकार सुवर्ण की भी भस्म बनावे फिर प्रत्येक भस्म में मित्र पञ्चक को मिलाकर दोनों को जीवित करे और फिर दोनों को ही मिलाकर ऊपर और नीचे सोनामक्खी रखे और जब तक ताम्र नष्ट होकर केवल स्वर्ण ही रह जाये तब तक धोंकना ही रहे, इस प्रकार सौ बार धोंके तो उत्तम बीज सिद्ध होता है और पचास बार करने से मध्यम बीज तेंतीस बार करने से अधम बीज और दस बार करने से अधम से भी अधम बीज सिद्ध होता है। सौ बार सिद्ध किया हुआ बीज समस्त महारसों के लिये उपयोगी होता है और जो सौ बार बीज के सिद्धि करने में शक्ति न हो तो सात बार ही धातु को भस्म कर जिलावे अगर इस प्रकार जो बीज की सिद्धि को नहीं करेगा उसको पारद की सिद्धि नहीं होगी, इसमें सन्देह नहीं॥३—८॥

कल्पित स्वर्णबीज

कुनटीहतकरिणा वा रविणा वा ताप्यगन्धकहतेन ।
दरदनिहतासिना वा त्रिर्व्यूढं हेम तद्बीजम् ॥९॥

(र० प०)

अर्थ—कुनटी (मैनसिल) आक का दूध अथवा स्वर्णमाक्षिक या गन्धक तथा सिंगरफ से भस्म किये हुए स्वर्ण को जो तीन बार फिर जीवित करके फिर भस्म करे तो वह स्वर्णबीज होता है॥९॥

नुसखः तखमीर जुहब (उर्दू)

सुफहा ३८ किताब अकलीमियां में जो नुसखः खलास का लिखा है और जिसके अजजाइ हस्बजैल है, जाज जर्द मुसफ्फा (फिटकरी पीली) गिले सिरसशवी (मुलतानी मिट्टी), नमक तुआम इस नुसखे में तखमीज जुहब का खास्सः है लिहाजा इसकी तौजीह और इस पर अमल करना कायदः से खाली न होगा। जाज जर्द मुसफ्फ से मुराद जर्द कसीस है जिसके तस्फिये का तरीका यह है कि इसको चहार चन्द पानी में खूब पीस डाले, यहां तक कि वह पानी में घुल मिल जावे। बाद अजां पानी को बजरिये बत्ती के मुकत्तर कर ले और इस मुकत्तर को आग पर खुश्क कर ले। गिले सरशवी से मुराद मुलतानी मिट्टी है जो जर्द रंग की मिट्टी होती है। नमक तुआम से मुराद नमक सांभर या नमक लाहौरी है वजन अजजाइ का अकलीमियां में मौजूद है चाहिये कि तिला खालिस को पत्र, बारीक बनाकर कूजः तखलीस में तहबतह हरसह अदवियः मजकूर के साथ रखकर चौबीस घंटे तेज आंच देनी चाहिये। यानी जिस वक्त आगर पर रखे उस वक्त दूसरे रोज उतारें। पहली वार कुछ वजन तिला का कम हो जाता है बाद इसके वजन कम नहीं होता और सातवें अमल के बाद बशर्ते कि आग बतरीकबाला दी जावे तरह होने लगता है। दस बार के अमल में तोला भर सोना तोला भर चांदी को सबग देता है, इसके बाद भी अगर बदस्तूर चौबीस चौबीस घंटे तक आग देता जावे तो इसकी सबागी बढ़ती जाती है यहां तक कि अगर पचास मर्तबः यह

१—दंडधारी—इत्यपि ।

अमल करे तो एक हिस्सा जुहब मजकूर का आठगुना नुकरः को तिला करता है और अगर सौ मर्तबः इसी तरह आग दे तो एक हिस्सा गुना नुकरः को रंग देता है और अगर डेढ़ सौ बार मुताबिक इन्दराज सदर आग दें तो एक हिस्सा पैंतीस हिस्से नुकरः को तिला करता है और अगर दो सौ बार मिसरहवाला दे तो एक हिस्सा साठ हिस्से को और अगर ढाई सौ बार आग दे तो एक हिस्सा से हिस्से को और अगर तीन सौ बार आग दे तो तिलाइ मजकूर तुख्म अकसीर हो जाता है यानी जिस नुकरः को रंगता है अगर इसी रंगीन नुकरः को दूसरे जदीद नुकरे पर तरह किया जावे तो नुकरः जद्रीद तिला हो जावेगा। (हसीनुद्दीन अहमद सेक्रेटरी अखबार अकलीमियां १६/३ व १/४/१९०७ सुफहा)

तारबीज

वंगाभ्रं वाहयेत्तारे गुणानि द्वादशानि च ।
एतद्बीजं समे जीर्णे शतवेधी भवेद्रसः ॥१०॥

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–एक भाग चांदी में बारह भाग वंग और अभ्रकसत्त्व को गलाकर मिलावे तो फिर सम भाग से इस बीज को पारद में जारित करे तो यह पारा शतवेधी होता है॥१०॥

स्वर्णबीज

नागाभ्रं वाहयेद्धेम्नि द्वादशानि गुणानि च ।
प्रतिबीजमिदं श्रेष्ठं पारदस्य निबन्धनम् ॥११॥

(र० चिं०, र० रा० शं, बृ० यो०)

अर्थ–इसी प्रकार स्वर्ण में नाग (सीसा) और अभ्रक सत्त्व के मिलाने से बीज तैयार होता है उसके साथ पारद का जारण करने से पारा बद्ध होता है॥११॥

कुटिलं विमला तीक्ष्णं समचूर्णं प्रकल्पयेत् । पुटिलं पञ्चवारन्तु तारे वाह्यं शनैर्धमेत् । यावद्दशगुणं तत्तु तारबीजं भवेच्छुभम् ॥१२॥

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–अब रौप्य बीज का वर्णन करते हैं कि कुटिल, (रसराज शंकर में इसका अर्थ वंग लिखा है), रूपामाखी, लोह (फौलाद) इनको सम भाग लेकर पांच बार पुट देवे फिर चांदी को मन्दाग्नि में गलाकर धीरे धीरे उस चूर्ण को डालता जावे, यहां तक कि उसमें दसगुणा चूर्ण मिल जाय तो वह बीज उत्तम होता है॥१२॥

सत्त्वं तालोद्भवं वङ्गं समं कृत्वा तु धामयेत् । तच्चूर्णं वाहयेत्तारे गुणान्येव हि षोडश ॥१३॥ प्रतिबीजमिदं श्रेष्ठं सूतकस्य निबन्धनम् । चारणात् सारणाच्चैव सहस्रांशेन विध्यति ॥१४॥

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–हरिताल का सत्त्व तथा वंग को सम भाग लेकर अग्नि पर रखकर धोंके फिर उसी चूर्ण को सोलह गुना लेकर गलाई हुई चांदी में धीरे धीरे मिला देवे तो यह प्रतिबीज पारद के बन्धन में श्रेष्ठ है, इसके जारण से तथा सारण पारा सहस्रवेधी होता है॥१३॥१४॥

बीजसाधन सुवर्ण, रजत, ताम्र तीनों से

सुवर्णं रजतं ताम्रं घर्षणाच्चूर्णतां गतम् । हिंगुलं च रसं तालं सौवीरं च लवंगकम् ॥१५॥ अष्टानां समभागानां लवंगक्वाथयोगतः । खल्वमर्दन–सूक्ष्माणां चक्रिका च-सुशोषिता ॥१६॥ मृत्संपुटे रोधयित्वा संपुटं च सुशोषितम् । पुटो गजपुटस्तस्य क्वाथमर्दनयोगतः ॥१७॥ पुटनं मर्दनं तावद्यावत्सुश्वेतभस्मना । अस्याथ जारणा कार्या सुवर्णे जारणे कृते ॥१८॥

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अर्थ–स्वर्ण चूर्ण, रजतचूर्ण, हिंगुल, पारा हरताल, सुरमा, तांबे का रेत और लौंग इन आठ औषधियों को सम भाग लेकर खरल में क्वाथ से घोटे फिर उसकी टिकिया बनाकर सुखावे। उन टिकियों को मिट्टी के संपुट में रख कपरौटी कर सुखा ले। तदनंतर गजपुट में फूंके। इस प्रकार जब तक उसकी श्वेत भस्म न हो जाये तब तक क्वाथ के योग से टिकिया बना बना कर गजपुट में देता जावे, सब स्वर्ण जारण के पश्चात इसका जारण करना चाहिये॥१५–१८॥

नागबीज

माक्षिकेण हतं ताम्रं नागं वै रंजयेन्मुहुः ॥तं नागं वाहयेद्बीजे द्विषोडशगुणानि च ॥१९॥ बीजं त्विदं वरं श्रेष्ठं नागबीजं प्रकीर्तितम् ॥ समचारितमात्रेण सहस्रांशेन विध्यति ॥२०॥

(र० चिं, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–सोनामक्खी के साथ भस्म किया हुआ ताँबा वंग को रंगता है और उस बत्तीस गुने ताम्र को जो बीज में वाहित (अग्नि में रखकर धोंकने से ताम्र न रहे और बीजमात्र ही शेष रहे) करे तो वह उत्तम बीज नागबीज के नाम से कहलाया जाता है। इस बीज का सम भाग जारण करने से पारद सहस्रवेधी होता है, कहीं कहीं ऐसा भी लेख है कि केवल रत्ती मात्र ही बीज के जारण से पारा सहस्रवेधी होता है॥१९॥२०॥

वंगभस्म वा वंगबीज

कली पीस के जैसे शोरे और संखिये दो चुटकी कली को देनी भस्म हो जाय तब फिर मौलहियात देकर सजीव करनी फिर पूर्ववत् मारनी इस तरह वारंवार करने से कली बहुत उत्तम बनती है। खुद भी ताम्र को रंगती है। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक का पृष्ठ १९)

बीजरंजनार्थ तैल

मंजिष्ठाकिंशुकं चैव खादिरं रक्तचन्दनम् ॥ करवीरं देवदारु शरलो रजनीद्वयम् ॥२१॥ अन्यानि रक्तपुष्पाणि पिष्ट्वा लाक्षारसेन तु ॥ तैलं विपाचयेत्तेन कुर्याद्बीजादिरंजनम् ॥२२॥

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०, र० र०)

इति श्री अग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनु–
बाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां
बीजसाधनवर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

अर्थ–अब रंजन तथा जारण के लिये तैल को कहते हैं–मँजीठ, ढाक के फूल, खैरसार, लाल चंदन, दोनों कनेरों के फूल, देवदारु, धूप, सरल, दोनों हल्दी और अनेक प्रकार के लाल फूलों को पीसकर लाक्षा के रस से तैल का परिपाक करे तो यह बीजादि को रंग देता है॥२१॥२२॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्ल–
कृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां बीजसाधन–
वर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

१–'सारणात्' ही पाठ सब जगह मिला वह ठीक ही है उसकी जगह 'जारणात्' पाठ बनाने योग्य नहीं।

बिड़साधनाध्यायः १४

बिड़ के अर्थ

कांचनादिग्रसने तीव्रबुभुक्षाकराणि द्रव्याणि बिड़ानि कथ्यंते ।।

(र० सा० प०)

अर्थ–सुवर्णआदि के प्रास के लिये जो तीव्र क्षुधा करनेवाले द्रव्य हैं उनको बिड़ कहते हैं।।

बिड़बीज जारण के लिये

गंधकं शंखचूर्णं वा गोमूत्रैः शतभावितम् ।
बिडोऽयं जारणे श्रेष्ठो बीजानां द्रावणे हितः ।।१।।

(कामरत्न)

अर्थ–गंधक और शंखचूर्ण को समान भाग लेकर गोमूत्र से सौ बार भावना देवे तो यह बिड़ जारण के लिये अथवा बीजों के द्रावण के लिये अत्यन्त हीं उत्तम है।।१।।

अन्यच्च

मूलकार्द्रकचित्राणां क्षारैर्गोमूत्रगालितैः ।
गंधकैः शतशो भाव्यो बिडोऽयंजारणे मतः ।।२।।

अर्थ–मूली अदरख तथा चित्रक के क्षारों को गोमूत्र में गलावे फिर गंधक में उस रस की सौ बार भावना देवे तो यह बिड़ जारण के लिये उत्तम है।।२।।

अन्यच्च

मूलकार्द्रकवह्नीनां क्षारं गोमूत्रगालितम् । वस्त्रपूतं द्रवं ग्राह्यं गंधकं तेन भावयेत् ।। शतबारं खरे घर्मे बिड़ोऽयं हेमजारणे ।।३।। (र० चिं०, नि० र०, बृ० यो०, र० रा० शं०, सिद्धलक्ष्मीश्वरतंत्र, का० र०)

अर्थ–मूली, अदरख तथा चित्रक (चीता) के क्षारों को गोमूत्र में गलावे फिर उसको कपड़े से छानकर गंधक को सौ बार तेज घास में भावना देवे तो यह बिड़ स्वर्णजारण के लिये उत्तम है।।३।।

बिड़

वैद्यदर्पणात्–अथ यंत्रं विनाभ्रकादिबीजजारणार्थं प्रधानबिड़प्रकारन्तरमुच्य ते–मूलिकार्द्रकचित्राणां क्षारैर्गोमूत्रगालितैः । गंधकः शतशो भाव्यो बिड़ोऽयं जारणे मतः ।।४।।

अस्यार्थः–मूलिका आर्द्रकं चित्रकं चैतानि समानि प्रत्येकं द्रोणद्वयपरि–मितानि संशोष्य भस्म कृत्वा गोमूत्रे घोलयित्वा वस्त्रगालितं च कृत्वा पात्रे त्रिदिनं चतुर्दिनं वा स्थापयेत् ततस्तेन गोमूत्रेण पलाष्टकसैंधवलवणं शुद्धगंधकं वा पाषाणखल्वे मर्दयेत् गाढं कृत्वा तेनैव गोमूत्रेण स्वल्पेन खल्वे प्रक्षाल्य पुनमर्दयेदेवं पूर्ववच्छतवारं तदधिकं वा कुर्यात् । ततः संशोष्य काचकूप्यां स्थापयेत् । अस्य बिड़संज्ञा ज्ञेया।

अयं बिड़ः सूतस्याष्टमांशतया पारदेन सह खल्वे मर्दितोऽत्यन्तक्षुधावाँश्च जायते अत एवाभ्रकसत्त्वं स्वर्णं वा तारं वा माक्षिकादिसत्त्वं वा द्रवीकृत्वा पारदाभ्यन्तरे पारदरूपं करोति तदनंतरबीजं द्रवीभूतं पारदः खादति तस्मात्सर्वबिड़ेभ्यः प्रधानोऽयं बिड़ इति ।

(ध० सं०)

अर्थ–अब बिना यंत्र के अभ्रकादिं बीजजारण के लिये बिड़ बनाने की प्रधान रीति कहते हैं। मूली, अदरख और चीता इनमें से प्रत्येक को दो दो मन लेकर और सुखाकर भस्म कर ले फिर गोमूत्र में घोलकर कपड़े से छान लेवे और उसको तीन तथा चार दिवस तक उसी पात्र (जिसमें छाना हो) मे रखा रहने देवे तदनंतर उस गोमूत्र से आठ पल सैंधव लवण अथवा गधक को पत्थर के खरल में ऐसा मर्दन करे कि वह ठीक तौर से गाढ़ा हो जाय फिर सुखा लेवे, प्रत्येक भावना के समय यदि खरल को धोना हो तो उसी गोमूत्र से धोवे। इस प्रकार सौ बार भावना देवे। फिर उसको सुखाकर शीशी में भर रखें। हेमजारण के लिये यह उत्तम बिड़ है। इस बिड़ का आठवां हिस्सा लेकर पारद के साथ मर्दन करे तो पारा अत्यन्त क्षुधावान् होता है और इसी कारण अभ्रसत्त्व, स्वर्ण, चांदी तथा माक्षिकसत्त्व को पारद के गर्भ में ही पारद रूप करता है, तदनंतर द्रवीभूत बीज को पारद खा जाता है, इस कारण यह समस्त बिड़ों में उत्तम बिड़ है।।४।।

अन्यच्च

कन्याहयारिधत्तूरद्रवैर्भाव्यन्तु गंधकम् ।।
शतवारं खरे घर्मे बिडोयं हेमजारणे ।।५।।

(कामरत्न)

अर्थ–घीग्वार का रस धतूरे का रस तथा कनेर का रस इनसे गन्धक का तेज घास में सौ भावना देवे तो यह बिड़ स्वर्ण जारण के लिये उत्तम है।।५।।

बिड़ अभ्रक जारण के लिये

सैंधवं गंधकं तुल्यं ताम्रबल्लीद्रवैः प्लुतम् ।।
अनेन बिडयोगेन गगनं ग्रसते रसः ।।६।।

(र० प०)

अर्थ–गन्धक और सैंधव लवण को समान लेकर मँजीठी के रस से भावना देवे तो इस बिड़ के योग से पारद अभ्रक को ग्रस लेता है।।६।।

बिड़ जारण के लिये

निदग्धशंखचूर्णन्तु रविक्षीरशतप्लुतम् ।।
षड्विन्दुकीटसंयुक्तो बिडे देयः सुजारणे ।।७।।

(टो० नं०)

अर्थ–शंख की भस्म तथा षड्बिन्दु कीट को आक के दूध से सौ भावना देवे तो जारण के लिये उत्तम बिड़ होता है।।७।।

बिड़ सर्वलोहजारण के लिये

गोमूत्रैर्गंधकं घर्मे शतवारं विभावयेत् ।। शिग्रुमूलद्रवैस्तद्वद् दग्धं शंखं विभावयेत् ।।८।। एतद्गंधकशंखाभ्यां समांशैर्बिडसैंधवैः ।। एतैर्विमर्दितः सूतो ग्रसते सर्वलोहकम् ।।९।।

(र० चिं०, नि० र०)

अर्थ–गंधक में गोमूत्र की सौ भावना देवे तथा शंखभस्म को भी सैंजन की जड़ के रस से सौ भावना देवे फिर इन गंधक, शंखचूर्ण और सैंधव का समान भाग लेकर पारद का मर्दन करे तो पारा सब धातुओं को खा जाता है।।८।।९।।

पुरंदर बिड़

शंखबाँटिके चूनो करै, दश पल जोखि खरल में धरै ।।
सौ पल लेइ आँवरासार, चूने सों पीसे इकसार ।।
गाय मूतसों सौ पुट देइ, सुखै सुखै कै खरल करेइ ।।
इह बिड नाम पुरंदर कहिये। यासे स्वर्णजारणा भइये ।।

(रससागर)

बिड़ स्वर्ण जारण के लिये

टंकणं शतधा भाव्यं द्रावैः पालाशवृक्षजैः ।।
बिड़ो वह्निमुखो नाम हितोऽयं सर्वजारणे ।।१०।।

(र० चिं, नि० र०)

अर्थ–सुहागे को ढाक के काढे की भावना देवे तो यह वह्निमुख नाम बिड़ सम्पूर्ण जारणाओं के लिये हित है।।१०।।

बिड़ सत्त्व जारण के लिये

भावयेन्नैचलं क्षारं देवदालीफलद्रवैः ।।
एकविंशतिवारन्तु बिडोऽयं सत्त्वजारणे ।।११।।

(र० चिं०, नि० र०, र० प०)

अर्थ–समुद्र फलों को क्षार को देवदाली (बंदाल) के फल के रस से इक्कीस बार भावना दे तो यह बिड सत्त्व जारण के लिये श्रेष्ठ है।।११।।

हेम जारण के लिये तीव्रानल बिड़

देवदालीशिखिबीजगुंजासैंधवटङ्कणैः ।। समांशं निचुलक्षारमम्लवर्गेण सप्तधा ।।१२।। कोशातकीदलरसैर्भावयेद्दिनसप्तकम् ।। तीव्रानलो बिड़ो नाम्ना विहितो हेमजारणे ।।१३।।

(र० प०)

अर्थ–बन्दाल, अजवाइन, चौंटनी, सैंधव और सुहागा इनके बराबर समुद्रफल का क्षार लेकर अम्लवर्ग की ७ भावना देवे और ७ भावना तोरई के पत्तों के रस की देवे तो यह तीव्रानल नामक बिड़ स्वर्णजारण के लिये हित है।।१२।।१३।।

बिड जारण के लिये

काशीसं लवणं सिंधु सौवर्चलसुराष्ट्रिके ।।
गंधकेन समं कृत्वा बिडोयं जारणे मतः ।।१४।।

(ध० सं०)

अर्थ–कसीस, त्रिकुटा, सैंधव, सांचर, नोंन, सौराष्ट्रिक इन सबको गन्धक की बराबर लेकर गोमूत्र की भावना देवे तो यह बिड़ जारण के लिये श्रेष्ठ है।।१४।।

उग्र बिड़ बनाने की क्रिया

सौवर्चलकटुकत्रयकांसीसगंधकैश्च बिड़ैः ।।
शिग्रोरसशतभाव्यैस्ताम्रदलान्यपि हि जारयति ।।१५।।

(ध० सं०)

अर्थ–सांचर, नोंन, सोंठ, मिर्च, पीपल, फिटकरी, हीराकसीस और गन्धक इनको सैंजन के रस की भावना देवे तो यह बिड़ ताम्रपत्रों का भी जारण कर देता है और स्वर्णादि धातुओं का जारण करे तो इसमें सन्देह ही क्या है।

सर्वलोह जारण के लिये बिड़

त्रिक्षारं पंचलवणनवसारं कटुत्रयम् ।। इन्द्रगोपं घनं शिग्रु सूरणं नवसूरणम् ।।१६।। भावयेदम्लवर्गेण त्रिदिनं चातपे खरे ।। अनेन मर्दितः सूतो भक्षयेदष्टलोहकम् ।।१७।।

(र० प०)

अर्थ–सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, पांचोनौन, नौसादर, त्रिकुटा, बीरबहूटी, अभ्रक, सैंजना, जमीकन्द और जंगली जमीकन्द इनको तीन दिन तक तेज घाम में अम्लवर्ग से भावना दे फिर इसके साथ मर्दन किया हुआ पारद आठ प्रकार के लोहों को खा जाता है।।१६।।१७।।

सर्वलोह जारण के लिये ज्वालामुख बिड़

त्रिक्षारं गंधकं तालं भूलतां नवसारकम् ।। सैंधवं च समं चूर्णं मूत्रवर्गैर्दिनं पचेत् ।। ज्वालामुखो बिड़ो नाम्ना हितः सर्वत्र जारणे ।।१८।।

(र० प०)

अर्थ–सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, गन्धक, हरताल, केंचुआ, नौसादर और सैंधव को मूत्रवर्ग से एक दिवस पर्यन्त पचावै तो यह ज्वालामुख नाम बिड़ समस्त जारणाओं में हित है।।१८।।

हेम जारण के लिये बिड़

त्रिक्षारं पंचलवणं शंखं तालं मनःशिला ।।
दिनैकमम्लवर्गेण पक्वं स्याद्धेमजारणे ।।१९।।

(र० प०)

अर्थ–सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, पांचों नोंन, शंखचूर्ण, हरताल और मैनसिल इनको एक दिन तक अम्लवर्ग से करे तो यह बिड़ हेमजारण के लिये अत्यन्त उपयोगी है। ।।१९।।

बिड़ बनाने की दूसरी क्रिया जारण के लिये

कदलीपलाशतिलनिचुलकनकसुरदालिवास्तुके रंजः ।
वर्षाभूवृषमोक्षकसहितः क्षारो यथालाभम् ।।२०।।

(ध० सं०)

अर्थ–केला, ढाक, तिल, वेत, धतूरा, देवदालि, बथुआ, कंजा, सांठ, अडूसा और मोक्षक (घण्टापाढल) इन सम्पूर्ण दवाओं के पंचाग को लेकर सुखावे फिर जलाकर गोमूत्र में भिगोकर कपड़े से छान ले तदनंतर उस जल को लोहे की कढाई में रखकर अग्नि से तब तक परिपाक करे कि जब तक उस खार में शीघ्र शीघ्र नाश होने वाले बुदबुदा न आने लगें। फिर उसी में त्रिकुटा, हींग, गन्धक, जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, छः प्रकार का नोंन, गोपीचंदन इनके चूर्ण को डाले। इसके बाद इन सबको मिलाकर धान के ढेर में सात दिवस तक रखकर और फिर उसको निकालकर कांच की शीशी में भर देंवे तो यह बिड़ रसादि के जारण में उत्तम है।।२०।।

बिड़ बनाने की तीसरी क्रिया

ये पूर्वोक्ताः कदलीपलाशादिवृक्षास्तेषां क्षाराणि निंबूजंबीरनीरैः संभावितानि भवेयुश्चेत् तदा बिड़वत् कार्यकराणि भवन्तीति सुगममिति ।।

(ध० सं०)

अर्थ–अब बिड़ बनाने की विधि को कहते हैं कि पूर्वोक्त केला और ढाक आदि वृक्षों के क्षार यदि निंबू तथा जंभीरी के रस से भावित हुए हों तो वे बिड़ के समान कार्य करनेवाले होते हैं और यह ऐसा ही करना हमारी सम्मति में उचित है।।

अन्यच्च

वास्तूकैरंडकदली देवदाली पुनर्नवा ।। वासापलाशनिचुलतिलकांचनमोक्षकाः ।।२१।। सर्वांगखंडशश्छिन्नं नातिशुष्कं शिलातले ।। दग्धं कांडं तिलानां च पश्चाङ्गं मूलकस्य च ।।२२।। प्लावयेन्मूत्रवर्गेण चलं तस्मात्परिस्रुतम् ।। लोहपात्रे पचेद् यन्त्रे हंसपाकाग्रिमानवित् ।।२३।। बाष्पाणां बुद्बुदानां च बहूनामुद्गमो यदा ।। तदा काशीशसौराष्ट्रक्षारत्रयककटुत्रयम् ।।२४।। गंधकं च सितो हिंगुर्लवणानि च षट् तथा ।। एषां चूर्णं क्षिपेद्देवि लोहसंपुटमध्यतः ।।२५।। सप्ताहं भूगतं पश्चाद् धार्यस्तु प्रचुरो बिड़ः । अत्र सकलक्षारैश्च साम्यं तिलकांडानां नित्यनाथपादा लिखंति ।।२६।।

(र० चिं०, नि० र०)

अर्थ–उपरोक्त श्लोको का वही अर्थ है जो कि बीसवें श्लोक का अर्थ है, विशेष बात यह है कि इस बिड़ बनाने के विषय में नित्यनाथ लिखते हैं कि सबके तुल्य तिल की डंडी लेनी चाहिये।।२१–२६।।

बडवानल बिड़ स्वर्णादिलोहसत्त्व चारण के लिये

शंखचूर्णं रविक्षीरैरातपे भावयेद्दिनम् ।। तद्वज्जंबीरजद्रावैर्दिनैकं धूमसारकम्

।।२७।। सौवर्चलमजामूत्रैर्भाव्यं यामचतुष्टयम् ।। कंटकीरीं च संभाव्यं दिनैकं नरमूत्रकैः ।।२८।। स्वर्जिक्षारं तिंतिडीकं काशीशञ्च शिलाजतु ।। जंबीरोत्थद्रवैर्भाव्यं पृथग्यामचतुष्टयम् ।।२९।। निस्तुषं जयपालं च मूलकानां द्रवैर्दिनम् ।। सैंधवं टंकणं गुंजा दिनं शिग्रुजटांभसाः ।।३०।। एतत्सर्वं समांश तु मर्द्यं जंबीरजद्रवैः ।। तत्सर्वं रक्षयेद्यत्नाद्विडोऽयं बडवानलः ।।३१।। अनेन मर्दितः सूतः संस्थितस्तप्तखल्वके । स्वर्णादिसर्वलोहानि सत्त्वानि ग्रसते क्षणात् ।।३२।। (र० सा० प०; र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, आ० नि० रत्ना०, र० रा० प०) ।[1]

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसाद-
सूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां
विड़साधनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ।।१४।।

अर्थ-अब मैं उत्तम वैद्य के बनाने योग्य बिड़ को कहता हूं कि शंख के चूर्ण को आक के दूध से एक दिन तक तेज घास में भावना देवे और इसी प्रकार धूमसार को भी जंभीरी के रस से एक दिन भावना देवे। तथा सांचरनों को एक दिवस गोमूत्र से भावना देवे और नौसादर को एक दिवस तक कटेरी के क्वाथ की भावना देवे तथा सज्जी के खार को तंतडीक (डासरया) के रस से एक दिन भावना देवे। कसीस और शिलाजीत को जंभीरी के रस से चार प्रहर भावित करे तथा तुषरहित जमालगोटे को मूली के रस से भावित करे। सैंधव, सुहागा और चौंटनी को सैंजने की मूली के रस से एक दिन भावना देवे। तदनंतर इन सबको जंभीरी के रस से मर्दन कर गोली बना लेवे तो यह बडवानल नाम का बिड़ सिद्ध होता है। इसके साथ तप्तखल्व में मर्दन किया हुआ पारद स्वर्णादि धातु तथा सम्पूर्ण सत्त्वों को ग्रसता है।।२७-३२।।

इति श्रीजैसलमेरनिवासि पण्डितमनसुखदासात्मजव्यास-
ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां
बिडसाधनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ।।१४।।

चारण संस्काराध्यायः १५

चारणलक्षण

रसस्य जठरे ग्रासक्षेपणं चारणा मता।

(र० र० स०)

अर्थ-पारद के भीतर ग्रास देने को चारणा कहते हैं।

चारणसंस्कार का रूप

घनसहितस्वर्णतारादिधातूनां तथा रसोपरसानां बीजभूतानां सूतराजो चारणाग्रासदानादस्य संस्कारस्य चारणैव संज्ञा प्रसिद्धा जाता ।।

(धं० सं०)

अर्थ-अब चारण नाम के पारद के संस्कार को वर्णन करते हैं कि पारद को चारणा (भक्षण) के लिये जो अभ्रक, स्वर्ण, चांदी प्रभृति धातुओं का अथवा बीजरूप रस तथा उपरसों का ग्रास दिया जाता है इस कारण इस संस्कार का नाम चारण प्रसिद्ध हो गया है।।

चारण के भेद

अत्र चारणाख्ये कर्मण्यपि निर्मुखसमुखा महायोगाः सन्ति तथाहि-
अभ्रकजीर्णो बलवान्भवति रसस्तस्य चारणे प्रोक्ताः ।
सन्धानवासनौषधिभिर्निर्मुखसमुखा महायोगाः ।।१।।

(ध० सं०)

अर्थ-इस चारण संस्कार में निर्मुख और समुख आदि अनेक महायोग हैं, यही बात धरणीधरसंहिता में लिखी है कि अभ्रक जीर्ण होने से पारद बलवान होता है। इस कारण अभ्रक चारण के लिये संधान तथा वासना के योग्य औषधियों में निर्मुख और सम्मुख आदि अनेक गुण देनेवाले महायोग कहे गये हैं।।१।।

वासनौषधि

वासनौषध्यस्तु गगनग्रासकथने कथितास्तास्तु यथालाभतो ग्राह्याः, इति वासनौषध्यः।।

(ध० सं०)

अर्थ-वासनौषधियां गगनग्रास के प्रकरण में कही गई हैं वे यथालाभ ग्रहण करनी चाहिये।

चारणोपयोगी सन्धान की क्रिया

सर्वधान्यानि निक्षिप्य चारनालं तु कारयेत् । सप्तमूलं संकुटय ह्यौषधीस्तत्र निक्षिपेत् ।।२।। क्षितिकासीससामुद्रसिन्धुत्र्यूषणराजिकैः । संयुक्तं कारयेत्तं तु साम्ले सप्ताहसंस्थितम् ।।३।। तत्रारनालसंयुक्तं ताम्रभांडं तु संधयेत् । सन्धानं जायते त्वेवं योज्यं सर्वत्र चारणे ।।४।।

(ध० सं०)

अर्थ-अब अभ्रक चारण के निमित्त संधाक को कहते हैं। समस्त प्रकार के तुषरहित अनेकों जल में डालकर कांजी बनावे फिर आगे कही हुई जड़सहित औषधियों को कूटकर उस कांजी में डाल देवें। फिर फिटकरी, हीरा कसीस, समुद्रनोन, सैंधव, सोंठ, मिर्च, पीपल और राई इनको औषधिसहित कांजी के घड़े में रखकर गरम स्थान में सात दिवस तक रखे और इन समस्त चीजों को तांबे के पात्र में रखकर उसका मुख बंद कर देवे तो यह संधान समस्त चारण संस्कारों के उपयोगी होवेगा।।२-४।।

अन्यच्च

संधानकप्रकारोयमुच्यते जारणे हितः । शिग्रुं च वज्रकंदं च सूरणं मीनचित्रकम् ।।५।। तंडुली विषनाली च वर्षाभूर्यवचिंचिका । मुसली क्षीर कंदश्च कंदं वै वत्सनाभकम् ।।६।। सर्वधान्यभवैः कुर्यात्तंडुलैस्तुषतोयकम् ।। प्रक्षाल्य चाष्टगुणिते जले सम्यक्प्रतापिते ।।७।। सम्यगबुद्बुदिते दद्यात्तंडुलांश्च यवादिकान् । सम्यग्गते विनिष्पन्ने ह्यन्नं संगाल्ययत्नतः ।।८।। तन्मंडं प्रक्षिपेत्तोये तुषे सर्वप्रसाधिते अन्नं किंचित्ततो दत्त्वा खरे घर्मे निधापयेत् ।।९।। एवं सप्तदिनस्यांते चात्यम्लं भवति ध्रुवम् । प्रागुक्तमौषधीवर्गं दद्यात्तत्र विचूर्णयेत् ।।१०।। पुनः संधारयेद्धर्मे दिनसप्तकमी दृशम् । ततस्तु योजयेत्सूते जारणादिक्रमेण वै।। ११।। लोहभाजनयोगेषु लोहशुद्धिर्दृढानले । इति संधानयोगोऽयं जारणेति गुणावहः ।।१२।। प्रकाशितः सम्प्रदायक्रमप्राप्तः शिवोदितः ।।१३।।

(र० प०)

अर्थ-अब जारणोपयोगी संधान के क्रम को कहते हैं-सैंजने की जड़, शकरकंद, जमीकंद, मैछछी, चित्रक, चौलाई, विषनाली (कमलतन्तु), विषखपरा, इमली, मूसली, क्षीरविदारी, वत्सनाग और तुप रहित समस्त प्रकार के अन्न या चावलों से कांजी बनावे। कांजी बनाने की यह विधि है कि प्रथम चावलों से चौसठ गुना पानी लेकर औटावे जब कि जल में आधान के समान उफान आ जावे तब तो जौ इत्यादि तथा चावलों से को धोकर उस पानी में डाल देवे और अन्न के लगने पर मांड को निकाल उसी तुपोदक में

---

[1] १-अंतिम पक्तिके पढ़ने से मालूम होता है कि बिड़ का प्रयोग चारणके निमित्त होता है। जारण जुदा करना होगा। जारण क्रिया में भी बिड़ का प्रयोग कच्छपयंत्र में करते हैं। (तप्तखल्व में चारण । दोलायंत्र का कच्छपयंत्र से जारण होता है।)

मिला देवे। कुछ थोड़ा सा और भी अन्न डालकर तीव्र घास में रखे, इस प्रकार सात दिवस के बाद वह संधान अम्ल हो जाता है। तदनंतर पूर्वोक्त औषधियों को कूटकर उनके चूर्ण को उसी संधान में भरकर सात दिन तक फिर तेज घास में स्थापित करे फिर उसको जारण के क्रम से पारद के काम में लावे. धातुओं के बासनों पर लगा के अग्नि में धोंके तो धातुओं की शुद्धि होती है। इस प्रकार यह संधान का योग जारण के लिये अत्यन्त आवश्यक है और श्रीमहादेवजी का कहा हुआ मुझको गुरुसंप्रदाय से प्राप्त हुआ है।।५–१३।।

शुक्त

मधुगुडकांजिकमस्तुप्रविभागाः स्युर्यथोत्तरं द्विगुणाः ।
त्रिदिनानि धान्यराशौ स्थापितमिदमुच्यते शुक्तम् ।।१४।।

(र. र. स.)

अर्थ–शहद एक भाग, गुड़ दो भाग, कांजी चार भाग, दही का तोड़ आठ भाग, इन सबको तीन दिवस तक नाज के ढेर में गाड़ देवे तो यह उत्तम शुक्त (सिरका) बज जायेगा।।१४।।

जारणोपयोगी अष्टमहौषधि

व्याघ्री सिंही तथा वज्री कौमारी लांगली ततः । अभिमानाग्निधमनी हंसपादी तथैव च । महौषध्यः प्रयोक्तव्या अष्टावेताश्च जारणे ।।१५।।

(र० रा० प०)

अर्थ–व्याघ्री (कटेरी), सिंही (अडूसा), वज्री (हडसंहारी), कौमारी (वाराहीकंद), लांगली (कलिहारी), अभिमान, अग्दिधमनी और हंसपादी (लाल रंग की लजवंती) इन आठों महौषधियों का प्रयोग जारण के लिये उपयोगी है।।१५।।

जारणोपयोगी सिद्धमूली

व्याघ्रपादी हंसपादी कदल्यंघ्रिकुमारिका ।। मंडूकी चाग्निधमनी विख्याता सिद्धमूलिका ।।१६।। एता व्यस्ताः समस्ता वा प्रोक्तस्थाने प्रयोजयेत् ।।१७।।

(र० प०)

अर्थ–व्याघ्रपादी (विकंकत वृक्ष), हंसपादी (लज्जालु, केलाअंघ्री), घीग्वार, मंडूकी (ब्राह्मीघास), अग्निधमनी ये सिद्धि जड़िये हैं और यथालाभ इनका प्रयोग करे।।१६।।१७।।

सम्मति–पूर्व दोनों श्लोकों में कही हुई औषधियों का स्वरस तथा क्वाथ उपयोगी होता है।

अभ्रक जारण के भेद

तत्त्रिविधम् पत्रचूर्णजारणं सत्त्वजारणं द्रुतिजारणं चेति ।

(र० प०)

अर्थ–अभ्रकजारण तीन प्रकार का है–पत्रचूर्णजारण, सत्त्वजारण अथवा द्रुतिजारण।

अभ्रकसत्त्व पर्याय

केचित्त्वेवं वदन्ति स्म अभ्रकसत्त्वस्वर्णमाक्षिकसत्त्वयोरभावे कृष्णवज्राभ्रं मारितं निश्चंद्रिकं शुद्धस्वर्णमाक्षिकं मारितं तत्तत्सत्त्वस्थाने देयमिति ।।

(ध० सं० ४४)

अर्थ–कुछ बुद्धिमानों के ऐसा भी कहा है कि अभ्रक सत्त्व के अभाव में भस्म किये हुए कृष्णवज्राभ्रक का प्रयोग तथा माक्षिकसत्त्व के अभाव में सोनामक्खी की भस्म का प्रयोग करना चाहिये।

अभ्रकपत्रजारणार्थ अभ्रकचूर्ण क्रिया

अर्कक्षारैस्तु धान्याभ्रं दिनं मर्द्यं दिनानि च । कपोताख्ये पुटे पच्यादेवं वारचतुष्टयम् ।।१८।। त्रिधा च मूलकद्रावैरंभाकंदद्रवैस्त्रिधा । अपामार्गः काकमाची मीनाक्षी मुनिभृंगराट् ।।१९।। पुनर्नवा मेघनादो वातारिश्चित्रकस्त-था । क्रमादेषां द्रवैरेव मर्दने पुटपाचने ।।२०।। एकैकेनैव वारेण द्रवं दत्त्वाथ भावयेत् । शतावरी तालमूली रसश्च कदलीयकम् ।।२१।। अर्कं पुनर्नवा शिग्रु यवचिंचा ह्यनुक्रमात् । प्रतिद्रवैर्दिनैकैकं भावितं चारणे हितम् ।।२२।।

(र० प०)

अर्थ–जारण के लिये अभ्रक के पत्तों का चूर्ण इस प्रकार करना चाहिये। धान्याभ्र को आक के दूध से मर्दन कर कपोतपुट में भस्म करे, इस तरह चार पुट लगावे। तीन पुट मूली के रस के और तीन पुट केले की जड़ के रस के पुट देवे फिर ओंगा, मकोय, मचैछी, अगस्त, भांगरा, सांठ, चौलाई, एरण, पित्रक इनके एक बार पुट देकर भस्म करे तदनंतर सतावर तालमखाने केले का रस और सांठ, सैंजना, यवचिंचा (इमली) का रस दे देकर भावना देवे तो यह चूर्ण जारण क्रम के लिये अत्यन्त हितकारी है।।१८–२२।।

अन्यच्च

अर्कक्षीरेण धान्याभ्रं यामं पिष्ट्वा तथा धमेत् । कपोताख्ये पुटे पच्यात्पुनर्मर्द्यं पुनः पचेत् ।।२३।। एवं विंशपुटैः पक्वं तदभ्रं शोडशांशकम् । जारयेत्पारदे ग्रासं शतधा पूर्वभावितम् ।।२४।।

(र० प०)

अर्थ–अब अभ्रकजारण के लिये अभ्रकचूर्ण की दूसरी विधि कहते हैं–धान्याभ्र को आक के दूध में पीसकर कोयलों की अग्नि में धौंकना फिर इसी प्रकार आक के दूध में घोट घोटकर बीस पुट देवे तो अभ्रक की भस्म होगी फिर पूर्वोक्त (पहले श्लोक में कही हुई) औषधियों की सौ भावना देवे, तदनंतर उसके षोड़शांश का पारद में ग्रास देवे।।२३।।२४।।

अभ्रकजारण के लिये अभ्र को भावित करने की क्रिया

यवाख्या कदली शिग्रु चिंचाफलपुनर्नवा । शतमूलीरसैरभ्रं भावितं मुनिसंख्यया ।।२५।। तद्ग्रासं रसराजोऽसौ सुखं भुंक्ते वरे मुखे । संजाते देहसिद्ध्यर्थं धातुसिद्ध्यर्थमेव हि।।२६।।

(र० पा०)

अर्थ–जवाखार, केला, सैंजना, इमली, सांठ, सतावर, इनके रस से सात सात बार अभ्रक को भावना देवे तो उस अभ्रक चूर्ण को मुख होने पर पारद अच्छी तरह खाता है और उससे देह तथा धातु की सिद्धि अच्छी प्रकार होगी।।२५।।२६।।

(र० पा)

अब निर्मुख अभ्रक चारण प्रयोग कहते हैं

निश्चन्द्रकं हि गगनं क्षाराम्लैर्भावितं तथा रुचिरैः ।
सृष्टित्रयनीरकणातुंबरुसम्मर्दितं चरति ।।२७।।

अर्थ–अब निर्मुख अभ्रकजारण के प्रयोग को कृष्णवज्राभ्रक (जो कि विना जलाये चौलाई और बथुआ के रस के साथ मर्दन करने से निश्चन्द्र हो गया हो) को अत्यन्त स्वच्छ सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, ओंगे का क्षार इत्यादि क्षारों से तथा अम्लवेतस (नींबू का भेद), जंभीरी, बिजौरा, नारंगी, चणकाम्ल, करोंदा, इन अम्लवर्ग से भावित करे तथा गाय, बकरी भेड़, नर और नारी का शुक्र और शोणित, जलपीपल और तुंवरु (जिसका मुख फटा हुआ और आकृति काली मिर्च के समान होती है,) से मर्दन करे तो उस अभ्रक को पारद खा जाता है।

चणकाम्ल और अम्लवेत की उत्तमता

**चणकाम्लं च सर्वेषामेकमेव प्रशस्यते ।
अम्लवेतसमेकं वा सर्वेषामुत्तमोत्तमम् ॥२८॥**

अर्थ–समस्त प्रकार के अम्लों में चणकाम्ल (चने की खटाई) श्रेष्ठ है तथा अम्लवेत (एक प्रकार का निंबू जयपुर में प्रसिद्ध है) सब अम्लों में उत्तमोत्तम है॥२८॥

निर्मुखे गगन चारण क्रिया

धान्याभ्रमम्लवर्गेण दोलायंत्रे त्र्यहं पचेत् । स्नुहीक्षीरैस्ततो मर्द्यं यामैकं चांध्रितं धमेत् ॥२९॥ कपोताख्यपुटैकेन तमादाय विमर्दयेत् । मूलकं कदलीकंदं मीनाक्षी काकमाचिका ॥३०॥ मुनिरार्द्रकवर्षाभूर्मेघनादापमार्ग कम् । एरंडश्च द्रवैरेषां पृथग्देयं पुटं क्रमात् ॥३१॥ दोलायंत्रे ततः पच्याद्द्वत्र्यक्षीरैर्दिनावधि । नवसारं च काशीशं बचा निंबं सुचूर्णितम् ॥३२॥ अभ्रकात्षोडशांशेन प्रत्येकं मिश्रयेत्ततः । मर्दयेत्तात्रखल्वे तच्चणकाम्लारनाल कैः ॥३३॥ नवसारैरारनालेन लेपयेत्तत्र निक्षिपेत् । पारदं शोधितं चाभ्रं चणकाम्लं च कांजिकम् ॥३४॥ मद्वग्निना पचेच्चुल्यां रसश्चरति तत्क्षणात् । जारयेत्पर्वयोगेन ततश्चार्यं च जारयेत् ॥ आसां युक्तिर्यथापूर्वं सेयं निर्मुखजारणे ॥३५॥

(र० प०)

अर्थ–धान्याभ्र को अम्लवर्ग से तीन दिवस तक दोलायंत्र में पचावे फिर थूहर से एक प्रहर मर्दन कर अंधमूषा में रखकर धौंकना तदनंतर एक कपोतपुट लगाकर निकाल लेवे, इसके बाद मूली, केले की जड़, मछैछी, मकोय, अगस्तिया, अदरख, सांठ, चौलाई, ओंगा और एरण्ड इनके द्रव से अभ्रक को क्रमपूर्वक देना चाहिये फिर एक दिवस तक थूहर और कसीस को अभ्रक से षोड़शांश लेकर अभ्रक के साथ मिलावे और चणकाम्ल तथा कांजी से ताम्र के खरल में मर्दन करे। तदनंतर नौसादर के लिये हुए पात्र में शुद्ध पारद तथा अभ्रक चणकाम्ल तथा कांजी को मृदु अग्नि से पचावे तो पारा अभ्रक को चरता है फिर पूर्व योग से जारण करे और फिर चारण तथा जारण करे। यह निर्मुख जारण की युक्ति है॥२९–३५॥

निर्मुख अभ्रचारण के लिये अभ्रसाधन

मूत्राम्लक्षारकासीसचित्रकाक्षीकटुत्रयम् । जारणौषधिकाषायंतक्ररोधसमन्वि तम् ॥३६॥ सप्ताहं ताम्रजे पात्रे धृत्वा वस्त्रेण गालयेत् । भावयेदभ्रचूर्णादि तत्त्र्यहं भूधरे पचेत् ॥३७॥ एवं सप्तपुटं देयं भावयित्वा पुनः पुनः । धान्याभ्रमभ्रसत्त्वं वा तत्पुटितं चारयेद्रसे ॥३८॥ सूतेन्द्रो जीर्यते क्षिप्रं यथान्नं जठरानलः । निर्मुखो ग्रसते बीजं दोलायाः शतधा रसः ॥३९॥ एषामन्यतमं चूर्णं समादाय क्रियां चरेत् । पूर्वप्रोक्ताभिषेका ये तेषामन्यतमेन च ॥ शतधा भावितं चूर्णं रससारोक्तक्रमेण वा ॥४०॥

(र० प०)

अर्थ–गोमूत्र, अम्लपदार्थ, सज्जीखार, जवाखार, हीराकसीस चित्रक, फिटकिरी, त्रिकुटा, जारणौषधियों का क्वाथ, मठा, पठानी, लोध इन सबको १ दिवस तक ताम्र के पात्र में रखकर छान लेवे और उसी से अभ्रक के चूर्ण की भावना देकर भूधरयन्त्र में पचावे। इस प्रकार ७ बार भावना दे देकर पुट देवे। पुट दिये हुए धान्याभ्रक तथा अभ्रसत्त्व को रस में चारण करे तो पारद में अभ्रक शीघ्र ही जारित होता है। जिस प्रकार जठरानल में अन्न पचता है इसी प्रकार दोलायन्त्र में सौ तरह से पारद बीज को खा जाता है अथवा इनमें से किसी चूर्ण को लेकर चारण क्रिया करे। अथवा जो जो पूर्व अभिषेक कहे हैं उनमें से किसी के साथ सौ बार भावित किया हुआ चूर्ण वा रससार की क्रिया से सिद्ध किया अभ्रचूर्ण जारण के लिये उत्तम होता है॥३६–४०॥

चारण के लिये विशेष कांजी

**सतुत्थटंकणस्वर्जिपटुताम्रे त्र्यहोषितम् ।
कांजिकं भावितं तत्तु गंधाद्यं चरति क्षणात् ॥४१॥**

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०)

अर्थ–नीलाथोथा, सुहागा, सज्जीक्षार, सैंधव और कांजी इनको ताम्र के पात्र में तीन दिन रखे फिर उससे भावित किये हुए गंधकादि को पारद शीघ्र ही चरता है॥४१॥

अभिषेक

क्षारत्रयं पंचपुटुकांक्षीकासीसगंधकम् ॥ माक्षिकं चाम्लसंयुक्तं ताम्रपात्रे तु सारयेत् ॥४२॥ एतच्चाभिषवं दिव्यं कारयित्वा विचक्षणः । जारणार्थं तु बीजानां वज्राणां च विशेषतः ॥४३॥ तस्मिन्नावर्तितं नागं वंगं वा सुरवंदिते ॥ निषेचयेच्छतवारं न रसायनकर्मणि ॥४४॥ अनेन चारणावस्तु भावयेत्तद्विचक्षणः ॥

(र० प०)

अर्थ–सुहागा, सज्जीखार, जवाखार, पांचो नोंन, फिटकरी, कसीस, गंधक, सोनामक्खी और आरनाल को तांबे के पात्र में रखकर विद्वान् वैद्य बीजों के जारण के लिये और विशेषकर वज्रजारण के लिये इनकी कांजी बनवावे, हे पार्वति! उस कांजी में नाग तथा वंग को गला गलाकर सौ बार बुझावे। यह कर्म रसायन के वास्ते न करे और धातुवाद के लिये करे और विद्वान इससे चारण की वस्तुओं को भावना देवे ॥४२–४४॥

अन्यच्च

त्रिक्षारं पंचलवणं कांक्षीकासीसगंधकम् ॥ माक्षिकं कांजिकैर्युक्तं ताम्रपात्रे दिनत्रयम् ॥४५॥ स्थितं घर्मेपलं तस्मिन्द्रुतं नागं विनिक्षिपेत् ॥ तारस्य कर्मणि वंगं शतवारं निषेचयेत् ॥४६॥ तद्द्रवं ताम्रपात्रस्थमभिषेकं विदुर्बुधाः ॥ अनेन चारणावस्तु शतवारं विभावयेत् ॥४७॥ द्वंद्वितं व्योमसत्त्वं च बीजानि विविधानि च । नागं व वज्रबीजं च भावितं चारयेद्रसे ॥४८॥ संस्कृतो नागवंगाभ्यां सर्वधातुपतिर्बुधैः । स श्रेष्ठो धातुवादेषु नेष्टः प्रोक्तो रसायने ॥४९॥

(र० प०, र० रत्ना०)

अर्थ–तीनों क्षार (सज्जीखार, यवक्षार, सुहागा), पांचो नोंन (फिटकरी, कसीस, गंधक और सोनामक्खी) इनको कांजी के साथ तांबे के पात्र में तीन दिवस तक घास में रखा रहने दे, उसमें एक पल नाग जलाकर बुझा देवे और जो चांदी बनाना हो तो वंग के सौ बुझाव देवें फिर उसे तांबे के पात्र में रखे तो उसको पंडित लोग अभिषेक कहते हैं, अभ्रकसत्व अनेक प्रकार के बीज नाग और वज्रबीज को उस अभिषेक से भावना देकर पारद में चारण करे और पंडितों से नागवंग के साथ संस्कार किया हुआ स्वर्ण धातुवाद में श्रेष्ठ है और रसायन के लिये श्रेष्ठ नहीं है॥४५–४९॥

अन्यच्च

सम्यगावर्तितं नागं पलैकं काञ्जिके क्षिपेत् । पलानां शतमात्रे तु शतवारं द्रुतं द्रुतम् ॥५०॥ अनेन काञ्जिकेनैव शतवारं विभयेत् । यत्किंचिच्चारणावस्तु ततस्तच्चारयेद्रसे ॥ अभिषेकोऽयमाख्यातः कथितो मतिमतां वरैः ॥५१॥

(र० प०)

अर्थ–एक पल नाग (सीसे) को अच्छी प्रकार गलाकर कांजी में डाल देवे, यदि सौ पल सीसा होवे तो सौ बार सीसे को गला गला कर बुझाव देवे। इसी (जिसमें बुझाव दिया गया है) कांजी में जो कुछ चारण की वस्तु हैं उनको सौ बार भावना देवे फिर रस में चारण करे, बुद्धिमानों ने इसको अभिषेक कहा है॥५०॥५१॥

निर्मुख गगनचारण के लिये अभ्रसत्त्व साधन

रसरत्नाकरोक्तं व त्रिक्षाराद्यभिषेचनम् । शतधा भावयेत्तेन तत्सत्वं चरति

[१]क्षणात् ।।५२।। इत्थं संसाधितं सत्त्वं पूर्ववच्चाभिमंत्रितम् । विधाय प्रार्थनां पश्चाद्ग्रासं मंत्रेण चारयेत् ।।५३।।

(र० प०)

अर्थ–रसरत्नाकर तथा त्रिक्षार आदि जो अभिषेचन हैं उनसे अभ्रक सत्त्व को नौ बार भावना देवे। इस भावना दिये हुए अभ्रकसत्व को मंत्रों से अभिमंत्रित कर और ईश्वर की प्रार्थना कर फिर मंत्र पढ़ पारद को ग्रास देवे।।५२।।५३।।

गगन की निर्मुख चारण क्रिया

तिलपर्णीरसं नीत्वा गगनं तेन भावयेत् ।
मर्दनाज्जायते पिष्टी नात्र कार्या विचारणा ।।५४।।

(ध० सं०)

अर्थ–तिलपर्णी के रस को निकालकर उससे अभ्रक को भावना देवे तो उस भावना दिये हुए अभ्रक तथा पारद के मर्दन करने से पिष्टी तैयार होती है. इसमें जरा भी विचार करना उचित नहीं है।।५४।।

अन्यच्च

मुंडीनिर्यासके नागं बहुशस्तं निषेचयेत् ।। तेनाभ्रकं तु संयोज्य भूयोभूयः पुटे दहेत् ।।५५।। चित्रकार्द्रकमूलानामेकैकेन तु सप्तधा। स्रावितं वा प्रयत्नेन गंधकाभ्रकचूर्णकम् ।।५६।। नागं मुंडीरसाक्षिप्तं रसलुंगाभ्रभावितम् । षोडशांशेन दातव्यं दोलायंत्रे चरेद्रसः ।।५७।।

(ध० सं०)

अर्थ–मुंडी के स्वरसमें सीसे को गला गलाकर कई बार बुझाव देवे और उसी रस से पारद को भावना देकर बार बार गजपुट में फूंक देवे और चित्रक अदरख तथा मूली के रस से सात सात भावना देवे तो गन्धक और अभ्रक आदि का चूर्णग्रास देने के योग्य होता है अथवा जिस मुंडी के रस में नाग का बुझाव दिया गया हो उससे भावित तथा बिजौरे के रस से भावित अभ्रक का पारद में षोडशांश का ग्रास देवे तो उस ग्रास को पारद दोलायन्त्र में चर जाता है।।५५–५७।।

अन्यच्च

सोमवल्लीरसे पिष्ट्वा क्षपयेच्च पुटत्रयम् ।। सोमवल्लीरसेनैव सप्त वारांश्च भावयेत् ।।५८।। गगनं स्त्रियते भांडे रसेन सह संयुतम् ।। मलं सितेषुपुंखाया गव्यक्षीरेण घर्षयेत् ।५९।। कल्केन मेलयेत्सूतं गगनं तदधोर्ध्वगम् ।। स्थापयेद्रवितापे तु निर्मुखं ग्रसते क्षणात्।।६०।। जायते पिष्टिका शीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ।।६१।।

(ध० सं०)

अर्थ–सोमवल्ली के रस को निकालकर उसमें सीसे के तीन बुझाव देवे। उसी रस से अभ्रक को भावना देकर सात बार गजपुट देवे। प्रत्येक पुट में सोमवल्ली के रस से भावित अभ्रक को बासन में भरकर ऊपर से फिर सोमवल्ली का रस भर देवे अथवा सफेद सरफोखे की जड़ को गाय के दूध से पीसे फिर पारद के नीचे तथा ऊपर तेज घास में रखे तो निर्मुख भी पारा अभ्रक को शीघ्र ही खा जाता है और उसकी पिष्टी शीघ्र हो जाती है, इसमें सन्देह नहीं है।।५८–६१।।

निर्मुख चारण के लिये सूतसंस्कार

अथवा तप्तखल्वे तु भूलतासंयुतो रसः ।। मर्दयेत्त्रिदिनं पश्चात्पात्यं पातनयंत्रके ।। संस्कारेण ह्यनेनैव निर्मुखश्चरति ध्रुवम् ।।६२।।

(र० प०)

अर्थ–अथवा भूलता का रस और पारद को तप्तखल्व में तीन दिवस तक घोटे फिर पातनयंत्र में पातन करे, इसी संस्कार से निर्मुख पारद अभ्रक को शीघ्र खा जाता है।।६२।।

बिड़योग से तप्तखल्व द्वारा निर्मुख स्वर्णादिचारण

अथवा बिड़योगेन शिखिपित्तेन लेपितम् ।।
चरेत्सुवर्णं रसराट् तप्तखल्वे यथासुखम् ।।६३।।

(रसमंजरी)

अर्थ–अथवा बिड़युक्त मोर के पित्त से लेप किये हुए सुवर्ण के पत्र को पारद तप्तखल्व में शीघ्र ही खा जाता है।।६३।।

समुख में अभ्रचारण

त्रुटिशो दत्त्वा मृदितं सोष्णो खल्वेऽभ्रहेमलोहादि ।।
चरति रसेन्द्रः क्षितिखगवेतसजम्बीरबीजपूराद्यैः ।।६४।।

(र० चिं० नि० र०, र० रा० शं०, र० सा० प०)

अर्थ–जिस पारद के मुख हो गया है उसको तप्तखल्व में गेरकर अभ्रक, सुवर्ण और लोहा इनमें से जिसका जारण करना हो, उसको थोड़ा थोड़ा गेरकर मर्दन करे और मर्दन के समय फिटकरी, सुहागा और जम्बीरी का रस भी थोड़ा थोड़ा डालता जावे तो पारद उन धातुओं को अवश्य ही चर लेगा।।६४।।

समुखगगनचारणक्रिया

अथातः समुखचारणाविधिर्यथा तत्रादौ स्वेदनकर्मोक्तसंधानं कुर्यात् तथाहि–
स्वर्ज्जीक्षितिखगटंकणलावण्यान्वितकर्मवाजेन ।
त्रिदिनं पर्युषितमारनालं गगनादिकभावने शस्तम् ।।६५।।

(ध० सं०)

अर्थ–अब समुख चारण विधि को कहते हैं कि प्रथन स्वेदनसंस्कार की रीति से कांजी को बनावे। जैसे कि राई, नोंन, त्रिकुटा, चित्रक, अदरख, मूली, धान ये सब सम भाग लेकर और कूटकर बीस गुने पानी में डालकर तीन दिन तक या पांच दिवस तक रखकर फिर उसमें सज्जी, फिटकरी, कसीस, सुहागा, और नोंन ये सब संधान से षोड़शांश लेकर और पीसकर कांजी मे मिलावे फिर उसको तीन दिवस तक स्थापित करे, उस कांजी से अभ्रक आदि को तीन बार तथा सात बार भावना देवे क्योंकि इस बात को शास्त्रकारों ने भी लिखा है जैसे कि सज्जीखार, फिटकरी, कसीस, सुहागा, नोंन और कांजी को तीन दिवस तक तांबे के पात्र में स्थापित करे तो यह अभ्रकादि की भावना देने में उत्तम कांजी मानी गई है।।६५।।

समुखगगनचारणक्रिया

गगनरसोपरसामृतलोहरसायसादिचूर्णानि ।।
सर्वमनेन हि भाव्यं यत्किंचिच्चारणावस्तु ।।६६।।

(ध० सं०)

अर्थ–भावना देने योग्य अभ्र आदिकों का वर्णन करते हैं कि वज्राभ्रक, महारस (हिंगुल, सोनामक्खी, रूपामक्खी, शिलाजीत, चपला, चुंबक, वैक्रान्त, रसखपरिया), उपरस (सुरमा, गंधक, मैनसिल, हरिताल, गेरू, फिटकरी, कसीस), सींगिया और विना भस्म किये हुए स्वर्णादि धातु इनके चूर्ण तथा अन्य जो कुछ चारण की वस्तु है वे सब इसी कांजी मे भावना देने योग्य हैं।।६६।।

सम्मति–इस श्लोक में रसशब्द का पाठ दो स्थल में आया है उससे यह बात समझना चाहिये कि औरों की अपेक्षा रस और उपरसों को दूनी भावना देनी शास्त्रकारकों संमत है।।

१–यद्यपि पाठ में निर्मुख या समुख का पता नहीं है परन्तु विचार से निर्मुख ही जान पड़ता है। (ग्रंथकार)

समुखगगनचारणक्रिया

त्रुटिशो दत्त्वा मृदितं सारे खल्वेऽभ्रहेमलोहादि ॥
चरति रसेन्द्रः क्षितिखगवेतसजम्बीरबीजपूराम्लैः ॥६७॥

(ध० सं०)

अर्थ–जिसका मुसला लोहे का हो ऐसे लोह के खल्व में संस्कृत पारद को डाल उसमें पूर्वोक्त कांजी से भावित अभ्र तथा स्वर्णादि को थोड़ा थोड़ा डालकर फिर फिटकरी, कसीस, अम्लबेन (निम्बूविशेष), बिजौरा और जँभीरी इनके साथ मर्दन करने से पारा ग्रास को चरता है॥६७॥

सम्मति–इस बात पर पूर्ण ध्यान देना चाहिये कि स्वर्ण की क्रिया में नाग का चारण तथा चांदी की क्रिया में बंग का चारण करे और देहसिद्धि के लिये नाग और बंग का चारण सर्वथा नहीं करना चाहिये।

समुख में गगनचारण

अथ रसरत्नाकरे घनपत्रचूर्णचारणोच्यते । अथातः समुखे सूत पूर्वाभ्रं[1] षोडशांशकम् ॥ दत्त्वा मर्घ तप्तखल्वे सिद्धमूलीद्रवैर्दिनम् ॥६८॥ ततस्तं चारणायंत्रे जंबीररससंयुते ॥ घर्मे धार्य दिनैकस्तु चरत्येव न संशयः ॥६९॥
(र० प०)

अर्थ–अब रत्नाकर में कही हुई अभ्रक चूर्ण की चारणा को वर्णन करते हैं। प्रथम बुभुक्षित पारद में पहले सिद्ध किये हुए (अर्थात् इसी चारण प्रकरण में जो र० प० की रीति से अभ्रक भस्म वा चूर्ण का विधान किया गया है) अभ्रक के षोड़शांश को डालकर सिद्धौषधियों के साथ तप्तखल्व में एक दिन मर्दन करे फिर उसको जंभीरी के रस से भरे हुए चारण यंत्र में एक दिन रखे तो पारा अभ्रक को खा जाता है॥६८–६९॥

वासनामुखचारणक्रिया

अथ समुखचारणान्तर्भूतं वासनामुखचारणं दर्शयन्नाह–
तैलादिकतप्तरसे हाटकतारादिगोलकमुखेन ।
चरति घनं रसराजो हेमादिभिरेति पिंडत्वम् ॥७०॥

तैलादयः के तत्राह तैलानि वसाः मूत्राणि रजः शुक्रं च तैलानि यथा–
कंगुनी तुंबिनी घोषा करंजः श्रीफलोद्भवम् । कटुवातारिसिद्धार्थः सोमराजीविभीतकम् ॥७१॥ अतसीजं महाकाली निम्बजं तिलजं तथा । अपामार्ग देवदालीदंतीतुबुरुविग्रहम् ॥७२॥ अंकोलोन्मत्तभल्लातफलानां तैलमीरितम् ॥
वसा यथा–
जलौकोदर्दुरवसा वसा कच्छपसंभवा ॥७३॥
कुक्कुटीशिशुमारीजा गोसूकरनरोद्भवा ।
अजोष्ट्रखरमेषाणां महिषस्य तथा वसा ॥७४॥
मूत्ररजःशुक्राणि यथा–
मूत्राणि हस्तिवृषभमहिषीखरवाजिनाम् । स्त्रियाः पुंसस्तथा मूत्रं पुष्पं बीजं तु योजयेत् ॥७५॥

(ध० सं०)

अर्थ–अब समुख चारणान्तर्भूत वासनामुख चारण को कहते हैं–चौलर कपड़े में पारद से षोड़शांश का आधा अभ्रक बिछाकर ऊपर से पारद को रखे और उसके ऊपर फिर बचे हुए षोड़शांश के आधे अभ्रक को डालकर और ऊपर से षोड़शांश का आधा बिड़ डालकर उसकी पोटली बना लेवे। उस पोटली को तैल के दोलायंत्र मे पचावे तो वह पारद गोलक मुख से सोना चांदी और अभ्रक वगैर को चर लेता है और स्वर्ण आदि के चारण से पारद गाढ़ा हो जाता है। मालकांगनी, कड़वी तोंबी, सोंफ, कंजे की मीग, श्रीफल (बेल, गोला), कटु (राई), एरंड, सरसों, बाबची, बहेडा, अलसी, महाकाली (एक प्रकार की लता), नीम, तिल, ओंगा, बंदाल, दंती, धनियां, अंकोल, धतूरा और भिलावा इनका तैल इस चारण में लेना उचित है तथा जोंक, मण्डूक, कछुवा, बकरा, ऊंट, गदहा, मेंढा और भैंसा, इनकी चर्वी लेनी चाहिये और हाथी, बैल, भैंस, खर और घोड़ों का मूत्र स्त्री और पुरुष का मूत्र रज और वीर्य लेना चाहिये॥७०–७५॥

गगन के वासनामुख चारण का प्रकारान्तर

अथ समुखचारणान्तर्भूतायां वासनामुखचारणायां प्रकारान्तरेण घनचारणं दर्शयन्नाह–

अथवा माक्षिकं गगनं (कृष्णवज्राभ्रकम्) तथाम्लेन पुटितं भावितं यत् पटु (सैंधव लवणम्) तदेतत्त्रयं समभागं जंबीरनीरेण यामैकं मर्दयित्वा चक्रिकां कृत्वा शरावसंपुटे धृत्वा पक्वं (लघुपुटवह्निना पुटितम्) कृत्वा तद्गगनं सूतमानाच्चतुःषष्टयंशकं पारदेन सहाम्लरसेन मर्दयित्वा गोलकं विधाय चतुर्गुणवस्त्रेण पोटलीं कृत्वा पूर्वोक्ततैलयंत्रेण स्वेदयेत् ततश्च तप्ततैलादिना तप्तपारदो माक्षिकसंयोगात् घनं शीघ्रमेव चरति ग्रसतीति भावः।

(ध० सं०)

अर्थ–अथवा सोनामक्खी अभ्रक तथा अम्ल से भावित सैंधा नोंन इन तीनों को जंबीरी के रस से एक प्रहर मर्दन कर टिकिया बना शकोरे में रखकर मंदाग्नि में पका लेवे उस अभ्रक को पारद से चौंसठवां हिस्सा लेकर अम्लरस के साथ घोटकर गोला बनावे, उस गोले की चौलर कपड़े में पोटली बांधकर पूर्वोक्त तैल के दोलायंत्र में स्वेदन करे, उसके बाद तप्त तैलादिकों से तप्त हुआ पारद सोनामक्खी के योग से अभ्रक को शीघ्र ही चर लेता है॥(४/१/१०)

गगन के वासनामुख चारण का शुकपिच्छाख्य प्रकारान्तर

अथ समुखं चारणान्तर्भूतवासनामुखचारणायां शुकपिच्छाख्यसंधानेन रससिद्धोपदिष्टचारणाप्रकारान्तरं दर्शयन्नाह–अन्ये स्वच्छं कृत्वा शुकपिच्छमुखेन[1] चारयन्ति घनम् । सिद्धोपदेशविधिनाऽसितग्रासेन शुष्केण ॥७६॥ भस्मचाराश्च शुष्काश्च क्षाराश्च लवणानि च । आलोडच चाम्लवर्गेण शुल्वभांडे निधापयेत् ॥७७॥ यावच्च शुकपिच्छाभमभ्रकं तेन भावयेत् । ग्रसते तत्क्षणात्सूतो गोलकस्तु विधीयते ॥७८॥

(ध० सं०)

अर्थ–अब समुखचारण के अन्तर्भूत वासनामुख चारण में शुकपिच्छ नाम के संधान से उस चारणाके प्रकरण को कहते हैं कि जिसको रससिद्धों ने कहा है–रसकर्म के ज्ञाता आठ संस्कारों से शुद्ध कर या सिंग्रफ में से निकले हुए को साफ कर उसमें शुकपिच्छ नाम के संधान से भावित अभ्रक को पूर्वोक्त तैलादि और शुकपिच्छ संधान से युक्त दोलायन्त्र में चराते हैं। केवल शुकपिच्छ संधान से नहीं चराते हैं। यह चरणा जब होती है कि जब सिद्धों के उपदेश से पारद ग्रास को खा लेवे। अब शुकपिच्छ नाम संधान को कहते हैं कि अनेक प्रकार के क्षार तथा लवणों को अम्ल वर्गों के रस में घोलकर तब तक ताम्रपात्र में रखे कि जब तक वह तोते के पर के समान हरा न हो जावे फिर उससे अभ्रक को भावित करे तो पारा उसको शीघ्र खा जाता है और उसका गोला भी बन जाता है॥७६–७८॥

तीक्ष्ण चारण जारण

क्रामति तीक्ष्णेन रसस्तीक्ष्णेन जीर्यते ग्रासः ॥ हेत्रो योनिस्तीक्ष्णं रागान् गृह्णाति तीक्ष्णेन ॥७९॥ तदपि च दरदेन हतं कृत्वा वामाक्षिकेण रविसहितम् ॥ वासितमपि वासनया घनवच्चार्यं च जार्यं च ॥८०॥
(र० रा० प०, र० रा० शं०, र० चिं०)

इति निरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां
चारणसंस्कारवर्णनं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥१५॥

१–अभ्रं धान्याभ्रं वा पूर्वोक्तविधिना साधितम् अभ्रभस्म ।

१–मेरी राय में यहां 'निर्मुखम्' पाठ होना चाहिये।

अर्थ—तीक्ष्ण से पारद में क्रामण शक्ति बढ़ती है। ग्रास जीर्ण होता है और तीक्ष्ण ही स्वर्ण की योनि है और तीक्ष्ण से पारद रंगतदार होता है और वह तीक्ष्ण भी सिंग्रफ से भस्म किया हुआ हो या सोनामक्खी और आक के दूध से भस्म किया हो और वासना से वासित हो उसको अभ्रक की तरह चारण वा जारण करे।।७९।।८०।।

इति श्रीजैसलमेरनिवासि पं० मनुसखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया भाषाटीकायां चारणसंस्कारवर्णनं नाम पञ्चदशोऽध्यायः ।।१५।।

गर्भद्रुतिसंस्काराध्यायः १६

गर्भद्रुतिलक्षण

ग्रस्तस्य द्रावणं गर्भे गर्भद्रुतिरुदाहृता ।।

(र० र० स०)

अर्थ—ग्रास दियें हुए का जो गर्भ में ही गलाना हो उसको गर्भद्रुति कहते हैं।।

अन्यच्च

वह्निव्यतिरेकेऽपि रसग्रासी कृतानां लोहानां द्रवत्वं गर्भद्रुतिः । गर्भद्रुतिमंतरेण जारणैव न स्यात् ।।

(र० चिं०, र० रा०, शं०, बृ० यो०)

अर्थ—ग्रास दिये हुए समस्त धातुओं को अग्नियोग के विना ही जो द्रव होता है उसको गर्भद्रुति कहते हैं जो कि उसको गर्भद्रुति के विना जारण नहीं होता है।।

गर्भद्रुति का प्रयोजन

गर्भद्रुत्या रहितो ग्रासश्च जीर्णोऽपि नैकतां याति । एकीभावेन विना न जीर्यते न सा कार्या ।।१।।

(ध० सं०, र० प०)

अर्थ—अब गर्भद्रुति के प्रयोजन को कहते हैं कि जारण संस्कार की रीति से खिलाया हुआ भी ग्रास गर्भद्रुति के विना पारदरूप नहीं होता है और जब तक पारद तथा ग्रास का एक रूप न हो तब तक ग्रास नहीं होता। इसलिये गर्भद्रुति अवश्य करना चाहिये।।१।।

केवल अभ्रकजारण का निषेध

केवलाभ्रकसत्त्वं[1] हि न ग्रसत्येव पारदः । तस्माल्लोहान्तरोपेतो युक्तं वा धातुसत्त्वकः । अभ्रकं जारयेत्सिद्ध्यै केवलेन तु सिध्यति ।।२।।

(र० रा० सुं०, र० प०)

अर्थ—पारद केवल अभ्रकसत्त्व को नहीं ग्रसता है इस कारण वैद्यवर अन्य धातु से मिले हुए या स्वर्णमाक्षिक से मिले हुए अभ्रक का जारण करे तो सिद्धि होती है और केवल अभ्रक से नहीं।।२।।

गर्भद्रावी होने[2] के निमित्त अभ्रकसत्त्व के साथ ताप्यसत्त्व का मेल करे

व्योमसत्त्वं समांशेन ताप्यसत्त्वेन संयुतम् । साकल्येन चरेद्देवि[1] गर्भद्रावी भवेद्रसः ।।३।।

(र० चिं०, निघं, र०, र० र० रा० शं०, बृ० यो०)

एवं हेमाभ्रताराभ्रादयः स्वस्वरिपुणा[2] निव्यूढाः । प्रयोजनमवलोक्य प्रयोज्याः ।।

(र० चिं० बृ० यो०)

अर्थ—पारद के तुल्य अभ्रकसत्त्व और सोनामक्खी के सत्त्व को लेकर बिड़ के साथ मर्दन करे तो पारा समस्त ग्रास को खा जाता है और गर्भद्रावी होता है। इस प्रकार जहां जिसका प्रयोजन हो वहां अपने अपने शत्रु से निर्व्यूढ हेमाभ्र या ताराभ्र का प्रयोग कराना चाहिये।।३।।

अभ्रकगर्भद्रुतिप्रकार

(वास्तव में गर्भद्रुति के निमित्त अभ्रक का साधन है)

खसत्त्वं ताप्यसत्त्वं तु तुल्यं संचूर्ण्य भावयेत् । त्रिदिनं च पुटेत्पश्चाद्रससारोक्तविधानतः ।।४।। त्रिदिनं भावयित्वादौ ततः पुटनमाचरेत् । एवं सप्तपुटं दत्त्वा तत्सत्त्वं चरति क्षणात् ।।५।।

(र० प०)

अर्थ—अभ्रकसत्त्व तथा सोनामक्खी के सत्त्व को तुल्य लेकर चूर्ण करे फिर उसको रससार की कही हुई विधि से तीन दिवस तक भावना देकर पुट देवे, प्रति पुट में तीन दिवस तक भावना देनी चाहिये। इस प्रकार सात पुट देवे तो उस सत्त्व को पारद शीघ्र ही खा जाता है।।४।।५।।

अभ्रसत्त्व के गर्भद्रावी होने के निमित्त ताम्र और माक्षिक का मेल करे

कमलघनमाक्षिकाणां चूर्णं समभागयोजनमिति ।। तच्छुद्धाभ्रं शीघ्रं चरति रसेन्द्रो द्रवति गर्भे च ।।६।।

(र० चिं०, र० प०)

अर्थ—समभाग एकत्रित किये हुए ताम्र अभ्रक और सोनामक्खी ये पारद में शीघ्र ही मिल जाते हैं और वह पारद शुद्ध अभ्रक को शीघ्र खा जाता है और वह अभ्रक पारद के गर्भ में द्रव भी शीघ्र होता है।।६।।

गगन[3]गर्भद्रुति

अथ गर्भद्रुतिकर्म चारणं गुणवर्द्धनम् ।। कथयामि यथा तस्य रसराजस्य सिद्धिदम् ।।७।। ताप्यसत्त्वाभ्रसत्त्वं च घोषाकृष्टं च ताम्रकम् ।। समभागानि सर्वाणि ध्मापयेत् खदिराग्निा ।।८।। भस्त्रिकाद्वितयेनैव यावदभ्रकशेषकम् ।। तदभ्रसत्त्वं सूतस्य चारणं समभागिकम् ।।९।। अनेनैव प्रकारेण त्रिगुणं जारितं रसे ।। गर्भद्रुतेर्जारणं हि कथितं भिषगुत्तमैः ।।१०।।

(ध० सं०)

अर्थ—गुण के बढ़ानेवाले जिसमें गर्भद्रुति का कर्म विद्यमान है और जो पारद की सिद्धि का दाता है, मैं उस चारण को कहता हूं कि प्रथम स्वर्णमाक्षिक सत्त्व, अभ्रक सत्त्व और घोषा (पीतल) से निकला हुआ ताम्र इन सबको समभाग लेकर खैर की लकड़ी में दो भस्त्राओं (धोंकनियों) से तब तक धोंके कि जब तक सब पदार्थ जलकर केवल अभ्रक सत्त्व मात्र ही शेष रह जाये। उस अभ्र के सत्त्व के पारद का समभाग लेकर चरावे इस प्रकार तिगुना अभ्रक सत्त्व पारद में जारित करे तो उसका उत्तम वैद्यों ने गर्भद्रुति का जारण कहा है।।७–१०।।

१–केवलमभ्रकसत्त्वं ग्रसते यस्मान्न गर्भाद्रुतम् ।। (र० प०)

२–नोट–यहां ऐसा जान पड़ता है कि गर्भद्रुति के निमित्त ताप्यसत्त्व के प्रयोग कहा, अब स्वर्ण और अभ्रकसत्त्व की भी गर्भद्रुति के अर्थ आज्ञा देता है और यह भी कहता है कि हेम के लिये और तार के लिये तार का प्रयोग करे।

१–तप्तखल्व रचयेद्देवि–मेरी सम्मति में निर० र० का पाठ हो तो ऐसा हो 'तप्तखल्वे चरेद्देवि'

२–निपुण को ठीक कर 'रूपेण' बनाया है। पाठ 'रिपुणा' भी मिला है–हस्तलि –स० टी० दोनों में और ऐसे ही ठीक जान पड़ता है।

३–वास्तव में द्रुति के लिये अभ्रकबीज का साधन है।

सम्मति–प्रथम अभ्रक सत्त्व को पारद से चौसठवां हिस्सा लेकर खरल में डाल नींबू और जम्भीरी के रस से मर्दन कर गोला बनावे उसको गोमूत्र तथा कटुतैल के यन्त्र में स्वेदन करे, इस प्रकार करने से अभ्र सत्त्व पारद के गर्भ में पारद रूप हो जाता है, इसी को गर्भद्रुति कहते हैं और अभ्रकसत्त्व, माक्षिक, सत्त्व और घोषाकृष्ट ताम्र इन तीनों को एक घरिया में रखकर धोंकने से जो अभ्रकसत्त्व शेष रहता है वह उत्तम बीज होता है और उस बीज की पारद में उत्तम द्रुति होती है इसलिये ध० स० में इसी को प्रधान माना है॥

निर्मुखजारणोपयोगी और भस्मोपयोगी महाद्रव

नवसारयवक्षारस्फटिकादिभिरेष काचबकयंत्रैः ॥ बहुधा त्यजति स्वसत्त्वं तद्धि महाग्रावकं नाम ॥११॥ तस्मिन्निमग्नममृतं बीजं घनसत्त्वमम्लयोगेन ॥ ग्रसति रसेन्द्रो गर्भे द्रवति दुरापोयमुपदेशः ॥१२॥ उपरसरसलोहान् पत्थरभान्यपि तत्र तत्क्षणमृतानि ॥ पुटभावनसंयोगैर्व्याधिहराणीति सकलशास्त्रार्थः ॥१३॥

(रसमानस)

अर्थ–नौसादर, जवाखार, फिटकरी इनको पानी में घोलकर सत्त्व को निकाले उसे महाद्रव (तेजाब) कहते हैं, उसमें स्थित ताम्र के बीज को अथवा अभ्रक सत्त्व को पारद अम्लयोग से खा जाता है तथा वह बीज और अभ्रक सत्त्व गर्भ में द्रव हो जाता है। यह उपदेश अत्यन्त गुप्तरूप से लिखा है। आगे भस्म लिखते हैं–कठिन कठिन उपरस, रस और धातु इनके पुट देने से ही भस्म हो जाते हैं और पुट भावनाओं से व्याधि के नाश करनेवाले भी होते हैं। यह समस्त शास्त्रों का अर्थ है॥११॥१३॥

सम्मति–इस गर्भद्रुति के प्रकरण में स्वर्ण, चांदी, ताम्र, नाग और वंग इनमें से किसी एक बीज की गर्भद्रुति करना आवश्यक है और स्वर्ण के बीज की गर्भद्रुति करना तो अत्यन्त आवश्यक है, ऐसा सिद्धों ने कहा है॥

स्वर्णगर्भद्रुति कीं आवश्यकता और स्वर्ण द्रुति का समय

अत्र गर्भद्रुतिकर्मणि स्वर्णद्रुतिजारणमावश्यकतया करणीयमिति वक्रोक्त्या प्रोच्यते–

अभ्रक चारणमादौ गर्भद्रुतिचारणं च हेम्नोन्ते ॥ यो जानाति न वादी वृथैव सार्थक्षयं कुरुते ॥१४॥

(र० रा० प०)

अर्थ–इस गर्भद्रुति कर्म में स्वर्ण की द्रुति का जारण अवश्य करना चाहिये, इस बात को वक्रोक्ति कहते हैं कि रसशास्त्र के नहीं जाननेवाला जो वैद्य प्रथम अभ्रकजारण को नहीं जानता है और उसके पश्चात् स्वर्ण की गर्भद्रुति के जारण को नहीं जानता है वह अपने धन को निष्फल ही खर्च करता है इसलिये वैद्य को समझकर काम करना चाहिये॥१४॥

गर्भद्रावी होने के लिये बीजों के संस्कार की क्रिया

शिलया निहतं नागं ताप्यं वा सिंधुना हतम् । ताभ्यां तु मारितं बीजं सूतके द्रवति क्षणात् । शुद्धं सुवर्णं रुप्यं वा बीजमित्यभिधीयते ॥१५॥

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, बृ० यो०, र० रा० प०)

अर्थ–मैनसिल से मारा हुआ नाग तथा सुहागे से भस्म किया हुआ ताप्य (सोनामक्खी) और उन दोनों से सिद्ध किया हुआ जो बीज है वह पारद में शीघ्र द्रव होता है अर्थात् उसकी शीघ्र गर्भद्रुति होती है, शुद्ध स्वर्ण तथा चांदी को बीज कहते हैं॥१५॥

अन्यच्च

बीजानां संस्कारः कर्तव्यस्ताप्यसत्त्वसंयोगात् । तेन द्रवंति गर्भे रसराजस्याम्लवर्गयोगेन ॥१६॥

(र० चिं०, नि० र० रा०, शं०, बृ० यो०)

अर्थ–ताप्यसत्त्व (सोनामक्खी का सत्त्व) के संयोग से समस्त बीजों का संस्कार करना उचित है क्योंकि ऐसा करने से बीज अम्लवर्ग के योग से पारद के गर्भ में ही द्रव होते हैं॥१६॥

द्रुति के लिये स्वर्ण बीज का साधन

अथ स्वर्णजारणयंत्रं बिना द्रुतिकरणे प्रकारांतरमाह–

शुद्धं माक्षिकचूर्णं निर्व्यूढं यच्छत गुणं हेम्नि । तद्धेम चरति सूतो द्रवति च गर्भे रसस्य तुल्यांशम् ॥१७॥

(ध० सं०)

अर्थ–स्वर्णजारण के यंत्र के बिना जिस प्रकार गर्भद्रुति होती है उस प्रकार को कहते हैं। जिस सुवर्ण में सौगुने शुद्ध सोनामक्खी का चूर्ण मिलाया जाता है उस सुवर्ण को पारद समान भाग से चरता है और वह गर्भ में ही द्रव होता है॥१७॥

अन्यच्च

निर्व्यूढं गंधकाश्मशतगुणसंख्यं तथोत्तमे हेम्नि ।
सूते च भवति पिष्टिर्द्रवति हि गर्भे न विस्मयः कार्यः ॥१८॥

(ध० सं०)

अर्थ–उत्तम सुवर्ण में थोड़ा थोड़ा गंधक डालकर अग्नि द्वारा मिलावे तो उस सुवर्ण की पारद के साथ उत्तम पिष्टी होती है और गर्भ में ही द्रुत हो जाता है इसमें सन्देह नहीं है॥१८॥

अन्यच्च

अथवा तालकसत्त्वं शिलाया वा तच्च हेम्नि निर्व्यूढम् ॥
शतगुणमथ मूषायां जरति रसो द्रवति गर्भे च ॥१९॥

(ध० स०)

अर्थ–अथवा हरताल का सत्त्व या मैनसिल का सत्त्व सोने में सौगुना अग्नि द्वारा मिलावे फिर उसको पारद के साथ मिलाकर मूषा में जारण करे तो गर्भद्रुति होगी॥१९॥

अन्यच्च

अथवा शतनिर्व्यूढं रसकवरं शुद्धहेम्नि वरबीजम् ।
जरति रसेन्द्रे शीघ्रं द्रवति च गर्भे न संदेहः ॥२०॥

(ध० सं०)

अर्थ–अथवा सुवर्ण में सौ बार जस्त को मिलावे तो वह उत्तम बीज होता है और वह पारद से शीघ्र ही द्रव हो जाता है॥२०॥

द्रुति के लिये स्वर्ण का महाबीजसाधन

समगर्भद्रुतिकरणं हेम्नो वक्ष्याम्यहं परं योगम् । भ्रामकसस्यकचूर्णं शतनिर्व्यूढं महाबीजम् ॥२१॥ अथास्य बीजवरस्य गर्भद्रुतिकरणप्रकारान्तरं श्लोकत्रयात्ककुलकेनाह–अथवा गंधकधूमं तालकधूमं शिलाह्वरसकस्य ॥ दत्त्वाऽधोमुखमूषां दीर्घतमां खर्परस्यार्द्धे ॥२२॥ ऊर्ध्वे लग्ना पिष्टी सुदृढ़ा तु यथा यथा हि कर्त्तव्या ॥ दत्त्वा खर्परपृष्ठे दैत्येन्द्रं दाहयेत्तदनु ॥२३॥ स्तोकं स्तोकं दत्त्वा कर्षाग्नौ धारयेन्मृदा लिप्ताम् ॥ गर्भे द्रवति हि बीजं म्रियते च तथाधिके दाहे ॥२४॥

(ध० सं०)

अर्थ–दस अंगुल लंबी और डेढ़ अंगुल चौड़ी मूषा बना लेवे फिर समभाग उत्तम बीज सहित पारद की अम्लयोग से पिष्टी बनवावे और सोनामक्खी की मूषा के पेंदे में उस पिष्टी को दृढ़ लगाना चाहिये। तदनतर मिट्टी के खिपड़े में गंधक, हरताल, मैनसिल या खपरिया को थोड़ा थोड़ा डाले और

उस खिपड़े को जलते हुए अंगारों पर रख कर और उसके ऊपर उस मूषा को उलटा मुख कर खड़ी कर दे, इस प्रकार पांच तथा सात बार थोड़ा थोड़ा गंधक आदि डाले और प्रथम रखे हुए गंधकादिकों को निकाल दे, इसके बाद मूषा के मुखकर खिपड़े का टुकड़ा लगाकर और कपरौटी कर निर्धूम कंड़ों की आंच में तपावे, इस प्रकार करने से बीज की गर्भद्रुति होती है और वह बीज जारित होता है। यदि इस मूषा में अग्नि अधिक दी जावेगी तो बीज तथा पारद इन दोनों की भस्म हो जायेगी, इसमें सन्देह नहीं है।।२१–२४।।

द्रुति के निमित्त स्वर्णपत्रों को धूपित करना

लवणं देवीस्वरसस्नुतमहिपत्रं विचूर्णितं शिलया ।। तत्पुटत्रितयात्सुमृतं संस्थापयेदयस्पात्रे ।।२५।।विहिताद्धांगुलनिम्ना स्फुटविकटकटोरिका मुखाधारा ।। तस्योपर्यपि देया कटोरिका द्व्यंगुलात्सेधा ।।२६।। विहितच्छिद्रत्रितया शस्ता चतुरंगुलादूर्ध्वम् । छिद्रेषु खलु शलाका योज्यान्यत्र हेमपात्राणि ।।२७।। संस्थाप्य विधूप्यंते यंत्राधस्तात्प्रदीपयेदग्निम् ।। मधूपोपलेपमात्रात्संति कृष्णानि हेमपत्राणि ।।२८।। तान्यग्नितापितानि च पश्चाद्यंत्रे मृतानि धूमेन ।। पाचितहेमविधानाच्चरति रसेन्द्रो द्रवति गर्भे च ।।२९।।

(ध० सं०)

अर्थ–प्रथम एक उत्तम शिला पर सैंधानोंन रखकर फिर उसको ब्राह्मी के रस से भिगोकर खूब घोटे और उसी शिला पर उस नोंन को तथा अहिपत्र (नागफनी) को मिलाकर पीसे फिर उन दोनों को लोहे के संपुट में रखकर लघुपुट देवे। इस प्रकार तीन पुट देने से लवण की उत्तम भस्म होती है, उस भस्म को फिर ब्राह्मी के रस से भिगोकर ऐसी मूषा बनावे कि जो चार अंगुल ऊँची और जिसके नीचे के मुख पर आध आध अंगुल की परिधि (हद्द) हो और उस परिधि सहित मुख को एक लोहे के पात्र पर रखकर फिर उसमें समभाग सिंग्रफ सहित सोनामक्खी के चूरे को अथवा केवल गंधक को ही डालकर उसके मुख पर एक ऐसी मूषा बनाकर रखे जो कि दो अंगुल उस मूषा के मुख मे भीतर रखी हुई हो और दो अंगुल बाहर खड़ी हो और जिसके मुख पर तीन छिद्र हों और तीनों ही छिद्रों में तीन लोहे की सलाइयां रखी हुई हों और उन पर तपाये हुए स्वर्ण के कंटकवेधी पत्र रखकर ऊपर से दूसरी मूषा से बंद कर देवे। तदनंतर लोहपात्र के नीचे तेज आंच लगावे तो अग्नि के ताप से उठे हुए धुएं से स्वर्ण के पत्र काले रंग के हो जायेंगे। इस प्रकार बार बार इसी क्रिया को करता रहे जब तक कि स्वर्ण के पत्र उत्तमता से मृत न हो जायें (अर्थात् पिसने योग्य न हो जायें) फिर स्वर्ण क्रिया से ग्रास देवे तो पारा उसको शीघ्र चरता है और स्वर्ण भी पारद के गर्भ में शीघ्र द्रव होता है।।२५–२९।।

तारवंगादिगर्भद्रुतिक्रिया

एवं तारं नागं वंगं रसकं१ च सजलगंधकेन लिप्तं केवलगंधकचूर्णधूमेन सुपक्वं च कृत्वा पश्चाद्द्रुतिकर्मणि योजयेदिति–

अत्र स्वर्णमाक्षिकचूर्णो विशेषः पूर्वं रक्तवर्गे माक्षिकं ।
त्रिदिनं भावयित्वा पश्चाद्दरदेन सह संयोज्य धूपो देयः ।।

(ध० सं०)

अर्थ–इसी प्रकार गंधक को पानी से पीसकर चांदी, सीसा, रांग और जसद आदि के पत्रों पर लेप करे। फिर इनको केवल गंधक के धूएँ से पकाकर द्रुतिकर्म के लिये काम में लावे और यहां पर सोनामक्खी के चूर्ण करने में इतनी विशेष बात है कि उस सोनामक्खी के चूर्ण को तीन दिवस तक रक्तवर्ग से भावना देवे। फिर सिंग्रफ के साथ मिलाकर धूप देवे।।

१–रसकं जसदमिति प्रसिद्धम् ।

तारवंगादिगर्भद्रुतिक्रिया

रक्तवर्गो यथा–

दाडिमं किंशुकं चैव बंधूकं च कुसुंभकम् ।। समांजिष्ठो हरिद्राया लाक्षारससमन्वितः ।।३०।। रक्तचन्दनसंयुक्तो रक्तवर्ग उदाहृतः ।।३१।।

अर्थ–अब रक्तवर्ग को कहते हैं कि अनार, टेसू के फूल, बन्धूक (गुलदुपहरिया का फूल), केसर, मंजीठ, हल्दी, लाख का रंग और लाल चंदन इनको रक्तवर्ग कहते हैं।।३०।।३१।।

सुमृतस्य स्वर्णस्य तारस्य नागादेश्च गर्भद्रुतिजारणं च घोषाकृष्टताम्रवत् कर्तव्यमिति बोध्यम् । किं च समभागादिकदरदस्य गंधकस्य च भागः स्वर्णादिसम एव तन्मध्यत एव लेपो धूमश्च देयः ।।

(ध० सं०)

अर्थ–अच्छी प्रकार भस्म किये हुए स्वर्ण चांदी की तथा सीसे आदिकों की गर्भद्रुति का जारण पीतल से निकाले हुए ताम्र की तरह होता है, ऐसा जानना और स्वर्णआदि के समान ही धूप योग्य गंधकादि को ग्रहण करना चाहिये और उसी गंधक में से लेप और धुआं देना चाहिये।

नागबीजसाधन

अथेदानीं यंत्रं विना नागद्रुतिप्रकारमुच्यते रसदरदाभ्रकताप्यं विमलमृतं शुल्बलोहपर्पटिका ।। लुह्यार्कदुग्धपिष्टं कंकुष्ठशिलायुतं नागम् ।।३२।।

(ध० सं०)

अर्थ–अब यंत्र के बिना नागग (सीसे) की गर्भद्रुति के प्रकार को कहते हैं कि पारा, हिंगुल, कृष्णाभ्रक, सोनामक्खी, विमल (उपरस विशेष) और लोहा, तांबा इनको आक के दूध से घोटकर गोला बनावे और इसी तरह कंकुष्ट (हरिताल के तुल्य पीत तथा हरिद्वर्णपाषाणभेद इसको कोई मुर्दासिन भी कहते हैं) और मैनसिल को भी अर्कदुग्ध में घोटकर गोला बनावे। इन आठों को पृथक् पृथक् लघुपुट में सिद्ध करे फिर इन आठों का भाग नाग के समान लेना चाहिये। उस नाग की घोषाकृष्ट तांबे के समान द्रुति होती है।।३२।

वंगबीजसाधन

अभ्रकतालकशंखररससहितं यत्पुनः पुनः पुटितम् ।
विंबाक्षारविमिश्रं वंगं निर्ज्जीवतां याति ।।३३।।

(ध० सं०)

अर्थ–वंग को इमली के क्षार में पीसकर उसके ऊपर नीचे अभ्रक हरिताल, शंख और पारे को रखकर संपुट में रखकर तब तक लघुपुट लगावे कि जब तक वह वंग निर्जीव न हो जाये। फिर उस वंग का घोषाकृष्ट ताम्र की तरह ग्रास देवे तो उसकी गर्भद्रुति होती है।।३३।।

नाग और वंग की गर्भद्रुति

अथ संताननागस्य वंगस्य च द्रुतिप्रसंगात् नागवंगयोः समयोरेकीकृत्य एतदुक्तचिंचाक्षारान्वितस्य मिलितनागवंगयुग्मस्याध ऊर्ध्वं चाभ्रकतालशंख पारदैतच्चतुष्टयं दत्वा । भक्षणार्थमत्यद्भुतगुणाकारणमिलितं नागं वंगं च मारयेत् । युग्मस्य गर्भद्रुतिर्न भवति तथा च वंगं पृथक्पृथगेव वृत्त्यर्थं मारयेदिति द्योतयन्नाह–

युग्मं विधानपुटितं म्रियते निरुत्थतां गतो नागः ।
वंगं च सर्वकर्मसु नियुज्यते तदपि गतजीवम् ।।३४।।

(ध० सं०)

अर्थ–प्रथम समभाग सीसा तथा रांग को गलाकर इमली के क्षार के साथ घोटकर मिलावे। फिर उसके ऊपर नीचे अभ्रक, शंख, पारा, हरिताल को रखकर और उसका संपुट बनाकर लघुसंपुटमें फूंक देवे। इस रीति से जब तक मिले हुए सीसे और राग की निरुत्थ भस्म नहीं हो तब तक पुट लगाता ही जाये तो यह मिलित (जोड़े) की भस्म अद्भुत चमत्कार के करनेवाली

होती है, इसमें कोई संदेह नहीं है और जो द्रुति के लिये सीसे और रांग की भस्म मिलावे तो भिन्न भिन्न पदार्थों की बनावे न कि मिले हुए नाग बंग की भस्म मिलावे क्योंकि मिले हुए पदार्थों की द्रुति नहीं होती है। इस बात को स्पष्ट करने के लिये इस ध० सं०–बनानेवाला कहता है कि जिसको विधिपूर्वक पुट लगाई जाती है, उस युग्म (सीसे और रांग को जोड़ा) की निरुत्थ भस्म हो जाती है और उसको सम्पूर्ण कामों में लाना चाहिये।।३४।।

स्वर्णगर्भद्रुतिक्रिया बिड़योग से

अथ पारदस्य स्वर्णादिधातोश्च तुल्यभागश्च बिड़योगेन करीषाग्नितप्तलोह खल्वे जंबीरनीरेण पिष्टीं कृत्वा पुनर्बिडेन तां पिष्टीं परितो लिप्य दीर्घमूषायंत्रेण त्रिवारतापनेन स्वर्णादीनां रत्नानां च केचिद्गर्भद्रुतिं कुर्वंति अतस्तत्प्रकारमाह–

गंधको हरितालश्च कृष्णांजनशिलाजतु । हिंगुलं रसकं चैव वैक्रान्तं स्वर्णमाक्षिकम् ।।३५।। लवणत्रयं क्षारयुग्मं जंबीररसगैरिके । सर्वे समानभागाः स्युर्माक्षिकं च द्विभागकम् ।।३६।। एषां श्लक्ष्णं कृतं चूर्णं बिड़ इत्युच्यते बुधैः । गर्भद्रुतौ च बीजानां द्रावणे जारणे मतः ।।३७।।

(ध० सं०)

अर्थ–तप्तखल्व यंत्र में पारद के समान स्वर्णादि धातुओं को डालकर जंभीरी के रस से घोट पिष्टी बनावे और उस पिष्टी को चारों तरफ से बिड़ से लपेटकर एक लम्बी मूषा में रखकर तीन बार तपावे फिर उस सुवर्ण आदि धातु तथा रत्नों की गर्भद्रुति करते हैं, ऐसा कुछ आदमियों का कथन है। उस क्रिया को विधिपूर्वक कहते है–प्रथम बिड़ के प्रकार को कहते हैं–कि गंधक, हरताल, काला सुमा, शिलाजीत, सिंगरफ, वैक्रान्त (लालरंग का हीरा), वैक्रान्त के अभाव में वज्रसूमिका चूर्ण, सोनामक्खी, सैंधानोंन, साम्हर, सोंचरनोंन, जवाखार, सज्जीखार, आक का दूध, जंभीरी का रस और गेहूं इनको महीन पीसकर चूर्ण बनावे तो उसको बिड़ कहते हैं। इस बिड़ की दवाओं में सब दवा बराबर लेना चाहिये, परन्तु सोनामक्खी के दो भाग लेना उचित है। यह बिड़ बीजों के गर्भद्रुति तथा जारण में हित है।।३५–३७।।

सम्मति–पूर्वोक्त रीति से बिड़ को बनाकर एक कांच के बासन में रख ले फिर जिस बीज का जारण करना हो उसको रक्तवर्ग में बुझाव देकर उसको पारद के समान ग्रहण करे। तदनंतर तप्तखल्व में डालकर जंभीरी के रस से बीज पारद तथा बिड़ को घोटकर पिष्टी बनावे और उस पिष्टी पर बिड़ को लपेटकर एक अंधमूषा में रखे और उसके मुख को बंदकर कपरौटी करे। फिर उसको करसी (कंडो के छोटे टुकड़े) की आंच में तपावे, इस प्रकार तीन बार करने पर सुवर्ण आदि धातु तथा हीरा वगैरः रत्न गर्भ में ही द्रुत और जारित भी होते हैं।।

हीरे की गर्भद्रुति करने के लिये कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना चाहिए कि हीरों को रक्तवर्ग में सौ बार भावना देवे तो वह हीरा समभाग पारद के गर्भ में द्रव तथा जारित होता है। यदि पिछत्तर बार भावित किया पच्चीस बार भावित हो तो चतुर्थ भाग से द्रुत तथा जारित होता है। यदि पिछत्तरबार भावित किया गया हो तो तो पौन भाग से, पचास बार भावित हो तो आधे भाग से और पच्चीस बार भावित हो तो चतुर्थ भाग से द्रुत तथा जारित होता है परन्तु सोनामक्खी के सत्त्व का सुवर्ण के साथ चौथाई आधा या समभाग किसी का चारण करने से पारद की ताराकृष्ट संज्ञा होती है। उस ताराकृष्ट को यदि चांदी के पत्रों पर लगाकर अग्नि में तपावे तो पूर्णवर्ण का सुवर्ण होता है यह रहस्य छिपाने योग्य है।

गर्भद्रुतिपरीक्षा

रससमतां यदि जातो वस्त्राद्गलितोऽधिकश्च तुलनायाम् ।
ग्रासो द्रुतः स गर्भे दत्त्वाऽसौ जीर्यते क्षिप्रम् ।।३८।।

(ध० सं०)

अर्थ–ग्रास दिया हुआ पदार्थ जब पारद के समान रूपवाला हो जाय तब चौलर कपड़े में छान लेवे फिर उस छने हुए पारे को तराजू में रखकर तोले। यदि पूर्व लिये हुए पारे से उस छने हुए पारे का वजन अधिक हो तो ऐसा समझना चाहिये कि गर्भद्रुति हो गई है। फिर उसको तप्तखल्व में अम्लवर्ग द्वारा घोटे तो उसका शीघ्र जारण होता है।।३८।।

द्रुत ग्रास की निक्षेपकरण क्रिया जारण

इति गदितां गर्भद्रुतिमभिषवयोगेन चाम्लवर्गेण । स्वेदनविधिना ज्ञात्वा मृदितां तप्ते तु खल्वतले ।।३९।।

(ध० सं०)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनु–
बाबूनिरंजनप्रसाद संकलितायां रसराजसंहितायां
गर्भद्रुतिप्रकरणं नाम षोडशोऽध्यायः ।।१६।।

अर्थ–इस प्रकार अम्लवर्ग या सिरके के साथ जो गर्भद्रुति का प्रकार लिखा है उसको स्वेनविधि से जानकर फिर तप्तखल्व में घोटे तो बीज का जारण होता है।।३९।।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां
रसराजसंहिताया भाषाटीकायां गर्भद्रुतिप्रकरणं
नाम षोडशोऽध्यायः ।।१६।।

बाह्यद्रुतिसंस्काराध्यायः १७

बाह्यद्रुतिलक्षण

बहिरेव द्रुतीकृत्य घनसत्त्वादिकं खलु ।। जारणाय रसेन्द्रस्य सा बाह्यद्रुतिरुच्यते ।।१।।

(र० र० स०)

अर्थ–इस प्रकार अभ्रक जारण के लिये कठिन पदार्थ और अभ्रक सत्त्वादि की बाहर की ही द्रुति करे बस इसी को बाह्यद्रुति कहते हैं।।१।।

बाह्यद्रुतिफल

बाह्यद्रुतयो वक्ष्यन्ते । एतास्तु केवलमारोटमेव मिलितानि बंधनंति फलमस्य कल्पप्रमितमायुः । किं पूर्वोक्तग्रासक्रमजारिताः पूर्वोक्तफलप्रदा भवन्ति।।२।।

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०,)

अर्थ–अब बाह्यद्रुतियों को कहते हैं। आरोट से मिली हुई ये द्रुतियां पारद को बद्ध करती हैं और एक कल्पपर्यन्त जीवित रहना इस बद्धपारद के भक्षण का फल है और यदि पूर्वोक्त ग्रास जारित पारद को द्रुति से बद्ध किया जावे तो उत्तम फल होता है।।२।।

द्रुति की दुःसाध्यता

द्रुतयोऽपि न सिध्यन्ति शास्त्रे दृष्टा अपि ध्रुवम् । बिना शंभोः प्रसादेन न सिध्यन्ति कदाचन ।।३।।

(र० रा० शं०)

अर्थ–शास्त्र में देखी हुई भी द्रुतियें श्रीमहादेवजी की कृपा के बिना सिद्ध नहीं होती है।।३।।

अन्यच्च

यद्यपि बाह्यद्रुतिः रसनिबंधेषु प्रोक्ता तथाऽपि पार्वतीश्वरकृपां विना कलौ न

सिध्यति अत एव रसकर्मविशारदैः सम्यक्तया न कथिता यन्मया श्रीशंकरकृपया रससिद्धानां प्रसादतः श्रीगुरुणामनुकंपया च किंचित् विज्ञातं बाह्यद्रुतिकर्म तदिह प्रोच्यते तदपि तेषां कृपां विना न निर्विघ्नं समाप्तिं गच्छति ।।४।।

(ध० सं०)

अर्थ–यद्यपि अनेक रसग्रंथो में बाह्यद्रुति का वर्णन किया गया है तथापि कलियुग में श्रीमहादेवजी की कृपा के बिना वह द्रुति सिद्ध नहीं होती है इसलिये चतुर रसवादियों ने उन द्रुतियों का वर्णन नहीं किया और मैंने श्रीमहादेवजी, रससिद्ध तथा श्रीगुरुदेवजी, इनकी कृपा से जो कुछ बाह्यद्रुति का कर्म जाना है उसको मैं यहां पर कहता हूं, वह काम भी उन गुरुदेवों की कृपा के बिना समाप्त नहीं होगा।।४।।

अभ्रकबाह्यद्रुतिक्रिया

अर्थात् अभ्रकसत्त्वस्य बारंवारं सत्त्वनिष्कासनं द्रुतिः चतुःसेटकमितं श्वेताभ्रकं चूर्णितं कृत्वा मूलिकारसेनाष्टयामं भावयित्वा पुनः सतुषं कृत्वोर्णवस्त्रे बद्ध्वा तज्जलपात्रे त्रिदिनं निमग्नं कृत्वा धान्याभ्रं कुर्यात् । ततो धान्याभ्रकतुल्यं सावणनाम्ना प्रसिद्धं वस्त्रप्रक्षालनकं तत्र मेलयित्वा मर्दयेत् । ततस्तदभ्रकं लोहपात्रे क्षिप्त्वा व्रणदातेजाब इतिनाम्ना । प्रसिद्धं द्रवरूपं चतुःसेटकमितं तत्र दत्त्वा मंदाग्निना पाचयेत् पादावशिष्टे द्रवे सति अग्नेस्तदुत्तार्य प्रत्येकं षट्त्रिंशटंकमितं गुडं घृतं क्षुद्रमीनं च शर्करा नवटंका मधु सप्तदशटंकमितं गुग्गुलु अष्टादशटंकतिं विशुष्कपलमष्टादशटंकमितं तथा एतत्सप्तकं कुट्टयित्वा तदाभ्रके क्षिपेत् ततः पाषाणकुंडे घोटयित्वा पिंडत्रयं कृत्वा संशोष्य अग्निधान्या पिंडत्रयं कोकिलामध्यस्थं कृत्वा भस्त्रया सह ध्मापनेनाभ्रकसत्त्वं फटिकातुल्याभं निःसरति ततः पुनस्तत्पूर्वोक्तगुडादि कसप्तकं कुट्टयित्वा पूर्वं निर्गताभ्रकसत्त्वेन सह घोटयित्वा पुनः पिंडत्रयं कृत्वा संशोष्य पूर्ववत् ध्मापनेन पुनरभ्रकसत्त्वं रंगाभं निःसरति ततः पुनस्तत्पूर्वोक्तगुडादिसप्तकं कुट्टयित्वा वंगाभाभ्रकसत्त्वेन सह घोटयित्वा पिंडत्रयं कृत्वा संशोष्य पूर्ववत् ध्मापनेन दधिनिभमग्रकसत्त्वं सदार्द्रमेव तिष्ठति इयमभ्रकबाह्यद्रुतिः सूतं विना या द्रुतिः कथ्यते एषाऽति धन्या न वाच्या कस्यचित् ।।५।।

(ध० सं०)

अर्थ–चार सेर सफेद अभ्रक का चूरा करके आठ प्रहर मूली के रस में भिगोये और उसमें धान के तुष मिलाकर फिर कमल के टुकड़े में बांध कर जल भरी हुई नाद में तीन दिवस तक डूबा रखे। फिर बाहर निकाले तदनन्तर कमल के टुकड़ों में भरे हुए अभ्रक को उस पानी में मले तो वह अभ्रक चूर्ण चूर्ण होकर जल में आ जावेगा, तब पानी को नितारकर नीचे जमे हुए अभ्रक को निकाल लेवे, इसको धान्याभ्रक कहते हैं। तब धान्याभ्रक के तुल्य कपड़े धोने का साबुन लेकर दोनों को मिला देवे फिर उसको लोहे के पात्र में रखकर ऊपर से चार सेर तेजाब डालकर मंदाग्नि से पकावे इसके बाद अग्नि से उतार लेवें। फिर छत्तीस टंक गुड़, छत्तीस टंक घी, छोटी मछली, नौ टंक शक्कर, सत्रह टंक शहद, अठारह टंक गूगल, अठारह टंक सूखा हुआ मांस, इन सातों को कूटकर अभ्रक में मिला देवे फिर पत्थर की कुण्डी में घोटकर तीन पिंड बनाकर कोयलों से भरी अँगीठी में रखकर धोंकनी से धोंके तो फिटकरी के समान अभ्रक का सत्त्व निलता है तदनंतर पूर्वोक्त गुड़ादि सात पदार्थों को घोट कर फिर उसको पहले निकले हुए अभ्रक सत्त्व के साथ घोटकर तीन पिंड बनाकर और सुखाकर पहले के समान अग्नि में धोंके तो अभ्रक सत्त्व रांग के समान निकलता है। फिर उसी अभ्रकसत्त्व में कूटे हुए गुड़ आदि सात पदार्थों को मिलाकर तीन गोले बनावे और उनको सुखाकर पहले के समान कोयले की अँगीठी में धोंके तो दही के समान अभ्रक सत्त्व निकलता है और यह हमेशा गीला ही रहता है इसको अभ्रक की बाह्यद्रुति कहते हैं। जो पारद के बिना अभ्रक की द्रुति की जाती हैं वह धन्य और गुप्त रखनी चाहिये।।५।।

विचार–एक दिन मूली के रस में सफेद अभ्रक को भिजोकर कम्बल की थैली में भरे, यदि अभ्रक सेर भर हो तो उसमें पाव भर धान की भूसी मिलाकर तीन दिन रात परात में भिगोवे, चौथे दिन उसी परात में उस थैली को मले। ऐसा करने से अभ्रक के छोटे छोटे टुकड़े होकर पानी में आवें तब नितार पानी को निकाल डाले, पानी के भीतर जो धान्याभ्रक है उसको ले और उसकी बराबर साबुन मिलाकर एक खरल में घोटे पश्चात् कढाई में डाल साबुन का तेजाब २ सेर डाले। तीनों को मुंदाग्नि से जलावे, जब आधसेर तेजाब बाकी रहे तब उतार ले और फिर इसमें ३६ टंक शहद, १७ टंक छोटी मछली, ३६ टंक खर्गोश का मांस, ९ टंक खांड, ३६ टंक गुड़, १८ टंक गूगल, १८ टंक अंडी का चोवा, इन सबको कूट पीसकर मिलावे और तीन गोले बना सुखावे, पश्चात् तीनों को अँगीठी में रख ऊपर कोयला दे, वंकनाल धोंकनी से धोंके। अभ्रक का सत्त्व ज्वार की सदृश निकाल उसमें पूर्वोक्त मसाला डाल एक खरगोश मारकर डाले फिर सबको घोटकर गोला बनावे फिर पूर्वोक्त रीति से दूसरी बार रांग के समान निकले अभ्रकसत्त्व निकाले ले। इसी प्रकार तीसरा मसाला डालकर बंकनाल से धोंक दही का द्रवीभूत सत्त्व निकाल लेवे। तीसरी बार का निकाला हुआ सत्त्व सर्वदा पतला रहता है, जमता नहीं है इसको बाह्यद्रुति कहते हैं। यह पारे के सम्बन्ध बिना द्रवीभूत है, ऐसी संमति है।

अभ्रबाह्यद्रुति की क्रिया तथा बद्धत्व

(अभ्रकसत्त्व को वज्रवल्ली के योग से मूषा में धोंकने से द्रुति)

बाह्यद्रुतिविधानं च कथ्यते गुरुमार्गतः । अभ्रकसत्त्वं हि मूषायां वज्रवल्लीरसेन हि ।।६।। सौवर्चलेन सध्मातं रसरूपं प्रजायते । अभ्रद्रुतेश्च सूतस्य समांशैर्मेलिन कृते ।।७।। तेन बद्धत्वमायाति बाह्यद्रुतिरियं मता । गुरोः प्रसादात्सततं महाभैरववंदनात् ।। शिवयोरर्चनदेव सिध्यति बाह्यगा द्रुतिः ।।८।।

(ध० सं०)

अर्थ–अब बाह्यद्रुति के विधान को गुरुजी के बताये हुए मार्ग से कहता हूं–अभ्रकसत्व में सांचरनोंन डालकर हडसंकरी के रस से घोट मूषा में डाल कर धोंके तो अभ्रक के सत्त्व की द्रुति होगी। उस द्रुति के तुल्य पारद को लेकर घोटे तो पारद बद्ध होता है, इसको बाह्यद्रुति कहते हैं यह बाह्यद्रुति गुरसेवा महाभैरव की पूजा तथा श्रीमहादेव और पार्वतीजी की कृपा से सिद्ध होती है।।६–८।।

अभ्रकद्रुति

स्वरसेन वज्रवल्लयाः पिष्टं सौवर्चलान्वितं गगनम् ।।
पक्वं शरावसम्पुटे बहुवारं भवति रसरूपम् ।।९।।

(र० रा० सुं०)

अर्थ–अभ्रक में सांचरनोंन डालकर वज्रवल्ली (हडसंघी) के रस में भावना देवे फिर शरावसंपुट में रखकर गजपुट में फूंके, इस प्रकार कई बार पुट देने से अभ्रक की द्रुति हो जायेगी।।९।।

अभ्रकसत्त्व की चूर्णपरिवाप से द्रुति

निजरसपरिभावनेन कंचुकिकंदोत्थचूर्णपरिवापात् ।
द्रुतिमास्तेऽभ्रकसत्त्वं तथैव सर्वाणि लोहानि ।।१०।।

(र० रा० सुं०)

अर्थ–क्षीर का कंचुकी के कंद को अपने रस की भावना देकर चूर्ण कर लेवे फिर अभ्रकसत्त्व को तपाकर उस चूर्ण का बुरका (प्रक्षेप) देवे तो

१–पाठान्तर–घी ३६ टंक, मधु १७ टंक, खांड ९ टंक, गुड़ ३६ टंक, गूगल १८ टंक, भेड़केरोम १८ अंक, छोटी मछली सूखी ३६ टंक, एक खरहा जिवह किया हुआ।

अभ्रक सत्त्व की प्रवृत्ति द्रुति होती है॥१०॥

अभ्रकसत्त्व को कांजी के सौ पुट देने और हर बार घरिया में औटाने से द्रुति

चौ०–खाटी कांजी तंदुलनीर । अभ्रक का सतु खरै वीर ॥
एक याम जो अतिमरदेय । पुनि घरिया में दे औटेय ॥
ऐसी सौ पुट देय बनाय । तबही सत्त द्रुत है जाय ॥

(रससागर)

अभ्रक[1] महलूल करने की तरकीब

नौआदीगर–अभ्रक को किसी जर्फ (पात्र) में रखकर कांजी में तीन रोज तक तर करे। महलूल होकर पानी की तरह हो जायेगी। कांजी बनाने की तरकीब यह है कि चावल को सिरकः तुर्श में या दही के पानी में खूब पकावे जिसमें गलकर उनका पेट फट जाय, बाद उसको घोट कर छान ले और शीशे में चालीस दिन तक धूप में रहने दे। निहायत उमदा सिरकः कीमियाई हो जायेगा।

(सुफहा अकलीमियां १०१)

श्वेत धान्याभ्रक को भावना दे तीन बार अंधमूषा में धोंकने से द्रुति

श्वेताभ्रकं च संचूर्ण्य गोमूत्रेण तु भावयेत् ॥ कदलीफलसंयुक्तं भावयेत्तद्विचक्षणः ॥११॥ धमेदधाख्यमूषायां त्रिवारं च पुनः पुनः ॥ द्रुतिर्भवति वज्रस्य नात्र कार्या विचारणा ॥ अनेनैव प्रकारेण द्रुतिं कुर्यात्सुशोभनाम् ॥१२॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ–सफेद अभ्रक का चूर्ण कर गोमूत्र की भावना देवे और उसको पंडित केले के कंदक के रस से भावना देवे तदनंतर अंधमूषा में रख दो तीन बार खूब धोंके तो अभ्रक की द्रुति हो जायेगी। इसमें विचार करना उचित नही है॥११॥१२॥

अभ्रद्रुति धान्याभ्रक को भावित कर अंधमूषा में धोंकने से द्रुति

अभ्रकं नरतैलेन भावितं च सुचूर्णितम् ॥
गोपेन्द्रलेपिता मूषा धमनाद्द्रुतिमाप्नुयात् ॥१३॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ–धान्याभ्र को नरमूत्र (शोरा) से भावना देकर चूर्ण करे। फिर बीरबहूटियो को पीसकर लेप की हुई मूषा में रखकर अग्नि में धोके तो अभ्रक की द्रुति होती है॥१३॥

अभ्रकद्रुति–अंधमूषा में

ककोड़ीफलचूर्णं तु मित्रपंचकसंयुतम् । तत्तुल्यं चैव धान्याभ्रमम्लैर्मर्द्यं दिनावधि ॥१४॥ अंधमूषागतं ध्मातं तद्द्रुतिर्भवति ध्रुवम् ॥१५॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ–बांझककोड़े के फल का चूर्ण और शहद, घी, गूगल, सुहागा इनके तुल्य धान्याभ्र को मिलाकर तीन दिन तक पीसे फिर उसको अंधमूषा में रखकर कोयलों में धोंके तो अभ्रक की पारद के समान तरलद्रुति होती है॥१४॥१५॥

धान्याभ्र को अंधमूषा में धोंकने से द्रुति

श्याम बार मानस के लेय । तिलीतेलसों बाँटे देय ॥
अब्यों भैंसिको गोबर आनि । ताको रस ले वस्तर छानि ॥
गोबररस धनाब पुनि तेल । सानि एक घरिया में मेलि ॥
अंधमूसि में धवैं सुजान् । एक द्रुरत सिद्ध विधिजान ॥

(रस–सागर)

और

लेहु सिलाजित करमा अस्त । मेष सिंग करि दूजी बस्त ॥
ये औषधि धनाबकरि एक । अंधमूसिमें यहै विवेक ॥
निकसे द्रुरति जु संशय नहीं । रसरतनाकरते यह कही ॥

(रसरत्नाकर)

और भी

गोवतरें दूजै रिसुकाय । वक्कल गुठली दूब बटाय ॥
मत भीजै धुरही को लाय । बहुरि सुकैकै पुनि बटवाय ॥
सौ पुट देय सुखै सौ बार । तब यह औषधि जानै सार ॥
समाधान औषधिको एक । औंधि मूसि में यहै विवेक ॥
कै डिढ़ मूसि धवत जो रहै । निकसै द्रुरत पंच कवि कहै ॥

(रस–सागर)

द्रुरत अभ्रक स्याह बजरियः इन्द्रायन व रोगन पलास (उर्दू)

ताजा इन्द्रायन (तमह) बहुत से लेकर उसको रेजः रेजः कर ले और एक देग में डालकर थोड़ी सी आंच देकर निकाल ले और इन्हें कूटकर पानी निकाल लें। इस पानी में चार प्रहर तक अभ्रक स्याह धनाव को पकावें और निकालकर खुश्क कर लें फिर एक लकड़ी दरख्त पलास (ढाक) की जो लंबाई में एक हाथ के बराबर हो ले और इसमें सूराख करके अबरक मजकूर को इसमें डाल दें। अजजाय मुस्तखरजः से खूब मजबूती से बंद करें और एक गढे में उपलों, लकड़ी ढाक और कोयलों में बंद आंच दे। सर्द होने पर अभ्रक को उसमें निकाल लें और चार प्रहर तक रोगन तुखम पलास में खरल करके दो शकोरों (कूजः गिली) में बंद और मजबूत गिलेहिकमत करके सख्त आंच दे पारा उसमें निकल आवेगा। तौजीह इस तरह पारा निकालने के लिये कम अज कम आध पाव अभ्रक पर अमल करना चाहिये क्योंकि इस अभ्रक से कुमूस न इस तरकीब से पारा बहुत निकलता है। इन्द्रायन (तमः) से पानी बहुत कम निकलता है और बाजवक्त निकलता ही नहीं इस वास्ते इस तरकीव का जिकर किया गया है जिसके जरिये पानी न देनेवाली बूटियों से पानी निकाला जाता है तमों (इन्द्रायन) को इस तरह आंच देने से इसके माई अजजाय किसी कदर असली सूरत अख्तियार कर लेते हैं। पस बहुत ज्यादह आंच नहीं देनी चाहिये कि वह माई अजजाय अवखरात की सूरत में इससे निकली ही जावे और फिर इनसे बिलकुल पानी निकले ही नहीं बल्कि इस कदर आंच काफी है जिससे इसके माई अजजाइ अपने असली सूरत पर आ सकें और जिस वक्त इनसे अवखरात निकलने शुरु होवें उस वक्त उन्हें उतार लेना चाहिये और काटकर इनसे पानी हासिल करना चाहिये। ढाक की लकड़ी में सूराख करके इनमें अभ्रक के भरने का जिकर है मगर इस अमर को जाहर नहीं किया गया कि किस सिमत से और कितना गहरा सूराख निकालना चाहिये। पस आम कायदे को मद नजर रखे हुए इसमें सूराख लंबाई की तरफ से निकालना चाहिये और निस्फ से इस कदर ज्यादः गहरा हो कि अगर इसमें निस्फ अबरक अगर भरा जावे तो निस्फ की बराबर हो जावे पस जब अभ्रक इसमें भर चूके और जो बूरा वगैरे इस सूराख के निकालते वक्त इससे निकला है वही इस बाकी मादा सूराक के खला में भर देना चाहिये अजजाइ मुस्तखरजः से यही बूरा मुराद है और बहुत रजों से इसे भरना चाहिये बल्कि मुनासिब है कि इसे कूट कूटकर भरे।

१–नोट–यह द्रुति नही है पानी है (मे० स०)।

आग देने के बाद लकड़ी कोयल्ले की सूरत में होगी जो राख होने के करीब हो पस इनमें से अहतियात से अभ्रक निकाल लेना चाहिये जो सुर्ख रंग लिये हुए होगा। आग का अंदाजः कोई लिखा नहीं गया सिर्फ एक गढ़े में आग देना लिखा है चूंकि हिन्दुओं का आम कायदः है कि अगर किसी जगह इस किस्म की आग देनी हो और उसका वजन न लिखा हो तो समझना चाहिये कि वह गजपुट की आग है और गजपुट की आग आम तअबीर के लिहाज से इस गढ़े की आग को कहते हैं। जो एक हाथ लंबा चौड़ा और गहरा हो इस वास्ते इस जगह गजपुट की आग ही देनी चाहिये चुनाचः इस अमर की तो जीह महलूम अलइल्म में भी कर दही गई है और इसीके मुताबिक कामयाबशुदः अलहावने भी आग दी है रोगनतुख्मपलास के बीजों को जो कोबकर पातालजंत्र (शीशीमअकूस) के जरिये रोगन निकाल लेना चाहिये और उसमें उस अभ्रक को खरल करके दो मिट्टी के हमबार लवकूजों में बंद करके और बहुत मजबूत गिलेहिकमत करके आंच देना चाहिये असलवियाज (कापी) सिर्फ नम्र्म आंच का जिकर है मगर इसकी तौजीह नहीं कि किस तरह की आंच। आंच गढे की ही होनी चाहिये और खूब तेज हो और कम अजकमः छः पहर आंच दी जावे इस तरह कि अगर पहली आंच खतम हो जावे तो और ईंधन डाल दें सिर्फ उपलों की मुनासिब नहीं उपलों लकड़ी और कोलयों खिल्तमिल्तशुदः देनी चाहिये पारा अतराफकूजः में या कूजः के निचले हिस्से में चमटा होगा। सफेद स्याही मायल रंग होगा अहतियात से रख लें। इस अमल में सिर्फ दो बूटियों से काम लिया गया है, एक इन्द्रायन (नमः है) इसके पानी में खरल करने और ढाक की लकड़ी में बंद करके आग देने से मतलब यह है कि ऐसे दर्जः तक पहुंचाया जावे और उसकी असल कसाफत को दूर करके रूह को लताफत बखशी जावे। यह अमर हासिल करने के बाद रोगन तुख्मपलास से खरल किया गया है कि पारा दूसरे अजजाइ अबरक से अलहदा होने से काबिल हो जावे। इसलिये इस वक्त करल करनें में जिस कदर मुबालग किया जावे उसी कदर कम है। अगर्चः साह् बेनुसखे ने चार पहर का काफी लिखा है, मगर जरूरत इस अमर की है कि इस अजकम आठ पहर खरल किया जावे ताकि आंच अगर कम भी कर दी जावे तो पारा अलहदा हो जावे और दूसरा ज्यादः मिकदार में निकले। पस, जिस कदर खरल इस रोगन में ज्यादः होगा और उसी कदर इस पारे के निकलने में आसानी होगी जियादः भी निकलेगा। खरल बहरहाल मुतवातिर चाहिये। यह काफी नहीं कि दवा खरल में डाले रखें। ख्वाह खरल कम हो जरूरत मुतवातिर खरल की है और जिस कदर जियादः हो उतना ही कम है कुछ इस खरल के फेल से कुछ इस तेल के. इसमें नाफिज और इससे यकजान होने की वजह से और खरल की हरारत से अभ्रक मे पारे के मुतफर्रिक अजजाइ किसी कदर मुजतमः हो जाते हैं और पारा आग पर अबरक के दीगर अजजाइ से अलहदा हो जाता है। अलावह इसके इसमें खरल करने से यह भी मनशा है कि पारा पूरी तरह कायमुल्नार हो जावे। और अगर कुछ इसमें खामी बाकी है तो वह जाती रहे क्योंकि रोगन तुख्मपलास व जातखुद आम पारे को कायमुल्नार करने की खासियत रखता है और इस गरज के वास्ते मुसल्लिमः बूटी है। पस. मेरे दोस्त! अगर कुछ काम करना चाहते हैं तो फौरन इसके दरपै हो जावे यकीनी अमल है और तजरुबः शुदः है। इस पारे को आगे काम में लाने की तरकीब बिलकुल आसान है और यकीन है कि जो असहाब इस पारे को निकाल लेंगे वह बहुत जल्द मंजिल मकसुद तक पहुंच जावेंगे। अगली तरकीब फिर कभी अर्ज होगी जो असल किताब में मौजूद है (एडीटर)

(सुफहा ६५५, अखबारकीमियां लाहौर २४/१/१९०९)

अभ्रक के महलूल करने की तरकीब (उर्दू) धौंकने से द्रुति

अबरक को अव्वल बोतः में रखकर धौंके, ताकि आग की तरह सुर्ख हो जाय। बाद उसके हलजूं पीसकर उस पर छिड़के, हल हो जावेगी। मुतरज्जिम हलजूं हिन्दी में शंख को कहते हैं जो बड़ी कौड़ी की एक किस्म है (सुफहा अकलीमियाँ १०१)

धान्याभ्रक को केली की जड़ में रख उपलों की आंच से द्रुति

धान्याभ्रकं च गोमांसमभ्रपदं च सैंधवम् ॥ स्नुह्यर्कपयसा द्रावैर्मुनिजैर्मर्दयेत्त्र्यहम् ॥१६॥ तद्गोलं कदलीकंदे क्षिप्त्वा बाह्ये मृदा लिपेत् ॥ करीषाग्नौ त्र्यहं पाच्यं द्रुतिर्भवति निर्मला ॥१७॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ–धान्याभ्रक और इसी की बराबर गोमांस अभ्रक का चतुर्थांश सैंधव इनको थूहर, आक तथा अगस्तिया रस में तीन दिन घोटकर गोला बनाये। केला के कंद में रखकर कपरौटी कर आने कंडो की तीन दिन तक आंच देवे तो अभ्रकद्रुति उत्तम होती है॥१६॥१७॥

धान्याभ्रक को चाकीयंत्र से द्रुति

और जुगति यह सुनियो लोय । जैसी गुरुग्रंथन में होय ॥
जइलै गाडि कसौंदी यान । ये ताको रस लीजै छान ॥
पुनि धनाव दीजै पुट सात । सुकै सुकै बाँटिये सुसात ॥
चाकीजंत्र पचाय जु लेय । होय दुरति नाहीं संदेह ॥

(र० रत्ना०, रससागर)

और

पुनि अभ्रक अरु सूरन लेय । दोऊ खररि कलश में देय ॥
चाकीयंत्र देय ता आगि । निकसै दुरति करमगति लागि ॥

(र० रत्ना०, रससागर)

धान्याभ्र को घड़े में औटाने से द्रुति

लेहु मँगाय सरी चौराई । धूरे ऊपर होत बुबाई ॥
सो रँधिसकै जिन हांडी मांय । ऐसे चरवा देइ चढाय ॥
काटि चौरई नीर पखारि । दै धनाव ऊपर पल चारि ॥
पारी मुंह दै लेहु पचाय । चारि पहर ज्यों आगि बराय ॥
जो शुभ करम होय कवि कहै । दुरति निकसिकै हांडी रहै ॥

(रससागर)

सीमावतलक की द्रुति (फारसी)

सीमाव अजतलक व तलकराव पारस अवरक गोयन्द विगरिन्द सुबूएफर्द गिली व बऽबपुरकुनद आँसुबूएरा दरदेग गिली हिन्द व बालाए दहन सुबूए पारचः बरबन्दन्द व बालाइई पारचः वर्ग कोंच बगुस्तरन्द व बालाइई वर्ग अवरकहिन्द व बालाइ अवरकनीज वर्ग कौंच गुजारन्द पस आँदगैरा बेरदगदान हिन्द व आतिशदिहन्द तमाम सीमाव अन्दरून सुबूए पर आव फरूख्वाहन्द चकीद । (सफा ५ किताब मुजरीबात अकबरी)

अभ्रक की स्वेदन यंत्र से द्रुति

अभ्रक से पारा निकालने के लिये मिट्टी का छोटा बासन ले और उसे पानी से भरकर एक बड़े बासन में रखे और उस छोटे बासन के मुख पर कपड़ा बांध सफेद अभ्रक ले, कोंच के पत्ते ऊपर नीचे रख बीच में अभ्रक रखे और बड़े बासन को चूल्हे पर रख आग देने से पारा स्वयं निकलकर पानावाले पात्र में गिर जायेगा।। (अखबार भारतरक्षक)

१–गालिबनसत लेना चाहिये।

अभ्रकद्रुति कोंचपत्र से

जुलनी बूटी पंजाब में होती है जो हाथ में लगने से जलन पैदा करती है। एक हांडी में नीचे अभ्रक रखकर ऊपर जुलनी भरकर आंच देने से अभ्रक की द्रुति हो जाती है। (कश्मीरयात्रा में श्रीनगरनिवासी नव्वाबखांसे प्राप्त)

धान्याभ्रक की दोलायंत्र से द्रुति

पीडर जल कुम्ही को आनि । अमलबेत अरु हींग बखानि ॥
जवाखार साजी जु सुहाग । एक एक पल ले सब भाग ॥
अरु लोनी जुचना की आन । एक पल लीजै जु सुजान ॥
बहुरि धनाव आठ पल लेय । औषधि सहित खरल में देय ॥
देदे खारि खरलिये इसे । चारि पहर ज्यों लागे जिसे ॥
पुनि दो बर वस्तर में मेलि । कांजी सों कटाह भरि ठेलि ॥
जंत्रडोलि का लेय पचाय । आठ पहर जो आगि बराय ॥
गुरुप्रसाद ते कविजन कहै । रसरतनाकर को मत यहै ॥
जो यह जुगति करेगो गुनी । द्रुरति होय ग्रन्थन में सुनी ॥
मनसिल गंधक अरु हरताल । इह विधि दुरति करै करतार ॥

(रससागर)

धान्याभ्र की पृथ्वी में गाढ़कर द्रुति

अगस्तिपत्रनिर्यासैर्मर्दितं धान्यकाभ्रकम् । सूरणोदरमध्ये तु निक्षिप्तं लेपितं मृदा ॥ गोष्ठभूमौ खनित्वा तु हस्तमात्रे हि पूरितम् ॥१८॥ मासान्निष्कासितं तत्तु जायते पारदोत्तमम् । स तेन मर्दितः सूतो बधमायाति तत्क्षणात् । भक्षणात्कुरुते तत्तु रुग्जरामृत्युनाशनम् ॥१९॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ–अगस्ति वृक्ष (हथिया वृक्ष) के पत्तों के रस से धान्याभ्र को घोटकर गोला बनाय बीच में गढ़ा किये हुए जमीकन्द में गाड़ देवे। उस पर कपरौटी करे। फिर गायों के बांधने की जगह एक हाथ गहरा गढ़ा खोदकर अभ्रक भरे हुए जमीकन्द को उस गढ़े में डालकर ऊपर से मिट्टी भर देवें और एक मास के पीछे निकाले तो अभ्रक की पारद के समान उत्तम द्रुति होती है और उसके साथ मर्दन करने से पारद उसी क्षण बंधक को प्राप्त होता है और भक्षण करने से रोग बुढ़ापा और मृत्यु को नाश करता है।।१८।।१९।।

धान्याभ्र की धूप से द्रुति

उरद सेर ले सेर धनावि । दोऊ थैली भरिजै दाबि ॥
थैली डोलाजंत्र पचाइ । चारि पहर ज्यों आगि बराइ ॥
बहुरि खररि पानी में लेइ । अभ्रक में अगिया रस देइ ॥
रसु धनावलै सीसी भरै । दै मुंह रुई घास में धरै ॥
द्वै दिन लों राखिये प्रमाना । दुरत होइ जो सुनो सुजाना ॥

(र० रत्ना०, रससागर)

और

पैठौ एक बड़ो सो आनि । मुँह की जैना रेत नवानि ॥
मांहि बीस पल देइ धनाव । ताकी चकती ता मुख दाब ॥
ताहि नादि में धरै बनाय । ऊपर नादि और औंधाय ।
मांझ राखिये डांडौ तिसौ । लटकै नहीं कुम्हेडौ जिसौ ॥
दिन चारीस धरचो सो रहै । धूप रहे यों कविजन कहै ॥
सो सरिहै देहु जिन डारि । निकसै दुरति सु लेहु पखारि ॥
गगन दुरत दुर्लभ संसार । प्रगट कहै यों सैदपहार ॥

(र० रत्ना०, रससागर)

वार्त्तिक

अभ्रक श्वेत वा श्याम के पत्र लेकर खट्टे अनार में खोतरकै भरदेणे और बन्द कर देणा फिर धूप में रख छोड़ने हल द्रवित हो जाणगे । मक्खन जैसा हो जायेगा।

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

और

बीज बकाइन भांडे मेल । जंत्र पताल काढि जै तेल ॥
लेप गगन पत्रनिकों करै । तैले पत्र कठौती धरै ॥
छाहं सुकै ते छप्पन जाम । पुनि चौबीस पहर धरि घाम ॥
एक द्रुरति निकसै यह रीति । ग्रीष्म ऋतु सूरज की प्रीति ।

(रससागर)

और भी

अभ्रक के जु पत्र कै धरै । पुनि बर दूध लेप दिन करै ॥
पुनि पुनि सो लै दीजै घाम । भयो मैनसों सीझे काम ॥

(र० रत्ना०, रससागर)

अन्यच्च

शुद्धकृष्णाभ्रपत्राणि पीलूतैलेन लेपयेत् । घर्मे शोष्याणि सप्ताहं लिप्त्वालिप्त्वा पुनः पुनः ॥२०॥ मर्दितं चाम्लवर्गेण तद्वच्छोष्याणि चाथ वै । स्नुह्यर्कार्जुनवह्नीनां कटुतुंब्या समाहरेत् ॥२१॥ क्षार क्षारत्रयं चैतदष्टकं चूर्णितं समम् ॥ वज्रकंदं क्षीरकंदं बृहतीकंटकारिका ॥२२॥ वनवृंताकमेतेषां द्रवैर्भाव्यं दिनत्रयम् ॥ अनेकक्षारकल्केन पूर्वपत्राणि लेपयेत् ॥२३॥ आतपे कांस्यपात्रे च स्थालीलेप्यं पुनः पुनः ।
एवं दिनत्रयं कुर्याद् द्रुतिर्भवति निर्मला ॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ–शुद्ध काले अभ्रक के पत्रों पर पीलू के तैल का लेप कर धूप में सुखावे। इस प्रकार सात भावना देवे। फिर अम्लवर्ग में सात बार घोटकर घाम में सुखावे, इसके बाद थूहर, आक, अर्जुन, चित्रक, कडवीतूवी तथा सज्जीखार, जवाखार और सुहागा इन आठ चीजों को समान भाग लेकर वज्रकंद, क्षीरकंद, बड़ी कटेरी जंगलीबेंगन इनके रस में पूर्वोक्त क्षारादि आठ चीजों के चूर्ण को घोटे, पीछे इस लेप को अभ्रक के पूर्वोक्त क्षारादि ठ चीजों के चूर्ण को घोटे, पीछे इस लेप को अभ्रक के पत्रों पर चढाय सुखाये। इस प्रकार तीन लेप करे, कांसे की थाली में डालकर सुखावे तो पारद की द्रुति अवश्य होती है।।२०।२४।।

अन्यच्च

उमादंडविमर्देन गगनं द्रवति स्फुटम् ॥

(काकचंडेश्वर, टो० नं०)

अर्थ–उमा (हल्दी या अलमी) की लकड़ी या पंचाग के रस से अभ्रक को भावना देकर लीद में गाड़ देवे तो अभ्रक की द्रुति होगी ॥

और

अभ्रकपत्र अग्नि में तपा के लोटा सज्ज के पाणी में तीन बार बुझावे, फिर महीन कर धोकर कपड़छान करे फिर इस अभ्रक को द्रुतिकार्य में लगावे॥

और भी

कलीचूना १ सेर, सज्जीखरी १ सेर, दोनों पीसकर सज्जी पहले अग्नि में तपा

लेवे फि चौसठ सेर पानी में म्वावे।[1] दोनों चीजें तीन दिन भिगोवे (भिजा रखें) बाद नितार लेवे। उसमें उतनी ही दोनों चीजें फिर पावे फिर नितारै एवं आठ बार करै। यह हल्ल तितना होवे उतना नौसादर जल पा देवे। इससे अभ्रक खरल करै। दो पहर फिर तशबिया देवे, एवं आठ बार खरल और तशोया देवे। मोमिया होवेगा फिर शीशी में पाकर लिद्द में दब्बछड्डै दो महिने फिर निकालकर नरमभूभल में रखे, शीशी के मुख पर नमदे की टाकी रखे, टाकी भीज जावै तो निचोड़े भिजणें रहे तो हल (द्रुति) हो गया।।

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अभ्रकद्रुति और द्रुतियोग से चन्द्रोदय
अभ्रक से पारद निष्कासन

पुराना सिरका ऊख का सेर चारि लेइ एक पाव पुराणा चाँवल मिहीं धोइकर उस सिरका में डारै। दोनोंकूं एकही हांडी में डारिके पकाव। करछली से चलाया करै, जब ताईं वह चांवल पक पकके हल्ल हो जायं तब सबकूं कपरा में छानि लेइ। खूदा दूर करके एक सीसी में डारे तेह सीसी को मुँह मूंदि के इकईस दिन अथवा पचास दिन ताईं लीद में गाड़िराखै, सब अभ्रक को पारो होइ जाय पाछे बाकी जो होइ अभ्रक करि पानी तह को पारा करिबेंकू उही सीसीकूं घाम में रोज राखै जब ताईं सब पानी सूखि के पारा होइ एहीभांति अभ्रक को पारा निकासिये।

अभ्रक के पारा को जो कोऊ कहै काइमुल्लार सो मिथ्या एहींभांति है मैं निकासा है और आगे परख राखा है, आग पर नहीं ठहरात है। इस अभ्रक कर पारा पैसा दोइ भर ले और सोधा गंधक पैसा दोइ भर लेइ और सिंग्रफ के पारा से चन्द्रोदय बना होइ सोभी पैसा दोइ भर लेह तीन ऊकूं सिरका से एक घड़ी घोटे छोटी सीसी में डारि के आंच छह पह मध्यम देइ, हांडी के तरे छेद न करै, चारि आंगुर पहिले ऊंची बारू डारे, हांडी मेंते पर सीसी राखे फिर हांडी के मुँह ताईं बारुडारे तब आंच दे, सीसी का मुँह खुला रहे, आधीरत्ती लोंग और आधी रत्ती इह चन्द्रोदय खाइ भूख बहुत होइ, इसमें संदेह नाही अनुभूत है, एही भांति कर चन्द्रोदय दुर्लभ है जब अभ्रक कर पारा होइ तब यह सिद्ध होइ सो पारा अभ्रक का केऊ निकासै नाहीं जानत। यद्यपि निकासिबे की तरह बहुत हैं परन्तु इह तरह भली है और तरह में संदेह है। इस तरह से संदेह नाहीं, खामखाँ पारा निकास्या करहि–इस तरह से यह चन्द्रोदय सब लेइ, इसमें एक मासा सोनेकर तब तक डारै, एक मासा नौसादर डारै, एक घड़ी तीनों को सुखा घोटै, दोइ पियाला में राखि संधि लेप करि अढाई घरी सिरकी करी आंच देइ, इसी भाँति छह आंच देइ, हर बेर सोने कर तब तक मासा भरि और हर बेर नौसादर मासा भरि डारि के तिस उपरांत इही रसकूं एक सीसी में डारै तिह में पैसा चारि भरी, सिरका तुंड डारै। वह सिरका जो चालीस दिनमें सिद्ध भया सोई डारै वह सीसी घाम में इक्कीस दिन ताईं राखि छोडै, जब हल्ल होइ के पानी होइ जाय कुछ तरै छट तले न रहै तब भौरेकेते आंच पर धरै तब पानी सूखिजाय डरासा होइ तब एक तोला तांबा टघराइ कै एक रत्ती यह डोर सोना होइ यह क्रिया शेख इनाइतुल्ला हरसाल की है, तिस में अभ्रक का पारा निकासना अनुभूत है और उस पारा का चन्द्रोदय भी अनुभूत है, सोना अनुभूत नाहीं।

(आ० प्र० पं० कुं० १७/१२/१०)

हल अबरक से सीमाब कायमुल्नार करने की तरकीब (उर्दू)

वाजः हो कि सीमाब अबरक से जो निकलता है वह खुद ही कायमुल्नार होता है और उसको सीमाब बाजारी के साथ मुआबसबद यानी घीग्वार का मिलाकर महक करे तो उसको भी कायमुल्नार (अग्निस्थायी) करता है और मिस (तांबा) पर तरह करने से उसको भी चांदी करता है। (सुफहा ६१ किताब अलजवाहर)

अभ्रक द्रुति के फवायद (उर्दू)

अर्थ–मुतरिज्जिम सीमाव अबरक स्याह को सीमाव बाजारी के साथ मुनक्किद करने से अकसीर आजमतिला (सोना) की और सीमाव अबरक सफेद को सीमाव बाजारी में मुनक्किद करने से अकसीर आजमनुकरा (चांदी) की होती है। तरकीव इनकी साखी नं० ५७ व ६० में मुन्दर्ज हैं, व साखी नं० ३० व नं० ५४ लगायत ६० में मुख्तलिफ नुसखे अभ्रक से सीमाव निकालने के हैं। (सुफहा अकलीमियां ७४ ३१/१/११)

अभ्रकद्रुति की शकल खवास और फवायद (उर्दू)

सीमाव-अभ्रक हिन्दी में उसको द्रुत कहते हैं, इसकी अलामत यह है कि सीमाव बाजारी से जियादह गाढ़ा होता है और उसमें सफेदी स्याही माइल होती है लेकिन बिल्कुल स्याह नहीं होता। सीमाव उरफी से यकजात मुश्किल से होता है और सीमाव उरफी अलहदा और सीमाव अबरक अलहदा रहता है मगर सीमाव अबरक का कायमुल्नार होता है और जब सीमाव उरफी से यकजात हो जावे तो उसको भी कायमुल्नार (अग्निस्थायी) कर देता है और ऐसा सीमाव यकजान शुद्ध, अकसीर आजम होता है। (सुफहा अकलीमियाँ ७४)

अभ्रक को महलूल करने की तरकीब (उर्दू)
(गालिबनद्रुति समझा है)

अभ्रक को महबूल यानी धनाव करने के मेंढ़क गोश्त में खरल करे जर्रः जर्रः हो जायँगे बादहू साफ करने निकाल ले और लोहे के जर्फ में पीसे, हल हो जायेगी। अगर उस अबरक को पानी में फिटकरी और नौसादर के सहक करके तसईद करे तो सुर्खरंग की मसअद होगी। (सुफहा अकलीगियाँ १०१)

हल अभ्रक की तरकीव (उर्दू)

औराक अबरक तीन तोला लेकर छः तोले शीरगाड जर्द ताजः में जोहनोज गर्म हो असामाश करे कि रेजः रेजः मैंदे की तरह हो जावे बाद इसके बदस्तूर मजकूर चाह हल में रखकर बाद महलूल होने के काम में लावे। (सुफहा किताब अलजवाहर ६२)

अभ्रकद्रुति–अव्वल छूने के पानी में घोट पुट दे कुश्ता तैय्यार करके बादहू चाहहल में (फारसी)

दरहल करदन तलक कि दरीं किताव दरवाजे अअमल दरकार बुवद बिलजरूर गुफ्तह शवद अगर्चे ई अमल बातो अअसतफाना ई फकीर तजरुमा आवुर्दः बुदायवूदः आँस्त कि बियारन्द तलक् स्याह महलूब कि दरदाव दोयम गुप्त शुदः वावकली खगीर कुनन्द बदरकूजः करदः सरश बगिल हिकमत इस्तवार कुनन्द चूँ खुश्क शवद दरे कूजः कूजःगराँ बबादरवेठी चूनापंजा निहन्द कि आतिश तेज वाशद वहतर चुनी तखरार नुमायन्द ता मुकल्ल से गरदद मानिंद सफेदाज चूंबर जुबान अबशवद सकल जाहर न गरदद व विदानस्त मुकल्लिसः शुदः दरशीशः करदः सरशः अस्तवार कुनन्द दौरे हलनिहन्द ताविस्त व हफ्त रोज कि दर सदरगुफ्तः शुदः व वाद अजमुद्दत वर आवुर्दः दरकूजः फकाजे सरशराव काफूर विगीरन्द व जंजीर आहन दर तजूर करम मुअल्लिक बियावेजन्द तमाम शव व सवाहश बर आनन्द वजरमान खुदा ताला व मिसल व मानन्द चूँ शीर सफेद व रोशन कि अज सीमावकानी फर्क[1] न तवा करदद हरजा क हलं तलक जिकर रफ्तः वाशद आंजाकार फरमायन्द। (सुफहा २१–२२ किताब जवाहर उउलसिनात)

१–मँगवावे।

१–अगर बजाइ चूने के एमोनिया से काम लिया जावे तो।

अबरक को महलूल करने और उससे सीमाव निकालने की तरकीब चाह हल से द्रुति (उर्दू)

अव्वल अभ्रक को धनाव करे इस तरह कि अभ्रक को गरम करके कूट डाले बादहू उसको थैली में भर दे और उसके बराबर छुहारे की गुठली या बिल्लौर के रेजे डालकर पानी से भिगो दें और जोर जोर से खूब हाथ से मले, दही की तरह सफेद सफेद जर्रात निकलेंगे जो पानी के ऊपर तैरते रहें उनको फेंक दे और जो अबरक तहनशीन हो जावे उसको खुश्क करे और बन्द कूजे में रखकर शीश:गरों या कुम्हारों की मिट्टी में रख दे, तीन रोज के बाद निकाले। यह अबरक के जर्रात सफेदह की तरह होंगे उनको खरल में सहक करे और शीशे में रखकर मुँह बन्द करके सत्ताईस दिन तक चाहहल में बतरीक मारूफ रखे और हर तीसरे दिन लीद ताज: बदलता रहे। बाद सत्ताईस दिन के निकाल कर दूसरे कूजे में रखकर उसका मुँह काफूर से मसरूद करके लोहे के तार में बांधकर तनूर में नानबाई के रात भर लटका दे। सुबह को निकाल ले, अल्लह तअला के फजल से करम से कूज: मजकूर में दूध सफेद की तरह सीमाव रोशन और साफ बरामद होगा और असली सीमाव से कोई फर्क नहीं होगा। जहां तहां अभ्रक महलूल का जिकर इस किताव में है, उसी से काम निकाले। (सुफहा ६० किताब अलजवाहर)

बीरबहूटी को महलूल करने की तरकीब (उर्दू)

बीरबहूटी को एक जर्फ में रखे और नौसादर घिसकर उस पर छिड़क दे। सुर्ख पानी हो जायेगी। यह हल सीमाव को दूसरे चन्द एमाल के बाद मुनक्किद करता है और बाद नुसख: जात कीमिया में काम आता है—सुफहा अकलीमियां १०२)

स्वर्णद्रुति

चूर्णं सुरेन्द्रगोपानां देवदालीफलद्रवैः ।
भावितं सदृशं भस्म करोति जलवद्द्रुतिम् ॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ—बीरबहूटियों के चूर्ण को देवदाली के फलों के रस से भावना देवे फिर उसकी सुवर्णभस्म में भावना देवे फिरउस भावना दी हुई स्वर्ण भस्म को घरिया में रखकर धोंके तो सुवर्ण की द्रुति होती है।।२५।।

अन्यच्च

मंडूकास्थिवसाटंकहयलालेन्द्रगोपकैः ।
प्रतिवापेन कनकं सुचिरं तिष्ठति द्रवम् ॥२६॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ—मेडकी की हड्डी तथा वसा, सुहागा, घोड़े के मुख की लार और बीरबहूटी इनका चूर्ण बनावे फिर स्वर्ण को गलाकर उसमें पूर्वोक्त चूर्ण का बुरका देवे तो स्वर्ण की द्रुति होती है।।२६।।

सोने और रूपे की द्रुति

शंतधा नरमूत्रेण भावयेद्देवदालिकाम् ।
तच्चूर्णावापमात्रेण द्रुतिः स्यात्स्वर्णतारयोः ॥२७॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ—देवदाली (बन्दाल) को सौ बार नरमूत्र (सोरा) की भावना देकर चूर्ण बना लेवे फिर सुवर्ण तथा चांदी में से जिसको द्रुति करना हो उसको गलाकर पूर्वोक्त चूर्ण का बुरका देवे तो वह धातु पादर के समान द्रव होता है।।२७।।

लोहद्रावण

तीक्ष्णचूर्णं तु सप्ताहं पक्त्वा धात्रीफलद्रवैः । लोलितं भावयेद् घर्मे क्षीरकंदद्रवैः पुनः ॥२८॥ सप्ताहं भावितं सम्यक् त्रावसंपुटसके ततः । धमितं द्रवतां याति चिरं तिष्ठति सूतवत् ॥२९॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ—शुद्ध लोहे के चूर्ण को आमले के रस में सात दिन पकाकर घाम में सुखा लेवे फिर क्षीरकन्द के रस में सात दिन भिगोकर घाम में सुखाकर मूषा में रखे फिर अग्नि में रखकर धोंके तो वह बहुत दिनों तक पारद के समान द्रवरूप होता है।।२८।।२९।।

अन्यच्च

देवदाल्या रसैर्भाव्यं गंधकं दिनसप्तकम् ।
तेन प्रवापमात्रेण लोहास्तिष्ठंति सूतवत् ॥३०॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ—देवदाली के फल के रस से गंधक को सात भावना देकर पूर्ण करे फिर जिस लोहे (धातु) की द्रुति बनानी हो उसको गलाकर उसमें पूर्वोक्त भावना दिये हुए गंधक के चूर्ण की बुरकी देवे तो वह धातु पारद के समान रसरूप होकर ठहर जायेगा।।३०।।

अन्यच्च

तीक्ष्णमारणयोगेन कांतमारणमिष्यते ।
शुद्धिश्च तादृशी ज्ञेया स्वसत्त्वस्य तथैव हि ॥३१॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ—जिस प्रकार तीक्ष्ण (फौलाद) का मारण कहा है उसी प्रकार कान्त लोहे का भी मारण जानना चाहिये और फौलाद के ही तुल्य शुद्धि तथा सत्त्वपातन की विधि भी जाननी चाहिये।।३१।।

लोहद्रुतिक्रियानंतर बुद्धक्रिया

त्रिटंकमभ्रसत्त्वजारितपारदमष्टसंस्कारैः संस्कृतपारदं वा त्रीणि[1] खल्वे मर्दयेत्, एकीभूते सति पश्चात् काचकुप्यां मृद्वस्त्रसुलिप्तायां तं सूतं क्षिप्त्वा कोकिलाग्नौ तापयेत् तेन सूतो बद्धो भवति तं बद्धसूतं टंकैकं द्राविते रंगे सेटकमिते क्षिपेत् तद्रंगं टंकमितं सेटकमिते द्रावितताम्रे क्षिपेत् तत्ताम्रं सेटकद्रावितघोषे क्षिपेत् तत्सेटकघोषं पूर्णवर्णसुवर्णं भवति विद्याभाग्यवशात्फलतीत्यलम् ॥३२॥

(ध० सं०)

अर्थ—तीन टंक अभ्रकसत्त्वद्रुति, तीन टंक लोहसत्त्वद्रुति और तीन टंक शुद्ध पारा इन तीनों को खरल में डालकर घोटे जब भलीभांति घुट जाय तब घरिया में रखकर धोंके तो पारा बद्ध होता है। एक सेर गले हुए रांग में एकटक उस बद्ध पारद को डाले और उस एक टंक रांग को गले हुए एक सेर तांबे में डाले और उसमें एक टंक तांबे को गले हुए पीतल में डाल देवे तो वह पीतल स्वर्ण होता है। यह बात विद्या और भाग्य के वश से होती है।।३२।।

लोहद्रुतिक्रिया

अत्रादौ तीक्ष्णलोहखंडानि मधुशैवलक्षारटंकणैः प्रत्येकं समांशकैः परिलिप्य दृढमूषायां तानि निक्षिप्याष्टघटीमितं कोकिलाग्नौ भस्त्रिकया मंदमंदं ध्मापयेत्। ततः स्वांगशीतानि ज्ञात्वा तीक्ष्णलोहमयरेत्यारेतितं कृत्वा तन्मध्यचतुर्विंशतिटंकमितं तीक्ष्णचूर्णं त्रिटंकसैंधवलवणं च खल्वे निंबूरसेन मर्दयेत् यदि गाढं भवेत्तदातितप्तजलं तत्र खल्वे क्षिप्त्वा घोलयेत् ततस्तत्र तीक्ष्णचूर्णे त्रिटंकं नवसादरं क्षिपेत् शीते सति जलं निःसारयेत् एवं त्रिवारं क्षालयित्वा निंबूरसेन मर्दयेत् ततो गोलकं कृत्वा काचमयपात्रे धृत्वा आतपे प्रहरद्वयं शोषयेत् ततः काचपात्राद्गोलं निष्कास्य पुनः खल्वे क्षिप्त्वा

---

[1]—त्रीणि पारदद्रुति, लोहद्रुति, अभ्रद्रुति (यह निश्चय ही है भाषा पुस्तको में)

चूर्णत्रिटंकनवसादरं दत्त्वा निंबूरसेन मर्दयित्वा गोलं कृत्वा काचपात्रे धृत्वा पुनः प्रहरत्रयं शोषयेत् । ततः पुनस्तद्गोलं खल्वे कृत्वा सचूर्णं तत्र त्रिटंकनवसादरं त्रिटंकहिंगुलं च क्षिप्त्वा निंबरसेन संमर्द्य गाढीभूतं पुनः काचपात्रे धृत्वा दाडिमाम्लफलरसैः काचपात्रं पूरयित्वा मुखमाच्छाद्य रहसि मासमेकं स्थापयेत् परन्तु अम्लदाडिमफलरसं स्वल्पं स्वल्पं प्रतिदिनं क्षेपणीयं लोहं परिमग्नं यथा स्यात्तथा, ततस्तल्लोहं पारदवद्द्रवभूतं सत्तिष्ठतीति लोहवाह्यद्रुतिः सिद्धा । इति लोहवाह्यद्रुतिः तथा चातिरहस्तरमप्रकाश्यं द्विजदेवभक्तजनेषु पुण्यकर्मतत्परब्राह्मणेषु मत्सरेर्ष्यादंभलोभहीनेषु जितेन्द्रिय वर्गेषु ईश्वराज्ञया देयम् । यत्कर्म तन्मयात्रोक्तं तेन श्रीसांबः प्रीयताम् ।।३३।।

(ध० सं०)

अर्थ—प्रथम शहद, संखिया और सुहागा इन तीनों को समभाग लेकर पीस लेवे फिर उससे फौलाद के टुकड़ों पर लेपकर एक बड़ी घरिया में रख पिघलने तक धीरे धीरे कोयलों की आंच में धोंके। शीतल होने पर चौवीस टंक उसमें से निकालकर रेत से रितवा लेवे फिर तीन टंक निमक डालकर नींबू के रस से घोटे और घोटते घोटते जब गाढ़ा हो जाय तो गरम पानी डालकर घोल देवे और ठंडा होने पर उस पानी को निकाल देवे फिर उसमें ३ टंक नौसादर डालकर गरम पानी से घोटे। शीतल होने पर पानी निकाल लेवे। इस प्रकार तीन बार धोवे फिर निम्बू के रस से घोटकर गोला बनाकर कांच के पात्र में रख घाम में दो प्रहर तक सुखावे फिर कांच के पात्र से गोला को निकालकर उसमें तीन टंक नौसादर डाल निम्बू के रस से घोटे तदनंतर गोला बनाकर कांच के पात्र में रख घाम में दोपहर तक सुखावे फिर उसको पीसकर तीन टंक नौसादर और तीन टंक शिंगरफ डालकर निंबू के रस में घोटे। जब सूख जाये तब गोला बनाकर और कांच के पात्र में खट्टे अनार के रस से उस प्याले को भर देवे और उसके मुख को भी बंद कर एक मास तक एकान्त में रखे परन्तु प्रतिदिन उस प्याले में थोड़ा थोड़ा खट्टे अनार का रस डालता रहे कि जिससे वह गोला रस में डूबा हुआ हो तो वह लोहा पारद के समान द्रव होकर रहता है। यह लेख अत्यन्त रहस्य अर्थात् छुपाने योग्य है इसको उत्तम मनुष्यों के लिये बतावे।।३३।।

ताम्रद्रुति

लवणक्षारमूत्राणि क्षाराश्चौषधसंभवाः । एषां क्षारसमस्तेषामौषधीकंद–संभवाः ।।३४।। यच्चान्यद्द्रावकं कल्पफलत्रयकटुत्रयम् । कुलत्थक्वाथतोयं च सर्वं मृद्वग्निना पचेत् ।।३५।। गालयेद्वस्त्रयोगेन पुनः पाकं च कारयेत् । तेनैव भावयेच्चैवं शुद्धं शुल्बस्य चूर्णकम् ।।३६।। एकविंशतिवारांश्च भावयित्वा विशोषयेत् । लादिमध्ये तू भूगर्भे धान्यराशौ च भास्करे ।।३७।। सप्ताहं धारयेत्तं तु दोलायां चैव स्वेदयेत् । एकविंशदिने जाते शुल्बस्येव द्रुतिर्भवेत् ।। द्रुतिर्भवति शुल्बस्य रसरूपा च निर्मला ।।३८।।

(र० रा० सुं०)

अर्थ—सब प्रकार के नोंन, सम्पूर्ण मूत्रों के खार, औपधियों के खार और इन सबके समान अनेक प्रकार के कन्दों के खार और द्रवकारक पदार्थ त्रिफला, त्रिकुटा, इन सबको कुलथी के काढे में मंदाग्नि से पचावे। पीछे वस्त्र में छानकर पक्व करे, जब गाढ़ा हो जाय तब शुद्ध तांबे के चूर्ण में भावना देवे, ऐसे २१ बार पुट देकर सुखा लेवे पीछे लीद में, धरती में, धानों के ढेर में और धूप में सात सात दिन रखकर पूर्वोक्त दोलायन्त्र में स्वेदन करे, ऐसे इक्कीस दिन करने से ताम्र की पारद के समान निर्मल द्रुति होती है।।३४–३८।।

हल सुरब व अबरक (उर्दू)

तरकीब यह है कि दस हिस्सा सुरब महलूल जिसको आब सज्जी में हल किया हो और पांच हिस्सा तलक स्याह जिसको सज्जी की चाशनी देकर गुदाज किया हो, दोनों अज जाय को इकट्ठा करके आबसज्जी[1] डाल डालकर सहकवलेग करे कि खूब दोनों आमेज होकर एक जात हो जावें बादहू मोटी गजीके कपड़ें में डालकर जवान और ताकतदार आदमी जोर जोर से निचोड़े कि साफ होकर निकल जावे अल्लाह के फजल से सीमाव बहार आवेगा और गिरह असरब की खुल जावेगी। इस सीमाव मसनई और मअदनी सीमाव से कोई फर्क नहीं। हर काम में आता है और रोशन व नूरानी होता है। अगर मुरवारीद जर्द को इसमें मलें तो मनव्वर करता है (सुफ़हा ५१ किताब अलजवाहर)

सिक्के से पारा बनाना

हरताल वर की आला किस्म चार तोले, शोरा कलमी चार तोले, चूना आवनारसीदः चार तोले, इन सबको इस कदर पानी में भिगोकर धूप में रख दे कि पानी चार अंगुल ऊँचा रहे, तीन चार रोज की धूप में जबकि इस कदर हरारत बढ़ जावे कि पर मुर्ग को वह पानी जला देवे तब पानी को मुकत्तर करे और सिक्के को दस पन्द्रह दफे गलाकर उसमें गोता दे। जब सिक्के से किसी कदर हुबाव से निकलने लगे तब एक चीनी की रकाबी में हवा के सामने रख दे, थोड़ी देर में सिक्के की गिरह खुल जावेगी और मिसल सीमाव के लरजा हो जावेगा। यह सीमाव कायमुल्नार होगा। आग पर रखने से फरार न होगा। (अखबार अलकीमियाँ १ अक्टूबर सन् १९०६)

अफसीर अहसाद व अहसाम सुरख व बंग के हलकरने यानी पारा बनाने की तरकीब

जरनज ३ तोला, शोरा कलमी ३ तोला और खार ३ तोला, चूनाकली ३ तोला, गन्धक आँवलासार ३ तोले। इन सबको जुदागानः बारीक पीसकर एककदः चीनी में डालकर इस कदर पानी दाखिल करें कि अदबियात से पांच अंगुल तक ऊंचा रहे तीन चार रोज तक तेज धूप में रखें जब इस कदर हिद्दत पैदा हो जाय कि परे मुर्ग डालने से सोख्त हो जाता है मुकत्तर, लेकर सुरब व कलई हम वजन गलाकर मुकत्तर मजकूर में बुझा देवें। जब पच्चीस गोतः तक नौबत पहुंचे फिर एक चीनी की रकाबी में डालकर हवा में रख दे। पांच चार मिनट के बाद वह सुरब व कलई सीमाव हो जायेगा। असल सीमाव और इसमें कुछ फर्क न होगा। यह मनसई सीमाव २ तोले मुतहर्रिक कायमुल्नार है और बाजारी सीमाव आग पर से फरार हो जाता है। बस अगर फर्क है तो इसी कदर है अंजावाद इस मसनूई सीमाव के चम्पा के फूलों में खरल करे। थोड़ीदेर बाद पारा बस्तः हो जायगा।हर चहार चार तोला को कूट पीस कर अकद मजकूर के जरुवाला देकर चार सेर आंच रेशमान दें। कुश्ता बरंग सफेद होगा। यह कुश्ता बड़ा अजीब व गरीब है। इस कुश्ते की चन्दही खुराक से बे औलाद के बफजलहू तअला औलाद नरीनः हो जाती है। (सुफ़हा ८ व ९ अखबार किताब अलकीमियाँ २/२/११)

सिक्के के सीमान का कुश्ता (उर्दू)

दो गज तूल में मोटी सी लकड़ी पलास की लेकर उसके सर पर इस कदर खफीर करे कि जिससे एक सेर हल्दी समा सके। एक तोला सीमाव के नीचे ऊपर हल्दी एक सेर देकर इसी चकमें बंद करके और फिर उसको खूब गिले हिकमत करके दो मन पाचक दस्ती की आंच दे। जब सर्द हो जावे तो

१–आवसज्जी से मुराद सज्जी का तेजाब है जो अङ्गरेजी दूकानाते से कशीद किया हुआ मिलता है।

निकाल ले। सीमाव सिगुफ्तः शुदः बरामद होगा। (सुफहा १४ अखबार अलकीमियां १/१०/१९०६)

संगजराहत द्रुति

संगजराहत पाहन होय । अजा छीरसों बांटो सोय ॥
बहुरि छिरहटाको पुट देय । एक पहर जो खरर करें ॥
पुनि संपुट तामेके मेलि । आगि पहर द्वै दीजै ठेलि ॥
चूल्हे ऊपर ना चढ़ै। तामैं धरिकै कविजन कढै॥
इनकी दुरति होई इह रीति । जानें करि सतगुरु की प्रीति ॥

(रससागर)

सप्तधातुद्रावण

पीतपंडूकगर्ते तू चूर्णितं टंकणं क्षि त् । रुद्ध्वा भांडे क्षि द् भूमौ त्रिसप्ताहं समुद्धरेत् ॥३९॥ तत्ससस्तं विचूर्ण्याथ द्रुते लोहे प्रवापयेत् । तिष्ठंति रसरूपाणि सर्वलोहानि नान्यथा ॥४०॥

(र०.रा० सुं०)

अर्थ–पीले मेड़क के पेट में सुहागे का चूर्ण भर एक पात्र में रखकर मुख बंद कर देवे। फिर धरती में २१ दिन तक गाड़ने के बाद निकालकर चूर्ण बना रखे, तदनंतर जिस लोहे को (धातु को) द्रव करना हो उसको गलाकर उसमें पहले बनाये हुए चूर्ण को डाले तो वह लोह पानी के समान पतला होकर रह जाता है॥३९॥४०॥

लोहद्रावकारक देवदाली गन्धक

देवदालीरसो गंध पाषाणेन समन्वितम् ।
द्रावयेत्सर्वलोहानि पारदस्यापि बंधकृत् ॥४१॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–बन्दाल के रस से गंधक को सौ बार द्रावित करे तो वह चूर्ण समस्त धातुओं को द्रव करता है और पारद का बांधनेवाला होता है॥४१॥

सत्त्वद्रावक

देवदालीरसां गृह्य श्वेतसिद्धार्थसंयुतम् । रिंगणीयासमायुक्तं गुटिकां कारयेद् बुधः ॥ द्रावयेत्सर्वसत्त्वानि पारदं चैव शुद्धयति ॥४२॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–सफेद सरसों, कटेरी की जड़, इन दोनों को बंदाल के रस में घोटकर गोली बनावे फिर जिस सत्त्व को जारण करना हो उसको अग्नि में धोंकते धोंकते तेज हो जाने पर उन गोलियों को डाले तो सब उच्चसत्त्व हो जाते हैं॥४२॥

हरितालद्रुति

हरतारै जु पांच पल लेय । बकरी छीर सात पुट देय ॥
पानी अरंडी तिनपुट देय । तीनों समान खरर करेय ॥
तीनों पुट दै ग्वारिके सही । यहै खररि की संख्या कही ॥
नेकसो दुरत हरतार जु रहै । सीसी घालि पंच कवि कहै ॥
यहै खररि की संख्या कहै । नैक साधु हरतार जु रहै ॥
मुद्रा करि पुनि दीजै आगि । आठौ प्रहर अहर्निश जागि ॥
दे मत अगिनि जुसे लेइ उतारि । पुनि तातेही लेइ पखारि ॥
होय दुरति हर तारहि गनौ । रसरतनाकरते हौं भनौ ॥

(र० रत्ना० रससागर)

पाषाणद्रुति

औरे पाहन जेते सेत । तिनके दुरति होय यह हेत ॥
पाथर बांटि कपरछन कीन । अजादूध भिजवै दिन तीन ॥
तापाछ जु छिरहट आनि । पानन के रस पाहन सानि ॥
तब हांडी भरी लेय चढ़ाय । चारि प्रहर ज्यों आगि बराइ ॥

(र० रत्नाकर, रससागर)

हीरा की द्रुति

वज्रवल्ल्यंतरस्थं च कृत्वा वज्रं निरुत्थितम् ।
अम्लभांडगतं स्वेद्यं सप्ताहाद्द्रवतां व्रजेत् ॥४३॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ–हीरे को वज्रवल्ली (हडसंधारी) की लुगदी में रखकर गजपुट द्वारा निरुत्थ भस्म कर लेवे फिर उसको अम्लवर्ग में स्वेदन करे तो पारद के समान हीरे की द्रुति होती है॥४३॥

मोती की द्रुति

मुक्ताफलानि सप्ताहं वेतसाम्लेन भावयेत् । जंबीरोदरमध्ये तु धान्यराशौ निधापयेत् ॥४४॥ पुटपाकेन तच्चूर्णं द्रवते सलिलं यथा ॥ कुरुते योगराजोऽयं रत्नानां द्रावणं शुभम् ॥४५॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ–मोतियों को सात दिवस तक अम्लवेत के रस की भावना देकर जँभीरी के भीतर भरकर धान के ढेर में गाड़ देवे फिर उसमें से निकाल कर पुटपाक करे तो मोती का चूर्ण जल के समान द्रव हो जाता है॥४४॥४५॥

हल मुरवारीद (उर्दू) मोती की द्रुति–धूप में (अम्लयोग से)

छोटे छोटे मोती पाक व साफ लाकर धोवे और चौड़े मुँह की शीशी में अर्क लैमूं बिजौरा और शीरः लैमूं कागजी और अर्क लहसन और प्याज का उस पर डाले कि मोती मजकूर उसमें डूब जाये और मुँह शीशी का बंद करके धूप में रख दे और हर रोज देखता जावे जब कुल अर्क जज्ब हो जावे और अर्क मजीद ढाल दिया करें सतरह या २१ दिन तक में मोती हल हो जायेंगे (सुफहा १३ किताब अलजवाहर)

मोती की द्रुति–चाह हल में (अम्लयोग से) हल मुरवारीद (उर्दू)

अव्वल मुरवारीद को शीरः लैमूं में पीसकर शीशे में रखे और उस पर से शीरः मजकूर इस कदर डाले कि मोती छिप जावें और शीशी का मुँह बंद करके किसी जर्फ में जिसमें सिरकः निस्फतक भरा हुआ हो मौअल्लिक लटकाकर घोड़े की लीद में गाड़ दे चौदह दिन.में महलूल हो जायेगा। (सुफहा ९ किताब अलजवाहर)

और भी

इस तरकीब को अकसर हुकमाइइमगारवह ने बयान किया है–छोटे छोटे मोती जो सफेद और बुर्राक हों, लाकर उनको पहले नमक के पानी में चंद मर्तबः धोवे बाद उसको मीठे पानी से धोकर शीशे में जिसका मुँह चौड़ा हो, रखकर अर्क लैमूं बिज्जौरे का उस पर डाले और मुँह पर शीशे की डाट लगाकर मुहर कर दे कि हवा और खाक का असर न पहुँचे और दो हफ्ते तक चाह हल में दफन करे, अगर हल न हुई हो तो सतरह दिन ख्वाह इक्कीस दिन तक दफन रहने दे। मोम की तरह नरम हो जायेगा। बादहू चीनी के प्याले में निकालकर साफ पानी से धोवे जिसमें लेमूं का असर न रहे और मुसफ्फा हो जाए। (सुफहा १५ किताब अलजवाहर)

और भी

छोटे छोटे सच्चे आबदार सफेद मोती एक हिस्सा सदफ (सीपी) सफेद मोटे दल्दार एक हिस्साा लेकर अव्वल मोतियों को धो डाले जैसा कि ऊपर जिकर किया गया है, बादहू शीशे के खरल में सदफ और मोती को इस कदर सहक करे कि चिपकने लगे, बाद में उसे किसी शीशी अजाजी में जिसका काग भी शीशे का हो, रखकर पाव पर ताजः लैमूं बिजौरः के मगज तुख्म को कूटकर सफेद बारीक कपड़े में छानकर अर्क उसका शीशी मजकूर में इस कदर डाले कि चार अर्क मोती और सीपी के ऊपर रहे बाद उसके डाट लगाकर माष (उर्द) के आटे और लाहौरी नमक से मुहर करके सुखाकर चाहहल में इक्कीस दिन तक दफन करे और हर तीसरे दिन गरम पानी लीद पर छिड़का करे और मुँह चाह का किसी नांद से बन्द करे दे और इक्कीस दिन के बाद आहिस्तगी से शीशी को निकाल ले और डाट को खोले। मोती और सीपी महलूल हो गई होंगी मगर जो चीज अर्क के ऊपर जाकर किसी तरह फैली होगी वह मोती का महलूल होगा और जो चीज तहनशीन होगी वह सदफ हल शुदः होगी। मोती हलशुदः को चांदी के चम्मच से उतार लें। (सुफहा किताब अलजवाहर ११)

हल मुरवारीद (उर्दू)

छोटे छोटे मोती पाकीजः और सफेद लाकर पहले नमक के पानी से चन्द मरतबे धोवे बाद उसके एक रात नौसादर मअदनी महलूल में भिगोवे। नौसादर इस तरह महलूल करे कि अव्वल बैजः मुर्ग को लेकर उसको पानी में डाले, इतनी देर तक महलूल करे कि अव्वल बैजः मुर्ग को लेकर उसको पानी में डाले। इतनी देर तक कि उसकी सफेदी व जर्दी अन्दरुनी जम जावे। बादहू पानी से निकाल कर छिलका दूर करे और छोड़ा मुँह तराश डाले कि जर्दी बासानी उससे निकल जावे और सफेदी बैजे की बोतः के हमशकल रह जावे। बादहू नौसादर मुसफ्फा पाकीजः को बारीक पीसकर बोतः बैजः मजकूर में रख दे और तराशीदः सफेदी से ढांककर थोड़ी सी तर मिट्टी उसके मुँह पर रख कर बन्द कर दे और रात भर शबनम (ओस) में इस तरह रखे कि नीचे बोतः के तश्तपराज आब रहे और उस पानी में भी थोड़ा सा नौसादर पीसकर मिला दे। शुबह को नौसादर मजकूर पानी की तरह हल हो जायेगा। उसको शीशे के खरल में निकाल कर दाने होय मुरवादी को रात भर उसमें तर रखे शुबह को निकाल कूट डाले और फिर छिलके में बदस्तूर भरकर मुरवारीद शस्तः को उसके अन्दर रख दे और अर्क लैमूं बिजौरे को बकदर जरूरत और डालकर छिलके में भर दे और दूसरे छिलके को ढाँककर नई गजी के कपड़े को उस पर लपेटकर तागे या तार से मजबूत कस दे और एक गढ़ा गजभर खोदकर उसमें घोड़े की तर व खुश्क मिली हुई लीद भर दे और लैमूं मजकूर उसमें दफन कर दे और गढे के ऊपर कोई जर्फ औंधा ढाँककर किनारों पर मिट्टी डाल दे। छः रोज के बाद खोदे और निकाले। सब मोती महलूल हो गये होंगे। आहिस्तः आहिस्तः से बजरिः चांदी या शीशः या चीन के चमच से उतारे। (सुफहा ७ किताब अलजवाहर)

फवायद हल मुरवारीद (उर्दू)

अरस्तातालीस ने कहा है कि मुरवारीद महलूल जब पानी की तरह महलूल हो जाता है तो मबरूस जिसके इलाज से अतबा आजित हों एक बार से लेकर तीन बार अगर बुरस लगावे तो जिल्द हमरंग बदन असली हो जाती है और मुरवारीद गैर महलूल मजजूम को नाफै ही उसके हल करने के कई तरीका है। (सुफहा किताब ९ अलजवाहर)

मुरवारीद महलूल का खवास (उर्दू)

सीमाव को मुनक्किद यानी गुटका करना और किबरियत को तखलीस करना मुरवारीद खवास से है।। (सुफहा ५३ अकलीमियाँ)

सदफसे मुरवारीद बनाने की तरकीब सदफ को हल करना (उर्दू)

धोई हुई साफ सफेद रंग की सदफ जो मोटी और दल्दार हो छोटे छोटे सच्चे मोतियों के साथ मिलाकर खूब कूटे और शीशे में रखकर अर्क लैमूं बिजौरह यानी अतरज या अर्क लैमूं कागजी इस कदर डाले कि अजजाइ मजकूर उसमें छुप जावें और दो हफ्तः या तीन हफ्तः तक नमदार सरगीन में दफन कर दे ताकि कुल महलूल हो जावें बादहू कवाम करके गाढ़ा करे उसके बाद सीमाव का नमक और फिटकिरी मसावी के साथ तसईद करे जब तसईद सफेदरंग का हो जो कई बार की तसईद में होगा उस वक्त मुरवारदिक के हमवजन मिलावे सीमाव मजकूर मुनअक्किद होकर उससे मिल जावेगा क्योंकि यह मुरवारीद महलूल के खवास से है। (सुफहा अकलीमियाँ ५२)

आम चीजों की द्रुति की क्रिया बजरिये खुम (उर्दू)

एक खुम यानी मठोर (मटका) सरफराख और ऊँचा ले जिसका तूत ढाईगज शरई और अर्ज पौनगज शरई से और अर्ज पौनगज शरई से कम न हो और खुम के अन्दर निस्फ जाइद सिरकः निहायत तुंद व तुर्श भर दे और जिस दवा की तहलील मंजूर हो उसको शीशे में रखकर खुम में सिरकः के ऊपर कंदील की तरह दो अंगुल के फासले से लटका दे और बोतलकतान के कपड़े से लपेट दे और खुमके ऊपर मुहर सारूज यानी बे बुझा हुआ चूना सफेदी बैजः मुर्ग गुड निशास्तः की लगावे और चारों तरफ उसके घोड़े की लीद और कबूतर की बीट दोनों मिलकर एक गढ़े में भरकर उसमें दफन कर दे और सुबह व शाम गर्म पानी उस पर छिड़का करे बाजे एक हफ्ते में और बाजे दो हफ्ते में और बाजे चालीस दिन में हल हो जाते हैं।।(सुफहा अकलीमियाँ ८८)

चाहहल की तरकीब (उर्दू)

दो चाहहल बनावे और दोनों करीब करीब हों और दोनों के दरमियान में इतना बड़ा सूराख कर दे कि अन्दर ही अन्दर मोती या दवा जिसका हल मंजूर है एक चाह में मिनकतल किया जा सके जिस तरह शीशागरों की भट्टी में होता है और लीद अस्प ताजा कबूतर की बीट में मिलाकर चाहमें भर दे दो चाह बनाने और उसके दरमियान में अन्दरूनी रास्ता रखने की गरज यह है कि मोती या दवा दूसरे चाह में मुन्तकिल करने के वक्त हवा न लगने पावे और दूसरे चाह में जो ताजा लीद में भरा गया हो मोती मजकूर रख दिया जा सके चालीस रोज ज्यादः से ज्यादः हल करने की मियाद है और हफ्तः बार लीद वगैरः को तबदील करना चाहिये और जब तक महलूल न हो अमल तदफीन की जारी रखे। (सुफहा किताब अलजवाहर ६९, ता० ३/२/११)

हिदायत मुतअल्लिक चाह हल (उर्दू)

चाह हल मुआमिले में यह अमर काबिल लिहाज है कि चाह मजकूर पुख्तः होना चाहिये और लीद पर गरम पानी या पेशाब गर्मी के दिनों में डाल दिया करे दिन में एक बार या दो बार ऊपर से कोई नांद या मटके का निस्फ हिस्सा जेरीन ढांक दिया जावे और चारों तरफ सिर्फ जोड के मुकाम पर मिट्टी से इस तरह बराबर कर दे कि कोई सूराख खुला न रहे गहराई चाह की एक गज की और दौर का कुतर निस्फ गज का हो। (सुफहा ६९ का हासिया किताब अलजवाहर)

द्रुति के मुतअल्लिक (उर्दू)

बाजः हो कि यह बात काबिल याद रखने के है कि जिस कदर कसरत से सहक किया जावेगा हल अच्छा होगा, अकसीर के हल करने के वास्ते

लवनुलअजर: या तेजाब या माइउलहाद वगैर: दूसरे पानी की इमदाद की जरूरत है वरन: अकसीर हल में कामयावी नहीं होनी चाहिये। (सुफहा ९० अकलीमियाँ)

पारदहल

सज्जी हिस्सा १, शोरा हिस्सा १, पाणी तरल रतल १, भिन्न भिन्न भिगाणे फिर नितार के इकट्ठे कर भांडे में पाकर जोश देवे आधा रहे तौ लेवे फिर सज्जी तथा शोरा रतल पाणी में भिगोकर नितारकर उससे पाना फिर आग पर पाया पाणी सुखाना इसी तरह पन्द्रहवार सुखाना फिर पारा एक रतल उडा के वह पारा प्याले में वा शीशी में पाकर पंजदिरम अक्षय नमक पारक बंद करके हिलाना जब लवण जल रूप हो जावें तब लवण और पाणा पारा भी पाणीरूप हो जावेगा ऊपरला पाणी नितारकर अलग करै, पारा हेठ रहेगा यह पारे का हल है। (जवूं से प्राप्त पुस्तक)

पारदद्रुति लवणद्रुति के द्वारा

लवण की द्रुति करणी हो तो इस अक्षय लवण को नवसादर के हलनाल खरलकर शीशी में पाकर तशविया देवे एवं बहुवारं–जब नरम होवे तब शीशी में वा प्याले में पाकर जलपात्र में रखकर मंदमंद अग्नि की भाप देवे, जब तक द्रवित होवे द्रवित उतार लेवे उस द्रवित नाल अद्रवित को खरलकर फिर भाप देवे फिर द्रवित उतारकर पूर्वद्रवित में रखें एवं पुनः पुनः जब तक सब द्रवित होवे।

लवण द्रुति से पारद द्रति तथा पारद ६ बार उड़ाया हो या शीशी में पाकर उसमें द्रुत लवण पाकर हिलावे फिर उसको लिद्द में दबा छोड़े सात दिन वा चौदह दिन पारदद्रुति होवेगी। (जवूं से प्राप्त पुस्तक)

पारदद्रुति से रजतकर योग

१ तोला द्रुत पारा ७० तोले पारे पर खरल करे तौ वह गिरा होवेगा वह गिरा १ तोला ७० तोले पारे पर पाकर खरल करे तौ वह भी कली जैसा होवेगा उसको खोलना हो तो उसमें १ तोला चांदी पाके सहित सुहागा घृतपा के दशवार गालणा सब रजत होवे।। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अक्षयलवण

लवणशीशा १२ तोले पीसकर कुज्जी में पाकर मुखबंद करके २० सेर गोहे की आग देवे फिर निकाल के पीस के फिर पूर्ववत् आग देवे एवं बराबर जब तक घटै नहीं अक्षय लवण भया. (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अनेकद्रुति मेलापन

कृष्णागरुनाभिसिलै रसोनसिरामठैरिमा द्रुतयः ।।
सोष्णा मिलन्ति मर्द्याः श्रीकुसुमपलासबीजरसैः ।।४६।।

(र० रा० सुं०)

अर्थ–काली अगर, कस्तूरी, मनसिलै, लहसन, सफेद हींग तथा लौंग और ढाक के बीजों का तैल गरम किये हुए इन सब चीजों से अग्नि पर या तेज घास में घोटे तो यह सब द्रुतियें आसपास में मिल जायेंगी।।४६।।

अथ नागद्रुतिः

ता० ५/१२/०७ को ४ तोले पीली हरताल, ४ तोले कलमी शोरा, ४ तोले बेबुझा चूना तीनों को पीस मिला ४।। छ० पानी में भिगो चौड़े मुंह की शीशी में भर शीशी का मुंह कपड़े से बांध धूप में रख दिया। रात को गर्म जगह में रखा गया।

ता० ६ को सवेरे देखा तो शीशी के अन्दर छोटे छोटे अंकुर से दीख पड़े। पानी थोड़ा समझ आधी छ० के करीब पानी और मिला। बोतल को धूप में रख दिया।

ता० ७ को बोतल में कलके से अंकुर न दीख पड़े। बोतल धूप में रखी गई। चूंकि किताब में लिखा था कि ये पानी जब मुर्गे के पर को जला देवे तब ठीक समझना, इस बात को आज ता० ८ को शीशी में मुरगे का पर भिगोया तो बिलकुल न जला और न कुछ और बात पैदा हुई।

ता० ९ को बोतल धूप में रखी गई। रात को चूल्हे की गर्मी में रख दी।

ता० ११ को फिर मुरगे का पर डाला किन्तु कुछ नतीजा न निकला।

ता० ११ को उपरोक्त तीनों दवा यानी हरताल, शोरा और चूना १–१ तोल पीस बोतल में और डाल दी और बोतल धूप में रख दी।

ता० १२ आज भी बोतल में पर डाला किन्तु कुछ नतीजा न निकला।

दूसरा उद्योग

कई दिन बीत जाने पर भी उपरोक्त तेजाब में जब वांछित तीव्रता उत्पन्न न होने का कारण विचारा गया तो समझ पड़ा कि शीशी का मुँह केवल कपड़े से बंधा रहने के कारण बाष्प निकलते रहने से तेजाब में तीव्रता न उत्पन्न हुई। अतएव ता० १३ को एक डाटदार शीशी में पाव भर जलभर तोले शोरा कलमी, ४ तोले चूना बेबुझा, तीनों को पीस मिला भर दिया और शीशी को डाट लगा दी। शीशी को गरम होते देख ठंडे पानी में रख दिया जिससे उसकी उष्मा शान्त हो गई।

ता० १४ से शीशी नित्यप्रति धूप में रखी गई।

ता० १८ को शीशी में मुरगे का पर डाला तो न जला।

कार्य में सफलता न देख दोनों बार की दवा का मेल

ता० २० को दोनों शीशीयों का मसाला एक डाटदार बोतल में भर रख दिया और बोतल को हररोज धूप में रखना जारी रखा।

ता० २२/१२ को बोतल के जल में फिर शोरे की सी कलमें दीख पड़ी।

ता० २५ जनवरी को उक्त बोतलों से ऊपर का पानी नितार लिया जो तोल ३।। छ० हुआ। बाद को २ छटांक सीसे को कलछी में डाल कड़ाधोंक १४ बार उस पानी में बुझाया। हर बुझाउ पर तोल उसकी नीचे के नक्शे के अनुसार घटती गई।

नक्शा

न० बुझाउ	तोल सीसा
१	१० तोले
२	७ तोले ८ माशे
३	५ तोले ७ माशे
४	४ तोले ४ माशे
५	३ तोले ५ माशे
६	३ तोले ३ माशे
७	३ तोले
८	२ तोले ५ माशे
९	१ तोले ९ माशे
१०	१ तोले ६ माशे
११	१ तोले ३ माशे
१२	१ तोले
१३	९ माशे
१४	८ माशे

१–इन चीजों को चीनी के कटोरे में रख पानी डालकर चलाया तो कुछ खदर नही हुई। ५–७ मिनट बाद शीशी भर दिया तो शीशी गरम होने लगी। थोड़ी देर में खूब गर्म हो गई, टूटने के भय से फिर कटोरे में ही लौट लिया, दो घंटे बाद शीशी में भर दिया।

अंत में ८ माशे सीसा और ४ तोले उसका मैल कुल पीली सी रंगत का रह गया। इस ८ माशे सीसे को चीन रकाबी में रख हवा में रखते रहे किन्तु और कुछ नतीजा न निकला।

सम्मति–पहली बार सीसा सुगमता से पिघल गया था। बुझाउ के बाद दुबार बहुत देर में कड़ी आंच करने पर गला और आगे भी कड़ी ही आंच देनी पड़ी। अब कभी ठंडी आंच में देर तक धौंकते थे तो मैल बहुत रह जाता था और पिघले सीसे की तोल बहुत घट जाती थी। सबसे अच्छा गलाउ जिसमेंम छीजन कम होती थी, इस प्रकार हुआ कि लोहे की कलछी या घरिया को पहले खूब गर्म कर लिया और फिर उसमें सीसा डाल जल्दी से कड़ी आंच दे पिघला लिया। आगे से ऐसा ही किया जावे।

नागद्रुति

ता० १६/१२/०७ को १ छटांक कृष्णाभ्रक के चूर्ण में २।। छटांक सज्जी मिला एक बड़ी घरिया में भर भट्टी की कड़ी आंच से गला दिया। २ घंटे में जब अभ्रक गलकर नीचे बैठ गया तब घरिया को उतार ठंडा कर लिया।

ता० १८ को घरिया से निकाला तो जमा हुआ कठिन पत्थर सा ११ तोले ३ माशे वजन निकला अर्थात् कुल १७।। तोले, ६ तोले ३ माशे कम हुआ।

ता० १९ को उक्त दवा में ९ माशे नमूने के लिये निकाल बाकी को पीसा तो कठिन पीसा और तोल में १० तोले ३ माशे रही ३ माशे छीजन गई।

मदनमुद्रा (सय्याद पहाड़ की क्रिया से)

अर्थ–ता० ३०/८/०७ को २ छटांक मोम छाना हुआ और ५ छटांक अलसी के तेल को ६ घंटे बहुत मंद और ६ घंटे ऐसी मन्दआंचसे जिससेतेल में धुंआ उठता रहा, कढ़ाई में औटाया। रात को कढ़ाई चूल्हे पर ही रखी रही।

ता० ३१ को सवेरे देखा तो ठीक कड़ा न था। मोम सा ही था। अतएव ७ से १०।। बजे तक ३।। घंटे फिर औटाया गया तो १० बजे खूब झाग उठने लगे, उनको चलाते गये तो आध घंटे ही में एक दम कड़ाही झागों से भर गई और वह थोड़ा सा हो गया। किसी चीज पर चिपटता न था। आंच अधिक समय तक लग गई जिससे झाग उठने लगे थे, उसी समय उतार लेना था कि चीचड़ न होता किन्तु जम जाता और फिर पिघलाने से पिघल सकता।

उपरोक्त क्रिया का दूसरी बार अनुभव

ता० २०/९/०७ को ७।। तोले छाना हुआ मोम और १९ तोले अलसी के तेल को लोहे की कड़ाही में ऐसी सामान्य आंच दी गई जिसमें कड़ाही में हलका धुंआ निकलता रहा। बाद ८ घंटे के कड़ाही में झाग आने लगे और थोड़ी देर के बाद सब तेल ज्वार बराबर के झागों से ढ़क गया। उस वक्त लोहे की कलछी से चलाते रहे और देखते रहे तो १०–१५ मिनट में ही कलछी से गिरते हुए तेल में घनता दीख पड़ी अर्थात् तेल की धारा के पिछले भाग का स्वरूप गड़ की लाट का सा दीख पड़ा। तुरन्त कड़ाही को उतार लिया। (यदि कड़ाही थोड़ी देर भी और रहती तो क्रिया पहली ही की तरह खराब हो जाती। झाग उठने के समय सावधानी की आवश्यकता है क्योंकि फिर थोड़ी ही देर में पाक सिद्ध हो जाता है) और इस भय से कि गर्म कड़ाही में रखे रहने से पाक तेज न हो जावे, थोड़े से गर्म गर्म को ही लाख के अमृतवान में भर दिया तो २/१ मिनट के बाद ही उसमें से झागस्वरूप उबलकर बहुत सा भाग बह गया। यदि उसमें न लौटते तो वेग इतना तीव्र था कि प्रायः बहुत सा भाग निकलकर कुछ थोड़ा सा ही रह जाता। अतएव बाकी को खुली सैनक में भरा तो उसमें से उबला नहीं केवल थोड़े से झाग दिये।

सम्मति–झाग उठने का कारण ओक्साइडेशन का आरम्भ हो जाना बाबू ईश्वरदास जापानी (भारतवासी एक वैश्य महाजन जो जापान जाकर कांच का काम और कैमिस्ट्री विद्या सीखकर आये थे) के अनुभव से मुद्रा की निष्फलता (२९/९/०७)

ता० २९ सितम्बर को जलयन्त्र,में इसकी मुद्रा कर ऊपर जल भर नीचे अग्नि दीनी, थोड़ी ही देर में मुद्रा फूल गई और जल अन्दर प्रवेश कर गया।

मदनमुद्रा का दूसरा प्रकार

ता० ९/१२/०७ को २ रुपये भाव के १ सेर ६ छ० मोम को जो छान साफ करने पर १। सेर रहा था। एक बड़ी कड़ाही में जिसमें मन भर के करीब पानी आता था, डाल २० सेर पानी भर बड़े चूल्हे पर रख १० बजे से तेज आंच वालनी आरम्भ की, पानी बीच में उबलता रहा। १२ बजे से आंच खूब तेज कर दी जिससे सब कढाई का पानी उबलने लगा। २ बजे से कढाई में ४ अंगुल पानी रह जाने और मोमकढी सा गाढ़ा होकर खदकने लगने पर १८ सेर पानी और डाल दिया। शाम के ६ बजने पर फिर ३ अंगुल पानी रह गया और मोम की पहली ही सी हालत हो गई तब १८ सेर पानी फिर डाला। इसी तरह चार चार घंटे बाद रात के १० बजे से २ बजे और सवेरे के ६ बजे १८–१८ सेर पानी डाला। ता० १० को १० बजे ३ अंगुल पानी रह जाने पर फिर १८ सेर पानी डाला और २ बजने पर १८ सेर पानी कड़ाही में और डाल दिया। ३।। बजे कढ़ाई में थरमामीटर डाला तो १०० डिग्री तक गर्मी थी। १०० डिग्री पर पानी[१] उबलने लगता है।

४ बजे से ६ सेर पानी गरम करके डाला गया। इस बार गर्म पानी डालने से मोम जमकर ऊपर नहीं आया। ६ बजे से आंच देकर १०।। प्रहर हो जाने पर काम बंद कर दिया और चूल्हे से कोयले निकाल कढ़ाई को जैसे का तैसा रखा छोड़ दिया किन्तु थोड़े से कोयलों से सवेरे तक गर्मी रही।

ता० ११ को देखा तो कढ़ाई में ऊपर मोम जमा हुआ था और नीचे पानी था। सय्यद पहाड़ के लेखानुसार तली में कोई चीज नहीं बैठी थी कड़ाही से मोम पृथक् कर उसका पानी निचोड़ धूप में सुखा दिया।

ता० १४ को सूख जाने पर तोला तो १ सेर २ छटांक हुआ, २ छटांक छीज गया। ये काम १०।। प्रहर चला जिसमें २० सेर पानी तो आदि ही में मोम के साथ डाला गया था बाद में ८ बार में ३ मन १२ सेर पानी और डाला गया यानी कुल ३ मन ३२ सेर पानी पड़ा जिसमें से अखीर में १५ सेर के करीब बच भी रहा।

उक्त मोम में से १ छटांक मोम को करछी में पिघलाया तो पिघल गया। ठंडा होने पर साधारण मोम से रंग में कुछ काला और तोड़ने में कुछ करारा मालूम हुआ।

अनुभव

ता० १७ को जलयंत्र पर उक्त मोम की मुद्रा कर यंत्र में पानी भर नीचे आंच जलाई तो पानी के गरम होते ही मोम पिघल गया और पानी यंत्र के अन्दर प्रवेश कर गया।

सम्मति–ऐसा समझ पड़ता है कि जल घटने पर ठंडा पानी डालना ठीक न हुआ। सर्वदा खौलता हुआ पानी डालना योग्य था। जिसका कुछ पता ग्रंथो से लगता है।

ता० २९ को फरवरी को ८ बजे लोहे की कड़ाही में १८ सेर पानी भर करीब १ घंटे के तेज आंच लाल खूब खौल जाने पर उस पानी में उक्त १ सेर २ छ० मोम को डाल दिया और तीव्राग्नि देना आरम्भ किया। मोम डालते ही पिघलकर पानी के ऊपर आ गया औ पानी के साथ खौलने लगा और पानी के अन्दर जाता और बाहर आता दीख पड़ा। १० बजे तक आधा पानी

१–पानी जब सूखने पर आता था तब तो खदकने लगता था और जब उसमें पानी और डाला जाता था तब ठंडा होकर कुल मोम पेव सीसा हो पानी के ऊपर तैर आता था और जब गर्म होके उबलने लगता था तब कुछ ऊपर झाग रूप में रहता था।

जल चुकने पर ९ सेर गर्म पानी और डाल दिया। बाद को जितना पानी अन्दाज से घटता गया उतना १ सेर के कटोरे से खूब गर्म पानी डाल डाल पूरा करते रहे। रात के १२ बजे तक २ मन ३२ सेर पानी और पड़ा अर्थात् कुल ३ मन १९ सेर पानी हुआ। १५ घंटे आंच दे रात के १२ बजे काम बन्द कर दिया। कढ़ाई को गर्म चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० १ मार्च को सवेरे देखा तो कुल मोम पानी के ऊपर जम गया था जिसको निकाल पानी निचोड़ धूप में सुखा दिया। (अबकी बार मोम नीचे न बैठा)

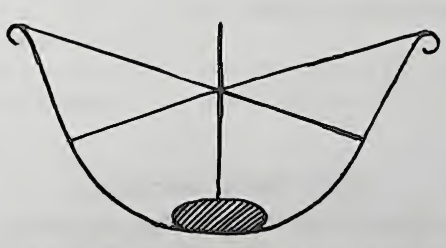
मदनमुद्रा

ता० १९/१२/०७ को २ तोले मदनमुद्रा का मोम और २ तोले साफ की हुई लाख (जिसे इस तरह साफ किया था—२ छटांक लाख को हलकी टुकरी की थैली में भर कोयलों की आंच पर दूर से पिघलाया तो जितनी लाख पिघल पिघल कर थैली के बाहर आती गई, उसी को छुरी से छुटा छुटाकर अलग रखते गये। इस तरह २ छ० लाख में ३।। तोले हाथ लगी) को कलछी में पिघला २ तोले चूना पिसा हुआ उसमें डाल दिया। (प्रथम तो पिघलकर लाख और मोम ही भली भांति नहीं मिले थे किन्तु चूना डालने से और कंकड़ी सी पड़ गई) और जलयंत्र पर उसकी मुद्रा गर्म गर्म की ही कर दी गई। ठंडा होने पर यंत्र में पानी भरा तो दरदरी मुद्रा से ठीक संधि बंद न हो सकने के कारण अन्दर पानी जाता मालूम हुआ। बाद को १ घंटे मंदाग्नि दी गई तो मुद्रा एक तरफ से कुछ फूल गई और पानी अन्दर प्रवेश कर गया।

पुनः ता० २६ को मदनमुद्रा का १।। तोले मोम १।। तोले साफ की हुई पिसी लाख, १।। तोले पिसा चूना ले प्रथम मोम को पिघलाकर उसमें लाख डाल लाख के भी पिघल जाने पर (लाख पिघलकर इस बार भी भलीभांति मोम में नहीं मिली) थोड़ा थोड़ा कर चूना डाल दिया और लकड़ी से चलाते गये। चूना मिल जाने पर गर्म गर्म की ही जलयंत्र पर मुद्रा कर लोहे की शलाख से घोट दिया जिससे खरखराहट जाता रहा बाद को यंत्र में पानी भरा तो उस वक्त पानी अन्दर जाता न मालूम हुआ किन्तु जब उसके नीचे आंच दी तो मुद्रा फूल गई और पानी अन्दर प्रवेश कर गया।

जलमुद्रा

ता० ४/२/०९ को पुरानी ईट का चूर्ण १ छ०, कलइ १ छ०, गुड़ १ छ०, पहली दोनों चीजों को कूट पीस छान बारीक कर बबूल के क्वाथमें (जो ऽ।≈ बबूल की छाल को २ सेर पानी में औटा ऽ। तय्यार किया था) घोल उस क्वाथ से साथ उक्त दोनों औषधियों को २–२।। घंटे घोट जलयंत्र पर कर दी गई।



ता० ५ के सबेरे देखा तो सब ओर से मुद्रा चटक गई थी अतएव उस पर और मुद्रा लगा चिकना ठीक कर यंत्र में पानी भर भट्टी पर आंच दी तो उस समय पानी अन्दर न गया किन्तु जब करीब १/२ घंटे अग्नि लग चुकी तब एक दो जगह से बबूले उठने लगे अर्थात् पानी प्रवेश होने लगा। अतएव उतार फिर दुबारा मुद्रा से बन्द कर उसी समय पानी पर भट्टी पर चढ़ाया तो थोड़ी देर में बड़े बड़े बबूले निकलने लगे और नीचे को भाप के जोर से रकाबी ढीली हो गई और पानी अन्दर प्रवेश कर गया अतएव फिर बन्द कर भट्टी पर चढ़ा भाप का जोर रोकने के लिये रकाबी पर भारी लोहे का बाट रख दिया किन्तु पानी तब भी न रुका, जिसका कारण यह ज्ञात हुआ कि रकाबी हलकी थी और सब ओर से ठीक न बैठती थी संधि रह जाती थी और उसी संधि को अन्दर को वाष्प खोल पानी के अन्दर जाने का मार्ग बना देती थी।

सम्मति—यन्त्र ठीक न होने कारण यह निश्चय न हुआ कि वे जलमुद्रा ठीक है वा नहीं। अतएव भारी और सच्चे किनारे का जलयंत्र बनवाया जाय तब उसमें इस जलमुद्रा की पुनः परीक्षा की जावे। ये जलमुद्रा सुगम और आशाप्रद अवश्य है। जलयंत्र के ऊपर कटोरी के कस जाने का भी प्रवंध रहे।

कृष्णधान्याभ्र

हाथरस से आये ।≈) सेर के भाव के ६ सेर कृष्णाभ्रको (जिसके किसी किसी डिम्मे में श्वेत पत्थर मिल रहा था) उत्तम, मध्यम, दो भागों में विभक्त कर अर्थात् जो स्वच्छ चमकदार कृष्णवर्ण का था उसे उत्तम और जो लालामी लिये मिट्टी मिले वर्ण का था उसे मध्यम रखा। पश्चात् दोनों को भागों से पत्थर इत्यादि पृथक् कर अलग अलग दोनों के हाथों से छोटे छोटे पत्र कर इमाम दस्ते में कूट लोहे की चलनी में छान तोला ४ सेर २ छ० उत्तम और १ सेर २ छ० मध्यम कुल ५। सेर अभ्रचूर्ण तय्यार हुआ, १२ छ० छीज गया। फिर उस उत्तम मध्यम दोनों प्रकार का अभ्रचूर्ण को पृथक पृथक् कम्वल की दो थैलियों में भर एक एक रात पानी में भिगो दूसरे दिन मथ छान ऊपर से पानी नितार सुखा हाथों से मीड तारों की चलनी में छाना और अवशेष को पुनः इसी तरह किया तो ३ सेर १२ छ० उत्तम और १ सेर २।। छ० मध्यम धान्याभ्र तैयार हुआ। ५ छ० और छीज गया। (३०/३/०९)

धान्याभ्र में भावना

उक्त ३सेर१२छ० उत्तम अभ्रक को ककरोंदे के समान रस से भावित कर ५ घंटे घोट और उक्त १ सेर २।। मध्यम अभ्र को द्विगुण रस से भावित कर १० घण्टे घोट सुखा मीड तारों की चलनी में छान डाला। तोल में पूरा ३ सेर १२ छटांक उत्तम और १ सेर ३ छटांक मध्यम हुआ।

धान्याभ्र में विशेष भावना

(१) उक्त ३ सेर १२ छ० उत्तम अभ्र में से १ सेर को पुनः ३ सेर ककरोंदे के स्वरस की और भावना दे, ६ दिन में ३६ घंटे घोट सुखा दिया अर्थात् इसमें सब चतुर्गुण रस की भावना लगी (यह अभ्रद्रुति उद्योग में काम में लिया गया।)

(२) उक्त अवशेष २ सेर १२ छ० आम अभ्र में १ सेर को २ सेर ककरोंदे स्वरस की भावना दे। ८ घंटे घुटाई कर सुखा दिया। सूख जाने पर मीडचलनी में छान तोला तो १ सेर १ छ० हुआ अर्थात् इसमें सब द्विगुण रस की भावना लगी। (यह अभ्र हकीम फतहयाबखां की सत्त्व पातन की क्रिया में काम में लिया गया)।

अभ्रद्रुति उद्योग

हकीम फतहयाबखां मोहनपुरा जिला बुलन्दशहर द्वारा १७/४/०९

ता० १७ को उक्त नं० १ के १ सेर कृष्णधान्याभ्र में (जिसको ककरोंदे के चौगुने रस की भावना लग चुकी थी) १।। सेर सिरका अंगूरी डाल रबड़ी सा पतला कर ७ घंटे घुटाई की।

ता० १८ को विना और सिरका डाले ७ घंटे घुटाई की।

ता० १९ को ३ छ० सिरका डाल ५ घंटे घुटाई की।

ता० २० को ३ छ० सिरका डाल ७ घंटे घुटाई की।

ता० २१ को ३ छ० सिरका डाल ७ घंटे घुटाई की।

ता० २२ तो ३ छ० सिरका डाल ७ घंटे घुटाई की।

ता० २३ को घुटाई के लायक काफी पतला समझ और सिरका न डाल ७ घंटे घुटाई की और दोपहर को धूप में रख दिया।

ता० २४ को ७ घंटे घुटाई की।

ता० २५ को देखा तो कुछ फूला हुआ मालूम हुआ अतएव धूप में बैठ ४ घंटे घोटा गया गाढा हो जाने से हाथ रुकने के कारण घुटाई बन्द कर सुखा दिया।

ता० २७ को १ घंटे घोट गुडी तोड़ सुखा दिया गया।

ता० १/५ को भलीभांति सूख जाने पर तोला तो १ सेर ३ छटांक हुआ बाद को बोतलों में भर दिया गया। इस १ सेर धान्याभ्र में (जिसको चतुर्गुण ककरौंदे के रस की भावना लग चुकी थी) २। सेर सिरका १० दिन में १९ प्रहर मर्दन द्वारा शोषण किया गया।

अभ्रद्रुति उद्योग

(पंडित कुलमणि शास्त्री द्वारा ३०/६/०७)

तारीख ३० जून को एक हांडी में ६४। सेर तिवर्षा सिरका भर ३ सेर के भाव के पावभर चावल डाल औटा एक घण्टे बाद खूब हल हो जाने पर उतार ठंडा कर मथ छान डाला जिससे गाढा मांड निकला बाद को एक बड़े शीशे में भर १४।। छ० कृष्णाभ्र (जिसके छोटे छोटे पत्र कर लिये गये थे) डाल खूब मिला (गाढ़ा रबड़ी सा हो गया) शीशे का मुख बन्द कर ३ कपरौटी कर करीब १ गज गहरे लीद से भरे गढ़े में गाढ़ दिया गया।

४० दिन बाद ता० १० अगस्त को शीशे को गढे से निकाला तो लीद की गर्मी से शीशा खूब गर्म हो रहा था अभ्रक नीचे बैठ गया था। सिरका ऊपर था जितना शीशा गाढते समय खाली था उतना ही अब मिला कुछ सूखा नहीं। खोल कर करछी से अभ्रक को निकाल उंगली से टटोला तो कुछ नरम हुआ था किन्तु उसमें सख्त मौजूद थी हल नहीं हुआ था। इस वास्ते उसे छान सिरके को शीशे में भर लिया ये तोले में १ सेर १० छ० था और अभ्रक को पानी से धो धूप में सुखा तोला तो करीब १३ छटांक था।

अपनी बुद्धि से पुनः उद्योग

उसी अभ्रक को कूट हाथों से मीड चलनी में छान रेतसा कर लिया ये तोल में इस समय १२ छटांक रहा जिसमें से १ छटांक मोटा अलंग कर दिया बाकी ११ छटांक अभ्रक को फिर उसी १ सेर १० छटांक सिरके में भिगो मिला दिया। (१५/८/०७)

ता० १६ को उसमें १। सेर के करीब नया सिरका और मिला उसी पहले शीशे में भर डाट लगा मुँह पर कपरौटी कर दी (ये शीशा पेंदी से ८ अंगुल ऊंचा भरा गया) बाद को उसी पहले गढे में आधा गोबर भर बीच में शीशे को रख ऊपर से और गोबर गढे के मुंह तक भर बन्द कर दिया।

४० दिन बाद ता० २६/९/०७ को उक्त बोतल को निकाला तो बोतल गर्म थी किन्तु पहली सी गरम न थी क्योंकि लीद से गोबर में ऊष्मा कम होती है और अबकी बार गोबर दिया गया था सिर का कुछ सूखा न मालूम पड़ा क्योंकि बोतल ८ अंगुल ऊंची ही भर रही थी इसको ३–४ वार पानी में डाल डाल नितारा और फिर सुखाया तो ७ छटांक २ तोले मोटा अभ्रक और ३ छटांक २ तोले बारीक कुल १० छटांक ४ तोले अभ्रक हाथ लगा १ तोले छीज गया।

सम्मति–जान पड़ता है कि अभ्रक चूर्ण की केवल सिरके के योग से और लीद गर्त में द्रुति होना कठिन है। अभ्रक सत्त्व की हो तो हो। अभ्रक का सत्त्व ही द्रुति होने योग्य है इसका समर्थन पुस्तकों से होता है और हकीम महसवान ने भी किया।

द्रुति के निमित्त सिरके का तीव्र सिरका बनाने का उद्योग

ता० २६ को १ सेर १० छटांक तिवर्षे सिरके को तामचीनी के ढक्कनदार कटोरे में पौन छटांक चावल डाल मंदाग्नि से औटाया २ घंटे में चावल खूब हल हो जाने पर उतार मथकर छान डाला। करीब १ तोले चावलों का फोक निकला बाकी सब सिरके में मिल गये। यह सिरका थोड़ा गाढा हो गया और तोल में १ सेर ३।। छ० रहा। दो बोतलों में भर रख दिया। जब धूप निकलती थी तब धूप में रखा जाता था। (२६/८/०७)

४० दिन बाद ता० ९/१० को सिरके को जो नितर आया था नितार एक नई बोतल में भर लिया जो आधी बोतल होगा इस नितरे सिरके में कुछ तीव्रता न जान पड़ी और बाकी बचे को छान १ बोतल में भर दिया। छानने में कुछ फोंक निकला।

ता० १० तो लोहे की तिपाई में कपड़ा बांध सिरके को टपकाना चाहा तो न टपका फिर इस वास्ते दो बोतलों में भर डाट लगा अलमारी में रख दिया कि वगैर हिले झुले नीचे बैठ जाय और ऊपर से सिरका नितर आवे।

ता० १८/१० तक बोतलों में गाद न बैठी फिर इसको कटोरे में भर बत्ती लगा नितारा चाहा तो भी न टपका देखा तो गाढा बहुत था इस कारण न टपकता था लाचार हो फेंक दिया।

सम्मति–अनुभव से ज्ञात हुआ कि इस चावल की क्रियासे सिरकेमें कुछ विशेष तेजी न आई, उलटी यह हानि हुई कि सिरके का बहुत सा भाग गाढा हो गया और वह फेंक देना पड़ा।

इति श्रीजैसलमेरनिवासी–प० मनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठ मल्लकृतायां रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायांबाह्यद्रुतिनागद्रुति संस्कारवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

जारणकर्म्माऽध्यायः १८

जारणावश्यकता

यस्त्वेवं विधिमासाद्य जारणाक्रमवर्जितम् ॥ सूतकं मारयेत्तेन मारितं सकलं जगत् ॥ न भवेत्तस्य संसिद्धी रसे वाथ रसायने ॥१॥ (टो० नं०)

अर्थ–जिसमें जारण का काम नहीं है ऐसी क्रिया से जो वैद्य पारद की भस्म करते हैं वे समस्त जगत् के मारने का उपाय करते हैं और उस वैद्य की रस और रसायन बनाने में सिद्धि नहीं होती है।।१।।

गंधकजारणबिना पारदसाधननिषेध

गुरु शास्त्रं परित्यज्य बिना जारितगंधकात् ॥
रसं मारति दुर्मेधास्तं शपेत्परमेश्वरः ॥२॥

(र० रा० सुं०, र० सा० प०)

अर्थ–गुरु और शास्त्र के मार्ग को छोड़कर बिना गंधक जारण किये जो निर्बुद्धि वैद्य पारद को सिद्ध करता है उसको श्रीमहादेवजी शाप देते हैं।।२।।

गंध और बीज जारणआवश्यकता

अजीर्णं चाप्यबीजं वा यः सूतं घातयेन्नरः ॥ ब्रह्महा स दुराचारो मम द्रोही महेश्वरि ॥३॥

(र० प०)

अर्थ–गंध आदिसे जीर्ण नहीं किये हुए अथवा नहीं बीज जारण किये हुए पारद को जो वैद्य भस्म करता है, हे पार्वती! वह वैद्य ब्रह्म हत्यारा, दुराचारी और मेरा शत्रु होता है।।३।।

अन्यच्च

अजीर्णं चाप्यबीजं च सूतकं यस्तु घातयेत् ।। ब्रह्महा स दुराचारी मम द्रोही महेश्वरि ।। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन जारितं मारयेद्रसम् ।।४।।

(र० सं०, नि० र०, र० सा० प०)

अर्थ–हे पार्वती! जिसमें बीज और गंधादि नहीं जारण किये गये हैं, ऐसे पारद को जो वैद्य भस्म करता है वह ब्रह्म हत्यारा, दुराचारी और मेरा शत्रु होता है इसलिये प्रयत्न से जारित, पारद की भस्म करनी चाहिये।।४।।

हेम और गंधजारण की आवश्यकता

अजारयन्तः परिहेमगन्धं वांछन्ति सूतात्फलमप्युदारम् । क्षेत्रादनुप्तादपि शस्यजात कृषीवलास्ते भिषजश्च मन्दाः ।।५।। (र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, बृ० यो०, र० रा० प०, र० सा० प०)

अर्थ–जो वैद्य सुवर्ण और गंधक के जारण किये विना पारद से उत्तम फल को चाहते हैं तथा जो किसान बिना बोये खेत से बहुत से अन्न को चाहते हैं वे वैद्य और वे किसान दोनों ही मूर्ख हैं।।५।।

बीजजारण[1] की आवश्यकता

रसे रसायने चापि यावद्बीजं न जारयेत् ।
तावद्वृथा द्रव्यहानिं करोति ब्रह्महा भिषक् ।।६।।

(टो० नं०)

अर्थ–जब तक रस और रसायन के लिये बीज का जारण नहीं करे तब तक वैद्य अपने धन को व्यर्थ ही व्यय करता है और ब्रह्महत्यारा कहाता है।।६।।

गगनग्रास की आवश्यकता

यद्यपि गंधकजारणातेन कर्मणा सूतो दलकर्मवर्णवृद्धितारकृष्णीकरणादिकर्म करणे समर्थो भवति तथाऽपि गगनग्रासं विना पारदस्य बलवत्त्वं वेधकशक्तिः पक्षच्छेदश्च न संभवत्यतो गगनग्रासादिसंस्काराः कर्तव्याः ।।७।।

(ध० सं०)

अर्थ–यद्यपि गंधक जारणान्त कर्म से पारद दलकर्म, वर्णवृद्धि तथा तारकृष्टि आदि कर्म करने के योग्य होता है तथापि अभ्रकजार के बिना पारद में बलवेधशक्ति और पक्षच्छेदन होता है इसलिये गगनग्रास आदि संस्कार करने चाहिये।।७।।

अभ्रजारण की आवश्यकता

घनरहितबीजजारणसंप्राप्तिदलादिसिद्धिकृतकृत्याः । कृपणः प्राप्य समुद्रं वराटिकालाभसन्तुष्टः ।।८।। (र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं० बृ० यो०, र० रा० सुं०, र० सा० प०)

अर्थ–जो वैद्य अभ्रक जारण के विना ही केवल बीजजारण करने से जो सिद्धि मिलती है उससे जो वैद्य ऐसे कृतार्थ हो जाते हैं जैसे कि दरिद्री लोक समुद्र के पास जाकर केवल कौड़ी के मिलने से संतुष्ट हो जाते हैं, वे मूर्ख हैं।।८।।

गंधकजारणफल

गंधकात्परतो नास्ति रसेषूपरसेषु च ।
एकोपि हेमसंयुक्तः स्नेहरागकरः क्षणात् ।।९।।

(र० प०)

अर्थ–रस और उपरसों में गंधक के समान और कोई पदार्थ नहीं है क्योंकि सुवर्ण से मिला हुआ अकेला गंधक ही पारद में चिकनाई तथा रंगत को शीघ्र पैदा करता है।।९।।

षड्गुणान्तगंधकजारणफल

[1]गंधजारितसूतस्य फलमुक्तं शिवागमे । तुल्यं तु गंधके जीर्णे शुद्धाच्छतगुणो रसः ।।१०।। द्विगुणो गंधके जीर्णे सर्वथा सर्वकुष्ठहा । त्रिगुणे गंधके जीर्णे सर्वषांढ्यविनाशन ।।११।। चर्तुगुणे तत्र जीर्णे वलीपलितनाशनः । गंधे पंचगुणे जीर्णे क्षयक्षयकरो रसः ।।१२।। षड्गुणे गंधके जीर्णे सर्वरोगहरो भवेत् । अवश्यमित्युवाचेदं देवीं श्रीभैरवः स्वयम् ।।१३।। (बृ० यो०, र० रा० सुं०, र० सा० प०, नि० र०, र० रा० शं०)

अर्थ–गंधक जारण किये हुए पारद का फल इस प्रकार शिवागमशास्त्र में लिखा है कि पारद के समान गंधक जारण करने से पारद शुद्ध पारद से सौगुना श्रेष्ठ होता है, दुगुना गंधक जारण किया हुआ पारद सम्पूर्ण कुष्ठरोगों का नाश करता है और तिगुना गंधक जारण करने से समस्त नपुंसकता का ध्वंस करता है, तथा चौगुना गंधक जारण से पारा त्वचा में झुरी तथा सफेद केशों को दूर करता है और पांच गुने गंधक के जारण से पारद क्षय रोग का नाशक होता है, तथा ६ गुने गंधक के जारण से पारा सर्व रोग का हंता होता है इसमें कोई सन्देह नहीं हैं क्योंकि यह बात श्रीमहादेवजीने पार्वतीजो को अपने मुख से कही है, यह गुण पारद का है ऐसा रससारपद्धति में लिखा है।।१०–१३।।

अन्यच्च

समांशे गंधके जीर्णे शुद्धाच्छतगुणो रसः । गंधके द्विगुणे जीर्णे सर्वकुष्ठनिषूदनः ।।१४।। गंधके त्रिगुणे जीर्णे जाड्यहा रस उत्तमः । जीर्णे चर्तुगुणे गंधे वलीपलितजिद्रसः ।।१५।। गंधे बाणगुणे जीर्णे क्षयक्षयकरः शिवः । गंधे रसगुणे जीर्णे सर्वान्तिकप्रणाशकः ।।१६।। सत्यंसत्यं शिवो देवीमुवाच स्वप्रियामये । त्वां वदाम्यरविंदाक्षि हिताय जगतामपि ।।१७।। (अनुपानतरंगिणी)

अर्थ–पारद की बराबर गन्धक जारण करने से पारा शुद्ध पारद से सौ गुना अधिक गुणदाता है, द्विगुण गंधक जारण से सर्व कुष्ठों को दूर करता है, त्रिगुण जारण से सर्व व्याधियों, चतुर्गुण जारण से वलीपलितको, पंचगुण जारण से क्षयरोग को और छः गुण गंधक जारण से पारद सर्व रोगों को नाश कर्ता है। प्यारी! सम्पूर्ण जगत् के कल्याण के लिये श्रीमहादेवजी ने पार्वती को कहा है वही मैं तुमसे कहता हूँ।।१५–१७।।

अन्यच्च

[2]समे गंधे तु रागघ्नो द्विगुणे राजयक्ष्मनुत् । जीर्णे तु त्रिगुणे गंधे कामिनीदर्पनाशनः ।।१८।। चतुर्गुणे तु तेजस्वी सर्वशास्त्रविशारदः । भवेत्पंचगुणे सिद्धः षड्गुणे मृत्युनाशनः ।।१९।। (यो० र०, र०, र० रा० सुं०, बृ० यो०, र० रा० प०, र० सा० प०, नि० र०, र० चिं०)

अर्थ–समभाग गंधकजीर्ण से पारा रोगघ्न द्विगुण जीर्ण से क्षयरोग का नाश कर्ता, त्रिगुण गंधक के जीर्ण से स्त्री के दर्प का नाशक तथा चौगुना गंधक जीर्ण से तेजस्वी तथा मनुष्य को सर्वशास्त्रों का ज्ञाता बनाता है, पंचगुण से पारद सिद्ध होता है और षड्गुण गंधक जारण से पारा मृत्यु का नाश करनेवाला होता है।।१८।।१९।।

षड्गुणो रोगघ्न इति यदुक्तं तद्बहिर्धून एवावगन्तव्यम् । तत्र गंधस्य समग्रजारणाभावात्स्वर्णादिपिष्टिकायामपि रीतिरियम् ।।२०।।

(र० चिं०)

अर्थ–छः गुना गंधक जारण करने से पारद सब रोगों का नाशक है ऐसा पाठ किसी किसी पुस्तक में है सो वह फल बहिर्धूमका ही समझना चाहिये

१–बीजजारण के अनंतर अभ्रक का जारण किये बिना ही जो केवल बीजजारण से संतुष्ट हो जाते हैं–ऐसा अर्थ होगा।

१–इदं फलं मूर्छितस्यैव इ० (र० सा० प०)
२–इदं फलं मारणपक्षे तु इ० (र० सा० प०)

क्योंकि बहिर्धूम में समस्त गंधक का जारण नहीं होता है और यही रीति स्वर्णादिकों के जारण में समझनी चाहिये।।२०।।

शतगुणजारणफल

अंतर्धूमेविपचितशतगुणगंधेन रंजितः सूतः । स भवेत् सहस्रवेधी तार ताम्रे भुजङ्गे च ।।२१।। (र० चिं०, र० रा० शं०, र० रा० सुं० बृ० यो०, र० रा० प०, र० सा० प०)

अर्थ–सौगुने गंधक से अंतर्धूम द्वारा पचाया हुआ पारा रंजित (रंगा हुआ) होता है और वह चांदी, तांवा और राँगे में सहस्रवेधी होता है।।२१।।

सम्मति–यह क्रिया सोना चांदी बनाने के विषय में आती है और षडगुण गंधक जारण से सब रसादि बनते हैं, इसलिये वही पारा समस्त वैद्यों के उपयोगी है। मेरी समझ में इसी सम्मति को समस्त वैद्य भी पसंद करेंगे और षड्गुण गंधक जारण किये बिना कोई कार्य नहीं करना चाहिये यह बात सर्वसम्मत है।

शत और सहस्त्रगुण गंधक जारणफल

जीर्णे शतगुणे गंधे शतवेधी भवेद्रसः सहस्रगुणित जीर्णे सहस्रांशेन वेधयेत् ।।२२।। (र० सा० प० नि० र०, र० रा० शं०, र० रा० सुं०)

अर्थ–जिस पारद में सौगुना गंधक जारण किया जाय वह शतवेधी होता है और जिसमें हजारगुना गंधक जारण किया जाय वह सहस्रवेधी होता है।।२२।।

अन्यच्च

जीर्णे शतगुणे सम्यक्सहस्रांशेन विध्यति ।
सहस्रगणिते जीर्णे लक्षवेधी न संशयः ।।२३।।

(र० प०)

अर्थ–और रसपद्धति में तो ऐसा लिखा हैं कि शतगुण गन्धक जारण से पारद सहस्रवेधी होता है और हजार गुना गन्धक जारण करने से लक्षवेधी होता है, इसमें सन्देह नहीं।।२३।।

पिष्टी बनाकर भूधरादिद्वारा गंधकजारणफल दशगुणसे वेधकफल और वेधविधान

दशगुणं जारयेद्गंधं पिष्टिकां वेधयेद्ध्रुवम् । कल्कहैमी तया तारं क्रमेण वेष्टयेद्बुधः ।।२४।। ध्मातं तदंधमूषायां कनकं भवति शोभनम् । तद्धेम जायते दिव्यं दिव्याभरणभूषिते ।।२५।। शतगुणं जारयेद्गधं सहस्रांशेन वेधयेत् । सहस्रं जारयेद्गधं लक्षवेधं करोति सः ।।२६।। जारितो लक्षसंख्यां च कोटिवेधं करोत्य सौ । एवं वेधाधिको देवि रसकर्म करोतिः सः ।।२७।। असंख्याता कृता येन जारणा विधिरुत्तमः । नादवेधी भवेत्तस्य रुद्रतुल्यो न संशयः ।।२८।। क्षपिता मुखमध्ये तु खेचरत्वं च जायते । इच्छाचारी भवेत्सोपि क्रीडते सचराचरम् ।।२९।। इच्छारूप भवेत्तस्य त्रैलोक्यं गोचरं भवेत् । खाद्यते न च कालेन बाध्यते न च कर्मणा ।।३०।।अच्छेद्यो वज्रशस्त्रेण वज्रदेहोऽभिजायते । येन केन प्रकारेण गंधको जारितो यदि ।।३१।। नान्यथा जारितं सिद्धिर्विना गंधकसूतयोः ।। पक्षच्छेदे समर्थः स्याद्रंजने बंधने तथा ।।३२।। क्रमेण वेधयत्सूतो यथा जारितगंधकः । तादृशो हि गुणः सूतो यथा जारितगंधकः ।।३३।। (यो० सा०)

अर्थ–पारद और गन्धक की पिष्टी बनाकर वेधकर्म के लिये दशगुना गन्धक जारण करे। फिर उसी स्वर्ण और पारद के कल्क से चांदी के पत्रों को लपेट अन्धमूषा में धोंके तो उसका निश्चय सोना होता है और उसी स्वर्ण के उत्तम गहने होते हैं। पारद सौगुने गन्धक जारण से लक्षवेधी होता है और लक्षगुण जारण से कोटिवेधी होता है। इस प्रकार हे पार्वती! जो अधिक वेध के करनेवाला है वही पारद रसकर्म को करता है और जिसं मनुष्य के उत्तम रीति से अधिक जारणा की है उसका पारद नादवेधी होता है और वह श्रीशिव के समान होता है। अनेक बार जारित पारे की गोली को मुख में रखने से मनुष्य खेचरत्व को प्राप्त होता है और वह चराचर सृष्टि के साथ खेल करता हुआ इच्छापूर्वक विचरता है क्योंकि वह अपने रूप को इच्छानुसार धारण कर सकता है और उसकी दृष्टि में तीनों लोक झलकते हैं और उसको काल नहीं खाता है अपने किये हुए कर्म भी दुःख नहीं देते हैं और वज्र के समान देह होने के कारण वज्र के समान शस्त्र से भी नहीं कट सकता है चाहे जिस प्रकार गन्धक को जारण करे परन्तु बिना गन्धक जारण के गुण नहीं होता क्योकि गंधक जारण से पदार्थ के पक्ष नाश होते हैं और क्रम से रंजन, बन्धन, तथा वेधन के भी योग्य होता है जैसा जैसा पारद में जारण किया जायेगा वैसा वैसा अधिक गुण होगा।।२४–३३।।

पिष्टी की क्रिया और भूधर से गंधक जारण क्रिया और उसके भक्षण का फल

अथातः संप्रवक्ष्यामि पिष्टिकावेधमुत्तमम् । एवं यावत्सूतकं च गंधकं नवमांशतः ।।३४।। खल्वमध्ये ददेत्सूते स्तोकं च गंधकम् । गंधसूतकृतां पिष्टीं कर्पटे तां सुबंधयेत् ।।३५।। स्मरेत्सदाशिवं देवं पाषाणे न तु मोदयेत् । निक्षिपेत्तु यदा गंधमूर्ध्वाधः परिकल्पयेत् ।।३६।। निक्षिप्तमंधमूषायां भूधरेण तु पाचयेत् । एतया क्रियया सूते षडगुणं जारयेद्ध्रुवम् ।।३७।। पुनः पुनः क्रमेणैव दशगुणं पाचयेदपि । पूर्वजारितगंधस्य विधिरेवं वरानने ।।३८।। अथवा ताम्रपात्रे च स्तोकं स्तोकं च सूतकम् । गंधकं स्तोकमेकं च करांगुल्या च मर्दयेत् ।।३९।। नवनीतसमं पिंड जायते वरपिष्टिका । दत्त्वा लघुपुट पश्चाद्धेमपत्राणि मेलयेत् ।।४०।। अथवा मधुसंयुक्तां भक्षयेत्तां सुपिष्टिकाम् । षण्मासस्यप्रयोगेण दिव्यदेहोऽभिजायते ।।४१।। संवत्सरप्रयोगेण जीवेद्वर्षसहस्रकम् ।। तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्वं भवति कांचनम् ।।४२।। (योगसार)

अर्थ–अब मैं उत्तम पिष्टिकावेध को वर्णन करता हूँ। प्रथम पारद को खरल मेंडाल पारे से नवम भाग लिये हुए गंधक को थोड़ा थोड़ा डालकर घोटे फिर उस गंधक और पारद की पिष्टि को कपड़े में बाँध देवे और उस पिष्टी को पत्थर के खरल में न पीस तदनंतर श्रीशिवजी का ध्यान करता हुआ वैद्य अंधमूषा में सबसे नीचे गंधक उसके ऊपर पारदपिष्टि और फिर उसके ऊपर गंधक रखकर और मुद्रा कर भूधरयंत्र में पचावे इस प्रकार विद्वान वैद्य षड्गुणगधक जारण करे और इसी प्रकार दशगुणगंधक को को भी जारण करे जैसे कि षड्गुण जारण किया गया था। अथवा पारद तथा थोड़े से गंधक को तांबे में डालकर अंगुली से मर्दन करे और करते करते जब मक्खन के समान हो जाय तब बंद करे उसके बाद लघुपुट देकर सोने के पत्रों को ल्हेस दे। अथवा जो मनुष्य उस पिष्टी को शहद में मिलाकर ६ मास तक भक्षण करे उसकी देह दिव्य (उत्तम) हो जाती है यदि एक वर्ष तक जो इसका सेवन करे तो एक सहस्त्र वर्ष तक जीवित रहे और उसके मूत्र से तांबे का सोना होता है।।३४–४२।।

सम्मति–इस जारण के फल में गंधक जारण की जो क्रिया लिखी गई है उसका यह मतलब है कि पूर्वोक्त जारण फल से इससे क्रिया का विशेष संबंध है।

तुलायंत्रद्वारा गंधकजारणफल

तुलायंत्रगतं सूतं गंधकं धूमरंजितम् । तारे ताम्रे तथा नागे सहस्रांशेन वेधयेत्

१–शतगुण–पाठान्तर कई पुस्तकों मे और यही ठीक भी जान पड़ता है सहस्रगुण–नि०र० में है किन्तु यह छन्दविरुद्ध और युक्तिविरुद्ध है।

१ इसका संबंध ऊपर कहे हुए वेधकर्म से है आशय यह है कि दसगुण जारण जारित पारदपिष्टी में स्वर्णपत्र मिला कल्क बना उससे तारपत्रों को वेध करे।

॥४३॥ षड्गुणे च द्विरावृत्ते सूतो जारितगंधकः ॥ धूम्रजारितयोगेन जरादारिद्र्यनाशनः ॥४४॥

(योगसार)

अर्थ–तुलायंत्र में गंधक के धुएँ से रँगा हुआ पारा, चाँदी, तांबा तथा सीसे को सहस्रांश से बेधता है। अथवा धूम्रयोग (तुलायंत्र से) बारहगुना गंधक जारित पारा बुढ़ापे अथवा दरिद्रता को नाश करता है॥४३॥४४॥

गंधक और अभ्रक जारणमहत्त्व
अथ रससिंधु

देव्या रजो भवेद्गन्धो धातुः शुक्रमथाभ्रकम् । आलिंगने समर्थौ द्वौ प्रियत्वाच्छिवरेतसः ॥४५॥ आश्लेषा देतयोः सूतो न वेत्ति मृतिजं भयम् ॥ शिवशक्तिसमायोगे प्राप्यते परमं पदम् ॥४६॥

(टो० नं०, ध० सं० र० रा० सुं०)

अर्थ–गधंक श्रीपार्वतीका रज है और अभ्रक श्रीब्रह्मदेवजी का वीर्य है ये दोनों प्रिय होने से शिववीर्य (पारद) के साथ मिलने में समर्थ हैं और इन दोनों के साथ मेल होने के कारण पारद अपनी मौत की भी शंका नहीं करता है तथा शिवशक्ति (पारद–गंधक) योग से परमपद को प्राप्त होता है॥४५॥४६॥

षड्गुणगंधकजारण की आवश्यकता

जड्गुणे गंधके जीर्णे रसो भवति रोगहा ॥
तस्माद्गंधस्तु शुद्धो हि जीर्येत रसरेतसि ॥४७॥

(ध० सं०, र० रा० सुं०)

अर्थ–षड्गुण गंधक जारण से पारद रोगों के नाश करनेवाला होता है, इस कारण पारद में शुद्धगंधक का जारण करना उचित है॥४७॥

गंधाभ्रजारणफल

देव्या रजोद्भवो गंधोः धातुः शुक्रं तथाभ्रकम् । आलिंगने समर्थौ द्वौ प्रियत्वाच्छिवरेतसः ॥४८॥ शिवशक्तिसमायोगात्प्राप्यते परमं पदम् । यथा स्याज्जारणा बह्वी तथा स्याद्गुणदो रसः ॥४९॥ (नि० र० र० चिं० र० रा० शं० र० सा० प०)

अर्थ–पार्वती के रज से पैदा हुआ गंधक और ब्रह्मा के वीर्य्य से पैदा अभ्रक है अतएव ये दोनों प्रिय होने के कारण पारद के साथ मिलने के योग्य है और शिवशक्ति (पारा–गंधक) के योग से परम पद को प्रात होता है जितना अधिक गंधक जारण होगा उतना ही पारद अधिक गुणवान् होगा॥४८॥४९॥

गंधाभ्रजारणफल

देव्या रजो भवेद्गंधो धातुः शुक्र तथाभ्रकम् । आलिंगने समर्थौ द्वौ प्रियत्वाच्छिवरेतसः ॥५०॥ शिवशक्तिसमायोगात्प्राप्यते परमं पदम् । तस्माद्गंधं विशुद्धं स्याज्जीर्यते शिवरेतसि ॥५१॥ यथा स्याज्जारणा बह्वी तथा स्याद्गुणदो रसः ॥ मृत्यूपमृत्युनाशार्थं पारदः शिववद्भवेत् ॥५२॥ ये गुणाः पारदे देवि गंधकेऽभ्रे च ते गुणाः ॥ षड्गुणे गंधके जीर्णे रसो भवति रोगहा ॥५३॥ (र० प०)

अर्थ–श्रीपार्वती का रज, गंधक और ब्रह्मा का वीर्य अभ्रक है, ये दोनों प्यारे होने से मिलने योग्य है और शिव शक्ति अर्थात् पारद और गंधक के योग से परमपद को प्राप्त होता है, इस कारण शुद्धगन्धक का ही पारद में जारण करे मृत्यु तथा उपमृत्यु (अकालमृत्यु) के नाश करने के लिये पारद ही श्रीशिव के समान है पारद में जितनी अधिक अधिक गंधक की जारणा होगी उतना ही पारे में गुण अधिक होता है जो गुण पारद में हैं वे गुण गंधक तथा अभ्रक में होते हैं। षड्गुण गंधक के जारण से पारद रोगों का नाशक होता है॥५०–५३॥

रसायन और धातुवाद दोनों के उपयोगी अभ्रक का जारण

संप्रत्युभयोरेव प्राधान्येन जारणोच्यते यथा–

(र० चिं०, र० रा० शं०)

अर्थ–रसायन तथा धातुवाद इन दोनों की प्राधान्यता से अब हम जारण क्रिया को कहते हैं।

अभ्रकजारण फल

अभ्रकस्तव बीजं तु मम बीजं तु पारदः ॥
अनयोर्मेलनं देवि मृत्युदारिद्र्यनाशनम् ॥५४॥

(र० द०,नि० र०)

अर्थ–हे पार्वति! तुम्हारा रज अभ्रक तथा मेरा वीर्य पारद है इन दोनों का जो मेल है वही मृत्यु तथा दरिद्रता का नाश करता है॥५४॥

एक अभ्रसत्त्व ही पारे का पक्षच्छेद कर सकता है

विनैकमभ्रसत्त्वं नान्यो रसपक्षकर्तने समर्थः ॥
तेन निरुद्धप्रसरो नियम्यते बध्यते च सुखम् ॥५५॥

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं० बृ० यो० र० सा० प०, र० रा० प०, र० प०)

अर्थ–केवल अभ्रकसत्त्व को छोड़कर और कोई पदार्थ पारद के पक्ष काटने में समर्थ नहीं है इसलिये अभ्रकसत्त्व के जारण करने से वेग रहित पारद सहज में ही नियमित और बद्ध होता है॥५५॥

पक्षच्छेद के बिना रसबंध असंभव

पक्षच्छेदमकृत्वा रसबंधं कर्तुमीहते यश्च ।
बीजैरेव हि स जडो वाञ्छत्यजितेन्द्रियो मोक्षम् ॥५६॥

(र० प०)

अर्थ–जैसे इन्द्रियों को नहीं जीतकर मनुष्य मोक्ष को चाहते है वैसे ही जो वैद्य पारद के पक्ष काटने के बिना केवल बीजों से ही पारद को बद्ध करना चाहता है वह मूर्ख समझा जाता है॥५६॥

छिन्नपक्षलक्षण

नाधः पतति न चोर्द्ध्वे तिष्ठति यंत्रे भवेन्न चोद्गारी ॥
अभ्रकजीर्णस्तु रसश्छिन्नपक्षस्तु विज्ञेयः ॥५७॥

(र० प०)

अर्थ–जो पारा नीचे नहीं गिरता हो और ऊपर उड़ता न हो और यन्त्र में ही ठहरा हुआ हो तथा किसी पदार्थ के उद्गार करनेवाला न हो या स्थिर हो उस अभ्रक जीर्ण पारद को छिन्नपक्ष समझना चाहिये॥५७॥

अभ्रकजीर्णरसलक्षण

कपिलोऽथ निरुद्गारी विप्लुषभावं स मुंचते सूतः ॥
निष्कंपो गतिरहितो विज्ञातव्योऽभ्रजीर्णस्तु ॥५८॥

(ध० सं०)

अर्थ–जो पारद धूवें की सी रंगत का हो और जो चंचलभाव को छोड़ देता हो तथा स्थिर स्वभाव, कम्प रहित, गति (उर्ध्वाधः इत्यादि) रहित हो उसको अभ्रजारित पारद कहते हैं॥५८॥

सम्मति–यहां पर इस बात को याद रखना चाहिये कि रसरत्नसमुच्चय में निष्कम्प मृत पारद का लक्षण बताया है और यहां अभ्रकजीर्ण का लक्षण माना है आगे विचारणीय है।

चंचलपादर का अभ्रकजारणबिना बद्ध

अग्राह्यो निर्लेपः सूक्ष्मगतिर्व्यापकः क्षयो बीजः ।

यावद्विशति न योनौ न तावद्बंधाश्रितो भवति ॥५९॥

(र० प०)

अर्थ–जो बीज अग्राह्य (ग्रहण के योग्य न हो) निर्लेप (जो किसी से निर्लिप्त नहीं हुआ हो) सूक्ष्म गतिवाला व्यापक अक्षय है वह भी योनि में बिना प्रवेश किये हुए बंधन को नहीं प्राप्त होता है॥५९॥

अभ्रक के पांचग्रास के अनंतर ही बीज जारण की आज्ञा

पंचभिरेभिर्ग्रासैर्घनसत्त्वं जारयित्वादौ ।
गर्भद्रावी निपुणो जरयति बीजं कलांशेन ॥६०॥

(र० प०)

अर्थ–गर्भद्रुति से निपुण वैद्य प्रथम अभ्रकसत्त्व का जारण करे तदनंतर षोडशांश से सुवर्ण का जारण करे॥६०॥

सम्मति–यहां पर पंचग्रास का प्रमाण चौसठ, चालीस, तीस बीस तथा सोलह ऐसा है।

अभ्रजारणफल

(अभ्रजारण से पारद का बंधन सुगम हो जाता है)

स्वल्पमप्यभ्रकं सूतो यदि गृह्णाति चेत्सुखम् ।
बध्यते स्वगृहे क्षेत्रे यथा चोरोऽतिचञ्चलः ॥६१॥

(र० प०)

अर्थ–जिस प्रकार अपने घर के खेत में अति चंचल चोर बंधाई में आ सकता है तैसे थोड़ा ही अभ्रकजारण करने से सुखपूर्वक बद्ध हो जाता है॥६१॥

द्विगुणसत्त्व जारणफल

यदि सूताद्द्विगुणोऽभ्रसत्त्वे जीर्णे सति तदा पारदः ।
छिन्नपक्षो भवति तथाग्निसंयोगान्न गच्छतीति भावः ॥

(ध० सं०)

अर्थ–जब पारद से दूने अभ्रसत्त्व का जारण होता है तब पारा पक्षरहित होता है और अग्नि के योग से नहीं जाता है।

समादिअभ्रकजारणफल

अभ्रके द्विगुणे जीर्णे धूमत्वं नैव गच्छति। जीर्णे दशगुणे ग्रासे गतिस्तस्य न विद्यते ॥६२॥ उत्पत्योत्पत्य सूतेन्द्रो मूषायां पतति ध्रुवम् । जारितेष्टगुणे ग्रासे कम्पते च मुहुर्मुहुः॥६३॥ बाह्यो चोत्पत्य नोयाति स्थितिः स्थानेषु दृश्यते । जीर्णे चाष्टगुणेः व्योम्नि धाम्यो भवति पारदः ॥६४॥ श्वेता च बहुधा छाया व्योमजीर्णे च दृश्यते । निष्कंपो निर्गतिस्तस्य धमनाज्जीर्यते रसः ॥६५॥ अष्टकाष्टगुणे जीर्णे महाबलमवाप्नुयात् लेपेन तारपत्रेषु करोति दश वर्णकम् ॥६६॥

(र० प०)

अर्थ–द्विगुण अभ्रक जारण करने पर पारद धूवें के रूप में होकर नहीं जाता है और चौगुने अभ्रसत्त्व जारण करने पर पारद की गति नष्ट हो जाती है तथा पारा उड़ उड़कर मूषा में ही रह जाता है और षड्गुण अभ्रसत्त्व जारण से पारद बार बार कांपता है और बाहर उड़कर नहीं जाता और वह अपने स्थान पर ही ठहरा हुआ मालूम होता है और अठगुने अभ्रसत्त्व के जारण करने से पारा अग्नि से धोंकने योग्य हो जाता है और अभ्रसत्त्व के जीर्ण होने से पारद की छाया अकसर सफेद मालूम होती है तथा पारद को धोंकने से निष्कम्प और गतिरहित हो जाता है और सोलह गुने के सत्त्व के जारण से पारा अत्यन्त बलिष्ठ होता है उसी पारद का चाँदी के पत्रों पर लेप करने से दसवर्ण का सुवर्ण होता है॥६२॥६६॥

समादि अभ्रजीर्ण के दर्जे

समजीर्णे भवेद्बालो यौवनश्च चतुर्गुणम् ॥ वृद्धः षोडशजीर्णे च तदा कर्म पृथक पृथक् ॥६७॥ कुमारो रोगदमने तरुणो देहरक्षणे ॥ वृद्धो विध्यति लोहानि सर्व ज्ञात्वा चरेत्क्रियाम ॥६८॥

(टो० नं०)

अर्थ–पारदतुल्य अभ्रकसत्त्व के पारद दण्डधारी होता है और दूसरा नाम कल है यह किंचित् कार्य करनेवाला होता है जिस पारद में तुल्यभाग अभ्रसत्त्व का जारण होता है उसको बालपारद तथा चतुर्गुण जारित को युवा और षोडशगुण जारित पारद को वृद्ध कहते हैं। और उनके कर्म पृथक् पृथक् हैं। बाल पारद रोगों को हरता है और तरुण पारद देह का रक्षक है तथा वृद्ध पारद समस्त धातुओं को वेधता है इस कारण सब बातों को जानकर पारद कर्म करे॥६७॥६८॥

स्वर्णजारण फल

रसपावकयोर्वैरं सख्यं पावकस्वर्णयोः ॥
अतिमैत्री तयोरस्ति स्वर्णसंयोगतस्ततः ॥६९॥

(र० प०)

अर्थ–पारद और अग्नि की परस्पर शत्रुता है तथा अग्नि और स्वर्ण की परस्पर मित्रता है इस कारण स्वर्ण और पारद के योग से पारद तथा अग्नि की अतिमित्रता होती है॥६९॥

स्वर्णजारित पारद के गुण

सुवर्णं राजतस्पर्शात्सर्वधातून्विनिश्चितम् ॥
कुरुते लीलयाः सूतः कोटिवेधे स्थितः सदा ॥७०॥

(र० प०)

अर्थ–स्वर्णजारित के कारण कोटिवेध में स्थित पारद सहज से ही समस्त धातुओं को सुवर्ण करता है॥७०॥

गंध, अभ्र, हेमादिजारण के फलों की संख्या

शुद्धं[१]गंधेषु जीर्णेषु शुद्धाच्छतगुणाऽधिकः ॥ षड्गुणे गंधके जीर्णे रसो भवति रोगहा ॥७१॥ अवश्यमित्युवाचेदं देवीं श्रीभैरव स्वयम् ॥ तस्माच्छतगुणो व्योमसत्त्वे जीर्णे तु तत्समें ॥७२॥ ताप्यखर्परतालादिसत्त्वे जीर्णे गुणावहाः ॥ हेम्नि जीर्णे सहस्रैकगुणसंघप्रदायकः ॥७३॥ (र० चिं०, नि० र०, र० रा० सुं०, र० रा० शं०, र० सा० प०)

अर्थ–शुद्ध गंधक के जीर्ण होने पर पारद शुद्ध पारद से सौ गुना अधिक होता है और षड्गुण गंधक जीर्ण होने पर पारा रोगों को नाश करता है यह श्रीमहादेवजी ने पार्वती को कहा है इस प्रकार शतगुण गंधक जारण किया हुआ पारद तथा सम भाग अभ्रक जारण किया हुआ पारा ये दोनों तुल्यगुण के हैं। सोनामक्खी खपरिया और हरताल आदि के सत्त्व जीर्ण होने पर पारद गुणदाता होता है और सुवर्ण जारण होने पर एक सहस्रगुण के देनेवाला होता है। इसी श्लोक से यह बात सिद्ध होती है, कि आठ संस्कारों के बाद गंधक जारण का प्रयोग लिखा है यही बात मेरी सम्मति में ठीक है॥७१–७३॥

एवं च संस्कारैः संशोधितस्य सूतस्य जारणं बिना मारण सर्वथा निषिद्धिं जारणं तु मुखं विना न संभवति, तस्मात्सूतस्यादौ सम्यक्तया शोधनं कृत्वा पश्चान्मुखं कुर्यात्तदनंतरं सुवर्णं सुवर्णक्रियार्थं तारं रजतक्रियार्थं स्वर्णं तारं वा बलवत्सूतकरणार्थं गंधकं तु बलवत्त्वरोगहारित्वकरणार्थं च जारयेदिति ॥ (ध० सं०)

१–हस्तलिखित योगतरंगिणी–शुद्ध अर्थात् अष्टसंस्कार के अनंतर गंधकजारण कहाता है और ऐसा ही इस श्लोक से सिद्ध है।

अर्थ–जारणसंस्कार के विना संस्कारों से शुद्ध किये हुए पारद का मारण करना उचित नहीं है और बुभुक्षितीकरण के बिना नहीं हो सकता है। इसलिये प्रथम उत्तम रीति से पारद को शुद्ध कर उसके मुख करे तदनंतर स्वर्ण बनाने के लिये स्वर्ण का जारण तथा चांदी बनाने के लिये चांदी का जारण या पारद में बल पहुंचाने के लिये सोना और चांदी दोनों का जारण अथवा बल बढाने या रोग नाश करनेवाली शक्ति बढाने के लिये गन्धक जारण करे।

किस कर्म में किस रंग का अभ्रक लेना चाहिये

रक्ते पीतं च हेमार्थे कृष्णं हेमशरीरयोः ॥ तारकर्म्मणि तच्छुक्लं काचकीदृक् सदा त्यजेत् ॥७४॥

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, बृ० यो०, र० रा० प०)

अर्थ–स्वर्ण बनाने के लिये लाल और पीले रंग का अभ्रक जारण करे स्वर्ण का बनाना शरीर की रक्षा के लिये कृष्णाभ्रक का जारण करे और चांदी बनाने के लिये श्वेत अभ्रक का जारण करे। स्वर्ण बनाने के लिये श्वेत अभ्रक का जारण कदापि न करे।।७४।।

वर्णभेद से अभ्रकजारणफल

कृष्णाभ्रके न बलवञ् शितरागैर्युज्यते रसेन्द्रस्तु ॥
श्वेतै रक्तैः पीतैर्विद्वद्भिर्वर्णतो ज्ञेयाः ॥७५॥

(ध० सं०)

अर्थ–कृष्णाभ्रक जारणसे कृष्णवर्णका श्वेताभ्रकसे श्वेतवर्णका रक्ताभ्रक से लालवर्ण का तथा पीताभ्र से पीतवर्ण का पारद होता है। परन्तु यह सदा स्मरण रखना चाहिये कि किसी रंगत के जारण करने से पारद बलवान अवश्य ही होता है।।७५।।

स्वर्ण और चाँदी के उपयोगी पृथक् जारण का वर्णन

कृष्णाभ्रकं सुवर्णं वा यशाशक्त्या यथाशक्त्या प्रजारयेत् ॥ पूर्ववत्क्रमयोगेन फलं स्यादुभयोः समम् ॥७६॥ अनेनैव प्रकारेण तारं वा श्वेतमभ्रकम् ॥ जारयेत्तु यथाशक्त्या तारकर्मणि शस्यते ॥७७॥

(र० रा० प०)

अर्थ–पारद में कृष्णाभ्रक तथा स्वर्ण का यथाशक्ति जारण करे और उन दोनों के जारण का फल है और इसी प्रकार चांदी तथा श्वेताभ्र को जारण करे तो वह चांदी बनाने के लिये उत्तम है।।७६।।७७।।

किस निमित्त किसका जारण करे

कृष्णाभ्रं च सुवर्णं वा जारयेद्धेमकर्मणि ॥ रजतं श्वेतमभ्रं वा तज्जार्यं तारकर्मणि ॥७८॥ कर्तव्यं सूतराजे तु तद्वद्भवति कांचनम् ॥ श्वेतेन जायते श्वेतं यथा बीजं तथांकुरः ॥७९॥

(र० रा० प०)

अर्थ–सुवर्ण बनाने के लिये सुवर्ण तथा कृष्णाभ्रक का जारण करे। चांदी बनाने के लिये चांदी तथा श्वेताभ्रक का जारण करे तो सोना और चांदी प्रस्तुत होते हैं। सुवर्ण जारण से सुवर्ण, रजत जारण से रजत (चांदी) होती है अर्थात् जिस प्रकार का बीज डालेंगे वैसा ही अंकुर पैदा होता है।।७८।।७९।।

भिन्नधातुओं के जारण का पृथक् पृथक् फल

कुटिले बलमत्यधिकं रागस्तीक्ष्णे च पन्नगे स्नेहः ॥ रागस्नेहबलानि तु कमले नित्यं प्रशंसति ॥८०॥ बलमास्तेऽभ्रकसत्त्वे जारणरागाः प्रतिष्ठितास्तीक्ष्णे ॥ बन्धश्च सारलोहे क्रामणमथ नागवंगगतम् ॥८१॥

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, बृ० यो०, र० रा० प०)

अर्थ–कुटिल के जारण करने पर पारद में बल अधिक होता है। कांत के जारण से राग (रंगत) और पन्नग (सीसे) के जारण से स्नेह पैदा होता है और कमल (तांबा) के जारण करने में राग स्नेह और बल ये नित्य ठहरे हुए हैं अर्थात् अभ्रसत्त्वजारण में बल, तीक्ष्ण जारण में क्रामण ठहरा हुआ है।।८०।।८१।।

तीक्ष्णलोहजारण का फल

क्रामति तीक्ष्णेन रसस्तीक्ष्णेन च जीर्यते ग्रासः ॥ हेम्नो योनितीक्ष्णं रागान्गृह्णाति तीक्ष्णेन ॥८२॥ तदपि च दरदेन हतं कृत्वा वा माक्षिकेण रविसहितम् ॥ वासितमपि वासनया घनवच्चार्यं च जार्यं च ॥८३॥

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, बृ० यो०, र० रा० प०)

अर्थ–कान्त जारण से पारद क्रामण और बुभुक्षित होता है। सोने की योनि कान्त है इसलिये तीक्ष्ण (कान्त) जारण से पारद उत्तम रगत को ग्रहण करता है और जो कान्त पारद में जारित किया जाय उसको सिंगरफ और आक के दूध से भस्म किया हुआ हो अथवा सोनामक्खी और अर्क दुग्ध के साथ भस्म किया हुआ हो और वह भस्म वासना देने योग्य पदार्थों में वासित किया गया हो उसको खिलाना तथा जारित करना चाहिये।।८२।।८३।।

संपूर्ण लोहों के जारण से पारद बद्ध हो जाता है

सर्वैरेभिर्लोहैर्माक्षिकमृदितैर्द्रुतैस्तथा गर्भे ॥ विडयोगेन च जीर्णे रसराजो बन्धमुपयाति ॥८४॥ निर्बीजं समजीर्णे पादोने षोड़शांशे तु ॥ अर्द्धेन पादकनकं पादेनैकेन तुल्यकनकं च ॥८५॥ समादिजीर्णस्य सारणायोग्यत्वं शतादिवेधकत्वं च ॥ इतोन्यूनजीर्णस्य पत्रलेपाधिकार एव ॥८६॥ उच्यते च समजीर्णश्चायं शतवेधी द्विगुणजीर्णः सहस्रवेधी एवं लक्षायुतकोटि–वेधी अनुसर्तव्यः । चतुःषष्टिगुणजीर्णस्तु धूमस्पर्शावलोकशब्दतोऽपि विध्यति ॥

(र०चिं०, नि०र०, र०रा०शं०, बृ०यो०,र०रा०प०)

अर्थ–इन समस्त धातुओं को सोनामक्खी के साथ घोटकर पारद को खिलावे तो वे धातु पारद के गर्भ में ही द्रुत होकर विड़ योग से जब जारित होते हैं तब पारद बन्धन को प्राप्त होता है। जिस पारद में बीज का जारण नहीं किया गया हो वह समभाग कांत के जारण बद्ध होता है और जो चौथाई बीज (सोना) से जारित हो वह आधे कांत के जारण से बद्ध होता है तथा जिसमें तुल्य भाग का बीज जारित किया हो वह चतुर्थ भाग के जारण से बद्ध होता है। समभाग आदि कांत के जारण से पारद में क्रामणशक्ति उत्पन्न होती है और सौगुने से भी अधिक वेधशक्ति होती है और इसमें न्यून जारित पारद का तो पत्रों पर ही लेप का अधिकार है। अर्थात् वह लेप द्वारा ही सोना चांदी बना सकता है और कहा भी है कांत के समभाग से जीर्ण पारद शतवेधी द्विगुण जीर्ण से सहस्रवेधी इसी प्रकार लक्षवेधी दश लक्षवेधी और कोटिवेधी का अनुसंधान करना चाहिये और चौसठ गुने जीर्ण से तो धूमवेधी, स्पर्शवेधी, अवलोकवेधी और शब्दवेधी भी होत हैं।।८४–८६।।

१– कांचने तु' पाठान्तर निघण्टुरत्नाकार का टीकाकार कहता है कि श्वेत अभ्रक को चांदी के निमित्त वर्ते, सोने के लिये कदापि नहीं, इस अर्थ में 'कांचने तु' पाठ अच्छा बनता है।

१–यहां लोहे से सप्तधातु समझ पड़ते हैं।

२–यहां पर 'अयं' के स्थान में 'अयः' पाठ जान पड़ता है क्योंकि पारद के बन्धन और वेधक होने में लोहा ही कहा गया है। (वा 'अयं' शब्द से बाह्यद्रुतयः का इशारा है क्योंकि बाह्यद्रुतिकथनानंतर ही यह पाठ है)

अभ्र और स्वर्ण जारण से पारद बद्ध हो जाता है और दोनों का वेधक होता है ।

एवं द्विगुराद्यमभ्रकजारणं कृत्वा यदि पूर्वं स्वर्णादिजारणं न कृतं चैत्तदातः परं कच्छपयंत्रैणैव स्वर्णं रजतादिकं वा जारयेत् (तत्प्रकारस्तु गर्भद्रुतिप्रकरणोक्तो ज्ञेयः) ततः सिद्धपारदो भवति बद्धश्च जायते। एतत्सिद्धिपारदफलं प्रोच्यते–

मृतमुत्थापेन्मर्त्यं पारदो लग्नमात्रतः ।।

निर्हंति सकलान्रोगान्सूतः शीघ्रं न संशयः ।।८७।।

(ध० सं०)

अर्थ–इस प्रकार दूने अभ्र आदि को जारण करके फिर कच्छपयंत्र द्वारा सुवर्ण तथा चांदी का जारण करे। यदि अभ्रकजारण से पूर्व स्वर्ण का जारण नहीं किया हो तो इस प्रकार पारद शुद्ध और बद्ध होता है। इस प्रकार सिद्ध पारद का यह लक्षण है कि एवं सिद्ध किया हुआ पारद स्पर्शमात्र से ही मृतमनुष्य को जीवित कर देता है और पारद सम्पूर्ण रोगों को शीघ्र ही नाश कर देता है इसमें संदेह नहीं है।।८७।।

रसबंधनप्रशंसा

रसबंध एव धन्यः प्रारम्भे यस्य सततमीति करुणा ।।

सेत्स्यति रसे करिष्ये महीमहं निर्जरामरणम् ।।८८।।

(र० र० स०)

अर्थ–वह रसबंधन ही धन्य है जिसके प्रारम्भ करने के समय चित्त में ऐसा भान होता है कि रससिद्ध होने पर इस संपूर्ण पृथ्वी को मैं नीरोग (तन्दुरुस्त) और बुढ़ापे से रहित कर दूंगा।।८८।।

जारितपारद भक्षण की महिमा

विपिनौषधिपाकसिद्धमेतद्घृततैलाद्यपि दुर्निवारवीर्यम् ।।

किमयं पुनरीश्वराङ्गजन्मा घनजांबूनदचन्द्रभानुजीर्णः ।८९।। (र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, र० रा०, सुं०, र० सा० प०)

अर्थ–जंगली जड़ियों के साथ सिद्ध किये हुए घृततैलादि भी दुर्निवार्यवीर्य (जिनका गुण रुक नहीं सकता) होते हैं फिर अभ्रक, स्वर्ण, चांदी और ताम्रजीर्ण पारद (जो कि श्रीशिवजी के अंग से पैदा हुये हैं) का वीर्य कैसे रुक सकता है।।८९।।

हेमादिजीर्णसूतभक्षण फल

हेमजीर्णो भस्मसूतो रुद्रत्वं भक्षितो ददेत् ।। विष्णुत्वं तारजीर्णस्तु ब्रह्मत्वं भास्करेण तु ।।९०।। तीक्ष्णजीर्णो धनाध्यक्षं सूर्यत्वं चापि तालकैः । राजरेण शशांकत्वममरत्वं च रोहणे । सामान्येन तु तीक्ष्णेन शक्रत्वमाप्नुयान्नरः ।।९१।।

(र० चिं०)

अर्थ–सुवर्ण जीर्ण पारद के भक्षण करने से मनुष्य रुद्ररूप को प्राप्त होता है और चांदी से जीर्ण पारद भस्म के सेवन से विष्णु रूप को प्राप्त होता है, ताम्रजीर्ण पारद के सेवन से ब्रह्मरूप को, कान्तजीर्ण पारद के सेवन से कुबेरपन को और हरितालजीर्ण पारदभस्म के सेवन से सूर्यरूप को, राज लोह से जारित पारद भस्म के सेवन से चन्द्ररूप को, रोहणलोह से जारित पारदभस्म के सेवन से अमरपन को और सामान्य लोह के साथ जारित पारदभस्म के सेवन से मनुष्य इन्द्ररूप को प्राप्त होता है।।९०।।९१।।

जारण के रूप अर्थात् जारणा के ३ भाग

ग्रासस्य चारणं गर्भे द्रावणं जारणं तथा । इति त्रिरूपा निर्दिष्टा जारणा वरवार्तिकैः । ग्रासः पिंडः परिणामस्तित्रश्चाख्याः पराः पुनः ।।९२।।

(र० र० स०)

अर्थ–ग्रास का चारण, गर्भद्रावण और जारण इस प्रकार श्रेष्ठ वार्तिककारों ने तीन प्रकार की जारणा कही है और प्राचीन समय के तो इनके ग्रास, पिंड और परिणाम ये तीन नाम हैं।।९२।।

जारणारूप

एषा चारणा त्रिविधास्ति (निर्मुखत्वेन, समुखत्वेन, वासनामुखत्वेन वा) घनस्य ग्रसनं ग्रासचारणा प्रथमा, पिष्टीरूपरसेन सहाभ्रकादेर्मेलनं पिष्टीचारणा द्वितीया, रसस्य गर्भे रसरूपं गगनं तिष्ठतीति चारणा तृतीया इयं या गर्भचारणा सैव गर्भद्रुतिः कथ्यते । उक्तं च रसरत्नप्रकाशे अर्थगर्भद्रुतिकं संचारणं गुणवर्द्धनं कथयामि यथा तस्य रसराजस्य सिद्धिदमिति ।

(ध० सं०)

अर्थ–निर्मुखत्व, समुखत्व और वासनामुखत्व इनमें से किसी के द्वारा ज़ारण की जाय तो वह जारणा तीन प्रकार की होती है। उन तीनों जारणाओं में प्रथम जारणा का नाम ग्रासजारण है जिसमें कि अभ्रक का ग्रास दिया जाता है। दूसरी जारणाका नाम पिष्टीजारणा है जिसमें कि पिष्टीरूप रस पारद के साथ अभ्रक आदि का मेल होता है। और तीसरी जारणा का नाम गर्भजारणा है जिसमें कि पारद भीतर अभ्रक पारदरूप होकर ठहरता है और इस गर्भजारण को ही गर्भद्रुति कहते हैं क्योंकि रसरत्नप्रकाश में यही कहा है कि अब मैं गुण के बढ़ानेवाले और रसराज की सिद्धि के दाता गर्भद्रुति नाम के सञ्चारण को कहता हूं।

सम्मति–जारणा चाहे निर्मुख हो, या सन्मुख हो या वासनामुख से हो परन्तु प्रत्येक जारणा में चारण, गर्भद्रुति और जारणा ये तीनों भाग तो अवश्य ही करना पड़ता है।

जारणा के भेद

समुखा निर्मुखा चेति जारणा द्विविधा पुनः ।।९३।।

(र० र० स०)

अर्थ–अथवा और भी जारण के दो भेद हैं, एक निर्मुख और दूसरा समुख।।९३।।

जारण के तीन भेद

निर्मुखं समुखं चैव वासनामुखमेव च ।।

जारणा त्रिविधा ज्ञेया द्रष्टव्या रसशास्त्रके ।।९४।।

(टो० नं०, र० रा० सं०)

अर्थ–रसशास्त्र में निर्मुख, समुख और वासनामुख, इन भेदों से वासना तीन प्रकार की मानी गई है।।९४।।

सम्मति–प्रथम रसरत्नसमुच्चय में निर्मुख और समुख भेद से दो प्रकार की जारणा कही है और टोडरानन्द में वासनामुख भेद बताकर तीन प्रकार की कही है। अब यहां पर यह बात समझनी चाहिये कि वासनामुख का समुख में अन्तर्भाव होना उचित है, इस प्रकार मेरी समझ में तो जारण निर्मुख १, समुख २, वासनामुख ३, यातुधानमुख ४ और राक्षसवक्त्रवान ५, इन भेदों से पांच प्रकार से होनी चाहिये और उनमें चारणद्रुति और जारण ये तीनों कार्य करना उचित है।।

मुखलक्षण

चतुः षष्टचंशतो बीजप्रक्षेपो मुखमुच्यते । एवंकृते रसो ग्रासलोलुपो मुखवान्भवेत् ।। कठिनान्यपि लोहानि क्षमो भवति भक्षितुम् ।।९५।।

(र० र० स०)

अर्थ–चौसठवें हिस्से बीज के जारण से पारद के मुख होता है इस भांति करने पर पारा ग्रास लेने में लोलुप होता है और यह कठिन लोहों के भक्षण करने के लिये समर्थ होता है।।९५।।

सम्मुखलक्षण

इयं हि समुखा प्रोक्ता जारणा मृगचारिणा ॥

(र० र० स०)

अर्थ—और इसी को ही समुख जारण कहते हैं॥

निर्मुखजारणलक्षण

निर्मुखा जारणा प्रोक्ता बीजादानेन भागतः ॥९६॥

(र० र० स०)

अर्थ—और जिसमें बिना रीति के बीज का जारण किया जाय उसको निर्मुख जारण कहते हैं॥९६॥

द्वितीयनिर्मुखजारणालक्षण

सूतः खल्वे घृष्टो दिव्यौषधिभिः सनिर्मुखश्चरति ॥
दिव्यौषध्यो अग्रे वक्ष्यमाणाः ॥

(ध० सं०)

अर्थ—दिव्यौषधि (जो औषधिवर्ग में लिखी गई हैं) से खरल में घोटा हुआ पारद निर्मुख ही धातुओं को चर लेता है इसको निर्मुख जारणा कहते हैं॥

समुखजारणालक्षण

सास्यो रसः स्यात्पुटशिग्रुतुत्थसराजिकैः सोषणकैस्त्रिरात्रम् । पिष्टस्ततः स्विन्नतनुः सुवर्णमुख्यांश्च वै खादति सर्वधातून ॥९७॥

अर्थ—सैंधव, सैंजना, राई, त्रिकुटा इनके साथ तीन दिवस तक पारद को घीग्वार का रस डाल घोटे तदनंतर स्वेदन करे तो पारद मुखवाला होकर सुवर्ण आदि धातुओं को खाता है, इसी को समुखजारणा कहते हैं॥९७॥

अथ वासनामुखजारणालक्षण

अम्लवर्गेण संयुक्तं यथालाभेन मर्दयेत् ।
अभ्रकादीनि चरति स उक्तो वासनामुखः ॥९८॥

(ध० सं०)

अर्थ—पारद को यथालाभ अम्लवर्ग से मर्दन करे तो पारा अभ्र आदि को खा जाता है। बस इसी को वासनामुख जारण कहते हैं॥९८॥

राक्षसवक्त्रवान लक्षण

दिव्यौषधिसमायोगात्स्थितः प्रकटकोष्ठिषु ।
भुंजीताऽखिललोहद्यं योऽसौ राक्षसवक्त्रवान्॥९९॥

(र० र० स०)

अर्थ—जो पारद दिव्यौषधि के योग से तीव्राग्निवाली कोठियों में स्थित होकर समस्त धातुओं को खा जाता है उसको राक्षसवक्त्र(मुख) वान् कहते हैं॥९९॥

जारणा के २ प्रकार : बाल व वृद्ध (रसार्णव से)

जारणा द्विविधा बालजारणा मृदुपातना ।
अन्या तु खोटबद्धेन धातुभिर्वृद्धजारणा ॥१००॥

(र० प०)

अर्थ—जिसमें मृदुपातन हो उसको बालजारण कहते हैं और जारणा दो प्रकार की है, एक बालजारण और दूसरी धातुओं के साथ वृद्धजारणा, अब जिसमें मृदुपाचन हो उसको बालजारणा और जिसमें खोटवृद्ध के साथ जारण हो उसको वृद्धजारण कहते हैं॥१००॥

अन्यच्च

अथ जारणा सा च गालनपातनव्यतिरेकेण धनहेमादिग्रासपूर्वकपूर्वावस्था प्रतिपन्नत्वं सा द्विविधा बालजारणावृद्धजारणाभेदात्, समुखनिर्मुखवासनामुखभेदादेकैका त्रिविधा । समुखा बालजारणा, निर्मुखा बालजारणा, वासनामुखबालजारणा एवं वृद्धजारणा त्रिविधेति, षड्जारणा, तत्राभ्रजारणा, सत्त्वजारणा, पत्रजारणाभेदाद्द्विविधा ।

(जंबू से प्राप्त पुस्तक पृ० ३९)

अर्थ—अब जारण को कहते हैं। अभ्रक और सुवर्णादि के ग्रास देने पर गलाने और पातन के विना ही जो पारद अपनी पूर्वावस्था (पहिली ही हालत) को प्राप्त हो जाय उसको जारण कहते हैं और वह जारणा, बालजारणा और वृद्धजारणाके भेद से दो प्रकार की है। फिर भी निर्मुख, समुख और वासनामुख के भेद से एक एक जारणा तीन तीन प्रकार की है उसके भेद नीचे के यन्त्र (नक्शे) में लिखे हुए हैं, सो देख लीजियें और अभ्रकजारण भी सत्त्वजारण और पत्रजारणा भेद से दो प्रकार की है॥

जारणा

बालजारणा	वृद्धजारणा
समुखबालजारणा	समुखवृद्धजारणा
निर्मुखबालजारणा	निर्मुखवृद्धजारणा
वासनामुखबालजारणा	वासनामुखवृद्धजारणा

जारणाक्रम

गंधकजारणमादौ कुर्यादथ जारणं सुवर्णस्य ।
जलधरसत्त्वस्य ततो जारणमथ सर्वलोहानाम् ॥१०१॥

(बृ० यो०, र० रा० शं०, र० सा० प०, नि० र०)

अर्थ—प्रथम गंधक का जारण करे तदनन्तर स्वर्ण का जारण और फिर अभ्रसत्व का जारण करे॥१०१॥

धातुवाद के निमित्त आदि में अभ्र अंत में हेम जारण की आवश्यकता

अभ्रकजारणमादौ[१] गर्भद्रुतिजारणं च हेम्नोऽन्ते। यो जानाति न वादी वृथैव सोऽर्थक्षयं कुरुते ॥१०२॥

(र०चिं०, नि०र०, र०रा०शं०, र०रा०सुं०, बृ०यो०, र०रा०प०)

अर्थ—सुवर्णजारण के अन्त में प्रथम अभ्रकजारण फिर गर्भद्रुति और तदनंतर जारण को करे। इस बात को पारद वादी नहीं जानता है, वह अपने धन को व्यर्थ ही खोता है। यह अर्थ केवल रसायन बनानेवालों के पक्ष में है और धातुवादी जो वैद्य हैं उनके मत में प्रथम अभ्रकजारण तदनन्तर स्वर्णजारण करना उचित है, ऐसी सर्वशास्त्रानुसार मुझ टीकाकार की भी सम्मति है॥१०२॥

गगनग्रासमय

अत्र केचिदभ्रकजारणात् प्राक् सुवर्णरजतजारणं कुर्वंति पक्षद्वयेऽपि न काचिद्धानिः फलसाम्यात् परन्तु सुवर्णताराभ्रकानाम बीजसंज्ञा स्वर्ण–क्रियायां स्वर्णं तारक्रियायां रजतमिति विवेकः ॥

(ध० सं०)

१–इस श्लोक का अर्थ करते समय इस श्लोक का भी ध्यान रहे–

श्लो०–'पञ्चभिरेभिर्ग्रासैर्घनसत्त्वं जारयित्वादौ । गर्भद्रावे निपुणो जरयति बीजं कलांशेन' (र० चि०) किन्तु १ श्लो० यह भी है–'गन्धस्य जारणमादौ कुर्य्यादथ जारणं सुवर्णस्य । जलधरसत्त्वस्य ततो जारणमथ सर्वलोहानाम्' (र० रा० शं०)

शुद्ध स्वर्ण च रूप्यं च बीजमित्यभिधीयते ।। (र० र० स०)

अर्थ–अब जारण के विषय में कुछ विचार किया जात हैं कि कुछ वैद्यों की यह सम्मति है कि अभ्रकजारण से पहले स्वर्ण और चांदी आदि का जारण करना चाहिये और अत्यन्त ही कम वैद्यो की यह सम्मति है कि पूर्व अभ्रकजारण करके फिर स्वर्णादिक जारण करना उचित है। ग्रन्थकार की सम्मति यह है कि फल की ममता के कारण दोनों पक्षों में भी हानि नहीं है। यहां पर स्वर्ण चांदी और अभ्रक की बीज संज्ञा है। यदि स्वर्ण की क्रिया हो तो स्वर्ण का बीज और जो चांदी की क्रिया हो तो चांदी का बीज जारण करना चाहिये, ऐसा विचार करना उचित है।

जारणाक्रम

आदौ अभ्रकजारणं, ततो गंधकजारणम्, सुवर्णजारणं पश्चान्नवसारं विड़ान्वितम् । सप्तरसजारणमंते कुमारिकारसमर्दनं सर्वजारणेषु कार्य्यम् ।।

(जंबू से प्राप्त पुस्तक पृष्ठ ३७)

अर्थ–प्रथम अभ्रकजारण उसके बाद गंधकजारण, तदनंतर नौसादर और बिड से जारण करे। प्रत्येक जारण के अंत में घीग्वार के रस से पारद का मर्दन करे, यह उत्तम जारणा का क्रम है।।

सम्मति–खाक के लिये गंधकजारणानन्तर स्वर्णजारण काफी समझा गया है। देह और लोह बंध के निमित्त पहले गन्धक जारण करे। फिर अभ्रक के क्रम से ५ ग्रासों का जारण अवश्य करे।

"विना गंधेन ये मर्त्याः कुर्वते धातुजारणम् ।। न क्षुधा जायते सूते जीर्यंते धातवोऽपि न ।। तस्माद्गंधं पुरा जार्यं सूते वह्निविवर्धनम् ।।"
"पंचभिरेभिर्ग्रासैर्घनसत्त्वं जारयित्वादौ । गर्भद्रावी निपुणो जरयति बीजं कलांशेन ।।"

बालजारणाक्रम

गगनं जारयेदादौ सर्वसत्त्वमतः परम् ।। ततो माक्षिकसत्त्वं च सुवर्णं तदनंतरम् ।।१०३।। गर्भे संद्रावयित्वा तु ततो बाह्यद्रुतिं द्रवेत् ।। सितं सितेन द्रव्येण रक्तं रक्तेन रंजयेत् ।। सारणं क्रामणं ज्ञात्वा ततो वेधं प्रयोजयेत् ।।१०४।।

(र० प०)

अर्थ–प्रथम अभ्रक का जारण कर फिर समस्त सत्त्वों को जारण करे उसके बाद सोनामक्खी के सत्व का जारण करे, तदनंतर स्वर्ण की गर्भद्रुति करके फिर बाह्यद्रुति करे, यदि पारद को लाल रंगत का बनाना हो तो लालद्रव्य से रंजित करे और श्वेत रंगत का पारद बनाना हो श्वेत पदार्थों से रंजित करे। सारण तथा क्रामण को जानकर फिर वेध का प्रयोग करना चाहिये।।१०३।।१०४।।

वृद्धजारणाक्रम

गंधकं जारयेत्पूर्वं यंत्रे कच्छपयंत्रेणैव पश्चात्तु जारयेद्धेम व्योमप्रभृति यद्भवेत् ।।१०५।। पश्चाच्छ्यामादिकाः सर्वे जार्यंते रत्नसंचयाः ।। क्रामणं विद्यते सर्वं जारणात्तु न संशयः ।।१०६।। विना गंधनये मर्त्याः कुर्वते धातुजारणम् ।। न क्षुधा जायते सूते जीर्यंते धातवोऽपि न ।।१०७।। तस्माद्गंधं पुरा जार्यं सूते वह्निविवर्धनम् ।।१०८।।

अर्थ–प्रथम कच्छपयन्त्र से गन्धक का जारण करे फिर स्वर्ण और अभ्रक का करे। तदनन्तर अनेक रत्नोंका जारण करे क्योंकि सम्पूर्ण क्रामण जारण में स्थित है जो वैद्य गन्धक के विना (धातु) स्वर्ण आदि का जारण करते हैं उनका पारा बुभुक्षित नहीं होता है और धातु भी जीर्ण नहीं होते हैं। इस कारण प्रथम गन्धक जारण से पारद की अग्नि तीव्र होती है।।१०५–१०८।।

जारणमाहात्म्य

जारणस्य विशालाक्षि श्रृणु महात्म्यमुत्तमम् ।। सर्वपापप्रनष्टे हि प्राप्यते सूतजारणम् ।।१०९।। तस्मिन्प्राप्ते हि विज्ञानं प्राप्यते मुक्तिलक्षम् ।। यथा सूर्य्योदये प्राप्ते प्रकाशं प्राप्यते जनैः ।।११०।।

(अनुपानतरंगिणी)

अर्थ–हे बड़े नेत्रवाली पार्वती! अब तुम जारण के माहात्म्य को सुनो, समस्त रस पापोंके नाश होनेपर जारण प्राप्त होता है और रस जारण के प्राप्त होने पर विज्ञानरूप मुक्ति प्राप्त होती है जैसे कि मनुष्यों को सूर्योदय होने पर प्रकाश का लाभ होता है, वैसे ही जारणा होने पर विज्ञानरूप मुक्ति प्राप्त होती है।।१०९।।११०।।

अन्यच्च

सर्वपापक्षये जाते प्राप्यते रसजारणा ।। तत्प्राप्तौ प्राप्तमेव स्याद् विज्ञानं मुक्तिलक्षणम् ।।१११।।

(र०चिं०, नि०र०, र०रा०शं०, बृ०यो०, र०रा०सुं०, र०सा०प०)

अर्थ–समस्त पापों के नाश होने पर रस की जारणा प्राप्त होती है और जारणा के प्राप्त होने पर विज्ञानरूप मुक्ति प्राप्त होती है।।१११।।

अन्यच्च

**मोक्षाभिव्यंजकं देवि जारणा साधकस्य तु ।।
यावन्न जीर्य्यते सूतस्तावत्तु न च तिष्ठति ।।११२।।**

(र० प०)

अर्थ–हे देवि! जारणा ही पारद साधन के मोक्ष जताने वाली है और जब तक पारद जारित न हो तब तक स्थिर नहीं होता है।।११२।।

अन्यच्च

मोक्षाभिव्यंजकं देवि जारणा साधकस्य तु ।। खल्वस्तु[1] पिण्डिका देवि रसेन्द्रो लिङ्गमुच्यते ।। मर्द्दनं बंधनं चैव ग्रासं पूजा विधीयते।।११३।।

(र० चि०, नि० र० र० रा० शं० र० सा० प०)

अर्थ–हे प्यारी पार्वती! पादरजारण ही साधक को मुक्ति का दिखानेवाला है। स्ववस्तु (अभ्र व गन्धक) जलहरीरूप हैं और पारद शिवलिंग का रूप है तथा मर्दन बन्धन और ग्रास ये उनकी पूजा है।।११३।।

अग्नि पर पारे को रखने का माहात्म्य

यावद्दिनानि बह्निस्थो जारणे धार्यते रसः । तावद्वर्षसहस्राणि शिवलोके महीयते ।।११४।। दिनमेकं रसेन्द्रस्य यो ददाति हुताशनम् ।। द्रवंति तस्य पापानि कुर्वन्नपि न लिप्यते ।।११५।। (र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, बृ० यो०, र० रा० सुं०, र० रा० प०, यो० र०)

अर्थ–जारण के लिये जितने दिन पारद को अग्नि में रखे, साधक उतने ही हजार वर्ष तक शिवलोक में निवास करता है और जो मनुष्य एक दिन अग्नि में पारद को स्थापित करे तो उसके पाप नाश को प्राप्त होते हैं और कर्मो को करता हुआ भी कर्मो से लिप्त नहीं होता है।।११४।।११५।।

अन्यच्च

यावद्धस्राणि वह्निस्थं रक्षयेत्पारदं प्रिये । तावद्वर्षसहस्रांतं शम्भुलोके महीयते ।।११६।। वह्निस्थं रक्षयेद्यो वैघस्रैकं पारदं प्रिये । तस्य पापानि नश्यंति कुर्वन्नन्यैर्न लिप्यते।।११७।। (अनुपानतरंगिणी)

१–'स्ववस्तु पिंडिका देवि' (नि० र०) इस टीकाकार ने वस्तु का अर्थ गन्धक किया है।

अर्थ–हे पार्वती! जितने दिवस तक जो पारद की अग्नि में रक्षा करे तो वह उतने हजार वर्ष तक शिवलोकमें पूजनीय होता है और हे प्यारी! जो वैद्य एक दिन भी पारद को अग्नि में रखे तो उसके पाप नष्ट होते हैं और अन्य कर्मों से लिप्त भी नहीं होते हैं।।११६।।११७।।

सर्वजारण की आदि कर्तव्यता (रसचिंतामणि से)

तोलकानां शतं सूतं पूर्वमादाय सद्दिने स्थापयेद्दृन्लिबन्तस्य भाजने सुदृढे शनैः।।११८।। चंपकस्याथ पुष्पाणि जातिपुष्पाणि यानि च । शतपत्रीभवान्यत्र पुन्नागकुसुमानि च।।११९।। बिल्वस्य नव पत्राणि पाटलासुमनानि च । बकुलस्य च रम्यानि यथालाभं प्रकल्पयेत्।।१२०।। बहूनि निर्मलान्यत्र गुह्यस्थाने मनोहरे । सुलेपिते पवित्रे च शिवं तत्र शिवासमम्।।१२१।। स्थापयेद्भैरवं देवं ब्रह्माणं हरिमर्चयेत् । शंखमर्दलनिर्घोषैस्तत्सवं तत्र कारयेत्।।१२२।। बहुमंगलगीतेन ताश्चं संतोषयेत्सुधीः दानं समानं कर्तव्यं वक्तव्यं बहु मंगलम्।।१२३।। पश्चात्तत्र परे खल्वे तदा कर्म प्रसाधयेत् । एकभुक्तं ब्रह्मचर्यं भूमिशायी सदा भवेत्।।१२४।। शिवपूजापरो नित्यं रससेवापरायणः शुचिवासास्समातिष्ठे च्छिवहोमपरो भवेत्।।१२५।। योगिनः पूजयेन्नित्यं नित्यं मंत्रपरो भवेत् । अनया कुरुते रीत्या नित्यं हि रसजारणम् ।।१२६।। विनानेन न कर्तव्यं जारणाकर्म सूतके । नो कर्म जायते प्रान्ते न रसः सिद्धिमेति च।।१२७।।नो विघ्नानि निवर्तंते रसकर्महराणि च । अत एव हि नो याति जारणासिद्धिमुत्तमाम् ।।१२८।। दूषणं शास्त्रकारस्य प्रयच्छन्ति मनीषणः । दूषणं रसराजस्य महात्मानो न जानते ।।१२९।। अनेन विधिना सूतं लालयंति हे ये जनाः ते मर्त्यास्सिद्धिमाप्स्यन्ति ऐहिकीं पारमार्थिकीम् ।।१३०।। सुदिने रसराजस्य कृत्वा पूजां यथोदिताम् । तर्पयेद्योगिनीचक्रं मध्ये भैरवदेशिकम् । ततो हि रसराजस्य जारणाचरणं चरेत् ।।१३१।। (र० प०)

(र० प०)

अर्थ–श्रेष्ठ दिन में सौ तोले पारद को लेकर उत्तम दृढ वासन में रखे फिर चंपा, चमेली, गेंदा, पुन्नाम, बिल्वपत्र, पाटला (पाडल) बकुल (मौलसिरी) इनके फूलों को यथालाभ ग्रहण करे और एकान्त स्थान को लीपकर श्रीशिव तथा पार्वती, ब्रह्मा, विष्णु, और श्रीभैरवजी की मूर्ति को स्थापित करे फिर शंख और झालर बजावे अनेक प्रकार के गीतों से देवताओं को प्रसन्न करें और अनेक प्रकार के दान भी करे तदनंतर दूसरे खल्व में पारद को रखकर कर्म का प्रारम्भ करे साधकजन एकबार भोजन तथा पृथ्वी पर शयन करे शिवभक्त पारद सेवा का करनेवाला शुद्ध वस्त्रधारी शिव का हवन करे और नित्यप्रति योगिनियों की पूजा करे इस रीति से नित्य रस जारण को करे, जो इस रीति से जारण नहीं करता है वह पारद की सिद्धि को नहीं प्राप्त होता है और पारद कर्म के हरनेवाले विघ्न भी दूर नहीं होते हैं इसलिये जारणा की सिद्धि नहीं होती है और वे शास्त्रकारोंका वृथा ही दूषण लगाते हैं क्योंकि वे रसराज के दूषण को नहीं जानते हैं इस रीति से जो वैद्य पारद को प्रसन्न करते हैं वे इस लोक की तथा परलोक की सिद्धि को प्राप्त होते हैं श्रेष्ठ भैरव की पूजा करे तब रसराज की चारणा और जारणा करे।।११८–१३१।।

अथ जारणाक्रम

जारण वस्तु चादाय शुद्धभूमौ निधाय च ।
अष्टोत्तरशतेनापि जारणे तत्प्रयोजयेत् ।।१३२।।
अथात्र मंत्रः– ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः फट् रसेश्वराय सर्वसत्त्वोपचाराय ग्रासं गृह्ण २ स्वाहा-।।१३३।।
अनेन मन्त्रराजेन चारणा वस्तु मन्त्रयेत् ।। ग्रासदानात्मिका या च शिवेनोक्ता रसार्णवे ।। प्रार्थना सा तु कर्तव्या धीमता साधकेन तु ।।१३४।।

अर्थ–समस्त जारण की चीजों को शुद्ध स्थान पर रख ॐ ह्लां ह ह्लिं ह्लैं ह्लौं ह्लः फट् रसेश्वराय सर्वसत्त्वोपचाराय ग्रासं गृह्ण २ स्वाहा इस मंत्र को १०८ बार पढकर अभिमंत्रित करे और रसार्णव में ग्रास देने के समय जो शिवजी ने प्रार्थना की है उसको पारद का साधक वैद्य करे।।१३२–१३४।।

अथ प्रार्थना

सर्वसत्त्वोपकाराय भगवंस्त्वदनुज्ञया । जारणां कर्तुमिच्छामि ग्रासं ग्रस मम प्रभो ।।१३५।। कुरुष्वेति शिवेनोक्तं भावयेच्च स बुद्धिमान् ।। ततो रसमुखे ग्रासमर्पयेन्मन्त्रमुच्चरन् ।।१३६।।

अथ मन्त्रोऽयम्

ॐ नमो मृतलोहाय परामृतरसोद्भवाय हुं स्वाहा ।

(र० प०)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्री
प्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसाद–संकलितायां
रसराजसंहितायां जारणकर्मनिरूपणं
नामाष्टादशोऽध्यायः ।।१८।।

अर्थ–हे भगवन्! समस्त जीवों के उपकारार्थ मैं जारण संसकार करना चाहता हूं सो हे नाथ! इस ग्रास को ग्रहण करो ऐसा कह पारद में ग्रास देवे।।१३५।।१३६।।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यास
ज्येष्ठमलकृतायां रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायां
जारणकर्मनिरूपणं नामाष्टादशोऽध्यायः ।।१८।।

अथ जारणसंस्काराध्यायः १९

पारदवंदना

प्रसीद पारद शीघ्रं साधकानां सुसेवित ।
दारिद्याधिरुजानां च नाशिने भवते नमः ।।१।।

(र० पा०)

अर्थ–भली प्रकार सेवा किये हुए हे पारद! तुम पारद सिद्धि करनेवालों पर शीघ्र प्रसन्न हो और दरिद्रता, मानसिक और शारीरिक दुःखों के नाश करनेवाले आपको नमस्कार है।।१।।

जारणालक्षण

जारणा१ हि पातनगालनव्यतिरेकेण घनहेमादिग्रासपूर्वकपूर्वावस्थापन्नत्वम् ।।२।। (र० चिं०, बृ० यो०, र० सा० प०)

अर्थ–अभ्रक और स्वर्णादि धातुओं के ग्रास जीर्ण होने के पश्चात् पातन और गलान (छानना) के बिना जो पारद अपनी यह भी अवस्था को प्राप्त हो उसको जारणा कहते हैं।।२।।

अन्यच्च

द्रुतग्रासपरीणामो विडयंत्रादियोगतः ।
जारणेत्युच्यते तस्याः प्रकाराः संति कोटिशः ।।३।।

(र० र० स०)

१–गर्भद्रुति होने पर गालन से पृथक् हो ही नहीं सकता।

अर्थ–बिड और यंत्रादिकों के योग से जो द्रुतग्रास का परिणाम है उसको जारण कहते हैं और उस जारण के कोटिशः प्रकार हैं।।३।।

ग्रासमान और उनके जारण का प्रकार (रससार से)

चतुःषष्ट्यंशभागेन ग्रासयुग्मं प्रदीयते । चत्वारिंशद्विभागेन दद्याद्ग्रासचतुष्टयम् ।।४।। त्रिंशांशकेन षड्ग्रासानष्टौ विंशांशकेन च । एतांश्चतुर्विधानन्ग्रासान्स्वेदयोगेन जीर्यति ।।५।। दशग्रासान् कलांशेन श्रीशिवाय समर्पयेत् । अर्कांशैर्द्वादश ग्रासानष्टांशैश्च चतुर्दशान् ।।६।। चक्रे वा वालुकायंत्रे कूपके नैव जारयेत् । दीयते षोडश ग्रासाः पादांशैः पुटयोगतः ।।७।।

(र० प०)

अर्थ–चौसठवें भाग के दो ग्रास, चौवालीसवें भाग के ४ चार ग्रास, तीसवें भाग के दस ग्रास, बारहवें भाग के बारह ग्रास और आठवें भाग के चौदह ग्रासों को चक्रयंत्र में, वालुकायंत्र में अथवा कूपि का यंत्र में जारण करे और चतुर्थ भाग के सोलह ग्रासों को पुटयोग से देना चाहिये।।४–७।।

ग्रास के अनंतर दोलायंत्र को छोड़ कच्छपयंत्र से जारण करे

क्रमेणानेन दोलायां जार्य ग्रासचतुष्टयम् ।
ततः कच्छपयंत्रेण ज्वलने जारयेद्रसम् ।।८।।

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–इस क्रम से चार ग्रास तक दोलायंत्र में पारद का जारण करे और तदनंतर कच्छपयंत्र से पारद का जारण करे।।८।।

गर्भद्रवित अभ्रसत्त्व और बीजों के जारण की क्रिया दोलायंत्र से

पट्वम्लक्षारगोमूत्रस्नुहीक्षीरप्रलेपिते । बहिश्च बद्धे वस्त्रेण भूर्जे ग्रासं निवेशितम् ।।९।। क्षारारनालमूत्रेषु स्वेदयेत्त्रिदिनं भिषक् । उष्णेनैवारनालेन क्षालयेज्जारितं रसम् ।।१०।। (रस० चिं०, हस्तलिखित)

अर्थ–जिस पारद में बीज का ग्रास दिया हुआ है उसको सैंधव अम्लवर्ग जवाखार सज्जीखार गोमूत्र को थूहर के दूध में भोजपत्र पर लेप करे फिर उस भोजपत्र में ग्रास दिये पारद को रखकर कपड़े से पोटली बनावे और उस पोटली को जवाखार कांजी और गोमूत्रों में वैद्य तीन दिवस तक स्वेदन करे और इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि जारित रस को उष्णकांजी से धोना चाहिये।।९।।१०।।

सिद्धमत से हेमजारण

संग्रासं[1] पंचषड्ग्रासैर्यन्त्र क्षारैर्विमर्दयेत् ।। सूतकात्षोडशांशेन गंधेनाष्टांशकेन वा ।।११।। ततो विमर्द्य जंबीररसे वा कांजिकेऽथवा ।। दोलापाको विधातव्यो दोलायंत्रमिदं स्मृतम् ।।१२।।

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–पांचवें भाग अथवा छठे भाग जवाखार से जिसको ग्रास दिया गया है ऐसे पारद को मर्दन करे अथवा पारद से षोडशांश या अष्टांश गन्धक को लेकर पारद के साथ मर्दन करे फिर जंभीरी अथवा कांजी में दोलापाक करना चाहिये, बस इसी को दोलायन्त्र कहते हैं।।११।।१२।।

जारणक्रिया

जंबीरपूरकचाङ्गेरीवेतसाम्लसंयोगात् ।।
क्षारा भवंति सुतरां गर्भद्रुतिजारणे शस्ताः ।।१३।।

(र० चिं०, नि० र०)

अर्थ–जंभीरी, बिजौरा, चूका, अम्लवेत और अम्लवर्ग के योग से समस्त क्षार गर्भद्रुति जारण के निमित्त उत्तम होते हैं अर्थात् जहां गर्भद्रुति जारण के लिये क्षार का प्रयोग करना हो तो उस क्षार को जंभीरी, बिजौरा, चूका, अम्लवेत अथवा किसी अम्लवर्ग की भावना देनी चाहिये।।१३।।

कच्छपयंत्रद्वारा स्वर्णजारण

शश्वद्भृताम्बुपात्रस्थखर्परच्छिद्रसंस्थिता ।
पक्वमूषातले तस्यां रसोष्टांशबिड़ावृतः ।।१४।।
संरुद्धो लोहपात्र्याथ ध्मातो ग्रसति कांचनम् ।।
वालुकोपरि पुटो युक्त्या महामुद्रया च निर्वहः ।।१५।।

(र० चिं०, र० रा० शं०, र० रा० प०, नि० र०, र० प०)

अर्थ–प्रथम मिट्टी का एक कूंडा बनाकर पानी से भर देवे और उस पर एक दूसरा ऐसा खपरा रखे जो कि पानी से स्पर्श करता हुआ हो, उसके बीच में छेदकर पक्वमूषा को रखे और उसमें बीजसहित पारद को रखकर ऊपर नीचे अष्टमांश बिड़ को रख देवे। तदनंतर लोहे की कटोरी से मुद्रा देकर कोयलों से धोंके तो पारा सुवर्ण को खा जाता है अथवा दृढमुद्रा लगाकर ऊपर से बालूरेत भर कुक्कुटपुट लगावे तो स्वर्ण जारण होगा।।१४।।१५।।

स्वर्णजारण बिड़योग से कच्छपयन्त्रद्वारा

शश्वद्भृताम्बुपात्रस्थशरावच्छिद्रसंयुतः ।। पक्वमूषां न्यसेच्छिद्रे जलस्पर्शकरीं दृढाम् ।।१६।। तस्यां पक्वकुमुदिन्यां रसोष्टांशबिड़ावृतः ।। संरुद्धो लोहपात्र्याथो मुद्रितो दृढमुद्रया ।।१७।। तदूर्ध्वे वालुकां दद्यादष्टांगुलमितां ततः ।। हठात्तदुपरि ध्मातो रसस्तद्गर्भसंस्थितः ।। मयूरमायुना लिप्तं कांचनं ग्रसति ध्रुवम् ।।१८।।

(र० प०)

अर्थ–पानी से भरे हुए कूंडे पर छेदवाला शकोरा रख देवे और उस छिद्र में ऐसी पक्वमूषा को रखे जिसका पेंदा जल को स्पर्श करता हुआ हो, उस मूषा में अष्टमांश बिड़ सहित पारद को रखकर लोहे की कटोरी से दृढ़ मुद्रा कर देवे। फिर उस पर आठ.आठ अंगुल बालूरेत भर हठाग्नि देवे तो गर्भ में ठहरा हुआ पारद मोर के पित्ते से लेप किये हुए सुवर्ण को शीघ्र खा जाता है।।१६–१८।।

अन्यच्च

सच्छिद्रं सलिलापूर्णभांडवक्त्रे शरावकम् ।। दत्त्वा छिद्रे पक्वमूषा[1] देया नीराविायोगिनी ।।१९।। तस्यां बिड़ावृतः सूतो देयो लोहावृते मुखे ।। तदुपरि वालुकां दत्त्वा दृढां मुद्रां च कारयेत् ।।२०।। शनैर्ध्मातो ग्रसत्येष कांचनं सूक्ष्मतां गतम् ।। स्वल्पं सपित्तता पात्तं शनैर्देयं समावधि ।। देहार्थं धातुवादार्थं प्रयच्छन्त्यल्पबुद्धयः ।।२१।।

(योगतरंगिणी, बृ० यो० त०, र० रा० शं०, र० रा० प०)

अर्थ–इसका अर्थ ऊपर की क्रिया के अनुसार समझना चाहिये।

कच्छपयंत्र द्वारा जारण

कुंडाम्भसि लोहमये सबिडं सग्रासमीशजं पात्रे । अति चिपिटलोहपात्र्या

१–पाठान्तरम्–"ग्रासपंचकषड्ग्रासैर्यक्षारैर्विमर्दयेत् । सूत तु षोडशांशेन गन्धकाष्टांशकेन वा' (नि० र०, र० रा० शं०) पुनः शुद्ध यूं होगा–संग्रासं पंचषड्भागैस्त्रिभिः क्षारैर्विमर्दयेत् । सूतकात्षोडशांशेन गंधेनाष्टांशकेन वा (अथवा) षड्भागयवक्षारैः रसं ग्रासे विमर्दयेत् । पुनः व्या० ज्ये० म०–बृहद्योगतरंगिणी का पाठ बहुत है उत्तम उसका पाठ यह है इससे भी उत्तम व्याकरण में शुद्ध यह होगा–'संग्रासं पंचषड्भागयवक्षारेण मर्दयेत् । सग्रासपंचषड्भागैर्यवक्षारैर्विमर्दयेत् । सूतं तत्षोडशांशेन गंधेनष्टांशकेन वा'।

१–मूषार्द्धे वालुका दद्यान्मुद्रां कृत्वा दृढां ततः । इ० (र० रा० प०)

पिधाय संलिप्य वह्निना योज्यम्[1] ॥२२॥

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–जल भरे हुए कूडे में जो लोहे का पात्र रखा हुआ है उसमें बिड़ तथा ग्रास सहित पारद को अत्यन्त चिपटी लोहे की कटोरी से ढक और मुद्रा कर ऊपर से अग्नि लगावे तो स्वर्ण का जारण होगा॥२२॥

स्वर्णजारण में यन्त्र की आवश्यकता

सोमानलयंत्रे सुवर्णजारणं दोलायन्त्रे वा ॥२३॥

(र० प०)

अर्थ–सोमानलयन्त्र (जो कि यंत्राध्याय में कहा गया है) में अथवा दोलायन्त्र में भी सुवर्ण का जारण होता है॥२३॥

कल्पितबीजजारण

एवं कल्पितबीजजारणम् ॥२४॥

(र० प०)

अर्थ–इसी प्रकार कल्पित बीज का भी जारण होता है॥२४॥

सम्मति–ऊपर का पाठ स्वर्ण जारण के बाद लिखा हुआ है इसलिये यह बात स्पष्ट प्रतीत होती है कि साधारण वर्ण बीजवत् कल्पित (बनावटी) बीज का भी जारण होगा।

चारित गगन का जारण दोलायन्त्र से

चारितं बंधयेद्वस्त्रे दोलायन्त्रे दिनं पचेत् ॥ सिद्धमूलीद्रवैर्युक्तं कांजिके जीर्यते फलम् ॥२५॥ अजीर्णे चेत्पचेद्यंत्रे कच्छपाख्ये दिनावधि । अष्टमांशं बिडं दत्त्वा जारयेन्नात्र संशयः ॥ अनेन क्रमयोगेन चार्यं जार्यं पुनः पुनः ॥२६॥

(र० प०)

अर्थ–अभ्रक खाये हुए पारद को पोटली में बांधकर सिद्ध जड़ियों के रस से मिली हुई कांजी में दोलायंत्र द्वारा एक दिवस तक पचावे तो अभ्रक का जारण होता है, यदि इस क्रिया के करने पर भी अभ्रक जीर्ण न होता तो फिर कच्छप यंत्र द्वारा एक दिन परिपाक करे। कच्छप यंत्र में यदि जारण करना हो तो अष्टमांश बिड़ देकर जारण करे इसी क्रम से चारण तदनंतर जारण करना चाहिये॥२५॥२६॥

अभ्रक का दोलायन्त्र से जारण

त्रिक्षारंपंचलवणमम्लवर्गं स्नुहीपयः ॥गोमूत्रैर्लोडयेत्सर्वं तेन वस्त्रं घनं लिपेत् ॥२७॥ तन्मध्ये चारितं सूतं बद्ध्वा भूर्जेन वेष्टयेत् ॥ सिद्धमूलीद्रवं दत्त्वा दोलायन्त्रे त्र्यहं पचेत् ॥२८॥ तमुद्धृत्यारनालेन क्षालयेल्लोहभाजने ॥ वस्त्रपूतं ततः कृत्वा साम्लपात्रे विमर्दयेत् ॥२९॥ हस्तेनैव भवेद्यावच्छुष्कं तत्पारदं पुनः ॥ चतुर्गुणेन वस्त्रेण गालयेन्निर्मलो रसः ॥३०॥ अजीर्णे तु पुनर्मर्द्यम्लं दत्त्वा दिनावधि ॥ दोलायां स्वेदयेत्तद्वद्भवेज्जीर्णो न संशयः ॥३१॥

(र० प०)

अर्थ–सुहागा, जवाखार, सज्जीखार, पांचो नोंन, अम्लवर्ग और थूहर के दूध को गोमूत्र में घोटकर कपड़े पर गाढ़ा गाढ़ा लेप करे उसमें ग्रास दिये हुए पारद को बांधकर ऊपर से भोजपत्र बांधे फिर सिद्ध जड़ियों का रस देकर दोलायंत्र द्वारा तीन दिन तक पचावे और पके हुए पारद को निकालकर लोहे के पात्र में छान लेवे फिर छने हुए पारद को थोड़ी सी खटाई डालकर हाथ से ही तब तक मर्दन करे कि जब तक पारा अच्छी तरह सूख न जाय फिर चौलर कपड़े में छाने तो पारद निर्मल होता है। इस क्रिया के करने पर भी यदि ग्रास जीर्ण नहीं होय तो फिर खट्टा रस देकर एक दिन तक मर्दन कर दोलायंत्र में एक दिन पकावे तो ग्रास जीर्ण होगा, इसमें संदेह नहीं है॥२७–३१॥

अभ्रजारण जलयंत्र से

अथेदानीं प्रवक्ष्यामि भक्षणं चाभ्रकस्य हि । करोति विधिना येन लोहानां चैव सूतराट् ॥३२॥ जलयंत्रस्य योगेन बिड़ेन सहितो रसः ॥ भक्षयत्येव चाभ्रस्य कवलानि न संशयः ॥३३॥ ततो हि जलयंत्रस्य लक्षणं कथ्यते मया। सवृत्तलोहपात्रं च जलधाराढकत्रयम् ॥३४॥ तन्मध्ये तुदृढं सम्यक् लोहसंपुटम् ॥ लोहसंपुटमध्ये तु निक्षिपेच्छुद्धपारदम् ॥३५॥ बिडेन सहितं चैव षोडशांशेन यत्नतः । चतुःषष्ठ्यंशकं चाभ्रसत्त्वं संपुटके न्यसेत् ॥३६॥ संपुटं रोधयेत्पश्चात् दृढया मीनमुद्रया । वज्रमुद्रिकया वापि संधिरोधं तु कारयेत् ॥३७॥ चुल्ल्यां निवेश्य तद्यंत्रं जलेनोक्तेन पूरितम् । क्रमादग्निःप्रकर्तव्यो दिनं सार्द्धद्वयं तथा ॥३८॥ एवंकृते ग्रासमानं भक्षयेन्नात्र संशयः । अनेनैव प्रकारेण षड्ग्रासान् जारयेत्सुधीः ॥३९॥ भक्षिप्ते चाभ्रसत्त्वे वै सर्वकार्येषु सिद्धिदः । जायते सूतराजो वै सत्यं गुरुवचो यथा ॥४०॥ (ध० सं०)

अर्थ–अब मैं अभ्रक की उस ग्रासभक्षण विधि को कहता हूं कि जिसमे पारद सम्पूर्ण धातुओं को खा जाता है, जलयंत्रद्वारा बिडसहित पारद अभ्रक के समस्त ग्रासों को खा जाता है, इसमें कुछ सन्देह नहीं है इसलिये मैं जलयंत्र के लक्षण को कहता हूं जिसमें ३ आढक जल आता हो ऐसा एक उत्तम लोहे का कढाव बनावे, उस कढाव के बीच में संपुट तैयार करावे, तदनंतर उस संपुट में पारद, पारद से षोडशांश बिड और चौसठवां भाग अभ्रसत्त्व का लेकर रख देवे फिर उस संपुट को मीनमुद्रा से अथवा वज्रमुद्रा से मुद्रित कर चूल्हे पर चढाय और जल से भरकर मन्द, मध्य और तीव्राग्नि के योग से ढाई दिन तक अग्नि देवे इस क्रिया से पारद अभ्रकसत्त्व प्रभृति को खा जाता है इसमें सन्देह नहीं है। इसी रीति से पारद के ग्रासों का वैद्य जारण करे अभ्रसत्त्व जीर्ण होने पर पारद को समस्त कार्यों में लावे तो पारद गुरु के वचनों की तरह काम को सत्य ही करता है॥३२–४०॥

महाद्रव

वृषश्चित्रमपामार्गं चिंचा कुष्माण्डनाडिका । स्नुही तालस्य पुष्पञ्च वर्षाभूर्वेतसं तथा ॥४१॥ एतेषां क्षारमाहृत्य लिम्पाकस्वरसेन च । क्षालयित्वा क्षारतोयं वस्त्रपूतञ्च कारयेत् ॥४२॥ चण्डातपेन संशोष्य ग्राह्यं तद्द्रवणोचितम् । एतस्यद्विपलं ग्राह्यं यवक्षारं पलद्वयम् ॥४३॥ स्फटिकारिपलं चैव नरसारपलं तथा । पलार्द्धं सैंधवं ग्राह्यं टकणंठ तोलकद्वयम् ॥४४॥ कासीसं तोलक चैव मुद्राशंखं च तोलकम् । दारुमोचं कर्षकञ्च तोलं सामुद्रफेनकम् ॥४५॥ सर्वमेकत्र संचूर्ण्य बकयंत्रेण साधयेत् । महाद्रावकमेतद्धि योज्यञ्च रसजारणे ॥४६॥

(शब्दकल्पद्रुम)

अर्थ–अडूसा, चीता, ओगा, इमली, पेठा, थूहर प्रपौडरीक, सांठ और अम्लवेत इनके क्षार को निकालकर और जंभीरी के रस से घोलकर छान लेवे और उसको तेज घाममें सुखाकर द्रावण के योग्य बना लेवे तदनन्तर इस क्षार को दो पल, जवाखार दोपल, फिटकरी एक पल, नौसादर एक पल, सैंधव आधा पल, सुहागा दो तोले, कसीस एक तोला, शंख एक तोला, दारुमुच (एक प्रकार का स्थावर विष है) एक तोला और समुद्रफेन एक तोला, इन सबको एक जगह चूर्णकर बकयंत्र से द्राव खींच लेवे इस द्राव को रस जारण के निमित्त काम में लावे॥४१–४६॥

१–योज्य इत्यपि। २–यह पाठ स्वर्णजारणान्तर लिखा है जिससे यह आशय निकाला कि साधारण बीज वा कल्पित बीज का जारण होगा। ३–धनम् इत्यपि। ४–सिद्धमूली का वर्णन चारण संस्कार में हुआ है।

अन्यच्च

शुद्धं कांचनमाक्षिकं मृदुतरं कांस्याभिधेयस्तथा सिंधूत्थं विमलं रसाञ्जनवरं फेनं स्रवन्तीपतेः ।। क्षारौ सर्ज्जिकसम्भवौ सुविमलौ भागास्त्वमीषां समाः सप्तानां सदृशन्तु टङ्कणमिह त्वर्द्धो नृसारः स्मृतः ।।४७।। तत्तुल्या स्फटिककारिका त्रिसदृशः शुद्धो यवस्याग्रजः कासीसद्वितयं यवाग्रजसमं सञ्चूर्ण्य सर्वं न्यसेत् ।। पात्रे काचमये मृदम्बरवृते सोऽयं महाद्रावको नो वक्तुं प्रभवेदमुष्य नितरां सम्यग्गुणं भूतले ।।४८।। (श० क० द्रु०)

अर्थ–शुद्ध और कोमल स्वर्णमाक्षिक, नीलाथोथा, सैंधानोंन, रसौत, समुद्रफेन, जवाखार, सज्जीखार इन सबको समान भाग लेवे और इन सातों चीजों के समान सुहागा सुहागे का आधा नौसादर और नौसादर के तुल्य फिटकरी तथा सुहागा, नौसादर और फिटकरी इन तीनों के समान जवाखार और जवाखार के तुल्य दोनों प्रकार के कसीस इन सबको चूर्ण कर शीशे में (जिस पर कपरौटी की हुई हो) डालकर पातालयंत्र में चोवा खींच लेवे तो यह उत्तमद्राव बनता है, इसके गुण का संसारभर में कोई भी वर्णन नहीं हैं।।४७।।४८।।

ग्रासजीर्णपरीक्षा

चतुर्गुणेन[1] वस्त्रेण पीडितो यदि निःसरेत ।।
ग्रासं जीर्णं विजानीयादजीर्णस्त्वन्यथा भवेत् ।।४९।।

(टो० नं०)

अर्थ–चौलर कपड़े में डालकर दवाने से पारा बाहर निकल जावे तो समझना चाहिये कि ग्रास जीर्ण हो गया यदि न निकले तो ग्रास नहीं जीर्ण हुआ समझना चाहिये।।४९।।

सम्मति–ऊपर लिखी हुई क्रिया में संदेह है क्योंकि गर्भद्रुति ग्रास तथा बाह्यद्रुति ग्रास कपड़े से छानने से छनता है।

ग्रासजीर्ण की परीक्षा अजीर्णनाशन

अजीर्णनाशाय सुभूर्जपत्रे स्वेद्यस्त्रिरात्रं पटुकांजिकऽथ ।।
मात्राधिकश्चेत्समतामुपैति यावन्न तावद्ग्रसनाधिकारी ।।५०।।

(यो० तं०)

अर्थ–अजीर्ण नाश करने के लिये पारद को भोजपत्र में बांधकर लवण और कांजी में बराबर तीन रात स्वेदन करे फिर निकालकर तोले से यदि वजन अधिक हो तो फिर स्वेदन करते करते जब पारद अपने पहले वजन के तुल्य हो जाय तब ग्रास का अधिकारी होता है।।५०।।

अजीर्णनाशन

रसाजीर्णे समुत्पन्ने बिडैर्गोमूत्रसंयुतैः ।।
स्वेदनीयो रसो भूयो दिनैकं सूतजारणे ।।५१।।

(र० पा०)

अर्थ–जारण अवस्था में पारद को यदि अजीर्ण हो गया तो तो गोमूत्र में बिड मिलाकर एक दिवस तक स्वेदन करे तो अजीर्ण नाश होता है।।५१।।

अन्यच्च

अजीर्णे पातयेत्पिष्टिं स्वेदयेन्मर्दयेत्तथा ।।
वसनाम्लप्रयोगेण जीर्णे ग्रासं प्रदापयेत् ।।५२।।

(रसदर्पणात्, टो० नं०)

अर्थ–यदि पारद को अजीर्ण हो तो पिष्टी बनाकर पातन करे अथवा अम्ल पदार्थ के योग से स्वेदन करे या मर्दन करे तो इस प्रकार जीर्ण होने पर फिर ग्रास को देवे।।५२।।

ग्रासजीर्णान्ते मर्दन

इष्टिकाँ गुडदग्धोर्णा गृहधूमं च राजिका ।। सैंधवेन युतं सर्वं षोडशांश रसस्य तु ।।५३।। सर्वधान्याम्लसंयुक्तं पारदं मर्दयेत्ततः ।। दत्त्वा ततोऽम्लवर्गेण दोलायंत्रे दिनं पचेत् ।।५४।। जीर्णे ग्रासेत्विदं कुर्याद्रागग्राही भवेद्रसः ।। अग्रे ग्रासप्रमाणाद्यं पूर्वोक्तं क्रमतश्चरेत् ।।५५।। (र० प०)

अर्थ–ईट का चूरा, गुड, ऊन की भस्म, घर का धूवा, राई ओर सैंधव इन सबको पारद से षोडशांश लेकर पारद के साथ धान्याम्ल से मर्दन करे तदनंतर अम्लवर्ग में दोलायंत्र द्वारा एकदिवस तक स्वेदन करे तो ग्रास जीर्ण होकर उत्तम रंग का होता है। इसी प्रकार आगे भी क्रम से ग्रासों को जीर्ण करे।।५३–५५।।

जारण संस्कारोपयोगी तेजाबशोरा सज्जीद्राव

लोटा सज्जी पानी में भिगो छोडनी, लकड़ी से हिलाते रहना, चौथे दिन नितारकर कढाई में पका लेना वह सज्जी और शोरा कलमी मिला के पका लेना यह दोनों चीजें लोहताम्र आदि धातु को जल्दी गला देती है।। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

तेजाब फारूकी बनाने की तरकीब (उर्दू)

शोरा एक हिस्सा, नौसादर कानी चहारम हिस्सा, फिटकिरी निस्फ हिस्सा, तीनों दवाएं बाहम खरल के कुएअंबीके (भबका) में रखकर तसईद करे तेजाब उससे मुकत्तर होगा और ऐसा तेज होगा कि अगर छुरी उसमें डाले तो गुदाज होकर सिर्फ दिस्ता हाथ में रह जावेगा अमल हस्तरह करे कि दोपहर तक मौआतदिल आंच करे, कुरे से जब धूवां बरंग सफेद निकलना शुरू होगा तो थोड़ी देर में अंबीक गर्म हो जावेगी, जब तेजाब निकल चुके उतार ले इस तेजाब से तमाम अजसाद सिवाय सोने के महलूल हो जाते हैं, इस तेजाब में बहुत से खवास हैं मिनजुमलः उनकी यह है कि जिस शख्स को बुरस या बहक हो उस पर रंग तबदील हो जावेगा अगर मुकर्रर मले तो बिलकुल जाइल हो जाता है, और अगर जखम पड जावे तो मोमरोगन लगाने से सेहत होती है, दर्द दाने को जाइल करता है और तूहालको नाफः है अगर बीस तोला नुकरः इसमें डाले महलूल होकर १८ तोला निकलती है और दो तोला सोना अलहदा हो जाता है, लेकिन यह अमल यानी सोना जुदा करना निहायत मुश्किल है, हर शखस उस पर फादर नहीं हो सकता सुफहा ६५ किताव अलजवाहर (१३/११/१)

महाद्राव

यवक्षारस्य भागौ द्वौ स्फटिकारेस्त्रयो मताः । एकीकृत्य प्रपिष्यापि मूत्रैर्वत्सतरीभवैः ।।५६।। शुष्कं कृत्वा क्षिपेत्पात्रे सैसके वस्त्रलेपिते । अन्यसीसकपात्रन्तु द्विमुखं मेलयेद्बुधः ।।५७।। वृद्धवैद्योपदेशेन पचेत्पात्रस्थमौषधम् । ततो ज्वालाधतः स्थाप्यं पात्रान्यं लभते रसम् ।।५८।।

(शब्दकल्पद्रुम)

अर्थ–जवाखार दो भाग और तीन भाग फिटकरी इन दोनों को छोटी बछिया (बछिया जो कि घास न खाती हो) के मूत्र से पीसकर सुखा लेवे उस चूर्ण को कपरौटी की हुई शीशी में रख चूल्हे पर चढ़ावे और सीसी के मुख को दूसरे शीशे के पात्र में कर कपरौटी कर दे कि जिससे खाली पात्र में भी हवा न निकले फिर वृद्धवैद्यों की आज्ञानुसार अग्नि लगावे तो नीचे के पात्र में जो रस निकलेगा उसको शीशी में भर रखे। इसे महाद्राव नाम का तेजाब कहते है।।५६–५८।।

सम्मति–प्रथम शीशी को सूर्य के तेज में उष्ण कर और चूल्हे पर चढाय

१–यह पाठ शंकित है क्योंकि गर्भद्रुति ग्रास और बाह्यद्रुति ग्रास छानने से छन जायेगा।

ऐसी मन्दाग्नि देवे कि उस शीशी से पसीना सा आता रहे अधिक अग्नि न लगे।

तरकीब तेजाबमाइफारूक (फारसी)

दरतकतीर माइफारूक कि वह तरीन हमें तेजाब हाड़ व तुंद व गुजन्द वराय हाजत बिगीर बजाक हो जुजब: शोर: कमनी दो जुज व खुस्करा तफतीर कुन हरकिरा ख्वाही हलकुन अज अजसाद व अजसाद व अरमाह व अनफास व इमलाह गुजार अजी जूद हल शवद खास बुराद: निस गिरफ्त जीवक महलूल बर ओरेख्त: तवगकुनद सीमाड शव महलूल कमर खालिश बुदह आयद जहात मईशत मईशत काफीम्त आसान अजी नेस्त (सफा ६ किताब इसरार अलकीमियां)

शोरादि तेजाब

शोरा १० तोले, श्वेतकाही २० तोले, लाल काही १ तोला, इनको पीसकर तेजाब निकाल लेना। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

तेजाब शोरा बनाने की तरकीब (उर्दू)

अर्थ–शोरा सेर भर, फिटकरी, हीरा कसीस, हरएक आधसेर तूतियाए गुजराती आधपाव सबको बाहम पीसकर बजरिये दो घडो के जिनका मुँह छोटा हो तेजाब निकाले दवावाले घड़े को टेढ़ा करके दूसरे घडे से कुछ ऊंचा रखे और उसका मुंह सींकों से बंद करके खाली घडे को जरा नीचे रखे और दोनों के मुहं को गिलेहिकमत करके खाली घडे को पानी में बकदार निस्फके डुबोए रखे और दवावाले घडे को चूल्हेपर रखकर आंच रफ्त: रफ्त: दे, ताकि पानी खाम न निकले और आंच तेज भी नहो, वरन: दवा जल जावेगी और तेजाब में जली हुई बू आवेगी (सुफहा किताब अकलीमियाँ)

शंखद्रावविधि

सैंधौ सोरा अरु पिटकरी । पुनि कसीस ले चौथी करी ॥
नलिनीजंत्र काढिकै लेहु । शंखद्राव खैबेको येहु ॥

(र० सार०, रससागर)

तेजाब की तरकीब (उर्दू)

अर्थ–शोरा बारह हिस्सा, नमक संग तीन हिस्सा कसीस तीन हिस्सा, (तनकनार) सुहगा, एक हिस्सा, सिंगरफ एक हिस्सा, मुताबिक तेजाब फारूकी के कशीद करे, अकसर जगह पर काम आता है इस तरह नमक का तेजाब भी निकल सकता है जिसमें सोना महलूल हो जाता है। अंगरेजी में इसको यूरेटिक एसिड कहते हैं। अजजाइ यह हैं फिटकरी नमक सांभर सुफहा ६६ किताब अलजवाहर एक्वारेजिया जिस्में सोना गल जाता है।

Nitric Acid-शोरे का तेजाब
3 part Hydrocloric Acid-
नमक का तेजाब–1 part
} makes Aquara-Jia

(बाबू ईश्वरदास जापानी)

शंखद्राव

सैंधो ले साजी को लोन । अरु फिटकरी लीजिये कौन ॥
अरु थूथो कसीसको ल्याय । पुनि नौसादर लेहु मँगाय ॥
ढेकी यंत्र जु काढन कह्यो । गुरुप्रसाद ते ग्रंथनलह्यो ॥
आठों सूर रक्तकी छही । जांहि याहि सन कविजन कही ॥
बावटि पंच गुल्म ले जाय । जो रोगी संजम से खाय ॥
जो पथ रहै तो औषध सार । गुरुप्रसाद कहि सैद पहार ॥

(रससार०, रससागर)

अन्यच्च

चना खार सूरीको नोंन । नीलकंठ तामें सब कोन ॥
नलिनी जंत्र चुवावे ताम । शंखद्राव जाने को नाम ॥
याते जो कीजै सो होय । जो इहविधि कै जाने कोय ॥

(रससागर)

अन्यच्च

चनाखार सूरीको नोंन । नीलकंठ तामें सबकौन ॥
पैगाली जु सवीरा सेत । जवाखार गुजराती हेत ॥
ढेकीजंत्र जु लइ चुवाय । छरके भांति नीर ह्वै जाय ॥
वेही औषधि अरु संखिया । शंखद्राव यह ग्रंथनि किया ॥
जावाइवै फेरि चुवाय । लोहद्राव होय बुरी बलाय ॥
ऐसे शंखद्राव हैं घने । ते सब परैं कौनपै गने॥

(र० सा० बडा०, र० सा०)

अन्यच्च

ले दोऊ फटकरी कसीस । सैंधा लोंचर लौन गुनीस ॥
दोऊ नौसादर कचलौन । जवाखार अरु मोखा सोन ॥
पुनि सांभरि साजीको लौन । चूनो सीसी पीसिके कोन ।
सोचर सोना अरु संखिया । गंधक पांह सुहागसुलिया ॥
मनसिल अरु मुरदा सिंगाल । अरु थूथो तबकी हरताल ॥
बहुरि सिलाजित सोध्यो आनि । खार सचौरा लेहु सुजान ॥
उबले इन खारिन को लोन । इनमें एकन भूले कोन ॥
आझाझारो विषखापरो । ढाक चौराई पीपर खरो ॥
अररूसौ वह अत्र वनसटी । जुगल कटाई नीकी वटी ॥
भेडा विट मरोहि सुपवारु । रम्भा कुंदन अरु देवदारु ॥
पीरौ बांसौ अरु जोडरी । उमरि और आमिली करी ॥
तिली पिजरौ अरडु बखानि । लमाडि बेलि कुम्हैडे जानि ॥
वाखरु लौन लेहु समतूल । पैके वस्तन जाना कौल ॥

(र० बड़ा०, र० सा०)

तेजाब गन्धक की तरकीब

तेजाब गन्धक का जिसको अंग्रेजी में सलफ्यूरिक एसिड कहते हैं, इस तरह निकाला जाता है कि गन्धक एक हिस्सा नौसादर निस्फ हिस्सा लेकर अव्वल नौसादर को बकरी के मसाने (फूंकनी) में साफ करके मुँह उसका तागे से बाँधकर खिचड़ी में दमपुख्त के वक्त घंटे भर रहने दे। नौसादर मजकूर हल हो जायेगा, बाद इसको नौसादर महलूल हो, गन्धक में मिलाकर घिसकर गोली बांधै और बजरिये पतालजंत्र में आतिशी शीशी के चारों तरफ रेग रखकर आग देना चाहिये ताकि जल न जावे और भबके की तरह अर्क गंधक का भी निकलता रहे। सूरत उसकी यह है कि एक प्याला चीनी का जिसके पेंदे में तीन सूराख हो, जस्त या लोहे के तार से बांधकर लकड़ी में लटका दे और उसके नीचे एक प्लेट टेढी करके रखे और प्लेट के ऊपर प्याले आहनी में गन्धक भरे और तीन फलीतों में गन्धक मजकूर लगाकर रोशन कर दे जिसमें गन्धक जलने लगे और उसका धुंआ चीनी के प्याले में लगकर अर्क होकर प्लेट में आवे। इस अमल के वक्त यह लिहाज रखे कि हुवाब न हो। (सुफहा अकलीमियां ६०/१४/११/१०)

तेजाब जो सोने पर हलका असर करता

Sulphuric Acid-गन्धक का तेजाब।
Accetic Acid-सिरके में ज्यादा पाया जाता है।
Lactic Acid-दही में ज्यादा मिलता है।

(बाबू ईश्वरदास जापानी)

पारदसिद्धीवेधक

पारद ४ तोले, इष्टिकाचूर्ण में मर्दन दोपहर पानरस, इन्द्रजीत बूटी का रस, निंबूरस, तुलसी रस में दो दो प्रहर खरल करके वस्त्र से निकालना, समुद्रलवण २० तोले डालकर खरल ४ प्रहर हंडिकाडमरूयंत्रेणोर्ध्वपातनं ४ प्रहर चतुष्टयमपरिलग्नं गृह्णीयात् ।

शोरा ४० तोला, फिटकरी २० तोले, हीराकसीस १० तोले, इनका तेजाब निकाल कर पूर्वोक्त पारद में २ तोले तेजाब डालकर खरल करना। २ प्रहर फिर शीशी में रखकर बालुकायंत्र में पकाना, ६ प्रहर ऐसे ६ शीशे पकाने अथवा सप्त पकान, सिद्ध हो जायेगा।
(रक्तवर्णताम्रापरि रजतोपरि वा तोलेकोररत्तिकाचतुर्थांश पाणायहदी तुलसी पानरस जंबीरस इन्द्रजीतरस ।) जंबू से प्राप्त पुस्तक)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यास ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां जारणसंस्कार निरूपणं नामैकोनविंशोऽध्यायः ॥१९॥

गंधकजारणाध्यायः २०

पारदउपासना

स जयति रसराजो मृत्युशंकाऽपहारी सकलगुणनिधानः कायकल्पाधिकारी ॥ बलिपलितविनाशं सेवनाद्वीर्यवृद्धिं स्थिरमपि कुरुते यः कामिनीनां प्रसंगे ॥१॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ–जो स्त्रीसंग में वीर्य को स्थिर करता है, सेवन से वीर्य की वृद्धि को करता है और वलीपलित का नाश करता है उस मृत्यु शंका के नाश करनेवाले समस्त गुणों के खजाने श्रीपारद की जय हो॥१॥

षड्गुणगंधकजारणावश्यकता

अथाष्टसंस्कारैः संशोधिते सूते हिंगुना कृष्टयादिना वा संशोधिते सूतराजे षड्गुणगंधकजारणाख्यकर्माऽकृत्वैव यस्तं मारयति सोऽत्युग्रपापी भवति तस्माद्दीपनकर्मांते षड्गुणगंधकजारणमावश्यकतया करणीयम् । उक्तं च रसराजहंसे–
इत्थं संदीपितः सूतो विद्युत्कोटिसमप्रभः । यस्त्वेवं विधिमासाद्य जारणाक्रमवर्जितः ॥२॥ सूतकं मारयेत्तेन मारितं सकलं जगत् ॥ न भवेत्तस्य संसिद्धी रसे वाथ रसायने ॥ कर्तव्यं कच्छपाद्यैश्च जारणाक्रममुत्तमम्॥३॥

अर्थ–आठ संस्कारों से सिद्ध किये हुए पारद को अथवा हिंगुलादि से निकाले हुए पारे को, षड्गुणजारण किये बिना जो मनुष्य उसका भस्म करता है वह महापापी होता है इसलिये दीपन कर्म के पश्चात् षड्गुण गंधकजारण अवश्य करना चाहिये। यही बात रसराजहंस में लिखी है। इस प्रकार दीपित पारद कोटिविद्युत (बिजली) के समान कान्तिवाला होता है और जो इस तरह के पारद को गंधकजारण के बिना मारता है उसने मानो समस्त जगत् को मार दिया और उसकी रस तथा रसायन में सिद्धि नहीं होती। इस कारण कच्छपादि यंत्रों से गन्धक जारण अवश्य करना चाहिये।॥२॥३॥

गंधकजारित पारदगुण

मलकंचुकपरिमुक्तः पूतः षड्गुणगंधकजारितसूतः ॥ निजसेवकजननूतनकल्पः सुरतविधौ दलितोत्तमतल्पः ॥४॥

(योगतरंगिणी)

अर्थ–मल तथा कंचुकों से रहित, पवित्र तथा जिसमें षड्गुण (छः गुना) गंधक जारण किया हुआ हो, ऐसा पारद अपने सेवन (पारद के सेवन) करनेवाले मनुष्यों के नवीन शरीर का दाता तथा संभोगावस्था में दृढ़पलंग को तोड़नेवाला होता है।॥४॥

गंधकजारण आवश्यकता

गुरुशास्त्रं परित्यज्य यो वै जारितगंधकम् ॥
रसं निर्माति दुर्मेधाः शपेत्तं परमेश्वरः ॥५॥

(र० रा० शं०, नि० र०)

अर्थ–जो मूर्ख गुरु और शास्त्र की रीति को छोड़कर बिना गंधक जारण किये रस (पारद) को बनाता है उसको श्रीमहादेवजी शाप देते हैं।॥५॥

शुद्ध गंधकजारण आदेश

षड्गुणे गंधके जीर्णे रसो भवति रोगहा ॥
तस्माद्गंधं सुशुद्धं हि जीर्यते रसरेतसि ॥६॥

(टो० नं०)

अर्थ–षड्गुण गंधक जारण करने पर पारद रोगों को नाश करनेवाला होता है इसलिये शुद्ध गंधक को पारे में जारण करे।॥६॥

गंधकजारण के भेद

तत्र गंधकजारणा अन्तर्धूमबहिर्धूमभेदेन द्विविधा ।

(र० शं०)

अर्थ–अन्तर्धूम और बहिर्धूम के भेद से गंधक जारण दो प्रकार का है।

षड्गुण गंधकजारण खल्व द्वारा बहिर्धूम

तप्तखल्वे रसं क्षिप्त्वा अधश्चुल्ल्यास्तुषाग्निभिः ।
स्तोकंस्तोकं क्षिपेद्गंधमेवं वै षड्गुणं चरेत् ॥७॥

(योगरत्नाकर)

अर्थ–तप्तखल्व में पारद को डालकर नीचे के चूल्हे में आंच डाल कर पारद में थोड़ा थोड़ा गंधक डाले तो गंधकजारण अवश्य होगा।॥७॥

गंधकजारण हंडिकायंत्र से बहिर्धूम

अथवा हंडिकायंत्रेण षड्गुणगंधकजारणं कुर्यात्–तदुक्तं वैद्यदर्पणे–
मृद्गंगारस्थिते पात्रे मृन्मये शुद्धसूतकम् । निक्षिप्य तप्ते सूते तु क्षिपेदुपरि गंधकम् ॥८॥ नीरेण हंसपद्याश्च भावितं सम्प्रदाहयेत् । त्रिबलं गंधके जीर्णे गंधं दद्यात्पुनः पुनः ॥९॥ एवं षड्गुणगंधस्य जारणं हंडिकाऽभिधे । एवं कृत्वा सूतराजं याजयेत्सर्वकर्मसु ॥१०॥

(ध० सं०)

१–मेरी राय में इसके साथ स्वर्ण वा अभ्रसत्त्व और डालना चाहिये।

१–शिव–इत्यपि

अर्थ—अथवा हंडिकायत्र से षड्गुण गंधकजारण करे—यही बात वैद्य दर्पण में लिखी है—कोमल अंगारों पर रखे हुए मिट्टी के पात्र में पारद को डाले और जब वह पारद तप जाय तब उस पर हंसराज के रस से (या अमलतास के रस से) भावना दिये हुए समभाग गंधक को भस्म करे, इस प्रकार हंडिकायंत्र में षड्गुण गंधक जारण करे फिर उसका समस्त कार्यों में व्यवहार करे॥८–१०॥

शिवशक्तियंत्र द्वारा गंधकजारण बहिर्धूम

चूल्हो एक कराही दोई । एक पारो एकु बाखर होई ॥
ज्यों ज्यों जल बाखर को जरै । त्यों त्यों जल औषध को करै ॥
शिव अरु शक्ति यंत्र को जानि । रसरत्नाकर कही बखानि ॥

(रससागर)

खर्पर द्वारा गंधकजारण—बहिर्धूम

अथ रसजारणं तत्र सामान्यतः षड्गुणबलिजारणम् ॥ ससूतमल्पकं भांडं वालुकायंत्रके न्यसेत् । षड्गुणं गंधकं तत्र क्षिपेदल्पाल्प शनैः॥११॥ द्रवीभूतं बलिं ज्ञात्वा शीघ्रमुत्तार्य यत्नतः । स्वांगशीते दृढे गंधे स्फोटयित्वा नयेद्रसम् ॥१२॥ सर्वरोगहरः सूतो हरः पापहरो यथा । पतिप्राणप्रिये कांते यत्ते हरिहरार्चने ॥१३॥

(अनुपाततरंगिणी)

अर्थ—अब रसजारण को कहते हैं और उस जारण में भी साधारण रीति से षड्गुण गंधकजारण को कहते हैं—

पारद सहित छोटे से मिट्टी के बासन को वालुकायंत्र पर रखे और उस तपे हुये पारद में छगुने लिये गंधक में थोड़ा थोड़ा डालता जावे। गंधक का क्षय जानकर यंत्र को उतार लेवे और स्वांग शीतल होने पर उस पात्र को तोड़कर पारद को निकाल लेवे, वह पारद समस्त रोगों को नाश करता है, जैसे श्रीमहादेव जी समस्त पापों को नाश करते हैं वैसे ही वह पारद सब रोगों को नाश करता है॥११–१३॥

अन्यच्च

सूतप्रमाणं सिकताख्ययंत्रे दत्त्वा बलिं मृद्घटितेऽल्पभांडे[1] । तैलावशेषे[2] तु रसं निदध्यान्मग्नार्धकायं[4] प्रविलोक्य[5] भूयः ॥१४॥ आषड्गुणं गंधकमल्पमल्पं क्षिपेदसौ जीर्णबलिर्बली स्यात् । रसेषु सर्वेषु नियोजितोऽयमसंशयं हन्ति गदं जवेन ॥१५॥

(र० रा० शं, बृ० यो०)

अर्थ—सिकतायंत्र (वालुकायंत्र) में मिट्टी की बनाई हुई छोटी सी मलसिया को गाड़कर उसमें पारद के सम भाग लिये हुए गंधक को डाल कर यंत्र के नीचे अग्नि जलावें और उस गंधक के पिघलने पर पारद को डाल देवे और धीरे धीरे गंधक के जलने पर जब पारा आधा खुल जाय तब फिर ऊपर से गंधक डाल देवे। इस प्रकार षड्गुण गंधकजारण करने से जो पारद सिद्ध होता है वह समस्त रसों में डालने योग्य और निःसन्देह रोगों को नाश करता है॥१४॥१५॥

गंधकजारण कूपी द्वारा

काचकुंपकमध्यस्थं पारदं गंधकं कुरु ॥ तत्कुंपं सार्षपे तैले अग्निसंतपने कुरु ॥१६॥ अनेन विधिना सूतः प्रत्यहं ग्रासस‌युतः ॥ जरत्यष्टगुणं गंधं हेमाकारो भवेद्ध्रुवम् ॥१७॥

(र० पा०)

अर्थ—कांच की बनाई हुई आतिशी शीशी में सम भाग पारद तथा गंधक को डालकर ऊपर से सरसों का तैल भर देवे और फिर उस शीशी को अग्नि पर रख कर तपावे। इस प्रकार प्रतिदिन ग्रास से युक्त पारद अष्टगुण गंधक को जारण करता है और पारद का रंग सुवर्ण के समान होता है, इसमें कुछ संदेह नहीं है॥१६॥१७॥

षड्गुण गंधकजारण के लिये यंत्रमान क्रम

इष्टिकायंत्रयोगेन मूषायां वापि कुंपकैः ॥ लवणोत्तममूषायां काच्छपे चापि खर्परे ॥१८॥ रसं गंधकसंयुक्तं स्थापयित्वा यथोत्तरम् ॥ पादांशे क्रमको दत्त्वा जारणीया सुधीमता ॥ षड्गुणे गंधके भुक्ते रसो भवति रोगहा ॥१९॥

(र० पा०)

अर्थ—इष्टिका यंत्र, मूषा, आतिशीशीशी, लवणोत्तम, मूषा, कच्छप यंत्र अथवा खर्पर यंत्र में गंधक और पारद को एक दूसरे के ऊपर रखकर जारण करे इस रीति से षड्गुण गंधक जारण किया हुआ पारद रोग का नाश करनेवाला होता है॥१८॥१९॥

मूषा द्वारा गंधकजारण अन्तर्धूम

मूषायामत्र लिप्तायां चतुःषष्टचंशकादिना । विधिना गंधकं दत्त्वा भूधरे तं पुटेल्लघु ॥ इत्थं संदीपितः सूतो विद्युत्कोटिसमप्रभः ॥२०॥

(टो० नं०, र० रा० हंसात्)

अर्थ—खरिया से लिपी हुई मूषा में पारद को रख कर उसमें चौसठवां भाग गन्धक डालकर भूधर यंत्र में रखे और ऊपर से लघु पुट देवे इसी प्रकार दीपित किया हुआ पारद कोटि विद्युत के समान कांतिवाला होता है। इस क्रिया के उत्तम होने में कोई संदेह नहीं है॥२०॥

गंधकजारण मूषा द्वारा

आरोटकसमगंधकचूर्णं तुल्यं निरुद्धमूषायाम् ॥ सुविगर्तायां मूषां तां क्षिप्त्वाष्टांगुलाधस्तात् ॥२१॥ आपूर्यवालुकाभिस्तं गर्तं भूसमीकृत्य ॥ प्रज्वाल्योपरि वह्निं त्रिदिनं मूषां समुद्धृत्य । जीर्णे तु गंधकेऽस्मिन् पुनस्तु क्षेप्योऽनया रीत्या ॥२२॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ—आरोटसंज्ञक पारद के तुल्य गन्धक चूर्ण को गहरी मूषा (घरिया) में रखकर ऊपर से आठ आठ अंगुल वालूरेत भर देवे और उस रेत पर तीन दिन तक अग्नि जलाकर स्वांग शीतल होने पर मूषा निकाल लेवे और मूषा को खोल कर देखे कि गन्धक जीर्ण हुआ है या नहीं, यदि गन्धक जीर्ण हो गया तो फिर इसी रीति से गन्धक जारण करे॥२१॥२२॥

लोहसंपुटद्वारा गंधकजारण अन्तर्धूम

सूते गंधं रसैकांशं निक्षिप्य मृदुखल्वगे ॥ तावत्संकुट्टयेत्पिंडं भवेद्वा ताम्रपात्रगे ॥२३॥ तत्तुल्यं गंधकं दत्त्वा रुद्ध्वा तल्लोहसंपुटे ॥ पुटयेद्भूधरे यंत्रे यावज्जीर्यति गंधकः ॥२४॥ एवं पुनः पुनः कुर्याद्यावज्जीर्यति षड्गुणः[1] ॥२५॥

(बृ० यो०, र० रा० शं०, नि० र०)

अर्थ—चिकने खरल में या तांबे के पात्र में पारद और पारद से चौथाई गंधक का चूर्ण मिलाकर जब तक उसका गोला नहीं बने तब तक घोटता जावे फिर उसके समान गंधक को ऊपर नीचे देकर लोहे के पात्र में रखकर मुद्रा करे, तदनंतर भूधर यंत्र में गंधक जीर्ण होने पर अग्नि लगाता रहे, इस प्रकार षड्गुण गंधक जारण करे॥२३–२५॥

१–तैलभाण्डे, इत्यपि । २–तैलावशेषामित्यपि । ३–नियुज्यदित्यापि । ४–मासार्धकोऽयमित्यपि । ५–बलीयानित्यपि ।

१–एवं पुनः पुनर्गन्धो दातव्यः षड्गुणो बुधैः–इत्यपि

लोहसंपुट द्वारा भूधरयंत्र से गंधक जारण अन्तर्धूम

अष्टाङ्गुलामितं गर्तं निम्नं च निखनेद्भुवि ॥ द्वादशांगुलविस्तारं पूरयेद्व्द्यंगुलं पुनः ॥२६॥ वालुकाभिस्तदुपरि शुद्धेश्वलिंगगर्भिणीम् ॥ लोहमूषां निरुद्धयास्यां निधाय सिकतोपरि ॥२७॥ पूरयेद्वालुकाभिस्तं गर्तं भूमिसमीकृतम् ॥ तदूर्ध्वं ज्वालयेदग्निं त्रिदिनं चोद्धरेत्ततः ॥२८॥ जीर्णे गंधे पुनर्गंध तत्र सूतसमं क्षिपेत् ॥ अनेन विधिना भूयो भूधरे वलि–जारणम् ॥२९॥

(र० प०)

अर्थ–पृथ्वी में आठ अंगुल गहरा और बारह अंगुल चौड़ा गड्ढा खोदकर दो दो अंगुल रेत बिछा देवे फिर लोहे की घरिया में सम भाग पारद और गंधक को भर और कपरौटी कर उस रेत पर रख देवे, उस पर बालूरेत भरकर गढ़े को धरती के बराबर कर देवे उसके ऊपर तीन दिवस तक अग्नि को जलाकर उस घरिया को निकाले जो गंधक जीर्ण हो गया हो तो फिर पारे के समान गंधक लेकर पूर्वोक्त विधि से गंधक जारण करे।।२६–२९।।

गंधकजारण इष्टिकायंत्र से

मृदुमृदारचितामसृणेष्टिकामुपरि गर्तवरेण च संयुताम् ॥ रसवरं दशशाणमितं हि तत्सशुकपिच्छवरेण निधापयेत् ॥३०॥ सकलचूर्णकृतं च सुरार्तकं गलितनिंबुफलोद्भवकेन वै ॥ छदततं च शराववरेण तन्मृदुतयाशु मृदा परिमुद्रितम् ॥३१॥ तदनुक्कुटपुटो हि दीयते ह्युपलकेन वनोद्भवकेन वै ॥ विधिविदा भिषजा ह्यमुनाकृतो विमलषड्गुणगंधकमश्नुते ॥३२॥ स च शरीरकरोऽपि चलोर्द्धकृत् सकलसिद्धिकरः परमो भवेत् ॥ तदगुणं हि युतं परिबार्यते रसवरः खलु हेमकरो भवेत् ॥३३॥

(रसप्रकाशसुधाकर)

अर्थ–जो कि कोमल मिट्टी से बनाई गई हो और जिसके ऊपर सुन्दर गढा हो ऐसी चिकनी ईंट को बनावे फिर उसके गढे में ढाई तोला पारा डालकर ऊपर से उतना ही शुद्ध आँमलासार गंधक डाल देवे तदनंतर उन दोनों को नींबू के रस से तर करके मुद्रा करे फिर उस इष्टिकायंत्र को भूधरयंत्र में रख जंगली कंडों का कुक्कुटपुट देवे इस प्रकार पारद षड्गुण गंधक को खा जाता है और वह षड्गुण जीर्ण पारद शरीर को नीरोग करनेवाला रसायन और समस्त सिद्धियों का करनेवाला होता है और वह सुवर्ण बनानेवाला पारा अनेक गुणों से युक्त है।।३०–३३।।

गन्धकजारण वा (रसमूर्च्छन) इष्टिकायंत्र से

इष्टिकायां सुपक्वायां सुखातं चतुरङ्गुलम् ॥ कृत्वा काचेन संलिप्तं तस्यान्तः पिष्टिकां क्षिपेत् ॥३४॥ निंबूद्रवार्द्रो गंधोऽस्य देय मूर्ध्नि द्विकार्षिकः ॥ मुखं संरुद्ध्य शुष्केऽथ दद्याल्लावपुटं ततः ॥३५॥ शीते तस्योपरि पुनः पुटं देयं ततोऽधिकम् ॥ एवं द्वित्रिचतुःकार्या यावज्जीर्यति षड्गुणः ॥३६॥ मूर्च्छितो विधिनानेन भवत्येव रसेश्वरः ॥३७॥

(यो० तरंगिणी)

अर्थ–सुन्दर पकी हुई ईंट में चार अंगुल गढ़ा खोदकर और उसको कांच से लीपकर (अर्थात् जिस पर कांच का रोगन हो) उसमें पारे की पिष्टी को रखे और उस पिष्टी पर नींबू के रस से तर किये हुए द्विगुणित गंधक को रख मुख पर मुद्रा करे और उसके सूखने पर भूधरयंत्र में रख ऊपर से लावक पुट देवे। उस पुट के शांत होने पर फिर पुट देवे, इस प्रकार तीन चार पुट देवे तो गंधक जीर्ण होगा एवं गंधक जीर्ण होने पर फिर गंधक डालकर पूर्वोक्त विधि से जारण करे, इस प्रकार षड्गुण गंधक जारण करे तो पारा मूर्च्छित होता है।।३४–३७।।

गंधकजारण गौरीयंत्र से

अथवा गौरीयंत्रेण गंधकजारणं कुर्यात् तदुक्तं टोडरानंदे–

गौरीयंत्र प्रवक्ष्यामि सुखदं जारणाविधौ ॥ अष्टांगुलोच्छ्रयां कृत्वा चतुरस्रां समेष्टिकाम् ॥३८॥ तत्रेष्टिकाया मध्येऽथ कुर्याद्गर्तं तु वर्तुलम् ॥ गर्तस्य परितः कृत्वा मेखला त्वंगलोच्छ्रिताम् ॥३९॥ गर्तं लिप्त्वा शुक्तिभस्म पेषयित्वा जलेन वै ॥ श्लक्ष्णवस्त्रकृतां पिष्टीं रसपिष्टीविधानतः ॥४०॥ तां पिष्टी लिप्तगर्ते च निक्षिपेच्च प्रमाणतः । तस्योपरि बलेश्चूर्णं पिष्टीपारमितं न्यसेत् ॥४१॥ दत्त्वा खर्परचक्रीं च संधि लिप्त्या विशोष्य च ॥ ऊर्ध्वं हयक्षुराकारं पुटं दद्याल्लघुपलैः ॥४२॥ शीते पुटे बलौ जीर्णे पुनस्तद्वद्बलिं न्यसेत् । रुध्यात्पुटं पुनर्दद्याद्यथा स्यात्षड्गुणावधि ॥४३॥ बालसूर्यनिभः साक्षात्खेटीभवति सूतकः । अस्यैव चेष्टिकायंत्रं कथयन्ति भिषग्वराः ॥४४॥

(ध० सं०)

अर्थ–गौरीयंत्र से गंधक जारण करना चाहिये, वही बात टोडरानंद में कही है कि अब हम जारण के लिये सुख के दाता गौरीयंत्र को कहते हैं। प्रथम ८ अंगुल ऊंची तथा आठ ही अंगुल चौड़ी चौकोन ईंट को बनवाकर फिर बीचो बीच में सुंदर गोल गढ़ा बनावे और उस गढे के चारों ओर एक एक अंगुल ऊंची मेखला (पाली) बनावे तदनन्तर उस गढे को जल से पीसे हुए सीप के चूने से लीप कर फिर रस पिष्टी के विधान से की हुई पारे की पिष्टी को उस गढे में रखे और पिष्टी का चौथाई गंधक चूर्ण को उस पिष्टी पर रख ऊपर से खिपड़ा ढांक कपरौटी करे फिर उस पर घोड़े के खुर के समान लघु पुट देवे। पुट के शीतल होने और गंधक के जीर्ण होने पर फिर गंधक को जीर्ण करे तो नवीन सूर्य के समान कांतिवाला साक्षात् पारद खेटी नाम का होता है।।३८–४४।।

गौरीयंत्र उपयोगी वार्ता

गंधकस्य क्षयोनास्ति न रसस्य क्षयो भवेत् । क्षयोऽयं तमविज्ञाय यंत्रे विक्रियेत क्रिया ॥४५॥ सम्यग्यंत्रपरिज्ञानात्किंचित्सूतक्षयो भवेत् । यदि गंधस्तु निर्गच्छेत्तदार्धांशक्षयो भवेत् ॥४६॥ यंत्रालक्ष्ये विधिं तस्य चतुर्थांशजयो भवेत् ॥४६॥ यंत्रालक्ष्ये विधिं तस्य चतुर्थांशजयो भवेत् । वह्निलक्ष्यमविज्ञाय रसस्योर्ध्वक्षयो भवेत् ॥ अथवा सर्वशो हानिर्जायते च ध्रुवं बचः ॥४७॥

(टो० नं०)

अर्थ–पारद का क्षय नहीं होता और न गंधक का क्षय होता, इस वास्ते जो क्षय पदार्थ हैं उसको नहीं जान करके जो यंत्र में क्रिया की जाती है वह विकृत हो जाती है। यंत्र को ठीक जानने से पारद कुछ क्षय होता है और जब उसमें से गंधक की सुगंध आने लगे तो पारद का आधा क्षय होता है। यंत्र के लक्ष्य न होने पर पारे का चतुर्थांश क्षय होता है और अग्नि लक्ष्य के विना पारद का अर्धांश क्षय होता है अथवा सम्पूर्ण पारद का क्षय होता है ऐसा भी कोई कहते हैं।।४५–४७।।

इष्टिका से गंधक जारण भूकरनकला करने की तरकीब जिसको षड्गुण गंधक जारण कहते हैं (उर्दू)

अर्थ–एक ईंट में गढ़ा गोल बनाकर गंधक मुसफ्फा सीमाव के हम वजन ऊपर नीचे गड्ढे मजकूर में रखकर ईंट को उसको ढांक दे लेकिन अव्वल ईंटों को इस तरह घिसकर हम बार कर ले कि शिगाफ न रहे और लव वलव रखकर जोड़ पर मुहर और गिले हिकमत कर दे ताकि भाप गंधक और सीमाव की न निकलने पावे और खिश्तबलाई के ऊपर चहार तह कपड़ा भिगोकर रख दे और नीचे से पाव भर कुटी हुई बिनुए कंड की आग दे। सर्द होने के बाद निकाल ले, बादहू फिर गंधक मुसफ्फा सीमाव मजकूर से दुचंद लाकर ऊपर नीचे सीमाव के खिश्त मजकूर में बदस्तूर रखकर गिले हिकमत करके आधेसेर करसी जंगली में आग दे। बाद सर्द होने के सिवारा तीन गुना गन्धक मुसफ्फा बतरीक मजकूर सीमाव मजकूर के ऊपर नीचे रखकर आग दे और हर बार ऐसा वस्ल करे कि भाप न निकलने पावे यह सीमाव सिंगरफ की रंग का हो जायेगा।।

(सुफहा अकलीमियाँ १४८)

गंधकजारण को जलयंत्र द्वारा (इष्टिकायंत्र का भेद)

साजी ईंट जुदेइ मँगाइ । वाही घसि के पेटु बनाइ ॥
माझ दुहून के कीजै डौरू । जैसे संपुट माइ जु औरू ॥
वस्त पाचनी संपुट करै । सो संपुट ईंटनि में धरै ॥
कपरौटी अति करे दृढाई । जब सूखे तब देइ चढाइ ॥
बड़ो यंत्र यह विधिना कियो । या सम और न जानो बियो ॥
संपुट एक कांच को करै । कपरौटी के सूखत धरै ॥
करि कुंडल मलुरीठ बनाई । चोरे ही में देइ चढ़ाई॥
कुंजल नाम यंत्र को कहै । गुरुप्रसाते कवियनु लहै ॥
अलप आगि याही से कही । संपुट वस्तु जाइ जो रही ॥

(रससागर)

कनककुंडरीयंत्र (इष्टिकायंत्र भेद)

एक ईंट चूल्हे पर धरे । ऊपर ताहि अंगीठी करे ॥
पुनि तापर बेली औंधाई । ज्यो अंगरो इकु तामें जाई ॥
पुनि हठमुद्रा कीजै गुनी । जैसे रसरतनाकर सुनी ॥
जंत्रहि कनककुंडरी नाम । येते धातुनिको विश्राम ॥

(रससागर)

गंधकजारण गौरीयंत्र से (जारणार्थ गंधक साधन है)

काशीशं चैव सौराष्टी स्वर्ज्जीक्षारोजमोदकम् । शिग्रुतोयेन संयुक्तं कृत्वा भाव्यमनेन वै ॥ सप्ताहं चूर्णितं गन्धं गौरीयंत्रेण जारयेत् ॥४८॥

(र० प०)

अर्थ–हीराकसीस, सौराष्ट्री (फिटकरी), सज्जी का खार और अजमोद इनके चूर्ण को सेंजने के रस में घोले फिर उस पानी से सात दिवस तक गंधक के चूर्ण को भावना देकर गौरी यंत्र में जारण करे॥४८॥

गंधकशोधन

तप्तं तप्तं शतधा पलांडुरसे निषिक्तमंते च पंचधा सजलम् । दुग्धे निषिक्तं गंधकमष्टगुणं शतगुणं वा जारयेत् ॥

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अर्थ–गंधक को गला गलाकर प्याज के रस में सौ बार बुझावे तदनंतर आधे पानीवाले दूध में पाँच वार बुझावे फिर उस गंधक को अष्टगुण जारण करे॥४८॥

गंधकजारण के बाद पारे के असली हालत पर लाने की तरीका

इष्टिकायंत्र से रफ्तः रफ्तः छहगुनी गंधक पारे में पिलावे बाद उसके शीरः घीग्वार से तीन रोज खरल करे और बजरिये डौरूयंत्र मजकूर के पारे को तसईद कर ले (सुफ़हा अकलीमियाँ १४८)

गंधकजारण सम्मतिसिकता भूधर वा कच्छपयंत्र से

समशकलद्वयात्मकलोहसंपुटकेन सिकतायंत्रमध्ये भूधरे वेति त्रिलोचनः ॥

कूर्मयंत्रे रसे गंधं षड्गुणं जारयेद् बुधः । इत्यन्ये ॥४९॥ अत्र[1] पक्षे रागस्तथा न स्यात्तेनादौ पंचगुणं जारयित्वा शेषं कूपिकादौ जारयितव्यश्च स रागः साधुः स्यात् ॥५०॥

(र० चिं० हस्तलिखित, र० रा० शं०)

अर्थ–त्रिलोचन वैद्य की यह सम्मति है कि जिसमें दो बराबर लोहे की कटोरियों का संपुट हो ऐसे सिकता यंत्र में या भूधर यंत्र में गंधक जारण करे और कुछ वैद्यों की यह सम्मति है कि कच्छप यंत्र द्वारा पारद में षड्गुण गंधकजारण करे। कच्छपयंत्र में गंधकजारणद्वारा उत्तम राग नहीं होता इस कारण प्रथम कच्छपयंत्र द्वारा पांच गुने गंधक को जारण करे फिर बालुका यंत्र में कूपिका द्वारा जारण करे तो उत्तम राग (रंगत) होता है॥४९॥५०॥

गंधकजारण कच्छपयंत्र

अथ गंधकजारणं कच्छपयंत्रेणोच्यते तदुक्तं देवीयामले ।

जलकूर्मप्रकारोऽमधुनां वक्ष्यते स्फुटम् । दैर्घ्यादधः स्थालिकाया मानं स्याद्द्वादशांगुलम् ॥५१॥ षोडशांगुलविस्तारा चतुःकीलयुतां मुखे । जलेनापूर्य तां स्थालीं निखनेद्भूमिमध्यतः ॥५२॥ उपरिष्टाच्छरावं च साम्बुकुंडपिधानकम् । मध्ये मेखलया युक्तं दद्यात्तत्कीलमध्यतः ॥५३॥ शरावपिष्टभागं च जलमग्नं यथा भवेत् । लिप्त्वा च मेखलामध्यं शुक्तिकाभस्मनाम्बुना॥५४॥ तन्मध्ये पारदं क्षिप्त्वा शोधितं शोभने दिने । रसस्योपरि गंधस्य रजो दद्यात्समांशकम् ॥५५॥ तस्योपरि शरावं च मृन्मयं कांतिलोहजम् । रीतिजं वायसं दत्त्वा कर्तव्यं संधिमुद्रणम् ॥५६॥ खटीं शिवा पटं भक्तं सम्यङ् निष्पेष्य मुद्रयेत् । तस्योपरि पुटं दद्याच्चतुर्भिर्गोमयोपलैः ॥५७॥ एवं पुनः पुनर्गंधं षड्गुणं जारयेद्बुधः । गंधे जीर्णे भवेत्सूतस्तीक्ष्णासिः सर्वकर्मकृत ॥५८॥

(ध० सं०)

अर्थ–अब कच्छपयंत्र द्वारा जारण को कहते हैं। यह देवीयामल में लिखा है।

अब जलकूर्म (कच्छपयंत्र) का प्रकार कहते हैं कि नीचे की थाली के उँचाई का प्रमाण बारह अंगुल हो और विस्तार सोलह अंगुल का हो और जिसके मुख पर चार कीले गढ़ी हुई हो उस स्थाली (कूड़े) को जल से भर धरती में गाड़ देवे फिर उस पर जल सहित कूंडे के ढ़कने वाले शकोरे को रख देवे जिसके बीच में गोल गोल मेखला यानी पाली लगी हुई हो और उस शकोरे को पीठ पानी से मिलीहुई हो, तदनंतर सीप के चूने से उस मेखला को लीपकर फिर उसमें शुद्ध पारद को रख कर ऊपर से समभाग गंधक का चूर्ण डाल देवे और उसके ऊपर कोरा या विलिया अथवा पीतल की कटोरी रखकर मुख पर मुद्रा करें। मुद्रा करने के लिये खड़िया, हर्र, नोंन और राख इन चीजों को लेना चाहिये फिर उस मुद्रा पर चार उपलों की आंच देवे। इस प्रकार बार बार गंधक डालकर जारण करे, जीर्ण होने पर पारद बुभुक्षित और समस्त काम का कर्ता होता है॥५१–५८॥

अन्यच्च

मृत्कुंडे निक्षिपेन्नीरं तन्मध्ये च शरावकम् । मृकुंडे च पिधानाभं मध्ये मेखलया युतम् ॥५९॥ क्षिप्त्वा च मेखलामध्ये[1] संशुद्धं रसमुत्तमम् ॥ रसस्योपरि गन्धस्य रजो दद्यात्समांशकम् ॥६०॥ दत्त्वोपरि शरावं च भस्ममुद्रां प्रदापयेत् ॥ तस्योपरि पुटं दद्याच्चतुर्भिर्गोमयोपलैः ॥६१॥ एवं पुनः पुनर्गंधं षड्गुणं जीर्यते बुधैः । गंधे जीर्णे भवेत्सूतस्तीक्ष्णाग्निः सर्वकर्मसु ॥६२॥

(यो०र०, र०सा०प०, नि०र०, र०रा०शं०, शार्ङ्गधर, यो०त०)

अर्थ–मिट्टी के कूण्डे में जल भर देवे उसके ऊपर ऐसा कूंडा ढक देवे कि जिसमें मेखला बनाई गई हो फिर उस मेखला में शुद्ध पारद को रखकर ऊपर से पारे के समान ही गंधक का चूर्ण डाल देवे। तदनंतर उस मेखला के मुख

१–अत्रपक्षे का अर्थ कूपिकोदरे वा कच्छपिकोदरे पाठ पर निर्भर है यदि कूपीकोदरे पाठ ठीक हो तो यह अर्थ होगा कि कच्छपयंत्र में राग ठीक नहीं होता कूपिकोदर से जारण करे या कच्छपिकोदरे पाठ ठीक है तो यह अर्थ होगा कि सिकतायंत्र वा भूधर यंत्र वा भूधर यंत्रस्थित कूपी में राग अच्छा नहीं हो। पीछे कच्छप यंत्र से जारणा करे।

१–निक्षेप्य मेखलामध्ये स्वर्णेनात्र रसं क्षिपेत् । यो० त०

पर शकोरा रख भस्म मुद्रा कर देवे और मुद्रा पर चार उपलों का पुट देवे। इस प्रकार बार बार पुट देकर षड्गुण गंधक को जारण करे। इस रीति से षड्गुण गंधक जारण किया हुआ पारद बुभुक्षित और समस्त कर्मो में उपयोगी होता है।।५९–६२।।

षड्गुण रसजारण कच्छप यंत्र से

प्रक्षिप्य तोयं मृत्कुंडे तस्योपरि शरावकम् । सचूर्णं मेखलायुक्तं स्थापयेत्तस्य चान्तरे ।।६३।। रसं क्षिप्त्वा गंधकस्य रजस्तस्योपरि क्षिपेत् ।। लघीयसी भस्ममुद्रां ततः कुर्याद्भिषग्वरः ।।६४।। अरण्योपलकैः सम्यक् चतुर्भिः पुटमाचरेत् ।। एवं पुनः पुनर्गन्धं दत्त्वा दत्त्वा भिषग्वरः ।। कुर्वीतः रसराजस्य सम्यक् षड्गुणजारणम् ।।६५।।

(रसमंजरी)

अर्थ–मिट्टी के कूंडे में पानी भरकर फिर उसके ऊपर मेखलायुक्त और चूने से लेप किये हुए शकोरे को रखे तदनंतर उस मेखला में पारद को रख कर ऊपर से गंधक के चूर्ण को बिछा देवे और उसके मुख को शकोरे से ढक कर मुद्रा कर देवे, इसके बाद चार जंगली कंडों की पुट लगावे। इस प्रकार बार बार गंधक देकर वैद्यवर पारद में षड्गुण गंधक जारण करे।।६३–६५।।

गडुकायंत्र से गन्धक जारण वा कच्छपयंत्र से

आकंठकलशं भूमौ निखाय जलसम्भृतम् ।। शरावस्तन्मुखे स्थाप्यो मध्यच्छिद्रसमन्वितः ।।६६।। नीरावियोगिनी तत्र च्छिद्रे काचविलेपिताम् ।। मृन्मूषां स्थापयेत्तस्यामूर्ध्वाधस्तुल्यगंधकम् ।।६७।। मृन्मूषां स्थापयेत्तस्यामूध्व धिस्तुल्यगंधकम् ।।६७।। रसं निक्षिप्य तस्योर्ध्वं शरावेण विमुद्रयेत् ।। वन्योपलाग्निं तस्योर्ध्वं ज्वालयेद्गुरुमार्गतः ।।६८।। स्वांगशीतं समुद्धृत्य पुनस्तुर्यांशगंधकम् ।। दत्त्वा पूर्वक्रमेणैव जारयेत्षड्गुणं बलिम् ।। षड्गुणे गंधके जीर्णे स्याद्रसः सर्वरोगहा ।।६९।।

(बृ० यो०, र० रा० शं०, र० रा० प०, नि० र०)

अर्थ–जल से भरे हुए घड़े को गले तक धरती में गाड़कर फिर उसके मुख पर बीच में छिद्र किये हुए शकोरे को रख देवे और उस छिद्र के ऊपर जल से मिली हुई और कांच से लिप्त मिट्टी की मूषा को रखे तदनंतर उसमें पारद को रख और ऊपर नीचे सम भाग गंधकचूर्ण को रखकर और सकोरे से ढ़ककर मुद्रा कर देवे और गुरुदेव की बताई हुई क्रिया से उस पर जंगली कंडो की आंच लगावे। स्वांग शीतल होने पर पारे को निकाल और सम भाग गंधक मिलाकर पूर्वोक्त क्रिया से जारण करे। इस प्रकार षड्गुण गंधक जारण करने पर पारद समस्त रोगों का नाश करनेवाला होता है।।६६–६९।।

गंधकजारण कच्छपयन्त्र से पारद को अतिबुभुक्षितकरणार्थ षड्गुण गंधकजारण
चौपाई

इक हंडिया में पानी भरिये । ताऊपर इक कुंडा धरिये ।।
फिर चूना पानी सों सानै । कुंडामध्य मैंड इक ठानै ।।
मंड विषै पारद धरि देय । ताऊ पर गंधक रज लेय ।।
अतिपतरी लोहे की करिये । तापै एक कटोरी धरिये ।।
औंधी करे कटोरी आछे । मुद्र वज्र देइ दृढ़ पाछे ।।
उपरा जंगल के मैंगवाइ । ऊपर अंगुर आठ भराय ।
कुक्कुटपुट है याको नाम । तापै बह्नि धरै गुनि धाम ।।
राख होइ उपरा जरिजाय । तब पारद को लैनिकसाय ।।
या प्रकार ते बारंबार । षट्बिरियां गंधक दे जार ।।
या विधि कच्छप यंत्रप्रकार । कह्यो सुमुनिजन कर निरधार ।।

दोहा

**पारा लै द्वे करष भर, गंधक चूर समान ।
कुंडा को पेंदों रहै, लग्यो नीरतें जान ।।**

वज्रमुद्राकथन

**नोंन राख को पीसि कें, चारों तरफ लगाय यहै ।
वज्रमुद्रा कही, जानो पंडित राय ।।
इस गंधक पारद विषे, जब षटगुन जरिजाय ।।
तब अति तीक्ष्णता विषे, अग्नि भली प्रगटाय ।
सर्व कर्मकृत होता अरु, सब धातु को खाय ।।
इम पारद शोधन सुविधि, सुगमहि देइ बताय ।।**

(वैद्यादर्श)

गंधकजारण कच्छपयंत्र से

गंधक पारा सम भाग और तैल नौसादर ६ माशे पानी में रखकर आग लावणी ।

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

गंधकजारण सोमानलयंत्र से

मेघनादवचाहिंगुलशुनैर्मर्दयेद्रसम् । नष्टपिष्टन्तु तद्गोलं हिंगुना वेष्टयेद्बहिः ।।७०।। पचेल्लवणयंत्रस्थं दिनैकं चंडवह्निना । ऊर्ध्वलग्नं समादाय दृढवस्त्रेण वेष्टयेत् ।। ७१।। ऊर्ध्वाधो गंधकं तुल्यं दत्त्वा सौम्यानले पचेत् । जीर्णे गंधे पुनर्देयं षड्भिर्वारैः समं समम् ।।७२।। षड्गुणे गंधके जीर्णे मूर्च्छितो रोगहा भवेत् ।।७३।।

(रसमंजरी, र० रा० शं०, र० रत्नाकर, र० सा० प०)

अर्थ–चौलाई की जड़, वच, हींग और लहसन से पारद को घोटे और घोटते घोटते जब पारद नष्टपिष्ट हो जाय तब उसका गोला बनाकर बाहर से हींग का लेप करे फिर उसको लवणयन्त्र द्वारा एक दिन तक तीव्र अग्नि से पकावे, तदनंतर ऊपर लगे हुए पारद को निकाल कर दृढ़ वस्त्र से बांध लेवे और उसके ऊपर नीचे सम भाग गंधक को देकर सोमानल यंत्र में पकावे, गन्धक के जीर्ण होने पर फिर गन्धक को देकर पकावे। इस प्रकार छः बार सम भाग का गन्धक देना चाहिये क्योंकि षड्गुणगन्धक के जीर्ण होने पर पारा मूर्च्छित और रोगों का नाश करनेवाला होता है।।७०–७३।।

गंधकजारण नाभियंत्र से

**पूर्वोक्तनाभियंत्रेण गंधकं जारयेद्बुधः ।
अन्तर्धूमविपक्वोत्र सूतराजोऽतिरंजितः।।७४।।**

(र० प०)

अर्थ–बुद्धिमान वैद्य पूर्वोक्त नाभियंत्र से गंधक को जारण करे क्योंकि अन्तर्धूम द्वारा पकाया हुआ पारद उत्तम रंगवाला होता है।।७४।।

तुलायंत्र से गंधकजारण

**अथातः[1] शुद्धसूतस्य जारयेत्पूर्वभावितम्[2] ।
गंधकं तु तुलायंत्रे पश्चात्सर्वं ग्रसत्यलम् ।।७५।।**

(र० प०)

१–पूर्वभावित का संवध इस पूर्वोक्त श्लोक से है "काशीसं चैव सौराष्ट्री स्वर्ज्जीक्षारोऽजमोदकम् । शिग्रुतोयेन संयुक्तं कृत्वा भाव्यमनेन वौसप्ताहं चूर्णितं गंधं गौरीयंत्रेण जारयेत् ।।"

२–कशीसे आदिका द्राव बनाकर क्यों न गन्धक में भावना दी जावे।

अर्थ–अब शुद्ध किये हुए पारद पर पहली औषधियों (कसीस, फिटकरी, सज्जीखार, अजमोद, सैंजन के रसयुक्त) से भावना दिये हुए गन्धक को तुलायंत्र में जारण करे तो पारा समस्त पदार्थों को खानेवाला हो जाता है।।७५।।

अन्तर्धूम गंधकजारण कूपी द्वारा

गंधकं सूक्ष्मचूर्णं तु सप्तधा बृहतीद्रवैः । भावयेच्चाथ वृन्ताकरसेनैव तु सप्तधा ।।७६।। पलैकं पारदं शुद्धं काचकूप्यन्तरे क्षिपेत् । कर्षैकं भावितं गंधं कर्पूरं माषमात्रकम् ।।७७।। क्षिप्त्वा तत्र मुखं रुद्ध्वा मृदा कूपी विलेपयेत् । दीपाग्निना दिनं पच्यान्मुखमुद्घाटयेत्पुनः ।।७८।। जीर्णे गंधे च कर्पूरं दत्त्वा तद्वत्पुनः पुनः। एवं शतगुणं गंधं जीर्णं च जायते रसे ।।७९।।

(र० प०)

अर्थ–गंधक का सूक्ष्म चूर्ण बनाकर कटेरी की जड़ के रस से तथा बेंगन के रस से सात सात बार भावना देवे फिर शीशी में ४ तोले पारा डालकर और ऊपर से ४ तोले भावना दिया हुआ गंधक तथा दो माशे कर्पूर डालकर खिपड़ा इत्यादि से मुख बंद की हुई शीशी के मुख पर मिट्टी से कपरौटी कर देवे फिर दीपाग्नि से एक दिन वालुका यंत्र में पकाकर फिर मुखको खोलदेवे, गंधक के जीर्ण होने पर पुनः कर्पूर और गंधक को डाल कर जीर्ण करे। इस प्रकार पारद में सौ गुण गंधक जीर्ण होता है।।७६–७९।।

अन्तर्धूम गंधक जारण कूपी द्वारा

निरवधिनिपीडितमृम्बरादिपरिलिप्तामतिकठिनकाचघटीमग्रे वक्ष्यमाण–प्रकारां रसगर्भिणीमधस्तर्जन्यंगुलिप्रमाणितच्छिद्रायामनुरूपस्थालिकायामा रोप्योपरितस्तां द्वित्र्यंगुलिमितेन निरंतरालीकरणपुरःसरं सिकताभिरापूर्य्य वर्द्धमानकमारोपयेत् क्रमतश्च त्रिचतुराणि पंचषाणि वासराणि ज्वलनज्वाल–या पाचनीयमित्येकं यंत्रम्।।८०।।

(र० चिं०, र० रा० शं, बृ० यो०)

अर्थ–कपड़ा डालकर निरंतर कुटी हुई मिट्टी तथा कपड़ों से कूपी पर सात परत लगावे और कूपी के सूखने पर पारा और गंधक भर देवे फिर उस कूपी को ऐसी हांडी में रख कि जो शीशी के रखने योग्य और जिसके पेंदे में तर्जनी के समान छेद किया हुआ हो तदनंतर उस शीशी के चारों तरफ तीन तीन अंगुल रेत भर कर ढ़कने से ढाक देवे फिर तीन चार या पांच दिवस तक विधिपूर्वक अग्नि देता रहे, यह एक प्रकार का यंत्र कहा गया है।।८०।।

अन्तर्धूम गन्धकजारण कूपी द्वारा

हस्तैकप्रमाणवसुधान्तर्निखातां प्राग्वत् काचघटी नातिचिपिटमुखी नात्युच्च मुखीं मसीभाजनप्रायां खर्परचक्रिकया काचचक्रिकया वा निरुद्धवदनविवरां मृन्मयी वा निधाय करीषैरुपरि पुटो देयः ।।८१।।

(र० चिं०, बृ० यो०)

अर्थ–वालुकायंत्र में कही हुई रीति के अनुसार सात बार कपरौटी की हुई शीशी में पूर्ववत् पारा और गंधक भर उसका मुख खपर्या की चकती से या कांच की चकती से बंद करे, शीशी का मुख अधिक चपटा या अधिक ऊंचा न हो अथवा दावात के समान हो फिर धरती में हाथ भर गढ़ा खोदकर शीशी रख दे, ऊपर से कंडो के खादक पुट देना चाहिये।।८१।।

कज्जली को बिना समान २ गन्धकजारणोपदेश

[1]अत्र कज्जलीकरणमन्तरेण केवलं गंधकमपि साम्येन जारयन्ति।।८२।।

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–पूर्वोक्त दोनों यंत्रों में बिना कज्जली के गंधक को समभाग से जारण करना चाहिये, अनेक विद्वानों का ऐसा मत है।।८२।।

षड्गुण बलिजारण से रस सिंदूर संपादन

कूपीकोटरमागतं रससमं गन्धं तुलायां विभुं विज्ञाय ज्वलेनक्रमेण सिकतायंत्रे शनैः पाचयेत् । बारंवारमनेन वह्निविधिना गंधक्षयं साधयेत् सिंदूराद्युचितोऽनुभूय भणितः कर्मक्रमोयं मया ।।८३।। (र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं, बृ० यो०, आ० वि०, र० रा० प०, र० सा० प०)

अर्थ–वजन में पारद के सम भाग गंधक को आतिशी शीशी में भर कर बालुकायंत्र में मंद, मध्यम और तीक्ष्णाग्नि से पाक करे, इस रीति से बार बार गंधक का जारण करे, रससिंदूर आदि पदार्थों के बनाने योग्य इस कर्म को मैंने अपने अनुभव से कहा है।।८३।।

सम्मति–रससिंदूर बनाने के लिये जो शीशी चढाई जावे उसके मुख पर ईंट की टिकिया लगाकर मुद्रा करे और बालुका यंत्र में रखकर चार प्रहर की आंच देवे। इस प्रकार बार बार गंधक का जारण करे यदि शीशी दृढ़ न हो तो दूसरी शीशी लेनी चाहिये और जो रस सिंदूर हो जाय तो ऊर्ध्वपातन यंत्र द्वारा पारद को निकाल लेवे।

मूर्च्छन के लिये कज्जली

त्रिगुणमिह रसेन्द्रमेकमंशं कनकपयोधरतारपंकजानाम् ।। रसगुणबलिभि–र्विधाय पिष्टिं रचय निरंतरलंबुभिः कुमार्याः ।।८४।।

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–तीन भाग पारा, एक भाग सुवर्ण, चांदी, अभ्रक, पंकज और छः भाग गंधक इन सबको मिलाकर घीग्वार के रस में पीसकर पिष्टी बनावे।।८४।।

आषड्गुणमधरोत्तरसमादिबलिजारणे तु योज्येयम् ।
योगे पिष्टी पाच्या कज्जलिकार्थं च जारणार्थं च ।।८५।।

(र० चिं०, र० रा० शं०)

अर्थ–साधारण कज्जलीकरण इन दोनों में समान गंधक से लेकर षड्गुण गंधक के प्रयोगों में रस गंधक की कज्जली कर डालनी चाहिये। यह प्रकार अधोयंत्र से ही सिद्ध होता है ऊर्ध्व यंत्र से नहीं।।८५।।

गंधकजारण में नागादि की पिष्टी धातु उपयोगी है

नागादिशुल्वादिभिरत्र पिष्टीर्व्यादिषु योगेषु च निक्षिपंति ।।८६।।

(र० चिं०)

अर्थ–सीसा और तांबा आदि धातुओं की करी हुई पिष्टी सोना चांदी बनाने के अर्थ में उपयोगी होती है।।८६।।

गन्धकजारण के लिये कूपी

काचमृत्तिकयोः कूपी हेमायः क्वचित् ।
कीलालाद्यैः कृतो लेपः खटिकालवणादिकः ।।८७।।

(र० चिं०, र० रा० शं०)

अर्थ–कहीं कहीं कांच और खड़िया की बनी हुई या सोना तथा लोहे के साथ बनी हुई शीशी पर क्रमशः रक्त और सार का तथा खड़िया और नोंन का लेप करना चाहिये।।८७।।

ग्रस्त धातु वा केवल पारद को मूर्च्छन करे

[1]ग्रस्तधातुममुं सूतं केवलं वा पुनः पुनः । मूर्च्छयेत्षड्गुणैर्गंधैः क्रमात् कच्छपयंत्रके ।। रोगहर्ता भवेदेवमित्युवाच शिवां हरः ।।८८। (रसमानस)

१–इसका आशय यह जान पड़ता है कि जो कज्जली करेंगे तो षड्गुण तक जितना चाहे गंधक डाल सकते हैं किन्तु बिना कज्जली के समान से अधिक गंधक एक बार न डालना।

१–बुभुक्षितीकरण के अनन्तर ग्रन्थकार ने यह पाठ दिया है जिससे यह जान पड़ता है कि ग्रस्त का आशय चारित से है जारित से नहीं वा पिष्टी से होगा।

अर्थ–धातु का ग्रास दिये हुए अथवा केवल ही पारद को षड्गुण गंधक से कच्छप यंत्र द्वारा बार बार जारण करे तो वह पारद रोग हर्ता होता है, ऐसा श्रीमहादेवजी ने पार्वती को कहा है।।८८।।

एक मत से बीजजारणान्तर गन्धकजारण आदेश

आदौ[1] संजारयेद्बीजं पश्चाद्गंधं च जारयेत् ।।८९।।

(टो० नं०)

अर्थ–प्रथम बीज का जारण करे पीछे गंधक का जारण करे।।८९।।

बीजजारणानन्तर गन्धकजारणक्रिया
(भूधर यंत्र से)

गधकं[2] जारयेद्धीमान् रक्तचित्रकभावितम् । अंकोलतैलतो वापि रक्तवर्णेन वा तथा ।।९०।। किंशुकातैलतो वापि हेमभृंगरसेन वा । काचमारीरसेनापि ह्यथवा वेणिकारसैः ।।९१।। चूलिकलवणोपेतं यंत्रे भूधरसंज्ञके । निर्माय गोस्तनाकारं बज्रमूषां दशांगुलम् ।।९२।। अर्धपक्वां पटुक्षारस्नुहीदुग्धार्क–दुग्धतः । विषाम्लक्लृप्तां संशुष्कां तत्र सूतं निवेशयेत् ।।९३।। धरण्यामवटं कृत्वा वितस्तिद्वयमानतः । तत्र मूषां प्रतिष्ठाप्य रसयुक्तां ततः क्षिपेत् ।।९४।। गंधकं राजिकामात्रं प्रागुक्तौषधभावितम् । अपिधाय पिधायाथ पुटं दद्यादरण्यजैः ।।९५।। छानैः कुक्कुटसंज्ञं च स्वांगशीते ततः क्षिपेत् राजिकाद्वयमानेन गंधकं पूर्ववन्मतम् ।।९६।। इत्थं द्वित्रिचतुःपंचक्रमेण परिवर्धयेत् ।। यथा गंधो न निर्याति धूमो वापि कथंचन ।।९७।। एवं प्रवर्धयेत्तावद्यावत्स्यात्षोडशांशकम् । न वर्द्धते ततः पश्चाद्वर्धितं न गुणावहम् ।।९८।। रसस्य मारकत्वाच्च वर्द्धनं परिवर्जयेत् । एवं युक्त्या गंधकं हि जारयेत्षड्गुणं प्रिये ।।९९।।

(टो० नं०)

अर्थ–चूलिका, लवण से युक्त और लाल चीता, अंकोल का तैल, ढाक के बीजों का तैल, धतूर का तैल, भांगरे का रस,काकमाची का रस और बंदालक का रस इनमें से किसी से भावना दिये हुए गंधक को जारण करे। नोंन, खार, थूहर का दूध, आक का दूध, इनसे बनाकर सुखाई हुई दस अंगुल गौ के स्तन के आकारवाली और आधी पकी हुई बज्रमूषा को बना कर उसमें पारद को रखे फिर धरती में दो बालिश्त गढ़ा खोदकर पारद से भरी हुई उस मूषा को गाड़ देवे और ऊपर से राई के बराबर गंधक डाल देवे फिर ढकने से ढककर ऊपर से बालूरेत भर कर जंगली कंडों की कुक्कुटपुट देवे। स्वांग शीतल होने पर निकालकर पूर्वोक्त रीति से दो राई बराबर गंधक जारण करे। इसी प्रकार तीन चार और पांच राई के क्रम से गंधक बढ़ाता जावे और इस प्रकार गंधक का जारण करे कि उस गंधक का धूंआ बाहर नहीं जावे एवं षोडश गुण गंधक तक जारण करे। सोलह गुने गंधक से अधिक गंधक का जारण नहीं करे क्योंकि यह गंधक पारे को मारनेवाला है। हे प्यारी पार्वती! इसी प्रकार षड्गुण का भी जारण समझ लेना चाहिये।।९०–९९।।

गन्धकजारण से अकसीर खुर्दनी व कीमियाई (उर्दू)

अकसीर आजमतिना बनाने का तरीक: सेर भर तुख्मपलास यानी ढाके का रोगन निकालकर उसमें सीमाव मुसफ्फा चालीस माशे को सहक करना शुरू करे यहां तक कि सीमाव मजकूर मसक: हो जावे, उसके बाद गंधक मुदव्विर[1] मजकूर: नुसख:[2] हाजा चार माशे लेकर सीमाव में मिलाकर कजली कर ले बादहू उसको बोत: मुअम्मा में रखकर मअमूलन गिले हिकमत करके बाद खुश्क होने के जमीन के अन्दर दफन करे तो इस तरह के बोते के ऊपर दो अंगुल मिट्टी रहे, उसके ऊपर सवासेर कंडों की आग जलावे सर्द हांने के बाद फिर सवासेर पांचक दस्ती की आग जलावे। इस तरह से चार बार सवासेर की आग जलावे ताकि कुल पांच सेर कंडे जलकर राख हो जावें। यह एक बार अमल हुआ बादहू दवा को बोते से निकाल कर गन्धक मुदव्विर मजकूर हवाला चार माशे फिर मिलाकर रोगन पलास में सहक करके बोत: मुअम्मा में दस्तूर रख कर सवा सवा सेर की चार बार आग दे। रोगन पलास की मिकदार इतनी होनी चाहिये कि दवा उसमें चख हो जावे। गरज इसी तरह से दवाई अकसीरो को निकाल क गंधक मुदव्विर चार माशे मिलाकर रोगन पलास में सहक करके चार बार सवासेर की आग जंगली उपलों की दिया करे। इस तरह के चालीस अमल में अकसीर कामिल हो जावेगी इस अमल में चालीस माशे सीमाव में चौगुनी यानी १६० माशे गंधक मुदव्विर मजकूर और पांच मन पुख्त: पाचक दस्ती सिर्फ होते हैं। अकसीर का रंग जर्द होता है। तरह करने का तरीका यह है कि तोले भर अकसीर में सौ तोले सुख पर गुदाज करके तरह करे जो जर्द और शिकनान हो जावेगा। बादहू एक तोला सुरव मजकूर लेकर सौ तोले मिस गुदाख्त: पर तरह करे। इनशा अल्ला: कलबुल ९क आलीडल एन करेगा और खाने में कुव्वत शवाब होगी जौफ पीरी जायल हो जाये। (सुफ्हा अकलीमियां २४४)

इति श्रीजैसलमेरनिवासि पं० मनुसखदासात्मजव्यास–
ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायां
गंधकजारणं नाम विशोऽध्यायः ।२०।।

चन्द्रोदय का अनुभव

३०/९ उपरोक्त हिंगुलोत्थ और १ बार करे गये साधारण मूर्छित से शुद्ध ऽ। पावभर पारे में से ८ तोले पारे को लोहे के स्वच्छ खरल में डाल उसमें १ तोले सोने के बरक थोड़े थोड़े डाल घोटा गया तो घंटे भर में सब वर्क पारे में मिल गये और पारा सफेद ही रहा और गाढ़ा कर्दम सा हो गया उसमें (घृत में गला दूध में डाल) शुद्ध करी हुई आँवलासार गंधक (जिसकी चिकनाई कपड़े से पोंछ ली थी) १६ तोले डालकर घोटा गया।

१/१० आज दिन भर कज्जली सूखी घुटती रही।

२/१० आज दोपहर तक सूखी कज्जली घुटती रही, खूब बारीक काजल सी हो जाने पर पहर दोपहर को घीग्वार का रस डाल घोटी गई।

३/१० आज दोपहर तक घीग्वार के रस की कज्जली घुटी। दोपहर को गाढ़ा हो जाने पर सुखा दी गई।

४/१० आज यह औषधि सूखती रही।

५/१० आज दोपहर तक यह औषधि सूखती रही, दोपहर बाद इस औषधि को खूब सूख जाने पर तोलागया तो ८+१+१६=२५) भर ठीक हुई, पहले से एक अंगरेजी आतिशी शीशी को जो ४ इंच चौड़ी थी, उस पर कुम्हार के यहां की मिट्टी में घोड़े की लीद सानकर कूट कपरौटी ७ दफे की गई। कभी कभी कुछ मुलतानी भी लगाई गई, इस शीशी को डाट पक्की ईंट की बनाई गई। घिसकर चिकनी कर ली गई। यह डाट ३ अंगुल लंबी होगी।

---

१ यहां यह शंका पड़ता है कि बुभुक्षितीकरण के लिये गंधक जारण प्रथम करे किन्तु [illegible] प्रथम बीज जारण कर ले।

२ [illegible] आन पड़ती है।

१–गंधक मुदव्विर की तरकीब आधसेर गंधक आंवलासार को शीर: घीग्वार में सात बार शीर: बादहू शीर: लहसन खालिस में सात बार इस्तंजाल करे बादहू चार चार पहर घीग्वार और सुर्ख प्याज के अर्क दोलायंत्र मे स्वेदन करे और सात दिन तक दोनों चीजों में स्वेदन करता रहे और सरगोश को गिले हिकमत करे दे कि भाप न निकले।

२–गन्धक मुदव्विर का नुसख: तूल तवील अलहद दर्ज है (सुफ्हा २३ पर)

७ कपरौटी करी हुई आतिशी शीशी में २५) रुपये भर दवा भर कर उस पर ईंट की डाट लगा उसकी सन्धि को नामेके साथ कुटी हुई मिट्टी से बन्द किया गया और सुखा दिया गया।

६/१० दूसरे दिन शीशी की डाट और गर्दन पर उसी नामे से मिली मिट्टी से एक लंबी कपड़े की पट्टी को जो ४ अंगुल चौड़ी होगी सानकर कपरौटी की गई यानी तीन चार लपेट लगाये गये और उस पट्टी को डाट के ऊपर लौट भी दिया गया जिससे सब डाट ढ़क गई। दोपहर बाद इसी तरह की एक कपरौटी डाट पर और कर दी गई।

७/१० उपरोक्त शीशी आज प्रातःकाल से वालुका यंत्र में चढ़ाई गई। वालुकायंत्र–एक रोगनी यानी चीनी किया हुआ चौड़े मुँह का मिट्टी का घडा तोला (जिसका ८ इंच गहराई १३ इंच चौड़ाई १० इंच मुँह चौड़ा था) लेकर उसके पेंदे के बीच में एक गोल छेद जिसमें एक उंगली चली जावे, बढ़ई से कराकर उस छेद के चारों ओर तोले के अन्दर की तरफ गूदड़ और कुटी मिट्टी की बत्ती सी बनाकर एक घिरोली बना दी गई जो सबसे पतली उंगली के पौरु के बराबर ऊंची होगी–इस घिरोली के बीच में एक खपरे की लंबी ठीकरी रख कर दवा दी गई जिससे वह घिरोली की ऊँचाई के अन्तरगत ही रही–फिर इस घिरोली के ऊपर शीशी रखकर तोले में छनी हुई गंगारेणु का और कूएं की रज भर दी गई तोले की गर्दन तक, नतीजा यह रहा कि शीशी के पेंदे का बीच नीचे से अधेले की बराबर खुला रहा (इस छिद्र के बीच में भी एक लंबी ठीकरी दो टुकड़े करती रही और शीशी के नीचे एक अंगुल से शुरू होकर २ अंगुल तक बालू रही, शीशी के इधर उधर चार चार अंगुल बालू होगी, शीशी के गर्दन जितनी सीधी थी वह सब खुली रही।।

इसे बालुकायंत्र अर्थात् तोले की एक छोटी सी भट्टी पर चढ़ाया गया, इस तरह कि भट्टी के ऊपर ५ गुम्मा ईंटके अद्धे रख कर उन पर तोला रखा गया ताकि आंच तोले के चारों तरफ निकल सके। आज ७ बजे से हलकी आंच शुरु हुई। रात को कुछ बढ़ाई गई।

८/१० आज दिन को आंच कुछ थोड़ी बढ़ाई गई। रात को पूरी आंच कर दी गई यानी इतनी आंच दी जाती थी जिसकी लोय चारों तरफ निकलती थी। तोले के पेंदे की ऊँचाई तक, अब तक गर्दन की तरफ से कोई गंधक का धूम्र निकलता नहीं दीख पड़ा।

९/१० को बराबर आंच दी गई, गंधक किसी समय निकलता नहीं दीख पड़ा।

११/१० आज शाम तक आंच दी गई, ६ बजे तक आंच दिन को दोपहर के सय कुछ हल्की रखी जाती थी। रात को विशेष कर दी जाती थी।

(७–८–९–१०–११/२) यानी (३६ प्रहर आंच देकर बन्द की गई) रात को आंच बन्द की गई। यंत्र भट्टी पर ही रखा रहा।

१२/१० सुबह यंत्र भट्टी से नीचे उतार लिया गया, शाम को ३ बजे शीशी तोड़ी गई तो शीशी की गर्दन के ऊपरी भाग में १।। तोला गंधक अर्धजलित विशेष पीला कुछ काला नीचे पेंदे में नीचे की तरफ जला हुआ गंधक सोना काली रंगत का ७।। तोले निकला। इस जले हुए गन्धक के ऊपर शीशी के मध्य भाग से गिरा हुआ १३।। तोला ऊपर से सुरक रंग का पारद गंधक निकला जो खसखसी रस सिंदूर की आकृति का था, अन्दर तोड़ने पर सुरखी नाम की थी पीलापन था। ३ माशे शीशी में भी लगा रह गया होगा, सब तोला २२।। तोला हुई रखा गया था। २५ तोले अर्थात् २।। तोले केवल जला–कारण इसका कम आंच लगना कहा गया, लकड़ी गीली थी, सबसे नीचे पेंदे पर स्वर्ण की रंगत चमकती थी।

३६ प्रहर की आंच में सिरफ २ तोले गंधक का वजन घटना यह रखने लायक है।

भांग से पारे के मूर्च्छन का अनुभव

स्वामी रामेश्वरानंद जी ने कहा कि भंग से मूर्च्छन होता है, इसलिये उन्हीं के द्वारा कराया गया।

२ तोले पुराने रखेहुए शुद्ध पारेको, भांग को कूंडी में भिगो उसका थोड़ा रस डालकर ता० २९/९ ३०/९ १/१० २/१० ४ दिन बड़े खरल में घोटा गया तो पहले तो पारद उसमें लीन हुआ जान पड़ा किन्तु तीसरे दिन गोली बनने लायक गाढ़ा होने पर पारा जुदा हो चला–चौथे दिन जब दवा की बत्तीसी बनने लगी तो आधे के करीब पारा पृथक् हो गया खूब सूखा देने पर ।।=) भर पारा पृथक् था और २) भर पारे औषधि का वजन था इस औषधि को एक मटके में रख सकोरेसे ढक सेर भर कंडोंके दहरे पर रख दिया तो फूंककर केवल ६ माशे रह गई। इससे इतना ही सिद्ध हुआ कि ३ दिनके परिश्रममें २) में से केवल अर्द्धांश पारा मूर्च्छन लुप्त हुआ। यह कर्म पारद शोधन के उपयोगी नहीं कहा जा सकता।

चन्द्रोदय का दूसरा अनुभव

२२/१०–१३।। तोले सुरखी मायल पारद गंधक को जो पहले शीशी में से निकलता था, लेकर २।। तोले शुद्ध गन्धक और डालकर १६ तोल के सूखा खरल में घोटा गया। (इस १६ तोले में ८ तोले पारा जो प्रथम डाला गया था (और ८ तोले गंधक समझना चाहिये) एक हिंदुस्तानी आतिशी शीशी में जिस पर ७ कपरौटी कर ली गई थीं और जो पहली शीशी से आधी होगी और ऊँची कम थी बल्कि चपटी थी उक्त १६ तोले वजन को भर ईंट की डाट से बंदकर डाट पर भी कपरौटी कर, सूखा पहली शीशी के अनुसार ही बालू भरे तोले में तोला (अर्थात् मिट्टी का खमड़ा) पहला ही था, दो कपरौटी उस पर नई कर ली गई थी) रखकर भट्टी पर चढ़ा दिया।

१५/१० के सवेरे से अग्नि दी गई। मृदु, दोपहर के ४ बजे से पीछे से मध्य रात को ८ बजे से तेज आंच दी गई (तेज आंच ३ वा ४ लकड़ी बबूल की थी चारों तरफ पूरी झरें निकलती थीं)

१६/१० सवेरे ४ बजे से शीशी तौल से उछल कर बाहर आ पड़ी, कारण यह हुआ कि शीशी पिघल गई, नीचे से छिद्र हो गया, झरबेरी के बेर के बराबर उसमें से गंधक पारद नीचे निकला होगा, उसने शीशी को फेंक दिया।

स्वामीजी ने उस शीशी के छिद्र पर गीली मिट्टी रखवा दी, पर मेरी राय में इस मिट्टी से निकलनेवाली भाप रुकी न होगी। शीशी को तोड़कर देखा गया तो गंधक शीशी की गर्दन में भरा हुआ था, पिघलकर जम गया था, रंगत काली पीली थी। तोल में ३।। तोले था, सिंग्रफ की सी आकृति में किन्तु काली और सुर्ख मिश्रित रंग का गंधक और पारा शीशी के पेट में और गर्दन में मौजूद था, तोल में ७।। तोले था, कुछ इस परे गंधकं में से शीशी की गर्दन में स्थित गंधक में भी घुस गया था जिसका कारण यह मालूम होता है कि शीशी टूटने से पारा एकदम ऊपर को उठकर गर्दन में घुस गया।

स्वामीजी ने कहा कि देशी शीशी अक्सर गल जाती है, अंग्रेजी मजबूत होती है, जो देशी शीशी में ताम्र का भाग विशेष डलवाया जाय तो अधिक मजबूत हो जाती है। सब वजन शीशी से निकली वस्तु का ११ तोले था, जिसमें स्वामीजी के मत से ८ तोले पारा और ३ तोले गंधक था। मेरी राय में उसमें ४ तोले पारा और ७ तोले गंधक होगा।

पारद निष्कासन

१७/१० आज उक्त ११ तोले वजन में से १ तोला गंधक फेंक दिया गया, बाकी पीसकर तोला तो १० तोले था। नींबू के रस में घोट टिकिया बना सुखा दिया गया। फिर डौरू यन्त्र में ४ प्रहर की आंच दे उड़ाया गया। खोलने पर ५ पैसे भर काली चीज ऊपर की हांडी के खुरचने से निकली। १

पैसे भर सुर्ख गंधक की भस्म पेंदे में निकली। (हांडी की संधि स्वामीजी के समक्ष में उत्तम रीति से की गई थी) यानी १० तोले में इस समय ३ तोले ही वजन रह गया या तो गंधक का ही भाग इस १० तोले में था सो जल गया अथवा पारा डौरूयंत्र में से सन्धि द्वारा निकल गया, ५ पैसे भर जो काली चीज निकली उसमें पारा नजर नहीं आता था, उसको खूब नींबू में घोट धूप में रखा गया तो पारे के कण दीख पड़े। दुबारा फिर नींबू के रस में भिगो धूप में रखा गया तो वैसा ही रहा। इसको इष्टिका यन्त्र में आंच दी गई तो तोल कुछ घटी पर कुछ नतीजा न निकला, लाचार फेंक दिया। दरअसल पारा इसमें बहुत ही कम था।

स्वर्णभस्म करना व उत्थापन

पहली बार की चन्द्रोदय की क्रिया में जो शीशी के पेंदे में गंधक और स्वर्ण की काले रंग की ७॥ तोला जली हुई चीज निकली थी उसमें से ३ तोले को कांच के टुकड़े पर थोड़ा थोड़ा रख कोयलों पर रखा गया तो गंधक जलकर उड़ गई और १ तोला बाकी रहा। (सुरखी–मायल)

३॥ तोले बाकी बचे को कचनार की छाल से काढ़े में घोट टिकिया बना सुखा शराब संपुट में रख ५ सेर आरने कंडों की आंच दी गई तो काले रंग की टिकिया १=) भर निकली। यानी सब ७॥ तोले का जलकर २=) भर रहा। इसमें १) भर स्वर्ण और बाकी गंधक, पारा, घीकुमारी का अंश समझना चाहिये।

उत्थापन

इस २=) भर भस्म में से ।) भर शहद सुहागा घी मिलाकर घरिया में रख धोंका तो उसमें से ९ रत्ती स्वर्ण निकला।

भस्मीकरण

बाकी १॥।=) भर को खूब बारीक पीस कचनार के काढ़े में घोट टिकिया बना सुखा संपुटकर ५ सेर कंडों की आंच दी गई तो १॥=) भर निकला। दुबारा फिर इसको कचनार के काढ़े में घोट ७ सेर की आंच दी गई तो १॥) भर निकला, रंग सुर्खी मायल है। फिर तिबारा ।॥) भर गंधक शुद्ध मिला कचनार के काढे में घोट ५ सेर कंडों की आंच दी गई तो१॥)भर ही निकला रंगत सुर्ख टिकिया मुलायम थी, फिर चौथी बार ।॥)भर ही गंधक मिला कचनार में घोट १० सेर कंडों की आंच दी गई तो १॥ भर ही निकला, मगर ज्यादा आंच लग जाने से आधी टिकिया जलकर कठिन और काली हो गई, स्वर्णभस्म में ५ सेर कंडों से अधिक आंच देना मुनासिब नहीं है जो टिकिया मोटी होने से कच्ची निकले तो आंच न बढ़ाकर एक की जगह दो टिकिया दो संपुट में रखो।

पांचवी बार ।॥)भर गंधक मिला कचनार क्वाथ में घोट ५ सेर कंडों की आंच दी गई टिकिया खूब चौड़ी खूब खस्ता निकली रंगत थोड़ी सुर्खी मायल थी तोल १।) भर थी।

छठी बार सिर्फ कचनार के काढे में घोट ४ सेर कंडों की आंच दी गई तो १।)तोले निकली रंगत कम सुरख थी।

७ वीं बार ३॥ सेर कंडे १।)भर निकला, रंगत उमदा सुर्ख थी।

८ वीं बार २॥ सेर कंडों की आंच दी गई पीसने से रंगत सुर्ख थी, पर सोने की रंगत के रवे बहुत चमकते थे लिहाजा यह ठीक नहीं फुका इसको फिर फूकना चाहिये यह जिलाना चाहिये–चूंकि तोल कुशते की सोने के वजन से बढ़ गई थी और रवे चमकते थे बस इस ख्याल से इसका जाने क्या चीज मिल गई सोना जिलाना ही ठीक समझा गया।

१८/२–शहद, सुहागा, घी डालकर न्यारिये से धुकवाया गया तो ९ आने पर सोना निकला, लेकिन रंगत सफेदी माइल थी और सोना फूटग हो गया था पहला सोना जो शीशी में से निकलने के बाद निकाला गया था वह फूटक नहीं था इसलिये ख्याल होता है कि गंधक से फूटक हो गया।

चन्द्रोदय का तृतीय अनुभव दत्तमटिरिया मेडिका की क्रिया से

१७/१०/०४–८ तोले हिंगुलोत्थ एक बार साधारण मूर्छित किया हुआ पारा १६ तोले शुद्ध गंधक को २ दिन घोट सूक्ष्म कज्जली बना ७ कपरौटी की हुई आतिशी शीशी में भर पूर्वोक्त विधि से वालुकायंत्र में बढाया गया किन्तु डाट मुख पर रख दी गई संधि बंद नहीं की गई थी।

२१/१०–आज ६ बजे से सबेरे ९ बजे तक मंद, १२ तक मृदु, अनंतर साधारण तीव्र आंच दी गई ९ बजे शीशी कुछ गरम हुई, १२ बजे कुछ खुशबू आर डाटपर गंधक की रंगत आने लगी और शीशी की गर्दन में तार डालने से मालूम हुआ कि गंधक कुछ गर्दन के इधर उधर चढ़ा है। ३ बजे तक इस दशा में कुछ अंतर न दीख पड़ा, ३ बजे से आंच पूरी तीव्र कर दी गई–३।। बजे शीशी में खूब धआं निकला और ५ मिनट में शीशी के मुख से **नीली** ज्वाला निकलने लगी जो एक बालिश्त से भी ऊंची होगी, ५ मिनट में वह ज्वाला कम पड गई फिर भी शीशी के मुख से लो निकलती रही और कुछ गंधक गर्दन से नीचे वह कर आती थी उससे नीचे तक ज्वाला जलती थी, रंगत ज्वाला की नीली थी इस समय कुछ आंच मंदी कर दी गई कि गंधक तीव्र वेग से न जल जाय, पोन घंटे तक गंधक जलती रही फिर बंद हो गई, जिसका कारण या तो अग्नि की मंदता या गंधक की क्षयता हो सकती है, आंच बंद हो जाने पर ५।। बजे तार डालकर देखा गया तो गंधक शीशी की नाल में पिघला हुआ हुआ मौजूद था, अनंतर आंच तीव्र की गई परन्तु फिर गंधक न जली, ६ बजे तार डाला गया तो शीशी का मुख बंद या तार केवल १ अंगुल अन्दर हो गया, खुअद जोर देकर देखा गया तो भी तार अंदर न गया, किसी चीज से खूब बंद था ६।। बजे तक आंच दी गई, न तो फिर गंधक जला न धुआं निकला, तार डालने से शीशी के मुख पर कठोरता और खुश्की जान पड़ी यह विचारा कि समय पूर्ण हो गया, और गंधक जल गई आंच बंद कर दी गई रात्रि भर शीशी भट्टी पर ही रही।

२२/१० शीशी ठंडी हो गई थी तोड़ कर देखा गया तो गर्दन के ऊपर के भाग में ३।।। भर अर्ध जलित गंधक काले पीले रंग की, उसके नीचे बीच गर्दनमे ४।।।≈भर कुछ पारद अंश से मिश्रित गंधक सुर्खी माइल काले रंग की निकली उसके नीचे गर्दन के निचूले भाग में ४ भर गंधक से मिश्रित सुरखी मायल काले रंग का निकला, गर्दन से नीचे शीशी के ऊपर भाग में केवल मूर्च्छितपारा ३।।≈भर निकला इसकी रंगत सिंग्रफ की सी थी लकीर करने से खूब सुरखी निकलती थी तले में शीशी के थ्रोड़ी सी राख गंधक की निकली।

नतीजा यह जान पड़ा कि ८+१६ भर गंधक पारद में से १६ भर माल रहा, यानी आधी गंधक जली, तरकीब जो दत्तमेटरिया ने लिखी है ठीक ही है यह गंधक का कम जलना हमारी क्रिया की कचाई थी गंधक जलने पर हमने आंच डारकर कम कर दी थी और पहले भी आंच के तीव्र करने में बहुत देर की थी, मेरी राय में १ प्रहर मंद आंच देकर दूसरे प्रहर में मध्यम अग्नि देनी चाहिये और तीसरे प्रहर से पूरी तीव्र अग्नि कर देनी चाहिये और चौथे पहर के अन्त में शीशी उतार लेनी चाहिये।

चन्द्रोदय का चतुर्थ अनुभव

२३/१०–४।।।=) भर पारद अंश से मिश्रित गंधक ४) भर गन्धक से मिश्रित पारद को जो तृतीय अनुभव में से निकला था। खूब घोट एक छोटी आतिशी शीशी में जिस पर ७ कपरौटी थी भर छोटे तौले में वालुका यन्त्र पर धरा।

२४/१०–७ बजे से सबेरे से आंच दी गई १० बजे तक शीशी गरम हुई १२ बजे सलाई डालकर देखा गया तो पारद गन्धक पिघली हुई दशा में मिले हुए थे और शीशी भर रही थी ३ बजे गंधक शीशी की गर्दन में आ गया था परन्तु पिघला हुआ था ४।। बजे शीशी का मुँह गंधक ने रोक दिया सलाई अन्दर से न गई ६ बजे तक आंच और दी गई गंधक शीशी के मुख से

जौ भर नीचे तक आकर रह गया न ऊंचा सरका न जला गंधक न जलने का कारण यह मालूम होता है कि पहले शीशी में जल चुकने की वजह से गंधक कमजोर हो गई थी।

२५/१०–शीशी को देखा गया तो शीशी पिघल कर ऊपर को सिकुड़ गई थी पर कपरौटी शीशी के आकार की कायम थी, शीशी तोड़ी गई तो गर्दन में ऊपर १।। भर गंधक अर्द्ध जालित, बीचमें २=) भर गंधक पारद मिश्रित नीचे २।।।=) भर पारद गंधक मिश्रित, सबसे नीचे कुछ गर्दनमें कुछ बोतलमें १।।।=) भर पारद मूर्छित जिसकी रंगत कुछ काली थी, निकला सब तोले ८।=) भर रखा गया था, ८।।। भर रस सिर्फ ।।)भर जला, ३ प्रहर की आंच में भी केवल ।।)भर जलना आश्चर्य है, इसमें ज्ञातहोता है कि अन्तर्धूम में गंधक का क्षय कठिन है, बहिर्धूम में गंधक शिखारूप से जलकर ही क्षय हो सकेगा और तरह नहीं।

शीशी आतिशी मामूला काम न देगी, १ पिघल कर फूट गई, १ सुकड़ गई इसलिये अंगरेजी आतिशी शीशी लेना ठीक होगा, या सारां की शीशी बनवाई जावें।

गंधक जारण का अनुभव बहिर्धूम

स्वामी रामेश्वरानंद द्वारा रसेन्द्र चिन्तामणि में कहे बहिर्धूम जारण की क्रिया से "सूतप्रमाणं सिकताख्ययंत्रे दत्त्वा बलिं मृद्घटतैलपात्रे ।। तैलावरूपेऽत्र रसं निदध्यान्मग्नार्द्धकायं प्रविलोक्य भूयः" ।।

१०/१० वालुका यंत्र में स्थित एक छोटे से चीनी करे मलसे में तैल और गंधक को मिलाकर चटाया तो तेल जल गया और गंधक रह गया तैलावशेषे का अर्थ होता है कि तैल बाकी रहे, इससे सिद्ध हुआ कि पाठ अशुद्ध है, तैलावरूप ही होना चाहिये।

११/१० आज उसी बालुकायंत्र में उसी छोटे मलसे को रख उसमें १ तोला गंधक का चूर्ण डाल आंच दी गई तो घंटे भर में गंधकं तेलरूप हो गई फिर उसमें पारा १ तोला डाल दिया गया। ९ बजे सवेरे से १२ बजे तक आंच देने पर थोड़ा ही क्षय हुआ। मग्नाईकाय नहीं हुआ। १२ बजे अननंतर घंटे घंटे भर पीछे २–२ माशे गंधक डाला गया तो शाम के ६ बजे तक १ तोला गंधक क्षय हुआ अर्थात् सवेरे से शाम तक १ तोला १। तोला गंधक यह हुआ होगा।

वालुकायंत्र १ तोला मिट्टी का था  . जिसमें सूक्ष्म बालू रखी गई थी यानी मलसे के नीचे कोई अंगुलभर ही बालू होगी, चूल्हेपर रखकर दो तीन लकड़ियों की आंच बराबर दी गई, शाम तक २० सेर लकड़ी जली होगी इससे सिद्ध हुआ कि बहिर्धूम गंधक जारण में भी जो बालुका यंत्र से होगा देर लगेगी किन्तु हो सकता है अधिक पारे के गंधक जारण में खूब चौड़ा बालू का बर्तन लेकर उसमें चौड़े पेंदे की रकाबी रखना ठीक होगा।

६ बजे एक लंबी कील से चलाकर देखा गया तो पारा बीच में कुछ घन रूप था और ऊपर काली गाढ़ी गंधक थी, तजुरबे के लिये आंच खूब तेज की गई तो गंधक में आंच लग गई, उसको शराब (सकोरे) से ढ़क दिया तो अग्नि बुझ गई, यंत्र उतार लिया गया।

१२/१० सवेरे देखा गया तो पारा गंधक में मिला हुआ रांग की सी आकृति कठिन हो गया था, शायद वालुका यंत्र में स्थित दशा में कील से चलाने से गंधक में मिल गया हो, फिर इस पारे गंधक की नींबू के रस से घोटा गया तो ६ माशे पारा पृथक् हो गया बाकी पारा मूर्छित रूप में ही था, पारा क्षय नहीं हुआ।

इष्टिकायंत्र से गंधकजारण का अनुभव

१२/१० कुहरेनाथ के यहां बनी खांचेदार ईट में अर्थात् इष्टिका के गढ़े में चीनी बर्तन के टुकड़े भुना सुहागा, चूना कलई सब समान भाग खरल में जल के साथ घोट लेप कर सूखा कर १।। तोले पारा डाल ऊपर से १।। तोला गंधक चूर्ण डालकर उलटा शकोरा ईट के मुख पर ठीक लगाकर, कुम्हार की मिट्टी मुलतानी, रुई कूटकर उससे दरज बंद की गई और सुखा दी गई। घंटे भर सूखने से दराज खुल गई उस दराज़ को चीनी चूने सुहागे से बंदकर फिर सुखाया गया। कपड़े से ढ़ककर तो संधि नहीं खुली, इस ईट के ऊपर सेर सेर भर कंडों के ४ पुट लगाये गये।

१३/१० आज ईट खोली गई तो गन्धक केवल पिघला हुआ मिला, जला नहीं पारा नीचे विद्यमान था।

(२) दुबारा फिर ईट को सकोरे से बंदकर ईट को २ हिस्से जमीन में गाड़ कर (गढ़े में पानी भी छिड़क लिया था) एक भाग खुला रख ५ सेर आरने कंडों की आंच दी गई, खोलने पर गंधक बिल्कुल न मिला अर्थात् जल गया, पारा सफेद चमकता हुआ बहुत साफ १।। तोले पूरा मौजूद था, यह पुट ४–५ घंटे में ठंडा हुआ था। ईट में कुछ दर्ज पड़ गई थी, ईट बहुत मोटी और गढ़ा बहुत बड़ा है इस कारण से ५ सेर का पुट लगा। शायद इससे कम से भी काम चल जावे उसका अनुभव फिर होना चाहिये, वालुकायंत्र में गंधक निःशेप अग्नि जल उठने पर भी नहीं हुआ था और गंधक निःशेप पारे को शकोरों में रख कोयलों को ऊपर नीचे रख गंधक में अग्नि पैदा की गई तो गंधक जल गया किंतु निःशेप नहीं हुआ। इसलिये दोनों क्रिया (वालुका और शकोरा) में गंधक का मैल सा रह जाने से पारा मैला रहा, हर इष्टिकायंत्र में गंधक निःशेप हो जाने से पारा बड़ा स्वच्छ निकला इससे इष्टिकायंत्र द्वारा गंधक जारण उत्तम कहा जा सकता है।

(३) २८/१० चन्द्रोदय के द्वितीय अनुभव से निकले २—) भर गंधक पारद को पीसकर इष्टिकायंत्र में रख ४ सेर कंडों की आंच दी गई तो १।) भर निकला, रंग थोड़ी सुरख थी।

(४) और २।।।=) भर गंधक पारद को आंच दी गई तो १।।।) भर निकला। रंगत विशेष सुरख थी। इन दोनों में से जो गंधक था वह जल गया। केवल पारद ही अब समझना चाहिये क्योंकि तोल मिलाने से पारद ही पूरा बैठता है। इष्टिकायंत्र से पारद गंधक पृथक् पृथक् भी अच्छी तरह से जारण हुए थे और मूर्च्छित रूप में भी जो अबकी बार परीक्षा की गई तो बहुत अच्छा नतीजा निकला था।

(५) उपरोक्त नं० ३+४ को मिलाकर फिर इष्टिकायंत्र में आंच दी गई तो दोनों उड़ गये। कारण यह कि गंधक पहले ही क्षीण हो चुका था। आयन्दः यह भी खयाल रखा जावे कि गन्धक क्षय हो जाने से पारद उड़ सकता है।

(६) १ तोला परा १ तोला गंधक की कजली कर इष्टिकायंत्र में आंच दी गई तो नतीजा ठीक नहीं हुआ।

इष्टिकायंत्र द्वारा गंधकजारण का पुनः अनुभव

२७/०२/०६ उक्त प्रकार के इष्टिकायंत्र के गर्त के बीच में पारद पिष्टी ५।।)भर (जिसके बनाने की विधि पीछे लिखी है) रख उसके ऊपर जंभीरी के रस में पिसी गंधक १।।)भर की पिष्टी सी रख ऊपर शकोरा ढक संधि को भस्म मुद्रा से बंद कर दिया गया।

भस्ममुद्राप्रकार

कारीषभस्मलवणांबु वज्रमुद्रा प्रकीर्तिता

मैंने लकडी की राख ली थी १।) रूपये भर और उतना ही सैंधा नमक डाल खरल में पानी के साथ खूब घोटा गया इसी से मुद्रा की गई, यह क्रिया भी मुद्रा की उत्तम रही।

२८/२ जमीन में गड्ढा कर इष्टिकायंत्र रख जो जमीन से ३ या १ इंच के करीव नीचा रहा होगा ऊपर ३ अंगुल रेत भर आधं आध कंडों की आंच ५ दी गई। शाम को ठंडा होने पर निकला तो मालूम हुआ कि आंच का असर नहीं पड़ा गंधक बिलकुल नहीं जला।

१/३ आज पुनः इष्टिकायंत्र को बंद कर उसी प्रकार रख सेर सेर भर की ६ आंच दी गई घंटे घंटे भर पीछे।

२/३ आज निकालकर देखा गया तो गंधक पिघल गया था जला नहीं।

२/३ आज पुनः बन्द कर उसी तरह सेर भर की ६ आंचे दी गई मगर इष्टिकायंत्र के गढ़े को ऊंचा करने के लिये गढ़े में रेत भर ऊपर से मिट्टी का चिराग अर्थात् मोटा दीवला रख उस पर पिष्टी रखी और दीवला इस तरह लगाया गया कि जिससे गढ़े की निचाई खांचा छोड़कर १॥ इंच और खांचा समेत २। इंच रही थी। ऊपर के शकोरे समेत कुल फासला २॥ इंच होगा।

३/३ आज निकाल कर देखा गया तो गंधक जल गया था, कुछ छूंछ बाकी थी और नीचे रखी पारे की पिष्टी ज्यों की त्यों थी।

३/३ आज फिर बंद कर डेढ़ सेर की ४ आंचे दी गई।

४/३ आज खोलकर देखा गया तो गंधक की छूंछ बिलकुल जली हुई मौजूद थी, जो तोल में ९ माशे हुई और पारद पिष्टी में से कुछ पारद जुदा हो गया था कुछ पिष्टी दबाने से छूट गया। कुल पारा २।) भर छुट गया बाकी पिष्टी भी रेत सी हो गई जो तोल में ३=) भर थी इससे जान गया कि अबकी बार कुछ अंश पिष्टी के अन्तर्गत गंधक का भी जल गया और जो रहा वह भी निर्जीव हो गया। कल तक की आंच ठीक थी, आज की विशेष अग्नि से पिष्टी से पारद छुट गया।

४/३ आज फिर ३=) भर को बंद कर दिया।

५/३ आज सवा सवा सेर की ४ आंचें दी गई।

६/३ खोलकर देखा गया तो ।) भर पारा जुदा हो गया था और २।=) भर रेतसा सुर्ख हिरमिचीसा हो रह गया था। ।।) भर तोल कम हो गई।

६/३ आज फिर २।=) भर को बंद कर दिया, अनुभव के लिये।

५/३ खोलकर देखा गया तो ।) भर को बंद कर दिया, अनुभव के लिये।

७/३ आज उसी तरह १।।–१।। सेर की ४ आंचे दी गई।

८/३ खोलकर देखा तो २=) भर हुआ, जैसा रेत सा था वैसा ही रहा, अनुभव से मालूम हुआ कि–

(१) इष्टिकायंत्र का गढ़ा गहरा ज्यादा है, खांचा ४/८ इंच है, इसके अलावा सिर्फ १-१/४ और गढ़ा काफी होगा। २/८ इंच ऊपर के शकोरे की गहराई (खांच के ४/८ इंच को मिनहा करके रहती है) सब मिलकर २ इंच फासिला रह जावेगा, यही ठीक होगा, हद २॥ इंच तक हो सकता है जैसा कि अब तक के अनुभव में रखा गया था।

(२) और इसके लिये सेर या सेर ४ आंचे काफी होगीं।

(३) एक इंच रेत गढ़े में ईट के ऊपर रहना चाहिये।

(४) मुद्रा–भस्म मुद्रा ही ठीक है जैसे की गई थी।

(५) पिष्टी जैसे बनाई थी वैसे ही ठीक है।

गंधकजारण का तीसरी बार अनुभव

९/३/०७ साधारण शुद्ध पारद को (जो २६/५/०५ को पातित होकर एक शीशी में रखा था २९ तोले) १० तोले लेकर तप्त खरल में घोटा गया (खरल इतना तप्त था जिससे हाथ न जले) और थोड़ी थोड़ी शुद्ध गंधक पिसी हुई की चुटकी दी गई तो २। घंटे में ।।-) भर =१/१७ गंधक पड़ चुकने पर पारे की पिष्टी मक्खन सी हो गई। पहली बार जो पिष्टी २६/२ को की गई थी उससे यह नरम थी, तोल १०।) भर हुई।

इष्टिकायंत्र जिसमें खांचा ४/८ इंच खांचा+१०/८ इंच गढ़ा+३/८ इंच ढक्कन की ऊँचाई ८ सब मिलकर २ इंच का फासला था उसमें पिष्टी रखकर ऊपर से २ तोले गंधक की पिष्टी जो जँभीरी के रस में घोटकर बनाई गई थी, खूब जमाकर ऊपर शकोरे से मुंह बन्द कर भस्म मुद्रा से (जो लकड़ी की राख और समान सैंधव से जल के साथ घोट बनाई गई थी) संधि बंदकर सुखा दिया गया।

१०/३ आज इष्टिकायंत्र को गढ़े में रख ऊपर एक इंच रेत दे सवा सवा सेर आरने कडों की ५ आंच दी गई, घंटे घंटे भर पीछे तीसरे पहर खोला गया तो गंधक जलकर काली पड़ गई थी और बजाय कटोरी ढक्कन नुमा होने के सीधी रोटीसी हो गई थी और तोल में २)भर की जगह १–)भर रह गई थी, टिकिया तोड़ने से ऊपर बिलकुल काली और नीचे करीब आधी के कुछ सुरखी मायलकाली थी। आंच पर रखने से थोड़ा धुंआ और कुछ लौ भी देती थी, जिससे मालूम होता है कि गंधक में अभी कुछ जान बाकी है।

पारदपिष्टी की गंधक भी कुछ जल गई क्योंकि अब पिष्टी नरम नहीं रही। आगे आंच इससे कम होना चाहिये।

१/३ आज फिर २ तोले गंधक को जंभीरी में घोट पारद पिष्टी पर ढ़क बंद कर सुखा दिया। (दोपहर बाद होली की छुट्टी रही)

१२/३ आज उसी तरह १ आंच १ सेर की और ३ आंच सवा सवा सेर की दी गई। (दोपहर से छुट्टी रही)

१३/३ आज खोला गया तो गंधक पहले से कुछ अधिक जली हुई १–) भर निकली, आगे गंधक इससे कम जलनी चाहिये, इस बार पहले से थोड़ी आग में ज्यादा जलने का कारण यह मालूम होता है कि बंद करे पीछे १ दिन तक रखे रहने से जँभीरी का रस खुश्क हो गया हो, इससे आंच का असर अधिक पहुँचा। आगे से आंच उसी दिन लगे और इतनी ही लगे।

पारदपिष्टी ऊपर से कुछ जली सी जान पड़ी थी इसलिये शुबहा हुआ कि पारद उड़कर घट तो नहीं गया, इस कारण पिष्टी को निकालकर तोला गया तो १०।) भर हुई। इतनी ही रखी थी, इससे ज्ञात हुआ कि पारद क्षय नहीं हुआ लेकिन निकालने में पिष्टी टूट गई। पिष्टी की दशा कहीं कुछ ढ़िम्मा सा और कुछ मिट्टी सी थी। पिष्टी में देखने से कहीं कहीं पारा छुटा हुआ मिला। सब पारा ।।) भर या १) भर पिष्टी से पृथक् हो गया। आगे से पिष्टी में या तो गंधक अधिक पड़े या आंच कम लगे।

१३/३ आज फिर पिष्टी के ढ़ेले और रेत और घुटे पारद को यन्त्र में रख ऊपर से ६ माशे पिसी गंधक से ढ़क एकसा कर ऊपर से जंभीरी में घुटी २।।) तोले गंधक की टिकिया ढ़क बंदकर १ सेर की एक आंच और १। सेर की ३ आंचे दी गई।

१४/३ आज खोला गया तो गंधक ।।।≡) भर निकली और अन्य दिन से ज्यादा जली हुई थी, शायद गर्मी बढ़ती जाती है, इससे आंच अधिक असर करती है। आगे से आंच और कम दी जानी चाहिये।

१४/३ आज फिर ३ तोले गंधक की पिष्टी जंभीरी रस से बना ऊपर से रख बंद कर १ आंच ऽ।।। की और फिर ३ आंचे सेर सेर भर की दी गई।

१५/३ आज खोला गया तो १०।।) भर पारा कुछ ढ़ेले से कुछ चूरा सा कुछ पारे के रवे निकले। ।।–) भर गंधक जला हुआ निकला, गरमी बढ़ने से आंच और लगनी चाहिये।

इस पारद में समान गंधक जारण हो चुका और पिष्टी में अधिक अग्नि लग जाने से पिष्टी टूट गई है इसलिये इसको यहीं छोड़ दिया गया। १०।।) भर है।

इष्टिकायंत्र द्वारा गंधक जारण का अनुभव चौथी बार

१५/३/०६ साधारण शुद्ध पारद (२९ तोले में जिसमें से पहले भी ९/३ को १० तोले लिया गया था) में से फिर १० तोले पारद लेकर शुद्ध गंधक पिसी हुई की चुटकी दे दे। तप्त खरल में घोटा गया। दृढ़ता से दो आदमियों द्वार निरंतर तो २। घंटे में ।।।) भर गंधक पड़कर पिष्टी तैयार हो गई। यह

पिष्टी पहली पिष्टी से कुछ कड़ी थी और ठीक थी। आगे से इतनी ही गंधक पड़नी चाहिये। पिष्टी का पूरा अनुभव हो गया। पिष्टी का तोल १०।।) भर हुई।

१६/३ आज इष्टिकायंत्र को साफ कर, शकोरे बदल, सीप की कलई से लेपकर, पारद पिष्टी को रख, ऊपर से जँभीरी के रस में पिसी २।।) भर शुद्ध गंधक रख शकोरे से ढ़क उपरोक्त रीति से बनी भस्ममुद्रा से बंदकर आध आधसेर की ४ आंच दी गई। कंडों की घंटे घंटे भर पीछे (घंटे भर तक आध सेर की आंच ठहरती है, यह मैंने खुद देखा) इष्टिकायंत्र के गढ़े में रख १ इंच रेत दे पहली तरह से ही आंच दी गई थी।

१७/३ आज खोलकर देखा गया तो ३ भाग गंधक ऊपर जलकर कोयला हो गई थी और चौथाई के करीब नीचे कच्ची रह गई थी। अबकी बार आंच कुछ कम रही। आगे से आरने कंडों की आध आध सेर की ५ आंच दी जावें। छुटाने से काली गंधक आसानी से छुटकर निकल आई और तोल में ।।।) भर हुई। नीचे की पीली गंधक छुटाने से नहीं छुटी और जोर से छुटाने से उसकी डली के संग पारद पिष्टी का अंश भी चिपटा हुआ आता था इसलिये नहीं छुटाई। पारदपिष्टी नीचे ठीक थी उसमें से पारद के रवे नहीं छुटे थे जैसे कि पहले अधिक आंच लग जाने से छुट जाते थे।

यंत्र पर भस्ममुद्रा बड़ी दृढ़ रहती है, कहीं संधि नहीं पड़ती, न मकान में जहां आंच दी जाती है, गंधक के जलने की गंध आती है। इससे गंधक का अन्तर्धूम जारण होना सिद्ध है।

(१)

१७/३ आज फिर २।।) भर गंधक को जँभीरी के रस में घोट ऊपर दे-संपुटकर ९-९ छटांक की ५ आंचे दी गई आरने कंडो की।

१८/३ आज खोलकर देखा गया तो गंधक ठीक जल गई थी। तोल में १।ः) भर निकली (कुछ गंधक जो पहले पुट में बाकी रह गई थी अबकी बार में छुट गई। इस कारण तोल अधिक हुई) किन्तु एक तरफ कोई ।।) भर पारा छुटा हुआ मिला जो जुदा कर लिया गया। आंचे ज्यादे रहीं ४ ही काफी होंगी।

(२)

१८/३ आज फिर २।।) भर गंधक को उसी प्रकार ९/९ छटांक की ४ आंच दी गई।

१९/३ आज देखा गया तो गंधक ठीक जली थी। १-) भर तोल में हुई-जो सब काली पड़ गई थी। यह आंचे ठीक रहीं। आरने कंडों की।

(३)

१९/३ आज फिर २।।) गंधक निम्बूद्रवार्द्र को उसी प्रकार ४ आंचे दी गई। ९-९ छटांक की आरने कंडों की।

२०/३ आज खोला गया तो गंधक सब जल गया। ।।-) भर हुआ आज गंधक निःशेष जल गया-आगे आंच कुछ कम करनी चाहिये। अब पारद पिष्टी काली सी पड़ गई है।

(४)

२०/३ आज फिर २।।) भर गंधक निम्बूद्रवार्द्र दे आध आध सेर की ४ आंचे दी गई। २१/३ आज निकालकर देखा तो गंधक कम जली थी। १-) भर तोल में हुई-कारण इसका कुछ आंच में कमी-कुछ रस बादल का होना-कुछ वायु तीव्र चलना-कुछ रस नींबू का अधिक पड़ जाना हुआ।

(५)

२१/३ आज फिर २।।) भर गंधक निंबूद्रवार्द्र दी गई। ९-९ छटांक की ४ आंचे दी गई। २२/३ को ।। भर गंधक निकली-यह ठीक जली थी और यह आंच ठीक थी किन्तु आजकल मेघ और वायु है-अधिक ऊष्मा में आध सेर की आंच ही ठीक होगी।

(६)

२२/३ आज फिर २।।) भर गंधक दी गई। ९/९ छटांक की ४ आंच दी गई। २३/३ आज गंधक ।।।) भर निकला। यह ठीक निश्चय नहीं हुआ कि कभी ।।) भर और कभी १) भर गंधक क्यों निकलता है।

(७)

२३/३ आज फिर २।।) भर गंधक दी गई-दस दस छटांक की ४ आंचे दी गई। २४/३ आज गंधक ।।≡ भर निकला मगर कुछ रवे पारे के भी जो ।) भर होगा छुट गये थे-कल वर्षा भी होती रही थी, ठंड भी थी फिर भी यह आंच तेज रही। आगे से १० छटांक की आंच हरगिज न दी जावे।

(८)

२४/३ आज फिर २।।) भर गंधक दी गई। ८-८ छटांक की ५ आंचे दी गई। २५/३ को खोला गया तो ।।) भर गंधक निकली जो बिलकुल काली और जली हुई थी। कुछ पारा आज भी छुट गया जो-) भर होगा। आंच यह भी अधिक रही। आगे ४ आंच से ज्यादा न दी जावे और ९ छटांक से ज्यादा और ८ छटांक से कम आंच न दी जावे।

२५/३ आज २।।) भर गंधक दे ९/९ छटांक की दो आंचे और ८/८ छटांक की दो आंचे दी गई।

२६/३ आज खोला गया तो गंधक ।।) से कम बिलकुल जली हुई निकली। कुछ पारा छुट भी गया। अब भी अग्नि अधिक रही।

(१०)

चूंकि ढाई गुनी जारित हो चुकी इसलिये इसको यहीं खतम किया गया। पिष्टी निकालकर तोली गई तो १०) भर हुई। ।।) भर पारा हुआ जो बीच में निकला था, सब १०।।) भर मौजूद था, इतना ही रखा गया था। रंगत इसकी काली थी, सुरखी नहीं थी, हिंगुल इससे बनेगा या नहीं, इसमें संशय है, पहले से भी अधिक अग्नि देने से बना था।

फल

इस प्रकार के यंत्र के ऊपर १ अंगुल रेत रहना ठीक है और ऊपर आध सेर की ४ आंच ठीक है। इसमें २।।) भर गंधक जल जाती है, जलने पर १/३ वजन में रह जाती है।

इष्टिकायंत्र द्वारा गन्धकजारण संस्कृत पारद पर

२८/३/०७ चैत्रसुदी बुधवार १६) भर संस्कृत पारद को १) भर शुद्ध गंधक चूर्ण के साथ थोड़ा थोड़ा गंधक डाल तप्त खल्व में घोटा गया तो २। घंटे में पिष्ट हो गई। १६।।।) भर पिष्टी की तोल हुई।

२९/३ इष्टिकायंत्र में पहले की भांति मोटा चराग (गढ़ा छोटा करने के लिये) लगा। भस्ममुद्रा से संधि बन्द कर दी गई। गहराई खांचा छोड़कर (पहले से कुछ ज्यादा) १।। इंच रही। इसमें पारद पिष्टी सीधी रखकर ऊपर से ४ तोले (एक बार की शुद्ध) गंधक जंभीरी के रस में घोट ऊपर रख दी गई। कुछ थोड़ा सा रस और भी टपका दिया। ऊपर से शराव से बन्द कर भस्ममुद्रा कर दी गई। ४ घंटे सूखने के बाद गड्ढे में रख ऊपर १ इंच रेत दे आध आध सेर की ४ आंचें दी गई घंटे घंटे पर पीछे।

३०/३ आज खोलकर देखा गया तो कुछ अंश गंधक का जल कर काला पड़ गया और फूल गया था जो तोल में ।।।-) भर हुआ और करीब आधे के गंधक पिघलकर पीला जमा हुआ रह गया। कुछ तो गहराई गड्ढे की ज्यादा थी, कुछ गंधक की तोल ज्यादा थी, कुछ रस जंभीरी ज्यादा पड़ इस से गंधक ठीक न जला।

[१ (४ तोले)]

३०-३१/३ आज फिर ३ तोले गंधक उसी प्रकार दे (१।। या २ भर पहला भी रेह गया था) बंद कर आठ आठ छटां की ५ आंचें दी गई तो

खोलने पर ३ तोले गंधक ऊपर का तो करीब २ जल गया था और पहला गंधक तोले भर बाकी होगा। गंधक तोल में १।–) भर निकला। यह पूरा जला नहीं था। आगे आंच अधिक लगे।

[२ (३ तोले)]

३१+१/४ आज फिर ४ तोले गंधक नींबूद्रवार्द उसी प्रकार दे १) भर पहला भी रह गया था) बंद कर ९/९ छटांक की ५ आंचे दी गई तो गंधक सब जलकर पारद पिष्टी से बिलकुल जुदा हो गया। अबकी बार गंधक निःशेष जल गया और तोल में ।–) भर रह गया। पारद पिष्टी ज्यों की त्यों रही। गंधक जलकर बिलकुल काली और हाथ के मलने से कड़ी राख सी हो गई ती. पहली दोनों बार की गंधक कच्ची रह गई थी। जो जलकर छुट गया था उसमें भी पीलापन रहा था।

[३ (४ तोले)]

१+२/४ आज फिर ४) भर गंधक दी गई और ९–९ छटांक की ४ आंचे दी गई तो गंधक ठीक जला हुआ ।) भर निकला यह आंच ठीक रही।

[४ (४ तोले)]

२+३/४ आज फिर उसी तरह ४ तोले गंधक दी गई और ९–९ छटांक की ४ आंचे दी गई। खोलने पर गंधक चौथाई के करीब ऊपर जला हुआ मिला, बाकी ३/२ के करीब बिलकुल बेजला पीला पिघलकर जमा हुआ मिला। समझ में नहीं आया आज क्या हुआ? गालिबन नोकरों की बेअहतियातीसे आंच ठीक नहीं लगती। रेत जो गढ़े पर दिया जाता है उसकी खराबी शकोरे मोटे पतले की खराबी हो जाती है।

[५ (४ तोले)]

३+४/४ आज बाकी बची गंधक के ऊपर १) भर गंधक और देकर ९–९ छटांक की ४ आंचे दी गई। खोलने पर सब गंधक जल गई सिर्फ ।) भर काली जली हुई मिली।

[६ (१ तोले)]

४/४ आज फिर ४) भर गन्धक दे ९–९ छटांक की ४ आंचे दी गई। खोलने पर आधी गन्धक जली जो –)॥ भर हुई बाकी ज्यों की त्यों पीली बेजली मौजूद रही (जहां तक समझ में आता है इस न जलने का कारण यह है कि गन्धक को निकलने का मौका नहीं मिलता है तब बेजली रह जाती है)

५+६ तारीख को सिकंदरे जाने के कारण काम बंद रहा।

[७ (४ तोले)]

७/४ आज फिर (कुछ गंधक पहला बाकी था इसलिये) २) भर गंधक और दे ९–९ छटांक की ४ आंचे दी गई। खोलने पर ।।) भर गंधक निकली। आज बहुत सा हिस्सा गंधक का बिलकुल जल गया था और थोड़ी गंधक ज्यादा कच्ची पीली रह गई थी।

[८ (२ तोले)]

८/४ आज फिर ४) भर गंधक उसी प्रकार निम्बूद्रवार्द्र दे ९–९ छटांक की ४ आंचे दी गई तो गंधक बिलकुल निःशेष जल गया। एक काली तबकी सी चमकदार खिलकुल जुदा निकली। जो तोल मे) भर हुई। इष्टिकायंत्र को साफ करने में पारदपिष्टी भी निकल पड़ी। नीचे कुछ रवे पारे के भी थे। पारद पिष्टी तोल में १६।।।) भर के करीब थे। इतनी ही रक्खी थी, अबकी दफे कुछ आंच ज्यादा लगी।

[९ (४ तोले)]

८/४ दूसरा भाग और आरम्भ कर दिया गया। २० तोल पारद संस्कृत को १–) भर शुद्ध और सँहजने रस से भावित गंधक थोड़ा थोड़ा दे तप्त खल्व में दो आदमियों द्वारा दृढ़ता से घोटा गया तो मामूली समय २ घंटे बीत जाने पर पिष्टी न बनी फिर विचारा गया तो खरल की गर्मी कुछ कम पाई–उस गर्मी को इतना बढ़ाया कि हाथ न जलने पावे और खूब कड़ी घुटाई कराई। तब पिष्टी बनी और वह पिष्टी कड़ी अधिक हो गई तब २) भर पारद और मिलाकर पिष्टी ठीक की गई। अबकी बार पिष्टी देने से बनने क ये कारण जान पड़े–

(१) पारद और बार से अधिक था और शास्त्र में पहर भर ही लिखा है, पहर भर में ही अबकी पिष्टी बनी पहले थोड़े पारद का जल्दी काम हो जाता था।

(२) खल्व पूर्ण तप्त नहीं रखा गया पूरा गर्म रखना बहुत आवश्यक है।

(३) अबकी बार गंधक जल्दी जल्दी डाल दी गई जिससे वह ठीक खरल में इधर उधर रही। मर्दन में ठीक न आई। गंधक बहुत थोड़ी थोड़ी पड़नी चाहिये।

पिष्टी तोल में २१) भर हुई और १) भर चूरा सा जुदा हुआ, सब २२) भर हुआ होना चाहिये था। २३) भर इसलिये अबकी बार १) भर पारद अवश्य छीज गया, पिष्टी ठीक नहीं बनी इसलिये फिर घोटी जावे।

९/४ आज फिर पिष्टी को तप्त खल्व में घोटा गया तो पारद पिष्टी से छुटकर जुदा हो गया। पारद ९।।) भर हुआ और १२।।) भर कज्जली हुई। सब २२) भर हुआ यानी पारे का वजन रहा। १।) भर गंधक का वजन छीज गया मालूम हुआ कि एक बार ही पिष्टी तैयार हो सकती है, दुबारा नहीं। यह पारद संस्कृत पारद में मिला दिया गया।

कज्जली को आगे १०/४ व ११/४ में इष्टिकायंत्र में आंच दी गई। अधिक कड़ा हो जाने से आगे आंच देना बन्द रहा। १३।) भर तोले इस कज्जली के ढिम्मे की हो गई। वह जुदा रख दिया गया, इस १३।) भर में २।–) भर गंधक इष्टिकायंत्र जारण से मिलकर सब तोल १५।।) भर हो गई।

उपरोक्त कजली से पारद का उत्थापन

बहुत दिन रखी रहने के बाद आज ता० ३/२/१९०९ को उक्त १५ तोले ६ माशे संस्कृत पारद गंधक की कज्जली को (जिसमें १२।।) तोले के करीब पारा और ३ तोले के करीब गंधक था) लोह खल्व में बारीक पीस लोहे के डौरू में (जो देहली से बनवाकर मँगाया गया था) भर भस्म मुद्रा से बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया। ता० ४–२ को ८ बजे से मंदाग्नि देना आरम्भ किया। डौरू के ऊपर **भीगा** कपड़ा डाला गया। ४ बजे डौरू की मिलान की संधि में हो–पिघला हुआ गंधक निकलने लगा जिसकी बूंद आंच पर लौ और गंध देती थी। अतएव काम बन्द कर डौरू को उतार रख दिया।

ता० ५ को खोला तो बड़ी कठिनता से खुला। खुल जाने पर देखा तो डौरू के मिलान की संधि में पीले रंग का गन्धक जमकर चारों तरफ भर गया था और इसी कारण जिकड़ गया था। ऊपर के पात्र में पृथक् रूप में कुछ भी पारा न था किन्तु मूर्छित पारद काले रंग का जमा हुआ था और नीचे के पात्र में १४ **तो०** को १ मासा कज्जली का चूर्ण मौजूद था। डौरू के किनारों पर से खुरच निकाल लिया जो तोल में ३ माशे १ रत्ती हुआ। ऊपर के डौरू में जो पदार्थ उड़कर लगा था उसको वैसा ही रहने दिया और नीचे को डौरू में जो चूर्ण निकला उसको ज्यों का त्यों फिर भर डौरू को बन्द कर दिया।

ता० ७ को ८ बजे से अग्नि देना आरम्भ किया। ३।। बजे पर ऊपर के डौरू के बंद की संधि में हो, गंधक निकालने का चिह्न द्रवरूप में दीख पड़ा। जो थोड़ी देर बाद सूख गया किन्तु गंधक की गंध आती रही। रात के १० बजे तक अर्थात् १४ घंटे अग्नि दे डौरू को ज्यों का त्यों चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० ८ को खोला तो (पहली सी ही कठिनता से खुला) डौरू के मिलान की संधि में पहली बार कासा ही पीले रंग की गंधक भरा हुआ था, जिसको खुरचकर तोला तो ३ माशे हुआ। ऊपर के पात्र की पेंदी में कुछ पृथक् रूप में

पारा अबकी बार भी न था। केवल ५ माशे ४ रत्ती मूर्च्छित पारद गंधक जमा हुआ था जिसकी रंगत नीचे काली और ऊपर से कुछ पीलाई लिये थी। नीचे की पात्र की पेंदी में एक ओर कोकाले रंग का चमकदार गंधक पारद की कज्जली ऊपर से बहकर जम गई थी जो तोल में ४ माशे ३ रत्ती थी और १२ तोले ८ मा० अवशेष गंधक पारद का चूर्ण मौजूद था अर्थात् सब १४ तोले वजन निकला १।। तोले घटा।

अब इस भांति १४ तोले पदार्थ मौजूद हैं–

(१) नीचे के पात्र में अवशेष पारद कज्जली चूर्ण १२ तोले----८ माशे

(२) नीचे के पात्र में वहकर आई पारद पर्पटी ४ मा० ३ रत्ती

(३) ऊपर के पात्र में उड़कर लगी गंधक जिसमें पारद का बहुत थोड़ा ही अंश होगा--५ मा० ४ र०

(४) डौरू के जोड़ से दो बार में निकली केवल गंधक----६मा०१र०"

जोड़– १४ तोले

दूसरी आंच

ता० ३ को उक्त १३ तोले ६ माशे ७ रत्ती पारद गंधक को कज्जलीचूर्ण ४ माशे ३ रत्ती नीचे के पात्र में बहकर आई पारद पर्पटी ५ मा० ४ र० ऊपर के पात्र में उड़कर लगी गंधक थी। डौरू में भर भस्ममुद्रा से बन्द कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ४/५ को ६ बजे से रात के १० बजे तक मृदु मध्यमाग्नि दे डौरू को ज्यों का त्यों चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० ५को डौरू को खोला तो ऊपर के पात्र की पेंदी में थोड़ा सा पारद गंधक जम रहा था जिसको ज्यों का त्यों जमे रहने दिया। पात्र की रंगत काली हो रही थी। पारद निजरूप में बिल्कुल पृथक् न हुआ। नीचे के पात्र में १२ तोले ६ माशे अवशेष पारद गंधक का चूर्ण था।

तीसरी आंच

ता० ५ को उक्त १२ तोले ६ माशे पारद गंधक के चूर्ण को डौरू में (जिसके ऊपर के बड़े पात्र के नीचे और नीचे के छोटे पात्र को ऊपर बदल दिया था) भर भस्ममुद्रा से बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ६ को ६ बजे से रात के १० बजे तक १६ घण्टे आंच दे डौरू को ज्यों का त्यों चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० ७ को खोला तो ऊपरके पात्रमें इधर उधर श्यामता थी और ऊपर के पेंदे में सुनहरी झलकयुक्त सफेद रंगत थी। पारद निज रूप में कुछ भी न दीख पड़ा। ऊपर के डौरू को खुरच देखा तो जान पड़ा कि पारद गंधक डौरू में सब ओर कृष्ण हिंगुल रूप में जमा हुआ है जिसे ज्यों का त्यों रहने दिया नीचे के पात्र में ११ तोले ६ माशे पारद गंधक का चूर्ण शेष रहा।

चौथी आंच

ता० ७ को उक्त ११ तोले ६ माशे पारद गन्धक के चूर्ण को डौरू में (जिसके छोटे पात्र को फिर नीचे और बड़े को ऊपर कर लिया था) भर भस्ममुद्रा से बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ८ को ७ बजे से १० बजे रात तक १५ घंटे आंच दे रात को काम बंद रखा।

ता० ९ को फिर ७ बजे से सवेरे १० बजे रात तक १५ घंटे आंच दी।

ता० १० को ७ बजे सवेरे से १० बजे रात तक १५ घंटे आंच दी। अर्थात् ३ दिनमें १५ प्रहर आंच लगी।

ता० ११ को खोला तो ऊपर के पात्र में श्यामता थी। पारद निज रूप में कुछ न दीखता था किन्तु पात्र की पेंदी के खुरचने से ६ रत्ती पारा निकला। इधर उधर थोड़ा खुरचा तो और पारा छुटता न देखा। अतएव बाकी डौरू को इधर उधर और न खुरचा नीचे के पात्र में १० तोले ८ माशे पारद गंधक का चूर्ण शेष रहा जिसमें कड़ी कड़ी पपड़ियां सी पड़ गई थी जिससे जान पड़ता था कि अब गंधक का अंश कम रह गया है।

पांचवीं आंच

ता० ११ को उक्त १० तोले ८ माशे पारद गंधक के चूर्ण को कुछ पपड़ी पड़ जाने के कारण बारीक पीस डौरू में भस्म ऊपर मुद्रा से बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १५ को ६ बजे से निरन्तर मृदु मध्यमाग्नि देना आरम्भ किया।

ता० १८ के सुबह ६ बजे तक अर्थात् तीन दिन रात निरंतर अग्नि दे डौरू को ज्यों का त्यों रखा छोड़ दिया। ३ बजे तोला तो करीब १।। तोले के पारा स्वतः पृथक् हुआ। नीचे के पात्र में निकला ऊपर के पात्र के पेंदे में खुरचने से जो करीब तोले राख निकली उसके मलने पर करीब ६ माशे के पारा निकला और ५ माशे ४ रत्ती बारीक चिकनी भारी राख रही। नीचे के पात्र में अवशेष चूर्ण ७ तोले १ माशे रहा। ऊपर नीचे के पात्र में खुरचने से ऊपर के पात्र में ३ माशे ४ रत्ती पपड़ियों का चूरा निकला और नीचे के पात्र में से १ माशे ४ रत्ती दरदरी कत्थई रंग की सी राख निकली अर्थात् सब २ तोले २ रत्ती पारा और ७ तोले १ माशे ४ रत्ती चूर्ण मिलाकर ९ तोला ११ माशे ६ रत्ती वजन हाथ लगा। ८ माशे २ रत्ती घटा।

विचार–आदि में पारद गंधक १५ तोले ६ माशे था जिसमें १२।। तोले पारद का अनुमान किया गया था। अब तक केवल २ तोले १ माशे पारा हाथ आया है और ७ तोले १ माशे ४ रत्ती चूर्ण शेष है, दोनों मिलाकर १० तोले करीब हुआ। इसके अतिरिक्त केवल ६ माशे १ रत्ती गंधक का चूर्ण और है अतएव जान पड़ता है कि २/३ तोले पारा अवश्य क्षय हो गया।

लोहे का डौरू जो भस्ममुद्रा और कपरौटी से बंद किया जाता है इसलिये इसके सिवाय और कुछ नहीं। खयाल किया जा सकता है कि पारद जीवगति से लोहे में प्रवेश कर गया।

छठी आंच

आदि में पारद गंधक १५।। तोले था जिसमें १२।। तोले पारद का अनुमान किया गया था किन्तु अब तक ५ प्रहर आंच लग चुकने पर केवल २ तोले १ माशे ही पारा हाथ लगा जिससे सिद्ध हुआ कि गंधक पारद को अब तक नहीं छोड़ता। अतएव उक्त ७ तोले ११ माशे ४ रत्ती पारद गंधक के चूर्ण को पीस डौरू में भर अंग्रेजी कैमिस्ट्री के अनुसार ५ तोले वे बुझे चूने के झरवेर के बराबर छोटे छोटे टुकड़े उक्त चूर्ण में ऊपर बिछा दिये गये। इसलिये कि गंधक पारद को छोड़ चूने में मिल जावे।

आज ता० १९ को फिर भस्ममुद्रा से बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २० को ६ बजे से रात के ९ बजे तक मृदु मध्यमाग्नि दे डौरू को ज्यों का त्यों रखा छोड़ दिया।

ता० २१ को खोला तो ११ माशे ३ रत्ती पारा स्वतः पृथक् हुआ नीचे के पात्र में चूर्ण में मिला हुआ निकला। ऊपर के पात्र की तली खुरचने से निकली ९ रत्ती राख के मलने से ५ रत्ती पारा और निकला। ४ रत्ती उक्त राख रह गई। नीचे के पात्र का अवशेष चूर्ण ४ तोले २ माशे ६ रत्ती रहा। चूने को जो तोड़ने में कठिन हो गया था तोला तो ७ तोले ४ माशे हुआ अर्थात् २ तोले ४ माशे बढ़ गया। इस भांति सब १ तोले पारा ४ तोले २ माशे ६ रत्ती अवशेष चूर्ण २ तोले ४ माशे चूने की वृद्धि सब ७ तोले ६ माशे ६ रत्ती वजन हाथ आया। रखा गया था ७ तोले ११।। माशे, घटा ५ माशे।

सातवीं आंच

ता० २२ को उक्त ४ तोले २ माशे ६ रत्ती गंधक पारद के चूर्ण को डौरू में बिछा उस पर उक्त ७ तोले ४ माशे चूना जिसके चने से टुकड़े कर लिये थे बिछा भस्ममुद्रा से बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २३ को ६ बजे से रात के ८ बजे तक १४ घंटे आंच दे डौरू को ज्यों का त्यों चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० २४ को खोला तो १० माशे ५ रत्ती पारा स्वतः पृथक् हुआ। नीचे के पात्र की राख से मिला हुआ निकला। नीचे के पात्र का अवशेष चूर्ण २ तोले २ माशे हुआ। चूने को तोला तो ११ माशे बढ़ गया। इस प्रकार १० माशे ५ रत्ती पारा, २ तोले २ माशे शेष चूर्ण, ३ तोले ३ माशे चूने की वृद्धि, सब ६ तोले ३ माशे ५ रत्ती वजन हाथ आया। रखा गया था ६ तोला ६ रत्ती। घटा ३ माशे १ रत्ती।

आठवीं आंच

ता० २४ को उक्त २ तोले गंधक पारद के चूर्ण को डौरू में बिछा उस पर उक्त ८ तोले ३ माशे चूने के कुछ और छोटे टुकड़े कर बिछा भस्ममुद्रा से बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २५ को ६ बजे से निरन्तर मृदु मध्याग्नि देना आरम्भ किया और अबकी बार डौरू के ऊपर भीगा कपड़ा रखा।

ता० २७ को सवेरे ६ बजे तक अर्थात् दिन रात अग्नि दे डौरू को ज्यों का त्यों छोड़ दिया। ३ बजे खोला तो स्वतः पृथक हुआ पारद कुछ न निकला। ऊपर के पात्र के खुरचने से १ तोले ६ माशे ७ रत्ती राख निकली जिसके मलने पर १ तोले १ माशे ५ रत्ती पारा निकला। ५ माशे २ रत्ती राख रह गई। नीचे के पात्र का अवशेष चूर्ण २ तोले ८ माशे हुआ। चूने को तोला तो ५ तो० ४ माशे हुआ। इस भांति १ तोला १ माशे ५ रत्ती पारा, ५ माशे २ रत्ती राख, २ तोला ८ माशे अवशेष चूर्ण, ४ माशे चूने की वृद्धि, सब ४ तोले ६ माशे ७ रत्ती वजन निकला और रखा गया था ५ तोले ५ माशे, घटा १० माशे ५ रत्ती।

ता० २८ को उक्त डौरू को और डौरू के पेंदे से निकली ५ माशे न २ रत्ती राख को नींबू से धो सुखा पारा निकाला तो एक दो बाजरे का सा रवा निकला। सूखी राख १० माशे हुई जिसे उक्त अवशेष २ तो० ८ माशे चूर्ण में मिला दिया गया।

नववीं आंच

ता० ३० को उक्त ३ तोले ६ माशे अवशेष चूर्ण और ५ तोले ४ माशे चूना कुल ८ तोले १० माशे वजन को (जिसमें ५ तोले चूने के वजन को काटकर ३ तोले १० माशे (वा ३ तोले ४ माशे ६ रत्ती) पारद गंधक का चूर्ण समझना चाहिये) उपरोक्त रीति से डौरू में बिछा भस्ममुद्रा से बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १/५ को ६ बजे से रात के ९ बजे तक १५ घंटे आंच दे, डौरू को ज्यों का त्यों छोड़ दिया।

ता० २/५ को खोला तो स्वतः पृथक् पारा कुछ न था, ऊपर के पात्र के पेंदी खुरचने से ७ माशे ७ रत्ती राख निकली जिसके मलने पर ६ माशे ३ रत्ती पारा निकला, १ माशे ४ रत्ती राख रह गई। नीचे के पात्र में अवशेष चूर्ण ३ तोले ७ माशे और चूना ४ तोले ४ माशे निकला। अर्थात् कुल वजन ८ तोले ६ माशे ७ रत्ती निकला। रखा गया था ८ तोले १० माशे, घटा ३ माशे १ रत्ती।

दसवीं आंच

ता० २/६ को उक्त १ माशे ४ रत्ती राख, ३ तोले ७ माशे अवशेष चूर्ण और ४ तोले ४ माशे चूना सब ८ तोले४ रत्ती वजनको जिसमें ३ तोले ४ रत्ती वा २ तोले ७ माशे २ रत्ती गंधक का वजन है) मिला पीस डौरू में भर भस्ममुद्रा से बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ३ को ६ बजेसे रातके ९ बजे तक १५ घंटे आंच दे डौरू को छोड़ दिया।

ता० ४ को खोला तो स्वतः पृथक् पारद कुछ न निकला। ऊपर के पात्र की पेंदी खुरचने से ९ रत्ती राख निकली जिसके मलने पर ५ रत्ती पारा निकला और ४ रत्ती राख रह गई। नीचे के चूना मिश्रित पारद गन्धक के चूर्ण के मलने से १ तोले पारा निकला अवशेष चूना मिश्रित चूर्ण ६ तोले १० माशे रहा। इस भांति सब १ तोले ५ रत्ती पारा ४ रत्ती राख ६ तोले १० माशे अवशेष चूना मिश्रित चूर्ण मिलाकर सब ७ तोले ११ माशे १ रत्ती वजन हाथ लगा रखा गया था, ८ तोले ४ रत्ती घटा १ माशे ३ रत्ती चूने के वजन को छोड़ १ तोले ५ माशे २ रत्ती पारद गंधक का वजन है, इस ६ तोले १० माशे ४ रत्ती अवशेष चूर्ण को पानी में घोल रकाबी में रख धूप में सुखा दिया।

ता० ५/६ को उसकापानी सूख जाने पर नीचे जमी चूनाश्रित पारद गंधक की मोटी पापड़ी को तोडश तो उसमें जहां तहां ४–६ पारे रवे चमकते थे गीला समझ और सूखने दिया।

ता० ६ को उस चूर्ण की पापड़ी को तोडा मला तो ४–६ राई से रवे पारे के निकलें जिन्हें पृथक् कर लिया और उस चूर्ण को फिर सुखा दिया।

ता० ९ को उक्त चूर्ण को तोला तो ७ तोले ५ माशे ४ रत्ती हुआ अर्थात् ७ माशे अधिक हुआ जिसका कारण कदाचित् पहली तोल का अन्तर होगा।

ग्याहरवीं आंच

ता० ९/६ को उक्त ७ तोले ५ माशे ४ रत्ती चूना मिश्रित चूर्ण को डौरू मेंभर भस्म मुद्रा से बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १० को ६ बजे से रात के ९ बजे तक १५ घंटे आंचदे डौरू को ज्योंका त्यों छोड़ दिया।

ता० ११ को खोला तो स्वतः पृथक् पारद कुछ न निकला किन्तु नीचे के चूना मिश्रित चूर्ण के मलने से ५ माशे ४ रत्ती पारा निकला रखा गया था ७ तोले ५ माशे ४ रत्ती घटा। १ माशे ४ रत्ती डौरू के खुरचने से ऊपर के पात्र में १ माशे ३ रत्ती और नीचे के पात्र में ३ मा० ६ र० सब ५ मा० १ रती और निकली जिसे उक्त में मिला देने से ७ तोले ३ मा० ५ रती वजन हो गया।

ता० १२ को उक्त डौरू को नींबू के रस से खूब घोटा गया और चूंकि नवीं और दसवीं आंचके उपरांत डौरू खोलते समय पारद विशेषकर ऊपर को न उड़ नीचे के पात्र में ही अधिक मिलता समझा इस शंका से कि कदाचित् चूर्ण के बारीक और भारी होने से पारद चूर्ण को पार न कर ऊपर को न जा नीचे ही रह जाता हो आगे के पातन के निमित्त उस धोवन के रस में उक्त ७ तोले ३ माशे ५ रत्ती चूर्ण को घोल छोटी छोटी गोलियां बना धूप में सुखा दीं ताकि पारद को ऊपर उड़ने का अवकाश मिले।

ता० १४ को उक्त गोलियों का सूख जाने सपर तोला तो ७ तोले ७ माशे हुई अर्थातू ३ मां० ३ रती तोले बढ़ी (यह तोल शायद डौरू के धोने से कुछ राख के निकलने से बढ़ गई होगी)

बारहवीं आंच

ता० १४/६ को उक्त ७ तोले ७ माशे गोलियों की (जिनमें १० माशे २ रती के अनुमान पारद गंधक रहता है) डौरू में भर भस्ममुद्रा से बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १५ को ६ बजे से रात के ९ बजे तक १५ घंटे आंच दी गई।

ता० १६ को खोल ऊपर के पात्र में पेंदे को खुरचा तो ४ माशे १ रत्ती राख निकली जिसके मलने पर ३ माशे ५ रत्ती पारा निकला और ४ रत्ती राख रह गई, अवशेष चूर्ण की गोलियां ६ तोले ११ माशे रही अर्थात् सब ७ तोले ३ माशे १ रत्ती वजन निकला रखा गया था ७ तोले ७ माशे घटा ३ माशे ७ रत्ती। शेष ६ तोले ११ माशे ४ रत्ती चूर्ण में से ५ तोले चूने का वजन घटा कर १ तोले ११ माशे ४ रत्ती वजन रहता है किन्तु हिसाब से २ मा० ६ रत्ती ही आता है। इस प्रकार इस १५।। तोले गंधक पारद में जिसमें १२।। तोले के करीब पारद या १२ आंच देने से ७ तो० ५ मा० ३ र० पारा निकला जिसका सूक्ष्म विवरण प्रगट करने के लिये नीचे नक्शा दिया गया है।

नक्शा

तारीख	न० आंच	समय आंच	चूर्ण जो रखा गया	१ पाराजोनिकला	२ चूर्ण जो निकला	३ चूने की वृद्धि	जोड़ ३ का	घटी	विशेष वार्ता
१ ३–७/५/०९	१	२२ घंटे	१५तो०६मा०	+	१४तोले	+	+	१तो०६मा०	प्रथम बार डौरू का बंदकर ८ घंटे आंच देने के पश्चात् डौरू के बंद की संधि में हो गंधक निकलने लगा था अतएव उसे दुबारा बंद कर चढ़ाया।
३/५/०९	२	१६घंटे	१३तो०६मा० र० ७	+	१२तो०६मा०	+	+	१तो०७र०	
५/५/०९	३	१६ घंटे	१२तो०६मा०	+	११तो०६मा०	+	+	१तो०	इस बार डौरू में जमे पारद गंधकादि को खुरचा गया
७–८–९/०९ ३दिन	४	४५ घंटे	११तो०६मा०	६ र०	१०तो०८मा०	+	+	९मा०२र०	इस बार भी डौरू खुरचा न गया
११–१२–१३ ३दिनरात	५	७२ घंटे	१०तो०८मा०	२तो०२र०	७तो०११मा०४र०	+	+	८मा०२र०	इस बार ३ दिन १५–१५ घंटे आंच दी गई। रात में काम बंद रहा, खोलने पर डौरू न सूखा।
१९/५/०९	६	१५ घंटे	७तो०११मा०४र० (५तो०चूरा)	१तो०	४तो०२मा०६र०	२तो०४मा०	७तो०६मा०६र०	४मा०६र०	इस बार ३ दिन रात आंच दी गई।
२२/५/०९	७	१४ घंटे	६तो०६मा०६र०	१०मा०५र०	२तो०२मा०	३तो०३मा०	८तो०३मा०५र०	३मा०१र०	डौरू ऊपर न खुरचा गया।
२४/५/०९	८	घंटे४८	५तो०५मा०	१तो०१मा०५र०	३तो०१मा०२र०	४मा०	४तो०६मा०७र०	१०मा०५र०	
३०/५/०९	९	१५ घंटे	३तो०५मा०२र० ४–६०ख० ३–१०	६मा०३र०	३तो०८मा०४र० ८–३ ३तो०४र० निकल गया	+	३तो०६मा०७र०	३मा०१र०	इस बार २ दिन रात निरंतर आंच दी गई, डौरू खुरचा गया और धोया गया। यहां तक चूने की पृथक् तोल हुई। आगे से चूर्ण और चूना पीस मिला दिये गये।
२/६/०९	१०	१५ घंटे	३तो०४र० (५तो०चूना)	१तो०५र०	१तो०१०मा०४र० (५तो०चूना)	+ +	२तो०११मा० १र०	१मा०३र०	इस पारद अधिक निकलने का कारण यह प्रतीत होता है
९/६/०९	११	१५ घंटे	२तो०५मा०४र०	४मा०४र०	१तो०१मा०४र०	+	मा०र०	१–४	कि अब तक चूने की डेलियां रखी जाती थी–परन्तु इस बार
१४/६/०९	१२	१५ घंटे	२तो०७मा० (५तो०चूना)	३मा०५र०	+	+	+	+	चूर्ण–चूना बारीक पीस मिला दिये गये
			जोड़ पारे का	७तो०५मा०३र०					कोई चीज ठीक तोली न गई

९/४ (ए) आज फिर ४) भर गंधक देकर (पहले से चलते हुए पारद को) नौ नौ छटांक की ४ आंचे दी गई तो गंधक ठीक जला हुआ ।।) भर निकला, यह आंच ठीक रही। (१० ४/३४)

१०/४ (ए) आज फिर ४) भर गंधक भावित (गंधक को धतूरे के रस में पुन: शुद्ध कर सैंजन में रस के ३ भावना दी गई) देकर ९/९ छटांक की ४ आंचे दी गई तो गंधक जला हुआ कुछ खाकी रंग का १।=) भर निकला ११ ४/३८)

(ए) दूसरे इष्टिकायंत्र में १२।।) भर पारद कज्जली को ९/४ को तैयार हुई थी, रख ऊपर थोड़ी सूखी गंधक बुरक ऊपर से शुद्ध गंधक ३) भर की पिष्टी दे बन्द कर आठ आठ छटांक की ४ आंचे दी गई तो गंधक बिलकुल जला हुआ बहुत थोड़ा निकला लेकिन गंधक जली हुई निकालने में यह दिक्कत हुई कि कुछ अंश कज्जली का उसमें चिपटा चला आता था मुश्किल से जला हुआ गंधक जुदा किया।

(१ ३/३) ११/४ (ए) भर गंधक भावित दी गई और ९/९ छटांक की आंचे दी गई। गंधक ठीक जला हुआ ।।।=) भर निकला।

(१२-४/४२)

(ए) ३) भर गंधक की पिष्टी १) भर गंधक सूखा बीच में देकर आठ आठ छटांक की ४ आंचे दी गई तो १≡) भर गंधक जला हुआ निकला, नीचे २।–√) भर गंधक कुछ भारी और निकला जिसमें पारद अंश मिला रहने का सन्देह है। नीचे खूब जमा हुआ हिंगुल सा कठिन लेकिन काला पारे का ढ़िम्मा निकला जो तोल में १३।) भर हुआ। सब १३।)+२।–)=१५।।–) हुआ।

अनुभव

विदित हुआ कि पिष्टी रखने से पारद कड़ा नहीं होता। कज्जली रखने से पारद नीचे को सरक कड़ा हो जाता है। कठिन हो जाने से इसको यहीं रोक दिया।

१२/४ (ए) भर भावित गंधक दी गई। आंच ९–९ छटांक की ४ गंधक जला हुआ ।।।) भर निकला (१३ ४/४६)

१३/४ (ए) ४ तोले — ।।।) भर निकली–१४ ४/५० भावित गंधक

१४/४ (ए) ४ तोले — ।।।) भर निकली–१५ ४/५४ केवल शुद्ध गंधक दीगई।

१५/४ (ए) ४ तोले — ।।) भर निकली– १६ ४/५८ –

१६/४ (ए) ४ तोले — ।।) भर निकली–१७ ४/६२ भावित गंधक

१७/४ (ए) ४ तोले — ।।) भर निकली–१८ ४/६६ भावित गंधक

१८/४ (ए) ४ तोले — ।।) भर निकली–१९ ४/७० भावित गंधक हवा

हवा आजकल तेज चलती है इसलिये आंच कम बैठती है

तीसरा भाग

१८/४ तप्तखल्व में २०) भर संस्कृत पारद डाल थोड़ा थोड़ा शुद्ध गंधक (भावित नहीं) डाल डाल कर निरंतर दो आदमियों द्वारा घोटा गया तो २।। घंटे में १–) भर गंधक पड़ चुकने पर बहुत उत्तम पहले सब दफे से अच्छी खूब चिकनी उजली पिष्टी तैयार हो गई। तोल में २०।।।=) भर हुई यानी पारद और गंधक दोनों की तोल से केवल ।) भर कम हुआ।

१९/४ (ए) ४ तोले शुद्ध गंधक निम्बूवार्द्र दे ९–९ छटांक की ५ आँचे दी गई तो ।) गंधक खूब जला हुआ निकला। यह आंच ठीक रही आगे जाकर यही आंच अधिक पड़ी। (४/८४ ।२० आंच)

५ तोले भावित गधक निंबूद्रवार्द्र दे नौ छटांक की ४ आंचे दी गई तो २।=) भर गंधक अर्द्धजलित निकला। इस नई २०) भर पिष्टी को एक नये इष्टिकायंत्र में जिसका (ए) आकर ठीक चलते हुए यंत्रों का सा करा लिया था और सिपी की कलई से लेप लिया था, रखकर उसी प्रकार आंच दी गई। ५) तोले गंधक के लिये ४ आंच बहुत थोड़ी है। यंत्र इतने पारद के लिये ठीक है। (१ १/४)

२०/४ (ए) ४ तोले शुद्ध गंधक बिजौरे के रस में घुटी देकर ऊपर से २।) भर अर्द्धजालित गंधक जो कल (सी) में से निकली थी रखकर ९–९ छटांक की ५ आंचे दी गई तो १।।) भर जला हुआ गंधक निकला (२१ ३१/७८)

(सी) ५) तोले भावित गंधक बिजौरे के रस में घोट ९–९ छटांक की ५ आंचे दी गई तो १।।।) भर जला हुआ गंधक निकला। २ ५/९

२१/४ (ए) ४ तोले शुद्ध गंधक बिजौरे के रस में घुटी देकर ९–९ छटांक की ५ आंचें दी'गई तो १ भर गंधक बिलकुल जला हुआ निकला और १ माशे पारा छुटकर पिष्टी के ऊपर मोटे रवों में मिला कल भी कुछ रवे पारे के चमकते थे यह अग्नि अधिक है। गंधक नि:शेष जलने पर अवश्य हानि पहुँचाती है ८ छटांक की ४ आंच ही ४ तोले गंधक को काफी है।

[२२ आंच ४+७८ तोले]

(ए) ५ तोले भावित गंधक बिजौरे से घोट दे ९–९ छटांक की ५ आंच दी गई तो जला हुआ गंधक १। भर निकला। यह आंच ठीक रही। (पिष्टी पारद की कुछ फूल गई) चतुर्थांश गंधक बाकी रह जाना ही ठीक है।

[३ आंच ५+९ गंधक]

(ए) २२/४ तोले शुद्ध गंधक बिजोरे के रस में घोट दे ८,८ छटांक की ५ आंच दी गई तो बिलकुल जला हुआ ।) भर गंधक निकला। आज भी एक आध रवा पारे का चमका अवश्य, आज भी आंचें ज्यादा रहीं, गंधक नि:शेष न होकर पंचमांश ही बाकी रह जाना ठीक होता है और इसके वास्ते ४ तोले गंधक में ९ छटांक की ४ आंचे+५ तोले में ९ छटांक की ५ आंचे ठीक होती है। शुद्ध गंधक से भावित गंधक अधिक अग्नि चाहती है।

(२३ आंच ८२+४ गंधक)

(ए) ५ तोले भावित गंधक बिजौरे के रस में पिसा देकर ९ ९ छटांक की ५ आंचे दी गई तो १।=) भर जला हुआ गंधक निकला, यह आंच ठीक रही।

(४ आंच १४+५ गंधक)

२३/४ (ए) ४ तोले शुद्ध गंधक बिजौरे के रस में पिसी दे ९–९ छटांक की ३ आंच दी गई तो≡) भर गंधक निकला और २ रवे पारे के बाजरे के बराबर निकले। आज भी आंच ज्यादा रही।

(३४ आंच ८६+४ गंधक)

(सी) ५ तोले गंधक (२ बार भावित ३ तोले शुद्ध) को बिजौरे के रस में घोट ९–९ छटांक की ५ आंचे दी गई तो।।≡) भर गंधक खूब जला हुआ निकला चूंकि आज कुछ गंधक बिना भावना दिया हुआ भी पड़ा इसलिये यह आंच कुछ ज्यादा रही। (शुद्ध गंधक भावित गंधक की बराबर अग्नि नहीं सहता)।

(५ आंचे १९+५ गंधक)

२४/४ बीमार हो जाने से मुलाजिम आज काम बंद रहा।

२५/४ (ए) ४ तोले शुद्ध गंधक बिजोरे के रस में घोट देकर ८,८ छटांक की ४ आंचे दी गई तो कुछ गंधक जलने से बाकी रह गया। कुछ गंधक चिपटा हुआ भी रह गया। आंच कम पहुंची आज कुछ शकोरे भारी थे। आज भी न जाने क्यूं कुछ रवे पारे के जुदा मिले।

(२५ आंच ९०+४ गंधक)

(ए) ५ तोले शुद्ध गंधक बिजौरे के रस में घोट देकर ८,८ छटांक की ५ आंचे दी गई। ठीक जला हुआ गंधक ।।–) भर निकला यह आंच ठीक रही।

(छ आंच २४+५ गंधक)

२६/४ (ए) भर शुद्ध गंधक बिजौरे में घोट ऊपर दे ८,८ छटांक की ५ आंचे दी गई। दूसरे दिन खोलने पर≡) भर गंधक बिलकुल जला हुआ निकला और कुछ रवे पारे के भी मिले।

(२६ आंच ९४+४ तो० गंधक)

आज इस (ए) के तोले पारद में ९८ तोले गंधक अर्थात् ६ गुने से २ तोले अधिक जारण हो चुका इसलिये इसको यहीं समाप्त किया गया। इष्टिकायंत्र से निकलने पर कुछ पिष्टी निकलीं, कुछ चूर्ण सा निकला, कुछ पारे के रवे भी निकले। तोलने पर कुल पारा जो इसमें से अब तक निकला था।)।। भर हुआ। १२।।।ऽ) भर पिष्टी हुई ४।।) भर पिष्टी आदि का चूर्ण हुआ, सब तोला १७।।ऽ)भर पिष्टी हुई जो रखी गई थी वह १६।।।)भर थी, इससे ज्ञात हुआ कि पारद पूरा क्षय नहीं हुआ, थोड़ा ही हुआ। पिष्टी खूब खस्ता ही रही, कज्जली की तरह कड़ी नहीं हुई।

२६–४ (ए) भर शुद्ध गंधक बिजौरे के रस से घोट दे आठ आठ छटांक की ५ आंचे दी गई तो १।) भर जला हुआ गंधक निकला। और ।ऽ) भर पारा छुटा हुआ मिला। यह आंच अधिक लगी। गरमी बढ़ जाने और वायु बंद रहने से इतनी अग्नि का सहन न हुआ। यह पारा जुदा रख लिया गया।

(आंच २९+५ तोले गंधक)

२७/४ (सी) ५) भर शुद्ध गंधक बिजौरे के रस से घोट दे आठ आठ छटांक की ४ आंचे दी गई तो आज गंधक बिलकुल अर्द्ध जलित पीला रह गया। समझ में न आया कि आज आंच इतनी कम क्यूं रही। ५ आंच कल ज्यादा रही थी। ४ आंच आज कम रहीं।

(८ आंच ३४+५ तो० गंधक)

२८/४ (सी) कल की गंधक कच्ची रह गई थी। इसलिये उसी के ऊपर २ तोले गंधक बिजौरे के रस से घोट दे ८,८ छटांक की ४ आंचे दी गई तो बिलकुल जला हुआ गंधक।।।) भर निकला। (यह दो दिन की ७ भर गंधक का जलन है) और कुछ रवे पारे के भी जुदा मिले। पारा छुटने का कारण समझ में नहीं आया।

(९ आंच ३९+२ तोले गंधक)

२९/४ (सी) ५) भर शुद्ध गंधक बिजौरे के रस में घोट ८,८ छटांक की ४ आंचे दी गई तो जला हुआ गंधक।=) भर निकला। बहुत थोड़े रवे पारे के मिले, अग्नि अधिक रही।

(१० आंच ४१+५ गंधक)

३०/४/१९०६ (सी) ५ तोले (शुद्ध और मकोय के रस से ३ बार भावित) गंधक बिजौरे के रस से घोट दे ८,८ छटांक की ४ आंचे दी गई तो २।) भर कुछ कम जला गंधक निकला। भावित गंधक अधिक आंच चाहता है।

(११ आंच ४६+५ तो० गंधक)

१/५ (सी) ५ तोले (शुद्ध भावित) गंधक बिजौरे में घोट दे आठ आठ छ० की ५ आंचे दी गई तो (कल से कुछ ज्यादे जला गंधक) लेकिन पूरा न जला गंधक २।) भर निकला।

(१२ आंच ५१+५ तोला गंधक)

२/५ (सी) ५ तोले शुद्ध भावित गंधक बिजौरे के रस से घोट दे आठ आठ छटांक की ४ और ९ छटांक की १ आंच दी गई तो १।।।) भर गंधक निकला, अभी गंधक पूरा नहीं जलता, आंच कम है।

(१३ आंच ५६+५ तोले गंधक)

३/५ (सी) तोले शुद्ध और भावित्त गंधक बिजौरे के रस से घोट दे आठ आठ छ० की ३ आंच और ९, ९ छटांक की २ आंचे दी गई तो १।।) भर गंधक निकला अभी पूरा नहीं जला।

(१४ आंच ६१+५ तोले गंधक)

४/५ (सी) ५ तोले शुद्ध और भावित गंधक बिजौरे के रस से घोट दे ९, ९ छ० की ५ आंचे दी गई तो १।।ऽ) भर गंधक करीब करीब जला हुआ निकला।

(१५ आंच ६६+५ तोले गंधक)

५/५ (सी) ५ तोले (शुद्ध) और भावित गंधक बिजौरे के रस से घोट दे ९–९ छटांक की ५ आंच दी गई तो १।≡) भर निकला जला हुआ कुछ रवे भी नजर पड़े बहुत कम।

(१६ आंच ७१+५ गंधक)

६/५ (सी) ५ तोले शुद्ध और भावित गंधक बिजौरे के रस से घोट ९,९ छटांक की ५ आंचे दी गई तो १।।ऽ) भर गंधक जला निकला। कुछ सूक्ष्म रवे पारे के दीख पड़े।

(१७ आंच ७६+५ तोले गंधक)

७/५ (सी) ५ तोले शुद्ध और भावित गंधक बिजौरे के रस से घोट ९, ९ छटांक की ३ आंच और ८,८ छटांक की २ आंच दी तो १।।।) भर जला हुआ निकला।

(१८ आंच ८१+५ तोले गंधक)

८ से १३ मई तक नौकरों की छुट्टी के कारण काम बंद रहा।

१४/५ (सी) ५ तोले (शुद्ध और धतूरे के रस से ४ बार भावित) गंधक बिजौरे के रस से घोट देकर ९,९ छटांक की ५ आंचे दी गई तो १।। तोले जला हुआ गंधक निकला। कुछ रवे पारे के भी मिले, किनारों पर रवे जब कभी मिलते हैं, किनारों पर जहां पिष्टी की ऊपरवाली चमड़ी टूटी होती है, वहीं मिलते हैं।

(१९ आंच ८६+५ तोले गंधक)

१५/५ (सी) ५ तोले शुद्ध भावित गंधक बिजौरे के रस से घोट दे इष्टिकायंत्र में नौ नौ छटांक की ५ आंचे दी गई। १।।) भर गंधक जला हुआ निकला।

(२० आंच ९१+५ तोले गंधक)

१६/५ (सी) ५ तोले शुद्ध भावित गंधक बिजौरे के रस में घोट दे इष्टिका यंत्र में ९,९ छटांक की ५ आंचे दी गई। १।।=)भर गंधक निकला।

(२१ आंच ९६+५ तोले गंधक)

१७/५ (सी) ५ तोले शुद्ध भावित गंधक बिजौरे के रस में घोट दे ९, ९ छटांक की ५ आंचे दी गई तो १।।=) भर गंधक जला निकला। आज कुछ रवे पारे के मिले। यह रवे वहीं मिलते हैं जहां पिष्टी की चमड़ी टूट जाती है।

(२२ आंच १०१+५ तोले गंधक)

१८/५ (सी) * * * १।।ऽ) भर गंधक के रवे कुछ आज भी मिले।

(२३ आंच १०६+५ तोले गंधक)

१९/५ (सी) * * * १।।=) भर गंधक निकला।

(२४ आंच १११+५ तोले गंधक)

२०/५ (सी) * * * १।।=) भर निकला।

(२५ आंच ११६+५ तोले गंधक)

सब १२१ तोले गंधक अर्थात् (२०+६=१२०) षड्गुण जारित हो गया चूंकि इस पिष्टी में ६ गुनी गंधक जारण हो गई। इसलिये इसको इष्टिका यंत्र से निकाल लिया गया। निकालने पर पिष्टी के नीचे कुछ पारा पृथक् पृथक् लगा हुआ मिला, पिष्टी खस्ता थी। तोल २०।।=) भर हुई। तोल रखी भी २०।।≡) भर थी। ठीक जितनी रखी थी उतनी ही निकली।

ॐ शिवाय नमः

षड्गुण बलिजारित हिंगुल से पारद का उत्थापन

१९/५/१९०७ वैशाख सुदी गंगा सप्तमी इतवार आज इष्टिकायंत्र में जिस पारद पिष्टी षड्गुण बलिजारित हो चुका था, (२६/४/१९०६ को और पिष्टी में १६) भर पारा डाला गया और जिस पिष्टी से।–) भर पारा जारण कर्म के अन्तर्गत छुट गया था और जिस पिष्टी की तोल अब

१७=) भर थी और जो इस समय लाली मायल खाकी रंग की थी। उक्त १७=) भर पिष्टी की जो अब पिष्टी न रही थी किन्तु फुसफुसी मिट्टी सी हो गई थी, लोह खल्व में डाल जंभीरी रस १०) भर के अन्दाज डाल घोटा। २ वा ३ घंटे तो गाढ़ा होने पर कुछ पारा छुट गया फिर खल्व को शीशे के बकस में रख दो पहर के समय धूप में रख दिया। खल्व अत्यन्त तप्त हो गया। हाथ से छुआ न जाता था किन्तु पारद और नहीं छुटा। दुबारा फिर १०) रुपये भर के करीब जम्भीरी रस डाल घोटा तो गाढ़ा होने पर फिर पहले के ही बराबर पारा छुटा। तदनंतर फिर उसी समय और रस डाल घोटा, तिबारा गाढ़ा होने पर बहुत थोड़ा पारा छुटा। सब पारा मैला सा था और एक दिन रखा रहने पर ऊपर से बिल्कुल काली ताम्रवर्ण कज्जली से आच्छादित हो गया। तीन बार गाढ़े कपड़े से छानकर कुछ राख सी जुदा हो जाने पर स्वच्छ श्वेत वर्ण का ३=) भर पारा हुआ (यह पारा घुमाने से पूंछ छोड़ता था यद्यपि पूंछ उज्ज्वल थी, शायद नींबू रस के संसर्ग से हो, पातन द्वारा उत्थापित में आशा है कि पूंछ न रहेगी) और १४ तोले १० माशे सखा पिष्टी का चूर्ण बचा। खूब सूख जाने पर तीसरे दिन तोला गया था।

१५/७ को इस १४ तोले १० मासे में से ५ तोले चूर्ण को रोगनी कोरी हांडिया में जिनके किनारे घिस लिये थे और जिन पर दो कपरौटी कर ली गई थी और जो बहुत चपटी थी। ऊंची ४ इंच अन्दर अन्दर चौड़ी ८।। इंच अन्दर अन्दर थीं भर बाहरी किनारे भस्ममुद्रा से बंद कर ऊपर से मारकीन और मुल्तानी से जोड़ की दो हरी कपरौटी कर सुखा दिया।

१६/७ को एक प्रहर मंद और ३ प्रहर साधारण अग्नि दी चूल्हे पर और ऊपर ८ तह कपड़ा खूब भीगा, निरन्तर डाला। रात को खाली चूल्हे पर रखा रहा।

१७/७ डौरू खोला तो संधि ठीक निकली। किंतु अंदर नीचे की हांड़ी में तले में जो सुरखी मायल राख थी वह छूने से गीली चिकट सी निकली। छुटाने पर १ तोला २ माशे हुई। कुछ हांडी. में लगी भी रह गई। २ तोले १ मा० २ रत्ती पारा ऊपर की हांडी में छुटाने से निकला, कुछ नीचे की हांडी की गर्दन में लगा भी रह गया। जो छुट न सका। शायद पानी से छुट सकता। ५ माशे ५ रत्ती काली राक भी पोंछन की निकली। इस तरह २ तोले १ माशे २ रत्ती पारा ५ माशे ५ रत्ती काली राख भारी, १ तोले २ माशे सुरखी मायल चूर्ण, सब ३ तोले ८ माशे ७ रत्ती वजन निकला। बाकी १ तोले ३ माशे १ रत्ती छीजन गई। किन्तु इसमें कुछ अंश हांडियों में चिपका भी मौजूद है।

१७/७ उन्हीं रोगनी हांडी में पूर्ववत् २ कपरौटी करके पहले डौरू से निकली १ तोले २ माशे गुलाबी चूर्ण ५ माशे ५ रत्ती काला चूर्ण सब १ तोले ७ माशे ५ रत्ती पहले डौरू से निकली दवा को और ५ तोले पारद पिष्टी के चूर्ण को भर पूर्वोक्त किया से डौरूकर भस्म मुद्रा कर २ कपरौटी कर सुखा दिया।

१८/७ आज ४ प्रहर की पूर्णाग्नि दी गई अर्थात् पहले से ड्यौढ़ी सवाई और भी भीगा कपड़ा निरन्तर डाला।

१९/७ आज डौरू खोला तो ३ तोले ९ माशे पारा निकला। २ माशे ३ रत्ती काला चूर्ण, १ तोले ८ माशे गुलाबी चूर्ण निकला। सब ५ तोले ३ रत्ती निकला। (था ६ तोले ८ माशे ५ रत्ती), घटा १ तोले २ रत्ती नीचे की हांडी में जितने भाग में आंच की लौ लगी थी उतने में पारद न था किन्तु ठीक बीच में कुछ सुरख हिंगुल और अधिक गुलाबी चूर्ण रखा था। हिंगुल नीचे चिपटा हुआ था और गुलाबी चूर्ण उसके ऊपर फैला हुआ था। हांडी की आधी गर्दन गुलाबी रंग की थी और ऊपरी आधी काले रंग की जिससे ज्ञात होता है कि जहां तक पूरी आंच लगती है वहां तक का रंग सुर्ख हो जाता है। जहां कम आंच पहुँचती है वहां का रंग कच्ची गंधक की वजह से काला रहता है। इसलिये अग्नि नीचे की हांडी के किनारों तक जानी चाहिये अर्थात् पारद पातन में तीव्राग्नि की आवश्यकता है ऊपर की हांडी में रंग कृष्ण था और कुछ अंश पारद का छुटने से रह गया था।

१९/७ उन्हीं रोगनी हांडियों पर फिर कपरौटी कर दूसरे डौरू से निकला १ तो० ८ माशे गुलाबी चूर्ण (जो हवा लगने से सील गया था, गालिबन नींबू के क्षार योग का कारण है) और २ मा० ३ रत्ती काला चूर्ण और ५ तोले पारद पिष्टी का चूर्ण (असल में ४ तोले १० माशे होना चाहिये था.) सब ६ तोले १० मा० को पहली ही तरह से बंद कर डौरू कर दिया। सूखने का रख दिया किंतु धूप नहीं थी।

२०/७ आज ४ प्रहर की तीव्राग्नि दी गई अर्थात् दूसरी बार से भी तेज भीगा कपड़ा निरंतर डाला।

२१/७ आज खोलकर देखा तो नीचे की हांडी में पारा बिलकुल न था। ऊपर की हांडी के किनारों पर भी न था। नीचे की हांडी में हिंगुल भी बहुत कम था। हलकी गुलाबी सफेद राख जो २ तोले १ मा० निकली। ऊपर की हांडी से ३ तोले ३ माशे पारा और २ माशे १ रत्ती छानन की राख काली निकली। अबकी पारा सब उड़ गया फिर भी तौल कम बैठी।

२२–२३–२४/७/१९०७ को यह शंका कर इस २ तोले १ माशे गुलाबी और ३ माशे १ रत्ती काली राख फिर उसी डौरू में भर ३ प्रहर आंच दी तो ४ माशे ५ रत्ती पारा और निकला और १।। तोले राख गुलाबी निकली।

२४–२५–२६/७ इस १।। तोले राख को फिर पातन किया तो ४ प्रहर की अग्नि से केवल १ माशे ४ रत्ती पारा निकला। १=) भर गुलाबी राख निकली।

फल

पारद उत्थापन का १६) भर पारा पिष्टी करने को डाला जो पिष्टी १६।।।) भर हुई। गंधक जारणानंतर १७।=)भर पिष्टी हुई गंधकजारण में ।)।। भर पारा निकल आया था। उत्थापन के समय पिष्टी की तोल १७=) भर मिली। (शायद १७ तोले २ माशे हो)

पारद ३=) भर खल्व में घोटने से निकला। २ तो० १ मा० पहले पातन में, ३ तो० १ मा० दूसरे पातन में, ३ तो० ३ माशे तीसरे पातन में, ४ माशे ५ रत्ती चौथे और १ माशे ४ रत्ती पाँचवे पातन में, सब १२ तोले ८।। माशे पारद हुआ।

फिर इकट्ठा तोलने पर ३=)+९)८ रत्ती+६ मा० १ रत्ती हुआ। इस ९)८ रत्ती पारद को छान चीनी के बर्तन में घुमाया तो बहुत लंबी पूंछ छोड़ता था। चार चार छः छः अंगुल की लंबी सर्पाकार सी बन जाती थी। मेरी राय में तो पारद में कोई पदार्थ गंधकजारण से मिलकर पारद को कुछ घन कर देता है। यह पूंछ एक नहीं दो दो चार चार तक रह जाती थीं।

इन दोनों पारद को मिला छान तोला तो १२=) रत्ती+६ माशे १ रत्ती हुआ। (।) भर पहले भी निकल आया था इसलिये १२।=) ४ रत्ती+६ मा० रत्ती समझो) जो इकट्ठा तोलने पर १२ तोले ८ माशे २ रत्ती हुआ। इस हिसाब से १६) भर में से ३।।) भर के करीब छीजन गई अर्थात् पंचमांश में कुछ कम सौ (साधारण शुद्ध पारद १०) भर में २।। गुण गंधकजारित किया था, उस पारद के उत्थापन में १।।।) भर छीजन गई थी जो पंचमाश से कम होती है) इष्टिकायंत्र में षड्गुण बलि जारित अष्ट संस्कारयुक्त पारद की इकट्ठी तोल छान कर फिर की गई तो १२ तोले ८ माशे २ रत्ती भर हुई।

३१/७/०७ इस १७=) भर पिष्टी के ५ बार पातन में बची १।=) भर

१–इस तजरुबे के लिये कि जारित गंधक को पुनः पुट द्वारा जारित करने से क्या दशा रहती है। इष्टिकायंत्र के जारण से निकली जली काली गंधक में से २ तोले की शराव संपुट में बंदकर ५ सेर की आंच दी गई तो १ मा० ३ रत्ती खाकी मटेली सी राख निकली। इस अनुभव से सिद्ध हुआ कि पिष्टी पातन से बची वस्तु को अग्निपुट देने से जो रक्त भस्म उत्पन्न हुई है वह केवल गंधक नहीं हो सकती फिर क्या है। मेरी सम्मति में ३ माशे पारा १ माशे गंधक १ माशे जंभीरी का रस १ माशे लोह खल्व से घुटने से लोह का अंश सभी वस्तु इसमें हो सकती है।

तलस्थ गंधकादि को शराब सम्पुट में बंद कर ५ सेर की अग्नि दी गई तो ६ माशे गहरी सुरख रंग की एक हलकी चीज निकली। इसको पारद गंधक से उत्पन्न हिंगुल का भेद कह सकते हैं। इसको एक शीशी में बंद कर रख दिया। किन्तु हिंगुल से इसमें यह भेद है कि हिंगुल भारी होता है और यह हलकी है।

गन्धक पिष्टी का अनुभव

दशनिष्कं शुद्धसूतं निष्कैकं शुद्धगन्धकम्। स्तोकंस्तोकं क्षिपेत्खल्वे मर्दकेनाथ कुट्टयेत् ॥ यामनात्राद्भवेत्पिष्टी गंधपिष्टिर्निगद्यते ॥

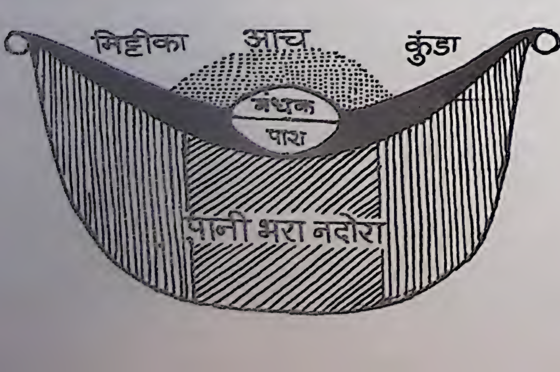
२६/२/१९०६ सोमवार ४।।) भर बाजारी पारे को (५/७ बार कपड़े में छान लिया गया था) लोहे के तप्त खल्व में डाल थोड़ी थोड़ी गंधकचूर्ण की थोड़ी थोड़ी चुटकी दे घोटा गया तो दो घंटे खूब निरन्तर दो आदमियों द्वारा घोटने से और खरल इतना गर्म रखने से कि जिससे हाथ न जले और ।–) भर गंधक पड़ चुकने पर पारा और गंधक मिलकर पिष्टी सी हो गई। कुछ और –) भर गन्धक डाल और अधिक घोटने से सख्ती आने लगी। फिर दो तीन बार में २) भर पारा और डाला तो पिष्टी में तुरन्त मिल गया और पिष्टी नरम हो गई। सब ६।।) भर पारा पड़ा और ।।) भर गंधक पड़ी। पिष्टी की गोली बांध ली गई। तोल में गोली ५।।।) भर हुई। कुछ चूरा सा खरल में निकला ।) भर होगा। कुछ खरल में लगा रह गया। शायद कुछ तोल में गड़बड़ हो गयी थी या कुछ छीज गया हो। यह क्रिया पिष्टी की बढ़िया रही।

जय श्रीशंकर स्वामी की

नं० १ कच्छपयन्त्र
गंधकजारण का अनुभव कच्छपयंत्र द्वारा
(कूंडे में)

४/५/०६ एक कुंडा ऐसा बना कि जिसके पेंदे में गढ़ा खांचेदार था। उसमें ५ तोले पारा रख ऊपर से ५ तोले गंधक का चूर्ण रख ऊपर से सकोरे से ढ़क भस्ममुद्रा से बंदकर उस कूंडे को एक जल भरे नदोरे के ऊपर रख कूँडे के ऊपर पाव पाव भर की १० आंचे दी गईं। ५ घंटे में खोलने पर गंधक पिघला हुआ पूरा ५ तोले मिला। कुछ भी नहीं जला आंच कम रही।

५/५ आंचे फिर बंदकर आध सेर की ५ आंचे दी गई तो २ तोले गंधक जला।



६/५ आज फिर २ तोले गंधक डाल तीन तीन पाव की ४ आंचे दी गईं तो २।। तोले गंधक जला।

७/५ आज फिर २।। तोले गंधक डाल ढ़ाई पाव की ८ आंचे दी गईं तो २।। तोले गंधक जला। आंच कम है आगे से सेर सेर भर की ६ आंचे देकर देखो और शकोरे की जगह लोहे की कटोरी रखो।

१६/५ आज गंधक पूरा अर्थात् १ छ० पारा १ छ० गंधक को (दूसर कूंडे में) कच्छपयंत्र में सेर सेर भर की ३ आंचे दी गईं। कूंडा चटक जाने से आगे का काम बन्द रहा। खोलने पर केवल १ पैसे भर गंधक कम हुआ।

१७/५ आज फिर इसी को बन्द कर सेर सेर भर की ६ आंचे दी गई तो ६ माशे और जला यानी कुल २ तोले गंधक जला। आज देखा तो मालूम हुआ कि कूंडा जो १७/५ से काम में आया उसमें संधि होने से नीचे का पानी अन्दर आ जाता है। गालिबन इसी वजह से काम ठीक नहीं हुआ।

नं० २ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का दूसरी बार अनुभव
(कूंडे में)

ता २२/५/०७ को ८।। तोले पारे और गंधक के ढ़िम्मे को (जिसमें ५ तोले पारा और अवशेष गंधक था, यह ढ़िम्मा उपरोक्त नं० १ कच्छपयंत्र में इससे साल भर पहले अनुभव करते समय उत्पन्न हुआ था) मिट्टी के खांचेदार कूंडे में रख लोह कटोरी से ढ़क ३ भाग सैंधव और १ भाग राख से बनी भस्ममुद्रा से बंद कर दिया गया।

ता० २३ को कूंडे को पानी भरी नांद के ऊपर रख ६।। बजे से १२।। बजे तक पाव भर आरने कंडों की ८ आंचे दी गई।

ता० २४ को निकाल कर तोला तो ८=) भर वजन मिला। =) भर छीजन गई।

सम्मति–अग्नि कम होने के सिवाय और कोई त्रुटि नहीं जान पड़ती। लोह कटोरिका केवल १ इंच गहरी थी और ६ इंच चौड़ी थी।

नं० ३ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का तीसरी बार अनुभव
(कूंडे में)

ता० २४/५/७ को उपरोक्त ८।=) भर गन्धक पारद में) भर शुद्ध हिंगुलोत्थ पारद और मिला। पूरा ८।। तोले उसको पीस बारीक कर कच्छप यंत्र में रख ३ तोले राख ३ तोले लवण से बनी भस्ममुद्रा से उपरोक्त विधि से बंद कर धूप में सुखाने को रख दिया।

ता० २५ को भी सूखा किया। कुछ सूक्ष्म दरज पड़ गई थी वह फिर बंद कर दी गई। ता० २६ को ऽ।। सेर की आंच देना आरम्भ किया पहली ही आंच में कूड़ा चटक गया, इसलिये उतार लिया।

सम्मति–कूंडे की मिट्टी अच्छी नहीं है और न अच्छी कमाई गई है।

नं० ४ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का चौथी बार अनुभव
(कूंडे में)

ता० २६/५/७ की शाम के ४ बजे दूसरा नया कूंडा ले उसमें उपरोक्त ८।। तोले पारद गंधक रख उपरोक्त विधि की भस्ममुद्रासेजिसमें चटके हुए पहले कुंडे से छुटाई भस्ममुद्रा भी डाल दी गई थी) लोह कटोरिका से वंदकर धूप में सूखने को रख दिया।

ता० २७ को उपरोक्त रीति से पानी भरी नांद पर कूंडे को इस प्रकार रखा कि पेंदी २ अंगुल पानी में भीगी रही। ७ बजे से ६ बजे तक अर्थात् ११ घंटे १३ आंचे दी। इन आंचों में पहली ऽ। की दूसरी ऽ।≤की बाकी सब आध

आध सेर की लगीं। २ दफे बीच में पानी बदला गया। यह कूंडा भी पहली ही आंच से चटक गया था। किन्तु फिर अधिक न चटका। रात को यन्त्र ज्यों का त्यों नांद पर रखा रहने दिया।

ता० २८ को देखा तो यंत्र की कटोरी की दरजों पर बहुत तरी थी। अतएव उसे पहिले सुखाकर खोला तो दवा का ढ़िम्मा अपने रूप में मौजूद था और वजन में ८ तोला था।

सम्मति–कूंडे खराब हैं, चटकते हैं। कटोरी शायद मोटी हो, पानी बदलने की आवश्यकता नहीं, अग्नि और बढ़ाकर देखो। रात को कूंड़ा पानी से पृथक् कर दिया जावे।

नं० ५ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का पांचवी बार अनुभव
(कूंडे में)

ता० २९/५/७ को उपरोक्त ८ तो० पारद गंधक को उसी कूंडे और कटोरी में भस्ममुद्रा से बन्दकर सुखा दिया।

ता० ३० को धूप में सूखता रहा।

ता० ३१ को प्रथम पाव भर की आंच दी गई। आंच के सुलगते ही पहली दर्ज पर कूंडा और चटक या अन्दर दवात के पानी पहुँच गया। इस वास्ते काम बंद रहा और कूंडे को धूप में सुखा खोलकर दवा निकाली जो ८ तोले हुई।

सम्मति–आगे से कूंडे पर कपरौटी होनी चाहिये।

नं० ६ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का छठी बार अनुभव
(कूंडे में)

ता० ३/६/७ को उपरोक्त ५ तोले औषधि को ऐसे कूंडे में (जिसके अन्दर बाहर पेंदी को छोड़ किनारों पर दोनों तरफ ६९ अंगुल मोटी कपरौटी टुकरी की गई थी और ऊपर की पेंदी में खरिया का लेप कर दिया था) रख लोह कटोरिका से (जो पहली कटोरी से हलकी चद्दर की बनी थी) ढक भस्ममुद्रा से संधि बन्द कर धूप में सुखा दिया।

ता० ४ को पहली आंच ऽ। पाव भर की, दूसरी आध सेर की, तीसरी तीन पाव की और आठ आंचे एक एक सेर की दी गई। ये कूंडा भी पहली ही आंच से चटक गया और पानी का तरीका असर जरूर अन्दर पहुँच गया होगा। किन्तु नौकरों के खबर न देने से काम बन्द न रखा गया। सब आंचों के लगने के बाद कूंडी खोली नाँग पर रख दिया गया।

ता० ५ को खोला गया तो उक्त औषधि का एक ढिम्मा ७ तोले ७ माशे हुआ और ५ माशे इस ढ़िम्मे के नीचे राख सी अलग निकली अर्थात् जो आठ तोले वजन था, वह पूरा निकल आया।

सम्मति–आगे से आंच आध सेर की आरम्भ की जाय और डेढ़ सेर तक लगे अवश्य पानी अन्दर जाने की शंका होती है। कूंडे कपरौटी करने पर भी चटक ही जाते हैं, यह बड़ी खराबी है।

नं० ७ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का सातवीं बार अनुभव
(कूंडे में)

ता० ५/६/७ को उक्त ७ तोले ७ माशे पारद गंधक और ५ माशे राख कुल ८ तोले वजन को कपरौटी किये गये कूंडे में रख लोहकटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा से संधि बंद कर धूप में सूखने को रख दिया।

ता० ६ को कूंडे के चार चार अंगुल किनारों पर दूसरी कपरौटी और की गई और सुखा दिया।

ता० ७ को कूंडा सूखता रहा।

ता० ८ को पहली आध सेर की आंच देने से कूंडा चटक गया और दरार कटोरी के अन्दर तक चली गई जिससे पानी अवश्य अन्दर जाता लिहाजा काम बंद कर दिया गया।

सम्मति–कूंडा के चटक जाने से ही अब तक अनुभव ठीक न हो सका।

नं० ८ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का आठवीं बार अनुभव
(ताम्रचीनी के पात्र में)

ता० ८/६/७ को उक्त ७ तोले पारद गंधक को ताम्रचीनी के कूंडे में रख बड़ी लोहकटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा से संधि बंद कर धूप में सुखा दिया।

ता० ९ को इस चीनी के पात्र को जल भरी नाँद पर तैराकर तीन तीन पाव की ११ आँचे देकर जैसे का तैसा रखा छोड़ दिया। (तामचीनी के पात्र में और कंडो के बीच में पेंदा रहित लोहे की परात का घेरा भी रख दिया था ताकि अग्नि तामचीनी के पात्र को न छुए)।

ता० १० को खोला तो ढ़िम्मा अपने रूप में ६। तोले मिला और उस ढ़िम्मे के नीचे गंधक की पपड़ी १। तोले मिली अर्थात् कुल ७।। तोले वजन मिला, ६ माशे घटा।

सम्मति–इस प्रकार यंत्र का निर्माण तो अच्छा रहा यदि काम दे किन्तु एक दोष तामचीनी के कूंडे में है कि उसका पेंदा सपाट है, बीच में ढालू नहीं है इस कारण पारद बीच में ठहर नहीं सकता।

नं० ९ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का नवीं बार अनुभव
(तामचीनी के पात्र में)

ता० १०/६/७ को उक्त ६। तोले का काले रंग का ढ़िम्मा और १। तोले गंधक की पापड़ी कुल ७।। तोले वजन को बारीक पीस पूर्वोक्त तामचीनी के कूंडे में पूर्वोक्त विधि से बन्द कर दिया गया।

ता० ११ को कूंडे को पानी भरी नाँद पर तैरा एक २ सेर की १२ आंचे दी। बाद में जैसे का तैसा रखा छोड़ दिया।

ता० १२ को खोला गया तो ढ़िम्मा तामचीनी के कूंडे से चिपटा हुआ मिला। चाकू से खुरच ढ़िम्मे छुटाया तो उसके नीचे की तरफ पिघले हुए गंधक का अंश दिखाई दिया और तोल में ७। तोले हुआ। ३ माशे घटा।

सम्मति–अभी तक गंधक का क्षय ठीक नहीं होता या अग्नि कम है या समय कम है, पीछे साबित हुआ कि पानी अधिक था।

नं० १० कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का दसवीं बार अनुभव
(तामचीनी के पात्र में)

ता० १५/६/७ को पूर्वोक्त गंधक पारद का ढ़िम्मा ७। तोले और हिंगुलोत्थ पारद १० माशे और हिंगुल पातन से बचा चूर्ण वा राख १ तोले और दाग खाया हुआ दानेदार गंधक १ तोले उक्त तामचीनी के कूंडे में इस तरह रखे गये कि ७।। तोले वाले ढ़िम्मे को और हिंगुलोत्थ पारद की १ तोले

राख दोनों को पीस कूंडे में विछा लिया, उसके ऊपर बीच में हिंगुलोत्थ १० माशे पारा रख १ तोले पिसा गंधक ऊपर बुरका दिया गया। इस तरह कुल १० तोले १ माशे वजन रख लोहकटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा से संधि बंद कर धूप में सुखा दिया।

ता० १६ को यंत्र को नाँद पर तैरा सवा सवा सेर की १२ आँचे दी गई। बाद का पानी बहुत गर्म हो होकर चौथी पांचवीं आग तक सेर तीन पाव घट जाता था. इस वास्ते जितना घटता था, दो एक बार में उतना ही और डाल दिया जाता था। पश्चात् आंच बंद कर यंत्र को ज्यों का त्यों नाँद पर तैरा छोड दिया।

ता० १७ को खोला गया तो ढ़िम्मा कूंडे से चिपका हुआ मिला। ऊपर बुरके गये गंधक का रूप जला दृष्टि पड़ा। पारा भी जले गंधक से ढ़का मिला। उक्त ढ़िम्मे और पारद को तोला तो कुल (१० तोले १ माशे में) ९ तोले ८ माशे वजन निकला। ५ माशे घट गया।

सम्मति–१। सेर की १२ आंचों से भी कोई नतीजा नहीं हुआ। ऊपर की लोह कटोरी कुछ भारी अवश्य है और कोई बात समझ में नहीं आती। पीछे साबित हुआ कि पानी अधिक था।

नं० ११ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का ग्यारहवीं बार अनुभव
(कूंडे में)

ता० १७/६/७ को ५ तोले पारद और ५ तोले दाग खाया हुआ दानेदार पिसा हुआ गंधक मिट्टी के कूंडे में इस तरह रखे गये कि पहले पारा रख उसके चारों तरफ और ऊपर गंधक ढ़क दिया और बहुत हलकी लोह कटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा से संधि वंद कर धूप में रख दिया।

ता० १८ को चूंकि आंच से कुंडे चटक जाते थे, उसके बचाव के वास्ते दो घेरे लोहे के चार पांच अंगुल चौड़े लगा दिये और इनमें जो संधि रह गई, वह बालू से भर दी गई। इन घेरों के लगाने से कूंडा करीब ३ अंगुल के खाली रहा और पेंदे में केवल कटोरी दीखती रही।

ता० १९ को ३ आंचे पाव भर आध सेर तीन पाव की दी गईं, तीसरी आंच की राख कूंडे से निकालते समय राख में गंधक का अंश दृष्टि पड़ा। इस कारण काम बन्द कर कूंडे का ठंडा कर खोला तो गंधक पिघलकर पापड़ी सा हो गया और उसके नीचे पारा अपने रूप में मौजूद था। कुंडे के अन्दर तरी आ गई थी, इस कारण धूप में सुखा पारे गंधक को तोला तो ८ तोले १० माशे मिला। १ तोले २ माशे छीजन गई।

सम्मति–कारण गंधक निकल आने का यह जान पड़ा कि कपरौटी के नीचे मुद्रा का मसाला लगाना भूल गये, केवल ऊपर से लगा दिया था।

नं० १२ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का बारहवीं बार अनुभव
(कूंडे में)

ता० २०/६/७ को उक्त ८ तोले १० माशे पारे गंधक को और समान गंधक जारित को ११ माशे चूर्ण को सब ९ तोले ९ माशे को उसी कूंडे में ऐसे रखा जिससे तरल पारद गंधक से ढ़का रहा। बाद को लोह कटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा से सन्धि बन्दकर सुखा उपरोक्त विधि से लोहे के दो घेरे लगा बालू भर रख दिया।

ता० २१ को पानी भरी नांद पर कूंडे को रख पाव भर, आध सेर, तीन पाव, सेर भर की ४ आंच और सवा सवा सेर की ७ सब ११ आंचे दे पानी की नांद से कूंडे को उतार खाली नांद पर छोड़ दिया।

ता० २२ को खोला गया तो कूंडे के कांचे में पानी का अंश दृष्टि पड़ा। गंधक पिघल कर हलकी पापड़ी सा हो गया था। उसके नीचे पारा मौजूद था कुछ अंश पारे के गंधक में समा गये थे। तोला तो (९ तोले ९ माशे वजन में) ८ तोले वजन हाथ लगा। १।। तो० छीजन हुई।

सम्मति–बालू भरने से कूंडों का चटकना बंद हो गया किन्तु पानी का अंश अन्दर पहुँच जाता है, इसका भी उपाय करना चाहिये।

नं० १३ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का तेरहवीं बार अनुभव
(कूंडे में)

ता० २५/६/७ को ८। तोले पारद गंधक को उपरोक्त विधि से कूंडे में रख लोह कटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा से संधि बन्द कर धूप में सुखा दिया। इस बार कूंडे के बाहर १ छटांक अंडी के तेल में आधी छटांक मोम मिला। आंच पर गर्म कर लेप कर दिया ताकि पानी का असर अंदर न पहुँचे। अन्दर लोहे के घेरे और वालू रेत रखी गई।

ता० २६ को यह यंत्र रखा रहा।

ता० २७ को पानी भरी नाँद भर रख पाव भर से १ सेर तक की ४ आंचे और सवा सवा सेर की ८ आंचे सब १२ आंचे दे कूंडे को खाली नाँद पर रख दिया। ता० २८ को खोला गया तो गंधक पिघलकर फैल गया था और काले रंग का हो गया था। पारा गंधक के नीचे ढ़क रहा था। खुरच कर निकाला तो कुल ७। तोले वजन हाथ लगा। १ तोले घटा। कूंडे में इस बार भी कुछ तरी आ गई थी इस वास्ते उक्त औषधि को सुखा फिर तोला तो कुछ अंतर न मालूम हुआ।

सम्मति–अबकी बार पहले से भी गंधक कम जला कारण समझ में नहीं आया।

नं० १४ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का चौदहवीं बार अनुभव
(कूंडे में) टब में रखकर

ता० ३०/६/७ को उक्त ७ तोले पारद गंधक को उपरोक्त विधि से गर्म अंडी के तेल में मिले मोम गेरू से पेंदे में लिये कूंडे में रख लोह कटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा से संधि बन्द कर धूप में सुखा दिया।

ता० १/७ को कूंडे को पानी में भरे टब में छोटी लोहे की तिपाई पर रख एक अंगुल कूंडे की पेंदी तक पानी रख कूंडे में लोहे के घेरे लगा बालू भर पाव भर आध सेर तीन पाव की आंच और सेर भर की ९ सब १२ आंचे दे कूंडे को पानी से जुदा कर रख दिया। इस बार टक्का पानी अधिक गर्म नहीं हुआ। नवीं आंच पर पानी की घटी मिकदार पूरी कर दी।

ता० २ को खोला गया तो गंधक पिघला न था, जैसे का तैसा रखा था। नीचे पारा मौजूद था। तोल में गंधक पारद ७ तोले हुआ। ३ माशे छीज गया।

सम्मति–जल विशेष होने से शीतलता अधिक रही, इस कारण गंधक नहीं जला। अब कारण समझ में आया।

नं० १५ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का पन्द्रहवीं बार अनुभव
छोटे नँदोर में (कूंडे में)

ता० २/७/७ को ७ तोले गंधक पारद में ३ तोले दानेदार दाग खाया गन्धक डाल पीस मोम अंडी के तेल गेरू में पेंदे में लेप किये गये कूण्डे में उपरोक्त विधि से रख लोह कटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा से सन्धि बन्द कर धूप में सुखा दिया।

ता० ३ को लोहे के घेरे और बालू रख ऐसे छोटे पानी भरे नँदोरे पर कूण्डे को रखा जो एक अंगुल पेंदा भीगा और ५ अंगुल कूंडा नाँद से बाहर रहा। पश्चात् पाव भर, आध सेर, तीन पाव, सेर भर की ४ आंचे और सवा सवा सेर की ५ कुल ९ आंचे दी गई। नवीं आंच पर कूंडा दो तीन जगह से चटक गया। दर्ज कटोरी तक पहुँच गई परन्तु नीचे के मोम के लेप ने अन्दर

पानी नहीं आने दिया। आगे काम न चलाया, खोला गया तो गंधक पिघलकर फैल गया था, रंगत काली थी, पारा नीचे ढ़क रहा था। खुरच कर तोला तो पारा १० माशे निज रूप में और पारद गंधक मिश्रित ६ तोले १० माशे था। सब गंधक पारद ७ तोले ८ माशे। २ तोले ४ माशे घट गया।

सम्मति–अबकी फल सबसे अच्छा हुआ यदि कूंडा न चटकता तो पूरा गंधक जीर्ण हो जाता। यह सफलता पानी कम होने से हुई। अधिक पानी गर्म न होकर कूंडे के पेंदे को इतना शीतल रखता था जिससे गंधक जीर्ण नहीं हो सकता था। कूंडा १७ इञ्च चौड़ा था इसलिये कूंडा नँदोरे पर ढ़कने से ५,५ अंगुल चारों तरफ निकला रहा। पानी नँदोरे में ६ इञ्च गहरा भरा था। तोल में ८ सेर था। २ इञ्च नँदोरा कूंडा रखने से खाली हो गया था।

नं० १६ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का सोलहवीं बार अनुभव
(कूंडे में छोटे नँदोरे में)

ता० ४/७/७ को उक्त ७ तोले ८ माशे पारद गन्धक को नये कपरौटी करे और गर्म अंडी के तेल में पड़े मोम गेरू से पेंदे से लिपे कूँडे में उपरोक्त विधि से रख भस्ममुद्रा से संधि बंद कर (चूंकि धूप में सुखाने को नीचे का लेप पिघलकर टपकने लगता था इस वास्ते) सीरक में सुखा दिया और बालू और घेरे लगा दिये।

ता० ५ को ८ सेर पानी से भरे छोटे नन्दोरे पर कूंडे को रख १ अंगुल पेंदी भीगी राख ऽ। पाव भर ऽ।। सेर की २ आंच और तीन तीन पाव की १२ कुल १४ आंचे दे कुंडे को उतार खाली नाँद पर रख दिया।

ता० ६ को खोला गया तो अन्दर पारद गंधक ज्यों का त्यों रखा रहा, पिघला तक न था।

कारण कि आंच १। सेर की जगह ऽ।। की दी गई।

सम्मति–अबकी बार यह भी निश्चय हो गया कि ८ सेर जलवाले नँदोरे पर रखे कूंडे के लिये तीन पाव की आँच कम है। १। सेर की ही चाहिये।

नं० १७ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का सत्तरहवीं बार अनुभव
(कूंडे में)

ता० ६/७/७ को उपरोक्त पारद गंधक को जो पिघला तक न था, कूंडे से जुदा न कर जैसे का तैसा ही बंद कर सुखा दिया।

ता० ७ को ८ सेर पानी आनेवाले उसी नँदोरे पर कूँडे को फिर रख सदा की रीति से रेत भर ऽ।। सेर ऽ।। तीन पाव की २ आंचे और १। सेर की १२ सब १४ आंचे दी। कूंडे को पानी की नाँद से अलग कर रख दिया। इतने समय में एक बार १।। सेर के अन्दाज नँदोरे में पानी डालने की आवश्यकता हुई जो गर्म कर डाला गया।

ता० ८ को खोला गया तो गंधक पारद अब भी जैसे का तैसा रखा रहा, पिघला नहीं। कूंडा चटका मिला। तोल में गन्धक ६ तोले २ माशे और पारद निजरूप में ९ माशे कुल गन्धक पारद ६ तोले ११ माशे हुआ। ९ माशे घटा।

सम्मति–अबकी बार सफलता अवश्य होती किन्तु कूंडा चटक गया जिससे क्रिया निष्फल गई। यह दोष कूंडे का है।

नं० १८ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का अठारहवीं बार अनुभव
(तामचीनी की रकाबी में)

ता० ६/७/७ को २।। तोले पारद और २ तोले दानेदार दाग खाई हुई पिसी गन्धक कुल ५ तोले वजन को तामचीनी की तश्तरी के बीच में गंधक की घरिया सी बना उसमें पारा रख थोड़ी गंधक ऊपर डाल उँगली से ठीक कर लोहकटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा कर धूप में सुखा दिया।

ता० ७ को तामचीनी के बड़े कटोरे में २।। सेर पानी भर उस पर इस यंत्र को रख ऽ। पाव भर डेढ़ पाव की २ आंचे और आध आध सेर की १३ कुल १५ आंचे दे कटोरे से कूंडा उतार अलग रख दिया। इस कटोरे में ४/५ दफे आध आध या पौन पौन पाव के अन्दाज गर्म, पानी डाला गया।

ता० ८ को खोला गया तो गंधक जली हुई मिली। पारा गंधक से ढ़का और कुछ प्रत्यक्ष होकर भस्ममुद्रा से लगा मिला। तोल में पारद निजरूप में २ तोले ३ माशे और गंधक ६ माशे कुल पारद गंधक ६ माशे कुल पारद गंधक २ तोले ९ माशे निकला। २ तोले ३ माशे घटा पारद कुछ भस्ममुद्रा से जाकर लग जाने से छीज गया।

(१) सम्मति–अबकी बार पूर्ण गंधक जलकर पूरी सफलता हो गई और सफलता के कारण भी निश्चय हो गये। वह यह है कि अग्नि इतनी तीव्र जो पारद गंधक को आधार पात्र को भली भांति गर्म कर सके, नीचे जल भी अधिक न हो जो गर्म न हो सके किन्तु केवल इतना ही खूब गर्म हो जावे चूंकि जल का, इवेपोरेटिंगपोइन्ट नीचा है और गंधक का ऊंचा और पारद का और भी ऊंचा, इस कारण जल गर्म होकर हानि नहीं कर सकता। गर्म से गर्म जल भी पारद को उड़ने से रोकने के लिये समर्थ होगा। घट अवश्य जाता है सो बार बार डालकर उसकी पूर्ति हो सकती है।

(२) सम्मति–यह तामचीनी के यंत्र बहुत ठीक होते यदि इन रकाबियों के पेंदे ऊपर को उठे न होते, ऊपर को उठे होने से पारद किनारों की तरफ को बह जाता है।

नं० १९ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का उन्नीसवीं बार अनुभव
(कुंडे में छोटे नँदोरे में)

ता० ८/७/७ को १६ वें अनुभव के ६ तोले ११ माशे पारद गंधक को मोम गेरू से पेंदे में लेप किये गये, नये कूंडे में उपरोक्त विधि से रख लोह कटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा से बंद कर सुखा दिया।

ता० ९ को कूंडे में लोहे के घेरे लगा बालू भर ८ सेर पानी भरे नँदोरे पर रख ऽ।। सर ऽ१ सेर की २ आंचे और १। सेर की ६ कुल ८ आँचे देने से कूंडा चटक गया। दर्ज कटोरी तक पहुँच गई। पानी कूंडे में अन्दर आ गया। एक तरफ से भस्ममुद्रा भी उखड़ गई थी इस वास्ते आगे काम न चलाया गया। खोला गया तो पारद गंधक ज्यों का त्यों बे पिघला रखा रहा। जहां से भस्ममुद्रा उखड़ गई ती वहां से गंधक के उड़ जाने का चिह्न दीख पड़ा। तोलने पर ४ तोले ९ माशे गंधक और ७ माशे पारद निज रूप में सब गंधक पारद ५ तोले ४ माशे निकला। १ तोले ७ माशे घटा। बड़े कूंडे जितने बने थे। सब टूट चुके।

न० २० कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का बीसवीं बार अनुभव
(मिट्टी का सैनक)

ता० १०/७/७ को तामचीनी की तश्तरी में किये गये १७ वीं बार के अनुभव से बचे २ तोले ३ माशे पारा और ६ माशे गंधक में ३ माशे पारद और २ तोले गंधक और मिला पारद गंधक ढ़ाई २ तोले कर उसको मिट्टी की बड़ी सैनक में (जो १० इंच चौड़ी और ३ इंच चौड़ी गहरी थी तोल में १ सेर १० छटांक थी नीचे जिसके मोम गेरू का लेप कर दिया गया था) रख ऊपर हल्की लोहकटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा कर सुखा दिया।

ता० ११ को उपरोक्त सैनक को तामचीनी के ऽ२।। सेर पानी भरे कटोरे पर रख प्रथम आंच पाव भर की दी तो सैनक चटक गई। इस वास्ते काम बन्द कर दिया गया। खोला तो गंधक पिघला हुआ मिला। पारद गंधक से

ढ़क रहा था, तोलने से गंधक २ तोला. ५ माशे और पारद निजरूप में २ तो० ४ माशे कुल ४ तोले ९ माशे वजन का रहा। ३ माशे छीजन गई।

सम्मति–चटक जाने का एक कारण यह भी हो सकता है कि अबकी बार लोहे का घेरा और बालू नहीं रखी थी।

नं० २१ कच्छपयंत्र (लोहपात्र में)
उपरोक्त क्रिया का इक्कीसवीं बार अनुभव
(सैनक में)

ता० १२/७/७ को उक्त २ तोले ५ माशे गंधक और २ तोले ४ माशे पारद कुल ४ तोले ९ मा० पारद गंधक को पहली सी ही सैनक में (जिसकी पेंदी में मौम आदि का लेप किया गया था और जिसके किनारों से अन्दर की ओर चार चार अंगुल कपरौटी कर दी गई और ठीक किनारे पर १ पट्टी कसकर लगाइ थी) उपरोक्त विधि से रख लोहकटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा कर सुखा दिया।

ता० १३ को सैनक को एक पात्र में ऽ३।– सेर पानी आता था, रख लोहे का एक घेरा अन्दर लगा बालु भर पाव भर ऽ।। सेर की २ और तीन पाव की १० कुल १२ आंचे दे पानी के पात्र से यंत्र को उतार अलग रख दिया। इतने समय में दो तीन बार गर्म जल डाला गया।

ता० १४ को खोला गया तो गंधक पिघलकर फैलकर बिलकुल जल गई थी उससे ढ़क रहा था, तोला गया तो गंधक ८ माशे कर पारद निजरूप में २ तोले ३ माशे कुल गंधक पारद २ तोले ११ माशे निकला। १ तोले ९ माशे घटा।

सम्मति–अबकी बार भी पूर्ण गंधक जल गया और पूर्ण सफलता हो गई किन्तु २ माशे पारद अभी घटता है। कुछ रवे पारद के गंधक में होंगे पर फिर भी १ माशे पारद का तो क्षय अवश्य हुआ। १७वीं बार में भी पूर्ण सफलता होने पर ३ माशे पारद घटा था। यह पारद क्षय विचारणीय है।

सफलता का नतीजा

(१४ वीं बार) बड़े कूंडे में ८ सेर पानी नीचे रख ऽ१। सेर की ७ आंचों में ५ तोले में से २ तोले ४ माशे गंधक जला। (१७ वीं बार) तामचीनी की रकाबी में ऽ२। सेर पानी नीचे रख आध आध सेर की १४ आंचो से २।। तोले में से २ तोले ३ माशे गंधक जला।

(२०वीं बार) मिट्टी की कूंडेनुमा सैनक में जो तोल में १ सेर १० छ० भारी थी। ऽ३। सेर पानी नीचे रख तीन पाव की ११ आंचो में २ तोले ६ माशे में से १।। तोले गंधक जला।

नं० २२ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का बाइसवीं बार अनुभव
(सैनक में)

ता० २१/७/७ को पूर्वोक्त २ तोले २ माशे पारद में ३ माशे पारद और उक्त ८ माशे गंधक में १ तो० १० माशे गंधक और मिला दोनों को पूरा ढ़ाई ढ़ाई तोलकर पहली ही सैनक में उपरोक्त विधि से बंद कर ऽ। पाव भर आधे सेर की २ आंचे और तीन तीन पाव की ८ कुल १० आंचे दी तो गंधक जला हुआ मिला। पारा गंधक से ढ़क रहा था, पारा निज रूप में २ तो० ४ माशे मिला और पारद मिश्रित गंधक ३ माशे ३ रत्ती और जला हुआ गंधक १० माशे हुआ। इस जले गंधक में पारा न था।

सम्मति–मेरी समझ में अबकी बार गंधक भी जल गया और पारा भी क्षय नहीं हुआ।

नं० २३ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का तेईसवीं बार अनुभव
(सैनक में)

ता० २४/७/७ को उक्त २ तोले ४ माशे पारद और ३ माशे ३ रत्ती पारद मिश्रित गंधक में २।। तोले गंधक और दे सब ५ तोले १।। माशे को उसी सैनक में उपरोक्त विधि से बंद कर पाव भर की १ आंच और आध आध सेर की १६ कुल १७ आंचे दी। १२ घंटे में तो गंधक जला हुआ मिला। पारा गंधक से ढ़क रहा था। पारा निजरूप में २ तोले ३ माशे निकला। पारद मिश्रित जला गंधक ७ माशे और नीचे के खुरचने की राख ६ माशे निकाली।

सम्मति–अबकी बार यह भेद रहा कि जो गंधक जला हुआ ऊपर था उस सब में पारद मिश्रित था और इस कारण से यह कुछ कठिन था और हिंगुल बन जाने का रूप जान पड़ता था।

प्रश्न–क्या कोमल आंच कच्छप में विशेष गुणकारी है।

नं० २४ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का चौबीसवीं बार अनुभव
(सैनक में)

ता० २७/७/७ को उपरोक्त २ तोले ३ माशे पारद और ७ माशे पारद गंधक और ६ माशे नीचे के खुरचने में १।। तोले नया गंधक और दे सब ४ तोले १० माशे को उसी सैनक में उपरोक्त विधि से बंद कर १२ घंटो में ऽ। की १ और आध आध सेर की १६ सब १७ आंचे दी गई। ता० २८ को खोला गया तो पारद निजरूप में २ तोले और पारद मिश्रित जला गंधक १ तोले २ माशे और पारद के नीचे की राख ७ माशे निकली।

नं० २५ का कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का पच्चीसवीं बार अनुभव
(लोहपात्र में)

ता० ३०/७/७ को पूर्वोक्त सोलहवें कच्छप से निकले १५ तोले १।। माशे पारद गंधक में से १ तोले १ माशे पारद और ९ तोले पारद गंधक सब १० तोले १ माशे जिसमें ११/१५ १/२ भाग पारा था। नये लोहे के कच्छपयंत्र में भस्ममुद्रा से बदकर ३।। सेर जल से भरे चीनी के तसले पर रख १२ घंटे में पाव भर की १ और आध आध सेर की १५ कुल १६ आंचे दी तो गंधक ज्यों का त्यों बेपिघला रखा रहा।

नं० २६ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का छब्बीसवीं बार अनुभव
(लोहपात्र में)

ता० २/८/०७ को पूर्वोक्त गंधक पारद को जो पिघला तक न था, लोहे के पात्र से जुदा न कर ज्यों का त्यों भस्ममुद्रा से बंद कर पूर्ववत् जल भरे पात्र पर रख ऽ।। सेर की १ और ऽ।।। की १५ सब १६ आंचे दी तो गंधक की ढेरी सी ज्यों की त्यों बनी रही किन्तु उसके ऊपरी भाग पर कुछ सफेदी और कठिनता आ गई थी। पारद निजरूप में १० माशे और पारद गंधक ९ तोले ३ माशे कुल १० तोले १ माशे पूरा निकल आया।

सम्मति–आगे और अधिक आंच दी जावे।

नं० २७ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का सत्ताईसवीं बार अनुभव
(सैनक में)

ता० ३/८/०७ को पूर्वोक्त तेईसवें कच्छप में से निकले २ तोले पारद

और १ तोले २ माशा पारद मिश्रित गंधक और ७ माशे पारद के नीचे की राख में १।। तोले नया गंधक और दे पूरा ५ तोले कर उसी सैनक में उपरोक्त विधि से बंदकर ऽ। की १ आंच और डेढ़ पाव की ३ (जो नोकरों की असावधानी की वजह से लग गई ११) कुल १६ आंचे दी तो पारद निज रूप में १ तोले ८ माशे और गंधक पारद १ तोले ५ माशे निकला जो कुछ कड़ा भी था और कुछ अंश नीचे सैनक में लगा रह गया जिसको खुरचना उचित न समझा। यह अनुमान में ६ माशा होगा। सब ३ तोले ८ माशे समझना चाहिये। १। तोले के करीब गंधक का क्षय हुआ।

सम्मति–गंधक पूरा नहीं जलता अग्नि या समय कम है।

नं० २८ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का अट्ठाईसवीं बार अनुभव
(सैनक में)

ता० ५/८/०७ को पूर्वोक्त १ तोले ८ माशे पारद और १ तोले ५ माशे पारद गंधक में ६ माशे नया गंधक और दे कुल ३ तोले ७ माशे को उसी सैनक में उपरोक्त विधि से बंद कर पाव भर ऽ।। सेर की २ और ढ़ाई ढ़ाई पाव की १५ कुल १७ आंच दी तो पारद निज रूप में १ तोले ६ माशे और पारदमिश्रित जला गंधक १ तोले ७ माशे निकला। कुल वजन ३ तोले १ माशे निकला। रखा गया था ३ तोले १ माशे पुराना और ६ माशे नया अतएव ६ माशे नये गंधक वजन ही छीजा। देखने से आज सैनक चटकी मिली।

सम्मति–मेरी समझ में ढ़ाई पाव की आंच से कम और तीन पाव की आंच से अधिक आंच देना ठीक नहीं।

नं० २९ का कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का उन्तीसवीं बार अनुभव
(लोहापात्र में)

ता० ५/८/०७ को उपरोक्त २५ वीं क्रिया का १० माशे पारद और ९ तोले ३ माशे पारद गंधक कुल १० तोले १ माशे को लोहे को कच्छप में रख भस्ममुद्रा से बंदकर उसी जल भरे पात्र में रख ऽ।। सेर की १ आंच और सेर सेर भर की १६ आंचे कुल १७ आंचे दी तो पारद निजरूप में ६ माशे और पारद गंधक ९ तोले ७ माशे अर्थात् पूरा १० तोले १ माशे निकल आया।

सम्मति–तोल में अन्तर अबकी बार भी न पड़ा या तो अग्नि कम है (जल तो अधिक है नहीं) या यह कारण है कि गंधक जला हुआ कम अंश में है इसलिये क्षय नहीं होता, नया गंधक देकर देखा जावे।

नं० ३० कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का तीसवीं बार अनुभव
(लोहपात्र में)

ता० ६/८/७ को पूर्वोक्त ६ माशे पारद और ९ तोले ७ माशे पारद गंधक में (नवें और सोलहवें कच्छप से निकले १५ तोले १।। माशे पारद गंधक में से बचा) ५ तोले पारद गंधक और मिला दिया अर्थात् नवें और सोलहवें कच्छप का सब १५ तोले ७।। मा० पारा यहां ले लिया गया। (इसमें ११।। तोले पारा और ३ तोले ७।। माशे गंधक है) और इसमें २।। तोले नया गंधक और दे सब १७ तोले ७ माशे को लोहे के कच्छपयंत्र में बंदकर उसी जल भरे पात्र पर रख १२ घंटें में ऽ।। सेर ऽ।।। तीन पाव ऽ१ सेर की ३ और सवा सवा सेर की १५ कुल १८ आंचे दी तो पारद निज रूप में ६ माशे और पारद गन्धक १६ तोले ९ माशे निकला अर्थात् (१७ तोले ७ माशे में) १७ तोले ३ माशे वजन निकला ४ माशे घटा)

सम्मति–गन्धक का क्षय अब भी नहीं हुआ, आंच बढ़ाई जावे। ऽ।।। ऽ१ ऽ१।। की दी जावे।

नं० ३१ का कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का इकतीसवीं बार अनुभव
(लोहपात्र में)

ता० ११/८ को पूर्वोक्त ६ माशे पारद और १६ तोले ९ माशे पारद गन्धक यानी १७ तोले ३ माशे में २ तोले ९ माशे नया गन्धक और मिला। पूरा २० तोले कर (इसमें ११। तोले पारद और ३।। तोले पुराना और ५ तोले नया गन्धक है) लोहे के कच्छप में बंद कर उसी जल भरे पात्र पर रख १२ घंटे में ऽ।। ऽ१। ऽ१।। सेर की ४ और पौन दो दो सेर कों १० कुल १४ आंच दी तो पारद निज रूप में ५ माशे और पारद गन्धक १९ तोले ४ माशे निकला अर्थात् (२० तोले में) १९ तोले ९ माशे निकला। ३ माशे घटा।

सम्मति–गन्धक के क्षय न होने का कारण फिर समझ में नहीं आया। अग्नि तीव्र है। थोड़ी और अधिक दी जावे।

नं० ३२ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का बत्तीसवीं बार अनुभव
(लोहपात्र में)

ता० १४/८/७ को पूर्वोक्त ५ माशे पारद और १९ तोले ४ माशे पारद गन्धक कुल १९ तोले ९ माशे को लोहे के कच्छप में बंद कर उसी पानी भरे पात्र में रख १२ घंटे में ऽ१ सेर ऽ१। सेर ऽ१।। सेर ऽ१।।। सेर की ४ और दो दो सेर की ७ कुल ११ आंचे दी गई तो पारद निज रूप में ४।। माशे और पारद गंधक १९ तोले ३।। माशे कुल (१९ तोले ९ माशे में) १९ तोले ८ माशे निकला अर्थात् सब निकल आया। १ माशे तोल का अंतर समझना चाहिये।

नं० ३३ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का तेतीसवीं बार अनुभव
(लोहपात्र में)

ता० २० से २३/८/७ तक ४।। माशे पारद और १९ तोले ३।। माशे पारद गंधक कुल १९ तोले ८ माशे को लोहे के कच्छप में रख हलकी नई कटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा कर छोटे कूंडे पर जिसमें २।। सेर जल भरा जाता था, रख १२ घंटे में ऽ१ ऽ१। ऽ१।।। की ३ पौने दो दो सेर की ३ और दो दो सेर की ७ कुल १३ आंचे दी। हर घंटे में १ बार पानी गरम डालना पड़ा। खोला को पारद निजरूप में ४ माशे और पारद गंधक १८ तोले ८ माशे अर्थात् कुल १९ तोले निकला। ८ माशे घटा।

सम्मति–गंधक क्षय नहीं होता। पानी इससे कम नहीं हो सकता। कटोरी हलकी कर दी गई। अतएव अग्नि तीव्र करने को कोयले की अग्नि दी जावे।

नं० ३४ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का चौंतीसवीं बार अनुभव
(लोहपात्र में)

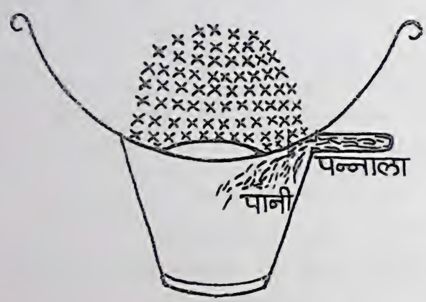
ता० २५ से २७/८/०७ तक पूर्वोक्त ४ माशे पारद और १८ तोले ६ माशे पारद गंधक (यह १८ तोले ८ माशे था, पीसने पर २ माशे खरल में छीज गया) कुल १८ तोले १० माशे को लोहे के कच्छप में रख हलकी लोहकटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा कर बालटी भर (जिस में ८।। सेर पानी आता ता और बाल्टी कम चौड़ी होने से जिसमें केवल कच्छप की कटोरी की बराबर नीचे का पेंदा भीगती थी) रख पाव पाव भर कोयलों की ३ आंचे और डेढ़ डेढ़ पाव की ६ कुल ९ आंचे दीं। हर आंच पर दो बार गर्म पानी डालना पड़ा। खोला तो पारद निजरूप में २ माशे और पारद गंधक १८

तोले निकला। ८ माशे घटा।

सम्मति—कोयले बढ़ाये जावें और जल्दी जल्दी आंच दी जावे। आध सेर कोयलों की आंच हर घंटे पर लगनी चाहिये।

नं० ३५ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का पैंतीसवीं बार अनुभव
(लोहपात्र में)

ता० २८ से ३० तक पूर्वोक्त २ माशे पारद और १८ तोले पारद गंधक को लोहे की कच्छप में रख हलकी लोहकटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा कर उसी जल भरी बालटी पर (जिसमें इस बार किनारे पर एक पनाला करीब ८ अंगुल लंबा इस वास्ते लगाया गया था कि पानी कम हो जाने पर उसमें होकर पानी अंदर पहुंच जाय और कच्छप बालटी से उठाना न पड़े) रख पाव पाव भर कोयलों की ३ आंचे और ऽ। की १ और आध आध सेर की ११ कुल १५ आंचे ५ प्रहर में दी गईं। बाद को जैसे का तैसा पानी पर रखा छोड़ दिया। सवेरे देखा तो कुछ गर्म था और पानी पेंदे से हट गया था इसलिये दो पहर को खोला तो १।। माशे पारद और १७ तोले ४ माशे गंधक पारद निकला ८।। माशे घटा।



नं० ३६ कच्छपयंत्र
उपरोक्त क्रिया का छत्तीसवीं बार अनुभव
(लोहपात्र में)

ता० ३१ से २/९/०७ तक पूर्वोक्त १७ तोले ४ माशे पारद गंधक और १।। माशे पारद को लोहे के कच्छप में रख हलकी लोहकटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा कर उसी बाल्टी पर (जिसमें इस बार मिट्टी भर ४ अंगुल खाली रख केवल ४। सेर पानी भरा गया था) रख ७ बजे से ऽ।। सेर की फिर ८ बजे से ऽ।।। की आंच हर घंटे पर लगाई गई। ६ बजे तक सब १२ आंचें लगीं तो पारद गंधक १७ तोले १ माशे निकला। ४।। माशे घटा।

सम्मति—अग्नि पूरी दी गई फिर भी गंधक का क्षय नहीं हुआ न अग्नि कम है न जल अधिक है। समझ में नहीं आता है कि क्या कर्तव्य है।

पारद उत्थापन
कच्छपयंत्र से निकले पारद गंधक का डौरू द्वारा पातन
प्रथम बार

ता० ११ से २३/९ तक २७ वें कच्छप का ३ तोले १ माशे और पैंतीसवें कच्छप का १७ तोले १ माशे कुल २० तोले २ माशे को जिसमें १४ पारा और ६ तोले के करीब गंधक है किन्तु वास्तव में सब ३५ तोले के करीब गंधक पड़ा था जिसमें से ६ तोले रह गया है, रोगनी हांडियों में रख डौरू कर भस्म मुद्रा से बंदकर कपरौटी कर सुखा दिया। दो दिन रखा रहा।

ता० २२ को भट्टी पर १ प्रहर मंदाग्नि और ३ प्रहर समाग्नि दी। ऊपर भीगा कपड़ा डाला गया बाद को चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० २३ को सवेरे खोला गया तो ऊपर की तमाम हांडी में उड़ा हुआ काले रंग का गंधयुक्त मूर्छित पारद लग रहा था। (क्रिस्टल रूप में)। यह ऊपर काला था और नीचे श्वेत सा था, इसको निकाला तो ३ तो० १ माशा हुआ, इसमें में से पारा न निकल सकता था। नीचे की हांडी में ६ तोले ५ माशे दवा ढ़िम्मे की शकल की काले रंग की थी यानी ऊपर नीचे की हांडियों की कुल दवा १२ तोले ४ माशे निकली। ७ तोले ९ माशे छीजन गई। गंधक विद्यमान् रहने से इसमें पारे का कुछ भी अंश पृथक् हाथ न लगा और न प्रत्यक्षरूप में दीख पड़ा।

उपरोक्त पारद गन्धक का द्वितीय बार पातन

ता० २४/९/०७ को पूर्वोक्त १२ तोले ४ माशे पारद गंधक को पीस उन्हीं हांडियों में फिर डौरूकर भस्म मुद्रा से बन्द कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २५ को ६ बजे से समाग्नि दी—३ बजे खुद जाकर देखा तो गंधक की गंधक आने की शंका हुई। इस वास्ते डौरू चटक जाने की शंका से ३ बजे काम बंद कर दिया और हांडी को उतार लिया।

ता० २६ को सवेरे खोल देखा गया तो हांडी चटकी न थी, ऊपर की हांडी में २ तोला ११ माशे गंधकयुक्त पारद निकला। (इसका रंग प्रथम बार की भांति काला न था, श्वेतता लिये था) जिसमें पारे के परमाणु दीखते थे। किन्तु पृथक् न हो सका। नीचे की हांडी में ६ तोले ४ माशे ललाई लिये काली दवा मिली यानी कुल ९ तोला ३ माशे वजन निकला। ३ तोले १ माशे छीज गया।

सम्मति—६ तोले गंधक की जगह १० तोले १० माशे तोल घट चुकी फिर भी पारा पृथक् नहीं हुआ।

शंका—क्या बंद यंत्र में गंधक विद्यमान रहते भी पारा उड़ता है और खुले में नहीं।

अनुमान से समाधान—अवश्य उड़ता है, नहीं उड़ता तो शीशी में गंधयुक्त पारद की नाल उड़कर न जमती।

उपरोक्त पारद गंधक का तीसरी बार पातन

ता० २६/९ को पूर्वोक्त ९ तोले ३ माशे पारद गंधक को पहली भांति फिर डौरू में बंद कर दिया।

ता० २९ को पहली ४ प्रहर की अग्नि दी।

ता० ३० को सवेरे खोला तो ऊपर की हांडी में बेसनी रंग की भस्म में मिले पारद के रवे दीख पड़े जो इकट्ठा करने पर ३ तोले हुए, ६ माशे पारद नीचे की हांडियों में निकला। दोनों हांडियों का पारा तोल में ३ तो० ६ माशा हुआ और नीचे की हाँडी का चूर्ण (जो श्वेततायुक्त ताम्रवर्ण का सा था) ४ तोलें ३ माशे और पारा छानने से निकला ४।। माशे कुल ४ तोले ७।। माशे चूर्ण निकला। (९ तोले ३ माशे वजन में) ८ तोले १।। माशे हाथ लगा—१ तोले १।। माशे छीज गया।

सम्मति—गंधकयुक्त पारद के पातन में पहली बार पारद गंधक का अंश अधिक रहने से काले रूप में उड़कर जमा था और बहुत सा भाग बेउड़ा ही रह गया होगा। दुबारा पातन में गंधक का अंश कम रहने से श्यामता घट कर सफेदी आई। तीसरी बार गंधक बहुत कम रह जाने से पीतता दीख पड़ी अर्थात् जब तक ऊपर की हांडी में श्याम रहे जान लो कि गंधक का क्षय नहीं हुआ—गंधक का क्षय होने पर क्रम से सफेदी और पीतता उत्पन्न होती है। (अनुमान है कि अन्त में रक्तता होती होगी)

उपरोक्त पारद गंधक का चौथी बार पातन

ता० ३/१० को पूर्वोक्त ४ तोले ७।। माशे दवा को पहली ही भांति डौरू में बंद कर दिया।

ता० ८ को ४ प्रहर सामान्य अग्नि भट्टी पर दी।

ता० ९ को खोला तो (ऊपर की हांडी में पारे के रवे दीख पड़ते थे और बहुत हलकी पीली झलक युक्त श्वेत भस्म सी हांडी पर छाई हुई थी) ८ माशे पारा ऊपर की हांडी में निकला–नीचे की हांडी में पारा बिलकुल नहीं था। ४ तोले ७।। माशे में से ४ तोले ५ माशे हाथ आया। २।। माशे छीजन गई।

उपरोक्त पारद गंधक का पाँचवी बार पातन

ता० ११/१०/०७ को पूर्वोक्त ३ तोले ९ माशे पारद गंधक को पहली ही भांति डौरू में बंद कर दिया।

ता० १२ को ७ बजे से रात के ९ बजे तक भट्टी पर समाग्नि दी गई। ऊपर भीगा कपड़ा डाला गया बाद को जैसे का तैसा रखा छोड़ दिया।

ता० १३ के सवेरे खोला तो २।। माशे पारा और २ रत्ती कम ३ तोले ६ माशे हलके कत्थई रंग की राख निकली।

सम्मति–इस २ रत्ती कम ३।। तोले राख में आधी यानी १ रत्ती कम १ तोले ९ माशे राख को, मोटे मिट्टी के चिरागों के किनारे घिसे संपुट में भर भस्ममुद्रा कर कपरौटी मुखा दिया। फिर ता० १७ को ५ सेर कंडों की आंच दी गई तो १तोले ४ माशे राख करीब २ पहले से ही रंग की निकल आई जो खुरखरी और कत्थई रंग की थी–यह बात निश्चय करने योग्य है कि जब पारद और गंधक दोनों आग्नेय हैं तो फिर यह क्या चीज बाकी रह गई।

जौनपुर की अलकीमियां कमेटी के बने पातन यन्त्र अर्थात् चीनी फिरे मिट्टी के डौरू द्वारा पारद उत्थापन का अनुभव (प्रथम भाग)

ता० २०/५ को बाजारी पारेका इष्टिका यंत्र से गंधक जारण के अनुभव में उत्पन्न हिंगलू १ तोले ११ माशे को चिनी फिरे पातनयंत्र में रख दो भाग सैंधव और एक भाग राख से बनी भस्ममुद्रा से संधि बंद कर ऊपर से मारकीन की २ कपरौटी कर दी गई और यंत्र सूखने को रख दिया गया।

ता० २१/२२ को फुर्सत न मिलने की वजह से यंत्र रखा रहा और सूखता रहा।

ता० २३ को ७ बजे से ३ बजे तक उँगली सी पतली बबूल की डंडियों की ऐसी मंदाग्नि दी गई जो पेंदे में ही लगी और ऊपर भीगा कपड़ा रखा गया। बाद को आंच अलग कर जैसे का तैसा गर्म चूल्हे पर रखा रहने दिया।

ता० २४ को खोला गया तो ।।ﴀ) ४ रत्ती पारा और १ तोले राख निकली। ८ रत्ती छीजन गई, पारा कुछ नीचे के पात्र की गर्दन में लगा हुआ मिला।

विचार–अग्नि मंद रही, कुछ विशेष होनी चाहिये थी। यद्यपि यंत्र की संधि बहुत ढ़ीली और अनमिल थी किन्तु इस भस्म मुद्रा के कारण पारा संधि से बाहर निकला न दीख पडा। अनुभव आशा जनक हैं।

उपरोक्त क्रिया का दूसरी बार अनुभव (द्वितीय भाग)

ता० २५/५ को हकीम मुहम्मद यूसफ साहब की चाये की क्रिया का जो पारा जड़िया में मिला रह गया था, उस ५। तोले को पीस बारीक कर पातनयन्त्र में रख केवल पानी और गोंद के पानी के साथ घुट नमक के कुश्ते से दोनों पात्रों को जोड़ धूप में रख दिया, ७ बजे से ३ बजे तक सुखाया। बाद को मुलतानी की कपरौटी कर फिर धूप में सूखने को रख दिया।

ता०२६ को १ प्रहर मंदाग्नि जो पेंदे में ही लगी और ३ प्रहर कुछ अधिक अग्नि दी, बाद को आंच बंद कर यन्त्र को ज्यों का त्यों गर्म चूल्हे पर रखा रहने दिया।

ता० २७ को पानी डाल डाल जोड़ खोलना चाहा परन्तु न छूट सका तो उक्त यन्त्र को पानी भरी नांद में रात भर पड़ा रहने दिया।

ता० २८ के सुबह को पानी से निकाल खोला तो जल्द खुल गया, थोड़ा सा पानी यन्त्र के अन्दर चला गया था, अतएव पानी निचोड़ सुखा पारे को छुटा तोला तो १–) भर निकला, ऊपर के डौरू में अधिक और नीचे के डौरू की गर्दन में थोड़ा था, नीचे के पात्र में जो भीगा ढिम्मा सा मिला उसको भी सुखा तौला तो १।। तोले हुआ, इसमें पारद बहुत थोड़ा हो तो हो।

विचार–नमक के कुश्ते की (निष्केवल) मुद्रा अधिक कड़ी हो जाती है, बाहरी जोड़ पर हो तो हो भीतर कभी न करनी चाहिये। यह यन्त्र जोड़ पर खांचेदार था और इसमें खांचे के भीतर भी भस्ममुद्रा दी गई थी, भीतर पानी न पहुँचने से कठिनता से खुली। यह मुद्रा खराब संधियों में भी पारद को रोकती है।

उपरोक्त क्रिया का तीसरी बार अनुभव

ता० ३०/५/७ को खांचेदार छोटे डौरू में चोयेंवाले पारे का १ तोले ७ माशे सफूफ और १।। तोले पहले डौरू की बची राख कुल ३ तोले १ माशे वजन रख साधारण नमक में मिली हुई तिहाई भाग राख से बनी भस्ममुद्रा से अन्दर बाहर कर बंद कर दिया और १ घंटे भर सूखने पर २ कपरौटी टुकरी कर दी गई।

ता० ३१ को यह यन्त्र धूप में सूखता रहा।

ता० १/६ को खोला गया तो संधि पर पानी डालकर खुल गया, ऊपर के पात्र में ७ माशे पारा मिला। कुछ दो चार रवे नीचे के पात्र की गर्दन में मिले। १ तो० ९ मा० राख निकली अर्थात् ३ तोले १ माशे वजन में कुल २ तोले ४ माशे वजन मिला। ९ माशे छीजन गई।

सम्मति–नमक के कुश्ते की मुद्रा खोलने में कठिनता करती है और साधारण नमक की मुद्रा सरलता से खुल जाती है और काम वैसा ही देती है, इस कारण खांचेदार जोड़े में तो अवश्य साधारण लवणमुद्रा ही करनी चाहिये।

उपरोक्त क्रिया का चौथी बार अनुभव (तृतीय भाग)

ता० ३०/५/०७ को साधारण मध्य शुद्ध पारद की इष्टिकायंत्र में समान गंधक जारण से उत्पन्न (११/२) ५।। तोले पिष्टी (जिसमें ५ तोले पारद था) को पीस जौनपुर वाले बिना खांचे के बड़े डौरू में बन्द कर दिया गया, इस डौरू के किनारों पर भी कांच फिरा था, इसलिये वे घिसे न गये और उनके बीच में जो मोटी संधि रहती थी वह नमक के कुश्ते और समान अंश राख से बनी भस्ममुद्रा से अन्दर बाहर बंद कर टुकरी की दो कपरौटी कर दी गई।

ता० ३१ को यह यंत्र धूप में सुखा दिया गया।

ता० १/६ को यह यंत्र रखा रहा।

ता० २ को १ प्रहर मंदाग्नि और ३ प्रहर समाग्नि दी गई।

ता० ३ को यह यंत्र संधि पर डालकर खोला गया तो शीघ्र खुल गया, ऊपर के पात्र में २ तोले ८ माशे पारा और नीचे के पात्र में ३ माशे यानी कुल २ तोले ११ मा० पारा निकला। १ तोले ५ माशे राख निकली, १ तोले

२ मा० छीजन गई।

विचार–बिना खांचे पर यह कुश्ते नमक की मुद्रा भी ठीक है, छीजन बहुत ज्यादा गई। कुछ पारे के रवे यंत्र के अन्दर कांच के सूक्ष्म गड्ढ़ों में भी समाये रह गये।

उपरोक्त क्रिया का पाँचवीं बार अनुभव

ता० ३०/५/०७ मई को साधारण शुद्ध पारद का इष्टिका यंत्र में समान गंधक जारण से उत्पन्न ५।। तोले पिष्टी को जिसमें ५ तोले पारद था पीस बाजरी कांच फिरी हांडियों में जिनके किनारे कांच बहुत कम फिरे होने के कारण चकले पर घिस लिये-गये थे। (यद्यपि घिसने से निःसंधि हो गये थे किन्तु किनारों की चौड़ाई कम ही थी) रख बे सांस मिला केवल बाहर से नमक के कुश्ते और लकड़ी की राख समान अंश से बनी भस्म मुद्रा से जिसमें गोंद न पड़ा था बंद कर टुकरी की २ कपरौटी कर दी गई।

ता० ३१ को धूप में सूखता रहा।

ता० १/२/३ को यह यंत्र रखा रहा।

ता० ४ को १ प्रहर मंदाग्नि और ३ प्रहर समाग्नि दी ऊपर भीगा कपड़ा रखा गया, बाद को जैसे का तैसा चूल्हे पर रखा रहने दिया।

ता० ५ को खोला गया तो ऊपर की हांडी में ३। तोले पारा मिला दो एक रवे पारे की नीचे की हांडी में ६ माशे राख निकली, १।।। तोले छीजन गई।

(छीजन इसमें भी बहुत ज्यादा गई, दोनों हांडियों में काला रंग चढ़ गया, केवल पेंदें में जहां अग्नि लगती थी वहां काला रंग न था अवश्य गंधक का अंश ही काला रंग है, और मुमकिन है कि इसमें कुछ पारद का अंश भी हो)।

ता० ७ को इन हांडियों को धोया और धोवन के पानी को नितारा तो काली राख मिली जिसको सुखाया तो कुछ रवे पारे के दीख पड़े, इन हांडियों के अन्दर फिरा कांच चिकना नहीं है, इसी कारण से यह रवे पारे के रह जाते हैं।

उपरोक्त क्रिया का छठी बार अनुभव

ता० ८/६/०७ को जौनपुर वाले बड़े डौरू से निकली १ तोले ५ माशे राख और बाजारी हांडियों के डौरू से निकली ६ माशे राख और इन दोनों डौरूओं के धोने से निकली ३ माशे राख कुल २ तोले २ माशे वजन को जौनपुर वाले खांचेदार छोटे डौरू में रख भस्ममुद्रा संधि बंद कर धूप में सुखा दिया।

ता० ९ को ११ घंटे मंदाग्नि दे चूल्हे पर रखा रहने दिया।

ता० १० को संधि पर पानी डाल खोला गया तो ऊपर के पात्र में ११ माशे पारा और नीचे के में १ माशे कुल १ तोले पारा मिला और नीचे के पात्र में ११ माशे राख निकली ३ माशे छीजन गई अभी पारा और है।

विचार–इन डौरूओं में मंदाग्नि से पारा ठीक नहीं उड़ता तीव्राग्नि देनी चाहिये, कारण यह कि पेंदें कम चौड़े और उँचाई ज्यादा है यह आकार डौरू का हांडी से अधिक लाभदायी नहीं।

असंतोषदायी फल–अर्थात् १० तोले पारद से बनी पिष्टी की भस्म के पातन में ७ तोले १० माशे पारद हाथ आया ३ माशे और भी निकलने योग्य रह गया, तो भी २ तोले ६ माशे अर्थात् चतुर्थांश क्षय हुआ।

उपरोक्त क्रिया का सातवीं बार अनुभव (चतुर्थ भाग)

ता० १०/६/०७ को साधारण शुद्ध पारद में ढाई गुनी गंधक जारण से इष्टिका यंत्र में उत्पन्न पिष्टी के डिम्मे को जो तोले में १०।।) भर था बारीक पीस उसका आधा ५।) रुपये भर को कांच फिरी बाजारी हांडियों में (जिनके किनारे आज थोड़े और घिस लिये थे) रख बेमांस दर्ज मिला नमक के कुश्ते और नमक की राख समान अंश से बनी भस्ममुद्रा संधि बंद कर दो कपरौटी कर धूप में सुखा दिया।

ता० ११ को १२ घंटे मंद और समाग्नि दी गई और यंत्र के ऊपर आठ दस तह का भीगा कपड़ा डालते रहे, बाद को जैसे का तैसा चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० १२ को यंत्र की संधि पर पानी डाल खोला गया तो (ऊपर की हांडी में २।।। तोले पारा निकला और नीचे के हांडी में १।।। तोले राख यानी कुल ४।। तोले वजन मिला ९ माशे छीजन गई ऊपर की हांडी में से ५ माशे पारा जो छिद्रों में भर गया था वह ब्रुश से छुटाने से मिला था।)

उपरोक्त क्रिया का आठवीं बार अनुभव

ता० १०/६/०७ जून को साधारण शुद्ध पारद में ढाई गुनी गंधक जारण से इष्टिका यंत्र में उत्पन्न पिष्टी के डिम्मे को जो तोल में १०।।) भर था बारीक पीस उसका आधा ५।।) भर जौनपुरवाले डौरू में रख डौरू कर नमक के कुश्ते और नमक की राख समान अंश से बनी भस्ममुद्रा से भीतर बाहर संधि मोटे कपड़े की दो कपरौटी कर धूप में सुखा दिया।

ता० ११/१२ को यह यन्त्र धूप में सूखता रहा।

ता० १३ को १ पहर मंदाग्नि और ३ पहर पूर्णाग्नि दी गई और ऊपर आठ दस तह का भीगा कपड़ा डाला गया बाद को जैसे का तैसा चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० १४ को खोला गया तो ऊपर के पात्र में ३।।। तोले पारा और नीचे के पात्र में ५ माशे यानी कुल ४ तोले २ माशे पारा और नीचे के हांडी में ५ माशे राख निकली इस तरह कुल ४ तोले ७ माशे वजन हाथ लगा। ७ माशे छीजन गई तीव्र अग्नि और ऊपर खूब शीतलता देने से अधिक लाभ हुआ फिर भी पंचमांश छीजन गई।

(तीव्र अग्नि और ऊपर खूब शीतलता देने से अधिक लाभ हुआ फिर भी पंचमांश छीजन गई)

उपरोक्त क्रिया का नववीं बार अनुभव

ता० १५/६/०७ को सातवें और आठवें पातन से निकली प्रथम बार १ तोले ९ माशे दूसरी बार ५ माशे कुल २ तोले २ माशे राख को जौनपुरी छोटे डौरू में रख भस्ममुद्रा से संधि बंद कर दो कपरौटी कर सूखने को रख दिया।

ता० १७ को खोला गया तो पारा ऊपर के पात्र में रवे रूप में मिला और नीचे के पात्र में जो पारा मिला वह अपने रूप में मिला यह ऊपर के में से गिर पड़ा होगा, दोनों पात्रों का पारा तोल में १ तोले ४ माशे हुआ, ऊपर नीचे के पात्रों के पारा छानने से जो राख निकली वह ३ माशे हुई, कुल १ तोले ७ माशे वजन मिला ७ माशे छीजन गई।

फल १०) भर पारे की १०।।) भर पिष्टी के पातन में (जो तीन बार करना पड़ा) २।।।+४३) १।–)=८।) भर पारा मिला १।।।) भर पारा छीज गया।

बिडप्रयोग का अनुभव दोलायन्त्र से

ता० २६/१२/०८ को चक्रवर्ती औषधालय के सिंग्रफ से निकले ८ तोले पारे को १ तोले बिड़ के साथ थोड़ा बिड़ डाल तप्त लोह खल्व में घोटा। मिलता न देख जंभीरी रस डाल २ घोटना आरम्भ किया, जंभीरी रस से झाग उठे, पारा कुछ मिला।

ता० २६/२७ दोनों दिन ८,८ घंटे घुटा, जंभीरी रस ३/४ बोतल पड़ा।

ता० २८ को धूप में बिना रस डाल घोटा, गाढा होने पर ३ तो० ६ माशे ३ रत्ती पारा पृथक् हो गया बाकी गाढी चीकट को गाढे कपड़े पर रख लिया

और बाकी को धोकर उसी कपड़े पर डाल दिया, बिना रस से छुटना मुश्किल था।

ता० २९ को कल का पृथक हुआ ३ तोले ६ माशे ३ रत्ती पारा भी उसी कपड़े में रख पोटली बांध दी।

ता० ४/१/९ को ४ सेर गोमूत्र से पूरित हांडी में दो लाकर ९ बजे से मंदाग्नि देनी आरम्भ की दिन रात काम चला।

ता० ६ की रात को ८ बजे काम बन्द कर दिया, अर्थात् २।। दिन काम चला। हांडी को भट्टी पर रखी रहने दिया, सब ४ १०।। सेर गोमूत्र पड़ा।

ता० ७ के सवेरे खोला तो ३ तोले ११ माशे पारा कपड़े पर एकत्र मिला बाकी बिड में मिला हुआ था बिड को गर्म पानी से धो नितार सुखाया तो २ तो० ९ माशे ३ रत्ती पारा और निकला, अर्थात् ६ तोले ८ माशे ३ रत्ती पारा और निकला, १ तोला ३ माशा ५ रत्ती दवा में मिला रह गया बिड की धुली राख ८ माशे ६ रत्ती निकली जो चिकनी काली कज्जली रूप थी हांडी में गोमूत्र निकाल देखा तो उसके पेंदें में कहीं से गाद जम रही थी उसको रकावी में निकाल सुखाया तो कोई रवा पारे का न दीख पड़ा अतएव उसे धो सुखा दिया जो बहुत बारीक और कंजई रंग की थी और तोल में ४।। तोले थी।

सम्मति–यह दोला भली भांति पारद के पृथक् करने में समर्थ न हुआ क्या मूत्र को छोड़ अम्ल में दोला करना अधिक उपकारी होता?

ता० १३ को उक्त काली और कत्थई दोनों प्रकार की भस्मों में से पृथक् पृथक् चार चार माशे भस्म को लोहे की रकावी में रख शीशी के ढक्कन से ढक स्प्रिट लैम्प की २०, २० मिनट दोनों को आंच दी तो दोनों में से पारा उड़कर शीशे के ढक्कन पर जमा किन्तु काली भस्म में से अधिक उड़ा, अतएव इन दोनों भस्मों को जो तोल में ५ तोले २ माशे थी लोहे के डौरू में भर बंद कर दिया।

ता० १४ को ८ बजे से रात के ८बजे तक १२ घंटे आंच दी, डौरू पर भीगा कपड़ा न डाला गया।

ता० १५ को खोला तो ४ माशे ७ रत्ती पारा निकला, अर्थात् सब ७ तोले १ माशे २ रत्ती पारा हाथ लगा, १० माशे ६ रत्ती घट गया, राख ४ तोले ३ माशे रह गई।

बिडप्रयोग का अनुभव (जलयंत्र से)

ता० १५/१/०९ को उक्त बिड दोला से निकले ७ तोले १ माशे २ रत्ती पारद और १ तोले बिड दोनों का लोह खल्व में बूंद बूंद जंभीरी रस डाल गाढा घोटा। १५, २० मिनट में पारा मिल गया २ घंटे घुटा करीब ७ माशे जंभीरी रस पड़ा।

ता० १६ को सबेरे बिना रस डाल घोटा तो गाढा होने पर पारे के रवे इकट्ठे होने लगे और २, २।। घंटे में ३ तोले १० माशे ६ रत्ती पारा पृथक् हो गया बाकी ३ तो० २ माशे ४ रत्ती बिड में मिला रहा, इस पारद मिश्रित बिड को खरल में खुरच टिकिया सी बना आक के पत्ते पर रख लिया जिसमें बहुत सूक्ष्म कण दीख पडते थे फिर उस पृथक् हुए ३ तोले १० माशे ६ रत्ती पारे को १ तोले बिड़ के साथ जंभीरी रस डाल २ घंटे घोटा, फिर पतला ही खरल से खुरच पहली ही पिष्टी पर जमा सुखा दिया।

ता० १७ को ४ बजे तक सूखा बाद को ज्यों का त्यों जलयंत्र की कटोरी में रख कटोरी के किनारों पर अन्दर बाहर भस्ममुद्रा लगा यंत्र को बंद कर कमानियों से कस दिया।

जलयंत्र



ता० १८ को उक्त यंत्र में पानी भर भट्टी पर रख ९ बजे से मन्दाग्नि देना आरम्भ किया जिसके जल की गर्मी पहले दिन ६० नं० तक दूसरे दिन ७० तक, तीसरे दिन ७५ तक रही।

ता०२३ को ११बजे अर्थात् ३ दिन रात काम चलाकर बन्दकर यंत्र को जैसे का तैसा भट्टी पर रखा छोड़ दिया।

ता० २२ तो खोला तो यंत्र के ऊपर के पेंदे में पारद मिश्रित श्वेतभस्म छाई हुई थी जिसमें पारे के बड़े दो रवे दीखते थे नीचे की रकाबी में केवल जली हुई टिकिया जो बहुत हलकी हो गई थी ज्यों की त्यों रखी थी जिसके आसपास सिंदूर वर्ण की आभा थी जो सब रकाबी में फैलकर उसके किनारों तक भस्ममुद्रा से अन्दर प्रवेश कर गई थी, यंत्र के पेंदे से उस श्वेत भस्मयुक्त पारद को खुरच छान तोला तो ६ तोले ५ माशे पारा निकला ८ मा० २ रत्ती घटा, और छनी हुई राख जो भारी थी ६ माशे ६ रत्ती रही, नीचे की रकावी की टिकिया १ तोला ७ माशे ४ रत्ती थी जो मटैली रंग की थी और जिसमें पारा बिलकुल न दीखता था किन्तु जब इसमें से थोड़ी सी कोपीस लोहे की रकाबी पर रख शीशी के ढक्कन से ढक २० मिनट स्प्रिट लैम्प की आंच दी तो ढक्कन पर बहुत हलकी सफेदी जमी उसे पोंछा तो पारे के सूक्ष्म परमाणु दीखे जिससे सिद्ध हुआ कि इसमें भी थोड़ा पारा अवश्य है अतएव पारद पृथक् करने के लिये ता० ३१/१ को उक्त नीचे और ऊपर की २ तो० १ माशा (१० रत्ती छीज गया) राख को पीस उसी प्रकार जलयंत्र की रकाबी में (जो पहली रकाबी से १/२ इंच कम गहरी और हलकी की थी और जिसके लगाने से यंत्र में १।।। इंच ऊंचा अवकाश रहता था और २०।। छ० गंधक आती थी) पहली रकाबी योग से यंत्र के पेंदे में २। इंच ऊंचा अवकाश रहता था और उसमें २४।। छंटाक दानेदार गंधक समाती थी) रख भस्ममुद्रा से (जो दो दो तोले खरिया नोंन, लोह कीट को बारीक पीस भेंस के दूध के साथ घोट तय्यार की गई थी) बंद कर सुखा दिया।

ता० १/२ को ९ बजे से भट्टी पर अग्नि देना आरम्भ किया (जिसके जल की गर्मी ९ बजे से १२ बजे तक ६० नं० तक १२ से ४ तक ७५ नं० तक ४ से ८ तक ८० नं० तक और८ से १२ तक ९० तक रही) और रात्रि के १२ बजे तक अर्थात् ५ प्रहर अग्नि दी ता० २ को खोला तो यंत्र के ऊपर के पेंदे में श्वेत और मटैली रंग की रवेदार भस्म छाई हुई थीं। एक ओर के किनारे पर कत्थई रंग था जिस पर बबूलों के से चिह्न दीखते थे नीचे की रकाबी में केवल पिसी हुई दवा की कठिन टिकिया थी। ऊपर की कुल राख को खुरचा तो नीचे से काले रंग की निकली और तोल में ६ माशे ३ रत्ती हुई नीचे की टिकिया १ तोले ५ माशे ६ रत्ती थी अर्थात् दोनों भस्म २ तोले १ रत्ती हुई ७ रत्ती वजन घटा।

ता० ३ को ऊपर नीचे की दोनों भस्मों में से चुटकी से थोड़ी थोड़ी दहकते हुये कोयलों पर पृथक् पृथक् डाली तो नीचे भस्म न शीघ्र जलती और न धूआं देती थी और ऊपर शीघ्र जलकर धूआं देने लगती थी।

ता० ५ को ऊपर की भस्म को जो ५ माशे ६ रत्ती रह गई थी थोड़ी थोड़ी कर लोहे की रकावी पर रख शीशे के ढक्कन से ढक ७–८ बार १५–१५ मिनट स्प्रिट लैम्प की आंच दी तो १ माशे ६ रत्ती पारा और निकला १ माशे ६ रत्ती राख शेष रही अर्थात् सब पारा ६ तोले ६ माशे ६ रत्ती हाथ लगा ६ माशे ४ रत्ती घट गया। बाद को इस भस्म से पारद निःशेष न हुआ समझ १ घंटे स्प्रिट की और तीव्राग्नि दी तो शीशे के ढक्कन पर श्वेत काफूरी रंगत छा गई जिसमें उज्ज्वल चमकदार श्वेत कजलें थी अर्थात् भस्म में पारद विद्यमान होने से रस कपूर तैयार हो गया जो तोल में १ माशे हुआ।

(१) सम्मति–अबकी बार जल की गर्मी ९० डिग्री तक पहुंची जिससे कोई हानि नहीं पहुंची इससे अधिक होना सम्भव नहीं अतएव ९० डिगरी तक ही आगे अग्नि दी जावे।

(२) सम्मति–अबकी बार केवल नई भस्ममुद्रा की परीक्षा के लिये और शेष पारद के भस्म से पृथक् करने के लिये कर्म किया गया। भस्ममुद्रा अवश्य पहली भस्ममुद्रा से दृढ़ प्रतीत हुई किन्तु १६ घंटे के थोड़े से समय में गंधक जलकर पारद पृथक् न हुआ मुर्च्छित रूप में दोनों ऊपर जा जमें आगे यही मुद्रा काम में ली जावे और समय ७ दिन कर दिया जावे।

शंका–क्या यंत्र का अवकाश अब भी अधिक है और थोड़ा करना चाहिये।

जलयंत्र द्वारा
बिडप्रयोग का (उपरोक्त क्रिया का दूसरी बार अनुभव)

ता० १०/२/०७ को उक्त ६ तोले ६ माशे ७ रत्ती पारद और १ तोले ७ माशे ४ रत्ती बिड दोनों को बूंद बूंद जंभीरी रस के साथ १० बजे से घोटना आरम्भ किया १५–२० मिनट में पारा मिल गया फिर रस डाल १॥ घंटे और घोटने से पारा छुटने लगा २ बजे खुश्की आ जाने से और अधिक पारा इकट्ठा होता समझ थोड़ा रस डाल घोटा तो पारा फिर मिल गया किन्तु जब फिर गाढा हुआ तो ५ तोले २ माशे ३ रत्ती पारा छुट गया बाकी १ तोले ४ माशे ३ रत्ती बिड में मिला रहा इस पारद मिश्रित बिड़ को खरल में खुरच आक के पत्ते पर रख लिया जिसमें पारे के रवे दीखते रहे।

ता० १२ को उस पृथक् हुये ५ तोले २ माशे ३ रत्ती पारे को १ तोले बिड के साथ जँभीरी रस डाल १ घंटे पुतला ही खरल से खुरच उसी पहली पिष्टी पर जमा सुखा दिया।

ता० १३ को सूख जाने पर अर्कपत्र सहित पिष्टी को तोला तो ९ तोले ३ माशे हुई। बाद में उसे ज्यों का त्यों जलयंत्र की कटोरी में रख यंत्र के खांचे में और कटोरी के किनारों पर अन्दर बाहर उक्त भस्ममुदा कर यंत्र को बंद कर कमानियों से कस सुखा दिया।

ता० २१ को यंत्र में पानी भर भट्टी पर ९॥ बजे से अग्नि देना आरम्भ किया जिसके जल की गर्मी निम्नलिखित नकशे के अनुसार रही। पानी की घटी मिकदार उष्ण जल डाल पूरी की जाती थी।

नकशा

तारीख	घंटा	नं०गर्मी	विशेषवार्ता
२१/२/०९	९॥ बजे	—	कर्मारम्भ
	१०॥ बजे	५५ नं०	
	११॥ बजे	६४ नं०	
	२ बजे	७३ नं०	
	५ बजे	८० नं०	
	७ बजे	८१ नं०	
	८ बजे	७५ नं०	
	९ बजे रात	७७ नं०	
	१० बजे	७४ नं०	
२२/२/०९	८ बजे	८७	
	९बजे	९४ नं०	
	१०॥ बजे	८५ नं०	
	२ बजे	९२ नं०	
	३॥ बजे	९२ नं०	
	८ बजे रात	९० नं०	
	९ बजे	९२ नं०	
२३/२/०९	८ बजे	९३ नं०	
	९॥ बजे	९४ नं०	
	१०॥ बजे	९३ नं०	
	२ बजे	९५ नं०	
	३॥ बजे	९५ नं०	
	५ बजे	९२ नं०	
	८ बजेरात	८८ नं०	
	९ बजे	९२ नं०	
२४/२/०९	८ बजे	९० नं०	
	९ बजे	८९ नं०	
	१० बजे	९३ नं०	
	११ बजे	९० नं०	
	२ बजे	८९ नं०	
	३॥बजे	९१ नं०	
	५ बजे	९२ नं०	
	९ बजेरात	८९ नं०	
२५/२/०९	८ बजे	९० नं०	
	१०॥ बजे	९० नं०	
	२ बजे	९३ नं०	
	३॥ बजे	९४ नं०	
	४ बजे	८८ नं०	इस समय स्वयं जाकर देखा तो पानी की संसनाहट केसिवाय खिचरीके खदकनेका सा शब्द यन्त्र से आ रहा था अग्नि तीव्र कर देने पर यह शब्द और बढ़ गया। ऐसा शब्द पहले मुझे कभी नहीं सुन पड़ा था। शंका हुई कि यह शब्द काहे का था।
	८ बजे	९२ नं०	
	९ बजे	९१ नं०	
२६/२/०९	८ बजे	९५ नं०	
	१०॥ बजे	९३ नं०	
	११ बजे	९३ नं०	काम बन्द

ता० २६ को ११ बजे तक ५ दिन रात अर्थात् ४० प्रहर काम चला बन्द कर यंत्र को कोयले भरी भट्टी पर रखा छोड़ दिया।

ता० २७ को देखा तो यन्त्र में पानी के भीतर तली में बहुत सा लवण बैठ गया था जिसको ज्यों का त्यों रहने दिया यन्त्र को भट्टी से उठाया तो अग्निवेग से कमानियों के पृथक् हो जाने के कारण कटोरी पृथक् हो गई खुल जाने पर पानी फेंक उलटाकर देखा तो यंत्र के ऊपर के पेंदें में अर्थात् यंत्र के उस हिस्से में जिससे कटोरी ढक रही थी खाकी वस्तु छा रही थी जिसके भीतर भली भांति पारा जम रहा था जिसको पृथक् किया तो ५ तो० ११

मा० पारा और २ मा० ७ रत्ती पारद मिश्रित राख निकली नीचे के रकाबी में केवल जली हुई १ तोले ११ मा० की टिकिया निकली जिसके नीचे थोड़ा लवणसदृश श्वेत पदार्थ जमा हुआ था जिसको रस कपूर कहना संभव है टिकिया को तोडा तो नीचे और बीच में कत्थई रंग की थी और ऊपर की तरफ को एक तिहाई टिकिया काले रंग की अध जली थी जिससे सिद्ध हुआ कि आंच अबकी बार भी पूरी न लगी आग से टिकिया पेडे की भांति की मोटी न बना पतली चंदिया सी बना रखी जावे नीचे की रकाबी के खुरचने से १० मा० जले लोहे के पत्र पृथक् हो गये ऊपर के पेंदे की उक्त २ मा० ७ रत्ती राख को धोया तो ३ रत्ती पारा और निकला अर्थात् सब ५ तो०.११ मा० ३ रत्ती हाथ लगा ७ मा० ३ रत्ती बटा धुली राख १ माशे ३ र० रह गई।

ता० १/३ का उक्त ता० २५/२ की यंत्र में खदकने के शब्द का शंका निवारणार्थ यंत्र में पानी भर भट्टी पर चढ़ा ९५ नं० की आंच दी तो पहला सा ही खदकने का शब्द फिर सुन पड़ा जिससे ज्ञात हुआ कि कई दिन तक पानी के जलने से उत्पन्न हुआ कमलरूप लवण जब यंत्र की पेंदी में एकत्र हो जाता है तब उसके खदकने से यह शब्द उत्पन्न होने लगता है।

सम्मति–(१) आगे से जलयंत्र का पेंदा बहुत ही मोटा होना चाहिये।

(२) भस्ममुद्रा भी ठीक काम देती है और इसके योग से भी अधोमुख जलयन्त्र चलाया जा सकता है।

(३) कमानियों का लगाना ठीक नहीं, ये अग्नि के योग से ढ़ीली पड़ जाती है–कोई और प्रकार तवे के कसने का निकालना चाहिये।

(४) अग्नि ९५ नं० के लगभग रखनी चाहिये और समय अग्नि का कम से कम ७ दिन होना चाहिये।

(५) पारद कज्जली इत्यादि को इकट्ठा न रख यंत्र के पेंदे में फैला कर बिछा देना चाहिये।

(यंत्र के अवकाश की ऊंचाई और कम कर १।। इंच की जगह् १।। इंच रखनी चाहिये।

ता० ४/३ को उक्त यंत्र के ऊपर के पेंदे की धुली भस्म १ मा० २ र० और नीचे की टिकिया १ तोले ११ माशे कुल २ तोले ३ रत्ती को बारीक पीस जौनपुरी डौरू में भर भस्ममुद्रा लगा कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ९ को ४ प्रहर अग्नि दी।

ता० १० को खोलने पर ४ रत्ती पारा निकला और १ तोला १० मा० ४ रत्ती राख निकली। छीजन कुछ नहीं गई किन्तु पारा बहुत कम निकला।

ता० १५ को उक्त १ तो० १० मा० ४ रत्ती राख को पीस ६ तोले पानी में धो फिल्टर कर स्वच्छ नितार लिया।

ता० १६ को गर्म बालू पर रख सुखाया तो १० माशे ५ रत्ती क्षारश्वेत उत्तम रंग का तैयार हो गया। फिल्टर से निकाली राख सूखकर ९ माशे रही।

अनुभव जलयंत्र नीचे कटोरी लगा भस्ममुद्रा प्रयोग से

ता० १६/६/०८ को ५ तोल शंकित पारद और ५ तोले बेशुधी पिसी आँवला सार गंधक को लोहनिर्मित जलयंत्र (जिसमें कटोरी ऊपर से ढ़क नीचे लगाई थी और जो अधर रहने के कारण लोहे की कमानियों से कसकर ठहरा दी जाती थी) की कटोरी में इस प्रकार रख दिया कि प्रथम आधी गंधक रखी उसमें गढ़ाकर गढ़े में पारा रख ऊपर से बाकी गंधक डाल पारे को ढ़क दिया और कटोरी के किनारों पर अन्दर बाहर भस्ममुद्रा (जो ३ तोले लकड़ी की भस्म और ४ तो० नोंन से बनाई गई थी) लगा कटोरी के खांचे में जमा कमानियों से कस दिया और फिर दर्जो पर भस्ममुद्रा कर सुखा दिया।

ता० १७/७ को उक्त यंत्र को भट्टी पर रख ऊपर पानी भर ७ बजे से मंदाग्नि देना आरम्भ किया जिसके जल की गर्मी निम्निलिखित नक्शे के अनुसार रही। २ बजे पर पानी की घटी मिकदार करीब १।। डेढ़ सेर पानी डाल पूरी कर दी गई। ४–४ घंटे बाद करीब सेर डेढ़ सेर के पानी डालते रहे।

ता० २० तक ३।। दिन रात काम चलाकर रात के १० बजे पर आंच बंदकर यंत्र को जैसा का तैसा रखा छोड़ दिया।

ता० २१ को खोला तो अधिकांश पारद गंधक नीचे की रकाबी से उड़कर ऊपर यंत्र के पेंदे पर जो लगे थे। सबसे ऊपर पीत गंधक की तह सी थी उसके नीचे गंधक पारद की काले रंग की बूंदें सी थी और यंत्र में ठीक बीच में अग्नि न लगने के कारण एक ओर का गंधक जलकर काला हो गया था, बाकी और तरफ का पीत कृष्ण रंगत का था। नीचे की रकाबी के बीच में श्वेत और आसपास श्याम रंग की पापड़ी जम रही थी। ऊपर जमे हुए पारद गंधक को खुरच तोला तो ९ तोले १ माशे हुआ और नीचे की रकाबी से खुरचा को ११ माशे राख निकली अर्थात् पारद गंधक का पूरा वजन निकला।

सम्मति–इस बार गंधक जला नहीं बहुत थोड़ा जो श्वेत हो गया था, उसी को कुछ जला कह सकते हैं। आगे अग्नि का समय और प्रमाण दोनों बढ़ाकर देखा जाय। जल की गर्मी अबकी बार ५० से ७० तक रही। आगे १ दिन ५०, १ दिन ६०. २ दिन ७०, २ दिन ७५. १ दिन ८० डिग्री तक रखी जावे और ७ दिन आंच दी जावे।

नक्शा जल की गर्मी का

१७/७/०८	७ बजे		अग्नि देना आरम्भ किया
	४बजे शाम	४८ नं०	
	६।। बजे	५२ नं०	
१८/७/०८	७ बजे	५४ नं०	विशेष वार्ता
	९ बजे	५० नं०	
	११ बजे	५२ नं०	
	३ बजे	६२ नं०	
	५ बजे	६२ नं०	
	६।। बजे	६० नं०	
१९/७/०८	७बजे सवेरे	५३ नं०	
	८ बजे	६४ नं०	
	९बजे	६७ नं०	
	१० बजे	६८ नं०	
	११ बजे	६५ नं०	
	२ बजे	६४ नं०	
	३ बजे	६७ नं०	
	४ बजे	६४ नं०	
	६ बजे	६८ नं०	
	१० बजेरात	६४ नं०	
२०/७/०८	५ बजेसवेरे	६५ नं०	
	७ बजे	६७ नं०	
	९ बजे	६९ नं०	
	१० बजे	६७ नं०	
	११ बजे	७० नं०	
	२ बजे	६५ नं०	
	३ बजे	७० नं०	
	४ बजे	६९ नं०	
	६ बजे	६७ नं०	
	१० बजे	६७ नं०	काम बंद

नं० १ तुलायंत्र
गंधकजारण तुलायंत्र द्वारा
(भट्टी पर बालुकायंत्र में)

आज ता० २८/९/०७ को तुलायंत्र की छोटी कूपी में ५ तोल कैन का शुद्ध पारद और बड़ी कूपी में दाग खाई दानेदार शुद्ध ५ तोले गंधक भर पारेवाली कूपी की सन्धियों पर मदनमुद्रा और गंधक वाली कूपी की संधियों पर भस्ममुद्रा लगा दी। कूपियों और नाल के जोड़ों पर कपरौटी कर दी गई।

ता० १४/१० को उक्त यन्त्र को अंग्रेजी स्टेण्ड के द्वारा इस प्रकार स्थित किया कि गंधवाली कूपी भट्टी पर लोहे की कढ़ाई के बीच में लटकी रही। (कढ़ाई को बालू से भर दिया सब कूपी बालू से दब गई) और दूसरी कूपी पारदवाली पानी भरे कटोरे में लटकी रही। कढ़ाई और कटोरे के बीच में एक ईट रख दी इसलिये कि अग्नि की लपट कटोरे से न लगे। बाद को कढ़ाई के नीचे ७।। बजे से मध्याग्नि बालनी आरम्भ कर दी। कटोरे का पानी कभी कभी बदल दिया गया।



ता० १५ को सवेरे देखा तो पारदवाली कूपी बिलकुल गरम न थी। उसके ऊपर का नल का भाग भी गुनगुना ही होगा। गंधकवाली कूपी के ऊपर का नल का भाग भी थोड़ा ही गर्म था, कढ़ाई की रेत ऊपर से केवल इतनी गर्म थी कि हाथ को बुरा न लगे अतएव अग्नि कम समझ ८ बजे से अग्नि तीव्र कर दी अर्थात् एक मोटी लकड़ी की आंच जिसकी झर कढ़ाई की सब तरफ को निकलती थी, देना आरम्भ की। ३ बजे देखा तो सवेरे से इस समय कुछ अधिक गर्मी थी। किन्तु पारद कूपी इस समय भी गरम न थी। अब उतना जल गुनगुना था, पारद का ऊपरी नल हलका गर्म था, गंधक के ऊपर का नल भी इतना गरम था जिससे हाथ जलता न था। रेत को भी ऊपर छूने से हाथ न जलता था। थर्मामीटर रेत में डाल कर देखा तो २६० तक तो धीरे धीरे बढ़ा फिर एकदम भागकर अन्तिम भाग तक पहुंच गया। निकाल दूसरी बार रखा तो फिर वैसा ही हुआ। इससे ज्ञात हुआ कि अन्दर अग्नि पूरी तरह लग रही है।

ता० १६ के ८ बजे सवेरे तक काम चला बाद को आंच बंदकर यन्त्र को ज्यों का त्यों रखा छोड़ दिया।

ता० १७ को निकाला तो बालू बहुत गर्म थी। कूपी के अन्दर गंधक पिघलकर जम गया था जो निकल न सका, लोहे के बड़ी कील से कुरेद कुरेद कर निकाला तो मालूम हुआ कि गंधक का बहुत थोड़ा सा ऊपरी भाग काला हो गया था और नीचे पीली रंगत मौजूद थी जिससे ज्ञात होता था कि गंधक बहुत कम अंश जला। पारे को निकाल तोला तो पूरा ५ तोले निकल आया, किन्तु पारे पर कुछ श्यामता दीख पड़ती थी जो अवश्य गंधक के प्रभाव से उत्पन्न हुई होगी। छानने से यह श्यामता दूर हो गई। बाद इसके इस १६ प्रहर की अग्नि से कढ़ाई का पेंदा तैरकर नीचे की तरफ झूल आया था।

सम्मति—यह निश्चय न हुआकि गंधक से वाष्प भलीभांति उत्पन्न होकर पारद तक पहुँची या नहीं। पीछे और किये हुए कर्म से सिद्ध हुआ कि इस बालुकायंत्र की क्रिया से थोड़ी वाष्प पैदा होकर पारद तक पहुँची।

नं० २ तुलायंत्र
उपरोक्त क्रिया का दूसरी बार अनुभव
(भट्टी पर बालुकायंत्र में)

ता० २२/१०/७ को उक्त ५ तोले पारद को चौड़े मुख की छोटी शीशी में भर उक्त यंत्र की पारदवाली कूपी की जगह लगा कपरौटी कर दी और गंधकवाली कूपी को अपनी जगह पर ज्यों का त्यों लगा कपरौटी कर दी। बाद को अंग्रेजी स्टेण्ड द्वारा पूर्वोक्त प्रकार से बालुका भरी कढ़ाई में रख गंधक की कूपी को भट्टी पर आंच देना आरम्भ किया और पारदवाली शीशी जल भरे कटोरे में पहली भांति लटका दी गई, ८ बजे से पूर्ण अग्नि देना आरम्भ किया।

ता० २३ के सबेरे ७ बजे तक देखा तो पारद की शीशी में भाप वगैरः का कुछ लक्षण दिखाई न दिया, शीशी के अन्दर की रंगत बिलकुल सफेद रही अतएव (पीछे किये कर्म से निश्चय हुआ कि गंधक की भाप की रंगत बहुत हलकी होती है और वह शीशी में दीख नहीं पड़ती किन्तु उसका असर पारे पर पड़ने से श्यामता आ जाती है उसीसे वाष्प पहुंचना ज्ञात होता है) आंच बन्द कर कढाई को ज्यों की त्यों रक्खी छोड़ दिया, दो पहर को यन्त्र उतार लिया शाम को खोला तो गंधक की कूपी नाल से जिकड़ गई थी कूपी के मुँह पर कालोंछे आ गई थी, कूपी में से लोहे की कील से खुरच कर गंधक को निकाला तो ऊपर श्यामता लिये हलकी पीत रंग का गंधक ३ तोले १ माशे निकला। गंधक की तोल और गंधक की रंगत से ज्ञात होता था कि आधा अंश गंधक का जल गया।

सम्मति—दो बार इस क्रिया के करने से निश्चय हुआ कि इस प्रकार भट्टी पर रखे बालुकायंत्र में गंधक जारण के लिये पूरी गर्मी नहीं उत्पन्न हो सकती।

नं० ३ तुलायंत्र
उपरोक्त क्रिया का तीसरी बार अनुभव
(अग्निपुट में)

ता० २४/१०/०७ को उक्त यन्त्र में पारदवाली शीशी तो जैसी की तैसी लगी रही और गंधकवाली कूपी से निकले ३ तोले १ माशे गंधक में १ तोले ११ माशे नया गंधक और मिला पूरा ५ तोले कर उसी कूपी में भर कूपी की संधियों पर भस्ममुद्रा कर पूर्वोक्त विधि से नल में लगा कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २९ का उक्त यंत्र को स्टेन्ड द्वारा इस प्रकार स्थित किया कि गंधकवाली कूपी कढ़ाई के पेंदे से २ अंगुल ऊंची रही, पारदवाली शीशी जल भरे कटोरे में लटक रही, फिर कढाई के अन्दर १ सेर कंडों की आग दी गई (कूपी का मुख कंडों से ऊपर रहा) आंच के दहक जाने पर गंधक कूपी के मुख पर जलती दीख पड़ी, दूसरी आंच १ सेर की उसी तरह फिर दी तो कूपी के मुख पर भी जलती गंधक दीख पड़ी और शीशी में भी पिघली गंधक टपकने लगी इस वास्ते काम बंद कर दिया गया।

ता० ३० को खोला तो पारद की शीशी में ऊपर पीला गंधक जमा हुआ था और नीचे पारद था, पारदःतोल में ६ रत्ती कम ५ तोले हुआ और गंधक १ तोले १० माशे निकला, गंधक की कूपी से १ तोले गंधक श्यामता लिये निकला।

सम्मति—इस क्रिया से गंधक को अग्नि अधिक लगना सिद्ध हुआ।

नं० ४ तुलायंत्र

उपरोक्त क्रिया का चौथी बार अनुभव

(बालुका भरे नलके में रख बाहर अग्निपुट)

ता० ३१/१०/०७ को उपरोक्त ६ रत्ती कम ५ तोले पारद का नई शीशी में भर उक्त यंत्र की नाल के मुख पर लगा कपरौटी कर दी और पूर्वोक्त पारदवाली शीशी से निकले १ तोले १० माशे गंधक और गंधकवाली कूपी से निकले १ तोले कुल २ तोले १० माशे गंधक में ता० २ मा० गंधक और मिला पूरा ५ तोले कर उसी कूपी में भर कूपी के संधियों पर भस्ममुद्रा कर नाल के मुखपर भस्ममुद्रा योग से लगाकर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १/११ को उक्त यंत्र को स्टेन्ड द्वारा कढाई में इस प्रकार स्थित किया कि गंधक की कूपी १ अंगुल ऊंची रही, बाद को एक टीन का घेरा जो करीब एक बालिस्त लंबा और करीब ४ इंच चौड़ा जिसका मुख होगा कूपी के ऊपर चढ़ा दिया ओर उसमें बालू भर दी तमाम कूपी बालू में दब गई, दारदवाली शीशी पानी भरे कटोरे में लटकी रही, बाद को ९ बजे से एक एक सेर कंडों की आंच हर घंटे पर दी गई। तीसरी आंच पर केवल पारे की शीशी में पारे के ऊपर श्यामता दीख पड़ी शीशी की रंगत साफ रही, आंच की गर्मी से स्टेन्ड से पारद की शीशी की तरफ नल का सीधा भाग गुनगना था और झुका हुआ भाग उससे भी कम नाममात्र को गुनगुना हुआ था और स्टेन्ड से गंधक की कूपी की तरफ का नल का भाग इतना गर्म था जो छूने से हाथ जलता था। शाम तक ९ आंचें दी गई बाद को यंत्र जैसे का तैसा छोड़ दिया गया।

ता० २ को खोला तो पारद की शीशी में श्याम रंग का चिकना पसेव सा निकला कपड़े में छानने से कपड़ा भीगा और चिकना हो गया और श्यामता पारे की दूर हो गई। छना पारा ४ तोले ११ माशे निकला, गंधक की कूपी को खोल गंधक को निकाला तो ३ तोले ९ माशे गंधक कलछोई रंगत की निकली।

सम्मति–अब तक की हुई सब क्रियाओं से यह क्रिया कुछ ठीक पड़ी।

नं० ५ तुलायंत्र

उपरोक्त क्रिया का पांचवीं बार अनुभव

ता० २/११/०७ को उपरोक्त ४ तोले ११ माशे पारे में ५ तोले पारद और मिला ९ तोले ११ माशे को उसी शीशी में भर शीशी को उक्त यंत्र की नाल में लगा कपरौटी कर दी, और गंधकवाली कूपी में ५ तोले नया गंधक भर नाल के मुखपर लगा भस्ममुद्रा कर कपरौटी कर दी।

ता० ३ को पूर्वोक्त विधि से उक्त यंत्र को स्टेन्ड द्वारा कढाई में स्थित कर टीन का खोल कूपी पर लगा बालू भर दी और पारदवाली शीशी जल भरे कटोरे में लटका दी, कटोरे और कढाई के बीच में ईंट लगा दी ताकि कटोरे तक गर्मी न पहुँचे, बाद को ८ बजे से एक एक सेर की आंच हर घंटे पर दी गई, दूसरी तीसरी आंच पर पारद पर कालोंछ छा गई यंत्र के नलके में पहले दिन से आज सब तरफ को गर्मी अधिक थी किन्तु कटोरे का जल ठंडा था जिसके बदलने की आवश्यकता न थी, रात के १० बजे तक १५ आंचें बाद को यंत्र जैसे का तैसा रखा छोड़ दिया।

ता० ४ को यंत्र में पुनः अग्नि दी किन्तु नल को गरमी अधिक पहुँचाने के लिये उक्त यंत्र ने नल को इस प्रकार स्टेण्ड में कसा कि नल का १/४ भाग स्टेन्ड से शीशी की तरफ रहा बाकी ३/४ भाग नल का गंधक कूपी की तरफ कढाई में रहा अर्थात् अग्नि की तरफ नलका भाग अधिक रखा बाद को ९ बजे से एक एक सेर की आंच हर घंटे पर दी गई, इस बार नल और दफे से अधिक गर्म हुआ। स्टेन्ड से गंधक की तरफ का नल छुआ नहीं जा सकता था क्योंकि उस पर पानी की बूंद छुन्न हो जाती थी स्टेन्ड से पारे की तरफ का नल जहां तक सीधा था वह भी खूब गर्म था जिसको थोड़ी देर तक ही छू सकते थे शीशी के ऊपर का मुड़ा हुआ भाग हलका गर्म था शीशी ठंढी थी रात के ९ बजे तक १३ आंचें लगीं बाद को जैसे का तैसा रखा छोड़ दिया इन दो दिनों में सब २८ आंचें लगीं।

ता० ५ को खोला तो पारद पर कालोंछ छा रही थी और पसेवसा भी शीशी में मौजूद था पारद को निकाल छाना तो ये श्यामता कपड़े पर आ गई और कपड़ा भीगा सा हो गया पारे को तोला तो ९ तोले १० माशे ४ रत्ती हुआ ४ रत्ती छीज गया और गंधक को निकाला तो ४ तोले ५ माशे गंधक श्यामता लिये निकली, ७ माशे कम हुई।

सम्मति–अबकी बार की क्रिया सर्वोत्तम रही, अब तक ये निश्चय हो चुका है कि–

(१) भट्टी पर रखे बालुका में गंधक जारण के लिये पूरी गर्मी नहीं पैदा हो सकती।

(२) बिना बालू के केवल कंडों के पुट से गंधक अधिक उबाल खा शीशी में टपकने लगता है।

(३) अतएव बालू में भरे घेरे में रखी गंधक कूपी को ही कंडों की २ सेर की आंच देना उचित है।

(४) यह भी निश्चय हुआ कि गंधक की वाष्प शीशी को नहीं तोड़ती।

(५) गंधक की वाष्प का रंग बहुत हलका होता है जो शीशी में दिखाई नहीं देता किन्तु पारद पर श्यामता पैदा करता है।

(६) नल का ३/४ भाग आंच की तरफ रखने से अच्छी गर्मी पैदा होती है (बीच में ईंट अवश्य रखी जावे) किन्तु यह निश्चय होना बाकी है कि नल की लंबाई ज्यादा तो नहीं है जिससे गंधक की वाष्प वहां तक जाते अपने असर के पूरे वेग को न कर सके इसलिये दूसरा कम लम्बा नल बनवाकर इसी पांचवीं बार की क्रिया के अनुसार पुनः अनुभव करना चाहिये यह भी ध्यान रहे कि २८ घंटे में ७ माशे गंधक जला है, अतएव अबकी बार कम से कम ४८ घण्टे और अधिक से अधिक ७२ घण्टे निरंतर काम चले।

नं० ६ तुलायन्त्र

उपरोक्त क्रिया का छठी बार अनुभव

ता० १/१/०७ को १० तोले पारे को (जिसमें ४॥ तोले पांचवें अनुभव का बचा हुआ ३ माशे कैन का और ५ तोले चक्रवर्ती औषधालय का सिंग्रफ का निकला हुआ था) शीशी में भर और ५ तोले दानेदार दाग खाई हुई गंधक को कूपी में भर भस्ममुद्रा कर दोनों को उक्त यंत्र की नाल में जो पहली नाल से पतली और करीब ४ अंगुल के छोटी तैयार कराई गई थी (पहली नाल १३ इञ्च लम्बी थी और ३,३ इञ्च दोनों ओर झुक रही थी, सब १८ इञ्च के करीब थी) लगा कपरौटी कर दी।

ता० २ को उक्त यंत्र के नलके को स्टेण्ड में इस प्रकार कसा कि नल का १/४ भाग स्टेन्ड से शीशी की तरफ और ३/४ भाग गंधक कूपी की तरफ रहा और पहली बार के अनुसार शीशी को जल के पात्र में स्थित कर और कूपी को बालू भरे घेरे में स्थित कर घेरे के चारों तरफ ८॥ बजे से एक एक सेर की आंच हर घण्टे पर देनी आरम्भ की, तीसरी आंच के बाद पारद पर श्यामता दीख पड़ी, ११ बजे देखा तो कूपी की तरफ की आधी नल में इतनी गर्मी थी जो पानी की बूंद छुन्न हो जाती थी और शीशी की तरफ नल कम से कम तप्त था, ५ बजे तक निकली उष्मा कुछ और भी अधिक हो गई थी, रात के ९॥ बजे तक १४ आंचे दी गईं बाद को यंत्र जैसा का तैसा छोड़ दिया।

ता० ३ के सवेरे खोला तो शीशी में पारे के ऊपर थोड़ा सा वाष्प का जल था और स्याही पहले से बहुत कम दीख पड़ी पारे को निकाल तोला तो पूरा १० तोले हुआ छानने पर भी पारे की पूरी तोल रही, गंधक को निकाला तो अधजली गंधक ४ तोले निकली, १ तोले घटी।

सम्मति–नल के छोटा करने से कुछ हानि लाभ न जान पड़ा अब पूरी परीक्षा करने को ३ दिन निरंतर अग्नि दी जावे और जाड़ा अधिक होने के कारण १ सेर की जगह १८ छटांक की आंचें दी जावें।

नं० ७ तुलायन्त्र
उपरोक्त क्रिया का सातवीं बार अनुभव

ता० ४ को पूर्वोक्त १० तोले पारद में ५ तोले पारद चक्रवर्त्ती औषधालय का सिंग्रफ का निकाला हुआ और मिला पूरा १५ तोले कर शीशी में भर दिया और ७॥ तोले दाने पर दाग खाई हुई गंधक कूपी मे भर (जिससे आधी कूपी भरी) कूपी पर भस्ममुद्रा कर दोनों को यन्त्र की नाल में लगा कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ५ को उपरोक्त विधि से यंत्र के नलके को कस शीशी को जल भरे कटोरे और कूपी को बालू भरे घेरे में स्थित कर ९ बजे से १८, १८ छटांक की आंच एक एक घण्टे बाद देना आरम्भ किया, दूसरी आंच लग जाने के बाद ११ बजे देखा तो शीशी में पिघली हुई गंधक का डिम्मा दीख पड़ा इस वास्ते काम बन्द कर दिया, २ बजे खोला तो शीशी में ३ रत्ती कम १५ तोले पारा निकला और १ तोले १ माशे २ रत्ती श्याम रंग का गंधक का डिम्मा निकला, और कूपी में ५ तोले २ माशे अधजली गंधक कृष्णतायुक्त निकली, २ माशे २ रत्ती गंधक शीशी के तरफ के तल के छिद्र में भी निकली, इस तरह कुल ६ तोले ५ माशे ४ रत्ती गंधक निकली, १ तोले ४ रत्ती घट गई।

सम्मति–अबकी बार आंच अधिक लग गई कुछ तो कंडों की तोल ही बढ़ा दी गई थी कुछ साबूत आरने कंडे लगा देने से आंच एकदम प्रज्वलित होकर तीव्र हो जाती थी कुछ नल भी अबकी बार जहां तक नीचा हो सकता था कसा गया था और बालू भी टीन के नलके में ऊपर तक भरी गई थी इन सब कारणों से अग्नि अधिक बैठ गंधक पिघल कर शीशी में आ गई।

नं० ८ तुलायन्त्र
उपरोक्त क्रिया का आठवीं बार अनुभव

ता० ६/१/८ को उक्त ३ रत्ती कम १५ तोले पारद को शीशी में भर और ७॥ तोले गंधक को (जिसमें ५ तोले बाजारी बगैर शुधी और २॥ तोले घर की शुधी दानेदार दाग खाई हुई थी) कूपी में भर पूर्वोक्त प्रकार से नल में लगा सुखा दिया।

ता० ७ को इस विधि से यंत्र को कसा कि कूपी की तरफ का नल घेरे से १ अंगुल ऊंचा रहा और घेरे में बालू भी वहां तक भरी गई जहां तक कूपी का मुख था, कढाई में कंडों के छोटे छोटे टुकड़े जो दो दो अंगुल मोटे थे लगाये कटोरी में पानी वहीं तक भरा जिससे शीशी का उतना भाग डूबा जितने में पारा था बाद को ९ बजे से एक एक सेर की आंच हर घंटे पर देनी आरम्भ की, तीसरी आंच लग जाने के बाद ११॥ बजे देखा तो पारे पर बिलकुल श्यामता न थी लेकिन ५ आंचें लग चुकने पर २ बजे जब देखा तो पारे पर गाढी श्यामता दीख पड़ी और शीशी की रंगत साफ रही इस समय नल में इतनी गर्मी थी जिसे हाथ से नहीं छू सकते थे किन्तु पानी डालने से और बार की तरह बूंद छुन्न कहीं पर न होती थी।

ता० ८ आज सबेरे देखा तो पारे पर श्यामता कुछ अधिक थी किन्तु नल कल में इतना कम तप्त था जिसे खूब छू सकते थे। शायद रात की सर्दी का कारण हो ११॥ बजे पर नलके को इतना गर्म पाया कि जो पानी की बूंद छुन्न होने लगी इससे यह बात मालूम होती है कि शायद कढाई की आंच बल उठी हो शाम को सामान्य हालत थी।

ता० ९ को सबेरे ८ बजे देखा तो नल में कल शाम की सी ही ऊष्मा पाई गई शाम को भी ऊष्मा वैसी ही थी।

ता० १० को ९ बजे तक ३ दिन पूरे हो जाने और १२ आंचें लग चुकने पर काम बंद कर दिया और यंत्र को जैसे का तैसा रखा छोड़ दिया, ३ बजे खोला तो पारे पर श्याम रंग का जल फैल रहा था। पारद को छाना तो यह श्यामता कपड़े पर आ गई। छना पारा पूरा तोल में ३ रत्ती कम १५ तोले हुआ गंधक कूपी को खोला तो उसमें अधजली गंधक ६ तोले ४ माशे निकली १ तोले २ माशे घटी।

सम्मति–७२ आंचें लगने पर भी केवल १ तोले २ माशे गंधक क्षय होना संतोषदायक नहीं है आंच बहुत हलकी भी नहीं कहीजा सकती क्योंकि १६ छटांक की थी और १८ छटांक की आंच से गंधक उबल गया था और इसी क्रिया में भी पांचवीं आंच पर पारद पर पूरी श्यामता आ गई थी जिससे गंधक की वाष्प बनना सिद्ध है फिर भी क्रमवृद्धि नियमानुसार अधिक २ अग्नि दे अनुभव करना-चाहिये।

नं० ९ तुलायन्त्र
उपरोक्त क्रिया का नवीं बार अनुभव

ता० ११/९/०८ को १४ तोले १० माशे पारद को (यह पारद पिछले तुलायन्त्र से ३ रत्ती कम १५ तोले निकला था इस बार के तुलायन्त्र के बंद करते समय १ माशे ५ रत्ती और गिर गया इस वास्ते १४ तोले १० माशे शेष रहा) शीशी मे भर और उसी पिछले ८ वे अनुभव की निकली ६ तोले ४ माशे गंधक को जिसकी पीतिमा बहुत फीकी पड़ गई थी कूपी में भर पूर्वोक्त प्रकार से नाल में लगा कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १२ को उपरोक्त विधि से यंत्र के नलके को कस शीशी को जल के कटोरे मे और कूपी को बालू भरे घेरे में स्थित कर ७ बजे से हर घंटे पर आंच देना आरंभ किया जिसका नकशा नीचे दिया गया है:–

नक्शा

तारीख	घंटा	तोलकंडा	पारेकीरंगत	विशेष वार्ता
१२/१/०८	७	१से०१छ०टूटेकंडे	सफेद	७ वजेसे १२ बजेतक आंचकी १से० १छ०
	१२	१से०२छ० "	सफेदऊपर किंचितवाष्प विंदु	१२ से ३ तक ४ आँचे १से० २छ०
	४	१से०३छ०		४ से ५ तक २ आँचे १ से० ३ छ०
	६	१से०४छ०		६ से ८ तक ३ आँचे १ से० ४ छ०
	९	१से०६छ०	अल्पश्यामता १२बजेपर	९ से ८ तक १२ आंचे १ से० ५ छ०
१३/१/०८	९	१से०६छ०		९ से ११ तक ३ आँचे १से० ६छ०
	१२	१से०८छ०		१२ से १ तक २ आंचे १ सेर ७ छ०
	२	१से०८छ०		आधघंटे बाद आग झीना पड़ने पर १२ छ० कंडे
	२॥	१२छ०		साबूत और लगादिये
	३॥	२से०साबूत		औरआगेभीइसीतरह
	४	आरनेकंडे१२छ०		
	५	२सेर		
	५॥	१२छ०		
	६॥	२ सेर		
	७	१२ छ०	श्यामतापर थोड़ाबादामी	

तारीख	घंटा	तोलकंडा	पारेकी रंगत	विशेषवार्ता
	८	२ सेर	रंगका द्रव	
	८॥	१२ छ०		
	९॥	२ सेर		
	१०	१२ छ०		
	११	२ सेर		
	११॥	१२ छ०		
	१२॥	२ सेर		
	१	१२ छ०		
	२	२ सेर		
	२॥	१२ छ०		
	३॥	२ सेर		
	४	१२ छ०		
	५	२ सेर		
	५॥	१२ छ०		कुल ४२ आंचे

११ बजे तक १ सेर १ छ० की ४ आंचे लग चुकने तक पारे की रंगत विलकुल श्वेत रही। ५ वीं आंच के बाद जब देखा तो पारे पर सूक्ष्म बिन्दु दीख पड़े किन्तु श्यामता बिलकुल न थी। ऊपर के नक्शे के अनुसार १। सेर की आंच लगने से भी रात के ९ बजे तक श्यामता न दीख पड़ी—अतएव ९ बजे से १ सेर ५ छ० की आंच कर दी गई तो १२ बजे पर कुछ श्यामता का लक्षण दीख पड़ा।

ता० १३ को सवेरे ८ बजे देखा तो थोड़ी ही श्यामता थी। कुछ विशेष न थी। शाम के ३॥ बजे से टीन के घेरे में ऊपर तक बालू भर २ सेर १२ छ० की आंच १॥–१॥ घंटे के बाद इस तरह देना आरम्भ किया कि प्रथम २ सेर तावूत आरने कंडों की आंच दी जाती थी जिससे कढ़ाई इतनी भर जाती थी कि घेरा भी ढ़क जाता था। १/२ घंटे बाद जब ऊपर की कुछ आंच झीनी पड़ जाती थीं तभी १२ छटांक साबूत कंडे उसी के ऊपर और रख दिये जाते थे। (आंच खूब बलती रहती थी)। रात के ७ बजे तक शीशी में सवेरे ही की सी श्यामता रही। ८ बजने पर उस श्यामता के ऊपर एक चौड़ी बूंद सफेद रंग की दीख पड़ी। १० बजे देखा तो पारे पर श्यामता अधिक हो गई और कुछ मटैला जल भी छा गया था। शीशी में मटैले रंग की लकीरें सी दीखती थीं जो अवश्य द्रवरूप में गंधक बह आने से पैदा हुई होंगी। रात में काम उसी तरह चलता रहा। ६ बजे सवेरे तक ४२ आंचे लगीं बाद को काम बंद कर दिया गया।

ता० १४ को सवेरे ८ बजे देखा तो शीशी में पिघले हुए गंधक का ढ़िम्मा दीख पड़ा। शीशी को खोला तो २ रत्ती कम ४ तोले १० माशे पारद निकला और ३ तोले ३ माशे अर्धजलित गंधक का ढ़िम्मा कलछोई रंगत का निकला। कूपी को खोला तो उसमें १ तोला ५ माशे २ रत्ती गंधक बिलकुल जली काली रंगत की निकली अर्थात् ६ तोले ४ माशे गंधक में से ४ तोले ८ माशे २ र० गंधक निकली। १ तोले ७ माशे ६ र० घटी किन्तु ७ माशे नल के अन्दर भी पिघला बहा हुआ लगा रह गया होगा। अतएव केवल १ तोले वास्तव में क्षय हुआ।

सम्मति—चौथी बार से नवीं बार तक के अनुभवों से सिद्ध हुआ कि बालू भर नलके में स्थित कूपी को जाड़े के मौसम आदि में १ सेर आरने कंडों ही की अग्नि हर घंटे देना उचित है। अधिक अर्थात् १८ छ० की अग्नि से भी गंधक उबल कर पारद पर पहुँच जाता है किन्तु ६ घ० अग्नि लगने के बाद हर घंटे पर १ छटांक की आंच बढ़ाना उचित है। यहां तक कि २२ घंटे में से २ सेर तक आंच पहुँच जावे। इससे आगे आंच न बढ़ानी चाहिये नहीं तो गंधक उबल कर पारद पर फिर पहुंच जायेगा। यह भी ध्यान रहे कि गंधक उबलने से पहले किसी मटीले रंग के द्रव की कुछ बूंदे पारे पर दीख पड़ती है, ऐसा होने पर आंच कुछ घटा देनी चाहिये कि उबलने का भय न रहे—आगे २ सेर की आंच सवा सवा घंटे पर १४ घंटे और लगनी चाहिये—बस ३६ घंटे ही आंच देना काफी है, इतने ही समय में जितना गंधक जल सकता है, जल जायेगा।

(७२) आंच तक देकर देखा गया तो गंधक अधिक क्षय न हुआ। यह शंका भी है कि लोह और शीशे से निर्मित यंत्र में सर्वतः निरुद्ध हुआ गंधक सब नहीं जल सकता। केवल उतना ही जलेगा जितना कि यंत्र के अन्दर की वायु की उज्जनगैस जला सकती है।

(२) सम्मति—अब तक पारद की शीशी जल भरे पात्र में स्थित की जाती थी और बीच में ईंट रख गर्मी रोक दी जाती थी। अतएव पारद बहुत ठंडा रहता था। एक बार ऐसा भी करना चाहिये कि बीच में ईंट न रखी जावे जिससे जल का पात्र गर्म होकर पारद भी कुछ गर्म रहे—और चूंकि जल का बौइलिंग पॉइन्ट बहुत नीचा है अतएव पारद को हानि होने की शका नहीं।

नं० १० तुलायंत्र

उपरोक्त क्रिया का दसवीं बार अनुभव

ता० १/३/०८ को ६४ तोले ९ माशे ६ रत्ती पारद को शीशी में भर और ५ तोले गंधक बाजारी नई बड़ी कूपी में (जिसमें ७ छ० दानेदार गंधक समाती थी) भर पूर्वोक्त प्रकार से नाल में लगा कपरौटी कर मुखा दिया।

ता० २ को उपरोक्त विधि से यंत्र के नलके को कंस शीशी को जल भरे कटोरे में और कूपी को बालू भर घेरे में (यह घेरा ४॥ इंच चौड़ा और ७॥ इंच ऊंचा नया मोटी चद्दर का बनवाया गया था) तह से ३ अंगुल ऊंचा स्थित कर २ बजे से निम्नलिखित नक्शे के अनुसार टूटे आरने कंडो की आंच हर घंटे पर देना आरंभ किया।

नक्शा

तारीख	घंटा	तोलकंडा	पारेकीरंगत	विशेषबार्ता
	३ बजे	१सेर	सफेद	
	३ बजे	१सेर	किंचित वाष्प	
				बिन्दु
	४ बजे	१सेर		
	५ बजे	१सेर		
	६ बजे	१सेर		
	७बजेरात	१सेर		
	८बजे	१सेर		
	९ बजे	१सेर		
	१० बजे	१सेर१छ०		
	११बजे	१सेर१छ०		
	१२बजे	१सेर१छ०		
	१बजे	१सेर२छ०		
	२बजे	१सेर२छ०		
	३बजे	१सेर२छ०		
	४बजे	१सेर३छ०		
	५बजे	१सेर४छ०		
		३/३/०८		
		६बजे		
		१सेर५छ०		

तारीख	घंटा	तोलकंडा	पारेकीरंगत	विशेषवार्ता
	७बजे	१सेर६छ०		
	८बजे	१सेर७छ०		
	९बजे	१सेर८छ०		
	१०बजे	१सेर९छ०		
	११बजे	१सेर१०छ०		
	१२बजे	१सेर११छ० कुल२३आंच		

जल के कटोरे और कढ़ाई के बीच जो ईट लगाई जाती थी सो इस बार नहीं लगाई गई।

ता० ३ के १२ बजे देखा तो नल और कूपी के जोड़ पर गंधक निकल रहा था अर्थात् नीली लौदी खपड़ी यंत्र को निकालना चाहा तो नल अलग निकल आया और कूपी में से नीली लौ खूब निकलने लगी और नल में से थोड़ी नीली लौ निकली और कुछ बूंदे टपकी और कुछ पीले रंग का गैस नल में से निकलता रहा। गाढ़े गैस के ठंडा होकर जमने से ही यह बूंदे जमी होंगी–कूपी का और बकला जोड़ ढ़ीला था उसके चुस्त करने के लिये कपड़ा और मुलतानी लगाई गई थी। कपड़े के जल जाने पर यह खराबी पैदा हुई, आगे से कूपी और नल का जोड़ ऐसा बनना चाहिये जो स्वयं चुस्त हो और उसकी सांस भस्ममुद्रा बंद करनी चाहिये और उसके ऊपर कपरौटी करनी चाहिये।

सम्मति–अबकी बार यंत्र टूट जाने से यह ज्ञात हो गया कि इस मोटे नलके और मोटी कूपी में भी १ सेर ११ छ० तक की आंच हर घंटे देना गंधक के जलने के लिये बहुत काफी है। एक शंका अवश्य रहती है कि क्या नलके को और छोटा करने की आवश्यकता है।

ता० ४ को कूपी से गंधक को निकाल तोला तो ५ माशे ५ रत्ती गंधक अधजली निकली।

नं० ११ तुलायंत्र
उपरोक्त क्रिया का ग्यारहवीं बार अनुभव

ता० ४/३/०८ को उक्त १४ तोले ९ माशे ६ रत्ती पारद को छान उसी शीशी में भर और ७॥ तोले वेशुधी आंवलासार गंधक को उसी कूपी में भर पूर्वोक्त प्रकार से दोनों को नाल में लगा कूपी की दर्ज पर और कूपी और नाल के जोड़ पर (जो रेत कर स्वयं चुस्त कर लिया गया था) भस्ममुद्रा कर कपरौटी कर सुखा दिया। ता० ५ को रखा रहा।

ता० ६ को उपरोक्त विधि से यंत्र के नलके को कस शीशी को जल भरे कटोरे और कूपी को बालू भरे घेरे में तह से १॥ अंगुल ऊंचा कस २ बजे से हर घंटे पर निम्नलिखित नक्शे के अनुसार आंच देना आरम्भ किया–ईट अबकी बार भी बीच में रखना मौकूफ रखा था।

नक्शा

तारीख	घंटा	तोल कण्डा	पारे की रंगत	विशेषवार्ता
६/३/०८	२ बजे	१ सेर	सफेद	
	३ बजे	१ सेर		
	४ बजे	१ सेर		
	५ बजे	१ सेर		
	६ बजे	१ सेर		
	७ बजे	१ सेर		
	८ बजे	१ सेर १ छ०		
	९ बजे	१ सेर १ छ०		
	१० बजे	१ सेर ३ छ०	१०॥बजे पारद पर कुछ श्यामताकालक्षण दीखपड़ा	
	११ बजे	१ सेर ४ छ०		
	१२ बजे	१ सेर ५ छ०		
	१ बजे	१ सेर ६ छ०		
	२ बजे	१ सेर ७ छ०		
	३ बजे	१ सेर ८ छ०		
६/३/०८	४ बजे	१ सेर ८ छ०		
	५ बजे	१ सेर ८ छ०		
	६ बजे	१ सेर ८ छ०		
	७ बजे	१ सेर ८ छ०		
	८ बजे	१ सेर ८ छ०		
	९ बजे	१ सेर ८ छ०		
	१० बजे	१ सेर ८ छ०		
	११ बजे	१ सेर ८ छ०कुल २२ आंचे		

ता० ७ को ११ बजे देखा तो गंधक कूपी पर घेरे में बालू के अन्दर धुंआ उठता दीख पड़ा। थोड़ी बालू को निकाला तो कूपी के मुख से जहां कपरौटी हो रही थी १॥ अंगुल नीचे दोनों दरजों पर गंधक जलता दीख पड़ा। इस वास्ते काम बंद कर दिया। ठंडा हो जाने पर खोला तो ७ तोले ३ माशे गंधक जिसकी रंगत कुछ फीकी पड़ गई थी, निकला शीशी में देखने से पारे पर हलकी श्यामता थी किन्तु लौटने पर वह पारे में मिल गई।

सम्मति–इससे यह सिद्ध हो गया कि १॥ सेर की आंच से भी गंधक को जलानेवाली गर्मी पैदा हो जाती है।

नं० १२ तुलायंत्र
उपरोक्त क्रिया का बारहवीं बार अनुभव

ता० १२/४/०८ को उपरोक्त १४ तोले ९ माशे ६ रत्ती पारद को जो छानने पर १४ तोले ९ माशे २ रत्ती रह गया था। शीशी में भर और ७ तोले वेशुधी आंवलासार गंधक को दूसरी बड़ी कूपी में भर पूर्वोक्त प्रकार से नई नाल में (जो अबकी बार छोटी अर्थात् ८ अंगुल लंबी बनवाई गई थी) लगा कूपी की दरज पर और नाल और कूपी के जोड़ पर भस्ममुद्रा कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १३ को उपरोक्त विधि से यंत्र के नलके को कस शीशी को जल भर कटोरे में और कूपी को बालू भरे घेरे में तह से ३ अंगुल ऊंचा कस ८ बजे से हर घंटे पर निम्नलिखित नक्शे के अनुसार आंच देना आरम्भ किया।

नक्शा

तारीख	घंटा	तोलकंडा	पारदकीरंगत	विशेष वार्ता
१३/४/०८	८ बजे	१२छ०आरने टूटे कंडे	सफेद	कर्मारम्भ
	९ बजे	१३ छ०		
१३/४/०८	१० बजे	१४ छ०	सफेद ऊपर	
	११ बजे	१५ छ०	कुछवाष्पबिन्दु	
	१२ बजे	१६ छ०	अल्पश्यामता	
	१ बजे	१सेर१छ०		१बजेसे३बजेतक३आंच १सेर१छ०की दीगई
	४ बजे	१सेर२छ०		४बजे शामसे दूसरेदिन १०बजे तक १० आंचे १सेर२छ० की दीगई
१४/४/०८	११ बजे	१सेर३छ०		
	१२ बजे	१सेर३छ०		
	१ बजे	१सेर४छ०	गाढ़ी श्यामता	
	२ बजे	१सेर५छ०		
	३ बजे	१सेर५छ०		
	४ बजे	१सेर६छ०		४बजेसे दूसरेदिन ६बजे तक १५ आंच १सेर ६ छ० की दी गई
१५/४/०८	७ बजे	१सेर७छ०		
१५/४/०८	८ बजे	१सेर८छ०		८बजेसेरातके७बजेतक१२आंच १ सेर ८छ०की दीगई ७बजे ने रात में शीशी में गंधककी की डली दीख पड़ी– शीशीमें गंधककीडली दीखपड़ी
	८ बजेरात	६ छ०		८बजे रातसे दूसरेदिन १०बजे तक १५ आंच ६ छटांक–
१६/४/०८	१० बजे			कामबंद–कुल६३आंच लगीं–

ईट इस बार भी न लगाई किन्तु लोहे का तवा लग गया। तीसरी आंच पर पारे पर कुछ वाष्प बिन्दु और पांचवी आंच पर अल्प श्यामता दीख पड़ी। १२ छ० से १ सेर २ छ० तक की आंच दी गई।

ता० १४ को पारे पर की श्यामता कुछ गहरी हो गई और शीशी की रंगत धूंधरी सी पड़ गई थी। आंच १ सेर ३ छ० से १ सेर ६ छ० तक बढ़ाई गई।

ता० १५ को १ सेर ७ छ० से १ सेर ८ छ० तक की आंचे लगीं। रात के ७ बजे देखा तो शीशी में पीत रंग की गंधक सी डली दीख पड़ी। अतएव काम बंद न कर आंच घटाकर ६ छ० की कर दी गई।

ता० १६ को ३ दिन रात हो जाने और ६३ आंचे लग चुकने पर १० बजे दिन के काम बंद कर दिया और यंत्र को जैसे का तैसा रखा छोड़ दिया। शाम को खोला गया तो शीशी में पारे पर श्यामता अधिक थी और बहुत छोटी गंधक की डली उसमें पड़ी थी। कपड़े में छानने से पारे की श्यामता कपड़े पर आ गई। तोलने पर १४ तोले ८ माशे हुआ। १ माशे २ रत्ती छीज गया। पारे पर की गंधक की डली २ रत्ती थी। कूपी में से गंधक को खुरच निकाला तो ५ तोले १ माशे गंधक पीत रंग की निकली। १ तोले १० माशे ६ रत्ती घटी।

सम्मति–पुन: इसी सबब से छोटे नलवाले यंत्र में निकला हुआ सब पारा और ७ तोले गंधक भर शीशी स्थित जल भरे पात्र को बीच में तवा लगाने के बिना कड़ाई से मिलाकर रखो ताकि पानी खूब गर्म होता रहे और यह शंका कि कदाचित् जल शीतल रहने से गंधक न जलता हो निवृत्त हो जावे और आंच पहले दिन १२ छटांक से आरम्भ कर हर दूसरे घंटे पर १ छटांक बढ़ाकर १ सेर तक कर दी जाय। दूसरे दिन हर तीसरे घंटे पर १ छटांक बढ़ाकर १ सेर ३ छ० तक कर दी जाय। तीसरे दिन भी हर तीसरे घंटे पर १ छ० बढ़ाकर १ सेर ६ छ० की कर दी जाय। इससे अधिक हरगिज नहीं क्योंकि १ सेर ८ छ० की अग्नि से इस छोटे नलवाले यंत्र में गंधक पारे पर टपकने लगता है। शीशी की गर्दन तक जल का पात्र भरा रहे और हर आंच पर जितना जल कम हो जाय उतना और मिला दिया जाय।

नं० १३ तुलायंत्र
उपरोक्त क्रिया का तेरहवीं बार अनुभव

ता० २४ को १३ तोले ९ माशे ४ रत्ती पारद को (जो पिछले तुलायंत्र के १४ तोले ८ माशे निकला था किंतु बंद किये हुए तुलायंत्र के गिर जाने से शीशी का १० माशे पारा कूपी की गंधक में मिल गया जो पृथक् न हो सका अतएव १३ तोले ९ माशे ४ रत्ती रह गया) शीशी में भर और ६ तोल ४ माशे वेशुधी आंवलासार गंधक को कूपी में भर पूर्वोक्त प्रकार से उसी छोटे नाल में लगा कूपी की दर्ज पर और नाल और कूपी के जोड़ पर भस्ममुद्रा कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २५ को रखा रहा।

ता० २६ को उपरोक्त विधि से यंत्र के नलके को कस शीशी को जल भरे कटोरे में (जो पानी में गर्दन तक ड़बी रखी थी) और कूपी को बालू भरे घेरे में तह से ३ अंगुल ऊंचा कस ८ बजे से निम्नलिखित नकशे के अनुसार आंच देना आरम्भ किया।

नक्शा

तारीख	घंटा	तोलकण्डा	पारेकीरंगत	विशेषवार्ता
२६/४/८	८बजे	१२छ०टूटे आरनेकंडे	सफेद	
	९बजे	१२छ०		
	१०बजे	१३छ०	वाष्पबिन्दु	
	११बजे	१३छ०		
	१२बजे	१४छ०		
	२बजे	१५छ०		
	३बजे	१५छ०	गहरीश्यामता	४बजे शामसे दूसरेदिन ६बजेतक १५आंच१सेरकी
	४बजे	१सेर		
२७/४/८	७बजे	१सेर१छ०		
	८बजे	१से०१छ०		
	९बजे	१सेर१छ०		
	१०बजे	१से०२छ०		
	११बजे	१से०२छ०		
	१बजे	१से०३छ०		१बजे दिनसे दूसरे दिन ५बजे तक १७ आंच१सेर३छ०
२८/४/८	६ बजे	१से०४छ०		
	७ बजे	१से०४छ०		
	८बजे	१से०४छ०		
	९बजे	१से०५छ०		
	१०बजे	१से०५छ०		

	११बजे	१से०५छ०		
	१२बजे	१से०६छ०	४॥बजेशाम	१२बजेदिनसे४बजेशामतक
			शीशीमें गंधक	५आंच १से०२६छ०
शाम	५बजे	१से०४छ०	दीख पड़ी	५बजे शामसे१२
				बजेराततक ८आंच
रात	१बजे	१से०५छ०		१से०४छ०
	२बजे	१से०५छ०		३बजेरातसे दूसरेदिन
	३बजे	१से०६छ०		१०बजे८आंच१से०६छ०
				की लगी
२९/४/०८	१०बजे	दिन		कामबंद७५आंचलगीं

इस बार कड़ाई और यंत्र के बीच मे लोहा का तवा न लगाया गया जिससे कटोरे का पानी इतना गर्म होने लगा जिसमें देर तक ऊँगली नहीं डाले रह सकते थे जितना पानी अन्दाज से कम होता जाता था और डाल देते थे। तीसरी आंच पर पारे पर कुछ वाष्प बिन्दु और आठवीं आंच पर गहरी श्यामता दीख पड़ी।

ता० २८ को ४॥ बजे देखा को शीशी में छोटी छोटी गंधक की.२ डली पीत रंग की दीख पड़ी। अतएव आंच घटा कर १ सेर ४ छटांक की कर दी गई जिससे गंधक का आना बंद हो गया और वाद को रात के १ बजे और २ बजे १ सेर ५ छ० की आंच लगा कर ३ बजे से फिर १ सेर ६ छटांक की कर दी गई और इस ठंडे समय में आंच बढ़ा देने से भी गंधक फिर न टपका।

ता० २९ को ७ बजे देखा तो शीशी में और गंधक न आई थी। १० बजे दिन के ३ रात बीच चुकने पर काम वन्द कर दिया गया और यन्त्र को जैसा का तैसा रखा छोड़ दिया।

ता० ३० को खोला तो शीशी में पारे पर अधिक श्यामता थी। थोड़ा गंधक तो कल शीशी में दीखता था, अब खोलते समय यन्त्र की नाल में जमा हुआ और थोड़ा शीशी में गिर गया। पारे को निकाल विना छाने तोला तो १३ तोले ९ माशे हुआ। ४ रत्ती छीज गया और छान कर तोला तो पारे की श्यामता कपड़े पर आ गई और तोल में ४ रत्ती और छीजकर १३ तो० ८ माशे ४ रत्ती रह गया। पारे पर गंधक १ माशे ५ रत्ती पीत रंग का निकला। कूपी में से गन्धक को खुरच निकाला तो ७ माशे ३ रत्ती गंधक कूपी और नाल के मुख पर चिपटा हुआ मिला जो बिलकुल काली रंगत का जला हुआ था और २ तोले ३ माशे ५ रत्ती गंधक पीत श्याम रंगत का, बीच में निकला और १ तोले ३ माशे ३ रत्ती, कम पीत अधिक श्याम रंगत का अधजला गंधक नीचे तली में निकला। इस तरह कुल ६ तोले ४ माशे गंधक निकला। २ तोले घटा, उक्त चारों मेल के गंधक को आंच पर डाल जलाया तो चारों तरह का पिघल लौंदे जलने लगा। किन्तु जो नाल और कूपी के मुख का काली रंगत का था, वह जलता तो न था किंतु पिघलता कम था।

सम्मति–आगे से आंच १२ छ० से आरंभ कर पहले दिन सेर भर तक बढ़ाई जावे। दूसरे दिन रात को १८ छ० बढ़ाई जावे। तीसरे दिन रात को १। सेर बढ़ाई जावे। इससे अधिक आंच न बढ़ाई जावे। तीसरे दिन रात्रि को १। सेर तक बढ़ाई जावे। इससे अधिक आंच न बढ़ाई जावे और दिन को १० बजे से ५ बजे तक घटाकर १२ छ० की ही आंचे दी जावें। इस तरह ४ दिन में काम चले और शीशी की जगह कूपी लगाई जावे।

न० १४ तुलायंत्र
उपरोक्त क्रिया का चौदहवीं बार अनुभव

ता० २०/५/०८ को उक्त १३ तोले ८ माशे ४ रत्ती पारद को लोह कूपी में भर और ७ तोले वेगुधी आंवला सारगंधकको दूसरी कूपी में भर पूर्वोक्त प्रकार से उसी छोटी नाल में लगा पारदवाली कूपी के केवल नाल और कूपी के जोड़ पर भस्ममुद्रा और गन्धकवाली कूपी की दर्ज पर और कूपी और नाल के जोड़ पर भस्ममुद्रा कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २८ को उपरोक्त विधि से यंत्र के नलके को स्टेण्ड में कस पारदवाली कूपी को जल भरे पात्र में (कूपी जल में १/४ भाग डूबी रही) और गन्धकवाली को बालू भरे घर में तह से २ अंगुल ऊंचा स्थित कर ४ बजे शाम से हर घंटे पर निम्नलिखित नक्शे के अनुसार आंच देना आरम्भ किया।

तारीख	घंटा	तोलकंडा	विशेषवार्ता
२८/५/८	४बजेशाम	१२छ०	
	५बजे	१२छ०	
	६बजे	१३छ०	
	७बजे	१३छ०	
	८बजे	१४छ०	
	९बजे	१५छ०	
	१०बजे	१सेर	१०बजे रात से दूसरे दिन शाम के
			६ बजे तक २१ आंच १ सेर
२९/५/८	७बजेशाम	१से०१छ०	
	८बजे	१से०१छ०	
	९बजे	१से०१छ०	
	१०बजे	१से०२छ०	१०बजे रातसे दूसरे दिन शामके
			६बजेतक २१आंच १सेर २छ०
३०/५/८	७बजेशाम	१सेर३छ०	
	८बजे	१से०३छ०	
	९बजे	१से०३छ०	१०बजे रातसे दूसरे दिन९बजे दिन
	१०बजे	१से०४छ०	तक १२आंच१सेर४छ०
			दुपहरी की गर्मी के खयाल से आंच
३१/५/८	१०बजे	१से०२छ०	घटा कर १० बजे दिनसे शाम के
			७बजे तक १० आंच १ सेर २ छ०
	८बजे	१से०३छ०	की कर दी गई।
	९बजे	१से०४छ०	
			९बजे रात से ४ बजे सवेरे तक ७
	५बजे		आंच १ सेर ४ छटांक
			काम बंद

इस बार कढ़ाई और कटोरे के बीच में तवा न लगाया गया। कटोरे का पानी इतना गर्म रहता था जिसमें देर तक उंगली न डाले रह सकते थे। हर दूसरे घंटे पर पानी की घटी मिकदार २–२॥ छ० पानी डाल पूरी करनी पड़ती थी। यह काम ३॥ दिन रात चला।

ता० ३१ को सवेरे ५ बजे से काम बंद कर यन्त्र को जैसे का तैसा रखा छोड़ दिया।

ता० १/६ को खोला तो पारद की कूपी में पारे पर करीब करीब २ तोले के श्याम रंग का जल मिला जिसमें श्याम रंगत की गंधक की दो डली पड़ी थी। पारे को पानी से पृथक कर सुखा छान तोला तो १३ तोले ८ माशे हुआ। ४ रत्ती छीज गया। पारे पर की गंधक की डली ४ रत्ती हुई। कूपी से गंधक को खुरच तोला तो ६ तोले ५ माशे गंधक पीत हरित रंग की कूपी में ऊपर की और २ माशे जली गंधक श्याम रंग की कूपी में नीचे की अर्थात् ७ तोले गंधक में से कुछ ६ तोले ७॥ माशे गंधक निकली। ४॥ माशे घटी।

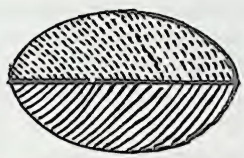
(१) सम्मति–इस शंका से कि पारद कूपी में जो जल निकला वह बाहर से कूपी के अन्दर तो नहीं चला गया, कूपी को उपरोक्त प्रकार से ही २–३

दिन जल मे स्थित रखा किन्तु कूपी के अन्दर जल न मिला। इसलिये यह निश्चय नहीं हुआ कि ये जल कैसे उत्पन्न हुआ। आगे क्रिया में किसी ममाले से पारद कूपी के बाहरी जोड़ पर मुद्रा अवश्य करनी चाहिये।

(२) सम्मति–अबकी बार अग्नि का समय भी ३।। दिन रात कम न था और अग्नि का प्रमाण भी कम न था क्योंकि ४ रत्ती गंधक पारे पर जो टपकी फिर भी गंधक की तोल केवल ४।। माशे घटी, इसलिये ये विचारने योग्य है कि अथवा अग्नि का समय १४ वा २१ दिन तक बढ़ाया जाय या क्या मेरी राय मे लोह संपुट में अवरुद्ध गंधक वाष्पते जारण करने को अग्नि मंद और समय बहुत अधिक होना चाहिये।

गंधक जारण का अनुभव संपुट द्वारा (भूधरयंत्र में)

ता० २९/११/७ को २।। तोले दानेदार दाग खाई पिसी गंधक और २।। तोले पारद कुल ५ तोले को मिट्टी के किनारे घिसे शकोरों के संपुट में (जो हलके चपटे बिना पेंदी के ४ इञ्च चौड़े १ इञ्च गहरे (सर्वांग) थे, इस तरह रखा कि नीचे ऊपर गंधक और बीच में पारद रहा। बाद को संपुट की दरजों पर और ऊपर नीचे कपरौटी कर सुखा दिया।



सम्पुट

ता० ३ को १२–१२ अंगुल लंबे चौड़े और १२ ही अंगुल गहरे गढ़े में बालू भर बालू में २।।। अंगुल नीचे संपुट को दबा ८।। बजे से दो दो घंटे बाद सवा सवा सेर की आंच देना आरम्भ किया।

ता० २/१२ के शाम के ४ बजे तक रात दिन इसी तरह के आंच दी गई। २ रात और ३ दिन में सब २८ आंच लगीं।

ता० ३ को खोला तो ऊपर जली हुई गंधक काले रंग की बीच में पारा और नीचे पारद गंधक से बनी जली पिष्टी सी निकली। तोल में २ तोले ४ माशे ३ रत्ती पारद निजरूप में और ६ माशे गंधक जली हुई और ६ रत्ती पिष्टी निकली यानी (५ तोले वजन में) २ तोले ११ माशे १ रत्ती वजन मिला। २ तोले ७ रत्ती घटा। जहां तक समझ में आता है पारद क्षय नहीं हुआ।

२ तोले ४ माशे ३ रत्ती पारद निजरूप में मौजूद है।

४ रत्ती पिष्टी मे समझना चाहिये।

१ माशे जली गन्धक में अवश्य मिला हुआ है।

२ तोले ५ माशे ७ रत्ती जोड़ पारद का होता है इसलिये एक आध रत्ती छीजन होगी।

सम्मति–इस क्रिया में यद्यपि ३ दिन निरंतर अग्नि देनी पड़ती है परन्तु गंधक का जारण बहुत अच्छा होता है। केवल एक ही दोष अबकी बार रह गया है वह यह है कि १ माशे के करीब पारा जली हुई गंधक में मिल गया जिससे पृथक् करना कठिन है। अनुमान होता है कि यदि पूरे ३ दिन रात अग्नि दी जाती तो गंधक पूर्णतः जल जाती और गंधक की निःसत्त्व राख में पारा मिला न रह जाता। यह भी संभव है कि किसी अम्ल रस से गंधक को आर्द्र कर देने से शेष जली गंधक में पारद न मिलता–एक बार पुनः इसी क्रिया को पूरे ३ दिन रात करके देखो।

गंधकजारण का अनुभव संपुट द्वारा (भूधरयंत्र में) अकलीमियां की क्रिया से

ता० ५/१२/०७ को ३ तोले ४ माशे पारद को (जो सरबंद कैन का था, मर्दन से जो साधारण शुद्ध था और जिसमें तुलायंत्र से गंधकजारण का अनुभव हुआ था) लोह के खल्व में डाल उसमें ढाक तेल दो दो चार चार बूंद डाल ८।। बजे से मर्दन करना आरंभ किया। मर्दन करते ही पारे के बारे से रवे होने लगे। दो घंटे बाद ये रवे और छोटे हो गये और ज्यों ज्यों मर्दन हुआ, त्यों त्यों ये छोटे होते गये। शाम के ४ बजे देखा तो पारे के रवे बहुत कम दीखते थे और एक प्रकार की पतली पिष्टी सी बन गई थी। आज ७ घंटे घुटाई की गई। २ माशे तेल पड़ा होगा।

ता० ६ को १ माशे के करीब ढाक का तेल और डाल ८ बजे से ११।। बजे तक ३।। घंटे घुटाई की तो पारद नष्टपिष्टी हो गया फिर २ बजे पर ४ माशे दानेदार गंधक पीस खरल में घोटा तो पारा इकट्ठा होने लगा। बाद को बूंद बूंदकर २ माशे तेल डाल ४ बजे से फिर घुटाई की तो पारा फिर न मिला अतएव उसको पृथक् कर तोला तो १ तोला ८ माशे ४ रत्ती हुआ। १ तोला ७ माशे ४ रत्ती गंधक में मिला रहकर फुसफुसी पिष्टी सी बन गई जिसकी टिकिया न बन सकी। इस दवा को जो तोल में १ तो० ११ मा० ४ र० थी, चीनी फिरे छोटे संपुट में रख कपरौटी कर सुखा दिया।

सम्मति–गंधक एक बार में डाल दी गई, यदि थोड़ी थोड़ी डाल घोटा जाता तो शायद पारा पृथक् न होता।

ता० ८ को १२/१२ अंगुल लंबे चौड़े और १२ अंगुल गहरे गढ़े में बालू भर बालू में ३ अंगुल नीचे उक्त संपुट को रख ९।। बजे से दो दो घंटे बाद सवा सवा सेर कंडों की आंच देना आरम्भ किया। ३।। बजे तक ४ आंच दी गई।

ता० ९ को संपुट को निकाला तो संपुट के ऊपर के शकोरे पर कालोंछ आ गई थी। थोड़ी कपरौटी जल गई खोला तो दवा जैसी की तैसी रखी थी। तोलने पर १ तोले ११ माशे ४ रत्ती घटी।

सम्मति–आगे ३ अंगुल की जगह सिर्फ २ अंगुल रेत ऊपर रखा जाय और ६ आंच दी जाय।

उपरोक्त क्रिया का दूसरी बार अनुभव (भूधरयंत्र में)

ता० ११/१२/७ को पूर्वोक्त १ तोले ११ माशे दवा को उसी संपुट में रख कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १२ को उसी १२–१ अंगुल लम्बे चौड़े बालू भरे गढ़े में २ अंगुल नीचा संपुट को दबा ९ बजे से सवा सवा सेर कंडों की दो दो घंटे बाद आंच देना आरम्भ किया। ७ बजे तक ६ आंच दी गई।

ता० १३ को संपुट निकाला तो उसके ऊपर की सब कपरौटी जल गई थी। दवा के रंग में कुछ फर्क न था। तोलने पर १ तोला १० माशे २ रत्ती हुई। १६ रत्ती घटी।

सम्मति–अनुमान होता है कि संपुट गहरे और पेंदीदार शकोरों का किया गया, इसी कारण से अग्नि का प्रभाव ठीक न पड़ा। गंधक जारण नहीं हुआ। आगे से बिना पेंदी के चपटे शकोरों से संपुट कर पुनः ६ आंच दो।

उपरोक्त क्रिया का तीसरी बार अनुभव (भूधरयंत्र में)

ता० १४/१२/०७ को पूर्वोक्त १ तोले १० माशे २ रत्ती दवा को बिना पेंदी के चपटे शकोरे के संपुट में बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १५ को उसी १२–१२ अंगुल लंबे चौड़े बालू से भरे गढ़े में २ अंगुल नीचा संपुट को दबा ८।। बजे से सवा सवा सेर कंडों की दो दो घंटे बाद आंच देना आरम्भ किया। ६।। बजे तक ६ आंच दी गई।

ता० १६ को संपुट को निकाला तो उसकी कपरौटी तो जल गई थी किन्तु खोलने पर दवा ज्यों की त्यों पुरी १ तोला १० माशे २ रत्ती निकली।

सम्मति–२ घंटे तक आंच ठहरती नहीं और जाड़ा बहुत पड़ता है अतएव डेढ़ डेढ़ घंटे बाद दहरा दिया जावे।

उपरोक्त क्रिया का चौथी बार अनुभव
(भूधरयंत्र में)

ता० १६/१२/०७ को पूर्वोक्त १ तोले १० माशे २ रत्ती दवा को उसी संपुट में रख कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १७ को उसी बालू भरे गढ़े में २ अंगुल नीचा संपुट को दवा ८॥ बजे से सवा सेर कंडों की डेढ़ डेढ़ घंटे बाद आंच देना आरम्भ किया। ४ बजे तक ६ आंचें दी गई।

ता० १८ को निकाल दवा को तोला तो १ तोले १० माशे हुई, २ रत्ती घटी।

सम्मति–आगे १। सेर की जगह डेढ़ सेर की आंच और १॥ घंटे की जगह १। घंटे में आंच दो और ६ की जगह १२ आंच दो।

उपरोक्त क्रिया को पांचवीं बार अनुभव
(भूधरयंत्र में)

ता० १९/१२/७ को उक्त १ तोले १० माशे दवा को उसी सम्पुट में रख कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २० को रेत से भरे १२ अंगुल चौड़े गोल गढ़े में उसी प्रकार दो अंगुल नीचा संपुट को रख ८ बजे से डेढ़ डेढ़ सेर की आंच सवा सवा घंटे बाद दी। रात के ९॥। बजे तक सब १२ आंच लगीं।

ता० २१ को खोला तो दवा ज्यों की त्यों १ तोले १० माशे निकली।

सम्मति–आंच १। सेर की जगह १॥ सेर की कर दी और तादात में भी ४ से १२ तक बढ़ा दी किन्तु गंधकजारण नहीं हुआ। इससे अनुमान होता है कि अधिक शीत पड़ने के कारण गंधक जारण ठीक नहीं होता। पीछे ज्ञात हुआ कि नीले गढ़े में आंच दी गई। अनुमान होता है कि यही कारण गंधक न जलने का हुआ।

उपरोक्त क्रिया का छठी बार अनुभव
(भूधरयन्त्र में)

ता० २३/१२/०७ को पूर्वोक्त १ तोले ८ माशे ४ रत्ती पारे में (जो प्रथम अनुभव में खरल में गंधक डालते समय इकट्ठा हुआ पृथक् कर लिया गया था) १ तोले ३ माशे ४ रत्ती पारद (जिस पर तुला यंत्र में गंधक जारण का अनुभव किया गया था) और मिला पूरा ३ तोले ४ माशे कर लोहखल्व में डाल ढ़ाक तेल दो दो चार बूंद डाल ९॥ बजे से धूप में मर्दन करना आरम्भ किया। ३ बजे पर पारद के नष्टपिष्टी हो जाने पर खल्व में ८ माशे पिसा गंधक इस तरह डाला कि चुटकी से थोड़ा थोड़ा गंधक बिखरवां डालते गये और घोटते गये और थोड़ा थोड़ा तेल भी डालते गये जिसमे पिष्टी में खुश्की न आने पाई। इस क्रिया से गंधक मिल गया और पारा पूर्ववत् पृथक् न हुआ किन्तु थोड़ी देर और घुटने पर कुछ खुश्की आने पर पारे के रवे पृथक् होने लगे, इसलिये और न घोट कर पिष्टी की ही टिकिया बना संपुट में रख कपरौटी कर दी गई। (११ माशे तेल पड़ा)

ता० २४ को संपुट रखा रहा।

ता० २५ को उसी बालू भरे गढ़े में १। अंगुल नीचा संपुट को रख ९ बजे तक सवा सवा सेर की आंच एक एक घंटे बाद दी गई। रात के ८ बजे तक १२ आंच लगीं।

ता० २६ को सवेरे संपुट को निकाल खोला तो अन्दर टिकिया ज्यों की त्यों निकली। ऊपर कुछ जल गई थी। तोलने पर १ तोले ११ माशे ३ रत्ती हुई। १ तोले ८ माशे ५ रत्ती घटी अर्थात् गंधक की तोल के सिवाय १ तो० ४ माशे ५ रत्ती पारा भी उड़ गया। अग्नि अधिक लग गई। सेर सेर भर की आंच घंटे या सवा घंटे पीछे जाड़े के दिनों में लगनी चाहिये। संपुट २ वा २॥ अंगुल नीचा रेत में रहना चाहिये।

इति श्रीजैसमेरनिवासि पं० मनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्ल-कृतायां रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायां गंधकजारणं नामैकविंशोऽध्यायः ॥२१॥

समुदायेन गगनजारणाध्यायः २२

अभ्रसत्त्वजारण की आद्योपान्तक्रिया

अथाभ्रकसत्त्वादिबीजजारणप्रकारो लिख्यते केवलाभ्रकसत्त्वं हि न ग्रसत्येव पारदः ॥ तस्माल्लोहान्तरोपेतं युक्तं वा धातुतत्त्वके॥१॥

अर्थ–पारद केवल अभ्रकसत्त्व को नहीं खाता है इसलिये अन्य किसी धातु के साथ मिले हुए अथवा सोनामक्खी के सत्त्व के साथ मिले हुए अभ्रकसत्व का जारण करे॥१॥

प्रथमं पाषाणखल्वे सूतं निधाय सूतादष्टमांशं बिडं दत्त्वा जंबीरनिंबूनीरेण दिनमेकं मर्दयेत् । ततस्तस्मिन् सूतमानाच्चतुःषष्टचंशमितमभ्रकसत्त्वं सार्षपतैलमयूरपित्ताभ्यां स्वहस्तयोरेव स्पर्शितं कृत्वा तत्सत्त्वं गोलं धृत्वा कांजिकैर्वस्त्रवर्त्त्या तं गोलं प्रक्षालयेत् (प्रस्वेदयेत्) क्षालनात्पारदक्षयो यथा न स्यात्तथा विधेयः । ततः सूतं चतुर्गुणवस्त्रे धृत्वा निष्पीडयेत् । शिक्थशेषश्चेत्तदा ग्रासो न सम्यग् जीर्णः । अशेषश्चेत्तदा सम्यग्ग्रासो जीर्णः । इति परीक्ष्य अजीर्णे तु पुनः शिक्थं सूते क्षिप्त्वा त सूतं पूर्ववत्स्वेदयेत् अभ्रकसत्त्वमाक्षिकसत्त्वजीर्णः सूतो दंडधारी भवति । सूते क्षिप्त्वा निंबूरसेनं वा तद्भावे जंबीररसेन वा दिनमेकं पुनः पुनर्मर्दयेत् । ततः स्वर्णमाक्षिकसत्त्वं सूताच्चतुःषष्टचंशमितं मधुयुतं च सूते क्षिप्त्वा निम्ब्वादिनीरेण दिनमेकं संमर्द्य गाढं ज्ञात्वा गोलं कुर्यात् । ततः सार्द्धनिष्कं सैंधवं सार्द्धनिष्कं यवक्षारं च निंबुरसगोमूत्राभ्यां संमर्द्य भूर्जपत्रं वा चतुर्गुणवस्त्रं लिप्त्वा संशोष्य अस्मिन् गोलं नीत्वा मृन्मयपात्रे च वस्त्रोपरि अजीर्णे तु न भवति इत्यपि परीक्षान्तरम् एतद्दत्तग्रासादधिकात् पंच ग्रासान् दद्यात् । अथायं क्रमेण प्रथमग्रासे द्वात्रिंशद्भागेन सत्त्वं देयं, द्वितीयग्रासेऽष्टमांशेन सत्त्वं देयं चतुर्थग्रासे तु चतुर्थांशेन सत्त्वं देयं, पंचमग्रासे च पारदतुल्यं सत्त्वं देयं तथा च षड्ग्रासा दत्ता भवंति षट्सु ग्रासेषु प्रत्येकं सूताष्टमांश एव बिडः प्रक्षेपणीयः एवं कृते गगनग्रासाख्यसंस्कारो भवति सूतस्य ॥

(ध० सं०)

अर्थ–प्रथम पत्थर के खरल में पारद को रख और पारद से अष्टमांश बिड़ को डालकर जंभीरी और नींबू के रस से एक दिन घोटे फिर उसमें पारद की तोल से चौसठवें भाग अभ्रकसत्त्व को सरसों के तेल और मोरे के पित्ते से चिकना कर फिर उसको पारद में डालकर नींबू के रस से अथवा जंभीरी के रस से एक दिन बार बार मर्दन करे, इसके बाद चौसठवां भाग सोना मक्खी का सत्त्व और शहद को पारद में डालकर नींबू आदि के रसों में एक दिन घोटे और उसको गाढ़ा जानकर गोला बना लेवे फिर डेढ़ तोला सैंधानोंन और डेढ़ तोला जवाखार इन दोनों को नींबू के रस और गोमूत्र से घोटकर उससे भोजपत्र या चौलर कपड़े को लीपकर और सुखाकर फिर उस गोले को मिट्टी के पात्र में कपड़े पर रख देवे। फिर कपड़े की बत्ती को कांजी में भिगोकर स्वेदन कर धोवे, उस पारद को ऐसा धोवे कि जिससे पारद का क्षय नहीं हो फिर पारद को चौलर कपड़े में बांधकर निचोड़े। यदि उसमें कुछ गाद रह गई हो तो ग्रास भलीभांति जीर्ण नहीं हुआ, ऐसा समझना चाहिये। यदि जीर्ण नहीं हुआ हो तो फिर पहले के समान स्वेदन करे। इस प्रकार अभ्रक सत्त्व और माक्षिक सत्त्व के जीर्ण से पारद दण्डधारी नहीं होता है। यह ग्रास जीर्ण तथा अजीर्ण की परीक्षा कही है, इस ग्रास के

अतिरिक्त पांच ग्रास और देवे उसका यह क्रम है प्रथम ग्रास में बत्तीस भाग सत्त्व, द्वितीय ग्रास में षोड़शभागसत्त्व और पंचग्रास में पारद के समान सत्त्व देना चाहिये। इसी प्रकार पूर्वग्रास सहित ६ ग्रास होते हैं और प्रत्येक ग्रास में पारे से अष्टमांश बिड़ डालना चाहिये। ऐसा करने पर गगनग्रासाख्य संस्कार होता है।

सम्मति–प्रथम पारे में बिड़ डालकर मर्दन करना, दूसरे उसमें अभ्रक सत्व डालकर घोटना, तीसरे स्वर्ण माक्षिक सत्व डालकर घोटना, चौथे उसको वस्त्र में गोला बनाकर स्वेदन करना, पांचवें ग्रास जीर्ण हुआ या नहीं जीर्ण हुआ ऐसी परीक्षा करना, छठे ग्रास के नहीं जीर्ण होने पर पुनः स्वेदन करना, इस प्रकार समस्त ग्रासों में ६ क्रियायें क्रमशः अवश्य करनी चाहिये।

अभ्रकजारण की कच्छप के पीछे खुली भूषा में जारण की क्रिया

बाजै वैद्य कच्छपयंत्र से पारे में दूने अभ्रक सत्त्वादिक को डालकर जलाते हैं और जो शेष रहता है उसको साक्षात् भट्टी की अग्नि में धोंक जलाकर राख करते हैं और पूर्वोक्त गोले को पक्की घड़ियों में रख गोले के ऊपर नीचे बिड़ दे घड़ियों की नींबू के रस से भर देते हैं और घरिया का मुख बंदकर भट्टी में धोंकते हैं, तब पारे का द्विगुण सत्त्वादिक कच्छपयंत्र में जलाते हैं, तब पारा उड़ने का भय नहीं रहता। इससे साक्षात अग्नि के संयोग से बाकी द्विगुण से अधिक सत्वादिक जलावे तो कुछ चिन्ता नहीं।

(रसराजसुन्दर प्र० खं० पूर्वभाग)

अभ्रजारण

प्रथम पारे में उसका अष्टमांश बिड़ डाले यानी पारा ८ टंक हो तो एक टंक बिड़ डाले और जंभीरी के रस में १ दिन घोटे। पश्चात् चौसठवां हिस्सा यानी ४ रत्ती अभ्रकसत्त्व डाले। फिर जंभीरी के रस में १ दिन घोटे (परन्तु यह याद रहे कि प्रथम अभ्रकसत्त्व को जब जंभीरी के रस में घोटे जब पहले उस अभ्रसत्त्व को मोर का पित्ता और सरसों का तेल हाथ से मल लेवे अथवा सोनामक्खी का सत्त्व और शहद मिलाकर मल लेवे। सोनामक्खी का सत्त्व अभ्रकसत्त्व के समान यानी ४ रत्ती लेना) एक गोला करे। तत्पश्चात् सैंधानमक और जवाखार दोनों को धेला धेला भर लेकर नींबू के रस और गोमूत्र में खूब घोटे। जब गाढ़ा हो तब चार तह कपड़े पर लेप करे और जब खूब सूख जाये तब उसमें उस गोले को रखे। ३ और सूत से बांधकर दोलायंत्र की भांति एक हांडी में सैंधा नमक, जवाखार, कांजी, कागजी, नींबू का रस, गोमूत्र डालकर तीन दिन स्वेदन करे। जानना चाहिये कि जब अभ्रकसत्त्व सोनामक्खी के सत्त्व में मिलें तब पारा अभ्रकसत्त्व को भली भांति ग्रसै और दोनों सत्त्व न मिलें तो नहीं ग्रसे। याते अभ्रकसत्त्व की बराबर सोनामक्खी सत्त्व मिलावे। पीछे जारण करे। जब इस प्रकार स्वेदन कर चुके तब उस गोला को निकाल लेवे फिर उस गोला को कांजी के पानी से धोकर इससे पारा निकाल लेवें और कपड़े में डालकर खूब मले परन्तु ऐसा मले कि पारा घटने न पावे। जब मलते मलते निर्मल हो जाय तब चार लड़ कपड़े में डालकर निचोड़ लेवे। पीछे पारे को तौल जो जाने कि केवल पारा रह गया है। अभ्रसत्त्व बाकी नहीं रहा तो जानना कि पारा अभ्रसत्त्व को खा गया और पारा तोल में अधिक होवे तो जाने कि पारे में अभ्रक जीर्ण नहीं हुआ। जब अभ्रकसत्त्व पारे में जीर्ण हो जाये तब पारा दंडधारी (अथवा जीवधारी) होवे और यदि जीर्ण न हो तो दंडधारी न होवे तब उस पारे को भोजपत्र में बांधकर दोलायंत्र की भांति लटकाय। कांजी का पानी भरै और पाव भर सैंधानमक डाले। तीन दिन स्वेदन करे तब पारे का अजीर्ण दूर हो।

(रसराजसुन्दर पू० भा० प्र० खं०)

अभ्रकसत्त्वजारणक्रिया आद्योपान्तदोला

(कच्छपयंत्र से)

अथ जारणकं कर्म कथयामि सुविस्तरात् । अभ्रकं तप्तसत्त्व च समं कृत्वा तु संधमेत् ॥२॥ अभ्रकशेषं भवेद्यच्च तत्सत्त्वं जारयेद्रसे । एवं वै नागवंगाभ्यां घनसत्त्वं हि साधयेत् ॥३॥ धातुवादविधानेन लोहकृद्देहकृन्न हि। नागं वंगं महाघोरौ न सेव्यौ हि निरंतरम् ॥४॥ साधितं घनसत्त्वं तदिति रंजनसंनिभम् । बुभुक्षितरसस्यास्ये निक्षिप्तं वल्लमात्रकम् ॥५॥ रसगाद्याणकं तुर्यभागैश्चैव प्रकाशितम् । ताम्रपात्रस्थमम्लं वै सैंधवेन समन्वितम् ॥६॥ क्षारेण सहितं वापि मर्दितं त्रिदिनावधि । जातं तुल्यसमं नीलं कल्कं तत्प्रोच्यते खलु॥७॥ कल्केनानेन सहितं सूतकं च विमर्दयेत् । दिनत्रयं तप्तखल्वे धौतो यस्माच्च कांजिकैः ॥८॥ स्थापितं काचपात्रे तु तदूर्ध्वाधो विडं न्यसेत् । रसस्याष्टमभागेन संपुटं कारयेद् बुधः ॥९॥ भूर्जपत्रैर्मुखं रुंध्यात्सूत्रेणैव तु वेष्टयेत् । संपुटं वाससा वेष्टच दोलायां स्वेदयेत्ततः ॥१०॥ गोमूत्रेणाम्लवर्गेण कांजिकेन दिनं दिनम् । अस्य पात्रेऽस्य लोहस्य पात्रे काचमये ऽथ वा ॥११॥ उष्णकांजिकतोयेन क्षालयित्वा रसं ततः । दृढ़े चतुर्गुणं वस्त्रे क्षिप्त्वा निष्पीडयेद्रसम् ॥१२॥ निपतेदथ मृत्पात्रे सर्वोऽपि यदि पारदः । तदाभ्रं जरितं सम्यक् पुनरेवं तु कारयेत् ॥१३॥ ग्रासमानं पुनर्देयमभ्रबीजमनुत्तमम् । दद्यादेव चतुर्ग्रासं विना कच्छपयंत्रतः ॥१४॥ अष्टग्रासेन संचार्य जारयेद्गुरुमार्गतः । एवं कृते समं चाभ्रं सूतकं जीर्यते ध्रुवम् ॥१५॥ स्वहस्तेन कृतं सम्यग्जारणं न श्रुतं मया ॥१६॥

(ध० सं०)

अर्थ–अब जारण कर्म को विस्तारपूर्वक कहते हैं कि सुवर्ण माक्षिक सत्ता और अभ्रक को समभाग लेकर कोयलों की अग्नि में धोंके और धोंकते धोंकते जब सुवर्ण माक्षिक सत्त्व जलकर अभ्रक मात्र ही शेष रह जाय तब उसको पारे में जारण करे, इसी प्रकार नाग तथा वंगते अभ्रक सत्त्व को सिद्ध करे और धातुवाद की विधि से सिद्ध किया हुआ सत्त्व धातु के बनानेवाला होता है और शरीर को उत्तम बनाने वाला नहीं है। नाग और वंग ये दोनों धातु भयंकर है, इसलिये निरंतर सेवन करने योग्य नहीं है और उनसे सिद्ध किया हुआ अभ्रक सत्त्व रंजन योग्य होता है। यह अभ्रक सत्त्व दो प्रकार का होता है। पहला नाग संस्कृताभ्रक और दूसरा वंगसंस्कृताभ्रक। अब अभ्रक संस्कार के उपयोगी नाग और वंग के बनाने की प्रक्रिया को बताते हैं। प्रथम नाग (सीसे) को अग्नि में गलावे फिर नाग के समान भाग लिये हुए मैनसिल को थोड़ा थोड़ा डालकर धोंकता जावे तो नाग का भस्म होता है और इसी प्रकार वंग को भी अग्नि में गलाकर वंगतुल्य हरिताल का थोड़ा थोड़ा बुरका देकर आंच में धोंके तो वंगभस्म होता है। अब हमको नागसंस्कृताभ्रक बनाना है तो अभ्रक (या सत्त्व) के नागभस्म के तुल्य लेकर अग्नि में रखकर धोंके और जब अभ्रकमात्र शेष रह जाय तब निकाल लेवे तो यह नागसंस्कृताभ्रक बीज सिद्ध हो गया और जो वगसंस्कृताभ्रक बनाना है तो नागसंस्कृताभ्रक बीज की रीति से बना लेवें। पूर्वोक्त रीति से सिद्ध किये हुये तीन रत्ती अभ्रक सत्त्व को एक तोले पारे में जीर्ण करे तो रंजन होता है अथवा चतुर्थांश अभ्रक सत्त्व जीर्ण होने पर पारद का रंजन होता है। तांबे के पात्र में अम्लवर्ग में से किसी एक खट्टे पदार्थ का रस डालकर उसमें कुछ सैंधानोंन तथा जवाखार मिला देवे फिर उनको तीन दिवस तक तांबे के मूसला से घोटे तो यह एक प्रकार का कल्क बन जायेगा फिर उस कल्क के बराबर पारा लेवे और पारे से चौसठवां हिस्सा अभ्रक लेवे और फिर इन तीनों को अम्लरस से तीन दिन तप्तखल्व में मर्दन कर गरंम कांजी से धो लेवे। तदनंतर उस धोये हुए पारे को कांच की शीशी में रख उसके ऊपर नीचे अष्टमांश बिड़ को रखकर भोजपत्र से बंदकर सूत लपेट देवे फिर उसके ऊपर कपड़ा लपेट दोलायंत्र द्वारा एक दिन गोमूत्र से एक दिन अम्लवर्ग से और एक दिवस कांजी से स्वेदन करे। इसके पश्चात् लोहे के या कांच के पात्र

में गरम कांजी से धोकर चौलर कपड़े में छान लेवे। यह छना हुआ पारा पहले डाले हुए पारे के वजन के समान हो तो ऐसा समझना चाहिये कि अभ्रक जीर्ण हो गया। फिर इसी प्रकार से ही अभ्रक जीर्ण करे। अभ्रक के प्रथम ग्रास में चौसठवां हिस्सा, दूसरे ग्रास में बत्तीसवां हिस्सा, तीसरे ग्रास में सोलहवां हिस्सा और चौथे ग्रास में आठवां हिस्सा दोलायंत्र द्वारा जारण करे। पंचमादि ग्रासों का दोलायंत्र द्वारा जारण नहीं होता इसलिय शेष चार ग्रासों को कच्छपयंत्र द्वारा आगे कही हुई रीति से जारण करे। प्रथम ग्रास में पारा और पारे के तुल्य कल्क तथा पारद के अष्टमांश अभ्रकबीज, दूसरे ग्रास में पारा, पारद के तुल्य कल्क और पारद से चौथाई अभ्रकबीज, तीसरे ग्रास में पारा, पारे के तुल्य कल्क और पारद से आधा अभ्रबीज और चौथे ग्रास में पारा, पारे के तुल्य कल्क और पारद के समान अभ्रकबीज लेवे। इनको तप्तखल्व में नींबू या जंभीरी आदि के रस से घोटकर गोला बनावे और पारे के अष्टमांश बिड़ को लेकर उस गोले के चारों तरफ लगाकर कच्छपयंत्र द्वारा जारण करे इस प्रकार दूना, तिगुना और चौगुना अभ्रकबीज जारण करे यह क्रिया हमारे हाथ से की हुई है, केवल सुनी हुई नहीं है। यह बात धरणीधरसंहिता के बनाने वाले ने अपने ग्रंथ में स्वयं लिखा है॥२–१६॥

गगनभक्षण की सुगम क्रिया
(मूषा द्वारा)

अथाभ्रकसत्त्वजारणे प्रकारान्तरं सुगमं बहुवैद्यैरनुभूतं लिख्यते–
शुद्धस्थाने लिप्तभूमावेकान्ते जनवर्जिते । स्थाप्यार्द्रगोमयं तत्र पक्वां मूषां च मृन्मीयम् ॥१७॥ षडंगुलायगंभीरां लोहजां वापि विन्यसेत् । मूषायां पूर्ववद्गोलं कृत्वा धृत्वा बिडं क्षिपेत् ॥१८॥ गोलस्याधस्तथोर्ध्वं च सूतादष्टमभागतः । ततो निंबादिनीरेण मूषार्धे परिपूरयेत् ॥१९॥ तस्योपर्यगारदीप्तं पात्र लोहं च मृन्मयम् । यावत्सत्त्वं द्रवीभूयात्तावत्पात्रस्य धारणम् ॥२०॥ ततश्च पारदं नीत्वा तुलया तोलनं चरेत् । नाधिके पूर्वमाने तु कुर्यादिबंपुनःपुनः ॥२१॥ एकद्वित्रिचतुष्पंचषड्गुणं सत्त्वजारणम् । सूते सत्त्वं षोडशांशमत्र देयं न चान्यथा ॥२२॥ अतिगुप्तप्रकारोऽयं सुलभो वैद्यसम्मतः । क्रियाकौशल्ययुक्तेन भिषजाऽयं विधीयते ॥२३॥

(ध० सं०)

अर्थ–अब हम जिसको अनेक वैद्यों ने अनुभव किया है ऐसे अभ्रक सत्त्वजारण के सुगम उपाय को लिखते हैं। एकान्त शुद्धस्थान में लिपी हुई पृथ्वी पर गीले गोबर को रख फिर उसमें छः अंगुल लम्बी लोहे की या मिट्टी की घरिया रख देवे और उस घरिया में पूर्वोक्त रीति से गोला बनाकर भर देवे और उसके ऊपर नीचे पारद से अष्टमांश बिड़ देकर उस धरिया का आधा हिस्सा नींबू तथा जंभीरी के रस से भर देवे फिर घरिया के ऊपर अंगारों से भरा हुआ मिट्टी तथा लोहे का पात्र रख देवे कि जिससे अभ्रक सत्त्व द्रव हो जावे और सत्त्व के द्रव होने पर उस अग्नि से पात्र को उतार लेवे फिर उस पारद को गरम कांजी से धोकर तराजू में तोल लेवे। पारद का भाग औषधि रहित केवल पारद के तुल्य हो तो सत्व जीर्ण हो गया। समझना चाहिये यदि अधिक हो तो फिर भी यही क्रिया करे इस रीति से पारद में षोडशांश सत्त्व का ग्रास देकर समभाग, दूना, चौगुना, पच्चगुना, तथा छगुना सत्त्वजारण करे वैद्यों के मानने योग्य और सुलभ यह गुप्त अभ्रक सत्त्व जारण प्रकार पारद क्रिया कुशल वैद्यराज ने अपने अनुभव से लिखी है॥१७–२३॥

और भी

[1]पृथ्वी में गोबर रखकर उसमें ६ अंगुल गहरी पक्की घरिया रख उसमें गोले को रखे उसके ऊपर नीचे बिड धर के जंभीरी के रस से आधी घरिया को भर दे और मुख बन्द कर ऊपर अंगारो का भरा खिपरा रखे। जब तक सत्त्व न पिघले पश्चात् पारे को निकाल तोले जो पारा वजन में बराबर हो फिर इसी प्रकार सत्त्व को डालकर अग्नि दे। जब पारे का दूना सत्त्व जल जाय तब साक्षात् अग्निसंयोग से त्रिगुण, चतुर्गुण, पंचगुण, षड्गुण, सत्त्वादिक जारण करे। (हर बार का षोड़शांश सत्त्वादिक डाले और जलावे) तिसके उपरान्त बाह्यद्रुति के योग से अभ्रकसत्त्व को पारे में जलावे।

(रसराजसुन्दर प्र० खं० पूर्वभाग)

धान्याभ्रक चारण और जारण

अथ रसरत्नाकरे घनपत्रचूर्णचारणोच्यते अथातः समुखे सूते पूर्वाभ्रं षोडशांशकम् । दत्त्वा मर्द्यं तप्तखल्वे सिद्धमूलीद्रवैर्दिनम् ॥ ततस्तं चारणायंत्रे जम्बीररससंयुते । घर्मे धार्यं दिनैकन्तु चरत्येव न संशयः ॥२५॥

अर्थ–प्रथम बुभुक्षित पारद में पारद से षोड़शांश चारण योग्य अभ्रक चूर्ण को मिलाकर सिद्धमूलियां के रस के सात एक दिवस तक तप्तखल्व में घोटे, फिर उसको जंभीरी के रस के साथ एक दिवस तक तप्तखल्वमें फिर उसको जंभीरी के रस से भरे हुए चारणयंत्र में रखकर एक दिन घास में रखे रहे तो चारण होता है, इसमें संदेह नहीं है॥२४॥२५॥

अथ तत्रैव जारणा
चारितं बंधयेद्वस्त्रे दोलायंत्रे दिनं पचेत् । सिद्धमूलीद्रवैयुक्ते कांजिके जीर्यते फलम् ॥२६॥ अजीर्णे चेत्पचेद्यंत्रे कच्छपाख्ये दिनावधि । अष्टमांशबिडं दत्त्वा जारयेन्नात्र संशयः । अनेन क्रमयोगेन चार्यं जार्यं पुनः पुनः ॥२७॥ (र० रा० प०)

इति श्री अग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजन-प्रसादसंकलितायांरसराजसंहितायामभ्रकजारणं नाम द्वाविंशतितमोऽध्यायः ॥२२॥

अर्थ–खोये हुए पारे को कपड़े में बांधकर सिद्धमूलियां के रस से युक्त कांजी में दोलायंत्र द्वारा एक दिवस तक पचावे तो अभ्रक जीर्ण होगा। यदि गंधक जीर्ण नहीं हुआ हो तो फिर उसको कच्छपयंत्र में अष्टमांश बिड़ मिलाकर एक दिन जारण करे, इसमें संदेह नहीं है, इसी क्रम से बार बार चारण और जारण करना चाहिये।॥२६॥२७॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यास–
ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां–
अभ्रकजारणं नाम द्वाविंशतितमोऽध्यायः ॥२२॥

स्वर्णजारणाध्यायः २३

स्वर्णजारण कटोरे में

भूखो पारो दस पल लेय । कुंदन तबक तासुमें देय ॥
चीनीको जु सकोरा धरे । तामें निंबुआ को रस करे ॥
निंबुआको रस दे पल एक । ढाकि रहै निस यहै विवेक ॥
बहुरचो सरवा लीजे छान । उतने हि तवक ओरहे आन ॥
नींबूको रस बहुरचो देय । आठ पहर ज्यों धरोय रहेय ॥
ऐसो कुंदन तोलों देय । जोलों पारो समसरि लेय ॥
के कहुं होय अजीरन ताहि । तो दिन देय मंदोवो वाहि ॥
जव जाने सु बराबर चरे । बोझ न होय जोखके धरे ॥

(रससागर)

[1]–१/१६ सत्त्व का देना इस सुगम क्रिया के संबध मे ठीक है किन्तु कच्छपादि में इससे अधिक ग्रास दि जाते है।

बुभुक्षित करके स्वर्ण खिलाने की द्वितीय क्रिया धूप में तप्त खल्व में मर्दन फिर दोला में जारण

एतदेव रसं यत्नाज्जम्बीरद्रवसंयुतम् । दिनैकं धारयेद्धर्मे मृत्पात्रे वा मृतो भवेत् ॥१॥ ग्रासं तत्रैव दातव्यं स्वर्णं शुद्धं शनैः शनैः । चतुष्षष्ट्यादितुल्यांशं देयं जीर्णं च चालयेत् ।२॥ चतुष्षष्ट्यंशकं चादौ द्वात्रिंशत्तदनंतरम् ॥ पुनर्विंशतम ग्राह्यं द्विरष्टं द्वादशं क्रमात् ॥३॥ अष्टमांशं चतुर्थं वाप्यर्द्धं चैव समांशकम् ॥ प्रतिग्रासे तप्तखल्वे दिनमम्लेन मर्दयेत् ॥४॥ तं क्षिपेच्चारणायंत्रे जंबीरनीरसंयुतम् ॥ तद्यंत्रं धारयेद्धर्मे दिनं स्याज्जारितो रसः ॥५॥ तं छागक्षीरगोमूत्रस्नुह्यार्कक्षीराम्ललेपिते ॥ दृढवस्त्रे बहिर्बद्ध्वा मृद्धटे स्वेदयेद्बुधः ॥६॥ कांजिकाक्षारसूत्रैर्वा दोलायंत्रे त्वहर्निशम् ॥ तमुद्धतं रसं देवि खल्वे संशोधयेत्क्षणात् ॥७॥ संमर्द्य पूर्ववत्खल्वे यंत्रे लिप्तपुटे पुनः ॥ क्रमेणानेन देवेशि त्रिभिर्ग्रासैः प्रजीर्यते ॥८॥ यावत्तेन यदा तस्मात्तावत्तेन विमर्दयेत् ॥ प्रतिग्रासं तप्तखल्वे यथा शक्त्या च चार येत् ॥ तं जीर्णं मारयेत्सूतं मारणं कथ्यते द्रवैः ॥९॥ (कामरत्न)

अर्थ–मिट्टी के पात्र मे जंभीरी के रस के साथ इस बुभुक्षित पारद को एक दिन घाम में रखे और उसी में शुद्धस्वर्ण का धीरे धीरे ग्रास देवे और ग्रास जीर्ण होने पर फिर सुवर्ण का ग्रास देवे। प्रथम चौसठवां भाग, फिर बत्तीसवां भाग, तदनंतर बीसवां भाग, फिर सोलहवां भाग, तदनन्तर बारहवां भाग, आठवां भाग, चतुर्थांश, अर्द्धभाग और फिर तुल्यभाग सुवर्ण का लेकर ग्रास देवे प्रत्येक ग्रास देने के समय जंभीरी आदि खट्टे पदार्थ के रस में एक दिवस तक तप्त खल्व द्वारा मर्दन करे फिर उसको जंभीरे के रस में सुवर्ण सहित एक दिन तक घाम में रखे तो पारद ग्रास को खा जाता है और बकरी का दूध गोमूत्र थूहर का दूध, आक का दूध और अम्लपदार्थों से लेप किये हुए दृढ़ कपड़े में उस पारद को बांधकर कांजी, क्षार और गोमूत्रों से मिट्टी के दोलायंत्र द्वारा तीन दिवस तक स्वेदन करे। हे पार्वती! उस रस को निकालकर कर सुखा लेवे फिर खरल में डालकर पहले की तरह तप्तखल्व में मर्दन करे तो तीन ग्रासों से पारद उत्तम होता है। प्रत्येक ग्रास में तप्तखल्व द्वारा जहां जितना जिससे मर्दन लिखा है उतना उससे मर्दन करे तो यथावत् ग्रास जीर्ण हो जायेंगे, इसमें सन्देह नहीं है॥२–९॥

स्वर्णादि चारण और जारण क्रिया (दोलायंत्र से)

चतुःषष्ट्यंशकं हेमपत्रं मायूरमायुना । विलिप्तं तप्तखल्लस्थे रसे दत्त्वा विमर्दयेत् ॥१०॥ दिनं जंबीरतोयेन ग्रास ग्रासे त्वयं विधिः । शनैः संस्वेदयेद्भूर्जे बद्ध्वा संपुटकाञ्जिकै ॥११॥ भांडके त्रिदिनं सूतं जीर्णस्वर्णं समुद्धरेत् । अधिके तोलने तत्र पुनः स्वेद्यः समावधि ॥१२॥ द्वात्रिंशत्षोडशाष्टांशक्रमेण वसु जारयेत् ॥ रूप्यादिषु स सत्त्वेषु विधिरेवंविधं स्मृतः ॥१३॥ चुल्लिकालवणं गंधमभावे शिखि–पित्तः ॥१४॥

(नि० र०, र० रा० सं०, बृ० यो०, र० प०, र० चि०)

अर्थ–पारद से चौसठवें हिस्से के सुवर्ण के पत्र लेकर मोर के पित्ते से लेप कर फिर उस सुवर्ण को तप्तखल्व में डालकर पारद के साथ जंभीरी के रस से एक दिवस तक मर्दन करे। यह क्रिया प्रत्येक ग्रास के आरम्भ में करनी चाहिये फिर उस ग्रास दिये हुए पारे को भोजपत्र में बांधकर लवण सहित कांजी से तीन दिन तक स्वेदन करे फिर निकाल कर तोले। यदि तोल में अधिक हो तो फिर स्वेदन करे। इस प्रकार दोलायंत्र में द्वात्रिंशांश षोडशांश और अष्टमांश तक ही जारण करे। यही क्रिया अभ्रसत्वादि तथा चांदी आदि के जारण की है। जहां मोर का पित्ता नहीं मिलता है वहां पर चुल्लिका लवण (नौसादर) तथा गंधक के द्वारा ग्रास देना चाहिये॥१०–१४॥

सुवर्णजारण के लिये बिड

नवसादर–सुहागा–सौराष्ट्रीत्रयाणामूर्द्ध्वपातनं सप्तधा तद्योगेन सुवर्णजारणं –(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अर्थ–नौसादर, सुहागा, सूरती, मिट्टी, इन तीनों को सात बार उड़ा कर फिर उसमें सुवर्ण का जारण करे॥

गन्धक जारण वा मुखीकरण

संस्थाप्य गोमयं भूमौ पक्वमूषां तथोपरि । तन्मध्ये कटुतुम्ब्युत्थं तैलं दत्त्वा रसं क्षिपेत् ॥१५॥ काकमाचीरसं देयं तैलतुल्यं ततः पुनः । गंधकं व्रीहिमात्रं च क्षिप्त्वा तच्च निरोधयेत् ॥१६॥ तत्पृष्ठे पावकं देयं पूर्णं वा वह्निखर्परम् । स्वांगशीतलतां ज्ञात्वा जीर्णे तैले च गंधकम् ॥१७॥ काकमाचीद्रवं चाग्नौ दत्त्वा दत्त्वा च जारयेत् । मूषाधो गोमयं चात्र दत्त्वा चोर्ध्वेञ्च पावकम् ॥१८॥ षड्गुणं गंधकं जार्य्यं सूतस्यैव मुखं भवेत् । तत्सूतं मर्दयेन्नीरर्जम्बीरोत्थैः पुनः पुनः॥१९॥षोडशांशं शुद्धहेमपत्रं सूतेषु निक्षिपेत् । शिखिपित्तेन संपिष्टं तैलैश्च सर्षपाद्यैः ॥२०॥ लिप्त्वा हेम क्षिपेत्सूतं यामं जंबीरजैर्द्रवैः ॥२१॥ पूरयेद्रोधयेच्चाग्निं दत्त्वा यंत्रे च जारयेत् । ग्रासे ग्रासे च तन्मर्द्यं जंबीराणां द्रवैर्दृढम् ॥२२॥ मूलिका लवणं गंधमभावे पित्ततैलयोः । पिष्ट्वा जंबीरनीरेण हेमपत्रं प्रलेपयेत् ॥२३॥ (रसरत्नाकर)

अर्थ–पृथ्वी पर गोबर रखकर ऊपर से पक्वमूषा को रखे फिर उस मूषा में कड़वी तूंबी का तैल तथा पारद और तैल की बराबर काकमाची (मकोय, कवैया) का रस और चावल की बराबर गंधक डालकर मुख बंद करे। ऊपर केवल अग्नि अथवा खिपरे में रख कर अग्नि लगावे। स्वांग शीतल होने पर फिर गंधक काकमाची का रस कड़वी तूंबी रस डाल डाल कर जारण करे। पक्वमूषा के नीचे गोबर अवश्य रखना चाहिये। इस प्रकार षड्गुण गंधक जारण करे तो पारद के मुख होता है। उस बुभुक्षित पारद को बार बार जंभीरी के रस से मर्दन करे। प्रथम चौसठवां भाग, फिर बत्तीसवां, फिर सोलहवां, इस प्रकार सुवर्ण का ग्रास देवे जिस सुवर्ण के पत्र का ग्रास देना हो उसको मोर का पित्ता तथा सरसों के तैल से लीपकर, फिर पूर्व के समान जंभीरी के रस से मर्दन कर मूषा में भर देवे फिर कपरौटी कर बालू या भूधर यंत्र द्वारा जारण करे। प्रत्येक ग्रास के समय जंभीरी के रस से दृढ़ मर्दन करना चाहिये। जहां मोर का पित्ता तथा तैल नहीं मिले तो चुल्लिका लवण और गन्धक को जंभीरी के रस से घोट सुवर्ण के पत्रों पर लेप करे॥१५–२३॥

बीजजारण समुदाय से

तप्तखल्वे रसं दत्त्वा खदिरांगारतापिते । चतुःषष्ट्यंशकं सूताद्बीजं सूते नियोजयेत् ॥२४॥ संधानकाम्लं लवणं चुल्लिका लवणेन च । दीपनीदीपितं सूतं मर्दयेन्मर्दकेन वै ॥२५॥ ऊर्ध्वाधश्च बिडं दत्त्वा यंत्रे भैरवसंज्ञके । बिडं सूतादष्टमांशमितं पश्चाद्दिनत्रयम् ॥२६॥ प्रक्षिप्य मर्दयेत्सम्यक् संप्रदायपरायणः । चतुर्थेऽह्नि रसं प्रोक्ष्य कांजिके क्षालयेत्पुनः ॥२७॥ पूर्ववद्दापयेद्बीजमेवं वारचतुष्टयम् । दत्त्वा पलाशं जीर्येत दोलायामथ जारयेत् ॥२८॥ अथवा कथ्यते ऽत्र जारयेद्बीजमुत्तमम् । ततः परं गंधकं च जारयेत्तु पूर्वतः ॥२९॥ सबीजं सूतकं कृत्वा जारयेत्षड्गुणं बलिम् । एवं युक्त्या गंधकं च जारयेत्षड्गुणं बुधः ॥३०॥ (टो० नं०)

अर्थ–खैर के कोयलों से तपे हुये तप्तखल्व में पारद को डालकर चौसठवें हिस्से का बीज डाले फिर कांजी, अम्लवर्ग और चूलिका लवण के साथ घोटे से घोटे फिर पारे से आठवां हिस्सा बिड़ लेकर उस पारद के ऊपर नीचे रख देवे और उसको भैरव यंत्र में तीन दिन तक पचावे फिर गुरुपरंपरा से जंभीरी के रस से घोटे तदनंतर चौथे दिन उसको कांजी से छिड़ककर धो डाले। इसी तरह फिर चार ग्रास देवे। षोड़शांश तक दोलायंत्र में बीज का जारण करे, इसके बाद कच्छपयंत्र द्वारा बीज का जारण करे। फिर पूर्व के समान गंधक का पारद में बीज मिलाकर षड्गुण गंधक जारण करे॥२४–३०॥

अबुभुक्षित पारद में बिडयोग से स्वर्णजारण की क्रिया

अथवा निर्मुखं सूतं बिडयोगेन मारयेत् । अनेन मर्दयेत्सूतं ग्रसते तप्तखल्वके ॥३१॥ स्वर्णाभ्रसर्वलोहानि यथेष्टानि च जारयेत् ॥३२॥

(र० र०)

अर्थ–अथवा निर्मुख पारद को बिड़ के योग से जारण करे, ग्रास देने के लिये पारद को बिड़ के साथ तप्तखल्व में मर्दन करे तो इच्छापूर्वक समस्त धातुओं को जारण करे॥३१॥३२॥

स्वर्णजारण बिड़योग से (कच्छपयंत्र द्वारा)

शश्वद्भृताम्बुपात्रस्थशरावच्छिद्रसंस्थिता ॥ पक्वमूषा जले तस्यां रसोऽष्टांश बिड़ान्वितः ॥३३। संरुद्धो लोहया पात्र्या मुद्रितो दृढमुद्रया। वालुकां तदुपर्यष्टांगुलमानां विनिक्षिपेत् ॥३४॥ दृढ़ात्तदुपरि ध्मातो रसस्तद्गर्भ–संस्थितः । मायूरमायुना लिप्तं कांचनं ग्रसति क्षणात् ॥३५॥

(बृ० यो०, र० रा० सं०, र० रा० प०, नि० र०)

अर्थ–निरंतर जल भरे हुए पात्र में स्थित शकोरे में जल मिली हुई पक्वमूपा को रखे और उसमें अष्टमांश बिड़सहित पारद को लोहे की कटोरी से दृढ़ मुद्रा देकर ऊपर से आठ आठ अंगुल बालूरेत बिछा देवे और उस पर दृढ़ाग्नि देवे तो उसके भीतर रखा हुआ पारद मोर के पित्ते से लिप्त सुवर्ण के पत्रों को खा जाता है, इसमें सन्देह नहीं है॥३३–३५॥

हेमजारणर्यंत ही रसायन प्रयोग में आवश्यकता है

इयत्येव रसायनत्वपर्यवसितिः किन्तु बादस्य प्राधान्यम् ॥

(र० चिं०, र० रा० सं०)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबू-निरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां स्वर्णजारणं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥२३॥

अर्थ–शरीरोपयोगी रसायन के लिये इतना ही संस्कार यानी स्वर्णजारण पर्यंत कर्म करना काफी है और इसमें धातुवाद की प्रधानता नहीं है।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठ–मल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां स्वर्णजारणं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥२३॥

स्वानुभूतस्वर्णजारणाध्यायः २४

ॐ शिवाय नमः

स्वर्णजारण के लिये संधानसाधन चारणाध्याय में रखी र० प० से उद्धृत संधानक्रिया

**संधानकप्रकारोऽयमुच्यते जारणे हितः ।
शिग्रं च वज्रकंदं च सूरणं मीनचित्रकम् ॥५॥**

ता० २० मई सन १९०७ को गेहूं २ सेर, जौ २ सेर, चावलसाठी १ सेर, चावल पसाई १ सेर, चावल लाल १ सेर, चना १ सेर, उर्द १ सेर, मूंग १ सेर, मोठ १ सेर, मसूड़ १ सेर, खुरथी १ सेर, अरहर १ सेर, मक्का १ सेर, ज्वार १ सेर, बाजरा १ सेर, चैना १ सेर, कंगनी १ सेर, ससा १ सेर, राई १ सेर, सब २१ सेर, नाज को छान, फटक, दल उसमें से दो मटकों में सवा पांच पांच सेर भर और एक एक मन पानी भर पांच पांच सेर के अन्दाज खाली छोड़ सैनको से मुख बंद कर कपरौटी कर मटकों को मटकों से सिवाय गहरे गड्ढों में गाड दिया, चमेली के तख्ते में।

ता० २२ को इसी तरह और दो मटके उपरोक्त विधि से भर उसी तरह गड्ढों में गाड़ दिये।

दूसरा भाग

आज ता० ५ जून को १५ दिन बीत जाने पर मटके निकाल लिये और कोठे में रख दिये और कैनों के इंतजाम की वजह से और काम न चला।

ता० ६ जून को चारों मटकों का जल टुकरी की साफी से लोहे के कढ़ाउ में छाना गया। किसी किसी मटके में कुछ फुई के झाग थे, वह उतार कर फेंक दिये गये। पानी सफेद बेसनी रंग का निकला। ऊपर पतला नीचे कुछ गाढ़ा। अन्न फूला हुआ स्वच्छ बेसनी रंग का निकला। गला सड़ा न था और जो मोटा अन्न था वह भली भांति हल भी नहीं हुआ। मटके ५ सेर के करीब पानी के पहले भी खाली रखे गये थे। चार पांच सेर के करीब और सूखा गया, इसलिये तिहाई के करीब खाली मिले दो मटकों में जो जल निकला, वह पांच कैनों में आया। बाकी दो मटकों को जल तीन कैन और एक मटके में भर लिया गया। सब जल २॥ मन होगा। पृथ्वी से मटके के निकालने पर बड़ी दुर्गंध आती थी और जिस मकान में रखे गये थे उसके चारों तरफ दुर्गंध फैली रही। छानते समय कुछ विशेष दुर्गंध न जान पड़ी। चखने पर स्वाद खट्टा न था इसलिये इसके तुपाम्बु कहना ही ठीक है, कांजी नहीं। ३ सेर दले हुए चावल और १ सेर उर्द की दाल लोहे की कढ़ाई में ३२ सेर पानी डाल खौल जाने पर उनको डाल दिया, डेढ़ घंटे के करीब औटाया। बाद को ११ बजे गाढ़ा होता जान आंच निकाल चूल्हे पर रखा छोड़ दिया। तीन बजे देखा तो गाढ़ा अधिक था और अन्न अच्छी तरह हल नहीं हुआ था इसलिये २४ सेर पानी और डाल एक घंटे भर के करीब औटा उतार लिया। ठंडाकर मलकर छाना तो २६ सेर निकला।

ता० ७ को २६ सेर सब मांड को तुपाम्बु में मिला छान फिर आठों कैन भर प्रत्येक कैन में एक एक छटांक चावल डाल कैनों के ढ़कने लगा कपरौटी कर धूप में रख दिया। प्रत्येक कैन में ११ सेर के अंदाज जल आता है लिहाजा दो दो अंगुल रखकर आध आध सेर पानी आने की गुंजाइश और रखी गई थी। इन कैनों से बचा तुपाम्बु एक मटके में भर उसमें भी आधपाव चावल डाल मुंह ढ़क कपरौटी कर कोठे में रख दिया।

तीसरा भाग

ता० १४ जून को ७ दिन बाद उक्त आठों कैनों को खोला गया तो किसी कैन में फुई वगैरः नहीं निकली। नीचे चावल गले हुए निकले। चखने से कांजी

खट्टी मालूम हुई। अतएव आठों कैनों को और मटके का जल पृथक् पृथक् छान ज्यों का त्यों जिसका तिस में भर प्रत्येक कैन में सींगिया १।। तोले सैंजने की जड़ २ तोले, चीता २ तोले, विषखपरा २ तोल, चौलाई २ तोले, मछैछी २ तोले, मूसली सफेद २ तोले, इमली १।। तोले, जमीकंद ३ तोले, इनमें से इमली का पन्ना बना डाला गया और जमीकंद हरा पीसकर डाला, बाकी सब औषधियां सुखा चूर्ण कर डाली गई, इस तरह प्रत्येक कैन में १७।। तोले वजन और मटके में द्विगुण प्रमाण से कुछ अधिक यानी ४० तोले के करीब वजन डाल ढ़कनों से सबके मुँह ढ़क कपरौटी कर धूप में रख दी गई। ये कैने दो दो अंगुल के अंदाज खाली भरी गई थी और मटका आधा भरा था।

ता० २४ को १० दिन बाद आठों कैनों और मटके को खोल छान डाला तो मसाला गल गया था जायका खूब खट्टा हो गया था जिसका तिस में भर दिया गया। नितारने की गरज से फिर मुंह बंदकर कपरौटी कर धूप में ही रखा रहने दिया। कैनें सब भरी हुई और मटका आधा है।

चौथा भाग

ता० ४ जुलाई को आठों कैनों में से ६ कैन नितार नितार कर छान ५ कैने भर लीं। मटके को नितार छान एक कैन में अलग भर लिया और मटके और ६ कैनों की याद को एक कैन में भर दिया। २ कैन हिल जाने से नितर न सके, वह अभी वैसे ही रख दीं।

ता० ८ को २ कैन बेछनी और एक कैन गादकी को नितार कर छान १।। कैन भर ली और इन तीनों की गाद को १ कैन में भर लिया। इस प्रकार ८ कैन और १ मटके से संधान की ७।। कैन तैयार हुई जो मुँह बांधकर कपरौटी कर रख दी। पीछे आधी कैन ४ बोतलों में भर दी।

संधान जो फोक से तैयार हुआ

नं० १–आज ता० ६ को पहले चारों मटकों से निकले अन्न को आधा आधा दो मटकों में भर पानी डाल दिया और ७ जून को मांड मे छानने से निकले अंदाज से ६ सेर के करीब चावलों को आधा आधा दोनों मटकों में डाल मुँह ढ़क कपरौटी कर पहले मटकों की जगह फिर गाड़ दिये गये।

ता० १६ को १० दिन बाद दोनों मटके निकाल खोले गये–इनमें फुई वगैरः कुछ नहीं निकली, नीचे गला अन्न निकला। बाद को दोनों मटकों को जल छान एक मटके में भर दिया।

नं० २–ता० १७ को उक्त मटके में १ सेर चावल और ꠰ पाव भर राई डाल मुंह ढ़क कपरौटी कर धूप में रख दिया।

नं० ३–ता० २४ को ७ दिन बाद ८ कैन और एक मटके के छानने में जो ꠰४। सेर मसाला निकला वह इस मटके में डाल ज्यों का त्यों मुख बन्द कर धूप में रखा रहने दिया।

ता० १० जुलाई को उक्त मटके को खोला गया। यह मटका सूख कर एक बालिश्त कम हो गया था और इसमें मसाला गल गया था, इसको छान खूदा फेंक दिया।

नं० ४–ता० १० जुलाई को इस मटके के जल को उसी में भर दिया और असली मटकी और आठों कैनों की बची गाद से भरी १ कैन को इसी मटके में डाल दिया और मुंह ढ़क कपरौटी कर धूप में रखा रहने दिया। यह मटका इस समय करीब एक बालिश्त के खाली रहा।

न० ५–ता० १७ को खोल नितार छान १।। कैन् भर ली। मटके में जो गाद बची उसको नितारने के वास्ते कोठे में रख दिया।

धान्याम्ल

३१/१२/३ गेंहू, जौ, चना, मक्का, ज्वार, बाजरा, समा, कंगनी, चैना, साठी, पसई, बासपती, अरहर, उर्द, मूंग, मोंट, मसूर, मटर, खुर्ती (कुलथी) रसाम, तिल, अलसी, कर्र, सब पाव पाव भर सरसों, राई, आध आध सेर सब ७ सेर हुई। फटक और दल कर एक मटके में पौन मटके पानी में भिगो दी गई।

२/१ को इस कांजी में ꠰ आध पाव मुंडी सूखी ꠰ आध पाव भांगरा सूखा, पाव पाव भर त्रिफला, चीता, सितावर, कूटकर और डाली गई।

५/१ को इसमें लाल सोंठ, मछैछी, कोयल (जोहरी मँगवाई) गई थी और वैद्यराज ने कहा कि यदि ऐसी ही कांजी डाल दोगे तो कांजी सड़ जायेगी) सूखी हुई और डाली गई।

१०/१ को देखा गया तो कांजी थोड़ी खट्टी हो गई थी।

२०/१ के करीब देखा तो पानी मटके में घट गया था और पानी डाला गया।

४/२ को जब कांजी का पानी स्वेदन के लिये लिया गया तो मालूम हुआ कि पानी थोड़ा रहा और आधा मटका फूली हुई दवाई और नाज से भर गया था, जितना सामान इस एक मटके में डाला गया था, वह दो मटकों को काफी होता।

2nd Part

३/२ को और कांजी दूसरे मटके में डाली गई जिसमें गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मक्का, कंगनी, चैना, साठी, पसाई, उर्द, मूंग, मोठ, मसूर, मटर, खुर्ती, रमास, तिल, अलसी, पाव पाव भर सरसों राई आध आध सेर सब ५।। सेर औ त्रिफला चीता पाव पाव सितावर आध पाव डाली गई।

४/२ को पहली कांजी कम पड़ने से पहले मटके के छूंछ नाज को इस मटके में मिला कर आधा नाज और ३/४ हिस्से पुरानी मटके में कर दिया गया, इसलिये कि जल्दी खट्टा हो जावे और आधे नाज को १/४ पानी को नये मटके में रहने दिया और ताजे पानी से ऊपर तक मटका भर दिया।

3rd Part

२०/३ के करीब फिर और नई कांजी डाली गई।

4th Part

६/८/०५ आज निम्मलिखित ४।। सेर नाज को एक मटके में भर मटके के मुंह तक १ मन ८ सेर पानी भर दिया। १ लाल चावल २ पसई के चावल, ३ साठी के चावल, ४ बासमती, ५ गेंहू, ६ जौ, ७ अरहर, ८ चना, ९ उर्द १० मूंग, ११ मसूर, १२ मोठ, १३ खुरती, १४ ज्वार, १५ बाजरा, १६ *चैना, १७ कँगनी, १८ समा, १९ सरसों, २० राई, सब आध आध सेर* जिसका १० सेर होता किन्तु छान फटक कर ९ सेर बैठा। इसमें से आधा डाला गया।

७/८ आज मटके को बहुत भरा देख उसमें से ८ सेर पानी दूसरे मटके में भर १ सेर कांजी का सामान उसमें मिला दिया गया।

९/८ आज मटके में फिर भी पानी ज्यादा देख मटकी की धान्य मटके में और डाल दी गई।

१०/८ आज मटके का मुँह कपड़ मिट्टी से बंद कर दिया गया।

२०/८ आज १५ दिन हो गये। मटके को खोल सब कांजी मटके और मटकी की छान मटके में भर दी गई और त्रिफला, चीता, मुंडी, सितावर, एक एक छ० कूट कर डाल दी गई। मछैछी, छुईमुई, सांठ, सहदेई, हरी पीस कर एक एक छटांक डाल दी गई।

२१/८ आज उसमें भांगरा, कोयल काली, नागफनी हरी, एक एक छटांक पीसकर डाल दी गई और मुंह बन्द कर दिया गया।

२४/८ आज ३।। सेर नाज कांजी से बचे हुए को २१ सेर पानी में भिगो दिया गया एक मटकी में।

३१/८ यह खट्टा हो गया था लिहाजा छान कर बड़े मटके में ही शामिल कर दिया गया।

5th Part

५/९ चावल, साठी, पसई, लाल चावल, गेंहूं, जौ, चना, अरहर, उर्द, मूंग, मोठ, मसूर, खुर्ती, ज्वार, बाजरा, चैना, कंगनी, समा, सरसों, राई, ये १९ नाज आध आध सेर ली गई। सब १९/२–९।। सेर होते हुए भी दल फटक कर ९ सेर बैठे, इसमें से ६ सेर एक नये मटके में भर ३८ सेर पानी डाल मटके का मुंह बंद कर जमीन में गाड़ दिया गया। बाकी ३ सेर एक मटके में भर १९ सेर पानी डाल मुंह बंद कर रख दिया गया।

२०/९ आज मटके को जमीन से निकाला गया तो कांजी मामूली खट्टा निकली फुई न थी और कांजी साफ थी, रंग उजला था, छान कर फिर मटके में भर दी गई। दूसरी मटकी जो बाहर की रखी रही थी उसमें फुई आ गई थी और बू भी ज़्यादा थी, उसको भी छानकर पुरानी कांजी में शामिल कर दिया गया।

अनुभव

जमीन में गाड़ना ठीक है, आगे से ऐसा ही किया जावे।

२९/९ आज कांजी के मटके में त्रिफला १० तोला, चीता ६ तोला, सितावर ९ तो०, मुंडी १० तो, सहदेई २ तो०, मछैछी ४ तो०, सोंठ ४ तो०, कोयल ४ तोला, भांगरा २ तोला, सब १० छटांक १ तोला वजन डाल जमीन में गाड़ दिया गया।

१७/१० आज मटके को जमीन से निकाल छान कर फिर भर रख दिया गया।

३०/९ आज ८ सेर चावल तीन चार तरह के और आध सेर राई और ३६ सेर पानी एक मटके में भर जमीन में गाड़ दिया गया।

१७/१० आज मटका खोल छान त्रिफला ५ छ०, चीता ३ छ०, सितावर ३ छ०, मुंडी ३ छ० डालकर जमीन ही में रख दिया।

१९/१० आज सहदेई १।। छ०, भांगरा १।। छटांक, मछैछी १।। छटांक, सोंठ १ छटांक, कोयल १ छ०, मुंडी १।। छटांक, चीता १। छ०, ये दवा सूखी कुटी में डाली गई।

२०/१० आज मटका जमीन में गाड़ दिया गया।

१/११ आज मटका जमीन में से निकाल छान लिया गया। कांजी १८ सेर के करीब रह गई।

ॐ शिवाय नमः

स्वर्णचारण और जारण

(रसेन्द्रचिंतामणि की दोला की क्रिया से)
चतुःषष्ट्यंशकं हेमपत्रं मायूरमायुना

तारीख २ व ३/९/०७ को ५ तोले षड्गुण बलिजारित संस्कृत पारद को तप्तखल्व में जंभीरी के रस में ५ प्रहर मर्दन किया गया। पौन बोतल रस खर्च हुआ। सायंकाल को पृथक् कर लिया और प्रातःकाल को तोला तो १ रत्ती कम ५ तोले हुआ।

ता० ४/९ को उपरोक्त १ रत्ती कम ५ तोले पारद को तप्तखल्व मे डाल थोड़ा थोड़ा जंभीरी रस से १ माशे सोने के कुन्दन के दो दो अंगुल के टुकड़े कर उन टुकड़ों को जंभीरी के रस से आर्द्र ३ माशे नौसादर सत्त्व में लपेट थोड़े थोड़े डाल ग्रास दिये गये और सायंकाल तक जंभीरी रस डाल घोटा गया। तदनंतर खरल से पृथक् कर रसयुक्त रख दिया गया। प्रातःकाल रस से पृथक् कर तोला तो ५ तोले ७ रत्ती हुआ। पारद के नीचे के अंश में स्वर्ण की गाढी पिष्टी सी दीख पड़ती थी।

ता० ५/९ को ५ तोले ७ रत्ती सुवर्णयुक्त पारद को भोजपत्र मे बांध जारण के लिये तैयार किये हुए संधान में दोलायंत्र की विधि से ९ बजे दिन से स्वेदन आरम्भ किया। रात दिन स्वेदन चला। ४।। सेर संधान आदि में दोला में भरा गया और उसमें १ छटांक सैंधव लवण डाला गया। सायंकाल तक ३ बोतल संधान और १ छटांक नोंन और डाला गया। ४ बोतल संधान रात को और पड़ा।

ता० ६/९ आज सवेरे ८ बजे मालूम हुआ कि पारद भोजपत्र फट जाने से निकल गया। दोलायंत्र को उतार पारद को पृथक् किया तो ५ तो० ७ रत्ती पारद निकल आया और दोला की हांडी के अन्दर का पेंदा बिलकुल साफ मिला। कांजी की कोई गाद नही बैठी थी। कैंची की मारकीन पर थूहर का दूध जिसमें गोमूत्र और थोड़ा बिजौरे का रस मिला लिया था, लेपकर उसमें पारद को बांध पुनः उसी कांजी में दोलायंत्र कर दिया गया। दूसरे दिन ८ बजे तक स्वेदन होता रहा। ऽ आध पाव नोन और ८ बोतल संधान और डाला गया। यह क्रिया दो रात दिन अर्थात् १६ प्रहर चली और ऽ। पाव भर नोंन और ४।। सेर १५ बोतल अर्थात् १६ सेर कांजी खर्च हुई, जिसमें कुछ कम ४ सेर कांजी बच भी रही।

ता० ७/९ को ८ बजे सवेरे पारद को निकाल तोला तो ५ तोले ७ रत्ती मौजूद था, शीशी में बंद कर दिया गया।

ता० ११/१ उपरोक्त पारद को शीशी में से नितार कर तोला तो ४। तोले पारा नितर आया, उसको कैंची की मारकीनी में छाना तो केवल ४ रत्ती पिष्टी रह गई, शेष ४ रत्ती कम ४। तोले पारा छन कर तरल रूप रह गया। नितारने से बचे बाकी ९ माशे ७ रत्ती में जो गाढ़ा था छानने से निकली उपरोक्त ४ रत्ती पिष्टी मिला उसी मारकीन मे छाना तो ३ माशे की गोली बांधने लायक कठिन पिष्टी रह गई जो बिल्कुल श्वेत रंग की और दरदरी सी थी, बाकी ७ माशे ४ रत्ती पारा छनकर तरलरूप हो गया अर्थात् ४ तोले १० माशे तरल पारद और ३ माशे स्वर्ण और पारद की कठिन पिष्टी मिली। इससे ज्ञात हुआ कि चारण में ३ प्रहर के मर्दन से और दोला में २ दिन के जारण से स्वर्ण पारद में मिला तक नहीं, किन्तु जितने पारद को स्वर्ण पकड़ सका उतने को पकड़कर नीचे बैठ गया। यह भी ज्ञात हुआ कि १ भाग स्वर्ण २ भाग पारद को पकड़ सकता है, किन्तु पिष्टी फुस फुसी और दरदरी रहती है।

पुनः मर्दन

ता० १३/९ को उक्त ३ माशे की पिष्टी से पृथक् हुए ४ तोले १० माशे पारद को ८ बजे से तप्तखल्व में जंभीरी का रस डाल डाल मर्दन आरम्भ किया। ९ बजे पर २ माशे जवाखार और १२ बजे २ माशे सज्जीखार भी डाले। ६ बजे शाम तक मर्दन किया गया। पौन बोतल के अन्दाज रस खर्च हुआ। बाद को रस सहित पारे को खरल से निकाल तामचीनी के कटोरे में रख दिया।

पुनः चारण

ता० १४/९ को सवेरे रस से पारे को पृथक् कर तोला तो १ रत्ती कम ४ तोले १० माशे था। ८ बजे से उक्त पारद में तप्तखल्व में रख नींबू जंभीरी, बिजौरे का मिश्रित रस थोड़ा थोड़ा डाल मर्दन करना आरम्भ किया और साथ साथ ही पूर्वोक्त सुवर्णयुक्त ३ माशे की पिष्टी को (जिसको जंभीरी के रस में १ माशे नौसादर और १ माशे गंधक के साथ दूसरे शीतखल्व में घोट लिया था) दो दो चार रत्ती ग्रास देना आरंभ किया। ९ बजे तक सब पिष्टी डाल दी। पिष्टी के ग्रास देते समय पिष्टी पारद में भलीभांति प्रवेश न

करती थी किन्तु पारद के ऊपर जो जंभीरी आदि का रस था, उस पर फैल जाती थी अर्थात् पिष्टी में जो गंधक का हलका भाग था वह रस के ऊपर तैर जाता था। यदि पिष्टी की जगह केवल स्वर्ण के पत्र होते शायद ऐसा न होता, या रस बहुत थोड़ा होता तो ऐसा न होता। सायंकाल ६ बजे तक यानी १० घंटे तक काम चला। पौन बोतल यानी ऽ। सेर के करीब रस पड़े। बाद को रससहित पारद को खरल से निकाल तामचीनी के कटोरे में ढ़ककर रख दिया।

चारण फल

ता० १५/९ को सवेरे रस से पारे को पृथक् कर तोला तो ५ तोले ३ रत्ती पारा हुआ, ५ रत्ती घटा, जो शायद गंधक में मिला रह गया हो। ऊपर कहा गया है कि पारद को पिष्टी के ग्रास देते समय पिष्टी पारद में भली प्रकार प्रवेश न कर रस पर फैल जाती थी। शाम तक घोटने पर भी पिष्टी का कुछ अंश रस में मिला हुआ पाया गया। अनुमान होता है कि गंधक रसों की आर्द्रता के कारण पारद से पृथक् रहा और संभव है कि पिष्टी के पारद का वह अंश जो गंधक ने चर लिया हो, गंधक के साथ रह गया हो, खल्वस्थ पारद में न मिला हो और उस पिष्टी के पारद के साथ कुछ स्वर्ण का अंश भी पृथक् रह जाना संभव है किन्तु स्वर्ण का एक अच्छा भाग पारद में अवश्य मिला क्योंकि ३ माशे पिष्टी में से २ माशे ३ रत्ती पारद में मिलकर तोल बढ़ गई। इसके अलावा पारद के नीचे भाग में स्वर्ण से उत्पन्न हुई घनता जैसी कि पहले चारण में हुई थी, दीख पड़ी। चारण समाप्त कर पृथक् किये गये जंभीरी आदि रस को तामचीनी के कटोरे में ढ़ककर रख दिया।

ता० १५ को नितारा तो थोड़ा नितरा और नीचे कोई चीज बैठी हुई पाई गई जो अवश्य गंधादि होगी (इस नितरे हुए रस में से थोड़ी चूने की पक्की जमीन पर गिर पड़ी तो फदकने लगा) सब रस नितार देने के बाद अवशेष को सुखाया तो चमचोड़ सा हो गया। अतएव जंभीरी के रस के भाग को दूर करने के लिये उसे कई बार धो नितार सुखाया तो १।। माशे निकला। इसको मिट्टी की प्याली में रख आंच पर रख दिया तो गंधक लौ देकर जलने लगा। जब जलना बन्द हो गया और उतार लिया तो तोल में ३।। रत्ती हुआ जो कुछ काला और ललोए रंग का था। अनुमान होता है कि ये सुवर्ण का अंश बाकी है।

पुनः जारण

ता० १६/९ आज उपरोक्त ५ तोले ३ रत्ती ग्रासयुक्त पारद को एक वस्त्र में (जिस पर सैंधव, जवाखार, सज्जी, सुहागा, ढ़ाक, ओंगा, इमली के क्षार और थोड़े बिजौरे के रस और गोमूत्र से युक्त थूहर के दूध का लेप कर दिया गया था) बांध ४।। सेर साधित संधान और ऽ। सैंधव से पूरित हांडी में दोलायंत्र कर २ बजे से स्वेदन करना आरम्भ किया। सायंकाल तक १ १/२ बोतल और रात्रि भर में २ २/२ बोतल संधान पड़ा।

ता० १७/९ की शाम तक २। बोतल संधान पड़ा (दूसरी कैन जिसमें से पहली बार थोड़ा ही संधान खर्च हुआ था अब खतम हो गई) रात्रि में पहले जारण के दोला से निकले संधान में से २ १/३ बोतल संधान पड़ा।

ता० १७/९ की शाम तक २। बोतल संधान पड़ा। (दूसरी कैन जिसमें से पहली बार थोड़ा ही संधान खर्च हुआ था अब खतम हो गई) रात्रि में पहले जारण के दोला से निकले संधान में से २ १/३ बोतल पड़ी।

ता० १८/९ को २ बोतल उसी बचे संधान की आंच ६ बजे तक पड़ी फिर तीसरी कैन खोल उसकी १ १/२ बोतल रात के ३ बजे तक पड़ी। ३ बजे के बाद संधान डालना बन्द कर दिया।

ता० १९ के सवेरे ९ बजे तक आंच दी गई अर्थात् ३ दिन निरंतर दोला में जारण हुआ फिर चूल्हे पर ही रखा छोड़ दिया। सायंकाल ३ बजे खोला तो सफारी पर पारे के नीचे के भाग में एक घनरूप टिकिया सी दीख पड़ी जिसमें से तंतुरूप बहुत सी किरणें बिखरी हुई थीं। अनुमान होता है कि स्वर्ण और पारद के वास्तविक मल से ये तंतु उत्पन्न हुए थे। पारद के छानने पर १ रत्ती कम ४ तोले १० माशे पारद छानकर पृथक् हो गया और २ माशे ५ रत्ती पिष्टी रह गई। चारण के सय भी तरल पारद १ रत्ती कम ४ तोले १० माशे ही था और उतनाही अब हाथ आया। किन्तु चारण के समय पिष्टी ३ माशे थी अब २ माशे ५ रत्ती रह गई। ये कमी चारण संस्कार में ही हुई (जिसका संकेत चारण क्रिया में दिया गया है) जारण में नहीं। क्योंकि चारण के अनंतर पारद और पिष्टी की इकट्ठी तोल ५ तोले ३ रत्ती थी और अब ५ तोले ५ रत्ती होती हैं (इस २ रत्ती बढ़ती का कारण तोल का फर्क होगा) तरल पारद पृथक् और पिष्टी पृथक् रख दी गई। इस कारण क्रिया में ३ दिन रात में ४।। सेर--१२। बोतल कांजी खर्च हुई जो अनुमान में १४ सेर होगी, किन्तु इसमें से ३ सेर के करीब कांजी बची भी रही, वह अलग रख दी।

पुनः स्वर्णचारण

ता० २४/१०/०७ को उपरोक्त ४ तोले ९ माशे ७ रत्ती पारद को तप्तखल्व में डाल जंभीरी रस और ३ माशे नौसादर उड़े हुए को साथ ८ बजे से घोटना आरम्भ किया। शाम के ६ बजे पर घुटाई बंद कर रससहित पारद को कटोरे में भर रख दिया।

ता० २५ को उपरोक्त पारद को जंभीरीरस से पृथक् कर और नये गरम जंभीरी रस से धो तप्तखल्व में स्थापित किया और २ माशे ५ रत्ती उपरोक्त स्वर्ण और पारद पिष्टी में १ माशे गंधक और १ माशे नौसादर सत्त्व मिला खल्व में थोड़ा घोट चूर्ण सा कर उस चूर्ण का ग्रास देना आरम्भ किया और दस बीस बूंद जंभीरी का रस डालना आंरभ किया (अधिक रस इसलिये नहीं डाला कि उपरोक्त चूर्ण रस पर तैरकर पारद के संग घुटाई में न आता)। १ घंटे के अन्दर सब चूर्ण डाल दिया और उसके अनंतर ३/४ तोले रस दे देकर घोटते रहे। कभी कभी ६--७ तोले रस भी एकदम डाला। शाम के ५ बजे घुटाई बंद कर रससहित पारद को कटोरे में भर रख दिया।

चारण फल

ता० २६ को रस से पारे को पृथक् कर तप्त जंभीरी रस से धो तोला तो ५ तोले हुआ ४ रत्ती वजन रस में मिला रह गया। इस अवशेष रस में और पानी डाल ३--४ बार नितार सुखाया तो कालाचूर्ण ७ रत्ती हुआ। फिर ७ रत्ती वजन को आतिशी प्याली में रख स्प्रिटलैम्प की आंच दी तो गंधक धूंआ देकर जलने लगा। निर्धूम हो जाने पर उतार तोला तो २ रत्ती वजन काले रंग का हाथ लगा (जिससे ज्ञात हुआ कि चारण में डाला गया गंधक पारद से पृथक् रहता है और गंधक के साथ कुछ भाग स्वर्ण का भी रह जाता होगा) (इस दो दिन के मर्दन में १ बोतल रस खर्च हुआ) और पारद को नितार कर देखा तो नीचे कुछ घन भाग दीख पड़ा।

जारण

ता० २६ को थोड़ा थूहर दुग्ध व सोंठ, चीता, मूली के क्षारयुक्त गोमूत्र व थोड़ा जंभीरी का रस बिजौरा रस और सैंधव लवण ले सबको मिला एक कपड़े पर बहुत हलका लेप कर उस ५ तोले पारद को उसमें बांध ५ सेर जंभीरी रस से पूरित हांड़ी में दोला कर दिया और ५ छटांक सैंधव और ५ छटांक कलमी शोरा पीसकर हांडी में डाल दिये। पश्चात् १० बजे से मंदाग्नि देना आरम्भ किया। १२ बजे देखा तो अग्नि कुछ तेज हो जाने से हांडी का रस उबल रहा था और अन्दर का मसाला फटा सा होकर हांडी के किनारों पर आ लगा था अतएव अग्नि पूर्ववत् मंद कर दी गई। ३ बजे पर १ तोला

जवाखार अंग्रेजी थोड़ा थोड़ा कर डाला गया जिसके डालते ही झागो से हांडी भर गई। १/२ बोतल रस जंभीरी दिन में और एक बोतल रात में पड़ा।

ता० २७ को ३ तोले जवाखार अंग्रेजी एक एक प्रहर बाद डाला गया। २ १/२ बोतल रस रात दिन में पड़ा।

ता० २८ को १।। तोले जवाखार अंग्रेजी और डाला और २ बोतल रस रात दिन में पड़ा।

ता० २९ को ८ बजे आंच बंद कर दी गई और हांडी को भट्टी पर रखा छोड़ दिया। दो पहर पीछे ३ बजे दोला से पृथक् कर खोला तो कपड़ा जीर्ण हो गया था, जरा दबाने से फट जाता था। पारा निकाल गर्म जंभीरी रस से धो तोला तो पूरा ५ तोले निकल आया और कपड़े से छानने पर कुछ और पिष्टी न निकली। ये काम ३ दिन रात चला जिसमें ५ सेर जंभीरी रस आदि हांडी में भरा गया और ६ बोतल और ऊपर से पड़ा। कुल १०। सेर के करीब रस खर्च हुआ जिसमें ४ सेर ६ छटांक रस बच भी रहा। (चूंकि रस में ५ छटांक नोंन और ५ छटांक शोरा डाला गया था, और १ छटांक जवाखार अंग्रेजी भी पड़ा। इस वास्ते रस की तोल ऽ३।।। सेर समझनी चाहिये। (शोरा डालने से झाग नहीं उठे, जवाखार से झाग उठते थे।)

स्वर्णजारण मर्दन

आज ता० ९/११/०७ को बिजौरे से दीपित (अर्थात जो १/९/०७ को अष्ट संस्कारयुक्त पारद बिजौरे से दीपित किया गया था) १५ तोले १० माशे ४ रत्ती पारद में से ५ तोले पारद ले तप्तखल्व में जंभीरी के रस के साथ ८ बजे से मर्दन करना आरम्भ किया, १२ बजे सोंठ, चीता, मूली के क्षारयुक्त गोमूत्र दो बार में करीब २ तोले के डाला गया जिससे झाग उठे। ५।। बजे शाम के घुटाई बंद कर रससहित पारद को कटोरे में भर रख दिया। सवेरे पारद को जंभीरीरस से पृथक् कर नये गरम जंभीरी रस से धो तोला तो पूरा ५ तोले हुआ। (पौन बोतल रस पड़ा)

चारण

आज ता० १० को १०।। बजे पर उक्त पारद को तामचीनी के कटोरे में रख १ तोला जंभीरी रस डाल दो रत्ती सोने के बरकों का थोड़ा थोड़ा ग्रास देना आरम्भ किया। पारे पर रस अधिक हो जाने से बरक रस पर तैर जाने और पारद से पृथक् रहने के कारण पारद ने सुवर्ण को न ग्रसा अतएव रस को आधा निकाल डाला जिससे बीच पारे पर रस न रहा। बाद को उसी प्रकार फिर ग्रास दिया तो पारद बरकों को अपनी ओर खींचकर तुरंत ग्रसने लगा। इस तरह दो रत्ती सुवर्ण का एक ग्रास दे पारद को शीशे के बकस में रख धूप में रख दिया। आध घंटे बाद अर्थात् ११ बजे उसी तरह दूसरा ग्रास दिया। थोड़ा रस सूख जाने से दो चार बूंद रस और पारे के कटोरे में डाल दिया और फिर उसी प्रकार धूप में रख दिया। ११।। बजे ४ रत्ती का एक ग्रास और दिया और ३–४ रस और डाल धूप में रख दिया। इस तरह १ माशे सोने के बरकों के ३ ग्रास दिये गये और शाम तक धूप में रखा रहा। ग्रास देते समय पारा बरकों को खींचता था और कुछ अपनी तह से ऊंचा बरकों पर चढ़ जाता था और उस समय रंगत पारे की खूब चमकदार सफेद हो जाती थी। ग्रास खाते ही पारद पर कुछ ऊंचे नीचे रवे से दीख पड़ते थे जिसको अंग्रेजी साइन्स के अनुसार यह कह सकते है कि जितना पारद स्वर्ण के परमाणुओं से मिलकर संयुक्त रूप में हो जाता था वह कण रूप में पारद के ऊपर ऊंचा नीचा दीखता था। उपरोक्त ३ ग्रास देने के समय कुछ चूने की सी फुटक कटोरे में दीख पड़ी और दूसरे दिन कटोरे से पारद को निकालने के पीछे जंभीरी रस के नीचे कुछ बैठी हुई वही चूने की सी फुटकें मिलीं। अनुमान से रत्ती भर होंगी जिनको इस शंका से कि क्या यह स्वर्णजनित साल्ट (नमक) बन गया, अनुभव करने के लिये पृथक् कर लिया गया। (जिसकी ता० २०/१०/०८ को बाबू ईश्वरदास द्वारा इसकी Analysis कराई गई तो यह केवल चूना साबित हुआ, सोना या पारा न था) ता० १२ के सवेरे पारे के रस से पृथक् किया तो तोल में यह ५ तोले १ माशे से कुछ ही कम हुआ, यानी १ माशे सोना और ५ तोले पारद मिलकर पूरी तोल हुई। बाद को तामचीनी की रकाबी में पारे को रख ४ तोले जंभीरी रस और ३ माशे नौसादर उड़ा हुआ उसमें डाल शीशे के बकस में रख ८ बजे से धूप में रख दिया। शाम तक धूप में रखा रहा।

ता० १२ को तप्तखल्व में (जो इस बार तुषाग्नि की जगह कंडो के छोटे छोटे टुकड़ों की अग्नि से ऐसा गर्म रखा था कि जिसे देर तक न छू सकते थे और गरम होने से खरल की मूसली पर कपड़ा बांधकर घुटाई करनी पड़ी थी) जंभीरी रस के साथ ८ बजे से ११ बजे तक १ प्रहर निरतंर कठोर मर्दन किया। (अबकी बार मर्दन करते समय पारा खरल में और मूसली की तली में जहां जहां चिपटता था, अनुमान होता है कि अधिक तप्तखल्व में निरंतर तीव्र मर्दन से स्वर्ण द्रव होने के कारण ही यह बात पैदा हुई हो)।

मूषा द्वारा जारण

ता० १२ ही को ५ अंगुल गहरे और ७ अंगुल गहरे चौड़े तामचीनी कटोरे में खल्व से निकले जंभीरी रस सहित पारद को भर उसमें इतना रस और भरा जिससे आधा कटोरा भर गया। बाद को लोहे की परात में करीब २।। सेर के गोबर भर उसमें उस कटोरे को खूब जमाकर करीब ३ अंगुल के गाड़ दिया। बाद को लोहे की छोटी रकाबी में खूब दहकते कंडों के अंगारे भर कटोरे के ऊपर रकाबी को रख दिया कटोरे पर रकाबी कटोरा ऐसा गर्म होने लगा कि जिसे छू न सकते थे। जब रकाबी की आंच झीनी पड़ जाती थी तभी उसी तरह की दूसरी रकाबी जो अंगारे भर कर पहले से तय्यार कर ली जाती थी। तुरन्त उस कटोरे पर रख दी जाती थी कटोरे की गर्मी से थोड़ा गोबर भी ऊपर सूख गया था। ये पहली आंच ११। बजे लगी इसी तरह आध आध घंटे बाद आंच लगती रही। रातके ९ बजेतक२१ आंच लगीं। बाद को रस सहित पारद के कटोरे को ज्यों का त्यों रख दिया। सवेरे पारद की रस से पृथक् कर तोला तो ५ तोले ६ रत्ती हुआ २ रत्ती या तो जारण हो गया या छीज गया। पारद से निकले रस को नितारा तो उसमें पारद वगैरः का कुछ पता न लगा।

पुनः मर्दन

ता० १३ को उक्त पारद को कर्सी से तप्त किये गये खल्व में रख कांजी और ३ माशे नौसादर उड़े हुए के साथ १२ बजे से ४ बजे तक निरंतर कठोर मर्दन किया। बीच बीच में अम्ल वर्ग भी जो नींबू जंभीरी बिजौरा, नारंगी, इमली, दाडिम (अनार), बसन्ती, (यह एक ६ पत्तों की बूटी होती है जिसको फारसीवाले खटकल बूटी कहते हैं सरसों के फूलके से रंग का इस पर भी पीला पूल आता है। खाने में यह बूटी खट्टी होती है) सबके समान रस मिला कर बनाया गया था, चार २ छः २ माशे कर ४–५ तोले के करीब डाला गया ४ बजे घुटाई बंद कर कांजी से पारद को पृथक् कर लिया इस समय स्वर्ण और पारद परस्पर खूब मिश्रित थे।

दोला में जारण

ता० १३ को ही को काला नोंन, समुद्रनोंन, सैंधा नोंन, खारी नोंन, सांभर, और कचनोन प्रत्येक साढे सात सात माशे सब तोल ३ तोले ९ माशे और जवाखार, सज्जी, सुहागा सब तोले क्षार सब ३ तोले ९ माशे को १।। तोले गोमूत्र व थूहर दुग्ध और ६ माशे उपरोक्त अम्लवर्ग के साथ घोटकर उसका १ बालिश्त लम्बे चौड़े भोजपत्र पर आध अंगुल मोटा लेपकर उस भोजपत्र में उक्त पारद को रख नीचे कैंची की मारकीन लगा पोटली बांध

ली। और उस पोटली को एक हांडी में जिसमें ३ सेर मूत्र (यानी गाय का मूत्र १ सेर, भैंस का ऽ।। सेर बकरी का ऽ। सेर, भेड़ का ऽ।।, घोड़े का ऽ। सेर, ऊँट का ऽ। सेर) और २ सेर कांजी भरी गई बिदित हो कि उक्त मूत्रों में कांजी मिलाने से इतने झाग उठे कि करीब ८ अंगुल हांडी खाली रहते भी एक साथ खिचड़ी की तरह उबल कर हांडी को खाली करते २ पाव भर के अंदाज वजन निकल गया और पीछे से चार नोंन सैंधा, सांभर, खारी समुद्र नोंन एक एक छटांक और ३ क्षार–सज्जी सुहागा जवाखार भी एक एक छटांक डाले गये फिर दोला कर दिया गया (लवण और क्षार डालते समय झाग न उठे) पश्चात् हांडी को भट्टी पर रख ४।। बजे शाम को मंदाग्नि दी गई पहले दो पहर तक मन्द आंच से भी हांडी में बहुत झाग उठे और उबाल आये रात को १ बोतल कांजी पड़ी।

ता० १४ आज सबेरे देखा तो हांडी आधी के करीब खाली दीख पड़ी इस कारण कांजी और भर कर हांडी पूरे नाप तक भर दी बाद को गाय और घोड़े का मूत्र डालते रहे। १० बजे पर १० माशे ओंगे का क्षार, २।। तोले केले का, ६ माशे ढाक का, १ तोले २ माशे इमली का पृथक् २ डाले गये। किसी क्षार ने झाग नहीं दिये शाम तक सब ३ बोतल कांजी और १ सेर गोमूत्र और ऽ।। घोड़े का मूत्र पड़ा। रात को ऽ। पाव भर गोमूत्र और आधी बोतल कांजी पड़ी।

ता० १५ आज ऽ। सेर गोमूत्र और १ सेर भैंस का मूत्र और १ सेर ऊँट का, ऽ। डेढ़ पाव बकरी का मूत्र और १/२ बोतल कांजी दिन रात में पड़ी।

ता० १६ आज ऽ। डेढ़ पाव कांजी और ऽ।। सेर गोमूत्र पड़ा शाम के ५ बजे आंच बंद कर हांडी को ज्यों की त्यों भट्टी पर रखी छोड़ दिया।

ता० १७ के सबेरे खोला तो भोजपत्र तो बिलकुल गल ही गया था। लेकिन कपड़ा नहीं लगा पारा कुछ भोजपत्र में था बाकी भोजपत्र के नीचे कपड़े में पारे को उँगली से टटोला तो कुछ कंकरसी चुभती हुई चीज उसमें मालूम हुई उसको पारे से पृथक् कर देखा तो वह स्वर्ण और पारद से बना ककर सा था जिसमें खूब उभरी हुई सुइयां सी दीख पड़ती थी। पारे को निकाल गरम कांजी से धो नितारा तो ४ तो० ९ मा० ६ रत्ती तरल रूप में पृथक् हो गया और २ मा० २ र० घनरूप पृथक् हो गया। उपरोक्त तरल रूप को छानने से २ रत्ती पिष्टी निकली और ४ तोला ९ मा० ४ र० स्वच्छ तरल रह गया। वह २ रत्ती पिष्टी २ माशे २ रत्ती घनभाग में मिला दी गई। और कुल १ मा० ४ रत्ती को छाना तो १ माशे ७ रत्ती पिष्टी निकली और ५ रत्ती पारा निकला (ध्यान देना चाहिये कि सबसे पहले जारण में १ माशा स्वर्ण ही रहने से ३ माशे पिष्टी बनी थी) जो उपरोक्त पारद में मिला दिया गया अखीर तोल पिष्टी की १ माशे ७ रत्ती और पारद की ४ तो० ११ माशा है इन दोनों की तोल मिलाकर ५ तोले ७ रत्ती हुई जारण से पहले ५ तोले ६ रत्ती ही पारद रखा गया था इस वक्त १ रत्ती तोल बढ़ गई। ये काम ३ दिन रात चला जिसमें कुल ६ सेर कांजी और (गाय का ३।।। सेर भैंस का ऽ१।। सेर बकरी का ऽ।। ढाई पाव भेड़ का ऽ।।। तीन पाव घोड़े का ऽ१ सेर ऊंट का १। सेर सब) ९ सेर मूत्र कुल १५ सेर वजन पड़ा जिसमें करीब ऽ३।। सेर के बच भी रहा। (इसमें ऽ। लवण और ऽ। क्षार भी पड़े)

५ त्वर्णजारण

मर्दन

आज ता० २६ को बिजौरे से दीपित पारद (जिसको पहले स्वर्ण का ग्रास दिया गया था) ४ तोले ११ माशे में ४ माशे बिजौरे से दीपित पारद और मिला ५। तोले कर तप्त खल्व में जंभीरी रस और २ माशे नौसादर उड़े हुए के साथ ८।। बजे से मर्दन करना आरम्भ किया शाम के ६ बजे रस सहित पारद को रख दिया (पौन बोतल रस खर्च हुआ)

ता० २७ को काम बन्द रहा

चारण

ता० २८ को पारे को रस से पृथक् कर नये गरम जंभीरी रस से धो तोला तो २ रत्ती कम ५।। तोले हुआ २ रत्ती छीज गया बाद को कर्सी से किये तप्त खल्व में पारद को रख दो दो बूंद जंभीरी रस डाल ९। बजे से मर्दन करना आरंभ किया और साथ साथ ही १ माशे कुंदन के एक एक अंगुल लंबे टुकड़ों को जंभीरी रस में घुटे १ मा० गंधक और १ माशा नौसादर सत्त्व से लेपकर ग्रास देना आरंभ किया प्रथम एक एक दो टुकड़ों का ग्रास दिया और पीछे पांच पांच सात २ टुकड़े इकट्ठे भी डाल दिये ग्रास देते समय पारद कुंदन को सोने के बरकों की तरह शीघ्र न ग्रसता था और गंधक नौसादर का जिन पत्रों कर लेप किया था वह थोड़ा रस रहने पर भी पारद में भली भांति न मिलते थे और थोड़ा भी रस अधिक रहने पर तो बिलकुल ही न मिलते थे १। घंटे तक थोड़ा २ रस डाल ग्रास देते रहे। बीच में कुछ नौसादर द्राव भी डाला १०।। बजे सब ग्रास दे चुकने पर जंभीरी रस अच्छी तरह से डाल और नौसादर द्राव और डाल और खल्व को अधिक तप्त कर घोटना आरंभ किया। १२ बजे के करीब कुंदन के टुकड़े पारद से पृथक् न दीख पड़े। शाम के ५ बजे तक मर्दन जारी रहा। ५ बजे रस को पृथक् कर पारे को धीरे धीरे खल्व से गिराया तो पीछे कुछ घन भाग रह गया जिससे ज्ञात हुआ कि गर्भद्रुति नहीं हुई। खल्व की गर्मी ४५ सी, यानी ११२ फ० ही थी–फिर पारे को चीनी के प्याले में कर जंभीरी रस न्यून भाग और नौसादरद्राव अधिकांश डाल ढ़क कर रख दिया।

ता० २९ को सबेरे देखा तो पारे पर श्यामता आ गई थी। द्राव से पृथक् कर पारद को नितारा तो नीचे रवेदार चीज दीख पड़ी जिससे ज्ञात हुआ कि स्वर्ण पारद में भली भांति नहीं मिला बाद को तप्त खल्व में नये जंभीरी रस के साथ ८। बजे से निरंतर कठोर मर्दन करना आरम्भ किया, कल का पारद से निकला नौसादरद्राव भी खरल मे डाल दिया (खरल इतना गर्म रखा गया जिसे छू न सकते थे थरमामेटर का पारा ६५ तक चढ़ता था) ११।। बजे पारद कटोरे में नितारा तो बहुत कम घन भाग दीख पड़ा और जो कुछ भी घन भाग था वह बहुत कम दरदरा मालूम होता था, बाद को फिर पारद को उतने ही तप्त खल्व में नये जंभीरी रस के साथ उसी प्रकार मर्दन किया (पारद के निकलने के पहले रस को भी खरल में डाल दिया)। १। बजे पर पारद को खरल से निकाल धो नितार तोला तो ५ तोले ३ माशे ६ रत्ती था यानी चारण की तोल के अनुसार पूरा हुआ (अबकी बार खरल ८५ तक गर्म रखा गया इस विशेष तप्तखल्व में मर्दन करने से कोई विशेष लाभ नहीं हुआ) पारद को नितारने पर पहली सी थोड़ी सी रवेदार पिष्टी दीख पड़ी।

दोला में जारण

आज ता० २९ को काला नोंन, समुद्र नोंन, खारी नोंन, सांभर और कच लोन छै छै माशे सब नोंन ३ तोले और त्रिक्षार अर्थात् सज्जी, सुहागा, जवाखार एक एक तोले सब ६ तोले वजन को ३ माशे गोमूत्र और १ तोले के करीब थूहर दुग्ध और थोड़ा से अम्ल वर्ग (जौ, नींबू, जंभीरी, बिजौरा, नारंगी, इमली, दाडिम, बसंती, सबके समान रस मिलाकर बनाया गया था) के साथ घोट कैंची की दुहरी मारकीन पर उसका दोरूपे भर मोटा लेप कर दिया और उस लेपित वस्त्र में उक्त उक्त पारद को रख पोटली बांध दी फिर २ सेर गोमूत्र १ सेर कांजी और बिजौरी के दीपन में इसी पारद के दोला से निकले १ सेर जंभीरी रस कुल ४ सेर द्रव से पूरित हांडी में ३ छटांक सज्जीक्षार और १ छ० सज्जी ४ छ० सुहागा। (सुहागा चौकी का काम में लाया जाता था) ४ छ० जवाखार (जिसमें २ छ० अंग्रेजी १ छ० देशी बाजरी और १ छ० घर का था) कुल १२ छ० वजन डाल दोला कर दिया (इस बार गोमूत्र में कांजी मिलाते समय थोड़े से ही झाग उठे किन्तु जंभीरी रस डालने पर अधिक झाग उठे दो बारमें आध पाव रस डाले तो झाग तो उठे किन्तु विशेष तीव्रता न थी फिर एकदम रस डाल देने से इस जोर से झाग उठे कि उबल कर आध सेर के करीब पदार्थ हांडी से निकल

गया) और ४ बजे से बहुत मंदाग्नि दी। रात के ७ बजे देखा तो थरमामेटर में ५५ तक गर्मी मालूम होती थी। दोला को अग्नि ता० २ के शाम को ६ बजे तक दी गई और नीचे लिखे नकशे के मुताबिक रस और मूत्र पड़े नकशे के अखीर खाने में दोला जल की गरमी थरमामेटर के सैन्टीग्रेट के दर्जे की दिखाई गई है।

नक्शा

तारीख	गोमूत्र	कांजी	जंभीरीरस	गरमी	विशेष वार्ता
२९	२ सेर	१ सेर	१ सेर		प्रथम भरेगये
रात	—	—	१ बोतल	७५	
३० दिन	—	१ सेर	—	६५	
रात	ऽ।। सेर	—	—	५५	
१ दिन	—	—	ऽ।। सेर	६५	
रात		—	ऽ।। सेर	६५	
२ दिन	ऽ।। सेर	—	—	६५	
मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	—	
३ दिन	३ सेर	२ सेर	ऽ२।।। सेर		

जोड़ तीनों का ७।।। सेर

ये काम ३ दिन रात चला जिसमें आदि से अंत तक ३ सेर गोमूत्र, २ सेर कांजी, २।।। सेर जंभीरी रस, कुल ७।।। सेर द्रव पडे जिसमें से ३।। सेर के करीब अखीर में बच भी रहा।

ता० २/१२ के शाम के ५।। बजे आंच बंद कर हांडी को ज्यों की त्यों भट्टी पर रखी छोड़ दिया।

ता० ३ के सवेरे खोल पारे को निकाल गरम कांजी से धो नितार तरल रूप और घन सब पारद को पृथक् पृथक् कर दिया। घन रूप को छानने से ३ माशे ३ रत्ती पिष्टी न निकली और तरल पारद के छानने से कुछ पिष्टी न निकली। छना पारद तोल में ५ तोले ३ रत्ती हुआ किन्तु पारद पिष्टी की इकट्ठी ५ तो० ४ रत्ती ही हुई यानी २ रत्ती और छीज गया।

विचार–यह बात विचारणीय है कि इससे पहले जारण में पिष्टी की तोल १ मा० ७ रत्ती हुई थी। अबकी बार ३ माशे ३ रत्ती हुई। इस अंतर का क्या कारण है? क्या अबकी बार अधिक मंदाग्नि देने से पारद स्वर्ण से पृथक् नहीं हुआ।

६ सिद्ध मत दोला से स्वर्ण जारण

सग्रासं पंचषड्भागैर्यवक्षारैर्विमर्दयेत् । सूतकात्षोडशांशेन गंधेनाष्टांशकेन वा। ततो विमर्द्य जंबीररसे वा कांजिकेऽथ वा । दोलापा को विधातव्यो दोलायंत्रमिदं स्मृतम् ।।

मर्दन

ता० १५ को ४ तोले ९ माशे ५ रत्ती पारा संस्कृत षड्गुण बलिजारित पारद को (जिसमें ३ बार स्वर्णग्रास दिया जा चुका था) सामान्य तप्त खल्व में जंभीरीरस और २ माशे नौसादर उड़ाये हुये के साथ ८ बजे से निरंतर मर्दन करना आरंभ किया। शाम के ६ बजे घुटाई बंदकर रससहित पारद को तामचीनी के कटोरे में भर कर रख दिया। आज १० घंटे घुटाई हुई। पौन पौन बोतल रस जंभीरी का खर्च हुआ।

चारण

ता० १६ को पारे को रस से पृथक् कर मध्य खल्व में डाल बहुत थोड़े जंभीरी के रस के साथ ८ बजे से मर्दन करना आरम्भ किया। १५ मिनट बाद नं० १ स्वर्णजारण से निकली २ मा० ३ रत्ती पिष्टी को १ माशे नौसादर सत्त्व में सूखा मिला ग्रास दे दिया जो डालते ही पारे में मिल गई और फिर थोड़ा थोड़ा जंभीरी रस डाल घोटते रहे। ३ बजे तक ७ घंटे मर्दन हो चुकने पर पारे को रस से पृथक् कर गर्म जंभीरी रस से धो शीत खल्व में थोड़ा थोड़ा अंग्रेजी जवाखार डाल ४ बजे से सूखा घोटना आरम्भ किया। शाम के ६ बजे तक ३ छटांक जवाखार पड़ चुकने पर घुटाई बंद कर ज्यों का त्यों खरल को रख दिया।

ता० १७ को ३ बजे से ५ बजे तक फिर घोटा।

ता० १८ को धूल की छुट्टी रही।

ता० १९ को १ छ० जवाखार और डाल ३ घंटे घुटा।

ता० २० को १ छ० जवाखार और डाल ६ घंटे घुटा पारा अदृश्य हो गया।

ता० २१ को ४ माशे गंधक पीस थोड़ी थोड़ी डाल ६ घंटे घोटा।

ता० २२ को ४ घंटे घोटा। अब सब की रंगत खाकी हो गई है।

जारण

ता० १ अप्रेल को खरल से पृथक् कर दुहरी कैंची की मारकीन में पोटली बांध ४ सेर कांजी से पूरित हांडी में दोला कर दिया और चूंकि कांजी में जवाखार पड़ने से झाग उठते हैं और उबाल आता है इस वास्ते तस्त में हांडी को रख प्रथम ३ घंटे धूप में रखा तो झाग न उठे। बाद को २ बजे से भट्टी पर मंदाग्नि देना आरंभ किया। ४ बजे देखा तो कांजी पर प्रथम सफेद मलाई सी पड़कर झाग उठने लगे और करीब २ आध घंटे रहकर लोप हो गये। रात को ३।। बोतल कांजी और पड़ी।

ता० २ को दिन में २।। बोतल और रात में ३ बोतल कांजी पड़ी।

ता० ३ को ९ बजे दोला में थरमामीटर डालातो ९५ नं० की गर्मी मिली। आज दिन में ३ बोतल और रात में भी ३ बोतल कांजी पड़ी।

ता० ४ के दो प्रहर कें १२ बजे तक २ बोतल कांजी और पड़ी। १२ बजे पर काम बंद कर दिया। तीन दिन रात निरंतर अग्नि दी गई और कुल १४ बोतल कांजी पड़ी। हांडी को ज्यों की त्यों भट्टी पर रखी छोड़ दिया। शाम को उसमें से पोटली को निकाल अलग कटोरे में रख दिया।

ता० ५ को खोला तो संधान निचुड़कर कटोरे में आ गया था। पोटली के अन्दर केवल संधान मिश्रित काले रंग की गाढ़ी पिष्टी सी रह गई थी। पारद निजरूप में बिलकुल न दीख पड़ा अतएव उस सब को कपड़े पर से अलग कर उसमें करीब २ छटांक नींबू का रस मिला कटोरे में भर शीशी के बकस में रख धूप में रख दिया और लकड़ी से कभी कभी चलाते रहे।

ता० ६ को धूप में रखा रहा।

ता० ७ को नितार पृथक् कर धूप में सूखने को रख दिया।

ता० ८ व ९ को भी सूखता रहा।

ता० १० को देखा तो सूखकर ढिम्मा सा बन गया था, तोड़ने से उसमें पारे के रवे दीखते थे।

ता० ११ को तोला तो ४ तोले ११ माशे हुआ। (पारद और स्वर्ण की तोल ५ तोले थी) दोला से निकले संधान को नितार और इस शंका से कि इसमें स्वर्ण पारद मिला हुआ है, बोतल में भर रख दिया और नीचे की गाद को सोख्ते कागज में छान धूप में सुखा दिया जो सूखने पर १ तोले ५ माशे हुई, इसमें से ४ माशे को चीनी की प्याली में रख शीशे के ढक्कन से ढक स्प्रिट की आंच दी तो बड़ी दुर्गन्ध आने लगी और शीशे का ढक्कन धूम्रवर्ण के वाष्प जल से रंग गया। ढक्कन पर पारे का कुछ लक्षण दिखाई न दिया। २ घंटे बाद आंच से उतार ठंडा कर दवा को तोला तो २ माशे ६ र० रह गई।

बाद को इस २ माशे ६ रत्ती दवा को बारीक पीस उसी प्रकार फिर २।। बजे से तेज आंच दी। शाम के ५।। बजे उतार देखा तो दवा बिल्कुल जल सी गई मालूम होती थी और ढ़क्कन पर वही धूम्र वर्ण वाष्प जल जम गयाथा, पारे का कोई चिह्न न दीख पड़ा अतएव दवा को जो तोल में २ माशे रह गई थी, इस शंका से कि इसमें स्वर्ण विद्यमान है, उपरोक्त बिना आंच खाई हुई दवा में मिला रख दिया।

सूक्ष्म वृत्तान्त

इस क्रिया में पारा ४ तोले ९ माशे ४ रत्ती स्वर्ण पारद पिष्टी २ मा० ३ र० गंधक ४ माशे जवाखार अंग्रेजी ५ छ०, कांजी प्रथम बार ४ सेर, सब कांजी १५ सेर।

मर्दन—२ माशे नौसादर व जंभीरी रस से सामान्य तप्तखल्व में १० घंटे।

मर्दन—स्वर्ण पिष्टी व १ माशे नौसादर सहित मध्य तप्त खल्व में ७ घंटे।

मर्दन—सग्रास पारद का ५ छटांक जवाखार सहित १३ घंटे (५ दिन में)

मर्दन का गंधक मिला	१० घंटे (२ दिन में)
स्वेदन	तीन दिन रात

शंका—क्या कांजी कम खट्टी थी? या क्या कांजी की विद्यमान तोल ८४ सेर से कम थी।

		मर्दन			चारण			जारण								
तारीख	नं०		मसाला	समय	वस्तु	यंत्र	रस	मसाला	यंत्र	द्रव	क्षारादिक	पारद	पारदतोल	पारद जो	पिष्टी जो	विशेष वार्ता
२/९/०७	१	जंभीरीरस	÷	५प्रहर	१मा० कुंदन	तप्तखल्व	जंभीरी.	३मा०नौसा–दर सत्व	दोला	संधान	४छ० सैंधव	+	५तो०षड्गुण बलिजारित पारद	४ तोले १० मा०	३ माशे	१भाग स्वर्ण २ भाग पारद को पकड़ सकता है
१३/९/७	२	जंभीरीरस क्षा०२मा० स० क्षा०	२मा० य०	१०घंटे	३मा० पिष्टी उक्त नं०१	तप्तखल्व	नी० जंभीरी	१मा०नौसा–दर१मा० गंधक	दोला	संधान	६छ० सैंधव	+	उपरोक्त४तो० १० मा०	४तो० ९ मा० ७ र०	२मा० ५र० पिष्टी	
२४/१०/०७	३	जंभीरी रस	३मा०नौसादर	१० घंटे	२मा०५र० जो उप० नं २ के जारण से निकला	तप्तखल्व	जंभीरी	१मा०नौसा–दर १मा० गंधक	दोला	जंभीरीरस	५छ० सैंधव ५छ० शोरा ५छ० यवक्षार अंग्रेजी	+ +	उपरोक्त४तो० ९मा० ७र०	४तो० ९मा० २ र० पारा	२मा० ३र० पिष्टी अलग रख दी	
९/११/७	४	जंभीरीरस	सोंठ,चीता मूलीकेक्षार युतगोमूत्र २ लो०	९।। घंटे	१मा० सोने के वर्क	१धूप से तप्तमूषा १अधिक तप्तखल्व	जंभीरी रस	३मा०नौसा–दर	मूषा	जंभीरी रस		+	बिजौरसेदीपित ५तो० पारद	अलग रख दिया		
	४/२	२कांजी	३मा० नौसादर ५तो० अम्लवर्ग	४ घंटे					दोला	९सेरमूत्र ६से०कांजी	४लवणऽ। क्षारत्रयऽ क्षार ओंगा१०मा० केला२।।तो० ढाक६मा, इमली१–	+		४तो०११मा० पारद	१मा० ७र० पिष्टीअलग रख दी	
२६/११/७	५	जंभीरीरस	२ मा० नौसादर	१४ घंटे २दिनमें	१मा० कुंदन	अधिक तप्तखल्व	जंभीरी रस नौसादर द्राव	१मा०गंधक १मा० नौसा–दर सत्त्व	दोला	१से०कां० २से०गोमूत्र १से०जंभी० रस	सज्जीक्षारऽ सज्जीऽ–।सुहा० ऽ।जवाखारदेशी ऽ जवाखारअंग०	+	५।तो०पारद			उपरोक्त४तो०११मा० पारदमें ४ मा० बिजौरेसे दीपित पारद और मिला ५तो० करलिया दोला की मंदाग्नि ७५छ० से अधिक न थी
१५/३/०८	६	जंभीरीरस	२ मा० नौसादर	१० घंटे की २ मा०	उक्त नं०३ ३र० पिष्टी	मध्य तप्तखल्व	जंभीरी रस	१मा०नौसा–दरसत्त्वजवा–खार अं० ऽ। ४मा० गंध०	दोला	१५सेर कांजी	ऽ ÷	+	४तो० ९मा० ५र० ३वार स्वर्णग्रासयुक्त	५तो० स्व० पारद		

रंजनसंस्काराध्यायः २५

पारदवंदना

विश्वेशबीजं रसराजसूतं मृत्य्वादिरोगाधिदरिद्रजानाम् । जरावलीनां निधनाय नित्यं. भोगाय मोक्षाय सुखाय वन्दे ॥१॥

(र० पा०)

अर्थ–मृत्यु आदि रोग दरिद्रता से पैदा हुए दुःख तथा बुढ़ापे के नाश के लिये, भोग, मोक्ष और सुख के लिये शिवजी के वीर्य श्रीरसराज पारद को मैं नित्यप्रति नमस्कार करता हूं॥१॥

रंजनलक्षण

सुसिद्धबीजधात्वादिजारणेन रसस्य हि । पीतादिरागजननं रंजनं परिकीर्तितम् ॥२॥

(र० र० सं०)

अर्थ–भली प्रकार सिद्ध किये हुए बीज और धातु आदि के जारण से पारद के पीत आदि वर्ण के पैदा होने को रंजन कहते हैं॥२॥

रसरागसंस्कार

तत्रादौ रसरागाख्यश्चतुर्दशसंस्काररयायमर्थः रसस्य रागः स्वर्णरजतताम्रतीक्ष्णकान्तान्यतमप्रजारणा॥३॥

(ध० सं०)

अर्थ–यहां से आगे जो पारद के कर्म कहेंगे उनको केवल वेध के लिये ही जानना चाहिये। वहां पर प्रथम रसराग नाम का चौदहवां संस्कार है। उसका यह अर्थ है कि सोना, चांदी, तांबा, फौलाद और कांत लोहे में से किसी एक के जारण करने से पीत आदि वर्ण विशेष का सिद्ध करना॥३॥

रसरागसारणाख्यसंस्कारः

तस्य रसरागकरणस्य ताम्रपात्रस्थमम्लमित्यादिनोक्तताम्रकल्केन[1] सहाभ्रकसत्त्वजारणायैव निष्पत्तिर्जाता पुना रसरागकरणं पिष्टपेषण (व्यर्थ) मरित तथापि रसरागविधानज्ञापनाय किंचित्प्रोच्यते ॥४॥

(ध० सं०)

अर्थ–यद्यपि जहां समुदाय के अभ्रक जारण कहा है वहां पर (ताम्रपात्रस्थमलं) इत्यादि श्लोक से कही हुई ताम्रकल्क के साथ अभ्रक सत्त्व के जारण की क्रिया से ही रसराग (पारे में रंग का आ जाना) की सिद्धि हो जाती है। फिर रसराग संस्कार का करना व्यर्थ है तो भी रसराग की विधि के जानने के लिये फिर कुछ रसराग संस्कारवर्णन किया जाता है॥४॥

अभ्रकजारणाद्रसे बलाधिक्यं जायते तीक्ष्णजारणाद्रसे रागाधिक्यं जायते नागजारणाद्रसे स्नेहाधिक्यं जायते ॥५॥

(ध० सं०)

अर्थ–अभ्रकजारण से पारद में अधिक बल होता है, फौलाद के जारण से उत्तम रंग आता है और नाग के जारण से पारे में स्नेह अधिक होता है॥५॥

रसरागक्रिया

माक्षिकेण तु कनकं च मृतं रसकतालयुतं पटुसहितं तत्पक्वं हंडिकायां यावदिंद्रगोपनिभम् । अथैतच्चूर्णेन सूतरंजनं तत्फलं चाह–तत्चूर्णं सूतवरे त्रिगुणं चीर्णं हि जीर्णं तु॥ द्रुतहेमनिभः सूतो रञ्जति लोहानि सर्वाणि ॥६॥

(ध० सं०)

अर्थ–द्विगुण वा त्रिगुण सोनामक्खी से भस्म किया हुआ सुवर्ण और उसी के तुल्य खपरिया हरिताल तथा सेंधानोंन इन सबको मिलाकर लवणयंत्र द्वारा हांडी में परिपक्व करे तो वह भस्म बीरबहूटी के समान लाल वर्ण की होगी फिर उसका चूर्ण बनाकर रख लेवे। तदनंतर संस्कारों से शुद्ध किये हुए पारे में पूर्वोक्त तिगुने चूर्ण को खिलावे और जारण करे तो वह पारद गलाये हुए सुवर्ण के समान वर्ण होकर सब धातुओं को रंगता है॥६॥

रंजनक्रिया

केवलं निर्मलं ताम्रं वापितं दरदेन तु । कुरुते त्रिगुणे जीर्णे लाक्षारसनिभो रसः ॥७॥

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–तांबे को गला कर शिंग्रफ का चूर्ण थोड़ा थोड़ा डाले, उस तांबे के तिगुने चूर्ण को पारद चारण करे तो वह पारद लाख के रंग का सा होता है॥७॥

अन्यच्च

गंधकेन हतं नागं[1] जारयेत्कन्दलोदरे । एतस्य त्रिगुणे जीर्णे लाक्षाभो जायते रसः ॥८॥ एतत्तु नागसंधानं न रसायनकर्मणि ॥९॥

(र० चिं०, बृ० यो०)

अर्थ–गंधक से भस्म किया हुआ सीसा और उस नाग के साथ भस्म किया हुआ तिगुना तांबा जब पारद में प्रथम गंधक के साथ नाग (सीसे) को भस्म करे और उससे तांबे को भस्म करे उस तांबे को पारद में तिगुना जारण करे तो वह पारद लाख के रस के समान लाल रंगवाला होता है। यह योग धातुवाद (सोना चांदी बनाना) के लिये है और रसायन के लिये नहीं है॥८॥९॥

बीज की अवधि

किंवा यथोक्तसिद्धबीजोपरि त्रिगुणताम्रोत्तरे नान्यद्बीजम् ॥१०॥

(र० रा० शं०, र० चिं०)

अर्थ–अथवा यथोक्त सिद्ध बीजों के जारण करने के उपरांत जब तिगुना ताम्रजारित हो जाय तब और बीजजारण नहीं करना चाहिये॥१०॥

स्वर्णबीज

समजीर्णं स्वतंत्रेणैव रंजयति–
कुनटीहतकरिणा वा रविणा वा ताप्यगंधकहते ॥
दरदनिहत असिना वा निर्व्यूढं हेम तद्बीजम् ॥

ताम्रबीज

बलिना व्यूढं [2]केवलमार्कमपि–ताम्रतद्बीजम् ॥११॥

(र० चिं०, र० रा० शं, बृ० यो०)

अर्थ–कुनटी (मैनसिल) के साथ भस्म किये हुए शीसे के साथ या सोनामक्खी वा गंधक के साथ भस्म किये हुए तांबे से अथवा हिंगुल के साथ

१–अभ्रकजारणसमुदाय में ध० सं० के मत से कहे अभ्रकजारण में ताम्र कल्कयुक्त अभ्रक का जारण कहा है, उसका हवाला देता है।

१–'व्यूढं' का अर्थ हतं जान पड़ता है किन्तु संशय है।

२–ताम्र–स्वयं निश्चयानंतर र० रा० श० में कमलोदरे ताम्रे इति टीका।

मारे हुए लोहे से तीन बार व्यूढ़ किया हुआ सुवर्ण बीज होता है, उसको समभाग जारण करे, स्वतन्त्रता से पारद को रंगता है।।११।।

रंजन (रसरहस्य से)

रामठं मुसलीकंदं लांगलं रक्तचित्रकम् ।
मूषालेपनमात्रेण रसो भवति कुंकुमम् ।।१२।।

(टो० नं०)

अर्थ–हींग, मूसली, कलिहारी और लाल चीता इनका मूषा में लेप करके पारद को धोंके तो वह पारा केसर के समान लाल वर्ण का होता है।।१२।।

अन्यच्च

रसं खर्परके कृत्वा अधो बह्निः प्रताप्यते । निंबूकद्रवसंमिश्रं भूनागतरुजे द्रवे ।।१३।। प्रदद्यात्सूतकाश्चोतं बहुशः संप्रदायवित् । जायेतारुणपीताभो नित्यमेव महौषधात् ।।१४।। अतिस्निग्धच्छविः सूतोऽरुपरूपो महाबली । यथा यथा ग्रसेद्ग्रासो भूनागद्रवसंयुतः ।। तथा तथा भवेत्सूतो दाडिमीकुसुमच्छविः ।।१५।।

(टो० नं०)

अर्थ–मिट्टी के खिपरे में पारे को डालकर नीचे से अग्नि जलावे फिर उस पारद पर निंबू के रस से मिले हुए भूनाग (केंचुओं) के नवीन नवीन (ताजे) रस का चोवा डालता जावे तो इस महौषधि से पारद का रंग लाल और पीला हो जाता है और लाल रूप का पारद चिकना और बली होता है, जैसा जैसा भूनाग के रस से युक्त निंबू के रस से जीर्ण होता है अर्थात् चोवा भस्म होता जाता है, तैसे ही पारद का रंग अनार के फूल के समान लाल हो जाता है।।१३–१५।।

कंकुष्ठादिगण

कंकुष्ठं हरितालं च गंधकं दरदं शिला । माक्षिकं सैंधवं तुल्यं नवसारं तथाभ्रकम् ।।११६।। सौवीरं गैरिकं काचं राजावर्तं विषत्रयम् । प्रवालं यावकं पिंडं सिंदूरं सरसांजनम् ।।१७।। समुद्रफलकर्पूरं पीतकासीसवेतसम् । खर्परं किंशुकं रक्तं तापिका नूततां नयेत ।।१८।। कृत्वा चूर्णं कालिनीनां रजसा परिभावयेत् । जपादाडिमबंधूकहेमपुष्परसैस्तथा ।।१९।। चांगेरिकाहस्तिशुंडीधूसरैः स्वरसैस्तथा । निशामुनिरसेनापि पंच पंच च भावनाः ।।२०।। शृंगीविषेण च तथा दुग्धिकाक्षतजेन च । कुंडलीगणिकार्योत्थपुष्पेणैव च भावना ।।२१।। कंकुष्ठादिगणो ह्येष रसचिंतामणौ स्थितः । रक्तिकादशकं दद्याद्रसे खल्वनिवेशिते ।।२२।। कर्मणोनन्तरं पूर्वं निम्बूकद्रवमिश्रितम् । एवं रागयुतः सम्यक् प्रोज्ज्वलो निश्चलस्तरम् ।।२३।। सर्वकर्मसहः श्रीमान् वह्निस्थायी स्थिरप्रभः । हेमाभ्रस्वत्त्वप्रभृति ग्रसते निःप्रयासतः ।।२४।। यद्यदारभते कर्म तत्तदेव करस्थितम् । अनेन सदृशं नास्ति रसरागकरः परः ।।२५।। असौ रक्तगणः साक्षात् क्षुद्बोधोतीव शोभितः अवश्यं पीतनं शास्याद्वह्निं बुद्बुदयन् व्रजेत् ।।२६।।

(र० चिं०, टो० नं०)

अर्थ–कंकुष्ठ (मुरदासंग), हरिताल, सिंग्रफ, मैनसिल, सोनामक्खी, सैंधानोंन, नौसादर, अभ्रक, सौवीर, गेरू, कांच (कचलोन), राजावर्त, तीनों विष (संखिया, सींगियां, कुचला), मूंगा, जौका, चूना, सिंदूर, समुद्रफल, कपूर, पीले रंग का कसीस, बैत, रसखपरिया, ढाक के फूल, अनार के फूल, इनका चूर्ण बनाकर फिर इनको कालिनी (इसका लक्षण परिभाषा में लिखा है) के रज अर्थात् मासिक धर्म के रक्त से भावना देवें और जपा (गड़हर), अनार, गुलदुपहरिया और धतूरा इनके फूलों के रस से भावना देवे तथा लौनिया और हाथी शुण्डी के फूलों के रस से भावना देवे और हल्दी अगस्त के फूलों का रस इन सबसे पांच पांच बार भावना देवे तथा सींगिया के क्वाथ से दुद्धी के दूध से कुण्डली (कचनार) गणकारी (मदन मादनी एक प्रकार का फल), इनके फलों के रस से पांच पांच भावना देवे। यह कंकुष्ठादिगण रसेन्द्रचिंतामणि में वर्णन किया गया है, खरल में पारे को डालकर दश रत्ती पूर्वोक्त चूर्ण और नींबू के रस के साथ घोटे। प्रत्येक कर्म के बाद पारद को नीबू के रस में रखे तो पारद अत्यन्त निश्चल उत्तम रंगवाला सब कर्मो के सहनेवाला अग्निस्थाई होता है और वह पारद हेम तथा अभ्रक सत्त्व की द्रुति को बिना परिश्रम के ग्रस लेता है और इस पारद से जो जो कर्म किये जाते हैं, सब शीघ्र हो जाते हैं, इस रक्तगण के अतिरिक्त और दूसरा कोई भी रसराग करनेवाला पदार्थ नहीं है। यह गण पारद की भूख को साक्षात् बढ़ाता है।।१६–२६।।

रंजन (गंध, खग, नवसादर तैल) से

तैले नियमितं तप्ते तत्तु संस्थापितं पुनः । गंधखगनव–[1] साराणां त्रयाणां शुष्कमर्दनात् ।।२७।। एक्यमापादीयत्वा तु मृन्मये कोकिलोपरि । ऐक्यं संपादयित्वा तु सुतप्तं चीनपात्रगम् ।।२८।। तिर्यक्संस्थापितं बायोः स्रवेत्तैलं नियोजयेत् । रसे संस्थापितं तप्ते स्वल्पं स्वल्पं यथा पचेत् । रसाद्दशगुणं तेन रंजितो जायते रसः ।।२९।।

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अर्थ–तपे हुए तैल में नियमित संस्कार किये हुए पारद को रखे और गंधक, फिटकरी, नौसादर इन तीनों को सूखा ही पीसकर खिपड़े में रखकर और कोयलों की आंच में रख गलाकर सबको एक कर लेवे फिर उस पारद सहित तैल के पात्र को टेढ़ा करके तैल निकाल लेवे तदनंतर उसमें गंधक फिटकरी और नौसादर के किये हुए चूर्ण को थोड़ा डाल कर पकावे, इस प्रकार दशगुणा पकाने से पारद रंजित होता है।।२७–२९।।

रंजन

पारदं शुद्धमादाय तैलं सर्षपजं तथा । स्थालिकायां सुसंतप्ते तैले वस्त्रगतं रसम् ।।३०।। दोलायंत्रेण संपक्वं जले संस्थापयेत्ततः । रसनाम्हदीपत्रौ समभागौ पेषितौ चिरम् । जले संयोजितौ पात्रे दीर्घास्ये तत्र निक्षिपेत् ।।३१।। रंजितं तस्य रागेण पुनस्तैलेन लंबयेत् ।।३२।। एवं तच्छतधा पक्वं शतधा रंजितं तथा । तदा तज्जारणायोगे रसरागं नियोजयेत् ।।३३।।

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अर्थ–शुद्ध सरसों का तैल लेकर और हांडी में डालकर गरम करे फिर पारद (जो अग्निस्थाई हो) को कपड़े में बाँधकर दोलायंत्र द्वारा पकाकर जल (गरम) में डाल देवे, तदनंतर रासन तथा मेंहदी के समभाग किये लिये हुए पत्तों को पीसकर और समान जल में घोलकर लम्बे मुखवाले बासन में डाल देवे फिर पारद को तैल में पकाकर उस जल (रासन और मेंहदी के पत्तों से बने हुए) में सौ बार बुझाय देवे तो पारद रंजित होता है, तब उस पारद को जारणा में उपयुक्त करे ।।३०–३३।।

चांदी में रंजन की आवश्यकता नहीं है

तारकर्मण्यस्य न तथा प्रयोगो दृश्यते ।।३४।।

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसाद
सूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराज–
संहितायां पारदरंजनं नाम
पंचविंशोऽध्यायः ।।२५।।

१–खग कसीस (वा) माक्षिक यह शका कि खग कदाचित् नवसादर (डकाव) वाची तो नहीं है, यहां निवृत्त होती है, नवसादर के पृथक् कहने से खग कसीसवाची भी नहीं है, यह शंका पहले ही निम्मलिखित जारण श्लोक से निवृत्त हो चुकी है। क्षारक्षोणीरुहाणां जारणसंस्कारोक्त जिसमें कसीस नरसार, पक्षि, तीनों शब्द कहे हैं।

अर्थ–चांदी बनाने के योग में रंजन कर्म की आवश्यकता नहीं है।।३४।।

इति श्रीजैसलमेरनिवासीपंडितमनसुखदासात्मजव्यास–
ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां
पारदरंजनं नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ।।२५।।

सारणसंस्काराध्यायः २६

सारणलक्षण

सूते सतैलयंत्रस्थे स्वर्णादिक्षेपणं हि यत् ।
वेधाधिक्यकरं लोहे सारणा सा प्रकीर्तिता ।।१।।

(र० र० स०)

अर्थ–तैल सहित यन्त्र में रखे हुए पारद में जो सुवर्ण आदि को डालकर जारण करना या धातु में अधिक वेध करनेवाले संस्कार को सारण संस्कार कहते हैं।

अन्यच्च

तस्य रागस्य ताम्रादिषु प्रायणम् ।।२।।

(ध० सं०)

अर्थ–रंजित पारद का ताम्र आदि धातुओं में जो पिलाना है उसको सारण कहते हैं।।२।।

सारणक्रिया

अथेदानीं प्रवक्ष्यामि वेधवृद्धेश्च कारणम् । महद्वृद्धिकर यस्मात्सारणं सर्वकर्मणाम् ।।३।। धूर्तपुष्पसमाकारा मूषाष्टांगुलदीर्घिका । मुखे सुविस्तृता कार्या चतुरंगुलसंमिता ।।४।। मृन्मया सा विशुष्का च मध्येऽतिससृणीकृता । अन्या पिधानिका मूषा सुनिम्ना छिद्रसंयुता ।।५।। शुद्धं सुजारितं सूतं मूषामध्ये निधापयेत् । मत्स्यकच्छपमंडूकजलौकामेषशूकराः ।।६।। एकीकृत्य वसामेषां पचेत्तैलं च मारणम् । भूनागविट् तथा क्षौद्रं वायसानां पुरीषकम् ।।७।। तथैव शलभादीनां महिषीकर्णयोर्मलम् । रसस्य षोड़शांशेन चैतेषां कल्कमाचरेत् ।।८।। पटेन गालितं कृत्वा तैलमध्ये नियोजयेत् । सारणार्थं कृतं तैलं मूषामध्ये निधापयेत् ।।९।। जीवं च कल्कमिश्रं हि कृत्वा मूषोपरि न्यसेत् । पिधानद्वितयेनैव मूषावक्त्र निरुधयेत्।।१०।। भस्मना लवणेनैव मूषायुग्मं निरुन्धयेत् । भूमिकायास्त्रिभागं हि खनित्वा वसुधां क्षिपेत् ।।११।। तदूर्ध्वं ध्मापयेदग्निं दृढ़ांगारैः खराग्निना । एवं तु जारितं बीजं रसमध्ये पतत्यलम् ।।१२।। बन्धमायाति सूतेन्द्रः सारितो गुणवान् भवेत् । प्रथमं जारितश्चैव सारितः सर्वसिद्धिदः ।।१३।। न जारितः सारितश्च करो वेधकरो भवेत् । गुरूपदेशतो दृष्टं सारणं कर्मचोत्तमम् । हस्तेन भवयोगेन कृतं सम्यक् श्रुतं नहि ।।१४।।

(ध० सं०)

अर्थ–अब सारण कर्म को कहते हैं, अब हम वेध संस्कार की वृद्धि के कारण को कहेंगे क्योंकि समस्त कर्मों की वृद्धि का देनेवाला सारण कर्म है धतूरे के फूल के समान आठ अंगुल लंबी जिसका मुख चार अगुल चौड़ा हो मिट्टी की बनी हुई बीच में अत्यन्त चिकनी हो और उसी मिट्टी का बना हुआ चिकना तथा गहरा छेदवाला ढकना हो उस मूषा में शुद्ध जारित (बीजजारित) पारद को रख देवे फिर मछली, कछवा, मेंडक, जोंक, मेंढा, सूकर, इनकी चर्बी को इकट्ठी कर सारण तैल को पकावे और भूनाग (केंचुओं) की विष्ठा शहद और कौए की बीट, तथा शलभ (टीडी) की बीट और भैंस के कान का मैल इन प्रत्येक को पारद से षोडशांश लेकर कल्क बनावे उस कल्क को कपड़े में छानकर तैल में डाल देवे सारण संस्कार के लिये हुए इस तैल को मूषा में पारे के ऊपर भर देवे तथा उस तैल के ऊपर पूर्वोक्त कल्क में बीज (सोना वगैरः) को रस ढकने से ढाक नोंन तथा राख से संधि को ल्हेस देवे तदनंतर तीन भाग मूषा को धरती में गाड़कर ऊपर से कोयलों की आंच से तेज धोंके इस प्रकार जारित बीज पारद में गिर पड़ता है तो पारद बंधन को प्राप्त होता है एवं सारित पारद गुणवान् होता है प्रथम जारित करे फिर सारित करे तो पारद अधिक गुणवान् होता है तथा जो पारद न तो जारित किया हुआ हो और न सारित किया हुआ तो वह वेधशक्ति से रहित होता है। यह सारण कर्म गुरु के उपदेश से स्वयं अपने हाथों के द्वारा किया है केवल सुना ही नहीं है।।३–१४।।

सारणा तैल

द्विपलं तिलतैलं स्यात्तत्तुल्याजवसा तथा ।
विधिना साधितं तैलं सारणातैलमुच्यते ।।१५।।

(र० प०)

अर्थ–दो पल बकरे की चर्बी और दो ही पल तिल का तैल हो, इन दोनों को चूल्हे पर चढ़ाय मंदाग्नि से ऐसा पकावे कि वे दोनों मिलकर एक हो जावें, बस इसी को सारणतैल कहते हैं।

अन्यच्च

द्विगुणे रक्तपुष्पाणां रक्तपीतगणस्य च । क्वाथे चतुर्गुणं क्षीरं तैलमेकं सुरेश्वरि ।।१६।। ज्योतिष्मतीकरंजाख्यकुट्तुम्बीसमुद्भवम् । पाटलाकाकतुंड्याह्वमहाराष्ट्रीरसैः पृथक् ।।१७।। भेकशूकरमेषाहिमत्स्यकूर्मजलौकसाम् । वसया चैकया युक्तं षोडशांशैः सुपेषितैः ।।१८।। भूलताभल्लाक्षीकद्वन्द्वमेलाख्य–कौषधैः । पाचितं गालितं चैव सारणातैलमुच्यते ।।१९।।

(र० चिं०)

अर्थ–लाल फूलों का पीतगण तथा रक्तगणों के दूने क्वाथ में एक भाग तैल और तैल से चौगुना दूध डाले फिर मालकाँगनी और कंजे की मींग और कड़वी तुंबी के बीज, पाढ़ल, कौवाटोढ़ी और गजपीपल इनके प्रत्येक रस को थोड़ा थोड़ा डाल देवे और तैल से षोड़शांश २ मेंढ़क, शूकर, मेंढ़ा, बकरा, मछली, कछुआ और अनेक जलवासियों की चर्बी को तैल के समान लेकर डाल देवे और केंचुए की मिट्टी शहद और जोड़े की मिलानेवाली औषधियों, इन सबको तैल से षोड़शांश षोड़शांश लेकर पीसकर तैल में डाल कर पकावे फिर छानकर रख लेवे तो यह सारण तैल कहलाता है।।१६–१९।।

प्रकारान्तर से सारण

सूते सतैलपात्रस्थे स्वर्णाविक्षेपणं हि यत् । वेधाधिकारकं लोके सारणा सा प्रकीर्तिता ।।२०।।

(ध० सं०)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबू–
निरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां
सारणसंस्कारकथनं नाम षड्विंशोऽध्यायः ।।२६।।

अर्थ–अब और प्रकार के सारण संस्कारों को कहते हैं–तेल सहित पात्र में रखे हुए पारद में जो सोने आदि को डालना है, उसको लोक में सारण संस्कार कहते हैं।।२०।।

१–ऊर्णाटंकणगिरिजमहिषाकर्णाक्षिमलइन्द्रगोपकर्कटकाः इति द्वन्द्वमेलापकौषधानि (र० चिं०, नि० र०, वृ० यो०, र० प०)

अर्थ–ऊन, सुहागा, शिलाजीत, भैंस की आखोंका मैल बीरबहूटी केकड़ा ये द्वन्द्व मेलापक औषधियां हैं।

भावार्थ–बकरे की चर्बी ८ तोले, तिल का तैल ८ तोले, इन दोनों को मिलाकर एक पात्र में रखे फिर उस पात्र को दो घड़ी तक अंगारों पर रख और उतारकर छान लेवे यह सारण नाम का तैल तैयार हो गया। अब एक मूषा में थोड़ा सा सारण तैल डाल कर उसी पात्र में जारण पर्यन्त संस्कार किये हुए पारद को डाले फिर अन्य मूषा में स्वर्ण और कुछ कलमी शोरे को डाल और गलाकर सारण तैल में रखे हुए पारद में डाल देवे फिर पारद से अष्टमांश लिये हुए बिड़ के दो भाग करके एक भाग को सूक्ष्म लोहे की कटोरी में रख और उस स्वर्ण मिले हुए पारद को रख ऊपर से जँभीरी या नींबू के रस को देकर फिर उस पर बिड़ डालकर दूसरी लोहे की कटोरी से ढ़क भस्ममुद्रा से मुद्रित करे तदनन्तर अंगारों से भरे हुए खिपड़े में रख सुवर्ण को गलावे फिर पारद से अष्टमांश बिड़ और सुवर्ण युक्त पारद को खरल में डालकर नींबू या जंभीरी के रस से घोटकर गोला बनाये फिर पारद से आधे बिड़ को बिड़ के ऊपर नीचे रख कच्छप यंत्र से जारण करे और उसके जीर्ण होने की परीक्षा तोलने से कर लेवे तात्पर्य यह है कि जितना पारद प्रथम सारण तैल में डाला था उतना ही जारण करने पर तोल में उतर आवे तो समझना चाहिये कि स्वर्ण जीर्ण हो गया। पारे की तोल से भार अधिक हो तो जीर्ण नहीं हुआ समझना चाहिये। इसी प्रकार पारद से दूने सुवर्ण को कच्छपयंत्र द्वारा जारण करे इसकी क्रिया पूर्वोक्त समभाग सुवर्ण जारण के तुल्य समझनी चाहिये और ऐसे ही त्रिगुण सुवर्ण को जारण करे। समभाग सुवर्ण से जारित किया हुआ पारद सारित होता है और द्विगुण जारित किया हुआ अनुसारित तथा त्रिगुण जारित किया हुआ प्रतिसारित कहाता है–सारित पारद शतवेधी और द्विगुणजारित पारद सहस्रवेधी तथा त्रिगुण जारित लक्षवेधी होता है। कुछ मनुष्यों की यह संमति है कि सारित पारद (समभाग स्वर्ण जारित) सहस्रवेधी अनुसारित पारद (द्विगुण स्वर्णजारित पारद) दस सहस्रवेधी तथा प्रतिसारित (त्रिगुण स्वर्णजारित पारद) लक्षवेधी होता है।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यास–
ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां
सारणसंस्कारकथन नाम षड्विंशोऽध्यायः ॥२६॥

क्रामणसंस्काराऽध्यायः २७

क्रामणाख्य सोलह संस्कार (क्रामणलक्षण)

कात्स्‍र्न्येन् (पूर्णतया) ताम्रादिधातुषु सूतस्य प्रवेशकारकं क्रामणम्॥१॥

अर्थ–अब यहां से क्रामण नाम का सोलहवां संस्कार वर्णन करते हैं, तहाँ प्रथम क्रामण के लक्षण को कहते हैं जिस विधि से पारद तांवे आदि धातुओं में पूर्ण रीति से प्रवेश कर जावे तो उसको क्रामण संस्कार कहते हैं॥१॥

क्रामण के द्रव्य

तीक्ष्णं दरदेन हतं शुल्वं वा ताप्यमारितं विधिना ॥ क्रामणमेतत्कथितं कांतमुखं कांतमाक्षिके चापि ॥२॥

(ध० सं०)

अर्थ–सिंग्रफ से मारा हुआ तीक्ष्ण (फौलाद) तथा सोनामक्खी से भस्म किया हुआ तांबा और सुवर्ण माक्षिक के साथ भस्म किये हुए कान्त आदि समस्त लोह इन तीनों को क्रामण कहते हैं॥२॥

क्रामण

शिलया निहतो नागो वंगं वा तालकेन शुद्धेन ॥ क्रमशः पीते[1] शुक्ले क्रामणमेतद्धि संदिष्टम् ॥३॥

(र० चिं०, र० रा०, शं०, बृ० यो०)

अर्थ–मैनसिल से भस्म किया हुआ नाग (सीसा) और शुद्ध हरिताल से भस्म किया हुआ वंग ये दोनों सुवर्ण तथा चांदी के बनाने में क्रामण कहे हैं॥३॥

प्रकारान्तर क्रामण

अथ शुद्धमनःशिलामारितो नागः शुद्धतालेन मारितं वंगं मनुष्यरुधिरं काकविष्ठा महिषीकर्णनेत्रमलं नारीदुग्धं हिंगुलमित्यादिमनुष्यरुधिरादीनां व्यवायीसंज्ञापि ॥४॥

अर्थ–अब अन्य प्रकार से क्रामण को कहते हैं। शुद्ध की हुई मैनसिल से भस्म किया हुआ नाग (सीसा), अशुद्ध हरिताल से भस्म किया हुआ वंग, मनुष्य का रक्त, कौवे की बीट, भैंस के कान और नेत्रों का मल, स्त्री का दुग्ध तथा हिंगुल ये क्रामण तथा व्यवायी औषधि हैं॥४॥

बलवानपि सूतो योगात्संविशति लोहानि ॥ सिद्धैर्योगवरैर्नो विशति क्रामणै रहितः ॥५॥ शिलया निहतो नागो वंगस्तालेन शुद्धेनक्रामेण पीते शुक्ले क्रामणमेतत्समुद्दिष्टम् ॥६॥

(ध० सं०)

अर्थ–सारणान्त संस्कारों से संस्कृत किया हुआ भी पारद क्रामण तथा व्यवायी औषधियों के योग से समस्त लोहों में प्रविष्ट होता है। यदि क्रामण औषधियों से रहित हो तो वह पारद अनेक सिद्ध योगों से भी धातुओं में प्रवेश नहीं होता है, मैनसिल से मारा हुआ सीसा तथा हरिताल से मारा हुआ रांग, सोना और चांदी के बनाने में क्रामण माना है॥५॥६॥

सम्मति–रसायन जाननेवाले महात्माओं का यह मत है कि मनुष्य के रक्त से, भैंस के कान तथा आंखो के मल से, स्त्री के दूध से या कौवे की बीट से, पारद को घोटकर गले हुए तांबे तथा रांग में डाल देवें तो सोना तथा चांदी हो जाती है अथवा तांबे के सूक्ष्म सूक्ष्म पत्रों पर पारद सहित क्रामण तथा व्यवायी औषधियों से लेपकर तपावे तो भी पारद वेध के करनेवाला होता है अर्थात् सोना बन जाता है।

क्रामण के द्रव्य

अथान्यानि क्रामणद्रव्याणि तंत्रान्तरोक्तानि यथा–टंकणकुनटीरामठभूमिलतासंयुतं महारुधिरम् । क्रामणमेतत्कथितं क्षेपे योज्यम् ॥७॥

(ध० सं०)

अर्थ–और भी क्रामण पदार्थ अन्य पदार्थो में लिखे हैं जैसे कि सुहागा, मैनसिल, रामठ (हींग), केंचुआ इन सबको मनुष्य के खून से भावना देकर चूर्ण कर लेवे तो यह क्रामण लेप तथा क्षेप में ग्रहण करने योग्य है॥७॥

क्रामण

विषश्च दरदश्चैव नृरक्तं कांतखर्परौ । इन्द्रगोपस्तु कुनटी मासिकं काकविड् भवेत् ॥८॥ महिषीणां कर्णमलं स्त्रीदुग्धं टंकणेन चापात्यन्येव समांशानि कृत्वा द्रव्याणि मर्दयेत् ॥९॥ कस्त्वमेतदधश्चोर्ध्वं मध्ये सूतं निधाय च । काचचूर्णं ततो दत्त्वा वांधमूषागतं धमेत् ॥१०॥ अनेन क्रामणेनैव पारदं क्रामयेत् क्षणात् । इदं क्रामणकं श्रेष्ठं नंदराजेन भाषितम् ॥११॥ ताप्यसत्त्वं तथा नागं शुद्धक्रामणकं सदाबीजानि पारदस्यापि क्रामणानि न संशयः ॥१२॥

(ध० सं०)

1–पीते स्वर्णे इत्यादि। शुक्ले–रूप्ये इ० र० रा० श०।

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलिता यां रसराजसंहितायांक्रामणसंस्कारोंपवर्णनं नाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥२७॥

अर्थ–सींगिया, हिंगुल, मनुष्य का रक्त, चुंबक रस, खपरिया, बीर बहूटी, मैनसिल, कौआ की बीट, (कौवे की अवस्था एक महीने की हो तो उत्तम) भैंसों के कानों का तथा आंखों का मल, सुहागा, इन सबको स्त्री के दूध में घोट कर कल्क बनावे तदनंतर कल्क के बीच में पारद को रख कर उसके ऊपर पिसे हुए काच के चूरे को रखे। यह विधि अंध मूषा में करनी चाहिये अर्थात् अंधमूषा में थोड़ा सा कल्क रखे फिर पारे को उसके पाद कल्क को और कल्क के ऊपर पिसे हुए काच के चूरे को रखे। अंधमूषायन्त्र द्वारा धोंके फिर इस क्रामण से पारद को सिद्ध करे। यह क्रामण नंदराज का कहा हुआ है, सोनामक्खी का सत्त्व और सीसा ये सदा क्रामण कहे हैं और जो बीज हैं, वे भी पारद के क्रामण करनेवाले हैं, अंधमूषा यंत्राध्याय में लिखी हुई है उसके अनुसार बनाना चाहिये॥८–१२॥

सत्तरहवां संस्कार क्रामण (उर्दू)

सत्तरहवां संस्कार क्रामण यह है–फिटकरी को तीन बार बकरी के पित्तों में तर करके और धूप में सुखा कर सत निकाले और बीरबहूटी, बछनाग कान्तलोहा, आदमी का खून, थूहर का दूध, रसक, सिंग्रफ रूपी साफ सबको सारथः के तेल में खरल कर ले उसको क्रामण कहते हैं। क्रामण को भी द० संस्कारं करते वक्त डाले या उस पर लेप कर दे। (खजानः कीमियां)

इति श्रीजैससमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्ल कृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां क्रामणसंस्कारवर्णनं नाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥२७॥

वेधकर्मसंस्काराऽध्यायः २८

पारद की वेधक शक्ति

शतसहस्रलक्षाणां कोटिधूम्रादिवेधनम् ।
शब्दवेधं च धातूनां कुरुते साधितो रसः ॥१॥

(र० पारि०)

अर्थ–सिद्ध किया हुआ रस सौगुने, हजार गुने, लाख गुने तथा करोड़ गुने, वेध को और धूमवेध, शब्दवेध को भी करता है॥१॥

वेधलक्षण

व्यवायिभेषजोपेतो द्रव्ये क्षिप्तो रसः खलु । वेध इत्युच्यते तज्ज्ञैः स चानेकविधः स्मृतः । लेपः क्षेपश्च कुंतश्च धूमाख्यः शब्दसंज्ञकः ॥२॥

(र० र० स०)

अर्थ–किसी द्रव्य में व्यवायी औषधियों के साथ जो पारद को मिलाना है, उसको विद्वान लोग वेधकर्म कहते हैं और यह वेध कर्म लेप, क्षेप, कुन्त, धूम और शब्द इन नामों से पांच प्रकार का है॥२॥

लेपवेधलक्षण

लेपनं कुरुते लोहं स्वर्णं वा रजतं तथा ।
लेपवेधः स विज्ञेयः पुटमत्रच सौकरम् ॥३॥

(र० र० स०)

अर्थ–लेप करके शुद्ध देने से धातुओं का सोना तथा चांदी बन जाता है उसको लेप कहते हैं और पुट शब्द से यहा शूकर पुट का ग्रहण है॥३॥

अन्यच्च

सूक्ष्माणि ताम्रपत्राणि कलधौतभवानि च ॥
कल्केन लेपितान्येव ध्मापयेदन्धमूषया ॥४॥
शीतीभूतं तदुत्तार्य लेपवेधः स कथ्यते ॥५॥

(ध० सं०)

कंटकवेधी तांबे तथा चांदी के पत्रों को कल्क से लेप कर अन्धमूषा में रखकर धोंके और ठंडा होने पर उतार लेवे उसको लेपवेध कहते हैं॥४॥५॥

क्षेपवेधलक्षण

प्रक्षेपणं द्रुते लोहे वेधः स्यात्क्षेपसंज्ञितम् ॥६॥

अर्थ–किसी लोहे को गलाकर फिर उसमें क्रामण संस्कार किये हुए पारद का प्रक्षेप करे उसको रसायन के जाननेवाले विद्वज्जन क्षेपवेध कहते हैं॥६॥

कुन्तवेधलक्षण

संदंशधृतसूतेन द्रुतद्रव्याहुतिश्च या ।
सुवर्णत्वादिकरणं कुंतवेधः स उच्यते ॥७॥

(र० र० स०)

अर्थ–जिस पात्र में पारद रखा हो उसको सँडासी से पकड़कर उसमें गले हुए धातु को डाल देवे, इससे जो सुवर्ण आदि बनाया जाता है उसको कुन्तवेध कहते हैं॥७॥

अन्यच्च

नागं वङ्गं द्रावयित्वा ताम्रं चैव तथापरम् । पारदोऽन्यतमे पात्रे द्राविते संनियोजयेत् ॥ कथ्यते कुंतवेध स वेधकर्मविशारदैः ॥८॥

(ध० सं०)

अर्थ–सीसा, वंग, तांबा तथा अन्य किसी धातु को गला देवे, उनमें से किसी एक के पात्र में पारद को डाल देवे उसको कुन्तवेध कहते हैं॥८॥

तरहकरना उर्दू (वेध या कुन्तवेध)

पिघली हुई धातु में दवा अक्सीरी को कागज की पुड़ियां में या दूसरे तरीके से डालकर उसको किसी लकड़ी वगैरः से चलावे ताकि धातु गुदाजशुदः के हर जुज में अकसीर मजकूर नफज कर जावे।

(अकलीमियां)

धूमवेधलक्षण

वह्नौ धूमायमानेऽन्तः प्रक्षिप्तरसधूमतः ।
स्वर्णाद्यापादनं लोहे धूमवेधः स ईरितः ॥९॥

(र० र० स०)

अर्थ–किसी सहायक औषधि में अग्नि रख देवे जब धूंआ निकलने लगे तव उसमें पारद डाल देवे, उसके धूएँ से धातुओं का जो सुवर्ण बनाना है उसे धूमवेध कहते हैं॥९॥

धूमस्पर्शेन जायन्ते धातवो हेमरूपताम् ।
कलधौतादयः सर्वे धूमवेधः स कथ्यते ॥१०॥

(ध० सं०)

अर्थ–चांदी प्रभृति समस्त धातुओं का धूँएं के योग से जो सुवर्ण बनाना है उसको धूमवेध कहते है॥१०॥

शब्दवेध

मुखस्थिरसेनाल्पलोहस्य धपनात्खलु ।
स्वर्णरूप्यत्वजननं शब्दवेधः स उच्यते ॥११॥

(र० र० स०)

अर्थ–प्रथम जिस धातु का सुवर्ण बनाना हो उसे गलावे और जब वह गल जावे तब मुख में पारद को रखकर फूंकनी से धोंके तो सोना और चांदी होगी, उसे शब्दवेध कहते हैं॥११॥

उद्घाटन

सिद्धद्रव्यस्य सूतेन कालुष्यादिनिवारणम् ।
प्रकाशनं च वर्णस्य तदुद्घाटनमीरितम् ॥१२॥

(रसरत्नसमु०)

अर्थ–सिद्ध पदार्थ में जो मलिनता रही हो उसको दूर करने की अभिलाषा से उसमें जो पारद मिलाते हैं कि जिससे मैल दूर हो जाय और साफ वर्ण हो जाय उसे उद्घाटन कहते हैं॥१२॥

स्वेदन

क्षाराम्लैरोषधैः सार्धं भाण्डं रुध्वातियत्नतः ।
भूमौ निखन्यते यत्नात् स्वेदनं संप्रकीर्तितम् ॥१३॥

(रसरत्नसमु०)

अर्थ–क्षार और खटाई को मटका में भर देवे और जिसको शुद्ध करना हो उसे भी भरकर मुख बन्द कर धरती में गाड़ देवे तो उसको भी स्वेदन कहते हैं॥१३॥

वेधकर्म

अथ वेधविधानं हि कथयामि सुविस्तरम् । यस्य विज्ञानमात्रेण वेधज्ञो जायते नरः ॥१४॥ धूततैलमहेः फेनं कंगुणीतैलमेव च । भृङ्गतैलं विषं चैव तैलं जातीफलोद्भवम् ॥१५॥ हयमारशिखातैलमब्धिशोषकतैलकम् । एतान्यन्यानि तैलानि व्यवायकरणानि च ॥१६॥ संस्कारैः संस्कृतः सूतः समस्तैलव्यवायिना । यामैकं मर्दितं सम्यक् पारदो वेधकृद्भवेत् ॥१७॥
(धं० सं०)

अर्थ–अब मैं उस क्रिया को कहता हूं कि जिसके जानने से ही मनुष्य वेधज्ञ होता है। धतूरे का तैल, खस का तैल, हिंगुनी का तैल, जलभांगरे के बीजों का तैल, सींगिये का तैल, जायफल का , कन्हेर का, कन्हेरी की जड़ का, समुद्रशोष का, ये तैल तथा अन्य क्रामण तैलों को ग्रहण करे फिर संस्कारों से संस्कृत पारद को पूर्वोक्त क्रामण तैल से एक प्रहर तक मर्दन करे तो पारद वेधकृत होता है॥१४–१७॥

लेपवेधाधिकारी पारद से वेध करने की क्रिया

अत्यम्लितमृद्वर्तिततारादिष्टादिपत्रमंतिशुद्धम्। आलिप्य रसेन ततः क्रमेण लिप्तं पुटेषु विश्रान्तम् ॥१८॥ अर्द्धेन मिश्रयित्वा हेम्ना श्रेष्ठेन तद्दलं पुटितम् । क्षितिखगपटुरक्तमृदा वर्णपुटोयं ततो देयः ॥१९॥

(र० चिं०, नि० र०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–अत्यन्त अम्ल वर्ग में मर्दित कर शुद्ध किये हुए इसीलिये अत्यन्त शुद्ध चांदी तथा तांबे के पत्रों पर पारद (जो लेप करने योग्य हो गया है) का लेप कर पुट देवे फिर उस चांदी तथा तांबे के पत्रों में आधा भाग सोना मिला कर और पत्र बना कर पुट देवे। तदनंतर फिटकरी, कासीस, नोंन और गेरू इनके लेप से उन पत्रों पर लेप करके कोयलों की आंच में तपावे तो वह उत्तम वर्णवाला सुवर्ण होता है॥१८॥१९॥

१–क्रामण संस्कार में व्यवायी क्रामण का पर्याय कहा है वहां देखो।
२–पुट प्रायेण चुल्लिकाधस्तादस्य ।

दंड वा कुन्तवेध की क्रिया

चत्वारः प्रतिवापाः सलाक्षया मत्स्यपित्तभावितया ॥ तारे वा शुल्बे वा ताराविष्टेऽथवा कृष्टौ ॥२०॥ तदनुक्रामणमृदितः सिक्थकपरिवेष्टितो देयः। अतिविद्रुते च तस्मिन् वेध्योऽसौ दण्डवेधेन ॥२१॥

तदनुसिद्धतैलेनाप्लाव्य भस्मावच्छादनपूर्वकमवातार्य स्वाङ्गशैत्यपर्यंतमपेक्षितव्यमिति–

विद्धं रसेन यद्द्रव्यं पक्षाहं स्थापयेद्भुवि ॥
तत आनीय नगरे विक्रीणीत विचक्षण ॥२२॥

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–मत्स्यपित्त से भावना दी हुई लाख के चांदी तांबे ताराविष्ट तथा कृष्टि में चार प्रतिवाप देने चाहिये। तदनंतर अच्छी प्रकार उन पदार्थों के गलाने पर क्रामण तैल से मर्दन किये हुए पारद को मोम में लपेट कर दंडवेध की क्रिया से डाल देवे फिर राख से ढ़ककर ऊपर सिद्ध तैल से तर करके उतार लेवे और स्वांग शीतल होने पर उसकी रक्षा करता रहे जो धातु पारद से वेधा गया हो, उसको पन्द्रह दिवस तक धरती में गाड़े और निकाल कर फिर नगर में बेचने को जावे, यह काम विद्वानों का है॥२०–२२॥

वेध जिसका किया जाय वह धातु

अष्टानवतिभागं च रूप्यमेकं च हाटकम् । सूतैकेन च वेधः स्याच्छतांशविधिरीरितः ॥२३॥ चन्द्रस्यैकोनपंचाशत्तथा शुद्धस्य भास्वतः । वह्निरेकः शंभुरेकः शतांशविधिरीरितः ॥२४॥ द्वावेव रजतयोनिताम्रयोनित्वेनोपचर्य्यते ॥

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–अट्ठानवें भाग चांदी और एक भाग स्वर्ण को एक भाग पारे से वेध करे तो उसको शतांश विधि कहते हैं, उनचास भाग चांदी और उनचास भाग तांबा और एक भाग सोना इनको एक भाग पारद से वेध करे तो उसको वैद्य शतांश विधि कहते हैं। ये दोनों शतांश विधि रौप्ययोनि तथा ताम्रयोनि के नाम से प्रसिद्ध है॥२३॥२४॥

सत्रहवां संस्कार वेध

अब उस वेध को इस तोर से करना चाहिये ९८ हिस्सा चांदी साफ और एक हिस्सा सोना और एक हिस्सा वेध और एक हिस्सा क्रामक डालकर चर्खा दे उस वक्त बहुत बढका उमदा सोना बन जायगा उसको रीलसन वेध कहते हैं और अगर पारे का हजार बार गंधकजारन किया हो तो वह हजार हिस्से तक वेधेगा। (खजानः कीमियां)

जितना अधिक बीज जारन होगा उतनी ही अधिक वेध शक्ति जानो

एवं सहस्रवेधादयो जारणबीजवशादनुसर्त्तव्याः ॥२५॥

(बृ० यो०, र० रा० शं०)

अर्थ–इसी प्रकार जारित बीज के अनुसार सहस्र वेध आदि पारद भी समझने चाहिये॥२५॥

पहले लोह पर परीक्षा कर पीछे देह पर प्रयोग करे

लोहबन्धस्त्वया देवि यद्दत्तं वरमीशतः । तं देहबन्धमाचक्ष्व येन स्यात्खेचरी गतिः ॥२६॥ यथा लोहे तता देहे कर्तव्यः सूतकः सता । समानं कुरुते देवि प्रत्ययं देहलोहयोः । पूर्वं लोहे परीक्षेत पश्चाद्देहे प्रयोजयेत् ॥२७॥

(रसेश्वरदर्शन)

१–यहां क्रामण पाठ ठीक होगा क्योंकि क्रामण का अर्थ यहां नाग या वंगभस्म (देखो क्रामण संस्कार) हो सकता है।

इति श्रीअग्रवालवैश्यवशावतसरायबद्रीप्रसादसूनुबीबूनरजन-
प्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां वेधकर्मसंस्कारवर्णनं
नामाष्टाविंशोऽध्यायः ॥२८॥

अर्थ–पार्वतीजी कहती है कि हे महेश्वर! आपने लोहवेध का वर्णन किया अब उस देहवेध का वर्णन करो कि जिससे खेचरी गति होती है। श्रीमहादेवजी कहने लगे कि हे पार्वती सज्जन पुरुष जिस प्रकार सोने चांदी बनाने के लिये पारा बनाता है उसी प्रकार देह सिद्धि के लिये भी बनावे क्योंकि उत्तम रीति से सिद्ध किया हुआ पारद देह (रसायन) और लोह (सोना चांदी का बनाना) में समान विश्वास का करनेवाला होता है अर्थात् धातुओं को सोना बनाता है और देह को सुन्दर बनाता है यही बात शास्त्र में लिखी है कि सिद्ध किये हुये पारद की प्रथम लोह पर परीक्षा करे फिर अपने शरीर में प्रयोग करे॥२६॥२७॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यास
ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायां वेधकर्म
संस्कारवर्णन नामाष्टविंशोऽध्यायः ॥२८॥

वेधकर्माध्याय २९

उत्तम वेधक प्रयोग विचारणीय लवणद

कनकस्य रसेनैव रसमूर्च्छा प्रजायते । चूलिकालवणेनैव सर्वलोहानि जारयेत् ॥१॥ कंटकारीरसेनैव सर्वकर्माणि कारयेत् ॥ गंधकेन युतः सूतः सर्वरोगं निवारयेत् ॥२॥

(योगसार)

अर्थ–धतूरे के रस से पारद मूर्च्छित होता है, खारी नोंन के साथ समस्त धातुओं को खा जाता है, कटेरी की जड के रस से समस्त कर्मों को करता है, और गंधक के योग से समस्त रोगों को नाश कर सकता है॥१॥२॥

ढाकतैलयोग से वेधक पारद गंधककल्क पलाशबीजकल्प

तस्य बीजस्य यत्तैलं गंधकेन सुमर्दितम् । पारदं तेन कल्केन द्वात्रिंशत्कांचनं भवेत् ॥३॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–ढाक के तैल से पारद गंधक को पीसकर अग्नि दे जलयंत्र में तांबे के पत्रों पर लेप करे फिर ३२ बार गजपुट देवे तो सुवर्ण होगा॥३॥

रससिंदूर को गंधकतैल से मिलाकर तारपत्र पर लेपकर सोना बनाने की क्रिया

रसं शुद्धं तथा शुद्धं गंधकं चैव तत्समम् ॥ उभयस्य तु पादांश नवसारं क्षिपेद्बुधः ॥४॥ आदाय चूर्णयेत् खल्वे मर्दितं दिवसत्रयम् ॥ तच्चूर्णं काचकूप्यां तु क्षिपेद्भांडे च सैकते ॥५॥ वेष्टीभूतकृता देया विलिप्ता वस्त्रमृत्स्नया । रंध्रं कृत्वा नवे भांडे भांडान्ते कूपिकां क्षिपेत् ॥६॥ तद्भांडेऽधोमानमात्रं लवणं पूरितं क्षिपेत् । तस्योपरि सैकतं चापूर्य्य वक्त्रं निरोधयेत् ॥७॥ विशोष्य वालुकायंत्रे प्रवेश्य च भिषग्वरः ॥ सिन्दूरं भवति क्षिप्रं पारदं कुंकुमप्रभम् ॥८॥ गंधकस्य तु तैलेन योजयेत्तारपत्रके ॥ पुटत्रयाद्भवेत्स्वर्णमिति सिद्धैः सुनिश्चितम् ॥९॥

(काकचंडेश्वर–पृष्ठ नं० ११)

अर्थ–शुद्ध पारद पांच तोले ५, शुद्ध गंधक पांच तोले ५, और नौसादर २॥ ढाई तोले इन तीनों को खरल में डाल तीन दिन तक घोटे फिर कपरौटी की हुई शीशी (आतसी) में भर कर इस प्रकार वालुकायंत्र में धरै कि हांडी के पेदे में छेद करै उस पर शीशी धरै फिर आधी हांडी भरकर पीसा नोंन फिर मुख तक बालू रेत भर देवे और अग्नि लगावें अर्थात् एक दिनरात की मन्द मध्य और तीक्ष्ण अग्नि लगावे तो सिन्दूर के समान रससिन्दूर होगा उसको गंधक के तैल के साथ पीस चांदीपत्रो परलेपनकर पुट (गजपुट) देवे, इस प्रकार तीन पुट देने से सोना हो जायगा इसमें सन्देह नहीं है॥४–९॥

रससिन्दूर बनाकर टंकण तैलप्रयोग से वेधक

पारदस्य पलं ग्राह्यं शुद्धस्य विधिपूर्वकम् । पिष्टं बध्वाथ वस्त्रेण पूर्ववच्च यथाक्रमम् ॥१०॥ अधरोत्तरगंधेन विपेत्तन्मूषकोदरे ॥ श्वेतकुक्कुटरक्तेन टंकणक्षारवारिणा ॥११॥ रुब्वा वक्त्रं विशोष्याथ लिप्त्वा कर्पासमृत्स्नया । वालुकापूर्णभांडेन चुल्ल्यग्नौ पाचयेत्सुधीः ॥१२॥ यामाष्टौ जायते नूनं सिन्दूरारुणसन्निभम् ॥ स्वांगशीतलमादाय करण्डे विनिवेशयेत् ॥१३॥ शुभेऽह्नि वल्लमात्रस्य सेवनात्सकलामयान् ॥ जयेदाशु रसेन्द्रोऽयं विष्णुचक्रमिवासुरान् ॥१४॥ लिप्त्वा टंकणतैलेन दत्त्वाग्नौ दुम्बरस्य च ॥ अल्पाग्नौ पाचयेच्छीघ्रं सुवर्णं जायते ध्रुवम् ॥१५॥ जपापुष्पं समादाय रसं निष्कास्य यत्नतः ॥ विनिक्षिपेद्गले ताम्रे सुवर्णं जायते ध्रुवम् ॥१६॥

(काकचंडीश्वरीतंत्र पृष्ठ नं० १२)

अर्थ–प्रथम एक पल पारद को सुहागे के पानी से घोटे फिर सफेद मुर्गे के रक्त से घोटे इसके समान गंधक को लेवे फिर मूषा में कुछ गंधक को नीचे रखे और ऊपर पारा फिर गंधक देवे तदनन्तर मूषा के मुख को मूषा की ही मिट्टी से बंद कर वालुकायंत्र में रख आठ प्रहर तक अग्नि लगावे तो सिन्दूर के समान लाल वर्ण का रससिन्दूर प्रस्तुत होगा, उसका तीन रत्ती सेवन करने से समस्त रोग दूर होते है, अथवा इस रससिन्दूर को सुहागे के तैल में पीसकर तांबे के पत्रों पर लेपकर थोड़ी सी आंच में पकावे तो सुवर्ण होगा॥१०–१६॥

वेधक अंकोलतैल से पारद अभ्रक का द्वंद्वकर ताम्रका सोना (अंकोल बीजकल्प)

तत्तैलमर्दितं सूतं घटद्वंद्वमवाप्नुयात् । तन्निष्कमात्रं विन्यस्तं ताम्रं च कनकं भवेत् ॥१७॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–अंकोल के बीजों से पारद को मर्दन करे उसमें चार माशे लेकर एक तोले गले हुए ताँबे में गैरे तो सुवर्ण हो जायेगा॥१७॥

पारद और अभ्रक से रांग आदि की चांदी

बूटी लज्जालु के रस में पारा १, पीत[1] अबरख १, कंकुली सेंधा १ तीनों धातु खलै पहर पांच ५ मांसा १ सेर रांगा की पारा की सीसा में डारै तो रूपा होता है।

सुवर्णकर पहेली

गरुड भुजंग समकर सूता । पार्वती रस मेलो पूता ॥ रगडत रगडत होवे खार । कांचन होत न लागै बार ॥ जंगाल सिक्का पारा गंधक रगडना बहुत–(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारा, गंधक, सोना, सीसा, बूटी जग्यचंचली

पात फूल मुसरी के अस–पहुप लाल पातम कुछ छोट, तेकर रस तोला १ हिरण्य गन्ध तोला १ पारा १ सीस १ बातीलेपि आंच देइ तो हिरण्यं भवति । (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

१–यहां पीत अभ्रक का सत्त्व वा द्रुति लेना योग्यं होगा।

पारदभस्म को कोटिवेधी करने की क्रिया

मृतरसपलमेकं पंचनागं तु देयं कनकबलविमिश्रं ध्मातसूतावशेषम् ॥ विजयति शतवारं चैवमेव प्रकारं भवति स रसराजः कोटिवेधी क्रमेण॥१८॥

(निं० र०)

अर्थ–पारद (जो कि बद्ध हो) की भस्म एक पल नागेश्वर (जो कि किसी धातु और मैनसिल आदि के योग से भस्म नहीं किया गया हो अर्थात् केवल जड़ी योग से फुंका हो) पांच पल, सुवर्ण १ एक पल, इन तीनों को मिलाकर प्रकट मूषा में रख धोंकता जावे, जब तक नाग और सोना न जल जावे तब तक धोंकता जावे। जबकि पारद मात्र ही शेष रहे तब उतार लेवे, इस प्रकार सौ दफे करे तो सहस्रवेधी पारद सिद्ध हो जायेगा॥१८॥

अकसीर तिलाई बजरिये गोली सीमाव व तिला (उर्दू)

सोना यानी तिला एक हिस्सा और पारा चार हिस्सा मगर मुसफ्फा हो दोनों को सहक करे ताकि गोली हो जावे फिर गोली में एक सूराख करके डोरा पिरो दे और एक पतली लकड़ी में बांध कर देगगिली में लटका दे। हांडी के तले से न टकरे किसी कदर ऊंचा रहे फिर गंधक डालकर चूल्हे पर सवार करके नरम नरम आंच करे जब वह गंधक यानी आंवलासार जलजावे उसे दूर करके और गंधक डाले इसी गंधक का धुंआ निकलते निकलते गोली सीमाव की मिस्ल शिंजर्फ सुर्ख हो जावेगी पस निगाह रखे फिर कसीस सुर्ख और सबज फिटकिरी हम वजन लेकर तेजाब कशीद करे मिस्ल खून के सुर्ख निकलेगा फिर इससे एक हिस्सा और जर्दी बैजा मुर्ग तीन हिस्सा लेकर तेजाब को जर्दी पर डाले और रहने दे। जब एक जान जर्दी और तेजाब हो जावे तो फिर तेजाब खींचे यह भी मिस्ल शिंग्रफ के सुर्ख निकलेगा। पस तेजाब से कदरे गोली मजकूरा बाला को सहक करके एक दिन बराबर और एक दिन नरम आंच से तश्विया दे फिर उसको कदरे तेजाब से दिन भर सहक करे और दूसरे दिन तश्विया करके और इस तरह तस्किया और तश्विया करे, ताकि गोली पारा कायमुल्नार हो जावे। पस चांदा की पतरा गरम करके कर दे उसी दवा से डाले। अगर पिघल जावे और धुआं न दे पस अकसीर है। वक्त जरूरत है। बारह माशे कीजिये पर एक माशे तरह करें बफज्लहू खुदा उमदा तिला होगा। (सुफहा १० अखबार अलकीमियां १६/१०।१९०६)

सीमाव और तिला से अकसीर तिलाई (उर्दू)

नुसखा यह है अगर्चः यह नुसखा फार्सी मेंथा लेकिन उर्दू तर्जुमा करके लिखता हूं। जाज गंधक जगार हम वजन लेकर कुराअंबीक आतिशी में अर्क निकाले। वर्कतिला तोला पारा मुसफ्फा चार तोला लेकर दोनों को खरल में डालकर सहक करे। खरल घिसने वाला न हो जबकि उकद हो जावे। खरल से निकालकर लोहे की कर्छी में रखकर नरम आग पर तश्मिया करे, यहां तक कि पारा और तिला में तमीज न हो सके। बिलकुल एक जात हो जावे। आग इस कदर हो कि पारा सोने से अलहदा हो जावे। बादहू अर्क जो ऊपर लिखा है तीन रोज तक थोड़ा थोड़ा डालकर खरल करे। बाद तीन रोज के एक शबकर्छी आहनी में रखकर नरम भूभल पर तश्विया करे। इस तरीके से तीन रोज खरल करे, उसी अर्क में और एक शब तश्मिया गरजे कि बीस मर्तबः तश्मिया होगा। दो माह में यह नुसखा तैयार होगा, इसका रंग मिस्ल सिंग्रफ सुर्ख होगा। इस शिंग्रफ में से दो हिस्सा लेकर बीस हिस्सा चांदी पर तरह करें। पांच हिस्सा पूरे बाद नदाब के बरामद होगें। खालिस शमस होगा। (हाफिज रहीमबख्श जबलपुर महल्ला ओमती का पुल) (अखबार अलकीमियां १६/४/१९०७)

नुसखा अकसीरी तिलाई बजरियः कुश्तै उकद सीमाव व तिला (उर्दू)

सीमाव ६ माशे अगर तिला खालिस में ६ माशे गलाकर डाल दिया जावे तो हर दो का उकद होगा। उस उकद पर अफयून मिसरी ६ माशे का जमाद करके कोकनार यानी पोस्त सबज दस तोले के नुगदे में उकद मजकूर देकर एक मूली दो सेर पुख्तः को तराश कर उकद मयनुगद के उसमें देकर खूब मजबूत कपरौटी कर और चार साइस तक नरम आंच में दें दे। इसी तरह तीन बार अमल करने से सीमाव व तिला कुश्ता होगा। बादहू मिस एक तोला गलाकर कुश्ता तिला में से एक बिरंज तरह करें। मिस यानी तांबे का कुश्ता होगा। इस कुश्ता अव्वल मिस में अगर एक तोला दूसरे तांबे पर एक बिरंज की मिकदार तरह करें वह भी कुश्ता होगा। दूसरे दर्जे के कुश्ता मिस में से अगर एक बिरंज और एक तोला तांबे को चर्ख दे कि तरह करें वह भी कुश्ता होगा। इस तरह सात दर्जे तक एक एक बिरंज कुश्ता दरकुश्ता करता चला जावेगा। सातवें दर्जे के कुश्ते मिस में से अगर एक चावल मिस खालिस पर तरह करें। कुदरत खुदा को इसका आमिल मशाहदा करेगा। (सुफहा २१ किताब इसरारुल कीमियां २१)

नौसादर का तैल बना उसमें पारद अग्निस्थायी कर उसमें १/४ स्वर्ण खिला वेधक करता है।

नौसादर लेकर सैंधव लवण महीन पीसकर नौसादर के हेठ ऊपर दाब देकर डमरूयंत्र करके १। प्रहर नीचे अग्नि देनी नरम, मध्य सवा पहर उपरि लग्नसत्त्व लेना, नौसादर ५ तोला, लून १ पाव, सर्जतैल १५ तोले, लोटासज्जी भिगो देनी (नौसादर से त्रिगुण) उसका पानी नितारकर पकाना यह सर्जसत्त्व भया (इस सर्जसत्त्व को चीनी के प्याले में रखकर नींबू निचोड़ते जाना जब तक तैल ना बने। जब तैल बन जाय तब सर्ज तैल में नौसादर सत्त्व मिलाकर पातालयंत्र से दोनों का तैल निकाल लेना रजतकर योग है। यह तैल पारद यथेष्ट लेकर उसमेंस दो बिंदु पावे पारद स्थिर हो जायेगा। चक्र खा जायेगा। इस स्थिर पारद के तोले में ३ माशे सोने के वा चांदी के वर्क खिला देवे फिर वह पारद ४ तोले ताम्र पर १ रत्ती पारा दोनों काम देगा।

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

नौसादर से शोरा, उससे गंधक, उससे पारा कायम किया है उससे वेधक योग

नौसादर १२ तोले लेके २४ तोले चूना अनुबुज्ज लेकर खरल करना खूब फिर मिट्टी दे हुक्के बिच पाके १ आनी बिच चढ़ाना आनीबिचों कड़के सिक्का रूप हो जावेगा। कुट्टके पाणी बिच पाणा चूणा हेठ बैठ जायेगा। नौसादर पानी बिच घुल जायेगा। कढ़ाई बिच डाल के पका लेना, नौसादर कायम हो जायेगा। फिर शोरा कलमी लेकर टिंड में तहबतह खट्टी बेरी दे पेतरे तेरे दीदे के हेठ आग बालणी पत्तर पादे जारणा। चरख खा जायेगा। ३ हिस्से इस शोरेदे १ हिस्सा कच्चा शोरा पाके खरल करना। इस शोरेदे के बराबर नौसादर पाके खरल करना या पक्के दोनों बिच २ तोले कचलूण पाके खरल करना खुश्क फिर बड़े कड़छे बिच पाके खाली नाक धोंकना खूब खूब चरख खाये जब खूब चरख खा रहे तब उतार लेणा। फिर कुट्टके मुश्कपूर का तैल मल के कढ़ाई से पाके आग बालणी तेल हो जायेगा। तेल शीशी बिच पारखणा फिर छोटे लुहाड़े में पाके गंधक पादैणी ३ प्रहर मंदाग्नि बालणी गंधक कायम हो जायेगी। तेल फिर पाकर रखणा फिर वह गंधक माशा तोलने पर पारे पर पाणी बोते बिच पारा कायम हो जायेगा। उस पारे को तांबे पर मल के आग बिच पकाणा चांदी हो जायेगी। अथवा पारा मल के उस पर मनशिल, सिंग्रफ, गंधक की चुटकी देणी, तांबा पीसक हो जायेगा। उसको ताम्र पर वा रजत पर सुटो स्वर्ण हो जायेगा।

कर्पूर तैल

मुश्क काफूर और विरौजा सम भाग शीशे में पाके धूप में रखना तैल हो जायेगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अकसीर तिलाई रोगन नौसादर से सीमाब को कायम करके हरताल कायम व नौसादर कायम से तैयार की है (उर्दू)

नं० १–नौसादर का तेल निकालने की तरकीब यह है नौसादर १० तोले का चूना आबना रसीद पांच सेर में देकर एक मिट्टी के बर्तन में बन्द करके पन्द्रह सेर की आंच दे। जब सर्द हो जाय, निकाल लें फिर उसे एक खुले बर्तन में दाखिल करके चहार चंद पानी दाखिल कर दें, चौथे रोज मुकत्तर लेकर पकावें, जब तमाम पानी जल जावेगा तो नौसादर तैल हो जायेगा।

नं० २–अव्वल सीमाव को पहले ईट के बुरादे में एक पहर तक खरल करे ताकि वह स्याह कजली से साफ हो जावे। बादह नौसादर के तेल दो तोले में नरम नरम आंच पर एक घंटे तक लगावट दें। इस कदर अमल से मुतहरिक कायमुल्नार हो जावेगा। बादहू सीमाव मुजहर्रिक कायमुल्नार को अपने मुंह के लब (थूक) के साथ डेढ़ घंटे तक खरल करे। तमाम सीमाव नापिदीद और खाक होजायेगा बादहू खाक शुदः सीमाव को एक मिट्टी के बर्तन में डाल कर उसमें करीबन आध सेर वर्क घीग्वार दाखिल कर दें। बर्तन का मुंह गिले हिकमत करके पन्द्रह सेर पुस्तः पाचक की आंच दे दें। जब सर्द हो जावे निकाल ले। सीमाव व रंग आस्मानी किसी कदर सफेदी लिये हुए कुश्ता[१] होकर बरामद होगा।

नं० ३–यह कुश्ता सीमाव तबई दुनियां से तनहाही अकसीर का काम देता है, दो चावल वजन बालाई या मस्का में रखकर जैल के मरीजों को एक हफ्ते अशरे तक खिलाएँ। बहुक्म खुदा मरीज तन्दुरुस्त हो जाते हैं वह यह है सुरअत, जिरियान, नामर्दी २ भूक न लगना, बगैरः नामर्द को २१ खुराक में मर्द बना देता है।

नं० ४–हृहब खबास नफस हरताल वर की एक तोले की सालमड़ला लेकर बरंग नीम के पानी पच्चीस तोले में किसी मिट्टी के बर्तन में भिगो दें और धूप में रख दें जब तमाम पानी खुश्क हो जावें, हरताल को अलहदा करके दो कपरमिंट करें जब कपरमिंट खुश्क हो जावे, भूसी चावल ४० तो० की आंच दे मगर हवा से बचाकर जब सर्द हो जावे निकाल लें। हरताल चर्ख होकर बरंग सुर्ख किसी कदर स्याही माइल बरामद होगी। २ यह हरताल चर्ख खुर्दः मरीज जिरियान को एक चावल बराबर रोजाना बालाई या मस्का में खिलाना अकसीर हुकम रखती है। पुराने बुखार व खांसी का तीन खुराक में कलकुम्मा हो जाता है। मरीज दमा को हलुआ में रखकर देना खुराक में कामिल शफा होती है, अगर एलुआ में खिलावें उम्र भर बवासीर नहीं होती।

नं० ५–नफस नौसादर चार तोला लेकर आध सेर पुस्तः (४० तोले) सफेदा काशगरी के दर्मियान देकर एकतावा आहनी पर रखकर चूल्हें पर रख दें। नीच नरम नरम आंच रोशन करे। जब कहीं से सफेदा शिगाफ दे फौरन और सफेदा उस शिगाफ शुद्ध जगह पर डाल देना चाहिय। जब तमाम सफेदा सुर्ख हो जावे आंच बंद कर दें और दर्भियान से नौसादर निकाल लें। यह नौसादर सुर्ख शाहब के मानिन्द कायमुल्नार होकर निकलेगा। अब हमारे पास नफस वह रुह व जसद हर एक कायम शुदः मौजूद है सिर्फ तरकीब व तहलीली जरूरत है। ताकि हर सह यकजान होकर उनमें खासियत अकसीर की पैदा हो जाये।

नं० ६–तरकीब तहलील कुश्ता सीमाव एक तोला, हड़ताल चर्खखुर्दः एक तोला, नौसादर सुर्ख कायमशुद्ध; एक तोला हर सह को रोगन बैजा या अलीट[१] के तेल में दिन में तस्किया और रात को नरम तश्विया दें। तकिया और तश्विया का सात दफै अमल से अकसीर तैयार हो जावेगी। बस बाकै हो सकेगी।

[१] इस कुश्ते को अहतियात से अभी महफूज रखे।

नुसखा–अकसीर शमसीबजरियः नौसादर मूमिया–सीमाव कायमुल्नार शिजर्फ मूमिया सुर्व व कलई तैयार शुदः (उर्दू)

नौसादर देशी २०तोले सिरका अंगूरी १० तोल, हर दोको खरल में डालकर सहक करके कुर्स बना लें फिर प्याज नर्गिस २० तोले नुगदा बनाकर उसमें कुर्स मजकूर रख कर बारीक कपड़ा मलमल में पोटली बनावें, उस पर तीन तोले कच्चा सूत लपेट कर गिलोला बनाकर रख लेंवे। बादहू हांडी गिलीकिला में मुअल्लिक गिलोला को लटका कर सरपोश से बन्द करके चूल्हे पर रखकर एक पहर तक नरम नरम आग जलावें। याद रहे कि हांडी में पानी वगैरः कुछ नहीं होगा। जब एक पहर पूरा हो तो फिर सर्द होने के बाद नौसादर को निकालकर खरल में डालकर सिरका अंगूरी १० तोले में सहक करके कुर्स बनाकर पियाज १० तोले की लुगदी में रखकर बदस्तूर अव्वल एक प्रहर की आंच देवे। १० तोले की नुगदी में रखकर इसी तरह सिरका अंगूर में सहक करके ७ मर्तबे तक हांडी खाली में बंद करके आग देना होगा। बाद सम्मुल फार सफेद २ तोला, मगज जमालगोटा २ तोला, नौसादर तैयार शुदः हरसह मिलाकर सहक करके कुर्स बना लेंवे मगर सिरका न डालें बदस्तूर अव्वल २० तोले प्याज नरगिस में देकर खाली हांडी में एक प्रहर की आंच देवे। जब कि सर्द हो तो निकाल कर खरल में डाल कर सम्मुल फार २ तोले, मगज जमालगोटा २ तोले मय नौसादर मजकूरः सहक करके कुर्स बनाकर नुगदा नर्गिस में देकर कपड़ा बारीक में बांधकर ३ तोले कच्चा सूत लपेट कर मौअल्लिक हांडी में लटकाकर एक पहर तक आंच देवें। यह अमल भी ७ मर्तबः पूरा करना होगा। याद रहे कि हर मर्तबः सम्मुल फार व जमालगोटा व नर्गिस जदींद लेना चाहिये। बस इस अमल से सब आशियाए बशकले मोम हो जायँगी। निशानी उसकी कि अगर एक सुर्ख मोम का एक तोला लोहे को लगाकर आग देवें तो लोहा कुश्ता हो जावेगा तो बेहतर समझें बरनः दुबारा सम्मुल फार व जमालगोटा मिलाकर पका लेवें ताकि मुकम्मिल हो जावे। अगर तैयार हो तो फिर सीमाव मुसफ्फा २ तोले मोम तैयार शुदः ६ माशे रोगन बिलार ३ माशे खरल में डालकर सहक करके दो प्याला चीनी में खुर्द में बन्द करके रेग जंतरं में दो पहर तक नरम नरम आग देवें जब कि सर्द हो तो निकाल कर दोबारा खरल में डालकर सहक करके दो प्याले चीनी खुर्द में बन्द करके रगं जंतर में दो पहर तक नरम नरम आग देवें जब कि सर्द हो तो निकाल कर दोबारह खरल में डालकर मोम तैयार शुदः ६ माशे रोगन बिलावर ३ माशे सहक करके बदस्तूर अव्वल प्याला चीनी में बन्द करके दोपहर तक रेग जंतर में पकावे। यह अमल १२ मर्तबः तक पूरा करें। सीमाव आला दर्जे का कायमुल्नार होगा, उसको हिफाजत से रखें फिर जंजफर रूमी दो तोले मोम व नौसादर व सम्मुलफार वगैरः ६ माशे रोगन बिलावर ३ माशे हरसह को सहक करके बदस्तूर सीमाव कायमुल्नार के प्याले खुर्द में बन्द करके रेग जंतर में दो पहर तक पकावें। इसी तरह जजंफर में जदीद मोम नौसादर व रोगन बिलावर मिलाकर प्याला चीनी में दो दो पहर तक रेग जंतर में पकाना होगा। यह अमल भी बारह मर्तबः

१–इस नुसखे के मुतअल्लिक जिस साहब ने कुछ अदवियाज समझीं हो वह बजरियेः खत किताबत समझ सकता है।

(सुफहा ४–५ अखबार अलकीमियां १६/९/१९०७)

और हकीम मुहम्मद फतहयाबखां साहब ने बयान किया कि अलीट रोगन अलसी को कहते हैं।

तक पूरा करे। तो जंजफर मूमिया हो जायेगा। यह भी हिफाजत से रखें। बाद कलई ५ तोले, सुर्व ५ तोले, सीमाव खाम ५ माशे, नौसादर खाम १० माशे, पहले कलई व सुर्ख व सीमाव को आग पर रखकर उकद करे फिर उकद को खरल में डालकर उसमें नौसादर डाल दे और एक तोला सिरका अंगूरी डाल कर सहक करके कुर्स बनाकर कुजः गिली में बंद करके नीमसेर पाचकदस्ती की आग देवे जबकि सर्द हो तो खरल में डालकर सीमाव खाम ५ माशे, नौसादर १० माशे, सिरका एक तोला मिलाकर सहक करके कुर्स बनाकर कूजें में बन्द करके नीम सेर आग देवें। इस तरह सात मर्तबः अमल करे मगर याद रहे कि हर अमल में सीमाव ५ माशे और नौसादर १० माशे, सिरका एक तोला मिलाकर आग देना होगा। बाद सात अमल के यह भी हिफाजत से रख लेवे। फिर सीमाव कायमुल्नार तैयार शुदः एक तोला, जंजफर मूमिया शुदः एक तोला, सुर्व व कलई तैयार शुदः ८ तोले खरल में डालकर हमराह रोगन जमालगोटा ४ तोले की २४ प्रहर तक सहक करे। बाद आतिशी शीशी गिले हिकमत शुदः में डालकर शीशी का कांच काग से बन्द करके संघी बिरंज व नमक से बन्द करके फिर मटका गिलीकला में पूरी दो मन रेत डालकर दर्मियान में शीशी को रख कर चूल्हे पर रखे और बारह पहर तक औसत दर्जे की आग जलावें। याद रहे कि लकड़ी बेर की लेनी होगी। जब कि सर्द हो तो निकालकर मुलाहिजा फर्मावें। इन्शाल्लाह अकसीर बरंग जाफरान तैयार होगी। सुफहा नं० ११–१२ अखबार अलकीमियां १६/५/१९०७

सम्मति–यह नुसखा गुर गोरखनाथ जोगी का है जो शखस अमल करे उप पर फर्ज है कि बाद तैयारी पहले अमल में से सवामन पुख्तः की रोट बनाकर उस पर फातिया हजरत अली करम अल्लाह वजह कि दिलाकर फिर अपने काम में लावें। वर्नः बजाय फायदे के उलटा नुकसान होगा। आयन्दे अख्तियार है और साथ उसके यह भी अर्ज है कि जंजफर मोमिया इसी तरकीब का सिर्फ एक सुर्ख खिलाने से नामर्द जवान मर्द हो जाता है। मेरा तजरुबा शुदः है, तैयार करके ले।

अकसीर शमस बजरियः कुश्ता सीमाव मुसफ्फा व मुश्तही व गलीज उमदा काबिल तजरुबा (फार्सी)

हजरत हाजीवदीउद्दीन मुहम्मद खुशहाली जो वा कमालबुजर्ग औलिया अल्लाह और तारकीन दुनिया से हुए हैं वह अपनी तसनीफ मुआलुमल्तिजारत्र मतबूआ बम्बई सुफहा १७ पर एक नुसखा शमसी को जबान फार्सी में तहरीर फर्माते हैं। शमस अज खिदमत हजरत हबूयाफ्तः बियारद सीमाव गलीज कायमुल्नार कि दरप्याल मसीदाश्तः चूदह दादह बाशन्द व गलीज कर्दः बाशन्द या हर नौआ कि कर्दः बाशन्द अमादास बाशद लोबन्द न बाशद व अकर लोबन्द दर तूतिया सवज कर्दह बाशद व साबित नमदः बाशदः बिगरिद यकदाम पुख्तः बवियारद नमक संग साईदः शश आसार व आब लेंमू बया तदतिज खमीर कर्दः दर चकरः जमीन निस्फ दाश्तः बालाई दे सीमाव बिदारद अमा लिन्धः बाशद करसनः मुसफ्फा गसाबित बाशद बादहू नमक दीकर कि निस्फ मांद औरा नीच खमीर कर्दः बालाई दे बिदारद व बालाई नमक मजकूर अन्द करके विपोशद अव्वल रोज आतिश दो आसार पाचक बालाई दे विसोजद व दोयमरोज पज आसार पाचक दस्ती बिसोजद व सोयम रोज दहआसार व चहारमरोज बिस्त आसार व पंज में रोजसी आसार शशमरोज एक मन हफ्तमरोज एक थन दहआसार बाला यानी सवामनरा आतिश गजपुट दिहद बादहू खूब सर्द कुनद बर आरद सीमाव मिस्ल खाक सफेद शिगुफ्तः बरायद मुजर्रिब अस्त बादहू यक बिरंज अजी सीमाव परि सदसालरा खुर्दन दिहद नौजवान शबद दहआसार तुआम बिखुरद व शहबत बेहद शब्द कि बे जनयकसाइत नमादं व यक हब्बावार यकदाम मिस तरहदिहद खुद अकमीर गर्दद व आँमिसरा बर यकदाम मिस दीगर तरह दिहद आं तेज अकसीर गर्दद व अजाँ मिस वर मिस दीगर दहद आँ तेज कलनक गर्दद व हमचुना बर सदब हर मिस अकसीर बाशद बजाय खुद व आँफरार यकदाम अकसीर आजम बजाइ खुद बिमाँद मकर हयूं कि बकहुब्वः अजब मिरफ्तः बूद आँकदर कमबूद इल्लायक दाम असल कनक बजाइ खुप बिमाँद व सद दामदीगर नीज अकसीर बाशद ईजा बदल नजर कुनद व बतमाम तफहस दरयावद कि चः नियामत याफ्तः बाशद व चिःकंज बरदाश्तः कि तमाम कुन्ज शाहानः दरवगल ईबवजन यकदाम बाषद व अज मिस सदाम बर मस बा नुकरा तरह दिहद शम्स कामिल गर्दनद मुजर्रिब अस्त अमा फरार कायमुल्नार मुसफ्फा गुर्सनः औलाबदस्त आर बादहू सरई कार बारदारता साजगा गर्दद वास्लाम बालाकराम एअजीज में उवास्तम कि बर किताब सबूत व गलीजन नवीसम अम्मां बद तरीन व खलहेच न दीदम न बावदाँ आँरा नीज व कलम आवुर्दः दरीं किताब वा सूरतदज करदेम चूं दरयाबी दरयावी दरजहां फिसाद व खराबी न कुनी ता व मिसल कारू मर्दहू दरगाह इलाही न शबी ईराबिसाज व अमल आरद व उलमायन आमिल व फुकरायन मुतवक्किल बिरसाँ व बेवगान व यतीमान राखिदमत कुन व अरवाह आँ हजरत सह दर काइनात व हर शबज जुमा उर्स में कर्दः बाश ता सहादत दारीन जहान बराइ खुद बरदारी मनकि न कर्दन नफस खुदरा अजमू कर्दम कि सय्याद मुनकव्वूर अस्त बरनफ से खुद जबर व कहर कर्दम व फुकरा अख्तियार कर्दम ताकि बर मजीद न शबद अजमुतावअत मुश्ताक न गर्दद ज्यादः चिः निगारद व स्लाम (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १/१२/१९०६)

तरकीब गलीज कर्दन सीमाव लोबन्द व गैर लोबन्द कायम साबित व कायमुल्नार व मुसफ्फा व मुनक्का व गुर्सनः बियारद सीमाव बा खिश्त पुख्तः सरल कुनद बादहू तसईद कर्दः बिगीरद बादहू दर किबरियत महलूल सहक कर्दः तसईद कुनद मुसफ्फा शवद बादहू वा नौसादर व बछनाग व राई सहककर्दः चहार पास व शस्तः बिगीरद हमचुनां हफ्तबार या सहबार अमल कुनद बाहूदर बैजा खाली अन्दाख्तः व बालाएआँ मलहउलबोल पर कर्दः दरसरकीन अस्पताजा दरजमीन दफन कुनद बादहू बिस्तरोज वर आरद मुतहल शुदः बाशद व अगर जेर देगदान स्तिरोज दफन कुनद अकद व कायम गर्दद व पस बास्लाम व आगर आँहल रा आतिश बिदारद अम्मा दर कटोरी मिसदाश्तः आतिश दिहद व कलाइआँ नमक मजकूर नरम अ आबी दिहद गलीज कर्दद व कायमुल्नार तलखुलबोल बियारद बोल सिवियां दहसाला हफ्त आसार दरकढ़ाई अन्दाख्तः या दरतगार बिजोशानद आँचिः कफ बालाइ अबुरायद गिरफ्तः बर आवुर्द ताकि तमाम शबद बादहू दर आफ्ताब खुश्क कुनद नमक गर्दद् बादहू हमी नमकरा निगहदाद व दरवक्त हाजत फराररा दर प्यालः मिसीदाश्तः बर आतिश निदारद व बालाइआँ अजीं नमक दादः विरवद ताकि बस्तः गर्दद गलीज व कायमुल्नार बाशद बरगीरद व वकार बन्दद

(सुफा अखबार अलकीमियाँ १/१२/१९०६)

उर्दू तर्जुमा

सीमाव गलीज और कायमुल्नार ख्वाह किसी तरकीब से किया गया हो मगर नदरस हो तो बन्द न हो और अगर लोबन्द हो तो तूतिया सबज से किया गया हो एक दिरम पुख्तः ले कि नमक संग छः सेर जो आब लेमू या तुररंज के पानी में खमीर कर लिया हो पहले जमीन खोद कर एक गढ़ा सा बना लेवे फिर उसमें निस्फ नमक मिस्ल सूरत कदः रखकर उसमें सीमाव मजकूरः रखे बादहू रेगवालू की तह देकर छिपावें। अव्वल रोज दो सेर पाचक दस्ती की आग दें। दूसरे दिन पंजसेर तीसरे दिन दससेर चहारम रोज बीस सेर पंजमरोज तीस सेर छठे दिन एक मन सातवें रोज सवामन की आंच दे। जब बिल्कुल सर्द हो जावे बअहतियात तमाम सीमाव को निकाल लें। सीमाव कुश्ता होकर बरंग सफेद बरामद होगा। अगर इस सीमाव में से एक चावल खुराक किस सद साल बूढ़े को दिया जावे तो वह जवान हो जावेगा। दस सेर तक अनाज को हजम कर सकेगा और कुव्वत बाह इस दर्जे होगी कि बिदून जन के एक साइत न रह सकेगा। अगर रत्ती भर एक दिन में मिस पर तरह करे वह मिस अकसीर होगा। मिस अकसीर

शुदः में से एक हुब्बः दूसरे मिस पर तरह करें तो उसे कलनक कर देगा। इसी तरह एक सौ दर्जे तक इसी तरकीब व अमल से यह जदीद तांबा अकसीर होता चला जावेगा। सौवें दर्जे की अकसीर में से मिस या नुकरः पर तरह कर दें, शमस कामिल होगा। मेरी ख्वाहिश थी कि इस नुसखे को दर्ज किताब न किया जावे। फिर यह समझ कर कि छिपाना नुसखे का बखल में दाखिल है इसलिये लिख दिया गया और तरकीब गलीज और कायम करने की सीमाव की भी दर्ज की गई जो शख्स इस नुसखे पर कादिर हो जावे उसे खबरदार रहना चाहिये कि वह कोरून की तरह मांद दरगाह न हो जावे बल्कि गुरबा और मसाकीन व वेवागानकी व मुहताजानकी खबरगीरी रखे। (सुफहा ७ अखबार अलकीमियां १/१२/१९०६)

उर्दू तर्जुमा गुजिश्तः अशाइत से आगे

तरकीब गलीज करने सीमाव लोबन्द व गैर लोबन्द व कायम साबित व कायमुल्नार व मुसफ्फा व मुनक्का व गुर्सनः अव्वल सीमावको लेकर पुरानी ईंट में खरल करे फिर तसईद करे यानी जौहर उड़ा दे। अलावाद गंधक के महलूल में सहक करके तसईद करे, सीमाव मुसफ्फा हो जावेगा। इसके बाद नौसादर और बछनाग और राइ में जुदा जुदा खरल कर लें। इसी तरह सात बातें बार अमल करके एक खाली बैजा मुर्ग में बन्द कर दे और बकाया खाली बैजा मुर्ग को तलखुल बोल से पुर करके मुंह बन्द कर दें फिर घोड़े की ताजी लीद में जमीन के नीचे दफन कर दें। बीस रोज के बाद निकालें। सीमाव पर टूटे हुए निकलेगा अगर इसी सीमाव मुतहल शुद को चूल्हे के नीचे दफन कर दें और बीस रोज के बाद निकालें। उकद कायमुल्नार होकर बरामद होगा।

तरकीब तलखुलबोल

दो सालः बच्चों का बोल सात सेर के करीब लेकर कढ़ाई में डालकर आग पर पकावें, वक्त जोश जो झाग आवे उसको लेकर अलहदा करते जावें। जब झाग का आना बन्द हो जावे तो नीचे उतारकर खुश्क कर लें लेकिन धूप में पस जिस कदर नमक बरामद होगा उसे अहतियात से शीशी में महफूज रखें। उक्त हाजत सीमाव को तांबे की प्याली में रखकर आग पर रखें और ऊपर उसके इसी नमक से एक तह देकर अमल करे। सीमाव गलीज और कायमुल्नार हो जाता है फिर इस सीमाव गलीज बकायम को काम में लावें। (सुफहा ७ अखबार अलकीमियां १६/१२/१९०६)

नुसखा कमरी सीमाव को मुसफ्फा कायमुल्नार व सुर्ख बनाकर उससे सीमाव की चांदी बनाने की तरकीब (उर्दू)

(१) सीमाव ५ तोले को खरल में डालकर हमराह शीर मदार २० तोले सहक करे हत्ताकि सख्त हो जावे बाद कूटें। सीमाव मुसफ्फा शुदः निकलेगा।

(२) फिर फफूल एक सेर रस लेकर उसको कूटकर ५ सेर पानी में भिगो दे और तीन रोज के बाद चूल्हे पर रख नरम नरम आग जलावें जब कि तीसरा हिस्सा पानी रहे तो नीचे उतार कर मुकत्तर कर लेवें फिर सीमाव मुसफ्फा शुदः को प्याली चीनी गिले हिकमत की हुई में डालकर वह प्याला रेत में रख दे जो पहली सी ही तवागिली में डालकर चूल्हे पर रखा होगा। बादहू वेर की लकड़ी लेकर उसकी नरम नरम आग जलावें और मुकत्तर का चोवः देते जावें जब कि तमाम पानी जज्ब हो जावे तो प्याले को नीचे उतार सीमाव निकालकर खरल में डाल जो कायमुल्नार होगा।

(३)रोगन बैजा मुर्ग करकनाथ से सहक बलेग करें लेकिन याद रहे कि बजाय दिस्ता पत्थर के चोब नारजील से सहक करना होगा। ८ पहर तक खरल होने के बाद सीमाव को बारीक कपड़ा मलमल नं० २५ में बांधकर पोटली बना लेवें और एक रोज शीरमदार में तर रखें फिर एक रोज रोगन कितान में भिगो रखें बाद हांडी गिली गिले हिकमत शुद्धः में तीन सेर पानी नारजील का डालकर चूल्हे पर पोटली बतरीक डोल जंतर लगाकर नरम नरम आंच जलावें जबकि सब पानी सोख्तः हो तो नीचे उतारकर सर्द होने के बाद मुलाहिजा फर्मावें व रंग सुर्ख दानेदार बरामद होगा। बादहू सीमाव मजकूर एक तोला सीमाव खाम १२ तोला खरल में डालकर हमराह अर्क लैमूं के सहक करें। एक घंटे में कुछ सीमाव बस्ता हो जावेगा। सबको जमा करके एक एक तोले की कुर्स बना लेवे और एक रोज साये में रखे बाद में जौहर नौसादर ८ तोले मकस बैना ८ तोला हमराह शीरमदार ८ तोले के सहक करके नुगदा बना लें फिर कूजागिली में निस्फ नुगदा डालकर इस पर कुर्स सीमाब बराबर रख दें और बाकी निस्फ को ऊपर डालकर बंद करें। गिले हिकमत करने के बाद खुश्क होनें दे फिर एक सेर पाचक दस्ती की अखगर आग में रख दे। जबकि सर्द हो तो निकालकर कुठाली में डालकर जेरुवाला सुहागा १ तोला, कुश्ता[1] सम्मुल फार एक तोला देकर चर्ख देवें। इन्शा अल्लाह बालिश नुकरा बरामद होगा जो बाजारी खुशी से कबूल करते हैं। (अखबार अलकीमियां १/६/१९०७)

अकसीर नुकरई बजरियः सीमाव कायम सम्मुलफार वगैरः कायम (उर्दू)

सम्मुलफार सफेद दो तोला, सुहागा दो तोला, शोरा कलमी दो तोला, नौसादर दो तोला, इन सबको जूदकोब करके एक कूजागिली में बंद करके मजबूत गिले हिकमत करके खुश्क कर लें और दस सेर पाचक की आग दें। सब अशियाद चर्खखाकर और कायम होकर पकेबर दीगरे दो टिकिया होकर तहनशीन हो जावेंगी। जब सर्द हो जावे तो निकाल लें। सबसे ऊपर बरंग सफेद सुहागा वगैरः की टिक्की होगी, इसको अलाहदा कर ले और नीचे दर्ज रंग लिये हुए सम्मुलफार कायम शुदः की टिक्की होगी, इसको अलाहदा रखे सीमाव बाजार से लाकर इसको पहले किसी तरकीब मारूफ से कर ले बादहू एक करीर की लकड़ी जो एक या डेढ़ गज की तूल में हो और मुटाई में भी खासी हो उसके एक तरफ खोद कर उसमें सीमाव मुसफ्फा डालें और खिला को बुरादा करीर से भर दें। उसके ऊपर गिले हिकमत करके दूसरी तरफ आंच दें और गिले हिकमतवाले जर्फ को जिस तरफ कि सीमाव रखा हुआ है, बालूरेत में दबाए रखे ताकि धुंआ बंद रहे। जब लकड़ी जल जल कर करीब गिले हिकमत के पहुंच जावे फौरन् आग से अलहदा कर लें और दर्मियान से सीमाव निकाल लें यह सीमाव बिलकुल कायमुल्नार होगा। ख्वाहे सौमन की आंच में दे दें हरगिज फरार न होगा। सम्मुलफार कायम १ तोला सुहागा शोरा वगैरः कायम १ तोला सीमाव कायम १ तोला इस हरसह अजजाइ को लैमूं के पानी में बारह पहर खरल करके नरम भूभल का तश्विया दें। अकसीर तैयार हो जावेगी। एक माशा दो तोले पर तरह करें तो कुदरत खुदा का जलवा नुमायां होगा। (सुफहा ९ अखबार अलकीमियां १६/१२/१९०६)

सीमाव और नुकरा से अकसीर नुकरई (उर्दू)

सीमाव मुसफ्फा में बारह पहर चोया सहदेई बूटी का दे फिर तीन रोज तक शीरकवाई में स्याह में जिसको हिन्दी में गीदड़दाख कहते हैं, हर रोज चार चार पहर खरल करे। बादहू वर्क नुकरा हम वजन उसके लेकर शीरा हुलहुल जर्द गुल में चार प्रहर तक सहक करे फिर उसका कटोरा बनाकर नाल जंतर में रखे। हर किस्म के जंतरों का बयान शेख सुलमान मंडवी के रिसाले हफ्त कोकब में है और कटोरी मजकूर के चारों तरफ खारी नमक रख दे फिर शीरा लैमू कागजी और हुलहुल जर्द गुल के शीरा में चार चार पहर अलाहदा अलाहदा कटोरी मजकूर को चोया दे। अब यह कटोरा कलस यानी चूना की तरह ले पीस के हो जायेगा उसको इक्कीस पुट आफ्ताबील की यानी छाल वेख नीब के इक्कीस दिन तक बदस्तूर दे बाद उसके हम

१—कुश्ता सम्मुल फार चाहे किसी तरकीब से तैयार किया गया हो काम आ सकता है।

वजन कलस के वर्क नुकरा मिलाकर सहक करके गोली बांधे और फिर बारह पहर तक चोया शीरा लैमूं का अकसीर हो जायेगा। एक तोला कलई को गुदाज करके एक हुव्वाः इस अकसीर से तरह से करे, नुकरा हो जावेगा। इन्शा अल्लाह ताला (सुफहा २७८ किताब अलकीमियां)

इख्तलाफात अलकीमियां मातुलुंग यानी लैमू बिजौरे का चोया बजाय आबवेख नींबू के लिखा है और बाज दीगर हर्फ अहवाव में बजाइ सहदेई के वकन और बजाय हुलहुल जर्द के हलैला जर्द और बजाइ कवाई स्याह के पोई तलख मुन्दर्ज है लेकिन अज्जाइ जो तीन में अख्तियात किये गये हैं वह वा एतवार कसरत के हैं क्योंकि इस नुसखे के तजरुबे करने की इत्तला किसी मेम्बर ने नहीं दी और न सदर मुकाम पर अंजुमन के उसका तजरुबा हुआ।

(सुफहा २५८ किताब अलकीमियां)

अग्निस्थायी पारद
चांदीयोग एक प्रकार से चांदी का जारण है

काही १ तोला, फिटकरी १ तोला, शीशालून १ तोला, शोरा १ तोला, मुश्क कपूर ६ माशे, नौसादर ६ माशे, चांदी बुरादा ४ तोले, पारा ८ तोले, आठों चीज खरल करना। १ बोतल सिरका अंगूरी सुखाणा जब खिप जावे तब पानी ठंडा पाके घोल के कढ़ाही में पाके पकाणा जब थोड़ा पानी रह जावे तब उतार कर और पानी पाकर धोंणा धोकर सब दवाई निकाल देणी। चांदी पारा निकाल कर तोल लेनी फिर खरल में पाकर पूर्वोक्त दवाई नई पाकर खरल करना, ऐसे तीन बोतल सिरका तीन वेर में खिपाणा यह पारद अग्निसह है। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

फौलाद योग से वेधक पारद
(एक प्रकार के लोहजारण का पर्याय है)

हरे फौलाद से द्विगुण नौसादर पारे सिरके में खरल करके चूल्ही में दावणा। ४० दिन फिर वहां से रक्त वर्ण निकलेगा। (पारा गंधक) प्रथम पारा फौलाद सम दोनों चीजें सिरके में खरल कर गंधक दोनों के सम पाके कपड़मिट्टी करके चूल्हे में मूंद रख छोड़ना, बीस रोज फिर कड़वे गंधक पूर्ववत् पाक पूर्ववत् २ बीज एवं बारंबार वेधकृद्भवेत्।

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

नुसखा अकसीर अजसीमाब व मिस खरा तीन (फार्सी)

बायद कि बियारद खरूस सफेद रंग व ओंखरूस रा दर कफ से निगाह दारद व हर रोज कि करम खरातीन कि दर जबान हिंदी औरा केंचुआ गोयन्द हुमारा में खुरानद बाशन्द बताकीद नुमायद कि वगैर अज करम खरातीन चीजें दीगर न खुरद व बाद अज पंच अज शशमाह औं मुर्ग रा बिकुश्तन्द दर सगदान आंखरोस पारा मिसमें बरायद कि आं मिसरा कटोरी बिसाज़द बाद अजां बियारद सीमाव हुमाकंदर कि दर आं कटोरी पुर शवद वक्ते कि खिचड़ी विपजन्द दरवक्त डमखुर्दम आं कटोरी पुर सीमावरा दरदेग खिचड़ी में गुजारद मुजर्रिव अस्त देखो पहेली किस्तम सुफहा २० सप्तसागर उर्दू (सुफहा ५५ किताब हाशिया जवाहर उलसिनात)

पारद बंधनवेधक पारद को भूनाग ताम्र की कटोरी में पकाकर

भूनागताम्रचषके निधाय सूतं कृशानुयोगेन ॥ तत्ताम्रजया दर्व्या प्रचालयेदाशु कुर्वतो यत्नात् ॥१॥ नानाद्रुमफलनिवहै सहस्रशः कुक्कुटाख्यपुटपक्वम् ॥ बद्धं तन्माषमितं तोलकमितशुल्बवेधकं भवति ॥२॥

(काकचंडीश्वरीतंत्र)

अर्थ–गिंडोवो के तांवे के प्याले में पारे को रखकर नीचे आग सुलगा दे, उसी तांवे की कड़छल से बड़ी सावधानी से उसे चलाता रहे। फिर उसे अनेक प्रकार के पेड़ और फलों पर कुक्कुट पुट से पकावे, जब वह बंध जावे तब एक माशा व तोले भर शुल्ब का वेधक होता है।।१।।२।।

नुसखा अकसीर तूतिया से मुसफ्फा और सुर्ख तांबा बना उसको पारे में आमेज किया है (उर्दू)

जिस कदर चाहे तूतिया को लेकर बारीक पीस ले और कुशादः मुंह शीशे को गिले हिकमत करके इसमें भर दे और इसमें रोगन वेदअंजीर (अंडे) इस कदर डाले कि तूतिया के चार अंगुश्त ऊंचा रहे फिर इस शीशे को दो सार बकरी की मेंगनी की आग पर रखे जब रोगन खुश्क हो जावे तो आग से उतार सर्द कर ले और फिर पीस ले और फिर दूसरे शीशे में भर कर इस कदर उस पर शहद डाले जो तूतिया को ढांप ले फिर दुबारा आग पर रखे जिस वक्त शहद डाले जो तूतिया को ढांप ले फिर दुबारा आग पर रके जिस वक्त शहद भी खुश्क हो जावे तो नीचे उतार ले सर्द होने के बाद तूतिया के हम वजन नमक लाहौरी मिलाकर पीसे और पानी डाल डाल कर साफ करे जब कि पानी में शोरियत न रहे तो खुश्क करके खूब पीस डाले और मुखमरात से तश्विया करे जिस वक्त सुखल मानिन्द शिंग्रफ के हो जावे उस वक्त हम वजन तूतिया के पारा साफ किया हुआ मिलावे और रोगन बैजा मुर्ग और नौसादर महलूलमें तशम्मअ करे तो तूतिया तैयार है। अब एक हिस्सा सिम और दो हिस्सा नुकरा को बाहम मिलाकर गलावे जिस वक्त खूब चर्ख आने को हो तो इस मुरक्कब तैयारः शुदः से नीम जुज्ब इसमें डाल दे और कुदरत खुदा का मुलाहिजा फर्मावे। (सुफहा २९ किताब अखबार अलकीमियाँ पन्द्रह रोजा १६/३/१९०५)

तरकीब रोगन बैजा

अब हक बैजा मुर्ग बयान करते हैं जो अहल सितन की ईजाद है जिस कदर चाहे बैजा लेकर उनको पानी में खूब जोश देवे। तीन चार जोश के बाद उनको नीचे उतार कर उनका पोस्त दूर करे और फकत जर्दी लेवे। इस जर्दी को किसी कर्छी आहनी में डालकर आग पर रखे। जब जलने के नजदीक उस पर तीन माशे नौसादर डाले और किसी चीज से हिलाता जावे। इस तरह मर्तबः बमर्तबः तीन माशे नौसादर डालना होगा। गर्ज २३ अहद बैजा हो तो वे तोले तक नौसादर चर्ख करे। सब तेल निकलकर वरंग सुर्खी माइल कर्छी में जमा हो जायेगा। किसी कपड़ें में छान कर शीशा में निगाह रखे, बस यही रोगन बैजा है। खाकर ब्रहुत उस्ताद लोग इसी तरकीब को पसंद करते हैं।

तरकीब नौसादर महलूल

नौसादर महलूल की तरकीब यह है कि नौसादर एक हिस्सा नमक इन्दरानी निस्फ हिस्सा दोनों मिलाकर सलाया करें। बादहू एक हांड़ी में डालकर तीन मर्तबः तसईद करे तो नौसादर सफेद और साफ हो जावेगा। फिर दुबारा हांडी गिली में डाल दे और गढ़ा दो गज गहरा और गज भर चौड़ा नमनाक जमीन में खोद कर इस गढ़े को लीद अस्प से निस्फ तक भरकर और वह हांडी इसमें रख कर बाकी गढ़ा लीद से भर दे और मिट्टी डालकर बंद कर दें। एक हफ्ते के बाद खोलकर देखें तो नौसादर मिस्ल पानी के हो जावेगा। इस वक्त कपड़े में छान कर शीशा में बंद रखें और वक्त जरूरत काम में लेवे।

अग्निस्थायी पारद में जस्त और गंधकयोग से वेधक एक प्रकार का जस्त का जारण है
(स्वर्ण कर योग)

पारा कायम दो तोले, जस्त २ तोले, गंधक ६ तोला, तीनों की निंबू के रस में खरल करना। दो पहर सुखाकर आतिशी शीशी में पाकर ४ प्रहर आग दे फिर खरल फिर आग फिर खरल फिर आग, ऐसे बारंबार करना। जब दवाई रक्त वर्ण की हो जावे तो फिर ताम्र पर रजत पर सुटना

(स्वणकर्म)

जस्तशोधन

जस्त डाल के नौसादर की चुटकी देनी जस्त शुद्ध हो जायगा। वह जस्त पाणा।

गंधकशोधन

गंधक डाल के दुग्ध विंच पाणा ७ बार और दुग्ध बदलते जाणा गंधक शुद्ध हो जाता है, वह गंधक पाणा।

पारदबंधन

पारा कायम इस तरह करना। पारा ४ तोले बोढ़ का दूध २० तोले दोनों को खरल करना और इमाम दस्ते में पाकर खूब कूटना अनवरत ४ प्रहर फिर उसको शीशी में डालकर वालुकायंत्र में देनी मीठी दुग्ध जल जायगा और पारा स्थिर हो जायगा। (जंब्र से प्राप्त पुस्तक)

रोगन सीमाव की तरकीब (उर्दू)

चूना संग आठ हिस्सा, नौसादर मसअद १० हिस्सा दोनों बारीक पीसकर दो कटोरियों के दर्मियान जिनको गिलेहिकमत कर लिया हो, सेर पाचक दस्ती के बुरादे की आग दे बादहू फिर दो हिस्सा नौसादर इसमें मिलाकर दुबारा बदस्तूर आग दे। इसी तरह हर बार दो हिस्सा नौसादर इजाफा करके आग दिया करे। यहां तक कि नौसादर चूने से दुगुना हो जावे। बादहू शीशी आतिशी में रख कर मजबूत गिले हिकमत करके गिलखन यानी भाड़ में दफन करे। बाद पन्द्रह दिन के निकाल। तेजाब महलूल हो जावेगा। बादहू संखिया सफेद एक हिस्सा लेकर तेजाब मजकूर में खरल करके और फिर बदस्तूर गिले हिकमत करके भांड में दफन करे। बारह दिन के बाद निकाल कर एक हिस्सा सीमाव लेकर उस महलूल में इस कदर सहक करे कि यकजान हो जावे। कम से कम एक पहर तक सहक करना चाहिये। जब तक सीमाव में महलूल जज्ब न हो जावे और सीमाव शफ हो जावे। बादहू उसको शीशी में रखकर बदस्तूर गिले खव में दफन कर दे। बारह दिन के बाद निकाले कुल सीमाव रोगन की तरह हो जावेगा। यह रोगन जुजामवर्स, बजअ मुफालिस, सिल तपेहाइ, मंजसिना, दमा, खांसी, कोहना, कुव्वतवाह, इमसाक लफूज के वास्ते हमराह वदरकाक अजीमुल्तफा है और कहते हैं कि मिस और कलई पर भी काम देता है लेकिन हनोज इसका तजरुवा नहीं हुआ है। (हुसीनुद्दीन अहमद सेक्रेटरी कैमिकल सोसाइटी अज जौनपुर) सुफहा नंबर ३९ व ३० अखबार अलकीमिया । १६/५/१९०७)

अकसीर शमसी आहन का रोगन तय्यार किया है (उर्दू)

जज्जाज (फिरकरी) एक हिस्सा सोहनमक्खी एक हिस्सा, जोहर नौसादर ऐक हिस्सा, बुरादा आहन ७ हिस्सा, जरनेख वरकी एक हिस्सा, गंधक एक हिस्सा इन जुमले अजजा को जुदागाना बारीक पीसकर सबके हमवजन शोरा कलमी शामिल करके तमाम को कुंजदके मुकत्तर या वर्क के पानी से चार प्रहर खरल करके एक बैजा मुर्ग खाली में बन्द करके खोल वैजा बत्तौर सरपोश ऊपर देकर उस मुर्गी के नीचे रखें जिसके नीचे अंडे हो जब बच्चे निकाल ले उस बैजा को अलहदा करले दनियासे महलूल पानी वरामद होगा इस पानी हलश्द को किसी कुलिया रोगनी में डालकर और मुंह कुलिया का बंद करके नमर आंच दे वह पानी बस्ता होकर एक जिस्म हो जायेगा इस मुजस्मि बस्तःशुदः पानी के जेरुवाला अस्तख्वाबकर बारीक देगची में रखें किसी कदर लहम देगची में डाल देना चाहिये चार पहर तक देगची के नीचे आग जलावे बाद चार प्रहर आग सर्द करके जब देगची खोल कर देखें तो सुर्ख रंग का रोगन वरामद होगा उसको कमला अहतियात से शीशी में डाल रखें बमौका जरूरत रोगन में कर्स रसासपर चन्द नुकता लगाकर पारद जोगा गुठाली में उसास बंद करके आंच दे दें फिर आंच से अलहदा करके सर्द पानी में बुझावें जरे खालिस दस्तयाब होगा (सुफहा २७–२८ किताब अखबार अलकीमियां १६/३/१९०५)

अकसीर शमसी बमजिब साखी २६ शिंजर्फ को लोहा और सोना देकर मुरत्तिब किया है (उर्दू)

हमारे मुअज्जिज दोस्त सय्यद लताफहुसेन साहब रजवी शहदी रईस बरेलीने उसूल मगरवी से साखी नं० २६ किताब अलकीमियां के तजरुवे के वक्त पंढ शिग्रफ को इस तरह कुशादा करके अकसीर आजम बनाया है कि शिंग्रफ कायमुल्नार से चहारम बुरादा जर और बुरादा जरके हम वजन बुरादा आहन खास लेकर तेजाब फारुकी में महलूल किया हत्ताकि रंग उसका मिस्ल खून के हो गया बादहू इस महलूल को शिंग्रफ मजकूर में मिलाकर खफीफ तख्यिया भूभल में दिया बादहू इसमें सम्मुलफार नौशादर छठा हिस्सा मिलाकर रोगन मूए इन्सान और रोगन जर्दी बैजा मुर्ग में तक्यिा देकर मुसम्मा किया यहां तक कि कुल दवा मजकूर सुफहापर रवां हुये बादहू अकद करके एक हुव्वा दवाई मजकूर का तोले भर नुकरापर बहालत चर्ख तरह किया जरखालिस नं० अव्वल हो गया (हसीनुद्दीन अहमद) (सुफहा ९ व १० किताब अखबार अलकीमियां१६/३/१९०५)

शिंग्रफ की भस्म से चांदी का सोना एक प्रकार के तेजाब से काम लेता है

शोरा कलमी १ तोला, जर्दकाही १ तोला, लोटा सज्जी १ तोला, नौसादर १ तोला, लोहचूर्ण १ तोला, फिटकरी १ तोला सुहागा १ तो०, आतिशी शीशे में निंबू का रस आध सेर पक्का पाकर पूर्वोक्त सातों चीजें पृथक् पृथक् पीसकर रस में मिला दें क्रम से एक मिल जाय तो दूसरी पाणी फिर शीशी धूप में रख छोड़नी जब तक आध सेर कच्चा रहे फिर वालादी गुच्छी रख के रस निकाल लेना आध सेर कच्चा निकलेगा फिर शिंग्रफ तोले तोले लेकर लोहे की प्याली में रखकर कोयले आधे सेर कच्चा लाके चोया देना सिंग्रफ काला होगा फिर नागफणी की जड़ २ सेर कच्ची लेकर उकरके सिंग्रफ रख के ऊपर से उसी की टाँकी देके मेंथरे घोट के लेप करना सुखाकर ट बिच पंज सेर पक्के गोहे की आग देणी, कायम होवेगा, तोले चांदी पर १ रत्ती द्रवित पर पाणा ३ माशे सोना भी मिला देणा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

जातुलरगूह के मानी (उर्दू)

आँवलासार और चूना आबनारसीदः हममजन लेकर दोनों को मिलाकर मसाबी पानी से पकावें और नीचे उतार ले जब कुल अजजा तहनशीन हो जाएं तो नितार ले, इसीका नाम जातुलरगह है यह पानी सीमाव को सूर्ख रंग की तरफ लाने के लिये कार आमद है और मुख्तलिफ तरकीबों से भी पानी सीमाव को मुतहर्रिक कायमुल्नार भी करता है। (सुफहा ८ अखबार अलकीमियाँ १/६/१९०५)

रजत कर उत्तम योग–बंग की चांदी सर्प लवण योग

८ सेर पक्के लवण साबर ले के पीस के लगोड भाडे में पादैणा फिर एक सर्प स्याह जहरी पा दैणा, उपरों आधा लवण बाकी पा दैणा उस भांडेदा मुंह खोलणा सर्प सारा पाणी होकर लवण में मिल जायगा जेकर उपरों आधा लवण बाकी पादैणा फिर उस भांडे दो मुँह बंद करके ४० रोज अरूडी[1] बिच दब छोड़ना इकतालीसवें रोज हबाड़ बचाकर सर्प बड़ा जहरी न हो तो लवण बीच ६ माशें गंधक ६ माशे पारा रला देणा फिर मिट्टी दी कढाई चढा के उसमें कालीसेर कच्चा चढाके आग बालणी जब कली खूब फूल जाय तब काठदी कर्छी नाल उसमें वह लवण पापक्का पादैणा हवाढ बचा के आग परही कली जम जायेगी। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

१–कुरुडी धूरा पूरनसिंह ने बताया।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां वेधकर्मकथनं नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥२९॥

शोधनाध्यायः ३०

पारद के शोधन की आवश्यकता

जयेदयं संहितायाप्यजेयान्गदान्महापातकजान्क्षणेन॥
शुद्धस्ततः शोधनमस्य कार्यमार्यैरशुद्धो न सुखाय सूतः ॥१॥

(योगतरङ्गिणी ५१.)

अर्थ–शुद्ध किया हुआ यह पारद नित्य सेवन करने से अजेय (असाध्य) महापापों से पैदा हुए रोगों की शीघ्र ही नाश करता है। इसलिये पारद का शोधन करना चाहिये अशुद्ध पारद सुख के लिये नहीं होता है॥१॥

शोधन की आवश्यकता

सूतोऽशुद्धतया गुणं न कुरुते कुष्ठाग्निमान्द्यक्रिमीन् ॥
छर्द्यारोचकजाड्यदाहमरणं धत्ते नृणां सेवनात् ॥२॥

(योगरत्नाकर ७७)

अर्थ–अशुद्ध पारद सेवन करने से गुण नहीं करता प्रत्युत मनुष्यों के कोढ, अग्निमान्द्य, कृमि, वमन, अरोचन, जडता, दाह और मृत्यु इनको करता है॥२॥

शोधन की आवश्यकता

दोषहीनो यदा सूतस्तदा मृत्युजरापहः । साक्षादमृतमप्येष दोषयुक्तो रसो विषम् ॥ तस्माद्दोषविशुद्धयर्थं रसशुद्धिर्विधीयते ॥३॥

(रत्नाकर १६०, नि० र० ६)

अर्थ–जब पारद दोषरहित होता है तब मृत्यु और बुढापे को दूर करता है वह साक्षात् अमृत ही है। दोषों से मिला हुआ पारद विष होता है। इसलिये पारे के दोषों को दूर करने के वास्ते पारद शुद्धि कही जाती है॥३॥

पूर्वं दोषा रसेन्द्रस्य ये च प्रोक्ता मनीषिभिः । अतस्तेषां प्रशान्त्यर्थं प्रोच्यते कर्म साम्प्रतम् ॥४॥

(योगरत्नाकर ७, नि० र० ६)

अर्थ–महात्माओं ने पहिले जो दोष पारद में कहे हैं, उनकी शान्ति के लिये अब शोधन कर्म को कहते हैं॥४॥

रसशोधनमुहूर्त

सुदिने शुभनक्षत्रे रसशोधनमारभेत् ॥५॥ (रसरत्नसमुच्चयः ९०)

अर्थ–रसराज वैद्य शुभ दिन और शुभ नक्षत्र में पारद के शोधन का प्रारम्भ करे॥५॥

रसशोधनमुहूर्त

शुभेऽहनि प्रकर्तव्य आरम्भो रसशोधने ।
एकान्ते धामनि शुभ्रे पुराभ्यर्च्यो हि भैरव। ॥६॥

(योगरत्नाकरः ७७)

अर्थ–शुभ दिन में रसशोधन का आरम्भ करना चाहिये और प्रथम एकांत स्थान में श्रीभैरवजी की पूजा करनी चाहिये॥६॥

रसशोधनारम्भः

नत्वा गुरुं भैरवकन्यकाबटून् द्विपाननं सिद्धमनुष्यलक्षितम् । अन्तःसुनीलं बहिरुज्ज्वलं रसं निवेशयेत्खल्वतले शुभे दिने ॥७॥

(टोडरानन्दः)

अर्थ–बटुक भैरव कन्या श्रीगणेशजी सिद्ध पुरुष और श्रीगुरुदेव को नमस्कार कर शुभ दिन में भीतर से नीले वर्ण का बाहिर से उज्ज्वल वर्णवाले पारद को खरल में डाले॥७॥

पारद की दो प्रकार से शुद्धि

शुद्धिरिति सा च द्विविधा प्रोक्ता उक्तं हि व्याधौ रसायने चैव द्विविधा सा प्रकीर्तिता ॥८॥ या शुद्धिः कथिता व्याधौ सा नेष्टा हि रसायने ॥ रसायने तु या शुद्धिः सा व्याधावपि कीर्तिता ॥९॥

(रसेन्द्रसार सं० ४, र० रा० सुं० १८)

अर्थ–पारद की शुद्धि दो प्रकार की कही गई है, उसको कहते हैं व्याधि और रसायन में अलग अलग दो प्रकार की शुद्धि कही है तिसमें व्याधि के लिये जो शुद्धि कहीं है सो रसायन में नेष्ट है और रसायन में जो शुद्धि कही है वह व्याधि में भी लेनी कही है॥८॥९॥

शोधन और संस्कार में भेद

शोधनं दोषहरणं संस्कारश्च बलतेजसोऽभिवर्धनम् ॥१०॥

(ध० सं० २३)

अर्थ–दोषों के नाश करनेको शोधन कहते हैं और संस्कार पारद केवल तेज को वढ़ाता है॥१०॥

पारदशोधनार्थ औषधिमान

सूते पादमितं सर्वं प्रक्षिपेच्छोधनौषधम् ।
अष्टमांशं पुनः केऽपि कथयन्ति मनीषिणः ॥११॥

(योगतरङ्गिणी ५३)

अर्थ–पारद में शोधन करने योग्य सब औषधि को पारद से चौथाई लेकर डाले और कुछ पंडितों का यह मत है कि पारद से षोडशांश औषधि लेना चाहिये॥११॥

अथ मर्दनप्रकार

उष्ण एव रसः कार्यः शीतं सर्वात्मना त्यजेत् । शीते च बहवो दोषाः षण्ढाद्याः संभवन्ति च ॥१२॥

(रसमञ्जरी ४)

अर्थ–पारद को गरम गरम ही मर्दन करे और ठंडा हो तो सर्वथा ही वर्जित है। क्योंकि ठंड पारद के मर्दन करने से षण्ढ आदि दोष पैदा होते हैं॥१२॥

नौआदीगर सीमाव को मुसफ्फा और पाक करने की तरकीब

सीमाव को अर्क कटाई खुर्द में और अर्क दूध के उफ्तादः में जिसको दुधीखुर्द मफरूश कहते हैं मसावी सीमाव के हरेक बूटी का अर्क लेकर कम से कम पहर भर सहक करे पाक हो जायगा (सुफहा अलकीमियाँ १६२)

अथ शोधन

कुमारीत्रिफलाव्योषचित्रकं निम्बुकं रसम् । दिनैकं मर्दितं धृत्वा शुद्धो भवति पारदः ॥१३॥

अर्थ–त्रिफला, सोंठ मिरच, पीपल चित्रक इनको पारद से षोडशांश अथवा चतुर्थांश लेकर निंबू और घीग्वार के रस में एक दिन घोटकर रख देवे तो पारद शुद्ध होता है॥१३॥

मदनसंस्कार

चौपाई–घीकुमार त्रिफला त्रिकुटा ले । चित्रक अरु नींबू रसहूदे।। घोट तीन दिन रस करी शुद्ध ।। सकल काज मे देय प्रबुद्ध ।।

(वैद्यादर्श १०)

मतान्तर से शोधन

दिनैकं मर्दयेत्सूतं कुमारीसंभवैर्द्रवैः । तथा चित्रकजैः क्वाथैर्मर्दयेदेकवासरम् ।। काकामाचीरसैस्तद्वद्दिनमेकं तु मर्दयेत् ।।१४।।

(रसेन्द्रसारसंग्रह ७)

अर्थ–पारद को तप्तखल्व में घीकुमार (गुवारपट्ठा) के रस से एक दिन खरल करे इसी प्रकार चित्रक के काढ़े से भी एक दिन तक मर्दन करे और तैसे ही काकमाची (मकोय–कवैया) के रस से एक मर्दन करे।।१४।।

दोहा–घीकुमार से घोटिके, एक दिवस पर्यन्त । घोटे चित्रक क्वाथ पुनि, एकहि दिन निश्चिन्त ।। फिर मकोयको क्वाथ पुनि, एकहि दिन निश्चिन्त ।। फिर मकोय को क्वाथ अरु, त्रिफला क्वाथ कराय । एक एक दिन इन विषे, पारद को घोटवाय ।। तब कांजी के नीरते, पाराको ले धोय । भलीभांति फिर खरल में, धरे भिषक जनलोय । पारेते आधो तहां, सैंधो नोंन डराय । तब नींबू रस एक दिन, घोटे निपुन बनाय । पुन राई लहसन विषे, एक एक दिन घोट । नवसादर में घोटि पुन, चार पहर इकजोट । ता पाछे कांजी विषै पारद को घुटवाय । कांजी हति धोय पुनि, पारद दिव्य कराय ।। (वैद्यादर्श)

शोधन

कुमारी चित्रकं व्याधिर्मूलकांकुंल्यवारिणा । पृथक् पृथक् चतुर्यामं मर्दयेत्सर्वकर्मसु ।।१५।।

अर्थ–घीकुवार, नागरमोथा, व्याधिमूलक (मकोय), इनके क्वाथ में पारद को पृथक् पृथक् चार प्रहर तक घुटाने से वह पारा सब काम के लिये योग्य होता है।।१५।।

शोधनविधि

कुमारिकाचित्रकरक्तसर्षपैः कृतैः कषायैर्बृहतीविमिश्रितैः । फलत्रिकेणाऽपि विमर्दितो रसो दिनत्रयं सर्वमलैर्विमुच्यते ।।१६।। (रसराज २९, आ० वि० ३०६, र० रा० प० ३०, वै० क० ४४, र० सा० प० ९)

अर्थ–चित्रक, लाल सरसों, कटेरी की जड़ और त्रिफला इनके क्वाथ तथा घीकुमार के रस के साथ तीन दिन तक घोटा हुआ पारा समस्त दोषों से छूट जाता है।।१६।।

पारदशोधन

फलत्रयं चित्रकसर्षपाणां कुमारिकन्याबृहतीकषायैः । दिनत्रयं मर्दितसूतकस्तु विमुच्यते पंचमलादिदोषैः ।।१७।।

(रसमञ्जरी ३, रसराजसुन्दर २८, टो० ४)

अर्थ–इसका अर्थ पहले के समान है।।१७।।

शोधन

कन्याग्निक्षुद्रात्रिफलाः सर्षपो राजिका निशा । अष्टावशेषक्वाथेन रसं मर्द्य दिनत्रयम् ।।१८।। कांजिकेन तु प्रक्षाल्य शोष्यवस्त्रातपै रसम् । खल्वैकभागं कृत्वोर्द्ध वलितं ग्राहयेद्रसम् ।। अवशिष्टं मलं त्याज्यं निर्मलो जायते रसः ।।१९।। (ध० सं० ११)

अर्थ–घीकुमार, चित्रक, कटेरी की जड़, सोंठ, मिरच, पीपल, लाल सरसों, राई और हल्दी इनके अष्टावशेष काढ़े से पारद को तीन दिन तक मर्दन करे फिर उसको कांजी से धोकर कपड़े से पूंछ घाम में सुखावे तदनन्तर खरल के एक भाग को ऊंचाकर इकट्ठे हुए पारे को ग्रहण कर लेवे और बचे हुए मैल को छोड़ देवे तो पारद अतिनिर्मल होता है।।१८।।१९।।

शोधन

फलत्रयं चित्रकं च क्षुद्रा च कृष्णसर्षपाः । कुमारिका च बृहती अकोलं राजवृक्षकः ।।२०।। विमर्द्य क्वाथैनैतेयां त्रिदिनं च दृढ़ं रसम् । आरनालेन तूष्णेन क्षालयेत्काचभाजने ।।२१।। ततो निम्बूसहस्रस्य रसैर्घर्मे त्र्यहं रसम् । स्थापयेत्तेन हंसः स्यात्संस्कारार्हश्च जायते ।।२२।।

(ध० सं० २३)

अर्थ–त्रिफला, चित्रक, कटेरी की जड़, काली, सरसों, घीग्वार, अंकोल, अमलतास, इनके काढ़े से तीन दिन तक पारे को मर्दन करे गरम कांजी से कांच के बासन में धोवे। फिर हजार नींबू के रस में पारे को डालकर तीन दिन तक घाम में रखे तो पारा हंस के सदृश शुद्ध होता है।।२०–२२।।

सीमाब को मुसफ्फा करने की तरकीब (उर्दू)

नौआदीगर सीमाब चार तोले लेकर दो तोले चूना[1] और दो तोले सज्जी में पहर भर तक खरल करे और धोकर काम में लावे (मुफहा अलकीमियां)

मतान्तर

निशेष्टकाधूमरजोऽस्लपिष्टो विकंचुकः स्यात् दिवसेन सोर्णः । वरारनालान लकल्पकाभिः सव्यूषणाभिर्मृदितस्तु सूतः ।।२३।।

(रसेन्द्रसारसंग्रहः ६, हस्तलिखितयो गतरङ्गिनी)

अर्थ–पारे मे अष्टमांश हल्दी, ईंट का चूना, धूमसार और ऊन इनको लेकर नींबू या जंभीरी के रस से एक दिवस तक मर्दन करे तो पारा शुद्ध होगा अर्थात् कंचुकरहित होगा। अथवा त्रिफला, चीता, सोंठ, मिरच, पीपल, कांजी और घीग्वार के रस में एक दिन तक घोटे तो पारद शुद्ध होगा।।२३।।

सीमाव के मुसफ्फा और पाक करने की तरकीब (उर्दू)

अव्वल सीमाव को खिश्त कौहनः नीमपुख्तः में अर्कलैमू कागजी मिलाकर तमाम दिन सहक करे तो बादहू रोज उस काजल से जो भड़भूजः या भटियारे के छप्पर में होता है अर्क लैमूं मिलाकर दिन भर खरल करे। तीसरे रोज राई में अर्कलैमूं मिलाकर तमाम दिन घिसे और हर बार धोकर दूसरे रोज खरल किया करे और अगर धोते वक्त सफेदी सीमाव के पानी के ऊपर तैर आवे तो थोड़ा सा दूसरा मीठा पानी उस पर छिड़के जिससे सफेदी नीचे बैठ जावे। अगर तीनों अजजाइ बाहम मिलाकर तीन रोज तक बराबर खरल करे तो भी जाइज है।। (मुफहा अकलीमियां ९४)

मुख्यदोषहरशोधनविधि

गृहकन्या हरति मलं त्रिफलाऽग्निं चित्रको विषं हन्ति । तस्मादेभिर्मिश्रैर्वारा न्संमूर्च्छयेत्सप्त ।।२४।।

(वैद्यकल्पद्रुमः ४४, आयुर्वेदविज्ञानम् ३०६)

अर्थ–घीकुवार पारे के मल को हरता है, त्रिफला अग्निदोष को और चित्रक विषदोष को हरता है, इसलिये इन तीनों वस्तुओं से पारद को सात सात बार मर्दन करे तो पारे के मल अग्नि और विष ये तीनों दोष दूर होते हैं।।२४।।

शोधनविधि

अंकोलेन विषं हन्ति पावकं हन्ति चित्रकैः ।।
राजवृक्षैर्मलं हन्ति कुमारी सप्त कंचुकान् ।।२५।।

(योगचिन्तामणिः १५१)

१–चूना बगैर बुझा होना चाहिये।

अर्थ–रसशास्त्र के ज्ञाता वैद्य अकोल से विषदोष को नाश करते हैं, चीते की छाल से अग्निदोष को नाश करते हैं, अमलतास से मलदोष को और घीगुवार से सातों दोषों को दूर करते हैं॥२५॥

शोधन

आरग्वधो हन्ति मलं प्रयत्नात्कुमारिका सप्त हि कंचुकांश्च।अंकोलमूलं च विषं निहन्याद्रसस्य बह्निं किल पावकश्च ॥२६॥ प्रत्येकं सप्तवारं च मर्दितः पारदो भवेत् । तदा विशुद्धतां याति सर्वयोगार्हितो भवेत् ॥२७॥

(योगरत्नाकरः ७६ नि० र० २६)

अर्थ–उपाय करने से अमलवेत मलदोष को नाश करता है, घीग्वार सातों कंचुकों को विध्वंस करता है, अंकोल की जड़ विष को उखेड़ती है और चित्रक अग्निदोष का नाशक है। इसलिये इनमें से एक एक औषधि के साथ पारद को सात सात बार मर्दन करे तो पारे की विशेष शुद्धि होती है और वह पारद समस्त योगों में मिलाने योग्य होता है॥२६॥२७॥

पारद के मुख्यदोष का परिहारकथन

पारद घोटे प्रथम ही, अमलतास रस डार ॥ पारद के मलदोष को, एक दिना में ढार ॥ फिर चित्रक रस डाल के, एक दिना खरलाय । पारददोष नसाइये रस नीको ह्वै जाय ॥ पारद में विषदोष है, ताको हरन उपाय ॥ रस अंकोल मंगाय के, एक दिना घुटवाय ॥ या पारद के देह में, सात कंचुकी होय । घिसकुमारिरस घोटकै, सबै दूर करि सोय ॥ साधारणविधिते जहां, कीया चाहे शुद्ध । मुख्य दोषत्रय टारिके, सब ठां देय प्रवुद्ध ॥

(वैद्यादर्श)

अष्टदोषों का पृथक् पृथक् शोधन

खल्वे पाषाणजे लौहे सुदृढ़े सारसम्भवे ॥ तादृशः स्वच्छमसृणः चतुरंगुलमर्दकः ॥२८॥ निक्षिप्य सिद्धमन्त्रेण रक्षितं द्वित्रसेवकैः । भिषग्विमर्दयेच्चूर्णैर्मिलित्वा षोडशांशतः ॥२९॥ सूतस्य गालितैर्वस्त्रैर्वक्ष्यमाणद्रवादिभिः । मर्दयेन्मूर्छयेत्सूतं पुनरुत्थाय सप्तशः ॥३०॥ रक्तेष्टिकानिशाधूमसारोर्णाभस्मतुम्बकैः । जम्बीरद्रवसंयुक्तैर्नागदोषापनुत्तये ॥३१॥ राजवृक्षस्य मूलेन मर्दयेत्सह कन्यया । मलदोषापनुत्त्यर्थं मर्दनोत्थापने शुभे ॥३२॥ कृष्णधुस्तूरकद्रावैश्चाञ्चल्यविनिवृत्तये । त्रिफलाकन्यकातोयैर्विषदोषोपशान्तये ॥३३॥ गिरिदोषे त्रिकटुना कन्यातोयेन यत्नतः । चित्रकस्य तु चूर्णेन सकन्येनाग्निनाशनम् ॥३४॥ आरनालेन चोष्णेन प्रतिदोषं विशोधयेत् । एवं संशोधितः सूतः सप्तकंचुकवर्जितः ॥३५॥ उत्थापनावशिष्टं तु चूर्ण पातनयंत्रके । धृत्वोर्ध्वभाण्डे संलग्नं संहरेत्पारदं भिषक् ॥३६॥

(रसेन्द्रचिन्तामणिः ९, नि० र० ११)

अर्थ–चिकना और साफ चार अंगुल का जिसका घोटा हो, ऐसे पत्थर के या लोहे के सुन्दर खरल में सिद्ध मन्त्र को पढ़कर दो तीन नौकरों से रक्षा किये हुए पारद को रखकर कपड़े से छाने हुए पारद से षोडशांश औषधियों को लेकर आगे कही हुई पतली चीजों के साथ मर्दन करे। इसका क्रम यह है कि प्रथम मर्दन और मूर्च्छन करे फिर उत्थापन करे। लाल ईंट का चूरा हलदी धूमसार ऊन की राख कड़वी तुम्बी इनको नींबू के रस के साथ मल दोष की शान्ति के लिये मर्दन करे। कारण कि मलदोष को दूर करने के लिये मर्दन और उत्थापन अच्छे समझे गये हैं। चञ्चल दोष के नाश के लिये काले धतूरे के रस से पारे को मर्दन करे। सोंठ मिरच पीपल और घीग्वार का रस इनके साथ मर्दन करने से गिरिदोष दूर होता है। त्रिफला और घीग्वार के रस के साथ मर्दन करने से विष दोष शान्त होता है। घीग्वार के रस के साथ चित्रक के चूर्ण से मर्दन करे तो पारे का अग्नि दोष दूर होता है। प्रत्येक दोष के दूर करने के लिये गरम गरम कांजी से धोना चाहिये। इस प्रकार शुद्ध किया हुआ पारा सातों कंचुकों से रहित होता है। उत्थापन से बचे हुए पदार्थ को पातनायन्त्र से उड़ा लेवे और इस प्रकार ऊपर के बासन में लगे हुए पारे को बुद्धिमान् वैद्य निकाल लेवे॥२८–३६॥

मतान्तर

राजवृक्षस्य मूलेन मर्दयेत्सह कन्यया । मलदोषापनुत्त्यर्थं मर्दनोत्थापने शुभे ॥३७॥ चित्रकस्य च चूर्णेन सकन्येनाग्निनाशनम् । दिनानि सप्त सम्पिष्टो वज्रीक्षीरेण पारदः ॥३८॥ स्वर्जिकाक्षारयुक्तेन भूमिदोषो विनश्यति । क्षेत्रदोषं त्यजेद्देवि गोकर्णरसमूर्च्छितः ॥३९॥ सप्तवारं काकमाच्या गतदेहं बिमर्दयेत् । पातयेत्सप्तवारे च गिरिदोषं त्यजेद्रसः ॥४०॥ त्रिफला–कन्यकातोयैर्विषदोषोपशान्तये । कृष्णधर्त्तूरकद्रावैश्चांचल्यविनिवृत्तये ॥४१॥ मर्दनोत्थापने कुर्यात्सूतराजस्य चासकृत् ॥

(रसपद्धतिः २७)

अर्थ–मलदोष को नाश करने के लिये अमलतास की जड़ तथा घीग्वार के रस के साथ पारद को मर्दन करे। चीता और घीग्वार के रस के साथ मर्दन करने से पारद का अग्नि दोष दूर होता है। सज्जीखार तथा थूहर का दूध इनसे सात दिन तक घोटा हुआ पारद भूमिदोष रहित होता है। गोकण्ट (गोखरू) के रस से मूर्छित किया हुआ पारद हे देवि! क्षेत्र दोष को छोड़ देता है। काकमाची (मकोय, कवैया) के रस से पारद को सात बार मर्दन करे तो मूर्छित होता है। फिर उसको सात ही बार पातन करे तो पारद का गिरिदोष नष्ट होता है। विषदोष की शान्ति के लिये त्रिफला और घीग्वार के रस के साथ मर्दन करे। तथा चांचल्य दोष की निवृत्ति के लिये काले धतूरे के रस के साथ प्रत्येक घोटने के बाद पारद का पातन करना उचित है॥३७–४१॥

मतान्तर

सोर्णानिशेष्टिकाधूमजम्बीराम्बुभिरादिनम् ॥ मर्दितः कांजिकैर्धौतो नागदोषं विमुञ्चति ॥४२॥ विशालाङ्कोलचूर्णेन वंगदोषं विमुञ्चति । राजवृक्षो मलं हन्ति चित्रको वह्निदूषणम् ॥४३॥ चांचल्य कृष्णधूत्तूरस्त्रिफला। विषनाशिनी । कटुत्रयं गिरिं हंति प्रसह्याग्निं त्रिकण्टकः ॥४४॥ प्रतिदोषं कलांशेन तत्तच्चूर्णं सकन्यकम् । उद्धृत्योष्णारनालेन मृत्पात्रे क्षालयेत्सुधीः ॥४५॥ एवं संशोधितः सूतः सप्तकंचुकवर्जितः ॥

(रसेन्द्रसारसंग्रहः ५)

अर्थ–ऊन की राख, हलदी की ईंट का चूरा, धूमसार और जंभीरी का रस, इनके साथ अष्टिनं (सात दिन तक) मर्दन कर गरम कांजी से धोवे तो पारद का नागदोष दूर होता है। इन्द्रायन अंकोल का चूर्ण और घीग्वार का रस इनके साथ मर्दन करने से वंगदोष नष्ट होता है। अमलतास की फली का गूदा मलदोष को दूर करता है। चित्रक अग्निदोष को काले धतूरे का रस अग्निदोष को त्रिफला विषदोष को सोंठ मिरच पीपल गिरिदोष को गोखरू असह्याग्नि को नाश करता है। प्रत्येक दोष को दूर करने के लिये उस उस दोष की नाशक औषधि को पारद से षोड़शांश लेकर घीग्वार के रस के साथ सात सात दिन तक मर्दन करे फिर मिट्टी के पात्र में निकाल कर गरम कांजी से धोवे। इस प्रकार शुद्ध किया हुआ पारद सातों कंचुकों से रहित होता है॥४२–४५॥

मृन्मयः कञ्चुकश्चैकोऽपरः पाषाणकंचुकः ॥ तृतीयो जलजो ज्ञेयो द्वौ द्वौ तौ नागवंगजौ ॥४६॥ रसे तु कंचुकाः सप्त विज्ञेया रसकोविदैः ॥ जलमृन्मयपाषाणनाशने सप्तकैस्त्रिभिः ॥४७॥ वज्रकन्दार्कपालाशकषायेण विमर्दयेत् ॥ चित्रकक्वाथसंघर्षात्कपाली याति वंगजा ॥४८॥ वज्रकन्दर–सेनैव याति बंगजकालिका ॥ कटुतुम्बीरसेनैव श्यामा नश्यति नागजा ॥ राजिकाक्वाथतो याति नागजा च कपालिका ॥४९॥

(ध० सं० २३)

अर्थ–एक मृन्मयकंचुक, दूसरा पाषाण कंचुक, तीसरा जलजकंचुक और दो दो नाग और वंग से पैदा हुए चार कंचुक इस प्रकार पारद में सात कंचुक कहे हैं। तहां जलज कंचुक, मृन्मय कंचुक और तीसरा पाषाण कंचुक इन तीनों के नाश करने के लिये थूहर का दूध, आक का दूध और ढ़ाक का काढ़ा, इनसे पारद को सात सात बार मर्दन करे। चित्रक के क्वाथ के साथ

मर्दन से वंग से पैदा हुआ कापाली नाम का कंचुक नष्ट होता है। शक्करगज (काबुल की तरफ पैदा हुआ एक प्रकार का कन्द) के रस से घोटा हुआ पारद वंगज कालिका नाम के कंचुक से रहित होता है। कड़वी तूंबी के रस से घोटा हुआ पारा नाग (सीसे) से पैदा हुए श्यामा नाम के कंचुक से छूट जाता है और राई के क्वाथ के साथ घोटने से पारद का सीसे से पैदा हुआ कपालिका नाम का कंचुक नष्ट होता है। इस रीति से सातो कंचुकों से रहित पारा होता है।।४६–४९।।

कंचुकीनिशान

एकनैव रसोनस्य रसः सिध्येद्रसेन च ।।५०।।

(रसपद्धतिः २८)

अर्थ–एक ही लहसन के रस से सात दिन तक घोटा हुआ पारद सातों कंचुकों से रहित होता है।।५०।।

रससार

दिनानि सप्त सम्पिष्टो वज्रीक्षीरेण पारदः । स्वर्जिकाक्षारयुक्तेन भूमिदोषो विनश्यति ।।५१।। टंकणक्षारसंयुक्तमर्कक्षीरं नियोजयेत् । सप्ताहं मर्दयेत्सूतमश्मकंचुकनाशनम् ।।५२।। चित्रकद्रवसंपिष्टष्टंकणेन समन्वितः । कपालीवंगसम्भूता नश्यत्येव न संशयः ।। वज्रकन्दरसेनैव नवसाररसेन च ।।५३।। वंगदोषसमुद्भूता कालिका नश्यति ध्रुवम् ।। टंकणेन कलांशेन कटुतुम्बीरसेन च ।।५४।। दिनानि सप्त संघृष्टो नागश्यामा व्यपोहति ।।५५।। बीजकक्वाथसंघृष्टो निम्बूफलरसेन च । कपाली नागसंभूता नश्यत्येव न संशयः ।।५६।।

(रसपद्धतिः २९)

अर्थ–सज्जीखार से मिले हुए थूहर के दूध से सात दिन तक घोटा हुआ पारा भूमिदोष से रहित होता है और सात दिन तक ही सुहागा और आक के दूध के साथ घोटने से पाषाण कंचुक का नाश होता है तथा सुहागा और चित्रक के क्वाथ से घोटने से बंग से उत्पन्न कपाली नष्ट होती है। वज्रकन्द (शक्करगंज) के साथ घोटने से वंग दोष से उत्पन्न कालिका दोष दूर होता है। षोड़शांश सुहागा और कड़वी तूंबी के रस के साथ सात दिन तक घोटने से नाग की श्यामा नाम की कंचुकी दूर होती है, बिजौरे का रस तथा नींबू का रस इनके साथ घोटने से पारद की नागसम्भूत कपाली नष्ट होती है।।५१–५६।।

अथ युगपत्सप्तकंचुर्कहरण

कर्पासपत्रनिर्यासे स्विन्नस्त्रिकटुकान्वितः । सप्तकंचुकानिर्मुक्तः सप्ताहा–ज्जायते रसः ।।५७।।

(रसपद्धतिः ३०)

अर्थ–सोंठ, मिरच और पीपल को कपास के पत्तों के रस में घोले फिर उसमें पारद को सात दिन तक स्वेदन करे तो सातों कंचुकों से रहित होता है।।५७।।

मर्दन द्वारा शोधन

आश्रयाशरसना सुरदाली स्मारणी गजबला शृंगाली । धावनी रजनिवह्निकुमारी मर्दनाद्भवति दोषविदारी ।।५८।।

(टोडरानन्दः)

अर्थ–चित्रक, रास्ना देवदाली (बंदाल), स्राविका (सरसों), गंगरेन, विदारीकंद, धाविनीं (कटेरी), हलदी, घीग्वार का इनके साथ सात दिन तक घोटने से पारद दोषरहित होता है।।५८।।

मतान्तर

जयन्त्या वर्द्धमानस्य चार्द्रकस्य रसेन च । वायस्या चानुपूर्व्यैवं मर्दनं रसशोधनम् ।।५९।। एवां प्रत्येकशस्तावन्मर्दयेत्स्वरसेन च । यावच्च शुष्कतां याति सप्तवारं विचक्षणः ।।६०।। उद्धृत्योष्णारनालेन मृद्भाण्डे क्षालयेत्सुधीः । सर्वदोषविनुर्मुक्तः सप्तकंचुकवर्जितः ।। जायते शुद्धसूतोऽयं युज्यते सर्वकर्मसु ।।६१।।

(रसेन्द्रसारसंग्रहः ६)

अर्थ–जयन्ती (अगेथु), वर्द्धमान् (एरण्ड), अदरक, कौवाठोडी इनमें से प्रत्येक के रस के साथ सात दिवस तक पारद को घोटे यदि रस सूख जावे तो वही रस डाल देवे फिर मिट्टी के पात्र में रखकर उष्ण कांजी से धो डाले तो पारद सब दोषों से मुक्त होता है और शुद्ध हुए पारद को सब कर्मो में लावे।।५९–६१।।

सीमाब को मुसफ्फा करने की तरकीब बजरियः तसईद (उर्दू)

नौआदीगर सीमाब दो दाम को अर्क लेमू कागजी में सहक करे बादहू शकोरे में रखकर चार पांच लैमू का अर्क उसमें डालकर कोयले की आग पर जोश दे। यहां तक कि कुछ अर्क लैमूं का सीमाब मजकूर में जलने से रह जावे। बादहू उतारकर सर्द करे। निगाह रखे अगर बाद उसके डौरू जंत्र में तसईद करे तो आला दर्जे का हो जायेगा। मुतरिज्जम दाम से मुराद वहलूबी है जो एक तोला ८ माशे की होती है। (सु० अकली ९५)

पातन द्वारा शोधन

कुमार्याश्च निशाचूर्णैर्दिनं सूतं विमर्दयेत् । पातयेत्पातनायंत्रे सम्यक् छुद्धो भवेद्रसः ।।६२।। (कालरत्नम् २९३, रसरत्नाकरः १६१, रसमञ्जरी ४, वै० कल्प०, नि० र० २४, रसे० सार० ६, र० रा० शं० ४, र० रा० प० २४, बा० बृ० ६, सा० प० ८)

अर्थ–पारद से अष्टमांश हलदी को डालकर घीग्वार के रस के साथ एक दिन घोटे फिर पातनायंत्र में उड़ाकर रख लेवें तो पारद अत्यन्त शुद्ध होता है।।६२।।

मतांतर

विधिमेनं परित्यज्य मार्कवार्कहरिद्रया । उद्घातांद्यवशिष्टं च चूर्णं पातनयन्त्रके ।।६३।। अतोऽर्द्धभाण्डसंलग्नं संग्रहेत्पारदं बुधः । रसकर्मणि सर्वत्र योगराजेषु योजयेत् ।।६४।।

(ध० सं० ३५)

अर्थ–यदि एक तोले पारद हो तो ६ माशे आक के जड़ की छाल और ६ माशे हलदी का चूर्ण इन दोनों को मिला के घीग्वार के रस में घोटे और पारे को निकाल लेवें। बचे हुए चूर्ण को पातनायंत्र में उड़ा लेवें, उस रस को समस्त कामों में लावें।।६३।।६४।।

पातन द्वारा शोधन

कपोतविड्धूमसारराजिकाभिर्विमर्दितः । उत्थितः पातनायन्त्रेऽग्निना शुध्यति पारदः ।।६५।।(रसमानसः)

अर्थ–कबूतर की बीट धूमसार और राई इनके साथ पारद को मर्दन कर फिर अग्नि से उष्णपातन करे तो पारद शुद्ध होता है।।६५।।

पातन द्वारा शोधन

श्रीखंड देवदारु च काकतुण्डीजयाद्रवैः । कर्कोटीमुसलीकन्याद्रवं दत्त्वा विमर्दयेत् । दिनैकं पातयेत्पश्चात्तच्छुद्धं च नियोजयेत् ॥६६॥

(रसमञ्जरी ४, र० रत्ना० १६१, र० रा० शं० ४, र० रा० प० २४, नि० र० २५, रसे० सा० सं० ६)

अर्थ–श्रीखण्ड (चन्दन), देवदार, कौआठौडी, जयन्ती, बांझककोड़ा, सफेद मूली और घीग्वार इनके साथ पारद को एक दिवस तक मर्दन कर फिर पातनयंत्र में पातन करे पारद को निकाल लेवें और सब कामों में लावें॥६६॥

अमललानी सीमावणे मुश्तही करने की तरकीब (जिसको बुभुक्षितीकरण स्लाह में जोगियो कहते हैं)

अर्थ–मजकूर वाला एमाल तसईद के बाद सीमाव को गुरसिना करना चाहिये। इस तरह से कि संदल सुर्ख, देवदारु, कागठुठी, शीरागुल, गुड़हल, बड़हल, शीराककोर, शीरा, मूसली, स्याह सफेद, शीरा, घीग्वार इनमें से जो जो दस्तयाब हों, तीन रोज तक पुट आफ्ताबी दे यानी दोपहर तक खरल करे और दोपहर से शाम तक खुश्क करे (और अगर जौहरा ताऊस मिल सके और उसमें सहक करें तो दूसरे अजजाइ में खरल करने की जरूरत नहीं है। (नुफहा अकलीमियां १४५)

विचार–यह तरकीब शुद्धि की है, अलबत्ता जौहरा ताऊस में सहक करना तरकीब मुश्त ही करने की है। मुमकिन है कि अव्वल शुद्धि और बादहू मुश्त की करन यह दोनों यकजाय किया गया हो और तहरीर में गलती हो।

शोधन

सूतः शोध्यो निशायां मरिचनिचयके पिष्टके चेष्टिकायां धूमे सम्पाकतोयेऽप्यधितुलसि विषे सूरणे शिग्रुपाके ॥ वज्रीदुग्धेऽर्कदुग्धे हुतभुजि लशुने चापि पालाशपङ्के सोद्ध्र्वाधः पातने वै लशुनपटुमतिः स्वेदयेत्कांजिके च ॥६७॥ दिनद्वयं प्रमर्दयेद्रसाधिपम् । समीरितौषधिं प्रति प्रहृष्टमानसो भिषक् ॥६८॥

(योगतरंङ्गिणी ५३)

अर्थ–हलदी, काली मिरच, ईंट का चूरा, धूमसार, अमलतास का रस, तुलसीपात्र का रस, जमीकन्द, सैंजना, सेहुंड का दूध, आक का दूध, चित्रक, लहशुन और ढ़ाक का क्वाथ, इनमें एक एक दिन घोटकर ऊर्ध्वपातन करे और फिर एक एक दिन घोटकर अधः पातन करे। इसके बाद लहशुन और लवणयुक्त कांजी में स्वेदन करे तो पारद शुद्ध होता है॥६७॥६८॥

संक्षिप्तशोधन

एतावतस्तु संस्कारान्कर्तुं सूतस्य न क्षमैः । तान्मुख्यान्कियतः कृत्वा संग्राह्यो रोगनुत्तये ॥६९॥

(र० सा० प० ९)

अर्थ–जो मनुष्य पारद के इन संस्कारों को नहीं कर सकते हैं. वे जन उन कुछ मुख्य संस्कारों को (स्वेदन, मर्दन, ऊर्ध्वपातन) करके रोगों की निवृत्ति के लिये पारद को ग्रहण करें॥६९॥

सम्मति–रससारपद्धतिकार ने स्वेदन, मर्दन और ऊर्ध्वपातन इसको ही मुख्य संस्कार कहा है यथा–"एतावदप्यशक्तः कर्तुं सूतस्य शोधनं मनुजः ॥ स्वेदनमर्दनमूर्ध्वपातनमेतत्त्रयं कुर्यात्" ।

सूतः क्षाराम्लमूत्रैर्वसनपरिवृतः स्वेदितोऽष्टौ च यामान्कन्यावह्नचर्कदुग्धैस्त्रिफलजलयुतैर्मर्दितः सप्तवारान् ॥
पादांशार्केण युक्तः समगगनयुतस्तुत्थताप्येन च स्यादूर्ध्वं पात्यस्त्रिवारं भवति च सततं सर्वदोषैर्विमुक्तः ॥७०॥

(टोडरानन्दः ५ रसेन्द्रकल्पद्रुम ६)

अर्थ–प्रथम पारद को वस्त्र में लपेट क्षार, अम्ल (निम्बू वगैरह) और गोमूत्र इनमें आठ पहर तक स्वेदन करे फिर घीग्वार का रस, थूहर का दूध, आक का दूध और त्रिफला काजल इनके साथ सात बार मर्दन करे। तदनन्तर पारद में चौथाई ताम्र मिलावे अथवा समभाग अभ्रक मिलावे या नीलाथोथा अथवा सोनामक्खी मिलावे फिर ऊर्ध्वपातनयंत्र में पातन करे। इस प्रकार तीन बार पातन करे तो पारद सब दोषों से रहित होता है॥७०॥

एतावतस्तु संस्कारान् कर्तुं सूतस्य न क्षमैः ॥ तान्मुख्यान्कियतः कृत्वा समर्थो रोगनुंत्तये ॥७१॥ दग्धोर्णागृहधूमसारजनीरक्तेष्टिकाकांजिकैः पिष्ट्वा व्योषकुमारिकानलरानिम्बूद्रवैकांजिकैः पिष्ट्वा व्योषकुमारिकानलवरानिम्बूद्रवैर्वासरम् । व्योषाद्यम्बुनि दोलया रचितया स्विन्नं सुताम्राघ्रियुक् पिष्टं भाण्डतलाज्जलाश्रयगतं सूतं समभ्युद्धरेत ॥७२॥ लवणसलिलदोलायन्त्रमध्ये दिनैकं भुजगनयनवन्ध्याभृंगकल्कान्तरस्थम् ॥ तदनुदहनतोये कांजिके स्वेदितः स्यात्सपटुमरिचशिग्रूण्युत्तमः श्रीरसेन्द्रः ॥७३॥ शतांशमुत्तमं हेम सूता सूते बिड़ावृत्तम् । चारयित्वाथ संस्वेद्य रसं जीर्णबलिं हरेत् ॥७४॥
(बृहद्योगतरङ्गिणी, १२०)

अर्थ–जो मनुष्य इन अठारह संस्कारो को नहीं कर सकते हैं वे कुछ इन मुख्य संस्कारों को करके रोगों को दूर करके के लिये समर्थ होते हैं। ऊन की भस्म, धूमसार, हलदी, लाल ईंट का चूरा और कांजी इनके एक दिन अथवा सोंठ, मिरच, पीपल, चित्रक, त्रिफला और नींबू का रस इनके साथ भी एक दिन मर्दन कर फिर पूर्वोक्त सोंठ आदि पदार्थो से युक्त नींबू के रस में स्वेदन कर चौथाई तांबे के साथ घोट अधःपातन या तिर्यक्पातन करे। सर्पाक्षी बांझककोड़ा और जलभंगरी इनके कल्क (पिष्टी) में पारे को रखकर नोंन के पानी में दोलायंत्र द्वारा एक दिन स्वेदन करे उसके बाद नोंन, मिरच, सैंजना और चित्रक इनको पीसकर कांजी में मिलाये फिर उसी कांजी में पारे को स्वेदन करे तो पारद उत्तम होता है। पारद से सौवां हिस्सा सुवर्ण मिलावे और उसमें बिड़ भी डाल देवे फिर उसको स्वेदन करे। सुवर्ण जारित पारद को निकाल लेवें॥७१–७४॥

रसोनराजिके पिष्ट्वा मूषायुग्मं प्रकल्पयेत् ॥ तत्र सूतं सुसंरुध्य स्वेदयेत्कांजिकैस्त्र्यहम् ॥७५॥ ततः कुमारिकानीरैर्मर्दयेद्वासरं रसम् ॥ चित्रकस्वरसैः पश्चाद्वासरं मर्दयेत्ततः ॥७६॥ काकमाचीद्रवैर्धत्त्रं वराक्वाथै–स्ततो दिनम् ॥ ततस्तेभ्यः समुद्धृत्य रसं प्रक्षाल्य कांजिकैः ॥७७॥ ततः खल्वे विनिक्षिप्य तदर्धं सैन्धवान्वितम् ॥ दिनैकं निम्बुनीरेण मर्दयेदपि वल्लभे ॥७८॥ ततः सूतसमानेतान्गृहीत्वा नवसादरम् । राजिकां च रसोनं च प्रिये चैतैस्तुषाम्बुना ॥७९॥ संमर्द्य चक्रिकां कृत्वा शोषयित्वा प्रलेपयेत् ॥ हिंगुना शोषयेत्पश्चादूर्ध्वपातनके न्यसेत् ॥८०॥ तां चक्रिकामधः स्थाल्यां पूरयेल्लवणेन हि । अधः स्थाल्यां ततो मुद्रां दत्त्वा दृढतराम्बुधः ॥८१॥ विशोष्य स्थापयेच्चुल्ल्यामधो वह्निं त्रियामकम् । दत्त्वा तीक्ष्णमुपर्यम्बु निस्सिञ्चेत्सुप्रयत्नतः ॥८२॥ स्वांगशीतं समुद्घाट्य तिर्यक्कृत्वा प्रयत्नतः ॥ अयोर्ध्वभांडसंलग्नं गृह्णीयाद्रसमुत्तमम् ॥८३॥ पश्चाद्वलप्रकर्षाय स्वेदयेद्दोल यंत्रके । सिन्धूत्थचूर्णगर्भस्थं वस्त्रे बद्ध्वोत्तमो रसः ॥८४॥

(अनुपानतरङ्गिणी ७४)

अर्थ–लहसुन और राई को पीसकर दो घरिया बनावे उसमें पारद को अच्छी तरह बांधकर कांजी में तीन दिन तक स्वेदन करे फिर घीगुवार के रस में एक दिन तक घोटता रहै। उसके बाद चित्रक के स्वर में एक दिन मर्दन करे। फिर उसके बाद एक दिन मकोय के रस में, एक दिन त्रिफला के रस में घोटे। तदनन्तर खरल में से पारे को कांजी से धोकर पारे से आधा भाग सैंधानोंन और पारद को खरल में डाल एक दिवस तक निम्बू के रस से घोट फिर पारद के समान ही नौसादर राई और लहसुन इन तीनों को लेकर पारे के साथ कांजी से गोल टिकिया बनाकर और सुखाकर हींग से लेप कर देवें। उस टिकिया को नीचे के बासन में रख ऊपर से हांडी गलाकर मुद्रा कर लेवे और सुखाकर चूल्हे पर रख तीन प्रहर तक तेज अग्नि देवें और ऊपर की

हांड़ी पर जल को सींचता रहै, जब अपने आप ठंढा हो जावे तब खोल कर और टेढ़ा कर अतियत्न से ऊपर के बासन से उत्तम पारद को निकाल लेवे फिर उसी पारद के बल बढ़ाने के लिये सेंधानोंन के चूर्ण में रख कपड़े में पोटली बांध दोलायंत्र में स्वेदन करे॥७५–८४॥

शोधन

एकेन लशुनेनैव शुद्धो भवति पारदः ।
समं सप्तदिनं पिष्टो दोषकंचुकिवर्जितः ॥८५॥

(छ० सं० २८)

अर्थ–पारद को तप्त खल्व में डालकर लहसुन के रस से सात दिन बराबर घोटता रहे तो पारद दोष और कंचुकों से रहित होकर शुद्ध होता है॥८५॥

मतांतर

एकेन लशुनेनैव तप्तखल्वे स्थितः सदा ।
सप्तसप्त दिनं पिष्टः शुद्धो भवति सूतकः ॥८६॥

(टोडरानन्दः)

अर्थ–पारद को तप्तखल्व में डालकर लहशुन के रस से इक्कीस दिन तक घोटता रहे तो पारद शुद्ध होता है॥८६॥

मतान्तर

एकेन लशुनेनापि शुद्धो भवति पारदः ॥ तप्तखल्वे मासमेकं पिष्टो लवणसंयुतः ॥८७॥ (योगतरंगिणी ५३, र० रा० सुं० ३५ र० रा० शं० ४ रस० प० ९)

अर्थ–पारद को तप्तखल्व में डालकर केवल नोंन और लहशुन के रस से एक मास पर्यंत लगातार घोटता रहै तो पारद अत्यन्त शुद्ध होता है॥८७॥

शोधन

रसोनमर्दितः सूतो नागवल्लीदले स्थितः ॥ सर्वदोषविनिर्मुक्तो योज्यः स्याद्रसकर्मसु ॥८८॥

(रसेन्द्रसारसंग्रहः)

अर्थ–पारद को तप्त खल्व में डालकर लहशुन के रस के साथ घोटे फिर उसको गोला बनाय नागरवेल के पान में रख कम से कम एक प्रहर स्वेदन करे तो पारद शुद्ध होता है और उसको समस्त रसकर्म में उपयुक्त करे॥८८॥

शोधन

रसस्य दशमांशं तु गंधं दत्त्वा प्रयत्नत ॥ जम्बीरोत्थद्रवं यामं पात्यं पातनयंत्रके ॥८९॥ पुनर्मर्द्यं पुनः पात्यं सप्तवारं विशुद्धये ॥ युक्तं सर्वस्य सूतस्य पुनः पात्यं सप्तवारं विशुद्धये ॥ युक्तं सर्वस्य सूतस्य तप्तखल्वे विमर्दनम् ॥९०॥
(रसमञ्जरी ४, कामरत्न २९४, र० रा० प० २६ रसेन्द्रसारसंग्रह ६)

अर्थ–पारद में दशमांश गंधक को मिलाकर जंभीरी के रस से एक प्रहर तक घोटकर ऊर्ध्वपातनयंत्र में उड़ा लेवे फिर मर्दन करना और पातन करना इस प्रकार सात बार पातन करे तो पारद शुद्ध होता है जिस जिस स्थल पर पारद का मर्दन लिखा है वहां पर तप्त खल्व द्वारा मर्दन किया समझना चाहिये॥८९॥९०॥

भूगर्तेऽजशकृत्तुषानलपुटैः संस्थापिते लोहजे खल्वे जृंभलकांजिकेन बलिना सार्द्धं दशांशेन सः ॥ संमर्द्यः परिपातयन्त्रविधिना निष्कासित सप्तधा शुद्धः पारदकर्मठैर्निगदि वैद्यरवद्येतरै ॥९१॥

(रसराजसुन्दर ३५, नि० र० २४, सा० प० ९)

अर्थ–धरती में गड्ढा खोदकर बकरी की मेंगनी और भुस की अग्नि पर रखे हुए लोहे के खरल में दशांश गंधक के साथ पारद को रखकर घोटे फिर ऊर्ध्वपातन यंत्र द्वारा उड़कर ग्रहण कर लेवे इस प्रकार सात बार करे तो पारद सर्वोत्तम शुद्ध होता है ऐसा शास्त्रों में लिखा है॥९१॥

हिदायत मुतअल्लिक सीमाब मयगन्धक (उर्दू)

गंधक और सीमाब मुसावी मिलाकर घोटकर बजरिये डौरूजंतर के तसईद किया जावे तो इस अमल से गंधक भी तसईद होती है और पारा भी जंतरमजकूर को अच्छी तरह कपड़े से साफ करके तसईद शुदाः को निकाल ले और पारे के जर्रार को कपड़े से छानकर और दबादबा कर अलहदा कर ले। (मुफ़हा अकलीमियां १४२)

शुद्ध पारद के अभाव में दरदाकृष्टपारद ग्रहण

शुद्धं रसेन्द्रं युंजीत सर्वकर्मसु सत्फलम् ।
दरदाकृष्टमथ वा नाशुद्धं योजयेत्क्वचित् ॥९२॥

(रसमानस[1])

अर्थ–सम्पूर्ण कर्मों में शुद्ध पारद का ही प्रयोग करे तो अच्छा फल होता है अथवा जहां शुद्ध पारद नहीं मिले वहां शिंगरफ से निकाले हुए पारे को लेना चाहिये अशुद्ध पारद का कहीं भी प्रयोग न करें॥९२॥

हिंगुलाकृष्ट पारदविधि

निम्बूरसेन संपिष्य प्रहरं दृढम् । उद्ध्र्वपातनयंत्रेण संग्राह्यो निर्मलो रसः ॥९३॥ (योगरत्नाकर ७७, र० रा० शं० ४)

अर्थ–हिंगुल (शिंगरफ) को नींबू के रस से पारद को एक प्रहर तक दृढ़ता से घोटकर डमरूयंत्र में उड़ा लेवें तो पारद निर्मल हो जाता है॥९३॥

हिंगुलाकृष्टपारदशोधन

निम्बूरसैर्निम्बपत्ररसैर्वा याममात्रकम् । पिष्ट्वा दरदमूर्ध्वं च पातयेत्सूत–युक्तितः ॥ ततः शुद्धतरं तस्मान्नीत्वा कार्येषु योजयेत् ॥९४॥ (रसराज ३२, र० रा० सुं० ३५, शार्ङ्गधर ३०८, नि० र० २८)

अर्थ–नींबू के रस से या नीम के पत्तों के रस से शिंगरफ को एक प्रहर तक घोट ऊद्ध्र्वपातन यंत्र में उड़ा लेवे फिर उस शुद्ध पारद को निकाल सब कामों में लावें॥९४॥

सिंगरफ से पारद निष्कासनविधि

दोहा

साधारणपारदविषे, संस्कार करवाय । सिंगरफके पारदविषे, पारो तथा निकसाय ॥१॥ सिंगरफ को पारद कहो, कौन रीतितैं होय । ताकी विधि कर्तव्यता, सबै कहतहैं सोय ॥२॥ या प्रसंग ही में कहूं डमरू दोलायंत्र । गंधक विष शोधन कहूं, और वालुकाजंत्र ॥३॥ सिंगरफ मुदंर द्वै पहर, नींबूरस पिसवाय । निबंपातरस डारिके, अथवा ले खरलाय ॥४॥ निम्बूपातरस ना कढै, तव जलदेय कढाय । ताके जवा बनायके, दीजै धूप सुखाय ॥५॥ फिर द्वै हांडी लेयके, नीके मुख घिसलेय । नीचेकी हांडी विषे, जवा फेर धरिदेय ॥६॥ कपरा माटी घोरिके, संधि बंद करलेय । ताको धूपसुखायके, चूल्हेपै धरिदेय ॥७॥ बारं बारं भिजोयके, कपरा ले बुधिवान । ऊपरकी हांडी विषे, फेरत रहै निवान ॥८॥ शिंगरफ को परमान है, षट पैसा भर देय । तीन प्रहर ताकी तरे, मध्यम आंच करेय ॥९॥ या विधि

---

[1]–शुद्धो भवति पारदः इत्यपि ।

डमरू जंत्रते, पारद लेय उड़ाय । उडनहार जे वस्तुते, या ही में उडवाय ॥१०॥ स्वांगशीत होवे जबै, हांडी पृथक् कराय। पारद ऊपर जो लग्यो, ताहि पोंछ निकसाय ॥११॥

(वैद्यादर्श १३)

शिंग्रफ की तसईद (पाराकुश्तः को) शिंग्रफ से जिन्दः निकालने की तरकीब (उर्दू)

शिंग्रफ को अर्क लैमूं में एक प्रहर तक खरल करे और दो जर्फ गिली के लबों को पत्थर घिस कर हमवार के दे ताकि उससे सांस और भाप वगैरः न निकल सके बादहू जर्फ मजकूर को गिले हिक्मत करके आग पर रख दे जसद खालिस जानिबवाला तसईद हो जायगा। सुफहा अकलीमियां १००)

हिंगुलाकृष्टरस

दरदं तण्डुलस्थूलं कृत्वा मृत्पात्रके त्रिदिनम् ॥ भाव्य जम्बीररसैश्चाङ्गेर्या वा रसैबहुधा ॥९५॥ ततश्च जम्बीरवारिणा चाङ्गेर्य्या रसेन परिप्लुतम् । कृत्वा स्थालीमध्ये निधाय तदुपरि कठिनी घृष्टम् ॥९६॥ उत्तानं चारुशरावं तत्र बारबारं जलं देयम् । उष्णे हेयं तथैव तदूर्ध्वपातनेन निर्मलः सूतः ॥९७॥ (रसेन्द्रसार संग्रह ९)

अर्थ–शिंगरफ के चावल के समान टुकड़े करके मिट्टी के पात्र में रख तीन दिवस तक जंभीरी के रस से या चूका के रस से अनेक बार भावना देवे फिर जंभीरी या चूका के रस में तर करके हांडी में रखें और उस पर हांड़ी को रखे जिसका मुख ऊपर को हो दोनों हांडियों के मुख को कपरौटी से बंद कर दे और ऊपर की हांडी में बराबर पानी भरता रहे अर्थात् जब पानी गरम हो जावे निकाल कर ठंडा पानी भर देवे इस प्रकार जो ऊपर की हांड़ी के पर्दे में जो पारद लग जाय उसको निकाल लेवे और आसपास जो मिट्टी लगाई जाती है उसको भी कपड़े में छान कर बार बार पानी या कांजी में धो डाले इस प्रकार निकले हुए शुद्ध पारद को सब कामों में लावे॥९५–९७॥

हिंगुलाकृष्टपारदविधि

अथवा हिंगुलात्सूतं ग्राहयेत्तन्निगद्यते । पारिभद्ररसैः पेष्यं हिंगुलं याममात्रकम् ॥९८॥ जम्बीराणां द्रवैर्वाथ पात्यं पातनयत्र के। तं सूतं योजयेद्योगे सप्तकंचुकवर्जितम् ॥९९॥ (कामरत्न २९३, रसदर्पण, टो० १७)

अर्थ–अथवा सिंगरफ से पारद के निकालने की रीति कहते हैं कि नीम के पत्तों के रस से या जंभीरी के रस से सिंगरफ को एक प्रहर तक मर्दन करे फिर पातनयंत्र से पारद को निकाल लेवें उन सातों कंचुकों से रहित पारे को सब काम में लावें॥९८॥९९॥

मतान्तर

पारिभद्ररसैः पेष्यं हिंगुलं याममात्रकम् । जम्बीराणां रसैर्वाथ पात्यं पातनयंत्रके ॥१००॥ तं सूतं योजयेद्योगे सप्तकंचुकवर्जितम् । संशुद्धिमन्तरेणापि शुद्धोऽयं रसकर्मणि ॥१०१॥

(रसेन्द्रसारसंग्रहः १०, रसरत्नाकर १६२, नि० र० २८)

अर्थ–नीम के पत्तों का रस या जंभीरी के रस से सिंगरफ को एक प्रहर तक घोटकर डमरू यंत्र में उड़ा लेवे उन सातों कंचुकों से रहित पारद को समस्त योगों में बर्ते क्योंकि यह पारद शुद्धिकर्म के बिना ही रसकर्म में शुद्ध माना गया है॥१००॥१०१॥

मतान्तर

दरदं निम्बुनीरेण दिनमेकं विमर्दयेत् । ऊर्ध्वपातनके यन्त्रे वह्निं दत्त्वा त्रियामकम् ॥१०२॥ स्वांगशीते समुद्घाट्य ह्यूर्ध्वलग्नं रसं नयेत् । पुनर्निम्बस्य निम्बोर्वा रसैर्यामं विमर्दितः ॥ कचुकैर्नागवंगाद्यैर्मुक्तः स्यात्पारदोत्तमः ॥१०३॥

(अनुपानतरंगिणी ७४)

अर्थ–सिंगरफ को नीबू के रस में एक दिन तक घोटे फिर डमरूयंत्र में रखकर तीन प्रहर की मृदु मध्य और तीक्ष्ण अग्नि देवे स्वांगशीतल होने पर ऊपर लगे हुए पारद को निकाले फिर नीम या नीबू के रस में एक प्रहर तक घोटे तो पारद नाग आदि कंचुकों से रहित होकर उत्तम शुद्ध होता है॥१०२॥१०३॥

मतांतर

अथवा ग्राहयेत्सूतं दरदात्तन्निगद्यते । कंचुकैर्नागवंगाद्यैर्विमुक्तो रसकर्मणि ॥ हिंगुलाकृष्टसूतस्तु जीर्णगंधसमो गुणैः ॥१०४॥

(र० रा० शं० ४ नि० र० २८)

अर्थ–अथवा पारद को सिंगरफ में से निकाले तो नाग, बंग आदि सब कंचुकों से रहित होता है। हिंगुल से निकाला हुआ पारद गंधक जारित पारद के समान होता है॥१०४॥

सम्मति–उपयुक्त क्रिया रसराज शंकर की है और निघंटुरत्नाकर वाले ने भी उसीसे लिया है कारण कि, जैसे अधूरी क्रिया रसराज शंकर में लिखी है वैसी ही निघण्टुरत्नाकर में लिखी है इसकी पूरी क्रिया इस ग्रंथ में रससारपद्धति से गृहीत कर आगे लिखते हैं।

हिंगुल से रसाकृष्टि

अथवा ग्राहयेत्सूतं दरदात्तं निगद्यते । निम्बूरसेन संपिष्य प्रहरं दरदाद्दृढम् ॥१०५॥ निम्बपत्ररसैर्वापि जंबीराद्भिरथापि वा । ऊर्ध्वपातनयंत्रेण तद्ग्राह्यो निर्मलो रसः ॥१०६॥ कंचुकैर्नागवंगाद्यैर्विमुक्तो रसकर्मणि । हिंगुलाकृष्टसूतस्तु जीर्णगन्धसमो गुणैः ॥१०७॥

(बाग्भटः, र० सा० प०)

अर्थ–अथवा सिंगरफ से पारद के निकालने की युक्ति को वर्णन कहते हैं कि हिगुल को एक प्रहर तक नीबू के रस से, नीम के पत्तों के रस से खूब घोटे फिर ऊर्ध्वपातन यंत्र में निर्मल पारद को ग्रहण कर लेवे तो पारद नाग, बंग आदि कंचुकों से रहित हुआ रसकर्म के योग्य होता है हिंगुल से निकला हुआ पारद गंधकजीर्ण पारद के गुणों के तुल्य होता है॥१०५–१०७॥

हिंगुलाकृष्टरस की शुद्धि

अथवा दरदाकृष्टं स्विन्नं लवणाम्बुभाजिदोलायाम् । रसमादाय यथेच्छं कर्तव्यस्तेन भेषजो योगः ॥१०८॥ (योगरत्नाकरः ७७, नि० र० २९, र० रा० शं०, र० सं० सा० प० ९)

अर्थ–अथवा हिंगुल से निकले हुए पारद को नोंन के पानी से भरे हुए दोलायंत्र में स्वेदन कर निकाल लेवे वैद्य उसका सब औषधियों का प्रयोग करे॥१०८॥

मतान्तर

योज्यः साम्बुपुटौ स्विन्नः पूर्वाभावे भिषग्वरैः ॥१०९॥

(योगतरंगिणी ५६)

अर्थ–जल में घुले हुए नोंन को दोलायंत्र में भरकर पारद को स्वेदन करे तो पारा शुद्ध होता है यह क्रिया हिंगुलाकृष्ट पारद के नहीं मिलने पर वैद्यों को करनी चाहिये॥१०९॥

रस की हिंगुलाकृष्टविधि

अथवा हिंगुलात्सूतं ग्राहयेत्तन्निगद्यते । जम्बीरनिम्बुनीरेण मर्दितो हिंगुलो

दिनम् ॥११०॥ ऊर्ध्वपातनयंत्रेण ग्राह्यः स्यान्निर्मलो रसः कंचुकैर्नागवंगाद्यै- र्निर्मुक्तो रसकर्मणि । विना कर्माष्टकेनैव सूतोऽयं सर्वकर्मकृत् ॥१११॥ (रसेन्द्रसारसंग्रहः ॥८, र० रा० सुं० ३४)

अर्थ–अथवा सिंगरफ से पारद के निकालने को कहते हैं कि सिंगरफ को नींबू या जंभीरी के रस से एक दिन मर्दन करे फिर ऊर्ध्वपातनयंत्र में रखकर उड़ा लेवे तो वह पारद नाग, बंग आदि कंचुकों से रहित होकर रसकर्म के योग्य होता है तथा आठ संस्कारों के बिना किये हुए भी समस्त कर्म के उपयोगी होता है॥११०॥१११॥

सम्मति–सिंगरफ से निकले हुए पारद का कदर्थन होता है और कदर्थन से पारद में नपुसकता पैदा होती है उस नपुसंकता के दूर करने के लिये और अधिक बल पैदा करने के वास्ते सैंधव सहित जल भरे हुए दोलायंत्र में स्वेदन करे अथवा बाझककोड़ा मर्याक्षी माम्हार भरा नीम इनको कांजी में घोलकर देवे फिर उसमें पारद को एक दिवस तक स्वेदन करे तो पारद नपुसंकता से रहित होता है यही बात रसरत्नप्रदीप में लिखी है "पातैस्त्रिभिः सूतकर्थनं वै भवेत्तथा हिंगुलकृष्टतोऽपि ॥ कदर्थनेनैव नपुंसकत्वमेवं भवेदस्य रसस्य पश्चात् ॥१॥ बलप्रकर्षाय च दोलिकायां स्वेद्या जले सैंधवचूर्णगर्भे ॥ वंध्यां हि नेत्रांबुजमार्कवाणां सतिक्तकानां दिवसं द्रवैक्ये ॥२॥"

दरदाकृष्टरस की शोधनावश्यकता

रसगंधकसंभूतं हिंगुलं प्रोच्यते बुधैः । तस्मात्सूतं च यद्ग्राह्यं शोध्यं तदपि सूतवत् ॥११२॥

(टो० १७, र० रा० सुं० ६६)

अर्थ–पण्डित मनुष्य सिंगरफ को पारद और गंधक से बना हुआ कहते हैं इसलिये सिंगरफ से जो पारद निकाला जाता है उसको साधारण पारद के समान शुद्ध करना चाहिये॥११२॥

सिंग्रफ से सीमाव निकालने की अफ्ताबी तरकीब (उर्दू)

दूसरा तरीका अफ्ताबी यह है कि शिंग्रफ को किसी मछली के पित्ते में अच्छी तरह सहक करे बादह अर्कलेमूं में सहक करे और किसी बर्तन आहनी ख्वाह चीनी ख्वाह शीशी में रखकर धूप में टेढ़ा करके मूकाबिल रखे सीमाव सिंग्रफ से जुदा हो जायेगा। (सुफहा अकलीमियां १०१)

शिंग्रफ से बगर आंच के सीमाव निकालने की तरकीब (उर्दू)

अगर शिंग्रफ आब गलगलमें¹ खरल करके फिर शिंग्रफ को गल गल में डाल कर गर्म जगह में रखें तो पारा निकल आवेगा (सुफहा ७२ कुश्तैजात हाजरी)

रोहू मछली का प्रभाव पारद पर (उर्दू)

सीमाव को पित्तारोह में सहक करने से सफाई बहुत जल्द होती है और अगर सहक वलेग किया जावे तो मुनअक्किद हो सकता है॥ (सुफहा किताब अकलीमियां ५१)

सीमाव के परों के नाम (उर्दू)

सीमाव के परों के नाम हस्वजैल हैं–१ धूम यानी धूआं २ कप यानी लरजिश, ३ चर यानी खुरिश, ४ अचर यानी गैर खुरिश, ५ ऊप यानी तेजी, ६ कोप यानी गुस्सा, ७ संचार यानी गवासी। और हर एक पर एक एक जसद और एक एक सितारे से मनसूब है जो पर कि तिला व नुकरः या शम्स या कमर से मन्सूब है वह बदस्तूर हर अमल में रहने देना चाहिये क्योंकि तिला व नुकरा खुद पाक है। लिहाजा इनसे मन्सूबः पर भी पाक है। बाकी पांच पर पांचों अजसाद के वास्ते मौहर्रिक है इनके बाकी रहने से न अकसीर सीमाव अजसाद के रहने के काम आती है और न खाने में कोई नफी रखती है। अगर अकसीर तिला बनाना मंजूर है तो पक्षघात यानी अमल रावअ के बाद धूप, कंप, चर और और कोप को दूर करे और अचर, उप, सञ्चार को रहने दे। अगर चांदी बनाने की ख्वाहिश है तो धूम, कंप, चर, उपको दूर करे। और कोप, चर, संचार को बाकी रखें। अगर गुटका बनाना मकसूद है तो धूप, कंप, चर, संचार को दूर करे। और अचर, उप, कोप को निगाह रखें। अगर खाने और कुव्वत बदन के वास्ते इस्तैमाल करना मंजूर हो तो कप, अचर, कोप को दूर करे। और धूप, चर, उप को रहने से अगर इन उसूल को वे समझे बूझे अमल करेगा तो हरगिज दुरुस्त न होगा और बातिल हो जायगा। (सुफहा अकलीमियां १५०–१५१)

शंका–ठीक समझ में नहीं आता कि परों से मुराद को चलीने है या गती से है या अभ्रक जारण में जो अग्नि पर रखने से पारद की दशा होती है उससे मुराद है।

खाने के वास्ते सीमाव से केंचली मुखालिफ दूर करने की तरकीब (उर्दू)

सीमाव को १ ईंट, २ राई, ३ जौहरा ताऊस या जौहरा मेष, ४ शीरा दरख्त आक में बदस्तूर खरल करे। (सुफहा अकलीमियां १५८)

अमल खालिस सीमाव से केंचली मुखालिफ दूर करने और केंचली मुवाफिक इस्तवार करने की तरकीब जिसको स्तलाहहुक्मा में मुतफिकउल अमल कहते हैं (उर्दू)

१ खिश्त जर्द	७ शीरा बेखकौआठोढी
	८ शीरा धतूरा स्याह
२ शीरा चौलाई	९ शीरा मुलहठी
३ आब नमक	१० शीरा पतालगरुडी
४ आब चूना	११ शीरा बकन
५ आब सज्जी	१२ शीरा बकाई स्याह
६ शीरा केवांच	

पहली तदबीर अमल शमसी के वास्ते केंचली मुखालिफ सीमाव से दूर करने की यह है, कि अशियाय जल में दो पहर तक खुश्क करे बाद उसके आठ प्रहर शीरा गोमा का चोया दे जिसमें खरल करने से खराब केंचलिया जो दूर हो गई हैं फिर न ऊद कर आवें और मुवफिक केंचली बाकी कायम रहें क्योंकि मुमकिन है कि किसी मुखलिफ बूटी में खरल करने या चोया देने से केंचली मतलूबः जायः हो जावें और अमल नातमाम रहे। (सुफहा अकलीमियां १५१)

अमल कमरी के वास्ते सीमाव से केंचली मुखालिफ दूर करने की तरकीब (उर्दू)

मुफस्सिल जैलः अजजाइ बूटियों में सहक करे सहक बतौर पुट आफ्तबी के देना चाहिये सीमाव कमरी हो जायगा।

१ शीरा सहँजना
२ शीरा भांगरा
३ आब बेखनीब
४ कांजी
५ सिरकः तुर्शगुकत्तर
६ माइडल खालह
७ लेनुलगदरा
८ वर्गतंबूल
९ ईंट

१–गलगल पंजाबी में अमलवेत को कहते हैं।

चाहिये कि सीमाव मजकूर को शीरा सहँजने में बेख सहँजने के डंडे से खरल करे और शीरा भांगरा और काजी और सिरकःतुर्श में अलहदा अलहदा बेखनबि के डंडे से खरल करे माइ१ उल हवालिद से वह तेजाब मुराद है जो अंडों के छिलकों और नौसादर को महलूल करके बनाया जाता है और इन दोनों की तरकीबें बाब अव्वल में तकतीर व तकलीस के बयान में मिलाकर सहक करे सहक करने के बाद शीरा गोमा का आठ पहर चोया दे ताकि केंचली मुखलफिका असर न रहे और केंचली मुवाफिकका असर जाइल न हो। (सुफहा अकलीमियां १४५-१५५)

गुटका बनाने के वास्ते सीमाव से केंचली मुखालिफ दूर करने की तरकीब (उर्दू)

बुरादः खिस्त नीम पुख्तः में कांजी या सिरकः मुकत्तर या अर्क वर्ग तम्बूल डाल डाल कर दरख्त नींब के डंडे से या सँहजने की जड़ से या जकूम बेखार यानी छीमियां थूहर की नरम फली से जो दरख्त मजकरःबाला में केला की फली की तरह लगी होती है खरल को और खरल बदस्तूर दो पहर दिन तक करे और दोपहर से शाम तक धूप में खुश्क करे और दूसरी बूटी के शीरा और दूसरी लकड़ी के दिस्ते से खरल न करे इस वास्तेकि अमल ठीक उतरे या नहीं यानी जिस केंचली को बाकी रखना मंजूर है वह मुमकिन है कि दूसरी लकड़ी में खरल करने से दूर हो जावे। (सुफहा अकलीमियां १५६)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यास ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायां साधारणशोधनं नाम त्रिंशोऽध्यायः ॥३०॥

अथ पारदमारणाध्यायः ३१

अथपारदभस्मक गुण

यावन्न हरबीजं तु भक्षयेत्पारदं मृतम् ।
तावत्तस्य कुतो मुक्तिर्भोगाद्रोगाद्भवादपि ॥१॥

(रसराजसुंदर)

अर्थ–मनुष्य जब तक भस्म किये हुए शिवबीज पारद को नहीं खाता है तब तक भोग रोग और संसार या जन्ममरण से उस मनुष्य की मुक्ति (छुटकारा) नहीं होती है॥१॥

अथ मृतपारदलक्षण

अतेजा अगुरुः शुभ्रो लोहहाऽचंचलो रसः ॥
यदा नावर्त्तयेद्वह्नौ नोर्ध्वं गच्छेत्तदा मृतः ॥२॥

(रसराजशंकर)

अर्थ–जब कि पारद चमक रहित हो, हल्का हो, सफेद हो, धातुओं का खानेवाला और चंचलता रहित होकर आंच में चक्कर न खावे और उड़े भी नहीं तब पारद को मरा हुआ समझना चाहिये॥२॥

दूसरा लक्षण

अगुरुरतेजाः शुभ्रो वह्निस्थायी स्थिरो धूमः ॥
हेमादिधातुभोक्ता तत्कर्ता स्यान्मृतः सूतः ॥३॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–जो पारद भारी व चमकीला न हो, आंच में न उड़नेवाला चंचलतारहित सुवर्ण आदि धातुओं को खानेवाला या सुवर्ण आदि धातुओं को करनेवाला हो उसको मृत पारद कहते हैं॥३॥

सीमाव के मुख्तः कुश्ता की शनाख्त (उर्दू)

अर्थ–आल. शनाख्त कुश्ता पुख्तः सीमाव की यह है कि वह अकसीर अजसाद हो "जो रंगी माया वही रंगी काया" इसी वजह से मशहूर मसल है, ऐसा हालत में जो मिकदार अजसाद पर तरह करने की मुअय्यन है नहीं, कदर खुराक होती है। नं० १ कुश्त अरबाहु के अमूमन और कुश्ते सीमाव का खुसूसन आग पर कायमुल्नार होता है और धुंआ नहीं देता। अगर यह भी न हो तो हरगिज न खाना चाहिये। न० २ कुश्ता के खाते ही उसका सुरी नफा जाहर होता है और भूख लगती है और उसके बाद नऊज और कुव्वत बाह पैदा होती है। अगर यह बात जाहर न हो और मुफर्रत भी न हो तो जानना चाहिये कि कुश्ता के जौहर सोख्त हो गये और अगर मुफर्रत भी न हो तो जानना चाहिये कि कुश्ता के जौहर सोख्त हो गये और अगर मुफर्रत हो तो नीमपुत्वह की दलील है। (सुफहा ३०२ अखबार अलकीमियां)

रसभस्म रखने के लिये पात्र

वंशे वा माहिषे श्रृंगे स्थापयेत्साधितं रसम् ॥४॥

(रसेन्द्रचिन्तामणि)

अर्थ–जब विधिपूर्वक पारद सिद्ध हो जाय तब उसको बांस की नली में या साफ किये हुए भैंस के सींग में रखना चाहिये॥४॥

सम्मति–पहले समय में कांच की अथवा चीनी की शीशियां नहीं मिल सकती थीं, इसलिये रसेन्द्र चिन्तामणि कारने शीशियों का नाम नहीं लिखा है परन्तु आजकल कांच की शीशियां बहुत मिलती हैं, इस वास्ते उनमें ही सिद्ध रसादिकों को रखना चाहिये।

अकसीर सीमाव नाकिस की तासीर (फार्सी) (षंढ पारद प्रभाव)

बा इस्तैमाल सीमावे कि बाद अज खुर्दन ओहेच खासियत जाहर न गर्दद चुनाचः खुश्की गुलू व खारिश दस्त दस्तहा वकमी इश्तहा सिवाइ अजीदीगर मुतलक तासीर जाहर न गर्दद न गर्मी व न इश्तहा पसविद्यनन्द कि हेच मसालह बर्दी नमान्दः वहम. सोख्तः शुदः अस्तः तासीर नमेबख्शद। (सुफहा ११ छोटी किताब या किताब जवाहर उलसिनात नुसखे में सिद्ध रस)

सीमाव के कुश्ता नीमपुख्तः खाने के नतायज (उर्दू)

खाने में अहतिराक पैदा होता है, बदन का रंग नहासी हो जाता है। जजामी कैफियत तारी होती है। आंवलावदन से और जिस्म में बरम हो जाता है। अगर आरजी इलाज से सेहत भी हुई तो बाज औकात फेंकड़ा नाकिस हो जाता है और सिल व नफत उलदम के अवारिज नाहक होते हैं। लिहाजा जैल के मुजर्रिब और फौरी इलाज लिखे जाते हैं। (सुफहा ३०४ किताब अलकीमियां)

खाम कुश्ता सीमाव के जिस्म से खारिज करने की तरकीब (उर्दू)

नौआदीगर पंचांग दरख्त नील मुसल्लिम को लेकर टुकड़े टुकड़े करके

१–मुतर्रांज्जम–गाइउं खालिहद तेजाब शोरा वगैर को कहते हैं लेनुलगदरा से यहां पर मुराद उस पानी से है कि जो गुर्दार सन और नमक सज्जी से बनाया जाता है।

पानी में जोश दे। बादह् छानकर आधे आधे घंटे के बाद एक एक प्याला मिलावे। सीमाब पेशाब की राह से बह जावेगा। मुजर्रिब है। (सुफ्हा ३०३ किताब अलकीमियां)

खास कुश्ता सीमाब को जिस्म से खारिज करने की तरकीब (उर्दू)

नौआदीगर शीरा बर्गमिसी जिसको कागज़ुंबा कहते हैं निकालकर तीन तोले से लेकर आधपाव तक सात आठ स्याह मिर्च मिलाकर आध पाव पानी शामिल करके छान ले। बादहू पिला दे। चौदह दिन में सेहत हो जाती है और अगर जल्द जाहर पुर असर अहतिराक खून का हो रोगनतुख्म कुद्दू तलख की मालिश करे. सेहत कामिल हो जायेगी। (सुफ्हा ३०३ किताब अलकीमियां)

सीमाब को बदन से खारिज करने की तरकीब (फार्सी)

तदबीर कसोकि जीवक खुर्दः बाशद व बसब आंशकाक व जराहात हमररसीदः बाशद ओं अस्त कि विगीरन्द शीरः हब्बुलकतन मिकदार यक आसार व वरक सिक्कः काई कि ग्राही अस्त हिन्दी दर आंमालीद साफकर्दः सहरोज बियाशामन्द व मेगोयन्द कि ईदवा अखराज मेनुमायंन्द सीमावरा अज मबरबोल बहुमचुनी शस्तन दस्तोपाइ और आबाव मजबूख पोस्त दरख्त पीपल कि पंज आसार आरां दरदह आसार आज विजोशानन्द ता विनस्फ रसद व गुफ्तः अन्द कि ईतदबीर जहत बाद फरंग नीजंनाफः अस्त। (सुफ्हा २४१ किताब जिल्द दायमकरा वा दीनकबीर)

सदोष पारदमारण का निषेध

युक्त द्वादशभिर्दोषैर्यश्च हन्याद्रसेश्वरम् ॥ ब्रह्महत्यादि का हत्या भवेत्तस्य पदे पदे ॥५॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–जो वैद्य या साधारण जन बारह दोषों से संयुक्त पारद को भस्म करता है उसको एक एक पेंग पर ब्रह्हत्यादिक हत्या होती है।।५।।

अन्यच्च

सदोषो भस्मितो येन योजितं योगकर्मणि ॥
स भिषक् पतते नरके यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥६॥

(रसराजसुन्दर, नि० र०)

अर्थ–जिस मनुष्य ने दोष सहित पारद को भस्म किया है और बनाकर रसादिकों में भी प्रयोग किया हो वह मनुष्य सूर्य चंद्रमा की स्थिति पर्यत नरक में पड़ता है।।६।।

निर्दोष पारद मारण की आज्ञा

मुक्तं द्वादशभिर्दोषैर्यस्तु हन्याच्छिवात्मजम् ॥ ऐहि के स तु पूज्यः स्यात्परत्र स्वर्गतो भवेत् ॥ गुणप्रच्छादकाः सप्त कंचुका पारदे मताः ॥७॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–जो मनुष्य बारह दोषों से रहित पारे को भस्म करता है वह इस लोक में पूजनीय होता है और मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग लोक को जाता है, पारद शुद्ध करने का कारण यह है कि पारे में स्वयं गुण के नाशक सात कचुक माने गये हैं।।७।।

अशुद्ध और अबीज पारद मारण का निषेध (शिवागम से)

योऽशुद्धं घातयेत्सूतं निर्बीजं वाय मानवः ॥ ब्रह्महा स दुराचारी मम द्रोही महेश्वरि ॥८॥

अर्थ–जो वैद्य अशुद्ध या बीज रहित पारद को भस्म करता है, हे पार्वती! वह दुष्ट ब्रह्म हत्यारा मेरा शत्रु होता है।।८।।

पारदमारण निषेध

गुरुशास्त्रे परित्यज्य विना जारितगंधकात् ॥ रसं निर्माति दुर्मेधाः शपेत्तं परमेश्वरः ॥९॥

(बृहद्योगतरङ्गिणी, नि० र०)

अर्थ–जो निर्बुद्धी लोग गुरु तथा शास्त्र की प्रक्रिया को छोड़कर और गंधकजारण न करके पारद की भस्म करता है उसको श्रीमहादेव जी शाप देते हैं।।९।।

सुवर्णयुक्त पारद की आज्ञा

औषधीघातितः सूतो यदा भूयो न जीवति ॥ न तु क्रामति लोहेषु न च कुर्याद्रसायनम् ॥१०॥ तस्मात्सुवर्णादियुतं मारयेद्रससभैरवम् ॥११॥

(टोडरानंद)

अर्थ–औषधियों द्वारा मारा हुआ पारद फिर जीवित नहीं होता है और वह धातुओं में प्रवेश नहीं करता. रसायन का कर्ता भी नहीं होता है इसलिये सुवर्णयुक्त पारद को भस्म करना ही उचित है।।१०।।११।।

जड़ी द्वारा मारे हुये पारे के गुण

मूलिकामारितः सूतो जारणाक्रमवर्जितः ॥ न क्रमेद्देहलोहाभ्यां रोगहर्ता भवेद्ध्रुवम् ॥१२॥

(रसरत्नाकर०, टो० नं०)

अर्थ–जारणक्रम को छोड़कर केवल जड़ियों से पारद को मारते हैं तो वह पारद केवल देह और धातु में प्रवेश न होकर रोगों को ही नाश करता है।।१२।।

दूसरा प्रमाण

रसौषधीमृतः सूतो गंधकादिविवर्जितः ॥ न देहे नैव लोहे स क्रमते किन्तु रोगहा ॥१३॥

(रसमानस)

अर्थ–गंधादिकों से रहित पारद को केवल जड़ी से ही भस्म करे तो वह पारद देह तथा लोह में प्रवेश नहीं करता है किन्तु रोगों का नाशक अवश्य है।।१३।।

पारे का मारण नहीं होता किन्तु महामूर्च्छा होती है।

निर्जीवत्व गतः सूतः कथं जीव ददाति सः ॥ निर्जीवेन तु निर्जीवः कथं जीवति शंकरः ॥१४॥ परस्य हरते कालं कालिकारहितस्तथा ॥ अष्टानां चैव लोहानां मलं शमयति क्षणात् ॥१५॥ महामूर्च्छागतं सूतं को वापि कथयेन्मृतम् ॥ दिव्यौषधिरसेनैव जायते नष्टचेतनः ॥ कालिकारहितश्चापि आधिं व्याधिं विनाशयेत् ॥१६॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–जो पारद स्वयं मरा हुआ है वह फिर कैसे जीवित कर सकता है क्योंकि हे शिवजी महाराज! निर्जीव पारद से जीवित नहीं हो सकता है। शिवजी बोले–हे पार्वती! जिस प्रकार पारद आठ रोगों के मैल को शीघ्र ही

नाश कर देता है, उसी प्रकार कालिका दोष से रहित किया हुआ पारद काल को भी हर लेता है। महामूर्च्छा में प्राप्त हुए पारद को मरा हुआ कौन कह सकता है। कारण उसका यह है पारद दिव्यौषधियों के योग से चैतन्य रहित हो जाता है और कालिका रहित पारद आधि (मन के रोग) व्याधि (शरीर के रोग) को नाश करता है।।१४–१६।।

भस्म के वर्ण

श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं चेति चतुर्विधम् ।। सूतभस्म प्रयोक्तव्यं यथा व्याध्यनुपानतः ।।१७।।

(आयुर्वेदविज्ञान)

अर्थ–सफेद लाल पीली तथा काली इस प्रकार चार तरह की पारदभस्म को रोगों के अनुमान के साथ देनी चाहिये।।१७।।

और भी

श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं चेति चतुर्विधम् ।। लक्षणं भस्म सूतस्य श्रेष्ठं स्यादुत्तरोत्तरम् ।।१८।।

(रसरत्नाकर, रसेन्द्रसारसंग्रह)

अर्थ–सफेद लाल पीली और काली इस तरह ४ प्रकार की पारे की भस्म है, इसमें एक दूसरे से अधिक अधिक गुणवाली है।।१८।।

अथ मारकवर्ग

ब्रह्मदण्डी मेघनादश्चित्रकं कटुतुम्बिका । वज्रवल्ली बला कन्या त्रिकंटार्के स्नुहीपयः ।।१९।। कन्दो रम्भा च निर्गुंडी लज्जा जाती जयन्तिका । विष्णुक्रान्ता हस्तिशुण्डी दद्रुघ्नो भृंगराट् पटुः ।।२०।। गुडूची लांगली नीरकणा काली महोरगा । काकमाची च दन्ती च एताः पारदमारकाः ।।२१।। व्यस्ताः समस्ता वा सर्वा देया ह्यष्टदशाधिकाः । उक्तस्थाने प्रयोक्तव्या रसराजस्य सिद्धये ।।२२।।

(कामरत्न)

अर्थ–ब्रह्मदण्डी, चौलाई, चित्रक, कड़वी, तोंबी, हडसंहारी, खरटी, घीग्वार, गोखरू, आक, सेहुंड का दूध, जमीकन्द, केले की जड़, निर्गुण्डी, छुईमुई, जायफल, जयन्तिका (हलदी), कोयल, हाथीशुण्डा, पवांड, भंगरा, करेला, गिलोय, कलिहारी, या गंगारिया जलपीपल, काली (बिछुआ घास), तगर, मकोय, दतोन, ये पारदेश्वर को मारनेवाली औषधियां है। इन सबको या पृथक् पृथक् जिस स्थान में कहा हो पारद की सिद्धि के लिये देना चाहिये। ये सब दवाई अट्ठाईस हैं।।१९–२२।।

रसमारकवर्ग

अस्मिन्प्रकरणे वक्ष्ये शुद्धसूतस्य मारकाः । औषध्यस्ताः समस्ता वा व्यस्ता वा सिद्धसम्मताः ।।२३।। गंधं विनापि याः सूतं घ्नन्त्येव कृपया गुरोः । मेघनादो वचा वल्ली देवदाली च चित्रकम् ।।२४।। बला शुण्डी जयन्ती च कर्कोटी च पुनर्नवा । कटुतुम्बी कन्दरम्भा लशुनं गजशुण्डिका ।।२५।। कोशातक्यमृताकन्दकन्यकाचक्रमर्दकम् । सूर्यावर्तः काकमाची गुंजा निर्गुण्डिका तथा।।२६।। लांगली सहदेवी च गोक्षुरं काकतुण्डिका । जाती लज्जालुपटुके हंसपादभृंगराजकम् ।।२७।। ब्रह्मबीजं च भूधात्री नागवल्ली बरी तथा । स्नुह्यर्कदुग्धं तुलसी धत्तूरो गिरिकर्णिका । गोपालांकोठकाद्याश्च सन्त्यन्याश्च महौषधीः ।।२८।।

(रसमानस)

अर्थ–अब मैं यहां पर शुद्ध पारद के मारनेवाली औषधियों को कहूँगा, वे औषधियां पारद मारने के लिये पृथक् पृथक् अथवा समस्त मिलाकर सिद्धसम्मत हैं जो कि गंधक के बिना ही गुरु की कृपा से पारद को मारती है, चौलाई, हडसंहारी, देवदाली (बन्दाल), चित्रक, खरेटी, सोंठ, जयन्ती ककोड़ा, सोंठ की जड़, कड़वी तोंबी, केले का कंद, लहसन, हाथीशुण्डा, गलकातोरई, गिलोय, जमीकन्द, घीगुवार, पमार, सूयावर्त[1] (एक प्रकार का शाक), मकोय, चौंटनी, निर्गुण्डी, कलिहारी, सहदेवी, गोखरू, कौआठोड़ी, जायफल, छुईमुई, करेला, हंसराज, भंगरा, ढाक के बीज, भुंई आमला, पान, त्रिफला, थूहर और आक का दूध, तुलसी, धतूरा, कोयल, कालीसर, अंकोल इनसे और भी कई महौषधियां हैं।।२३–२८।।

मारक वर्ग

अथैता मूलिका वक्ष्ये शुद्धसूतस्य मारणे । ब्रह्मदण्डीवला शुण्ठी कटुतुम्ब्यर्धचन्द्रिका ।।२९।। विषमुष्टचर्कलाक्षाश्च गोक्षुरः काकतुण्डिका । वज्रवल्ली मेघनादश्चित्रकस्तृणमुस्तिका ।।३०।। कन्या चाण्डालिका कन्दसर्पाक्षी शरपुंखिका । बस्ता रक्तांगनिर्गुण्डी लज्जालुर्देवदालिका ।।३१।। जाती जयन्ती वाराही भूकदम्बकुरण्टकम् । कोषात की नीरकणा लांगली सहदेविका ।।३२।। चक्रमर्द्दोऽमृता कन्दं काकमाची रविप्रिया । विष्णुक्रान्ता हस्तिशुण्डी स्नुक्पयो भृंगराट् पटुः । इत्येता मूलिकाः ख्याता योज्याः पारदमारकाः ।।३३।।

(रसरत्नाकर)

अर्थ–अब हम शुद्ध पारद के मारने के लिये जड़ियों को कहते हैं। ब्रह्मदंडी, खरैटी, सोंठ, कड़वी, तोंबी, कनफोड़ा, कुचला, आक, लाख, गोखरू, कौआठोड़ी, हडसंहारी, चौलाई, चीता, तृणमुस्तिका, घीग्वार, चंडालकंद, सर्पाक्षी, सरफों का, वस्ता, कबीला, निर्गुण्डी, छुईमुई, दंदाल, जायफल, जयन्ती, बाराहीकन्द, अजमान, पीली, कटसरैया, गलकातोरई, जलपीपल, कलिहारी, सहदेवी, पमार, जमीकंद, मकोय, हुलहुल, विष्णुक्रान्ता, हाथीशुंडा, थूहर का दूध, भंगरा, करेला, ये जड़ियां पारद के मारनेवाली कही हैं।।२९–३३।।

अथ मारकवर्ग

घनवचचित्रकगोक्षुराः कटुतुम्बी दन्तिका जाती। सर्पाक्षी शरपुंखा कन्या चाण्डालिकाकन्दम् ।।३४।। विषमुष्टिवज्रवल्ल्यौलज्जालुर्देवदालिकालाक्षा । सहदेवी नीरकणा निर्गुंडी चक्रलांगलिके।।३५।। मानकश्चन्दरेखा रविभक्ता काकमाचिका चार्कः । विष्णुक्रांता बायसतुण्डी बज्री बला च शुण्ठी च ।।३६।। कोषातकी जयन्ती वाराही हस्तिशुण्डिका रम्भा । मत्स्याक्षी यमचिञ्चा द्वे हरिद्रे पुनर्नवाद्वितयम्।।३७।। धुस्तूरकाकजंघा शतावरी कंचुकी च धन्या च । तिलभेकपार्णिके च दूर्वा मूर्वा हरीतकी तुलली ।।३८।। गोकण्टकाखुपर्ण्यो कर्कोटी बंधुवर्णलता चामूलषी हिंगुगुडूची शिग्रुगिरिकर्णिका महाराष्ट्री ।।३९।। मार्कवसैंधवसरणी सोमलता श्वेतसर्षसो लशुनम् । हंसपदी व्याघ्रपदी किंशुकभल्लातकन्द्रवारुणिकाः ।।४०।। सर्वं चार्द्धांशं वा अष्टादशोधिका वापि द्रव्यम्।रसमारणमूर्च्छादौ च युक्तिज्ञैर्विधिवदुपयोज्यम् ।।४१।।

(रसेन्द्रसारसंग्रह)

अर्थ–नागरमोथा, वच, चीता, गोखरू, कड़वी तोंबी, दतोन, जायफल, सर्पाक्षी, शरपुंखा, घीग्वार, चंडालकंद, कुचला, हडसंहारी, छुईमुई, बंदाल, लाख, सहदेवी, जलपीपल, निर्गुडी, पमार, कलिहारी, मानकंद (जैपुर के अजायबघर में है) बावची, हुलहुल, मकोय, आक, विष्णुक्रान्ता, कौआठोढ़ी, थूहर, खरेटी, सोंठ, गलकातोरई, वरना, बाराहीकन्द, हाथीशुण्डा, केला, मछेछी, चौंटनी, दोनों हलदी, वरना, बाराहीकन्द, हाथीशुण्डा, केला, मछेछी, चौंटनी, दोनों हलदी, सोंठ, धतूरा, काकजंघा (मसी), शतावर, कंचुकी (अगर), आमले, तिलपणी, मापपर्णी, दूब, मूर्वा, हर्र, तुलसी, मूषाकर्णी, करेला, वन्धु पुष्पलता (बिजैसार), मूसली, हींग, गिलोय, सैंजना, सफेद कणही वृक्ष, महाराष्ट्री (जलपीपल), सैंधव, भांगरा,

१–मही‌पय्यास्तथैरा: ।

१–सूयावर्त को हुलहुल कहते हैं।

प्रसारणी (खीप), सोमलता सफेद, सरसों लहसन, हंसराज, कटोरी, ढ़ाक, भिलावाँ, फरफेंदुआ इन सबको या इनमें से आधी अथवा अठारह दवाओं से अधिक दवाएँ रसमारण अथवा रसमूर्च्छन के लिये वैद्यों को काम में लाना चाहिये॥३४–४१॥

पारदभस्म

पक्वार्कपत्रस्वरसैश्चावैकं प्रहरत्रयम् । दीपाग्निना भवेद्भस्म सूतराजस्य चोत्तमम्॥४२॥

(निघंटुरत्नाकरः)

अर्थ–शुद्ध पारद का कढ़ाई या खिपरे में रख नीचे से आंच दीपक की लगाता रहे और ऊपर से पके हुए आक के पत्तों का रस थोड़ा थोड़ा चुवाता रहै। इस प्रकार तीन प्रहर तक चोवा देकर दीपाग्नि देवे तो पारद की भस्म हो जायेगी॥४२॥

पारदभस्म

कंटकारीकाकमाचीकृष्णधत्तूरकै रसैः । दिनं रसं विमर्द्याथ नवस्थाल्यां विनिक्षिपेत् ॥४३॥ पटुनापूर्य तन्मूर्ध्नि कुरु तोयाश्रितां पराम् । दहेद्दीपाग्निनाधःस्था भस्म यात्यूर्ध्वभांडके ॥४४॥

(निघंटुरत्नाकर)

अर्थ–कटेरी, मकोय, काला, धतूरा, इनके रसों से एक दिवस तक पारद को मर्दन कर नवीन हांडी में भर देवे और उस पर नोंन साम्हर (पिसा हुआ) भर देवे और उस हांडी पर दूसरी हांडी रख कपरौटी करे और ऊपर की हांडी में पानी भर नीचे की हांडी में दीपाग्नि लगावे तो भस्म ऊपर की हांडी के तले में लग जायेगी॥४३॥४४॥

पारदभस्म

एकविंशतिपलं सूतं शुद्धं खल्वे विनिक्षिपेत् । मर्दयेत्कनकतैलेन एकविंशदिनावधि ॥४५॥ देवदालीरसेनैव भावनार्धशतानि च । क्षिप्त्वा विषपलं तत्र दृढहस्तैर्विमर्दयेत् ॥४६॥ धारयेड्डमरूयंत्रे लौहे कवचशेखरे । मासार्धं ज्वालयेद्वह्निमूर्ध्वस्थं वारिशीतलम् ॥४७॥ ऊर्ध्वं लग्नं मृतं सूतं स्वांगशीतं समुद्धरेत् । वल्लमात्रमितं देयं जरामृत्युं लिहहरेत् ॥४८॥ मोहगणादिकं सर्वं ज्वराणां पांडुकामलाम् । वातादिसर्वरोगाणां निहन्ता नात्र संशयः ॥४९॥ देहसिद्धिर्भवेन्नृणां कामसिद्धिर्भवेत्ततः । अत्यन्तं रमते नारीः कामिनीप्राणवल्लभः ॥५०॥

(निघण्टुरत्नाकरः)

अर्थ–२१ पल शुद्ध पारद को खरल में डाल कर इक्कीस ही दिवस तक धतूरे के तैल से मर्दन करे और बंदाल के रस की पचास भावना देवे फिर उसमें एक पल सिंगिया डाल खूब घोटे और लोहे के बने हुए डमरूयंत्र में रख पंद्रह १५ दिन तक आग लगावे और ऊपर ठंडा पानी रखे। इस प्रकार रखने से जब स्वांग शीतल हो जाय तब ऊपर लगे हुए पारद को निकाल तीन रत्ती सेवन करे तो यह भस्म जरा और मृत्यु को नाश करता है। प्रमेह आदि समस्त रोगों को ज्वर, कामला और समस्त वात रोगों को नाश करता है, इसमें सन्देह नहीं है। प्रथम तो मनुष्यों की देह सिद्धि होती है फिर कामदेव की वृद्धि होती है। स्त्रियों के प्राण का प्यारा स्त्रियों के साथ अत्यन्त ही रमण करता है॥४५–५०॥

पारदभस्म

शुद्धसूतपलान्यष्टौ वत्सनाभं तदर्धकम् । मर्दयेत्स्वर्णतैलेन रक्तकर्पासकद्रवैः ॥५१॥ घनकन्दो वज्रवल्ली देवदाली सचित्रकैः । बला शुण्ठी चन्द्रवल्ली तृणमुस्ता जयन्तिका ॥५२॥ विषमुष्टिर्ब्रह्मदंडी सर्पाक्षी शरपुंखिका । तुम्बी चण्डालिका कन्दः कर्कधूः कन्द एव च ॥५३॥ कुड्मलस्य भवः कन्दः क्षीरकन्दा हरिप्रिया । हस्तिशुण्डाऽमृताकन्दा कन्या वाराहकन्दका ॥५४॥ कोशातकी चक्रमर्द्दः काकमाची रविप्रिया । रम्भा गुंजा च निर्गुण्डी सहदेवी च लांगली ॥५५॥ काकतुण्डी गोक्षुरकं जाती लज्जावती पटुः । आखुकर्णी हंसपादी मृगलुह्यर्कधीपयः ॥५६॥ ब्रह्मबीजं तु भूधात्री नागवल्ली तथैव च । शतावरी च धत्तूरो विषवल्ली गणेरिका ॥५७॥ श्वेतां कालं शिखिशिवे सस्यत्रगिरिकर्णिका । गोलिका ज्वालवदना गोपालानां च कर्कटी ॥५८॥ पृथक् सप्तन्विद[1] भाव्यं गोलकं कारयेद्बुधः । निक्षिपेड्डमरूयंत्रे लौहे कंवचशेखरे ॥५९॥ मासार्द्धं ज्वालयेद्वह्निमूर्ध्वस्थं वारि शीतलम् ॥ सोमनाथरसं बद्धं स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥६०॥ कुमारी भैरवं विप्रं पूजयेदिष्टदैवतम् ॥ धन्वन्तरिर्गणेशश्च संपूज्यश्च महेश्वरः ॥६१॥ गुंजार्धं च प्रदातव्यं स्मृत्वा च गुरुदेवताः ॥ सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो जरामृत्यू लिहन्हरेत् ॥६२॥ कान्तिपुष्टीकरं श्रेष्ठं वृद्धोऽपिं तरुणायते ॥ बाजीकृतौ महाकामी सर्वकायक्षमं शिवम् ॥६३॥ देहे लौहे भवेत्सिद्धिर्वायुतुल्यबलप्रदः ॥ सत्यं वीर्य्यसमं कामं कामयेत्कामिनीशतम् ॥६४॥ बुद्धिं ज्ञानं महाप्रज्ञामायु–र्वृद्धिकरं परम् ॥ महासूतश्च विख्यातो रसवेधी स उच्यते ॥६५॥

अर्थ–शुद्ध पारद आठ पल और चार पल सींगिया, इन दोनों को धतूर के तैल से नर्मविन के रस से फिर नागरमोथा, जमीकन्द, हडसंहारी, बंदाल, चीता, खरैटा, सोंठ, सोमलता, तणमुस्ता, हलदी, कुचला, ब्रह्मदंडी, सर्पाक्षी (सरफों का), कड़वी तोंबी, चंडालकंद, बेर, क्षीरकन्द, तुलसी, हाथीशुंडा, गिलोय, घीगुवारी, वाराहीकन्द, गलकातोरई, पमार, मकोय, हुलहुल, केला, चौंटनी, निर्गुंडी, सहदेवी, लांगली (कलिहारी) कौवाठोड़ी, गोखरु, जायफल, छुईमुई, करेला, मूषाकर्णी, हंसपदी, थूहर, आक का दूध, ढ़ाक, भुई, आमले, पान सतावर, धतूरा, इन्द्रायन, सफेद अंकोल, मोरपंखी, विष्णुक्रान्ता, गोलिका, बालमखीरा, इन सबकी सात सात बार भावना देकर गोला बना लेवें फिर लोहे के बने हुए डमरूयंत्र में रख पन्द्रह दिन तक आंच जलावे और ऊपर जल रखे तो सिद्ध हुए सोमनाथ नाम के रस को स्वांगशीतल होने पर उतार लेवे फिर कुमारी भैरव ब्राह्मण तथा इष्टदेवता धन्वन्तरि, गणेश और महादेवजी इनकी पूजा कर चार चावल की बराबर इस रस को चाटे। यह रसराज कान्ति तथा पुष्टि को करता है और इसके सेवन से बूढ़ा भी जवान हो जाता है, जो कामी पुरुष बाजीकरण के लिये खावे तो समस्त कामों के करने योग्य होता है, रसायन तथा धातुवाद में सिद्धि होती है, वायु के समान बल का दाता है और सौ स्त्रियों से संभोग कर सकता है। बुद्धि, ज्ञान, आयु इनकी वृद्धि को करता है। यह महासूत रस बन्धी कहाता है॥५१–६५॥

पारदभस्म की विधि

गोपालकर्कटीतोयैर्मर्दितः संपुटे स्थितः । ऊर्ध्वपातनयोगेन सूतो भस्मत्वमाप्नुयात् ॥६६॥

(नि० र०)

अर्थ–शुद्ध पारद को गोपाल काकड़ी के रस से मर्दन कर संपुट में रख ऊर्ध्वपातनयंत्र से उड़ा लेवे तो पारा भी भस्म हो जायेगी॥६६॥

तथा च

पलाशबीजं रक्तं च जम्बीराम्लेन सूतकम् । सजीवं मर्दितं यन्त्रे पाचितं म्रियते ध्रुवम् ॥६७॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सब जीव नाम के पारे में समान भाग ढ़ांक के बीज डाल कर संतरों के रस में घोटे और संपुट में रख बालुकायंत्र में पकावे तो पारा मर जायेगा॥६७॥

तथा च

लज्जालूरससंपिष्टो बहुशः पारदो भवेत् । नष्टपिष्टो विधातव्यो

१–वारान् सप्त ।

मूषिकामध्यसंस्थितः । तद्रसैश्च पुनः सम्यक् म्रियते पुटपाकतः ॥६८॥
(रससारपद्धति)

अर्थ–लज्जालू अर्थात् छुईमुई के रस में बार बार घोटने से पारा नष्ट पिष्ट हो जाता है फिर नष्ट हुए पारे को मूषा में रख बालुकायंत्र में पकावे तो पारा मर जायेगा॥६८॥

सीमाव को कायमुल्नार करने की तरकीब बजरिये लजालू बजरिये अग्निपुट (उर्दू)

अर्थ–लजालू से कायमुल्नार करने का यह तरीका है कि सीमाव को अर्कबूटी लजालू मजकूर से बतौर पुट आफ्तावी सहक करके सफीफ भूभल में अग्निपुट दे। बादहू शीरा या अर्क बूटी मजकूर में सहक करके आधपाव कर्सी से आग देना शुरू करे और बढ़ाता जाये। रफ्तः रफ्तः सीमाव कायम होता जाता है क्योंकि नदरोजी आंच सीमाव के कायमुल्नार करने के वास्ते बड़ा आला दर्जे का गुण है जो कि सीमाव इस किस्म के अमल हर बार तब्दिया करने से कम होता जाता है लेकिन बिलाखिर कायमुल्नार ऐसा हो जाता है कि फिर नहीं उड़ सकता। (सुफ्हा अकलीमियां २०३ का हाशिया)

पारे के कुश्ता करने की तरकीब (उर्दू)

पञ्चाङ्गी–बरबरी लंगी इनके अर्क में तीन रोज चारों संस्कार किये हुए पारे को खरल करके वज्रमूषा में बंद करके लघु पुट की आंच में रख खाक कर ले और खाय तो भूख बढ़ जाय। ताकत आये, हर बीमारी से नजात पाय। (सुफ्हा ८ खजाना कीमियां)

तरकीब कुश्ता सीमाव पांच अंगुलबूटी के पत्ती पंजिया दस्त की तरह होती है और तोरई की तरह बेल चढ़ती है (उर्दू)

पत्ती की पुस्तकी जानिब रुएं होते हैं, जड़ इसकी अदरक की तरह होती है, उसकी जड़ को कूट कर अर्क निचोड़े और उसके गुट का सीमाव निरास को उसकी सफल में रख कर ऊपर नीचे सफल से गुटका को छिपावे इस तरह से कि दर्मियान से उसके गुटका रहे। बादहू बोतः में रखकर अर्क बूटी मजकूर का उसमें भर दे और बोतः को मुअम्मा करके ढ़ाई सेर कंडों में आग दे। गुटका मजकूर कलश की तरह हो जायेगा। दो रत्ती लेकर तोला भर कलई गुदाख्तः पर तरह करे। नुकरः हो जायेगी। हिन्दी में इस बूटी को हंगोल कहते हैं और झाड़ियों और जंगलों में होती है। लोग इसको खाते हैं, जब पककर सुर्ख हो जाता है तो मीठा हो जाता है। लेकिन जानवर उसको पकने के कब्ल ही खा जाते हैं और उसके बेख और पत्ते वगैर से बहुत उलफत रखते हैं। (सुफ्हा अलकीमियाँ २६४)

पारद भस्म

देवदाली हंसपदी यमचिञ्चा पुनर्नवा । एभिः सूता विघृष्टव्यो पुटनान्म्रियते ध्रुवम् ॥६९॥
(रसेन्द्रसारसंग्रह, र० सा० प०)

अर्थ–चंदाल, हंसराज, यमचिन्चा और सांठ इनके रस से पारद को घोट कर बालुका यंत्र में पकावे तो पारद भी भस्म होगी। इसमें सन्देह नहीं है॥६९॥

कुश्ता सीमाव बजरियः बूटी पांच अंगुल (उर्दू)

तरकीब नं० २–अगर सीमाव को दो पहर बूटी मजकूर के शीरे में खरल करे तो कायमुल्नार होता है, मुतरज्जिम यह बूटी कंदूरी की बूटी से बहुत ज्यादह मुशाब है, मुमकिन है कि वही हो या उसी की कोई किस्म हो। मुहम्मद यासीन खां साहब मुतवतन पूना मकान नं० १११४ को इस बूटी का तजरुबा हुआ है और वह उसको कंदूरीतलख कहते थे, जिस तरीके से इन्होंने आजमाया और बूटी में जा अलामते में बरवक्तशरीफ आवरी जौनपुर के बयान की वह तहरीर की जाती है। कीमियाइ कंदरी का फल मीठी कंदूरी से छोटा करीब निस्फ के समर नींबू के बराबर या किसी कदर बड़ा होता है। नोंन की सिम्त फल में ऊपर हिस्से में झुर्रियां पड़ी होती हैं और इस पजमुर्दह हिस्सें में बीज नहीं होता है। पुख्तः होने पर नीचे का निस्फ हिस्सा सुर्ख रंग का और ऊपर का निस्फ हिस्सा सबज रहता है। तमाम पंचांग दरख्त के एलुए की तरह कड़वे होते हैं, हिंगाम तजरुबा अर्क वर्ग कंदूरी तलक कीमियाई का लेकर और फूल के बर्तन में सीमाव को रखकर इस कदर डाला कि छिप गया और नीचे जकूम के कोयलों की आग रखे जिसको फूंकते जाते थे। आधे घंटे बाद उतार लिया। नुकरा खालिस था, मजीद तजरुबा इस बूटी पर अगर किया जावे तो नये खवास मालूम हो सकते हैं। दक्खन की जानिब इसके दरख्त कसीरुल वजूद होते हैं। मगर कंदूरी तलख का दरख्त तलाश में मिलता है। (सुफ्हा अकलीमियां २६४)

अकसीर बजरियः सीमाव बद्ध

काले भांगरे के पत्तों की लुगदी में पारा रखकर मिट्टी के बर्तन में रखकर हलकी आग दो और ऊपर से अर्क काले भांगरे का डालते जाओ। गोली बन जायेगी फिर उस गोली पर दुबारा यही अमल करो। अकसीर हो जावेगी।

(सुफ्हा खजाना कीमियां ३२)

अन्यच्च

श्वेताकोलजटानीरैः सूतो मर्द्यो दिनत्रयम् । पुटितश्चांधमूषायां सूतो भस्मत्वमाप्नुयात् ॥७०॥ प्रत्यहं रक्तिकापंच भक्षयेन्मधुसर्पिषा । को वा तस्य गुणान्वुक्तं भुवि शक्नोति मानवः ॥७१॥
(रसमंजरी, रसे० सा० सं०, रस० पारि०)

अर्थ–सफेद अंकोल की जड़ के रस से पारद को तीन दिवस तक दृढ़ मर्दन करे। अन्धमूषा में रख बालुकायंत्र में पकावें तो पारद की भस्म होगी, इस भस्म को प्रति दिन पांच रत्ती घृत और शहद के साथ भक्षण करे तो इसके गुणों को धरती पर कौन वर्णन कर सकता है॥७०॥७१॥

कुश्ता सीमाव (अर्क पुष्पयोग) (उर्दू)

अगर दरख्त आक के फूलों में सीमाव को सहक बलेग करे और ऊपर नीचे नमक रखकर आठ सेर कंडों में फूंक दे तो सीमाव कुश्ता और खाक हो जावे। (सुफ्हा अकलीमियां १५८)

कुश्ता सीमाव (उर्दू)

सीमाव दो तोला ले और खारदार थूहर मोटे पत्तोंवाले के फूलों में जो अदद में एक सौ हों खरल करें इस तरह चालीस रोज तक करें टिकिया बनाकर दो महीने खुश्क होने दे बाद अजा छुरों से रेजः रेजः करके एक कूजे में डालें और गिले हिकमत करके एक मन उपला सहराई की आंच दे सफेद कुश्ता बरामद होगा खुराक एक चावल मुनासिब अदविया में तमाम अमराज अ जमिना खवीशा मिस्ल जजाम आतिशक और हर एक किस्म के जख्मों और औजाअ मुफसिल और मुरक्किबः नुक्तलिफः पत्तों में मरीज उल नफा है। (सुफ्हा ६१ मुजरवात फीरोजी)

सोना बनाने की तरकीब बजरियः कुश्ता सीमाव (उर्दू)

एक तोला पारा आग पर चढ़ा के पहले तिपत्ती का रस सेर भर डालो

फिर बाबची का अर्क सेर भर डालो चार पहर मंदी आग दो कुश्ता हो जावेगा बारह तोला तांवा को सोना बनावेगा। (सुफहा खजाना कीमियां ३३)

गालिवचन कुश्ता सीमाब अकसीरी (उर्दू)

अकसीर तिला अर्क कडवी पोई में.

मुसलिफ ले वे खे ये ए खे ये

मुतरजिम काफ डे वाव ये ये वाव ये

डेढ़ पहर तक सीमाव को खरल करके बोते में रखें और दूसरा बोतः उस पर रख कर अंधमूषा करके तीन चार सेर कर्सी में आग देकर निकाल ले इस तरह सात बार खरल करके सात ही बार आग देकर उतार ले अकसीर हो जायेगा बादहू एक रत्ती लेकर एक तोला मिस गुदाज शुदः पर तरह करे तिला हो जायेगा। (सुफहा अकलीमियां २२४)

अन्यच्च

अप्रसूतगवां मूत्रैः पेषयेदुक्तमूलिकाः । तद्द्रवैर्मर्दयेत्सूतं यावल्लीनत्वमाप्नुयात् ॥७२॥ भूधराख्ये पुटे पाच्यं दशधा भस्म तद्भवेत् । द्रवैः पुनः पुनर्मर्द्य एवं भस्म भवेद्रसः ॥७३॥

(रसमानसः)

अर्थ–बिना ब्याई हुई बछिया के मूत्र से मारकर वर्ग में कही हुई औषधियों को घोटे उस पतले पदार्थ से नष्ट पिष्टि पर्यन्त पारद को घोटता जावे और भूधरपुट में पकावे इस प्रकार दस बार करने से पारा भस्म होता है॥७२॥७३॥

खरमञ्जरिबीजान्वितपुष्करबीजैः सुचूर्णितैः कल्कम् । कृत्वा सूतं पुटयेद्दृढमूषायां भवेद्भस्म ॥७४॥

(रसरत्नसमुच्चय र० रा० शं०, नि० र०)

ओंगा के बीज और कमल के बीज इन दोनों को पीस गोला बनावे उस गोले में पारे को रखे और उसी गोले को अंधमूषा में रख कपरौटी कर (कुक्कुटपुट में) पकावे तो पारे की भस्म हो जायगी॥७४॥

कुश्ता सीमाव की तरकीब (उर्दू)

पारे को सात दिन छोटी दूधी के अर्क में खरल करो फिर सात दिन बड़ी दूधी के अर्क में खरल करो फिर सातदिन तक छिकनी के अर्क में खरल करो फिर टिकिया बनाकर कपड़ा लपेटकर बनकरेला की जड़का लुगदा छटांक भर पारा भर आध सेर लगाना फिर हंड़िया में भर कर कपरौटी करके दो फुट मुकब की आग दो निहायत उमदा कुश्ता हो जावेगा। (सुफहा खजानः कीमियां) ॥३८॥

रुद्रवंती से अकसीर आजम बनाने की तरकीब (उर्दू)

अकसीर आजम मुफर्रिद बूटी से अकसीर आजम इस तरह बनती है कि सीमाव को पाव भर लेकर उसको मुसफ्फा करे और रुद्रवंती जिसमें सुर्ख गिरह भी हो (यह सुर्ख गुल होते हैं) लेकर कोल्हू के जरिये बगैर पानी की आमेजिश के शीरः निकाले कोल्हू लकड़ी का होना चाहिये शीरः मजकूर से सीमाव को मुसल्सि बारबार दिन रात इस तरह से सहक करे कि खरल करने का सिलसिला मुनफतह न हो साठ दिन रात यानी चार सौ अस्सी पहर तक बराबर सहक करता रहे बाद अख्ताम मुद्दत मजकूर के धूप में रखकर उसको मुअम्मा करके गिल हिकमत मुतहक्किम करे और अच्छी तरह उसको खुश्क करे बादहू अव्वल रोज सेर भर कंडों की आग बतौर भड़का के करे यानी चारों तरफ कंडे जमा कर बीच में दवा रखे दूसरे रोज दो सेर की तीसरे रोज तीन सेर की इस तरह इक्कीस सेर कंडों की आग दे अब दवा तय्यार हो गई यह अकसीर कलई को चांदी और मिसपर तरह करने से उसको शमस करती है तरह करने की मिकदार इस वजह से नहीं मौअय्यन है कि यह अकसीर तय्यार होने के बाद बकदर कुव्वत अकसीर के मुअय्यन हो सकती है बाद तजरुबे के मिकदार तरह को मुकर्रर करे खाने के वास्ते भी यह अकसीर नामर्द को मर्द बनाती है मुसन्निफ असवाब शाहीने इस तरीके को नज्म किया है और आजमूदः है। (सुफहा अकलीमियां २३०)

अन्यच्च

अपामार्गस्य बीजानि तथैरण्डस्य चूर्णयेत् ॥ तच्चूर्णं पारदे देयं मूषायामधरोत्तरम् ॥ रुद्ध्वा लघुपुटैः पच्याच्चतुर्भिर्भस्मतां व्रजेत् ॥७५॥

(रसरत्नाकर, रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं०, र० रा० सुं०, नि० र०)

अर्थ–ओंगा के बीज तथा एरंड के बीज इन दोनों को समान भाग लेकर पीस लेवे उस चूर्ण को मूषा में पारद के ऊपर नीचे बिछाकर और कपरौटी कर कुक्कट पुट देवे इस प्रकार चारपुट देने से पारद की भस्म होगी॥७५॥

अन्यच्च

अपामार्गस्य बीजानां मूषयुग्मं प्रकल्पयेत् । तत्संपुटेन्यसेत्सूतं मलयूदुग्धमिश्रितम् ॥७६॥ द्रोणपुष्पीप्रसूनानि विडङ्गमरिमेदकः ॥ एतच्चूर्णमधोर्ध्वे च दत्त्वा मुद्रां प्रकल्पयेत् ॥७७॥ तं गोलं मुद्रयेत्सम्यक् मृन्मूषासम्पुटे सुधीः ॥ मुद्रां दत्त्वा शोषयित्वा ततो गजपुटे पचेत् ॥ एवमेकपुटेनैव जायते सूतभस्मकम् ॥७८॥

(योगरत्नाकर, र० रा० शं० वै० क० र० ला० प० नि० र० शार्ङ्गधर०)

ओंगा के बीजों को दो मूषा बनावे उस संपुट में कठूमर के दूध से पीसे हुए पारद को रख देवे और उस पारे के ऊपर नीचे गोमा के फूल वायविडंग और बदबूदार कत्थे के चूर्ण रख मुद्रा करे उस गोले को मूषासंपुट में रख मुद्रा कर सुखा लेवे और गजपुट में फूंक लेवे इस प्रकार एक ही पुट में पारद की भस्म होगी॥७६–७८॥

रस मारण

बीज अपामारग के लावे । तिनको जलतें मिहिं पिसवावे ॥
पिट्ठी की द्वै घरिया करिये । इक घरिया में पारा धरिये ॥
दूध कठूमर को मँगवाय । ता घरिया में दे भरवाय ॥
दूसरी घरिया को चिपटाय । गोला करिके संधि मिलाय ॥
इक सरवा माटीको लेया । ता में वह गोला धरि देया ॥
खदिर होय दुरगंध समेत । ताकी त्वचि ले बुद्धि निकेत ॥
त्वचि समान ले गोमाफूल । अरु बिडंग दे तासमतूल ॥
इनको चूरण मिहिं पिसवाय । भिषजन देय जुदो धरवाय ॥
फिर माटी को सरवा लीजै । आधो चूरन तामें दीजै ॥
चूरन पै गोला वह धरै । आधो चूरन तापै करै ॥

–दोहा–

इनको चूरन लीजिये, गोला सब दब जाय ॥
दूसर सरवा लेयके, औंधे दे चिपकाय ॥
कपरौटी ऊपर करे, नीके संधि मिलाय ।
संपुट धूप सुखायके, गजपुट में धरवाय ॥
आठपहर पर्यन्तलों, देके अगिन लगाय ।
एकहि गजपुट में सुफिर, सूत भस्म ह्वै जाय ॥
सकल चिकित्सा कर्म में, यथायोग अनुपान ।
रत्तीदैके द्वै रती, देखि बलाबल ज्ञान ॥

(वैद्यादर्श)

पारदभस्म

काष्ठोदुम्बरिकादुग्धैर्मर्दयेत्पारदं दृढम् । अपामार्गस्य बीजानां मूषायुग्मं विमुद्रयेत् ॥७९॥ द्रोणपुष्पीप्रसूनानां विडंगमरिमेदयोः ॥ कल्कैर्मूषां विलिप्यैव परितोंगुलमात्रकम् ॥८०॥ तद्गोलं न्मये न्यस्य मूषायुग्मं विमुद्रयेत् । द्वस्त्रैः शोष्य नागा ` पाचयेच्च पु रसम् ॥ भस्मीभूतो रसो नेयो योज्यः स्यात्सर्वकर्मसु ॥८१॥

(अनुपानतरङ्गिणी)

अर्थ–प्रथम पारद को कठूमर के दूध में मर्दन कर फिर ओंगा के बीजों को पीस दो घरिया बनावे, एक घरिया में पारद को रख दूसरी घरिया को जोड़ देवे और ऊपर से गोमा के फूल, वायविडंग तथा दुर्गन्धित कत्था इनके कल्कसे एक २ अंगुल लेप करे उस गोले को सकोरों में रख कपरौटी कर और सुखाय गजपुट में फूंक देवे तो पारद की भस्म हो जायगी उस भस्म को समस्त कर्मों में दे देना ही उचित है॥७९–८१॥

कुश्त सीमाव की तरकीब (उर्दू)

मामूली भंग से कुश्ता सीमाव का इस तरह होता है कि सीमाव गूलर के दूध से दो घंटे सहक करे और भंग की दूध में हल करके लुवदी की घरिया बनाकर सीमाव का गोला उसमें रखकर दूसरी लुवदी से बंद करके गिले हिकमत करके खुश्क करे जब खुश्क हो जाय ९ सेर उपलों की भूभल में आग दे सीमाव कुश्ता हो जाता है और यह कुश्ता कलई को नुकरा करता है इसका तजरुबा अब तक नहीं हुआ है तजरुबा तलब है (सुफहा अकलीमियां)

बूटी लजालू से सीमाव को अकसीर बनाने का तरीका (उर्दू)

दो तोले सीमाव शमशी को दो तोले शीर गूलर में घंटे डेढ़ घंटे तक खरल करे ताकि गोलासा उसका बंध जावे बादहू सवा वालिश्त या कमावेश एक मोटा ताजा डंडा दरख्त पीपल की शाख का लेकर लंवाई में डंढी के गोल सूराख ऐसा कर दे कि आर पार न हो और उसमें छंटाक भर लुगदी लजालूइ सुर्ख गुल की जो साये पड़कर मुरझा जाता है भर कर ऊपर सीमाव का गोला मजकूर हवाला रख दे और उसके ऊपर दूसरी छटांक भर लजालू मजकूर की रखकर बुरादा जो सूराख करने के वक्त बरामदा हुआ था भरकर डाट दूसरी पीपल की लकड़ी की लगाकर तीन चार बार गिले हिकमत ऊपर से कर दे और हर बार गिले हिकमत को खुश्क कर लिया करे बादहू बीस सेर खानगी कंडों में बतौर गजपुट के फूंक दे सर्द होने पर कहतियात से निकाले और कागज पर कुल राख वगैरः गिरा दे फिजूल राख स्याह में कुश्ता सीमाव मिलेगा जाए न होने पावे आहिस्ता आहिस्ता फूक मारकर सिर्फ पत्तों की राख उड़ा दे बकिया राख वजनी सफेद मिस्ल चूना के होती है वही सीमाव का कुश्ता है उसको निकाल ले एक रत्ती इस कुश्ते का तोले भर भिस मुसफ्फा उलअज्ल को तिलाए आला करता है अगर बाजारी मिस पर तरह किया जावे तो उसको मिस्ल नैपाली सोने के रंगता है लेकिन फूटक पन सख्तगी बाकी रहती है जो उन तरीकों से जिनको दीवाचे में बयान किया गया है दूर की जाती है। मुहम्मद यासीनखां साहव मूतवतन पूना का तजरुबा है मूतरिज्जिम की राय है कि सीमाव पहले लरजां कायमुल्नार कर लेना चाहिये। सीमाव इसी बूटी के शीरे में अव्वल तस्किया व तश्विया करके कायमुल्नार हो सकता है और दूसरी तरह से कायम किया हुआ भी काम देता है (सुफहा अकलीमियां २१२)

अन्यच्च

काष्ठोदुम्बरिकाया दुग्धेन सुभावितो हिंगुः । मर्दनपुटनविधानात् सूतं भस्मीकरोत्येव ॥८२॥

(रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं० नि० र०)

अर्थ–हींग को कठूमर के दूध से पीस घरिया बनावे और उसी के दूध से पारद को घोटे घरिया में धर दोनों घरियाओं का मुख वंद कर देवे और फिर सकोरा में रख कपरौटी कर गजपुट में फूंक देवे तो पारद भस्म होगा।

पारे के कुश्ता करने की तरकीब बजरियः कठगूलर (उर्दू)

पारद गूलर के दूध और हींग में मिलाकर चार पहर खूब खरल करके गोला बना ले और बदस्तूर मजकूर आंच दे कुश्ता हो जावेगा।

(सुफहा १० खजानः कीमियां)

अन्यच्च

मलयूदुग्धसंमिश्रं रसराजं विमर्दयेत् । तद्दुग्धमिश्रहिङ्गोश्च मूषायुग्मे विमुद्रयेत्॥८३॥तां मूषां न्मय रुध्वा मूषायुग्मं तु वेष्टयेत। द्वस्त्रैः सप्तभिः पश्चाच्छोषयेदातपे भृशम् ॥८४॥ पुटेन्मृदुपुटं यत्नाद्रसो भस्मत्वमाशुयात् । नवयौवनसौन्दर्यभूषणे मदिरेक्षणे ॥८५॥

(अनुपानतरङ्गिणी)

अर्थ–प्रथम कठूमर के दूध से पारद को घोये फिर कठूमर के ही दूध से हींग को पीस दो घरिया बनावे एक घरिया में घुटे हुए पारे की गोली रख ऊपर से दूसरी घरिया को ढांक कपरौटी करे तदनन्तर उस गोले का सकोरा में रख सुखा सुखा कर सात बार कपरौटी करे फिर मृदुपुट में फूंक देवे तो पारद भस्म होगा हे नवीन अवस्थावाली प्यारी! उसको समस्त रोगों में दे देना चाहिये॥८३–८५॥

पारदमारण दोहा

दूध कठूमरके विषे, हींग मिहीं पिसवाय ।
द्वै घरिया ताको करै, सुन्दर सुलफ बनाय ॥
फेर कठूमर दूध में, पारद शुद्ध घटाय ।
गोली करि पुनि हींग की, घरिया बीच धुराय ॥
तापर घरिया दूसरी, ओंधी दे चिपटाय ।
गोलासो करिके सुलफ, कवरौटी करवाय ॥
गोला कपरौटीसहित, मांटी सम्पुटमांहि ।
पुनि धरि कपरौटी करै, गजपुट दीजै ताहि ॥
कहि गजपुट आग , याही विधिते होत ।
कारजसाधकके सबहि, पारदत सिध होत ॥

(वैद्यादर्श)

अन्यच्च

नागवल्लीरसैः पिष्टः कक टीकन्दगर्भगः । न्मूषासम्पु पक्वो रसो यात्येव भस्मताम् ॥८६॥ (वैद्यकल्पद्रुम, अनु० तर० नि० र० र० रा० शं० शार्ङ्गधर, आ० वे० वि० र० सा० प० शं० क०)

अर्थ–बंगला पानों के रस से पारद को खूब मर्दन कर गोली बनावे फिर उस गोली को ककोड़ा में रख ऊपर नीचे माटी के सरवास से ढांक कपरौटी कर देवे और उस सम्पुट को गजपुट में फूंक देवे तो वह भस्म समस्त कर्मों में देने योग्य योगवाही होता है॥८६॥

अन्यच्च

भुजंगवल्लीनीरेण मर्दयेत्पारदं दृढम् । कर्कोटीकन्दमूषायां सम्पुटस्यं पुयेद्गजे । तद्भस्म योगवाहि स्यात्सर्वकर्मसु योजयेत् ॥८७॥

(रसमञ्जरी० रसेन्द्रसारसंग्रह० र० रा० सुं०)

अर्थ–इसका भी अर्थ ऊपर की क्रिया के अनुसार ही जानना चाहिये केवल अधिक पाठभेद होने के कारण श्लोक लिखा है॥८७॥

अन्यच्च

काष्ठोदुम्बरजैः क्षीरैः सितां हिंगुं विभावयेत् । सप्तवारं प्रयत्नेन शोष्यं पेष्ये पुनः पुनः ॥८८॥ काष्ठोदुम्बरपंचांगैः कषायं षोडशांशकम् । हत्वा तेन पुनर्मर्द्यं हिंगुं बंगं रसेश्वरम् ॥८९॥ क्षिप्त्वा निरुध्य मूषायां भूधराख्ये पुटे पचेत् । अष्टधा म्रियते सूतो देयं हिंगु पुटे पुटे ॥९०॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ–कठूमर के दूध से संफेद हींग को सुखा सुखाकर सात बार भावना देवे, फिर कठूमर के पंचांग का क्वाथ बनाकर फिर हींग की भावना देवे और बंग तथा पारद को सम भाग लेकर घोटे और हींग को मूषा में रख गजपुट में पकावे तो आठ बरस में पारद भस्म होगा प्रतिपुट में हींग की मूषा देनी चाहिये।।८८–९०।।

अन्यच्च

कटुतुम्ब्युद्भवे कन्दे गर्भे नारीपयः प्लुते । सप्तधा म्रियते सूतः स्वेदितो गोमयाग्निना ॥९१॥

(रसरत्नाकर, र०र०स०, र०रा०शं०, र०रा०सुं०, र०सा०प०)

अर्थ–कड़नी तोम्बी को लेकर बीज में टांकी लगा के उसमें पारा भर देवे और ऊपर से स्त्री का इतना दूध भर देवे कि पारा दूध में डूब जावे फिर उसी तोम्बी के टुकडे से बन्द कर कपरौटी करे। फिर पांच तथा सात कंडों की आंच में भुरता कर लेवे इस प्रकार सात बार करने से पारद की भस्म हो जायेगी।।९१।।

अन्यच्च

कृष्णधत्तूरतैलेन सूतो मर्द्यो द्वियामकम् । दिनैकं तं पचेद्यंत्रे कच्छपाख्ये न संशयः ॥ मृतः सूतो भवेत्सद्यः सर्वरोगषु योजयेत् ॥९२॥

(कामरत्न र० रा० सुं०)

अर्थ–काले धतूरे के तैल से या नियामक वर्ग से एक दिवस तक पारे को मर्दन करे फिर कच्छप यंत्र में रखकर पकावे तो पारद की भस्म होगी इसमें सन्देह नहीं है। यह समस्त रोगों में देने योग्य है।।९२।।

अन्यच्च

देवदालीं हरिक्रान्तामारनालेन पेषयेत् । सप्तधा सूतकं तेन कुर्यान्मर्दितमुत्थितम् ॥९३॥ तं सूतं खर्परे कुर्याद्दत्त्वादत्त्वा तु तद्द्रवम् । चुल्ल्युपरि च पचेद्वह्नौ भस्म स्यादरुणोपमम् ॥९४॥ वल्लमात्रमिदं देयं योगोक्तं रोगनाशनम् । बलं वीर्यं तथा पुष्टिं कुर्याद्बहुतरां क्षुधाम् ॥९५॥

(रसत्नाकर, र० र० स० नि० र०)

अर्थ–बन्दाल तथा विष्णुक्रान्ता को कांजी से पीसे फिर उसी द्रव से पारे को मर्दन कर ऊर्ध्व पातन से उड़ा लेवे उस पारद को खिपरे में रख कांजी में पिसे हुए वंदाल और विष्णुक्रांता के द्रव से चार पहर तक चूल्हे पर चढाय आंच देवे तो पारद की लाल रंगत की भस्म हो जायेगी। उसकी तीन रत्ती सेवन करे तो बल वीर्य तथा पुष्टि और अधिक क्षुधा को करता है।।९३–९५।।

पारे का कुश्ता करने की तरकीब
(खर्परद्वारा–देवदालीयोग)
(उर्दू)

देवदाली यानी बिन्दाल विष्णुक्रान्ता यानी धनन्तर इनमें थोड़ा पानी कांजी का डाल कर अर्क निकाल ले और उसमें सात बार पारा खरल करे और सुखावे फिर पारे को कोरे ठीकरे में चूल्हे पर चढाकर चार पहर आंच दे और वह अर्क टपकता रहे कुश्ता हो जावेगा।

(सुफहा १० खजाना कीमियां)

मकरध्वजविधि

लै दूधार स्यामके पान । तिनको कूट लेहु रस छान ।। तब पल चारक पारो लेहु । वा रस की पुट ताको देहु ।। खरल घालिके देहु बनाय । पुनि ले पारो सरवा ताय ।। सरवा ढांकि जुं संपुट करै । कपरौटी करि सूकन धरै ।। लै आरने तीस पल गुनी । दे गजपुट जो गुरुपै सुनी ।। ऐसी पुट दीजै गन तीस । पारो सिद्ध करे जगदीस ।। खाये बढ़े सहस गुन काम । मकरध्वज या रसको नाम ।। रोग सकल मानस के जाय । जो प्राणी संयम से खाय ।।

(रससागर)

वारिजरसविधि

जलकुम्भीरस काढै कोय । पारो खररि आठ दिन होय ।। आठहि द्यौस छौंकनी कही । मर्दन करे सो रस को सही । पारो बँधि माखनसो होय । तब शीशी में मेले लोय ।। जंत्रबालुका लेहु पचाय । चारि पहर ज्यों आगि बराय । पारो उडि लागे गो नार । तरहर कछू रहेगी छार । पारो काढि खरल में करै । छार होय सो न्यारो धरै ।। पुनि वेही रस खरले गुनी । जैसी जुगति जु पूरब सुनी । ऐसी सीसीकी विधि सात । भस्म होय सब सांची बात । बंग सोखि तारको करै । सब आपदा गुनीकी हरै ।। खायेते गुन करै अपार । वारिज अमृत कह्यो संसार ।। (बड़ा रससागर)

पारद लघु भस्म विधि

जा पारे में दोष न होय । सो पल बीस लीजिये सोय ।। खरल अफोय मूली के नीर । बीस दिना इक लग बलवीर । सीसी घालि बालुका धरै । बारह पहर आगि तब करै । सीतल हो तब लीजे फोरि । वेही रस पुनि खारि बहोरि । संख्या सबै पाछिली जानि । खररि आगि यों कही बखानि । ऐसी सीसीकी विधि सात । गुन जाने या रसके खात । भस्म सूत लघु जानो लोय । अन्तरके जिन जानो कोय । जे गुन सब दीरघके कहै । ते गुन सब या लघु में लहै ।।
(बड़ा रससागर)

अन्यच्च

छागमूत्रे घटे सूतं कर्षमात्रं तुषाग्निना । शोषितं खादिरेणाथ दारुणा घट्टयेत्पचेत् । स भस्मभावमाप्नोति सर्वयोगोपकारकम् ॥९६॥

(निघंटुरत्नाकर)

अर्थ–एक घडे भर बकरे के मूत्र में एक तोला पारे को तुसों की आंच से सुखावे फिर कत्थे की लकड़ी से आंच परही घोटे और गजपुट में फूंक देवे तो पारद भस्म होगा।।९६।।

अन्यच्च

रसं गंधकतैलेन द्विगुणेन विमर्दयेत् । दिनैकं वाथ सर्पाक्षीविष्णुक्रान्तातिभृंगजैः ॥९७॥ त्र्यहं विमर्दयेद्द्रावैस्त्रिंशद्वट्टमहापुटे । इत्येवमष्टधा पाच्यं रसो भस्मी भवेद् ध्रुवम् ॥९८॥ (रसरत्नाकर)

अर्थ–पारद को द्विगुणित गंधकतैल से एक दिवस तक मर्दन करे फिर सर्पाक्षी विष्णुक्रांता और भंगरा के रस से एक दिवस तक मर्दन करे फिर महापुट में फूंके तो इस प्रकार आठ बार करने से पारद भस्म होगा इसमें सन्देह नहीं है।।९७।।९८।।

अन्यच्च

शुद्धसूतसमं गंधं वटक्षीरैर्विमर्दयेत् । पाचयेन्मृत्तिकापात्रे वटकाष्ठैर्विचालयेत् ॥९९॥ल वग्निना दिनं पाच्यं भस्म सूतं भवेद् ध्रुवम् । द्विगुञ्जं नागपत्रेण पुष्टिमग्निं च वर्धयेत् ॥१००॥

(योगचिन्तामणि योगरत्नाकर)

अर्थ–पारा, गंधक इन दोनों को समान भाग लेकर वड़ के दूध से मर्दन करे फिर मिट्टी के पात्र में रख बड़ की ही लकड़ी से घोटे और नीचे से एक दिवस तक हलकी हलकी आंच लगावे तो पारद निश्चय भस्म होगा उस भस्म को दो रत्ती पान के साथ भक्षण करे तो पुष्टाई और अग्नि को बढ़ाता है॥९९॥१००॥

अन्यच्च

सूतार्ध गंधकं दत्त्वा लोहपात्रे विनिक्षिपेत् । वह्निं प्रज्वालयेन्मन्दं स्नुह्यर्कक्षीरमाहरेत् ॥१०१॥ चालयेत्खदिरदंडेन क्षीरं दत्त्वा पुनः पुनः ॥ अग्निं यामाष्टकं दद्याज्जायते सूतभस्मकम् ॥१०२॥ गुंजामात्रं प्रदातव्यं यथारोगानुपानतः ॥ योजयेत्सर्वरोगेषु योगेषु च रसायनम् ॥ कान्तिः पुष्टिर्बलं वीर्यं जायते चाग्निदीपनम् ॥१०३॥

(निघंटुरत्नाकर)

अर्थ–पारा और पारद से आधा गंधक दोनों को लोहे की कढाई में डालकर नीचे से मन्द मन्द आंच लगावे ऊपर से थूहर और आक का दूध चुवाता रहे तथा खैर की लकडी से घोटता जावे इस प्रकार आठ प्रहर तक आंच लगावे तो पारद भस्म होता इसको रोग के अनुसार समस्त रोगों में देवे क्योंकि यह रसायन है इसमें कांति बढती है और शरीर हृष्ट पुष्ट होकर बलवान् होता है॥१०१–१०३॥

अन्यच्च

द्विपलं शुद्धसूतं तु सुतार्द्धं शुद्धगंधकम् ॥ कन्यानीरेण संमर्द्य दिनमेकं निरन्तरम् ॥ रुद्ध्वा तद् भूधरे यन्त्रे दिनैकं मारयेत्स्फुटम् ॥१०४॥ (रसमंजरी रसेन्द्रसारसंग्रह, रसरत्नाकर)

अर्थ–दो पल शुद्ध पारा और उससे आधा भाग शुद्ध आमलासार गंधक इन दोनों की कजली कर घीग्वार के रस से एक दिन तक घोटता जावे फिर भूधरयंत्र में एक दिन तक पकावे तो पारद की भस्म होगी॥१०४॥

अन्यच्च

अङ्कोलस्य शिफावारिपिष्टं खल्वे विमर्दयेत् ॥१०५॥ सूतं गंधकसंयुक्तं दिनान्ते तं निरोधयेत् ॥ पुटयेद् भूधरे यन्त्रे दिनान्ते स मृतो भवेत् ॥१०६॥ (रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं० र० सा० प० र० रत्ना० नि० र०)

अर्थ–पारा और गंधक को समान लेकर खरल में डालकर अंकोल की जड के रस से एक दिवस तक घोटे फिर कपरौटी कर एक ही दिन तक भूधरयंत्र में पकावे तो पारद भस्म होगा॥१०५॥१०६॥

अन्यच्च

स्तोकं स्तोकं गन्धकं सूतराजं दत्त्वा दत्त्वा ताम्रपात्रे विघृष्टम् ॥ शीघ्रं पिष्टी जायते सा द्विगन्धान्मन्दं पच्याद् भूधेरे भस्मसूतः ॥१०७॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–तांबे के पात्र में पारद को रख थोड़ा थोड़ा सा गंधक दे देकर घोटता जावे और इस प्रकार द्विगुणित (दूना) गंधक घोटने के समय में डाल देवे फिर भूधरयंत्र में मन्दाग्नि से पकावे तो पारद की भस्म होगी॥१०७॥

बलीपलितरिपुरसविधि

गन्धक पारो सम कै आनि । फूल अगस्तियाको रस छानि ॥
घालि खरल पुट दीजै सात । सुकै सुकैकै नीको घात ॥
बारह प्रहर बालुका आग । इह विधि पारो दीजै दाग ॥
फेर बहुरि पुटबीसक देय । पुनि जलजंत्र माहि धरदेय ॥ चौंसठि
पहर आग की बानि । घटते दीजै तातों पानि ॥
पारो कली होय बरबारो । खैर बेरि धो तातरवांरो ॥
बलीपलितरिपु रसको नाम, वृद्ध हि चढै सहसगुन काम ॥
विषज्वर अरु अवर विकार । पांडु रोग घटि है निरधार ॥
जो मंडल भरि खाय निवाह । इतने दोष न व्यापै ताह ॥

(रससागर बड़ा)

हेमविधि

पारो गन्धक समकै लेय । दशदश पान दोऊ जानेय ॥
याकौं खररै यह अवरेखि । पारेकी सम कुचला पेखि ॥
वह जल लीजै अष्टविशेख । यासों खररै बहुरो रेख ॥
अरु जैपाल कुचला सम लेय । इन ही को पुनि क्वाथ करेय ॥
यहै क्वाथ खरलै ता माहिं । बूंद बूंदकै सुखवे ताहि ॥
पुनि आनिजै चौलाई लाल । याहु को रस पारे में घाल ॥
द्वै दिन घालि खरल धस लेय । राति दिवस अतिही भरदेय ॥
धरि जलयंत्र अगिन अतिकरै । चौसठि पहर खैर की जरै ॥
याकोनाम हेमरस जानि । चढ़े शरीर कनककी बानि ॥
मण्डल एक खाइगो भूप । ताको एक कामको रूप ॥
जो नर याको साधन करै । वह बनिताके दर्पहि हरै ॥
गुल्म पंच चौरासी बाय । सन्निपातेरह अरु कुष्ठ नसाय ॥
निर्दोषल ह्वै जीवै सोय । जौलों आयु तासुकी होय ॥
तरुन हि बढै सहस गुन काम । वृद्ध खाय हो तरुनसमान

(रससागर। बड़ा रससागर)

तलभस्म

सूतश्चतुष्पलमित। समशुद्धगंधः स्याद्भूमसारपिचुरेक इदं क्रमेण । सम्मर्दयेद्विमलदाडिमपुष्पतोयैर्घस्रं विमिश्य सितसोमलमाषकेण ॥१०८॥ एतन्निधाय सकलं जलयंत्रमध्ये संमुद्य सन्धिमुदितेन पुरा क्रमेण । आपूर्य यंत्रमुदकेन दिनानि चाष्टौ वह्निं क्रमेण तदधो विदधीत विद्वान ॥१०९॥ पश्चात्ततो जलमुदस्य रसं तलस्थमादाय भाजनवरे च भिषङ् निदध्यात् ॥ संपूज्य शम्भुगिरिजां गिरिजातनूजं दद्याच्छुभेऽहनि रसं वरमेकगुंजम् ॥११०॥ ताम्बूलिकादलयुतं ससितं पयोनु पीत्वाम्लमाषलवणै रहितं सदन्नम् ॥ अद्यात्कियन्त्यपि दिनानि ततो यथेच्छं भक्ष्यं भजेदथ नरो विगतामयः स्यात् ॥१११॥

(बृहद्योगतरङ्गिणी । र० रा० शं० र० सा० प०)

अर्थ–पांच पल शुद्ध पारद और पांच ही पल गंधक और एक तोला धूमसार इन सबको क्रम से मर्दन करे फिर एक मासा संखिया मिलाय अनार के फूलों के रस से एक दिन तक मर्दन करे इनको जलयंत्र में रख पूर्व कहे हुए क्रम से सन्धि को मुद्राकर यंत्र को जल से भर देवे और उसके नीचे आठ दिवस तक अग्नि लगावे फिर जल को निकाल पेंदे में जमे हुए भस्म को निकाल श्रेष्ठ पात्र में भर देवे तदनन्तर सेवनकर्त्ता मनुष्य गौरी और गणेश को पूज श्रेष्ठ दिन में एक रत्ती रस पान के साथ सेवन कर पीछे से मीठा दूध पीवे और खटाई, उड़द, नोंनरहित पदार्थों को नित्य खावे फिर कुछ दिनों बाद यथेच्छ (मनमाना) भोजन करै तो मनुष्य नीरोग होगा। १०८–१११॥

अन्यच्च

धूमसारं रसं तुवर गन्धकं नवसादरम् ॥ यामैकं मर्दयेदम्लैर्भागं कृत्वा समं समम् ॥११२॥ काचकूप्यां विनिक्षिप्य तां च द्वस्त्रमुद्रया । विलिप्य परितो वक्रे मुद्रां द वा विशोषयेत् ॥११३॥ अधः सच्छिद्रपिठरीमध्ये कूपिं निवेशयेत् । पिठर वालुकापूरैः त्वा च कूपिकागलम् ॥११४॥ निवेश्य

चुल्ल्यां तदधो वह्निं कुर्याच्छनैः शनैः ॥ तस्मादप्यधिकं किंचित्पावकं ज्वालयेत्क्रमात् ॥११५॥ एवं द्वादशभिर्यामैर्म्रियते सूतकोत्तमः ॥ स्फोटयेत्स्वांगशीतं तन्मूर्ध्वगं गन्धकं त्यजेत् ॥११६॥ अधःस्थं च मृतं सूतं गृह्णीयात्पारदं मृतम् ॥ यथोचितानुपानेन सर्वकर्मसु योजयेत् ॥११७॥ (वैद्यकल्पद्रुम० र०रा० शं०,शार्ङ्गधर० आ० वे० वि०,यो० त०, वाच०,बृह०र० सा०,प० नि०र०)

अर्थ–धूमसार, पारद, गोपीचन्दन, गंधक और नवसादर इन सबको समान भाग लेकर एक पहर खट्टाई से मर्दन कर कांच की शीशी में भर देवे और उस शीशी पर कपरौटी कर मुख पर मुद्रा लगाय सुखावे। जिस हांडी के तेल में छेद किया हुआ हो उसमें शीशी को रख शीशी की नारतक बालू रेत भर देनी चाहिये फिर उस यंत्र को चूल्हे पर चढाय धीरे धीरे आंच लगावे तदनन्तर कुछ पूर्व से अधिक आंच जलावे इस प्रकार बारह प्रहर तक अग्नि जलावे तो पारे की उत्तम भस्म होगी स्वांगशीतल होने पर शीशी को फोड़ ऊपर लगे हुए गंधक को छोड़ देवे और नीचे जमे हुए मृत पारद को निकाल लेवे और योग्य अनुपान से समस्त रोगों में देना चाहिये॥११२–११७॥

पारदमारण

शुद्धसूतं द्वयं गन्धं त्रयं स्फटिकैधवम् ॥ चतुर्थं स्वमलं भागं वत्सनाभं च पंचमम् ॥११८॥ सूतार्द्धं चैव कर्पूरं सर्वं खल्वे विमर्दयेत् । भावनामर्कदुग्धस्य सुहीदुग्धस्य वै तथा ॥११९॥ यन्त्रे च लवणं सूतमूर्ध्वस्थाल्या मुखं लिपत् ॥ अग्निं यामाष्टकं दत्त्वा दद्याच्च जलपातनम् ॥१२०॥ ऊर्ध्वं स्थाल्यां रसं सिद्धं योजयेत्सर्वकर्मणि भक्षणे देहसिद्धिः स्याद्देवदानवदुर्लभा ॥१२१॥

(निघंटुरत्नाकर)

अर्थ–पारा और आमलासार गंधक दो दो भाग, फिटकिरी और सैंधव तीन २ भाग, संखिया ४ चार भाग, सींगिया पांच भाग पारद से आधा भाग कपूर इन सबको खरल में डाल मर्दन करे फिर आक तथा थूहर के दूध की एक एक भावना देव उसका गोला बनाय लवणयंत्र में रख ऊपर से दूसरी हांडी का मुख दाब कपरौटी करै और आठ प्रहर तक आंच लगावे ऊपर की हांडी के पेंदें में जल छिडकता रहे, स्वांगशीतल होने पर ऊपर लगे हुए पारद को निकाल सब कामों में लावे इसको सेवन से देह की वह सिद्धि होती है जो कि देवता व दानवों को भी दुर्लभ है॥११८–१२१॥

रसभस्म

शुद्धसूतसमं गन्धं सामलं च दतर्धकम् ॥ सोमलार्द्धं विषं क्षिप्त्वा हिंगुस्फटिकगैरिकम् ॥१२२॥ सामुद्रलवणं चैव सर्वतुल्यं विनिक्षिपेत् ॥ कांजिकेन पुटं दद्यात्पुटित्वा चैन्द्रवारुणीम् ॥१२३॥ स्थाल्यामुत्थापनं कृत्वा अग्निं यामाष्टकं ददेत् ॥ स्वांगशीतं समुद्धृत्य भस्म सूतोर्ध्वपातनम् ॥१२४॥ योजयेत्सर्वरोगेषु कुर्याद्बहुतरां क्षुधाम् ॥ पुष्टिदो वर्धते कामो युज्यते रक्तिकाद्वयम् ॥१२५॥ (रसराजसुन्दर, नि० र०)

अर्थ–शुद्ध पारद और गंधक समान भाग और गंधक से आधा संखिया संखिये से आधा सींगिया हींग। फिटंकरी और गेरु इन सबके समान सैंधानोंन लेकर कांजी से पीसे फिर इन्द्रवारुणी (फरफेदुआ) के रस से भावने देवे तदनन्तर डमरूयंत्र में रख आठ प्रहर की आंच देवे स्वांगशीतल होने पर हांडी को निकाल ऊपर लगे हुए पारदभस्म को समस्त रोगों में देवे तो अत्यन्त क्षुधाकारक दाता और कामशक्ति का वर्द्धक है इसकी मात्रा दो रत्ती की है॥१२२–१२५॥

अन्यच्च

वटक्षीरेण सूताभ्रौ मर्दयेत् प्रहरत्रयम् ॥ पाचयेत्तस्य काष्ठेन भस्मीभवति तद्रसः ॥१२६॥ (रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं० र० रा० सुं० र० सा० प० नि० र०)

अर्थ–पारद तथा अभ्रक भस्म को बड़ के दूध से तीन प्रहर तक घोटे फिर उसको खिपरे में रख तीन ही प्रहर तक बड़ की ही लकडी से घोटता हुआ चूल्हे पर आंच दे तो पारदभस्म होगा॥१२६॥

कृष्णभस्म

धान्याभ्रकं सूततुल्यं मर्दयेन्मारकद्रवैः ॥ दिनैकं तेन कल्केन पुटं लिप्त्वाथ वर्तिकाम् ॥१२७॥ कृत्वैरंडस्य तैलेन विलेप्य च पुनः पुनः ॥ प्रज्वाल्य तान्धः पात्रे सतैलः पारदः पतेत् ॥१२८॥ दिनैकं भूधरे पक्त्वा भस्मीभवति नान्यथा ॥ योजितो रसयोगेन तत्तद्रोगहरो भवेत् ॥ विशेषान्मेहपाण्डुवर्तिलयकासादिकाञ्जयेत् ॥१२९॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–धान्याभ्र को पारद के समान लेकर मारकवर्ग में कही हुई औषधियों के रस से एक दिवस तक मर्दन करे फिर उसी कल्क से कपड़े पर लेपकर बत्ती बनावे और उस बत्ती को अंडी के तैल में भिगोकर आंच जलावे, उस बत्ती का मुख नीचा रखे, उसमें से जो तैल के साथ पारद नीचा टपके, उसको लेकर एक दिन तक भूधरयंत्र में पकावे तो पारद भस्म होगा॥१२७–१२९॥

अथ नीलकण्ठरसविधि

लेय गगन तर सूत सुहागा । ये लीजै तीनों सम भागा ॥
रस ग्वारि के खररि दिन तीन । तुकै भस्म सीसी में कीन ॥
बीस पहर बालुका बारि । सैर अकेलो चूल्हे डारि ॥
नीलकंठ रस यह जानिजै । राजा राय को यही मानिजै ॥
पारो अग्निजीत पै होय । सतकी संगत रहिये सोय ॥
विन सोधेसो डूबे दाम । अरु गुन जाय गुनी को काम ॥
यों सोधे पारे को धरै । निहचै सो ऐसो गुनकरै ॥
नरके देह जिती है बलाय । या रसके खायेते जाय ॥
या रसको बल इतो विचार । नर भोगवे अखारे चार ॥
जुर अंकुश सब जुर को जानि । नीलकंठ रस कह्यो बखानि ॥

(रससागरबड़ा)

अथ मुनिबल्लभ रसविधि

कायम सूत तीस पल लेय । दुरत एक पल तामें देय ॥
रस तमोरिया ताको देय । चार पहर जो खरर करेय ॥
खररत तबै एक ह्वै जाय । तब मुद्राकर सीसी नाय ॥
आग प्रहर बारह की सुनी । चढ़ती चढ़ती कीज्यो गुनी ॥
गुरु ग्रंथन मे कहि गये मनौ । ताते गुन न बखानत बनों ॥
कायाकल्प ऋद्धि को दानि । इतने में ही लीज्यो जानि ॥
मुनिवल्लभ रस जानो येह । याते सब भागैं सन्देह ॥
अधिक कौन परगट कै कहै । करमतणी गति लागी वहै ॥

(रससागर, बड़ा रससागर)

पारदभस्म

स्वर्णादष्टगुणं सूतं लोहपात्रे विनिक्षिपेत् । गंधकं च कलाभागं स्तोकं विनिक्षिपेत् । देवदालीविष्णुक्रान्ता द्रवं दद्यात्पुनः पुनः । मृदुं च ज्वालयेद्वह्निं यावद्गंधकजारणम् ॥ सूतभस्म तु जायते सर्वरोगापहारकम् । वलीपलितकं हन्ति विद्यापुष्टिकरं परम् ॥१३१॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–सुवर्ण से आठ गुना पारद लेकर लोहे की कड़ाही में रख चूल्हे पर चढ़ाय मन्दाग्नि देवे और सोलह भाग शुद्ध गंधक लेकर थोड़ा थोड़ा बुरकाता जाय और ऊपर से बंदाल का रस तथा विष्णुक्रान्ता का रस चुवाता रहै और कड़ाही के नीचे तब तक मंदाग्नि देव जब तक कि गंधक जारण न हो तो वह रस समस्त रोगों का नाशक पारदभस्म वलीपलित को नाश करता है, विद्या

की पुष्टि का करनेवाला है॥१३०॥१३१॥

अथ कंचन रसविधि

पारो पीत लेय पल चार । कुन्दन तब तक माहिं दे डार ॥
लीजै पारे समके हेम । बढ़े कनक चंचल ते प्रेम ॥
नीर खररिके चांदी करै । पलक छांह में सूखन धरै ॥
पुनि गंधक के लेय पल पांच । खररि ग्वारि में राखै सांच ॥
तब चांदी ऊपर लिपटाय । सरवा जन्त्र मांहि धरवाय ॥
मुद्रा करि कपरौटी एक । आगि कुकुर पुट यहै विवेक ॥
सोई गंधक बहुरचो लेय । ग्वारिबाटिका लेप करेय ॥
गंधकसौं बीसा सौ बार । लेपै चांदी इह अनुसार ॥
जब चांदी पीली ह्वै जाय । तब रस भयो जानियो राय ॥
चांदी छोलि रतीभर लेय । फिरत तार तोल में देय ॥
जब कुन्दन होय बारह बानि । तो पुट दीजै यहै सुजानि ॥
खोयेते बाढ़े अतिकाम । कंचन रस या रस को नाम ॥
एक बरस भरि साधै कोय । कायाकल्प तासुकी होय ॥
अग्नि बरै नहिं बुझिहै नीर । यों बजरंगी होय शरीर ॥
पूरस रोग सबै तजि जाहिं । नयनहु कोई चपै न ताहिं ॥
भोग भोगवै चिरा समान । थंभन कहा बखाने आनि ॥
बायकष्ट जित्ते सनिपात । सात दिना के खाये जात ॥
या पारे विधि जाने सोय । यातें भलो न दीसै कोय ॥
(रससागर बड़ा)

कुश्ता सीमाव (उर्दू)

अर्क–गुंचा चमेली डेढ़ पाव सीमाव एक दाल में खरल करके जज्ब करे और टिकिया बनाकर खुश्क करके बोतः नुकरा में रक कर और गिलेहिकमत करके दो तीन जंगली उपलों की हवा से बचाकर आंच दे। शिगुफ्तः बरामद होगा। खुराक एक चावल तमाम अमराज मुजमनमायूसः खुमूसन जिरियान सीलान सुलासुलवौल कुव्वतवाह तौलीदमनी में अकसीर है और किसी किसी मर्ज में खता नहीं गया। मुजर्रिब है
(मुजर्रिबातफीरोजी)

कुश्तासीमाव (उर्दू)

सीमाव मुसफ्फा एक तोले कलई के साथ गिरह करके रोगन जर्दम सर्द करे और नेजबल नीम को बकरे के एक कपड़े पर बिछावें और उसमें वह गिरह रखें और मजबूती मे लपेटकर चीथड़ों से कपरौटी कर रात के वक्त दो सेर उपलों में हवा मे बचा कर आग दे। सुबह के वक्त निकालें। कलई पिघलकर नीचे बैठी होगी और सीमाव शिग्गुफ्तः अलहदा होगा। खुराक ज्यादः मे ज्यादः एक चावल तक कुव्वत बांह के वास्ते मामूल व मुजर्रिब राकिमुलहर्फ । (सुफहा ६० मुजर्रिबात फीरोज)

अथ बनितारमणरसविधि

लीजै शिलाजीत पच अंग । षोडश अंश काटिजै रंग ॥
ता रससों पारो भरदेय । चौंसठि पहर न छेव करेय ॥
पारो बैठि जाय इह रीति । खायजाय बनिता सौं प्रीति ॥
बनितारमन नाम रस येह । एक रती पाननिसौं देह ॥
याकी ठानि करेगो कोय । अगिनजीत ये पारो होय ॥
(रसरत्नाकर)

अथ राक्षसरसविधि

फूल बबूर कूटि रस छान । सूत खररि दिन सात सुजान ॥
सीसी अगिन बालुका कही । एक प्रहर ज्यों जानो सही ॥
गाढ़ि घूटि पुन पारो होय । पुनि वाही रस खरले सोय ॥
ऐसी शीशी तेरह करै । पारो नीरस होयकै भरै ॥
सूत भसम अति उज्जवल होय । बहूरि खरल में दीजै सोय ॥
दवा पल के जानो अनुमान । तब पलभरि विष देय सुजान ॥
तामें नीरटंक दश चार । सो राखे अरु घाले नार ॥
तब काढ़े में मर्दन करै । सब सोखे जल सीसी भरै ॥
बारह पहर जु अग्नि करेय । बहुरो फेरि खरल में देय ॥
उतनोंही विष ओटन धरै । ऐसी सो शीशी गिन करै ॥
रस राक्षस यह जानो गुनी । ऐसी वंगसेन में सुनी ॥
कैसे भसम होय जो सूत । सौ पुट विष की देओ धूत ॥
सौ शीशी में घटे न एक । गुनन होय सच यहै विवेक ॥
संज्ञा गई जासु की होय । अतिही गुन ह्वै सुनो रे लोय ॥
चावर एक देय ता खान । अब ताको गुन सुनो सुजान ॥
आँखिन सूझे दरश मयंक । उपजै छुधा अग्निके झंक ॥
वलीपलित नासै छिनमात । श्रवण सुनै चैंटी खररात ॥
एक पहर में ऐसी होय । बीसहु नार अघाय न सोय ॥
सन्नि तेरह चौरासी बात । कुष्ठ रोग सब तजि के जात ।
अरस रोग अरु मृगी अपार । सबै सिराते उदर विकार ॥
पीनस अरु भाजै गलगंड । व्योची दाद गुल्म बलगंड ॥
कार श्वास अरु क्षई नसाय । चय नासूर भगन्दर जाय ॥
पक्षाघात जाय कवि कहै । कफ संग्रहनी नेक न रहै ॥
रोग सकल भाजैं बलवानै । यह रस बज्र तासु को मानै ॥
मंडल भर जो प्रानी खाय । तो बगुला से भौर उड़ाय ॥
एक बरस जो साधै कोय । कायाकल्प तासु की होय ॥
पानी मांहि न डूबे सोय । अग्नि न बरे अंचभो होय ॥
श्वास एकदश बदलै जाहि । इहविधि बढे दशगुनी वाहि ॥
होय शुद्ध मन उपजै ज्ञान । लागै तबै धनीसौं ध्यान ॥
कौन सके सब गुनहि बखान । रस राक्षस अमृत सम जान ॥
(रसत्नाकर, रससागर बड़ा)

पारदभस्म

व्यालस्य गरले सूतं मर्दयेत्सप्तवासरम्[1] । शम्भुनालकृते यन्त्रे तन्मध्ये तद्रसं क्षिपेत् ॥१३२॥ वह्निं प्रज्वालयेद्गाढं वारिणाः चोर्ध्वशीतलम् । यामद्वादशकं चैव सुसिद्धो जायते रसः ॥१३३॥ शुल्वेगन्धार्धकं देयं गुंजैकं पर्वतानपि । देहे लोहे भवेत्सिद्धिः कामयेत्कामिनीशतम् ॥१३४॥ तिलमात्रं प्रदातव्यं सर्वरोगान्नियच्छति। सेवनाज्जायते सिद्धिरायुर्वृद्धिश्चिरन्तनी ॥१३५॥

(निघंटुरत्नाकर, र० रा० सुं०)

अर्थ–प्रथम पारद को सर्प के गरल में सात दिन तक खरल करे। पीछे उस पारद को शम्भुनाल से किये हुए यंत्र में डाल देवे और उस यंत्र को ऊपर से तो जल से ठंडा रखें और नीचे से बारह पहर तक तेज अग्नि जलावे। ऐसा करने से पारद सिद्ध हो जाता है। पीछे उसको तांबे के पात्र में डालकर आधा गंधक खपावे। पीछे इसमें से १ रत्ती पारद देने से पर्वतमात्र लोहे की और शरीर की सिद्धि हो जाती है अर्थात् लोहे को तो सुवर्ण कर देता है और शरीर में ऐसी पुष्टि कर देता है कि पुरुष सौ स्त्रियों से संभोग कर सकता है और इसके तिलमात्र के ही सेवन से मनुष्यों के सम्पूर्ण रोग नष्ट हो जाते हैं और चिरकालवाली आयु की वृद्धि हो जाती है॥१३२–१३५॥

कुश्ता सीमाव (चिमगादर में) (उर्दू)

बूकलमून यानी आफ्ताव पुरस्त को जिन्दः पकड़े और जितना पारा

१–सप्तवारं विभावयेत् इत्यपि ।

उसके पेट में डाल सके, डालें और मुंह और मुकंद बंद करके चार तोला फिटकरी को उस पर जमाद करे और चीथडों को मिट्टी में लतपत करके उस पर लपेटे और एक मिसीया आहनी संपुट में रखकर ऊपर लोहे के तार से खूब मजबूती से लपेट दें और खूब मजबूती से कपरौटी करके एक कूजे में जिसके नीचे सूराक किया गया हो रखे और हवा से बचाकर रोगन सेरगीन सहराई में आंच दे। शिगुफ्तः बरामद होगा। खुराक ज्यादः से ज्यादः निस्फरत्ती तमाम अमराज के वास्ते अकसीर हैं और जजाब के वास्ते अजीबुल असर है कि चालीस रोज में इसके पुराने पोस्त को उतार कर नया असली रंग का पोस्त पैदा कर देता है, इस हालत में मुमकिन है, दस्त भी आवें, मुजरिब है (सुफहा ६० व ६१ मुजर्रिबात फीरोजी)

सम्मति–केवल कोल कमश्मीरी ने इस तरकीब को निहायत मुजर्रिब बतलाया और कहा कि इसमें संपुट लोहे की जरूरत नहीं हैं न तार की न कूजे की, इस तरह आग दी गई तो कुश्ता हो गया, उसमें से सिर्फ खफीफ पैसे पर एक तरफ मलकर दूसरा पैसा ऊपर रखकर आंच में धोंके तो बगैर चर्ख खाये दोनों तिला हो जायेंगे।

पारदभस्म

कुम्भी समूलामुद्धृत्य गोमूत्रेण सुपेषयेत् । तद्द्रवैर्मर्दयेत्सूतं दिनकं कान्तसम्पुटे ॥१३६॥ लिप्त्वा नियामका देया ऊर्ध्वं चाधस्तदन्धयेत् । मृद्वाग्निना दिनैकन्तु पचेच्चुल्यां मृतो भवेत् ॥१३७॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ–यहां से आग सबीज पारद के भस्म करने विधि का वर्णन है, कुम्भी को जड़ सहित उखाड़ गोमूत्र से पीसे, उससे पारद को एक दिवस तक घोटकर लोहे के सम्पुट में लेप कर देवे और उस सम्पुट के नीचे और ऊंचे दोनों तरफ नियामक औषधियोंस का कल्क लगाकर सम्पुट को बंद कर देवे और चूल्हे पर मन्दाग्नि से बालुकायंत्र द्वारा पकावें। एक दिवस तक तो पारद भी भस्म होगी॥१३६॥१३७॥

अथ पारदभस्मविधि

शाकवृक्षस्य पक्वानि फलान्यादाय शोषयेत ॥ पेषयेद्रविदुग्धेन तेन मूषां प्रलेपयेत् ॥१३८॥ आदि प्रसूतगोजातजरायुश्चचूर्णपूरितः । तन्मध्ये सूतकं रुद्ध्वाध्मातो भस्मत्वमाप्नुयात् ॥१३९॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ–शाकवृक्ष के पके हुए फलों को लेकर और सुखाकर पीस लेवे फिर उस फलों के चूर्ण को आक के दूध से पीस दो मूषा (घरिया) बनावे, उस घरिया में प्रथम व्याई हुई गाय की जेर के चूर्ण को भर और उसमें पारद को रखकर कोयलों के धोंके तो पारद की भस्म होगी॥१३८॥१३९॥

अन्यच्च

कर्कोटीकाकमाची च कंचुकी काकतुम्बिका । काकजंघा काकतुण्डी काकिनी काकमंजरी ॥१४०॥ पिष्ट्वैता वज्रमूषान्तर्लेपं कृत्वा रसं क्षिपेत् ॥ मर्दितं दिनमेकं तु तैरेवार्द्रोत्थितै रसैः ॥१४१॥ रुद्ध्वाथ भूधरे पच्यादष्टवारं पुनः पुनः । मर्दयेल्लिप्तमूषां तां रुद्ध्वां ध्मातो मृतो भवेत् ॥१४२॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ–बांझककोड़ा, मकोय, कड़वीतूंबी, इनको पीसकर वज्रमूषा में लेप कर देवे। तदनन्तर लेप की हुई मूषा में पूर्वोक्त औषधियों के रस से एक दिन तक मर्दन किये हुए पारद को रखकर मुख बंद करे भूधरयंत्र में इसी प्रकार आठ बार कोयलों में पकावे तो पारद भस्म होगा॥१४०–१४२॥

अन्यच्च

गोघृतं गंधकं सूतं पिष्ट्वा पिण्डीं प्रकल्पयेत् । कुमारीदलमध्यस्थं कृत्वा सूत्रेण वेष्टयेत् ॥१४३॥ तं कान्तसम्पुटे रुद्ध्वा त्रिभिर्लघुपुटैः पचेत् । ततो मातो भवेद्भस्म चान्धमूषागतो रसः ॥१४४॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ–पारद तथा गंधक को समान भाग लेकर कजली करे उस कजली को घृत से लपेटकर गोला बनावे, उस गोले को घीग्वार के गूदे में रख ऊपर से सूत लपेट देवे फिर उसको कान्तलोहे के सम्पुट में रख तीन लघुपुटों में पकावे। तदनन्तर कोयलों में धोंककर निकाल लेवे तो पारद का भस्म होगा॥१४३॥१४४॥

अन्यच्च

रसो नियामकैर्मर्द्यो दृढं यामचतुष्टयम् ॥ द्विगुणैर्गंधतैलैश्च पचेन्मृद्वग्निनाशनैः ॥१४५॥ यावत्खोटो भवेत्तावद्रोधयेल्लोहसंपुटे ॥ हरीतकीजले पिष्ट्वा लोहकिट्टेन मूषिकाम् ॥१४६॥ कृत्वा तन्मध्यतः क्षिप्त्वा सम्पुटं चान्धयत्पुनः । तस्योर्ध्वं ब्रावकाकारं कृत्वा नागं द्रुतं क्षिपेत् ॥१४७॥ कठिनेन धमेत्तावद्यावन्नागो द्रुतो भवेत् ॥ न धमेच्च पुनस्तावद्यावत्कठिनतां व्रजेत् ॥ एवं पुनः पुनर्ध्मातस्त्रियामैर्म्रियते रसः ॥१४८॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ–पारद को चार प्रहर तक नियामन औषधियों से दृढ़ मर्दन करे फिर पारद से दूने गंधक तैल से लोहे के पात्र में बंधकर तब तक मंदाग्नि से पकावे जब तक वह खोट न हो जाय फिर लोहे की कीट को हर्र क पानी से पीस घरिया बनावे। खोट बने हुए पारद को उसमें रख लोहसम्पुट मे रख देवे। पीछे उस पारद के ऊपर शीशे को इस वजे से रखे कि वह झिरकर पारद में चला जाय और जब तक कठिन न हो जाय तब तक उसको धोंके, ऐसे बारबार धमाया हुआ पारद तीन प्रहर में मृत हो जाता है॥१४५–१४८॥

अन्यच्च

उन्मत्तविजयार्कं वा कांजिके सूतधावने । हालाहलेन तुल्येन दरदोत्थं विमर्दयेत् ॥१४९॥ नष्टपिष्टं तु तज्ज्ञात्वा भावयेत्पद्मिनीदलैः । गोधूमराशौ संस्थाप्य मासमेकं ततः पुनः ॥१५०॥ निष्कास्य क्षालयित्वा तमहिफेनेन मर्दयेत् । कुर्याच्च पूर्ववत्पश्चान्नवसारेण मर्दयेत् ॥१५१॥ कमलस्य रसेनापि कृष्णोन्मत्तरसेन च । हिंगुना गन्धपाषाणसत्त्वेनाथ विमर्द्य च ॥१५२॥ षण्मासान्तरत स्थाप्य सूरणास्योदरे रसः । एवं वर्षेण सिद्धः स्याद्रसराट् च स्वयं मतः ॥१५३॥ दृश्यते चूर्णसंकाशो जीवनाख्यो रसोत्तमः । एवं गुंजा द्विगुंजं वा दृष्ट्वा दोषबलाबलम् ॥१५४॥ दृष्टौषधबलं देयस्तेन सौऽर्करसोत्तमः । देयोगुणो न चेतेच्चेतं ब्रह्मापि न चेतयेत् ॥१५५॥

(अर्कप्रकाशः)

अर्थ–सिंगरिफ से निकाले हुए पारे को धतूरा और भांग के रस में घोट कर धो लेवे फिर कांजी में घोटकर धोवे, तदनन्तर पारे के समान भाग हालाहल विष को लेकर दोनों को पीसे फिर पारा तथा विष को एक जीव हुआ जानकर कमोदनी के रस की भावना देवे। गोला बनाय गेंहून के ढ़ेर में एक मास तक रख देवे फिर उस ढ़ेर में से निकाल समभाग अफीमके संग घोट कमलिनी के पत्तों के रस से भावना देकर गोला बनाय पहिले के समान एक मास तक गेहूं के ढ़ेर में रखे और इसी प्रकार समभाग नौसादर के साथ घोटकर कमल के रस, धतूरा, हींग और बैरोजा के साथ मर्दन कर गोला बनाय। जमीकंद के भीतर रख छः मास तक पड़ा रहने देवे। इस प्रकार एक वर्ष में यह रसराज सिद्ध होता है और चूर्ण के समान हो जाता है, इसकी एक रत्ती दो रत्ती रोग का बलावल जान औषध देवे तो यह रस मनुष्य को शीघ्र चेतन करता है। यदि रस से चेतन न होवे तो उसको ब्रह्मा भी चेतन नहीं कर सकता है, इसको जीवनरस कहते हैं॥१४९–१५५॥

अथ गोरखनाथी पारद भस्मविधि

मल्लिकाव्याघ्रकदलीकाकमाचीरसेन च । स्वर्णभण्डीरभृंगार आरग्वधरसन च ॥१५६॥ कन्याभल्लातपत्रोत्थरसेन परिमर्दयेत् । इष्टिकाकांजिकेनापि त्रिफलाक्वथितन च ॥१५७॥ कंटालिकादेवदालीवह्निगोक्षुरकण च । दर्ज्यर्कजेन दुग्धेन शकुलाक्षरसेन च ॥१५८॥ त्र्यूषणात्थकषायेण कीटषट्बिन्दुलेन च॥ चिंचिकालशुनात्येन दुग्धिकाया रसेन च ॥१५९॥ सितपर्णीमूषणपर्णीलांगलीस्वरसेन च । हिंगुलं च शिलागन्धं हिंगुसौवर्चलैः पृथक् ॥१६०॥ कांजिकेन समं पिष्ट्वा यामं यामं पृथक् पृथक् । मर्दयेच्च तथा यामं महाशंखेन मर्दयेत् ॥१६१॥ पलषट्कमितं सूतं बहुशो निम्बूकेन च । रसेन मर्दयेत्तापे भाव्यते च पुनः पुनः ॥१६२॥ दृढं तापीद्वयं नीत्वा समां सममुखां ततः । अधस्ताद्या भवेत्तापी पर्णचूर्णेन लिप्यते ॥१६३॥ पुनः पंचमृदो देया मृन्मध्ये लघुगर्तिका । तन्मध्ये लिंबिका पत्रं धत्तूरदलमध्यगम् ॥१६४॥ विरच्य मूषिकां गाढ़ीं तस्मिन्गर्ते निवेशयेत । तस्यां रसं विनिक्षिप्य शिम्बीपत्ररसो रसे ॥१६५॥ दीयते सेटकमिते सूक्ष्मच्छिद्रा शराविका । तत्पार्श्वे खर्परी देया निर्दोषा नूतना ततः ॥१६६॥ तापिकामनयेच्चान्यां कन्यकाद्रवलेपिताम् । ततो नौसादरेणोक्तामेकतः कुरु तद्द्वयम् ॥१६७॥ सिंधिलेपं ततः कृत्वा सशुष्कां चुल्लिसंस्थिताम । यथाग्निरुद्भवेच्चानुदीक्षिता र्धः समंततः ॥१६८॥ यामषोडशकं यावन्मंदमध्यक्रमेण च । तदा निष्पद्यते भस्म सूतकं श्रृणु यादृशम् ॥१६९॥ हीरकद्युतिसंकाशं प्रमाणं हीरकाकृतिम् । क्वचित्पर्पटिकाभासं गलद्रूप्यनिभं क्वचित् ॥१७०॥ पिंडरूपमिदं साक्षाद्दृश्यते दृष्टिसौख्यदम् । भक्षयेद्रक्तिकामेकां मरिचेन समं रसम् ॥१७१॥ गुडेनाबध्य मतिमान् ज्वरनाशाय तं पुरामंदेग्नौ वाथ हृद्रोगे दद्याल्लोणीरसेन च ॥१७२॥ अम्लपित्ते प्रदातव्यं विमला सत्त्वसंयुतम् । गल्यं बाजीकरं मेध्यं बलोत्साहकरं परम् ॥ एतस्मान्नापरं भद्रं विद्यते रसभस्मतः ॥१७३॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–मोतिया, लालअंड, केला, मकोय, पीलाभंगरा, चौलाई, अमलतास, घीगुवार, भिलावों के पत्तों का रस इनके सात पारद को एक एक प्रहर तक घोटे तथा ईट का चूर्ण और कांजी के संग त्रिफला का क्वाथ कटेरी, वंदाल, चित्रक, गोखरू इनका क्वाथ और थूहर का अर्क दुग्ध, श्वेत दूब का रस, सोंठ, मिरच, पीपल का क्वाथ, षड्बिन्दुलकीट, रमली, लहसन का रस, दुद्धी का रस, सौंफ, मूषाकानी, कलिहारी इनका स्वरस, हींगुल और स्याहनोन इनको कांजी के साथ एक एक प्रहर तक पारे को घोटे और इसी प्रकार एक प्रहर तक महाशंख के साथ मर्दन करे। इस प्रकार शोधित पारद का छः पल लेकर नींबू के साथ तीव्र घाम में बार बार भावना देवे। फिर दो गहरी कटोरी बनवावे जिस कटोरी को नीचे रखना हो उसको पान के रस से लीप देवे फिर उसमें पंचमृत्तिका को रख छोटा सा गढ़ा बनावे, उसमें शिम्बी के पत्तों का रस डाल घरिया को रख देवे। उस घरिया में पारद को रख ऊपर से शिंबी के पत्तों का रस निचोड़ देवे और घरिया के ऊपर इतना बड़ा सकोरा रखे कि जिसमें कम से कम एक सेर रस आवे और उस सकोरे को पेंदे में छोटा सा छिद्र हो और सकोरे पर खिपरा रख देवे। तदनन्तर दूसरी कटोरी को ऊपर से रख देवे। दोनों के मुख को नौसादर से जोड़ मुद्रा करे। फिर चूल्हे पर चढ़ाय सोलह प्रहर तक मन्द, मध्य और तीक्ष्ण क्रम से अग्नि देवे। स्वांग शीतल होने पर खोलकर देखे तो आप लोगों को कहीं हीरे के वर्ण के समान रंगवाला, कहीं पपड़ी के समान और कहीं गलती हुई चांदी के रंगवाला रस दीखेगा। एक रत्ती इस रस को मिरच सात के साथ पीसकर गुड़ में लपेट ज्वर आने से पूर्व खावे तो ज्वर नहीं आवेगा। मन्दाग्नि में और हृदय के रोगों मे नोनिया के रस में मिला देवे और अम्लपित्त होने पर विमला सत्त्व के साथ सेवन करे। मधु के साथ यह रस बल और उत्साह को करता है तथा वाजीकरण है। इससे उत्तम और कोई नहीं॥१५६–१७३॥

सर्वलोहमारणोपयोगी रसभस्म

उत्तरावारुणीदुग्धैः सर्पाक्षिजरसैस्तथा । हंसपादरसस्तद्वैद्वज्रयर्कपयसा सह ॥१७४॥ ब्रह्ममूलरसैस्तद्वत्कपिकच्छूशिफारसैः । विष्णुक्रान्ताषडंगोत्थरसैः पोनर्नवैस्तथा ॥१७५॥ यवचिंचा देवदाली कंचुकी पाठिका वरी । रसैः प्रमर्दयेत्सूतं भिषग्दशदिनावधि ॥१७६॥ तत्कल्कगोलकं कृत्वा यन्त्रे सोमानले पचेत् । एकविंशदिनं यावदग्निं संज्वालयेदधः ॥१७७॥ यन्त्रादुत्तारयेत्सूतं भस्मीभूतं सुपांडुरम् । तस्मै तत्सारयेल्लोहं सुवर्णाद्यमसंश-५म् । लेपेन पुटयोगेन सर्वलोहानि मारयेत् ॥१७८॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–इन्द्रायन का दूध, सर्पाक्षी का रस, हंसराज का रस, इसी प्रकार थूहर और आक का दूध, कौंच की जड़ का रस, विष्णुक्रान्ता के षडंग का रस, सांठ का रस, चौंटनी का क्वाथ, इनसे पारद को दस दिवस तक घोटता रहे, उसका गोला बनाय, सोमानलयंत्र में पकावे और इक्कीस दिन तक अग्नि देता रहे। सफेद हुए पारद की भस्म को उतार लेवे, उससे सुवर्णादि धातु उत्पन्न होते हैं, इसके लेप या पुट देने से समस्त धातु भस्म होते हैं।।१७४–१७८।।

कुश्ता के रखने का बर्तन

अकसीर को पानी में भीगने न दे और हवाई रतूबत में महफूज रखे, बरनः नाकिस हो जावेगी। बेहतर है कि चीनी या शीशे के जरूफ में या नारियल के डिब्बे में भरकर रख छोड़े। (सुफहा अकलीमियां २३)

पारद की सिद्ध भस्म

पारद, गंधक, समभाग लेवे, अश्वत्थ, न्यग्रोध (बड़), गूगल पिलखन इन चारों वृक्षों के दूधों से कजली को चार दिन तक खरल करना फिर मिट्टी के बासन में रखे, नीचे दीप्ताग्नि देना, एक प्रहर तक बड़ को लकड़ी से घोटता रहे तो पारदभस्म सिद्ध होगी। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

वेधक पारा

पारा और आमलासार गंधक को समान भाग लेकर चालीस दिन तक चीढ़ के तैल में अथवा देवदारु के तैल में खरल करना फिर एक रोज छाणों की आग देनी, शीशी में पाकर फिर तांबा वा चांदी के एक तोले में एक रत्ती पारा पाना तो सुवर्ण होगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारदभस्म

लोट का सज्जी सवासेर पक्का लाहोरी दड़र करके पानी में भेवना आठ पहर भीजी रहे फिर पाणी आध पाव उतार के एक एक तोला आमलासार खरल करना, दो घड़ी भर पानी ऊपरो नितार के कपड़े से पानी पृथक् करके उस आंवले सार को कुंजी में रखकर मुंह बंद करके भूभल बिचनरच आग देनी एवं बार बार करना, जब तक गंधक निर्धूम होवे फिर कंगण खार में इसी तरह करना तब तक जब गंधक काले पर रखा हुआ तैल हो जावे फिर उस गंधक से एक रत्ती लेकर तोला पारा खरल करना खाक होवे। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारदभस्म

वोड (बड़), अर्क (आक), इटसिट (विसखपरा), क्वार गदल (घीगुवार), हाथीशुंडी, बणा (बनकपास), लेहलीसण (सन), सहस्रदानी (हजार दाना), छत्री, दाधक, नागफनी, थोहर इन दवाइयों का रस तथा दूध पारद से चौगुना चौगुना लेकर खरल करना फिर अणबुज्ज चूना पंच बट्टि लेकर छानकर घड़े बीच आधा पाकर ऊपर गोली रखकर उपरे बाकी चूना पाकर घड़ेदा मुंह मांह के आटे से बंद कर पहरभर पानीमें रखना फिर सतकपड़माटी करके सुखाकर गजपुट देनी, ६४ चौसठ पहर पीछे निकाल लेना, पारद खिल (खील) हो जावेगा। उसको ताम्र वा कलीपर पर चढ़ावे। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

पाराभस्म

पारा तोला १ जावित्री माशे ३ खरल करके गुटिका शोरे बिच आंच देनी और पालक रस में ये गुटिका करना।

शोरे कायम की क्रिया

गंदा वैरोजा लेकर हांडी में पानी पाकर उसके मुख पर कपड़ा बन्द कर ऊपर गंदा वैरोजा पाकर हेठ आग बालणी वैरोजा पिघलकर पानी में पड़ जायेगा। पकाड़ा पीसक हो जायेगा। ५ तोले शोरे पर २।। तोले वैरोजेदा सत्त आग ऊपर रखकर पाणा शोरा कायम हो जायेगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्तासीमाव बजरियः शोरा कायम (उर्दू)

पारा एक तोले को एक बर्तन में रखे और उसके ऊपर शोरा कायम एक छटांक डालकर दूसरा बर्तन रखकर ऊपर थोड़े से कोयलों की आग देवे, कुश्ता हो जावेगा। (सुफहा ६० किताब कुश्तैजातहजारी)

कुश्ता व सीमाव अव्वल नौसादर से सीमाव को कायमुल्नार करके बादहू कुश्ता (उर्दू)

१–नौसादर के तैल निकालने के तरकीब यह है नौसादर १० तो० को चूना आबनारसीदः पांच सेर में देकर एक मिट्टी के बर्तन में बंद करके पन्द्रह सेर की आंच दे। जब सर्द हो जाये तो निकाल ले फिर उसे एक खुले बर्तन में दाखिल करके चहारचंद पानी दाखिल कर दे। चौथे रोज मुकत्तर लेकर पकावे। जब तमाम पानी जल जायेगा तो नौसादर तेल हो जायेगा।

२–अव्वल सीमाव को पोली ईट के बुरादे में एक पहर तक खरल करे ताकि वह स्याह कजली से साफ हो जावे, बादहू नौसादर के तेल दो तोले में नरम नरम आंच पर एक घंटे तक लगावट दे, इस कदर अमल से सीमाव मुतहर्रिक कायमुल्नार हो जावेगा, बादहू सीमाव मुतहर्रिक कायमुल्नार को अपने मुंह के लब (थूक) के साथ डेढ़ घंटे तक खरल करे। तमाम सीमाव नापिदीद और खाक हो जावेगा। बादहू खाक शुदः सीमाव को एक मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें करीबन आध सेर अर्क घीग्वार दाखिल कर दे। बर्तन का मुँह गिले हिकमत करके पन्द्रह सेर पुख्तः पाचक की आग दे, जब सर्द हो जावे निकाल ले, सीमाव बरंग आसमानी किसी कदर सफेदी लिये हुए कुश्ता होकर बरामद होगा।

३–यह कुश्ता सीमाव तभी दुनिया में अकसीर का काम देता है, दो चावल वजन बालाई या मस्कः में रखकर जैल के मरीजों को एक हफ्ते अशरे तक खिलाये। बहुक्म खुदामरीज तन्दुरुस्त हो जाते हैं, वह यह हैं सरअत, रिक्कत जिरियान, नामर्दी, भूख न लगना वगैरः वगैरः नामर्द को इक्कीस खुराक में मर्द बना देता है। (सुफहा ४–५ अखबार अलकीमियां १६/९/१९०७)

पारदभस्म (वेधक) सर्द से

कालेफणी सांप में पारा भरकर एक मिट्टी के बर्तन में रख गजभर के गढ़े में आधा गोबर भर खुले मैदान में आषाढ़ में उस बर्तन को रख ऊपर गोबर डालता रहे। वर्षा भर जब फिर जेठ आवे तब आग लगा दे। पारदभस्म तैयार होगी। (पं० ऋषीरामजी जंबूवाले ने बताया)

और भी

कृष्णसर्प में पारद भरकर एक हांडी में पाकर गर्त के नीचे ताजा गोमय भर बीच हांडी धर ऊपर फिर गोमय पाता रहे। गर्त को खूब भर दे। चार मास पड़ा रहा। ऊपर गोहा सूख जाये तब और सूखे गोहे ऊपर लगाकर आग देवे। शीतल होने पर निकाले। वह ताम्र को सुवर्ण करता है। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता सीमाव चिमगादर में (फार्सी)

बियारन्द सीमाव दो दाम व सहचहाहारखरी दरपार्चः साफ नुमायंद पसबाशीर तुलसीदरजर्फ गिली वा अंगुस्त बिमालंद ताकि सीमाव दानः दानः शवद बादहू बिगीरन्द चिमगद्दर कलां नर व कर आँब रीशमां बिबन्दन्द दरहलक आवेजन्द पस दहन ओरा बिदोजद तासीमाव बरन उफ्तद। बादहू आँरा दरहम गिरफ्तः गर्द ओवगिले हिकमत दरगीरद चुनां चः बरतमामी चिमगद्दर गिलबाशद व अज हेच तरफ खाली न बाशद पस आँरा खुश्कसाजद दरआफ्ताब बचूं। खुश्क शवद दरदेग गिलीहिंद व बसरपोश दरपोशद गिर्द आँमुहकिम कुनद बर्गिलि हिकमत बदर चकर गज दरगज बातिश पाचक दस्ती बिसोद ता अस्तरव्वां हाइचिमगद्दर आँखा किस्तर शवद बई दर पंचरोज बदर यक हफ्तः गोश्त व पोस्त अवख्तखां सोख्तः खाकिस्तर गर्दद पस अज देग बर आवुर्दः गुल दूरकर्दः खाकिस्तररा दरजाइ महफूज बिदारंद बमिसरा गुदाख्तः कदरे अजई अकसीर बहुए रेजद तिलागर्दद बरकलई नीच अंदाजद शायद कि ईनहम चीजें बिशवद (सुफहा ४ किताब मुजर्रिबात अकबरी फार्सी व सुफहा ७ उर्दू)

कुश्ता सीमाव व हरताल अकसीर अजलाद व अकसीर अजसाम बगले में (उर्दू)

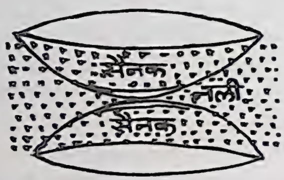
हरताल तबकी तीन तोला, सीमाव मुसफ्फा तीन तोला, दोनों का अर्क संभालू में दोपहर तक खरल करे। बाद अजाँ अर्क पोस्त दरख्त सिरस में बदस्तूर दोपहर तक खरल करके टिकिया बनाकर हिफाजत से रख ले। बगला मशहूर एक जानवर है नौ अदद ले और अस्तख्वां सबको साफ करके खुश्क करे। बारीक सुरमे की तरह पीसे, इस मैदे को शीर आक में तीन मर्तबः तर व खुश्क करके इसी से खमीर करे और एक कटोरी बोते की सूरत में इससे बना ले। खुश्क करके शीर आक से पुर कर ले. साये में पड़ा रहने दे। हत्ताकि खुश्क हो जावे। इसी तरह सात पुट दे टिकिया अव्वल को इसी कटोरी में रखकर इसी तरह सात मर्तबः शीर आक को धूप में या साये में खुश्क कर ले, एक और कटोरा लोहे से बनावे जो कटोरा अव्वल से बड़ा हो उसको अन्दर बाहर नमक सांभर से जो शीर आक से खमीर किया गया हो, लेप कर दे। कटोरी को इसमें रखकर हर खाली जगह को नमक सांभरवाले खमीर से इस तरह भर दे कि कोई खाली जगह न रहे। एक गिलीं मटकी में जो बहुत मोटा हो बल्कि बेहतर यह है कि खुद सिफारिश से खूब मजबूत और मोटा तैयार करावे। इस मटकी में तीन अंगुल बलन्द खाकिस्तर चोबपलास नीचे बिछावे। डिब्बा आहनी मजकूर को इस पर रख दे। खाकिस्तर मजकूर को इस पर रख दे। खाकिस्तर मजकूर इर्दगिर्द और ऊपर खूब जोर से दे दे और खूब दबावे। हत्ताकि मटकी की गर्दन तक आ जावे। अगर चोब पलास की खाकिस्तर दस्तयाब न हो सके तो पीपल की भी काम दे जायेगी। मटकी को सरपोश देकर मुहर करे और सब पर खूब गिले, हिकमत करके मुनासिब चूल्हे पर सवार करे। मगर तमाम अमल में बावजू होना जरूरी है या काम अजकम पाक व साफ तौ जरूर हो। चोबपलास से आंच दे। नरम से शुरू करे। दमबदम आंच बढ़ाते जावे। आखिर की आंच बहुत तेज होनी चाहिये। सोलह पहर तक आंच देना चाहिये। चूल्हे पर ही सर्द बस खुदा का फज्ल है मगर याद रहे कि खूब अहतियात से तमाम खाक को ऊपर से हटावे और जीवक तक बजरनेख अकसीर शुदः को निकाल कर हिफाजत से रखे। अशद जरूरत के वक्त एक बहलूली मिसमुनक्का को बोतः में पिघलावे और अकसीर मजकूर से एक खराखाश की बराबर इस पर तरह करे और कुदरत खुदा मुलाहिजा फमवि मगर अकसीर को मौम में लपेटकर तरह करे उस वक्त जब कि खूब चर्ख आ जावे वरनः नाकिस रह जायेगा। खाने के काम में खुराक एक चावल से भी कम वर्ग तंबूल में एक आदमी के वास्ते एक हीखुराक तमाम उम्र काफी है, मगर खिलाने में अहतियात करनी चाहिये। आदमी का मिजाज देखकर खिलावे एक चावल इश्तहातक खुराक है इन्तशार इस कदर होता है कि बाजे वक्त जान का

खौफ पैदा हो जाता है और नीज दीगरन नुकसान का अहतमाल है। गरजे कि तबियत समझदार और हाशियार तजरुबेकार होना जरूरी है और वह बगले की हड्डीवाली कटोरी भी पीसकर हिफाजत से रख ले एक रत्ती खुराक है जैकुल नफस, बवासीर, जलोदर, वायुगोला, झुला वगैरः अमराज व मुजमनः में अकसीर आजुम है तमाम हुआ नुसखा देखो (रिसालह इसरार सीदरी सुफहा ५३ ता० ५६)

नाजरीन ऊपर का नुसखा आपने पढ़ लिया है यह रिसालः इसरार सेदरी का नुसखा है। एक साहब मुहम्मद अलीमखां सरहदी तहरीर फर्माते हैं कि इस नुसखे को मैंने बनाया वाकई सही साबित हुआ और यह भी तहरीर फर्माते है कि भिलावे के तेल में शामिल करके यह अकसीर दो खुराक मैंने खा ली है सफेद बाल गिरकर आब स्याह निकल आये है और जिस्मानी ताकत का यह हाल है जैसा कि आलम जवानी में था हर वक्त खेलकूद को तबियत चाहती है जिस कदर गिंजा खाता हूं, सब हजम हो जाती है कवज का नमूद तक नहीं रहा। रंग बदन मिस्ल फूल गुलाब को निखरता चला आ रहा है वगैरः २ (सुफहा ३–४ अखबार अलकीमियां १६/६/१९०७)

पारद भस्म बगले से

पक्षी बगला जिसके वाजुके पर त्याह हों उसको इस तरह मारे कि उसके बाजू की हड्डी न टूट जावे। फिर उसके दोनों बाजू की हड्डी यानी नली निकाल ले बेहतर हो कि दो पक्षियों से चार अदद नली निकाल ले। नली को एक तरफ से तराश कर उसके अन्दर सुई से सूराख करे। लम्बाई में फिर उनमें पारा भर दे और उनका मुंह अंडे की जर्दी व चूने से बन्द कर दें। बाद को एक सैनक नीचे ओंधी रख उस पर वह नली रख दूसरी सैनक सीधी रख



दे और गोबर के चूरे से दोनों सैंनकों को ढक बहुत हलकी आंच दे। कपोतपुट सर्द होने के बाद निकाले। पारद भस्म निकलेगी एक चावल इसमें में मांस के अन्दर रख नामर्द को खिला दे और जब तक उसको दो तीन दस्त न आवें खाना और पानी न दे ६ घंटे के करीब दस्त होगा जिसमें झिल्लीसी निकलेगी। इस हालत में गर्मी बहुत मालूम होगी इस वास्ते सर पर खूब मशक से पानी डाले वाद दस्त आने के जो मर्जी आवे खाय निहायत दर्जे की वाह पैदा हो जायेगी। (कश्मीरयात्रा में प्राप्त)

कुश्ता सीमाव बजरियः नली बगला (उर्दू)

पारा एक तोला नली बगला के दर्मियान इस तरीके से रखें कि निस्फ नली से गूदा निकालकर पारा डाले और फिर निकला हुआ गूदा डालकर कपरौटी करके दो प्यालों के दर्मियान रखकर थोड़ी से कोयलों की आग देवे वक्त सर्द होने के पारा कुश्ता शुदः निकाल ले (सुफहा ६० किताब कुश्तैजात हजारी)

सीमाव का कुश्ता माजून में (उर्दू)

माजून फिलास्फिया दो तोले गुलकन्द आला दो तोले दोनों को लतपत करके नुगदा बना ले अजवाइन के पानी में सीमाव ३ माशे को एक दिन खरल करे नुगदा मजकूर में देकर एक सेर रेगमान की आग दे सीमाव कुश्ता होकर निकलेगा। हवा से बचकर आंच दे, बाजदफे थोड़ी भी वे अहतियाती अमल में आने से अमल बातिल हो जाता है। (सुफहा १४ अखबार अलकीमियां १६/६/१९०७)

कुश्ता सीमाव (उर्दू)

नकछिकनी जो कीमियाई बूटी है सीमाव उससे कुश्ता हो जाता है। (सुफहा १८१ किताब अकलीमियां)

कुश्ता सीमाव बजरियः केला (उर्दू)

एक जड़ केला जो तूल में एक फुट से कम न हो लेवें और इसमें निस्फ तक सूराख करके सीमाब एक तोले डालकर बरामद शुदः गूदा डालकर रस्सी सनसे खूब मजबूत करके गिलेहिकमत करके करीब दस सेर पुख्तः की आग देवे इन्शाअल्लाह कुश्ता होगा वह मेरे दोस्त का मुजर्रिब है। (सुफहा ६० किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ता सीमाव मूली में (उर्दू)

सफेद मूली जो वजन में सेर भर करीब हो लेकर दर्मियान से काटकर चाकू से खोदकर एक तोला सीमाव डालकर फिर वह गूदा जो खोदने से निकला था, डालकर अच्छी तरह संपुट करके बल्कि कपरौटी करके तेज गर्म भाड़ की वालू में दबा दो सुबह को निकाल लो, उमदा कुश्ता हो जावेगा। इसके बंद करने की हिकमत चाहिये। वरनः निकल जावेगा। (सुफहा ५७ किताब कुश्तैजातहजारी)

पारद की भस्म (वा चांदी नींबू में)

कागजी नींबू बीच १ तोला पारा पाकर कपड़मिट्टी करके दोपाथी विच आग दैंणी फिर चौक १ तोला, कुठ १ तोला, दोनों को पीसकर दो ठिका बना के उनके बीच बोते विच पाथ के गोहों की आग दैणी। फूल जायेगा। सिद्ध भया नहीं तो चांदी वण गई (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता सीमाव बजरियः बेलफल (उर्दू)

एक पल बेल का गोंद निष्फ के करीब निकालकर दर्मियान पारा डालकर फिर वाकी गूंद डालकर कपरौटी करके आग करीब गजपुट के देवे। कुश्ता हो जायेगा। (सुफहा ६० किताब कुश्ता जात हजारी)

कुश्तासीमाब बजरियः करेला (उर्दू)

एक अदद करेला बड़ा जर्दरंग का लेकर उसमें सूराख कर ले। दर्मियान दो तोला सीमाव रखकर मुँह बंद करके कपरौटी करे और बकरी या भेड़ों की मेंगनियों की दो थापियों बड़ी होवें। फिर थापियों के अन्दर गढ़ा खोदकर १ १/२ सेर पुख्तः एरंड डालकर दर्मियान करेला कपरौटी करके आग करीव २० सेर पाचक दस्ती की गढ़ा में देवे। बाद सर्द होने के निकाल ले। (सुफहा ५९ किताब कुश्तैजात हजारी)

पारदभस्म मिर्च से

एक ताजा सुर्ख मिर्च में पारा भरकर उसके सुराख को डोरे से बांध दिया जावे। ऊपर से पारा भर ताजा सुर्ख मिर्च पीसकर गिलोला बना दिया जावे। कपरौटी कर दस सेर की आंच दी जावे। भस्म हो जायेगी। (कश्मीरयात्रा में प्राप्त)

कुश्ता सीमाव रामपत्ती से खरलकर हंसराज की लुगदी में कुश्ता (उर्दू)

रामपत्ता ६ माशे, एक तोला हंसराज एक तोला सीमाव को रामपत्ती में हल करके हंसराज का नुगदा करके कपरौटी करके दो सेर उपलों की आग देवे। अज मुहम्मद अलीखां वल्द चौधरी शेरखां मरहूमनियामेज (सुफहा ५८ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्तसीमाव बजरियः तुलसी (उर्दू)

एक तोला सीमाव लेकर कामिल एक प्रहर तक अर्क बर्गतुल सी मुकत्तर खरल करके दो सिप्पियों को डोरे से बांधकर तीन दफे खुश्क करके पांच सेर धान के भुस में हवा से बचाकर आग देवे। पारा कुश्ता हो जावेगा। (सुफहा ६० किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्तासीमाव रतनजोत से (उर्दू)

बूटी रतनजोत एक पाव अर्क में एक तोला सीमाव खरल करके एक मिट्टी की कूजिया में बंद करके गिलेहिकमत करके निस्फ से उपलों की आग दे दो। मेरा मुजरिब है मगर बाज दफे उड़ भी जाता है। (सुफहा ५७ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्तासीमाव चिरचिटे से टिकिया बनाकर (फार्सी)

कुश्तासीमाव जो महोयियों की जान है, दरवेश साहब कसमिया फर्माते थे कि यह खिलाफ नहीं है।

बिगीरन्द सीमाव मुसफ्फा असली व आँरादर अर्क चिरचिटा सबज सहयोग खरल साजन्द चूँकर्स शवद दर दो उपला कि हर वजन यकसेर बाशद दरः उपलः गार करदः वर्गनीव फर्शकर्द दर्मियानकर्स निहादः व बालायश वर्ग मजकूर निहादह उपला दोयम निहादह लव बंद कर्दह आतिश दिहन्द व उपला मजकूर अजमुश्क बुज स्याह यकरंग तैयार करे। आलादर्जे का होगा। खुराक वास्ते मभी व मुगल्लिज व मुश्त ही एक चावल मुवाफिक बंदरकः जैसा कि मिजाज हो अकसीर है। (सुफहा १० अखबार अलकीमियाँ १/११/१९०७)

पारद की जड़ी से गोली बना कर स्थिर कर भस्म करना

बृहतीकटकारिकारसेन मर्दनात पारदस्य गुटिका कार्य्या गुटिका ब्रह्मदंडीर-से पाचनींया तेन पारदगुटिका स्थिरा भवति ततः सरे कच्चागोहे वा तुष में अग्नि देणी पारद भस्म जायते । (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

पारदभस्म की बूटी से गोली बांधना (बूटी से भस्म)

[१] कामरसबूटी में पारे की गोली बन जायेगी। उस गोली को शरपुष्प, जजूलीदेरु में और कामरसबूटी इन तीनों की नुगदी बना के गोली रख के आग देने से पारा फुल हो जायेगा। कली पर चलेगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

कुस्तासीमाव गोभी में गोली बना अनार में कुश्ता (उर्दू)

गोभी के अर्क में तीन तोला सीमाव दो रोज तक खरल करने से पारा मुनेअक्किद हो जायेगा। बादहू एक ताजा अनार खाम में शिगाफ करके उकद सीमाव उसमें रखकर बाद गिले हिकमत मजबूत तीन सेर की आंच दी जावे। सीमाव बरंग सफेद कुश्ता होगा। (सुफहा नं० ४ अखबार अलकीमियां १५/५/१९०७)

पारद भस्म की तिधारे से गोली बना (घीग्वार से भस्म)

दो तोले पारद को सेहुंड के दूध में तीन चार दिन तक रखने से गोली बन जाती है उसको पाव भर घीग्वार के लुगदे में रख कर आंच रखकर आंच देने से भस्म हो जाता है। पारद को तिधारा थूहर के दूध में घोटकर थोड़ा ले फिर घोटे। इस तरह करने से तीन दिन में गोली बंध जावेगी। (कश्मीर यात्रा में जंबूनिवासी सायीदास से प्राप्त)

कुश्तासीमाव सहदेवी सफेद गुल के चोया से मसका बना उसकी लुबदी में कुश्ता (उर्दू)

सहदेवी सफेदगुल की मतलूब है जिससे सीमाव इस तरह कुश्ता हो जाता है कि अव्वल उसके अर्क का चोया दे, यहां तक कि मस का होजाय। बाद उसके इसी की लुबदी में रखकर पांच सेर कंडों में फूंक दे, कुश्ता हो जायेगा। छोटी सहदेई मुराद नहीं है। (सुफहा २७९ किताब अलकीमियां)

पारदभस्म जड़ी से गोली बना

(अर्क) (छत्रिका दुग्धिका) दुग्धाभ्यां सपुत्राभ्यां गुटिकां संपाद्य लोहसम्पुटे ससंभ्रिकार्गलफणिकाफलमध्यनिहितगुलिकां दत्त्वा हस्तपुटं दद्यात् सिद्धं रसभस्म बंगे योज्यम् ।

बंगशोधन

नवसादर, सुहागा, फिटकिरी, सुधाचूर्ण, सैंधव, पंचभिर्वंगशोधनम् । कालीवरैकडपंचांगोर्के तप्तं तप्तसर्कपत्रं दत्त्वा धमेदिति । एवं गयदापुष्पार्केऽपि कृष्णधकरपत्रपुष्पाभ्यां सार्कदुग्धाभ्यां वा गुटिका कार्या । (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता सीमाव कीमियाई (उर्दू)

सीमाव को चारयोम बुरादः खिश्त पुख्तः में सहक करके गर्म पानी से धोकर साफ करके चार दिन तक भाँगरे स्याह गुल मामूली में और चार योम शीरः बिजौरबूटी में सहक किया बादहू दोनों शीरा मसाबी मिलाकर तीन दिन बराबर दोनों शीरों के चोया दे बाद उसके दर्मियान दो चिराग गिली के रखकर और ऊपर से तलछट मजकूरः बूटियों का डालकर मुअम्मा किया और खूब गिले हिकमत करके खुश्क कर लिया और बारह सेर कंडों में भडका की आंच दे इस अकसीर को एक रत्ती लेकर तोला भर कलई पर तरह करके चांदी बनाया दोनों बूटियां नेनीताल पर बकसरत पैदा होती है (सुफहा २७३ किताब अलकीमियां)

पारदभस्म जड़ी से जलयंत्र में

घग्गरबेल के पंचांग के रस से खरल दिन पारद से चतुर्गुण रस में खरल करणा फिर विष्णुक्रान्ता रस में खरल करना फिर जलयंत्र में अग्नि दैणी भस्म होवेगी वेधक लक्ष्मण रस से खरल करना जो हाथ आवे तो नहीं तो नहीं। घग्गरवेल श्वेत, पीत, रक्त, कृष्ण ऐसी चार प्रकार की होती है। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारदभस्म जसदयोग

लोटा सज्जी आधसेर, फिटकिरी आधसेर, काही आधसेर, नौसादर आधसेर, कालीमिर्च १/२ सेर आध आध सेर पक्का १० सेर पाणी २॥ बाकी उसमें ३१ बार डालना। ८ तोले जस्त गलागलाकर १२ पारा सिंग्रफ से निकाला हुआ उस पारे को निंबू के रस में खरल कर लेना फिर दोनों का टिक्की बना लेनी उसके हेठ ऊपर सीपदा चूना डंडे थूहर के दुग्ध से तर किया हुआ दे के नरम नरम अग्नि तब तक देनी जब तक फुल हो जाय फिर काम में लगाओ। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

१–यह अकसर धान के खेत में पैदा होती है बरसात में।

१–सब चीज आध आध सेर लेनी।

पारदभस्म जस्तयोग से (वेधक ताम्र का सोना)

जस्तदी डब्बी आठ तोले, पारा आठ तोले, मँहंदी दे पाणी में खरल करके धो डालना फिर पारा डब्बी में पाकर उपरों महँदीदा पाणी भर देना उस डिब्बी को पेठे में देकर बंदकर ऊपरों भूरेदी टाकी से तीन कपड़माटी करके सुखाकरा गजपुट दैणी खिल हो जायगी उसको ताम्रपर पाणा (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता सीमाव बजरियः रांग (उर्दू)

सीमाव दो तोले, कलई दो तोले, रोगन सरसों ८ तोले को किसी कर्छी आहनी में डाले और इसमें सीमाव डाले और ऊपर कलई डाल देवे। जब पारा और कलई की गिरह बन जावे तब तेज बल को खूब बारीक करके गिरह मजकूर के नीचे ऊपर देकर कपड़ा करीब दो सेर के लपेट लपेट महफूज जगह में रखकर आग लगावे बवक्त सर्द होने के निकाल ले कलई अलहदा पडी रहेगी ओर सीमाव कुश्ता हो जावेगा। (सुफहा ५९ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ता सीमाव बजरियः रांग

सीमाव दो तोला, कलई दो तोला, पहले कलई को पिघलाकर पारा शामिल करके बर्गदरख्व झुंड के एक पाव नुगदे के दर्मियान रखकर कपरौटी करके आग दे देवे। करीब तीन सेर के मगर गढा में कलई अलहद हो जावेगी और सीमाव कुश्ता हो जावेगा (सुफहा ५९ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्तासीमाव बजरियः रांग (उर्दू)

पहले कलई की दो कटोरियां बनावे इसमें महँदी या भंग को अच्छी तरह बारीक करके निस्फ डाले और इसमें एक तोला पारा डालकर बाकी निस्फ महँदी या भंग डाले बादहू हर दो कटोरियों को आमेज करके एक उपला कला में रखकर उसके ऊपर दूसरा उपला रखकर लव बंद करके गढा में महफूज जगह आग दे देवे। सीमाव फूल हो जायगा और कलई नीचे बैठ जावेगी। (सुफहा ५९ किताब कुश्तैजात हजारी)

पारद फुल्ल पारदभस्म चांदीयोग

पारद यथेष्ट शुद्ध, काष्ठक, तारे मीरेदातैल, हुसन युसफ का तैल काष्ठक से गुटिका पारद की बनानी। फिर तारे मीरेदे तैल में पकानी फिर हुसन यूसफ के तैल में भिगोकर कुठाली में रखकर भस्त्रा धोंकना पारद फुल हो जायगा वंग में योजना करना। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारद भस्मवेधक शंखियायोग

रत्तक कुट्ठ के पाणी में भिगो छोड़ना फिर उस पाणी में रत्तक समेत पारा खरल करना गोली बन जायगी।

शंखिया अम्मीरस दा चोबा १ तोले को ५ तोले इसके गोलीपर लेपकरके मृतपात्र में २ सेर कच्चे की आग देनी तोले त्रामेपर १२ रत्ती श्वेत होवे (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारद भस्म शंखिया गन्धक आदि के तैल से

शंखिया, श्वेत नौसादर, लोंटी सज्जी तीनों समभाग दडर करके कांस्यपात्र दो में कणक दे आटे नालमुद्रित करके सुखा के रखना धोवियों की खुब में लटका देना चार पहर में तेल होगा उस तेल से धारण करना।

ततः मृन्मयी कूपिका कार्य्या तस्या अंतः शोरेदी भावना कार्य्या तस्यां पारदं यथेष्टपरिमाणं निधाय पूर्वं तैलबिंदुं निक्षिप्य संमुद्य स्वल्पो वह्नितापो विधेयः ।

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारद भस्म शंखिया आदि के तैल से तेजाब से वेधक

१ शंखिया गन्धक, नौसादर गंधक, आँवलासार, सुहागा, शोरा सबको दरड करके तेजाब कर लेना फिर उस तेजाब में आतिशी शीशीमें पारकर २१ दिन में धूप में रखना पारा फिर सतकपडमाटी करके सात सेर गोहे की पुट देनी सिद्ध भया उस पारे को ताम्र वा कली पर पाणा तोले पर १ रत्ती (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता सीमाव बजरियः तेजाब गन्धक सयफवाद (उर्दू)

तेजाव गंधक ४ तोले, सीमाव मुसफ्फा १ तोला दोनों को लोहे चीनी की प्याली में दाखिल करके कोयले की आंच पर रख दे और आप जरा फासले पर रहे क्योंकि इसका धुआं मुजिर है जब तमाम तेजाव जलकर सीमाव को खाक कर देवे उस वक्त आग से अलहदा करके वा अहतियात कुश्ता सीमाव को शीशी में रख छोड़े। एक निरंज कुश्ता सीमाव को एक माशे खील फिटकिरी में शामिल करके मरीज सुजाक कुरह को दे इन्शा अल्लाह दो तीन खुराक में ही आराम हो जाता है।

(सुफहा १३ अखबार अलकीमियां १६/९/१९०७)

सीमाव को नुकराका चारण करा गोली बना उससे कुश्ता अकसीरी कमरी (उर्दू)

कपडासंगीन लेकर चने की ओस में इक्कीस रोज तक तर करके रखे और नमक बना ले चार तोला सीमाव इसमें खरल करे एक माशा नौसादर और तीन माशा वर्क नुकरा मिलाकर बाहम खरल करे सीमाब बस्ता हो जावेगा। जामा मजकूर की थैली बनाकर उसमें पारा अकद शुदा को लपेटे और एक हांडी में ५ सेर नमक संग बारीक पीस कर भरे दर्मियान नमक के थैली मजकूरा रखकर ऊपर से और पावसेर नमक भर दे और गिले हिकमत करके चौवीस पहर बराबर आग देवे सर्द होने पर निकाले सीमाव शिगुफ्तः होगा। एकजुज अजाँवर एक तोला अजजेर जोशीदह अंदाजन्द कमर ख्वाहद बूंद (अजव्याज हकीममुहम्मद फतहयाबखा सोहनपुरी।)

सीमाव का कुश्ता अकसीरी बजरियः तेजाब कसीस (उर्दू)

शोराकलमी २।। सेर, फिटकिरी सुर्ख १। सेर, कसीस २ तोला, हरताल तवकिया २ तोले, दोमटकों में डौरूजंतर बनाकर तेजाब खींचो और बार दीगर उसमें डालकर कसीस हडताल तवकिया फिर दो और फिर डौरू जंतर में खींचो तेजाव खिंच आवेगा। पारा कदर हाजत तेजाब में खरल करो कुश्ता हो जावेगा शीशी आतिशी कपरौटी करके सीमाव डालकर अर्क जलनीव जर्द डालकर (काह) (कागमेस) से मुँह बन्द करके वालुकाजंतर में आग लगा दो नीचे पारे के आतिश हो चार पहर आग दो खुश्क होने पर फिर तेजाव में डाल खरल करो और अर्कजलनीब भर कर फिर वालुकाजन्तर में पकाओ सात दफै पकाने से कुश्ता अकसीरी हो जावेगा मुजर्रिबअस्त। (अजबियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी)

सीमाव का कुश्ता अकसीरी (फार्सी)

वियारद नीमादस सीमाव अन्दा दर एक लैमूं सुर्ख कागजी दाखिल कुनद सरओ मुहक्किम बन्दद दर मुकाम कि मर्दुम शाशह कुनद आंजा दफन कुनद तानः रोज वाद कशीदः दरयक लैमू दीगर हमचूं कुनद बादहू सहवारा दरेक लैमूं हमचुनी कुनद न रोजनः रोज जुमलै २७ रोज पसबियारद यकवैजा मुर्ग

खाली कर्द: दरआं सीमाव बस्त: निहादह अजअकं वूटी काघरी पुर कुनद पस हस्त या हफ्त छेप कुनद सीमाव दरू अदाख्त: पस खुम बन्द कुनद दो दो सेर पाचक दस्ती आतिश दिहद इन्शा अल्लाहताला शिगुफ्त: शवद पस बियारद दो टिकिया कलई विराद भिकदार नखूद अज अकसीर मजकूरह अन्दाजंद ता नुकरा खालिस शवद मुजर्रिब अस्त (अज बियाज हकीम मुहम्मद फतहयाब खां सोहनपुरी)

अदबियानामालूम बराइयक तौला हकसम। सफेद गेरूमची ६ माशे। दूध सफेद आक १ तोला। दूध तिधारा १ तोला। सुहागा तेलिया कदर हाजत जेरूवाला निहन्द व पाचक दस्ती बकदर सहपाउ अगर अशयाइ नामालूम ज्यादह शवद ज्यादह कुनद बादजान फिलजात मकरूल मिस्लई कुश्ता सीमाव तिलाकुनद (कुश्ता फल्लूस दरअर्कमकोह दर (अजवियाजहकीममुहम्मददफतहयावखांसोहनपुरी)

कुश्ता सीमाव भैंस के सींग में (उर्दू)

पारे का कुश्ता नरजामूश के सींग में कपरौटी शुद: में एक बैरागी को करते देखा है और उसमें पैसे को सफेद कुश्ता करता भी कई बार देखा गया था। (अजबियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी)

कुश्ता सीमाब (फार्सी)

वियारद नीमआसार चूना व शाख जामूश कि दरॉ कुंदज जेरुवाला मसका कायम निहादह बालाइश लेप ईकदर कर्द: दर सहमन चोबआतिश दिहद बाद अजसर्द शुदन विंरज खुराक ववेधक सादक अज। (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयावखां सोहनपुरी)

कुश्ता पारा (उर्दू)

नमक लाहौरी की डली लेकर बशकल कुठाली बनाकर उसमें गोली सीमाव रखें और ऊपर से उसी नमक से दूसरी कुठाली रखकर गिलाफ बनाकर आग अतरनी में आतिश दो पहर देवे पारा कुश्ता हो जावेगा। (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयावखां सोहनपुरी)

शिगुफ्त यानी कुश्ता सीमाव (फार्सी)

अर्क गुलनागफन ऽ। (सीमाव) मुसफ्फा १ तोला खरल कर्द: हवूब साजन्द फज्लहू जानवर २ असोर दरजर्फे पुर नमूदह दर्मियान हुबसीमाव निहादह बाज फजलहू मजकूर: पुरसाजन्द विगीर जर्फरा गिले हिकमत नमूदह दरगोश: सहराई ७ आसार आतिश दिहन्द शिगुफ्तख्वाहद बूद फकीरे कामिल। (अजनियाज हकीम मुहम्मद फतहयावखां सोहनपुरी)

कुश्ता पारा बजरियः नील (उर्दू)

अर्कवर्गनील एक सेर एक तोला पारे पर चोया दो फिर ५ तोले वसमा के नुगदे में रखकर खूब गिलेहिकमत करके अढाई सेर आरने उपलों की आग दो सफेद कुश्ता हो। जजाम को एक रत्ती अकसीर है।

(सुफहा १३ अखबार अलकीमियां २४ फरवरी सन् १९०९)

सीमाव का कुश्ता बजरियः बोतः हींग व तुख्म चिरचिटा (उर्दू)

हीराहींग दरजः अव्वल आधपाव लाकर अंजीर के दूध से गूंदकर ढकनदार बोतः बना लो उसमें एक तोला पारा बंद करके सुखा लो। फिर चिरचिटा के बीजों का आटा आध सेर अंजीरी के दुध से खमीर करके इस वोते के ऊपर चढा दो और उस पर गिलेहिकमत करो। मगर पतला लेप करो और सिर्फ खरियामिट्टी। तब ३ सेर पाचक सहराई में आग दे दो पारा शिगुफ्तः काबिल अमल निकलेगा। (सुफहा १६ अखबार अलकीमियां ८/२/१९०९)

पारे कुश्ता बजरियः बिच्छू बूटी (उर्दू)

बिछुआबूटी के अर्क में ४६ घड़ी पारे को खरल करे तो नीमकायम मसका हो उस पर अंगूरी शराब का चोया दो खील होगा। (सुफहा १६ अखबार अलकीमियां ८/२/१९०९)

पारदभस्म घीग्वारसे

तोलकद्वयमादाय पारदं शुद्धमुत्तमम्। घृतकौमारिकाद्रावैस्तोलकद्वयसम्मितैः ॥१॥ मर्दयेत् खल्वके यावच्छुष्कतां याति पारदः। पुनर्देयः पुनर्मर्द्यः शुष्कं याते पुनस्तथा ॥२॥ एवं षष्टिपुटैः सम्यग् मर्दयित्वा ततः परम्। काचकुप्यां विनिक्षिप्य तत्सर्वं तु विचक्षणः ॥ मुखं रुद्ध्वा ततो धीमान्वालुकायन्त्र-मध्यतः ॥३॥ क्षिप्त्वार्कप्रहरैः पाच्यैः खरमध्याल्पवह्निकैः ॥ भस्म तज्जायते सूतं देहलोहानि वेधयेत् ॥४॥

(काकचंडीश्वरी तन्त्र)

अर्थ–दो तोले शुद्ध पारद को खरल में डाल दो दोही तोले घीग्वार का रस डालकर घोटे जब रस सूख जावे तब उतना ही रस डाल देवे इस प्रकार साठ भावना देवे फिर उसको कांच की शीशी में भर और मुख पर वज्रमुद्रा करे तदनन्तर उस शीशी को वालुकायंत्र में रख १२ बारह प्रहर तक तेज, मध्य और मन्द क्रम से अग्नि लगावे तो देह और लोह को बेधनेवाली अर्थात् देह को सुवर्ण के समान गौरवर्ण करनेवाली भस्म होती है॥१–४॥

पारदभस्मवेदक सूरणयोग

पारदः प्रथमतः सूरणकंदरसेन यामचतुष्टयं मर्दनीयः पश्चात्सूरणकंदगर्ते स्थापनीयः न कच्छिकनीमुपर्यधो दत्त्वा तदनंतरं गजपुटे मध्याग्निऽऽरण्यगोमयैः पाचयेत्सिद्धचति तंडुलमात्रं तोलकमात्रे शुल्बे ॥

(काकचंडीश्वरी तंत्र)

अर्थ–प्रथम पारद को जमीकन्द के रस से मर्दन करे फिर जमीकन्द में गढा खोद नकछिकनी भर देवे उस पर पारा और पारे पर फिर नकछिकनी भर देवे। तदनन्तर जमीकन्द के टुकड़े से गढे के मुँह को बन्द कर गजपुट में जंगली कंडों की आंच देवे तो पारदभस्म होगी इस भस्म को एक तोले तांबे में एक चावलभर डाले तो सोना होगा।

उपदंशनाशक पारदभस्म

पारद (हिंगुलोत्थ) को झटेला के रस और पत्ती में घोटकर गोली बना ले सुखाकर चिरचिटा (वाल्दार चिपकनेवाला अपामार्ग नहीं) की लुगदी में रखकर कपरौटी कर फूंक दे २० सेर कंडों में इसमें से चावल भर की गोली ब्राह्मी से बनाकर दूध के साथ रात्रि को खावे कठोर उपदंश नाशक है। (अलमोडेवाले पंथजी का बतलाया)

कुश्तासीमाव (उर्दू)

रेवन्दचीनी को खूब बारीक पीसकर अर्कगोभी में खरल करके एक कुठाली बनावे और दर्मियान में हबूबसीमाव रखकर ऊपर रेवन्दचीनी के मूष बनाकर रखें। ऽ। सेर उपले सहराई में आग दे। (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयावकां सोहनपुरी)

कुश्तासीमाव केले में (उर्दू)

सीमाव को अर्क खटुआबूटी में खरल कर गोली बना लो करीब १० गिरह के केला मय जड के लो हर दो तरफ से सपाट करो और दर्मियान में कावाक करके गोली पारे को रखो और अर्क चूकाभर कर नीचे ऊपर गमाह मजकूर: भी दे दो और हर दो तरफ गट्टी सपाट पर जमाकर हफ्त कपरौटी करो और गजपुट की आंच दो कुश्ता हो जावेगा। (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयावखां सोहनपुरी)

सीमावकायमुल्नारका कुश्ता (उर्दू)

सीमाव कायमुल्नार को अर्क लैमू में खरल करके मग्ज जमालगोटा ऽ– की कुठाली तय्यार करो। उसमें पारा १ तोला हरकदर भरकर ऊपर से दूसरी कुठाली जमालगोटा मजकूरः की जमाकर गोला बना लो और उस पर नीले रंग की कपड़े की चीर लपेट दो गेंद बना लो महफूज जगह में आग दिखाकर रख दो तीसरे यौम निकालो पारा फूटक होकर रह जावेगा मिस्लन फूल। मगर आधपाव तेल सरसफ (ऽ१। सेर) का छवटा भी कपरौटी पर लगा दो (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखाँ सोहनपुरी)

पारे का कुश्ता अकसीरी (उर्दू)

एक बेल ताजा में पारा हस्वमनशा भरकर मुँह बन्द करके फिर एक पेठे के अन्दर बेल को रखकर ऊपर से मूँग का आटा भर दे और कूएँ में ६ महीने तक दाबे रखे इन्शा अल्लाह पारा कुश्ता कायमुल्नार हो जावेगा दो रत्ती एक तोला रांग में काफी है। (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी)

कुश्तासीमाव (उर्दू)

सफेद ढाक जिसके पत्ते की जड़ पर कांटा होता है उसमें दो कावाक कर दो एक कावाक में पारा हस्व मनशा और दूसरे में शिंग्रफ हस्व मनशा भरकर उसके खूदे से बन्द करके इर्दगिर्द उपले सहराई लगा दो और आग लगा दो बाद तीन रोज के निकालो पारा शिगुफ्त शिंग्रफ शिगुफ्त अलहदा २ हो जावेगा काम में लाओ मुजर्रिब है। (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी)

कुश्ता सीमाव रांग का मेल से तेज बलमें मयफवायद इस्तैमाल (उर्दू)

पारा एक तोला, कलई एक तोला, एक करछी में दो चार तोला सरसों का तेल डालकर दर्मियान में पारा रख दे कलई का अलहदा पिघला कर पारे के ऊपर डाल दे दोनों मिल जायेंगे। तेज बल की एक पाव छाल का सफूफ करके दर्मियान इन दोनों के डली को रखकर ऊपर साफ कपड़ा तीन बेर लपेट दे एक महफूज जगह में हवा से बचाकर आग लगा देवे सर्द होने पर निकाल लेवे पारा अलहदा फूल जायेगा कलई अलहदा वैसी ही रहैगी। आहिस्ता २ अहतियात से निकाल लेवे निहायत मुकव्वी वाह है जिरियान को मुफीद बल्कि अकसीर है। एक छ्वारा लेकर उसको चीर कर गुठली निकाल डाले और एक रत्ती कुश्ता पारा इसमें डालकर धागे से बांधकर गाय के दूध में लटकावे कि दूध का खोवा हो जावे। बाद अजां कुश्ता निकालकर बताशे में रखकर खा लेवे इसी तरह इक्कीस रोज तक यह अमल करने से नामर्द भी मर्द हो जाता है। (वैशापकारक लाहोर)। (सुफहा नं० ५ अखबार अलकीमियाँ १/६/१९०५)

तरकीव कुश्ता पारा (उर्दू)

पानी के फूलों का रस निकालकर सीमाव १ तोला पर चोया देवे नीचे नरम नरम आंच रखे। बाद चार पहर के चोया बन्द कर दे बादहू हरचहार अजवाइन ८ तोले। चीनी के फूल ८ तोले। हर दो को सवज महदी के पानी में घोटकर नुगदा तय्यार कर लेवें। सीमाव चोयाशुदः को दर्मियान देकर मजबूती के साथ ऊपर एक सेर पुख्तः सफेद धज्जियां लपेट कर हवा से बचाकर आंच दे। जब सर्द हो जावे निकाल लें। सीमाव कुश्ता शुदः बरामद होगा। मुजर्रिबुल मुजर्रिब है। (अखबार अलकीमियां १६/५/१९०५)

पहेलीकुश्ता सीमाव (उर्दू)

सफेद फूल पतला पान। वह बूटी है रानों रान ॥
तीन बूंद से पारा भरे। काहे को जागी[1] मारा फिरे ॥
(सुफहा ५ अखबार अलकीमियां १/१/१९०५)

सूतभस्म

कृष्णधत्तूरतैलेन सूतो मर्द्यो नियामकैः। दिनैकं तत्पचेद्यंत्रे कच्छपाख्ये न संशयः ॥ मृतः सूतो भवेत्सद्यस्तत्तद्योगेषु योजयेत् ॥५॥ (भाषा पुस्तक पं० कुलमणि)

अर्थ–सिद्ध सूत टाँक चारि लेइ स्याह धतूरा के तेल से एक दिन घोटे और एक दिन नियामक औषधि से घोटे। नियामक औषधि यह है बंदाल, सफेद फूका आक, तत्ते का दूध, कबूतर की बीट, हंसपदी, इंद्रवाणी, इत्यादिक नियामक हैं पारे को उड़ने नहीं देते। बंद करते है एक एक दिन इन औषधियों से घोटि के एक गोला बतारिके कच्छपयंत्र में राखि के अग्नि देइ पारा मरइ निःसंदेह इह मारण सबजी निर्बीज पारद साधारण है।।५।।

पारदभस्म बिल्वपत्र रस में घोट गजपुट में

बाबू किशोरीलालजी के सुसर भोलाप्रसादजी के मुनीम मोहनलालजी से मालूम हुआ कि पारद को बिल्वपत्र के रस में घोट भलीभांति नष्टपिष्टी होने पर संपुट कर गजपुट में फूंकने से भस्म हो जाती है। वह आजकल पारद को बिल्वपत्र के रस में घोट रहे हैं। ये शंका कि बिल्वपत्र से रस नहीं निकलता ठीक नहीं। श्रावण भादो में बेलपत्र को कूटने से रस निकलता है और ऋतुओं में भुर्ता करने से रस निकल सकता है।

पारदभस्म लालमिर्चमें

एक ताजी लालमिर्च में पारा भरकर छिद्र को डौरे से बाँध दिया जावे ऊपर से पाव भर ताजी मिर्च पीसकर लुगदी बना दी जावे कपरौटी कर दस सेर की आंच दी जावे भस्म हो जायगा। (काश्मीरयात्रा में नयाबखा से प्राप्त)

पारदभस्म नकछिकनीमें घोट पेठे में रख

मेरठ के एक मास्टर से मालूम हुआ कि नकछिकनी के रस में लगभग दो महीने तक घोटने पर जब पारद पूर्ण रूप से अदृश्य हो गया तब उसको पेठे में भर ऊपर मोटी कपरौटी कर ऊथले नदोरे में रख महागजपुट अर्थात् गजभर लंबे चौड़े पुट में आग दी गई तो कपरौटी के अन्दर खगररूप में पारद भस्म मिली जिसकी तोल पारद के समान रही इस भस्म का नमूना कुछ मुझे भी दिया इसको घरिया में रख स्प्रिटलैम्प की घंटे भर आंच दी गई किन्तु उड़ी नहीं। और तवे पर रखकर दो घंटे कड़ी आंच दी गई तो भी न तोल घटी न रंग बदला।

इस क्रिया से यह लक्ष ग्रहण करने योग है कि मारकवर्ग की जड़ियां पारद को उसी दशा में भस्म कर सकती है कि जब वह भलीभांति नष्टपिष्टी हो जाय।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायां पारदभस्मवर्णनं नामैक–त्रिंशोऽध्यायः ॥३१॥

१–गालिबन मुराद खून हैजसे होगी।

स्वानुभूतपारदभस्माध्याय ३२

पारद भस्म का अनुभव

३०/९/१९०५ आज ताम्रचीनी के प्याले में १।। तोले तेजाब गंधक में १ तोले पारा डाल कोयले की मंदी आंच दी गई तो १।। घंटे में ।) भर पारा तो कच्चा रह गया उसे जुदा कर लिया बाकी पारे का कुश्ता हो गया सफेद रंग का तोल में १) भर हुआ इसमें ।।।) पारा रहा और बाकी ।) भर गंधक वा ओक्सीजन मिल गई।

अनुभव पारदभस्म (चोयेसे)

पक्वार्कपत्रस्वरसैश्चोवकैः प्रहरत्रयम् ।

२०/२/०७ पारा ६।। तोले लेकर एक बहुत छोटी कढाई में जो कटोरे के बराबर होगी रखकर नीचे अंगुष्ठ समान मोटी पहिये की दो वा तीन लकड़ियों की अग्नि बालनी आरम्भ की और तत्क्षण श्वेत अर्कपत्रों को स्वरस उस पारे के ऊपर रुई के फोये से चुआना आरम्भ कर दिया। किन्तु पारे के रवे उछटकर इधर उधर कढाई में पड़ने लगे इनके निवारणार्थ अधिक रस देकर पारे को ढक दिया तब पारा स्थिर रहा फिर भी स्वरस के सूखने पर ऐसा होता था कि उस आच्छादित रस में से किसी एक दो ओर को भाप निकलने लगती थी और उस भाप ही द्वारा पारे के उड़ने का भ्रम होता था। क्योंकि कभी कभी जिस तरफ से भाप निकलती थी उसी तरफ को कढाई में पारे में से उड़े परमाणु दृष्टि आते थे। अतएव इस कारण के निवृत्ति करने के अर्थ जहां से भाप निकलती थी वहां स्वरस निचोड़ दिया जाता था जिससे वह भाप बंद हो जाती थी। ३ प्रहर तक इसी प्रकार थोड़ा थोड़ा आक का रस कढाई में चुआते रहे और मंद मंद अग्नि जलाते रहे। बाद ३ प्रहर कर रस निचोड़ना तो बंद कर दिया और थोड़ी देर तक उसी प्रकार अग्नि जलाते रहे ताकि ऊपर का रस सूख जाय। जब रस सूख गया और संगरसा हो गया तब नीचे की अग्नि का ठंडा करके उसी कोयले भरे चूल्हे पर उस कढाई को रखा रहने दिया। रातभर कढाई रखी रही प्रातः काल उस जले रस को अलग करके देखा तो बीच में पारा अपने रूप में मौजूद था। मगर कुछ चमकीला और साफ प्रतीत हुआ तोल में करीब ४ तोले निकला बाकी उस जले रस में मिला हुआ रह गया। मिश्रित भाग डमरूद्वारा पातन कर निकाला तो १० माशे और भी हाथ लगा कुल ४ तोले १० माशे हाथ लगा बाकी अर्थात् १ तोला ८ माशे उड़ गया। इस चोये की क्रिया में हमारा ऽ२। सेर आक का स्वरस लगा और ऽ५।। सेर लकड़ी पहिये की जली।

उपरोक्त क्रिया का पुनः अनुभव

११/६/०७ उसा पहले बचे हुए ४।।=) भर पारे को कटोरे की बराबर कढाई में डालकर नीचे स्प्रिटलैम्प की अग्नि देनी आरम्भ की और साथ साथ ही आक के पत्तों का स्वरस रुई के फोये से चुआना आरंभ कर दिया और आक ही लकडी से उस पारे को चलाते रहे। स्प्रिटलैम्प की गर्मी से भी पारा चटखने लगा इसलिये लैम्प बहुत मंदा रखा रस पहला जैसा नहीं डाला सिर्फ पारे के ऊपर दो चार बूंद डाल दी और इतना ठहर गये कि जब तक पहला रस सूख जाय और पारा गर्मी से तडपने लगे ज्यों ही गर्मी से पारा तडपता था तडपने के समीप होता था रस को दो चार बूंद डालकर लकड़ी से चला देते थे। इस हिसाब से हम को ५ वा ७ मिनट बारद रस चुआने की आवश्यकता होती थी। इस क्रिया से हमने ८ घंटे तक एक सी ही स्प्रिटलैम्प की अग्नि दी और इन ८ घंटों में २ छटांक आक का रस खर्च हुआ और सिर्फ एक बार का भरा लैम्प का तेल जला बाद ८ घंटे के कढाई को उतार कर उसमें से पारा निकालकर और पानी से धोकर साफ किया और तोला तो ४।।) भर हुआ अर्थात् –)।। भर उड़ गया। पारा अपने रूप में ही रहा कोई विकृती नहीं हुई।

पारद भस्म चोये से

पारदं लोहपात्रस्थदुग्धे सेहुंडके स्थितम् । अर्ककाष्ठस्य चाग्निं च संचयेद्यामदिङ्मितम् ।।

ता० २३ को उपरोक्त आक का चोया दिये हुए ४ तोले ९ माशे २ रत्ती पारद की कटोरे के समान लोहे की छोटी कढाई में रख ७।। बजे से स्प्रिटलैम्प की आंच दी और सेहुंड के दूध का पारे पर चोया देना आरम्भ किया। ९ बजे तक लैम्प को मन्दमन्द जलाया बाद को कुछ तेज कर दिया पहले डाले चोये का सनसनाहट जब बन्द हो जाता था तब दूसरी बार डाला जाता था। चारपांच घंटे बाद चोया देते देते पारे के ऊपर गाढा दूध जमकर ऐसा कठिन हो गया था कि लकड़ी से हटाने से पारद से अलग न होता था। और सख्ती आ जाने से पारद के ऊपरी भाग पर अग्नि का असर कम पहुंचता था बीच कढाई में चोया देने से बहुत देर तक ज्यों का त्यों दूध उसी जगह रखा रहता था इसलिये लैम्प को और तीव्र कर दिया गया और बार अर्क पत्रादिकों के चोये से पारद थोड़ी ही अधिक गर्मी से चटकने लगता था इस बार इस दूध ने पारे को तीक्ष्णाग्नि से भी बिलकुल नहीं चटकने दिया ४ बजे पर स्प्रिट निबट जाने पर कढाई को चूल्हे पर रखकर आक की पतली लकडियों की मंदाग्नि दी और ६ बजे पर बचे हुए आधी छटांक के करीब दूध को एक साथ कढाई में डाल दिया और आंच कुछ और तेज कर दी जाय यद्यपि इन लकड़ियों की आंच लैंप की आंच से कई गुना तेज थी किन्तु पारा अब भी नहीं चटकता था। २० मिनट तक चोया बंद रहा और अग्नि जलती रही। कढाई खूब गर्म हो रही थी भाप कढाई से निकल रही थी दूध भी सूख चुका था, इस वास्ते नत्था नौकर ने हाथ में जलती लकडी ले देखने चाहा कि अचानक कढाई में ऊपर आंच लग गई। आंच बुझाने के लिये कढाई को पानी भरे गढे में रख दिया। आग बुझ बुकने पर कढाई को पानी से अलग कर रख दिया। ये काम ११ घंटे चला ५ छटांक ३।। तोले दूध पड़ा। ८।। घंटे में १।। लैम्प स्प्रिट और २।। घंटे में १। सेर के करीब आक की लकड़ी खर्च हुई।

ता० २४ को सबेरे कढाई को देखा तो चोये का दूध किनारों पर जला हुआ श्याम रंग का और बीच में अधजला दीख पड़ा। थोड़ा पारा जले पदार्थ से पृथक् नीचे था बाकी सब परमाणु रूप से चोये में मिल गया था। पृथक् पारद को तोला तो ४ माषा ७ रत्ती हुआ। बाकी पारद मिश्रित ढिमेके छोटे छोटे टुकड़े कर धूप में रख दिये।

ता० २९ तक सूखकर २ मा० ५ र० पारा और निकल आया।

ता० २/१० तक सूखने पर यह चूर्ण ३ तोले १ माशे ४ रत्ती रह गया।

उत्थापन उद्योग

इस ३ तोले १ माशे ४ रत्ती पारदमिश्रित दवा को जौनपुरी डौरू में बंदकर भस्ममुद्रा और कपरौटी कर ११ घंटे आंच दी तो १ मा० ६ रत्ती पारा निकला और १ तोले ५ रत्ती राख नीचे निकली इस राख को ३ आंच शराब संपुट में ७ सेर ७ सेर और १० सेर की दी गई तो स्याही दूर होकर खाकी सफेद रंगत हो गई तोल में ५ माशे रही।

१–सम्मति–चोया देने योग्य वस्तुओं में थूहर का दूध उत्तम ज्ञात होता है क्योंकि यह गाढ़ा और लसदार होने से पारद को ऊपर से वेष्टित कर लेता है और उड़ने वा चटकने नहीं देता। इससे आशा है कि शास्त्रोक्त १० प्रहरपर्य्यंत अग्नि देने से भस्म हो जावे। चोया इसका बीच में इसका कम सूखता है इसलिये बीच में थोड़ा किनारों पर अधिक दिया जावे ताकि किनारों की तरफ से पारा उड़ न जावे। और अग्निलैम्प की ही उचित है क्योंकि एकसी लगती है। आक की लकडियों की अग्नि भी लकड़ी पोली होने के कारण तीव्र नहीं होती। परन्तु उसका एकसा रखना कठिन है अधिक सावधानी चाहिये। यह भी बहुत आवश्यक है कि अग्नि तीव्र न दी जावे कि जिससे पारा परमाणुओं में भिन्न भिन्न होकर दवा में न मिले किन्तु साधारण अग्नि ऐसी दी जावे कि पारा जहां का तहां स्थिर ही आवे। और पारे के ऊपर जो चोये का वेष्टनरूप जमे उसको कदापि तोड़ना न चाहिये किन्तु जमने देना चाहिये उससे पारद की स्थिति जहां थी तहां बनी रहेगी तोड़ने

से पारा छिन्न भिन्न होकर दवा में मिलकर खराब होता है। मेरी समझ में पारे का भस्म करनेवाला चोया नहीं किन्तु अग्नि है। चोया पारे को अग्नि पर रोकने के लिये है।

२–सम्मति–सेहुंड का दुग्ध निकालते समय सावधानी से काम करना चाहिये तुरन्त हाथ मुँह धो डालना चाहिये, नत्था नौकर के मुंह पर दूध के छींटे गिर जाने से सफेद मरोरी सी फुंसियां और सूजन पैदा हो गई। जिसको गोले और काफूर को पानी में मिलाकर लेप करने से फायदा हुआ।

पारद को चोया

ता० १९/३/०९ को २० तोले सिंग्रफ के पातन से १३ तोले पारा निकाला गया और फिर उसको ढाई ढाई छटांक कृष्ण तुलसी, कृष्ण धतूरे, और आंवले के रस का चोया रकाबी में रख पुचारे द्वारा हकीम मुहम्मदयूसफ साहब की क्रिया से दिया गया। जो १२ तोले शेष रहा (बहुत दिनों तक शीशी में रखा रहने पर पारद पर काली कांचली सी आ गई थी जो छानने से दूर हो गई)

ता० १९ तो उपरोक्त १२ तोले पारद को पुनः लोहे की छोटी कढाई में रख १० बजे से स्प्रिटलैम्प की आंच देनी आरम्भ की और साथ साथ ही श्वेतार्क के पीत पत्रों के स्वरस का जो सोख्ते में छान लिया गया था चोरा देना आरम्भ किया। पारा जब तक कढाई में रस कम होने से खुला रहा तब तक अधिक कांपता रहा। जब रस पड़ते पड़ते पारा रस से ढक गया तब कांपना कुछ कम हो गया किन्तु तब भी जब चोया देने में देर हो जाती थी तो पार कांपने लगता था और जब उस पर रस डाल देते थे तो तड़पना बंद हो जाता था। रात के १० बजे तक अर्थात् ४ प्रहर तक ८ छटांक रस पड़ चुकने पर काम बंद कर दिया।

ता० २० को पारे के ऊपर से रस की मलाई सी पृथक् कर पारे को निकाला तो ११ तोले ७ माशे अलग निकल आया बाकी कढाई की तली में फैल रवे रूप में रस मे मिला रह गया अतएव गर्म पानी से धो रस को नितार पारा निकाल लिया जो तोल में ५ माशे हुआ अर्थात् सब पारापूरा १२ तोले निकल आया।

सम्मति–अबकी चोया देने की क्रिया ठीक रही। आगे से इसी प्रकार से ही चोया दिया जाय अर्थात् :

नं० (१) हलकी लोहे की कढाई में रख स्प्रिटलैम्प की ही आंच देनी चाहिये क्योंकि यह एक सी और ठीक लग सकती है।

नं० (२) स्प्रिटलैम्प की अग्नि भी आदि में बहुत कोमल और मध्य में कोमल ही देनी चाहिये जिससे पारा उछटने न पावे।

नं० (३) बीच में चोये की मलाई को छोड़ना या हटाना न चाहिये।

पारद को चोया

ता० २/४/०९ को उक्त १२ तोले पारे को छोटी कढाई में रख उपरोक्त प्रकार से स्प्रिटलैम्प की कोमल आंच पर १० बजे से वसंती, नीमकी कोंपल, मूली, तीनों के दो दो छटांक स्वरस का चोया दिया गया तो ६ बजे तक ८ घंटे में समाप्त हुआ।

ता० ३ को पारे के ऊपर से मलाई को पृथक् कर पारे को निकाला तो अधिक पारा स्वतः ही पृथक् हो गया, थोड़ा जो मलाई में परमाणु रूप में मिल गया था उसे गर्म पानी से धो निकाल लिया तोलने पर पूरा १२ तोले निकल आया।

पारद को चोया

ता० ५/४/०९ को उक्त १२ तोले पारे को छोटी कढाई में रख उपरोक्त प्रकार से स्प्रिटलैम्प की कोमल आंच पर २ बजे से सोख्ते में छने मकोयके २ छटांक और कटेरी के १ छटांक स्वरस का चोया दिया जो ६ बजे तक समाप्त हुआ।

ता० ६ को पारे के ऊपर से मलाई हटा १ छटांक कटेरी के रस का चोया और दिया जो १।। घंटे में समाप्त हुआ। तदनन्तर पारद को पृथक् किया ११ तोले ९ माशे स्वतः निकल आया बाकी को धोकर निकाला तो ३ माशे और निकला अर्थात् पूरा १२ तोले निकल आया।

पारद को चोया

ता० ७/४/०९ को उक्त १२ तोले पारे को उपरोक्त प्रकार से दूधी, अमरबेल, बैंगन के २–२ छटांक स्वरस का (जो सोख्ते में छान लिये गये थे) चोया १० बजे से दिया जो ६।। बजे तक समाप्त हुआ।

ता० ८ को पारे को निकाला तो ११ तोले १० माशे ४ रत्ती पारा स्वतः निकल आया। बाकी को गर्म पानी से धोया तो १ माशे ४ रत्ती निकला। अर्थात् सब पूरा १२ तोले निकल आया।

पारद को चोया

ता० ८/४/०९ को उक्त १२ तोले पारे को उपरोक्त प्रकार से तमाखू, केला, तुलसी के २–२ छटांक स्वरस का चोया दिया गया जो १० बजे से ६।। बजे तक समाप्त हुआ।

ता० ९ को पारे को निकाला तो ११ तोले ५ माशे पारा स्वतः निकल आया। बाकी को गर्म पानी से धोकर निकाला तो ७ माशे और निकल आया। अर्थात् सब पूरा १२ तोले निकल आया।

तम्बाकू पत्तों में स्वतः स्वरस खूब निकला।

पारद को चोया

ता० २६/४/०९ को उक्त १२ तोले पारे का उपरोक्त विधि से स्प्रिटलैम्प की कोमल आंच पर महँदी बेर के पत्ते, और नींबू के २–२ छटांक रस का चोया दिया जो ३ बजे से ८।। बजे तक समाप्त हुआ।

ता० २७ को पारे को निकाला तो ११ तोले पारा स्वतः पृथक् हो गया। बाकी को गर्म पानी से धो निकाला तो ११ माशे और निकला। अर्थात् सब ११ तोले ११ माशे निकला १ माशे घटा।

पारद को चोया

ता० २७/४/०९ को उक्त ११ तोले ११ माशे पारे को उपरोक्त विधि से स्प्रिटलैम्प की कोमल आंच पर बनतुलसी और बबूल के २–२ छटांक रस और मुंडी के २ छटांक क्वाथ का (जो ऽ– सूखी मुंडी को ऽ।– पानी में औटा ऽ पानी शेष रख तैयार किया था) चोया दिया जो २।।। बजे से ८ बजे तक समाप्त हुआ।

ता० २८ को देखा तो ऊपर जमी मलाई के नीचे रस भर रहा था, कारण यह कि आदि में नोकरों से अधिक रस चोया दिया जो आज तक सामान्य रीति से सूख न सका। अतएव सब पारे को गर्म पानी से धोकर निकालना पड़ा जो तोल में ११ तोले १० माशे हुआ। १ माशे घट गया।

पारद को चोया

ता० २९/४/०९ को उक्त ११ तोले १० माशे पारे को उपरोक्त विधि से आधी आधी छटांक नकछिकनी, भंग और रीठा के २–२ छटांक द्रव का (अर्थात् नकछिकनी और भंग को पानी में पीस लिया और रीठों की गुठली निकाल ऽ।। सेर पानी में औटा ऽ।। क्वाथ तैयार कर लिया गया। चोया दिया जो १० बजे से ६।। बजे तक समाप्त हुआ।

ता० ३० को पारे को निकाला तो ११ तोले ७ माशे ४ रत्ती पारा स्वतः पृथक् हो गया। बाकी चोये में मिले को धोकर निकाला तो २ माशे ४ रत्ती और निकला अर्थात् पूरा ११ तोले १० माशे निकल आया।

पारद को चोया

ता० ३०/४/०९ को उक्त ११ तोले १० माशे को उपरोक्त विधि से हल्दी, तुख्मरेहा, तुख्म वालंगा के २–२ छटांक द्रव का (अर्थात् हल्दी के २ छटांक, जौकुट चूर्ण को १ सेर पानी में औटा २ छ० क्वाथ तैयार कर लिया और २ तोले तुखमरेहां और १ तोले तुखमवालंगा को पहले दिन शाम को ३–३ छटांक पानी में भिगो दूसरे दिन मथ छान डाला। अधिक ल्वाबदार होने के कारण वस्त्र में अच्छी तरह छन सके। तब पीसकर कुछ ल्वाब और छान लिया गया) चोया दिया जो ११ बजे से ६ बजे तक समाप्त हुआ। ल्वाबदार द्रव की मलाई पारे पर चमचोड़ पड़ी।

ता० १/५ को पारे को निकाला तो ११ तोले ७ माशे पारा स्वतः पृथक् हो गया बाकी चोये में और कुछ ऊपर की चिमचोड़ मलाई में मिले हुए को गर्म पानी से धोकर निकाला तो २ माशे ३ रत्ती और निकला। पारद मिश्रित मलाई को सुखा उंगलियों से मीड़ा तो ३ रत्ती पारा उसमें निकला। अर्थात् सब ११ तोले ९ माशे ६ रत्ती निकला, २ रत्ती छीज गया।

पारद को चोया

ता० २/५/०९ को उक्त ११ तोले ९ माशे ६ रत्ती पारद को उपरोक्त विधि से ईसबगोल और पोस्त के छिलकों के २–२ छटांक द्रव का (अर्थात् १ तोले ईसबगोल को ३ छटांक पानी में और ३ तोले पोस्त के छिलकों के छोटे छोटे टुकड़ों को ४ छटांक पानी में पहले दिन पृथक् पृथक् भिगो, दूसरे दिन मथे थान २–२ छ० द्रव तैयार कर लिया) चोया दिया जो ९ बजे से १।। बजे तक समाप्त हुआ।

ता० २ तो पारे को निकाला तो ११ तोले ६ माशे स्वतः पृथक् हो गया बाकी चोये में मिले को पानी से धो निकाला तो ३ माशे ६ रत्ती और निकला अर्थात् सब पूरा ११ तोले ९ माशे ६ रत्ती निकल आया।

पारद को चोया

ता० २/५/०९ को उक्त ११ तोले ९ माशे ६ रत्ती पारद को उपरोक्त विधि से आधी आधी छ० चाकसू और वारतंग के पहले दिन पानी में भिगो दूसरे दिन मथ छान २–२ छ० तैयार किये द्रव का चोया दिया जो ८ बजे से २ बजे तक समाप्त हुआ। चाकसू के चोये से पारे के ऊपर कुछ मजवूत मलाई पड़नी आरंभ हुई जो पारे को कुछ कुछ पकड़ती थी।

ता० ३ को पारे को निकाला तो ११ तोले ६ माशे पारा स्वतः पृथक् हो गया बाकी चोये में मिले को गर्म पानी से धोकर निकाला तो ३ माशे और निकला अर्थात् सब ११ तोले ९ माशे निकल आया, ६ रत्ती घटा।

पारद को चोया

ता० १३/६/०९ को उक्त ११ तोले ७ माशे ६ रत्ती पारे को उपरोक्त विधि से पुष्पकेत की और विषखपरे के ४–४ छटांक मुकत्तर रस को चोंया दिया जो ८ बजे से रात के ८ बजे तक १२ घंटे में समाप्त हुआ।

ता० १४ को पारे को निकाला तो ११ तोले ५ माशे ४ रत्ती पारा स्वतः पृथक् हो गया बाकी को विषखपरे के रस से धो निकाला तो १ माशे १ रत्ती और निकला अर्थात् सब ११ तोले ६ माशे ६ र० पारा निकला। १ मा० १ र० घटा

पारे को चोया

ता० १४/६/०९ को उक्त ११ तोले ६ माशे ९ रत्ती पारे को लोहे के खरल में डाल २।। तोले श्वेत आक के मुकत्तर रस के साथ (जिसमें षोडशांश अर्थात् २ माशे आक का क्षार पड़ा था) ७ बजे से थोड़ा थोड़ा रस डाल घोटना आरंभ किया। घुटाई आरंभ होते ही पारा रस में मिलने लगा और १ घंटे घोटने से सब पारा मिलकर पिष्टी सा हो गया। ११ बजे तक ४ घंटे घुटाई खरल को धूप में रख दिया। ३ बजे देखा तो पारा उसी पिष्टी के रूप में सुख गया था जिसको थोड़ा घोटने से बहुत सा पारा पृथक् हो गया। पश्चात् उस सबको छोटी कढ़ाई में रख खरल को उसी आक के रस से धो उसी कढ़ाई में कर उपरोक्त विधि से उसी क्षार मिश्रित आक के ३।। छटांक रस का (जिसमें १ तो० २ मा० क्षार समझना चाहिये) ४ घंटे चोया दिया।

ता० १५ को पारे को निकाला तो ३ तोले ११ माशे पारा स्वतः पृथक् हो गया बाकी को आक के गर्म रस से धोया तो वही पिष्टी के रूप में नीचे बैठ गया। जिसको सुखा हिलाया तो ७ तोले १ माशे पारा और निकला अर्थात् दोनों बार में ११ तोले पारा निकला (जिसे विषखपरे के रस में डाल बोतल में भर रख दिया) ६ माशे ५ रत्ती पिष्टी और नितार के पानी में मिला रहे। जिसको सुखा मीड़ने से दो एक बाजरे से रवे निकले। बाकी पिष्टी और नितार के पानी को सुखा दुबारा गर्म पानी से धोया तो २ मा० ४ र० पारा और निकला। अर्थात् सब ११ तोले २ माशे ४ रत्ती पारा निकला। बाकी ४ माशे १ रत्ती न निकल सका।

पारे को चोया

ता० १६/६/०९ को उक्त ११ तोले ४ रत्ती पारे को विषखपरे के रस से निकाल उपरोक्त रीति से जलपिप्पली के ४ छटांक मुकत्तर रस का चोया दिया गया जो ६।। बजे से ११।। बजे तक ५ घंटे में समाप्त हुआ।

ता० १७ को पारे को निकाला तो १० तोले ९ माशे ४ रत्ती पारा स्वतः पृथक् हो गया बाकी को गर्म पानी से धोकर निकाला तो ५ माशे और निकला अर्थात् पूरा ११ तोले २ माशे ४ रत्ती निकल आया जिसे विषखपरे के रस में डाला धूप में रख दिया करते रहे।

सम्मति–आज चोया समाप्त हो गया इसलिये पारे को वस्त्र में छान चीन के बर्तन में हिला झुला देखा तो बहुत सी पूंछ छोड़ता था जिससे जान पड़ा कि जड़ी से कोई अंश इसमें अवश्य मिल गया किन्तु यह पारा अग्निस्थायी नहीं हुआ।

चोये की जड़ियों की सूची

२० तोले सिंग्रफ से निकले १३ तोले पारे को निम्नलिखित ३४ बूटियों के ५ सेर ५ छटांक रस का १५ बार में ३५ पहर चोया दिया गया। अन्त में ११ तोले १ माशे २ रत्ती पारा रहा।

१ कृष्ण तुलसी, २ कृष्ण धत्तूरा, ३ आँवला, ४ श्वेतार्क, ५ बसंती, ६ नीम की कोंपल, ७ मूली, ८ मकोय, ९ कटेरी, १० दूधी, ११ अमरबेल, १२ बैंगन, १३ तंबाकू, १४ केला, १५ हरी तुलसी, १६ महँदी, १७ वेर के पत्ते, १८ नींबू, १९ बनतुलसी, २० बबूल, २१ मुंडी सुखी, २२ नकछिकनी सूखी, २३ भंग सूखी, २४ रीठा सूखा, २५ हल्दी, २६ तुख्म रेहां, २७ तुख्मवालंगा, २८ ईसबगोल, २९ पोस्त के छिलके, ३० चाकसू, ३१ वातरंग, ३२ पुष्पकेतकी, ३३ विषखपरा, ३४ जलपिप्पली।

अनुभव हिंगुलभस्म

ता० २८/१२/०६ को ।।।≡) आने भर की शिंग्रफ की डली पर दो तोले अंडी की मिगी को जो अन्दाजन ४ माशे नींबू के रस में जो करीव ८ या १० मिनट के खरल की गई थी और अपने तेल और नींबू के रस से अवलेह सी हो गई थी, लपेट ऽ१ सेर मींगअंडी की पिसी हुई का गोला बनाकर उस पूर्वोक्त संलिप्त शिंग्रफ की डली को उसमें रखा और उस गोले को कढ़ाई में रखकर चूल्हे के नीचे आग बालनी आरंभ की। २० मिनट तक तेज आंच बलती रही। बीस मिनट के अन्दर उस गोल की यह दशा हो गई कि नीचे की आंच की गर्मी से पिघलकर कढ़ाई में नीचे को बैठने लगा। अर्थात् ऊँचाई करीब १ अँगुल के रह गई। बाकी का तेल निकलकर उस गोले के चारों तरफ जड़ से भर गया। २० मिनट के बाद उस कढ़ाई में भी आग लगा दी। जिससे ऊपर कढ़ाई में तेज आग जलने लगी और १० मिनट बाद सब गोले

में लग गई। कढ़ाई के नीचे भी वैसी ही आग बालते रहे। रहे दृश्य ठीक २५ मिनट तक रहा। बाद को कढ़ाई की आग एक साथ बन्द हो गई और उपरोक्त गोली की भस्म जो जल जाने पर भी पिघले हुए गोले की सी ही शकल की बनी रही थी, बुझे हुए कोयलों की तरह से चटकने लगी। बस कढ़ाई की आंच बुझते ही नीचे की भी आंच ठंडी कर दी गई और कढ़ाई को चूल्हे से उतार लिया गया। ठंडा होने पर शिंग्रफ की डली को उसमें से निकाला तो उस पर सुर्खी की जगह स्याही आ गई और वजन में=) भर घट गई अर्थात् ।।।–) भर रह गई। बाद को दो बड़े कंडों में जो वजन में दो सेर के करीब होंगे। सरवे के बराबर गोल गढ़े खोदकर और एक सेर पिसे हुए तिलों के लुगदे में उस डली को रखकर दोनों पहलुओं से उन कंडों को लगा दिया और आंच दे दी। ठंडा होने पर जो राख के अन्दर सिंग्रफ तलाश किया तो पता न लगा अर्थात् सब उड़ गया। इस तरकीब से हमने दो बार किया किन्तु दोनों बार यही दशा हुई। (अखबार अलकीमियाँ १/१२/१९०६)

सम्मति–ऐसी तरकीबों से सफलता की बहुत कम आशा है किन्तु इस क्रिया में दो बात का संशय हो सकता है।

(१) दो तोले मींग का जमाद करना लिखा है कदाचित् उसमें कुछ अन्तर रहा हो।

(२) अग्नि शायद अधिक लगी। यह भी याद रहे कि अखबार में लिखा था कि शिंग्रफ कायमुल्नार (अग्निस्थायी) निकलेगा मगर सब उड़ गया।

इति श्री जैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठ–
मल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां स्वानुभूत–
पारदभस्मवर्णनं नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ।।३२।।

सुवर्णयोगमूर्छितचन्द्रोदयाध्यायः ३३

सुवर्णयोग से मूर्छितरूपचन्द्रोदयादिकों की विधि

सूततुल्यं मृतं हेम द्वाभ्यां तुल्यं च गन्धकम् । रविक्षीरैर्दिनम्मर्द्यमन्धयेद्भूधरे पचेत् ।। पुटैकेन भवेत्सिद्धिर्मूर्छितः सर्वरोगहा ।।१।।

(रसरत्नाकरहस्तलिखित)

अर्थ–शुद्ध पारद के समान सुवर्ण की भस्म और इन दोनों के तुल्य शुद्ध गंधक इन तीनों की कजली कर अन्यमूषा में रख भूधरपुट में पकावे तो एक ही पुट में सिद्धि होती है और सब रोगों को नाश करनेवाला पारद मूर्छित होता है।।१।।

सम्मति–प्रथम पारद तथा सुवर्णभस्म को खरल करे, फिर थोड़ा थोड़ा गंधक डालकर कजली करनी चाहिये, इसी प्रकार धातु के साथ पारद की कजली करना उचित है।।

चन्द्रोदय की दूसरी विधि

पलद्वयं सवर्णस्य सूतस्याष्टौ च मर्दयेत् ।। एकीभूते च गन्धस्य पलं षोडशिकं क्षिपेत् ।।२।। शोणकार्पासकुसुमैः कन्याद्भिर्मर्दयेत्पृथक् ।। काचकूप्यां च संरुध्य वालुकायन्त्रगं त्र्यहम् ।।३।। पचेत्सिद्धो रसः स स्याच्छ्रेष्ठश्चन्द्रोदयाभिधः।। जातीफलं सकर्पूरं लवंगं मरिचानि च ।।४।। पृथग्रससमानि स्युः कस्तूरीरसदिग्लवा ।। माषोऽस्य भक्ष्यः पर्णेन जरारोगविनाशनः ।।५।। सुप्रभातं तदाभ्यासाद्विषं च विषवारि च ।। सर्वे प्रशममायान्ति शीघ्रमेव न संशयः ।।६।। कोचिच्चतुर्गुणान्याहुः कर्पूरादीनि तद्रसात् ।।७।।

(रसराजसुन्दर)

अर्थ–प्रथम चार पल सुवर्ण तथा आठ पल पारद इन दोनों को मर्दन करे, इनके एक जीव होने पर सोलह पल गंधक को धीरे धीरे मिलाकर कजली करे फिर नर्म कपास के फूलों के रस से तथा घीकुमारी के रस से पृथक् पृथक् मर्दन करे। उस कजली को कांच की शीशी में भरकर बालुकायन्त्र में तीन दिन तक पकावे तो यह चन्द्रोदय नाम का उत्तम रसराज सिद्ध होता है। जायफल, कपूर, लौंग, काली मिरच ये सब पृथक् २ पारद के समान लेना चाहिये और कस्तूरी पारे से दशमांश लेना इन सबका एक मासा पान के साथ खावे तो बुढापा और रोगों का नाश करता है, इसका प्रातःकाल सेवन करने से विष तथा विषैला पानी का पैदा हुआ रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं कुछ विद्वानों की सम्मति है कि, पारे से कपूर आदि पदार्थों को चौगुना लेना चाहिये।।२–७।।

मुख्यचन्द्रोदयकथन

दोहा–

सुन्दर सोने के वरक, पैसा चार प्रमान । सोलह पैसा भर निपुन, पारद सोध्यो सान ।। दोनों की कजरी करे, सुन्दर रीति घुटाय । फिर पैसा बत्तीसभर, गन्धक शुद्ध मँगाय ।। तीनों को एकत्रकर, कजरी करै घिसाय । नंदनवन के फूलरस, एक दिना खरलाय ।। एकदिना पुनि खरलकर, घीकुमारिरस डार । कजली वह सूके जवै, शीशी भरे सुधार ।। फिर सीसी मुख मूंदिये, गुड़ चूना जु लगाय । चार प्रहर फिर आंच दे, स्वांग शीत उतराय ।। फिर वह शीशी फोर के, नीके जतन रखाय । लाल कटोरी सी लगै, सीसी गरदन आय ।। ताहि छरीसों छीलिये, नेक न छीजन देय । मुख्य चन्द्रोदय यहै, या विधि से कर लेय ।। लौंग मिरच अरु जायफल, रत्ती दो भर लेय । रत्तीभर फिर तोलके, चन्द्रोदय रस देय ।। पोते चावल तीन भर, कस्तूरी जु मिलाय । पानन संग दीजै तथा, मधु के संग चटाय ।। याक खाये अंग में, काम बहुत बढ़ जात । बार सुफेद न होयँगे। अरु सब रोग नसात ।। विष पानी के दोष को, यहै नसावत जान । मुख्यसु चन्द्रोदय कह्यो, बहुत गुनन की खान ।।

(वैद्यादर्श)

अथ चंद्रोदय रस विधि

पलं मृदु स्वर्णदलं रसेन्द्रं पलाष्टकं गन्धकषोडशांशम् ।। शोणैस्तु कार्पासभवैः प्रसूनैः सर्वं विमर्द्याथ कुमारिकाद्भिः ।।८।। तत्काचकुम्भे निहितं सुगाढे मृत्कर्पटाभ्यां दिवसत्रयं च । पचेत्क्रमाग्नौ सिकरताख्ययंत्रे ततो रजः पल्लवरागरम्यम् ।।९।। निगृह्य चैतस्य पलं पलानि चत्वारि कर्पूररजस्तथैव ।। जातीफलं शोषणमिन्द्रपुष्पं कस्तूरिकाया इह शाण एव ।।१०।। चन्द्रोयोऽयं कथितोऽस्य माषो भक्ष्यो हि वल्लीदलमध्यवर्ती ।। मदोन्मदानां प्रमदाशतानां गर्वाधिकत्वं श्लथयत्यकाण्डे ।।११।। घृतं घनीभूतमतीव दुग्धं मृदूनि मांसानि च मंडकानि ।। माषान्न पिष्टानि भवन्ति पथ्यान्यानन्ददायी न्यपराणि चात्र ।।१२।। वलीपलितनाशनस्तनुभृतां वयःस्तम्भनः । समस्तगदखण्डनः प्रचुररोगपंचाननः ।। गृहे न रसराजको भवति यस्य चन्द्रोदयः । स पंचशरदर्पितो मगदृशां कथं वल्लभः ।।१३।।

(योगचिन्तामणिः, वाजीकरणकल्पद्रुमः)

अर्थ–कोमल सुवर्ण के वर्क एक पल, शुद्ध पारद आठ पल और सोलह पल शुद्ध गंधक लेवे। प्रथम पारद और सुवर्ण को पीसे फिर गंधक संग कजली करे उसको एक दिन नर्मावन के फूलों में रस की भावना दे फिर एक दिन घीकुवार के रस की भावना देकर कपरौटी से दृढ़ की हुई। कांच की शीशी में भर वालुकायंत्र में तीन दिवस तक क्रमाग्नि देवे। तदनन्तर स्वांगशीतल होने पर रक्तवर्ण पारद को निकाल लेवे, उस चन्द्रोदयरस का १ पल, कपूर चार पल, जायफल चार पल, सोंठ चार पल, लौंग चार पल औरं कस्तूरी चार माशे। इन सबको पीस एक माशा पान के साथ नित्य प्रातःकाल खावे तो मदोन्मत्त सौ स्त्रियों के मद को दूर करता है। चन्द्रोदय के सेवन के समय घी, खूब औटा हुआ दूध, मांस हलके (हिरन प्रभृति) मांड, उड़द की पिष्टी के वने हुए पदार्थ अथवा अन्य आनन्दायक पदार्थ भी यहां पथ्य हैं। यह

चन्द्रोदयरस बलीपलित का नाशक, मनुष्यों के आयुष्य का बर्द्धक, समस्त रोगों का नाशकर्ता जिसके घर में नहीं है, वह कामदेव के बाणों से दुःखी हुई स्त्रियों का वल्लभ कैसे हो सकता है।।८-१३।।

दोहा

सुन्दर सोने के वरक, एक टकाभर आन । सोध्यो पारद लीजिये, आठ टका परमान ।। पाराते गन्धक दुगुण, शुद्ध आमलासार । तीनों को धरि खरल में, कजरी कर निरधार ।। नन्दनवन के फूल कों, रस कजरी में देय । दिवस निरन्तर तीन लो, बार बार खरलये ।। ग्वारपटा के रसविष, घोटे त्यों दिन तीन। सूकजाय तब आतसी, सीसी भरे प्रवीन ।। कपरौटी कर दीजिये, सीसी के चहुँ ओर । मुख पै मुद्रा देय के, धूप सुखावै जोर ।। फेरि बालुकाजंत्र में, सीसी धरे जमाय । सीसी गरदबलों भरै, बारु रेत भराय ।। चूल्हे पै धरि यंत्र तब, नीचे अग्नि जराय । पहिले मृदु मध्य जु पुनि, फिर तीक्षण करवाय ।। याविधि से बत्तिस पहर, इक लग अग्नि लगाय । आपहि शीतल होय तब, सीसी ले निकलाय ।। शीशी को फोरेसु जब, भिवजन सहित उमंग । चन्द्रोदय रस लेय तब, अरुण हींगलू रंग ।। भीमसेन कर्पूर अरु, जातीफल जु लवंग । समुद्र शोष मृगमद सहित, चूरन करिसम संग ।। चन्द्रोदय रत्ती प्रभित, चूरना माषा दोय । मधुते चोटे नित्य तों, तन में अति गुन होय ।। औटो पय मिश्रीसहित, माफिक रुचि अनुमान । पुष्टिवस्तु औरहु भवै, आमिष आदि सुजान ।। या प्रकार सेवन करे, काम बढ़ै अति देह । रमन करे नारीनते, निसदिन सहित सनेह ।। मिटे नपुंसकता तुरत, चन्द्रोदये मित्त । बीरज क्रम क्रमते अधिक, बड़िबो करे सुनित्त ।। श्वास छई मन्दा अगिन, कोष्ठ बन्ध हरि लेय । जुदे जुदे अनुपानते, सब रोगनपै देय ।।

(वैद्यादर्श)

शास्त्रान्तर से गुण विशेष लिखते हैं

रतिकाले रतांते वा पुनः सेव्यो रसोत्तमः । कृत्रिमं स्थावरविषं जंगमं विषवारि च ।। न विकाराय भवति साधकेन्द्रस्य वत्सरात् ।।१४।। मृत्युंजयो यथाभ्यासान्मृत्युं जयति देहिनाम् ।। तथायं साधकेन्द्रस्य जरामरणनाशनः ।। शास्त्रान्तरेऽस्य मकरध्वजो नामापि कथ्यते ।।१५।।

(रसेन्द्रचिन्तामणिः)

मैथुन के समय अथवा मैथुन के पश्चात् इस चन्द्रोदय रस का सवन कर तो एक साल तक सेवन करने वाले मनुष्य के देह में कृत्रिमविष, स्थावरविष, जंगमविष तथा जहरी पानी कभी भी असर नहीं करता है। जिस प्रकार मृत्युंजयरस सेवन करने से मनुष्य मृत्यु को भी जीत लेता है, उसी प्रकार चन्द्रोदय भी बुढ़ापा और मृत्यु को नाश करता है, चन्द्रोदय को अन्यशास्त्रों में मकरध्वज भी कहते हैं। ऐसा रसेन्द्रचिंतामणि में लिखा है।।१४।।१५।।

अन्यच्च

स्वर्णादष्टगुणं सूतं सूताद्द्विगुणगंधकम् ।। रक्तकार्पासकुसुमैः कुमार्य्याद्भिर्वि मर्दयेत् ।।१६।। शुष्कं काचघटी रुद्ध्वा वालुकायन्त्रगं हठात् ।। भस्म कुर्याद्रसेन्द्रस्य नवार्ककिरणोपमम् ।।१७।। भागोऽस्य भागाश्चत्वारः कपूरस्य तु शोभनाः ।। लवंगं मरिचं जातीफलं कपूर्रमात्रया ।।१८।। मेलयेन्मृगनाभिं च षण्मासप्रमितं बुधः ।। श्लक्ष्णपिष्टो रसो नाम जायते मकरध्वजः ।।१९।। वल्लं वल्लद्वयं वाथ तांबूलीदलसंयुतम् ।। भक्षयेन्मधुरं स्निग्धं मृदु मांसमवातलम् ।।२०।। श्रृतशीतं सितायुक्तं दुग्धं गोभवमाज्यकम् ।। मध्वाद्यं मिष्टमपरं मद्यानि विविधानि च ।।२१।। ददात्यग्निबलं पुंसां वलीपलितनाशनः ।। मेधायुःकामजननः कामोद्दीपनकृन्महान् ।।२२।। अभ्यासात्सादकः स्त्रीणां शतं जयति नित्यशः ।। रतिकाले रतान्ते च पुनः सेव्यो रसोत्तमः ।।२३।। विषवारि स्थावरं च जंगमं कृत्रिमं विषम् ।। न विकाराय भवति वत्सरात्साधकस्य तु ।।२४।। मृत्युंजयो यथाभ्यासान्मृत्युं जयति देहिनः ।। तथायं साधकेन्द्रस्य जरामरणनाशनः ।।२५।।

(वाजीकरणकल्पद्रुमः)

अर्थ—एक भाग सुवर्ण और सुवर्ण से अष्टगुण पारद, पारद से दूना शुद्ध गंधक, इन तीनों को कजली कर लाल कपास के फूलों के रस से और घीकुवार के रस से पृथक् पृथक् दो दिवस तक मर्दन करे, सूखने पर कांच की शीशी में भर मुखमुद्रा कर बालुकायंत्र में हठाग्नि देवे तो नवीन सूर्य के समान किरणोंवाला पारद का उत्तम भस्म बन जायेगा। इसका एक भाग चार भाग कपूर के, लौंग, मिरच और जायफल ये प्रत्येक चार चार भाग, कस्तूरी छः माशे इन सबको एकत्र कर और सूक्ष्म पीसकर चूर्ण करे इसको एक माशा नित्य सेवन करें अथवा तीन रत्ती या छः रत्ती पके हुए पान में खावे, चिकनाहट लिये हुए मधुर पदार्थ, वात को नहीं बढ़ानेवाला कोमल मांस, गरमकर फिर ठंडा किया हुआ मिश्रीसहित दूध, गाय का घृत, अन्य भी शहद से लेकर मीठे पदार्थ, अनेक प्रकार के मद्य इनको अच्छी प्रकार भक्षण करे, ऐसे सेवन करने से पुरुषों के अग्नि बल को देता है, मेधा आयु और कान्ति का दाता काम का अत्यन्त ही उत्पादक है और अभ्यास करने से नित्य सौ १०० स्त्रियों को जीतता है, मैथुन के समय अथवा मैथुन के अन्त में इस रस को फिर सेवन करना चाहिये। जहरीला पानी, स्थावर विष, जंगम विष और कृत्रिम विष रस सेवक मनुष्य को विकार नहीं पैदा करते हैं। जिस प्रकार, मृत्युंजय सेवन करनेवाले मनुष्यों के मृत्यु को जीत लेता है, उसी प्रकार चन्द्रोदय सेवन करनेवाले के बुढ़ापे और मृत्यु को रसचन्द्रोदय नष्ट करता है। इसको शास्त्र में मकरध्वज कहते हैं।।१६-२५।।

सम्मति—रसचन्द्रोदय की सेवनविधि में भागशब्द से एक पल का अर्थ ग्रहण करना चाहिये क्योंकि प्रथम कहे हुए विधाना में एक पल रस और चार चार पल अन्य पदार्थ कस्तूरी दशमांश, इस रीति से यहां पर भी दशमांश ही कस्तूरी लेना उचित था परन्तु शास्त्रकार ने स्वयं कस्तूरी को छः माशे लिखा है, इसके ले लेने में भी कोई दोष नहीं है।

मकरध्वजरस (चन्द्रोदय ३ शीशी) उर्दू

वर्क तिला या बुरादाजिला एक माशे, सीमाव दश माशे, गंधक दो माशे, तीनों चीजें गुलकपास सुर्ख में दो रोज बतौर पुट अल्फावी के सहके करे, बादहू दो दिन तक शाराघीकुवार में उसी तरह खरल करे, बादहखूब खुश्क करके शीशा में गिलेहिकत करके बालूजंतर में रखे और चौबीस पहर तक नरम व गरम आंच दे, यानी ८ पहर नरम आंच दे, बाद उसके रफ्तः रफ्तः तेज आंच दे, इसी तरह तीन शीशी में अव्वल सहक दोनों बूटियों से करके बदस्तूर आंच दे, बादहू निकालकर सीमाव से पांचवां हिस्सा यानी ढ़ाई ढाई माशे सीमाव खाम और मारक शीशा गुगर्द जुमलः अजजाय मुसफ्फा करके शहद में खरल करके और कदर दो रत्ती के गोली बनावे और हर रोज दो हफ्ते तक एक एक गोली खावे और जमाइ से परहेज करे। खास्सा यह है कि सास भर तक कुव्वत हरकिस्म की कायम हो और तमाम जिस्म में शनाव की कैफियत पैदा हो, इसको चटकुला कहते हैं क्योंकि थोड़ी मिहनत में तैयार हो जाता है। (सुफहा २९५ किताब अलकीमियां)

चन्द्रोदयरसविधि

पलभर पात सुनेरी तनौ । यारो तहां आठपल गनौ ।। पारे सम ले आमलासार । ग्वारि खररि दिन तीन अपार ।। सुकै बालुकायंत्र चढ़ाय । बारह प्रहर जु आग कराय ।। शीतल करि तब लेइ उतार । बहुयो फोरि खरल में डार ।। पुनि गंधक पारो सम लेय । रसक्वारी के खरल करेय ।। सीसीविषे चढ़ावे तिसै । पहिली जुगति कही है जिसै । सोरह बार जु गन्धक देय । सोरह शीशी अग्निकरेय ।। अनूपान या रस को येहु । त्रिफला त्रिकुटा त्रिजटा लेहु ।। चतुर्जात को लीजै लोय । एक एक पारे सम होय'। नागबेल रस बांधो बरी । पारो रत्ती परे सो करी ।। अनूपान महिषी को छीर । साऊं साय सुनो बलवीर । अजाके होय अखारे सात । सो पूछे या रस की बात ।। वृद्ध खाय ह्वै तरुन समान । तरुण ही बाढ़े काम सुजान ।। जोबन तनमन चाहै हस्यौ । चन्द्रोदय रस ताको कह्यौ ।। और रोग जो याते जाय । जो रोगी यारस को खाय ।। नाशै पंच कुष्ठ जै कहैं । मण्डल व्योंची खादिन रहै

।। कास श्वास जु रहे न अन्त । सन्निपात जेते छिनवंत ।। उदररोग चौरासी बाय । या रस के खायेते जाय ।। पंच अपस्मारी पक्षाघात । या रस के खाये ते जात ।। मिरगी बार रोग सब जाय । अपस्मार के काजै खाय ।।

अन्यच्च

सुसूक्ष्मं रेतितं कृत्वा सुवर्णं शुक्तिमात्रकम् ।। पारदं शोधितं सम्यग्दद्यात्पलचतुष्टयम् ।।२६।। सुशोधितं गंधकं च प्रदेयं कुडवद्वयम् ।। कार्पासपुष्पवृन्तोन्थरसे मर्द्यं दिनद्वयम् ।।२७।। ततः कन्यारसेनैव भावयित्वा विनिक्षिपेत् ।। कर्षार्धं रेतितं नागं ततो यन्त्रं प्रकल्पयेत् ।।२८।। अष्टादशांगुलोत्सेध विस्तारेण षडंगुलम् ।। सुचिक्कणं सुवृत्तं च संपुटं रचयेत्तथा ।।२९।। यथोर्ध्वसंपुटस्याधः संपुटार्धं ग्रसेद्दृढम् ।। सत्कुलालेन रचितं सुपक्वं ताम्रसन्निभम् ।।३०।। मध्ये काचप्रलिप्तं च रसमारणकर्मसु ।। अधः संपुटखंडेषु रसचूर्णं नियोजयेत् ।।३१।। किंचिद्दोषं परित्यज्य मुखे देया पिधानिका ।। काचभस्मसमंकृत्वा भस्मना सह पेषयेत् ।।३२।। तेनैव मुद्रयित्वाथ सम्पुटं कारयेत्ततः ।। संधियुक्तं ततःखण्डं मृच्चैलेन प्रयोजयेत् ।।३३।। संधिं त्यक्त्वा ऊर्ध्वखण्डं जलमुद्रां प्रलेपयेत् ।। शुद्धांजननिभं किट्टं किट्टार्धं संमितां कुरु ।।३४।। सुवर्णपुष्पनिर्यासं संमितार्धं नियोजयेत् ।। दक्षाण्डजद्रवेनैव मर्दयित्वा दृढं भिषक् ।।३५।। सर्वथा मुखमुद्रेयं पुत्रस्यापि न कथ्यते ।। तथापि रचयेद्यन्त्रं पारंपर्य्योपदेशतः ।।३६।। सम्पुटस्य यथा सन्धिर्जलमध्ये न तिष्ठति ।। विरच्यैवं प्रकारेण यंत्रभैरवसंज्ञकः ।।३७।। यंत्रसोमानलो नाम क्वच्चिदुक्तः सुगोपितः ।। यंत्रराज इति क्वापि योज्यः परमदुर्लभः ।।३८।। रसस्य निगडः साक्षादनन प्रपचेद्रसम् ।। शनैः शनैर्मन्दवह्निर्भिषग्दिनचतुष्टयम् ।।३९।। ततः प्रवालसंकाशं रसं ग्राह्यं सुधोपमम् ।। यदि किंचिश्च तिष्ठेत यंत्रराजस्य सन्धिगम् ।।४०।। ततोर्धगंधकं दत्त्वा काचकुप्यां पुनः क्षिपेत् ।। स्वाङ्गशीतं समादाय नवपल्लवसन्निभम् ।।४१।। सूक्ष्मचूर्णरसं कृत्वा रक्षेत्स्वर्णकरंडके ।। जातीफलं लवंगं च कंकोलं जातिपत्रिका ।।४२।। मस्तंगीकर्षमात्रं स्यात्कस्तूरी कर्षमात्रिका ।। तदर्धं पक्वकर्पूरं तथार्ककरहाटकम् ।।४३।। समुद्रशोषजफलं समभागं विचूर्णयेत् ।। माषमात्रं रसं नित्यं चूर्णमेतद्द्विमाषकम् ।।४४।। मिश्रयित्वा भक्षयेच्च श्रृणु पथ्यमतः परम् ।। प्रथमं मृदुमांसं च संघृतांधः सुशीलयेत्।।४५।। अतः परं बहविधं मांसभक्ष्यं प्रकल्पयेत् ।। मंडकावटकांश्चैव पक्वान्नं दुग्धसंयुतम् ।।४६।।भोजयेद्रमयेद्‌वालां कामां चित्तगतां तथा ।। सर्वधातुक्षयं कासं मन्दाग्निं ग्रहणी गदम् ।।४७।। श्लेष्मामयान्बहुविधान्प्रमेहान्विंशतिं जयेत् ।। अपस्मारं तथा ग्रन्थिं हृद्रोगं पांडु दुर्जयम् ।।४८।। अरुचिं शोफरोगांश्च प्रमेहपिड़काञ्जयेत् । जीर्णज्वरं प्रलोपाख्यं सामवातं गुदामयम् ।।४९।। मेहशूलगरश्वासाञ्जयेदाशु उरःक्षतम् ।। बालानां च प्रदातव्यं मात्राभेदेन सर्वथा ।।५०।। कृशानां च परां पुष्टिं वीर्याढ्यं कुरुते भृशम् ।। तिमिरं च जयेदाशु रसायनमनुत्तमम् ।।५१।। स्त्रीणां प्रकान्तिजननं वलीपलितनाशनम् ।। रक्तनीलं सितं पीतं मेचकं जलसन्निभम् ।।५२।। शुक्रस्रावं कटीशूलं नाशयेच्च किमद्भुतम् ।। कक्षापुटिमते प्रोक्तो रसः परमदुर्लभः ।। स्वानुभूतश्चात्र मया लेखितः संप्रदायतः ।।५३।।

(टोडरानंद)

अर्थ–अत्यन्त सूक्ष्म पिसे हुए सुवर्ण का एक पल, शुद्ध पारद दो पल और शुद्ध आमलासार गंधक ८ आठ पल इन तीनों की कजली करे फिर कपास के फूलों की कलियों के रस मे तीन दिवस तक दृढ़ घोटे फिर घीकुवार के रस से दो दिन भावना देकर छः माशे सीसा डाल देवे फिर अठारह अंगुल ऊँचा, छः अंगुल चौड़ा और चिकना तथा गोल ऐसा संपुटयंत्र बनावे जो कि नीचे के संपुट में ऊंचे के सम्पुट का आधा हिस्सा आ जावे तथा जिसके पेंदें में कांच गलाकर लगाया हुआ हो, अब नीचे के सम्पुट में पारद की कज्जली धरे कुछ पोल कर छोड़े मुख पर ढकनी कर देवे और आगे कही हुई क्रिया से मुद्रा करे, कांच तथा राख को समान भाग लेकर खूब पीसे, उसी से मुद्रा कर संपुट बनावे फिर सन्धिवाले खंड को कपरौटी कर बंद करे, ऊपर के खंड को जलमुद्रा से लीपे, जलमुद्रा इस प्रकार प्रस्तुत होती है, दीपक के नीचे की कीट और कीट से आधा मैदा तथा मैदा से आधा एलुवा लेकर मुर्गी के अण्डे के रस से खूब घोटे, इसको जलमुद्रा कहते हैं। इसको अपने पुत्र के वास्ते भी नहीं कहना चाहिये तथापि परंपरा उपदेश से इस यंत्र को बनाना अत्यावश्यक है, यंत्र ऐसा बनावे कि जिसकी संधि जल के बीच खुलने नहीं पावे तो इसको यंत्रभैरव कहते हैं और कहीं कहीं इसको सोमावलनाम का यंत्र भी कहा है, यह यंत्रराज पारद का साक्षात् कैद करनेवाला है, इसे वैद्य धीरे–धीरे चार दिन तक मंद मंद आंच लगावे तब मूंगा के समान अमृततुल्य पारद को निकाल लेवे और यदि उस यन्त्रराज की संधियों में कुछ पारद रह भी गया होवे तो आधा गंधक फिर देकर कांच की शीशी में रख बालुका यन्त्र द्वारा पका लेवे। स्वांगशीतल होने पर रक्तवर्ण रस को निकाल लेवे, इस प्रकार प्रस्तुत हुए इस रस को सूक्ष्म पीसकर सुवर्ण के पात्र में रखे फिर जायफल, लौंग, कंकोल, जावित्री, एक कर्ष, मस्तंगी, एक माशा, उससे आधा कपूर, कपूर से आधा धतूरा तथा समुद्र फेन, इन सबको एक एक तोला लेकर सूक्ष्म पीस लेवे, इस चूर्ण का दो माशा तथा एक उर्द की समान रस को मिलाकर शहद के साथ खावे, अब हम इसके पथ्य को कहते हैं, उसे सुनो। प्रथम घृत में सेके हुए कोमल मांस को सेवन करे फिर इसके पश्चात् अनेक प्रकार के मांसो को भक्षण करे, मांडे, बड़े अनेक प्रकार के पक्वान्न इनका भोजन करे। फिर अपने मन को प्रसन्न करनेवाली स्त्री से कामनापूर्वक रमण करे, वह रस सब प्रकार के धातुक्षय, कास, मंदाग्नि, संग्रहणी, कफजन्यरोग, बीस तरह के प्रमेह, मृगीरोग, गांठ, हृद्रोग,और कठिन पांडुरोग, अरोचकता, शोथ (सूजन), प्रमेह, पिडिंका, जीर्णज्वर, प्रलेपक (जो कि प्रायः क्षयरोग के साथ साथ रहनेवाला एक प्रकार का विषमज्वर जिसको अंग्रेजी में हेक्टिस (HECTIC) कहते हैं। गठिया, गुदा के रोग, शुक्रक्षरण, शूल, विष, श्वास, उरःक्षत शीघ्र ही नाश करता है और बालकों को भी उनकी अवस्थानुसार मात्रा की कल्पना करनी चाहिये। कृश अर्थात् दुर्बल मनुष्यों को पुष्टि तथा वीर्यवान् बनाने के लिये एक ही पदार्थ है, यह रसायन तिमिररोग को भी नाश करता है, स्त्रियों की कान्ति को बढ़ाता है, बली (बुढ़ापे में त्वचा ढ़ीली होना) पलित (बालों का सफेद होना) का नाशक है तथा लाल, पीला, सफेद, नीला और कालेवर्ण के वीर्यपात को कमर के शूल को भी नाश करता है। इसमें कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं है, इस रस को श्रीकक्षापुटि महाराज ने वर्णन किया है और मैंने स्वयं अनुभव करके अपने बनाये हुए इस पुस्तक में रीत्यानुसार लिखा है, इसमें सन्देह नहीं है।।२६–५३।।

मृगांकविधि

भूखा पारा दसपल लेय । कुन्दन तवक तासु में देय ।। चीनी को जु सकोराधरे । तामें निंबुवा को रस धरे ।। निंबुवा को रस दे पल एक । ढ़ाकि रहै निसि यहै विवेक ।। बहुरचो सर्वा लीजे छानि । उतने तबक और दे आनि ।। नींबू को रस बहुरचो देय । जो लों पारो समसरि लेय ।। कै कहु होय अजीरन ताहि । तो दिन दोइ जिमावे ताहि ।। जब जानै सुबराबर चरै ।। बोझ नहोय जोखि के धरै ।। तबे तबके पारे सम देय । कुन्दन पारो खरल करेय ।। निंबुवा रससों खरलै गुनी । यह मैं गुरु अपने से सुनी ।। तब ऐसी विधि चांदी करै । सूखन को जु छांह में धरै ।। ले गंधक सोध्यो पल सात । ग्वारि खररिये ऐसी बात ।। वा चांदी तर ऊपर देय । गंधक को गोला कै लेय ।। वाहि एक दिन सुकवे छांह । पुनि ले धरे कढ़ाई मांह ।। ऊपर ढ़ांकि लोहिड़ी याहि । मुद्रा मैन कीजिये ताहि ।। धरि जलयन्त्र आगि अति करै । चौसठ पहर रातिदिन करै ।। पुनि सिराय के लीजै लोय । लीलाबंर बैठिये सोय ।। यह मृगांक रस जानो गुनी ।। यों कहि गये अचारज मुनी ।। कै यह करै जोगी अवधूत । कै करि है राजा को पूत । यह निश्चय करि जानो सोय । यासम और न दीखे कोय ।। बहुत हौस बनितन से होय । यह रस खानि बूझिये सोय ।। बल बीरज अरु थंमन करै । रोगशरीर आपदा हरै । जितने रोग किये करतार । या खायेते जाहिं असार ।। याके गुन की संख्या जान । है निहचैके सुनो सुजान ।। और बात को कहै बढ़ाय । सातों धात बेधि है राय । कनकसूत गुन इते अथाह । कहांलो कहों सुनो नरनाह ।।

(रससागर)

वैक्रान्तबद्ध (पारदशिवागमसे)

सुवर्णस्य सुवर्णस्य तोलेकं रेतितस्य च । कर्षं च शुद्धवैक्रान्तं रसं षोडशकार्षिकम् ॥५४॥ शरावमात्रं गन्धस्य खल्वमध्ये विचूर्णयेत् । हरितकर्ण्यश्वकर्णोत्थरसं दत्त्वा दिनद्वयम् ॥५५॥ कृष्णधत्तूरकर्पासदलोत्थेन रसेन च । सुशोधितं रेतितं च नागं दत्त्वाऽथ तोलकम् ॥५६॥ कुमारीस्वरसेनैव मर्दयेच्च दिनद्वयम् । सप्तमृच्चैलसंलिप्ते काचकुम्भे क्षिपेद्रसम् ॥५७॥ तन्मुखे खटिकां दत्त्वा लेपयेत्सप्तधा मृदा । मृत्कर्पटविधानार्थं परिभाषां विलोकयेत् ॥५८॥ संस्थाप्य वालुकायंत्रे पचेद्दिन चतुष्टयम् । शनैः शनैः प्रदातव्यो वीतिहोत्रो भिषक्तमैः ॥ ५९॥ स्वांगशीतो रसो ग्राह्यो यथारोगानुपानतः । दापयेत्सर्वरोगाणां विनिहन्ता न संशयः ॥६०॥ जातीफलं जातिपत्रं कुंकुमं सलवंगकम् । कंकोलार्ककरं चैव स्वस्थे स्यादनुपानकम् ॥६१॥ अतीव कान्तिजननमतीवोत्साहवर्द्धनम् । अतीव कामवृद्धिं च वह्निवृद्धिं करोति च ॥६२॥ शोषं क्षयं राजरोगं प्रमेहं विषमज्वरम् । प्रलापकमजीर्णं च तथा मन्दज्वरं जयेत् ॥६३॥ वृद्धानां कान्तिजननं पुत्रदं श्रीकरं परम् । ओजोवृद्धिकरं श्रेष्ठं महावातविनाशनम् ॥६४॥ श्लेष्मा भयप्रशमनं कर्मजव्याधिनाशनम् । वैक्रान्तबद्धसूतोऽयं बृहणे परमोमतः ॥६५॥

(टोडरानन्द)

**इति श्रीअग्रवालवैश्यावंतसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजन–
प्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां सुवर्णमूर्च्छित–
चन्द्रोदयवर्णनं नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥३३॥**

अर्थ–रेती से लेकर चूर्ण किये हुए उत्तम रंग के सुवर्ण का एक तोला और एक ही तोला शुद्धवैक्रान्त तथा सोलह तोले पारद और गंधक चौसठ तोले लेकर खरल में डाल के घोटे फिर हस्तिकर्णी (एक तरह का ढ़ाक) अश्वकर्णी (शालवृक्ष) इनके फूलों के रस से दो दिवस तक घोटे। इसी प्रकार काले धतूरे के रस से और कपास के फूलों के रस से भी घोटे तदनन्तर एक तोला रेते हुए शुद्ध सीसे को डाल घीगुवार के रस से दो दिवस तक घोट सात कपरौटी की हुई कांच की शीशी में सब पारद को रखकर मुख पर खड़िया की टिकिया लगाय सात बार मिट्टी से लेप देवे। कपरोटी करने की क्रिया परिभाषाध्याय में देख लेनी चाहिये फिर शीशी को बालुकायंत्र में रख चार दिन तक पकावे और वैद्यराज को धीरे धीरे अग्नि लगाना आवश्यक है। स्वांगशीतल होने पर रस को निकाल लेवे फिर यथा अनुपान अनेक रोगों को नाश करता है, इसमें किंचित भी सन्देह नहीं है। जायफल, जावित्री, केसर, लौंग, कंकोल, अकरकरा, इनके संग नीरोगदशा में भक्षण करे तो कांति, उत्साह, काम की वृद्धि तथा अग्नि की वृद्धि इनको अत्यन्त ही करती है। शोषरोग, क्षय (जिसको अंग्रेजी में थाइसिस कहते हैं) प्रमेह, विषमज्वर, प्रलापक, अजीर्ण तथा जीर्णज्वर को जीत लेता है, वृद्ध मनुष्य जो इस रस को खावे तो लक्ष्मी तथा पुत्र को प्राप्त होता है। ओज (रसादि सात धातुओं से पैदा हुआ एक प्रकार का धातु विशेष) की वृद्धि का करनेवाला तथा महावात का नाशक, कफ तथा कर्म से पैदा हुए रोगों को नाश करता है। यह वैक्रान्तबद्ध पारद बृंहण (वीर्य के बढ़ाने) में परमोत्तम माना गया है॥५४–६५॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठ–
मल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां सुवर्णमूर्च्छित–
चन्द्रोदयादिवर्णनं नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥३३॥

अथ प्रयोगीयाध्यायः ३४

भस्मसूतं द्विधा गन्धं क्षणे कन्याम्बुमर्दितम् ॥ रुद्ध्वा लघुपुटे पच्याल्लेहयन्मधुसर्पिषा ॥१॥ निष्कमात्रं जरामृत्यू हन्ति गन्धामृतो रसः ॥ समूलं भृंगराजं तु च्छाया शुष्कं विचूर्णयेत् ॥२॥ तत्समं त्रिफलाचूर्णं सर्वतुल्या सिता भवेत् ॥ पलैकं भक्षयेच्चानु वर्षान्मृत्युजरापहः ॥३॥

(रसेन्द्रचिन्तामणि, र० रा० शं०)

अर्थ–पारदभस्म में द्विगुणगन्धक डालकर उसको घीकुवार के रस से क्षणमात्र मर्दन करे, फिर लघुपुट में रखकर पका लेवे, फिर इस गंधामृत रस को ४ माशे प्रमाण लेकर शहद और घृत मिलाकर नित्य चाटे तो वृद्धता और मृत्यु को नष्ट करता है और जड़ समेत जलभंगरा को छाया शुष्क करके उसका चूर्ण बनावे, पीछे इसके बराबर ही त्रिफला का चूर्ण इसमें मिलावे और सबके बराबर मिसरी मिलावे पश्चात् पूर्वोक्त रीति से पारदभस्म को चाटकर ऊपर से ४ तोला यह चूर्ण खावे, ऐसे १ वर्ष पर्यन्त सेवन करने से मृत्यु और वृद्धता को नष्ट करता है॥१–३॥

हिरण्यगर्भरस

अथ सूतस्य शुद्धस्य मूर्च्छितस्याऽप्ययं विधिः ॥ सूततुल्यं घृतं जीर्णं द्वाभ्यां तुल्यं च गंधकम् ॥४॥ रविक्षीरैर्दिनं मर्द्यसन्धयित्वा तु भूधरे ॥ पुटैकेन भवेत्सिद्धो रसो हैरण्यगर्भकः ॥५॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ–पारद के समान पुराना घृत और इन दोनों के समान ही गंधक इन तीनों को पीस आक के दूध में एक दिवस तक घोटे फिर अन्धमूषा में रख भूधरयंत्र में पकावे तो एक ही पुट से हिरण्यगर्भ नाम का रस सिद्ध होता है॥४॥५॥

चिरञ्जीवित्वकल्प

रसभस्म गुडूच्याश्च सत्त्वमेकत्र तद्द्वयम् ॥ क्रियते शाल्मलीसत्त्वं तद्द्वयं परिभाव्य च ॥६॥ पंचाशद्भावनास्तापे शाल्मलीसत्त्वकस्य च ॥ टंकद्वयमिदं चूर्णं यदि गृह्णाति तत्क्वचित्॥७॥ । शाल्मलीसत्त्वमनु च चतुस्तालं पिबेद्दिने ॥ दिने प्रभातसमये तीक्ष्णाम्लं परिवर्जयेत् ॥८॥ दुग्धभक्ताशनः शान्तो भूमिशायी जितेन्द्रियः ॥ त्रिमासादूर्ध्वतः केशाः कालालिकुलसन्निभाः ॥९॥ अजरामरं शरीरं वयस्तम्भो महामतिः ॥ एवं कल्पो विधातव्यो चिरंजीवितुमिच्छता ॥१०॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–पारदभस्म (चंद्रोदयादि) और सत्तगिलोय इन दोनों को एकत्र कर सेमल के दूध से भावना देकर घाम में सुखा लेवे, इस प्रकार पचास भावना देवे। इस चूर्ण में से दो टंक (आठ माशे) लेकर ऊपर से चार तोले सेमल का रस प्रातःकाल के समय पीवे और कालीमिरच तथा खटाई का परित्याग करे। दूध, भात का भोजन करे, शांत हो धरती पर सोवे, इन्द्रियों को जीते तो तीन मास में ही बाल भौरों के समान काले हो जाते हैं। शरीर अजर अमर होता है। अवस्था तथा बुद्धि को बढ़ानेवाला होता है, जो मनुष्य बहुत दिवस तक जीवित रहने की इच्छा करता हो तो इस प्रकार कल्प करना चाहिये।६–१०॥

अथ योगवाही रसविधि

भागा रसस्य चत्वारो गन्धकश्चाष्टभागिकः ॥ सैंधवस्य च भागौ द्वौ श्वेताजयन्तिकाद्रवैः ॥११॥ मर्दितं त्रीण्यहान्यस्य गोलकं कुरु शोषयं ॥ तप्तमूषां जले क्षिप्त्वा गृहाण रसभस्मकम् ॥१२॥ संस्कृत्य कंटकाद्यैश्च यथेष्टं विनियोजयेत् ॥ योगवाही रसोऽयं च प्रयोज्यः सर्वकर्मसु ॥१३॥

(रसपारिजात)

अर्थ–पारद चार भाग, गंधक आठ भाग, सैन्धव दो भाग, इन तीनो को सफेद जयन्ती के रस में तीन दिवस तक मर्दन कर गोला बनाय सुखा लेवे फिर तप्तमूषा में रख कोयलों की आंच में धोंके। जब लाल हो जावे तब जल में डाल रस को निकाल लेवे और उसको समस्त कर्मो में योजित करे। इसको ही योगवाही रस कहते हैं॥११–१३॥

हेमसुन्दररस

मृतसूतस्य पादांशं हेमभस्म प्रकल्पयेत् ॥ क्षीराज्यमधुना मिश्रं माषैकं कांस्यपात्रके ॥१४॥ लेहयेन्मासषट्कं वै जरामृत्युविनाशनः ॥ बाकुचीचूर्णक र्षैकं धात्रीफलरसप्लुतम् ॥ अनुपानं लिहेन्नित्यं स रसो हेमसुन्दरः ॥१५॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–पारद भस्म (चन्द्रोदयादि) के चार भाग, एक भाग सुवर्ण की भस्म इन दोनों को घोट लेवे फिर इसका एक माशा (आजकल कलियुग में एक रत्ती लेना चाहिये) दूध, घी और शहद के साथ कांसे के पात्र में छः मास तक खावे तो बुढ़ापा तथा मृत्यु का भी नाश करता है। तदनन्तर बावची के एक तोले (कलियुग में चार माशे) चूर्ण को आमले के रस में मिलाकर चाटे। यह इसका अनुपान है इसको हेमसुन्दररस कहते हैं॥१४॥१५॥

अमृतार्णबरस

सूतभस्म चतुर्भागं लोहभस्म तथाष्टकम् ॥ मेघभस्म च षड्भागं शुद्धगंधस्य पंचकम् ॥१६॥ भावयेत्त्रिफलाक्वाथैस्तत्सर्वं भृंगजद्रवैः ॥ शिग्रुवह्निकटुक्याथं सप्तधा भावयेत्पृथक् ॥१७॥ सर्वतुल्या कणा योज्या गुडैर्मिश्रं पुरातनैः ॥ निष्कमात्रं सदा खादेज्जरामृत्युं निहन्त्यलम् ॥१८॥ ब्रह्मायुः स्याच्चतुर्मासै रसोऽयममृतार्णवः ॥ तिलकोरंडपत्राणि गुडेन भक्षयेदनु ॥१९॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–पारदभस्म चार भाग, लोहभस्म आठभाग, अभ्रकभस्म छः भाग, शुद्ध गंधक पांच भाग इन सबको सातबार त्रिफला के क्वाथ की भावना देवे फिर भंगरा, सैंजना, चित्रकक्वाथ, कटुकीका क्वाथ इनसे सात सात बार भावना देवे और इन सबकी बराबर पीपल छोटी लेना इन सबको पुराने गुड़ के संग मिलाकर चारमाशे सदा खावे तो जरा और मृत्यु को नाश करता है यदि चार मास तक इस रस को खावे तो ब्रह्मा के तुल्य अवस्थावाला होता है। इसका नाम अमृतार्णव है तिल तथा कटसरैया (कटेरी) के पत्ता गुड़ के संग खावे बस यही इस रस का अनुपान है॥१६–१९॥

अथ चतुर्मुखरसविधि

रसगन्धकलौहाभ्रं समं सूतांघ्रि हेम च ॥ सर्वान्खल्वतले क्षिप्वा कन्यास्वरसमर्दितम् ॥२०॥ एरण्डपत्रैरावेष्टय धान्यराशौ दिनत्रयम् ॥२१॥ तद्यथाग्निबलं खादेत्त्रिफलामधुसंयुतम्॥एतद्रसायनवरं वलीपलितनाशनम् ॥२२। क्षयमेकादशविधं कासं पंचविधं तथा ॥ कुष्ठमष्टादशविधं पांडुरोगान्प्रमेहकान् ॥२३॥ शूलं कासं च हिक्कां च मन्दाग्निं चाम्लपित्तकम् ॥ व्रणान्सर्वान्पक्षघातं विसर्प विद्रधिं तथा ॥२४॥ अपस्मारं ग्रहोन्मादान्सर्वार्शांसित्वगामयान् ॥ क्रमेण शीलिते हन्ति वृक्षानिन्द्राशनिर्यथा ॥२५॥ पौष्टिकं बल्यमायुष्यं पुत्रप्रसवकारणम् ॥ चतुर्मुखेन देवेन कृष्णात्रेयेण सूचितम् ॥२६॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–शुद्ध पारद अथवा पारदभस्म एक भाग, गंधक एक भाग, लोहभस्म एक भाग, अभ्रक एक भाग और पारद से चौथाई सुवर्णभस्म इन सबको खरल में डाल घीकुवार के रस से घोट गोला बनावे फिर सुखाकर एरण्ड के पत्तों से लपेट तीन दिवस तक धान के ढेरे में रखें, तदनन्तर धान के ढेर में से निकाल पीसकर अग्निबल के अनुसार त्रिफला तथा शहद के साथ खावे तो यह उत्तम रसायन क्षय, पांच प्रकार के कास, अठारह प्रकार के कोढ, पांडु, प्रमेह, शूल, श्वास, हिक्का (हिचकी), मन्दाग्नि, अम्लपित्त, व्रण, पक्षाघात, विसर्प, विद्रधि, मृगीरोग, ग्रहोन्माद, समस्त प्रकार के बवासीर, त्वचा के रोग इनको क्रम क्रम से नाश करता है, जैसे इन्द्र का वज्र वृक्षों को नाश कर देता है इसी प्रकार यह रस भी सेवन करने से क्रम क्रम से रोगों को नाश करता है। यह रस पुष्टिकारक, बल तथा आयुष्य का दाता, पुत्र का पैदा करनेवाला है। इसको श्रीब्रह्माजी ने स्वयं अपने मुख से श्रीआत्रेयजी को कहा है॥२०–२६॥

त्रिनेत्ररसविधि

रसगंधकताम्राणि सिन्दुवाररसैर्दिनम् ॥ मर्दयेदातपे पश्चाद्वालुकायन्त्रमध्यमगम् ॥२७॥ रुद्ध्वा मूषागतं यामत्रयं तीव्राग्निना पचेत् ॥ तद्गुञ्जा सर्वरोगेषु पर्णखंडिकया पुनः ॥ दातव्या देहसिद्ध्यर्थं पुष्टिवीर्यबलाय च ॥२८॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–पारद, गंधक और ताम्र इन तीनों को निर्गुंडी के रस से एक दिवस तक घोटे फिर मूषा में रख वालुकायंत्र द्वारा तीन प्रहर तक तीव्र अग्नि लगावे इस रस की एक रत्ती लेकर पान के टुकड़े के साथ देह की सिद्धि के लिये खावे तो बल को बढाता है पुष्टि को करता है॥२७॥२८॥

सम्मति–इस रस में पारद शब्द से पारदभस्म चन्द्रोदय अथवा रससिन्दूर लेना चाहिये, गंधक तीनबार शुद्ध किया हुआ लेना तथा तांबे की भस्म लेना चाहिये।

अथ दरदेशरसविधि

पंचपलं दरदं पलमेकं शुद्धबलिं मृदुवह्निगतायाम् ॥ कज्जलिकां विरचय्य तु तालं माषमितं विनियोज्य च कूप्याम् ॥२९॥ विपचेत्सिकतासु दिनं दहनैस्तदनु स्वत एव हिमं च हरेत् ॥ दरदेश इति क्षयनाशकरो भवतीह रसः सकलामयजित् ॥३०॥

(बृहद्योगतरङ्गिणी)

अर्थ–पांचपल सिंगरफ, एक पल शुद्ध आमलासार गंधक इन दोनों की कजली बनाकर और एक माशे हरताल को मिला काच की शीशी में भर देवे, फिर बालुकायंत्र में रख एक दिवस तक आंच लगावे स्वांगशीतल होने पर निकाल लेवे इसको दरदेश रस कहते हैं। यह रस क्षय रोग का नाशक है और अनुपानानुसार अनेक रोगों का नाश करता है॥२९॥३०॥

अथ साधारणपारदसेवनविधि

प्रातरेव पुरतो विरेचनं तद्दिनोपवसनं विधाय च ॥ तत्परेऽहनि च पथ्यसेवनं तत्परेऽहनि रसेन्द्रसेवनम् ॥३१॥ (रसेन्द्रसारसंग्रह)

अर्थ–अब पारद के सेवन की विधि को कहते हैं कि प्रथम प्रातःकाल दस्त करानेवाली दवाई का सेवन करे और उसी दिन लंघन भी कर लेवे और उसके दूसरे दिन पथ्य का सेवन करे अर्थात् हलका भोजन करे फिर उसके दूसरे दिन पारद का सेवन करे॥३१॥

सम्मति–पारद का सेवन दो प्रकार का होता है एक तो रसायन (नीरोगशरीर में बल की विशेष वृद्धि) के लिये और दूसरे रोगनाशन के लिये, जहां रोग के नाशार्थ पारद का सेवन किया जावे वहां तो आवश्यकतानुसार वमन, विरेचन कराने चाहिये और आवश्यकता न हो तो न करावे और यदि रसायन के लिये खावे तो ऊपर लिखी हुई विधि के अनुसार सेवन करे।

पारदप्रयोग

विना गंधकसंयोगाद्रसः प्रायो न युज्यते ॥ उक्ते पारदमात्रे तु सिन्दूरं प्रायशो मतम् ॥३२॥

(आयुर्वेदविज्ञान)

अर्थ–जहां गंधक का प्रयोग नहीं है वहां अकसर पारद का प्रयोग नहीं होता है और जहां केवल पारद का ही नाम आया है वहां पर बहुधा रससिंदूर का ग्रहण करना चाहिये।।३२।।

अनुपानोपदेश

अनुपानं तु दातव्यं ज्ञात्वा रोगादिकं भिषक् ।।३३।।

(रसेन्द्रसारसंग्रह)

अर्थ–वैद्य को चाहिये कि रोगी के रोग, देश और काल को देखकर अनुपान की कल्पना करनी चाहिये।।३३।।

अन्यच्च

यस्य रोगस्य यो योगस्तेनैव सह योजयेत् ।। रसेन्द्रो हरते रोगान्नरकुंजरवाजिनाम् ।।३४।। (रसमञ्जरी, वै० क० र० रा० शं० आ० वे० वि० वृह० यो० श० क० र० सा० प०)

अर्थ–जिस रोग का जो योग वर्णन किया है उसके साथ ही प्रयोग करे तो वह पारद मनुष्य, हाथी तथा घोडों के रोगों को शीघ्र ही नाश करता है।।३४।।

रस के अनुपान

पित्ते शर्करयाऽमलेन सहसा वाते च कृष्णासखं दद्याच्छलेष्मणि शृंगबेरसहितं जम्बीरजेन ज्वरे । रक्तोत्थे मधुना प्रवाररुधिरे स्यान्मेघनादोदकैर्दद्याज्चाथ कृतातिसारविकृतौ रोगारिसंज्ञो रसः ।।३५।।(रसराजसुंदर, नि० र०)

अर्थ–यह रोगारि नामका रस पित्त के रोगों में खांड तथा आमले के साथ, वातज रोगों में पीपल के साथ, कफजन्य रोगों में अदरख के साथ, अजीर्णज्वर में जंभीरी के रस के साथ, रक्तविकार में शहद के संग, स्त्रियों के रक्तप्रवाह में चौलाई के रस के संग और रक्तातिसार में भी चौलाई के रस के साथ खावे।।३५।।

अन्यच्च

गुडेन सूतं मरिचाज्ययुक्तं स्निग्धं च भोज्यं दधिशुक्सदैव ।। नवप्रतिश्यायहरं च सत्यकं शुण्ठीश्रृतं दुष्टकफस्य नाशनम् ।।३६।। चूर्णीकृतां माषविदारियष्टिकां सशर्करां सूततृणेन युक्ताम् ।। प्रमथ्य दुग्धेन पिबेन्निरन्तरं स्त्रीणां शतं कामयते स कामी ।।३७।। मुक्ताऽमृताचन्दनधान्यवीरणशुण्ठीसहायं मधुशर्करान्वितम् ।। लिहन्प्रभाते विनिहन्ति युक्तं कासं च श्वासं कफरक्तपित्तम् ।।३८।। प्रातर्निपीतो मधुना रसेन्द्रः सवारितः स्थौल्यमहो निहन्ति । भक्तश्च मण्डं पिबतश्च सूतः कोष्ठं हरेत्स्थौल्यचिरोत्थभूतम् ।।३९।। (निघण्टु रत्नाकर)

अर्थ–गुड, मिरच स्याह और घृत इनके साथ पारद को खाकर नित्यप्रति चिकना भोजन तथा दही को खावे नवीन जुखाम को हरता है शुण्ठी के क्वाथ के साथ कफ को दूर करता है, माषपर्णी, विदारीकन्द, मुलहठी इनका चूर्ण और मिश्री इनके संग एक चावल की बराबर पारद को मिलाय फँकी लगावे और ऊपर से दूध पीवे तो वह कामी मनुष्य सौ स्त्रियों से रमण करता है। मोती, गिलोय (सत्त गिलोय), चन्दन सफेद, धनियाँ, खस और सोंठ, इनमें घृत तथा शहद मिलाकर पारद को प्रातःकाल चाटे तो कास, श्वास, कफ, रक्तपित्त को नाश करता है तथा प्रातःकाल ही शहद और पानी के साथ सेवन करे तो स्थौल्य (मेद के बढने) को दूर करता है भात के मांड के साथ पीया हुआ पारद पुराने कोढ को नाश करता है इसमें सन्देह नहीं है।।३६–३९।।

वैद्यजीवन से उक्तानुक्तरसों के प्रयोग का अनुपान

शूले हिंगुघृतान्वितं मधुयुता कृष्णा पुराणज्वरे पित्ते साज्यरसोनकः कफरुजि क्षौद्रान्वितं त्र्यूषणम् । शीते व्याललतादलं समरिचं मेहे वरा सामला दोषाणां त्रितयेऽनुपानमुदितं सक्षौद्रमार्द्रोदकम् ।।४०।। मथवा पर्पटकं ज्वरे ग्रहिण्यां मथितं हेम गरे वमीषु लाजा । कुटजोतिसृतौ वृषोस्रपित्ते गुदकोलेषु नतं कृमौ कृमिघ्नम् ।।४१।।

(रसतारपद्धति)

अर्थ–और भी जिनके अनुपान कहे हों या न कहे हों उनके अनुपान वैद्यजीवन में इस प्रकार कहे हैं कि शूलरोग में घृत और हींग के साथ, पुराने ज्वर में शहद पीपल के साथ, पित्तरोग में घृत और लशुन के साथ, कफरोग में शहद तथा सोंठ, मिरच, पीपल के साथ, वातरोग में मिरच और पान के संग, प्रमेहरोग में त्रिफला के संग और सन्निपातज्वर में शहद, अदरक के रस के साथ देवे। नागरमोथा तथा पटोलपत्र के साथ ज्वर में, मठा के संग संग्रहणी में, वमन में खीलों के साथ, अतिसार में कढ़ाकी छाल के संग, रक्तपित्त में अडूसे के साथ, कृमिरोग में वायविडंग के साथ खावे।।४०–४१।।

यथा जलगतं तैलं तत्क्षणादेव सर्पति । एवमौषधमङ्गेषु प्रसर्पत्यनुपानतः ।।४२।। पिपली मधुना सार्द्धं वातमेहं हिनस्ति च ।। त्रिफला शर्करासार्द्धं पित्तमेहहरास्मृता ।।४३।। पिपली मरिचं शुण्ठी भाङ्गी च मधुना सह । कासश्वासप्रशमनः शूलस्य च विनाशनः ।।४४।। हरिद्रा शर्करासार्द्धं रुधिरस्य विकारनुत् ।। त्र्यूषणं त्रिफला वासा कामलापांडुरोगहृत् ।।४५।। पिप्पलीं चित्रकं पथ्या तथा सौवर्चलं क्षिपेत् ।। अग्निमान्द्यबद्धकोष्ठहृद्व्यथानाशनं परम् ।।४६।। शिलाजतु तथैला च सितोपलसमन्वितम् ।। मूत्रकृच्छ्रे प्रशस्तोऽयं सत्यं नागार्जुनोदितम् ।।४७।। लवंगं कुंकुमं पत्रीं हिंगुलं करहाटिकम् ।। पिप्पली विजया चैव समानीयानि कारयेत् ।।४८।। कर्पूरमहिफेनं च भागाद्भागार्धकं क्षिपेत् ।। सर्वमेकत्र संमर्द्य धातुवृद्धौ प्रदापयेत् ।।४९।। सौवर्चलं लवंगं च भूनिम्बश्च हरीतकी ।। अस्यानुपानयोगेन सर्वज्वरविनाशनः ।।५०।। तथा रेचकरः प्रोक्त सौवर्चलफलत्रिकः ।। लवंगं कुंकुमं चैव दरदेन च संयुतः ।।५१।। ताम्बूलेन समं भक्ष्यो धातुवृद्धिकरः परः।।विदारीचूर्णयोगेन धातुवृद्धिकरो मतः ।।५२।। विजयादीप्यसंयुक्तो वमनस्य विकारनुत् ।। सौवर्च्चलं हरिद्राच विजया दीप्यकस्तथा ।।५३।। अनेनोदरपीडां च सद्योजातां विनाशयेत्।।चतुर्वल्लं पलाशस्य बीजाच्च द्विगुणं गुडः ।।५४।।अस्यानुपानयोगेन कृमिदोषविनाशनः ।। अहिफेनं लवंगं च दरदं विजया तथा ।।५५।। अस्यानुपानतः सद्यः सर्वातीसारनाशनः ।। सौवर्चलेन दीप्येन चाग्निमांद्यहरः परः ।।५६।। क्षुद्बोधजनकश्चैव सिद्धनागेश्वरोदितम् ।। गुडूचीसत्त्वयोगेन सर्वपुष्टकरः स्मृतः ।। युक्तानुपानसहितः सर्वान्रोगान्विनाशयत् ।।५७।।

(योगरत्नाकर र० रा० सुं० नि० र०)

अर्थ–जिस प्रकार तैल की एक बूंद जल में डालने से शीघ्र ही फैल जाती है इसी प्रकार औषध अनुपान के द्वारा समस्त अंगों में प्रवेश कर जाता है। यह रस पीपल और शहद के साथ वातज प्रमेह को नाश करता है, त्रिफल और शहद के संग पित्तज प्रमेह को दूर करता है, पीपल, मिरच, सोंठ और भारंगी इनका चूर्ण तथा शहद के साथ सेवन करने से खांसी, श्वास, शूल को नाश करता है, हलदी और शक्कर के साथ सेवन करने से रक्तविकार को नाश करता है, सोंठ, मिरच, पीपल, हर्र, बहेडा, आमला और अडूसा इनके संग भक्षण करने से रसराज पांडुरोग को नाश करता है, पीपल, चि[illegible]क (चीता) हर्र और काले नोंन के संग खाने से मंदाग्नि, कोष्ठबद्ध और ह[illegible]य की पीड़ा को शांत करता है शिलाजीत, छोटी इलायची और मिश्री इनके साथ देने से घोर मूत्रकृच्छर को जीतता है यह सत्यवचन श्रीनागार्जुन का कहा हुआ है। लौंग, केसर, जायपत्री, सिंगरप, सुवर्ण, पीपल, भांग उ[illegible] सबको समान भाग लेके प्रत्येक भाग का चौथाई भाग कपूर ओर अफी[illegible] डाल देवे इन सबको एकत्र कूट पीसकर रस के साथ धातुवृद्धि के लिये द[illegible] देवे। काला नोंन, लौंग, चिरायता हर्र इनके साथ पारद का सेवन करने से समस्त ज्वरों का नाश करता है। काला नोंन और त्रिफला के संग देने से

दस्तावर होता है, लौंग, केसर, सिंगरप तथा पान के साथ अत्यन्त धातुवृद्धि को करता है। विदारीकन्द के चूर्ण के संग भी धातुवर्द्धक है। भांग, अजमायन के साथ वमन रोग को हरता है। कालानोंन, हलदी, भांग और अजमोद इनके साथ तत्काल पैदा हुई उदरपीड़ा को नाश करता है। १२ बारह रत्ती ढाक के बीज और चौबीस रत्ती गुड़ इस अनुपान के साथ कृमिदोष को नाश करता है, अफीम, लौंग, सिंगरफ और भांग इनके साथ अनेक प्रकार के अतीसारों को नाश करता है, अजमोद और काले नोंन के साथ मंदाग्नि को मिटाता है और भूख को बढानेवाला है यह सिद्ध नागेश्वर का कथन है। सत्तगिलोय के साथ देने से पुष्टिकारक है अथवा अनेक योग्य अनुपानों के साथ अनेक रोगों को नाश कर देता है इसमें संदेह नही है।४२–५७।।

रस अनुपान

गुंजैकमानमारभ्य चतुर्गुंजावधिं नरः रसराजं प्रिये युक्त्या भक्षयेदनुपानतः ।।५८।। घृतवल्लिजचूर्णेन मगधामधुनाऽथवा ।। मधूच्छिष्टघृताभ्यां वा सर्वरोगेषु योजयेत् ।।५९।। पित्ते क्षीरसितायुक्तं पिप्पल्याथ समीरणे ।।श्लेष्मण्योर्द्रकजैर्नीरैर्ज्वरजैर्जम्बीरजद्रवैः ।।६०।। मधुना रक्तविकृतौ दध्नाऽतीसार के गदे ।। समतोयश्रृतं दुग्धे पीत्वा पश्चात्सितायुतम् ।।६१।। रक्तातीसारके देयं मेघनादभवै रसैः ।। प्रतिश्याये कफे दुष्टे गुडसर्पिर्मरीचकैः ।।६२।। पथ्येऽन्नं सदधि स्निग्धं कवोष्णं भोजने हितम् ।। हितमालिंगनं ते स्याद्यथा मे मदनज्वरे ।।६३।। वीर्यवृद्धौ तथा स्तम्भे माषकूष्मांडयष्टिजैः ।। चूर्णैर्दुग्धसितायुक्तैर्मधुसर्पिर्युतैस्तु वा ।।६४।। तृतीयके ज्वरे पित्ते भ्रमे मधुसितायुतम् ।। जग्ध्वा मेघामृतारक्तधान्याकजलज पिबेत् ।।६५।। क्वाथं कमलमूकान्तातुल्यशीले मनोहरे । सुखी स्यात्ते रतावास्यचुम्बनेन यथा त्वहम् ।।६६। रक्तपित्त कफे कासे श्वासे क्वाथेन सेवयेत् । द्राक्षा वासा शिवानाम्भो पथ्ययुक्तो वरांगने ।।६७।। मेदोगदे शालिमुण्डैर्वाम्बुमाक्षिकसंयुतन् ।। भजेद्गजास्यतुल्योऽपि स्थूलः कृशतरो भवेत् ।।६८।। नष्टपुष्पे रक्तगुल्मे शिवे शल्गमिघे गदे ।। क्वाथे कृष्णतिलोत्थे तु भार्ङ्गीत्रिकटुहिंगुजैः ।।६९।। चूर्णैस्तु सगुडैर्युक्ते रसभूतिर्निषेविता ।। सुखदा त्वं यथा रात्रौ प्रिये श्रृंगारसंयुता ।।७०।।

(अनुपानतरङ्गिणी)

अर्थ–हे प्यारीजी! बुद्धिमान् मनुष्य उत्तमयुक्ति से और योग्य अनुपान के संग एक रत्ती से लेकर चार रत्ती तक रसराज या पारदभस्मादिका सेवन करे, घृतबल्ली के चूर्ण के साथ पीपल और शहद के साथ, घी और शहद के साथ समस्त रोगों में रसराज का प्रयोग करे। पित्तजरोगों में घी, दूध के साथ सेवन करे। वातजरोगों में पीपल के साथ और कफजन्यरोगों में अदरख के रस मे संग सेवन करे। रक्तविकार में शहद के संग अतीसार में दही के साथ और पीछे से समभाग जल और दूध को औटा कर दूधमात्र शेष रहने पर मिश्री मिलाकर पीवे। रक्तातीसार में चौलाई के रस के साथ, प्रतिश्यात में कफ में गुड़, घी और मिरच के संग खावे और पथ्य में कुछ गरम दही भात खावे और कामज्वर में स्त्री का आलिंगन करना ही अनुपान है। वीर्य वृद्धि के लिये उदर पेठा और मुलहठी के चूर्ण को दूध, मिश्री के साथ या घृत, शहद के साथ सेवन करे। तिजारी में, पित्तज्वर में, भ्रम में शहद या मिश्री के साथ खाकर ऊपर से नागरमोथा, गिलोय, लाल चंदन, धनियां और खश के क्वाथ को पीवे। हे स्त्री! पथ्य से रहनेवाला मनुष्य मुनक्का, अडूसा और हर्र के क्वाथ के संग रसभस्म को खावे, मेदरोग में सांठीचावलों के मांड के साथ या जल, शहद के साथ सेवन करे तो हाथी के समान भी मोटा आदमी अत्यन्त ही दुर्बल हो जाता है, हे पार्वती! जिसका पुष्प (रज) नष्ट हो गया हो या रक्तगुल्म हो गया हो या शूलरोग हो गया हो तो वहां पर काले तिलों के क्वाथ के साथ खावें और मनुष्य को भारंगी, त्रिकुटा हींग, गुड़ इनके साथ सेवन किया हुआ रसभस्म रात्रि में कासश्वासदि रोगों से ऐसा सुख देता है जैसा कि हे पार्वती! तू श्रृंगारयुक्त मुझको सुख देती है।।५८–७०।।

अथ साधारण अनुपान

कैराताम्बुदपर्प्पटं ज्वरगदे तक्रं ग्रहिण्यामथाऽतीसारे कुटजः कृमौ कृमिरिपुर्दुर्नामकेऽरुष्करम् ।। पांडौ किट्टमथ क्षये गिरिजतु श्वासे तु भार्ङ्ग्यौषधं मेहे त्वामलकं क्षये तृषि जलं संतप्तहेमांचितम् ।।७१।। शूले हिंगु करंजमामपवने तैलं रुवोमूत्रयुक् श्रेष्ठा प्लीह्नि कणा विषे शुकतरुः कासे तु कंठालिका ।। वातव्याधिषु गुग्गुलुश्च विहितः स्याद्रक्तपित्ते वृषोऽपस्मारे तु वचा सवागथ गरे हेमोदरे रेचनम् ।।७२।। वातास्रे च गुडूचिकार्दितगदे माषंडरो मेदसि क्षौद्राभः प्रदरे तिरीटमरुचौ लुंगो व्रणेऽग्न्या पुरम् ।। शाके मद्यमथाम्लपित्तरुजि तु द्राक्षाऽथ कृच्छे वरी कूष्माण्डाम्बु दृगामये तु त्रिफलोन्मादे पुराणं घृतम् ।।७३।। कुष्ठे खादिरसारवार्य्यथ पयो निद्राक्षये माहिषं श्वित्रे वाकुचिजं त्वजीर्णरुजि तु स्वापामयोपोषणम् ।। छर्दौ लाजमधूर्ध्वजत्रुविकृतौ नस्यं सतीक्ष्णौषधं शूले पार्श्वभवे तु पुष्करजटा मूर्च्छासु शीतो विधिः ।।७४।। कार्श्ये मांसरसोऽऽश्मरीषु गिरिभिद् गुल्मेषु सेतुत्वचा माक्षोऽस्त्रस्य तु विद्रधौ जतुरसैर्हिध्मासु नस्यं हितम् ।। दाहे शीतविधिर्भगन्दरगदे तुर्बीलताभ्वास्थिनी घृष्टे रासभलोहितैः स्वरगदे मध्वन्वितं पौष्करम् ।।७५।।

(रससारपद्धति)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजन–
प्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां प्रयोगादिवर्णनं
नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ।।३४।।

अर्थ– ज्वररोग में चिरायता, नागरमोथा और पित्तपापड़े का अनुपान संग्रहणी में मठा, अतीसार में कुढ़ा की छाल, कृमिरोग में वायविडंग, बवासीर में मिलावे, पांडुरोग में लोहकिट्ट, क्षयरोग में शिलाजीत, श्वास में भारंगी, प्रमेह में आमले, प्यास में सुवर्ण का बुझा हुआ पानी, शूलरोग में हींग, आमवात में करंजुवा, मूत्रकृच्छ्र में अंडी का तैल, प्लीहा में पीपल, विष में ढ़ाक के फूल, कासरोग में कंठलिका के साथ, वातव्याधि में गूगल, रक्तपित्त में अडूसा, मृगीरोग में बच, उदररोग में कबीला, वातरक्त में गिलोय, मद रोग में शहद, अर्दित (लकवा) में इमरती के साथ, प्रदररोग में लोध, अरुचि में बिजोरा, आंच से जले हुए फोड़े पर गूगल, पकने में मद्य, अम्लपित्त में मुनक्का, मूत्रकृच्छ्र में त्रिफला, नेत्ररोग में पेठे का रस, उन्माद रोग में त्रिफला और पुराना घृत, कोढ़ में खैरसार का क्वाथ, अनिद्रा में भैंस का दूध, श्वेत कोढ़ में बावची, वमन में खीलें और शहद, ठोड़ी से ऊपर के रोगों में मिरच के साथ नस्य, पसली के दर्द में पोहकरमूल, मूर्छा में शीतल क्रिया, कार्श्यरोग में मांस का, पथरी के रोग में पाषाणभेद, गुल्मरोग (बायगोला) में बरनासी छाल, दाह में शीतलविधि, भगंदर में घोड़े की हड्डी को गधे के रक्त से पीसकर लगावे, स्वरभंग में शहद और पौकरमूल, इन अनुपानों के साथ पारदभस्म या चन्द्रोदयादि सेवन करना चाहिये।।७१–७५।।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्ल–
कृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां प्रयोगादिवर्णनं
नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ।।३४।।

पारदमूर्च्छिताध्यायः ३५

मूर्च्छना जारणा इत्यनर्थान्तरं प्रायः ।

(रससारपद्धति)

अर्थ–मूर्च्छना तथा जारण ये दोनों परस्पर पर्यायवाचक शब्द हैं अर्थात् जारणा को मूर्च्छना कहते हैं और मूर्च्छन को जारणा कहते हैं।

अथ मूर्च्छनालक्षण

तत्र अव्यभिचरितव्याधिघातकत्वं मूर्च्छना ।

(आयुर्वेद विज्ञान, रससारपद्धति, र० चिं०)

अर्थ–व्याभिचाररहित रोग के नाश करने को मूर्च्छना कहते हैं, अर्थात् जो पदार्थ रोगादि प्रवल कारण से न रुककर निरन्तर व्याधि का नाश करनेवाला हो, उसको मूर्च्छना ही कहते हैं।

अथ मूर्च्छनाभेद

तत्प्रकारा बहुविधाः सन्ति, तत्र निर्गन्धसगन्धभेदेन द्विविधा मूर्च्छना ।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–मूर्च्छना अनेक प्रकार की होती है, उनमें प्रायः मूर्च्छना के निर्गन्ध और संगध ये दो प्रधान भेद हैं।।

निर्गन्धमूर्च्छनालक्षण

तत्र निर्गन्धा तु विषद्योषधिभिरेकरूपा योगीश्वरादिगम्याऽस्ति ।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–विष आदि औषधियों के सात जो पारद की मूर्च्छना की जाती है उसको निर्गन्ध मूर्छना कहते हैं और उसको केवल योगीश्वर ही कर सकते हैं। अर्थात् जो मनुष्य चित्त को एकाग्र करके रसप्रक्रिया का अन्वेषण करते हैं वे ही निर्गन्ध (गंधकरहित) मूर्च्छना को कर सकते हैं।

सगंधमूर्च्छनाभेद

सगन्धा तु बहिर्धूमान्तर्धूमनिर्धूमभेदात्त्रिविधाः। तत्र षड्गुणगन्धकजारणा साधीयसीति निगद्यते ।। सा तु स्वेदनादिसंस्कार द्वारा शुद्धस्य सूतस्य कार्या ।।

(रससारपद्धति, र० चिं०, र० रा० शं०)

अर्थ–बहिर्धूम, अन्तर्धूम और निर्धूम भेद से सगन्धजारणा तीन प्रकार की है, वहां षड्गुणगंधकजारण की रीति अत्यन्त सरल है, इसी कारण उसको लिखते हैं और वह गंधकजारण स्वेदनादि संस्कार से शुद्ध किये हुए पारद की करनी चाहिये।।

दो प्रकार की पारदभस्म

सूतभस्म द्विधा ज्ञेयमूर्ध्वगं तलभस्म च ।।१।।

(वृद्धयोगतरङ्गिणी, र० रा० सुं०)

अर्थ–पारद भी भस्म दो प्रकार की कही है, एक ऊर्ध्वग और दूसरी तलभस्म ।।१।।

सम्मति–रससिन्दूरादि को ऊर्ध्वग भस्म तथा रसमानस ग्रन्थ में ३२ बत्तीस शीशियों द्वारा जो शीशी के नीचे भस्म रह जाती है उसको तलभस्म कहते हैं।

तथा च

सूतभस्म द्विधा ज्ञेयमूर्ध्वगं तलभस्म च ।। ऊर्ध्वं सिन्दूरकर्पूररसाबन्यदधो भवेत् ।।२।।

(रसराजशंकर, र० रा० सुं०)

अर्थ–ऊर्ध्वग और तलभस्म इन भेदों से पारद भस्म दो प्रकार की है। रससिन्दूर तथा रसकपूर को ऊर्ध्वग भस्म और इससे अन्य को तलभस्म कहते है।।२।।

षड्गुण गन्धकजारण की आवश्यकता

रसगुणवलिजारणं विनायं न खलु रुजां हरणक्षमो रसेन्द्रः ।। न जलदकलधौतपाकहीनः स्पृशति रसायनतामिति प्रतिज्ञा ।।३।। (रसेन्द्रचिंतामणि, नि० र०, र० रा० शं०, बृ० यो०, र० रा० सु०, र० रा० प०, र० सा० प०)

अर्थ–यह पारद षड्गुणगंधकजारण के विना रोगों का नाश करने को समर्थ नहीं होता है (अर्थात् छः गुना गन्धकजारण किया हुआ पारद रोगनाशक होता है) और अभ्रक तथा स्वर्ण जारण के विना (अर्थात् जिसमें स्वर्ण तथा अभ्रक जारण न किया हो) पारद रसायन करने योग्य नहीं होता है. यह एक प्रकार की ग्रन्थकारों की प्रतिज्ञा है।।३।।

मूर्च्छनोपयोगी पारद

तत्तत्तन्त्रनिगदितदेवतापरिचरस्मरणान्तरम् । तत्तच्छोधनप्रक्रियाभिर्बह्वीभिः परिशुद्धानां रसेन्द्राणां तृणारणिमणिजन्यवह्निन्यायेन तारतम्यमवलोक्यमानैः सूक्ष्ममतिभिः "पलार्द्धेनापि संस्कारः कर्तव्यः" इति वचनात् व्यावहारिकतोलकद्वयप्रमाणेनापि परिशुद्धो रसो मूर्च्छयितव्यः ।

(रसेन्द्रचिन्तामणि)

अर्थ–उन २ तंत्रों में कहे हुए देवताओं की पूजा और स्मरण करने के बाद अनेक शोधन की प्रक्रियाओं से शुद्ध किये हुए पारदों की तृणारणिमणिजन्यवह्निन्यायेन तारतम्य को देखते हुए विचारवानों को व्यावहारिक दो तोलों के प्रमाण से शुद्ध किये हुए पारे को भी मूर्छित करना चाहिये और इसी बात को रसार्णव में भी लिखा है।

अथातः शुद्धसूतस्य मूर्च्छनाविधिरुच्यते ।।४।।

(रसरत्नाकर)

अर्थ–अब हम शुद्ध किये हुए पारद की मूर्च्छनाविधि को वर्णन करते हैं। इससे यह बात सिद्ध होती है कि जिस पारद का हम मूर्च्छन संस्कार करें, उसको प्रथम शुद्ध ही कर लेवें।।४।।

मूर्च्छन

कुरण्टकरसैर्भाव्यमातपे भावयेद्रसम् । लताकरञ्जपत्रैर्वा अंगुष्ठेन विमर्दयेत् ।। दिनैकं मूर्च्छिता सम्यक् सर्वरोगेषु योजयेत् ।।५।।

(रसरत्नाकर)

अर्थ–पीले फूल की कटेरी की जड़ के रस से पारद को एक दिवस तक घाम में मर्दन करे अथवा बेलदार कञ्जे के पत्तों के रस से एक दिन अँगूठे से मर्दन करे तो पारद अच्छी प्रकार मूर्च्छित होता है और उस मूर्च्छित का सब रोगों में प्रयोग करे।।५।।

सम्मति–इसको निर्गंध मूर्च्छना कहते है क्योंकि यह औषधि जड़ी द्वारा मूर्च्छित की गयी है।।

निर्गन्धमूर्च्छनविधि

कुरण्टकाम्बुसंयोगादातपे मर्दयेद्रसम् । म्रियतेऽसौ ततः सूतः सर्वकर्माणि साधयेत् ।।६।।

(टोडरानन्द, रसराजसुन्दर, नि० र०)

अर्थ–पीले फूलों की कटेरी की जड़ से पारद को घाम में घोटे तो पारद मृत होता है और उसको सब कामों में लावे।।६।।

मूर्च्छनं रसरत्नाकरे

मेषशृङ्गी कृष्णधूर्तो वला श्वेतापराजिता । कन्याग्निस्त्रिफला चैव सर्पाक्षी सूरणं वचा ।।७।। गोजिह्वा लांगली तालं लांगुली क्षीरकन्दकम्। राजिका काकमाची च रविक्षीरं च कांचनम् ।।८।। व्यस्तानां वा समस्तानां द्रवैरेषां विमर्दयेत् ।। यामैकं रसराजं तु मूषायां सन्निरोधयेत् ।।९।। पुटैकेन पचेत्तत्तु भूधरे चाथ मर्दयेत् ।। पूर्वद्रावैर्यथापूर्वं रुद्ध्वारुद्ध्वा विपाचयेत् । इत्येवं सप्तधा कुर्याज्जायते मूर्च्छितो रसः ।।१०।।

(रसपद्धति)

अर्थ–मेढ़ासीगी, कालाधतूरा, खरेटी, सफेद, कोयल, घीकुमारी, चित्रक, त्रिफला, सर्पाक्षी, जमीकंद, वच, गोभी, कलिहारी, क्षीरकंद, राई, मकोय, आक का दूध, कचनार, इन समस्त अथवा भिन्न औषधियों के रसों से पारद को एक प्रहर तक मर्दन करे फिर मूषा में (घरिया) में रख कर भूधरयंत्र में पकावे फिर इसी प्रकार पूर्वोक्त रसों से घोटकर भूधरयंत्र में पकावे, इस प्रकार सात बार पकावे तो पारद मूर्छित होगा॥७–१०॥

मूर्च्छन

कृत्वा षडंगुलां मूषां सुपक्वां मृन्मयीं दृढ़ाम् । मूषागर्भे विलप्याथ मूलैर्बहुपत्रकैः ॥११॥ तन्मध्ये सूतकं क्षिप्त्वा मूषा पूर्य्यातु तु तद्द्रवैः । रुद्ध्वा सलवणैर्यन्त्रचुल्ल्यां दीप्ताग्निना पचेत् ॥१२॥सप्ताहान्ते समुद्धृत्य यवमात्रं ज्वरापहम् ॥१३॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ–मिट्टी की छः अंगुल घरिया बनाकर अग्नि में पका लेवे और मूषा के भीतर सँहजने के मूलों के रस से अथवा प्याज के रस से लेप करे फिर उस मूषा में पारद को रख ऊपर से उसी (जिससे मूषा के भीतर लेप किया हो) रस से मूषा को भर देवे और उसको लवणयंत्र में रखकर मन्दाग्नि से पकावे। सात दिवस के बाद निकालकर एक रत्ती देवे तो ज्वर दूर हो जाये॥११–१३॥

मूर्च्छन

सद्योजातस्य बालस्य विष्ठां पालाशबीजकम् ॥ चांडालीरुधिरं सूतं सूतपादं च टङ्कणम् ॥१४॥ जयन्त्या मर्द्दयेद्द्रावैर्दिनैकं तत्तु गोलकम् ॥ पिष्टया सहदेव्याथ लेपयेत्ताम्रसम्पुटम् ॥१५॥ तन्मध्ये गोलकं क्षिप्त्वा द्वियामं स्वेदयेल्लघु । बालुकायन्त्रमध्ये तु समुद्धृत्य पुनः पुनः ॥१६॥ चित्रकैः सहदेव्या च गन्धकैर्लेपयेद्बहिः । सम्पुटं बन्धयेद्वस्त्रे मृदालिप्य च शोषयेत् ॥१७॥ तद्रुध्वा अन्धमूषायां ध्माते सम्पुटमाहरेत् । सूक्ष्मचूर्णं हरेद्रोगान् अन्धमूषायां ध्माते सम्पुटमाहरेत् । सूक्ष्मचूर्णं हरेद्रोगान् योगवाहो महारसः ॥१८॥ (रसरत्नाकर)

अर्थ–उसी समय उत्पन्न हुए बालक की विष्ठा, ढ़ाक के बीज, स्त्री का रज और पारद, पारद से चौथाई सुहागा, इन सबको एक दिवस तक जयन्ती (अरणी) के रस से घोट के गोला बनावे और पिसी हुई सहदेवी से ताम्रसंपुट से लेपकर और गोले को रख दो प्रहर तक बालुकायंत्र में बार बार हलकी आंच से स्वेदन करे, तदनन्तर गंधक और चित्रक को सहदेवी के रस में पीस सम्पुट के बाहिर लेप करे और सम्पुट को कपड़े में बांध मिट्टी का लेपकर सुखा लेवे, उस गोले को अन्धमूषा में रख कर धोंके और उसके लाल होने पर सम्पुट को निकाल लेवे, तदनन्तर सम्पुट में रखे हुए पदार्थ का चूर्ण कर अनुपान के अनुसार देवे तो यह रस परम योगवाही है॥१४–१८॥

मूर्च्छन (रसकपूर)

काशीशं सैंधवं सूतं तुल्यं तुल्यं विमर्दयेत्॥काशीशस्यास्य भागेन दातव्या फुल्लतुरिका ॥१९॥ स्तोकंस्तोकं क्षिपेत्खल्वे यामत्रयं च मूर्च्छयेत् ॥ प्रत्येकं शतनिष्कं स्यादूनं नैवाधिकं भवेत् ॥२०॥ स्थालीसम्पुटयन्त्रेण दिनं चण्डाग्निना पचेत् । ऊर्ध्वलग्नं तलश्चुल्ल्या मूर्च्छितं चाहरेद्रसम् ॥२१॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ–हीराकसीस, सैंधानोंन और पारद इनको समान भाग लेकर मर्दन करे, कसीस से आधा भाग फिटकिरी लेकर खरल में थोड़ा डाल कर तीन प्रहर तक घोंटे तो पारद मूर्च्छित होता है, इनमें से प्रत्येक पदार्थ को सौ सौ निष्क लेना चाहिये अर्थात् तैंतीस तोले से कम और अधिक भी न होना चाहिये। स्थालीसम्पुटयंत्र (अर्थात् एक थाली में यह समस्त पदार्थ रख कर ऊपर से लोहे का कटोरा रख कपरौटी कर देवे) में रख एक दिन तक तेज आंच लगावें ऊपर लगे हुए मूर्च्छित पारद को निकाल कर रख लेवे॥१९–२१॥

सम्मति–मेरी सम्मति से यह रसकपूर की ही एक प्रकार की प्रक्रिया है क्योंकि इस प्रक्रिया में कुछ नौसादर का योगकर योगचिन्तामणि ग्रंथकार ने रसकर्पूर बनाया है।

रसकर्पूर विधि

पारदः स्फटिका च्चैव हीराकासीसमेव च ॥ सैंधवं समभागं वै विंशाशं नवसादरम् ॥२२॥ खल्वे निमर्द्य सर्वाणि कुमारिरसभावना ॥ क्रमवृद्धाग्निना पक्वो रसः कर्पूरसंज्ञकः ॥२३॥ (योगचिन्तामणि)

अर्थ–पारद, फिटकिरी, हीराकसीस और सैंधानोंन ये सब सम भाग हो और नवसादर बीसवां भाग इन सबको खरल में डाल कर कुमारी रस की भावना देवे फिर स्थालिकायंत्र में मन्द मध्य और तीक्ष्ण अग्निद्वारा पकावे तो यह रसकपूर सिद्ध होगा॥२२॥२३॥

अन्यच्च

टंकणं मधु लाक्षा च ऊर्णा गुञ्जायुतो रसः ॥ मर्दयेद्भृङ्गजैर्द्रावैर्दिनकं वा धमेत्पुनः ॥२४॥ ध्मातो भस्मत्वमायाति शुद्धः कर्पूरसन्निभः ॥ (रसमञ्जरी, रसेन्द्रसारसंग्रह, का० र०)

अर्थ–सुहागा, शहद, लाख, ऊन और चौंटनी ये सब पारद से पृथक् पृथक् षोडशांश लेकर जलभंगरा के रस से एक दिवस तक घोटे फिर अंधमूषा में रख धोंके तो शुद्ध कर्पूर के समान भस्म होती है। इसको कामरत्नकार ने भस्म और अन्यों ने रसकपूर माना है॥२४॥

रसकर्पूरविधि

स्फटिका खटिका लवणं च समं वनमृद्गलदिष्टरजोगिरिजम् ॥ तलभाण्डधृतं घटकोदरगो रसराजवरो डमरूपिहितः ॥२५॥ तलखर्परटिकाविहितः पिहितो निहितः सकलामयनाशकरः ॥ रतिभोगपुरन्दरसुन्दरमंदिरमन्दरकन्दरियुक् मुदितः ॥२६॥ घनसारतुषारसमुक्तलतामृतराशिशशांककलाधवलः ॥ २७॥ सममेललवंगपुरान्वितः सुखयति चानुदिनं त्वशितः ॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–फिटकिरी, खडियामाटी, नोंन, बमई की माटी, ईट का चूरा, गेरू इन सबको समान भाग लेकर घोट लेवे फिर हांडी के तले में कुछ अर्थात् आधा दवाइयों का पिसा हुआ चूर्ण रख ऊपर पारे को रख फिर दवाइयों का चूर्ण डाल देवें इस प्रकार डमरूयंत्र में रख चार प्रहर की अग्नि देवे तो ऊपर की हांडीके तले में पपड़ी के रूप में जमा हुआ रस कपूर बन जाता है वह समस्त रोगों का नाश करता है और यह रस पारद बर्फ, मोतीनकी बेल, अमृत का ढेर और चन्द्रमा की कला के समान सफेद होता है उसको केले के नवीन कंद में (जड़ में) रखे फिर कस्तूरी, चंदन, केसर, इलायची छोटी लौंग, गूगल इनमें से समस्त अथवा व्यस्त के देने से यह रस प्रतिदिवस सुख को देता है ऐसा अनेक ग्रंथों में लिखा है॥२५–२७॥

अन्यच्च

खटीष्टचगैरिका वल्मी मृत्तिका सैंन्धवं समम् । भागद्वयमितं श्लक्ष्णं रसं भागद्वयं स्मृतम् ॥२८॥ हण्डिकायां विनिक्षिप्य पार्श्वे पार्श्वे च खर्परटान। वस्त्वाथ हण्डिकां रुद्ध्वा द्विरष्टप्रहरं पचेत् ॥ मृतसूतं च गृह्णीयाच्छुद्धकर्पूर सन्निभम् ॥२९॥

(रसमञ्जरी)

अर्थ–खडिया, ईट का चूरा, गैरु, बमई की माटी, सैंधानोंन ये सब सम भाग लेवे और इन सबके तुल्य पारद लेवे फिर इन सबको महीन पीस हांडी

के भीतर रखे और ऊपर से आसपास खिपरे रखता जावे फिर हांडी का मुख बन्द कर सोलह प्रहर की आंच देवे और स्वांगशीतल होने पर शुद्धकपूर के माफिक मृत पारद को ग्रहण कर लेवे॥२८॥२९॥

अन्यच्च

खटीष्टचगैरिकावल्मीमृत्तिकासैंधवं समम् ॥ भागद्वयमिदं श्लक्ष्णं रसो भागद्वयं तथा ॥३०॥ संमर्द्य चैकतः कृत्वा बाढं सरसमौषधम् ॥ हिंडिकायां विनिक्षिप्य पार्श्वे पार्श्वे च खर्पटान॥३१॥ अन्यां च हिंडिकां दत्त्वां प्रकुर्यात्संधिरोधनम् ॥ यामषोडशपर्यंतं वह्निं कुर्यादहर्निशम् ॥ अधऊर्ध्वं रसं तस्माल्लग्नं शीतं तमानयेत् ॥३२॥ कर्पूरपुलकाकारं बलदं दृष्टिसौख्यदम् ॥३३॥ पुष्टचारोग्यप्रदं श्रेष्ठं कमनीयं सुखावहम् ॥ महाप्रमेहशमनं मत्तेभबलकारकम् ॥३४॥

(टोडरानन्द)

अर्थ—खडिया, ईट का चूरा, गेरू, बमई की माटी, सैंधा नोंन ये सब समान लेवे, इन सबकी बराबर पारा लेवे और सबको एकत्र खरल कर करे फिर हांडी में भरकर आस पास खिपरे लगा देवे और ऊपर से दूसरी हांडी का मुख लगाकर कपरौटी से संधि को बन्द कर देवे तदनन्तर सोलह प्रहर तक बराबर आंच देवे और ऊपर और नीचे लगे हुए रसकपूर को निकाल लेवे वह रसकपूर कपूर के समान श्वेत होता है, बल का दाता, नेत्रों के सुख को देता है पुष्टि आरोग्य सुन्दरता और सुख का दाता है तथा घोर प्रमेह (सूजाक) को शान्त करता है और मस्तहाथी के समान बल को देता है॥३०—३४॥

अन्यच्च

तत्र पारदसंक्षिप्तशोधनं कर्त्तव्यम्—

शुद्धसूतसमं कुर्यात्प्रत्येकं गैरिकं सुधीः ॥ इष्टिकां खटिकां तद्वत् स्फटिकां सिन्धुजन्म च ॥३५॥ वल्मीकं क्षारलवणं भाण्डरंजनमृत्तिकाम् ॥ सर्वाण्येतानि संचूर्ण्य शुद्धवस्त्रेण शोधयेत् ॥३६॥ एभिश्चूर्णैर्युतं सूतं स्थालीमध्ये परिक्षिपेत् । तस्याः स्थाल्या मुखे स्थालीमपरां धारयेत्समाम् ॥३७॥सवस्त्रकुदितमृदा मुद्रयेदुभयोर्मुखम् । संशोष्य मुद्रयेद् भूयो भूयः संशोष्य मुद्रयेत् ॥३८॥ सम्यग्विशोष्य तां मुद्रां स्थालीं चुल्ल्यां विधारयेत्। अग्निं निरन्तरं दद्याद्यावद्दिनचतुष्टयम् ॥३९॥ अङ्गारोपरि तद्यंत्रं रक्षेद्यत्नादहार्निशम् । शनैरुद्घाटयेद्यन्त्रमूर्ध्वस्थालीगतं रसम् ॥ कर्पूरवत्सुविमलं गृह्णीयाद्गुणवत्तरम् ॥४०॥ तद्देवकुसुमचन्दन कस्तूरीकुंकुमैर्युतं योग्यम् । खादन् हरति फिरंगं व्याधिं सोपद्रवं सपदि ॥४१॥ विन्दति वह्नेर्दीप्तिं पुष्टिं वीर्य्यं बलं विपुलम् ॥ रमयति रमणीशतकं रसकर्पुरसेवकः सततम् ॥४२॥

(वैद्यकल्पद्रुम, र० रा० शं० र० रा० सुं० आ० वि०)

अर्थ—प्रथम साधारण शोधनाध्याय में कहे हुए किसी साधारण शोधन प्रकार से पारद का सेवन शोधन करना चाहिये, फिर शुद्ध पारद के तुल्य गेरू, ईट का चूरा, खडिया, फिटकिरी सैंधवनोंन, बमई की माटी, खारीनोंन, मिट्टी के बासनों के रंगने की माटी इन सबको पीस कपडे में छान लेवे फिर इस चूर्ण के संग पारे को एक प्रहर तक घोटे और उस चूर्ण को एक हांडी में रख ऊपर से दूसरी हांडी के मुख को गला देवे फिर वस्त्रसहित कुटी हुई मिट्टी से दोनों हांडिन के मुख को बंद कर सुखा देवे और सुखाकर फिर मुद्रा करे इस प्रकार सात कपरौटी करे। मुद्रा को अच्छी तरह से चूल्हे पर चढाय चार दिवस तक निरंतर अग्नि देवे अग्नि देने के बाद उन्हीं अंगारो पर उस यंत्र को रखा देवे जब स्वांग शीतल हो जावे तब धीरे धीरे उस यंत्र को खोल उत्तम गुणवान् कपूर के समान श्वेत वर्णवाले उस रसकूपर को ग्रहण करे जो कि ऊपर की हांडी के तले में लगा हुआ हो, लौंग, चंदन सफेद, कस्तूरी, और केसर के साथ खाया हुआ वह रसकपूर उपद्रव फिरंग (आतशक) को दूर करता है अग्नि को दीप्त तथा वीर्यपुष्टि को करता है रसकपूर का सेवन करनेवाला एक ही पुरुष सौ स्त्रियों से निरन्तर सम्भोग करता है ऐसा अनेक ग्रन्थों में लिखा है॥३५—४२॥

सम्मति—यद्यपि अनेक पुस्तकों की टिप्पणी में इसकी मात्रा एक रत्ती की लिखी है तथापि हमारी समझ में एक या दो चामर से अधिक मात्रा देना उचित नहीं क्योंकि अधिक मात्रा अनेक प्रकार के रोगों को पैदा करती है यह हमारा अनुभव है।

अन्यच्च

संक्षेपाद्धि रसं पूर्वं शोधयेच्छुद्धमानसः ॥ पश्चाच्छुद्धेन प्रत्येकं तुल्यं कृत्वा रसेन हि ॥४३॥ गैरिकं खटिकामिष्टी सौराष्ट्री सैंधवं तथा ॥ टंकणं क्षारलवणं मृत्स्नाचूर्णं सुसूक्ष्मकम् ॥४४। एतच्चूर्णान्वितं सूतं यामैकं मर्दयेत्ततः ॥ ऊर्ध्वपातन के यंत्रे वह्निं दद्याच्छनैः शनैः ॥४५॥ अहोरत्रैश्चतुर्भिश्च ततो वै स्वांगशीतलम् ॥ उद्घाटचोर्ध्वविलग्नं वै रसं कर्पूरसंज्ञकम् ॥४६॥ गृहीत्वा सर्वरोगघ्नं बलबुद्धिविवर्द्धनम् ॥ वृन्ताकशतकैः शुद्धं भक्षितं गुणवत्तरम् ॥४७॥ कस्तूरिकाचन्दनदेवपुष्पैः संकुंकुमैरब्जविलोचनो यः । कर्पूरकरं पारदसम्भवं ना निषवयन्संजयते फिरंगम ॥४८॥ सोपद्रवं विन्दति चाग्निदीप्तिं वीर्यं बलं पुष्टिमदीर्घकालात् ॥स्त्रीणां समूहं रमयेत्प्रिये त्वं मया रसस्वाद्य निषेवितं मे ॥४९॥

(अनुपानतरङ्गिणी)

अर्थ—मनुष्य शुद्ध मन होकर प्रथम साधारण शोधनाध्याय की रीति से पारद को शुद्ध करे उसी शुद्ध किये हुए पारे के तुल्य गेरू, खडिया, ईंट का चूर्ण, सौराष्ट्री (फिटकरी) और सैंधव, सुहागा, खारी नोंन, बमई की माटी इनके सूक्ष्म चूर्ण के साथ पारे को एक प्रहर तक मर्दन करे ऊर्ध्व पातनयंत्र में (जैसा कि ऊपर की क्रिया में विधान कहा गया है) रख चार दिन रात तक धीरे धीरे आंच देवे फिर स्वांग शीतल होने पर यंत्र को उघाड़ ऊपर लगे हुए रस कूपर को निकाल लेवे और उसको सौ १०० बैंगनों में एक एक कर भुरता करे तो वह शुद्ध समस्त रोगों का नाशक बल बुद्धि का वर्धक अत्यन्त गुणवान् होता है जो कमलतुल्य नेत्रवाला मनुष्य कस्तूरी, केसर, चंदन, लौंग इनके साथ पारद से उत्पन्न हुए रसकपूर को खाता है वह उपद्रवयुक्त फिरंग रोग (आतशक) से विजय पाता है। अग्नि की दीप्ति वीर्य वल और पुष्टि को शीघ्र ही प्राप्त होता है और अनेक स्त्रियों से रमण करता है। हे प्यारी! मैंने भी आज ही रसकपूर खाया है सो तू मेरे साथ रमण कर।॥४३—४९॥

अन्यच्च

यंत्रे सुसिद्धे डमरूसमाख्ये निधाय सूतस्य पलानि पंच । वल्मीकमृत्स्नाखटिकेष्टिकाणां सगैरिकाणां तुवरीयुतानाम् ॥५०॥ ससैंधवानां समभागिकानां चूर्णाढकं चोपरितो निदध्यात् । अम्लेन दध्ना महिषीभवेन पिष्टं रसोनंस्य शरावमेकम् ॥५१॥ समक्रमेणात्र निधाय खण्डैराच्छांदयेत्खर्परजैर्विसन्धिः ॥ चूर्णप्रलिप्तोदरमूर्द्ध्वभाण्डं संस्थाप्य संमुद्रच दृढ़ं सुचुल्याम् ॥५२॥ प्रज्वालयेद्वह्निमधः क्रमेण संस्थाप्य यंत्रोपरि वस्त्रमार्द्रम् ॥ वह्निर्न्न प्रदद्याद्दिनषट्कमत्र तत्स्वांगशीतं परिगृह्य बुद्धचा ॥५३॥तद्द्रोणपुष्पोपयसा प्रपिष्टं कूप्यां निदध्यान्नवसादरं चं । कर्षप्रमाणं प्रहरत्रयं च वह्निं प्रदद्यादथ शीतलांगीम ॥५४॥ निष्कास्य कूपी सिकताख्ययंत्रादास्फोटच कण्ठस्थममुं प्रगृह्यात् । कर्पूरनामा रसनायकोयं वल्लं पुराणेन गुडेन भक्तः ॥५५। निर्वातभाजा सरुचा च पथ्यशीलेन कुष्ठामयनाशनः स्यात् ॥ फिरंगकरिकेसरी सकलकुष्ठदावानलोऽखिलव्रणविनाशकृद्व्रणजगर्तपूर्तिप्रदः । सुवर्णसमवर्णकृद्बलहुताशतेजस्करः समस्तगदतस्करो रसपतिः स कर्पूरकः ॥५६॥ (योगतरङ्गिणी)

अर्थ—जगत् प्रसिद्ध डमरूयंत्र में पांच पल पारद को रख कर ऊपर से बमई की माटी, खडिया, ईंट का चूरा, गेरू, फिटकिरी, सैंधव सम भाग लिये हुए इन सबका चार सेर चूर्ण लेकर रख देवे फिर ऊपर से भैंस के खट्टे दही से

प्याज को पीसकर अनुमान से पाव भर के रख देवे और उस पर सीधे सीधे खिपरों को रखे कि जिससे सन्धि न रहे फिर हांडी के भीतर के तले में चूने से पोतकर दोनों हांडी के मुख को मिलाय अच्छी प्रकार कपरौटी कर देवे। चूल्हे पर चढाय और ऊपर की हांडी पर गीला वस्त्र रख मन्द, मध्य और तीक्ष्ण क्रम से छः दिन रात बराबर आंच लगावे और अग्नि के अपने आप शीतल होने पर बुद्धिमानी से निकाल लेवे, इसके पश्चात् द्रोणपुष्पी अर्थात् गोमा के रस से कांच की शीशी को भर कर एक तोला नवसादर और पूर्वोक्त पारद भस्म को डाल देवे और सिकतायंत्र बालुकायंत्र से शीशी को निकाल और फोड़कर गले में चिपटे हुए इस रस को निकाल लेवे तो यह रसकपूर प्रस्तुत हो जायगा, जो रोगी निर्वात स्थान में रहकर पथ्य करता हुआ तीन रत्ती इसको पुराने गुड़ के संग सेवन करे तो कुष्ठ आदि रोगों का नाश होता है। तथा यह फिरंगरूपी हाथी के मारने के वास्ते सिंह, समस्त कोढरूप वन के जलाने के लिये अग्नि, समस्त व्रणों को नाश के करनेवाला, घाव को भरनेवाला तथा शरीर को सुवर्ण के तुल्य करनेवाला, अग्नि के समान तेज का कर्ता और समस्त रोगों को चुरानेवाला यह सम्पूर्ण रसों का पति रसकपूर है।।५०–५६।।

अन्यच्च

मैरिकतुवरीखटिकासैंधवगडकजं रजः कुडवम् ।। प्रत्येकं दृढहंड्यामाधाय तस्योपरीशजः स्थाप्यः ।।५७।। कुडवमितोथ तदूर्ध्वे देया तदास्य पातमुखी ।। अथ तत्संधौ मुद्रां कृत्वा तदधो हुताशनो ज्वाल्यः ।।५८।।अर्मणषट्कप्रभितैर्दारुभिरनुनातिदुर्बलस्थूलैः ।। अग्निं क्रमेण दद्याद्गुरुदर्शितवर्त्मनां द्युनिशम् ।।५९।। उत्तार्य्य च तद्यंत्रवराद्युक्त्या कर्पूरसन्निभं सूतम् ।। आदाय काचकुम्भे निधाय नवसादरं दद्यात् ।।६०।। संमुद्य चाथ काष्ठैरर्धार्मणसम्मितैः पचेच्चुल्ल्याम् ।। चुल्ल्यां डमरुकमध्यं वितस्तिचतुरंगुलावकाशं तु ।।६१।। कर्तव्यं क्रमदहनं तदधः प्रज्वालयेन्मध्यम् शशिधवलमुपरिलग्नं युक्त्या संगृह्य रक्षयेद्यत्नात् ।।६२।। वल्लं वा वल्लार्धं जीर्णेन गुडेन रोगिणे दद्यात् । दुग्धौदनं तु पथ्यं देयं त्वस्मै च ताम्बूलम् ।। हरति समस्तान् रोगान्कर्पूराख्यो रसोनणाम् ।।६३।। फिरंगगजकेसरी सकलकुष्ठदावानलोऽखिलव्रणविनाशकृद्व्रजगर्तपूर्तिप्रदः । सुवर्णसमवर्णकृद्वलहुताशतेजस्करः समस्तगदतस्करो रसपतिः स कर्पूरकः ।।६४।।

(योगतरङ्गिणी, बृ० योग० र० रा० शं० श० सा० प०)

अर्थ–गेरू, फिटकरी, खडिया, सैंधानोंन, साम्हर इनमें से प्रत्येक का एक २ कुडव लेवे इसमें से आधे चूर्ण को हांडी में बिछाकर ऊपर एक कुडव अर्थात् आध सेर पारा रखे और बचे हुए चूरेको ऊपर रख देवे फिर दूसरी हांडी के मुख से मुख को मिलाकर कपरौटी करके सन्धि वंद कर देवे और नीचे से न मोटी फटी हुई और न पतली कटी हुई ऐसी छः ६ मन लकड़ी से गुरु के बताए हुए मंद, मध्य और तीक्ष्ण क्रम से अग्नि देवे यह अग्नि दिन रात बराबर देनी। तदनन्तर यंत्र को उतार और युक्ति से रसकपूर को निकाल कांच की शीशी में भर कर पारे से चतुर्थांश नवसादर डाल देवे और वज्रमुद्रा देकर डेढ मन लकड़ी से चूल्हे पर पकावे चूल्हे और हांडी की बीच में एक बालिश्ता का फासला हो और मंद, मध्य, तीक्ष्ण, क्रम से अग्नि देनी चाहिये तो चन्द्रमा के समान श्वेत शीशी के गले में हुए रसकपूर को निकाल अच्छी तरह कांच की शीशी में भर कर रख देवे फिर उसमें तीन रत्ती या डेढ रत्ती निकाल पुराने गुड़ के साथ रोगी को देवे और ऊपर से दूध भात खिलाकर पान खिला देवे तो यह रसकपूर मनुष्य के समस्त रोगों को हरता है और फल पूर्वोक्त रसकपूर के समान जानना।।५७–६४।।

अन्यच्च

पिष्टं पांशुपटुप्रगाढममलं वज्राख्यम्बुना नैकशः सूतं धातुगतं खटीकवलितं तं सम्पुटे रोधयेत् ।। अन्तस्थं लवणस्य तस्य च तले प्रज्वाल्य वह्निं हठाद्धस्त्रं ग्राह्यमथेन्दुकुन्दधवलं भस्मोपरिस्थं शनैः ।।६५।। तद्वल्लद्वितयं लवंगसहितं प्रातः प्रभुक्तं नृणामूर्ध्वं रेचयति द्वियाममसकृत्पेयं जलं शीतलम् ।। एतद्धन्ति च वत्सरावधि विषं षाण्मासिकं मासिकं शैलोत्थं गरलं मृगेन्द्रकुटिलोद्भूतं च तात्कालिकम् ।।६६।।

(रसमञ्जरी, यो० त० रसेन्द्रसार० रा० सं०)

अर्थ–रेहवां नोंन और साम्हर तथा पारे को थूहर के दूध में पीस लोहे के पात्र में रख खडिया माटी से संधिलेप कर लवणयंत्र में रख नीचे से तीक्ष्ण एक दिन रात अग्नि लगावे तो संपुट में स्थित भस्म के ऊपर चंद्रमा तथा कुंद के समान लगी हुई भस्म को धीरे धीरे निकाल लेवे। उसमें से ६ छः रत्ती लौंग के साथ प्रातःकाल खावे तो दो प्रहर तक वमन होवे तदनन्तर शीतजल पीवे तो यह रस सालभर के छः महीने के, तीन मास के और एक मास के विष को दूर करता है पर्वतीय विष तथा सिंह के नखों का विष जो कि शीघ्र उत्पन्न हुआ हो तत्काल नाश करता है।।६५।।६६।।

अन्यच्च

पक्वेष्टिका च सौराष्ट्री वल्मीकस्यापि मृत्तिका । सैंधवं गैरिकं चेति निदिष्टाः पंचमृत्तिकाः।।६७।।ताभिः संमर्द्य बहुशः सूतमेकीकृतं क्षिपेत्।। मृत्स्थाल्यां खर्पराद्रुध्वा डमरूयन्त्रगं पचेत् ।।६८।। ऊर्ध्वलग्नश्च यः सूतः अधस्तात्प्रच्युतश्च यः ।। तं गृहीत्वा पुनस्तद्वत्ताभिरेव विमर्दयेत् ।। काचकूप्यां क्षिपेद्रुधवा वालुकायंत्रगं पचेत् ।।६९।। एवं वारत्रयं पक्वः सिद्धो भवति पारदः ।। न कुर्यादास्यपाकादीन् रसः कर्पूरसंज्ञकः । भुक्तः करोत्यभीष्टाप्तिं योज्यः सर्वत्र कर्मसु ।।७०।।

(रसमानस)

अर्थ–पकी हुई ईट का चूरा, फिटकिरी, बमई की माटी, सैंधानोंन गेरू यह पांच प्रकार की माटी कही है। इनसे पारद को खूब मर्दन कर एकरूप कर लेवे फिर मिट्टी की हांडी में रख और आस पास खिपरे रख ऊपर से दूसरी हांडी का मुख लगाय कपरौटी देकर चार प्रहर की आंच देवे और हांडी पर गीला कपड़ा रखे तदनन्तर ऊपर लगे हुए या नीचे गिरे हुए पारे को निकाल लेवे फिर इसी पारे को कांच की शीशी में भर मुखमुद्रा दे वालुकायंत्र में पकावे इस प्रकार तीन बार पकावे तो पारद सिद्ध होता है और मुख पाक को भी नहीं करता है तथा खाया हुआ यह रसकपूर सब कर्मों में प्रयोग करनेयोग्य मन वांछित फल को प्राप्त करता है।।६७–७०।।

रसकपूरविधि

पारो गन्धक अरु फटकरी । ले सोध्यो चारो सम करी ।।
खररि ग्वारसों कजरी करे । मुद्राकर चूल्हेपै धरे ।।
आग देउ द्वै दिन द्वै राति । ऊपर लगै चंद्र की भांति ।।
तब सो लेहु खरलिजै ग्वारि । अग्नि वालुका दे जाम चारि ।।
उड लागे कपूर रस होय । इह विधि गुनी कीजिये लोय ।।
चित्र रोगते यों गरिजाय । निवरेसो मण्डलभर खाय ।।
मण्डल बाहिरी दादुन घात । ते छूटे मण्डल के खात ।।
अरु जेते ये रक्तविकार । याके खाये जात असार ।।

(रससागर बड़ा)

सर्वरोगहरी कर्पूरक्रिया

मार्कवाम्बुसितसैंधवमिश्रः कूपिकोदरगतः सिकतायाम् ।। पाचितो यदि मुहुर्मुहुरित्थं बन्धमिच्छति तदैष रसः सः ।।७१।।

(रसेन्द्रचिन्तामणि)

अर्थ–कुकुरभांगरे का रस और सैंधेनोंन के साथ पीस कांच की शीशी में भर वालुकायंत्र में बार बार पचावे तो पारद बंधक को प्राप्त होता है यदि शुद्ध पारद न मिल सके तो सिंगरफ ही मिलाना चाहिये, प्रथम गुड की पाल बांधकर बीच में हिंगुल को रख ऊपर से नोंन को भर देवे।।७१।।

खोटबद्ध रसकूपर

शुद्धसूतसमं तुत्थं घनक्वाथेन सप्तधा । भावयित्वा न्यसेत्कूप्यां मुखे मुद्रां च कारयेत् ॥७२॥ वालुकायंत्रमध्ये तु यामार्धं ज्वालयेदधः ॥ रसकर्पूर-विख्यातः खोटबद्धो भवेद्रसः ॥७३॥

(योगतरंगिणी)

अर्थ—शुद्ध पारद के समान शुद्ध तूतिया को लेकर नागरमोथे के क्वाथ से सात बार भावना देवे फिर कांच की शीशी में भर मुखमुद्रा करके वालुकायंत्र में डेढ प्रहर तक पकावे तो यह खोटबद्ध रस कूपर सिद्ध हो जायेगा॥७२॥७३॥

रसकपूरसेवनविधि

लिख्यतेऽस्य ततः सम्यक् प्राशने विधिरुत्तमः ॥ अनेन विधिना खादन् मुखपाकं न विंदति ॥७४॥ गोधूमचूर्णं सन्नीय विदध्यात्सूक्ष्मकूपिकाम् ॥ तन्मध्ये निक्षिपेत्सूतं चतुर्गुंजमितं भिषक् ॥७५॥ ततस्तद्गुटिकां कुर्याद्यथा नो दृश्यते बहिः ॥ सूक्ष्मचूर्णं लवंगस्य तां वटीमवधूलयेत् ॥७६॥ दन्तस्पर्शो यथा न स्यात्तथा तामम्भसा गिलेत् ॥ ताम्बूलं भक्षयत्पश्चाच्छाकाम्ललवणं त्यजेत् ॥ श्रममातपमध्वानं विशेषात्स्त्रीनिषेवणम् ॥७७॥

(रससारपद्धति)

अर्थ—अब रस कपूर के भक्षण के लिये उत्तम विधि को वर्णन करते हैं। इस प्रकार से खाता हुआ मनुष्य मुख पाक को प्राप्त नहीं होता है। प्रथम गेहूं के चून को मांडकर लोई बना लेवे और उसकी शीशी बनाकर चार रत्ती (कलियुग में १ रत्ती) रसकपूर भर देवे फिर गोली बनाय लौंग के चूरे में लपेट लेवे जिस प्रकार दांत न लगे इस प्रकार जल के सहारे निगल जावे और ऊपर से पान खा लेवे। शाक, खटाई, नोंन को परिश्रम, घाम तथा रास्ते का चलना और विशेषकर स्त्रीसंगको छोड़ देवे॥७४–७७॥

विधिहीन सेवित रसकूपर के दोष

सेवितोऽविधिना कुष्ठं संधिवातं कफादिकम् । रसः कर्पूरकः कुर्यात्तस्माद्यत्नेन सेवयेत् ॥७८॥

(अनुपान तरंगिणी, र० रा० सुं०)

अर्थ—विधि रहित सेवन किया हुआ रसकपूर कोढ गठिया और कफ आदि अनेक रोगों को करता है इसलिये अत्यन्त यत्न के साथ रसकपूर को सेवन करे॥७८॥

रसकर्पूरदोषनिवारण

महिषीशकृतो नीरं धान्याकं वासितायुतम् ॥ पिबन्नीरेण मुक्तः स्याद्रसकर्पूरजैर्गदैः ॥७९॥

(अनुपानतरंगिणी र० रा० सुं०)

अर्थ—मिश्रीसहित भैंस के गोबर का रस अथवा धनियाँ इनको पानी में घोटकर पीवे तो रसकूपर के दोष से उत्पन्न हुए रोग दूर होते हैं॥७९॥

सगन्धमूर्च्छन प्रकरण

गंधकेन रसं प्राज्ञः सुदृढं मर्दयेद्भिषक् । कज्जलाभो यदा सूतो विहाय घनचापलम् ॥८०॥ दृश्यतेऽसौ तदा ज्ञेयो मूर्च्छितो रसकोविदैः ॥ असौ रोगचयं हन्यादनुपानस्य योगतः ॥८१॥

(रसेन्द्रसारसंग्रह)

अर्थ—विद्वान् वैद्य शुद्ध गंधक के साथ खूब मर्दन करे, जब कि पारद घनता और चपलता को छोड़ कज्जलकेसमान दीखने लगे तब रसायनशास्त्रा के ज्ञाताओं को जानना चाहिये कि पारद मूर्च्छित हो गया है और यह पारद अपने अपने अनुपान के साथ अनेक रोगों का नाश करता है॥८०॥८१॥

अन्यच्च

शुद्धं रसं गन्धकं च तुल्यं सम्मर्दयेद्दिनम् ॥ निश्चन्द्रं कज्जलीभूतं ततो योगेषु योजयेत् ॥८२॥

(आयुर्वेदविज्ञान)

अर्थ—शुद्ध पारद और गंधक को समान भाग लेकर एक दिवस तक मर्दन करे जब कि पारद चमकरहित कज्जल के समान हो जावे तब उस मूर्च्छित पारद को प्रयोगों में लावें॥८२॥

अन्यच्च

सूतं गंधकसंयुक्तं कुमारीरसमर्दितम् ॥ कृष्णवर्णं भवेद्भस्म देवानामपि दुर्लभम् ॥८३॥ (रसराजसुन्दर, नि० र०)

(रसराजसुन्दर, नि० र०)

अर्थ—गंधकसहित पारद को घीगुवार के रस में घोटे तो देवताओं को भी दुर्लभ कृष्णवर्ण पारद की भस्म (कज्जली) होती है॥८३॥

अन्यच्च

शुद्धं सूतं तथा गन्धं खल्वे तावद्विमर्दयेत ॥ सूतं न दृश्यते यावत्किन्तु कज्जलवद्भवेत् ॥८४॥ एषा कज्जलिका ख्याता बृंहिणी वीर्यवर्द्धिनी । नानानुपानयोगेन सर्वव्याधिविनाशिनी ॥८५॥

(रससारपद्धति)

अर्थ—शुद्ध पारद तथा गंधक को खरल में डाल तब तक मर्दन करे कि जब तक पारद न दीखकर काजल के समान हो जाय यह कज्जली रसायन, वीर्य के बढानेवाली, अनेक अनुपानों के साथ समस्त रोगों को नाश करनेवाली होती है॥८४॥८५॥

अन्यच्च

धुस्तूरकद्रवैर्मर्द्यं दिनं गंधं ससूतकम् ॥ दिनैकमन्धमूषायां भूधरे मूर्च्छितो भवेत् ॥८६॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ—पारद तथा गंधक को धतूरे के रस से एक दिवस तक मर्दन करे फिर अन्धमूषा में रख भूधरयंत्र में पकावे तो पारद मूर्च्छित होता है॥८६॥

अन्यच्च

शुद्धसूतं गंधं द्विधा सूतार्धं सैंधवं क्षिपेत् ॥ द्रवैः सितजयन्त्याश्च मर्द्दयेद्दिवसत्रयम् ॥८७॥ कृत्वा गोलं च संशोष्य क्षिप्त्वा मूषां निरुन्धयते । शोषयित्वा धमेत्किंचित्सुतप्तां तां जले क्षिपेत् ॥८८॥ तस्माद्रसं समुद्धृत्य त्रिकंटरसभावितम् ॥ योजयेत्सर्वरोगेषु धमेद्वा भूधरे पचेत् ॥८९॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ—शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गंधक दो भाग, सैंधव आधा भाग इन सबको सफेद फूल की जयन्ती के रस से तीन दिवस तक मर्दन करे और उसका गोला बनाकर सुखा लेवे और मूषा में रख मुखमुद्रा कर सुखावें फिर कोयलों में रख कुछ धोंके जब खूब तप जावे तब निकाल पानी में डाल देवे, तदनन्तर मूषा में से इसको निकाल गोखरू के रस की भावना देवे फिर समस्त कामों में लावे इस क्रिया में मूषा को कोयलों में धोंके अथवा भूधरयंत्र में रख कर पकावे॥८७–८९॥

अन्यच्च

रसार्धं गन्धकं मर्द्यं घृतैर्युक्तं तु गोलकम् ॥ कृत्वा तं बन्धयेद्वस्त्रे दोलायंत्रगतं पचेत् ॥९०॥ गोमूत्रान्तः कृतं यामं नरमूत्रैर्दिनत्रयम् ॥ शोषयेच्च पुनर्वस्त्रे बद्ध्वा वेष्टयं मृदा लिपत् ॥९१॥ शुष्कं निरुन्ध्य मूषायां ततस्तुषाग्निना पचेत् ॥ ऊर्ध्वभागमधः कृत्वा अधोभागं च ऊर्ध्वगम् ॥९२॥ इत्यादिपरिवर्तेन स्वेदयेद्दिवसत्रयम् ॥ पश्चाद्धृत्यं तं सूतं योगवाहं रुजापहम् ॥९३॥ (रसरत्नाकर)

अर्थ–पारद से आधा भाग गंधक लेकर घृत के संग घोटकर गोला बनावे और उसको कपड़े से बांध दोलायंत्र में पकावे एक प्रहर तक गोमूत्र में रखे फिर तीन दिन तक सोरे के जल के साथ घोटे और सुखाकर कपड़े से बांध कपरौटी करे फिर सुखाकर मूषा में रखें फिर तुषों की अग्नि से पकावे तदनन्तर दूसरी बार ऊपर के बासन को नीचा करे इस प्रकार उलट पलट कर तीन बार स्वेदन करे फिर उसमें से रस को निकाल कर समस्त रोगों को नाश करने के लिये प्रयोगों में लावे।।९०–९३।।

पीतरस

रसं गंधं समं दत्त्वा हस्तिशुण्डीद्रवैर्दृढम् ।। भूधात्रिकारसैर्मर्द्य दिनमेकं निरन्तरम् ।।९४।। विशुष्कं वालुकायन्त्रे मूषायां सन्निरोधयेत् । दिनमेकं पचेदग्नौ मन्दंमन्दं निशावधि ।।९५।। एवं निष्पाद्यते पीतः सूतराजश्च गृह्यते । क्षुद्बोधं कुरुते पूर्ममुदरादीन् विनाशयेत् ।। वातपित्तकफोद्भूतान्रोगान्सर्वान्व्यपोहति ।।९६।। (आयुर्वेदविज्ञान)

अर्थ–रस और गंधक को समान भाग लेकर हाथी शुंडी के रस से मर्दन करे फिर भूई आमलेक रस से एक दिवस तक मर्दन करे और सूखने पर मूषा में रख एक दिन रात तक धीरे धीरे बालुकायंत्र में पकावे तो पीली रंगत का पारद भस्म होता है इसके सेवन से प्रथम भूख लगे फिर उदर (पेटके) रोगों को नाश करता है तथा वात, पित्त और कफ से उत्पन्न हुए रोगों को दूर करता है।।९४–९६।।

अन्यच्च

मर्दयेद्रसगन्धौ च हस्तिशुण्डीद्रवैर्दिनम् ।। भूधात्रिकारसैः पिष्टा पर्यन्तं दिनसप्ततः ।।९७।। विघृष्य वालुकायन्त्रे मूषायां सन्निरोधयेत् ।। दिनमेकं प्रदायाग्निं मन्दमन्दं निशावधि।।९८।। एवं निष्पाद्यते शीतः पीतः सूतस्तु गृह्यते ।। पर्णखण्डे न तद्गुंजां भक्षयेत्सततं हिताम् ।।९९।। क्षुद्बोधं कुरुते पूर्वमुदराणि विनाशयेत् । हृदयोत्साहजननः सुरूपतनयप्रदः ।।१००।। बलप्रदः सदा देहे जरानाशनतत्परः ।। ज्वराणां नाशने श्रेष्ठस्तद्वच्छ्रीसुखकारकः ।।१०१।। अङ्गभंगादिकं दोषं सर्वं नाशयति क्षणात् ।। एतस्मान्नापरः सूतो रसात्सर्वाङ्गसुन्दरात् ।।१०२।। (रसेन्द्रसारसंग्रह, र० रा० सुं०)

अर्थ–इसकी प्रक्रिया पूर्वोक्त पीतरस (सर्वांगसुन्दर) की प्रक्रिया के समान है. अनुपानविशेष के कारण भिन्न पाठ लिखा गया है।।९७–१०२।।

अन्यच्च

रसगंधौ समौ कृत्वा हस्तिशुण्डीद्रवैर्भृशम् । भूधात्रिकारसैस्तद्वत्पर्यन्तं दिनसप्तकम् ।।१०३।। विघृष्य वालुकायन्त्रे मूषायां विनिवेशयेत् ।। दिनमेकं भवेदग्निर्मंदमंद निशावधि ।।१०४।। एवं निष्पाद्यते पीतः शीतः सूतः सुगृह्यते ।। पर्णखण्डेन तद्गुंजा भक्ष्यते श्रूयतामिह ।।१०५।। क्षुद्बोधं कुरुते पूर्वमुदराणि विनाशयेत् ।। ज्वराणां नाशने श्रेष्ठस्तनुश्रीवृद्धिकारकः ।।१०६।। हृदयोत्साहजननः सुरूपतनयप्रदः ।। बलप्रदः सदा देहे जरानाशनतत्परः ।।१०७।। अंगभंगादिकं दोषं सर्वं नाशयति क्षणात् ।। पुराणगुडयोगेन ज्वरनाशाय युज्यते ।।१०८।। अरुचौ सह पिप्पल्या समं मोचरसेन तम् ।। ग्रहण्यां तमतीसारे समं बिल्वेन शस्यते ।।१०९।। फलक्वाथेन तं साकं पांडुरोगे नियुज्यते ।। भार्ङ्गीक्वाथेन तं साकं कासे श्वासे प्रयोजयेत् ।। एतस्मान्नापरः सूतो रसः सर्वाङ्गसुन्दरात् ।।११०।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–इसकी क्रिया पूर्वोक्त पीत रस के तुल्य समझना चाहिये परंतु इसमें जो अनुपान दिये हैं इस वास्ते भिन्न ही लिखा है, वे ये हैं कि, पान के टुकड़े से प्रथम क्षुधा को बढ़ाकर उदर रोगों का नाश करता है, ज्वरों के नाश करने में श्रेष्ठ, शरीर की शोभा को बढ़ाने वाला है, दिल को ताकत देता है, रूपवान पुत्र का दाता, बल के देनेवाला और बुढ़ापे को दूर करनेवाला है। तथा अंगभंग आदि दोषों को शीघ्र ही दूर करता है और पुराने गुड के साथ देने से पुराने ज्वर को नाश करता है, अरुचिरोग में छोटी पीपल के साथ, संग्रहणी में मोच रस के साथ और अतीसार (दस्तों की बीमारी) में बेलगिरी के साथ, त्रिफला के क्वाथ के संग पांडुरोग को और भारंगी के क्वाथ के साथ कास श्वास को नाश करता है इस सर्वांग सुन्दर रस से परे और कोई रस उत्तम नहीं है ऐसा जानना चाहिये।।१०३।११०।।

अन्यच्च

भूधात्रीहस्तिशुण्डिभ्यां रसं गन्धं च मर्दयेत् । काचकूप्यां चतुर्यामं पक्वपीतो रसो भवेत् ।।१११।।

(रसराजसुन्दर)

अर्थ– भुईआमला और हाथी शुंडी के रस से पारद गंधक की कजली को घोटकर कांच की शीशी में चार प्रहर तक पकावे तो पीत रंग का रस होता है।।१११।

सम्मति–मेरी समझ में सर्वांग सुन्दर यानी पीतरस की अधूरी क्रिया है क्योंकि ऊपर कहे हुए पीतरस अर्थात् सर्वांग क्रिया यथावत् मिलती है।।

रससिंदूरविधि

पक्वमूषागतं सूतं गन्धकं चाधरोत्तरम ।। तुल्यं संचूर्णितं कृत्वा काकमाचीद्रवं पुनः ।।११२।। द्वाभ्यां चतुर्गुणं देयं द्रवमूषां निरुध्य च ।। पाचयेद्वालुकायंत्रे क्रमवृद्धाग्नि दिनम् ।। आरक्तं जायते भस्म सर्वयोगेषु योजयेत् ।।११३।।

(रसमंजरी)

अर्थ–प्रथम पारद के समान गंधक का चूरा कर पक्व मूषा में आधा नीचे तथा आधा ऊपर और बीच में पारद को रखकर पारे गंधक से दूना मकोय (काकमाची) का रस भर के मुखपर मुद्रा कर देवे फिर बालुकायंत्र में मंद, मध्य और तीक्ष्ण क्रम से एक दिन तक अग्नि जलावे तो लाल रंग की भस्म होती है और उसको समस्त कामों में लावे।।११२–११३।।

अन्यच्च

गंधकेन समः सूतो निर्गुडीरसमर्दितः ।। पाचितो वालुकायंत्रे रक्तं भस्म प्रजायते ।।११४।।

(रसमंजरी)

अर्थ–गंधक के तुल्य भाग पारद को ले कजली करे फिर निर्गुंडी के रस से मर्दन कर वालुकायंत्र में पकावे तो पारद की भस्म लाल वर्ण की होगी।।११४।।

अन्यप्रकार

सूतार्द्धं गंधकं शुद्धं माक्षिकोद्भूतसत्त्वकम् ।। गन्धतुल्यं विमर्द्याथ दिनं निर्गुडिकाद्रवः ।।११५।। स्थापयेद्वालुकायन्त्रे काचकूप्यां विपाचयेत ।। अन्धमूषागतं वाथवालुकायन्त्रके दिनम् ।। पक्वं संजायते भस्म दाडिमीकुसुमोपमम् ।।११६।।

(रसमंजरी)

अर्थ–पारद एक भाग, स्वर्णमाक्षिकसत्त्व एक भाग तथा गंधक आधा भाग इन सबको निर्गुंडी के रस से एक दिन तक खरल करे फिर कांच की शीशी में भर वालुकायंत्र में अथवा अन्धमूषा में भर कर वालुकायंत्र में पकावे तो पारद की भस्म अनार के फूल के समान हो जाती है।।११५–११६।।

अन्यच्च

रसाद्द्विगुणितं गन्धं समं वा वालुकाभिधे । जायते रससिन्दूरोऽग्निा

द्वादशयामतः ॥११७॥ पलमात्ररसस्येयं क्रियोक्ता बहुधा मया । अतः पर प्रकर्तव्य सन्नकेन विवर्जनम् ॥११८॥

(रसमानस)

अर्थ–पारे से दूना अथवा सम भाग गंधक को लेकर वालुकायंत्र में बारह प्रहर तक पकावे तो रससिन्दूर बनता है। यह क्रिया हमने एक पल पारे की कही है यदि अधिक पारद का रससिन्दूर बनाना होवे तो अधिक अग्नि का प्रयोग करे॥११७॥११८॥

अन्यच्च

शुद्धसूतं समं गंधं कज्जली कारयेत्तयोः ॥ काचकूप्यां सप्तमृद्भिस्तन्मध्ये निक्षिपेद्रसम् ॥११९॥ धारयेत्सिकतायंत्रे वह्निं प्रज्वालयेच्छनैः ॥ पुनः शलाकया कुर्याद्यामषोडशमानतः ॥१२०॥ स्वांगशीतं समुद्धृत्य सूतमाणिक्यवद्रसम् ॥ गंधकं च पुर्नदद्यात्कुर्यात्षड्गुणजारणम् ॥१२१॥ जायते भस्म सूताख्यं सर्वयोगोपकारकम् ॥ जायते सिद्धदो नूनं सर्वप्रत्ययकारकम् ॥१२२॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–शुद्ध पारद तथा गंधक को समान भाग लेकर उन दोनों की कजली करे और सात बार कपरौटी की हुई कांच की शीशी में भर देवे उसको वालुकायंत्र में रख धीरे धीरे आंच लगावे, गंधक से शीशी का मुख रुकने पर लोहे की शलाका से खोल दे, इस प्रकार सोलह यामतक अग्नि लगावे और स्वांगशीतल होने पर रस माणिक्य के समान निकालके फिर गंधक देकर जारण करे इस प्रकार षड्गुणगंधक जारण करे तो पारदभस्म (रससिन्दूर) सर्वयोगों के उपकारी प्रत्यक्ष फल का दाता सिद्ध होगा॥११९–१२२॥

रससिन्दूर बनाने की तरकीब (उर्दू)

सिन्दूर रस बनाने की तरकीब यह है कि सीमाव मुसफ्फा बीस दाम पुख्तः (३ तोले ५ माशे) गंधक मुसंक्का बीस दाम पुख्तः लेकर बारह पहर तक शीरह घीग्वार में खरल करे और शीशी को गिलेहिकमत करके मुंह पर मुहर लगा दे और वालूजंतर में दस प्रहर तक नरम और गरम आंच दे तो जो सीमाव गर्दन में शीशी के जमा हो उसको निकाल ले, आंच नरम व गरम से मुराद यह है कि अचल छः प्रहर तक नरम आंच हो बाद रफ्तः रफ्तः तेज आंच करके आतिशमियानः (भाप आंगन) करे यह रस अनवाइब अकसाम जजाम व फसाद खून और तपेदिक को मुफीद है बारहा इस नुसखे का तजरुबः हुआ है। सुफ्हा २४५ अकलीमियाँ) ॥

सिन्दूररस

शुद्धसूतं तदर्धं तु शुद्धगंधकमेव हि ॥ तयोः कज्जलिकां कुर्याद्दिनमेकं विमर्दयेत् ॥१२३॥ मृत्कर्पटैर्विलिप्तायां कूप्यां कज्जलिकां क्षिपेत् । बालुकायन्त्रगां पश्चाद्यावद्दिनचतुष्टयम् ॥ गृह्णीयादूर्ध्वसंलग्नं सिन्दूरसदृशं रसम् ॥१२४॥

(रसराजशंकर, र० सा० प० नि० र०)

अर्थ–शुद्ध पारद के अर्ध भाग गंधक को ले कजली करे फिर कपरौटी की हुई शीशी में कजली को भर बालुकायंत्र में चार दिन रात पकावे फिर ऊपर लगे हुए सिन्दूर के समान रस को ग्रहण कर लेवे॥१२३–१२४॥

अन्यच्च

शुद्धं गन्धं रसाच्छुद्धादर्धभागं विमिश्रयेत् ॥ तयोः कज्जलिकां कृत्वा काचकूप्यां विनिक्षिपेत् ॥१२५॥मृदस्त्रैः कुट्टितैः कूपीं लेपयेच्छाषयेत्ततः ॥ स्थापयेद्वालुकायन्त्रे वह्निं दद्याच्छनैः ॥१२६॥ चतुर्घस्रावधिं पश्चात् स्वांगशीतां हि कूपिकाम् । स्फोटयेदूर्ध्वसंलग्नं सिन्दूराह्वं रसं नयेत् ॥१२७॥

(अनुपानतरंगिणी)

अर्थ–शुद्ध किये हुए पारद से आधा भाग शुद्ध गंधक को लेकर उन दोनों की कजली करे फिर उस कजली को कपड़ा और माटी को एक साथ कूट कर लेप की हुई कांच की शीशी में भर देवे फिर बालुकायंत्र में रख धीरे धीरे अर्थात् दो दो लकड़ी की आंच चार दिवस तक देवे और स्वांग शीतल होने पर शीशी को तोड़ ऊपर लगे हुए सिन्दूर नाम के रस को निकाल लेवे॥१२५–१२७॥

अन्यच्च

शुद्धसूतस्य गृह्णीयाद्भिषग्भागचतुष्टयम् ॥ शुद्धगन्धस्य भागैकं तावत्कृत्रिम गंधकम् ॥ अथवा पारदस्यार्धं शुद्धगंधकमेव हि ॥१२८॥ तयोः कज्जलिकां कृत्वा दिनमेकं विमर्दयेत् ॥१२९॥ मृत्तिकां वाससा सार्धं कुट्टयेदतियत्नतः ॥ तथा बारत्रयं सम्यक्काचकूपीं प्रलेपयेत् ॥१३०॥ मृत्तिकां शोषयित्वा तु कूप्यां कज्जलिकां क्षिपेत् ॥ तां कूपी वालुकायंत्रे स्थापयित्वा रसं पचेत् ॥१३१॥ अग्निं निरंतरं दद्याद्यावद्दिनचतुष्टयम् ॥ गृह्णीयादूर्ध्वसंलग्नं सिन्दूरसदृशं रसम् ॥१३२॥ (वैद्यकल्पद्रुम, आयुर्वेदविज्ञान)

अर्थ–शुद्ध किया हुआ पारा ४ चार भाग शुद्ध गंधक एक भाग गंधक कृत्रिम (नोंनिया) एक भाग अथवा शुद्ध आमलासारगंधी दो भाग लेना चाहिये फिर उन दोनों की कज्जली कर एक दिवस तक मर्दन करे। कपड़े के साथ माटी (खड़िया) को खूब पीसे और उसीसे शीशी पर तीन बार कपरौटी करे फिर उस शीशी में कजली को भरे तदनन्तर शीशी को बालुकायंत्र में रख निरन्तर चार दिवस तक धीरे धीरे आंच लगावे स्वांग शीतल होने पर ऊपर लगे हुए रससिन्दूर को उतार लेवे॥१२८–१३२॥

अन्यच्च

सूतकं च समादाय द्विगुणं गंधकं क्षिपेत् । ततश्च कज्जलीं कृत्वा काचकूप्यां निधापयेत् ॥१३३। मृन्मयीं मुद्रिकां दत्त्वा नन्दसंख्याप्रमाणतः ॥ पृथग्भाण्डे तु संस्थाप्य वालुकार्द्धप्रमाणतः ॥१३४॥ मध्ये च कूपि कां कृत्वा मुखे मुद्रां च कारयेत् ॥ द्वात्रिंशद्याममाग्निश्च स्वांगशीतोऽवतार्यते ॥१३५॥ रससिन्दरूनामायं भास्करेण विनिर्मितः ॥ गुंजायुग्मं- सदा ग्राह्यं नागवल्लीदलैः सह ॥१३६॥ (योगचिन्तामणि० निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–एक भाग पारद तथा दो भाग गंधक लेकर खरल में डाल कजली करे फिर उस कजली को कांच की शीशी में भरकर शीशी पर नौ कपरौटी करे और बालुकायंत्र में रख मुख पर मुद्रा कर देवे फिर बत्तीस प्रहर तक अग्नि लगावे जब अपने आप शीशी ठंडी हो जाय तब उतार लेवे तो यह रससिंदूर नाम का रस प्रस्तुत होता है इसको भास्कर नाम के पंडित के बनाया था दो रत्ती रससिन्दूर को पान के संग खावे तो अनेक गुणकर्त्ता होता है॥१३३–१३६॥

षड्गुणगंधकजरणा

हिंगुलोत्थरससं भागं षड्भागं शुद्धगंधकम् ॥ खल्वमध्ये विनिक्षिप्य कुमारीरसमर्दितम् ॥१३७॥ काचकूप्यां विनिक्षिप्य बालुकायंत्रगे पचेत् ॥ पाचयेत्सप्तरात्राणि सिंदूरं भवति ध्रुवम् ॥१३८॥ वल्लमात्रं प्रयुंजीत मधुना लेहयेत्परम् ॥ स्तम्भनं लिंगवृद्धिं च वीर्यवृद्धिं बलान्विनम् ॥१३९॥ तेजस्त्वं पुष्टिकारित्वं महामत्तगजेन्द्रवत् ॥ षढत्वं वन्ध्यारोगत्वमन्यादीन् सर्वरोग-जित् ॥१४०॥ दिनमेकं शतस्त्रीणां रमते तृप्तिवीर्यवान् ॥ निरन्तरं रतिप्रेम्णा सनातनः ॥१४१॥ शतानि पंच षट्केन रोगाणां नाशको भवेत् षड्गुरो गन्धको नाम विश्वामित्रेण निर्मितः ॥१४२॥

(रसराजसुंदर, नि० र०)

अर्थ–हिंगुल से निकाला हुआ पारद एक भाग शुद्ध आमलासार गंधक ६ छः भाग इन दोनों को घीकुवार के रस में घोट कपरौटी की हुई कांच की आतशी शीशी में भर बालुकायंत्र में रख नीचे से सात दिन रात बराबर

आंच लगावे तो निश्चय रससिन्दूर बनेगा, फिर इसमें से तीन रत्ती शहद के संग खावे तो वीर्य के स्तम्भन, लिंगवृद्धि, वीर्यवृद्धि, तेज तथा मस्तहाथी के समान पुष्ट करता है और एक ही दिन में सौ स्त्रियों से रमण करता है। रोगों को नाश करता है, यह षड्गुण नाम का गंधक श्रीविश्वामित्र ने कहा है (अर्थात् यह षड्गुणगंधक जारित पारद है) ।।१३७–१४२।।

अन्यच्च

पलमात्रं रसं शुद्धं तावन्मात्रं तु गन्धकम् ।। विधिवत्कज्जलीं कृत्वा न्यग्रोधांकुरवारिणा ।।१४३।। भावना त्रितयं दत्त्वा स्थालीमध्ये निधापयेत् ।। विरच्य कवचीयंत्रं वालुकाभिः प्रपूरयेत् ।।१४४।। दद्यात्तदनुमन्दाग्निं भिषग्यामचतुष्टयम् ।। जायते रससिन्दूरं तरुणादित्यसन्निभम् ।।१४५।। अनुपानविशेषेण करोति विविधान्गुणान् । क्षयकुष्ठमरुत्प्लीहमेहघ्नं पाण्डुनाशनम् ।।१४६।। नागार्जुनेन कथितं योगानां योगमुत्तमम् ।।

(योगरत्नाकर, रसमं, नि० र०, योगसार)

अर्थ–एक पल शुद्ध पारद और उतना ही शुद्ध गन्धक इन दोनों को विधिपूर्वक कजली कर बड़जटा के क्वाथ की तीन भावना देकर शीशी में भर देवे और उसको वालुकायंत्र में रख वैद्य चार प्रहर की मन्दाग्नि देवे तो प्रातःकाल की लालिमा की तरह रक्तवर्ण का रस सिन्दूर बनता है। विशेष अनुपान के संग अनेक रोग क्षय, कोढ़, वात, तिल्ली, प्रमेह और पाण्डु रोग को नाश करता है। यह योग समस्त योगो में उत्तम योग है, ऐसा श्रीनागार्जुन महाराज ने कहा है, इसमें सन्देह नहीं है।।१४३–१४६।।

अन्यच्च

गन्धकं धूमसारं च शुद्धं सूतं समम् ।। यामैकं मर्दयेत्खल्वे काचकूप्यां निवेशयेत् ।।१४७।। रुद्ध्वा द्वादशयामेषु वालुकायंत्रगे पचेत् ।। स्फोटयेत्स्वांगशीतांतमूर्ध्वगं गन्धकं त्यजेत् ।। अधःस्थं मृतसूतं च सर्वयोगेषु योजयेत् ।।१४८।। (रसमंजरी, रसरत्नाकर)

अर्थ–शुद्ध गंधक, भाड़ का धूआँ और शुद्ध पारद इन तीनों का तुल्य भाग लेकर और एक प्रहर तक मर्दन कर कांच की शीशी में भर देवे और मुख पर मुद्रा कर वालुकायंत्र में बारह प्रहर तक पकावे। स्वांग शीतल होने पर शीशी को तोड़ ऊपर लगे हुए गंधक का परित्याग कर नीचे के रससिंदूर को ग्रहण करे, इसको फिर समस्त कामों में लावे।।१४७।।१४८।।

अन्यच्च

गन्धकं नवसारच्च शुद्धं सूतं समं त्रयम् ।। यामैकं चूर्णयेत्खल्वे काचकूप्यां विनिक्षिपेत् ।।१४९।। रुद्ध्वा द्वादशयामांतं वालुकायंत्रगं पचेत् । स्फोटयेत्स्वांगशीतांतमूर्ध्वगं गन्धकं त्यजेत् ।।१५०।। रक्तभस्मा रसो योगवाही स्यात्सर्वरोगहृत् ।।१५१।। (रसराजसुन्दर)

अर्थ–इस पाठ में कही हुई क्रिया उपरोक्त रससिन्दूर की क्रिया से अत्यन्त ही मिली हुई है, केवल धूमसार के स्थान में नवसार का पाठ है, इस वास्ते अर्थ पूर्व के समान है।।१४९–१५१।।

अन्यच्च

कूपी सप्तमृदंशुकैः परिवृताःशुष्कात्र गन्धेश्वरौ तुल्यौ तौ नवसारपारदकलितौ संमर्द्य तस्यां न्य त् ।। सा यंत्र सिकताख्यके तलबिले पक्त्वार्कयामं हिमं भित्त्वा कुंकुमपिंजरं रसवरं भस्माददेद्वैद्यराट ।।१५२।। पाके रुद्धं मुखं कूप्यां नवसारेण जायते ।। ततः शलाकया कुर्यात्कूपिकानाशशान्तये ।।१५३।। अनेन विधिना पाका यावन्तोऽस्य भवन्ति हि ।। तावन्तोऽपि गुणोत्कर्षा जायन्ते रसभस्मनः ।।१५४।। (र० रा० शं०, र० सा० प०, नि० र०)

अर्थ–आतशी शीशी पर सुखा सुखा कर सात कपरौटी करे फिर पारा एक भाग, गंधक एक भाग, पारद से चतुर्थांश नौसादर इन तीनों को घोटकर शीशी में भर देवे फिर एक हांडी के तले में छेद कर उस छेद पर दिवला रखकर कपरौटी की हुई शीशी रखे फिर बालुका रेत से रेत भर कर बारह प्रहर तक निरंतर अग्नि देवे। शीतल होने पर केसर के समान वर्णवाले रससिंदूर को वैद्यराज इस तरह निकाल ले कि जैसे उसमें कांच का हिस्सा न जावे, यदि पाक के समय नौसादर से शीशी का मुख बंद हो जाय तो शीशी के भीतर बारबार लोहे की सलाई गेरता रहे, इस प्रकार जितने पाक इस पारद के हों, उतना ही पारद में अधिक गुण होता है।।१५२–१५४।।

सम्मति–प्रत्येक वैद्य को ध्यान में रखना चाहिये कि जब पारद में गंधक जारण करे तब शुद्ध गंधक तथा पारद लेकर कजली करे, फिर शीशी में भर लेखानुसार आंच देवे, प्रथम ही पाक में रससिंदूर ही प्रस्तुत हो जाता है, इस वास्ते पुनः जारणार्थ उस रससिंदूर में से हिंगुल के सदृश ही पारा निकाल लेवे, फिर निकले हुए पारद के तुल्य ही गंधक लेकर जारण करे, इस प्रकार चिकित्सा के लिये अर्थात् भक्षण के लिये षड्गुण गंधक जारण करे और रसायन के लिये जितने पाक हो सके अर्थात् जितने गुण गंधक जारण हो सके, उतना ही श्रेष्ठ गुणवान् पारा होता है।।

अन्यच्च

पारदं गन्धकं तुल्यं गंधार्द्धं नवसादरम् । कज्जलीं चित्रकक्वाथैस्तथोन्मत्तदलाम्बुना ।।१५५।। कुमारीस्वरसैर्घस्त्रं पृथक्कृत्वा विमर्दयेत् ।। काचकूप्यां विनिस्थाप्य लेपयेत्कूपिकां प्रिये ।।१५६।। तद्विधानं प्रयक्ष्यामि तच्छृणु त्वं समाहिता ।। खटिकां लोहकिट्टं च चूर्णयेद्वस्त्रगालितम् ।।१५७।। लोहकिट्टचतुर्थांशं चूर्णं गोधूमसम्भवम् ।। दिनैकं मर्दयेत्सर्वं सवस्त्रं लेपयेच्च ताम् ।।१५८।। कूपिकां शोषयेत्पश्चाल्लेपयेच्छाषयेत्ततः ।। सप्तवारं प्रलिप्यैत्रं शोषयेत्तां निधापयेत् ।।१५९।। वालुकायंत्रके दद्याग्निं यामचतुष्टयम् । स्वांगशीतां तु संस्फोटच चोर्ध्वलग्नं रसं नयेत् ।।१६०।। सुरक्तं रससिन्दूरं ख्यातं वैद्यवरैः प्रिये ।। अनुपानयुतं दत्तं रोगजालविनाशनम् ।।१६१।।

(अनुपाततरङ्गिणी)

अर्थ–पारद एक भाग गंधक एक भाग और आधा भाग नवसादर, इन तीनों को खरल में डाल चित्रक के क्वाथ से या धतूरे के पत्तों के रस से कजली करे फिर एक दिवस तक घीग्वार के रस से घोट कांच की शीशी में भर शीशी पर कपरौटी करे, हे प्यारी! अब मैं कपरौटी करने की क्रिया को कहता हूं, तुम सावधान होकर सुनो। प्रथम खड़िया लोहे की कीट इनको पीसकर कपड़ छान करे और लोहे की कीट से चौथाई गेहूं का चून मिलावे, इन सबको एक दिन मर्दन कर कपड़े के सात शीशी पर लेपकर सुखावे। इस प्रकार सात बार सुखा सुखाकर लेप करे तदनन्तर शीशी को बालुकायंत्र में रख चार प्रहर की आंच देवे। स्वांग शीतल होने पर शीशी को बालुकायंत्र में रख चार प्रहर की आंच देवे। स्वांग शीतल होने पर शीशी को फोड़ ऊपर लगे हुए रस को निकाल लेवे, हे प्यारी! वैद्यलोग इस रक्तभस्म को रससिन्दूर कहते हैं, अनुपान के संग देने से यह समस्त रोगोंका नाश करता है।।१५५–१६१।।

रससिन्दूर (उर्दू)

पारा गंधक बराबर नौसादर इनकी चौथाई लेकर लैमूं के अर्क में पहर भर खरल करके फिर ककड़ी के अर्क में एक प्रहर, सुर्ख कपास के अर्क में एक प्रहर खरल करे आतिशी शीशी में डालकर डाट लगा दे और सात तह कपरमिट्टी की चढ़ाकर सुखावे फिर मिट्टी के कूंडे में रेत छना हुआ भर के उसमें शीशा गाढ़ दे। मगर मुंह शीशे का निकला रहे और उसके नीचे चार पहर धीमी और चार प्रहर कुछ तेज और चार पहर खूब तेज आंच करे, बाद सर्द होने के निकाल ले। सुर्ख कुश्ता निहायत उमदा हरकाम का हो जावेगा। इसको रससिंदूर कहते हैं, निहायत मुकव्वी है। (सुफहा खजाना कीमियां)

रससिन्दूर (उर्दू)

पारा साफ गंधक बराबर, एक की चौथाई नौसादर सबको बराबर ले और सुर्ख कपास दोनों के अर्क में जुदा जुदा तीन रोज खरल करके सुखा के आतिशी शीशी में भर के मुँह बंद करके सात तह कपरमिट्टी की चढ़ाकर वालुजंतरी कूंड का मजबूत ले और उसमें पिसा हुआ नमक निस्फ कूंड तक भर कर शीशः रख कर उसके ऊपर बालूरेत छना हुआ भर दे। और मुंह शीशे का निकला रखे और चूल्हे पर बारह पहर आंच दे, इसके बाद पारद सुर्ख हो जायेगा, इसे रससिंदूर कहते हैं। इसे गंधक के तेल में मिलाकर चांदी के पत्तरों पर लेप करके तपावे। तीसरे लेप और तपाव के बाद सोना बन जावेगा। (सुफहा किताब खजान कीमियां ११)

अन्यच्च

सूतः पंचपलः स्वदोषरहितस्तत्तुल्यभागो बलिर्द्वौ टंकौ नवसारपादकलितौ संमर्द्य कूप्यां न्यसेत् । तां यन्त्रे सिकताख्यके तलबिले पक्त्वार्कयामं हितं भित्त्वां कंकुमपिंजरं रसवरं भस्मावदेद्वैद्यराट् ॥१६२॥ वाते सक्षौद्रपिप्पल्यापि च कफरुजि त्र्यूषणं साग्निचूर्णं पित्ते सैलासिता स्याद् व्रणवति बृहतीनागराद्रामृताम्बु । पुष्टौ साज्यत्रियामा हरनयनफला शाल्मलीपुष्प-वृन्तं किं वाफान्ताललाटाभरणरसपतेः स्याद्यनूपानमेतत् ॥१६३॥

(योगरत्नाकर, योगतरंगिणी, र० रा० सुं० र० रा० शं)

अर्थ–रसरत्नाकर में लिखा है कि पारद में तीन दोष स्वाभाविक हैं, जैसे विष, वह्नि और मल इन तीनों दोषों से रहित अथवा साधारण क्रिया से शोधित पारद पांच पल और उसी के तुल्य भाग गंधक और आठ माशे नौसादर इन तीनों की खूब कजली कर कपरौटी की हुई आतसी शीशी में भर देवे। फिर उस शीशी को नीचे छेद किये हुए वालुकायंत्र में १२ बारह प्रहर तक आंच लगावे। तदनन्तर उस शीशी को फोड़ बुद्धिमान वैद्य केशर के समान रसों में उत्तम पारद भस्म को निकाल लेवे। वात के रोगों में पीपल और शहद के संग, कफ के रोगों में सोंठ, मिरच, पीपल और चीते का चूर्ण इनके सात, पित्तज रोगों में छोटी इलायची और मिश्री के संग तथा क्षत (घाव) रोग में कटेरी, सोंठ, गीली गिलोय के जल के संग और पुष्टि के लिये घृत, हलदी, त्रिफला और सेमल के फूलों के डाठुरों के सात यह कान्ताललाटभरणरस के अनुपान जानने। योगतरंगिणी के मत से एक तोला फिटकरी और गेरनी तथा अग्नि १२ बारह प्रहर की देनी।।१६२।।१६३।।

अन्यच्च

नागार्जुनीति विख्याता दुग्धिका क्षितिमण्डले ॥ तयाविमर्दयेत्सूतं दिनमेकं निरन्तरम् ॥१६४॥ काचमाच्यापि कर्तव्यं मर्दनं दोषशान्तये ॥ पारदं दशटङ्कं स्याद्दशंटकं च गंधकम् ॥१६५॥ नवसारं च पादं स्यात्त्रयमेकत्र मर्दयेत् ॥ काचस्य कूपके कृत्वा मुखं तस्य निरुध्यते ॥१६६॥ अष्टयामावधिर्यावत्तवत्सूतः प्रपच्यते ॥ एवं निष्पद्यते साक्षादरुणादित्य-सन्निभः ॥१६७॥ अरुणो भस्मसूताख्यः सर्वकार्यार्थसाधकः ॥ प्रवालकोमल च्छायो नृणामत्यन्तवल्लभः ॥१६८॥ भक्षयेद्रक्तिकाः पंच मरिचेन समं रसम् ॥ क्षुद्बोधकारकः प्रायः सद्यः कामाग्निदीपकः ॥१६९॥ ज्वरं प्रमेहं कासं च नाशयेदनुपानतः ॥ येषुयेषु प्रयोक्तव्यो रसो रोगेषु सत्वरम् ॥१७०॥ तांश्च तान्नाशयेच्छीघ्रं समर्थो रसपार्थिवः ॥१७१॥

(टोडरानन्द, र० रा० शं०, र० रा० प०, नि० र०)

अर्थ–इस पृथ्वी पर नागार्जुनी नाम की दुद्धी है, उसके साथ एक दिन तक पारद को मर्दन करे तथा दोष की शान्ति के लिये मकोय के रस से मर्दन करे, इस प्रकार शुद्ध किया हुआ पारा दश टंक, शुद्ध गंधक दश टंक, दो टंक नौसादर इन तीनों को साथ मर्दन करे कांच की शीशी में रख मुख बंद कर देवे और आठ पहर तक पाक करे। इस प्रकार पाक करने से पारद लाल रंग का हो जायेगा। यह समस्त कार्यों के सिद्ध करनेवाला है, इसकी पांच रत्ती काली मिरच के संग खावे तो प्रायः भूख को लगाकर कामाग्नि को दीप्त करता है। ज्वर, प्रमेह, कास को अपने अपने अनुपात से नाश करता है। जिन जिन रोगों में यह दिया जाता है, उन उन रोगों को शीघ्र ही नाश करता है।।१६४–१७१।।

अन्यच्च

पलद्वयं शुद्धरसं पलार्धं शुद्धगंधकम् ॥ कर्षार्धं नवसारं च जम्बीरेण विमर्दयेत् ॥१७२॥ काचकूप्यां क्षिपेच्चैव सप्तधा मृदुकर्पटैः । विलेप्य काचकूपीं तामातपे शोषयेद्दृढम् ॥१७३॥ सच्छिद्रभांडे कूपीं तां सिकतायंत्रके न्यसेत् ॥ कूपिकां कंठमानेन पूजयेदिष्टदेवताः ॥१७४॥ पंच पूज्याः कुमार्यश्च ततश्चुल्ल्यां निधापयेत् ॥ पचेद्यामाष्टकं चैव कूपिकां च क्षणेक्षणे ॥१७५॥ संशोध्य पाचयेद्यंत्रे स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥ ग्राह्यं च दरदाकारं देवदानवदुर्लभम् ॥१७६॥ सेवयेद्रोगनाशाय तत्तद्रोगानुपानतः ॥ वल्लं वा वल्लयुग्मं वा कणया मधुना सह ॥१७७॥ सेवितं कामिनीकामं दर्शयेद्रातिकौतुकम् ॥ वीर्यबंधकरं शीघ्रं योषामदविनाशनम् ॥१७८॥ सिन्दूरं हरवीर्यसम्भवमिदं रूक्षाग्निमान्द्यापहं यक्ष्मादिक्षय पाण्डुशोफमुदरं गुल्मप्रमेहापहम् । शूलप्लीहविनाशनं ज्वरहरं दुष्टव्रणान्नाशयेदर्शांसि ग्रहणीभगंदरहरं छर्दित्रिदोषापहम् ॥१७९॥

(योगरत्नाकर, नि० र०)

अर्थ–शुद्ध पारद ८ आठ तोले, शुद्ध गन्धक ४ चार तोले, नौसादर ६ माशे इन तीनों को कजली कर नींबू के रस से घोटे। सात बार सुखा सुखा कर कपरौटी की हुई शीशी में भर पेंदें में छेद किये हुए सिकतायंत्र (बालुकायंत्र) में रख कर रेत से गले तक भर देवे। तदनन्तर इष्टदेवता तथा पांच कन्याओं को पूजन करके यंत्र को चूल्हे पर चढ़ाय आठ प्रहर तक पकावे और शीशी को क्षण क्षण भर में सँभालता रहे और स्वांग शीतल होने पर देवता और दैत्यों को दुर्लभ सिंगरफ के समान रससिन्दूर को निकाल लेवे, अपने अपने अनुपान के साथ रोगों के नाश के लिये सेवन करे। तीन अथवा छः रत्ती पीपल और शहद के साथ सेवन किया हुआ स्त्रियों को सम्भोगावस्था में आश्चर्य का पैदा करनेवाला होता है, वीर्य को रोकनेवाला और स्त्रियों के मद का विध्वसंकारी है। यह पारद से प्रस्तुत किया हुआ रससिन्दूर शरीर के रूखापन को तथा अग्निमान्द्य को नाश करता है। राजरोग, क्षय (शुक्रक्षय), पांडु, उदर, गुल्म, प्रमेह, शूल, प्लीहा, ज्वर, व्रण (घाव), बवासीर, संग्रहणी, भगंदर, वमन और त्रिदोष को दूर करता है।।१७२–१७९।।

रससिन्दूर (उर्दू)

तीसरी तरकीब यह है बराबर गंधक पारा ले और ८ माशे नौसादर और लाल नरमे के फूलों के अर्क में तीन रोज खरल करके एक राजे घीकुवार के अर्क में खरल करके सुखा के पक्व की आतिशी शीशी में रखकर सात तह गिले हिकमत करके बालू जंतर में तीन रात बराबर मुवाफिक आंच दे ठंडी होने दे। फिर निकाल ले, पारा सुर्ख खाक हो जावेगा। इसके खान से भी वही नफा होगा और दूसरी नफा इसमें यह है कि बड़े बड़े मर्जों में इसे जुदा जुदा तौर के खिलावे। बफज्लहू ताला फौरन मर्ज दूर हो और तन्दुरुस्त खाए तो कभी बुढ़ापा न आने पावे, उसके जुदा जुदा खिलाने की तरकीब खाद किताब से मालूम हो जावेगी। (सुफहाखजानः)

अन्यच्च

सूतः पंचपलः किंवा तत्तुर्यांशोऽत्र गंधकः ॥ द्वौ टंकौ नवसारस्य कषा च तुवरी भवेत् ॥१८०॥ बह्निं शनैः शनैः कुर्यात्त्रिदिनं सिकताभिध ॥ ऊर्ध्वगः कूपिकानाले सिन्दूराभो भवेद्रसः ॥१८१॥ उक्तयोगेन योक्तव्यः केवलो वाऽनुपानतः ॥१८२॥

(रसमानस)

अर्थ–पांच पल पारद और उसका चौथाई गंधक, आठ माशे नौसादर,

एक तोले फिटकरी इन सबकी कजली कर आतशी शीशी में भर देवे और बालुकायंत्र द्वारा तीन दिवस तक धीरे धीरे पकावे। नाल के ऊपर लगे हुए रससिन्दूर को निकाल लेवे। पूर्वोक्त योग के साथ अथवा रोगानुसार अनुपान से अनेक रोगों को नाश करनेवाला है॥१८०–१८२॥

अन्यच्च

पृथक्समं समं कृत्वा पारदं गंधकं तथा ॥ नवसारं धूमसारं स्फटिकं याममात्रकम् ॥१८३॥ निम्बूरसेन संमर्द्य काचकूप्यां निवेशयेत् ॥ मुखे पाषाणखटिकां दत्त्वा मुद्रां प्रलेपयेत् ॥१८४॥ सप्तभिर्मृत्तिकावस्त्रैः पृथक् संशोध्य वेष्टयेत् ॥ सच्छिद्रायां मृदः स्थाल्यां कूपिकां तां निवेशयेत् ॥१८५॥ पूरयेत्सिकतापूरैरागलं मतिमान् भिषग् ॥ निवश्य चुल्ल्यां दहनं मन्दमन्यखरक्रमात् ॥१८६॥ प्रज्वाल्य द्वादशं यामं स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥ स्फोटयित्वा पुनः कूपीमूर्ध्वलग्नं बलिं त्यजेत् ॥ अधःस्थरससिन्दूरं सर्वरोगेषु योजयेत् ॥१८७॥

(रसेन्द्रसारसंग्रह, रसमंजरी, टो० नं०)

अर्थ–पारद और गंधक इन दोनों को समान भाग लेवे और पारद से चौथाई नौसादर, भाड़ का धुआँ और फिटकरी इन सबको एकत्र कर और निंबू के रस से मर्दन कर शीशी में भर देवे। शीशी के मुख पर पत्थर के टुकड़े को रख मुद्रा करे फिर शीशी पर सुखा सुखा कर कपरौटी करे। तदनन्तर पेंदें में छिद्रवाले बालुकायंत्र में रख कर मन्द, मध्य, और तीव्र क्रम से बारह प्रहर तक आंच देवे। स्वांग शीतल होने पर शीशी को तोड़ ऊपर लगे हुए गंधक के टुकड़ों को छोड़ उनके नीचे लगे हुए रससिन्दूर को ग्रहण करे और फिर समस्त रोगों में दे देवे॥१८३–१८७॥

तलभस्मविधान

नवसादर अरु धूमसा, अरु फिटकिरी विचार ।
गंधक पारा शुद्ध ये, सब सम भाग निहार ॥
किते भिषक गृहधूमसा, एवजसीसा लेत ।
और और ग्रन्थनविषें, वरन्यो युक्तिसमेत ॥
ये पांचो पीसै मिहीं, अध अध पाव तुलाय ।
जंभीरी रस में तथा, नींबूरस घुटवाय ॥
शीशी के भीतर सुभरि, मुखमुद्रा करवाय ।
तब कपरौटी जतन सों, चहूं ओर चिपटाय ॥
सीसी घाम सुकाय कें, हांडी में दर देय ।
हांडी के पेंदे विषे, छेद एक कर लेय ॥
छेद रुपैया के सम, सुन्दर वर्तुल होय ।
तापैं लम्बी ठीकरी, घिसकैं धरि गुनिलोय ॥
तापैं माटी सानिके, मैड करे जु बनाय ।
ठिकरी के दोऊ तरफ, छेद सन्धि रह जाय ॥
शीशीधर ता मेंडपै, बारू रेत भराय ।
शीशी नालीरसरहे, बारूते निकसाय ॥
हांडी चूल्हे पै धरे, नीचै करे कृसान ।
बार प्रहर पर्यंतलौं, मन्दहि मन्द प्रमान ॥
फिर क्रमते बढ़ती करे, ज्वाला बढ़तहि जाय ।
आठ पहर उद्भट अगिन, देय निरन्तर पाय ॥
स्वांग शीत ह्वै जाइ तब, सीसा फोर निकार ।
ऊपर जो गंधक लगै, ताहितजै निरधार ॥
नीचे मृत पारद रहै, अरुन कटोरी रूप ।
सब योगन में देय यह, तब तल भस्म अनूप ॥
यथा उचित अनुपान ते, सब रोगनपै देय ।
एक रत्ती कै है रत्ती, देख बलाबल सेय ॥

(वैद्यादर्शभाषाग्रन्थ)

अन्यच्च

भागो रसस्य एव भागा गंधस्य माषं पवनाशनस्य ॥ सम्मर्द्य गाढं सकलं सुभाण्डे तां कज्जलीं काचघटे निदध्यात् ॥१८८॥ संरुध्य मृत्कर्पटकैर्घटीं तां मुखे सचूर्णां खटिकां च दत्त्वा । क्रमाग्निना त्रीणि दिनानि पक्त्वा तां बालुकायन्त्रगतां च पच्यात् ॥ १८९॥ बन्धूकपुष्पारुणमीशजस्य भस्म प्रयोज्यं सकलामयेषु । निजानुपानैर्मरणं जरां च हन्त्यस्य वल्लः क्रमसेवनेन ॥१९०॥

(रसेन्द्र, सं, र० रा० श०, रसमंजरी, यो० र०, योगत०, र० सा० प०, नि० र०)

अर्थ–एक भाग पारद, तीन भाग गंधक (यहां भाग शब्द से कर्ष लेना चाहिये) सीसा एक माशा, इन सबको महीन पीसकर कांच की शीशी में भर देवे और कपरौटी भी कर देवे। शीशी के मुख पर चूना और खड़िया से मुद्रा कर लेवे फिर बालुकायंत्र में रख तीन दिवस तक मन्द, मध्य और तीक्ष्ण क्रम से अग्नि लगावे तो पारद की भस्म गुलदोपहरिये के समान हो जायेगी। इसको अपने अपने अनुपानों के साथ देने से समस्त रोगों को नाश करता है और तीन रत्ती सेवन किया हुआ रससिन्दूर मरण और जरावस्था (बुढापा) को भी नाश करता है॥१८८–१९०॥

सम्मति–यहां पर भाग शब्द से तीन कर्ष का ग्रहण करना चाहिये। ऐसा हमारे प्रपितामह राजवैद्य व्यास हरिभजनरायजी का भी कहना था और वृद्ध वैद्यों की भी यह आज्ञा है और 'पवनाशनस्य' इसके अर्थ से सीसे को ग्रहण करते हैं सो हमारी समझ में ठीक नहीं क्योंकि यहां धातुवाद का प्रयोजन नही है, केवल खाद्य के लिये औषधि बनाने का प्रयोजन है। इस वास्ते रससारपद्धति में जो 'पवनाशस्य' इसके स्थान में 'नवसादरस्य' ऐसा पाठ लिखा है, सो सीसे के एवज में नौसादर डालना चाहिये। अब कितने वैद्य शीशी का मुख बंद करके और कितने मुख को खोल करके पाक करते हैं, इसमें जैसी अपनी गुरुप्रणाली हो वैसा ही करना चाहिये॥

हिंगुल से रससिन्दूर बनाने की विधि

रसमन्तरेण पिष्टाभ्यां हिंगुलगंधाभ्यामपि सिन्दूरं संपाद्यम् ॥

अर्थ–यदि पारद उत्तम नहीं मिले तो केवल हिंगुल और गंधक से ही रससिन्दूर बनाना चाहिये॥

रससिन्दूर के गुण

निखिलक्षयभक्षणदक्षतरं व्रणकुष्ठभगन्दरमेहहरम् । बलदीधितिशुक्रसमृद्धिकरं रसभस्म समस्तगदापहरम् ॥१९१॥

(योगतरङ्गिणी)

अर्थ–यह रसभस्म अर्थात् रससिन्दूर अनेक प्रकार के क्षयों का नाश करता है और व्रण, कोढ, भगन्दर तथा प्रमेह को नाश करता है। बल, तेज वीर्यवृद्धि इनका करनेवाला है॥१९१॥

अन्यच्च

हरति रससिन्दूरं कासश्वाससाग्निमान्द्यमेहगदान्। रक्तविकारं कृच्छ्ररज्वरादिरोगान्यथानुपानयुतम् ॥१९२॥

(अनुपानतरंगिणी)

अर्थ–यथायोग्य अनुपान से मिला हुआ रससिन्दूर कास, श्वास, अग्निमान्द्या, प्रमेह, रक्तविकार, मूत्रकृच्छर और ज्वारआदि रोगों का नाश करता है॥१९२॥

अन्यच्च

सिन्दूराख्यः सूतो वरया प्रातर्भुक्तो घृतमधुपरया । वितरति तरुणिमरूपमुदारं वृद्धस्यापि विमोहितदारम् ॥१९३॥

(योगतरंगिणी)

अर्थ–जो मनुष्य त्रिफला, घृत और शहद के संग रससिन्दूर को प्रातः काल सेवन करे तो वृद्धावस्था में भी स्त्रियों को मोहित करनेवाले रूप को प्राप्त होता है॥१९३॥

अन्यच्च

गुंजादिमानमारभ्य चतुर्गुंजावधि प्रिये । दद्यात्कालवयोवह्निदेशान्दृष्ट्वामयं वलम् ॥१९४॥ पिप्पलीमधुसंयुक्तं वातमेहं वरांगने ॥ सितोपलावरायुक्तं पित्तमेहनिवारणम् ॥१९५॥ भार्ङ्गीत्र्यूषणमाक्षीकैः कसनश्वास शूलनुत् ॥ सिंतारात्रिसमायुक्तं रक्तदोषं विनाशयेत् ॥१९६॥ कामलापांडुमन्दाग्निन्वंरा त्र्यूषणयुग्जयेत् यथा विष्णु। श्रिया युक्तोः हृदिस्थो भक्तपातकान् ॥१९७॥ हृद्रोगं बद्धकोष्ठं च वह्निमान्द्यादिकान्गदान् ॥ जयेच्चित्रकपांचालीशिवासौ वर्चलान्वितम् ॥१९८॥ शिलाजतुसितैलाभिर्मूत्रकृच्छ्रापनुद्भवेत् ॥ सौ–वर्चल वरायुक्तं रेचयेन्नवयौवने॥१९९॥जातीपत्रोलवंगा म्बुभंगा पिप्पलिकुंकुमैः ॥ कर्पूरेण च संयुक्तं धातुवृद्धिकरं परम् ॥२००॥ लवंगरुच्यकशिवायुक्तं सर्वज्वरापहम् ॥ प्रिये भंगाजमोदाभ्यां छर्दिरोगप्रणाशनम् ॥२०१॥ लवंगकुंकुमयुते नागवल्लीदलोद्भवे ॥ वीटके वापि कूष्मांडचूर्णे स्याद्धातुवर्द्धनम् ॥२०२॥ गुडपर्पटसंयुक्तं कृमीन् कोष्ठगताञ्जयेत् ॥ लवंगभंगाफूकैश्च सर्वातीसारनुत्प्रिये ॥२०३॥ दीप्यसौवर्चलोपेतं वह्निमान्द्यापहं परम ॥ पौष्टिकेप्यमृतासत्त्वसंयुतं पुष्टिकारकम् ॥२०४॥ वातं माक्षिकपांचालीचूर्ण युक्तं विनिर्जयेत् ॥ सितोपलायुतं पित्तं जयेदम्बुजलोचने ॥२०५॥ त्रिकटुवग्नियुतं हन्यात् कफरोगं सदारुणम् । अन्यान् रोगाञ्जयेद्युक्त्या यथायोग्यानुपानकैः ॥२०६॥ पथ्यं पारदवत्सर्वं सेवयेद्वै हरिं स्मरन् । नवकंजबिशालाक्षि प्रिये पीनपयोधरे ॥२०७॥

(अनुपानतरङ्गिणी)

अर्थ–हे प्यारी! वैद्य देश, रोग और अवस्था को देख कर एक रत्ती से लेकर चार रत्ती तक इस रससिन्दूर को खाने के लिये रोगी को देवे। हे स्त्री! शहद और पीपल के साथ सेवन से वातप्रमेह को, मिश्री तथा त्रिफला के साथ पित्तमेह को, भारंगी, सोंठ, मिरच, पीपल और शहद के साथ खांसी श्वास दर्द को नाश करता है तथा हलदी और मिश्री के साथ सेवन करने से रक्तदोष को दूर करता है और त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल इनके संग देने से कामला, पाण्डु तथा मन्दाग्नि का इस प्रकार नाश करताहै कि जैसे लक्ष्मी से संयुक्त श्रीविष्णु भगवान् भक्तों के हृदय में ठहरे हुए भक्तों के पापों को नाश कर देते हैं। तथा चीते की छाल, पांचाली, हर्र, सोंचर नोंन इनसे युक्त रससिन्दूर हृद्रोग, कोष्ठबद्ध, मन्दाग्नि आदि रोगों को जड़ से उखाड़ देता है। तथा सिलाजित, मिश्री, इलायची छोटी इनके संग देने से यह रस मूत्रकच्छ को दूर करनेवाला होता है। सोंचर नोंन और त्रिफला के साथ देने से दस्तावर हो जाता है। जायफल, लौंग, अफीम, भांग, पीपल, केसर तथा कपूर के साथ मिला हुआ अत्यन्त धातुकी वृद्धि के करनेवाला है। लौंग, सोंचरनोंन, हर्र इनसे संयुक्त यह रस सम्पूर्ण ज्वरों का नाश करता है। लौंग तथा केसर से संयुक्त पान के बीडे में अथवा पैठे के चूर्ण में देने से धातु का वर्धक है। गुड तथा पटोल के साथ कृमिरोग का हन्ता है। लौंग, भांग तथा अफीम के साथ अतीसार को दूर करता है। अजमोदा और काले नोंन के साथ मन्दाग्नि को हरता है और पुष्टि के लिये सत्तगिलोय के साथ देना चाहिये। पांचाली और शहद के साथ वात को, मिश्री के साथ पित्तरोग को, हे प्यारी! यह रस अवश्य जीतता है। तथा सोंठ, मिरच, पीपल के साथ बढे हुए कफरोग को नाश करता है तथा अपने अपने अनुपान के साथ अनेक रोगों को भी नाश करता है। हे पीनस्तनी! नवीन कमलवत् विशाल नेत्र वाले श्रीहरि को याद करता हुआ इसका सेवन करे और पथ्यप्रभृति पारद के समान समझने चाहिये॥१९४–२०७॥

अन्यच्च

रससिन्दूरमशुद्धाद्रसाद्धि जातं पारवद्रोगान् । कुर्य्याच्चैतच्छान्त्यै घृतमरिचरजः पिबेत्सप्तदिनम् ॥२०८॥

(अनुपानतरङ्गिणी)

अर्थ–अशुद्ध पारद से बना हुआ रससिन्दूर अशुद्ध पारद भक्षण के समान ही रोगों को पैदा करता है इस वास्ते उनरोगों की शान्ति के अर्थ घृत तथा पिसी हुई काली मिरच को ७ दिन तक पीवे॥२०८॥

अन्यच्च

ये क्षीणा गत्वीर्याश्च कथं सीदंति ते नराः । ईश्वरेण त्विदं प्रोक्तं हरगौरीरसायनम् ॥२०९॥ रसभागो भवेदेको द्विगुणो गन्धको मतः ॥ खल्वे कज्जलसंकाशं काचकूप्यां क्षिपेत्सुधीः ॥२१०॥ खर्परे बालुकापूर्णे स्थापयेत्तत्र कूपिकाम् ॥ इष्टिकां च मुखे दत्त्वा कृत्वा कर्प्पटमृत्तिकाम् ॥२११॥ सप्तविंशतियामैश्च त्रिभिः कूपैर्विपाचयेत् ॥ पश्चादूर्ध्वं समायातं रसं ज्ञात्वा विचक्षणः ॥२१२॥ हंसपादसमं वर्णं निष्पन्नं रसमादिशेत् ॥ गुंजायुग्मं प्रदातव्यं सितादुग्धानुपानतः ॥२१३॥ प्रमेहश्वासकासेषु षंढे क्षीणेऽल्पवीर्यके ॥ हरगौरीरसं देयं सर्वरोगप्रशान्तये ॥२१४॥

(योगचिन्तामणि) र० रा० सुं० नि० र०)

अर्थ–जो मनुष्य क्षीण (रस रक्त और मांसादि से रहित) और वीर्य से रहित है वे मनुष्य क्यों दुःख पा रहे हैं कारण कि उनके लिये परमात्मा ने इन हरगौरी रस को बनाया है। इसके बनाने की क्रिया यों है कि एक भाग पारद (शुद्ध किया हुआ) और दो भाग गंधक, इन दोनों की कजली कर कांच की शीशी में भर देवे और उस शीशी को रेत से भरे हुए खिपरे में रख मुखपर ईंट का टुकडा लगाय मुद्रा कर देवे और सत्ताईस प्रहर तक अग्नि देवे इस प्रकार तीन बार शीशी में (बदल बदल कर) पाक करे। उसके पश्चात् पारद को नली में आया हुआ जानकर वैद्य यह निश्चय कर लेय कि अब यह रस हंस के पैर के समान लाल वर्णवाला रससिन्दूर शुद्ध हो गया है इसकी दो रत्ती मात्रा मिश्री तथा दूध के साथ देना चाहिये। प्रमेह, श्वास, कास, बढ़ता क्षय, अल्प वीर्यवाले को तथा अनेक रोगों में यह हरगौरी नाम का रसराज अवश्य देना चाहिये ऐसा योगचिन्तामणि ग्रन्थ में उत्तम प्रयोग लिखा है॥२०९–२१४॥

सम्मति–हमारी समझ में यह हरगौरी रस भी एक प्रकार का रससिन्दूर ही होना चाहिये संग्रहकार ने इसको इस वास्ते पृथक् लिखा है कि यह तीन शीशियों द्वारा उतारा गया है और कुछ विशेषता नहीं है॥

रससिन्दूर तहनशीन तलभस्म (उर्दू)

सिन्दूर रस से सिर्रफ कीमियाई मुराद है जिसका तरीका अव्वल अकसीर तिला के शुरू में तहरीर हुआ है यानी अव्वल सीमाव कों छः बार तसईद करे बाद उसके मुश्त ही और मुन्तकिक उल अमल करे। बाद उसके मुसारी सीमाव के गंधक मुसफ्फा मिलाकर शीरः घीग्वार का डालकर सहक करता जावे और बारह पहर यानी तीन दिन सहक करके तसईद करे यह सीमाव वरंग सुर्ख हो जाताहै और अगर इस तरह सहक करने का और आग देने का बजरिये आतिशी शीशी मजकूर के अमल मुकर्रर करता रहे तो चंद अमल में सीमाव तहनशीन हो जाता है। और तनहा अकसीर का काम देता है चुनांचः कुश्तः सीमाव मुन्दर्जः सुफहा १९५ किताब अलकीमियां जिसको बाजमेम्बरान अंजुमन ने तजरुबा करके कामयाबी हासिल की है वह भी रस सिन्दूर रस है जिसमें बार बार गंधक देकर हर बार चार चार पहर आग देनें में इजाफा किया है और यहां तक कि छत्तीस प्रहर की आग की नौबत पहुंची है आखर में तनहा सीमाव को सहक करके तीस पहर आग देकर तहनशीन किया है और उसमें रंगने और खुराक दोनों का काम लिया है चुनाचः पूरी सरै और तरीक अमल रिलासा अकसीर असकर की शरै में मुन्दज होगा अगर मंजरे खुदा है– खुलासा यह है कि जिस तरह साबिक में बयान हो चुका है कि सीमाव को षड्गुन गंधक जारन करे यानी बजरिये ईटाजंतर के छः गुनी पिलावे इस अमल सिन्दूर रस में कुल ऐमाल तो बदस्तूर होते हैं और बजाय ईटा जंत्र के शीशी आतिशी में बालूजंत्र करके

सीमाव तसईद किया जाता है। (सुफहा अकलीमियां २४६)

कामदेवरसविधि
(पारद रस गंध हरतालयोग मूर्छित तीन शीशी)

पारा गन्धक अरु हरतार । गन्धक लेहु आवलासार ॥
तीनो चारि चारि पल लेय । पुनि मर्दन रसग्वारि करेय ॥
बहुत खरर दीजै बिन तीनि । तापाछे सीसी में कीनि ॥
बारह पहर पचावे गुनी । अगिनि जु जंत्र वालुका सुनी ॥
पुनि रस ग्वारि खररि यह रीति । मरदत जांहि तीन दिन बीति ।
सुकै बहुरि जलजंत्रहि धरै । आगि पहर बारह की करै ॥
कामदेव या रस को नाम । यह आवे खंडित के काम ॥
जो यह रस मण्डल भरि खाय । पुरुष होय वो सुनि ज्यों राय ॥
स्त्रीके दश दोषहिको हरै । वन्ध्या खाइ सुगर्भहि धरै ॥
और रोग जे भाजैं धने । ते सब परैं कौन पै गने ॥
(रस सागर बड़ा)

भास्कररस एक प्रकार का मूर्च्छित पारद

गन्धकस्य पलं चैकं सूतकस्य पलार्धकम् ॥ खल्वे कज्जलिकां कृत्वा मूषायां विनियोजयेत् ॥२१५॥ जीविनी चन्द्रवल्ली च अधोर्ध्व परिलेपयेत् ॥ पक्वमूषां च संस्थाप्य सिक्तायंत्रे नियोजयेत् ॥२१६॥ प्रज्वाल्य वह्निं यामैकं स्वांगशीतं तु कारयेत् ॥ तरुणादित्यसंकाशो जायते रसभास्करः ॥२१७॥ गुंजायुग्मप्रमाणेन लेहयेन्मधुसर्पिषा ॥ मासत्रयप्रयोगेण क्षयं कासं निवारयेत् ॥२१८॥ मंडूरयोगसंयुक्तं पांडुरोगं विनाशयेत् ॥ पांडुरी पांडुरोगे च नाशयेद्विषमज्वरम् ॥२१९॥ महिषाक्षकसंयुक्तो हरेत्कुष्ठान्यनेकशः ॥ कूष्मांडविधिना युक्तो वृद्धोऽपि तरुणायते ॥२२०॥ एतद्रसायनं देवि जरादारिद्र्यनाशनम् ॥ नानाव्याधिहरं दिव्यं रसायनमिदं शुभम् ॥२२१॥ (योगसार)

अर्थ–एक पल गंधक और आधा पल पारद इनकी कजली बनाकर मूषा (घरिया) में रखे और उस पिष्टी पर जीवनी और चन्द्रवल्ली के कल्क का ऊपर नीचे लेप करे उस पक्वमूषा को सिकतायंत्र (वालुकायंत्र) में रख देवे और एक प्रहर तक अग्नि लगावे। स्वांगशीतल होने पर निकाल लेवे तो वह नवीन सूर्य के समान रंगवाला रसभास्कर प्रस्तुत होता है। दो चौटनी के प्रमाण से तीन मास तक खावे तो कास और क्षयरोग नष्ट होता है, मंडूर के साथ देने से पांडुरोग तथा पांडु और विषज्वर दूर होता है, भैंसागूगल के साथ कोढ़ को हरता है, पेठापाक के साथ खाने से वृद्ध भी तरुण होता है, हे पार्वती! यह दरिद्रता और अनेक प्रकार के रोगों को नाश करता है॥२१५–२२१॥

हरितालसत्त्व से पारद का तलस्थाई करना

हरिताल से अर्द्ध एरंडबीज मज्जा पाकर खरल करे सत्त्वपातन करना फिर सिरके से खरल करके सत्वपातन करना फिर क्वार गंधदल में खरल करके सत्त्वपातन करना। फिर मधु से खरल करके पारदसत्त्व पाकर खरल करके सप्तबार अष्टप्रहर अग्नि देनी, अधस्थाई सत्त्व हो जायेगा।

पारदसत्त्व

पारद समभाग, काली काही खड़िया मिट्टी, धूम सार इन तीनों में खरल करना। एक एक प्रहर खरल करना। एक में पहर खरल करके दूसरी पानी। फिर पहर खरल करके तीसरी पानी, फिर पहर खरल करके डमरूयंत्र में ऊर्ध्व सत्त्व पातन करना। इस पारदसत्त्व को हरितालसत्त्व में पाना। हरिताल सत्त्व से तुर्यांश पारदसत्त्व पाकर मधु से खरल करना। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

हरितालसत्त्व और रसकपूर को अग्निस्थाई करने की क्रिया

हरिताल से अर्द्ध एरंडबीज मज्जा पाकर खरल करके सत्त्वपातन करना फिर सिरके से खरल करके सत्त्वपातन करना। फिर कारगंदल में खरल करके सत्त्वपातन करना। बार चार फिर मधु से खरल करके सत्त्वपातन करना। फिर पारदसत्त्व पाकर खरल करके सप्तमबार अष्ट प्रहर अग्नि देनी। अधस्थाई सत्त्व हो जायेगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

हरगौरीरस विधि
(पारदरस–गंधक हरतालयोग मूर्छित ३ शीशी)

पारो शुद्ध पांच पल लेय । पांचो सत हरतारहि देय ॥
पांचो गन्धक आँवलासार । एकतकै जु खर में डार ॥
खररि ग्वारि रस सीसी भरै। बारह पहर बालुका धरै ॥
शीतल कै उतारि सो लेइ । ऐसी सीसी सात करेइ ॥
हरगौरी रस जानो येह । इतने रोग जाइँ सो देह ॥
आमवात अरु कम्मर खाय। रकत विकार एकौ न रहाय ॥
अशी रोग भाजे बल होय । जो यह विधि कै जाने कोय ॥
सोध्यो पारौ गन्धक शुद्धिं । यहै जानि जो याकी बुद्धि ॥
(रसरत्नाकर, रससागर बड़ा)

श्रीवल्लभरस (पारद गन्धक हरताल से सिद्ध रस मूर्छित) सूक्ष्म जलयंत्रदीपकाग्नि

तबकसो हरतार हि बीन । पारौ गंधक समकै तीनि ॥
चारचो चारि टंक सो लेय । सूकी कजरी बांटि करेय ॥
कांसे की थारी में करै । ऊपर उलटी बेली धरै ॥
दृढ़ ताहि मैन की मुद्रा करै । ता थारी ताते भरै ॥
दृढ़ बाती कपरा की करै । तेल चारि पल दीपक भरै ॥
थारी चूल्हे दे चढ़ाइ ॥ तातनु दीपक धरिये आइ ॥
जिह ठा थारी औषधि भरी । दीया ज्योति तिही ठां करी ॥
आंच धरी द्वै कीजे लोइ । इतने मांझ महासिधि होइ ॥
जो यह लेय होय ता भाग । आध रतीसों बेधे नाग ॥
कीना चढ़ चांदी है जाई । तौ थंभन के कीजै खाई ॥
याको श्रीवल्लभ रस जानि । रसरतनाकर कही बखानि ॥
आन प्रीति कवि देखी ताह । भाखी सो ग्रंथनि की छांह ॥
(रससागर, रससागर बड़ा)

कुनटीरस (पारद रस मनसिल हरतालयोगमूर्छित ३ शीशी)

मनसिल पारौ अरु हरतार । एक एक पल तीन्यों भार ॥
बांटि निचोर धतूरे पात । खरलै तीन द्यौस अरु राति ॥
सीसी घालि वालुका धरै । अगिनि पहर बारहकी करै ॥
सीसी सीसी तीनि चढ़ाय । तब मानस या रस को खाय ॥
रस कुनटी यह जानों लोइ । खंडितते अतिनीको होइ ॥
न्हायेते वंध्या जन खाय । बालक होइ दोष मिटि जाय ॥
(रससागर, बड़ा रससागर)

निषिद्ध भी सोमलयुक्त पारदक्रिया का कथन

है निषिद्ध तोहू कहत शिष्य बोध के अर्थ ।
सोमल जुत पारद क्रिया जानों बुद्धि समर्थ ॥
सोध्यो पारद पंच भरता सम सोमल जान ।
नवसार को लीजिये पैसा एक प्रमाण ॥

आठ पहर इन सबन को अर्क दूध खरलाय ।
रवि की धूप सूखाय के डमरूजन्त्र धराय ॥
दोय पहर की आंच दै पारा लेय उड़ाय ।
फिर पारा को जतन सों भिषजन ले तुलवाय ॥
तोलामांहि पारा कढ़ै, तासो दूनो लेय ।
देती बीज छिलाइ के सोधे तामें देय ॥
दंती के रस पर लिये दिना सात परमान ।
आंच देय डमरूविध धरि द्वै पहर सुजान ॥
पारा उड़ि ऊरध लगे ताहि लेइ निकराय ।
तामें पैसा दोय भरि सोमल देइ मिलाय ॥
नवसादर पैसा भरयो ताही में दे डारि ।
सूखे ही फिर घोटिये, दोय पहर निरधारि ॥
छोटी सी सीसी विषैं फिर सब ही भरि लेइ ।
नवसादर को पीसि के, सीसी मुख मूंदेइ ॥
जन्त्र बालुकामांहि पुनि सीसी को धरवाय ।
हांडी के पेंदे विषै, छेदन कबहुँ कराय ॥
हांडी में बालू भरै अंगुर चार प्रमान ।
बारू पै सीसी धरै विधिसों वै सुजान ॥
फिरि बारू भरि दीजिये, हांडी मुखपरयंत ।
चूल्हे पै धरि अगिनि दे सोरह पहर निचंत ॥
आपहि सीतल होय जब सीसी फोर निकार ।
सोमल जुत पारद क्रिया याविधि करै तैयार ॥
एकरतीकी मात्रा क्षुधा अधिक करि देत ।
रुग उपदंश फिरंग को निहँचैही हरि लेत ।
मेटै रक्त विकार को शोथ करै सब गात ।
लोचन में बहु भांति के करै रोग उत्पात ॥
फूटिजात है देह सब झोला मारी जात ।
नसफूलै जब कंठ की तब जलपान रुकात ॥
सोमल को सेवन किये इतने होत विकार ।
याते सदभिषजन नहीं याको करत प्रचार ॥
बहुधा गुजराती भिषक् गुलसुचमत्कृत जान ।
पारदजुत सोमल भसम, राखत निकट निदान ॥
संमलहू राखत नहीं सद भिषजन के गोत ।
कुबुध भिषक के वास्ते यासम और न होत ॥
(वैद्यादर्श)

सुधानिधिरस–(पारदरस गंधकयोग मूर्छित वा भस्म वा बद्ध)

भौंआमिली कुकरदौ आनि । एकतके रस लीजै छानि ॥
सूत पंच पल खपरा धरै । बीस पहर ज्यों चोवा करै ॥
ता पाछे जु खरल में देइ । वाही रससों खरल करै ॥
गंधक माहिं देय पल एक , द्वै दिन खरलै यहै विवेक ॥
आगि पहर बारह की कही । जंत्र वालुका जानो सही ॥
सीतल कै उतारिजै ताहि । रस जु सुधानिधि जानों याहि ॥
खाये ते कांती अति होय । बल बीरज हि बढ़ावै सोय ॥
और बहुत गुन करै अपार । जे दुर्लभ सब ही संसार ॥
(रससागर बड़ा, रससागर)

रजतकरयोग–(चांदीयोग से पारद की तलभस्म वेधक)

पारा कायम १ तोला, रूपरस १ तोला, रसकपूर १ तोला, तीनों का काकमांची के रस में खरल करना फिर शीशी विच पाके बालुकायंत्र में ४ प्रहर आग देनी फिर ऊर्ध्व लग्न अधस्थलग्न दोनों को फिर खरल करना फिर अग्नि देनी एवं बारबार करना। जब तलस्थ हो जावे, उसको बंग पर सुटणा रजत कर योग है। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

हरिताल चांदीयोग से पारद की तलभस्म (वेधक)

हरिताल यथेष्ट लेकर एरंडतैलसे खरल करना, ४ प्रहर फिर शीशे में पाकर ६ प्रहर आग देनी। ऊर्ध्वपातन हो जायेगा। ऊर्ध्वलग्न को लेकर ऊर्ध्वलग्न सत्त्व जेकर दश तोले होवे तो उसमें ५ तोले पारद पाणा और १ तोला रजत पाणा, ऐसे १६ तोले को खरल करना, पूर्वोक्त नवसादर१ तैल में फिर द्वितीय शीशे में ऊर्ध्वपातन करना फिर ऊर्ध्वलग्न और अधस्थ दोनों लेकर खरल करना फिर पातन एवं बार बार जब सब तलस्थ हो जावे तब सिद्धि भया ताम्र पर योजन करना। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

मधूरस–सीमाव की तलभस्म, संखिया, मंसिल सोनाभक्खी और सेंजफ के हमराह (उर्दू)

सिन्दूरस–सीमाव को खिश्त नीम पुख्त: (ईंट अधप की) में खरल करके धोए, बादहू नमक के साथ बादहू राई में सहक करके धोए, बादहू बजरिये तसईद व तखलीके के जहर और अयूब से पाक करें बाद उसके नामुवाफिक केचली को दूर करे। बादहू मुखकरन खुर्द व कलांकरे बाहू पक्षाघात करे, बादहू शीरा चौलाई और शीराबेख यानी भंग और शीरा लहसन और शीरा चौलाई और शीराबेख यानी भंग और शीरा लहसन और शीरा कौवाई स्याह जिसको हिंदी में गीदड़दाख कहते हैं और शीरावर्ग धतूरा स्याह और नमक संग और शीरा घीग्वार में अलहदा अलहदा एक एक पुट आफ्ताबी दे यानी दो पहर दिन तक धूप में खरल करे। खुश्क करे बादहू तीन दिन तक दवाएँ मसहूक: को खुश्क करले, सूखने के बाद..उसको बारीक कर डाले जिसमें लोदह में सीमाव जमा न रहे। उसके बाद सीमख्व से दुचन्द अंगूज: यानी भंग को शीरा घीग्वार के हमराह पीसकर ऊपर डाले प्याले या हांडी में लेप करे और नीचेवाले प्याले या हांडी में पहले थोड़ी राख छनी हुई बिछाकर उसके ऊपर नमक पिसा हुआ फर्श करके सीमाव मजकूर को रख दे और हींग लगे हुए जर्फ को ऊपर से ओंधा ढ़ांक दे और जोड़ को मजबूत बंद करके गिले हिकमत करने और सुखलाकर चूल्हे पर इस तरह रखे कि नीचे के जर्फ का पेंदा चूल्हे के अन्दर आ जावे। बादहू उसके नीचे सुबह से शाम तक औसत दर्जे की आंच करैं जिसमें सीमाव मसअद होए यानी नीचे से उड़कर अतराफजर्फ और सरपोश में चम्पी हो जावे। बाद उसके शीरा केवाइस्याह में और शीरावेख मुश्कक में जो वेजकाहमर्क और दूब की होती है और शीरा हंसपगी तीन दिन तक बतौर पुटआफ्तावी के खरल करके गरम पानी या कांजी से धोकर निकाल ले तब दो ईंटे लेकर उनको इस तरह पर घिसे कि लब से लव मिलकर हमवार हो जावें और नीचेवाली ईंट में ओखलीनुमा गड्ढा कर दे और सीमाव को ऊपर के नीचे गंधक मुसफ्फा से पोशीदः करके ओखली मजकूर में भरकर दूसरी ईंट ले बंद करके लवबलव कर दे और जोड़ के ऊपर मजूबत गिलेहिकमत कर दे, इस तरह कि धुआं उससे बाहर न निकल सके और ऊपरवाली ईंट पर चार तह कपड़ा भिगोकर रख दे और खिश्तजेरीन के नीचे पाव भर उपला जंगली की कर्सी की आग दे, जब ईंट ठंडी हो जावे, ईंटो को खोले और दुबारा सीमाव से दूनी गंधकमुसफ्फा ऊपर नीचे सीमाव के बदस्तूर रखे और गिले हिकमत करके सुखाकर दुचन्द कर्सी उपला जंगली की यानी आध सेर की आग दे, बार सोम सहचन्द गंधक मुसफ्फा सीमाव के ऊपर नीचे रखकर तीन पाव कर्सी की आग दे। मगर सीमाव बदस्तूर वही रहे और छः गुनी गंधक उसमें मिल जावें इस अमल को जोगी खटगुन गंधक जारन कहते हैं। इससे सीमाव

१–नवसादर तैलक्रिया इसी पत्रवाली लिखी गई है और नौसादर तैल प्रकरण में रखी गई है।

२–इसी नुसखे मुतअद्दित गलतियां ं इस किस्म की हैं जिनसे किताब बनानेवाली की कम लियाकत जाहर होती है, मस्लन, पक्षाघात के बाद उड़ना नामुमकिन है, गंधक जारण का तरीका बिलकुल गलत है)

सिंग्रफ रंग का सुर्ख हो जाता है अब इस सीमाव सिंग्रफी को फिर शीरा घीग्वार में एक दिन एक फुट आल्फाबी खरल करके उसके बाद सम्मुलफार सोनामक्खी शिंग्रफ रूमी, मेनसिल चारों मुसफ्फा और सीमाव के वजन से बकदर निस्फ के हो, लेकर शीरा, किवाई स्याह में एक दिन एक पुट आफ्ताबी मुताबिक काइ दे, मुहीना से सहक करे उसके बाद अच्छी तरह सुखला कर शीशा आतिशी में भरकर मुहर करके गिले हिकमत मजबूत करे, बादहू बजरिये बालूजंतर के जिसको बालुका जंतर भी कहते हैं, बत्तीस पहर तक नरम व गरम आंच दे, यानी सोलह पहर तक दीपक अग्नि जिसको दीयाबाती अग्नि कहते हैं और सोलह पहर भात अग्नि की तरह चार लकड़ी की आंच करे, जब आग देने से फरागत हो जाए, एक हफ्तः तक उसी जगह ठंडी होने दे, उसके बाद निकाल ले और फिर शीरा कटाई खुर्द में ऊंट कटारा की जड़ के दिस्ते से तीन रोज तक तीन पुट आफ्ताबी दे लेकिन चारों पाघर मजकूर अजसरं नौजदीद मिलाकर तब खरल करे और बदस्तूर साबिक शीशः आतिशी में रख कर सर व मुहर करके बत्तीस पहर उसी तरह नरम और गरम आग दे। सर्द होने के बाद बार सोम फिर पाखरहाइ यानी संखिया सोनामक्खी यानी शिंजर्फरूमी मेनसिल बवजन मिलाकर शीरा ऊंटकटारा से तीन दिन तक मामूलन खरल करके शीशे में रख गिले हिकमत और मुहर करे बालूजंत्र में रखे और तीस पहर आग दे, इन्शा अल्लाहतला इस मर्तबः तहनशीन हो जावेगा। बाद उसके दूजः लेकर एक तोला कलई या मिस पर तरह करे तो नुकरः हो जाइ इस अकसीर को एक चाँवल के बराबर दो से र हलवा में मिलाकर तीन चार आदमी खाते हैं, खवास अगर इसके तहरीर हो तो कलाम तवील हो जायेगा। खाने के बाद खुद ही मालूम हो सकता है, मुख्तसिर यह है कि तमाम अमराज वादी और खूनी मसलन बवासीर, वझूला व रअशा व फागिल व सरै व सकता व खारिश व दाद व बाद फरंग व जाजम व बुर्स व छीप स्तसफार व तपेदिल वसिल व हर किस्म के तपेकुहनः व मुजम्मनः वगैरः दफे हो जावेंगे। अगर तीन रोज खावेगा तो एक हफ्ते में कायाकल्प हो जावेगा। उम्र ज्यादः होगी, रोशनी चश्म और ज्यादती शहवत होगी और इश्तहागालिव होगी और गर्मी और कुव्वत वदन हद से जायद होगी इन्शा अल्लाहतला (सफा २९८ किताब अलकीमियां)

नुसखा सिद्धरस । सीमाव पर अबर का असर डाल गंधकमुसफ्फा हरतालं कायम व नौसादर मुसफ्फा के हमराह तलभस्म (फार्सी)

सीमावरां अजां खासियतवख्श दानन्द कि हरतरक्की कि अज खुर्दन सीमाव दरवदन हासिल आयदजुद तनज्जूल नकुदन ख्वाहइश्तहा ख्वाह कुव्वत व अगरजूद बरतरफ गर्दद पस आसार मसालः ओ ख्वाहद बूद अस्लवाइद कि सीमाव व कमाल रसद व अगर वकिये व कमाल नरसीद बाशद य आंसीमाव नबायद खुर्द व बास्तैमाल सीमावे कि बाद अजखुर्दन ओहेच खासियत जाहर न गर्दद चुनांचः खुश्की गुलू व खारिशे दस्तहा व कमी इश्तहा सिवाय अर्जी दीगर मुलतक तासीर जाहर न गर्दद न गर्मी बन इश्तहा पसविदानन्द कि हेच मसाला विर्दी नमादः बह में सोख्तः शुद्धः अस्त तासीर नमेबख्शद व सीमाव कि औलाअस्तगुफ्तः ख्वाहद शुद कि वआं सिफात में शवद बहव में कारहाम्त आयदा आँनस्तविदांकि रतूवत सीमाव व एतराकरा कि बासिल साजद गुगर्द अस्त यानी अलख ।

गुगर्द आंवलासार मुसफ्फा बजरनेख कायम

तस्फिया, गंधक, बिसानीद, चहुल, बनह जोहरे रोहूदादः दो नीम आसार गंधकराहमी तौर हर कदर ज्यादः बाशद ज्यादः कुनन्द बादहू सह कदर आफ्ताव कुनन्द बदर चमचः नुकरः कुदाज दिहन्द ब विस्तु यककुर्त दर शारहे लहसन अन्दाजद दरजोश हफ्तम शीरा ताजा कुनद बादहू विस्तुयक कुर्त दरशीरए लहसन अन्दाजद दरजोश हफ्तम शीरः ताजा कुनद बाद विस्तुयककुर्त द रशीरः घीग्वार अन्दाजद बशिस्तव ६४ चहार पुट सहककर्दः अजशीरः अगिया दिहन्द व विस्तपुट अजशीरः जकूमई हरदोमुरत्तिव गर्दद व सफेद रंग बुवदतस्फिया ब तदवीर कायम जरनेख बवादहू वियारद जरतेनेक व यकहफ्तः दर आबचूना सदफी व यक हफ्तः दरआबसाजी डोलजन्तर कुनद व यकहफ्तः दररोगन कुंजद बादहू शीरआक सहककुनद व अगर यक पाव हरताल बाशद यकसेर ब यकपाव नमक हमींतरीक हर चाहर नमक अव्वल नमक चरचरः बाहू नमक पलास न नमक उर्द सहनमक बन्दाल जर्दय कजाकर्दः कर्स हरताल दरदेग गिली निहन्द हर चहार नमक यगान यगान व बर्ग आक जेरुबाला दादह विनिहद व वालाए आँ हर चहार नमक मजकूर दादः अम्मादेग हमूकदर बाशद कि पुरन शवद वसर पोशीदः दरगिले गेरू दशाजदह मास आतिश दिहद तहनशीन ख्वाहद शुद फर्स हमचू नुकरः बाद शिकनान तदबीर गलीजकर्दन सीमाव वा अभरक बादहू वियारद अभ्रक सफेद दहनाव सफेद साजद बुआं दह नाव व सीमाव तुरवपुख्त यकजा करदः सहक कुनद बदर डौरू जन्तर आतिश दिहद सीमाव परदिः बाला गीरद व कलस अभ्रक पाईमाद हमीं तरीक हफ्त अमल कुनद सीमाव गलीज गर्दद व दरवजन दहदवाजदह गर्दद अज अव्वल कि जौहर तलक कि दाखिल शुदः बाशद गरानी आं मालूम गर्दद अम्मा अगर सीमाव दह पांज दह तलकदहद ज्यादः गरां कुनद अजहमे औला बुवद यानी अगर सीमाव यकसर बाशद सफेद तलक यकव नहमसेर दरहसर अमल बादहू आँसीमावरा वां गूगर्दमामूल सहक कुनद हर दो बराबर अव्वल वा अर्कगूमा व बादहू वा अर्कवदनः व वाजअर्क रामबल व अर्कधतूरः स्याह यह हर किस्म कि बाशद हफ्तहफ्त पुट दिहद दर आफ्ताब सहक कर्दः हमूकदर कि सीमाव अस्त आं हरताल मामूल वा नौसादर मुसफ्फा व रोगन तुख्म धतूरा अन्दाख्तः यकहफ्तः सहक कुनद व दरबोतः मुअम्मा कि अज चरक आहन बतलक सफेद व लोह चून व गिल वा वती मार अन्दाख्तः व मैदा खिश्त अन्दाख्तः वा सफेदी बैजः खमीर साख्तः बाशद बोतः साजद अ दरां अन्दाख्तः दर गज पुट वा बशकल वकरीनीम मन अन्दाख्तः जरुवाला आतिशहिदह बादहू कि सर्द शवद बर आवुर्दः वाशीरः अरन्ड सुर्ख यकहफ्तः सहक कुनद बादहू दरशीशः गिलेहिकमत करदः चहार बास आतिश नर्म दिहद लेकिन हमूकदर कि दर आतिश दादन दर अव्वल ताकीद कर्दः बूदन्द हमूकदर दरसर्दकर्दन ताकीद कुनद व इल्लाअमल कि बूदः बाशदजाले गर्दद व बाज यक हफ्तः सहककर्दः दरशीरा बेख नीम कि चकौनीद गिरफ्तः बाशद बाजदर शीशः अन्दाख्तः यकरोज व यकशव आतिशदिहद अन्दक तेज बादहू यकहफ्तः बाशीरः रंच कुनद सहक व शांजदह पास पास आतिश दहद व बाजदरशीरः पलास यक हफ्तः सहक कुनद सीवदो पास आतिश दिहद बाज यक हफ्तः दरशीरः हंसपगीकलां कि विसियार वहममें रसद अम्मा खुदकर्म वहम में रसद व कलां आँ बाशद किबरवर्ग ओपशम बाशद व सुर्खः वशीरः ओ सुर्ख ववर्ग ओ वतर्ज पाइ वत मबाशद सहककर्दः दरदेग कवची जंतर करदः शस्तुचहार पास आतिश दहद बाद अजसर्द शुदन बरआरद वदरजर्फ दन्दानकवल व वा दरकाचः निगाहदारद व अगर नदर हेचजर्फ न मांद जानौंए शवद व रंगई सुख बाशद चूँ विसानीद जर्द बुवद व मौजहाजनद ईसीमाव रा वाजी कुंकुम रस गोयन्द व वाजे सिद्ध रस ई सीमावरा बाद अज इन्सराम रसीदन वदस्त बिगीरद व अगर विगीरद अन्दक चराखः बदस्त गिरफ्तन व खुर्दन यक खासियतदारद (अलख सुफहा ११ छोटी कितबियाकिताव जवाहर उलसिनात)

बेधरस एक किस्म का रससिन्दूर तलभस्म ७ शीशी (उर्दू)

स्लाह सीमाव का तरीका जिसके खाने से तमाम बीमारियां जाइल होकर वदन कवी होता है और बूढा जवान होता है।

वेधरस सीमाव जिसको शिंग्रफ से निकाला हो और दो रोज तक खिश्तनीमरख्तः में आवना रसीदः में खरल किया हो बादहू तीन रोज तक राई में सहक करके डौरू जंतर में तसईद किया हो तीन तोला ले और गंधक

मुसफ्फा जिसको इक्कीस बार गाय के दूध में स्तजाल किया हो स्तंजाल से मुराद धूम जंतर है जो इस तरह से अमल में लावे कि दूध सेर भर को हांडी में रख कर उसके मुँह को बारीक कपड़े से बाँधे और गंधक को करछः आहिनी से आग से पिघला कर कपड़े के ऊपर डाले जिसमें गंधक छनकर दूध में गिरे इसी तरह इक्कीस बार छान लिया हो ख्वाह गंधक को बारीक करके कपड़े के ऊपर फैला दे और हांडी के किनारे गंधक के चारों तरफ मिट्टी या आटे की दीवार की तरह गोल हलका बांध कर लोहे का तवा उस पर रख दे और कोयल की आग तवे के ऊपर रख दे जिसमें गंधक मजकूर गुदाज होकर दूध में गिरे इक्कीस बार अम्मल करे तीन तोला ले सुमस्याह जिसको जहर तेलिया भी कहते हैं तीन तोला तीनों अजजाइ को जौहरः ताऊसम खरल केके तीन रोज तक धूप में रखें अगर मोर के पित्ते हाथ न लगें तो मुर्ग के पित्ते में खरल करे लेकिन मोरके पित्ते सबसे आला है बाद तीन रोज के शीरा बेख ककोहर में जिसको हिन्दी में खिकसा कहते हैं चार पहर तक खरल करे बादहू शीरा वर्ग तंबूल सबज में चार पहर तक सहक करे बाद उसके खुश्क करके शीशी आतिशी में रख कर गिले हिकमत करके हांडी में रेग भरकर उसके दरमियान में बतौर बालूजंतर के रखे और बारह पहर तक इस तरीके से नरम व गरम आग दे कि चार पहर दिन को दीपक अग्नि बादहू चार प्रहर आग को भातअगिन फिर दूसरे दिन चार पहर तक गोश्त अगिन की तरह आग दे जब खुद वखुद सर्द हो जावे उतार ले कुछ दवा तो शीशे में तहनशीन हो जायगी और कुछ उड़कर शीशे के गले में चस्पां मिलेगी बादहू कुलदवा को इकट्ठा करके गंधक मुसफ्फा और जहर स्याह पहले वजन से निस्फ यानी डेढ़ डेढ तोला चार रोज तक शीरः अनारतुर्श में पुट आफ्ताबी दे यानी दो पहर दिन तक खरल और दोपहर से शाम तक खुश्क किया करे इस्तरह के चार पुट हुये फिर बतरीक मजकूरः वाला शीशः गिलेहिकमतशुदः में रख कर बालूजंत्र में धरे और बारह पहर तक बदस्तूर नरम व गरम आंच दे इस तरकीव को तीन बार करे यानी हर बार गंधक मुसफ्फा और जहर स्याह डेढ डेढ तोला जदीद दाखिल करके शीरः अनार तुर्श में चार पुट आफ्ताबी देकर बारह पहर तक नरम व गरम आंच दिया करे कुल चार शीशः हुए बादहू गंधक मुसफ्फा हमवजन सीमाव के और सुमस्याह चहारम हिस्सा यानी ९ माशे डालकर एक रोज अर्क जोहरा कटाई खुर्द में दो पहर दिन तक सहक करके दो पहर से शाम तक धूप में रखे इसी तरह एक दिन शीरा घीग्वार में फुट आफ्तावी देकर बालूजंतर में बदस्तूर रख कर बारह पहर तक बदस्तूर आंच दे इस अमल को मुकर्रर करे यानी दोनों बूटियों के शीरे में बदस्तूर पुट आफ्ताबी देकर बारह प्रहर तक आंच बालूजंतर में दे कुल छः शीशे हुए सातवें शीशे में इस्तरह अमल करे कि आक के दूध में दवा को मुसल्सिल दो दिन बदस्तूर खरल करके सुखा दे इस मर्तबः गंधक और सुमस्याह न मिले और खुश्क होने के बाद शीशः में रखे और गिले हिकमत करके धालूजंत्र में रख कर बारह पहर तक बतरीक मामूल व मजकूरः आग दे सातवी शीशी में पारा तहनशीन हो जायगा अगर कुल तहनीशीन हो जाए तो फिर आंच देने की जरूरत नहीं है अगर कुछ तसईद हुआ हो तो दवाई जैल में मिलाकर एक रत्ती का चौथाई खावे और अगर तहनशीन हुआ हो तो एक हिस्सा को दो हिस्सा करके खावे बदर बदरकः जिसमें गोली बनाकर खाई जाती है हस्वजैल है। जाफरान लोगं, अकरकरा, खासियत यह है कि जितना चाहे खाना खावे हजम होकर जररु वदन हो जायगा और भूख में खाने से अगर खाना भी न खावेगा तो भी सेरी रहेगी और इस कदर कुव्वतरबाह गालिब होगी और इतना इमसाक पैदा होगा कि दस औरतों से भी आसूदगी न होगी और गर्मी के जमाने में खून की और सर्दी के मौसम में गरमी मालूम होगी इस सीमाव में असर यह है कि जब तक एक लहमा खाना न खा ले भूख मालूम नहीं होती अगर एक हफ्ते तक खावे तो दो साल तक यही कैफियत रहती है और अगर छः महीने तक खावे तो कायाकल्प असर नौ कुव्वत सीमाव की ऊद करे और हमेशह कुव्वत हेजदहसाल की रहे समस्या ही तफसीर में भी इख्तलाफ है वाजे किताबों में समस्याह लिखा है और वाजे में जहर तेलिया लेकिन सही जहर लिया है। अगर्चः सखिया स्याह लिया जावे तो भी नुकस नहीं है लेकिन जहर तेलिया इसमें आला है याद रखना चाहिये कि बगैर मुदब्बिर करने के उसको हरगिज न डाले वरनः मुजर्रत का एतमाल है समस्या के मुदब्बिर करने की तरकीब जहर की गिरहें लेकर एक दिन रात गाय के पेशाब में तर करे और निकालकर काम में लावे नौआदीगर जहर पीस तेलिया को पोटली में बांधकर हांडी के अन्दर जिस्में पानी हो इस तरह लटका दे कि पेंदी से लगने न पावे और आधे घंटे तक पकावे ख्वाह दूध में जोश देकर काम में लावें।

(सुफ़हा २९४ किताब अलकीमियां)

तरकीब कुश्ता सीमाब

(अव्वल सीमाव को कायमुल्नार किया है बादहू सात बार गंधक शीशी में जारन कर तल भस्म बनाते हैं)

कुचला दो सेर लेकर पच्चीस सेर सादा पानी में डालकर किसी कढाई में दे गदान पर रखें और नीचे आंच रोशनकरे जब आठ सेर पानी बाकी रह जाय तब उतार ले पानी आठ सेर को अहतियात से रखें कुचला मामूली को कूट पीसकर बारीक करे और उसके हमराह सज्जी पाव सेर पुख्तः शोरा व कलई पावसेर पुख्तः नौसादर आध पाव पीसकर हरशः शामिल करे लें बादहू उस तमाम एक जातशुदः के तेतीस हिस्सा करके रख छोड़े एक हिस्सा कढाई के वेरू हिस्से के नीचली जगह पर जो आंच की तरफ है जमाद कर दे दरमियान कढाई के १ तोला सीमाव और नीचे ऊपर, दाल चिकना एक तोला रस कपूर एक तोला, समुलफार सफेद १ तोला कूट पीसकर बिछा दे आठ सेर पानी कुचले में से एक पाव पानी कढाई में डाल दें और नीचे आग जलाकर पानी खुश्क करे जब पानी खुश्क हो जाय एक एक पाव भर दूध मादः गाव उसी वक्त कढाई में डालकर और आंच जलानी शुरू करें जब दूध खुश्क हो जाये कढाई को देगदान से नीचे उतार कर दूसरे हिस्सा का कढाई के नीचे जमाद कर और दर्मियानसे सीमाव जिस कदर बरामद हो निकाल ले दुवारा वदस्तूर साविक सम्मुल फार सफेद एक तोला, दारचिकना एक तोला, रस कूपर १ तोला ताजा लेकर खूब बारीक पीस कर सीमाव बरामद शुदः के जेरुवाला कढाई में रख कर पाव सेर पानी कुचला दरमियान डाल कर नीचे आंच जलानी शुरू करें जब तमाम पानी जज्ब हो जावे फिर पावभर शीर मादह गाव कढाई में डाल कर खुश्क करें बादहू कढाई को आंच से अलहदा करके दरमियान से सीमाव निकाल लें हरद फैके अमल से सीमाव ज्यादती पर बरामद होगा हर बार कुचला व लोटा सज्जी वगैरः का जमाद कढाई के नीचे करते जायें और सम्मुलफार, दारचिकना, रस कपूर एक एक तोला ताजा लेकर सीमाव बरामद शुदः के जेरुवाला देकर पाव भर आबकुचला खुश्क होने के बाद पाव भर शीर मादः गाव जज्ब करते चले जावे यहां तक तीसवीं दफै तीस हिस्से जमाद के तमाम हो जावें हर दफै पाव भर के हिसाब से आब कुचला जो आठ सेर था सर्फ हो जावेगा और आठ सेर ही दूध खर्च होगा। संमुल फार सफेद ३२ तोला, दार चिकना ३२ तोला, रस कपूर ३२ तोला यह कुल ९५ तोले का खर्च है और तीसवीं दफै की पकावट के बाद करीबन २५ तोले के निकलेगा यह सीमाव मजकूर

दफै की पकावट के बाद करीबन २५ तोले के निकलेगा यह सीमाव
मुतहर्रिक कायमुल्नार कहलाता है सीमाव मुतहर्रिक कायमुल्नार मजकूर पांच तोले को तीन रोज तक राई के अर्क में खरल करे और एक रोज वसाह (अटसट) बूटी के अर्क में खरल करे बादहू एक रोज गोमा बूटी के पानी में बचा रह दे फिर एक दिन कुँवार गंदल का चोया देवे अजांबाद नमक आंवलासार को चालीस गोता अर्क प्याज में देकर साफ कर ले हम वजन सीमाव मामूला गंधक साफ शुदः को वाहमी मिलाकर कजली करे पिर एक रोज तक अर्क कुँवार में खूब खरल कर किसी शीशी आतिशी में डाल कर और मुहर सुलैमानी करके बारह पहर बालूजंतर की आंच दे बाद सर्द होने के निकाल कर बदस्तूर कुँवार में एक दिन खरल कर दूसरी शीशी में

बतरीक मजकूर अव्वल सोल्हा पहर आंच दे अलहाजुल कयास इसी तरह सात आंच तक दे और हर आंच यकेबाद दीगरे चार पहर ज्यादः करते जाएँ यहां तक कि सातवीं आंच छत्तीस पहर की हो हर दफै सीमाव के हमवजन गंधक शामिल करके जो अर्क प्याज में साफ की गई है अर्क क्वाँर में खरल करने के बाद आंच देनी चाहिये इस कुश्ते का रंग सुर्ख होगा खूराक एक सुर्ख का चहारम हिस्सा दो हफ्ते के स्तैमाल से ताजीस्त कुव्वत कम न होगी एक रात में हमेशह अगर सात औरतों से जमाइ किया जावे ताकत वदस्तूर कायम रहती है मुगल्लिजमनी होने में बेनजी रहै इमसाक की हद्द नहीं रहती दौरान अमल दवाई परहेज जायदज जरूरी है अगर बराबर लगातार इस कुश्ते को दो माह तक खाया जावे वशरते कि इस अर्से में और जसे महामत मुकी जावे तो उसके पेशाव में सीमाव कायमुल्नार होता है और उस सीमाव को ख्वाह किसी तरकीव से नमक कायम के साथ नौसादर के तेल में तसकिया और तमश्विया देने से खासियत अकसीर की उसमें पैदा हो जाती है, यह नुसखा साधू वृजागर सन्यासी ने जो मेरे दोस्त हैं इसरार अलकीमियां में दर्ज कराने के लिये मुझे इनायत फर्माया है जो हदियः नाजरीन है। (सुफहा २२ किताव इसरार अलकीमियां)

पारद का मूर्च्छितरूप भस्मकरणार्थ रससिंदूरादि विधिकथन (भाषा)

दोहा–

पारा लीजै आठ पल, भलौ बुभुक्षित शुद्ध ।
शुद्ध आंवरासार ले, इतनो गंधक शुद्ध ॥
गंधक पारा एक दिन, सूखे ही खरलाय ।
गंगक्रिया गोमा जु रस, पुनि द्वै दिन घुटवाय ॥
दोऊ रस को एक करि, सकै जों त्यों त्यों डार ।
ऐसे द्वै दिन घोटिके, सीसी भरे सम्हार ॥
पहले वा सीसी विषे द्वै कपरौटी देय ॥
तव सीसीकों घामके, विषे निपुन धरिदेय ॥
सीसी वह सूकै, जवै, हांडी में धरवाय ।
हांडी के पेदें विषे, छेद जु करै वनाय ॥
छेद वहै चौंडो निपुन, रुपया बरोबर होय ।
तापे लम्बी ठीकरी, घिसिके धरि गुनलेई ॥
ठिकराके दोऊ तरफ, छेद संधि रहिजाय ।
तापर माटी सानिकै, मैंडजु करैं बनाय ॥
तापर सीसी राखिकै, बारूरेत निकसाय ।
हांडी चूल्हे पै धरै, नीचे अगिनवराय ॥
द्वै लकडी की दीजिये, आठ पहर लगवाय ॥
चार पहर धीमी करै, तेज पहर करि चार ।
स्वांगसीत होवे जवै, तब यह लेय उतार ॥
वह सीसीको फोर के, चांदी ले निकसाइ ।
राख लगी चांदी विषे, ताकों दूर कराय ॥
फिर चांदी वह लेइकै, खरल मांहि घुटवाय ।
गंगक्रिया गोमा दुहूं, इनके रस डरवाय ॥
एक दिनालग घोटि, ये दोनों रस डार ।
फिर शीशी सूकै जवै, पूरव विधि निरधार ॥
पहली जो सीसी भरै, वाही जन्त्र धराय ।
वैसे ही बाक भरै, वैसे आंच लगाय ॥
चारि पहर लों दीजिये, द्वै लकरीकी आंच ।
तालों गन्धक सब जरै, चांदी निकसै सांच ।
अब गन्धक के जरन की, कहत परीक्षा निकसै सांच ॥
अब गन्धक के जरन की, कहत परीक्षा सोइ ।
डेढ पहर बीते तबै, या विधि करिये जोइ ।
एक सींक को लेयके, शीशी भीतर डार ।
सींक जरी निकसै तबै, गन्धक जरचो विचार ।
गन्धकते लिपटी भई, सींक बहिर निकसाय ।
तब निहचै करि जानियो, गंधक जरयो न जाय ।
गंधक जरचो जो होय तो सीसी लेइ उतारि ।
गंधक जरचो न होयतो, ज्यों की त्यों निरधारि ।
जबलग गंधक छीन ह्वै, तब लग आंच लगाय ।
गन्धक छीन जु होय तव, सीसी ले उतराय ।
तब सीसी को फोरिके, चांदी लेइ निकार ।
राख कछू लगती रहै, ताकों छील विडार ॥
फिर चांदी को तोलिये, जो पूरी उतराय ।
गोमा गंगक्रिया दुहूँ, इनके रस घुटवाय ॥
इक दिन घोटि सुखायकें, सीसी में भरि लेय ।
वाही वालूजंत्रते, मंद आंच फिर देय ।
तातें पैसा दोय भर, गंधक जाइ जराइ ।
यह प्रमाण औरहू, कछुक देत समझाय ॥
गंधक पैसा भर जरै, पहर आँच कर तेज ।
धेला भर ही जरत है, पहर करे निस्तेज ॥
गंधक अधिकी जरत है, तेज आंचसों जान ।
गंधक थोरी ही जरै, मंद आंचते मान ॥
जब गंधक आधो जरै, सीसो लेइ उतार ।
सीसीको फिर फोरिके, चांदी लेइ निकार ॥
राख लगी चांदी विषै, ताहि दूरि करि देय ।
नीके खरल पिसाइके, वकनी सो करिलेय ॥

सोरठा

एक अधेला भार, फिर विषचूरन लीजिये ।
खरल करै निरधार, चूरन धर चांदीविषे ॥

दोहा

पारद चाँदी घोटिके, सीसी में भरि लेय ।
त्योंही वालूजंत्रमें, पूरव विधि धरदेय ॥

सोरठा

मंद तेज नहिं होय, चार पहर की आंच देइ ।
बाकी रहै न कोय, गंधक सब याते जरे ॥
सीसी लेइ उतार, स्वांग सीत ह्वै जाइ तब ।
पारद भस्म निकार, सीसीको फिर फोरके ॥
चांदी होइ निकोर, या विषके संजोग से ॥
चांदी को दे छोड़, गंधक की जो राख सब ।
फेर छुरीसों छील, रही सही जो राख है ।
करै कछू नहिं ढील, पुनि चांदी को तोलिये ॥
तो चन्द्रोदय सांच, जो चांदी पूरी कढै ।
पुनि दीपक दे आँच, जो चांदी बधती कढै ॥
चार पहर गुनरास, दीपक आंच लगाइये ।
उज्ज्वल चन्द्र प्रकास, तो चन्द्रोदय रस बने ॥

दोहा

गुरुप्रसादते होत है, यों पारद की भस्म ॥
चूकै तो कोरा रहे, हाथ न आवै भस्म ॥
यह चन्द्रोदय भस्म को, तोला भर तुलवाय ।
तोला भर ही लोंग दे, घरी चारि खरलाय ॥
द्वै रत्ती की मात्रा, खैबेको नित देय ।
तांबूल अनुपान से, रोग सबै हरिलेय ॥

याके खाये देह में, भूख तुरत बढिजाय ।
रोग अजीरन ना है, ताही सबै पलाय ।
कुष्ठवन्ध बहुमूत्रता, मूर्च्छा हिचकी लोय ।
कांति करै, बलको करै, कामदेह अतिहोय ॥
स्त्री प्रसूत सनिपातअरु, और वमन हरिलेय ॥
देही सीतल जो परे, ताहि गरम करि देय ॥
खांसी स्वास फिरंग रुग, अरु उपदंश विकार ।
अरुच रोग हू को हरै, ज्वर आठौं निरधार ॥
ज्वर आवे मिटजाइ फिर, अरुचि देह रहिजाय ।
यह असाध्य रुग अरुचि है, याते प्रान नशाय ।
सोहू याते मिटत है, ऐसो यहै अनूप ।
चन्द्रोदय रस नाम है, यातें रीझे भूप ॥
(वैद्यादर्श)

रससिन्दूर (गंधक हमवजन व नौसादर १/८० हिस्सा आग १२ पहर फारसी)

दरकुश्तन सीमाव साजद बियारन्द शीशः गर्दनदराज कि गर्दनश बारीक वे शिकमश फराख व आँगवगिले हिकमत उस्तवार कुनन्द व नीमसेर जीवक खालिश मुत्तहरकरद अजपर्चः गुजरानीदः वाबोलवसिरकातुंद अगर बहम नरसदप सनमें शवद व दररोगन जैतून व अगर व हम न रसद दर रोगन कनान कि आँरा अलसी गोयन्द हरबके अर्जा दोचन्द बर सीमाव बिरेजन्द कि चहार अंगुश्त बरवाला बरामद व वर आतिश नरम व मुलाइम जोशदिहन्द चूंक अन्दक तरावत नुमायंद सीमाव खुश्क गेरू व बवाजबोल रेजन्द वजोश दिहन्द बनौअ मजकूरः चुनीसह मर्तबः तकरार नुमायन्द व अरतेज फारिगशबंद अजपर्चः गुजरानीदः बानीमसेर करीत आसकरदः कुजुलशवद दरआँशीशः कुनन्द व नीमतोला नशासद पैकानी व आँखुमकरदः बवाज नाको साईदः दरशीश मजकूरकुनन्द व दहनशीशः रा पारः कागज व नमक व खाकस्तर मुहर स्तुवारकुनंद व खुश्क साजन्द बसदर देगकुनंद व अंदक यकता चहार अगुंश्त अज सरशीशः बिगुजरद व नवाए देग वादेगदाँ बरनियाइद बजेरदेग आतिश नर्म नर्म करदः आतिश तुआम न चूनां कुनंद तादवाजदः पास कियक लहजा शौला नमीरद चूं सर्द शवदबेरु आरंद व शीशः विशिकिश्तः जीवक कुश्ता विसितानंद अजी सीमावहुवः बरबर्गतंबूल बिखुरद व वर बालाइ आँदोवीरवर्ग बिखुरन्द व अजतुरशी परहेज नुमायंद हेच इल्लत गिर्द व ओनगर्दद व हुकुमा वा नवाए जीवक व हरजः मते वनोए मेदिहंद अम्माउश्र अजतहारव मालुमई नस्तवियारन्द कवावचनि व अकरकरा व मूसली स्याह व सफेद व भूफली व बसवासः व तुख्म उटंगन व तुख्मकोंच, करनफल, इलायचीदाना, व जाफरान, व मस्तंगी, व जौज बवा अज हर एक तोला कोफ्तः वेख्त व यक तोला सीमाव वियामीरंद व हमचंदाँ अस्ल खालिश बवजन दो माशः गिलोलः साजंद बहर सुवह निहारयके अजाँ बिखुरंद वक्त शाम अम्मादरसरेमा तनावुल शाम बादहाइ मुखालिफ विरवद व कुव्वतवाह ज्यादः गर्ददः व रंग सुर्ख शवद अगर पीरखुरंद जवाँन शवद बइश्तरहा गालिब आयन्द चन्दाँ कि खुराक दो सह आदम खुरद । (किताव जवाहर उलसिनात सुफहा ३२)

सीमाव मूर्च्छित गंधक से भूधर में (उर्दू)

सीमाव दो दोला, आँवलासार गंधक ३ तोला दोनों को बाहम खूब तरह खरल करे बादहू लुआब घीग्वार में दो दिन खरल करें फिर चमडे को सात तह करके पारे को पोटली की तरह बांधे और एक गढा खोदकर तीन अंगुश्त रेत उस पर बिछावे और पोटली रख देवे बादहू इस कदर और रेत डालकर दो दिन बराबर जंगली उपलों की आग जलाते रहें बवक्त सर्द होने के निकाल लें। (सुफहा ५८ किताब कुश्ताजातहजारी)

पारद चूर्ण बबूल फूल से

बबूल के अधखिले फूलों में पारा घोटने से फौरन कजली हो जाती है। (तजरुबा भाई साहबरता हनूमानप्रसाद)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्ल कृतायां रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायां पारदमूर्च्छितीकरणं नाम पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥३५॥

मूर्छितबद्धाध्यायः ३६

अवस्थाभेद से पारदसंज्ञा

दोषहीनो रसो ब्रह्मा मूर्च्छितस्तु जनार्दनः ॥ मारितो रुद्ररूपी स्याद्बद्धः साक्षात्सदाशिवः ॥१॥ (र० चि० ४, र० सा० २, र० क० २, र० सा० प० ३, र० र० १५७)

अर्थ–दोषरहित पारद ब्रह्मा का रूप है और मूर्च्छित पारद विष्णु का रूप है, भस्म किया हुआ पारा शिवरूप होता है तथा बद्ध हुआ पारा साक्षात् श्रीशिवरूप होता है॥१॥

पारद की मूर्च्छनादि तीन दशाओं का फल

शुद्धया विशुद्धोऽथ सुजीर्णगंधो बह्निप्रभः कांचनभुग्गदघ्नः ॥ वदन्ति चैनं त्रिविधं सुबद्धं संमूर्च्छितं चापि मृतं रसेन्द्रम् ॥२॥

(योगतरङ्गिणी ॥५४॥)

अर्थ–शोधन क्रिया से शुद्ध किया हुआ तथा गंधक जारण किया हुआ बुभुक्षित और सुवर्ण को खानेवाला पारद रोगों का नाशक होता है और इसी पारद को बद्ध, मूर्च्छित और मतभेद से तीन प्रकार का कहते हैं॥२॥

मूर्छादिदशाओं का फल

मूर्च्छां प्रपन्नो हरते च रोगान् बद्धस्तथा खेचरतां ददाति । मृतो मृतिं नाशयति प्रकर्षाज्जीयाद्रसेन्द्रोऽगणितप्रभावः ॥३॥
(योगतरङ्गिणी ५४)

अर्थ–मूर्च्छा को प्राप्त हुआ पारद रोगों को नाश करता है, मरा हुआ मृत्यु को नाश करता है और बद्धपारद आकाशगति को देता है इस प्रकार अनेक प्रभाववाले पारद की जय हो॥३॥

तथा च

मूर्च्छितो हरते व्याधीन्बद्धः खेचरसिद्धिदः ॥ सर्वसिद्धिकरो लोके निरुत्थो देहसिद्धिदः ॥४॥

(शब्दकल्पद्रुम १२०)

अर्थ–मूर्च्छित पारद रोगों को हरता है, बद्ध किया हुआ आकाशगति का दाता है तथा मृत पारद सब सिद्धि को देता है और निरुत्थ (अर्थात् जो किसी प्रकार ही अपने रूप में न आ सके) पारा देह की सिद्धि को देता है॥४॥

तथा च

मारितं देहसिद्धचर्थ मूर्च्छितं व्याधिनाशनम् । रसभस्म क्वचिद्रोगे देहार्थे मूर्च्छितं क्वचित् ॥५॥ बद्धं द्वाभ्यां प्रयुंजीत शास्त्रदृष्टेन कर्मणा ॥
(रसरत्नाकर १७३)

अर्थ–देह की सिद्धि के लिये मारे हुए पारे का तथा रोगों के नाश के लिये मूर्च्छित पारद का प्रयोग करे। कहीं कहीं मारे हुए पारे का रोगों के नाश के

लिये तथा मूर्च्छित का देह सिद्धि के लिये भी प्रयोग करते हैं। शास्त्रीय कर्म का द्रष्टा दोनों ही सिद्धियों के लिये अर्थात् देह सिद्धि और रोगनाशक सिद्धि इनके लिये बद्ध पारे का प्रयोग करता है।।५।।

मूर्छित पारद का लक्षण

कज्जलाभो यदा सूतो विहाय घनचापलम् ।। मूर्छितः स तदा ज्ञेयो नानारसगतः क्वचित् ।।६।।

(रसरत्नाकर १७२)

अर्थ–जब पारद घन और चपलता को छोड़कर कज्जल के समान अनेक रस या वर्ण (रंग) व्यापी हो जाय तब पारद मूर्च्छित कहाता है।।६।।

कज्जलाभो यदा सूतो विहाय घनचापले । दृश्यतेऽसौ तदा ज्ञेयो मूर्छितः सुतरां बुधैः ।।७।।

(रसदर्पण, टोडरानन्द २७, रसमंजरी १०)

अर्थ–जब पारद घन और चपलता को छोड़कर काजर के समान दीखने लगे तब पारद को पंडितजन मूर्च्छित हुआ समझें ।।७।।

तथा च

नानावर्णो भवेत्सूतो विहाय घनचापले ।। लक्षणं दृश्यते यस्य मूर्छितं तं वदन्ति हि ।।

अर्थ–जब पारद घन और चपलता को छोड़कर अनेक वर्णवाला होता है इस प्रकार के जिसके लक्षण हो उस पारद को रसकर्म के ज्ञाता वैद्य मूर्छित पारद कहते हैं।।८।।

मूर्छितलक्षण

गौरवं घनता यस्मिन् तेजस्वित्वं च दृश्यते ।। सोऽयं विमूर्छितः सूतो विज्ञेयो नैव बह्निना ।।९।।

(रसेन्द्रसारसंग्रह ९)

अर्थ–जिस पारद में भारीपन कठिनाई और चमक दीखती है उसको मूर्छित पारद समझना चाहिये अर्थात् जिसमें गुरुता कठिनता और चमक न हो उसको मूर्छित पारद कहते हैं।।९।।

सम्मति–मेरी राय से यह बद्ध पारद का लक्षण हो सकता है क्योंकि यह पूर्वोक्त अनेक मूर्च्छित पारद के लक्षणों से विरुद्ध है और रसेन्द्रसारसंग्रहकार ने स्वयं इन्हीं लक्षणों को बद्ध के लक्षण में लिखा है।।

बद्धलक्षण

यस्मिन्गुरुतारुणता तेजस्वित्वं च दृश्यते सूते ।। दृढशिखिमध्ये तिष्ठेद् बद्धः सूतोऽमृतोपमो ज्ञेयः ।।१०।।

(रसेन्द्रसारसंग्रह)

अर्थ–जिस पारद में भारीपन, ललाई और चमकीलापन दीखता हो और तीक्ष्ण अग्नि में भी उड़ नहीं सकता हो उसको बद्धपारद कहते है और वह अमृत के तुल्य होता है।।१०।।

मतान्तर

माधुर्य्यगौरवोपेतस्तेजसा भास्करोपमः ।। वह्निमध्ये यदा तिष्ठेत्तदा बद्धस्य लक्षणम् ।।११।।

(रसरत्नाकर १७२)

अर्थ–जो पारद माधुर्य्य तथा गुरुता मे युक्त हो और तेज में सूर्य के समान चमकीला हो और जब अग्निस्थायी हो जावे तब उसको बद्धपारद कहते हैं।।११।।

मतान्तर

अक्षयी च लघुद्रावी तेजस्वी निर्मलो गुरुः । स्फुटनं पुनरावृतौ बद्धसूतस्य लक्षणम् ।।१२।। (रसमंजरी १० वाच० बृह० ७ नि० र० ७)

अर्थ–अक्षयी (जो अग्निपर रखने से न उड़े) शीघ्र ही द्रव हो जावे चमकीलापन, स्वच्छ, भारी और दुवारा बद्ध करने में खील २ होना इत्यादि बद्ध पारद के लक्षण हैं।।१२।।

मृतपारदलक्षण

अगुरुरतेजाः शुभ्रो वह्निस्थायी स्थिरो धूमः ।। हेमादिधातुभोक्ता तत्कर्ता स्यान्मृतः सूतः ।।१३।। (बृहद्योगतरंगिणी १२२, र० रा० शं० १४, र० सा० प० १४, नि० र० २८)

अर्थ–जो पारद हलका हो, तेज रहित हो, सफेद हो, अग्नि में स्थिर और धूमरहित हो, हेमादि धातुओं का खानेवाला हो और उन्हीं हेमादि धातुओं का बनानेवाला हो ऐसे पारद को मृत पारद कहते हैं।।१३।।

मृतपारदलक्षण

अतेजा अगुरुः शुभ्रो लोहहा चंचलो रसः। यदा नावर्तयेद्वह्नौ नोर्ध्वं गच्छेत्तदा मृतः ।।१४।। (रसराजसुन्दर ८५ र० रा० शं० १४ रस० सा० प० १४, नि० र० २८)

अर्थ–तेज (चमक) और गुरुता से रहित हो, श्वेत हो लोह (धातु) का खानेवाला और चंचलता से रहित पारद जब अग्नि में नहीं चक्कड़ खाता है उड़ता भी नहीं है तब उसको मृत पारद कहते हैं।।१४।।

मतान्तर

आर्द्रत्वं च घनत्वं च तेजो गौरवचापलम् ।। यस्यैतानि न दृश्यन्ते तं विद्यान्मृतसूतकम् ।।१५।।

(रसमंजरी १० वा० बृ० ७)

अर्थ–गीलापन, कठोरता, चपलता, चमक और गुरुता ये लक्षण जिस पारद के न हो उसको मृत पारद कहते हैं।।१५।।

तथा च

द्रवघनगुरुचंचलता तेजस्वित्वं च दृश्ये यत्र । तं मृतसूतं विद्यानैकः सर्वत्र वर्णनियमोऽस्ति ।।१६।। (रसेन्द्र सार संग्रह ९)

अर्थ–गीलापन, कठोरता, चंचलता और चमक ये लक्षण जिसमें नहीं दीखते हो उसको मृतपारद कहते हैं और वर्ण का नियम सब जगह एकसा नहीं है।।१६।।

तथा च

चांचल्यमद्रितेजस्त्वं द्रवत्वं गौरवाणि च । सूतस्य पंच नश्यन्ति बद्धस्यपि मृतस्य च ।।१७।।

(नि० रत्ना० १८)

अर्थ–चंचलता, घनता, चमकीलापन, गीलापन और गुरुता ये पांचों लक्षण मृत और बद्धपारद के नहीं होते हैं।।१७।।

पारद की चार दशाओं के नाम फल और लक्षण

दोहा

सोधितपारद को कहैं, मुनि जन ब्रह्म स्वरूप ।
जो है पारद मूर्च्छित, सोहु जनार्दन रूप ।।
मारित पारद रुद्र है, बद्ध सदाशिव जोय ।
या प्रकार रसराज की, चारि अवस्था होय ।।
जो चन्द्रोदय आदि दै, जानो रस सिंदूर ।

यह मूर्च्छित विधिसों करै, सकल रोग को दूर ॥
बद्ध वहै रसराज सों, जानो गुटिकाकार ।
सो खेचर गति को करे, जानो क्षुधा अपार ॥
जरा हरे पारद मृतक, वरण्यों सुधा समान ।
को करुणाकर भुवि विषे, पारदसम गुणवान् ॥
अनुपान जो रोग पै, ताही करके देय ।
नर कुञ्जर पुनि तुरग के, सकलरोग हरि लेय ॥
(वैद्यादर्श ९)

रस की तीन दशाओं की सूक्ष्म विधि

मारयेज्जारितं सूतं गंधकेनैव मूर्छयेत् ॥ बद्धः स्याद्द्रुतिसत्त्वाभ्यां रसस्यैवं त्रिधागतिः ॥१८॥

(रसरत्नाकर १५८)

अर्थ–विद्वान मनुष्य गंधक जारित पारद को मारे और गंधक जारण से पारे को मूर्छित करे द्रुति और सत्त्व से पारद ब्रह्म होता है इस प्रकार पारद की तीन गति है॥१८॥

चार प्रकार के बद्ध

पोटः खोटो जलौका च भस्म चापि चतुर्थकम् ॥ बन्धश्चतुर्विधो ज्ञेयः सूतस्य भिषगुत्तमैः ॥१९॥ पोटः पर्पटिकाबन्धः पिष्टिबन्धस्तु खोटकः ॥ जलौका पंकबंधः स्याद्भस्म भस्मनिभं भवेत् ॥२०॥

(र० रा० शं०)

अर्थ–पोट, खोट, जलौका, और भस्म इस प्रकार चार तरह का पारद का बन्ध होता है। पपडी के समान बने हुए पारे को पोट कहते हैं, पिष्टीबद्ध को खोट कहते हैं, कीचड़ के समान बने हुए को जलौका बद्ध कहते हैं और भस्म के रूप में बने हुए पारे को भस्मबद्ध कहते हैं॥१९–२०॥

पच्चीस रस बंधों का वर्णन

पंचविंशतिसंख्याकान् रसबंधान्प्रचक्ष्महे । येनयेन हि चांचल्यं दुर्ग्रहत्वं च नश्यति ॥२१॥ रसराजस्य संप्रोक्तो बंधनार्थो हि वार्तिकः ॥ हटारोटौ तथाऽभासः क्रियाहीनश्च पिष्टिका ॥२२॥ क्षारः खोटश्च पोटश्च कल्कबंधश्च कज्जलिः ॥ सजविश्चैव निर्जीवो निर्वीजश्च सबीजकः ॥२३॥ शृङ्खलाद्रुतिबन्धौ च बालकाश्च कुमारकः ॥ तरुणश्च तथा वृद्धो मूर्तिबद्धस्तथापरः ॥२४॥ जलबंधोऽग्निबंधश्च सुसंस्कृतकृताभिधः ॥ महाबंधाभिधश्चेति पंचविंशतिरीरिताः ॥२५॥ केचिद्वदन्ति षड्विंशो जलूकाबंधसंज्ञकः ॥ स तावन्नेष्यते देहे स्त्रीणां द्रावे प्रशस्यते ॥२६॥

(रसरत्नसमुच्चय ९२, र० रा० शं० ११ र० रा० सु० ५८)

अर्थ–जिस प्रकार पारद की चंचलता और दुर्ग्रहता (पकड़ाई में न आना) नष्ट हो जावे इसलिये विद्वानों ने बद्धकारक पदार्थों से पारद का बंधन कहा है। उन पच्चीस रसबंधों को हम वर्णन करते हैं हट १ आरोट २, आभास ३, क्रियाहीन ४, पिष्टीका ५, क्षार ६, खोट ७, पोट ८, कल्कबंध ९, कज्जलि १०, सजीव ११, निर्जीव १२, सबीज १३, निर्बीज १४, श्रृंखलाबंध १५, द्रुतिबंध १६, बालक १७, कुमारक १८, तरुण १९, वृद्ध २०, मूतिबद्ध २१, जलबंध २२, अग्निबंध २३, संस्कृतकृत २४, और महाबंध २५। इस प्रकार पच्चीस बंध कहे हैं। कुछ मनुष्य जलौ का बद्ध को भी बंधों में मानकर छब्बीस प्रकार के बंध कहते हैं परन्तु बहुत जनों की यह सम्मति है कि जलौका बंध नाम का बंध शरीर के पोषण के लिये नहीं कहा है किन्तु स्त्रियों के द्रावण करने के लिये प्रयोग किया गया है इस वास्ते यह बंधों में नहीं होना चाहिये॥२१–२६॥

हट अशुद्धरसलक्षण

हटो रसः स विज्ञेय सम्यक्शुद्धिविवर्जितः । स सेवितो नृणां कुर्यान्मृत्युं व्याधिसमुद्भतम् ॥२७॥

(रसरत्नसमुच्चय ९३, र० सा० प० १२)

अर्थ–जो पारद अच्छी प्रकार शुद्ध नहीं किया गया हो, उसको हटरस कहते हैं और सेवन किया हुआ वह हटरस मनुष्यों के मृत्यु और भयंकर व्याधि को करता है॥२७॥

आरोटशुद्धरसलक्षण २

सुशोधितो रसः सम्यगारोट इति कथ्यते । स क्षेत्रीकरणे श्रेष्ठः शनैर्व्याधिविनाशनः ॥२८॥ (रसरत्नसमुच्चय ९३, र० रा० शं० ११, र० रा० सुं० ५८ र० सा० प० १२)

अर्थ–सम्पूर्ण रीति से शुद्ध किया हुआ पारद आरोट नाम से कहाता है वह क्षेत्रीकरण, जो रसायन सेवन से पूर्व अभ्रक प्रभृति का सेवन करने के लिये श्रेष्ठ है और सेवन करने से धीरे धीरे रोगों का नाश करता है॥२८॥

मतान्तर

सुशोधितो रसः सम्यग् युक्तो योगेन केनचित् । आरोटसंज्ञया ख्यातः स क्षेत्रीकरणे मतः ॥२९॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–अच्छी प्रकार शुद्ध किया हुआ तथा किसी रसायनिक योग से युक्त किया हुआ पारा आरोटन नाम से कहाता है और क्षेत्रीकरण के लिये उत्तम माना गया है॥२९॥

अरोटसंज्ञां लभते ह्येकवारं मृतस्तु यः । न तेन जीवकर्म स्यान्न तथा व्याधिनाशनः॥३०॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–जो पारद एक बार मरा हुआ है उसको आरोट कहते हैं। उससे क्षेत्रीकरण नहीं होता है। तथा रोगों का नाश भी नहीं होता है॥३०॥

आभासरसलक्षण ३

पुटितो यो रसो याति योगं मुक्त्वा स्वभावताम् । भावितो धातुमूलाद्यैराभासो गणवैकृते ॥३१॥ (रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं० ११, र० रा० सुं० ५९, र० सा० प० १२)

अर्थ–पुट के देने से जो पारद पुट दिये हुए योग को छोड़कर फिर अपने रूप में प्राप्त होता है और उसी में फिर धातु तथा जड़ी प्रभृति की भावना दी जावे तो उसको आभासरस कहते हैं वह रस अवगुण के लिये होता है॥३१॥

क्रियाहीनरसलक्षण ४

असंशोधितलोहाद्यैः साधितो यो रसात्तमः । क्रियाहीनः स विज्ञेयो विक्रियां यात्यपथ्यतः ॥३२॥ (रसरत्नसमुच्चय ९३, र० रा० शं० ११, र० रा० सुं० ५९, र० सा० प० १२)

अर्थ–नहीं शुद्ध किये लोहादिधातुओं से सिद्ध किया हुआ पारद क्रिया हीन कहाता है। वह पथ्य न करने से विकार को प्राप्त होता है॥३२॥

पिष्टीबन्धरसलक्षण ५

तीव्रातपे गाढतरं विमर्द्यां पिष्टी भवेत्सा नवनीतरूपा ॥ ख्यातः स सूतः किल पिष्टिबद्धः संदीपनं पाचनकृद्विशेषात् ॥३३॥

(रसरत्नसमुच्चय ८३, र० रा० शं० ११)

अर्थ–पारद तथा गंधक को खरल में डालकर तेज घाव में खूब घोटे तो

पारद की मक्खन के समान पिष्टी होती है उसको पिष्टीबंध कहते हैं। उस पिष्टीबन्धके सेवन से अग्नि की वृद्धि होती है और अत्यन्त पाचन करता है।।३३।।

क्षारबद्धरसलक्षण ६

शंखशुक्तिवराटाद्यैर्योऽसौ संसाधितो रसः ।। क्षारबद्धः परं दीप्तिपुष्टिकृच्छूल–नाशनः ।।३४।।

(रसरत्नसमुच्चय ९३, र० रा० शं० र० रा० सुं० र० सा० प०)

अर्थ–शंख मोती सीप, और कौड़ी वगैरह पदार्थो के साथ जो पारद सिद्ध किया जाता है उसको क्षारबद्ध कहते हैं वह क्षारबद्ध अत्यन्त दीपन स विज्ञेय और शूल का नाश करनेवाला है।।३४।।

खोटबद्धलक्षण ७

बन्धो यः खोटतां याति ध्मातो ध्मातः क्षयं व्रजेत ।। खोटबद्धः स विज्ञेयः शीघ्रं सर्वगदापहः ।।३५।।

(रसरत्नस०)

अर्थ–जो पारद बंधनेयोग्य जडियों के योग से गोली बन जाय और बार बार धोंकने से घटता जावे उसको खोटबद्ध कहते हैं और शीघ्र ही समस्त रोगों को नाश करता है।।३५।।

पोटबद्धलक्षण ८

द्रुतकज्जलिका मोचापत्रेषु चिपिटीकृता । स पोटः पर्पटी सैव बालाद्यखिलरोगनुत् ।।३६।।

(रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं० र० रा० सुं० टो० नं० २७)

अर्थ- पारद और गंधककी कजली को लोहे की कढ़ाई में डालकर तपावे तो उसका रस अर्थात् पानी समान पतला पदार्थ हो जायगा उसको गौ के गीले गोबर पर रखे हुए केले के पत्ते पर डाल देवे और ऊपर से केले के पत्ते को रख और उस पर फिर गोबर को रखकर दबावे स्वांग शीतल होने पर निकाल लेवे उसे पोट या पर्पटिका बद्ध कहते है। उस पर्पटी को पीस अनुपान के साथ सेवन करे तो बालक और वृद्ध वगैरह के रोगों को शीघ्र ही नाश करता है।।३६।।

कल्कबंध का लक्षण ९

स्वेदाद्यैः साधितः सूतः पंकत्वं समुपागतः ।। कल्कबद्धः स विज्ञेयो योगोक्तफलदायकः ।।३७।।

(रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं० र० रा० सुं०)

अर्थ–स्वेदन आदि संस्कारों से जो पारद पंक (कीचड़) के समान हो जाता है, उसको पङ्कबद्ध कहते है, वह पृथक् पृथक् योगों के साथ फल का दाता है।।३७।।

कज्जलीबंध लक्षण १०

कज्जलीरसगन्धोत्था सुश्लक्ष्णा कज्जलोपमा ।। तत्तद्योगेन संयुक्ता कज्जलीबन्ध उच्यते ।।३८।।

(र० र० स०)

अर्थ–पारे और गंधक को खरल में डाल के घोटे तो अत्यन्त चिकनी तथा काजर के समान काली कजली होती है उस कजली का प्रधान २ औषधियों द्वारा मेल करने से कज्जलीबंध हो जाता है।।३८।।

सजीवरसलक्षण ११

भस्मीकृतो गच्छति वह्नियोगाद्रसः सजीवः स खलु प्रदिष्टः ।। संसेवितोऽसौ न करोति भस्मकार्यं जराव्याधिविनाशनं च ।।३९।।

(रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं० र० सा० प०)

अर्थ–भस्म किया हुआ जो पारद अग्नियोग से उड़ जावे उसको सजीव रस कहते हैं, और उस पारद के खाने से पारद भस्म के समान गुण नहीं होते बुढ़ापा तथा रोगों का नाश भी नहीं होता है।।३९।।

निर्जीवरसलक्षण १२

जीर्णाभ्रको वा परिजीर्णगंधोः भस्मीकृतश्चाखिललौहमौलिः ।। निर्जीवनामा खलु भस्मसूतो निःशेषरोगान्विनिहन्ति वेगात् ।।४०।।

(रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं० र० रा० सुं०)

अर्थ–अभ्रकजारण किये हुए अथवा गंधकजारण किये हुए जो पारद की भस्म हो जाय तो समस्त धातुओं से उस पारदभस्म का गुण उत्तमोत्तम है वह भस्म किया हुआ निर्जीव नाम का पारद शीघ्र ही समस्त रोगों को नाश कर देता है।।४०।।

निर्बीजरसलक्षण १३

रसस्तु पादांशसुवर्णजीर्णः पिष्टीकृतो गंधकयोगतश्च ।। तुल्यांशगंधैः पुटितः क्रमेण निर्बीजनामा सकलामयघ्नः ।।४१।।

(रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं० र० रा० सुं० टोड०)

अर्थ–चौथाई भाग सुवर्ण जारित किये हुए पारद की गंधक के योग से पिट्टी बनावे और क्रम से तुल्य गंधक के साथ पुट दिया हुआ समस्त रोगों का नाशक निर्बीज नामका पारद सिद्ध होता है।।४१।।

बीजबद्धलक्षण १४

पिष्टीकृतैरभ्रकसत्त्वहेमतारार्ककान्तैः परिजारितो यः ।। हतस्ततः षड्गुणगंधकेन स बीजबद्धो विपुलप्रभावः ।।४२।। (रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं० र० रा० सुं० टोड० रसमञ्जरी)

अर्थ–अभ्रकसत्व, सुवर्ण, चांदी तांबा और कान्तलोह इनमें से किसी को पारद के समान भाग लेकर पिट्टी बनावे तदनन्तर बीजजारणरीति से जारण करे, फिर उसको छःगुने गंधक के साथ भस्म करे तो उसको बीजबद्ध पारद कहते हैं वह अत्यन्त प्रभाववाला होता है अर्थात् समस्त रोगों में निःशंक देने योग्य है।।४२।।

श्रृंखलाबद्धलक्षण १५

वज्रादिनिहतः सूतो हतसूतसमोऽपरः । श्रृंखलाबद्धसूतस्तु देहलोहविधायकः ।। चित्रप्रभावां वेगेन व्याप्तिं जानाति शङ्करः ।।४३।।

(रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं० र० रा० सुं०)

अर्थ–हीराप्रभृति रत्नों से सिद्ध की हुई पारद की भस्म तथा जड़ी बूटियों से की हुई पारदभस्म इन दोनों को समान भाग लेकर घोट लेवे तो श्रृंखलाबद्ध रस सिद्ध होकर देह को दृढ़ करनेवाला होता है इस पारद में ऐसी विलक्षण शक्ति है जो कि औषधि को शरीर के सर्वत्रस्थान में फैला देता है (इसके विशेषगुण शिवसंहिता में लिखे हैं) ४३।।

द्रुतिबद्धरसलक्षण १६

युक्तोऽपि बाह्यद्रुतिभिश्च सूतो बद्धं गतो वा भसितस्वरूपः ।। स राजिकापादमितो निहन्ति दुःसाध्यरोगान्द्रुति बद्धनामा ।।४४।।

(रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं० र० रा० सुं०)

अर्थ–परिभाषाध्याय में कही हुई विधि से द्रुतिकर पीछे किसी औषधि द्वारा जो पारद का बंधक करना है उसको द्रुतिबद्ध कहते है चौथाई राई की बराबर द्रुतिबद्ध पारद के खाने से दुःसाध्य (जिसकी चिकित्सा कठिनाई से होती हो) रोगों को नाश करता है।।४४।।

बालरसलक्षण १७

समाभ्रजीर्णः शिवजस्तुबालः स सेवितो योगयुतो जवेन ।। रसायनो

भाविगदापहश्च सोपद्रवारिष्टगदाञ्शिहन्ति ॥४५॥ (रसरत्नसमुच्चय, र० रा० शं० र० रा० सुं० र० सा० प०)

अर्थ–पारद में समान भाग अभ्रक को जारण करे तो वह बालरस सिद्ध होता है, सेवन किया हुआ यह बालरसनाम का रसायन उपद्रव तथा अरिष्ट (मृत्यु के लक्षण) सहित होने पर रोगों को नाश करता है॥४५॥

कुमाररसलक्षण १८

हराद्भवो यो द्विगुणाभ्रजीर्णः स स्यात्कुमारोऽमिततन्दुलोऽसौ ॥ त्रिसप्तरात्रैः खलु पापरोगसंघातघाती च रसायनं च ॥४६॥

(रसरत्नसमु० र० रा० शं० र० रा० सुं० र० सा० प०)

अर्थ–पारद से दूना अभ्रक लेकर जारण विधि से जारण करे तो इसको कुमाररस कहते हैं वह कुमार रस इक्कीस दिवस तक सेवन किया जावे तो पापरूप रोगों का नाश करनेवाला और रसायन है॥४६॥

तरुणरसलक्षण १९

चतुर्गुणव्योमकृताशनो यो रसायनाग्र्यस्तरुणाभिधानः ॥स सप्तरात्रात्सकलामयघ्नो रसायनो वीर्यबलप्रदाताः ॥४७॥

(र० र० समु० र० रा० शं० र० सा० प० र० रा० सुं०)

अर्थ–पारद से चौगुना अभ्रक लेकर जारण विधि से जारण करे तो उसको तरुणबंधनाम रस कहते हैं उसका इक्कीस दिवस तक सेवन करने से समस्तरोगों का नाश करनेवाला रसायन और वीर्य तथा बल का दाता होता है॥४७॥

वृद्धरसलक्षण २०

यस्याभ्रकं षड्गुणितं हि जीर्णं प्राप्तग्निसख्यं स हि वृद्धनामा ॥ देहे च लोहे च नियोजनीयः शिवादृते कोऽस्य गुणान्प्रवक्ति ॥४८॥

(र० र० समु० र० सा० प० रा० शं०-र० रा० सुं०)

अर्थ–जिसको अभ्रक से मित्रता प्राप्त हुई है अर्थात् अग्नि में डालने से न उड़े और जिसमें छः गुना जारण किया हो उसको वृद्धनाम का रस कहते हैं। उसका प्रयोग शरीर के लिये तथा रसायन के लिये अवश्य करना चाहिये इसके गुणों को श्रीमहादेवजी के सिवाय और कोई नहीं कह सकता है॥४८॥

मूर्तिबद्धलक्षण २१

यो दिव्यमूलिकाभिश्रं कृतोऽत्यग्निसहो रसः ॥ बिनाऽभ्रजारणात्स स्यान्मूर्तिबद्धो महारसः ॥४९॥अयं हि जीर्यमाणस्तु नाग्निना क्षीयते रसः योजितः सर्वयोगेषु निरौपम्यफलप्रदः ॥५०॥

(र० र० स० र० रा० शं० र० रा० सुं० र० सा० प०)

अर्थ–जो पारद अभ्रक जारण करने के बिना ही केवल जड़ी बूटियों से ही अग्निसह (अग्नि में रखने से न उड़नेवाला) हो जाय उसको मूर्तिबद्ध रस कहते हैं और इसको कितनी बार अग्नि में तपावे तो भी क्षय नहीं होता है इसको योंग से अद्भुतफल प्राप्त होता है॥४९–५०॥

जलबंधलक्षण २२

शिलातोयमुखैस्तोयैर्बद्धोऽसौ जलबन्धवान् ॥ स राजरोगमृत्युघ्नः कल्पोक्तफलदायकः ॥५१॥

(र० र० स०)

अर्थ–शिलाजीत आदि द्रव पदार्थों के साथ बंधा हुआ पारद जलबंध नाम से प्रसिद्ध है, जरा (बुढ़ापा) राजरोग तथा मृत्यु का भी नाश करनेवाला है और कल्प में कहे हुए फल को भी देता है॥५१॥

अग्निबद्धरसलक्षण २३

केवलो लोहयुक्तो वा ध्मातः स्याद्गुटिकाकृतिः । अक्षीणश्चाग्निबद्धोऽसौ खेचरत्वादिकृत्स हि ॥५२॥

(र० र० समु०, र० रा० शं०, र० रा० सुं०)

अर्थ–केवल पारद अथवा पारद में किसी लोह (धातु) को डालकर धोंका जावे तो पारद की गोली के समान आकृति हो जाती है और क्षय भी नहीं होता, उसको अग्निबद्ध रस कहते हैं, वह खेचरत्व आदि गति को करता है॥५२॥

संस्कृतकृतलक्षण २४

विष्णुक्रान्ताशशिलाकुम्भीकनकमूलकैः ॥ विशालानागिनीकन्दव्याघ्रपादीकुरुकण्टकैः ॥५३॥ वृश्चिकालीभशुण्डिभ्यां हंसपाद्या महालुरैः ॥ अप्रसूतगवां मूत्रैः पिष्टं बालुके पचेत् ॥५४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–विष्णुक्रान्ता (कोयल), शशिप्रभा (बावची), कुम्भी (जल कुम्भी), धतूरा, मूली, इन्द्रायण, नागिनीकन्द (नागदमनी का कन्द), व्याघ्रपादी (कटेरी), पीयाबांसा, बिछुआघास, हाथीशुण्डा, लालरंग का लजालू, राई, इन सबको समभाग लेकर अप्रसूता (जो ब्याई न हो और जिसके प्रथम भी गर्भ रहा हो) गायन के मूत्रों से पीस मूषा बनावे फिर उसमें पारद को रख मुखबंद करे, तदनन्तर बालुकायंत्र में रख पका लेवे फिर पारद के तुल्य सातों ही धातुओं को लेकर पूर्वोक्त औषधियों के रस से घोट गोला बनावे, पाछे बालुकायंत्र में पकावे, इस प्रकार अन्य अन्य यंत्रो से भी पारद की मूर्च्छा हो सकती है, इसका नाम सुसंस्कृत रखा है॥५३॥५४॥

महाबन्धरसलक्षण २५

हेम्ना वा रजतेन वा सहचरो ध्मातो व्रजत्येकतामक्षीणो निबिडो गुरुश्च गुटिकाऽऽकारोऽतिदीर्घोज्ज्वलः । चूर्णत्वं पटुवत्प्रयाति निहतो धृष्टो न मुञ्चेन्मलं निर्गन्धो द्रवति क्षणात्स हि महाबन्धाभिधानो रसः ॥५५॥

(र० र० समु०, र० रा० शं०, र० रा० सुं०, र० सा० प०)

अर्थ–सोने तथा चांदी के साथ धोंकने से उड़े नहीं बल्कि उसमें मिल जाय, अग्नि में डालने से उड़े नहीं, अत्यन्त सूक्ष्म औषधि से बंधन को प्राप्त हो जाय, भारी वजन हो, गोली का सा गोल आकार हो, चमकीला स्वरूप हो, भस्म करने से नोंन के समान चूरा चूरा सा हो जाय, घिसने से मैला न हो, जिसमें किसी प्रकार की गंध नहीं आती हो और आंच में रखकर तपाने से शीघ्र ही पारद के समान पतला हो जाय उसको महाबन्ध रस कहते हैं॥५५॥

अथ पोटखोटादिप्रकार

अन्यमते–चत्वार एव बन्धास्तेऽधो लिखितप्रकारेण वर्ण्यंते । यथा।

(र० रा० शं०)

अर्थ–औरों के मत से चार प्रकार के ही बंध है, वे नीचे लिखे हुए प्रकार से वर्णन किये जाते हैं जैसे–

पोटः खोटो जलौका च भस्म चापि चतुर्विधम् ॥बन्धश्चतुर्विधोज्ञेयः सूतस्य भिषगुत्तमैः ॥५६॥ पोटः पर्पटिकाबंधः पिष्टीबन्धस्तु खोटकः ॥ जलौकाः पङ्कबन्धः स्याद्भस्म भस्मनिभं भवेत् ॥५७॥

(बृ० ज्यो० र० रा० शं, र० रा० सुं०)

अर्थ–१ पोट, २ खोट, ३ जलौका और ४ भस्म इस प्रकार उत्तम उत्तम वैद्यों ने ४ चार तरह के बंध कहे हैं, इन चार प्रकार के बंधो में जो पारद पपड़ी के समान होता है उसको पोटबद्ध कहते हैं और जो पिष्टी के समान होता है उसको खोटबद्ध कहते हैं, कीचड़ के समान बने हुए पारे को जलोकाबंध और भस्म के समान बने हुए पारे को भस्मबंध कहते हैं॥५६॥५७॥

पर्पटी (पोट) बद्धविधान

लोहपात्रेऽथवा ताम्रे पलैकं शुद्धगन्धकम् ॥ मृद्वग्नि द्रुते तस्मिञ्छुद्धं सूतपलत्रयम् ॥५८॥ क्षिप्त्वाथ चालयेत्किञ्चिल्लोहदर्व्या पुनः पुनः ॥ गोमये कदलीपत्रं तस्योपरि च ढालयेत् ॥५९॥ इत्येवं गन्धबद्धं च सर्वरोगेषु योजयेत् ॥

(रसमंजरी, र० र०, आ० वे० वि०)

अर्थ–लोह के पात्र में (कड़छी वगैरह में) अथवा तांबे के पात्र में एक पल शुद्ध गंधक को डालकर मन्दाग्नि से गलावे फिर उस गले हुए गंधक में तीन पल शुद्ध पारद को डालकर लोहे की कड़छी से बार बार चलाता जावे तदनन्तर गोबर के ऊपर रखे हुए केले के पत्ते पर उस गंधक पारदकी कज्जली ढ़ाल देवे। इस प्रकार सिद्ध किये गंधबद्ध को सब रोगों में दे देवे तो श्रेष्ठ है।५८।५९॥

रसपर्पटीबन्धे भावप्रकाश में

रसशुद्धं विधायादौ विधिनान्यतमेन च ॥ जयापत्ररसेनाथ वर्धमानरसेन वा ॥६०॥ भृंगराजरसेनापि काकमाच्या रसेन च ॥ रसे शोध्यं प्रयत्नेन तत्समं शोधयेद्बलिम् ॥६१॥ भृंगराजरसैः पिष्ट्वा शोधयेदर्करश्मिभिः ॥ सप्तधा वा त्रिदा वापि पश्चात्तच्चूर्णं तु कारयेत् ॥६२॥ चूर्णयित्वा रसं तेन रसेन सह मर्दयेत् ॥ नष्टसूतं यदाचूर्णं भवेत्कज्जलसन्निभम् ॥६३॥ निर्धूमैर्बदराङ्गरैर्द्रवीकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ ततस्तं महिषीविष्ठास्थापिते कदलीदले ॥६४॥ निक्षिप्य तदुपर्यन्यत्पत्रं दत्त्वा प्रपीडयेत् ॥ शीतलां तां ततो यत्नात्समुद्धृत्य विचूर्णयेत् ॥६५॥ एवं सिद्धा भवेद्व्याधिघातिनी रसपर्पटी ॥ जराधिव्याधिभिर्व्याप्तं विश्वंदृष्ट्वा पुरा हरः ॥६६॥ चकार कृपया युक्तः सदावद्रसपर्पटी ॥ रक्तिकासम्मितां तावद्भृष्टजीरकसंयुताम् ॥गुंजार्द्धभृष्टहंग्वा तां भक्षयेद्रसपर्पटीम्॥६७॥ रोगानुरूपभैषज्यैरपि तां भक्षयेत्सदा ॥ पिबेत्तदनु पानीयं शीतलं चुलकत्रयम् ॥६८॥ प्रत्यहं वर्द्धयेत्तस्या एकैकां रक्तिकां भिषक् ॥ नाधिका दक्षगुंजातो भक्षयेत्तां कदाचन ॥६९॥ एकादश दिनारम्भात्तां तथैवापकर्षयेत् ॥ एवमेतां समश्नीयान्नरो विंशतिवासरान् ॥७०॥ शिवं गुरु तथा विप्रान्पूजयित्वा प्रणम्य च ॥ श्रद्धया भक्षयेदेतां क्षीरमांसरसौदनः ॥७१॥ ज्वरं च ग्रहिणीं चापि तथातीसारमेव च ॥ कामलां पाण्डुरोगं च शूलं प्लीहजलोदरम् ॥७२॥ एवमादीन् गदान्हत्वा हृष्टपुष्टश्च वीर्यवान् ॥ जीवेद्वर्षशतं साग्रं वलीपलितवर्जितः ॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–अरणी के पत्तों का रस, एरण्ड के पत्तों का रस, जलभंगरे के पत्तों का रस अथवा मकोय के पत्तों का रस इनमें से किसी एक के रस से विधिपूर्वक पारद को शुद्ध करे और पारद के समान गंधक को लेकर भँगरा के रस में घोट सूर्य के तेज से सुखा लेवे, इसी प्रकार सात भावना देवे फिर उसको चूरा बना लेवे। तदनन्तर उस पारद के साथ शुद्ध गंधक को घोटकर कजली बनावे (फिर घी से चिकनी की हुई करछी में कजली को रखकर) निर्धूम (सुलगे हुए) बेरी के अंगारों पर उस करछी को रखकर कजली को गलावे जब वह खूब गल जावे तब भैंस के गोबर पर रखे हुए केले के पत्ते पर गली हुई कज्जली को ढाल देवे फिर ऊपर से केले का पत्ता रखकर और उस पर भैंस का गोबर रख दाब देवे और जब वह ठंडा हो जाय तब निकालकर पीस लेवे तो इस प्रकार रोगों को नाश करने वाली रसपर्पटी सिद्ध होती है। पहिले समय में श्रीकृपालु महादेवजी ने बुढ़ापा और रोग आदि से घिरे हुए संसार को देखकर अमृत के समान इस रसपर्पटी को सिद्ध किया है, प्रथम एकरत्ती रसपर्पटी को भुना हुआ एक रत्ती जीरा सफेद तथा आधीरत्ती भुनी हुई हींग इन दोनों के साथ खावे अथवा रोग के अनुसार औषधि के साथ (अनुपान के साथ) नित्य भक्षण करे और उसके पीछे ३ चुल्लू ठंडा जल पीवे। इस प्रकार नित्यप्रति एक एक रत्ती को बढ़ाता हुआ दस रत्ती तक बढ़ावे, दसरत्ती से अधिक भक्षण करना उचित नहीं है और ग्यारहवें दिन से फिर इसी प्रकार ही घटाता जावे। इस रीति से मनुष्य बीस दिवस तक इस रसपर्पटी से इनको खावे। रसपर्पटी भक्षण के प्रथम दिन में श्रीशिवजी, गुरुदेव और ब्राह्मण पूजकर और प्रणामकर दूध और माँस रस के साथ सिद्ध किये हुए भात को खानेवाला मनुष्य श्रद्धा से इस रसपर्पटी को खावे तो ज्वर, ग्रहणी अतिसार, कामला, पांडुशूल, प्लीहा और जलोदर इत्यादि रोगों का नाश कर मनुष्य को हृष्टपुष्ट और वीर्यवान बनाती है और विधिपूर्वक रसपर्पटी के खानेवाला मनुष्य एक सौ आठ तथा एक सौ बीस वर्ष तक नीरोगता पूर्वक जीवित रहता है।६०–७३॥

जलौका बंधः

मुनिपत्ररसश्चैव शाल्मलीकृतवारि च ॥ जातीमूलस्य तोयं च शिंशपातोयमेव च ॥७४॥ श्लेष्मातकफलं चैव त्रिफलाचूर्णमेव च ॥ कोकिलाक्षस्य चूर्णं च पारदं मर्दयेद् बुधः ॥७५॥ जलौका जायते दिव्या रामाजनमनोहरा ॥ सा योज्या कामकाले तु कामयेत्कामिनी स्वयम्॥ सद्यस्खलनमाप्नोति दुःसहा परितोऽङ्गना ॥७६॥

(रसराजशंकर)

अर्थ–अगस्त के पत्तों का रस, सैमल की छाल का क्वाथ, चमेली की जड़ का रस, लहसोड़ा (मारवाड़ी में गूंदा), त्रिफला का चूर्ण और बहेड़े का चूर्ण इनके साथ शुद्ध पारद को मर्दन करे फिर उसकी जोंक के समान लंबी वत्ती बनावे तो वह जलौका बद्ध रस होता है। स्त्रियों को अत्यन्त आनन्द का दाता वह जलौका कामदेव के समय मदनमन्दिर में स्थापित करे तो वह स्त्री शीघ्र च्युत होती है।७४–७६॥

जलौकापरिमाण

बालमध्यमवृद्धास्तु योनिर्विज्ञायते क्रमात् ॥ नीरसानामपि नृणां योषा या संगमोत्सुका ॥७७॥ बाल्ये चाष्टांगुला योनौ यौवने च दशांगुला ॥ द्वादशैव प्रगल्भानां जलौका त्रिविधा मता ॥७८॥

(रसराजशंकरः ॥ निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–स्त्रीजनेनन्द्रिय बाल, मध्यम और वृद्धा इन भेदों से तीन प्रकार की है जो स्त्री नीरस मनुष्यों के संगम से सुख को चाहती है वह बाल्यावस्था में आठ अंगुल, जवानी में दस अंगुल और जवानी के बाद बारह अंगुल की ज़लौका लेवे, इस प्रकार जलौका तीन प्रकार की हैं।७७।७८॥

गन्धकबद्धलक्षण

अथवा गन्धपिष्टीनां वस्त्रे बद्ध्वा च गन्धकम् ॥ तुल्यं दत्वा निरुध्याथ संपुटे लोहजे दृढे ॥७९॥पुटयेद्भूधरे तावद् यावज्जीर्यति गन्धकम् ॥ एवं पुनः पुनर्देयं यावद्गंडस्तु षड्गुणम् ॥ इत्येवं गन्धके बद्धः सूतः स्यात्सर्वरोगहा ॥८०॥ (रसरत्नाकर)

अर्थ–अथवा गंधक के साथ की हुई पारे की पिष्टी के समान गंधक को लेकर और कपड़े में बांध लोहे के पात्र में रख तब तक भूधरयंत्र में रखे कि जब तक गंधक जारण हो जाय। इस प्रकार तुल्यगंधक को बार बार देकर षड्गुण गंधक जारण करे तो उसको गंधकबद्ध कहते हैं, वह सब रोगों का नाश करता है।७९।८०॥

गन्धबद्धलक्षण

मूषाजम्बीरविस्तारा दैर्घ्येण षोडशांगुला ॥ अपक्वा सुदृढा कार्या सिकताभाण्डगध्यगा ॥८१॥ त्रिभागवालुकालग्ना पादांशेन बहिःस्थिता ॥ पलैकं चूर्णितं गंधं मूषामध्ये विनिक्षिपेत् ॥८२॥ शुद्धसूतपलं पश्चात्क्षिपेद्गंधपलं ततः ॥ भाण्डमारोपयेच्चुल्ल्यां मूषामाच्छाद्य यत्नतः ॥८३॥ मन्दाग्निना पचेत्तावद्यावन्निर्धूमितां व्रजेत् ॥ गन्धधूमे गते पूर्य्या काकमाचीद्रवैस्तुषा ॥८४॥ पूर्वे जीर्णे पुनः पुर्य्या नागवल्लीदलद्रवैः ॥ जीर्णे धुस्तूरकद्रावैः पूरयित्वा पुनः पचेत् ॥८५॥ यावज्जीर्यति तद्गंधं काकमाच्यादिभिः पुनः ॥ दत्त्वा दत्त्वा पचेत् तद्वद्धस्तूरादिक्रमाद्रसम् ॥८६॥ भित्त्वा मूषां समादाय जराव्याधिहरो रसः योजयेद्गंधबद्धोऽयं योगवाहेषु सर्वतः ॥८७॥

(रसरत्नाकर)

पाठान्तर

सुवृत्तद्व्यङ्गुलाकारा दीर्घे स्यात्षोडशांगुला । मृन्मये सम्पुटे पक्वा मूषा जम्बीरसन्निभा ॥८८॥ कारयेद्वालुकां भंडे यावतो द्वादशांगुलम् ॥ चुल्यामारोप्य तद्भाण्डमधो मन्दाग्निना पचेत् ॥८९॥ पलैकं चूर्णितं गंधं मूषामध्ये विनिक्षिपेत् ॥ शुद्धसूतपलं पश्चात्ततो गन्धपलं क्षिपेत् ॥९०॥ आच्छाद्य पाचयेत्तावद्यावन्निर्धूमगंधकम् ॥ काकमाच्या द्रवैः पूर्यं सम्पुटं चाथ पाचयेत् ॥९१॥ जीर्णद्रावे पुनः पूर्यं नागवल्ल्या बलद्रवैः ॥ तज्जीर्णे कनकद्रावैर्मेघनादद्रवैः पुनः ॥९२॥ एवं पुनः पुनर्देयं यावज्जीर्यति गंधकम् ॥ स्वभावशीतलं ज्ञात्वा भित्त्वा सम्पुटमाहरेत् ॥ गंधकजीर्णबद्धोयं सर्वरोगहरो रसः ॥९३॥

(हस्तलिखितरसरत्नाकर)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मज्व्यास-
ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां
मूर्च्छितबद्धोपवर्णनं नाम षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥३६॥

अर्थ–जंभीरी के समान गोल, दो अंगुल चौड़ी और सोलह अंगुल लम्बी मिट्टी की मूषा (घरिया) बनाकर पका लेवे और उस मूषा को बालुकायंत्र में बारह अंगुल रेत में गाड़ देवे। और चार अंगुल खुली रहने देवे फिर उसमें एक पल शुद्ध किया हुआ गंधक डाल देवे और उतना ही यानी गंधक के समान ही शुद्ध पारद को डाले, उस पर फिर एक पल गंधक धूआं न देवे। अर्थात् जलने लगे तब उसमें मकोय का रस भर देवे। जब मकोय का रस जलकर सम्पुट में आंच जलने लगे तब पानों का रस डालकर सम्पुट भर देवे। उसके जलने पर धतूरे के रस और धतूरे के रस के जलने पर चौलाई (मारवाड़ में चंदेला कहते हैं) का रस डाले, इस प्रकार बार बार रस डालता जावे कि जब तक गंधक जीर्ण न हो, गन्धक जीर्ण होने पर स्वांग शीतल जान के सम्पुट को तोड़ पारद को निकाल लेवे तो यह समस्त रोगों का नाशक गंधबद्धरस सिद्ध होता है, इसको बुद्धिमान् वैद्य अपनी इच्छा से अनुपान के अनुसार अनेक प्रकार के रोगों में दे सकते हैं॥८१–९३॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मज्व्यास–
ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां
मूर्च्छितबद्धोपवर्णनं नाम षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥३६॥

गुटिकाध्यायः ३७

दूसरे प्रकार से पारदबंधनं । सलक्षण (चतुष्षष्टिवनौषधियें)

अचिंत्यमौषधीवीर्यं रसराजस्य बंधने ॥ क्रियामंत्रविधानेन सबीजी बध्यते रसः ॥१॥ तृणगुल्मलता वल्लीवृक्षैः सह वनस्पतिः । षड्विधस्तु रसौषध्यो लक्षणेनावलोकयेत् ॥२॥ सोमवल्ली द्विधा ज्ञेया श्वेता रक्ता च कंदका ॥ रसो रक्तो भवेत्तस्यास्तिथिसंख्यादला च सा ॥३॥ तानि शुक्लकृष्णपक्षे जायन्ते च पतन्ति च ॥ कृष्णपक्षे क्षयात्सापि वल्ली भवति केवला ॥४॥ पूर्णिमायां ग्रहीतव्या रसबंधे रसायने ॥ जलजा पद्मिनी दिव्या वने तद्रूपधारिणी ॥५॥ तथान्याजगरी नाम मंडलैश्च विचित्रता ॥ अजगराकृतिर्वल्ली स्वल्पपत्रपयस्विनी ॥६॥ गोनसी गोनसाकारा सा क्षीरा रसबंधिनी ॥ रुदन्ती चणकाकारा स्रवतीतोयबिंदुका ॥७॥ औषधी सर्वरा नाम स्नुहपित्रा कपिप्रिया ॥ सक्षीरा किंच दुर्भागा जायते च शिलातले ॥८॥ वाराहीकंदलोम्नी च वल्ली मागतपत्रिका ॥ अश्वत्थपत्री सक्षीरा वल्ली सा जातकी स्मृता ॥९॥ अम्लपत्री भवेदम्ला वासनातिविसर्पिणी ॥ चकारनाकं वासपत्री सपत्नी च पयस्विनी ॥१०॥ अशोकनामा सक्षीरा लता चाशोकसन्निभा ॥पुन्नागपत्रिका वल्ली सुगंधक्षीरिणी भवेत् ॥११॥ नागिनी नागसक्षीरा सर्पा वा सर्पसन्निभा ॥ वृक्षरोहा भवेद्वल्ली रसराजस्य बन्धनी ॥१२॥ छत्राकारा च ला वल्ली साक्षीरैकत्रकन्दका ॥ क्षत्रिनाम्नेति विख्याता रसबन्धमहाबला ॥१३॥ संबरी नामतो ज्ञेया पीतक्षीरा वनोद्भवा ॥ नात्युच्चगुल्मजातिश्च नन्दिकापत्रसन्निभा ॥१४॥ मूलक्षीरफलैः पुष्पैः क्षणात्सूतकबंधिनी ॥ वालुकायन्त्रसदृशी पीतक्षीरा सकोमला ॥१५॥ देवनाम्नी लता सा च रसबन्धे महौषधी ॥ वज्रवल्ली सपुष्पा च स्नुहीपत्रपयस्विनी ॥१६॥

अर्थ–रसराज के बंधन के लिये और औषधियों का प्रभाव अचिन्तनीय है, इसलिये पारदबंधनार्थ क्रिया और मन्त्रों का प्रयोग करे, तृण, गुल्म, लता, वृक्ष और वनस्पति इन भेदों में रसौषधियां छः ६ प्रकार की हैं, उनको वैद्य लक्षणानुसार देख लेवें। (१) सोमवल्ली नाम की औषधि श्वेत और रक्त भेद से दो प्रकार की होती है और वह एक प्रकार का कन्द होता है जिसके तोड़ने से लाल रंग का रस निकलता है और उसके पत्ते थोड़े ही होते हैं। वे पत्ते शुक्ल पक्ष में उत्पन्न होते हैं, कृष्ण पक्ष में पत्ते झड़ जाते हैं अथवा कृष्णपक्ष में जो औषधि घटती हो उसको भी सोमवल्ली कहते हैं, उसको पारद बंधन और रसायन के लिये पूर्णमासी के दिन ग्रहण करना चाहिये। (२) जंगल में पद्मिनी के समान रूपवाली जो औषधि है उसको जलजा पद्मिनी कहते हैं। (३) और अनेक प्रकार के मंडलों से चित्रित जिसके थोड़े पत्र और दूध अधिक हो, अजगर के समान आकार हो उसको आजगरी नाम की बूटी कहते हैं। संग्रहकार का कहना है कि मैंने कश्मीर में अमरनाथ के रास्ते पर महागुन्स पर्वत है, वहां गुन्स और महागुस नाम की दो बूटी है, काश्मीर की भाषा में गुन्स अजगर को कहते हैं। (४) अधिक दूधवाली रसबंधन के योग्य गोन सा नाम की जड़ी है जिसका आकार सर्प के समान होता है। जिसका आकार चने के वृक्ष का सा हो उसमें से पानी की बूंदे झरती हों, उसको रुदन्ती (रुद्रदन्ती) कहते हैं। जिसके पत्ते थूहर के पत्तों के समान हों, उसे सुवर्ण नाम की बूटी कहते हैं। वह वानरों को अत्यन्त प्रिय होती है। और दुर्भगा नाम की औषधि चट्टानों की जगह उत्पन्न होती है और दूधदार होती है। जिसके पत्ते अगस्त्य वृक्ष के समान हो, उसके वराही कन्दलोम्नी नाम की बूटी कहते हैं। अश्वत्थपत्री नाम की वह बूटी कहते हैं जो दूधवाली और साजात की हो। जो फैलनेवाली खट्टी गंधक जिसमें आती हो जिसके पत्ते चकोर के नाक के समान हों या बिना पत्ते की हो और दूधवाली हो उसको अम्लपत्री जड़ी कहते हैं। (५) अशोक वृक्ष के समान जो दूधवाली औषधि हो उसको अशोकपत्री कहते हैं। जिसमें सुगंधित दूध निकलता हो उसको पुन्नागपत्री कहते हैं। जो सर्प के तुल्य हो उसे नागिनी या सर्पा कहते हैं। वृक्षारोहा नाम की वेल पारद को बंधन करनेवाली होती है। जिसका आकार छतरी के समान हो और जिसका शरीर कन्दरूप हो, दूध जिसमें अधिक हो, उसको छत्री नाम की जड़ी कहते हैं। वह रसबंधन करने में अत्यन्त बलवती है। संवरी नाम की वह जड़ी होती है जो कि जंगली छोटी जाति को पौधा होता हो और जिसके पत्ते नन्दिका के समान होते हैं जिसके फल दूध और फूलों से पारद बद्ध होता है। बालुका के समान पत्तोंवाली कोमल और पीले दूधवाली हो, रसबंधन करनेवाली देवी नाम की जड़ी है। जिसके पत्ते थूहर के समान और दूधदार हो, उसे वज्रवल्ली कहते हैं॥१–१६॥

चित्रकौ कृष्णरक्तौ च क्षारं कृष्णं करोति यः ॥ कृष्णास्तु गोपनाख्यातौ शुद्धौ द्वौ रसबन्धने ॥१७॥ नराजत्कृष्णपुष्पी च ईषद्वृत्तफला लता ॥ कालपर्णी भवेद्वल्ली मुकुटे पर्वतस्य च ॥१८॥ पालाशतिलका नाम पत्रैः पालाशसन्निभा । कन्दे पीतरसं मुंचेद्रसराजस्य बन्धने ॥१९॥ नीलोत्पलसमाकारा नीलोत्पाली च पर्वते ॥ रजनी सा हरित्पात्रा क्षीरत्कौमारिकंदका ॥२०॥ सिंहिका नाम विख्याता श्वेतपुष्पा पयस्विनी ॥ कुलत्थपत्रवत्पत्रा क्षीरपात्रा च मेदिनी ॥२१॥ गजदन्ताकृतिः कंदा क्षिप्रक्षीरा लता भवेत् ॥ महौषधिजपापुष्पा क्षीरस्नेही चतुर्दला ॥२२॥ गोकर्णपत्रा गोष्ठांगी कंदक्षीरा नगोद्भवा ॥ त्रिफली रक्तमाला च नाम्ना

खदिरपत्रिका ।।२३।। पत्रैर्हरिद्रसंकाशा रसं रक्तं विमुञ्चति ।। तृणकंदवतोर्ज्योतिर्ज्योतीरूपा निशामुखे ।।२४।। ज्वलन्ति पर्वतैस्तैस्तु ते सर्वे रसबंधकाः ।। मंजिष्ठा रसबंध च रक्तवल्ली विसर्पिणी ।।२५।। ब्रह्मदंडी भवेज्ज्येष्ठी क्षीरकंदरसौषधी।।त्रिलोहवेष्टित् मूलं वक्त्रस्थं पाययेन्नरः।।२६। । कीटभारी भवेद्वल्लीं शिग्रुबीजा पयस्विनी ।। तुम्बिका तुम्बसदृश सक्षीरा तरुगामिनी ।।२७।। कटुतुंबी भवेदन्या सक्षीरा भूमिगर्भिका ।। मयूरस्य शिखानाम्नी ज्ञातव्या रसबंधिनी ।।२८।। मूलकाकारकापत्रा रक्तक्षीरा सपीतका ।। नाम्ना हेमलता दिव्या पीतपुष्पा महौषधिः ।।२९।। सासुरी तुम्बिका पुष्पी पत्रैः पंचागुलैः समा ।। सप्तच्छदसमैः पत्रैः सप्तपर्णी भवेल्लता ।।३०।। गोमारी नाम विख्याता सक्षीरा खड्गपत्रिका ।। पीतक्षीरा भवेद्दिव्या रसराजस्य बंधका ।।३१।।

अर्थ–चित्रक एक औषधि है जो कि दो प्रकार की होती है, एक काली दूसरी लाल, वह दूध के (संग औटाने से) काला करती है। काले चीते को गोपन कहते हैं, वह दोनों प्रकार का भी चित्रक पारद बंधन में श्रेष्ठ है। कालपर्णी नाम की पर्वतों के शिखरों पर होती है, जिसके फूल चमकरहित और काले होते हैं। जिसके पत्ते ढाक के समान होते हैं और जिसके कन्द में पीला रस निकलता है, वह पारद बंधन के करनेवाली, पालाशतिला नाम की जड़ी है। नीलकमल के समान पर्वतों पर जो जड़ी उत्पन्न होती है उससे नीलोत्पाली कहते हैं। रजनी नाम की वह जड़ी है जो कि हरे पत्तोंवाली हो और जिसकी जड़ में कंद हो। सफेद फूलवाली दूधदार हो, कुलथी के पत्तों के समान जिसके पत्ते हों और पत्तों में भी दूध हो, दस्तावर हो, उसको सिंहिका कहते हैं। जिसका कन्द हाथी दांत के समान श्वेत और मोटा हो, थोड़ी ही चोट लगने से शीघ्र दूध टपक आवे, उसे क्षिप्रक्षीरा जड़ी कहते हैं। जिसके फूल गुड़हर के समान हों और प्रत्येक डांडी में चार चार पत्ते हों, जिसके दूध में चिकनाहट हो उसको महौषधि कहते हैं। जिसके पत्ते गाय के कान के समान, कन्द में दूध और पर्वत में उत्पन्न हो उसको गोष्ठांगी कहते हैं। जिसके मिले हुए तीन फल हों और लाल वर्ण हो पत्ते पीले पीले से हों और रस जिसका लाल निकलता हो, उसको खदिरपत्रिका कहते हैं। पर्वत पर उत्पन्न हुई जो औषधियां सांयकाल के समय दीपक के समान जलती हैं, उनको तृणकन्द कहते हैं। (कोई कोई वैद्य इसको संजीवनी बूटी कहते हैं) फैलनेवाली जो लाल वेल होती है, उसको मंजिष्ठा कहते हैं। वह रस को बांधती है। (६) ब्रह्मदण्डी ज्येष्ठी (मुलहठी) और क्षीरकन्द ये तीनों रसौषधियां हैं। जिसके पत्ते सैंजन के समान हों और दूधदार हो उसको कीटभारी कहते हैं। दूधदार पेड़ों पर चढ़नेवाली तूंवी के समान जो जड़ी होती है उसको तुम्बिका कहते हैं। धरती पर फैलनेवाली कड़वी तूंवी होती है उसे कटुतुम्बिका कहते हैं। रस को बांधनेवाली एक मयूरशिखा भी होती है, जिसके मूली के समान पत्ते लाल रंग का रस या पीलाईयुक्त लाल रस और फूल पीले हों, उसको हेमलता कहते हैं। जिसके फूल राई या तूंबी के समान हों और बराबर पांच अंगुल के सात सात पत्ते हों, उसको सप्तपर्णी कहते हैं। जिसके पत्ते तलवार के समान हों, दूधदार हो, उसको गोमारी कहते हैं। यदि वह पीले दूध की हो तो अत्यन्त रसबंधक होती है।।१७–३१।।

व्याघ्रपादलता वल्ली सक्षीरारक्तपुष्पिका ।। धनुकुस्तुंवरीरूपा क्षीरिणी पीतपुष्पिका ।।३२।। दिव्यौषधिमहावीर्या त्रिशूली नातिसर्पिणी ।। त्रिदंडी रक्तपत्रा च त्रिपत्रा सा लता भवेत् ।।३३।। श्रृंगाकारा भवेच्छृंगा पीपपुष्पा पयस्विनी ।। समरिचसमाकीला क्षीरिणी कन्दसंयुता ।।३४।। वज्रनामसमा ख्याता-क्षीरिणी कदंबत्यापि ।। रक्तपर्णी सिता चैव दिव्यौषधिमहाबला ।।३५।। करवीरदला पुष्पा रक्तकंदावली भवेत् ।। पीतमस्तककंदाभां मस्तरूपा पयस्विनी ।।३६।। रक्तक्षीरा भवेत्सा च वल्ली बिल्वदला शुभा ।। समरूपा भवेद्वल्ली रोहिणी रसबन्धनी ।।३७।। बिल्वात की भवेद्वल्ली ज्योतिष्पत्रा पयस्विनी ।। गोरोचनारूपक्षीरा वल्ली गोरोचनप्रभा ।।३८।। स्वल्पासकंदपुष्पा सा लता कंदैकपत्रिका ।। स्वल्पाकारा विशल्या च त्रिपत्रा कंदवर्जिता ।।३९।। कंदक्षीरा नगोद्भूता शीघ्रक्षीराल्पमोचिनी ।। चतुःषष्टिसमाख्याता औषध्यः सुरपूजिताः ।।४०।। शुभे दिने सुनक्षत्रे वल्लिपूजाविधामतः ।। क्षेत्ररक्षा प्रकर्तव्या अघोरास्त्रैर्दिशस्तथा ।।४१।। शक्तिबीजोऽथ वाऽघोरो ग्रहणीप्राप्तियोगतः ।। याः काश्चिन्मुनिभिः प्रोक्ता औषध्यश्च सहस्रकम् ।। ताभिर्युक्तैस्तु विज्ञेयं तत्त्वज्ञै रसबंधनम् ।।४२।।

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–व्याघ्रपाद लता उसको कहते हैं कि जिसके फूल लाल और जड़ सिंह के पंजे के समान हो जिसके फूल पीले हों, दूधदार और अत्यन्त फैलनेवाली न हो उसको त्रिशूली जड़ी कहते हैं। जिसके वेल के लाल तीन तीन पत्ते हों, उसको त्रिदण्डी कहते हैं। सींग के आकार की पीले फूलवाली जो दूधदार वेल होती है उसे श्रृंगा जड़ी कहते हैं। जिसका कन्द दूधदार और मिरच के समान हो उससे कीलाबूटी कहते हैं। जिसमें दूध हो और कन्द भी हो उसको वज्री कहते हैं। अत्यन्त बलकारक एक प्रकार की श्वेत लता को रक्तपर्णी कहते हैं। जिसके फूल और फल कन्हेर के समान और कन्द जिसका लाल हो उसको वल्ली कहते हैं। जिसका कन्द पीला और मस्तक के समान हो उसे मस्तकन्दा कहते हैं, वही मस्तकन्दा बेल लाल दूधवाली और बेल के समान पत्तेवाली हो तो उत्तम होती है। समान रूपवाली जो बेल होती है उसको रोहिणी नाम की बूटी कहते हैं। जिसका दूध चांदी के समान श्वेत हो, रंग जिसका गोरोचन के समान हो उसको गोरोचना बूटी कहते हैं। जिसके कन्द और फूल छोटे हों, एक एक ही पत्ता हो उसको लताकन्द कहते हैं। जिसके कन्द न हो तीन तीन पत्ते निकलते हों, छोटा पौधा हो उसे विशल्या कहते हैं। ये चौसठ औषधियां देवताओं के भी पूज्य हैं। शुभ दिन और शुभ नक्षत्र में वल्लीपूजा के अनुसार क्षेत्र की रक्षा करनी चाहिये फिर अघोर मन्त्रों से दिशाओं की रक्षा करे। ऋषियों ने ओर और जो सहस्रों औषधियां वर्णन की हैं, उनके योग से भी पारद का बंधन होता है, ऐसा जानना चाहिये।।३२–४२।।

गोली सीमाव बजरिये बूटी (उर्दू)

सीमाव जिस कदर मुनासिव समझो अर्क खिरनी बूटी के साथ कामिल चार चार घंटे तक खरल करो। बादहू दूध अंजीर बकदर अन्दाजा डालकर खरल करो, गोली बन जावेगी। (सुफहा ६६ किताब कुश्तैजात हजारी)

रसबंधकवर्ग

रम्भावीरस्नुही चैव क्षीरकञ्चुकिरेव च । दिनारिश्चैव गोरंभा मीनाक्षी काकमाचिका ।। एभिस्तु मर्दितः सूतः पुनर्जन्म न विद्यते ।।४३।।

(यो० र०, नि० र०)

अर्थ–केले का रस, आक थूहर क्षीरकंचुकी की दीनारि गोरम्भा मछैछी मकोय इनके साथ मर्दन करने से पारद का पुनर्जन्म नहीं होता अर्थात् पारद महामूर्च्छित होता है।।४३।।

सीमाव को जड़ी में नष्टपिष्टी (उर्दू)

अगर सीमाव को केला के पानी में खरल किया जावे तो नेस्तनाबूद हो जाता है। (सुफहा ५७ किताव कुस्तैजातहजारी)

मुत अल्लिक कायमुल्नार गुटिका (उर्दू)

मुतरिज्जम यह जजरुबा हुआ है कि हर बूटी कमरी अमूमन सीमाव को करते हैं और हर बूटी शम सी सीमाव को कायमुल्नार करते हैं। इसी उसूल के लिहाज से नकछिकनी सफेद गुल से सीमाव गुटिका हो जाता है और

कुश्ता नुकरा जो बूटी मजकूर से बनता है वह आजबआव सीमाव भी हो सकता है और नकछिकनी स्याह गुल से अकसीर सीमाव शम सी बनती है जिसका तरीका ऊपर बयान हो चुका है। (सुफहा अकलीमियां २१६)

गोली सीमाव बजरिये जड़ी (उर्दू)

अवनी बूटी यानी खटकल में करीब चार पांच घंटे खरल करने से गोली बन जाती है। (सुफहा ६२ किताब कुश्तैजात हजारी)

आब लहसन में अगर पारा खरल किया जावे तो गालिबन गोली बन जायेगी। करीब एक घंटे तक। मगर आबप्याज में भी चन्द अर्से खरल करने से गोली बन जाती है। (सुफहा ६५ किताब कुश्तैजात हजारी)

गोली सीमाव बजरियः पान (उर्दू)

पान बंगला दो सद अदद सीमाव एक तोले खरल करके गोली होगी (सुफहा ६३ किताब कुश्तेजात हजारी)

उकद सीमाव बजरिये तुलसी स्याह (उर्दू)

पारा जिस कदर मुनासिब समझो अर्क बूटी स्याम तुलसी के साथ कामिल दो घंटे तक खरल करो, बादहू एक मोटे कपड़े में डाल कर निचोड़ो ताकि जाइद पारा निकल जावे। गरज कि अर्क लेमूं में भी खरल करे यानी कपड़ें में डालने से पहले। (सुफहा ६६ कुश्तैजात हजारी)

उकद सीमाव–बजरिये तुलसी स्याह (उर्दू)

सीमाव एक पाव को अर्क स्याम तुलसी में इस कदर खरल करे कि मिस्ल दही हो जावे फिर शोरा एक पाव को पानी निस्फ सेर गर्म करे। बादहू पारे को गिलास सांचे में डालकर शोरा के पानी में डाल दें। पांच मिनिट तक पकावे फिर सांचे से गिलास निकाल कर ३ मर्तबः अर्क लेमूं के गर्म करके बुझावें। (सुफहा ६५ किताब कुश्तै जात हजारी)

गुटिका जड़ी से (मुश्तमः)

पारा ३ सेतपुहप के रस में खरलै दिन ७ दूसरे तीसरे धोआ करे तव गोली बांधे गोहूं की रास में धरे १ तव निकारि के पीतरकती बूटी में खरल करे। दिन ३ तो सिद्ध होय।

गुटिका सीमाव बजरिये जड़ी (उर्दू)

सीमाव को कटाई में खुर्द में सहक करने से सफाई भी आती है और गाढ़ा भी होता है। सीमाव दुधी खुर्द में सहक करने से गाढ़ा और मुसफ्फा हो जाता है और बिलाखिर गोला बंध जाता है। (सुफहा) अकलीमियाँ १६३)

गुटिका बनाने की तरकीब बजरिये दुधी यानी नागार्जुनी (उर्दू)

मुख्तलिफ[1] किताबों में मललन अतमामुल हविस, महाभारत अवजाखखुशहाली में लिखा है कि दुधी खुर्द जिसको नागार्जुनी भी कहते हैं, लेकर उसकी लुवादी में सीमाव को बंद कर दे, गिलेहिकमत करके आग दे तो गुटिका कायमुल्नार तैयार होती है और अगर खरल करके बालू जंतर में आग दे तो अकशीर हो जाती है। अगर दूधी के शीशे में सीमाव को पकावे तो गाढा हो जाता है। बादहू भफली में पकाकर सुहागा देकर आग दे और अकसीर बनावे। इस तरकीब को साहब खुशहाली ने लिखा है। (सुफहा अकलीमियां १६३ का हाशियां)

गुटिका बनाने की तरकीब बजरिये दुधी (उर्दू)

दुधी बूटी को लाकर उसको कूटे और तरीकी हालत में बोतः बनावे और सीमाव तोला भर लेकर उसमें डाले और दुधी कुटी हुई से मुंह बोते का बंद कर दे। मतलब यह है कि दुधी के गोले के अन्दर सीमाव रहे बाद उसके खुश्क करे और बैजः मुर्ग लाकर उसमें आलायश निकाल डाले और उसके अन्दर दुधी का बोतः रखकर दूसरा टुकड़ा बैजे का ऊपर से बंद करके गिले हिकमत कर दे और खूब मुस्तह कम करके एक हफ्ते तक रहने से जब गिले हिकमत बिलकुल खुश्क उसको कोयले कंडे की आग होनी चाहिये बल्कि भूभल की आग में दफन करे। चन्द पहर तक दफन रहने दिया कि दूधी का बोतः अंदरूनी सोख्त हो जावे। बाद आग सर्द होने से निकाल कर सीमाव बस्तः को मुंह में रखे इमसाक होगी और जब तक तुर्शी न खायेगा, फारिग न होगा। (सुफहा किताब अलजवाहर उर्दू १२०)

गुटिका बनाने की तरकीब बजरिये शीरा दुधी व शीरा धतूरा (उर्दू)

जो कि बारहा तजरुबे में सही उतरी है। सीमाव लाकर सात दिन तक तेजाब साबुन में रखे बाद उसके पुख्तः ईंट में खरल करे। बाद उसके एक दिन शीरा घीग्वार में सहक करे। ताकि स्याही बिलकुल जाइल हो जावे और सितारे की तरह चमकने लगे। बाद उसके शीरा दुधी खुर्द का नौ हिस्सा और शीरा धतूरे स्याह का एक हिस्सा खरल में डालकर सीमाव में सहक करना शुरू करे ताकि सीमाव उसमें गाढ़ा हो जावे। बादहू आरदमाश लाकर उसको अच्छी तरह गूंदे और कूटे ताकि खूब चिपकने लगे और लसदार सख्त हो जावे। उस आरद माश में एक गढ़ा कुलिया की तरह बनाकर सीमाव मजकूर और शीरजन को डाल कर मुँह उसका आटे से बंद करके खूब खुश्क करे कि पत्थर की तरह तख्त हो जावे। आटे का लेप मोटा मोटा होना मुनासिब है और उसके ऊपर तीन बार मोटी मोटी गिले हिकमत करके हर बार उसको भी खिला दे। बादहू उसको भूभल में दफन करे और इतनी देर रखे कि आटा दर्मियान में सोख्त हो जावे। बादहू उसको फौरन गर्म गर्म निकालकर पानी में डाल दे कि ऊपर की मिट्टी फट जावे। उस वक्त सीमाव मुनअक्किद को निकाल ले आला दर्जे कि गुटिका हो जावेगी। इन्शाअल्लाह मुजर्रिब व आजमूदह है। (सुफहा किताब अलजवार १२१–देखो नुसखा फार्सी ३४ नं० २)

गुटिका सीमाव बजरिये अमरबेल (उर्दू)

गवरूल यानी आकाशबेल के पानी में इस तरह गोली करे यानी पहले निस्फ सेर पानी लेकर कढ़ाई में डालकर पानी आग पर खुश्क करे। बादहू फिर सेर पानी लेकर इस तरह करे, सीमाव की गोली बन जावेगी। सुफहा ६२ किताब कुश्तैजातहजारी)

गुटिका बनाने की तरकीब–बजरिये नमक व जड़ी भाँगरा व मिस्सी (उर्दू)

सीमाव आठ फल्लूस लाकर कढ़ाई आहनी में रखकर मशक भर पानी और पाव भर नमक डाल कर तीन पहर आग दे। इस तरह कि आधा पानी रह जावे। बादहू पानी निकाल कर शीरा भांगरा स्याह उस्में डालकर पकावे। जब दो तीन तोला रह जाय, निकाल कर छः गोलियां बनावे और सुई से सूराख करके करछी में डालकर हर एक गोली में दो फल्लूस शीरः मिसी (काझनकाह) का डाले थोड़ी देर आग पर रखे सख्त हो जायेगा और उमदा गुटिका होगी। जो आदमी दोनों हाथ में मलेगा, निहायत शहवत होगी और जिस कदर दूध खायेगा, हजम हो जायेगा। अगर मुंह में रखकर पियादह पा चलेगा, माँदह न होगा। (सुफहा किताब अलजवाहर ११८)

१–महजना मुकम्मिल तरकीब दर्ज है चन्दवार तजरुबे में नाकामयाबी रही।

गुटिका इमसाक बनाने की तरकीब बजरिये विसखपरा व धतूरा स्याह (उर्दू)

विषखपरा यानी गिद्धपरना लाकर कूट कर बोतः बनावे और तोला भर सीमाव उसमें डाल कर बोतः को बोतः आहनी में रख कर नीचे से चराग की आग दे और ऊपर से चोया अर्क धतूरा स्याह का टपका दे। जब मुनक्किद हो जावे तो रख छोड़े और मुवाशिरत के वक्त मुँह में रहे। जब तक मुँह से बाहर न निकलेगा इमसाक होगा। (हसीनुद्दीनअहमद हाशिया सुफहा किताब अलजवाहर १२२)

सीमाव मुंजमिद करने की तरकीब बजरिये कटाई सफेद गुल जिसका जीरा भी सफेद हो (उर्दू)

तरकीब दोयम अगर सीमाव को शिकोरे में रख कर चार पहर बराबर चोया शीरा बूटी मजकूर का दे और शिकोरे के नीचे मुलाइम आग देता रहे और बूटी कटाई सफेद गुल की लकड़ी से आहिस्ता आहिस्ता हिलाता रहे जो सीमाव मुंजमिद हो जायेगा और कलई के वास्ते अकसीर होगा। अलामत कटाई सफेद गुल जिसके अन्दर का जीरा सफेद ही कीमियाई है, अगर कलई गुदाख्तः में तोला भर इसका अर्क डाले नुकरा हो जायेगा। (सुफहा अकलीमियां २६५)

गुटिका बनाने की तरकीब (उर्दू)

नयेजायफलमें पारा भरके मुंह उसका अफयून से बंद कर दे और चारों तरफ अफयून लगा दे फिर काले धतूरे के फल में रखकर सात तह कपरमिट्टी चढ़ाकर धूप में सुखा दे फिर चौथाई प्रस्थ (२ सेर) वजन खानगी उपले एक घड़े में भरकर उस धतूरे के फल को उसमें रखकर आग दे। जब ठंडी हो जाय जायफल धतूरे से निकालकर दूसरे धतूरे के फल में रखकर बदस्तूर आग दे। इसी तरह सौ आंच दे। हर रोज नया धतूरे के फल ले और पाव वजन (यानी २ सेर की चौथाई १/२ सेर) हर सहजंगली बढ़ाता जावे। सौ रोज बाद गुटिका बन जावेगी। यह हर धातु को बदल देता है और पास रखने से आदमी तेजस्वी हो जाता है। (सुफहा १४ खजाना कीमियां)

गुटिका बनाने की तरकीब बूटी से (उर्दू)

तितलौंकी जिसको हिन्दी में कटज्वर भी कहते हैं और जो सिरेके पास पतली होती है, जब दरख्त में लगी हो, दो हिस्से सिरे के पास छोड़ कर उसमें तोला भर पारा भर दे और शिगाफ उसी के छिलके से बंद करके ऊपर से मोम लगा दे। और हत्तुल इमकान मगज में उसके हाथ न लगने पावे। तेंतीस दिन तक उसमें पारा मजकूर रहने दे और फौरन डालकर वन्द कर दे ताकि हवा के असर से सड़ने न पावे। बाद अय्याम मजकूर के जब तितलौं की मजकूर पक जावे। तोड़कर साय में खुश्क करे और एक कपरौटी मुकम्मिल कपड़े पर बालू लगाकर कर दे और दस बारह कंडो की आग लगावे। आग भुड़का की तरह हो और तितलौं की मजकूर का रुख सूरज की तरफ रखे। बादहू सर्द होने से निकाल ले सीमाव गुटिका होकर अकसीर का काम देगा। (सुफहा अकलीमियां २१३)

गुटिका सीमाव बजरिये बूटी (उर्दू)

बूटी चहार सिटगिरह के एक पाव नुगद में सीमाव डालकर आग करीब ३ सेर के देवे। गोली उमदा बन जावेगी। अजमुहम्मद स्माइल पवलिक डिसपरी चीड़याल (सुफहा ६२ किताब कुश्तेजात हजारी)

उकद सीमाव माखा बूटी (उर्दू)

उकद सीमाव इस्तरह हो जाता है कि चार पत्तियें भांगरा स्याह नर यानी माखा नरस्याह का लेकर एक सर्द कोयले में गढा करके सीमाव खालिस मुसफ्फा सिरका शवनम नखूद ख्वाह मामूली सिरका मुकत्तः साफ कर लिया गया हो ऊपर नीचे दो २ पत्तियां रखें और उनके दर्मियान में सीमाव मजकूर रहे बादहू कोयला मजकूर को कोयले की आग के अन्दर रख दे और परंधो के और दरज की राह से देखता रहे। सीमाव थोड़ी लरजा रहता है बादहू सुर्ख होकर जम जाता है सर्द पानी कोयला पर डालकर उतार ले। ऐसा उकद होता है कि वजन बदस्तूर और साफ शफ्फाफ होता है पत्ती जल जाती है और उकदसे चिपक जाती है उसको चाकूसे खुरच डाले। (सुफहा अकलीमियां २७२)

और भी (उर्दू)

अलामत भांगरा स्याह गुल को दकन यानी गुजरात बगोजन व खानदेश वगैरः में स्याह माखा कहते हैं नर और मादा दो किस्म का होता है हिन्दी में स्याह भांगरा कहते हैं (यह स्तलाह साधुओं की है मामूली भांगरा स्याह दूसरा है) हुलिया उसका यह है कि पत्तः अंगरेजी रुपये की बराबर बलकि किसी कदर बड़ा पीपल के पत्ते के मुशावः मगर उससे बहुत छोटा होता है और उसी के पत्ते की तरह नोक छोटा बडी निकली होती है इसकी बडी अलामत यह है कि पत्ते की कोर पर चारों तरफ खफीफ सुर्खी होती है और रंग वे रेश भी पत्ते का सुर्ख होता है और एक हाथ से ऊंचा दरख्त नहीं होता। पत्ता इसका न बहुत मोटा न बारीक अकसर उन जगहों पर होता है जहां नहर या पानी खुश्क होकर किसी जगह तरी बाकी रहे। डंडी दरख्त की स्याही माइल होता है और यही अलामत नर होने की है क्योंकि मादा की डंडी सुर्ख होती है और दरख्त लांबा होता है। मादे में खासा है कि इससे सीमाव फरार नहीं हो सकता जब तक कि उसका असर हत्ता कि राख तक बाकी रहे ख्वाह कितनी ही तजे आग दी जावे लेकिन कोई काम मादा माखा कीमियाई से नहीं निकलता। यहां तक सीमाव मुनक्किद भी नहीं हो सकता और जब पत्ती मजकूर का असर जाइल होता है तो सीमाव मजकूर मफरूर हो जाता है। (सुफहा अकलीमियां २७२)

रसबंधन मूलिकाबद्ध

राजिकाफलिनीकंदतुलसीरसचित्रकैः ॥ मूषालेपस्तु कर्तव्यः क्षणार्धे बद्धसूतकः ॥४४॥

(यो० तं०)

अर्थ—राई, फलिनीकन्द (जमीकन्द), तुलसी का रस और चित्रक इनसे घरिया में लेप कर एक क्षण तक अग्नि में रखे तो पारद बद्ध होगा॥४४॥

गुटिका बनाने की तरकीब (उर्दू)

आँवला, अजा[1] यानी दूध बकरी का जुदा जुदा कुचल कर अर्क निकाले फिर लोहे के बर्तन में पहले बूटी का अर्क सात बार लेप करे और सुखा ले फिर दूसरी बूटी का अर्क इसी तरह तीसरे अर्क इसी तरह तीनों के अर्क में तीन तोले पारा थोड़ा सा खरल करके उस लोहेके बर्तनमें डालकर गोल मुँहके चूल्हे पर चढ़ावे और मुवाफिक की आंच लगावे और उन बूटियों का डालता जावे और नये अनार की जड़ से पारे को हिलाना चाहिये। पहर भर में पारा मक्खन सा हो जायगा फिर उस पारे को आँवले के अर्क में खरल करके जब खूब मिल जावे गोली बनाकर कपड़े में लपेट कर मटके में आँवले का अर्क भरके मुअल्लिक लटका दे और पहर भर धीमी आंच दे। फिर दूसरे

१—अजा गलत है अगर अजिया है तो भंग, अगर अजहा है तो कौंच, अगर अजागर है तो भांगरा, अगर अजाजी है तो खट्टा गूलर, अगर उझटा है तो भूमी आंवला से मुराद है।

आंवले के अर्क में इसी तरह डेढ पहर आग दे। अगर पारा गोली बनाने के लायक हो गया हो निकाल ले वरन तीसरे रोज इसी तरह दो पहर आंच दे जब तक गोली बनाने के लायक न हो तो हर रोज निस्फ (पहर) बढाकर आंच दे जब गोली बना ले नाज में कपडे समेत दवा दे दो चार रोज में गुटिका बन जावेगी मुँह में रखने से जमीन पर से ऊंचा चलने लगे और दूध में जोश करते वक्त डाल लेवे इंतहा की ताकत हो। (सुफहा १३ खजाना कीमियाँ)

उकद सीमाव (उर्दू)

सीमाव लेंमू कागजी के शीरे में अगर सौ पुट तसकिया व तश्चिया किया जावे तो मुनअक्किद हो जाता है। बादहू थोड़े अमल में मुकल्लिस होकर अकसीर तिला का खास्सा जाहर करता है। (सुफहा अकलीमियाँ २०९)

मूलिकावद्ध

निंबूरसेन संमिश्रमेकीकुर्याद्रसेन तम् ॥ पारदं खल्वके कृत्वा सौभाग्यं च तदर्धकम् ॥४५॥ मर्दयेत्सर्वमेकत्र दिनं पंचावधिस्तदा ॥ माषप्रमाणगुटिकाः कर्तव्याः शुष्कतां गताः ॥४६॥ काष्ठभाजनमध्यस्था माषचूर्णेन वेष्टिताः ॥ इष्टिचूर्णेन चालोड्याः पुनः शोष्यः सुधीमता ॥४७॥ अधोरक्षां ददात्यादौ पुनरंगारकानथ ॥ क्रमेण वटिकां क्षिप्त्वा धाम्यमानाः शनैः शनैः ॥४८॥ अनेन विधिना सूतोध्मातो रक्षान्तरालगः ॥ निःसृत्य वटिकाभ्योऽसौ भवत्यतिसितप्रभः ॥४९॥ सर्वोपि कनकरूपः स्यादपूर्वो जलयोगतः ॥ पोटस्तु जायते ध्मातः पारदः शुक्रसंनिभः ॥५०॥ अयं मूलिकाबद्धपारदो मुखरोगहृत् ॥ न जरापि बलं कुर्यान्न कालः कलयत्यमुम् ॥५१॥

(टो० नं०)

अर्थ–पारद से आधा सुहागा इन दोनों को खरल में रख नींबू से रस से पांच दिन तक घोटे उनकी उरद के समान गोलियां बना के सुखा लेवे लकड़ी के पात्र में रस उरद की पिट्ठी से लपेट देवे। उस पर ईट का चूरा लपेट कर सुखा लेवे। नीचे राख ऊपर गोली फिर राख फिर गोली इस प्रकार रख अग्नि में धोके तो उन गोलियों में से निकलकर पारद अत्यन्त श्वेतरूप हुआ राख से वारह निकल आता है और वे समस्त गोलियां जल के योग से सुवर्ण के समान रूपवाली हो जायँगी उस पारद को पोटबद्ध कहते हैं। अब जो इसको खाता है उसका बुढापा और काल कुछ भी नहीं करता है।।४५–५१।।

गुटिका सीमाव बजरिये रोगन अलसी (उर्दू)

सीमाव अली के तेल के साथ पकाने से भी जम जाता है इसकी भी जो चीज चाहो सो बना लो अगर ज्यादः सख्त करना मंजूर हो तो चन्द दिन लेमूं के पानी में रख दो सख्त हो जावेगा। (सुफहा ६४ किताब कुश्तैजात हजारी)

गुटिका सीमाव बजरियः रोगन जैतून (उर्दू)

जितना दिल चाहे उतना सीमाव लेकर लोहे की कढाई में रोगन जैतून के साथ धीमी आंच पर जोश दे और उसके धूंए से मुंह और नाक को बचाए क्योंकि मोहलिक है। जब रोगन सूख जाएँ और डाले (या लकड़ी का तेजाब डाले इससे सीमाव मरताहै) फिर उसको निकालकर जो चाहे बना लेवे यह पारा इतना सख्त हो जाता है कि हथोड़ा भी खा जाता है। (सुफहा ६४ किताब कुश्तैजात हजारी)

गुटिका बनाने की तरकीब बजरियः बैजः (उर्दू)

सीमाव खालिस को लाकर हजार अस्पंद सोख्तानी में तीन रोज तक सहक करे कि विलकुल स्याह हो जावे बाद उसके शीरा लैमूं से धोए ताकि मैल दूर होकर सितारे की तरह चमकदार हो जाए। बाद उसके अंडा लाकर बकदर एक सर्सों के सूराख करके सफेदी और जर्दी को रफ्तः रफ्तः उस सूराख के जरिये से गिरा दे और बैजा को खाली करके सुराख के चारों तरफ मोंम का घेरा बनाकर उस घेरे में सीमाव मजकूर रखे ताकि थोड़ा थोड़ा सूराख के रास्ते से बैज के अन्दर चला जावे और गिरै नहीं बाद उसके सूराख को अंडे के छिलके में सफेदी लगाकर उसी से बंद कर दे और सुखला दे। बादहू लहसन लाकर जवे जवे छीलकर दोनों कोने जवे के काट डाले और कूट कर महीन कर ले लहसन अगर अठारह हिस्सा हो तो माशा का आटा दो हिस्सा उसमें मिलाए और खूब दोनों को कूटे। बाद उसके अंडे पर एक तरह उसके बतौर गिले हिकमत के चारों तरफ हमबार लगा दे और धूप में सुखला दे और खुश्क करे। इसी तरह सात बार गिले हिकमत लहसन और माश के आटे की करे हर बार खुश्क करे उसी के ऊपर से तार लोहे का लपेटे और कड़वा तेल आधामन इतने बड़े जर्फ के रखें कि जोश खाकर निकल न सके और बैजा मुर्ग मजकूर का तार के जरिये से तेल में लटका कर डाले। जंतर गर की करे लेकिन जर्फ के पेंदे से बैजः मजकूर दो दो अंगुल ऊंचा रहे और आग जलाना शुरू करे। आठ पहर के बाद आग को खुद बखुद सर्द होने दे बादहू सीमाव को गिले हिकमतों के अन्दर से निकाले मुनअक्किद तो होगा लेकिन सख्त न होगा। कपड़े से बांध कर तीन रोज वशब मुंह में रखे बाद उसके घडे में सर्द पानी के अंदर डाले उकद कामिल हो जायगा और उमदा किस्म की गुटिका होगी इन्शा अल्लाहताला (सुफहा किताब अलजवाहर १२२–१२३ देखो नुसखा फार्सी नुफहा नं० ३५–४४)

रजोबद्ध रसबन्धन

पुष्पितमनोजमंदिरमध्ये सूतो नियंत्रितो युक्त्या ॥ बद्धो भवति कियद्भिर्दिवसैः पुष्पप्रभावेण ॥५२॥

(यो० र० र० रा० शं० र० सा० प० नि० र०)

अर्थ–जिस समय स्त्री को मासिकधर्म हो उस समय स्त्री की योनि में किसी युक्ति से पारद को रख देवे तो रज के प्रभाव से वह पारद बद्ध होता है।।५२।।

कालिनीलक्षण बंधनोपयोगी

यस्याः स्युः कुटिलाः केशाः श्यामांगी रक्तलोचना ॥ अश्वत्थपत्रसदृशो गुह्यदेशे विराजितः ॥५३॥ कृष्णपक्षे पुष्पवती सा नारी कालिनी मता ॥ तस्या देयं त्रिसप्ताहं गंधकं घृतसंयुतम् ॥५४॥ तद्रजसा रसं सम्यङ् मर्दयेद्युक्तकर्मसु ॥ बंधनार्थं विशेषेण सूतकस्य प्रयोजयेत् ॥५५॥

(टो० नं०)

अर्थ–जिस स्त्री के केश घुंघराले हों, शरीर श्याम हो, लाल २ नेत्र हों और जिसकी योनि पीपल के पत्ते के समान हो, कृष्ण पक्ष में रजोधर्म हो उसको कालिनी कहते है। उस स्त्री को मासिकधर्म से पूर्व सात दिन तक घृतयुक्त गंधक खिलावे उसके रज से रसायन काम में मर्दन करावे और विशेषकर पारद बंधक के काम में लावे।।५३–५५।।

कायम उकद सीमाव बजरिय नमक खास तैयार करदः (उर्दू)

दीगर नौशादर ६ माशे फिटकिरी ६ माशे इन हर दो को जुदागाना बारीक पीसकर आपुस में मिला ले। सात अदद टुकड़ा कुंवार के चार चार अंगुल के लेकर और उसको छीलकर एक बर्तन में चीनी में एक बाद दीगरे तहबतह रखे और टुकड़े कुआर पर हर दो अदबिया थोडा थोडा डाल दे। एक शवानः जो रोज तक उस ही जर्फ चीनी में उसको रहने दे बादहू एक शवानः रोज के कुंवार के गूदे का सब पानी हो जायगा। वह पानी किसी आहनी तवा पर जिसमें पानी ठहर सके पका ले वह एक किस्म का नमक हो

जायेगा उस नमक को खरल में डालकर दरमियान तीन माशे सीमाव डाले और उस तरीके से खरल करे कि दिस्ता सिर्फ सीमाव पर ही रहे। खरल के साथ न घिसने पावे आधे घंटे तक इसी तरह आहिस्तः आहिस्तः दिस्ता सीमाव पर चलाते रहे बाद आध घंटे के सीमाव को खरल से अलहदा कर ले नमक को खरल से निकालकर एक बोतः गिली में निस्फ नमक डालकर ऊपर उसके सीमाव मजकूरह तीन माशे रख कर फिर बाकी मांदा नमक निस्फ सीमाव के ऊपर डाल दे। बाकी हिस्सा खिला बोतः को कोयलों की खाकिस्तर से पुर करके खूब कोयलों की आंच में धोंके एक आध घंटेके बाद बोते को आंचसे अलहदा करके जब बोतःको खोलकर देखेगे वह सीमाव बसूरत नुकरः जमा हुआ निकलेगा।(सुफहा २८ किताब इसरारुलकीमियाँ)

रसबंधन गंध द्वारा

बलाव्दरवनूधात्रीसस्यघ्नीजिह्विकाम्बुभिः ॥ मर्दितस्तुर्यभावेन गंधकेन समन्वितः ॥५६॥ वेष्टितो हिंगुना फल्गु क्षीरात्तेन दधित्यजे ॥ चूर्णगर्भे प्रदेयोऽयमन्तर्लवणमीशजः ॥५७॥ प्रध्मातः शनकैर्बद्धो रसो भवति नान्यथा ॥ वक्त्रस्थो वपुषः स्थैर्यं करोत्यखिलरोगजित् ॥५८॥

(यो० त०)

अर्थ–खरैंटी, नागरमोथा, आक का दूध, भुँईआमला, सस्यघ्नी और बनगोभी इनके रस से एक तोले गंधक और चार तोले पारद इन दोनों को घोट गोला बनावे उसको गूलर के दूध से पिसी हुई हिंग से लीप देवे फिर हींग से लिपटे हुए गोले को बेलगिरी के चूर्ण से लपेट देवे। तदनंतर उस गोले को लवणयंत्र में रख धोंके तो पारद बद्ध हो जायगा इसमें सन्देह नहीं है उसको मुख में रखने से शरीर स्थिर होता है और समस्त रोगों को जीतता है।।५६–५८।।

गोली सीमाव बजरियः तूतिया (उर्दू)

पारा और तूतिया हम वजन लेकर एक छोटे वर्तन में आग पर लगावे एक घंटे के बाद गोली बन जावेगी। (सुफहा किताब कुश्तैजातहजारी)

सम्मति–महज पारा और तूतिया आग पर पकाने से पारा उड़ जायगा लिहाजा पानी शामिल करना चाहिये। तरकीब नामुकम्मिल दर्ज हुई है नीज हम वजन तूतिया काफी नहीं। तजरुबे से सावित हुआ है।

पारद कटोरा तुत्थयोग से

सजलं तुत्थकैः सूतं कटाहे पाचितं मनाक् ॥ घृष्टं च बह्निसंयोगाद्वद्धं भवति यावतः ॥५९॥ कृता कटोरिका तस्य भंगानीरे निशिस्थिता । चन्द्रांशुना दृढा सा स्याद्विषदोषापनोदिनी ॥ तत्रस्थनीरपानेन दुग्धपानेन वा भवेत् ॥६०॥ (रसमानस)

अर्थ–तीन तोले नीले थोले में एक तोले पारद को रख नीचे से अग्नि देवे और थोड़ा से पानी भी डाल देवे और धीरे से घोटता जावे इस प्रकार एक प्रहर भर करने से पारा बद्ध होता है। उसकी कटोरी बनाकर भांग के रस में एक रात भर चन्द्रमा की रोशनी में रख देवे तो विषदोष के नाश करनेवाली कटोरी होती है उसमें जल अथवा दूध भरकर पीवे तो विष दूर होता है।।५९–६०।।

पारदगुटिका तुत्थयोग से

पाराः तूतिआसेत ४ मन भरि पानी में अवटे तब करछी से चलाए जाए पारा गोली बांधे तब धरि राखे कच्चा दूध नित पिआवै पीवत पीवत दश मन दूध एक रात में पीवैं तब भैंसी के गोबर में राखे मास ३ तो मुख होइ मुख में डारे तो दस सहस्र कोस उडने की सामर्थ्य होइ। सोधै राखै अवर स्त्री साथ रहै भोग न करै तब ताईं सिद्धि न होइ नव मासमें सिद्धि होइ।

१–तुत्थक पारद से ड्योढ़ा होना चाहिये, अनुभव से सिद्ध हुआ।

२–नवमास में सिद्ध होइ इसका आशय यह जान पड़ता है कि नवमास मुख में रखने से सामर्थ्य हो।

रसबंधन तुत्थबद्ध

लोहपात्रे जले पूर्णे तन्मध्ये तन्मध्ये पारदं क्षिपेत् ॥ पारदाष्टगुणं तुत्थं स्तोकं विनिक्षिपेत् ॥६१॥ वह्निं प्रज्वालयेद्गाढं गालयित्वा पुनः पुनः ॥ तं सूतं जायते मूर्च्छा गोलकं कारयेद्बुधः ॥६२॥ बंधयेद्गोलकं वस्त्रे स्वेदयेद्दंतिकाजले १॥ वारं पंचाशतः प्रोक्तं दोलायंत्रे दृढं भवेत ॥६३॥ खेचरे चोदरे क्षिप्त्वा एवं पिष्टेन लेपयेत् ॥ पुनर्लेपं कृते सप्त मृतकर्पटसंज्ञकैः ॥६४॥ गजाख्यं ज्वालेद्वह्निं स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥ तत्रस्था गुटिका ग्राह्या सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ॥६५॥

(नि० र०)

अर्थ–लोहे की कढाई में जल भरकर पारद डाल देवे और पारद से आठगुणे नीले थोथे को थोडा थोडा डालता जावे नीचे से दृढ़ अग्नि लगाता रहे। घडी २ के पीछे छानता रहै फिर उस मूर्च्छित हुए पारे की गोली बनाय कपड़े से बांध रुद्रदन्ती के रस में पचास बार स्वेदन करै। फिर किसी पक्षी के उदर में रख जौ के चून का एक अंगुल लेप करै लेप सूखने पर फिर दूसरा लेप कर ऊपर सात कपरौटी करै। तदनन्तर गजपुट देवे स्वांग शीतल होने पर निकाल भीतर से गोली को निकाल लेवे वह समस्त सिद्धि की दाता है।।६१–६५।।

सम्मति–मेरी समझ में तो पक्षी के स्थान में मुर्गे के अंडे में रखना चाहिये।

कटोरा सीमाव बजरियः तूतिया (उर्दू)

अव्वल बीस तोले तूतिया खूब बारीक करके पीस लो इनमें से निस्फ तूतिया लोहे की कढाई में पतला पतला विछाओ और उस पर सीमाव २० तोले डालकर बाकी मादा तूतिया भी ऊपर डाल दो और एक प्याला आहनी या मिट्टी का या किसी और किस्म का लेकर ढांप दो और प्याला इस कदर बडा हो कि कुल तूतिया और सीमाव बखूबी ढक जावे और प्याले के किनारे आरदगंदम या आरदमाश या किसी और चीज से जो मुनासिब हो वंद कर दो ताकि उसमें पानी दाखिल न हो सके और जिस वक्त खुश्क हो जावे कढाई को पानी से भरकर चूल्हे पर रखें और प्याले के ऊपर कोई वजनदार चीज रखे ताकि भाफ से जो ऊपर को जाती है, प्याला उखड न जाय और अमल खराब हो जावे। फिर कढाई के नीचे के पहले थोडी थोडी आंच जलावे और फिर आहिस्ता २ बढाते जावे जिस वक्त तमाम पानी खुश्क हो जावे कढाई को उतार लेवे बवक्त सर्द होने के सीमावः वगैरः निकाल लेवे और फिर उसको पानी से धोकर साफ करे। यहां तक कि पानी का रंग असली हो जावे सीमाव मक्खन की तरह होगा। फिर उसको एक गाढे कपड़े में डालकर निचोडे जो सीमाव कपड़े में रह जावे उसको अलहदा रख ले और जो नीचे गिर जावे उसको दुबारा तरकीब मजकूर बाला के मुताबिक करे। गरजे कि जब तक लायक जमाने के होवे इसी तरह अमल करते जावे। फिर मक्खन शुद्धः सीमाव को फिर एक मिट्टी के प्याले या गिलास में अन्दर की तरफ जमावे और अहतियात रहे कि किसी जगह मोटी और किसी जगह पतली न हो हमवार हो। फिर इसमें अर्कलैमू अर्कतुलसी खानगी या जंगली या खटकल बूटी का भरकर तीन रोज रहने दे अगर अर्क कम हो जावे तो और डाल देवे। चौथे या पांचवें रोज और अर्क अलहदा करके प्याले को ठंढे पानी में चार पांच घण्टे रहने दे इस अर्से में मिट्टी का बर्त्तन पानी में घुल जावेगा और बर्त्तन सीमाव का अलहदा हो जावेगा साफ व हिफाजत रखे मेरा खुद आजमूदः है। (सुफहा ६६ कुश्तैजात हजारी)

१–दंतिका–रुद्रदंतिका इत्यर्थः ।

गुटिका बनाने की तरकीब बजरिये नीला थोथा (उर्दू)

सीमाव सवा तोला लेकर बतरीक मजकूरह बाला स्याही दूर करके सवा तोला तूतिया ए सवज (नीला थोथा) मिलाकर दोनों को खरल करके और गोली बनावे बादहू थोडा सा रोगन लेकर हाथ में मले और गोला में मले बाद उसके ईट पुख्त: लाकर उसमें ओखलीनुमा गढ़ा बनावे और उसमें सीमाव की गोली रखकर तीन रोज तक अर्क वर्ग धतूरे में डालकर धूप में रख दे। बादहू वैज: मुर्ग लाकर उसको एक पोटली में बांधे और गोली सीमाव मजकूर को उस अंडे में डालकर पोटली को किसी जर्फ में लटका कर सात सेर भैंस का दूध उसमें भर दे और बतौर डोलजंतर भापी के उसमें भाप दे और मुंह जंतर का बन्द कर दे कि भाप न निकल सके। सुबह से शाम तक या शाम से सुबह तक बारह घण्टे तक सख्त आग दे कि उबलने न पावे। बादहू उसको चूल्हे पर बदस्तूर रहने दे जब खुद बखुद सर्द हो जावे निकाल कर रख छोड़े। एक कटोरे में दूध भर गुटिका को पोटली में बांध कर उसमें डाल दे थोड़ी देर के बाद दूध पी जावे और गुटिका को पोटली के मुंह में रख कर मुबाशरत करे जब तक गुटिका मजकूर मुंह में रहेगा इमसाक होगा और जब मुंह से बाहर निकाल लेगा फरागत होगी आजमूद: है। (सुफहा किताब अलजवाहर १९)

गुटिका सीमाव बजरियः संगरालख (फार्सी)

उकद जीवक जहत इमसाक व तकवियत वाहकवीउल असर अस्त सनत आँबिगीरन्द भिकदार हश्त मसकाल जीवक राउ बा कदरे सिरका कोहना कि दरहावन आहनी खूब बमालन्द कि मुजमिल शवद पस सह मिसकाल नमक हिन्दी कोफ्त: दरअ, दाखिल नुमायन्द बखूब विमालन्द अनगाह दरजर्फ आहनी कि अजसिरक: अंगूरी खूब पुरकर्द: बाशंद रेख्त: बर आतिश गुदाजन्द व सहमिसकाल रूकख्तज सलाम: करद: अन्दक अन्दक बिखरद व सीमाव दिहन्द व दिस्तह आहन दरहम विसानीदं ताबस्त: शवद पस अज आतिश फरोगीरन्द व बआब सर्द विशोयन्द ताचर्क ओजाइलशवद व अज पारच: सफेद मसका महकिम वियफशरानन्द अंगाह गिलोल साजन्द बदरं बसत आँसूराखे कुनन्द व रेशमाने अजआँ बिगुजारंद व यकशव दर्मियान आबलेंमू बिगुजारंद ता मोहकिम शवद मुंजमिद गर्दद पस आरा दर्मियान रोगन तातूरह कि हिंदी धतूरा नामन्द बिजोशानन्द व तायकसाल गाहे दर्मियान शीरगाहेब दर्मियान रोगनवगाहे दरदेग तुआम बगाहे दर्मियान आबेवर्ग ग्याही अजगयाहाई मुनासिब बयन्दारन्द व हमेशह दरदस्त मेमालीद: बाशंद चंदां कि मतजूली व हमचूं आईना गर्दद व शक्काफ नुमायद व मुतलक कुदरत दरजिस्म आँनमान्द अंगाह बजहत इमसाक मनीअस्त हिंगाम मकार वतदर दहन निगाह दारन्द वे भिसल अस्त। (सुफहा २३८ किताब जिल्द दोयम करावांदीन कवीर)

रसबन्धक भूलताबद्ध

भूलतां शिखिरीमूलवारिणो मर्दयेद्दृढम् ।। तन्मूषां लेपयेन्मध्ये तन्मध्ये निक्षिपेद्रसम् ।।६६।। पंचटंकप्रमाणं तां मूषामंगारके क्षिपेत् ।। एवं बद्धो भवेत्सूतो मूषांतः स्थां दृढो भवेत् ।।६७।। मुखमध्यगतस्तिष्ठेन्मुखरोग विनाशनः ।। शरीरे क्रामिते सूते जरापलितजिन्नरः ।।६८।।स्तंभयेच्छस्त्रसंघातं कामोत्पादनकारकः ।। पुनर्नवं वपुः कुर्यात्साधकस्य न संशयः ।। अतिकामो भवेन्मर्त्यो वलीपलितनाशनः ।।६९।।(बृ० यो, नि० र० र० रा० शं० र० सा० प०)

अर्थ–भुँईआमला और अपामार्ग की जड़ से पारद का मर्दन करे और उसी की घरिया बनाकर उन्हीं के रस से घरिया को लीपकर पांच टंक भर पारद उसमें रख देवे और अगारों पर रख धोंके तो पारद घरिया में ही बद्ध हो जायेगा उसको मुख में धरे तो मुखरोग दूर होता है। कामदेव को उत्पन्न करनेवाला शरीर को नवीन बनाने वाला होता है। इसके खाने से मनुष्य अत्यंत कामी और वली पलित से रहित होता है।।६६–६९।।

उकद सीमाव जरियः मिसहरताल (उर्दू)

अगर मिस हरताल को निकाल कर कटोरा बनावे और उसमें सीमाव भर कर आग पर रखे तो मुनअक्किद हो जायेगा उस वक्त उसको अगर मिस मुसफ्फा कमरी में तरह करेगा तो नुकर: हो जायगा। (सुफहा अकलीमियां १९१)

गुटिका बनाने की तरकीब बजरियः तांबा (उर्दू)

सीमाव सवा तोला लेकर ईट के कोहने में खरल करके साफ कर ले जब सफेद हो जावे और स्याही बिलकुल न रहे उस वक्त: शीर: घीगुवार में सहक बलेग करे। बाद उसके तांबा चार माशे लेकर खूब सुर्ख करे और उसी टुकड़े को लेकर सीमाब में डालकर चलावे बाद उसके सीमाव मजकूर को कपड़े में पोटली बनाकर निचोड़े जितना कपड़े में रह जावे उसी कपड़े में रहने दे और जिस कदर छन कर गिर पड़े उसमें बदस्तूर तांबे को सुर्ख करके चलावे और फिर निचोड़े यह अमल इस कदर करे कि सीमाब मजकूर बिलकुल कपड़े में रह जावे। बाद उसके गोली बनाकर कपड़े में पोटली बांधकर निगाह रखे (बादहू नमक शोर निस्फ मन लाकर ठीकरे में रखे और दो तीन बार बिरियां करे। यहां तक बिलकुल स्याह हो जावे उसको शीशी आतिशी में भर दे) बाद उसके एक मिट्टी की हांडी गर्दनराज जमीन में गाढ़ कर उसके अन्दर एक प्याला रख दे और हांडी पर घड़ा निस्फ तराशकर ओंधा करके रख दे इस तरह कि मुँह घडे का हांडी के मुंह पर रहे और हांडी का मुंह घडे से ढक जावे बादहू शीशी ओंधी करके गर्दन शीशी को घडे के मुँह से निकाल दे ताकि गर्दन हांडी के अन्दर और प्याला अन्दरूनी के ऊपर रहे। बाद उसके सब जोड़ो पर गिलेहिकमत करके घडे में बालू इस तरह भर दे कि शीशी के चारों तरफ पांच छः अंगुल बालू रहे बाद उसके घड़े का टुकड़ा जोड़ दे और चारों तरफ से सख्त आग दे नमक शोर का रोगन होकर प्याले अन्दरूनी में जमा होगा। जब कुल रोगन टपकचुके एक हांडी में रखकर पोटली को जिसमें सीमाव बँधा हुआ तागा बांधकर हांडी में लटका दे ताकि रोगन में पोटली गर्क हो जावे और आग औसत दर्जे की जलावे यहां तक तमाम रोगन गुटिका में जज्ब हो जावे। बाद उसके ढाई सेर तुख्म धतूरा को दलकर बतरीक मजकूर बाला रोगन निकाल ले और उस रोगन में गुटिका को डालकर आहिस्ता आहिस्ता आंच दे और गुटिका में रोगन मजकूर जज्ब करे। बाद उसके ढाई सेर घूंघची सुर्ख का रोगन बतरकीब मजकूर खींचे और बजरिये डोलजंतर मजकूर के गुटिका को पिलावे। बाद उसके च्छ्वारे की गुठली का रोगन खींचे और उसी तरह डोल जंतर गर्की करके गुटके में जज्ब करे बाद उसके तुख्म तएवर का रोग निकाल कर बदस्तूर गुटिका को डोल जंतर करे बाद उसके लावे खाल कोहन: बकदर एक तोला के और उसको पानी में भिगोकर नरम करे बाद उसके गुटिका को उसमें लपेटे। बाद उसके सेरभर गोश्त हलवान का पीसकर गुटिका को लपेटे। बाद उसके सेर भर गोश्त हलवान का पीसकर गुटिका को उसके दर्मियान में रख कर गोला बनावे और गोले पर तागा लपेट कर पानी में डोल जंतर गर की करके चार प्रहर तक आग दे बाद उसके पांच सेर दूध लाकर कढाई में डालकर गुटिका को उसमें डाल दे ताकि तमाम दूध जज्ब हो जावे। अब तय्यार हो गया जब काम में लाने, मंजूरहो एक दिरम सीमाव खाम गुटिका को खिलावे और बारीक कपड़े में लपेटकर तागा में पोटली बांध कर गर्दन में लटका दें और सुहब के वक्त उसको मुंह में रख ले जब तक मुंह में रहेगा इन जाल न होगा जब फारिग होना मंजूर हो मुंह से बाहर निकाले जब तक मुंह से बाहर न निकालेगा खलास न होगा। अगर उस पर

१–इस तरकीब के देखने से यकीन होता है कि भूनाग ताम्र की कटोरी में जरूर पारा कायम होगा।

फारिग न हो तो थोड़ी सी तुर्शी रख ले फारिग हो जावेगा मुजर्रिब है (सुफ़हा किताब अलजवाहर ११५–११८)

प्याला सीमाव–(उर्दू) मुश्तवः

सीमाव को नमक और पानी से मुकर्रर सिकर्रर सगवूल करे और उसका छठा हिस्सा रूह तूतिया, खालिस शीरा, जौज माइल सफेद, और आब मुलहठी में एक दिन तक खरल करके और जिस कालिब में चाहे तय्यार करे और प्याला मयशीरा, जौज माइल और शीरा हव्वुलकतनने पकावें चमकीला और मजबूत निकलेगा। हस्व जरूरत गरम २ दूध या अर्कयात माइउल्लहम वगैरः इसमें डालकर चालीस रोज तक पीए और कुदरत खुदा का मुलाहिजा फर्मावे (सुफ़हा ६२ मुजरवात फीरोजी)

गोली सीमाव—बजरियः कलई (उर्दू)

पारा और कलई हमवजन लेकर बजरिये लैंमू के अर्क के दो घंटे खरल करके गोली बनावे। (सुफ़हा ६६ किताब नुसखः जात हजारी)

कटोरा सीमाव बजरियः कलई (उर्दू) तजरुबाशुदः

कलई २ छटांक को पहले किसी लोहे के वर्तन में कोयलों की आग में गरम करे जब पिघलने को हो तब पारा तीन छटांक डाल दे बाद दो तीन मिनट के गिलास के सांचे में डाल देवे और सांचे को बुझावें गिलास पत्थर तय्यार हो जावेगा। (सुफ़हा ६५ किताब कुश्तैजात हजारी)

गुटिका नागवंगभस्मद्वारा

समुद्रफलचूर्णेन नागवंगौ विमिश्रितौ ॥ म्रियेतां सर्वमेहघ्नौ भवेतां देहपुष्टिदौ ॥७०॥ तत्स्पृष्टहस्तसंस्पृष्टः केवलो बध्यते रसः ॥ स रसो धातुबादेषु शस्यते न रसायने ॥७१॥

(रसमानस)

अर्थ–समुद्रफल के चूर्ण से नागवंग को घोटकर भस्म करे वे प्रमेह को नाश करनेवाले और शरीर के पुष्ट करनेवाले हैं उनसे हाथों को मल फिर पारद को छूवे तो पारद बद्ध होता है। वह बद्ध पारद सोना चांदी बनाने में उत्तम है और रसायनोपयोगी नहीं है।।७०।।७१।।

गुटिका बनाने की तरकीब बजरियः संगवसरी (उर्दू) मुश्तवः

अर्थ–मुंह मे रखने से बहुत नाफः है और हार मिजाजवाले को दाफै तिश्नगी है और इमसाक करता है तजरुवा हआह सीमाव एक हिस्सा संगवसरी यक हिस्सा अव्वल संग वसरी को गुदाज करके सीमाव को उसमें मिलाकर गोली बांधे और मुर्गी को निगलावे और आधे दिन तक रहने दे। बाद उसके मुर्गी को जिवह कर गुटिका को निकाल ले और हाजत के वक्त काम लें। मुँह में रखने से नफा जाहर होता है। (सुफ़हा किताब अलजवाहर १२४–१२५)

तरकीब प्याला पारा बजरियः जस्त (उर्दू)

अर्थ–पारा मुसफ्फा ६ तोले बुरादा जस्त १० तोले दोनों को एक दिन मुलहठी के काढे और एक दिन आबवर्ग धतूरा में खरल करे तो मुस्का हो जावेगा फिर उसको प्याले खाम में लेकर तरकीब मजकूरह से जमाद करके रखें और प्याला बना ले। यह प्याला जरा नरम होता है सख्त करना हो तो आब धतूरा व मतबूख पम्बः दाने में पकाकर सख्त कर सकते हैं। (सुफ़हा १० अखबार देशोपकारक ४/७/१९०६)

सम्मति–तजरुबे से यह तरकीब गलत साबित हुई सफूफसा तय्यार हुआ न कि गोली। मुकर्रर बजाइ डोढे के चहारम हिस्सा जस्त लिया गया तो कामियाबी हुई।

रसबन्धन तारबद्ध

बसति गिरिगुहायां नैव न नागो न च भवति खगेन्द्रो जातपक्षद्वयेन ॥ अरुणकिरणवर्णो वृश्यते चांबरस्थः सकलजनप्रसिद्धस्तेन बद्धो रसेन्द्रः ॥७२॥

(टो० नं०)

अर्थ–पर्वतों की गुफा में रहता है परन्तु वह हाथी या सिंह नहीं है, और इसके पक्ष दो है परन्तु पक्षी नहीं है, आकाश अर्थात् बीच में रहनेवाला है और जिसकी रंगत लाल चमकीली है इसको सब मनुष्य जानते हैं कि जिससे पारा बद्ध होता है।।७२।।

सम्मति–यद्यपि संग्रहकर्त्ता ने इसमें वर्णित पदार्थ को चांदी माना है परन्तु (अरुणकिरणवर्णः) इस विशेषण से स्त्री का रज ही प्रतीत होता है और योनि के द्वार के दोनों किनारों को पक्षता है इस अर्थ में रस कामधेनुकी सम्मति भी है।।

गोली सीमाव बजरियः चांदी

पारा दो तोला, बुरादः ९ माशे बजरियः अर्कलैंमू बाहम खरल दो पहर करे गोली बन जावेगी। (सुफ़हा ६६ नुसखे जात हजारी)

कटोरा सीमाव बजरियः नुकरा (उर्दू)

पारा ३ छटांक को बुरादा चांदी १ छटांक के साथ बजरियः अर्कलैंमू खरल करे जब एक जान हो जावे तब खरल से निकालकर हाथ को अर्क तुलसी मल कर गिलास बनावे और किसी ठंडी जगह में रख दे बाद एक घंटे के सख्त गिलास बन जावेगा। (सुफ़हा ६५ किताब कुश्तैजात हजारी)

प्याला सीमाव (उर्दू)

सीमाव को नमक और पानी से मुकर्रर सिकर्रर मगवूल करे और उसका छठा हिस्सा बुरादः नुकरा, खालिस शीरा, जोज माइल सफेद और आब मुलहठी में एक दिन तक खरल करे और जिस कालिब में चाहे तय्यार करे। और प्याला मय कालिब शीरा जोनमाइल और शोरा हब्बुल कजन में पकावे चमकीला और मजबूत निकलेगा सलातीन के लायक हो जावेगा। हस्बजरूरत गरम गरम दूध या अर्कयात या माइउललहम में डालकर चालीस रोज तक पीये और कुदरत खुदा का मुलाहिजा फर्वावे। (सुफ़हा ६२ मुजरवात फीरोजी)

पारदगुटिका रौप्ययोग से

पारा रूपा को चूरन २ पान के रस में खलै दिन ७ गोली के धान के रासमध्ये राखे मास ३ चीकरा बूटी के रस में खली दिन २२ तब धानमध्ये राखे तो सिद्धि होई इसमें दूध भाग भोजन करे मास ३ तो सिद्धि होई।

१–चन्द्र अर्थात् चांदी समझ में आती है किन्तु रसकामधेनु ने इसको रज माना है और यही ठीक है।

२–तजरुबे से सही साबित हुआ वजन नुकरा १/४ ही ठीक है मैंने १/५ से भी गोली बनाई बन गई मगर सख्ती पूरी के लिये १/४ ही ठीक है।

३–अनुभव से ३ भाग में पारे में १ भाग चांदी ही ठीक सिद्ध हुई।

पारदगुटिका रौप्ययोग से

प्रथम पारा और ईट को सोधै दिन ३ पारा १ रूपाचरन १ पाक के रस में खलै दिन २१ गोली के धान के राशि में राखे मास १ तब निकासि मुख में डारै तो सहस्र कोस उडैके सामर्थ्य राखे शिव के बचन प्रमान है।

गोली सीमाव कायमुल्नार बजरियः नुकरा (उर्दू)

चांदी के कुश्ते में पारे की गोली बनाकर धतूरे स्याह के फल में इस गोली को भरकर ऊपर मिट्टी का पतला लेप कर दे और आग में भुलभुला ले कि धतूरा पककर बिलकुल खुश्क हो जावे। मगर जल न जावे पस बाद अंजा गोली को फल के अन्दर से निकालकर किसी पत्थर पर ऊंचे से छोड़ दे। फिर उसको इकट्ठा करके गोली बना ले और धतूरे के अंदर भरकर इसी तरह आंच पर भुलभुलाले इसी तरह ११ बार करे गोली कायमुल्नार हो जावेगी। इसको चर्ख दे ले कमरा बरामद होगा। अगर इसको फुलाले तो आगे काम देगी (सुफहा १७ अखबार अलकीमियां ८/४/१९०९)

सीमाव गोली बनाने की तरकीब (उर्दू)

सीमाव एक हिस्सा बुरादा नुकरा एक हिस्सा बदस्तूर सहक करके गोली बांधकर सफेद मुर्ग को खिलाकर रात भर रहने दे बादहू जिबह करकेगुटिका निकालकर काम में लावे इमसाक और तिश्नगी और तलवासा को नफा करता है। (सुफहा किताब अलजवाहर १२६–१२७)

गुटिका पारा (रसबंधन–तार वा ताम्र योग) (उर्दू)

पारे को कढाई में डालकर आग पर रखें और आपोस्तका चोया देते रहे और नीम की लकड़ी से जिसके मुंह पैसा या अठन्नी लगाई गई हो हिलाते जावें थोड़ी देर गिरह के लायक हो जावेगा। सर्द करके गिरह बना ले और गुलाब में एक प्रहर जोश देकर स्तैमाल में लावे पहले की तरह काम देता है लेकिन तासीर में उससे कम है। (सुफहा ६२ मुजरिबातफीरोजी)

गोली सीमावबजरियः कुश्ता नुकरा (उर्दू)

पारे की हर एक चांदी कुश्ते के साथ मुनासिव मिकदार से गोली बन जाती है बशरते कि चांदी का कुश्ता बजरिये बूटी हो। (सुफहा ६६ किताब कुश्तैजात हजारी)

तरकीब गोली पारा बजरियः कुश्ता नुकरः (उर्दू)

पारा मुसफ्फा एक तोले, कुश्ता चांदी ६ माशे दोनों को लहसन का पानी डालकर तमाम रोज खरल करे जिससे शाम तक गोली बंध जावेगी फिर एक पोस्त बैजः मुर्ग जिसकी सफेदी व जर्दी दूर करने के वास्ते थोडा हिस्सा तोडा गया हो लेकर उसमें आवलहसन भर दे और दरम्यान वह डेढ तोले कि डालकर दूसरी पोस्त बैजः मुर्ग ऊपर देकर आरदमाश को रस लहसन में गूंदकर चार बार लेप करे (यानी एक लेप खुश्क हो जावे दूसरा लेप करे इस्तरह से चार) फिर एक आरद गंदुम पानी में गूंदे हुए का लेप कर दे फिर एक बर्तन में सरसों का तेल भरकर आग पर रखे और इस गोली को इस तेल में लटका दे इस्तरह कि तह को न लगे फिर दर्मियानी आंच पर पकावे। आठ पहर बादहू सर्द होने पर निकाल कर गोली को दो घंटे रोगन धतूरा में नरम आंच पर पकावे फिर निकाल कर पानी सर्द में दो एक दिन रख छोडै यह गोली पारा पहले बयान तमाम गोलियों से ज्यादा मुफीद है यह गोली बहुत आला है अजहद मुंकब्बी वाहय मुमसिक है मुँह में रखते है दूध में लटका कर भी पीते हैं अगर रोगन धतूरे में पकाने के बाद रोगन कुचला, रोगन, भांग, रोगन मालकांगनी में भी पका लें तो अजबस मुफीद है कहते हैं कि उसको जर्दी बैजः मुर्ग में भी पकावे तो अजब असर होता है।

(सुफहा १० देशोपकारक अखबार ४/७/१९०६)

गुटिका बनाने की तरकीब बजरियः तिला व नुकरा (उर्दू)

इस गुटिका को मुँह में रखने से कुव्वतबाह और इमसाक होगा और दर्दसर और तिश्नगी को जाइल करेगा और तिश्नगी नफस को मुफीद है और मुँह और तालू की खुश्की को नाफः है बुरादा तिलाई सुर्ख खालिस दो हिस्सा बुरादा नुकरा एक हिस्सा सीमाव एक हिस्सा तीनों को यक जा करके अच्छी तरह सहक करे और गोली बांध ले और ओटे में मिलाकर स्याह मुर्गी या स्याह कौवे को निगला दे और एक रात दिन मुसल्सिल निगाह रखे बाद उसके जिबह करके गोली निकाल ले और सर्द पानी से खूब धोवे और जरूरत के वक्त मुँह में रखे मुजर्रिव है इन्शा अल्लाह खूब काम देगी (सुफहा किताब अलजवाहर १२४)

गुटिका बनाने की तरकीब बजरियः तिला (उर्दू)

जब तक मुँह में रहेगा मैदे को कवी करेगा प्यास न मालूम होगी इमसाक होगा और दर्दसर जाइल हो जायगा और तलूना और खुश्की दहन को मुफीद होगी। सीमाव एक हिस्सा, तिलाइ सुर्ख एक हिस्सा बुरादा करके गोली बनावे दो रोज के बाद मैदा की गोली में रखकर कबूतर को खिलावे बाद तीन दिन रात के उसको जिबह करके और धोकर जरूरत के वक्त मुँह में रखे। (सुफहा किताब अलजवाहर १२३–१२४)

हुब सीमाव और तकबियत एजाइ रिहाब अदील अस्त नुसखः (फार्सी)

बिगारंद सीमाव साफ व पाकीजः शशमाशः व तिलाइ वर्क कि आरौं व जबान हिंदी पना गोयंद कि बिसियार खालिश मेबाशद चहार माशा हरदोरा कदरे आब अन्दाख्तः सहक कुनन्द तामसकः शवद पसहुव बस्तः यक साइत निगाहदारन्द कि अन्दके सख्त शवद अंगाह अज सोजन सूराख कर्दः रिश्तः बजब्रूत रेशमदरां अन्दाजंद व बजाइ मजब्रूत निगाहदारन्द दर्मियान हफ्तः अशरा खूब महकुम व सख्त मिस्ल गोली बंदूक ख्वाहदशुद पस आँगोलीरादर आवन्द शीरअन्दाजंद वचोबे वरसर आवंद गुजाश्तः सररिश्तः बचोव वः बन्दन्द कि हुब सीमाव दर शीरगर्कमांद व अज तह आवंद अंदके बलंद बाशंद व शीर रा जोशदहन्द हरगाह शीर तय्यार शवद गोली रा बैरू कशन्द साफकर्दः निगाह दारन्द व शीररा विनोशन्द बाद ओमत चन्दरोज कुव्वत तमाम हासिल आयद बई यक गोली ता सदसाल किफायत कुनद व चीजे अजाँकमन शवद बहरगाह ख्वाहन्द कि तिला अनगोगी बैरूकशन्द गोलीरा दरबोतः गुजाश्तः कदरेतंकार अन्दाख्तः चर्ख दिहन्द सीमाव पर्रान शवद बतिला चर्ख खुर्दः व वजन कुद बैरू आयद। (सुफहा ८०७ किताब शफाइल अवदान)

गुटिका बनाने की तरकीब तिलासे (उर्दू)

सोने के पत्तरं एक निश्क यानी चार माशे, पारा साफ एक निश्क इन दोनों को सरफों के और जंभीरी के अर्क में दस रोज खरल करके गोला बनाकर पोटली बांधकर मटके में गाड के दूध भर करके मौअल्लिक लटका दे फिर दो दिन रात तेज आंच से दूध कम हो जावे तो और डाल दे जब सोलह पहर आंच लग जावे निकाल ले गुटिका बन जावेगी। (अगर गोली निहायत सख्त बनाई हो तो बराबर वजन लेना भी शायद दुरुस्त होगा) उसको हस्तकेसरी कहते हैं मुँह में रखे बुढापा दूर हो उम्रदराज हो। (सुफहा १३ खजाना कीमियाँ)

रसबन्धन (हिरण्यगर्भगुटिका) स्वर्णबद्ध

उत्कृत्य मूलं विषजं विदध्याद्गर्भेस्य सूतं कनकांशपिष्टम्। संवेष्टयेत्कोलभवे-न तन्तुमांसेन पश्चाद्विपचेद्द्वियामम् ॥७३॥ धत्तूरबीजोद्भवतैलगर्भे संबद्धत.

याति मुखस्थितोयम् ॥ संभोगकाले दृढतां करोति वीर्यस्य दुग्धं भजतां नराणाम् ॥७४॥

(रसरत्नप्रदीप, यो० त०)

अर्थ—बच्छनाग को जड़ समेत उखाड़कर उसका कल्क बनावे और उसके बीच में सुवर्ण के संग पिसे हुए पारे को रखे पश्चात् उसको सूअर के मांस में एक महीना रखकर दो प्रहर तक पकावे। फिर धतूरे के बीजों के तेल में उसको रखकर संबद्ध करे अर्थात् गोली करे संभोगकाल में यह मुख में रखी हुई गोली वीर्य को दृढ करती है। परन्तु इसको मुख में दबाकर मनुष्यों को ऊपर से दूध पीना चाहिये।।७३।।७४।।

गुटका बनाने की तरकीब—बजरियः नुकरा आहन शिंजर्फ—मारक शीशा (उर्दू)

इसको हिन्दी में प्रभामारी कहते हैं, मुँह में रखने से बहुत नफा करता है और इमसाक होता है, मैदा को गर्म और हज्म को कवी करता है, खट्टी डकारें फौरन दूर हो जाती है, सीमाव दो हिस्सा बुरादा नुकरा निस्फ भि:सा बुरादा आहन निस्फ हिस्सा शिजर्फरूमी निस्फ हिस्सा व यक दांग मारक शीशाइ जौहवी (सोनामक्खी) एक हिस्सा एक दांग सबको इकट्ठा करके थोड़ा से पानी मिलाकर सहक करे, और गोली बाँध ले और ईंट में गढ़ा करके उसमें दुधीबूटी के वर्ग रख कर उस पर गोली मजकूर को रख कर ऊपर से दुधी मजकूर से पोशीदह करके मुंह बंद करके गिले हिकमत कर दे जब खुश्क हो जावे नरम आग यानी भूभल में दफन करे सर्द होने के बाद जब सीमाव मजकूर को निकाल कर सर्द पानी में डाल दे और हाजत के वक्त काम में लावे जब तक मकसूद हासिल हो। (सुफहा किताब अलजवाहर १२५)

रसबंधन लोहद्रुतिबद्ध

कंचुकीकीटचूर्णेन मृतलोहं च भावयेत् ॥ देवदालिरसेनैव ध्मातं सद्रुतितं जयेत् ॥७५॥ द्रुतिभिर्मर्दितः सूतो बद्धमायाति तत्क्षणात् ॥ भक्षणात्कुरुते नृणां रुग्जरामृत्युनाशनम् ॥७६॥

(नि० र०)

अर्थ—लोहे की भस्म में सर्प के मांस को (जो लोहे के समान हो) मिलाकर बंदाल के रस से घोटे फिर कोयलों की आंच में रख धोंके तो लोहे की द्रुति होगी, उस द्रुति से पारद को घोटे तो उसी क्षण पारद बद्ध होगा इस बद्ध पारद के भक्षण से रोग, वृद्धता और मृत्यु भी नष्ट होता है।।७५।।७६।।

रसबंधन गगन सत्त्वबद्ध

सूतं गगनसत्त्वं च समभागेन मर्दयेत् ॥ तत्क्षणं जायते बद्धो गोलं कृत्वा भिषग्वरैः ॥७७॥ खेचरे चोदरे क्षिप्त्वा एवं पिष्टेन लेपयेत् ॥ सप्तभिर्मृत्तिकाभिश्च तत्क्षणं वेष्ययेद् बुधः ॥७८॥ गोमयेन च संलेप्यं गजाख्यं पुटयेद्भिषक् ॥ तत्रस्था गुटिका ग्राह्या मुखे धृत्वा च खेचरे ॥७९॥ अदृश्यं जायते सिद्धिः स्पर्शनाद्व्याधिनाशनम् ॥ कंदर्पो जायते कामी वायुतुल्यो बलप्रदः ॥८०॥ अन्योन्यं जायते सिद्धिः शुल्बं भवति कांचनम् ॥ शस्त्रीग्नीनां भयं नास्ति दिव्यदेहा भवंति हि॥८१॥

(नि० र०)

अर्थ—पारद और अभ्रक सत्त्व को समान भाग लेकर मर्दन करे तो पारा शीघ्र बद्ध होगा उसका गोला बनाकर मुर्गी के अंडे में भर देवे उस पर जौ के चून का एक २ अंगुल लेप कर सात कपरौटी करै। फिर गोबर से लीप गजपुट देवे, स्वांगशीतल होने पर गोली को निकाल पक्षी के मुख में धरे तो पक्षी अदृश्य हो जायगा। यह कामदेव को उत्पन्न करती है वायु के समान बल को देती है और इससे तांबा सुवर्ण होता है और जो इसको खाते हैं उनकी देह को शस्त्र और अग्नि का भय नहीं होता।।७७–८१।।

गुटिका बनाने की तरकीब गगनसत्त्व वा द्रुतिबद्ध (उर्दू)

पारा साफ अवरख की द्रुति दोनों को बराबर लेकर खूब खरल करे गोला बन जावेगा फिर चील को चीरकर उसमें रख कर जौ के आटे से खूब बंद कर दे। फिर सात तह कपरमिट्टी चढ़ाकर सुखा कर उस पर गोबर चढ़ा दे और सुखा दे फिर एक गज मुरब्बा गहरा गढ़ा खोदकर उसमें जंगली उपले भरकर उसके बीच में रखकर आग दे जब सर्द हो निकाल ले गुटिका बन जावेगी। मुंह में रखे तो जमीन से ऊँचा चले और गाइब हो और भरकर उसके बीच में रखकर आग दे जब सर्द हो निकाल ले गुटिका हो और हाथ में रखें तो बीमारियां दूर हो और दूध में डालकर गरम करके पिये तो बाहवे इन्तहा होगी और ताकत हवा की सी बदन में आयेगी। (सुफहा १४ खजानः कीमियां)

अभ्रद्रुतिबद्ध

सूतं द्रुतिसमं कृत्वा षोडशांशेन काञ्चनम् ॥ धमेत्प्रकटमूषायां रसेन्द्रो बंधमाप्नुयात् ॥८२॥ राजिकार्द्धार्द्धमानेन पर्वतानपि वेधयेत् ॥ यथा लोहं तथा देहं भिद्यते नात्र संशयः ॥८३॥ इत्यभ्रद्रुतिसंसिद्धं रसायनमुदाहृतम् ॥बिना शम्भोः प्रसादेन न सिध्यंति कदाचन ॥८४॥

(नि० र० रसमानस)

अर्थ—पारद १६ सोलह तोले, अभ्रकद्रुति १ एक तोला लेकर घोटे फिर मूषा में रख अग्नि में धोंके तो पारद बद्ध होगा वह बद्ध पारद एक राई भर भी ढेर के ढेर ताँबे को वेधता है और वह जिस प्रकार धातु का सुवर्ण बनाता है उसी प्रकार शरीर को भी सुवर्ण के समान कर देता है।।८२–८४।।

रसबंधन वैक्रान्तबद्ध

अथ वा गंधपिष्टी सा क्षीरकंदोदरे क्षिपेत् ॥ व्याघ्रीकंदे सूरणे च गुडशुद्धद्रवे तथा ॥८५॥ अर्धार्धं भस्म वैक्रान्तं दत्तवा निष्कार्धमात्रकम् ॥ ततः कन्दस्य मजाया मुखं रुद्ध्वा लिपेन्मृदा ॥८६॥ लेपत्र्यंगुलमात्रं तु सर्वतः शोष्य गोलकम् ॥ पाचयेद्भूधरे यंत्रे कुक्कुटाभिष्टधा पुटेत् ॥८७॥ पूर्वकंदो यथापूर्वं लेप्यं शोष्य सुसंपचेत् ॥ द्वित्रैर्वनोत्पलैरेव बद्धः स्याद्रक्तवर्णकः ॥ नाम्ना वैक्रान्तबद्धोयं जरामृत्युरुजापहः ॥८८॥

(र० रत्नाकर ह० लि०)

अर्थ—पारद और गंधक की पिष्टी क्षीरकन्द, व्याघ्रीकन्द अथवा जमीकन्द में रखकर पिष्टी ऊपर नीचे वैक्रान्त की भस्म को रख देवे (यहां पर यह अवश्य विचारना चाहिये कि यदि पिष्टी १ कर्ष हो तो वैक्रान्त भस्म आधा निष्क ले लेना) फिर उसी कन्द के टुकडे से छेद को बंदकर तीन २ अंगुल मिट्टी का लेप करे फिर गोले को सुखाय भूधर यंत्र में आठ बार कुक्कुय पुट देवे पूर्व पुट में जो कन्द लिया हो वही कन्द फिर भी लेना चाहिये और दो तीन जंगली कंडों की आंच देनी चाहिये तो पारद लाल रंग का बद्ध होगा यह बद्ध पारद वैक्रान्त कहाता है।।८५–८८।।

रसबंधक वैक्रान्तबद्ध

कटुतुंब्युद्भवे कन्दे वन्ध्यायाः क्षीरकंदके ॥ अपक्वैकं समादाय तद्गर्भे पिण्डिका ततः ॥८९॥ दशनिष्कं शुद्धसूतं निष्कैकं शुद्धगंधकम् ॥ स्तोकं स्तोकं क्षिपेद्गधं पाषाणे तु च कुट्टयेत् ॥९०॥ याममात्रे भवेत्पिंडी रक्तकंदे विनिक्षिपेत् ॥ अर्धोर्द्धे भस्मवैक्रान्तं दत्त्वा निष्कार्द्धमात्रकम् ॥९१॥ ततः कंदस्य मज्जार्भिमुखं बद्ध्वा मृदा दृढम् ॥ लिप्तमंगुलमानेन सर्व्वतः शोष्य गोलकम् ॥९२॥ पाचयेद्भूधरे यंत्रे ततोद्धृत्य पुनः पचेत ॥ ऊर्ध्वभागमधः कुर्य्यादित्येवं परिवर्तयेत् ॥९३॥ क्रमेण चालयेदूर्ध्वं बहिर्युग्मोत्पलैः पचेत् ॥ ततो भिन्नस्तु संग्राह्यः बद्धः स्याद्दाडिमोपमः ॥ नाम्ना वैक्रान्तबद्धोयं सर्वरोगेषु योजयेत् ॥९४॥

(र० रत्नाकर)

अर्थ–कटुतुम्बी, बांझ ककोडा या क्षीरकन्द इनमें से किसी एक कच्चे कन्द को लेकर उसमें छेद करै फिर दस तोले पारा और एक तोला गंधक लेकर धीरे धीरे घोटे तो एक प्रहर में पिष्टी हो जायगी, उसको ऊपर कहे हुए किसी कन्द में रख ऊपर नीचे आधा निष्क वैक्रान्तभस्म रख देवे फिर उसी कन्द के छुकले से गड्ढे का मुख बन्द कर देवे और एक २ अंगुल मिट्टी का लेप कर सुखा लेवे और भूधरयंत्र में पचावे फिर निकाल कर पुनः पाचन करै परन्तु प्रथम पिष्टी का जो भाग नीचे को था उसे ऊपर कर देवें। भूधरयंत्र में दो जंगली कंडों की आंच देनी चाहिये। जब पारद अनार के तुल्य लाल हो जाय तब संपुट को तोड बद्ध पारद को निकाल लेवे। इसको वैक्रान्तबद्ध कहते है यह समस्त रोगों में देने योग्य है॥८९–९४॥

रसबंधन (स्मरसुन्दरीगुटिका) वज्रहेमाद्विबद्ध

वज्रहेमाभ्रकं ताप्यं कांतं सूतं समं समम् । मर्द्य जंबीरकैर्द्रावैर्दिने खल्वे ततः पुनः ॥९५॥ ब्रह्मवृक्षस्य बीजानि कर्पासास्थीनि राजिका ॥ बंध्या च जनयित्री च पिष्टं तन्मध्यगं कुरु ॥९६॥ पूर्वबन्मर्दितं गोलं लघुसप्तपुटैः पचेत् ॥ ततो गजपुटं दद्यान्मुखं रुद्ध्वा धमेद्धठात् ॥९७॥ तद्गोलं धारयेद्वक्त्रे शस्त्रस्तंभकरं भवेत्। ताम्रपात्रे पुनर्वेष्टच मुखस्थं सर्वशत्रुजित् ॥९८॥ हन्ति रोगं जरां मृत्युं गुटिका स्मरसुन्दरी ॥ सर्वेषां मुक्तयोगानां कुंभकर्ण स्मरेद्यदि ॥ अपातं सुमुखं शत्रुसमूहं संनिवारयेत् ॥९९॥

(नागार्जुन)

अर्थ–हीरा, सुवर्ण, अभ्रक, सोनामक्खी, कान्तिसार और पारद इन सबको समान भाग लेकर खरल में जंभीरी के रस से एक दिन तक मर्दन करे फिर ढाके के बीज, बिनोले की मींग, राई, वांझककोडा और जनयित्री इनको पीसकर गोला बनावे उस गोले में उस औषधि के गोले को रखकर सात लघुपुट देवे। फिर गजपुट में रख देवें । तदनंतर मूषा में रख धोंके उस सिद्ध गोले को मुख में रखे तो शस्त्र को थांभ देता है। यह स्मरसुन्दरी गुटिका रोग जरा मृत्यु को नाश करती है॥९५–९९॥

गुटिका बनाने की तरकीब—हीरे से (उर्दू)

पारा बराबर का सोना खाया हुआ और उसका सोलहवां हिस्सा हीरे का कुश्ता दोनों को आकाश बेल के अर्क में खरल करे फिर उन दोनों का दसवां हिस्सा कान्त लोहा और सुहागा खूब वारीक खरल करे। फिर सबको मिलाकर अंधमूषा यानी घरिया में धरकर कोयलों की आंच पर रखकर धोंकनी से खूब धौंके गुटिका बन जायगी। इसकी खासियत यह है कि मुँह में रखने से बुढ़ापा दूर होता है और लंड़ाई में फतह और हर अज्वतवाना मजबूत हो जाता है और पास रखने से मुफलिसी दूर होती है और हर दिल अजीज होता है खूसूसन औरतों का इस गुटिका को सिरीगरी कहते है। (सुफहा १२–१३ खजाना कीमियां)

रसबंधक (खेचरीगुटिका) धतूरबद्ध

रसटंकत्रयं शुद्धं कृष्णधत्तूरबीजजे ॥ तैले पलद्वये खल्वे मर्दितं दिनसप्त च ॥१००॥ तावद्यावद्भवेत्तस्य जलौकारूपमुत्तमम् ॥माषान्नपिष्टकेनादौ दृढसूत्रेण वेष्टयेत् ॥१०१॥ वर्ति कृत्वा ततो गाढं शोषयेद्रविणा च तम् ॥ दशशीर्षमिते सर्षपस्य विपाचयेत् ॥१०२॥ तैलक्षयो भवेत्तावद्यावत्तामवतार्य वै ॥ स्निग्धच्छायां निशायां च शनैः सिद्धां च तां नयेत् ॥१०३॥ दुग्धेनापूर्यते कुंभः शुभस्तत्र निवेशयेत् ॥ विशोष्य सकलं दुग्धं गुटिका यदि तिष्ठति ॥१०४॥ बर्करस्य मुखे पश्चाद्गुटिकां तां प्रयच्छति ॥ प्रविष्टा तन्मुखस्यान्ते ज्वलमाने च तद्धृदि ॥१०५॥ व्याकुलं कुरुते कामं देहस्वास्थ्यं न तस्य वै ॥ उदरस्था यदा भूयात्तदाऽसौ म्रियते पशुः ॥१०६॥ स्वकीयवदने पश्चाद्धृत्वा शुभ्रां निरामयः ॥ योजनानां शतं गच्छेदप्रयासेन साधकः ॥१०७॥ अन्येऽपि बहवो रोगा मुखस्था दंतधातिनः ॥जिह्वातालुगता एते कंठस्था शालुकादयः ॥१०८॥ उपजिह्वा द्विजिह्वा स्यादधिजिह्वासुदारुणा । सप्तपुष्टिषु ये मध्ये हृद्रोगाः पीनसादयः ॥ तांस्तान् विनाशयत्येषा गुटिका नाम खेचरी ॥१०९॥

(र० रा० शं०, र० सा० प०, नि० र०)

अर्थ–तीन टंक शुद्ध पारद को धतूरे के बीजों के दो तोले तेल में सात दिन तक मर्दन करे और जब तक उसका रूप जोंक के सामन हो तब तक मर्दन करे उसको जो कि जोंक के समान लंबी बत्तीसी हो। उरद की पिष्टी में रख कच्चे सूत से बांध देवे और घाम में सुखा लेवे। उस गोले को दस सेर सरसों के तैल से पकावे। जब तैल जल जाय तब उतार लेवे। फिर रात्रि में छायादार स्थान में सिद्ध गोली को निकाल दूध के भरे हुए घड़े में रख देवे। जब दूध सूख जावे तब गोलों को निकाल बकरे के मुख में रखे। जब वह गोली उस बकरे के मुख में जायेगी तभी से उसका हृदय कामाग्नि से प्रज्वलित हो जाता है और जब वह गोली पेट में चली जायेगी तब वह बकरा मर जायेगा। इसके बाद उस गोली को अपने मुख में रखे तो बिना ही परिश्रम किये सौ योजन चल जाता है और भी बहुत से मुख में रहनेवाले रोग और दांतो के रोग नष्ट होते हैं, जिह्वा तालु शालु आदि कण्ठ के रोग तथा उपजिह्वा द्विजिह्वा हृद्रोग और पीनस आदिक रोगों को यह खेचरी गुटिका नाश करती है॥१००–१०९॥

गुटिका बनाने की तरकीब बजरियः रोगन धतूरा (उर्दू)

पारा साफ तीन टंक काले धतूरे के तेल में सात दिन तक खरल करे, तेल दो पली डाले और खूब खरल करे। सात रोज बाद मिस्ल जोंक के हो जावेगा। उर्द के आटे की गोली में रखकर चारों तरफ मजबूत सूत लपेट दे फिर उस पर उर्द के आटे का मोटा लेप करके सुखा के दस सेर तेल सरसों का लेकर उसमें पका लें, जब सब जल जाय, बर्तन को सर्द जगह रख और बाद सर्द होने से गोले से बाहर निकालकर दूध के मटके में डाल कर आंच दे। जब दूध खुश्क हो जावे, निकालले। गोली बँध गई तो गुटका बन गया, नहीं तो फिर पकावे जब गोली बँध जावे रख छोड़े। मुँह में रखने से सब बीमारियाँ दूर हों और एक दम चार सौ कोस चला जावे। थकान न मालूम हो और सौ औरतों से मोहबत करे। कुव्वत कम न हो और कोई हथियार जिस्म पर कारगर न हो, इसको खेचरी कहते हैं। (सुफहा १५ खजानः कीमियां)

रसबंधन (विषबद्ध मुश्तवा)

रसं कनकतैलेन मर्दयेद्दिनसप्तकम् ॥ विषग्रंथि समुत्कृत्य सार्धं गंधाभ्रकत्रयम् ॥११०॥ हेमतैले विनिक्षेप्यं मूषायां रोधयेन्मुखम् ॥ सप्तभिर्मृत्तिकाभिश्च वेष्टयित्वा च शोधयेत् ॥१११॥ तत्क्षणाद्वेष्टयेत्सूत्रं मृत्कर्पटसप्तकम् ॥ गोमयेनाथ संलेप्य तं गोलं पूजयेद्भिषक् ॥११२॥ हस्तत्रयमितं गर्तं शोषकृत्पिंडपूरितम् ॥ तन्मध्ये निक्षिपेद्गोलं दग्ध्वा शांतं समुद्धरेत् ॥११३॥ तत्रस्था गुटिका ग्राह्या दिव्यकौतुकदायिनी ॥ सा रोगे मुखनिक्षिप्ता रमते शोकनाशिनी ॥ यावत्सा गुटिका ग्राह्या तावन्न द्रवते नरः ॥११४॥

(नि० र०)

अर्थ–पारद को सात दिन तक धतूरे के तैल में घोटे फिर सींगिया की गांठ में छेद कर पारद भर देवे और ऊपर नीचे साढ़े तीन गुना गन्धक रख देवे और विष के टुकड़े से मुख को बंद करे। फिर एक घरिया में कटेरी का तैल भर घरिया के मुख को बंद कर सुखा सुखा सात कपरौटी करे, उस पर सूत लपेट कर फिर सात कपरौटी करे, उस गोले को गोबर से लीपकर वैद्य पूजन करे। फिर तीन हाथ लंबा चौड़ा गड्ढा खुदवाकर सूखे हुए जंगली कंडों से भरकर बीच में गोले को रख अग्नि लगावे । स्वांग शीतल होने पर निकाल लेवें, उसमें से उत्तम कौतुक (आश्चर्य) देनेवाली गोली को निकाल लेवे। उस शोकविनाशिनी गोली को मुख में रखने से खूब रमण करता है और जब तक गोली मुख में रहेगी, तब तक वीर्यपात न होगा॥११०–११४॥

गुटिका पारा (रसबंधक विष से) (उर्दू)

मान्किा: नमक लाहौरी और पानी में मुकर्रर सिकर्रर धोवे और शीरा वर्ग तंबूल में एक पहर खरल करके वीस एक कितै में निस्फतक खाली करके डाले और अजजाइ मुखखरज: से बंद करके एक बर्तन में गोश्त बुजगाला तीन पाव पानी एक पाव डालकर वह वीश उसमें छोड़कर मुंह को खूब मजबूती से वन्द करें और शाम के वक्त चूल्हे पर सवार करे और नरम आंच जलावे और अलस्सवाह में चार प्रहर गुजरने पर चूल्हे से नीचे उतार ले। गुटका वरामद होगा। एक प्रहर गुलाव में जोश देकर काम में लावे। कुव्वत वाह इमसाक व इन्तशार मे वेनजीर है, दूध में रखकर जोश देकर पिया करे और कुदरत खुदा का मुलाहिजा फर्मावे। (सुफहा ६२ मुजरवातफीरोजी)

गुटिका बनाने की तरकीब (रसबंधन ब्रह्मांडगुटिका विषयोग) (उर्दू)

पारा-साफ तप्त यानी गरम खरल में नागवेल यानी पान के अर्क में सात रोज खरल करे फिर कांजी के पानी से धोकर पारा निकाल ले फिर एक कर्षभर पारा बशकंद में भर के सूअर के गोश्त का उस पर लेपकर बीस पल धतूरे के तेल में वशकंद को पकावे। जब पक जाइ कुछ सदका दे और दवा को निकाल ले। यह गुटका बन गया। जब तक मुँह में रहेगा जमा इसे फारिग न होगा और बुड्ढा हो जवान हो जायेगा। सुस्त हो किसी फेल से या बीमारी से सब काम के लायक हो जायेगा। इस गुटका को ब्रह्मांड गुटिका कहते हैं। (सुफहा १३ खजानः कीमियां)

रसबन्धन (ब्रह्मांडगुटिका) विषबद्ध

नागवल्लीदलद्रावैः सप्ताहं सिद्धपारदम् ॥ मर्दयेत्तप्तखल्वेन काञ्जिकैः क्षालयेत्ततः ॥११५॥ तं गर्भे विषकंदस्य क्षिपेन्निष्कचतुष्टयम् ॥ विषेण तन्मुखं रुद्ध्वा स्थूलवाराहमांसजे ॥११६॥ पिंडवर्गे निरुध्याथ मुखं सूत्रेण बन्धयेत् ॥ सन्ध्याकाले बलिं दत्त्वा कुक्कुटं मदिरायतम् ॥११७॥ ततश्चुल्ल्यां लोहपात्रे तैले धत्तूरसंभवे ॥ विपचेतु ततः पश्चात्सपिंडं मन्दवह्निना ॥११८॥ सन्ध्यामारभ्य यत्नेन यावत्सूर्योदयो भवेत् ॥ विषमुटिपलं चैकं गुंजाविजययोरपि ॥११९॥ तैलं जातीफलस्यापि वीरतालस्य चोत्ततम् ॥ पाचयेत्पूर्वयोगेन अन्यथा नैव सिध्यति ॥१२०॥ तत उद्धृत्य गुटिकां क्षीरमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ तत्क्षीरं शोषयेत्क्षिप्रमेतत्प्रत्ययकारकम् ॥१२१॥ दृष्ट्वा तां धारयेद्वक्त्रे वीर्यस्तंभकरी नृणाम्॥ क्षीरं पीत्वा रसेन्द्राभां कामाकुलकलायुताम् ॥ ब्रह्मांडगुटिका ख्याता शोषयन्ती महोदधिम् ॥१२२॥

(र० सुं)

अर्थ–सिद्ध पारद को पानी के रस से सात दिवस तक मर्दन करे (तप्तखल्व में) कांजी से धो लेवे, उस चार तोले पारद को विपकन्द में भर देवे फिर विपकन्द के ही छिलके से मुख बंदकर पुष्ट सूअर के मांस में रख सूत बांध देवे। और सायंकाल को मदिरासहित मुर्गे का बलिदान देवे। फिर कढ़ाई में धतूरे का तैल भर उस गोले को सायंकाल से सूर्योदय तक मन्दाग्नि से पकावे। फिर कुचला, चौटनी, हर्र जायफल और वीरताल के तैल में भी पूर्वोक्त रीति से पकावे। तदनन्तर गुटिका को निकाल दूध के घड़े में रख देवे तो गोली उस दूध को शीघ्र ही सुखा लेती है। यह विश्वास है। ऐसा देख मनुष्य उसको मुख में धरता है, उसका वीर्य थंभ जाता है और गोली को मुख में रख और दूध पी काम से व्याकुल स्त्री से रमण करे। यह ब्रह्माण्ड गुटिका समुद्र को भी सुखानेवाली प्रसिद्ध है।।११५–१२२।।

रसबन्धन (खगेश्वरीगुटिका) विषबद्ध

तुत्थकं मूषया कृत्वा स्थापयेन्मध्यपारदम् ॥ अर्कसेहुंडधत्तूरसो द्रोणं च पूरयेत् ॥१२३॥ सप्ताहमौषधीभाव्यं सिंहनेत्र्या घनप्रिया ॥ पश्चात्तदम्लयोगेन गोलकं शुक्रसन्निभम् ॥१२४॥ धत्तूरविषतैलेन ज्योतिष्मत्य स्तथैव च ॥ गुंजा च लांगली चैव भल्लातां कोलकौ तथा ॥१२५॥ एतेषां तैलयोगेन गुटिकां विषमध्यगाम् ॥ दोलायंत्रे पचेदेवं चतुष्षष्टिदिनानि च ॥१२६॥ प्रत्येकमौषधीतैले राक्षसी गुटिकोत्तमा ॥ स्वर्णादिद्रव्य लोहानि भक्षयन्नात्र संशयः ॥१२७॥ तारमध्ये यदा क्षिप्तं स्वर्णं भवति निश्चितम् ॥ वंगमध्ये यदा क्षिप्तं रजतं जायते ध्रुवम् ॥१२८॥ मुखे क्षिप्त्वा अदृश्यं च नानाकौतुककारकम् ॥ खेचरी जायते सिद्धिर्मनः पवनवेगकृत ॥१२९॥ जरां मृत्युं हरेद्रोगं विषं स्थावरजंगमम् ॥ नानया सदृशं क्वापि त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥ नाम्ना खगेश्वरी नाम गुटिका सिद्धिसाधनम् ॥१३०॥

(र० सुं०)

अर्थ–सिद्ध पारा ऽ। सेर लेकर आधसेर नीलाथोथा आधा नीचे और आधा ऊपर उसके रखे और आक, धतूरा, तूहर इन तीनों का रस चार चार सेर प्रथम कढ़ाई में पूर्वोक्त रीति से पारे को रख ऊपर से सब रस को डाल तेज आंच दे। जब रस गाढ़ा हो जाय तब कढ़ाई को उतार पारे को पानी से खूब धो डाले। जब पारा गाढ़ा हो खरल में डाल ७ दिन सिंहनेत्री के रस में घोटे और ७ दिन घनप्रिया के रस में घोटे। पीछे कागजी नींबू के रस में घोटे। पीछे एक विष की बड़ी और मोटी गांठ लेकर उसमें एक गढ़ेला इतना बड़ा खोदे जिसमे ऽ। पाव भर पारा समा जावे। तब उसमें पारा भरकर विष के टुकड़े से मुख बंद करे और इस विष की गांठ कढ़ाई के पेंदे से दो अँगुल ऊँची रहे। ६४ दिन पर्यन्त इसके नीचे मंदाग्नि जलावे, जैसे जैसे तेल घटे वैसे वैसे डालता जाये। इसी प्रकार मालकांगनी, घूंघची, करियारी, भिलावा और अंकोल इन प्रत्येक के तेल में चौसठ चोसठ दिन पचावे तो राक्षसी पारा हो अर्थात् बहुत सूखा होवे। या पारा स्वर्णादिक के खाने को समर्थ हो, चांदी में इसको डालवे से सुवर्ण हो और राँग को चांदी करे। मुख में रखने से अदृश्य होवे, आकाश में विचरने वाला हो। एक क्षण में हजार कोश पहुंचे। बुढ़ापे, मृत्यु और विष का नाश करे, इसकी बराबर दूसरी गुटिका नहीं है।।१२३–१३०।।

गुटिका बनाने की तरकीब (खगेश्वरी गुटिका) (उर्दू)

सवज तूतिया का बुरादा लोहे के बर्तन में रखे फिर पारा आक के दूध में और थूहर के अर्क में खरल करके उस मोरतूतिये (मयूरतुत्थ) के बुरादे में दवा दे। फिर आक का दूध और धतूरे का अर्क उसमें डाले और सुखा ले, सात रोज तक फिर संगपथरी और तिरभत्तः के अर्क में एक बार डाले और सुखा ले। फिर तीनों के अर्क में उस पारे को गोली बना के वशकंद में रखकर धतूरा, मालकांगनी, भिलावा, लांगली, गुंजा, अंकोल इनका जुदा जुदा तेल निकालकर लोहेको डोलजंतर बनाके उस पारद और वशकंदको हर तेलमें जुदा जुदा चौसठ रोज तक आंच दे। गुटिका बन गई, इसको रागशमशी कहते हैं। चांदी को गलाकर इसे डाले तो सोना बन जावे। राँग में डाले तो चांदी हो जाय। मुंह में रखे तो गाइव हो, जमीन से ऊंचा चले जैसे हवा और बुढ़ापा कभी न आवे और सब जहरों कोवदन से दूर करता है। इसको भी खगेश्वरी भी कहते हैं। (सुफहा १४ खजाना कीमियाँ)

बद्धरस फल

मुखमध्यगास्तिष्ठेन्मुखरोगविनाशनः ॥ शरीरे क्रमिते सूते जरापलित–जिन्नरः ॥१३१॥ स्तंभयेच्छस्त्रसंघातं कामोत्पादनकारकः ॥ पुनर्नवं वयः

१–अगर कामयावी न हो तो बुरादा नुकरा शामिल करो। दरअसल बुरादा तिला की जरूरत है। देखो सुफहा ४१ गोली वर्नग्यि: तिला।

२–तजरुबे से साबित हुआ कि पान के रस में घोटने से पारा साफ हो जाता है गलीज नहीं होती।

कुर्यात्साधकानां न संशयः ॥१३२॥

(यो० र०)

अर्थ–यदि बद्धपारे के मुख में रखे तो मुखरोग दूर होता है और इस बद्धपारद का शरीर की नस नस में प्रवेश होने से बुढ़ापा और पलित रोग नष्ट होता है। शस्त्रों के समूह को थँभा देता है। काम को उत्पन्न करता है। बद्धपारद बनानेवालों के शरीर को यह पारद नवीन ही बना देता है॥१३१॥१३२॥

अन्यच्च

रसेन बद्धमायातस्त्रोटयत्येव निश्चितम् ॥ घनां लोहमयीं स्थूलां स्पर्शमात्रेण लीलया ॥१३३॥ मृतमुत्थापयेन्मर्त्यं चक्षुषोः क्षेपमात्रतः ॥ निहन्ति सकलान् रोगान्मृतः शीघ्रं न संशयः ॥१३४॥

(र० सं०)

अर्थ–पैर की बड़ी भारी बेड़ीभी लोहेकी इसके स्पर्शमात्रसे टूट जाय और इसको घिस कर मुर्दे की आंख में लगावे तो जी उठे और इसके सूंघने से ही सब रोग दूर होवें॥१३३॥१३४॥

पारदगुटिका मेंहदीभस्म (कसीले के चोये से)

मेंहदी, वसमा, कमीला, (एक और याद नहीं), यह दवाई रात के भिगो छोड़नी सवेरे जोश देकर पानी निकालना। उस पानी का चोया देना। पारद की गुटिका बन जायेगी। थोड़े भेद से अग्निस्थायी कहा है। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

गोली सीमाव बजरियः नीम (उर्दू)

नीम के पत्ते थोड़ा सा पानी मिलाकर पीसो और निचोड़ो। सेर दो सेर अर्क तैयार करके एक तोला पारा किसी जर्फ गिली में आग पर चढ़ाओ और उसी अर्क से चोवा देते रहे। जब तक कि पारा बस्ता होकर काबिल गोला बँधने के न हो जावे। उस्ताद ने मिकदार अर्क की नहीं बतलाई। मगर गोली हो जाने का बाइदा है। यह गोली कायमुल्नांर नहीं है, इसकी दो तदबीरें आयंदः हो सकती है। एक नाशिस्त देकर कमर बनेगा। दोयम शिगुफ्त होकर अकसीर खुर्दनी और काबिल तरह के होगा। (सुफहा ११ अखबार अलकीमियां)

गोली सीमाव बजरियः चोया से (उर्दू)

अगर सीमाव मुसफ्फा एक तोले पर तीन सेर नीम के रस का चोया दिया जावे तो सीमाव गलीज और काबिल अकदके हो जाता है। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १६/२/१९०७)

गुटिका सीमाव घमोई के चोया से (उर्दू)

घमोई नीम सोख्तः को पानी में एक दिन रात तर करके छान ले और फिर उसी पानी में जदीद खाकिस्तर घमोई को डाल कर एक दिन रात भिगो कर छान ले लेकिन पानी में खाकिस्तर घमोई को भिगोने के वक्त पानी मजकूर को लोटे में भरकर किसी जर्फ में टोंटी से गिरावे और इस अमल को मुकर्रर सिकर्रर करता रहे। जब पानी गाढ़ा हो जावे। तब उसमें सीमाव मुसफ्फा को चाया जर्फ, आहनी में दे मुनअक्किद हो जायेगा। मुतरज्जिम घमोई नीम सोख्तः से मुराद यह है कि खाकिस्तर सफेद न हो बल्कि स्याह कोयलों की तरह हो, रंगरेजों की तरह ऊपर से नीचे की जानिब पानी को मय खाकिस्तर के गिराना चाहिये। चोया की मिकदार नहीं लिखी है। लेकिन तीन रोज तक चोया देते देते गाढ़ा हो जाता है और उसके बाद हवा लगने से सोख्त हो जाता है। (सुफहा २८५ किताब अलकीमियां)

खालिस बूटियों से सीमाव का उकद यानी गुटिका बनाने की तरकीब (उर्दू)

घमोई व मूली के रस में घोट चूना के पानी से भाप दे, घीग्वार में रख दो तरकीब अव्वल–शीरा बूटी घमोई का निकाल कर सीमाव मुसफ्फा को एक हफ्ते तक खरल करे। इस तरह से कि हर रोज दो पहर दिन तक सहक करे बादहू शाम तक धूप में सुखला दे। बादहू एक हफ्ते तक शीरा मूली में जिसको पका लिया हो निचोड़ कर मफल दूर करके उस शीरा पुख्तः में बदस्तूर मजकूर खरल करे, गाढ़ा हो जायेगा। बाद उसके कपड़ें में बाँधकर गिरह देकर चूना के पानी में इस तरह लटका दे कि पानी के ऊपर पोटली मजकूर चार अंगुल ऊंची रहे और सरपोश को आटा लगाकर हांडी के लब से बस्त्र करके भाप दे। यहां तक कि सख्त और साफ हो जावे निकाल कर थोड़ी हींग सीमाव मजकूर में मिलाकर सात दिवस तक शीरः घीग्वार से सहक करके फिर हींग के हमराह पोटली बाध कर बेख घीग्वार में सालभर तक रख दे बाद साल भर के तैयार हो जायेगा। (सुफहा २८२ किताब अलकीमियाँ)

गुटिका–जलकुम्भी (फारिस अलमाइ अरबी) के रस में घोट तदरीजी आंच से ३० पुट में (उर्दू)

सीमाव को बदस्तूर मुसफ्फा करके जलकुंभी के शीरे में चार रोज तक चार पुट आफ्ताबी दे यानी दो पहर खरल और दो पहर खुश्क करे, यह एक पुट हुआ। बाद उसके दो शकोरोंमें दो सफल बूटी मजकूर को रख दर्मियान में उसके पांच बहलूली (८ तोले ४ माशे) सीमाव रखकर कुछ शीरा बूटी जलकुंभी का ऊपर से डाल कर अधमूषा करके मजबूत मुहर कर दे। बादहू पुट दे। अव्वल रोज सेर भर उपला जंगली की बुरादा करके आग दे। इसी तरह दूसरे रोज दो सेर उपलों की आग दे और हर रोज सेर भर उपलों की आग ज्यादा करता जावे। यहां तक कि तीस सेर की नौबत आ पहुँचे। मुनअक्किद हो जायेगा। मुतरज्जिम जलकुंभी को अरबी में फारिस अलमाइ कहते हैं। यह बूटी पानी पर बगैर जड़ के होती है। इसकी पत्ती वर्ग बादर जीवयः से जिसको वल्ली लोटन कहते हैं। मुशाबः होती है मगर उससे छोटी और पोदीना से बड़ी होती है और मशहूर ओ मारूफह इसका दरख्त अकसर तालाब में होता है। करीब दो अंगुल के पत्ती चौड़ी होती है। बीच से खाली इधर उधर से उठी हुई गोलाई माइल चार पांच कोने होते हैं। जड़ इसकी पानी के अन्दर मगर जमीन के ऊपर होती है। दो किस्म की होती है। एक की पत्ती हुल आलम यानी सदाबहार के पत्ते के मशाबः मगर उसमें बड़ी और दूसरी वह जिसका जिकर हो चुका है। यह बूटी खुश्की में भी होती है। (सुफहा २८६ किताब अलकीमियां)

गुटिका सीमाव (उर्दू)

(लजालड रेगी या किवाइ स्याह या वाइतलख के रस में तश्किया और लुबदी में तश्विया ११ मर्तबः)

अगर सीमाव को बतरीक मजकूर मुसफ्फा करके शिरा लजालू एरेगी या शीरा किवाइ स्याह या शीरः नाइ तलक में जिसको हिन्दी में कोढ़ कहते हैं, खूब सहक करे बादहू लुबदी में उसी बूटी के जिससे किया है, रख कर मजबूत बोतः मुअम्मा करके गिले हिकमत करके आग दे, इसी तरह ११ मर्तबः तश्कीद व तश्विया करे। बेशक मुनअक्किद और सख्त हो जायेगा। मुतरज्जिम लजालूइरेगी से मुराद यह है कि जो लजालू रेग खुश्की में पैदा हो, हरसहबूटी की माहियत ऊपर लिखी गई है। यह सब बूटिया फर्दन फर्दन सीमाव को गाढ़ा और दरगा आग पर करती हैं, सहक की मिकदार मुन्दर्ज नहीं है, लेकिन इस कदर पुटआफ्ताबी देना चाहिये कि सीमाव मजकूर गाढ़ा हो जावे। उसके बाद तश्विया उसी बूटी के सफल में रख भूभल यानी कर्सी के दूध की आग दे (सुफहा २८४ किताब अलकीमियां)

गुटिका सीमाब अर्क चौलाई में घोट ११ बार तश्विया (उर्दू)

अगर बाद मुसफ्फा करने के सीमाब को शीरः चौलाई में सहक करे बादहू बर्ग चौलाई मजकूर के सफल में सीमाब को रख कर बोतः मुअम्मा करके तीन सेर कर्सी की आग में जिससे धुंआ निकल गया हो, ग्यारह बार तश्विया दे गुटिका बंध जायेगी। लेकिन हर बार सहक करके रखकर तश्विया देना चाहिये। सख्त हो जायेगा। (सुफहा २८३ किताब अलकीमियां)

मुतरज्जिम—अलकीमियां और दीगर हफ्त अहबाब कल्पी में लिखा है कि बर्ग चौलाई में हर बार सहक करने के बाद ग्यारह अदद अव्वल, कन्दकोही में डालकर भूभल की आग दे तो भी गुटका हो जाती है। (सुफहा २८३ किताब अलकीमियां)

सीमाब पर चौलाई का असर (उर्दू)

चौलाई बहुत कवीउलअमल पत्ती है, इससे सीमाब गाढ़ा और देर पा बनता है। (सुफहा २८४ किताब अलकीमियां)

गुटिका सीमाब शीरा लौनिया खुर्द में तश्किया व तश्विया से (उर्दू)

सीमाब मुसफ्फा को शीरा लौनियां ख्वाह चौपत्ती आबी में जो सितह आब पर होती है। दो तीन पहर तक तस्किया देने से और बाद उसके उसी के सफल में तश्विया देने से मुनअक्किद होता है। (सुफहा २८५ किताब अलकीमियां)

मुतरज्जिम—सीमाब चौपत्ती के अर्क से बहुत जल्द बस्तः हो जाता है। (सुफहा २८५ किताब अलकीमियां)

गुटिका सीमाब रोगन धतूरे में तसकिया और बर्ग धतूरे में तश्विया (उर्दू)

तरकीब हफ्तम सीमाब को मुसफ्फा करके रोगन तुख्म धतूरा में धूप में पुट आफ्ताबी दे और रात को बर्ग धतूरे की लुबदी में रख कर अंधमूषा में बंद करके दो सेर की कर्सी उपला जंगली में जिसमें धुंआ न रहा हो, आग दे। पच्चीस बार यही अमल करे। मुनअक्किद हो जायेगा। अहलफनका कौल है कि सीमाब अगर रोगन की इमदाद से बजरियः तसकिया व तश्विया के बस्ता किया जाता है। आम इससे कि तेल अशियाइ मअदनी का हो या नबाती या हैवानी का ख्वाह बैजा से या खून से बस्ता हो तो नाकिस होता है। लेकिन यह कौल खिलाफ है इसलिये कि तजरुबे से अमल करने के वक्त मालूम हुआ कि अक्सर कामिल और दुरस्त उतरा और बाज हालत में ठीक नहीं निकला। (सुफहा २८५ किताब अलकीमियां)

पारदगुटिका

(कटेरी के रस में घोट गोली बना हस्तिशुंडी की लुगदी में पुट)

कंटकारी पंचांग रस ८ तोले पारद एक तोला मर्दन करना जब तक पारद दृश्य होवे, गुटिका बना के ढक्कुला में गर्त करके मृत्तिका लगाकर हस्ती शुंडी दी। नुगदी में गुटिका रखकर ढक्कुला दूसरा रखना, ऊपरो संधि मुद्रण करके अग्नि देनी, गुटिका हो जायेगी। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका

(हस्तिशुंडी के रस में घोट गोली बना धूमली की लुगदी में पुट)

हस्ति शुंडी में पारद खरल करना ८ प्रहर फिर गोली बना के धूमली बूटी के नुगदे की सम्पुट बना के उसमें गोली रख के चार सेर पक्के गोहे की आग देनी, पारद स्थिर गोलाकृत हो जायेगा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका

(धतूरे के रस औरदोधकके दूध में घोट पिट्ठी से लपेट पुट)

पारद १ तोला ३ तोले साबुन पारे में भिजा रहे, ८ दिन तक धतूरे का रस ९ तोले दोधक छतड़ी का दूध १ तोला इसमें खरल कर माषपिष्ट में गोला बना के कपरौटी गाचनी से करे फिर सुखाकर कोयलों में सुरख करके पानी में सुटना गोली लें लेवे। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका स्थिर

(तिमरू की लकड़ी के बुरादे में तीन आंच)

तिमरुदी लकड़ी का बूरा बना लेना, पाव पक्का और आकाश वेल दे रसे बिच उसका नुगदा बना के उसमें पारा तोला १ रखकर अग्नि देना, ऐसे तीन आंच देने से पारद गुटिका स्थिर हो जायेगी। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका चित्रेके पानी में औटाकर

चित्रेका[१] पानी या पक्का पारा तोला मंदाग्नि में पकाना गुटिका (भवेत्) होवे। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका बज्रदन्ती से

बज्रदन्ती औषधि तीन पत्ते उसके इकट्ठे होते हैं, पत्ता मिर्च के पत्ते सदृश होता है, पुष्प श्वेत बेल होती है, इसके पत्र रस में गर्भ में पारद बन्धन होता है। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका रामपत्री से

अन्यानुभूत—यथा रामपत्री में जरा जरा पानी देकर पारद को खरल करने से गुटिका हो जायेगी। उस गुटिका को दुग्ध में पकाकर पीनेसे पुष्टि होवे। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारद गुटिका

नियोजबोज तुलसी काले धतूरे के रस में ३ दिन घोट पारद 'नियाजबोज में दिन १ श्याम तुलसी में दिन १ श्याम धतूरे में दिन १ मर्दनेन गुटिका जायते दुग्धादौ योज्यम्'। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारद गुटिका हुलहुल के रस में घोट पिष्टी

दरख्त हुलहुल एक बूटी आम होती है, इसमें से सख्त किस्म की बू आया करती है। यह वही बूटी है जिसके चन्द कतरे कान में डालने से सख्त से सख्त कान का दर्द फौरन दूर होता है, पारे को अगर हुलहुल के रस में थोड़ी देर तक खरल करे तो मानिन्द सिक्का के हो जाता है और गिरह बँध जाती है। (अखबार देशोपकारक)

उकद यानी गुटिका चील के अंडे से (उर्दू)

सीमाब अगर चील के अंडे में भरकर सेने के वास्ते उसके घोंसले में रखे तो यह कहते हैं कि बस्ता हो जाता है लेकिन इसका तजरुबा नहीं हुआ और न हम अमल में लाये, अलबत्तः ठीक उस वक्त उतरेगा कि तीन रोज तक चोया शीरा कनवाई स्याह यानी मकूका जिसको गीदड़ दाख कहते हैं दे,

---

१—मुतरज्जिम—अव्वल कंद की ही एक जिन्स महराई सूरन की है, इसके पत्ते ज्याद: चौड़े और जड़ सफेदी माइल होती है।

१—यह एक वृक्ष काश्मीर में होता है।

उसके बाद अंडे मजकूर में रखे लेकिन चूंकि छोटी गुटिका सीमाव की बेखासियत होती है। इस वास्ते अगर बगैर चोया बूटी मजकूर के सीमाव मुनक्किद हो भी गया हो नाकिस होगा, लिहाजा चोया देना जरूरी है। (सुफ़हा २८३ किताब अलकीमियाँ)

मुतरज्जिम–सीमाव चील के अंडे में रखने से इक्कीस दिन में गुटिका हो जाती है। बशर्ते कि पहली मर्तबः के अंडे दिये हुए हों, लेकिन गुटिका छोटा होगा और हुकमाइ का कौल है कि अगर तोले भर से ज्यादा गुटिका न हो तो कुछ खास्ता नहीं रखता। (सुफ़हा २८३ किताब अलकीमियाँ)

गुटिका सीमाब रोहू मछली में (उर्दू)

सीमाव मुसफ्फा को रोहू मछली के मुँह में डाले और मछली के जिस्म पर आध सेर स्याह साईदः मिर्च[1] का लेप करके गजपुट की आग दे। इस तरह तीन अमल करे। गुटिका हो जायेगी।

मुतरिज्जम–इस तरकीब में तरद्दुद यह पड़ता है कि सीमाव मछली के पेट में नहीं थमता, फौरन उगल आता है लिहाजा किसी बांस के नले को उसके मुँह में ठूंस कर पारा डाल दे और मछली को खड़ी रखे और पतली पतली रेत की कपरौटी करके बहुत जल्द अवे में कुम्हारों के खड़ी दुम के बल रख दे क्योंकि यह मछली नाजुक बहुत होती है और इसमें जल्द सड़ना शुरू होता है। इस वास्ते धूप में नहीं बल्कि सायें में रखे और बहुत जल्दी तमाम तरकीब को करना चाहिये।

सय्यदलताफहुसैन साहब बरेलवी ने अप्रैल सन् १९०४ ईसवी में साबी नं० ४३ रिसाल किविरियत अहमर के तजरुबा करने के वक्त इसी तरकीब से सीमाव को कायमुल्नार किया था और बावजूद कि मछली जलकर राख हो गई, ताहम सीमाव उड़ा नहीं, हर अमल में गाढ़ापन बढ़ता जाता है बिलाखिर गुटिका कायमुल्नार बनती है। (सुफ़हा २८४ किताब अलकीमियाँ)

सिफत व फवायद गुटिकानिरास (उर्दू)

तनहा सीमाव जब बगैर अआनत किसी जसद के मुनअक्किद होता है, उसको गुटिका निरास कहते हैं, गुटिका निरास मजकूर थोड़े से अमल में या तो खुद चांदी या सोना हो जाता है या दूसरी धातु को मिस करने से उसको सोना या चांदी बना देता है या कुश्ता करने से अकसीर तिला या अकसीर नुकरा सा खास्सा जाहर करता है। अगर दूध में डाल कर पिये तो मुकव्वीवाह होता है व अलहाजुलकयास और भी खवास है और जो गुटिका किसी जसद के राहु से बनता है, उससे अकसीर नवाती में खुद उसके तिला या नुकरा होने में अराकीन अंजुमन अलकीमियां को अब तक कामयाबी नहीं हुई जैसा कि जैल से वाकै से मालूम होगा। यह राइ मुजरिज्जम की है। (सुफ़हा २८७ किताब अलकीमियाँ)

पारदगुटिका चांदी की भस्म से

ताँबेदी कटोरी बिच ५ तोले पारा पाकर उपरों एरंड तैल ६ तोले पाके लघुवालुका यंत्र में चार पहर मंदाग्नि देनी फिर तैल हटाकर पारा धो लेना। इस पारे बिचों चार तोले पारा १ तोला रूप्यभस्म दोनों को निंबू रस में खरल करना, चार प्रहर फिर धोंके। ताम्रपत्र में गोली रखके उपरों एरंड तैल और पाके लघु बालुका यंत्र में चार पहर मंद मदं अग्नि देनी। दो लकड़ी दी तब गोली बहुत दृढ़ हो जायेगी। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारे का मसका ताँबे से

साटे के नीचे एक पैसा जड़ देना और पारा और सुहागा बराबर वजन लेकर पहले सुहागे को खूब पीसना फिर पोस्त का पानी पाकर चीनी के प्याले में उस सोटे से खूब पीसना, पारा मोमवत हो जायेगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका–नीलेथोथे से औटाकर

पारद २ तोला, सुहागा २ तोला, लवण १ तोला, नीला थोथा १ तोला ले हेठ आधा सुहागा उस पर आधा लवण उस पर आधा, नीला थोथा उस पर कुंडी ऊंधी देकर उस पर पानी हेठ आग बालणी, ऐसे गुटिका हो जायेगी। उसको जरा अग्नि देने से दृढ़ गुटिका हो जायेगी। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारदगुटिका (स्तंभन) ताम्र से बना विष में रख तुषपुट

अथ शुक्रस्तम्भयोगानाह–

सार्द्धं त्रिनिष्कं हरजं मर्दयेन्मुखवारिणा ॥ तं शुल्कमातपे तीव्रे मर्दयेत्ताम्रमुद्रयां ॥१३५॥ अपामार्गरसं दत्त्वा घटिकात्रितयावधि ॥ पुनः कनकनीरेण मर्दयेद्घटिकात्रयम् ॥१३६॥ ततो रसं समादाय हस्ताभ्यां गोलकीकृतम् ॥ कनकस्य रसे मग्नं कृत्वा घर्मे सुरक्षयेत् ॥१३७॥ हस्तोष्माणं पुनर्दत्त्वा स्थापयेत्कनकद्रवम् ॥ एवं दिनद्वयं कुर्यात्साधकस्तदनन्तरम् ॥१३८॥ विषग्रंथिं समुद्धृत्य गुटिकां तत्र निक्षिपेत् ॥ मर्दयेत्तेन वदनं वीजानीमानि मेलयेत् ॥१३९॥ धत्तूरफलबीजानि जलाबीजानि फेनजम् ॥ एकत्र मेलयेत्तुल्यं मर्दयेदुष्णवारिणा ॥१४०॥ अस्य मूषाद्वयं कृत्वा विषग्रंथिं निवेशयेत् ॥ अंधमूषां ततः कृत्वा तुल्यामुपरि निक्षिपेत् ॥१४१॥ दिनाष्टके स्थिते तत्र ततो ग्राह्या वटी शुभा ॥ मुखस्था वीर्यधृक् पुंसां संभोगे सौख्यदा भवेत् ॥१४२॥

(वैं० क०)

अर्थ–साढ़े तीन तोले पारद को कांजी से घोट सुखा लेवे फिर एक लकड़ी के घोट में तांबे का पैसा गाड़कर ओंगे का रस देकर तीन घड़ी तक घोटे फिर धतूरे के रस से दो घड़ी घोटे फिर पारद के हाथ में लेकर गोली बना लेवे और धतूरे के रस में रखकर घाम में रखे फिर हाथ की गरमी देकर (अर्थात् हाथ से मलकर) धतूरे के रस में रख देवे। इस प्रकार दो दिन तक करने के बाद सींगिये को निकाल लेवे। तदनन्तर धतूरे के बीज, भांग के बीज और अफीम इन तीनो को एकत्र कर उष्ण जल से घोट दो मूषा बनावे, उनमें से एक में गोली सहित सींगिये को रख ऊपर से दूसरी मूषा को रख मुख बन्द कर देवे और उस घरिया पर तुषों को रख देवे। आठ दिवस के पश्चात् घरिया को निकाल गोली को निकाल लेवे, उस गोली को मुख में रखने से वीर्य को धारण करनेवाली और संभोग दशा में सुखदायिनी होती है।।१३५–१४२।।

गुटिका सीमाव बजरियः तिला–अभ्रक–संखिया (उर्दू)

मुश्कक जेरजमीन जिसको हिन्दी में भदर मोतिया और अरबी में सुअद हिन्दी कहते हैं और जो बेख काह मरक और दूब की है, जोगियों की स्लाह में इवली कहते हैं। दस हिस्से लावे और चौगुना पानी उसमें मिलाकर जोश दे। जब एक हिस्सा रह जावे उतार कर बत्ती से मुकत्तर करके तुख्म धतूरा बारीक पीस कर मिलावे और फिर एक दिन जोश दे जिसमें वह भी हम मिजाज हो जावे। बादहू उतार ले और दुबारा फिर बजरियः बत्ती के तकतीर करके साफ करले। उसके बाद लावे रत्तसंगीन यानी जर्द संखिया और सीमाव और अभ्रक स्याह और दहनाव और औराक तिला चोंरा मसावीउलवजन लेकर तीन दिन तक आब मजकूर में बदस्तूर खरल करे, इस तरह से कि सुवह से दो पहर तक खरल करे और दोपहर से शाम तक धूप में सुख लावे। जब खूब खुश्क हो जावे। अंधमूषा में डालकर गिले हिकमत करके भूभल हो जावें दी जाती है, खुद बखुद सर्द होने पर निकाल कर फिर बोतः मुअम्मा में रखकर कोयलों की आग में सुनारों की फूंकनी से फूंके। गुटिका कायमुल्नार अकसीर हो जायेगी। (सुफ़हा २८९ किताब अलकीमियाँ)

१–स्याह काली मिर्च को पानी या लैमूं में पीसकर जमाद करे।

गुटिका सीमाव बजरियः तिला नुकरा अभ्रक संखिया (उर्दू)

मुश्कक जो कि जड़ का है, मरक और दूब की है और हिन्दी में इसका नाम खल बूटी (भदरमोतिया) है, लावे और हमवजन उसके त्रिफला यानी हरड़, बहेड़ा, आँवला पीस कर मिलावे और चौगुने पानी में कढ़ाई आहना या देग में रखकर जोश दे, जोगियों की सलाह में इसको सोपली कहते हैं, जब एक हिस्सा पानी रह जावे, बत्ती से मुकत्तर करके छानकर शीशे में रख दे बादहू सीमाव अवरक स्याह, अवरक सफेद, संखिया सफेद, तिला नुकरा बराबर लेकर आब मजकूर से खरल जज्जाजीमें सहक बलेग करे और बतरीक मजकूर कुकर पुट की तरह आग देकर सर्द करे। बादहू बोत. मुअम्मा में रख कर फून जंतर में गुटिका हो जायेगी। (सुफहा २९० किताव अलकीमियां)

गुटिका सीमाव बजरियः संखिया अभ्रक व तिला या नुकरा या आहन या सुर्व वगैरहः (उर्दू)

अगर अमल शमसी मंजूर हो तो अवरक स्याह व तिला या अवरक स्याह व आहन लावे और अगर अमल कमरी मंजूर है तो अभ्रक सफेद या नुकरा या अभ्रक सफेद और कलई या अभ्रक सफेद और जस्त या अभ्रक सफेद और मुर्वले गर्ज यह है कि जो अमल मंजूर हो, उसके दो जुज व शमसी मजकूरह बाला या दो जुज्व कमरी मुन्दर्जः सदरले और सीमाव व संखिया जर्द अमल शमनी की सूरत में और सीमाव व संखिया सफेद अमल कमरीकी हालत में लेकर चारों की शीरह हाड मजकूर यानी संभालू या मुश्कक जेर जमीन मजकूर में खरल में रखकर जमीर करे लेकिन शीरः मुश्कक यानी मोनिया का होना जरूरी है। बादहू बंद बोतः में रख कर फूके। गुटिका हो जायेगी। बादहू जब मंजूर हो कि उससे पाक करे खुली घरिया में रखकर धोंके और तिला या नुकरा से जैसा अमल हो, हम्लिान करे, जब गुदाज हो जाय। थोड़ी थोड़ी चुटकी सुर्व के बुरादे की जिसकी मिकदार निस्फ नुकरें में हो डालता जावे और धोंकता जावे जिसमें कुल सुर्व सोख्तः हो जाइ तिला व नुकरा कामिलुलअयार रह जावेगा। अगर फूटक हो तो समझना चाहिये कि सुर्व खाम अब तक उसमें मौजूद है फिर धोंके ताकि सुर्व खाम सोख्त हो जाय, इन्शाअल्लाहताला आला दर्जे का हो जायेगा। (सुफहा २९१ किताव अलकीमियां)

गुटिका सीमाव बजरियः अभ्रकसुर्व (उर्दू)

शाराबग तिरसली और मूली से जिसको हिन्दी में संभालू और मरक्वाह (मोनिया) कहते हैं लावे और सुर्व को अंजन (सुरमा) से कुश्ता करे और सीमाव और अभ्रक धनाव तीनों मसावी लेकर शीरहाड मजकूर में जमीर करे और बोतः में रखकर फूंके गुटका हो जायेगा और कुल काम मजकूर बाला में आवेगा। (सुफहा २९० किताव अलकीमियां)

उक्त सीमाव बजरियः संखिया व मुर्दार संग के तांबे के संपुट में (उर्दू)

सीमाव एक तोले, संखिया एक तोला, दोनों को अर्कलैमूं एक अदद में खरल करके दो कटोरी मसी में जिसमें एक का वजन पन्द्रह तोले और दूसरी का वजन दस तोले था, बंगला पान की दो तीन तक नीचे की कटोरी में रखकर ऊपर से सीमाव मसहूका को जो दही के चक्के की तरह हो गया था, रख दिया। इस तरह से कि सीमाव का असर पानों तक रहा। कटोरे के ऊपर जरह बराबर भी नहीं पहुँचा क्योंकि कटोरी पर पहुँचने से उसको तोड़ देता है। बाद उसके सीमाव के ऊपर मुर्दारसंग एक माशा पीसा हुआ छिड़क दिया और ऊपर से दो तीन तह पानों (बर्ग तम्बूल) को रखकर दूसरा कटोरा बंद करके आहिस्ता आहिस्ता गिलि हिकमत तीन बार मअमूल तौर से किया ताकि दवा तहवबाला न हो जाये। बाद उसके दस सेर खानगी कंडों की आग भड़कः की तरह एक गढ़ा खोदकर दी। सर्द होने पर निकाला तो सीमाव मुनअक्किद था। यह नुसखा जमीमा में एक कलमी हफ्त अहवाव के था जिसमें अजमालन यह भी लिखा था कि यह सीमाद चांदी खाम खालिस होकर निकलता है और अकसीर तिला और अकसीर अजसाम सब कुछ बन सकता है। (सुफहा २८७ किताव अलकीमियां)

गुटिका संखिया से (उर्दू)

सीमाव और सम्मुल फार को सहक करके अर्ककटाई खुर्द चार पहर तक मुतवातिर चोया दे। बस्ता व मुनअक्किद हो जायेगा। (सुफहा २८६ किताव अलकीमियां)

पारे की गोली को कठिन करने की क्रिया

पारे की गोली हो जावे और उस गोली को सख्त करना हो तो तालमखाणा बीजबंद दोनों को पानी से पीस कर उसका संपुट बनाना, उस संपुट में गोली रख कंद बंद करके आग में रख कर संपुट को पकाना। जब पक जावे तब निकाल लेना, सख्त हो जावेगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

बद्धप्रकार अभ्रकस्वर्ण से

अभ्रकं हरबीजेन षोड़शांशन्तु कांचनम् ।। ध्मातं गतअंधमूषां गंधकेन समन्वितम् ।।१४३।। मुखे क्षिप्त्वा वरारोहे संतिष्ठेत्स यथा खगः ।। राजिकामर्धमात्रेण पर्वतानपि वेधयेत् ।।१४४।। राजिकासर्वमात्रेण तादृशं यदि भक्षयेत् ।। प्रयच्छते खेचरत्वं क्रीडते शंकरो यथा ।।१४५।।

(योगसार)

अर्थ–अभ्रक पारद और पारद से षोडशांश सुवर्ण और गंधक इन सबको पीस अंधमूषा में रख धोंके तो पारा बद्ध होगा, उसको जो मनुष्य मुख में रखे तो वह पक्षी के समान खड़ा रहता है और आधी राई के समान भाग से पर्वतों को भी वेधता है और ऐसे पारद की एक सरसों के तुल्य मात्रा खा लेवे तो खेचर होता है और श्रीमहादेवजी के समान क्रीड़ा करता है।।१४३–१४५।।

पारदगुटिका अभ्रसत्व हेम व तार से

हेमताराभ्रसत्त्वं च रसगंधसमन्वितम् ।। उष्णोदकेन संघृष्य पुनस्तप्तोदके क्षिपेत् ।।१४६।। जायते गुटिका दिव्या सिद्धिर्भवति नान्यथा ।। मासैकेन समुद्धृत्य मुखे प्रक्षिप्य साधकः ।।१४७।। वज्रकायो भवेद्देवि बलीपलित वर्जितः ।। अथ तां गुटिकां घृष्ट्वा मध्वाज्येन पिबेत्सुधीः ।।१४८।। मासत्रयप्रयोगेण जीवेच्चन्द्रार्कतारकाः ।। तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्वं भवति कांचनम् ।।१४९।।

(योगसार)

अर्थ–सुवर्णभस्म, एक भाग, चांदी की भस्म एक भाग, अभ्रक सत्त्व एक भाग, पारद एक भाग और गंधक एक भाग, इन सबको उष्णोदक से पीस गोली बनाय फिर गरम जल में धरे तो दिव्य सिद्धि की देनेवाली गोली सिद्ध होगी। एक मास तक उष्णजल में रख और निकाल मुख में रखे तो साधक का शरीर वज्र के तुल्य हो जायेगा। जब तक सूर्य और चन्द्रमा रहैं तब तक जीवित रहता है, उसके भक्षण करनेवाले मनुष्य के मूत्र और पुरीष के योग से तांबे का सुवर्ण होता है।।१४६–१४९।।

खगेश्वरी गुटिका

लीलाथोथा की कोरिके एक घरिया बनावे तिस में पारा रखे अथवा लोहे की बड़ी कटोरी बनावे तिसके भीतर चारिउ ओर लीलाथोथा का मोटा लेप करे तिसमें शुद्ध पारद राखे उस कटोरी कूं अंगारा परिराखे एही भांति एक

लोहे की तिखटी बनावे। तेह तिखटी के एक अँगीठी राखे अँगीठी राखे उस तिखटी पर वह कटोरी राखे। आक, सेहुंड, धतूरा इन हर एक का रस ले चार चार सेर तेही रस करि चोवा हर घरी दिया करे, उस कटोरी के पारा के ऊपर जबताई सब रज जरि जाइ तेही उपरांत पारा निकासिलेइ तिसकूं सत सात दिन सिंघनेत्री के रस से और घन पिया के रस से खरल में घोटे। पाछे कागदी नींबू के रस से उस पारा कूं धोइ लेइ। उस पारा की गुटिका होई बहुत चमक होइ। उस गुटिका में जैसी नक्षत्र में पाछे, उस गुटिका कूं सींगिया विष के भीतर राखि के विष के टुकड़ों में टांगि के सूत से मोहकम बांधि के धतूरा कर तैल, मालकांगुनी का तेल, घुँघुची का तेल, करहारी का तेले, अंकोल का तेल, भेला करि सब तेल एकत्र करि इसमें चौसठि दिन पकावे। धीमी आंच से पकावे अथवा हर एक के तेल में जुदा जुदा चौसठि दिन पकावे। इस भांति पकावने से बरस एक लागे। ताते इकठौरी पकावे। इस तेल में पकाये से पारा भूखा होता है। रस राख सा होता है, तब इस पारा में सोना रूपादि क्रमते चरावे फेरि बहुत चरावे तिस पाछे अभ्रक सत्त्व चरावे तब यह सूत सिद्ध होइ और गुटिका होइ एके दांड इसको रूपा में डारे तो सोना करे, रांगा में डारे तो रूपा करे। मुख में राखे तो अदृश्य होइ आकाशचारी होइ उतालता से चले। एक घरी में १०० कोस जाइ बूढ़ा न होइ मृत्यु न होइ सब विषकूं दूरि करै मुख में राखे से इसके बराबर कोई गुटिका नहीं।

(खगेश्वरी गुटिका भाषापुस्तक प० कुलमणि शास्त्री पत्र १८)

ब्रह्मांडगुटिका

सबीज बद्ध पारद को पान के रस से सात दिन घोटि के कांजी के पानी से धोइ के चार टांक वह पारा सींगिया विष में मकरोइ के राखै और विष के टुकड़ा से मुंह मूंदे फिर सूअर के मांस में राखै। सूत से लपेटे लोहे की कढ़ाई में साठ पैसा भरि धतूरा को तेल डारइ तिस तेल में इह पिंड राखै सांझ से लेइ सूर्य उदय ताइं सायंकाल एक मुर्ग और शराब बलि देइ। कालिकाकूं, भैरवकूं, इह बलि देइ तब आरंभ करे। मंद अग्नि से पकावे। प्रातःकाल निकासि के पहिले कुचिला के तेल में पकावइ कुचिलाकर तेल पैसा दोइ भरि घुँघुची तेल में पकावइ, भांग के तेल में पकावइ, जायफल के तेल में पकावइ, बीरताल के तेल में पकावइ, हर एक को तेल पैसा दोइ भरि ले पाछे, निकासि के दूध में डारै। दूधकूं एक छिन में सोखे तो जानिये गुटिका सिद्ध भयो तब दूध पीय के मुंह में राखे, स्त्री के पास जाय, बंधेज होइ जब मुंह में से अलग करे तब वीर्य पतन होगया। (भाषा पुस्तक प० कुलमणि)

पारदगुटिका (स्वर्गगैरिक हिरमिची से)

अथ पारदस्य निर्बीजबंधनप्रकारो लिख्यते पलानि षड्रसस्यात्र गृह्णीयाद्भिषगुत्तमः ।। सुवर्णगैरिकस्यापि तावन्त्येव पलानि च ।।१५०।। मर्दयित्वा द्वयं सम्यक् तुलामात्रे जले पचेत् ।। पादावशिष्टं विज्ञाय वस्त्रपूतं प्रकल्येत् ।।१५१।। रसस्य यो घनो भागो वासस्ये व स तिष्ठति ।। तस्यैव यो द्रवो भागः सोऽधः पतति नीरवत् ।।१५२।। इत्थं वारत्रयं कुर्याद्रसो गाढोऽखिलो भवेत् ।। प्रतिवारं क्षिपेत्तत्र जलं गैरिकमेव च ।।१५३।। तावन्मानं ततः सर्वं गाढं सूतं समाहरेत् ।। दिनानि सप्त धत्तूरस्वरसेन विमर्दयेत् ।।१५४।। प्रतियामार्द्धकं घृष्ट्वा क्षालयेच्च पुनः पुनः ।। वृहद्गोक्षुरनीरेण तथा कोलरसेन च ।।१५५।। एवमेव प्रकारेण मर्दयेत्क्षालयेदपि ।। क्षुधितः परिशुद्धश्च जायतेऽसौ रसेश्वरः ।।१५६।। पृष्ठभागं शरावस्य तं सूतं परिलेपयेत् ।। गाढगोधूमपिष्टेन च्छादयेच्च समंततः ।।१५७।। मृत्पात्रे प्रक्षिपेत्पूर्वमजादुग्धं भिषग्वरः।।। पृष्ठभागं शरावस्य निदध्यात्तन्मुख ततः ।।१५८।। पात्रस्याधः शनैर्वह्निं ज्वालयेत्प्रहरद्वयम् ।। तत्पृष्ठलग्नं तत्पिष्टं येन स्विन्नं प्रजायते ।। १५९।। सूतेन घटितं पात्रं दृढं स्वेदात्प्रजायते ।। एवमेव प्रकारेण शिवलिंगं प्रकल्पयेत् ।।१६०।।

(भाषापुस्तक प० कुलमणि)

अर्थ—पारा पैसा बारह भर लेई, हिरमिचा पैसा बारह भरि लेइ, छिन एक घोटि कै चारि सेर पानी डारिकै औटावे जब एक सेर भरि पानी रहे तब तक कपरा में निचोरि के जो पारा गाढ़ा होइ सो लेइ, एही भांति तीन बेर करे, हर बेर एक पाव हिरमिची डारे और हर बेर चार सेर पानी और हर बेर चुरवे जब सेर एक पानी रहे तब कपरा से पानी निचोरि डारै पारा गाढ़ा निकासि लेइ तेह पारा गाढ़ा कहैं, धतूरा के रस से दिन सात घोटि चारि घड़ी घोटे फेरि पानी से धोवइ, इही भांति हरबेर घोये और हर बेर धोवइ पीछे बड़े गोखरू के रस से सात दिन घोटे और वही भांति धोवे तब माटी के परई की चौगिर्द वह गाढ़ा पारा लगावे। तेपर तेपर आटा करि रोटी लगावे। पाछे एक हांडी में बकरी का दूध सेर दोइ डारे ताही हांडी के मुँह पर पारा की परई राखे, रोटी की तरह हांडी के तरे आंच देइ पहर दोइ तीन दूध की भाप से वह रोटी जब ताईं उसे ही जाइ तब उतारि के आटा दूर करिके पारा का पयाला निकासि लेइ। तेही पयाला में दूध पीवे तो वह दूध बहुत गुण करे, ऐही भांति पारा का महादेव बनावे। तेही महादेव कूं जो पूजे पुण्य बहुत होइ ।।१५०–१६०।।

इति पारद बीज बन्धन प्रकार समाप्त

सीमाब की जड़ी से गोली (उर्दू)

अर्क अमरबेल ५ तोले, अर्क बेल पत्र १५ तोले, सीमाब ३ तोले इनके अर्क में पारा खरल करो बस्ता हो जावेगा। (अजीवियाज हकीम मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

मसका सीमाब लजवन्ती से (उर्दू)

बग छुई मुई जर्द रंग सबज यानी गीली लेकर एक सुराई में पारा १ तोले चढ़ाकर रोग कुंजद ३ माशे डाल कर ऊपर वर्ग लजवन्ती रखे जब पत्ता जल जावे, फूंक से उड़ावे मसका हो जावेगा। मुजरिब (अजमकसूद अलीशाह अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयावखां सोहनपुरी)

मसका सीमाब (उर्दू)

पारा २।। तोले लेकर एक कर्छी में दही के तोड़ का पानी का चोवा देवे। आग ढ़ाक या बेर की जलावे पारा मसका हो जावेगा। (अजवियाज हकीम मुहम्मदफतहयाबखां सोहपुरी)

अकद सीमाब जड़ी से (उर्दू)

अर्क पियाज नरगिस में पारा खरल करने से अकद हो जाता है जिस कदर चाहे खरल करे। (अजबियाज मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

सीमाब की गोली बजरियः जड़ी हुलहुल स्याह से (उर्दू)

अर्क हुलहुल स्याह में पारे को खरल करो, जम जावेगा। ख्वाह कुछ ही बना लो, प्याल वगैरः मगर आग पर कायम नहीं है। (अजवियाज हकीम मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

सीमाब की कायम गोली जड़ी से (हड़जुड़ी कलां से) (उर्दू)

हड़जुड़ी विलायती तिधारा बेल्दार फूल सुर्ख अकसर अंग्रेजों के बंगलों पर लगा रहता है। उसके शीर में हब्ब पारे की बंध जाती है और आग में नहीं जाती। (मियां मकसूद अलीशाह अजवियाज हकीम मुहम्मदफतरहखां सोहनपुरी)

नवातात से बनी गोली की तरजीह की वजह (उर्दू)

पारे की गोली नवा तात से बनाई गई हो इलमाइफन करते है और धातु

से बनी हुई गोली को नापसन्द करते हैं उसकी दलील यह है कि नवातात में जो फिलजात धात हैं वह तबई महलूल कुदरत ने कर दी है और महलूल दर्जा अकसीर पर है और खामधातु वैसी नही है। (सुफहा ११ अखबार अलकीमियां १६/२/१९०७)

पारद और अभ्रक की पिष्टी बनाने की क्रिया

एरंडसदृशैः पत्रैः फलैश्चैव तु तादृशैः ॥ तस्य योगं प्रवक्ष्यामि सर्वसंशयनाशनम् ॥१६१॥ तस्य पत्ररसं गृह्य पारदभ्रकमिश्रितम् ॥ एकरात्रं मर्दयेच्च पिंडीभवति तत्क्षणात् ॥ धाम्यमानेतु तत्स्येन बद्धो भवति सूतकः ॥१६२॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–जिसके पत्ते और पल अरंड के समान है उसके रस से पारद और अभ्रक को आठ पहर तक बराबर घोटे तो पिष्टी होगी। उस पिष्टी को कोयलों में रखकर धोंके तो पारद बद्ध होगा।।१६१।।१६२।।

पारदबंधन कृष्ण अंडतैल से

कृष्णगोक्षीरसंयुक्तं मधुना च समायुतम् ॥ तत्तैलीपष्यः माणस्तु बद्धो भवति पारदः ॥१६३॥ तंदगधाणादेव खेचरः स तु जायते ॥ अंजनात्सप्तपातालं पश्येन्मध्याह्नभास्करम् ॥१६४॥ सर्वांजनमिदं ख्यातं सिद्धयोगमुदाहृतम् ॥ अवध्यो देवदैत्यानां विष्णुलोके चरत्यसौ ॥१६५॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–काली गाय के दूध में शहद मिलाकर मक्खन निकाले उसके साथ पारद को घोटे तो पारद बद्ध होगा, उसको शरीर पर धारण करने से मनुष्य खेचर होता है। इसका अंचन लगाने से मध्याह्न के सूर्य को और सात पातालों को देख लेता है। इस अंजन को सिद्धयोग कहते हैं और इसके धारण करनेवाला देव और दैत्यों से अवध्य होकर विष्णुलोक में रहता है।।१६३–१६५।।

पारदबंधन श्वेत अंडतैल से

तत्फलं चैव गृह्णीयाच्छुद्धसूतसमन्वितम् ॥ लिकुचद्रवसंपिष्टमंगधमूषागतं धमेन ॥१६६॥ शाल्मलीखदिरांगारैर्बद्धो भवति पारदः ॥ श्वेतगोक्षीरसंयुक्तं तद्भस्म निष्कमात्रकम् ॥१६७॥ लिहेद्गोघृतसंयुक्तं क्षीराशी च जितेन्द्रियः ॥ मासमेकप्रयोगेण दिवा पश्यति तारकाः ॥१६८॥ मासद्वयप्रयोगेण चन्द्रवन्निर्मलो भवेत् ॥ मासत्रयप्रयोगेण खेचरत्वं लभेन्नरः ॥१६९॥ मासषट्कप्रयोगेण पातालं पश्यति ध्रुवम् ॥ संवत्सरप्रयोगेण जीवेद्ब्रह्मदिनाष्टकम् ॥१७०॥

(औ०–क० लता०)

अर्थ–ऊपर लिखी हुई एरण्डाकार जड़ी के फल और पारद को लकुच के रस से घोटे और अन्धमूषा में रख सैंमल के कोयलों में धोंके पारद बद्ध होता है उस भस्म को गाय के दूध या घृत के साथ खावे पथ्य में दूध भत खावे तो एक मास में दिन में तारों को देखता है, दो माम में चन्द्रमा के समान निर्मल होता है तीन महीने में खेचर होता है, छः मास के प्रयोग से पाताल को देखता है और साल भर के प्रयोग से ब्रह्म के आठ दिवस तक जीवता है।।१६६-१७०।।

अथ खेचरी गुटिका जातीफल धत्तूर योग

जातीफलेऽर्पयेत्सूतमहिफेनेन लेपयेत् ॥ कृष्णधत्तूरफलकेः निःक्षिपेत्तत्फलं ततः ॥१७१॥ मृत्कर्पटैः सप्तकृत्वो लिप्त्वा घर्मे विशोषयेत् ॥ पादप्रस्थमितैः पाच्यं गर्तमध्ये वनोत्पलैः ॥१७२॥ स्वांगशीतलमुद्धृत्य पक्वं धत्तूरसंभवम् ॥ तदैव निःक्षिपेज्जातीफलं वै सूतसंयुतम् ॥१७३॥ अर्द्धप्रस्थमितैर्वन्यैरुत्पलैः पाचयेत्सुधीः ॥ एवं शतपुटैः पाच्यं पादवृद्ध्या वनोत्पलैः ॥१७४॥ फलं तदेव संस्थाप्य धूर्तजेषु शतेष्वपि ॥ फलेषु यत्नतश्चैव साधकोऽति विचक्षणः ॥१७५॥ गुटिका जायते सिद्धा सर्वलोहानि वेधयेत् ॥ तस्या धारणमात्रेण खेचरो जायते नरः ॥१७६॥

(काकचंडेश्वरतंत्र)

अर्थ–जायफल में छेदकर उसमें पारद भर देवे और उस पर अफीम का लेप कर उस फल को पके हुए धतूरे के फल में रख सात कपरौटी करै उस गोले को सवा सेर जंगली कंडोंके गढे में रख अग्निलगावे स्वांगशीतल होने पर निकाल उसी जायफल को दूसरे पके धतूरे के फल में रख पूर्ववत् पुटपाक करै तो उस फल में समस्त लोहों को बेधने वाली गोली सिद्ध होती है इसके धारण करने से मनुष्य खेचर हो जाता है।।१७१–१७६।।

पारदबंधन (बेधक) तप्तकुंडमें

तप्तजलकुंडनिहितं दृढतरवस्त्रेण वेष्टितं सूतम् ॥ बद्धं सद्द्रुतवंगे कुरुते रविभागतस्तारम् ॥१७७॥

(काकचंडेश्वरीतंत्र)

अर्थ–तप्त जल के कुंड में वस्त्र से लिपटे हुए पारद को रखे तो पारा बद्ध होता है बद्ध हुए पारद १ तोले को १२ तोले गले हुए वंग में डाले तो चांदी बन जायगी।।१७७।।

सीमाव मुनअक्किद कायमुल्नार अकसीरी नकछिकनी से अकदकर सफेद आक के रस में पकाकर–(उर्दू)

अर्क नकछिकनी सफेद में पारे को खरल करके गोली बांध ले सफेद आक का अर्क जड का डालकर कढाई आहनी में पकावे और आतिश दीपक देवे पारा मुनअक्किद होकर कायमुल्नार हो जावेगा मिस १ तोला पर एक माशे तरह कुनद शमसख्वाहद बूद। (अजबियाज हकीम मुहम्मदफतहयावखां सोहनपुरी)

गोली पारा (उर्दू)

बराबर वजन चीनी के फूल के साथ मुसफ्फा पारा को थोडी देर खरल करने से गिरह बँध जाती है और कुव्वत अजीम बखशती है।

गोली पारा (उर्दू)

तुलसी के रस के साथ यहां तक खरल करे कि मसका बन जावे फिर गोली बांधकर आमचूर के पानी में सख्त करने के लिये रखें–

मुतअद्दिर अमलसीमाव (बस्तकर्दन बनीम कायम व कुश्ता (फार्सी)

शीरादिस्तार कांजी के चोआ देने से सीमाव संग सख्त को तरह से हो जाता है सीमाव रावरोगन जियापोता दवाजदह पास सहक कुगन्द दरसमर धतूरा निहादह दरआव सख्त जोश दिहद सख्त वस्ता गर्ददे सीमाव अजरस सेंमल स्याह दवाजदह पास चोवः दिहंद–दवाजदह पास सहक कुनद अगर जोनकियः गर्दद वाज दवाजदह पाल कुनद बस्तद ।

तरकीब (उर्दू)

गर्ददे सीमाव व खकिस्तर जवासा व सहदेवी जर्द सहक करे १२ पहर बादहू बआवगोयद नीमकायम शवद । दराकी कोरा सीमावको खरल करे पोटली बाँधकर तीनचार घुड्योंको खोकसानमें पकावे अन्दक अन्दक आग लगावे जव नरम हो जावे पकाले नीम कायम है अव्वलवेख इन्दराइन वाज अजरस तुलसी वाज अजरस गोभी वाज अजआव सारगीनगाउ अज जुमलै हश्त पास

खरल करे मस्काना कायम होगा अजरस ककोल चार पहर खरल करे मस्का होगा अगर गोली सीमाव को इक्कीस रोज रातदिन आबकटाई कलां में पकावें कामधेनु गुटिका हो जाती है। पारा १ तोले शीर मदार ३ माशे में खरल करके गोली बनाकर दरख्त करील के कोंपल के बोत में रख कर दो तीन सेर आग देवे कुश्ता हो जावेगा दो घूँघची बरफीज या तरह दिहद खूब होगा (अज वियाज हकीम मुहम्मदफतहयाबखां सोहनपुरी)

तरकीब कायम नमूदन मसका नाकयाम (फार्सी)

तंमाकू सुरती गिरफ्त: यकशवान: रोज व आबतरकुनद व शीराओ गिरफ्त: आरद सीमाव मसका नाकायर व चार पाश चोयादिहद कायम शवद अगर सीमाव जोखिया बाशद नाकायम या मसका बाशद दर तेल कंठी जेरुवाला दादह आतिश वा मिकदारे दिहद अगर तशवद मुकर्रर सिकर्रर कुनद सीमाव पोटली बस्ता अजशीर: हाथीशुंडी ईशरलिंगी कचरिया व चित्तरकूटी आमे गोयदे चोया दिहद कायम जवद नाकायम मसकारा बरस कटाई बरसको कनादरे दरा नमक पांगा अन्दाख्त: दवाजदह पास चोया दिहद कायम शवद अगर मसका नाकायम बाशद अज रसपथचटा चोया दिहद चूसख्व शवद नरक: कदर आमेज दवाज चोया दिहद सख्त शवद हरकदर कि शफजाइद र वा बाशद मस्काना कायमरा दहपाश चोया अजरस वेस पलास दिहद बिदी गुन: कायमशवद मसका कि बूटी वंद कि मैदा जर्द चोब खामव मैदा कता निस्फ जेरु निस्फ वाला दादह रोगन कुता पुर नुमायद कि चार अंगुश्त बालाबाशजरे ओ आतिश नरमदिहद चूं खुश्क शवद कायमुल्नार ख्वाहद शवद। मसका नाकायमरा चार पाश चोया अजरस बेंगन बचार पास अजरस प्याज नरगिस बचार पास अजरस वार इन्दराइन हिदह कायमुल्नार गर्दद कोली कांदा ऽ। रेजा कर्दहा दर दो आसार आव अंदाख्त: मसकारा बरदास्त: गर्दानिद मुर्कर्रर कुनद वेख अन्दरू बसखान: तेज: गेयन्द बोता अश मानिन्द कचूरेको जब जरजमीन दरवेख ओ चकर कर्द: दरो मसका निहद बलाइलेप कुनद दर कर्सी आतिश दिहद शव विमाँद सीमाव मसका कायमुल्नार बरंग सुर्ख बरमआयद। रस अंधाहूली व रस तजालू में पकावे मसका कायमुल्नार होगा। नौसादर मस अद कि यकीस कर्द: बकलपोस्त बजैः मुर्ग निगाह दारद वादहू सीमाव दर रस कंघी खिरैटी रस ककरोंदा चार चार पास खरल कर्द: मसाल: मजकूर: बाला दहववाला सीमाव निहादह दरबोत: मौअम्मा दर पाव आसार कर्सी आतिश दिहद हमचुनी सहपुट कुर्स कायमुल्नार ख्वाह बुवद। यककर्स आरद गदुमबाला इशकर्स शोरबालायश मसकाबालायश कर्स शीरबालायश कर्स गंदुम लवबलवकर्द: वरतव: दमपुख्त: पुख्त। कुनद हमचुर्नी चन्दवार बिकुनद कायमुल्नार गदद कलसबजामुर्ग दो यक वजन नौसादर दोयक वजन मूएसर हन्सान यकवजन तेजाब कशद पांजदह रोज दमष्चादह बाद अजां तेजाब सीमावदार दर शीशी तेजाब गर्ककर्द: आति शचोब पलास दादहआयद कायमुल्लार बार्दद।

(ऊपर को क्रिया की सूची) अजवियाज हकीम मुहम्मदफतहताहयावखां सोहनपुरी)

१–तरकी सीमाव जोंक सीमावरा बरस पकावे चार पास खरल कुनद जोंक अलाशवद।

२–सीमावरा बशीर आक वा चोव अनार दारचीनी प्याल: सहग वलेग: कुनद वस्त: गर्दद।

३–तरकीब कुश्ता सीमाव अगर सीमाव कायमुल्नारबाशद वायद कि वेख बिन्दालजर्द गुल अगरवेख नबाशद तुख्म ओविगीरद हुलहुलजर्द व एलुआ व तुख्म जमालंगोटा हर चहाररा सूदह दरबोत: तहबाला गुजाश्त: वलेपबोत: मजकूरा साख्त: दर आतिश बेदद गुजारद कि चहारपास बाशद वाद अज अजसर्दा वर अगरद अकसीर अस्त।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायां मूर्च्छितबद्धोपवर्णनं नाम त्रिंशोऽध्याय: ।।३७।।

स्वानुभूतगुटिकाध्याय: ३८

पारदगुटिका का अनुभव

२३/३ बुधवार सन् १९०४, ५ तोले शिंग्रफ के पारे को ५ तोले गोभी के रस में (गोभी को सवेरे ८ बजे उखाड़ पानी से साफ करके कपड़े से पोंछ खरल में कूट निचोड रस निकाला जो जरमन सिलवर की कटोरी और चीनी के प्याले में रखा गया) ९ बजे से १२ बजे तक घोटा गया तो पारा जड़ी में मिल गया और रस गाढा हो गया रबडी सा गाढा हो जाने पर इकट्ठा कर गोली बांधी गई, बांधते बांधते ज्याद: गाढा होने पर ।।।) भर पारा जुदा हो गया, बाकी ४। तोले की गोली बँध गई, इस गोली पर मलमल के कपड़े को गोभी के रस में भिगोकर ७–८ तह लपेट दिया गया, यह गोली छाह में रखी रही।

२४/३ को एक नदोरे में (जो सवा बालिश्त गहरा और डेढ बालिश्त चौडा था) चार अंगुल गंगारज डाल गोली रख ऊपर से खूब रजभर १। सेर कंडों की आंच दी गई, ७ बजे शाम को।

२५/३ आज भी १। सेर कंडों की आंच दी गयी, ९ बजे से सवेरे और १ अंगुल रेत कम कर दिया।

२६/३ आज १।। सेर कंडों की आंच दी, रेत आज १ अंगुल और कम कर दिया, १० बजे तक सवेरे तक गोली पर आंच का असर कुछ जान पड़ा।

२७/३ आज १।। सेर कंडों की आंच दी, रेत आज १ अंगुल और कम कर दिया आंच का असर गोली तक पहुँचता है वा नहीं इसलिये गोली के इधर उधर ४–५ मूंग डाल दी गई।

२८/३ आज १।। सेर कंडों की आंच दी गई, और रेत उतना ही रखा गया, मूंग पर आंच का असर समझ न पड़ा इसलिये आज कागज के टुकड़े रखे गये।

२९/३ आज देखने से मालूम हुआ कि, कागज पर कुछ असर नहीं पड़ा, इसलिये ४ सेर रेत निकाल दिया गया, अर्थात् ४ अंगुल रेत नीचे और ४ अंगुल ही ऊपर रही, और १।। सेर कंडों की आंच दी गई।

३०/३ को खोला तो मालूम हुआ कि कागज के टुकड़ो पर हलका असर आंच का पहुंचा और गोलीकी रंगत पर भी सबजी की जगह सुरखी आई, गोली तोली गई तो ५ तोले १ पैसे २ आने भर हुई।

३०/३ आज भी उतना ही रेत यानी ४ अंगुल नीचे और ४ अंगुल ऊपर रखा गया, १।। सेर कंडों की आंच दी गई, सवेरे ९ बजे तोल पूरी उतरी।

३१/३+० आज भी उपरोक्त रीति से कर्म किया।

१/४–० ।। तोल में) भर कम हुई आज ऊपर की तरफ कुछ कपड़ा काला पड गया था गालिबन गोली कुछ ऊंची रह गई।

२/४– + ०

३/४– + ० ५ बजे शाम को आंच दी गई।

४/४– + ० + ०

५/४– + ० + ०

६/४– + ० + ० तोल में ५) १ पैसे भर ठीक हुई।

७/४–गोली को १० बजे सवेरे से आंच दी गई, अब गोली के ऊपर २ अंगुल रेत रहता है और इसमें आंच ज्याद: नहीं लगती।

८/४–१० बजे आंच दी गई, २ अंगुल रेत ऊपर है।

९/४–१० बजे आंच दी गई, २ अंगुल रेत आज कुछ स्याही कपड़े पर आ गई।

१०/४ आज गोली को देखा गया तो नीचे की तरफ कुछ रवे पारद के नजर आये ऊपर की तरफ कपड़ा भी खूब काला पड़ गया था, तोल की गई तो गोली ५ भर थी, अर्थात् एक पैसे भर कम हो गई, दरअसल आंच अधिक लगी और गालिबन ८ अप्रेल की भी आंच अधिक लगी थी क्योंकि कल भी कुछ रवे जरूर थे खयाल ठीक नहीं हुआ था, आगे आंच कम होनी चाहिये आज ४ बजे ३॥ अंगुल रेत १॥ सेर कंडों की आंच दी गई।

११/४–आज भी देखने से गोली पर पारे के सूक्ष्म परमाणुओं का शुबहा हुआ इसलिये आज ४ बजे ३॥ अंगुल रेत और १। सेर कंडों की आंच दी गई।

१२/४ आज देखने से कोई रवा पारे का नहीं दीख पड़ा न कपड़े पर जलने से कालोंछ आई। बस ४ अंगुल रेत नीचे ५ अंगुल ऊपर और १। सेर की आंच यही ठीक है ऊपर रेत इससे ज्यादः ही रहे, ४ बजे मुताबिक आंच दी गई।

१३/४ – ४ + ०

१४/४–आज देखने से मालूम हुआ कि कुछ खफीफ रवे पारे के गोली के ऊपर मौजूद हैं मालूम ऐसा होता है ज्यों ज्यों गरमी बढती जाती है त्यों त्यों आंच की तेजी ज्यादः असर करती है, अतएव आज ६ अंगुल रेत रखकर १। सेर की आंच दी गई।

१५/४. ६ अंगुल रेत १। सेर की आंच आज भी दी रवे पारद के गोली पर थे मगर यह रवे पेश्तर के ही मालूम होते हैं और कल भी यही बात होगी।

१६/४ चार पांच अंगुल रेत १। सेर कंडे।
१७/४
१८/४ +०
१९/४ +०
२०/४ +०
२१/४ +०
२२/४ +०
२३/४ +० तोल ५ तोले ठीक।

२४/४ आज गोली तोली गई तो ५ तो हुई, खोला गया तो कपड़ा उतारते में कपड़ों की तहों में से पारे की बूंद निकली जो तोल में ।) भर हुई कपड़ा छुटा देने पर एक मटैली शकल की गोली निकली जो इतनी कठिन थी कि हाथ मे नहीं टूटी गोली तोलने पर ॥) आने कम ५) तोले हुई मोगरी से तोड़ने पर गोली अन्दर से कंजई रंग की निकली और इसमें अंदर पारे के रवे भी चमकते थे। जहां तक खयाल किया जाता है गोली को कभी आंच अधिक लग गई, आंच अधिक लगने से (१) कुछ पारा तो उड गया, (२) कुछ जुदा हो गया, (३) कुछ गोली के अन्दर ही पृथक् रूप से रहा, यह भी मुमकिन है कि गोली के अन्दर रवे इस वजह से रह गये हों कि गोली बांधते समय ही रवे रह गये हों, यानी घुटाई कम हुई रस कम पड़ा हो इस ४।) भर गोली में से ॥) भर गोली को पीसा गया तो उसमें से १) भर पारा जुदा हो गया;) भर सफूफ रहा–) भर पीसने में छीज गया, ३॥।) भर गोली बची इससे साबित होता है कि पारा बद्ध नहीं हुआ।

पारद गुटिका का दूसरा अनुभव

१२/३/०५ बाबू प्यारेलाल ने कहा कि एक साधू ने मेरे सामने पारे की गोली बनाई, उसकी तरकीब यह है कि एक लोहे के कलछे में २ वा ३ बार रांग गलाकर जमीन पर डाल दिया जावे बाद को उस कलछ में पारा गरम कर कर सांच में डाला जावे और ऊपर से फोरन गेंदे के फूल का रस डाल दिया जावे। आज इसी रीति से कर्म किया गया किन्तु निष्फल हुआ; जरूर उस साधू ने धोखे से रांग मिलाकर गोली बांधी दी होगी। आज पारे को लोहे के कलछे में रख आंच पर खूब गर्म किया गया तो पारा थोड़ी देर में हिलने लगा बाद को उड़कर गायब हो गया; चटका या उछला नहीं।

पारद गुटिका का तीसरा अनुभव

१६/३/०५ कबीर बाबा ने बाबू प्यारेलाल के बाग में जडी से गोली बांधने का वादा कर और पारे से चांदी निकालने का वादाकर चालाकी से नाइट्रिट सिलवर पारे में डाल घोटा तो १ तोला पारा ३० ग्रेन (तखमीनन) नाइट्रेट सिलवर से कूटते कूटते खरल में मिल गया थोड़ा गूलर का दूध पहले खरल में डाल पारा घोटा था तो पारा १० मिनट में कुछ रवे रवे हो चला था फिर नाइट्रिट सिलवर डाला था गोली बँधजाने पर शहद, सुहागा, घी, डाल घरिया में गलाया गया तो पारा उड़ गया, ३ माशे के करीब चांदी निकली जो निहायत खालिस थी। इन्ही कबीर बाबा ने केले में पारे को भी फूंका था पर फुका नहीं, यह आदमी निहायत झूंठा और चालाक था, बाबू प्यारेलाल के कहने से इस पर विश्वास किया गया और धोखा निकला।

सम्मति–पारे की तहकीकात में साधुओं पर हरगिज विश्वास न करो।

पारद गुटिकाओं के निमित्त पारद का साधारण शोधन

१/१/०७ कोठी से सरबंदकेसे जिस पर (Almaden) लिखा था (एल्मेडन स्पेन में है इसलिये अनुमान किया गया कि यह पारा स्पेन का है। ४ सेर पारा १८) रुपये में खरीद किया गया, यह पारा खालिस था और श्वेतवर्ण का उज्ज्वल था।

१ शुद्धयोगरत्नाकर पत्र ७६ की क्रिया से

कुमारी त्रिफला व्योषचित्रकं निम्बुकं रसम् ॥ दिनैकं मर्दितं धृत्वा शुद्धो भवति पारदः ॥

५/१/०७ घीग्वार का गूदा ४ छटांक, चीता १ छटांक,त्रिफला ३ छटांक त्रिकुटा ३ छटांक, नींबू का रस २ छटांक को ३ सेर पानी में औटा छानकर १॥ सेर काढा लिया गया।

६/१/०७ आज ४ सेर पारद को तप्त खल्व में डाल उपरोक्त क्वाथ से ९ बजे से ५ बजे तक ८ घंटे निरंतर मर्दन किया गया।

७/१ आज १२ घंटे तक तप्त खल्व में मर्दन होने पर रस सूखकर शहद का हो गया और विशेष भाग पारे का जुदा हो गया, पृथक् कर तोलने पर ऽ३॥। ॥ सेर पारा जुदा हो गया सिरफ १/२ (एक बटावा दो) छटांक पारा दवा में मिला रह गया, उसको क्वाथ की छूछ सहित औटाये हुए नमकीन गरम जल से धोकर निकाला गया तो १/२ छ० पारा निकल आया सब पारा ४ सेर पूरा हो गया, सब पारे को उसी गरम जल से धो लिया गया।

२ शुद्धरसमंजरी पत्र ३ कि क्रिया से

फलत्रयं चित्रकसर्षपाणां कुमारिकन्याबृहतकिषायैः ॥
दिनत्रयं मर्दितसूतकस्तु विमुच्यते पंचमलादिदोषैः ॥

७/१/०७ घीग्वार ४ छटांक, कटेरी २ छटांक, चीता १ छ०, राई १ छ०, हल्दी १ छ०, त्रिफला ३ छटांक को २॥ सेर पानी में औटाकर १। सेर क्वाथ लिया गया।

८/१ उपरोक्त क्वाथ से तप्त खरल में ४ सेर पारद पुनः मर्दन किया गया। ८॥ बजे से ५॥ बजे तक ९ घंटे इसमें ४ छ० रस कटेरी और डाला गया।

९/१ आज भी तप्त खल्व में मर्दन हुआ ४ छ० रस घीग्वार डाला गया, ९ बजे से २ बजे तक मर्दन होने पर रस सूखकर चीकटसा हो गया, और

पारा जुदा हो गया। तोलने पर ३।।।ङ) सेर पारा निकल आया १ छटांक औषधी में मिला रह गया, उसको (नमकपड़े औषधी की छूंछ सहित औटाकर छाने) गरम जल से धोकर निकाला गया तो १ छ० पूरा निकल आया।

(१) पारदगुटिका का अनुभव

(अलकीमियां के पत्र १६३ के अनुसार)

१५/१/०७ ककरदुधी को पानी से धो कपड़े से पोंछ खूब बारीक पीस ५ तोले की गोल लुगदी बना उसके दो टुकड़े भर एक टुकड़े के बीच में कांच की गोली से गढ़ा कर उसमें १ तोला पारा भर फिर दोनों टुकड़े खूब मिलाकर ता० १६–१७ को धूप में सुखाया (मगर सूखा नहीं अंदर की तरीने सूखने न दिया)

ता० १८ को ढाईपाव कंडों की आंच दी गई (बंद मकान में गढेमें) तो गोला कपरौटी का मिला उसमें लुगदी जलकर राख हो गई थी और पारा उड़ गया था।

उपरोक्त क्रिया का दूसरे प्रकार से अनुभव

१५/१/०७ ककरदुधी को पानी में धो कपड़े से पोंछ खूब बारीक पीस ५।। तोले की लुगदी वैजावी बना उसमें पैन्सिल से गढा कर १ तोले पारा भर दुधी की लुगदी ही बंद कर मुल्तानी से एक कपरौटी कर ता० १६–१७ को धूप में सुखाया। (मगर सूखी नहीं अंदर की तरीने सूखने न दिया)

ता० १८ को कुम्हार की मिट्टी का २ रुपये की मुटाई के बराबर लेप चढ़ा दिन भर सुखा शाम को आध सेर की आंच दी गई।

ता० १९ के सबेरे गोले के अंदर जली हुई लुगदी काले कोयलों की शकल की मिली और पारा उड़ गया था।

सम्मति–मिट्टी फट गई थी इसमें नामावगैर: कूट कर और मिलाना चाहिये।

उपरोक्त क्रिया का तीसरे प्रकार से अनुभव

१९/१/०७ कुकरदुधी को धो पोंछ बारीक पीस ५ तोले की लुगदी बना उसके दो हिस्से कर एक हिस्से में गडहा कर पारा भर दूसरे को ऊपर रख ज्यों का त्यों लुगदी बना स्याह धतूरे के रस से चिकना मुलतानी की एक कपरौटी कर एक छटांक कुम्हार की मिट्टी (जो रुई डाल कर खूब कूटी पीसी गई थी) का २ रुपये की मुटाई की बराबर लेप करके धूप में सुखा दिया ता० १९ के दो पहर से ता० २० के दिन भर सुखाया, शाम को १ कपरौटी मुलतानी की और कर दी गई।

ता० २१ को सूखती रही।

ता० २२ को सवेरे ऽ॥डेढ पाव कंडों की आंच दी गई शाम को देखा तो गोले के अन्दर दुधी जल कर कोयला हो गई थी पारा उड़ गया था, राई की बराबर दो एक रवे रह गये थे आंच और हलकी होनी चाहिये।

उपरोक्त क्रिया का चौथीबार अनुभव

२०/१/०७–कुकरदुधी को धो पोंछ खूब बारीक पीस ५ तोले की गोल लुगदी बना उसके दो भाग कर १ भाग में गढाकर १ तोले पारा रख दूसरे भाग से बंद कर जैसा का तैसा लुगदी को बना स्याह धतूरे के रस से भलीभांति चिकना १ कपरौटी मुलतानी की कर धूप में सूखने को रख दिया।

ता० २० को दिनभर सुखा के ता० २१ के सबेरे १। छटांक मिट्टी कुम्हार की जिसको रुई डालकर खूब पीटा कूटा था लेप करके धूप में सूखने को रख दिया।

ता० २२ को भी सूखती रही।

ता० २३ को गढे में ६ अंगुल गहरे रेत में इस गोले को इस तरह रखा कि १।। अंगुल नीचे २।। अंगुल इधर उधर और २ अंगुल ऊपर बालू रही। बाद को ८।। सवेरे से दो पहर के ११ बजे तक ४ आंच आध आध सेर की और ११ बजे से तीन बजे तक ४ आंच तीन तीन पाव की लगी इस तरह ८ आंच दी गई।

ता० २४ को निकालकर देखा तो पारा ।।ङ) भर मिला और लुगदी जली हुई ।।।) भर मिली। निकालने पर गोले के नीचे की तरफ कुछ रेत चिपटा हुआ मिला जिससे जान पड़ा कि ऊपर की आंच के लिये जोर से लुगदी का रस भाप हो नीचे की तरफ से निकल गया इस तरफ लेप में कुछ नुकूल भी था।

(२) पारदगुटिका का अनुभव

किताब अलजवाहर उर्दू के पत्र १२० के अनुसार १८/१/१९०७–मुरगी के ताजी अंडे का १/४ भाग ऊपर उस्तरे से तराश कर उसकी सफेदी जर्दी दूर कर छिलके को पानी से धो साफ कर उसके अन्दर ककरदुधी बारीक पिसी हुई की लुगदी भर उसमें गढाकर उसमें १ तोले पारा भर ऊपर से लुगदी से बंद कर फिर एक दूसरे अंडे का १/३ भाग का छिलका ऊपर से ढक एक कपरौटी शाम को की गई उसके भी सूख जाने पर दूसरी दिन ता० १९ के तीसरे पहर १ लेप मिट्टी कुम्हारी का कि जिसका वजन १ छटांक था और रुई डालकर जिसको खूब कूटा था कर दिया गया।



ता० २० तो दिन भर सूखता रहा शाम को १ कपरौटी मुलतानी की की गई।

ता० २१ को दिन भर सूखा।

ता० २२ को एक गढे में ६ अंगुल ऊंचा रेत भर उसमें इस तरह गोला रखा कि १।। अंगुल नीचे २।। अंगुल इधर उधर २ अंगुल ऊपर रेत रहा। फिर ८।। बजे सवेरे से ४।। बजे शाम तक २ आंच आध आध सेर की और ६ आंच तीन तीन पाव की लगी।

ता० २३ को सवेरे निकाल कर देखा तो मिट्टी ऊपर की खूब मजबूत मौजूद थी, अन्दर लुगदी दूधी की जलकर कोयल हो गई थी और तोल में ।।।) भर रह गई थी पारा ।।ङ) भर निकला॥) भर उड़ गया।

विचार–जान पड़ता है कि इस दुधी से पारा बंधना मुश्किल नहीं दुधी और हो, या क्रिया हो और वा पारा और हो। गालिबन क्रिया ठीक नहीं लिखी।

(३) पारदगुटिका का अनु० अपनी बुद्धि के अनुसार

१९/१/०७ एक अंडा मुर्गी का ले उसमें सुई से छिद्रकर करीब १ तोले के उसकी जर्दी निकाल उसमें दो तोले पारा भर अंडे की ही जर्दी में चूना पीस उससे उसका मुँह बन्द कर मुलतानी से १ कपरौटी कर ४ तोले मिट्टी कुम्हार की (जिसकी रुई डालकर खूब कूटा पीसा गया था) कालेप २ रुपये की मुटाई की बराबर कर धूप में सुखा दिया।

ता० १९ को दिन के १० बजे से ता० २० के दिन भर सूखा शाम को १ कपरौटी मुलतानी की और की गई। ता० २१ को दिन भर सूखा। शाम को ऽ।= कंडों की आंच दी तो ता० २२ के सबेरे अंडा आधा मिला और उसमें ६ माशे पारा मिला बाकी उड़ गया बाकी अंडे का छिलका और जरदी की

गोली फटकर अलग पडी मिली। इससे सिद्ध हुआ कि पारा जर्दी से जुदा रहा जर्दी के अन्दर दाखिल नहीं हुआ।

(४) पारद गुटिका का अनुभव

(किताब खजानः कीमियाँ के सफा १४ के अनुसार)

१९/१/०७–गोल जायफल में बरमें से छिद्र करके १ तोला पारा भर उसका मुख अफीम में बंद कर दिया और स्याह धतूरे के फल में चाकू से डंठल की ओर से गढा करके जायफल को उसमें रख खाली जगह को थोडे से धतूरे के ही बीजों से भर ऊपर दूसरे फल का डंठल लगा मुँह बंदकर दिया और धतूरे के कांटे छील कर एक कपरौटी करके सुखाने को रख दिया। ता० १९ की शाम के ४ बजे से २० के दिन भर सूखा।

ता० २१ के सवेरे १।। छटांक कुम्हार की मिट्टी का (जो रुई डाल खूब कूटी पीसी गई थी) १ रूपये की मुटाई के बराबर लेपकर धूप में सुखाने को रख दिया।

ता० २२ के सबेरे ऽ।ऽ की आंच दी गई तो गोले के अन्दर धतूरा जल गया था और जायफल भी अधजला हो गया था। जायफल का मुँह जो अफीम से बंद था खुल गया था (अफीम नदारद) थोड़ा पारा धतूरे में मिला बाकी पारा जायफल में था सब पारा पूरा तोल में १ तोले निकल आया।

आंच और कम होनी चाहिये किताबवाला लिखता है कि आंच आध सेर से आरम्भ करो और बढाते जाओ मगर फिर जायफल का पता भी न रहेगा लेकिन इस क्रिया में भी कुछ गलती है।

(५) पारदगुटिका का अनुभव

(किताब अलजवाहर उर्दू के सफे १२२ के अनुसार)

१८/१/०७–विषखपरे को (जो आजकल कम मिलता है और जो पका हुआ पुराना सुर्ख रंगत का छोटा छोटा मिला) धो, पोंछ, पीस, बारीक पीस लुगदी कर ४ तोले की कटोरी सी बना (जिसकी पेंदी १ अंगुल मोटी होगी) बहुत छोटी कढाई में रख स्प्रिट लैम्प की आंच देनी आरम्भ की और ऊपर धतूरे के रस का चोया देना आरम्भ किया तो पारा ज्यों का त्यों रखा रहा।

जड़ी की घरिया में चोया देने से यह लाभ अवश्य है कि पारा चटकता नहीं, खाली चोया देने से पारा थोड़ी गरमी से भी चल देता है।

उपरोक्त क्रिया का दूसरी बार पूरी तौर से अनुभव

२१/१/०७ विषखपरे को पानी में धो, कपडे से पोंछ बारीक पीस, ३।। तोले की गोल घरिया बना छोटी कढाई में घरिया रख १ तोले पारा उसमें रख नीचे पहिये की पतली लकड़ियों की आंच बालनी आरम्भ कर दी और उसी समय से स्याह धतूरे के रस का चोया देना आरम्भ किया, मगर थोड़ा ठहर ठहर कर चोया दिया।

ता० २१ को सबेरे ९ बजे इस काम को आरम्भ किया ५।। बजे तक चला, पहले मंदाग्नि दी बाद १ बजे के कुछ तेज आंच कर दी, आंच की गर्मी से घरिया को किनारे खुश्क होकर नीचे हो गये और रस भी पहले की अपेक्षा जल्द जल्द डालना पडा। ६।। तोले रस पड़ा, रात को कढाई गर्म चूल्हे पर ही छोड दी।

ता० २२ के सबेरे देखा तो पारा घरिया में फैला और मिला हुआ मिला, तोड़ने से सिर्फ ।ॅ) भर हाथ लगा बाकी घरिया में जज्ब हो गया या निकाल न सका।

आंच जो पीछे तेज कर दी वह ठीक न थी, उससे पारा फैल गया, यदि और भारी और बड़ी घरिया बनाकर मंदाग्नि से काम लिया जावे तो पारा का एक जगह स्थिर रहना संभव है और यदि ७ दिन तक यह चोया दिया जावे तो शायद बद्ध हो जावे।

(६) पारद गुटिका का अनुभव किताब अलजवाहर के सफे १२१ के अनुसार)

१७/१/०७–ककरदुधी के रस ३ तोले, काले धतूरे का रस ६ माशे निकालकर २ तोले पारे को थोड़ा थोड़ा एक आदमी घोटता रहा तो कुछ चिपकाय पैदा हुआ और पारा कुछ मिला भी था, रस गाढा होते ही पारा जुदा हो गया और १।।।–) ।। भर निकल आया बाकी सफूफ में मिला रह गया इसलिये दुबारा आज ता० २९/१ को ५ तोले पारा लिया गया और १० तोले रस छोटी दुधी को और १ तोले रस काले धतूरे का लिया गया दोनों रस मिला लिये गये ११।। बजे से २ बजे तक दो तीन आदमी लगाकर उपरोक्त रस डाल २ लोहे के खरल में पारे को निरंतर घुटवाया हाथ बंद न रहने पाया ९।। तोले रस पड़ा, पारे के छोटे छोटे रवे हो गये थे और किसी कदर मिलसा गया था नष्टपिष्टी मगर नहीं हुआ था, इकट्ठा करने की गरज से रस डालना बंदकर जरा गाढा होने दिया तो ज्यों ज्यों गाढा होता गया पारद छुटता चला गया और पाव घंटे के अन्दर गोली बांधते बांधते ४।। तोले पारा अलग हो गया।

१ गोली बताशे से बडी बंधी जिसकी तोल ।।।) भर हुई मुश्किल से इसमें ।≠) भर पारा होगा। १ छोटी गोली और बंधी जो≈) भर की थी उसमें –) भर पारा होगा, चूंकि पारे की गोली नहीं बंधी इसलिये इस क्रिया को आगे न चलाया।

अभी तक कभी केवल रस से पारे की गोली बाँधने का अनुभव नहीं हुआ।

गंधबद्ध पारदगुटिका का अनु०

(योगतरंगिणी के सफे ५६ की क्रिया के अनुसार)

३०/१/०७–आज ४ तोले पारा लिया गया, १ तोले गंधक पिसी हुई ली गई और २ तोले गोभी का रस, २ तोले कांटेदार चौलाई का रस, २ तोले विषखपरे का रस निकाला गया और कंघी के पत्तों को कटकर और उसमें २ तोले और गोभी का रस डालकर खूब कूट छानकर रसनिकाला २ तोले रस निकला इन सब ८ तोले रसों को मिला लिया गया, फिर पारे को खरल में डाल थोड़ा २ गंधक डाल थोड़ा थोड़ा रस डाल पहर भर घोटा गया तो सब खिप गया और पारा मिल गया, किन्तु जब गाढा हुआ तो पारा छुटने लगा और गोली बांधने तक १। तोले पारा निकल आया बाकी पिष्टी की ३ गोलियां बांध ली जो तोल में ४।। तोले हुई अर्थात् इनमें से २।। तोले के करीब पारा और १० माशे गंधक और १४ माशे बूटी का अंश समझना चाहिये।

आज दूसरे दिन ता० ३१ को यह गोली सुखाने को रख दी गई, दिन भर सूखती रही १ गोली को तोड़कर देखा तो गोली के बाहरी भाग पर चारों तरफ पारे का अंश अधिक चमकता हुआ दिखाई दिया जिसका ठीक कारण समझ में नहीं आया।

ता० १/२ तक गोली सूखती रही सूखने से जो वह बाहरी भाग पर पारे का चमकाहट था। सो कम हो गया।

ता० २ को भी गोली सूखती। रही–लेकिन धूप न थी। ता० ३ व ४ को भी सूखी अब तोल में ४ तोले ७ रत्ती है।

पारा छोड़ देने के कारण यह गोली नाकिस समझ रद्दी कर दी गई।

उपरोक्त क्रिया का दूसरे प्रकार से अनुभव

३१/१/०७ आज २ तोले पारद को ६ माशे पिसी हुई गंधक थोडी थोडी डालकर-धूप में बैठकर ९ बजे से निरन्तर घोटना आरम्भ किया तो १०।। बजे तक नष्टपिष्टी कजली हो गई, १२ बजे तक और निरन्तर घोटा गया। गोभी विषखपरा और कांटेदार चौलाई का एक एक तोले रस निकाला गया और उस रस के साथ कघी के पत्तों को कूटकर सबका मिश्रित रस लिया

गया और उस रस को तोला तो २॥ तोले ही हाथ लगा।

उपरोक्त कजली को उपरोक्त रस डाल २ एक घंटा घोटा गया १॥ तोले रस खपा तदनन्तर इस पिष्टी की २ गोली बनाली गई जो तोल में २॥≈)७ रत्ती हुई, जिनमें एक गोली १। भर दूसरी १।=) ७ रत्ती भर थी। इन गोलियों में २) भर पारा और ॥) गंधक और≈)भर जडी का अंश है। गोली उत्तमं बनी, रस का अंश कम रहा। इस विचार रस १ गोली को जो तोल में १।) भर थी फिर रस डालकर घोटा गया तो बाकी तोले भर रस भी घंटे भर में खप गया फिर उसकी गोली बना ली जो तोल में १।–) भर ही हुई कुछ छीजन में भी गई होगी।

ता० १ व २ को गोलियां सीरक में सूखती रहीं, पहली बनी गोली की बनिस्वत दूसरी गोली कम चिकनी थी। आज ता० २ को तोला गया तो पहली बनी गोली जो तोल में १।=) रत्ती भर थी १।) ७ रत्ती रह गयी और दूसरी पीछे बनी गोली जो तोल में १।=) भर थी आज तोलने में १≈) ४ रत्ती रह गई अर्थात् दोनों गोलियों की तोल इस समय मिलकर २।≈) ११ रत्ती अर्थात् २॥) भरं हुई, विदित होता है कि केवल अंश जड़ी का इसमें मिला, जितनी पारे और गंधक की छीजन हुई।

ता० २ की शाम को १० माशे हींग को पीस बारीक होने पर १०–१२ माशे दूध गूलर का डाल खूब घोट चीकट सा हो जाने पर उपरोक्त दोनों गोलियों पर थोड़ा थोड़ा लेप किया गया लेकिन चिपक की वजह से लेप मोटा २ न चढ सका हाथों से छुटा आता था चढता न था इसलिये इस वक्त इतना ही छोड़ दिया।

३/२/०७ आज सवेरे १ लेप और चढा दिया गया और दिन भर साये में सूखती रही।

४/२ आज सवेरे तीसरा लेप बची हुई उस दवा का कर दिया गया और २ बजे तक धूप में सूखती रही गोधूप बहुत हलकी थी धूप में सूखने से कोई कठिनता लेप में न पैदा हुई इसलिये फिर साये में रख दिया।

५/२ जिस बर्तन मे गोली सुखाने के लिये रखी थी उसमें गोलियां नीचे की तरफ चिपक गई आज छुटाने में चिपकी हुई जगह का लेप कुछ खराब हो गया वह फिर हींग लगारक दुरुस्त कर दिया गया और गोली साये में सूखने को रख दी आज धूप निकली भी नही, बादल रहा।

६/२ आज खूब बारिस रही इस वजह से गोलियां कमरे में ही रखी रहीं।

७/२ आज ८॥ बजे से गोली धूप में सूखने को रख दी। ११॥ बजे तक सूखी तो गोलियों का लेप फटने लगा इसलिये धूप में से उठाकर सीरक में ही रख दी।

आगे से हींग का लेप कभी धूप में न सुखाया जाय।

८/२ आज गोलियां सीरक में ही सूखती रही।

९/२ आज एक गोल ऊंची हांडी जिसमें ७ सेर के करीब पिसा हुआ नमक आ सकता था उसमें आधे के करीब लाहौरी लवर भर उसके ऊपर एक छटांक के करीब कैथ के फल के सूखे हुए गूदे का चूर्ण रख उस पर उपरोक्त गोलियों में से एक गोली रख गोली के चारों तरफ एक कागज का २॥ अंगुल ऊंचा और ४ अंगुल चौड़ा घेरा रख उसमें २ छ० के करीब कैथ का चूर्ण भर चारों तरफ लवण भर दिया गया, फिर उस कागज के घेरे को धीरे से निकाल लिया फिर बाकी बचा और लवण डाल उसी हांडी को मुँह तक खूब दबादब कर भर दिया। जो हांडी के मुँह से ऊपर २ वा ३ अंगुल उठा हुआ रहा अर्थात् ऊपर से ढके सकोरे की गहराई भी नमक से भरी रही खाली न रही ६ सेर १३॥ छ० नमक हांडी में समाया।

१०/२ आज सवेरे के ७॥ बजे इस हांडी को चूल्हे पर रख पहिये की लकडियों की मंद मंद अग्नि देना आरम्भ किया यह मन्द आंच १२। बजे तक लगी इससे केवल हांडी ही गर्म हुई होगी अन्दर गर्मी कम पहुँची होगी हांडी बीच में ऊपर की तरफ चटक गई गालिबन सब जगह नमक से भर जाने से और आकाश न रहने से ऐसा हुआ उसी समय चूल्हे पर चढे चढे ही ऊपरी भाग पर जहां कपरौटी न होने से दरज दिखाई देती थी कपरौटी कर दी गई, बाद १२। बजे तक एक एक लकड़ी वेल की और दो दो पहिये की मिला मिलाकर पहली अग्नि में कुछ तेज अग्नि दी, इस रीति से अग्नि ३ बजे तक लगी बाद ३ बजे के ज्यों ज्यों भट्टी कोयलों से भरती गई आंच तेज होती गई, ६॥ बजे जलती लकड़ियों को तो निकाल लिया और हांडी को उसी कोयले भरे चूल्हे पर रखी छोड़ दिया।

११/२ आज सवेरे ठंढा होने पर हांडी को खोला तो हांडी टूटी हुई निकली और नमक अन्दर बिलकुल जमकर एक कठिन ढिम्मा बन गया था नमक के ढिम्मे में भी एक दरार पड़ गई थी जो गालिबन हांडी टूट जाने की वजह से पडी होगी हांडी टूट जाने का कारण अवश्य लवण कां ठूस कर भरा जाना हुआ, नमक के ढिम्मे को इधर उधर से भुजाली से छांट भुजाली के जोर से दरार की जगह से दो फांकें की गई। तो नमक के डेले के अन्दर कैंथ का चूर्ण जला हुआ कोयले रूप में निकला, उसके अन्दर गोली ५–४ फांकों में खिली हुई मिली गोली के ऊपर हींग का लेप अर्द्ध जलित मौजूद था किन्तु गोली से छुटगया था, लेप को छुटाकर दीपक की लौ पर जाकर देखा तो लौ देता था गोली तोल में ४ रत्ती कम १) भर थी रंगत काली थी दो गोलियों में दो तोले पारद था इस हिसाब से एक गोली में एक तोले पारद हुआ इस समय गोली ४ रत्ती कम १ भर की निकली इससे अनुमान हो सकता है कि पारद सब मौजूद है ४ रत्ती कमी छीजन की है जब तक गन्धक निःशेष नहीं हो जाता तब तक पारद क्षय नहीं हो सकता इस न्याय से गोली की तोल में गंधक विद्यमान होने की शंका नहीं की जा सकती।

इस गोली को चीनी की प्याली में रख शीशे के ढक्कन से ढक स्प्रिट लैम्प की दो पहर अग्नि दी गई तो गोली का कुछ अंश जल कर भस्म रूप हो गया और तोलने से ३ रत्ती भस्म ।॥) ४ रत्ती अवशेप गोली मिली बाकी करीब) भर पारा उड़ गया जिसके रवे शीशे के ढक्कन पर पाये गये।

अनुमान–(१) यदि हांडी न टूटती तो नमक का ढेला न टूटता और नमक का ढेला न टूटता तो गोली न टूटती।

(२) गोली को आंच कम लगी अधिक समय तक अर्थात् ४ पहर की जगह ६ प्रहर तक आंच देने से गोली की रंगत कुछ उत्तम होने की आशा हो सकती है।

उपरोक्त दूसरी गोली का पुनः अनुभव

१५/२/०७–आज उपरोक्त दो लेप की हुई दूसरी गोली पर पहिला लेप चटक जाने से पहले की भांति १० बजे सबेरे हींग और गूलर के दूध का लेप चढाकर सीरम में सूखने को रख दिया, १ बजे तक सीरक में सूखने के बारद दूसरा ऐसा ही और एक लेप कर दिया दोनों लेपो में ४ माशे हींग थी।

१६/२ को गोली सीरक में ही सुखाई। ता० २४ तक गोली रखी रही।

ता० २५ को दो कपरौटी करी एक हांडी में आधी के करीब वही पहली क्रिया का निकला नोंन लाहौरी भर उस पर बीच में कैथ के गूदे का सूखा चूर्ण आध पाव रख उसके बीच में गोली रख ऊपर से फिर नोंन हांडी की गर्दन तक भर और मुंह खुला रख चूल्हे पर रख दिया।

ता० २६ के सबेरे २ बजे से ६ बजे तक मंद और मध्य अग्नि दी। हांडी में सबेरे ही दरार हो गई थी पर काम जारी रखा। हांडी पर खूब कपरौटी थी पर नमक के जोर से फट गई।

ता० २७ के सबेरे खोला तो हांडी बहुत फटी मिली, नमक का एक ढेला निकला इसमें भी दरार पड़ गई थी। यह नमक नीचे आधी दूर तक आंच खाकर खूब कठिन और सफेद हो गया था ऊपर का आधा कम आंच लगने से मैला और फुसफुसा रहा था। ढेला तोडकर बीच से कैथ के चूरे की काली जली लुगदी निकली। इसमें से गोली साबित १ तोले २ मा० ७ रत्ती की निकली। गोली की रंगत कृष्ण थी।

मेरी राय में–(गोली की वजन ज्यादः रही, कैथ के गूदे की रंगत काली रही, नमक का ऊपरी भाग नहीं पका इसलिये) आंच की कमी रही, आगे से

और सब क्रिया बदस्तूर रहकर हांडी की जगह कढाई ली जावे और आंच तेज दी जावै ६ प्रहर की।

गंधबद्ध गोली का तीसरीबार अनुभव

१७/३/०७–आज २ तोले साधारण शुद्ध पारा और ।।) भर शुद्ध दानेदार गंधक को लोहे के खरल में ४ घंटे निरन्तर घोटा नष्टपिष्टी कजली हो गई।

१८/३–आज १ छटांक रस विषखपरे का, १ छटांक कांटेदार चौलाई का, १ छ० गोभी का, इस तरह ३ छटांक रस निकला और कंघी में से रस न निकल सकने की वजह से कंघी को कूट उसमें उपरोक्त ३ छ० रस डाल थोड़ा और कूटा ताकि कंघी के भी रस का अंश आ जाय कुल निचोड़कर तोला तो १३ तोले हाथ लगा।

उपरोक्त कजली को इस रस में से थोड़ा २ रस डाला १०।। बजे से ११।। बजे तक मामूली तौर से और २ बजे से ५ बजे तक निरंतर ५ घंटे घोटा फिर ३ गोलियां बांध ली जो १=) १=) भर की हुई यह गोलियां बांधते समय बहुत कड़ी न थी इनमें ८ तोले रस खिपा था।

१९/३ आज यह गोलियां सीरक में ऊपर के बरामदे में सुखाने को रख दीं, इनमें से १ गोली फट गई, गालिबन हवा लगने से इसलिये इन गोलियों को कमरे में रख दिया। टूटी गोली को तोड़ गोभी का ४ माशे रस डाल १५ मिनट घोट फिर गोली बना कमरे में रख दिया।

२०/३ आज देखा तो तीनों गोलियां बिलकुल तिरकी हुई मिली जरा हिलाते टूट गई।

२२/३ आज तोलने से तीनों गोलियां २।।। तोले हुई इनको खरल में डाल घोटा गया फिर १ तोले गोभी के रस के साथ १/२ घंटे घोटे २ गोलियां ९–९ माशे की और तीसरी १ तोले ७ माशे की बना ली यानी सब तोल में ३ तोले १ माशे की हुई। फट जाने का कोई इलाज समझ में न आया लाचार प्रत्येक गोली को जाली के कपड़े में जुदा जुदा बांध शीशे के सन्दूक में कमरे में ही सूखने को रख दी। इस ख्याल से कि जाली कसे रहने से फटने न पावेगी और सूखती भी रहेगी।

ता० २३/३ आज इन गोलियों को देखा तो सूख जाने के कारण जाली का कपड़ा ढीलासा मालूम हुआ और बड़ी गोली किंचित् तिरकी हुई मालूम हुई अतएव दुबारा उसी तरह डोरे से कसकर जैसे का तैसा बांध संदूक में रख दीं।

२४/३ को सवेरे खोल देखा तो गोली फटी न थी फिर जाली में कस बकस के बाहर कमरे में रख दिया।

२५/३ आज देखा तो सब गोली चटक गई थीं और एक बिलकुल खिल गई थी।

२७/३ आज देखा तो बाकी गोली भी फांक २ हो गई।

सम्मति–यदि गीली ही गोलियों पर हींग गूलर के दुग्ध का लेप चढ़ा दिया जाय तो शायद फिर न तिरक सकेगी।

उपरोक्त गंधबद्ध गोली पर पुनः अनुभव

३०/८ आज उक्त १ तो० २ माशे की गोली पर (जो पारद गंधक की तारीख १६/२/०७ में तय्यार हुई थी) हींग और गूलर का मोटा लेपकर छाया में रखा।

३१/८ आज दो लेप इन के और किये गये (हींग गूलर के लेप बनाने में हींग को बारीक पीस ऊपर से गूलर का दूध डाल घोटा तो चीड हो गई ओर दूध डाल और घोटा तो चीढपन और बढा फिर उसे फेंक और दूध खरल में डाल ऊपर से थोड़ी २ हींग बुरक थोडी देर घोट थोडी हींग और बहुत दूध से लेप ठीक बना) लेप थोड़ा सूखने पर हथेली से मलने से गोली पर ठीक बैठ जाता है।

१/९ को एक कढाई को पीसे सैंधव लवण से आधा भर उस पर १ छ० कैथ के चूर्ण के मध्यस्थ उक्त गोली को रख लवण को कढाई के किनारों से ४ अंगुल ऊंचा चोटीदार भर दिया कुल लवण ९।। सेर समाया सुवह के नव बजे से रात के ९ बजे तक ४ प्रहर समाग्नि दी गई बाद को कढाई को जैसे का तैसा चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० ९ को गोली को निकाला तो उसका ऊपरी आधा भाग जल गया था जले भाग की रंगत भूडसी सी थी और अन्दर का भाग जो बगैर जला था उसकी रंगत काली या तोल में इस समय २ रत्ती कम ७ माशे रही।

आंच विशेष लग जाने से गोली जल गई किन्तु रंग में सुरखी किसी अंश में न आई इससे शंका होती है कि गोली ठीक बनने पर भी सुर्ख न होगी।

ताम्रबद्ध पारद गुटिकाका अनुभव

किताब अलजवाहर उर्दू के सफे ११५ व ११७ के अनुसार

६/२/०७–१। तोले पारा लेकर एक तामचीनी की तश्तरी में रख लिया फिर ।। ।।ॐ भर के एक शुद्ध ताम्रपत्र को (जो लबांई में ३ अंगुल और चौड़ाई में १।। अंगुल था) कोयलों को तेज आग में खूब सुर्ख करकर उस पारे में चिमटेसे पकड रिगडवा और पारेको कपड़ेमें छानना आरंभ किया। पहली दफे १ बुझाव, देकर दूसरी दफे २ बुझाव तीसरे दफे ३, चौथी दफे, ८ पांचवी दफे भी ८ बुझाव देकर छानना। इस्तरह ५ दफे में कुल २२ बुझाव दिये इन बुझाव के देने से और कपड़े में छानने से पारद में ऐसी कोई विकृति पैदा न हुई जो प्रगट हो। पुनः यह ख्याल करे कि ताम्रपात्र पारे से भली भांति रिगडे नहीं खाता उस पारे को एक छोटी कढाई में रख उपरोक्त ताम्रपात्र के ही सदृश दूसरा ताम्रपत्र ले परस्पर एक के बाद दूसरा गर्म करकर पारे के ऊपर रख लाठी से उस ताम्रपत्र को जोर से दबा ठंढा होने तक अर्थात् दो दो मिनट तक खूब घोटते रहे इस रीति से ३२ बुझाव दिये। प्रथम बार १५ बुझाव के अनंतर और द्वितीय बार १७ बुझाव के अनंतर पारद को कपड़े में छाना इन बुझाव के देने से भी पारा कपड़े में ठहरो लायक तो नहीं हुआ क्योंकि जब जब हमने छाना तो कपड़े में सिर्फ कढाई और ताम्रपत्र की रिगड से उत्पन्न भई काली राख साही मिली और पारा छन छन गया किन्तु पहले की अपेक्षा पारे में किंचित् गाढापन अवश्य आ गया क्योंकि उसकी स्वाभाविक चपलता में अंतर आ गया।

१५/२ आज पारे को तोला तो ।।।) १० रत्ती रह गया था।

१६/२ आज पुनः उपरोक्त ।।।) १० रत्ती पारद को लोहे की छोटी कढाई में रख उपरोक्त दोनों ताम्रपत्रों को पहले की ही भांति कोयलों में गर्म करकर पारे पर लाठी से दबा दबा रिगडना और फिर कपडे में छानना आरम्भ किया।

प्रथम बार ४, द्वितीय बार १६, तृतीय बार १८, चतुर्थ बार २५ बुझाव देकर छाना इस तरह कुल ६३ बुझाव दिये और ४ दफे छाना इन बुझाव के भी देने से पारे में कोई विशेष और नई बात नहीं पैदा हुई। छाने हुए पारे को तोला गया तो ४ रत्ती कम ।।) भर निकला। थोड़ा पारा उस राख में जो पारे के छानते समय निकलती थी मिला रह गया। दूसरे दिन जब उस राख को तश्तरी में डाल पानी से धोया तो ४ रत्ती पारा और भी निकला। इस तरह कुल ।।) भर निकला=) १० रत्ती उड़ गया या छीज गया।

नतीजा–१। तोले पारे को २२ बार हलके हलके और ९५ बार खूब जोर से रगडा गया कुल ११७ रगडे लगे। किन्तु नाम मात्र को भी ताम्रकासा रंग और किंचित्मात्र घनता के अतिरिक्त कोई नतीजा न निकला। पारे की तोल आधसेर भी कम रह गई इसलिये आगे और बढ़ना निरर्थक समझ त्याग दिया।

सम्मति–बुभुक्षि पारद पर यह क्रिया ठीक हो तो हो साधारण कदापि सफल नहीं हो सकती।

पारदगुटिका अनुभव तुत्थयोग से

(किताब अलजबाहर के पत्र ११८ के अनुसार)

१७/२/०७ पारा १ तोला, तूतिया १ तोला सूखा खरल में घोटा गया तो पारा बहुत जल्दी तूतिये में मिलकर कजली हो गई १।। डेढ़ घंटे घोटने के बाद उसको पानी से धो डाला तो तूतिया धूलकर निकल गया ।।-) भर पारा गाढासा रह गया मगर कपड़े में छानने से गोली नहीं बँधी शायद ज्यादे देर घोटने से काम चले, या ज्यादे तूतिया डालने से किन्तु पानी में औटाने की क्रिया इससे सुगम और अच्छी है, इसमें परिश्रम अधिक है और छीजन पारे की ज्यादा है और फल में कोई विशेषता नहीं इसलिये तुत्थयोग से बांधने में औटाने की ही क्रिया श्रेष्ठ कर्तव्य है।

पारदगुटिका अनुभव–तुत्थयोग से

(रसमानपत्र १३ की क्रिया से)

२३/२/०७–आज २ तोले साधारण शुद्ध पारद और २ तोले तूतिया ५ सेर पानी भरी हुई लोहे की कढाई में डाल चूल्हे पर रख सबेरे के ८।। बजे से तेज आंच बालनी और पारे को लोहे की कलछी से घोटना आरम्भ किया। १० मिनट बाद आंच की गर्मी से पानी खौलने लगा और कढाई के नीले पानी की रंगत काली सी हो गई जिस कलछी से पारा चला गया जाता था उस पर पारे का कुछ अंश चढ़ गया और वह छुटाने से भली भांति छुट न सका। २ घंटे में यानी १०।।। बजे तक कढाई का सब पानी सूख गया गाढा तूतिया और पारा रह गया ठंढा हो जाने पर इस तूतिया सहित पारद को पानी से धो कपड़े से छाना २ बार छानने में ।≡) भर की गोली बंध गई और १८) भर पारा छन गया वह अलग कर लिया बँधी हुई गोली उस वक्त नरम थी और सफेद चमकदार थी दूसरे दिन चमक न रही और कठिन हो गई जो हाथ से न टूटती थी गोली खूब कठिन है और उसको रगड़नेसे अन्दर चमकीली निकलती है।

उपरोक्त क्रिया का दूसरी बार अनुभव

२४/२/०७ उपरोक्त क्रिया से ३ तोले पारा और ६ तोले तूतिया ऽ५ सेर पानी में कढाई में ८। बजे से औटाना और कलछी से घोटना आरंभ किया (जिस कलछी से घोटा जाता था उसके कुछ भाग को आज दवा खा गई) १०। बजे तक कढाई का तीन हिस्से में दो हिस्सा पानी जल चुका तभी पारा बहुत गाढ़ा होकर जम गया। कढाई को नीचे उतार लिया और ठंढा होने पर पहला पानी नितार गर्म पानी से धो पारे को निकाल गोली बना ली पारा अधिक गाढ़ा हो जाने से ठीक धुल न सका और छानने की आवश्यकता न रही। यह गोली भी गीली रहने तक चमकती रही किन्तु आध घंटे के अन्दर ही जस्तकी सी रंगत की हो गई और बहुत कठिन हो गई जो हाथ से नहीं टूट सकती थी। तोल में ३।≡) भर हुई और उसका बचा हुआ मैल ।।) भर हुआ इसमें भी पारा मौजूद था परन्तु पृथक् पृथक् न हो सका। इतना अर्थात् द्विगुण तूतिया डालना उचित न हुआ।

उपरोक्त ३।≡) भर की गोली बहुत कठिन हो गई थी और ठीक न धुलने के कारण उसमें मैल रह गया था और बड़ी भी बहुत थी इसलिये उसे खरल में डाल तोड़कर उसमें १।=) भर वह पारा जो इससे पहली बीन तूतिये की गोली के छानने में निकला था और ।≈) भर वह साधारण शुद्ध पारद जो ताम्रपत्र के घोटने की क्रिया से बचा था और ।।) भर साधारण शुद्ध कोरा पारा सब २।) भर पारा मिला खरल में घोटा गया तो पिष्टी हो गई उसको पानी से अच्छी तरह से धो साफ कर कपड़े में निचोडा तो ९ माशे पारा छन गया ४।।) भर गोला बंध गया।≡)भर छीजन गई जिसकी तोले तोले भर की ४ गोलियां और ।।) भर की १ गोली बना ली १ गोली को १ छटांक नींबू के रस में डाल रख दी और तीन गोली रकाबी में खुली रख दी।

२५/२ आज सबेरे देखा तो चारों गोलियों में से किसी में कोई कठिनता उत्पन्न नहीं हुई नींबू के रस में पड़ी हुई गोली को तो उसी तरह रस में पड़ा रहने दिया और बाकी ३ बड़ी और १ छोटी गोलियों को कपड़े में और दबाया गया तो ३ माशे पारा और निकला यानी सब तोले भर पारा निकल आया अब गोलियों का तोल इस प्रकार है:

पहली १) भर, दूसरी २ रत्ती कम १) भर, तीसरी ३ रत्ती कम १) भर, और चौथी ४ रत्ती १) भर पांचवीं ।।) १ रत्ती भर सब ४।≈) ।। भर।

चूंकि ६ तोले तूतिये से काम लिया गया था इसलिये अनुमान होता है कि पारे से ड्योढे तूतिये से गोली ठीक बना करेगी। समान भाग तूतिया कम होता है और द्विगुण अधिक हो जाता है इसमें यह भी शंका है कि यदि अधिक पानी में अधिक देर तक औटाया जाय तो शायद समान भाग ही काम दे जाय।

२ गोली रकाबी में रखी रही एक बड़ी एक छोटी।

१ गोली को २ छटांक बसंती के रस में डाल कर रख दिया गया।

१ गोली को १ सेर बसंती के रस में १ प्रहर औटाया गया फिर रात भर उसी तरह रखी रहने दिया करे सबेरे निकाल धोकर देखा तो उस गोली के बनिस्बत जो इसी क्रिया से बनाकर खाली रखी रही थी इस गोली की चमक कुछ कम हो गई और कुछ कठिनता भी अधिक हो गई किन्तु पहली क्रिया से बनी गोली किसी मैली रंगत की न हुई न उतनी कठिनता आई आवश्यकता से सख्ती कम रही। गालिबन अग्नि संस्कार के पीछे जो पारा मिलाया गया उस कारण से पूरी सख्त नहीं आई। इन ४ बड़ी और १ छोटी गोलियों के प्रकार:

१ छोटी तो खाली ही रखी रही और रखे रहने ही से उसकी सख्ती में अन्तर पडा इतनी कठिन हो गई कि चुटकी से न दबी। रंगत कुछ मैली सफेद रही।

२ बड़ी गोली ३ दिन भांग के काढे में भीगी रही यह ऊपरवाली से शायद कुछ ज्याद: सख्त हो रंगत भी वैसी ही थी।

३ तीसरी बड़ी गोली ३ दिन नीबू के रस में भीगी रही रस बदलता रहा। यह भी चुटकी से न दबती थी शायद यह दूसरी से भी कुछ ज्याद: कडी हो गई।

४ चौथी बड़ी गोली ३ दिन बंसती के रस में भीगती रही रस बदलता रहा यह भी चुटकी से न टूटती थी और ठीक दूसरी गोली के समान थी।

५ पांचवीं गोली १ प्रहर बसंती के रस में औटाई गई यह भी वैसी ही सख्त थी कुछ विशेषता न जान पड़ी मगर इन पांचों गोलियों को चुटकी से रगडने से पारे की सफेदी मिट्टी सी छुटती थी यही दोष था यद्यपि रंगत अच्छी थी इसी तूतिये से पहली बार बनी गोली से कुछ छुटता न था किन्तु रंग खराब था गोली नं० १, २, ३, ४, ५ में कोई न जान पड़ा किन्तु नं० ३ नींबूवाली कुछ विशेष साफ थी।

उपरोक्त क्रिया का तीसरी बार अनुभव

११/३/०७ आज २ तोले पारद और १ तोला तूतिया ५ सेर पानी में कढाई में चढा औटाना और लकड़ी के सोटे से हौले २ घोटना आरम्भ किया। २।। घंटे औटाने से जब करीब ३ छटांक के पानी रह गया तब ठंढा कर पानी नितार पारे को अलग कर पानी से धो कपड़े में छाना तो ३ रत्ती कम ।≈) भर की गोली बंधी बाकी १।।≈) ३ रत्ती पारे को फिर दुबारा उसी रीति से पहले बचे ३ छटांक पानी में ५ सेर पानी और मिला १ तोले

तूतिये के साथ २ बजे से ५ बजे तक औटाया। करीब पावभर के पानी रह जाने पर पारे को पानी से पृथक् कर धो मय पहली १॥=) भर की गोली के चूर्ण के (जो सबकी १ गोली बनाने की गरज से गरम कढाई में डाल दिया था) कपड़े में छाना गया तो ४ रत्ती कम ॥) भर की गोली बनी। बनाते समय गोली कम निचोड मुलाइम रखी थी परन्तु रातभर में कडी हो गई जिससे सिद्ध हुआ कि गोली को कड़ा निचोडने की आवश्यकता नहीं है।

१२/३ दूसरे दिन फिर उस बाकी बचे पारे को पहले दिन के बचे पाव भर पानी में ५ सेर पानी और मिला १ तोला तूतिया डाल ८ बजे से ११ बजे तक औटाया पाव भर पानी रह जाने पर उतार पारे को निकाल पानी से धो, छान, गोली बना तोली तो २ रत्ती कम १) भर हुई। इस तरह २ तोले पारे को ३ बार में २ तोले तूतिया और १५ सेर पानी के साथ करीब ७ घंटे औटाने से ६ रत्ती कम १=) भर की गोली हाथ लगी। और ।।।=) भर पारा मिला ६ रत्ती छीजन गई। हर बार में १ तोले तूतिये से १) भर पारा बंधा।

अनुभव

(१) प्रथम बार समान भाग तूतिया डालने से ५ सेर पानी में प्रति तोला तूतिये से=)।। भर पारा बचा था उसकी बनिस्वत आधा आधा तूतिया देने से अबकी बार विशेष यानी फी तोला तूतिये से ।=) भर पारा बँधा।

(२) दूसरी बार–द्विगुण तूतिया देने से (६ तोले तुत्थ ३ तोले पारा ५ सेर पानी) एकहम बहुत सख्त फी तोला ।।) भर पारा बँधा जो सबमें विशेष रहा।

(३) तीसरी बार–१–१/२ डयोढा तूतिया देने से (१–१/२ तोले तुत्थ १ तो० पारा ५ सेर पानी) फी तोले तूतिये से १) ।। भर पारा बंधा किन्तु यह नरम रह गया इसलिये १) भर का ही औसत समझना चाहिये।

उपरोक्त क्रिया का चौथी बार अनुभव

१२/३ आज १ तोले पारे को १।। तोले तूतिया के साथ उपरोक्त विधि से ५ सेर पानी में २। घंटे औटाया जब करीब आध सेर के पानी रह गया तब ठंढाकर पारा अलग किया। पारा गाढा दहीसा हो गया था छान गोली बनाई तो तोल में ४ रत्ती कम कम ।।=) भर की हुई। ऽ। भर पारा छन गया बाकी करीब=) भर छीजगया। गोली बनाते समय नरम रखी गई थी सवेरे तक कडी तो हो गई मगर कई दिवस रखे रहने पर भी इसमें पूरी कठिनता न आई। ऊपर से कुछ छुटता था निचोडने में कुछ थोड़ी कसर रह गई होगी। इस गोली में लोहे के तार से छेद कर तार समेत रात भर रखा रहने दिया सवेरे गोली सख्त हो जाने पर निकाल लिया और डोरा डाल दिया।

अनुभव

(१) बस अबकी बार पारा ठीक गाढा हुआ इतना ही गाढा होना ठीक है। विशेष गाढा होने से गोली बांधने में खराबी होती है इसलिये निश्चय हुआ कि पारे से डयोढा तूतिया लेना योग्य है।

(२)यह भी ज्ञात हुआ कि थोडा २ तूतिया डाल विशेष पानी में औटाने से कोई विशेष लाभ नहीं होता।

(३) यह भी ज्ञात हुआ कि फी तोले तूतिये से ।=) भर पारा ठीक बँधता है।

१३/३ आज उपरोक्त गोली को कडी करने के लिये १ छ० नींबू के रस में ता० १८ तक ५ दिवस पड़ा रहने दिया परन्तु गोली में कोई विशेषता उत्पन्न न हुई।

ता० १९ से २२/३ तक गोली को काले धतूरे के रस में डाल धूप में रख दिया ता० २२ को निकाला तो भी गोली में कोई प्रत्यक्ष विशेषता दृष्टि न आई।

२२/३ से २४ मार्च तक तुलसी के १।। छटांक रस में गोली को डाल धूप में रख दिया।

२४/३ आज सबेरे गोली को तुलसी के रस से निकाल धो देखा तो ऊपर से पिष्टी का फिसलना बंद न हुआ था। ९ दिन ३ रसों में भिगोने से कोई प्रत्यक्ष लाभ न हुआ।

२१/५ बहुत दिन तक गोली खाली रखी रही, ऊपर कुछ गरदा जम गई थी उसके पोंछ देने पर अन्दर से गोली साफ निकली और इस पर से अब पिष्टी सी फिलसना बंद है बहुत दिन रखे रहने से ही कुछ कठिनता बढी है।

खास नोट–सुना गया कि जो तूतिये के साथ नमक डालकर औटाया जावे तो कम तूतिये से भी पारा बंध जावे इस बात का पता कुछ यूनानी किताबों से भी लगता है और अनुभव करने योग्य है।

३१/७/०७–अनुभव तूतिये से बनी गोली को घरिया में न्यारिये से गलवाया तो बहुत देर में गली, पारा उड़ गया; तूतिया रह गया ११ माशे की गोली में ३ माशे रह गई।

उपरोक्त क्रिया का पांचवी बार अनुभव लवणयुक्त

१८/८/०७ आज ता० १८ को २ तोले साधारण शुद्ध पारद और २ तोले तूतिया और ४ तोले सैंधव लवण को ५ सेर पानी में औटाया तो २ घंटे में सब पानी जलने पर दही सा जल गया उसको धोकर छाना तो १। तोले की शुद्ध गोली बनी और ८ माशे पारा छन गया और ४ माशे नीचे का पारा जो खुरचकर निकाला था, कुल मैलयुक्त रहा वह वे छाना रख दिया, पहर भर बाद देखा तो गोली पत्थर सी कठिन हो गई थी और बेछाना ४ माशे पारा भी जम गया था और काफी कड़ा था, जिसका औसत फी तोले तूतिये ।।।) भर पारा बंधने का हुआ।

अनुभव

पहले ४ चार बार बिना लवण के केवल तूतिये से गोली बनाई थी, उनका औसत ।=) भर से ।।) तक ता, अबकी बार लवण योग से ।।।) भर बंधने का औसत बैठा जो सबसे अधिक है, ज्ञात होता है लवण योग से पारद तुत्थ के ताम्र को भलीभांति चर सका।

१९/८ आज सायंकाल को गोली पर उस बचे पारे से थोड़ा पारा उंगली से मला तो गोली ऊपर से चमकीली तो हो गई किन्तु उसने पारे को पीया नहीं और इस प्रकार बनी ४ माशे की डली को पारे में रात भर पड़ी रहने दिया तो उसने भी पारे को नहीं पिया।

पारदगुटिका का अनुभव वंगयोग से

(किताब कुश्तैजातहजारी के सफा ६५ के अनुसार, छलवेध से)

२७/२ आज १ तोले रांग को लोहे की कछली में हलका पिघला कर चिलम से ढ़क चिलम के छेद में से १।। तोले पारा डाल दिया गया तो न तो चटका न उछला, दोनों फौरन मिल गये, २ मिनट बाद सांचे में गोली ढ़ाल ली जो १=) भर तोल में हुई, बाकी बच रागं पारे को जो फुसफुसा सा था फिर गलाया तो बहुत जल्दी गल गया फिर गोली ढ़ाली तो १) भर तोल में हुई। कुछ थोड़ा बच भी रहा। यह दोनों गोलियां एक सी बनी; खूब चमकदार सफेद थीं, और सख्ती काफी थी मगर हाथ में लेने से पारे के रवे छूटते थे और स्याही बहुत देती थी, एक सप्ताह के पीछे देखा तो गोली के नीचे की तरफ थोड़ा १ बूंद पारा निचुड़ आया था, चटका देने से छूट पड़ा। इस क्रिया में चमक बहुत उत्तम रहती है, मगर हाथ में लेने से पारे के रवे पारद रूप में ही छूटते हैं, यह बड़ा दोप है और गोली बहुत खरखरी है। कई बरस पहले जो पारे और रांग के (जिसका proportion **याद नहीं**)

छलवेध से गोली बनायी थी उसको देखा तो बहुत खरखरी न थी, खूब चिकनी थी इसलिये अनुमान होता है कि समान अंश रांग को ज्यादे पिघलाकर पारा मिलाने से गोली उत्तम चिकनी बन सकेगी किन्तु रखी रहने पर पारा उसमें से भी झूलता रहेगा।

२८/७/०७ को देखा तो गोलियां ऊपर बड़े मोटे रवे पाये थे, अब इस गोली को गोली कहना ठीक नहीं, कुछ पारा छूट भी गया था, जैसे लकड़ी और कंडे में भेद है, उसी प्रकार इस गोली को कंडा कहे तो ठीक होगा, दूसरी गोली मर्दन द्वारा बनी ज्यों की त्यों मौजूद थी, जिससे ज्ञात होता है कि मर्दन से ही पारा दूसरी धातु में भली भांति मिलता है।

पारदगुटिका अनुभव बङ्गयोग से

(किताब कुश्तजात हजारी के पत्र ६६ के अनुसार मर्दन द्वारा)

१/३ आज १ तोले पारा ७।। माशे रांग के चूरे को लोहे के खरल में काली घोटा तो बहुत जल्दी पिष्टी हो गई, फिर भी घोटते रहे, पीछे नीबू का रस डाल भी घोटा, सब २ घंटे घुटा फिर इकट्ठा कर गोली बांधी जो शुरू में तो बिखरती सी जान पड़ी मगर फिर पीछे धीरे धीरे दबाने से बँध गई और नरम मालूम हुई, तब कपड़े से निचोड़ा तो ४/५ बार में ।–) भर पारा छन गया, बाकी की गोली १≋) हुई≠) भर छीजन गई, यह गोली खूब चमकदार थी मगर कड़ी न थी, चुटकी से दबाने से टूट जाती थी और बँधी हालत में भी इस पर से पारे की पिष्टी मक्खन रूप में बहुत छूटती थी। पारा ठीक नहीं बँधा, रांग कम पड़ा किताब में ज्यादः लिखा था।

उपरोक्त क्रिया का दूसरी बार अनुभव

ता० २/३/०७ पुस्तक में पारे और रांग की तोल बराबर लिखी थी लेकिन खरल में डालते समय पारा और रांग बराबर लेने से रांग बहुत ज्यादः जान पड़ा इसलिये उपरोक्त क्रिया में रांग थोड़ा लिया गया था, अनुभव से गोली ठीक न बँधने पर फिर दुबारा पारा और रांग बराबर लेकर लोहे के खरल में १ छटांक नींबू के रस में २ घंटे घोटा गया (रांग और पारा थोड़ी देर में मिलकर कड़े पत्र से बन गये, उन्हीं को दवा दवाकर घोटा गया) बाद को निकाल कपड़े में दाब खूब जोर से दबा गोली बना ली, यह गोली से अधिक कठिन थी किन्तु पिष्टीरूप पारा थोड़ा थोड़ा इससे भी छूटता था और रांगयोग से ढ़ालकर बनाई गई सब गोलियों से यह गोली बहुत कम सख्त थी, मगर चिकनी बहुत ज्यादः थी (और तोल में ३ रत्ती कम ।।।≠) भर थी। मेरी राय में छलवेधे से बनी गोलियों से यह गोली उत्तम है।

नागवग बद्ध पारद गुटिका का अनुभव

(रस मानस पत्र ११ के अनुसार)

२/३/०७ आज २ तोले नाग और २ तोले वंग को मिट्टी के कूंडे में रख चूल्हे पर चढ़ा तेज आंच बालनी आरम्भ की, पिघल जाने पर समुद्रफल के चूर्ण की चुटकी दे देकर बबूल के सोटे से घोटना आरम्भ किया, पहर भर में सबकी भस्म न हुई, शाम हो जाने से अवशेष पतला ।।।) भर रांग और रंग निकाल लिया, इसके अनंतर आध घंटे और अग्नि दी गई, तदनंतर शकोरे से ढ़क भट्टी पर छोड़ दिया, ५।। छटांक के समुद्रफल का चूर्ण इस क्रिया में पड़ा।

ता० ३/३ के प्रातःकाल कूंडे से निकाल तोला गया तो ।।।) भर खाकी रंगत की भस्म निकली, इसमें छीजन बहुत हुई। ।!।) भर दवा को बारीक करने के लिये पत्थर के खरल में घोटा गया तो ।।≠) ५ रत्ती भर हाथ आई और ६ रत्ती के अन्दाज खरल में लगी रह गई। उस खरल में ।।) भर पारा डाल खाली घोटा गया तो कोई नतीजा न निकला, पीछे अंदाजन आधी छटांक नींबू का रस डाल घोटा गया तो पारा बिलकुल मूर्च्छित हो गया, पिष्टी रूप में न था, पानी से धो नितार कर नींबू के रस को दूर कर दिया और फिर धूप में खरल को सुखाया गया तो सूखने पर कुछ पारा अपने रूप में दीख पड़ा, थोड़ी देर घोट कर निकाला तो ।) ३ रत्ती पारा निकल आया और २ रत्ती कम ।।) भर चूर्ण निकल आया, इसमें पत्थर का अंश शामिल हो गया। पारे को कपड़े में छाना तो सब छन गया। कुछ बँधा नहीं।

११/३ आज ।।) भर पारे को ४ रत्ती उपरोक्त भस्म डाल और थोड़ा थोड़ा मकोय रस डाल २ घंटे घोटा गया तो पारा रवे रवे हो गया किन्तु पूरी रीति से मूर्छित न हुआ, फिर ४ रत्ती और भस्म डाल और रस थोड़ा थोड़ा डाल २ घंटे घोटा गया तो पारा भली भांति मूर्छित हो गया। पानी डाल, धो नितार देखा तो भी पारा मूर्छित हो रूप में था, उसको गोली बांधने के लिये कपड़े में निचोड़ा तो पारा छन कर करीब ।≠) भर के जुदा हो गया, बाकी कुछ रेत सा रह गया, गोली न बंधी, इससे सिद्ध हुआ कि यह भस्म पारे को मूर्छित करती हैं पर गोली नहीं बांधती।

१२/३ आज थोड़े पारे को शकोरेमें गर्म कर ऊपर ८ रत्ती यही भस्म डाल थोड़ी देर चलाया तो भी कोई नतीजा न निकला। यह सब क्रिया निष्फल गई।

पारद गुटिका अनुभव जसदयोग से

(देशोपकारक समाचार पत्र ४/७/०६ के अनुसार)

१२/३ आज १ तोले पारे को १।। तोले जसद चूर्ण के साथ १ छटांक मुलहठी के आध पाव काढ़े में ४ बजे से ६ बजे तक घोटा तो पारा मिलकर अदृश्य हो गया, दूसरे दिन–

ता० १३/३ को फिर उसी तरह ७ बजे से ११ बजे तक घोटा तो काढ़ा खुश्क होकर पारे की कजली सी हो गई।

ता० १४/३ को उस कजली में आध पाव काले धतूरे का रस डाल ४ घंटे घोटा, जब रस खुश्क हो गया और पहले ही जैसा फिर कजली रूप में हो गया तब खरल में अलग कर कई बार धोया तो केवल जसद चूर्ण सा ही दृष्टि आने लगा और तोल में ।।) भर हुआ, उस चूर्ण को कपड़े में जोर से दवा गोली बांधी तो बहुत फुसफुसी और कमजोर बंधी, जोर जोर से दबाने से रेत सी हो जाती थी अर्थात् गोली न बँधी।

ता० १५ को खरल को खुरचा तो उसमें से ।) चार आने भर जस्त चूर्ण मिश्रित पारा औ निकला, यानी सब (१ तोले पारा १।। तोले जस्त चूर्ण) २।। तोले वजन में कुल ।।।) भर दवा को १ तोले पारे के साथ गोली बनाने की गरज से थोड़ी देर घोट कपड़े में रख जोर से दबाया तो ।–) भरापारा छन गया और ।।≋) भर उस चूर्ण में मिल गया। कुछ छीज गया अर्थात् जो दवा ।।।) भर ती वह १।–) भर हो गई।≋) भर छीजन गई, परन्तु गोली बनाने के काबिल अब भी न हुई, रेत सी ही रही।

उपरोक्त क्रिया का दूसरी बार अनुभव

ता० १५/३ आज ।) भर जसद चूर्ण और १) भर पारे को खरल में १ घंटे तक घोटा तो दोनों की पिष्टी हो गई। पिष्टी हो जाने पर भी १।। वा २ घंटे तक और घोटा फिर पिष्टी को जो खूब चिकनी पर खूब कड़ी भी थी, इकट्ठा कर गोली बांध कपड़े में दबाया तो≋) भर छन गया। ।।।) भर की गोली बंधी –) भर छीजन गई तोल में गड़बड़ है, ठीक याद नहीं रही थी। यह गोली बहुत फुसफुसी और कमजोर थी, इसलिये कपड़े में निचोड़ने की भांति बांध डोरे से कसकर रख दिया।

ता० १६ को कपड़े से अलग कर देखा तो गोली पहले दिन से तो कठिन निकली परन्तु बहुत कमजोर थी, झाड़ने से पारा इससे झर जाता था और रखी रहने से इसमें नीचे की तरफ पारा इकट्ठा हो जाता था। इस वास्ते उंगली से चिकनाने से कुछ साफ हो गई। बाद को इसका सख्त करने के लिये–

ता० १६/३ को तीन पाव बिनौलों (को कूट ५ सेर पानी में औटा २।। सेर काढ़ा तैयार कर छान) के काढ़े में गोली को दोलायंत्र में २।। बजे से ६ बजे तक मंदाग्नि से औटाया गया, ऽ।। सेर काढ़ा रह जाने पर आंच निकाल ठंडा कर हांडी को उसी चूल्हे पर रखी रहने दिया।

ता० १७/३ को गोली को निकाला तो ऊपर से सख्त और चमकीली निकली परन्तु पारे के रवे अब भी हाथ से छूटते थे और रखी रहने से पारा नीचे की तरफ अब भी झूल आता था और कुछ छूटकर जुदा हो जाता था।

१८/३ आज उपरोक्त गोली के काले धतूरे के १ सेर रस में दोला यंत्र कर २ घंटे औटाया रस सब जल गया, तब गोली निकाली, गोली में कोई विशेष बात पैदा न हुई थी किन्तु नीचे की तरफ पारा अधिक इकट्ठा हो गया था जिसको झाड़कर उँगली से चिकना साफ कर दिया और गोली को तोला तो ।।।) भर हुई।

अनुभव

(१) जस्त से गोली ठीक नहीं बँधती।
(२) बिनौले के क्वाथ से औटाना कुछ सख्ती पैदा करता है।

नं० १ पारदगुटिका का अनुभव रजतयोग से

२६/७/०७ आज १।। तोले मध्य शुद्ध पारद (वह पारद जो संस्कार के अनुभवों में शुद्ध हुआ और जिसका बोधन संस्कार भी हुआ) में ६ माशे चांदी चूर्ण और ताजी नींबू का थोड़ा थोड़ा रस डाल घोटा, २ घंटे घुटने के बाद गाढ़ा होना आरम्भ हुआ, ४ घंटे घोटने से खूब गाढ़ा हो गया। बाद को रात हो जाने से खरल में नींबू का रस धो रख दिया। इस समय भी गोली बंध सकती थी। किन्तु नरम रहती थी।

२७/७ को थोड़ा नींबू का रस और डाल २ घंटे घोटा तो सख्ती आ गई और पारा टुकड़े टुकड़े होने लगा, अतएव खूब धो गोली बना ली, बनाते समय गोली यह चिकनी और चमकदार थी। १० मिनट पीछे ठीक गोल करने के लिये दबाना चाहा तो दबती न थी, तोल में २ तोले थी। इस गोली के बनाने में ६ घंटे घुटाई की गई और ४ तोले नीबू का रस डाला गया, बनाते समय गोली में जो चमक थी सो २ प्रहर बाद न रही। भद्दापन और कुछ खुरखुरापन आ गया जिससे जान पड़ा कि चांदी के चूरे के रवे पारे में भलीभांति लीन नहीं हुए।

नोट—कदाचित् चांदी का भाग चतुर्थांश से कुछ कम होता और अधिक काल तक घुटता तो यह खुरखुरापन न होता।

ता० २८/७ को इस गोली को गज भर उछाल कमरे के फरश पर गिराया तो न टूटी किन्तु जब तक छत तक उछाला तो गिरकर टूट गई।

उपरोक्त क्रिया का दूसरी बार अनुभव

२९/७/०७ पूर्वोक्त फूटी हुई गोली को (जिसमें १।। तोले पारद और ६ माशे चांदी का चूर्ण था) खरल में पीस नींबू का रस और ६ माशे मध्य शुद्ध पारद और डाल घोटना आरम्भ किया, पारा डालते ही फौरन मिल गया, इस समय गोली में नरमी थी, किन्तु २ घंटे घोटने से सख्ती आती गई और खरल में रगड़ने से आवाज देने लगी। पश्चात् ४ घंटे और घुटाई कर खरल के रस को पानी से धो गोली बना ली जो तोल में २ तो० ५ माशे हुई। १ माशे पारा खरल के सूक्ष्म गड्ढों में भरा रह गया। इस बार भी ४ तोले रस डाला गया और ६ घंटे घुटाई की गई। खरल से निकालते समय इनकी रंगत फीकी थी, गोली बनाते बनाते खूब चमक आ गई किन्तु रात भर रखा रहने से फिर पहला सा भद्दापन तो न आया था किन्तु पारे की चमक जाकर चांदी की सी सफेद रंगत हो गई।

नोट—जो खयाल ऊपर किया था वह ठीक हुआ, पारे से चतुर्थांश चांदी चूर्ण से गोली १२ घंटे घुटाई में अच्छी बनी।

आज ता० १ अगस्त को एक हांडी में जिसमें १० सेर के करीब जल आता ता, ६।। सेर भैंस का कच्चा दूध भर दिया और गोली को बारीक कपड़ें में बांध उस पोटली को डोरे से बांध उस डोरे को शराब छिद्र से निकाल एक छोटी लकड़ी से बांध दोला कर दिया, इस प्रकार कि गोली हांडी के पेंदे से २ अंगुल ऊंची रही फिर हांडी के ढ़कने की संधि पर कपरौटी कर दी और सरवे के ऊपर का छिद्र आटे से बंद कर दिया। बाद को १२ घंटे बहुत मन्द आंच दी, कभी कभी आंच की कुछ अधिक गर्मी पहुंचने से ढ़के सरवे की संधि में ही दूध व भाप का पानी निकल जाता था, बाद को जैसे का तैसा हांडी को गर्म चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

२/८ को खोला तो दूध तोल में ३। सेर रह गया था। गोली को निकाला तो बहुत उज्ज्वल रंग की निकली जिसमें मुँह दिखलाई देता था, तोल में २ तोले ५ माशे ही थी, विचार किया तो जान पड़ा कि कुछ अंश पारे का गोली पर झूलता है, जो हाथ से छूटाने से न छूटा किन्तु झटका देने से गिर पड़ा। गोली को फिर तोला तो २ तोले ४।। माशे हुई, जिससे जान पड़ा कि ४ रत्ती पारा पृथक् हो गया, अब गोली में चमक तो है किन्तु इतनी नहीं जो मुख दीखै।

(१) नोट—इस पारे के झूलने के कारण हो सकते हैं (१) अग्नि कुछ तेज लगी हो (२) चांदी का अंश कुछ कम हो, (गालिबन पहली ही कारण है नहीं) चांदी का अंश कम होना ही कारण पश्चात् अनुभवों से जान पड़ा कि चांदी अपने से तिगुने पारे को ही पूरा पकड़ सकती है।

(२) नोट—आज ५ अगस्त को गोली को देखा तो सफाई और चमक ज्यों की त्यों थी और कपड़े पर रगड़कर देखा तो कुछ भी स्याही नहीं दी।

यह गोली बाबू उमरावसिंह के पिता (जिनकी अवस्था ५५ वा ६० वर्ष की होगी) को करीब १ महीने दूध में इस्तेमाल कराई गई। उन्होंने बयान किया कि इस गोली के पीने से मुझको दस्त साफ हुआ, भूख अच्छी लगी और कुछ ताकत मालूम हुई, वापिसी पर गोली को देखा तो तोल पूरी थी, खरखराहट बिलकुल रफै हो गया था और खूब चिकनी हो गई थी, मगर कुछ पिष्टी ऊपर से फिसलने लगी थी।

(३) नोट—सिद्ध हुआ कि चांदी का भाग और अधिक होना चाहिये था ताकि दूध में बार बार औटाने पर भी पिष्टी की फिसलन पैदा न होती।

नं० २ पारदगुटिका का अनुभव रजत योग से

३/८/०७ को २ तोले मध्य शुद्ध पारद में (जिसमें २।। गुना गंधक भी जारित हुआ था) ६ माशे चांदी चूर्ण और पानी का ताजा रस थोड़ा थोड़ा डाल लोह खल्व में घोटना आरम्भ किया। आज ६ घंटे घुटा और ६ तोले रस पड़ा। आज ५ घंटे की घुटाई में यह गोली बंधने के काबिल गाढ़ा हो गया था किन्तु १ घंटे बाद इतनी सख्ती आ गई जो रगड़ के साथ आवाज देने लगा। बाद में ज्यों का त्यों रख दिया।

४/८ आज पारद पिष्टी को खूब धो साफ कर लिया, इस समय यह कठिन थी और मिट्टी की तरह टूटती थी और गोली नहीं बँध सकती थी अतएव १ तोले पारद और मिला और ताजा पान का रस और डाल ९ घंटे घुटाई की और ९ तोले रस पड़ा। शाम को खूब धो गोली बनाई तो बँध गई किन्तु नरम रही और इस गोली के नीचे की तरफ पारा झूलता था।

५/८ को ९ घंटे घुटाई की और ७।। तोला रस पड़ा। बाद को खूब धो गोली बना रख दी, गोली आज भी नरम बँधी थी किन्तु इतना अंतर पड़ा कि कल गोली से जो पारा झूल आता था आज नहीं झूलता।

६/८ को तप्तखल्व में ११ घंटे घुटाई हुई और १२ छटांक रस पड़ा। शाम

को धो गोली बनाई। आज भी गोली कल की सी हो नरम थी। कोई विशेष अंतर न था, तोल में इस समय ३ तोले ५ माशे थी, इस गोली को गफ मारकीन में निचोड़ा तो ५ माशे पारा छन गया। बाद को गोली और पारद पृथक् पृथक् रख दिये।

७/८ के सवेरे गोली को देखा तो कड़ी हो गई थी जो चुटकी से नहीं टूट सकती थी। हथेली के जोर से दबाकर तोड़ी, अतएव उस गोली को और उस ५ माशे पारद को शीत खल्व में डाल थोड़े थोड़े पान के रस के साथ घोटना आरम्भ किया। शाम तक ११ घंटे घुटी। ८–८ तोले रस पड़ा। धोकर गोली बांधी तो कलकी सी ही नरम थी, कपड़ें में दबाकर छाना तो ६ माशे पारा छूट गया। गोली और पारा जुदा जुदा रख दिये।

८/८ को गोली को १२ तोले पान के रस के साथ शीतखल्व में ९ घंटे घोटा (छना पारा अलग रखा रहने दिया) शाम को धो गोली बनाई तो ६ माशे पारा छन जाने से गोली आज सख्त थी, आज फिर कपड़े में निचोड़ी गई तो करीब ३ माशे के पारा गोली से और अलग हो गया, पानी इस समय गोली की तोल २ तोले ९ माशे रह गई।

९/८ को शीतखल्व में ८ घंटे घुटाई हुई। (छना पारा अलग ही रखा रहा) ९ तोले पान का रस पड़ा, शाम को धो गोली बांध ली, कपड़े में गोली को निचोड़ा तो आज भी माशे डेढ़ माशे और पारा गोली से पृथक् हो गया, बाद को गोली रख दी गई, आज गोली को घुटते ७ दिन पूरे हो गये।

१०/८ को सवेरे गोली को फिर जोर से निचोड़ा तो अबकी बार भी माशे डेढ़ माशे पारा पृथक् हो गया और गोली तोल में सिर्फ २ तोला ५ माशे रह गई, सब निचोड़ा पारा ९ माशे ५ रत्ती हुआ, ३ माशे ३ रत्ती पारा और चादी प्रतिदिन के धोने से खरल से सूक्ष्म गड्ढों में समा जाने से छीज गया। आज ही यह गोली पत्थर के फर्श पर पौन गज ऊंचे से गिरकर टूट गई। टूटी गोली को खरल में आध घंटे खाली घोटा तो नरमी आ गई और फिर गोली बन गई जो तोल में २ तोले ५ माशे ही की हुई, ये गोली इस समय चमकदार है।

११/८ के सवेरे गोली को देखा तो उंगली से पोंछने से ऊपर से पारा फिसलता था, इसलिये जितना पारा उंगली के जोर से फिसल सका, उस सबको जो १ माशे के करीब होगा,एक तरफ को इकट्ठा कर चाकू से पृथक् कर लिया। फिसनेवाला थोड़ा अंश रह भी गया, अन्दर गोली सख्त निकल आई।

१२/८ को फिर गोली को देखा तो बहुत थोड़ा अंश उंगली के जोर से फिसल सका जो रत्ती दो रत्ती होगा। वह भी छूटा लिया। गोली चिकनी चमकदार और सख्त है और तोल में २ तोले ४ माशे है (पारा छूटा हुआ १० माशे ४ रत्ती है) ३।। माशे की बन गई।

नोट–नींबू के रस से २ दिन घोटने से ६ माशे चांदी से २ तोले पारे की गोली ठीक बन गई थी। पान के रस में ७ दिन घोटने से ६ माशे चांदी से केवल १ तोले १० माशे पारे की गोली बंधी मगर पारा अधिक डाल देने से कुछ अंश चांदी का छने हुए पारे में भी चला गया, इसलिये यह समझना चाहिये कि इस क्रिया में भी यदि आदि में ही १ तोले पारा डाला जाता तो ६ माशे चांदी चूर्ण से २ तोला पारा बंध जाता है। पान के रस से वा ७ दिन घोटने से पारा विशेष नहीं बँधा, केवल इतना लाभ अवश्य हुआ कि चांदी चूर्ण और पारा भलीभांति मिलकर गोली खुश्क चिकनी बँधी।

अनुभव

आज जब कभी चांदी चूर्ण से गोली बनाओ तो १ भाग चांदी में ४ भाग से अधिक पारा न दो, अधिक कड़ा करने के लिये कुछ कम कर सकते हो। पानी केवल ३ भाग व ३।। भाग पारा दो और ३ दिन से कम घुटाई न हो। ५ दिन बहुत है, इससे अधिक घुटाई व्यर्थ है।

ता० १३/८ को इस गोली को देखा तो इसके ऊपर पारा बिलकुल न फिसलता था।

ता० २८/८ आज इस गोली को ५ सेर दूध में दोलायंत्र कर ४ प्रहर की मंदाग्नि दी।

ता० २८/८ के सवेरे खोला तो गोली ने ५ रत्ती पारा छोड़ दिया था, जो कुछ कपड़े पर मिला कुछ गोलीको झटकादेने सेजुदा हुआ। अब गोली की तोल २ तोले ३ माशे ३ रत्ती है और गोली के ऊपरी भाग पर कुछ फिसलन पैदा हो गई है। (दूध ५ सेर का २।।। सेर रह गया) गोली की चिकनाई और फिसलन दूर करने के लिये गोली को भांग की थंडाई में डाल रख दिया। सवेरे देखा तो गोली पर पिष्टी का फिसलना बंद हो गया था और जैसी दूध में औटाने से पहले सख्त थी वैसी ही फिर हो गई।

गोली का सेवन

उक्त गोली को आध सेर बाजारी ओटे दूध में हर रोज दोला कर १ घंटे नरम आंच पर १६ दिन तक शंकर सिपाही को उसका दूध पिलाया तो उसने बयान किया कि मेरे पसली के दर्द और कफ को इसने फायदा किया। बदन में कुछ फूर्ती मालूम देती है। भूख कुछ कम हो गई, खुश्की भी मालूम होती है, इसने गोली पीने के दिनों में श्राद्धों के नोते खा खा कर कुपथ्य किया, अतएव कुछ लाभ प्रतीत न हुआ। (गोली हर रोज धो कर या कपड़े से पोंछ कर साफ कर ली जाती थी, किसी किसी दिन गोली के कपड़े कर कोई पारे का रवा मिलता था सो शायद अधिक गर्मी पहुंच जाने का कारण होगा) तोल में गोली १ रत्ती कम हो गई, इस भांति–

ता० २/१० से १७/१० सन् ७ तक १६ दिन हरदेव कहार को पिलाया तो उसने कहा कि मुझे सेवन से दूध जो न पचता था, पच गया, दस्त बँधा हुआ आया, स्वप्न में वीर्यपात् हो जाना बंद हो गया, शरीर में फुर्ती मालूम होती है, चित्त में प्रसन्नता रहती है। १० दिन बाद जवानी का सा कामोद्दीपन हुआ, वाजीकर भी है किन्तु खुश्की अधिक करती है, शिर में कुछ नशा से रहा और नींद ज्यादः आई। १३ दिन पीने के बाद खाने की सब चीजें कड़वी मालूम होने लगीं, पीसकर छोड़ देने के ३ दिन बाद उसने कहा कि गर्मी और नशा हलका पड़ गया है परन्तु खाने की चीज अब भी कड़वी मालूम होती है किन्तु मुंह का जायका कभी कड़वा न हुआ था, इन दिनों में कब्ज भी न हुआ, अलवत्ता तर माल खाने को दिल चाहता जो मुझे यथारुचि न मिले, रोटी वगैरः खाना मुझे स्वादिष्ट न लगता था, इन १५ दिनों में किसी किसी दिन परमाणु रूप पृथक् हुआ पारद गोली के कपड़े पर मिलता था, इसी से गोली गोली २ रत्ती और कम होकर २ तोले ३ माशे की रह गई। (गोली से पारद का पृथक् होना केवल तेज आंच का देना निश्चय हुआ)।

ता० २१/१ को इस गोली पर पारा झूलता नजर आ पड़ा। झटका दे दिया तो १ रत्ती पारा पृथक् हो गया, अब गोली को तोल १ रत्ती कम २ तोले ३ माशे है।

नं० ३ पारदगुटिका का अनुभव रजत योग से

१२/८ आज १०।। माशे पारद (यह ढ़ाई गुण बलिजारित और मध्य शुद्ध है पिछली गोली के निचोड़ने से निकला और जिसमें पूर्वोक्त गोली के ऊपरी नरम भाग को कई बार खुरच खुरच कर दो दो माशे डाल दिया था) और २ माशे ३ रत्ती चांदी चूर्ण दोनों को लोहखल्व में तुलसी का स्वरस डाल डाल घोटा। २।। घंटे में पारा बिखर गया। पहली सी पिष्टी न रही। मगर घोटना जारी रखा, शाम तक यानी ५।। घंटे घुटने के बाद धोकर देखा तो गोली न बंधती थी। बिखर जाती थी, रंगत मैली जस्त की थी,ती, कपड़ें में दबा गोली सी बना रख दी जो तोल में १ तोल ३ रत्ती थी।

१३/८ के सवेरे देखा तो कड़ी हो गई थी, हाथ से जोर दे दबाने से भी टूटती न थी। मगर खुरखुरी थी अतएव २ माशे पारद और डाल नींबू के स्वरस के साथ २ घंटे घोटा गया तो फिर भी कुछ मालूम हुई। इसलिये २

माशे पारा पारद और डाल नींबू के स्वरस के साथ २ घंटे घोटा गया तो फिर भी कुछ मालूम हुई, इसलिये २ माशे पारा और डाल ४ घंटे घोटा। शाम को धो गोली बना ली, ये गोली इस समय चमकदार किन्तु नरम बनी, तोल में १ तोले ३ माशे हैं।

अनुभव

यदि चांदी में इतना पारा डाला जाता है जिससे खल्व पिष्टी हो जाती है तो फिर गोली नरम बनती है, कड़ी गोली के लिये इतना पारा डाला जावे जिससे पिष्टी नहीं किंतु टूटक सा रहे, टूटक तिगुना पारा डालने से रहता है।

१४/८ को देखा तो गोली के ऊपर से पारद पिष्टी फिसलती थी, इसको जुदा न कर वैसे का वैसा ही रखा रहने दिया।

२१/८ आज देखा तो गोली वैसी ही नरम थीं अर्थात् पिष्टी ऊपर से वहुत फिसलती थी, इस दोष के दूर करने के लिये एक छोटा चांदी का वरक गोली पर चढ़ा दिया तो चढ़ गया और तीसरे दिन देखा तो गोली के ऊपर कोई फिसलनेवाला अंश न रहा था।

ता० १६/९ को ऽ॥ सेर औटे गर्म दूध में इस गोली को दोलायंत्र कर १॥ घंटे तक भूमल पर रखा रहने दिया।

ता० १७ को सवेरे देखा तो कोई २ तोला रवे पारे का गोले से स्वतः ही पृथक् हुआ कपड़े पर आया और कुछ बड़े बाजरे के बराबर झटका देने से पृथक् हो गया, गोली में नरमी आ गई। पिष्टी ऊपर से फिसलने लगी, इससे ज्ञात हुआ कि गोली में चांदी का अंश कम रहा, अतएव एक चांदी का वर्क गोली पर और चढ़ा दिया गय गोली को अब फिर तोला तो ३ रत्ती कम हो गई, वरक चढ़ाने से सूरत तो बन जाती है पर दूध की गरमी से चमड़ी टूट जाती है।

तारीख १६ दिसंबर २६ फरवरी तक ४० दिन तक यह गोली ईश्वरदासजी के पिता को दूध के साथ इस्तेमाल कराई गई तो इसमें कुछ चमक बढ़ गई थी। शायद पीछे के दिनों में किसी दिन आंच तेज लग गई हो, तोला गया तो २ तोले २ माशे की हुई, ५ रत्ती घट गई।

नं० ४ पारद गुटिका का अनुभव
रजत योग से

१४/८ को २ तोले साधारण शुद्ध पारद को छोटी कढाईमें रख मंदाग्नि दी और साथ साथ ही पोस्त के पानी का चोया (जो पोस्त के सूखे १ छटांक टोड़ों को सेर १॥ सेर पानी में शाम को भिगो निकाला गया था) देना और ॥ भर चांदी के पोले जड़ी नीम की लकड़ी से घोटना आरम्भ किया, ६ घंटे तक इसी तरह काम चला, करीब २ सेर के पोस्त का पानी पड़ा। शाम को ठंडा कर धो पारे को निकाले देखा तो उसमें गाढ़ा पन आ गया था, जो रत्ती दो रत्ती पारा लकड़ी के पोले पर लिपट गया था वह अधिक गाढा हो गया था तोल इस पारद का इस समय २ रत्ती कम २ तोले थी।

१५/८ के सवेरे इस पारद को छान कर देखा तो गाढे अंश की चने के बराबर गोली बन गई, बाद को उस गोली को उसी पारे में मिला उपरोक्त विधि से चोया देना और घोटना आरम्भ किया, ३ घंटे बाद १ छंटाक पोस्त का १ सेर २ छंटाक पानी पड़ चुकने पर कढाई को उतार पारद को धो तोला तो १ तोले ९ माशे ६ रत्ती हुआ (२ मा० छीज गया) आज पारद कलसे अधिक गाढा हो गया था, किन्तु छाननेपर गोली ५ माशे ३ रत्ती ही की बंधी १ तोले ४ माशे ३ रत्ती पारा छन गया ये गोली अलग रख दी।

१६/८ को फिर उपरोक्त विधि से ४ घंटे काम चला। १ छ० पोस्त का १ सेर १ छ० पानी पड़ा, दोपहर को धो पारे को तोला तो १ तोले ४ माशे ३ रत्ती हुआ, छाना गया तो २ माशे २ रत्ती की गोली बन गई और १ तोले २ माशे १ रत्ती पारा छन गया। दोनों गोली मिला एक गोली ७ माशे ५ रत्ती की करली। लकड़ी से उस ॥) भर चांदी के पोले को निकाला तो उसमें पारा जज्ब हो गया था और चांदी उसकी कमजोरी सी हो गई थी, तोल में ६ रत्ती कम हो गई थी।

१७/८ को उपरोक्त विधि से ५ घंटे काम चला। १ छटांक पोस्त का २ सेर पानी पड़ा। शाम को कढ़ाई उतार ठंडा कर धो तोला तो १ तोले १ माशे ५ रत्ती पारा मौजूद था, छान गोली बनाई तो २ माशे की गोली बन गई। बाकी ३ रत्ती कम १ तोला पारा छन गया। इस गोली को उपरोक्त ७ माशे ५ रत्ती की गोली में मिला ९ माशे ५ रत्ती की कर ली, पहली गोली कड़ी हो जाती थी, उन पर यह ताजी बँधा पारा चढ़ा दिया जाता था।

१८/८ को चांदी के पोले को तोला तो ।=) रत्ती का हुआ किंतु इसमें पारे का भी अंश था, उसको दूर करने के लिये इस पोले को गलाकर तोला तो ।) ७ रत्ती चांदी बैठी अर्थात् २ माशे चांदी पारे में मिल जाने से घट गई। फल यह हुआ कि माशे चांदी से ९ माशे ५ रत्ती की गोली बनी यानी पंचमांश चांदी हुई अर्थात् १ भाग चांदी से ४ भाग पारा बंधा। यही औसत मर्दन से बंधी गोलियों का पड़ा है। इस गोली के बनाने में ४ दिन में ६ प्रहर काम चला। प्रतिप्रहर में १॥ माशे से कुछ अधिक पारा बँधने का औसत पड़ा। ये गोली मामूली चमकीली बनी किन्तु ऊपर से कुछ पारद पिष्टी फिसलती है और गोलियों सी चिकनी नहीं है कुछ खुरखुरी है। खुरखुरे होने का कारण यह है कि कढ़ाई में खल्व का सा मर्दन नहीं हुआ। पारा मर्दन से ही ठीक मिलता है।

२२/८ आज गोली को ऊपर से कुछ अधिक नरम देख उस पर १ चांदी का वरक चढ़ा दिया तो चढ़ गया और तीसरे दिन देखा तो गोली पर फिसलनेवाला कुछ अंश न रहे।

नं० ५ पारदगुटिका का अनुभव तारभस्म से

१३/३/०५ आज १ तोले पारे में १ माशे कुश्ता, चांदी डालकर घोटा गया तो कोई नतीजा मालूम नहीं हुआ, फिर मकोय (जो रसार्णव में बद्धक वर्ग में है) का रस डाल घोटा गया, तो पारा गाढ़ा हो गया, फिर १ माशा कुश्ता चांदी और डालकर घोटा गया तो पारा जम गया। धोकर मकोय का रस जुदाकर गोली बांध ली गई। गोली नरम चलती हुई और चमकती हुई बनी। तोल में १ तोला थी, कुछ छीजन भी गई थी।

२०/१० इस गोली को कपड़ें में धरक दबाया गया तो कुछ पारा जुदा हो गया फिर उस छने पारे को ४ तह में छाना तो कुछ लुगदी और निकली जिसको गोली में मिला दिया, इसी तरह दो तीन बार किया गया, फिर लुगदी छानने से न निकली जिससे ज्ञात हुआ छानने से ग्रसित धातु पारे से जुदा हो जाती है। (पातन गालन व्यतिरेकेना) अब यह गोली कुछ कड़ी बन गई। इसको पहर भर नींबू के रस में डूबा रखा तो कुछ सख्ती बढ़ी, तोल में ॥=) भर है।

नं० ६ पारदगुटिका अनुभव
(नाइट्रिट सिलबर से)

२०/१०/०५ आज २ पैसे भर पारे को ४ रत्ती नाइट्रिट आफ सिलवर डालकर खरल में घोटा गया तो कोई नतीजा जाहर नहीं हुआ, फिर मकोय का रस डाल घोटा गया तो पारा और नाइट्रिट मिलकर कुछ गाढ़ापन हुआ। फिर ६ रत्ती नाइट्रिट और डाला रस और डाल घोटा तो पारा पिष्टीरूप हो गया, पानी से धो निकाला गया तो सफेद चमकदार बन गया, इसको एक तह कपड़ें में छाना गया तो एक पैसे से बहुत कम गोली बैठी और पारा

१ पैसे ४ रत्ती भर हुआ। फिर दो हरे और चौहरे कपड़ें में छाना गया तो और गोली बैठी, आखिर में गोली ९ रत्ती कम १ पैसे भर और पारा ५ रत्ती कम १ पैसे भर बैठा, यानी १४ रत्ती पारा और १० रत्ती नाइट्रिक का वजन घट गया। यह पानी में मिल गया। पानी को बार बार नितारा और धोया गया। कुछ हाथ न आया, यह गोली नाइट्रिक की चांदी के कुश्ते की बराबर कड़ी न बनी।

पारदगुटिका अनुभव लोहभस्म से

अर्थात् १ अगस्त १९०७ के अखबार अलकीमियाँ में छपी हकीम अब्दुलकरीमवाले अकसीरी फौलाद भस्म से (जो २।। रुपये माशे पर मंगवाई) उनके पत्र द्वारा बताई क्रिया के अनुसार पारदगुटिका का अनुभव

२४/९/०७ को १ तोले सामान्य पारद और १ माशे उपरोक्त लोह भस्म को २ नींबू के २।। तोले रस के सात ६ घंटे शीतखल्व में मर्दन किया था। पारा लोहभस्म से पृथक् रहा, जब रस सूख गया और चिपकाहट पैदा हो जाने से हाथ रुकने लगा तब पारद को पृथक् कर लिया जो ११ माशे ३ रत्ती हुआ। फिर आतिशी घरिया में भूभल पर १५ मिनट रखकर ठंडा कर कैंची की मारकीन में छाना तो सब पारद छन गया। कपड़ें में कुछ न रहा। (खरल को सुखा भस्म को पृथक् कर तोला तो ४ माशे हुई इस भस्म में ५ रत्ती पारद और बाकी यानी १।। माशे के करीब नींबू का अंश समझना चाहिये)।

२८/९ को उक्त ४ माशे भस्म को दीवलों के संपुट में रख ३ सेर कंडे की आंच दे दी तो पूरी १ माशे रह गई।

नोट–पारद ने लोहभस्म को नहीं चरा और न चरना सुगम है, क्रिया झूठी रही।

स्वर्णमयी पारद गुटिका का अनुभव

२७/१२/०७ को अष्ट संस्कार युक्त और विजौरे से दीपित ४ माशे पारद और १ रत्ती कम ४ माशे स्वर्ण का कुंदन जिसक कैंची से कतर कर तिलसदृश टुकड़े आरम्भ कर लिये गये थे। दोनों का मृदु तप्तखल्व में जंभीरी रस के साथ ९ बजे से मर्दन करना आरम्भ किया, १५ मिनट में पारद और स्वर्ण मिलकर कठिन और चमचोड़ हो गये। जो घुटाई में न आने लगा। इस कारण आध घण्टे बाद ४ माशे पारद और डाल घोटा किन्तु तब भी ठीक काम चलता न समझ ४ माशे और डाल दिया अर्थात् १ तोला पारा डाल कड़े हाथ से घोटना आरम्भ किया। १ घंटे घुट जाने पर स्वर्ण और पारद नरम पिष्टी रूप में हो गये और घुटाई ठीक चलने लगी। बाद के ज्यों ज्यों घुटाई होती गई, पिष्टी चिकनी होती गई, ५ बजे घुटाई बंदकर खरल से पिष्टी को निकाल धो गोली बनाई तो बहुत ढ़ीली गोली बनी और तोल में १ तोले ४ माशे हुई। रात भर रहने के बाद सवेरे गोली को देखा तो गोली में कुछ कठिनता न मालूम हुई। अतएव कल की सी ही तरह रही।

आज ता० २८/१२ को ८।। बजे से मृदु तप्तखल्व में जंभीरी रस के साथ मर्दन करना आरम्भ किया। ११।। बजे से उस पिष्टी को खरल से निकाल धो तोला तो १ तोले ४ माशे हुई बाद को कैंची की मारकीन में उक्त गोली को निचोड़ा तो ४ माशे ३ रत्ती पारा छन गया और ३ रत्ती कम १ तोले पिष्टी रह गई। उक्त ४ माशे ३ रत्ती पारद को फिर दुबारा छान तोला तो २ रत्ती पिष्टी और निकली जो उसी पिष्टी में मिला दी गई और बाकी ४ माशे १ रत्ती पारद पृथक् रख दिया। सब १ रत्ती कम १ तोले पिष्टी को १२ बजे से उसी प्रकार फिर घोटना आरम्भ किया, शाम के ५ बजे से खरल से पिष्टी को निकाल धो कपड़े में निचोड़ा तो ९ रत्ती पारा और छन गया अर्थात् अब केवल १० माशे ६ रत्ती की पिष्टी रह गई और ४ माशे ७ रत्ती पारा छन गया। ३ रत्ती छीज गया, उक्त पिष्टी रह गई और ४ माशे ७ रत्ती पारा छन गया। ३ रत्ती छीज गया, उक्त पिष्टी की गोली बनाई तो श्वेत उज्जवल और चमकदार चांदी के रंग की बनी और कठिन भी अच्छी थी।

२९/१२ को गोली के ऊपर उँगली फेरने से उसके ऊपर से पिष्टी फिसलने लगी अतएव उसी प्रकार मृदु तप्तखल्व में गोली को डाल जंभीरी रस के साथ ८।। बजे से घोटना आरम्भ किया। १० बजने पर खरल से रस निकाल–)।। फी वरक के हिसाब से २२ वरक सोने के जो तोल में ४ रत्ती के थे, एक एक करके डालते गये और घोटते गये जिससे पिष्टी में कठिनता आ गई। सब वरक पड़ चुकने पर फिर जंभीरी रस डाल घोटा १२ बजे तक पिष्टी में अधिक कठिनता आ जाने से दरदरी हो गई और बिखर गई। घोटने से खरल में आवाज देने लगी। शाम के ५ बजे चूर्णरूप पिष्टी को धो कपड़े में रख जोर जोर से दबा गोली बना ली और नख से घिस घिस कर गोली चिकनी कर ली, कल नरम पिष्टी की गोली में जैसी चमक थी उतनी इसमें न आई, ईंट की चांदी का सा रंग रहा।

३०/१२ को गोली को तोला तो ११ माशे २ रत्ती हुई (जिसमें ६ माशे ४ रत्ती पारद और ४ माशे ४ रत्ती स्वर्ण समझना चाहिये) इस गोली से निकला पारा जो तोल में ४ माशे ७ रत्ती हुआ था, स्वर्णग्रासयुक्त पारद में मिला दिया गया, इस गोली के बनने बनाने में ३ दिन में २४ घंटे घुटाई हुई। १ बोतल रस जंभीरी खर्च हुआ।

३१/१२ को इस गोली को ३ सेर दूध में दोला कर १० बजे से ७ बजे तक ३ प्रहर मंदाग्नि दी गई, बाद ७ बजे के चूल्हे से उतार तिपाई पर रख २ बजे रात तक स्प्रिटलैम्प की आंच दी, सवेरे गोली को निकाला तो गोली में बहुत चमक पैदा हो गई थी। सूर्य के सन्मुख करने से सूर्य के प्रतिबिंब को देती थी। चिकनापन भी विशेष था किंतु गोली के ऊपर से किंचित् पिष्टी फिसलती सी मालूम होती थी, तोल गोली की इस समय १ रत्ती कम ११ माशे रही, ३ रत्ती कम हो गई।

१/१/०८ को गोली को भांग की ठंडाई में डाल रख दिया, दूसरे दिन रात को ठंडाई समेत ओस में रख दिया।

३/१ को निकाल धो पोंछ देखा तो गोली की चमक बदस्तूर मौजूद थी और गोली के ऊपर से पिष्टी का फिसलना कम हो गया था, फिर भी बहुत थोड़ा बाकी था।

२२/१ को इस गोली को दूध में औटाकर स्वयं पीना आरम्भ किया तो पहले ही दिन ५ रत्ती पारा गोली से छूटकर नीचे पतीली में गिर गया। इस कारण यह जान पड़ा कि चांदी की पतीली में दूध थोड़ा होने से गोली पेंदे से बहुत ही कम ऊंची रही थी और इसी सबब आंच की तेजी से गोली से पारा छूट गया, अब गोली की तोल १०माशे ४ रत्ती है और रंगत गोली की बिलकुल फीकी सफेद हो गई। चमक बिलकुल जाती रही, इस गोली को देर तक हाथ से चिकनाया तो चमक तो न आई किंतु उजलापन आ गया और कुछ चिकनी भी हो गई।

२९/८/०८ को उक्त चांदी सोने की सब गोलियों को देखा तो चांदी की गोलियों में कोई विकार न था। किंतु इस सोने के गोली के ऊपर कालोंच सी हो रही थी। झटक दिया तो बड़े बाजरे के बराबर इससे पारा पृथक् हो गया। फिर उस पृथक् हुए पारद को उसी में लगा चिकनाया तो बहुत उज्ज्वल और चमकदार हो गई।

पारदगुटिका का अनुभव धतूरतैल से

१/०८ को पूर्वोक्त १०।। माशे पारे में उसी कच्छपयंत्र का निकला १।। माशे पारा और मिला।

५/१/०८ को १ तोले पारद को (जो कच्छपयंत्र में गंधक जारण करते समय गंधक में मिल गया था और फिर जिसे पातन द्वारा निष्कासित किया था) लोह खल्व में डाल थोड़ा थोड़ा धतूर तैल डाल १ बजे से मर्दन करना आरम्भ किया। २ घंटे मर्दन से कुछ पारा मिला। तैल में जब तक पतलापन

रहता था, पारे के रवे बिखर से जाते थे और जब उसमें गाढ़ापन आता था तो पारा इकट्ठा होने लगता था, ५ बजे पर घुटाई बंद कर दी गई, आज ४ घंटे घुटाई हुई (२। तोले तेल पड़ा)

६/१ के ८ बजे से धत्तूरे तैल के साथ फिर घुटाई आरंभ हुई, आज पारद कल से अधिक मिल गया था, किन्तु ३ बजे बाद और तैल डालना बंद कर दिया तो ४ बजे तक तैल सूख गया और पारद पृथक् हो गया, तैल सूखकर ऐसा चमचोड़ हो गया, जो घुटाई न हो सकी अतएव घुटाई बंद कर खरल को रख दिया। (आज ८ घंटे घुटाई हुआ और ४। तोले तैल पड़ा) १० माशे ४ रत्ती पारा पृथक् हुआ मिला और ८ माशे ४ रत्ती की तेल की चमचोड़ सी गोली हुई।

नोट–पीछे जान पड़ा कि ये तेल ठीक न था, अधिकांश इसमें पानी का था।

उपरोक्त क्रिया का दूसरी बार अनुभव

ता० ८/९ को पूर्वोक्त १०।। माशे पारे में उसी कच्छपयंत्र का निकला १।। माशे पारा और मिला पूरा १ तोले खरल में डाल और १ छटांक धतूर तैल जिसमें पानी तथा एक बार में ही डाल दोनों को ९।। बजे से मर्दन करना आरंभ किया। १/२ घंटे घोटने के बाद तैल गाढ़ा होने लगा और पारा मिलकर अदृश्य हो गया, ११ बजे घुटाई बंद कर दी। फिर ४।। बजे से ५ बजे तक आधा घंटे और घोटा, तेल होकर शहद सा हो गया था। (आज केवल २ घंटे घुटाई हुई)

९/१ को ८ बजे से फिर घोटना आरंभ किया। तैल में गाढ़ापन और चिपट बढ़ती गई। ११ बजे तक घोटा फिर ४।। बजे से ५ बजे तक आधा घंटे और घोटा गया। (आज ३।। घंटे घुटाई हुई)।

१०/१ को ८ बजे से घुटाई आरंभ हुई। तेल में गाढ़ापन और भी बढ़ गया, ५ बजे घुटाई बंद कर दी गई (आज ९ घंटे घुटाई हुई)

११/१ को ८ बजे से रात के ८ बजे तक १२ घंटे घुटाई हुई, गाढापन विशेष न बढ़ा, ता९ १२ और १३ को घुटाई बंद रही।

१४/१ को १० बजे से घुटाई आरंभ हुई, गाढापन से कुछ अंतर न मालूम हुआ ५ बजे से बंद कर दी (आज ७ घंटे घुटाई हुई)।

१५/१ को ८ बजे से रात के ८ बजे तक (१२ घंटे घुटाई हुई) गाढापन और चिपक और बढ गई जिससे घुटाई कुछ कठिन होने लगी।

१६/१ को २ तोले ३ माशे तैल खरल में और डाला जिसके डालने से पहले माही पतला हो गया दिन के ८ बजे से रात के ८ बजे तक (१२ घंटे) घुटाई हुई।

१७/१ को भी १२ घंटे घुटाई हुई।

१८/१ को ८ बजे से १० बजे तक और ४।। बजे से ५।। बजे तक ३ घंटे घुटाई हुई।

१९/१ को ८ घंटे घुटाइ हुई।

२०/१ को उसे काफी गाढा होता न समझ पूर्व अनुभव की निकले ८ माशे ५ रत्ती की चमचोड गोली को भी (जिसमें १।।। माशे पारा और ७ माशे धत्तूर तैल का अंश था) इसी में मिला ८ बजे से घोटना आरम्भ किया, इस गोली के डालने से तैल में कुछ गाढापन आ गया था, आज ७ बजे रात तक ११ घंटे घुटाई हुई।

२१/१ तक ११ घंटे घुटाई हो चुकने पर भी और ७ माशे की गोली डाल देने पर भी जलौ का (जोंक) रूप होता न देख १ छटांक धत्तूर तैल का जल इस वास्ते डाल दिया कि इस जल में कोई पदार्थ ऐसा है जो घोटने से घनरूप हो जाता है जैसा कि पहले गोली बन्ध जाने से सिद्ध है यह तैल जल शीघ्र न मिला, (आज ८ घंटे घुटाई हुई)।

२२/१ को देखा तो दही सा गाढा हो गया था किन्तु चिपक न थी, जान पड़ता था कि धूप में न निकलने से और शीत अधिक पड़ने से तैल और जल मिलकर जम गये थे, आज ३ बजे से ५ बजे तक २ घंटे घुटाई हुई।

२३ को भी २ घंटे घुटाई हुई।

२४ को १० बजे से घुटाई आरम्भ हुइ २ बजे पर १ छटांक धत्तूर तैल जल और डाल दिया गया जिससे दही सा फिर हो गया, ४ बजे तक ६ घंटे घुटाई हुई।

२५ को ६ घंटे घुटाई हुई।

२६ + ० +०

ता० २७ को १ घंटे घुटाई हुई।

ता० २८ को ४ घंटे घुटाई हुई।

ता० २९ को सवेरे देखा तो कुछ कड़ा और चमचोड हो गया था, घुटाई करने से हाथ पर ज्यादः जोर पड़ता था, अतएव खरल को शीशे के बकस में रख धूप में रख दिया, ३ बजे निकाला तो ये पतला हो गया था ३ बजे से घुटाई की तो नरम घुटाई होने लगी (आज २ घंटे घुटाई हुई)।

ता० ३० को ६ घंटे घुटाइ हुई फिर रात को शीशी के बकस में रख ओस में रख दिया।

ता० ३१ के सबेरे देखा तो इसमें कठिनता मालूम हुई, मूसली को उस पर जोर से दबा उठाने से जितना चिपट खिंच आता था वह ज्यों का त्यों जोंक की तरह लगा रहता था अतएव खरल से उसको निकालना चाहा तो हाथ से कडुआ तेल मल उसकी गोली बनाई तो बन गई, जो तोल में ३ माशे तैल और १६ तोले ६ माशे तेल जल है और १२८ घंटे अर्थात् ५ दिन रात और ८ घंटे घुटाई हुई है) बाद को १/२ छटांक के करीब उर्द के आटे की कटोरी से बना उसमें उस गोली को रख चारों तरफ से बंदकर चिकना दिया और उसकें ऊपर इतना दोहरा सूत लपेट दिया जिससे गोला कुल ढक गया।

ता० १/२ को उर्द के पतले आटे का एक लेप करीब ३ रुपये भर मोटा उक्त गोले पर और चढ़ा सीरक में रख दिया।

ता० २ /२ को धूप में सूखता रहा, जहां कहीं लेप तश्तरी से चिपटकर खराब हो गया वहां और लेप लगा ठीक कर दिया।

ता० ३/२ को एक पतला लेप उसी के ऊपर और कर शीशे के बकस में रख सुखा दिया ४ व ५/२ को सूखता रहा।

ता० ६/२ को देखा तो लेप चटक गया था इस वास्ते दरारों पर लेप कर चिकना शीशे के बकस में रख धूप में रख दिया, ४ बजे से देखा तो फिर लेप चटक गया था उसकी फिर दरजबंदी कर दी गई, ता० ९ तक धूप में सूखता रहा।

ता० १०/२ को उर्द के आटे का एक पतला लेपकर उस पर थोड़ा दुहरा सूत लपेट सूत के ऊपर एक पला लेप और कर शीशे के बकस में रख धूप में सूखने को रख दिया।

ता० ११ वा १२/२ को धूप में सूखता रहा।

ता० १३ को शीशे के बकस में रख धूप में सूखने को रख दिया, लेप चटक जाने के कारण शाम को दर्ज बंदी कर दी गई।

ता० १४ को सीरक मेंरखा रहा, शाम को दर्ज बन्दी कर दी।

ता० १५/२ को सवेरे तडखी हुई जगह पर बहुत हल्का लेप कर दिया, बाद को कढाई में जिसमें २० सेर तक तैल आ सकता था १० सेर कडुआ तैल भर उसमें उस गोले को डाल ९ बजे से भट्ठी पर आंच देना आरंभ किया जिसकी गर्मी निम्न लिखित नकशे के अनुसार दी गई:

नकशा

तारीख	घंटा	दर्जा गर्मी	विशेष वार्ता
१५/२/०८	९ बजे	+	आंच आरम्भ की गई
	१० बजे	११० नं०	
	१२ बजे	१८५ नं०	इसमें पूरी ठीक सिकी इस समय१मोटी लकड़ीकी आंचथी
	१२।। बजे	१४५ नं०	
	२ बजे	१३५ नं०	
	३ बजे	१५२ नं०	
	५ बजे	१६५ नं० १	पतली लकड़ी की आंच
	५।। बजे शाम	१९० नं०	
	७ बजे रात	१७० नं०	
	८बजे	१६५ नं०	
	९ बजे	१८७ नं०	
	१० बजे	१८७ नं०	
	१।।बजे रात		थरमेटरन डाला,गोला तेलके ऊपर तैर आया था
१६/२/०८	७ बजे प्रातः	१८७ नं०	
	९ बजे	२०८ नं०	
	१० बजे	२०८ नं०	
	११ बजे	२०५ नं०	
	१२।। बजे	२१४ नं०	इस समय १पूरी सेकी तो कल से कुछ जल्दी सिकी अर्थात् पूरी सिकते लायक तैलकी गर्मी काफीथी
	२ बजे	२१० नं०	
	३ बजे	२१० नं०	
	४ बजे	२१५ नं०	
	४।। बजे	२१५ नं०	
	५ बजे	२१२ नं०	
	७।।बजे रात	१८२ नं०	
	९ बजे	२०४ नं०	
	९।। बजे	२०५ नं०	
१ बजेरात	२२० नं०		
१७/२/०८	६ बजे दिन	२१० नं०	
	८ बजे	२१६ नं०	
	९ बजे	२१५ नं०	
	१० बजे	२२५ नं०	
	११ बजे	२२८ नं०	
	१बजे	२४० नं०	आज पूरीसेकी तो बहुत जल्दी सिकी
	२ बजे	२४० नं०	
	३ बजे	२२० नं०	
	४ बजे	२३० नं०	
	५ बजे	२१५ नं०	
	९ बजे	२२३ नं०	
	९।। बजे	२१२ नं०	
	२ बजे रात	२५० नं०	
१८/२/०८	८ बजे दिन	२३८ नं०	
	९ बजे	२३० नं०	
	१० बजे	२२० नं०	
	११ बजे	२३५ नं०	
	१२ बजे	२४० नं०	
	२ बजे	२३७ नं०	
	३ बजे	२३० नं०	
	४।। बजे	२२९ नं०	
	५ बजे	२३५ नं०	
	९ बजे	२२५ नं०	
	२बजे रात	२५५ नं०	
१९/२/०८	६ बजेप्रातः	२४२ नं०	
	८ बजे	२४२ नं०	
	९ बजे	२४५ नं०	
	१० बजे	२५० नं०	
	११ बजे	२४३ नं०	
	१२।। बजे	२४५ नं०	
	२ बजे	२५५ नं०	
	४ बजे	२४० नं०	
	७ बजे	२४८ नं०	
	२ बजे रात	२५० नं०	आज तैलपर मलाई पड़ गई थी
१९/२/०८	६ बजे प्रातः	÷	काम बंदकर दियागया

गोला तेल में पड़ते ही नीचे ही बैठ गया था, १० बजे तैल में थरमामेटर डाला तो ११० दर्जे की गर्मी थी, गोले पर झाग उठ रहे थे यानी सिक रहा था ११ बजे जब १ मोटी लकडी की आंच लग रही थी, और तेल में १८५ नं० की गर्मी थी तब उसमें एक पूरी सेकी तो भली भांति सिक गई, इस समय तैल की गंध तमाम कोठी में फैल रही थी, कढाई में झाग भी बहुत थे आहिस्ता आहिस्ता ये झाग कम होते गये १२।। बजे १४५ नं० की गर्मी थी २ बजे पर गर्मी और कम होकर १३५ नं० तक रह गई कारण कि इस समय १ पतली लकड़ी की आंच लग रही थी गोला इस समय पेंदे से अधर मालूम होने लगा था, आंच की गर्मी बढाई गई शाम के ५।। बजे १९० तक थी रात को भी करीब २ शाम की सी ही आंच लगती रही, १० बजे बाद थरमामेटर न डाला, गोला कुछ और अधर मालूम होने लगा, रात के १।। बजे तक गोला बिलकुल तैल के ऊपर पूरी की तरह सिकने लगा था, तैल घटा न दीख पड़ा।

१६/२ के ९ बजे से आंच की गर्मी और बढ़ाकर २०० से कुछ ऊपर तक कर दी गई १२।। बजे पर तैल में २१४ नं० की गर्मी थी तब एक पूरी सेकी तो कलीकी बनिस्वत जल्द सिकी गोला इस समय भी सिक रहा था और कुछ हलका होकर ज्यादः दीखने लगा था और स्वतः ही जब तब घूमने लगता था, किन्तु गोले के नीचे के भाग में बोझ अधिक होने से घूम चूककर ऊपर का नीचे न होता था ज्यों का त्यों नीचे का भाग नीचे और ऊपर का ऊपर रहता था, नीचे का भाग पककर काला हो गया था और ऊपर का भाग रुपये के बराबर कुछ सफेद सा दीखता था, रात के ९।। बजे तक करीब २ ऐसी ही आंच लगीं, १ बजे रात के २२० नं० की गर्मी मिली, गोला खूब सिक रहा था, कढाही में धूआं खूब निकल रहा था, तैल घटा न मालूम हुआ।

१७/२/०८ को तैल की गर्मी और बढ़ाकर २२५ तक कर दी गई थी १ बजे पर जब तैल की गर्मी २४० नं० थी तब पूरी को सेका तो बहुत जल्द सिकी, इस समय भी गोला सिक रहा था, तमाम कडाही में धूंआ उठ रहा था तैल का रंग काला पड़ गया था किन्तु घटा न था, रात को आंच ऐसी ही लगती रहीं, रात के २ बजे पर कुछ गर्मी बढ़कर २५० तक पहुंच गई थी

बाद को कुछ कम कर दी।

१८/२ को आंच की गर्मी २४० तक रखी गई, तैल में खूब धुआं उठता था, गोला अब बहुत कम सिकने लगा था, गोले के ऊपर का भाग जो सफेद था वह काला होकर सबका एक रंग हो गया था, रात के २ बजे पर २५५ नं० की गर्मी मिली, बाद को २५० से नीची रही।

ता० १९/२ को भी कल की सी ही तैल में गर्मी रखी गई, ८ बजे देखा तो तैल में धुआं कुछ अधिक उठता दीख पड़ा, १२॥ बजे तैल में जब २४५ नं० की गर्मी थी तब कडाही में से कलछी से थोड़ा तैल निकाल ठंढाकर देखा तो उसमें साधारण तैल की बनिस्बत गाढापन और चिपक बहुत बढ़ गई थी, और कडाई में कुछ घटा भी मालूम होता था रात के २ बजे देखा तो तेल में मोटी मलाई सी पड़ गई थी।

२०/२ के सबेरे ६ बजे तक ये मलाई और मोटी हो गई और तैल में बहुत झाग उठने लगे और फिर तैल अग्नि को न सह सका अर्थात् आंच देने से झाग एक साथ ऊपर को आते थे अतएव तैल के कढाई से बाहर निकल जाने के भय से ६ बजे काम बंद कर दिया और कढाई को गर्म चूल्हे पर रखी छोड़ दिया।

२१/२ को देखा तो तैल और अधिक गाढा शहद सा हो गया था, और ऊपर की मलाई भी और मोटी और चिपकनी हो गई थी, गोले को निकाल खोला तो अन्दर उसके केवल तेल ही निकला। जिसको निकाल रख दिया न पारद की गोली मिली न पारद पृथक् रूप में मिला या तो पारद उस तैल में मिला हुआ होगा जो गोले के अन्दर से निकला या पारद गोले के अन्दर से निकल कुल कढाई के तेल में मिल गया था या कढाई के तेल से भी निकल हवा में उड़ गया।

(१) नोट–अनुभव से ज्ञात हुआ कि तैल औटाने से बड़ी तीव्र गंध दूर तक फैलती है और २–३ दिन तक जब तक कि तैल खूब नहीं पक जाता रहती है फिर बंद हो जाती है।

(२) नोट–यह भी ज्ञात हुआ कि सर्षप तैल धीरे २ बढाकर २५० नं० तक अग्नि सह सकता है।

(३) नोट–गोले पर उर्द के आटे का लेप सूखने पर फटना ही जाता है इसलिये इसमें कच्चा तागा बारीक और कतरा हुआ मिला लिया जावे तो शायद न फटे।

रसों में घोट पारे की कच्ची गुटिका बनाने के अनुभव (मूषाकर्णी से)

२५/१०/०५ पारे को मूषाकर्णी के रस में (और कुछ पत्ते भी डाले गये) घोटा गया तो ३ घंटे में गाढा होने पर गोली बंध गई मगर कुछ देर घोटकर खुश्की आने पर पारा छुट गया, फिर रस डाल घोट मुलायम गोली बांध ली गई कुछ पारा फिर भी निकल आया, ये गोलियां धूप में सुखाई गई तो रोज पारा छूट छूटकर जुदा होता जाता था, इससे पूरी तरह साबित है कि जडी से गोली बंधना असंभव है सिर्फ बाजी जडी ऐसी है जिनके रस में पारा घोटने से मिल जाता है मगर सूखने से फिर जुदा हो जाता है।

(गेंदे के फूल से)

७/१२/०५ गेंदे के फूलों के रस में घोटने से पारद बहुत शीघ्र मिला परन्तु इकट्ठा और गाढा होने पर मूषाकर्णी की सी ही दशा हुई।

बबूलपुष्प से

आज ता० २०/८/०७ को पारे को बबूल के फूल और कलियों के सात लोहे के खरल में घोटा तो पहिले तो पारा मिल जाता था किन्तु घोटते में ही खुश्की आ जानेपर पारा पृथक् होने लगता था, अतएव पानीका छींटा देदेकर घोटा और तरीही की हालत में गोली बांधी तो बन्ध गई ये गोलियां आधी धूप में और आधी सीरक में सुखा दीं, शाम को देखा तो इन गोलियों के ऊपर पारे के रवे दीखते थें, वजन में ये गोलियां हलकी थी चूंकि इनमें पारे का अंश कम और फूलों का अधिक था।

ढाक की जड के रस से

२६/१०/०७ को ६ माशे पारद को खरल में डाल ढाक की जड़ की छाल का रस थोड़ा २ डाल ४ घंटे घोटा तो जब रस में कुछ गाढापन आता था तो पारद के रवे कुछ बिखर जाते थे किन्तु जब और अधिक गाढा हो जाता था, तो पारा इकट्ठा होने लगता था, बस और कोई विशेष बात पैदा न हुई, अन्त में पारे को धोकर निकाला तो ५ माशे ३ रत्ती पारा निकल आया, ५ रत्ती छीज गया।

नोट–इस क्रिया से पारद का मूर्च्छित होना संभव नहीं जान पड़ा।

केले के रस से

१४/१/०७ आज दो २ तोले पारे को केले के रस में १ प्रहर निरंतर मर्दन किया गया तो बारीक रवे होकर मिल गया परन्तु रात रखे रहने से रस सूख जाने पर खरल की, मूसली चलाते ही पारा फिर इकट्ठा हो गया और पूरा २ तोले निकल आया।

पारे को बांधना गंगाराम सुनार की क्रिया से

(जो निष्फल हुआ)

ता० ५/९/०८ को १ तोले संखिये को खरल में डाल बारीक कर २ तोले पारा उसमें डाल थोड़ी देर घोटा बाद को केले की एक गहर पकी हुई डाल तीनों चीजों को ९॥ बजे से घोटना आरम्भ किया, संखिया और पारा घोटने से न मिला, जब उसमें गहर पिस गई तब मिल गया किन्तु २–२ घंटे घुटने के बाद जब गाढा हुआ तो पारा पृथक् होने लगा तब फिर आधी गहर और डाल दी और २॥ घंटे और घोटा थोड़ी खुश्की आने पर थोड़ा थोड़ा पारा फिर पृथक् दीख प्रड़ा किन्तु वैसे को ही इकट्ठा कर लिया।

ता० ६ को ताम्र के छोटे संपुट में (जो तोल में २ तोले ४ माशे था) उस दवा में से आधी दवा (इस संपुट में इतनी ही समाई) को रस लोहे के तार से (जो पहले आंच में खूब तपा लिया था) कस उसकी संधि पर केवल मुलतानी लगा सुखा १॥ सेर आरने कंडों की आंच गर्त में दे दी, ३ घंटे बाद संपुट को निकाला तो आंच की तेजी से संपुट गल गया था एक और को एक छिद्र हो गया था ऊपर का तार पिघले हुए ताम्र में गड़ गया था, चोट से संपुट को खोला तो कोई सफेद चीज निचले संपुट में चिपकी हुई थी, जिसका संपुट से पृथक् करना कठिन हुआ, सुनार ने टाकी से निकाला तो २ माशे निकाला तो संपुट को तोला तो १ तोले २ रत्ती रह गया, ५ माशे ६ रत्ती घटा गंगाराम ने कहा अग्नि तीव्र लग जाने के कारण ठीक अनुभव न हो सका अत एव पुनः उक्त उसी सदृश दूसरे ताम्र संपुट में जो तोल में २ तोले ५ रत्ती था फिर उसी प्रकार तार से कस संधि पर मुलतानी लगा। १ सेर कंडों के दहेर की आंच दी, १॥ घंटे बाद निकाला तो ये संपुट भी एक ओर को थोड़ा गल गया था, खोला गया तो कोई श्वेत वस्तु उसमें चिपटी हुई मिली जो पतली पापड़ी सी थी, संपुट को उलटाकर झाडने से सब दवा निकल आई तोला गया ३ मा० ३ र० दवा निकली संपुट को तोला तो १ तोले ९ माशे ३ रत्ती हुआ ३ माशे २ रत्ती घट गया दोनों वार की निकली ५ माशे ३ रत्ती वस्तु में से ५ माशे को घरिया में रख सुहागा डाल १/२ घंटे धोंका तो तैंकर उसकी डली बन्ध गई उतार नीचे रखा तो घरिया में से धुँआ निकलने लगा बाद को पानी, डाल ठंढाकर उस डली को तोला तो ४ माशे २ रत्ती हुई, ६ रत्ती कम हो गई ये डली पारे की सी अर्थात् श्वेत रंग की की तोड़ने से भीतर भीतर जसदकी सी रंगत थी, इस डली को चोट दी तो टूट गई उसके ६ रत्ती को टुकड़े को पीस परीक्षा के लिये २० फीसदी शोरेके तेजाब और ८० फीसदी पानी से बने सोल्यूशन में डाल रख दिया तेजाब का रंग हरा हो गया तेजाब के नितारने पर कोई चीज न मिली

(अर्थात् सब हल हो गया)

ता० ८ को उक्त डली के २ माशे के टुकड़े को घरिया में रख १५ मिनट कडा धोंका तो गल गया गल जाने पर भी धोंका तो डली सी बन गई, उसको ठंडाकर घरिया में पृथक् करना चाहा तो न हो सकी अतएव जब फिर सुहागा डाल कडा धोंका तो फिर पिघल गया पिघल जाने पर उतार ठंडाकर घरिया से निकाल तोला तो १ माशे ५ रत्ती रह गई, ३ रत्ती घट गई अब इसकी रंगत में से सफेदी घट गई थी थोड़ा और धोंकने से बिलकुल ताम्र रह जाता अनुमान से इस १ माशे से अधिक ताम्र बैठेगा।

सम्मति—गंगाराम ने कहा कि मैं संखिये के योग से पारद को बांध दूंगा जो आंच पर चक्कर खायगा किन्तु फटक रहेगा, अनुभव से सिद्ध हुआ कि बहुत सा पारा उड़कर केवल थोड़ा पारा ताम्रयोग से संपुट में चिपटा रह जाता है जिसमें ताम्र का आधे से अधिक अंश रहता है, और उसीको ये गँवार बँधा पारद समझ लेते है, ये सुनार माल्दार था इसलिये इसकी बात पर विश्वास किया गया था, आगे से शास्त्रहीन पुरुषों की बात पर विश्वास नहीं करना चाहिये।

इति जैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासजेष्ठमल्लकृतायां
रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायां स्वानुभूतगुटिकादिनिरूपणं
नामाष्टात्रिंशोऽध्यायः ॥३८॥

रससेवनाख्यसंस्काराध्यायः ३९

प्रारम्भश्लोक

मूर्च्छां गतो यो हरते च रोगान्बद्धो यदा खेचरतामुपैति ॥ लीनो भवेत्सर्वसमृद्धिदायी विराजतेऽसौ नितरां रसेन्द्रः ॥१॥

(योगरत्नाकर)

अर्थ—मूर्च्छा को प्राप्त हुआ जो पारद सौ रोगों को नाश करता है और बंधन को प्राप्त हुआ पारद समस्त समृद्धि का दाता है, उस रसराज पारद की सदा सर्वदा जय होगी॥१॥

अन्यच्च

मूर्च्छित्वा हरति रुजं बंधनमनुभूय मुक्तिदो भवति ॥ अमरीकरोति हि मृतः कोऽन्यः करुणाकरः सूतात् ॥२॥

(यो० र०)

रसप्रशंसा

नौषधं पारदादन्यन्न देवः केशवात्परः । न वैद्यादपरो बंधुर्न दानादपरो विधिः ॥३॥

(र० रत्ना०)

अर्थ—पारद के अतिरिक्त और दूसरी कोई औषधि नहीं है और श्रीकृष्ण के भिन्न दूसरा देवता नहीं हे, वैद्य के सिवाय दूसरा कोई बन्धु नहीं है और दान देने के सिवाय दूसरी कोई विधि अच्छी नहीं है॥३॥

गुणसंख्या

तारे गुणाशीति तदर्धकान्ते वंगे चतुष्षष्टिरवौ तदर्धम् । हेम्नः शतैकं गगने सहस्रं वज्रे गुणाः कोटिरनंतसूते ॥४॥

(यो० चि०)

अर्थ—चांदी में अस्सी गुण, लोहे में चालीस, वंग में चौसठ तांबे में ३२, सुवर्ण में सौ अभ्रक में हजार, हीरे में एक करोड़, और पारद के अनंत गुण है॥४॥

पारदगुण

असाध्यो यो भवेद्रोगो यस्य नास्ति चिकित्सितम् ॥ रसेन्द्रो हंति तं रोगं नरकुञ्जरवाजिनाम् ॥५॥

(बा० बृ०)

अर्थ—मनुष्य, हाथी और घोड़े प्रभृति का जो असाध्य रोग है और जिसका कोई इलाज नहीं हो सकता उसको पारद शीघ्र ही नाश कर देता है॥५॥

अन्यच्च

शुष्केन्धनमहाराशिं यद्वद्दहति पावकः ॥ तद्वद्दहति सूतोऽयं रागान्दोषत्रयोद्भवान् ॥६॥

(रसमंजरी)

अर्थ—जिस प्रकार सूखे हुये इंधन के ढेर को अग्नि जला देती है उसी प्रकार यह पारद तीन दोषों के पैदा हुये रोगों को नाश कर देता है॥६॥

अन्यच्च

देहस्य शुद्धिं कुरुते च पारदो नानागदानां हरणे समर्थः ॥ करोति पुष्टिं हरते च मृत्युं कल्पायुषं चापि करोति नूनम् ॥७॥

(योगचिंता, नि० र०)

अर्थ—अनेक रोगों के नाश करने में समर्थ पारद मनुष्यों की देह की शुद्धि को करता है, पुष्टि को करता है मृत्यु को दूर करता है और एक कल्प तक आयु की वृद्धि करता है॥७॥

और भी

पारद विद्यावंत करि, सिद्धि भयो जो होय । सर्व रोग को जीत तन, पुष्ट करत है सोय ॥ तथा भलीविधितें करै, देह लोहको सिद्ध । पारद को जु प्रताप यह, बरन्यो मुनिन प्रसिद्ध ॥

(वैद्यादर्श)

पारद के गुण तथा अनुपान

पारदः सकलरोगपारदो राजयक्ष्मशरणैकपारदः । सर्वरोगमपहंति तत्क्षणान्नागवल्लिरसराजभक्षणात् ॥८॥

(नि० र०)

अर्थ—समस्त रोगों से पार करनेवाला और राजरोग का एक ही नाशकर्ता पारद पान के साथ भक्षण करने से समस्त रोगों को शीघ्र ही नाश करता है॥८॥

पारदगुणाः

पारदः सकलरोगहा स्मृतः षड्रसो निखिलयोगवाहकः । पंचभूतमय एष कीर्तितस्तेन तद्गुणैर्विराजते ॥९॥ (बै० कल्प० आ० वि० बृ० यो० र० सा० प० श० क० रा० नि० रसामृत)

अर्थ—सब रोगों का नाशक जिसमें छहों रस विद्यमान हैं, सब योगों का चलानेवाला यह पारद पांच महाभूतों का रूप वर्णन किया गया है इस कारण वह पारद उनके गुणों से विराजमान हो रहा है॥९॥

अन्यच्च

पारदः षड्रसः स्निग्धास्त्रिदोषघ्नो रसायनः । योगवाही महावृष्यः सदा दृष्टिबलप्रदः ॥ सर्वामयहरः प्रोक्तो विशेषात्सर्वकुष्ठनुत् ॥१०॥ (आ० बै० वि० व० बृ० भि० श० क०)

अर्थ—पारद छहों रसवाला, चिकना, त्रिदोषघ्न, रसायन, समस्त योगों में

खपनेवाला, महावृष्य, सदा नेत्रों के बल का दाता, समस्त रोगों का नाशक और विशेषकर कोढ़ का नाशक कहा है॥१०॥

पारद के सामान्य गुण–भाषा

पारद षट रसयुक्त है, चिकनो हरै त्रिदोष। करै रसायन कर्म अरु, कर पुष्ट तन पोष। करै दृष्टि को पुष्ट बल, योगवाहि गुन जान। मेलकरै सब रसनते, सर्व कुष्ठ करि हान ॥ (वैद्यादर्श)

अन्यच्च

रसायनं त्रिदोषघ्नं योगवाह्यतिशुक्रलम् । सूतभस्माखिलातंकनाशकं त्वनुपानतः ॥११॥

(नि० रं०)

अर्थ–पारद भस्म रसायन और त्रिदोष नाश कारक योगवाही वीर्य का बढानेवाला अनेक अनुपानों से सम्पूर्ण रोगों का नाशक है॥११॥

अन्यच्च

सकलामयजिद्रसायनः स्यात्कृमिकुष्ठाक्षिसमीररोगहारी । रसषट्कयुतोऽथ योगवाही रसराजो गदितः स पंचबाणकारी ॥१२॥

(र० प०)

अर्थ–पारा सब रोगों का जीतनेवाला और रसायन है, कृमि, कोढ, नेत्ररोग, और वातरोग का नाशकर्ता है। छहों रसों से मिला हुआ योगवाही (जो प्रत्येकयोग में मिलकर औषधि की शक्ति को बढावे) तथा कामदेव को उत्पादक है॥१२॥

अन्यच्च

पारदः कृमिकुष्ठघ्नौ जयदो दृष्टिकृत्सरः । मृत्युहृच्च महावीर्यो योगवाही जरापहः ॥१३॥ स्मृत्योजोरुपदो वृष्यो बुद्धिकृद्धातुवर्धनः । षंढत्वनाशनः शूरः खेचरः सिद्धिदः परः ॥१४॥

(वैद्यक, आयु, बे० वि० श० क०)

अर्थ–पारद कृमि कोढ का नाशक, विजय का दाता, नेत्ररोगों का नाशक और दस्तावर है। मृत्यु का हरनेवाला, महाताकतवर, योगवाही और बुढापे को दूर करनेवाला है। स्मृति (यादाश्त) ओज (सब शरीर से धातु को इकट्ठा करनेवाला पदार्थ) और रूप का दाता है, तथा वृष्य, बुद्धि और धातु का बढानेवाला है, नपुंसकता का नाशक और खेचरी सिद्धि का दाता है॥१३॥१४॥

मारित तथा मूर्च्छित पारद का सामान्य गुण

कुष्ठ हरै कृमिको, हरै मृत्युको जोग। जराजोर नाशन करै, दृष्टि देत नैरोग ॥ कह्यो योगवाही तथा, महासुवीर जवान। बुद्धि रूप अरु ओज को, वर्द्धित करै निदान। रसरक्तादिक धातु सब, तनमें करै हमेस। काम बढावै अरु करै, मोपै देह विशेष ॥ शूर विरताको करत, हरत षंढतागोत। खेचर गतिकी सिद्धता, प्रगट देह में होत ॥ मारित अथवा मूर्च्छित, पारद के गुन एह। सकल रोग हरिको करै, निर्मल अतिही देह ॥ पांच भूतमय जानिये, या पारदको रूप। ध्वस्त करै जयको करै, रण में सदा अनूप ॥ जो औषधि जा रोग की, हरता ताके संग। दे पारद नर गज तुरंग, रोग कीजिये भंग ॥

(वैद्यादर्श)

रसगुण

रसो रसगुणैर्युक्तः शोधितो भस्मसात्कृतः ॥ त्रिदोषशमनः कामवर्धनः सर्वरोगहृत् ॥१५॥ कामिनीदर्पदलनः सुधास्पर्धी सुवर्णकृत ॥ चक्षुष्यः स्मृतिदो बल्यो रूपदः कृमिकुष्ठहा ॥१६॥ जरामरणजाडच्यघ्नो योगवाही वरांगने ॥ दहत्यग्निस्तृणानीव धातुस्थानामयान्सः ॥१७॥

(अनु० तरं०)

अर्थ–शुद्ध तथा भस्म किया हुआ पारद छओं रसों से युक्त त्रिदोष को शान्त करनेवाला है, काम के बढानेवाला है, समस्त रोग तथा स्त्री के दर्प को नाश करता है, अमृत के साथ स्पर्धा करनेवाला और सुवर्ण के बनानेवाला होता है, नेत्रों के लिये हित है, स्मृति रूप और बल के देनेवाला है कृमि, कोढ, बुढापा, मृत्यु और जड़ता का नाश करनेवाला है। हे पार्वती जिस प्रकार अग्नि वास को जला देता है उसी प्रकार यह पारद धातुगत दोषों को नाश करता है॥१५–१७॥

अन्यच्च

सूतः षड्रसयुक् त्रिदोषशमनः सर्वामयध्वंसकृत् कान्ताकामविमर्दनोऽतिबलकृत्स्पर्द्धी सुधायाः शिवः । चक्षुष्यः स्मृतिरूपदो मरणाहृद्वार्धक्यजिद्बुद्धिकृत् षांढचघ्नः कृमिकुष्ठहाकनककृत्संयोगवाही सरः ॥१८॥

(र० सा० प०)

अर्थ–इस श्लोक का अर्थ उपरोक्त तीन श्लोकों के समान समझना चाहिये॥१८॥

रससेवनफल

रसवीर्यविपाकेषु विद्यात्सूतं सुधामयम् । सेवितोऽसौ सदा देहे रोगनाशाय कल्पते ॥१९॥ (रसमंजरी)

अर्थ–जिस प्रकार अमृत में रस, वीर्य और विपाक आदि गुण विद्यमान है, उसी प्रकार वे गुण पारद में भी उपस्थित है वह भक्षण किया हुआ पारद रोगों के नाश करने के लिये समर्थ है॥१९॥

अन्यच्च

बुद्धिः प्रज्ञा बलं कांतिः प्रभा चैव वयस्तथा वर्धते । सर्व एवैते रससेवाविधौ नृणाम् ॥२०॥

(रसमञ्जरी, रसेन्द्र सा० सं० रा० रा० सु०)

अर्थ–रससेवा करनेवाले पुरुष के बुद्धि, स्मृति, बल क्रान्ति और आयु ये सब बढ़ते हैं और बढते हुए वे सब आपस में एक दूसरे की स्पर्धा करते हैं॥२०॥

अन्यच्च

देहं जरावलीहीनं कांतियुक्तं महाबलम् ॥ सर्वरोगैः परित्यक्तं कुरुते रसनायकः ॥२१॥

(र० पा०)

अर्थ–रसनायक अर्थात् पारद मनुष्यों के देह को बुढ़ापे से रहित, कांतियुक्त अत्यन्त बलवान् और सब रोगों से रहित करता है॥२१॥

अन्यच्च

वलीपलितनिर्मुक्तो मृत्युहीनो भवेन्नरः ॥ जायते मन्मथाकारो नरोपि प्रमदारतः ॥२२॥ रसायने हि निर्दिष्टं प्रायशो रससेवने ॥ बुद्धिप्रजाबलं कांतिं प्रभावेण यथा बहिः ॥२३॥ वर्द्धन्ते सर्व एवैते रससेवाविधौ नृणाम् ॥ आरोग्यं लघुता सौष्ठचं रुचिर्गुर्वन्नजीर्णता ॥ रोगनाशश्च वृष्यश्च सततं रससेवनात् ॥२४॥

(र० रत्ना०)

अर्थ–मनुष्य पारद के सेवन करने से बली और पलित करके रहित होता है, मृत्यु करके रहित होता है, स्त्रियों का प्यारा, कामदेव के समान रूपवाला होता है, प्रायः रस सेवन करने से मनुष्यों की बुद्धि, प्रजाबल, कांति ये सब बढते हैं और वह सूर्य के समान प्रभाववाला होता है और पारद के सेवन से शरीर की नीरोगता, फुर्ती, सुन्दरता होती है तथा रुचि, गुरु पदार्थ का जीर्ण (हज्म) होना, रोग का नाश और शरीर में अनंतबल होता है॥२२–२४॥

सदोष पारदसेवन निषेध

सदोषं सूतकं चैव दापयेन्न कदाचन । तैर्युक्तं रोगसंघातं कुरुते मरणादिकम् ॥२५॥

(र० पा०)

अर्थ–दोषसंयुक्त पारद को कभी नहीं दिवावे क्योंकि उन दोषों से मिला हुआ पारद रोगों के समूह तथा मृत्यु प्रभृति को भी करता है॥२५॥

अन्यच्च

अशुद्धसूतो न गुणान्विदध्याद्दद्याद्विदाहक्रिमिकुष्ठरोगान् ॥ मंदत्वमग्नेररुचिं वमिं च जाड्यं मृतिं तन्वति सेवतां चेत् ॥२६॥

(र० पा०)

अर्थ–अशुद्ध पारद गुण नहीं करता है, परन्तु विदाह, कृमि, कोढ, रोगों को करता है। अग्नि की मंदता, अरुचि, वमन और मृत्यु को भी करता है॥२६॥

अन्यच्च

संस्कारहीनं खलु सूतराजं यः सेवते तस्य करोति बाधाम् ॥ देहस्य नाशं विदधाति नूनं कुष्ठान्समग्रान्जनयेन्नराणाम् ॥२७॥ (यो० चिं० र० सुं० वाच० बृ० नि० र० श० क०)

अर्थ–जो मनुष्य विना संस्कृत (शुद्ध) किये हुए पारे को भक्षण करते हैं पारद उनके शरीर में दुःख को करता है, देहको नाश करता है और कुष्ठ आदि समस्त रोगों को करता है॥२७॥

किन २ चीजों से बद्धपारद को रसायन और कल्प में त्यागे

नागवंगादिभिर्बद्धं विषोपविषबंधितम् ॥ मूत्रशुक्रहठाद्बद्धंत्यजेत्सूतं रसायने ॥२८॥ (र० चि० नि० र० टो० नं०)

अर्थ–सीसे तथा राँग आदि से बँधे हुए विष और उपविष से बंधे हुए, मूत्र तथा वीर्य से हठात् (जबरन) बँधे हुए पारद को रसायन कर्म में त्याग देवे॥२८॥

शुद्धपारदगुण

शुद्धः स्मृतस्सर्वरोगापहर्ता संयोगवाही वृषवह्निकर्ता ॥ स शुद्धिमायाति यथा यथायं तथा तथा यात्यमृतत्वमेतत् ॥२९॥ (र० प०)

अर्थ–शुद्ध किया हुआ यह पारद सब रोगों को नाशक, योगवाही और अग्नि का कर्ता और वह पारद जितना २ शुद्ध किया जायगा उतना उतना ही अमृत के समान होता है॥२९॥

मृत और मूर्च्छित पारदफल

शुद्धः स्यात्सकलामयौघशमनो यो योगवाहो मृतः ॥ युक्त्या षड्गुणागंधयुग दहरो योगेन धात्वादिभुक् ॥३०॥

(योगरत्ना०)

अर्थ–शुद्ध पारद संपूर्ण रोगों का नाश कर्ता है, मृत पारद योगवाही होता है और युक्ति से षड्गुण गंधकजारित पारद बुभुक्षित और मृत्युनाशक होता है॥३०॥

अन्यच्च

जरामरणदारिद्र्यरोगनाशकरो मृतः ॥ मूर्च्छितो हरते व्याधीन रसो देहे चरन्नपि ॥३१॥ (र० रत्ना०)

अर्थ–मृत पारद बुढापा, मौत और दरिद्रतारूपी रोग को शीघ्र ही नाश करताहै और इस देह में खाया हुआ मूर्च्छित पारा सब रोगों को नाश करता है॥३१॥

पारद की मूर्च्छितादि ३ दशाओं का फल

मूर्च्छितो हरते व्याधिं बद्धः खेचरतां व्रजेत् ॥ सर्वसिद्धिकरो नीलो निश्चलो मुक्तिदायकः ॥३२॥

(यो० चि०)

अर्थ–मूर्च्छित पारद व्याधिको नाश करता है, बद्ध खेचरी गति को देता है और मृत सर्वसिद्धि का दाता है तथा यही पारद चंचलता रहित हुआ मुक्ति को देता है॥३२॥

अन्यच्च

मूर्च्छार्तो गदहृत्तथैव खगतिं दत्ते निबद्धोर्थदस्तद्भस्मामयवार्धकादिहरणं दृक्पुष्टिकांतिप्रदम् ॥ वृष्यं मृत्युविना शनं बलकरं कान्ताजनानन्ददं शार्दूलातुलसत्त्वकृत्क्रमभुजां योगानुसारि स्फुटम् ॥३३॥ (र० रा० सुं० नि० र० यो० र० र० रा० सुं०)

अर्थ–मूर्च्छित पारद रोग का नाशक और बद्ध हुआ पारद आकाश गति तथा अर्थ का दाता है और उसी पारद की भस्म रोग, बुढापे को नाश करनेवाली है तथा नेत्रों में पुष्टि और क्रान्ति को देती है तथा यह पारदभस्म वृष्य, मृत्यु का नाश करनेवाली, बल कर्ता, स्त्रीजनों को आनन्द की दाता, शेर के समान पुरुषार्थ को देनेवाली और योगवाही है॥३३॥

अन्यच्च

मारितो देहसिद्ध्यर्थं मूर्च्छितो व्याधिनाशने ॥ रसभस्म क्वचिद्रोगे देहार्थे मूर्छितं क्वचित् ॥ बद्धो द्वाभ्यां प्रयुंजीत शास्त्रदष्टेन कर्मणा ॥३४॥

(रसमंजरी, र० सा० प०)

अर्थ–देहसिद्धि के लिये मारित पारद है, और मूर्च्छित पारद रोग के नाश करने के लिये हैं अथवा कहीं रोग नाश के लिये रसभस्म का तथा देहसिद्धि के लिये मूर्च्छित पारद का भी प्रयोग करते हैं और शास्त्र का ज्ञाता वैद्य रोगनाश और देहसिद्धि इन दोनों के लिये बद्ध का प्रयोग करे तो भी उत्तम है॥३४॥

मूर्छितादि तीन दशाओं का प्रयोग

मूलिकामारितं सूतं सर्वरोगेषु योजयेत् ॥ जारितो मारितः सूतो जरादारिद्र्यरोगनुत् ॥३५॥ मूर्च्छितो व्याधिनाशाय बद्धः सर्वत्र योजयेत् ॥३६॥ (र० रत्नाकरः)

अर्थ–जड़ी बूटियों से मारे हुए पारे को समस्त रोगों में देना चाहिये तथा जारित फिर मारित पारद बुढ़ापे दरिद्रता और रोगों को दूर करनेवाला है मूर्च्छित व्याधियों के नाश के लिये है और बद्ध पारद का सब जगह प्रयोग किया जाता है॥३५॥३६॥

कैसा मूर्छित व्याधिनाशक और कैसा मृत आयुप्रद है

शुद्धः समृद्धाग्निसहो मूर्च्छितो व्याधिनाशनः ॥ निष्कंपवेगस्तीव्राग्निमायुरा–रोग्यदो मृतः ॥३७॥

(र० र० स०)

अर्थ–शुद्ध और अग्नि को सहन करनेवाला पारद मूर्च्छित होकर व्याधि का नाश करनेवाला है, तेजरहित पारद मृत होकर आयु और आरोग्य देता है॥३७॥

सम्मति–जब पारद में अभ्र जीर्ण होता है तब वह क्या और वेगरहित होता है यही बात ध० सं० के अभ्रकजीर्ण के लक्षण में लिखी है (निष्कम्पो गतिरहितो विज्ञातव्योऽभ्रजीर्णस्तु[१])

१–(स्मरणीयम्) कपिलोथ निरुद्गारी विप्लुषभावं स मुंचते सूतः । निष्कम्पो गतिरहितो विज्ञातव्योऽभ्रजीर्णस्तु ॥ (ध० सं०)

क्षेत्रीकरणानन्तर जारित पारदसेवन

घनहेमादिलोहजीर्णस्य भक्षणं कृतक्षेत्रीकरणानामेव शरीरिणां भक्षणेऽधिकार इत्यभिहितम् ॥३८॥

(र० चि० बृ० यो०)

अर्थ–जिन मनुष्यों के शरीर का क्षेत्रीकरण हो गया है वे ही मनुष्य अभ्रक सुवर्ण और अन्यधातु जारित पारद को भक्षण कर सकते हैं और नहीं॥३८॥

अन्यच्च

घनसत्त्वपादजीर्णोऽर्द्धक्रान्तजीर्णश्च तीक्ष्णसमजीर्णः क्षेत्रीकरणाय रसः प्रयुज्यते भूय आरोग्याय ॥३९॥ योऽग्निसहत्वं प्राप्तः स जातो हेमतारकर्ता च बद्धो रसश्च भुक्तो विधिना सिद्धिप्रदो भवति ॥४०॥

(र० चिं० र० रा० शं० र० सा० प० नि० र०)

अर्थ–प्रथम क्षेत्रीकरण के लिये आरोट रस को भक्षण करे फिर चौथाई भाग जीर्ण, अर्धभाग वैक्रान्त जीर्ण और सम भाग तीक्ष्ण (फौलाद) जीर्ण पारद को भक्षण करे और जो अग्नि को सहन करनेवाला हो और जो स्वर्ण चांदी को बनाता हो और जो बद्ध हो वही पारद विधिपूर्वक भक्षण किया हुआ सिद्धि का दाता होता है॥३९॥४०॥

हेमादिजीर्णभेद से रसभस्मफल

हेमजीर्णो भस्मसूतो रुद्रत्वं भक्षितो दहेत् ॥ विष्णुत्वं तारजीर्णस्तु ब्रह्मत्वं भास्करेण तु ॥ सामान्येन तु तीक्ष्णेन शक्रत्वं प्राप्नुयान्नरः ॥४१॥

(र० सा० प०)

अर्थ–स्वर्णजारित पारद की भस्म के भक्षण करने से मनुष्य शिवरूप को प्राप्त होता है और तारजीर्ण पारद की भस्म विष्णु रूप को प्राप्त करती है तथा ताम्रजीर्ण पारद की भस्म ब्रह्म के रूप को देती है और सम भाग फौलाद से जारित पारद की भस्म इन्द्रपन को प्राप्त कर देती है॥४१॥

स्वर्णजीर्ण पारदभस्म का फल

भस्मनो हेमजीर्णस्य लक्षायुः पलभक्षणात् ॥ विष्णुरुद्रशिवत्व च द्वित्रिचतुर्भिराप्नुयात् ॥४२॥

(र० चिं० र० रा० शं० नि० र० र० सा० प०)

अर्थ–एक पल स्वर्ण जारित पारद के सेवन करने से मनुष्य एक लक्षवर्ष जी सकता है, दो पल सेवन करने से विष्णुपन को, तीन पल सेवन करने से रुद्रपन को और चार पल सेवन करने से शिवत्व को प्राप्त होता है॥४२॥

तीक्ष्णजीर्ण पारद भस्म का फल

भस्मनस्तीक्ष्णजीर्णस्य लक्षायुः पलभक्षणात् ॥ एवं दशपलं भुक्त्वा तीक्ष्णजीर्णस्य मानवः ॥ तदा जीवेन्महाकल्पं प्रलयान्ते शिवं व्रजेत् ॥४३॥

(र० चिं० नि० र० र० सा० प०)

अर्थ–जो मनुष्य एक पल तीक्ष्णजारित पारद भस्म को सेवन करता है वह एक लक्ष वर्ष तक जीता रहता है फिर दश पल और सेवन करने से महाकल्पतक जीवित रह सकता है और वह अन्त में शिवरूप को प्राप्त होता है॥४३॥

ताम्रजीर्णपारदभस्म का फल

भस्मनः शुल्बजीर्णस्य लक्षायुः पलभक्षणात् । कोट्यायुर्बाह्ममायुष्यं वैष्णवं द्वजीवितम् ॥४४॥ द्वित्रिचतुःपंचषष्ठे महाकल्पायुरीश्वरः ॥४५॥

(र० चिं० र० रा० शं० नि० र० र० सा० प०)

अर्थ–ताम्रजीर्ण पारदभस्म के १ पल सेवन से मनुष्य लक्षायु होता है, दो पल सेवन करने से कोटि वर्ष की आयु होती है और चार पल सेवन करने से विष्णुपन को प्राप्त होता है तथा पांच पलके सेवन करने से रुद्रपन को, छः पल के सेवन करने से ईश्वर के समान महाकल्पायु होता है॥४४॥४५॥

हेमादिजीर्णपारदसेवनमान की परमावधि

हेमजीर्णे भस्मसूते त्रिपले भक्षिते क्रमात् ॥ क्षयकुष्ठं प्रमेहार्शोग्रहणीं च जयेत्तया ॥४६॥ ज्वरं च बहुवर्षोत्यं जयेद्दीर्घायुषं नयेत् ॥ एवं च द्वादश पलं तीक्ष्णजीर्णं च भक्षयेत् ॥४७॥ चतुष्पलं शुल्बजीर्णं तारजीर्णं तथैव च । वज्रवैक्रान्तजीर्णं च शक्तिमात्रं च भक्षयेत् ॥४८॥

(टो० नं०)

अर्थ–सुवर्णजारित पारद भस्म के ३ पल भक्षण करने से मनुष्य क्षय, कोढ, प्रमेह, बवासीर, और संग्रहणी को तथा बहुत वर्षो से उत्पन्न ज्वर को भी जीत लेता है इसी प्रकार तीक्ष्ण जीर्ण पारद को बारह पल भक्षण करे और ताम्रजारित पारदभस्म के चार पल और चार पल ही तारजारित पारद भस्म को खावे वज्र और वैक्रान्त जारित पारद भस्म के दो कर्ष भक्षण करे॥४६–४८॥

पारदसेवन

अथ सेवनकं कर्म पारदस्य निरूप्यते । यत्नेन सेवितः सूतः शास्त्रमार्गेण सिद्धिदः ॥ अन्यथा भक्षितश्चैव विषवज्जायते नृणाम् ॥४९॥

(ध० सं०)

अर्थ–अब पारद के सेवन कर्म को वर्णन करते हैं–शास्त्र की विधि से यत्नपूर्वक सेवित किया हुआ पारद सिद्धि का दाता है और शास्त्र रीति के अतिरिक्त सेवन किया हुआ पारद मनुष्यों के विष तुल्य होता है॥४९॥

रसवैद्यलक्षण

धर्मिष्ठः सत्यवादी स्यात् शिवकेशवपूजकः । सदयः पद्महस्तश्च रसवैद्यः श्रियाऽन्वितः ॥५०॥

(र० सा० प०)

अर्थ–रसशास्त्र का प्रवर्तक वैद्य लक्ष्मीवान् धर्मात्मा सत्यवादी शिव विष्णु का पूजक, दयावान् और कमलहस्त होना चाहिये॥५०॥

सेवन अयोग्य पुरुष

न योज्यो मर्मणि च्छिन्ने न च क्षाराग्निदग्धयोः ॥५१॥

(र० र० स०)

अर्थ–और जिस पुरुष का मर्मस्थान कट गया हो तथा क्षार और अग्नि से जल गया हो उस पुरुष को पारद का सेवन करना मना है॥५१॥

किस अवस्था में रस सेवन करना

कुमारे तरुणे वृद्धे सदा योज्यं रसायनम् । वृद्धत्वेऽपि बले योज्यमशीत्यूर्ध्वं न कर्हिचित् ॥५२॥

(र० सा० प०)

अर्थ–कुमार, तरुण और वृद्ध मनुष्य इन सबको रसायन देना चाहिये और बुढापे में भी अस्सी वर्ष के पश्चात् बल के लिये कभी सेवन न करै॥५२॥

अन्यच्च

पूर्वे वयसि मध्ये वा तत्प्रयोज्यं जितात्मनः । दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरुणं वयः ॥५३॥ प्रभावर्णस्वरौदार्यं देहेन्द्रियबलोदयम् । वाक्सिद्धिं निर्वृतिं

कान्तिमवाप्नोति रसायनात् ॥५४॥

(र० सा० प०)

अर्थ–किस अवस्था में रसायन को सेवन करना चाहिये इस बात पर वाग्भट्ट का प्रमाण देते हैं–पूर्वावस्था में अथवा युवावस्था में जितेन्द्रिय मनुष्य को पारदसेवन कराना चाहिये क्योंकि पारदसेवन करनेवाले मनुष्य की दीर्घायु, स्मृति, मेधा, आरोग्य, तरुणअवस्था, प्रभावर्ण, स्वर, उदारता, और देह इन्द्रिय तथा बल का उदय, वाणी की सिद्धि इनको प्राप्त होता है॥५३॥५४॥

पारद को विधिपूर्वक सेवन करें

अमृतं च विषं प्रोक्तं शिवेन च रसायनम् ॥ अमृतं विधिसंयुक्तं विधिहीनं तु तद्विषम् ॥५५॥

(र० चिं० रा० रा० शं०)

अर्थ–श्रीमहादेवजी ने विष (वत्सनाभ) और अमृत (पारद) इन दोनों पदार्थों को रसायन कहा है क्योंकि विधिपूर्वक सेवन करे तो वह अमृत है और विधिरहित सेवन किया हुआ अमृत भी विष है॥५५॥

क्षेत्रीकरण की अत्यावश्यकता

अक्षेत्रीकरणे भुक्तोऽप्यमृतोऽपि विषं भवेत् ॥ फलसिद्धिः कृतस्तस्य सुबीजस्योषरे यथा ॥५६॥ कर्तव्यं क्षेत्रकरणं सर्वस्मिंश्च रसायने ॥ नाक्षेत्रकरणाद्देवि किंचित्कुर्याद्रसायनम् ॥५७॥

(रस० शं०, र० सा० प० र० चिं०)

अर्थ–क्षेत्रीकरण के बिना भक्षण किया हुआ यह अमृत (पारद) भी विष के तुल्य होता है जिस प्रकार ऊसर धरती में बोये हुये बीज का कुछ फल नहीं होता है इसलिये हे पार्वती सब रसायनों के सेवन करने के लिये क्षेत्रीकरण करने की आवश्यकता है सो अवश्य करना चाहिये॥५६॥५७॥

अन्यच्च

रेचनान्त इदं सेव्यं सर्वदोषापनुत्तये ॥ मृताभ्रं भक्षयेन्मासमेकमादौ विचक्षणः ॥५८॥ (र० चिं० र० रा० शं०)

अर्थ–जो मनुष्य अपने समस्त रोगों को नाश करने के लिये इच्छा करता है। वह प्रथम जुलाब लेवे फिर एक मास तक अभ्रक का सेवन कर फिर उस पारद को भक्षण करे इसी को क्षेत्रीकरण कहते हैं॥५८॥

क्षेत्रीकरण के लिये पंचकर्म की आवश्यकता

पंचकर्म पुरा कृत्वा पश्चात्सकलदेहिनाम् ॥ योजनीयो रसो दिव्यः शीघ्रं सिद्धिमवाप्नुयात् ॥५९॥

(र० शं० र० सा० प०)

अर्थ–प्रथम पांच कर्मों को करके फिर समस्त मनुष्यों को उत्तम रस दे दो शीघ्र ही सिद्धि होती है॥५९॥

अन्यच्च

पंचकर्म च यत्नस्थैः सुकुमारैर्नरैरिह ॥ रेचनांत इदं सेव्यं सर्वदोषापनुत्तये ॥६०॥ (र० रा० शं० र० सा० प०)

अर्थ–जो सुकुमार पंच कर्मो से घवड़ाये हुये हैं वे केवल जुलाब लेकर ही पारद को सेवन करे तो शरीर के सब दोष दूर हो जाते हैं॥६०॥

पंचकर्म के अयोग्य पुरुष

नवज्वरेऽतिसारे च गर्भिणीबालवृद्धयोः ॥ न कुर्यात्पंच कर्माणि रक्तस्रावणदाहनम् ॥६१॥

(र० शं० र० सा० प०)

अर्थ–नवज्वर में, अतीसार में, गर्भावस्था में, बाल और वृद्धावस्था में पंच कर्म तथा रक्त स्रावण (फस्तः वगैरः खुलवाना) न करे क्योंकि उससे दाह पैदा होती है॥६१॥

क्षेत्रीकरण के लिये पंचकर्मनाम

पाचनं स्नेहनं स्वेदं वमनं च विरेचनम् ॥ एतानि पंचकर्माणि ज्ञातव्यानि भिषग्वरैः ॥६२॥

(र० सा० प० र० रा० शं०)

अर्थ–पाचन, स्नेहन, स्वेदन, वमन और रेचन इनको वैद्यराज पंचकर्म कहते हैं॥६२॥

क्षेत्रीकरण के लिये वमनविधि

निंबक्वाथं भस्मसूतं वचाचूर्णयुतं पिबेत् ॥ पित्तान्तं वमनं तेन जायते क्लेशवर्जितम् ॥६३॥ (र० चि०)

अर्थ–नीम के क्वाथ में पारद भस्म तथा वचका चूर्ण मिलाकर पीवे तो ऐसी वमन होती है कि अंत में पित्त निकलने लगता है और वह मनुष्य दुःख रहित हो जाता है॥६३॥

क्षेत्रीकरण

वमनं रेचनं पूर्वं शुद्धदेहः समाचरेत् ॥६४॥

(र० सा० प०)

अर्थ–देह को शुद्ध करके प्रथम रेचन (दस्त) करावे फिर वमन करावे तब क्षेत्रीकरण होता है॥६४॥

अन्यच्च

आदौ विरेचनं कृत्वा पश्चाद्वमनमाचरेत् । ततो मृताभ्रं भक्षेत् पश्चात्सूतस्य सेवनम् ॥६५॥ सम्यक् सूतवरं शुद्धं देहलोहकरं मुदा । सेवनः सर्वरोगघ्नः सर्वसिद्धिकरो भवेत् ॥६६॥

(धं० सं०)

अर्थ–प्रथम विरेचन करावे, फिर वमन करावे, उसके बाद अभ्रक भस्म को भक्षण करे, तदनंतर उस पारद को भक्षण करे जो कि शुद्ध देह और लोह को उत्तम बनानेवाला रोगों का नाशक और सर्वसिद्धि का दाता है॥६५॥६६॥

अन्यच्च

प्रथमं मारयेदभ्रं शास्त्रोक्तं सुपरीक्षितम् ॥ पश्चात्तं योजयेद्देह सूतकं तदनन्तरम् ॥६७॥ गुंजाद्वयं समारभ्य यावन्माषद्वयं भवेत् ॥ क्षेत्रमेवं भवेद्देहे सूतवीर्यप्रसाधकम् ॥६८॥ अक्षेत्रे योजितः सूतो न प्ररोहेत्कदाचन ॥६९॥ (टो० नं०, र० रा० सुं०)

अर्थ–प्रथम अच्छी तरह परीक्षा किये हुए अभ्रक को शास्त्रोक्त रीति से भस्म करे फिर उसको भक्षण करे, तदनंतर दो रत्ती से लेकर एक मास तक पारद भस्म का सेवन करे, इस विधि को क्षेत्रीकरण कहते हैं। यह क्षेत्रीकरण पारद की शक्ति का दाता है और क्षेत्रीयकरण के बिना प्रयोग किया हुआ पारद अच्छी प्रकार फल नहीं देता है॥६७॥६९॥

क्षेत्रीकृत का लक्षण

स्निग्धं स्निग्धविरिक्तं यन्नीरुजं सिद्धभेषजैः ॥ एतत्क्षेत्रं समासेन रसबीजार्पणक्षमम् ॥७०॥

(र० चिं०, र० सा० शं, र० सा० प०)

अर्थ–स्निग्ध (घृत और सैंधव का तीन दिन तक पान करना) फिर स्निग्ध (कपड़ा या पुटवह्नि से) विरिक्त अर्थात् जो इच्छाभेदी और नाराचादि रसों से जुलाब लिया हुआ तथा अन्य औषधियों से जो शरीर नीरोग हो गया है वह क्षेत्रीकरण पारद रूप बीज के बोने योग्य होता है॥७०॥

क्षेत्रीकरणानन्तर सेवनफल

क्षेत्रीकृतनिजदेहः कुर्वात रसायनं मतिमान् । विधिना पथ्यविधानादमरतुल्य देहः स्यात् ।।७१।।

(र० सा० प०, र० रा० श०)

अर्थ–अपने शरीर का क्षेत्रीकरण करके फिर बुद्धिमान् मनुष्य रसायन का सेवन करे और उस पर विधिपूर्वक पथ्य करे तो देवताओं के समान सुन्दर शरीरवाला होता है।।७१।।

बिना क्षेत्रीकरण पारदप्रयोग वर्जन

अकृते क्षेत्रीकरणे रसायनं यो नरः प्रयुंजति ।। तस्य क्रामति न रसः सर्वांगे दोषकृद्भवति ।।७२।।

(र० चिं०, र० रा० शं०, र० सा० प०)

अर्थ–बिना क्षेत्रीकरण किये हुए शरीर में जो मनुष्य रसायन का प्रयोग करते हैं, उनके शरीर में पारद आक्रमण नहीं करता। प्रत्युत दोष को ही पैदा करता है।।७२।।

सेवनप्रकार

अथातुरो रसाचार्यं साक्षाद्देवं महेश्वरम् । साधितं च रसं श्रृङ्गदन्तवेण्वादि–धारितम् ।।७३।। अर्चयित्वा यथाशक्ति देवगोब्राह्मणानपि । पर्णखंडे धृतं सूतं जग्ध्वा स्यादनुपानतः ।।७४।।

(र० र० स०, र० सा० प०)

अर्थ–अब रोगी साक्षात् श्रीमहादेवजी की तरह रसाचार्य की तथा सिद्ध किये हुए सींग, दन्त (दांत के बने हुए पदार्थ, वेणु (बांस के बने हुए पदार्थ) इनमें अर्थात् कांच के बने हुए पदार्थो में रखे हुये पारद की पूजा करकेऔर यथाशक्ति देवता, गौ और ब्राह्मणों के पूजनकर फिर से पत्र पर रखे हुए पारद को अनुपान से खाकर पथ्य करे तो सब रोगों से रहित होता है।।७३।।७४।।

रससेवनमात्रा

यावन्मानेन लोहस्य गद्याणे१ वेधकृद्रसः ।। तावन्मानेन देहस्य भक्षितो रोगहा भवेत् ।।७५।। राजिका तिलकंगुश्च सर्षपा मुद्गमाषकौ ।। रक्तिका चणको वाथ वल्लमात्रो भवेद्रसः ।। एषा मात्रा रसे प्रोक्ता रसकर्मविशारदैः ।।७६।। (ध० सं०)

अर्थ–चौसठ रत्ती लोहे में जितना पारद वेधकारक होता है, उतने ही पारद को भक्षण करने से देह का सब रोग नाश होता है। रसकर्म के ज्ञाता वैद्यों ने राई, तिल, कंगुनी, सरसों, मूंगा, उर्द, रत्ती, चना और वल्ल (तीन रत्ती), इनकी बराबर रस की मात्रा कही है।।७५।।७६।।

अन्यच्च

रसेन्द्रं सेवयेन्नित्यं चतुर्गुंजाप्रमाणतः ।। आज्येन मरिचैः साकं सेवयेच्च रसेश्वरम् ।।७७।।

(नि० र०)

अर्थ–रोगी मनुष्य ४ रत्ती के प्रमाण से घी और मिरच के साथ पारद का सेवन करे।।७७।।

रसमात्रामान

गुंजैकमात्रं तु नरस्य युज्यते गंद्याणकं प्रोक्तमजादिपुंगवे । गंद्याणसार्द्धं करिपुंगवेषु देयं सदा व्याध्यनुपानयोगात् ।।७८।।

(टो० नं०)

अर्थ–मनुष्य को सिद्ध रस की एक गुंजा, घोड़ा आदि को ६४ रत्ती, हाथी को ९२ रत्ती रोग के अनुपान के अनुसार सर्वदा सेवन करना चाहिये।।७८।।

अन्यच्च

वल्लमेकं नरेऽश्वे तु गंद्याणैकं गजे द्वयम् । सर्वरोगविनाशार्थं भिषक् सूतं प्रयोजयेत् ।।७९।।

(र० रा० सं० र० रा० शं० र० सा० प०)

अर्थ–वैद्य समस्त रोगों के नाश करने के लिये मनुष्य को ३ रत्ती, घोडे को ६४ रत्ती और हाथी को १२८ रत्ती अर्थात् १ तोले ४ माशे पारद का सेवन करावे।।७९।।

भक्षणमात्रा अनुपान आदि

गुंजैकमात्रं देवेशि ज्ञात्वा चाग्निवलं निजम् । घृतेन मधुना सार्द्धं ताम्बूलं कामिनीं त्यजेत् ।।८०।। दिनमकान्तरं कृत्वा निर्विघ्नं योजयेद्रसम् ।।८१।।

(टो० नं० र० चिं०)

अर्थ–श्रीमहादेवजी कहते हैं कि हे पार्वती! मनुष्य अपने अग्नि के बल को देखकर घी या शहद के साथ स्वर्ण जीण पारद को सेवन करे, पान तथा स्त्री का परित्याग करे और एक दिन अन्तर से निर्विघ्न पारद का सेवन करना चाहिये।।८०।।८१।।

हेमजीर्णरस मात्रामान

गुंजामात्रं रसं देवि हेमजीर्णं तु भक्षयेत् ।। द्विगुंजं तारजीर्णं स्याद्रविजीर्णस्य च त्रयम् ।।८२।। तीक्ष्णाभ्रकान्तजीर्णं तु गुंजैकैकं तु भक्षयेत् ।। वज्रवैक्रान्तजीर्णं तु भक्षयेत्सर्षपोपमम् ।।८३।।

(नि० र० टो० नं० र० सा० प० र० चिं० रा० रा० शं०)

अर्थ–हे पार्वती! स्वर्ण जीर्णपारद की एक रत्ती मात्रा को भक्षण करे तारजीर्ण की दो रत्ती, ताम्रजीर्ण की तीन रत्ती, तीक्ष्ण (फौलाद) हीरा और वैक्रान्त जीर्ण पारद की एक सरसों के समान मात्रा है।।८२।।८३।।

घनसत्त्वादिजीर्ण रसमात्रामान

घनसत्त्वकान्तताम्रशंकरतीक्ष्णादिजीर्णस्य । सूतस्य गुञ्जवृद्ध्या माषकमात्रं परा मात्रा ।।८४।।

(र० चिं० र० रा० शं० र० रा० सुं०)

अर्थ–अभ्रकसत्त्व, कांत, ताम्र, तीक्ष्ण आदि जीर्ण पारद की साधारण रीति से एक रत्ती की मात्रा है और अधिक से अधिक एक माशा मात्रा हो सकती है।।८४।।

रसमात्रा का घटाव बढाव

मात्रा वृद्धिः कार्या तुल्यायामुपकृतौ क्रमाद्विदुषा । मात्राह्रासः कार्यो वैगुण्ये त्यागसमये च ।।८५।।

(र० चिं०)

अर्थ–पारे के खानेवाले को ध्यान रखना चाहिये कि जब कुछ विशेष उपकार नहीं होता हो तब एक एक गुंजा मात्रा की वृद्धि करनी चाहिये और जब किसी प्रकार का उपद्रव हो या औषधि के छोड़ने का समय हो तब मात्रा का ह्रास (घटाना) करना चाहिये।।८५।।

पारद सेवन के पथ्य का समय

प्रभाते भक्षयेत्सूतं पथ्यं यामद्वयाधिके न । लंघयेत्त्रियामं तु मध्याह्नेनैव भोजयेत् ।।८६।। (र० चिं० र० रा० शं० र० रा० सुं० नि० र० र० सा० प० टो० नं०)

१–गद्याणम्–अष्टचत्वारिंशत् रक्तिकापरिमाणम् इति लीलावती। चतुःष्टिगुंजापरिमाणम्, इति वैद्यकम्

अर्थ–रसभक्षण की इच्छा करनेवाला मनुष्य प्रातःकाल ही पारे का भक्षण करे, पारद भक्षण के पश्चात् दूसरे प्रहर में पथ्य का सेवन करे अथवा तीसरे प्रहर में अवश्य ही पथ्य करे और तीसरे प्रहर को लंघन न करे तथा मध्याह्न में भोजन करे॥८६॥

रसभक्षण में अनुपान

अनुपानेन युंजीत पर्णखण्डेन वा सह ॥ इत्थं संसेविते सूते रोगसंघाद्विमुच्यते ॥८७॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः प्राप्नोति परमां गतिम् ॥ दारिद्र्यनाशनार्थाय वेधकर्म समाचरेत् ॥८८॥

(ध० सं०)

अर्थ–अनुपान के साथ पारे को पान में रखकर सेवन करे इस प्रकार सेवन करने से रोग दूर हो जाते हैं और सब पापों से छुटा हुआ परम गति को प्राप्त होता है और दरिद्रता को दूर करने के लिये वेध कर्म को करे॥८७॥८८॥

पारद सेवन के अजीर्ण का उपाय

ताम्बूलांतर्गते सूते किट्टबन्धो न जायते ॥ सकणामभृतां भुक्त्वा मलबन्धे स्वपेन्निशि ॥८९॥ (र० चिं० र० रा० शं० र० रा० सुं० नि० र० र० सा० प०)

अर्थ–पारद को पान के भीतर रखकर खावे तो अजीर्ण नहीं होता यदि कोष्ठबद्ध हो तो रात्रि में पीपल और हर्र को खाकर सो जावे॥८९॥

रस जीर्ण होने पर स्नानविधि

सौख्योष्णैः सलिलैर्द्रुतं रसभुजा स्नानं जीर्णे शते वातं पित्तकफौ निहन्ति बलकृत्त्वग्वर्णकृद्बृंहणम् ॥ रूपद्योतकरं मनः प्रशमनं कामस्य संवर्धनं नारीणां च मनोहरं श्रमहरं देहे रसक्रामणम् ॥९०॥

(र० रा० शं०)

अर्थ–पारद सेवन करनेवाला मनुष्य रस के जीर्ण (पचन) होने पर साधारण गरम जल से स्नान करे तो शरीर में रस का क्रामण होता है वह रसक्रमण वात पित्त और कफ को नाश करता है, बल त्वचा के वर्ण का बढ़ानेवाला है और बृहण है, रूप का प्रकाश तथा मन का शान्तकारक, काम का बढ़ानेवाला और स्त्रियों के मन को हरनेवाला तथा देह के श्रम को हरनेवाला है॥९०॥

स्नान तैल जल निर्णय

अभ्यंगमिनले योज्यं तैलैर्नारायणादिभिः ॥ अबलशीततोयेन मस्तके परिषचयेत् ॥९१॥ तृष्णायां नारिकेलाम्बुमुद्गयूषं सशर्करम् ॥ द्राक्षादाडिमखर्जूरकदलीनां फलं भजेत् ॥९२॥

(यो० र० र० रा० सुं० नि० र०)

उदर सति दध्यन्नं कृष्णजीरं ससैन्धवम् ॥९३॥

(र० रा० शं०)

अर्थ–पारद भक्षण के समय यदि वात के क्षोभ से शरीर में दर्द हो तो नारायण आदि तैल का मर्दन करे और अरति हो तो मस्तकपर शीतल जल डालना चाहिये और प्यास होने पर नारियल का पानी खांड सहित मूंग का पानी पीना चाहिये अथवा अंगूर अनार खजूर और केले के फल को खावे यदि उलटी आती हो तो काला जीरा सैंधानोंन सहित दही भात खावे॥९१॥९३॥

रससेवी के लिये जल का निर्णय

गव्यं सुदुग्धं सलिलार्द्धकेन श्रृतं कृतं पानजलं सुशीतलम् ॥ खंडेन वा शर्करया समेतं रसेन्द्रभोक्ता प्रपिबेत्सदैव ॥९४॥

(नि० र०)

अर्थ–आधा भाग दूध और आधा भाग जल इन दोनों को उष्ण करके शीतल कर लेवे फिर आधा पाव शक्कर डाल दे इसको रसेन्द्र भक्षण करनेवाला मनुष्य सदैव पीता है॥९४॥

अन्यच्च

दिव्यान्तरिक्षध्वनिजं च कौपं स्वयं विशीर्शादिशिलातलोद्भवम् ॥ तडागंज सारसमौद्भिदं यत्तोयं मतं त्वष्टविधं मनोरमम् ॥९५॥

(र० रा० शं० र० सा० प०)

अर्थ–दिव्य, आन्तरिक्षज, ध्वनिज (बर्फ से पैदा हुआ), कूए का जल, झरने का जल, तालाब का जल, झील का जल और औद्भिद अर्थात् जो पृथ्वी को भेदकर बाहर निकला हुआ हो इस प्रकार जल आठ प्रकार का कहा है॥९५॥

अन्यच्च

अक्षारं स्वादु मृष्टं दिनमणिकिरणैर्वासरे तप्तमादौ रात्रौशीतांशुरोचिर्भिर्वि धसुयवजां दोलितं दोषहीनम् । कर्पूरै राजचंपैरतिशयविमलैः पाटललासुपुष्पै स्त्वग्धान्यैर्वासितं यद्वरशिशिरजलं सूतसेवी पिबेत्तत् ॥९६॥

(र० रा० शं० र० सा० प०)

अर्थ–प्रथम मीठे जल को एक मिट्टी की चपटिया में भर कर सूरज कि किरणों में एक दिन भर रखें फिर उसी को रात्रि में चन्द्रमा की किरणों से शीतल और उसी जल को कपूर, चंपे के फूल, इलायची और अनेक सुगन्धित पुष्पों से सुगंधित किये हुए शिशिर ऋतु के जल को पारद के सेवन करनेवाला नित्य पीवे॥९६॥

तैलमर्दन

श्रीनारायणसंज्ञकेन च बलातैलेन चान्येन वा कार्यं मर्दनकोविदै रसभुजामल्लैः सदा मर्दनम् ॥ चातुर्जातलवंगकुंकुमनिशामुस्ताम्बुमांसीभवैश्च्रू र्णैर्भ्रष्टमसूरमुद्गयवजैरुद्वर्तनं कारयेत् ॥९७॥

(र० रा० शं० र० सा० प०)

अर्थ–वातज दोष की निवृत्ति के लिये नारायण तैल, बलातैल तथा अन्य वातघ्न तैलों को लेकर पहलवानों से अपने शरीर पर सदा मालिश करावे और चातुर्जात, लोंग, केसर, हलदी, नागरमोथा, जटामांसी, भुनी हुई मूंग, मसूर और जौ इनके चूर्ण को लेकर उबटना करे॥९७॥

आहारनिर्णय

सततं वर्जयेदेकाहारं च रससेवकः । नश्यत्यग्निरनाहारात्सूतो नैव क्रमेत्तनौ ॥९८॥ रोगशांतिं तथा कर्तुं नैव शक्नोति पारदः । विचित्रैर्भोजनैस्तस्माद्रसं समुपबृंहयेत् ॥९९॥

(र० रत्ना०)

अर्थ–रस के सेवन करनेवाला मनुष्य एक बार भोजन न करे अर्थात् दो बार भोजन करे क्योंकि भोजन के न करने से मंदाग्नि होती है और शरीर में पारद अच्छी तरह नहीं रमता है और पारद रोग की शान्ति भी नहीं कर सकता है इसलिये अनेक प्रकार के भोजनों से पारद के बल को बढावें॥९८॥९९॥

अन्यच्च

निषिद्धवर्ज्यं मतिमान् विचित्ररसभोजनं कुर्यात् । सुवति न यथा नश्यति जाठरो वह्निः ॥१००॥

(र० चिं० नि० र०)

अर्थ–बुद्धिमान् निषिद्ध (अपथ्य) रहित सरस भोजन को करे और भोजन भी ऐसा न करे कि जिससे पारा शरीर में फूट जाय और मन्दाग्नि भी होवे॥१००॥

पारद सेवन में पथ्य

धान्यदीनां च सर्वेषां यवगोधूमष्टिकाः । नेष्टास्तु विदलाः सर्वे मुक्त्वा मुद्गाढकी पुनः ॥१०१॥ आज्यं स्नेहे मधुषु मधुरं चेक्षुजातं हि यत्स्याच्छरेष्ठं खंडं दृतवरसितं क्षारयुक्तं न तत्स्यात् । हिंगु श्रेष्ठं सकलसुरभैः सैंधवं सिंधुजेषु रागे यूपाः प्रवररजनीसूरणार्द्रौ च कंदे ॥१०२॥ अशुभानि च मांसानि शाकानि विदलानि च । संस्कृतानि विधानेन न स्युर्दोषकराणि च ॥१०३॥ केशादिजुष्टं कृतलीतपुष्पं शाकावरान्नैर्बकुले महोष्णम् । निसेवितं यल्लवणाधिकं च संत्याज्यमन्नं रससेविभिस्तत् ॥१०४॥ तक्रं हितं स्नेहगतं तथा दधिगोक्षीरजातं सकलं हितं स्यात् । मुक्त्वा च पक्त्वाम्बुसुरारनालं स्यादम्बुपानं न हितं रसायने ॥१०५॥ तैलं च तैलं गिरिजाभवं यत् सुस्वादुहीनं सठितामदुग्धम् । विनष्टदुग्धं त्वशुभं च सर्वं खादेत्कदाचिन्न रसायनी नरः ॥१०६॥ पुष्पजातं फलं सर्वं मधुरं मांसशर्करम् । पाकयुक्तमशीर्णं च श्रेष्ठमुक्तं रसायने ॥१०७॥ असिताया विवत्सायाः प्राहुर्दुग्धं जलैः श्रृतम् ॥ बलवृद्धिकरं वृष्यं श्रेष्ठमुक्तं रसायने ॥१०८॥

(र० रा० श० र० सा० प०)

अर्थ–सब प्रकार के धानों में जौ, गेहूँ और साठी चावल खाना श्रेष्ठ है। मूंग और अरहर की दाल को छोड़कर सब दाले वर्जित है। चिकने पदार्थों से घृत श्रेष्ठ है। मीठी चीजों में इक्षु (सांठा या गांडा) से पैदा हुई सब प्रकार की मिठाई पथ्य है। सिंधुनदी के पास पैदा हुई चीजों में सैंधानोंन हित है और कंदों में जमीकंद और अदरख श्रेष्ठ है। अयोग्य मांस शाक और दाल प्रभृति ये सब विधि से सिद्ध किये हुये हो तो दोषरहित होते हैं, जिस पदार्थ में बाल पड़ गया हो, ठंडा हो गया हो उसका भक्षण न करे और अधिक लवणयुक्त पदार्थों के खाने को छोड़ देवे गाय के दूध से पैदा हुये सब प्रकार के दही और मठा हित है। सब तरह के फूल मीठे मीठे फल और खांड में पके हुए पदार्थ श्रेष्ठ है। जिसके बछड़ा न हो ऐसी सफेद गाय के दूध को गरम करके ठंडा कर पीना चाहिये और जो जो बल की वृद्धि करनेवाला और वृष्य पदार्थ खाना श्रेष्ठ है॥१०१–१०८॥

पथ्यवर्ग

घृतसैंधवधान्याकजीरकार्द्रकसंस्कृतम् । तन्दुलीयकधान्याकपटोलालम्बुषादि कम् ॥१०९॥ गोधूमजीर्णशाल्यन्नं गव्यं क्षीरं घृतं दधि । हंसोदकं मुद्गरसः पथ्यवर्गः समासतः ॥११०॥

(नि० र० र० र० स० यो० र० र० सा० प० र० रा० शं०)

अर्थ–घी, सैंधव, धनियां जीरा, अदरक इनके छोंक (भकार) दिये हुए चौलाई, बैंगन, परवल, तूंबी इनके साग, गेहूं का चून, साठी चावल, गाय का दूध, घृत और दही, हंसोदक, मूगं की दाल इनको पारद भक्षण में पथ्य कहा है॥१०९॥११०॥

पारद सेवन में पथ्य और आहार विहार

मुद्गयूषघृतं दुग्धं शाल्यन्नं सैंधवं तथा । नागरे पद्ममूलं च मुस्तकं गिरिमल्लिका ॥१११॥ शाकं पौनर्नवं श्रेष्ठं मेघनादं च वास्तुकम् । अभ्यङ्गं सुखदं स्नानं कोष्णतोयेन नित्यशः ॥११२॥ रूपयौवनसंपन्नां स्वानुकूलां भजेत्प्रियाम् ॥ तेन बुद्धिर्बलं कांतिर्वर्द्धते रससेविनः ॥११३॥

(अनुपानतरंगिणी)

अर्थ–मूंग का यूप, घी, दूध, साठी चावल का भात, सैंधानोंन, सोंठ, पद्ममूल (भसूडे कमल की जड), मोथा, गिरिमल्लिका (कुठाका वृक्ष), सांठ, चौलाई और बथुआ इनका साग, हलका उबटना, नित्यप्रति कोष्ण (नूनवाए) जल से स्नान करना, अपने अनुकूल सुन्दर स्त्री से प्यार करना इनसे रस सेवन करनेवाले मनुष्य की बुद्धि बल और कांति वढती है॥१११–११३॥

अन्यच्च

हितं मुद्गाम्बुदुग्धाज्यं शाल्यन्न च विशेषतः ॥ शाकं पौनर्नवायास्तु मेघनादं च चिल्लिकाम् ॥ सैंधवं नागरं मुस्तं पद्ममूलानि भक्षयेत् ॥११४॥

(रसमंजरी, र० सा० सं० र० रा० सुं०)

अर्थ–मूंग का यूप, दूध, घी, साठी चावल, ये विशेष कर हित हैं। सोंठ, चौलाई, चिल्लिका (एक प्रकार का पत्ते का शाक), सैंधव, सोंठ, पीपल, नागरमोथा और पक्षमूल को भक्षण करे॥११४॥

अन्यच्च

हितं मुद्गान्नदुग्धाज्यशाल्यन्नानि सदा ततः ॥ शाकं पौनर्नवं देवि मेघनादं सवास्तुकम् ॥११५॥ सैंधवं नागरं मुस्ता पद्ममूलानि भक्षयेत् ॥ आत्मज्ञानकथा पूजा शिवस्य च विशेषतः ॥११६॥ (र० सा० प० र० चिं० र० रा० शं० नि० र०)

अर्थ–मूंग का यूष, दूध, घी साठी चावल ये हित है और है पार्वती! सांठ चौलाई और बथुआ का शाक, सैंधानोंन, सोंठ, मोथा और पद्ममूल को भक्षण करे तथा आत्मज्ञान की कथा अर्थात् वेदान्त विषय की चर्चा और श्रीशिवजी की पूजा भी विशेष हित है॥११५–११६॥

सेवनीय विहार

उद्भिन्नचूचुका श्यामा सुभोगा सुभगा शुभा॥ दिंव्याभरणसंयुक्ता कामभोगविवर्जिता ॥११७॥ सन्निधानेषु कर्तव्या वृद्धैश्च परिरक्षिता ॥११८॥ (टो० नं०)

अर्थ–जिसके स्तन अच्छी तरह से उठे हुए हों और जिसके भोग और ऐश्वर्य श्रेष्ठ हो, उत्तम २ आभूपणों को धारण करनेवाली हो ऐसी श्यामा (सोलह वर्ष की) स्त्री रस सेवक के पास होनी चाहिये। और वह स्त्री कामभोग (मैथुन) से रहित तथा वृद्ध जनों से रक्षित हो अर्थात् पारद खानेवाले पुरुष का उस स्त्री से मैथुन कदापि न होने पावे॥११७॥११८॥

अन्यच्च

कस्तूरीसंयुतं नित्यं ताम्बूलं भक्षयेद्वरम् ॥ सुरभीणि च पुष्पाणि चंदनागरुलेपनम् ॥११९॥

(टो० नं०)

अर्थ–पान में कस्तूरी रख कर खावे तथा सुगंधित पुष्पों को धारण करे, चंदन, अगरका लेपन करे॥११९॥

अपथ्य जल

अतिपानमपानं च जलक्रीडां च वर्जयेत् ॥१२०॥

(टो० नं०)

अर्थ–अत्यन्त, जल का पीना तथा पानी का बिलकुल ही नहीं पीना अथवा जलक्रीड़ा को भी छोड़ देवे॥१२०॥

अपथ्य आहार

निषिद्धं वर्जयेत्सर्वं रससेवाविधौ नरः ॥ रसस्रावकरं वर्ज्यं भोजने चातियत्नतः ॥१२१॥ अग्निमांद्यकरं तद्वद्वर्ज्यं चापि प्रयत्नतः॥१२२॥

(र० रत्नाकर)

अर्थ–बुद्धिमान् मनुष्य रससेवन के समय सम्पूर्ण निषिद्ध पदार्थों को छोड़ देवे भोजन करने में उस भोजन को छोड़ दे कि जो अधिक रक्त का निकालनेवाला अथवा मन्दाग्नि का करनेवाला हो॥१२१॥१२२॥

अपथ्य आहार

अत्यम्लकटुतिक्तैश्च सूतः स्रवति सेवितैः ॥ अत्यम्ललवणाहारैर्मंदवीर्यो भवेद्रसः ॥१२३॥

(र० रत्नाकर)

अर्थ–खाये हुए अत्यन्त खट्टे चरपरे कडुवे पदार्थो से पारद शरीर में फूट जाता है और अधिक खट्टे और नमकीन चीजों के खाने से पारद मदवीर्य्य होता है॥१२३॥

अन्यच्च

कुलत्थांश्चातसीतैलं तिलान् माषमसूरकान् ॥ कपोतं कांजिकाशं त तक्रभक्तं तथैव च ॥१२४॥ वार्ताकं राजिकां बिल्वं वातलानि च वर्जयेत् ॥ तिलतैलं दधि क्षारं द्राक्षाक्षोटपरूषकम् ॥१२५॥ बदरं नारिकेलं च सहकारं सुवर्च्चलम् ॥ नारंगं कांचनारं च शोभांजनमपि त्यजेत् ॥१२६॥

(टो० नं०)

अर्थ–कुलथी अलसी का तैल, तिल, उर्द, मसूर, कबूतर, कांजी, मठे से मिला हुआ भात, वैंगन, राई, वेल तथा वातल पदार्थों को त्याग दे तिल का तैल, दही (भैंस का), खार (जवाखारप्रभृति), द्राक्षा (खट्टी दाख), आखरोट, फालसे, वेर, नारियल, आम, कालानोंन, नारंगी, कचनार, और सेंजना इनका भी परित्याग करे॥१२४॥१२६॥

अन्यच्च

कुलत्थानतसीतैलं तिलान् माषान्मसूरकान् ॥ कपोतान् कांजिकं चैव तक्रभक्तं च वर्जयेत् ॥१२७॥ हेमचक्रादयश्चैव कुक्कुटानपि वर्जयेत् ॥ कट्वम्लतिक्तलवणं पित्तलं वातलं च यत् ॥१२८॥ बदरं नारिकेलं च सहकारं सुवर्चलम् ॥ नागरंगं कामरंगं शोभांजनमपि त्यजेत्॥१२९॥

(र० चिं०, र० रा०)

अर्थ–कुलथी, अलसी का तेल, तिल, उर्द, मसूर, कबूतर, कांजी, मठा भात इनके खाने को छोड़ देवे। हेमचक्रादिक (ग्रन्थकार) मुर्गी के मांस का निपध करते हैं कटु (मिरचप्रभृति), अम्लतिक्त (निम्बादि), लवण, पित्त के कुपित करनेवाले, वात के कुपित करनेवाले, वेर, नारियल, आम, सोंचर नोंन, नारंगी, कमरख और सेंजने को भी परित्याग करे॥१२७–१२९॥

अन्यच्च

बृहतीबिल्वकूष्माण्डं वेत्राग्रं कारवेल्लकम् ॥ माषं मसूरं निष्पावं कुलित्थं सर्षपं तिलम् ॥१३०॥ लंघनोद्वर्तस्नानताम्रचूडसुरासवान् ॥ आनूपमांसं धान्याम्लं भोजनं कदलीदले ॥१३१॥ कांस्ये च गुरु विष्टम्भि तीक्ष्णोष्णं च भृशं त्यजेत् ॥१३२॥

(र० र० स० यो० र० सा० प०)

अर्थ–कटेरी का फल, बेल, कूष्मांड (काशीफल), बांस की पोई, करेला, उर्द, मसूर, कुलथी, सेंम, सरसों, तिल, लंघन उबटन, स्नान, मुर्गा, शराब, सजल देश के पशु पक्षियों का मांस, कांजी, कासी और केले के पत्ते पर भोजन करना, गुरु, बिष्टम्भी (अजीर्णकारक पदार्थ), चरपरा और उष्णपदार्थ इनको पारद खानेवाला मनुष्य न खावे॥१३०–१३२॥

अपथ्य ककारादि निषेध

यस्मिन् रसे च कंठोक्त्या ककाररदिर्निषेधितः ॥ तत्र तत्र निषेध्यस्तु तदौचित्यत्गतोऽन्यतः ॥१३३॥

(र० र० स०)

अर्थ–जिस रस में ककारादि पदार्थो का खास लेख द्वारा निपेध किया गया है, वहां पर वे ही निपेध करने योग्य हैं यदि और भी ककारादि पदार्थों को निपेध योग्य समझा जावे तो उनको भी भक्षण न करे॥१३३॥

अपथ्य ककारषट्क

कूष्माण्डं कर्कटी कोलं कलिङ्गं करमर्दकम् ॥ करीरं चेति षट्कादीन् रसभुग्वर्जयेज्जनः ॥१३४॥

(यो० र० र० रा० शं० नि० र०)

अर्थ–पेठा, ककडी, वेर, तरबूज, करोंदा, टेंटी इन पदार्थों को रस के खानेवाला मनुष्य छोड़ दे॥१३४॥

ककाराष्टक

कूष्माण्डं कारवेल्लं च कर्कटीं काकमाचिकाम् ॥ कुसुम्भकं कलिंगं च कर्कोटी कदलीं त्यजेत् ॥१३५॥

(र० मानस०)

अर्थ–पेठा, करेला, ककड़ी, काकमांची (मकोय व कवैया) कसूमं, तरबूज, बांझ, ककोड़ा और केले के फल का भी परित्याग करे॥१३५॥

ककाराष्टक वर्ग

कुष्माण्डं कर्कटश्चैवं कलिंगं कारवेल्लकम् ॥ कुसुम्भिकां च कर्कोटी कलम्बीं काकमाचिकाम् ॥ ककाराष्टकमेतद्धि वर्जयेद्रसभक्षकः ॥१३६॥ (टो० नं० र० सा० लं० र० मंजरी, र० रा० शं० र० रा० सुं० र० सा० प० नि० र० र० चिं०)

जराव्याधिविनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतं सुखी ॥

(अनुपानतरंगिणी)

अर्थ–पेठा,ककडी, तरबूज, करेला, कसूम का शाक, ककोडा मकोय, कलम्बी, (कलमी का शाक जो कि जल में पैदा होता है) यह ककाराष्टक है। रस सेवन करनेवाला मनुष्य इस ककाराष्टक को छोड़ देवे तो बुढ़ापे से रहित हुआ मनुष्य सौ वर्ष तक सुख से जीता है॥१३६॥

ककारादिगण

कण्टारीफलकाञ्जिकं च कलमस्तैलं तथा राजिका निम्बूकं कतकं कलिंगकफलं कूष्माण्डकं कर्कटी । कारीकुक्कुटकारवेल्लकफलं कर्कोटिकायाः फलं वृन्ताकं च कपित्थकं खलु गणः प्रोक्तः ककारादिकः ॥१३७॥ देवीशास्त्रोदितः सोऽयं ककारादिगणो मतः ॥

(र० र० स०)

अर्थ–कटेरी का फल, कांजी, कलम (कलमी धान) तैल, राई, नींबू, निर्मली के बीज, तरबूज, पेठा, ककड़ी, कारी (आकर्षकारी), मुर्गा, करेला, बांझ ककोडा, वेंगन, कैथ इनको ककारादिगण कहते हैं यह देवीशास्त्र में कहा हुआ ककारादि गण है॥१३७॥

अन्यच्च

शास्त्रान्तरविनिर्दिष्टः कथ्यतेऽन्यप्रकारतः ॥१३८॥ कंगुकन्दककोलकुक्कुटक लक्रोडाः कुलत्थास्तथा कण्टारीकटुतैलकृष्णगलकः कूर्मः कलायः कणा ॥ कर्कारुं च कठिल्लकं च कतकं कर्कोटिकं कर्कटी कालीकाञ्जिकमेषकादिक–गणः श्रीकृष्णदेवोदितः ॥१३९॥

(र० र० स०)

अर्थ–कंगनी, वेर, मुर्गा, झरबेर, सूअर, कुलथी, कटेरी काफल,कडुआ तेल,कछुआ,मटर,पीपल, पेठा,करेला,निर्मलीका फल,बांझककोड़ा, ककड़ी, कलिहारी, कांजी और मेढ़ा इत्यादि श्रीकृष्णदेव का कहा हुआ ककारादिगण हमने अन्य प्रकार से वर्णन किया है॥१३८॥१३९॥

अपथ्य आहार

वर्ज्यं चैवातिमधुरमत्यम्लकटुतिक्तकम् । वर्ज्या वृद्धा विरूपा स्त्री वर्जयेल्लवणन्ततः ॥ भूतस्रावः प्रजायेत ज्वरश्चैव प्रजायते ॥१४०॥

(टो० नं०)

अर्थ–अत्यन्त मीठा और अत्यन्त खट्टा पदार्थ, कडुवा चर्परा, बूढ़ी और कुरूपा स्त्री तथा लवण इन पदार्थों को रस के खानेवाला मनुष्य त्याग दे कारण कि इन पदार्थों के सेवन करने से शरीर के पंचमहाभूतो के ह्रास, पंच

महाभूतों के नाश होने से शरीर का नाश अवश्य होता है क्योंकि यह शरीर पंचमहाभूतों से ही बना हुआ है।।१४०।।

पारदसेवी को त्याज्य कर्म

अतिपानं चात्यशनमतिनिद्रा प्रजागरः ।। स्त्रीणामति प्रसंगं च अध्वानं च विवर्ज्जयेत् ।।१४१।। अतिकोपं चातिहर्षं चातिदुःखमतिस्पृहाम् ।। शुष्कवादं जलक्रीड़ामतिचिंतां च वर्जयेत् ।।१४२।। (र० चिं० र० रा० शं० र० रा० सुं० र० सा० प० नि० र०)

अर्थ–पारद के भक्षण करनेवाला मनुष्य सुरापान, अत्यन्त खाना, पीना, अत्यन्त सोना, अथवा जागना, अति स्त्रीप्रसंग, मार्ग का चलना, (अथवा जहां ध्यान चापि 'ऐसा' पाठ है वहां स्त्रियों का ध्यान ऐसा अर्थ करना चाहिये) इनको छोड़ देवे तथा अधिक क्रोध करना, अधिक खुशी करना, अत्यन्त दुःख, अनेक पदार्थों की अत्यंत इच्छा, शुष्कवाद (निष्फल झगड़ा करना), जल में खेलना या तैरना और अत्यंत चिन्ता करना इनको त्याग दे।।१४१।।१४२।।

अन्यच्च

पातकं च न कर्तव्यं पशुसंगं च वर्जयेत् ।। चतुष्पथे न गंतव्यं विण्मूत्रं च न लंघयेत् ।।१४३।। धीराणां निंदनं देवि स्त्रीणां निंदां च वर्जयेत् ।। सत्येन् वचनं ब्रूयादप्रियं न वदेद्वचः ।।१४४।।

(र० चिं० र० रा० शं० र० सा० प० नि० र०)

अर्थ–पाप और पशुओं के संग त्याग दे, चौराहे पर न जाय, मल और मूत्र को न फलांगे, शूरवीरों और स्त्रियों की निन्दा न करे, झूठ और कटु वचन न बोले।।१४३।।१४४।।

अपथ्य आहार विहार

कुंकुमागुरुलेपं च तथा कर्पूरभक्षणम् ।। भूमिशय्यातिपानं च अध्वानं परिवर्जयेत् ।।१४५।।

(टो० नं०)

अर्थ–केसर और अगर का लेप, कपूर का भक्षण धरती का, सोना, सुरापान, मार्ग का चलना, इनको छोड़ देवे।।१४५।।

पारदसेवी को त्याज्य कर्म

न वादजल्पनं कुर्यात् दिवा चापि न पर्य्यटेत् ।। नैवेद्यं नैव भुंजीत कर्पूरं वर्जयेत्सदा ।।१४६।। कुंकुमालेपनं वर्ज्यं न शयेत्कुशलः क्षितौ ।। न च हन्यात्कुमारीं च वातलानि च वर्जयेत् ।। १४७।। क्षुधार्तो नैव तिष्ठेत्तु अजीर्णं नैव कारयेत् ।। दिवारात्रं जपेन्मंत्रं नासत्यवचनं वदेत् ।।१४८।।

(र० चिं० र० रा० शं० र० सा० प० नि० र०)

पारदसेवी समय का लंघन न करे

एतांस्तु समयान्भद्रे न लंघेद्रसभक्षणे ।।१४९।।

(र० चिं० र० रा० शं० नि० र०)

अर्थ–वितंडावाद न करे, और दिन में भ्रमण न करे नैवेद्य अर्थात् मिठाई और कापूर न खाय, केसर का लेप न करे, और धरती पर सोवे, बालकों को न मारे, और बादी करनेवाले पदार्थों को न खावे, भूखा न रहे, और इतना भी भोजन न करे जिससे अजीर्ण हो, दिनरात भगवद्भजन करे और झूठ न बोले, हे पार्वती! पारद सेवन के समय इन बातों का उल्लंघन न करे।।१४६–१४९।।

नागदोषयुक्तरसोपद्रवशमन

अज्ञिनां नागकल्केन भुक्तो यदि भवेद्रसः ।। नागदोषविशुद्धयर्थं गोमूत्रेण समन्वितम् ।।१५०।। पटुयुक्तं पिबेन्मूलं कारवेल्ल्या भवं तथा ।। एषां नागभवो दोषो नाशमायाति निश्चितम् ।।१५१।। वंध्याकर्कोटकीपुष्पं गरुडी च ततः परम् ।। आसागन्यतमं मूलं क्षिप्त्वा गोजलमध्यतः ।।१५२।।

(र० रत्नाकर)

अर्थ–यदि मनुष्यों ने नागयुक्त पारद को खाया हो तो नागदोष की शुद्धि के लिये सैंधानोंन, और करेले की जड़ को गोमूत्र के साथ पीवे तो नागदोष की शान्ति होती है अथवा बांझ ककोड़ा, लोंग और पाताल गरुड़ी इनमें से किसी एक को जड को गोमूत्र के साथ पीवे तो भी नागदोष की शान्ति होती है।।१५०–१५२।।

नागादियुक्त पारददोषशमनोपाय

कथमपि यद्यज्ञानान्नागादिकलंकितो रसो भुक्तः । तत्स्रावणाय विज्ञः पिवेच्छिखां कारवेल्लभवाम् ।।१५३।।

(र० चिं० र० रा० शं० र० सा० प० नि० र०)

अर्थ–यदि विना समझे या विना विचारे नागदोप युक्त पारद को खा लेवे तो उस दोप को दूर करने के लिये करेले की जड़ को पीवे।।१५३।।

नागदोष शमनोपाय

यदि युक्तं पिबेन्मूलं कारवल्लीभवं तदा । नागदोषः शमं याति पारदस्य न संशयः ।।१५४।।

(टो० नं०)

अर्थ–यदि करेले की जड़ को गोमूत्र के साथ पीवे तो पारद का नागदोप शान्त होता है।।१५४।।

वंगदोषशान्ति

वंगदोषप्रशांत्यर्थं शरपुंखां प्रभक्षयेत् ।।१५५।।

(टो० नं०)

अर्थ–और वंगदोप की शान्ति के लिये सरफोंखे की जड़ को पीवे।।१५५।।

अशुद्धपारदविकार शान्ति

विकारो यदि जायेत पारदान्मलसंयुतात् ।। गंधकं सेवयेद्धीमान्पाचितं विधिपूर्वकम् ।।१५६।।

(यो० चिं० र० रा० सुं० नि० र०)

अर्थ–यदि दोपयुक्त पारद के खाने से विकार पैदा हुआ हो, तो उसकी शान्ति के लिये विधिवत् शुद्ध किये हुये गंधक को खावै।।१५६।।

अन्यच्च

गंधकं माषयुग्मं च नागवल्लीदलैः सह । खादेत्पारदसंग्रस्तो दोषशान्तिस्तदा भवेत् ।।१५७।।

(यो० चि० नि० र०)

अर्थ–पारददोष से ग्रस्त मनुष्य अर्थात् जिसने पारा खाया हो पान के साथ दो माशे गंधक को खावे तो अवश्य ही शान्त होगा।।१५७।।

जो दोष पूर्व कहे हैं उनकी शान्ति कहते हैं

गवां दुग्धयुतं पीत्वा गंधकं दिनसप्तकम् ।। पारदस्य विकारेण मुक्तः सुखमवाप्नुयात् ।।१५८।।

(अनुपानतरंगिणी)

अर्थ–दोपों का वर्णन पूर्व कर चुके हैं अब उनकी शान्ति कहते हैं आंवलासार गंधक को गाय के दूध के साथ सात दिन तक पीवे तो पारद के विकार से मुक्त होकर सुख को प्राप्त होता है।।१५८।।

भिन्न भिन्न विकारशान्ति

उद्गारे सति दध्यन्नं कृष्णजीरं ससैन्धवम् । अभ्यंगमनिलक्षोभे

तैलैर्नारायणादिभिः ॥१५९॥ अरतौ शीततोयेन मस्तकोपरि सेचनम् । तृष्णायां नारिकेलाम्बुमुद्गयूषं सशर्करम् । द्राक्षादाडिमखर्जूरकदलीनां फलं भजेत् ॥१६०॥

(र० र० स०)

अर्थ–पारद के खाने से यदि वमन हो तो काला जीरा और सैंधानोंन खावे, शरीर में वात का क्षोभ होने पर नारायण तैल प्रभृति का अभ्यंग करे, अगर घबराहट होवे तो मस्तक पर ठंडे पानी की धार गिरवावे, प्यास लगने पर नारियल का जल या खांड सहित मूंग की दाल का पानी पीवे या अंगूर, अनार, खजूर और केले के फलों को खावे॥१५९॥१६०॥

पारदविकारशान्ति मर्दनद्वारा

नागवल्लीरसं प्रस्थं भृंगराजरसं समम् । तुलसीरसं प्रस्थं च च्छागदुग्धं समांशकम् ॥१६१। मर्दयेत्सर्वगात्रेषु यामयुग्मं दिनत्रये ॥ स्नानं शीतलनीरेण सूतदोषप्रशान्तये ॥१६२॥

(यो० चिं० नि० र०)

अर्थ–यदि पारद के खाने से शरीर में फोड़ा फुंसी हो गई हो तो १ सेर पान का रस, और १ सेर जल भांगरे का रस, तथा १ सेर ही तुलसी का रस और १ सेर बकरी का दूध इनको मिलाकर तीन दिवस तक दो दो प्रहर नित्य प्रति समस्त शरीर में मर्दन करे, फिर शीतल जल से स्नान करे तो पारद का दोष शान्त होता है॥१६१॥१६२॥

रस अजीर्णदोष

सूताजीर्णाज्ज्वरस्तद्रा नाभिमूलेऽतिगौरवम् । अंतर्दाहो जड़त्वं चवह्निनाशः प्रजायते ॥१६३॥ मूर्च्छा शोको भ्रमः कपंश्छर्दिर्मोहो ज्वरस्तथा । हिक्कावेपथुशूलानि निद्रालस्यमरोचकम् ॥१६४॥ लिंगस्तंभो ह्यतीसारः कासश्वासविजृंभिका ॥ कर्णाक्षिचक्षुःकुक्षेश्च चरणोदरमूर्द्धनि ॥१६५॥ मेढ्रदाहोग्निबंधश्च भवेत्सर्वांगवेदना । ये चान्ये च महारोगा रसजीर्णे भवंति हि॥१६६॥

(टो० नं०)

अर्थ–पारद के अजीर्ण न होने से ज्वर, तन्द्रा नाभी की जड़ में भारीपन, अन्तर्दाह, शरीर की जडता और मंदाग्नि भी होती है या मूर्च्छा, शोक, भ्रम, कांपना, उलटी, बेहोश होना, हिचकी, शूल, नींद, आलस्य, अरुचि, जननेन्द्रिय का जकड़ना, खांसी, श्वास, दस्त, जँभाई का आना, कान, आंख, पसली, पांव, पेट, और शिर में दर्द, वृषणों में दाह, मंदाग्नि और जो बड़े बड़े रोग हैं वे भी रसाजीर्ण में होते हैं॥१६३–१६६॥

रस अजीर्ण लक्षण चिकित्सा

नाभिमूले भवेच्छूलं निद्रालस्यं ज्वरोऽरुचिः ॥ जाडयं मलग्रहो दाहो रसाजीर्णे भवेन्नृणाम् ॥१६७॥ रसाजीर्णमिति ज्ञात्वा कुर्यात्तस्यप्रतिक्रियाम् ॥ दिनत्रयं प्रयत्नेन क्रियमाणे रसायने ॥१६८॥ कर्कोटीकंदसंभूतं कषायं त्रिदिनम्पिबेत् ॥ रसाजीर्णे पिबेद्वापि गोजलं रुचकान्वितम् ॥१६९॥ विश्वसैंधवसंयुक्तं मातुलुंगस्य मूलकम् ॥१७०॥

(र० रत्नाकर)

अर्थ–पारद भक्षण में मनुष्यों को जब अजीर्ण होता है तब नाभी के नीचे शूल, नींद का आना, आलस्य, ज्वर, अरुचि, शरीर का जकड़ना, बिडबंध (कब्ज) और दाह ये होते हैं। जब यह पूर्ण रीति से ज्ञान हो जावे कि रसाजीर्ण हो गया तो उसकी चिकित्सा ही करनी चाहिये। रसायन भक्षण करने पर यदि अजीर्ण हो जावे तो बांझ ककोडे की जड़ का काढ़ा बनाकर तीन दिवस तक पीवे अथवा रसाजीर्ण में गोमूत्र में कालानोंन मिलाकर पीवे या सोंठ, सैंधानोंन और बिजोरे की जड़ को औटा कर पीवे॥१६७–१७०॥

रसअजीर्ण चिकित्सा

कर्पैकं स्वर्जिकाक्षारं कारवेल्लरसप्लुतम् ॥ सौर्वच्चलसमोपेतं रसे जीर्णे पिबेद्बुधः ॥१७१॥

(र० रा० सुं० नि० र०)

अर्थ–रसाजीर्ण होने पर बुद्धिमान मनुष्य करेले के रस में एक तोला सज्जीक्षार और कालोनोंन मिलाकर पीवे॥१७१॥

रसअजीर्ण का उपाय

एवं चैव महाव्याधीन् रसेऽजीर्णे तु लक्षयेत् ॥ कार्षिकं स्वर्जिकं क्षारं कारवेल्लीरसप्लुतम् ॥ गोमूत्रं सैंधवयुतं तस्य संस्रावणं परम् ॥१७२॥

(र० चिं० र० रा० शं० र० सा० प० टो० नं०)

अर्थ–इस प्रकार रसाजीर्ण में उत्पन्न हुई महाव्याधियों को अच्छी तरह समझ लेवे और रसाजीर्ण में एक तोला सज्जी खार और करेले के रस को पीवे अथवा गोमूत्र में सैंधानोंन घोलकर पीवे॥१७२॥

रसअजीर्ण का उपाय

सिंधुकर्कोटकीमूलं कारवेल्लीरसप्लुतम् ॥ सौवर्चलसमोपेतं रसाजीर्णो पिबेद्बुधः ॥१७३॥

(र० चिं० र० रा० शं० र० सा० प०)

अर्थ–सैंधानोंन, बांझ ककोडे की जड़, और काले नोंन को करेले के रस में डाल कर पीवे तो रसाजीर्ण से मुक्त होता है॥१७३॥

अन्यच्च

सौवर्चलं गोजलेन पिबेद्वासुखवांछया ॥ विश्वसैन्धवचूर्णं च मातुलुंगाम्लवारिणा ॥ रसाजीर्णविनाशार्थं पिबेद्रोगी दिनत्रयम् ॥१७४॥

(टो० नं०)

अर्थ–गोमूत्र के साथ काले नोंन को पीवे अथवा सोंठ तथा सैंधव को बिजौरे के रस में मिलाकर पीवे तो रसाजीर्ण नष्ट होता है॥१७४॥

रसअजीर्ण चिकित्सा

मोचकस्य रसं देवि राजकोशातकीरसम् । रसाजीर्णे तु जीर्येत नियतं नात्र संशयः ॥१७५॥ लंघनं त्रिदिनं कुर्याद्रसं चैव विवर्जयेत् ॥ कर्कोटचाह्विकषायं च पाययेद्दिवसत्रयम् ॥१७६॥

अर्थ–यदि रसाजीर्ण में सेंजने के रस को या घी या तोरई के रस को पीवे तो खाया हुआ पदार्थ शीघ्र ही पच जाता है अथवा तीन दिवस तक रस का परित्याग करता हुआ लंघन करे या बांझ ककोडे के काढे को तीन दिन तक पीवे॥१७५–१७६॥

अन्यच्च

शरपुंखासुरदालीपटोलबीजं च काकमाची च ॥ एकतमां तु क्वथितामजीर्णरवसायने तु पिबेत् ॥१७७॥

(र० चिं० र० रा० शं० र० सा० प० नि० र०)

अर्थ–बुद्धिमान् मनुष्य, शरपुंखा, देवदाली, पटोल के बीज और मकोय इनमें से किसी एक का काढ़ा करके रसाजीर्ण में पीवे तो अजीर्ण दूर होता है॥१७७॥

रसअजीर्ण चिकित्सा

मुनिभृंगराजैश्चतुर्थीसुपिष्टीकृतं रोमतक्रं पिबेत्सप्तरात्रम् ॥
अतिचांतदर्दाहं कृतं सूतकेन पतेत्सूत को मूत्रमार्गेण पश्चात् ॥१७८॥

(नि० र०)

१–रसाजीर्णे महाव्याधील्लँक्षयेद्भिषगुत्तमः । (र० रा० शं० र० सा० प०)

अर्थ–अगस्त्य, भांगरा से चार बार अच्छी तरह पीसे हुए रोमतक्र को सात रात तक पीवे तो पारे के कारण हृदय के दाह की शान्ति होती है और पारा सब मूत्र की राह से निकल जाता है।।१७८।।

रसजीर्णलक्षण

अनुलोमगतिर्वायुः स्वस्थता सुमनस्कता ।। क्षुत्तृष्णन्द्रियवैमल्यं रसपाकस्य लक्षणम् ।।१७९।।

(टो० नं० र० रा० सुं०)

अर्थ–वायु का यथार्थ रीति से देह में सञ्चार होना, स्वास्थ्य, मन का प्रसन्न रहना, भूख, प्यास और इन्द्रियों का ठीक रीति से व्यापार होना, रस की परिपक्वता का लक्षण है।।१७९।।

रससेवन से एक दोष का निवारण

एको हि दोषः सूक्ष्मोस्ति भक्षिते भस्मसूतके ।। त्रिसप्ताहाद्वरारोहे कामान्धो जायते नरः ।।१८०।। नारीसंगाद्विना देवि अजीर्णं तस्य जायते ।। मैथुनाच्चल्लिते शुक्रे जायते प्राणसंशयः ।।१८१।। युवत्या जल्पनं कार्यं तावत्तु मैथुनं त्यजेत् ।। लघुतां शेफसो ज्ञात्वा पश्चादच्छसुखी भवेत् ।।१८२।। ब्रह्मचर्येण वा योगी सदा सेवेत सूतकम् ।। समाधिकरणं तस्य क्रामणं परमं मतम् ।।१८३।। (र० चिं०, र० रा० शं०, र० रा० सुं०, नि० र०, र० सा० प०)

अर्थ–पारद भस्म के भक्षण करने में एक बड़ा ही दोष यह है कि इक्कीस दिन तक खाने से मनुष्य कामान्ध हो जाता है और उसको स्त्री न मिले तो अजीर्ण पैदा होता है और मैथुन करने से यदि वीर्य अपने स्थान से च्युत हो जाय तो वह मनुष्य मर जाता है। इसलिये सुन्दर स्त्री के साथ बातचीत या हास्य न करे और जब तक पारद भस्म खावे तब तक मैथुन न करे, अथवा योगीराज ब्रह्मचर्य वृत्ति को धारण कर पारद को सेवन करे तो समाधि का लगाना ही उसका क्रामण होता है और शेफ (जननेन्द्रिय) की लघुता (हलकापन) को जानकर पीछे स्त्रीसंग करे।।१८०–१८३।।

सूतभक्षण में दोष और उसका निवारण

एको हि दोषः सूक्ष्मोऽयं भक्षिते भस्मसूतके । त्रिसप्ताहाद्वरारोहे कामान्धो जायते नरः ।।१८४।। मैथुनाच्छुक्रमेहस्य त्रिसप्ताहादधः कृतात् ।। जायते प्राणसंदेहस्तावत्तन्मैथुनं त्यजेत् ।।१८५।। युवत्या जल्पनं कार्यं युवत्याश्चांगमर्दनम् । तस्याः स्पर्शनमात्रेण रसः क्राम्यति विग्रहे ।।१८६।। यथायथाह्लादयति सुस्त्रीरूपनिरीक्षणात् । तथाक्रामति देवेशिसूतकोऽसौ ततः क्रमात् ।।१८७।।

(टो० नं०)

अर्थ–पारद के भक्षण करने मे एक ही यही दोष बड़ा है कि उसके तीन सप्ताह तक भक्षण करने मे मनुष्य कामान्ध हो जाता है। तीन सप्ताह के भीतर किये हुए मैथुन से प्राण नष्ट होते हैं, इसलिये जब तक पारद भस्म का सेवन करे तब तक स्त्री का संग न करे, स्त्रियों के साथ बातचीत करे और उनके कुछ मर्दन करे। स्त्रियों के स्पर्श करने से ही पारद शरीर में क्रामण करता है। जैसे जैसे सुन्दर स्त्रियों के रूप से दर्शन से मनुष्य प्रसन्न होता है वैसे वैसे ही हे देवि! यह पारद शरीर में अधिक रमता है।।१८४–१८७।।

स्त्रीसेवननिषेध

लवणाद्विक्रियां याति स्त्रीसंगान्म्रियते नरः ।।१८८।।

(टो० नं०)

अर्थ–लवण के खाने से शरीर में विकार पैदा होता है और स्त्री के संग से मनुष्य मर जाता है।।१८८।।

रसविकारशान्ति

रसायनविधिभ्रंशाज्जायेरन् व्याधयो यदि । यथास्वमौषधं तेषां कार्यं मुक्त्वा रसायनम् ।।१८९।।

(र० सा० प०)

अर्थ–रसायनविधि के भ्रष्ट होने से यदि रोग पैदा हो तो रसायन विधि को छोड़कर रोगानुसार औषधि करना चाहिये।।१८९।।

इति रससेवनाख्यसंस्कारः समाप्तः ।

नुकसान पारद और उसका इलाज यूनानी तरीके से (उर्दू)

जीवक यानी सीमाव अगर जिन्दः खाये तो अकसार जरर नहीं करता, उसी वक्त निकल आता है मगर जो नसा कि मसअद और मकसूल होता है उसका खाना बातिन नही दर्द और बदन में वर्म और मगस शहीद और जबान में गरानी मैदे बूझः और बोल की बंदिश लाता है। इलाजमाइउल असल और बूरा पकाकर कैंकराये और इन्ही से हुकनः करे और तीन दिरम माइउल असल के हमराह कई मरतबः में दे। इसके बाद दूध और बजूर के लुआब और शराब के और मरमुफीद है और दिल की तकवियत अदबिया और अगजिया मुनासिब से जरूरी है और जो कुछ कि मुर्दासंग खाने से बाब में बयान किया जायेगा, नफा करता है। अगर जिन्दा सीमाव कान में चला जाये तशनुज और दर्द शदीद और अखलात अकल और उस जानिब में बहुत बूझः पैदा हो जाता है और अकसर सक्ता और सर अभी हो जाए और उसके निकालने की तदबीर यह है कि रसास यानी रांगा कान में ले जाए ताकि सीमाव उस पर चिपट जाए और बाहर निकाल ले। (सुफहा तिब अकबर उर्दू ७५२)

सफाई सीमाव (फार्सी)

दस्तूर–तसफिया जीवक कि मअमूल अहल सिनात यानी कीमियां अस्तआंअस्त कि जीयकरा दर जर्फ मसी बेकलाई साफ बेचकर बकुदूरत करदः बर आतिश मुजारन्द व बफाल्सः अन्द की जर्फ नसितः रा बरे आवविसियार सर्द करदः बालाइआं बिदारन्द आंचि जीवक खालिस साफी अस्तसऊद कर्दः बरसित जेरीआंजर्फ पुरआवसर्द मुजतमा से गरदद आंराजमानमूदःबकार बरन्द व अमा बतरीक मुतअर्रिफ कि जाँवकरा दर हावन संईग या दरजर्फ शीस्तः या लुआबदारद व आबवेद अंजीर बिसानीद बाद अजां शीस्त हिनकाद व मसकाल आँरा बासी मसकाल आब खालिस दरदेग संगी बातिश मलायम बिजोशानद व हरचंद आव बह तहलील रदद अन्दक अन्दक आब तायकर तलनीजदाखिल नुमायन्द ता तमाम खुनक गर्दद पस जीवकरी बरदाश्तः दरशीसः निगाह दारन्द वई मुसम्मी अस्त बिलुल अरवाह वास्तलाह अहलासिनात व मुनक्की अस्त । (सुफहा २३३ किताब जल्द दोयम करावादीन कबीर)

कच्चा पारासेवन विधान

पारा १ तोला, गौ का दूध १ सेर दोनों को मिला आग पर औटावे। तीन पाव रह जाने पर दूध को छान ले ताकि पारा निकल जावें फिर इसका सेवन करे पारा मिला औटाया हुआ दूध पुरुष के अंग अंग को वज्र बना देता है और हानि किसी प्रकार की नहीं करता परन्तु पारा शिंग्रफ का निकाला हुआ हो। (अखबार भारतरक्षक अप्रेल व मई सन् १९०७)

तरीक खुर्दन सीमाव खाम (फार्सी)

गिदर शिकम व माँद व नफा ओ जाहर अस्त बिगीरन्द सीमाव हरमिकदार कि ख्वाहद खुर्द व दरकागज या बर्ग या न हिल्द पस आंरा फर्द बुर्द व कवल अजखुर्द नवीन खसतीन बायद कि विरंजपुख्तः जौबरात तनाववुलकुनद वा रोगन या वी व रोगन मुत्तसिल ओ सीमाव खुरद व तरीकि गुफ्तः शुद व वादअज खुर्दन सीमाव अन्दकें दहन बस्तः दारन्द व

तकल्लुम न कुनद ता सीमाव अजदहन कुरू नकीतद व दो रोज दर्मियान हम विरीनिसान सीमावरा मेखुर्दः बाशद कानूनी कि गुफ्तः शुद दरहफ्तरोज नफा बीपिदीद आयद व हरकदर मुद्दत कि बिख्वाहद बकार बरन्द मुख्तारस्त व अव्वल अज नीम तोला शुरूकुनद पस चूं बतबै मुवाफिक आयद हरकदर कि ख्वाहन्द आहिस्तः आहिस्तः बियफ जानीद अस्मादर अय्यामां सरमा बायद खुर्द न आंकि दरगर्मा बशर्ते कि मबरूदी व मरतूबी मिजाज बुवद अर्जी मुन्तफः शवद व महरूरीरा सख्तजियां दारद व आफात आरद जवानरा नबायद व नशायद व बद आंकि ता सहरोज ईसीमाव दरशिकम् मीनुमायद व रोज सोयम दरगायत बरमीआयद व बायद कि सीमाव मस्कह व रागन बिसियार मेखुर्दः बाशद मुजरिंतिन रसानद व अज तुर्शी व बादी अहतराज जाजिम दानंद ओ अफसूं ईनस्त–(सुफहा ९ किताब मुजरवात अकबरी)।

तरकीब खुर्दन सीमाव खाम (फार्सी)

दवाए कि दर आवुर्दन इश्तहा नफा तमाम दारद व बगायत मुवस्सर अस्त व मंजिलः अकसीर अस्त सीमाव यक दाम गुलैनरमा सद अदद सुहागा ४ माशा निखस्ती सीमावरा दरशीरा बर्ग भटकटाई कि औरा बाजंजान जंगली गोयन्द दो रोज तर कुनन्द व रोज सोयम सीमाव बेरू आरन्द व दरापर्चः सुफ्त दो सह मर्तबः साफ नुमायन्द बादहू दरआफ्ताव खुश्क साजन्द पस सुहागा व सीमाव दरओंद नारियल या चोबनी सहल कुनन्द व गुलहाइ नरमा अन्दक अन्दक मे अफजानीद हलमें कुनन्द ताकि हमेः गुलहा दरूइ हलशवद् मीआद सहक चहार पास अस्त पसमिकदार फिलफिलकर्द गोलीबंदन्द व अगर गोली न बन्दरन्द बकदरे गुलाव दरआँ बियफजानेद व वाद अजतुआम दो गोली फरू बुरन्द व अजतुर्शी व बादी परहेजन्द तुआमहज्म कुनंद बइश्तहा बिसियार आरद गुल नरमा अगरगुंचःबुवद व तमाम शिगुफ्तः बाशद बेहतर अस्त (सुफहा ५२ किताब मुजरवात अकबरी)

सीमाव को हमराह कपास स्याह गुलखानेके फवायद (उर्दू)

अगर कोई शखस ढ़ाई पत्ती कपास स्याह गुल की खाकर सीमाव तोला भर या दो तोला बकदर बरदाशत तबियत के पी जावे और उसके ऊपर ढ़ाई अदद कपास स्याहगुल मजकूर की पत्ती खा लेवे तो सीमाव मजकूर जब तक मैदे में रहेगा इमसाक और कुव्वतवाह इतनी होगी कि जिस कदर चाहे जमाइ करे मादा न होगा और पैदल चलने से थकावट न आवेगी। जब बराह के सीमाव खारिज हो जायगा यह तासीर उससे बातिल हो जावेगी। (सुफहा अकलीमियां ५८)

मभी–जायफल में असर सीमाव लिया है (फार्सी)

कि१ बगायत अजीबअस्त जोजहिन्दी दुरुस्त मुकश्शर साजन्द व दरूएयक सूराख खुर्द कुनन्द व दहदिरम लिबरियत व दहदिरम जीवकहल करदः कर्दीअन्दाजन्द व सूराख जोजवन्द कुनन्द पस दरसह अदद सुबूइ शीरगाउ बिजोशानन्द यक शवानः रोज बाद आजाँ बर आवुर्दः जोजरा पारः कर्दः बअदवियः तमामी दूरसाख्तः मरज जौजहिन्दीरा खुश्क साख्तः बिदारन्द व हररोज अजाँ अन्दक बिखुरन्द बेजनतावन तवानंद आवुर्द व रोगने कि बालाइ शीर मजकूर बन्दद नीज मुकव्वीस्त (सुफहा १०१ किताब अकबरी)।

रोगन सीमाव गायतमभी बजरिये कबूतर (फार्सी)

बच्चा कबूतर कि कली तमाम नबरआर्वुदः बाशद बिगीरन्द व यकदाम सीमाव आँरा बिजोशानन्द व रोज दोयम दोजाल यम सह दाम व रोज चहारम चहार दाम व रोज पंजम पंच दाम व मुजर्रद नोशानीदन जिबः कुनन्द बहलक मुकदवी बिदोजन्द चुनांचः सीमाव दर्शिकम ओमाँद व नतवानन्द बर आमद पसआंरा दर आब बिजोशानन्द ताकुलिहाइ बाजू जुदा शवद आँकुलिहारा बिगीरन्द व दरशीशः मालुल हिकमत कि बराइ चोवः बरआवुर्दन मेसाजन्दः निहादः बतरी चोवः चकानन्द व अर्क निगाहदारन्द व खुराक ई आनस्त कि वतन यानी तखदरूइ तरकुनन्द व कतरः अज्व फरूचकद बिखुरन्द यानी यक कतरः खुराक अस्त बापान बायद खुर्द दरतकवियत वाह हुक्म अकसीर दारद (सुफहा ८४ किताब मुजरवात अकबरी)

१–अगर यह मुफीद है तो चन्द्रोदय जायफलः वगैरः के साथ किसी कदर मुकव्वयी होगा।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासजेष्ठमल्ल–कृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां रससेवनादिकथनं नामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ।।३९।।

औषधिसेवनाध्यायः ४०

कज्जलीसेवन

यह कज्जली संस्कृत दीपित पारद की समान अंश गन्धक शुद्ध में शीतखल्व में घोट बनी थी (आगे गन्धकजारित पारद की द्विगुणगन्धक से तप्तखल्व में बने)

ता० २८ से २ चावल कज्जली, ६ चावल आँवला और १ रत्ती मिश्री सब २ रत्ती को दूध के साथ रात को सेवन करना आरम्भ किया।

ता० ११/१ तक १४ पुड़ियां सेवन की कोई प्रत्यक्ष लाभ न दीख पड़ा।

ता० १२ को २ चावल कज्जली १।। चावल अभ्रकभस्म ४ चावल आंवला, शहद और घी में मिला दूध के साथ रात को सेवन किया।

ता० १३/१४ को यही दवा केवल शहद में मिला दूध के संग सेवन की।

ता० १५ से ४ चावल कज्जली, और १२ चावल मिश्री सब २ रत्ती को दूध के साथ रात को सेवन करना आरम्भ किया और भोजनान्तर दोनोंसमय १ ड्राम चिरायता पीना आरम्भ किया।

सम्मति–ता० १० को शुक्रवार में बारिश होने और कोहरा पड़ने के कारण शीत अधिक हो जाने से दस्त साफ नहीं होता और भूख ठीक नहीं लगती। ३–४ दिन चिरायता पीया इससे कुछ लाभ न हुआ। उलटा ज्यादा कब्ज मालूम हुआ इसलिये छोड़ दिया। अन्न कम खाया और बादाम का सेवन अधिक किया। १ दिन रात को कज्जली हरड के मुरब्बे के संग खाई तो कब्ज घटकर कुछ तबियत ठीक हुई।

ता० २०–२१ को कज्जली का सेवन बंद रहा।

ता० २२ को प्रातःकाल को ४ चावल कज्जली, १ चावल अभ्रक ५ चावल आंवाला और १० चावल मिश्री की पुड़ियो का १ माशे घी, ३ माशे शहद में मिला चाट दूध से सेवन करना आरम्भ किया। और रात्रि को स्वर्णमयी पारद गुटिका दूध में औटा पीना आरम्भ किया। अब कब्ज दूर हो गया क्षुधा सामान्य ठीक हो गई।

ता० ३० जनवरी से ६ चावल कज्जली, २ चावल अभ्रक, २ चावल शिलाजीत, ६ चावल भुंडीचूर्ण, सब २ रत्ती की पुड़िया, २ माशे घी और ३ माशे शहद के साथ खाना आरम्भ किया और ऊपर से दूध पीना बदस्तूर जारी रखा और रात को गोली का सेवन निरंतर रहा।

ता० ३१–१–२ को ३ दिन पुड़िया नहीं खाई।

ता० ३ फरवरी से हर पुड़िया में २ रत्ती आँवला, ४ रत्ती मिश्री मिला केवल दूध से खाना आरम्भ किया।

ता० ८ तक ये पुड़ियाँ खाई और गोली भी पीई फिर इस पुड़ियो में मुंडी और बढ़ा दी किन्तु आगे कुछ मौसम गर्म हो जाने और कुछ कब्ज मालूम होने से मुंडी युक्त पुड़िया का सेवन कर चल सका गोली भी १० ता० के बाद ज्यादः कब्ज हो जाने से कभी कभी बंद रखी गई। खूब दूध पानी से यह कब्ज दूर हो गया किन्तु मौसम गर्म हो जाने के कारण रात्रि को दूध की रुचि नहीं होती अतएव ता० १६ से गोली बंद कर दी गई।

कज्जली सेवन का नक्शा

तारीख	पुडिया	गोली	विशेषवार्ता
२८/१२/०७से ११/१तक	१८पुडिया–(जिसमें १चावल कज्जली ६चावलआंवला, १रत्तीमिश्री, सब २रत्तीपुडियारातको दूध के साथसेवन कीगई)		सुबहकसरतऔर शामकोहवाखाना जारी रखा
से ११/१तक	१रत्तीमिश्री,सब २रत्तीकीपुड़िया रातको दूधकेसाथ सेवनकीगई)		कोहवाखानाजारी
१२/१/०७	१पुडिया(जिसमें २चावल कज्जली, १॥चावल अभ्रकभस्म,४चावल आंवला,शहद और घी में मिलादूध के साथ सेवन)		
१३/१से १४/१ तक	२पुडिया(उपरोक्त दवा केवल शहदमें मिलादूधकेसाथसेवन)		
१५/१से १९/१ तक	५ पुडिया(जिसमें४चावल कज्जली १२चावल मिश्री सब २रत्तीको दूध केसाथऔर भोजनोत्तरयादोनों समय १ड्राम चिरायता)		३-४दिन चिरायता पीया कोईलाभ न मालूमहुआ उलटाकब्जमालूम होनेसेछोड़दिया अधिक किया
२०/१से २१/१तक	कज्जलीकासेवनबंदरहा ८पुड़िया(जिसमें४चावल कज्जली, १चावलअभ्रक,५चावलआंवला, १०चावलमिश्री,१मा०घी ३माशे शहदमें मिला दूधमें सेवनकी)	रात्रिको स्वर्ण–मय गुटिका दूधमें	अबकब्जनहीमालूम होता क्षुधा सामान्य ठीक हो गई
३०/१	१पुडिया(जिसमें६चावलकज्जली, २चावलअभ्रक,२चावल सिलाजीत,६चावलमुंडीचूर्ण सब२रत्तीकीपुडिया ३मा० शहदकेसाथऊपरसेदूधपीया)		
३१/१/२	३दिनपुडियानहींखाई		
३/२से	५पुडिया(उपरोक्तपुडियामें२र० आंवला ४रत्तीमिश्रीमिलाकेवल दूधकेसाथ		
९/२	१पुडिया(उपरोक्तपुडियामें कुछ मुंडीऔर बढ़ादी)		किन्तुकब्जमालूम होनेसेमुंडीयुक्त पुडियाकासेवन न चलसका
१०/२	पुडियाबंद		
१६/२	३८दिनपुडियाकासेवनहुआ	गोलीबंद २५दिन गोलीसेवन	ज्यादःकब्जहोने गोलीकभी २बंदरखीगई

सम्मति–अनुभव से ज्ञात हुआ कि ४ चावल से १ रत्ती तक कज्जली की साधारण मात्रा मेरे लिये है, इसके सेवन से दूध पीने में रुचि होती है और दूध पचता है, मस्तक को ऊष्मा नहीं देती और निद्रा में हानि नहीं करती, जाड़ों के दिनों में कज्जली का सेवन त्रिफला वा और ऐसी ही दस्तावर औषधियों के साथ होना चाहिये। कज्जली के सेवन काल में दूध का सेवन अधिक रखना चाहिये और अन्न कम खाना चाहिये जिससे कब्ज न होने पावे।

ढाक की जड़ की छाल के चूर्ण का सेवन

सोमवार ता० १६ मार्च से २ रत्ती, ३ रत्ती, या ४ रत्ती ढाक की जड़ की छाल के चूर्ण को समान मिश्री मिला धारोष्ण (तत्तत्काल का काढ़ा हुआ दुग्ध जिसकी गर्मी शांत न होने पाई हो) दुग्ध से प्रातःकाल खाना आरम्भ किया तो दूध के पचने के शक्ति उत्पन्न हुई दोपहर को दूध चावल या दूध दलिया और रात को गाजर आदि की खीर पूरी से प्रतिदिन खानी पड़ी। दस्त बँधा हुआ पीला ठीक होने लगा। ४ रत्ती मात्रा अधिक हो यकृत पर और मस्तिष्क में शुष्कता करनी थी २ वा ३ रत्ती ठीक होती थी)

ता० ३० मार्च तक १५ दिन खाकर ऋतु बहुत उष्ण हो जाने और तृषा बढ़ जाने और मल अधिक कड़ा आने के कारण इस औषधि का सेवन उचित न समझ बन्द कर दिया।

यह औषधि कफनाशक, दूध को पाचनेवाली, क्षुधा को जगानेवाली, और कामोत्पादक सिद्ध हुई। ग्रीष्म और वर्षा के बीत जाने पर शरद ऋतु में फिर इसका सेवन आरम्भ करने योग्य है शीतकाल में औटे दूध से सेवन करना उचित होगा और यह भी विचारा जाय कि क्या घी, शहद मिलाकर शीत ऋतु में सेवन करना चाहिये।

सहमल पुष्प चूर्ण सेवन

सूखे हुए सहमल के फूल और समान मिश्री मिलाकर ४–४ रत्ती की पुड़ियां बांध ली गई।

ता० ८ को १ पुड़िया धारोष्ण दुग्ध से।

ता० ९ को २ पुड़िया

ता० १० को २ पुड़िया

ता० ११ को १ पुड़िया

३–४ दिन के सेवन से ही सहमल पुष्प ने पेट में गुरुता उत्पन्न की और भूख घटा दी अतएव छोड़ दिया। इस चूर्ण को दीप्त जठराग्नि होने पर शहद में मिला और औटे दूध से सेवन करना शायद हित पड़े।

सहसवानवाले हकीम की मारफत धर्मपुर से आये श्वेत ढाकपुष्प चूर्ण का सेवन

श्वेतढ़ाक पुष्पचूर्ण और समान मिश्री मिला ४–४ रत्ती की पुडिया बना ली।

ता० १६ को ४ रत्ती।

ता० १७ को ८ रत्ती की मात्रा असह्य होने से घटा दी गई

ता० १८ को ४ रत्ती ।

ता० १९ को ४ रत्ती ।

२–३ दिन खाने से ही क्षुधा और दुग्धरुचि उत्पन्न हुई है और दस्त साफ होने लगा किन्तु ३ दिन और सेवन करने से दस्त में खुश्की आ जाने से छोड़ दिया।

सम्मति–घी और शहद मिला चाट ऊपर से दूध पीना ठीक होगा वा बरसात में केवल मिश्री मिला दूध से सेवन करो। (जड़ और फूल के गुण एक से ही प्रतीत हुए)

चित्रक (चीते) का सेवन

कार्तिक बदी २ दोज से माशे जौकुट चीते को ३ छटांक पानी में भिगो प्रातःकाल छान पीना आरम्भ किया, ७ दिन पीछे २ माशे चीते की छाल का जल इसी तरह पिया सब १०–१२ दिन तक सेवन हुआ। मध्य में इसने पट्ठों को ताकत दी जिससे शरीर में एक प्रकार का बल जान पड़ा और मस्तक का बलगम गाढ़ा हो गया। कुछ दूध और मीठे की रुचि उत्पन्न हुई और निरन्तर कामोत्तेजन भी हुआ किन्तु अन्त में खुश्की ज्यादः हो जाने से कब्ज हो गया भूख बहुत घट गई और कमजोरी आ गई। सरकी रगें खिच सी गई जिसकी शान्ति फ्रूटसोल्ट पीने और दुग्ध पीने, फल खाने और अन्न कम खाने से हुई।

सम्मति–इस अनुभव से सिद्ध हुआ कि चित्रक में कुचले की सी शक्ति है। और ये पतले मल को बांधने और रगों को कसने मस्तिष्क के दूर करने का उत्तम औषधि है किन्तु इस समय इसके सेवन का ठीक न था, फागुन, चैत्र ठीक होगा। शायद पानी की जगह दूध के साथ सेवन करना अधिक हितकारी होता। मात्रा ३ माशे की मेरी प्रकृति के लिये अधिक थी। १ मासा, १।। मासा होनी चाहिये। "वसंते भ्रमणं पथ्यं पथ्यं च वह्निसेवनम्" इसके सेवन के दिनों में थोड़ी कसरत भी आरम्भ कर दी थी और लोहे का बुझा पानी पीता था।

स्वर्णभस्म सेवन

१ चावल स्वर्णभस्म, १ चावल मुक्ताभस्म, २ रत्ती बंशलोचन, २ रत्ती छोटी इलायची के दाने इसके चूर्ण को ९ माशे शरबत अनार के साथ ता० ३०/१ शनैश्चरवार से प्रातःकाल कसरत से पहले सेवन करना आरम्भ किया। ३ दिन इसी प्रकार सेवन रहा पहले और दूसरे दिन भर भूख अच्छी मालूम हुई तीसरे दिन गाढ़ी खीर खालेने से कुछ खराबी पड़ गई।

ता० २ से उपरोक्त पुड़िया में चांदी का १ वर्क और शामिल कर दिया गया मौसम ज्यादा ठंढा हो जाने से ता० ५/२ को पुड़िया शहद में खाई। गर्मी खुश्की करने के कारण ता० ६/२ से फिर अनार से शर्बत से ही खाना आरम्भ किया एक आध दिन बीच में नागा भी हुई। सब ९ पुड़िया खाई फिर ता० ८/२ से नुमाइश के मेले में जाने से नजले और जुकाम की सी शिकायत हो गई और शिर में दर्द रहने लगा, लाचार दवा बंद करनी पड़ी।

सम्मति–जान पड़ता है कि इस औषधि ने थोड़ी गर्मी और विशेष खुश्की पैदा की जिसमें कसरत और नुमाइश की खुश्की मिलने से विकार पैदा हुआ।

आगे जब कभी फिर सेवन किया जाय तो मक्खन या मलाई से सेवन करना चाहिये और उन दिनों में कसरत न करनी चाहिये और मस्तिष्क से काम बहुत ही कम लेना चाहिय। रात को काम बिलकुल न करना चाहिये, क्रोध भी छोड़ना चाहिये, वार्तालाप कम करनी चाहिये, अर्थात् वातजन्य सब कर्मों से मस्तक की रक्षा करनी चाहिये और कफवर्द्धक पदार्थ केला, चावल, खीरमखाना, आदि का सेवन करना चाहिये।

औषधिनिर्माण (सुरमा–सोने मोती का)

कोरे सुरमे को कई दिन घोट बारीक कर लिया वह सुरमा ३ तोले, मूंगे की जड़ १ तोले, ममीरा कश्मरी ४ माशे, यह तीनों मिला सूखे घोटे

ता० २२ को ३ घंटे
ता० २३ को ६ घंटे
ता० २४ को ४ घंटे
ता० २५ को १ घंटे
ता० २६ को २ घंटे

ता० २७–आज २ माशे छोटे अनविंधे मोती डाले और हरडका पानी डाल ४–५ घंटे घोटा।

ता० २८ को ६ घंटे घुटा हरड के पानी के साथ
ता० २९ को घुटाई बंद रही।
ता० २/३ को २ घंटे गुलाबजल में घुटा
ता० २ को ३ घंटे " "
ता० ३ को ६ घंटे " "

ता० ४ आज थोड़ा गुलाबजल और डाल १ माशे सोने के वर्क डाल ६ घंटे घुटाई की।

ता० ५ आज ६ रत्ती भीमसेनी काफूर डाल ६ घंटे घुटाई की अब तक ये पतला था।

ता० ६ को ३ घंटे घुटाई की गीला जान शीशे के बकस में रख धूप में रख दिया।

ता० ७ को ४ घंटे घुटाई की अब ये बिलकुल सूख गया था सब घुटाई दवा मिलाने पर ५६ घंटे यानी ६ दिन के करीब हुई।

ता० ८ को खरल से निकाल तोला तो ५ तोले ३।। माशे हुआ अर्थात् दवाओं के वजन के हिसाब से ७ माशे ६ रत्ती बढ़ा।

सम्मति–इस मुरमें को आखों में लगाया तो ठंडा मालूम हुआ पानी बहुत निकला भीमसेनी काफूर का प्रमाण अधिक जान पड़ा इस वास्ते आगे से इतने सुरमे में ६ रत्ती की जगह ३ रत्ती कपूर डालना काफी है।

तैलसाधन (सहमल पुष्पादिसे)

तेल मीठा १ सेर
भांगरे का स्वरस ऽ।। सेर
कमल की जड़ का हिम ऽ।।=(जो ऽ।।जड़ में से पानी का छींटा दे निकाला)
सहमल के फूलों का हिम २।। सेर(जो १ सेर ताजे फूलों का पानी के साथ निकाला)
कमल की जड़ की पिष्टी १ छ०
भांगरे की पिष्टी १ छ०
सहमल के फूलों की पिष्टी १ छ०
ये तीनों पिष्टी ऽ।। सेर पानी में घोल लीं।

इन सब रसों को और ऽ।। सेर पानी में घुली तीनों पिष्टियों के उक्त तैल में मिला बड़े भगोने में भर १०।। बजे से समाग्नि देना आरंभ किया ८ बजे रात के तैल अवशेष रहने पर उतार लिया।

ता० १८ को छान बोतल में भर लिया १ सेर हुआ रंगत हलकी हरी रही।

त्रिफलारसायन

अगहन बदी ५ को ३ छटांक त्रिफला (जिसमें हर्र, बहेडा, आँवला समान भाग था) को निम्नलिखित नकशे के अनुसार भांगरे के रस की ७ भावना दी गई।

नक्शा

तारीख	नंबर भावना	तोल रस	समय घुटाई	समयसूखनेका
१३/११/०८	१	४ छटांक	२ घंटे	५ घंटे
१४	२	३ छटांक	२ घंटे	५ घंटे
१५	३	२ छटांक	३ घंटे	५ घंटे
१६	४	३ छटांक	१।। घंटे	५ घंटे
१७	५	२।। छटांक	२ घंटे	५ घंटे
१८	६	२ छटांक	२ घंटे	५ घंटे
१९	७	३ छटांक	२ घंटे	५ घंटे
मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	मीजान
७	७	१९।।छटांक	१४।। घंटे	३५ घंटे

ता० २० को सूखता रहा कभी चल दिया।

ता० २१ को खुरच दिया फिर सूखता रहा।

ता० २३ को तोड़ दिया अर्थात् छोटे २ टुकड़ेकर बखेर दिया और सूखता रहा।

ता० २८ को पीस चूर्ण बना लिया जो तोल में १८ तोले हुआ

सोंठरसायन

ता० २१ को १ छ० सोंठ चूर्ण, १ छ० घी, १ छ० शहद, १ छ० खांड, सबको मिला शीशी में भर गेहूँ के बोरे में गाड़ दिया।

ता० २१ दिसंबर को निकाला तो घृत आदि जमे हुए निकले गेहूँ के बोरे में धान्यराशि (शास्त्रलिखित) के अनुसार कुछ गर्मी न दी इस कारण इसको २–३ दिन धूप में रखा खाने में सुस्वादु चरपरी थी।

निर्गुंडीरसायन

ता० ४ को निर्गुंडी की जड़ की छाल का सूखा चूर्ण १ छ० शहद १ छटांक, घृत १। छटांक और १ चम्मच दूध सबको शीशी में बंद कर दिया।

ता० ५ को गेहूं के बोरे में गाड़ दिया।

ता० २२ दिसबर को निकाल दिया औषधि न थी जमी हुई निकली। गेहूँ के बोरे में धान्यराशि समान गर्मी न दी इस कारण इसको धूप में रखा वहां भी न पिघला यह कि निर्गुंडीचूर्ण अधिक फूला और शुष्क होने के कारण सवाये घृत से भी भली भांति आर्द्र न हुआ लाचार भूभलपर गरम कर पिघलाया।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठ–
मल्लकृतायां रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायाम्
औषधिसेवनवर्णनं नाम चत्वारिंशोऽध्यायः ।।४०।।

चिकित्साध्यायः ४१

वात, पित्त, कफ—नाशक ३ प्रयोग जड़ी से

अथ वातपित्तकफानां शमने परमौषधसंग्रहः । राला गुडूचिकैरंडो दशमूलं प्रसारिणी।।क्वाथादिकल्पनं वायोर्नास्ति नाशकरं परम्।।१।।जीवनीयगणो द्राक्षा खर्जूरं सपरूषकम् ।। वासा चन्दनमत्युग्रं पित्तस्य परमौषधम् ।।२।। त्रिकटु त्रिफलामूलं पत्रं धान्यकपुष्पकरम् ।। अमृतां दीप्यकं नूनं कफरोगे महौषधम् ।।३।। (र० सा० प०)

अर्थ–अब वात, पित्त और कफ के नाश करने को परम उत्तम औषधियों के संग्रह को कहते हैं। रासना के पत्ते, गिलोय, एरण्ड, दशमूल, प्रसारिणी (खींप) इनका क्वाथ, चूर्ण और घृत आदि वायु का नाशक है। जीवनीयण मुनक्का, खजूर, फाल से, अडूसा और चन्दन इनका भी क्वाथादि पित्त का परमौषध है। त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) त्रिफला (हर्र, बहेडा, आमला) पीपलामूल, पत्रज, धनिया, पौष्करमल, गिलोय और अजमायन इनसे बना हुआ औषध कफ का नाशक होता है।।१–३।।

दाडिमादिचूर्ण

दाडिमस्य पलान्यष्टौ पलं सौगन्धिकस्य च ।। अजाजीनां पलं चार्धं पलार्द्धं धान्यकस्य च ।।४।। पृथक् पलांशकान्भागाँस्त्रिकटु ग्रंथिकस्य च ।। त्वक्क्षीरी वालकं चैव दद्यात्कर्षसमं भिषक् ।।५।। शर्करायाः पलान्यष्टौ तदेकथं विचूर्णयेत् ।। आमातीसारशमनं कासहृत्पार्श्वशूलनुत् ।। हृदोरामरुचिं गुल्मं ग्रहणीमग्निमार्दवम् ।।६।। (वैद्यरहस्य)

अर्थ–अनारदाने आठपल, दालचीनी, इलायची, छोटी वंशलोचन, पत्रज ये एकपल, दोनों जीरे, दो तोले, धनिये दो तोले, पीपलामूल, एकपल, दालचीनी क्षीरी, नेत्रवालछड़ ये सब एक २ तोले, खांड़ आठपल इन सबको पीस चूर्ण करे तो यह दाडिमादिचूर्ण आमातिसार, खाँसी, हृदय और पसली का दर्द, हृदय के रोग , अरुचि, गोला और संग्रहणी को दूर करता है।।४–६।।

दाडिमाष्ट चूर्ण

पलद्वयं दाडिमस्य व्योषस्य च पलद्वयम् ।। त्रिगंधस्य पलं चैकं खंडस्याष्टपलानि च ।।७।। सर्वमेकीकृतं चूर्णं प्रशस्तं दाडिमाष्टकम् ।। दीपनं रुचिदं कंठ्यं ग्राहि संग्रहणीहरं परम् ।।८।। (वैद्यरहस्य)

अर्थ–अनारदाने दो पल, सोंठ, मिरच और पीपल दो पल, दालचीनी, इलायची और तेजपात, मोथा एकपल, खांड आठपल, इन सबको पीसकर मिला लेवे तो यह दाडिमाष्टक तैयार हो गया यह चूर्ण दीपन रुचि के बढ़ानेवाला कण्ठ को हित ग्राही और ग्रहणीरोग को नाश करता है।।७।।८।।

नमक सुलेमानी हाजिमतु आम व राफैकब्ज (उर्दू)

नमकस्याह १ तोला, नमकतुआम १ तोला, नमकसैंधा १ तोला, नमक लाहौरी १ तोला, मिर्चस्याह १ तोला, जोहरनौसादर १ तोला इन सब अजजाई को बारीक पीसकर रखें जिस वक्त जरूरत हो बहालत कब्ज और दर्द शिकम बराबर ३ माशे खावे अगर जौहार नौसादर दस्तयाब न हो तो नौसादर पकाकर शरीक करे और यह नमक बर्मतहाल को तो निहायत ही मुफीद है। (सुफहा १३ अखबार अलकीमियां १/६/१९०७) ।

चूरन हाजिम तुआम या जायका खुश (उर्दू)

सूर हजमी खट्टीडकार दर्दशिकम को दफै करता है–हाजिम इस कदर है कि जिस कदर खावे हमज हो जावे तिली व हैजे को मुफीद है।

नमकलाहौरी ऽ।, नमकखुर्दनी ऽ=, शोराकलमी ऽ= मिर्च, स्याह ऽ =, नौसादर मादनी ऽ=, तेजाव अर्क, जामुन बकदर जरूरत सफूफ करके बना लो खुराक ४ रत्ती। (सुफहा ७ व ८ अखबार अलकीमियां १६/७/१९०७)

शिकंजवीन हाजिम व मुकव्वी (उर्दू)

शिकजवीन जो निहायत हाजिम और मुकव्वी रूह है इसके स्तैमाल मादा ताकतवार हो जाता है। आबबर्ग पोदीना ऽ।। सेर आबलैमूं कागजी ऽ।। सेर, आवजंजवील ताजा ऽ= कंद सफेद डेढ़ सेर, शहदखालिस पावभर जाफरान १ तोला, बतरीक मामूल शिकजवीन बनाले कवल अजगिजा एक तोला। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां १/९/१९०७)

जवारिश उलवीखां मुकव्वी मेदा व जिगर (फार्सी)

मेदासारा कुव्वता दिहद हरारत जिगर व इसहालमुरारीरा नाफै व नाफै व इश्तहाआरद शीराआंवला ४ तोला, तवाशीर ४।। माशे, सन्दल ४।। माशे, समाक ४।। माशे, जरिश्क ४।। माशे, बर्कगुल ४।। माशे, बादरंजयः ४।। माशे, पोस्तबैरूपिस्ता ४।। माशे, कश्तीज खुश्क ९ माशे, मुकशर तुख्म खुरपा मुरबारीदनासुफ्तः २। माशे, अंबरा शहब १ माशे, वर्क नुकरा ९ सुर्ख, वर्कतिला ९ सुर्ख, नवात ८ तोले, आब बशीरी ९ तोले, शरवत ६ माशे (किताब मुजर्रिबात अकबरी)

हजमशीरका नुसखा (संखिया का उमदा स्तैमाल) (उर्दू)

सम्मुलफार सफेद एकज्जुज, नमकसंग आठजुज, दोरोज वातहारत जिस मकान में हाइजा व जनव का गुजर न हो अर्क घीग्वार के साथ सहक करे और वहिफाजत रख ले। जुमला अमराज बलगमी व हजम शीर वगैरः में एक चावल से चार चावल तक वे मिसल है हिसाबसे अगर कोई साहब एक चावल रोज तनावल फर्मावे बहत्तर दिन में असल एक रत्ती तनावुल फर्माएंगे। मगर बहत्तर दिन कहां दो चार रोज में शिकायत रफै हो जाती है। और हजम शीर का तो कुछ हिसाब नहीं। एक मर्तबः अव्वल तय्यारी पर हकीर ने चार चार चावल शक्कर वगैरः में मिलाकर इस्तैमाल किये थे। मुद्दतों दो दो तीन तीन सेर शीर पीता रहा जब गोश्त वगैरः में असली हाल

पैदा हुई थी वरनः तमाम बदन सूख गया था और इससे पहले दो छटांक दूध भी हजम न होता था अब करीब पन्द्रह सोलह साल बीस साल हो चुके कि हकीरकर बलाए मौला गया था और राह में तरह तरह के अवारिज पैदा हुये थे वह सब भी जाते रहे और जितना दूध चाहूं अब भी पी लूं और रोगन जितना ज्यादः मिले सेहत ज्यादः रहे। सुफहा १६ अखबार अलकीमियां १६/८/१९०७)।

रफीकदमाग मुकव्वी दमाग उमदा तरकीब इस्तैसाल मक्खन (उर्दू)

निहायत आसान और लजीज है आज तक इसके मुकाबले में मुकव्वी दमाग सरीअउलहज्म एक शै नहीं देखी गई। बाज ऐसी दवा है कि अगर दमाग के लिये वर्ते तो मैदे में सिकालत हो जाती है। मैदे की जियादः इस्में रिआयत हो तो दमाग में यबस आ जाता है। जरा गरम दवाएं हैं तो महरूर मिजाज इससे हैरान है यह ऐसो अजीव व गरीब आजमूदा बारह नुसखा है कि जिस दिन शुरू करो उसी दिन से भूख लगती है। तरकीब में मक्खन देकर इन्सान यह जरूर ख्याल कर लेता है कि, देर से हजम जरूर होगा। मगर सरीउलहज्म है सराप दमाग से जो आंखे अन्दर घुसती जाती हैं इसके वास्ते तो अकसीर आजम है लजीज ऐसा कि सोहन हलवे से उमदा सुबह को बजाय और निहार अशियाइ के कायम मुकाम मुकव्वी कल्ब बदन और दमाग की यबूसत का दाफः दो हफ्ते में अपने फवयाद या हालत मौजूदः को देख लें जब चाहें छोड़ दें जब देखेंकि खास वा इससे जौफ फिर सख्त हो गया है फिर इस्तैमाल कर ले मिस्ल अकसीर फाइदा बखश है।

नुसखा मौसूफ यह है सुबह को तीन माशे खसखास सफेद, सात अदद मगज बादाम, मुकश्शर शीरी, एक माशा दाना इलायची खुर्द ढ़ाई तोला मिसरी, ५ तोला मक्खन मादः लेकर एक तोला पानी में इन सब अशियाइ को पीसकर जब बसूरत हलवा हो जावे हरदोशै मक्खन और मिश्री मिलाकर एक रत्ती नुकरई अकसीर मिलाकर चमच से खा ले और जब हफ्ता गुजर जावे वजन मिश्री व मक्खन जुमला दवाओं का दुचंद कर ले बस इससे ज्यादा न बढ़ावे।

नुसखा नुकरई यह है—एक माशा तवासीर, एक माशा दाना इलायची खुर्द, एक माशा मुखारीद, एक माशा वर्क नुकरा १ घंटे पीसकर रख छोड़े यह ही नुकरई अकसीर है सौंफ या कश्नीज या बैजा या और जो मुकव्वियात दमाग है वह मुतलक न मिलावे। अगर्चः तीन माशे खसखास इस नुसखे में काबिज शै है मगर सात अदद बादाम और मक्खन मुकाबल में उसको मुतलक कब्ज या खुश्की करने नहीं देते। और हजम मसका बवजह मिश्री बराबर के और एक माशा दाने इलायची के पूरा होता है। इन अय्याम में परहेज तुर्शी और सकील अशियाओं और तेल और काबिज अशियाइ का जरूर चाहिये। गिजा के वक्त जब दो तीन लुकमा हनोज खानें में बाकी हो तो छोड़ देवे और बेहतर है कि बाद गिजाओं के आध घंटे सो ले। और बाद गिजा को रात को दमागी काम तहरीर वगैरः का चन्दरोज न ले। चुपड़ी हुई रोटी, प्याज और अजवाइन और मूली खाम को न खावे बलकि दूध भी जिस कदर आदत है आधा पिया करे और दूध पर सफूफ बड़ी इलायची व मिश्री दो माशे तक खूब हाजिम है। सुफहा १० व ११ अखबारअलकीमियाँ १६/८/१९०७)।

हरीरा मुकव्वी दमाग व बाह व दाफै जिरियान (उर्दू)

निशास्ता गंदुम १ तोला, दाना खसखास सफेद १ तोला, आरद माश मुकश्शर १ तोला, मगज तुख्म कुदू ६ माशे, मगज तुख्म खियारेन ६ माशे, फलखामबरगद २ तोले मगज बादाम मुकश्शर ७ अदद, जाफरान एक माशे कुल अजजाइ को डेढ़पाव पानी में बारीक पीसकर बादहू ५ तोले मिसरी मिलाकर ५ तोला रोगन जर्द में बजरियः इलाचयी कलांके बघार कर जरा गाढ़ा हो पर उतारकर इस्तैमाल किया करे। अगर साल में दो तीन बार दसदस योम तक जो साहब इस्तैमाल कर लिया करेंगे उनको दमाग व वाह व जिरियान की इन्शा अल्लाह ताला फिर कोई शिकायत न होगी (सुफहा १० अखबारअलकीमियां १/८/१९०७)।

अदवियः दाफः इफ्तलाजलुकल्ब (उर्दू)

इफ्तलाजलुकल्ब के लिये यह सफूफ मुजर्रिबुल मुजर्रिब और और आसान व कम खर्च है—तबाशीर गुलखर्च १ तोला बहमन सुर्ख दसमाशे, बुरादा संदल सफेद, मगजकशनीज, तुख्मरेहा छः छः माशे, आंवला मुकश्शर चार चार, गुलनीलोफर पांच पांच माशे, जरनबा ३ यानी कचूर ४ माशे सबको बारीक सफूफ बनावे सुबह के वक्त बकदर ३ माशे सर्दपानी के हमराह इस्तैमाल करें अगर्चः लाहक शुदः बीमारी एक ही नुसखे के स्तैमाल से रफ हो जावेगी मगर चन्द मुद्दत तक अगर मुदावेमत इस्तैमाल करे तो इन्शा अल्लाह तोला फिर कभी शिकायत न होगी मुजर्रिब आजमूदा है। (सुफहा १० अखबार अलकीमियां)

मौसम गर्मी के इस्तैमाल के लायक एक उमदा नुसखा (उर्दू)

बजबाब इस्तफसार नं० ३८७–१७ अक्टूबर आपकी तबियत बहुत गर्म खुश्क है इसपर आपने भांग पीली तो इसका यही असर होता था जो हुआ अब मुन्दर्जः जैल नुसखा खावेमुदबारीद ना सुफ्ताः ६ माशे, वर्कतिला २ माशे, वर्क लुकरा ६ माशे, तबाशीर १ तोला, कबूद दानः इलायची खुर्द १ तोला, कवलगट्टा १ तोला भीमसेनीकाफूर ३ माशे, कुश्तामूंगा ६ माशे कुश्तासंगपुश्त ६ माशे कुश्ता जहरमोहरा ६ माशे, अव्वल मुरवारीद को एक दिन अर्क गुलाब में खरल करे फिर कुश्ता वर्क मिलाकर एक दिन खरल करे बादहू सब अदविया मिलाकर खरल करे और रखे खुराक ३ रत्ती सुबह व शाम वहमराह दूध के (सुफहा वैश्योपकारक अखबार ५/१२/१९०६)।

कुश्ता मुरवारीद दाफै तमाम जिस्मानी कमजोरी (उर्दू)

मुरवारीद नासुफ्ता ६ माशे बकरी या भैंस के दूध में दाखिल करके एक कुलिया में मुँह बन्द करके आंच दे दे, मुरवारीद कुश्ता होकर बरामद होगा हर सुबह खुराक २ चावल मसका में रखकर निगल जाया करै। सुफहा ९ अखबार अलकीमियां (१६/७/१९०७)

दवाएँ सफूफ जवाहर बराईतकवियत एजाई रईसौ व नीज तकबियत मैदा नुमायन्द (फार्सी)

मुरवारीद, नासुफ्ता, अकीकसुर्ख, यशवसफेद, शाखमरजाँ, जहरमौहरा असवल, वसद हरवाहदे यक माशा बिगीरन्द बदरसंग सिमाक या खारा बारीक सहक कर्दः पस वा अर्क केवड़ा कि सह वजन अदबिया बाशद दो साइत सहक कुनन्द ताअर्क जज्व शवद व खुश्क गर्दद पस अजखरल बरदारन्द व दो माशा दानः इलायची सफेद व दो माशा तवासीर व एक माशा जाफरान व चहारसुर्ख मुश्क खालिस या कदरे अर्क केवड़ा बहुमां खरल सहक कुनन्द हरगाह अर्क खुश्क शवद अज संग बरदारन्द ब या दवाएं अव्वल यकजा कर्दः निगाह दारन्द बवक्तहाजत बकदर यकमाशा अजी सफूफ बिगीरन्द दरअमराज गर्म बकदरे शरबत अनार शीरीं या तुर्श व या हुर्चिमुनासिब हाल मरीज बाशद वियामेजन्द बिखुरानन्द बदर अमराज सर्द दर शहद खालिद दिहन्द न चन्दरोज तकवियत कामिल हासिल शवद। (सुफहा ८५६ किताब शफाएडलअबदान)।

खीरद्वारा मुकव्वी व मुसमिन व मुबही (फार्सी)

शोरगाउ यक आसार, आब खालिस दो आसार, खरमा चहार अदद बिजोशानन्द ता आब बिसोजद बहिंगाम जोशीदन बिकुफ मेगर्दानन्द बाशद पस सर्द कर्दः विनोशान्द (सुफहा १४ किताब मुजर्रिबात अकबरी)

गोलीमुकव्वी व मुबही व मुफर्रह मुरवारीद से बराइ मिजाजहार (फार्सी)

हुव मुकव्वी व मुबही मनवियाज हकीम उलवीखां व हारमजा जानरा कीमियां अस्त एजाइ रईसारा नीज कुव्वत बखशद मुरवारीद नासुफ्तो तवाशीर वंशलोचन जहरमोहरा खताई हरसह यकयक तोला बारीक साईदा जुदा जुदा दर खरल समाक दरअर्क वेदमुश्क चन्दान हल नुमायद कि खमीर बरखेजद व दिस्ता खरल बसबब गिलजत दवा बंद शवद बादहू बकदर दाना नखूद बस्ता मुवाफिक मिजाज व सब शखस दोसहहुव्व बिदिहन्द हरसुबाह व गुलाब व वेदमुश्क अजहलक फरू बुरन्द व शवानः रोगन तुख्म कुदू व बादाग शीरीं मुकशर व कमरकाह वजर हर दो पाई व दमाग वं कफ दस्त अन्दक अन्दक विमालन्द व गिजाकवी मेल फरमावन्द मुजर्रिवे अस्त (सुफहा १० किताव मुजर्बातअकवरी)

माजून पट्ठा मुकव्वी बाह (फार्सी)

जियः तकवियत वाह विसियार नाफः अस्त शीर यमनी हदिया यानी पट्ठा मग्जनारजील ताजा मुकश्शरः कर्दः जाफरान दो माशे गुलाब ३ तोले हमेरा खूब कोफ्तः माजून साजन्द निहार व वजन दो तोले व गुलाब जाकरनवात व आब बिखुरन्द मनविजाय उलवीखां मरहूम जिथ तकवियतवाह अकसीर अस्त । (सुफहा १०२ किताबमुजरबात अकबरी)

नोट–फिर पट्ठापाक क्यूं न तय्यार हो।

नुसखा हलवाइगाजर जो तकवियत वाहमें बे मिसाल है (उर्दू)

गजर तराशीदः दोसेर और नखूद बिरियाँ मुकश्शर, पाव भर बैजामुर्ग ३२ अदद और शीरगाउ चार सेर, कंदसफेद ढ़ाईसेर, किशमिश पाव भर, मगज बादाम और मग्ज चिलगोजा पावभर, रौगनजर्द डेढ़ सेर, पिस्ता पावभर अव्वल गाजरों को दूध में पकावे जब कि गलीज हो जावे खूब मालिश करे बादहू रोगन जर्द में विरिया करे कि सूर्ख हो जावे अजाँवाद जर्दी बैजा और आरद नखूद को अलहदा विरियां करे उसके बाद पानी एक सेर में कंद सफेद का कवाम करके जुमला अशियाइको उसमें डालकर कफगीर से खूब घोटे और मगजियात बारीक करके मिलावे मूसली सैमल सफूफ बहिसाव फीपाव हलवाके दो तोला दाखिल करके जाफरान दो माशे, मुश्क ३ माशे, गुलाब एक छटांक, केवड़ा एक छटांक में हल करके मिलावे खुराक २ तोले अलस्सवाह । (सुफहा अखबार अलकीमियां १६/१२/१९०६)।

मुसम्मिन व मुबही मुगल्लिजस्तैमालगोंद बबूल (उर्दू)

सहलुल हुसूल नुसखा जिनको बवजह खलूए बदन की शिकायत है इसके इस्तैमाल से तोलीद व आयादह कुव्वत और फरवही जुमले बदन सफेद दाखिल करके मिलाकर बाअहतियात रख छोड़े जिस कदर हजम हो सके तनावुल फर्मावें और पहले ही दिन कुव्वता का अआदह महसूस फर्मावें दो तीन अमर काबिल लिहाज है एक यह कि विरियानी में कमी न रहे खूब खील हो जावे दूसरे कोई चीज सकील इसके हमराह तनावुल न फर्मावें कि वह खुद ही हजम न हो और उसके काइदे को भी बरवाद करे, तीसरे खूब छिपाया जावे और थोड़ा थोड़ा खाया जावे कि मैदे में बस्ता न पहुँचे कि देर में महलूल हो दफे रिक्कत के लिये बे मिसल है बशर्ते कि हरारत का गलवा जिस्म में न हो क्योंकि यह चीजें भी किसी कदर हरारत करती हैं। (सुफहा १६ अखबार अलकीमियाँ १६/८/१९०७)

नुसखा निर्गुण्डी पारा मुकव्वी बाह (उर्दू)

हाफिजा और बासरा और हाजमा मुवल्लिद खून सालै मुफर्रह मुकव्वीकलव दाफै अखलात फासिद वगैरः निरगुंडी, मुंडी, भांगरा, आंवला, सितावर हर एक आध सेर असगंध, नागौरी, मूसली स्याह, तुख्मकाच, गुगर्दकलां, भूफली, तालमखाना, सुगन्धवाला, हर एक पावसेर, तज, बल आधपाव सबको नीमकोब करके आठहिस्से पानी में पकावे जब पंजुम हिस्सा पानी बाकी रहे साफ करके मिश्री एक सेर, शहद आध सेर, रोगन जर्द एक पाव, खोया आधसेर मिलाकर पकावे जब गाढ़ा हो जावे, जाफरान, बताशा, लौंग, मस्तंगी, जाइफल, जोतरसी दारचीनी, सन्दल, अगर दाना इलायची खुर्द व कला एक तोला, मुश्कखालिस ३ माशे सफूफ करके मिलावे और मग्जबादाम और मग्ज चिरौंजी भी चार चार तोले शामिल कर ले खुराक दो तोले सुबह व शाम (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १६/११/१९०६)

मुबही खुर्दनी उमदा (फार्सी)

अंबर, अशहव, सन्दलसफेद, वर्कतिला यकनीम व आँकि हमैरा सूदः बलुआव समैगरवी जब बवजन नखूद केसरी ज्यादह बन्दन्द यकहुब वक्त हाजत दरदहान गीरन्द (सुफहा ९१ किताब मुजर्रिबात अकबरी)।

रोगनढाक—बराइतिला (फार्सी)

रोगनपलास पापड़ा कि दर इलाज अन्नीवकार आयद पला पापड़ा हर कदर कि बाशद दरआध तरकुनद यक साइत पसपोस्त अजवी जुदा साजन्द व मग्जरा खुश्क नुमायन्द व बिगीरन्द देग गिली व दरवसत हकीकी आँ सूराख कुनन्द अजबरमा व सुबूए खुर्द गिली दरजेर आँ सूराख पैवस्त नुमायन्द बतरीके कि अमल पताल जन्तर अस्त पस मग्जहा दरदेग अन्दाजन्द व मुहरकर्दः तमामे देगरा लेप नुमायन्द व खुश्क साजन्द व हमचुनाँ बिदहन्द यके बाद खुश्क शुदन दीगर व चूँ लेप सोयम नीज खुश्क शवद चकरे मुरव्वा बकदर नीम गुजानद जजमीं कुनन्द व जेर आँचकर कलां व वसत हकीकी बीच करे दीगर मिकदार आँ सुबूए खुर्द कि दरइहदेग मरकूजस्त बिकुनन्द व दरईचकर खुर्द प्याला निहन्द व आव पुरसाख्तः व आँ दंगरा दरचकर दरआरन्द चुनाँचः सुबूइ खुर्द दरकर खुर्द बाशद दरप्याला पुरआव द देगादर चकर कलाँ बादहू गिर्दागिर्द देग अजपाचकदस्ती बरसाजन्द तातमाम चकर मम्लूशवद पस आतिश दरविहन्द वचूँ सर्द शवद देगरा बर आरन्द व सूबूए जेरीनए वा अहतियात जुदा कुनन्द तमास रोगन दरीं सुबूए खुर्द जमा ख्वाहद बुवद विसिता नन्द व बर कफे व बिमालन्द व हशका गुजारन्द (सुफहा ६ किताब मुजर्रिबात अकबरी)।

रोगनतिला (उर्दू)

सम्मुलफार १ तोला, जहरतेलिया १ तोला, सुहागा तेलिया १ तोला, गंधक आंवलासार १ तोला, इन चहार अदविया को बारीक पीसकर बादअजां ५ तोले रोगन जर्द में मिलाकर और उसको एक साफ पार्चेपर मले और उसकी बत्ती बनावे उसे रोगनी करके एक तोला पारा खरल में डालकर उस बत्ती के नीचे रख दें जो कुछ रोगन टपके उसको चार पहर खरल करके एक कतरा पान पर लगाकर ह० श० फ० ह० छोड़कर बाँधे निहायत मुजर्रिव है। (सुफहा अखबार अलकीमियाँ १६/११/१४०६)।

तिलाका मुरक्कब बेजरर नुसखा जोहमें: सिफत् मौसूफ है (उर्दू)

जोंकखुश्क १ तोला, खरातीन खुश्क १ तोला, वीरबहूटी १ तोला, अकरकरा ३ माशे, सम्मुलफार सफेद २ सुर्ख इन सबको रोगन वेजा मुर्ग में खरल करके शफः और सीवन छोड़कर तिला करे बादहू वर्गपान बांध ले एक हफ्ते के इस्तैमाल से कुल खराबियां रफै हो जायँगी व जौफ दमाग के लिये मिसरी बादाम खिलावें। (सुफहा ९ अखबार अलकीमियाँ १६/७/१९०७)।

नुसखा तिला बराइवाह व मुनग्गिज (फार्सी)

जो अव्वल शव में ही बेकरार कर दे मगर मजलूक को आज तक नहीं दिया गया, मामूली सुस्ती का फौरन कलाकुम्मा कर देगा मन्सिल दो माशे, हरताल तव की दो माशे, गंधक आंवालासार, ६ माशे, संखिया सफेद ३ माशे, मस्तंगीरूमी एक माशे, हमैरा कोफ्तः बारीक साईदः दररोगन गाउ दोले आमेख्तः बरपार्चः यक वजव आलूदह फतीला साख्तः बदस्तूर मारूफ रोगन चकानन्द व अहतियात निगाहदारन्द वक्त हाजत बकदर सुर्ख बर एजाइतनासुल मालीदः व हश्क व सबून बाकी दाश्तः बर्गतंबूल गरम शुदः बालाइश निहादह पट्टी बन्दन्द व ई अमल वक्त शाम अगाज कुनन्द व सुबह पट्टी अलहदा कर्दः ताजातिला बदस्तूर मारूफ इस्तैमाल कुनन्द हमीतौर सुबह व शाम एकहफ्तः अमल बायद नमूद इन्शाह अल्लाह ताला बहालत असली ख्वाहद शुद व दरी असना अज जमाज व तररावात वगैरः हजर कुनन्द (सुफहा १० अखबार अलकीमियां १/११/१९०७)।

रोगन जर्दी बैजामुर्ग राफै सुस्तीकजीव व मुकव्वी बाह (फार्सी)

बियारन्द दहअदद बैजा हाइ माकियान दरआव बिजोशानन्द व बाद सर्दशुदन अम्हारा शिकश्तः जर्दीरा कि गोली बस्तः बाशद बिगीरन्द व दर कढाई आहनी अन्दाख्तः व जेर आतिश कुनन्द व जर्दीरा अजचमचा तह व बाला मेनमूदः बाशन्द हरगाह सोख्तः स्याह शवन्द व रोगनअजां जाहर शवद अज सर देगदां फर्द आर्वुदः व फशुर्दः तमाम रोगन बिगीरन्द व अगर हनोज चीजें खामी जर्दी बूदः बाशद बार दीगर कढाई रा बर सर आतिश गुजाश्त अज चमचा तहवबाला कुनन्द व हरगाह रोगन नमूदार शवद व जेर आबुर्दः खूब फशुर्दः रोगन बिगीरन्द पस आं रोगनरा व अजजाइ मुफस्सिलो उलजल हल कदेः दरजर्फ चीनी निगाह दारन्द तिलाइ आं बराइसुस्ती कजीव व इस्तहकाम औं विसियार नाफै अस्त अजजाई अस्तरोगन बैजा दो तोला, करनफल एक माशे नौज बवा एकमाशा जफ्तरूमी कि समगी अस्तस्यारंग यकमाशा मूमिया यकमाशा गौलोचन यकमाशा खरातीन खुश्क खाक दूर कर्दः व बारीक साईदः यकमाशे बीरबहूटी यकमाशे वा रोगनबैजा हल करदह निगाह दारन्द बवक्तहाजद कदरे अजां हश्वह गुजाश्तः बरकजीब तिलाकर्दः पारा बर्ग पान नीमगरम वस्त। वक्तशव बजवाब रवन्द सुबह अज आब गरम बिशोयन्द हमवरीं तरीक हफ्त शव व अमल आरन्द (सुफहा ७३९ किताब शफाइउल अवदान)।

तिलाए बेनजीर (उर्दू)

निहायत नफीस और मौअत्तर और अपने किस्म में बेनजीर मिस्ल अकसीर है और बिलाहोने मर्ज के भी हरसर्द बशर इसको शौकिया इस्तेमाल करके उमदा फाइदा उठा सकता है। खास करके जौफ वाह कवरसिनी बयाजलक वगैरः से नाकारा हो गया हो गर्जे कि किसी किस्म का एजाब में नुकस हो, बिलाजरर हरदर्जे का फायदा बखशू है अय्याम गर्मी में इसका इस्तेमाल वगैरः अशद जरूरत न करना चाहिये। एक डली सम्मुलफार ढ़ाईतोले की लेकर सातरोज शीरआक में तर रखे बादहू निकालकर उसको ५ तोले मसकागाढ़ में तीन योम बराबर खरल करे। २ रत्ती जाफरान २ रत्ती मुश्क एक माशा जावित्री, एक माशा लौंग, एक माशा अकरकरा, एक माशा जायफल, एक माशा बीरबहूटी मिलाकर एक रोज बराबर खरल करके रख छोड़े निहायत मौअत्तर होता है मामूली तौर से हश्फः के नीचे का हिस्सा छोड़ कर बाकी सब तरफ दो तीन कतरों से चुपड़कर एक तह भोजपत्र और उस पर पार्चा लपेटकर बाद आठ पहर के फिर जदीद चीजें और बांधे रहे, धौना जरूरत नहीं बाज को दो रोज में और बाज को एक हफ्तः में बिलादर्द के सुर्ख सुर्ख पित्त निकलेंगे, उस दिन एक ही दफे तिला मजकूर लगाकर फिर न लगावे और तासेहत मक्खन या घी लगाया करे और अहतियात चाहिये कि फोतों में वह तिला न लगे। हरमग्ज खुसूसन ४० बरस के बाद को तो यह तिला अकसीर आजम का काम देता है। (परहेज) आबसर्द तुर्शी, दालमाष, बर्फ, सर्द, अशियाड, सर्दहवा से परहेज करना चाहिये। अगर बाद १५ रोज के फिर वैसा ही अमल करे तो सोलहा साल तक एसाब मिस्ल जवान २० बरस के कायम रहेंगे। गिजा, घी, दूध, गोश्त, बैजा, बकदर बरदाश्त खाते रहें, इसतिला से अकसीर मरीज, जिनका नाम बताना नहीं चाहता अच्छे हुए हैं, राकिम हकीम जाहद कां अज महल्ला जिला मुरादाबाद (सुफहा ११ अखबार अलकीमियां १/९/१९०७)

नोट–यह नुसखा गुलदिस्ता मुजर्रिबात का है, एडीटर ने इस नुसखे को तैयार करके अकसर मरीजों को दिया है जिसकी वह उमदा होने की अकसर नसदीक करते हैं।

नुसखातिला (उर्दू)

करनफल ३ तोला, दारचीनी ३ तोला, हब्बलमलूक ६ तोला, बेखमदार तोला, बेख कनेर सफेद १ तोला, तुख्म धतूरा एक तोला इन सबको सिर्फ ी मादा में खरल करके गोलियां बनावे और खुश्क हो जाने के बाद बजरियः पातालजंतर रोगन कशीद करे, हश्फह और सीवन छोड़कर बुफिया को बचाकर महजअज्ब के ऊपरवाले हिस्से पर तिला करके बर्गपान लपेट ले। सर्द पानी से बचाव।
(सुफहा अखबार अलकीमियां १६/११/१९०६)

जमाद बेनजीर बराइ कुव्वउवाह (उर्दू)

मग्ज खर खुश्क यकदाम शीर आक दर सायः खुश्क कर्दः यकदाम उरूसकयकदाम मग्ज घूंघची सफेद यकदाम सुहागा तेलियाबिरियां कर्दः दोदिरम रोगन कुँजद अनकदर कि दवाजदह पास खरल शवद बादअजाँ यकमुर्खतिला नुमायद जियादती न कुनद फायद कुली में बखशद । (अज गुलशन हिकमत नुसखा कलमी बाबू प्यारेलाल बरौठा)।

मजलूक के लिये तिला (उर्दू)

बुराद (फियाजः) खरस ४ तोला, अफरकरा ६ माशे, जाइफल ४ माशे, जावित्री ४ माशे, लौंग ४ तोले, चरबीशीर ६ माशे, घूँघची सफेद ६ माशे, बीरबहूटी ६ माशे, खरातीन खुश्द ६ माशे सिवाय शहम के दूसरी जुमलै अदवियात को दो आतिशा शराब में हल करके बाद शहम शीर उसमें मिलाकर बजरियः कुराअंबीक रोगन कशीद करे। फिर तिला करे अगर सात रोज के अन्दर मजलूक की कुल शिकायतें रफे न हों तो हम जिम्मेवार। (सुफहा ३ अखबार अलकीमियां १/११/१९०७)

लेप मुबही खरी (फार्सी)

सीमाब यकदाम शदह दो दाम हर दोरा आवन्द आहनी वा दिस्तः आहनी हलकुनन्द तायकजात शवद पस बर पार्चः निहादहः वर्कजीव पेचन्द व चू लगूद तमाम शवद दूर कर्दः नजदीकी डुमायन्द (सुफहा ९० किताब मुजर्रिबात अकबरी)

मुहबी खुरी (उर्दू)

सुहागे को शहद में मिलाकर अज्ब और नाफ और शानः पर लेप करने से ऐसी कुव्वत इन्तशार की पैदा होती है कि वह फरियाद करने लगती है। (अखबार अलकीमियां १६/४/१९०७ सुफहा ५)

अथ शिथिललिंगचिकित्सा

पारद टंकन चीनिया, ले कपूर सम भाग । रस अगस्त में एक दिन, खरल करै इकलाग ।। फेरि एक दिन शहद में, घोटे भिषेक निदान । लेप कीजिये

लिंगपै, राखै पहर समान ।। फेरि धोइके नीरसों, करै नारिसों संग । तुंद होइ सुस्ती घटै, द्रवै अबेर अनंग ।। इति नागार्जुनी वटिका

(वैद्यादर्श पृष्ठ नं० ३३)

लेप मुबही खुरी (मुमसिकभी मुमकिन है) (फार्सी)

शीरा दरख्त व बारधतूरा विसितानंद व पार्चः नौ कि सिफत बुवद दर आँतरकुनन्द व खुश्क साजन्द व हमचुनां आजां शफत करत विकुनन्द व बिदानन्द बवक्त हाजत कदर, बलुआब खुद तरकर्दः बर आलत पेचन्द व बाद अज चन्दे दूर कर्दः नजामहत नुमायन्द–सुफहा ९० किताब (मुजर्रिबातअकबरी)

लेप मुबही खुरी (फार्सी)

किदर जिल्दे व तुन्दी नजीर नारद पोस्त कनेर सफेद, पोस्तवेख धतूरा, पोस्त बेखबायंत (खनब यानी भंग) पोस्त वेख आकहर चहार बराबर दर सायः खुश्क कर्दः बिकोबन्द व अजशीरः वर्ग, धतूरा बिरिशन्द व मानिन्द कनार सहरा ई गिलोला बन्दन्द बवक्त हाजत अजबोल खुद साईदः बर कफेब तिला कुनन्द चूं खुश्क शवद मजामहत नुमायद अजायब बीनद।

लेप तुमासेक खुरी (फार्सी)

कुचला पोस्त वेख कनेर सफेद व वर्ग धतूरा स्याह् हरसह् बराबर दरशराब खरल कर्दः लेप नुमायन्द इमसाक आरद व अगर ख्वाहन्दः जूद नाजिल शवद बाद लेप कर्दन चूं यक घड़ी बिकुनन्द रूबआंब गर्म बिशोयंद (सुफ्हा ११५ किताब मुजर्रिबात अकबरी)

लेप नाफ मुमसिक व मुबही (फार्सी)

कि इमसाक आरद बमुजर्रिद इस्तेमालु लगाज आरद गोमहान वातियत मशहूर तुख्म अजाँ बिगीरंद व बारीक बिसानीद दरनाफ बिमालन्द फकत बकदर नीम माशा मुजर्रिब अस्त सुफहा ११५ किताब (मुजर्रिबात अकबरी)

मुमसिक रोगन तुख्मसिरस बराय मालिश कफ या (उर्दू)

सिर्स के तुख्म जो कोब करके बजरियः पातल जंतर के रोगन निकालना और वक्त कुरबत एक घंटे पहले तीन माशे कफेया में मलना निहायत उमदा मुमसिक है–सुफ्हा ९. (अखबार अलकीमियां १/११/१९०७)

मुमसिक रोगन जो नाखून पर तिला किया जाता है (उर्दू)

इमसाक नादिर बिला खुर्दनी. सहुव्वा मुर्ख यकदाम, हुव्वा सफेद यकदाम, तुख्म धतूरा यकदाम. तेल कुंज पाव भर खाम हरसह अदविया जौ कोब करके रोगनकुंज में डालकर इक्कीस रोज तक जमीन के नीचे दफन करें, बादह् निकालकर रोगन टपका दे। थोड़ा सा रोगन हाथ पांव के तमाम नाखून पर लगाये तानमकन खुर्दः न शवद मुजर्रिब आजमूदह् है। (सुफहा ६ अखबार अलकीमियां १/९/१९०७)

मुमसिक–कलीबबूल खुर्दनी (फार्सी)

पर्चा सफत व बारीक बिगीरंद व फली बबूलरा विशिकुनन्द बदर तरे वही पारचः रा तर कुनन्द हमीसाँ हफ्तलूनत तर कुनन्द व खुश्क साजन्द व बिदारंद हरगाहख्वाबद कदरे आजा दरशीर विशोयंद व अगर शीर न बाशद आब काफस्ति मुजर्रिब अस्त व अगरजन कदरे अर्जी पाचा बरदारद तंगी आरद (सुफहा १४४ किताब मुजर्रिबात अकबरी)

इससाक मुजर्रिब (उर्दू)

ढाक की लकड़ी मोटी बारह गिरह की लेकर दर्मियान में उसके सूराख करके जिस कदर उसमें लोगें आस के भर दे और उसकी डाट लगाकर उस मुकाम को गिले हिकमत करके दोनों सरों की जानिब से आग दे जब आग करीब लोंगो के पहुँचे सर्द करके लोंग निकाल ले वक्त जरूरत के एक लोंग पान में खावे और मजामअत करे। बहुत इमसाक होगा। (अज गुलशन हिकमत नुसखा कलमी बाबू प्यारे लाल बरौठा)

तरीकं साफ कर्दन अफयून (फार्सी)

कि दर खुर्दन कममुफर्रत व बेबदल मेशवद बियारद अफयून किस्म अव्वल कि जुदा व आब हलशवद यकसेर शीरगाउ व चहार सेर शीररा गर्म कर्द अफयून दराँ हलः कुनन्द बादहू अजपार्चः साफ नुमायन्द वकवाम कुनंद चूं बहद कवाम नमूदः हल कुनंद ताहमैः रोगन जब्ज शवद बादहू जाफरान यकदाम व ऊदककारी दो दाम साईदः दाखिल साख्तः खूब बेहतर जनन्द व मिकदार सुर्ख जहाबस्तः बिदारद व अगर बजाइ ऊद अंबर अहशब आमेजन्द बेहतर अस्तबायद कि सदर्मतब आह जादर आब अदरक सलावः कुनंद दरदवाजदह् रोज तमाम मेशवन्द व पस कर्क साख्तः दरजर्फ गिली निहादह् व सरपोश गिली निहादह रोज यक शंबः जेर जमीन दफन कुनन्द व रोज यक शंबः आयन्दः बर जार्बुदह् बकार बुरन्द नफा बिला मजर्रत बखुसद (सुफहा १२ किताब मुजर्रिबात अकबरी)

वर्श

अफीम, अभ्रकभस्म, रजतभस्म, लोह्भस्म, मूंगाभस्म, वर्कचांदी, वर्कसोना, मोती कच्चे, इलायची बड़ी। अजवाइन खुरासानी बंशलोचन सब समान भाग लेकर अफीम में घोटकर गोली बनावे, मात्रा एक रत्ती। (पंडित ऋषीरामजी जंबूवाले ने बताया)

सीद्रावकलेप रक्तगुंजाकल्प

तमेव मूलं बृहत्तीफलं च मधुना सह । लिंगे च लेपनं कुर्याद्द्रावणं मोहनं वशम् ।।९।। (औषधिकल्पलता)

अर्थ–चौंटनी की जड़ और कटेरी के फल को शहद के संग पीस लिंग पर लेप करे तो स्त्रियों को मोहित करनेवाला और द्रावण है।।९।।

रोगन खुर्दनी व तिलाई मुबही मुमासिक व मुलजद (उर्दू)

तकवियत वाह मुमसिक–म–ज गायत सरीअउल तासी है, लोबान कोड़िया नीमपाव पुख्तः, अकरकरहा एक तोला, दारचीनी १ तोला, जाफरान ६ माशे, विसवासा १ तोला, करनफल कुलाहदार १ तोला, जौज व विया एक तोला, मुश्ककाफुर १ तोला, कस्तूरी १ माशे, जुमलै अदवियात मरकूमा को अलहदा अलदहा कोफ्तः बेख्तः हमराजहर्दी बैजामुर्ग इक्कीस अदद खरल करके बजरियः पतालजन्तर रोगनकशीद करे। एक कतरा पानके टुकड़े में लगाकर खाए और एक कतरा पर लगाए अजीब तमाशा देखेगा। (सुफहा ६ अखबार अलकीमियाँ १/९/०७)

पलितकारण

क्रोधशोकश्रमकृतः शरीरोष्मा शिरोगतः । पित्तं च केशान्पचति पलितं तेन जायते ।।१०।।

(रसकामधेनु)

अर्थ-अनेक प्रकार के क्रोध, शोक और श्रम के करने से जो शरीर की

ऊष्मा शिर पर जाके पित्त को पैदा करती है और यह केशों को पकाती है कि जिससे पलितरोग उत्पन्न होता है॥१०॥

केशरंजन

त्रिफलायास्तु षड्भागा दाड़िमत्वग्गजटाद्वयम् । निशात्रयं षष्टिमुण्डाद्विभृंगर सविंशतिः ॥११॥ केशेषु लग्नं तन्नात्रौ बद्धचित्रप्रवालतः । प्रातर्धौतं सप्तसप्तदिने लग्नं त्रिमासकम् ॥ केशाः कालालिसंकाशा यावज्जीवमपि स्मृताः ॥१२॥

(रसकामधेनु)

अर्थ-त्रिफला छः भाग, अनार के छिलके दो भाग, हलदी तीन भाग, लोहा दो भाग, जलभंगरे का रस बीस भाग, इन सबको पीस केशों पर लेप करे फिर ऊपर से चीते के पत्तों को बांध देवे। प्रातःकाल धो लेवे। प्रत्येक सप्ताह में एक बार लगावै। इस प्रकार तीन मास करने से जीवनपर्यन्त केश रहते हैं॥११॥१२॥

केशरंजक

अधःपुष्पीमूलरसात्पञ्चैकं रोचकद्रवात् । दशमूलकजद्रावादिक्षुभागाश्च विंशतिः ॥१३॥ लोहसंपुटगं गर्ते सर्वमासद्वयं स्थितम् । त्रिपलाधौतकेशांश्च त्रिमासाँल्लेपयेत्ततः१ ॥१४॥ यावत् कृष्णा भवंत्येव मुखस्थाप्यष्टितंडुलाः । यावज्जीवं भवेत्सिद्धिरिति सिद्धैः प्रभाषितम् ॥१५॥

(रसकामधेनु)

अर्थ-गोजिह्वा की जड़ के रस के पांच भाग, केले के रस का एक भाग, दशमूल के रस के और ईख के रस के बीस भाग, यह सब लोहे के सम्पुट में रखकर खड्डे में दो महीने तक रखे पीछे त्रिफला से बालों को धोकर तीन महीने तक लीपे-जो जन्म भर बाल काले रहेंगे। इसका प्रमाण यह है जो साठी चावल मुख में रखे जावें वे भी काले हो जावेंगे। यह सिद्धों ने कहा है॥१३-१५॥

खिजाब के लिये तेल (उर्दू)

कीकड़साध (जो काला रस कीकड़ से बहा करता है) पाव व समः आधसेर, काले तिलों का तेल आधसेर, एक बर्तन गिली में डाल दे। एक कीकड़ के पास से जमीन यहां तक खोदे कि जड़ जाहर हो जाय। जड़ को वहां से काटकर बर्तन में रख देवे और बर्तन का मुँह अच्छी तरह बंद करके ऊपर गोबर का ढ़ेर लगा देवे। ४० दिन बाद निकाले और इस बर्तन के नीचे सूराख करके बजरियः पतालजंतर के जिसकी तरकीब कई बार दर्ज हो चुकी है तेल निकाल ले। यह तेल उमदा खिजाब है। (सुफहा अखबार देशोपकारक ३१/१०/१९०६)

केशकल्पतैल

आंवला सार, गंधक, लोटासज्जी, नौसादर, कलमीशोरा, जौकुट करके अठगुने गोमूत्र में लोहे के बर्तन में भिगो दे। ८ प्रहर बाद नितार कर पानी ले ले और लोहे के बर्तन में पकावे। गाढ़ा होने पर उतारकर चौड़े मुँह के चीनी के बर्तन में डाल दे और धूप में बर्तन का मुँह टेढ़ा करके रख दे, तेल जुदा होता जायेगा उसको अलहदा करता जावे-यह तेल बालों को काला करता है। (पंडित ऋषीरामजी जंबूवाले ने बताया)

केशकल्पतैल

काकन्यापत्रमूलं सहचरिसहितं केतकीनां च कंदं छायाशुष्कं च भृङ्गं त्रिफलरसयुतं तैलमध्ये निधाय ॥ तत्क्षिप्त्वा लोहभांडे क्षितितलनिहितं मासमेकं च यावत् केशाः काशप्रकाशा भ्रमरकुलनिभा मासमेकं भवन्ति॥१६॥

अर्थ-चौंटनी के पत्ते और जड़ पीया बांसा केतकी की जड़ और छाया में सुखाया हुआ भांगरा इनसे चौगुना त्रिफला का रस और त्रिफला के रस से चौथाई मीठा तेल इन सबों को लोहे के पात्र में एक मास तक गाड़ धरै फिर मास एक के बाद निकालकर लगावे और उसकी बूंद अन्य स्थान पर न लगे नहीं तो वह स्थान काला हो जायगा। इस तैल के लगाने से बाल काले होते हैं॥१६॥

केशरंजकतैल

अंजनं मधुकं कृष्णा तार्क्ष्यजं सारिवोत्पलम् ॥ त्रिफला नीलिकापत्रं कासीसं मुस्तकं तिलाः ॥१७॥ आम्रास्थि तालपत्रं च फलं पिण्डीतकस्य च ॥ जम्ब्वाम्रार्जुनपुष्पाणि कूर्मपित्त सतुत्थकम् ॥१८॥ शिंशपशां भूतकेशीं च मार्कवं सन्निकण्टकम् । पृथगक्षसमान्भागांस्तथा लोहरजःसमम् ॥१९॥ तैलप्रस्थमजाक्षीरे धात्रीभृंगरसाढ़कम् । इक्षुकस्य रसस्यापि लोहपात्रे विपाचयेत् ॥२०॥ पक्वं तल्लोहभांडस्थं शिरस्यभ्यंगनस्ययोः । यत्नेन योजयेत्तैलं वरांगेपि न पातयेत् ॥२१॥ पतंति बिंदवो यत्र कृष्णं तत्रोपजायते । भवन्ति कुटिलाः शीघ्रं कचाः षट्पदकोपमाः ॥२२॥ खालित्यं पलितं चैव इन्द्रलुप्तं च नाशयेत् ॥ मेध्यं चक्षुष्यमायुष्यं बलवर्णकरं परम् ॥ नीलबिंद्विति विख्यातं विश्वामित्रेण पूजितम् ॥२३॥

(रसकामधेनु)

अर्थ-सुरमा, महुआ, पीपल छोटी, तार्क्ष्यज, सारिवा, कमल त्रिफला, नील के पत्ते, कसीस, नागरमोथा, तिला, आम की गुठली, ताल के पत्ते, पिण्डी तंक के फल, जांबन, आम और अर्जुनवृक्ष के फूल, कछुए का पित्ता, नीलाथोथा, सीसम की जड़, भूतकेशी, जलभँगरा, सन्निकंटक ये सब एक एक तोले, लोहे का रेत १ तोला, तिलों का तैल एक सेर, आमलेस का रस २ सेर, जलभंगरे का रस दो सेर और दो ही सेर ईख का रस इन सबको लोहे की कढ़ाई में चढ़ाकर आठ प्रहर तक पकावै तो तैल प्रस्तुत होगा, इसका नाम नीलबिन्दुतैल है इसको बड़ी युक्ति से लगावे क्योंकि तैल की बूंद चहरे पर पड़ गई तो दाग काला पड़ जायेगा। यह तैल खालित्य, पलित और इन्द्रलुप्तरोग को नष्ट करता है। नेत्र आयु और बल के लिये हित है, इसके लगाने से केश भौंरों के समान काले होते हैं। (यह विश्वामित्र ने कहा है)॥१७-२३॥

रोगनखिजाब (उर्दू)

गुलेलाला को निचोड़कर उसके पानी में तेल डालकर जोश दे यहां तक कि पानी जल जावे, तेल को शीशे में निगाह रखे सर और डाढ़ी को लगावे। यह निहायत रंग देगा-(अफलातून)

(अखबार अलकीमियां १६/४/१९०७)

नुसखा खिजाब १० साला (फार्सी)

खिजाब दहसाला बियारन्द हलैला व बलैला व आवंला अजहरेक बिस्त दिरम बेख नीलोफर व पोस्त बेख अंतर तुर्श हर एक सह दिरम हरकेरा बारीक साईदः व जाम बेज कर्दः दरदेग आहन अन्दाजद व बालाइयां आब फिटकिरी गर्क कुनन्द यकमाह दर अंबारशाली बिनिहन्द बाद अजाँ बर आबुर्दः दरसेरश बिमालन्द बबर्ग अंजीर बर बन्दन्द व खुश्पद मूए स्याह शवद व दहसाल स्याह बिनुमायद सुफहा-(५२ जवाहरउलसिनात)

नुसखा खिजाब ३० साला (फार्सी)

दरसनत खिजाब सीसाला कर्दन मूएबियारंद पोस्त हलैला व पोस्त बलैला व आंवला व हरीबलूत व हिनाइ स्याह व हिनाइ सुर्ख या याकिस्तर

१-यहां त्रियामा-रात्रिवाचक शब्द होना योग्य है वा यह अर्थ लेना कि सात दिन के अन्तर तीन मास तक यह प्रयोग करे।

सुर्ख व बेख नीलोपर व पोस्त व बेख परख्त अनार तुर्श व बर्ग तंबूल अज हरेक बिस्त दिरम तोवाल आहन बराबर ई हमैः अजजारा जुदा जुदा बारीक साईदः व यकजा कर्दः दरदहसेर रोगन कुंजद दरआबंद स्याह अंदाजंद व यकरोज दर आफ्ताब बिदारंद अंगाह लैमूं शीरा भांगरा स्याह नीमवजन हरा अंदाख्तः दरजबुल अस्यान फरूबुरंद व गिर्दबरगिर्द आंकरअस्यान रेख्तः बाशद ता चहलरोज बाद वर आवुर्दः निगाह दारंद चूं ख्वाहंद कि मूए स्याह शवद कदरे विरंज व संग मकनातीस दरदहान गीरंद व अंजीदारद बरसरेश बिमालंद व बरवालाइ आँ वर्गबेद अंजीर बिंबदंद व बिखुस्पद चूं बिदानंद कि विरंज दरदहन स्याह रवद व रोगन कुंजद चर्व कुनंद खिजाब तीसाला शवद मूइ बगावत स्याह शवद (सुफहा ५२ किताब जवाहरउलसिनात)

अकसीर बदनी नुसखा फौलादी या खिजाब खुर्दनी (उर्दू)

नुसखा फौलादी या खिजाब लाजबाब व खातिर नाजरीन अलकीमियाँ रवना खिदमत है जिसके चार माह छः माह निहायत छः माह इस्तेमाल करने से बफज्लखुदा अजसर नौजड़ से बाल स्याह पैदा होते हैं। नियाजमन्द का बरसों ने ख्याल था कि कोई ऐसा नुसखा हो जिसके अन्दरूनी इस्तेमाल से बाल स्याह हो जावें और तेजाबों के खिजाब की पबलिक को जरूरत न रहे क्योंकि वह अंग्रेजी खिजाब वगैरः बजाइ बाल स्याह करने से उलटा खराब कर देते हैं। शुक्र खुदा कि मेरी बरसों की कोशिश से नुसखा जैल मिला। आजकल के खिजाबों को बांधने की जरूरत पड़ती है। इसको सिर्फ लगातार इस्तेमाल करने से ही बाल हस्व मनशा स्याह होते हैं, तजरुबा से नाजरीन साहिबान को खुद बखुद मालूम हो जायेगा। यह अर्क कुव्वत बाह के लिये भी बमजिलः अकसीर है। चालीस रोज के इस्तेमाल से नामर्द को काबिल जमाइ के कर देता है। इमसाफ तौ हद से बढ़ जाता है। खूब फासिद सौदाई सोख्ता के लिये मुफीद है रंगजिस्म को मानिन्द अनार के सुर्ख कर देता है। हजम की ताकत बढ़ जाती है। पहले से दुगनी गिजा हजम हो सकती है। मर्जतहाल को चंदरोज में नेस्तनाबूद कर देता है। गरज इसी तरह संदहा अमराज के लिये एक सौ से ज्यादः अमराज पर बन्दे का तजरुपा हो चुका है। बफज्ल खुदा इसे हरेक जगह मुफीद पाया, इसलिये निहायत ही मुजर्रिब समझकर पेश खिदमत है नाजरीन साहिबान जरूर व सदजरूर ही तजरुबा करें और मेरी मेहनत की दाद दें।

नुसखा अकसीर यह है

बुरादाफौलाद बीस तोले को कढ़ाई में डालकर चूल्हे पर रखे और नरम आग जलावे और बीस तोले तेजाब गंधक को उसमें डाल कर शीख आहनी से मिलाना जावे जब कि तेजाब खुश्क हो तो एक सेर हफीरात तुर्शी को डालकर पकावे जब वह खुश्क हो तो दुबारा बीसतोले तेजाब गंधक का डालकर बदस्तूर पकावे और तेजाब को अच्छी तरह खुश्क होने दे। जब कि धुंआ बंद हो जावे तो नीचे उतारकर रखे बाद समर जामुन हों अच्छा है वरनः बरनः वर्ग दरख्त जामुन का घोटकर पानी निकालकर बकंदर ४ सेर लोहे के बर्तन में डालकर वह फौलाद उसमें डाल दे और आठ रोज तक धूप में रखे, लेकिन दिन में दो तीन मर्तबः शीक आहनी से हिला दिया करे। बाद चोबचीनी ४ तोले, उन्नाब ४ तोले, कबाब ४ तोले, तवाशीर २ तोला, इलायची खुर्द २ तोला, बनफशा २ तोला चारचीनी ४ तोल, कासनी ४ तोले, बेखकासनी ४ तोले, मकोह ४ तोले, बदियान २ तोले, संदल सफेद ५ तोले, संदलसुर्ख ५ तोले, चोबहयात ५ तोले, चिरायता ८ तोले, बुरादाशीशम ८ तोले, बुरादा आबनूस ८ तोले, मिर्च स्याह ४ तोले, कतीरा २ तोले, शहतरा १२ तोले, सरफोका ४ तोले, पोस्त हलैलाजर्द ४ तोले। बलैता ४ तोले, बर्गमुण्डी १२ तोले, बर्गझाऊ १२ तोले, आकाशवेल ६ तोले, जवासा ६ तोले, गलिनीबू १० तोले, बर्गचीना ८ तोले, बर्गगिलोइ ६ तोले, बर्गकासनीसवज ६ तोले, समरनींबू ६ तोले, उशवा ६ तोले, तुख्महिन्दी १० तोले, मुनक्का १० तोले, अंजीर ४ तोले, आंवला ५ तोले, लहसोड़ा ५ तोले, खारखुश्क ५ तोले, हलैलास्याह ८ तोले, तरबद मुकश्शर ४ तोले, जब कि ८ रोज तक फौलाद का पानी तैयार हो जावे तो उसी फौलाद वाले बर्तन में सब अदविया डालकर उसमें ६ सेर पानी कुए का भी डाल दे। तीन रोज के बाद सराअंबीक में डालकर बतरकीब मारूफ अर्क कशीद करें और सर्द होने पर बोतल में भर रखे खुराक बकदर १ माशे अर्क को एक से दो तोले तक गुलाब में डालकर नोश फर्मावे और कुदरत का भी तमाशा देखें पस अगर आपको कुव्वत बाह और बाल स्याह करने का शौक हो तौ कदरे तकलीफ फर्माकर तैयार करके देख लेवें। (अलराकिम हकीम सय्यद गुलामअलीशाह मालिक शफाखान हैदरी करांची सुफहा १४ अखबार अलकीमियां ६६ अगस्त १९०७)

नुसखा सोजाक निहायत ही मुजर्रिब (उर्दू)

सतशिलाजीत, सतगिलोह, सतबैरोजा, दानः इलायची, खुर्द, कत्था, सफेद, तवाशीर, गंधक, आंवला सार, मुसफ्फा गेरू, तमाम दवाओं को बराबर वजन लेकर पीसकर रखे और ३ माशे रोजाना शरबत नीलोफ से खाया करे। ७ दिन में ही आराम होगा। (सुफहा १० अखबार वैद्योपकारकलाहोर ५/१२/१९०६)

सोजाक का उमदा इलाज (उर्दू)

हल्दी ५ सेर को एक हँडिया में डाल दे और उसमें अढ़ाई सेर दूध दाखिल करके खुश्क करे ले फिर उस हल्दी का बजरियेः पातालजंतर तेल कशीद करके अहतियात से रख छोड़े। एक शीख बलाई या मसका में रखकर मरीज को खिला दिया करे। चंद ही यौम में मर्ज का नमूद न रहेगा, इन्शाअल्लाहताला (अखबार अलकीमियां १/१/१९०७ सुफहा ९)

नुसखा सोजाक कौहना वा जदीद (उर्दू)

शोराकलमी १२ तोले, गंधक आँवला सार ३ तोले, दोनों को मिलाकर मिट्टी के बर्तन में जो कि बिलकुल नया हो डालकर कोयलों की आग पर रखे जब दोनों बिलकुल पानी हो जावें तो बर्तन को नीचे उतारकर दूसरे कलईदार बर्तन में उलट दे, सर्द होने पर सफूफ बनाकर पार्चः पेज करके रख छोड़े, बादहू फिटकिरी बिरियां एक तोल, गिलें अरमनी एक तोले, वंशलोचन एक तोले। समग कतीरा १ तोले, शोरा व गंधक मामूली एक तोले, सतसिलाजीत ६ माशे तमाम अदवियात को कूट छानकर बकदर चार माशे हमराह शीर मादः गाउ इस्तैमाल करायें। इन्शाअल्लाह उलअजीज बहुत जल्द फायदा होगा। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां १६/११/१९०७)

नोट—अखराज पथरी के लिये भी यह नुसखा इसरार मुख फियासे हैं।

दाफः सोजाक व मुकव्वीवाह (उर्दू)

रससिंदूर १ तोला, गंधक आँवलासार १ तोला, कुश्ताकलई १ तोला, कुश्ताचांदी १ तोला, कुश्ता सोना ३ माशे, मुरवादीद ना सुख्तः ३ माशे, भीमसेनीकापूर १ तोला, कश्ताअबरखस्याह १ तोला, तमाम अदविया को भाँगरे के रस में ४ दिन तक खरल करके गोलियां बनावे, बमिकदार ४ रत्ती गोली होनी चाहिये; हररोज एक गोली बहमराह दूध खावे और बादी व तुर्शी से परहेज रखे और ६ माह मुदावतम करें फिर सब अमराज दुम दबाकर भाग जावेंगे। (सुफहा १५ वैद्योपकारक लाहौर १२ दिसंबर १९०६)

इलाज सोजाक (उर्दू)

जौहर लोबान में कुश्ता तूतिया चहारहिस्सा शामिल करके रोगन सन्दल

में खरल करके मिस्ल मरहम के बना रखें खुराका दो चावल बलाई या मस्का में सोजाक को पहली खुराक में दफै कर देता है।

कुश्ता तूतिया की तरकीब यह है

काफूर २ तोले को तूतिया ६ माशे के जेरुबाला देकर किसी कूजेगिली में बंद करके दो तीन पहर की आंच दे दे कुश्ता सफेद होकर निकलेगा लेकिन जिस कूजे में बंद किया जावे तमाम कुलिया का मुह काफूर से पुर होना बेहतर है. अगर खिला होगा तो तूतिया गायब हो जावेगा। (सुफहा नं० १९ अखबारअलकीमिया १६/६/१९०७)

रसकपूर का कुश्ता और पुराने से पुराने सोजाक का कलाकुम्मा (उर्दू)

पोस्त दरख्त बेर को जलाकर उसके खाकिस्तर एक सेर में तीन सेर पानी मिलाकर ५ रोज तक भिगों रखें बाद उस पानी को बत्ती लगाकर मुकत्तर कर लेवें फिर एक कढ़ाई आहनी में अबर का टुकड़ा रखकर उस पर एक तोला रसकपूर को रख दे और नरम आग पर पानी का चोया देवे जबकि तमाम पानी जज्ब हो जावे तो फिर एक सेर सिरका अंगूर का लेकर इसीतरह चोया देकर जज्ब करे उसके बाद बिलाबा १० तोला कुंजदस्याह १० तोला को कूटकर नुगदा बना लेवे और रसकपूर तैयार शुदः उसमें रखकर तीन मर्तबः गिले हिकमत करे जबकि अच्छी तरह खुश्क हो जावे तो ४ सेर पाचक दस्ती में आग देवे। बफज्लहू ताला आला दर्जे का कुश्ता तैयार होगा. बवक्त सुबह बकदर निस्फ चावल मक्खन में रखकर खावे। कौहना से कौहना सूजाक के किये नं० ४ अकसीरबस तजरुबा शर्त तैयार करके देख लें। (सुफहा ७ अखबार अलकीमियां १/९/१९०६)

कहल सोजाक (यानी काजल से सोजाक का इलाज) (उर्दू)

जोंक खुश्क एक अदद को फलीता में लपेटकर राई के तेल के जरिये काजल लें। मरीजसोजाक की आखों में लगाएँ, इन्शाअल्लाह् सोजाक क नमूद तक नही रहेगा। (सुफहा ३ अखबार अलकीमियाँ १/११/१९०७)

रोगन कुचला मुकव्वी व दफे सोजाक (उर्दू)

पावभर कुचला के पांचसेर रोगन गावी में भिगोवे जब दूध बिलकुल खुश्क हो जावे तब बजरियः पतालजंतर रोगन कशीद कर ले यह रोगन कुरह सोजाक को दफै करता है। अयसाव सुस्त और कमजोर को ताकतवर बनाता है तिला अन व अकलन दोनों तरह इसका इस्तेमाल मुफीद जायज है–खुराक १ बूंद है (सुफहा ३ अखबार अलकीमियां १६/११/१९०७)

नोट–अगर कुचले के हमराह आधपाव मीठा तेलिया भी शामिल कियाः जावे तो तपेलरजः के लिये भी मुफीद है।

इलाज आतिशकः बजरियः रसकपूर तसईद शुदःनीज अर्क मुसफ्फा (उर्दू)

इस नुसखे को पच्चीस बरस से तजरुबा करता चला आता हूं और न कै व दस्त होते हैं। नाजरीन अखबार भी बार बार तजरुबा फर्मा ले बिलादरेग रफाह खलाय के लिय हदिया नाजरीन है।

नुसखा–रसकपूर एक तोला,दारचिकना,मुलतानीमिट्टी एक तोला, कुल दवाओं को बारीक सफूफ करके एक चीनी के प्याले में रखकर ऊपर से दूसरा चीनी के प्याला मुंह से मुँह मिलाकर कपरौटी करके मोटी फतीला से जौहर उड़ा ले। १२ घंटे में जौहर उड़कर ऊपरवाले प्याले में जम जावेगा। उसको खुरचकर एक शीशी में रख लें खुराक मुवाफिक बरदाश्त मिजाज एक चावल तक है, खाने की तरकीब एक छटांक घी या बालाई में डालकर चावल से दो खावे और ऊपर से आध सेर दूध पीवे। ७ या ९ यौम तक गिजाए मुर्गन दूध घी की कसरत परहेज नमक. मिर्च सुर्ख, नुर्शी बादी और इस दवा के खाने के बाद दो घंटे अर्क जैल पी लिया करें।

अर्कलहिपात चोबचीनी ४ तोले. उन्नाव एक तोला, गाड़जुबा ४ तोले, कबाबचीनी २ तोले. बंशलोचन १ तोले, इलायची खुर्द नीमकोब ३ तोले, बनफशा एक तोला, दारचीनी ४ तोले, गुलनीलोफर एक तोला, तुख्मकासनी ४ तोले, बेग कासनी ४ तोले, अनबुलसालब ४ तोले. बादियान ४ तोले. बुरादासंदल सुर्ख ५ तोले, बुरादासंदल सफेद ५ तोले, चोबहयात ७ तोले. मिर्च स्याह ४ तो०. कतीरा १ तोले. शाहतरा ४ तोले. पोस्त बेख सरफोख ४ तोले. पोस्त हलैला जर्द ४ तोले. पोस्त हलैला काबुली, मुंडी खुश्क कर्द: १२ तोले. बर्गझाऊ १२ तोले. तुख्म सरवाली १० तोले. अंबरनूरिया ४ तोले. चौलाई २ तोले. गुर्जसबज १० तोले. बर्गचीता ८ तोले,बर्गहिना १० तोले.बर्गकासनी ४ तोले,बर्गमकोह ६ तोले, सपूलनीब ७ तोले. पोस्त बेख नीम ७ तोले. उशबामगरबी एक तोले. तुख्महिना १ तोले. मवीजमुनक्का. अंजीरबलायती ४ तोले. आंवला ४ तोले. सिपिस्तां ४ तोले, गोखरूबड़ा ४ तोले, सोनामक्खी ६ तोले, हड़जगी ८ तोले. तरबदपोटली बस्ता ४ तोले, यह तरकीब मामूलअबीक से अर्क खीचें। बराबर बजन दवा अर्क बहुत तेज होगी। और दूचनद भी उमदा होगा। खुराक ३ तोले से ५ तोले तक हमराह शदह से होवे। यह अर्क अमराज जैल को भी बहुत मुफीद है। आतिशक, सोजाक, खूनफासिदजजामसनबहरी, मर्ज सौदावी (इसमें ज्यादह दिन इस्तेमाल करना लाजिम है) बुखार. चौथय्या, लरजह, दाफः हाजनखुश्क। (हकीमजाहदखां अजमहरोड़ा–जिला मुरादाबाद सुफहा ११ अखबार अलकीमियां १६/२/१९०७)

नुसखा आतिशक (उर्दू)

आतिशक का उमदा मुजर्रिब और बेजरर इलाज नीलाथोथा का कुश्ता है। (सुफहा १५ अखबार अलकीमिया १६/४/१९०७)

आतिशक का इलाज

नीलाथोथा दो तोले की दो डली लेकर पाव भर रीठे के पोस्त में रखकर किसी कूंजे में बंद करके ३ सेर उपलों की आंच में दे दे। बाद सर्द होने के निकालें, नीलाथोथा कुश्त होकर बरामद होगा। मरीज आतिशक ख्वाह कैसा ही गल क्यों न गया हो और कितने ही जख्म क्यों न हों कितना ही सख्त दर्द क्यों न होता है सिर्फ १ रत्ती कुश्तामजकूरः से बालाई या मसके में रखकर मरीज आतिश को खिलावे और मरीज को अपने रोबरू से अलहदा न होने दे। मरीज को जब प्यास लगे बजाइ पानी के रोगनजर्द नीम गर्म पिलावे। इन्शा अल्लाह् ६ घंटे के अन्दर जख्म और दर्द आतिश का नमूद रहेगा, मरीज हैरान रह जावेगा कि जो सोलह साल से जख्म थे, वह महज ६ घंटे के अन्दर अन्दर कहां गायब हो गये और अगर जख्मों में दर्द होगा साथ ही वह भी काफूर होगा। (सुफहा ११ अखबार वैद्योपकारक १२/११/१९०६)

नोट–बारह घंटो के बाद पानी पीने की इजाजत है।

नुसखा आतिशक

नीलाथोथा ६ माशे थोड़ी रुई में लपेटकर कोयलों की आंच में दे दे। १५ मिनट में निकालकर रुई पृथक् कर भस्म को पीस लो, जो सफेदी लिये हो जायेगी। इसमें १० तोले बारीक पपरियाकत्था मिलाकर नीबू के रस में जंगली बेर की बराबर गोली बांध ले, दो गोली रोज सवेरे शाम मलाई के

साथ खावे। खुराक जो दिल चाहे। ७ दिन में आतिशक जाती रहेगी। इस गोली को पानी में घिसकर जख्म पर भी लगावे।

एक आदमी ने बजाइ कत्थे के समान कौड़ी भस्म व समान हड़ मिलाकर इसी रीति से गोली बनाना और पानी के साथ खाना बतलाया मुजर्रिब बतलाया।

नुसखा आतिशक

३ माशे नीलाथोथे को एक छटांक मक्खन के साथ तांबे के बर्तन में नीम के मोटे से जिस्में नीचे पैसा लगा हो २४ घंटे खरल करके रख छोड़े, सादे पान में एक माशे खुराक सवेरे रोजाना जो चाहे खावे आतिशक बिला के दस्त ७ दिन में जाती रहेगी। (बाबा लालदासजी का बताया)

कंघी से दूध का चूरन बनाने की क्रिया (उर्दू)

कंघी जर्दगुल की हरी शाखों से अगर दूध आग पर रखकर चलाया जावे तो बुरादा खुश्क आटे की तरह हो जाता है और फिर इस कदर गर्म पानी डालने से बदस्तूर दूध असली हो जाता है। आजमूदा है (सुफहा अकलीमियाँ २२८-२५ नवम्बर सन् १९०४)

(आक) मदार-अशरकेफवायद (उर्दू)

हिंदुस्तान में कोई जगह नहीं कि जहां आक का दरख्त न पाया जाता हो, खुदावन्द करीम ने जिस कदर इसमें मुनाफा रखे हैं वैसे कसरत से भी पैदा कर दिया है। नजला मैदे के अमराज और बजअउजल मफासिल बवासीर जौफ वाह नीज व बाई अमराज वगैरः गरज बहुत से अमराज में यह तीर बहदफ है। मेरे तजरुबे में जितनी तरकीबें आई हैं हदिया माजरीन करता हूं। नजला बंद के लिये यह हुलास निहायत मुफीद है। आरने उपलों की राख ३ मर्तबे आक के दूध में तर करके खुश्क करे और बवक्त जरूरत थोड़ा सा इसमें से लेकर सूंघे। दस मिनट के बाद छींक आकर तबियत साफ हो जावेगी। इसके बाद एक छटांक जलेबी गर्म गर्म खा ले। आक के दरख्त की जड़ जमीन के अंदर से निकाले। इसकी छाल साफ करके खूब बारीक पीसकर निस्फ वजन कालीमिर्च का सफूफ मिलाकर पानी में गोलियां चने के बराबर बना ले। खाँसी के वास्ते अज हद मुफीद है, हैजे में गुलाब के अर्क के साथ देवे तो अकसीर है, इसकी छाल का सफूफ एक हिस्सा कंदस्याह तीन हिस्सा दोनों यकजात करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बना ले। बलगमी खाँसी के वास्ते मुजर्रिब है। मैदे के अकसर अमराज के लिये यह गोलियां मैंने नाफै पाई हैं, आक के शूल १ तोला, काली मिर्च १ तोला, सोंठ १ तोला, नमकलाहौरी १ तोला, काली मिर्च १ तोला, सोंठ १ तोला, नमकलाहौरी १ तोला, सबको पीसकर अदरख के अर्क में गोलियाँ बनाए। जब कभी पेट में गिरानी मालूम हो तो एक गोली कदरे पानी के साथ खाएं। यह गोलिया बजैउल मुफासिल के लिये भी मुफीद है। रवाह या सूरी के वास्ते भी नाफः है। अकसर देखा गया है कि मस्सों में खराब रतूबत निकलकर तबियत हलकी होगी, हैजे में भी मैंने बहुत नाफै पाया है, बजअउलमुफासिल में इसका रोगन निहायत ही मुजर्रिब है, आक के पत्ते ७ अदद भिलावे ७ अदद रोगन कुंजद में जलाए जब खूब जल जावे तो साफ करके शीशी में रख छोड़े और बवक्त जरूरत धूप में बैठकर मालिश करे सिर्फ दो तीन मर्तबा की मालिश से आराम हो जाता है, इसकी छाल का सफूफ एक माशे हाथ व पाँव की सर्दी व कमजोरी के वास्ते उमदा चीज है। आयन्दा निस्फ माशा ताजा पानी के साथ फांके, इसके बादस एक माशे उमदा तिरियाक है, खाँसी दमा के वास्ते भी नफा देता है, इसके पत्तों से इस्तंज करना, बवासीर के मस्सों को तहलील करता है, अजवाइन देशी आक के दूध में तर करके आग में जला ले और सफूफ करके रख छोड़े। खांसी के वास्ते नाफै है, जहरीले जानवरों के काटने के लिये इसका दूध फौरन् असर करता है, हरताल गोदंती को आक के दूध में भिगोकर कुश्ता करे तो कालिज के वास्ते बहुत ही फायदा देता है, कुश्ता मजकूर एक रत्ती अदरख दो माशे में पीसकर मिलाकर खिलाए दिन को गिजाये मुरगन दे और शाम को कुछ गिज न दे। चंद योम में आराम हो जावेगा, आक के दूध में संखिया मिलाएँ और रोगन जर्द मिलाकर तिला करें। जलक के वास्ते अकसीर आजम है। आँवला पड़कर रगें साफ हो जाती हैं और इसके बाद मसका (मक्खन) लगाने से जलन वगैरह सब जाती रहती हैं। (सुफहा १० अखबार देशोपकारक १६/८/१९०५)

फवायद आक (उर्दू)

अगर पोस्त बेखआक सुर्खगुल और फिलफिलगिर्द हमवजन कूट पीसकर अदरक के पानी में बकदर दानः फिलफिल स्याह गोलियां बना ले मरीज हैजा को बहालत करीबुलमर्ग एक गोली खिलावे, इन्शा अल्लाह ताला शफा हो जाती है। अगर आक की जड़ एक दिरम निस्फ दिरम फिलफिलगिर्द के साथ मिलाकर बड़ के दूध में रगड़कर बकदर दान नखूद गोलियां बना ले। एक गोली कबल अजतप मरीज को खिलावे। दुबारा लरजा का बुखार न आवेगा।

और अगर किसी कदर आक की जड़ और पंवां की जड़ दोनों को पानी में रिगड़कर मारगुजीदा को पिलावे फिलफौर बफलजहू ताला शफायाब हो जाता है, अगर बेख पंवान भैस्सर आये तो तनहा बेख आक ही काफी हो सकती है।

फवायद नौशादर मुजर्रिब (उर्दू)

नौसादर हिन्दुस्तान में एक ऐसी चीज है कि जिसको हरशख्स को हरवक्त अपने पास रखना जरूरी है। आम तोर जो मुश्किल दरपेश आती हैं, उनमें अमृत की धार जैसी अदविया है, उतरकर यह अकेली ही मुश्किल कशाई में मदद देगा। आमतौर पर जो जौहरात बनाये जाते हैं उनका भी यह खास जुज है, सिफत व हरफत और कीमियां में अकसर इस्तेमाल किया जाता है अलावा अजी इसका सफूफ बनाकर एक शीशी में भरकर रख लीजियेगा। हस्बजैल मौकों पर अकसीर बल्कि जादू साबित होगा, दर्द डाढ़, दर्द सर, दर्द दांत, दर्द कान, गरजे कि तमाम अमराज बालाई गर्दन में सुंघाने से मुजर्रिबुल मुजर्रिब नसवार ही साबित होगी, मेरी अपनी आजमूदा है मिर्गी में सुंघाने से फिलफौर होश आ जाती है, नीज, बिच्छू, ततैया, भिड़, डाँस, मच्छड व दीगर कुल शहरातुलारिज के कांटे पर लगाने से उसी वक्त आराम आ जाता है। मैंने जहां अजमाया हैरानी से तीर व हदफ पाया है। अगर कदरे चूनी भी शामिल कर लिया जावे तो बहु बेहतर वरनः खालिस ही काफी है। सीप या चीपे पर इसको पानी में घिसकर दिन में चन्द बार लगाने से आराम आ जाता है, सांप का जहर मिनटों में बातिल करता है, मुर्दा मुतसव्विर लाश में दुबारा जान डालना इसके अंजन का काम है। अर्कगिलोय से इसको जौहर उड़ाया जाय तो बुखार के लिये आला सुर्मा है गो आजमाने का मौका नहीं मिला मगर कयास है कि गिलटी प्लेग पर इसकी मालिश जरूर मुफीद साबित होगी। लिहाजा नाजरीन अखबार हाजा से मुलतमिस हूं कि इसका सफूफ करके शीशी में जरूर रख छोड़ें और आजमाकर हैरान हों। कुलअमराज पर मैं मुफीद पा चुका हूं, तब दर्ज कराने की ताकीद है। (सुफहा १२ अखबार देशोपकारक १२/१२/१९०६)

अंकोल तैलक्रिया

सप्ताहं तिलतैलेन भावयेदातपे परम् । अंकोलबीजचूर्णं तु शोष्यं पेष्यं पुनः पुनः ॥२४॥ तत्तैलं ग्राहयेच्चैव तैलकारस्य यत्नतः । अथवा कांस्यपात्रे हि तेन कल्केन लेपयेत् ॥२५॥ उत्थाप्य स्थापयेद्धर्मे सम्मुखं तु परस्परम् । तयोरधः कांस्यपात्रे पतितं तैलमाहरेत् ॥ इदमेवावली तैलं सर्वयोगेषु योजयेत् ॥२६॥

(इंद्रजाल)

अर्थ-सात दिवस तक अंकोल के बीजों का तिल के तैल की भावना देवे

फिर उसको पीसकर सुखा लेवे। उसका तैल घानी से निकाल लेवे अथवा बीजों को पानी से पीस कांसी के पात्र पर लेप कर देवे और उसको घाम में रख देवे तो तैल नीचे टपक आवेगा। इस तैल को सब कामों में लावे।।२४–२६।।

अंकोलतैलप्रयोग

शववक्त्रे बिन्दुमात्रं तत्तैलं निक्षिपेद्यदि ।। एकयामं सजीवं स्यान्नान्यथा शंकरोदितम् ।।२७।। तप्तमंकोलतैलेन मुंडितं तत्क्षणाच्छिरः ।। पूर्ववत्पूर्यते केशैः सद्य एव न संशयः ।।२८।। तत्तैललिप्तमाभाण्डं शोधितं निर्विपेत्क्षणात् ।। सफलो जायते वृक्षस्तत्क्षणान्नात्र संशयः ।।२९।। पद्मिनीबीजचूर्णं तु भाव्यमंकोलतैलतः ।। न्यस्तं जले महाश्चर्यं तत्क्षणात्कमलोद्भवः ।।३०।। बीजं नीलोत्पलोद्भूतं सिक्तमंकोलतैलतः।।न्यस्त जले महाश्चर्यं तत्क्षणात्पुष्पसम्भवः ।।३१।। यानि कानि च बीजानि जलजस्थलजानि च ।। अंकोलतैललिप्तानि क्षणात्तान्युद्भवंति यै।।३२।। यानि कानि च बीजानि अंकोलतैलमेलनात् ।। सफलो जायते वृक्षः सिद्धियोगमुदाहृतम् ।।३३।।

(नागार्जुन–इंद्रजाल)

अर्थ–मुर्दे के मुख में अंकोल के तैल की एक बूंद डार देवे तो वह एक प्रहर तक जीवित रहेगा, यह श्रीमहादेवजी का वचन है। मिथ्या नहीं हो सकता है। तत्काल मुंडाये हुए मस्तक पर यदि अंकोल का तैल गरम किया हुआ लगावे तो पूर्व के समान ही केश शीघ्र उत्पन्न होते हैं और उसी तैल में आम की गुठली को तरकर बोवे तो उसी समय फलसहित वृक्ष पैदा हो जायेगा, इसमें सन्देह नहीं है और कमलनी के बीज के चूर्ण का अंकोल तैल से भावना देकर बोवे तो उसी समय कमल का फूल पैदा होगा, यह आश्चर्य है। इसी प्रकार नीलकमल का भी अनुभव है और भी जितने बीज जल और स्थल के वृक्षों के हैं, उनके भी बीज इसी प्रकार अकोल तैल के योग से उत्पन्न होते हैं, यह सिद्धयोग है।।२७–३३।।

जेबी तबीक का नुसखा
रोगन नौसादर व काफूर व पिपरमेन्ट व सतअजवाइन व कार्वालिक एसिड (उर्दू)

नौसादर को अव्वलरोज लैमूं के रस में खरल करे, दूसरे रोज अमरबेल के मुकत्तर पानी में तीसरे दिन अटसट बूटी के रस में चौथे दिन केले के पानी में पांचवें रोज बिसखपरें में, लेकिन शाम को आग के सामने (यकेबाद दीगर) हररोज बूटी का पानी खुश्क करके आयन्दः अमल करना चाहिये। छठे रोज धूप में और खुश्क करे जब बिलकुल खुश्क हो जावे तब दो प्याले गिलो को जोड़कर तसईद कर ले, जौहर नौसादर एक हिस्सा. कारबालिक एसिड एक हिस्सा, काफूर पांच हिस्सा, पिपर्मेन्ट पांच हिस्सा, सत अजवाइन पांच हिस्सा, इन सबको एक शीशी में बंद करके मुँह पर कोई डाट देकर जरा धूप में रख दे। सब अजजा एक लख्त तेली हो जायेगी। आजमूदह मुजर्रिब बस यही जेबीतबीव है।

(सुफ़हा ४ अखबार अलकीमियां १/५/१९०७)

रोगनशफा मयतरकीब इस्तैमाल दाफः हैजा व बुखार (उर्दू)

कारबालिक एसिड एक हिस्सा, काफूर पांच हिस्सा दोनों को एक शीशी में बंद करके धूप में रख दें फौरन तेल हो जावेगा। जरूरत के वक्त काम में लावें, हैजे में तीन तीन चार २ बूँद देने से मरीज बफज्लहू ताला शफायात हो जाता है और अगर इसी रोगन में रुई की बत्ती तरकर नासूर में रोज देलीजाया करे, पुराने से पुराना नासूर थोड़े ही दिनों में अच्छा हो जाता है अलावः हैजा और नासूर के दूसरे जख्मों पर भी इस तेल को लगाना मुफीद साबित हुआ है मौसमी बुखार पांच बूँद उतार बुखार में देने से दुबारा नहीं चढ़ता और नारी के बुखार में भी वे मिसल साबित हुआ है (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १६/१०/१९०६)।

जयावटीविषयोग

विषं त्रिकटुकं मुस्ताहरिद्रानिम्बपल्लवाः । विडंगमष्टकं चूर्णं छागमूत्रैः समं समम् ।। चणकाभा वटी कार्य्या योगवाही जयभिदा ।।३४।। इत्यनुपानकल्पनया सर्वव्याधिहरी जयावटी ।।३५।।

(र० सा० प०)

अर्थ–सींगिया, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, हलदी नीम के पत्ते और बायविडंग इन आठ चीजों को सूक्ष्मकर बकरी के मूत्र में घोट चने की बराबर गोली बनावे तो यह जयानाम की गोली अपने अपने अनुपान के साथ समस्त रोगों को नाश करनेवाली है।।३४।।३५।।

इलाज आग से जले का (उर्दू)

जब कोई जगह जल जावे तो आक के पत्तों को आग पर सेंकने से इन पत्तों से जो पानी निकले उसको उस जगह पर लगा देने से फौरन दर्द और जलन मौकूफ हो जाता है और चमड़ा वैसा का वैसा रहता है।। (अखबार देशोपकारक १२/१२/१९०६)

इलाज दाफः जहर संखिया (उर्दू)

संखिया जो चौथे दर्जे पर गरम खुश्क है और सम कातिल है लीजिये एक नबात हिंदी जिसको मछछूची (चूनापानी) कहते हैं इसमें खुदा ने यह ताकत दी है कि सेर भर संखिया अगर खा ले तो उस पर मछैछी का अर्क पी जावे, सब मिट्टी हो जावेगा। यह दावा तो फकुराका है मगर हमारा दावा तो यकीनी इस कदर है कि संखिया खुर्दः का इलाज इससे बेहत्तर शायद मालूमात इन्सानी में न हरगिज न होगा। (सुफ़हा १२ देशोपकारक १२/१२/१९०६)

इलाज दाफैः सगे दीवाना (फार्सी)

हरकरा कि सगे दीवानः गुजीदः बाशद ईदंवा बच्चः हाइसग बकै बरायद मरीज सेहत यावद व बिगीरंद कदरेशीरआक व शश माशे खकिस्तर सरगीन सहराई यकजा कर्दः बकदर कुनार सहराई हुव्वबंदद बनिगाह दारंद हरगाह सग गुजीदः मिस्ल सग आवाज कुनः व बेहोश शवद अ बाज बहोश आयद फिल फौर यक हुव बाजराह आवताजः बिखुरानंद बादयक साइत मरीज कैकुनद व बच्चः हाइसग बकैबरायद व बाद अजां अगर बार दीगर आवाज सगकुनद वे बेहोश शवद चूं बहोश आयद बारदीगर यक गोली बदस्तूर साबिक दिहन्द हमवरीन तरीक मेदादह बाशन्द ताआंकि असर समबिल्कुल जायल शवद।

(सुफ़हा ८५४ किताब शफाइउलअवदान)

इलाज दफै जहर सगे दीवाना (फार्सी)

बकदर शशआहक खुश्क आबनादीदः रा बकदरे आब खून्न हलकुनन्द व यकदम बिगुजारंद कि दर्द तहनशीन शवद पसआब जुलालरा बमरीज बिनोशानन्द व अहकरा व आवसहक कर्दः कि मिस्ल मरहम शवद बरजख्म ददां सग जमाद कुनन्द व हर रोज दोबार व अमल आरंद तासहरोज असर सम जाइलशवद (सुफहा ८५४ किताब शफाउलआबदान)।

कुत्ते के काटे का इलाज

हाथीशुंडीदे बीज ६ माशे दधि में मिलाकर "श्वानदष्टं प्रति खादयेत्" हलक उतरै। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

इलाजदफाई जहर कजदम (फार्सी)

अगर कसेरा अकरव नेश जहद बाशद फिलाफौरै कदरे अहक बकदरे नौसादर हरदो ममावी वा चन्द कतरा आब सहक कुनंद हरगाह बूएतुन्द व तेज अज आंवरायद आंरा मुकाबिल मुनखरीन बीमार कुनंद व मुजरिद रसीदन बूएआं व दमाग असर जहर जाइल शवद व बीमार व हालकुद आयद (सुफहा ८५३ किताब शफाइउल आवदान)।

उपयोगी नश्तर

युक्तप्रदेश की सरकार ने अपने गजट में लिखा है कि लाडियर ब्रंटन, नश्तर और "परमाङ्गनेट आफ पोटाश, सर्प विष को दूर करता है मेरठ जिले में २३५ मनुष्यों में १०१ मनुष्यों की इस नश्तर और दवा से प्राणरक्षा हुई है। फिर भी नश्तर और दवा में अभी कई अवगुण है।

(अखबार वंगवासी ३१/५/१९७९)

अथ मंडूककल्प

सर्पविषनाशक मेंडक का मुहरा

महानद्यां समुद्रे वा देवखाते महाह्लदे । दशपुरुषमध्यस्थो मंडूकानां वसेत्तु यः ॥३६॥ सर्पवर्णो ह्यतिस्थूलो दीर्घजीवी बिलेशयः ॥ शरत्काले तु निर्गत्य वसेदन्यत्र सर्वदा ॥३७॥ तस्य मूर्ध्नि महारत्नं कीर्तितं विषनाशकम् । एतत्संगृह्यतां नृणां नास्ति मृत्युदरिद्रता ॥३८॥ यत्र स्थले भवेद्रत्नं तत्र सर्पो न तिष्ठति ॥ तद्घृष्टोदकसेकात्तु नश्यते दशधा विषम् ॥३९॥ वातगुल्मोदरार्तिश्च नेत्रशूलादिका रुजः ॥ नश्यंति स्पर्शमात्रेण घृष्ट्वा वा तैलसेवनात् ॥४०॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–गंगादि महानदी, समुद्र, स्वयं बने हुए तालाब या बड़े तालाबों में मेंडकों के दश पुरुषों के समय से न मरा हुआ (दीर्घजीवी) जो मेंडक रहता हो, सर्पकासा रंगवाला, बहुत मोटा बहुत दिन तक जीनेवाला बिलनिवासी वह मेंडक शरद ऋतु में अपने बिल से निकलकर सदा बाहर रहता है, उसके शिर में जो बड़ा रत्न रहता है वह बिष का नाश करता है। जिसके पास वह मणि हो उसको दारिद्रय और मृत्यु नहीं होती, जहां वह रत्न हो वहां कभी सर्प नहीं आता उस रत्न से घिसे जल को देह में सींचने से दश प्रकार का बिष दूर हो जाता है। वायुविकार, गुल्म, जलोटा, आँखदर्द आदिरोग चले जाते हैं, उस मणि के छूने या उसे तेल में घिस कर लगाने से उक्तरोग नष्ट हो जाते हैं।।३६–४०।।

इलाज दफै जहर मारस्याह (फार्सी)

कसेरा कि मारस्याह गुजीदः बाशद फिलफौर बकदर एक मुर्ख नीलाथोथा बारीक साईदः बसरनेनिहादः मुनखमारगुजीदः बदमन्दद अगर यकबार काफी न शवद बाद यक साइत यार दोम वमिकदार मजकूर बद व बहस्त जरूरत बार सेम नेजुन्न अमल आरन्द इन्शा अल्लाह ताला अगर मार गुजीदः बेहोश शुदः बाशद व होश दरआयद व तन्दुरुस्त शवद **व** अगर मार गुजीदः रा कफ अजदहां जारी शुदः बाशद अजहिलाज हेच नफा हासिल न शवद कबल अज जारी शुदन कफअज दहांनफा कुली बखशंद–(सुफहा किताब शफाइउलआबदान) ८५३।

जहर सांप का इलाज (उर्दू)

हाथीशुण्डी मार गुजीद के लिये तिरियाक है किसी सांप के काटे हुये को करीबन ६ माशे के हाथीशुण्डी खिला दीजिये सांप का जहर असर नहीं करता–(सुफहा ४ अखबार अलकीमियां) १५/५/१९०७।

सर्पविषहर

लज्जामूलं करे बद्ध्वा विलिप्य सकलं वपुः । रमते फणिभिः सार्धं वार्तिको गरुडो यथा ॥४१॥

(योगरत्नावली)

खिलाड़ी लज्जालू (छुईमुई) की जड़ को हाथ में बांधकर और उसी जड़ से शरीर को लेपकर सापों के साथ गरुडजी के समान रमण करे।।४१।।

मच्छर न आवेंगे (उर्दू)

दरयाफ्त से मालूम हुआ है कि मच्छरों को रंग से खास उन्स है अगर मुनासिब रंग के कपड़े मुस्तैमिल हों तो मच्छर पास नहीं फटकते मस्लन मच्छर को स्याहरंग निहायत मरगूब है अगर कोई शखस निहायत साफ और सफेद रंग के कपड़े रखें तो उसको मच्छर बहुत कम सताएँगेअगर जमीन पर न हो और जूते या कपड़े स्याह न हो तो मच्छरों से कम ईजा पहुँचेगी, बहुत से आदमी छत में स्याहरंग का कपड़ा बांधकर टांग लेते हैं और फिर उनको मच्छरों से कुछ तकलीफ नहीं होती क्योंकि तमाम मच्छर उस कपड़े के गिर्द लिपटे रहते हैं (ब्रह्मप्रचारक) सुफहा १४ (अखबार अलकीमियां २६/१०/१९०७)

मच्छर और कीडे का इलाज

कूट यानी कुस्त को कपड़ो के सन्दूक में रख देने से कपड़ो में कीडा नहीं लगता। कश्मीरी कूट का चूर्ण बिस्तरे पर बजाइ पिस्सूपौडर के छिड़कते हैं।

नुसखा धूप का छोटा

गूगल, तगर, नागरमोथा, छारछबीला, बालछड, चन्दन सफेद, लोंग, इलायची बड़ी, कपूर, गोला, बूरा ये समान भाग के धूप बनावें।

नुसखा धूप का बड़ा

गूगल, लोवान, अगर, तगर, कपूरकचरी, नागरमोथा, छारछबीला, बालछड, चन्दन सफेद, चन्दन लाल, जायफल, लौंग, इलायची बडी, कपूर, गोला, बूरा समान भाग सब ले बनावें।

दशांगधूप

कूट ६ भाग, नक्ख ५ भाग, हर्ड का छिलका १ भाग, गुड़ १२ भाग, राल १ भाग, छरीला (छारछबीला) ३ भाग, छड़डंडी (जटामांसी) ९ भाग, गुग्गुल १ भाग, मुथा (मौथा) ४ भाग इन सबको पृथक् कूट छान ठीक वजनकर जड़ धूप में मिला धुंकावे चाहे इसी तरह कोयलों पर धुंकावें।

इलाज नासूर

जजुवान सग खुश्क करके जलाकर नासूरपर छिडकना या रोग सन्दल में खोपड़ी इन्सान और सिरस के दरख्त की छाल घिसकर बजरियः वत्ती के नासूर में दाखिल करे पहले पिचकारी से जख्म को धोकर साफ कर लें यह हमारा तरजुबा है। (सुफहा न० १४ अखबार अलकीमियां १६/१०/१९०७)।

बद की दवा

बद के ऊपर बड़ के दूध का फोया लगाकर नमक की पोटली से सेकने से बद बैठ जाती है ओर रीठे को घिसकर लगाने से बद पक जाती है (बाबा लालदास का बताया)।

नुसखा दादहर किस्म (उर्दू)

रुइ इतरों को तीन चार मर्तवः दाद पर मल देना चाहिये हफ्ते के अन्दर

अन्दर इन्शाअल्लाहताला आराम हो जाता है मगर रुहइतर मुनासिब मौसम मलना चाहियेमस्लन गर्मी में रुहहिना और मौसम सरमा में रुहअंबर और मुश्क वगैरः । (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां १५/५/१९०७) ।

शरीद मुहल्लिक खांसी का इलाज (उर्दू)

एक सेर दूध गावी में नमक सांभर २ तोले का इस कदर जोश देवे कि दूध बिलकुल खुश्क हो जावे और महज नमक ही बाकी रह जावे बादहू नमक को निहायत अहतयात से शीशी में रख छोड़े दो रत्ती हर सुबह यह नमक चाट ले खांसी काफूर होगी। (सुफहा ३ अखबार अलकीमियां १/११/१९०७)

दर्द दाढ

जिस तरफ की दाढ़ में दर्द हो उसी तरफ हाथ के अंगूठे और कलमाकी उंगली के दर्मियानी हिस्से में लहसन कूटकर लुगदी सी बनाकर बांध दे अभी आध घंटा इस अमल को न गुजरेगा कि दर्द दाढ़ को बफज्लहू आराम हो जावेगा।

(सुफहा ३ व ४ अखबार अलकीमियां १/११/१९०७)

दांतों का इलाज (उर्दू)

मंजन निहायत मुफीद और मुजर्रिब जो दरद दंदान को और हिलने को मुफीद हैअगर गोश्त दातों ने छोड़ दिया हो तो गोश्त दांतों पर चढ़ आता है।

नुसखा यह हैत्रिफला २ तोले, त्रिकुटा, ६ माशे, नमकशोरा ६ माशे, नमक लाहौरी ६ माशे, नमक स्याह ६ माशे, माजू ६ माशे, तूतिया विरियां ६ माशे फिटकरी सफेद ६ माशे चोबपतंग ६ माशे खूब बारीक पीसकर मिलाकर रख छोड़े मगर शीशी में रखें उंगली से दांतों पर लगाकर मुँह नीचे कर ले ताकि पानी निकल जावे चन्द मिनट में पानी निकल चुकेगा पस उंगली से खूब मलकर कुल्ली कर दे मेरा तजरुबा किया हुआ है। चंदरोज इस्तैमाल करे इन्शा अल्लाह दांतों के मुतअल्लिक कुल शिकायत रफे हो जावेंगी राकिम बेनीप्रसाद खरीदार नं० १८६ । (सुफहा ९ अखबार अलकीमिया १६/३ व १/४/१९०७) ।

इलाजदाफै खून दन्दान (उर्दू)

फिटकिरी, अजवाइन खुरासानी, अफयून, नौसादर जरा जरासी पीसकर वत्तौर मंजन मलने से दांतों का दर्द खून जाने वगैरः **को बंद करता है।** (सुफहा १२ वैश्योपकारक १२/१२/१९०६) ।

मंजन दांतों का खून बंद करे

अगर की खाक १ तोले, फिटकरी भुनी १ तोला, नमक लाहौरी ३ माशे, पीसकर मंजन करे, दांतों के खून को बंद करता है। (करावादीन)

हुलास तुख्म सिरस दाफै जुकाम (उर्दू)

मगज तुख्म सिरस बारीके सफूफ करके सूंघना दिमाग से रेजिश खूब निकलता है। (सुफहा ९ अखबार अलकीमियां १/११/१९०७)

रोगन दफै अमराज गोश (उर्दू)

एक तेल जो कान के जुमले अमराजं में निहायत मुफीद है सावित हुआ है अव्वलजख्म व दुम्वल व सवूर वगैरः और दूसरे सकल समाअत तीसरे दर्द गोश जिसकी वजह से बाज आदमी हिलाक भी हो गये हैं फौरन आराम होता है चौथे मैल वगैरः अगर इजा देता हो पांचवें पानी या हवा से अगर तकलीफ हो गई हो सबको बहम्दअल्लाह आराम होता है. सुप्त, काफूर रोगन जर्द हमवजन सहक करके पका के शीशी में रख छोड़े ववक्त एक दो कतरा काफी है दो तीन रोज के इस्तैमाल से सब शिकायतें दफे होती हैं इत्तहावाफा (सुफहा १७ अलकीमियां १६/८/१९०७) ।

तजरुबा गरीब सम्हालूका इस्तैमाल तम्बाकू में बिसारत बखश है (फार्सी)

शखस अजआरजः चश्म नावीना शुदः बूद पस अज अहद बैद अतफाक मुलाकोत उफ्ताद आंकदर बिसारत दाश्त कि किताब में गीरद बचूं इस्तफसार सबब रफ्त जाहर साख्त कि मुद्दते बर्ग सम्हालू खुश्क साख्त बिलमनःहकः वा तंबाकू बतरीक मुतआरिफ दूदओं मेखुर्दम अज मुवाजवातई बीना शुदम अजीब तअज्जुब अस्त (सुफहा २० किताब मुजर्रिबात अकवरी) ।

सफूफ मुकव्वी बसर सौंफ का इस्तैमाल (फार्सी)

मुजर्रिब साहब दाराशिकोही पैवस्तः हरशब ववक्त ख्वाब दो दिरम नवातकोफ्तः व बुरद अज जौफ मामून करदद बफज्ल इलाही हरगिज व इल्लत कूरभी मुब्तलान न शवद।
(सुफहा २० किताब मुजर्रिबात अकबरी)

सफूफ आंवला मुकव्वी बिसारत (फार्सी)

सफूफ आंवला, रोग्न, आमला, ताजादरसाया खुश्क कर्दः बदर शीर गाउ जोशानीदः खुश्कः कर्दः कोफ्तः पुख्तः सफूफ साख्तः यक हफ्तः यक दिरम वा शहद बिखुरद । (सुफहा २० किताब मुजर्रिबात अकबरी) ।

सुरमा सीमाव दाफैजुमलै अमराज चश्म (उर्दू)

लई के दरख्त जो अकसार जंगल में बकसरत होते हैं और कद में दो फुट से नौ फुट तक होते हैं इन पर जो शबनम पड़ती है वह मोतियों की तरह जम जाती है और खुश्क होकर मिठाम पकड़ती है यह शबनम २ बोतल इकट्ठी की जावे एक तोला सीमाव पाक इसमें खरल किया जावे इसका पानी खुश्क होकर बिलकुल मिस्ल सुरमा हो जावेगाआंखों के जुमले अमराज के लिये अकसीर साबित हुआ है, मुमकिन है कि इस पानी से सीमाव आसानी से कायम हो जावे, नाजरीन इस पर क्या राइ कायम कर सकते हैं। (मुहम्मदबखश हेडकलर्क मुल्तान) (सुफहा १७ अखबार अलकीमियां १/९/१९०७) ।

औषधि नेत्रों की पुनर्नवाक्षारसे

विषखपरा २ सेर पक्के. "छायाशुष्क दग्ध्वा तदंगारान् जले क्षिपेत्" १० सेर जले अर्क "शाखया चालयेज्जलं स्वच्छं गृहीत्वा पाचयेत् तत् क्षारम्" १ तोला १ माशा नीलाथोथा, "उभयोर्मर्दनं कृत्वा रक्षयेत् शलाकया नेत्रे क्षिपेत् नेत्रसर्वरोगनाशः ।" "यदि नेत्रात् जलस्रावः स्यात्तदा" हालयों के जल में "पूर्वोषधलेपः नेत्रजलनिरोधकः" इट सिटचिटाफुल हेठ ऊपर लेपा से डाली तथा लाल (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अथ पुनर्नवा मूलकल्पः

नेत्ररोग हर पुनर्नवा प्रयोग

पुनर्नवायाः शुभ्राया मूलं गोघृतमिश्रितम् ॥ अंजितं हरति क्षिप्रं नेत्रान्तरगता रुजः ॥ आज्येन पुष्पं मधुनाश्रुपातं भृंग्या च कंडूपटलं च नित्यम् ॥ रात्र्यांध्यमाज्येन निशाप्रयुक्ता पुनर्नवा नेत्ररुजोपहंत्री ॥४३॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ—जो मनुष्य सफेद सांठ की जड को जल में घिसकर नेत्रों में आंजै तो यह सांठ की जड़ नेत्रों के भीतर के समस्त रोगों को नाश करती है। घृत के

साथ घिसकर लगाने से फुल्ली को, शहद के साथ जल के बहाव को, जलभँगरे के साथ नेत्रों की खुजली को और घृत के साथ रात में लगाने से रतौंध को नाश करती है इस प्रकार सांठ सब नेत्र रोगों को नाश करती है।।४२।।४३।।

आंख दुखने का इलाज (उर्दू)

सत्यनाशी की टीप यानी दूब जर्द कैसी ही आंख दुखती हो सलाई फेर कर लगाने से एक रात में आंखें साफ हो जाती हैं। (अखबार अलकीमियां १६/२ व १/४/१९०७)।

आंखें दुखने का इलाज पोटली से (उर्दू)

काफूर १ माशा, रसोत २ माशा, फिटकरी विरियां २ माशा, लोध २ माशा, बर्गसिस २ माशा इन जुमलै अद वियात को कूट कर पोटली बना ले पानी में तर करके आंखों पर थोड़ी थोड़ी देर वाद फेरते रहैं इन्शा अल्लाह एक ही रोज में आराम कुल्ली हो जावेगा।

आशोव चश्म का इलाज (उर्दू)

जिस आंख पर आशोव हो उसकी सिम्तमुखालिफ पांव के अँगूठे के नाखून पर शीर मदार का लेप करे अगर दोनों आंखें दुखती हों तो दोनों अँगूठों पर शीर मदार का लेप करे इन्शा अल्लाह फौरन आराम हो जावेगा (सुफहा ३ अखबार अलकीमियां १६/११/१९०७)

रोगन आंवला दाफै दर्दसर (फार्सी)

पदमाख, सन्दल, पीपल, कमलगट्टा, गुलहठी, हर एक यक दिरम शीरा आंवला यक आसार, रोगन कुंजद शाज दह दाम (या दिरम) अदवियारा कोफ्त: या शीरा आंवला व रोगन बिजोशानन्द ताकि रोगन विमांद व विदांकि अगर आंवला तरबाशद आँरा अफशुर्द: आब विसितानंद व अगर खुश्क बाशद जोश दादह आववीविगीरन्द व रोगन रावरसर विमालन्द मुर्जरिब। (सुफहा १४ किताब मुजर्रिबात अकबरी)।

नाफैदर्दसर (उर्दू)

सिरस के फूल सूँघना व लगाना नाफै दर्दसर है। (सुफहा ९ अखबार अलकीमियां १/११/१९०७)

इलाज ताऊन (उर्दू)

ताऊन के जमाने में बदन पर नीम गर्म तेल का मालिश करे और नीमगर्म तेल की थोड़ी से मिकदार हर रोज पीता रहे।

नोटतेल किसी किस्म का हो मगर खालिस हो, एक तोले से आठ तोले तक तेल रोजाना पीना चाहिये हमराह नीमगर्म चाइया यखनी, या शोरबा के मालिश करने के तैल में बाज डाक्टर थोड़ा काफूर भी शामिल करते हैं।

तन्दुरुस्त आदमी इसका रोजाना इस्तेमाल करे तो हरगिन मुब्तलाइ मर्ज ताऊन न होगा और शुरु मर्ज ताऊन में भी इसका इस्तैमाल बराबर किया जावे तो जरूर फायदा होगा। मर्ज बढ़ जाने पर फायदे की उम्मैद कम है।

इलाज ताऊन (उर्दू)

सम्मुलफार एक तोला, शोरा कल्मी ५ तोला, हरदोको हाथीशुंड के मुकत्तर पानी में जो करीनन सात तोले के हो, खरल करे। बादहू गोलासा बनाकर कूज गिली में बंद करके मजबूत कपरमिट्टी के बाद चार पांच सेर उपलों की आंच में दे दे, जब सर्द हो जावे निकाल ले हवा लगते ही सम्मुल फार व शोरा कलमी मोमिया हो जावेगा मुवाफिक मिजाज व उम्र मरीज बकदर निस्फ रत्ती के एक रत्ती तक खिलावे इन्शा अल्लाह ताऊन में मुबतला होकर न मरेगा और जल्द शफायात होगा। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां १५/५/१९०७)।

हाथीशुंडी मारगुजीद: के लिये तिरियाक है किसी सांप के काटे हुए को करीबन छ: माशे के हाथीशुंडी खिला दीजिये सांप का जहर असर नहीं करता हाथीशुंडी और सम्मुलफार दोनों मिलकर जहरीला मादा हशरातुलआरिज के दफै सम्मियत के लिये बेनजीर अकसीर का हुक्म रखता है। चूंकि सख्त मुहल्लिक ताऊन आननफानन में अपना काम करके मरीज को हिलाक कर देता है इस वास्ते शोरा कलमांका सम्मुलफार के सात रखना मुकद्दम है ताकि हाथीशुंडी और सम्मुलफार के असर को तमाम वदन में जल्द मुन्तशिर करके मर्ज की तेजी को रोके और बढ़ने न दे। (सुफहा नं० ४ व ५ अखबार अलकीमियां १६/५/१९०७)।

बुखारसोम व चौथय्या के लिये नुसखा जैल मुजर्रिब है (उर्दू)

हरताल गोदंती एक तोला एक सेर नीम की पत्ती के नुगदे में रखकर दस सेर की आंच दे, जब सर्द हो जावे निकाल ले कुश्ता मजकूर एक रत्ती फिटकिरी की खील २ माशे बाहमी मिलाकर बालाई या मसके में रखकर बुखार चढ़ने से पहले खा ले इन्शा अल्लाह बुखार न होगा अगर अव्वल दफे हो जावेगा तो दूसरी दफे की खुराक से न होगा (अखबार अलकीमियां १६/४/१९०७ सुहफा १५)।

ज्वरांजन

निंबबीज, मज्जा, जीरा श्वेत, पीपल, करेले के रस में २१ बेर खरल करना ताप का अंजन है। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

हब्बदाफै तपेकौहना–मुफीद तपेदिक और बच्चों की अर्जलागरी यानी रिढाया झोरा के लिये बहुत ही मुफीद है (उर्दू)

कछुए की बालाई हड्डी को अर्क गुलाब में घिसकर गोंद बबूल कदरे शामिल करके मटर की बराबर गोलियां बना ले एक गोली सुबह वा एक गोली शाम अर्कबर्ग कदम २ तोले के साथ इस्तेमाल करने से पुराना बुखार और बच्चों का तपेदिक (यानी जिस मर्ज में बच्चे लांगर हो जाते हैं जिसको अहडा या झूरा कहते हैं) को अजबस मुफीद है, मैंने पन्द्रह बच्चों का इस दवा से इलाज किया जिनकी हालत ऐसी थी कि सिर्फ ५ मिनट के मेहमान मालूम होते थे और सबकी नजरों में ऐसे मालूम होते थे कि इनका जीना मुश्किल है उस मालिक हकीकी ने इस दवा से फायदा कामिल बख्शा और वह बच्चे अच्छे हो गये, बच्चों को इस गोली को मां के दूध में देना चाहिये और तीन बरस या इससे ज्याद: उमर वाले को अर्क मजकूरा बालामें तपे कोहना व लागरी के लिये यह नुसखा अजीब गरीब है नाजरीन इसके तजरुबे से फायदा उठावें और हरवक्त मौका जरूर तजरुबा फर्मावें।

अर्कबर्ग कदम

बर्गकदम ताजा मयगुल २ सेर, पानी ५ सेर, एक रात दिन भिगो कर हस्बदस्तूर अर्क खींचे।

नोटकदम–कदम दरख्त कलां सायेदार होता है। मशहूर आम है। अर्क मजकूर: बाला दाफे फिसाद खून व सफराई खुराक २ तोले से ३ तोले तक। (सुफहा नं० १३ अखबार अलकीमियां १/६/१९०७)

बच्चों की पसली का इलाज (उर्दू)

छोटे बच्चों को एक मर्ज होता है जिसमें उनकी पसली के नीचे गढ़ा पड़ता है और नफस व मुश्किल आता है यह दवा मुझको मेरे एक दोस्त

मिस्टर फलप साहब मरहम ने बताई थी एक बड़ा चमचा (यानी खाना खाने का) प्याज का अर्क और उसी कदर शीरगाउ या शीरमारद मिलाकर नीम गरम बच्चे को पिला दिया जावे इन्शा अल्लाह बहुत जल्द आराम होगा और खुदशबो रोज का तजरुबा है (अखबार अलकीमियां १६/४/१९०७)।

नुसखा दाफै दर्द गठिया (उर्दू)

सम्मुलफार सफेद चार तोला रोगन जर्द पांच सेर में डालकर एक कढ़ाई आहनी में आग पर चढ़ाकर बत्तीस पहर की मुतवातिर आतिश खिचडी देवें बाद बत्तीस पहर के सम्मुलफार को अलहदा करके रोगन जर्द को दर्द की जगह मालिश करें दर्द का नमून तक न रहेगा और कुव्वत बाह के लिये भी इस घी का अज्व पर मालिश करना मुफीद है। (सुफहा ५ अखबार अलकीमियां १६/५/१९०७)

नुसखा दाफै जुजाम बजरियः रोगन हरताल (फार्सी)

बियारद जर नेख धुगदादी किस्म अव्वल व गुलताजा तुरई तलख दस्ती जरनेखरा वा गुल मजकूर सहक नुमायद ताआँकि खुश्क गर्दद जिहाते कोचक बन्दद बादहू बियारद शीशः कोचक आरा चहार कपरौटी कुनद व खुश्क नुमायद व तहेशीशारा सूराख नुमायद हमराह हवाल दोज सूराख कुनद तहशीशः राः गर्म नमूदः सरे कारद सुराख नुमायद गोला मजकूररा दर शीशः पुर नुमायद बादहू यक चकर कुनीदः शीशः दीगर दहन कुशादहे बाला बस्ल नमूदह अजगुल साख्तः दफन कुनद व शीशः बालारा अजगिर्दखाक बकदर चहार अंगुश्त दादह व दह आसार पाचक दस्ती निहादह आतिश दिहद वा ईतरीक कुनद कि अव्वल यक पाव पाचक आतिश दिहद वक्ते आतिश खामोश गर्दद बादहू नीम आसार पाचक दादह आतिश दिहद बलकि पावसेर इजाफा कुनद सोख्तः शवद रोगन दरशीशी जेरीन ख्वाहद याफ्त अर्जी रोगन वा मर्ज सफेद बुर्स व जुजामरा शफा बाशद व अगर आजार ताजा बाशद दर यकबार नफा रसद व अगर कोहना बाशद दर दो मर्तबः दर दो मर्तबः फुर्सत शवद। (अजकिताब कलमी नुसखे जात बाबू प्यारेलाल बरौठ।)

जुजामका सहल इलाज (उर्दू)

केतूर में एक हिन्दू फकीर जुजाम के इलाज में बहुत मशहूर था और सिर्फ खिचडी खिलाने से तीसरे रोज से हत हो जाती है तीसरे रोज पसीना जर्द गलीज और बदबूदार खारिज हो जाता था इस नुसके के दरियाफ करने में बहुत कोशिश की गई आखिर जोयन्द यावन्दः मालूम हुआ कि वह फकीर एक जिन्दः छपकली को पकड़कर पोटली में बांध देता था और देगची में रख कर दाल चावल और पानी भर देता था जब दम पुख्त हो जाती थी तो उस पोटली को निकाल कर फेंक देता था इसी तरह तीन रोज मुजवातिर मगर यह हराम चीज थी इस वास्ते इसकी तरफ परवाह नहीं की गई और इसी तरह इसकी स्लाहकरके तजरुबा कियागया और दुरस्त हुआ कि दो तीन छपकलियों को पानी में जोश दिया और साफ करके चने की दाल को इसमें दस पन्द्रह भिगोया और सुखाया और बाद अजाँ बहुत से यानी मस्लन तालाब वगैरः में गोता दिया फिर इस दाल का हलवा पकाया और ३ माशे से ९ माशे तक खिलाया। (सुफहा १९ रिसालहिकमत लाहौर १५/२/१९०७)।

मर्ज मिरगी का एक बेनजीर नुसखा (उर्दू)

ज्योतिषी महाराज साहब, हकीम खरीदार अलकीमियां कलकत्ते से तहरीर फर्माते हैं कि (जरा) एक महशूर जानवर है (एक क़िस्म का कीडा) हमारी तरफ बहुत होता है बरसात के मौसम में जब कि घास करीब एक बालिश्त होती है और आसमान से बादलों की गुजर होती है तो वह घास में दिखाई देता है, घास के बीचोबीच झाग (कफ) उठे हुए मालूम होते हैं और वह जानवर झाग के अन्दर रहता है अकसर जमीनदार काश्तकार लोग बड़ी आसानी से तलाश कर लेते हैं और इस घास के खाने से अकसर चौपाये मिस्ल गाय, भैंस अफरजाते हैं और चरना छोड़ देते हैं, घास को बीच से पकड़ कर दबाना शुरू करें, जों जो दबायेंगे झाग ऊपर को निकलेंगे और फिर उसको टेढी करके बोतल में मय जानवर के जमा करते जावे जब ऐसा करते करते बोतल भर जावेगी करीब एक सद जगह में ही बोतल भर जावेगी, बादहू एक सद अदद मिर्च स्याह उमदा शामिल करके आठ सात रोज तक बोतल में काग लगाकर बन्द करके धूप में रखे एक ही जगह बोतल को रहने देवे ताकि दिन की धूप और रात की ठंडक उसे पहुँचती रहे, बादहू एक चीनी के बर्तन में सोये में खुश्क कर ले और सफूफ बनाकर रख ले मरीज मिरगी को वक्त दौरे के करीब ३ माशे दोनों नथुनों में डाल कर जोर से किसी फूकनी से फूकें ताकि दमाग में पहुँच जाय, बाद आध घंटे के बेसुमार छींके आनी शुरू होंगी जिससे एक किस्म उसके दमाग से बाहर निकल आवेगा जिसका मुंह स्याह बाकी सबजी माइल आठ टांगें होंगी लंबाई में करीब १-१/२ या १-१/४ इंच के होगा फिर कभी मिर्गी का रोग न होगा। (सुफहा अखबार अलकीमियां १/८/१९०७)।

कुश्तामिरजा दाफैदमा व मुकव्वी (उर्दू)

दमा व खांसी के लिये कुस्तामिरजाँ व तरकीब जैल बारहा दफै तजरुबे से सही साबित हुआ है, शाख मिरजाँ को बारीक टुकड़े करके शब अर्क लैमू कागजी में तर रखे बाद इसके निकाल कर एक शकोरे गिली में नीचे मिसरी और वर्क गुल बिछाकर टुकड़े मजकूरह छिपावें ऊपर उसको दोनों जुज मजकूरः से पोशीद करके दूसरा शकोरा बंद करके उसके ऊपर गिले हिकमत करें और सात आसार पाचक दस्ती में रखकर फूंक दें यह कुस्ता व मिकदार एक सुर्ख पानी या शहद में रखकर खिलावे अलावह दमा सुर्फ, मरतूबी, कुव्वतबाह को भी अकसीर साबित हुआ (सुफहा १० अखबार अलकीमियां १/११/१९०७)।

मुजर्रिब नुसखा दमा (उर्दू)

नजीर हुसैन साहब खरीदार अलकीमियां आमीन कलक्टरी गोरखपुर से लिखते हैं कि बर्गसबजो को कनार का अर्क निकाल कर मिस्ल दीगर शरबतों के उसका शरबत तय्यार रखे सुबह शाम एक एक तोला इस्तैमाल करने से दमा का नमूदतक नहीं रहता (सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १/७/१९०७)।

दमे का मुजर्रिब इलाज

टेसू के फूल, मग्ज, बिनौला, हम वजन पानी में पीसकर बेर के बराबर गोलियां बना ले और चालीस दिन तक हर सुबह को एक गोली खावे। (सुफहा १४ अखबार अलकीमियां १६/६/१९०७)।

औषधि बवासीर

भैंस और भैंसा दोनों का सींग बराबर खूब बारीक पीसकर आगपियाले में रखकर उस पर एक चुटकी डालकर धूप देने से बवासीर के मस्से तीन दिन में गिर जावेंगे।

बवासीर का मुजर्रिब इलाज (उर्दू)

जो बारहा दफैका आजमूदह है, कुकड़छदी पाव भर पुख्तः नुगदा करके एक पार्चे में बाँध कर कदरे चिकनी मिट्टी लगाकर उसी वक्त चूल्हे में खफीफ आग में पकावे जब मुर्तासा हो जावे और पत्तों का रंग जर्दसा हो जावेगा निकालकर खरल में डाल कर कत्था एक तोला, नीलाथोथा एक तोला मिलाकर खरल करे आबलेमूं डाल कर आठ रोज तक खरल करता रहे और

नीम के सोटे में पैसा मन्सूरी लगाकर उससे खरल करना चाहिये, तरीके इस्तैमाल यह दवा बतौर मरहम के हो जाती है किसी चीनी के प्याले में रख ले जरा सी उँगली के साथ बवासीर के मस्सों पर लगा दिया करे, दिन में एक दफै काफी है चंदरोज के स्तैमाल से मस्से खुश्क होकर जड से निकल जाते हैं। (सुफ़हा ४ अखबार अलकीमियाँ १६/१२/१९०७)

नुसखा बवासीर (उर्दू)

कुश्ता सदफ १ तोला नीम के नुगदे में तय्यार किया हुआ एक रत्ती गोंयत दो रत्ती, एलुआ २ सुर्ख, रसौत २ सुर्ख इन सबको मिलाकर गोली सी करके पानी के साथ निगल जाना बवासीर के लिये मुजर्रिब इलाज है (अखबार अलकीमियाँ १६/४/१९०७ सुफ़हा १५)

बवासीर खूनी बादी (उर्दू)

मग्ज नीम (नीब) तोला, मग्ज पलास तोला, रसौत, जर्द तोला, गिले अरमनी ६ माशे, बारीक पीस कर अर्क गुलाब में बकदर कनार सहराई हब्ब तय्यार करे। एक हुब हमराह अर्क मको अर्कबादियान के रोजाना स्तैमाल करे इन्शा अल्लाह हफ्ते में बेख व बुनियाद से मुनाकिता होगी बाद अंग्रेज अशिया से अहतिराज गो मामूली अदवियात है लेकिन सदहा दफै की आजमूदः व तजरुबेमें से गुजर चुकी है।राकिम हकीम सय्याद मुहम्मदतकी।
(सुफ़हा १० अखबार अलकीमियाँ १/११/१९०७)।

नुसखा बवासीर बादी व खूनी (उर्दू)

रसौत ६ माशे, एलुआ ६ माशे, निबौली नीम ६ माशे, निबौली बकाइन ६ माशे, पोस्तहलैला जर्द ६ माशे, पोस्त हलैला स्याह ६ माशे, मग्ज चाकसू ६ माशे, मक्कल ६ माशे, पपीता एक तोला मूली के पानी में खरल करके नखूद के बराबर गोलियां बनावे और दो गोली सुबह व शाम ताजा पानी में खावे खुदा चाहे बवासीर का नमूद न रहेगा (सुफ़हा ११ अखबार देशोपकारक १४/११/१९०६)

औषधि अर्शकी

बकायन के बीजों की गिरी १ भाग, इन्द्रजौ १ भाग, कहरुवा २ भाग, मूली के रस से शुद्ध रसौत ४ भाग, २४ प्रहर मूली के रस से खरल में घोंटे, २ रत्ती की गोली नक से सर्वार्श नाशक, रक्तार्शपर विशेष (पंडित ऋषीरामजी अंबूवाले ने बताया)

जिस औरत के सिवाय दुख्तरों के औलाद नरीनः न हो उसका इलाज हस्ब जैल है (उर्दू)

औलाद नरीनःका नुसखा शाख मुरवारीद १ तोला को घीग्वार के आध सेर लुआब में लतपत करके कूजे गिली में बंद करके सात सेर की आंच दे जब सर्द हो जावे निकाल ले कुश्ता होगा, कुश्ता मिरजां एक तोला, मुरवारीद साढ़े चार माशे दोनों को अर्क केवड़ा और गुलाब में दो रोज तक सिलाया करे बादहू मुश्क खालिस ३ माशे शामिल करके व कदरदानः मोठ गोलियां बना ले मर्द और औरत दोनों हरवक्त एक एक गोली खा जाया करे जब इक्कीस दिन गोलियां खाने को हो जावें तो जमाइ करे इन्शा अल्लाह औलाद नरीनः होगी यह नुसखा बारहा दफै का आजमूदह है। (सुफ़हा १२ अखबार अलकीमियां १/११/१९०७)

लड़का पैदा होने के इलाज (उर्दू)

शिवलिंगी २ माशे, हालत हमल में हर चौथे दिन दूध से खिलाई जाया करे और बड़ के कोपलों के पानी की नसवार दे दी जाया करे और ताकत बर अर्गजिया खिलाई जाया करे तो औलाद नरीनः पैदा होगी आगे खुदा मालिक है हमारी दवा निआमत अजमाकी एक गोली खिलाने से खुदा चाहे लड़का पैदा होगा। (सुफ़हा १५ अखबार देशोपकारक १४/११/१९०६)

अकर यानी वंध्या का इलाज (उर्दू)

कंघीघास ७ माशे, नागकेसर ७ माशे, जीरा सफेद ७ माशे, तुख्म कटाईकलां ७ माशे, नबात ७ माशे कूट पीसकर मिलाकर खुराक ७ माशे, हमराह एक दाने, मुरवारीद व यक दाना, शिवलिंगी बादहैज व शीरगाउ बवक्त सुबह खिलावे और रात को मजामहत करे सुबह गिजाइ जनानुशीर बिरंज व शाम नान फतीर दाल मूंग (सुफ़हा ६ अखबार अलकीमियाँ १/२/१९०७)

नुसखा अकसीरुलबदन यानी दाफै जिरियान व नीज आतिशक व नामर्दी (दरअसल कुश्ता शिंजर्फ व नुकरा है) (उर्दू)

एक तोला खालिस चांदी लेकर इसकी छोटीसी प्याली बनाकर उसमें एक डली शिंग्रफ रूमी बकदर एक तोला रखे और एक दूसरी आहनी प्याली जिसमें एक सेर पुख्तः रेत आ सके लेकर इसमें रेत भर चांदी की प्याली मयशिंग्रफ हमवार जमाकर नीचे मुलायम अगरोशन कर दे और आबबर्ग खटकट इक्कीस तोला एकएक कतरा डालता जावे हत्ता कि तमाम पानी जज्ब हो जावे फिर एक बोतल शराब बराँडी का एक एक कतरा डालता जावे तब वह भी खतम हो जावे तो डली मजकूर निकालकर पानी खालिस से साफ करके एक पाव पुख्तः नुगदा बर्ग रेहाँ यानी तुलसी सबज में बन्द करके खूब गिले हिकमत करे और एक सेर पुख्तः उपला खानगी की आग तपावे जब उसमें से धुआँ निकलना मौकूफ हो जावे तो उसमें गिलोला मजकूर रख दे बाद सर्द शुदन निकाल ले इसी तरह दस मर्तबः यही अमल करे फिर ग्यारहवीं दफे शिंग्रफ बारीक पीस कर और प्याले को भी सोहान से रगड़ कर साथ ही मिलाले इन हर दो अजसाद और अरवाह को मिलाकर दो तोले अर्क ब्रह्मदंडी में खरल करके टिकिया बनाकर धूप में खुश्क करे और एक पाव पुख्तः बर्ग ब्रह्मदंडी का नुगदा बनाकर दस रुपया सेरपुख्त आतिशदे कुश्ता शिंग्रफ सफेद शिगुफ्तः बा वजन बरामद होगा अगर एक रत्ती भी इसमें से कम हो तो हमारा जिम्मा सिर्फ ७ चावल, ७ मर्द खाने से पैदायशी नामर्द हो जाता है और आतिशक तो इसका नाम सुनकर कोसों भागता है बज वजअ मुफासिल के लिये अकसीर है, तमाम उम्र किसी दूसरी दवा की जरूरत नहीं रहती। (आपका नियाज मन्द हकीम अब्दुल करीम अफी उनहू अज मुकाम बाँसवाडा जिला लुधियाना २२/९/१९०७) (सुफ़हा ६ अखबार अलकीमियाँ १६/१०/१९०७)

नुसखा मुस्हिल दाफैअमराजसौदाबी (उर्दू)

नुसखा अकसीरी यह है कि किसी किस्म का मादह हो। दिन में छोड़ता ही नहीं आतिशक व जुजाम जुमलै अमराज मागी सरैमें बेमिसल दवा के इस्तेमाल के बाद दौरा बिलकुल मौकूफ कवलनुज में अकसीर का अमल, दर्द पहल, दर्द चाहे शिकम में बेमिसाल कुल मसलः दवायें जौफ मैदः है यह मुकव्वी मैदः है यानी जिस दिन से इस्तेमाल फर्मावेंगे बगैर दो दफै गिजा खाये चैन न पड़ेगा और वह भी मुर्गन, हो नरम गिजा अकसर खुश्क मुर्गन दूध बूरा के साथ इस्तेमाल करे ऐसा ज्यादह न खा जावे कि सूरहजम का खयाल हो पसली का दर्द, गुर्दे का दर्द, पेचिश खूनी वगैरः दर्द, तरख्वाह किसी खिल्त से हो या मैदे से हो, तप किसी खिल्त से हो एनतप में अकसर स्तैमाल किया है उसी वक्त उतरती है सूजाक इस तरह जाता है कि लोग तअज्जुब करते रह जाते हैं बाहमें अगर रतूबतः वगैरः के सबसे कमी हो गई हो फौरन दफै होगा, छुप सफेद दाग वगैरः में भी मुफीद हैं, गरज कौनसी बीमारी है जिसमें इसका फायदा न देखा हो रहम वगैर के अमराज में बेनजीर हैं क्योंकि जिनको अय्याम जियादह होते हैं या कम होते हैं इनके

इस्तेमाल से वा फायदा होंगे तो यह है कि मादेहाइ फासिद में जिनके औलाद नहीं होती उनके औलाद होगी।

नुसखा यह हैऔर अतवा को करावादीन वगैर से मिल सक्ता है (मुफ्त.) त्रिफला, रोगन बादाम, गुलसुर्ख, हरेक दस दस जुज, मरज हब्बुल सलातीन मुदब्बिर व मुसफ्फ दरशीरयक जुज्व, पस पचरस जुज्व में एक जुज्व हुआ शहद सहचंद जमीअ अजजाइ चाली रोज बाद सहक व इमतजाज धूप में रखें, चालीस रोज गल्ले में कदरे शरबत इन्तहा एक मंइकाल वरक नुकरः या तिला के साथ इस्तैमाल करै थोड़ी देर स्तैमाल के बाद पानी से इजतनाव करे कि अच्छी तरह से असर कर ले बाद में जब प्यास लगे स्तैमाल करे ऐसा मुस्हिल है कि जब चाहे और जिस शिकायत में चाहे इस्तैमाल करे खुसूसन जो लोग आसीडल मैदा हो उससे जरूर इजाबत होगी लुत्फ यह है कि संद वगैरः तहलील होकर इजाबत इस तरह होती है गोया किसी ने एक परनाला खोल दिया सब शिकायतें रफै हो गई। (सुफ्हा १६ अखबार अलकीमियाँ १६/८/१९०७)

औषधि आतिशक

एक पेड भागरे सफेद फूल को मय जड़ पञ्चाङ्ग के पांच काली मिर्च के साथ पाव भर पानी में पीस छान सात दिन बराबर पिलाने से आतिशक जाती रहैगी। (बाबालालदासजी का बतलाया)

उपदंश की औषधि हुक्के में पीने से

बादफरंग उपदंश में समुद्रझाग १ तोला, पाषाणभेद १ तोला, मोचरस १ तोला तीनों को अजामूत्र में खरल कर उसकी सात भाग सायं प्रातः हुक्के में पीवे पथ्य कणक चावल मूंगीति। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

वाजीकरणशिवलिंगीप्रयोग

अथ शिवलिंगीकल्पमंत्रः ॐ श्रीईश्वरिं सर्वदानववशकारिणि सर्वजनविमोहि न्यै स्वाहा ।

इत्यमुना च मंत्रेण गंधादिभिरनुष्ठिताम् । त्रिधा सूत्रेण संवेष्टच गुटिकां संप्रपूजयेत् ॥४४॥ पुष्ये वा रेवतीऋक्षे गृहीत्वा गुटिकां पिबेत् । क्षीरशुद्धेन रत्यर्थं रमतेऽथ सहस्रशः ॥४५॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–"ॐ श्रीईश्वरी सर्वदानववशकारिणी सर्वजनविमोहिन्यै स्वाहा" इस मन्त्र को पढ़कर अक्षत और गन्ध आदिकों से मंत्रित किये हुए सूतों से शिवलिंगी के बीज को लपेट कर गोली बनावें और उसकी पूजाकर पुष्य या पुनर्वसु नक्षत्र के दिन गोली को दूध के संग निगलावे तो हजार स्त्रियों से रमण कर सकता है।।४४–४५।।

वाजीकरआँवला तिल, घी शहद

धात्रीफलानि चूर्णानि तिलचूर्णैः समांशकः घृतमाक्षिकाभ्यामालोडच त्रिंशद्रात्रिषु भुज्यताम् ॥ पुरुषो बुद्धिसंयुक्तो वृद्धोपि तरुणायते ॥४६॥

(औ० क०)

अर्थ–आमले का चूर्ण और तिलों के चूर्ण को समान भाग लेकर घृत और शहद के संग मिलाय जो पुरुष तीस रात बराबर सेवन करे तो वृद्ध भी बुद्धिमान होकर जवान हो जाता है।।४६।।

स्त्रीद्रावक लांगलीकी जड का हाथ पर लेप

जलेन लांगलीकन्दं पिष्ट्वा हस्ते प्रलेपयेत् ॥

हस्तेन स्त्रीकरं स्पृष्ट्वा द्रवेत्सर्पिर्हुतं तथा ॥४७॥

(औ० क०)

अर्थ–कलिहारी की जड़ को जल के साथ पीस अपने हाथों पर लेप कर देवे उन हाथों से जो स्त्री के हाथ को स्पर्श करे तो अग्नि में घृत के समान द्रव हो जायगी।४७।।

सरअ यानी मिरगी का इलाज (उर्दू)

बर्गरैहाँ यानी नियाजबू कूटकर उसका पानी एक तोला निकाले और चीनी या कांच के बर्तन में शीशी में रखें हालत मिर्गी से फरागत पाने के बाद मरीज को चारपाई पर चित्त लिटाकर पानी मजकूर थोड़ा थोड़ा करके मरीज की नाक में डाल दे और मरीज बतौर नसवार दमाग को खींचे तीन चार रोज के इस्तैमाल से किरम (कीडे) मिरगी मर जावेंगे और मिरगी से खलासी होगी। (सुफ्हा १५ अखबार अलकीमियाँ ८/३/१९०९)

दाद का उमदा इलाज (उर्दू)

दाद का मुजर्रिब सहल और अजीब नुसखा दर्ज करता हूं वह यह कि खरबूजे की गिरियां घोटकर मक्खन में मिला ले और दाद पर लगावे हर रोज ताजा मक्खन सा बना लिया करे चन्द रोज में बिलकुल आराम। (सुफ्हा १७ अखबार अलकीमियां ८/४/१९०९)

श्वेतकुष्ठ की औषधि

मकोयका स्वरस पाव छटांक पानी और उसीका लेप श्वेतकुष्ठ नाशक है।

विषूचिका (हैजा) रक्षा ताम्रखण्डद्वारा

पाश्चात्य जगत में एक नई आलोचना आरम्भ हुई है कि तांबे का टुकड़ा शरीर पर रहने से हैजा नहीं होता, लंडन और अन्यान्य स्थानों के डाक्टरों के इस बात की पोषकता की है। खबर है कि तांबे की खानियों से हैजा नहीं होता और रूस के कितने ही देहाती शरीर पर तांबे का टुकड़ा बांध हैजे से साफ बच गये, यह भी खबर है कि चाय के बागों में कुलियों में भी तांबे का टुकड़ा बांधा है जैसे आत्मरक्षा की है, कलकत्ते की लेसली कम्पनी ने अपने चाय के बाग में कुलियों के शरीर पर तांबे का टुकड़ा बंधवा दिया था, पड़ौस के बागों में हैजे ने बड़ा जोर पकड़ा पर लेसली कम्पनी के बाग में हैजा हुआ ही नहीं। (बंगवासी २९/४/१९०९)

प्लेग का निर्णय

प्लेग भयानक रोग है और इसके मूल सूक्ष्म जंतु का पता सन् १८९४ में डाक्टर यारसीर और किटोसाटो ने लगाया, यह सूक्ष्म जन्तु सरलता से अनगिनत संख्या में बढ़ जाता है। धूप से और गर्मी से वह शीघ्र मर जाते हैं। यह ऐसा कोमल जन्तु है कि किसी अन्य जीव के शरीर से बाहर आकर जी नहीं सकता, फी सदी ३ बीमारों को छोड़कर और सब रोगियों के शरीर में यह सूक्ष्म जन्तु चमड़े में होकर प्रवेश पाता है, खान पान के द्वारा यह शरीर में नहीं जाता, शरीर में पहुँचकर यह लिम्फेटिक नाम की गिल्टियों में पहुँचता है तब ये गिल्टियां सूज जाती है जिन्हें ब्रद कहते हैं। रुधिर में ये सूक्ष्म जन्तु बहुत कम पाये जाते हैं, अधिकतर ये गिल्टियों में ही रहते हैं, मूत्र में भी बहुत कम किसी बीमार में ही देखे जाते हैं, मल में भी कभी पाये जाते हैं, इसी कारण एक मनुष्य से दूसरे में रोग का पहुँचना कठिन प्रतीत होता है। यह बात सर्वसाधारण भी जानते हैं कि रोग पहले चूहों में फैलता है और फिर मनुष्य में आता है, दो प्रकार के चूहे हैं, एक वे है जो अस्तबल गोदाम और मोरियों में रहते हैं। घरेलू चूहे मनुष्य के पक्के साथी है, देखा गया है कि बाहर रहनेवाले चूहों में जब बीमारी फैलती है तो उसके १० दिन पीछे घरेलू चूहों में आती है, इनके पीछे घर में बसनेवाले मनुष्य बीमार होने लगते हैं, यही हाल सब देशों में देखा गया है। प्लेग जन्तु पिस्सुओं के शरीर में रहते हैं और ये पिस्सू चूहों के शरीर पर इन्हीं पिस्सूओं द्वारा ये रोग फैलता है, जहां तक पिस्सू पहुच सक्ते हैं वहां तक रोग फैलता है, रोगाक्रान्त

जीव के साथ आरोग्य जीव रहे है परन्तु उन पर कोई पिस्सू न हो तो वे बीमार न होंगे। बच्चों ने माता का दूध पीया था उनको भी कुछ न हुआ परीक्षा से सिद्ध हो चुका है कि प्लेग का सूक्ष्म जन्तु बड़ा कोमल जीव है रोगी के शरीर से बाहर निकलते ही मर जाता है मिट्टी, धूल या मैल कीचड में जीता नहीं रहता। हवा द्वारा भी छूत नहीं लगती न हवा द्वारा ये बीमारी फैलती है। यह पूरा निश्चय है कि चूहों पर रहनेवाले पिस्सू ही इस रोग के फैलानेवाले हैं। जहां जितना बीमारी का जोर अधिक था वहां उतने ही अधिक पिस्सू पाये गये, घरों में कीडे मारने वाली दवा छिड़कने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि दवाई का असर पिस्सूओं पर कुछ नहीं होता, रोग नष्ट करने का मुख्य उपाय इन पिस्सुओं का नष्ट करना ही है (वेङ्कटेश्वर समाचार पत्र ७/५/१९०९)

सम्मति–मेरी सम्मति में पिस्सू नष्ट करने के लिये मकान के भली भांति गर्म करना ही सर्वोत्तम उपाय है।

ताऊन का इलाज (उर्दू)

हकीम मुहम्मद जमशेद अलीखां देहलवी अपना तजरुबा यह बयान करते हैं कि बर्फ ताऊनी गिल्टी के वास्ते निहायत मुफीद साबित हुई है, वह लिखते हैं खुदा का हुजार २ शुकर है कि जिस तरह बेशकीमती दवा बेख कबीला ताऊन के लिये मुजर्रिब साबित हुई इसी तरह से सबसे कम कीमत चीज ताऊनी जुर्म के हिलाक करने को मेरे तजरुवे में आई बगरज रिफाह आम पबलिक को आगाह करता हूं कि बर्फ ताऊनी गिल्टी पर बांधने से १२ घंटे में ताऊनी गिल्टी बैठ जाती है और मरीज दूसरे ही रोज अच्छा हो जाता है। निहायत वसूक से मैं कहता हूं कि बर्फ के बांधने से उमदा गिल्टी के लिये कोई दवाई नहीं अगर बेख कबीला एक माशे पानी में मिलाकर पिला दी जावे तो प्यास और जलन भी नहीं रहती, जिन लोगों को बेखकबीला मैस्सर न आवे वह सिर्फ गिल्टी पर बरफ बांधे और पानी और दूध में बर्फ ही पिलावे हुकमी सेहत हासिल होती है। (वैश्योपकारक सुफहा ५ अखबार अलकीमियां १६/६/१९०७)

इलाज ताऊन अंकोल से (उर्दू)

ताऊन की गिल्टी पर फिलफौर जमाद समर अंकोल मुफीद साबित हुआ चार मरीजान मधियाने में पर तजरुबा किया गया चारों सेहत याब हो गये। (सुफहा १४ किताब अखबार अलकीमियां १/५/१९०५)

सर्पविषनाशक रक्तगुंजामूल

पुष्यार्केण समुद्धृत्य तन्मूलं तु विचक्षणः। सर्पदष्टस्तु लेपेन निर्विषो भवति क्षणात् ॥४८॥ (औषधि कल्पलता)

अर्थ–बुद्धिमान् मनुष्य आदित्यवार और पुष्य नक्षत्र के दिन लाल चौटनी की जड़ को उखाड़ लेवे जब किसी मनुष्य को साँप काट खावे तो जल में घिसकर लगा देवे तो विषरहित हो जाता है॥४८॥

नुसखा मार गुजीदः (उर्दू)

यह नुसखा एक फकीर साहब से बड़ी कोशिश से हासिल किया गया है और इन महात्माओं का बारहा का आजमूदा है इससे हर किस्म के सांप का जहर हुकमन दूर होता है और लुतफ यह है कि न दवाई खाने की हाजत न मंत्र तंत्र की जरूरत आनन फानन मरीज गुसल सेहत करता है। जिस शखस को सांप काटे उसकी जाई नैशपर जिस कदर समास के रोगन भिलावा डालता जावे हलाकि छलापुर ही जावे पस असर जहर फौरन जाइल होकर मरीज सेहत याब होगा, यह एक लासानी टोटकः है वह महात्मा दानः हाइ भिलाव हर वक्त जेब में रखते हैं। जिस वक्त जरूरत पड़े फौरन भिलावे का सरकाटा और उसमें से तेल छाले पर डाल दिया। मरीज तन्दुरस्त, आप चलते बने (सुफहा १५ अखबार अलकीमियां ८/३/१९०६)

सर्प का विषबहुमूल्य औषधि

वड़े २ विषैले सर्पो का विष छूत की बीमारियों तथा विक्षिप्तता दूर करने में बड़ा उपयोगी होने के लिये यह पदार्थ बहुमूल्य गिना जाता है उपयोगी होता है इसलिये यह परमावश्यक है कि विष जीवित सर्प के दांतों में से निकाला जावे, मृत सर्प का विष किसी काम का नहीं होता, लंदन और न्यूआर्क में यह विष निकाला गया, दोनों जगह विष निकालने का ढंग एक ही था पहले सर्प को चिमटे से पकड़ा और एका एक उसे उलटा कर दिया फिर उसकी गर्दन किसी चीज से पकड़ ली जिससे वह सिर इधर उधर को न हिला सकें और न काट सके तब एक बहुत सूक्ष्म शीशी जिसके मुँहपर एक बारीक वस्त्र रखा था सर्प के मुँह में दांतों के तले रख दी, दांत तले शीशी आते ही सर्प ने उसे जोर से काटा, जिससे उसके विष के दोनों अगले दांत कपड़े में छेद करके शीशी में चले गये इस प्रकार अधिकांश विष तो शीशी में गिर पड़ा और कुछ कपड़े से लगा रह गया इसी प्रकार सर्प ने तीन बार दांत मारे तीनों बार कुछ न कुछ विष शीशी में उसे छोड़ देना पड़ा, विष पीले रंग का है तीनों बार में कुल मिलाकर पौने १८ ग्रेन (१ माशा) विष निकला था। इसमें प्रत्येक भाग विष के साथ ९९ भाग चीनी मिलाई गई और बहुत दिनों तक खरल में मिश्रित की गई, अंत में जब चीनी सफेद सुर्मे की भांति बारीक हो गई तब शीशीयों में भर के रख दी गई, कहते हैं कि डाक्टरी काम के लिये इस चीनी के एक ग्रेन का दस लाखवां भाग काफी होता है इस हिसाब से समझ लीजिये कि इतना विष कितने दिनों तक काफी है? (श्रीवेंङ्कटेश्वर समाचार पत्र २२/१/१९०९ पृष्ठ ३)

मारगुजीदः का एक अजीब इलाज (उर्दू)

अगर सांप को काटे हुये तीन दिन भी हो गये हों और मारगुजीदः जाहरा मर गया हो तो भी इसके इस्तैमाल से दुबारा जिंदा होने की उम्मीद है शाह साहब फर्माते थे कि मारगुजीदः दर असल मर नहीं जाता बलकि एक किस्म की सकते ही हालत इस पर तारी होती है जिससे वह जाहरा मुर्दा मालूम होता है, वह यह भी बयान करते थे कि यह नुसखा उन्होंने फकत आदमियों पर नहीं आजमाया बलकि जानवरों पर भी इसका तजरुबा किया है, नुसखा हस्बजैल है। अगर मारगुजीदः बेहोश हो गया हो तो नौसादर को पीस कर उसकी आंखों में डाले, अगर एक दो दफै आँखों में डालने से होश न आवे तो चन्द दफै यही अमल करे जब होश में आ जावे तो पोस्त फन्दक (जिसको पंजाबी में अरीठा कहते हैं) पानी में रगड कर पिलावे, चंद दफै पिलाने से कै शुरू हो जाती है और जहर का असर बातिल होता चला जावेगा, जहर उतरने की निशानी यह है कि मरीज को नीम का पत्ता खिलावे अगर वह उसकी तलखी को महसूस करे तो समझे कि जहर उतर गया। वरनः नहीं अगर जहर न उतरे तो बार बार पोस्तफन्दक पानी में रिगड़ कर पिलावे और जिस जगह सांप ने काटा हो उस पर शीर मदार डालते रहें और जब तक जहर न उतर जावे मरीज को सोने की इजाजत न दे। (सुफहा नं० ७ अखबार अलकीमियां १६/६/१९०५)

इलाज सांपका

ताजी गोबर मुतबातिर बांधना जहर सांप इलाज निहायत अच्छा है (ख्याल करो मंदिर में दबाने की रवायत को ऊपर से घी दूध का सेवन होना चाहिये। कश्मीरयात्रा में प्राप्त)

अग्नि से न जलने का उपाय सफेद चिर्मिटी लेप से

श्वेतगुंजारसेनैव सर्वाङ्गे लेपमाचरेत्। अंगारराशिमध्यस्थो भ्राम्यमाणो न दह्यते ॥४९॥ (औ० क०)

अर्थ–सफेद चौंटनी के रस से समस्त शरीर पर लेप कर देवें फिर बहुत से अंगारों के बीच चक्कड लगावे तो भी जल नही सकता ॥४९॥

जलस्तंभ सफेद चिरमिटी से

मूलं तु श्वेतगुंजायाः कुसुंभरसपेषितम् । तेनैव रंजयेद्वस्त्रं तद्वस्त्रं स्वांगवेष्टितम् ॥५०॥ गंभीरजलमध्ये तु यावदिच्छति तिष्ठति । जलस्तंभमिदं ख्यातं गुंजामंत्रेण मंत्रितम् ॥५१॥ (औ० क०)

सफेद चौंटनी की जड़ को कसूम के रस में पीस कपड़े को रंग लेवे उस वस्त्र को पहन कर गंभीर जल में घुस जावे और जब तक इच्छा हो बैठा ही रहै यह जलस्तंभ कहा है, चौंटनी की जड़ को मंत्र से मंत्रित करै॥५०॥५१॥

अद्‌भुत काजल सफेद चिरमिटी से

श्वेतगुंजारसैश्चाह्नि सितसूत्रं विभावयेत् ॥ तत्सूत्रवर्तिकादीपं प्रगृह्य कज्जलं ततः ॥ तेनाञ्जितो नरश्चित्रं दिवा पश्यति तारकम् ॥५२॥

(औ० क०)

अर्थ–दिन में सफेद चौंटनी के रस से सफेद सूत को भिगो देवे फिर उसकी बत्ती बनाकर दीया जलावे और उससे काजल पाड कर नेत्रों में आँजै तो दिन में तारे दीखने लग जाते हैं॥५२॥

खांसी की गोली

बिहीनाना १ तोले, वंशलोचन ६ माशे, इलायची छोटी के बीज ६ माशे, पीपल छोटी ३ माशे, मुनक्का ३ तोले, मिर्च काली ३ माशे, नमक काला ६ माशे, नमक सफेद ६ माशे, सबको कूट पीस गोली बना लो (राय बद्रीप्रसादजी वकील हमारे पिताजी की पसंद)।

मंजन

त्रिकुटा ३ तोले, त्रिफला १॥ तोले, माजू ६ माशे, मस्तंगी १ तोले, फिटकिरी १ तोले, तूतिया भुना हुआ १ माशे, नमक लाहौरी ४ तोले, बादाम के छिलकों के कोयले सबके बराबर सबको पीस मंजन बना लो।

आहार विधान

आयुः सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्द्धनाः ॥ रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः ॥५३॥

आयु सत्त्व बल आरोग्य सुख और प्रीति के बढ़ानेवाले रसदार चिकने स्थिर (देह को स्थिर रखनेवाले) हृदय के हित और जो २ सात्त्विक आहार हैं वे सब हित है और मिताहार भी हित है॥५३॥

मिताहार–यथा

सुस्निग्धमधुराहारश्चतुर्थांशविवर्जितः ॥ भुज्यते शिवसंप्रीत्यै मिताहारः स उच्यते ॥५४॥ द्वौ भागो पूरयेदन्नैस्तोयेनैकं प्रपूरयेत् ॥ वायोः सम्पूरणार्थाय चतुर्थमवशेषयेत् ॥५५॥ (वंगवासी १०/५/१९०९)

अर्थ–सुन्दर चिकना मीठा भोजन चतुर्थांश छोड़कर शिवजी की प्रीति के लिये या कल्याण और स्वास्थ्य के लिये जो खाया जाता है उसको मिताहार कहते है। दो भाग अन्नों से, एक भाग जल में से भरे और चौथे भाग को वायु के चलने फिरने के लिये बाकी रख देना चाहिये॥५४॥५५॥

जल्दी दही जमाने की क्रिया पाठा की जड़ से

पाठामूलं गले बद्ध्वा क्षीरभांडस्य तद्दधि ॥
जायते तत्क्षणाद् दुग्धं सत्यमेव न संशयः ॥५६॥

(औ० क०)

अर्थ– पाढल की जड को दूध के बासन की नार से बांध देवे तो शीघ्र ही दही जम जायेगा इसमें सन्देह नहीं है॥५६॥

नुसखा स्याही

छटांक भर लाख को आध सेर पानी में जोश दे, एक दो जोश आ जाने के बाद छटांक भर सज्जी भी डाल दे बारीक करके जब पाव भर पानी रह जावे तब दो माशे सुहागा डाल दे। फिर उतार ठंढा कर छान ले फिर एक तोले काजल में एक तोले अर्क डालकर घोटे जज्ब हो जाने पर फिर तोला देकर घोटे वह भी जज्ब हो जावे तब बाकी सब रस डालकर करीब दो पहर घोटे और देखे कि लिखने के काबिल ठीक हुआ या नहीं। जब ठीक गाढ़ा हो जावे तब रख ले तो अच्छी स्याही तय्यार होगी अगर बजाड पानी के गोमूत्र बनावे तो स्याही पक्की होगी। (कश्मीर कापी से)

रोगन गंधक मय हरतालसंखिया बनाकर उस्में सीमाब मिलाकर खानेके तरकीब (उर्दू)

गजी का कपड़ा नीमकोहना आधा गज लेकर भांगरे मुतआरिफ के शीरा में इक्कीस पुट दे यानी हरबार तर करके खुश्क करे फिर रोगन मादः गाड में तर करके सोनामक्खी, गंधक, मुसफ्फा, हरताल, ताबकी जहर, बछनाग, मुदव्विर हर एक ढाई ढाई दिरम पीसकर कपड़े मजकूर में मिलाकर शीख आहनी में लपेटकर उस शीख को दो आहनी शीखों पर रखकर उसके नीचे चीनी का प्याला रखे और कपड़े में बड़ी शीख की तरफ से आग लगावे। जिस्में तेल टपककर प्याले में गिरे इसको शीशी में बंद करके रख छोडे और हर रोज एक रत्ती लेकर सीमाब खाम मुसफ्फा जो दो हफ्ते कवल से रोगन मजकूर में पड़ा हो एक रत्ती उसमें मिलाकर पान पर उँगली से इतना घिसे कि सीमाव गायब हो जावे उस पान को हर रोज दूसरे पान में डालकर खावे, खासियत यह है कि इस्तहा गायब हो, बादफरंग, सीत, झोला, पुरानी गठिया दूर हो। तगलीजमई व इमसाक, व कुव्वतावाह बकस, रत हो। फरूह खवशिया अच्छे हो जावे मुतरिज्मम रोगन में सीमाव डालने का तरीका मुख्तलिफ है बाजकलमी हफ्त अहवाव में इस तरह लिखा है कि रोगन में पहले रोज एक रत्ती सीमाव डाले और दूसरे रोज दो रत्ती सीमाव डाल, तीसरे रोज इसी तरह सातवें रोज सात रत्ती उसमें डाले सीमाव गायव हो जावेगा। बादहू सीमाव एक एक रत्ती लेकर बदर का यानी पान में डाल कर दो। आदमी खावें बाज हफ्त अहवाव कलमी में इस तरह लिखा है कि एक हुव्वा सीमावले और उसके ऊपर चंद बार तिनके (खस) से रोगन मजकूर का एक कतरा डाल कर उँगली से घिसे और धूप में रख दे ताकि सीमाव खुश्क हो जावे इसी तरह रोजाना अमल करके हुव्वा सीमाव धूप में रखा करे जब रोगन सीमाव के ऊपर गायब हो जावे तो एक रत्ती रोगन मजकूर पान पर मल कर १ रत्ती सीमाव मजकूर जिस्में रोगन जज्ब हुआ है मिलाकर पान में खावे यही तरकीब हफ्त अहवाव कलमी मुरसिलः हकीमनूर आलम साहब में भी है चूंकि यह हफ्त अहवाव बहुत कदीम और करीब जमानः तसनीफ की लिखी हुई है लिहाजा जियादा तर काबिल एतबार है। (सुफहा २९७ किताब अलकीमियां)

कुश्ता पुराने की तारीफ (उर्दू)

खाने की अकसीर ख्वाह कुस्ते में यह मलहूज रहे कि जितना पुराना कुश्ता होगा वह कवी उलअमल और बेजरर होगा इस वास्ते जिस कुश्ते को कोठी गंदुम या जौ वगैरः में एक मुद्दत के वास्ते रख छोड़ते हैं वह मुकव्वी और उमदा हो जाता है। अगर फौरन खाने की जरूरत हो कम से कम तीन रोज तक किसी तर जगह में दफन कर देना चाहिये। (सुफहा २५ किताब अखबार अलकीमियां १६/३/१९०५)

कुश्ता खाने की मुमानियत (उर्दू)

अकसीर या कुश्ता अश्खास जईफ एजाई बलागर अन्दाम जवान

१–सारांश यह है कि ऐसे कपड़े से वेष्टित शरीर तक जल प्रवेश न करेगा।

हारमिजाज और लड़के और जन हामिला को न खिलाना चाहिये। (सुफहा २५ किताब अखवार अलकीमियां १६/३/१९०५)

इलाज जिरियान बडकी गोली (उर्दू)

(एक नुसखा मौतदिल हर मिजाज के मुवाफिक पचासों नुसखों में से जो तीर व हदफ देखा गया और बड़ी बड़ी लागत के नुसखे जिरियान इसके मुकाबिले में हेच है)

दरख्त बड़ के ताजा बर्ग जो रंग में जर्द हो करीबन एक मन पुख्त: के ले कर दो चार गड्ढ़ों में ठोंसकर भर दे और दर्मियान में पानी डाल दे पानी की तादात कोई नहीं जिस कदर आ सके। मगर गढ़े लगे हुए हो कोरे न हों आठ पहर के बाद एक कढ़ाई आहनी में बर्ग व पानी मजकूर उलटा कर आग पर जोश दे जब निस्फ हिस्सा पानी खुश्क हो जावे नीचे उतार कर सर्द कर ले फिर पोस्त की तरह खूब मले बादहू किसी कपड़े से छान कर साफ करके नरम नरम आँच पर पकाना शुरु करे जब अफयून से किसी कदर कवाह स्याह रंग हो जावे तो नीचे से आग बंद करके सिर्फ कोयलों की आंच देता रहें और किसी चमच चोवी से कवाम को हिलाता रहे जब अच्छी तरह मिस्ल अफयून पूरा कवाम हो जावे उसी वक्त भूफली बूटी खुश्क सात तोले मिस्ल सुर्मा के बारीक करके नीचे उतारकर उसमें डाल दे और लकड़ी से हिलाता रहे फिर छोटे बेर की बराबर गोलियां बना ले हर सुवह एक गोली निहार पानी के साथ निगल जाया करे।

परहेज, कंद स्याह, तुर्श अशियाइ, तेल, बैंगन, मेथी, जियादती मिर्च सुर्ख।

इस्तैमाल–सोडा वगैर: दीगर जुमले खारहा से भी परहेज होने चाहिये जो साहव इस नुसखे को इस्तैमाल करेंगे वह अजीव फवायद मुशाहद: करके इस नुसखे की खुद कदर करेंगे। अलावह दूर होने जिरियान के मुमसिक भी कमाल दर्जे का है अगर कोई साहव मजमूल इस नुसखे को तय्यार करना चाहे उनके लिये मुनासिब है कि तरकीव मजकूरा में एक माशे मुश्क खालिस ५ माशे मुरवारीद एक दफ्तरी वर्क नुकरा एक दफ्तरी बर्क तिला मिलाकर गोलियां बनावें जब तह गोलियां इस्तैमाल करनी शुरू करें तो पहले दिन एक रत्ती दूसरे दिन दो रत्ती, इसी तरह एक रत्ती बढ़ाकर पूरी गोली तक नौबत पहुँचावें जिन साहिवान के मिजाज में यऊस जियाद: हो वह एक तोले मसकों में मिलाकर निगल लिया करें, भूफली बूटी इस मुल्म में तमाम जगह होती हैं अकसर रेगिस्तानी जमीनों में बकसरत मिलती है। (सुफहा १७–१८ किताब अखवार अलकीमियां)

इस्तेमाल कुश्ता में परहेज (उर्दू)

कुश्ता के इस्तैमाल के जमाने में जमाइ व रियाजत शाकातुर्शी व वादी व अशियाइ बाहू से परहेज लाजिम है–(सुफहा २६ किताव अखवार अलकीमियां १६/३/१९०५)

जलक का तिला (उर्दू)

मीठा तेलिया २ दिरम्, घुंघची सफेद १ दिरम्, मगजहव्वल मलूक १ दिरम्, पोस्तवेख कनेर १ दिरम्, आधसेर शीर गाउमेश में मुतवातिर आठ पहर तक खरल करके गोलियां बना लें और साये में खुश्क करके वजरिय: पतालजन्तर से तेल निकाल ले, रात को तिला करके ऊपर वर्गपान दिया करें चन्द रोज के इस्तेमाल से मजलूक को भी फायदा होता है आजमूदा और मुजर्रिब है।

(सुफहा ११ किताव अखवार अलकीमियां १६/३/१९०५)

इलाज मजलक (उर्दू)

वर्गसंभालू गर्म करके मलने से मजलूक हफ्ते में सेहत पकड़ जाता है और दराजी और कर नहीं भी लाता है–(सय्यदहसेन अलीशाह मुहर्रिर बन्दोवस्त तहसील मंचन आबाद इलाका भावलपुर) (सुफहा ३० किताब अखवार अलकीमियां १६/३/१९०५)

दूध का बुरादा बनाने का नुसखा वजरिय: कंघी (उर्दू)

पांच छ: बांर मैंने दूध को इस्तरह से बुरादा बनाया है कि, दूध खालिस लेकर उसको नरम आग पर चढ़ाया और मरतूल गोल की जिसकी फार्सी में दाख्त शान: और उर्दू में कंघी कहते है हरीशाख लेकर दूध मजकूर को मुसल्सिल चलाते खोया कर दिया बादहू उतार कर सर्द कर लिया और चुटकी से मलकर बुरादा बना लिया खोये को जियादह आंच पर न रहने दे वरन हिद्दत आतिश से इसमें सुर्खी आ जावेगी यह बुराद आटे की तरह हो जाती है और सेर भरं उमदा दूध में पाव भर बुरादा निकलता है–रंग बुरादा मजकूर का सफेद खफीफ सी सबजी लिये हुये होता है–यह सबजी हरी शाख से चलाने का असर है निहायत खुश जायका मुकव्वी कलव और भी मस्लह खून नाकिशका है अगर यह बुरादा सेर भर गर्म पानी में डाल कर ऊठकर आता है (हुसैनुद्दीन अहमदअजे) (सुफहा ३० अखवार अलकीमियां १६/४/१९०५)

नुसखा पीपलपाक मुकव्वीमैवाहाजिम मुकव्वी बमाग बाफे जिरियान व मुमसिक उर्दू

फिलफिल दराज २५६ टांक घी में लेकर चहार चन्द दूध में जोश देवे जब खोया हो जावे तब ५१२ टांक घी में बेरियां करे, फिर १०२४ टांक मिसरी की चाश्नी करके मुन्दार्ज: वाला खोय उसमें डाल दे ओर मुन्दर्ज जैल चीजे कूट कर और पीस कर मिलावें मगर याद रहे कि यह चीजें बहुत गरम चाश्नी में न डालनी चाहिये जब जरा ठंढी हो जावे तब मिलावे वह यह है, इलायची खुर्द १ पल, पत्रज १ पल, नागकेसर १ पल, तज १ पल, कीकड़ का गोंद १६ पल, खुराक हस्व मिजाज १ तोला से चार तोला तक मुमसिक है, मुकव्वी दिल व दमाग, दमा दिकतापतिल्ली, थकान, कमजोरी, हाजमा को दूर करे और घी दूध हजम करे दाफै जिरियान भी है।

नोट–साढे चार माशे का और पल टांक का होता है। (ठाकुरदत्तशर्मा वैद देशोपकारक लाहौर)

(सुफहा ११ अखवार अलकीमियां १/५/१९०५)

औषधि बवासीर की

नाके की हड्डी (चाहे जिस अंग की हो) लेकर बासी पानी में घिसकर बवासीर के मस्सों पर लगावे तीन दिन में ववासीर जाती रहैगी। (हरदेव कहार ने वताया)

औषधि जूडी

जिस समय जूडी का आना आरंभ हो यानी हाथ पैर ठंढे होने लगें उस समय दो वर्तनों में गर्म पानी भर (ऐसा गर्म जो सहारा जा सके) एक बर्तन में हाथ और दूसरे में पैर डुबो दे तो फिर जूडी न आवेगी और नींद आने लगेगी। (हरदेव कहार ने बताया)

सुरमा दाफै बुखार (उर्दू)

कुश्ता हरताल मजकूर १ तोला, पारा मुसफ्फा १ तोला, अव्वल पारद और गंधक को जल्दी कजली करे। फेर कुश्ता हरताल मिलाकर अच्छी तरह खरल करे एक रेशमी कपड़े में बांधकर पोटली बनावें और एक सांप स्याह व मिकदार एक बालिश्त के सरकी तरफ से काट लेवे और उसके मुंह में नमक तुआम विछाकर दर्मियान पोटली मजकूर रख कर मुंह को सीदे कपरौटी मजकूर करें। और एक हंडिया में रेत बालू के दर्मियान रखकर हंडिया के नीचे चार पहर आंच रखें। सर्द होने पर पोटली को निकालकर अदवियात को खरल कर रखें। आँखों में एक सलाई डालने से तप दूर हो

जाता है, एक आंख में डालने से एक तरफ का दूसरी आंख में डालने से दूसरी तरफ का जाता रहता है (ठाकुरदत्तशर्मा एडीटर वैद्योपकारक लाहौर) (सुफहा ४१ व ४२ किताब अखबार अलकीमियां १६/४/१९०५)

सुरमा दाफै बुखार (उर्दू)

सुर्मा अस्फहाई ६ माशे, सुर्मा स्याह १ तोले, सीमाब ६ माशे इन हरसह अदबिया को पित्ताबुज: १, पित्तादरन १, अर्कतूमा १ सेर अव्वल पित्तों में खरल करके बादहू तूमा के पानी में खरल करे जब पानी खुश्क हो जावे एक शीशी में डालकर मुंह बंद करके दो हफ्ते के निकाल कर बुखार के लिये इस्तैमाल करे शफा होगी। अगर एक सलाई एक आंख में डाली जाय और दूसरी में न डाले। बस, एक निस्फ हिस्सा बदन पर बुखार महसूस होगा निस्फ, बिलकुल तन्दुरुस्त जब दूसरी आंख में सलाई डालेंगे बिलकुल दफै होगा। (सुफहा ४२ किताब अखबार अलकीमियां १६/४/१)

सुरमा दाफै बुखार (उर्दू)

सुरमा तमाम अकसाम हुम्मियात जदीद: व मअमुन: खुसूसन सम्पात: व बाय: के लिये मुफीद तमाम है। त्रिफला, त्रिकुटा, अंगूज: सरसफ, मग्जतुख्मसिर्स, कुटकी, नमक लाहौरी, हम वजन कूट छान कर बोलबुज में खरल करके हबूब शियाफिया बनाकर रख छोड़े। एक हिस्से की मिकदार गर्म पानी में पीसकर एक आंख में डालने से एक तरफ का ताप दूर होगा और दोनों आंखों में डालने से तमाम बदन का तप दूर होगा इन्शा अल्लाहताला। (हकीम अब्दुल्लाह मुदर्रिस दोयम तलोंडी चोधरियान) (सुफहा १७ अखबार अलकीमियां १६/५/१९०५)

दफिय: जहरबिच्छू (उर्दू)

मग्ज जमाल गोटा को पानी में घिसकर मुकाम डंकपर लगावे फौरन आराम होता है अगर डंक गर्दन को ऊपर के हिस्से में हो तो यह इलाज न करना चाहिये। तेल दारचीनी जो अंगरेजी दूकान्दारान से आम मिल सक्ता है लगा देने से फौरन आराम हो जाता है (ठाकुरदत्त शर्मा एडीटर देशोपकारक लाहौर)

(सुफहा २१ अखबार अलकीमियां १६/५/१९०५)
(उसूलतन्दुरुस्ती वदराजीउम्र)

पानी स्वच्छ करने का उपाय

पानी स्वच्छ करने का उपाय सबसे अच्छा यह है कि पानी को बालू में से छानना ऐसा करने से उसके ९९ भाग शून्य हो जाते है। श्रीवेंकटेश्वर समाचार पत्र २६/३/०९ बंबई में बैठी डाक्टरों की सभा की संमति।

बिना कुल्ला किये प्रातःकाल पान करने का निषेध

बिलायत चिकित्सा सम्बन्धी सर्वश्रेष्ठ मासिकपत्र लान्सेटने लिखा है, "बिना मुंह धोये चाय पीने से मुंह के न पचनेवाले पदार्थ पेट में जाते हैं और इससे तरह तरह की बीमारियां उत्पन्न होती है।

(वंगवासी ३/५/१९०९)

गर्म खाने के बाद सर्द पानी की मुमानियत (उर्दू)

अथवा लिखते हैं कि गर्म खाने के बाद सर्द पानी का पीना मुजिर है। अगर सबर न हो सके तो पानी को थोड़ी देर मुंह में रखकर फिर मैदे में उतारे और कदरे पिये बल्कि चूंसे तो बेहतर है ताकि एका एक मैदे में सर्द पानी न जावे। (सुफहा नं० ७ अखबार अलकीमियां १५/८/०७)

लेटे में आराम मिलने की बजह तादाद कमी हरकत दिल (उर्दू)

यह कायदा कुदरत है कि जब इन्सान लेट जाता है और जिस्म बेहिस हरकता हो जाता है तो दिल को कदरे इतमीनान और सकून हासिल होता है लिहाजाकल्ब इस हालम में बमुकाबले बेदारी या चलने फिरने की फी मिनट दस हरकतें कम करता है। यानी फी घंटे छ: सौ हरकते हुई पस जो शख्स सबको आठ घंटे आराम करता है उसका कल्ब करीबन पांच हजार हरकते करने की मिहनत से बच जाता है और चूंकि दिल को हर वक्त हरकत के साथ ६॥ ओन्स खून का वजन उठानापड़ताहै इसलिये बमुकाबले दिन के रात के वक्त कलब को तीस हजार ओन्स वजन कम उठाना पड़ता है यही वजह है कि किसी मिहनत के बाद इन्सान का दिल खुदबखुद लेटने को चाहता है जिसके बाद तकान रफै हो जाता है। (सुफहा ८ अखबार अखलकीमियां १६/२/१९०९)

फिकरें व हविस के नुकसान व सबर के फवायद (उर्दू)

बिल इत्तफाक साबित है कि फिकरों और ख्वाहिशों की ज्यादता का दौरान खून व पर्वरिश दमाग पर खराब असर होकर अकसर दमागी व कलबी अमराज पैदा होते हैं और उम्र कम हो जाती है दिली इतमीनान हो तो सेहत अच्छी रहती है उम्र ज्यादह होती है पस मजहबी अपने मालिक की तरफ रिजूअ करने हैं तो कैसी हो फिकर क्यों न हो वह दूर होकर दिल को इत्मीनान हासिल होता है जो कयाम सेहत के लिये बहुत जरूरी है। आबिद व खुदापरस्त लोगों की उमर ज्यादह होने का यही सबब है कि काम व क्रोध, लोभ व मोह व अहंकार वगैर: जजबात को एतदाल पर रखते हैं राजी व रजा होने के ख्याल में मुनहमिक और हमेशह मुतयैयन रहते हैं। (सुफ्हा ६ व ७ अखबार अलकीमियां १६/८/१९०७)

सेहत पर हँसने का असर (उर्दू)

सेहत के लिये कहकहा मार कर हँसना निहायत मुफीद है इसके सबसे एक बरकी रूह हमारे तमाम जिस्म में दौड़ जाती है इसका अगर जिस्म के किसी खास हिस्से पर नहीं होता बल्कि हर एक रंग पट्ठा व रेशा इस बिजली की रूह से जो कहकहा के साथ दमाग से शुरू होती है मुतास्सर होता और उस बिजली की रूह से दौरान खून पर निहायत सेहत बख्श असर पड़ता है डाक्टर वाल्टरहड्न का कौल है कि हँसो और मोटे हो हँसी एक किस्म की वर्जिश है जिससे फेफड़ो को तकवियत पहुँचती है और दिल की सुस्त हरकत को दुरुस्त करती है और दमाग में खून जाने से दमागी पट्ठों को ताकत पहुँचती है। खयालात तेज होते हैं तमाम रंजीद: बातें फरामोश हो जाती हैं जो तबीयत को निडाल करनेवाली है। अखबार जौहर व हवाल: डाक्टर कजीन साहब लिखता है कि कहकहा मारकर हँसने से कोई बारीक से बारीक रग भी बाकी नहीं रहती कि जिसके खून में मुफीद व मुबारिक तहरीक पैदा न हो जाय जब मसर्रत का असर दिल पर पहुँचता है तो इन्सान के लिये खुदबखुद जोर से हँसने से दौरान खून में तेजी पैदा हो जाती है और खून जिस्म के हरेक हिस्से सरअत से हरफत करने लगता है जो मूजिब सेहत है पस खिलखिलाकर हँसने से इन्सान की उम्र में तरक्की और कवाइ में तकबियत हासिल होती है और इससे मालूम हुआ कि बुखार बिलकुल फरो हो गया और वह बिलकुल तन्दुरुस्त है कहकहा लगाकर हँसना न सिर्फ सेहत बख्श है बल्कि मुसफ्फी खून भी है कोई आला से आला दवा खून साफ करने में ऐसी अकसीर नहीं जैसी कि खिलखिलाकर हँसना। गरज हँसी सौ दवाओं की एक दवा और निहायत मुफीद और फरहत अफजा वर्जिश है। हर एक मशहूर और नामी डाक्टर में जराफत की सिफत जरूर पाई जाती है और यह सिफत उनकी कामयाबी में एक बड़ा हिस्सा रखती है क्योंकि उनकी जराफत मरीज को हँसने के लिये बहुत मौका देती है जो उनकी दवा के निस्वत बहुत ज्यादह सेहत बख्श असर रखती है इसके

बरखिलाफ उदास और मलाल रहना अपना हाथों बीमारी का खरीदना है उदासी और परेशानी से खून की हरकत सुस्त पड़ जाती है और जिस्म के फासिद माद्दे अच्छी तरह खारिज नहीं होने पाते और जिस्म इन्सान तरह तरह की बीमारियों का शिकार होता है इसी तरह जो लोग हर वक्त रंजीदह सूरत बनाये बैठे रहते हैं और हँसने और कहकहे लगाने की अपनी शान समझते हैं (नौज्मान) मुफहा नं० ११ अखबार अलकीमिया १६/७/१९०७)

बराजी उम्र के उसूल (उर्दू)

(१)खाओ जब तुम भूखे हो और किसी दूसरे वक्त न खाओ। (२) सो जाओ जब तुम थके हो। (३) और देखो कि सोने के वास्ते तुम्हें वक्त काफी मिलता है। (४) जब तुम जागते हो सारा वक्त काम करो। (५) और जैसा कि चाहिये काम को खुशी बना लो। (६) हमेशा खुश रहो (७) कभी खोफ जदह और गजब नाक न हो (८) परवाह नहीं कि क्या होता है। (मुफहा ४ अखबार देशोपकारक ३१/१०।१९०६)

दराजी उम्र के उसूल (उर्दू)

(दराजी उम्र के वास्ते हैल्थ नामी अखबार में चन्द कवायद लिखे हैं जो नीचे लिखे जाते हैं)

(१) सुबह सवेरे उठो और रात को जल्दी सो जाओ और सारा दिन काम करते रहो। (२) पानी और गिजा जिन्दगी का सहारा है साफ हवा और सूरज की रोशनी के वास्ते अजहद जरूरी है (३) गजब नाक और खोफजदह न हो और न ही झुंझलावो। (४) किफायत शआरी और परहेजगारी दराजी उम्र के वास्ते बड़ी चीज है। (५) सफाई जंग लगने से बचाती है जिन मशीनों की बहुत अहतियात की जाती है वह बहुत देर काम दिया करती है (६) काफी नींद साल: शुद: को पूरा करती है और ताकत देती है बहुत ज्याद: नींद नरम करती है और कमजोर करती है। (७) पोशाक ऐसी होनी चाहिये कि तमाम हरकते आसानी से हो सकें और जिस्म गर्म रहे और मौसम की अचानक तबदीलियों को बरदाश्त कर सके। (८) एक साफ और खुशगवारा घर बेहतर घर है (९) दिल बहलाओ और खुशी के समान से दिल ताजा होता है और ताकत हासिल करता है मगर इनकी ज्यादती से मुहब्बत पैदा करती है और जिन्दगी से मुहब्बत आधी तन्दुरुस्ती है। बरखिलाफ इसके उदासी और नाउम्मेदी बुढ़ापे को जल्दी लाती है। (मुफहा ५ व ६ अखबार देशोपकारक ३१/१०/१९०६)

राममूर्ति के उपदेश

मांस इत्यादि कदापि नहीं भक्षण करना चाहिये। सादी खुराक बहुत लाभदायक होती है। आपने कहा है कि मुझे दो साधुओं से मिलने का अवसर मिला था दोनों महात्मा बड़े आरोग्य और शक्तिशाली थे। भोजन के लिये केवल दूध काम में लाते थे परंतु प्राणायाम में पूरे दक्ष थे। मनुष्य मस्तिष्क शक्ति के साथ जिस काम को करेगा उसमें सफलता होगी। हर अवस्था के मनुष्य को किसी न किसी प्रकार की कसरत करना आवश्यक ही नहीं वरन् कर्तव्य कर्म है। यदि व्यायाम के पश्चात थोड़ी सी ठंडाई पी ले तो वह बहुत गुण करती है। बादाम १० अंदद रात को पानी में भिगो दे प्रातः काल उन्हें छील डाले फिर उनके साथ धनियां आधा तोला, काली मिर्च १ नग छोटी इलायची २ नग, इन सबको पीसकर और थोड़ी खांड मिलाकर प्रातःकाल पी लेना चाहिये। कसरतके आधे घंटे पश्चात् स्नान करना चाहिये। खुली हवामें व्यायाम करना अधिक लाभदायक है। (श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार साप्ताहिक पत्र २२/१/१९०९)

सब ग्रंथो और धर्मशास्त्रों के अवलोकन से मुझे यह भली भांति मालूम हो गया कि मानसिक बल ही सब कुछ है इसके विना शारीरिक बल नहीं प्राप्त हो सकता तब से मैंने प्राणायाम अभ्यास करना आरम्भ किया। (श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार पत्र १९/२/१९०९)

राममूर्ति के भोजन

नित्य १ बजे दिन को मैं चावल दाल और शाक पात का भोजन करता हूं, चावल कोई पावभर इससे अधिक नहीं। किन्तु मैं मांस मछली नहीं खाता। भोजन के साथ मैं दूध नहीं पीता, हां थोड़ा घी खाता हूं, ९ बजे सवेरे मैं अपनी ठंडाई पीता हूं। बादाम, २ इलायची, जीरा, कालीमिर्च इन सबको मिश्री के साथ पी लेता हूं। ये सब चीजें पानी में भिगोकर रात भर रखी रहती है। ठंडाई के आध घंटे के बाद थोड़ा मक्खन खाता हूं। चार बजे तीसरे पहर मैं फिर ठंडाई पीता हूं और उसके बाद पाव भर घर की बनी रबड़ी, घी और मधु में मिलाकर खाता हूं। १ बजे रात को फिर चावल दाल शाक पात का भोजन होता है। (श्रीवेङ्कटेश्वर समाचारपत्र १९/२/१९०९)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्ल-
कृतायां रसराजसंहितायां भाषाटीकायां चिकित्सानिरूपणं
नामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४१॥

उत्तमोत्तमरसाध्यायः ४२

सर्वरोगहर पारदयोग

पारदं दधिपिष्टं तु अष्टयामेन पूर्ववत् ॥ सघृतं मर्द्दयेद्देहे सर्वरोगविनाशनम् ॥१॥ (वैद्यभास्करोदयः)

अर्थ-पारद को दही के साथ आठ प्रहर तक घोटे, फिर उसको लेकर सब शरीर पर लगावे तो समस्त रोगों (रक्तविकार से उत्पन्न हुए) को नाश करता है॥१॥

पूर्णेन्दुरस जो केवल पारद और शाल्मलीद्राव से सिद्ध है

शाल्मल्युत्थैर्द्रवैर्मर्द्य पक्षैकं शुद्धसूतकम् ॥ यामद्वयं पचेच्चाज्यैर्वस्त्रैर्बद्ध्वाऽथ मर्दयेत् ॥२॥ दिनैकं शाल्मलीद्रावैर्मर्दयित्वा वटीकृतम् ॥ वेष्टयेन्नाग-वल्लयाथ निक्षिपेत्काचभाजने ॥३॥ भाजनं शाल्मलीद्रावैः पूर्णं यामद्वयं पचेत् ॥ वालुकायंत्रमध्ये तु द्रवे जीर्णे समुद्धरेत् ॥४॥ द्विगुजं भक्षयेत्प्रातर्नागवल्लीदलान्तरे ॥ मुशलीं ससिताक्षीरं पलैकं पाययेदनु ॥५॥ रसः पूर्णेन्दुनामायं सम्यग्वीर्यकरः परः ॥ कामिनीनां सहस्रैकं नरः कामयते ध्रुवम् ॥६॥

(धातुरत्नमाला)

अर्थ-सैमल कें मूसले के रस से पारद को १५ दिन तक घोटे फिर कपड़े में बांध दो प्रहर तक घृत में पकावे और फिर सैमल मूसले के रस से एक दिन घोट गोली बनावे। तदनन्तर उस गोली पर नागरबेल के पान लपेट कांच की शीशी में सैमल का रस भर देवे एव वालुकायंत्र द्वारा रस के जल जाने पर उतार लेवे। इस रस को दो रत्ती लेकर पान के साथ चबावे इसके पीछे सफेद मूसली और मिश्री के एक तोल चूर्ण को दूध के साथ पिवावै तो यह पूर्णेन्दुनाम का रस वीर्य को बढ़ानेवाला है और एक मनुष्य हजार स्त्रियों से रमण करता है॥२-६॥

राजवीटिका रस (अर्थात् पान पर रखे गंधक के तैल में मिलाकर पारदभक्षण की क्रिया)

श्यामधत्तूरसुरसाः कासमर्दः पुनर्नवा । बिल्वमार्कवदूर्वाभे पिप्पल्यगुरु-वासकाः ॥७॥ सोमराजीचक्रमर्दतिलपर्णीदिवाकराः । एतेषां स्वरसैस्त्रिस्त्रि र्भावयेन्निर्मलांबरम् ॥८॥ परिणाहे च दैर्घ्ये च हस्तमात्रं भिषग्वरः । आतपे शोषयेद्बुद्ध्या प्रतिवारं तृणात्करे ॥९॥ ततः पलमितं गंधं पेषयेच्चतुराज्यक म् । तत्पिष्ट्वा लेपयेद्वस्त्रं तद्वर्तिस्तस्य कल्पयेत् ॥१०॥ अयःशलाकयाविध्य तस्याः पुच्छं मुखं पुनः । प्रज्वाल्याधःस्थिते पात्रे शाणः पुच्छं मुखं पुनः ।

प्रज्वाल्याधःस्थिते पात्रे शाणः सर्पिः स्रवेच्च यत् ॥११॥ गृहीत्वा काचपात्रे तत्स्थापयेदिष्टमंत्रितम् । नागवल्लीदलतले तच्चतूरक्तिकामितम् ॥१२॥ गृहीत्वा पारदं वल्लं शुद्धं तत्र च निक्षिपेत् । अंगुल्या मृदु संमर्द्य तयोः कज्जलिकां चरेत् ॥ १३॥ खादेत्तद्वीटिकां प्रातः पथ्यं दुग्धौदनं लघु । दिनानि मनुसंख्यानि पश्चान्मुद्गं ससैंधवम् ॥१४॥ त्रिसप्ताहव्यतीतेषु शाकमाषाम्लवर्जितम् । ककारपट्कंरहितं भोजने पथ्यमुत्तमम् ॥१५॥ कुष्ठमष्टादशविधं प्रमेहक्षयकामलाः । दुर्नामग्रहणीपाण्डुकासश्वासभगंदरा ॥१६॥ व्रणाश्च विविधाः सर्वे कृमिशूलानिलार्तयः ।आमवाताक्षिवदनकर्णस्यातंकसंचयाः ॥१७॥ अग्निमांद्यं च षांढ्यं च रक्तपित्तं भ्रमिस्तृषः । मूर्च्छातंद्रासहृद्रोगा जाठराण्यखिलानि च ॥१८॥ अजीर्णानि च सर्वाणि वलयःपलितानि च । नश्यन्त्यन्येऽपि योगेन सत्यं शिववचो यदि ॥१९॥ नास्त्यनेन समो योगो वृष्यः कुत्रापि भूतले ॥२०॥

(धातुरत्नमाला)

अर्थ–काला धतूरा, तुलसी, कसौंदी, सांठ, बील, जलभांगरा, दोनों दूब, पीतलछोटी, अगर, अडूसा, सोमराजी, पँवार, तिलपर्णी और आक इनके स्वरस से एक हाथ विस्तीर्ण निर्मल कपड़े को तीन तीन बार भावना देवे प्रत्येक भावना में घाम में स्वच्छ घास पर सुखा लेवे फिर एक पल गंधक और घृत चार पल को पीसकर उस कपड़े को लेप कर देवे और उसकी वत्ती बनाकर उसकी नोंक को चीमटे से पकड़ दूसरी नोंक पर आग जलावे तो उसमें से जो लालवर्ण का घृत टपकेगा उसको लेकर शीशी में भर मंत्र से अभिमन्त्रित करें। फिर उस घृत को चार रत्ती लेकर तीन रत्ती शुद्ध पारद के साथ पान में रख लेवे, तदनन्तर हथेली में उस पान की बींड़ी को खूब मलकर कजली कर लेवे। उस बीड़ी को प्रातःकाल खाकर थोड़ा दूध चावल पथ्य खावे। इस प्रकार १५ पन्द्रह दिन तक खावे। इसके पीछे सैंधानोंन के साथ मूंग के पदार्थ को खावे और तीन सप्ताह के पीछे खटाई रहित शाक खावै, इसके पथ्य में करेला ककोंडा ककड़ी ककरोंदा केला और काशीफल को छोड़ देवे तो यह रस बवासीर संग्रहणी पाण्डु खांसी श्वास भगन्दर फोड़े कृमि दर्द वातव्याधि आमवात मुख नेत्र और कान के रोग पेट के रोग सब प्रकार के अजीर्ण मंदाग्नि नपुंसकता रक्तपित्त भ्रम प्यास मूर्च्छा तन्द्रा हृदय के रोग बलिपलित ये सब रोग इसके सेवन से नाश होते हैं। यदि श्रीमहादेवजी के सत्यवचन हैं तो इसके समान पृथ्वी पर और दूसरा दृष्य प्रयोग नहीं है।।७–२०।।

महाराजवीटिका

(अर्थात् पान पर रखे गंधकतैल में मिलाकर पारद भक्षण की क्रिया)

बीजं ब्रह्मतरोर्विधाय बहुधा खंडत्रियामोषितं छागे दुग्धवरेऽथ शुष्कमथ तद्गन्धेन तिथ्यंशिना ।। मुक्तं काचघटीच्युतं हुतभुजो योगेन कृत्वा ततः सत्त्वं तस्य निगृह्य काचघटिते भांडे सुखं स्थापयेत् ॥२१॥ तत्तैलं वल्लमादाय ताम्बूलीपत्रगं चरेत् ॥ क्षिप्त्वा तत्र रसं वल्लमंगुल्यग्रेण मर्दयेत् ॥२२॥ युक्त्या तां कज्जलीं कृत्वा ताम्बूलं शीलयेदनु ॥ शाकाम्लमाषकट्वादि–वर्जितं पथ्यमाचरेत् ॥२३॥ अनेन योगराजेन षंढोऽपि पुरुषायते ॥ अपूर्ववच्छतं गच्छेद्वनितानामदो गुणात् ॥२४॥ पुरुषोऽशीतिवर्षीयोऽप्यन्यस्य किल का कथा ॥ स रोगो नास्ति नानेन यः प्रशाम्यति दहिनः ॥२५॥ वलीपलितविध्वंसी योगोऽयं क्षयकुष्ठजित् ॥ वातपित्तकफातंकं हन्ति पंचाननः परम् ॥२६॥ नास्त्यनेन समं लोके किञ्चिदन्यद्रसायनम् ॥

(धातुरत्नमाला)

अर्थ–ढाक के बीजों को टुकड़े टुकड़े कर तीन प्रहर तक उत्तम बकरी के दूध में भिगोवे फिर उसको सुखाकर उसमें पन्द्रहवां भाग गंधक मिलावे। इन दोनों को पीस शीशी में भरकर पातालयंत्र द्वारा सत्त्व (घृत या तैलरूप) निकाल शीशी में रख लेवे फिर उसमें से ३ रत्ती तैल और तीन ही रत्ती पारद को पान में रख अंगुली से कज्जली कर लेवे। उस पान को कज्जली सहित प्रातःकाल खा लेवे और शाक, खटाई, उरद और चरपरी चीजों को छोड़ देवे। इस योग से वृद्ध पुरुष भी युवा होता है। अस्सी बरस का वृद्ध मनुष्य सौ स्त्रियों से रमण करता है। जवान पुरुष का तो कहना ही क्या है। ऐसा कोई रोग नहीं है जिसको यह रस नाश नहीं करता हो और वली पालित का नाश करनेवाला यह योग क्षय और कुष्ठरोग को जीतता है।।२१–२६।।

पारदहरीतकी

पलमेकं भस्मसूतं गंधकस्य पलानि षट् ॥ पलमेकं च कर्पूरं सर्वमेकत्र मर्दयेत् ॥२७॥ शतमेके हरीतक्याः छागक्षीरेण पाचयेत् ॥ सुशीताया हरीतक्याः समादाय निरस्यते ॥२८॥ रक्तसूत्रैर्वेष्टयित्वा मधुमध्ये च निक्षिपेत् ॥ मासादूर्ध्वं हरीतक्या एकैकं भक्षयेत्सुधीः ॥२९॥ मासमात्रप्रयोगेण सर्वरोगान्व्यपोहति ॥ षण्मासस्य प्रयोगेण कामरूपी भवेन्नरः ॥३०॥ सततं सेवितो देवि जीवेच्चान्द्रार्कतारकाः ॥३१॥ (योगसारः)

अर्थ–सौ हर्र बड़ी को बकरी के दूध में पकावे। पकने पर ठंडी कर गुठला निकाल लेवे फिर एक पल पारदभस्म और छः पल गंधक और एक पल कपूर को पीस सौ हरों में भर देवे और लाल डोरों से बांध शहद में डुबा देवे। एक मास पीछे नित्यप्रति एक एक कर खावे तो एक मास में यह हर्र समस्त रोगों का नाश करती है और छः मास के प्रयोग से मनुष्य कामरूप कामदेव के समान होता है और जो निरन्तर उसको खाता रहे तो जब तक चन्द्रमा तारे और सूर्य रहें तब तक जीवित रहता है।।२७–३१।।

कज्जलिका सेम्हल के फल के साथ प्रयोग

गंधकस्य पलं चैकं सूतकस्य पलं तथा ॥ कृत्वा कज्जलिकां सम्यक् शाल्मलीफलमध्यतः ॥३२॥ माषंमाषं प्रयुंजीत रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् । निक्षिपेन्मधुमध्ये तु यावद्विंशदिनावधिः ॥३३॥ ततोद्धृत्य फलं चैकं भक्षयेत्सर्पिषा सह । प्रनष्टवीर्यो बलवाञ्जायते नात्र संशयः ॥३४॥ मासमेकं प्रयोगेण दृढकामी भवेन्नरः मासत्रयप्रयोगेण बलीपलितवर्जितः ॥३५॥ षण्मासस्य प्रयोगेण कामचारी महाबलः ॥ संवत्सरप्रयोगेण आयुर्वृद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥३६॥ पथ्यं तस्य प्रवक्ष्यामि शृणुष्वैकाग्रमानसा ।तिक्ताम्लतैललवणं महिषीक्षीरसर्पिषी ॥३७॥ अत्युष्णं वा सुशीतं वा वर्जयेत्सर्वदा बुधैः । एवं विधिविधानेन सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥३८॥ त्रिवर्षं चैव धान्यं त्वन्नं सर्पिर्युतं तथा ॥३९॥ दधि गव्यं च कथितं भोजनार्थं वरानने । कुपथ्यस्य प्रयोगेण अंग च स्फुटते सदा ॥४०॥

(योगसार)

अर्थ–गंधक एक पल, पारा एक पल, इसकी कजली कर २ माशे सेमर के फल में रख, लाल डोरे से बांध देवे और बीस दिन तक शहद में रख देवे फिर इसमें से एक पल के घृत के साथ सेवन करे तो नष्टवीर्य अर्थात् जिनके वीर्य न रहा वे भी बलवान् हो जाते हैं। एक मास के प्रयोग से मनुष्य कामी होता है, छः मास के प्रयोग से कामनापूर्वक विचरनेवाला महाबली होता है और एक साल के प्रयोग से दीर्घकाल तक जीता रहता है अब उसका पथ्य कहते हैं। चर्परा, खट्टा, तैल, नोंन, भैंस का दूध और घृत अत्यन्त उष्ण या शीतल इन सबको इसका सेवन करनेवाला छोड़ देवे। इसप्रकार सेवन करने से सिद्धि होती है और तरह से नहीं होती। बकरी का दूध, घृत तथा गाय का भी दूध और घृत से मिले हुए पदार्थ तिबरपा अन्न गायन का दही ये सब पथ्य हैं, हे सुन्दरमुखवाली स्त्री! यदि इस सेवन से पथ्य में कुपथ्य करें तो सब शरीर में पारा फूट जाता है।।३२–४०।।

पारदसेवन विधि (कज्जली का त्रिफला भांगरे से प्रयोग)

त्रिफलायाः पलशतं चूर्णं भृङ्गरसाम्बुना । भावयेत्सप्तवारांस्तु छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥४१॥ पादं गंधकचूर्णस्य तदर्धं पारदं क्षिपेत् । लिह्यान्मधुघृताभ्याश्च मात्रया प्रत्यहं पुमान् ॥४२॥ जीर्णे भोज्ये ह्यनाहारे गुणानेतानवाप्नुयात् ।

प्रसन्नदृष्टिव्याधिर्जीवेद्वर्षशतत्रयम् ॥४३॥ कामदेवप्रतीकाशदेहवीर्यो महाबलः ॥ मेधावी स्मृतिमान्धीरो जितकेशो जितोवपुः ॥४४॥ सुभगश्चारुरूपश्च स्त्रीशतानंदवर्द्धनः । बाडवानलतुल्योऽसौ भोज्येन्दुपरिहारकः ॥४५॥ अशीतिर्वातजान्रोगांश्चत्वारिंशच्च पैत्तिकान् । विंशतिः श्लैष्मिकाश्चैव सन्निपातांस्त्रयोदश । सर्वे दृष्ट्वा पलायन्ते वैनतेयमिवोरगाः ॥४६॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ–त्रिफला के सौपल चूर्ण को जलभँगरे के रस से सात भावना देवे और छाया में सुखा लेवे फिर त्रिफला के चूर्ण से चौथाई शुद्ध गंधक और गंधक से आधा पारद ले कजली कर पूर्वोक्त चूर्ण के साथ मिला देवे। इसमें से मात्रानुसार घृत और शहद के साथ नित्यप्रति सेवन करे और भोजन जीर्ण होने पर फिर भोजन करे तो प्रसन्नदृष्टि होकर सौ वर्ष तक जीवित रहता है। कामदेव के समान देह और वीर्यवाला होता है और महाबली होता है, बुद्धिमान् स्मृतिमान्, धीर, उत्तम रूपवाला तथा सौ स्त्रियों से रमण करने वाला होता है और अस्सी वातरोगों के पित्त के चालीस रोगों को तथा कफ के बीस रोगों को और तेरह सन्निपात रोगों को नाश करता है। जिस प्रकार गरुड़जी से सर्प भाग जाते है। इसी प्रकार इस औषधि से समस्त रोग नष्ट होते हैं॥४१–४६॥

रुद्रवंतीप्रयोग (पारद वा गंधक योग से)

रुदन्त्याश्चैव पंचागं हेमबद्धं च सूतकम् । दुग्धेन सहितं पीतं केवलं गंधकोऽपि वा ॥४७॥ जायते स्थविरो देवि नवयौवनगर्वितः । जायते नात्र सन्देहो रसगन्धकयोगतः ॥४८॥

(यो० सा०)

अर्थ–रुद्रदन्ती का पञ्चांग और सुवर्णबद्ध पारद को दूध के साथ सेवन करे अथवा केवल गधक ही सेवन करे तो बुड्ढा भी जवान होता है, इसमें सन्देह नहीं है॥४७–४८॥

कल्प, रससिन्दूर का

सूतकस्य त्रयं देवि चत्वारो गंधकस्य च । वालुकायंत्रसंयुक्तं जायते भस्म सूतकम् ॥४९॥ संवत्सरप्रयोगेण मम तुल्यपराक्रमी । तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्वं भवति कांचनम् ॥५०॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–पारद तीन भाग और गंधक चार भाग इन दोनों को पीस बालुकायन्त्र में भस्म करे इस रस को जो एक साल तक प्रयोग करे तो वह श्रीमहादेवजी के समान बलवीर्यवाला हो जायेगा और उसके मूत्र और मल में तांबे का सुवर्ण होता है॥४९॥५०॥

रससिंदूर

पलमात्रं रसं शुद्धं तावन्मात्रं तु गंधकम् । विधिवत्कज्जलीं कृत्वा न्यग्रोधांकुरवारिभिः ॥५१॥ भावनात्रितयं दत्त्वा स्थालिमध्ये निधापयेत् । विरच्य कचचीयंत्रे वालुकाभिः प्रपूरयेत् ॥५२॥ दद्यात्तदनु मन्दाग्निं भिषग्यामचतुष्टयम् । जायते रससिंदूरं तरुणादित्यसन्निभम् ॥५३॥ अनुपानविशेषेण करोति विविधान्गुणान् । नागार्जुनेन कथितं योगानां योगमुत्तमम् ॥५४॥

(सो० सा०)

अर्थ–शुद्ध पारद एक पल और शुद्ध गंध एक पल इनको विधिपूर्वक कज्जलीकर बड़ की जटा के क्वाथ से एक दिवस तक घोटे। इस प्रकार तीन भावना देवे फिर शीशी में रख बालुकायन्त्र द्वारा मन्दाग्नि से चार प्रहर तक पकावे तो नवीन सूर्य के समान चमकदार लालवर्ण का रससिन्दूर नाम का रस प्रस्तुत हो जायगा। अपने अपने अनुपान के साथ अनेक गुणों को करता है। इस सर्वोत्तम योग को श्रीनागार्जुन ने कहा है॥५१–५४॥

पर्पटी

गंधकं सूतकं चैव कृत्वा कज्जलिकासमम् । गव्येन नवनीतेन लोहपात्रे तु पाचयेत् ॥५५॥ षोडशांशं विषं क्षिप्त्वा यावद्द्रवति गन्धकः तत्क्षणे निक्षिपेद्देवि कदलीकन्दमध्यतः ॥५६। एषा पर्पटिका नाम रसानां च रसायनम् । निष्कमात्रप्रमाणेन हन्ति कुष्ठं सुदारुणम् ॥५७॥ मासमात्रप्रयोगेण सर्वरोगान्व्यपोहति । संवत्सरप्रयोगेण वलीपलितनाशनम् ॥५८॥ युक्त्या संसेविता येन जीवेच्चन्द्रार्कतारकम् ॥त्रिमूली च द्विमूली च त्रिफला च चतुःपलम् ॥५९। समांशं योजयेद्योगं वलीपलितनाशनम् ॥६०॥

(योगसागर)

अर्थ–शुद्ध गंधक और शुद्ध पारद को समान भाग लेकर कजली करे, उसको गोघृत में रख लोहे की कड़छी में तपावे और कजली के सोलहवां हिस्सा सीगिया को पीसकर मिला देवे। जब गंधक गल जाय सब केले के पत्ते पर डाल देवे। यह पर्पटिका नाम का रस समस्त रसों में उत्तम है, इस पर्पटी का एक तोला मात्रानुसार खावे तो घोर कुष्ठरोग भी दूर होता है और एक मास के प्रयोग से यह पर्पटिकी सब रोगों को दूर करती है, एक वर्ष के प्रयोग से वलीपलित से रहित होता है और जो विधिपूर्वक इसका निरंतर सेवन करता है तो कल्पर्यन्त जीवित रहता है तथा द्विमूली त्रिमूली और त्रिफला ये सब चार पल चार ही पर्पटी लेकर मात्रानुसार भक्षण करे॥५५–६०॥

पर्पटीप्रयोग

गंधकस्य पले द्वे च पलैकं शुद्धसूतकम् । कृतं पत्रगतं पक्वं लेहयेन्मधुसर्पिषा ॥६१॥ मासैकं वा त्रिमासं वा हन्ति कुष्ठं सुदारुणम् । षण्मासस्य प्रयोगेण जीवेच्चन्द्रार्कतारकम् ॥६२॥

(योगसागर)

अर्थ–शुद्ध गंधक दो पल और शुद्ध पारा एक पल इनकी कजली कर आंच में पचाय पत्ते पर डाल लेवे इसमें से मात्रानुसार एक मास या तीन मास तक सेवन करे तो घोर कुष्ठरोग को नाश करती है और छः मास के प्रयोग से सूर्यचन्द्र और तारों की स्थिति तक जीवित रहता है॥६१॥६२॥

कज्जलीप्रयोग

गंधकस्य पलं चैकं सूतकार्धपलं तथा ॥ मर्दयेद्यममेकं च लेहयेन्मधुसर्पिषा । मासमात्रप्रयोगेण जीवेच्चन्द्रार्कतारकम् ॥६३॥

(यो० सा०)

अर्थ–आधा पल शुद्ध पारद और एक पल शुद्ध गंधक इन दोनों को एक प्रहर तक पीस घृत और शहद के साथ तीन मास तक सेवन करे तो जब तक चन्द्रमा सूर्य और तारागण चमकते हैं तब तक जीवित रहता है॥६३॥

गंधबद्धरसकल्प (रसगंधकयोग)

गंधकस्य पलं चैकं रसस्यार्द्धपलं तथा ।कुमारीरससंघृष्टदिनैकं गोलकीकृतम् ॥६४॥ अंधमूषाकृतं ध्मातं लेहयेन्मधुसर्पिषा । मासमात्रप्रयोगेण जरादारिद्र्यनाशनम् ॥६५॥

(र० सा० प०)

अर्थ–पारद आधा पल, गंधक एक पल इन दोनों की कजली घीगुवार के रस में घोट लेवं, फिर उसका गोला बनाकर अंधमूषा में रखकर धोंके, उसमें से एक मास का प्रयोग करे तो बुढ़ापारूप दारिद्रय का नाश होता है॥६४॥६५॥

आरोटरसभक्षणफल

आरोटं१ भक्षयेद्देवि चन्द्रगन्धं२ च कारयेत्३ । पोषयेत्सर्वधातूनां बलपुष्टिप्रदायकः ॥६६॥

(यो० सा०)

अर्थ–हे पार्वती! आरोट रस का भक्षण करे और कपूर, सुवर्ण चांदी, कबीला औषधि चूक आदि किसी भी चीज का गन्ध आने लगे तो समझना कि वह सभी धातुओं को पुष्ट करेगा और बल तथा पुष्टि का करनेवाला होगा॥६६॥

पारदगंधकसेवनफल

बहुनाऽत्र किमुक्तेन गंधकं सहसूतकम् । षण्मासं भक्षितो येन जीवेच्चंद्रार्कतारकम् ॥६७॥

अर्थ–बहुत सी बातों से क्या प्रयोजन है कि छः मास तक जो मनुष्य कजली का सेवन करे तो सूर्य चन्द्रमा के रहने तक जीवित रहता है॥६७॥

अभ्रकसत्त्वप्रयोग

सूततुल्यं व्योमसत्त्वं तयोस्तुल्यं च गंधकम् । कुमारीस्वरसैर्मर्द्यं यंत्रे सैकतके पचेत् ॥६८॥ दिनद्वयान्ते संग्राह्यं भक्षयेन्मासमात्रकम् । क्षयं शोषं तथा कासं प्रमेहं चापि दुष्करम् ॥६९॥ पांडुरोगं च कार्श्यं च जयेच्छीघ्रं न संशयः॥७०॥

(र० रा० सुं०, टो० नं०)

अर्थ–पारा और अभ्रकसत्त्व दोनों एक एक भाग दोनों के समान गंधक सबको घीग्वार के रस में घोट दो दिन बालुकायंत्र में अग्नि दे तो अभ्रकसत्त्व मरे। पश्चात् शीतल कर रख छोड़े। इसका एक महीना सेवन करे तो क्षयी, खांसी, असाध्यप्रमेह, पांडुरोग, कृशता इनका शीघ्र नाश करे। यह काकचंडेश्वर ग्रंथ में लिखा है॥६८–७०॥

रसायनाय चूर्णरत्नम् (अभ्रप्रयोग)

वृष्यगणचूर्णतुल्यं तत्पुटपक्वं घनं सिता द्विगुणा । वृष्यात्परमतिवृष्यं रसायनं चूर्णरत्नमिदम् ॥७१॥

(र० सा० प०)

अर्थ–वृष्यगणों के रस से सिद्ध किया हुआ अभ्रक और उसके समान वृष्यगण का चूर्ण इन दोनों के समान मिश्री इसको मात्रानुसार सेवन करे तो यह चूर्ण अत्यन्त पुष्टिकारक रसायन और चूर्णों में रत्न है॥७१॥

अभ्रकगुण

अब गगनगुन सुनिलीजै सोइ । जो पै तनके जाने लोइ । गुनी निचंद्री करै बनाय । पुनि ताको जो प्रानी खाय ॥ जे प्रौढा जोबनमदभरी । ते दिनमान बीस बसकरी ॥ जो सतकाढ़ि खाय नर कोइ । ता शरीर बजरंगी होइ ॥ पुनि जो दुरितहोइ ता तनै । ताके गुनको कहँ लोभनै । जो कहुँ गांठि सूतसौं परै । रत्ती आपदा नृप की हरै ॥ इतने ही में जानों संत । गगनसूत गुनखरे अनंत ॥ धातुसबरी और सबरे दोष । गगनदुरतसम और न कोष ॥

(रससागर)

गंधकप्रयोग अजीर्णनाशक

धात्रीरसे न संयुक्तो ह्यजीर्णं हरते ध्रुवम् ॥७२॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–गंधक को आंवले के रस के साथ सेवन करे तो अजीर्ण दूर होगा॥७२॥

गंधक के उत्तम अनुपान

पुनर्नवान्वितं गंधं त्रिविधं नाशयेद्विषम् । धात्रीरससमायुक्तमजीर्णं नाशयेद्ध्रुवम् ॥७३॥ सूतकेन समायुक्तं चिरायुः पुरुषो भवेत् ॥७४॥

(यो० सा०)

अर्थ–सोंठ की जड़ से युक्त गंधक को सेवन करने से तीन प्रकार का विष दूर हो जाता है॥७३–७४॥

गंधकसेवन में पथ्यापथ्य

वमनं रेचनं कृत्वा रसायनं समाचरेत् । शुभे मुहूर्ते नक्षत्रे अर्चयित्वा जगत्पतिम् ॥७५॥ पक्षमात्रप्रयोगेण भक्ष्यं पथ्यादिकानि च । षष्टिकातंदुला भक्ष्यं गोधूमाश्च वरानने॥७६॥बालकानि च मांसानि तित्तिरीछागलानि च। कृष्णमुद्गाश्च सर्पिश्च सिता क्षीरं च तक्रकम् ॥७७॥ एतद्देवि सदा पथ्यमपथ्यं परिवर्जयेत् । कटुतिक्तकषायाणि तैलं कांजिकराजिकम् ॥७८॥ स्त्रीसेवारोहणं यानं प्रवातादीनि वर्जयेत् । कोद्रवान्नं कुलित्थं च कर्तव्यं पथ्यभोजनम् ॥७९॥ लवणाम्लविपाकानि द्विदलानि च वर्जयेत् ॥८०॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–प्रथम वमन और विरेचन (दस्त) कराकर रसायन का प्रयोग करे, शुभमूहुर्त और शुभदिन में श्रीपरमात्मा का पूजनकर १५ पन्द्रह दिवस तक रसायन का प्रयोग करे और इस प्रकार पथ्य करे। सांठी चावल, गेहूं (पुराना), नवीन तीतर और बकरे का मांस, छुकलेदार मूंग, घृत, मिश्री, दूध और मट्ठा हे पार्वती! ये सदा पथ्य हैं। इनसे अतिरिक्त चर्परा, कडुआ, कषैला, तेल, कांजी, राई स्त्रीसेवन, सवारी पर चढ़ना और सामने की वायु का सेवन करना अपथ्य है। कोद्रू और कुल भी पथ्य हैं और जिसका विपाक लवण और खट्टा है, दाल सब तरह की अपथ्य हैं॥७५–८०॥

गंधकभक्षण के नियम और पथ्य

वमनं रेचनं कृत्वा रसायनमथाचरेत् । मुहूर्ते शुभनक्षत्रे नमस्कृत्वा जगद्गुरुम् ॥८१॥ विधानेन यथा देवि कर्तव्यं गंधकं प्रिये । तथा चैवं प्रवक्ष्यामि प्रयोगान् भक्षणस्य च ॥८२॥ षाष्टीकमथवा शालिगोधूमांश्चैव सुव्रते । जांगलानि च मांसानि कोमलानि तथैव च ॥८३॥ कृष्णमुद्गाश्च सर्पिश्च सिता क्षीरं च माक्षिकम् । एतद्धि विहितं पथ्यमपथ्यं परिवर्जयेत् ॥८४॥ श्रुतावधानसम्पन्नो वाराह इव पुष्टिमान् ॥८५॥

(यो० सा०)

अर्थ–रसायन का सेवन करनेवाला प्रथम वमन और विरेचन को करके शुभ मुहूर्त और शुभ नक्षत्र में रसायन का सेवन करे। हे देवि! जिस प्रकार गंधक के विधान कहते हैं उसी प्रकार भक्षण के प्रयोगों को भी कहते हैं। सांठी चावल, एक साल के पुराने गेहूं, जँगली जानवरों का कोमल मांस, काले मूंग, घृत, मिश्री, दूध और शहद यह रसायन के भक्षण करने में पथ्य है और इससे अतिरिक्त अपथ्य हैं, इस प्रकार सेवन करने से ऐसी बुद्धि तीव्र होती है कि केवल श्रवण करने से ही याद हो जाता है और वह मनुष्य सूवर के समान पुष्ट हो जाता है॥८१–८५॥

गंधकशुद्धि

अथातः शोधनं वक्ष्ये गंधकस्य वरानने । गंधकं गालयित्वा तु घृतमध्ये तु पार्वति ॥८६॥ तथा वै छागदुग्धे च शोधयेत्सप्तवारकम् । ततो रसोपयोगी च गंधको भवति ध्रुवम् ॥८७॥

(योगसार)

१–चन्द्रगंध पाठ रखने से कोई स्पष्ट अर्थ नही निकलता, खीचकर ऐसा अर्थ कर सकते है कि जो आरोटरस को खाए तो चन्द्र और गंधकयुक्त कर पारद का भक्षण करे।

२–गंधबद्धं पाठ रखने से सर्व संमत अर्थ होता है कि यदि आरोट का भक्षण करे तो गंधक मे मूर्छित कर ले।

३–कारयेत् की जगह धारयेत् पाठ हो और चन्द्रगंध की जगह चन्द्रबद्ध हो तो यह होगा कि आरोट का भक्षण करे और चन्द्रबद्ध को धारण करे।

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसाद–
सूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराज–
संहितायांमुत्तमोत्तमरसादिनिरूपणं नाम
द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४२॥

अर्थ–हे सुन्दर मुखवाली स्त्री! अब हम गंधक की शुद्धि को कहते हैं कि प्रथम गन्धक को घृत में गलाकर बकरी के दूध में सात बार गेरे तो गंधक शुद्ध होकर रसायन के उपयोगी हो जायेगा।।८६।।८७।।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्ल–
कृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायांमुत्तमोत्तमरसादि–
निरूपणं नाम द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४२॥

तैलनिष्कासनाध्यायः ४३

धत्तूरतेल का अनुभव (पातालयन्त्र से)

४/२/१९०७ को एक काली बोतल पर २ कपरौटी करके ऽ।। सेर धतूरे के बीजों को जौकुट करके बोतल में भर दिया और पांच पांच अंगुल लम्बी सींको के टुकड़ों के बंडल को उस बोतल के मुख में डाट की तरह लगा, सींके करीब आधी बोतल के बाहर और आधी भीतर रही फिर एक मिट्टी के नदोरे की पेंदी में बोतल की गर्दन के नाप की सूराख कर नदोरे के अन्दर की ओर बोतल को उलटा रख नदोरे की सूराक में हो बोतल का मुख नीचे को निकाल दिया और नदोरे की सूराख और बोतल की गर्दन के मिलान पर थोड़ी सी चिकनी मिट्टी लगा इस यंत्र को बिना आग के चूल्हे पर रख दिया, जिससे बोतल का मुख चूल्हे की तली से ६ अंगुल ऊंचा रहा, बाद को एक कांच का गिलास जो करीब ९ अंगुल लंबा और २ वा २।। अंगुल गुलाई में होगा बोतल के नीचे रख दिया, इस गिलास में २।। अंगुल मुख बोतल का अन्दर चला गया, फिर बोतल के पेट के ऊपर एक टीन का नलका (जो बोतल के चारों ओर एक एक अंगुल ढ़ीला रहा) बतौर खाली के पहना दिया और उस नल के अन्दर रेत भर दिया। फिर इस यन्त्र के ऊपर अर्थात् नदोरे में प्रथम बार ३ सेर कंडों की करसी इस तरह से चुनकर कि जो बोतल की पेंदी से ३ अंगुल ऊंची रही, आंच दे दी यह पहली आंच १० बजे से ११।। बजे तक लगी, जब यह पहली आग खूब सिलग गई तभी से मैल निकलना आरम्भ हो गया। पहली आंच जब कदराने लगी तब १ सेर कंडे ऊपर और चुन दिये गये। इन दो दफे की आंच से ३।। तोले तेल निकला। बाद को फिर १२।। बजे २ सेर कंडे और लगा दिये गये। यह आंच २ बजे तक लगी। इस आंच से भी ३।। तोले तैल निकला मगर पहली दफे जो निकला वह सफेद मटमैली रंगत का पतला पानी सा था, जिसमें चिकनाई नहीं थी और ख्याल करने से तैल नहीं बल्कि पसेव से प्रतीत होता था और यह दूसरे तेल में मिलता भी न था, पृथक् हो जाता था।



दूसरी बार का तेल दो प्रकार का था, कुछ पीली सी रंगत का था और कुछ काला था, जो काला था उसमें चिकनाई अधिक थी और पीले में जरा कम यह दोनों भी परस्पर मिले नहीं, नीचे पीला और ऊपर काला रहा। इस प्रकार ऽ।। सेर बीजों कें ६ सेर कंडों की आंच से ४ घंटे में ७ तोले तेल निकला। तेल निकल आने के बाद इस यन्त्र को जैसे का तैसा छोड़ दिया।

ता० ५ को बोतल निकाल बीजों को निकाला तो बिलकुल जले हुये निकले और तोल में ३ छटांक हुए।

धत्तूरतैल का दूसरी बार अनुभव (पातालयन्त्र से)

ता० ७/२/०७ को उपरोक्त विधि के पातालयंत्र में प्रथम बार ३ सेर कंडों को द्वितीय बार २ सेर की तृतीय बार १ सेर की आंच दी। पहली आंच ८।। बजे लगाई जब इस आंच के करीब १ सेर के अंगार रह गये तब १० बजे से करीब दूसरी आंच दी, फिर इस दूसरी आंच के जब आध सेर के करीब अँगार रह गये तब १ सेर कंडे और रख दिये। इस तरह ३ आंच दी गई। पहली दफे की आंच से जो तेल निकला वह पहले ही सा पानी की शकल का १।।। तोले था और दूसरी आंच से जो तेल निकला वह काली शकल का जला हुआ ३ तोले निकला, इसमें चिकनाई भी थी। (इस आंच से तेल में कुछ धुंआ भी निकला) तीसरी आंच से कुछ तेल न निकला। यन्त्र ठंडा होने पर बीजों को बोतल से निकालकर तोला तो १४ तोले जले हुए निकले।

आंच	कंडे	घंटे	तेल	जले बीज
३	ऽ६	२	४।।। तो०	३।। छ०

अनुभव–दूसरी आंच अन्दाज से अधिक लगी इसलिये बीज एकदम जलकर धुआं देने लगे और तेल खराब और बहुत कम निकला।

धत्तूर तैल का तीसरी बार अनुभव (पतालयन्त्र से)

ता० ७/२/०७ को उपरोक्त यन्त्र में उपरोक्त विधि से नदोरे और बालू के गर्म रहने के कारण प्रथम बार २।। सेर टूटे हुए कंडों की आंच दी यह आंच १। बजे से २।।। बजे तक रही, इसमें ३।।। तोले तेल काली रंगत का निकला और बहुत सा धुआं भी नीचे गिलास में भर गया। अग्नि के थोड़े बाकी रहने पर २।।। बजे पर १ सेर कंडों की आंच फिर दी, इस आंच से कुछ तेल न निकला क्योंकि पहली ही आंच से सब बीज जल गये होंगे। इस आंच के भी ठंढा होने पर तीसरी आंच १ सेर कंडों की ३।।। बजे दी इस आंच से भी कुछ तैल न निकला। तीन आंच में सिर्फ पहली दफे ३।।। तोले तेल निकला। यन्त्र के ठंढा होने पर बीजों को निकालकर तोला तौ १३।। तोले निकले।

बीज	आंच	कंडे	घंटे	तेल	जले बीज
३	७।।छ०	३	ऽ४।।	२।।	३।।। +

अनुभव–आंच कंडों की होने से और यन्त्र गर्म रहने से एकदम अग्नि तेज होकर अधिक तीव्र हो गई जिससे बीज जलने लगे और धुएं के साथ जला हुआ गाढ़ा तेल निकला। आंच हलकी और कर्सी की होनी चाहिये।

धत्तूर तैल का चौथी बार अनुभव (पातालयन्त्र से)

ता० ८/२/०७ यंत्र उपरोक्त विधि से बनाया किन्तु ऊंचा करने के लिये चूल्हे की जगह एक काठ की तिपाई पर जो करीब १।। हाथ के ऊंची थी रखा, और बोतल के नीचे एक शीशे की नली करीब बालिश्त भर के लंबी

लगाई गई जिसमें बोतल का मुख आ गया और इसी नली के नीचे वही गिलास जो पहले लगाया जाता था लगाया गया, यह नली गिलास के मुँह में ठीक बैठ गई और सांस बंद हो गई, नली इस लिये लगाई थी कि गिलास को गर्मी न पहुँचे और भाप को भली भांति ठंढा होने का अवसर मिले और उस नदोरे में बहुत थोड़ी सी बालू नीचे भी बिछा प्रथम.बार ११ बजे ३ सेर आरने कंडों की कर्सी बारीक होने से आग नीचे तक न बैठी, पहली आंच के थोड़े ही कंदराने पर १२।। बजे दूसरी आंच डेढ सेर की कंडों की, इस दूसरी आंच के सुलग जाने पर थोड़ा थोड़ा तेल निकलना आरम्भ हो गया थोड़ा थोड़ा तेल निकलने का यह कारण था कि नदोरे के नीचे की कर्सी में ठीक आंच नहीं बैठी, जब उसको कुरेदकर ठीक किया, तो आंच अच्छी तरह निकलने लगी और तेल अच्छी तरह निकलने लगा, बाद को २ बजे से ऊपर से थोड़ी सी राख हटाकर १ सेर कंडों के टुकड़ों की आंच लगा दी, तेल उसी तरह निकलता रहा, ३।। बजे १ आंच ऽ।।। कंडों की और दी गई, इस समय भी तेल निकलने की वैसी ही दशा रही, पांचवी आग ४। बजे ऽ।।। तीन पाव कंडों की दी गई, इस्तरह ५। घंटे में सब ५ आंच ३ सेर कर्सी और ४ सेर कंडों की दी गई, जिससे कुल तेल ८ तोले निकला। यह तेल पानीसा पीली रंगत का था और इसके ऊपरी भाग पर कुछ चिकनाई भी थी। बोतल के अन्दर जले बीज ऽ। निकले, इस बार अधिक बीज निकलने का कारण यह हुआ कि थोड़े बीज उसमें बगैर जले रह गये थे।

नं० ४ बीज	आंच	कंडे	घंटे	तेल	बीज
७।। छ०	५	ऽ७ सेर	५।	६ तोले	ऽ।

अबकी बार सबसे अच्छा और अधिक तेल निकला. (आगे के तजरुबे मे यह आच भी अधिक सावित हुई) किन्तु इतनी कसर रही कि पहली आंच जो केवल कर्सी की थी सो नीचे तक न सुलगी। आगे से पहले १ सेर कंडों के टुकड़े डालकर ऊपर से २ सेर कर्सी देनी चाहिये जिससे आंच नीचे तक पहुंच जाय। कर्सी देने से यह मतलब है कि आंच एकदम तीव्र होकर जला न दे। इस कारण निम्न लिखित आंच के अनुसार देनी चाहिये।

नकशा आंच का

आंच जो दी गई	आंच जो देनी चाहिये
१ पहली ३ सेर कर्सी	२ सेर कर्सी१ सेर कंडे
२ दूसरी, १।। सेर कंडे	१ सेर कंडे–ऽ। कर्सी
३ तीसरी, १सेर कंडे	ऽ१। सेर कंडे
४ चौथी, ऽ।।कंडे	ऽ१। सेर कंडे
५ पांचवी,ऽ।।। कंडे	आवश्यकता नहीं

आगे के अनुभव से यह भी आंच अधिक सिद्ध हुई।

धत्तूर तैल का पांचवीं बार अनुभव
(पा० यं०)

ता० १२/२/०७ को उपरोक्त विधि के पाताल यंत्र में प्रथम बार ३ सेर की आंच इस तरह से दी कि यंत्र की तली में पहले १। सेर कंडों के छोटे २ टुकड़े दो दो अंगुल के बिछा दिये गये। बाद को ऊपर ऽ१।।। आरने कंडोंकी कर्सी लगा दी। यह आंच ८।। बजे सबेरे से दी गई ९।।। बजे से तैल निकालना आरम्भ हो गया, और अन्दाजन इस आंच से २ तोले तेल निकला। आंच को कुरेद कर देखा तो नीचे के कडें कम सुलगे हुए निकले। इस वास्ते दूसरी आंच १०।। बजे ऽ।। सेर कंडों के वैसे ही टुकड़ों की दी तैल मामूली तरह से निकलता रहा, तीसरी आग ११।। बजे नदोरे में से थोड़ी राख हटाकर ऽ।। सेर की दी, ज्यों का त्यों तेल नीली रंगत का निकलता रहा दूसरी और तीसरी आंच में ५।। तोले तेल और निकला, चौथी आंच १ बजे ऽ।। कंडों के टुकडों की दी, इस आंच से तो तेल निकला वह काली रंगत का निकला पांचवी आंच २ बजे ऽ।। सेर की दी इस आंच में भी तैल काली ही रंगत का निकलता रहा। छठी आंच ३ बजे ऽ।। तीन पाव की दी इसने बहुत थोड़ा तैल निकला, ४ बजे तैल निकला, सब तेल १०।। तोले हुआ, बीज ७।। छटांक थे बोतल खोलने पर जले बीज ३।। छटांक निकले।

नं० ५ बीज	आंच	कंडा	घंटा	तेल	जले बीज
७।। छ०	६	ऽ६	६	१०।। तो०	३।। छ०

सम्मति–आगे से आंच न तो कर्सी की हो न कंडों के बड़े टुकड़ों की किन्तु कंडों के दो दो अंगुल के टुकड़ों की होनी चाहिये।

(१) पहिली आंच २ वा २।। सेर
(२) दूसरी आंच ऽ।। सेर वा ३/४ सेर
(३) तीसरी आंच ऽ। सेर वा ३/४ सेर
(४) चौथी आंच " "
(५) पांचवीं " " " .

धत्तूर तैल का छठी बार अनुभव
(पा० यं० से)

ता० १६/२/०७ उपरोक्त विधि के यंत्र में जो बोतल के ऊपर टीन का खोल चढ़ाया जाता था और जिसके चारों तरफ एक एक अंगुल जगह खाली रहती थी आज उसकी जगह दूसरा बड़ा खोल जिसमें दो दो अंगुल की चारों ओर गुंजायश थी पहना दिया गया और प्रथम बार ८।।। बजे ऽ२ सेर कंडों के दो दो अंगुल के टुकडों की आंच दी गई, आंच देने से १।। घंटे बाद तैल निकलना आरंभ हो गया, दूसरी आंच १० बजे से वैसे ही ऽ।।। सेर कंडों के टुकडों की दी, तीसरी आंच १०।।। बजे ऽ।।= की दी, तेल उसी भांति निकलता रहा, चौथी आंच ११// बजे ऽ।।। की दी, पांचवीं आंच.१२। बजे ऽ।।। तीन पाव की दी, छठी आंच १ बजे ऽ।।।की दी, इन ऽ५= की ६ आंचों में ४। घंटे में ७।। तोले तेल पतला और पीली रंगत का निकला, २ बजे तेल निकलना बंद हो गया था, यद्यपि अबकी बार तेल कम निकला, किन्तु रंगत में स्याही बिलकुल न थी किन्तु चिकनाई भी कम थी, जले बीजों की तोल ३।। छटांक हुई, अबकी बार आंच कम लगी, कारण यह कि खोल टीन का चौड़ा था और तोल कंडों की कम। पहली आंच ऽ२।। सेर कंडों की होनी चाहिये।

नं० ६ बीज	आंच	कंडे	घंटे	तेल	जले बीज
७।। छ०	६	ऽ५=	४।	७।। तो०	३।।छ०

धत्तूर तैल का सातवीं बार अनुभव
(पा० यं० से)

ता० १६/२/०७ को उपरोक्त विधि से पातालयंत्र में प्रथम आंच २।। सेर कंडों के टुकड़ों की ८। बजे दी, दूसरी आंच ऽ।।। की ९। बजे दी, इस दूसरी आंच के लगने के आधे घंटे बाद अर्थात् ९।।। बजे से तैल निकलना आरम्भ हो गया। तीसरी आंच ऽ।।। की १०। बजे, चौथी ऽ।।। की ११। बजे, पांचवीं ऽ। सेर की ११।। बजे, छठी ऽ। सेर की १२ बजे, ७ सातवीं ऽ१ सेर की १२। बजे राख हटाकर, आठवीं ऽ। सेर की ।।। पौना बजे, नवीं ऽ१ सेर की १।। बजे राख हटाकर, दसवीं ऽ१ सेर की २। बजे दी गई।

छठी आंच तक तेल पीली मटमैली रंगत का पतला ४ तोले निकला, और सातवीं से नवीं तक सुर्खी माइल और विशेष चिक्कणतायुक्त ५ तोले निकला, दसवीं आंच में बिलकूल न निकला।

नं० ७ इस तरह कुल ७।। छटांक बीजों में ऽ९। सेर की १० आंचों से ६ घण्टे में ९ तोले तेल हाथ लगा, जले बीज ३।। छटांक निकले।

धत्तूर तैल का आठवीं बार अनुभव (पा० यं० से)

१८/२/०७ को उपरोक्त विधि के पाताल यन्त्र में प्रथम आंच २।। सेर की ९।।। बजे द्वितीय ऽ।। सेर १०।।। बजे, तृतीय सेर की ११। बजे दी, तीसरी आंच लगने से ५ मिनट तेल निकलना आरम्भ हो गया, फिर चौथी आंच १ सेर की ११।। बजे, पांचवी ऽ।। सेर की १२ बजे, छटी १ सेर की १२।। बजे सातवीं ऽ।। सेर की १। बजे, आठवीं १ सेर की २ बजे, नवीं ऽ।। सेर की, २।। बजे दसवी १ सेर की ३। बजे, ग्यारहवीं १ सेर की ४। बजे दी गई। इन सब आंचों में ८।। तोले तेल पहली ही जैसी रंगत का निकला। अर्थात् कुल ७।। छटांक बीजों में १० दस सेर की ग्यारह आंचों से ६।। घंटे में ८।। तोले तेल निकला, जले बीज ३।। छटांक निकले।

सम्मति–धत्तूर तैल के उपरोक्त ८ बार के अनुभव से ज्ञात हुआ कि एक बोतल धत्तूरबीज जो तोल में ऽ।। सेर के करीब होते हैं उनमें जाडे के मौसम में ६ वा ७ सेर कंडों की आंच लगाने से ६ वा ७ घटे में ८ वा दस तोले तक तेल निकल सकता है, अवशेष बीज आधे अर्थात् ४ वा ३।। छटांक बचने चाहिये, अधिक आंच लग जाने से बीज ३ छटांक और बहुत अधिक लगने से २।। छटांक तक रह जाते हैं, पहले जो कुछ निकलता है वह पीली मिट्टी की रंगत का पानी होता है। पीछे से तैलमिश्रित पानी पीत रक्त रंगत का कुछ श्यामता लिये हुए होता है, पानी की रंगत स्वच्छ होती है, किन्तु तैल की रंगत में कुछ श्यामता अवश्य होती है, तेल वहीं उत्तम है जिसमें रक्तता विशेष और श्यामता कम हो अधिक अग्नि लग जाने से श्यामता बढ़कर तैल खराब हो जाता है।

आंच का हिसाब यद्यपि बहुत ठीक तौर पर निश्चय नहीं हुआ किन्तु जहां तक समझ में आया आंच कंडों के बहुत छोटे २ टुकड़ो की (चूरे की नहीं क्योंकि वह सुलगती नहीं) इस भांति होनी चाहिये।

बार	तोल
१	ऽ२।। सेर निश्चय है
२	२।। पाव
३	२।। पाव
४	१। सेर
५	२।। पाव
६	२।। पाव
७	ऽ१। सेर

और आंच देने का समय नियत नहीं हो सकता, केवल यह विचार रखना चाहिये कि जब जब आंच डैकर टीन का नलका खुलता जावे तब तक २।। पाव कंडे ऊपर से चुने जावें, जब आंच विशेष कदरा जावै तब राख निकाल कर १। सेर की आंच दी जावे। अब तक सब धत्तूर तैल ११ छटांक से कुछ अधिक निकला है। धत्तूर तैल जो पतला और कम श्यमता लिये था वह बोतल में था और जिसमें गाढ़ापन और श्यामता अधिक थी वह छोटी २ तीन शीशियों में था।

तारीख ८/१/०५ को बोतलवाले तेल में बत्ती भिगो जलाई तो न जली किन्तु जब शीशियों के तेल में बत्ती भिगो जलाई तो जलने लगी, इससे ज्ञात हुआ कि बोतल में पानी था, और शीशियों में तैल था।

ढाक तैल का प्रथम बार अनुभव (पातालयंत्र से)

ता० १९/२/०७ को उपरोक्त विधि के पातालयंत्र में प्रथम आंच ऽ२।। सेर की ९। बजे, दूसरी ऽ।। सेर की १० बजे, तीसरी ऽ१ सेर की १०।।। बजे दी, इसी तीसरी आंच से तेल निकलना आरम्भ हो गया चौथी आंच ऽ१।। सेर की, ११। बजे, पांचवीं ऽ।। की १२ बजे, छठीं ऽ।।≈की १ बजे, सातवीं ऽ।। की १।।। बजे, आठवीं ऽ।। सेर की २। बजे, नवीं ऽ।। की ३। बजे दी, चौथी आंच तक तेल कुछ सफेद पतला निकला, बाद को पीली लाल काली रंगत का निकलने लगा सफेद रंगत का ३।। तोले और काली रंगत का ५ तोले तेल निकला।

पहले पतले तेल को कागज पर डालकर देखा तो उसमें बहुत कम चिकनाई पाई गई, और काले तेल को कागजपर डाला तो उसमें अधिक चिकनाई पाई, ७।। छटांक बीजों में ८।≈सेर की ९ आंचों से ६।। घंटे में ८।। तोले तेल निकला जले बीज ४।। छटांक निकले।

मेरी सम्मति से अब भी आंच तेज लगती है, आगे से ओर मंद होनी चाहिये।

ढाकतैल का दूसरी बार अनुभव (पा० यं० से०)

उपरोक्त विधि से पातालयंत्र में प्रथम आंच २।। सेर की ८।। बजे, दूसरी ऽ।।≈की ९। बजे दी, इसी दूसरी आंच के ऽ।। घंटे बाद यानी १० बजे से तैल निकलना आरंभ हो गया फिर तीसरी आंच ऽ।।≈की १०।। बजे, चौथी १। सेर की ११। बजे, पांचवीं ऽ।।≈की १२। बजे, छठी ऽ।।≈की १। बजे, सातवीं १। सेर की २। बजे दी, तीसरी आंच तक सफेद पतला तेल ४।। तोले निकला चौथी आंच लगते ही पीली लाल काली मिली हुई रंगत का निकलने लगा और ५ तोले निकला, इस प्रकार ७।। छ० बीज में ऽ७। सेर की ७ आंचों से ६।। घंटे में ९ तोले तेल निकला, जले बीज ४।। छटांक निकले।

मेरी सम्मति में आज तेल कल से अच्छा निकला पर आंच शायद अब भी ज्याद: है। ढाकतैल दोनों बार का ३ छटांक ३ तोले है।

अंकोल तेल का दूसरी बार अनुभव (पा० यं० से०)

२१/२/०७ उपरोक्त विधि के पाताल यंत्र में प्रथम आंच ऽ२।। सेर की ८।। बजे, दूसरी ऽ।।≈की १० बजे दी, इस आंच के पाव घंटे बाद तेल निकलना आरम्भ हो गया फिर तीसरी आंच ऽ।।≈की ११ बजे, चौथी ऽ१। सेर की १२ बजे, पांचवीं ऽ।।≈की १ बजे छठी ऽ।।≈की २ बजे, सातवी १। सेर की ३ बजे दी, तीसरी आंच तक तेल सफेद दूध की सी रंगत का ६ तोले निकला, बाद को चौथी आंच लगने से तेल कुछ २ रक्तता पीतता श्यामता मिश्रित रंगत का ।।।=) भर और निकला, १२।। बजे तेल निकलना बन्द हो गया। इस प्रकार ७।। छ० बीजों में ५ सेर की ४ आंचों से घंटे में ७ तोले तेल निकला जले बीज ३।।। छटांक निकले। पोंछली ३ आंच व्यर्थ लगीं।

सम्मति–अंकोल धतूरे से बहुत कोमल है, अतएव इसमें ये आंचें भी तोल में और तादाद में अधिक रही, आगे से केवल ४ आंच सो भी वजन घटाकर दी जावे।

अंकोल तैल का दूसरी बार अनुभव (पा० यं० से०)

२२/२/०७ को उपरोक्त विधि से पाताल यंत्र में प्रथम आंच ऽ२।। सेर की ८।। बजे दी, ९।।। बजे से तेल निकलना आरम्भ हो गया फिर दूसरी आंच ऽ।।≈की १० बजे तीसरी ऽ।।≈की ११ बजे चौथी १। सेर की १२ बजे दी, तेल १२।। बजे निकलना बन्द हो गया, तीसरी आंच तक तेल सफेद रंगत का ६।। तोले निकला, बाद को रक्त पीत श्याम मिश्रित रंग का ३।। तोले निकला। इस प्रकार ७।। छटांक बीजों में ५ सेर की ४ आंचों से ४ घंटे में १० तोले तेल निकला, जले बीज ऽ। पाव भर रह गये। इस बार अधिक बीज निकलने का यह कारण हुआ कि बोतल के मुख की तरफ के कुछ बीज बगैर जले रह गये जिसका कारण यह था कि चौथी आंच राख हठाकर दी जाती

थी, अबकी बार राख न हटाई थी। आगे से अंतिम आंच राख हटाकर ही दी जावे मेरी सम्मति से अब भी आंच का वजन अधिक है आगे से और घटाया जाय।

अंकोल तैल का तीसरी बार अनुभव (पा० यंत्र से)

ता० २३/२/०७ को उपरोक्त विधि के पातालयंत्र में प्रथम आंच २ सेर की ७।। बजे दी, ९ बजे पर तेल निकलना आरम्भ हो गया, दूसरी आंच ऽ।। सेर की ९ बजे, तीसरी ऽ।। सेर की १० बजे, चौथी ऽ१ सेर की ११ बजे राख निकालकर दी तीसरी आंच के सुलग जाने तक सफेद सी रंगत का तैल ३।। तोले निकला पश्चात् इसी आंच के तीव्र होने पर रक्त पीत श्याम रंगत का तेल आने लगा ११।। बजे तक ४ तोले और निकला फिर निकलना बंद हो गया इस तरह ७।। छटांक बीजों में ४ सेर की ४ आंचों से ४। घंटे में ११।। तोले तेल निकला। जले बीज ३।। छटांक निकले आज तेल सब दिन से ज्यादः निकला परन्तु रंगत का बहुत उत्तम नहीं आंच अब भी तेज है, आगे आंच की तोल और कम की जाय।

अंकोल तैल का चौथी बार अनुभव (पा० यं०)

ता० २४/२/०६ को उपरोक्त विधि के पातालयन्त्र में प्रथम आंच ऽ१।। सेर की ७।। बजे दी, ८।। बजे तेल निकलना आरम्भ हो गया, दूसरी आंच ऽ।। सेर की ९ बजे, तीसरी ऽ।। सेर की १० बजे चौथी १ सेर की ११ बजे दी, तीसरी आच तक तेल सफेद सी रंगत का ७।। तोले निकला इस तीसरी आंच के तेज होने पर रक्त पीत श्याम रंगत का निकलने लगा, १२ बजे तक ४।। तोले तेल और निकला। इस तरह ७।। छ० बीजों में ३।। सेर की ४ आंचों से ४।। घंटे में १२ तोले तेल निकला जले बीज ३।।। सेर की ४ आंचों से ४।। घंटे में १२ तोले तेल निकला, जले बीज ३।।। छटांक निकले। सब बार से अबकी बार आंच कम लगी, और सब बार से अधिक तेल निकला यह आंच इस मौसम में ठीक है।

१२ बार के अनुभव के अनंतर पाताल यंत्र से तैलनिष्कासन विषय में सम्मति

मामुली काली बोतल (यदि गोल आतिशी शीशी होती तो अच्छा होता) पर दो कपरौटी कर तैलोपयोगी वस्तु का दलिया बना बोतल में भर जो करीब ७ छ० के आता है, सींक के बराबर मोटे लोहे के तारों से मुखबन्दकर (सींक नहीं क्योंकि वह तेल पर फूल तैल आना बन्द कर देती है) बोतल को एक छोटे नदोरे को एक तिपाई पर जो गजभर के अन्दाज ऊंची हो रख दे (गजभर इसलिये कि नीचे लंबी नली और पात्र आ सके) और तिपाई नीचे कोई छोटे मुंह का बड़ा शीशे का पात्र रख एक बालिश्तभर लंबी शीशे की नली बोतल के मुख और नीचे के पात्र के मुख के बीच इस भांति लगा दे कि सांस न निकले नली लगाने और बड़ा पात्र रखने का यह आशय है कि भाप भली भांति ठंडी होकर एकत्र हो सके बोतल के ऊपर एक टीन का खोल इतना चौडा पहना दे कि जिसमें बोतल के चारों तरफ कम से कम दो (यदि तीन हो तो अच्छा) अंगुल जगह रहै उसमें बालू भर दे और कंडों के दो २ अंगुल के छोटे छोटे टुकड़े कर (बड़े टुकड़ो से आग ज्यादः तेज हो जाती है और बिलकुल चूरे में आँच बैठती नहीं) उस नदोरे में प्रथम बार १।। सेर की आंच लगा दे और डेढ़ घंटे के बाद ऽ।। सेर की दूसरी आंच राख के ऊपर लगा दे, और फिर घंटे भर बाद राख निकाल कर १ सेर की चौथी आंच दे, बस इतने में ही ऽ३।। सेर की आंच से ४।। घंटे अंकोलादि साधारण कठिन चीजों का तेल निकल आवेगा जो तोल में १२ तोले तक होगा आंच का यह हिसाब फाल्गुन की सी हल्की सर्दी के मौसम का है और ऐसे टीन के खोलका है जिसमे बोतल के चारों तरफ दो दो अंगुल रेत रहता था यदि रेत ३ अंगुल रखा जावेगा या अधिक शीतऋतु होगी तो कंडों की तोल थोड़ी बढ़ा देनी होगी और गर्मऋतु होगी तो कुछ घटानी होगी और धनूरादि कठिन चीजों में चार बार से अधिक ६ बार तक भी अग्नि लगाने की आवश्यकता होगी, अब तक के अनुभव से यही निश्चय हुआ है कि पाताल यंत्र द्वारा जो कुछ पदार्थ निकलता है उसको तैल न कहकर चोया कहना उचित होगा, क्योंकि आदि में जो सफेदी माइल उत्तम पदार्थ निकलता है वह जलरूप होता है, और उसमें बहुत कम चिकनाई हती है पीछे से रक्त कृष्णरूप जो कुछ पदार्थ निकलता है, उसमें तैल का अंश कुछ अधिक अवश्य होता है किन्तु इसमें थोड़ी जलायद अवश्य आती है, इसलिये सफेदी माइल पहले निकले चोये को अलग कर देना चाहिये और जब सुर्खी आने लगे तब से उस तैलमिश्रित पदार्थ को अलग रखना चाहिये यदि तैल की आवश्यकता हो तो ऊपर से नितार नितार कर बहुत थोड़ा अर्थात् १ सेर चोये मे आधी छटांक वा १ छटांक तैल संग्रह कर सकते हैं। (१) भापी यंत्रद्वारा भाप दे और निचोड़कर (२) पानी में औटा और नितारकर (३) अंग्रेजी क्रियाओं द्वारा भी तैल निकालने का अनुभव करना योग्य है।

अंकोल तैल का अनुभव औटाकर

१५/३/०७ को पाव भर अंकोल के बीजों को जौकुट कर ५ सेर पानी में १ घंटे औटाया करीब १ सेर के पानी जल चुकने पर ठंढाकर रखा रहने दिया।

तारीख १६ के सबेरे देखा तो पानी के ऊपर बिलकुल चिकनाई न पाई गई अतएव क्रिया निष्फल गई।

मूलीक्षार

१/१९०४ को ७० गड्डी मूली की जड़ और पत्तों की कुटी कर सुखाये गये जो तोल में १।। मन से ज्यादः होंगे सूख जाने पर इनकी राख कर ली गई, फिर राख को ५ से पानी में घोल रैनी चुआ कई बार उलट पुलट कर पानी जला लिया गया तो ३ छटांक के करीब क्षार निकल आया, इस ख्याल से कि पानी कम पड़ने से क्षार राख में गया या फिर राख में पानी डाल रैनी चुआ पानी जलाया गया तो १ छटांक नमक और निकला, कुल क्षार में से श्वेत क्षार पृथक् और मैला पृथक् रखा गया।

मूलीक्षार का दूसरी बार अनुभव

१२/३/०८ दिसंबर के महीने में आई हुई १० सेर हरी कच्ची पतली मूलियों को पत्तों सहित कतर सुखाया गया तो १३ छटांक रही, और अब मार्च में आई हुई १ मन पक्की मूलियों की जड और २८।। सेर मूलियों का पञ्चाग सबको धो गंडासी से कतर सुखाया तो १३ सेर रही, कुल १३ सेर १३ छटांक सूखी मूलियों को जलाया तो २७ छटांक भस्म तय्यार हुई।

ता० १२/३ को उक्त २७ छटांक भस्म में से (जो छान साफ करने पर २६ छटांक ही रह गई थी) आधी १३ छटांक भस्म को ६ गुने अर्थात् ५ सेर पानी में घोल रैनी की तरह २१ बार चुआ लिया जो जल तोल में ४।। सेर रहा।

ता० १४ को कढ़ाई में औटा क्षार बना लिया जो श्वेत रंगन का ४ छटांक ६ तोले तय्यार हुआ किन्तु कहीं २ इसमें पीलापन रहा।

ता० १५ को उक्त अवशेष १३ छटांक भस्म को उसी प्रकार ५ सेर पानी में घोल २१ बार चुआ लिया जो तोल में ४ सेर २ छटांक रहा।

ता० १९ को कड़ाही में औटा क्षार बना लिया जो ३ छटांक ३ तोले सफेद रंगत का और १ छटांक काले रंग का तय्यार हुआ। काला रंग नीचे जल जाने से हो गया था आंच अधिक लग गई थी।

मूलीक्षार का तीसरी बार अनुभव

१२/४/०८– ३० सेर खूब पकी मूलियों की जड़ और १७।। सेर लकड़ी कुल १ मन ७।। सेर को सुखा जलाया तो १४ छटांक भस्म तय्यार हुई।

ता० १२/४ को उक्त १४ छटांक भस्म को ऽ५। सेर पानी में घोल क्षार विधि से २१ बार चुआ लिया तो तोल में ३ सेर रहा।

ता० १४/४ को कड़ाही में औटा क्षार बना लिया जो १६ तोले श्वेत रंग का और ७ तोले कुछ श्यामता लिये हुए अर्थात् कुल ४ छ० ३ तोले क्षार तय्यार हुआ।

सोंठ क्षार

ता० २४/५/०७ को ३ सेर सोंठ को (जो धारकी न थी झंनूरेदार थी) लोहे की कड़ाई में खूब तेज आंच बालनी आरम्भ कर दी करीब पौन घंटे बाद कड़ाई मे स्वतः आंच लग गई और सोंठ फूल फूल कर नीचे गिरने लगी. ऊपर आग लगते ही नीचे की आग मंदी कर दी गई. १५ मिनट बाद ऊपर की आंच मुंठियों के कोयले कर बुझ गई, बाद को नीचे ज्वलित अग्नि को अलग कर कोयले भरे गर्म चूल्हे पर कड़ाई को रखा रहने दिया।

ता० २५ को उक्त भस्म को देखा तो श्वेत श्याम रंग की बहुत हल्की भस्म तय्यार हुई जो तोल में ऽ।ऽसवापाव थी।

पुनः ता० २७/५ को ११। सेर सोंठ बड़े देग में भर ८ बजे तीक्ष्णाग्नि बालनी आरम्भ की और थोड़ी देर तक देग के ऊपर लोहे की परात ढांक दी. १।। घंटे बाद देग के अन्दर भी आंच लगा दी और नीचे की आंच कम कर दी. आध घंटे बाद अर्थात् कुल २ घंटे में सोंठ के कोयले हो गये. पश्चात् चूल्हे से बलती आंच अलग कर जैसे का तैसा चूल्हे पर ही देग रखा रहने दिया।

ता० २८ को भस्म निकली तो.इसका भी पूर्वकृत भस्मका सा ही रूप था. तोलने में १ सेर २।। छटांक हुई, कड़ाई में की गई ३ सेर सोंठ की भस्म का और देग में की गई ११। सेर सोंठ की भस्म का औसत एक पड़ा।

ता० ३० जून को उक्त १४। सेर सोंठ की १ सेर ३।। छटांक भस्म को ८ सेर गोमूत्र में घोल तिपाई में एक टुकरी की साफी बांध उसमें २१ बार लौटपौट कर क्षारविधि से रैनी की भांति दो दिन में अर्थात् ता० १ तक चुवा लिया जो तोल में ४। सेर रह गया, गोमूत्र से इसकी रंगत लाल काली रही।

ता० २ जुलाई को लोहे की कड़ाई में औटा लिया, इसमें श्वेत रक्त रंगत का ऊपर का ३३ तोले और रक्त क्षार निकला, यह क्षार कड़ाही को चूल्हे से उतारने के समय कुछ गीला था धूप में सुखाकर ठीक किया गया था, फिर भी कुछ अंश कृष्ण हो गया, चखने से यह दोनों प्रकार के क्षार काली मिर्च की तरह तिक्त थे. किन्तु कृष्ण क्षार से रक्त क्षार में विशेष तीव्रता थी।

नोट–मालूम होता है कि उपरोक्त कारण से ही अर्थात् कुछ अंश जलकर कमजोर हो जाने के दोषों से ही शास्त्रकार ने इस क्षारयुक्त मूत्र की रैनी का जल ही काम मे लिया है. क्षार नही बनाया।

ता० ७/६/०८ में यह क्षार चुक जाने पर दुबारा सोंठ के क्षार की जगह सोंठ का जल ही बनाकर बिड में लिया गया. जिसकी क्रिया बिड के अन्तर्गत लिखी गई है।

नोट–एक बार रैनीहुई भस्म को दुबारा चुआकर क्षार बनाया तो उसमें दरफ बहुत कम था. अतएव दुबारा निकालना योग्य नहीं।

चीताक्षार

ता० २/७//७ को २० सेर चीते जो जो हाथरस से २।।–) में आया था, और सफेद रंग का था, कड़ाई में भर तीक्ष्णाग्नि से भस्म किया जो तोल में १३ तेरह छटांक हुआ।

ता० ६ को उक्त १३ छटांक भस्म को ऽ६ सेर गोमूत्र में घोल तिखटी में साफी बांध क्षार विधि से रैनी की भांति १८ बार ता० ८ तक चुवा लिया जो तोल में १।। सेर रहा अबकी बार अधिक गोमूत्र सूख जाने का कारण ये मालूम होता है कि कोठे में कच्छप यंत्रों व गंधक शुद्धि की आंच की गर्मी अधिक रही. और लू अधिक चली।

ता० ८ को इसको लोहे की कड़ाही में करीब करीब २ घंटे औटाया तो कोमल क्षार बन गया. अधिक गीला जान गर्म चूल्हे पर रात भर रखा रहने दिया।

ता० ९ को भी किंचित् नमी मालूम हुई अतएव धूप में सुखा कड़ाही से खुरच तोला तो १९ तोले निकला रंगत अच्छी रही किंचित् श्यामतायुक्त रक्तवर्ण था।

ता० १०/७ को पहली ही चीते की राख में जिसकी रैनी चुआ ली गई, यह शंका कर कि गोमूत्र सूख जाने से कदाचित् क्षार इसमें रह गया हो पुनः १।। सेर गोमूत्र और डाल क्षारविधि से १३ बार चुआ लिया, ता० १२ तक।

ता० १२ को तोला तो ऽ।। सेर रह गया, इस ऽ।। सेर को कढ़ाई में औटा लिया जो ३।। तोले बार रक्त कृष्णा रंगत का निकल आया, जो पृथक् नं० २ का कर रख दिया गया।

चीताक्षार

६/४/०८ हाथरस से आये हुए ५) रुपये मन के भाव के २५ सेर चीते की (जिसमें हरा और लाल मिला हुआ था) कढ़ाई में जलाकर की हुई ऽ१।।। सेर भस्म में से जो छानने बीनने पर ऽ१।। सेर ही रह गई थी आधी अर्थात् १२ छ० भस्म को ऽ४।। सेर पानी में घोल २१ बार चुवा लिया। वह जल तोल में २।। सेर रहा।

ता० ९ को औटाकर क्षार बनाया जो तोल में ८ तोले ९ माशे हुआ, रंगत इसकी मैली रही. उक्त अवशेष १२ छटांक भस्म को उसी प्रकार ४।। सेर पानी में घोल २१ बार चुआ लिया वह जल भी तोल में २।। सेर रहा।

ता० १० को औटा क्षार बना लिया जो पहले क्षार की सी ही मैली रंगत का १० तोले तय्यार हुआ।

ता० ११ को दोनों बार की रैनी चुआई जाचु की भस्म को २। सेर पानी मे घोल २१ बार चुआ लिया जो १।।। सेर रहा।

ता० १२ को औटा क्षार बना लिया जो तोल में ४ तोले पहले ही बार के क्षारों की सी रंगत का तैयार हुआ. इस तरह कुल २२ तोले ९ माशे क्षार तय्यार हुआ।

नोट–कीमती भस्म की दो बार रैनी चढ़ानी चाहिये बचा हुआ क्षार दूसरी बार में सब निकल आता है।

चीताक्षार

११/१०/०७ हाथरस से आये ७) मन के भाव के ९ सेर चीते का (जिसमें थोड़ा हरा और बहुत लाल रंगत का मिला हुआ था) कढ़ाई में जलाकर की हुई ६ छटांक भस्म को २। सेर पानी घोल में २१ बार चुआ लिया तो तोल में १।। सेर रहा।

ता० २७ को औटा क्षार बनाया जो कुछ ललोई सी रंगत का ६ तोले तय्यार हुआ।

ओंगाक्षार

२/१२/०७ को २ बोझ ओंगे के पेड़ सुखाकर आंच लगाकर राख कर ली जो २ सेर हुई।

ता० २१ को १ सेर १० छटांक ओंगे की भस्म को छः गुने अर्थात् ऽ९।।। सेर पानी में घोल रैनी की तरह क्षार विधि से २१ बार (ता० २३ तक)

चुआ लिया जो तोल में ७४। सेर रहा।

ता० २३ को औटाकर क्षार बना लिया जो भारी और सफेद रंगका ३।। छ० तय्यार हुआ।

केलाक्षार

ता० ३/१२/०७ को ८ केलों की १ सेर ५।। छ० भस्म को ७ सेर पानी में भिगो रैनी की तरह क्षारविधि से २१ बार (ता० ६ तक) चुआ लिया जो तोल में जल ४ सेर रह गया, बाद को कढ़ाई में औटाकर क्षार बना लिया।

ता० ७ को देखा तो कढ़ाई के चारो तरफ जो पतला क्षार जमा था वह बहुत सफेद रंग का था, और कढ़ाई के पेंदे में मोटा क्षार जमा था, वह कुछ गीला रह जाने से भद्दी रंगत का था, इस गीले क्षार को छुटा फिर अग्नि पर सुखाया तो कुछ श्वेतता आ गई, किन्तु पुरा सफेद न हुआ, यह दोनों प्रकार के क्षार ५ छ० ४।। तोले हुए जो नं० १ समझे गये और इनके अलावह २।। तोले क्षार और निकला जो कुछ मैला था उसको नं० २ कर रखा गया।

नोट–आगे से कढ़ाई बहुत साफ होनी चाहिये और क्षार का पाक हो चुकने पर कढ़ाई को गर्म चूल्हे पर रखी छोड़ देना चाहिये जिससे धीरे २ क्षार भलीभांति शुष्क होकर अच्छा श्वेत हो जावे।

तिलक्षार

ता० ८/१२/०७ को ३३ सेर तिल की लकड़ियों की तय्यार हुई २ सेर १० छ० भस्म में से १ सेर ५ छ० भस्म को ८ सेर पानी में घोल रैनी की तरह क्षार विधि से २१ बार (ता० १० तक) चुआ लिया जो तोल में ५ सेर हुआ।

ता० ११ को कढ़ाई में औया क्षार बना लिया, रात को कढ़ाई गर्म चूल्हे पर ही रखी रही।

ता० १२ को कढ़ाई से निकाला तो बहुत अच्छी सफेद रंगत का ७ छ० क्षार हुआ।

ता० १२ को उक्त अवशेष १ सेर ५ छ० तिलनाल भस्म को उसी प्रकार ८ सेर पानी में घोल २१ बार (ता० १४ तक) चुआ लिया जो तौल में ५। सेर जल हुआ।

ता० १४ को औटा क्षार बना लिया, पाक होने के अनन्तर २ घंटे तक कढ़ाई कोयले भरे चूल्हे पर रखी रही, बाद को निकाला अर्थात् कुल ३३ सेर तिल की लकड़ियों की २ सेर १० छ० भस्म से १४ छ० क्षार बहुत स्वच्छ तैयार हुआ।

कांटेदार थूहरक्षार

ता० ८/२/०८ थूहर को काट सुखा दिया, दूध का वृक्ष होने से और जाडे का मौसम होने से कई महीनों में सुखा।

ता० ८ को ११ सेर ६ छटांक थूहर की सूखी लकड़ियों की १ सेर ६ छ० भस्म को ६ सेर पानी में घोल रैनी की तरह २१ बार चुआ लिया जो तोल में ४ सेर हुआ बाद को कढ़ाई में औटा क्षार बना लिया जो बहुत श्वेत रंग का २२ तोले हुआ।

यवक्षार

ता० ३१/३/०८–१० रुपये में खरीदे कच्चे १/२ बीघे जौ के खेत को जो गद्दर हो गया था, और अभी अध पका था काट सुका जलाया तो ३२ सेर भस्म तैयार हुई, जिसको छाना तो २६।। सेर रह गई, ५।। सेर छानन जुदा रह गया।

उक्त २६।। सेर भस्म में से प्रतिबार १।। सेर भस्म को छः गुने अर्थात् ९ सेर पानी में घोल घोल क्षार विधि से २१ बार चुआ कढ़ाई में औटा क्षार तय्यार कर लिया, प्रति बार में लगभग ५।। सेर रैनी का जल और ८।। छ० क्षार होता था, इस प्रकार १८ बार रैनी चढ़ी और २६।। सेर भस्म में से ९ सेर १४ छ० १ तोले ९ माशे क्षार निकला जिसमें से ८ सेर ७ छ० ३ तोले ९ माशे उत्तम क्षार बहुत श्वेत नं० १० और १ सेर ६ छटांक ३ तोले मध्यम क्षार कुछ मैली रंगत का निकला ५।। सेर राख के छानन को जिसमें कुछ कोयले और कुछ राख थी (कुछ कंकडी भी थी) कंकडी बीन साफ कर ३ घान १ सेर १०।। छटांक के कर उपरोक्त प्रकार से १० सेर पानी में चढ़ा क्षार बनाया तो प्रतिबार में लगभग ६।। सेर रैनी और ६। छ० क्षार बैठा तो कुल १ सेर ३ छटांक तय्यार हुआ, रंगत इसकी मैली रही कारण यह कि इसका रैनी का पानी पीत रंग का था, ये क्षार उपरोक्त मध्यम क्षार में मिला दिया गया, इन तीनों घान में से भी पहले घान की अपेक्षा पिछले दो घान कम मैले थे क्योंकि इनकी रैनी को मैला समझकर एक रात ठहरा निनार साफ कर औटाया और भट्ठी पर अधिक न सूखने दिया, रबड़ी सा हो जाने पर ही नीचे से आंच निकाल कड़ाही को भट्टीपर रखी छोड़ दिया, बस, फिर अपने आप खुश्क होकर क्षार तय्यार हो गया, जो कम मैला रहा। सब क्षार ७।। सेर १ छ० १ तोले तय्यार हुआ, जिसमें उत्तम नं० १–८ सेर ७ छटांक ४ तोले, मध्यम नं० १–७ छ० २ तोले, मध्यम नं० २–१० छ० २ तोले, मध्यम नं० ३–९ छ० ३ तोले, मध्यम नं० ४–१४ छटांक रैनी चढ़ी हुई भस्मों में से अवशेष क्षार निकालने के लिये पुन. २ सेर भस्म को १० सेर पानी में चढ़ा २१ बार लौट (५।।। सेर रैनी का जल रहा) क्षार बनाया तो १६ तोले हुआ, अर्थात् दुबारा में पहली बार बार से १/३ (एक बटावा तीन) तील बैठी और रंगत इसकी बहुत मैली रही, और खान में भी तेजी न थी, अतएव बाकी भस्म में से क्षार निकलना मुलतबी रखा।

(१) अनुभव–जब राख खूब जल जाती है तो उसमें श्वेतता आ जाती है और उसकी रैनी का रंग भी श्वेत निर्मल रहता है, क्षार भी बहुत श्वेत रंग का तैयार होता है, और जब राख कम जलती है तो उसमें कोयले रह जाने के कारण राख काले रंग की हो जाती है, और उसके रैनी के जल की रंगत पीली और क्षार मैला बनता है और तोल में कम बैठता है।

(२) अनुभव–क्षार औटाने समय भी इतना ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि ग्रीष्म ऋतु में जब क्षार तय्यार होने पर आवे और रबड़ी सा गाढ़ा हो जावे तभी आंच बन्द कर कढ़ाई को कोयले भरी भट्ठी पर रखी छोड़ दे फिर उसी गर्मी से सूखकर श्वेत क्षार तय्यार हो जावेगा, यदि इसमें अधिक देर तक अग्नि दी जावेगी तो अग्नि ही गर्मी से तली में जलकर क्षार में श्यामता आ जायेगी।

(३) अनुभव–एक बार की चढ़ी, रैनी को यदि दुबारा चढ़ाया जावे तो उसमें से प्रथम बार की अपेक्षा १/३ (एक बटावा तीन) क्षार मैला और कम तेज निकलता है।

सज्जीक्षार

ता० १९/६/०७ को ऽ। सेर की सज्जी को पीस आठ सेर जल में घोल कर तिखटी के ऊपर टुकरी की साफी बांध उसमें २१ बार लौट पोटकर क्षार विधि से रैनी की भांति तारीख २१ तक चुआ लिया।

ता० २२ को तोला तो ५। सेर जल हुआ, इस पानी को लोहे की कढ़ाई में समाग्नि से २।। वा ३ घंटे में औटाया तो तीन मेल का क्षार बन गया, ऊपर का जो बहुत हलका था और श्वेत था, वह ११ तोले हुआ, और जो जरा भारी सा पीलकाई लिये था वह ६ तोले था, इससे भी जरा और भारी चूरा जो कड़ाही के तलेले लग कर काला हो गया, १० तोले था, कुछ अंश क्षार का कडाही में लगा रह गया, वह जब न छूट सका तब पानी का छींटा दे रात भर रखा रहने दिया।

ता० २३ को खुरचा तो पतली पापड़ी की शकल का १२ तोले और निकला इस तरह ४ मेल का कुल ३९ तोले क्षार हाथ लगा, तीसरे और चौथे नम्बर के २२ तोले क्षार को साफ करने के लिये तामचीनी के पात्र मे अन्दाजन १ सैर की करीब जल भरकर उस्में उसको डाल रख दिया।

ता० २४ को देखा तो नीचे मैल काली रंगत का जम गया, और ऊपर पीली रंगत का पानी रह गया उस पानी को नितार लिया।

ता० २५ को लोहे की कड़ाही में औटाया तो १ घंटे सब पानी जल गया और क्षार उफन कर खजला की शकल का हो गया, इस बार कुछ गीला रखा गया था, अतएव धूप में सुखा तोला तो कुल १९ तोले हुआ, इसकी श्यामता दूर हो गई और रंग स्वच्छ हो गया, इस्तरह १ सेर सज्जी में कुल ३६ तोले क्षार निकला।

सज्जी शुद्धि का अनुभव

ता० २३/५/०७ को शाम को पाव भर काली सज्जी ।) सेर वाली को पीसकर पौन के करीब जल से भरे घड़े में डाल शराब से ढक संधि बन्दकर एकान्त में रख दिया।

ता० ३०/५ तक यह घड़ा कई जगह रखा रहा, खोल कर देखा तो ऊपर खारा पानी पाया और नीचे सज्जी की कीच सी जमी पाई, घड़े के ऊपर कुछ सज्जी का अंश दिखाई नहीं दिया।

नोट–विदित होता है कि या तो सज्जी कमजोर है, या घडा ज्याद: पका हुआ है या पुराना है, नया चाहिये। घट से निकले जल को कड़ाही में जलाया तो ४ तोले २ माशे क्षार श्वेत वर्ण था।

नोट–सज्जी को पीस क्षारक्रियावत् रैनी चुआ क्षार सिद्ध करना ही ठीक होगा।

ता० ९ जून को अर्थात् १७ दिन बाद फिर इस घड़े पर नजर पड़ी तो घड़े के ऊपर सफेद रंग का अधिक अंश देखने में आया, अत एव निर्वात स्थान में चिरकाल तक घड़ा रखने से सज्जी अवश्य शुद्ध हो सकती है।

सज्जी शुद्धि का पुनः अनुभव

ता० १५/६/०७ को ।) सेरवाली ॥ सेर सज्जी को पीस १० सेर के करीब पानी आनेवाली कमोरी को पूरा पानी से भर उसमें उस सज्जी को घोल सरवेसे ढक दिया।

ता० १६ को फिर उसे घोला और कमोरी का मुख सरवेसे बंद कर कपरौटी कर नांद से ढ़क कोठे में रख दिया।

ता० २३ को नाद उठा कमोरी को देखा तो उसके ऊपर सज्जी का अंश प्रत्यक्ष न दृष्टि पड़ा, किन्तु कमोरी के नीचे पानी रिसता सा अवश्य दीख पड़ा, अब कमोरी के ऊपर से नांद अलग कर दी, और कमोरी को जैसे की तैसी रखी रहने दिया।

ता० २५ को फिर देखा तो अब भी कुछ अंश सज्जी का कमोरी के ऊपर न दीख पड़ा, १० दिन तक कुछ लाभ न दीखने से कमोरी से जल पृथक् कर नितार औटा लिया तो ३ छटांक क्षार बैठा, जिसमें से २ छटांक उजला रख लिया, १ छ० जो किंचित् मैला था, गोरीशंकरजी को दे दिया।

नोट–यह क्रिया दो बार की गई फलदाइ नहीं हुई यद्यपि असंभव नहीं है किन्तु झगड़ा विशेष और लाभ शंकित है, अत एव त्याज्य है, यह हांड़ी खाली पड़ी रही, ५ जून को देखा तो सफेदी सी हो गई थी, यदि चिरकाल तक इसमें जल भरा रहने दिया जाता तो कुछ सज्जीक्षार हाथ अवश्य आता।

नौसादर शुद्धि–(पातनद्वारा)

ता० २३/५/०७ को ॥ सेर नौसादर पीस ढाई छटांक जंभीरी का रस डाला गया जिस्में वह रबड़ी सा हो गया, आज घंटे भर घोटा गया, (नौसादर) रस कम चाहता है और मुश्किल से खुश्क होता है।

ता० २४ को ६॥ बजे से ९ बजे तक फिर घोटा गया, ३॥ घंटे की घुटाई में उसमें खुश्की आती गई, परन्तु पूरी खुश्की न आने के कारण साफी से ढककर धूप में रख दिया शाम तक सूखता रहा, खूब सूख गया।

ता० २५ को हांड़ी में भर दूसरी हांड़ी से डमरू यंत्र बना २ कपरौटी कर धूप में सुखने को रख दिया, यह दोनों हांड़िया ऐसी थीं जिनमें चार चार सेर पानी आता था।

ता० २६/५ को यंत्र रखा रहा।

ता० २७/५ को यंत्र के ऊपर की हांडी पर गोबर के लेप का घेरा बना १ प्रहर मन्दाग्नि और तीन प्रहर पहुँचे सी मोटी दो दो लकड़ियों की समाग्नि दी, और गोबर के लेप से खाली पेंदें पर भीगा कपड़ा डालते रहे, पश्चात् यंत्र को चूल्हे पर ही रखा रहने दिया।

ता० २८/५ को खोला तो नीचे के हांड़ी के पेंदे के जितने भाग पर प्रज्वलित अग्नि लगी, उतने में नौसादर न था, ऊपर चढ़ गया था, १२ तोले ऊपर की हांड़ी में उड़ कर जो लगा जो वजन में बहुत हलका फूलसा बारीक और रंगत में बेसनीसा था, नीचे की हांडी के जिस भाग पर प्रज्वलित अग्नि न लगी थी, उस ऊपरी भाग पर १५ तोले नौसादर मिला, उसकी भी रंगत उड़े हुए फूल जैसी ही थी परन्तु यह भारी कड़ा और कच्चे ही जैसा दरदरा था इस नीचे की हांड़ी में २ तोले ऊपर की हांडी कासा अच्छा फूल भी पेंदें में निकला जो शायद ऊपर की हांड़ी में से ही झरपडा होगा और इसमें कुछ काली चीज का भी मेल हो गया था, जो नीचे की हांड़ी का मैल होगा इस तरह ४० तोले नौसादर तीन मेल का कुल २९ तोले वजन मिला, ११ तोले छीज गया।

नोट–क्या नौसादर का वर्ण पातन में पीत हो जाना आवश्यक है, या मंदाग्नि से श्वेत भी रह सकता है।

अवशेष नौसादर का पुनः पातन

ता० ३०/५/०७ को पहली बार के पातन में नीचे की हांड़ी में मिलें १७ तोले नौसादर को साढ़े पांच पांच सेर पानी आने वाले चौड़े मुँह के तौलों में (अर्थात् मिट्टी के खमड़े जिनके किनारे घिस लिये गये थे) रख डीरू कर कपरौटी कर दी गई।

ता० ३१ को १ प्रहर मन्दाग्नि और ३ प्रहर मोटी लकड़ियों की समाग्नि दी गई, बाद को जैसे का तैसा चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० १/६/ को खोला तो १० तोले नौसादर का फूल पहले सा ही किन्तु रंग में कुछ अधिक सुनहरा ऊपर जा लगा नीचे की हांड़ी के पेंदे में करीब ४ माशे के नि:सार मैल और गर्दन में १० माशे नौसादर कुछ उतरी हुई रंगत का दरदरा मिला, ६ तोले छीजन गई, अर्थात् ४० तोले के पातन में २२ तोले फूल मिला।

नोट–नौसादर पातन में चौड़े मुँह के तौले ही ठीक रहेंगे, और ५ सेर पानी आनेवाले पात्र में २५ वा ३० तोले का पातन ठीक होगा, अधिक का पातनकासा उचित नहीं, अग्नि ऐसी हो जो नीचे के पात्र के कुल पेंदे को ढकती रहे अर्थात् जैसी खिचड़ी के नीचे दी जाती है पातन में आधे से कुछ ज्याद: फूल मिलता है, पातन से वर्ण श्वेत रह सकता है वा नहीं इसका निश्चय फिर कभी करने योग्य है।

नौसादर, सुहागा, फिटकरी का सत्त्वपातन

ता० ३/६/०७–१० तोले नौसादर, १० तोले चौकी का सुहागा और १० तोले फिटकरी तीनों को पीसी किन्तु पीसते २ गीला हो गया (गालिबन कमरे में खस की टट्टी लगी रहने से सील पहुँची होगी) इस लिये धूप में रख दिया।

ता० ४/६ को भी फुर्सत न होने से थोड़ी देर पीसा और रखा रहा।

ता० ५ को फिर दो घंटे पीसा किन्तु खूब बारीक न हुआ, तोल में इस समय २५ तोले हुआ, ५ तोले छीजन गई, इस २५ तोले को ५॥ सेर पानी आनेवाले चौड़े मुँह के तोल में रख ढुकरी की दो कपरौटी कर धूप में सुखा दिया।

ता० ६ को यह डौरू धूप में सूखता रहा।

ता० ७ को भी रखा रहा।

ता० ८ को ऊपर की हांड़ी पर गोबर लगा भीगा कपड़ा निचोड़ा हुआ डाल ७ बजे से ७ बजे तक १२ घंटे मंद, मृदु सामान्य अग्नि दी गई, तो पहले सत्त्व पातन से कुछ हल्की थी बाद को यंत्र जैसे का तैसा चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० ९ को खोला गया तो ऊपर उड़ा हुआ ३।। तोले फूल हलका और बिलकुल सफेद रंगत का मिला, नीचे की हांड़ी में ११ तोले काली रंगत का खगर की शकल की दवा निकली, जिसके ऊपर २।। तोले फूल का सफेद रंगत का ढिम्मा कुछ कड़ा मिला ये ढिम्मा ऊपर की हांड़ी से गिर पड़ा था और ऊपर की हांड़ी में उस अंश में जमा था जिस पर भीगा कपड़ा पड़ा था, इस तरह कुल ६ तोले फूल ओर ११ तोले दवा मिली ८ तोले छीजन गई।

अवशेष नौसादरादि का पुनः पातन

ता० १० की नीचे की हांडी का ११ तोले ढिम्मा जो मैली रंगत का था उसे बारीक कर इसमें १। तोले अच्छा फूल भी गलती से मिल गया, इस वास्ते १२। तोले वजन हो गया, किन्तु हांडी में भरते समय जो तोला तो ११। तोले ही रहा, ९ माशे खरल में छीज गया, उक्त ११। तोले को पहली ही बड़े तोले में रख डौरू बना, दो कपरौटी कर धूप में सुखा दिया।

ता० ११ को यह डौरू रखा रहा।

ता० १२ को १२ घंटे मन्द सामान्य आंच दी गई, और ऊपर तीन चार तह का भीगा निचोडा डालते रहे, बाद को जैसे का तैसा रखा छोड़ दिया।

ता० १३ को खोला गया तो ऊपर के तोले के पेट में १ तोले ३ माशे रवादार फूल बहुत श्वेत वर्ण का मिला और इस तोल की गर्दन में ३–४ अंगुल चौड़ा जो चिपटा हुआ मिला, वह भी रंगत का सफेद और फूल ही था, किन्तु इसमें रवे और चमक न थी और तोल में १ तो० २ माशे हुआ, और इसी के नीचे ३ माशे और निकला जो इससे भी मैली रंगत का था, इस तरह ऊपर के तौले में सब २ तोले २ माशे वजन निकला, नीचे के पात्र में ४ तोले १० माशे निकला, जिसमें १ तोले १० माशे मैले रेत की शकल का निकला, और ३ तोले सख्त खंगर की शकल का नीचे निकला, इसके अलावा १।। तोले के अन्दाज चिपटा हुआ खंगार रह गया जो छूट न सका, अर्थात् सब २ तोले ८ माशे उडा हुआ हाथ आया. ४ तोले १० माशे अवशेष निकला, १।। तोले छुट न सका कुल ९ तोले हुआ, ३।। तोले छीजन गई।

नोट–अवशेष वस्तु को दुबारा पातन से कोई लाभ नहीं हुआ, केवल (२ तो० ८ मा० १ तोले फूल जो इसमें गिर पड़ा था) १ तोले ५ माशे हाथ लगा, फल यह हुआ कि, ३० तोले में ७ तोले ५ माशे हाथ आया।

नौसादरादि का तीसरा डौरू

ता० १५ को नौसादर ११ तोले फिटकिरी १० तोले, सुहागां १० तोले तीनों के ३१ तोले वजन को बारीक पीस रख दिया।

ता० १६ को भी थोड़ी देर पीसा और सील जाने से धूप में सुखाया किन्तु थोड़ा सीला रहा, बाद को खरल से निकाल तोला तो २९ तोले रहा, २ तोले छीज गया, इस २९ तोले वजन को पूर्वोक्त तोलों में रख डौरू कर तीन कपरौटी कर सूखने को रख दिया।

ता० १७ को १ प्रहर मन्द और ३ प्रहर समाग्नि दे जैसे का तैसा चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० १८ को खोला गया तो ऊपर के पात्र के पेंदे से २ तोले ९ माशे फूल निकला, यह फूल दानेदार था किन्तु पहली सी सफेदी और चमक न थी, और उसी तौले के पेटे और गर्दन में ३ तोले निकला वह बारीक सफेद किन्तु वजनदार था, इससे कुछ मैली रंगत का ६।। माशे और निकला, और नीचे के तौले के पेटे और गर्दन में १०।। माशे तीसरे नंबर का मैली रंगत का नौसादर और पेंदें में ९ तोले ९ माशे दवा जली हुई की राख मिली, इस तरह ७ तोले २ माशे दवा और ९ तोले ९ माशे राख मिलकर १७ तोले ११ माशे वजन मिला, ११ तोले १ माशे छीजन गई।

नोट–अबकी अग्नि अधिक तीव्र लग गई, और पानी का कपड़ा भी ऊपर न पड़ा था, जिससे नीचे रही वस्तु जल गई, और उड़ी वस्तु का रंग और चमक उत्तम न रही।

नौसादरादि का दुबारा पातन (चौथा डौरू)

ता० २०/६/०७ को प्रथम बार का ४ तोले ७ माशे और द्वितीय बार का १ तो० २ मा० और तृतीय बार ५ तोले ६ माशे कुल ११ तोले ३ माशे वजन को नये तौलों में (जो पहलों से हलके थे और जिनके किनारे घिस लिये थे) भर कपरौटी कर धूप में सुखा दिया।

ता० २१ को ४ प्रहर एक मोटी लकड़ी से जिसकी झर हांडी के पेंदे से बाहर नहीं निकलती थी, मंदाग्नि दी गई और ऊपर भीगा निचोड़ा कपड़ा डाला गया, बाद को जैसे के तैसा रखा छोड़ दिया।

ता० २२ को खोला गया तो नौसादरादि का कुल अंश उड़कर बहुत बारीक फूल हो गया था और सुनहरी रंगत आ गई थी . किन्तु कुल नौसादर ऊपर के ही तौले में न था, आधा एक नीचे की भी हांडी में गिर गया था, ऊपर के में ४ तोले और नीचे के में (३ तोले ३ माशे) व (१ तोले ५ माशे) = ४ तोले ८ माशे निकला। नीचे ऊपर के में कुछ विशेष अन्तर दृष्टि न पड़ता था, किन्तु नीचे के में कुछ भारीपन था इस वास्ते पृथक् पृथक् रखे गये, और उपरोक्त १ तोले ५ माशे नीचे पेंदे की राख के मिल जाने से अधिक मैला हो गया था, और नीचे के तौले का पेट खुरचने से पतली पापड़ी सा १ तोले २ माशे और निकला, इस तरह कुल (११ तो० ३ माशे में) ७ तोले ३ माशे स्वच्छ फूल और २ तोले ७ माशे मैला फूल सब ९ तोले १० माशे वजन मिला, १ तोले ५ माशे छीजन गई।

नौसादरादि का पांचवां डौरू

ता० २३/६/०७ को नौसादर, सुहागा, फिटकिरी सात सात तोले ले बारीक पीसा सील जाने से धूप में सुखा रख दिया।

ता० २४ को तोला तो २१ तोले की जगह छीजकर १७ तोले रहा, इसमें ४ तोले पहले पातनों का मैला फूल मिला दिया गया, कुल २१ तोले को हलके तौले में भर डौरू कपरौटी कर धूप में सुखा दिया।

ता० २५–२६ को डौरू रखा रहा।

ता० २७ को ४ प्रहर मंदाग्नि दी गई, और ऊपर भीगा निचोड़ा कपड़ा डाला गया, बाद को जैसे का तैसा चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० २८ को खोला और तोला तो ऊपरवाले ताले में बिलकुल साफ ९ माशे फूल निकला और ऊपर का गिरा ढिम्मा और ऊपर नीचे के तौलों के पेट और गर्दन से जो छुटाया और जो राख से छूकर मैला हो गया था वह मिलाकर ४ तोले ३ माशे हुआ और जो पोंछने से अधिक मैला हो गया, वह १ तोले १ माशे हुआ, बाकी खंगर की शकल की जली ७ तोले २ माशे राख निकली, इस तरह ३ मेल का कुल ६ तोले १ माशे फूल और ७ तोले २ माशे राख यानी १३ तोले २ माशे वजन निकला, ८ तोले २ माशे छीजन गई।

नोट–इस बार आंच तो मंद दी गई थी परन्तु तोल में हलके होने के कारण और माल कम होने के कारण और ७ बजे सायंकाल तक अग्नि देने के कारण अग्नि अधिक समय तक लगने से नीचे की तल झट जल गई।

नौसादरादि का छठा डौरू

ता० ३०/६/०७ को नौसादर, सुहागा, फिटकिरी आठ आठ तोले ले खरल में पीस सील जाने से धूप में सुखा तोला २४ तोले का २१ तोले रहा, उस २१ तोले में पहले पातन का मैला फूल १ तोले १ माशे डाल २२ तोले १ मासे कर भारे बड़े तोलों में भर कपरौटी कर धूप में सुखा रख दिया।

ता० १/७ को ४ प्रहर मंदाग्नि दी गई, और ऊपर भीगा कपड़ा डाला गया, बाद को जैसे का तैसा चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० २ को देखा तो ऊपर के पात्र में २ तोले ९ माशे सफेद रंग का बारीक फूल मिला और नीचे की तौले की गर्दन में ९ माशे और पेट में १ तोले ४ माशे एक दूसरी से उतरी हुई रंगत का मिला, इस तरह सब चार तोले १० माशे फूल हाथ लगा, और इस फूल के अलावा १ तोला १० माशे और भी फूल नीचे निकला परन्तु यह राख से छूकर अधिक मैला हो गया था, इस वास्ते काम का न समझा नीचे जली राख जो अधिक आंच लग जाने से काली हो गई थी, ९ तोले निकली इस तरह (२२ तोले १ माशे में) ४ तोले १० मा० फूल और १० तोले १० माशे निःसार पदार्थ हाथ लगा, ६ तोले ८ माशे छीजन गई अबकी बार भी अधिक लगी, जिससे नीचे का पदार्थ जल गया।

नौसादरादि के दुबारा पातन का सातवां डौरू

ता० २/७/०७ को ४ तोले ३ माशे और ९ माशे ९ माशे सब ५ तोले फूल पांचवे डौरू और २ तोले ९ माशे व १ तोले ४ माशे तथा ४ माशे व ९ माशे सब ४ तोले १० माशे फूल छठे डौरू का कुल ९ तोले १० माशे वजन को हलके तौलों में रख कपरौटी कर धूप में रख दिया।

ता० ३ को ३ प्रहर मंदाग्नि दी गई और ऊपर भीगा नीचोड़ा कपडा डाला गया, बाद को चूल्हे के नीचे से कोयले निकाल रखा रहने दिया।

ता० ४ को खोला गया तो ऊपर के पात्र में पीली बेसनी रंगत का फूल २ तोले ३ माशे निकला और नीचे के में पीत श्वेत रंग का ढ़िम्मा ५ तोले ३ माशे का मिला जो आंच पूर्ण समय तक न लगने से बेउड़ा रह गया था, इसी ढ़िम्मे के नीचे १ तोले १ माशे मैल निःसार निकला, इससे कुछ अंश इस ढ़िम्मे का भी मिल गया था, इसी तरह २ तोले ३ माशे उड़ा हुआ औण ५ तोले ३ माशे बेउड़ा और १ तोले ७ माशे जला हुआ मैल सब मिलाकर ८ तोले ७ माशे वजन हाथ लगा, १ तोले ३ माशे छीजन गई। अबकी बार आंच कम देर तक लगी इसलिये काम ठीक नहीं हुआ।

नौसादरादि के तिबारा पातन का आठवां डौरू

ता० ४/७/०७ को सातवें डौरू के कच्चे रहे ५ तोले ३ माशे नौसादर को उन्हीं तौलों में भर कपरौटी कर धूप में सुखा दिया।

ता० ५ को ३ प्रहर मंदाग्नि दी गई और ऊपर भीगा हुआ निचोड़ा कपड़ा डाला गया, बाद को जैसा तैसा चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० ६ को देखा तो सब फूल उड़ गया और बहुत स्वच्छ सुनहरी रंगत आ गई, नीचे के तोले के पेंदे में माशे दो माशे काला मैल रह गया—दोनों तौलों में ४ तोले स्वच्छ फूल निकला और ३ माशे फूल नीचे के तौले की तली की राख से छूकर मैला हो गया था और ७ माशे नीचे के तोले के पेट में पोंछकर निकाला था, यह कुछ वजनी और रवादार था, इसलिये १० माशे अलग रखा गया था। इस बार (५ तोले ३ माशे में) ४ तोले फूल और १० माशे मैला फूल मिलाकर ४ तोले १० माशे वजन हाथ लगा, ५ माशे छीज गया।

नोट

(१) पहली बार दुबारा पातन एक बार में ही ठीक हो जाने से निम्नलिखित फल हुआ।

रखा गया	निकला
११ तोले ३ माशे	उत्तमफूल ७ तो० ३ मा०
	मैल २ तो० ७ मा०
	छीजन १ तो० ५ मा०
	११ तो० ३ मा०

(२) अबकी बार दुबारा पातन दो बार में होने से निम्नलिखित फल हुआ।

रखा गया	निकला
९ तोले १० माशे	उत्तम फूल ६ तो० ३ मा०
	मैल १ तो० ११ मा०
	छीजन १ तो० ८ मा०
	९ तोले १० मा०

दोनों बार का नतीजा एकसा ही हुआ अर्थात् स्वच्छ फूल २/३ से कुछ कम हाथ आया।

नौसादरादि के तिबारा पातन का नवां डौरू

ता० ६/७/०७ को दो बार उड़ाया ६॥ तोले बहुत स्वच्छ बेसनी रंग के नं० २ फूल को हल के तौलों में भर कपरौटी कर धूप में सुखा दिया।

ता० ४ को ४ प्रहर मंदाग्नि दी गई और ऊपर भीगा कपड़ा डाला गया, बाद को जैसे का तैसा चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० ८ को खोला गया तो २ तोला ८ माशे फूल ऊपर नीचे के तौलों में उड़ा हुआ मिला, बाकी ३ तोले २ माशे बे उड़ा रह गया, इस तरह कुल (६॥ तोले में) २ तोले ८ माशे स्वच्छ बेसनी रंग का उड़ा हुआ और ३ तोले २ माशे बे उड़ा सब ५ तोले १० माशे माल निकला, ८ मा० छीजन गया।

नोट—इस बार आंच यद्यपि ४ प्रहर लगी, किन्तु बहुत कम लगी, इस कारण सब न उड़ा।

नौसादरादि के तिबारा पातन का दसवां डौरू

ता० ८/७/०७ को दो दफे के उड़ाये नं० १ के ६ तोले फूल को (जो ६॥ तोले रखा था घुटकर ६ तोले रह गया था) उन्हीं तौलों में भर कपरौटी कर रख दिया।

ता० ९ को ४ प्रहर मंदाग्नि दी गई किंतु पहली बार से कुछ अधिक और ऊपर भीगा निचोड़ा कपड़ा डाला गया, बाद को जैसे का तैसा चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० १० को खोला गया तो सब फूल उड़ा हुआ मिला, कुछ ऊपर के तौले में था और कुछ नीचे के में; नीचे ऊपर के फूल को अलग अलग कर तोला तो ऊपर के तौलें में २ तोले ६ माशे फूल बहुत बारीक और स्वच्छ बेसनी रंग का निकला, नीचे के में १० माशे निकला, इन दोनों के रंग रूप में कुछ अंतर न था, किंतु हाथ से छूने में नीचे का किंचित् मोटा मालूम होता था, इस वास्ते इस १० माशे को पहले के तिबारा उड़े २ तोले ८ माशे में शामिल कर नं० २ का कर दिया और ऊपर वाले को दूसरी शीशी में भर नं० १ का कर लिया, ऊपर नीचे के तौले के पोंछने से ७ माशे भारी दरदरा फूल और निकला, इसको पिछले डौरू की बे उड़ी दवा में शामिल कर दिया। इस तरह इस बार (६ तोले वजन में) २ तोले ६ माशे नं० १ और १० नं० २ का मिलाकर ३ तोले ४ माशे उत्तम फूल और ७ माशे दरदराफूल कुल ३ तोले ११ माशे वजन हाथ लगा, २ तोले १ माशे छीजन गई।

नौसादरादि के तिबारा पातन का ग्याहरवां डौरू

ता० १०/७/०७ को नवे डौरू का ३ तोले २ माशे वे उड़ा और दशवें डौरू का ७ माशे दरदरा सब ३ तोले ९ माशे फूल को उन्हीं तोला में रख कपरौटी कर धूप में सुखा दिया।

ता० ११ को ३ प्रहर मन्दाग्नि दी गई और ऊपर भीगा कपड़ा डाला गया। बाद को जैसे का तैसा चूल्हे पर रखा छोड़ दिया।

ता० १२ को खोला गया तो सब फूल उड़ गया, ऊपर के तोले में १ तोले ६ माशे और नीचे के तौले में ५ माशे सब १ तोले ११ माशे फूल बहुत स्वच्छ वेसनी रंग का निकला, ३ माशे फूल नीचे तौले के खुरचने में जो मैले हो जाने से काम का न समझा, इस तरह ३ तोले ९ माशे बजन में १ तोले ११ माशे उत्तम फूल और ३ माशे मैला फूल कुल २ तोले २ माशे बजन हाथ लगा। १ तोले ७ माशे छीजन गई। १ तोले ६ माशे नं० १ में शामिल किया गया, ५ माशे नं० २ में शामिल किया गया।

फल नौसादरादि के सत्त्व पातन का

नं० १ ३६ तो० नौसादर ३५ तोले सुहागा, ३५ तोले फिटकिरी सब १०६ तोले को ४ दफे में उड़ाया तो १ बार का उड़ा २२ तोले अर्थात् २/३ से कुछ कम फल हाथ लगा।

नं० २ इस २२ तोले को जो २१ तोले ही रह गया था, फिर ३ बार में उड़ाया तो दो बार का उड़ा १३।। तोले फूल हाथ लगा अर्थात् २/३ से कुछ कम हाथ लगा।

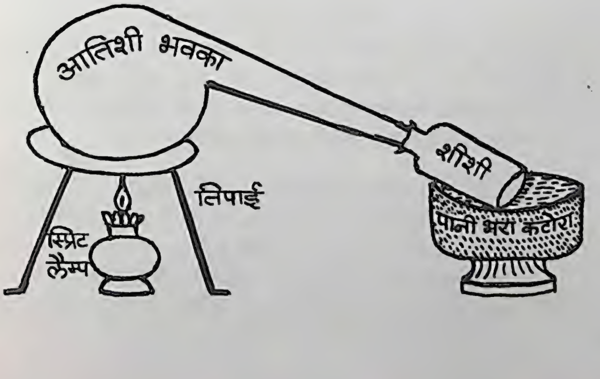
नं० ३ इस १३। तोले को जो १२।। तोले ही रह गया था, फिर ३ बार में उड़ाया तो ७ तोले ११ माशे फूल तिबारा का उड़ा हाथ लगा अर्थात् २/३ से कुछ कम।

मौजूद तोला तीन बार उड़े सत्त्व की

नं० १	४ तोले
नं० २	३ तोले ११ माशे

द्राव

ता० १३/१०/०७ को ५ तोले नौसादर, ५ तोले फिटकरी और ५ तोले जवाखार, अंग्रेजी (Carbonate of Potash) कुल १५ तोले वजन को खरल में पीस आतिशी शीशे के भवके में भर दिया और उक्त भवके को लोहे की तिपाई पर रख उसकी नली को दूसरी चौड़े मुंह की बोतल में प्रवेश कर इस बोतल को पानी भरे कटोरे में तिरछा रख दिया। बोतल का नीचे का भाग पानी में रहा। ऊपर चार पांच तह का भीगा कपड़ा डाल दिया। बाद को ७।। बजे से स्प्रिट की आंच दी। २।। बजे पर भवका चटकने लगा। इस वास्ते काम बंद कर दिया गया। (यह भवका पहले से ही चटका हुआ था, कपरौटी कर कर काम लिया था)



४ बजे से भवके की नली से बोतल अलग कर द्राव को तोला तो २ तोले २०।। माशे स्वच्छ रंगत का द्रव निकला और भवके में १०।। तोले के उक्त तीनों चीजों को ढिम्मा सा निकला जिसके ऊपर नीचे सफेदी और बीच में हलकी कालोंछ थी। द्राव में चखने में बहुत तेज न था और उड़े हुए नौसादर का सा स्वाद था।

सम्मति–थोड़े से द्राव की छोटी प्याली में भर इसमें धेले को डाल रख दिया और रात भर पड़ा रहने दिया। सवेरे देखा तो द्राव गाढ़ा हो गया था और रंगत तूतिये की सी हो गई थी। इससे ज्ञात हुआ कि यह द्राव ताम्र को चरता है।

शुकपिच्छ काँजी का अनुभव

ता० १/१/०९ को नं० १ की २ सेर कांजी में सज्जीक्षार, फिटकिरी, कसीस, सुहागा और लवण २–२ तोले पड़ चुकने के बाद कांजी के ऊपर फैन सा हो गया जो कुछ देर बाद करीब करीब बैठ गया।

ता० ५/१ को देखा तो झाग न थे। कांजी का रंग अभी हरा नहीं हुआ।

सम्मति–शास्त्रकारों ने कांजी से षोड़शांश औषधि लिखी है, इसलिये सब औषधियां मिलाकर षोड़शांश डाली गई थीं किन्तु जब बहुत दिन रखे रहने पर भी कांजी में हरियाई नहीं आई तो यह समझा कि प्रत्येक षोडशांश लेनी चाहिये अतएव ता० २६/१ को उक्त औषधि ५/८ तोले और डाल १०/१० तोले कर दी गई और प्रातःकाल रोज उसे एक बार लौटपौट करते रहे।

ता० १४/२ तक इसी प्रकार किया किन्तु कांजी में हरियाली न आई अतएव ता० १५/२ का गाढ़ी जान थोड़ा पानी मिला ज्यों की त्यों रखी रहने दी।

ता० १७/२ को उक्त कांजी को रैनी की भांति चुआया तो दो दिन रात में भी भलीभांति न निचुड़ कर एक सेर जल नीचे टपका, जो पीली मिट्टी के रंग था और १५ छटांक कांजिक युक्त फोंक रहा जो फेंक दिया और १ सेर जल को उसी पात्र में भरकर रख दिया गया। कभी कभी पात्र को हिलाते रहे और जो हरियाली पात्र में इधर उधर उत्पन्न होती रही उसे खुरच उसी जल में डालते रहे।

ता० २५ को देखा तो पतीला में करीब २ छटांक के जल रह गया था जिसके ऊपर नीला लवण तैर रहा था और कुछ किनारों पर इधर उधर जम रहा था, उस सबको उठा खुरच सुखा तोला तो ७ माशे हुआ। उसे शीशी में भर दिया और उस पतीली में करीब ४ छटांक के कांजी और डाल रख दी गई।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्ल
कृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां तैलनिष्कासनादि
निरूपणं नाम त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ।।४३।।

कल्पाध्यायः ४४

अंकोलबीजकल्प (शहद से)

तद्बीजचूर्णं[1] मधुना पक्षमात्रं च सेवितम् । यः कोऽपि सेवते मर्त्यो जरायुक्तो युवा भवेत् ।।१।।

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–शहद के संग इस अंकोल के बीज के चूर्ण को जो एक पक्ष (१५ दिन) तक सेवन करे वह वृद्धावस्था युक्त भी मनुष्य युवा हो जाता है।।१।।

१–यह कै लाता है।

सर्पविषनाशक अंकोलबीज प्रयोग (शहद से)

एकविंशदिनं तस्य बीजं क्षौद्रसमन्वितम् । भजंतं मानुषं द्रष्ट्वा सद्यः सर्पो मृतिं नयेत् ॥२॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–इक्कीस दिन तक उसके बीजों को शहद में मिलाकर खाते हुए मनुष्य को काटने से सर्प तत्काल मर जाता है अर्थात् इसके सेवन करने वाले व्यक्ति को सर्प का विष नहीं चढ़ता है॥२॥

त्रिफलाकल्प

हरीतक्यास्त्रयो भागा धात्र्या द्वादशभागकाः । षड्भागाश्च बिभीतस्य त्रिफलैका प्रकीर्तिता ॥३॥ खदिरस्य रसे सप्तरात्रं भृंगरसेन वा । विडंगपयसा सप्त सप्तब्रह्मरसेन वा ॥४॥ त्रिफलां भावयेदित्थं भक्षयेच्छर्करासमम् । वलीपलितनिर्मुक्तः सर्वरोगैः प्रमुच्यते ॥५॥

(औ० क०)

अर्थ–हर्ड तीन भाग, आँवला बारह भाग, बहेड़ा ६ भाग इस प्रकार इनका त्रिफला होता है। इसको सात रात्रि तक खैर के रस में फिर सात रात्रि तक भांगरे, सात दिन वायविंडग और सात दिन ढ़ाक के रस में भावना देवे, इस प्रकार भावित त्रिफला को बराबर की खांड कें संग भक्षण करे तो बुढ़ापे की (सफेद बाल उत्पन्न आदि) व्याधि से छूट जाता है और सब रोग दूर होते हैं॥३–५॥

अन्यच्च

त्रिनिष्कमात्रा ह्यभया षण्मितं च बिभीतकम् । धात्री द्वादशनिष्काख्या त्रिफलासूक्ष्मचूर्णितम् ॥६॥ चूर्णं बिडंगखदिरं भृंगराजभवाम्बुभिः । पलेन सप्तधा भाव्यं मासमात्रनिषेवणात् ॥७॥ वलीपलितनिर्मुक्तः षण्मासाद्दिव्यदेहता । इति संवत्सराभ्यासात्सहस्रायुर्भवेन्नरः ॥८॥

(औ० क०)

अर्थ–तीन निष्क (१२ माशे) हर्ड, २४ माशे बहेड़ा, ४८ माशे आंवला ऐसे त्रिफला का बारीक चूर्ण बना के फिर वायविंडग, खैर और भांगरा इनके चार तोले रस में सात सात बार इस चूर्ण की भावना देके एक महीना तक सेवन करे तो सफेद बाल नहीं आते और छः महीने में दिव्य शरीर हो जाता है। इसी प्रकार वर्ष दिन तक अभ्यास करने में हजार वर्ष तक जीवित रहता है॥६–८॥

भांगरे से भावित त्रिफला का कल्प

तद्रसे त्रिफलाचूर्णं भावितं पलितापहम् । त्रिपक्षमात्रं जंतूनां नात्र कार्या विचारणा ॥९ ॥

(औ० क०)

अर्थ–इस भांगरे के रस में त्रिफला के चूर्ण को भिजोकर लगावे तो सफेद बालों को दूर करता है (अर्थात् बाल काले हो जाते हैं) तीन पक्ष अर्थात् डेढ़ महीने में निश्चय मनुष्यों के (काले केश होते हैं) ॥९॥

त्रिफला मकोय भांगरे से भावित कल्प

काकमाचीरसो भृङ्गरसेन सह भावितः । द्वादशाहाद्भवेज्जंतो पलितस्तंभनं परम् ॥१०॥

(औ० क०)

अर्थ–मकोय और भांगरे से भावित त्रिफलाचूर्ण के सेवन से सफेद बाल नहीं होते॥१०॥

दुग्ध से मंडूकब्राह्मी कल्प

मंडूकब्राह्मी संगृह्य शुक्लपक्षे शुभे दिने । पत्रमूलान्विता शोष्या छायायां कृतचूर्णकम् ॥ भक्षयेत्तुगवां क्षीरे सर्वरोगप्रणाशनम् ॥११॥

(औ० क०)

अर्थ–मण्डूकब्राह्मी को शुक्लपक्ष में शुभदिन विषे ग्रहण कर लावे छाया में सुखाकर चूर्ण बना के गौ के दूध के संग पीवे तो सम्पूर्ण रोग दूर होते हैं॥११॥

रुद्रवंती कल्प

रुदंती जरया दष्टं नरं दृष्ट्वा वदत्यपि । मयि च विद्यमानायां कथं क्लिशयन्ति मानवाः ॥१२॥ रुदन्ती नाम विख्याता जराव्याधिविनाशिनी । चणपत्रोपमैः पत्रैर्युक्तांभोबिंदुवर्षिणी ॥१३॥ चतुर्विधा च सा ज्ञेया पीता रक्ता सिताऽसिता । तामौषधीं समासाद्य शुक्लपक्षे शुभे दिने ॥१४॥ छायाशुष्कां च तां कृत्वा भक्षयेन्नियतेन्द्रियः । विरेचं वमनं कृत्वा बिडालपदमात्रया ॥१५॥ भक्षयेन्मधुसर्पिर्भ्यां मासमेकं महौषधम् । जीर्णान्ते भोजनं कुर्याद्दुग्धभक्तं नरो यदि ॥१६॥ दृढ़कायोऽतितेजस्वी सर्वरोगैः प्रमुच्यते । वलीपलितनिर्मुक्तो परमायुस्ततो भवेत् ॥१७॥ सूक्ष्मचूर्णं ततः कृत्वा स्थापयेत्कटुतुंबके । कर्षमात्रप्रमाणेन भक्षयेच्च शुभे दिने ॥१८॥ मधुसर्पिर्भिरालोडच कृष्णगोक्षीरभोजनम् । षण्मासस्य प्रयोगेण वज्रकायो भवेन्नरः ॥१९॥ पंचाङ्गं भक्षयेद्यस्तु सर्वरोगं निवारयेत् । बिडालपदमात्रं तु मधुसर्पिःसमन्वितम् ॥२०॥ जीवेद्वर्षशतं पंच वलीपलितवर्जितम् । पाने लेपे तथा नस्ये विषं हन्ति च भक्षणात् ॥ रुदन्तीमूलचूर्णं तु विडंगेनैव योजितम् ॥२१॥

(औ० क०)

अर्थ–रुदन्ती नामक औषधि बुढ़ापे से पीड़ित हुए नर को देखकर कहती है कि मेरे विद्यमान रहते मनुष्य दुःख क्यों पाते हैं। रुदन्ती नाम से प्रसिद्ध बुढ़ापे की व्याधि को नष्ट करनेवाली चने के पत्तों के समान पत्तोंवाली तथा जल की बिन्दु सदृश बिन्दुओंवाली होती है। वह रुदन्ती पीली, सफेद, लाल, काली इन भेदों को करके चार प्रकार की जाननी चाहिये और उस औषधि को शुक्लपक्ष तथा शुभ दिन में लावे, छाया में सुखा के जितेन्द्रिय हो उसको नित्य भक्षण करे, विरेचन वमन करके इस महान् औषधि को शहद घृत के संग एक तोला प्रमाण खाय, पाचन हो जाने पर दूध चावल का भोजन करे वह नर दृढ़ शरीरवाला, अत्यन्त तेजस्वी हो और सब रोगों से छूट जाता है। सफेद बाल नहीं आते, परम आयु होती है फिर इसके चूर्ण को बारीक कर कड़वी तूंबी में भरकर धरे। एक तोला भर को शहद और घृत में मिलाकर शुभ दिनों में खाय पथ्य भोजन करे और काली गौ के दूध का भोजन करे। छः महीने तक प्रयोग को करे तो सब रोगों से छूट जाता है। इसके पंचांग को भक्षण करे तो सब रोग दूर हो जाते हैं। शहद और घृत के संग एक तोला सदैव इसका सेवन करे तो पांच सौ वर्ष तक जीवित रहता है और सफेद बाल नहीं होते। पान करने से, लेप करने से तथा नस्य लेने से वा लक्षण करने से वायविडंग संग युक्त किया हुआ रुदन्ती का चूर्ण विष को दूर करता है॥१२–२१॥

दुग्ध से तृणज्योति कल्प

रात्रौ प्रज्वल्यते नित्यं तृणेन सदृशं भवेत् । तस्य मूलं समादाय क्षीरमध्ये निवेशयेत् ॥२२॥ तत्क्षणाज्जायते रक्तं तत्तु क्षीरं पिबेद्बुधः । सप्तरात्रप्रयोगेण वलीपलितवर्जितः ॥२३॥ क्षीरेण नियताहारो लवणाम्लं च वर्जयेत् ॥ द्विरष्टवर्षाकारोसौ जीवेद्वर्षसहस्रकम् ॥२४॥

(औ० क०)

अर्थ–जो तृण के समान होती है रात्रि में नित्य अग्नि की तरह प्रकाशित होती रहती है उसकी मूल को लाके (ज्योतिष्मती) मालकांगनी की जड़ को लाकर दूध में भिगो दे, उस दूध को पीवे उसी क्षण में रक्त बढ़े, सात दिन इसके प्रयोग के करने से सफेद बाल नहीं होते, दूध के संग नियमित भोजन करे। खारी तथा खट्टा भोजन नहीं करे तो सोलह वर्ष की अवस्थावाले के समान सुन्दर होकर हजार वर्ष तक जीवित रहता है॥२२–२४॥

सेंभल के पेड़ के रस का सल्प

तद्वृक्षरंध्रे निक्षिप्य सरंध्रां लोहनालिकाम् । विन्यस्य भांडे तस्याधो दहेत्पुटगताग्निना ॥२५॥ तन्निःसृतं रसं यस्तु जनोऽपि मधुना पिबेत् । अनेककामरूपी स्यान्नाना रूपं प्रपश्यति ॥२६॥

(औ० क०)

अर्थ–उस वृक्ष में छिद्र कर उसमें छिद्रवाला लोहे का नल लगाकर उसका मुख वर्तन में धरकर नीचे से गजपुट अग्नि करके आँच देवे उसमें होकर निकले हुए रस को शहद के संग पीवे तो अनेक रूप में प्रवेश होनेवाला हो॥२५॥२६॥

सेंभल की जड़ के रस का कल्प

आदायारुणशाल्मल्यास्तरुणांघ्रिभवं रसम् । सिताक्षौद्रयुतं पीतं कुर्याद्वज्र–निभं वपुः ॥२७॥

(औ० क०)

अर्थ–लाल सा लवण की नवीन जड़ का रस निकाल मिश्री और शहद डाल कर पीवे तो वज्र के समान शरीर होता है॥२७॥

सेंभल की जड़ के रस का कल्प

खन्यते शाल्मलीमूलं सरसं तन्निकृष्यते । ऊर्ध्वं पूर्वमधः पश्चादीर्घं नीत्वा च तत्क्षणात् ॥२८॥ निश्चोत्यते शुभे भांडे गंगानीरसमप्रभम् । पुनर्निवृत्यते नीरं मूलं किंचिन्निकृंत्यते ॥२९॥ पुनराश्चोतते मूलं तत्तस्या भाजने भृशम् । अनेन तु प्रकारेण पुनरन्यत्तदा नयेत् ॥३०॥ एवं क्रमेण कर्तव्यं शाल्मलीसत्त्व–साधनम् । पलं द्विपलमात्रं वा पीयते सत्त्वमुत्तमम् ॥३१॥ अतिशीतमतिश्वेतमतिसौम्यकलामयम् । सर्वरोगोपशमनं जरापलितनाशनम् ॥३२॥ खंडशो याति तद्वक्तं रक्तपीतं महोल्बणम् । रक्तरूपाश्च ये मेहा रक्तप्ररकाणि च ॥३३॥ दाहं ज्वरं महाघोरं तत्क्षणाच्च प्रणाशयेत् । यावन्तो रक्तपित्तोत्स्था रोगास्तानाशु नाशयेत् ॥३४॥ यौवनस्थं वपुः कुर्यात्कलाकांति र्विवर्द्धते । षण्माससेवनाच्च स्यादायुर्वर्षशतत्रयम् ॥३५॥

(र० सा० प०)

अर्थ–सेमर की जड़ खनके गोली उस जड़ के ऊपरी भाग को कुचल कर रस निकाल ले, पीछे नीचे के भाग का रस निकाले। इस प्रकार बड़ी जड़ का क्रमशः जल निकलने पर वह कमती होती जायेगी। सुन्दर स्वच्छ पात्र में उस गंगाजल सदृश रस को रख ले, जहां तक रस निकल सके। इसी प्रकार फिर भी निकालता जावे, इस प्रकार सेमर के सत्त्व का साधन करना चाहिये। तैयार हो जाने पर एक वा दो पल वह पिया जाता है। वह बहुत ठंडा, अति सफेद, बहुत सुन्दर कलायुक्त, सब रोगों का नाशकारी; वृद्धावस्था और बालों के पकने को नाश करनेवाला है। लाल या पीले वर्ण का कैसा ही रुधिर हो उसके विकार तथा रक्तप्रमेह और रक्तप्रदरों को तत्काल नाश करता है। दाह भयंकर ज्वर को शीघ्र नाश करता है, रक्तपित्तजन्य सभी रोगों को नाश करता है, देह में नई जवानी का सञ्चार करता सुन्दरता को बढ़ाता है। इसके ६ महीने में सेवन करने से तीन सौ वर्ष की आयु होती है॥२८–३५॥

सेंभल के फूल के स्वरस का कल्प

तत्पुष्पस्य रसं पीतं बालार्ककरसन्निभम् । कलाभिर्निखिलाभिश्च तत्पूर्णः सुभगो भवेत् ॥ अनेककालजीवी स्याद्रमते च यथा सुरः ॥३६॥

(औ० क०)

अर्थ–उसके पुष्प के रस को पीवे तो उदय होते हुए सूर्य के समान (लाल) कांतिवाला होता है। सब कलाओं के परिपूर्ण ऐश्वर्यवान् हो अनेक वर्ष तक जीवे और देवताओं की तरह रमण करता है॥३६॥

सेंभल के फूल के चूर्ण का कल्प

पुष्यार्के मधुना तस्याः प्रसूनजनितं रजः । आज्येन सेवनं कुर्याद्बलं तद्वत्पराक्रमम् ॥३७॥

(औ० क०)

अर्थ–जब पुष्प नक्षत्र पर सूर्य आवे उस दिन उसके पुष्प की रज शहद और घृत के संग सेवन करे तो बल पराक्रम की वृद्धि होती है॥३७॥

बाजीकर पूप (पूये वा गुलगुले)
सेंभली की जड़ के

तन्मूलबाजिगंधाभ्यां युताभ्यां माषशर्करा । घृतेन शोभितापूपानेकविंशदिने भवेत् ॥३८॥ नवनागबली श्रीमानम्लक्षारं न सेवयेत् । प्रगल्भकामिनीवृन्दम दनिमर्थनक्षमः ॥३९॥

(औ० क०)

अर्थ–उस (सेंभल) की जड़ असगंध, खांड, उर्दों का चून इन सब के साथ घृत में पकावे हुए मालपूओंको इक्कीस दिन तक भक्षण करे तो नव हाथियों के समान बलवान और शोभवान् होता है। खट्टा और खारी पदार्थ खानानहीं चाहिये, ऐसा करने से स्त्री समूह के कामदेव का मंथन करने में समर्थ होता है॥३८॥३९॥

सेंभल के फूल का मर्दनार्थ तैल

तत्पुष्पभृंगराजाभ्यां तैलमुत्पलकंदजम् । पाचितं स्वशरीरे च केशपादविलेपितम् ॥ सप्ताहात्पलितं हन्ति कपाले केशरंजनम् ॥४०॥

(औ० क०)

अर्थ–उस सेंभल के पुष्प, भंगरा, कमलकन्द तेल इन सबको पका के अपने शरीर में तथाबाल और पैरों में लगाने से सात दिन में बुढ़ापे के सफेद बालों को दूर कर उनको काला करता है॥४०॥

दूध से मूसली कल्प

पयसा मुसलीचूर्णं शुद्धकायः पिबेत्सुधीः । शतमायुरवाप्नोति शतस्त्रीगमने पटुः ॥४१॥

(औ० क०)

अर्थ–दूध के संग मुसली के चूर्ण को शुद्ध शरीरवाला होके खावे तो सौ वर्ष की अवस्थावाला और सौ स्त्रियों के संग रमण करनेवाला होता है॥४१॥

दूध से पुष्टिकर मूसली प्रयोग

क्षीरेण पीता सा हन्याद्वक्षोरुक् कृष्णकायताम् ॥४२॥

(औ० क०)

अर्थ–दूध के संग पी हुई यह मूसली छाती का रोग, शरीर का कालापन इनको दूर करती है॥४२॥

घी शहद से मूसलीकल्प

मूलं तस्याः समुद्धृत्य च्छायाशुष्कं सुचूर्णितम् । मधुसर्पिर्युत भुतं देहः शुद्धो शुभे दिने ॥४३॥ जीर्णे क्षीरेण भोक्तव्यं वातलानि विवर्जयेत् । वलीपलितनिर्मुक्तो मासयोगेन मानवः ॥४४॥

(औ० क०)

अर्थ–इसकी जड़ को छाया में सुखाकर चूर्ण बनावे फिर शहद और घृत के संग शुभ दिन में खाने से कोष्ठ की शुद्धि होती है औषधि जर जावे तब दूध के संग भोजन करे और बादी करनेवाले पदार्थों का भक्षण न करे॥४३॥४४॥

अन्यच्च

अतिश्वेता च मुसली कृष्णापि मुसली स्मृता । तन्मूलं च समुद्धृत्य च्छायाशुष्कं विचूर्णितम् ।।४५।। कर्षमध्वाज्यसंयुक्तं प्रातः शुद्धः समुल्लिहेत् । जीर्णे दुग्धान्नभोजी स्यात्क्षारान्नं तु विवर्जयेत् । षष्ठे मासि भवेद्बालो वृद्धोऽपि लभते धियम् ।।४६।।

(औ० क०)

अर्थ–प्रातःकाल शौचादि से शुद्ध होकर शहद अथवा घृत के संग एक तोला खावे औषधि का पाक होने पर दूध का भोजन करे, खारी और चर्परे भोजन का परित्याग कर देना चाहिये, छठे महीने में बालक अथवा वृद्ध हो तो भी बुद्धिमान् हो जाते हैं।।४५–४६।।

घी से वाजीकरमूसलीप्रयोग

घृतेन सहितं तस्य चूर्णं वीर्यविवर्द्धनम् ।
नारिकेलाम्बुना पीतं शिरोविस्फूर्तिनाशनम् ।।४७।।

(औ० क०)

अर्थ–घृत के संग इसके चूर्ण को भक्षण करे तो वीर्य वृद्धि होती है। नारियल के जल के साथ पीवे तो शिर की भड़क दूर होती है।।४७।।

दुग्ध से मुंडीचूर्ण कल्प

छायाशुष्कं च तच्चूर्णं कर्षं गोपयसासह । वर्षकेन रुजं हंति जीवेद्वर्ष–शतत्रयम् ।।४८।।

(औ० क०)

अर्थ–छाया में सुखाया हुआ मुंडी का चूर्ण १० माशे गौ के दूध के साथ एक वर्ष तक पीवे तो मत्र पीड़ा दूर हो और तीन सौ वर्ष तक जीवित रहता है।।४८।।

तक्रादि से मुंडीपञ्चांग कल्प

भिक्षूत्तमांगपरिकल्पितनामधेयं तत्पत्रपुष्पफलदंडसमूलचूर्णम् । तक्रारनालपयसा मधु वारिणाज्यं षण्माससेवन नरा न जरामरत्वम् ।।४९।।

(औ० क०)

अर्थ–गोरखमुंडी के पत्र, पुष्प, दंड, मूल और फल इस पंचांग के चूर्ज को तक्र, कांजी, दूध, शहद और घृत के संग सेवन करनेवाले जन बुढ़ापे से रहित होकर अमर होते हैं।।४९।।

ढाकफूल प्रयोग कल्प

आतपे शोषितं तस्य प्रसूनजनितं रजः क्षीरेणार्द्रीकृतं स्निग्धभांडे विन्यस्य संस्थितम् ।।५०।। एवं विंशदिनादूर्ध्वं सुमुहूर्ते शिवान्तिके । तद्भक्षेत्पयसाहारं कांजिकाम्लादिवर्जितम् ।।५१।। एकविंशदिनात्तस्य कल्पेन खेचरो भवेत् । बलेन जायते भीमसेनतुल्यपराक्रमः ।।५२।। जरामरणनिर्मुक्तो न कदाचित्क्षयं व्रजेत् । तद्वच्चूर्णं समादाय पलमात्रं पिबेद्यदि ।।५३।। चतुष्पलेन दुग्धेन मासमात्रं न संशयः । तन्मूत्रेण प्रशांतोष्णं ताम्रं स्वर्णत्वमाप्नुयात् । अनेककालजीवी स्यात्कंदर्प इव मूर्तिमान् ।।५४।।

(औ० क०)

अर्थ–ढाकके पुष्पों को घाम में सुखाकर उनकी रज को दूध में भिजो कर चिकने बर्तन में धरे। इक्कीस दिन पीछे सुन्दर मुहूर्त में शिवजी की मूर्ति के समीप दूध के संग उसको भक्षण करे और कांजी आदि खट्टे पदार्थों के भोजन का परित्याग कर देना चाहिये, इक्कीस दिन तक इस कल्प का सेवन करने से आकाश में उड़ने (गमन करने) वाला हो जाता है और बल में भीमसेन की बराबर पराक्रमवाला होता है। वृद्धावस्था और मृत्यु से रहित होकर कभी नष्ट नहीं होता और इसी प्रकार के इस चूर्ण को एक पल (४ तोले) ग्रहण कर चार पल (सोलह तोले) दूध के संग केवल एक महीने तक पीवे तो उस मनुष्य के मूत्र में बुझाया हुआ तप्त तांबा सोना हो जाता है और बहुत चिरायु होता है और कामदेव के समान सुन्दर रूपवान् होता है।।५०–५४।।

तक्र से ढाकपत्र कल्प

पत्राणि ब्रह्मवृक्षस्य कोमलानि विशेषतः । छायायां शोषयित्वा तु लोहभांडे विनिक्षिपेत् ।।५५।। सूक्ष्मचूर्णं विधायेत्थं ब्रह्मचारी विशेषतः । गृहीत्वा चैव पुण्याहे सुलग्ने सुमुहूर्तके ।।५६।। मंगलं च प्रकर्तव्यं प्रारंभे हि विचक्षणैः । पलं चूर्णस्य संगृह्य तक्रेण सह यः पिबेत् ।।५७।। जीर्णान्ते भोजनं पथ्यं लवणाम्लविवर्जितम्। तृषितस्तु पिबेत्क्षीरमथवा शीतलं जलम् ।।५८।। मासमात्र–प्रयोगेण जायते ह्यमरोपमः । षण्मासस्य प्रयोगेण कर्णिकारसमद्युतिः । सहस्रायुर्भवेद्धीमान्वलीपलितवर्जितः ।।५९।।

(औ० क०)

अर्थ–ढाक वृक्ष के कोमल पत्तों को छाया में सुखा लोहे के बतर्न में भर कर विशेष करके जितेन्द्रिय हुआ उनका सूक्ष्म (बारीक) चूर्ण बनावे फिर पवित्र दिन शुभलग्न और अच्छे मुहूर्त में ग्रहण करे पंडितजनों ने इसके आरम्भ में मंगल करना भी कहा है, इस चूर्ण को एक पल ग्रहण करे, छाछ के संग पीवे, पच जाने के बाद पथ्य लवण और खटाई से वर्जित भोजन करे, जब तृषा लगे तब दूध अथवा शीत जल पीवे, तीन महीने तक इस प्रयोग के करने से देवताओं के समान हो जाता है, छः महीने तक सेवन करने से अमलतास अथवा कन्हेर के समान लाल पुष्ट शरीर होता है और हजार वर्ष की आयुवाला बुद्धिमान सफेद बालों से वर्जित होता है।।५५–५९।।

दुग्ध से ढाक छाल कल्प

वल्कलं ब्रह्मवृक्षस्य सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् । तच्चूर्णं तु शुभं ग्राह्यं गवां क्षीरेण यः पिबेत् ।।६०।। पयसा सह भुंजीयाल्लघ्वाहारो जितेन्द्रियः । संवत्सरप्रयोगेण चैवं भवति लक्षणम् ।।६१।। तस्य मूत्रस्य षण्मासाल्लोहं भवति कांचनम् । शतवर्षसहस्राणि स जीवेन्नात्र संशयः ।।६२।।

(औ० क०)

अर्थ–ढाक वृक्ष की छाल का सूक्ष्म चूर्ण बना करके उस शुभ चूर्ण को ग्रहण कर गौ के दूध के साथ पान करे और दूध के साथ हलका भोजन करे। जितेन्द्रिय रहे तो वर्ष दिन के प्रयोग से ऐसा लक्षण होता है कि उसके मूत्र में छः महीने तक लोहा सुवर्ण हो जाता है और सैंकड़ों हजारों वर्षों तक वह जीवित रहता है, इसमें संदेह नहीं ।।६०–६२।।

सफेदढाक के पञ्चाङ्ग का कल्प

श्वेतपालाशपञ्चाङ्गं चूर्णितं मधुना सह । कर्षकं भक्षयेन्नित्यं व्याधिमृत्युजरापहम् ।। ब्रह्मायुर्जायते सिद्धिः स्पर्शमात्रे न संशयः ।।६३।।

(औ० क०)

अर्थ–सफेद ढाक के पंचांग के चूर्ण को शहद के संग एक तोला सदैव भक्षण करे तो व्याधि, मृत्यु, बुढ़ापा ये सब दूर होते हैं, ब्रह्मा के समान आयु होती है और स्पर्शमात्र ही निःसन्देह सिद्धि हो जाती है।।६३।।

ढाक के पत्ते फूल बीज का कल्प

पत्रं पुष्पं फलं ग्राह्यं सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् । कृष्णगोक्षीरसंयुक्तं भक्षयेद्वा समाहितः । द्विरष्टवर्षकायोऽसौ जीवेद्वर्षशतत्रयम् ।।६४।।

(औ० क०)

अर्थ–इस ढाक के पत्र, पुष्प, फल, ग्रहण कर सूक्ष्म चूर्ण बनावे, काली गौ के दूध के संग पीवे अथवा सावधान होकर भक्षण करे तो यह सोलह वर्ष की अवस्था सरीखा होकर तीन सौ वर्ष तक जीवित रहता है।।६४।।

ढाकबीज एकएक का कल्प

एकैकं भक्षयेद्बीजं तिलशर्करया सह।संवत्सरप्रयोगेण श्रृणु बक्ष्यामि तत्फलम्।

पूर्वोक्तानां फलं तत्तु यत्फलं तस्य जायते ।।६५।।

(औ० क०)

अर्थ—तिल और खांड के संग ढ़ाक के एक एक बीज को वर्ष दिन तक भक्षण करे, इसके फल को सुनो, कहता हूं।।६५।।

घी शहद से ढ़ाकबीज कल्प

पलाशबीजचूर्णं समभागाभ्यां मध्वाज्याभ्यां सहितमग्निबलानुसारेण निद्राकाले भुक्त्वा पुरुषो जयति ।।६६।।

(औ० क०)

अर्थ—बराबर भाग शहद और घी के साथ ढ़ाक के बीजों के चूर्ण को बल और अग्नि के अनुसार सोने के पहले सेवन करे तो बल की वृद्धि होती है।।६६।।

ढ़ाकबीज प्रयोग कल्प

धात्रीरसेन तद्बीजचूर्णं सम्यग्विभावयेत् । सप्ताहं पयसा तद्वच्छोषयित्वा ततः पुनः ।।६७।। सप्ताहं सेवनात्तस्य दूरदृष्टिर्भवेन्नरः । तेजसा सूर्यसंकाशो ह्याह्लादे चन्द्रमा इव ।।६८।। अतिदारुणवेगेन वायुं बुद्ध्या बृहस्पतिम् । वाचा सरस्वतीं जित्वा जीवेदाचंद्रतारकम् ।।६९।।

(औ० क०)

अर्थ—इसके बीजों के चूर्ण का आँवले के रस में अच्छे प्रकार से भावना दे फिर उसी तरह सात दिन तक दूध में भिज़ोये रखे, फिर पीछे से सात दिन तक उसका सेवन करने से दूर तक दृष्टि पहुँचानेवाला नर होता है, सूर्य के समान तेजवाला और चन्द्रमा के समान आनन्ददायी प्रिय शीतल हो जाता है। अत्यन्त दारुण वेग के द्वारा पवन को वुद्धि से बृहस्पति को एवम् वाणी करके सरस्वती को जीत के चन्द्रमा और तारागण विद्यमानता पर्य्यत जीवित रहता है।।६७–६९।।

ढ़ाकबीज से सिद्ध घी का प्रयोग कल्प

पलाशबीजचूर्णं तु प्रथमे चैव गृह्यते । भाद्रे वा श्रावणे वापि द्विगुणं च पचेत्पयः ।।७०।। विश्राम्य दिनमेकं तु स जातं च भवेदपि । दधिमंथप्रयत्नेन नवनीतं च गृह्यते ।।७१।। समुद्धृत्य प्रयत्नेन यवान्नसहिताशनः । भोजनं शालिभक्तेन गवां क्षीरेण संयुतम् ।।७२।। मासैकं ब्रह्मचूर्णेन वालीपलितवर्जितः । श्रुतिज्ञः सर्वतत्त्वज्ञो जीवेद्वर्षशतत्रयम् ।।७३।। गोक्षीरशालिभोजी स्यात्क्षाराम्लमपि वर्जयेत् । सर्वेषामपि योगामानामयं श्रेष्ठः प्रकीर्तितः ।।७४।। सर्पवृश्चिकदंशोत्थं कीटवानरसंभवम् । स्थावरं जंगमं चापि कृत्रिमं चापि यद्विषम् । अजीर्णं विविधं भूतं सर्वत्र विषनाशनम् ।।७५।।

(औ० क०)

अर्थ—पहले ढ़ाक वृक्ष के बीजों का चूर्ण श्रावण अथवा भाद्रपद महीने में ग्रहण करे उसमें दूने दूध को पकावे फिर एक दिन बासी धर देवे फिर जब वह जम जावे तब दही बिलोने की क्रिया से उसमें से नैनीघृत निकाले यत्नपूर्वक निकाले हुए घृत को यव (जौ) अन्न के संग भोजन करे और दूध के साथ साठी चावलों का भोजन करे, एक महीने तक (पूर्वोक्त) ढ़ाक के चूर्ण के साथ सेवन करने से सफेद बाल नहीं होते और सेवनकर्ता बलिष्ठ होता है। वेद और सब तत्वों के जाननेवाला, तीन सौ वर्ष तक जीवे, गौ का दूध और चावलों का भोजन करे, नमक और खटाई का त्याग देना चाहिये। सब योगों में यह श्रेष्ठ कहा है। सर्प बिच्छू के डसने से उत्पन्न तथा कीड़े वानरादि से उत्पन्न स्थावर जंगभ कृत्रिम विष और अनेक प्रकार का अजीर्ण सब विष इन सबों को नष्ट करनेवाली है।।७०–७५।।

घी से ढ़ाकतैल प्रयोग कल्प

ब्रह्मतैलं पलं ग्राह्यं घृतेन सहितं पिबेत् । महायोगी भवेत्प्राज्ञो मूर्खश्चैव प्रजायते ।।७६।। क्षीराहारप्रयत्नेन मासमेकं पिबेन्नरः ।। अदृश्यो जायते सोपि छिद्रं पश्यति मेदिनीम् ।।७७।। अग्निना दह्यमानोऽपि तस्य मृत्युर्न जायते । दशवर्षसहस्राणि वलीपलितवर्जितः ।।७८।।

(औ० क०)

अर्थ—ढ़ाक का तैल एक पल ग्रहण कर घृत के साथ उसको पान करे, वह यदि मूर्ख हो तो भी महायोगी और बुद्धिमान् हो जाता है और जो व्यक्ति दूध का आहार करे एक महीने तक पीता है वह अदृश्य हो जाता है। पृथ्वी के छिद्र में देखने की शक्ति होती है और यदि वह अग्नि में भी जल जाय तो भी उसकी मृत्यु नहीं होती है, दस हजार वर्ष तक उसके बाल सफेद नहीं होते।।७६–७७।।

घी व शहद से पलाशतैल प्रयोग कल्प

पातालयंत्रमावृत्य पलाशतरुबीजकम् । निष्कद्वयमितं तैलं मध्वाज्येन समं पिबेत् ।।७९।। मासमात्रेण योगीन्द्रो नक्षत्राण्यपि पश्यति । अनेककालं जीवी स्यात्प्रियो मान्यः सुरासुरैः ।।८०।।

(औ० क०)

अर्थ—पलाश के बीजों को पातालयंत्र में धारण कर उनका तैल निकाले। २ निष्क (९ माशे) प्रमाण उस तेल को शहद और घृत के साथ पान करे। एक महीने तक पीने से योगीन्द्र होकर नक्षत्रों को भी देखने की शक्ति आ जाती है और अनेक वर्षों तक जीवित रहकर देवता और दैत्यों का प्रिय मान्य होता है।।७९।।८०।।

घीशहद ब्राह्मीरस से ढ़ाकतैल प्रयोग कल्प

ब्रह्मतैलं मधु घृतं ब्राह्मीरससमन्वितम् । समभागानि सर्वाणि चोपभुंजीत साधकः ।।८१।। मासमात्रप्रयोगेण दिवा पश्यति तारकाः । षण्मासस्य प्रयोगेण सिद्धिर्भवति नान्यथा ।।८२।। ब्रह्मकोटिसहस्राणि विष्णुकोटिशतानि च । तैश्च सर्वैः परीवर्त्य तस्य मृत्युर्न जायते ।।८३।। सत्यमेतत्समाख्यातं तव स्नेहेन पुत्रक । गुह्याद्गुह्यतरं सारं साधकार्थमनुत्तमम् ।।८४।।

(औ० क०)

अर्थ—ढ़ाक का तेल, शहद, घृत, ब्राह्मी का रस इन सबको समान भाग लेकर साधक जन इनका सेवन करे, तीन महीने तक इस प्रयोग के करने से दिन में तारागण को देखने की सामर्थ्य होती है, छः महीने के प्रयोग से निश्चय सिद्धि होती है और हजारों करोड़ ब्रह्मा और सैंकड़ों करोड़ विष्णु वर्त जावें तब तक भी उसकी मृत्यु नहीं होती। हे पुत्र! तेरे स्नेह से मैंने गुप्त गुप्त से गुप्त सार साधकजनों के हित के वास्ते यह कल्प कहा है।।८१–८४।।

अन्यच्च

तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां लोहं भवति कांचनम् । वर्षाणि त्रीणि द्वे वाऽपि षण्मासमथवाऽपि च ।।८५।। अथवा वर्षमेकं तु ब्रह्मतैलं पिबेन्नरः । देहे हेम प्रजायेत स्वयं चैवाक्षयो भवेत् ।।८६।। प्रयत्नेन नमस्कृत्य स्वयं देवेन भाषितम् । द्वितीयं कथितं वत्स तृतीयं श्रृणु षण्मुख ।।८७।। तैलाज्यमधु संगृह्य मध्वाज्वकुडवं पिबेत् । तस्य पीतस्य तु फलं श्रृणु वक्ष्यामि तत्त्वतः ।।८८।। संवत्सरप्रयोगेण त्विदं भवति लक्षणम् । अग्निना नोदकेनापि तस्य मृत्युर्न जायते ।।८९।। इतिहासपुराणानां श्रोता श्रुतिधरो भवेत् । तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्बं भवति कांचनम् ।।९०।। यस्त्वनेन विधानेन द्वादशाब्दं करोति वै । स्वेनैव शरीरेण ब्रह्मलोकं स गच्छति ।। एतत्तु परमं गुह्यं नाख्यातं कस्यचिन्मया ।।९१।।

(औ० क०)

अर्थ—उसके मलमूत्र से लोहा सुवर्ण हो जाता है, जो मनुष्य तीन वर्ष, दो वर्ष, अथवा वर्ष किवा छः महीने तक इस ब्रह्मतैल को पीवे उसके शरीर में सोना उत्पन्न हो और अक्षय आयुवाला हो जावे यत्न से प्रणाम कर आप शिवजी ने कहा है, हे पुत्र स्वामिकार्तिक! दूसरा यह योग कहा अब तीसरे योग को सुन–तेल, घृत, शहद इनको ग्रहण कर शहद और घृत (तेल)

इनको कुडव (सोलह तोला) प्रमाण पान करे, उसके पीने का फल सुनो मैं यत्न से कहता हूं वर्ष दिन का प्रयोग (सेवन) करने से वह लक्षण होता है कि अग्नि अथवा जल से उसकी मृत्यु नहीं होती और वह इतिहास पुराणों को सुननेवाला एवं वेद को धारण करनेवाला होता है उसके मल मूत्र से तांबा सुवर्ण हो जाता है, जो इस विधि से बारह वर्ष तक करे वह अपनी उसी देह से ब्रह्मलोक में प्राप्त होता है यह प्रयोग परम गुप्त है, मैंने प्रथम यह किसी से नहीं कहा है।।८५–९५।।

ढाक तैल प्रयोग कल्प

ब्रह्मवृक्षस्य बीजानि वितुषीकृत्य बुद्धिमान् । अथ धात्रीरसेनैव अजाक्षीरेण भावयेत् ।।९२।। सप्ताहं शोषयित्वा च योजयित्वा विचक्षणः । बीजं यंत्रे ततः क्षिप्त्वा तैलं संगृह्य यत्नतः ।।९३।। तत्तैलं पलमात्रं तु पाययित्वा विधानतः । तस्य कर्म प्रवक्ष्यामि मनुष्याणां हिताय च ।।९४।। एकमासप्रयोगेण क्षीराहारः प्रयत्नतः । द्विगुणं परिहारोऽसौ सतैलगुडवर्जितः ।।९५।। श्रुतं च धारयेद्वीरः षोडशाब्दः शुभाकृतिः ।। सुवर्णवर्णसदृशो रूपवांश्च महाद्युतिः ।।९६।। षण्मासस्य प्रयोगेण जीवेद्वर्षसहस्रकम् । प्रथमं ते समाख्यातं द्वितीयं शृणु षण्मुख ।।९७।। अहं सम्यक् प्रवक्ष्यामि तव स्नेहेन पुत्रक । तैलस्य पलमात्रं तु मधुना सह यः पिबेत् ।।९८।। इतिहासपुराणानां श्रोता वक्ता च जायते । निधानमद्भुतं पश्येद्भूमेराकाशगामिनः ।।९९।। मेधाविनः सुपुत्राणां सहस्रं लभते नरः यांयां कामयते नारी सा भवेन्नवयौवना ।।१००।।

(औ० क०)

अर्थ–बुद्धिमान् जन ढाकवृक्ष के बीजों का तुष (ऊपर का छिलका) उतारकर फिर आंवले के रस में और बकरी के दूध में भावना देवे सात दिन तक उन्हें सुखाके पंडितजन बीज को यन्त्र में धारण कर यत्न से उनका तेल निकाले उस तेल को विधि से एक पल (४ तोले) पिला देवे उसके कर्म को मनुष्यों के हित के लिये कहता हूं, एक महीने तक प्रयोग करने से और यत्नपूर्वक दूध का आहार तथा तैल और गुड़ का त्याग करने से श्रवण करे तो विषय को धारण करने की शक्ति होती है और सेवन करनेवाला मनुष्य शूर वीर हो सोलह वर्ष की आयुवाले के समान कमनीय सुन्दर रूपवान् और ऐश्वर्यवान् दर्शनीय नवहस्ती के समान बलवाला होता है उसका वर्ण सुवर्ण के समान उत्तम हो जाता है, कांति अधिक होती है, छः महीने तक सेवन करने से हजार वर्ष तक जीवित रहता है, स्वामिकार्तिक! एक कल्प तेरे आगे कहा अब दूसरे को सुन हे पुत्र! मैं तेरे स्नेह से सब वर्णन करता हूं, जो मनुष्य एक पल इस तेल को शहद के साथ पीता है वह इतिहास पुराणों का श्रोता और वक्ता (बांचनेवाला) होता है। उत्तम स्थान को देखे पृथिवी और आकाश में विचरनेवाला हो, बुद्धिमान हो तथा सौ पुत्रोंवाला हो वह जिस जिस स्त्रीको चाहे वही नवीन यौवनवाली उसको प्राप्त हो जाती है।।९२–१००।।

बिल्वबीजतैल कल्प

बिल्वबीजानि संगृह्य सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् । त्रिफलाक्वाथतोयेन सप्तवाराणि भावयेत् ।।१०१।। ततो यंत्रेण निष्पीड्य तैलं गृह्यं सुसंयतः । स्निग्धभांडे विनिक्षिप्य भूमौ तत्तु निधापयेत् ।।१०२।। मासमेकं ततोद्धृत्य रक्षां कुर्याद्विधानतः । रेचनं वमनं कृत्वा शुद्धकोष्ठे शुभे दिने ।।१०३।। कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां पुष्ययोगेन बुद्धिमान् । निवासमंदिरे तैलं कर्षमात्रं पिबेन्नरः ।।१०४।। जीर्णान्ते भोजनं कुर्याच्छाल्योदनपयोयुतम् । दिवसै केन मेधावी बाधिर्यांध्यविनाशनम् ।।१०५।। द्विदिनेन विनश्यन्ति सर्वे रोगा न संशयः । त्रिचतुर्थदिनें ग्रंथसहस्राणि च धारयेत् ।।१०६।। पञ्चमे दिवसे चैव तथा सारस्वतो भवेत् । षष्ठे च दिवसे प्राज्ञो ब्रह्मतुल्यो भवेन्नरः ।।१०७।। सप्तमे दिवसे चैव सर्वज्ञः प्रियदर्शनः । श्रुतिज्ञः सुगमः श्रीमान्कर्णिकारसमद्युतिः।।१०८।। बलीपलितनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षसहस्रकम् । सप्ताभिमंत्रितं कृत्वा पश्चात्तैलं पिबेन्नरः ।।१०९।। (औ० क०)

अर्थ–बेल फल के बीजों के ग्रहण कर, बारीक चूर्ण बना, त्रिफला के क्वाथ के जल में सात बार भावना देवे फिर यंत्र में निष्पीडन करके तेल निकाले पीछे चिकने बरतन में भरकर पृथ्वी में गाड़ देना चाहिये, एक महीना तक गड़ा रखे पीछे विधि से रक्षा करके दस्त ले और वमन कराके शुद्ध कोष्ठ कर शुभ दिन में कृष्णपक्ष की अष्टमी को चर्तुदशी को, पुष्य नक्षत्र के योग में बुद्धिमान जन शयन करने के स्थान में स्थित हो दशमासपर्यन्त इस तेल को पान करे औषधि का परिपाक हो जाने पर चावल और दूध का भोजन करे बुद्धिमान् जन ऐसे एक ही दिन करे तो बहिरापन और अन्धापन दूर हो जाता है, दो दिन करे तो सब रोग नष्ट हो जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं है। दो तीन चार दिन तक सेवन करे हजारों ग्रंथों को धारण करने की शक्ति हो जाती है, पांच दिन में सरस्वती के समान बुद्धिमान् होता है, छः दिन में ब्रह्मसदृश प्राज्ञ हो जाता है, सात दिन तक सेवन करे तो सर्वत्र प्रियदर्शन वेद को जाननेवाला सुगम श्रीमान् और कमल के समान कांतिवाला होता है, बुढ़ापे के सफेद बालों से रहित और हजारवर्ष तक जीनेवाला होता है, सातवार मन्त्र पढ़ के पीछे इस तेल को पीना चाहिये।।१०१–१०९।।

धात्रीरस से अश्वगंधा कल्प

धात्रीरसेन तच्चूर्णं कर्षं पिष्ट्वापि सेवितम् ।
दिव्यदृष्टिर्भवेज्जंतुर्जरामरणवर्जितः ।।११०।।

(औ० क०)

अर्थ–एक तोला भर इस चूर्ण को आंवले के रस में पीस के सेवन करे तो दिव्यदृष्टिवाला होकर बुढ़ापे तथा मरने से बच जाता है।।११०।।

तिल घी व शहद से असगंध कल्प

शिशिरर्तौ काले अश्वगंधाचूर्णं तिलचूर्णं समघृतमाक्षिकाभ्यामालोड्य बलहीनो भुक्त्वा मासेन् वृद्धोपि यौवनं व्रजति ।।१११।। (औ० क०)

अर्थ–शिशिरऋतु (माघफाल्गुन) में असगंध के चूर्ण और तिल के चूर्ण को बराबर प्रमाण के घी और शहद मिलाकर खाने से बलरहित मनुष्य भी एक महीने में बूढ़े से जवान हो जाता है।।१११।।

हल्दी मधु से कल्प

निष्कमात्रं निशाचूर्णं मधुना सह लोलितम् । मासाच्छशिककांतिस्स्याद्द्विमासात्कमलप्रभः ।।११२।। त्रिमासात्पित्तकारं च चतुर्मासाज्ज्वरादिभिः । विमुक्तः पंचमासाच्च स्थिरयौवनवान्भवेत् ।।११३।। षण्मासात्सूर्यसंकाशः सप्तमासान्मनोभवः । अष्टमे स्यात्प्रसन्नात्मा दूरश्रवणवान्नरः ।।११४।। नवमासादनायासं स्त्रीशतं चाधिरोहति।। अनेकशास्त्रवेदी स्याद्दशमासनिषेवणात् ।।११५।। मासादेकादशान्मर्त्यः सर्वज्ञत्वमवाप्नुयात् । इदं तु वत्सरं यस्तु जरामरणवर्जितः ।। क्षीरा हारो भवेन्नित्यं हरिद्राचूर्णलोलुपः ।।११६।।

(औ० क०)

अर्थ–हल्दी के निष्क (चार मासे) चूर्ण को शहद में मिला के (उसका सेवन करे) एक महीने तक भक्षण करै तो चन्द्रमा के समान कांतिवाला हो, दो मास सेवन करै तो कमल के समान कान्तिवाला हो, तीन महीने में पित्त (बल) बढ़े, चार महीने में ज्वर आदि रोगों से छूट जाता है, छः महीने में सूर्य के सदृश कांतिवाला हो, सात महीने में कामदेव की समान हो जाता है, आठ महीने तक सेवन करने से प्रसन्न आत्मावाला और दूर से सुननेवाला होता है, नव महीने में बिना ही परिश्रम से सौ स्त्रियों को भोग सक्ता है, दस महीने सेवन करने से अनेक शास्त्रों को जाननेवाला हो, ग्यारह महीने तक सेवन करनेवाला जन सर्वज्ञ होता है और जो इस प्रयोग को एक वर्ष तक सेवन करे वह वृद्धावस्था तथा मृत्यु से बचा रहता है, हल्दी के चूर्ण को सेवन करनेवाले व्यक्ति को नित्य दूध ही आहार करना कर्तव्य है।।११२–११६।।

शुंठी कल्प

उत्तमं नागरं ग्राह्यं चूर्णितं वस्त्रगालितम्॥ गुडेन मधुना गव्यसर्पिषा मर्दितं भवेत् ॥११७॥ सुस्निग्धभांडे निक्षिप्य धान्यराशौ निधापयेत् । मासं मासं समुद्धृत्य कृत्वा कायविशोधनम् ॥११८॥ सुस्निग्धं भक्षयेत्प्राज्ञो बिडालपदमात्रकम् । दिनसप्तप्रयोगेण सर्वरोगं निवारयेत् ॥११९॥ षण्माससेविताज्जीवेन्नरो वर्षशतत्रयम् । बृहस्पतिसमो बुद्ध्या सर्वशास्त्र-विशारदः॥ नागार्जुनसमाख्यातः कल्पोयममृताधिपः ॥१२०॥

(औ० क०)

अर्थ-उत्तम सोंठ को लेकर चूर्ण बना वस्त्र में उसे छान के गुड, शहद, गौ का घृत इसमें मिलावे फिर उसे चिकने बर्तन में भरकर धान्य के कोठे में धरे एक महीने में बाहर निकाल शरीर की शुद्धि करै उस चिकने पदार्थ को सदैव एक तोला प्रमाण खावे, सात दिन तक इस प्रयोग के करने से संपूर्ण रोग दूर हो जाते हैं, छः महीने तक सेवन करे तो तीन सौ वर्ष तक जीवित रहता है, बुद्धि में बृहस्पति के समान हो सम्पूर्ण शास्त्र को जाननेवाला होता है, नागार्जुन के द्वारा कहा हुआ यह कल्प अमृतका भी अधिपति है॥११७-१२०॥

दुग्ध से चीते का कल्प

क्षीरेण मासमेकन्तु चित्रकं भक्षयेन्नरः ।
वज्रदेही महाकायो महाबलपराक्रमः ॥१२१॥

(औ० क०)

अर्थ-जो मनुष्य दूध के संग एक महीने तक चीते को पीता है वह वज्रसदृश शरीरवाला पराक्रमी हो जाता है॥१२१॥

घी शहद से कुष्ठ कल्प

कुष्ठचूर्णं तु मध्वाज्यं नित्यं कर्ष पिबेन्नरः ।
वत्सरं दिव्यदेहः स्याद्गंधेन शतपत्रवत् ॥१२२॥

(औ० क०)

अर्थ-कुष्ठ के चूर्ण को शहद और घृत में मिलाकर नित्यप्रति दश माशे खावे एक वर्ष दिन में दिव्य शरीरवाला हो कमल के समान सुगंधिवाला हो जाता है॥१२२॥

लघुबंद से कायाकल्प (उर्दू)

जनाब गोपीचन्द साहब महकमः सपेलाई व ट्रान्सपोर्ट छावनी फीरोजपुर से तहरीर फर्माते हैं कि कायाकल्प बूटी की अकसर असहाब तलाश में पाये जाते हैं जिन असहाब को कायाकल्प का शौक हो और उम्र चालीस साल से ज्यादः हो तो मुफस्सिला जैल बिला जरर और सहलुल हुसूल कायाकल्प के नुसखे को आजमाकर फाइदा उठावें नुसखा यह है-ककरोंदा बूटी के ताजे पत्तों के आध सेर पुख्त: अर्क में ६ माशे स्याहमिर्च को खूब बारीक पीसकर मिला लेवें और एक गिलास में डाल कर पी जावे। चालीस योम के अन्दर निहायत उमदा कायाकल्प बिला किसी तकलीफ के हो जाता है। न तो किसी तरह की तकलीफ होती है और न यही दागिर कल्पों की तरह जिसमें कि खाल उतरती है। बेशक पेश्तर के तमाम नाकिस खून को सालह पैदा कर देती है। और अगर जिस्म पर किसी किस्म का दाग धब्बा हो सब साफ हो जाता है और सफेद बाल इस कल्प के करने से स्याह निकलना शुरू हो जाते हैं भूख अजहद लगती है घी और दूध इसके हमराह गिजा है जमाइ और तेल गुड़ सुर्ख मिर्च और ज्यादह नमक का परहेज है कम नमक इस्तेमाल कर सकते हैं।

(सुफहा अखबार अलकीमियाँ) १/१२/१९०६

घी शहद से निर्गुंडी मूल कल्प

निर्गुंडी मूलचूर्णं तु गवां सर्पिः पलाष्टकम् । घृतं चैव तथा क्षौद्रं षोडशं क्षीरकं तथा ॥१२३॥ स्निग्धभांडे समालोड्य धान्यराशौ निधापयेत् । पूर्णे मास ततोद्धृत्य सुदिने पुष्पसंयुते ॥१२४॥ बिडालपादिकामात्रं मासमेकं प्रयोजयेत् । वलीपलितनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतत्रयम् ॥१२५॥

(औ० क०)

अर्थ-निर्गुंडी (सँभालू की जड़) का चूर्ण गौ का घृत यह दोनों बत्तीस तोले । सोलह तोले शहद, सोलह तोले दूध इनको एकत्र कर चिकने बर्तन में भरकर धरे तिस बर्तन को अन्न के भरे कोठे में रख देवे एक महीना पूरा लेवे सब पुष्य नक्षत्रयुक्त शुभ दिन में बाहर निकाले एक महीने तक चिकने बर्तन में भरकर के धान की राशि में स्थापित कर दे एक मास तक अच्छे दिन में वा पुष्य नक्षत्र के दिन निकालकर मार्जारी (बिलाई) के पद समान मात्र एक मास तक खावे तो सफेद बाल काले हो जाते हैं और तीन सौ वर्ष की आयु होती है॥१२३-१२५॥

घी से निर्गुंडी मूल कल्प

निर्गुंडीमूलमादाय घृतेन सह भक्षयेत् ।
मासैकस्य प्रयोगेण नराश्चाकाशगामिनः ॥१२६॥

(औ० क०)

अर्थ-निर्गुंडी के मूल को घृत के साथ भक्षण करे तो एक महीने के प्रयोग से मनुष्य आकाशगामी हो जाते हैं॥१२६॥

तक्र से निर्गुंडी मूल कल्प

निर्गुंडीमूलमादाय तक्रेण सह सेवितम् ।
मासमेकप्रयोगेण वलीपलितवर्जितः ॥१२७॥

(औ० क०)

अर्थ-निर्गुंडी के मूल को तक्र के साथ सेवन करै मास १ तक तो सफेद बालों के काले बाल हो जाते हैं॥१२७॥

पुनर्नवा कल्प

तच्चूर्णं सितया साकं यद्वा क्षीरेण यः पिबेत् ।
प्रभातकाले सततं जीवेत्तु शरदां शतम् ॥१२८॥

(औ० क०)

अर्थ-जो मनुष्य उस चूर्ण को दूध और मिसरी के संग प्रातः काल निरंतर पीता है वह सौ वर्ष तक जीवता है॥१२८॥

शहद और घी से कल्प श्वेतार्क

पुष्यार्केण गृहीत्वा तु श्वेतार्कः सर्वसिद्धिदः । पंचांगं चूर्णयेद्धीमान्मध्वाज्येन तु भक्षयेत् ॥१२९॥ जीर्णान्ते भोजनं कुर्यात् षष्टिकाक्षीरभोजनम् । वर्जयेत्तैलमम्लं च मासमेकं तु भक्षयेत् । वलीपलितनिर्मुक्तो महाबलपराक्रमः ॥१३०॥ (औ० क०)

अर्थ-सब सिद्धियों के देनेवाले सफेद आक को पंडित जन को चाहिये कि जब पुष्य नक्षत्र पर सूर्य का उदय होय अर्क उस दिन लाकर उसके पंचांग के चूर्ण को शहद और घृत के साथ खावे औषधि का परिपाक हो जाने पर सट्ठी चावल और दूध का भोजन करे, तेल और खटाई को बर्ज देवे एक महीने तक इसको भक्षण करे तो सफेद बाल नहीं होते महाबली पराक्रमी हो॥१२९॥१३०॥

पारदगंधवा-निर्गुंडीरसमर्दित कुष्ठहर

गंधकं सूतकं चैव निर्गुंडीरसमर्दितम् । हन्त्यष्टादश कष्ठानि विषं हन्ति जरापहम् ॥१३१॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ-शुद्धगंधक और पारद (चन्द्रोदयादि) को समान भाग लेकर निर्गुंडी के रस से मर्दन करे तो वह रस अठारह प्रकार के कोढ़, विषरोग,

और जरावस्था (बुढापे) को नाश करता है॥१३१॥

पारदगंधकप्रयोग निर्गुण्डी से भावित

गंधकं रससंयुक्तं निर्गुंडीरसभावितम् । अंधमूषागतं ध्मातं लेहयेन्मधुसर्पिषा । मासस्यैकप्रयोगेण सर्वव्याधिर्विनश्यति ॥१३२॥ (योगसार)

अर्थ–गंधक और पारद (बुभुक्षित) को निर्गुण्डी के रस से मर्दन कर अन्धमूषा में रख धोंके उसको शहद और घृत के साथ एकमास तक सेवन करे तो समस्त रोग नाश होते हैं॥१३२॥

सर्वरोग हर औषधि निर्गुण्डी कल्प (मूत्रपुरीष से सोना)

निर्गुंडीपंचांग रविपुष्यके दिन छायाशुष्ककर चूर्ण करके एक तोला चूर्ण अप्रसूत काली बकरी के मूत्र में १ मास खावै सर्वरोग रहित होवे–तस्य मूत्रपुरीषेण सुवर्णं रजतं च भवतीति ॥ (उसके पेशाब और पाखाने से चांदी का सुवर्ण होता है)॥ (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

अभ्रकपारदप्रयोग निर्गुंडी से भावित

गंधकं रसमाकाशं निर्गुंडीरसभावितम् । अंधमूषागतं ध्मातं लेहयेन्मधुसर्पिषा ॥१३३॥ मासस्यैकप्रयोगेण हन्ति कुष्ठं सुदारुणम् । षण्मासस्य प्रयोगेण वलीपलितनाशनम् ॥१३४॥

(योगसार)

अर्थ–शुद्ध गंधक, चन्द्रोदय और अभ्रकभस्म इन तीनों को समान भाग लेकर निर्गुण्डी के रस से भावना देकर और अंधमूषा में रखकर धोंके, उस भस्म को एक मास तक सेवन करे तो भयानक कोढ़ का रोग नष्ट होता है और छः मास तक सेवन करने से वलीपलित से रहित होता है अर्थात् नवीन अवस्थावाला हो जाता है॥१३३॥१३४॥

पारदप्रयोग (सुहागे से)

करालकबरीबीजं[1] समांशं योजयेत्सुधीः ।
सूतटंकणसंयुक्तं वलीपलितनाशनम् ॥१३५॥

(योगसार)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां कल्पोपवर्णनं नाम चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥४४॥

अर्थ–गंधक और तुलसी (काली) के वीज चन्द्रोदय और सुहागा इनको पीस लघुपुट देवे उसके सेवन करने से वलीपलित से रहित हो जाता है॥१३५॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां कल्पोपवर्णनं नाम चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥४४॥

धातुवादाध्यायः ४५

कटोरी नुकराको हजारलैमूं के अर्क से तय्यार करके उससे सीमाव की चांदी (फार्सी)

नुकरा खालिसरा अजद कटोरी साजद व बरआतिश निहादह शीरा लैमूं दरआं अन्दाजद बबूं खुश्क शवद दीगर अन्दाजद ताशीरा हजार लैमूं कागजी दरआं सोख्त शवद बादहू हरगाह किरव्वाहदं सीमावरा बआव अन्दाहूली व ककरोंदा सहक नमूदः दरकटोरः मजकूर कर्दः बर आतिशदिहद फसन गर्ददई अमल कुनद मे शवद मुजर्रिब है अम्मा आमिल लावल्दवूद अगर औलाददाश्तः बाशद हंरगिज न कुनन्द । (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयावखां सोहनपुरी)

[1]–करालकबरी से आशय काली बनतुलसी से जान पड़ता है।

जोडा

तुत्थकं दरदं कृष्णकंकुष्ठं हेमगैरिकम् । पारदं गंधकं चैव रसकं च मनः शिला ॥१॥ एतानि समभागानि हंसपाद्या वरानने । सुरदाल्या जलैनैव मूत्रवर्गे पृथक् पृथक् ॥२॥ मासैकेन प्रयत्नेन दोलायंत्रेण पाचयेत् । पाचित्वोद्धृत्य यंत्रात्तु वसुपत्राणि लेपयेत् ॥३॥ अग्निं दत्वा समासेन चतुर्थांशेन कांचनम् । दत्त्वातिध्मापयेत्सम्यक् तत्सर्वं कांचनं भवेत् ॥४॥

(योगसार)

अर्थ–तूतिया, सिंगरफ, कालाकंकुष्ठ, हेम (सुवर्ण), गेरू, पारद, गंधक, रांग और मैनसिल इनको समान भाग लेकर हंसपादी अर्थात् छुईमुई का रस, देवदाली का रस और मूत्रवर्ग से दोलायंत्रद्वारा स्वेदित करै और फिर यन्त्र से निकाल घोटकर चांदी के पत्रों पर लेपकर अग्नि में धोंके तो चांदी का सुवर्ण होगा वह सुवर्ण चार वर्ण का कहावेगा और अत्यन्त धोंकने से संपूर्ण ही सुवर्ण हो जाता है॥१–४॥

वेधक

तारताम्रे तु यः सूतः कुटिलं च समन्वितम् ।
ध्मापितं चैव मूषायां त्रिवारं कनकं भवेत् ॥५॥

(योगसार)

अर्थ–चांदी, तांवा, पारद और सीसा इनको समान भाग लेकर घरिया में रख कोयलों की आंच में धोंके इस प्रकार तीन बार धोंकने से सुवर्ण हो जाता है॥५॥

वेधक

पीतगंधकसूतेन रक्तचंद्रकपंचकम् । वज्रीक्षीरेण संयुक्तं वंगस्तभनमुत्तमम् ॥६॥ (योगसार)

अर्थ–आमलासार गंधक, पारद और वंग को रक्त पंचक तथा थूहर के दूध से घोटे तो यह उत्तम वेधक होता है॥६॥

वेधक जोडा

पुनरन्यत्प्रवक्ष्यामि द्रव्यस्य करणं महत् । रसगंधकतुत्थं च दरदं माक्षिकं तथा ॥७॥ एतत्सर्वोष्णतोयेन[1] याममानं विमर्दयेत् । तेनैव तारपत्राणि लेपयित्वा विचक्षणैः ॥८॥ एवंविधिविधानेन मंदं मंदेन पाचयेत् । चतुर्दश भवेद्वर्णं दारिद्रयस्य विनाशनम् ॥९॥ अनेन लिप्त्वा शौल्वं तु पत्रं विश्रास्य धामयेत् । षोडशवर्णिकं पत्रं भवत्येव न संशयः ॥१०॥

(योगसार)

अर्थ–अव उत्तम सुवर्ण वनाने की क्रिया को कहते हैं। पारा, गंधक, नीलाथोथा, सिंगरफ, सोनामक्खी इन सबको को उष्ण जल से एक प्रहर तक घोटे उसी पिष्टी से चांदी के पत्रों को लीप देवे इस प्रकार मन्द २ अग्नि से पकावे तो चौदह वर्णवाला सुवर्ण दरिद्रका नाशक सिद्ध होता है, और इसी लेप से तांवे के पत्रों पर लेप करै फिर कुछ समय तक ठहरकर धोंके तो सोलह वर्णवाला सुवर्ण होता है इसमें सन्देह नहीं है॥७–१०॥

वेधक

हेमगैरिकसंयुक्तं समांशेन च गंधकम् ।
देवदारुसमायुक्तं तारमायति कांचनम् ॥११॥ (योगसार)

[1]–उष्णतोय से ग्रन्थकार ने वह जल लिया है जो पर्वत से स्वयं गरम निकलता हो।

अर्थ–एक तोला चांदी, एक तोला सुवर्ण, एक तोला गेरू और एक ही तोला गंधक इनको देवदारु के रस से घोटकर सम्पुट में भस्म करै तो सुवर्ण होगा॥११॥

वेधक रक्तचित्रक भल्लाततैल से ताम्र का सुवर्णरूप

रक्तचित्रकभल्लाततैललिप्तं पुटेन तु ।
तप्तताम्रं च देवेशि जायते हेमरूपवान् ॥१२॥

(औषधिकल्पलता)

अर्थ–हे पार्वति! तांबे के पत्रों को लाल चीता और भिलावे के तैल से तरकर पुट में भस्म करै तो उत्तम रूपवाला सुवर्ण होगा॥१२॥

वेधक अंकोल तैल से जोड़ा

अरुणांकोलबीजस्य तैलं पूर्ववदाहृतम् । तेनं प्रलिप्तताम्रस्य पत्राणि पुटपाकके ॥१३॥ धृत्वाग्नौ चैव क्षिप्तव्या निष्कमात्रमिता सिता ॥ त्रिनिष्कमात्रस्वर्णेन स्वयं कनकतां व्रजेत् ॥१४॥ (औ० क०)

अर्थ–लालअंकोल के बीजों के तैल से तांबे के ऊपर लेप कर घरिया में रख आंच में तपावे, ताव आने पर एक तोला चांदी डाल देवे और तीन तोले सुवर्ण डाल देवे तो सुवर्ण हो जायगा॥१३॥१४॥

सम्मति–इस क्रिया में तांबे का भाग नहीं लिखा गया है इसीलिये तांबा मेरी समझ में १ ही तोला ठीक होगा॥

कलई, सीमाव और नुकरा मिलाकर चांदी बनाने की तरकीब बजरियः आक सफेद (उर्दू)

अगर आक सफेद तमाम लेकर कूट पीसकर रखे वियारद मिकदार यकजू नुकरा वयक माशा सीमाव व एक तोला कलई यकजा चर्ख देकर कदरे अजीइक दरगुजार विदहद वंसकरम अल्लाह ताला १०० ३० दानः ख्वाहद बूद । (अज वियाज हक्कीम मुहम्मद फतहयावखां सोहनपुरी)

रांग की चांदी बकरी को खिलाकर

छागली खादयेद्वंगं चणपिष्टेन पक्षकम् ।
भस्मीकृत्वा मलं तस्या निःसरेत्तारमुत्तमम् ॥१५॥

(काकचंडीश्वरीतंत्र)

अर्थ–वंग को चनों के साथ पीस के पन्द्रह दिन तक बकरी को खिला देवे उसकी मींगनी को जलाकर चांदी निकाले (जिस प्रकार सत्त निकालते हैं) ॥१५॥

नाग से सोना बनाने की क्रिया

कंकुष्ठं गुडहंसपादिरसकं तारं च गोदन्तिका लाक्षाकुंकुमरोचनामधुनिशा बिल्वं च लज्जालुकम् । एतत्सर्वमिंद च भागसमकं लवणोदके मर्दितं तेनोल्लेपितनागपत्रपुटितं षट्पाचने कांचनम् ॥१६॥ हारं कंकणमुद्रिकां विरचयेन्नागार्जुनैर्भाषितम् ॥१७॥ (योगसार)

अर्थ–कंकुष्ठ, गुड, हंसपादी, वंग, चांदी, गोदन्ती हरताल, लाख, कसूम, गोरोचन, शहद, हलदी, बेल, छुईमुई, समानभाग ली हुई इन चीजों को खारे पानी से घोट सीसे के पत्रों पर लेपकर छः बार पकावे तो सुवर्ण होगा उस बने हुए सुवर्ण से भूषण बनावे॥१६॥१७॥

वेधक नाग

बर्बुरस्य रसे नागं शोधयेच्छतवारतः ततः कृत्वा तु चषकमिष्टिकोपरि निक्षिपेत् ॥१८॥ तन्मध्ये गंधकं स्थाप्यं पाकं कुर्यात्त्रियामकम् । गंधकस्य तु तैलेन वेधकं चषकं ततः ॥१९॥ यामत्रयं कृते पाके भवेद्दिव्यं रसायनम् । अयुतावधि शुल्बं च वेधयेन्नात्र संशयः ॥२०॥

(काकचंडीश्वरतंत्र)

अर्थ–सीसे को गला २ कर बबूर के रस में सौ बार बुझाव देने से शोध लेवे उसका कटोरा बनाकर ईंट पर रख देवे उसमें गंधक रखे और तीन प्रहर तक पाक करै तो गंधक के तैल के योग से वह कटोरा वेधक होता है और वह वंग दस हजार भाग से तांबे को वेधकर सुवर्ण करता है, इसमें सन्देह नहीं है॥१७–२०॥

रंजितनाग से चांदी का स्वर्ण बनाने की क्रिया

नीलांजनं तथा तीक्ष्णं समभागेन टंकणम् । गंधचूर्णं समं ध्मातं नागं भवति शोभनम् ॥२१॥ घृततैले तथा क्षिप्तं सर्वदोषं विवर्जयेत् । धमेत्तं तारयोगेन हेमं भवति शोभनम् ॥२२॥

(योगसार)

अर्थ–एक भाग सुरमा, एक भाग तीक्ष्ण लोह इन दोनों के समान सुहागा तथा तीनों के तुल्य गंधक को लेकर अग्नि में धोंके तो सुन्दर नाग (सीसा) बन जायेगा। उसको गिलाकर घी तथा तैल में बुझावे तो सीसा समस्त दोषों से रहित होता है उसको चांदी के साथ धोंकने से सुवर्ण होता है॥२१॥२२॥

वेधक रौप्यकर पारद सेर की कटोरी की भस्म

शुभेऽह्नि रसमादाय गजपिप्पलिकाद्रवैः । मर्दयेत्सप्तदिवसं ततस्तांबूलपर्णजैः ॥२३॥ रसैश्च मर्दयेत्सप्तदिवसं तु विचक्षणः तोलकद्वयसारेण शोधितेन प्रकारयेत् ॥२४॥ चषकञ्चान्तरे चैव तस्य चाम्लरसैस्समम् । रसं विलिंपयेद्धीमांस्तोलकद्वयसंमितम् ॥२५॥ यावद्रसं क्षयं याति तावद् घर्मे विनिक्षिपेत् ॥ ततः सैंधवमानीय तदधः पूरयेत्सुधीः ॥२६॥ मृत्खर्परे तु संस्थाप्य चषकं तदधोमुखम् । चुल्लिकोपरि संस्थाप्य सरावं चाम्लवेतजैः ॥२७॥ रसैर्मुहुर्विलिंपेत्तच्चषकस्य बहिः पुनः ॥ पचेन्मंदाग्निना धीमान् यामान्षोडश यत्नतः ॥२८॥ स्वांगं शीतलमुद्धृत्य यत्नतः परिरक्षयेत् । शुल्बं वंगशरीराणि वेधयेन्नात्र संशयः ॥२९॥

(काकचंडीश्वरीतंत्र)

अर्थ–उत्तम दिवस में पारद को लेकर गजपीपल के क्वाथ से सात दिवस तक मर्दन करे। फिर सात ही दिवस तक पानों के रस से मर्दन करे तदनन्तर दो तोले शुद्ध लोहसार का कटोरा बनाय उससे घुटे हुए पारद का लेप कर देवे और उसी (लेप किये हुए) कटोरे में नींबू अथवा बिजोरे आदि के खट्टे पदार्थ का रस भर देवे और घास में रस के सूखना तक सुखावे फिर उससे पिसे हुए सैंधव को भर खिपरे पर उलट कर देवे और नीचे से अग्नि देवे कटोरे के पेंदे पर अम्लवेत् (एक प्रकार का नींबू) के रस से तर करता रहै इस प्रकार सोलह प्रहर तक मंदाग्नि देवे स्वांग शीतल होने पर निकालकर हिफाजत से रखे तो वह भस्म तांबा और वंग को बेधता है। इसमें सन्देह नहीं है॥२३–२९॥

हरताल की तलभस्म चांदी शंखियायोग से

अर्थ–हरिताल आध सेर पक्का, दाल चिकना पावपक्का, रजत पाव पक्का तीनों को ४ प्रहर खरल करना, एरंड बीज मज्जा और एरंड तैल पाकर फिर शीशी में उडाना फिर ऊर्ध्वस्थ अधस्थ दोनों खरल करना फिर उड़ाना फिर ऐसे चौदा बार करना फिर ताम्र पर योग करना यह दृष्टप्रत्यय योग है॥ (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

बकरी की मेंगनी का वेधक तैल हरताल गंधक का

चणपिष्टेन मासार्द्धं छागीं तालं च गंधकम् । खादयित्वाऽऽहृतं तैलं तन्मलाच्छुल्बवेधकृत् ॥३०॥ गंधकयोगेन तारपत्राणि तालयोगेन शुल्बपत्राणि वेधयेदिति संप्रदायः ॥३१॥ (काकचंडीश्वरीतंत्रम्)

अर्थ—बेसन के साथ हरताल अथवा गंधक को खिलाकर उसकी मैंगनियों से तैल निकाले तो वह तैल तांबे को वेधनेवाला होता है। तात्पर्य यह है कि गंधक के योग से चांदी को वेधता है और हरताल के योग से तांबे के पत्रों को वेधता है ऐसा संप्रदाय है॥३०–३१॥

हरतालतैलवेधक

तालं न्दुरवक्त्रे तु पक्षमात्रं निधाय च ।
तैलं सूपुटा धृत्वा कारयेच्छुल्बवेधकम् ॥३२॥

(काकचंडीश्वरीतंत्र)

अर्थ—हरताल को मेंडक के मुँह में पन्द्रह दिवस तक रखकर पाताल यंत्र से तैल निकाले तो वह तैल तांबे के पत्रों का वेधक होता है॥३२॥

ढाकफूलरस से भावितवेधक हरताल रांग की चांदी

तस्य पुष्पस्य निर्यासे तालकं च सुभावितम् । तस्य तालस्य कल्केन द्वात्रिंशांशेन लेपितम् ॥ वंगं भवति तत्तारं कुंदपुष्पस्य संनिभम् ॥३३॥ (औषधिकल्पलता)

अर्थ—ढाक के फूलों के रस से हरताल को भावना देवे वह भावित हरताल १ भाग को वंग ३२ भाग पर लेपकर पुट देवे तो कुन्द के समान चांदी हो जायेगी॥३३॥

वेधकपारद गंधक (तृणज्योति से)

तस्य मूलं तु संगृह्य रसगंधकतत्समम् । मातुलुंगरसेनैव एकीकृत्य तु मर्दयेत् । लेपयेच्छुल्बपत्राणि त्रिपुटं हेमशोभनम् ॥३४॥ (औषधिकल्पलता)

अर्थ—ढाक की जड़ के समान पारद गन्धक को लेकर और मिलाकर बिजोरे के रस से मर्दन करै फिर उससे तांबे के पत्रों पर कर पुट देवे तो इस प्रकार तीन चार पुट देने से उत्तम सुवर्ण होता है॥३४॥

वेधक पारदगंधकपिष्टीलेप

गंधकं चूर्णसंयुक्तं कृष्णायं लांगलीभवम् । एवं क्रमात्ततो देवि मर्दितं रसगंधकम् ॥३५॥ नवनीतसमापिंडी जायते वरपिष्टिका । दत्त्वा लघुपुटं पश्चाद्धेमपत्राधिलेपयेत् । पुटपाकेन देवेशि वर्द्धते स्वर्णपंचकम् ॥३६॥
(औ० क०)

अर्थ—गन्धक, चूना, लोहसार और कलियारी की जड़ इन सबको तप्त खल्व में खरलकर पिष्टी बना लेवे फिर उसको सम्पुट में रख लघुपुट देवे उससे सुवर्ण के पत्रों पर लेप करे तो सुवर्ण का रंग उत्तम होता है॥३५॥३६॥

वेधक गन्धक पारदलेप

गन्धकं रससंयुक्तं सुगंधिरसमर्दितम् । ताम्रपत्रप्रलेपेन दत्ताग्निः कांचनं भवेत् ॥३७॥ (औ० क०)

अर्थ—पारद और गंधक को कचूर के रस से मर्द करे और ताँबे के पत्रों पर लेप कर अग्नि देवे तो सुवर्ण होवे॥३७॥

वेधकगंधक पारदयोग

गंधकं गन्धमूलीं च रसबीजेन[1] मर्दयेत् । अमिथ्यं मासमेकेन तारलेपेन कांचनम् ॥३८॥ (योगसार)

गंधमूल— कुलींजन।
गंधमूलक— आमियाहल्दी।
गंधमूला— कचूर।
गंधमूली— छोटा कचूर।

अर्थ—गंधक, कचूर, सुवर्ण और पारद को बिजोरे के रस से एक मास तक मर्दन कर चांदी के पत्रों पर लेप करै तो सुवर्ण होगा॥३८॥

१—रस से पारद और बीज से स्वर्ण का ग्रहण करना और मासमेकेन का संबंध मर्दन से करना।

वेधक खोटबद्ध

शुद्धसूतं पलं चैकं गन्धकस्य पलार्धकम् । मधुसंजीवितो येन दिनमेकन्तु मर्दयेत् ॥३९॥ गुटिकां गुंजयुग्मं तु च्छायाशुष्कन्तु कारयेत् । बृहतीफलमध्यस्थं शिवाचूर्णेन लेपयेत् ॥४०॥ ततो गोधूमचूर्णेन मृदा लिप्य विशोषयेत् । क्षिप्त्वा कर्पूरकोष्ठे तु भस्त्रया चैव धम्यते ॥४१॥ कृत्वा कर्पूरकोष्ठे तु हठाग्नौ चैव धामयेत् । ततोऽसौ जायते खोटं पिष्यते लवणं यथा॥४२॥ शुल्वस्या षोडशांशेन वेधनं बीजकांचनम् । रसेन सहितं देवि यथा कार्यं रसायनम् ॥४३॥

(योगसार)

अर्थ—शुद्ध आमलासार गंधक एक भाग, दो भाग पारद इनको मधुजीवी के रस से एक दिवस तक घोटे और उसकी चौंटनी के समान गोलियां बनाय छांह में सुखा लेवें उनको बड़ी कटेरी के फल में भर ऊपर से एक अंगुल हर्र के चूर्ण का लेप करे, फिर गेहूं के चूर्ण का लेप करे, तदनन्तर मिट्टी का लेप कर सुखा लेवे। उस गोले को कपूर में रख धोंके तो वह खोट नोक के समान पिस जाता है वह सोलहवें भाग से ताम्र को वेधता है हे पार्वति! यह रसायन पारद के साथ होता है॥३९–४३॥

सीमाब और ताँबे के मेल से अकसीर (उर्दू)

हिकायत—तिजारा रियासत अलवर में एक सन्यासी ने एक मास्टर स्कूल से यह नुसखा बनवाया, सीमाब बाजारी और बुरादा निहास बाजारी हम वजन को अर्क नकछिकनी से (१०५) पुट देकर २४ प्रहरकी आंच दी। पुट का तरीकः यह था कि ताँबे के कटोरे में दिस्ता उसमें डबल पैसा नसब करके दवा को अर्क नकछिनकी डालकर १०५ मर्तबः लिपवाया पीसने की मिकदार इसी कदर कि अर्क सूख जाय इसके बाद ताँबे की डिबिया में बन्द करके किसी जर्फ में रेत भरकर डिबिया बीच में रखकर २४ प्रहर या ७२ घंटे की आंच दे (नारदमिस) आंच पूरी होने से ४ प्रहर के बाद दवा निकाल ले सन्यासी साहब कह गये कि एक रत्ती से तोलाभर सोना बनेगा। मास्टरसाहब ने जो खोला डिबिया में राख भरी पाई, सुनार से तरह कराई कुछ भी न हुआ। मगर डिबिया की दरज में शायद एक रत्ती सुर्ख दवा रह गई थी उसके तरह करने से तोला भर सोना तय्यार हुआ यानी इनकी मेहनत मजदूरी और खर्चा सब सन्यासी साहब दे गये थे।

मेरे एक दोस्त मुंशी हनुमतसिंह जो स्कूल के हेडमास्टर थे उन्होंने यह किस्सा मुझे लिखा कि अगर आप इस नुस्खे को सही समझें और बरादरान अलकीमियाँ के वास्ते कार आमद हो तो इसको करके देखें चूंकि नखछिकनी नबातात अकसीरि यासें है। मुझे नुसखे की सचाई पर वसूक हुआ। मगर अर्क की मिकदार मजहूल थी लिहाजा उसूल कीमियाई मशरकीपर बनाकर हमने ४ तोला सीमाब और ४ तोला मिसके बुरादह को अर्क मजकूर में इसी तरीके से पुट देने शुरू किये एक बोतल अर्क सय्यद सिनाहुसेन साहब रईस दहलिया डाकखाना दहानी जिला हरदोई मुल्क अवध ने भेजा जब वह खतम हो गया तो गोया ऽ॥ सेर यानी पचास तोला अर्क ८ तोले दवा में खर्च हुआ ५० ८ ६–१/४ गुना अर्क दवा को मिला अब हमने इसको १२ प्रहर यानी ३६ घंटे की आंच डिबिया में दी इसी तरह से सर्द होने के बाद एक रत्ती दवा चांदी तोला भरे पर तरह की जोड़ा बनाने की हद तक रंग आया और सीमाब कायमुरनार हो गया। फिर ६ माशे दवा को भडके की आंच तेजचन्द मरतबः दी तो आठवाँ हिस्सा दवा का कम हुआ जिससे मालूम हुआ कि अभी सीमाब किसी कदर नाकायम है और दवा बरंग स्याह भी है और ६ माशे इसी तजरुबे से दवा कम होकर ७॥ तोले रही फिर हमने एक बोतल अर्क और मँगाकर दफै दफै पुट दिलाये और ७२ घंटे की आंच दी अब दवा सुर्खी माइल और नीम मुशम्मै बरामद हुई यानी तरक्की औसाफ में है। यह भी याद रहे कि दुबारा पुट देने से दवा का वजन बजाइ ७॥ तोले के ११ तोले हो गया था हालाँकि रतूबत न थी और ७२ घंटे की आंच देने के बाद फिर वही ७॥ तोले बरामद हुई अब ११ तोला सोना हमिलानी जो हमारे दोनों खैर शागिर्दो ने खराब बतलाया था उसको फी तोला एक रत्ती

भर अकसीर तरह करने से वह सोना ऐसा उमदा हो गया जैसे दुचन्द हमिलान से भी कभी न हुआ था। काट और तोड सब दुरुस्त और सख्ती स्याही बिलकुल नदारद शुकर खुदा। अब हमको हिसाब से मालूम हुआ कि १२–१/२ गुना अर्क देने से यह दवा इस दर्जे को पहुँची आयन्दः और अर्क देने से पूरी अकसीरी हो जायेगी। अकसीरी बूटियों के अर्क से पुट देने की मिकदार कम से कम चहारचन्द और ज्यादह से जियादह चालीसगुना अर्क की है लिहाजा हम इस मिकदार तक रफ्तः रफ्तः इसको पहुँचा कर देखेंगे इस वक्त तौ यह दवा नीम मुशम्मा है और देर में पिघलती है और शायद निस्फ फिदाब है इसी वजह से तिलाये खालिस नहीं बनाती। अटयार अफजाकी हद पर जरूर पहुँचती है याद रहे कि जो दवा अटयार अफजा है ज्यादः तदबीर करने से वही दवा अकसीर हक के दर्जे पर पहुँच जाती है। नकछिकनी का शीरा यह बूटी भी किस कदर कम पानी देनेवाली है इसका शीरा भी अगर किसी कदर हरारत पहुँचाकर निकाला जावे तो शायद हर्ज न होगा और यही आसन तरीक है वरन् दीगर तरीकः सख्त मुश्किल है और अगर हो सके या कम अज कम ऐसी कोशिश करनी चाहिये कि शीरा बिला हरारत पहुँचाये निकाला जा सके।

पुट देना–इस जगह पुट देने से मुराद यह कि दवाई को अर्क से तर कर लिया जावे और इस कदर खरल करे कि अर्क खुश्क हो जावे। (सुफहा ४–५ अखबार अलकीमियाँ २४/२/१९०९)

शनाख्त अदबिया चहार गानः
अजरंग (उर्दू)

(१) अगर रंग अदविया का हरारत से पहला यानी बदस्तूर रंग खुद ही रहै तो यकीन जानो कि तवख पूरा ही नहीं व मकसूद नहीं है।

(२) अगर रंग अदविया का स्याह हो गया। व नअशा (जहांवां बन गई तो यकीन जानों कि अदबिया जादय हरारत से सोख्त हो गई है।

(३) अगर रंग अदविया का सुर्ख व जर्द है तो यकीन जानों व मानों कि अदबिया मतबूआ दुरुस्त व सही तौर पर पुख्तः हस्ब हस्व मुराद बन गई है। ख्वाह वह हरारत्त यकबारगी तरीक मुफीद व मुकर्ररः उस्तादान से है (ख्वाह बदफआत रफ्तः के है (अखबार अलकीमियां २४/२/१९०९)

लोहे से वंग बनाने की क्रिया

कांतिलोहं च सौबीरं टंकणं रक्तगंधकम् ।
अधंमूषागतं ध्मातं वंगः स्याद्वरवर्णिनि ।।४४।।

(योगसार)

अर्थ–कान्तिसार, लोहा, सुरमा, सुहागा, और लाल रंग का गंधक इनको पीस घरिया में रखकर धोंके तो उसके वंग की चांदी होती है।।४४।।

लोहे सुरमें से नाग बनाने की क्रिया

नीलांजनं तथा तीक्ष्णं समभागेन टंकणम् । गंधचूर्णं समं ध्मातं नागं भवति शोभनम् ।।४५।।

(योगसार)

अर्थ–सुरमा तथा तीक्ष्ण लोह इन दोनों के समान सुहागा और इन तीनों के समान गंधक को पीस कोयले की अग्नि में धोंके उसको योग से सीसा सुवर्ण होता है।।४५।।

उसूल कीमिया सुर्ख व सफेद के जुदागानः जुज्व आजम (उर्दू)

इस फन के आलिमों ने अकसीर अबेज के वास्ते, जरेवेख, नौसादर और फजः और अकसीर असमर के वास्ते जीवक, गुगर्द, नौसादर और जौहव मुकर्रर किया है और इन चहार अजजाइ को इस्तेलाह में अरकान अरबः और अनसिर अरबः के नाम से मौसूम करते हैं इसकी तशरीह यो है कि जरेवेख व गुगर्द नसीतरलः आग नौसादर नमीतरलः हवा और जीवक नमीतरल पानी और फजः और जौहव नीमतरलः अजसाद के हैं और इन चीजों में जो बहालत तरकीब व इम्तज़ान अजकिस्म मियाह वगैरः शामिल करते हैं वह नीमतरलः नफसके है और नफस जसद और रूह के दरमियान राबतः है।

(मुफहा १० अखबार अलकीमियां १६/६/१९०५)

उसूल कीमिया (उर्दू)

जब तक रूह, नफस, जसद, हरसह वा कायदा कायम व शिगुफ्तः होकर तहनशीन न हो जाये अकसीर नहीं बन सकती।

तफसील हरसहकी यह है

रूह जीवक (पारा) दोयम नौसादर।

(फ) पारा मसअद रूह महज हो जाता है कायम होकर जसद बन जाता है।

नौसादर मसअद । रूहमहज और साबित होकर नफस बनता है। नफस एक जौहर जरीन में दोयम किबिरियत असफर व हमर ।

(फ) जरवन में मसअद रूह महज हो जाती है।

किबिरियतें मसअद को नफस महज कहते हैं।

जसद–सोना, चांदी, लोहा, कलई, सिक्का तांबा वगैरः ।

(फ) बाजअहलफनजसद को उड़ाकर रूह कर लेते हैं और इस रूह को फिर जसद । यानी रोगन बना लेते हैं इस दर्जे इमशः के अन्दर जरूर खास्सा अकसीर पैदा हो सकता है।(सुफहा १६ अखबार अलकीमियां १/५/१९०५)

उसूलकीमियां (उर्दू)

कीमियां बनाने के लिये तादात तरीकों में से तीन खास तरीके है जो अमूनन इन्हीं हर सहपर उस्तादानफन कीमिया मगरबीका अमल रहा है तरीका अव्वलवालों का कौल है कि जब रूह नफस जसद को एक जिस्म और कायम करके शिगुफ्तः कर लिया जावे वह अकसीर है। तरीका दोयम वाले इस बात पर है कि जब हर सह को तसईद करते करते तहनशीन बना लेवें उसमें खासियत अकसीर की पैदा हो जायगीं तरीक सोयम के उस्ताद इस तरफ गये हैं कि जब मजमूई जसद कायम (रूह–नफस–जसद) को रूह बना लिया जावे और उस रूह को फिर जसद यानी तेल कर दिया जावे पस वही अकसीर आजम है।

नोट– यहां जसद का रूह बनाना जौहरलेने के मानी है और रूह से फिर जसद कर देना रोगन कर देने को कहा गया है–रोगन आतिशी ताकि हवाइ ऐसा रोगन कि फिर हजार तरद्दुत से अपने अवायलजसद की तरफ ऊद न करे (मुफहा १ व २ अखबार अलकीमियाँ १६/५/१९०५)

उसूलकीमिया (उर्दू)

वाजः रहे साहिवान फनमगरवी के नजदीक जब तक रूह। नफस जसद यह तीनों बाहमी मखलूत व महलूल न हो जावें गोया एक जिस्म न बन जावें इसमें खासियत अकसीर पैदा नहीं होगी। पस चाहिये कि इनहरसह हिस्से जसद, रूह, नफसें, को मखूसम पानी अर्क से तसकिया और तश्विया नरम यहां तक दें कि एक जिस्म होकर किसी तरह भी अज्जाइ जुदे जुदे न हो सके वल्कि आग पर डालने से तेल हो जावें तव खासियत अकसीर की पैदा होगी। (सुफहा १५ किताब अखबार अलकीमियाँ १/५/१९०५)

सीमाव को कीमियाई बनाने के लिये इलाज (उर्दू)

सीमाव का इलाज यह है कि तसईद और हल मलगमः अजसाद से किया

जावे एमाल शमसी में उन अजसाद से तलगीम यानी छलबंद करना चाहिये जो तिला बनाने के मखसूस है और एमाल कमरीमें उन अजसाद से जो नुकरा बनाने में इस्तेमाल किये जाते हैं। (सुफहा अकलीमियाँ ७९)

सोने की कीमियाई जांच का तरीका (उर्दू)

कीमियाई सोना अगर इमतहानात जैल में पूरा उतरे तो सोने के नाम से काबिल फरोख्त के शरीअन और कानूनन हो सकता है वरनः सोना कहकर फरोख्त करना जुर्म शरई और कानूनी है।

अव्वल–आग में तपा उदैने से लोन तिलाई बरामद हो।

दोयन–आग में ताउ देने से बिलकुल स्याही न आवे।

सोम–आग में गर्म करके नौसादर की चुटकी देने से मुतगीरुल लोन न हो यानी चित्तियां सफेद या स्याह न आवें और न रंग उड़े।

चहारम–हुक्मा ने लिखा है सौमर्तबः भी चर्ख दिया जावे तब भी रंग उसका बदस्तूर रहे।

पंजम–सिवाय सोने के दूसरी तमाम धातें तेजाब फारुकी में महलूल हो जाती हैं और सोना सिर्फ तजाब नमक में महलूल हो सकता है।

शशम–सोने के वजन सनफी उसमें पैदा हो जावे जिसको पहचान यह है कि दूसरी धातु में मिलकर चर्ख देने से हमशहः पेंदीतिलाई होगी।

हफ्तम–हथोडी व निहाई के जरिये से काटने में पूरा टुकड़ा कट जाए दरमियान से टूट न जाय।

हश्तम–सोने को चर्ख देने से उसकी टिकिया ऊपर की जानिब गोल मुहद्दिब और माहीपुश्त हो जिसको सुनारों के सीना उभारना कहते हैं।

नहम–चर्ख देने के बाद जब टिकिया सर्द हो जावे नीचे की सितह में जाली की तरह खानः हाइ मुश्बक हो जावें और उनमें गोलाई हो।

दहम–अगर नौसादर एक हिस्सा सोहागा एक हिस्सा शोरा निस्फ हिस्सा पानी में पीसकर पत्थर पर लगावे और गर्म करे तो मजल्ला हो जावे।

याजदहम–चर्ख देने के वक्त दाहनी जानिब से गर्दिश करे।

(सुफहा अकलीमियां ३१)

तिला से करवत में अजसाद का सिलसिला (उर्दू)

नुकरा बमुकाबले कुल अजसाद के तिला से अकरब है और मिस उसके बाद है और बाद उसके सुरब है और कलई व आहन बमुकाबले जुमले अजसाद के तिला से दूर है मुतरिज्जम नुकरः की नजदीकी की वजह यह है कि उसके बातन में बहियत होती है इसी वजह से रंग बहुत जल्द कुबूल कर लेती है। (सुफहा किताब अकलीमियाँ ४९)

वजन की दुरुस्तगी में यह ख्याल रखना चाहिये कि रंगत में जितना जियादह एनदाग्न आता जाता है वजन खुद बखुद दुरुस्त होता जाता है और चर्ख देते देते समेट पैदा होती जाती है जिससे हलका जसद वजनी होता जाता है। (सुफहा अकलीमियाँ)

गलाने में भारी धातु का नीचे रहना (उर्दू)

मुतरिज्जम वा एतबार ठोस और मुतखल खल होने की हरजसद का वजन जुदाजुदा है तजरुबे से साबित हुआ है कि चन्द अजसाद मुख्तलिफउलवजन को जब एक साथ गलाई जावेंगी हमेशह भारी जसद नीचे हो जायगा और उसके बाद तरतीबार उससे हलका उससे ऊपर होगा।

(सुफहा अकलीमियाँ ४९)

मखलूत धातों को अलहदा अलहदा करने की तरकीब (उर्दू)

फिलजात मखलूत को बुरादा करके आतिशी शीशी में रखकर ऊपर से उसका दोचन्द नौसादर का तेजाब डाले जिसको अंगरेजों में अकवाफार्ट्स कहते हैं या शोरे का तेजाब डाले जिसको अंगरेजी में नेडकएसिड (तेजाब फारूकी) कहते हैं यह तेजाब अंगरेजी दुकानों में या न्यारियों से मिल सक्ते हैं शीशे में आठवें हिस्से ज्यादा तेजाब न हो बादहू शीशी मजकूर निस्फ पानी में या बालू में रखकर नीचे से धीमी धीमी आग दे मखलूत धातें महलूल हो जायगी बादहू उतारकर तेजाब को दूसरी चीनी के बर्तन में निथारले और नीचे का तलछट स्याह ठंढे पानी से दो तीन वार धोकर सफूफ सुहागे के मिलाकर चर्ख दे सोना साफ निकल आवेगा बाद तेजाब में कुछ तांबे के टुकड़े तलछट डाल दे और बदस्तूर साबिक आग पर रखें चांदी रुई के गाले की तरह होकर तहनशीन हो जावेगी बतरीक मजकूर सुहागा देकर चर्ख दे चांदी साफ निकल आवेगी बादहू सीसा या लोहे का टुकड़ा डालकर तांबे की तलछट को निकालकर चर्ख दे तांबा साफ निकल आवेगा और सीसा अगर अलहदा करना मंजूर हो तो नमक डाले जब सीसा तहनशीन हो जाये चर्खदेखकरनेकाल ले तेजाब बहुत तेज (प्यूर) न हो जब तेजाब का जोश और धुआं बंद हो जाये उतरना चाहिये।

(सुफहा किताब अकलीमियां २९)

सोना केवल नमक के तेजाब में लगता है (उर्दू)

सिवाइ सोने के दूसरी तमाम धातें तेजाब फारूकी (शोरा) में महलूल हो जाती हैं और सोना सिर्फ तेजाब नमक में महलूल हो सक्ता है। (सुफहा किताब अलकीमियां ३१)

जडी से वेध जडी से ताम्र का सोना

तीतीपोई स्यामलता, स्यामपात के रस में ताम्रपत्र लेपि आंच देइ तो सोना होगा।

जड़ी से ताम्र का सोना

सर्वगंधाके रस में–ताम्रपत्र लेपि आंच देइ तो सुवर्ण होगा।

जड़ी से लोह का और ताम्र का सोना

कालकेतु के रस में लोहा लेपै तो सुवर्ण होता है। ताम्र पत्र पर लेपि आंच देइ तो सोना की सिद्धि होइ।

जडी से ताम्र का सोना

शाकवृक्षस्य निर्यासं पलमात्रं समानयेत् । पलेन शिग्रुबीजस्य रसेन परिमर्दयेत् ॥४६॥ पलमात्रं च शुल्बस्य पत्रं सूक्ष्मं विधापयेत् । बहुशो लेपितं कृत्वा घर्मे दत्त्वा पुनः पुनः । पश्चात्तद्धाम्यते पत्रं शुल्बं हेमापि जायते ॥४७॥

(बृ० यो० र० रा० शं०)

अर्थ–शाकवृक्ष के चार तोले गोंद को पल भर ही सैंजने की मूली के रस से घोटे फिर एक पल तांबे के टुकड़ों को सूक्ष्म अर्थात् कंटकबेधी करावे उन पत्रों पर ऊपर कहे हुए लेप को कर २ के सुखा लेवें फिर उन पत्रों को आंच पर रखकर धोंके तो ताम्र का सुवर्ण हो जायगा।।४६–४७।।

जड़ी से थूक से चांदी वा तांबे का सोना

बूटी गारहुन। पत्र तीन पीतफूलफल अरुन गोल प्रमान ब्रीछबीता १ सब भूमि में होते हैं तेकर पात मुख में डारै। कुचै तब ताम्रपत्र की रूपापत्र अगिनी में लाल करे तवं मुखते रस डारिदेइ तब फेरि आंच देइ तो सोना होइ।

गंधक और सोने से ताम्र का सोना

सुधामुखी, के रस में गंधक हीरं निषलै। ताम्रपत्रपर लेपि आंचदेइ तो

नोट (१)–क्या कालीपोई–या कडुवी पोई (या गीलीपोई)

नोट (२)–क्या सूर्यमुखी है?

सोना होता है।

बूटी और चन्द्रार्क से ताम्र का सोना

बूटी गंरवहरता—पातवांस को अस। फूल फल नहीं। सर्व भूमीमें होते हैं रससों धातु चन्दा वली खलिताम्र पत्र लेपि आंच देइ तो सोना सिद्ध होगा।

चिलम से ताम्र का सोना (पारदयोग)

हलदी उमदा मिट्टी में मिला क्यारी बना ढाकफूल के काढे से सींच तम्बाकू बोवे जब डंडी निकले तब उन डंडियों में ६ माशे फी डंडी पारा छेदकर भर दे ऊपर से आटे से बंद कर दे। पक जाने पर काटले से इस तम्बाकू को चिलम में पीने से चिलम का पैसा सोना बन जायगा। (कश्मीरयात्रा में सुना)

बूटी और गोदन्ती से चिलम में ताम्र का सोना

कादन्ती छोसे पात में रस नहीं पांच सात कांटा। पात के किनारे होत है भूमि में पात फैला रहत है। सब जगह पात और गोदन्ती हरताल, मीजिताम्रपात्र में लिपि चिलम पर धरि पीवे आंच लागे तो सुवर्ण होता है।

बूटी और गोदन्ती हरताल से ताम्र का सोना

सेतपुहुपको तीन पतिया (सफेद फूल की तिपत्ती) के रस तोला ४ रत्ती १ हरताल गोदन्ती खलि ताम्र पत्र पर लेपि आंच देइ तो सोना होता हैं। अवटावैं तो संशय नहीं।

केवल बूटी से रांग की चांदी और पारद भस्म से ताम्बे का सोना

बूटीकारवती—पातवांसकोअस। फूलअरुण व्रीछहस्तप्रमाण परवतपर होत है, माटीतरै तेल अस होत है, चिकनी से मासा १ की तोला १ पांच सेर रांगा से डारे तो रूपा होता है। तेके पात के रस में पारा खलै। तोला १ खलि चौरासी तोला तामा में डारै रत्ती १ तौ सोना सीधि, ते करेलकरी की माला बनाए जैको जपै सो सिद्धि हो।

रजतक्रिया रांग की चांदी बकरी के पेट में

काली बकरी को घर बिच रखणा और आक के पत्रों के बिना और कुछ नहीं उसको खाने देना। ९ दिन फिर ज्वारदा आटा या पक्का और सूक्ष्म कृतंरग ५ तोले रोटी बणानी तबे ऊपर सेंकनी हेठ नहीं सेंकनी वह रोटी बकरी को खिलानी और आक के पत्रों बिना और कुछ नहीं खिलाना और उस बकरी दियां मेंगणा सुखाकर टाये में पाकर ऊपर थोड़ा सा नौसादर धूड देना और होर गोहे लगाकर अग्नि दैणी रंग सब पिघल के अधःस्थ लघु गर्त में पैजायगा उसको कुठाली में पाकर सुहागा पाकर गाललैणा रंजित है (जंबू से प्राप्त पुस्तक)।

जडीबल से पारद से तांबे का सोना होइ पारदलेप

गजदंती बूटी—(क्या हस्तिशुंडी है) के रस में पारा खलितावपत्र लेपि आंच देइ तौ सोना होगा।

अन्यच्च

सीलवंतीबूटी—(क्या छुईमुई से मुराद है) के रस में पारा खलि ताम्रपत्र लेपै आंच देइ तो सोना होगा।

पारा और रुद्रवंती जडी से ताम्र का सोना धातुवेधी रसभस्म पारद लेप

चणकपत्रोपमैः पत्रैः सदाम्बुकणवर्षिणी । रुदंती नाम सा ज्ञेया तीव्रदारिद्र्यनाशिनी ॥४८॥ रुदतीरसमादाय रसेन सह मर्दयेत् रविपत्रप्रलपात्तु दिव्यं भवति कांचनम् ॥४९॥

(नि० र०)

अर्थ—जिसके पत्ते चने के पत्तों के समान हों और जिसमें नित्य जल झरता हो उसको (रुदवंती) कहते हैं वह तीव्र दारिद्र्य के नाश करनेवाली है उस रुदंती के रस मे पारद को घोट तांबे के पत्रों पर लेपकर अग्नि में धोंके तो सुवर्ण होगा॥४८॥४९॥

रुद्रवन्ती से अकसीर बनाने की तरकीब बजरिये सीमाब (उर्दू)

अकसीर बनाने का तजरुबा मुहम्मदयमीनखां साहब ने भी इस तरह किया है कि पारे को कोड़ी में भरकर दरख्त मजकूर ने नीचे गाड़ दिया सुबह को दूसरे रोज निकला पारा रेग की तरह होकर अकसीर शमसी हो जाता है और एक हुब: तोले भर चांदी पर तरह होता है (मुफ्हा अकलीमियां २३०)

हेमक्रिया रुद्रवन्तीजड़ी से और पारे गंधक से ताम्र का सोना

बूटी रुद्रवन्ती—पात चना को अस। फूल सेत और लाल होत है। तेल अस चंकिनी से गीरत है। नीक भीन अबर नहीं होत तेके रसमें पारा १ गंधक आंवरासार १ गेरू १ खलि ताम्रपत्रपर लेपि आंच देइ तो सोना सिद्ध होगा।

बूटी और गंधक से ताम्र का सोना

बूटीभगदंता—पात श्याम । पुहुप श्याम । छोट व्रीछ सब भूमिमें फैलत है तै को रस तोला १ गंधक नेनुआ तोला १ खलि ताम्रपत्रपर लेपि । दीपक आंच देइ सो सुवर्ण होता है।

अभ्रक भस्म से रांग की चांदी

बूटी गरवन्ती—पात सो आको अस । फूल पीते तेके रस तोला एक पीत अभ्रक मासा एक खली घरी एक जायफरमें डारि कपरौटी करि सुखाइ आंच देइ घरी ४ मासा १ सो सेर रांगा में अवटिडारै तो चांदी होगी।

और भी

दुधी[1] के दूध में। पीत अवरख गरमकरि बुझावे बार ३१ तो भस्म होइ रत्ती १ तोला रांगा में डारै रूपा होगा।

पारा और संखिया शोरे को खरल कर उस चूर्ण से रांग की चांदी

बूटी अग्रदंती—पात करोंदा को अस, फूल पीत छोट सर्व भूमि में होता है। तेके रस में पारा समूल १, कलमीसोरा १, खलै दीन १, तब रत्ती १ सेर रांगा में डारे पानी सोखे रूपा होई।

हेमराजी यानी कमरंग सोने को तेजरंग करना (उर्दू)

गंधक तीन तोला चार माशे घी में गलाये और घीग्वार में डाल दे इसी तरह पांच मर्तबः घी में गलाये और घीग्वार के अर्क में डाल दे फिर तोले भर नौसादर उसमें मिलाये फिर पांच तोला मिर्चियाकन्द मिर्चे पानी में खूब पीसकर इस पानी को थोड़ा थोड़ा उस गंधक में डालकर जज्ब करे और चने

१—दुधीका दूध निकलना कठिन है। क्या यह जड़ी अभ्रक के फूकने में काम देगी।

बराबर गोलियाँ बनावे फिर कमरंग सोना गलावे जब चाश्नी हो जाय एक एक गोली उसमें डालता जाय जब सब गोलियाँ पड़ जायँ उसका रंग तांबे का सा हो जायगा यह भी हेमराजी हो गई फिर तोले भर कमरंग सोने में माशे भर फिर हेमराजी डालकर गलावे चौगुना रंग सोने का उमदा हो जावेगा। (सुफ्हा खजानः कीमियां १९)

सोना बनाने की तरकीब बजरिये शुधी गंधक (उर्दू)

गंधक आठ पल, सांभरनमक आठ पल दोनों को नागरबेल में यानी पान के अर्क में चार प्रहर खरल करे शाम को सब दवा को खरल में इकट्ठी करके जंभीरी के अर्क में तर कर दे इसी तरह चालीस रोज जब पूरे हो जावें खरल से निकालकर रख छोड़े अगर एक महीने उसे खावे तो तमाम बीमारियां दूर हों, अगर चांदी के पत्रों पर लेप करके दो जंगली छोटे ऊपलों के बीच में रखकर आग दे तीन आंचों के बाद सोना बन जावेगा हर आंच आग सर्द होने के बाद हो। (सुफ्हा २३ खजानः कीमियां)।

चांदी को जर्द रंगने की तरकीब (उर्दू)

अर्कसत्यानासी पुख्तः शुदः तीन बोतल का गंधक आंवलासार दो बोतल पर सफाल नगली में रखकर चोया देवे मगर गंधक को किसी लकड़ी से पहले रेजः रेजः कर लेवे ताकि चोया देने के वक्त गंधक गुदाज न हो जावे बाद तमाम होने अर्क को गंधक को बारीक पीसकर दो दो माशे की पुड़ियां बना ले नुकरह एक सौ तोले को चर्ख देकर एक पुड़िया तरह करते जावे बारहवें चर्ख में बारहवीं पुड़िया तरह करके चांदी को बाहर निकाल ले वह चांदी कुश्ता होकर निकलेगी। फिर इस कुश्ते को माइउलहयात से जिन्दः कर ले चांदी चर्द रंगीन हो जायगी बराबर वजन के सोने के साथ हमिलान करे मकबूल बाजार है। (सुफ्हा २२ अखबार अलकीमियां दोस्त मुहम्मद खां एडीटर अख० अल०)

गन्धकमोमिया से चांदी वा ताम्र का सोना

पलाणपुष्प से खरल करना गंधक दिन सात फिर दुझाणा ३१ बार वा अधिक (यावन्मिक्थममो भवेत्। तद्गधकम्) रजत १० तोला पर १ रत्ती ताम्र में योजना करे (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

बजरिये रोगनगंधक अयार बढ़ाने की तरकीब (उर्दू)

गंधक सबज जिसका रंग सहक करने के बाद भी सबज रहता है एक तोला, मालकांगनी एक तोला, सफरतुलबैज यानी जर्दीबैजः मुर्ग दो अददलेमूं कागजी निस्फ आसार पुख्तः सबको यकबारगी मिलाकर खरल करे कि गोलियां बँध सकें बादहू शीशी में बतौर पातालयन्त्र के रखकर गिलेहिकमत करके दरमियान बालू के रखे ऊपर से बाजारीसख्त कोयलों की आग दे रोगन खुशरंग निलाई सुर्खी माइल टपकेगा। और उससे अयार सोने का ज्यादा हो सकेगा लेकिन बाज औकात कमी बेशी आग की वजह से रोगन बदरंग पीतल के रंग का निकलता है इससे अयार अफ्ताका काम नहीं निकलता अलबत्ता नकर्स और अर्कउलनिसा के दर्द के वास्ते इस्तेमाल करने से नफा हुआ है और दर्द बिलकुल जाइल हो गया है बादहू रोगन मजकूर में हरताल वर्की तोलेभर और मैन्सिल कनेरी तोलेभर पीसकर मिलावे और कमरंग सोनेपर जमाद करे और साये में खुश्क होने के बाद भूभल की आंच में दफन कर दे इसी तरह तीन अमल करे बादहू गलाकर पाचकदस्ती में गुदाजकरके छोड़े और गलाने के वक्त ख्याल रहे कि हरताल या मैन्सिल का कोई जुज सोने में न रह जावे वरना सोना फूटक हो जाता है। और जब ज्यादह खर्च दिया जावे, तब फूटकपना जाइल होता है। (सुफ्हा किताब अकलीमियां)।

ताकृष्टीगंधक तैलद्वारा चन्द्रार्क से सोने का जोड़ा

कर्पासद्वयबीजानि रविबीजजानि च द्वयम्। धत्तूरकस्य बीजानि बृहत्योश्च द्वयोस्तथा॥ करवीरस्य बीजानि समभागानि कारयेत्॥पश्चाद्वस्त्रं दृढं शुद्धमर्कदुग्धेन सप्तधा॥५०॥ भावयेत्सार्षपात्तैलभुक्तं पश्चाच्च गंधकम्। कृतसूक्ष्मं पुनः पिष्ट्वा वस्त्रलिप्तं प्रयत्नतः॥५१॥औषधानि मया यानि पुरा प्रोक्तानि तानि च॥ क्षेपणीयानि तद्गंधस्योपरि प्रमितानि च॥५२॥वस्त्रं संमार्ज्यते गाढमयः शूलिकया च तत्। निबध्यते ततः पश्चादयसोईपि शलाकया॥५३॥ प्रोतयित्वा भृशमिमामग्निं तत्र च कारयेत्। तदधो भाजनं धृत्वा ज्वलमानात्तदौषधात्॥५४॥ तैलं गंधकसंभूतं भाजने निपतत्यधः। तेन चन्द्रार्कपत्राणि परिलिप्तानि वह्निना॥५५॥ तावंत्येव पुनस्तप्त्वा पुनरग्नौ परिक्षिपेत्। भवन्ति तानि रम्याणि सुवर्णं सप्तवर्णकम्॥५६॥ अपरं नववर्णं च सुवर्णं तत्र मेलयेत्। अष्टवर्णं भवत्येवमेवं योजनिका क्रमात॥५७॥ तथा तथा भवेद्वृद्धिर्वर्णकानां वरा त्विह। तारकृष्टी निगदिता विपदामपदं भुवि॥५८॥ (बृ० योगतरंगिणी)

अर्थ—दोनों कपासी के बीज, दोनों कनेरों के बीज, धतूरे के बीज, दोनों कटेहलियों के बीज, इनको बराबर लेवे। पीछे मजबूत धोये हुए वस्त्र में आक के दूध से सात भावना दे, फिर सरसों के तेल से भिगोकर गंधक के चूर्ण को पीसकर वस्त्र में लीप दे और पूर्वोक्त औषध (दोनों कपासी के बीज इत्यादि) गन्धक के बराबर उसमें डाले। लोहे की शूली से अच्छी तरह वस्त्र को शुद्ध करना चाहिये फिर उसको सुई से सीकर आग पर चढ़ावे, उसके नीचे बर्तन रख दे, जब औषध जलने लगती है तो गंधक का तेल उस बर्तन में पड़ता जाता है उस तैल से चन्द्रार्कपत्र लीप कर अग्नि में तपावे, इस प्रकार फिर फिर करे तो सुन्दर सप्तवर्ण सुवर्ण बन जाता है। दूसरा नववर्णवाला सुवर्ण उसमें मिलावे तो अष्टवर्ण वाला सुवर्ण हो जावेगा। इसी क्रम से योजना करे तो वर्णकों की वृद्धि और उसमें उत्तमता होती है, यह सब आपत्तियों की नाशक तारकृष्टि कही गयी है॥५०—५८॥

हरिताल तेल से ताम्र का सोना

कृष्णसर्प में तब की हरिताल भरकर एक हांडी में पाकर मुख बंदकर किनारे धर छोड़े, जब सब कृमि हो जाय तो फिर बंद कर छोटे छोटे कीड़ों को बड़े कीड़े खा जायँगे, जब थोड़े रह जायँ तो पातालयंत्र से तैल निकाल लेवे। वह तैल ताम्र को सुवर्ण करता है। तैल लगाकर कोयलों पर भखाणा ताम्र सुवर्ण होगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

गंधक तेल से ताम्र का सुवर्ण

रोहित मत्स्य के तैल को गोमय में गाड़ना २१ दिन तक फिर उसमें आधा गंधक पाकर गोमय में गाड़ना। २१ दिन तक एकाकार द्रुत हो जायेगा; उसको फिर खिचड़ी में पकाणा ताम्रपत्र पर वा पित्तल पत्र पर लेप करके तपाणा एवं त्रिवारं। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

रोगन गंधक से अकसीर शोरे का जुज्व (उर्दू)

एक स्कूलमास्टर खादिमुल पुकारा था, एक फकीर इसके पास आया और नुसखा मुन्दरजः जैल तैय्यार किया, आंवलासार, कलईशोरा, लौनियाखार, बराबर वजन लेकर सहक करके गिलीकूज में (जो इसके पास का था) डालकर मसदूदल सवमतीन व मुखफ्फिस करके एक शेर पाचक जंगली की आग दे दे, सर्द होने पर निकाला तो सब दवा नरम मुशम्मे से बरामद हुई। पैसे पर यह दवा कदरे डालकर मलकर सुर्ख किया तो खालिस सुर्ख हो गयी। फकीर ने कहा हम जाते हैं, यह तैय्यार शुदः दवा तुम ले लो। इसने कहा कि अब मैंने सब तरकीब अपने सामने बनती देख ली है। मैं खुद बना लूँगा, यह आप ही ले जाइये, उसके जाने पर मास्टर ने चंदबार बनाया तो दवा न बनी बल्कि आग देने से उड़ गयी, मैंने भी दो दफे किया तो नाकामयाबी हुई। बराह करम इसकी दुरुस्ती फर्मावें जियादः नियाज॥ (राकिम नर मुहम्मद आजमूकल लाहौर)

संखिये की भस्म से चांदी (गालिबन) राँग की

सेत पुहुप की तिपतिआ के रस में संखिया दिन १ खरले तब केरा के गाम में धरि आंच देइ भस्म होइ, एक रत्ती अठारह तोले में डारे रूपा की सिद्धि हो। (अखवार अलकीमियाँ १५/३/१९०५)

संखिये की भस्म से रांग की चांदी

बूटी कोआस–सर्वभूमि में होता है, धान के खेत में बहुत होता है, बलुआसंबुल खार में खलै सुखावे सात पुट देइ, तब कपरौटी करि सुखाइ चारि कंडा की आंच देइ घरी १ कच्चा रहे भस्म न होइ, तब मासा १ सेर रांगा में डारि अवाटे तो रूपा होता है।

संखियाभस्म से वेधक

संखिया खरमूत्रमध्य २१ दिन रखणा, द्रोणपुष्पी की भस्म २ सेर हेठ ऊपर देकर १२ प्रहर मन्दाग्नि देणी, वेधक होय। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

संखिया मोमिया से रांग की वा ताम्र की चांदी

खस्सी (बकरे) दी चरवी सेर पक्का संखिया २१ माशे चरबी लपेट कर ताम्रपत्र में अग्नि देनी, मन्द उपरों में बन्द कर सिक्थोपन हो जायेगा, उसको बंग पर पाणा, एक रत्ती तोला वंग पर ४ तोला ताम्रोपरि एक रत्ती (नीलवस्त्रेण चालयेत् । जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

संखियातेल से ताम्र की चांदी

संखिया ४ तोला, शोरा आधसेर पक्का मिलावा या पक्का शोरा कढ़ाई में पाकर पकाणा जित्थों आठ उठे ओथे मिलावे पा देणा ऐसे सब मिलावे। जब शोरा निर्धूम होवे तब हेठ शंख रखकर ऊपर शोरा पाणा, शंख फूल जायेगा, शोरा हटाकर शंख पीसकर पारखणा, गरद जंगा रखणे से नरम होवेगा, ताम्रपत्र पर पाना–(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

संखिये का तेल (गालिबन) ताम्र से चांदी

श्वेत[1] संखिया १ तोला, जमालगोटे की गिरी २ तोले दोनों को नींबू रस में खरल करना, ४ दिन फिर अग्नि पर पाके देख लेना, जेकर धूम देवे तो फिर खरल करना, जब अग्नि पर पाया हुआ बल उठे धूम ना देवे तब सिद्ध भया उसको शीशी में पाकर लिद्द में दबा छोड़ना, रोज ५० फिर चांदी द्रवित पर पाणा, रत्ती तोला सुवर्ण होवे। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

मनसिलभस्म से रांग की चांदी

अष्टधार से उड़के दूध में मएनसिल मुलतानी खलै दिन १ तब आंच देइ पहर चार से भस्म रत्ती १ कै मासाभरि आध सेर रांगा में डारे तो रूपा होगा।

शिंग्रफभस्म (वेधक) रूमी मस्तंगी और रेवंदचीनी की लुगदी में आंच

रूमी मस्तंगी रेवन्दचीनी समभाग दोनों खरल करके नुगदी बणा के उसमें दोनों के बराबर सिंग्रफ रख के अग्नि देणी, वह सिंग्रफ चांदी पर वा कलीपर पाणा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

हिंगुल के अग्निस्थायी करने की तरकीब

बलिदर्दुरपतिलोहतापं[2] कुरुते हिंगुलखंडपक्षखंडम । शशिहेलिहिरण्यलोह–मूषादिनलब्धेन तुषोश्मना रुणद्धि ॥५९॥

(र० चिं०, र० रा० शं०)

अर्थ–गंधक, अभ्रक, रोहिपतृण, सब लोहों तथा हिंगुल का भस्म करता है, परन्तु चूका अर्कवृक्ष के संयोग से लोहमूषा में दिन भर तुषों की आंच से स्थायी हो जाता है॥५९॥

सिद्धमतखोट

द्रुतदर्दुरपूतिलोहसेकः कुरुते हिंगुलखंडपक्षखंडम् । शशिहेलिहिरण्यमूषिकापि ध्रुवमक्षीणधियामनेन लक्ष्मीः ॥६०॥

(बृ० यो०)

अर्थ–गन्ध भस्म और रोहिपतृण का सेर हिंगुल के टुकड़े टुकड़े करता है परन्तु चूका कनैर आदि के योग से सुवर्णमूषा में सिद्ध करने से सद्वैद्यों को लक्ष्मी प्राप्ति करता है॥६०॥

हिंगुल के अग्निस्थायी करने की तरकीब

दरदगुटिकाश्चन्द्रक्षौद्रैर्निरन्तरमावृतास्तरणिकनकौर्बिबागंधाश्मना सह भूरिणा । रचय सिकतायंत्रे पाकं मुहुर्मुहुरित्यसौ हुतभुजि वसन्वस्थेमानं कथं च न मुंचति ॥६१॥

(र० चिं०)

अर्थ–दरदर की टिकियाओं को चूका और मधु से घोट के आक वा घीकुंवार और धतूरा, कुंदुरू, खूब गन्धक के साथ बालुकायंत्र में बार बार गर्म करे तो हिंगुल अग्निस्थायी होता है॥६१॥

नागभस्म से चांदी का सोना

५ तोले सिक्का ढ़ाई तीन तोले मनशिला पीस के सिक्के ऊपर चुटकियां दे जाणा और चोड़ दी दाड़ी दी लकड़ी फेर दे। जाणा अथवा बेरी की लकड़ी फेरनी सिक्का मर जायेगा। उस सिक्के को नींबू रस में सात रोज फिर बालुकायंत्र में चार पहर फिर खरल फिर आग ऐसे सात बार आग देणी सिद्ध भया तोले रजत पर १ रत्ती पाणा स्वर्णकरणम् । (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अक्षय और रंजितनाग से चांदी का सोना

पलाश पुष्प रस १६ सेर नाग १ सेर (द्रुत नागे पुष्परसप्रक्षेपः । वस्त्रेण शनैः शनैः अक्षीणं जायते तुर्याशं चतुःषष्टिमिते तारे भाग एकोस्य दीयते लोहपात्रे)

पारदयुक्त सिक्काभस्म से ताम्र का सोना

सिक्का[1] लोहे के कड़छी में पाकर गालना और पलाश की लकड़ी फेरते जाना, सिक्का भस्म हो जायेगा, उस भस्म के बराबर उस भस्म को बराबर पारा पाकर १२ प्रहर नींबू के रस में खरल करना, फिर बालुकायंत्र में पकाना, १ चावल तोले तांबे द्रवित पर पाणा शुद्ध होवे। (जूंब से प्राप्त पुस्तक)

रजतकर रांग की चांदी

श्वेताभ्रं श्वेतकाचं च विषसैंधवटंकणम् । स्नुहीक्षीरैर्दिनं मर्द्यं तेन वंगस्य पत्रकम् ॥६२॥ लेप्यं पादांशकल्केन चांधमूषागतं धमेत् । यावद्द्रावयते वंगं पूर्वं तैलेन ढालयेत् ॥६३॥ वार्यादिलेपमेकं च सप्तवाराणि कारयेत् । पुत्रजीवोत्थतैलेन ढालयेत्सप्तवारकम् । तद्वंगं जायते तारं शंखकुन्देन्दु–सन्निभम् ॥६४॥

(र० रा० सुं०)

१–श्वेतसंखिया से सोना बनाना असंभव, ताम्र की चांदी संभव है। २– अभ्रम ३–सेकमित्यपि । ४–चन्द्र, चांदी, चूका । ५–सूर्य, ताम्र, आक, ध्रुवमक्षीणधियामनेन लक्ष्मीमित्यपि पाठः ।

१–क्या पहेली "एक चंचल दसगंधक साथ" में जो "फिर कागा नागा में बसे" यह पाठ है, इसका लक्ष्य इस क्रिया से होता है।

अर्थ–सफेद अभ्रक, सफेद कांच, सिंगियाविष, सेंधानोन और सुहागा इनको एक दिन थूहर के दूध में घोट रांग के पत्रों पर लेपकर अंधमूषा में

रख धोंकनी से धोंके जब जाने कि वंग गलने लगा तब पहले तेल में ढाल दे फिर पूर्वोक्त लेपकर आंच में तपाय पुत्रजीव (जीयापोता के तेल में) ढाले, इस प्रकार ७ बार में वह वंग शंख, कुन्द और चन्द्रमा के समान सफेद चांदी सा हो जायेगा।।६२–६४।।

रांग की चांदी

जस्त को अम्मी में भस्म व्रणाना फिर उसको पारा मिलाकर फली के नुगदे में आग देणी। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

ताम्रभस्म से जसद की चांदी

गजपुटी के रस में तामा सेत खलै पहर ४ नौसादर खलै दिन १ तब शंखद्राव नींबू में डार कपरौटी की आंच देइ तो भस्म होइ तब रत्ती १ चौदह तोला जस्ता की पारा में डारै तो रूपा होइ।

ताम्रभस्म से नाग की चांदी

सेतपारिजात के दुग्ध में सेततामा खलै पहर १ तब सूरन (जमीकंद) में डारि आंच देइ भस्म होइ सो रत्ती १ सहस्रतोला सीसा में डारे तो रूपा की सिद्धि हो।

ताम्रभस्म से रांग की चांदी

पीतरकतावूटी (क्या रक्तपत्ती है वा स्वर्णक्षीरी) के रस में तामा सेत मे खलि दिन ३, भांटा में डारि कपरौटी पाटी में करि आंच देइ दिन १ तो० भस्म होइ सो भस्म सतोला रांगा मौं डारै तो रूपा होवे।

ताम्रभस्म और रजतकर योग ताम्रभस्म से वंग की चांदी

जपोलोटा २ तोले, भिलावे ४ तोले, जवायण १ तोला, टका मन मनसूरी १ पूर्वोक्त पूर्वोक्त तीनों की नुगदी में बणा के दो कटोरी कली की बणा के उसमें टिक्की समेत डबो दे रखणी उपरों पंजपा कच्चे चिदिया लीएं लपेटकर खिनू बणा के गर्त बीच रख के आगदा कोयला ऊपर रख देणा गर्त ऊपर छेक करके ठीकरी रख देणी, स्वांगशीतल लेणा, भस्म हो जायेगी, ढोये बहुत होणा तो उस बमूबि सब दवाई बंधा लैणी लीए पंच पाव कुछ अधिक कर लैणी फिर आकदा दुग्ध पंज पाव और कली पंचपाव शुद्ध लेके एक मिट्टी दी चाटी विच कली दे हेठ आकदा दुग्ध आधा पाकर ऊपर कली रखकर कली पर ६ माशे पूर्वोक्त ताम्र भस्म और १ तोला रस कपूर, ६ रत्ती पारा पाकर ऊपरों आक का आधा दुग्ध पादैणा, ऊपरों चार बदी गौ का दुग्ध वा महिपी का दुग्ध पाकर चोटी ऊपरों बंद करके गोहे वा लिद्द पाकर टोपें में चाटी विशकार रख के टोटे बीच आग देणी। जिससे दुग्ध सब सड़ जाये। ताकली निकाल लैणी, रजत है चरख देलो (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

जौहर हरताल और कुश्ता तांबा दोनों से अकसीर कमरी (उर्दू)

हरताल वरकी को प्याले गिली में रखकर दूसरा प्याला बतौर सरपोश लबबलब जोड़कर देगदान पर रखे नीचे नरम नरम आंच जलावे। ऊपर वाले प्याले यानी कांसे पर पोदीना देशी के अर्क का चोया देता रहे जो जौहर ऊपर लगेंगे वह अकसीर का हुक्म रखते हैं। अगर इनमें से किसी कदर मिस पर लगाकर आंच दे तो फौरन मिस कुश्ता हो जायेगा, कुश्ता मिस तांबा मुसक्कीं ९ माशे रांग ६ माशे हर दो गलाकर जब एक जिस्म हो जाय इसके रेजे रेजे कर ले; सीमाव दस हिस्सा, आंवलासार चहार हिस्सा दोनों की कजली करके रेजहा मजकूर दस हिस्से के नीचे ऊपर देकर किसी बोते में खूब बंद करके बाद कपर मिट्टी गजपुट आंच दे कुश्ता होगा। यह कुश्ता हम:सिफत मौसूफ है। और अजीबुल खवास है नामर्द को मर्द बनाना तो इसके बांए हाथ का कर्तव्य समझिये। फालिज लकवा, अर्धंग, गठिया, कुल सात ही खुराक में काफूर होता है, बवासीर खूनी का तो नमूद नहीं छोड़ता, खुराक एक बिरंज बाज को निस्फ बिरंज। जौहर हरताल व कुश्ता तांबा से चांदी बनाने की तरकीब (फ) अगर इस कुश्ते के हम वजन जौहर जरनेख जो पोदीना देशी का चोया देकर हासिल किये गये हैं, दोनों को बाहम मिलाकर अर्क ग्वार में सात रोज तक दिन में खरल और रात को नरम आंच दी जावे, एक तोला मुश्तरी पर एक तरह करने से खालिस कमर करता है। (सुफहा ७ व ८ अखबार अलकीमियाँ)

रजतकर तांबे से चांदी

दाल चिकना ब्रुही बीच रखणा दिन १५ फिर एक कुज्जे में रख कर दूसरा कुज्जा उस पर ओंधा मार के डमरू यन्त्र बनाकर उसके नीचे दो लकड़ी की अग्नि बालनी घड़ी। १-दाल चिकणा ऊपर जा लगेगा वह जौहर लेके रखणो फिर चंगा त्रामा लेकर उसको सर्पप जल में १०० बार बुझाणा फिर समभाग ताम्र के कली लपेटकर ऊपर लीरां लपेट के आग लगा देणी। दोनों एक जान कांस्य सदृश हो जावेगा फिर १ तोला (डबल पैसा) त्रामा कुठाली में पाकर पहले दो रत्ती कास्य पाकर गालना फिर दो रत्ती जौहर पाकर चरख देकर बेचना रजत शुद्ध है। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

चांदी का जोड़ा तांबे को सफेद करना

श्वेत मुंर्दासिंग और सुहागा दोनों को खटयायीनाल खूब पोसना फिर तांबे के पत्र पर लेप करके सुखाकर अंधमूषा में देकर चरख दैणा और थोड़ा सा लवण संग श्वेत भी दैणा और आठवां हिस्सा जस्त भी पाकर चरख दैणा, साफ श्वेत हो जायेगा, रजत भी रलाना जेकर जोड़ा दागदार होवे वा चांदी काली होवे तो बहुत बार गाल के मुलठी के पाणी में पाणा। तब श्वेत हो जायगी। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

हेमरत्ती हेमवर्णवर्धकक्रिया ताम्रयोग

हेमतोले प्रदातव्यं ताम्रं माषार्द्धकं द्रुते। ताम्रे जीर्णे शुभे शुद्धे द्विगुणे चारणं भवेत् ।।६५।। त्रिंशद्गुञ्जासु संख्यासु वर्णहीनासु दीयते। हेम्नो हेम्नोऽस्य गुंजैका वर्णयुग्मोपपादिका ।।६६।।

(बृ० यो०)

एक तोला सुवर्ण को गलाकर एक मासे तांबे को डाल देवे। जब कि तांबा जल जाये तब पूर्व से दुगुना रंगतदार सुवर्ण होगा, इस एक तोले सुवर्ण को एक एक रत्ती कर गले हुए खराब सोने में डालता जावे, उत्तम सुवर्ण होगा।।६५।।६६।।

हेमराजी यानी कम रंग सोने को तेज रंग करना ताम्र को गंधक से मारकर ३ बार जिलाया है (उर्दू)

साफ तांबे को जंभीरी के रस में ३ बार बुझाव दे फिर दो हिस्से गंधक को उसमें मारके भर सादे पानी में घोलकर धूप में सुखा लै और भिगोते वक्त दूना हिस्सा उसका गंधक उसमें मिलावे फिर दसवाँ हिस्सा इन सब दवाइयों का पारा साफ और दसवां हिस्सा और गंधक मिलाकर खूब खरल करे फिर दो हांडियों में डालकर कपरमिट्टी करके सुखावे और वालूयंत्र में

१–चारणमित्यपि

रखकर हांडी में जम जावेगा और दवा नीचे की हांड़ी में रह जावेगी। पारे को अलग रहने दे और फिर जिन्दा करे। यह हेमराजी डालकर गलाय को पांचगुना रंग हो जावेगा। (मुफहा खजानकीमियां १८ व १९)

सोने का जोड़ा तीन बार गंधक से मारे ताम्र से हरताल सत्वयोग

त्रिवारं गंधकहतं ताम्रं हेमयेद्वयोरिदम् । सत्वं तालस्य मायैकं योजयेत्सर्वकामदम् ।।६७।। अष्टवर्णं भवेद्धेम ताम्रं गंधकमारितम् । एतयोर्दीयते रम्यं जायते कांचनं शुभम् ।।६८।।

(बृ० यो०)

अर्थ–गंधक से तीन बार मारा हुआ तांबा १ तोला सुवर्ण और एक मासा हरताल सत्त इन सबको मिलाकर धोंके तो आठ वर्ण का सुवर्ण होता है। वह सुवर्ण एक तोला और गंधक मारा हुआ तांबा एक तोला इन दोनों को चर्ख देवे तो उत्तम सुवर्ण होगा।६७।।६८।।

जोड़ासुर्ख तूतिया से तांबा निकालकर उससे चांदी रंगकर उससे हम्मिलान तिला (उर्दू)

नीलाथोथा १० तोले बारीक करके एक कपड़े की पोटलीमें बांध लेवे फिर उस पोटली को तेल में सरषप में भिगोवे और लोहे के जर्फ में आठ रोज तक रखा रहने दे। बाद आठ रोज के उसको आग लगावे। जब वह जलकर राख हो जावे तो बजरिये ब्याइउलहियात यानी शहद सुहागा घी, हरसह अजजाइ हमवजन देकर गलाये बाद अजा मिस्ल नियारियों के साफ करे। जिस कदर तांबा बरामद होगा। अहनियात से रख छोड़े बादहू तांबा बरामद शुदःके हमवजन चांदी खालिस अलदहा गलाये और तांबा मजकूर की चुटकी देता जावे। जब तमाम तांबा खतम हो जावेगा तो चांदी की रंगत तांबे जैसी हो जावेगी। इस चांदी के बराबर वजन जरे खालिस हम्मिलानु करके जेवर बना ले, यह बहुत उम्दा सनद का नुसखा है। (मुफहा २ अखबार अलकीमियां)

हेमकृष्टि ताम्र से चांदी को रंगा है

रसदरताप्यंगंधकमनः शिलाभिः क्रमेण वृद्धाभिः । पुटमृतशुल्बं, तारे त्रिव्यूढं हेमकृष्टिरियम् ।।६९।।

(र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–पारद १ भाग, सिंगरफ २ भाग, सोनामक्खी ३ भाग, मैनसिल ४ भाग इनको पीसकर एक तोले तांबे के पत्तों पर लेपकर भस्म करे उस तांबे की भस्म को गली हुई चांदी में तिगुनी प्रक्षेप करे तो चांदी होगी, इसको हेमकृष्टी कहते हैं।।६९।।

तारकृष्टी ताम्र औ रांग से चांदी का रंजन

भागैकमथ ताम्रस्य तारं भागैकमुत्तमम् । शुद्धनागं भवदेकं भागमेकन्तु टंकणम् ।।७०।। अंधमूषागतध्मातं यावत्क्षीणं भवेत्त्रयम् । तारं पीतं भवेदेतद्दलकार्यकरं परम् ।।७१। एतत्तारं भवेद्भागमेकं हेमत्रयं भवेत् । दशवर्णकमादाय धमनीयं प्रयत्नतः । हेम तज्जायते रम्यं चम्पुष्पप्रभं स्फुटम् ।।७२।।

(बृ० यो०)

अर्थ–एक भाग तांबा और एक भाग चांदी, एक भाग शुद्ध सीसा और एक भाग सुहागा इन सबको पीस अंधमूषा में रख धोंके जब तक सुहागा सीसा और तांबा ये तीनों जल जावें तब यह चांदी पीले रंग की दलदार होती है, इस चांदी का एक भाग सुवर्ण तीन भाग लेकर चर्ख देये (इसमें जो सुवर्ण हो वह दसवर्ण का होना चाहिये) इन दोनों को घरिया में धरकर धोंके तो चंपे के फूल के समान सुवर्ण होगा।७०–७२।।

१–गन्धकतारे, इत्यपि पा० । २–निर्व्यूढम् इत्यपि पा०

कमरंग सोने को तेजरंग बनाना (उर्दू)

साफ तांबे का गंधक में फूंके फिर जिन्दा करे दो हिस्सा सोना एक हिस्सा तांबा दोनों को गलाएं और जौ के बराबर पत्र बनावे फिर सेवल और टेसू के अर्क में सीसा को मारे और पत्र के बराबर इस मरे सीसा को ले दसवां हिस्सा इन दोनों का सेमल और जंभीरी का अर्क इस सीसे मरे में मिलाकर उस सोने के पत्र पर लेप करके सोये में सुखा लावे फिर खरिया नमक और आठवां हिस्सा इन दोनों का सज्जी का पानी और तीनों को सोने तांबे और सीसे से सौ हिस्से जियादह लेकर पीसकर मय उस पत्र के उस पर ढांके और कपरमिट्टी सुहागे से खूब बंद करे और सुखा के तीन बार कपर मिट्टी करे और सुखाकर खूब तेज आंच दे। जब आग और हांडी ठंडी हो जाय जब निकलेगा, पीसकर रख छोड़े, जब सोने का उमदा रंग करना चाहे तो फिर सोना गलाकर द्रुति हेमराजी डाल दे उमदा रंग का सोना हो जायेगा। (सुफहा खजान कीमियां)

हेमराजी यानी सोने का तेजरंग बनाना (उर्दू)

गंधक के साथ तांबे को मारे और जिन्दा करे तीन बार फिर दो हिस्सा सोना, तांबे में मिलाकर गलाएं और मरे सीसे को सेमल और जंभीरी के अर्क में मिलाकर लेप करते बदस्तूर दो हांड़ियों में रखकर कपरमिट्टी करके सुखा के तेज आंच दे, जब हंड़िया ठंडी हो जावे तो उस पत्र को निकालकर सर्द करे, हेमराजी से दो हिस्सा बढ़कर हो जायेगी। एक तोला कमरंग सोना लेकर एक रत्ती यह हेमराजी डालकर धोंके, उमदा रंगक सोना हो जायेगा। (सुफहा खजान कीमियां १८)

भंगजटाजूट से पारे से चांदी बनाने की तरकीब (उर्दू)

तरकीबसानी अगर शीराबूटी मजकूर का घरियें में डालकर सीमाब को उसमें डाले इस तरह कि शीरा में छुप जावें उसके ऊपर दूसरी घरिया रखकर और बोत मुअम्मा गिलेहिकमत से मोहक्किम करके बतरीक मजकूरः वाला आदे कुदरत इलाही से आबसाबाब जज्ब होकर कमर हो जायेगा। (सुफहा अकलीमियां २६१)

जुलनीबूटी से सीमाब को चांदी बनाना (उर्दू)

अमलकारी सीमाब मुसफ्फाकमरी जो बुरादाखिश्त कौहना वगैरः में साफ करके कपड़ें में छान लिया हो बोतें में डाले।

मुनसिम	शीन	लाम	सीन	ये
मुजुरिम	जीम	लाम	सीन	ये

और ऊपर से शीरा बूटी जुलनी का इतना दे कि सीमाब के ऊपर हो जावे और बारहवां हिस्सा सीमाब से सुहागा उस पर छिड़क दे और अंधमूषा में करके सवासेर करसी की आग एक बालिश्त गहरा गढ़ा खोदकर आग चारों तरफ से चांदी खालिस हो जावेगी। लेकिन बोता को अव्वल आग में रखकर पुख्तः करके बाद उसके अमल करे। (सुफहा अकलीमियां २६१)

गालिबन सीमाब से चांदी बनाने की तरकीब (उर्दू)

मुसर्रिफ–कि:	खे	स्वाद	कात्रा	नून
मुतरज्जिम–गि:	वाव	मीम	आलिफ	नून

जिसका फूल तीन किस्म का होता है, अव्वल सफेद गुल उसका दरख्त हर

१–यह जरूर हरीन तिला की खराबी थी, लिहाजा दुरस्त कर दी गई।

२–अलामत यह बूटी सफेदगुल और जर्दगुल और जर्दगुल दो किस्म की होती है। अमल कीमियाई में जर्द कारामद है।

जगह मिलता है, दोयम सुर्खगुल सोयम स्याहगुल फूल निकलने के बाद इसकी किस्म पहचानी जाती है लेकिन अगर फूल न निकलें हों तो सफेद फूलवाली से इस तरह तजीम करे कि सुर्खगुल की पत्तियां सफेदगुल से ज्यादा छोटी और बारीक होती है। सुर्ख गुल का दरख्त कीमियाई है। इसका शीरा निकालकर पहर भर तक सीमाव को उसके शीरे में खरल करे और अंधमूपा में रखकर दो सेर कर्सी की आग दे।

(सुफहा अकलीमियाँ २६८)

गुलमहदी जर्दगुल से अमलकमरी की तरकीब (उर्दू)

तरकीब नं० १ एक शाख जकूम खारदार की लाकर चार चार अंगुल के टुकड़े करे और एक जानिब से उसको खाली करके अगर बूटी मजकूर सूखी हो तो जरा सा सुहागा मिलाकर और उस टुकड़े के मुँह में पारा डाल दे और दूसरे जकूम के टुकड़े से जोड़कर गिलेहिकमत कर दे और अगर बूटी ताजी न मिल सके तो उसको कूटकर दो टिकियां बनावे और थोड़ा सा बतरीक मजकूर देकर दूसरा टुकड़ा उसमें मिलावे और सेर सवा सेर कर्सी की आग दे जब खुद ब खुद सर्द हो जाय काम में लावे।

(सुफहा अकलीमियाँ २५८)

गुलमहदी जर्दगुल से अमलकमरीकी तरकीब (उर्दू)

तरकीब नं० २ अर्क यह लुबदी में सीमाव को घोटे और दोनों की टिकिया बनाकर मूपे में रखे, ऊपर से कुछ सुहागा डाल दे और बोते को मौअम्मा करके कर्सी की आग दे और अगर वर्ग ताजा मिले तो शीरा उसका इतना डाले कि सीमाव उससे ढँक जावे यानी शोरा मजकूर बालाइ सीमाव रहे अगर बाजाइ पारे के मिस को बतरीक मजकूर रखे तो भी कारगर होगी लेकिन इस सूरत में तेज आग देनी पड़ेगी।

(सुफहा अकलीमियां २५९)

सीमाव का मसकः बनाना व चांदी बनाना (उर्दू)

शिवलिंग दूसरा नाम सारबेल यह एक बूटी है—जो आमूमन दरख्त थूहर पर होती है और इसको फल दराज लगता है। अगर इसके वर्ग को मिस पर मलकर मिस को आग में डाल दे वह सफेद हो जाता है। इस बूटी के एक तोला अर्क में अगर सीमाव एक तोले को हल करें सीमाव मिस्ल मस्कः के हो जायेगा। इस मस्कः शुदः पारे के नीचे ऊपर वावतरंग देकर आंच दे। आग सर्द होने के बाद निकालेंगे। आपका सवाल हल हो जायेगा। (सरजमीन मालरिकोटले में बूटी बकसरत है कहो तो भेज दी जावे) इसी तरह अर्क वर्ग नील में भी पारा हल किया जाकर मस्कः हो जाता है। आगे सब वही तरकीब है जो बयान की गई। (सुफहा १० अखबार अलकीमियां)

सीमाव की चांदी बनाने की तरकीब (उर्दू)

फरफयून एक तोला, सीमाव एक तोला, दोनों कुठाली में रखकर और फर्श व लिहाफ सुहागे का देकर कोयले की आंच में दे बादहू बाद कश में धोंके। इन्शा अल्लाह कमर खालिस होगा।
(अखबार अलकीमियां १/५/१९०७)

पारद की चांदी शोरे से (उर्दू)

अपामार्ग के रस में शोरा खरल करना फिर दो शिराव कें बंद करके आग देणी। चरख खा जायेगा। उस शोरे को पारे के ऊपर देके बंदूक की नली में आग देणी। पारा बैठ जायेगा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

पारद की चांदी

संखिया, पारद समभाग लेकर सिरके से वा किंब: के जल से खरल करना फिर अन्धमूषा में देकर चरख देणा। संखिया उड़ जायेगा। पारद चरख खा जायेगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारे की चांदी हकीकत मिकदार में (उर्दू)

नौसादर १ माशे, फिटकिरी ६ माशे दोनों को बारीक पीसकर मिलावें। सात आठ टुकड़े कुंआर के जो हर टुकड़ा चार चार अंगुल का हो पोस्त दूर करके किसी चीनी के बर्तन में एक के बाद दीगरे तहबतह रखे और हर टुकड़े पर फिटकिरी और नौसादर गिराय बादहू किसी जगह चार पहर तक रख छोड़े, चार पहर कें बाद क्वांर सब पानी हो जायेगा, इस पानी को तवे आहनी पर डालकर नरम नरम आंच पर पकावे और दर्मियान एक लकड़ी के चम्मच से हरकत देता रहे, थोड़ी ही देर में नमक बन जावेगा, इस नमक को खरल में डाले दर्मियान इसके सीमाव ३ माशे एक घंटे तक इस तरकीब को खरल करे कि दिस्ता खरल से घिसेगा तो अमल बातिल हो जायेगा। बाद खरल एक सादत किसी बोते गिली में इसी सीमाव के कीकड़ से दबाकर भरे फिर कोयले की तेज आंच में बोते को रखकर धोंके सीमाव नुकरः खालिस बन जावेगा।

नोट—अगर अमल मजकूर बाला से सरमू भी फर्क रहेगा तो अमल सही नहीं उतरेगा। (सुफहा अखबार अलकीमियां १६/६/१९०५)

कामधेनुकटोरी चांदी की

बूटीजलसी, पातमेंहदी को अस पुहुसरोवार चीतास्याम कालाचीता लजारुलाल लाललज्जालू पुहुप का वनमधु आले धातुमह करिसादै भीन भीन बार ३ तोल सब मीलाइ अष्टधातु को पात्र बनावे, तेहमहँ पारा अवटै रूपा होइ बड़ी बार यों ता पाछे पात्र में तांबा लोहा, सीसा, अवटि भीनभीन तो रूपा संधि।

सीमाव की चांदी बनाने की तरकीब (फार्सी)

बोतः नुकरः दो तोले सीमाव एक तोला शीरादरख्त वर दो तोला सीमावरा दरीं बोतः निहन्द व वरां शीरः मजकूर अन्दाजन्द बदर जेर आं बोतः चराग चहार फतील:दार विसोजन्द व रोगन कुंजद वादव बारा वबायद कि बोतः वरसहपाव आहनी बाशद व चराग चुनी वाशद कि आतिश तमाम दर जेर बोतः बुवद व फस्ल दर जुर्म बोतः व शैला फतीला सह अंगुश्त मजमूम बुवद हाजाकमर

(सुफहा १० किताब मुजरबात अकबरीफार्सी)

पारे की चांदी चांदी की कटोरी में

१२ माशे चांदी की कटोरी बनानी १२ निंबू का रस उसमें देणा फिर १ तोला पारा पाकर १ निंबू रस पा देवे। आग पर देवे चांदी होई (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

पारे की चांदी के मेल से चांदी बनाने की तरकीब

सिफत अकद सीमाव किसीम गर्दद व सीमाव १ तोला सम्मुलफार सफेद १ तोला, साबून १ तोला, बेख बिसखपारा १ तोला, सबको वाहम सहक करके कूजः गिली में डालकर पहनकूजः पर एक तोला खालिस सीम का मुदब्बिर करस रखकर तीन बार कपरौटी करके खुश्क करे बादहू चार पाचकदस्ती आंच दे जब सर्द हो जावे तो निकाल ले सीमाव मअबवाहर मुनक्किद सीमाव कुठाली में डालकर चर्ख दें कि सब सीमा खालिस हो जायेगी। (अखबार अलकीमियां १६/३/१९०७)

१—निम्बू

चांदीयोग से पारे की चांदी

घृत पाव १, शहद आध पाव, भिलावे पाव १, सिंग्रफ १ तोला, घृत कढ़ाई में पाकर ऊपर से सिंग्रफ की डली रखकर उपरों भिलावे रखकर मंदी मंदी आग बालनी। जब तीनों चीजें सड़ जायें तो शिंग्रफ ले लेणा फिर डेढ़ तोला चांदी गला के जब गलने लगे उस वेले सिंग्रफ पीस के पा देणी। सिंग्रफ और चांदी जब चरख खा जाण तां छोड़ देना बोता बणा के उसको सुखा पका के उसमें वह डली रख कर उपरों पारा पाणां फिर बंद करके ४ सेर कच्चे में गणा कूटकर उस पर बोतार रखना जितने तक दवाई आवे उतना मेंगण में रखना, बाकी खाली रहे। आग दैणी स्वांगशीतल निकालकर चांदी देरवेल के चरखदैणा। पारा तोला ९ (वा नौबारी करै) (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारे की चांदीयोग से चांदी

सिंग्रफ १ माशा, हरिताल १ माशा, गंधक १ माशा, मनसिल १ माशा, चांदी १२ माशे, चांदी को महीनपत्रा करवा कर उसमें चारों चीज महीन पीसकर रख दैणी पुड़ी बनाकर कुज्जे में रखकर उपरों पारा पा दैणा फिर (पूर्वो प्रथमौ चरमे योज्येन जात) मुख बंद करके आग दैणी फिर कपड़ें में छान कर गोली बनाकर कुठाली में रखकर चरख दैणा, रजते होवे। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

चांदी से पारे की गोली बना उसकी बैठक

रवि दिन चांदी माशे १०, हरिताल रत्ती १, शिंग्रफ रत्ती १, मनशिल रत्ती १ गंधक रत्ती १, मखीर माशा १, चांदी दा पत्रा बणाकर चारों चीजें महीन पीसकर पत्र पर मखीर लेपकर उपरों चारों का चूर्ण धूड़ देना फिर पत्र लपेटकर कुठाली में रखकर गालणा फिर पत्रा बणाना फिर पारा १० तोले लेकर कुज्जे में पाकर ऊपर पत्रा रखकर मुद्रा करके वही गोहे की अग्नि दैणी फिर पत्र लंग्न और अधस्त दोनों को कपड़ें में छानणा। जो गुटिका होवे सो लेके तुलसी के नुगदे में रखकर गरम भूभल बीच दो तीन आंगा देणियां दस तोले पारद जब बज्ज जायेगा तब फिर पत्रा कमजोर हो जायेगा और इस गुटिका पर सिंवधीं बूटी तथा श्यामा तुलसी का लेप करके वा इनके नुगदे में रख कर हें ऊपर जस्त चूर्ण देकर लीरां लपेटकर मिट्टी लगाकर स्वल्प अग्नि दैणी। फिर कुठाली बीच रखकर चरख दैणा सुवर्ण स्वर्ण भवेदिति । (उत्तम वर्ण का सुवर्ण होवै) (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारे की चाँदी से गोली बना उसकी बैठक

पारा २ माशे, रजत १ माशे, कांच के लूण में सूखा खरल करना गोली हो जायेगी। उस गोली को नकछिकनी के नुगदे में हलकी आग देणी, रजत हो जायेगी। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

पारे की नशिस्त चांदी से सीमाव की गोली बना उसकी नशिस्त (उर्दू)

जुजअव्वल–बजाज को माइउलकली की मुकत्तर से चन्दबार गोतः देकर मुकन्लिस कर लिया जावे बादहू हमचंद नौसादर मसअद से मुशम्मे करके चन्दरोज छोड़ दिया जावे ता आंकि मिजाज उसका कायम हो जावे।

जुज दोयम–जीवक चाँदी के महज बुरादे से मामूली तरीके से गोली बना ली जावे, अब इस गोली या गोलियों को जितनी भी हो इससे दुचन्द गुड़ में लपेटकर हर गोली अलहदा अलहदा रोगन सर्षफ सहचन्द में पकाया जावे बादहू उसमें से निकालर जुज अव्वल में (यह जुज अव्वल अगर एक एक पाव तैयार किया जावेगा, कम से कम दस सेर गोलियों को काफी होगा। यानी यह कि यह बहुत जलता है यह मतलब नहीं है कि दस सेर गोलियां एकदम डालकर पकाई जावें) आध घंटे तक पकाया जावे, फिर थोड़ी सी असल चांदी को चर्ख देकर एक गोली इसमें डाल दी जावे, जब यह चर्ख खाया जावे तब दूसरी गोली इसमें डाल दी जावे, ता आंकि जितनी बनाई हों सब खतम हो जायें। यह नुकरा बाजारी नुकरे से कहीं अच्छा होता है–(राकिम मुहम्मद का जमउर्फ बादशा शार्दन फकीर सैरानी–मुकाम रानीपुर शरीफ–रियासत जैपुर सिन्ध) (सुफ़हा अखबार अकलीमियां १/१०/१९०७)

रौप्य भस्म से पारद की गोली फिर भस्म वा बैठक

रूपरस, जवायणां, ब्रह्मदंडी दोनों से आग देणे वा कुठाली में जवायण दी चुलकी से बनानी वा जवायण दे दे ढकुले बड़े बनालयणे उसमें टोआकर के ब्रह्मदंडी रख के आग देणे से फूल हो जायेगा। रूपरस दी गोली बणा के लोटासज्जी के पाणी में नालमूली का मिकड़ रगड़ कर गोली पर लेप कर सुका लैणा, हरदल घोट के उसमें गोला रख के आग दैणी, जब गोली पुल्तः कोमय हो जावे तब फुलावट दैणी संखिये दीहू परस की गोली लेकर नौसादर, शोरा, सुहागा, संखिया चारों समभाग महीन पीसकर कुज्जे में पाकर डेढ़ पाव कच्चे दी आग देणी, फूल हो जायेगा, उस फुलदा दाबूदे की कुठाली में धवों रजत ही है। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

चांदीभस्म से पारे की गोली बना उसकी बैठक

नौसादर २० तोले, लोटासज्जी २० तोले, लोटासज्जी नीकी करके भिगो दैणी और नौसादर को निंबू के रस में खरल करना। १।। प्रहर और लोटासज्जीदा पाणी। चतुर्थांश पा दैणा पाकर कुज्जे में रख छोड़ना घड़ी ४ फिर उसका नालिकायंत्र से तैल निकाल लेणा और निकालकर रख छोड़ना। शोरे का तैल, शोरा २० तोले लेके खपरे में चढ़ाकर आग बालणी, जब अग्नि पक जावे तब भिलावे ६ तोले कम से पाणे फिर कालीरी ३ तोले क्रम से सुटणी, इस तरह किये अग्नि सह हो जाता है फिर कूट के कांस्यपात्र में पाकर शरद जगह रखणा द्रवित हो जायेगा। अवशिष्ट में लोटासज्जीदा पाणी पा दैणा उससे भी द्रवित हो जायेगा। उस तेल को अलग पात्र में रखना।

कुक्कुटटांड का चूणा बना के अलग रखणा

रूप्यभस्म, रूप्य को कुआरगंदलदियां पुटां २१ देणियां फिर तैल कौड़ा लेकर उसमें लवण पाक ११ पुटां दैणियां, फिर जंबूवृक्ष त्वक् चूर्णो पंजया की नुगदी लेके उसकें रूप्य रख के २० सेर गोहे की भड़क दैणी, ऐसेई आग दैणे से भस्म हो जायेगी, उसको पारा ४ रत्ती को तोला पाके गोली बणा के कुज्जे में अंडो के चूने को नौशादर तैल १।। माशे मलना और लवण को शोरे का तैल मलना हेठ लवण आधा ऊपर अड़चूर्ण आधा ऊपर गोली ऊपर अंडचूर्ण ऊपर लवण देकर कुज्वेदा मुखबंद करके भूभल में घड़ी भर आग दैणी। फिर तेज आग ३१ सेर गोहों की पैणी रजत हो जायेगी। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

चांदी से बनी पारे की गोली की बैठक

त्रिफला या पक्केदी नुगदी बणा के कुंजे में रौप्यरसगुटिका रखकर कोकिलाग्नि वा उपलाग्नि दे या रौप्यकम् । (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

चांदी से बनी सीमाव की गोली की नशिश्त जस्त के कुश्ते से (उर्दू)

अव्वल जसत् को गुदाज करके त्रिफला की चुटकी देते जाएँ और लकड़ी से हिलाते रहें। थोड़ी देर में तमाम जस्त कुश्ता हो जायेगा। सीमाव की चांदी में लेंमू के अर्क से गोली बांध ले, फिर कुश्ता जस्त को शीरेजकूम में समीर करके गोली मजकूर को अन्दर रखकर थोड़े से पाचक दस्ती की आंच दे। नशिस्त खा जावेगा। (सुफ़हा ४–५ अखबार अकलीमियां १६/६/१९०७)

नशिस्त गोली सीमाव जो कुश्ता नुकरा एक आँच से बनी हो (उर्दू)

नशिस्त–हकीम सैय्यद इसरारुल्लाहसाहब २०/८/१९०७ को मालीरकोटला दफ्तर अखबार अलकीमियां में तशरीफ लाये थे। जुबानी भी इस नशिस्त का जिकर आया था हकीम साहब मौसूफ ने नशिस्त की तरकीब इस तरह पर फर्माई है। जस्त आध सेर लेकर कढ़ाई में गलावे दर्मियान उसके सहजने की लकड़ी फेरते जावें तमाम जसत कुश्त हो जावेगा।

कुश्ताजस्त आध सेर, सम्मुलफार सफेद आध सेर, तमाम कुश्ते में सम्मुल फार २ तोला खुश्क खरल करें किसी कूजें में वंद करे और दो सेर की आंच दे। इसी तरह हर दफा दो दो तोले सम्मुलफार शामिल करके बीस आंचे दो दो सेर की दें दे। नशिस्त तैयार होगी। अकद सीमाव को इस नशिस्त में देकर आग दे। सीमाव नशिस्त खाजायेगा (सुफहा ६ अखबार अलकीमियां १/९/१९०७)

कुश्तानुकरः जाजब सीमाव (उर्दू)

नुकरा १ तोले का पत्र बनाकर गरम करके अनारदाना तुर्श के पानी में चालीस मर्तबः गोतः देवे फिर जकूम खारदार वकदर बीस तोला को नुगदा बनाकर उसमें पत्र मजकूर को रखकर गिलेहिकमत करके खुश्क होने के बाद ५ सेर की आंच दे। कुश्ता उमदा तैयार होगा। अगर किसी गलती से खाम रहे तो दुबारा आग दे। यह कुश्ता अगर हुरन खुरी के पानी में खरल करे तो चौदह तोला परे को जज्ब करता है। अर्कलेमूं से ११ तोला। (सुफहा ६ अखबार अलकीमियां १/९/१९०७)

तुसखा कमरी–तांबे का सफेद कुश्ता बनाकर उससे सीमाव की गोली बांधकर नशिस्त देने की तरकीब (उर्दू)

मिस एकदाम का पत्रा बनाकर पोस्त वेख पीपल के पानी में ४० मर्तबः गोता दें, बादहू वर्गपीतल की नरम नरम कोंपल नीम सेर पानी में दरख्त करीब २० तोले से घोटकर नुगदः बनाकर उसमें पत्तरामिस को रखकर गिलेहिकमत करें जब कि खुश्क हो तो २० सेर पाचकदस्ती की आग देवे। बफजलहू खुदा कुश्तावरंग सफेद होगा। शायद किसी गलती से पहली मर्तबः कुश्ता न हो तो दुबारा बदस्तूर बर्ग पीपल में रखकर आग देवें तो जरूर होगा। बादहू कुश्ता मिस १ तोला सीमाव मुसफ्फा शुदः २४ तोले खरल में डालकर हमराह यानी जो नागरजील में निकलता है, दो तीन घंटे सहक करने से अकद हो जायेगा, बाहदू चोपचीनी ३ तोला, कवावचीनी ३ तोला, रवेंद चीन ३ तोला, दारचीनी ३ तोला, अलहदा अलहदा कूटकर खरल में डालकर हमराह शीरमदार १२ तेल खरल करे जबकि जमाद करने के लायक हो तो गिरह मजकूर पर जमाद कर देवें। बादहू वर्ग मदार ३० तोले को कूटकर नुगदा बनाकर कूजः गिली में गिरह के जेरुवाला देकर बंद करे गिले हिकमत करने के बाद खुश्क होने दे फिर ४ सेर पाचकदश्ती की अखगर आग में रख दें जबकि सर्द हो तो गिरह निकालकर दुबारा कुड़ाली में डालकर जेरुवाला सुहागा देकर खूब जोर से फूंक मारे हत्ताकि चर्ख अच्छी तरह से आ जावें। सर्द करने के बाद अपने काम में लावें। बफज्जलखुदाआलाकमर तैयार होगा। बश तजुर्बाशर्त है तजरुबां करके देख ले।

नोट–गिरह को चर्ख देर से आता है इसलिये घबराकर छोड़ न दे बल्कि बहुत से कोयले डालकर मुश्क आहनगरान से धोंके यानी फूंक मारें तो एक घंटे तक जरूर ही चर्ख आ जाता है। अलराकिहकीम सैय्यद गुलाम अली शाह अजकरांची (सुफहा १५ अखबार अलकीमियां १/६/१९०७)

नशिस्त देने की तरकीब (उर्दू)

ऊँट कटेरे की पांच सेर राख में जो उसके पंचांग की हो पारः कर्स बँधा हुआ रखकर हांडी में भरकर दो घंटे कामिल तदवीजन आंच दे चांदी हो जावेगी। (सुफहा अकलीमियां १६४)

नोट–यह तरकीब मुतरज्जिम ने कुश्ता नुकरा से सीमाव की गोली बांध ने बाद लिखी है।

गिरह सीमाव की नशिश्तकी तरकीब (उर्दू)

नशिस्त की तरकीब यह है कि सीमाव मुन्दरजः जैलफर्स को लेकर अव्वल गूनर्द छांछिया को पानी में घोलकर १५ मिनट तक उस कर्स को पोटली में रखकर पकावे ताकि सख्त हो जावे बादहू एक तोला शोरा काइमुल्नार को बोते में रखकर उँगली से गढ़ा सा बनावे और उस गढ़े में संबुलखार कायमुल्नार दो माशे छिड़कर कर्स सीमाव को उसके ऊपर रख दे सीमाव के ऊपर फिर दो माशे समुलखार मजकूर छिड़कर तोला भर शोरा काइमुल्नार उसके ऊपर से ढांककर बोतः को मुअम्मा करके गिले हिकमत कर दे बाद खुश्क होने के पावभर धान की भूसी की आग दे खेल की तरह बैठ जावेगा सुहागा देकर चर्ख दे और काम में लावे। (सुफहा अकलीमियां २६५)

कर्स बनाने की तरकीब रुपया या चांदी के पत्तर को कटाई खुर्द की लुगदी में रखकर कपरौटी बगैरः फूंक दे निहायत उमदा कुश्ता तय्यार होगा, जो जाजव आव सीमाव है लेंमू के साथ सहक करे तोला तोला भर की कर्स वना ले।

नशिस्त या (दाबू) (उर्दू)

सीमाव की गिरह हस्वजैलदाबू में बिलकुल बैठ जाती है, उम्मेद है, कि नाजरीन इससे जरूर मुनफैद होगे। जस्त शीरीं ३२ तोले को अव्वल सर्पप के तेल में सात बार बुझाव देकर साफ करे, यहां तक कढ़ाई में गलाकर दरख्त सहँजने की लकड़ी फेरते जावें, यहां तक कि जस्त वाकिस्तर मानिन्द राख के हो जावे बादहू दो प्याले गिलीपुख्तः के लेकर एक प्याले में निस्फ खाकिस्तर मजकूर बुझाकर उसके ऊपर गिरह सीमाव रख दें बाकी निस्फ खाक जस्तगिरह के ऊपर देकर दूसरा प्याले बतौर सरपोश दें और गिले हिकमत करके दो अढाई सेर उपलों की आंच दे इनशा अल्लाह शर्तिया गिरह जमकर निकलेगी।

एक खासराज–यह खाकिस्तर जस्त हमेशह के लिये इसी तरह कारामद रहेगी और २१ दफा २१ गोली सीमाव की दाबू में नाशिस्ता खा जायेगी फिर यह खाकिस्तर जस्त मोतियाबिन्द के लियें अकसीर है। (सुफहा ३–अखबार अलकीमियां १/११/१९०७)।

नशिस्तसीमाव की गिरह (उर्दू)

सम्मुलफार सुहागा नौसादर फिटकिरी सबको अलहदा अलहदा पीस सम्मुलफार को छोड़कर पानी को मिलावे और शकोरे में निस्फ फर्श करें और इस पर सम्मुलफार फर्श देकर करें और इस पर अकद रखें और निस्फसम्मुलफार को लिहाफ बनावें और इस पर निस्फ दूसरी अदवियात का दूसरा लिहाप बनावें और गिले हिकमत करके आध सेर उपलों की आंच दे वाजः रहे कि सब चीजें अकद से दुगुनी होनी चाहिये। (सुफहा ७० मुजरवात फीरोजी)

मुतअल्लिक नशिस्त (उर्दू)

वाजः हो कि कुश्ता नुकरा से जो आब सीमाव जज्ब होता है तो वह सीमाव नशिस्त से नुकरः होता है और कुश्तः मिसवरंग सफेद या कुश्तातिलासे जो कर्स सीमाव बँधता है वह सीमाव नशिस्त देने से तिला हो जाता है। (सुफहा अकलीमियां २६६)

हिदायत मुतअल्लिक शिगुफ्त व नशिस्त सीमाव (उर्दू)

चिगुफ्त व नशिस्त के मुतअल्लिक अस्वात को वता देना जरूरी है, कि

जो अकद खालिससीमाव की बनाई हो वही काम दे सकती हैं वरनः बे सूद और इस बात के पहचानने के लिये आयागिरह खालिस है या नहीं यह अमल करना चाहिये, जो मुजर्रिब है कि गिरह को एक कुठाली में रखकर कोयलों की आग पर रखें और अबकरी कुलथी और गंधक की चुटकी दें अगर वह गिरह बरंग जर्द नमूदार हो तो वह सुर्ब से गिरह की हुई है और स्याह हो जावे तो सुरमा से और अगर सफेद बराबर वजन निकले तो दुरुस्त है और इस हालत में अगर चमकदार न हो तो नौसादर की चुटकी दें, चमकदार हो जायगी। (सुफहा ६१ मुजरबात फीरोजी)

सोना बनाने की तरकीब (उर्दू)

घरिया में रोगनजैतून का लेप करके उसमें तोलाभर पारा और कदरे चांदी डालकर चंद कतरे रोगन मजकूर के टपकाकार कोयले की बहुत नरम आंच पर पकाये और माशे भर बच्छनाग पीसकर चटकी से डालता जावे जब पारा खूब पकजावे पारचः पत्तरप डाल दे मस्कः होजायेंगे जिस कदर चाहे पारेको मस्कः बना ले फिर अंडेकी सफेदी दूर करके जर्दीमें यह मस्कः डालकर उसी छिलके में रखकर सात तह गिलेहिकमत करके पाव भर जंगली छिलके में रखकर सात तह गिलेहिकमत करके पावभर जंगली उपलों की आंच में रख दे मश्का सख्त हो जायगा फिर (इसके तीन तरीके हैं यामाइउलहयात में चर्ख दे या) तिरफले या बंग अंजीरकी लुगदी में रखकर कम आंच में खाक करले फिर एक माशे एक तोले तांबेपर डालकर चर्ख द्रे सोना हो जायगा (और माइउलहयात यह है शहद, घी, नौसादर बरावर घरिया में रखकर सोना डाल दे) (सुफहा खजानः कीमियां २६–२७)

नोट–जो इबारत मुश्तबः है उस पर ब्रेकट बना दिया है।

नुसखा कीमियां नुकरई (उर्दू)

शोरे से सम्मुलफार, सम्मुलफार से हरताल, कायम कर उससे सीमाव व नुकराके अकद को कायम व शिगुफ्त किया है। शोराकलई दो हिस्सा, नमक लाहौरी सफेद एक हिस्सा, हर दो को चूनाकली के तेजाब में दो पहर तक सहक करे, शोरा कायममुल्नार हो जायेगा। तरीका तेजाबकली चूना आवना रसीदः व कादिरख्वाहिश लेकर किसी चीनी या मिट्टी के वर्तन में डालकर दर्मियान में पानी इस कदर दाखिल करे कि तीसरे रोज तक चार चार अंगुल पानी ऊंचा रहे, तीसरे रोज को मुकत्तर ले लें बस इसी का नाम तेजाबकली है, शोरा कायममुल्नार मअमूला दो तोले को सम्मुलफार एक तोला को ऊपर नीचे देकर कूजः गिली या किसी ऐसे बोते में कि जिसके किनारे बलंद हो वंद करके पांच सेर वजन खाम उपलों की आंच में दे, सम्मुलपार चर्ख खाकर कायम हो जायगा, सम्मुलफार कायम एक हिस्सा हरताल वरकी एक हिस्सा मगर हरताल के तीन हिस्सें कर लें हिस्सा अव्वल जरनेखको सम्मुलफार कायम के साथ मिलाकर खूब खरल कर लें फिर बतरीक मारूफ शीशी आतिशी या देगगिली में डालकर मुंह मजबूत वंद करके चार पहर की आंच से जौहर उड़ा लेवे इसी तरह हिस्सा दोयम सोयम बारी बारी मिलाकर अमल करने से तीसरी दफा जरनेख व सम्मुलफार तहनशीन हो जायगे सीमाव २ हिस्सा बुरादा या वर्क नुकरा एक हिस्सा हर दो के अकद करके हम वजन नौसादर में खरल करें जब स्याही नमूदार हो पानी से साफ करें इसी तरह यहां तक अमल करते जायें कि बिलकुल स्याही बाकी न रहे बादहू अकसीर तहनशीन शुदः के हमवज़न सीमाव व वर्क मुसफ्फी मजकूरा मिलाकर नौसादर के तेल में तमाम दिन तसकिया और आठ पहर का नरम तश्विया दें इसी तरह चार दफे अमल क़रें मगर एक दूसरे तश्विया के बाद आंच तश्विया होनी चाहिये, चहारम दफे के अमल करने से अकसीर शिगुफ्तः होकर तदनशीन हो जायगी यकेबर दो सद जौहरा तरह विखुरेद नौसादर का तेल नौसादर नीम को व १० तोले भांग खुश्क एक सेर पुख्तके दर्मियानी हिस्से में देकर बजरिये पताल जंतर दससेर की आंच देकर तेल निकाल लें यह तेल सुर्ख रंग का निकलेगा।

नोट–बतकदीर अगर अकसीर तहनशीनशुदः हस्बख्वाहिश काम न दे तो तिलसफेद को फूंक कर इसकी खाकिस्तर ले लें खाकिस्तर मज़कूर में पानी डालकर आठवें पहर बाद मुकत्तर निथार लें यह मुकत्तर का मगरबियों के माइहारह नाम रखा है अकसीर (शिगुफ्तः शुदः को इस मुकत्तरं में यहां तक तस्किया और तश्विया दें कि आग पर डाल देने से मोंम की तरंह पिघल जाये बस फिर बफज्लहूताला अकसीर आजम है। (सुफहा २–३ अखबार अलकीमियां)

चांदी से बनी पारद गोली की भस्म से रांग की चांदी की भस्म

रजत में ५ तोले पारे की गिरा करनी उस गिरा को ८ तोले हरी महदी की लुगदी में रखकर (वदी) ४ सेर जमीकंद दी गड्डी में रखकर ऊपर तीन कपडमिट्टी करनी। सुखाकर तोला सेर पक्के गोहे की आग दैणी खिल हो जायगी, कली पर पाणा तोले में रत्ती (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

तारक्रिया (राजवती विद्यानाम्नी)

पारदचांदी की कटोरी के भस्म से रांग की चांदी

अथ दारद्रिचनिर्नाशनं रसचिंतामणौ–पारदो गृह्यते शुद्धष्टंकद्वादशमात्रिकः ॥ श्वेताश्वमारपुष्पैश्च मर्द्दयेद्दिनसप्त च ॥७३॥ गोमूत्रक्षालनं कुर्यात्संध्यायां प्रतिवासरम् ॥ अथ तारस्य कर्तव्या सूक्ष्मा भद्रा कटोरिका ॥७४॥ पारदो दशटंकः स्यात्तस्यां देयः पुरकृतः ॥ हरीतक्या पुनर्भ्वादिर्दशशटंकमितोऽपि सः ॥७५॥ करवरिस्य पुष्पस्य रसश्चोतपरिप्लुतः ॥ हंडिकायामधः कृत्वा शीशिकां संधिमुद्रिताम् ॥७६॥ सराविकां पुनर्दत्त्वा कुरुते संधिरोधनम् ॥ मृदा तस्याः सराव्याश्च गाढं वालुकया पुनः ॥७७॥ आपूर्य हंडिकां तत्राप्युपरिष्टाच्च पालिकाम् ॥ दत्त्वाथ मुद्रयते पश्चाद्धंडिकामुखमप्यति ॥७८॥ द्वादशप्रहरा यावत्तावद्वह्निः प्रताप्यते ॥७९॥ भृशं नाति भृशं मंदं पश्चाच्छीतांतमुद्धरेत् ॥ टंकषोडशके वंगे एकटंकोऽस्य दीव्यते ॥८०॥ एवं वंगं भवेत्तारं महासारं वरं परम् । वंगस्तंभपरं रम्यः क्रियतां तद्यथा सुखम् ॥८१॥ एषा राजवती विद्या पुत्रस्यापि न कथ्यते ॥८२॥

(र० सा० प०)

अर्थ–शुद्धपारद १२ बारह टंक लेकर श्वेत कन्हेर के फूलों के रस से सात दिन तक मर्दन करे और प्रत्येक दिन संध्या को गोमूत्र से धो लेवे फिर चांदी की एक कटोरी बनावे जिस पूर्वसिद्ध किये हुए दसटंक पारे को रख देवे ऊपर से दस टंक सांठ और हर्र का चूर्ण रख देवें ऊपर दस टंक श्वेत कन्हरे के फूलों का रस डाल देवें उस कटोरी को हांड़ी में उलटा रख संधिपर मुद्रा करे फिर ऊपर शकोरा रख मुद्रा करै फिर हाँड़ी में बालूरेत भर ऊपर परिया से ढांक हँडिया के मुख को अत्यन्त दृढ़ कपरौटी से बन्द कर देवे, फिर तीक्ष्ण मध्य और मन्द क्रम से १२ पहर तक अग्नि देवे स्वांगशीतल होने पर निकाल लेवे यह भस्म एकमाशा और वंग सोलह माशा इन दोनों को चर्ख देवे तो सर्वोत्तम चाँदी बनेगी और वंग जिस प्रकार स्तंभनकारी होता है उसी तरह करना चाहिये इस विद्या को अपने पुत्र के लिये भी न कहनी चाहिये (अर्थात् अत्यन्त रहस्य है)॥७३–८२

एक अजीब नुसखा तांबे से गिरहशुदः सीमाव को शिगुफ्तकर उससे तांबे को सफेद किया है बगरज हम्मिलान नुकुरः (उर्दू)

सीमाव खालीस व मुसफ्फा एक तोला, तूतिया सब्ज दो तोले, तूतिये को बारीक करके एक आहनी कडाही में निस्फ तूतिया डालकर उस पर सीमाव रख दे और बाकी निस्फ तूतिया को सीमाव के ऊपर डाल दें और दो सेर पानी उस कडाही में डालकर आंच दें एक घंटे के बाद तिनका से हिलाकर देखें अगर सीमाव तिनका के साथ लग जावें तो उतारकर पानी सब फेंक दे

और बाकी सब चीजें कढाई में ही रहने दे अब नमक और थोड़ा से पानी डालकर सीमाव मजकूर को खूब साफ करें, बादहू सीमाव साफ शुदः को एक चीने के प्याले में डालकर एक लेमूं उस पर निचोड़ दे सीमाव सख्त हो जायेगा. एक बूटी सूगंड (सूरगंड) जिसके नीचे एक चीज मिस्ल प्याज के है। उस प्याज को सूराख करके मजकूरह गिरह सीमाव उस्में भर दें और जो कुछ सूराख करते वक्त प्याज का बुरादा निकले उसीसे मुंह बंद कर दिया जावे जाकर कपरौटी करके खुश्क करे आठ सेर उपलों की आँच दे सीमाव कुश्ता हो जावेगा। एक तोले तांबे को चर्ख देकर सीमाव कुश्ता शुद के १/४ हिस्सा ऊपर चुटकी दे तांबा बिलकुल सफेद हो जावेगा यह तांबा सफेद शुदः और चांदी खालिस हम वजन मिला ले मकबूल बाजार होगा। (सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ १६/११/१९०७)

गुटका सीमाव बजरिये संखिया दर संपुट ताँबा (उर्दू)

मैंने पारे को इस्तरह गुटका बनाया था कि तोले भर सीमाव बाजारी और तोलेभर संखिया सफेद दोनों को एक अदद लेमूं कागजी में सहक किया जब गाढ़ा मिस्ल चक्का दही सा हो गया। तो दो मिसकी कटोरियों की सितः अन्दरूनी को मुतअद्दिदवर्ग तांबूल से पोशीदः कर दिया और उस परशैः ससहूका को रखकर और सी ३० माशे भर मुर्दारसंग डालकर सददो उलरहन और तीन बार मतीनल हिकमतहू करके बाद तखफीफ पांच छः सेर कण्डों की आग दे दी और सर्द होने के बाद निकाला तो गुटका सख्त बन्ध हो गया था और चांदी खाम हो गया था यह गुटका सुहागे की इमदाद से गलता है और उस्में और चांदी में सिर्फ यह फर्क है कि गुटका मजकूर संकनाल है। (सुफहा ४० किताब अखबार अलकीमियाँ १६/४/१९०५)

नोट—इसी किस्म का तजरुबाः बजरिये गंगाराम सुनार फासगंज हुआ था। (हसी मुद्दीन अहमदअज जौनपुर)

रांग के योग से बनी पारे की गोली की भस्म वेधक

९ माशे कली, ६ माशे पारा, कडछ में कली गाल के पारा पादैणा दोनों की गोली बणा के ४ तोले मोडयांदे पत्तरादी नुगदी बणाके उसमें गोली रख के दो पाथियों में बंद करके आग दैणी पारा फुल जायगा। वह पारा १ रत्ती तोला १ ताम्रपर पाणा रजत होवे। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारद को प्रथम अग्नि स्थाई तदनंतर रांग युक्त गोली बनाकर उसकी भस्म से ताम्र की चांदी बनाने की क्रिया

पारा १ तोला आरखोर कश्मीर अरखुढके रस में करना फिर अरखुढ की लकडी ३६ अंगुल लैणी उसमें छेक करके नौ अंगुल उसमें पारा पादैणा ऊपर से उसी का बुरादा पाकर बंद करके गिलेहिकमत करके हेठले पास्से से आग में दैणी जब हैठों २४ अंगुल लकड़ सड जावे तब निकाल लैणा फिर उस कायम पारे के साथ १ तोला कली और १ तोला दाल चिकना पाकर तीनों को अरखुट जल से एक प्रहर खरल करना फिर उन तीनों का गोला बनाकर कूज्जे में पाकर ऊपर तैल पादैणा तीन घड़ी आग दैणी फिर तैल से निकालकर महदी १० तोले लेकर उसकी नुगदी में उस गोले कों रख कपड मिट्टी करके पांच सेर पक्के गोहे की आग दैणी सर्द होवे तो निकालना तोले ताम्र पर १रत्ती पारा श्वेतकरम। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

नोट—क्या इस क्रिया से पारा कायम होता है? वा कायम पारा इस योग से लैना चाहिये।

पारद की गोली की भस्म

तोला पारेदी गोली होवे तो दो तोले पुराण गुड, माजू तोला, १ मायी १ तोला, पीपलामूल १ तोला, चारों चीज महीन पीसकर गोली परदे के, उपरों कपड़ा लपेटकर कपडमाटी कर दैणी सुखाके आग दैणी १० सेर कच्चे लोहे की गोली कायम हो जायगी। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

शिगुफ्त वराय अकद सीमाव (उर्दू)

बस अगर ऐसी गिरह मैस्सर हो जावे तो इस तरीके से इसको शिगुफ्त करें कि सम्मुल, तकार, नौसादर हमवजन मिलावे और बारीक करें और इस दवा से गिरह के हमवजन लेकर दो पाचकदस्ती खुर्द में चक्कर करके नीचे ऊपर इस गिरह के दे और मामुली गिले हिकमत करके ऊपर की तरफ से आग दें और सर्द होने पर निकालें अगर तमाम शिगुफ्तः हो जावे फवहा वरनः शिगुफ्तः उतार ले और बाकी को फिर इसी तरह आंच दे और काम में लावें, मुजर्रिबई शिगुफ्तः सीमाव कलई राहम जज्बमेकुनद व मिस व विरंज ममरुजरा हम सफेद मेकुनंद बतरीक दीगर व कार तहमीर मिमहममे आयद तरीकशवनी जतरीक अकद सीमाव दर मअदन उलअकासीर जिल्द अव्वल नविश्तः खुद अज आंजा विजोनद। (सुफहा ६९ व ७० मुजर्रिवात फीरोजी)

शिगुफ्त अकद सीमाव कायम

सम्मुलफार दो हिस्सा, वेश दों हिस्सा, अकद कायम दो हिस्सा, संखिया और वेश को बारीक करे और एक कूजे में अव्वल संखिया की तह दें और दूसरे वंश का फिर अकद कायम रखें और इन दोनों का तरतीव बार लिहाफ करें और आंच दें इन्शा अल्लाह शिगुफ्तः हो जावेगा। (सुफहा ७० मुजरिवात फीरोजी)

अकसीर कमरीसीमाव कायम की शिगुफ्त अकसीर कमरी

शोरा, फिटकरी, नौसादर, हर एक दो दो मश्काल लेकर आठ पहर शीरेज कूम में सहक करके बादहू इसका बोतां बनायें और सीमाव कायमुल्नार मुन्दर्जः कवाइद या वह सीमाव जिसको बतरीक मगरबी जाजसफेद से मारा हो, सात माशे लेकर बोतः मजकूर में डाले और सरपोश भी इसी मसहूकका होना चाहिये अब इसका एक गोलासा बना कर उस गोलेपर दूसरा संपुट चिकनी मिट्टी का करके इस पर गिले हिकमत करें बादहू खुश्क करके बारह सेर भड़का की आंच दे बादहू सर्द होनेके निकालें और एक तोला कलई को गुदाज करके एक रत्ती अकसीर हाजा तरह करे खालिस चांदी हो जायगी यह नुसखा बारहों दफे का मुजर्रिब है और अब हाल में ही तजुरुबा हुआ है यह चांदी जुमलै एमाल कीमियाई में पूरी उतरती है सय्यद लताफहुसेन रसऊई शहदी अकब कोतवाली मुत्तसिल मस्जिद मुम्ताज अलीखां बरेली सुफहा ११ अखबार अलकीमियां)

शिगुफ्त सीमाव कायम (उर्दू)

हारवखांसाहब कायम दो माशे जर नेख व फिलाफल गर्दः छः छः माशे की चुटकी दें और एक निर्बिसी के किते से इसको हिलाते रहे जब सब दवा चर्ख हो जावे तो राख को फूंक से उड़ावे, सीमाव मिस्ल रेग के हो जावेगा मुजर्रिब है, बहिसाव फी तौला फी हुव्वः तरहकुनन्द (सुफहा ७० मुजर्रिवात फीरोजी)

जडी से पारे का थाका उससे तांबे का सोना

बूटीआगिया—मदार को असपात दूध नहीं पानी होत है पांच सात पत्ते जरमें होत हैं तिसके पत्ते का चूरन मासा, तोला १ गरम करि डारै तो थाका होई सो थाका ओ नौसादर कागदी नेबुआ का रस में खरलि १ रत्ती, १ चौरासी तोला तांबा में डारे तो सोना होता है (देखो अखबार अकलीमियां)

जडी से पारद का थाका फिर भस्म और पारदभस्म से ताम्र का सोना

अस्थलकमल–सब जगह होता है पानी के निकट कमल असपात लेकर बुकनी मासा अढाई तोला १ पारा में डारे तो थाका औ नौसादर तोला १ पान के रस में खलै आंच देइ तो भस्म होई, ते भस्म मधु में खलि धरै, सीसीमें ताम्रपत्र लाल करै तेह में बुंद १ डारे अवटै–हीरन होई तोला चार में बुंदमात्र डारे अवटे तो फिर सुवर्ण होई।

बूटीसर्वतीत–पातलाल, फूललाल, लतास्याम, पातगोल, बेरीको अस हस्तप्रमाण वृक्ष नदी के निकट सर्व जगह होता है।

बूटी से पारे का थाका उससे चांदी की भस्म उससे रांग सीसा वा जस्त की चांदी

बूटी रकत सोहाला, पात चारि तोला, पारे में डारै तो थाका होइ, सो थाका मासा १, नौसादर तोला, १ दोनों खलै दस तोला रूपामें डारै सो भस्म होइ सो भस्म तोला १ नौमे तोला राँगा में डारै जस्ता में पारा में सीसामें अवटिरू डारे तौ रूपा होई।

पारे का बंधन फिर भस्म उससे तामे की चांदी

पारा ८ तोले, बिरोजा १ सेर, लोहेदी कटोरी वीच पारा पाके उपरों विरोजा पाके मंदमंद अग्नि में पकाणा जद बिरोजा सड जांय तो पारा निकाल लैणा फिर जपोलेटे (जमालगोटे) दो सेर पक्के लेके पातालयन्त्र में उनका तैल निकालकर लोहेदी कटोरी बीच वही पारा पाके उपरों जपोलोटे का तैल पाकर मंदमंद अग्नि से पकाणा जब सब तैल सड़ जाय तो पारा कठिन हो जायगा उस कठिन गोले पर दो तोले निर्विसी, काकमाचीदे रस नाल घस के लेप कर देणा और सुखा लैणा फिर जंगली लसुन लेकर पापक्केदी नुगदी करके उसमें डली रखकर बालुकायंत्र में अग्नि देणी एक वा दो वा तीन ऐसे फूल जायगा तोले ताम्र वा कली पर पाऔ १ रत्ती रजत कर है। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अकसीरकमरी अकसीर सीमाव से सीमाव अकद बनाने की तरकीब (उर्दू)

कलस पोस्त बेजः मुर्ग ९ तोले, सीमाव मसअद ९ मासे इन दोनों को सफेदीबेजः मुर्ग में चार पहर किसी अच्छे खरल में जो घिसने वाला न हो खरल करे जब एक जान हो जावे तो आतिशी शीशी गिलेहिकमत शुदः में भरकर शीशी के मुंह को चूना व नमक से खूब अच्छीतरह बन्द कर दे वारेम आहन व खरियामिट्टी व पवःकोहनः बजिगरबुज वगैरेः को कूटकर शीशी के दहनपर मुहर कर लें ताकि दवाई का बुखार खारिज न होने पावें फिर तनूर में दो तीन टुकड़े उपला दश्ती डालकर आग लगावें जब उपला जलकर अखग रह जावे और धुआं मुनकता हो तौ किसी चीज से अंगारों को हमवार करें जिसवक्त तनूर का ताव कम हो इसमें यह पायः आहनी यानी चूल्हा रखकर इस पर शीशी मजकूरः को रख दें तनूर की मोरी और मुह को बन्द करें कि हवा दाखिल न हो अगर शीशी को तनूर में रखे तौ फजर को निकाल लें और शीशी को तोड़कर दवाई को खरल में डालकर दूसरी दफा जर्दीबेजः मुर्ग में चार प्रहर खरल करके शीशी में भरकर तनूर में वदस्तूर अव्वल आंच देते जावें जब तीस आंच तक पहुँचे तो अकसीर तय्यार होगी जिसकी रंगत स्याह व शकल सुर्मा होगी यह अकसीर स्याह १ तोला सीमाव ४० तोला हरदोको जर्दीबैजः मुर्ग में ८ योमतक सहक करके दोपरावः में या शीशी आतिशी में बदस्तूर साबिक तनूर में आंच दे सीमाव मुनअक्किद व कायमुल्नार होगा एकदिरम सीमाव तय्यार शुदः एक सौ बीस दिरम् नहास मुनक्कीपर तरह करें मिस सीम खालिस हो जायगा।

तरकीब तकलीसपोस्तबैजः मुर्ग

अंडों के छिलके जिस कदर चाहे लेकर सज्जीवसिरकः व नमक वगैरः के पानी में जोश देकर दोनों हाथों से खूब मलमलकर गुस्ल दें कि अन्दरूनी झिल्लों दूर हो जावें जब पोस्तबैजः साप व मुतरा हो जावें तौ मिट्टी के बर्तन में बन्द करके लोहारों की भट्ठी में हफ्तेः अशरेतक तेज आंच में रखें ताकि चूना हो जावे या किसी मुतर्मीदः आंच में कई दफा रखकर कलस कर लें।

तरकीब तसईद सीमाब

पारा बाजारी २० तोला, नौसादर २० तोला, फिटकिरी सफेद २० तोला, सिरका अंगूरी २० तोला हरसह अदविया खुश्क हो सिरके में खरल करके बाद खुश्क होने के देगअसालमें निहायत नरम आंच पर तसईद कर तीन प्रहरी की आंच काफी होगी फिर आला और असफल मिलाकर वजन करे कमीवजन को नौसादर जदीद से पूरा कर लें, बादहू सिरका मजकूर में खरल करके बदस्तूर जौहर निकाल लें यही अमल तीन दफै करे जौहर सीमाब तय्यार हो जायगा।

यह नुसखा अक्सर इल्म अकसीर की किताबों में लिखा हुआ देखा है सबने मुजर्रिब बयान किया है बल्कि एक शख्स के पास जो मय्याह था मैंने तय्यार भी देखा है (अगर डाक्टर साहब इस नुसखे को तय्यार करना चाहते हैं तो कलस पोस्तबैजा मुर्गमुझसे तलब करलें मुफ्त भेज दूंगा जो मैंने अभी तय्यार किया है।) (हकीम इमामुद्दीनखां हैरानअजचक मुहम्मदमहदीखां डाकखाना अहमदाबाद तहसील पाकटन जिला मंठगमरी) (सुफहा २१ किताब अखबार अलकीमियां १/५/१९०५)

पारद भस्म से रांग की चांदी

बूटी–रक्तसोहाला पाततीन दोई छोटा बीच का बस पुहुप पीत सब जगह होता है तेहिके रस पीतगुखरू, पार खलैदिन १ गोली के आंच देइ तो भस्म होइ सो भस्म रत्ती १ सोरह तोला रांगा में डारै तो रूपा भवति–(होवै)

सोना बनाने की तरकीब बजरिये कुश्ता सीमाव (उर्दू)

सूराजमुखी के अर्क में पारे को २१ बार खरल करके फिर शीशा में भरकर मुखमुद्रा करके कपरौटी करके बकरी की मेंगनी में रखकर बारह सेर आग देवे जब खुद ठंढा हो तब निकालकर एक तोला तांबे पर एक रत्ती डालै तो सोना बन जावेगा। (सुफहा खजानः कीमियां ३३)

पारद भस्म से रांग और जस्त और चांदी से चांदी

पारा १ मिश कालापोस्त आधसेर पोस्तको पानी में भेउ के रस निकाल लेणा उस रस का पारे को चोया दैणा पारा भस्म हो जायगा, यह पारा १ रत्ती जस्त ६ माशे कली ६ माशे दोनों को जुदाजुदा साफ करके गोली बना लैणा चांदी १ तोला रत्नाकर पूर्वोक्त पारा १ रत्ती पाकर चरण दैणा रजत होवे। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)।

सोना बनाने की तरकीब बजरिये कुश्ता सीमाब (उर्दू)

खट्टा का दरख्त, जिसके फूलों पर कन्यावानी का मेह बरसगया हो उसका अर्क सेरभर और सेरभर अर्क भांगरे का जिस पर भी वह मेह वर्षा हो अलहदा अलहदा दो बोतलों में जमा करो और पारा एक तोला कढाई में डालकर एक लौ की बलती यकसां धीमी आग से उसको औटा और उस पर वारी वारी से थोड़ा थोड़ा अर्क खट्टा व भांगरे का डालते रहो किसी फोये से पटकाते रहो इस तरह सारा अर्क दोनों किस्म का खतम कर दो पारा उड़कर निकलने न पावे इसके लिये यह करो कि जंगार का एकदाइरा कढाई में पारे से बालिश्तभर ऊंचा बना दो जो जो पारा उड़ेगा भी वह

उससे बाहर न जावेगा लौटकर अपनी जगह आ पड़ेगा। मगर यह काम ऐसी जगह करो जहां किसी किस्म का साया छप्पर छत दरख्त या दीवार का न हो बल्कि अपने जिस्म या किसी परन्द का साया भी उस पर न पड़े तब यह पारे का कुश्ता उमदा बन जावेगा इसमें से जरा सा पैसा पर उसको चर्ख देकर डालो तो खालिस सोना बन जावेगा (सुफ़हा खजानः कीमियां ३५)

पारदभस्म हरताल वा शंखिया योग से रांग चांदी की चांदी

हरिताल वा श्वेत संखिया १२ पहर मूली के पाणी में खरल करना फिर १२ पहर छाया में सुखाणा फिर १२ प्रहर कली हुए भांडे में कुरस को दोनों पासे मूली दे पाणीदा चोया दैणा फिर उसके ऊपर जो श्यामता आवे उस श्यामता को करदछिल छोड़ना फिर इस हरिताल के ४ माशे और पारा २ माशे दोनों को खरल करके खाली कुक्कुटांड में हेठलवणपाके ऊपर दवाई पाके बंद करके कपडमाटी करके सुखा के मन्द मन्द अग्नि देने पकाना छः प्रहर में भस्म हो जायगी फिर दो हिस्से कली और एक हिस्सा चांदी पाके गालना फिर दो रत्ती पूर्वोक्त भस्म पा देणी सब रजत हो जायगा (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

रजतकर पारद भस्म शंखिया योग से ताम्र संपुट

पारा १ तोला वा २ तोला, शंखिया २ तोले, सुहागा २ तोले, नवसादर २ तोले, द्रोणपुष्प रस १० तोले में खरल २ दिन टिक्की वणा के धूप में सुखा लैणी कटोरी हेठ की लोहे की और ऊपर की तांबे के पेचदार और ऐसी होवे कि टिक्की आ जावे खाली जगह ना रहे दोनों डिब्बियों का संपुट बंद करके घुमारमिट्टी से और गाचनी मिट्टी से बंद करके पांच कपरौटी कर देणी और उन पर कडक के दाने के बराबर मिट्टी लगा दैणी खूब सुखाकर गर्त में ५ सेर पक्के जंगली गोहों की आग देणी स्वांग शीतल ४ पहर के बाद निकालौ ताम्रद्रवित पर १ तोला परमांणे रजतकरम । (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारदभस्म शंखिया या हरतालयोग से उससे ताम्र की चांदी ताम्रसंपुट

पारद २ तोले, शखिया १ तोला, हरताल १ तोला, श्वेतपलांडु रसेन २ तोले, पारद १२ प्रहर "मर्दयेद् गुटिका भवेत्" होवे १ तोला हरिताल (हरिदुग्धेन मर्दयेत् ८ प्रहरं यावत्तस्यापि गुटिका कार्या एवं गुटिकात्रयं संपाद्य पारदगुटिकाया उपरि शंखियागुटिका कार्य्या तस्या उपरि हरितालगुटिका देया एवमुपर्य्युपरि गुटिकात्रयं संपाद्य गोलकं विधाय तं गोलं ताम्रसंपुटे पुनर्नवाभस्ममध्ये निधाय चत्वारिंशत्पुटानि देयानि पुटमंत्रस्वल्पं, २ सेर द्विसेरमितवनोपलस्य देयमेवं चत्वारिंशत्पुटैः पक्वं गोलं सुरक्षयेत् द्रवितताम्रोरि योज्यं मात्रा चास्य स्वल्पा तंडुलमिता (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अकसीरकमरी बजरिये सीमाब व संबुलकायम (उर्दू)

मुआलम अंजार व खुशमाली में लिखा है सीमावकायम संबुलकायम तनकार नौसादर बराबर मसअदान तमाम को बारह पहर लेंमू के पानी में खरल करे बादहू संपुट में रखकर दमसेर पाचकदस्ती भड़के की आग दे मिसल चूना जवाहरं के हो जावेगा एक माशा इस अकसीर से दो तोला मिसपर तरह करे चांदी खालिस हो जावेगी। (सुफ़हा अखबार अलकीमियां १६/१०/१९०६)

पारद गंधक से ताम्र का सोना

पारदं शुद्धभागैकं शुद्धं बलि तथैव च । शतवारं पुटं दत्त्वा वनार्कक्षीरवारिणा ॥८३॥ निक्षिप्य डमरूयंत्रे लोहे कवचशेखरे । यंत्ररंध्रं मृदा लिप्त्वा शेखरेभ्यः परित्यसत् ॥८४॥ मासार्द्धं ज्वालयद्वह्निं स्वांगशीत्तं समुद्धरेत् । जायते सूतकल्कस्थताम्रवेधी रसो भवेत् ॥८५॥ रसं कुर्य्याच्छुल्बशुद्धं कर्षैकं रक्तिकां ददेत् । निर्मलं जायते हेम कुर्य्याद्धेम न संशयः ॥८६॥

(नि० र०)

शुद्ध पारद एक भाग, शुद्धगंधक एक भाग इन दोनों को जंगली आक के दूध या पत्तों के रस से सौ पुट देवे उसको डमरूयंत्र में रख कपरौटी कर १५ पन्द्रह दिवस तक अग्नि जलावे, स्वांगशीतल होने पर निकाल लेवे तो उस पारदकल्क का ताम्र के वेधनेवाला रस होता है फिर गलाए हुए तोले भर तांबे में एक रत्ती भर गेरने से सुवर्ण हो जायेगा॥८३–८६॥

अकसीर यानी सीमाब को हमराह गंधक हरताल, सम्मुलफार वगैरः के पांच नाशिस्तों में कायम किया है (उर्दू)

शिंग्रफरूमी २ तोला, सम्मुलफार सुर्ख २ तोला, गंधक आंवलासार दो तोला, हरतालवर की दो तोला, सीमाब मुसफ्फा दो तोले, काहीमुर्ख दो तोले, नौसादर ईरानी दो तोला, नौसादर पैकानी दो तोला, हर एक को जुदा २ कूटकर यकजा मिलाकर खरल में डाल दें और पानी शिगुफ्तः करीर में जो माह चैत में होता है सात रोज सहक करे जब कि खुश्क हो तौ आतिशी शीशी में डालकर कांच के काग से बन्द करें बादहू हांडी गिले हिकमत शुदः में एक मन रेत डालकर शीशी को दर्मियान में रखकर चूल्हा पर रखें और ४ प्रहर तक नरम नरम आग जलावें जब कि अच्छी तरह सर्द हो जावे तो शीशी से दवा को निकालकर दुबारा खरल में डालकर हमराहपानी शिगुफ्तः करीर ७ रोज तक सहक करके बदस्तूर अव्वल ४ पहर की आग देवे इसी तरह पानी करीर में सहक करके पांच मर्तबः रेगजंतर में बदस्तूर आग देना चाहिये बस इस अमल से सब दवा तहनशीन हो जावेगी तो अकसीर तय्यार समझें और बकदर एकसुर्ख एक तोला मिस व एक तोला नुकरापर चर्ख करें और कुदरत खुदा का तमाशा देखें, अब भी मिहनत न करें तो आपकी तकदीर है (राकिम हकीमसय्यदगुलाम अलीशाह मालिक सफाखाना हैदरी करांची) (सुफ़हा ११ अखबार अलकीमियां १/१०/१९०७)

रजतकरयोग पारद का अभ्रक और हरताल से ३ शीशी में सिद्ध किया है (उससे रांग वा ताम्र की चांदी)

अभ्रक श्वेत ले के कपड़े में पाके कौडियां समेत पाणी में धोणा जब सब पाणी बीच छण जाय पाणी नितारकर अभ्रक ले लेणा फिर बराबर सुहागा और उतना ही हरिताल पाके चीनी दे प्याले बिच रख देणा फिर २ तोले अभ्रक बिच पांच तोले पारा पाके धतूरे के बीज रत्त का मीठा तेलिया कुचले इनका तैल पाताल यंत्र द्वारा निकालकर उससे खरल करना चारघडी, फिर शीशी में रखकर वालुकायंत्र में दोपहर आग दैणी फिर उसी तैल में खरल करना फिर आग दैणी एवं तीन बार यह दिवाई रैणी जैसी हो जायगी मीठा तेलिया ७ तोले दिवाई दे हेठ ऊपर देवे आग दैणी दिवाई फुल जायगी उसको कलीपर वा त्रामेपर तोले भर ४ चावल भर पाणा रजत हो जायगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

सूत, टंकण, विष, चित्रक के साथ पारा घोट उस चूर्ण से रांग की चांदी

सूतटंकणमेकैकं नृकपालं द्वितीयकम् । सर्वतुल्यं विषं योज्यं पश्चाङ्गरक्त-चित्रकम् ॥८७॥ विषतुल्यं क्षिपेच्चूर्णं वज्रक्षीरे विभावयेत् । मासमात्रं दिवारात्रौ तद्वाप्यं षोडशांशतः ॥ दत्तं वारत्रयं वंगे तारं भवति शोभनम् ॥८८॥

(नि० र०)

अर्थ–पारद, सुहागा, एक २ भाग, नृकपाल २ दो भाग इन सबको बराबर सींगियां और सींगिया की बराबर लाल चीते के पंचांग का चूर्ण इन सबको एक मास तक थूहर के दूध से दिन रात घोटे उसमें से एक लेकर सोलह तोले वंगमें तीन बार बुरके तो उसकी चांदी होगी॥८७–८८॥

रजतकर पारा गंधक अभ्रचूर्ण से रांग की चांदी

पीताभ्रं गंधकं सूतं रक्तपुष्पं चतुर्थकम् । वज्रीक्षीरेण संयुक्तवंगं तारायते क्षणात् ॥८९॥

(र० रा० सुं०)

अर्थ–पीलीअभ्रक, पीलीगन्धक, पारा तथा रक्तपुष्प इनका चूर्ण कर थूहर के दूध में घोटे पीछे रांग को गलाकर उसमें डाले तो रांग की चांदी हो॥८९॥

हेमक्रिया चांदी का सोना पारद गन्धक अभ्रक माक्षिक चूर्ण योग से

प्रमाणद्वितयं हेममाक्षिकं तच्च चूर्णितम् । पारदं गंधकं खल्वे कृष्णाभ्रं च द्वयं नयेत् ॥९०॥ निंबूरसेन तां पिष्ट्वा बीजपूररसेन च । बीजपूरं तदुत्कीर्य तत्र कल्पत्रयस्य यत् ॥९१॥ क्षिप्त्वा निखयन्यतद्भूमौ मुच्यते भूमिमध्यगम् । एकविंशत्यहान्यस्य तुषाग्निं कुरुतऽनिशम् ॥९२॥ शनैः शनैर्यथा भूयाच्छलनकैर्याविदुत्तमः । तत्तथा ह्यन्यत्तद्द्यात्तारे द्वादशभागिके ॥९३॥ माषमात्रममुं दद्याच्छलक्ष्णकल्कं च मूषके । एवमुत्पद्यते तारं सां हेम न संशयः ॥९४॥

(बृ० यो०)

अर्थ–दो भाग सुवर्ण, ८ आठ भाग सोनामक्खी, पारा गन्धक और कृष्णाभ्रक इन तीनों को नींबू के अथवा बिजोरे के रस से पीस लेवे फिर बिजोरे को चीरकर उसमें उस कल्क को भर देवे फिर धरती को खोद और उसमें गोले को रख ऊपर से रेत ८ आठ अंगुल भर देवे इस पर इक्कीसदिन तक धीरे २ तुषाग्नि देवे उस सिद्ध रस के एक माशे को बारह तोले चांदी में गेरै तो सुवर्ण हो जायगा॥९०–९४॥

सुवर्ण कर लेप ताम्र का सोना

पारा १, गंधक २, हरिताल ३, मनःशिला ४, सोनामक्खी ५, शंखियासुर्ख ६, काकची हल्दी के रस में खरल करनी तीन दिन ताम्रपत्र पर लेंप करके पुट देणी फिर लेप फिर पुट एवं सात बार लेप और पुय देने से सुवर्ण होगा (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तारकृष्टी चांदी से सोने का जोडा

गंधकं तारमेंकं स्यात् पारदस्यैकमेव सः । हेममाक्षिकमेवैकं दरदं तालकं तथा ॥९५॥ स्त्रीस्तन्येन तु तद्घृष्ट्वा तारपत्रं प्रलेपयेत् । शरावसंपुटे कृत्वा मंदाग्निस्तत्र दीयते ॥९६॥ आरण्यशानकैः पश्चात्तारमादाय ते च तत् । कनकेन समं देयं मूषके प्रकटे च तत् ॥९७॥ आवर्त्य तेन तारेण तारकृष्टी भविष्यति । अम्लवेतसपानीयं मेलयेच्च पुनः पुनः ॥९८॥ बीजपूरस्य बीजानि समभागानि कारयेत् । अथवा मधुमध्ये च ढालयेद्वारपंचकम् ॥९९॥ अपूर्व दृश्यते रूपं कांचनं दशवर्णिकम् ॥१००॥

(बृ० यो०)

अर्थ–गंधक एक भाग, पारा एक भाग, सोनामक्खी एक भाग, सिंगरफ एक भाग, हरताल एकभाग इन सबको स्त्री के दूध से घोटकर चांदी के पत्रों पर लेपकर देवे और उनको सकोरा में रख और कपरौटी कर जंगली कंडों की धीरे धीरे आग देवे फिर चांदी के पत्रों को निकाल लेवे तदनन्तर उस चांदी के पत्रों के बराबर सुवर्ण लेकर दोनों को घरिया में रख चरख देवे अर्थात् गलावे और गले हुए को अम्लवेत अथवा बिजोरा अथवा शहद में डाले तो दशवर्ण का अनोखा सुवर्ण हो जायगा॥९५–१००॥

तारकृष्टी चांदी से सोने का जोड़ा

पारदं दरदं हेममाक्षिकं गंधकं शिला । एतानि समभागानि काकमाचीरसेन च ॥१०१॥ मर्दयानि च गाढानि कारितव्यानि खल्वगे । पीतपित्तलपत्राणि कृतसूक्ष्माणि तान्यथ ॥१०२॥ लेपितव्यानि चैतेन चूर्णेनाथ प्रयत्नतः । मध्यमस्तु पुटो देयो क्रियते चूर्णमुत्तमम् ॥१०३॥ पुनस्तारैकभागकं चूर्णं भागद्वयं भवेत् । अत ऊर्ध्वमिदं दत्त्वा धाम्यते चैकतः कृतम् ॥१०४॥ एवं वारद्वयं तारं तत्तैले विनिवेशयेत् ॥ पिंजराभं भवेत्तारं समं हेमापि मेलयेत् ॥१०५॥ जायते कनकं रम्यं वर्णयुग्मं विहाय तत् ॥१०६॥

(रस० शं०)

अर्थ–पारद, सिंगरफ, सुवर्णमाक्षिक (यहां हेममाक्षिक शब्द से हेम से सुवर्ण और माक्षिक से सोनामक्खी ग्रहण है अथवा केवल सुवर्णमाक्षिकका ही ग्रहण हो इन दोनों प्रकार से हानि नहीं) गंधक और मैनसिल इन सबको समान भाग लेकर मकोय के रस से घोटे तदनन्तर पीले पीतल के सूक्ष्मपत्र बनवाकर उनपै पूर्वोक्त कल्कका लेप कर देवे और मध्यम पुट देकर चूर्ण कर देवे फिर एक भाग चांदी और दो भाग चूर्ण इन दोनों को मिलाकर चरख देवे जब पिघल जावे तब भिलावे के तैल में डाल देवे इस प्रकार चरख देवे तब पिघल जावे तब भिलावे के तैल में डाल देवे इस प्रकार दो बार करने से चांदी पीले रंग की हो जाती है वह चांदी और सुवर्ण को समान भाग लेकर चरख देवे तो सुवर्ण होगा॥१०१॥१०६॥

सोना बनाने की तरकीबं जरिये सीमाब (उर्दू)

सुर्खकमल के फूल की पत्ती उमदा फौलाद के बुरादह में मिलाकर खूब खरल करके चर्ब दे फिर बुरादा करके उनही फूलों की पत्ती में चर्ब दे इसी तरह तीन चर्ब दे इस फौलाद का रंग दो मर्तबे में मिस्ल तावा हो जायगी उसकी घरिया बनाले और उसमें साफ पारा भर दे और पारसपीपल के पत्ते और फूलों का अर्क डालकर सौ आंच दे पारा फौलाद का रंग सुर्ख हो जावेगा फिर एक हिस्सा यह और ९९ हिस्सा चांदी मिलाकर चर्ब दे सोना बन जावेगा। (सुफहा २७ खजाना कीमियां)

रजतकर (रांग की चांदी)

हरिताल कुमारिकापुष्प नुगदी में रखकर कपडमाटी करके सुखाकर ऊपर गोहे मिट्टी का पोचा देकर चार सेर कच्चे गोहे की आग देणी फूल हो जायगा इसमें पारा मिलाकर सख्त गोली बनाकर सख्तगोली तोला में १ माशा नीलाथोथो के हिसाब से नीलाथोथा और शंखिया तीन तोला गोली में २ तोला के हिसाब से इन तीनों के खरल करके महीन करके आक के पत्र ८ उपर्य्युपरि देके ऊपर धागा लपेटकर गर्म भूभल में घड़ी भर दाब छोड़ना थोड़े प्रसिज्जल के चिक्कण जैसा हो जायगा फिर लोहचून तोला गोली में ३ माशे हिसाब से और गोदन्ती हरिताल और राल दोनों शंखियों के नम समभाग लेकर तीनों को खरल करके महीन करके प्रस्वेदित पूर्वोक्त मिलाकर खरल करणा संपुट मिट्टीदा सुखाकर उसमें बंद करके सुखाकर भूभल में पूर्ववत् प्रस्वेदित करना तात्पर्य राल उड़कर बाहर न आवे प्रस्वदित होकर मिल जावे प्रस्वेदसे सिद्ध होती है (सिद्धं वंगं नियोजयेत्।) (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

वेधक

हरिताल १॥ तोला कुमारीपुष्प नुगदी में रखकर कपडमिट्टी करके सुखारक ४ सेर कच्चे गोहे की आग देणी फूल श्वेत हो जायगी उसमें पारा १॥ तोला नीलाथोथा ३ माशे, शंखिया २ तोले (तीनों मिलाकर खरल करके घड़ी भर रखना फिर निकालकर) पारे की गोली सख्त हो जावे तब दूसरी दो चीज मिला देणी (मिलाके आक के पत्र ८ लपेटकर भूभल में) गोदन्ती हरताल २ तोले राल २ तोले लोहचूर्ण ७॥ माशे दुगुणी दोनों होन मिलाकर सम्पुट में रखकर बंद करके भूभल में रखणा जिससे राल दीवान आवे और पसीना आ जावे। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

पारदवेधक

पारा १ तोला शंखिया १ तोला नीलाथोथा ३ माशे तीनों को सुखा खरल करना फिर आक के ८ पत्रों में भूभल में रखणा नरम हो जाय तब निकलना लोहचूना ५।। माशे और नौ नौ माशे राल बरकी और गोदंती इनको खरल करके पूर्वोक्त से २ रत्ती पाकर संपुट में रखकर नरम आग देवे जिससे प्रमिज्जल जाय और वह ना निकले और पूर्वोक्त क्वार के डंडे से आग देणे से फूल हो जायगा और त्रामे पर चलैगा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

सिद्धदल कल्क (शिंग्रफ गंधक हरताल मैनशिल ताम्रयोग)

तालताम्रशिलागंधसंयुतं दरदं यदि । कूपिकायां मुहुःपक्वं द्रवकारि तदा मतम् ।।१०७।।

(र० चिं०)

अर्थ–जो हरिताल, ताम्र, मैनशिल, गंधक और सिंगरफ इन सबको इकट्ठा करके कुप्पी के भीतर रख के बारंबार पाक किया जाय तो वे द्रवकारी हो जाते हैं।।१०७।।

स्वर्णकर चांदी का सोना

पारा १ तोला आंवलासार १ तोला दोनों की कज्जली बनानी १ तोला जंगाल के पाके खरल करना १ तोला किरम पाके खरल करना चारोंचीज खरल करके चीनीके प्याले बीच पाके तेजाब से तर करके धूप में रखना जब सूख जाय तब तोले चांदी पर १ माशा पाणा।

नोट–ताम्र चारित पारद का पर्य्याय सिद्धकर उससे चांदी का सोना बनाया है। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

स्वर्णकर एक प्रकार से ताम्र पारद का मेल

शंखिया १ तोला, सज्जीकाली १ सेर, पक्काचूना अनुवुज्ज २ सेर, पक्के सूजी चूना दोनों पानी ८ सेर पक्के में भिगोवे तीन दिन तक फिर नितारकर उसमें शंखिया पकावे पक्का शंखिया १, गंधक २ हरिताल ३, शिंग्रफ, ४ रसकपूर ५, सुहागा ६, संगरासख ७ सातौं समभाग नौशादर फिटकिरी नौ नौ माशे पारा ५ तोले पंचगुणा अंमी का रस वा अनारदाने के पानी से खरलकर ७।। सेर कच्चे लकड़ी की आग देणी ऐसे १५ दिन खरल तथा आग।

नोट–नसकिया व तश्रिया से ताम्र जारण कर पारद को बद्ध किया है (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

स्वर्णकर तांबे का सोना

हरिताल गंधक जंगार सिक्का पारा यह पांचौ समभाग लेकर महीन पीसना फिर तेजाब में पाकर धूप में रखना ४० रोज जब तेजाब सूख जाय तब छोटी पुट देणी द्रवित ताम्रपर पाणा (जंबू से प्राप्त पुस्तक)।

पारा गंधक मैनशिल नागलेप से चांदी का सोना

पारदं शीसकं गंधं कुनटी तच्चतुष्टयम् । बीजपूरांभसा पिष्ट्वा बाढं दिनचतुष्टयम् ।।१०८।। अथ सूक्ष्माणि पत्राणि तानि तारस्य लेपयेत् । बीजपूररसेनैव तानि मात्रापि तावती ।।१०९।। एकाधिका भवत्यत्र भावना चास्य विंशतिः । विशोष्यावर्तितं तारं भवेत्तारस्य कांचनम् ।।११०।।

(बृ० यो० र० सा० प० र० रा० शं०)

अर्थ–पारद सीसा गंधक और कुनटी इन चारों को बिजोरे के रस से चार दिवस तक पीसे इस कल्क से चांदी के सूक्ष्म पत्रों पर लेप कर देवे (और पुटद्वारा भस्म कर लेवे) अब उस चूर्ण को बिजोरे के रस की इक्कीस भावना देवे फिर सुखा के सुवर्ण के साथ चरख देवें तो सुवर्ण होगा।।१०८–११०।।

सिद्धमतखोट

पारा गंधक मैनशिल नाग योग

अथाष्टांगुलतश्चुल्लयाः सिध्यंति सिकतावृताः । रसगंधशिलासर्पाः पाकाद्यग्निविपत्क्रियाः ।।१११।।

(बृ० यो० र० रा० शं०)

अर्थ–पारा गंधक मैनसिल और सीसे को पीस (बिजोरे की भावना देकर) बालुकायंत्र से पकावे तो पारद खोट होता है।।१११।।

रजतकर–(पहेली) पारा शिंग्रफ गंध हरताल मैनशिल शंखिया नाग जस्त से ताम्र की चांदी

दोरत्ते दो पीउलै, चन्दावर्णे चार । खदबद खिचडी रांधकर, चेला भूख ना मार ।।

सिंग्रफ १ मैनशिल २ गंधक ३ हरिताल २ पारा १ शंखिया २ सिक्का ३ जस्त ४ महीन खरलकर अर्क दुग्ध में खिचड़ी की तरह रिन्नणा फिर ताम्रपर वा कली पर पावै शुभ होवे (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

रजतकर (तांबे से चांदी)

शंखिया १ तोला पारा हरिताल नौसादर कली रक्तमूल क्वार गट्ठेल निंबूरस खरल २ प्रहर आग १० सेर कच्चे दी संपुट ताम्र पर रजत होय (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

वेधक पारद गंधक तैल

एरंड–तत्तैलं सूर्य्यवारेण ग्राहेयेद्विधिवत्ततः । रक्तैरंडस्य तैलेन शुद्धं सूतकगंधकम्।।११२।। मेलयित्वा पंचतैलं लोहपात्रे विशेषतः । याममात्रं पंचद्धीमान् गुंजगुंजानिभं भवेत् । तत्तारं नागपत्रेषु सहस्रांशेन वेधयेत् ।।११३।। (औषधिकल्पलता)

अर्थ–आदित्य बार के दिन लाल एरण्ड का तैल निकाल और उसमें पारद और गंधक को डाल ४ लोहे के पात्र में पकावे जब वह चौंटनी के समान लाल हो जाय तब उसे उतार लेवे तो वह तैल हजार अंश से चांदी को वेधता है।।११२।।११३।।

अन्यच्च

गंदक आंवलासार से चतुर्गुण, एरंडबीज गंधक से त्रिगुण, पारद दोनों से द्विगुण, एरंडबीज हुये गंधक एक दाम, एरंडबीज ४ दाम पारा ३ माशे, इन तीनों चीजों को खूब पीसकर इनका तैल निकाल लेणा, ताम्र द्रवित पर देने से स्वर्ण होवेगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अन्यच्च

रत्तिकाकी जड़ छिली हुई २ सेर गंधक, १ पाव, पारा, तीनों चीजें कुक्कुटांड की जड़ी में खरल करके गोलियां बणां लियां सुखाकर शीशे में पाकर पाताल से तैल निकालैना उस तैल को खिचड़ी में पाकर सुखा लेणा द्रवित ताम्र पर पारा सुवर्णकरम् ।। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

गंधक तैल वेधक पारदयोग (जलयंत्र से)

गंधक १ तोला, पारा ३ माशे, दोनों खरल करने अम्मी बूटीदा रस १ तोला पाके खरल करना, १ तोला फुलने पाके टिक्की बणानी टिक्की कड़ाही में रख के जलमुद्रा करके आग देणी तेल हो जायगें वह तैल ताम्रपर मलकर आग देणी स्वर्ण हो जायगा। (दृष्टप्रत्ययोऽयं बूटारामस्य) (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

रसकपूर और गंधक की द्रुति वेधक

खर्परं कुक्कुटांडस्य गृहीत्वा क्षालयेत्ततः । शोष्य चूर्णं सूक्ष्मतरं कृत्वा संप्लावयेत्ततः ॥११४॥ निंबूरसैः सिरकया वा वह्निना शोषयेज्जलम् । पुनः संप्लाव्य संशोष्य सुधारूपं ततो भवेत् ॥११५॥ तच्चूर्णं नवसारस्याधश्चोर्ध्वं प्रधारयेत् । मुद्य संधारयेच्चूल्हौ दिनान्यष्टौ दिवानिशम् ॥११६॥ वह्निं कुर्य्यात्प्रयत्नेन पक्वं काचस्य भाजने । भाजनान्तरकृतमुखं खनेदश्वपुरीषगम् ॥११७॥ अधश्चुतं गृहीत्वा तन्मर्द्य तत्समगंधकम् । तदर्धं रसकर्पूरं सम्यक् संमर्द्य धारयेत् ॥११८॥ अश्वपुरीषे सततं यावद्द्रवरूपतां याति ॥ अयं रसः समाख्यातः देहलोहकरः परः ॥११९॥

(जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अर्थ–मुर्गे के अंडों की सफेदी को धोकर सुखा लेवें फिर नींबू का रस अथवा सिरके से तरकर के अग्नि से सुखा लेवे इस प्रकार दो बार करें तो वह चूने के समान श्वेत हो जायगा। उस चूर्ण को नौसादर के ऊपर नीचे देकर हांड़ी में रख और कपरौटी कर चूल्हे पर चढ़ावे तदनन्तर आठ दिवस तक रात दिन बराबर अग्नि देता रहे उसमें से पक्वपदार्थ को निकाल कांच की शीशी में रख देवे इस शीशी का मुख एक दूसरी शीशी कर देवे जो खाली शीशी हो उसको नीचे धरें फिर घोड़े की लीद में एक मास तक रहने देवे नीचे टपके हुए रस में रस की बराबर गंधक को घोटे फिर गंधक से आधा रसकपूर को गेर घोटे इस कज्जली को शीशी में भर घोड़े की लीद में द्रव (रस होने पर दाब देवे तो यह रस देह को लोहे के तुल्य करता है और लोहे को वेधता है) ॥११४–११९॥

सोना बनाने की तरकीब (उर्दू)
पारदगंधक खिंलाकर पायखाना के तेल से

पारा साफ गंधकसाफ बराबर दूध में डालकर सात रोज पिये और इक्कीस रोज का पायखाना सुखाकर मिट्टी के बर्तन में करके कपरौटी कर दे और इसके नीचे सूराख़ कर दे और दूसरा बर्तन मिट्टी का जमीन में गाड़ दे इसके ऊपर वह बर्तन रख दे और हवा बंद कर दे फिर जंगली उपले उसके चारो तरफ लगाकर आग दे सुर्ख और जर्द तेल निकलेगा रुपया पर लगाकर मुँह की फूंक से सुखा दे फिर आग पर रखकर निकाल ले और मुंह से हवा दे और वही तेल उस प लगाकर आगर पर रखकर तपा ले सोना बन जावेगा फिर पारा गंधक खानेवाला त्रिफला खावे जब तक कि पेट साफ न हो तो खाता रहे इसका खानेवाला सौबरस तक जिन्दा रहेगा और कोई बीमारी उसको न होगी और बाहू बहुत बढ़ जावेगी और सफेद बाल स्याह हो जावेंगे और बूढा जवान हो जावेगा। (सुफहा खजाना कीमियां २३ व २४)

गंधक और हरताल का रोगन अकसीरी (उर्दू)

गंधक आंवलासार तीन छटांक, हरताल, तबकी १ छटांक, दोनों को बारीक पीस ले चूना आध सेर लोटासज्जी पावभर दोनों को बारीक करके पानी में डाल दे और दोनों का मुकत्तर दो सेर के करीब लेकर गन्धक व हरताल में थोड़ा थोड़ा दाखिल करके खरल करते चले जावें जब सब पानी जज्ब हो जावे तो गन्धक व हरिताल को थोड़ा सा आगपर रखकर देख लें अगर शौला दे तो और खरल करे अगर शौला न दे तो गोलियाँ बनाकर बजरिये पाताल जंतरतेल कशीद करें, यह तेल अकसीर का काम देगा और अहलफन इस तेल को समझ गये होंगे (सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १६/११/१९०७)

गंधक तेल से ताम्र का सोना

१६ तोले गन्धक पीतपुष्पवाले गिदड तमाकू के रस में खरल करना १ मास और पीतसंखिया १ तोला गोहे में दाड छोड़ना ठंडे थोहर के दूध में १ मास श्रावण महीने फिर दोनों को खरल करके शीशी मे पाके लिद्द मे दवा छोड़ना, १ महीना में तैलरूप हो जायगा, सूक्ष्म ताम्रपत्र पर लेप करना स्वर्णकरम् (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

गन्धकतैल ताम्रवेधक

१५ सेर पिलछी दी खार निकालकर उस खारपानी में १२ तोले गन्धक ६ तोले शंखिया श्वेत पीसकर दोनों पादेणे और पाणी कढाही में पाकर आग बालणी जब थोड़ा सा जल रह जावे तब गन्धक का तैल शीशी पादेणा तैल को ताम्र पर पाणा और शंखिया नीचे बैठ जायगा उसको कली पर मुटना।

गन्धक का तैल खासियत अकसीर व साजिश तूतिया बजरिये पताल जन्तर (उर्दू)

आबलहसन बसेरपुख्त: आँबलासार एक तोला पर चोया दे कि, जज्ब कर दें नीचे नरम आंच रोगन रखें जब तमाम लहसन का पानी जज्ब हो जावे तो आँबलासार में हस्बजैल कुश्ता तूतिया ३ माशे तय्यार करके शामिल कर दें और बजरिये पताल जन्तर तैल निकाल लें यह तेल अकसीर का काम देगा तरकीब कुश्ता तूतिया मजकूर डंडा थूहर एक बालिश्त लेकर उसमें तूतिया ६ माशे की डली बन्द करके खूब गिलेहिकमत करें फिर पांच सेर उपलों की आंच दे दे जब सर्द हो जावें तो निकाल लें तूतिया व रंग सफेद कुश्ता होकर बरामद होगा–(सुफहा ५ अखबार अलकीमियाँ)

अकसीर शमसी रोगनगंधकमय तांबा (उर्दू)

जनाब साहब एडीटर जादइनायतूह एक नुसखा अकसीर शमसी पेश खिदमत है उम्मीद है कि नाजरीन साहिबान तजरुबा करेंगे बादहू निहायत खुश होंगे क्योंकि तरकीब सहल और तजरुबाः शुदः है गन्धक आंवालासार ६ तोले को पीसकर डाल दें और चूल्हे पर रख दें और नरम नरम बेर की लकड़ी की आग जलावें और पानी बूटी पनवाडी जिसको सहराई कसूंबा कहते हैं चूहचूह डालते जावें जब कि दो सेर पानी जज्ब हो तो नीचे उतारकर खरल में डाल दे बाद लहसन एक पोतह ८० तोला शीरजक ६ तोला पीसकर उसी खरल में डालकर हरसह अजजाड को खूब सहक करें जो कोई जुज उसका मोटा न रहे जब कि हम जान हो चुके तो सबका एक कर्स बनाकर रख लेवे, बाद हांडी गिलेहिकमत शुदः में ८ सेर पानी चूना का डालकर उसके मुँहपर बारीक मलमल का कपड़ा बांध कर वह कर्स उस पर रखकर प्याले गिलसि ढापें और लब प्याले का आरद मांश से बंद करके हांडी को चूल्हे पर रखकर नीचे नरम नरम आग ४ पहर तक जलावें लेकिन जब दोपहर आग हो चुके तौ कर्स मजकूर को बदल देव यानी ऊपर का जर्फ नीचे और नीचे का जर्फ ऊपर कर दे पस जब कि चार पहर पूरें हो आग को बंद करे सर्द होने के बाद मुलाहिजा फर्मावें तो एक टिकिया हांडी से आंवलासार की बरामद होगी बडी हिफाजत से उसको निकालकर खरल में डालें और उसमें ६ माशे कुश्ता तूतिया बरंग सफेद मिलाकर हमराह पत्तः राह के दो रोज तक सुबह से शाम तक सहक करें फिर बराबर बेर के गोलियां बनाकर साये में खुश्क करें कि जब कि अच्छी तरह से खुश्क हो जावे तो आतिशी शीशे में डालकर बतरीक पतालजंतर दो सेर मेंगनी बुज की आग देकर कशीद करै इन्शा अल्लाह बरंग सुर्क रोगन तय्यार हो गया दुबारा दूसरी आतिशी शीशी में डालकर चावलों में दम देवें और बवक्त जरूरत काम में लावें बस तजरुबा शर्त है तय्यार करके देख लें।

नोट–वजन चावलों का यह है चावल ८० तोला कन्दस्याह ४० तोला रोगन २० तोला इसी हिसाब से चावल कंद पकाकर ववक्त दम शीशी को दर्मियान रख दें लेकिन याद रहे कि मुँह शीशी का चांवलों के बाहर न रहे वरनः अमल खराब हो जायगा (हकीम सय्यद गुलाम अलीशाह अजकरांजी) सुफहा नं० ८ व ९ (अखबार अलकीमियां १/८/१९०७)।

गंधक तेल से तांबे का स्वर्ण

आवलासार निर्मलेंसार रक्तकाही (सममेतत्त्रयं स्नुह्यर्कदुग्धाभ्यां सह खल्वे मर्दयेत्ततः पातालयंत्रेण तेलं संपातयेत्तस्मिन् तैले सोनसकेश्वरी ताम्रं द्रुतं निषेचयेदिति । (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

स्वर्णकर तैल (ताम्र का सोना)

शोरा नवसादर फिटकिरी श्वेतकाही सुहागा समभाग का तेजाव उस तेजावविच खरल करना शंखिया सुर्ख गंधक हरिताल का ही सुर्ख जर्दी अंडों की सव वरावर होवे खरल करके १६ पहर गोली वणाकर सुखा लैणी फिर शीशी में पारक वालुकायंत्र पातालयंत्र से तैल निकालना उस तैल को ताम्र पर मल के अग्नि कोयलों की देवें (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

गंधकादितैल–वेधक

१।। सेर कच्चा मूत्र, २ तोले लोटासज्जी, २ तोले शोरा लोटासज्जी महीन पीसकर काली गौ के मूत्र में पादैणा २ दिन भिज्जा फिर उसमें से आधा लेकर कढाही में पाकर नीचे आग बालनी जब रवड़ी जैसा होवे तांवा की मूत्र विचों आधा पादैणा फिर आग वाल जव रवड़ी जैसा हो जावे तव फिर सारामूत्र पादैणा फिर आग वालणी जव रवड़ी जैसा हो जावे तव उतार लैणा सडे ना यह शोरा कायम है, २ तोले आंवलेसार, १ तोला सिंग्रफ निका करके थामे सेर कच्चा लेकर कूट के उसदा नुगदा वणा के ऊपर टाकी लपेटके मिट्टी जरा लगाके सुखा के दोवट्टी गोहे बाल के जव अंगार निर्धूम होण तव तप्त जगह पर रख के अंगार देकर रिज्जजावे थोम सव ना सडे हरतालवरकी २ तोले, निंव दे पत्राविच रख के रिजजाये पक जायें पूर्वोक्त शोरा, गंधक, सिंग्रफ, हरताल, चारों चीजां आतिशी शीशी में पाकर उसमें ६ माशे नौसादर का तैल पाके (पातालयंत्र द्वारा तैल निकालना) यह तैल ताम्र पर मलना कांचनकरम् । (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

गंधकादि तैल–वेधक

शिंग्रफ, गंधक, हरिताल, समभाग (कुमारीपीतिम्रा १६ प्रहर) खल्वे मर्दयेत् ततः लघुगुटिकारूपं निर्माय शोष्य काचकूपिकाद्वयं अधः कूपिकामुखे ऊर्ध्वं कूपीमुखं विधाय ऊर्ध्वकूपिकायां गुटिका निधाय मुखमुद्रां विधाय बृहज्जलपात्रे १६ प्रहर हठाग्निं कुर्य्यात् वेधकतैलमध कूपिकायां पतेत् ।) (जंबू से प्राप्त पुस्तक)।

गंधकादि तैल

गंधक २।। हरिताल २।। पारा २।। सिंग्रफ १ सिराव ३३ खरल कर नाफिर गोली बनाकर सुखाणी फिर आतिशी शीशी में पाकर पातालयंत्र से तैल निकाल लैणा आग पहर एक पहले गर्म भस्म पाणी फिर मेंगड़ा ३ लेर फिर गोहे १० सेर कच्चेलाणे आग ठंडी ना होवे ऐसे तैल निकाल रखणा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

गंधक हरताल संखिया शिंग्रफ का रोगन अकसीरी (उर्दू)

सीमाव गंधक, आंवलासार, शिंग्रफरूमी, जरनेख, समुलफार जर्द, इन सबको बारीक खरल करके मुर्गी के बैंजे में दाखिल करें और एक बैजः मुर्ग का पोस्त उसके मुंह पर देकर गिलेहिकमत करे बादहू चूना आवनारसीदः बीस सेर निस्फबैजे के ऊपर और निस्फचूना नीचे देकर उसके ऊपर पानी छिड़क दे. चार प्रहर के बाद निहायत आहिस्तगी से बैजः मुर्ग को निकाल लें बैंजे से बरंग सुर्ख तेल बरामद होगा। कीमियांगरों के नजदीक यह तेल अकसीर की खासियत रखता है। (सुफहा ३ अखबार अलकीमियां १६/११/१९०७)

रोगनअकसीर खुर्दनी

जो गंधक हरताल संखिया व नुकरः वगैरः से बनाया है (उर्दू) सम्मुलफार सुर्ख एक तोला, संमुलफार सफेद एक तोला, शिंग्रफ एक तोला, चांदी का पानी जो तेजाब में कलाई जाती है। एक तोला इन जुमला इशियाय को कूटकर एक कड़ाही आहनी सूराख शुदः में दाखिल करें बादहू इनके ऊपर नमक सफेद आध सेर को बारीक पीसकर तह देदें। अजाँवाद कड़ही में कोयला रोशन करें और कड़ाही के नीचे सूराक में शीशी का मुंह चस्पां कर दें। दो घंटे तक तेल निकल आवेगा, इस तेले को एहतियात पुख्तः शीशी रख ले अगर एक सीख दो दाने मुनक्का में खिलावें तो कमजोर और बलगामी मिजाज नामर्द ईफुल उस जौफूलकवा लोगों के लिये अविहियात से कम नहीं गिजा गोश्त कवाब शीरगाउ और घी जिस कदर खा पीस के खाना चाहिये अगर चांदी एक तोले को गलाकर इस तेल का एफ कतरा डाल दें और अजीव तमाशा नजर आता है। (सुफहा २ अखबार अलकीमियाँ १/१२/१९०७)

रोगन अकसीर–अजसादव अजसाम–(जस्त–सीमाव–गन्धक–हरताल–कसीस से) (उर्दू)

अव्वलजस्त दो तोले को सीमाव के साथ मिलाकर अकद कर ले और इस अकद को रोगनफिटकिरी में चार प्रहर तक पकावे। दूसरे रोज मजकूर अजखुद तेल की शकल में हो जावेगा। गन्धक जोहरवार रोगनमादह गाऊ में चर्ख होकर सौदेफे पिघलचुकी हो और हीराकसीस जो रोगन मालकांगनी के जरिये मूमिया किया गया हो और हीराकसीस जो रोगन मालकांगनी के जरिये मूमिया किया गया हो और हरतालबर्की मुसफ्फा यह सम वजन लेकर रोगनमजकूरः में खरल करके बजरये शीशी आतिशी बतरीक मअरूफतेल निकले पहछे तेल निकालें। यह तेल किसी कदर कलीजसुर्खी माईल होगा। खुराक १ टंक मरीजजाम को शहद के साथ और मरीज आतिश को बर्गतांबूल (यानी पान के पत्ते) के साथ व सुस्त और नामर्द को बालाइ के साथ–लकवाराशा फालिज अधरंग व जमाउल मकासिल (जोड़ों का दर्द) और मरीज हैजा को हींग के साथ दे। मुफीद सावित होगा। इस रोगन का कीमियाई फाईदा यह है अगर एक तोला शिंग्रफ रूमी को ६ माशे रोगन अकसीर मजकूरः में खरल करके बकदरदानः नखूदगोलियां बनाकर बजरिये पतालजन्तर से तेल निकाल लें तो यह तेल सीमाव के लिये आला दर्जे का नशिस्त होगा और ताँवालाजिस को तिलाए हश्तअय्यार बना देगा। (बाकी आइदा) सुफहा ४ अखबार अलकीमियाँ १६/५/१९०५)

रुवाईशमशमगरबी (फार्सी)

खुशगुफ्तशमशमगरबीगुगर्दतूतिया जरनेख सुर्वजीवक ईंपंजराविसावाखूनती-रेत्तरः कुंनवांगहनियारदरकुन नुकरः निहासजरकुनईं अस्तकीमियां ।

तफसील

दोजरने खुदो किबिरी तो दो जीवक । मरा आमदजि उस्तादईं मोहक्किक । दो वजन अज सुर्व वदो अज तूतिया गीर । तोईं हरपंज बहर कीमियागर ।। बिकुन सीमावरा वा सुर्व पस अकद । कि गर्दद अदलताफत चूं जरे नक्द । बिगरिद शोरओ अजजाकि तेजाव । कि रेजद बर सरेयू हमचुंजर्द आब ।। उकावे कांमसअद कर्दः बाशद । व जाके जर्द यकजा कर्दः बाशद ।। जि कशरे बैजः आतिश कर्दः बरगीर । बराबर वा उकावश साज तखमीर ।। बिकुन मखलूत वा तेजाबे मजकूर । कि बिनुमायद चूंखूँ तीरः अजदूर ।। गुदा जिशदः ओरा दर चाह ताफीन मियानः शीशः दरचाह जेर सरगी ।। चो हलगर्दद पस ओराकु न तो तक्तीर । मियानह कर नवीकश ब तदवीर । चो हल गर्दद हल मुश्कल तजूदन बाशद गैर हल हरगिज तुरासूद ।। पसा आँगह जेर बरईं पंज जौहर । बिकुन तसहीक आज सुबहताव दीगर । विनें दर शीशः अन्दर जेर रेगश । बिकुन आतिश फरावां देगश ।। बिकुन तकरार

जाचो सहक आतिश फरावां देगश ।। बिकुन तकरार जावो सहक आतिश । कि गर्दद तह नशीं ईं जुम्लः बेखश ।। बिकुन तरह ओरा बर नुकर ओ मिस । तिलाए नर्म गर्दद जूव तावश ।। जहरईं नुसखा कर्दः अस्त तकरार व काजिव । लानते अल्लाहबाद सदहर बादः ।

(राकिमहकीम नूरआलम अजकोटशीरा डाकखाना टवन तहसील तिला गंगजिलाअटल) (सुफहा ६। किताब अखबार अलकीमियां १/४/१९०५)

स्वर्णकर तैल

हरिताल गंधक सिंग्रफ पारा मनशिल पीतशंख रसकपूर सातों समभाग लेकर अमरबेल के रस में सात दिन खरलकर भूतपात्र में ४० दिन गोबरमध्य रखणा तैल हो जायेगा। उसको ताम्रपत्र पर लेप करके तपावे स्वर्णक्रिया। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अनुभूतस्वर्णकरयोग (सोना, चांदी, तांबा जस्ता के मेल से सोने का जोड़ा)

ताम्र १ तोला, जस्त १ तोला, चांदी १ तोला तीनों गाल के लोणा दे पाणीबिच बुझाणा ७ बार फिर झाड़ के ६ माशे स्वर्ण मिला दैणा फिर बेचना बराबर भाव बिक जायेगा। दृष्टप्रत्यययोगायं वक्तुग (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

हेमक्रिया

हेमभागद्वयं तारं तथा ताम्रंचतुष्टयम् । एकतः क्रियते पत्रमतिसूक्ष्मं निरामयम् ।।१२०।। जंबीरनीरसंपिष्टं खर्परस्याष्टटंककम् । तेन तान्यथ पत्राणि लेपनीयानि वै बहु ।।१२१।। आवर्तयेत् पुनर्दत्त्वा मूषके गलितानि च । तदा तानि भवंत्यत्र हेमरूपाणि नान्यथा ।।१२२।।

(बृ० यो०)

अर्थ–दो भाग सोना, दो भाग चांदी और चार भाग तांबा इन सबको मिलाकर सूक्ष्मपत्र बनावे उन पर जँभीरी के रस से पिसे हुए आठ भाग खपरिया का लेप करे, उन पत्रों को घरिया में रख गलावे फिर चरख देवे तो सुवर्ण का वर्ण हो जायेगा।।१२०–१२२।।

चांदी रगने की तरकीब

जस्त और चांदी एक एक तोला दोनों को चरख देणा । पहिले चरख ३ रत्ती तांबा पा देणा फिर दूसरे चरख २ रत्ती तांबा पाणा फिर तीसरे चरख तीन रत्ती ऐसे मासा प्रति तोले तांबा पाणा फिर चौथे चरख खूब देणा यदि जस्त कायम हो तो रंजित होवे। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

स्वर्णक्रिया

मूली का रस १।। सेर पक्का ईंट मोटे थलेवाली लेकर उसमें टोपा निकालकर टोपे में पारा ऊपर लोहे की कटोरी देकर हेठ आग बालनी रस का चोया थोड़ा थोड़ा देते जाना। (लोहकटोरि का स्थान वंगकटोरिका मूलिकारसस्थाने अमरलतिकाजलं स्वेदनं प्रहरचतुष्टयंम तोलावंगे रक्तिकामात्रकम् । सज्जी सेर पक्का जस्त पापक्का जस्त के हेठ ऊपर सज्जी देकर डेढ़ प्रहर आग बालणी। जस्त को ढ़ालकर शोरे की चुट की देणी फिर कटु तैल में पा देणा एवं सात बार फिर तोले का ताम्र संपुट लेकर उसमें ३ माशे चांदी पूर्वोक्त २।। माशे पारा पाकर संपुट में रखकर, मंदमध्यबृहद्, धमनेन सर्व द्रावयेत् । (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

पारद और जस्त से ताम्र का सोना

रसकस्य द्विभागं तु पारदस्य त्रयं तथा । पिष्टिकां कारयेदेवं तप्तखल्वेन कांजिके ।।१२३।। पूर्ववन्निगडोपेतां खोटं कृत्वा तु वेधयेत् । दशसंकलिकायोगादब्द पेतां खोटं कृत्वा तु वेधयेत् । दशसंकलिकायोगा–दब्दवेधी महारसः ।।१२४।।

(नि० र०)

अर्थ–खपरिया दो भाग और पारा तीन भाग इनको कांजी से तप्तखल्व द्वारा पिष्टी करे। पूर्वोक्त क्रिया के समान निगड़ मिलाकर धोंके तो यह महारस दशसंकलि का योग से वेधता है।।१२३।।१२४।।

पारद[1] और जस्त से ताम्र का सोना

पारदः पलमेकः स्याद्द्विपलं पीतखर्परम् । मर्दयेत्सुदृढं तावद्रसो यावद्विलीयते ।।१२५।। पुनर्जंबीरनीरेण गुडेन च समन्वितम् । शोषयेच्चातपे पिष्ट्वा श्लक्ष्णं कृत्वा च धार्यते ।।१२६।। अर्कदुग्धस्य दातव्या भावनास्ता यथा तथा । अस्य कल्कस्य सिद्धस्य भाग एकोऽस्य टंकणः ।।१२७।। ताम्रं भागत्रयं दत्त्वा धाम्यतांमधमूषया । सुवर्णं दिव्यतेजः स्यात्कुंकुमादतिरिच्यते ।। यद्यतैर्न भवेत्सिद्धिः किमन्यैर्बहुलेखनैः ।।१२८।।

(बृ० यो०, र० रा० शं०, र० सा० प०)

अर्थ–पारद एक पल और पीला खपरिया दो पल इन दोनों को ऐसा मर्दन करे कि घोटते घोटते पारा मिल जावे। फिर जँभीरी और गुड़ के साथ घोट और सुखाकर सूक्ष्मचूर्ण बना लेवे फिर इसको आक के दूध की भावना देवे। इस सिद्धकल्क का एक भाग सुहागा और तीन भाग ताम्र को घरिया में धर धोंके तो उत्तम सुवर्ण होगा जो कि केसर से भी उत्तम कहाता है।।१२५–१२८।।

ताम्र से सोना

पारा, २तोला सुर्ख का ही १ तोला जस ६ मासे मीठा तेलिया ६ माशें चारों चीज खरल कर कुआर वांदल के रस में दोपहर टिक्की बणा के सुखा लैणी फिर तीन तोले तांबे के सम्पुट में टिक्की रखकर तीन सेर पक्के गोहे की पुट दैणी । ताम्रस्वर्ण हो जायेगा नरम। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

सोना बनाने की तरकीब–तारकृष्टी । (जसद की कटोरी की भस्म पारद युक्त से पीतल का सोना

तीन पैसे भर जस्त की कटोरी बनवाकर पैसा भर पारा उसमें रख कर ऊपर उसके गूलर का दूध भर दे किनारे तक। फिर हांडी के बीच में कटोरी रखकर ऊपर ढ़कना रखकर मुद्रा करे ऊपर बालू भरकर हांड़ी का किनारा मूंदकर सुखावे फिर चूल्हे पर चार पहर आग देवे। पीतल तोला एक जस्त माशे एक की लाग जाने–तारकृष्टी होती है। (सुफहा खजाना कीमियां ३३)

नोट–तारकृष्टी उसे कहते हैं जहां चांदी को दुरस्त कर सोने का जोड़ा बनावें। इस नुसखें में चांदी भी है इसलिये इसको तारकृष्टी भी कह सकते हैं।

स्वर्णकर जसद की कटोरीभस्म से ताम्र का सोना

पारा, हरितालब की, शिंग्रफ, गंधक, मैनशिल, शंखिया, सुहागा, जवाखार, तीन तीन माशे सब वस्तु लेकर कुमारीरस में खरल करे १ प्रहर फिर जस्त की तोले तोले की दो कटोरी लेकर हेठली कटोरी को पूर्वोक्त खरल कीतियां हुइयां वस्तु लेप करणी सुखाकर फिर लेप करना, एवं सब वस्तु लेप करणी, फिर जस्त के संपुट को मिट्टी के संपुट में रखकर सुखा

---

(१) तांबे और जसद से पीतल क्यों नहीं ।

(२) क्या यही धूम्रवेध है।

लैणा, हांडी लेकर उसदे तले ४ अंगुल रेत भर के ऊपर संपुट रखणा। ऊपर से और रेत पाणी हांड़ी का मुख बंद करके हेठ पलाश की लकड़ी की आग बालनी १ पहर, स्वांग शीतल निकाल लेवे, समेत कटोरी सब पीस रखे वह दवाई सिद्ध हो गई फिर तांबा द्रवितकर पाके तोले पर माशा १ दवाइ पाके ३ या ४ घड़ी तक चरख देतां रहे (जम्बूसे प्राप्त पुस्तक)

जसदयोग से ताम्रभस्म, ताम्रभस्म और जसद कटोरी योग से पारदभस्म ताम्रवेधी

जस्त १६ तोले लेके उसको दो सेर पक्के वज्रीदुग्ध में १०१ पुट देवे बाकी बचे जस्त की २ कटोरी बणा के उसमें पुटों से बचे दुग्ध को पाके उसमें ढौआ रख के ऊपर उसके ४ गज खासा मुलतानी मिट्टी नाल कपडमाटी करके १९ सेर अंग्रेजी दी आग दैणी उसमें ढौआ फुल हो जायेगा फिर कढ़ाई डूंगी लेकर उसमें सोलह तोले पारा पाकर ऊपर ढोआ भोर देवे उपरों जस्त दी प्याली दे देवे। उपरों सवासेर निंबूदा वा गलगलदा रस पावे ४ प्रहर आग तेजवाले फिर जो रस रह जावे सो निकाल लेवे, कढ़ाई बिच पाणीना रहे फिर कटोरी उतार के पारद भस्म बिल विच पा रक्खे। तोले तांवे पर रत्ती १ पावे कुठाली मुख बन्द करै, धूमना निकले हिंगु वा बगुले की हड्डी पावै जल्दगलै (जम्ब से प्राप्त पुस्तक)

हेमराजी यानी कमरंग सोने को तेज रंग करना (उर्दू)

राजावर्त के बुरादे को सिर्स के फूलों के अर्क में सौ बार खरल करै और हर बार सुखा ले फिर कमरंग सोना लेकर उसी के अस्सी हिस्से करे एक के बराबर सहअदविया ले फिर उस सोने को चर्ख दे जब चर्ख खा जावे यह एक हिस्सा दवा डाल दे। उमदा रंग सोने का हो जायेगा। सुफहा खजाना कीमियाँ १९)

हेमरक्ती वर्णवर्धक माक्षिकयोग

(सततं स्वेदयेत्त्रीणि दिनानि त्वथ माक्षिकम् । यवस्य कांजिके नैवं वासापत्ररसेन च ॥ दिवसं सकलं पश्चात्कुलत्थक्वाथमध्यगम् । स्वेदयेद्दिवसौ पश्चाद्टंकणार्द्रमधुलुतम ॥ कर्तव्याः शोषिताः सर्वा गलिता हेम्नि सुद्रुते ॥ एकैका संप्रदातव्या तस्मिन् हेम्नि शनैः शनैः । एवं दशगुणाहाराद्धेमरक्ती प्रजायते ॥ जायते सुन्दरं साक्षादुदयादित्यसन्निभम् ! हीनवर्णे शुभे स्वर्णे त्रिंशुद्गुंजाप्रमाणके ॥ गुंजकाद्वितयं दद्याद्वर्णयुग्मोपपादका । हेमरक्ती समाख्याता दारिद्रयध्वसंनी नृणाम् ॥

(बृ० यो०)

अर्थ–सौनामक्खी जो कांजी तथा अडूसे के पत्तों के रस से निरंतर तीन तीन दिन तक स्वेदन करे और एक दिन कुलथी के क्वाथ से और दो दिन शहद अदरख और सुहागे के द्रव में स्वेदन करै तदनन्तर पान के कल्क के साथ उदर के समान गोली बनावे और उनको सुखा लेवे इन गोलियों को गले हुए सुवर्ण में एक एक डालता जावे इस प्रकार दसगुनी गोलियों को डालने से स्वर्णकृष्टि होगी वह प्रातःकाल के सूर्य के समान लाल होगी फिर दो रत्ती स्वर्णकृष्टि को तीस रत्ती हीनवर्ण के सुवर्ण में गेरै तो उत्तम सुवर्ण होगा। यह हेमरक्ती मनुष्य के दारिद्रय का नाश करती है॥

हेमराजी यानी कमरंग सोने को तेजरंग करना (उर्दू)

मोरतूनिया और अदार आठ रुपये भर पारा साफ २५ दाम शिंग्रफ २५ दाम ५॥ दाम सबको निथारे और थूहर के अर्क में खरल करे पैसा पैसा भर की गोलियां बना ले फिर आठ रंगा सोना जलाये जब चाशनी हो जाय, एक एक गोली तोड़कर थोड़ी थोड़ी डालता जाये और धीमी धीमी आंच देता जाये जब सारी गोली गल जायेगी, सोना सुर्ख हो जावेगा, यह भी हेमराजी हो गई फिर अठरंग सोना और उसका दसवां हिस्सा यह हेमराजी यह दोनों गलाए दसगुने रंग का उमदा सोना हो जावेगा। (सुफहा खजाना कीमियाँ १९)

हेमराजी (यानी कमरंग सोने को तेजरंग करना) बजरिये लेप और तपाव (उर्दू)

हिंगुलरूमी सोनामक्खी गन्धक सोना गेरू व थोड़ा सा पारा इनको बिजौरे के अर्क में खरल करके फिर कमरंग सोने के पत्तों पर इसका लेप करके सुखावे और उपले की आग में तपावे तब नौसादर ग्वालवारी गेरूसुर्ख ईंट का बुरादा इन सबको पत्थर पर पानी से पीसकर कमरंग सोने पर लेप करके सुखाकर उपले की आंच में तपावे। अच्छे रंग का सोना हो जावेगा। (सुफहा खजाना कीमियाँ २०)

खोटबद्ध

भेकभास्करगंधायोवंगस्य क्षारभस्मना । हस्तीव बध्यते बक्त्रलौहखंडिकया रसः ॥१२९॥

(बृ० यो०, र० रा० शं०)

अर्थ–स्याह भोडर, सोना, गन्धक, लोहा और रागा, इनका क्षार और भस्म करके लोहबद्ध मुखवाली चक्रिका द्वारा पारद ऐसे खोटबद्ध हो जाता है कि जैसे हस्ती॥१२९॥

खोटबद्ध

सालूककुटिलाक्वाथरंभामार्गभस्मना । हस्तवि बध्यते वक्रलौहखंडिकया रसः ॥१३०॥

(बृ० यो०, र० रा० शं०)

अर्थ–स्याह, गन्धद्रव्य का क्वाथ, केला और ऊँगे का भस्म इन करके लोहबद्धमुखवाली खंडिका से पारा ऐसे खोटबद्ध हो जाता है कि जैसे हस्ती॥१३०॥

मंडूकपारदशिलावलयः समानाः सम्मर्दिताः क्षितिबिलेशयकांत्रविद्धा ॥ यन्त्रोत्तमेन गुरुभिः प्रतिपादितेन स्वल्पैर्दिनैरिह पतंति न विस्मयध्वम् ॥१३१॥

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–स्याह भोडर, पारा, शिलाजीत और गन्धक ये सब समान भाग गिंडोय डालकर मर्दन करे फिर गुरु के बताये हुए यंत्रोत्तम करके सिद्ध करे, इस प्रकार करने से थोड़े ही दिनों में यह सिद्ध हो जाता है, इसमें आश्चर्य नहीं ॥१३१॥

स्वर्णसाधन

शिलाचतुष्कगंधेशौ काचकूप्यां सुवर्णकृत् । कीलालायःकृतो योगः खटिकालवणाधिकः ॥१३२॥

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–एक भाग गन्धक और पारा, चार भाग मैनसिल एक कांची की शीशी में भर के लोह खड़िया और लवण के संयोग से तिसका मुख बन्द करके विधिपूर्वक पाक करने से सुवर्ण संजात होता है॥१३२॥

जोड़ा

तावर्के मर्कटशिवः शिलागंधाश्म चूर्णयेत् । पचेद्भूयःक्षिपन् गंधं यथा सूतो न गच्छति । पंकतद्धेम पत्रस्थं हेमतां प्रतिपद्यते ॥१३३॥

(र० चिं०)

अर्थ–तांवा, हिंगलू, शिलाजीत और गंधक इन सबका चूर्ण बनाकर फिर

गंधक इस प्रकार डाले कि निकल न जाय, इस प्रकार खूब धोकने से तांबे का सोना हो जाता है॥१३३॥

वेधोपयोगी सूतसाधन क्रिया

लोहं गंधं टंकणं ध्मातमेत्तुल्यैश्चूर्णैर्भानुभेकाहिरंगैः । सूतं गंधं सर्वसाम्येन कूप्यामीषत्साध्यं चात्र नो विस्मयध्वम् ॥१३४॥

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–लोहा, गंधक, सुहागा, काला अभ्रक, सीसा रांगा इन सबको गलाकर इन सबकी बराबर पारा और गंधक ले कांच की शीशी में भरकर मंदी आंच देने से पारा रंजित होता है, इसमें विस्मय का कोई कारण नहीं॥१३४॥

दो सिद्धबीज

लोहं गंधं टंकणं भ्रामयित्वा तेनोन्मिश्रं भेकमावर्तयेच्च । ताले कृत्वा तुर्य्यवंगान्तराले रूप्यस्यान्तस्ते च सिद्धोक्तबीजे ॥१३५॥ लोहभेकीतारताल कीसिद्धमतबीजद्वयम् ॥

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–लोहा, गंधक, सुहागा इनको प्रथम अग्नि में चक्र दिवाकर पश्चात् स्याहभोडर, हरताल और रांगा इसमें चौथा हिस्सा को डालै इस प्रकार करने से चांदी सिद्ध हो जाती है॥१३५॥

सिद्धचूर्णकल्क

कर्षाष्टंकणकज्जलीहरिरसैर्गंधस्य च द्वौ रजः सिद्धाख्यं सकलैः कृतं पलमथ द्वित्रैश्च लौहैः श्रितम् ॥ भूयो गंधयुतं चतुर्दशपुटे स्यादिन्द्रगोपारुणं तत्तारे लघुना पुटेन धमनेनार्कच्छबीमीहते ॥१३६॥ (इतिसिद्धचूर्णकल्कः) कर्षा इति बहुत्वमात्रं विश्रांततया तम इति यावत् कर्मस्य त्रिधा पत्रलेपेन ॥

(र० चिं०, र० रा० शं०, बृ० यो०)

अर्थ–सुहागा की कज्जली १६ माशा, कौंच का रस, गंधक का चूर्ण ३२ मासा, इन सबों को सिद्ध करके २ अथवा ३ भाग लोहा से युक्त कर पश्चात् गंधक और लाल इन्द्रगोप इसमें डालकर १४ लघुपुटों में धोके तो स्वच्छ चांदी हो जाती है॥१३६॥

सिद्धमतखोट

गंधतैलयुगलायसि मध्ये पूतिवारिवरामेष्यति पिष्टी । तैकभेकबलिकल्पित–पिष्टी संयमःप्लवगपूत्यभिषेकैः ॥१३७॥

(बृ० यो०, र० रा० शं०)

अर्थ–गंधक का तेल २ लोहे के बर्तनों में डालकर एक मे स्याह भोडर और दूसरी में गंधक डाले, पीछे दोनों को मिला कर पीठी बनावे और कौंच के रस से धोवे इस प्रकार करने से पारा खोटबद्ध सिद्ध हो जाता है॥१३७॥

हेमक्रिया
चांदी और तांबे का सोना गंध कुनटीयोग

तुल्यं तारं ताम्रमादाय स्वच्छं तावत्तप्तं गंधचूर्णे कुनटचाम् । न्यस्तं यावज्जीर्यते खंडशोर्धे प्राज्ञो गंधैःपाचयेत्काचकूप्याम् । खंडाकारं तादृशं टंकणेन स्वर्णान्तःस्थं भस्ममूषांतराले । नीचैर्यातं साधुःस्यात्सुवर्णं सतारहीने रंजयेन्माक्षिकं च ॥१३८॥

(र० चिं०)

अर्थ–चाँदी ताँबा, समभाग लेकर उस पर गंधक और मनसिल का चूर्ण डाले और कांचकूपी में पकावे पश्चात् मूषायंत्र में रख कर सिद्ध करे और सोनामक्खी डाले सुन्दर सुवर्ण सिद्ध हो जाता है॥१३८॥

हेमक्रिया

रसो मृतं मानवं हंति वंगं तेनैव तारं द्विगुणं निहन्ति । वंगं चतुःषष्टिप्रकारतारं हेमं करोतीति फणीन्द्रयोगात् ॥१३९॥

(नि० र०)

अर्थ–मरा हुआ पारा, वंग (रांगा) को मारता है और यह रांगा द्विगुण चांदी को मारता है। इस प्रकार ६४ मासा रांगा मृत पारे से मिला चांदी को सुवर्ण कर देता है, यह शेषनाग कहा हुआ योग है॥१३९॥

हेमराजी यानी कमरंग सोने को तेजरंग करना बजरिये बुझाव (उर्दू)

मजीठ, दोनों तरह की हल्दी, उमदा केसर, मालकांगनी के तेल में खरल करके सोने को तपाकर बुझावे या सोनें को चर्ख देकर यह दवा डाले उमदा रंग का सोना हो जावेगा। (सुफहा खजाना कीमियां १९)

तारकृष्टी चांदी से सोने का जोड़ा

गंधकाद्विंशतितमो भागः शुद्धो भवत्ययम् । त्रयो नौसादरस्यापि पीतं कासीसकं तथा ॥१४०॥ कुक्कुटांडद्रवस्यास्मिंशचूर्णे दत्त्वाथ भावनाम् । एकविंशन्मिताः पिष्ट्वा तारे तौलैकमानके ॥१४१॥ कृतपत्रोपरि प्राज्ञो लेपमात्रं तदौषधम् । दद्यात्तारं च कृष्टीं च माषैकं हेम लेपयेत् ॥१४२॥ वर्णिका सप्तकं तारं हेम तज्जायते परम् । तारकृष्टी निगदिता सा दारिद्रयप्रणाशिनी ॥१४३॥ अथवा पात्यं भवेद्धेम मेलनीयं च तत्समम् । वर्णायुग्मं भेषजस्यैतत्तारं हेमत्वमाप्नुयात् ॥१४४॥

(बृ० यो०)

अर्थ–शुद्ध गन्धक बीस भाग, शुद्ध नौसादर तीन भाग, पीलाकसीस ३ तीन भाग, इन तीनों को चूर्ण में मुर्गी के अंडो के रस की इक्कीस भावना देवे फिर एक तोले चांदी के सूक्ष्मपत्रों पर योग्य लेप देवे, इस तारकृष्टी में एक मासा सुवर्ण डाले फिर अग्नि में गलावे तो उस चांदी का सुवर्ण सात वर्ण का होगा, इसको तारकृष्टी कहते हैं। यह दरिद्रता को नाश करती है॥१४०–१४४॥

सोना बनाने की तरकीब तारारिष्ट (उर्दू)

सोनामक्खी शिंग्रफ राजावर्त मूंगा बराबर सबका तीसरा हिस्सा रस का सबको चार प्रहर भेड़ के दूध में खरल करके छाया में सुखाकर सबकी बराबर सैंधानमक डालकर खरल करे इसको तारारिष्ट कहते हैं। पहली बार चांदी पर तारारिष्ट बराबर बजन और दूसरी बार आधाबजन तीसरी बार चौथाई अलहदा २ लेप करके और हरबार गजपुट में तीन बार आंच दे, सोना बन जायेगा। (सुफहा खजाना कीमियां २५)

तारक्रिया
(तीक्ष्णादि से चांदी का जोड़ा)

भागद्वादशकं तीक्ष्णं चूर्णं वंगस्य वै त्रयम् । तथा नागस्य कर्तव्यं त्रयं सत्त्वं च तालकम् ॥१४५॥ तन्दुलीयरसेनैव मर्दनीयं द्रवं यथा । अंधमूषागतं ध्मातं दत्त्वा टंकणकं भृशम् ॥१४६॥ प्रकुर्य्याच्च पुनर्मूषामृतं च दलमेधते । समं तारेण योक्तव्यं रजतं स्यान्मनोहरम् ॥१४७॥

(बृ० यो०)

अर्थ–तीक्ष्णलोह १२ बारह भाग, ३ तीन भाग वंग भस्म, तीन भाग नागेश्वर और तीन ही भाग हरतालसत इन सबको चौलाई के रस से ऐसा पीसे कि वह पतला हो जाये उसको अन्धमूषा में रख अग्नि में धोंके और थोड़ा थोड़ा सुहागा भी डालता जावे फिर दूसरी मूषा में रख धोंके सो भस्म के समान ढ़ेला होगा, उसके समान चांदी मिला कि मित्रपंचक के साथ गलावे तो चांदी होगी ॥१४५–१४७॥

तारक्रिया
(राजवती विद्यानाम्नी पीतल से चांदी का जोड़ा)

चत्वारः स्वर्जिकाभागाः यवक्षारस्तथा पुनः । क्षारिकं लवणं दद्यात्तत्तथाविध मेव च ॥१४८॥ काकमाची रसस्यान्ते दीयते सर्वमेव तत् । तप्तपित्तलपत्राणि सूक्ष्माणि पलयोर्द्वयोः ॥१४९॥ तप्ततप्तानि तान्यस्मिन् काकमाचीरसे भृशम् । एकविंशति वाराणि तारतां प्रतियांति च ॥१५०॥ एवं शुभ्राणि जायंते रूप्याण्यूनानि किंचन । आरं तारसमं कृत्वा मृतवंग नियोजयेत् ॥१५१॥ एकादशविभागेन भवेत्तारं न संशयः । एषा राजवती विद्या पुत्रस्यापि न कथ्यते ॥१५२॥

(र० शं०, बृ० यो०)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजन-
प्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायां धातुवादवर्णनं
नाम पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४५॥

अर्थ–चार भाग सज्जी चार भाग जवाखार और चार ही भाग खारी नोंन इन सबको काकमाची (मकोय) के रस में घोल देवे फिर दो तोले पीतल के सूक्ष्म पत्तों को तपा तपा कर उस रस में २१ इक्कीस बार बुझाव देवे तो वे पीतल के पत्ते चांदी के समान श्वेत हो जायेंगे फिर पीतल और चांदी को समान भाग लेवे और ११ ग्यारहवां भाग वंगभस्म मिलावे तो चांदी होगी, इसमें सन्देह नहीं है, इस राजवती विद्या को अपने पुत्र को भी न कहना चाहिये।।१४८–१५२।।

सम्मति–अन्त में सब पदार्थो को मिलाय मित्रपंचक के साथ अग्नि में धोंके तो अवश्य चांदी होगी।

बिल्लोर के सुर्ख रंगने की तरकीब (उर्दू)

शिंग्रफ बनाने की तरकीब को शिंग्रफ हिन्दी कहते हैं, बिल्लौर के नगीना तराश ले कि खूब जिला हो गाय जिस कदर नगीना छोटे होंगे, सुर्ख खूब होंगे, बाद उसके सीमाव खालिस एक हिस्सा साफ करके उसके मसावी गूगर्द को कूटकर आतिशी शीशी में भरकर गिले हिकमत करके सीमाव पर उसको डाल दे और उसमें बिल्लौर के नगीने मिलाकर गिले हिकमत करे मुंह शीशी का मजबूत बंद कर दे और तनूर को खूब गर्म करके और शीशी को एक रात दिन गर्म तनूर में रखे और तनूर के मुँह को भी मजबूत बंद कर दे कि गर्मी न निकलने पावे, अलीउलसुवाह तनूर का मुँह खोले खुदा एही व कयूम के हुकम से जो हमेशा जिन्दा रहेगा, शीशी जब निकाली जावेगी तो नगीना बिल्लौर के याकूत की तरह सुर्ख मिलेंगे और शीशी के अन्दर कुल शिंग्रफ रूमी और लतीफ होगा। (सुफहा ८३ किताब अलजवाहर)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनुसखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्ल
कृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां धातुवादवर्णनं
नाम पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४५॥

औषधिपरीक्षाध्यायः ४६

जड़ी बूटियों की शनाख्त
करकनाथ की शनाख्त और पतः (उर्दू)

करकनाथ अपर ब्रह्मा बकसरत में है। जिसके पर व जिल्द व गोश्त व अस्तख्वां तक स्याह होते हैं और इसका गोश्त निहायत तलक खास एमाल अकसीरी के लिये खुदा ने पैदा किया है। (खरीदार नं० ५०६)

एजन् । पेशावर में भी दस्तयाब हो जाते हैं (चौधरी हजार खां)

एजन् । हां यहां एक के पास तीन मुरगियां इसी सितफ की है जैसी कि आप चाहते हैं। खून के स्याह होने का तौ कोई हाल मालूम नहीं मगर नाखून खाल पंचा वगैर सब स्याह हैं। (हकीम मुहम्मद चराग) सुफहा २५ अखबार अलकीमियां २४/१/१९०९)

चमकनेवाली जड़ी

चौमासे में एक जड़ी अलमोड़े में, गुरुड़िया होती है, इसकी जड़ रात्रि में जुगनू की भांति चमकतीहै (पंडित अनन्तशर्मा अध्यापक संस्कृतपाठशाला से पता लगा)

शबताब बूटी (उर्दू)

यह बूटी रात को मिस्ल चराग के चमकती है जिन जिन नाजरीन को इस बूटी के अफहाल बखवास कमाहकः मालूम हों वह दर्ज अलकीमियाँ कराकर मशकूर फर्मावें। इस बूटी का कश्मीर के नर्फानी पहाड़ों पर पता लग गया है, चुनाचि किसी कदर एडीटर ने मँगवा भी ली है जो इस वक्त मौजूद है। (सुफहा नं० ८ अखबार अलकीमियां १६/१०/१९०७)

शबताब (फार्सी)

मेरे मुकर्रम जनाब हकीम साहब रात को चमकनेवाली बूटी के खवास जिसको गयाह कहते हैं, हरजा कि बाशद अजदूर निगाहकुनी शवहम चूरोशनाई चरागबीनी बचू आतिशी किमे शवद दौर हाल पेशहुइ हरचंद कि नजदीक बाशद रोशनाई ओकमतर शव दव चूं नजदीक तररूइ रोशनाई ओचुना मुनकिता शबद कि बगैर अज शाख व वर्ग हेच नवीनी व चूं रेशमां दरदेवन्दी ब कदरे बाज पस रूइहुमां रोशनाई पैदा शवद बचूं रेशमान् जनत्वानीआं रोशनाई नीच दरहहरकत आयद विदानी कि हमी चराग गया हेस्त आँरा अजवेख वरकुनी व शाख ओ बिगीरी व वर जमीन बिकुशी हरअलफी किदर आं हुवावे बाशद वातो दर सखुन आयद व बिगोयद कि चिखासियत दारेम अगर वर्क वा पशक खरगोश दरदहान बिगीरी दरहर गोरस्तान कि विनशीनी मुदः वातो व आवाज दर आयद व इजहार हाल नुमायद खासियत ई गयाह ज्यादह अज आस्त कि बशरह रास्त आमद अगर मुराद आपकी सराखुल कलब से है जिसको अवसी उल गई और हिन्दी में सरफों का सफेद गुल कहते हैं तो कीमियाई खासः इसका हस्वजैल है, इसके पत्ते भी सफेद होते हैं, शीरः निकाल कर मिट्टी में खूब कूटकर बोतः बनावे लेकिनशीरः बूटी का खूब डाल डालकर कूटे बोता लांबा हो किसी मावबशीरा दो तोले उसमें आ जावे। खुश्क होने के बाद तीन बार बूटी मजकूर का उसमें भर कर साये में खुश्क करे बाद अजां तोले भर सीमाव लेकर तोले भर शोरा उसमें भरकर दूसरा बोतः मजकूरा वाला उस पर ढ़ांक कर जोडू दूसरे से बसल कर दे और १६ दिरम कर्सी की आग और नीचे से बराबर दे सीमाव अकसीर हो जावेगा। बाद रत्ती भर लेकर तोला भर मिस तरहर करे तिल हो जावेगा। (अजशरह करनव अहम्मद) हुसैनुद्दीन अहमद अज जौनपुर २७ अगस्त सन् १९०७ (सुफहा ११ अखबार अलकीमियां १६/१०/१९०७)

रुद्रदंती का मुकाम पैदायश, जमाना पुख्तगी फवायद वगैरः (उर्दू)

मुकरमबन्दः जनाब हकीमसर दुरशासाहब दाममुज्दकुम बाद सलाम नियाज दस्त वस्तः गुजारिश है कि मैं आंजनाब के काम को नहीं भूल गया था, इस इलाके के कर्कअमीन साहब से मुफस्सिल हाल दरियाफ्त करने के बाद अर्ज करता हूं कि रुदन्ती व रुदन्ता व मुकाम मौजा मझलगाँव परगनह हिगाम तहसील खागा जिला फतहपुर हसुआ में बकसरत पैदा होता है और

१–निज इसका पता मुल्क ब्रह्मा जिला टूंची । मुकाम लोइयम में लगा है।

गर्मी के मौसम में उसका अर्क शक्कर डालकर बतौर शरबत के पीने से बहुत से अवारिजमिस्ल हौलदिल व खफकान वगैर: की बहुत मुफीद है, दिन भर तबीयत खुश व बश्शाश रहती है, लूब गर्मी की हिद्दत असर नहीं कर सकती। दिल पर खुनकी रहती है आलादरजे में गर्मी के वास्ते फाइदेमन्द है अब रहा असल मकसूद जो आपका है, उसी के निस्बत वहां के मोतबिर लोग यानी खास मझलगांव के रहनेवाले मौअज्जिजीन जिनसे कुर्क अमीन साहबने अपने इतमीनान के मुवाफिक तहकीकात की है, उनका बयान है कि किमियां बनाने के काम में जो बूटी आती है, नाम तो उसका भी यही है यानी रुदन्ती और उसके नरको रुदन्ता कहते हैं लेकिन उसकी पैदायश के वास्ते हर साल कुआर के महीने में एक योग मुकर्रर है। जबकि वह बाद निस्फ शब के जमीन से निकलती है और कबल तिलूए आफ्ताब के लेनेवाले उसको हासिल कर लिया करते हैं, चुनांचि हरसाल क्वार के महीने में इस मौजे में ज्यादह तर जोगी व बैरागी कौम के लोग आकर मुकीम रहा करते हैं और कोई सितारा आसमान पर है उसको वही हलोग पहचानते हैं जब वह सितारा आसमान पर देखते हैं पर उसी शब को वह मुबारिक दरख्त जमीन से निकलता है और उसी के जानने और पहचानेवाले उसको लेकर गायब हो जाते हैं, हर शख्स उसको नहीं पा सकता, न किसी को उसकी पैदायश का ठीक वक्त मालूम है बस वह घास जो आमतौर से उस तालाब में पैदा होतीहै और रुदन्ती के नाम से मशहूर है वह वहां के लोगों के घरों में मनोरक्खी है उससे यह काम नहीं निकल सकता है। मुफस्सिल हाल अर्ज किया आयन्दा जो इरशाद हो तामील करू (फकत ८/४/१९०७)

अब यह खाकसार हेचमदान

जमीअ बिरादरान बना जरी न अलकीमियां की खिदम वा बरकत में अर्ज करता है कि उस अजीज के खत मुन्दर्ज वाला से अभी आपको यह मालूम न हुआ होगा कि यह बात सच है या जोगियों की एक अटकल है लिहाजा बगरज इतला आम कमतरीन आरिज है कि यह सरासर जोगी बैरागी लोगों की राजदारी और कतमान का एक फरेब है चूंकि यह अदना दर्जे की कीमियाई बूटी अकसर मुकामात में आय और कसरुल वजूद है लिहाजा अगर वह उसकी निस्बत इसी अटकल से काम न लेते तो यह बड़ा राज अवाम में अफशा हो जाता है और उनका मतलब कमाहकः न निकल सकता व कौल जनाब सेक्रेटरी साहब यह जरूर है कि यह बूटी दो किस्म की होतीहै। एक वह जिससे रोगन नहीं टपकता, दूसरी वह जिससे एक आलम शबाब के वक्त यानी माह कुआर कातिक में जब इसके पांचो अंग जड़, डाली, पत्ते, फूल, फल मौजूद हो जाते हैं तो उससे रोगनी रतूबत टपकने लगती है। जैसा कि अकलीमियां में उसकी तशरीह मजकूर है पस अव्वल उल जिकर बूटि किमियाई अलसाद है। लेकिन यह हरगिज सही नहीं कि सिर्फ साल में एक तारीख की रात को पैदा भी होती है और उसी रात को कमाल पर भी पहुंच जाती है और जोगी उसको उसी रात उखाड़ कर रफूचक्कर हो जाते हैं। नहीं बल्कि यह अमर नामुमकिन है कि अकलसलीम भी उसे नहीं मान सकती। इस ढ़कोसले की असलियत फिर हकीकत यह है कि सिर्फ ज्याती तासीर के इसके उखड़ने की एक तारीख मुकर्रर है जो हर महीने में एक मर्तबः आती है, माह क्वार की खुसूसियन इसलिये रखी गई है कि इस महीने में ही यह बूटी अपनी पूरी हालत शबाब कमाल को पहुँच जाती है लिहाजा इसी महीने में जब उस महीने की तारीख मौऐयनः पर उसको उखेड़ा जाता है तो जिस किस्म की बूटी है वह अपने अपनें खवास में बहुत कवीउल असर हो जाती है। अब रही बात यह है कि वह तारीख मोअय्यनः कौनसी तारीख है। सो इसका हवालः साहब किताब मखजनु अदवियान ने बाबदहम फसलुलराइ मय उतदाल उलमुल्तामसमें दर बयान रुदन्तीयों तहरीर फर्माया है कि (गोयन्द किचूं हिंगाम बूदन कमर दर मजिल नसरह कि वर बुर्ज सरतान ववहिन्दी आरा पुष्य नक्षत्र नामन्द कि दररोज यरुशेबह इत्तफाक उफ्तद आं गियाहरा व नजूइ कि साय: आँकस बरॉं वियुफ्तद आजवेख बवार व वर्ग अजजमीवर कुनद व हेच शब दरजेर आसमान तनववम पसदरसाय: खुश्ककर्द: निगाह दारन्द अनह गरज कि इसी के बाद साहब मखजनुल अदवियान के उसके खवास में बहुत से अमराजबतक वियत कवाइ जिस्माना वरूहानी व शहवानी के लिये अकसीरी खासियत और असार अजवा बयान फर्माते हैं। और अखोरे में लिखा है कि व अगर विदूनशर्त मजबूरा दर औकात दीगर गयाह ओरा अखज नुमायन्द नीज मनुफंत दारद व गोयन्द किचू एक तोला कलइरा गुदाख्त: चहारबोत: तरोताजा (चार अदद पोद सब्ज आँरा मालोद: बरा रेजन्द आँरानकरासाजन्द फकत) अब नाजरान पर खूब रोशन हो गया होगा कि महा क्वार में एक तारीख मोअय्यन इसलिये की गई है कि उसी तारीख में उसको उखेड़ने से उसकी तासीर बहुत कवी हो जाती है। यह नहीं कि बूटी कीमियाई उघती हो, उस रात को है यह सिर्फ जोगियों का ढ़कोसला है कि राज छिपाने के लिये अवाम में यहां मशहूर कर रखा है। लेकिन सन् १९०७ में जबकि उसका वक्त अनकरीब आ गया है लिहाजा सन् हाल की बाबत् हस्बजैल हेल्मांस है इस साल महाक्वार और कातिक में यक शंब: के दिन तो पुष्य नक्षत्र नहीं होगा लिहाजा किसी कदर वक्त हाजा में औफ़ जरूर होगा लेकिन तोहम इन्हीं तवारीख जैल में माहताब पुष्य नक्षत्र पर होगा। (१) एकम अक्तूबर सन् १००७ शब चहार शब: नामशबके बाद जबकि माहताब मशरक से तिलूअ होने लगे, उसी वक्त से शुरू करके एक घंटे और बीस मिनट बाद जिलूअ माहताब तक बूटी उखड़े। (२) २८ अक्तूबर सन १९०७ शबसह शब नामशब के करीब माहताब के तिलूअ से एक घंटे २० मिनट बद: तिळूआ माहताब तक फकत पहली तारीख माह कुआरमें और दूसरी माह कातिक में होगी। लिहाजा जहां जहां यह बूटी पैदा होती है वहां के माहिबान इन्हीं तवारीख में वक्त मजकूरह पर दोनों किस्म की बूटी यानी कीमियाई अजमाद हो या कीमियाई अजसाम उसे उखाड़ले और अपना साया उस पर न डालें पस बदली अवारिज के दफैवाली किस्म को तौ यों करें कि उसे रात से तेजीय शुरू कर दें यानी रात को जब बूटी उखेड़ लें तो खुले मैदान में जर आस्मान रख दे ताकि माहताब की शुआ उस पर बखूबी पड़ती रहे, जब सुबह होने लगे तो बूटी को उखाड़ कर सायेदार जगह में रख दें ताकि खूब खुश्क हो जावे फिर बमूजिब तहरीर किताब मखजनउलअद बियाके जिम जिस काम में लावेंगे । इन्शा अल्लाह ताला अकसीरी खासियत पैदा करेंगे। बाकी रही कीमियाई रुदन्ती हो उसको उसी पहली राजिस काम में लगानी चाहें, लगाएं या जिस तरह मन्शा हो और अगर हस्ब तहरीर किताब अकलीमियें के इन्हीं रातों में सीमाब को कौड़ी में डाल कर कीमियाई बूटी के नीचे दफन करेंगे तो इन्शा अल्लाह ताला अगर वह तहरीर सही है तो जरूर सीमाब में बड़ी जबरदस्त तासी पैदा होगी। (राकिम हकीम सर बरशाह मुवल्लिफ कीमियाई अज काबिल लाडर का खान पर रियासत भागलपुर) (सुफहा ७ व ८ अखबार अलकीमियां १६/१२/१९०७)

जीवकजड़ी का वर्णन

अलमोड़े में जीवक को मूडचा कहते हैं। इसकी बेल होती है जड़ में आलू की बराबर श्वेत कंद होता है। यह बरसात में अलमोड़े के पास होतीहै। बिकने भी आती है। इसकी तरकारी बीमारों को खिलाते हैं।

कटेली सफेद गुल (उर्दू)

बादजान सहराई सफेद गुल दकन में इसको सफेद डवाला बोलते है मदरास इलाका करीच करनौल खडरिया संजवाड़ा रेल की राह में कहम एक तालाब है बहुत बड़ा कुर्व वजबार सफेद डवाला कसरत से था सिफत फल भी मानिन्द बैजा कबूतर सफेद और फूल भी सफेद फूल के अन्दर जो जीरे होते हैं वह भी सफेद हों तो हस्बजैल तजरुबा चश्मदीद है फल के अन्दर मसका पारा कुश्ता होकर रजा तोला मिसव नुकरा तिला करता है। पञ्चांग यानी कल्हम पत्ता, डाली, जड, पीड, फल, फूल वगैर:

ख्वाहतर ख्वाह खुश्क खतली का पानी पूरा जज्ब करता है तर लुवदीमें ५ तोले में तोला नुकरा और ५ सेर पुख्तपुट में कुश्ता होकर २० से ३० तोला पारा गिरफ्त तुरशी से करती है, १० तोला तर लुवदी में १५ सेर पुख्त तोला मिस सफेद कुश्ता होता है, बहुत से काम देता है। अगर फूल का जीरा जर्दी माइल रहा तो कोई अमल नहीं होता। फकत फल सफेद मगर फूल नीला यह जात मैसुर इलाका मौजा थमकोरे के जंगल में बहुत है। बनीज मुल्क सरकार आली में जर्द जीरे के झाड़ औरंगाबाद बरोजा में मिलते हैं। फकीर को मालूम है एक तोला सूखी बूटी बीस तोले पारे को अकद व कुश्ता करके ५ तोले मिस को एक रत्ती कुश्ता सौ नंबर का तिला बनाना चश्मदीद है। मगर पारा अपना पास से देते थे। अब तमाम का मशबरा है कि वह पारा कायमुल्नार बूटी से था। (सुफ्हा ८ अखबार अलकीमियां २४/२/१९०९)

खवासब शनाख्तरतनजोत बूटी

एक अजीब खुशनुमा दरख्त करीर और खवड़ के नीचे बैसाक जेठ में अकसर इजलाअ पंजाब में होती है, शकल उसकी बएनहु मिस्ल पंचे कंजशक के होते हैं, जमीन पर बिछी हुई शाखें सुरखी माइल वर्ग खुर्द खुर्द मुशावः वर्ग काहू के दानेहाई खुर्द एक बालिश्त के अन्दर अन्दर फलती है, उखाड़कर रख छोड़ो तो तीन माह तक खुश्क नहीं होती। मजा फीका लजजदार जिन लोगों के सरका तालू जलता रहता हो और पगड़ी न रख सकते हों। या जिसको गर्मी सख्त का ठंड का हो या पेशाब में जलन हो या खास सोजाक और किसी तरह से न जावे, इन चारों आरजों के लिये मेरा खास तजरुबा है कि इसको ६ माष आध पाव पानी में पीस कर और दो तोले मिसरी मिलाकर एक हफ्ते पीने से मर्ज का कला कुम्भा हो जाता है। नाम निशान नहीं रहता और रियाहव रतूबत को तहलील करनेवाली है और दस्तों को बन्द करनेवाली है और हैजे को जारी करती है और यरकाब वतयेकौहनाकौ दफै करती है और पीसकर लगाने से वरम तहाल बखना जीर को तहलील करती है और सिरका के साथ पीसकर लगाने से वहककलफर्दद सपरज और नर्कुस को नफा देती है और सुर्मा में पीसकर मिला देने से मुफीद अमराज चश्म न मुकव्वी बसर है। फार्सी में होचूर और अरवी में अबूफल्सार कहते हैं। (सुफ्हा नं० १० अखबार अलकीमियां १/८/१९०७)

चमक नमोली के मानी (उर्दू)

चमक तमोली के फल से कटाई खुर्द का फल मकसूद है। सुफ्हा नं० १५ अखबार अलकीमियां १६/४/१९०७)

सहदेवी का लक्षण और गुण वेधक

सहदेवी प्रसिद्धा अधःश्वेता ऊर्ध्वं हरिता निंबपत्रसदृशक्पत्रा पीतपुष्पा गुडेति प्रसिद्धा पुष्पसदृक्पुष्पा तन्मध्ये रजतं ताम्रं पारदं चैतत्त्रयं भस्मीभवति अंतिमं रजतायते (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

फबायद बैंगन बलायती (उर्दू)

बलायती बैंगन में गन्धक बहुत होती है इस वजह से जर्मी, साईड (कीडों को मारनेवाला है) बहुत से मुतअद्दी अमराज जैसा कि टाईफाइड क्यूर इसहाल हैजा पेचिश बगैरः से बचाता है। मुकव्वी मैदाव मुहसिल व मुसक्की खून है। (सुफ्हा ६ अखबार अलकीमियां १६/८/१९०७)

बूटी से तीनिर्गंदबाडरी के गुण और पता

लखनौ में प्रसिद्ध पंसारीदी दूकान में सेती औषधि वंग (जलशोप का निगंद बाउरी कुष्ठादि रोगहा जलधंर होशियार में प्रसिद्ध है) (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

जहर हल्दिया की पैदायश

जहर हल्दिया हल्दी के खेत से मिलता है। (सुफ्हा १२ अखबार अलकीमियाँ १/८/१९०७)

विषभूमि

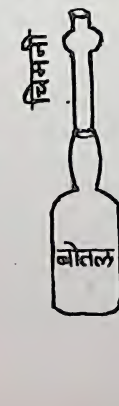
मलयप्रायद्वीप भारत के पूर्व भगवती भागीरथी की शाखाओं के आगे अवस्थित है। कोई साढ़े सात सौ मील लंबा और एक सौ बीस मील चौड़ा है। इसमें उत्तर से दक्षिण एक बहुत ही लंबी पर्वतमाला पसरी हुई है जिसमें असंख्य नदी नाले वह मलय भूमि को सींच सदा हरीभरी बनाये रहते हैं। इस प्रायद्वीप का कितना ही अंश अंग्रेजी के अधिकार में है और कितना ही वहां के स्वतन्त्र नृपतिवर्ग के। इसी प्रायद्वीप के प्रायः मध्यभाग में सघन वन के भीतर सकाई नाम्नी एक स्वतंत्र जाति रहती है। यह जाति जंगलियों की तरह रहती है। शिकार मारने और अपने शत्रुओं को पराजित करने के लिये बनवृक्षों से विष संग्रह किया करती है। अजनबी इस जाति के लोगों से मिलजुल नहीं सकता। हाँ तम्माकू, चावल, दाल प्रभृति उपहार देने से सहज ही इनका मित्र हो सकता है। सकाई जाति जिस भूमि में रहती है उस कहें तो विषभूमि कह सकते हैं। यहां इतना विष है जिसकी हद नही, ढूँढिये जहां देखिये वहीं विष मिल सकता है। जिस घास पर चलते हैं, उस घास में विषाक्त घास रहती है जो लताएं बृक्षों पर चढ़ी रहती हैं उनमें विषैली लता रहती है जो रंग वरंग फूल खिल कर वन की शोभा संपादन करते हैं, उनमें कितने ही विष इतने तेज और गन्ध बिशिष्ट है कि उनकी दूर दूर तक फैली बू से आदमी बीमार हो जाता है, कितने ही विषैले फूल या पत्तियां ऐसी हैं कि उन्हें उंगलियों से छू देने से भी देह में विष का विकार प्रगट होता है। देह फूल आती है। नाना प्रकार के चर्मरोग उत्पन्न होते हैं, घोर वन में प्राकृतिक पुष्पित कुञ्जभवन अपूर्व शोभासम्पन्न होने पर भी बड़े ही भयंकर हैं। सकाई जाति का प्रायः प्रत्येक पुरुष विषविद्या का पंडित है। (अखबार वंगवासी ता० २२/२/१९०७)

नींबू की जड़ का पानी निकालने की खास तरकीब (उर्दू)

नींबू की जड़ को काटकर उसके नीचे कोई रोगनदार जर्फ रख दे, इस तरह कि जड़ जर्फ के मुंह में फस जावें और ऊपर मिट्टी डाल दे। बीस दिन के बाद पानी निकल आवेगा। छान कर काम में लावे। (सुफ्हा २७८ किताब अलकीमियां)

नवातात के जौहर बनाने की अंग्रेजी तरकीब बजरियेः स्प्रिट (उर्दू)

जौहर नवातात की हुसूल के आसान तरकीब यह है कि जिसने न वात का जौहर लेना मंजूर हो उसके फल फूल पत्ते शाखा वगैरः जिसका जौहर निकालना हो, उसको कुचल कर एक चीनी के बर्तन में डालें कि वह नवात



खूब तर हो जावे बस चौबीस घंटे तक उसी तरह भीगा रहने दे फिर कांच की वह चिमनी जो लैम्पों पर दी जाती है, लेकर उसके तंग मुँह पर बारीक कपड़ा बांधे और उसको एक खुले मुंहवाली बोतल में फंसा दे। बस इस चिमनी की पेंदी की तरफ से जो अब ऊपर को होगी। वह भीगी हुई दवा डाल दे और ऊपर ढ़क दें जब तमाम अर्क निचुड़कर बोतल में आ जावे उसको आग पर रख खुश्क करे, शराब मय रतूबात फौरन उड़ जावेगी। जौहर खुश्क बोतल में रह जावेगा। (सुफहा २० अखबार अलकीमियां ८/२/१९०९)

जड़ी बूटी आघी बूटी की शनाख्त (उर्दू)

आघी को पञ्जाब में आकी कहते हैं, इसमें से दूध यानी सफेद रतूबत दरख्त आक की तरह नहीं निकलती बल्कि अर्क पानी की तरह निकलता है। फल फूल भी पैदा होता है। तने में पांच छः पत्तियां होती है, शाखें नहीं होती, एक बालिश्त से लेकर हाथ भर ऊंचा होता है। रेगिस्तान इसका नवत कीमियाई दरख्त है। कलई व सीमाब को नुकरा करता है। (हसीनुद्दीन अहमद अज जौनपुर) सुफहा ८ किताब अखबार अलकीमियां १६/३/१९०५)

पपीता के फवायद (उर्दू)

पपीता जो एक दरख्त का तुख्म है। गोल शकल किसी कदर तल अगर इस तुख्म को कोई शख्स पारचे में बांध कर हाथ में बांधे रखे उस शखस पर जादू और सहर का असर नहीं होता। बल्कि वरअस्क जादू करनेवाले पर इसका बाद असर पड़ता है अगर कोई शखस जहर खा गया हो दो सुर्ख पानी में घिसाकर पिलावे, असर जहर वातिल हो जायेगा और जिसके पास हरवक्त और हमेशह यह फल बतौर तावीज के रहे। बद बवाई हवा से बिलकुल महफूज रहता है और मैदे और पेचिश के लिये सुर्ख यादों सुर्ख पानी में घिसाकर मरीज को पिला देने से फौरन आराम होगा। फालिजवाले को भी मुफीद है अगर किसी को किसी वजह से गशी और बेहोशी हो जाय बदस्तूर इत तुख्म को घिसाकर पिलायें और पेशानी के बाल मूंडकर कर दे तुख्म मजकूरः का सफूफ गिराऐं फौरन होश में आ जायगा। खुसूसन जहर सांप और दूसरे हशरातुलारिज के जहरों के दफै के लिये तिरियाक है अगर किसी जख्म से खून बंद न होता तो इसी तुख्म का किसी कदर सफूफ जख्म के अन्दर गिरा देने से खून कितई बंद हो जाता है और तपेलरजः जिसको होव कदर दो सुर्ख पानी में घिसाकर तप होने से पहले पीले वे बुखार नहीं होगा अगर होगा तो बहुत कम, दूसरी तीसरे दिन तक बिलकुल जाता रहेगा और इसी कदर असरुल आदत के लिये बहुत मुफीद है और तकलीफ इस हाल के लिये भी नाफै है अगर इसको सिर्फ मुँह में ही रखा जावे। नजले को दफै और सीने के बलगम से पाक करता है। अगर इस तुख्म को तराश कर रोगन कुंजदम बिरिया करके फिर रोगन की मालिश करे खारिश और अतिशक वगैरे सब दफै हो जाते हैं। अगर कोई शख्स किसी किस्म के जहर खाकर बेहोश हो गया हो, इसी रोगन को चन्द कतर उस्के मुँह में डाले कतरा नीचे उतरने से फौरन होश में आ जायगा और जहर का असर काफूह होगा अगर किसी शख्स के हाथ पाँव फालिज जदह होकर नाकारह हो गये हों इस रोगन की मालिश से कमाल नफा होता है, अगर किसी औरत का हैज बन्द हो बवजनः सातदान गन्दुम के तुख्म के मंजकूरह को घिसा दें निहायत नफ है। अगर किसी शख्स के जख्म से कोई रग कट गई हो उन दोनों सरे रग के दर्मियानी हिस्से को सफूफ तुख्म मजकूरः से पुरकरे फौरन दुरुस्त होगी। अगर मिस्ल हजार पायः जानवर या कोई और इसी तरह का किसी जगह हिस्सा जिसमें डंक मारे और गोश्त के अन्दर सोजिश होती हो फौरन इसी तुख्म को घिसाकर जमाद कर देने से शफा होती है और तकबीयतवाह के लिये पच्चीस दाने रेजः रेजः करके पाव भर शराब में डाले और पन्द्रह रोज तक गर्मी में रखे बादहू इसमें से एक माशा बवक्त शाम रोज खालिया करें निहायत नफा होगा। अगर पानी में घिसा कर रसौली भर तिला करें रसौली तहलील हो जायगी। हैजा और दर्द शिकम के लिये करीबन या इससे कमोबेश गुलाब में घिसाकर मरीज को पिलावें फौरन सेहत होती है कै बन्द करने में अजीब से है (देखो तालीफशरीफी मुसन्निफः रनइसल हुक्मामुहम्मद शरीफ खाई जाजकउलमुल्क हकीम मुहम्मद अकमलखां ।) (सुफहा १२ व १३ व १४ अखबार अलकीमियां १६/५/१९०५)

बूटी जंडियाजंडी के मानी (उर्दू)

जंडियाजंडी को संस्कृत में शमी और अंगरेजी में पवंजटरी कहते हैं बाज सफेद कीकर भी कहते हैं। (सुफहा ९ अखबार अलकीमियां १/५/१९०५)

निर्गुंडी के नाम व शनाख्त (उर्दू)

निर्गुंडी के दरख्त जंगलों में होते हैं। पत्ते अरहर की तरह एक डंडी पर पांच पांच होते हैं आम के बौर की तरह गुच्छेदार फल आते हैं जो केसरी रंग के होते हैं। जड़ ही अकसर काम में आती है इसको संस्कृत में संदवार कहते हैं। हिन्दी में निर्गुंडी सम्हालू जड़ी। बंगाली में नशंदा। मरहठी में लंगर। गुजराती में नागाड। कर्नाटकी में करटील। तैलंगी में नरनोंचां। द्रावडी में काली संवाली। पंजाबी में बनायालहरी। अंगरेजी में टोलियूंड जडी। लैटनी में वाइटीकस नींगडू। फार्सी में दबान। तुख्म फजगश्त और अरबी में असलक बगैरह कहते है। (ठाकुरदत्त शर्मा वैद्या लाहोर) (सुफहा १२ किताब अखबार अलकीमियां १/५/१९०५)

तेलियाकन्द की शनाख्त (उर्दू)

जिस जगह से वह तेलियाकंद उखाड कर लाया था वह जगह भी देखी तो तमाम मिट्टी भी उसकी वह ले गया। गर्ज दूर दूर की मिट्टी उसने उठा ली एक गज के करीब वह दरख्त था और जड़ उसकी वजन में ४ सेर तक होगी और बर्ग उसके आम के मुशाबः थे लेकिन कदरे खुर्द और फूल जर्द रंग का था उस जमीन को जाकर देखा तो निहायत सख्त और स्याह और चिकनी जैसे तेल गिरा हुआ है (सुफहा ३४ किताब अखबार अलकीमियां १६/४/१९०५)

पीतरक्ती की शनाख्त (उर्दू)

पीतरक्ती को उस जगह भरजल कहते हैं। अगर उसको खोद कर लावे तो सूखती नहीं है और न रंग बदलता है। बिलकुल दिरम की शकल पर होती है और उसकी जड़ प्याज की तरह परत परत और प्याज से कुछ बड़ी होती है और फूल जर्द रंग का होता है दरख्त इसका निस्फ गज से एक गज तक बलंद होता है इसकी पैदायश की जमीन बहुत सख्त होती है। और पानी पत्ते का जर्द रंग का होता है। (सुफहा ३३ किताब अखबार अलकीमियां १६/४/१९०५)

एक पहाड़ का जिकर जहां बूटियां मिलती हैं पीतरक्ती और तेलियां कंद (उर्दू)

पीतरक्ती, नीलकंठी, तेलियाकंद, इन बूटियों का और जगह तो मिलना बहुत मुश्किल है मगर बमुकाम छोटन पहाड जिला जोधपुर मुल्क मारवाड़ में मौसम बरसात के अन्दर तलाश करने से मिलती है क्योंकि इस पहाड़ पर हर एक किस्म की बूटी मिल जाती है गर्जे कि जो बूटी इस पहाड़ पर होती है वह ही आबू के पहाड़ पर से मिल जायगी जुलाई अगस्त के महीने में आप उस जगह पहाड़ छोटन पर पहुँचें तो जरूर आपको कामयावी हासिल हो दोनों जगह अकसर फ़ुकुरा आते हैं और उन बूटियों के लाते हैं। शंकरगिरि संन्यासी जोधपुर को पीतरक्ती और तेलियाकंद दोनों हासिल हुए थे मैंने व

चश्म खुद देखे। (सुफहा ३२ व ३३ अखबार अलकीमियां १६/४/१९०५)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायामौषाधिपरीक्षा नाम षट्चत्वरिंशोऽध्यायः ॥४६॥

अभ्राध्यायः ४७

अष्ट महारस

अभ्रवैक्रान्तमाक्षीकविमलाद्रिजसस्यकम् । चपलो रसकश्चेति ज्ञात्वाऽष्टौ संग्रहेद्रसान् ॥१॥

(रससत्नसमुच्चय)

अर्थ-अभ्रक, वैक्रान्त, (कच्चा हीरा जिसको तर्मरी कहते है) सुवर्णमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक, शिलाजीत, चपल (जिसका वर्णन परिभाषाध्याय में किया गया है) रसखपरिया, इन आठों महारसों की खूब परीक्षा करके संग्रह करे॥१॥

अभ्रक की उत्पत्ति

कदाचिद्गिरिजा देवी हरं दृष्ट्वा मनोहरम् । मुमोच यत्तदा वीर्यं तज्जातं शुभ्रमभ्रकम् ॥२॥

(टोडरानन्द)

अर्थ-एक दिन श्रीपार्वतीजी ने श्रीमहादेवजी को अत्यन्त श्रेष्ठ रूप बनाये हुए देखकर जो अपने वीर्य को छोड़ा तो वह अभ्रक बन गया॥२॥

मतान्तर से उत्पत्ति

पुरा बधाय वृत्रस्य वज्रिणा वज्रमुद्धृतम् । विस्फुलिङ्गास्ततस्तस्य गगनं परिसर्पतः ॥३॥ निपेतुर्मेघनिर्घोषाच्छिखरेषु महीभृताम् । तेभ्य एव समुत्पन्नं तत्तद्गिरिषु चाभ्रकम् ॥४॥ तद्वज्रं वज्रजातत्वादभ्रम भ्ररवोद्भवात् । गगनच्युतिजातत्वाद्रूचिरे गगनं तदा ॥५॥

(टोडरानन्द)

अर्थ-पूर्व समय में वृत्रासुर के मारने के लिये इन्द्र ने अपने वज्र को हाथ में लिया उससे जो चिनगारियां उड़कर आकाश में फैल गईं और वे बादलों की गर्जनाहट से पहाड़ों पर गिर पड़ी उनसे ही पहाड़ों की खानों में वह अभ्रक उत्पन्न हुआ इसको वैद्य वज्र से उत्पन्न होने के कारण वज्र, अभ्र अर्थात् बादलों के शब्दों से उत्पन्न होने के कारण अभ्रक और गगन अर्थात् बादलों से गिरने के कारण गगन कहते हैं॥३-५॥

उत्तमाभ्रक लक्षण

राजहस्ताद्यधस्ताद्यत्समानीतं घनं खनेः । भवेत्तदुक्तफलदं निःसत्त्वं निष्फलं परम् ॥६॥

(रससत्नसमुच्चय)

अर्थ-जहां अभ्रक की खान हो वहां राजहस्त अर्थात् इमारती गजभर नीचा खोदकर जो अभ्रक निकाला जाता है वह उत्तम फलदायक है और दूसरा हलका अभ्रक निष्फल होता है॥६॥

अन्यच्च

स्निग्धं पृथुदलं वर्णसंयुक्तं भारतोऽधिकम् । सुखं निर्मोच्य पत्रं तु तदभ्रं शस्तमीरितम् ॥७॥

चिकना, मोटे दलवाला, उत्तम वर्णयुक्त, वजनदार जिसके पत्र अनायास से ही पृथक्-२ हो सकें वह अभ्रक उत्तम माना गया है॥७॥

अभ्रक भेद और उनके लक्षण

पिनाकं दर्दुरं नागं वज्रं चेति चतुर्थकम् । मुञ्चत्यसौ विनिक्षिप्तः[१] पिनाको[२] दलसंचयम् ॥८॥ अज्ञानाद्भक्षणात्तस्य महाकुष्ठं[१] प्रजायते । दर्दुरोऽग्निगतोऽत्यर्थं[२] कुरुते दर्दुरध्वनिम् ॥९॥ तस्य देहं प्रविष्टस्य भगंदरभयं भवेत् । वह्निप्रविष्टो नागस्तु फूत्कारं प्रविमुंचति ॥१०॥ सतूदरं प्रमेहं च प्रकरोति नपुंसकम् । वज्रं तु वज्रवत्तिष्ठेद्व्याधिवार्द्धक्यमृत्युहा ॥११॥

(टोडरानन्द, श० क०)

अर्थ-पिनाक, दर्दुर, नाग और वस्त्र, इन भेदों में अभ्रक चार प्रकार का होता है, उनमें से पिनाक नाम का अभ्रक अग्नि में तपाने से पृथक् २ पत्रवाला होता है उसके खाने से महाकुष्ठ रोग होता है, तथा अग्नि में स्थापित किया हुआ दर्दुर नाम का अभ्रक मेंडक के समान शब्द को करता है उसके सेवन करने से भगंदर के होने का भय होता है, अग्निसन्तापित नाग नामक का अभ्रक सर्प के समान फुंकारता है उसके खाने से उदररोग, प्रमेह और नपुंसकता उत्पन्न होती है तथा वज्र नाम का अभ्रक अग्नि में तपाने से किसी प्रकार की विकृति अर्थात् विकार को नहीं प्राप्त होता वह रोग जरा तथा मृत्यु का भी नाशक है॥८-११॥

तथा च

पिनाकं नागमण्डूके वज्रमित्यभ्रकं मतम् । श्वेतादिवर्णभेदेन प्रत्येकं तच्चतुर्विधम् ॥१२॥ पिनाकं पावकोत्तप्तंविमुञ्चति दलोच्चयम् । तत्सेवितं मलं बद्ध्वा मारयत्येव मानवम् ॥१३॥ तद्भुक्तं कुरुते कुष्ठं मंडलाख्यं न संशयः ॥१४॥ उत्प्लुत्योत्प्लुत्य मण्डूकं ध्मातं पतति चाभ्रकम् ॥ तत्कुर्यादश्मरीरोगमसाध्यं शस्त्रतोऽन्यथा ॥१५॥ वज्राभ्रं वह्निसंतप्तं निर्मुक्ताशेषवैकृतम् । देहलोहकरं तच्च सर्वरोगहरं परम् ॥१६॥

(रससत्नसमुच्चय)

अर्थ-पिनाक, नाग, मण्डूक और वज्र इस प्रकार अभ्रक चार प्रकार का है, सफेद लाल, पीला काला इन भेदों के कारण प्रत्येक अभ्रक के चार चार भेद है, अग्नि में तपाया हुआ पिनाक नामका अभ्रक अपने पत्रों को पृथक् २ कर देता है वह सेवन किया हुआ मल को बन्द कर मनुष्य को मार ही देता है, नागाभ्र अग्नि में तपाने से सर्प के समान शब्दों को करता है उसके सेवन करने से मण्डलाख्य कुष्ठ रोग होता है इसमें सन्देह नहीं, मण्डूक नाम का अभ्रक अग्नि में धोंकने से कूद २ कर गिर जाता है वह भक्षण करने से ऐसी पथरी को करता है कि जो शस्त्र के बिना किसी अन्य औषधि से नष्ट न हो सकें, वज्राभ्र नाम का अभ्रक अग्नि में तपाने से किसी प्रकार की विकृति को नहीं प्राप्त सब रोगों का खाया हुआ देह को वज्र के समान करनेवाला उत्तम है वह नाशक होता है॥१२-१६॥

अभ्रक के वर्ण तथा उनकी उपयोगिता

श्वेतं रक्तं च पीतं च कृष्णमेवं चतुर्विधम् । श्वेतं श्वेतक्रियासूक्तं रक्ताभ्रं रक्तकर्मणि ॥१७॥ पीताभ्रमभ्रकं यत्तु श्रेष्ठं यत्पीतकर्मणि । चतुर्विधं वरं व्योम यद्यप्युक्तं रसायने ॥ तथापि कृष्णवर्णाभ्रं कोटिकोटिगुणाधिकम् ॥१८॥ (रससत्नसमुच्चय)

अर्थ-सफेद, लाल, पीला और काला इस प्रकार अभ्रक चार प्रकार का है, तहां सफेद अभ्रक सफेदी के काम में अर्थात् चांदी बनाना और अबीर बनाने आदि काम में, लाल अभ्रक लाल रंग के काम में पीला अभ्रक सुवर्ण बनाने

१-कुष्ठप्रदायकम् । २- रं त्वग्निसंतप्तं । ३-गोलकान्बहुशः कृत्वा स स्यान्मृत्युप्रदायकः नागस्तु नागवद्वह्नौ ।

१-प्तं । २-कं

के कार्य में उपयोगी है तथापि कृष्णाभ्रक सबसे ही करोड़ २ गुना उत्तम है।।१७-१८।।

अन्यच्च

श्वेतं पीतं तथा कृष्णं रक्तं तद्भूमिसंगमात् । पीतं हेम्नि सितं तारे रक्तं चैव रसायने ।। कृष्णाभ्रकं च रोगेषु द्रुतिपाते तथैव च ।।१९।।

(टोडरानन्द)

अर्थ-वह अभ्रक सफेद, पीला, काला तथा लाल रंग का होता है। पीला अभ्रक सुवर्ण बनाने के काम में, सफेद चांदी आदि बनाने के कार्य्य में, लाल रसायन के बनाने के काम में और काला अभ्रक समस्त रोगों में तथा द्रुतिपातन में भी उपयोगी है।।१९।।

अभ्रक के वर्ण

तद्विप्रक्षत्रविट्शूद्रभेदाच्चैव चतुर्विधम् । क्रमेणैव सितं रक्तं पीतं कृष्णं च वर्णतः ।।२०।।

(टोडरानन्द)

अर्थ-और वही अभ्रक सफेद रंग का ब्राह्मण, लाल रंगवाला क्षत्रिय, पीत वर्णवाला वैश्य और काले रंग का अभ्रक शूद्रवर्ण होता है।।२०।।

दिशा भेद से अभ्रक के गुण

तत्र दक्षिणशैलेऽर्कशोषादल्पगुणं हि तत् । अल्पसत्त्वं तदा धत्ते त्वभ्रे सत्त्वं गुणप्रदम् ।।२१।। अतश्चोत्तरशैलोत्थं बहुसत्त्वगुणोत्तरम् । शंसन्ति मुनयः सर्वे प्रयोगे कृष्णमभ्रकम् ।।२२।।

(टोडरानन्द)

अर्थ-दक्षिण दिशा के पर्वतों में सूर्य की उष्णता से अभ्रक अल्प गुणवाला और अल्प सत्त्वाला भी होता है, इसलिये उत्तर के पर्वतों में उत्पन्न हुए अधिक सत्त्वाले गुणवान् कृष्ण अभ्रक को समस्त रोगों में प्रशंसनीय कहते हैं।।२१।।२२।।

अथ अभ्रक के गुण

रोगान्हत्वा दृढबलचयं वीर्यवृद्धिं विधत्ते तारुण्याद्ये रमयति शतं योषितां नित्यमेव । दीर्घायुष्मान्जनयति सुतान् सिंहतुल्यप्रभावान्मृत्योर्भीति हरति रुचिरं सेव्यमानं मृताभ्रम् ।।२३।। (टोडरानन्द)

अर्थ-समस्त रोगों को नाशकर बल और वीर्य की वृद्धि को करता है जवानी की प्रथमावस्था में नित्य सौ स्त्रियों से रमण करता है, सिंह के समान दीर्घायु पुत्रों का उत्पन्न करता है और सेवन किया हुआ अभ्रक मृत्यु के भय को भी नष्ट कर देता है।।२३।।

तथा च

क्षयकुष्ठज्वरहरं प्रमेहव्याधिनाशनम् । जरामरणभीतिघ्नं वातपित्तकफापहम् ।।२४।। अभ्रकं सेवितं नित्यं कासश्वासहरं परम् । रक्तिकैकं समारभ्य यावट्टंकमितं भवेत् ।।२५।। (टोडरानन्द)

अर्थ-एक रत्ती से लेकर चार माशे तक सेवित किया हुआ अभ्रक क्षय, कोढ, ज्वर तथा प्रमेह रोग को नाश करता है, जरा (बुढापा) और मृत्यु के भय को दूर करता है, वात, पित्त और कफ के नाश करता है, खांसी और श्वास के हरने से उत्तम है।।२४।।२५।।

अन्यच्च

गौरीतेजः परममसृतं वातपित्तक्षयघ्नं प्रज्ञोद्बोधि प्रशमितजरं वृष्यमायुष्यमग्र्यम् ।। बल्यं स्निग्धं रुचिदमकफं दीपनं शीतवीर्यं तत्तद्योगैः सकलगदहृद्व्योम सूतेन्द्रबद्धि ।।२६।। (टोडरानन्द र० र० स०)

अर्थ-अभ्रक भस्म परम अमृतरूप, वात, पित्त और क्षय का नाशक, बुद्धि को बढानेवाला, बल और आयु का कर्ता, चिकना, रुचिकर्ता, कफ का नाशक, दीपन, शीतवीर्य है। वह अभ्रक उन २ अनुपानों के योग से पारद के तुल्य समस्त रोगों का नाश करनेवाला है।।२६।।

अशुद्ध अभ्रक के दोष

अशुद्धाभ्रं निहन्त्यायुर्वर्द्धयेन्मारुतं कफम् ।
अहतं छेदयेदन्त्रं मन्दाग्निकृमिवृद्धिकृत् ।।२७।।

(टोडरानन्द)

अर्थ-अशुद्ध अभ्रक आयु को नाशकर कफ और वात की वृद्धि करता है, बिना मरा हुआ अभ्रक आंतों को काट देता है तथा मन्दाग्नि और कृमिरोग को बढ़ाता है।।२७।।

अथ अभ्रकशोधन विधि

आदौ सुतापितं कृत्वा गगनं सप्तधा क्षिपेत् ।
निर्गुण्डीस्वरसे सम्यक् गिरिदोषप्रशान्तये ।।२८।।

(टोडरानन्द)

अर्थ-प्रथम अभ्रक को अग्नि में तपा २ कर निर्गुडी के रस में बुझावै तो अभ्रक गिरिदोष से दूर हो जाता है।।२८।।

अन्यच्च

अंगारोपरि विन्यस्तं ध्मातमेकदलीकृतम् । निक्षिपेत्कांजिके कृष्णमभ्रकं वह्निसन्निभम् ।। ततोऽस्य कांजिकस्थस्य चिरं घर्मविधारणम् ।।२९।।

(टोडरानन्द)

अर्थ-अभ्रक का एक २ पत्रकर और उसको अंगारों पर तपाकर कांजी में बुझा देवे फिर बुझाये हुए अभ्रक को उसी कांजी में रख तेज घाम में रख देवे (कुछ दिन के बाद पानी से धोकर साफ कर लेवे) तो अभ्रक शुद्ध हो जायगा।।२९।।

तथा च

क्षिप्त्वा क्षिप्त्वारनाले वै तप्तं कुर्याच्च खर्परे ।
त्रिसप्तधा पुटं चैव दत्त्वा शुद्धयति चाभ्रकः ।।३०।।

(टोडरानन्द)

अर्थ-अभ्रक को खपरे में तपा २ कर २१ (इक्कीस) बार कांजी में पुट देवे तो अभ्रक शुद्ध होगा।।३०।।

अन्यच्च

प्रतप्तं सप्तवाराणि निक्षिप्तं कांजिकेऽभ्रकम् । निर्दोषं जायते नूनं प्रक्षिप्तं वाति गोजले ।। त्रिफलाक्वथिते चापि गवां दुग्धे विशेषतः ।।३१।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-अभ्रक को तपाकर कांजी में अथवा गोमूत्र में या त्रिफला के क्वाथ में और विशेषकर गाय के दूध में सात बार बुझाय देवे तो अभ्रक शुद्ध होगा।।३१।।

अभ्रक को मुसफ्फा करने की तरकीब (उर्दू)

अभ्रक स्याह व सफेद के मुसफ्फा करने की तरकीब-अभ्रक को गर्म करके सात बार बोलमादः गाउ में सर्द करे बादहू सात बार रोगन कुंजद में

फिर सात बार दहीतुर्श में सर्द करे बादहू नमक चिडचिड़ा यानी ओगा और नमक खारी लेकर पानी में अलहदा २ धो लें और एक एक मर्तबः बुझाव दे शिगुफ्तः हो जायगी (सुफहा अकलीमियां १७५)

अभ्रक के कोमल करने की क्रिया

अभ्रक के पत्रों को लेकर गाय के धारोष्ण दूध में मलना फिर सुखाना फिर धारोष्ण दूध में मलना और सुखाना इस प्रकार तीन बार मलने से अभ्रक नवनीत के समान हो जायगा फिर काम में लाओ। (जम्बू से प्राप्त भाषा पुस्तक)

अथ धान्यभ्रक क्रिया

चूर्णाभ्रं शालिसंयुक्तं बद्ध्वा कम्बल के श्लथम् । त्रिरात्रं कांज्रिके स्थाप्यं तत्क्लिन्नं मर्दयेद्दृढम् ॥ कम्बलाद्गलितं श्लक्ष्णं मारणादौ प्रशस्यते ॥३२॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–अभ्रक का चूरा कर उसमें धान मिला देवे, उसको कम्बल में ढीला बांध तीन रात तक कांजी में रख फिर जोर से मले इस प्रकार मलने से जो कम्बल में से सूक्ष्म चिकना रेत निकले उसको धान्याभ्रक कहते है वह मारण तथा सत्वपातन के योग्य है॥३२॥

धान्याभ्र

अभ्रक फोरे ऐसे रहैं । बनद्योलं सों कविजन कहैं ॥ पांच सेर लै जोषि जु जानि । तामें तीन सर दे धान ॥ दो बरगजीकी थैली करै । तामें धान गगन को भरै ॥ मुहडो सीय अतिगाढो करै । थैली बहुरि नांद में धरै ॥ नांदहि कलस दोय जल भरै । तामें थैली मर्दन करै ॥ घसि अभ्रक निकसै बाहरौ । पुनि वह जल मथनामेंकरौ ॥ नांद बहुरि मथनाजल देय । गाढो मर्दन फेरि करेय ॥ मर्दत जल होई गादरौ । पुनि वह जल मथना में करौ ॥ नांदहि और नवो जल देय । गाढो मर्दन अधिक करेय ॥ ऐसे फेर २ मद देय । रंच रंचको अभ्रक लेय ॥ जब वह मथना रहै थिराय । तब वह पानी देय बहाय ॥ सूखेते अति सूछम होय । यह धनाव जानै सब कोय ॥ तब धनाव पायो तिह नाम । शुद्ध भये आवे सबकाम ॥

(रससागर)

धान्याभ्रक की निरुक्ति

चूर्णाभ्रं शालिसंयुक्तं वस्त्रबद्धं हि कांजिके।
निर्यातं मर्दनाद्वस्त्राद्धान्याभ्रमिति कथ्यते ॥३३॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–चूर्ण किये हुए अभ्रक के साथ धानों को कपड़े में बांधकर कांजी में रख देवे फिर उसके मर्दन करने से जो वस्त्र द्वारा अभ्रक का रेत निकलता है उसे धान्याभ्र कहते हैं॥३३॥

अथ अभ्रक भस्मविधि

ले धनाव जितनी मानमनै । आक छीरसों सानि सुजानै ॥ पुनिं सरवन में धरै बनाय । खाली रहै न बाहिर जाय ॥ तब सरवा रस बाढा किये । कंडन गजपुट में रखिये ॥ इसी भांति की दीजै आगि । चार प्रहर जो ज्वाला लागि ॥ आक छीर ऐसी पुट सात । सातें सात सबनकी बात ॥ कनकपान रस ग्वारिजो कीर । पुनि लीजै थूहर को छीर ॥ ता पाछै छयोली की छाल । बहुरि औटि बिरजरिया घाल । गुड सुहागा अरु लीजे लाख । पुनि त्रिफला पीछै को राख । पीपर बरकी अंतर छाल । लेहू पेंडकी होय न डाल । सात सात पुट सबकी जानि । चौरासी पुट कही बखानि ॥ औटि २ के लीजै छालि । ता पाछै अभ्रक में घालि ॥ गुड सुहाग पै धोरे नीर । करै गुनी जाकी मतिधीर ॥ होय निचन्दी की गुनकै दानि । रसरतनागर कही बखनि ॥

(रससागर, बड़ा रसरसागर)

कुश्ता अवरक त्रिफला के ७२ पुट से (उर्दू)

दरसनत कुश्तन तलक बियारन्द तलक सफेद या स्याह व ओरा महलूव साजन्द व खुश्क साख्तः दर काढा हलैला व बलैला खमीर कुनन्द चन्द टुकड़ साजन्द व खुश्क साजन्द व दर पाचकदस्ती निहादह गजपुट विदमन्द चूं सर्दन शवद वर आवुर्दः बिकोबन्द बाजदरकारह मजकूर टुकड़ःहा वस्तः बाज आतिश दिहन्द चुनीं हफ्ताद दो पुट तकरार नुमायन्द अगर अजारंखशन्दगी रफ्त फहाव उलमुराद वल्ला व नोइ मजकूर दर आतिश दिहन्द व इल्ला बिनीअ मजकूर ता रखशन्दगी अजां नरवद साईद दरजाइ खूब निगाह दारन्द व हुक्मा आँरा माजून विसाजंद व हरनोअ मखुरन्द अम्मा हकीम मेगोयंद कि वाँई तरकीव पीर जबान गर्दद व कुव्वत वाह तमाम आवुर्द चुनाचि अकर चहल हरम बुवद खुशनूद कुनद सुस्तीतन व गरानी अंदाम नियारद दायम इश्तहा गालिब आयद तरकीब खुर्दन बियारंद आककरा ब वह मन ब वसवासा ब खोलीखान मिसरी ब जौजववा ब बेखकोंच ब तुख्म उटंगन ब मस्तगी व तवाशीर व फल बेख जुमलैरा बराबर कोफ्तः विसानीदः ब बजामः वहपजंद आँकदरे कि हमे दारद बाशद शशम हिस्साओ तकल कुश्ता व बराबर हुमें नवात आसकर्दः बिआमेजंद व इमदादा कफे अजां निहार बिखुरंद खासियत आँ वक्ते बिखुरंद मालूम कुनंद। (सुफहा ३२ किताव जवाहर उलसिनात्)

अथ अभ्रकमारण

देवदालीरसे गाढं धान्याभ्रं भावयेच्छतम् ।
कर्पूरधवलं सूक्ष्मं निश्चन्द्रं जायतं ध्रुवम् ॥३४॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–अभ्रक को देवदाली (बंदाल) के रस की भावना दे देकर सौ बार गजपुट देवे तो अभ्रक कपूर के समान श्वेत वर्णवाला निश्चंद हो जाता है॥३४॥

तथा च

रसालामूसलीवारिपुटितं च मुहुर्मुहुः ॥
निश्चन्द्रं मृत्युमाप्नोति कर्मयोग्यं भवेत्ततः ॥३५॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–विदारीकन्द और सफेद मूसली इन दोनों के रस की भावना दे दे कर अभ्रक को गजपुट देता रहै तो अभ्रक चमकरहित होगा, तदनन्तर वह अभ्रक समस्त प्रयोगों में देने योग्य होगा॥३५॥

सम्मति–इस श्लोक में पुट देने की संख्या नहीं दी गई है इसलिये बनानेवाले को समझना चाहिये कि जब तक अभ्रक चमकरहित न हो जावे तब तक पुट देता रहै।

तथा च

पेषणं च विधातव्यं पौनःपुन्येन पण्डितैः । चांगेरीस्वांगनिर्यासैरयेमं विधिमाचरेत् ॥३६॥ तण्डुलीयकमूलस्य रसेनापि ततः परम् । ततोऽस्मिन्खादिरांगारैर्नीते नीतेऽग्निवर्णताम् । क्षिपेत्पुनः पुनः क्षीरे यथा निश्चन्द्रिकं भवेत् ॥३७॥ (टोडरानन्द)

अर्थ–विद्वान मनुष्य अभ्रक को चांगेरी (नोनिया) के रस से बार बार घोटे फिर चौलाई की जड़ के रस से घोट टिकिया बनावे उन टिकियाओं को खैरसारके कोयलों में धोंक २ कर जब अग्नि के समान लाल वर्ण हो जावे तब गाय के दूध में बुझा देवे इस प्रकार जब तक अभ्रक की चमक जाती न रहै तब तक इस क्रिया को करता रहे तो यह अभ्रक की सर्वोत्तम भस्म होगी॥३६॥३७॥

तथा च

पुनर्नवां कुमारीं च चपलां वानरी तथा । मुसलीं चेक्षवल्लीं च

तथार्द्रामलकीरसैः ॥३८॥ प्रत्येकैकेन पुटयेत्सप्तवारं पुनः पुनः । अर्कसेहुण्डदुग्धेन प्रदेयाः सप्त भावनाः । एवं तन्म्रियते वज्रं सर्वरोगहरं परम् ॥३९॥ (टोडरानन्द)

अर्थ–सांठ, घीकुवार, भांग, कौच के बीज, मूसली, विदारीकन्द तथा गीले आमलों का रस इनमें से प्रत्येक की सात सात भावना देकर गजपुट देवे इसी प्रकार आक और थूहर के दूध की भी सात सात भावना देवे तो अभ्रक की भस्म होगी और वह भस्म सर्वरोग नाशक होती है॥३८–३९॥

तथा च

धान्याभ्रं गुडसंमिश्रं श्रेष्ठाक्षीरेण मर्दितम् । कुर्यात्तुचक्रिकां शुष्कां सम्यग्गजपुये पचेत् ॥४०॥ ततो धत्तूरपत्तूरकुमारीशशिबाटिका । प्रत्येकस्वरसेनैव पुटेदाशु मृतिं व्रजेत् ॥४१॥ (टोडरानन्द)

अर्थ–धान्याभ्रक में गुड़ मिलाकर स्थलकमल के दूध से मर्दन करे फिर उसकी गोल २ चकरी सी टिकिया बना लेवे उसको सुखाकर गजपुट में पका लेवे तदनन्तर धतूरे के पत्तों का रस, घीगुवार और सांठ इनके स्वरस से भावना देकर पुट देवे तो अभ्रक की शीघ्र भस्म होगी॥४०॥४१॥

तथा च

सपादटंकणं धान्यगगनं धामितं दृढम् ।
निश्चन्द्रं जायते शीघ्रं बालभृंगरसप्लुतम् ॥४२॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–धान्याभ्रक से चौथाई सुहागा लेकर दोनों को खरल में डाल नवीन जलभंगरों के रस में घोट कोयलों की आंच में धोंके तो अभ्रक की निश्चन्द्र भस्म होगी॥४२॥

तथा च

धान्याभ्रकस्य भागैकं भागार्धं टंकणस्य च । पिष्ट्वा तदन्धमूषायां रुद्ध्वा तीव्रग्निना पचेत् ॥ विचूर्ण्य योजयेद्योगे भेषजानामसंशयम् ॥४३॥ (टोडरानन्द)

अर्थ–धान्याभ्रक का एक भाग और आधा भाग सुहागा इन दोनों को पीस अन्धभूषा में रख तीव्र अग्नि में पचावे फिर उसको मूषा (घरिया) में से निकाल चूर्णकर समस्त प्रयोगों में चलावे इसमें सन्देह नहीं है॥४३॥

तथा च

धान्याभ्रकस्य भागौ द्वौ भागैकं शुद्धगंधकम् । वटक्षीरेण संमर्द्य मूषायां सन्निरोधयेत् ॥ पचेद्गजपुटेनैव वारमेकं मृतो भवेत् ॥४४॥

अर्थ–दो भाग धान्याभ्रक और एक भाग शुद्धगंधक इन दोनों को सूक्ष्म पीसकर बड़ के दूध की भावना देकर और अंधमूषा में भर गजपुट में पचावे तो एक ही बार में अभ्रक की भस्म होगी॥४४॥

तथा च

ततो धान्याभ्रकं कृत्वा पिष्ट्वा मत्स्याक्षिकारसैः । चक्रिंकृत्वा विशोष्याथ पुटेदर्धेभके पुटे ॥ पुटेदेवं हि षट्वारंपौनर्नवरसैः सह ॥४५॥ फलांशटंकणेनापि संमर्द्यकृतचक्रिकम् । अर्धेभाख्यपुटैस्तद्वत्सप्तवारं पुटेत्खलु ॥४६॥ एवं वासारसेनापि तण्डुलीयरसेन च । प्रपुटेत्सप्तवाराणि पूर्वप्रोक्तविधानतः । एवं सिद्धं घनं सर्वयोगेषु विनियोजयेत् ॥४७॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–धान्याभ्रक कर मछैछी के रस से पीसकर और टिकिया बनाकर सुखा लेवे फिर आधी गजपुट में छः बार पकावे इसी प्रकार सांठ के रस से भी भावना देकर पुट देवे फिर धान्याभ्रक से चौथाई सुहागा मिलाकर और टिकियां बनाय सातबार पुट देवे इसी प्रकार अडूसे का रस, चौलाई का रस, इन दोनों रसों की पूर्वोक्त क्रिया से भावना देकर सात बार पुट देवे तो अभ्रक सिद्ध होता है, उसको सब प्रयोगों में लावे॥४५–४७॥

तथा च

धान्याभ्रं कालमर्दस्य रसेन परिमार्दितम् ।
पुटितं दशवारेण म्रियते नात्र संशयः ॥४८॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–धान्याभ्रक को कसौंदी के रस से खूब मर्दन कर दश बार पुट देवे तो अभ्रक की निःसन्देह भस्म होगी॥४८॥

अन्यच्च

तद्वन्मुस्तारसेनापि तण्डुलीयरसेन च । पीतामलकसौभाग्यपिष्टं चक्रिकृताभ्रकम् ॥४९॥ पुटितं षष्टिवाराणि सिंदूराभं प्रजायते । क्षयाद्यखिलरोगघ्नं भवेद्रोगानुपानतः ॥५०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–इसी प्रकार नागरमोथे के रस से तथा चौलाई के रस से अथवा पके हुए आमले के रस से पीकर टिकिया बनाय साठ (६०) बार पुट देवे तो अभ्रक की भस्म सिन्दूर के समान लाल हो जायगी॥४९॥५०॥

अन्यच्च

वटमूलत्वचः क्वाथैस्ताम्बूलीपत्रसारतः । बासामत्स्याक्षिकाभ्यां वा मीनाक्ष्या सकठिल्लया ॥५१॥ पयसा वटवक्षस्य मर्दितं पुटितं घनम् । भवेद्विंशतिवारेण सिन्दूरसदृशप्रभम् ॥५२॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–बड़ की जड़ की छाल का क्वाथ, पान का रस, अडूसे का और मछेछी का मिला हुआ रस, करेला और मछेछी का मिला हुआ रस, अथवा बड़ का दूध इनमें से किसी एक पदार्थ से धान्याभ्रक को घोट संपुट में रखकर वीस गजपुट देवे तो सिंदूर के समान लाल, वर्ण अभ्रक की भस्म होगी॥५१॥५२॥

तथा च

पादांशटंकणोपेतं मुसलीरसमर्दितम् ।
रुद्ध्वा कोष्ठ्यां दृढं ध्मातं सत्त्वरूपं भवेद्घनम् ॥५३॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अभ्रक को चौथाई सुहागे के साथ पीसकर मूसली के रस से मर्दन कर कोष्ठी यन्त्र में रख खूब धोंके तो अनेक सत्त्वरूप हो जाता है॥५३॥

तथा च

गन्धर्वपत्रतोयेन गुडेन सह भावितम् । अधोर्ध्वं वटपत्राणि निश्चन्द्रं त्रिपुटैः खगम् ॥५४॥ क्षुधं करोति चात्यर्थं गुंजार्धमितिसेवया । तत्तद्रोगहरैर्योगैः सर्वरोगहर परम् ॥५५॥ (रसरत्नसमुच्य)

अर्थ–धान्याभ्रक के समभाग गुड मिलाकर एरण्ड के पत्तों के रस में घोट चक्री बनाय और ऊपर नीचे बड के पत्ता लगाय गजपुट देवे इस प्रकार तीन गजपुट देने से अभ्रक की भस्म होगी, आधी रत्ती भर सेवन करने से अत्यंत क्षुधा लगती है, अनेक अनुपानों के साथ सेवन से समस्त रोगों को नाश करती है॥५४॥५॥

अभ्रक की पुट के गुण

अभ्रस्त्वष्टादशपुटाद्वातहा द्विगुणेन च । पित्तघ्नस्त्रिगुणेनैव कफहा मेहशोफहा ॥५६॥ अम्लपित्तामवातादिरोगे स्याद्गजकेशरी । अभ्रं शतपुटादूर्ध्वं बीजसंज्ञां लभेद्ध्रुवम् । वीर्यौजः कान्तिमूलश्च सबीजो देहधारकः ॥५७॥ (टोडरानन्द)

अर्थ–अठारह पुट का अभ्रक वातनाशक होता है और छत्तीस पुट का अभ्रक पित्त का नाशकर्ता, तथा चौवन पुट का अभ्रक कफ, प्रमेह, शोथ का नाशक होता है। और वही अभ्रक अम्लपित्त, आमवात आदि रोगों में गजकेसरी है। सौ पुट से अधिक पुटवाले अभ्रक की बीजसंज्ञा होती है। वीर्य, ओज और कांति का दाता है और देह का धारक भी है।।५६।।५७।।

अथ अभ्रक का अमृतीकरण

त्रिफलायाः कषायस्य पलान्यादाय षोडश । गोघृतस्य पलान्यष्टौ मृताभ्रस्य पलान् दश ।।५८।। एकीकृते लोहपात्रे विपचेन्मृदुवह्निना । द्रवे जीर्णे समादाय योगवाहं प्रयोजयेत् ।। अन्येषामपि धातूनाममृतीकरणं ह्ययम् ।।५९।।

(टोडरानन्द)

अर्थ–त्रिफला के क्वाथ के सोलह पल, गाय का घृत आठ पल और दस पल अभ्रक भस्म इन सबको लोहे की कड़ाई में रख, मंदाग्नि से पकावे क्वाथ और घृत के जलने पर अभ्रक को उतार समस्त योगों में वर्ते इसी प्रकार अन्य धातुओं का भी अमृतीकरण जानना चाहिये ।।५८।।५९।।

पत्राभ्रक के सेवन का निषेध

निश्चन्द्रिकं मृतं व्योम सेव्यं सर्वगदेषु च । सेवितं चन्द्रिकायुक्तं मेहं मन्दानलं चरेत् ।।६०।। यैरुक्तं युक्तिनिर्मुक्तैः पत्राभ्रकरसायनम् । तैर्दृष्टं कालकूटाख्यं विषं जीवनहेतवे ।।६१।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–चमकरहित अभ्रक भस्म को समस्त रोगों में देना उचित है, और चमकदार अभ्रक के सेवन करने से प्रमेह और मन्दाग्नि को करता है, युक्ति के न जाननेवाले जिन मनुष्यों ने पत्राभ्रक रसायन का सेवन बताया है मानो उन्होंने जीवन के लिये कालकूट विष को ही देखा है, तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार कालकूट विष जीवन को नष्ट करता है उसी प्रकार पत्राभ्रक रसायन भी जीवन को नष्ट करता है।।६०।।६१।।

शुद्ध अभ्रक कहां लेना चाहिये

सत्त्वार्थं सेवनार्थं च योजयेच्छोधिताभ्रकम् ।
अन्यथा त्वगुणं कृत्वा विकरोत्येव निश्चितम् ।।६२।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सत्त्वपातन के लिये तथा भस्म बनाकर सेवन करने के लिये शुद्ध अभ्रक को काम में लावे, यदि इन दोनों कामों में अशुद्ध अभ्रक का प्रयोग करै तो अवगुण करके मनुष्य को निश्चय मार देता है।।६२।।

अभ्रक सेवन फल

वेल्लं व्योषसमन्वितं घृतयुतं वल्लोन्मितं सेवितं दिव्याभ्रं क्षयपांडुरुग्ग्रहणिका शूलामकुष्ठामयम् ।। जूर्ति श्वासगदं प्रमेहमरुचिं कासामयं दुर्धरं मन्दाग्निं जठरव्यथां विजयते योगैरशेषामयान् ।।६३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

इति श्रीअग्रवालवैश्यावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायामभ्रकवर्णनं नाम सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ।।४७।।

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, तथा घृत के संग एक रत्ती सेवन किया हुआ अभ्रक क्षय, पांडु, संग्रहणी, शूल, आम, कोढ़, ज्वर, श्वास, प्रमेह, अरुचि, कास, मन्दाग्नि और उदररोग तथा अनेक अनुपानों के साथ समस्तरोगों को जीतता है।।६३।।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायामभ्रकवर्णनं नाम सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ।।४७।।

सत्त्वाध्यायः ४८

सत्त अबरक स्याह की पहचान (उर्दू)

इसको हिन्दी में कृशनावरक और बजरीअवरक कहते हैं यह वजन में शीशा और पारे की तरह भारी होता है और कायमुल्नार और निर्धूम होता है जब बोत में रखकर आग पर गुदाज करे तो सोना चांदी तांबे वगैरह की तरह चक्कर खाता है और फूटक होता है मगर सत्त हरताल से वजन में हलका होता है रंग अभरक सफेद के सत्त का सफेद माइल व स्याही और अवरक स्याह के सत्त का कोयले की तरह स्याह होता है, एक तोला सत्त अवरक का चार तोला सीमाव बाजारी को कायम करता है। (सुफहा अकलीमियां १०९)

अथ अभ्रकसत्त्वपातन विधि

भावयेदभ्रकं तत्तु दिनैकं कांजिकेन च । रम्भाया मूलजैर्नीरैः सूरणोत्थैश्च मर्दयेत् ।।१।। तुर्यांशं टंकणं तत्र क्षुद्रमत्स्यैः समं पुनः । महिषीमलसंमिश्रान्सं विधायास्य गोलकान् ।। खराग्निना धमेद्गाढं सत्त्वं मुंचति कांस्यवत् ।।२।। (रसमानस)

अर्थ–धान्याभ्रक को एक दिन तक कांजी में भिगोवे फिर केले की जड के रस से तदनन्तर जमीकन्द के रस में भिगोय देवे इसके बाद चौथाई सुहागा तथा चौथाई भाग छोटी मच्छियों का चूर्ण और चौथाई भाग भैंस का गोबर मिलाकर ऊंट के लैंड़ा से कुछ छोटे गोले बनाकर तेज आंच में धोंके तो कांसी के समान अभ्रक का सत्त्व निकल आता है।।१।।२।।

तथा च

कासमर्दघनाधान्यवासानां च पुनः पुनः । मत्स्याक्ष्याः काण्डवल्ल्याश्च हंसपाद्यारसैः पृथक् ।।३।। पिष्ट्वा पिष्ट्वा प्रयत्नेन शोषयेद्धर्मयोगतः । पलं गोधूमचूर्णस्य क्षुद्रमत्स्याश्च टंकणम् ।।४।। प्रत्येकमष्टमांशेन दत्त्वा दत्त्वा विमर्दयेत् । मर्दने मर्दने सम्यक शोषयेद्रविरश्मिभिः ।।५।। पंचाजं पञ्चगव्यं वा पञ्चमाहिषमेव च । क्षिप्त्वा गोलान्प्रकुर्वीत किञ्चित्तिंदुकतोऽधिकान् ।।६।। पयो दधि घृतं मूत्रं सविट्कं चाजमुच्यते । अधः पातनकोष्ठयां हि ध्मात्वा सत्त्वं निपातयेत् ।।७।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कसौदी, नागरमोथा, अडूसा, सांठ, मछैछी, कांडवल्ली, हंसराज इनके रस से पीस २ कर घाममें सुखा लेवे फिर एक पल गेहूँ का चून अभ्रक से अष्टमांश क्षुद्रमत्स्य और सुहागा लेकर मर्दन करै प्रत्येक मर्दन के समय सूर्य की तेजी से सुखा लेवे तदनन्तर पंचाजा (बकरी की पांच चीजें, जैसे दूध, दही घी, मूत्र और मैंगनी) अथवा पंचगव्य तथा पंचमहिष मिलाकर आमले की बराबर गोली बनावे अधः पातन कोठीयंत्र में धोंककर सत्वपातन कर लेवे।।३–७।।

कीट से सत्त्वपातनक्रिया

कोष्ठयां किट्टं समाहृत्य विचूर्ण्य रवकान् हरेत् । तत्किट्टं स्वल्पटंकेन गोमयेन विमर्द्य च ।।८।। गोलान्विधाय संशोष्य धमेद् भूयोऽपि पूर्ववत् । भूयः किट्टं समाहृत्य मृदित्वा सत्त्वमाहरेत् ।।९।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–जिस कोठी में सत्त्वपातन किया हो उसमें से अभ्रक सत्त्व के रवों को निकाल लेवे उसकी कीट में थोड़ा सा सुहागा और गोबर मिलाकर गोले बनाय और सुखाकर पूर्व के समान धोंके इसी प्रकार फिर कीट को निकालकर सत्व को निकाल लेवे।।८–९।।

अथाभ्रकसत्त्वपातनविधि

चूर्णीकृतं गगनसत्त्वमथारनाले धृत्वा दिनैकमथ शोष्य च सूरणस्य । भाव्यं रसैस्तदनु मूलरसैः कदल्या वेदांशटंकणयुतं शफरीसमेतम् ।।१०।। पिण्डीकृतं तु बहुधा महिषीमलेन संशोष्य कोष्ठगतमाशु धमेद्धठाग्नौ ।भस्त्राद्वयेन च ततो

वमते हि सत्त्वं पाषाणधातुगतमत्र न संशयोऽस्ति ॥११॥ (कामरत्न र० रा० सुं०)

अर्थ–चूरन किये हुए अभ्रक के पत्रों को एक दिन कांजी में रख सुखा लेवे फिर एक ही दिन जमीकन्द के रस की भावना देवे तदनन्तर केले की जड़ के रस की भावना देवे फिर उसमें चौथाई भाग सुहागा तथा मछली डाल भैंस के गोबर से गोला ना लेवे उनको कोठी में रख हठाग्नि से दो धोंकनियों द्वारा धोंके तो पत्थर में रहे हुए भी धातु का सत्त्व पड़ जाता है इसमें सन्देह नहीं है॥१०॥११॥

और भी

धान्याभ्रकही लीजिये, सेर एक संगवाय । केला सूरन रसविषै, एक दिवस खरलाय । छोटी मछरी याविषै, एक सेर दे डार। लेय सुहागा पावभर, तामें दे निरधार ॥ महिषी गोबर लीजिये, चार सेर परमान । तामें ये सब सानिके, टिकरी करै सुजान ॥ ताको घाम सुखायके, सिघडी में भर लेय । पक्के कोला लेयके, तेइ पर धर देय ॥ सिघडी के पैंदे विषै; परनाली रखवाय ॥ घोंक्या करै सुधोंकनी, सुन्दर तरे बनाय ॥ आंच लगै सिघडी तपै, परनाली मग होय। कांसेकी उपमा सदृश, सत्व कढ़ैगो जोय ॥ ऐसेही हरताल अरु, मनसल दीजै धात । तिनके सत्व निकासिये, कही सकल मुनिजात ॥ (वैद्यादर्श)

और भी

अभ्र जोखि पल साठक लेय । औषधि एक एक पल लेय । ऊन लीजिये उरनातनी । घृत गुड़ चाह्ल माछरी गनी । गूगल और मुरहठी कही । पुनि सुहाग गुंजाफल सही ॥ साजी नोंन और मधु लेय । एक एक पल तामें देय । अव्यों भैंस को गोबर आनि । ताको रस ले बस्तर छानि ॥ गोबर रस सब लेय सनाय । छांह सुखावे बरी बंधाय । खूड़ा (पूड़ा) यंत्र पचावे सोय । इह विधि के सत पातन होय ॥ यह तो जुगति प्रकटकै कही । गुरुप्रसादते जानो सही ॥ सत उज्ज्वल रूपेसो होय । जो यह जुगति न चूके कोय ॥ कोरे अभ्रक विधि जानो । या विधि सत निकसै पहिचानो ॥

(रससागर)

तथा च

गुडः पुरस्तथा लाक्षा पिण्याकं टंकणं तथा । ऊर्णासर्जरसश्चैव क्षुद्रमीनसमन्वितम् ॥१२॥ एतत्सर्वं तु संचूर्ण्य च्छागदुग्धेन पिंडकाः । कृत्वा ध्माताः खरांगारैः सत्त्वं मुंचति निश्चितम् ॥ पाषाणमृत्तिकादीनां व्योमसत्त्वस्य का कथा ॥१३॥ (रसराजसुन्दर)

अर्थ–गुड़, गूगल, लाख, खल, सुहागा, ऊन, राल और छोटी मच्छी इन सबको पीस अभ्रक के साथ मिलाय बकरी के दूध से गोल २ टिकिया बनावे फिर उनको तेज कोयलों पर रख धोंके तो पत्थर और मिट्टी का भी सत निकल आता है अभ्रक का सत निकल आवे तो इसमें सन्देह ही क्या है॥१२॥१३॥

अभ्रकसत्त्वविधि

दश १० सेर मृताभ्रक को सात दिन तक कला के रस में घोटे तथा सात दिन जमीकन्द के रस में घोटे तथा सात ही दिवस मोथा के क्वाथ की भावना देवें पीछे धूप में सुखाय ढाई सेर सुहागा फुलाकर डाले तथा नीचे लिखी औषधियों को डाल चिरमिठी (चौंटनी), गूगल, लाख, ऊन, सज्जी, राल, छोटी, मछली, जवाखार, खल, जमीकन्द, केचुवा, हरड, बहेड़ा, आयला, चित्रक, चीरकन्द, धतूरे के बीज, कलहारी, पाढ, बलबीज, गंधक, मोंम, गोखरू, सैंधानोंन, संचरनोंन, बिडनोंन, साम्हरनोंन, शहद खाखला शशे की हड्डी, कबूतर की बीट, सोंठ, पीपल, मिरच सरसों का तेल, जीवन, भैंस का दूध, दही, घृत, मूत्र, गोबर ये समभाग सबको कूट पीसकर टिकरी बांधे तीन २ टंक की, फिर सुखाय कोठीयंत्र में रख नीचे पक्के कोयलो की अग्नि दे बकनाल धोंकनी से धोंके तो पतला सत्त्व निकल नीचे बैठ जाय उसको निकाल खगर को तोड़ चुम्बक से सत्त्व को निकाल लेवे फिर पूर्वोक्त मसाला डालकर धोंके ऐसा तीन बार करने से सब सत्त्व निकल आवे यह सोने के समान लाल निकले कदाचित् मरी अभ्रक न मिले तो धान्याभ्रक का ही सत्त्व निकाले यह सत्त्व कांसे के समान निकलेगा ॥

(रसराजसुंदर)

सत्त्व के एकत्र करने के विधि

कणशो यद्भवेत्सत्त्वं मूषायां प्रणिधापयेत् ।
मित्रपंचकयुग्ध्मातमेकीभवति घोषवत् ॥१४॥

(रसराजसुन्दर)

अर्थ–अभ्रक सत्व के कणों को एकत्र कर उनमें मित्रपंचक मिलाय मूषा में रख तीव्राग्नि में देने से सब सत्व के रवा मिलकर कांसे के समान हो जाते हैं॥१४॥

अथ अभ्रकसत्वशोधन विधि

अथ सत्त्वकणास्तास्तु मुस्ताक्वाथाम्लकांजिकैः[1]। शोधनीयगणोपेतान्मूषामध्ये निरुध्य च ॥१५॥ सम्यक्पक्वं[2] समाहृत्य द्विवारं प्रधमेत्ततः[3]। इति शुद्धं भवेत्सत्त्वं योग्यं रसरसायने ॥१६॥ (रसराजसुन्दर र० र० स०)

अर्थ–अभ्रक के उन शोधन करने योग्य रवों को नागरमोथे के काढे और मट्ठे से शुद्धकर मूषा में बंद कर देवें। अच्छी तरह पक जाने पर निकाल लेवे और दोबारा उसे गर्म करे तो अभ्रकसत्त्व शुद्ध हो जाता है. उसे रस और रसायन कर्म में प्रयुक्त करना चाहिये॥१५॥१६॥

अभ्रकसत्त्व के कोमल करने का उपाय

पट्टचूर्णं विधायाथ गोघृतेन परिप्लुतम् । भर्जयेत्सप्तवाराणि चुल्लीसंस्थितखर्परे ॥१७॥ अग्निवर्णं भवेद्यावद्वारंवारं विचूर्णयेत् । तृणं क्षिप्त्वा दहेद्यावत्तावद्वा भर्जनं चरेत् ॥१८॥ ततः सगन्धकं पिष्ट्वा वटमूलकषायतः । प्रटेद्विंशतिवारेण वाराहेण पुटेन हि ॥१९॥ पुनर्विंशतिवाराणि त्रिफलोत्थकायतः । त्रिफलामुण्डिकाभृङ्गपत्रपथ्याक्षमूलकैः ॥२०॥ भावयित्वा प्रयोक्तव्यं सर्वरोगेषु मात्रया । सत्त्वाभ्रात्किंचिदपरं निर्विकारं गुणाधिकम् ॥२१॥ एवं चेच्छतवाराणि पुटपाकेन साधितम् । गुणवज्जायतेऽत्यर्थं परं पाचनदीपनम् ॥२२॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पूर्वोक्त क्रिया से जो अभ्रक सत्व प्रस्तुत किया गया है उसको कपड़छान कर गाय के घृत से खूब सानकर (अर्थात् पिसे हुए अभ्रक सत्व में गोघृत मिलाकर खपरे में रख चूल्हे पर चढ़ाय सात बार भूंजै अग्नि लगाते २ जब सत्व लाल हो जावे तब उतार घोट लेवे फिर घी में मिलाकर अग्नि पर चढ़ावे इस प्रकार सात बार भर्जन करै अथवा जब सत्व में डालने से तृण जल जाय तब तक अग्नि लगावे, तदनन्तर सत्व में (चतुर्थांश) गन्धक डाल बडजटा के क्वाथ से घोट २ बीस बार बारह पुट देनी, प्रत्येक पुट के देने में चतुर्थांश गंधक डालता रहै, पश्चात् त्रिफला के क्वाथ की बीस पुट देनी त्रिफला, गोरखमुण्डी, जलभंगरे का पत्ता, बड़ीहर्र, बहेड़ा, और मूली के पत्ते इनमें से प्रत्येक के क्वाथ तथा रस की एक एक भावना देकर समस्त रोगोंमें मात्रानुसार प्रयोग करना चाहिये इसी प्रकार यदि बीस पुट के स्थान में बडजटा क्वाथ और त्रिफला के क्वाथ की पचास २ पुट दी जावे तो उत्तमोत्तम गुणवाला अभ्रकसत्व होता जठराग्नि का दीपन करनेवाला संग्रहणी के भंयकर दर्द को नष्ट करता है तथा उत्तम पाचन गुण करताहै॥१७–२२॥

---

१ क्वाथयित्वा । २ द्रुतम् । ३ द्रवम् (र० र० स०)

अन्यच्च

सत्त्वस्य गोलकं ध्मातं सत्यसंयुक्तकांजिके । निर्वाप्य तत्क्षणेनैव कुट्टयेल्लोहपारया ॥२३॥ संप्रताप्य घनस्थूलकणान् क्षिप्त्वाऽथ कांजिके । तत्क्षणेन समाहृत्य कुट्टयित्वा रजश्चरेत्॥२४॥ गोघृतेन च तच्चूर्णं भर्जयेत्पूर्ववत्त्रिधा । धात्रीफलरसैस्तद्वद्धात्रीपत्ररसेन वा ॥२५॥ भर्जने भर्जने कार्यं शिलापट्टेन पेषणम् । ततः पुनर्नवावासारसैः कांजिकमिश्रितैः ॥२६॥ प्रपुटेद्दशवाराणि दशवाराणि गन्धकैः । एवं संसाधितं व्योम सत्त्वं सर्वगुणोत्तरम् ॥ यथेष्टं विनियोक्तव्यं जारणे च रसायने ॥२७॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अभ्रक सत्व के गोले को कोयलों की अग्नि में तपाकर संडासी से निकाल बिना छनी हुई कांजी में बुझाय लोहे की खरल में डाल सूक्ष्म पीस लेवे पीसते २ जो मोटे २ दाने रह जाते हैं उन्हें फिर आंच में तपाय पुनः कांजी में बुझाय लोहे के खरल में पीस लेवे इस प्रकार चूर्ण किये हुए अभ्रकसत्व को तीन बार गाय के घी में भून लेवे, प्रत्येक भूंजने के समय खरल में घोटना चाहिये फिर आंमले के रस से तथा आमलों के पत्तों के रस से भूंज २ कर खरल में घोटे तदनन्तर सांठ और अडूसे का रस तथा कांजी इन तीनों को मिलाय अभ्रक सत्व में भावना दे देकर दस गजपुट अष्टमांश या चतुर्थांश गंधक मिलाकर देनी इससे अभ्रक सत्व की उत्तम रसायन बनती है इस रसायन को रस और रसायन यथेष्ट वर्तना चाहिये।।२३–२७।।

तथा च

मधुतैलवसाज्येषु द्रावितं भावितं तथा । मृदु स्याद्दशवारेण सत्त्वं लोहादिकं खरम् ॥२८॥

(रसराजसुन्दर, र० र० स०)

अर्थ-शहद, तैल, चर्वी और घृत इनमें सत्त्व को गला गला कर दस बार बुझाने से सत्त्व और कठोर लोहादि धातु मृदु (नरम) होते हैं।।२८।।

अभ्रकसत्वगुण

सत्त्वसेवी वयस्तम्भं कृतशुद्धिर्लभेत्सुधीः ॥२९॥

(रसमानसः)

जो मनुष्य अभ्रक सेवन के समान देह की शुद्धि कर सत्त्व को सेवन करता है उसके आयु की वृद्धि होती है।।२९।।

समस्त प्रकार के सत्वपातन की क्रिया का वर्णन

ऊर्णा सर्ज्जरसश्चैव क्षुद्रमीनसमन्वितः । एतत्सर्वं तु संचूर्ण्य छागदुग्धेन पिण्डिकाः ॥ कृता ध्माताः खरांगारैः सर्वसत्त्वान्निपातयेत् ॥३०॥

(टोडरानन्द, र० रा० सुं०)

अर्थ-ऊन, राल, छोटी मच्छी, इन तीनों को चूर्ण कर अभ्रक से चौथाई भाग लेकर अभ्रक में मिलाय बकरी के दूध से छोटे छोटे गोले बनाय तेज अंगारों में धोंके तो सब प्रकार के सत्त्व निकलते हैं।।३०।।

द्रुतियों के वर्णन न करने का कारण

द्रुतयो नैव निर्दिष्टाः शास्त्रे दृष्टा अपि दृढम् । विना शम्भोः प्रसादेन न सिध्यन्ति कदाचन ॥३१॥

अर्थ-यद्यपि शास्त्रों में द्रुतियों का वर्णन किया गया है परंतु श्रीमहादेवजी की कृपा के विना द्रुतियें सिद्ध नहीं होती हैं।।३१।।

अथ वैक्रान्त (तर्मरी) की उत्पत्ति

दैत्येन्द्रो माहिषः सिद्धः सहदेवसमुद्भवः । दुर्गा भगवती देवी तं शूलेन व्यमर्दयेत् ॥३२॥ तस्य रक्तं तु पतितं यत्र तत्र स्थितं भुवि । तत्र तत्र तु वैक्रान्तं वज्राकारं महारसम् ॥ विन्ध्यस्य दक्षिणे वाऽस्ति ह्युत्तरे वाऽस्ति सर्वतः ॥३३॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-सहदेव से उत्पन्न हुआ माहिष नाम का सिद्ध दैत्येन्द्र तथा उसको श्रीभगवती देवी ने अपने त्रिशूल से मारा उसका रक्त जिस जिस पृथ्वी पर गिरा वहां वहां पर वज्र के समान वैक्रान्त (कच्चा हीरा तर्मरी) महारस पैदा हुआ, वह विन्ध्याचल पर्वत के दक्षिण की तरफ मिलता है और उत्तर की तरफ तो सर्वत्र प्राप्त होता है।।३२।।३३।।

वैक्रान्त की व्युत्पत्ति

विकृन्तयति लोहानि तेन वैक्रान्तकः स्मृतः ॥३४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-समस्त लोहों (धातुओं) को चीर डालने की शक्ति रखता है इसलिये उसे वैक्रान्त कहते हैं।।३४।।

वैक्रान्त लक्षण

अष्टास्रश्चाष्टफलकः षट्कोणो मसृणो गुरुः । शुद्धमिश्रितवर्णैश्च युक्तो वैक्रान्त उच्यते ॥३५॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-आठ कोन और आठ ही फलक अथवा छः कोनवाला वैक्रांत चिकना और शुद्ध मिश्रितवर्णो से युक्त जो वैक्रान्त है वह उत्तम होता है।।३५।।

वैक्रान्त के भेद

श्वेतः पीतस्तथा रक्तो नीलः पारावतप्रभः ॥ मयूरकण्ठसदृशश्चान्यो मरकतप्रभः ॥३६॥ देहसिद्धिकरं कृष्णं पीते पीतं सिते सितम् । सर्वार्थसिद्धिदं रक्तं तथा मरकतप्रभम् । शेषे द्वे निष्फले वर्ज्ये वैक्रान्तमिति सप्तधा ॥३७॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-सफेद, पीला, लाल, नीला, कबूतर के रंगवाला, मोर के गले के समान, आसमानी और पन्ने के रंग के समान इस प्रकार वैक्रान्त सात तरह का है, काला वैक्रांत शरीर को अजर अमर करता है, पीला वैक्रांत सुवर्ण बनाने में, सफेद चांदी बनाने के काम में उपयोगी है, लाल और पन्ने के समान वर्ण का वैक्रांत समस्त अर्थ और सिद्धि का दाता है। आसमानी तथा कबूतर के रंगवाला ये दोनों निष्फल हैं।।३६।।३७।।

तथा च

श्वेतो रक्तस्तथा पीतो नीलः पारावतच्छविः । श्यामलः कृष्णवर्णश्च कर्बुरश्चाष्टधा हि सः ॥३८॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-सफेद, लाल, पीला, नीला, कबूतर के रंग का सा, श्यामल काला और कबरा इस प्रकार वैक्रान्त आठ प्रकार का है।।३८।।

अशुद्ध वैक्रान्त दोष

पाण्डुरोगं पार्श्वपीडां किलासं दाहसन्ततिम् । अशुद्धवज्रवैक्रान्तौ कुरुतोऽतो विशोधयेत् ॥३९॥

(बृहद्योगतरङ्गिणी)

अर्थ-अशुद्ध वैक्रान्त तथा वज्र ये दोनों पांडुरोग, पसली का दर्द, किलास और दाहरोग को करते हैं, इसलिये शुद्ध करे।।३९।।

वैक्रान्त गुण

वैक्रान्तो वज्रसदृशो देहलोहकरो मतः । विषघ्नो रसराजश्च ज्वरकुष्ठ-

क्षयप्रणुत् ॥४०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-वज्र के समान गुणवाला वैक्रांत भी देह को अजर अमर करता है, यह रसराज विष का नाशक, ज्वर, कोढ़ और क्षय का नाश करता है॥४०॥

अथ वैक्रान्तशोधन

वैक्रान्तकाः स्युस्त्रिदिनं विशुद्धाः संस्वेदिताः क्षारपटूनि दत्त्वा । अम्लेषु मूत्रेषु कुलत्थरम्भानीरेऽथवा कोद्रववारिपक्वाः ॥४१॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-कांजी और गोमूत्र इन दोनों को मिलाय उसमें (जवाखार) तथा पांचों नोंन मिलाकर और उसको दोलायंत्र में भरकर तीन दिवस तक स्वेदन करे अथवा कुलथी केले के जल में अथवा कोद्रव के क्वाथ में स्वेदन करे तो वैक्रान्त शुद्ध हो जावेगा॥४१॥

कुलत्थक्वाथसंस्विन्नो वैक्रान्तः परिशुध्यति ॥४२॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-अथवा केवल कुलथी के ही क्वाथ में स्वेदन करने से वैक्रान्त अत्यंत शुद्ध होता है॥४२॥

वैक्रान्त मारण

म्रियतेऽष्टपुटैर्गन्धनिम्बुकद्रवसंयुतः ॥४३॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-एक सम्पुट में वैक्रांत को रख उसके ऊपर नीचे नींबू के रस में पिसी हुई गंधक को रख गजपुट में फूंक देवे। इस प्रकार गजपुट देवे तो वैक्रांत की भस्म होगी॥४३॥

तथा च

वैक्रान्तेषु च तप्तेषु हयमूत्रं विनिक्षिपेत् । पौनःपुन्येन वा कुर्याद् द्रवं दत्त्वा पुनः पुनः ॥ भस्मीभूतं तु वैक्रान्तं वज्रस्थाने प्रयोजयेत् ॥४४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–वैक्रांत को तपा तपाकर घोड़े के मुत्रमें बुझावे फिर घोड़े के मूत्र को संपुट में रख संपुट देवे, इस प्रकार भस्म हुआ वैक्रान्त वज्र के स्थान में देवे तो श्रेष्ठ है॥४४॥

सम्मति–मेरी राय में पूर्वोक्त दोनों क्रियाओं की ऐक्यता होनी संभव है, इसलिये इस प्रकार वैक्रांतभस्म करना उचित है। प्रथम आंच में वैक्रांत तपाकर घोड़े के मूत्र में बूझावे फिर नींबू के रस में घोटे हुए गंधक का द्रव देकर गजपुट देवे, ऐसी आठ गजपुट देनी॥

मोक्षमोटरपालाशक्षारं गोमूत्रभावितम् । वज्रकन्दनिशाकल्कफल चूर्णसमन्वितम्॥४५॥तत्कल्कं टंकणं लाक्षाचूर्णं वैक्रान्तसम्भवम् । नवसारसमायुक्तं मेषशृङ्गीद्रवान्वितम् ॥४६॥ पिण्डितं मूकमूषा स्थं ध्मापितं च हठाग्निना । तत्रैव पतते सत्त्वं वैक्रान्तस्य न संशयः ॥४७॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पाढर का वृक्ष, मोरट का खार, ढाक का खार और गोमूत्र से वैक्रांत के चूर्ण को अनेक भावना देनी। पीछे वज्रकंद, हलदी, त्रिफला, सुहागा, नौसादर और लाख इनके चूर्ण से चौथाई वैक्रांत चूर्ण लेकर दोनों को मेढासींगी के रस में छोटी छोटी गोली बनावे, उनको अंध्रमूषा में रख हठाग्नि से धोंके तो उस मूषा में ही वैक्रांत सत्त्व निकल जाता है, इसमें संदेह नहीं है॥४५–४७॥

तथा च

सत्त्वपातनयोगेन मर्दितश्च वटीकृतः । मूषास्थो घटिकाध्मातो वैक्रान्तः सत्त्वमुत्सृजेत् ॥४८॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अथवा सत्त्वपातन करने के लिये जो औषध लिखे हैं उनके साथ वैक्रान्त के चूर्ण को घोट गोली बनाय मूषा में रख एक घड़ी तक धोंके तो सत्व निकल आवेगा॥४८॥

वैक्रान्त रसायन

भस्मत्वं समुपागतो विकृतको हेम्ना घृतेनान्वितः पादांशेन कणाज्यवेल्लसहितोगुञ्जामितः सेवितः ॥ यक्ष्माणं जरणं च पांडुगुदजं श्वासं च कासामयं कुष्ठं च ग्रहणीमुरः क्षतमुखान् रोगाञ्जयेद्देहकृत ॥४९॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–वैक्रान्तभस्म चार भाग, सुवर्णभस्म एक भाग इन दोनों को मिलाय छोटी पीपल और बायबिडंग इन तीनों को अनुमान से एक माशे लेकर उसमें एक रत्ती ऊपर लिखी रसायन डाल घी में चाट लेवे तो राजरोग, बुढ़ापा, पांडुरोग, बवासीर श्वास, खांसी, कठिन, संग्रहणी, उरःक्षत (सिल) प्रभृति रोगों को जीतता है और देह को दृढ़ करता है॥४९॥

तथा च

सूतभस्मार्धसंयुक्तं नीलवैक्रान्तभस्मकम् । मृताभ्रसत्त्वभस्मयोस्तुलितं परिमर्दितम् ॥५०॥ क्षौद्राज्यसंयुतं प्रातर्गुञ्जामात्रं निषेवितम् । निहन्ति सकलान्रोगान्दुर्जयानन्यभेषजैः ॥ त्रिसप्तदिवसैर्नृणां गङ्गाम्भ इव पातकम् ॥५१॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पारदभस्म दो तोले, नीले वैक्रान्त की भस्म एक तोला और इन दोनों की समान अभ्रक सत्त्वभस्म लेकर सूक्ष्म पीस लेवे, उसमें से एक रत्ती लेकर घी और सहत के साथ सेवन करे तो जो रोग अन्य औषधियों से नहीं नष्ट होते हैं उनको भी इक्कीस ही दिनों में ऐसे नाश कर देता है जैसे कि श्रीगंगाजल पाप को नाश कर देता है॥५०॥५१॥

वैक्रान्तसेवनफल

आयुःप्रदश्च बलवर्णकरोऽतिवृष्यः प्रज्ञाप्रदः सकलदोषगदापहारी । दीप्ताग्निकृत्पविसमानगुणस्तरस्वी वैक्रान्तकः खलु वपुर्बललोहकारी ॥५२॥ रसायनेषु सर्वेषु पूर्वगण्यः प्रतापवान् । वज्रस्थाने नियोक्तव्यो वैक्रान्तः सर्वदोषहा ॥५३॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–वैक्रांत आयु, बल और कांति को बढ़ाता है, अत्यंत पुष्टिकारक बुद्धि का बढ़ानेवाला, वातपित्त और कफ का नाशक है। जठराग्नि को तेज करता है तथा हीरे के समान गुणवाला है और इंद्रियों में फुर्ती रखता है, शरीर को बलिष्ठ तथा लोह सदृश कठिन बना देता है। यह रसायन सब रसायनों में उत्तम है, अपने बड़े प्रभाव से अनेक रोगों को निर्मूल कर देता है, हीरे के स्थान में वैक्रांत प्रयोग हमेशा करना चाहिये॥५२॥५३॥

वैक्रान्तद्रुति

श्वेतवर्णं तु वैक्रान्तमम्लवेतसभावितम् । सप्ताहान्नात्र सन्देहः खरघर्मे द्रवत्यसौ ॥५४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ—सफेद वैक्रांत के चूर्ण को सात दिन तक अमलवेत के रस की भावना देवे फिर तेज घाम में रखे अथवा प्रत्येक भावना के बाद घाम में रखे तो वैक्रांत की द्रुति होगी॥५४॥

अथ सोनामक्खी की उत्पत्ति

कान्यकुब्जाख्यविषये जायते स्वर्णमाक्षिकम् । तपतीतीरतोऽपि स्यादित्येवं तद्द्वियोनिकम् ॥५५॥ कान्यकुब्जोद्भवं ताप्यं विज्ञेयं स्वर्णवर्णकम् । तपतीतीरगं तत्तु पंचवर्णमुदाहृतम् ॥५६॥

(रससारपद्धति)

अर्थ—एक तो सोनामक्खी कन्नौज के देश में उत्पन्न होती है और दूसरी तपती नदी के किनारे उत्पन्न होती है, इस प्रकार सोनामक्खी की जन्मभूमि दो हैं, वही कन्नौज की सोनामक्खी सुवर्ण के समान वर्ण की होती है और तपती के किनारे की सोनामक्खी पांच वर्ण की होती है॥५५॥५६॥

तथा च

सुवर्णशैलप्रभवो विष्णुना काञ्चनो रसः । ताप्यां किरातचीनेषु यवनेषु च निर्मितः ॥५७॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ—मेरुपर्वत पर उत्पन्न हुए सुवर्ण के रस को श्रीविष्णु ने तापी नदी के आसपास के प्रदेश, सौराष्ट्र, चीन तथा अरबस्थान प्रभृति यवन देशों में उत्पन्न किया है॥५७॥

स्वर्णमाक्षिक की परीक्षा

स्वर्णाभं स्वर्णमाक्षकं निकोणं गुरुतायुतम् । कान्तिमाविकिरेत्तत्तु करे घृष्टं न संशयः ॥५८॥

(रससारपद्धति)

अर्थ—स्वर्णमाक्षिक सोने के समान कान्तिवाला गोल और भारी होता है, वह हाथ में रगड़ने से सोने की चमक को बिखेरता है॥५८॥

स्वर्णमाक्षिक का लक्षण

स्वर्णवर्णं गुरु स्निग्धमीषत्पीतच्छविच्छटम् । कषे कनकवद् घृषं तद्वरं हेममाक्षिकम् ॥५९॥

(रससारपद्धति)

अर्थ—जो स्वर्णामाक्षिक, सुनहरी, भारी, चिकना तथा कुछ पीली चमक रखता है, उसको कसौटी पर घिसने से सोने के समान लकीर को करता है, वह स्वर्णमाक्षिक उत्तम है॥५९॥

स्वर्णमाक्षिक के भेद

माक्षिको द्विविधो हेममाक्षिकस्तारमाक्षिकः । तत्राद्यं माक्षिकं कान्यकुब्जोत्थं स्वर्णसन्निभम् ॥६०॥ तपतीतीरसम्भूतं पञ्चवर्णसुवर्णवत् । पाषाणबहुलः प्रोक्तस्ताराख्योऽल्पगुणात्मकः ॥६१॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ—माक्षिक दो प्रकार का है, एक स्वर्ण माक्षिक और दूसरा रौप्य माक्षिक तहां स्वर्ण माक्षिक कन्नोज में उत्पन्न हुआ सुनहरी होता है और तपती नदी के किनारे उत्पन्न हुआ स्वर्णमाक्षिक पंचरंगी होता है और रौप्यमाक्षिक अधिक पाषाणवाला अल्पगुणवाला होता है॥६०॥६१॥

स्वर्णमाक्षिक के गुण

सुवर्णमाक्षिकं स्वादु तिक्तं वृष्यं रसायनम् । चक्षुष्यं बस्तिरुक्हृत्कण्ठपांडुमेहविषोदरम् ॥६२॥ अर्शः शोथं विषं कण्डूं त्रिदोषमपि नाशयेत् । अनुपानं वराव्योषं वेल्लं साज्यं हि माक्षिके ॥६३॥

(रससारपद्धति)

अर्थ—स्वर्णमाक्षिक मीठा, कडुवा, वृष्य, रसायन और नेत्रों को हितकर है। मसाने के रोग, हृद्रोग, गले के रोग, पांडु, प्रमेह, जलंधर, बवासीर, सूजन, विष, खुजली और त्रिदोष को भी नाश करता है, त्रिफला, त्रिकुटा, वायविडंग और घृत यह इसका अनुपान है॥६२॥६३॥

तथा च

ताप्यः सूर्यांशुसंतप्तो माधवे मासि दृश्यते । मधुरः कांचनाभासः साम्लो रजतसन्निभः ॥६४॥ किंचित्कषायमधुरः शीतः पाके कटुर्लघुः । तत्सेवनाज्जराव्याधिविषैर्न परिभूयते ॥६५॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ—जिस समय वैशाख मास में सूर्य की किरनें तीव्र होती है तब यह स्वर्णमाक्षिक दीखता है, वह स्वर्णमाक्षिक मधुर, खट्टा है तथा रूपामाखी कुछ कषैली, मीठी, शीतल परिपाक में चरपरी और हलकी है उसको सेवन करने से बुढ़ापा, व्याधि और विष इनसे दुःख नहीं होता है॥६४॥६५॥

तथा च

माक्षीकधातुः सकलामयघ्नः प्राणो रसेन्द्रस्य परं हि वृष्यः । दुर्मेललोहद्वयमेलनश्च गुणोत्तरः सर्वरसायनाग्र्यः ॥६६॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ—दोनों प्रकार का माक्षिक धातु समस्त रोगों का नाशक और पारद का प्राण है, परम पौष्टिक है, जो दो धातु परस्पर नहीं मिलते, उनके मिलाने में यह धातु उपयोगी है, उत्तम गुणवाला होने के कारण यह माक्षिक रसायन में उत्तम ही माना गया है॥६६॥

माक्षिक की शुद्धि

एरण्डतैलं लुङ्गाम्बु सिद्धं शुध्यति माक्षिकम् ॥६७॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ—अंडी का तैल तथा बिजोरा का रस इन दोनों में स्वर्ण माक्षिक के चूर्ण को मिलाकर कढ़ाई में डाल नीचे अग्नि जलावे जब लाल वर्ण हो जावे तब उतार लेवे तो माक्षिक शुद्ध होता है॥६७॥

तथा च

सिद्धं वा कदलीकन्दतोयेन घटिकाद्वयम् । तप्तं तप्तं वराक्वाथे शुद्धिमायाति माक्षिकम् ॥६८॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ—अथवा केले के जड़ के रस में दो घड़ी अर्थात् ४८ मिनट तक स्वेदन करे फिर तपा तपाकर त्रिफला के क्वाथ में बुझावे तो स्वर्णमाक्षिक शुद्ध होगा॥६८॥

सुवर्णमाक्षिकभस्म

मातुलुङ्गाम्बुगन्धाभ्यां पिष्टं मूषोदरे स्थितम् । पंचक्रोडपुटैर्दग्धं म्रियते माक्षिकं खलु ॥६९॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ—स्वर्णमाक्षिक को बिजौरा तथा समभाग गन्धक को पीस सम्पुट में रखकर बराह पुट में भस्म करे, इस प्रकार पांच वाराह पुट लगावे तो स्वर्ण माक्षिक अवश्य भस्म होगा॥६९॥

अथ स्वर्ण माक्षिक का मारण

एरण्डस्नेहगव्याज्यैर्मातुलुङ्गरसेन वा ॥ खर्परस्थं दृढं पक्वं जायते धातुसन्निभम् ॥७०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अथवा शुद्ध स्वर्ण माक्षिक बिजौरे के रस में पीसकर समभाग अंडी का तैल और घृत में मिलाय खिपरे पर रख हठाग्नि देवे जब खिपरा लाल हो जावे तब उतार लेवे तो स्वर्णमाक्षिक की भस्म गेरू के सदृश हो जायगी॥७०॥

स्वर्णमाक्षिक का प्रयोग

एवं मृतं रसे योज्यं रसायनविधावपि ॥७१॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पूर्वोक्त प्रकार से भस्म किये हुए स्वर्ण माक्षिक का समस्त रस और रसायन में प्रयोग करना चाहियें॥७१॥

स्वर्णमाक्षिक के सत्त्वपातन की विधि

त्रिंशांशनागसंयुक्तं क्षारैरम्लैश्च मर्दितम् ॥ ध्मातं प्रकटमूषायां सत्त्वं मुञ्चति माक्षिकम् ॥७२॥ सप्तवारं परिश्राव्य क्षिप्तं निर्गुण्डिकारसे ॥ माक्षीकसत्त्वसंमिश्रं नागं नश्यति निश्चितम् ॥७३॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–स्वर्णमाक्षिक में तीसवां भाग सीसा मिलाय जवाखार तथा सज्जीखार और अम्लवर्ग के साथ घोट खुल मुंहवाली मूपा में रख धोंके तो स्वर्णमाक्षिक का सत्त्व निकल आवेगा, तदनन्तर उस सत्त्व को सात बार अग्नि में तपा तपाकर निर्गुंडी के रस में बुझावे तो सत्त्व में मिला हुआ सीसा नष्ट होकर केवल सत्वमात्र ही रह जायेगा॥७२॥७३॥

तथा च

क्षौद्रगन्धर्वतैलाभ्यां गोमूत्रेण घृतेन च ॥ कदलीकन्दसारेण भावितं माक्षिकं मुहुः ॥७४॥ मूषायां मुञ्चति ध्मातं सत्त्वं शुल्बनिभं मृदु ॥ गुञ्जाबीजसमच्छायं द्रुतद्रावं च शीतलम् ॥ ताप्यसत्त्वं विशुद्धं तद्देहलोहकरं परम् ॥७५॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–स्वर्ण माक्षिक के चूर्ण को शहद, अंडी का तेल, गोमूत्र, घी तथा केले का जड़ का रस इनसे अनेक भावना देवे फिर मूषा में रख धोंके तो चौंटनी (गुंजा) के सदृश सत्त्व निकलता है। यह जल्दी गलनेवाला ठंडा और देह को लोह के समान करनेवाला है॥७४॥७५॥

सत सोनामक्खी की अलामत (उर्दू)

जर्दमाइल व सफेदी बजन में भारी होता है और दूसरे सत्तों की तरह टिकिया नहीं बंध सकती बल्कि रेजारेगा रग दरिया की तरह होता है और चांदी को रंगता है। इसी तरह से कि एक मास इसका दो मर्तबः करके एक तोला नुकरा गुदाख्तः पर तरह करे, तिलाई हफ्तवान हो जाता है और दूसरे चीजों के सत एक मुद्दत तक अगर रखे रहें तो उनका रंग मुतगैयर हो जाता है लेकिन इसका रंग नहीं बदलता। (सुफहा अलकीमियां ११०)

तथा च

एरण्डोत्थेन तैलेन गुञ्जाक्षौद्रं च टंकणम् ॥ मर्दितं तस्य वाफेन सत्त्वं माक्षिकजं द्रवेत् ॥७६॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अंड का तैल चौंटनी तथा सुहागा इन तीनों को स्वर्णमाक्षिक के सत्त्व के समान भाग लेकर घोट लेवे उसमें से कुछ तो स्वर्णमाक्षिक के सत्त्व के साथ ही घोटे और कुछ बाकी रहे, उसको रख देवे फिर उस मिश्रित स्वर्णमाक्षिक के सत्त्व को अग्नि में धोंके और ऊपर से ऊपर लिखे हुए मसाले को थोड़ा थोड़ा डालता जावे तो सत्त्व की द्रुति होगी॥७६॥

अथ माक्षिक सत्त्व प्रयोग

माक्षीकसत्वं च रसेन पिष्टं कृत्वा विलीने च बलिं निधाय ॥ संमिश्र्य संमर्द्य च खल्वमध्ये निक्षिप्य सत्त्वं द्रुतिमभ्रकस्य ॥७७॥ विधाय गोलं लवणाख्ययंत्रे पचेद्दिनार्धं मृदुवह्निना च । स्वतः सुशीतं परिचूर्ण्य सम्यग्वल्लोन्मितं व्योषविडङ्गयुक्तम् ॥७८॥ संसेवितं क्षौद्रयुतं निहन्ति जरां सरोगां त्वपमृत्युमेव ॥ दुःसाध्यरोगानपि सप्तवासरैर्नैतेन तुल्योऽस्ति सुधारसोऽपि ॥७९॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–माक्षिक सत्व तथा शुद्ध पारद को घोटे जब पारद सत्व में मिल कर अदृश्य हो जाय तब पारद के समान भाग गंधक डाल देवे और घोटे फिर सत्व के समान अभ्रक का सत्त्व तथा द्रुति को डाल तथा घोट गोला बना लेवे, उस गोले को लवणयन्त्र में रख मृदु अग्नि से छः घंटे अर्थात् १५ घड़ी तक पकावे स्वांगशीतल होने पर खरल कर रख लेना, उसमें से नित्यप्रति एक एक रत्ती लेकर सोंठ, मिरच, पीपल, बायविडंग और शहद के साथ चाटे तो जरा (बुढ़ापा), मृत्यु और असाध्य रोगों को भी सात ही दिन में नाश कर देता है इसके समान अमृत भी नहीं है॥७७–७९॥

अथ रूपामक्खी के भेद

विमलस्त्रिविधः प्रोक्तो हेमाद्यस्तारपूर्वकः ॥ तृतीयः कांस्यविमलस्तत्तत्कान्त्या स लक्ष्यते ॥८०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–रौप्यमाक्षिक तीन प्रकार का होता है, एक में तो सुवर्ण का अंश विशेष होता है और दूसरे में चांदी का और तीसरे में कांसे का अंश अधिक होता है उसको कांस्य माक्षिक भी कहते हैं, उनकी परीक्षा इस प्रकार होती है जैसे कि जिसमें सोने तथा चांदी की चमक अधिक हो उसे रौप्य माक्षिक कहते हैं और जिसमें कांसे की अधिक चिलकाहट हो उसे कांस्य माक्षिक कहते हैं॥८०॥

रौप्यमाक्षिक के गुण

वर्तुलः कोणसंयुक्तः स्निग्धश्च फलकान्वितः । मरुत्पित्तहरो वृष्यो विमलोऽतिरसायनः ॥८१॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–रूपामक्खी गोला और कोनेदार, चिकना, वात पित्त का नाशक, बलकारक और रसायन होता है॥८१॥

रौप्यमाक्षिक की उपयोगिता

पूर्वो हेमक्रियासूक्तो द्वितीयो रूप्यकृन्मतः ॥ तृतीयो भेषजे तेषु पूर्वपूर्वो गुणोत्तरः ॥८२॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पहिली रूपामक्खी सुवर्ण क्रिया में और दूसरा रौप्य बनाने के काम में और तीसरा औषध के काम में उपयोगी है, उनमें से तीसरे से दूसरा और दूसरे से पहिला अधिक गुणकारी है॥८२॥

रूपामाक्खी की शुद्धि

आटरूषजले स्विन्नो विमलो विमलो भवेत् ॥८३॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–रूपामाक्खी को अडूसे के रस में स्वेदन करे तो शुद्ध होगा॥८३॥

तथा च

जम्बीरस्वरसे स्विन्नो मेषश्रृङ्गीरसेऽथवा ॥ आयाति शुद्धिं विमलो धातवश्च यथापरे ॥८४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–रौप्यमाक्षिक चूर्ण को जंभीरी के रस में अथवा मेढ़ासिंगा के रस में

स्वेदन करे तो रौप्यमाक्षिक अवश्य शुद्ध होगा। इसी प्रकार और धातु भी शुद्ध होते हैं।।८४।।

रौप्यमाक्षिकभस्मविधि

गन्धाश्मलकुचाम्लैश्च म्रियते दशभिः पुटैः ।।८५।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–रूपामाक्खीमें अर्ध भाग गन्धक लेकर बड़हर और नींबू के रस में घोट गजपुट देवे, इस प्रकार दश बार पुट देने से रौप्यमाक्षिक की भस्म होगी।।८५।।

तथा च

सटङ्कलकुचद्रावैर्मेषशृङ्ग्याश्च भस्मना ।। पिष्टो मूषोदरे लिप्तः संशोष्य च निरुध्य च ।।८६।। षट्प्रस्थकोकिलैर्ध्मातो विमलः सीससन्निभः ।। सत्त्वं मुंचति तद्युक्तो रसः स्यात्स रसायनः ।।८७।।

(रसरत्नसमुच्चयः)

अर्थ–सुहागा, विजोरा का रस तथा मेढ़ासींगी का क्वाथ इन तीनों को मिलाकर रौप्य माक्षिक में भावना देवे और पिसे हुए रौप्य माक्षिक का मूषा में लेकर और सुखाकर छः सेर कोयलों की अग्नि में धोंकने से सीसे के समान शुद्ध सत्त्व निकलता है, वह रसायन के समान गुणकारक है।।८६।।८७।।

तथा च

विमलं शिग्रुतोयेन कांक्षीकासीसटंकणम् ।। वज्रकन्दसमायुक्तं भावितं कदलीरसैः ।।८८।। मोक्षकक्षारसंयुक्तं ध्मापितं मूकमूषगम् ।। सत्त्वं चन्द्रार्कसंकाशं पतते नात्र संशयः ।।८९।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–फिटकिरी, कसीस, सुहागा, वज्रकन्द, कठपाडर का खार इनको रौप्यमाक्षिक से दूना लेकर घोटे फिर सैंजने के रस तथा केले के रस से भावना देकर गोली बनाय अन्धमूषा में रख धोंके तो चन्द्रमा तथा सूर्य के समान सत्त्व निकलता है, इसमें सन्देह नहीं है।।८८।।८९।।

रौप्यमाक्षिक सत्व का कोमल करना और गुण

तत्सत्त्वं सूतसंयुक्तं पिष्टं कृत्वा सुमर्दितम् ।। विलीनं गन्धके क्षिप्त्वा जारयेत्त्रिगुणालकम् ।।९०।। शिलां पंचगुणा चापि वालुकायंत्र के खलु ।। तारभस्म दशांशेन तावद्वैक्रान्तकं मृतम् ।।९१।। सर्वमेकत्र संचूर्ण्य पटेन परिगाल्य च ।। निक्षिप्य कूपिकामध्ये परिपूर्य प्रयत्नतः ।।९२।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–एक तोला रौप्यमाक्षिक सत्व और एक ही तोला पारद इन दोंनों को खूब पीसे, जब पारद अदृश्य हो जाये तब उसमें एक तोला गंधक मिलाकर घोटे और तीन तोले हरताल, पांच तोले मैनसिल भी मिलाकर सूक्ष्म पीस और सीसी में भर वालुका यंत्र में चार प्रहर की अग्नि देवे, स्वांग शीतल होने पर निकाल कर उसमें दशवां हिस्सा चांदी की भस्म और मृत वैक्रान्त डाल कांच की शीशी में भर लेवे।।९०–९२।।

रौप्यमाक्षिकरसायन के गुण

लीढो व्योषवरान्वितो विमलको युक्तौ घृतैः सेवितो हन्याद् दुर्भगकृज्ज्व–राञ्श्वयथुकं पांडुप्रमेहारुचीः । भूलार्ति ग्रहणीं च शूलमतुलं यक्ष्मामयं कामलां सर्वान्पित्तमरुद्गदान्किमपरैर्योगैरशेषामयान् ।।९३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–रौप्यमाक्षिक को त्रिकुटा, त्रिफला और घृत के साथ सेवन करने से भूतादि से उत्पन्न हुआ ज्वर, शोथ, पांडुरोग, प्रमेह, अरुचि, ववासीर, संग्रहणी, शूल, राजरोग, कामला और सब तरह के वात पित्त के रोग नाश हो जाते हैं और २ अनुपानों से अनेक रोगों का नाशक है।।९३।।

अथ शिलाजीत की उत्पत्ति और गुण

ग्रीष्मे तीव्रार्कतप्तेभ्यः पादेभ्यो हिमभूभृतः ।। स्वर्णरूप्यार्कगर्भेभ्यः शिलाधातुर्विनिःसरेत् ।।९४।। स्वर्णगर्भगिरेर्जातो जपापुष्पनिभो गुरुः ।। स स्वल्पतिक्तः सुस्वादुः परमं तद्रसायनम् ।।९५।। रूप्यगर्भगिरेर्जातं मधुरं पाण्डुरं गुरु ।। शिलाजं पित्तरोगघ्नं विशेषात्पाण्डुरोगहृत् ।।९६।। ताम्रगर्भगिरेर्जातं नीलवर्णं घनं गुरु ।। शिलाजं कफवातघ्नं तिक्तोष्णं क्षयरोगहृत ।।९७।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–ग्रीष्म ऋतु में जब सूर्य की किरणों से हिमालय पर्वत के सोना, चांदी और तांबे के पाषाण तप जाते हैं तब उनमें शिलाजीत निकलता है, जिनमें सुवर्ण पाया जाता है, उन पाषाणों में जो शिलाजीत निकलता है, वह जपापुष्प के समान लाल, भारी कुछ कडुआ, मीठा होता है और वह रसायन है, जिनमें चांदी रहती है, उन पाषाणों में उत्पन्न हुआ शिलाजीत मीठा, सफेद और भारी होता है, यह शिलाजीत पित्तरोग का नाशक तथा विशेषकर पांडुरोग का नाश करता है और ताम्र के पाषाणों से निकला हुआ शिलाजीत नीली रंगत का कठोर और भारी होता है। वह कफ और वात का नाशक है। कडुआ गरम और राजरोग का नाशक है।।९४–९७।।

शिलाजीत के भेद

शिलाधातुर्द्विधा प्रोक्तो गोमूत्राद्यो रसायनः ।। कर्पूरपूर्वकश्चान्यस्तत्राद्यो द्विविधः पुनः ।। ससत्त्वश्चैव निःसत्त्वस्तयोः पूर्वो गुणान्वितः ।।९८।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–शिलाजीत दो प्रकार का है, एक गोमूत्रगंधी और दूसरा कर्पूरगंधी, उन दोनों में गोमूत्रगन्धी दो प्रकार का है–एक सत्त्ववाला और दूसरा बिना सत्त्व का, इन दोनों में सत्त्ववाला शिलाजीत अधिक गुणवाला होता है।।९८।।

शिलाजीत की परीक्षा

वह्नौ क्षिप्तं भवेद्यत्तल्लिंगाकारमधूमम् । सलिलेऽथ त्रिलीनं तच्छुद्धं हि शिलाजतु ।।९९।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–शिलाजीत को अग्नि पर डालने से लिंग के समान आकार होता है और धूआं भी नहीं होता और उस भस्म को जल में गेरने से गल जाता है अर्थात् जल के ऊपर डालने से नीचे लाल रंग की किरने सी हो जाती है।।९९।।

शिलाजीत के गुण

नूनं सज्वरपांडुरोगशमनं मेहाग्निमान्द्यापहं मेदश्छेदकरं च यक्ष्मशमनं शूलामयोन्मूलनम् ।। गुल्मप्लीहविनाशनं जठरहृच्छूलघ्नमामापहं सर्वत्वग्गद नाशनं किमपरं देहे च लोहे हितम् ।।१००।। रसोपरससूतेन्द्ररसलोहेषु ये गुणाः ।। वसन्ति ते शिलाधातौ जरामृत्युजिगीषया ।।१०१।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–शिलाजीत ज्वर, पांडुरोग और सूजन को शान्त करनेवाला, प्रमेह, मन्दाग्नि का नाशक, वायगोला, तिल्ली, उदररोग, हृदय का शूल और आम का नाशकारक है। मेद को उखाड़नेवाला, राजरोग का नाशक, देह का हितकारक नहीं है। रस, उपरस, पारद और धातुओं में जो गुण पाये जाते हैं वे गुण जरा और मृत्यु के नाश के लिये इस शिलाजीत में रहते है।।१००।।१०१।।

शिलाजीत की शुद्धि

क्षाराम्लगोजलैर्धौतं शुद्धयत्येव शिलाजतु ।।१०२।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–जवाखार, कांजी तथा गोमूत्र इन तीनों को एकत्र कर लेवे उससे शिलाजीत को धोवे तो शुद्ध हो जायेगा।।१०२।।

तथा च

शिलाधातुं च दुग्धेन त्रिफलामार्कवद्रवैः ।। लोहपात्रे विनिक्षिप्य शोधयेदतियत्नतः ।।१०३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–एक लोहे के पात्र में दूध, त्रिफला का क्वाथ और जलभंगरे का रस भरकर उसमें शिलाजीत मिलाय धूप में रख देवे, इस प्रकार करने से जो उत्तम शिलाजीत होगा, वह ऊपर आ जायेगा, नीचे उसकी कीट रह जायेगी। इस तरह तीन बार करने से शिलाजीत शुद्ध होता है।।१०३।।

तथा च

क्षाराम्लगुग्गुलोपेतैः स्वेदनीयंत्रमध्यगैः ।। स्वेदितं घटिकामानाच्छिला–धातुर्विशुध्यति ।।१०४।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–एक हांड़ी में कांजी भरकर उसमें जवाखार, नींबू का रस और गूगल मिलाय दोलायंत्र द्वारा एक घड़ी (२४ मिनट) तक स्वेदन करे तो शिलाजीत शुद्ध होता है।।१०४।।

शिलाजीतभस्म

शिलया गन्धतालाभ्यां मातुलुंगरसेन च ।। पुटितं हि शिलाधातुर्म्रियतेऽष्टा गिरिण्डकैः ।।१०५।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–मैनसिल, गंधक और हरताल इन तीनों को एक तोला लेकर और सोलह तोले शिलाजीत के साथ घोटे फिर आठ कंडों की आंच में फूंक देवे तो शिलाजीत की भस्म होगी।।१०५।।

शिलाजीत की भस्म के गुण

भस्मीभूतशिलोद्भवं समतुलं कान्तं च वैक्रान्तकं युक्तं च त्रिफलाकटुत्रिकघृतैर्वल्लेन तुल्यं भजेत् ।। पांडौ यक्ष्मगदे तथाग्निसदने मेहेषु मूलामये गुल्मप्लिहिमहोदरे बहुविधे शूले च योन्यामये ।।१०६।। सेवेत यदि षण्मासं रसायनविधानतः ।। वलीपलितनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतं सुखी ।।१०७।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–शिलाजीत की भस्म के समान कांतिसार और वैक्रान्तभस्म को लेकर घोट शीशी में भर लेवे उसमें से एक रत्ती भर त्रिफला, त्रिकुटा और घृत के साथ पांडु, राजरोग, मन्दाग्नि, प्रमेह, बवासीर, बायगोला, तिल्ली, उदरवृद्धि अनेक प्रकार के शूल तथा योनिरोग से सेवन करे, जो मनुष्य रसायन विधि से शिलाजीत को छः मास तक सेवन करे तो वलीपलित से रहित होकर सुख से सौ वर्ष जीवे।।१०६।।१०७।।

शिलाजीत के सत्त्वपातन की विधि

पिष्टं द्रावणवर्गेण साम्लेन गिरिसम्भवम् । क्षिप्त्वा मूषोदरे रुद्ध्वा पक्वैधर्मातं हि केवलम् ।। सत्त्वं मुञ्चेच्छिलाधातुस्तत्क्षणाल्लोहसन्निभम् ।।१०८।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–गुड़, गूगल, चौंटनी, घृत, शहद, सुहागा और नींबू का रस इनके साथ शिलाजीत को पीसकर मूषा में रख और कपरौटी कर कोयलों में पकावे तो लोह के समान सत्त्व निकलता है।।१०८।।

कपूरगन्धाशिलाजीत के गुण

पांडुरं सिकताकारं कर्पूराद्यं शिलाजतु ।। मूत्रकृच्छ्राश्मरीमेहकामला–पाण्डुनाशनम् ।।१०९।। एलातोयेन सम्भिन्नं सिद्धं शुद्धिमुपैति तत् ।। नैतस्य मारणं सत्त्वपातनं विहितं बुधैः ।।११०।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–जिसमें कपूर के समान गन्ध आवे उसको कर्पूरगन्धि कहते हैं, वह कुछ पीले रंग का और रेत के समान बिखरा हुआ होता है। वह मूत्रकृच्छ्र, पथरी, कामला और पांडुरोग का नाशक है, यह शिलाजीत इलायची के रस तथा क्वाथ में धोने से शुद्ध होता है, पंडितों ने इसका मारण तथा सत्त्वपातन नहीं कहा है।।१०९।।११०।।

सस्यक (नीलाथोथा) की उत्पत्ति

पीत्वा हालाहलं वान्तं पीतामृतगरुत्मता । विषेणामृतयुक्तेन गिरौ मरकताह्वये ।।१११।। तद्वान्तं हि घनीभूतं संजातं सस्यकं खलु ।। मयूरकण्ठसच्छायं भाराढ्यमतिशस्यते ।।११२।। द्रव्यं विषयुतं यत्तद्द्रव्याधिकगुणं भवेत् ।। हालाहलं सुधायुक्तं सुधाधिकगुणं तथा ।।११३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–श्रीगरुड़जी ने अमृतपान करने के पीछे हालाह विष खा लिया उस विष का वमन मरकत नाम के पर्वत पर हुआ जब वह वमन गाढ़ा हो गया उसको सस्यक कहते हैं, वह नीला, वजनदार अच्छा होता है जो पदार्थ विष से संयुक्त है अर्थात् जिस पदार्थ में विष मिला हुआ है वह पदार्थ अधिक गुणवान् हो जाता है। इसी प्रकार अमृत से मिला हुआ हालाहल भी अमृत से अधिक गुणवाला होता है।।१११–११३।।

सस्यकगुण

निःशेषदोषविषहृद्गदशूलमूलकुष्ठाम्लपैत्तिकविबन्धहरं परं च ।। रसायनं वमनरेककरं गरघ्नं श्वित्रापहं गदितमत्र मयूरतुत्थम् ।।११४।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–नीलाथोथा समस्त दोष और विष को दूर करता है, हृदय के रोग, शूल, बवासीर, कोढ़, अम्लपित्त, कब्ज को हरनेवाला; वमन (कै) दस्त के करनेवाला, श्वेत कोढ़ का नाशक और रसायन है।।११४।।

नीलेथोथे की शुद्धि

सस्यकं शुद्धिमाप्नोति रक्तवर्गेण भावितम् ।। स्नेहवर्गेण संसिक्तं सप्तवारमदूषितम् ।।११५।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–नीलेथोथे को रक्तवर्ग (कसूम, कत्था, लाख, मजीठ, लालचंदन, रतनजोत, दुपहरिया का फूल) से सात बार भावना देवे और सात ही बार स्नेहवर्ग से तर कर लेवे अर्थात् घृत को खूब गरम कर नीलेथोथे में डाल देवे फिर नितार लेवे, तदनंतर कांजी में औटाकर काम में लावे, यह नीलेथोथे की शुद्धि का प्रकार है।।११५।।

तथा च

दोलायंत्रेण सुस्विन्नं सस्यकं प्रहरत्रयम् ।। गोमहिष्यजमूत्रेषु शुध्यते तुत्थखर्परम् ।।११६।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–नीलेथोथे को गाय, भैंस, बकरी के मूत्र में दोलायंत्र द्वारा तीन प्रहर स्वेदन करे तो नीलाथोथा और रसखपरिया शुद्ध होगा।।११६।।

नीलेथोथे की भस्म

लकुचद्रावगन्धाश्मटंकणेन समन्वितम् ।। निरुध्य मूषिकामध्ये म्रियते कौक्कुटैः पुटैः ।।११७।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–दो तोला गन्धक और दो ही तोला सुहागा इन दोनों से दूना नीलाथोथा लेकर बिजोरे के रस से घोटे और मूंषा में रख तीन बार कुक्कुट पुट देता रहे, प्रत्येक पुट में गन्धक और सुहागा मिलाता जावे।।११७।।

सस्यक के सत्वपातन की विधि

सस्यकस्य च चूर्णं तु पादसौभाग्यसंयुतम् ।। करंजतैलमध्यस्थे दिनमेकं निधापयेत् ।।११८।। अन्धमूषास्यमध्यस्थं ध्मापयेत्कोकिलात्रयम् ।। इन्द्रगोपाकृतिं चैव सत्त्वं भवति शोभनम् ।।११९।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–नीलेथोथे के चूर्ण में चौथाई सुहागा मिलाकर करंजुड के तैल से एक दिवस पर्यन्त भावना देवे फिर दूसरे दिन अन्धमूषा में रख कोयलों की अग्नि में धोंके तो वीरबहूटी के समान लाल सत्त्व निकलता है।।११८।।११९।।

तथा च

निम्बुद्रवाल्पटंकाभ्यां मूषामध्ये निरुध्य च ।। ताम्ररूपं परिध्मातं सत्त्वं मुंचति सस्यकम् ।।१२०।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–नीलेथोथे में कुछ सुहागा डाल नींबू के रस से घोट मूषा में रख कपरोटी कराय कोयलों की आंच में धोंके तो तांबे के समान सत्व निकलेगा।।२०।।

तथा च

शुद्धं सस्यं शिखिक्रान्तं पूर्वभेवजसंयुतम् ।। नानाविधानयोगेन सत्त्वं मुंचति निश्चितम् ।।१२१।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–नीलाथोथा एक भाग, शिखिक्रान्त एक भाग और चौथाई भाग सुहागा डालकर नींबू के रस से घोटे फिर मूषा में रखकर कोयलों की आंच में रख धोंके तो निश्चय सत्त्व निकलता है।।१२१।।

सस्यकसत्त्व की अंगूठी की विधि

सत्त्वमेतत्समादाय खरभूनागसत्त्वयुक् ।। तन्मुद्रिका कृतस्पर्शा शूलघ्नी तत्क्षणाद्भवेत् ।।१२२।। चराचरं विषं भूतडाकिनीदृग्गतं जयेत् ।। मुद्रिकेयं विधातव्या दृष्टप्रत्ययकारिणी ।।१२३।। "रामवत्सुरसेनानी मुद्रितेपि तथाक्षरम् ।। हिमालयोत्तरे पार्श्वे अश्वकर्णो महाद्रुमः ।।१२४।। तत्र शूलं समुत्पन्नं तत्रैव विलयं गतम् ।।" यंत्रेणानेन मुद्राम्भो निपीतं सप्तमस्त्रितम् ।।१२५।। सद्यः शूलहरं प्रोक्तमिति भालुकिभाषितम् ।। अनया मुद्रया तप्तं तैलमग्नौ सुनिश्चितम् ।।१२६।। लेपितं हन्ति वेगेन शूलं यत्र क्वचिद्भवेत् ।। सद्यः सूतिकरं नार्य्याः सद्यो नेत्ररुजापहम् ।।१२७।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–नीलेथोथे का सत्व और भूनाग (गिंडोआ) का सत्व इन दोनों को समान भाग लेकर और गलाय कर अंगूठी बनवा लेवे, उस अंगूठी के छूने से ही नया शूल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। स्थावर जंगम विष चढ़ गया हो तथा भूत और डाकिनी लग गई हो तो इस अंगूठी को दिखावे, छुवावे और इससे जल को अभिमंत्रित कर पिलावे तो विष और भूतादि दूर हो जाते हैं, जिसका चमत्कार देखा हुआ है, ऐसी अंगूठी को वैद्य अपने पास अवश्य रखे और "रामवत्" इत्यादि मंत्र को सात बार पढ़कर जल को मंत्रित कर पिलावे तो शीघ्र ही शूल दूर होता है, ऐसा भालुकी नाम के ऋषि ने कहा है और इस अंगूठी को तपाकर तिलों के तैल में गेर देवे, उस तैल को जहां शूल हैं वहीं लगावे तो शूल नष्ट होगा, जब स्त्री के बालक उत्पन्न होने का समय समीप आ गया हो और प्रसव में कष्ट हो तब इस तैल को उदर बस्ति तथा योनि द्वार पर चुपड़े और अंगूठी को जल में धोकर पिलावे तो शीघ्र बालक होगा और नैत्रों में पीड़ा हो तो जल से आंखो को धोवे और तेल चुपड़ें।।१२२–१२७।।

चपल की उत्पत्ति

त्रिंशत्पलमितं नागं भानुदुग्धेन मर्दितम् ।। विमर्द्य पुटयेत्तावद्यावत्कर्षावशेषितम् ।।१२८।। न तत्पुटसहस्रेण क्षयमायाति सर्वथा ।। चपलोऽयं समाख्यातो वार्तिकैर्नागसंभवः ।।१२९।। इत्थं हि चपलः कार्यो वङ्गस्यापि न संशयः ।। द्वयोर्मिश्रितयोः पूर्वं चपलः किल वर्णितः ।।१३०।।

(रसमानस)

अर्थ–तीस पल शुद्ध नाग (सीसा) को लेकर आक के दूध में घोटे फिर गजपुट में रखकर फूँक देवे, इसी प्रकार फूंकते फूंकते जब एक पल भर रह जाय तब उसको चाहे हजारों ही पुट क्यों न दो तो भी वह घटेगा नहीं। इसी बचे हुए नाग को शास्त्रकार चपल कहते हैं और यह चपल गागसम्भव कहाता है, इसी प्रकार वंग का भी चपल हो सकता है, नाग और वंग इन दोनों को मिलाकर भी चपल बनाया जाताहै, ऐसा हम पहिले लिख चुके हैं।।१२८–१३०।।

चपल की व्युत्पत्ति

वङ्गवद्द्रवते वह्नौ चपलस्तेन कीर्तितः ।।१३१।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–यह चपल अग्नि पर रखने से रांग के समान पिघल जाता है, इसलिये वैद्य इसको चपल कहते हैं।।१३१।।

चपल के भेद और उत्तमता

गौरः श्वेतोऽरुणः कृष्णश्चपलस्तु चतुर्विधः ।। हेमाभश्चैव ताराभो विशेषाद्रसबन्धनः ।। शेषौ तु मध्यो लाक्षावच्छीघ्रद्रावौ तु निष्फलौ ।।१३२।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–गोरा, सफेद, लाल और काला इस प्रकार चपल चार रंग का है, उनमें से गोरा और सफेद चपल विशेषकर पारद का बंधक है, शेष दोनों लाख के समान शीघ्र गलनेवाले होते हैं इसलिये निष्फल हैं।।१३२।।

चपल का गुण

चपलो लेखनः स्निग्धो देहलोहकरोः मतः ।। रसराजसहायः स्यात्तिक्तोष्ण-मधुरो मतः ।।१३३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–चपल कफ और मल का उखाड़नेवाला है, चिकना है, देह को लोहे के समान करनेवाला है, कडुआ, गरम और मीठा तथा पारद की सहायता करता है।।१३३।।

तथा च

चपलः स्फटिकच्छायः षडस्त्री स्निग्धको गुरुः ।। त्रिदोषघ्नोऽतिवृष्यश्च रसबन्धविधायकः ।।१३४।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–चपल बिल्लोरी पत्थर के समान सफेद चिकना भारी त्रिदोष का नाशक बलकारी और रस का बंधक है।।१३४।।

चपल की शुद्धि

जम्बीरकर्कोटकशृङ्गबेरैर्विभावनाभिश्चपलस्य शुद्धिः ।।१३५।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–चपल की जंभीरी, बांझककोड़ा और अदरख की अनेक भावना (या तीन तीन भावना) देने से शुद्धि होती है।।१३५।।

चपल के सत्त्वपातन की विधि

शैलं तु चूर्णयित्वा तु धान्याम्लोपविषैर्विषैः ।। पिण्डं बद्ध्वा तु विधिवत्पातयेच्चपलं तथा ।।१३६।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–चपल को विष (सींगिया) तथा उपविष इन दोनों के क्वाथ से घोट विष (वत्सनाग) और उपविष इन दोनों का क्वाथ और उसके बराबर कांजी मिलावे उससे चपल को घोट कर गोला बनाय लेवे, उस गोले को मूषा में रख कोयलों की आंच में फूंक देवे तो भस्म होगी, उसी को सत्त्व कहते है।।१३६।।

महारसों में चपल की संख्या

महारसेषु कैश्चिद्धि चपलः परिकीर्तितः ।।१३७।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–किसी किसी वैद्य ने चपल को महारसों में माना है।।१३७।।

खपरिया के भेद और उत्तमता

रसको द्विविधः प्रोक्तो दर्दुरः कारवेल्लकः । सदलो दर्दुरः प्रोक्तो निर्दलः कारवेल्लकः ।। सत्त्वपाते शुभः पूर्वो द्वितीयश्चौषधादिषु ।।१३८।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–खपरिया दो प्रकार का होता है एक दर्दुर और दूसरे कालवेल्लक जो दलदार होना है उसे दर्दुर कहते है और दलदार नहीं होता उसको कालवेल्लक कहते हैं। सत्वपातन में दर्दुर और औषधिदिकों में कारवेल्लक उत्तम होता है।।१३८।।

खपरिया के गुण

रसकः सर्वमेहघ्नः कफवातविनाशनः । नेत्ररोगक्षयघ्नश्च लोहपारदरंजनः ।।१३९।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–खपरिया समस्त प्रमेह, कफ और पित्त के रोगों के नाश करता है, नेत्ररोग और क्षय का नाशक है, लोह और पारद का रंगनेवाला है।।१३९।।

रस और रसक की उत्तमता

नागार्जुनेन संदिष्टौ रसश्च रसकावुभौ ।।
श्रेष्ठौ सिद्धरसौ ख्यातो देहलोहकरौ परम् ।।१४०।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–श्रीनागार्जुन से उपदेश किये हुए रस और रसक ये दोनों ही उत्तम देह को लोहे के समान करनेवाले सिद्ध रस हैं।।१४०।।

अग्निस्थायी रस और रस की उत्तमता

रसश्च रसकश्चोभौ येनाग्निसहनौ कृतौ ।।
देहलोहमयी सिद्धिर्दासी तस्य न संशयः ।।१४१।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–जिस मनुष्य ने रस और रसक को अग्निस्थायी किया है उसकी देह को लोह के समान बना देनेवाली सिद्धि उसकी दासी हो जाती है इसमें सन्देह नहीं है।।१४१।।

खपरिया की शुद्धि

कटुकालांबुनिर्यासे आलोड्य रसकं पचेत् ।।
शुद्धं दोषविनिर्मुक्तं पीतवर्णं च जायते ।।१४२।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–रसखपरिया को कड़वी तोंबी के रस में घोलकर पकावे तो सब दोषों से रहित होकर खपरिया पीले रंग का शुद्ध होता है।।१४२।।

तथा च

खर्परः परितप्तः सप्तवारं निमज्जितः ।।
बीजपूररसस्यान्तर्निर्मलत्वं समश्नुते ।।१४३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–रसखपरिया को तपा २ कर बिजोरे के रस में बुझावे इस प्रकार सात बार बुझाने से खपरिया शुद्ध होता है।।१४३।।

तथा च

नृमूत्रे वाऽश्वमूत्रे वा तक्रे वा कांजिकेऽथवा ।।
प्रताप्य मज्जितं सम्यक् खर्परं परिशुध्यति ।।१४४।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–मनुष्य के मूत्र में, वा घोडे के मूत्र में, मट्ठा में अथवा कांजी में खपरिया को तपा तपा कर बुझावे तो निश्चय ही खपरिया शुद्ध होगा।।१४४।।

तथा च

नरमूत्रे स्थितो मासं रसको रंजयेद्ध्रुवम् ।।
शुद्धं ताम्रं रसं तारं शुद्धवर्णप्रभं यथा ।।१४५।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–खपरिया को एक मास तक मनुष्य के मूत्र में रखे तो शुद्ध तांबे को पारद को और चांदी के सुवर्ण के समान रंग देता है।।१४५।।

रसखपरिया के सत्त्वपातन की विधि

हरिद्रात्रिफलारालसिन्धुधूमैः सटंकणैः । सारुष्करैश्च पादांशैः साम्लैः संमर्द्य खर्परम् ।।१४६।। लिप्तं वृन्ताकमूषायां शोषयित्वा निरुध्य च । मूषामुखोपरि न्यस्य खर्परं प्रधमेत्ततः ।।१४७।। खर्परे प्रहृते ज्वाला भवेन्नीला सिता यदि । तदा संदंशतो मूषां धृत्वा कृत्वा त्वधोमुखीम् ।।१४८।। शनैरास्फालयेद्भूमौ यथा नालं न भज्यते । वंगाभं पतितं सत्त्वं समादाय नियोजयेत् ।। एवं त्रिचतुरैर्वारैः सर्वसत्त्वं विनिःसरेत् ।।१४९।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–हलदी, त्रिफला, राल, सैंधव, धूवां, सुहागा और भिलावा इन सबको खपरिया से चौथाई भाग लेकर नींबू के रस में डाल घोट लेवे वृन्ताक मूषा में लेपकर सुखा लेवे उसके मुख पर खिपरा रख उसमें कोयले जलावे फिर जब खिपरा उठाकर देखे कि ज्वाला नीली या सफेद निकले तब चिपटे से मूषा को निकाल नीचा मुख पर धीरे से ठोक देवे कि जिस प्रकार उसकी नाली टूटने न पावे तो उसमें से जो रांग के समान निकले उसे खपरिया का सत्त्व कहते हैं उसको लेकर समस्त कामों में लावे इस प्रकार तीन चार बार में ही सब सत्व निकल आवेगा।।१४६।।१४९।।

तथा च

साभयाजतुमूनागनिशाधूमजटंकणम् ।

मूकमूषागतं ध्मातं शुद्धं सत्त्वं विमुंचति ॥१५०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–हर्र, लाख, गिडोआ, हलदी, धूवां और सुहागा इनको चौथाई भाग लेकर और उसमें खपरिया डाल नींबू के रस से घोट मूषा में रख कोयलों में धोंके तो सत्त्व निकलेगा॥१५०॥

तथा च

लाक्षागुडासुरीपथ्याहरिद्रासर्जटंकणैः । सम्यक् संचूर्ण्य तत्पक्वं गोदुग्धेन घृतेन च ॥१५१॥ वृन्ताकमूषिकामध्ये निरुध्य गुटिकाकृतिम् । कृत्वा ध्मात्वा समाकृष्य ढालयित्वा शिलातले । सत्त्वं वंगाकृति ग्राह्यं रसकस्य मनोहरम् ॥१५२॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–लाख, गुड़, राई, हर्र, हलदी, राल और सुहागा इनके चूर्ण से चौगुना खपरिया का चूरा लेकर गाय का घृत तथा दूध में पकाकर गोला बनाय मूषा में रखकर कोयलों में धोंककर नीली ज्वाला निकलने पर पत्थकर की पाटिया पर ढाल देवे तो वंग के समान सत्व निकलेगा वह खपरिये का उत्तम सत्व होगा॥१५१॥१५२॥

तथा च

यद्वा जलयुतां स्थालीं निखनेत्कोष्ठिकोदरे । सच्छिद्रं तन्मुखे मल्लं तन्मुखेऽधोमुखीं क्षिपेत् ॥१५३॥ मूषोपरि शिखित्राश्च प्रक्षिप्य प्रधमेद्दृढम् । पतितं स्थालिकानीरे सत्त्वमादाय योजयेत् ॥१५४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अनुमान दस अंगुल चौडी और बीस अंगुल ऊंची मिट्टी या लोहे की नाल बनावे उसके नीचे एक जल का पात्र रख देवे और उस नाल के ऊपर छेदवाला सकोरा रख देवे और उस पर मूषा को उलटी रख कर ऊपर कोयले रख धोंकनी से धोंके तो जल के पात्र में गिरे हुए सत्त्व को निकाल लेवे॥१५३॥१५४॥

खपरसत्व के भस्म की विधि

तत्सत्त्वं तालकोपेतं प्रक्षिप्य खलु खर्परे ।
मर्दयेल्लोहदण्डेन भस्मीभवति निश्चितम् ॥१५५॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–उसके सत्व में चतुर्थांश हरताल मिलाकर खिपरे में रख लोहे की कडछी से घोंटे तो खपरिया का सत्व भस्म होगा॥१५५॥

रसखपरिया के अनुपान

तद्भस्मभृतकान्तेन समेन सह योजयेत् । अष्टगुंजामितं चूर्णं त्रिफलाक्वाथसंयुतम् ॥१५६॥ कान्तपात्रस्थितं रात्रौ तिलजप्रतिवापितम् । निषेवितं निहन्त्याशु मधुमेहमपि ध्रुवम् ॥१५७॥ पित्तं क्षयं च पांडु च श्वयथुं गुल्ममेव च । रक्तगुल्मं च नारीणां प्रदरं सोमरोगकम् । योनिरोगानशेषांश्च कासं श्वासं च हिध्मकाम् ॥१५८॥

(रसरत्नसमुच्चय)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबदीप्रसाद–
सूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराज–
संहितायां सत्त्वरसादीनां वर्णनं नामा–
ष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४८॥

अर्थ–ऊपर बनाये हुए सत्व के समान कान्तभस्म को लेकर लोहे के खरल में घोटे उसमें नित्यप्रति आठ रत्ती सेवन करे ऊपर से तिल के खर को पानी में मिलाय लोहे के पात्र में भर रात्रिभर ढांककर रख देवे वह जल तथा त्रिफला का क्वाथ इन दोनों को मिलाकर पीवें तो मधुमेह को भी नाश कर देता है, पित्त के रोग, क्षय, पांडु, सूजन, वायुगोला, रक्तगुल्म, स्त्रियों का प्रदर, सोमरोग, योनिरोग, कास, श्वास, और रजःशूल को नाश करता है॥१५६–१५८॥

१–रजःशूलम् इति पाठः ।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां
रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां सत्त्वरसादीनां वर्णनं नामाष्ट–
चत्वारिंशोऽध्यायः ॥४८॥

अभ्रसत्त्वाध्यायः ४९

अभ्रसत्त्वक्रिया नं० १

ता० १४/११/०७ को १ सेर धान्याभ्रक २ सेर कांजी में भिगो छाया में रख दिया, २ दिन रखा रहा (अभ्रक कांजी में मिलाते समय गाढ़ा रहा) रखा रहने से कांजी ऊपर आ गई और अभ्रक नीचे बैठ गया।

ता० १६ को सुखाने के लिये कांजी सहित धूप में रख दिया गया किन्तु सूखा नहीं।

ता० १७ को कांजी से पृथक् कर कपड़े पर डाल धूप में सुखा दिया।

ता० १८ को २॥ सेर जमींकंद के १ सेर ३ छ० स्वरस की १ भावना दी गई, अर्थात् दो बड़े स्याह पत्थर के खरलों में अभ्रक को डाल और रस डाल २ घंटे घोट सुखा दिया।

ता० १९ को २॥ सेर जमींकंद के १ सेर रस की दूसरी भावना दे २ घंटे घोट सुखा दिया।

ता० २० को सूखता रहा।

ता० २१ को केले की जड़ के १०॥ छ० स्वरस की भावना दे घंटे भर घोट सुखा दिया।

ता० २२ को केले की जड़ के ऽ॥ स्वरस की दूसरी भावना दे घंटे भर घोट सुखा दिया।

ता० २३ को केले की जड़ के ऽ॥ स्वरस की तीसरी भावना घंटे भर घोट सुखा दिया।

ता० २४ को सूखता रहा ता० २९ तक सूखा।

ता० २९ को खरल से निकाल हाथों से मीड तारों की चलनी में छान तोला तो १ सेर २॥ छ० हुआ।

ता० ७/१.२ को उक्त १ सेर २॥ छ० अभ्रक में से ९ छ० अभ्रक और ९ छ० मछलियों का चूर्ण (जो १। सेर छोटी मछलियों को सुखा कूट चलनी में छान ९ छ० ही तैय्यार हुआ था) २। छ० सुहागा पिसा चौकी का और १८ छ० भैंस का गोबर सबको मिला टिकिया बनानी चाही तौ ठीक न बनती थी इस वास्ते उसमें ऽ॥ के करीब कच्चा दूध मिला आटे की तरह गूंदे बड़े गूलर की बरावर गोली सी वना धूप में सुखा दी।

ता० २ जनवरी तक सूखती रही सूख जाने पर तोला तौ १॥ सेर हुई (१। सेर औषधि चूर्ण और ऽ१। सेर गोबर का सूखकर १॥ सेर रहा)।

अभ्रसत्त्वक्रिया नं० २

ता० १३/१२/०७ को उक्त अवशेष ९॥ छ० अभ्रक से ९॥ छ० कुटी छनी तिलकी खल, २। छ० पिसा सुहागा मिला ककरोंदा और खरतुआ का आध आध सेर रस डाल खूब मलकर सान टिकिया बना सुखा दीं।

ता० २/१ तक टिकिया सूखती रहीं, सूख जाने के बाद तोला तौ १ सेर ३॥ छटांक हुई (१। सेर का सूखकर १ सेर ३॥ छटांक रहा)।

अभ्रसत्त्वक्रिया नं० ३

ता० २३–११–७–१० छटांक ४ तोले अभ्रक को जिस पर द्रुति उद्योग किया गया था, अर्थात् जिसको पहली बार ४। सेर सिरके में घोल शीशे में भर ४० दिन तक लीद से पूरित गढ़े में गाड़ दिया था दूसरी बार ३ सेर सिर के घोल ४० दिन गोबर में गाड़ा गया था केले की जड़ के १। सेर से भावित कर घोट धूप में सुखा दिया, ता० २८ तक सूखा।

ता० २९ को हाथों से मीड तारों की चलनी से छान तोला तो ११।। छ० हुआ।

ता० १६ दिसम्बर को उक्त ११।। छटांक अभ्रक में १२ छ० तिल की खल, ३ छ० सुहागा, १।। छ० सज्जी, १।। छ० सामर, राल, पीपल की लाख, चिर्मिटी, गूगल, गुड़, शहद, घी, सब पौन पौन छटांक, ऊन १/२ छ०, दूध १।। सेर डाल खूब गूंद छोटी छोटी टिकिया बना सुखा दी।

(नोट–सूखी चीजें बारीक कर डाली गईं। गुड़, शहद, घी, गरम दूध में मिला डाले गये, ऊन बारीक कतर धुनवा कर डाला फिर भी मुश्किल से मिला)

ता० २ जनवरी तक टिकियों को सूख जाने पर तोला तो २ सेर ३।। छ० हुई (२ सेर ३।। छ० चूर्ण का सूखकर २ सेर ३।। छ० ही रहा)

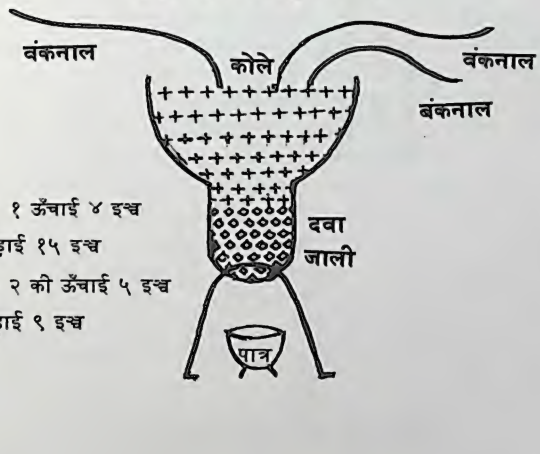
अभ्रसत्त्व के लिये चलनी

ता० ९/२/८ को ऽ।। सेर खरिया मिट्टी को इमामदस्त में थोड़ा पानी डाल कूटा, २ घंटे बाद उसमें ऽ। पाव भर फायरक्ले (आग की मिट्टी, अर्थात् एक प्रकार की श्वेत मृत्तिका जो आंच में पिघल न सके) जली हुई (अर्थात् सिकंदरे की ग्लासफेनटरी में कांची की भट्ठियों में काम में आ चुकी थी) मिला दोनों को खूब कूटते रहे।

ता० १० को इमामदास्ते में ठीक न कुटने के कारण पत्थर पर लोहे के हथोड़े से कूटा और १ तोले नामे को खूब विचूर कर थोड़ा २ कर उसमें डाल दिया और करीब ७–८ घंटे कूटा।

ता० १२ को लोहे की रकाबियों पर पाथ कर चलनी बना ली।

अभ्रसत्त्वपातन भट्ठी नं० १



नं० १ ऊँचाई ४ इञ्च
चौड़ाई १५ इञ्च
नं० २ की ऊँचाई ५ इञ्च
चौड़ाई ९ इञ्च

ता० १०/३/८ को उक्त नं० २ की १ सेर ३।। छ० टिकियों में से प्रथम १०। छ० टिकियों को उक्त भट्ठी में जिसका नकशा ऊपर दिया गया है चलनी पर रख ऊपर इतने कोयले लगाये कि भट्ठी के दोनों खाते ऊपर तक भर गये, नीचे कटोरा रख दिया गया, बादको ३ धोंकनियों से कड़ा धोंकना आरम्भ किया, १ घंटे तीव्राग्नि लगने के बाद धोंकना बंद कर नीचे की मिट्टी के कटोरे को निकाला, तो उसमें सिवाय कोयलों को थोड़े चूरे के कुछ न निकला, ऊपर के कोयलों को निकाल दवा को निकाला तो ऊपर की करीब आधी टिकियों का गलकर काली हरी रंगत का खंगरसा बन गया था और कुछ दानेसे भी बन गये थे, और बाकी नीचे की टिकियां भी आंच खाकर हलकी तो हो गई थी किन्तु पिघली न थी कारण यह हुआ कि भट्ठी के दोनों खाने कोयलों से भर देने से और धोंकनियों के नाल ऊंचे रहने से नीचे के खाने में ऊपर की बनिस्वत आंच कम बैठी।

दूसरा घान

दूसरी बार ५ छटांक टिकियों को उसी तरह से चलनी पर रखा और नं० १ पालिका में खांचा देकर धोंकनियों के नाल इतने नीचे कर दिये कि उनके मुँह नं० २ पालिका तक पहुँच गये और कोयले भी उसी नं० २ पालिका में भरे गये, बाद को २।। बजे के कड़ा धोंकना आरंभ किया, पौन घंटे बाद कोयले सम्हालने में लोहे के गज से चलनी टेढी हो गई जिससे कुछ दवा नीचे गिर गई और कुछ चलनी पर रह गई अतएव काम बंदकर ऊपर नीचे की सब दवा को निकाला तो इस बार आंच अधिक लगने से टिकियों का काले रंग का खंगरसा बन गया था जिसमें पहले घान से चमक अधिक थी, और कुछ दाने से भी निकलते थे।

तीसरा घान

तीसरी बार २।। छ० टिकिया को उसी प्रकार जलनी पर रख ३ धोंकनियों से कड़ा धोंकना आरम्भ किया कोयले कम हो जाने पर और डालते गये, २ घंटे बाद जब चलनी पर दवा न दीख पड़ी तब धोंकना बंद कर दिया, नीचे के पात्र को निकाला तो उसमें कोई चीज न गिरी थी, कोयलों को अलग कर चलनी को निकाला तो कुल दवा पिघल कर चलनी के ऊपर फैलकर कठिन रूप हो गई थी और कुछ चलनी छिद्रों में भर गई थी जिससे छिद्र बंद हो गये थे चलनी से इस दवा को अलग रखना चाहा तो चलनी टूट गई किन्तु दवा का पृथक् होना कठिन हुआ, छिद्रों में समाये हुए कुछ दानों को निकाला तो ये बहुत चमकदार काले रंग के निकले।

(१) सम्मति–जहां तक समझ में आता है भट्ठी की पालिका चौड़ी होने के कारण और धोंकनियों का मुँह ऊंचा न रहने के कारण आंच तीव्र न हुई, और इसकी वजह से ये सब खंगर ही बने सत्त्व न निकला।

(२) सम्मति–जो दाने ज्वार, बाजरे, मक्का से इन तीनों घानों में से निकले उनको चुंबक नहीं पकड़ता था, किन्तु उन दानों को पीस कर उसमें चुंबक लगाने से कुछ बारीक रवे लोहे के चिपट आते थे, इससे भी जान पड़ता है कि सत्त्व पृथक् नहीं हुआ चुंबक की सहायता से सत्त्व पृथक् किया तो निम्न लिखित फल हुआः

अभ्रसत्त्व के ३ घानों का नकशा

नं० घान	तोल दवा जितनी रखी गई	तोल दवा गली हुई जितनी निकली	तोलसत्व	विशेष वार्ता
				इस दवामें २४ तोले अभ्रक था
१ घान	१०। छ०	टिकियां ३ छ.		
		अधजली टि० १ छ०		
		छोटे खंगर ३ तोले	२ रत्ती	
		बड़े दाने ९ मा०	१ रत्ती	
		छोटे दाने ११ मा०	२ रत्ती	
		दूसरे छोटेदाने खूबसूरत ४ मा०	२ रत्ती	दवाकी तोल आधी रहगई
		मीजान ५ छ०	मीजान ७ रत्ती	इस दवामें १२तो०अभ्रक था
		कम चमकदार जले से खंगर	५ रत्ती	
		६ तो० ७ मा०		
		चमकदार खंगर ५तो०३मा०	४ रत्ती	
		छोटे दाने ६रत्ती	१/२ रत्ती	
		मीजान	मीजान	
२ घान	५ छ०	तो०मा० र०	१मा० १॥र०	
		११–१०–६		इस दवामें तो० अभ्रक था
		बड़े खंगर१तो०	२ रत्ती	
		६मा० ४र०		
		खंगरसे दाने ६मा०६र०	१/२ रत्ती	
		छोटे दाने१मा०	१/२ रत्ती	
		चलनीपर जमा हुआ	१/२ रत्ती	
३ घान	२॥ छ०	१२ तोले		चलनीकी मिट्टी मिलजाने से सत्त्व
		मीजान	मीजान	
		१४तो०२मा०२र०	३ रत्ती	
			मीजान कुल सत्त्व	
			२मा० ३॥र०	

अभ्रसत्त्वपातन, चौथाघान भट्टी नं० २



ता० ५ तो उक्त नं० ३ की २ सेर ३॥ छ० टिकिया में से ३ छटांक टिकियों को दूसरी भांति की बनी हुई भट्टी में (जिसका नकशा ऊपर दिया गया है और जिसकी चौड़ाई ६ इंच और लम्वाई १४ इंच थी) चलनी पर इस तरह रखा कि प्रथम चलनी पर करीब ६ अंगुल कोयले भंर लिये और कोयलों पर दवा रख दी और दवा के ऊपर फिर कोयले भट्टी के मुँह तक भर दिये, भट्टी के नीचे मिट्टी का पात्र रख दिया गया, बाद को ४ धोंकनियों से कड़ा धोंकना आरंभ किया ३/४ घंटे बाद धोंकना बंद कर नीचे के पात्र को निकाला तो उसमें कोयलों की राख में मिले हुये दो चार दाने ज्वार बाजरा से निकले, चलनी पर के कोयलों को निकाला तो उसमें भी कुछ दाने निकले और कुछ खंगर निकले, जिन दानों को चुंवक ने पकड़ा वह २ माशे ५ रत्ती हुये, उनको अलग रख दिया, वाकी दानों को और खंगरों को जो तोल में ५ तोले ११ माशे २ रत्ती थे लोहे के खरल में दरदरा पीस लिया फिर उसमें बार २ चुंवक फिराने से जितना चूर्ण चुंवक पर चिपटता गया था अलग रखते गये, इस तरह ३ माशे २ रत्ती सत्त्व और हाथ लगा, अर्थात् अब तक ५ माशे ७ रत्ती सत्त्व निकला और ५ तोले ८ माशे खंगरों का चूर्ण रह गया। भट्टी के तोड़ने पर १७ तोले मटैले खंगर भट्टी से चिपटे हुये निकले और ११ तो० चमकदार खंगर भट्टी से जुड़े किन्तु छज्जे की तरह चिपटा और छिद्रों में भरा मिला, १॥ तोले दाने भट्टी के नीचे बिखरे हुये मिले भट्टी तोड़ने पर निकले, सब खंगरों को और दानों को पृथक् पृथक् खरल में पीस चुम्बक द्वारा सत्त्व पृथक् किया तो १७ तोले ६ माशे भटैले खंगरों में से ५ रत्ती और ११ तोले चमकदारों में से १ माशे ७ रत्ती, चलनी के ऊपरवाले ३॥। तोले में से ५ माशे ५ रत्ती और भट्टी के नीचे के १॥ तोले दानों में से १ माशे ३ रत्ती सत्त्व निकला, अर्थात् इन पिछले खंगरों में से ९ माशे ४ रत्ती सत्त्व और निकला खंगरों का चूर्ण २१ तोले रह गया। ३ छटांक औषधि में से कुल सत्त्व १ तोला ३ माशे ३ रत्ती निकला और ७ छ० ४ तोले खंगरों का चूर्ण रह गया, सब मिलाकर ८ छटांक ३॥ माशे वजन हुआ, अर्थात् ५ छटांक बढ़ा जिससे सिद्ध हुआ कि भट्टी की मृत्तिका भी पिघल कर मिल गई थी।

अभ्रसत्त्व के चौथे घान का नकशा

नं० घान	तोल दवा जितनी रखी गई	तोलदवागली हुई जितनी निकली	तोलसत्त्व
४ घान	३छ० नं०३की	+	सत्वके दाने ३मा०५र०
		खंगर५तो०८मा०	३मा० ५र०
		भट्टीकेनीचेकेदाने १ तो०४मा०	१मा० ३र०
		चलनीपर लगे खंगर३॥।तो०	५मा० ५र०
		भट्टीकेचमकदार खंगर१२तो०	१मा० ७र०
		भट्टीकेकमचमकदार खंगर१७तो०	५रत्ती
		मीजान ७छ०३तो०१मा०	मीजान तो०मा०र० १–३–३

सम्मति–चलनी के लिये नीचे निकले और चलनी के ऊपर रहे खंगर और दानों में से सामान्य सत्व निकला और चलनी पर स्थित खंगर में सबसे अधिक सत्व निकला और भट्टी में लगे वा चिमटे खंगरों में सबसे कम निकला।

अभ्रसत्त्व के लिये चलनी

ता० ९/४/०८ को ऽ। सेर खरिया मिट्टी और ऽ। पावभर फायरक्ले जली हुई दोनों को मिला पानी डाल पत्थर पर हथोड़े से १ घंटे कूटा, बाद को १ तोले नामा विचूर कर उसमें डाल कूटते रहे, आज २ घंटे कुटाई हुई।

ता० १० को ४ घंटे और कूट लोहे की रकावियों पर पाथ दो चलनी बना ली।

सम्मति–१ तोले नामा डालने से छिद्र ठीक नहीं हो सकते अतएव आगे से ६ माशे नामा डाला गया।

अभ्रसत्त्वपातन, पांचवां घान

ता० ५/७/०७ को उक्त नं० २ की अवशेष २॥ छ० टिकिया में नं० ३ की १॥ छ० टिकिया और मिला ४ छ० वजन कर भट्टी में (जो १३ इंच गहरी ५ इंच चौड़ी नं० २ की भट्टी के आकार सदृश बनाई गई थी) चलनी पर (जिसके बनाने की विधि ऊपर लिखी है) इस प्रकार रखा कि प्रथम चलनी पर ५–६ अंगुल कोयले भर दवा रख दवा की चारों बगल कोयले लगा दिये, अर्थात् दवा को कोयलों के गर्भ में रखा और फिर ऊपर भट्टी के मुँह तक कोयले भर दिये, चलनी के नीचे मिट्टी का पात्र लगा दिया, बाद को चार नई धोंकनियों से ८। बजे से कड़ा धोंकना आरम्भ किया, ऊपर से कोयले और डालते गये, अग्नि की झर भट्टी के ऊपर और नीचे से निकलती रही, ऊपर की झर रोकने के लिये भट्टी पर लंबा मोटा नल लगा दिया, पौन घंटे बाद धोंकना बन्द कर कटोरे को निकालना चाहा तो कटोरा भट्टे के पेंदे से चिपट गया था भट्टी तोडा गया तौ जाली पिघलकर कटोरे में पड़ी मिली भट्टी के अंदर की खरिया मिट्टी पिघल कर काचरूप हुई कुछ तो जहां की तहां जम गई थी और कुछ नीचे को बहकर कटोरे के अन्दर और किनारों से जा लगी थी जिससे कटोरे में इस बार अभ्रक ऐसा जिकड़ गया था जो वगैर टूटे न निकल सका, कटोरा भी कुछ टेढा मेढा हो गया था और कहीं पिघल भी गया था, निकालने पर कटोरा कोयलों और कांच के खंगरों से भरा

निकला, कुछ खंगर के नीचे भी पड़े थे, कटोरे में १७ तोले खंगर मिले जिनमें से सत्त्व का दानों का बीना १।। माशे निकले जिन्हें चुंबक पकड़ता था, और १ तो० दाने ऐसे निकले जिन्हें चुंबक न पकड़ता था, भट्टी के नीचे के खंगर २ तोले ८ मा० थे और भट्टी पर लगे खंगर ७।। तोले हुए, १ तोले दोनों को जिन्हें चुंबक न पकड़ता था और कटोरे और भट्टी के कुल ऊपर नीचे के खंगरों को पृथक् पृथक् लोहे के खरल में बारीक पीस चुंबक द्वारा सत्त्व पृथक् किया तौ १ तोले दानों में से १ मा० ४ र०, कटोरे के १७ तोले, खंगरों में से ४ माशे, भट्टी के नीचे पड़े मिले २ तोले ८ माशे, खंगरों में से ५ रत्ती, और भट्टी के ऊपर लगे ७।। तोले, खंगरों में से भी ७ रत्ती सत्त्व निकला। अर्थात् कुल ४ छटांक दवा में से ८।। माशे सत्त्व निकला।

सम्मति–इस बार आवश्यकता से अधिक अग्नि लग गई अर्थात् कोयला कई बार में बहुत दे दिया गया और ज्यादः देर तक धोंकना जारी रखा है आगे से इतने कोयले और इतने समय की आवश्यकता नहीं।

जाली पिघल जाने का कारण यद्यपि तीव्राग्नि कहा जा सक्ता है किन्तु दूसरा मुख्य कारण यह भी हुआ कि अग्नि की ज्वाला चिमनी की रोक से ऊपर को कम गई और नीचे की तरफ भट्टी खुली रहने से नीचे की तरफ ज्वाला बहुत निकली, जिससे जाली पर ज्वाला का प्रभाव अधिक पड़कर जाली पिघल गई, आगे से भट्टी नीचे के बिलकुल बन्द रखी जावे अर्थात् सत्त्व का ग्रहण करनेवाला पात्र पृथ्वी खोदकर स्थित किया जावे और उस पर जाली रखी जावे, और भट्टी २ फुट ऊंची हो।

सम्मति–आगे से कोयलों की तोल हो, समय घडी से देखा जावे, भट्टी पहले गर्म कर ली जावे।

नकशा–अभ्रसत्त्व के पांचवें घानका

नं० घान	तोलदवाजितनी रखी गई	तोलदवा गली हुईजितनी निकली	तोलसत्त्व
नं० ५	नं० २की२।।छ०		
	नं० ३की१।।छ०		सत्त्वकेदाने १।।माशे
	४ छ०		
		कटोरेकेदाने १तो०	स०चू०१मा०४र०
		कटोरेकेखंगर१७तो०	सत्त्वचूर्ण४मा०
		भट्टीकेनीचे के खंगर२तो०८मा०	सत्त्वचूर्ण५रत्ती
		भट्टीकेऊपरलगे खंगर ७।।तो०	सत्त्वचूर्ण ७र०
		मी०छ०तो०मा० ४ १ ३।	मी०८मा०४र०

अभ्रसत्त्वके पहले घानकी टिकियों को दूसरी आंच

ता० १–८–०८ को पहले घान की निकली ४ छः टिकियों में से (जो नं० २ की थी) २ छ० टिकियों को खरिया की घरिया में भर मिट्टी में (जिसका नकशा आगे के पत्र पर दिया गया है) रखकर धोंकनियों से कडा धोंकना आरम्भ किया, पिसे सुहागे और साभर की बुर की देते गये, १/२ घण्टे बाद धोंकना बन्द कर घरिया को निकाल उलटा किया तो घरिया पेंदे में टूट गई थी जिससे कुछ दवा पिघल कर नीचे भट्टी में गिर जाने की शंका हुई, घरिया के उलटा करने से कुछ कोयलों में मिले हुए रवे मिले जो १ रत्ती थे। चुंबक इनको न पकड़ता था, कुछ दवा की राख घरियाही में जमी रह गई, उसको निकाल तोला तो ३ माशे हुई, भट्टी के नीचे तैकर गिरे कांच के से खंगारों को जो तोल में ५ तोले ५ माशे थे इस शंका से कि यह दवा घरिया के पेंदे में होकर निकल गई होगी, लोहे के खरल में पीस चुंबक से सत्त्व निकालना चाहा तो कुछ न निकला।

सम्मति–सत्त्वपातन के लिये खरिया की घरिया काम नहीं दे सक्ती कठिन घरिया बनानी चाहिये।

अभ्रसत्त्वपातन–छठा घान भट्टी नं० ३



ता० ३०–७–०७ को उक्त नं० ३ की अवशेष २ सेर छ० टिकियों को खरिया की घरिया में (जिसको पेंदी में एक छिद्र कर लिया गया था) भर उस घरिया को भट्टी में जो पृथ्वी के अन्दर खोदकर बनाई गई थी और जिसका आकार ऊपर दिया है जिसमें चिकनी मिट्टी की बनी छोटी सी चलनी (जिसमें उंगली समान मोटे ४–५ छिद्र कर लिये थे) लगाई गई थी और बंकनाल चलनी के नीचे लगाई गई थी इस प्रकार रखा कि प्रथम चलनी पर कोयले भर लिये कोयलों पर उस दवा युक्त घरिया को रख चारों ओर से कोयले लगा दिये ऊपर मिट्टी का ढक्कन ढक दिया और भट्टी के नीचे सत्त्व गिरने के लिये लोहे का कलछा रख भट्टी के नीचे के द्वार को मिट्टी से बन्दकर दिया गया, ताकि धोंकनियों की हवा बाहर को न निकल कर घरिया के पेंदे से लगे, बाद को दो मजबूत धोंकनियों से धोंकना आरम्भ किया, १/२ घंटे बाद धोंकना बन्द कर नीचे के पात्र को निकाला तो उसमें पिघल कर दवा की दो चार बूंदे टपकी थी जो जमकर चमकदार कांच की शकल को हो गई थीं और तोल में ८ माशे थीं और दस पांच दाने भी जो तोल में २ रत्ती थे निकले जिनको चुम्बक न पकड़ता था, ऊपर के ढक्कन को उठाया तो आंच की तेजी से अन्दर की तरफ उसकी मिट्टी पिघल कर कांचरूप हो गई थी, घरिया को निकाला तो उसमें कोयलों मे मिले हुए १ माशे २ रत्ती दाने निकले इनको भी चुम्बक न पकड़ता था, ३।। माशे दवा की राख निकलीं और घरिया की तली में जमी हुई २।। माशे राख निकली, ५ माशे खंगर चलनी पर जमा मिला, सब खंगरों को और राख को अलग २ पीस छान चुम्बक से सत्त्व पृथक् किया तो नीचे के कलछी के ८ माशे खंगरों में से २ रत्ती, कलछी के २ रत्ती, दोनों में से १ रत्ती, घरिया के ऊपर की ३।। माशे, राख में से ५ रत्ती, घरिया की तली की २।। माशे, राख में से भी ५ रत्ती सत्त्व निकला, अर्थात् १ माशे २ रत्ती सत्त्व के दाने और १ माशे ४ रत्ती सत्त्व चूर्ण मिलाकर २ माशे सत्व निकला, चलनी पर लगे ५ माशे खंगरों में से बिलकुल न निकला।

सम्मति–छेददार घरिया से कोई लाभ नहीं छेद से नीचे सत्व कम टपका और घरिया में आधा बैठा।

अभ्रसत्त्वपातन सातवां घान

ता० २/८/८ को उक्त नं० ३ की अवशेष १ सेर १५।। छ० टिकियों में से ३ छ० टिकियों को अंगरेजी घरिया में (जो नं० २ की थी और ।।।) को आई थी) भर उसी भट्टी में जिसका आकार कुछ बड़ा कर लिया गया था रख १० बजकर १० मिनट पर दो मजबूत धोंकनियों से कड़ा धोंकना

आरम्भ किया ११ बजकर १० मिनट पर यानी १ घंटे बाद धोंकना बंदकर घरिया को लोहे की परात में उलटा तो टिकिया निजरूप में जलकर राख हो गई थी किन्तु पिघली न थी १/३ टिकियों का घरिया के हिलाने झुलाने और परात में गिरने से चूर्ण हो गया था उसमें दाने मिले हुए थे, बड़े बड़े दानों को बीन बाकी राख में पानी डाल कोयलों को नितार सब दानों का निकाला तो कुल ६ माशे २ रत्ती दाने निकले जिनमें ४ माशे ६ रत्ती को चुंबक पकड़ता था और १ माशे ५ रत्ती को न पकड़ता था, बाकी राख में से जो तोल में १ तोले १ माशे ६ रत्ती थी चुंबक द्वारा सत्त्व पृथक् किया तो ७ माशे २ रत्ती चूर्ण निकला अर्थात् कुल १ तोले ५ रत्ती सत्त्व निकला, ६ माशे राख रह गई किन्तु इस चूरे में परात की काई लाई हुई बकुला का लाहा मिल जाने की शंका है।

उक्त जली हुई टिकियों में से जो तोल में ३ तोले थी दो टिकियों को पीस चुम्बक द्वारा सत्त्व पृथक् करना चाहा तो कुछ न निकला।

(१) सम्मति–अबकी बार आंच १ घंटे दी गइ इससे पहले आध घंटे की आंचों के नतीजे से अबकी बार नतीजा अच्छा रहा, सत्त्व भी अधिक निकला और टिकियों में सत्त्व रहा भी नहीं, आगे से १ घंटे से कम आंच न दी जावे।

(२)सम्मति–अँगरेजी बनी घरिया ने अग्नि को भली प्रकार सहन किया किन्तु इसमें एक शंका अवश्य हुई कि कदाचित् कोई धातु घरिया में तो नहीं पड़ा है कि जिसका अंश सत्त्व में मिल जाता हो।

अभ्रसत्त्वपातन, आठवाँ घान

ता० २/८/८ को उक्त नं० ३ का अवशेष १ सेर १२।। छ० टिकियों में से ३ छ० टिकियों को उसी अँगरेजी घरिया में भर उसी प्रकार दो धोंकनियों से ४।। बजे से धोंकना आरम्भ किया १/२ घंटे बाद धोंकना बंदकर घरिया को उलटा तो टिकियां निज रूप में जली हुई निकली, टूटी टिकियों की राख में दो चार मोटे मोटे रवे और कुछ मामूली रवे निकले दोनों रवे तोल में ३ माशे ३ रत्ती हुए, जिनमें १ माशे २ रत्ती को चुम्बक पकड़ता था, और २ मा० १ र० को न पकड़ता था, राख को पानी में धो (पानी से धोने से कोयलों की हलकी राख नितर जाती है और भारी राख तली में रह जाती है) चुम्बक द्वारा सत्त्व पृथक् किया तो १ माशे ३ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला और ५ रत्ती राख रह गई, कुल सत्त्व २ माशे ५ रत्ती निकला, जली हुई टिकियों में से जो तोल में ५ तोले थी दो टिकियों को पीस चुम्बक द्वारा सत्त्व निकालना चाहा तो उसमें से भी अधिक राख को चुंबक पकड़ने लगा।

ता०१७ को उक्त जली हुई ५ तो०टिकियों में से १ तोले टिकियोंको पीस चुम्बक से सत्त्व निकालना चाहा तो चुम्बक पृथक्करण में समर्थ न हुआ, किन्तु जब उस राख को पानी से धो सुखा शेष रही २ तोले, राख में चुम्बक लगाया तो प्रायः सभी राख को चुम्बक खींचने लगा इसलिये इसको ही रख लिया, इससे सिद्ध हुआ कि जब सत्त्व इतर पदार्थों में मिला होता है तो चुम्बक उसे पूरा तौर पर नहीं खींच सक्ता और जब धुलकर अधिकांश अन्य पदार्थ उसमें से निकल जाता है और करीब २ सार भाग ही रह जाता है तो चुंबक उसी भांति खींच सक्ता है।

सम्मति–अबकी बार इस शंका से कि अधिक समय तक अग्नि देने से अधिकांश सत्त्व जल न जाता हो, १ घंटे की जगह केवल १/२ घंटे आंच दी गई किन्तु सिद्ध हुआ कि १/२ घंटे की आंच सत्त्व पृथक् करने को समर्थ नहीं है १ घंटे ही अग्नि देनी चाहिये।

अभ्रसत्त्वपातन, नववाँ घान

ता० २–८–८ को उक्त नं० ३ अवशेष १ सेर ९।। छटांक टिकियों में से ३ छटांक टिकियों को अंगरेजी घरिया में जो खूब सुर्ख हो रही थी भर उसी प्रकार दो धोंकनियों से कड़ा धोंकना आरम्भ किया १५ मिनट बाद ख्याल किया तो घरिया में ऊपर की टिकियों पर रवे दीख पड़े, अतएव धोंकना बंद कर टिकियों को निकाला तो ऊपर ही की टिकियों पर दाने थे नीचे की पर न थे, ऊपरवाली टिकियों के दानों को पृथक् कर तोला तौ १।। माशे हुये, जिनको चुंबक पकड़ता था, टूटी टिकियों की राख जो तोल में २ माशे थी उसमें से सत्त्व को पृथक् किया तो आधी अर्थात् १ माशे राख ऐसी निकली जिसको चुम्बक पकड़ता था और १ माशे को न पकड़ता था, कुल सत्त्व २ माशे ४ रत्ती निकला, टिकियां जो तोल में ६ तोले थी उनमें से टिकियों को पीस चुम्बक लगाया तो थोड़ी २ राख को चुंबक पकड़ता था किन्तु पृथक् करने को समर्थ न होता था अतएव–

ता० १७ को उक्त बची हुई ५ तोले टिकियों की पीस रस राख को पानी में धो सुखा चुंबक द्वारा सत्त्व पृथक् करना चाहा तो प्रायः सभी उस अवशेष १ तोले ५ माशे राख को चुंबक पकड़ने लगा, इसलिये सब ही रख लिया गया।

सम्मति–इस बार केवल अनुभव के लिये ही टिकियों पर दाने दीखते पर घरियाको निकाल लिया जिससे अनुमान हुआ कि ऊपर की टिकियों पर अग्नि का प्रभाव पहले पड़ता है और नीचे की टिकियों पर पीछे और यह भी सिद्ध हुआ कि टिकियां साबुत ही रहकर ज्वार बाजरे समान कण रूप में सत्त्व को छोड़ती हैं जो पहले उनके बाहर निकलकर कण रूप में दीख पड़ता है और फिर वह बहकर अधिक शुद्ध होता हुआ नीचे को जाता है।

अभ्रसत्त्वपातन, दशवाँ घान

ता० २/९/८ को उक्त नं० ३ की अवशेष १ सेर ६।। टिकियों में से ३ छटांक टिकियों को अंगरेजी घरिया में (जो खूब गर्म हो रही थी) रख उसी प्रकार दो धोंकनियों से बहुत कड़ा धोंकना आरम्भ किया (इस बार बहुत से कोयले डाल इस भट्टी के निकले सब घानों से कड़ा ताप दिया) पौन घंटे बाद घरिया को निकाल दवा को लोहे की परात में ४ जगह अलग २ गिराया (ये बात जानने के लिये कि घरिया के किस हिस्से की दवा में दाने अधिक पड़े) तौ जो दवा पहली बार गिरी थी उसमें से दोनों को बीना तो ४ रत्ती हुये जिनको चुम्बक पकड़ता था, टिकियों की राख ८ माशे ५ रत्ती थी, दूसरी जगह गिरी टिकियों में से ९ माशे ४ रत्ती दाने निकले जिनमें १ माशे को चुंबक पकड़ता था, टिकियों की राख ८ माशे हुई, तीसरी जगह गिरी टिकियों की राख को धो दानों को निकाला तो २ माशे दाने निकले, जिनमें १ मा० ६ र० को चुंबक पकड़ता था, टिकियों की धुली राख ४ रत्ती हुई साबित जली टिकियां ३।। तोले रह गई उनमें से दो टिकियों को पीस चुम्बक द्वारा सत्त्व पृथक् किया तो ५।। माशे राख में से २ माशे को चुम्बक पकड़ता था, ३।। मा० को न पकड़ता था, चौथी जगह गिरे थोड़े से टिकियों के चूरे और दानों में से दानों को पृथक् किया तौ २ मा० ३ रत्ती दाने निकले जिनमे से १ मा० को चुंबक पकड़ता था और १ मा० ३ र० को न पकड़ता था टिकियों का चूरा १ माशे ४ रत्ती निकला, इस तरह इस घान में चुंबक से न पकड़े जानेवाला २ माशे १ रत्ती दानों को छोड़ ४ माशे २ रत्ती सत्त्व के दानें और २ माशे टिकियों का चूर्ण मिलाकर कुल ६ माशे २ रत्ती सत्त्व निकला।

ता० १७ को उक्त ३।। तोले टिकियों की पीस धो सुखा दिया जो १ तोले रही इसमें चुंबक लगाया तौ प्रायः सभी राख को चुंबक पकड़ने लगा अतएव उस सबको ही रख लिया।

सम्मति–अबकी बार ये भलीभांति सिद्ध हो गया कि गरमागरम घरिया में टिकिया भरे जाने पर भी पौन घंटे की आंच कम है। एक घंटे की ही होनी चाहिय, और ठंडी घरिया में इससे भी कुछ अधिक।

ता० १४ को उक्त सातवें आठवें दसवें घानों के चुंबक से न पकड़े जानेवाले ५ माशे ५ रत्ती दानों कोऔर १० वें घानके घरिया की तली में निकले जिनमें घरिया का अंश मिल जाने की शंका थी १ माशे ३ र० दानों को और १० वें घान की टिकियों के १ माशे ४ रत्ती चूरे को सबको पृथक् २ पीस चुम्बक द्वारा सत्त्व निकाला तौ ५ माशे ५ रत्ती दानों में से १ माशे ५ रत्ती, १ मा० ३ र० दानों में से १ रत्ती, १ माशे ४ रत्ती चूरे में से ५ रत्ती

सत्त्व निकला, सब सत्त्व २ मा० ३ रत्ती निकला।

उक्त–७–८–९–१० नं० के चार घान निकल चुकने पर अंगरेजी घरिया को साफ किया तो उसमें से दाने १ माशे २ रत्ती निकले जिनमें से २ रत्ती को चुंबक पकड़ता था, खंगरसा २ मा० २ रत्ती निकला, जिसमें से पीसने पर २ रत्ती सत्त्व निकला, चूर्ण ७ माशे १ रत्ती निकला जिसमें से ४ रत्ती सत्त्व निकला, इस भांति घरिया से सब सत्त्व १ माशे निकला।

सम्मति–घरिया में न मालूम क्या मसाला पड़ा है वो धातु रूप दीखता है और जिसके सत्व में मिल जाने की शंका होती है।

भट्ठी नं० ३ के निकले ६ से १० नं० तक के ५ घानों का नकशा

नं० घान	तोलटिकिया जोरखीगई	घरियाका लक्षण	अग्निकासमय	सत्त्वकेदाने	सत्त्वकाचूर्ण	जोड	तोलटि० जोनिकली	टि०कीधुली राखजिसको चुंबकपकड़ताहे	चुं०सेनपकड़े जानेवालेदाने	विशेषवार्ता
नं० ६	नं०३कीरछ०	मटियाकी	१/२घंटे	माशेरत्ती १ ४	माशेरत्ती २ ६	माशेरत्ती	+	+	+	
नं०७	(नं०३) ३ छ०	अंगरेजी	१घं०	४ ५	७ २ संकित	११ ७	३।तो०	+	मा० र० १ ५	इन ३तो०टिकियोंकोचुंबक न पकड़ताथाइसलिये उन्हेंफेंकदिया
नं०८	"३छ०	"	१/२घंटे	१ २	१ ३	२ ५	५तोले	२तोले	२ १	
नं०९	"३छ०	"	१/४घंटे	१ ४	१ ०	२ ४	६तो०	१तो०५॥मा०	+	
नं०१०	"३छ०	"	३/४घंटे	४ २	२ ०	६ २	३॥तो०	१तो०	२ १	इसघानकीतीव्राग्निदीगई
६से१०तक के जोड़	जोड १५छ०	+	+	जोड मा० र० ११ ५	जोडं मा० र० ११ ५	जोड तो०मा०र० १ १० २	१७॥तो०	४तो०५॥मा०	५ ७ इनमेसे१मा५र० सत्त्वनिकला	

अभ्रसत्त्व के लिये फायरक्ले की घरिया नं० १

ता० ५/८/०८ को ऽ। सेर खरिया मिट्टी ऽ। सेर फायरक्ले जली हुई ऽ। सेर सेन्ड, ३ माशे नामा चारों को मिला पानी डाल लोहे के हथोड़े से पत्थर पर कूटना आरम्भ किया, आज ५ घंटे कुटाई हुई, शाम को पानी में भिगो मिट्टी को रख दिया।

ता० ६ को ६ घंटे कुटाई हुई।

ता० ७ को ६ घंटे कुटाई हुई।

ता० ८ को ६ घंटे कुटाई हुई।

ता० ९ को करीब आधी मिट्टी को गिलास पर पाथ एक घरिया बना सीरक में सुखाने को रख दी।

ता० ११ को देखा तो घरिया सूखी न थी किन्तु ४/५ जगह से तिरक गई थी, अतएव उसे तोड़ कर फिर बाकी बची मिट्टी में मिला पानी में भिगो दिया।

ता० १२ को पत्थर पर २ घंटे पीसा इसलिये कि उसका दरदरापन न रहे, पीसने में दरदरापन कम हुआ किन्तु बिलकुल न गया।

ता० १३ को २ घंटे कुटाई हुई।

ता० १४ को काठ के सांचे पर दो घरिया पाथ सांचे से उतार सीरक में सुखाने को रख दी जो सूखती रही और फिर न फटी।

सम्मति–इन दोनों घरियों में बड़ी घरिया को अग्नि पर तपाया तो चटक कर उसके पेंदे का परत उचल गया जिससे निकाम हो गई, दूसरी ने कुछ काम दिया किन्तु १/२ घंटे की आंच में ये भी पिघल कर टेढ़ी मेढ़ी हो गई।

फायरक्ले की घरिया नं० २

ता० १६/८/८ को ऽ।। फायरक्ले को इमाम दस्ते में कूट कपड़े में छान पानी में भिगो दिया।

ता० १७ को लोहे के हथोड़े से २ घंटे कुटाई की।

ता० १८ को २ घंटे कुटाई हुई।

ता० १९ को पानी में भीगती रही।

ता० २० को २ घंटे कुटाई हुई मिट्टी दरदरी रही, लोच बिलकुल न था, सांचे पर पाथ घरिया बनानी चाही तो न बनती थी, खिली जाती थी अतएव उस फायरक्ले में ऽ। पाव भर खरिया मिट्टी और मिला भिगो दी।

ता० २१ को ६ घंटे कुटाई की।

ता० २२ को सांचे पर पाथ दो घरिया बना सांचे से उतार सीरक में सुखाने को रख दी जो सूखती रही और फिर न तिरकी।

सम्मति–ता० ८/९ को उक्त दोनों घरियों को भट्टी पर रख अग्नि पर तपाया तो चटक गई, इनमें नामा वासन आदि कोई वस्तु अवश्य पड़नी चाहिये थी।

अभ्रसत्त्वपातन ग्यारहवां घान

ता० ८/९/८ को उक्त नं० ३ की अवशेष १ सेर ३।। छ० टिकियों में से २ छ० की टिकिया को उक्त नं० १ की छोटी घरिया में रख उपरोक्त भट्टी में ९।। बजे से दो धोंकनियों से धोंकना आरम्भ किया, १/२ घंटे बाद कोयले डालने के लिये चिमट से घरिया को उठाया तो टूट गई अतएव धोंकना बंद कर दिया और घरिया को उसी में रखी छोड़ दिया, ४ घंटे बाद ठंडा हो जाने पर घरिया को निकाला तो घरिया पिघल कर टेढ़ी मेढ़ी हो गई थी, टिकियां निजरूप में जलकर राख हो गई थी, घरिया को उलटा तो कुछ दाने टिकियों पर लगे मिले, कुछ टिकियों से पृथक् चूरें में मिले निकले, साबित टिकियों को पृथक् कर बाकी राख मिश्रित दोनों को धो सुखा दिया।

ता० ९ को राख से दोनों को पृथक् किया तो कुल ३ माशे ६ रत्ती दाने निकले जिनमें २ मा० १ रत्ती को चुम्बक पकड़ता था, ३।। माशे धुली राख निकली जिसको चुंबक पकड़ता था, जली टिकियां ३ तोले २ माशे रही।

ता० ११ को उक्त १ माशे ५ रत्ती चुंबक से न पकड़े जानेवाले दानों को पीस चुंबक द्वारा सत्त्व निकाला तो ३ रत्ती निकला, ६ रत्ती चूर्ण रह गया, ४ रत्ती छीज गया, उक्त २ तो० २ माशे टिकियों को पीस चुंबक द्वारा सत्त्व निकाला तो ३ रत्ती निकला, ६ रत्ती चूर्ण रह गया, ४ रत्ती छीज गया, उक्त २ तो० २ माशे टिकियों को पीस चुंबक द्वारा सत्त्व पृथक् किया तो ७ रत्ती चूर्ण सा निकला जिसे चुम्बक पकड़ता था, अर्थात् चुम्बक से पकड़े जानेवाले दाने २ माशे, दानों का सत्त्व ३ रत्ती, दोनों के संग का धुला चूर्ण ३।। माशे, टिकियों की धुली राख ७ रत्ती निकली।

अभ्रसत्त्व के लिये वज्रमूषा, मसाले

(१) पुगलानी पोखर की कुम्हार की काली मिट्टी पीस कूट चलनी में छान ली।

(२) सफेद पत्थर के टुकड़ों को जो बांसी या बामौर जाति के थे, कूट पीस कपरछान कर लिया।

(३) धानों की २।। सेर भूसी को कड़ाही में भर ४ घंटे तीव्राग्नि दी तो ९ छटांक श्वेत भस्म तैयार हुई।

(४) लुहार की भट्टी से एकत्र किये लोहमैलको बीन फटक, कूट, पीस, कपरछान कर लिया।

(५) आदमी के बालों को पानी से धो सुखा कैंची से कतर यव (जौ) समान कर लिया।

(६) अच्छे बारीक पुराने सन को गाठ गुड़ी बीन अंगुल अंगुल बराबर कतर इमाम दस्ते में कूट जौ समान कर लिया।

(७) घोड़े के लीद को सुखा हाथों से मीड़ मोटी मोटी अलग कर बारीक रहने दी।

वज्रमूषा नं० १

ता० ३ को उक्त पुगलानी की मिट्टी २ छटांक, श्वेत पत्थर का चूर्ण २ छटांक, तुष भस्म ४ छटांक, लोह मल २ छटांक, आदमी के बाल १ छ० (२ छटांक लिखे थे किन्तु १ छ० डालने से हो मसाले में बाल ही बाल दीखने लगे अतएव १ छटांक ही डाले) पांचो चीजों को मिला बकरी के कच्चे दूध में साना (ऽ।। दूध काफी न हुआ) तो बाल ही बाल दीखते थे जिससे शंका हुई, दूध न होने से काम बन्द रहा।

ता० ४ को ऽ।– दूध बकरी का और ला थोड़ा थोड़ा डाल पत्थर पर लोहे के हथोड़े से कूटना आरम्भ किया, शाम तक ४ घंटे कुटाई हुई, करीब ऽ।– दूध पड़ा, बाल कुछ मसालें में मिलकर पिष्टीरूप हो गया और शंका निवृत्त हुई।

ता० ५ को कल के बचे हुए ऽ। पावभर दूध का छींटा दे देकर २ घंटे पिसाई और २ घंटे कुटाई की।

ता० ६ को ऽ।। सेर बकरी के दूध का छीटा दे दे ७ घंटे पिसाई कुटाई की, किन्तु बाल कुछ विशेष मसालें में मिले हुए बारीक हुए न दीख पड़े तब थोड़ी देर इमाम दस्ते में कुटाई की।

ता ७ को ११ बजे तक इमाम दस्ते में कुटाई की किन्तु बाल फिर भी बारीक न हुए, लाचार ३ बजे से दो घरिया बना सीरक में सुखाने को रख दी।

ता० ९ को देखा तो घरिया फटी तिरकी न थी किन्तु फफूस गई थी, सब १।।। सेर दूध पड़ा, १९ घंटे कुटाई हुई।

उक्त मूषा को अग्नि पर तपाया तो थोड़ी देर तक लौदे कर जलता रहा, बाद में उसके ऊपर से पापड़ी उचल गई और एक ओर से फट गया, मिट्टी ऐसी फुसफुसी हो गई जो जरा छूते ही झर जाती थी।

वज्रमूषा नं० २

ता० १०/१०/८ को उक्त पुगलानी की मिट्टी ६ छटांक, श्वेत पत्थर का चूर्ण २ छटांक, तुषभस्म २ छटांक, लोहमल १ छटांक, लीद १ छटांक, सन १ छटांक, छओं चीजों को मिला पानी डाल सान गूंद रख दिया।

ता० ११ को इमामदस्ते में २ घंटे कुटाई की।

ता० १२ को २ घंटे कुटाई हुई, कुछ लोच बढ़ा।

ता० १३ को २ घंटे कुटाई हुई।

ता० १४ को दूध का छींटा दे देकर ४ घंटे कुटाई की। लोच कुछ और बढ़ा (किन्तु पूरा नहीं, बाद को सांचे पर ३ घरिया पाथ सीरक में सुखाने को रख दी। सब कुटाई इमामदस्ते में १० घंटे घुटाई हुई, घरिया बहुत हलकी बनी।

उक्त घरियों में से एक घरिया से काम लिया तो २० मिनट की तेज आंच से घरिया एक ओर को फट गई थी और गलकर टेढ़ी मेढ़ी हो गई थी।

अभ्रसत्त्व के लिये घरिया

अर्थ–ता० ८–९/८ को फायरक्ले की उक्त नं० १ और २ की चटकी हुई ३ घरियों को (जिनमें १ सेर फायरक्ले, ऽ।। सेर सेन्ड, ऽ।। खरिया मिट्टी और ३ माशे नाम पड़ा था) तोड़ पीस पानी में भिगो दिया, ८/१० दिन तक भीगने रहने के बाद १ तोले सन मिला पत्थर पर २/३ दिन कूट पीस सांचे पर ३ घरियां पाथ सीरक में सुखाने को रख दीं।

उक्त घरिया में से एक घरिया से काम लिया तो १५ मिनट की तेज आंच से घरिया पिघल कर नीचे भट्टी पर जा लगी।

अभ्रसत्त्वपातन बारहवां धान

ता० ३० को उक्त नं० ३ की अवशेष १ सेर १।। छ० टिकियों में से ३ छटांक टिकियों को उपरोक्त फायरक्ले की घरिया में भर उक्त भट्टी में रख भट्टी पर ढ़क्कन ढ़क ८ बजकर ३५ मिनट पर दो धोंकनियों से धोंकना आरम्भ किया, ८ बजकर ५० मिनट पर अर्थात् १५ मिनट बाद कोयले डालने के लिये ढ़क्कन को उठाया तो टिकियां जिनके ऊपर ज्वार बाजरे से रवे दीखने लगे थे, कोयलों के ऊपर इकट्ठी दीखने लगी और घरिया गलकर नीचे को चली गई, अतएव धोंकना बन्दकर करीब पौन घंटे तक और उसी तरह उस घरिया और दवा को भट्टी में ही रखा रहने दिया, पौन घंटे बाद टिकियों को निकाला तो सब टिकिया परस्पर मिली हुई निकल आई, एक ओर को कुछ अंश पिघली हुई घरिया का भी लग गया, नीचे की चलनी को निकाला तो उसके मोटे मोटे छिद्रों में पिघली हुई घरिया का कांच भर गया था, टिकियों से सत्त्व पृथक् किया तो कुल १ तो० १ मा० ४ र० सत्त्व के दाने निकले जिनमें से बड़े २ माशे, छोटे ३।। माशे, कुल ५।। माशे गोल दोनों को चुंबक पकड़ता था, और ४ माशे बड़े खंगर से और ४ माशे छोटे चूरे से ८ माशे दानों को चुंबक नहीं पकड़ता था, दोनों दानों को पृथक् पृथक् पीस चुंबक द्वारा सत्त्व पृथक् किया तो खंगर से ४ माशे दोनों में से २।। माशे, छोटे ४ माशे दानों में से ३।। माशे सत्त्व और निकला, अर्थात् ५।। माशे दाने और ६ माशे सत्त्व चूर्ण मिलाकर ११।। माशे सत्त्व निकला और १ तो० ६ मा० टिकियों की धुली राख रही, इसको भी चुंबक पकड़ता था।

सम्मति–आंच तीव्र लगने से और घरिया गल जाने से अग्नि का सीधा प्रभाव टिकियों पर पड़ने से शीघ्र ही अर्थात् १५ मिनट में सत्त्व के दाने ज्वार से प्रगट हो गये, इसलिये बिना घरिया के टिकियों को कोयलों पर रख धोंकने से सत्त्व अच्छा निकलने की आशा है।

अभ्रसत्त्वपातन, तेरहवाँ धान

ता० ३०/१०/८ को उक्त नं० ३ की अवशेष १४।। छ० टिकियों में से २।। छ० टिकियों को वज्रमूषा नं० २ में (जिसको १०/१५ मिनट सेक लिया था) भर भट्टी में कोयलें भर घरिया रख ११ बजे से दो धोंकनियों से धोंकना आरम्भ किया, २० मिनट बाद देखा तो घरिया एक ओर को फट गई थी और पिघल गई थी, टिकियों पर रवे दीखने लगे थे, धोंकना बंद कर घरिया को भट्टी में ही रखा छोड़ दिया, २ बजे निकाला तो घरिया पिघल कर टेढ़ी मेढ़ी हो गई थी, टिकिया निज रूप में जली हुई सत्त्व सहित मौजूद थी. सत्त्व को पृथक् किया तो सब १ तो० १ मा० २ रत्ती दाने निकले, जिनमें ३ माशे ३ रत्ती बड़े और ३ माशे २ रत्ती छोटे कुल ६ माशे ५ रत्ती को चुंबक पकड़ता था और ६ मा० ५ र० खंगर से दोनों को चुंबक नहीं पकड़ता था जिनको पीसकर सत्व निकाला तो २ माशे ५ रत्ती निकला अर्थात् ६ मा० ५ रत्ती दाने और २ माशे ५ रत्ती सत्त्व चूर्ण मिलाकर ९ माशे २ रत्ती सत्व निकला, टिकियों की धुली राख जिसको चुंबक पकड़ता था, १ तोले ३ माशे निकली।

अभ्रसत्त्वपातन, चौदहवाँ धान

ता० ३० को उक्त नं० ३ की अवशेष १२ छ० टिकियों में से ३ छ० टिकियों को अंग्रेजी घरिया में भर उक्त भट्टी में ४। बजे से दो धोंकनियों से धोंकना आरम्भ किया, ५। बजे यानी १ घंटे बाद धोंकना बंदकर दवा को निकाला तो टिकियां निज रूप में जली हुई मौजूद थी, किसी किसी टिकिया पर कठिन पापड़ी सी थी, सत्त्व का रवा कोई न था जिसका कारण ये समझ पड़ा कि आंच घंटे पर तो दी गई किन्तु ताव किसी समय में न आया, ये ताव पण्डित गौरीशंकरी जी की निगरानी में जगना ने दिया, टिकियों की ऊपर की पापड़ी को खुरचा तो ७ माशे १ रत्ती चूरा सा निकला जिसमें ४ माशे ५ रत्ती को चुंबक पकड़ता था, टिकियों की धुली राख जिसको चुंबक पकड़ता था, ३ तोले रही।

सम्मति–इस बार निश्चय हुआ कि अग्निमंद लगने से १ घंटे में भी टिकियों ने सत्व को न छोड़ा।

अभ्रसत्वपातन, पन्द्रहवाँ धान

ता० ६/११/८ को उक्त नं० ३ की अवशेष ९ छ० टिकियों में से ४ छ० टिकियों को भट्टी के ऊपर तक कोयले भर बिना घरिया के उन कोयलों पर उन टिकियों को रख ८ बजकर ५० मिनट पर दो धोंकनियों से धोंकना आरम्भ किया, २५ मिनट बाद धोंकना बन्दकर पौन घंटे तक और उसी तरह उनको रखा छोड़ दिया, बाद को कुछ ठंडा होने पर कोयलों को निकाल देखा तो सब टिकियां पिघल कर नीचे को चली गई। २ बजे जाली पर से कोयलों को निकाला तो १।। माशे दाने सफेद रंग के से कोयलों में मिले निकले जिनको चुंबक न पकड़ता था, १ माशे ३ रत्ती दाने चलनी पर पड़े मिले उनको भी चुंबक न पकड़ता था, चलनी को तोड़ उस पर लगे कांचवत् सत्व के गर्म में से चुंबक से पकड़े जानेवाले १ रत्ती दाने और २ माशे चूर्ण निकला नीचे को कांचरूप पिघलकर टपका था उसे तोड़ा तो उसके गर्म में १ माशे ५ रत्ती दाने निकले जिनको चुंबक पकड़ता था और जो सब दानों में उत्तम और चमकदार थे और ७ रत्ती चुंबक से पकड़े जानेवाला चूरा निकला, २ माशे ४ रत्ती दाने भट्टी में नीचे टूटी चलनी के चूरे में मिले निकले जिनमें से ४ रत्ती को चुम्बक पकड़ता था, अर्थात् कुल २ माशे २ रत्ती सत्व के दाने और २ मा० ७ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, चलनी के टपके हुए कांच को पीस कर चुंबक से पृथक् किया तो ४।। माशे सत्व चूर्ण निकला जिसको चुम्बक खूब अच्छी तरह पकड़ता था। अब सब सत्त्व के २ मा० २ र० दाने और ७ माशे ६ रत्ती चूर्ण निकला।

अभ्रसत्वपातन, सोलहवाँ धान

ता० ६/११ को उक्त नं० ३ की शेष बची ३ छ० टिकियों को अंग्रेजी घरिया में भर उक्त भट्टी में १०।। बजे से दो धोंकनियों से धोंकना आरंभ किया। ११।। बजे अर्थात् १ घंटे बाद धोंकना बन्द कर टिकियों को निकाला तो दो चार टिकियों पर ही दाने थे जिनको पृथक् किया तो १ माशे ५ रत्ती निकले, इनको थोड़ा थोड़ा चुंबक पकड़ता था, टिकियों की धुली राख २ तोले ५ माशे रही, इसको भी थोड़ा थोड़ा चुंबक पकड़ता था।

सम्मति–समस्त सोलहों धानों के अनुभव से सिद्ध हुआ कि अत्यन्त तीव्र अग्नि से ही उत्तम सत्त्व निकलता है, जो उज्जवल लोहे के रूप का सफेदी लिये होता है और इतनी तीव्राग्नि घरिया में नहीं लग सकती अतएव बिना घरिया के भट्टी में ही रख तीव्राग्नि से सत्व निकाले तो भट्टी वंकनाल, कोष्ठी ही ठीक होती है।

अभ्रसत्त्वपातन, सत्तरहवाँ धान

ता० १६/१/९ को उक्त नं० १ की ४ छ० टिकियों को ऊपर एक कोयले भरी भट्टी में बिना घरिया के कोयलों पर ही रख ऊपर से कोयलोंसे ढक १० बजकर ३५ मिनट पर दो धोंकनियों से धोंकना आरंभ किया, नीचे पात्र रख दिया गया, ११ बजकर २५ मिनट पर यानी करीब पौन घंटे बाद धोंकना बंद कर ज्यों का त्यों छोड़ दिया। २ बजे नीचे के पात्र को निकाला तो उसमें ४ तोले कांच सा टपका हुआ मिला जिसमें कांच के से ही तार बन गये थे, ऊपर से कोयलों को निकाला तो उनमें भी कुछ हलके से खंगर से और कुछ दाने निकले, जाली को निकाला तो उस पर कांचवत् पदार्थ जमा हुआ था, जाली के छिद्र बन्द हो रहे थे, भट्टी के खुरचने से भी कांचवत् खंगर निकले, नीचे टपके हुए ४ तोले कांचवत् पदार्थ को दला तौ उसमें कोई दाना न दीखता था किन्तु चुंबक लगाया तो खस खस से भी बहुत छोटे नीली झलक युक्त २ रत्ती दाने निकले जिनको चुंबक बड़ी तेजी से पकड़ता था, उस कांचवत् पदार्थ को फिर बारीक पीस चुंबक लगाया तो १ मा० ६ रत्ती सत्वचूर्ण और निकला, कोयलों के साथ निकले खंगरों में ४ तोले खंगर और ४ माशे श्वेत रंग के दाने थे जिनमें २ रत्ती को चुंबक थोड़ा थोड़ा पकड़ता था बाकी ३ मा० ६ र० को चुंबक न पकड़ता था, उनको पीसा तो २ रत्ती सत्व चूर्ण निकला और खंगरों में से ५ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, जाली पर लगे कांचवत् सत्व को पृथक् कर दला तो बहुत सूक्ष्म दाने जिनको चुम्बक पकड़ता था १ रत्ती निकले और पीसने पर १ माशे ५ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, भट्टी के खंगारों में से केवल ४ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, अर्थात् सब ५ रत्ती दाने और ४ मा० ६ रत्ती सत्व चूर्ण मिलाकर ५ माशे ३ रत्ती सत्व निकला।

(१) सम्मति–अबकी बार भट्टी का ढक्कन टूट जाने से भट्टी का ताव पूरा न आया और इस कारण सत्व के रवे बहुत थोड़े और बहुत छोटे पड़े। आगे से भट्टी और ढक्कन खूब सुखाकर आंच से गर्म कर लेने चाहिये और गमागर्म भट्टी में कोयले भर टिकियां रख ढक्कन ढक एक दम वेग से धोंक तीव्राग्नि पैदा करनी चाहिये, तीव्राग्नि से १/२ घंटे में उत्तम सत्व पातन हो सकता है, धीमी अग्नि में घंटे भर में भी कुछ लाभ नहीं होता।

(२)सम्मति–अब ये निश्चय हो गया कि उत्तम सत्त्व वही है जो ठोसकणरूप में पाया जावे और ये कण पिघले हुए कांचवत् पदार्थ के ही अन्तर्गत मिलते हैं जिसका समर्थन "रसरत्नसमुच्चय" से भी होता है, अतएव सिद्ध हुआ कि बंकनाल भट्टी में कोयलों पर रखी टिकियों को इतनी तीव्राग्नि देनी चाहिये कि सब मसाला पिघल जाली नीचे निकल जावे, जितनी अग्नि तीव्र होगी उतना ही पदार्थ अधिक द्रव होकर गिरेगा, जितनी अधिक द्रवता पदार्थ में आवेगी उतने ही अधिक कण बनेगे।

(३) सम्मति–द्रव पदार्थ को तोड़ उससे केवल रवे ग्रहण करने योग्य है, पीसकर चुंबक द्वारा चूर्ण ग्रहण करना उचित नहीं उसमें शुद्ध सत्त्व नहीं मिलता, इसलिये शेष पिघले हुए पदार्थ से "रसरत्नसमुच्चय" में कही क्रिया द्वारा पुनः सत्व पातन कर पुनः कणों को ही ग्रहण करे।

अभ्रसत्वपातन, अठारहवां धान

ता० १०/२/९ को उक्त नं० १ की अवशेष २० छ० टिकियों में से ६ छ०

टिकियों को कोयलों से मुख तक भरी भट्टी में जो पहले गर्म कर ली गई थी रख ऊपर से कोले ढ़क भट्टी का मुख मिट्टी के ढ़क्कन से ढ़क ९। बजे से दो धोंकनियों से धोंकना आरम्भ किया, भट्टी के नीचे पात्र रख दिया गया, पौन घंटे बाद धोंकना बन्द कर ज्यों का त्यों भट्टी को छोड़ दिया, २ बजे से नीचे के पात्र को निकाला तो उसमें ८ तोले पदार्थ टपका हुआ मिला, ७ रत्ती दाने कटोरे के इधर उधर जमीन पर पड़े मिले जिनको चुंबक न पकड़ता था, ऊपर के कोयलों को निकाला तो उसमें भी सफेद रंग के दाने निकले जिनमें दो चार चने बराबर थे बाकी बाजरे से थे, इनको भी चुंबक न पकड़ता था, जाली को तोड़ा तो उस पर कांच सदृश पदार्थ जम रहा था, एक दो छिद्र खुल रहे थे बाकी बन्द हो गये थे। कटोरे में गिरे कांचवत् पदार्थ का दलिया सा किया तो कोई सत्व का दाना न मिला। जब उस दलिया को थोड़ा और बारीक किया तो उसके गर्भमें बहुत सूक्ष्म और चमकदार २ रत्ती उत्तम सत्व के दाने निकला, कटोरे के इर्दगिर्द जमीन पर पड़े ७ रत्ती दानों में से पीसने पर भी कुछ सत्त्व हाथ न लगा, चलनी के ऊपर पड़े कोयलों में मिले जो २ माशे ३ रत्ती दाने थे, इनको पीसने पर दो चार दाने युक्त १/२ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, जाली को तोड़ उस पर से कांचवत् पदार्थ अलग करते समय १ माशे १ रत्ती दाने निकले जिनको चुंबक न पकड़ता था, पीसने पर जिनसे १/२ रत्ती सत्व चूर्ण निकला, उस कांचवत् पदार्थ का दलिया किया तो उसकें गर्भ में २ रत्ती सूक्ष्म और उत्तम सत्व के दाने और १ मा० १ र० सत्व चूर्ण निकला, ये सत्व के दाने कटोरे के कांच से निकले दानों से बड़े थे, अर्थात् ४ रत्ती उत्तम सत्त्व के दाने और १ मा० २ रत्ती सत्त्व चूर्ण हाथ आया जिस सबको चुंबक बड़ी तीव्रता से पकड़ता था और १८ तोले कांचवत् पदार्थ शेष रहा जिससे पुनः सत्त्व पातन करना उचित है।

सम्मति–पन्द्रहवें घान में २५ मिनट आंच दी गई थी और सत्त्व के दाने अच्छे पड़े, सत्तरहवें और अठारहवें घान में पौन पौन घंटे की आंच दी गई और सत्त्व के दाने कम और छोटे मिले। इससे शंका होती है कि अधिक समय तक आंच लगने से भट्टी में शेष रहा सत्त्व जल जाता है अतएव आगे से अग्नि अधिक तीव्र अर्थात् ४ धोंकनियों से दी जावे, किंतु समय केवल २० मिनट रखा जावे और टिकियां भट्टी के मुख पर न रख ३/४ भाग कोयलों से भर रखी जावे।

अभ्रसत्त्वपातन उन्नीसवाँ घान

ता० २७/२/९ को उक्त नं० १ की अवशेष १४ छ० टिकियों में से ५ छटांक टिकियों को ३/४ भाग कोयलों से भरी भट्टी में रख कोयलों से ढ़क नीचे पात्र रक १० बजकर ५ मिनट पर ४ धोंकनियों से धोंकना आरंभ किया। ३० मिनट बाद धोंकना बंदकर भट्टी को ज्यों का त्यों छोड़ दिया, २ बजे नीचे की पात्र को निकाला तो उसमें टपका हुआ काचवत् पदार्थ ७। तोले निकला जिसके साथ पृथक् रूप में कोई दाना न था, दलने पीसने पर जिसके गर्भ में उत्तम सूक्ष्म चमकदार २ रत्ती दाने और ३ र० सत्त्व चूर्ण निकला, कांचवत् पदार्थ का दलिया ७ तोले रहा, जाली के ऊपर से कोयलों को निकाला तो उनमें ७ रत्ती कांच के से दाने निकले जिनको चुंबक न पकड़ता था, जाली को तोड़ उस पर लगे कांचवत् पदार्थ को पृथक् किया तो १२ तोले निकला और ३ रत्ती कांच के से दाने निकले जिनको चुंबक न पकड़ता था, इस १२ तोले दलने पीसने पर १ रत्ती उत्तम सूक्ष्म सत्व के दाने और २ रत्ती मोटा और ४।। रत्ती बारीक सत्त्व चूर्ण निलका, कांचवत् पदार्थ का दलिया ७ तोले रहा (५ तोले मिट्टी मिला भाग फेंक दिया) भट्टी के ५ छ० खंगरों के दलने से १ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला, चुंबक से न पकड़े जानेवाले सब १ मा० २ र० दानों को पीस सत्त्व पृथक् किया तो १/२ रत्ती सत्त्व चूर्ण जिसको चुंबक थोड़ा थोड़ा पकड़ता था और निकला अर्थात् सब ३ रत्ती उत्तम सत्त्व के दाने और १ माशे ३ रत्ती सत्त्व चूर्ण मिलाकर १ मा० ६ र० सत्त्व निकला।

(१) सम्मति–सत्त्व अबकी बार भी कम निकला और दानें भी बहुत छोटे छोटे ही निकले और अधिक भाग औषधि का अबकी बार भी जाली पर ही रह गया, अतएव शंका होती है ४ धोंकनियों से भी पूरा ताव न बैठा जिसमें जान पड़ता है भट्टी ठीक नहीं, भट्टी की चौड़ाई को कम कर ऊँचाई बढ़ानी चाहिये और गुलाई के साथ ढलवांपन दूरकर खड़ा ढ़ाल देना चाहिये।

(२)सम्मति–यह भी निश्चय हुआ कि इस क्रिया से अभ्र की टिकिया पिघल कर जाली पर ही पहुँचती है, भट्टी के किनारों से स्पर्श नहीं करती क्योंकि भट्टी के खंगरों से सत्व बिलकुल न निकला और अभ्र पिघलने से बने कांचवत् पदार्थ के रूप में और भट्टी के खंगरों के रूप मेय यह भेद भी होता है कि भट्टी के खंगर काले और रूखे होते हैं और कांचवत् पदार्थ नीलिमा लिये हुये चिकना होता है।

अभ्रसत्त्वपातन बीसवाँ घान

ता० १४/३/९ को उक्त नं० १ की अवशेष ९ छ० टिकियों में से ४।। छ० टिकियों को ३/४ भाग कोयलों से भरी १३ इंच गहरी और ९ इंच चोड़ी भट्टी में रख कोलयों से ढ़क ऊपर ढ़क्कन ढ़क ठीक १/२ घंटे ४ धोंकनियों से धोंका, जैसा का तैसा ढ़का छोड़ दिया।

ता० १५ को नीचे के पात्र को निकाला तो उसमें केवल ४ माशे कांचवत् पदार्थ टपका हुआ मिला जिसके दलने पीसने पर केवल १/२ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला, दाना कोई न निकला। पिसे खंगर का चूर्ण ३ माशे रहा, ६ रत्ती कांच सदृश दाने जिनको चुंबक न पकड़ता था, कटोरे के आसपास पृथ्वी पर पड़े मिले, जाली के ऊपर कोयलों को निकाला तो २ मा० कांच के दाने निकले जिसको भी चुंबक न पकड़ता था, जाली को जिसके सब छिद्र बंद हो रहे थे और सत्त्व का अधिक भाग नीचे न टपक जाली पर ही जम रहा था तोड़ मिट्टी पृथक् कर तोला तो ११ तोले हुआ, दलने पीसने पर इसके गर्भ में २ रत्ती बड़े और १।। रत्ती छोटे कुल ३।। रत्ती उत्तम सत्त्व के दाने और १ माशे सत्त्व चूर्ण निकला, पिसा खंगर १०।। तोले रहा, भट्टी के नीचे कटोरे के आसपास पड़े मिले ६ रत्ती दाने और जाली के ऊपर के २ मा० दाने सब २ माशे ३।। रत्ती उत्तम सत्त्व के दाने और २ मा० २ र० सत्त्व चूर्ण मिलाकर २ मा० ६ र० सत्त्व निकला।

सम्मति–(१) इस बार भट्टी की ऊँचाई बढ़ा देने और चौड़ाई कम कर देने पर भी ४ धोंकनियों से टिकियां पिघलकर नीचे न गिरीं किन्तु पहले घनों से भी बहुत अधिक भाग जाली पर ही रह गया, इसका स्पष्ट कारण समझ में नहीं आया, एक कारण हो सकता है कि भट्टी में बार बार कोयले न दे, केवल एक बार कोयले देने से भट्टी में पूरा ताव नहीं आता और जाली के नीचे कुछ भी कोयला न रहने से जाली बहुत ठंडी रहती है और उस पर पहुँचते ही अभ्रक जम जाता है, अतएव अगली बार भट्टी के चतुर्थांश कोयला जाली के नीचे भी दिया जावे और प्रति १० मिनट के अन्तर प कोयला डाल डाल भट्टी भर दी जावे।

सम्मति–(२) अबकी बार यद्यपि सब पदार्थ मिलकर जाली पर ही रह गया फिर भी सत्त्व के दाने और बार से अधिक बड़े बड़े मिले, इसका कारण निश्चय करना चाहिये।

अभ्रकसत्त्वपातन, इक्कीसवाँ घान

ता० २२/४/९ को उक्त नं० १ की शेष रही ४।। छ० टिकियों के कोयले भरी मिट्टी में जिसमें २। सेर कोयले समाते थे रख ऊपर से कोयलों से ढ़क ढ़क्कन ढ़क दिया और भट्टी के नीचे पात्र के इर्दगिर्द ऽ।। सेर कोयले बिछा उन पर दहकते कोयले रख नीचे का मुख बंदकर ८ बजकर ५० मिनट पर ४ धोंकनियों से धोंकना आरम्भ किया। १०–१० मिनट बाद २–२ सेर के अन्दाज दो बार कोयले भट्टी में डाले गये, ४० मिनट बाद धोंकना बंद कर भट्टी को ज्यों की त्यों ढ़की छोड़ दिया, ३ बजे नीचे के पात्र को निकाला तो उसमें ५ तोले कांचवत् पदार्थ टपका हुआ मिला, जिसके दल ने पीसने पर

१/२ रत्ती उत्तम सत्त्व के सूक्ष्म दाने और ३ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला, ४ तो० १० माशे कांचवत् पदार्थ का चूर्ण रहा, जाली को तोड़कर उस पर जमे २२ तोले कांचवत् पदार्थ को पृथक् कर दला पीसा तो केवल ६ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला, दाना कोई न निकला, काचंवत् पदार्थ का चूर्ण २१ तोले रहा, भट्टी के १४ तोले खंगरों के दलने पीसने पर ५ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला अर्थात् सब १/२ रत्ती सत्त्व के दाने निकले और १ माशे ६ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला।

सम्मति–२१ घान निकल चुके और अभी तक ये समझ नहीं आया कि ठीक सत्त्व किस प्रकार निकाले अतएव समस्त घानों की क्रिया को पढ़ना और विचारना चाहिये।

अभ्रसत्त्व के अवशेष काचवत् पदार्थ से पुनः सत्त्व पातन के लिये गोली नं० ४

कोष्ठयां किट्टं समाहृत्य विचूर्ण्य रवकान्हरेत् ॥ तत्किट्टं स्वल्पटंकेन गोमयेन विमर्द्य च ॥१॥ गोलान्विधाय संशोष्य धमेद् भूयोऽपि पूर्ववत् । भूयः किट्टं समाहृत्य मृदित्वा सत्त्वमाहरेत् ॥२॥

(र० र० स० ३५।३६।)

अर्थ–अभ्रसत्त्व के किट्ट (मल) को भट्टी से निकालकर उसका चूर्ण करे और रवों को ले लेवे फिर उसमें थोड़ा थोड़ा सुहागा डालकर गोबर से मर्दन करे पीछे उसका गोला बनाकर और सुखाकर पहले की तरह धमे, तिसके अनंतर फिर किट्ट को मर्दन करके सत्त्व निकाल लेवे।।१।।२।।

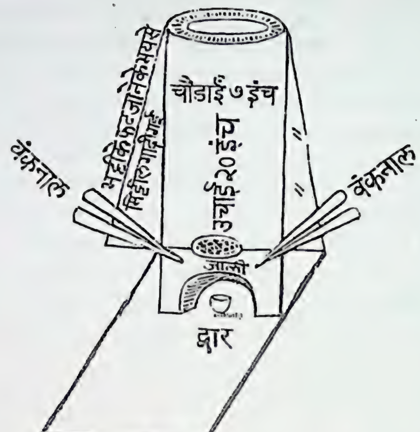
ता० ३/५/९ को अभ्रकसत्त्व के १७ वें घान से इक्कीस घान तक के भट्टी से नीचे टपके ६ छ० २ तो० काचवत् पदार्थ को वारीक पीस कपरछान कर अप्टमांश ४ तोले डेली का पिसा सुहागा और अर्द्धांश ३ छ० १ तो० गोबर मिला काफी गीला न होने से ककरोंदे के स्वरस का छींटा दे आटे की तरह गूंद गूलर की बराबर गोल गोली बना सुखा दी गई, जो तोल में सूख कर ७।। छ० रही। उसी प्रकार १७ वें घान में २१ वें घान तक के जाली पर जमे ७ छ० काचवत् पदार्थ में अष्टमांश ४ तोले ९ माशे डेली को पिसा सुहागा और अर्द्धांश ३।। छ० गोबर मिला ककरोंदे के स्वरस का छींटा दे गोली बना सुखा दी गई जो सूखने पर तोल में ८ छ० हुई।

अभ्रसत्त्व के लिये गोली नं० ५

ता० ११/५/०९ को उत्तम धान्याभ्र (जो ककरोंदे के समान रस से भावित थी) १ सेर अलसी की खल अर्द्धांश ८ छटांक, डेली का सुहागा चतुर्थांश ४ छ०, सज्जी लोट का अप्टमांश, २ छ०, राल, पीपल की लाख, चिर्मिटी, गुड़, गूगल, शहद, घृत, प्रत्येक षोड़शांश एक एक छ० (सूखी औषधियां कूट पीस कपरछान कर मिलाई गई, गुड़, गूगल, शहद, घृत सबको मिला गर्म कर डाले गये) सबको पीस मिला ककरोंदे के १।।।सेर रस के साथ गूंद १ घंटे घोट गोली बना सुखा दी गई जो सूखने पर तोल में २ सेर ६ छ० हुई।

अभ्रसत्त्वपातन–बाईसवां घान
भट्टी का आकार

राजहस्तसमुत्सेधा तदर्धायामविस्तरा । हस्तप्रमाणं दीर्घारमष्टसंख्यांगुलं तिर्यक् ॥३॥ शोडशांगुलविस्तीर्णं हस्तमात्रायतं समम् ॥ वंशखादिरमाधूक बदरीदारुसंभवैः ॥४॥



अर्थ–यह भट्टी ढ़ाई हाथ ऊंची और सवा हाथ चोड़ी हस्त प्रमाण लंबी और आठ अंगुल तिरछी और १६ अंगुल विस्तारवाली बनावे और इसमें वांस, खैर, महुवा, बेरी की लकड़ियों की आंच देवे।।३।।४।।

अबकी बार भट्टी गाउदुम न बना सीधी गोली बनाई गई जिसकी चौड़ाई ७ इंच और जाली से ऊपर ऊपर ऊँचाई २० इंच ती और जिसमें ३ सेर कोयले समाते थे।

ता० १९/५/९ को उक्त नं० ५ की गोलियों में से प्रथम २ छ० गोलियों को ३/४ भाग कोयलों से भरी उक्त नं० ४ की भट्टी में (जिसका आकार और नाप ऊपर दिया गया है) रख कोयलों से भट्टी ऊपर तक ढ़क्कन से ढक दी गई और नीचे पात्र रखने की आवश्यकता न समझ पात्र न रख नीचे का मुख बंद कर ८ बजे से ४ धोंकनियों से धोंकना आरम्भ किया, फिर १०–२०–३० मिनट पर ४ बार में दो दो छ० गोलियां और इस रीति से डाली गई कि प्रथम गोलियां डाल दी जाती थी और भट्टी जो करीब तिहाई के खाली हो जाती थी तुरन्त ही कोयलों से ऊपर तक भर दी जाती थी, इस भांति से पांच बार में १० छ० गोलियां डाली गई और पांच बार ही कोयला डाला गया, ९ बजकर १५ मिनट पर १४। घंटे धोंक चुकने के बाद जब भट्टी से अग्नि का झर निकला बंद हो गया तब धोंकना बंद कर ढक्कन उठा देखा तो भट्टी कोयलों से जाली तक खाली हो गई थी, बाद में ज्यों की त्यों भट्टी को छोड़ दिया

ता० २० को भट्टी के नीचे का मुख खोला तो केवल १ तोले २ माशे काचवत् पदार्थ नीचे टपका हुआ मिला जिसके दलने पीसने पर ३ रत्ती उत्तम सत्त्व के दाने (जो अबकी बार कुछ बड़े और उज्जवल थे) निकले, ४ रत्ती खंगर से व दाने निकले और १ माशे ३ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला, काचवत् पदार्थ का चूर्ण ९ माशे रहा, जाली को तोड़ उस पर जमे ३।। छ० काचवत् पदार्थ के दलने पीसने पर १ माशे उत्तम बड़े और ४ रत्ती छोटे ४ माशे ४ रत्ती खंगर से कुल ६ माशे दाने और ४ माशे ४ रत्ती मोटा, १ माशे ५ रत्ती महीन, सब ६ मा० १ रत्ती सत्त्वचूर्ण निकला, काचवत् पदार्थ का चूर्ण ३ छ० रहा, भट्टी के १ सेर १२ छ० खंगरों के दलने पीसने पर २ मा० ४ रत्ती बड़े और १ माशे छोटे, ४ माशे ४ रत्ती खंगर से, सब ८ माशे सत्त्व के दाने और ३ माशे ४ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला। काचवत् पदार्थ का चूरा १ सेर १० छ० रहा, इस भांति सब ३ मा० ४ रत्ती सत्त्व के बड़े–१ मा० ७ र० छोटे–९ मा० ४ र०, खंगर से कुल १ तोले २ माशे ७ रत्ती दाने और कुल ११ माशे सत्त्व चूर्ण मिलाकर २ तोले १ माशे ७ रत्ती सत्त्व निकला, ३ छ० ९ माशे काचवत् पदार्थ शेष रहा, बाकी फेंक दिया।

ता० ३० को उक्त सब प्रकार के दाने और सत्त्व चूर्ण को पुनः साफ कर ६ भागों में विभक्त किया गया जिससे उसकी तोलें अब इस प्रकार हैं–

उत्तम बड़े दाने	उत्तम छोटे दाने
३ माशे ४ रत्ती	२ माशे ४ रत्ती
खंगर से दाने	मोटा सत्त्व चूर्ण
६ मा० ४ रत्ती	५ माशे
महीन सत्त्वचूर्ण	मैला सत्त्वचूर्ण
६ मा० ४ र०	६ रत्ती
कुल	२ तोले ७ रत्ती

भट्टी से नीचे टपके हुए पदार्थ की अपेक्षा जाली पर जमे पदार्थ से दाने बड़े और उत्तम निकले और जाली की अपेक्षा भट्टी के खंगरों से अधिक सत्त्व के दाने निकले।

अभ्रसत्त्वपातन, तेईसवाँ धान

ता० ३०/५/९ को पहले उक्त भट्टी के ऊपर तक कोयलों से भर दिया और १० छ० कोयले जाली के नीचे भी बिछा उन पर आंच रख दी (यह खयाल कर कि कदाचित् बंकनाल द्वारा बाहर से आया हुआ वायु जाली के नीचे के भाग को ठंडा रख कर जाली द्वारा ऊपर से गिरते हुए सत्त्व को जाली पर ही ठंडा कर देता हो) फिर भट्टी के नीचे का मुख बंद कर धोंका गया, जब करीब आधी भट्टी खाली हो गई, तब उक्त नं० ५ की २ छ० गोलियां डाल ऊपर से कोयले भर ८। बजे से ४ धोंकनियों से धोंकना आरंभ किया, फिर १५ १५ मिनट बाद अर्थात् ८॥–९॥ बजे पर ३–३ छ० गोलियां और कोयले और डाले गये। (१५ मिनट में भट्टी आधी के अनुमान खाली हो जाती थी) चौथी बार ९ बजने पर देखा तो १/२ के अनुमान भट्टी खाली हुई थी गालिबन जाली के छिद्र रुक जाने से हवा का वेग घट गया था और जल्दी में इस बात का विचार न कर ४ छ० गोलियां और डाल दी और भट्टी कोयलों से भर दी गई, ४ बार में १२ छ० गोलियां पड़ीं, इसके अनंतर धोंकने से भट्टी में से रेल कीसी गूंज का शब्द निकलने लगा, जिससे पूर्ण निश्चय हो गया कि जाली से छिद्र अवश्य बंद हो गये हैं तथापि और धोंकते रहे परन्तु झर पूरे वेग से न निकली और करीब १ घंटे और धोंकने से भी कोयले निःशेष न हुए तब लाचार ९ बजकर ४० मिनट पर धोंकना बंद कर भट्टी को ज्यों की त्यों ढ़की छोड़ दिया।

ता० ३१ को भट्टी के नीचे का मुख खोला तो ४ तोले कांचवत् पदार्थ टपका हुआ मिला जिसके दलने पीसने पर ६ रत्ती बड़े, ४ रत्ती छोटे, ३ रत्ती खंगर से, सब १ माशे ५ रत्ती दाने और १ माशे ५ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला, कांचवत् पदार्थ ३ तोले ४ माशे रहा, जाली के ऊपर से कोयलों को निकाला तो बहुत से कोयले अधजले निकले जिनमें ४–६ अधजली गोलियां जिनमें कुछ सत्व भी पड़ गया था निकलीं जिनको तोड़ सत्त्व पृथक् किया तो ६ रत्ती बड़े, १ रत्ती छोटे, सब ७ रत्ती दाने और ३ माशे ७ रत्ती मोटा और ७ मा० २ र० महीन कुल ११ माशे १ रत्ती सत्त्वचूर्ण निकला, गोलियों की राख ५ तोले ४ माशे रही, जाली को तोड़ उस पर जमे ३ छ० कांचवत् पदार्थ के दलने पीसने पर २ मा० ४ र० बड़े, ४ रत्ती छोटे, ३ माशे खंगर से कुल ६ मा० सत्त्व के दाने और २ मा० ४ रत्ती मोटा सत्त्व चूर्ण निकला, काचवत् पदार्थ का चूर्ण ३ छ० १ तोले रहा, भट्टी के १३ छ० खंगरों के दलने पीसने पर् ६ रत्ती बड़े, १ मा० छोटे, ५ रत्ती खंगर से कुल २ मा० ३ र० सत्त्व के दाने और ४ माशे ४ रत्ती मोटा, ३ रत्ती महीन, सब ४ माशे ७ रत्ती सत्त्व चूर्ण निकला। इस प्रकार कुल ४ माशे ६ रत्ती बड़े, २ मा० १ र० छोटे, ४ माशे खंगर से कुल १० माशे ७ रत्ती सत्त्व के दाने और १ तोले ४ रत्ती मोटा, ७ माशे ५ र० महीन, सब १ तोले ८ माशे सत्त्व चूर्ण मिलाकर २ तोले ७ माशे सत्त्व निकला।

ता० ५/६ को उक्त सब प्रकार के दाने और चूर्ण को पुनः साफ कर ५ भागों में विभक्त किया गया जिससे अब उसकी तोल इस प्रकार है।

उत्तम बड़े दाने	उत्तम छोटे दाने
५ माशे २ रत्ती	२ माशे ३ रत्ती
खंगर से दाने	मोटा सत्त्व चूर्ण
३ मा० ३ र०	१० मा० ४ र०
महीन सत्त्व चूर्ण	सब ।
९ मा० ३ र०	२ तो० ७ मा०

अभ्रसत्त्वपातन चौबीसवां धान

अर्थ–ता० ६–६–९ को उक्त नं० ४ की भट्टी की चौड़ाई को ७ इंच थी अबकी बार शास्त्रोक्त माप के समान करने के लिये बढ़ाकर बालिश्त अर्थात् ९ इंच कर दी गई और इस शंका से कि मसाला पिघल कर जाली के रंध्रों में भर जाता है और जाली के रंध्र बंद हो जाने से धोंकनियों की हवा कोयलों तक नहीं पहुँच सकती, अतएव अबकी बार जाली को रखना, मौकुफ रखा गया, करीब ९ सेर के कोयले समान लगे थे, प्रथम १८ इंच तक ६ सेर कोयले भी नीचे का मुख बंद कर धोंका गया, जब भट्टी में करीब ८ इंच के कोयले नीचे धसक गये तब प्रथम ३॥ छ० गोलियां और ३ सेर कोयले और डाल भट्टी पर ढक्कन ढक ७ बजकर २० मिनट पर ४ धोंकनियों से धोंकना आरम्भ किया, १० मिनट बाद अग्नि का वेग अधिक बढ़ जाने से बंकनालों में हो अग्नि धोंकनियों के अन्दर प्रवेश कर धोंकनियों को जलाने लगी अतएव सुम्मों पर पानी डालते रहे और काम जारी रखा, ७ बजकर ४० मिनट पर ३॥ छटांक गोलियां और ३ सेर कोयले और डाल दिये, कोयले और पड़ने से और अग्नि के और अधिक प्रज्वलित होने से धोंकनियों का चर्म जलने लगा। लाचार ७ बजकर ५० मिनट पर अर्थात् ३० मिनट धोंक काम बंद करना पड़ा और भट्टी को ज्यों की त्यों छोड़ दिया।

ता० ७ को खोला तो भट्टी की तली पर कोयलों में मिला ७ तोले काचवत् पदार्थ निकला जिसके दलने पीसने पर २ रत्ती छोटे और ६ रत्ती खंगर से सब १ माशे सत्त्व के दाने निकले, काचवत् पदार्थ का चूर्ण ६ तोले रहा, कोयलों में मिली दो चार अधजली गोलिया निकली जिनकी पिसी राख २ तोले ३ माशे हुई, कुछ काचवत् पदार्थ पिघल कर भट्टी की तली की ईटों की संधि में समा गया था जिसको पृथक् किया तो ३ तोले ६ माशे हुआ जिसके दलने पीसने पर २ रत्ती सत्त्व के छोटे दाने और १ माशे सत्त्व चूर्ण निकला, काचवत् पदार्थ का चूर्ण ३ तो० ३ मा० रहा, भट्टी की बगलियों से तोड़ निकाले २ छ० १ तोले खंगरों के दलने पीसने पर २ रत्ती सत्त्व के छोटे दाने और ३ मा० ४ र० सत्त्व चूर्ण निकला, अर्थात् सब ६ रत्ती छोटे, ६ रत्ती खंगर से, कुल १ माशे ४ रत्ती सत्व के दाने और ४ माशे ४ रत्ती सत्व चूर्ण मिलाकर ६ माशे ६ रत्ती सत्व निकला।

सम्मति–इस बार की क्रिया के अनुभव से यह बात निश्चय हो गई कि ऐसी कड़ी आंच की भट्टियों में बिना जाली के धोंकनियों से हवा नहीं पहुँचाई जा सकती क्योंकि धोंकनियों से सांस लेते समय अग्नि धोंकनियों को जलाने लगती है।

अभ्रसत्त्वपातन पच्चीसवाँ धान

बिना जाली के जब काम ठीक न चल सकता और छोटे छिद्रों की जाली में भी यह त्रुटि थी कि पिघली हुई दवा से उसके छिद्र बंद हो जाने से धोंकनियों की फूंक दवा तक न पहुँच ताव ठंडा होने लगता था अतएव इस बार ९–६–९ को रुपये बराबर छिद्रों की जाली लगाई गई (जाली के ऊपर

ऊपर भट्टी की ऊँचाई २० इंच रही) और प्रथम ६ सेर कोयले (जिनसे भट्टी ८ अंगुल खाली रही) भर धोंका गया जब अग्नि भली भांति तीव्र हो गई और भट्टी कुछ और खाली हो गई तब २। छ० गोलियां और २ सेर कोयले डाल ७।। बजे से ४ धोंकनियों से धोंकना आरम्भ किया, १० मिनट धोंकने के बाद धोंकनियों में आंच आने लगी, भट्टी का ढक्कन उठा देखा तो मालूम हुआ कि कोयले बहुत नीचे धसक गये हैं, अतएव ७ बजकर ४० मिनट पर अर्थात् १० मिनट बाद धोंकना बंद कर भट्टी को ज्यों की त्यों ढ़की छोड़ दिया।

ता० १० को खोला तो जाली टूटी हुई मिली और कोयलों में मिली १०-१२ अधजली गोलियां निकालीं जिनकी पिसी राख जिसको चुंवक थोड़ा थोड़ा पकड़ता था, ४ तोले हुई।

सम्मति-यद्यपि इस बार जाली टूट जाने से पूर्ण निश्चय न हुआ किन्तु अनुमान यही होता है कि जाली के बहुत बड़े छिद्र न होने चाहिये, बड़े छिद्रों से कोयलें भी निकल कर नीचे गिर सकते हैं जो धोंकनियों को हानि पहुँचाते हैं और गूलर के समान अभ्र की गोली की रुपये बराबर छिद्र में बिना पिघले निकल जा सकती है, इसलिये पैसे से छोटा ही छिद्र होना चाहिये।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्ल-
कृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां स्वानुभूताभ्र-
सत्वादिपातनवर्णनं नामैकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥४९॥

मयूरपक्षसत्त्वाध्यायः ५०

मयूरपक्षसत्त्व नं० १ छोटे चँदोवा के निमित्त मयूरपक्षभस्म

ता० ५/६/८ को ७ सेर मयूर पक्षों के पृथक् किये गये १ सेर ८ छ० १।। तोले रोम और १५ छ० ३।। तोले चँदोवे (जो बड़े चँदोवे में अधिक डढ़ीर रह जाने के कारण पहली बार से छोटे अर्थात् ३।४ अंगुल लंबे मंडल मात्र ही पृथक् किये गये थे) कुल २ सेर ८ छ० वजन में से ४ छ० रोम और ३ छ० १।। तोले चँदोवे कुल ७ छ० १।। तोले वजन को १ सेर भैंस के कच्चे दुग्ध में भिगो सुखा दिया जो सूख कर ९ छटांक हुए।

ता० ७ को उक्त ९ छ० वजन में नं० २ के दूसरे घान के निकले ५ तोले अधजले मोर पक्षों को और मिला १० छटांक वजन कर उपरोक्त प्रकार से हांडी में बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ८ को २ बजे से भट्टी पर समाग्नि देना आरम्भ किया, शाम के ७ बजे आंच बंद कर हांडी को ज्यों की त्यों रखा छोड़ दी।

ता० ९ को खोला तो खंगर की शकल की श्याम रंग की १८ तोले भस्म निकली।

दूसरा घान

ता० १२ को उक्त अवशेष २ सेर ३।। तोले वजन में ६ छं० १।। तोले रोम और ३ छ० ३ तोले चँदोवे कुल ९ छ० ३।। तोले वजन को १ सेर गाय के कच्चे दुग्ध में भिगो सुखा दिया।

ता० १३ को उक्त मोरपंखो को जो तोल में इस समय ११ छटांक हुए, हांडी में भर उपरोक्त प्रकार से बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १५ को खोला तो खंगर की शकल की श्याम रंग की १९ तोले भस्म भारी और चमकदार निकली।

तीसरा घान

ता० १५/६/८ को उक्त अवशेष १ सेर ७ छ० मयूरपंखो में से ६ छटांक ४ तोले रोम और ४ छटांक १ तोले चँदोवे कुल ११ छ० वजन को १ सेर भैंस के कच्चे दुग्ध में भिगो सुखा दिया।

ता० १६ को उक्त मोरे पक्षों को (जो तोल में इस समय १३ छटांक हुए) उपरोक्त प्रकार से हांडी में बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १७ को २ बजे से ७ बजे तक तीक्ष्णाग्नि दे हांडी को ज्यों की त्यों भट्टी पर रखी छोड़ दी।

ता० १८ को खोला तो खंगर की शकल की २६ तोले भस्म भारी और श्याम रंग की निकली।

चौथा घान

ता० १९/६/८ को उक्त अवशेष ७ छटांक १ तोले रोम और ४ छ० ४ तोले चँदोवे कुल १२ छ० वजनक को १ सेर भैंस के कच्चे दुग्ध में भिगो सुखा दिया।

ता० २० को उक्त पक्षों को जो तोल में इस समय १४ छटांक २ तोले हुए उपरोक्त प्रकार से हांडी में बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २१ को २ बजे से ७ बजे तक तीक्ष्णाग्नि दे हांडी को ज्यों की त्यों भट्टी पर रखी छोड़ दिया।

ता० २२ को खोला तो खंगर की शकल की २६।। तोले और १ तोले खुरचन कुल २७।। तोले भस्म भारी और श्याम रंग की निकली, अर्थात् कुल ७ सेर मयूरपंखी के २।। सेर रोम और चँदोवों की (जो सब दूध में भीगे थे) १ सेर २ छटांक ६ माशे भस्म तैयार हुई।

मयूरपक्षसत्व नं० २ के निमित्त मयूरपक्षभस्म

ता० २५/५/८ को १।। सेर मयूर पक्ष (अर्थात् मोर की पूंछ की डढीरों) से रोमों को और चंदोवों को (जो ८ वा १० अंगुल लंबे अर्थात् जहां से डढ़ीर पर श्यामता आरम्भ होती है काट लिये गये थे) पृथक् किया तो २ छ० ३ तोले रोम और ६ छ० ३ तो० चंदोवे कुल ९ छ० १ तोले वजन निकला, बाकी १४ छ० ४ तोले उनकी निर्रोम डढीरें अलग कर ली गई।

ता० २६ को उक्त ९ छ० १ तोले रोम और चँदोवों को कपरौटी की हुई हांडी में भर सरवे से हांडी का मुख ढ़क कपरौटी कर सुखा भट्टी पर ८ बजे से मध्यमाग्नि देना आरंभ किया, घंटे भर बाद सरवे की संधि में होकर थोड़ी देर तक श्याम वाष्प जल (काली भाप का खोला गया तो हांडी की तली में लगी हुई बहुत हल्के चमकदार खंगरों की शलक की १८ तो० भस्म निकली)।

दूसरा घान दूध का

ता० २७/५/७ को २।। सैर मयूरपंखों के उपरोक्त विधि से पृथक् किये गये ५ छ० २ तो० रोम और ९ छ० ४।। तोले चंदोवे कुल १५ छ० १।। तोले वजन में से ३ छटांक रोम और ३ छ० चँदोवे कुल ६ छटांक वजन को १ सेर भैंस के कच्चे दुग्ध में भिगो सुखा दिया।

ता० २/६ को उक्त मोरपक्षों को जो तोल में इस समय ७ छ० थे कपरौटी की हुई हांडी में भर सरवे से मुख ढ़क कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ३ को भट्टी पर ३ बजे से मध्यमाग्नि देना आरंभ किया, ६ बजे आंच बंद कर हांडी को जैसे की तैसी रखी छोड़ दिया।

ता० ४ को खोला को हांडी की तली में जमी हुई खंगर की शकल की श्याम रंग की पहले घान की भस्म से कुछ भारी १३ तोले भस्म निकली।

तीसरा घान

ता० ४/६/८ को उक्त अवशेष २ छ० तोले रोम और ६ छ० ४।। तोले

चंदोवे कुल ९ छ० १।। तोले वजन को उपरोक्त विधि से हांडी में बंदकर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ५ को ३ बजे से ६।। बजे तक समाग्नि दे हांडी को जैसी की तैसी रखा छोड़ दिया।

ता० ६ को खोला तो हांडी में ऊपर ५ तोले मोर पंख अधजले निकले और नीचे १६ तोले खंगर की शकल की श्याम रंग की भस्म निकली।

नकशा नं० १–नं० २

नं०	तोल मोर पक्ष	तोल रोम	तोल चँदोवा	तोल रोम–चँदोवा	दूध के भीगे या वे दूध के	तोल भस्म	विशेष वार्ता
नं० १	ऽ७ सेर	सेर छ० तो० १ ८ १।।	१५ ३।। २ ८	सेर तो०	दूध के भीगे १ २ ६	सेर छ० माशे	
नं० २	ऽ४ सेर	छ० ८	सेर छ० १ १/२	सेर छ० १ ८	दूध के ६छ० ४७तो० वे दूध के १ सेर २।। छ० ३४ तोले	१३ तोले	
	जोड़ ११ सेर	जोड़ २सेर १।।तो०	जोड़ २ सेर १ तो० पंख के १/३ से	जोड़ ४ सेर २।। तो० ज्यादा रोम)	जोड़ – (रोम के १/२ से	जोड़ १से०११छ०२।।तो० कुछ कम भस्म)	अर्थात् पंखसे १/६से कुछ कम भस्म

मयूरपक्षसत्त्व नं० ३ के निमित्त नीरोम ढढीरों की भस्म

ता० २८–५–८ को ऽ।। सेर मयूरपक्षों की नीरोम (रोमरहित) ढढीरों के ४/४ अंगुल के टुकड़े कर हांड़ी में भर सवेरे से मुख बंदकर कपरौटी कर सुखा ३ घंटे मध्याग्नि दी बाद को जैसे का तैसा हांडी को रखा छोड़ दिया, शाम को खोला तौ ऊपर झुलसी हुई ऽ। पाव भर डढीरें निकली और नीचे खंगर की शकल की बहुत फुसफुसी और हलकी छत्तेसी चमकदार और श्यामरंग की ७ तोले भस्म निकली।

ता० १ को उक्त पावभर झुलसी ढडीरों को फिर उसी प्रकार हांड़ी में बन्दकर कपरौटी कर सुखा ४ घंटे तीक्ष्णाग्नि दे हांडी को ज्यों की त्यों भट्टी पर रखी छोड़ दिया।

ता० २ को खोला तौ पहली ही भस्म के सदृश ९ तोले भस्म और निकली, अर्थात् ८ छ० नीरोम डढीरों की सब १६ तोले भस्म तय्यार हुई।

मयूरपक्षसत्वपातन पहला धान

ता० ३०–६–८ को उक्त नं० २ की ५ तोले मयूरपक्षभस्म को बारीक पीस घरिया में भर कोयलों पर कड़ा धोंकना आरंभ किया, और साथ साथ ही घोडे के सुमकी १। तोले मैदा (जो इस रीति से बनाई गई कि घर की बडी घोड़ी के अगले पैरों की सुम जो ऊपर चाकू से खुरच साफकर नीचे से नरम और नीले रंग की निकाल लिये गये थे और जो तो० १,१० मा० थे कठिन और चमचोड़ होने के कारण इमामदस्ते में न कूट सके अतएव प्रथम रेती से रेत दरदरा चूर्ण हो जाने पर इमामदस्ते में कूट कपड़े में छान १। तोले मैदा तय्यार कर ली) चुटकी से बुरकते गये (जिसके डालने से घरिया के ऊपर आंच प्रज्वलित हो जाती थी) १/२ घंटे बाद धोंकना बंदकर घरिया को ठंढा कर भस्म को निकाला तो ताव खाकर भस्म की फुसफुसी टिकियां बन गई थी और कुछ हलकापन भी आ गया था, श्यामता और चमक उसकी फीकी प्रड़ गई थी, बाजरा और पोस्त सदृश गोल सत्त्व के दाने उसमें मिले हुये थे जो पृथक् कर तोलने से २ रत्ती हुये जिनमें सें आधे से अधिक दानों को चुंबक पकड़ता था तोड़ने से अन्दर पोले निकलते थे, राख को तोला तौ २ तोले रह गई थी।

दूसरी आँच

ता० १/७/८ को इस शंका से कि भस्म में अभी और सत्त्व मौजूद है १ तोले शहद, १ तोले घृत, ३ माशे पिसा सुहागा मिला सात लुगदी से बना घरिया में रख फिर आध घंटे कड़ा धोंका तो भस्म की पहले दिन से कुछ कड़ी टिकिया बन गई और ऊपर उसके बहुत हलकी सफेद पापड़ी सी हो गई जिसमें खंगर की शकल के छोटे छोटे कांच के से दाने दीखते थे, तोड़ने से अन्दर ये भी पोले निकलते थे, किन्तु इनको चुंबक न पकड़ता था, भस्म की टिकियों को तोड़ देखा तो अन्दर कोई दाना सत्व का न निकला, भस्म को तोला तौ १।। तोला हुई।

मयूरपंखसत्वपातन दूसरा धान

ता० २–७–८ उक्त नं० २ की २।। तोले भस्म में ७।। माशे सुहागा, १।।। माशे जवाखार, १।। माशे सांभर, ३ माशे धुना कतरा ऊन डाल मिला गुड़, शहद, मीठातेल, ९/९ माशे डाल सान लुगदी बना इमामदस्त में खूब कूटा जिससे ऊन खूब मिल गई, बाद को छिली अंडी ७।। माशे कूटी छनी अलसी ७।। माशे घंटे भर कूट चिकनी लुगदी बना ली जो तोल में ६ तोले ९ माशे हुई।

संमति–लुगदी ज्यादः नरम हो गई इसलिये गुड़, शहद, तेल ७।।–७।। माशे ही डालने चाहिये।

ता० ६ को उक्त लुगदी को घरिया में रख १/२ घंटे धोंका गया तौ लुगदी जलकर कठिन हो गई थी, तोड़कर देखा तौ कोई दाना सत्व का न दीख पड़ा, अतएव उसे पीस कपड़े में छान देखा तौ कोई दाना न मिला भस्म को तोला तौ २ तो० ८ माशे रह गई।

सम्मति–शंका रह गई कि ताव पूरा लगा या नहीं।

मयूरपक्षसत्त्वपातन, तीसरा धान

ता० ३/७/८ को उक्त नं० २ की २।। तोले मयूरपक्षभस्म में ऊन ३ माशे, सुहागा, पीपल की लाख, गूगल, गुड़, शहद, घृत, ७।।–७।। माशे, खल १। तोले डाल खूब सान इमामदस्त में कूट लुगदी बना ली जो तोल में ७ तोले ९ माशे हुई।

ता० ६ को उक्त लुगदी को घरिया में रख १/२ घंटे धोंका तो लुगदी जल कर कठिन हो गई थी, उसे तोड पीस कपड़े में छाना तो कोई दाना सत्त्व का न दीख पड़ा, भस्म को तोला तो २ तोले ९ माशे हुई।

सम्मति–शंका रह गई कि ताव पूरा लगा या नहीं।

मयूरपक्षसत्त्वपातन, दूसरे और तीसरे घान की दूसरी आंच

ता० १/८/८ को उक्त मयूर पक्षसत्त्व नं० २ के दूसरे और तीसरे घान की ५ तोले ५ माशे भस्म में से ४ तोले भस्म में सुहागा, शदह, घृत, १–१ तोले और गूगल चिर्मिटी लाल, लवण, जवाखार ३–३ माशे मिला (जिसके मिलाने से दवा की फुसफुसी टिकिया से बनी) वरिया में रख धोंकना आरंभ किया, १/२ घंटे बाद धोंकना बन्द कर दवा को निकाला तो लुगदी जलकर कठिन हो गई थी तोड़कर देखा तो लुगदी ऊपर कुछ श्वेतता लिये थी और अन्दर काली थी दाना सत्त्व का उसमें कोई न था, तोल में ५ तोले १ माशे थी।

ता० १७ को उक्त ५ तोले १ माशे की टिकियां को बारीक पीस पानी में डाल रख दिया तीसरे दिन देखा तो उसके ऊपर बहुत पतली मलाई सी पड़ गई थी नीचे कुल राख बैठ रही थी उस राख का पानी नितार और पानी से धोया तो उस राख के अतिरिक्त कोई सत्त्वरूप पदार्थ नीचे न बैठा धुली राख तोल में ११ माशे २ रत्ती रह गई।

मयूरपक्षसत्त्वपातन का उद्योग–लाला गंगाराम सुनार सहावर दर्वाजा कासगंज द्वारा

ता० ५/९/७ मयूर पक्ष भस्म नं० २–४ छटाँक, कैन का साधारण शुद्ध पारद १ छटांक दोनों को शीत खल्व में डाल ७ बजे से घोटना आरंभ किया, २० मिनट घोटने से पारा राख में मिलकर अदृश्य हो गया, १ घंटे और इसी तरह सूखा घोटा बाद को पानी में डाल थोड़ी देर घोटा पारा राख के पृथक् न हुआ, फिर राख में बहुत सा पानी डाल तश्तरी में नितार दिया जिससे खरल की तली में पारे का रेत सा बैठ गया, उसको धो तश्तरी में कर लिया बाद को उसी तरह ८–१० बार पानी डाल नितार तश्तरी में रख धूप में सुखा दिया तो सूख कर पारा निज रूप में दृष्टि आने लगा, अलग कर तोला तो ४ तोले ३ माशे निकला, ९ माशे राख में मिला रह गया, इस पारे को कपड़े में छानी तो कुछ भी पिष्टी न निकली।

ता० ६ को इस ४। तोले पारे को घरिया में रख कोयलों की आंच दी तो करीब १/२ घंटे में सब पारा उड़ गया, कुछ भी ताम्र न बैठा।

उपरोक्त मयूरपक्षभस्म को पानी के सुखाने से ३ छ० निकली थी खुले डौरू में ३ घण्टे मध्याग्नि दी तो ८ तोले रह गई।

(१)सम्मति–गंगाराम ने कहा था कि इस प्रकार मर्दन से पारा भस्म से ताम्र को ग्रहणकर तोल में बढ़ जायगा किन्तु पारा बढ़ने की जगह भस्म में मिल गया, धोकर निकालने पर कम निकला, छानने पर पिष्टी न दी, उड़ाने पर सत्त्व न दिया।

कर्म के पश्चात् गंगाराम ने कहा कि ये क्रिया मेरी की हुई नहीं है मेरे पिता की करी हुई थी, इनके बुलाने में दस रुपये खर्च पड़ गये और पाव भर भस्म जो पाँच रुपये से कम लागत की न थी दूषित हो गई।

(२)सम्मति–इस क्रिया में यह बात सिद्ध हुई कि मयूरपक्ष भस्म पारद को नष्टपिष्टी कर सक्ती है, अब ये अनुभव करना चाहिये कि कितने अंश से पारद की पिष्टी बन सक्ती है।

मयूरपक्षसत्त्व पातन के निमित्त भस्म नं० १–२ की टिकियां

ता० १२/१०/८ को मयूरपक्षभस्म नं० २ की दूध की भीगी १३ तोले और नं० १ में से १३ तो० सब २६ तोले में ऊन, गुड़, गूगल, लाख १।।–१।। तोले, मीन (मछली) चूर्ण ३ तोले। शहद, घृत, सुहागा, अंडी की मींगी, तिल की खल, ६–६ तोले ऊन कतर कर डाला गया। गुड़, गूगल, शहद, घृत में मिला गर्म कर डाले गये, बाकी सब चीज कूट पीस बारीक कर डाली गई) कुल ३९ तो० मसाले मिला सान १ घंटे इमामदस्त में कूटा गया।

ता० १३ को भी घण्टे भर कुटाई हुई (मसाला फुसफुसा रहा टिकिया बांधने लायक न था)

ता० १४ को २ घण्टे कुटाई की तब भी फुसफुसा रहा।

ता० १५ को करीब १।। छ० दूध डाल सान छोटी २ टिकियां बना सुखा दीं।

मयूरपक्षसत्त्वपातन, चौथा घान

ता० ३०/१०/८ को उक्त टिकिया में से ३ छ० टिकियों को अंगरेजी घरिया में भर नं० ३ की भट्टी में (जिसका आकार अभ्रसत्त्व प्रक्रिया में दिया जा चुका है और जो १ फुट गहरी और ९ इंच चौड़ी थी) ३ बजे से धोंकना आरंभ किया, ४ बजे धोंकना बन्द कर टिकियों को निकाला तो सब टिकियां जली हुई निजरूप में निकलीं, जो टिकियां घरिया में ऊपर थीं उनके ऊपर थोड़ी २ कठिन पापड़ी से पड़ गई थी बाकी टिकियां ज्यों की त्यों थी, टिकियों को तोड़ देखा तो किसी में कोई सत्व न दीखा, जली टिकियां तोले तो ५।। तो० रही।

सम्मति–अभ्रसत्त्व का घान अंगरेजी घरिया में जो आज ही निकाला गया उसमें भी सत्त्व न पड़ा, इससे यह निश्चय है कि यद्यपि घण्टे भर अग्नि दी गई किन्तु अग्नि मन्दी रही जिससे ताव ठीक न दाना आकर सत्त्वपातन न हुआ।

मयूरपक्ष सत्त्वपातन पाचवां घान

ता० ६/११/८ को उक्त टिकियों में से २।। छ० टिकियों को अंगरेजी घरिया में भर ३।।। बजे से दो धोंकनियों से धोंकना आरंभ किया, पौन घण्टे बाद धोंकना बन्द कर घरिया में निकाला तो घरिया का पेंदा गलकर भट्टी में ही रह गया था, टिकियां निजरूप में जली हुई निकलीं जिन पर कोई रवा न दीखता था, किन्तु घरिया के अन्दर खुरचने से २।। माशे चमकदार दाने निकले, जिनको चुंबक पकड़ता था, टिकिया ३ तोले ३ माशे रहीं।

सम्मति–ये दाने जहां तक निश्चय होता है घरिया के अंश से बने है मयूरपक्ष सत्व नहीं। अँगरेजी पृथक् करण द्वारा निश्चय किया जाय कि इन दानों में क्या वस्तु है?

मयूरपक्ष सत्वपातन छठा घान

ता० ६/११/८ को उक्त टिकियों में से ३ छटांक टिकियों को भट्टी में बिना घरिया के खाली कोयलों पर रख २० मिनट धोंका, जब जाना कि टिकियां नीचे को पिघलकर चली गईं, धोंकना बन्द कर जैसे का तैसा छोड़ दिया।

ता० ७ को पहले ऊपर के कोयलों को निकाला तो उनमें २ माशे दाने मिले निकले, चलनी को तोड़ नीचे टपकी हुई दवा को निकाला तो थोड़ा सा कांच सा निकला जिसके अन्दर कोई दाना न था और टूटी हुई चलनी के चूरे में मिले २ माशे दाने निकले, पिघली हुई दवा का अधिक अंश चलनी पर ही रह सब दाने ४ माशे थे जो राई से लेकर ज्वार की बराबर थे बडे दाने विशेष कर काचवत् थे। इन दानों को न चुंबक पकड़ता है न इनमें कुछ गुरुत्व है न कोई धातु की आकृति है ओर स्पष्ट कांच रूप दीखता है, अतएव इनको सत्त्व न मानकर कांच ही माना गया और श्वेत और श्याम दो भागों में विभक्त कर रख लिये गये, कुछ मैल कूढा छांटकर फेंक दिया गया।

मयूरपक्ष भस्म नं० १ में भावना

ता० २८ /६/८ को उक्त मयूरपक्ष भस्म नं० १ आठ छटांक ऊन भस्म

चार छटांक दोनों को पीस ५ छटांक केले की जड़ के रस की भावना दी गई।

ता० २९ को ३ छ० रस की दूसरी भावना लगी।

ता० ३० को भी ३ छ० रस की तीसरी भावना दी गई। बादक ता० ३/७ तक सूखती रही, सूख जाने पर हांडी में भर रख दी।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपंडितमनमुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रस राजसंहिताया हिन्दीटीकायां स्वानुभूतमयूरपक्षसत्वादिवर्णनं नाम पंचाशत्त मोऽध्यायः ॥५०॥

दरदाध्यायः ५१

दरद भेद

दरदं त्रिविधं प्राहुश्चर्मारं शुकतुण्डकम् । हंसपादं तृतीयं तु गुणवत्तु यथोत्तरम् ॥१॥ चर्मारः शुकवर्णः स्यात्सुपीतः शुकतुण्डकः । जपाकुसुमसंकाशो हंसपादो महोत्तमः ॥२॥ चर्मारः शुकवर्णः क्लमं भ्रमं मेहमोहौ च । संशोध्यस्तस्मात्सद्वैद्यै रक्तहिंगुलशुद्धितः ॥३॥

(बृहद्योगतरङ्गिणी, टो० नं०)

अर्थ—सिंगरफ, चर्मार, शुकतुंडक और हंसपाद इस प्रकार तीन तरह का है इनमें से एक से दूसरा यानी चर्मार से शुकतुंड और शुकतुंड से हंसपाद उत्तम है। जिस सिंगरफ में हरी झलक हो उसको चर्मार कहते है, जो कुछ पीली झलक का हो उसे शुकतुंडक कहते हैं, जो जपाकुसुम (गुड़हर) के फूलों के समान लाल वर्ण का हो उसे हंसपाद कहते हैं वह हंसपाद सर्वोत्तम है। हरी झलकवाला ग्लानि भ्रम प्रमेह और मोह को करता है इसलिये वैद्य उसको रक्तहिंगुल की शुद्धि के समान ही शुद्ध कर लेवे।।३।।

अशुद्ध हिंगुल के दोष

अशुद्धो दरदः कुर्याद्व्याधिं क्षैण्यं कसं भ्रमम् ॥४॥

(बृहद्योगतरङ्गिणी)

अर्थ—अशुद्ध सिंगरफ अनेक प्रकार के रोग, क्षीणता, कास और भ्रमको करता है।।४।।

हिंगुलशोधन

मेषीक्षीरेण दरदमम्लवर्गैश्च भावितम् ।
सप्तवारं प्रयत्नेन शुद्धिमायाति निश्चितम् ॥५॥

(बृहद्योगतरङ्गिणी भा० प्र०)

अर्थ—हिंगुल को सात बार भेड के दूध की सात भावना देवे फिर सात ही भावना अम्लवर्ग की देवे तो हिंगुल निश्चय ही शुद्ध होगा।।५।।

अन्यच्च

शुद्धः स्याद्दरदः सप्तकृत्वो लाक्षाम्बुभावितः ।
मलदोषादिकं नास्ति सर्वकार्येषु युज्यते ॥६॥

(टोडरानन्द)

अर्थ—हिंगुल को सात बार लाख के रस की भावना देवे तो वह शुद्ध होता है और सब कार्यो के उपयोगी है।।६।।

शुद्धहिंगुल के गुण

तिक्तं कषायं कटु हिंगुलं स्यान्नेत्रामयघ्नं कफपित्तहारि । हृल्लासकुष्ठज्वरकामलाघ्नं प्लीहामवातौ च गरं विनाशयेत् ॥७॥

(बृहद्योगतरङ्गिणी)

अर्थ—हिंगुल चरपरा, कषैला, कडुआ होता है, नेत्ररोगों का नाशक, कफ पित्त का हरनेवाला है, उबकाई, कुष्ठ, ज्वर और कामला को दूर करता है तिल्ली, आमवात और विष को नाश करता है।।७।।

उत्तमहिंगुल लक्षण

जपाकुसुमसंकाशो हंसपादो महोत्तमः ।
रसायने सर्वलोहमारणे रसरंजने ॥८॥

(टोडरानन्द)

अर्थ—लाल रंग का हंसपाद नाम का हिंगुल रसायन करने में तथा समस्त धातुओं के मारण और रंजन करने में अत्यन्त श्रेष्ठ है।।८।।

शिंग्रफ मुसफ्फा बनाने की तरकीब १/१८ गंधक से (उर्दू)

सीमाव मसअद अठारह हिस्सा गूगर्द एक हिस्सा लेकर बाद कजली करने के आतिशी शीशी में जिसको तीन बार गिले हिकमत करके खुश्क कर लिया हो निस्फ शीशी तक भर कर उस पर से शीशे की डाट लगाकर नमक साईदः और सफेदी बैजा मुर्ग से मुहर करके खुश्क कर ले और हांडी पराजरेग में गर्दन तक शीशी दफन करके हांडी को तीन रोज ख्वाह पांच रोज तक हस्ब जरूरत आग दे बाद सर्द होने के शीशी निकाल ले। बाजे हुकमाने गंधक अठारह हिस्सा सीमाव एक हिस्सा वजन तहरीर किया है।

शिंग्रफ मुसफ्फा बनाने की दूसरी तरकीब गंधक से (उर्दू)

यह है कि दोनों ब्रवजन मजकूरः बाला देकर आतिशी शीशी में रखकर गिले हिकमत करके एक तनूर में जिससे आग निकाल ली गई हो और शीर गरम हों ईंट रखकर उसके ऊपर शीशी मजकूर रख दे और उतनी देर में कि एक दो रोटी खाते हैं निकाल ले शिंग्रफ हो जावेगा। (सुफहा ८३ किताब अलजवाहर)

शिंग्रफ कुदसी बनाने की तरकीब १/८ गंधक से उमदा करना हो तो खफीफ नौसादर भी (उर्दू)

सीमाव खालिस दस दिरम (२ तोले ११ माशे) गूगर्द जर्द एकमुसकाल (४० माशे) लेकर शीशी गर्दन दराज में रखकर गिले हिकमत और मुहर वदस्तूर करके चौड़े मुँह की हांडी में इस तरह रखे कि गर्दन शीशी की निकली रहे और हांडी में भी गिले हिकमत करके हांडी में बालू रखकर शीशी के चारों तरफ भर दे और नीचे से आग ५ घंटे दे आग इस तरह दे कि पांच घंटे में ६ सेर लकड़ी जले इससे ज्यादह न हो जब छहों सेर लकड़िया खत्म हो जावें तो गंधक के बुखार से सीमाव मुनक्किद होकर शिंजर्फ होकर नीचे मुंजमिद हो जावेगी अगर ज्यादह उमदा बनाना मंजूर हो तो दांग रत्ती नौसादर कानी उसमें मिलावें। (सुफ़हा ८१ किताब अलजवाहर)

शिंग्रफरूमी बनाने की तरकीब २/३ गंधक और मन्सिल से (उर्दू)

सीमाव खालिस बारह हिस्सा, गंधक आठ हिस्सा दोनों की कजली करे बाद मुन्सिल सुर्ख मिलाकर सहक बलेग करके मोटे दलकी आतिशी शीशी में रखकर गिले हिकमत करके मुहर नमक और सफेदी बजा मुर्ग की करके बादहू खुश्क करके हांडी को आग पर चढावे और हांडी के मुँह को भी वन्द करके गिले हिकमत कर दे और चूल्हे पर हांडी के जोड को भी मिट्टी से ल्हेस दे कि आग का असर किसी जर्फ से बाहर न जावे, बादहू पहले पहर नरम आंच दूसरे पहर ओसत दर्जे की आंच, बादहू चार पहर सख्त आंच दे। गर्ज यह है कि रफ्तः रफ्तः आंच तेज करना चाहिये बाद उसके खुद व खुद

सर्द होने दे बाद अजाँ निकाल कर हांडी से शीशी को निकाल ले कुल अजजाइ मुनक्किद होकर शिंग्रफ रूमी बन जावेंगे यह अकसर जगह काम आता है। (सुफहा ८० किताब अलजवाहर)

शिंग्रफरूमी की दूसरी तरकीब गन्धक ३/५ और मन्सिल १/१० से (उर्दू)

अर्थ—सीमाब २० हिस्से गूगर्द बारह हिस्से जरनेख (मन्सिल) सुर्ख दो हिस्सा गुवार की तरह बारीक करके और प्याले में रखकर तनूर में जिससे आग निकाल ली गई हो एक ईंट के ऊपर रखकर दूसरा प्याला बन्द करके तनूर का मुंह मजबूत बन्द कर दे, दूसरे दिन तनूर खोल कर प्याला उठा ले शिंग्रफ बरंग सुर्ख और उमदा व लतीफ निकलेगा और अगर शीशी में बनावेगा तो गरकर्दके धुवें से स्याह हो जावेगा, इस वजह से प्याले में अमल किया गया है (सुफहा८३ किताब अलजवाहर)

सिंग्रफफरंगी बनाने की तरकीब संग रासखसे (उर्दू)

यह सबसे बेहतर होता है सीमाव खालिस लेकर उसको मुसफ्फा और पाकीज कर ले इस कदर कि उसमें स्याही बाकी न रहे और अगर स्याही रह जावे तौ इस्पन्द सोख्तनी के हमराह सहक करके स्याही को दूर करे बादहू हम वजन उसके संग रासख को लेकर खरल में महीन पीस कर सीमाव को मिलावे ताकि दोनों एक जाता हो जावें बाद उसके आतिशी शीशी में भर कर गिले हिकमत मुँह सारूज से मजबूत बन्द कर दे और रात भर गर्म तनूर में रखे. सुबह को निकाले शिंग्रफ रमानी निहायत उमदा बरामद होगा बफज्लहूताला। (सुफहा ८४ किताब अलजवाहर)

शिंग्रफ की स्याही दूर करने और मुसफ्फा करने की तरकीब (उर्दू)

इसकी छः तरकीवें है, तरकीव नं० १ शिंग्रफ को लेकर चीनी के बराबर छोटे छोटे टुकड़े बनावे और चीनी के प्याले में रखे और नीचे उसके गिले हिकमत कर दे और बोल सिवियान मुकत्तर उस पर डाले इतना कि चार अंगुल उसके ऊपर रहे बाद उसके नरम आग पर रख दे कि आहिस्ता आहिस्ता जोश खावे जो स्याही होकर ऊपर आती जावेगी उसको फेंकता जावें यहां तक पेशाव में न रहे बल्कि उसका रंग बदस्तूर रहे जब रंग उसका लाल रमालीकी तरह सुर्ख हो जावे बाद उसके धोकर काम में लावे तरकीव नं० २ शिंग्रफ को कतान के कपड़े की पोटली में बांधकर अव्वल नौसादर कानी को हल करके चीनी के जर्फ में रखें और शिंग्रफ की पोटली को उसमें लटकावे कि डूबी रहे और बतरीक अव्वल के नरम आग दे स्याही दूर हो जावेगी।

तरकीब नं० ३ शबयमानी फिटकिरी हल करके सिंग्रफ पार्चाकतान की पोटली में बांधकर उस्में लटका दे स्याही जाती रहेगी फिटकिरी महलूल इस्तरह करे कि उसको चंद रोज तक सिरका मुकत्तर या शराब खालिस में डाल दे जब हल होजावे काम में लावे।

तरकीब नं० ४ नौसादर मसक्का और फिटकिरी दोनों नमक सज्जी के पानीमें हल करे और शिंग्रफ को उसके दर्मियान में रखकर डोलापंतरगर्की करे स्याही जाईल हो जावेगी निकाल कर काम में लावे।

तरकीब नं० ५ शिंग्रफ का टुकड़ा लेक बकरी के घी में छिपा कर मौत दिल आग पर रखे और जोश दे स्याही दूर होगी।

तरकीब नं० ६ सिंग्रफ को अव्वल सिरका मुकत्तर में लटका दे जिस्में स्याही दूर होकर सुर्ख हो जावे बाद उसके रोगन में जोश देकर आलादर्जे का सुर्ख करे बादहू काम में लावे इन तरकीब मजकूरः वाला से साफ करके सिंग्रफ मजकूर नक्काशी का काम में लाया जाता है। (सुफहा ८५ किताब अलजवाहर)।

१ कदाचित् गूगर्द होगा।

कुश्ता शिंजर्फ बरंग सफेद आक की जड से (उर्दू)

अगर वेख आक को खोदकर उसमें शिंग्रफ ६ माशे की डली रख कर कपरमिट करके पांच सेर की आग दें तो शिंग्रफ बरंग सफेद कुश्ता हो जावेगा। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां १/२/१९०७)

कुश्ताशिंजर्फ कमलनाल से (उर्दू)

शिंग्रफ एक तोला कमलगट्टे की जड के दर्मियान रखकर रस्सी से खूब मजबूत बांधकर गिले हिकमत करके करीब दस सेर के आग देवें कुश्ता हो जावेगा। (सुफहा ८६ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ताशिंजर्फ सफेद गुलाबाससे (उर्दू)

वेख गुलाबासका आध सेर लुगदा लेकर आध पाव पार्चा लपेटकर किसी गोशे में हवा से बचाकर आंच दी जावे (सुफहा नं० ४ अखबार अलकीमियां १/५/१९०७)

कुश्ताशिंजर्फ लहसन में (उर्दू)

शिंग्रफ तोला को लहसन यानी थूम मुकश्शर १५ तोले के नुगदे में कपरौटी ५ तोले रश्नः खाम लपेट कर आग बकदर दो सेर महफूज जगह में देवें इस्तरह तीन आग देवें कुश्ता सफेद हो जायगा। (सुफहा ८३ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ताशिंग्रफ बरंगसफेद कौडगंदल में

कोड गंदल एक मशहूर बूटी है जो लुधियाने के कुर्व जवार देहात पवाद में बकसरते पैदा होती है इसके आध सेर नुगदे में शिंग्रफ दो तोले की डली रखकर मजबूत कपरौटी करके जब खुश्क हो जावे पांच सेर की मगाक में बंद हो आंच देवे जब सर्द हो जावे निकाल लें इसी तरह सात दफे सात नुगदे आध आध सेर में पांच पांच सेर उपले की बंद हवा में आंच देते जायँ आखिरी आंच के बाद शिंगरफ व रंग सफेद कुश्ता होगा। (सुफहा २६ किताब इसरार अलकीमियां)

कुश्ताशिंजर्फ केले के जड़ में (उर्दू)

केला की जड करीब सवा हाथ के लेवे बादहू उसके दर्मियान दो तोले शिंग्रफ की डली रख कर गिले हिकमत करके एक गढा में मुनासिब आग दे देवें ताकि केला जल जाने मुजर्रिब है। (सुफहा ८५ किताब कुश्तैजात हजार)

कुश्ताशिंगर्फ रूमी बरंग सफेद शीरमदार का चोया दे तुलसी की लुबदी में रख केले की जड में आंच (उर्दू)

शिंग्रफ रूमी १ तोला कर्छा आहनी में रख कर ४० तोला शीर मदार का चोया दे बादहू दस तोला तुलसी बूटी के नुगदे में देकर केलें की जड़ में बंद करके जब खुश्क हो १० सेर उपलों की आंच देवें इन्शा अल्लाह ताला कुश्ता सफेद रंगत का बरामद होगा। (सुफहा ११ वेशोपकारक १४/११/१९०६)

कुश्ताशिंजर्फ वरंग सफेद अर्कप्याज जंगली व शीर मदार में पकाने से (उर्दू)

आव जंगली प्याज दो तोला, शीर मदार १ तोला, शिंग्रफ एक तोला को मिट्टी के कुज्जों में रखकर नरम नरम आंच पर पकावे मगर आंच जंगली उपलों की हो सफेद हो जावेगा, मुजरिब है। (सुफहा ८३ किताब कुश्तैजात हजारी)

शिंग्रफभस्म कटेरी तुलसी, गुलाबांस के रस और भेड के दूध में ओटा मूषा में बालुकायंत्र में आंच

सिंग्रफ कंडचारी (कटेरी) रसविच उबालना फिर तुलसी बीच फिर गुलाबांसी रस बीच फिर भेद दे दुद्धविच फिर कुज्जे बिच रख के बालूयंत्र में हस्तभर टोपा में अग्नि देवे श्वेत हो जायगा (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्ताशिंजर्फबरंग सफेद खाकिस्तरदख्तसुर्ख मिर्च में (उर्दू)

पांच या ६ सेर सुर्ख मिर्च की लकडी जलाकर राख बना लो और हडियां में डालकर दर्मियान में शिंगरफ की डला रखकर पांच सेर बेर की लकडी की नीचे आग जलाओ मगर आंच दो चोबी हो जिस वक्त तमाम लकड़िया जल जावें तौ सर्द करके निकाल लो तौ शिंग्रफ सफेद होगा मुजर्रिब है। (सुफहा ८२ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ताशिंजर्फ की उमदा और आसानतरकीब खास्तर दरख्त सुर्ख मिर्च में (उर्दू)

मिर्च सुर्ख की लकड़ियां खुश्क बकदर दो सेर पुख्त: जलाकर उसकी खाक एक हांडी कोरी गिली में भर दे एनवसत खाक में दो तोला डली शिंग्रफ की रखे मुंह हांडी का चिप्पी (ढक्कन) से बंद करके आरद बंदमसे खूब खाम कर दें बाद अजां देगदान के ऊपर रखे एक पहर कामिल नरम आंच ५ सेर चीन कनार रसै दें इन्शा अल्लाह डली मजकूर अन्दर ही अन्दर हांड़ी के शिगुफ्त हो जावेगी निकाल कर कदरे आग पर डालें अगर रंग तवदील न हुआ और धुवां न दे इस्तैमाल में लावें यह कुश्ता कुव्वत वाह के लिये नादिरात और मेरे तजरुबात में से है हलवा या मस्का में बकदर दो बिरंज (सुफहा ५ अखबार अलकीमियां)

कुश्ताशिंग्रफ बरंग सफेद पोस्तबैजामुर्ग और शौरमें (उर्दू)

शिंग्रफ एक तोला, पोस्तबैजा मुर्ग दस तोला, शोरा कलमी पांच तोला, अव्वल एक तोला कूजा गिली में निस्फ पोस्त बैजा मुर्ग बारीक करके रखें उस पर शिंग्रफ की डली रखकर बाकी निस्फ पोस्त शिंग्रफ के ऊपर बिछाकर सबके ऊपर शोराकलमी डाल दें जाँवाद कपरौटी करके पांच सेर की आंच दें वरंग सफेद कुश्ता होकर बरामद होगा।

(सुफहा २ अखवार अलकीमियां १/११/१९०७)

सिंग्रफभस्म शीशे के चूर्ण में पुट

चिटे कचेद चूर्ण में सिंग्रफ रख के आग दैणी श्वेत हो जायगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्ताशिंग्रफ बरंग सफेद तुख्मएरंड में पकाकर कुंजद की लुबदी में आंच (उर्दू)

तुख्म अरंड दो तोले के रस में निंबू खरल करके शिंग्रफ एक़ तोला की डली पर जमाद कर दें और बादहू मग्ज तुख्म अरण्ड एक सेर का नुगदा बनाकर उसके दर्मियान शिंग्रफ देकर खुले मुंह की कड़ाही में रखकर नीचे आग जलानी शुरू कर दें, बीस मिनट के बाद कड़ाही के अन्दर मग्जों को भी आग लगावें ताकि वह जलने लग जावे जब बिलकुल जलकर कोयला हो जावें उस वक्त सर्द करके शिंग्रफ को निकाल लें, शिंग्रफ कायमुल्नार होकर निकलेगा, शिंग्रफ कायमुल्नार मजकूर एक तोला को एक सेर कुंजद स्याह के नुगदे में देकर दो पाचकदस्ती कलां के हवा से बचाकर आंच दें इन्शा अल्लाह शिंग्रफ बरंग सफेद बरामद होगा मुजर्रिब है, कुव्वतवाह के लिये दो बिरंज खुराक हलवा या मस्का में (सुफहा ७ अखबार अलकीमियां १/१२/१९०६)।

कुश्ता शिंग्रफ बरंग सफेद बैजामुर्ग में (उर्दू)

शिंग्रफ ३ माशे की सालम डली को अगर एक खाली बैजामुर्ग में रखकर दूसरा खोल ऊपर देकर गिले हिकमत करके चार पांच सेर की आंच दे दी जावे तो शिंग्रफ का सफेदरंग का कुश्ता हो जाता है कुव्वत वाह के लिये खुराक एक चावल। (सुफहा ५ अखबार अलकीमियां १/२/१९०७)

ईंगुरप्रक्रियाविधि शिंग्रफभस्म ७ आंच अंडे में भर धागा लपेट

अंडा इक मुरगीको लेइ। ताके नान्हों छेद करेइ ॥ काढि सुपेदी न्यारी धरै। जरदी मांहि जो ईंगुर भरै ॥ ईंगुर कीजै चना समान। तब अंडा में बेइ सुजान ॥ ईंगुर लीजै तोरौ एक। हंसपाक ले ये जु बिबेक ॥ अंडा बैठि मेदा अवधूत। पुनि लपेटि जै चौवरसूत ॥ सूत टंक दश के उनमान। इसी भांति कै वेष्टि सुजान ॥ अंडा पीडुरे लहिन धरौ। फेरि फेरि पुट सात करौ ॥ मोडे अंडा लीजै सात। सूत पुराने इहही बात ॥ ईंगुर जो बेधिक ह्वै जाय। धातहू रंगे सुनो हो राय ॥ जो यह किरिया मध्यम जानि। जामें होइ जीवकि हानि ॥

(बडा रससागर)

शिंग्रफभस्म अंडे में पकाया ५ बार

शिंग्रफ ले के कुक्कुटांड में पाकर उपरों फेर बंद करके चावलां बिच पाके रिनोणे एवं पचकुक्कुटाण्ड में रिनणे से शिंग्रफ फूल जायगा, अनुपान के साथ दैणा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्ताशिंग्रफ रोहूमछली में

एक तोला शिंग्रफ रूमी को रोहू मछली के मुंह में गिले हिकमत करके और तीन पहर उपलों की आग देवें। (सुफहा ८४ किताब कुश्तैजात हजारी)

शिंग्रफभस्म (बेधक) लाणाबूटी में पका बकरे की कलेजी में रख शराब डाल आँच

सिंग्रफ की डली लेकर मिट्टी के भांडे में रखकर लाणा[1]बूटी का पाणी सवा सेर पाकर धूप में रखकर सुखाणा अथवा भूभल पर रखकर सुखाणा फिर बकरे की कलेजी जो ठीककर रेजी रंगदी पखदी हुंदी है वह लेकर पाड के उसमें डली रखकर सीउके भांडे में रखकर उपरों देशी शराब चंगा पाकर बंद करके आग देणी फिर वह शिंग्रफ ताम्र पर पाणे से सुवर्ण कर होवेगा सुवर्ण फोटक हो जावेगा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्ताशिंग्रफ–धतूरे के रस में घोट टिकिया बना गूदड की आँच (उर्दू)

छः माशे शिंग्रफ वर्ग जोजमाइल[1] के पानी में छः खरल करके कुर्स बना कर खुश्क करके एक छटांक उमदा पार्चः लपेट कर एक गोशे में आग लगावें। (सुफहा ८५ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ता शिंजर्फ–अर्कलैमूं में गिलोला बना धतूरे के फल में रख गूदड़ की आँच (उर्दू)

शिंग्रफ रूमी एक तोला लेकर चीनी के वर्तन में रखे और अर्क लैमूं इस कदर डालें कि तीन अंगुश्त ऊंचा रहे और एक दिन रात के बाद उस अर्क में

---

१ क्या लोनिया से मतलब है?

१ जोजमाइल धतूरा।

उसे खरल करके ज्वर कर दें और गिलोला बन कर धत्तूरा के पेट को खाली करके उसमें भर दें और उसके मुंह का अजजाइ मुतखर्जा से वंद करके पार्चा कर पास जिसको कि रोगन बेद अंजीर से तरकिया हुआ हो उस पर इस कदर लपेटे कि एक तरबूज की मिकदार में हो जावे उसको एक तार आहनी से किसी जगह मौअल्लिक करें और आग दें जब शैला जनी खतम हो जावे तौ इस गिलोला मौल्लिका को जमीन पर रखें और एक बड़े से वर्तन से ढाप दें एक रोज के बाद उसको निकालें, कुश्ता सफेद रंग बरामद होगा खुराक एक रत्ती तक मक्खन के साथ करी बदनी की तकवियत और वाह व इमसाक के वास्ते जाइदीलहू मुजर्रिब उल मुजर्रिब है। (सुफहा ५५ किताब मुजर्रिबातफीरोजी)

कुश्ताशिंग्रफ–शीरतिधारा में टिकिया बना पुट की आँच (उर्दू)

शिंग्रफ एक तोला को दूध तीन धारी थूहर में खरल करके टिक्की बना कर खुश्क करके बूटी छलटी एक छटांक में रखकर गिले हिकमत करके आग करीब ४ सेर के देवें कुश्ता हो जावेगा। (सुफहा ८५ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्ताशिंग्रफ–जमीकन्द के रस में टिकिया बना जमीकन्द में रख पुट (उर्दू)

एक तोला शिंग्रफ को दो सेर अर्क जमीकन्द में खरल करके टिक्की बनावें बादहू साया में टिक्की को खुश्क करके एक जदीद जमीन में कंद में जो वहुत वडा हो डालकर अच्छी तरह छः या सात दफे कपरौटी करके खुश्क करें एक महफूज जगह में गढा खोदकर करीब एक मन के आग देवें। (सुफहा ५५ किताब कुश्तैजात हजारी)

शिंग्रफ भस्मसफेद : दूध में औटा प्याज के रस में घोट टिकिया बना प्याज की लुगदी में आंच (भाषा)

सिंग्रफ पहले दो सेर गौ के दुग्ध में दोलायंत्र से पकाणा फिर पलांडु के रस में खरल रस शिंग्रफ से चतुर्गुण होवे फिर पलांडु की लुगदी में १६ सेर पक्के गोउहे की आग देणी निर्वात स्थान में श्वेत हो जायगा, तब कमजोरी में १ रत्ती अनुपान से देणा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्तासिंग्रफ–अर्क प्याज व शराब देशी व जर्दी बैजा में घोटकर उपलें की आंच (उर्दू)

शिंग्रफ एक तोला, प्याज का पानी बकदर एक सेर पुख्त: लेकर थोड़ा थोड़ा डालकर खरल करे बादहू एक बोतल देशी शराब किस्म अव्वल में खरल करके टिक्की कूंजा बनावें बाद वहजर्दी तुख्म मुर्ग में खरल करके एक गिली में रखकर गिलेहिकमत करें और खुश्क करके दो सेर उपले सहराई की आग देवें। (सुफहा ८४ किताब कुश्तैजातहजारी)

कुश्ता शिंग्रफ–आक के दूध में टिकिया बना पीपल की खाक में (उर्दू)

एक तोला शिंग्रफ को आठ पहर शीर मदार में खरल करके टिक्की बनाकर खुश्क करके मगर साये में बादहू पोस्त दरख्त पीपल की सवा पाव राख लेकर एक बर्तन में डालकर दर्मियान टिक्की रखकर गिले हिकमत करके आग करीब आठ उपलों की दे देवें मुजर्रिब है। (सुफहा ८५ किताब कुश्तेजात हजारी)

कुश्तासिंग्रफ–खाकिस्तर ढाक या पीपल या जंगली कंडा (उर्दू)

दरख्त पीपल और बनकंडा और दरख्त ढाक की खाकिस्तर में भी कुश्ता शिंग्रफ का हो जाता है जिस्तरोक से हड़ताल का कुश्ता हो जाता है। (सुफहा ८२ किताब कुश्तैजात हजारी)

कुश्तासिंग्रफ (मुकव्वीवाह) बरंग सफेद अर्कघीग्वार में घोट सिर्स के नुगद में रख भूधर में आंच (उर्दू)

हस्व फर्माइश एडीटर नज्म हाजा हजरत सय्यदुलशौरा जनाब समीम साहब शायर रियासत आलियः मालीर कोटलाने तसनीफ फर्माई है, लुत्फ यह है कि नसर से ज्यादा बाजै परकीब समझ में आती है।
कुश्ता सिंग्रफे का बनाना है अगर । रख शिंग्रफे कारका मद्दे नजर ।। एक तोला शिंग्रफ के रूमी हैं बस । क्या जरूरत है बढाने की हविस ।। ग्वारके पानी में कर उसको खरल । दूसरे दिन साये में रख फिल अमल ।। और फिर वेख सिर्स में कर न देर । वजन जिसका कम से कम हो एक सेर ।। बंद करके एक वजन जेरे जमीन । खोदकर फिर दफन कर इसको यहीं ।। तह जमा ऊपर से बालू रेत की । तह मगर काफी है उसको एक ही ।। आंच दे इस एक तह में पांच सेर । दूसरे दिन आंच का दोना हो सिपहर ।। तीसरे दिन तीस सेर और आंच दे । रोज चौथे एक मन फिर उसको ले ।। पांचवें दिन फिर सवा मन लाइये । आंच की गर्मी उसे पहुँचाइये ।। बाद उसके सर्द हो जाए वह जब । कुश्ता शिंग्रफ का निकाले फिर वह तब । रंग आए जब नजर उसका सफेद । वाहकी कुव्वत की पूरी रख उमीद ।। है फकत खुराक इसकी दो बिरंज । खाके बालाईसे कर फिर दूर रंज । हो न बालाई तौ मस्काही सही । फाइदा दोनों का है बस एक ही ।। (सुफहा ६ अखबार अलकीमियाँ १६/१२/१९०६)

कुश्तासिंग्रफ मयसीमाव अर्कप्याज में ४० दिन खरलकर टिकिया बना चूने में रख चक्रजंतर की आंच (उर्दू)

शिंग्रफ पांच तोला, सीमाव पांच तोला, हर दो को मिलाकर अर्क प्याज में चालीस रोज तक बराबर खरल करें और फल्लूस के बराबर टिकिया बनावें और खुश्क करे और जमीन में एक गढा सूराख की तरह बकदरे डेढ बालिश्त या हस्व जरूरत खोदे और उस गढे को कलस हिजरी सफेद से जो बारीक किया हुआ हो निस्फ तक भर दें और उस पर सब टिकियां यकेबाद दीगरे रखकर बाकी को इसी कलम से भर दें और गढा मजकूर से चार अंगुल के फासिले पर गिर्दा खंदक की तरह एक और गढा खोदें और उपला सहराई से पूर कर दें आग इस तरह पर लगावें कि हर चार तरफ एक ही मर्तबः आग चमके और इस गर्ज के वास्ते रोग न स्याह से फतीला तर करके गिर्दा गिर्द रखना बहुत मुनासिब है अपने साये में परहेज करें कामिल सर्द होने पर निकालें खुराक एक चावल से चार चावल तक बदर का मुनासह अमराज से मस्लन मजजूम को हलैला, स्याह, कथा, कतीरा, सरभंगा, शाहतरा, हिनाब वर्ग खुरफा के जो शांदेसे चालीस रोज तक और नरमला के वास्ते मबीज मुनक्का मग्ज बादाम या वर्ग पान या रैहां या मक्खन में और और सर्द मिजाजवालों को लौंग जौंज बलवा वगैरह के साथ परहेज मुनासिब जरूरी है नजला मुतकर्चा के वास्ते अकसीर है हत्ता कि सदसाला नजला इससे दूर हो जाता है और जमाम के वास्ते वेनजीर तक वियत वाह और इमसाक के वास्ते वे मिसल हिफाजत करने काबिल है मामूल रमर्कमुल हुरूफ के बारहा तजरुबे में आ चुका है।

(सुफहा ५३ किताब मुजर्रिबात फीरोजी)

कुश्ता शिंग्रफ मय सीमाव अर्क प्याज में ४० दिन खरलकर टिकिया बना चूनें में रख चक्र जंत्र की आंच (उर्दू)

शिंग्रफ ५ तोले, पारा ५ तोले, दोनों को चालीस रोज तक अर्क प्याज में खरल करें और फल्लूस की बराबर टिकिया बनाकर साये में खुश्क कर ले, जमीन में एक सुराख डेढ बालिश्त गहरा खोदें निस्फ सूराख कलस हिजरी सफेद रंग से भर दें और टिकिया मजकूर रख कर बाकी भी उससे भर दें इस सूराख से चार अंगुल के फासिले पर गिर्दा गिर्द खंदक की सूरत में एक

दूसरा गढा खोदें और पन्द्रह सेर उपलों से भर दें और आग लगावे मगर हर चहार तरफ एक ही बार चमकी पूरी तरह सर्द होने के बाद जो कम अजकम बीस घंटे में होगा कुश्ता शुदहा शिंग्रफ व पारा हमवजन निकाल लें खुराक एक चावल से दो चावल तक मैं इसे इन बंदरकों से बरना करता हूं यानी आतिशक जजाम वाले को हलैला स्याह, कत्था, कतीरा, सरभंग शाहतर वर्ग हिना के जो शाँदे से और गर्म मिजाज वालों को वर्ग रेहाँ में सर्द मिजाजवालों को लोग जोज बवा वगैरः के साथ बीससाला नजला मुतकरजामें मैंने इसे अकसीर पाया है कुव्वत बाह और इमसाक में अजीब तमाशा दिखाता है गर्जे कि वे नजीर और काबिल हिफाजत हैं। (सुफहा १६ रिसालः हिकमत लाहौर १५/२/१९०७)

कुश्ता शिंग्रफ अजहद मुकव्वी प्याजी की सह आतिशा शराब तय्यार कर उस्में घूट टिकिया बना सम्पुट में रख बालू जन्तर में चार पहर आंच (उर्दू)

नाजिरीन मुन्दर्जः जैल कुश्त शिंग्रफ जो आपकी खातिर आज दर्ज कर रहा हूं सचमुच वेनजीर है कैसा ही सत्व नामर्द हो सात दिन के अन्दर खुदा चाहै मर्द बन जावेगा चहरा सुर्ख हो जावेगा इसको सात दिन वा परहेजा खाना किसी का काम है यह एक राज है सीना खोल कर नाजरीन के सामने रखे जाते हैं जो इसको बनावेगा याद करेगा।

प्याज एक मन लेकर उनका रस निकालें एक मटके में डाले और उसमें सेर भर गुड़ और सेर भर छिलका कीकड डाल दें पन्द्रह दिन के अन्दर ही उसमें साड़ पैदा हो जावेगा जैसा कि शराब में पैदा होता है अब बजरियः भबका या बजरियः कुरा अबीक इसका अर्क खींच ले इस अर्क का फिर अर्क खींचे तीन बार अर्क खींचने में करीब दो बोतल यह तेज अर्क जिसको शराब प्याज कहना बजा है निकलेगा शिंग्रफ ४ तोले लेकर खरल में डालकर इस अर्क को डालकर खरल करना शुरू करें, हत्ताकि तमाम पानी उसमें जज्ब हो जावे फिर शिंग्रफ की टिकिया बनाकर दो छोटे प्यालों के दर्मियान इसको दे दे और मिट्टी मुँह पर लगाकर बन्द कर दें एक बर्तन गिली में ५ सेर बालू रेत नीचे ऊपर देकर दर्मियान वह प्याली रखकर नीचे ४ प्रहर दर्मियानी आंच करे शिंग्रफ कुश्ता हो जावेगा खुराक इसकी एक चावल है जो बरदाश्त कर सकें, चाहे ४ चावल खा जावें मक्खन में रखकर निगल लेना चाहिये, ७ दिन खाकर फिर जवानी के दिन मुलाहिजा फर्मावे कसरत जमाई से परहेज करें और लुत्फ जिन्दगानी उठावें न कि इस ताकत अजीब को हासिल करके अय्याशी में गवां दे और फिर वैसे ही कोरे के कोरे रह जावें। (सुफहा अखबार वैश्योपकारक लाहौर ३१/१०/१९०६)

तरकीब कुश्ताशिंग्रफ शिंग्रफ को भिलावा कुचला, मालकाँगनी, शहद, घी में पका प्याज का चोयादे शीर आक में खरलकर बालू जंतर में आँच (उर्दू)

शिंग्रफ १ तोला, मालकांगनी १ छटांक, कुचला १ छटांक, भिलावा १ छटांक, शहद १ छटांक, घी १ छटांक मालकांगनी भिलावा, कुचलाको बारीक करके शिंग्रफ की डली कड़ाही में रखकर ऊपर बिछाकर दबा देवें और शहद व घी ऊपर डालकर नीचे नरम आंच ४ प्रहर करके ठंढा होने पर शिंग्रफ की डली निकाल ले इस डली को फिर तवा आहनी या कर्छे पर रखें और नरम आंच नीचे शुरू करें और प्याज के रस का चोया दें, ५ सेर रस प्याज का जब खतम हो जावे तो डली को लेकर दूध आग में एक दिन खरल करें और आक के दो पत्तों के दर्मियान पांच सेर बालू रेत नीचे ऊपर देकर एक हांड़ी में डालकर नीचे दो पहर तक दर्मियानी आंच दे, कुश्ता शिंग्रफ बहुत आला तय्यार है यह अकेला ही कुव्वतवाह में बेनजीर है दो चावल मक्खन में खावें ७ दिन के अन्दर सुर्ख कर देता है। (सुफहा वैश्योपकारक लाहौर १४/११/१९०६)

कुश्ता शिंजर्फ सफेद दाफै फालिज रोगन जमालगोटा व बादाम तलख वगैरः का तय्यार कर उस्में गोतादे सदबार तश्विया बादहू अस्पन्द व शीर मदार की लुबदी में आंच (उर्दू)

तुख्म अलसी २० तोला, तुख्म बादाम तलख २० तोला, तुख्म जमालगोटा २० तोला, तुख्म अस्पन्द २० तोला, सबको मिलाकर शीर जकूमसे तर करके बजरियः पतालजंतर जरूफ गिली में कशीद करें तेल बरंग स्याह होगा बाद जजफर दो तोला की एक डली लेकर उस तेल में तर करके वर्ग बेदअंजीर पर रख कर लपेट कर गिलोला बना लेवें और उस पर ५ तोले सख्त मिट्टी तरका गिलाफ देकर कोयले की आग पर तश्विया करें जब कि गिलो ले के ऊपरवाली मिट्टी सुर्ख हो जावे तो आग से निकाल कर तोड़कर और तेल में भिगोकर वर्ग एरंए में लपेटकर गिलोला बनाकर मिट्टी ५ तोला लेकर बदस्तूर अव्वल आग में तश्विया करें, इस्तरह एक सद मर्तबः तश्विया देना होगा तुख्म अस्पन्द २० तोला, शीरमदार २० तोला को घोटकर नुगदा बना लेवें और जंजफर मजकूर इसमें रखकर गिले हिकमत करें बाद ५ सेर पाचकदस्ती की आग दे दें कुश्ता बरंग सफेद हमवजन तय्यार होगा, बकदर निस्फ चांवल मुनक्का में खिलाया करें इन्शा अल्लाह अगर तमाम बदन को फालिज होगा तो हमेशा के लिये आराम हो जायगा तजरुबा शर्तिया है। (सुफहा १३ अखबार अलकीमियाँ १६/११/१९०६)

कुश्ता शिंजर्फ या तरकीब कायम करने शिंजर्फ सफेद प्याज में २१ आंच (उर्दू)

थोड़ी सी शिंग्रफ लेकर एक बड़े सफेद प्याज में मगर पहले हींग को लेप करके डालकर गर्म भूभल में कपरौटी करके रखें इस्तरह इक्कीस मर्तबः करें (सुफहा ८२ किताब कुस्तैजात हजारी)

कुश्ता शिंजर्फ या तरकीब कायम करके शिंजर्फ फल इन्द्रायन में १०१ आंच (उर्दू)

शिंग्रफ एक तोले को हिजल ताजा में डालकर कपरौटी करके एक गढा में एक सौ एक आग देवें इसी तरह एक सौ एक आंच दे देवें मगर याद रहे कि हरवार हिंजल ताजा चाहिये (सुफहा ८४ किताब कुस्तैजात हजारी)

शिंग्रफ कायम करने की क्रिया और कायमसिंग्रफ से निकाले पारे को स्थिर करता है

लोटा सज्जी के सत्व में सिंग्रफ को दाबू देने से ५ वा ७ बार लाल करने से एवं मुक्ति वा सुधा चूर्ण में (भरवेड का चूर्ण) सबज गिदड तमाकू में लुगदी वणा सात आग देणे से शिंग्रफ स्थिर हो जाता है। (उसको तेजाब में पारद अलग करै तो स्वच्छ है (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

शिंग्रफ भस्म वा अग्निस्थाई विष का लेप कर तोंबे में रख सौ पुट

१ तोला तेलिया, मौरा २ तोले जहरा दोनों को निंबू के रस में खरल करना फिर शिंग्रफ पर लेप करना फिर तुंबे में रखकर कपडमाटी करणी एवं सौ तुंबे में पुट देणा कुक्कुट पुट पुष्टि ज्वरादावनुपानेन (जम्बू मे प्राप्त पुस्तक)

तरकीब शिंग्रफ भूमियाशिंजर्फ को सींगिया के गिलोले में रख कड में पकाया है (फार्सी)

कि वराइ इश्तहा आबुर्दन सहचन्द अज साविक व दरबाह मुजर्रिब अस्त शिंग्रफ किस्म अव्वल कि हंसपाक गोयन्द दो तोले रायककितै विगीरन्द व वेश सफेद कि जहर नवाती अस्त पावसेर बस्तानंद व बारीक साजन्द व

जमीकुनद विकोवन्द व आव विगीरंद व अजीं आव वेश मसहूकारा व सर शंद व शिंग्रफ रादर वसत आँ निहादह गिलोला बन्दन्द वा पार्चा सुफ़ बरआँ गिलोला साफपेचन्द व दररंद दरंद पराविंयारन्द रोगन तुख्म महसफर कि वहिन्दीकड गोयन्द मवानःअनः (वजनी) सहसेर व दरदेग मिट्टी निहन्द व गिलोला दरआँ अन्दाजन्द व सरपोश बरआँ कर्दः महकुम गीरन्द व संगे बालाई सरपोश नीज गुजारन्द पस आतिश कुनन्द हनीजी कि शोला ओमिकदार कनूल बालिश्त अजदो सहचोव आतिश दिहन्द ता यक पास बादहू आशितुंद कुनद चुनाचि ख्वाहन्द ता सह पास कामिल आतिश दिहन्द तुन्द व बुख़ा र बर आमदन न दिहन्द शोर अजीम अजदेग ख्वाहद बरामद व सवास नकुनन्द व बाद चहार पास फरूद आरन्द तमाम रोगन गलीज शुदः मे मानद कितः शिंग्रफ अजों बर आरन्द कदर यक विरंजई'शिंग्रफः हमराह पान खाईदः विखुरन्द इश्तहा अजीज में आरद व रफ़ैः फैज हममें नुमायद व ने आफत अस्त व दरवाह आसर कवीदारद व बदनरा फरवः ब बरकुवत मेसाजन व दोहफ्तः अगर बिखुरन्द यकसाल आसरमें मानद व रोगन गलीज किं चोह मानिन्द में शवद आंनीज बराइ इश्तहा व अमराज मुलगमोह मजमनह मुजर्रिब अस्त कदेर विखुरानन्द वापान । (सुफ़हा ४ किताव मुजर्रिबात अकवरी)

शिंग्रफ मोमिया भिलावे और घी में औटा फिर दूध में औटाया है

भिलावे १० तोले, घृत १५ तोले, शिंग्रफ १ तोला, तीनों चीजे आग पर चढ़ा दैणा जब घृत जल जावे तब शिंग्रफ निकाल के २ सेर पके दुग्ध में पाके काढणा फूल जायगा, अनुमान से देणा (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

हिंगुल गुण

कषायतिक्तं कटु हिंगुलं स्यान्नेत्रामयघ्नं गलगंडकुष्ठम् ॥ हृंत्यम्लपितं ज्वरशोषशोफशूलातिसारं सुमुखप्रसेकम् ॥९॥ (टो० नं०)

(टो० नं०)

अर्थ–सिंगरफ कसैला, चर्परा, कडुवा होता है और नेत्र रोग, गलगंड कोढ़, अम्लपित्त, ज्वर, शोष, सूजन दर्द, अतिसार और मुख में से लारों के गिरने को नाश करता है।।९।।

फवायद कुश्ता शिंग्रफ मुखकर (उर्दू)

खुराक १ चावलमें तीन चावल तक वास्ते नामर्दी वगैरः के मक्खन में या मुनक्का में डाल कर खावें ऊपर से दूध नीम गर्म घी पिलाकर या वैसे ही पी जावें, इस साकके वास्ते पान में खा लें और दूध घी पी लें कोई भी वादी या बलगमी अमराज क्यों न हो मुनक्का में एक चावल मिला खालें, गठिया की इश्तहा जौफ एसाब और हनाजीर सफेद दाग नीज आतिश को भी मुफीद है अगर गर्मी खुश्की मालूम हो तो दूध घी वगैरः पिलावें पान में खाना भी बहुत ही मुफीद है, वादी और बलगमी अमराज में वादी बलगमी अशियाइ और नामर्दी में वादी अशियाइ तुर्श अशियाई और तेल की अशिया से परहेज लाजिम है (सुफहा १५ वैशोपकारक' लाहौर १२/१२/१९०६)

शिंग्रफमोमिया हुलहुल नींबू के रस में पकाने से (भाषा)

सिंग्रफ (हुलहुल के पत्ते कागजी निंबू) हुलहुल नेडली को कहते हैं न्योली का रस १० तोले और निंबू का रस ६ तोले से कम न होवे दोनों रस कुज्जे में पाकर शिंग्रफ की डली एक तोले की उस्में पाकर बन्द करके कोयलों के ऊपर कुज्जे को रखकर मन्द मन्द अग्नि देकर रस को जलाना सिंग्रफ श्वेत वर्ण मोमिया बन जायगा, न्योली के रस में फौलाद बणता है धूप में। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

रोगनशिंग्रफ (उर्दू)

दो तोला शिंग्रफ रूमी को पोटली में बांधे और जर्फ आहनी में रख कर रोजाना पाव भर शीर मदार डाल कर नरम आग में पकावे इसी तरह से सौ दिन तक पाव भर दूध में रोजाना पकाया करे ताकि पच्चीस सेर दूध शिंग्रफ मजकूर में जज्ब हो जावे, बाद अजां शिंग्रफ को जर्फ चीनी में रखकर रात को शवनम में रख दे सुबह को रोगन हो जायगा जो कि मुंजमिदन होगा, यह रोगन एक रत्ती तोले भर चाँदी का सोना बनाता है और एक सींक एक एक हफ्ते के बाद हमराह बालाई के खावे कुव्वत वाह और नामर्दी के वास्ते इससे बढ़कर नुसखा नहीं है।

और काविल तजरुबा है हकीम गोरदासमल साहब साकिन रावलपिंडी ने इसको अखबार अलकीमियां मारूजा यकम मई सन् १९०५ में तबअ कराया है और लिखा है कि यह उस जोगी का नुसखा है जिसने एक मुजामअत परस्त आदमी को दिया था और हकीम साहब ममदूह ने उससे हासिल किया इसमें ठीक नहीं कि यह नुसखा सुर्ख अकसीर का है और उसूलन वेनजीर है और जन गालिब है कि इससे तिला बन जावे। (सुफ़हा अकलीमियां १९५)

शिंग्रफ तैल मूषकपर्णी के रस में घोट पाताल यन्त्र से (भाषा)

मूषापर्णी के रस में खरल करना सिंग्रफ दिन २१ फिर छोटी छोटी गोली बनाकर सुखा लैणी फिर उनको आतिशी शीशी में पाकर कपरमिट्टी करके शीशी के मुख में अश्वकेश रखकर सछिद्र दौर में मुख हेठ निकाल कर छिद्र पर मिट्टी लगाकर मुखके नीचे कांच वा चीनी का पात्र रख कर अधोमुख शीशी के ऊपर सेर पक्का धान्य तुष रखकरअग्नि देवे 'तत्तैलं स्पशद्विधकम्' (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

शिंग्रफभस्म तथा तैल (भाषा)

सिंग्रफ लेकर थोम (लहसन) के रस में गोली बणा लेवे फिर थोम की लुगदी गोली के नीचे ऊपर देकर ६ बट्टी गोहे की आग देणी श्वेत भस्म हो जायगी, तप, नाकुव्वती, कफ, वात, रोगों पर तीला भर देणी अनुपान भिन्न भिन्न, एक तुरी थोम के रस में खरल करके छोटी गोली बणा कर पातालयंत्र से तैल निकाल लेवें, यह तैल वेधक है। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

अकसीर उल अकसरी मोम शिंग्रफ की शहद में गोता दे नौसादर पर छिडक आंबा हल्दी लपेट तुख्म अंडी में रख सदबार भडका (उर्दू)

बफज्ल खुदा इसके चन्द रोज के स्तैमाल से नामर्द जवां मर्द हो जाताहै चाहे कैसा ही गया गुजरा मारीज क्यों न हो तीन रोज निहायत सात रोज में अपनी असली हालत पर आ जाता है मेरे शफाःखानः हैदरी का यह खास नुसखा है अब तक कई मरीज जो वर्षों तक इलाज करते करते थक कर ना उम्मीद होकर इलाज से तोवा करके बैठ गये थे वह भी खुदा के फज्ल से कामयाब हुये तजरुबा शर्त है कि तय्यार करके देख लेवें और कहीं ऐसा न हो कि तूल अमल देख कर घबराकर इस नियामत से महरूम रहै अगर आपको कुव्वत वाह हासिल करने का शौक हो तो चन्दरोज जरूर मेहनत करै जिससे तमाम उम्र ऐशो अशरत से बसर होगी इन्शा अल्लाह इसके स्तैमाल के बाद दूसरी किसी दवा की जरूरत न रहेगी बस अगर कुदरता खुदा का तमाशा देखना हो तौ जरूर तजरुबा करे हरगिज खता न होगी।

नुसखा अकसीरी यह है

शिंग्रफ बकदर २ तोला सालम डली को ७ रोज तक शीर मदार में भिगो

रखे बाद उसके निकाल कर शहद खालिस में डुबो कर उस पर दो रत्ती नौसादर ईरानी वरंग सुर्ख पिसा हुआ सफूफ डाल दें यानी छिड़के दें और फौरन आंबा हल्दी के सफूफ में वह शहद आलूदह डली रख कर हाथ से इधर उधर करै जिस कदर उसके साथ आंबा हल्दी का सफूफ लगे वह बदस्तूर रहने दे बाद दो तोले तुख्म वेद अंजीर के नुगदे में रखकर गिलोला बना ले फिर ६ अदद वर्ग वेद अंजीर नीचे ऊपर देकर रेशा खास से चन्द पेच मार दें और पुतला जैसा गिले हिकमत करके गीला गीला ही पाचकदस्ती की आग में रख कर तश्विया करे जब कि बारह मिनट निहायत पन्द्रह मिनट हों तो फौरन गिलोला निकाल कर गर्म २ तोड़ कर शहद में आलूदह करके उस पर दो रत्ती नौसादर ईरानी का सफूफ छिड़क कर आंबा हल्दी के सफूफ में फिराकर दो तोले तुख्म वेद अंजीर के मुकश्शर नुगदे में रख कर उस पर ६ अदद वर्ग वेद अंजीर लपेट कर गिलोला बना कर पुतला गिले हिकमत कर लेवे और बदस्तूर अव्वल आग में रखकर तश्विया करें इसी तरह दो सद मर्तबः तश्विया करें इन्शा अल्लाह बहुक्म खुदा मजकूर आला दर्जे का मोमिया हो जावेगा, हां यह भी याद रहे कि अगर पहिलीसी आग बराबर आती रहैगी तो फिर आपको दो सदमर्तबः की तकलीफ न होगी सिर्फ एक सद पच्चीस तीस तश्विया में मोमिया हो जाता है इसलिये बेहतर है कि एक सद तश्विये के बाद डली को सीक आहनी मारमार कर देखता रहे जब कि सीख अन्दर डली के चली जावे तौ तश्विये को अमलबंद कर देवे बस तय्यार है वक्त जरूरत के बकदर निस्फ चावल से एक चावल तक मरीज को तबियत को समझ कर देवे। और इसरार इलाहीका मशाहदा फर्वावै यह भी याद रहे कि रोगन व शीर का इस्तेमाल ज्यादा करना चाहिये बल्कि जिस कदर रोगन खायेंगे वह सब हजम होता जावेगा, कोई तकलीफ न होगी, परहेज तुर्शी वह मछली और जमाइ का होना जरूरी है।

एक इसरार और मुखफ्फीराज

यह भी है कि शिंग्रफ मजकूर को प्याला चीनी में रख कर वह प्याला पांच सेर रेत के ऊपर रख दे जो पहले से तवा आहनी या गिली में डाल कर चूल्हे पर रखा होगा। नीचे नरम नरम आग जला कर अर्क जैल का चोया डालते जावेंगे तौ रंजफर मजकूर का तेल होता जावेगा जबकि तमाम तेल हो जावे तो हिफाजत से उतार कर शीशी में रख लेवे और ब वक्त जरूरत बकदर एक सुर्ख एक तोला मिस पर तरह करै इन्शा अल्लाह मकबूल बाजार होगा।

अर्क यह है

कलस वैजा मुर्ग २ जुज, नौसादर २ जुज, आवचूना ३ जुज, बोल सिवियां ४ जुज, मूए आदम ६ जुज, तरकीब यह है कि वालों को अच्छी तरह चिकनाई से साफ कर लेवें और मिकराज से बहुत कतर लेवै फिर अजजाइ को मिलाकर शीशी में डालकर बंद कर लेवै बाद गजपुटगढा जमीन में खोद उसमें लीद अस्पताजा भरकर शीशी को दर्मियान में रखकर गढ़े को बंद कर दे, बीस रोज के बाद निकाल कर कुरा अंबीक में डाल कर जो काच का होगा बतरीक मारूफ अर्क कशीद करै जब तक सफेद अर्क आता रहे तो उसको अलहदा रक्खै या नीचे गिरने देवै जिस वक्त सुर्ख रंग का अर्क निकले वह शीशी में लेते रहे जब कि स्याह कतरा गिरे तो अमल का फौरन बंद कर दे बस सुर्ख रंग का जो अफा होगा वह भी कारामद है उसी का चोह देने से फज्ल खुदा जंजद जजंफर शिंग्रफ का तेल हो जायेगा व खातिर नाजरीन यह भी जाहर कर देना मुनासिब है कि बदस्तूर जंजद के बजाइ अगर सीमाव मुसफ्फा शुदः को प्याले चीनी में डाल कर इसी तरह सफेद रंग को चोया दिया जावेगा तो वह सीमाव आला दर्जे का कायमुल्नार हो जाता है, मेरा तजरुबा शुदः बस अगर आपको तकलीफ न हो तो तजरुबा करके देख लें। (हकीम सय्यद गुलाम अलीमालिक शफाखाना हैदरी करांची) (सुफहा नं० ५ अखबार अलकीमियाँ १६/७/१९०७ ई०)

शिंजर्फमोमिया तूतिया के पानी से चोया देकर (उर्दू)

एक शखस जो अवाइल की गलतकारियों से बिलकुल नामर्द हो चुका था हमने हस्बजैल उसका इलाज किया, एक हफ्ते में पूरा मर्द हो गया, इसलिये बगरज रिफाइ आम यह नुसखा नजर नाजरीन है।

तूतिया सबज एक तोला, कोशीजर्दकटला (वादंजान सहराई) में तर करके सात रोज तक धूम में रखे, बादहू तूतिया मजकूर को शीर मदार निस्फपाव में दाखिल करके आफ्ताब में रख दें, वह तमाम तूतिया वगैरः पानी सयाल के मिस्ल हो जावेगा, इस पानी को निहायत अहतियात से रखे, शिंग्रफ एक तोला लेकर शकोरा गिली में रख कर आग पर धरै और ऊपर उसके आबतूतिया का चोया दें, शिंग्रफ मोमिया हो जायेगा, यह शिंग्रफ चांदी को रंगता है, नामर्द को मर्द करता है, खुराक निस्फ चावल बालाई या मसका में दौरान अमल दवाई में तुर्श अशियाइ और जमाइ तेल की बनी हुई शै और गर्म चीजों मिस्ल बैंगन वगैरः से परहेज है। (सुफहा नं० ४ अखबार अलकीमियां १६/६/१९०७)

हिंगुलभस्म १०१ आंच

हिंगुलं द्विपलं शुद्धं बद्ध्वा वस्त्रे चतुर्गुणे । षट्पलं कदलीमूलं सम्यक् संपुट्य बुद्धिमान् ॥१०॥ तदंतस्तत्परिक्षिप्य गोलमेकं प्रकल्पयेत् । एरंडपत्रैराच्छाद्य मृदा संलेपयेद्बुधः ॥११॥ पचेत्तद्गोलकं विद्वानुपलैर्दश-भिस्ततः। एवमेव प्रकारेण पुटमेकोत्तरं शतम् ॥१२॥ दत्त्वा प्रतिदिनं खादेल्लवंगस्यानुपानतः । गुंजामात्रं गुणैस्तुल्यं प्रागुक्तस्य रसस्य च ॥१३॥

अर्थ–दो पल शुद्ध सिंग्रफ को चौलर कपड़े में बाँधकर कुटी हुई छः पल केले की जड़ में रख गोला बनाय लेवे। उस पर अंड के पत्तों को लपेट कपरौटी कर देवै फिर उस गोले को सुखा कर दस जंगली कंडों में रख भस्म करै, इसी प्रकार १०१ एक सौ एक पुट देवै, इसमें से लौंग के साथ एक रत्ती नित्य खावै तो शरीर को पुष्टकर्ता और बात हर्ता होता है।।१०–१३।।

हिंगुलभस्म

पैसा चारि भरि सिंग्रफ लेइ, पहले हंसपदी के रस में घोटे सात बेर फेर बंदाल के रस में सात बेर घोटे फेरि बरोह के रस में फेरि आक के दूध से फेर सेहुंड के दूध से सात सात बेर घोटिके एक टिकड़ी बांधि के सुखाइ के सराव संपुट में राखि के एक सेर उपलों के बीच में राखि के आंच देइ, एक ही आंच से यह भस्म होय रत्ती दो खाय, लौंग के साथ भूख होय पुष्ट होय। (भाषापुस्तक प० कुलमणि)

हिंगुल से निकलता हुआ पारद गंधक जारित पारद के समान होता है

हिंगुलः सर्वदोषघ्नो दीपनोऽतिरसायनः । सर्वरोगहरो वृष्यो जारणायातिशस्यते ॥१४॥ एतस्मादाहृतः सूतो जीर्णगंधसमो गुणैः ॥१५॥

(र० र० समुच्चय)

अर्थ–हिंगुल समस्त दोषों का नाशक, अग्नि को बढ़ानेवाला, रसायन, समस्त रोगों का नाशक, बलकारी जारण के लिये होता है, इसलिये उस हिंगुल से निकाला हुआ पारद गंधक जारित पारद के समान होता है।।१४।।१५।।

शिंग्रफ के भेद और परीक्षा

हिंगुलः शुकतुण्डाख्यो हंसपाकस्तथापरः । प्रथमो हिंगुलस्तत्र चर्मारः स निगद्यते । श्वेतरेखः प्रवालाभो हंसपाकः स ईरितः ॥१६॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–हिंगुल दो प्रकार का होता है, एक शुकतुण्डाख्य और दूसरा हंसपाक अब शुकतुंड को चर्मार भी कहते हैं, हंसपाक वह सिंग्रफ होता है जिसमें कि श्वेतरेखा हो और मूंगेके समान लाल वर्ण हो॥१६॥

शिंग्रफ की शुद्धि

सप्तकृत्वोऽर्द्रकद्रावैर्लकुचस्याम्बुनापि वा ॥ शोषितो भावयित्वा च निर्दोषो जायते खलु ॥१७॥

(र० र० स०)

अर्थ–सिंग्रफ को अदरख के रस से अथवा लकुच के रस से भावना देकर सुखावे तो शिंग्रफ शुद्ध हो जायेगा॥१७॥

अन्यच्च

किमत्र चित्रं दरदः सुभावितः क्षीरेण मेष्या बहुशोऽम्लवर्गैः । एवं सुवर्ण बहुघर्मतापितं करोति साक्षाद्वरकुंकुमप्रभम् ॥१८॥

(र० र० स०)

अर्थ–शिंग्रफ को भेड़ी के दूध से या अम्लवर्ग से भावना देकर घाम में सुखावे तो श्रेष्ठ वर्णवाला साक्षात् केसर के समान वर्णवाला हो जाता है॥१८॥

शिंग्रफ के सत्त्वपातन की विधि

दरदः पातनायंत्रे पातितश्च जलाश्रये । तत्सत्त्वं सूतसंकाशं पातयेन्नात्र संशयः ॥१९॥

(र० र० स०)

अर्थ–शिंग्रफ को पातनयंत्र में रख जल के आधारपात्र में पातित करे तो वह सत्त्व पारद के समान होगा, इसमें सन्देह नहीं है॥१९॥

हिंगुलभस्म वेधक

दरदं दशमांशेन पुटतो जंबीरफलनिकायेषु । रविदुग्धपुटोहितच्छोषितशुक्लो भवतिशतवेधी ॥२०॥

(काकचंडीश्वरीतंत्र)

अर्थ–शिंग्रफ को आक के दूध में भिगो कर सुखा लेवे फिर जँभीरी के फल में रख अग्नि में सुखा लेवे, इस प्रकार दस बार करने से श्वेत भस्म होगी, यह शतवेधी होगा॥२०॥

शिंग्रफ भस्म

बुडरकोन१, इसमें शिंग्रफ या शिंग्रफ और चांदी चूर्ण दोनों घोटकर आंच देने से भस्म होता है।

तरकीब कुश्ताशिंजर्फ (उर्दू)

(अव्वल डली को गुले मदार की लुबदी में बालू में रख आँच कड़ाही में बादहू ७ बार अर्क में सूरजमुखी में तस्किया व तश्विया)

अर्थ–दरख्त सूरजमुखी चार सेर मयवर्ग व बेख उखाड़कर नौसादर ८ तोले आँवला सार (बजन नदारद) हरसह खूब बारीक कूट कर बजरिये: पाताल जंतर अर्क निकाल ले, शिंग्रफ रूमी दो तोले को गुले मदार के नुगदे में रखकर बालूरेत पांच सेर के बसत में खुले मुंह कड़ाही के अन्दर देकर नीचे आंच सख्त जलावें, चार प्रहर के बाद आंच बंद कर दें, शिंग्रफ सालम उलबजन कुश्ता होगी, अर्क सूरज मुखी में तमाम दिन रगड़ता रहे और रात को कुलिया गिली में मुंह बंद करके नरम आंच इसी तरह सात मर्तबः अमल करने से शिंग्रफ में खासियत अकसीर पैदा होगी, सुस्त कमताकत सुरअत, रिक्कत वगैरः अमराज के लिये बिलखासियत फाइदावखश है, अहलइलसिनाअ उसी तरह तस्किया व तश्विया देते देने मुशम्मा कर लेते हैं, फिर एक सुर्ख कमरव जौहर को शमसकर दिखलाते हैं लेकिन तरकीब मजकूरह उलसदर की शिंग्रफ बनी हुई का तजरुबा दफै डलअमराज के लिये तो हो चुका है, जौहरा व कमर के शम्सकर देना तजरुबा नहीं किया गया, इस वक्त शिंग्रफजेर अमल है, इन्शा अल्लाहताला आयन्दः अलकीमियाँ में बाद तजरुवा जाहर किया जायेगा। (सुपहा ९ किताब अखबार अलकीमियाँ)

१–बुडरकोन आसायमूना काफिर तम्बाकू जंगली तम्बाकू।

तरकीब कुश्ताशिंजर्फ सफेद अव्वल अर्क खुरफा और अर्क नींबू का चोया बादहू भंग और शीर मजार की लुबदी में रख आठ सेर की आँच (उर्दू)

शिंग्रफ रूमी १ तोला लेकर इसको एक करछी में रखें और वर्ग खुरफा का ताजा पानी एक सेर का चोया देवें जब तमाम पानी खतम हो जावे तो एक तोला नौसादर बीस तोला अर्क लैमूं में हल करके उसी शिंग्रफ पर चोवा देते रहे, जब पानी खतम हो जावे तो शिंग्रफ निकाल कर अलहदा रखें फिर बीस तोले भंग को बारीक पीसकर खरल में डाल दें और चालीस तोला शीरमदार डालें और चार पहर खूब खरल करें जबकि मिस्ल मोंम हो जावे तो उसका दो टिकिया बनाकर अन्दर शिंग्रफ रख दें और हाथ से दबाकर गोला बनावें फिर उस पर तीन गिले हिकमत करके साये में खुश्क कर लेवे, दूसरे रोज गढ़ा खोदकर आठ सेर पाचकदस्ती की आग दे, इन्शाअल्लाह ताला शिंग्रफ सफेद नमूदार होगी, खुराक निस्फ चाँवल मक्खन में (अलराकिम सय्यद गुलाम अलीशाह हकीम मालिक शफाखाना हैदरी अजकरांची यारकैंट) (सुफ़हा ३० किताब अखवार अलकीमियां)

शिंग्रफ मोमिया (उर्दू)

शिंग्रफ मोमिया, साहब महनत की चीज है अगर करने की हिम्मत है और शौक है तो लीजिये हाजिर है इसे अगर अमराज के काम में भी लाया जावे तो यकीनन निस्फ निस्फ रत्ती दो रत्ती सौ रुपये दे देगा जो दूसरे काम में बीस पच्चीस रुपये दे सकता है, अव्वल शिंग्रफ की डली पर बारीक लोहे के तार लपेट दें, इस वास्ते कि उसके रेजे अलहदा अलहदा होकर जाए न हो जावें फिर जार पहर नरम आग पर शीरमदार में डोलजंतर गर्की के जरिये पकावे बाद अजाँ रोगन बलादर से तरकर के सफूफ खिजल (तमाबारी-कशुदः) से लतपत करके नकछिकनी के नुकदे में लपेट और मामूली कपरौटी करके आध पाव की आग देवे यानी शिंग्रफ की डली को सफूफ खिंजल में जो कागद पर पड़ा हो इस शिंग्रफ की डली को फेरें, वह सफूफ इस पर लग जावेगा, आध पाव नकछिकनी के नुमदे में लपेट कर और मिट्टी से लतपत किये हुए कपड़े की पांच छैः तै इस पर लपेट कर आध पाव उपलों के शोले निकालकर आग दे देवें, सर्द होने के बाद निकाल कर बदस्तूर रोगन बलादर से तर और सफूफ खिंजल लतपत करके नकछिकनी के ताजे नुगदें में लपेट कर आग आध पाव दे देवें, इसी तरह इक्कीस बार आध आध पाव की आग देवें फिर पाव पाव की इक्कीस बार, फिर आध सेर की ग्यारह बार, फिर सेर भर की पांच बाद अजाँ बीस सेर की आग दें, अगर मोमिया नरम हो जावेगा तो अजीव गरीब काम देगा (सुफ़्हा १७ अखबार अलकीमियाँ ८/१/१९०९)

कुश्ता शिंजर्फ (उर्दू)

खोल, शिंग्रफ, बंदशोरा १० तोले, संबुल संखिया १ तोले संखिया को अर्क अनरनी में दोपहर कामिल हल करके शिंग्रफ पर लिहाफ की तरह लगावे, मावाद ठीकरे में शोरे के दर्मियान डली मजकूर रख कर आग देवे और एक सुई से देखता जावे, जब सुई शिंग्रफ में साफ उतर जावे, ठंडा कर देवे, इन्शा अल्लाह कुश्ता गुलाबी रंग का होगा, यह और कुश्ता रंगता है, मुजर्रिब है, (किताब अखबार अलकीमियां १/४/१९०५)

रोगन शिंजर्फ अक्सीर बदन

शिंग्रफ रूमी दो तोला फी डली, शीरमदार एक पाव शिंग्रफ की डली की लोहे के कर्छे में डालकर ऊपर से शीर मदार डालकर नीचे आग जलानी शुरू करें, यहां तक कि तमाम शीर खतम हो जावे, इसी तरह सदबार एक एक पाव के पुट देते जावें, बाद एक सदपुट देने के शिंग्रफ एक चीनी के प्याले मे डालकर रात के वक्त शबनम में रख छोड़े, सुबह इस शिंग्रफ को तेल की हालत में पाओगे, एक एक तिनका सात सात रोज के बाद इस्तैमाल कराएं, यह उस जोगी का नुसखा है जिसने एक मजामत परस्त आदमी को दिया था, याद रहे हिम्मते मर्दा मददे खुदा, यह अकसीर है सुर्ख कर देगा, (नांमः निगार, गोरदास मल हकीम शहर रावलपिंडी (सुफहा २८ किताब अखबार अलकीमियाँ १/५/१९०४)

शिंजर्फ कायमुल्नार लहसन में ५ मर्तबः पकाने से (उर्दू)

एक पोतिया लहसन मुकश्शर ५ तोला कूटकर दर्मियान एक तोला शिंग्रफ की डली देकर गोला बना लें और तवा आहनी पर गोली रखकर नीचे इसके नरम आग कोयलें की रोशन करें, यहां तक कि तमाम लहसन जल जावे, इसी तरह पांच दफै दें, पच्चीस तोला लहसन खर्च होगा, यह तरकीब मेरे एक दोस्त शेखचंद की आजमूदा है। (खाकसार मुहम्मद नूर अली अज औरंगाबाद दकन) (सुफहा नं० ११ अखबार अलकीमियाँ १/६/१९०५)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिव्यासमनसुखदासात्मजज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां दरदहिंगुलादिनिरूपणं नामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ।।५१।।

गंधाध्यायः

गंधकोत्पत्ति

श्वेतद्वीपे पुरा देव्याः क्रीडंत्या रजसाप्लुतम् ।। दूकलं तेन वस्त्रेण स्नातायाः क्षीरनीरधौ ।।१।। प्रसृतं यद्रजस्तस्माद्गंधकः समजायते।।२।।

(बृ० यो०)

अर्थ–पहले श्वेतद्वीप में क्रीड़ा करती हुई पार्वतीका वस्त्र रज से प्लुत हो गया, उस वस्त्रसहित स्नान करती हुई पार्वती का रज क्षीरसमुद्र में फैल गया, उससे गंधक पैदा हुआ।।१।।२।।

गंधकोत्पत्ति

श्वेतद्वीपपुरे देव्याः क्रीडंत्याः प्रसृतं रजः । क्षीरार्णवे तु स्नाताया दुकूलं रजसान्वितम् ।। धौतं यन्मथितं वस्त्रं गंधवद्गंधकं स्मृतम् ।।३।।

(टो० नं०)

अर्थ–श्वेतद्वीप में क्रीड़ा करती हुई पार्वती के रज की प्रवृत्ति हुई अर्थात् मासिकधर्म हुआ तब पार्वती ने उस रजोधर्म से लिपटे हुए गंधसहित वस्त्र को क्षीरसमुद्र में मलमल कर धोया इसलिये उसमें पैदा हुए पदार्थ को गंधक कहते हैं।।३।।

अन्यच्च

पूर्वं द्वीपवरे सिते गिरिसुता क्षीराब्धितीरे मुदा क्रीडंती सखिभिर्वृता धृतकरा धौतं रजस्तद्गतम् ।। जातं गंधकमद्भुतं सुरगणैस्तन्मंथने चोद्धृतं तद्गंधैर्मुदिताः सुरासुरगणाः प्रोचुस्तदाख्यामिमाम् ।। गंधाश्मायमिति क्षितौ गदगणध्वस्त्यै चिरं जृंभताम् ।।४।।

(र० सा० प०)

अर्थ–पूर्व समय में द्वीप में उत्तम श्वेतद्वीपों पर स्थित है और क्षीरसमुद्र में आनंदपूर्वक सखियों सहित स्नान करती हुई श्रीपार्वती का रज समुद्र के जल में धो गया उससे गंधक उत्पन्न हुआ, तदनंतर समुद्र के मंथन में देवताओं ने निकाला तो उसकी सुगंध से खुश हुए देवता तथा दैत्यों ने उसका गंधक नाम रखा, वह गंधक पृथ्वी पर अनेक रोगों का नाश करेगा।।४।।

अन्यच्च

श्वेतद्वीपे पुरा देवि सर्वरत्नविभूषिते । सर्वकाममये रम्ये तीरे क्षीरपयोनिधेः ।।५।। विद्याधरादिमुख्याभिरङ्गनाभिश्च योगिनाम् । सिद्धाङ्गनाभिः श्रेष्ठाभिस्तथैवाप्सरसां गणैः ।।६।। देवाङ्गनाभी रम्याभिः क्रीडिताभिर्मनोहरैः । गीतैर्नृत्यैर्विचित्रैश्च वाद्यैर्नानाविधैस्तथा ।।७।। एवं संक्रीडमानायाः प्राभवत्प्रसृतं रजः । तद्रजोऽतीव सुश्रोणि सुगंधि समनोहरम् ।।८।। रजसश्चाति बाहुल्याद्वासस्ते रक्ततां ययौ । तत्र त्यक्त्वा तु तद्वस्त्रं सुस्नाता क्षीरसागरे ।।९।। वृता देवाङ्गनाभिस्त्वं कैलासं पुनरागता ।ऊर्मिभिस्तद्रजो वस्त्रं नीतं मध्ये पयोनिधेः ।।१०।। एवं ते शोणितं भद्रे प्रविष्टं क्षीरसागरे । क्षीराब्धिमथनेन चैव अमृतेन सहोत्थितम् ।।११।। निजगंधेन तान् सर्वान् हर्षयन् सर्वदानवान् । ततो देवगणैरुक्तं गंधकाख्यो भवत्वयम् ।।१२।। इति देवगणैः प्रीतैः पुरा प्रोक्तं सुरेश्वरि । तेनायं गंधको नाम विख्यातः क्षितिमंडले ।।१३।।

(र० र० सं)

अर्थ–हे देवि! पहले अनेक रत्नों से भूपित कामनाओं के देनेवाले श्वेतद्वीप में क्षीरसमुद्र के किनारे पर उत्तम उत्तम विद्याधरियों, सिद्धों की स्त्रियों, योगिराजों की स्त्रियों तथा श्रेष्ठ अप्सराओं के समूह और सुन्दर सुन्दर क्रीड़ा करती हुई देवताओं की स्त्रियों के साथ मनोहर गीत नृत्य और अनेक प्रकार के चित्रविचित्र वाजों से क्रीड़ा करती हुई पार्वती का रज (मासिकधर्म) प्रवृत्त हुआ, हे पार्वती! वह रज अत्यन्त मनोहर और सुन्दर था और अधिक रक्त के निकलने से तेरे वस्त्र उस रक्त में रंग गये फिर उन कपड़ों को छोड़कर आपने समुद्र में स्नान किया और देवताओं की स्त्रियों के संग लेकर तुम कैलाश को चली गई तदनंतर उन कपड़ों को लहरों ने समुद्र में डाल दिया, इस प्रकार हे पार्वती! तेरा रक्त क्षीरसमुद्र में पहुंच गया और यही रज समुद्र के मथने में अमृत (पारद) के साथ उत्पन्न हुआ और अपनी सुगंध से उन देवता और दैत्यों को प्रसन्न करने लगा तो देवताओं ने कहा कि इसका नाम गंधक होना चाहिये और पारद के बंधन के लिये तथा जारण के लिये यह गंधक समर्थ होगा, जो गुण पारद में है वही गुण इस गंधक में होगा। हे पार्वती! इस प्रकार प्रसन्न हुए देवताओं ने पहले ऐसे ऐसे वचन कहे हैं, इस कारण भूमंडल में इसका नाम गंधक प्रसिद्ध हो गया।।५–१३।।

बलिनाम होने का कारण

बलिना सेवितः पूर्वं प्रभूतबलहेतवे । वासुकिं कर्षतस्तस्य तन्मुखज्वालया द्रुता।।१४।। वसागंधकगंधाढ्या सर्वतो निःसृता तनोः । गंधकत्वं च संप्राप्ता गंधोऽभूत्सविषः स्मृतः ।।१५।। तस्माद्बलिवसेत्युक्तो गंधकोऽतिमनोहरः।।१६।

(र० र० स०)

अर्थ–प्राचीन समय में राजा बलि ने अधिक बल के लिये सेवन किया था फिर समुद्र के मथने के समय वासुकि के मुख की ज्वाला से वासुकि को खींचते हुए उसी राजा बलि के शरीर से जो सुगंधवाली वसा (चर्वी) निकली और वह गंधक के रूप को प्राप्त हो गई, वह विपनाम का गंधक हुआ, इस वास्ते उस गंधक को बलिवसा कहते हैं।।१४–१६।।

चार प्रकार का गंधक

चतुर्धा गंधकः प्रोक्तो रक्तः पीतः सितोऽसितः ॥ रक्तो हेमक्रियासूक्तः पीतश्चैव रसायने ॥ व्रणादिलेपने श्वेतः श्रेष्ठः कृष्णः सुदुर्लभः ॥१७॥

(टो० नं० वृ० यो०)

अर्थ–गंधक चार प्रकार का कहा गया है, जैसे लाल, पीला, श्वेत और काला सुवर्ण बनाने की क्रिया में लाल, रसायन के लिये पीला, घाव आदि पर लगाने के लिये श्वेत लेना काला गंधक तो मिलता ही नहीं है॥१७॥

अन्यच्च

चतुर्धा गंधको ज्ञेयो वर्णैः श्वेतादिभिः खलु । श्वेतोऽत्र खटिका प्रोक्तो लेपने लोहमारणे ॥१८॥ तथा चामलसारः स्याद्यो भवेत्पीतवर्णवान् । शुकपिच्छः स एव स्याच्छ्रेष्ठो रसरसायने ॥१९॥ रक्तश्च शुकतुण्डाख्यो धातुवादविधौ वरः । दुर्लभः कृष्णवर्णश्च सजरामृत्युनाशनः ॥२०॥

(र० र० स)

अर्थ–श्वेत, पीत, रक्त और कृष्ण इन चार वर्णो से गंधक चार प्रकार का होता है। इन चार प्रकार के गंधक में श्वेत खड़िया नाम का गंधक धातुमारण के लिये अथवा मलहम आदि के बनाने में उपयोगी है, इसी प्रकार जो पीले रंग का आंवलासार नाम का गंधक है, उसी को शुकपिच्छ भी कहते हैं वह रसायन के लिये श्रेष्ठ है और शुकतुंड नाम का लाल रंग का गंधक धातुवाद में (सोना चांदी बनाने में) उत्तम माना गया है और जो बुढ़ापा तथा मृत्यु का नाश करनेवाला काला गंधक है व दुर्लभ है॥१८–२०॥

गंधक के तीन भेद

स चापि त्रिविधो देवि शुकचंचुनिभो वर । मध्यमः पीतवर्णः स्याच्छुक्लवर्णोऽधमः प्रिये ॥२१॥

(र० र० स०)

अर्थ–हे पार्वती! फिर वह गन्धक तीन प्रकार का है उनमें तोते की चोंच के समान लाल वर्ण का गन्धक श्रेष्ठ पीत वर्ण का आंवलासार गन्धक मध्यम है और हे प्यारी! शुक्ल वर्ण का गन्धक अधम है॥२१॥

सम्मति–वाग्भट्टाचार्य ने प्रथम तो चार प्रकार का वताया फिर तीन प्रकार का कहा, इसका कारण यह है कि कृष्ण वर्ण का गन्धक मिलना कठिन है, इसीलिये तीन प्रकार का कहा है, ऐसा प्रतीत होता है॥

उत्तम गंधक लक्षण

शुकपिच्छसमच्छायो नवनीतसमप्रभः ॥ मसृणः कठिनः स्निग्धः श्रेष्ठो गंधक उच्यते ॥२२॥

(रसमानस)

अर्थ–जो तोते की पूंछ के समान वर्णवाला मक्खन के समान महीन कठिन और चिकना गन्धक उत्तम है॥२२॥

गन्धक की किस्में (उर्दू)

गन्धक–हुकमाई हिन्द ने छः किस्में गन्धक की लिखी है, एक सफेद उसको गूगर्द फारसी भी कहते हैं, यह दाफै अमराज और मुफीद व सबअ मुफासिल है और नुकरः व मिस पर जमाद करके जलाने से कुश्ता करता है। दो यम आमलासार इसकी रंगत मिस्ल आंवले के होती है। सोयम सज्ज तोते के पर की तरह जो अन्दर से भी पीसने से, सवज निकले, यह बहतरीन अकसाम से है, चहारम सुर्ख तोते की चोंच की तरह उसको अगर कलई पर तरह करे तो चांदी और अगर मिस पर तरह करे तो सोना बनाते हैं लेकिन नायाब है पंजम स्याह इसके स्तैमाल से आदमी बूढ़ा नहीं होता, मुकामातकदीम औ गर्म चश्मों से जो ज्वालामुखी कहलाते हैं, इत्तफाकिया मिलते हैं। (शशम जर्द को बारूद में मुस्तअ मल है) (सुफहा अकलीमियां ६०)

गंधक की किस्में (उर्दू)

गंधक की छः किस्में है, (१) आंवलासार (२) नरमलासार, (३) नेनुआसार, (४) धोलिया, (५) छाछिया (६) सुर्ख जो बजात खुद अकसीर है)।

मुतरिज्जम–गन्धक का तफसीली बयान फसल अव्वल में हो चुका है, यहां मुख्तसरन कुछ अलामत लिखी जाती है।

आँवलासार जर्द सब्जी माइल व रंग आँवला चमकदार होती है।

नरमलासार–जर्द रंग की होती है, इसमें चमक बिलकु नहीं होती है और आतिशबाजी में इस्तेमाल की जाती है।

नेनुआसार–सब्ज गंधक को कहते हैं जो पीसने पर अन्दर से सब्ज निकले।

धोलिया–सफेद तीरह और खाक से मिली हुई होती है। इसको गूगर्द सफेद भी कहते हैं। नीलापन लिये हुए होती है, दरअसल यह गन्धक पारसी और सफेद की किस्म से है।

छाछिया–बाजे इसी को नरमलासार कहते हैं, फर्क यह है कि यह जर्द रोशन ह ती है और बेचमक हो वह नरमलासार है।

गन्धक सुर्ख–हजरत मुसन्निफ ने लिखा है "कि मैंने सुना है कि कोहदमावंद पर होती है और मिस को सोना और कलई को चांदी बनाती है, मुतरिज्जम ने गुलाबी रंग की गन्धक बनारस में खुद देखी है। (सुफहा अकलीमियां १६७)

गन्धक का असर (उर्दू)

गन्धक अगर गैर मुसफ्फा हो तो अपने अहराक की वजह से अजसाद को सोख्त क देता है और तांबे को जिगरगू करता है और लोहे को सुर्ख और सीमाव को अपनी बदबू से मुनक्किद करता है और उससे सिंग्रफ बन जाता है और चांदी महलूत में अगर गन्धक मिलावे और तेज आंच दे तो धक और चांदी गल जावेगी और सोना निकल आवेगा। (सुफहा अकलीमियां ६१)

अशुद्ध धकदोष

अशुद्धगंधः कुरुते तु कुष्ठं तापं भ्रमं पित्तरुजं तनोति ॥ रूपं सुखं वीर्यबलं निहंति तत्मात्सुशुद्धं विनियोजनीयम् ॥२३॥

(टो० नं०, र० सा० प०)

अर्थ–अशुद्ध गन्धक कोढ़ को करता है तथा ताप, भ्रम और पित्त के रोगों को शरीर में फैलाता है, रूप, वीर्य, सुख और बल को नाश करता है, इसलिये शुद्ध गन्धक का ही सेवन करना चाहिये॥२३॥

गंधंकशोधक

आदौ गंधकटङ्कादि क्षालयेज्जम्भवारिणा ॥ ईदृशं लग्नधूल्यादिमलं तेन विशीर्यते ॥२४॥ गंधः सक्षरिभांडस्य वस्त्रे कूर्मपुटाच्छुचि ॥ अथवा कांजिके तद्वत सघृते शुद्धिमाप्नुयात् ॥२५॥

(र० मा० र० चिं०)

अर्थ–प्रथम गन्धक और सुहागा प्रभृति को जंभीरी के रस से धो डाले कारण कि उस गन्धकादिक की रेत मिट्टी वगैरः साफ हो जावे, गंधक को दूध भरे हुए बासन के मुख पर रख कच्छपयंत्र से शुद्ध करे अथवा घी और कांजी में सी प्रकार शुद्ध होता है॥२४॥२५॥

अन्यच्च

सदुग्धभांडस्यपटस्थितोयं शुद्धो भवेत्कूर्मपुटेन गंधः ॥२६॥

(वृ० यो०)

अर्थ–एक बासन में दूध भर कर मुख पर कपड़ा बांध देवे और उस कपड़े पर गंधक को बिछा देवे फिर उसको कच्छपयंत्र से शुद्ध करे तो वह गंधक

शुद्ध होता है।२६॥

अन्यच्च

स्थाल्यां दुग्धं विनिक्षिप्य मुखे वस्त्रं निबध्य च ॥ गंधकं तत्र निक्षिप्य चूर्णितं सिकताकृतिम् ॥२७॥ छादयेत् पृथुदीर्घेण खर्परेणैव गंधकम् । ज्वालयेत्खर्परस्योर्ध्वं वनच्छाणैस्ततोत्पलैः ॥२८॥ दुग्धे निपतितो गंधो गलितः परिशुध्यति ॥ शतवारं कृतं चैवं निर्गंधो जायते ध्रुवम् ॥२९॥

(र० र० स०)

अर्थ एक हांडी में दूध भरकर मुख पर कपड़ा बांध देवे फिर उस कपड़े पर रेत के समान चूर्ण किये हुए गन्ध को बिछावे और उस गंधक पर एक मोटा खिपड़ा ढ़ाक दे, खिपड़े के ऊपर जंगली कंडों की अग्नि लावे, तदनंतर गल गलकर दूध में गिरा हुआ गन्धक शुद्ध होता है। इस प्रकार सौ बार शुद्ध किया हुआ गंधक रहित हो जाता है।।२७–२९॥

भाषा

छीर निपनिया छरीतनों । सपतगुनों गंधक अनों ।
वार तीनि ले तामें ढारि । और जुगति यह कही विचारि ॥

(र० सा०)

अन्यच्च

क्षीरेण भांडमापूर्य वस्त्रमावेष्ट्य तन्मुखम् । वस्त्रमध्ये क्षिपेद्गंधं मुखं यत्नात्पिधापयेत् ॥३०॥ शरावेण ततो वह्निं प्रज्वाल्योर्ध्वमवस्थितम् ॥ भांडके निपतेद्यावद्गंधस्तावत्समिंधयेत् ॥३१॥ कृशानौ तु स्वयं शीते गंधकं तु समुद्धरेत् । एवमेरंडभृंगारधत्तूरस्य रसेन वै ॥३२॥

(टो० नं०)

अर्थ–दूध के बासन को भरकर ऊपर मुख पर कपड़ा बांध देवे और उस कपड़े पर चूर्ण किये हुए गंधक को रख ऊपर से ढ़क देवे फिर शकोरे के ऊपर तव तक अग्नि जलावे कि जब तक वह गंधक टपक टपक कर दूध में चला जावे और अग्नि के शांत होने पर गन्धक को निकाल लेवे। इसी प्रकार एरण और धतूरे के रस से शुद्ध करे।।३०–३२॥

अन्यच्च

साज्यं भांडे पयः क्षिप्त्वा मुखं वस्त्रेण बंधयेत् । तत्पृष्ठे चूर्णितं गंधं क्षिप्त्वा श्रावेण बोधयेत् ॥३३॥ भांडं निक्षिप्य भूम्यन्तरूर्ध्वे देयं पुटं लघु । ततः क्षीरे द्रुतं गंधं शुद्धं योगेषु योजयेत् ॥३४॥

(रसरत्नाकर)

अर्थ–एक बासन में घी और दूध को डाल कर उसके मुख को कपड़ें से बांध दे, उसकी पीठ पर पिसे हुए गन्धक को बिछा कर शकोरे से ढ़क देवे फिर उस बासन को धरती में गाढ़कर ऊपर लघु पुट देना चाहिये, तदनंतर दूध में गले हुए शुद्ध गन्धक को सब कामों में लावे।।३३–३४॥

अन्यच्च

पयःस्विन्नो घटीमात्रं वारिधौतो हि गंधकः ॥ गव्याज्यविद्रुतो वस्त्राद्गालितः शुद्धिमृच्छति ॥३५॥ एवं संशोधितः सोऽयं पाषाणानंबरे त्यजेत् ॥ घृते विषं तुषाकारं स्वयं पिंडत्वमेव च ॥३६॥ इति शुद्धा हि गंधाश्मा नायपथ्यैर्विकृतिं व्रजेत् ॥ अपथ्यादन्यथा हन्यात्पीतं हालाहलं यथा ॥३७॥

(र० र० स०)

अर्थ–गंधक को एक घड़ी भर उष्ण जल में स्वेदन करे फिर गाय के घी में गालकर वस्त्र द्वारा दूध में छान लेवे तो गंधक शुद्ध होता है, इस प्रकार शुद्ध किया हुआ गंधक कपड़े में ही पत्थरों को छोड़ देता है, उसका विष घृत में मिल जाता है और आप चपटे गोलपिंड के आकार हो जाता है। (यह बिना कूर्मपुट के होता है, कूर्मपुट में तो मूंग की बराबर दाने होते हैं), इस प्रकार शुद्ध किया हुआ गंधक विकार को नहीं करता है और बिना शुद्ध किया हुआ गंधक पिये हुए हलाहल विष के समान होता है।।३५–३७॥

अन्यच्च

कंगुणीसर्षपैरंडतैलं वाथ कुसुंभकम् । मेषीक्षीरं घृतं वाथ गोक्षीरं चारनालकम् ॥३८॥ भृंगराजरसं वापि सारक्षीरमथापि वा ॥ एतेष्वेकन्तु भांडान्तः किंचिदूनं प्रपूरयेत् ॥३९॥ बद्ध्वा वस्त्रेण तद्वक्त्रं गंधचूर्णं ततोपरि । लोहपात्रे निरुध्याथ पृष्ठे स्थाप्यं च खर्परम् ॥४०॥ साग्निमुपलकैः पूर्णमंचं द्राव्य समुद्धरेत् । तं धत्तूरद्रवैः पिष्ट्वा शुष्कं द्रावं च पूर्ववत् ॥४१॥ पुनरेवं प्रकर्तव्यं संशुद्धो गंधको भवेत् ॥४२॥

(र० सा० प०)

अर्थ–कंगनी, सरसों, एरण्ड इनका तैल, कसूम का तैल (कर्र का तैल) भेड़ का दूध या घृत, गाय का दूध, कांजी, भांगरे का रस, बकरी का दूध, इनमें से किसी एक को लेकर बासन को ऊना भर देवे और उस बासन के मुख को बांधकर फिर उस पर गंधक का चूरा रख देवे फिर उसके मुख को लोहे के पात्र ढककर ऊपर से रखे और उस खिपड़े में अग्नि को जलावे तो वह गंधक गलकर दूध आदि किसी पदार्थ में टपक जायेगी। तदनंतर उसको निकाल कर धतूरे के रस से भावना देकर सुखा लेवे और फिर इसी प्रकार शुद्ध करे तो गंधक शुद्ध होता है।।३८–४२॥

अन्यच्च

स्निग्धां दर्वीं वह्निसंस्थां गंधं तेन द्रवीकृतम् । क्षीरभांडे विनिक्षिप्तं शुद्धं भवन्ति तत्क्षणात् ॥४३॥

(टो० नं०)

अर्थ–घीसे चिकनी और अग्नि पर रखी हुई करछी में गन्धक को पिघलाकर दूध में डाल देवे तो उसी क्षण गंधक शुद्ध हो जाता है।।४३॥

गंधक मुसफ्फा करनें की तरकीब (उर्दू)

करछा आहनी की सतः अन्दरूनी को घी में चर्व करके गंधक उसमें डालकर गुदाज करे, बादहू गाय के दूध में इस्तजाल करे, ख्वाह बुझाव दे, यह बुझाव तीस बार दिये जावें। (सफा अकलीमियां ९५)

गंधकमुसफ्फा करने का तरीका वास्ते खाने के (उर्दू)

घी एक दाम लेकर चमचा आहनी यानी करछी के अन्दर लगाकर उसमें, गंधक को गुदाज करे और पाव भर गाय के दूध में सर्द करे, इसी तरह तीस बार अमल करे, पाक और मुसफ्फा हो जायेगा। (सुफहा अकलीमियां १८२)

अन्यच्च

लोहपात्रे विनिक्षिप्य घृतमग्नौ प्रतापयेत् । वस्त्रसंशोधितश्चायं पाषाणनंबरे त्यजेत् ॥४४॥ घृते विषं तुषाकारं स्वयं पिंडं स्वमेव च ॥ प्रक्षाल्योष्णजलैः पश्चाद्धर्मशुष्कः शुचिर्भवेत् ॥४५॥

(र० सा० प०)

अर्थ–लोहे के पात्र में घी डालकर अग्नि पर तपावे फिर उसमें गंधक डालकर कपड़ें में छान देवे तो गंधक के साथ मिले हुए पत्थर के टुकड़े कपड़े में रह जाते हैं, गंधक के विष का अंश घी में मिल जाता है और गंधक का पिंडा बन जाता है फिर उसको गर्म जल से धोकर घाम में सुखा लेवे तो गंधक शुद्ध होता है।।४४॥४५॥

अन्यच्च

लौहपात्रे विनिक्षिप्य घृतमग्नौ प्रतापयेत् । तप्ते तप्ते तत्समानं क्षिपेतांधकजं रजः ॥४६॥ विद्रुतं गंधकं ज्ञात्वा दुग्धमध्ये विनिक्षिपेत् । एवं गंधकशुद्धिः स्यात्सर्वकार्येषु योजयेत् ॥४७॥

(र० चिं०, शार्ङ्ग)

अर्थ–लोहे के पात्र में घृत डालकर अग्नि पर तपावे फिर उसमें घृत के तपने पर घृत के समान गंधक का चूरा डाल देवे फिर गंधक को गला हुआ जान दूध में डाल देवे तो गंधक की शुद्धि होती है और उस गंधक को सब कामों में लावे॥४६॥४७॥

अन्यच्च

किं वाज्यद्रावितो भृंगरसे क्षिप्तो विशुद्धचति । सप्तधैवं भक्षणार्थं योगार्थं सकृदेव तु ॥४८॥

(रसमानस)

अर्थ–अथवा घृत में गंधक को गलाकर भांगरे के रस में बुझाव देवे तो गंधक शुद्ध होता है, यदि खानेयोग्य गंधक बनाना हो तो सात बार बुझाव देवे और किसी योग के लिय बनाना हो तो एक बार ही बुझाव देवे॥४८॥

गंधकनिर्गंधीकरण

विचूर्ण्य गंधकं क्षीरे घनीभावावधिं पचेत् ॥ ततः सूर्यावर्तरसं पुनर्दत्त्वा पचेच्छनैः ॥४९॥ पश्चाच्च पातयेत्प्राज्ञो जले त्रैफलसंभवे ॥ जहाति गन्धको गंधं निजं नास्तीह संशयः ॥५०॥

(र० सा० प०, र० चि०)

अर्थ–गंधक का चूर्ण करके फिर दूध में डालकर पकाते पकाते गाढ़ा हो जावे तब सूर्यावर्त का रस डालकर धीरे धीरे पाक करे, इसके बाद बुद्धिमान् वैद्य उस गंधक को त्रिफला के रस में कच्छप यंत्र द्वारा पातन करे तो गंधक अपनी सुगंध छोड़ देता है, इसमें कोई संदेह नहीं है॥४९॥५०॥

अन्यच्च

गंधको द्रावितो भृङ्गरसे क्षिप्तो विशुध्यति ॥ तद्रसैः सप्तधा स्विन्नो गंधकः परिशुध्यति ॥५१॥

अर्थ–पिघलाया हुआ गन्धक भंगरा के रस में डाला जाय तो शुद्ध हो जाता है, जल मे सात बार स्वेद किया हुआ गन्धक अच्छी तरह शुद्ध हो जाता है॥५१॥

गंधक मुसफ्फा करने का तरीका (उर्दू)

अगर अमल शमसी यानी तिला बनाना मंजूर है तो शीरा घीग्वार और अर्कप्याज में अलहदा बीस बीस बार इस्तंजाल करे यानी बतरीक धूमजंतर के अमल करे या चार चार पहर तक होलजनरमें पकाये, अगर खाने के वास्ते तसफिया मंजूर है तो बजाये अर्क मजकूर क दूध भैंस का होना चाहिये कि धुआं न रहे और शोला बंद हो जावे। (सफा अकलीमियां १७१)

अन्यच्च

देवदाल्यम्लपर्णी वा नारंगो वाथ दाडिमम् ॥ मातुलुंगमथालाभे द्रवमेकस्य चाहरेत् ॥५२॥ गंधकस्य तु पादांशं टंकणं द्रवसंयुतम् ॥ अनयोर्गंधकं भाव्यं त्रिस्त्रिर्वारं ततः पुनः ॥५३॥ धूस्तूरस्तुलसी कृष्णा लशुनं देवदालिकी ॥ शिग्रुमूलं काकमाचो कर्पूरः शंखिनीद्वयम् ॥५४॥ कृष्णागुरुस्तु कस्तूरी वंध्या कर्कोटकीसमम् ॥ मातुलुंगरसैः पिष्ट्वा क्षिपेदेरण्डतैलके ॥५५॥ अनेन लोहपात्रस्थं भावयेत् पूर्वगंधकम् ॥ त्रिवारं गंधतुल्यं तु जायते गंधवर्जितम् ॥५६॥ (र० चिं०)

अर्थ–देवदाली (वन्दाल), अम्लपर्णी (लोनिया), नारंगी, अनार, बिजौरा इनका रस अथवा इनमें से किसी एक का रस लेवे और गंधक का चौथाई सुहागा लेकर तीन भावना देवे फिर धतूरा, काली तुलसी, लहसन, बंदाल, सैंजने की जड़, (मूली) मकोय, कर्पूर, शंखिनी, दोनों काली अगर कस्तूरी, बांझककोड़ा, बिजौरा इनके रस में भावना दे देकर एरण्ड के तैल में गलावे, इस प्रकार गले हुये गंधक को फिर भी भावना देवे तो उस गंधक की सुगन्ध निकल जाती है, इसमें संदेह नहीं है॥५२–५६॥

गंधक को निर्गंध और श्वेत करना (भाषा)

रसखाटीदायोकौआने । अब दूजी विधि सुनौ सुजान । बीज निचोर तासु के देय । गंधकमहि छानि के देय ॥ चार पहर मर्दन कर लाय ॥ वासु मिटे सुपेद ह्वै जाय ॥ऐसी भांति खरलियो ताहि ॥रस अनारको सोखै जाहि

(रससागर)

गंधक को श्वेत करने की क्रिया (भाषा)

अब गंधक जैसे शुध होय । परगट कहों सुनो सबकोय ॥ गंधक सोरा सम के लेय । शुद्ध नीरसों खरर करेय ॥ चारि प्रहर ज्यों मरदन करै । नीर घोरि के कूडे धरै ॥ बहुरि थिराने लेय नितारि । ज्यों सोरा रस दीजै डारि ॥ पुनि दूजी साजी पुटदेय । तीजी चूना आछ करेय ।गंधक शुद्ध सेत अतिहोय । जो इहि विधि के जाने कोय ॥

(र० सा०)

इस्लाह गंधक (फार्सी)

तस्फिया गंधक, बिसानीद चहल व नहन्नः रोहू दादः दो नीव्य आसार गधक राहमी तोर हरकदर ज्यादः बाशद कुनन्द बादहू संहकदर आफ्ताब कुनन्द बदर चमचाए, नुकरः गुदाज दिहन्द व बिस्तुयक कुर्त दरशीरए लहसन अन्दाजददर जोश हफ्तम शीरः ताजा कुनद बादहू बिस्तुक कुर्त दर शीरए घीग्वार अन्दाजन्द व शस्तु चह (चौंसठ) पुट सहक करदः अजशीरः अगिया दिहिन्द व बिस्तपुट अजशीए जकूमई हरदो मुरत्तिब गरदद व सफेद रस रंग बुवद (सफा ११ छोटी कितबिया नुसखा सिद्ध रस किताब जवाहर, उलसनाअत)

गंधक का कायमुल्नार करना (उर्दू)

लहसन उमदः एक पुतिये का अर्क १ सेर निकाल कर साफ करके एक तोला गंधक करछे में रख कर और अर्क हस्व जरूरत डाले कि सब डूब जाये फिर उसको आग पर रखकर थोड़ा थोड़ा अर्क डालते रहे, जब खतम हो जावेगा, उतार लें, कायम हो जावेगा व सुर्ख।

(सफा खजाना कीमियां १६)

कयाम गंधक (उर्दू)

गन्धकको एक सौ एक मर्तबः पिघला कर और इसी के तेल में डालो, कायम हो जावेगी। (सफा १९१ किताब कुश्तै जात हजारी)

गंधक की तसईद (उर्दू)

गंधक दो प्याले में रखकर बाहम् प्यालों को खूब वस्ल करके गिले हिकमत कर दे और तीन दिन तक आग मिस्ल चराग के दे। (सफा अकलीमियां ९९)

गंधक और हरताल की तसईद करने के बाद स्याह रंग होता है, लिहाजा यह याद रखना चाहिये कि बाद रहतसईद आवशीरी से धोवे रफ्तः रफ्तः सफेद होता जायेगा और बिलाखिर सफेद होकर मोमियां हो जायेगा।

(सफा अकलीमियां १००)

१–कै दौनुकलाय रससागर । २–गंधकमोरासों (रससागर)

तसईद गूगर्द व रंगसफेद (उर्दू)

गूगर्दजर्द को लेकर थैली में भर दे और थैली मजकूर चूने के दरमियान में रख दे, इस तरह से कि थैली चूने से छिप जावे और तनूर जिसमें रोटी पक चुकी हो, भूभल में उसको एक दिन रात दफन रहने दे, जब सर्द हो जावे निकाल ले, गूगर्द व रंग सफेद मुसअद होगा।

(सफा अकलीमियां ९९)

गंधकादि का तैल निकालना जो जम जायेगा कपूरयोग से (भाषा)

अर्थ–तोले प्रतिमास मुष्कपूर दैणा और आनिशी शीशे के बीच पाकर मुख बंद करके कपड़मिट्टी कर दैणी और उसको अग्नि पर रखना तैल हो जायेगा फिर जम जायेगा। (जंत्र से प्राप्त पुस्तक)

गंधकतैल पिष्टीकरणार्थ दूध में औटाकर

आवर्तमाने पयसि दद्याद्गंधकजं रजः । तज्जाते दधिजं सर्पिर्गंधतैलं नियच्छति ।।५७।। अनेन पिष्टिका कार्या रसेन्द्रस्योक्तकर्मणि ।।५८।।

(र० चि०)

अर्थ–दूध के उबलने पर गंधक का चूरा डाल देवे फिर उसका दही जमाकर घी निकाल लेवे, इसे गंधक का तैल कहते हैं और इस तैल से पारद कर्म में पारद की पिष्टी बनाने चाहिये।।५७।।४८।।

अन्यच्च

आवर्तमाने, पयसि दद्याद्गंधकजं रजः ।। तज्जातदधिजं सर्पिर्गंधतैलं नियच्छति ।।५९।। तत्तु तैलं गलत्कुष्ठं हन्ति लेपाच्च भक्षणात् ।। पूजितं जारणायां च पारदः सविशेषतः ।।६०।।

(रसमानस)

अर्थ–औटते हुए दूध में गंधक का चूरा डाल देवे फिर उसका दहीं जमाकर घी निकाल लेवे, इसको गंधक का तैल कहते हैं, यह तैल लेप से और भक्षण से गलत्कुष्ठ को नाश करता है और जारण में यह तैल प्रशंसनीय है।।५९।।६०।।

गंधकतैल बत्ती बनाकर

कलांशव्योषसंयुक्तं गंधकं श्लक्ष्णचूर्णितम् ।। अरत्निमात्रे वस्त्रे तद्विप्रकीर्य विवेष्टच तत् ।।६१।। सूत्रेण वेष्टयित्वाथ यामं तैले निमज्जयेत् ।। धृत्वा संदंशतो वर्तिमध्ये प्रज्वालयेच्च तम् ।। द्रुतो निपतितो गंधो बिन्दुशः काकभाजने ।।६२।।

अर्थ–सोंठ, मिर्च, पीपल से सोलहगुना गंधक लेकर चूरा कर डाले फिर उसको पौन हाथ कपड़े में बिखेरकर बत्ती बनावे और उस बत्ती को सूत से लपेटकर एक प्रहर तक तैल में भिगो देवे फिर उस बत्ती को बीच में से पकड़ कर जला देवे तो गंधक टपक टपक कर कांच के वासन में आ जायेगा, उस गंधक की द्रुति कहते हैं।।६१।।६२।।

भक्षण प्रकार

तां द्रुतिं प्रक्षिपेत्पात्रे नागवल्ल्यास्त्रिबिंदुकाम् ।। वल्लेन प्रमितं स्वच्छं सूतेन्द्रं च विमर्दयेत् ।।६३।। अङ्गुल्याथ स पत्रांतां द्रुतिसूतं च भक्षयेत् ।। करोति दीपनं तर्विं भक्षं पांडु च नाशयेत् ।।६४।। कासं श्वासं च शूलार्तिं ग्रहणीमतिदुर्धराम् ।। आमं विनाशयत्याशु लघुत्वं प्रकरोति च ।।६५।।

(र० र० स०)

अर्थ–तदनन्तर तीन बूंद गंधक की द्रुति और तीन रत्ती पारद इनको पान में रख कर हथेली से मल देवे फिर उस पान सहित पारद को भक्षण करे तो अग्नि को तीव्र करता है, क्षय, पाण्डु, कास, श्वास, शूल, घोर, ग्रहणी और आम को नाश करता है।।६३–६५।।

अन्यच्च

अर्कक्षीरैः स्नुहीक्षीरैर्वस्त्रं लेप्यन्तु सप्तधा ।। गंधकं नवनीतेन पिष्ट्वा विलेपयेत् ।।६६।। तद्वर्तिर्ज्वलिता दण्डे धृता धार्या ह्यधोमुखी ।। तैलं पतत्यधोभांडे ग्राह्यं योगेन योजयेत् ।।६७।।

(र० चिं०)

अर्थ–आक के दूध से तथा थूहर के दूध से सात सात बार कपड़े को भिगोवे फिर मक्खन में पिसे हुए गंधक से उस कपड़े पर लेपकर देवे और उस बत्ती को जलाकर चिमटे से नीचामुख कर देवे फिर नीचे के पात्र में गिरे हुए तैल को ग्रहण करना चाहिये और उसको अनेक योगों में लगावे।।६६।।६७।।

नुसखः रोगन गंधक शीर आक में घोट बैजे में भर रोगन में पकाने से (उर्दू)

पांच मर्तबः तजरुबे में आया और सुर्ख तेल बरामद हुआ मगर वही तरकीब है कि बाज लोगों से जर्द और किसी से मुतलक न बना चांदी पर तरह करने से दो मर्तबः तजरुबा हुआ गब्वास नहीं है मगर जर्द करता है गंधक आंमलासार दो तोले, शीर मदार १० तोले, चार पहर खरल करो जब करीब गोली बंधन हो जावे निस्फ हिस्सा अंडे के छिलके में भर कर ऊपर दूसरा छिलका रखकर कपरौटी मजबूत करो और खुश्क करो फिर दूसरी कपरौटी कर तीसरी सेर भर अलसी का तेल किसी कढ़ाई आहनी या और जरूफ में डालकर और गोला मजकूर उसमें नरम आंच से चार प्रहर पका दो, सर्द होने के बाद कपरौटी दूर करे कज (टेढ़ा) करके किसी प्याले चीनी में रखो, खुली हवा में दस तोले ख्वाह कमोवेश हो रोगन सुर्ख बरामद होगा, इसके सही होने में कोई शक नहीं, (सफा ५ अखबार अकलीमियां)

गंधकतैलक्रिया

गंधकस्य च पादांशं दत्त्वा च टाङ्कणं पुनः ।। मर्दयेन्मातुलुङ्गाम्लै रुवुतैलेन भावयेत् ।।६८।। चूर्णं पाषाणगं कृत्वा शनैर्गंधं खरातपे ।।६९।।

(र० चिं०)

अर्थ–गंधक से चौथाई सुहागा लेकर बिजौरे के रस में घोटे और एरण्ड के तैल की भावना देवे फिर उस गंधक के चूरे को चिकने पत्थर पर बिछाकर तेज घाम में रख देवे तो गंधक का तेल निकल आवेगा।।६८।।६९।।

गंधकतैलक्रिया अग्नि पर पाक से

गंधकस्य तु पादांशं दद्याट्टंकणकं पुनः ।। मर्द्दयेन्मातुलुंगाम्लैरुष्णतैलेन भावयेत् ।।७०।। पुनः खर्पर के कृत्वा दीपाग्निं ज्वालयेदधः ।। न्यसेत्तत्र जलं कोष्णं मानाधिक्यं च यत्नतः ।। मलेन युक्तं यत्तैलं तत्तैलं रससाधकम् ।।७१।।

(टो० नंद)

अर्थ–गंधक से चौथाई सुहागा लेकर बिजौरे के रस से मर्दन करे फिर एरण्ड के तैल में भावना देवे, तदनंतर खिपरें में रख कर दीपाग्नि देवे और उसमें गरम जल भर देवे उसमें जो मैला मैला तेल निकलता है, वह रस का साधक समझना चाहिये।।७०।।७१।।

---

(१) क्या घी को गरम करने से तैल ऊपर आ जावेगा।

१–ऊपर कही निर्गंधी करणक्रिया से यह पाठ बहुत मिलता है।

अग्नि पर पाक करने से कटेली का असर गंधक पर (उर्दू)

यह बूटी गंधक के वास्ते गिरह कुश्ता है और इसरारसी है, इससे गंधक का रोगन निकलता है, मुतरिज्जम के सामने से एक साधु ने इसके अर्क में पकाते पकाते गंधक को सब्ज किया है ताआँकि सफल से रोगन जुदा हो गया। (सुफहा किताब अलकीमियाँ २८)

तरकीब रोगन गंधक बगरजइजाफः अयार (उर्दू)

आंवलासार गंधक से सब्जी माईल गंधक चुनकर निकाल ले और उसको कटाई कलांक के अर्क में जिसको कटीला और बढ़टसा कहते हैं तीन रोज तक पकावे, जब गंधक मजकूर इस कदर पक जावें कि आग पर रखने से धुआं और बू न दे बल्कि रोगन होकर सफल से जुदा हो जावे, ऐसें गंधक का रोगन भी बदस्तूरवाला निकालकर काम में लावे तो भी उससे अयार अफजा का काम निकलता है। (सुफहा किताब अकलीमियां)

गंधक के तेल की तरकीब (उर्दू)

पातालयन्त्र से आग (आकमें० स०) के पत्तों के रस का पुट देकर खुश्क करके चुकावे शीशा में भरकर। (सुफहा खजानः कीमियां ३३)

गंधक वगैरः के तेल निकालने की तरकीब (उर्दू) पातालयंत्र से

आग (आक) का दूध चौगुना लेकर उसमें कोई उपधातु डाल कर गोली बनाकर आतिशशीशी में वालूजंतर से तेल निकाल सकते हो। (सुफहा खजानः कीमियां ३३)

तेल गंधक (उर्दू)

गंधक आंवलासार आध पाव लेकर अर्क लहसन एक सेर अक–सत्यानशी एक पाव के साथ खरल करें कि हत्ता कि अर्क खुश्क हो जावे तब खुर्द खुर्द गोली बनाकर साया में अच्छी तरह खुश्क करें और फिर आतिशी शीशी में डाल देवे और शीशी में मुँह के लोहे की तारे दंवे फिर एक मिट्टी की कनाली लेकर दरमियान से इस कदर सूराक करें कि मुँह शीशी का निकल सके फिर एक चूल्हा खोदकर उसमें एक प्याली उमदा चीनी की रखे यानी पहले कनाल को रखे और नीचे उसको प्याले को रखें फिर चारों तरफ कनाल के आग करीब ५ सेर के देवें। तीन चार घंटे में तेल निकल आवेगा, मुजर्रिब है। (सुफहा ९० किताब कुश्तैजात हजारी)

गंधक तैल जंगली प्याज में २१ दिन घोटकर

गंधक को तीन सप्ताह जंगली प्याज के रस में घोटने के बाद तेल निकालने से अग्निस्थाई तेल निकलता है। (कश्मीर यात्रा में प्राप्त)

गंधकतैल पातालयंत्र से

गंधक यथेष्ट लेकर मधु बिच रखना (ककरविच) दिन चालीस तब पाताल यंत्र से तेल निकालना।। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

गंधकतैलवेधक पातालयंत्र से

गंधक यथेष्ट लेकर उप्ट्र मूत्र १ मात्र में पाकर नितारना फिर द्वितीय पात्र में नितारना फिर तृतीय पात्र में नितारना फिर चतुर्थ पात्र में नितार कर उससे खरल करना १८ दिन (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

अन्यच्च

गंधक यथेष्ट कृष्ण खेरी दुग्ध में खरल करना दिन १८ फिर ज्योतिष्मती तैल में खरल करना दिन ५ फिर रेत भांडे दी पाकर ऊपर अरण्योपल देकर तैल निकालना तैल वेधक है। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

गंधकतैल पातालयंत्र भेद से

अमलतासके फूल और गंधक दोनों समभाग खरल करके गोला बनाकर सुखाकर शीशी में पाकर पाताल यंत्र करके ऊपरली शीशीके ऊपर बच्छियों का गोहा रोज दो सेर पक्का पाणा १० रोज फिर दो सेर पक्के कोयले चंगे लेकर गोहे के ऊपर भरवा के भस्म कर देणे तैल गोहे की गर्मी से हो निकल आवेगा, काम में लगाना (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तरकीब तेल गंधक (उर्दू)

आंवालासार गंधक को एक शीशी में डाल कर दूसरी बोतल का मुँह बाहम मिला दो और गंधकवाली शीशी के ऊपर शीशी के ऊपर खाली को नीचे करके मौसम बरसात में एक गढ़ा खोद कर घोड़े की लीद में दबावे मगर हर हफ्ते लीद बदल दिया करे बाद गुजरने मौसम बरसात के जिस वक्त बोतलों को निकालोगे नीचे वाली बोतल पाओगे। (सफा ८९ किताब कुश्तैजातहजारी)

गंधकतैल गोबर में गाडकर

गंधक सूक्ष्मचूर्ण ऊर्ध्वपात्र में हेठ दूसरा पात्र खाली ऊर्ध्व मुख में तृण देकर खूब बंद करके पुरुष प्रमाण शर्त करके उसमें गोमय भर के पत्र द्वय रख कर ऊपर उतना ही गोमय हो रपाकर छोड देना, वैशाख मास करना ६ मास पर निकालना, गन्धक तैल अधोपात्र में जाकर पड़ेगा उसको योगों में योजन करना। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

गंधकतैल

अथवा चुल्लकं खंडे गर्ते गंधकजं रजः ।।
देयं पाकविधौ सम्यगन्यत् पूर्ववदीरितम् ।।७२।।

(जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

अर्थ–अथवा चूल्हे की तरह वाले गढे में गंधक का चूर्ण पाक के विधि में देकर पहले की समान क्रिया करने से गंधक तैल, योग के योग्य होगा।।७२।।

गंधकपिष्टिविधि

दश दल गंधक सोध्यो ग्वार । लेइ बुझाय तीन ही बार ।। पुनि गज एक ले चुचौकार । बरके दूध लेपि दशबार ।। करिदो बरता गंधक बांधि । कठिन गांठि ज्यों रहै न साधि ।। तब पोटली डोलिका धरै । हांडी रस जुगुनीके धरै ।। द्वै सै पल दिन प्रतिरसलेय । ऐसी आगि बीस दिन देय । तब गंधक पीठी ह्वैजाय । धातै रंगे सुनो हो राय । रतीरती जो प्रानी खाय । तो नासे चौरासी बाय । सीत दोष अरु मंडल हरै । जो रोगी संजम पथ करै ।।

(रससागर)

दशनिष्कं शुद्धसूतं निष्कैकं शुद्धगंधकम् । स्तोकं स्तोकं क्षिपेत्खल्वे मर्दकेनाथ कुट्टयेत् । याममात्रं भवेत्पिष्टीगंधपिष्टिर्निगद्यते ।।७३।। (र० रत्ना० हस्तलिखित अनूपश०)

अर्थ–चालीस माशे शुद्ध पारद और चार माशे शुद्ध गंधक लेवे फिर खरल (तप्त खल्व) में पारद को डालकर थोड़ा थोड़ा गंधक डालता जावे और घोटता जावे इस प्रकार एक प्रहर घोटने से पिष्टी होती है उसको गंधक पिष्टी कहते हैं।।७३।।

अन्यच्च

अथवा गन्धकं सूतं पूर्वमात्रा यथोदितम् । ताम्रपात्रे विमर्द्याथ अंगुष्ठेन शनैः

शनैः ॥७४॥ मृद्वंगारा ह्यधः क्षिप्या यथांगुष्ठं न बह्यते । पिष्टिकां घटिकामात्रे समुद्धत्याथ जारयेत् । अथवा तीव्रघर्मेण कार्या गंधकपिष्टिका ॥७५॥ (र० रत्ना० हस्तलि० अनूप०)

अर्थ—अथवा गंधक से दस गुना पारद लेकर तांवे के पात्र में रख देवे और उस तांवे के पात्र के नीचे थोड़ी सी अग्नि रख कर अपने हाथ के अंगूठे से धीरे २ मलता जावे और अग्नि भी ऐसी लगावे कि हाथ का अंगूठा नहीं जलै फिर एक हांडी में बनी हुई पिष्टिका को लेकर जारण करे (अथवा तेज घाम में रखकर गंधक की पिष्टि करे)॥७४॥७५॥

गंधपिष्टी

शुद्धसूतपलैकन्तु कर्षैकं गंधकस्य च । स्विन्नखल्ले विनिक्षिप्य देवदालीरसप्लुतम् । मर्दयेच्च कराङ्गुल्या जायते गंधपिष्टिका ॥७६॥

अर्थ—शुद्ध पारद एक पल (चार तोले) और शुद्ध गंधक एक कर्ष (एक तोला) इन दोनों को तप्त खल्व में डाल कर वंदाल के रस की भावना देकर हाथ के अंगूठे से मर्दन करे तो पिष्टी उत्तम होगी॥७६॥

गंधपिष्टी (उर्दू)

पारा एक पल, गंधक एक कर्स (कर्ष) यानी सवा तोला खरल में डालकर देवदाली के अर्क में मिलाकर धूप में रखकर उंगली से खूब रगडे पिष्टी बन जावेगी। (सुफहा खजानः कीमियां १५)।

गंधपिष्टी (उर्दू)

गंधक को सौ बार मिट्टी के ठीकरे में कोंच के अर्क में तर करके साये में सुखावें फिर उसमें पारा और यही अर्क डालकर उंगली से खूब मिलावे पिष्टी बन जायगी यह तीनों पिष्टी धातुवाद के काम में आवेगी बहुत उमदा है। (सुफहा खजानः कीमियां १५)

गंधक की पिष्टी (उर्दू)

साफ गंधक का बुरादा स्याह धतूरे के अर्क में सात बार तर करे सुखाकर फिर सात बार हेज के खून में इसी तरह फिर एक बार आदमी के वीर्य में तर करके सुखावे फिर मिट्टी के ठीकरे में रख कर एक पल पारा डाल कर उंगली से खूब मिलावे पिष्टी बन जावेगी। (सुफहा खजाना कीमियां १५)

गंधक जारण के लिये पिष्टी

बिलोलितैः स्वर्णजले विशुष्के वस्त्रेऽथ दत्त्वा नवनीतगर्भे चूर्णं शिलातालगंधकानां सपन्नगानां समभागिकानाम् ॥७७॥ कर्षप्रमाणं च ततोऽस्य वर्ति प्रज्वालयेत्तद्गलितं घृतं स्यात् । अनेन कुर्याद्रसनायकस्य सर्वत्र पिष्टी बलिजारणाय ॥७८॥
(टो० नं०, योगतरंगिणी० ध० सं०)

अर्थ—गंधक के चूर्ण को धतूरे के रस की भावना देकर सुखा लेवे फिर इसमें से १ तोला गंधक, मैनसिल १ तोला, हरिताल १ तोला, सीसा १ तोला इन सबको सम भाग लेकर चूर्ण कर लेवें उसमें से एक तोले चूर्ण को मक्खन में भिगो कर बत्ती बनाकर जला देवे तो घृत निकलेगा इसमें पारद में गंधक जारण के लिये पिष्टी करे॥७७॥७८॥

गंधक गुण

शुद्धगंधो हरेद्रोगान् कुष्ठमृत्युजरादिकान् ॥
अग्निकारी महानुष्णो वीर्यवृद्धिं करोति च ॥७९॥
(र० रत्नाकर० र० र० स०)

अर्थ—शुद्ध गंधक कोढ, मृत्यु और जरा (बुढापा) आदि रोगों को नाश करता है अत्यन्त उष्ण अग्नि और वीर्य को वृद्धि करता है॥७९॥

अन्यच्च

गंधाश्मातिरसायनः समधुरः पाके कटूष्णो मतः कंडूकुष्ठविसर्पदद्रुदलन दीप्तानलः पाचनः ॥ आमोन्मोचनशोषणो विषहरः सूतेन्द्रवीर्यप्रदो यक्ष्मप्लीहकफानिलक्रिमिहरः सत्त्वात्मकः सूतजित् ॥८०॥ (र० सा० प० र० र० स०)

अर्थ—गंधक रसायन पाक में मीठा, कुछ गरम है, खुजली, कोढ, विसर्प और दाद का नाशक अग्नि को दीप्त करनेवाला और पाचन है आम को साफ करनेवाला और सुखानेवाला है, विष का नाशक, पारद को बल देनेवाला, यक्ष्मा, प्लीहा, कफ और कृमि का विध्वंसकारी सत्वरूप और पारद के जीतनेवाला है॥८०॥

अन्यच्च

गंधकः कृमिकुष्ठघ्नो विषनेत्रामयापहः ॥
रसायनश्चातिबल्यो विषमज्वरनाशनः ॥८१॥

(टो० नं०)

अर्थ—शुद्ध गंधक कृमि कुष्ठ और नेत्ररोग का नाश करनेवाला है रसायन और अत्यन्त बलकारी है तथा विषमज्वरका नाशक है॥८१॥

अन्यच्च

गंधकः कटुकस्तिक्तो वीर्योष्णस्तुवरः सरः ॥ पित्तलः कटुकः पाके कंडूवीसर्पजंतुजित् ॥८२॥ हंति कुष्ठं क्षयप्लीहकफवातान् रसायनम् ॥ अशोधितो गंध एव कुष्ठसंतापकारकः ॥८३॥ शुक्रौजः क्षयमाबल्यं करोति च रुचिप्रणुत् ॥८४॥

(वृ० यो०)

अर्थ—गंधक, चरपरा, कडवा उष्णवीर्य और दस्तावर है, पित्त का पैदा करनेवाला। परिपाक में चरपरा, कंडू, विसर्प और कृमिरोग का नाशक है कोढ, क्षय, प्लाहा, कफ और वातरोगों को नाश करता है और रसायन है बिना शुद्ध किया हुआ गंधक कोढ, संताप करता है वीर्य तथा ओज का नाशक करने वाला और अरुचि का कर्ता है॥८२–८४॥

गंधक सेवन

घृताक्ते लोहपात्रे तु विद्रुतं शुद्धगंधकम् । घृताक्तदर्विकाक्षिप्तं द्विनिष्कप्रमितं भजेत ॥८५॥ हन्ति क्षयमुखान् रोगान कुष्ठरोगं विशेषतः । क्षाराम्लतैलसौवीरविदाहि द्विदलं तथा ॥८६॥ शुद्धगंधकसेवायां त्यजेद्योगयुतेन हि ॥८७॥ (र० र० स०)

अर्थ—घीसे चिकने किये हुये लोहे के पात्र में गंधक को गलाकर दूध में डाल देवे फिर उसमें से ८ माशे नित्य सेवन करें तो वह गंधक क्षय आदि रोगों को नष्ट करता है और कोथ को तौ अवश्य नाश करता है और गंधक को खानेवाला मनुष्य खार, अम्ल पदार्थ, सुर्मा, दाहजनक पदार्थ, तथा दाल इनके भक्षण को अवश्य छोड़ देवे॥८५–८७॥

गंधकसेवन कुष्ठ रोग के लिये

गंधकस्तुल्यमरिचः षड्गुणत्रिफलान्वितः । घृष्टः शम्याकमूलेन पीतश्चाखिलकुष्ठहा ॥८८॥ तन्मूलसलिले पिष्टं लेपयेत्त्र्यहं तनौ । दृष्टप्रत्ययंयोगोयं सर्वत्राप्रति वीर्य्यवान् । श्रीमता सोमदेवेन सम्यगत्र प्रकीर्तितः ॥८९॥

(र० र० स०)

अर्थ—गंधक एक भाग, तथा मिरच एक भाग और त्रिफला छः भाग इन सबको अमलतास की जड़ के रस से पीसकर पान करें तो समस्त कुष्ठ दूर होते हैं और उसी अमलतास की जड़ की रस से पिसे हुए गंधक का शरीर

---

(१) बाद कर्मोपयोगी है क्योंकि नाग का मेल है।

पर लेप करे तो कुष्ठरोग दूर होता है। यह योग श्रीसोमदेव ने अपने रसरत्नसमुच्चय में कहा है।।८८।।८९।।

गंधकलेप विधान

द्विनिष्कप्रमितं गंधं पिष्ट्वा तैलेन संयुतम् । अथापामार्गतोयेन सतैलमरिचेन हि ।।९०।। विलिप्य सकलं देहं तिष्ठेद्धर्मे ततः परम् । तक्रभक्तं च भुंजीत तृतीये प्रहरे खलु ।।९१।। भजेद्रात्रौ तथा वह्निं समुत्थाय ततः प्रगे । महिषीछगणं लिप्त्वा स्नायाच्छीतेन वारिणा ।।९२।। ततोऽभ्यज्य घृतैर्देहं स्नायादिष्टोष्णवारिणा । अमुना क्रमयोगेन विनश्यत्यतिवेगतः ।।९३।। दुर्जया बहुकालीना पामा कंडुः सुनिश्चितम् । गंधकस्य प्रयोगाणां शतं तत्र प्रकीर्तितम् । ग्रंथविस्तरभीतेन सोमदेवेन भूभुजा ।।९४।।

(र० र० स०)

अर्थ–आठ माशे गंधक को तैल में पीसकर अथवा ओंगा का रस, मिर्च, गंधक इनको तैल में पीसकर, फिर शरीर में लेपकर घाममें खड़ा रहै और तीसरे प्रहर में मट्ठा–भात का भोजन करे तथा रात में आंच से शरीर को सेकें और प्रातःकाल भैंस के गोबर से शरीर की मालिश कर शीतल जल से स्नान कर लेवे फिर घी की मालिश करके सुहाते २ गरम जल से स्नान करे इस युक्ति से अत्यन्त कठिन, बहुत दिनों की पैदा हुई खुजली निश्चय नाश हो जाती है इस प्रकार महाराज सोमदेव ने सैंकड़ो गंधक के प्रयोग वर्णन किये हैं उनको ग्रन्थ के बढ़ने के भय से हम नहीं लिखते हैं।।९०–९४।।

गंधककल्प

सुगंधकं निष्कमात्रं सदुग्धं सेव्यं मासं सौर्यवीर्यप्रवृद्ध्यै ।।
षण्मासात्स्यात्सर्वरोगप्रणाशो दिव्या दृष्टिदीर्घमायुस्सुरूपः ।।९५।।

(र० सा० प०)

अर्थ–जो मनुष्य चार माशे गंधक को एक महीने तक दूध के साथ सेवन करै तो वीर्य की वृद्धि होती है यदि छः महीने तक दूध के साथ ४ माशे गंधक को खावे तो सब रोग नाश होकर उत्तम दृष्टि और रूपवाला दीर्घायु होता है।।९५।।

अन्यच्च

इत्थं विशुद्धं त्रिफलाज्यभृंगवच्चिन्वतः शाणमितो हि लीढः । गृध्राक्षितुल्यं कुरुतेऽक्षियुग्मं करोति रोगोज्झितदीर्घमायुः ।।९६।। पथ्यं दुग्धौदनम् (र० सा० प०)

अर्थ–इस प्रकार शुद्ध किये हुए चार माशे गंधक को त्रिफला, घृत, भंगरा और शहद में मिलाकर चाटे तो उसके नेत्र गीध के समान तेज होते हैं और सब रोगों से रहित होकर दीर्घायु होता है, इस पर दूध तथा भात का पथ्य है।।९६।।

अन्यच्च

चूर्णीकृत्य पलानि पंच नितरां गंधाश्मनो यत्नतस्तच्चूर्णं त्रिगुणे तु मार्कवरसे छायाविशुष्कीकृतम् यत्स्याच्चूर्णमथाभयामधुघृतं प्रत्येकमेषां पलं वृद्धो यौवनमेति मासयुगलं खादेन्नरः प्रत्यहम् ।।९७।।

(र० सा० प०)

अर्थ–शुद्ध किये हुए पांच पल गंधक के चूर्ण को तिगुने भांगरे के रस से भावना देकर छाया में सुखाकर चूर्ण कर लेवे फिर उसमें एक पल हर्र का चूर्ण, एक पल घृत, और एक पल शहद को मिला देवे फिर उसको दो मास तक सेवन करें तो वृद्ध मनुष्य भी युवा पुरुष हो जाता है।।९७।।

अन्यच्च

बलिरेको घृतमरिचविमिश्रः पलितवलिघ्नः प्रातर्भुक्तः ।।
वितरति तरुणस्वरूपमुदारं वृद्धस्यापि विमोहितदारम् ।।९८।।

(र० सा० प०)

अर्थ–प्रातःकाल जो मनुष्य घी और मिरच के साथ गंधक को खाता है वह वलीपलित रहित होता है और वृद्ध मनुष्य को भी स्त्रियों को मोहित करनेवाले युवावस्था के रूप को देता है।।९८।।

अन्यच्च

वातारितैलसंयुक्तं त्रिफलागुग्गुलेन तु । गंधकं रससंयुक्तं मासाद्व्याधिजरापहम् ।।९९। अर्शोभगंदराद्याश्च तथा व्याधिकफोद्भवाः । चला दंता मंददृष्टिर्बलशुक्रादिसंक्षयः ।।१००।। नश्यन्ति व्याधयः सर्वे मासे नैकेन गंधकात् ।। षण्मासस्य प्रयोगेण देवतुल्यो भवेन्नरः ।।१०१।। हंसवर्णाश्च ये केशो वलिश्चापि प्रलम्बिनी ।। निर्जित्य यौवनं याति भ्रमरा इव मूर्द्धजाः ।।१०२।। दिव्यदृष्टिर्महाप्राज्ञो वराह इव कर्णयोः ।। चक्षुषा तार्क्ष्यतुल्योऽसौ बलेन बलविक्रमः ।।१०३।। दृढदन्तो वज्रकायो द्वितीय इव शंकरः ।। तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्वं भवति कांचनम् ।।१०४।। लवणाम्लानि शाकानि द्विदलानि तथैव च ।स्त्रियाश्चारोहणं यानं गंधसेवी विवर्जयेत् ।।१०५।। (र० सा० प०)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतसंरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसाद–संकलितायां रसराजसंहितायां गंधकविषयोपवर्णनं नाम द्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ।।५२।।

अर्थ–एरंड का तेल, त्रिफला, गूगल और पारद के साथ गंधक को जो एक मास तक सेवन करे तो वह जरा (बुढापा) और व्याधि रहित होता है और उसके अर्श (बवासीर) भगंदर आदि रोग तथा कफ से पैदा होनेवाले रोग दाँतों का हिलना, दृष्टि की मंदता, बल और वीर्य का नाश इत्यादि रोग एक मास तक गधकके सेवनसे नाश हो जाते हैं और छः मास तक सेवन करने से देवताओं के तुल्य होता है, सफेद बाल काले हो जाते हैं तथा झुर्रियों का नाश होकर युवावस्था का सा रूप हो जाता है, वराह के से कान हो जाते हैं और गरुड की ऐसी उत्तम दृष्टि होती है और पुरुषार्थ श्रीबलदेवजी के समान होता है, दांत तथा शरीर की दृढ़ता में दूसरे श्रीमहादेवजी के तुल्य होता है और उसके मूत्र तथा मल से तांबे का सोना हो जाता है, गंधक का सेवन करनेवाला नोंन, अम्ल पदार्थ (खट्टे पदार्थ), दाल, स्त्री के सहवास सवारी इन सबको छोड़ देवे।।९९–१०५।।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहिताया हिन्दीटीकायां गंधकविषयोपवर्णनं नाम द्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ।।५२।।

साधारणरसाध्यायः ५३

साधारण रसों का वर्णन

कम्पिल्लश्च परो गौरी पाषाणो नवसारकः ।। कपर्दो वह्निजारश्च गिरिसिंदूरहिंगुलौ ।।१।। मोदारश्रृंगमित्यष्टौ साधारणरसाः स्मृता ।। रससिद्धिकराः प्रोक्ता नागार्जुनपुरः सरैः ।।२।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कबीला, गौरीपाषाण (संखिया), नवसादर, कौड़ी, वह्निजार (अम्बर), गिरिसिंदूर, हिंगुल और मुरदारशिंग यह साधारण रस नागार्जुन प्रभृति सिद्धों ने रस की सिद्धि के करनेवाले कहे हैं।।१।।२।।

कबीले की उत्पत्ति

इष्टिकाचूर्णसंकाशश्चन्द्रिकाढ्योतिरेचनः ।।
सौराष्ट्रदेशे चोत्पन्नः स हि कम्पिल्लकः स्मृतः ।।३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कबीला ईंट के चूले के मसान चमकीला हो और दस्तावर होता है

वह कबीला सौराष्ट्र (सोरठ यानी सूरत) देश में उत्पन्न होता है॥३॥

कबीले के गुण

पित्तव्रणाध्मानविबन्धनिघ्नः श्लेष्मोदरार्तिकृमिगुल्मवैरी ॥
मूलामशोफज्वरशूलहारी कम्पिल्लको रेच्यगदापहारी ॥४॥
(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पित्त, फोड़ा, अफरा, मलबंध, कफरोग, उदररोग, कृमिरोग, गुल्मरोग, बवासीर, सूजन, आम, ज्वर इन सबको नाश करता है और जो रोग जुलाब लेने से दूर होते हैं उनके नाश करने में कबीला अत्यंत लाभकारक है॥४॥

गौरी पाषाण के भेद

गौरीपाषाणकः पीतो विकटो हतचूर्णकः।स्फटिकाभश्च शंखाभो हरिद्राभस्त्रयः स्मृताः ॥५॥ पूर्वपूर्वो गुणैः श्रेष्ठः कारवल्लीफले क्षिपेत् ॥ स्वेदयेद्धंडिकामध्ये शुद्धो भवति मूषकः ॥६॥ तालवद् ग्राहयेत्सत्त्वं शुद्धं शुभ्रं प्रयोजयेत् ॥ रसबंधकरः स्निग्धो दोषघ्नो रसवीर्यकृत् ॥७॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–शंखिया तीन जाति का होता है एक फिटिकिरी के समान होता है जिसके तोड़ने से चूरा चूरा हो जाता है और दूसरा शंख के समान सफेद होता है और तीसरा हलदी के समान पीला होता है इनमें एक दूसरे से उत्तरोत्तर न्यून गुणवाला होता है इस शंखिये के टुकड़े को एक बड़े करेले में रख और कपड़े से बांध कांजी में दोलायन्त्र द्वारा पकावै तो शुद्ध होगा। हरताल के समान शुद्ध सफेद सत्व निकालकर काम में लावे यह पदार्थ रस के बांधनेवाला चिकना दोषनाशक रस और वीर्य के करनेवाला है॥५–७॥

लोहसादर की उत्पत्ति

करीरपीलुकाष्ठेषु पच्यमानेषु चोद्भवः ॥
क्षारोऽसौ नवसारः स्याच्चूलिकालवणाऽभिधः ॥८॥
(रसरत्नसमुच्चय)

करील (कैर) और पीलू प्रभृतियों की लकडी पचने पर जो क्षार पैदा होता है उसको नवसादर कहते हैं और इसको चूलिकालवण भी कहते हैं॥८॥

तथा च

इष्टिकादहने जातं पाण्डुरं लवणं लघु ॥
तदुक्तं नवसाराख्यं चूलिकालवणं च तत् ॥९॥
(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–ईट के जलाने में जो हलका और पीला नोंन पैदा होता है उस नौसादर को चूलिका लवण कहते हैं॥९॥

सम्मति–करील अथवा पीलू अथवा ईट को जलाकर पानी में घोल और नितारकर छान लेवे और उसको औटाकर क्षार बना लेवें।

नौसादर की किस्में (उर्दू)

नौसादर की पांच किस्मे हैं। अव्वल–नौसादर उर्फी जिससे वर्तनों पर कलई होती है वहं ईट के पजावे से निकलता है। दोयम नौसादर कानी सफेद जिस्में बदबू नहीं होती, सोयम–पैकानी जो किसी कदर जर्दी व सुर्खी माइल होता है और स्याही और सफेदी उसमें नहीं होती, चहारम–अमली जो लडके को नानमैदा गन्दुम और शहद और रोगन और जर्दी बैजा मुर्ग खिलाकर बोलत बराज को उसके निगाह रखते हैं इक्कीस दिनों बाद जब जमा हो जाता है उसके हमवजन गंधक मिला कर पाइखाना और गंधक दोनों को पेशाब मजकूर में खरल करके हलाव अकद करते हैं और मुकतर करके तरकीब देते है और अमलकीमियां से यह सबसे अफजल होता है, पंजुम–फैनियः जो शोरा कल्मी की तरह होता है।

(सुफ़हा अकलीमियाँ १६९)

तरकीब नौसादर महलूल

नौसादर महलूल की तरकीब यह है कि नौसादर एक हिस्सा नमक इन्दरानी निस्फ हिस्सा दोनों मिलाकर सलाया करे बादहू एक हांडी में डालकर तीन मर्तबः तसईद करें तो नौसादर सफेद और साफ हो जावेगा फिर दुबारा हांडी गिली में डाल दे और गढा दो गज गहरा और गज भर चौड़ा नमकनाक जमीन में खोद कर उस गढे को लीद अस्पसे निस्फ तक चर कर और वह हांडी इसमें रखकर बाकी गढा लीद से भर दें और मिट्टी डाल कर बंद कर दें एक हफ्ते के बाद खोल कर देखे तो नौसादर मिस्ल पानी के हो जायगा इस वक्त कपड़े में छान कर रखें और वक्त जरूरत काम में लावे (सुफ़हा २९०३० किताब अखबार अलकीमियाँ १६/२/२९)

किस्म नौसादर मुन्दर्जः खुरशैद पिदायत (उर्दू)

रानाक्त हवाई मिनत और इससे मुरादरूह हम्मिलान मुमलिल मुशम्मा है और वह उकाब (नौसादर) है जो कानी हो और वह मलह तवजर्द की तरह होता है. सफेद चमकदार और सोजां और इसे अमूमन समर कंद से खुरासान की तरफ लाया जाता है इसकी दूसरी किस्म जो है कि इसे जवासा बोलते हैं यह करामद नहीं यह मसनूई है और कारसनत में काम नहीं देता सिर्फ कलईगरों के काम आता है कारआमद सिर्फ कानी है (सुफहा २१ अखबार अलकीमियाँ ८/३/१९०९)

नवसादरस्थिति प्रकार

मृदादिभिः स्थिराः कार्य्या नलिकातप्तकोपरि ॥ तन्मध्ये निक्षिपेच्चूर्णं तुल्यशोरकयोः समम् ॥१०॥ अर्द्धचूर्णोपरिधार्य्यं खंडचुल्लकसम्भवम् । तस्योपरि तथाचूर्णमर्द्धपूर्ववदेव हि ॥११॥ मंदानलेन विपचेद्यावद्यामचतुष्टयम् ॥ ततो वह्नौ परीक्षेत नैवं चेद्धि पुनः पचेत् ॥१२॥ स्थिरः संजायते वह्नौ नवसारसुपाचितः ॥ (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

अर्थ–तवे पर मिट्टी वगैरह से मिट्टी की बनी हुई नलिका को खड़ी कर देवे उसमें नीलाथोथा और शोरे के समान चूना मिलाकर डाल देवे जब आधी नली भर जाइ तब नौसादर रख ऊपर से नीलाथोथा और शोरा मिले हुए चूने को डाल देवे मंदाग्नि से चार प्रहर तक पकावै फिर उसमें से निकाल आंच पर रख परीक्षा कर जो उड जाइ तो इसी प्रकार फिर पाचन करे इस प्रकार करने से नौसादर अग्निस्थायी होता है॥१०–१२॥

नौसादर गुण

रसेन्द्रजारणं लोहद्रावणं जठराग्निकृत । गुल्मप्लीहास्यशोषघ्नं भुक्तमांसादिजारणम् ॥ बिडाख्यं च त्रिदोषघ्नं चूलिकालवणं मतम् ॥१३॥
(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–यह नौसादर पारद के जारण करने में तथा धातुओं के जलाने में अत्यंत उपयोगी है जठराग्नि को दीप्तकर मांसादि भारी पदार्थों को भी पचाता है गुल्म प्लीहा और मुख शोष को भी फायदा करता है कुछ विद्वानों का मत है कि विडनोंन को चूलिकालवण (नौसादर कहते हैं वह त्रिदोषघ्न है) १३॥

नौसादर तैल कायम

सिधीयों आचूना वा गुट्ठल कौडियों का चूना नौसादर के हेठ ऊपर चूना देना नौसदार दरडा कर लेणा आग आठ सेर पक्के की देणी नौसादर कायम हो जायगा उसको शीशी में पाकर ४१ दिन लिद्द (लीद) में दवाना

नौसादर तेल हो जायगा सब धातुओं को पकड़ेगा । (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा च

मृताश्मनवसारौ च समभागावर्धयामकम् ॥ खल्वे संमर्द्य मृत्पात्रे मुद्य मंदाग्निपाचनम् ॥ बारम्वारं क्रिया ह्येषा स्थिरतैल प्रकाशिका ॥१४॥

चूना और नौसादर को सम भाग लेकर चार घडी खरल में घोटे मुख पर कपरौटी कर मंदाग्नि से पचावे इस क्रिया को कई बार करे फिर ऊपर कही हुई क्रिया से शीशी में भर ४१ दिन लीद में रखें तो तैल होगा॥१४॥

तथा च

एक तोला लवण तीन तोला नौसादर दोनों को महीन खरल करना कूंजे में छेद करके और बंद करके आग देणी छिद्रद्वार करके नौसादर तैल हेठ पाताल यंत्र में पड़ जायगा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा

ऊंट के बाल कतरके छेदवाले कूंजे में बाल तथा नौसादर की तह बतह दे के मुख बंद करके चार सेर मेगणा तथा धान के तुषों की आग देणी तैल बन जायगा।

तथा

भांग में तह नौसादर की दे के भांडे की कपडमाटी करके कपडमाटी सुखाकर पातालयंत्र से तैल निकालना (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा

इन्द्र जौ बराबर या कमती या अधिक हों नौसादर या सज्जी या सुहागा इनमें से जिसका तैल निकालना हो उसको इन्द्रजो के साथ मिलाकर पाताल यंत्र द्वारा तैल निकाल ले। तथा अमरवेल का स्वरस निकाल कर जो प्रातःकाल निकल सकेगा उसमें नौसादर को ३ या ४ प्रहर खूब खरल करना चाहिये (इस रस के डालने से नौसादर उवाल खाता है) बाद खरल करने के गोली बनाकर गोलियों को खुश्क करके उनका पाताल यंत्र से तेल निकाल ले लेकिन तेज आंच की जरूरत होगी वह तेल मिसल शहद के निकलेगा और अग्नि स्थायी होगा। (कश्मीर यात्रा में श्रीनगर निवासी नव्वाब खां)

तथा च

जलाल्पृष्टं सुधाचूर्णं षट्तोलकप्रमाणकम् । जले पंचगुणं देयं दिनानि सप्त धारयेत् ॥१५॥ त्रिवारं चालयेन्नित्यं सुधाक्षारं जले भवेत् । तोलैकमानं हरितालं मर्दयेत् तेन वारिणा ॥१६॥ दशतोलकनवसारे लिप्त्वा लिप्त्वा सुशोषयेत् । ततः शीशं भवेत् तैले तारामीराक्षकेऽपि वा ॥१७॥ द्वियामं पाचयेल्लिप्तं नवसारं सुशोषितम् । विकाशो जायते तस्मिन् नवसारे सुपाचिते ॥१८॥ ततो नमदवस्त्रेण लग्नं तैलं सुशोषितम् ।चूर्णयेन्नवसारं तं सूक्ष्मरूपं यथा भवेत् ॥१९॥ सिंदूरं तोलकं दत्त्वा धार्य्यं पातालयन्त्रके । इत्थं पातालयन्त्रेण तैलं चुल्लकजं भवेत् ॥२०॥

अर्थ–नवसादर तोला १०, हरतालतोला ९, चूना वेबुझाहुआ तोले ६, सिंदूर एक तोला ९, तैल अलसी का यातारामीरा आध सेर ऽ॥ पक्का आग पांच घण्टे मंद देनी प्रथम चूना ६ तोले ले के पाणी में भिगो रखना सात दिन तक दिनमें एक बार पानी को चलाता रहे फिर निकाल लेना उस पानी में हरताल एक तोला खरल करना खूब महीन करना उस तोला हरताल को नौसादर की डली दस तोले की लेकर उस पर लेप करना और सुखा लेना फिर तैल तारामीरादा वा अलसीदा जितने में डली डुबी रहे आध सेर पक्का वा अधिक कडाही डूंगी में पाकर दो पहर मद्दी आग बारनी जिससे तैल में आग ना पड़े ऐसे नौसादर को पकाने से फूल जायगा किंवा गंधक की चुटकी देणी लघु गर्त करके फिर नमदा हेठ ऊपर देकर दो भारी पत्थरों में रखे उससे तैल शुष्क हो जायगा फिर उस नौसादर को महीन पीस कर उसमें एक तोला सिंदूर पाकर पाताल यन्त्र से तैल निकाल लेना तैल पांच तोला सिंदूर पाकर पाताल यन्त्र से तैल निकाल लेने तैल पांच तोला निकलेगा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक) ॥१५–२०॥

तथा च

सुधासैंधवकाचं च सज्जं टंकणपंचकम् । पृथक् दिष्ट्वा समं कृत्वा चूर्णं संतप्ततप्तके ॥२१॥ परितः नवसारस्य दत्त्वा यामचतुष्टयम् । पक्वासारं पृथक् कृत्वा देयं काचस्य भाजने ॥२२॥ जले क्लेदात् जले स्वेदात् किंवा पातालयंत्रतः । तैलमाबाय योगेषु योज्यं सर्वार्थसिद्धये ॥२३॥

अर्थ–४ तोला लवण सैंधव, ४ तोला शुद्ध चूना, ४ तोला कचनोंन ४, ४ तोला लोटका सज्जी और ४ तोला सुहागा इन पांचों चीजों को पीस मिला देना फिर तवे पर हेठ ऊपर यह दवाई रख कर बीच आठ तोले नौसादर की डलीरख कर ४ पहर आग बालणी जित्थो धूप निकले उथ्थे पूर्वोक्त दवाई पाणी फिर स्वांगशीतल निकाल कर दवाई हटा देनी फिर शीशे बिच पाकर पाणी बिच स्वेदन करे तैल हो जायगा वा पाताल यन्त्र में तैल निकालना ॥२१॥२३॥ (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

नवसादर तैल सज्जी और चूने से मर्दन से

नवसारं सर्जक्षारं सुधांडस्येति च त्रयम् ।
खल्वे संमर्द्दनादेव जलाकारं प्रजायते ॥२४॥

अर्थ–नौसादर, सज्जीखार, और अंडा के चूना इन तीनों की खल्व में मर्दन करने से जल की आकृतिवाला तैल होता है॥२४॥ (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

मुरदासंग और नौसादर तैल कायम

नौसादर और मुरदासंग दोनों सम भाग लेकर खरल करना ४ घड़ी फिर एक कुज्जी में पाकर बंद करके स्वरूप अग्नि देणी फिर खरल फिर अग्नि फिर खरल बारम्बार करने से तैल वण जायगा कायम–उसमें सब चीज कायम होवेंगी। (जम्बु से प्राप्त पुस्तक)

तरकीब हल नौसादर खालिसे (उर्दू)

नौसादर महलूल इस्तरह होता है कि उसको पानी में पीसकर जर्फ जज्जानी यानी बोतल में रखकर पार्चा कितान में बांध कर दरिया के किनारे दफन कर दे ख्वाह ऐसी जगह पर जो हर वक्त पानी से सड़ती हो दफन कर दे पानी की तरह हो जावेगा या इस तरह हल करे कि नौसादर मजकूर को बकरी के आंत में रखकर मुंह सुतली से बांध कर देग में पानी भर कर बतौर भावीजंतर के (लटका दे हाशिया सुफहा ८८ किताब अलजवाहर)।

सफाई नौसादर (उर्दू)

नौसादर को खूब बारीक पीस कर एक बर्तन में रखे बादहू सात हिस्सा पेशाब डाले और बर्तन के मुँह पर कागज रख कर खूब मजबूत बांध कर मौसम गरमी में ऐसे मौके पर रखें कि तमाम दिन धूप रहे बकौल भीमसेन इस तरकीब से नौसादर उड़ कर बर्तन में लग जावेगा और वह साफ होगा मगर यह याद रहे कि बर्तन आधा खाली रहे। (सुफहा ९७ किताब खुश्तैजात हजारी)

तजरुबाजाती

नौसादर थोड़े पानी में हल नहीं होता जब काफी पानी डालाजाता है तो

नापिदीद हो जाता है और जब धूप में रखा गया तो वर्तन के उपरी खाली किनारों पर नौसादर जमने लगा और जब पानी मिकदार से कम पड़ गया तो अन्दर पानी के भी नौसादर के फूल से पैदा होने लगते हैं और आखिरकार पानी खुश्क होने पर सफेद हलका नौसादर कटोरे में जम गया और नीचे स्याह तलछट रह गई इस तरकीब से नौसादर का मैल जरूर दूर हो सक्ता है और हलका सफेद नफीस नौसादर तय्यार हो सक्ता है। (३०/५/१९०५)

सफाई नौसादर (उर्दू)

नौसादर को लैमू के अर्क में खरल करके साये में खुश्क करके एक हांडी में रखे फिर उस पर दूसरी हांड़ी का मुंह ऐसा साफ करके रखों कि बाहम मिल जावें फिर मिस्ल डौरू जंतर के दुरुस्त करके जिस हांड़ी में नौसादर है उसे तीन घड़ी आगदर रखें और ऊपरवाली हांड़ी पर पार्चा भिगोकर रखे बल्कि बार बार पार्चा तर करता रहे तो नौसादर उड़कर ऊपरवाली हांड़ी में लग जावेगा वह साफ होगा (सुफहा ८८ किताब कुश्तैजात हजारी)

सफाई नौसादर (उर्दू)

नौसादर मुसक्का करने का तरीका यह है कि नौसादर को थोड़े से नमक और कांजी में डालकर खरल करे और डौरू जंतर या दो प्यालों में या शीशी के गर्दन में आठ या नव पहर तक आँच करे जो हाँड़ी के शीशी के गर्दन में उड़ कर चिमट जावे वही मुसक्का है। (सुफहा अकलीमियाँ १७५)

नौसादर सुहागे की हल करने की तरकीब (उर्दू)

बकरी की आंत को साफ करके सुहागे और नौसादर को उसमें भर दे और हांड़ी में पानी के दर्मियान जोश दे इस तरह कि सिरा उसका हांडी से बाहर रहे ख्वाह सब जने या नरकल के अन्दर जिसके एक तरफ तो गिरह हो या दूसरी तरफ चूना और अंडे की सफेदी से मुहर करके जाइनम नाक में जहां हर वक्त पानी की तरी रहती हो ख्वाह देग दो तबका में रखकर दफन कर दे यह महलूल निहायत आलादर्जे के खवास रखता है और हुकमाई मगरबी इससे तमाम अखाद और अनफास और अजसाद को मुशम्मा करने के बाद अकसीर में मिलाकर हल व अकद करते हैं ताकि लायक तरह के हो जावें और सीमाव व गंधक इससे कायमुल्नार हो जाते हैं (सुफहा अकलीमियां १०१ व १०२)

तैल नौसादर (उर्दू)

जिस कदर मुनासिब समझो नौसादर लेकर खरल करो और एक रोगनी वर्तन में डाल कर मुँह बन्द करके मौसम बरसात में एक गढा करीबन गज मुनः खोद कर गोबर डालकर बर्तन मजकूर में दर्मियान डालकर और गोबर ऊपर से डाल कर गढा को भर दो तीन रोज के बाद निकाल लो खुद व खुद नौसादर तेल हो जावेगा मुजर्रिब है (सुफहा ८७ किताब कुश्तैजात हजारी)

तैल नौसावर (उर्दू)

नौसादर और चूना सफेद एक हांड़ी में तह बतह देकर गोहे की आग दे दो जब सर्द हो निकाल कर हांड़ी को जाइ नमनाक में रखो तेल बरामद होगा। (सुफहा ८८ किताब कुश्तैजातहजारी)

रोगननौसादर से अकसीर उलबैज (फार्सी)

बियादर नौसादर पुख्तः दर हश्त आसार पुख्तः बोलखर स्याह कोफ्तः दर यक कूंड: गिली अन्दाख्त रूएकूंड: सहचहारलेप पार्चः व गिलेहिकमत मोहकिम नमूदः दरजमीन दरसरगीं चार पंच खारी ताजा अस्प मदफून कूनद बाद अज चहल रोज बिकुशद हर कदर बोल कि बाकी दरकंड: मॉद बाशदबरः आतिश नर्म खुश्क कुनद चुनांच जौहर ओ सोख्तः न शवद बाद आजां दर जेर कूंडः सूराख। नमूदह बियारद शीशी कलां कि दरां तमामी तेल बिगुजंद दर सूराख कूंडः मजकूर अंदाख्तः व आरद माश महकुम नमूदह रूए कूंडः मजकूररा सरपोश दादह हफ्त लेप कुंनद अज गिज मूनीदादः दरजमीनरा कावीदः शीशः अस्तवार नुमायद बालाइ कूंढः एक दोचली रेग फर्श नमूदह यक मन सरगी बर कूंडः अंदाख्तः अतिशदिहद बाद अज सर्द शुदन ख्वादहबूद सेर वजन अजतेल मजकूर बरयक आसार पुख्तः कलई गुदाफ्तः तमाम नमूदह अंदाजद कि तमाम कलई शिगुफ्तः ख्वाहद बूद निगाह दारद बियारद यक पाव कलई गुदाख्तः तमाम नमूदह आरां गुदाख्तः अशीदः दरआं कि बकदर दो घुँघची बाशद अज अकसीर मजकूर तरह कुनद नुकरा आला ख्वाहद शुद । (अजोबयाज हकीम फतहयाबखां सोहनपुरी)

रोगन नौसादर अकसीरी (उर्दू)

तेल नौसादर इस्तरह बनावे नौसादर १ सेर को स्याह ८ सेर में बारीक पीस कर मिला कर एक कूंडे गिली में खूब मजबूत भर चार पांच खारी लीद अस्प में दफन कर दे चिलः के देखे कि अगर बोल रह गया है आग पुज खुश्क करे, जेर कूंडे के सूराख करें शीशी दहन फुशादह रख दे और कूंडे में चाह दरचाह में मगर एक टोकरी रेग डाल कर यकमन सरगी अस्प भरकर आग लगा दे जब राख हो जावे तो तेल बरामद होगा इस तेल को कलई बराबर पर तरह करे तमाम कलई कुश्ता हो जावेगा, यह पाव तेल में कशीदः वजन अकसीर कलई कुश्ता डाले।

नौसादर कायम कर उससे रोगन निकालने की तरकीब (उर्दू)

जस्त का फूल आध सेर खाम जो अमूमन कसेरों से मिलता है नौसादर ४ तोले कुश्ताजस्त में देकर किसी कूजे गिली में बंद करके ४ पहर बालू जंतर के नीचे आंच दे बाद सर्द होने के निकाल लें नौसादर कायमुल्नार निकलेगा इस नौसादर कायमुल्नार जेरुवाला २० तोले भाँग यानी वरक उल इसरार खुश्क बारीक शुदः देकर बजरियः पतालजंतर तेल कशीद करे यह तेल बरंग सुर्ख निकलेगा और खून तीरह का काम देगा इस तेल में उपधातु का कुश्ता मोतिया हो जाता है। (सुफहा २५ अखबार अलकीमियाँ २४/१/१९०९)

रोगन नौसादर (उर्दू)

अंडों के छिलकों का चूरा एक सेर लेकर एक मिट्टी की हँड़िया में आधा चूना डाल कर ऊपर नौसादर की एक डली ५ या १० तोले की रख कर निस्फ चूना ऊपर दे और हँडिया का मुँह बंद करके चूल्हे पर रखकर एक पहर तक नरम और ३ पहर सख्त तेज आंच दे चार पहर के बाद आग बिछा दें लेकिन हँड़िया में रहने दे सुबह को जब बिलकुल सर्द हो जावे तब खोलकर चूने के अन्दर से कायम शुदः नौसादर निकाल लें जो हवा लगते ही तेल हो जावेंगी। (सुफहा २५ अखबार अलकीमियां लाहौर २४/१/१९०६)

तरकीब रोगन नौसादर चूने में पका चाहहल में (उर्दू)

नौसादर ८० तोले दर्मियान आहक यानी चूना आब नारसीदः ५ सेर पुख्तः की डली चूल्हे पर रख कर नीचे आग जलाना शुरू करे और चूने पर महीन लकड़ी रख जब लकड़ी जल जावे आग मौकूफ करे बादहू बोतल में डाल कर लीद अस्प में चालीस रोज तक दफन रखे बाद में निकाले रोगन हो जावेगा (अगर अकलीमियाँ जहवी यानी सोना मक्खी, बारीक पीस कर उसमें डालेगा सोना अलहदा और मिट्टी अलहदा हो जावेगी। (अखबार अलकीमियाँ १६/३/१९०७)

नौसादर कायम बरंग सुर्ख सफेदे से (उर्दू)

नौसादर चार तोले आध सेर पुख्त: (४० तोले सफेदा काशगरी के दर्मियान देकर एक तवा आहनीपर) रखकर चूल्हे पर रख दे नीचे नरम २ आंच रोशन करे जब कहीं से सफेदा शिगाफ दे फौरन और सफेदा उस शिगाफ शुदा जगह पर डाल देना चाहिये जब तमाम सफेदा सुर्ख हो जावे आंच बंद कर दे और दर्मियान से नौसादर निकाल ले यह नौसादर सुर्ख शहाब के मानिन्द कायमुल्नार होकर निकलेगा। (सुफहा ५ अखबार अलकीमियां १६/९/१९०७)

नौसादर कायम की तरकीब (उर्दू)

अगर नौसादर को कायम करना हो तो इसमें जब्दुलजर शामिल करना चाहिये जब्दुलजर कायमी नौसादर के लिये तजरुवेसे बेमिसल साबित हुआ है। (सुफहा अखबार अलकीमियां १९/१२/१९०६)

तरकीब कयाम नौसादर सज्जी में पकाने से (उर्दू)

सज्जी को सकर नीचे ऊपर रखो दर्मियान नौसादर रखकर आग दो नौसादर कायम हो जावेगा। (सुफहा ९७ किताव कुश्तैजात हजारी)

नौसादर कायम करने की तरकीब

इस नौसादर कायम के जरियः हरताल और सम्मुलफार भी कायम हो जाते हैं नौसादर बीस तोला, लोटा सज्जी तीन सेर पुख्त, शोरा कलमी एक शेर पुख्त। अवल लोटा सज्जी का मिखार निकालकर उस्में शोरा को पकावे, बादहू शोरा में नौसादर को रख कर कढ़ाई में नीचे आग जलावे, एक रोज तक किसी कदर शोरा अपने पास अलहदा भी रख लेना चाहिये ताकि जहां से शोरा फटने पर आवे वहां डाल दिया जाया करे, शाम तक यह अमल तमाम कर दे, पस नौसादर कायम होकर बरामद होगा या नौसादर हरताल और सम्मुल फारके कायम करनेवाला है और इस नौसादर के स्तैमाल से मर्ज दमे का भी नमूदातक नहीं रहता। (सुफहा २ अखबार अलकीमियां १/११/१९०७)

तेल नौसादर बेंगन में रखकर

अगर मारूबेंगन हो तौ उमदा है वरनः कोई सा बेंगने हो उसके शिकम में नौसादर भर दो और नमनाक जगह में रख दो तीन रोज में तमाम नौसादर तेल हो जावेगा (सुफहा ८८ किताव कुश्तैजातहजारी)

तेल नौसादर चूने में घोटने से (उर्दू)

इसी तरह नौसादर और चूना हम वजन लेकर बाहम खरल करके व वक्त शब हवादर जगह में रख दो नौसादर तेल होकर ऊपर होगा और चूना नीचे बैठा होगा, तेल मजकूर निकाल लें (सुफहा ८७ किताब कुश्तेजात हजारी)

तेल नौसादर समुन्दर झाग पुट देकर (उर्दू)

नौसादर एक तोला व समुन्दर झाग एकतोला वाहम खूब खरल करें और फिर दो मिट्टी के खुर्द शकोरों में रख कर कपरौटी करके गिले हिकमत करके आग करीब ५ सेर के दे देवे बवक्त सर्द होने के एक डली बन जावेगी फिर उसको एक चीनी की रकाबी में रख कर तिरछी करके रात को बाहर रख देवे सुबह कुल तेल निकल आवेगा (सुफहा ८८ किताब कुश्तैजातहजारी)

नौसादरके तेल बनाने की तरकीब (उर्दू)

नौसादर पाव भर साफ की राख पाव भर मिलाकर कुलुआ में भर कर मिट्टी पोत दो ५ सेर कंडों की आंच दो, सुबह को ठंढा हो तब निकाल कर खरल करना, इससे ऐसा तेल बन जावेगा कि जिस धातु पर उस तेल को डाल कर उसको आग पर रखोगें वही कुश्ता हो जावेगी खुली हुई है यह तिल्ली की दवा भी है खुराक अजवाइन के बराबर (सुफहा खजाना कीमियां ३३)

तरकीब तेल नौसादर तवे पर पुट (उर्दू)

नौसादर–जिस कदर मुनासिब समझो लेकर एक कढाई या तवे पर चूना डाल कर नौसादर रख दो और फिर उसके ऊपर और चूना डाल कर नीचे आग जलाओ जब तक कि उसका फटना बंद न हो जावे मत उतारो हां, अगर किसी जगह से फट जावे या धुआँ निकले तो और चूना डालते जाओ बवक्त सर्द होने के चूना अलहदा करके नौसादर को एक चीनी के बासन में रात को रख दो खुद बखुद तेल हो जावेगा। (सुफहा ८७ किताब कुश्तैजात हजारी)

कौडियों की परीक्षा और गुण

पीताभाग्रंथिकापृष्ठे दीर्घवृत्ता वराटिका । रसवैद्यैर्विनिर्दिष्टा सा चराचरसंज्ञिका ॥२५॥सार्द्धनिष्कभरा श्रेष्ठा निष्कभारा च मध्यमा ॥ पादोननिष्कभारा च कनिष्ठा परिकीर्तिता ॥२६॥ परिणामादिशूलघ्नी ग्रहणीक्षयनाशिनी ॥ कटूष्णा दीपनी वृष्या नेत्र्यावातकफापहा ॥२७॥ रसेन्द्रजारणे प्रोक्ता विडद्रव्येषु शस्यते ॥ तदन्ये तु वराटाः स्युर्गुरवः श्लेष्मपित्तलाः ॥२८॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–लम्बी और गोल जिसकी पीठ ऊपर जिसके दाग हो उसको रसवैद्यों के चराचर नाम रखा है जिसमें डेढ तोले भार हो वह श्रेष्ठ एक तोले भारवाली मध्यम और पौन तोले भारवाली कौडी कनिष्ठ समझी जाती है यह कौड़ी परिणाम आदि शूलों को नाश करती है संग्रहणी तथा क्षय की नाशकर्त्री कटु उष्ण दीपन बलकारक नेत्रों को हित पारदजारण के उपयोगी और विड द्रव्यों के बनाने में उत्तम है इनसे अन्य कौडिये भारी और कफपित्त को करती है।।२५–२८।।

कौडियों के भेद और गुण

वराटिका त्रिधा प्रोक्ता श्वेता शोणा सिता परा ।। पीता चेतीह चक्षुप्या श्वेत शोणा हिमा व्रणा ।।२९।। असिता बिन्दुभिः श्वेतैर्लक्षया लेखयाथवा ।। बालग्रहहरी नाना कौतुकेषु सुपूजिता ।।३०।।पीता गुल्मयुतापृष्ठे रसयोगेषु पूजिता ।।३१।। सार्धनिष्कप्रमाणासौ श्रेष्ठा योगेषु पूजिता निष्कप्रमाणा मध्यासौ हीना पादोननिष्कका ।। कपर्दिका हिमा नेत्रहिता स्फोटक्षयापहा ।। कर्णस्रावाग्निमन्द्यघ्नी पित्तासृक्कफनाशिनी ।।३२।। (बृहद्योगतरङ्गिणी)

अर्थ–कौड़िये चार प्रकार की होती है सफेद, लाल, काली और पीली इनमें से सफेद कौड़ी नेत्रों को हित, लाल कौड़ी ठंडी और व्रणों को दूर करनेवाली और काली जिस पर सफेद बूंद होता है वह बालग्रह का नाश करनेवाली अनेक खेलों में आती है और जिन कौड़ियों की पीपर गांठे होती है वे पीली कौड़िये रसयोग में उत्तम है जिसमें डेढ तोला वजन हो वह श्रेष्ठ, तोले भरवाली मध्यम और पौन तोलेवाली हीन गुणवाली होती है, कौड़ी ठंढी, नेत्रों को हित फौड़े और क्षय को नाश करती है, कान का बहना मन्दाग्नि रक्तपित्त का नाश करनेवाली है।।२९–३२।।

कौड़ियों की शुद्धि

वराटाःकांजिके स्विन्ना यामाच्छुद्धिमवाप्नुयुः ।।३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कौड़ियों को डमरू यंत्र द्वारा एक प्रहर तक कांजी में स्वेदन करे तो कौड़िये शुद्ध होगीं।।३३।।

अग्निजार की उत्पत्ति और शुद्धि

समुद्रेणाग्निनक्रस्य जरायुर्बहिरुज्झितः ॥ संशुष्को भानुतापेन सोऽग्निजार इति स्मृतः ॥३४॥ अग्निजारस्त्रिदोषघ्नो धनुर्वातादिवातनुत् । वर्धनो रसवीर्यस्य दीपनो जारणस्तथा ॥तदब्धिक्षारसंशुद्धस्तस्माच्छुद्धिर्नहीष्यते॥३५॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–समुद्र में अग्निक्र नाम का एक बड़ा मगर रहता है उसके जन्मते हुए का नार समुद्र की तरंगों में आकर बाहर समुद्र के आ जाता है और वह सूर्य की किरणों से सूख जाता है उसको 'अग्निजार इति स्मृतः' अग्निजार त्रिदोष को नाश करता है, धनुर्वा आदि वातों को दूर करता है रसवीर्य बढानेवाला दीपन और जारण है वह अग्निजार समुद्र के क्षार से ही भावित होने से स्वयं शुद्ध होता है इस वास्ते शुद्ध होने की आवश्यकता नहीं है॥३४–३५॥

सिन्दूर की उत्पत्ति

महागिरिषु चाल्पीयः पाषाणान्तः स्थितो रसः ॥
शुष्कशोणः स निर्दिष्टो गिरिसिन्दूरसंज्ञया ॥३६॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–हिमालय प्रभृति बृहत् पर्वतों में छोटे छोटे पत्थरों के मध्य में सूख कर ठहरा हुआ जो लाल रस होता है उसे गिरिसिन्दूर कहते हैं॥३६॥

सिन्दूर गुण

त्रिदोषशमनं भेदि रसबन्धनमग्रिमम्॥
देहलोहकरं नेत्र्यं गिरिसिन्दूरमीरितम् ॥३७॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–गिरिसिन्दूर त्रिदोष का शमनकर्ता दस्तावर रसबन्धन कर्ता पदार्थों में सर्वोत्तम देह को वज्र के समान करनेवाला और नेत्रों में हित है॥३७॥

तथा च

सिन्दूरमुष्णं वीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम् ॥
भग्नसंधानजननं व्रणशोधनरोपणम् ॥३८॥

(बृहद्योगतरङ्गिणी)

अर्थ–सिन्दूर उष्ण वीसर्प कोढ खुजली और विष को दूर करता है टूटी हुई हड्डी को जोडनेवाला है व्रण (घाव) में जो मवाद होता है उसे निकालनेवाला और व्रण को भरनेवाला है॥३८॥

सिन्दूर के शोधन की विधि

सिन्दूरं निम्बुकद्रावैः पिष्ट्वा घर्मे विशोषयेत् ॥
ततस्तण्डुलतोयेन तथाभूतं विशुध्यति ॥३९॥

(बृहद्योगतरङ्गिणी)

अर्थ–सिंदूर को नींबू के रस में घोट घाम में सुखाय लेवै फिर चावलों के धोवन से घोट सुखाय लेवै तो सिन्दूर शुद्ध हो जायगा॥३९॥

सिन्दूर (उर्दू)

सुरंज–को हिन्दी में सिन्दूर कहते हैं यह इस तरह से बनता है कि सुर्ब को तेज आज से इस कदर जलाते हैं कि सुर्ख रंग हो जावे आग पर जल सके और सुर्ख संगीन चर्ब मैदे की तरह हो (सुफहा अकलीमियाँ)

शिंग्रफ जावली यानी सिंदूर बनाने की तरकीब (उर्दू)

सुर्ब यानी सीसा को कोरी हांड़ी में रखकर आग पर चढावे और पिया बांसा या हलैला की लकड़ी से जलाकर राख कर ले और राख मजकूर को धो डाले। जब पानी दही की तरह गाढ़ी हो तहनशीन करके सीसे में डाल दे। और लकड़ी हलैला या पियाबांसा से लावे ताकि लकड़ी मजकूर जल जल कर उसमें मिलती जावे नीचे से मातदिल आंच करे और हर दस सेर सीसे में भर सिन्दूर जदीद मिला एक दिन रात आग जलावे जब सिन्दूर की तरह कुल सीसा हो जावे उतार ले और काम में लावें (सुफहा ८१ किताब अलजवाहर)

मुरदार संग

सदलं पीतवर्णं च भवेद्गर्जरमण्डले।
अर्बुदस्य गिरेः पार्श्वे जातं मृद्दारसंज्ञकम् ॥४०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसाद–
सूनुबाबूनिरंजनप्रसादसंकलितायां रसराज–
संहितायां साधारणरसोपवर्णनं नाम
त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥५३॥

अर्थ–गुजरात में अथवा आबू पहाड़ के आसपास उत्पन्न हुआ दलदार और पीत वर्ण मुरदार संग होता है॥४६॥

कुश्ता मुर्दार संग की तरकीब भंग सबजकी लुबदी में (उर्दू)

मुर्दारसंग के कुश्ता करने की तरकीब यह है, मुर्दारसंग उमदा टुकड़ा बरंग जर्द लेकर आठ हिस्से भंग सबजके नुगदे में रखकर आठ सेर पुश्तः उपलों की आंच दे। सर्द होने के बाद निकाल ले मिस्ल तराशियः के शिगुफ्त होकर बरामद होगा।

नोट–अगर कुश्ता मुर्दारसंग को दो चार सुर्ख के करीब मारगुजीदः को खिलाया जावे तो फौरन जहर जाइल हो जाता है। (सुफहा ५ अखवार अलकीमियां १/९/१९०७) ।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां
रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां साधारणरसोपवर्णनं
नाम त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥५३॥

स्वानुभूतगंधकाध्यायः ५४

गंधक को पानी में गलाने के उद्योग

ता० १९/१२/७ को १ तोले दानेदार गंधक को झिरझिरे कपड़े में बांध एक छोटी हांड़ी में जिसमें १॥ सेर जल और १॥ छटांक पिसी घोल दी थी दोला कर ८॥ बजे से शाम के ६ बजे तक ६॥ घंटे मंदाग्नि दी १०–१५ ही मिनट बाद से सज्जी खदकने लगी। दो दो घंटे बाद पानी घट जाने पर थोड़ा थोड़ा गर्म पानी डालते रहे ६ बजे तक १॥ सेर के करीब पानी पड़ा होगा। बाद को हांड़ी चूल्हे पर ही रखी छोड़ दी।

ता० २० को गंधक को निकाल देखा तो अपने रूप में दानेदार ही मौजूद था सुखाकर तोला ११ माशे २ रत्ती हुआ, ६ रत्ती घट गया।

सम्मति–सज्जी के जल में उबालने से गन्धक के गलने की आशा नहीं।

जारण के लिये भावितगंधक

(गंधक जारणाध्याय में रखे रसपद्धति की क्रिया से)

कशीशं चैव सौराष्ट्री स्वर्ज्जीक्षारोऽजमोदकम् । शिग्रुतोयेन संयुक्तं कृत्वा भाव्यमनेन वै ।। सप्ताहं चूर्णितं गंधं गौरीयंत्रेण जारयेत् ।।१।।

अर्थ–कसीस, फिटकिरी, सज्जी खार, अजमादे और सहँजने की जड़ का स्वरस इनसे आगे कहीं क्रिया के अनुसार गंधक को सात दिनों तक भिगोकर गौरीयंत्र से जारणा करे।।१।।

ता० १६ को दो बाकी शुद्ध ऽ१। सेर गंधक को पत्थर के खरल में डाल थोड़ा पीस लिया और सहँजने के छोटे पेटकी जड़ का स्वरस निकाल उसमें १ तोला हरा कसीस– १ तोला फिटकिरी– १ तोला सर्ज्जी क्षार नं० २ अपने यहां तक बना–१ तोला अजमोद यह चारों चीज पीस रस में रात में भिगो दी सबेरे छान इस रस को गंधक में डाल २ घंटे घोट कपडे से ढक सुखा दिया।

सम्मति–सहँजने के रस को थोड़ी देर रखने से उसमें गिलोय का सा सत्व नीचे बैठ जाता है जो छनता नहीं स्वादु में यह सत्त्व रस से अधिक तीव्र था अतएव इस सत्त्व को पृथक् ही गंधक में डाल देते थे।

नक्शा भावनाविधि

तारीख	तोलसेंजनेकी जड़केस्वरसकी	तोल कसीस	तोल फिटकिरी	तोल सज्जी क्षार	तोल अजमोद	समय घुटने का	समय घुटने का	विशेषवार्ता सूखने का
	छ०	तोले	तोले	तोले	तोले	घंटे	दिन	
१६/७/०७	५	१	१	१	१	२	१	सवेरे भावना दीगई
१८/७/०७	६	१	१	१	१	२	१	सवेरे " "
१९/७/०७	६	३/४	३/४	३/४	३/४	२	४ १/४	सवेरे " "
	बादल और	वृष्टि रहने	से सूखने के	कारण ४ दिन	भावना वंद	रही		
२४/७/०७	४	३/४	३/४	३/४	३/४	६	५	४छ०रसकाफीहुआइसवास्तेआगे से इतना ही डालना उचित है
२९/७/०७	५	३/४	३/४	३/४	३/४	६	४	न सूखने के कारण आज ५ दिन बाद भावना दी गई–
२/८/७	५	३/४	३/४	३/४	३/४	६	६	न सूखने के कारण ये भावना चौथे दिन दी गई–
मीजान ७ बार	मीजान ७। छ०	मीजान ६ तोले	मीजान ६ तोले	मीजान ६ तोले	मीजान ६ तोले	मीजान +	मीजान +	

फल–१। सेर शुद्ध गंधक को ७ बार भावना दी गई जिसमें ७। छटांक सहँजने की जड़ का स्वरस पड़ा और ६ तोले कसीस ६ तोले फ़िटकिरी ६ तोले सज्जी क्षार ६ तोले अजमोद सब मसाला ५ छ० ४ तोले पड़ा, अब भावित गंधक की तोले १ सेर १० छ० है–अर्थात् ६ छटांक वढ़ी जिसका यह अर्थ होता है कि जिस कदर मसाले पड़े उस कदर तोल बढ़ी, मसालों की छीजन को सहँजने के स्वरस के सत्व ने पूरा कर दिया–

बिड़ की तैयारी

चित्रकार्द्रकमूलीनां क्षारैर्गोमूत्रगालितैः । गंधकं शतशो भाव्यं बिडोऽयं जारणे मतः ।।२।।

अर्थ–मूली का क्षार १८ तोले जो पहले बना रखा था जल में बनाया था और २० सेर चीते का १९ तोले (+६।। तोले नं० २ क्षार जो अब बनाया गोमूत्र में भिगोकर और १४ सेर सोंठ का ३३ तोले (+१६।। तोले नं० २) क्षार जो गोमूत्र में भिगो अब बनाया और गंधक आंवलासार २ बार की शुद्ध की हुई यह सब इस प्रकार प्रयोग में ली गई।।२।।

पत्थर के बड़े खरल में पाव भर गंधक पीस ली और ६ माशे सोंठ का क्षार ३ माशे चीते का क्षार, ३ माशे मूली का क्षार इन तीनों क्षारों को रात को गोमूत्र में भिगो दिया जाता था और प्रातःकाल छानकर उस क्षारयुक्त गोमूत्र को खल्व स्थित गंधक में डाल १ घंटे घोट दिया जाता था फिर वस्त्र से खरल ढ़क धूप में सुखा देते थे।

१–सम्मति–यहां क्षार और गोमूत्र का प्रमाण नहीं कहा अनुभव से सिद्ध हुआ कि पाव भर गंधक की भावना को अर्थात् आर्द्र करने को ४ वा ५ तोले गोमूत्र चाहिये और उस गोमूत्र में पंचमांश के क्षार पड़ने योग्य है अर्थात् ४ तोले में ९ माशे क्योंकि इससे अधिक क्षार घुलता ही नहीं।

बिड़ की तैयारी का दैनिक नक्शा

तारीख	तोल गोमूत्र	तोल सोंठक्षार	तोल चीताक्षार	तोल मूलीक्षार	समय घुटने का	समय सूखने का	
	तोले	माशे	माशे	माशे	घंटा	दिन	
१४/७/०७	१०	६	३	३	१	१	
१५	५	६	३	३	१	१	ता०१४ को १०तोले गोमूत्रसे गंधकअधिकपतलाहोगयाथा,इस वास्ते आज ५तोले डालागया
१६	६	६	३	३	१	२ प्रहर	५तोले गोमूत्र कुछ कम समझ ६ तोले कर दिया।
"	६	६	३	३	१	२ प्रहर	चूंकि दो प्रहर भावना सूख जाती हैं इसलिये आज से १ दिन में २ भावना देनी आरंभ की।
१७	६	६	३	३	१	६ प्रहर	दो पहर के ३ बजे देखा तो भलीभांति सूखा न था इसलिये दूसरा पुट न दिया
१८	५	५	३	३	१	४ प्रहर	आज प्रातःकाल देखा तो अच्छी तरह सूखा न था इसलिये दो प्रहर तक सुखी पुट दिया
१९	४	६	३	३	१	२ प्रहर +३ दिन	आज दो प्रहर पीछे पुट दिया
२३	४	६	३	३	१		आज ये पुट दो प्रहर के ३बजे दिया गया। बादल–वृष्टि रही इस वास्ते ये ३ दिन बाद लगा अब ४तो० गोमूत्र काफी होता है
मीजान ८ वारे	मीजान ९॥ छ०	मीजान ४ तोले	मीजान २ तोले	मीजान २ तोले	मीजान ८ घंटा	मीजान ८ दिन	

बरसात में सीलते रहने से काम बंद कर दिया गया–

फल–विड़ की ८ भावना का–

४ छ० शुद्ध गंधक को ८ भावना दी गई जिसमें ९॥ छ० गोमूत्र पड़ा और ८ तोले क्षार पड़े। अब तोले विड़ की ६ छटांक है अर्थात् २ छ० बढ़ गई जिसका यह अर्थ है कि जितना क्षार पड़ता है उससे सवाई तोल बढ़ती है अर्थात् क्षार पूरा बढ़ता है और क्षार की चौथाई गोमूत्र का भी क्षार पड़ता है–इस हिसाब से १०० भावना में २ सेर के करीब तोले हो जावेगी–

तारीख	तोल गोमूत्र	तोल सोंठक्षार	तोल चीताक्षार	तोल मूलीक्षार	समय घुटनेका	समय सूखनेका	विशेषवार्ता
	तोले	माशे	माशे	माशे	घंटा	दिन	
२९/७/०७	५	६	३	३	१	१	
२०	३	६	३	३	१	१	५ तोले गोमूत्र से अधिक पतला हो जाने के कारण
२१	४	३	३	३	१	१	गोमूत्र घटा दिया गया किन्तु ३ तोले थोड़ा रहा अतः
२२	४	३	३	३	१	१	एव दूसरे दिन ४ तोले किया गया यह ठीक रहा और
२३	४	३	३	३	१	१	३ तोले मूत्र में १ तोला क्षार नहीं घुला इससे क्षार घटा
२४	४	६	३	३	१	१	दियागया और यह बात सिद्ध हो गई कि ४ तोले
२५	४	६	३	३	१	१	मूत्र में अधिक से अधिक १ तोला क्षार डाला जा सकता
२६	४	३	३	३	१	१	है किन्तु इतना भी ठीक नहीं घुलता अतएव ४ तोले में ९ माशे ही डालना उचित है
२८	४	३	३	३	२	२	अच्छी तरह सूखने के कारण ता० २७ को पुट न दिया

२९	४	३	२	३	१	१	
३०	५	६	३	३	१	१	
१/१०/०७	५	६	३	३	१	१	
२	५	६	३	३	१	१	
३	५	६	३	३	१	१	
४	५	४	४	४	१	१	
५	५	६	४	४	१	१	
६	५	४	४	४	१	२	
८	५	४	४	४	२	१	कल सोमवार को बिड़ में पुट न दिया
९	५	४	४	४	१	१	
१०	५	४	४	४	१	१	
११	५	४	४	४	१	१	
१३	५	४	४	४	२	२	गीला रहने के कारण १२ को पुट न दिया।
१५	५	४	४	४	१	२	गीला रहने के कारण ता० १४ को पुट न दिया।
१७	५	४	४	४	१	२	गीला रहने के कारण ता० १६ को पुट न दिया।
१९	५	४	४	४	१	२	गीला रहने के कारण ता० १८ को पुट न दिया।
मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	दुवारा १९ सितंबर से १९ अक्टूबर तक काम चला
		तो० मा०	तो० मा०	तो० मा०	घंटे	दिन	उसकी ये मीजान है।
२५ भावना	ऽ१॥ सेर	८ ४	७ २	७ २	२८	३१	

फल—उपरोक्त २५ भावना का—

उपरोक्त ८ भावना दी गई, ६ छटांक बिड़ में २५ भावना और दी गई जिसमें ४ छटांक ३ तोले ८ माशे क्षार पड़े और १॥ सेर गोमूत्र पड़ा, अब तोले बिड़ की १०॥ छटांक है अर्थात् ४॥ छटांक बढ़ गई यानी जितना क्षार पड़ा उससे १ तोले १० माशे और अधिक बढ़ी यदि आदि से अब तक ३३ भावना का हिसाब किया जाय तो यह ज्ञात होता है कि ४ छ० गंधक में ६ छटांक १ तो० ८ माशे क्षार पड़कर (और २ सेर १॥ छटांक गोमूत्र पड़ा) १० छ० २ तोले ६ माशे बिड़ हुआ अर्थात् गंधक और क्षारों की तोल से १० माशे तोल बढ़ी, इस हिसाब से १०० भावना में ऽ१॥ सेर बिड़ बनने की आशा है—

तारीख	तोल गोमूत्र	तोल सोंठक्षार	तोल चीताक्षार	तोल मूलीक्षार	समय घुटनेका	समय सूखनेका	विशेष बार्ता
	तोला	माशे	माशे	माशे	घंटे	दिन	
२२/२/०७	५	४	४	४	२	१	सब ६ तोले
	तो० र०	मा० र०					
२३	४–२	३।					सब ५ तोले
२६	५–७	५–५	५–५	५–५	२	१	सब ७ तोले
२७	४–२	३।	३।	३।	२	१	सब ५ तोले
२८	४–२	३।	३।	३।	२	१	सब ५ तोले
४/३/०७	तोले	माशे	माशे	माशे	घंटा	दिन	न सूखने के कारण ४ दिन पुट न दिया सब ६ तोले
	५	४	४	४	२	१	
५	५	४	४	४	२	१	सब ६ तोले
७	५	४	४	४	२	१	न सूखने के कारण ता० ६ को पुट न दिया सब ६ तोले
८	५	४	४	४	२	१	सब ६ तोले
९	७॥	६	६	६	२	१	सब ९ तोले
	तो० मा० र०	मा० र०	मा० र०	मा० र०			
१०	५–९–३	४–७	४–७	४–७	२	१	सब ७ तोले
११	५–८–३	४–७	४–७	४–७	२	१	सब ८ तोले
१२	६–६–६	५–६	५–६	५–६	२	१	सब ८ तोले
१३	६–६–६	५–६	५–६	५–६	२	१	सब ८ तोले
१५	८–३–६	६–६	६–६	६–६	२	१	न सूखने के कारण
	१२॥।						
१९	१५ तो०	९–	९–	९–	३	१ १/२	सब १५ तोले

तारीख	तोल गोमूत्र	तोल सोंठक्षार	तोल चीताक्षार	तोल मूलीक्षार	समय घुटनेका	समय सूखनेका	विशेषवार्ता
	१२॥।						
२०	१५ तो०	९–	९–	९–	२	४	सब १५ तोले
	११॥।						सब १४ तोले अच्छी तरह न सूखने के कारण
२४	१४ तो०	८–७	८–७	८–७	२	३	२१ से २३ तक पुट बंद
	तो०मा०र०						
२७	११–९–५	८–७	८–७	८–७	२	३	सब १४ तो० न सूखने के कारण २५–२६ को पुट बंद रहा
	. १४ तोले						
२९	९–२–५	७–१	७–१	७–१	२	२	सब ११ तो० न सूखने के कारण २८ को पुट बंद
३१	९–२–५	७–१	७–१	७–१	२	२	सब ११ तो० न सूखने के कारण ३० को पुट बंद
	तोला	माशे	माशे	माशे	घंटे	दिन	
	५	४	४	४	२	१	
४/४/०७	१४–२–५	११–१	११–१	११–१	२	३	सब १७ तोले न सूखने के कारण और अवकाश न मिलने के कारण १–२–३ को पुट बंद रहा
७	१०	८	८	८	२	२	सब १२ तो० न सूखने के कारण ५/६ को पुट न दिया
	तो०मा०र०	मा०र०	मा०र०	मा०र०			
९	८–३–६	६–६	६–६	६–६	२	२	सब १० तोले
११	१०	८	८	८	२	२	सब १२ तोले
१६	१३–५–२	१०–२	१०–२	१०–२	२	४	सब १६ तोले बादल रहने का कारण ४ दिन पुट न लगा
१९	१४–२–५	११–१	११–१	११–१	२	२	सब १७ तो० न सूखने के कारण २ दिन पुट न दिया
२१	८–३–६	६–६	६–६	६–६	२	२	सब १० तो० न सूखने के कारण २० को पुट बंद
२२	६–६–६	५–६	५–६	५–६	२	१	सब ८ तोले
	तो०	मा०	मा०	मा०			
२४	१०	८	८	८	२	२	सब १२ तोले न सूखने के कारण २३ को पुट बंद
	तो०मा०र०	मा०र०	मा०र०	मा०र०			
२५	९–२–५	७–१	७–१	७–१	२	१	सब ११ तो०
२६	६–६–६	५–६	५–६	५–६	२	१	सब ८ तोले
२७	५–९–३	४–७	४–७	४–७	२	१	सब ७ तोले
२९	८–३–६	६–६	६–६	६–६	२	२	सब १० तोले मसाला तैयार न होने के कारण २८ को पुट न लगा
	तो०	मा०	मा०	मा०			
३०	५	४	४	४	२	१	सब ६ तोले
१/५/०७	५	४	४	४	२	१	सब ६ तोले
	तो०मा०र०	मा०र०	मा०र०	मा०र०			
२	५–९–३	४–७	४–७	४–७	२	१	सब ६ तोले
३	६–६–६	५–६	५–६	५–६	२	१	सब ८ तोले
४	६–६–६	५–६	५–६	५–६	२	२	सब ८ तोले
६	तो०	मा०	मा०	मा०			
	७॥	६	६	६	२	१	सब ९ तोले अवकाश न मिलने के कारण ता० ५ को पुट न लगा
७	तो०मा०र०	मा०र०	मा०र०	मा०र०			
	५–९–३	४–७	४–७	४–७	२	१	सब ७ तोले
	तोले	माशे	माशे	माशे	घंटे	दिन	
	५	४	४	४	२	१	
८	५–९–३	४–७	४–७	४–७	२	१	सब ७ तोले
९	तो० ५	४	४–	४–	२	१	सब ६ तोले
११	८/३/६	६–६	६–६	६–६	२	१	सब १० तोले बादल रहने के कारण ता० १० को पुट न दिया
१५	६–६–६	५–५	५–५	५–५	१॥	१	८ तोले
१६	५–९–३	४–७	४–७	४–७	१॥	१	७ तोले

१७	५–९–३	४–७	४–७	४–७	१॥	१	७ तोले
१८	५–९–३	४–७	४–७	४–७	१॥	१	७ तोले
१९	७–६–०	६–	६–	६–	२	१	९ तोले
२०	५–९–३	४–७	४–७	४–७	१॥	१	७ तोले
२१	५–९–३	४–७	४–७		१॥	१	७ तोले
२२	५–९–३	४–७	४–७		२	१	७ तोले
२३	तो०मा०	मा०	मा०	मा०			
	७–६	६–	६–	६–	२	१	९ तोले
२४	७–६	६–	६–	६–	२	१	९ तोले
२७	११–९	८–७	८–७	८–७	२	२	१४ तो० अवकाश न मिलने के कारण २५–२६ को पुट बंद
२८	तो०	मा०	मा०	मा०			
	५	४	४	४	२	१	६ तोले
३०	१०	८	८	८	१॥	२	१२ तोले
३१	तो०मा०र०						
	५–८–३	४–७	४–७	४–७	१॥	१।	७ तोले
१/६/०७	४–०–२	३–२	३–२	३–२	३	१	५ तोले
२	७–६	६–	६–	६–	२	१	९ तोले
३	७–६	६–	६–	६–	३	१	९ तोले
	तो०	मा०	मा०	मा०	घंटे	दिन	
	५	४	४	४	३	१	१२ तोले
४	१०	८	८	८	३	१	१३ तोले अवकाश न मिलने के कारण ता० ५ को पुट न लगा
६	तो०मा०र०						
	१०–१–३	८–७	८–७	८–७	३	२	७ तोले सुंठीक्षार निबट जाने के कारण ता० ७–६–८ को ॥=) सेर के भाव की २ सेर धार की सोंठ को छोटी
७	५–९–३	४–७	४–७	४–७	३	१	७ तोले कढ़ाई में भर नीचे तेज आंच बालनी आरम्भ की आधा घंटे बाद कढ़ाई में ऊपर भी आंच लगाई और थोड़ी
८	५–९–३	४–७	४–७	४–७	३	१	६ तोले देर ही में कुल सोंठ की भस्म कर बुझ गई बाद को
	तोले	माशे	माशे	माशे	घंटे	दिन	कढ़ाईके नीचेकी आंच बंदकर ज्योंकीत्यों कढ़ाईको भट्टी
९/६/०७	५	४	४	४	३	१	पररखी छोड़दी। ता०८को उक्त भस्मको जो श्वेतरंगकी २छ०हुई १॥सेरगोमूत्रमें घोल रैनीकी भांति २१बार
१०	५	४	४	४	३	१	६तोले चुआलिया जोतोलमें ७॥रहा इसमें ४–४तोले
११	५	४	४	४	३	१	चीतामूली के क्षार मिला तैयार कर लिया ।
१२	तो०मा०र०	तो०मा०र०	तो०मा०र०	तोमा०र०			
	१६–७–४	१–१–४	१–१–४	१–१–४	२॥	१	२० तो० आज गोमूत्र अधिक डाल अधिक पतला कर दिया कि गंधक भलीभांति फूल सके
१४	१६–७–४	१–१–४	१–१–४	१–१–४	२॥	२	२०तो० न सूखनेके कारण ता० १३ को पुट न दिया आज भी पतला हो गया था ।
१६	११–९	८–७	८–७	८–७	२	२	१४ तो० न सूखने के कारण १५ को पुट बंद
मीजान	मीजान६से	मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	
७१	१२–४–७	३४–६–७	३४–६–७	३४–६–७	१५२	१०१	
मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	
कुल १०४	कुल सेर ८	कुल ९ छ०	कुल ८ छ०	कुल८छ०	कुल	कुल	
भावना	१४–१–२	२–१०–७	३–८–७	३–८–७	१८८	१४०	

मीजान		कुलक्षार	
सेर	छ०	मा०	र०
१	११	४	५

भलीभांति सूख जाने पर तोला गया बिड़ २॥ सेर हुआ इसमें ४ छ० शुद्ध गंदक है। ऽ१॥। सेर के करीब क्षार और ९ सेर के करीब गोमूत्र पड़ा है। गंधक और क्षारों की तोल २ सेर होती है और बिड़ ऽ२॥ सेर बैठा अर्थात् ऽ॥ सेर क्षार गोमूत्र से बन गया जिसका हिसाब करीब करीब यह होता है।

गंधक ४ छ०	सोंठक्षार १० छ०	चीताक्षार ९ छ० ९ छ०	मूलीक्षार ९ छ०	मूत्रक्षार ८ छ०

किन्तु कुछ सोंठ और चीते के क्षार गोमूत्र से बने अतएव यह औसत समझना चाहिये।

गंधक	सोंठक्षार	चीताक्षार	मूलीक्षार	मूत्रक्षार
४ छ०	८ छ०	८ छ०	९ छ०	११ छ०

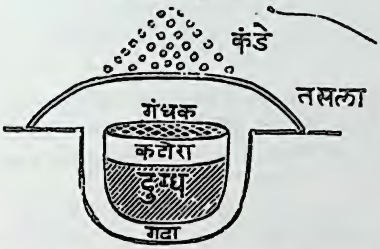
कूर्म पुट द्वारा गन्धकजारण के लिये गन्धकशोधन

उत्तम आंवलासार गन्धक को (जो देहली से कलियान कोठीवाले की मारफत १।।) सेर आई और हाथरस से १।।।) रुपये सर आई) शुद्ध किया गया–

'सदुग्धभाडस्थपटिस्थितोयं शुद्धो भवेत्कूर्मपुटेन गन्धः' ।

(वृ० यो०)

नकशा कूर्मपुट ।



तामचीनी के प्याले में १।। सेर दूध भर (तीन अंगुल खाली रहा) उसके मुंह पर गजी का कपड़ा बांधकर ऊपर से मोटी पिसी गंधक कपड़े पर अंगुल भर मोटाई से कम बिछाकर एक गढ़े में रख ऊपर लोहे के तशला उलटा ढ़क इस तरह कि कटोरे से १ अंगुल ऊंची तसले की पीठ रही, पीठ पर पाव पाव भर कंडों की आंच दी गई तो गन्धक पिघलकर दूध में गिर गई। निकालने पर ज्वार के से दाने निकले, पीले अच्छे रंग के ५ सेर गंधक की शुद्धि में एक बार में १० सेर दूध लगा १ सेर गन्धक के शोधन में १ छटांक से कुछ कम छीजन जाती है।

आंच पहले सेर भर की दी गई, उसमें गन्धक जल गया फिर ऽ।। की दी गई उसमें कुछ जला फिर ऽ।। सेर में कुच ठीक रहा उससे अच्छा ऽ। की आंच से रहा पिर ऽ पाव भर से भी काम ठीक चलता रहा, इसी को जारी रखा। ऽ। पौना पाव में नहीं पिघला।

यह क्रिया गंधक शुद्धी की उत्तम है। ५ सेर गन्धक शुद्ध होकर ४।। सेर रहा।

३०/३१/०६ तीन पाव गन्धक को फिर इसी क्रिया से धतूरे के पत्तों के १। सेर रस में शुद्ध किया थोड़ा थोड़ा आठ दफे में डाला गया। ३ छटांक कंडों की आंच ठीक रही। गन्धक छीजा बहुत ९ छटांक बैठा।

१/४ फिर उक्त दोबारा शुद्ध गंधक को २।। छटांक सहँजने के रस की भावना दी गई।

२/४/३ छटांक भी भावना दी गई।
३/४/३ छटांक की भावना दी गई।

गंधकशोधन कूर्मपुट द्वारा

ता० ३ को १) रुपये सेर की ४ सेर गन्धक आंवलासार जिसके डेले छोटी हर्र के बराबर थे और रंग में पीत थी और १।।) सेर की ऽ१ सेर गन्धक जिसके डेले बड़ी हर्ड के बराबर थे और ऽ। पाव भर चूरेवाली गन्धक जो सबसे उत्तम बतलाई गई और रंगत में पीत हरित सी थी। इस तरह कुल ऽ५। सेर गंधक का दलिया कर तोला तो ५ सेर २। छ० रहा, इसको उपरोक्त कूर्मपुट द्वारा ३–३ छटांक की आंच देकर ४ दिवस में अर्थात् ता० ६ तक ७।। सेर दूध के साथ शुद्ध कर धो सुखा तोला तो ऽ४ सेर ६।। छ० रही। दलते समय की १।। छटांक और शोध ने समय की ११।। छटांक सब १३ छ० छीजन गई जिस ऽ। पाव भर गंधक को प्रथम अच्छा समझा था उसमें मैल की कंकड़ी अधिक निकली और छीजन अधिक गई। शुद्ध होने पर सबका वर्ण एक सा रहा और दाना भी सब में एक सा ज्वार का सा पड़ा। प्रति बार करीब २।। छ० गन्धक दूध के कटोरे के ऊपर बँधी गजी पर बिछाई जाती थी और ३ छ० आरने कंडों की आंच दी जाती थी। इस प्रकार ६ वा ८ घान रोज निकाले गये। दूध अन्त में फट जाता था।

नक्शा—गंधकशुद्धि प्रथमबार

तारीख	गंधक की प्रथम तोल	दूध की तोल	पुटसंख्या	तोले शुद्ध गंधक	छीजन	विशेष वार्ता
३/७/०७	से०छ०	सेर		से०छ०	छ०	
	१—५॥	ऽ२	८	१—३॥	—२	
४/७/०७	१—६॥	ऽ२	९	१—५	—१॥	
५/७/०७	१—२॥	ऽ२	७	१—१	१॥—	
"	३॥	"	९	—३	३॥।तो०	बढ़िया गन्धक
६	१—	ऽ१॥	६	१४॥	—१॥	
मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	मीजान	इस शुद्ध गंधककी मीजान लिखे अनुसार ४सेर
४	से०छ०		से०छ०	छ०		११छ० होतीहै किन्तु ४॥छ० छीजन सुखाने
	५—२	ऽ७॥	३१	४—११	७॥	से और गई इस वास्ते ४सेर६॥छ० रखी।
				४॥ छ०	४॥छ०	
				छीजन सूख	छीजनसूख	
				काट४—६॥	कुलछीजन	
				छ०गंधक	११॥।छ०	

गन्धक की दुबारा शुद्धि

ता० ८ जुलाई को एक बार की शोधी गंधक ऽ४सेर ६॥ छ० और पहली एक बार की ही शोधी रखी १३ छ० स१ ५ सेर ३॥ छ० गधक को पूर्वोक्त विधि से कर्मपूट द्वारा दुबारा शोध गया। जिसका नक्शा नीचे दिया गया। ६ दिन में ८॥ सेर दूध, पाव भर घी, ४ गज धोतर शुद्धिमें खरच हुई और ४ सेर २ छ० उत्तम और ६॥ छ० दाख खाई गंधक रही। स१ ४ सेर ८॥ छ० हुई। ११ छटांक छीजन गई, अबकी शुद्धि में १० तारीक को छोड़ और सब तारीखों से घी से गन्धक मल दी गई।

८/७/०७	छ०	सेर		छ०	छ०	
	१५	ऽ१॥	६	१२	३	
१०/७/७	छ०	ऽ१॥से०		छ०उ०दाग	छ०	
	१५	घी१॥छ०	६	९—४॥खाई	१॥	
				१३॥छ०		चूंकिगंधक कुछ कपड़ेपर रहजाती थी छीजन
१२/७/७	छ०	ऽ१॥से०घी		छ०	छ०तो०	अधिक जातीथी इसलियें गंधकमें थोड़ा घी दूसरे
	१५	पौन छ०	६	उत्तमदागखाई	१—३॥	दिनसे मिला दियागया पहला घान ३छ०की
						आंचसे निकाला था वह ठीक निकला किन्तु
						८ ता० की सी ही छीजन अधिक गई और कपड़े
						पर कुछ अंश गंधकका रह गया आंच कम समझ
१३/७/७	छ०	ऽ१॥से०घी		छ०१३तो०१॥	छ० तो०	दूसरे घानमें ३॥छ० की आंच दी तो गंधक जलगया
	१५	पौन छ०	६	उ०दा०खाई	१—३॥	तीसरे घानमें ३छ०की आंच दी मगर इस घानकी
						रंगत भी कुछ खराब हो गई चौथे पांचवे छठे घान
						३छ० की आंचसे अच्छे निकले अबकी गंधकके दाने कुछ
				छ०छ०तो०		पीले और फोके निकले ये घीके योगका कारण है
१४/७/७	छ०	ऽ१॥सेर		११—२ १॥	छ० तो०	
	१५	घी छ०	६	३छ० १॥तो०	१—३॥	आज सूखा नोकरने काम किया १ घान बिगड़ गया
१५/७/७	छ०	१ऽसेर		छ० तो०	तो०	
	८॥	घी१/३ छ०	४	७ १।	३॥	
मीजान	मीजानऽ५	मीजान	मीजान	मी०से०४छ०	मीजान	
६	सेर ३॥छ०	ऽ८॥से०	३४	१ २/४तो०	छ० तो०	
				छ० ६तो०४	१० २	
				उ०दागखाई		

कुल ४ सेर ८ छ० ३ तोले
कुल मीजान ४ सेर १ छ० ४ तोले उत्तम
६ छ० ४ तोले दागखाई
१०छ० २ तोले छीजन
ऽ५ सेर ३ छ०

गंधक शुद्धि का फल

(१) प्रथम बार ५ सेर ४ छ० गंधक केवल दूध में शुद्ध होकर ४ सेर ६।। छ० रही। १३।। छटांक छीजन गई। अर्थात् फी सेर २।। छटांक छीजन कुछ तोल में गड़बड़ी हुई।

(२) दूसरी बार ५ सेर ३।। छ० (४ सेर ६। छ० अबकी और १३ छ० पहली) घृत योग से दूध में शुद्ध होकर ४ सेर ८।। छ० रही। ११ छ० छीजन गई अर्थात् फी सेर २। छ० छीजन।

दो बार की शुद्ध गन्धक की मौजूद तोल

सर्वोत्तम फोके दानेदार–९ छटांक
उत्तम दानेदार–ऽ३ सेर ९ छ०
दाग खाई हुई–६।। छटांक ८ छ०
कुल ऽ४ सेर ३ छ०

जारण के लिये गंधक की विशेष शुद्धि
(९ बार शुद्धि) अलकीमियां के पत्र २४४ के अनुसार

(१) ता० २५/७/०७ पूर्वोक्त दो बार शुधी गंधक में १ सेर गंधक को १ सेर छ० ग्वार के पट्टे के स्वरस में ६ धानों में तृतीय बार शोधा तो १४ छटांक रही।

(२) ता० २६ चतुर्थ बार भी १ सेर ६ छ० ग्वार के नये स्वरस में ६ घानों में शोधा तो १२ छ० रही। (छीजन अधिक गई)

(३) ता० २७–पंचम बार कटेरी के १ सेर ६ छटांक स्वरस में ५ घानों में शोधा गया तो १०।। छटांक रही। इस बार गंधक के दाने बनने की जगह कुछ गंधक की धारा ज्यों की त्यों जम गई थी।

(४) ता० २८–छठी बार भी १ सेर ६ छटांक कटेरी के नये स्वरस में ४ घानों में शोधा तो ९।। छटांक रही।

(५) ता० ३०–सातवीं बार १।। सेर प्याज के स्वरस में ४ घानों में शोधा तो ७।। छ० रही (छीजन अधिक गई)

(६) ता० ३१–आठवीं बार १ सेर ७ छटांक प्याज के नये स्वरस में ३ घानों में शोधा तो ६ छटांक ३ तोले हुई।
१३।।

(७) ता० २–नवीं बार लहसन के १ सेर स्वरस में ३ घानों में शोधा गया तो ६ छ० हुई।

सम्मति–छीजन अधिक जाने का कारण नत्था नौकर से पूछा तो जवाब दिय कि खाने के लिये जो शुद्धि हुई वह घृत, दुग्ध आदि में होने से उस क्रिया में गंधक नरेम और चिकनी रहती थी और कपड़े में से साफ निकल जाती थी। इस जारण क्रिया में घी आदि का योग न होने से गंधक कड़ी और रूक्ष रहती थी जिससे कपड़ों पर अधिक रह जाती थी इस कारण अधिक छीजन गई।

खाने के लिये गंधक की विशेष शुद्धि ७ बार

(१) उक्त दो बार की शोधी गंधक में से ऽ। डेढ पाव गंधक को तृतीय बार ऽ घी युक्त १२ छटांक दूध में ३ घानों में शोधा तब ५।। छटांक रही।

(२) चतुर्थ बार १३।। छटांक घृत में ३ घानों में शोधा तो ५।। छटांक रही।

(३) पंचम बार उसी १२।। छटांक घृत में फिर ३ घान में शोधा तो ४।। छटांक रही।

(४) छठी बार १४ छटांक भांगरे के स्वरस में २ घान में शोधा तो ४ छटांक रही।

(५) सातवीं बार १४ छटांक नये भांगरे के रस में फिर २ घान में शोधा तब ३।। छ० रही।

सम्मति–(१) ५ बार की शुद्धि में ६ छटांक गंधक की ३।। छ० रही। ७ बार की शुद्धि में ८ छ० की ३।। समझनी चाहिये।

(२) अब इस गंधक में दुर्गंध नहीं आती।

(३) कूर्मपुट में २।। छ० से १।। छटांक तक के घान निकले आंच सब में तीन तीन छटांक ही दी गई।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठ-
मल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायांस्वानुभूत-
गंधकविषयोपवर्णनं नाम चतुष्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः।।५४।।

उपरसाऽध्यायः ५५

आठ उपरसों का वर्णन

गंधाश्मगैरिकाकासीसकांक्षीतालशिलाञ्जनम् ।।
कंकुष्ठं चेत्युपरसाश्चाष्टौ पारदकर्मणि ।।१।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–गन्धक, गेरू, कसीस, फिटकिरी, हरताल, मैनसिल, सुरमा, और कंकुष्ठ पारदकर्म के लिये ये आठ उपरस कहे हैं।।१।।

गंधक का बयान (उर्दू) जाइपैदाइश

गंधक मशहूर धातु है जिस्म जर्द रंग वगैर, बे बू, लेकिन रगड़ने से खास किस्म की बू उसमें से निकलती है, इस्में गर्मी ओर वर्क कम सराइत करती है पानी में हल नहीं होती और शराब में कम हल होती है हर मुल्क में कमोवेश मौजूद है ज्यादह तर कोहिस्तीन मुल्कों में पैदा होती है। खुसूसन मुल्क आयसलेंड, चीन, सीसली, पैगो, अमरीका, नेपाल, वगैरः में बहुत पाई जाती है। उदयपुर और रावलपिंडी (पंजाब) में भी पैदा होती है। जिला बांदा में बसीत गंधक मिलती है। फिलपाइन के टापू से हिन्दुस्तान में गंधक बकसरत आती है। जर्द रंग, हश्त पहल, फलकी, रवादार को आंवलासार गंधक कहते हैं। जर्द रंग, हश्त पहल, फल की, रवादार को आंवलासार गंधक कहते हैं। (सुफहा १३ किताब अखबार अलकीमियां)।

नवातात जिस्में गंधक पाई जाती है (उर्दू)

कहते हैं कि गंधक नवातात में भी होती है। जैसे प्याज सरसों, राई, हींग, वगैरः में मौजूद है। हैवानात में कई जानवरों की बैजों की जर्दी में मौजूद होती है।

कान से गंधक बरामद करने का तरीका (उर्दू)

कुदरती गंधक जो मुख्तलिफ इशियाइ के हमराह मुरक्किव मिलती है उसको माटो में बजरियः आँच उड़ाकर जुदा कर लेते हैं फिर नरम आंच पर गुदाज करके साचों में डालकर मोटी मोटी बत्तियां बना लेते हैं जिसको अंगरेजी में रूलसिलकर और पंजावी में डंडागंधक और बत्तीगंधक कहते हैं। (सुफहा १४ किताब अखबार अलकीमियां)

गंधक के खवास (उर्दू)

गंधक को तसईद करने से उसके रवादार जर्दी माइल व सवजी किरकिराहट लिये हुए बेजाय का और बे बू सफूफ बन जाती है जिसको लैटिन में सिलकर सेलीमीटम और अंगरेजी में फ्लाचर्स आफ सलकर,

अरबी में किबरियत मसअद, हिन्दी में गंधक का फूल कहते हैं। अगर ५२३ दर्जे की हरारत में गंधक को गुदाज करके सर्द पानी में डाले तो रवड के मानिन्द मुलायमसा चमड़ा बन जाता है मगर यह सूरत बाद चन्द घंटों के बदल जाती है। गंधक सरीअडल इश्तआल है हवा में जलाने से नीलगू शौले से जलती है।

गंधक की किस्में (उर्दू)

मूलीफ मुहताज के नजदीक गंधक की दो किस्म हैं, सफेद और जर्द और साहब अजाम इसकी तीन किस्म, सुर्ख, सफेद, जर्द बयान करता है हकीम असहकविन उमरान के नजदीक इसकी चार किस्में है। सुर्ख, सफेद, जर्द, स्याह मगर कीमियाई किताब अबुलअजय के तितम्ब: में उसकी छः किस्में हैं, किस्म अव्वल किबरियत अहमर, यानी सुर्ख गंधक जो निहायत कामयाब है और कीमियाईगरी एमाल में यह बहुत कम आती है, शौअरान इसको नादिर उलवजूद तसलीम किया है हजरत मोलाना निजामी अलउल रहमत हूं फरमाते हैं।

"न गूगर्द सुर्खे न लाले सफेद। न जोईद: अजतौ बुवद ता उम्मेद"।

किस्म दोयम जर्द व तीरह रंग मानिन्द मोंम।
किस्म सोयम आ़जीरंग।
किस्म चहारम सब्ज खाकी।
किस्म पंजुम स्याह।
किस्म शशम जर्द व साफ जो बेहतर है।

हकीम जलीनूस ने लिखा है कि गंधक को खोदकर कान से निकालते है सुर्ख व जर्द व स्याह होती है और जर्द माइल व सबजीभी होती है इसका नाम मसतकावी और असावई है, अलगरज सबहुकमा का इत्तफाक है, कि किबरियत अहमर सब अकसाम से उमदा व अजफल है, मगर अजीजउलवजूद व नावेद है इसी के बाद सवज पत्थर जर्द साफ जिसको आंवालासार सब्ज कहते हैं इसी के बाद दूसरी अकसाम में से जो साफ और खालिस हो, किंबरियत अहमर मादनी के किबरियत अहमर मसनूई भी होती है जिसको कीमियागर एमाल कीमियावी से बनाते हैं, हम इसकी तय्यारी तरकीब आयन्दा इन्शा अल्लाह ताला लिखेंगे, इल्मकीमियाई की किताबों में किबरियत के इस्माह मुफस्सिल: जैल भी मरकूम है जो अहलफन के नजदीक बतौर सरमकतूम है वह यह है।

असलमार, अलजकर, उरूस, अकरब, नफस, नफलउलकबरी, ऐनुलकतर, हिजरुलदम्, हिजरुलमुल्क, अलहजरुल करम, शुमरवजा, हारअहमर अफसूँ अवियार, असदुलदर्ज, सबूक, मिथामलूस, मुन्दरस, अबरून, गन्दुम (राकिम कमतरीन खलायक नूरमुहम्मदमुवक्किल जिला लाहौर) (सुफहा १५–१६ किताब अखबार अलकीमियाँ)

गंधक की किस्में (उर्दू)

हिन्दुओं के नजदीक गंधक की चार किस्म हैं, अव्वल सफेद जो दफे अमराज व बजअउलमुफासिल और नुकराव मिसपर तिला करके आंच देने से इनको कुश्ता कर देती है। दोयम आँवले के रंग की जिसको आँवालासार कहते हैं। सोयम सबज बरंग तोता यह सब किस्मों में बेहतर है। चहाराम सुर्ख तोते की नाक जैसी और इसको अगर कलई पर तरह करें तो चांदी कर देती है और मिसपर तरह करे तो सोना कर देती है और एक किस्म इसका स्याह है जिसके मिलना दुस्वार है और इसी के स्तैमाल से इन्सान बूढा नहीं होता, इसकी अलामत यह है कि अगर दूध में डाले तो उसको जज्ब कर लेती है और यह किस्म धनन्तर वैद्य को मिला था बाद तस्फिया के अकसर इसका स्तैमाल किया जाता है तरीक तस्फिया हम आयन्दा इन्शा अल्लाह नीला लिखेंगे (सुफहा १७–१८ किताब अखबार अलकीमियां १६/३/१९०५)।

गंधकशुद्धि

पयः स्विन्नो घटीमात्रं वारिधौतो हि गन्धकः गव्याज्यबिद्रुतो वस्त्राद्गालितः शुद्धिमृच्छति ॥२॥ एवं संशोधितः सोऽयं पाषाणानम्बरात् त्यजेत् । घृते विषं तुषाकारं स्वयं पिण्डत्वमेव च ॥३॥ इति शुद्धो हि गंधाश्मा ना पथ्यैर्विकृतिं व्रजेत् ॥ अपथ्यादन्यथा हन्यात्पीतं हालाहलं यथा ॥४॥
(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–गंधक को एक घडी यानी चौबीस मिनट तक गाय के दूध में स्वेदन कर जल से धो लेवें फिर गाय के घृत में गलाकर दूधक पात्र के मुख पर कपड़ा बांधकर उस कपड़े पर उस गले हुए गंधक को डाल देवे इस प्रकार शुद्ध करने से गंधक में से पत्थर तथा अन्य प्रकार की कोई भी मैल निकल जाती है। गंधक का विष घृत में तुषाकार होकर रह जाता है और गंधक स्वयं पिण्ड के आकार होता है इस प्रकार शुद्ध किये हुए गंधक को जो कोई मनुष्य सेवन करै और पथ्य न करै तो भी विकार नहीं करता हैं यदि शुद्ध नहीं किये हुए गंधक को खा लेवे तो अवश्य हालाहल पीये हुए के समान मार देता है।।२–४।।

तथा च

गन्धः सक्षीरभाण्डस्य वस्त्रे कूर्मपुटाच्छुचिः ॥५॥
(एक भाषा पुस्तक)

अर्थ–एक हांड़ी में दूध भरे उसके मुंह पर एक लत्ता बांधे ते ही लत्ता पर गंधक बूक को पैसा एक भर घी में सानिके विछावे तापर तांबा राखै तांबा परि अंगारा राखै तांबा की गरमी से गंधक पिघली कपड़ा की राह से दूध में गिरि परै जो गंधक दूध में गिरा है वह शुद्ध है।।५।।

तरकीब किबरियत मुसफ्फा खुर्दनी मयफवायदस्तैमाल (उर्दू)

जो मुकव्वीवाह व मुमसिक व मुसल्ल: खून फासिद और दाफै खारिश व बहक व सबूर गरीब: व अमराज जिल्दिय: है और रंग को दुरुस्त करती है ५ तोले गंधक ५ तोले रोगन जर्द का आंच पर पिघला कर शीर मादह गाउ या शीर बुज में डालें इसी तरह इक्कीस बार और कमअजकम सात बार यह अमल करे बादहू बारीक करके बंद शीशी में रखे खुराक दो रत्ती से चार रत्ती तक है मक्खन या बताशे वगैर: में अगर हर बार रोगन व शीर ताजा डाले तौ बहुत मुफीद है यह मुस्तैमिल रोगन खारिश के लिये अजहद मुफीद है (सुफहा नं० १२ अखबार अलकीमियां १/६/१९०५)

गंधक को मुसफ्फा करने की तरकीब बजरिय: फिटकरी (उर्दू)

५ तोले गंधक और ५ तोले शवयमानी को मिलाकर बारीक सहक करे और किसी बर्तन में डालकर नरम आंच पर रखकर शीर मादा गाउ इस्पर इस कदर डालता रहे कि हर दो अदविया इसमें डूबी रहे जिस कदर स्याही ऊपर आती रहे उसको उतारता रहे इसी तरह तीन बार यह अमल करे फिर दूध की रतूवत से खुश्क करके अपने काम में लावे (सुफहा १२ अखबार अलकीमियां १/६/१९०५)

गंधक मुसफ्फा करने की तरकीब चन्द अरकों में (उर्दू)

गंधक को पिघलाकर शीराहाइजैल में जो मसावी उलवजन मिलाकर रखी हों इक्कीस या सात बार ठंढा करे शीरा मुंडी बूटी, शीरा शाहतरा, शीरावर्ग बगुल व समर जोजम इल (धतूरा) शीर मादा गाड मसावी उलदजन मिलाकर रखें अगर शीराइके एवज हर अशियाइ मजकूरह का अर्ककशीद करके स्तैमाल करे तो कोई मुजायका नहीं (सुफहा नं० १२ अखबार अलकीमियां १/६/१९०६)

गंधकछाछिया (उर्दू)

गंधक छाछिया जिसे मूसली की गंधक कहते हैं और जो आम तौरपर बारूद में स्तैमाल की जाती है अगर साफ करा लिया जावे तो आँवलासार बन जाती है (सुफहा १५ अखबार अलकीमियां लाहौर २४/२/१९०९)

गंधक की हरारत के दर्जे और उनका असर चाँदी पर (उर्दू)

जो चीज, चांदी को रंगती है उसकी हरारत के तीन दर्जे हैं, पहला दर्जा स्याह करने का और दर्जे में कुश्ता करती है चुना चे गंधक का यही असर है फिर जब इस्की गर्मी अदविया बारुदा में पीस पीसकर स्वाह पकाने से कम की जावे (देखो शेंखुल रईस रिसालः अकसीर अहमद) उस वक्त बशर्ते कि षंड हो जावे यही गंधक चांदी को सुर्ख करेगी बरगनहास अहमर इसलिये कि गंधक में तांबा मौजूद है इसके निकालने की तरकीब रिसाले अलकीमियां तर्जूमा हफ्त अहवाब में देखो पारा इन गंधक के तांबे को जज्व करके सुर्ख ब्यकसूद होता है जिसको फिर लिखेंगे और तवरीद से जर्द करोगी, यह तीसरा दर्जा है, इल्म मीजान में सावित किया है कि जब तक चांदी वरंग निहास अहमर न हो जाइ सोने में हरगिज मिलान के काविल न होगी हमारा तजरुवा है कि जर्द चांदी में खुर्दवीन से देखने से सफेद सफेद अजला नजर आते हैं और मिलाने के बाद सोना फीका हो जाता है और सुर्ख चांदी निहास रंग की अलबता इस्क मेला अच्छा रहता है बल्कि जहबसालीफ बनता है यानी ताँबची सोना जिसको तादील की जरूरत होती है, और दसवाँ हिस्सा सफेद चांदी पिलाने से मकबूल बाजार होता है यही हाल अकसीरी सोने का है अगर दवा ज्यादह तरह की जावे (सुफहा १८ किताब अखबार अलकीमियाँ १/५/१९०५)

गंधक के अर्क बनाने की क्रिया

घटस्य मध्यदेशे प्राक् विशालं छिद्रमाचरेत् । तद्द्वारा तदधः स्थाली काचलिप्ता निधाप्यते ।।६।। त्रिकाष्ठीं तत्र संस्थाप्य तदूर्ध्वं लोहनिर्मितम् ।। चषकं नातिगम्भीरं गन्धकस्य कर्णैर्युतम् ।।७।। स्थापयित्वा क्षिपेत्तत्र ह्यंगारं भिषगुत्तमः ।। दोलायंत्रविधानेन तस्माद्व्यंगुलमानतः ।।८।। स्थाल्यन्तरं महत्स्निग्धमूर्ध्वं संस्थापयेत्सुधी ।।घटस्य मध्यविवरं मुद्रयित्वाम्बरेण च ।।९।। निर्वाते विजनं देशे विनसद्यत्नपूर्वकम् ।। ऊर्ध्वपात्रादधः पात्रे स्वेदं पतति निश्चितम् ।।१०।। पर्णखण्डेन तत्स्वेदमत्यम्लं भक्षयत्सदा ।। (एक भाषा पुस्तक)

अर्थ–एक कूंडा के पेट के मध्य लांबा वित्ता डेढ और छः अंगुल चौडा छेद करो। उसके रास्ते से एक चीनी या चांदी की रकावी रख देवे उस रकावी के बीच में छोटी सी लोहे की तिपाई रख उस पर लोहे का ही प्याला रख देवे उसमें पाव भर गंधक के टुकड़े रख ऊपर से एक अंगार जलता हुआ रख देवे ऊपर से दोलायंत्र के समान गंधक वाले कटोरे से बड़ा चपटा कटोरा लटका देवे और घड़े के छिद्रों को कपडे से ढक देवे इस यंत्र को जहां दवा और आदमी न हों वहां रखना चाहिये इस प्रकार ऊपर के पात्र से जो नीचे के पात्र में स्वेद टपकेगा उसको पान के टुकड़े के साथ खावे तो क्षुधा बढती है यह स्वद खट्टा होता है जब कटोरे में गंधक न रहै तब फिर डालकर पूर्वोक्त क्रिया से स्वेद निकाल लेवे।।६–१०।।

तथा च

घटस्य मध्ये विपुलं द्वारमादौ प्रकल्पयेत् । अधोमुखं तमारोप्य भस्मनार्धं प्रपूरयेत् ।।११। दोषाधानं त्रिभिः काष्ठैस्तदन्तर्घटितैः नयेत् । पलार्धं गन्धकं रम्यं तिलतैलसमन्वितम् ।।१२।। द्रावयित्वा द्रुतं तूलं शिप्त्वा तत्र प्रकल्पयेत् । वर्तीर्दश दृढाः स्थूला दीर्घा द्व्यङ्गुलसंमिताः ।।१३।। चतस्रः पंच वा तस्मिन्प्रदीपे स्थापयेत्सुधीः । ज्वालयेत्ताः समस्ताश्च ज्वलद्वर्त्यन्तरेण च ।।१४।। दोलायंत्रप्रकारेण दीपं पात्रान्तरण च । तथा पिधापयेत्तस्य शिखाग्रं तद्यथा स्पृशेत् ।।१५।। ऊर्ध्वपात्रस्य भागार्धमुन्नतं स्थापयेद् बुधः । न तस्यापरभागस्य पात्रं संस्थापयेदधः १६।। तत्र गंधकजः स्वेदः स्वस्मादागत्य तिष्ठति । अत्यम्लः शुभ्रवर्णः स स्थाप्यः काचस्य भाजने ।।१७।। (एक भाषा पुस्तक)

अर्थ–घड़े के पेट में रालवालिश्त लंबा छेद करै उसको उलटा कर छेद की राह से घड़े में आधे पेट तक राख भर देवे उस राख के बीच तिखटी रख देवे और उस पर लोहे का दीपक रख उसमें जायफल के समान चार टुकड़ा गंधक के रखे फिर दो तोले गंधक को कुछ थोडे से तैल में गलावे जिसमें कि दो २ अंगुल लंबी और कलम के समान मोयी दस बत्ती भीग जावें। उस गंधक के तैल में बाती भिगोकर चार या पांच बाती एक ही बार उस दीपक में रख देवें ऊपर से एक चीनी का प्याला जो कि गहरा न हो उसके चारों कोनों में सूई की बराबर छेदकर लोहे के तार से बांध उस दीपक पर ऐसे लटकावें कि उसका एक भाग नीचा और दूसरा भाग ऊंचा जिधर नीचा भाग हो उसके भी नीचे एक ओर चीनी का प्याला रख देवें फिर दूसरी बाती से उन पांच बातियों को जलावे और घडा का मुंह बंद कर देवे छोटे २ छिद्रों से जब धूवां न निकसता दीखें तो समझ लो कि बाती बुझ गई अगर बाती न हो तो बाती डालो यदि गंधक न हो तो गंधक डालो इस प्रकार करने से नीचे के चीनीवाले पात्र में सफेद अर्क निकलेगा वह खट्टा होगा।।११–१७।।

तरकीब रोगन गंधक (उर्दू)

एक कुफ्लमिय सरपोश कूजा गरान से तय्यार कराकर जब वह खुश्क हो जावे नीलाथोथा देशी यक तोला, सुहागा यक तोला काचसब्ज यक तोला इन हरसह को जुदागानः बारीक करके फिर सबको बाहमी शामिल करे और सादा पानी से खरल करके कुफ्लीमय सरपोश के अन्दरूनी हिस्से में पतला पतला जमाद करे बादहू पजावा कुम्हारान में पका लेवे जब कुफ्ली और सरपोश इस्में से बाहर निकल आयेगी एक किस्म की रोगनी मालूम होगी, गंधक मजकूरः मुसफ्फा से जिसकी तरकीब ऊपर हकीम नूरमुहम्मद साहब ने दर्ज फर्माई है, कुफ्ली को भरकर ऊपर सरपोश दे दे, एक गढा खोदकर सरगीन ताजा अस्प के अन्दर वह कुफ्ली देकर ऊपर एक वालिश्त भर मिट्टी की तह दे अजाँबाद दो अंगुश्त वालूरेत ऊपर बिछाकर करीबन पच्चीस सेर मेंगन बुज की सरपर आंच दे जो पुख्तः वजन के हिसाब से मेंगन दस सेर होंगी, बाद चालीस यौम के जब कुफ्ली को निकालेंगे वह रोगन गंधक से पुरशुदः बरामद होगी, इस रोगन की खुशनुमाई और दहनियत को देख कर आमिल बेहद खुश होता है अगर्चः यह तेल मरीज हैजा के लिये एक बूंद भी अकसीर का हुक्म रखता है लेकिन अफसोस है कि यह अमल अय्याम बरसात सावन भादों में करना चाहिये (सुफहा १९–२० किताब अखबार अलकीमियाँ १६/४/१९०५)

रोगन गंधक जुज अर्क अमरबेल और प्याज पतालजंतर से (उर्दू)

गंधक का एक रोज अकासबेल, दूसरे दिन प्याज के पानी से खरल करके बकदर दाना माष गोलियां बनाकर बजरियः पतालजंतर तेल निकाल ले दफिया हैजा के लिये एक शीख काफी है। (सुफहा ११ किताब अखबार अलकीमियाँ १/५/१९०५)

गन्धकतैल

अर्कक्षीरैस्नुहीक्षीरैर्वस्त्रं लेप्यं तु सप्तधा । गंधकं नवनीतेन पिष्ट्वा वस्त्रं विलेपयेत् ।।१८।। तद्वर्तिर्ज्वलिता दण्डे धृता कार्या त्वधोमुखी । तैलं पतत्यधो भाण्डे ग्राह्यं योगेषु योजयेत् ।।१९।। (एक भाषा पुस्तक)

अर्थ–एक गज कपडा लेकर सात वार आक के दूध से भावना देवे प्रत्येक

भावना में कपड़े को भिगो २ कर सुखावे इसी प्रकार सात ही बार से हुण्ड के दूध से भावना देवे फिर जितने गंधक से कपडे पर लेप हो जाय उतना गंधक लेकर माखन में घोट कपड़े पर लेप कर देवे लेप एक जौ के समान होना चाहिये फिर उसकी बाती बनावे उसको चिमटा से पकड़कर बाती को जलावे बाती का जलता हुआ किनारा नीचा रखे और उसके नीचे एक पात्र रख देवे उस पात्र में जो गंधक आवेगा उसको गंधक तैल कहते हैं इसको चार रत्ती खाने से पुष्ट होता है कास, श्वास, कोढ, कब्ज और मंदाग्नि दूर होती है।।१८।।१९।।

रोगन गन्धक खुर्दनी जुज जमालगोटा पाताल यन्त्र से (उर्दू)

रोजन गुगर्द जो खाने और बतार के तिलाके लगाने के काम आता है आज उसीका नुसखा लिखता हूं।

इब्बुलशाफी गंधक आंवलासार ऽ। मग्ज जमालगोटा ऽ। अक– ककरोंदा (कुकरछेदी) ऽ। में पीस कर २२ रोज किसी गढे नमनाक में दफन कर दो इस दफन से गर्ज ताफीन है, हल करना मंजूर नहीं है (ज्यादह मुद्दत इससे जांवर है) इसके बाद निकालो और पीस कर मखरूनी शकल की गोलियां बनाओ। जब साये में खुश्क हो जावें बतौर मुतआरिफ रोग कशीद करो यह रोगन सुर्ख निकलता है, मगर दो किस्म का जमालगोटे का नीचे और ऊपर गंधक का, ऊपर का रोगन जुदा करो इसकी एक सींक पान पर लगाकर खिलाई जाती है सविनहश्फा लगाकर लगाई जाती है और बाईस रोज से लगायत चालीस में सुस्ती को फाइदा करता है, सम्मियत इसमें नहीं है, मुलैयन और दाफैकब्ज है। (सुफहा १७ किताब अखबार अलकीमियां १/५/१९०५)

गन्धक और फिटकिरी का तेल बगैर आंच के फिटकिरी का तेल बना उससे गन्धक का तेल (उर्दू)

१५ अपरैल सन् १९०५ ई० के अखबार अलकीमियां में जो तरकीब दर्ज हुई है उसके मुताबिक दो कुलफियां तय्यार कर लें पहले एक कुलफी में फिटकिरी भरकर सरपोश से लबबंदी करके दो मन पुख्त: रेग जोकदरे पानी से तर किया गया हो एक बड़े घड़े में भरकर कुलफी मजकूर दर्मियान में रखकर लबबंदी करे बाद गुजरने ४० रोज के मुलाहिजा करे इन्शाअल्लाह तमाम रोगन मिस्ल खून के होगा, इस रोगन के हम वजन किबरियत हल करके जब खुश्क हो जावे और किबरियत की बूबिल कुल न रहे तो दूसरी कुलफी में भर कर मुँह बन्द करके ताजे रेत में हस्बतरकीब मजकूरह अमल करे बाद गुजरने ४० रोज के रोगन सुर्ख बरामद होगा फज्लहू कुछ बाकी न रहेगा। इसी रोगन से कुछ और अमल करके शमसुलआला तिला खालिस बनाते थे और उन्होंने यह भी फर्माया था कि रूहतिला की शराकत से इस्में खासियत अकसीर पैदा हो जाती है। (सुफहा १३ अखबार अलकीमियां १/६/१९०५–१)

दहन उरूस यानी रोगन गन्धक बजरियः चोयासीर (उर्दू)

गंधक साफ शफ्फाफ आमलसार पिसी हुई को प्याले गिलीहिकमत शुद: में नरम आग पर रखे और हुचंद सिचद ताजा दूध का चोया दे पस आहनी कर्छी में जो नल के दार हो रखकर कडछे को नलके की तरफ ढवा करके आग पर रखें औ नलके के नीचे दूसरा ओंधा शीशा या चीना का वर्तन रख दे अब गंधक में आग लगावें रोगन नल के की राह से दूसरे औदीन में जमा होगा। (सुफहा २५ अखबार अलकीमियां २४/१/१९०९)

दहनउरूल यानी रोगन गंधक व आमेजिश मग्ज जमालगोटा (उर्दू)

गंधक आंवलासार ऽ।, मग्ज जमालगोटा ऽ।, अर्क ककरोंदे में पीसकर २३ रोज किसी गढे नमनाक में दफन कर दो इस दफन से गर्ज तसकीन है हल करना मजकूर नहीं है ज्यादा मुद्दत इससे जाइज है इसके बाद निकालो और पीसकर मखरूनी शकल की गोलियां बनाओ जब सब साये में खुश्क हो जावें बतोर तआरफ रोग कशीद करो यह रोगन सुर्ख निकलता है मगर दो किस्म के जमालगोटों का अलाहदा और गंधक का अलाहदा जमालगोटे का नीचे होगा और गंधक का ऊपर होगा (हकीम मुहम्मदचराग) (सुफहा २५ अखबार अलकीमियां २४/१/१९०९)

दहनउरूस यानी रोगन गंधक बजरिये अकाशबेल व प्याज (उर्दू)

गंधक को एक रोज अकाशबेल के पानी में और दूसरे प्याज के पानी में खरल बकदर दाना माष गोलियां बनाकर बजरियः पताल जंतर तेल निकाले दफिया हैजा के लिये सीख काफी है और इससे तांबा लाजिल भी होता है। (सुफहा २५ अखबार अलकीमियां २४/१/१९०९)

गेरू के भेद और गुण

पाषाणगैरिकं चैकं द्वितीयं स्वर्णगैरिकम् ॥ पाषाणगैरिकं प्रोक्तं कठिनं ताम्रवर्णकम् ॥२०॥ अत्यन्तशोणितं स्निग्धं मसृणं स्वर्णगैरिकम् ॥ स्वादुस्निग्धं हिमं नेत्र्यं कषाय रक्तपित्तनुत् ॥२१॥ हिध्मावमिविषघ्नं च रक्तघ्नं स्वर्णगैरिकम् ॥ पाषाणगैरिकं चान्यत्पूर्वस्मादल्पकं गुणैः ॥२२॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पाषाणगैरिक और स्वर्णगैरिक भेद से गेरू दो प्रकार का होता है पाषाण गेरू कडा और तांबे के सदृश वर्णवाला होता है और स्वर्णगैरिक (सोनागेरू) अत्यन्त लाल चिकना और चमकदार होता है। गेरू मीठा चिकना ठंढा नेत्रों को हित, कषैला और रक्तपित्त का नाशक है हिध्मा वमन विष और दुष्ट रक्त का नाश कर्ता है स्वर्णगैरिक से दूसरा गेरू न्यून (कम) गुणवाला है।।२०–२२।।

गेरू की शुद्धि और गुण

गैरिकं किंचिदाज्येन भृष्टं शुद्धं प्रजायते ॥२३॥

(बृहद्योगतरङ्गिणी)

अर्थ–गेरू को घृत में सानकर अग्नि में भून लेवे तो गेरू की शुद्धि होगी।।२३।।

तथा च

गैरिकं तु गवां दुग्धैर्भावितं शुद्धिमृच्छति ॥२४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–गेरू को गाय के दूध की सात बार भावना देवे तो गेरू अवश्य शुद्ध होगा।।२४।।

गेरू के गुण

गैरिकं दाहपित्तास्रकफहिध्माविषापहम् ॥
चक्षुष्य वान्तिकण्डूघ्नं शीतं रूक्षमुदर्दनुत् ॥२५॥

(बृहद्योगतरङ्गिणी)

अर्थ–गेरू दाह, रक्तपित्त, कफ, हिध्मा और विष का नाशक है, नेत्रों का हितकारक वमन और खुजली का नाश करनेवाला ठंढा रूखा और उदर्द (छपाका) को दूर करता है।।२५।।

गेरू के सत्त्वपातन की विधि

गैरिकं सत्त्वरूपं हि नन्विना परिकीर्तितम् । कैरप्युक्तं पतेत्सत्त्वं क्षाराम्लक्लिन्नगैरिकात् । उपतिष्ठति सूत्रेन्द्रमेकत्वं गुणवत्तरम् ॥२६॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–महात्मा नन्दी ने कहा है कि गेरू में सत्त्व नहीं निकलता है, क्योंकि, वह स्वयं सत्त्वरूप है, और कुछ पण्डितों का कथन है कि, क्षार (जवाखार) आदि अम्लवर्ग इनसे गेरू को सानकर कोठीयंत्र में धोंके तो सत्त्व अवश्य निकलेगा, और वह सत्त्व पारद के समान गुणवाला है॥२६॥

कसीस के भेद और गुण

कासीसं बालुकाद्येकं पुष्पपूर्वमथापरम् । क्षाराम्लागरुधूमाभं सोष्णवीर्यं विषापहम् । वालुकापुष्पकासीसं चित्रघ्नं केशरंजनम् ॥२७॥ पुष्पादिकासीस मतिप्रशस्तं सोष्णं कषायाम्लमतीवनेत्र्यम् । विषानिलश्लेष्मगदव्रणघ्नं श्वित्रक्षयघ्नं कचरंजनं च ॥२८॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–रेतीला, कासीस और हीराकसीस भेद से कसीस दो प्रकार का होता है। रेतीला कसीस (बालुकादि) रंग में खार, खटाई और अगर के समान होती है, वह उष्णवीर्य विषनाशक, सफेद कोढ़ का नाशक और केशों का रंगनेवाला है। तथा फूलकसीस उष्ण, कषैला, खट्टा और अत्यन्त नेत्रों को हित, विष, अनिल, कफ, व्रण, श्वित्र और क्षय का नाशक है, और केशों का-रंजक है॥२७॥२८॥

कसीस की किस्में (उर्दू)

जाज–इसको हिन्दी में कसीस और अंगरेजी में सल्फेट आफ आइरन कहते हैं, मुख्तलिफ रंग का होता है, सफेद, सुर्ख, सवज, जर्द, स्याह यह तिला का रंग बढाता है और चांदी को सोख्त करता है और आवसीमाव को खुश्क करता है। (सुफहा अकलीमियां ५९)

कसीस की शनाख्त (उर्दू)

कसीस मादनी को हीराकसीस कहते हैं जो आमवाजारों में विकती है अगरेजी में इसका नाम सल्फैट आफ आईरन और पंजाबी में काही या कोकाही कहते हैं (नूरमुहम्मद अजमुवक्कल लाहौर) (सुफहा १० किताब अखबार अलकीमियां १६/३/१९०५)

दोनों कसीसों के गुण

कासीसद्वयमम्लोष्णं तिक्तं केश्यं दृशोर्हितम् ।
हन्ति कण्डूविषश्वित्रमूत्रकृच्छ्रकफामयान् ॥२९॥

(बृहद्योगतरङ्गिणी)

अर्थ–दोनों प्रकार की कसीस, खट्टी, गरम, चरपरी, केशों को तथा नेत्रों को हित है, खुजली, विष, सफेद कोढ, मूत्रकृच्छ्र और कफ के रोगों को नाश करता है॥२९॥

कसीस भक्षण के गुण

बलिनाहतकासीसं क्रान्तं कासीसमारितम् । उभयं समभागं हि त्रिफलावेल्लसंयुतम् ॥३०॥ विषमांशघृतक्षौद्रप्लुतं शाणमितं प्रगे । सेवितं हन्ति वेगेन श्वित्रपाण्डुक्षयामयान् ॥३१॥ गुल्मप्लीहगदं शूलं मूलरोगं विशेषतः । रसायनविधानेन सेवितं वत्सरावधि ॥३२॥ आमसंशोषणं श्रेष्ठं मन्दाग्निपरिदीपनम् । पलितं वलिभिः सार्ध विनाशयति निश्चितम् ॥३३॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–गन्धक के साथ मारा हुआ कसीस और कसीस के साथ मारा हुआ वैक्रान्त इन दोनों को सम भाग लेकर त्रिफला और बायबिडंग (एक माशा) के साथ विषम भाग घृत तथा शहद में मिलाकर एक रत्ती सेवन करे तो सफेद कोढ, पांडु, क्षय, गुल्म, प्लीहा, शूल, बवासीर को एक वर्ष तक रसायन विधि से सेवन करने से नाश करता है। और यह आंव का सुखानेवाला अग्निवर्द्धक और बलीपलित को नाश करता है इसमें कुछ भी संदेह नहीं है॥३०–३३॥

कसीस की शुद्धि

कासीसं शुद्धिमाप्नोति पित्तैश्च रजसा स्त्रियः ॥३४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कसीस को पित्तवर्ग की तथा स्त्री के रज की भावना देवे तो कसीस निश्चय शुद्ध होगा॥३४॥

तथा च

सकृद्भृंगाम्बुना क्लिन्नं कासीसं निर्मलं भवेत् ॥३५॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–जलभंगरे के रस की एक बार ही भावना देन से कसीस शुद्ध हो जाता है॥३५॥

कसीस के सत्त्वपातन की विधि

तुवरीसत्त्ववत्सत्त्वमेतस्यापि समाहरेत् ॥३६॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–जिस प्रकार फिटकरी का सत्त्व निकाला जाता है, उसी प्रकार कसीस का भी सत्त्व निकालना चाहिये॥३६॥

फिटकिरी का उत्पत्ति भेद और गुण

सौराष्ट्र्यमनि सम्भूता मृत्सा सा तुवरी मता । वस्त्रेषु लिप्यते यासौ मंजिष्ठारागवन्धिनी ॥३७॥ फटकी फुल्लिका चेति द्वितीया परिकीर्तिता । ईषत्पीता गुरुः स्निग्धा पीतिका विषनाशिनी ॥३८॥ व्रणकुष्ठहरा सर्वकुष्ठघ्नी च विशेषतः । निर्भारा शुभ्रवर्णा च स्निग्धा साम्लाऽपरा मता ॥३९॥ सा फुल्लतुवरी प्रोक्ता लेपात्ताम्रं चरेदियम् ॥
(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सौरठ देश के पाषाणों में उत्पन्न हुई जो एक प्रकार की मिट्टी है उसे तुवरी कहते हैं, कपडो पर जिसके लगाने से मजीठ का रंग उत्तम हो जाता है फटिका और फुल्लिका इन भेदों से फिटकिरी २ प्रकार की है, यह विष फोडे और कुष्ठ को विशेषकर नाश करती है, और इससे भिन्न सफेद वर्णवाली हलकी चिकनी और खट्टी होती है। फूल्ल (फूल) फिटकरी वह उत्तम होती है, जो कि लेप करने से तांबे को खा जाती है॥३७–३९॥

फिटकिरी के गुण

कांक्षी कषाया कटुकाम्लकण्ठ्या केश्या व्रणघ्नी विषनाशिनी च । श्वित्रापहा नेत्रहिता त्रिदोषाशान्तिप्रदा पारदजारणी च ॥४०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–फिटकिरी कसैली, कडवी और खट्टी होता है, कंठ और केशन के हितकारी है, व्रण और विष की ओर श्वेत कोढ की नाशक नेत्रों के हित त्रिदोष को शान्त करनेवाली और पारद को रंगनेवाली है॥४०॥

फिटकिरी की शुद्धि

तुवरी काञ्जिके क्षिप्ता त्रिदिनाच्छुद्धिमृच्छति ॥४१॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–फिटकिरी जो कांजी में घोलकर तीन दिवस तक रहने देवे फिर पानी को सुखाय लेवे तो फिटकरी शुद्ध होगी॥४१॥

सफाई फिटकिरी (उर्दू)

फिटकिरी को मिस्ल पानी के हल करो और एक शीख जस्र की उस पानी में डाल दो चन्द अर्से में इस शीख पर फिटकिरी की कल में जम जावेगी जो निहायत साफ चमकदार होगी मुजर्रिव है (सुफहा ११० किताब कुश्तैजात हजारी)

तरकीब तेल फिटकिरी (उर्दू)

एक कुलफी गिली कूजः गरान यानी कुम्हरों से मय उसके सरपोश के तय्यार करावे उस कुलफी को खुश्क करके, नीलाथोथा, देशी एक तोला, सुहागा एक तोला, कांच सबूज एक तोला, इन हरसे को जुदागाना पीसकर फिर शामिल करके खूब सादा पानी में खरल करै और कुलफी मयसर्पोश के अन्दरुनी हिस्से में जमाद करके पजावा कुम्हारन् में पका लेवें जब कुलफी और सरपोश पजावे से बाहर निकल आयेगी एक किस्म की रोगनी हुई मालूम देगी जिस कदर चाहरे कुलफी में फिटकिरी सफेद भरकर ऊपर सरपोश दे दे, एक गढा खोदकर उसमें एक मन ताजा सरगीन अस्प डालकर ऊपर उसके कुलफी रख दें एक मन सरगीन कुलफी के ऊपर विछाकर उसके ऊपर एक बालिश्त के करीब मिट्टी के तह दे दे अजाँबाद दो अंगुश्त बालू रेत विछाकर मेंगन बुजकी सरपर आंच दे दे मेंगनबुज तरकीबन पैंतीस सेर के होनी चाहिये इस आंच में खार्जी हरारत पहुँचाना मकसूद है बाद चालीस यौम के जब कुलफी को निकालेंगे तेल से भरी हुई बरामद होगी, तेल की रंगत मिस्ल खून के सुर्ख और घी की तरह से दौहनियत होगी, फज्लहू कुछ नहीं होगा अगर सोजाकवाले को एक बूंद खालिस इस तेल फिटकिरी की बताशे में रखकर दी जावे ख्वाह कितने ही अर्से का क्यों न सोजाक हो तीन चार खुराक में बफज्जलहूताला शफा होगी। (सुफहा ३२ किताब इसरार अलकीमियां)

फिटकिरी के सत्त्वपातन की विधि

क्षाराम्लैर्मर्दिता ध्माता सत्त्वं मुञ्चति निश्चितम् ।।४२।।

(रसरत्नाकर)

अर्थ–फिटकिरी को क्षार (जवाखारादि) और अम्लवर्ग से घोट २ कर गोली बना मूपा में रखकर धोंके तो फिटकिरी का सत्त्व निकलेगा।।४२।।

तथा च

गोपित्तेन शतं वारान् सौराष्ट्रीं भावयेत्ततः ।
धमित्वा पातयेत्सत्त्वं क्रामणं चातिगुह्यकम् ।।४३।।

(रसरत्नाकर)

अर्थ–फिटकिरी को सौ बार गोपित्त की भावना देकर गोली बनाय मूपा द्वारा धोंके तो फिटकिरी का गुप्त रखने योग्य सत्त्व निकलेगा।।४३।।

(रसरत्नाकर)

अथ हरिताल के भेद और गुण

हरितालं द्विधा प्रोक्तं पत्राख्यं पिंडसंज्ञकम् । स्वर्णवर्णं गुरु तनुपत्रं च भासुरम् ।।४४। तत्पत्रतालकं प्रोक्तं बहुपत्रं रसायनम् । निष्पत्रं पिण्डसदृशं स्वल्पसत्त्वं तथा गुरु ।स्त्रीपुष्पहरणं तत्तु गुणाल्पं पिंडतालकम् ।।४५।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पत्र हरताल, तथा पिंडहरताल के भेद से हरताल के दो प्रकार की हैं, जिसका रंग सोने के समान हो, भारी और चिकनी हो जिसके पत्ते छोटे २ चमकदार हों उसको पत्रतालक कहते हैं इसी तरह की घनेपत्रवाली जो हरताल हैं, वह रसायन है। जिसमें पत्र न हों, ढेले के समान भारी हो और थोड़े सत्त्वाली हो उसको पंडहरताल कहते हैं वह थोड़े गुणवाली हरताल स्त्री पुष्प (रज) को नाश करती है।।४४–४५।।

हरताल की किस्में (उर्दू)

हरताल की पांच किस्में है (१) हरताल उर्फी (२) हरताल तबकी (३) हरताल बरकी (४) हरताल बुगदादी सफेद (५) हरताल स्याह हरताल उर्फी से मुराद हरताल जर्द से हैं जिसमें पर्त नहीं होते ढेले की तरह होती है–

हरताल तबकी व वर्की दोनों पर्तदार और चमकीली होती है फर्क यह है कि हरताल तबकी के पर्त दबाने से टूट जाते हैं और बरकी के पर्त दबाने से झुक जाते हैं और एमाल कीमियाई में कारामद है।

हरताल बुगदादी यह सफेद रंग का होता है और गोदता हरताल कहलाता है आग पर कायम होता है बाजे इसको संगजराहत और बाजे संबुलफार जानते हैं। लेकिन असल यह है कि गोदंता हरताल अलावह इन दोनों के है बरखिलाप संगजराहत के इसमें पर्त पर्त होते हैं और बरखिलाफ संखियां के कायमुल्नार होता है। रंगत इसकी बिलकुल गाय के दांत की तरह होती है यह खुद ही कीमियां है।

हरताल स्याह, बाज मुहक्ककीन ने इसको गंधक स्याह लिखा है जो दूध को जज्ब कर लेती है और उसका स्तैमाल बूढा नही होने देता और कायाकल्प करता है। (सुफहा अलकीमियां १५८)

अशुद्धहरताल के दोष

अशुद्धं तालमायुर्घ्नं कफमारुतमेहकृत् ।
तापस्फोटांगसंकोचं कुरुत तेन शोधयेत् ।।४६।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अशुद्ध हरताल आयु का नाश करता है, कफ, वात और प्रमेह को उत्पन्न करता है, दाह, शरीर का फटना और संकोच को करता है इसलिये हरताल को शुद्ध करना चाहिये।।४६।।

हरताल का शोधन

स्विन्नं कूष्माण्डतोये वा तिलक्षारजलेऽपि वा ।
तोये वा चूर्णसंयुक्ते दोलायंत्रेण शुध्यति ।।४७।।

(रसरत्नाकर)

अर्थ–हरताल के टुकड़े २ कर पोटली में बांध पेठे केरस में वा तिल के खार के जल मे अथवा चूने के पानी में दोलायंत्र द्वारा स्वेदन करे तो हरताल शुद्ध होगा।।४७।।

तथा च

तालकं कणशः कृत्वा दशांशेन च टंकणम् । जम्बीरोत्थद्रवैः शाल्यं कांजिकैः क्षालयेत्ततः ।।४७।। वस्त्रे चतुर्गुणे बद्ध्वा दोलायंत्रे दिनं पचेत् । सचूर्णेनारनालेन दिनं कूष्माण्डजे रसे । स्वेद्यं वा शाल्मलीतायैस्तालकं शुद्धिमाप्नुयात् ।।४९।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–हरताल के टुकड़े २ कर उसमें दशमांश सुहागा मिला जंभीरी के रस में कुछ देर रख कांजी से धोय लेवे फिर उन टुकड़ों को चौलर कपड़े में बांध चूने के पानी से मिली हुई कांजी में एक दिन स्वेदन करे फिर पेठे के रस में फिर सेमर के रस में एक दिवस तक स्वेदन करे तो हरिताल की शुद्धि होगी।।४८।।४९।।

हरताल को पिघलाकर साफ करना या चर्ख देना बेरी के पत्तों में (उर्दू)

हरताल को कोरी हांडी में ऊपर बेरी के पत्ते रख कर चूल्हे पर चढ़ाकर नीचे बेरी की लकड़ी की आग जलावे तो हरताल पिघल कर साफ हो जाती है (सुफहा ५६ किताब कुश्तैजात हजारी)

सफाई हरताल (उर्दू)

नौआदीगर, हरताल को पांच सेर स्याह गाय के पेशाब में और पांच सेर कांजी में और पांच सेर दही में अलहदा डोलजंतर करें और जब आध सेर पानी रह जाया करे निकालकर दूसरे जंतर में पकावे बादहू हरताल मजकूर को कपड़े में लपेटकर अठारह दिन तक पेठे में रखे बादहू बासी दही में सहक करके अमल में लावे (सुफहा अकलीमियां १७४)

सफाई हरताल (उर्दू)

हरताल मुसफ्फा करने की तरकीब अमल शम्सी के वास्ते अगर आधसेर हरताल हो तो पांचसेर कुरथी में पानी डालकर बारह पहर तक डोलजंतर करे और भाप दे और आग खेरकी लकड़ी को जलावे बाद उसके बारह प्रहर तक सज्जी में पानी मिलाकर डोल जंतर भापी करे इसी तरह पर दोनों चीजों के जो शाँदे की बारह बारह प्रहर तक भाप दे मुसफ्फा हो जायगा और अमल कमरी के वास्ते हर एक चीज में तीन तीन असल करे साफ हो जायगा (सुफहा अकलीमियां १७३)

१-नोट खैर की आग तेज होती है-

हरताल के गुण

श्लेष्मरक्तविषवातभूतनुत् केवलं च खलु पुष्पहृत्स्त्रियः ॥
स्निग्धमुष्णकटुकं च दीपनं कुष्ठहारि हरितालमुच्यते ॥५०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-हरताल कफ, रक्तविकार, विष, वात और भूत का दूर करनेवाली है, केवल स्त्रियों के रज का नाश करती है हरिताल चिकना, उष्ण, कडुआ, दीपन और कोढ को दूर करता है॥५०॥

हरतालभस्मविधि

बीस टंक लीजै हरताल । नान्हों फोर खपरिया घाल ॥
जरकी छाल सफोंकातनी । मुखे बांटि चूरन करघनी ॥
खपरा चूल्हेपर राखिये ॥ बाखर चूरनसों ढांकिये ॥
तातर आग अल्पसी करै । एक पहर जो मन्दी करै ॥
यह बाखर जहां धुवीं करेय ॥ तिंह २ ठौर चूरन देय ॥
खपरा चार पहर ज्यों तपै ॥ ताके गुनको कौनहि जपै ॥
तब रोगीको दीजै खान । कुष्ठ अठारह जाव निदान ॥
जैते स्रोनित रक्त विकार । कविजन कहै जे जाहिअसार ॥

(बड़ा रससागर)

अपामार्ग (ओंगा) की भस्म एक सेर पक्का, पीपल छाल की भस्म एक सेर पक्का, इन दोनों को मिलाय देणा फिर तबकिया (पत्रात्मक) हरताल देकर हांडी में रखनी और ऊपर नीचे रख भर देनी और हांड़ी के मुखपर मुद्रा करनी, उस हांडी को चूल्हेपर चढाय आठ पहर तक आग देनी जहां धूवां निकलता हो वहां राख से दाब देना तो हरताल की भस्म होगी, यह सन्निपातादि रोगों को दूर करता है। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा च श्वेत भस्म

हरताल यथेष्ट लेकर हांडी में अपामार्ग भस्म, पलाशभस्म, वा अश्वत्थ (पीपल) की भस्म पाकर, ऊपर त्रिकटुका चूर्ण पाकर ऊपर हरिताल रखकर, ऊपर चूर्ण ऊपर बाकी भस्म पाकर, बंद करके चार प्रहर आग देणी तो हरताल की श्वेत भस्म होगी। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा च

हरिताल, बीस माशे, फिटकिरी ४० माशे, करंजमज्जा ४० माशे करंजमज्जा और फिटकिरी दोनों की तह पर हरिताल रखखर ऊपर भी दोनों की तह देके कुञ्जे में सात सेर पक्के दी आग देणी हरिताल भस्म होगी खुराक आधी रत्ती से एक रत्ती तक ५० दिन में कुछ हटै। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

हरिताल शंखिया भस्म ढाक की राख में

पलाशभस्म मध्ये हरिताल और शंखिया बणता है (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता हरताल बरकी खाकलोध में चार पहर में (उर्दू)

लोध पठानी, एक सेर को फूंक कर खाकिस्तर बना ली जावे बाद अजांलोध पठानी में हरताल वरकी एक तोला देकर एन वसत खाकिस्तर चूल्हे पर बर्तन सवार कर दिया जावे और नीचे चार प्रहर तक आंच जारी रखे हरताल का सफेद रंग का कुश्ता हो जावेगा, पुराने बुखारवाले को खुराक दो चावल। (सुफहा ५ अखवार अलकीमियां १।२।१९०७)

हरताल को चर्ख देने की तरकीब नीम के पानी में तर रख भूसी की आंच (उर्दू)

हरताल बरकी एक तोला की सालम डली लेकर वर्ग नीम के पानी पच्चीस तोले में किसी मिट्टी के बर्तन में भिगो दे और धूप में रख दे जब तमाम पानी खुश्क हो जावे हड़ताल को अलहदा करके दो कपड़मिट्टी करे जब कपड़मिट्टी खुश्क हो जावे भूसी चावल चालीस तोले की आंच दे मगर हवा से बचाकर जब सर्द हो जावे निकाल ले, हरताल चर्ख खाकर बरंग सुर्ख किसी कदर स्याही माइल बरामद होगी, यह हरताल चर्ख खुर्दह मरीज जिरियान के एक चावल बराबर रोजाना बालाई या मसका में खिलाना अकसीर का हुक्म रखती है, पुराने बुखार व खांसी का तीन खुराक में कलाकुम्भा हो जाता है, मरीज दमे को हलवे में रख कर देना चार खुराक में कामिल शफा होती है, अगर एलुवा और कुश्ता सदफ (सीपी) के साथ मिलाकर बवासीर वाले को खिलावे उम्रभर बवासीर नहीं होती। (सुफहा ५ अखवार अलकीमियां १६।९।१९०७)

हरताल की सफेद खाक करने की तरकीब (उर्दू)

तुख्म मासफर यानी कड को हरताल के बराबर लेकर नजरून यानी जवाखार मिलाकर रात भर गरम तनूर में रखे दूसरे रोज निकाले सफेद हो जायेगा (सुफहा अकलीमियां १७४)

फवायद कुश्ता हरताल कायमुल्नार (उर्दू)

(१) हरताल कायमुल्नार और मुशम्मा को यह भी खास्सा है कि फटे हुए दूध को अजसरनौ दुरुस्त कर देती है, (२) फटे हुए खून को जजामी के दुरुस्त कर देती है (३) फेफडे का जो मर्ज सिलमें होता है इसी हरताल से मुन्दमिल होकर सिलका इलाज हकीकी हो जाता है (४) जितने जख्म और फोडे अन्दरून जिस्म होते हैं सबका इलाज इस हडताल से कामिल होता है (५) पुराना कर्सा सोजाक का इसी हरताल से दो चार रोज में अच्छा हो जाता है। (सुफहा नं० १४ अखबार अलकीमियां १।६।१९०७)

कुश्ता हरताल बजरिये सत्यानाशी दाफै आतिशक व जजाम (उर्दू)

तरकीब कुश्ता हरताल वर्की, वर्ग सत्यनाशी मय शाख को बारीक पीसकर पांच सेर का नुगदा बनाकर दर्मियान में एक तोले हरताल बरकी रखकर किसी बर्तन में ऊपर से सरपोश ढांककर बीस सेर उपलों की आंच दे २४ घंटे के बाद सर्द होने के निकाल ले बफज्ल खुदा उमदा कुश्ता होगा अर्जा जजाम व आतिशाक के लिये हुक्म अकसीर रखता है, खुराक एक चावल से कम, वालाई या घी में रखकर खाना चाहिये आर्जः जजाम व आतिशक के लिये हुक्म अकसीर रखती है खुराक एक चावल से कम वालाई या घी में रखकर खाना चाहिये और गिजा में कसरत घी की करना चाहिये (सुफहा नं० १२ अखबार अलकीमियां १६।६।१९०७)

कुश्ता हरताल बरकी का नुसखा फासफोरस में तर कर बकायन की लुबदी में ५ सेर कोयलों की आंच (उर्दू)

एक साहब संगतरा जिला स्यालकोट से बयान फर्माते हैं कि अगर हरताल वरकी को फासफोरस में तर करके दरख्त बकायन में आधसेर जुगदे में रखकर मजबूत गिलेहिकमत करके पांचसेर कोयलों की आंच दे दे तो हडताल कुश्ता हो जाती है जो साहब इसका तजरुबा करें अखवार अलकीमियां में अपने तजरुबे को जरूर दर्ज करा दें। (सुफहा अखवार अलकीमियां १६/११/१९०६)

कुश्ता हरताल त्रिफला चोया दे शहद में तर कर बेर की छाल और थूहर के दूध की लुबदी में १० की आंच

हलैलाकलां दस तोले, आंवला दस तोले, वहेड़ा दस तोले, सबको नीमकोव करके दो सेर पानी में तीन रोज भिगो कर जोश दे जबकि एक सेर पानी रहे तो नीचे उतार कर छान लेवे बाद हरताल बरकी दो तोले की एक डली लेकर इसको कड़छी आहनी में रखकर नीचे नरम आग जलाकर पानी मजकूर का चोवा दे, जब तमाम पानी जब्ज हो जावे तो नीचे उतार ले बाद पोस्त दरख्त बेर ताजा २० तोले शीर जकूम ३० तोले मिलाकर खूब घोट कर नुगदा बना लेवे और हरताल की शहद खालिस में आळूदह करके नुगदे में रख कर गिलेहिकमत करे और दो सेर पाचकदस्ती की आग देवें तो हरताल कुश्ता बरंग सफेद होगा बदकर निस्फ चावल मुनक्का या मसका में मरीज की तबियत देखकर खिलावे, इन्शा अल्लाह कौहना से कौहना दमे के लिये निहायत ही मुफीद है। (८८ सुफहा १४ अखवार अकलीमियां १६/११/१९०६–१)

कुश्ता हरताल वर्किया सफेद रंग नींबू के रस में घोट टिकिया बना जीरा सफेद में दो कंडों की आंच (उर्दू)

हरताल एक तोले को २० तो० लैमूं के पानी में खरल करके टिकिया बनावें और वह खुश्क करके एक पाचकदश्ती में गढ़ा खोदकर दस तोले जीरा सफेद फर्श व लिहाफ करे और दूसरा उपला रख कर किसी महफूज मकान में आग दे और सर्द होने के बाद निकाले, कुश्ता सफेद रंगत का बरामद होगा।

(सुफहा ११ अखवार वैशोपकारक लाहौर १४/११/१९०६)

तरकीब कुश्ता हरताल घीग्वार में सात दिन घोट टिकिया बना हरनखुरी की लुगदी में दस सेर की आँच (उर्दू)

हरताल बरकी १ तोला घीग्वार (क्वारगन्दल) के रस में ७ दिन खरल करे फिर टिकियां बनाकर मुश्वा लेवे और हरन खुरी के आध सेर के नुगदे के दर्मियान इस टिकिया को रख कर कपरौटी करके दस सेर की आंच दे दे तो कुश्ता हो (सुफहा ९ अखवार देशोपकारक ५/१२/१९०६)

हरितालभस्म

ब्रह्मनौनिया को रस करै । काढि निपनिया न्यारो धरै ॥
तिहि हरिताल खरलि दिन तीन । सुकै सुकै चौदह दिनकीन ॥
बहुरि काच के सम्पुट भरै । गजपुट जुगति भली विधि करै ॥
यों हरिताल टंक दश होय । पांच सेर छैना ले कोय ॥
गजपुट में दीजै परजारि । बहुरि सिराने लेय निकारि ॥
कुष्ठ जु ग्यारह यातें जाय । जो रोगी पथ संजम खाय ॥
(रससागर)

कुश्ता हरताल नीम के पानी में घोट टिकिया बना खाक पीपल में चार पहर की आँच (उर्दू)

अगर नीम के पानी में जो मुकत्तर कर लिया गया हो हरताल बरकी को उसमें खरल करके टिकिया बनाकर साये में खुश्क कर लें फिर खाकिस्तर पीपल में देकर नीचे चार पहर की आंच जलाई जावे तो हरताल कुश्ता हो जाती है, बुखार, इश्तशकात, दमा, नामर्दी, वगैरह सबके लिये खुराक डेढ चावल (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां १६/२/१८०७)

तथा च

पुनि हरिताल खरल में देय । दश पल के ग्यारह पल लेय ॥
कारी रायसेन के फूल । रसकाढत जल देय न भूल ॥
इस रस सात द्यौस भर देय । बहुरि चमेली पान हिलेय ॥
याहू के रससों दिन सात । सब बूंटिन की येकै बात ॥
औटे सेतसिरस जर आनि । औटि औटि के लीजै छानि ॥
खररि सात दिन कविजन कहैं । लोढा ज्यों न एक पल रहै ॥
रस ग्वारि के खररिजै प्रीति । सातों द्योस पाछिली रीति ॥
पुनि गोली कीजिये सुजान । मुनिबल्लभ कैसे फल जान ॥
बहुरि सुखै के सीसी भरै । कपरौटी दश ताकी करै ॥
छैना साठि तीनसै गनै । अतिनीचट लीजै आरनै ॥
तिन में गजपुट देय बनाय । जो दिन आग एक दहकाय ॥
बहुरि सिराने लेय निकाल । गुरुप्रसादते बैठे ताल ॥
जितै किते मानसके रोग । यह हरताल भयो तिन जोग ॥
अरु रुकती तांबेकी खाय । देति हि सलु सफेद हो जाय ॥
(रससागर बड़ा)

तथा च

तबक बीन लेवै हरताल । बारह पहर खरल में घाल ॥
आठ पहरलों खरले गुनी । एक भाप पुठ भाषै मुनी ॥
ऐसी पुट चौदहदे बीर । खररि खररि बकरी के छीर ॥
काचढारि जो हांडी होय । तिनको डौरू कीजै लोय ॥
औषधि करिकै मुद्रा करौ । एक द्यौस जा सूखन धरै ॥
तब चूल्हे पै देय चढाय । द्वै दिन मन्दी आगि बराय ॥
पुनि चढती चढती बारिजै । लकड़ी खैर वर की बारिजै ॥
चौंसठि पहर दीजिये आग । रात द्यौस ताके ढिग जाय ॥
शीतल स्वांग दीजिये हौन । तब उतारिके खोले दौन ॥
ऊपर की हांडी सत होय । तरहर खरलि जानि जैलोय ॥
ता सतसम कपूर रस लेय । शंखद्राव सों सोखन देय ॥
द्वै दिन घालि खरल घसलेय । औषधि पुनि शीशी में देय ॥
यंत्र खारिका लेय पचाय । शीशी फेर फेर के राय ॥
जैसे बैठि तहनसी जाय । ऐसी भांति सिद्धि ह्वै जाय ॥
आधी रत्ती खायगो सोय । जाके होथ बहुतसी जोय ॥
तबही करै चन्द्र की कांति । रोगन दूर करै बहु भांति ॥
अपसमार मन्दाग्नी जोय । कुष्ठ अठारह छिन में जाय ॥
सन तेरह चौरासी बात । कास श्वास नासै जा खात ॥
दन्तरोग मुखरोग नसाय । पीनस और सिरोवर्त जाय ॥
विधि जो रोग मानस कीन । ते सब या औषध आधीन ॥
रस कल्यान या रस को नाम । सो आवैहै सबन के काम ॥
जैसी जुगति कही जु बखानं । जो ऐसी करसकै सुजान ॥
यह निहचै के जानौ सन्त । दुख दारिद्र भाजै छिनमंत ॥
यह रसरतनागरे कही । कीनी वंगसैनते सही ॥
(रससागरबड़ा)

तथा च

हरताल को भेड़ के दूध में ७ सात दिवस तक खरल में घोटे फिर जमालगोटे के तैल में खरल करनी तैल हरिताल से दूना लेना आतशीशी में भर के अष्ट प्रहर अग्नि देनी फिर तैल में खरल करनी और बारह प्रहर आग देनी फिर खरल करके १६ सोलह प्रहर की आग देनी जब तक अधस्थ न होवे तब तक बारंबार अग्नि देणी, जब सब अधस्थ हो जावे तब काष्ठोदुम्बर के क्वाथ से कुष्ठी को देणी. १ एक रत्ती ऊपर से दुग्ध घृत पिलावे इस प्रकार कुष्ठी को सात दिन देणी लवण नहीं देना। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा च

पीरे पान आक के आनि । कूट निचोर लेय रस छानि ।।
ले हरताल टंक चालीस । उह रस खररे पुट इकईस ।।
रसरतनागरे मतलह्यौ । यंत्रखारिका कविजन कह्यौ ।।
मन्दी आग पहर द्वैचारि । चार पहरभर अगिन पजारि ।।
चार पहर ज्यों जठरा कही । गुरुप्रसाद ग्रंथन में लही ।।
इही भांति कै सीसी तीन । चंदिया बैठि जाय गुनलीन ।।
गुन अनिता को सकै बखानि । यह हरताल शुद्ध समजानि ।।
मंडल कोची कुष्ठ न रहै । रकतविकार जाय कवि कहै ।।
(रससागर)

तथा च

रस सैमरि फूलनि को लेहु । सत्तरि पुट हरतारहि देहु ।।
खरल सूत मुख जाय ह्वै छार । जोर सुदीजै सत्तरिबार ।।
बारह पहर बालुका आगि । शीशी के नारे उडलागि ।।
पुनि सत खरले वेही रीति । सैमर के रससों करि प्रीति ।।
पहिलीसी विधि जाते सही । सीसी सात पंच कविकही ।।
तांबो श्वेत करै छिनमास । बंगनीर सौखेगो सात ।।
रस रतनाकर कही बखानी । करमतनी गति विधि ना जानि ।।
कुष्ठ अठारह रहै न गात । सनि तेरह चौरासी बात ।।
(रससागर बड़ा)

तथा च

ले हरताल सेरभर मीत । जाके तबक होय अतिपीत ।।
अंडी कीकर मींगनी पाय । एक सेर जेताके आय ।।
पाके पान गोदरी आनि । तिनहिं दोंच रस लीजै छानि ।।
ता रस खरलि पंच कवि कहै । तीस पहर ज्यों हाथ न रहै ।।
आध सेर सीसीमें भरै । मुद्रिका करै जु खरिका धरै ।।
चढती चढती आगिजु कही । सोरह पहर रैन दिन सही ।।
सीतल भये लेहु सब फोरि । खरल मांहि पुनि देय बहोरि ।।
बहुरचो रस जु प्याज को लेय । पुनि जु पहर बारह भरदेय ।।
जाय सातईं सीसी बैठि । ताके रहै लच्छिमी पैठि ।।
जापै कृपा धनीकी होय । इह विधिकों कर जाने सोय ।।
(रससागर बड़ा)

तथा च

पल पांचक लीजै हरताल । लेहु सिरस की पल भर छाल ।।
खरल करै सुखै के पीस । पुनि सीसी घाले कवि ईस ।।
जंत्रबालुका में सो धरै । तामें मुखहि न मूदे करै ।।
पुनि तातर हर देय जराइ । पहरकर मांहि नीर हो जाइ ।।
जब जाने पिघलो हरताल । चार टंक तब सोरा डाल ।।
दूरि भयेते सोरा मेलि । परतहि अग्नि में करिहै पेलि ।।
जानो निकस गई जब झांक । तव मुद्रा कर शीशी ढांक ।।
बारह पहर बारि कठफारि । तब नीचै बैठे हरतारि ।।
जाके ऊंचे भाग लिलार । ता पाछै बैठे हरतार ।।
कुष्ठ हरै सब रक्तबिकार । और बात जाने करतार ।।
(रससागर)

तथा च

सेत काच तबकी हरतार । ग्रंथ देखि कहै सैदपहार ।।
तब तेजाब साबुन को आन । इकईस पुट खरलियो सुजान ।।
सीसी आगि दीजिये तिसी । सोरह पहर जानिये जिसी ।।
जंत्रबालुकाकी यह बात । सीतल भये फोरिये प्रात ।।
पुनि लतु ले खरले उहि नीर । बारह पहर सुनै बलवीर ।।
जितने खरल आगि दे तिसी । सीसी आठ जानिजै इसी ।।
जो शुभ कर्म होय तातनै । तरहर बैठे कविजन भनै ।।
खाये वृद्ध तरुण उनहार । अरु शरीर के जांहि विकार ।।
(रससागर बड़ा)

तथा च

समकै लै पारो हरतार । खरल घालि तब करै विचार ।।
पुट इकईस नींब के देय । इकईसी पुट ग्वारि के गनेय ।।
जितनौं थूहो तितनौं आकु । देहु दूध पुट पहिले ताकु ।।
घालि कचहरी मुद्रा करै । बारह पहर बालुका धरै ।।
ऐसी सीसी तीन चढाय । जौ लों बैठि तहनली जाय ।।
मानुस देह रोग हैं घनै । याके खाये ह्वैं सब मनै ।।
(रससागर बड़ा)

तथा च

लै पल पांच तवक हरतार । सूत एक पल यहै विचार ।।
घसि कजरीकी बीनुकताय । एक पहर ज्यों अतिखरराय ।।
ता पाछे जु नीब के पान । नीर बांटि के बस्तर छान ।।
वा रस सौ १०० खरै यह रीति । बारह पहर जाइजो बीति ।।
बहुरि सुखाकरि सीसी भरै । मुद्राकै पुनि सूखन धरै ।।
जंत्र बालुकामें सो धरै । आगि पहर द्वै मन्दी करै ।।
पुनि चढती चढती वे आगि । सोरह पहर रैन दिन जागि ।।
आठ पहरलों छुवै न कोइ । जैसे सीसी शीतल होइ ।।
तब सीसी देखिये उघारि ।। पारो ताल उडि लागे नारि ।।
लीजै तबहिं कचहरी फोरि । वो ही रसखररिये बहोरि ।।
खरलि बहुरि पहिली मरजादि । संख्या जैसी कही है आदि ।।
याको है पन्द्रह की आगि । पुनि औषध नारै उडि लागि ।।
बहुरि खररियो ग्यारह जाम । ग्यारह पहर आगि ते ताम ।।
पुनि दस खररि दसैंदे आगि । इस विधि पहर करो सब भागि ।।
चौदह सीसी बैठे सोय । इह विधि जो तालहि सत होय ।।
चौदह दिन तंदुल भरि खाय । ना से कुष्ठ जे बुरी बलाय ।।
तीनों जुर तेरह सनिपात । अपसमार छिन लगे न जात ।।
और बाय चौरासी जिती । खायेते सब नासैं तिती ।।
जो शुभ करम होय ता तनै । सो वैसे करै कविजन भनै ।।
जो तरहर बैठे हरतार । तौ निहचै तूठे करतार ।।
(रससागर बड़ा)

तथा च

रस हरतार संखिया होय । आना चार चार पल लोय ।।
आक दूधसों बारह पास । खरलत गुनी न होय उदास ।।
पुनि बारह थूहे को छीर । बारह छेरी को बिन नीर ।।

चौथे बहुरि भेडको आनि । यहै बहुरि बारह ज्यों जानि ॥
सुखै सुकैहु चारि पुट देय । तब जु कचहरी मांहि भरेय ॥
अगिन पहर बारह की कही । ऐसी गुरुग्रंथन में लही ॥
जैसी जुगति एककी कीन । गुनी करीये सीसी तीन ॥
चांदी वैठि तरहटी जाय । याकै गुन पहुमी न अमाय ॥
इतनेही में जाने अजान । रसरतनागर कही बखान ॥
या औषधि को खावे हेत । तांबा को करि जाने सेत ॥
(रससागर बड़ा)

कुश्ता हरताल व शिंजर्फ (उर्दू)

हरताल वर की एक तोले को अव्वल बरगद की डाढ़ी के चार तोले नुगदे में देकर और इसके ऊपर एक पार्चे का टुकड़ा लपेटकर रोगन तलख में दो घंटे तक पकावे बादहू अलहदा करके हुलहुल बूटी के एक सेर नुगदे में हड़ताल मजकूर देकर खूब मजबूत कपरौटी करके पांच सेर चीथड़े (पार्चा बोसीदह) को आंच दे जब सर्द हो जावे निकाल ले, निहायत उमदा बरंग सफेद कुश्ता बरामद होगा, हुलहुल एक जाड़ का नाम है कद एक हाथ पत्ते छोटे फली बारीक पैदायस मौसम बरसात में इसी तरकीब से शिंजर्फ कुश्ता हो सकता है आजमूदा है। (मुफहा ७ किताव अखबार अलकीमियां १६/३/१९०५)

कुश्ता हरताल चन्दर अरकों में घोट टिकिया बना ढाक की खाक में (उर्दू)

हरताल वर्की पाव भर पुख्ता को अव्वल शीर मदार १२ तोले में खरल करे बादहू शीर जकूम (डुंडथूहर) २२ तोले में फिर पाव भर कुचला लेकर दो सेर पानी में पकावे, जब सेर भर पानी रह जावे तो बदस्तूर हरताल में जज्ब करे, अजाँबाद अफयून दो छटांक आधसेर पानी में इसमें सोख्त करे, इस तरह यकेवाद दीगरे हस्वजैल बूटियों का पानी हडताल में खुश्क करे, इस तरह भांगरे का दो सेर पानी भी इसमें सोख्त करे, इस तरह यकेवाद दीगरे हस्वजैल बूटियों को पानी हडताल में जज्व करके बारीक टिकियां बना लें, अर्क सम्हाल ऽ।। सेर, अर्क हाथी शुंडी ऽ।। सेर, अर्क शाह तरह ऽ।। सेर फिर इन टिकियों को एक सबूचह गिली में खाकिस्तर पलास ४ सेर देखकर सबूचह को भजवूती के साथ गिलेहिकमत करे, जब खुश्क हो जावे देगदान पर रखकर सोलह पहर तक नीचे तेज आंच दे, बाद सर्द होने के निकाल ले, हडताल बरंग सफेद कुश्ता बरामद होगी, खुराक एक सुर्ख, यह कुश्ता हस्बजैल मर्जो को फायदा करता है, कुव्वत वाह के लिये बालाई में रखकर सादा पानी के साथ, इमसाक के लिये जायफल के साथ, पुरानी आतिश के लिये, पान के साथ, जिस औरत का हैज न बंद होता हो, शहद के साथ पुराने ताप के लिये सत्त गिलोइ के साथ जिसने कच्ची हरताल खा ली हो, आकरकरा के साथ, धातुजारी के वास्ते मिश्री के साथ, बवासीर के लिये जौखार ३ माशे कंद स्याह यक तोला के साथ, आँख के दर्द के लिय रोगन जर्द के साथ, (बाकी आयन्दा) (मुफहा ४ अखबार अलकीमियां १/६/१९०५ ई०)

कुश्ता हरताल अर्कों में घोट टिकिया बना ढाक की खाक में (उर्दू)

लीजिये हरतालवर्की पावभर, पीसिये उसको खरल में डालकर ।
बूटियां जिनका बताएं हमपता, लीजिये उन से अरक हर एकका ।
एक बूटी के अरक में रोज, पीसते रहिये उसे अनेक रोज ।
कर चुको हर एक अर्क में जब खरल, जर्रा जर्रा इसका हो पानी में हल ।
पतलीपतली इसकी फिर टिकियां बनाउ, सायेमें इनको हिफाजतसे सुखाउ ।
इकगिली बर्तन में लेकर सेर पांच, भर के खाकितर पलास दे दीजै आंच ।
आंच को जब हो चुके सबा बहर, फिर निकालै आग ठंडी देखकर ।
कुश्ता बन जावेगा मिस्ल सीमे खाम, दर्दमंदो के बहुत आवेगा काम ।
बूटियां यह हैं बता देते हैं हम, नज्म में कर देते हैं इनको रकम ।
भांगरा, जक्कूम, बिसखपरा, कुंवार, ब्रह्मडंडी, हाथीशुंडी और मदार ।
सात यह है आठवीं है काच पांच, याद करने में न कीजै तीन पांच ।
निस्फ रत्ती इसका मिकदारे खुराक, सत गिलोके साथ तप हो जाइ नाक ।
हींगसे इसको मिलाकर खाइये, मुखलिसी दर्देशिकम से पाइये ।
दर्दसे बेताव हों आंखे अगर, काली मिर्च इस्में खाओ डालकर ।
खाइये परमेह में हल्दी के साथ, रोकिये फीले रवां जल्दीके साथ ।
मिलके हो जल नीमसे तासीर यह, हो जजामीके लिये अकसीर यह ।
कुव्वते मर्दी हो वाह हो बेश्तर, तुख्मे उटंगन इससे मिलजावे अगर ।
(सुफहा नं० १६ अखबार अलकीमियां ।१६/६/१९०५)

कुश्ता हरताल अकसीरी (उर्दू)

सरगीन गोकसे अर्क टपकाकर उस अर्क को जेरनेख में लपेटकर दर्मियान एक बेंगन के कपरौटी करके आग नरम देवे, सात बेंगनों में इसी तरह करने से कलई कजा कर देता है और इक्कीस बार करने से मिस को रंग देता है। (अजव्याज हकीम मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी)

कुश्ता हरताल अर्क घीग्वार में घोट टिकिया बना पीपल की राख में आंच हांडी में (उर्दू)

सूर्मा बराइ बुखार हरकिस्म हरताल तबकी २ तोले आब घीग्वार से खरल करके टिकिया बनाकर साये में खुश्क कर ले और खाखिस्तर पीपल दरख्त को एक हंडिया में भर कर दर्मियान में टिकिया मजकूर को रखकर सरपोश देकर मुंह गिले हिकमत करें, आठ प्रहर नीचे आंच जलावे, कुश्ता हो जायगा। (सुफहा ४१ किताब अखबार अलकीमिया १६/४/१९०५)

हरताल भस्म

मीठे सेव के रस में हरताल तबकी साबूत भस्म होती है।

हरताल के सत्त्वपातन की विधि

कुलित्यक्वाथसौभाग्यमहिष्टाज्यमधुप्लुतम् । स्याल्यां क्षिप्त्वा विदध्याच्च मल्लेन छिद्रयोनिना ॥५१॥ सम्यङ्निरुध्य शिखिनं ज्वालयेत्क्रमवर्द्धितम् । एकप्रहरमात्रं हि रंध्रमाच्छाद्य गोमयैः ॥५२॥ यामान्ते छिद्रमुद्घाटच दृष्टे धूमे च पांडुरे । शीतां स्थालीं समुत्तार्य सत्त्वमुत्कृष्य चाहरेत् ॥५३॥
(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कुलथी का क्वाथ, सुहागा, भैंस का घृत और शहद इनसे हरिताल को घोटकर हांड़ी में भर देवे और उस हांड़ी के मुख पर छेदवाला ढकना ढांक मुद्रा कर देवे, फिर एक प्रहर तक मन्द मध्य और तीक्ष्ण क्रम से अग्नि देवे और छिद्र पर गोबर रख देवे, एक प्रहर अग्नि देने के बाद गोबर को हटाकर छिद्र द्वारा देखे कि जब सफेद धुआं निकले तब फिर गोबर से छिद्र को बन्द कर देवे और शीतल होने पर हांड़ी को उतार कर सत्व को निकाल लेवें॥५१–५३॥

तथा च

शुद्धचूर्णस्य पादांशं मर्दयेन्नवसादरम् । चूर्णं द्विगुणतोयेन तत्तोयं निर्मलं पचेत् ॥५४॥ शनैर्लवणपाकेन यावत्तल्लवणं भवेत् । अथ तत्तालकं शुद्धं पादटंकणसंयुतम् ॥५५॥ टंकणार्द्धेन तच्चूर्णं मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः । शरपुङ्खाद्रवैरेव शुद्धं तत्कूपिकोदरे । पचेद्यामाष्टकं यावत्सत्त्वरूपेण तिष्ठति ॥५६॥ (एक वैद्य की सम्मति)

अर्थ–बिना बुझा हुआ चूना एक सेर नौसादर एक पाव इन दोनों को २।। ढ़ाई सेर जल में घोल लेवे। इस प्रकार तीन दिवस तक रखा रहने देवे फिर उस पानी को छानि लेवे जिसमें चूने और नौसादर का मैला अंश न हो उस निर्मल पानी में पकावै, जब गाढ़ा हो जाय तब खार निकास लेवे तब हरताल एक सेर, सुहागा आध पाव और तीन पैसा भर पूर्वोक्त बनाया हुआ खार इन तीनों को घीगुवार के रस से और सरफोंका के रस से दो दो पहर घोटि शीशी में भरै और बालुकायन्त्र से आठ पहर की आंच दे। सत्व निकासे इसमें सन्देह नहीं।।५४–५६।।

तथा च

जैपालसत्त्ववातारिबीजमिश्रं च तालकम् । कूपीस्थं बालुकायंत्रे सत्त्वं मुंचति यामतः ।।५७।।

(एक वैद्य की सम्मति)

अर्थ–हरताल आध सेर, जमालगोटा का बीज आध पाव, अण्डी के बीज आध पाव, इनको एक पहर घोटि के सीसी में भरै और उसका मुख बन्दकर वालुका यंत्र द्वारा एक प्रहर की आंच देवे, सीसी के ऊपर जो लगा हो उसको हरताल का सत्त्व समझ कर निकाल लेवे।।५७।।

तथा च

हरताल को सात दिन कागजी नींबू के रस से, सात दिन घीगुवार के रस से, गोमीके रस से सात दिन, गंगतिरिया के रस से सात दिन घोटि पैसा पैसा भर टिकिया करै और घाम में सुखावै उनको डमरूयंत्र में रख आठ पहर आंच दे देवें, सत्त्व उड़कर हांडी के गले में लग जायेगा, उसको चाकू से खुरच लेवे, उस सत्त्व को आक के दूध से एक दिन घोटि कर टिकरी कर घाम में सुखावै, फेर डमरु यन्त्र में रख कर आठ पहर की आंच देवे, इतनी आंच देने पर यदि टिकरी काले रंग की नहीं आवे तो फिर एक दिन आक के दूध से घोटि टिकरी बांधि सुखा लेवे फिर उसी राख में रख पूर्वोक्त रीति से मुख मुद्राकर बारह प्रहर की आंच दे फिर उस टिकरी को शराव संपुट में रख दो सेर जंगली आरने कंडों में अग्नि दे शीतल होने पर निकाल लेवे, दो रत्ती खावे तो रक्त विकार दूर हो, श्वास कास दूर हो, शीत दूर हो, धातु पुष्टि होय, ये दोनों क्रिया कल्याण के लिये अनुभूत है, इसमें दोष नहीं है।

हरताल भस्म

मधुतुल्ये घनीभूते कषाये ब्रह्ममूलजे ।। त्रिवारं तालकं भाव्यं पिष्ट्वा मूत्रेऽथ माहिषे ।।५८।। उपलैर्दशभिर्देयं पुटं रुद्ध्वाथ पेषयेत् ।। एवं द्वादशधा पाच्यं शुद्धं योगेषु योजयेत् ।।५९।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–ढ़ाक की जड़ का क्वाथ बनाकर उसके तुल्य सहत मिलाकर औटावे, जब गाढ़ा हो जाय तब उतार कर रख लेवे उससे हरताल को तीन बार भावना देवे फिर भैंस के मूत्र से तीन भावना देवे, सुखाकर संपुट में रख दस उपलों की पुट देवे। शीतल होने पर पुट से निकाल पीस लेवे फिर पूर्वोक्त विधि से भावना देकर बारह पुट देवे तो हरिताल भस्म होगा, इसे समस्त योगों में लावे।।५८।।५९।।

हरताल के सत्त्वपातन की विधि

पलालकं रवेर्दुग्धैर्दिनमेकं विमर्दयेत् ।। क्षिप्त्वा षोडशिकातैले मिश्रयित्वा ततः पचेत् ।।६०।। अनावृत्ते प्रदेशे च सप्तयामावधि ध्रुवम् ।। स्वांगशीतमधःस्थं च सत्त्वं श्वेतं समाहरेत् ।।६१।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–एक पल हरिताल को एक दिवस तक आक के दूध से घोट एक तोला तिल का तैल मिलावे, उसको शीशी में भर बालुकायंत्र में सात प्रहर तक बंद हवा के मकान में पकावे, स्वांगशीतल होने पर नीचे जमे हुए सफेद सत्त्व को निकाल लेवे।।६०।।६१।।

तथा च

छागलस्याथ बालस्य बलिना च समन्वितम् । तालकं दिवसद्वंद्वं मर्दयित्वातियत्नतः ।।६२।। युक्तं द्रावणवर्गेण काचकूप्यां विनिक्षिपेत् । त्रिधा तां च मृदा लिप्त्वा परिशोष्य खरातपे ।।६३।। ततः खर्परकच्छिद्रे तामधां चैव कूपिकाम् । प्रवेश्य ज्वालयेदग्निं द्वादशप्रहरावधि ।। कूपीकंधस्थितं शीतं शुद्धं सत्त्वं समाहरेत् ।।६४।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–हरताल से चतुर्थांश गंधक को लेकर बाल बकरे के मूत्र से दो दिवस तक घोटे फिर द्रावणवर्ग (मधु–घृत–सुहागा–चरबी गोमूत्र) से मिश्रित कर काच की शीशी में भर देवे उस शीशी को तीन बार कपरौटी से लीप और तेज घाम में सुखा देवे फिर उस शीशी को खिपरे के छेद पर रख बालुका यंत्र द्वारा बारह पहर तक आंच लगावे। स्वांगशीतल होने पर शीशी के गले में लगे हुए शुद्ध सत्त्व को निकाल लेवे।।६२–६४।।

तथा च

पलार्द्धप्रमितं तालं बद्ध्वा वस्त्रे सिते दृढे । बलिनालिप्य यत्नेन त्रिवारं परिशोष्य च ।।६५।। द्राविते त्रिफले ताम्रे क्षिपेत्तालकपोटलीम् । भस्मनाच्छादयेच्छीघ्रं ताम्रेणाऽऽवेष्टितं सितम् ।। मृदुलं सत्त्वमादद्यात् प्रोक्तं रसरसायने ।।६६।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–आधा पल (दो तोले) हरताल को लेकर छोटे छोटे टुकड़े कर सफेद कपड़े में बांध ऊपर से सुखा सुखाकर तीन बार गंधक का लेप कर गले हुए तीन पल तांवे में उस पोटली को डाल देवे और शीघ्र ही ऊपर से राख से ढ़क देवे। स्वांगशीतल होने पर निकाल लिपटे हुए तांवे के पत्रों पर गले हुए सफेद और कोमल सत्त्व को निकाल लेवे। यह हरिताल का सत्त्व समस्त रसरसायनों में वर्तन योग्य है, इसमें सन्देह नहीं।।६५।।६६।।

तथा च

चूना ८ पहर भिगो छोड़ना फिर निकाल लेणा। उस पानी से दरड की हुई हरिताल धोनी और उस चूर्ण में और पाणी छोड़ना फिर नितार कर उससे धोणा, ऐसे तीन बार धोणा फिर सुखाकर एरंडबीज हरिताल से आधे पाकर खूब खरल करना। खरल करके शीशी में पाणा। पर शीशे को मिट्टी में मूज मिलाकर कूटना उससे लीपना। लेप बराबर एकसा होवे, उस शीशे को वालुकायंत्र में आग देणी। पहिले शीशे का मुख वंद नहीं करना जब पीतिमा उड़ जाय तब बन्द करना, बन्द करके आठ पहर की आग देणी, ऊपर लग जायेगा, सौ उतार लेणा, आधे सत्त्व होंगे फिर उन सत्त्वों को नींबू के रस में वा सिरकें में ८ पहर खरल करके फिर उडाणे ।। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

हरताल कायमुल्नार करने की उमदा तरकीब चूने से (उर्दू)

हरताल वर की दो तोले को ५ सेर चूनाकली आबना रसीद में देकर चूने के ऊपर पानी छिड़के। धुआं और गुवार मा बहुत देर तक निकलता रहेगा, जब चूना बिलकुल शिगुफ्तः होकर सर्द हो जावे हरताल चूने में से बाहर निकाल ले, इसी तरह दस बारा दफा अमल करें और हर बार चूना ताजा लेना चाहिये, हरताल कायम हो जावेगी। (सुफहा ३१ किताब इसरारुलकीमियां)

तथा च

ले हरताल टंक चालीस । धात्री गंधक मासे बीस ।।

दोऊ बांटि जु एकतधरै । घृत में सानि के टिकिया करै ॥
चुपर लुहेडा घरिया मांह । घृत मेलिये दश पल तांह ॥
आग घरी छः मन्द करै । पुनि उतारि सीसी को धरै ॥
जब रातो दीसे हरताल । पुनि उतारके पानी घाल ॥
ता रकेस तारस को नाम । जो खायेते बाढे काम ॥
तेरह सनि चौरासी बात । अरु सब रक्त विकार बिलात ॥
लघु किरिया दिन दीरघ करै । ते निवरे जे जाते गरे ॥
(रससागर बड़ा)

अथ हरताल का अग्निस्थायी सत्त्व

शुद्धं तालं समादाय द्रोणपुष्पीरसैर्भिषक् ॥ दिनानि सप्त संमर्द्य यन्त्रे विद्याधरे पचेत् ॥६७॥ यामानष्टौ पचेदग्नौ स्वांगशीतलमुद्धरेत् । ऊर्ध्वपात्रगतं सत्त्वं गृहीत्वा मर्दयेत्पुनः ॥६८॥ त्रिदिनं तद्रसैरेव ततो यन्त्रे पुनः पचेत् । तदधो ज्वालयेदग्निमष्टयाममतन्द्रितः ॥६९॥ एवं पुनः पुनः कुर्याद्यावत्सत्त्वं स्थिरं भवेत् । स्थैर्यं सर्वस्य नियतं जायते सप्तमेऽहनि ॥७०॥ अष्टमेर्कस्य दुग्धेन मर्दयित्वैकवासरम् । यामानष्टौ पचेदग्नौ कुर्यादिवं त्रिवारकम् ॥७१॥ गलत्कुष्ठे तथा शोथे वातरक्तसमुद्भवे । वातरक्तेषु सर्वेषु योज्यं गुंजाद्वयोन्मितम् ॥७२॥ चोबचीनीभवं चूर्णं गृहीत्वा टंकमात्रकम् । गुंजामात्रेण तालेन मिश्रितं मधुना लिहेत् ॥७३॥ तस्य नश्यति मूलेन फिरंगाख्यो महागदः । व्रणाः शुध्यन्ति सर्वेऽपि फिरंगोत्था न संशयः ॥ शीघ्रं श्लेष्मामयं हन्यादनलं च विवर्धयेत् ॥७४॥

अर्थ–हरताल शुद्ध खरल में डारि सात दिन तक द्रोण पुष्पी (गोमा) के रस में घोटे, जब गाढ़ा हो जावे तब पैसा पैसा भरि की टिकरी बांधि घाम में सुखावै, डमरु यन्त्र में घालि आठ पहर आंच देय स्वांग शीतल होने पर हांड़ी में जो सत चिपटा उसको चाकू से निकाल लेवे फिर उस सत्व को गोमा मे रस से तीन तीन दिन घोट टिकिया बांध घाम में सुखावे और डमरू यन्त्र में आठ पहर आंच देवे तब हरताल सिद्ध होय। इस हरताल भस्म की दो रत्ती की मात्रा से लेकर आरम्भ करे, अंगुली गलनेवाले वातरक्त में देवे तो वातरक्त दूर होता है। चार माशे चोबचीनी का चूरण में एक रत्ती हरताल मिला के शहद के साथ खावे तो गरमी दूर हो गरमी का पीब लोहू सूख जाता है, गरमी वेग रुक जाता है, दर कफर हो भूख खूब लागे।।६७–७४।।

अकसीर शमसी व अकसीर बदनी

(अव्वल हरताल मोमियां दाफै जजाम व नामर्दी, दोयम रोगन नौसादर कायम हलक्रुननः अजसाद सोयम हर दोसे रोगन हरताल उर्दू)

हरता बरकी ६ माशे की सालम डली लेकर ७ रोज तक शीर मदार में भिगो रखे बाद निकाल करके कपड़े से शीर वगैरः साफ कर दे जो अच्छी तरह साफ हो जावे। बाद नौसादर ईरानी, नौसादर पैकानी, नौसादर हैवानी, हर सह हम वजन लेकर बारीक सफूफ बनाकर रख ले फिर हरताल को शहद खालिस में आलूदह करके उस पर ४ रत्ती सफूफ मजकूर का छिड़क दे और लेमूं कलाँ के अन्दर रखकर ऊपर से गिले हिकमत कर लेवे और सेगन बुज की अखगर आग में रखकर २० मिनट से ३० मिनट तक तसव्वुर करे बाद निकालकर गर्मगर्म नुगदा या गिलोल को तोड़ कर दुबारा शहद में आलूदह करके इस पर ४ रत्ती सफूफ छिड़क कर लैमूं कलां में रखकर गिले हिकमत करके बदस्तूर अखगर आग में तश्विया करे। इसी तरह एक तद मर्तबः तश्विया करना होगा, यह भी याद रहे कि ६–६ माशे की दो डली लेकर बदस्तूर तैयार करना चाहिये जो पूरा एक तोले वजन हरताल का तैयार हो जावे दो अहद लैमूं में होगा यानी ६ माशे एक में और ६ माशे दूसरे में क्योंकि एक लैमूं में एक तोला हरताल का होना मुश्किल है इसलिये अलहदा अलहदा तैया करन लेना चाहिये, बाद असली नुकरा ३ तोले लेकर उसकी कटोरी यानी थाली इस कदर बड़ी बनावे जिसमें ३ तोले पानी पड़ सके फिर तवा आहनी या गिली पर ५ सेर रेत डाल कर वह कटोरी इस पर रख दे। इसमें हरताल मजकूर रख दे और चूल्हे पर रखकर नरम नरम आग जलावें और अर्कपित्ता रोहू का चोवा डालता जावे जबकि एक सेर पित्ता रोहू जज्जब हो तो आग बंद करके तवा नीचे उतार लेवे, सर्द होने पर मुलाहिजा फर्मावे, हरताल मोमिया होगा। बकदर एक सुर्ख मिस या नुकरा एक तोले पर तरह करोगे तो वहुक्म खुदा हस्बनशा कामयाबी होगी और शायद अगर हरताल मोमियाँ का तेल करना मँजूर हो तो रोगन नौसादर का चोया देकर कर लेवे। बरंग सुर्ख तैल तैयार होगा जिसकी तरकीब यह है नौसादर देशी ८० तोला। बारीक पीसकर के हांडी गिली गिले हिकमत शुदः में डालकर उसमें ८ सेर बोल खरस्याह का डालकर बंद करके तीन मन लीद अस्प में जमीन के अन्दर दफन कर लेवे, चालीस रोज के बाद निकाल कर हांडी को चूल्हा पर रखकर नरम नरम आग जलावे और सरपोश को खोलकर देखता जावे जब बोल खुश्क होकर नौसादर बाकी रहे तो नीचे उतार कर बरतन चीनी में निकाले। बाद साव का हांडी या दूसरी हांडी गिले हिकमत करके उसके नीचे तली में सूराख मिस्ल छलनी के करके नौसादर को इसमें डालकर रखे। बाद गजपुट गढ़ा खोदकर उसके अन्दर एक खुर्द गढ़ा बनावे उस छोटे गढ़े में प्याला चीनी का रखकर उसके ऊपर हांडी मजकूर को रख दे जो किनारा थाले से हांडी मिल जावे और सूराख थाले के अन्दर रहे। बाद हांडी के चारों तरफ एक मन रेत डालकर उस पर एक मन लीद अस्प खुश्क डाल दे और आग लगावे जबकि आग सर्द हो तो हिफाजत से हांडी को उठा कर प्याला निकाले, इसमें तेल होगा। वह तैयार शुदः तेल कढ़ाई में डालकर नरम नरम आग जला कर खुश्क कर लेवे तो वह नमक सफेद हो जावेगा। बस दुवारा नमक तैयार शुदः को बदस्तूर अव्वल सूराखदार हांडी में डाल कर गिले हिकमत करके गढ़े के अन्दर प्याले के ऊपर रखकर और एक मन रेत का डाल कर इस पर एक मन लीद अस्प की आग देवे। इसी अमल से नौसादर का तेल बरंग सुर्ख और मिस्ल शहद के कवाय होगा। बस यह हमेशा ही तेल की सूरत में रहेगा। अब हरताल मोमियां को करछी आहनी में पार्चा अभरक पर रखकर चूल्हे पर रख दे। नरम आग जलाकर चन्द कतरा तेल नौसादर के डालते जावे तो इस अमल से तेल हरताल सुर्ख रंग का हो जाता है। बस तजरुबा शर्त है तैयार करके देखे यह भी याद रहे कि हरताल मोमियां शुदः नामर्द को जवांमर्द और जजामवाले मरीज के लिये वमंजिला अकसीर है चन्द रोज में जजामी अच्छा हो जाता है।

नोट–नौसादर बदस्तूर तैयार किया हुआ हरेक धातु कायमुल्नार को मोमियां और तेल कर देता है। मेरा तजरुबा शुदः–अलमुश्तहर हकीम सय्यह गुलामअलाशाह मालिक शफा खाना हैदरी करांची। (सुफहा १० व ११ अखबार अलकीमियां १/९/१९०७)

रोगन हरताल शीरमबार का जुज पतालयंत्र से (उर्दू)

रोगन हडताल किसी गिली कूजे में जरेनेख जर्द दाखिल करके जर्फ मजकूर शीर मदार से पुर कर देवे फिर सरपोश से लबबंदी करके जमीन में ग्यारह रोज दफन रखे बादहू उसी दूध में हडताल पीस कर छोटी गोलियां वनाकर खूब खुश्क होने के बाद तार आहनी में पिरोकर सबूचह गिली में इसी तरह लटका दे कि तार सरपोश से पैबन्द हो और गोलियां का हिस्सा अन्दर से और तार का इन्तहाई हिस्सा नीचे रोजन के जरिये से बाहर निकला रहे और इसके नीचे शीशी रख दे। सबूचा के अतराफ और ऊपर ४ सेर (३२० तोले) मामूली पाचक जमा कर आग लगावे। इन्शाअल्लाह रोगन निकल आवेगा। आजमूदा है। (सय्यद अब्दुल करीम नं० ११ संस्कारबाग तिरचनापली सुफहा ११ अखबार अलकीमियां १/५/१९०५)

पारा शिंग्रफ हरतालादि मोमिया करने की क्रिया

चूनाकली अनभिज्ज १ सेर पक्का, लोटा सज्जी आध सेर पक्का, नौसादर पा १, शोरा पा १ सब भिन्न भिन्न बारीक करे गोमूत्र घड़ा १ चाटी १ में चूना आधा पावे बिछा देवे। उस पर और चीजें रख कर आधा चूना ऊपर पावे फिर ऊपर गोमूत्र पाकर जल्दी बंद करे। भाप न निकले, बाकी मूत्र पीछे से पावे हिलाकर बंद करे दूसरे दिन नितार कर पहले भांडे में पावे एवं तीन चार बार उसको पकावे, जब चिक्कण जैसा होवे तब उतारकर चीनी की थाली में पाकर रखे। रात को तरेल में द्रवित को शीशी में पा रखे सारा द्रवित कर लेवे। इस द्रव विचो आठ तोले चीनी के प्याले में पाकर चार तोले हरताल पाके नरम भूभल में पकावे, जब हरिताल जलरूप हो जावे तो उतार लेवे उसको थाली में पा रखे, रात को तरेल में रखे जल नितार लेवे बाकी हरिताल मोमिया रहेगा सो दवा हुई। एवं शिंग्रफ, संखिया पीत, मुश्ककपूर, संखियाश्वेत जिस्तमीठा, पारा द्रव से आधी चीज पाणी, इसी तरह सब चीजा बनानियां, मोमी सो निर्धूम हो नगिया पारद में जो वणेगा। आधा चावल १ तोले ताम्र पर पाणा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

अथ मैनसिल भेदके

मनःशिला त्रिधा प्रोक्ता श्यामाङ्गीकणवीरका । खंडाख्या चेति तद्रूपं विच्य परिकथ्यते ॥७५॥ श्यामा रक्ता सगौरा च भाराढ्या श्यामिका मता । तेजस्विनी च निर्गौरा ताम्राभा कणवीरका ॥७६॥ चूर्णीभूतातिरक्ताङ्गी सभाराखण्डपूर्विका । उत्तरोत्तरतः श्रेष्ठा भूरिसत्त्वा प्रकीर्तिता ॥७७॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–मैनसिल तीन जाति का होता है–श्यामांगी कणवीर का और खंडाख्या काली लाल और गौर वर्णवाली भारी हो उसे श्यामिका कहते हैं। जो गौर वर्ण से रहित चमकदार हो और ताम्र के समान वर्णवाली हो वह कणवीर का तथा रेत के समान लाल रंगतवाली और वजनदार हो उसे खण्ड मैनसिल कहते हैं। इनमें से उत्तरोत्तर अर्थात् पहले से दूसरी और दूसरी से तीसरी मैनसिल अधिक सत्त्ववाली होने के कारण उत्तम है॥७५–७७॥

मैनसिल के गुण

मनःशिला सर्वरसायनाग्र्या तिक्ता कटूष्णा कफवातहंत्री । सत्त्वात्मिका भूतविषाग्निमान्द्यकंडूतिकासक्षयहारिणी च ॥७८॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–यह मैनसिल समस्त रसायनों में श्रेष्ठ है और यह तिक्त कटु उष्ण कफ वात के नाश करनेवाली सत्त्वरूप भूत विष मन्दाग्नि खुजली कास और क्षय का नाश करनेवाली है॥७८॥

मनसिल का बयान (उर्दू)

मानसिल और हरताल का एक ही खास्सा है सिर्फ रग का फर्क है और वा एतबार रंग की तीन तरह की होती है। एक कोनलह जो करीला की तरह सुर्खी और जर्दी मिली हुई होती है, दूसरी सुर्खी माइल व स्याही होती है, तीसरी सुर्खी रंग गुल अनार की तरह उसको कन्नेरी कहते हैं, एमालकीमियां में यही आला दर्जे की है। (सुफहा अकलीमियां १६८)

अशुद्ध मैनशिल के दोष

अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रं च अशुद्धा कुरुते शिला । मंदाग्निं मलबन्धं च शुद्धा सर्वरुजापहा ॥७९॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अशुद्ध मैनसिल पथरी मूत्रकृच्छ मन्दाग्नि और कब्ज को करती है और शुद्ध मैनसिल समस्त रोगों को नाश करती है॥७९॥

मैनसिल की शुद्धि

अगस्त्यपत्रतोयेन भाविता सप्तवारकम् । शृंगबेररसैर्वापि विशुध्यति मनःशिला ॥८०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अगस्ति वृक्ष के पत्तों को कूट रस निकाले उससे सात बार मैनसिल को भावना देवे अथवा अदरख के रस की सात भावना देवे तो मैनसिल शुद्ध हो जायेगी॥८०॥

तथा च

जयन्तीभृंगराजोत्थरक्तागस्त्यरसैः शिलाम् । दोलायंत्रे पचेद्यामं यामं छागोत्थमूत्रकैः । क्षालयेदारनालेन सर्वरोगेषु योजयेत् ॥८१॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अरनी भंगरा और लाल अगस्त्य वृक्ष इन तीनों का रस निकाल हांडी में भर दोलायंत्र द्वारा एक प्रहर तक स्वेदन करे और इसी प्रकार १ एक प्रहर तक बकरे के मूत्र में स्वेदन करे फिर कांजी से धोकर समस्त रोगों में प्रवर्तित करे॥८१॥

मनसिल मुसफ्फा करने का तरीका (उर्दू)

अमल शमसी के वास्ते चीता कलां के फूल में ख्वाह सुर्ख हों या स्याह और चरबी में और अमल कमरी के वास्ते गुल सफेद चीताकलां और चरबी में साफ करे। (सुफहा अकलीमियां १७२)

मैनसिल के सत्त्वपातनविधि

अष्टमांशेन किट्टेन गुडगुग्गुलुसर्पिषा । कोष्ठयां रुद्ध्वा दृढं ध्माता सत्त्वं मुंचेन्मनः शिला ॥८२॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–मैनसिल और उस अष्टमांश लोहकीट इन दोनों को गुड गूगल और घृत के साथ घोटकर कोठी में रखकर धोंके तो मैनसिल का सत्व निकल आवेगा॥८२॥

तथा च

भूनागाधौतसौभाग्यमदनैश्च विमर्दितैः । कारवल्लीदलाम्भोभिर्मूषां कृत्वात्र निक्षिपेत् ॥८३॥ शिलां क्षाराम्लनिष्पिष्टां प्रधमेत्तदनन्तरम् । कोकिला–द्वयमात्रं हि ध्मानात्सत्त्वं त्यजत्यसौ ॥८४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कैंचुवा का सत सुहागा और मदन (मैनफिल) इन तीनों को करेल के पत्तों के रस से घोट मूषा (घरिया) बनावे उसमें अम्लवर्ग से पिसी हुई मैनसिल को रख सम्पुट दे और सुखाय एक प्रहर तक कोयलों की आंच में धोंके तो सत्व निकलेगा॥८३॥८४॥

सुरमा के भेद और गुण

सौवीरमंजनं प्रोक्तं रसांजनमतः परम् । स्रोतोजनं तदन्यच्च पुष्पांजनकमेव च ॥८५॥ नीलांजनं च तेषां हि स्वरूपमिह वर्ण्यते । सौवीरमञ्जनं धूम्रं रक्तपित्तहरं हिमम् ॥८६॥ विषहिध्माक्षिरोगघ्नं व्रणशोधनरोपणम् । रसाञ्जनं च पीताभं विषवक्त्रगदापहम् ॥८७॥ श्वासहिध्मापहं वर्ण्यं वातपित्तास्रनाशनम् । नेत्र्यं हिध्माविषच्छर्दिकफपित्तास्ररोगनुत् ॥८८॥ पुष्पांजनं सितं स्निग्धं हिमं सर्वाक्षिरोगनुत् । अतिदुर्धरहिध्माघ्नं विषज्वरगदापहम् ॥८९॥ नीलांजनं गुरु स्निग्धं नेत्र्यं दोषगदापहम् । रसायनं सुवर्णघ्नं लोहमार्दवकारकम् ॥९०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सुरमा पांच प्रकार का होता है। सौवीरंजन, रसांजन (रसोत), स्रोतोंजन (कालासुरमा), पुष्पाञ्जन (सफेद सुरमा), नीलाञ्जन। अब हम इनके पृथक् पृथक् रूप लिखते हैं; सौवीरनाम का अंजन धुएं के से रंग का होता है और वह सुरमा ठंडा और रक्तपित्तों को दूर करनेवाला है, विषरोगों में उपयोगी है, श्वास कास हिध्म का नाशक वर्ण को उत्तम बनानेवाला वातपित्त का नाशक है। स्रोतोंजन ठंडा चिकना कषैला मीठा और लेखन (साफ करनेवाला) नेत्रों को हित हिघ्मा विष वमन कफ रक्त पित्त रोग को दूर करता है।। पुष्पांजन सफेद चिकना ठंडा सब नेत्ररोगों का नाशक होता है अत्यन्त कठिन हिध्मा रोग विष के खाये से उत्पन्न ज्वर को दूर करता है और नीलांजन भारी चिकना नेत्रों के त्रिदोषज रोगों को निर्मूल करनेवाला रसायन सुवर्ण को भस्म करनेवाला और लोहे को कोमल करनेवाला है।।८५–९०।।

सुरमे की परीक्षा

वल्मीकशिखराकारं भंगे नीलोत्पलद्युति । घृष्टं तु गैरिकच्छायं स्रोतोजं लक्षयेद् बुधः ।।९१।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-उत्तम सुरमा वह है जो कि बमई के शिखर के समान हो तोड़ने पर नील कमल के समान चमक हो। और घिसने से गेरू के तुल्य वर्ण हो उसको पंडित स्रोतोंजन कहते हैं।।९१।।

सुरमे की शुद्धि

सूर्यावर्तादियोगेन शुद्धिमेति रसांजनम् ।।९२।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-सुरमे को सूर्यावर्त (हुलहुल) आदि के रस में घोटे तो सुरमा शुद्ध होता है।।९२।।

तथा च

अंजनानि विशुद्ध्यन्ति भृंगराजनिजद्रवैः ।।९३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–समस्त प्रकार के सुरमे जलभंगर के रस के साथ घोटने से शुद्ध होते हैं।।९३।।

सुरमे के सत्त्वपातन की विधि

राजावर्तकवत्सत्वं ग्राह्यं स्रोतोऽञ्जनादपि । मनोह्वासत्त्ववत्सत्त्वमंजनानां समाहरेत् ।।९४।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-समस्त सुरमों का राजावर्तक (रेउटी) और मनोह्वा (मैनसिल) के समान सत्त्व निकालना चाहिये।।९४।।

पारदबंधनयोग्य अंजन

गोशकृद्रसमूत्रेषु घृतक्षौद्रवसासु च । भावितं बहुशस्तच्च शीघ्रं बध्नाति सूतकम् ।।९५।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-सुरमें को गाय के गोबर का रस गोमूत्र घृत शहद और वैसा इनसे बहुत बार भावना देवे तो सुरमा पारे को शीघ्र बांध लेता है।।९५।।

मुरदासिंग की उत्पत्ति और भेद

हिमवत्पादशिखरे कंकुष्ठमुपजायते । तत्रैकं नालिकाख्यं हि तदन्यद्रेणुकाह्वयम् ।।९६।। पीतप्रभं गुरुस्निग्धं श्रेष्ठं कंकुष्ठमादिमम् । श्यामपीतं लघु त्यक्तं सत्त्वं नेष्टं हि रेणुकम् ।।९७।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-हिमालय पर्वत के पास पर्वत शिखरों पर कंकुष्ठ (मुरदासिंग) उत्पन्न होता है उनमें एक का नाम नालिक और दूसरे का नान रेणुक है, पीली चमकवाला भारी चिकना जो होता है उसे नालिक कहते हैं, यह उत्तम है। दूसरा जो रेणुकनाम का है व काले पीले रंग का हलका सत्वरहित होता है।।९६।।९७।

तथा च

हिमाचलैकदेशे तु कंकुष्ठमुपजायते । तदेकं नालिकाख्यं स्यादन्यद्रेणुकनामकम् ।।९८।। पीतप्रभं गुरु स्निग्धं कंकुष्ठं शिलया समम् । मृद्वतीव शलाकाभं सच्छिद्रं नालिकाभिधम् ।।९९।। रेणुकाख्यं तु कंकुष्ठं श्यामपीतरजोनिभम् ।त्यक्तसत्त्वं लघु प्रायः पूर्वस्माद्धीनवीर्यकम् ।।१००।। कंकुष्ठं रेचनं तिक्तं कटूष्णं वर्णकारकम् ।। कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम्।।१०१।।

(बृहद्योगतरङ्गिणी)

अर्थ-हिमालय पर्वत के किसी स्थान में कंकुष्ठ (मुरदासिंग) नाम का उपरस पैदा होता है यह दो प्रकार का होता है, एक नालिक और दूसरा रेणुक जो मैनसिल के समान रंग का हो, भारी चिकना अत्यन्त कोमल और लम्बी सीक के आकारवाला हो उसको नालिक मुरदासिंग कहते हैं और काली पीली रंग का रेत सत्वरहित और पूर्व से लघु और न्यून वीर्य का है, कंकुष्ठ दस्तावर चरपरा कड़ुआ गरम चहरे की सुन्दरता का करनेवाला कृमि सूजन उदररोग में गुल्म और अफरा के रोग को नाश करता है।।९८-१०१।।

कंकुष्ठ के विषय में विद्वानों का मत

कतिचित्तेजिवाहानां नालं कंकुष्ठसंज्ञकम् ।। वदन्ति श्वेतपीताभं तदतीव विरेचनम् ।। रसे रसायने श्रेष्ठं निःसत्त्वं बहुवैकृतम् ।।१०२।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-कुछ विद्वानों का यह सिद्धान्त है कि तेज चलनेवाले घोड़े होते हैं उनके नाल को कंकुष्ठ कहते हैं, वह अत्यन्त दस्तावर होता है, यह रस और रसायन में उपयोगी है और जो अच्छा नहीं होता वह सत्त्वरहित और बहुत विकारवाला है।।१०२।।

तथा च

केचिद्वदन्ति कंकुष्ठं सद्योजातस्य दन्तिनः । वर्चश्च श्यामपीताभं रेचनं परिकथ्यते ।।१०३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-और कुछ विद्वानों का मत है कि सद्योजात (जो उसी समय उत्पन्न हुआ हो) हाथी के बच्चे की जो काले पीले रंग की विष्ठा होती है उसको कंकुष्ठ कहते हैं वह दस्तावर कहाता है।।१०३।।

कंकुष्ठ के गुण

कंकुष्ठ तिक्तकटुकं वीर्योष्णं चारिरेचनम् ।। व्रणोदावर्तशूलार्त्तिगुल्मप्लीहगुदार्तिनुत् ।।१०४।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-कंकुष्ठ चरपरा कड़ुआ उष्णवीर्य अत्यन्त दस्तावर व्रण उदावर्त शूल गुल्म प्लीहा और बवासीर को दूर करता है।।१०४।।

कंकुष्ठ की शुद्धि

कंकुष्ठं शुद्धिमायाति त्रिधा शुंठ्याम्बुभावितम् ।। सत्त्वोत्कर्षोऽस्य न प्रोक्तो यस्मात्सत्त्वमयं हि तत् ।।१०५।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-कंकुष्ठ को सोंठ के क्वाथ के तीन बार भावना देवे तो कंकुष्ठ शुद्ध होता है, इसके सत्व खेंचने की विधि वर्णन नहीं की गई क्योंकि यह स्वयं सत्वरूप है।।१०५।।

विषनाश के लिये कंकुष्ठ सेवन विधि

भजेदेनं विरेकार्थं ग्राहिभिर्यवमात्रया ॥ नाशयेदामपूर्त्तिं च विरेच्य क्षणमात्रतः ॥१०६॥ भक्षतः सहताम्बूलैर्विसूच्यांसून्विनाशयेत् ॥ बर्बुरीमूलिकाक्वाथे जीरसौभाग्यकं समम् ॥ कंकुष्ठ विषनाशाय भूयो भूयः पिबेन्नरः ॥१०७॥

(रसरत्नसमुच्चय)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसाद सूनुबाबूनिरंजन-प्रसादसंकलितायां रसराजसंहितायामुपरसोपवर्णनं नाम पञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥५५॥

अर्थ-जिन मनुष्यों को कब्ज हो वह दस्तों के लिये एक जौ की बराबर-कंकुष्ठ का सेवन करे तो थोड़ी देर ही में आम को बाहर निकाल देता है, ताम्बूल के साथ भक्षण करने सें दस्तों को पैदाकर प्राणों को नाश कर देता है जो कंकुष्ठ के खाने से उत्पन्न हुए दस्त बंद न हों तो बेरमूली के काढ़े में जीरा और सुहागा बुरकाकर कंकुष्ठ के विष दूर करने के लिये बारंवार पान करे तो दस्त बंद होते हैं।।१०६।।१०७।।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनुसखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्ल-कृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायांमुपरससोपवर्णनं नाम पञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ।।५५।।

प्रकीर्णोपरसाध्यायः ५६

उपरस वर्णन

गंधकौ वज्रवैक्रान्तः सिंदूरं बोलगौरिके । समुद्रफैनः खटिका द्वयं शंबूकतार्क्ष्यं कम् ॥१॥ कासीसं कांतपाषाणो वराटी शुक्तिहिंगुलौ । कंकुष्ठं शंखभूनागं टंकणं च शिलाजतु ॥ उक्ता उपरसा एते द्रव्यनिर्णयकारिभिः ॥२॥ (बृ० यो०)

अर्थ—गंधक, हीरा, वैक्रान्त, सिन्दूर बोल, गेरू, समुद्रफेन, खड़िया, शम्बूक (घोंघा), तार्क्ष्य, हीराकसीस, कान्तपापाण, कौड़ी, सीप, हिंगुल, कंकुष्ठ (मुरदासिंग), शंख, कैंचुमा, सुहागा और सिलाजीत द्रव्य के ज्ञाता मनुष्यों ने इनको उपरस कहा है।।१।।२।।

अन्यच्च

गंधो हिंगुलमभ्रतालकशिलाः स्रोतोंजनं टंकणं राजावर्तनचुम्बकौ स्फटिकया शंखः खटीगैरिकम् ॥ कासीसं सरकं कपर्दिसिकताबोलाश्च कंकुष्ठकं सौराष्ट्री च मता अमी उपरसाः सूतस्य किंचिद्गुणैः ॥३॥

(र० सा० प०)

अर्थ-गंधक, हिंगुल, अभ्रक, हरताल, मैनसिल, सुरमा, सुहागा, राजावर्त, चुम्बक, फिटकिरी, शंख, खड़िया, गेरू, कसीस, रसक, कौड़ी, रेणुका, बोल, कंकुष्ठ (मुरदासिंग) मुलतानी इनको उपरस कहते हैं, जो कि पारद के कुछ गणों से युक्त है।।३।।

साधारण रस तथा सम्पूर्ण सत्त्वों की शुद्धि

साधारणरसाः सर्वे मातुलुङ्गार्द्रकाम्बुना । त्रिरात्रं भाविताः शुष्का भवेयुर्दोषवर्जिताः ॥४॥ यानि कानि च सत्त्वानि तानि शुध्यन्त्यशेषतः ॥५॥ ध्मातानि शुद्धिवर्गेण मिलन्ति च परस्परम् ॥६॥

(र० र० स०)

अर्थ-समस्त साधारण रसों को तीन रात तक बिजोरे और अदरख के रस की भावना देकर सुखा लेवे तो समस्त साधारण रस शुद्ध होते हैं और जितने सत्व हैं वे भी शुद्ध होते हैं, शुद्धिवर्ग से युक्त सत्त्व धोकने से मिल जाते हैं।।४-६।।

सम्पूर्ण रस और उपरसों की शुद्धि तथा सत्त्वपातन की क्रिया

सूर्यावर्तककदली वन्ध्या कोशातकी च सुरदाली । शिग्रुश्च वज्रकंदो नीकरणा काकमाची च ॥७॥ आसामेकरसेन तु लवणक्षाराम्लभावितं बहुशः ॥ शुध्यन्ति रसोपरसा ध्माता मुञ्चन्ति सत्त्वानि ॥८॥

अर्थ—हुलहुलका पंचांग, केला, बांझककोडा, तोरई, देवदालि, सहँजना, शकरकंद, सुगंधवाला, और पीपल, इनमें से किसी एक के स्वरस करके गुण लवण, क्षार और चूका आदि खटाई समेत बहुत बार भिगोये हुए रस और उपरस शुद्ध होते हैं और ये ही रस और उपरस धोंके हुए सत्त्वों को भी छोड़ देते है।।७।।८।।

सुहागा तेलिया बनाना (उर्दू)

यह दो तरह से बनाया जाता है, अव्वल सुहागे की बडी खुली कढाई में डालकर आग पर रखकर खील कर लो फिर खरल में डालकर ४ घंटे तक खूब रगड़ो फिर कढाई में डालकर आग पर रख दो वह फिर फूल-जावेगा, इसे फिर ४ घंटे खरल करो, इसी तरह करते जाओ हत्ताकि इसका फूलना बंद होकर सिमटाउ शुरू होगा, जब अच्छी रह सिमिट चुके तब बस करे यह आग पर कायमुल्नार होता है लेकिन ज्यादह सख्त ताउ से पिघलकर बिलकुल तेल हो आता है मगर सर्द होकर कांच की तरह सख्त हो जाता है यह अजीब चीज है और बड़ी कारामद शै है इससे बड़े २ काम निकलते हैं मेरे पास तय्यार मौजूद है, दो में मजकूरहवाला सुहागे को किसी नीमकायम शोरे में बराबर का मिलाकर खूब खरल करो। ३ प्रहर की रगडाई से मक्खन हो जावेगा। (सुफहा ६ अखबार अलकीमियां ८/४/१९०९)

टंकणशोधन आवश्कयता (शोधन गुण)

अशुद्धष्टंकणो वान्तिभ्रान्तिकारी प्रयोजितः । अतस्तं शोधयेदेव वह्नावुत्फु-ल्लितः शुचिः ॥९॥ टंकणो वह्निकृत्स्वर्णरूप्यतोः शोधनः सरः । विषदोषहरो हृद्यो वातश्लेष्मविकारनुत् ॥१०॥ (बृ० यो०)

अर्थ—अशुद्ध सुहागा वमन और चक्कर को करता है इसलिये शुद्ध करे शुद्धि इस प्रकार है खिपरे को आंच पर रख और उसमें सुहागे को रख फूला कर लेवे यह सुहागा अग्नि को बढानेवाला, सुवर्ण और चांदी का शुद्ध करनेवाला, दस्तावर, विष के दोष का हर्ता, हृदय को हितकारी, वात और कफ को नाशक है।।

सुहागे के भेद (उर्दू)

सुहागे की तीन किस्मे हैं अव्वल, सफेद, दोयम, नीलकंठी, सोयम् सीसफट मुतरिज्जम दो किस्म का सुहागा बाजार में मिलता है, पहली सफेद जिसको मुनारी मुहागा कहते हैं और उसको सुनार धातु के गलाने के वास्ते काम में लाते हैं। दूसरी नीलकंठी जिसको तेलिया सुहागा कहते हैं और जो एक एक अंगुल के बराबर कलम होती है, सीसफट भी सफेद को कहते हैं लिहाजा हफ्त अहवाब मुरसिला हकीम नूर आलम साहब बने सुहागे की दो ही किस्में लिखी हैं सफेद, नीला, (सुफहा अलकीमियां १६९)

१–भाविता बहुशः।

कांतपाषाणगुण

चुम्बको लेखनः शीतो मेदोविषगदापहः ।
कंडूदरक्षैण्यहरो मोहमूर्च्छायलोहहृत् ॥११॥

(बृ० यो०)

अर्थ–चुम्बक लेखन, ठंढा, मेद और विष के रोगों को नाश करता है। खुजली, उदररोग, क्षीणता, मोह, और मूर्च्छा को दूर करता है॥११॥

शंखगुण

शंख क्षारो हिमो ग्राही ग्रहणीरोगनाशनः ।
नेत्रपुष्पहरो वर्ण्यस्तारुण्यपिडिकाप्रणुत् ।
अशुद्धो गुणदो नैष शुद्धोऽम्लैः स गुणप्रदः ॥१२॥

(बृ० यो०)

अर्थ–शंख खार के समान रसवाला, ठंढा, काविज, संग्रहणी और अतीसार को नाश करता है, नेत्रफुल्ली को हरनेवाला जवानी की फुन्सियों (मुहासों को) हरता है और अशुद्ध शंख गुण नहीं करता है। और खटाई शुद्ध होता है॥१२॥

दक्षिणावर्तशंख गुण

दक्षिणावर्तशंखस्तु त्रिदोषघ्नः शुचिर्निधिः ।
ग्रहालक्ष्मीक्षयक्ष्वेडक्षामताक्षिक्षयाक्षमी ॥१३॥

(बृ० यो०)

अर्थ–दक्षिणावर्त (जिसका घुमाव सीधा हो) शंख त्रिदोष को नाश करता है, ग्रह, अलक्ष्मी (दरिद्रता), क्षय, विष, कृशता और नेत्र रोगो को नाश करता है॥१३॥

शुक्ति (सीप) का गुण

शुक्तिका शिशिरा पित्तरक्तज्वरविनाशिनी ॥१४॥

(बृ० यो०)

अर्थ–सीप ठंढी होती है रक्तपित और ज्वर को नाश करनेवाली होती है॥१४॥

रक्तबोलगुण

बोलं रक्तहर शीतं चक्षुष्यं प्यायनं सरम् ।
जरापस्मार कुष्ठघ्नं गर्भाशयविशोधनम् ॥१५॥

(बृ० यो०)

अर्थ–बोल, ठंढा, रक्तपित्त को हरनेवाला, नेत्रों को हित, पुष्टिकारक, और दस्तावर होता है। तथा बुढापा, मृगी का रोग, कुष्ठरोग का नाशक है और गर्भाशय (रेहम) को शोधनेवाला है॥१५॥

श्यामबोलगुण

श्यामबोलं तीक्ष्णगन्धं दद्रूकंडूविषापहम् ।
कुष्ठापस्मारवन्धार्शोरक्तग्रंथि च नाशयेत् ॥१६॥

(बृ० यो०)

अर्थ–श्याम रंग का बोल तेज, गंधवाला, दाद और खुजली के विष को दूर करता है, कोढ, मृगी, कब्ज और बवासीर के रक्त को नाश करता है॥१६॥

मानुषबोलगुण

अपरं मानुषं बोलं सद्योव्रणरुजापहम् । भग्नास्थिसंधिजननं त्रिदोषशमनं हिमम् ॥१७॥ धातुकांतिवयः स्थैर्यबलौजोवृद्धिकारकम् । प्रमेहकुष्ठपिडिका सर्वव्रणविषापहम् ॥१८॥ (बृ० यो०)

अर्थ–और तीसरा मानुषबोल नवीन व्रण की पीडा को दूर करता है, टूटी हुई हड्डी को जोडता है, त्रिदोष को शान्त करनेवाला और ठंढा है धातु, कान्ति, अवस्था, स्थिरता वल और ओज को बढानेवाला है तथा प्रमेह, कोढ, फुन्सी, और घाव की पीडा को नाश करता है॥१७॥१८॥

खटिकाद्वयगुण

खटी दाहास्रनुच्छीता कफघ्नी चक्षुषोर्हिता ।
तद्वत्पाषाणखटिका व्रणपित्तास्रजिद्धिमा ॥१९॥

(बृ० यो०)

अर्थ–दोनों प्रकार की खडिया दाह और रक्तविकार को हरनेवाली ठंढी कफ को दूर करनेवाली और नेत्रों को हित है इसी प्रकार पाषाणखटिका भी घाव पित्त तथा रक्तविकार को जीतती है और ठंढी है॥१९॥

शम्बूक (शिखले घोंघा गुण)

शम्बूकः शीतलो नेत्ररुजाविस्फोटनाशनः ।
शीतज्वरहरस्तीक्ष्णो ग्राही दीपनपाचनः ॥२०॥

(बृ० यो०)

अर्थ–घोंघा ठंढे नेत्र रोग और फोडा फुन्सी को नाश करता है। तथा शीतज्वर का हरनेवाला, ग्राही (कब्ज करनेवाला) दीपन और पाचन है॥२०॥

समुद्रफेनगुण

समुद्रफेनश्चक्षुष्यो लेखनः शीतल सरः । कर्णस्रावरुजाग्रंथिहरः पाचनदीपनः ॥२१॥ अशुद्धः स करोत्यंगभंगं तस्माद्विशोधयेत् । समुद्रफेनः संपिष्टो निम्बुतोयेन शुध्यति ॥२२। (बृ० यो०)

अर्थ–समुद्रफेन नेत्रों को हित, ठंढा और दस्तावर होता है तथा कानों का बहना या पीडा को हरता है एवं दीपन और पाचन है अशुद्ध समुद्रफेन अंग भंग को करता है इसलिये समुद्रफेन को नींबू के रस से घोटे शुद्ध कर लेवें॥२१॥२२॥

रसांजन (रसौत) के गुण

रसांजनं कटु श्लेष्मसुखनेत्रविकारनुत् ।
तिक्तोष्णं प्रदरध्वंसि व्रणघ्नं च रसाञ्जनम् ॥२३॥

(बृ० यो०)

अर्थ–रसौत, चर्परी, कफरोग, मुखरोग और नेत्रविकारों को दूर करती है कडवी तथा उष्ण होती है, प्रदर और व्रण (घाव) को नष्ट करती है॥२३॥

सज्जी की शुद्धि और गुण (भाषा)

सज्जी को बारंबार नितार के पकाने से सज्जी बहुत उत्तम बन जाती है और हरिताल को कायम करती है और हरिताल का रंग लालसिंग्रफ जैसा हो जाता है। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

सफाई सज्जी (उर्दू)

कोरी घडिया में पानी भरकर सज्जी को पीसकर उसमें डाल दे और घडिया के मुँह पर प्याली ढककर ऐसी जगह रखें कि जहां हवा न लगे, तीन चार दिन तक घडिया के ऊपर निहायत साफ शै बाहर निकलेगी इसे उतारकर काम में लावे। (सुफहा ११२ किताब कुश्तैजात हजारी)

शोराकायम (भाषा)

निंबू के पत्र शोरे से चतुर्गुण ले के हांडी में पत्र और शोरा तहबतह देकर

६ बट्टी गोहे की आग देनी वा जितने से पत्र सड जाय उतनी आग देनी शोरा कायम हो जायगा वा आक के पत्र। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

शोरादाम्न का बूरा शोरा कायमुल्नार (उर्दू)

मेरा तजरुबा आजमूदः और चीदः अज हमह तरकीब कायमुल्नार खवास मुशम्मा जो सम्मुलफार का राह बर कामिल है जैल में अर्ज करता हूं शोरा हस्ब जरूरत लेकर पास रखें और एक जर्फ गिली लेकर अव्वल उसमें वर्ग दरख्त बेरी तुर्श के बकदर ३० तोले हो तह बिछावे और उस पर ५ तोले शोरा पोशीदः करे फिर उस पर ३० तोले वर्ग साहांजनह के बिछावे उस पर उसके फिर तोला भर शोरा बुरबरा देवे ऊपर उसके ३० तोला वर्गभंग सबज बिछा देवे ऊपर उसके फिर ५ तोला बुरबुरा देवे ऊपर उसके फिर बर्ग दरख्त बेरी तुर्श बिछाकर सरपोश देकर चूल्हे पर रखकर अव्वल ३ घंटे आग मौतदिल बाद दो घंटे तेज जलावे इन्शा अल्लाहताला शोरा जर्फ में चर्ख खाकर बैठ जावेगा, इस शोरा को निकालकर खाकिस्तर वर्गहाड से साफ करके कूटकर बारीक खरल करे और आसारपुख्तः आब चाह में भिगोकर रखे और दो तोलें सुहागा भी बारीक खरल करके इसमें डाल दे और किसी लकड़ी से दो तीन मर्तबः बाद चार चार घंटे हिला दिया करे और ८ पहर बाद इसका नितारह जरा अलफा से लगाकर लेवे और इस मुकत्तर को नरम नरम आंच से पकाकर पानी सरव खुश्क कर लेवे और शोरे को जब खुश्क हो जावे कोयला पर या मिस सुर्ख करके डालकर देखे इन्शा अल्लाहताला आलादर्जे का कायमुल्नार और गव्वास और मुशम्मा होगा इससे जो सम्मुलफार या कुछ और रुह कायम किया जावेगा इसमें भी यही औसाफ होंगे। (सुफहा ९ व १० अखबार अलकीमियां २४/२/१९०९)

शोरा कायम (उर्दू)

शोरा बरीके पत्तों में तहबतह देकर आग दे दो। (सुफहा ८० किताब कुश्तैजात हजारी)

शोरा कायमुल्नार करने की तरकीब (उर्दू)

मुतरिज्जम ने शोरा कायमुल्नार इस्तरह बनाया था कि शोरा को कढाई में रखकर ऊपर से रोगन सर्षप यानी कडवा तेल मसाबी डाल दिया और आग पर रख दिया यहां तक कि तेल में खुद बखुद आग लग गई और फरो हो गई और शोरा कायमुल्नार हो गया इससे धुआं नहीं निकलता है और सफेद होता है अर्क चौलाई जंगली से भी मिस्ल अर्क आग के अमल करने से शोरा मजकूर कायमुल्नार हो जाता है। (सुफहा अकलीमियां २६५ का हाशिया)

शोरा कायम

लोटा सज्जी १ सेर, चूना १ सेर दोनों चीजों भेडणियां दिन दो तीसरे दिन सुहागा १। पाव पीस के पा दैणा शहद ३ तोले घृत ३ तोले पा दैणा नौसादर १/२ सेर पा दैणा चौथे दिन सब पानी नितार लैणा फिर शोरा आध सेर कढाई में पाके हेठ कोलयांदी आग तेज करके ऊपरों चोया देणा जब शोरा कायम हो जावे तव तुरंत होर भांडे विच पाणा परीक्षा कर लैणी। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

कायमशोरा (उर्दू)

उस्तादान फनका कौल है कि शोरे को संगजराहत कायम करता है और कायमी शोरा की तरकीब में संग जराहत का शामिल करना जरूरी है। (सुफहा ५ अखबार अलकीमियां १/१२/१९०६)

शोर को कायमुल्नार व मोमिया करने की तरकीब (उर्दू)

सेरभर शोरा लेकर कढाई में रखकर आग पर चढा दे जब पानी की तरह हो जावे तो अर्क वर्ग जर्द दरख्तमदार जिसको आग में गर्म करके निकाल लिया हो पैसे भर डाल दे ताकि फिर वह सख्त हो जावे फिर दुबारा पिघलाकर पैसा भर अर्क मजकूर डाल दे यहां तक कि आध सेर अर्क इसी तरह उस्पर जज्ब करे कायमुल्नार हो जावेगा अब इस शोरे को पीसकर चीने के बर्तन में रखकर रात को शबनम में रख दे सुबह को मक्खन की तरह हो जावेगा। (सुफहा अलकीमियां २६५)

नमककायम नसूदन (उर्दू)

चूना आबरनासीदः १ सेर के दर्मियान में डली नमक खुर्द करके रखे रकाबी में और रकाबी में ढककर सबसे खूब मजबूत बंद करके ७ सेर उपले जंगली में आग देवे फिर निकालकर इसी तरह करे तीन अमल में नामक कायम हो जावेगा और यह नामक आग पर चर्ख खायेगा। (अज बियाज हकीम मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी)

सफेदा (उर्दू)

अस्फीदाज को फार्सी में सफेद आब और हिन्दी में सफेदह कहते हैं यह सुर्ब और जस्त और कलई में से किसी को जलाकर राख करके सिर का आमेज करके बनाते हैं सीमाब को इसके हमराह अगर तसईद करे तो उसको खुश्क करता है। (सुफहा अलकीमिबां ६६)

हरकिस्म का सफेदा बनाने की तरकीब (उर्दू)

(नं० १) सफेदा काशगरी–सुर्ब को लेकर मट्टी की हांडी में गुदाज करे और आहनी कफीर से चलावे जिस्में राख हो जावे बादहू दूसरी हांडी में रखकर मुंह बंद करके तनूर रख दे और एक रोज आग दे बादहू सिरका मुकत्तर गिरावे और एक हफ्ते रहने दें कुल सफेदा निहायत शफ्फाफ हो जायगा काम में लावें।

(नं० २) सफेदा मरहम इसको सफेदा कलमी भी कहते हैं रांगा सेर भर लेकर गर्म करे और सीसा तोले भर उसमें मिलाकर दो पट्टे घीग्वार के डाल दे यहां तक कि पट्टे मजकूर सोख्त हो जावें बाद उसके ६ तोले आजवाइन उस्में मिलावे और सोख्त करे बाद उसके तीस पत्ते मदार के डालकर चलावे और अच्छी तरह पकावे और जलावे यह सफेदा मरहम के वास्ते बरामद है।

(नं० ३) सफेदा कुल मौहरा जिसको सफेदा फार्सी भी कहते हैं अकसर काम आता है कलमी मुसफ्फा एक जुज लेकर हांडी में रखे और थोड़ा नमक डालकर आग पर पकावे और घिसता जावे बाद उसके किसी कूजे मे रखकर गिलेहिकमत करके शीशःगरों या कुम्हारों की भट्टी में रखे और जब तक निहायत सफेद न हो भट्टी में रहने दे यह सफेदा एक तोला दूसरे तीन तोले सफेदे के बराबर काम देता है जिसको कागज की तरह लपेट सक्ते है और उसकी काट ऐसी होती है कि लोहा और शीशा कट सक्ता है और खराब नहीं होती इसनें दो फसलें है। (सुफहा ९५ किताब अलजवाहर)

तरकीब कुश्ता तूतिया सफेद जर्द फूलना बूटी में (उर्दू)

जर्दफूल का नाम जो एक किस्म की बूटी कुर्व जवार में पानी के होती है, एक हाथ दो हाथ तूलन उस्तादह होती है, पत्ती इमली के पत्ते से कुछ बड़ी और दल्दार होतीहै, एक डली मुसल्लिम तूतिया दो तोले की एक कूल्हियागिली आबनार सीदः में डली तूतिया की रखकर इस कदर बूटी मजकूर का अर्क डाले कि तूतिया डूब जावे, मुँह कुल्हिया का बंद करके अन्दाजन धीमी आंच कंडों की देवे, बहुत उमदा अकसीर खाक होगी। (सुफहा १३ अखबार अलकीमियां १६/१०/१९०७)

तरकीब कुश्तातूतिया सफेद नकछिकनी में (उर्दू)

बर्ग नकछिकनी जर्दगुल के नुगदे में रखकर कपरमिट्टी करके एक सेर पुख्त: सहराई पाचक की आंच दे कुश्ता सफेद हस्व मनशा तैयार होगा। (सुफहा नं० १३ अखबार अलकीमियां १६/१०/१९०७)

कुश्तातूतिया बरंगसफेद की तरकीब थूहर में (उर्दू)

डंडा थूहर एक बालिश्त लेकर उसमें तूतिया ६ माशे की डली बंद करके खूब गिलेहिकमत करे फिर पांच सेर उपलों की आंच दे दे जब सर्द हो जावे तो निकाल ले, तूतिया बरंग सफेद कुश्ता होकर बरामद होगा। (सुफहा ५ अखबार अलकीमियां)

तरकीब कुश्ता तूतिया सफेद काफूर में (उर्दू)

काफूर दो तोले एक कुलिया गिली में बंद करके उसके दर्मियान तूतिया सबज ६ माशे एक काफूर के दर्मियानी हिस्से में देकर कुलिया का मुँह गिलेहिकमत करके चार सेर पुख्त: की आंच दे दे बाद सर्द होने के निकाल ले, तूतिया बरंग सफेद कुश्ता होकर निकलेगा, जिस कदर जियादह आंच होगी, उतना ही ज्यादह सफेद होकर निकलेगा।

तरकीब कुश्ता तूतिया सफेद अकसीरी जिससे शिंजर्फ तूतिया बनकर अकसीर तिला बनता है जहर सांप से (उर्दू)

जहरीला सांप के जहर में तर व खुश्क करने से अव्वल नम्बर की खाक होगी, एक जोगी ने पहले तूतिया को नारजील के बिलकुल छोटे खाम फलों में बाद खारिज करने अर्क के दमपुख्त तीनबार कर लिया बाद उसके सात अदद सांप की सात अदद जहरीली थैलियां जो उसके मुँह में रहती है, लेकर बारीक दस्तपनाह से यकेबाद दीगरे जहर का अर्क इस डली पर चढ़ाकर धूप में खुश्क कर लिया, यहां तक कि सात अदद को खतम कर लिया, इस तर व खुश्क करने से तूतिया खील खील हो गया, इस खील की एक रत्ती दस बारह सेर शीर थूहर में डाल दिया, फौरन सारा दूध पानी हो गया बाद इस नीर को दम बारह तोला की शिंजर्फ की डली पर चढ़ाया तो मोमिया हो गई, इस मोमिया से एक रत्ती तोले भर नुकरा पर दिया तो तिलाइ कामिल बन गया। १ जोगी का कौल था कि हर हफ्ते तजदीद शीशी की जिसमें यह खाक रहती है, कर लिया के, वरन: शीशी शिद्दत हरारत से टूटकर रेज: रेज: हो जावेगी, लिहाजा बड़ी हिफाजत से रखना चाहिये और इब्तदाह अमल नुसखा से इन्तहाइ अमलतक निहायत अहतियात चाहिये क्योंकि जहर ही जहर है, बाइस हिलाकत न हो इसी खयाल से मैंने इस नुसखे को अखफा कर रखा था लेकिन अखबार अलकीमियां की रिफासहजआस: व बिरादरान अलकीमियां की इलूहिम्मती पर नजर करके उसको पबलिक में लाना हुआ। (सुफहा १३ अखबार अलकीमियां १६/१०/१९०७)

जंगार बनाने की तरकीब (उर्दू)

बुरादा मिस सेर भर लाकर पानी में धोवे और सुखा लेवे बाद उसके दो सेर सिरका मुकत्तर और आधपाव नौसादर डालकर बाहम मिलावे और तांबे की देगची में रखकर ऊपर से सर्पोश ढांक दे और दो पहर कामिल आग दे, बाद उसके छानकर पकाले और मुनअक्किद करे।

नौआदीगर बुरादा मिस को चीनी के जर्फ में बिछावे और उसके ऊपर नौसादर मसअद बिछावे और ऊपर से शराब दो आतिशा इस कदर डाले कि दो अंगुल ऊपर रहे बाद उसके दो तीन दिन तक सख्त धूप में रखे, जंगार लतीफ तैयार होजायेगा। (सुफहा ८७ किताब अलजवाहर)

जंगार फरलीसा बनाने की तरकीब (उर्दू)

बुरादा मिस एकमन लेकर बेकलई के तांबे के मटके में डालकर दसम न सिरा उसमें डाले और मुँह बन्द कर दे बाद उसके गर्म तनूर में रखकर मुँह तनूर का मिट्टी से मजबूत बन्द कर दे और एक दिन रात के बाद निकाले, कुल जंगार हो जावेगा। (सुफहा ९२ किताब अलजवाहर)

जंगार तुरसाई बनाने की तरकीब (उर्दू)

बुरादा मिस दस हिस्सा नौसादर कानी तीन हिस्सा बाहम मिलाकर सिरका अंगूरी में गर्क करके किसी जर्फ मिसी में रखकर घोड़े की लीद में पांच दिन तक दफन करे और हररोज ताजा लीद बदला करे। (सुफहा किताब अलजवाहर)

जंगार तुरसाई बनाने की तरकीब (उर्दू)

यह निहायत लतीफ होता है बुरादा मिस जितना मंजूर हो लाकर कटोरे में रखे और उसके मसावी नौसादर महलूल मिलावे, नौसादर इस्तरह महलूल करे कि नौसादर मादना लाकर बकरीकी आंत में रखकर हल करे, बाद उसके मिस के बुरादे से चहारम हिस्सा नमक सफेद साईद: मिलाकर धूप में रखे और अर्क लैमूं डाल दे और खरल करके फिर धूप में रख दे. यहां तक कि मिस मजकूर लैमूं और नौसादर महलूल में हल होकर जंगार हो जावे और हस्व जरूरत अर्क लैमूं और नौसादर डाला करे जब तक कुल मिस जंगार न हो। (सुफहा ९० किताब अलजवाहर)

जंगार हमसी वा जंगार फरऊनी बनाने की तरकीब (उर्दू)

बुरादा मिस पाकीज: जितना मंजूर हो लाकर खरल करे और शीर: अंगूर उस पर डालकर निगाह रखे जिसमे खुश्क हो जावे फिर सहक करे और शीरामजकूर डाले, इसी तरह सात बार खरल करे और खुश्क करे, शीरा अंगूर का न मिले तो सिरका बएवन शीरा के डाले और सबज पानी जो उस पर हर बार पैदा हुआ करे, उसको नितार कर आग या धूप में खुश्क कर लिया करे। (सुफहा ८८ किताब अलजवाहर)

जंगार को हल करना (उर्दू)

यह बेनजीर होता है और फीरोजा के रंगने के काम में आता है, जंगार हमसी एक हिस्सा सिरका सफेद मुकत्तर एक हिस्सा दोनों मिलाकर रहने दे ताकि सिरके में जंगार मजकूर हल होजावे और सिरके का रंग सब हो जावे, बाद उसके उसको छान ले।

लोह केसर (जाफरानुलहदीद)

लोहचूर्ण वा ताम्रचूर्ण १ तोला (पांच तोला शोरा, पीली काही ३ तोले, फिटकिरी लाल २ तोले, ये तीनों चीजों को दरड करके तेजाब निकालना) उस तेजाव में ताम्र का बुरादा अथवा लोहे का बुरादा खरल करके सुखा लेना लाल रंग का हो जायगा। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

धातु बिड

अब बिड हों सुनों रे गुनी, ज्यों कहि गये अचारज मुनी। सोवनमाखी सोधी होय, तामेकी बिड जाने लोये। लौन जु आजभारै तनौ, खपराकौ बिन्दु कवियनु भनौ। सीसेको बिन्दु सैंधों कहे, जाकी बासु प्रगट ही दहै। बंगहि भस्म करति है कहै, कै सुमलहे सीधी रहै। कैस वंगे गिलचा फटकरी, जाके देत जाइ सब जरी ॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां प्रकीर्णोपरसवर्णनं नाम षट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥५६॥

रत्नाध्यायः ५७

रत्नों के भेद

मणयोऽपि च विज्ञेयाः सूतबन्धस्य कारकाः ।। वैक्रांत सूर्यकान्तश्च हीरकं मौक्तिकं मणिः ।।१।। चन्द्रकान्तस्तथा चैव राजावर्तश्च सप्तमः ।। गरुडोद्गारकश्चैव ज्ञातव्या मणयस्त्वमी ।।२।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-वैक्रान्त (तर्मरी), सूर्यकान्त, हीरा, मोती मणि (चन्द्रकान्त), राजावर्त और गरुडोद्गारक (पन्ना) ये आठ रत्न पारद के बद्ध करनेवाले हैं।।१।।२।।

अन्यच्च

पुष्परागं महानीलं पद्मरागं प्रवालकम् ।। वैडूर्यं च तथा नीलमेति च मणयो मताः ।। यत्नतः संग्रहीतव्या रसबन्धस्य कारणात् ।।३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-पुखराज, इन्द्रनील, माणिक, मूंगा और लहसनिया और नीलम इनको भी रत्न कहते हैं और रस क्रिया के वास्ते परीक्षा करके लेना चाहिये।।३।।

रत्नों के नाम

वज्रं गरुत्मतः पुष्परागो माणिक्यमेव च ।। इन्द्रनीलश्च गोमेदस्तथा वैदूर्यमेव च ।। मौक्तिकं विद्रुमश्चेति रत्नान्युक्तानि वै नव।।४।।

(एक लिखित पुस्तक)

अर्थ-वज्र (हीरा, गरुत्मत (पन्न), पुखराज, माणिक, इन्द्रनील, गोमेद, लहसनिया मोती और मूंगा ये नवरत्न कहे जाते हैं।।४।।

पंचरत्नों के नाम

पद्मरागेन्द्रनीलाख्यौ तथा मरकतोत्तमः ।। पुष्पराग स वज्राख्यः पंच रत्ना वराः स्मृताः ।।५।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-माणिक, इन्द्रनील, पन्ना, पुखराज और हीरा ये पांच रत्न हैं।

रत्नों के दोष

गौरत्रासौ च बिन्दुश्च रेखा च जलगर्भता ।। सर्वरत्नेष्वमी पञ्च दोषाः साधारणा मताः ।। क्षेत्रतोयभवा दोषा रत्नेषु न लगन्ति ते।।६।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-फिकास, त्रास, छींटे, लकीर और पानी का दाग, यह पांच दोष सभी रत्नों में स्वाभाविक हुआ करते हैं। जमीन और पानी के दोष इनमें नहीं गिने जाते हैं।।६।।

नवग्रहों के क्रम से नौ रत्नों के नाम

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि तार्क्ष्यं च पुष्पं भिदुरं च नीलम् ।। गोमेदकं चाथ विदूरकं च क्रमेण रत्नानि नवग्रहाणाम् ।।७।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-माणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज हीरा, नीलम, गोमेद और लहसनिया, ये नौ रत्न, क्रम से सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु और केतु इन नवग्रहों के हैं।।७।।

अँगूठी में किन किन रत्नों का मेल करना

ग्रहानुमैत्र्या कुरु बिन्दुपुष्पप्रवालमुक्ताफलतार्क्ष्यवज्रम् ।। नीलाख्यगोमेदविदूरकं च क्रमेण मुद्राधृतमिष्टसिद्धौ ।।८।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-बिंदु (माणक), पुखराज, मूंगा, मोती, पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद और लहसनिया इस क्रम से अंगूठी मे जड़ावे तो वांछित कार्य की सिद्धि होती हैं।।८।।

पारदादि कर्म में रत्नधारण करने की विधि

रसे रसायने दाने धारणे देवतार्चने ।। सुरक्ष्याणि सुजातीनि रत्नान्युक्तानि सिद्धये ।।९।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-रसक्रिया में, रसायन दान, देवताओं का पूजन इनमें अच्छी जाति के रत्न अंगूठी में धारण करना, सिद्धि के लिये कहे हैं।।९।।

रत्नों के धारण करने का फल

सूर्यादिग्रहनिग्रहापहरणं दीर्घायुरारोग्यदं सौभाग्योदय भाग्यवश्यविभवोत्साहप्रदं धैर्यकृत । दुश्छायाचलधूलिसंगतिभवा लक्ष्मीहरं सर्वदा रत्नानां परिधारणं निगदितं भूतादिनिर्णाशनम् ।।१०।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-रत्नों के धारण करने से सूर्यादि नवग्रहों की पीड़ा दूर होती है, दीर्घायु (अर्थात् बड़ी उमर) और आरोग्य होता है, भाग्य का उदय होता है, धन और उत्साह बढ़ता है, धैर्य होता है, दुष्ट पुरुषों की छाया और धूर के मल से उत्पन्न हुई निर्धनता का नाश होता है और भूतप्रेतादिकों की पीड़ा भी शान्त होती है।।१०।।

माणिक की परीक्षा

माणिक्यं पद्मरागाख्यं द्वितीयं नीलगन्धि च । कुशेशयदलच्छायं स्वच्छं स्निग्ध महत्स्फुटम् ।।११।। वृत्तायतं समं गात्रं माणिक्यं श्रेष्ठमुच्यते ।। नील गंगाम्बुसम्भूतं नीलगर्भारुणच्छवि ।।१२।। पूर्वमाणिक्यवच्छ्रेष्ठं माणिक्य नीलगन्धि तत् । रन्ध्रकार्कश्यमालिन्यरौक्ष्याऽवैशद्यसंयुतम् । चिपिटं लघु वक्रं च माणिक्यं दुष्टमष्टधा ।।१३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-पद्मराग और नीलगन्धि के भेद से माणिक दो प्रकार का है, जो. माणिक लाल कमल के पुष्प के पत्ते के समान कान्तिवाला, साफ, चिकना, बड़ा, स्फुट, (जिसमें देखने से दूसरी तरफ का पदार्थ दीखता हो) वृत्तायत (अंडे के समान गोल) और समकोण हो वह माणिक उत्तम होता है, उसको पद्मराग कहते हैं और जो गंगाजल में उत्पन्न हुआ हो जिसकी कान्ति नीली झाईं लिये हुए लाल वर्ण की हो और शेष लक्षण पद्मराग के समान हों उसको नीलगन्धि (जिसमें कुछ नीली रंगत की झांई हो) माणिक कहते हैं, यह भी उत्तम होता है। और छेदवाला खरखरा, मैला, रुखापन, चपटा, छोटा हलका और टेढ़ा ये माणिक के आठ दोष हैं।।११-१३।।

माणिक के गुण

माणिक्यं दीपनं वृष्यं क्षयवातकफार्तिनुत् । भूतवेतालपापघ्नं कर्मजव्याधिनाशनम् ।।१४।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-माणिक के सेवन करने से अग्नि तीव्र होती है, शरीर पुष्ट होता है भूत और वैताल के रोग नष्ट होते हैं और कर्मो से उत्पन्न हुए रोग भी मिट जाते हैं।।१४।।

मोती की परीक्षा

ह्लादि श्वेतं लघु स्निग्धं रश्मिवन्निर्मलं महत्। ख्यातं तोयप्रभं वृत्तं मौक्तिकं नवधा शुभम् ॥१५॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-केवल दर्शनमात्रसे ही चित्त को प्रसन्न करनेवाला, सफेद, भार में हलका, चिकना, जिसमें चंद्रमा के समान किरणें निकलती हों, निर्मल हो बड़ा हो, जल के समान चमकीला हो, गोल हो इस प्रकार मोती में नौ शुभ लक्षण है॥१५॥

मोती के गुण

मुक्ताफलं लघु हिमं मधुरं च कान्तिदृष्टयाग्निपुष्टिकरणं विषहारि भेदि। वीर्यप्रदं जलनिधेर्जनिता च शुक्तिर्दीप्ता च पंक्तिरुजमाशु हरेदवश्यम् ॥१६॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-मोती हलका, ठंडा, मीठा और चमकदार होता है, नेत्र और जठराग्नि को दीप्यमान करनेवाला है। विष को हरनेवाला दस्तावर और वीर्य को बढ़ानेवाला है, इसी प्रकार समुद्र में उत्पन्न हुई सीप अग्नि को बढ़ानेवाली पंक्ति शूल को अवश्य नाश करती है॥१६॥

तथा च

कफपित्तक्षयध्वंसि कासश्वासाग्निमान्द्यनुत्॥ पुष्टिदं वृष्यमायुष्यं दाहघ्नं मौक्तिकं मतम् ॥१७॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-मोती कफ, पित्त और क्षय का नाश करनेवाला है, कास श्वास और अग्निमान्द्य (मन्दाग्नि) को दूर करता है, शरीर को पुष्ट करनेवाला, बलकारी, आयु को बढ़ानेवाला और दाह का नाश करता होता है॥१७॥

मोती के दोषों का वर्णन

रूक्षाङ्गं निर्जलं श्यावं ताम्राभं लवणोपमम्॥ अर्द्धशुभ्रं च विकटं ग्रन्थिलं मौक्तिकं त्यजेत् ॥१८॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-रूखा, तेजहीन, श्यामकांति, तांबा के समान, लवणसदृश, आधा शुभ्र, टेढ़ा और ग्रंथिवाला मोती दोषयुक्त समझा जाता है॥१८॥

मोतियों को द्रुति करने की विधि

मुक्ताचूर्णं तु सप्ताहं वेतसाम्लेन मर्दितम्। जंबीरोदर मध्ये तु धान्यराशौ विनिक्षिपेत्। सप्ताहादुद्धृतं चैव पुटे धृत्वा द्रुतिर्भवेत् ॥१९॥

(र० र० स०)

अर्थ-मोतियों के चूर्ण को सात दिवस तक अमलवैत के रस से घोटे फिर उसकी गोली बनाकर जंभीरी के फल में रख सात दिन धान के ढेर में रख देवें। तदनन्तर उसमें से निकाल किसी पात्र में रख देवे तो मोती की द्रुति होगी॥१९॥

मूँगे की परीक्षा

पक्वबिम्बफलच्छायं वृत्तायतमवक्रकम्। स्निग्धमव्रणकं स्थूलं प्रवालं शुभम् ॥२०॥ पाण्डुरं धूसरं सूक्ष्मं सव्रणं कण्डरान्वितम्॥ निर्भारं शुल्ववर्णं च प्रवालं नेष्यतेऽष्टधा ॥२१॥

(र० र० स०)

अर्थ-अत्यन्त लाल, गोल, लम्बा, सीधा, चिकना, जिसमें किसी प्रकार का छेद न हो, और मोटी हो इस प्रकार सात गुणवाला प्रवाल (मूंगा) उत्तम होता है, और जो पिलाई लिये हुए हो, धुँवे का सा वर्ण हो, छेदवाला हो, टेढा हो, सफेद हो और हलका हो, ऐसा मूंगा अच्छा नहीं होता॥२०॥२१॥

मूँगे के गुण

क्षयपित्तास्रकासघ्नं दीपनं पाचनं लघु॥ विषभूतादिशमनं विद्रुमं नेत्ररोगनुत् ॥२२॥ (र० र० स०)

अर्थ-मूंगा-क्षयरोग, रक्तपित्त, कास, विषरोग भूतादि रोग तथा नेत्र रोग नाश करता है, दीपन पाचन तथा हलका है॥२२॥

तार्क्ष्य परीक्षा

हरिद्वर्णं गुरु स्निग्धं स्फुरद्रश्मिचयं शुभम्॥ मसृणं भासुरं तार्क्ष्यगात्रं सप्तगुणं मतम् ॥२३॥ कपिलं कर्कशं नीलं पाण्डुकृष्णं च लाघवम्॥ चिपिटं विकटं कृष्णं रूक्षं तार्क्ष्यं न शस्यते ॥२४॥

(र० र० स०)

अर्थ-हरा, भारी, चिकना, चमकीली और चमकती हुई किरनोंवाला उत्तम होता है, तथा केंलई रंगवाला, खरखरा, नील, पीलाई अथवा स्याही लिये हुड हो, हलका हो, चिपटा हो, टेढा हो और रूखा हो ऐसा पन्ना श्रेष्ठ नहीं है॥२३॥२४॥

तार्क्ष्यगुणवर्णन

ज्वरच्छर्दिविषश्वाससन्निपाताग्निमान्द्यनुत्॥ दुर्नामपाण्डुशोफघ्नं तार्क्ष्यमोजो विवर्धनम् ॥२५॥

(र० र० स०)

अर्थ-अशुद्ध पन्ना-ज्वर, उलटी, विषरोग, श्वास, सन्निमात, मन्दाग्नि, ववासीर और सूजन को नाश करता है और ओज को बढाता है॥२५॥

पुखराज परीक्षा

पुष्परागं गुरु स्वच्छं स्निग्धं स्थूलं समं मृदु। कर्णिकारप्रसूनाभं मसृणं शुभमष्टधा ॥२६॥ निष्प्रभं कर्कशं रूक्षं पीतश्यामं नतोन्नतम्॥ कपिशं कपिलं पाण्डु पुष्परागं परित्यजेत् ॥२७॥

(र० र०स०)

अर्थ-पुखराज, भारी, साफ, चिकना, मोटा, सीधा, कोमल कन्हेर के समान हो और खरखरा हो, ऐसा पुखराज अच्छा होता है॥२६॥२७॥

पुखराज के गुण

पुष्परागं विषच्छर्दिकफवाताग्निमान्द्यनुत्॥ दाहकुष्ठास्रशमनं दीपनं पाचनं लघु ॥२८॥

(र० र० स०)

अर्थ-पुखराज, विषरोग, उलटी, कफ, वातरोग, मन्दाग्नि, जलन, कोढ, रक्त की खरावी को नाश करता है। दीपन है, पाचन है और हलका है॥२८॥

वज्र की उत्पत्ति

दधीचोईस्थ्नः समुत्पन्नः पविस्तस्य कणः क्षितौ॥ विकीर्णः स तु वज्राख्यां भजते तच्चतुर्विधम् ॥२९॥

अर्थ-दधीच ऋषि की हड्डियों से वज्र उत्पन्न हुआ उसके जो टुकडे धरती पर गिरे उनका नाम वज्र हो गया वह चार प्रकार का होता है॥२९॥

हीरे के भेद और परीक्षा

वज्रं च त्रिविधं प्रोक्तं नरो नारी नपुंसकम् ।। पूर्वपूर्वमिह श्रेष्ठं रसवीर्यविपाकतः ।।३०।। अष्टास्रवाष्टफलकं षट्कोणमतिभासुरम् ।। अम्बुदेंद्रधनुर्वारितरं पुंवज्रमुच्यते ।।३१।। तदेव चिपिटाकारं स्त्रीवज्रं वर्तुलायुतम् । वर्तुलं कुण्ठकोणाग्रं किंचिद्गुरु नपुंसकम् ।।३२।। स्त्रीपुनपुंसकं वज्र योज्यं स्त्रीनपुंसके । व्यत्यासान्नैव फलदं पुंवज्रेण विना क्वचित् ।।३३।। श्वेतादि वर्णभेदेन तदेकैकं चतुर्विधम् । ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रं स्वस्ववर्णफलप्रदम् ।।३४।। उत्तमोत्तमवर्णं हि नीचवर्णफलप्रदम् ।। न्यायोऽयं भैरवेणोक्तः पदार्थेष्वखिलेष्वपि ।।३५।।

(र० र० स०)

अर्थ–स्त्री, पुरुष और नपुंसक भेद से हीरा तीन प्रकार का है. रस, वीर्य, और विपाक के बल से पुरुष हीरा, उत्तम उससे स्त्रीसंज्ञका हीरा अधम होता है। आठ कोनेवाला अथवा आठ फलवाला तथा छः कोठेवाला अत्यन्त चमकदार इन्द्रधनुष के समान वर्णवाला हो और जल पर तैरता हो उसको पुरुष हीरा कहते हैं और वही हीरा चपटा और गोल हो तो स्त्रीसंज्ञक हीरा कहाता है तथा गोल हो और जिसके कोने सुकडे हुए हो और कुछ भारी हो उसको नपुसंकहीरा कहते हैं। ये तीन प्रकार का वज्र तीनों प्रकार के (स्त्री पुरुष नपुंसक) जीवों के योग्य हैं इन्हीं को उलट पुलट के दिया जावे को फल को नहीं करता है और पुरुष नामक हीरा सर्वत्र फल के दाता है. श्वेतादि वर्णभेद से ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शुद्र संज्ञक चार प्रकार का हीरा अपनी २ जाति में फलदायक है, उत्तम वर्ण का हीरा नीच वर्ण का फल करता है भैरवाचार्य ने यह न्याय सब पदार्थो में मानने योग्य कहा है।।३०–३५।।

वज्र के वर्ण और भेद

श्वेतं द्विजाभिधं रक्तं क्षत्रियाख्यं तदीरितम् । पीतं वैश्याख्यमुदितं कृष्णं स्याच्छूद्रसंज्ञकम् ।।स्त्रीपुंनपुंसकं तत्तु चतुर्विधमपि स्मृतम् ।।३६।।

(बृ० यो०)

अर्थ–सफेद हीरा ब्राह्मण, लाल हीरा क्षत्रिय, पीला हीरा वैश्य और काला हीरा शूद्रसंज्ञक होता है, और वे चारों प्रकार के हीरे स्त्री पुरुष और नपुंसक भेद से तीन २ प्रकार के हैं।।३६।।

पुरुष, स्त्री, नपुंसक वज्र की परीक्षा

वृत्ताः फलकसम्पूर्णास्तेजोवन्तो बृहत्तराः । पुरुषा हरिकाः प्रोक्ता रेखाबिन्दुविवर्जिताः ।।३७।। रेखाबिन्दुसमायुक्ताः षट्कोणास्ते स्त्रियः स्मृताः ।। त्रिकोणायतना दीर्घा विज्ञेयास्ते नपुंसकाः ।।३८।।

(बृ० यो०)

अर्थ–जो हीरे गोल, कोटेदार, चमकीले बडे (मोटे) और जिनमें रेखा और बिन्दु न हो ऐसे हीरे को पुरुष कहते है। जिनमे रेखा या बिन्दु हो, छः कोने हो उनको स्त्रीसंज्ञकहीरा कहते हैं और जो तिकोने हो और लंबे हो, उनको नपुंसक कहते हैं।।३७।।३८।।

पुरुषादि भेद से वज्र का प्रयोग

स्त्री तु स्त्रीणां प्रदातव्या क्लीबं क्लीबे प्रदीयते ।। सर्वेषा सर्वदा योज्याः पुरुषा बलवत्तराः ।।३९।। (बृ० यो०)

(बृ० यो०)

अर्थ–स्त्रीसंज्ञक हीरा, स्त्रियों को और नपुंसक हीरा नपुंसक को देना चाहिये और पुरुष हीरा सबको देना चाहिये, क्योंकि वह सबसे बलिष्ठ है।।३९।।

पुरुषादिभेद से वज्र का प्रयोग

सर्वेषां पुरुषाः श्रेष्ठा वेधका रसबन्धकाः ।स्त्रीवज्रं देहसिद्धयर्थं क्रामणं स्यान्नपुंसकम् ।।४०।।

(बृ० यो०)

अर्थ–उनमें पुरुष संज्ञक हीरे श्रेष्ठ, वेधक, और रस के बंधक होते हैं स्त्री संज्ञक हीरे देह की सिद्धि के लिये और नपुंसक हीरा क्रामण होता है।।४०।।

विप्रादिभेद से वज्र का प्रयोग

विप्रो रसायने प्रोक्तः क्षत्रियो रोगनाशने । वादे तु वैश्यः संप्रोक्तो वयस स्तंभनेऽन्तिमः ।।४१।।

(बृ० यो०)

अर्थ–ब्राह्मण जाति का हीरा रसायन के लिये, क्षत्रिय हीरा रोग नाश करने के वास्ते, वैश्यजाति का हीरा धातुवाद के निमित्त तथा शूद्रजाति का हीरा अवस्था को रोकने के लिये उपयोगी होता है।।४१।।

हीरे के गुण

आयुः प्रदं झटिति सद्गुणदं च वृष्यं दोषत्रयप्रशमनं सकलामयघ्नम् । सूतेन्द्रबन्धबधसद्गुणकृत्प्रदीपि मृत्युंजयं तदमृतोपममेव वज्रम् ।।४२।।

(र० र० स०)

अर्थ–हीरा आयु तथा सद्गुणों का दाता है, वृष्य है, तीनों दोषों को शान्त करता है, समस्त रोगों का नाशक है, पारद को बद्ध और भस्म करनेवाला है, तथा पारद के श्रेष्ठ गुण को करता है और मृत्यु के नाश करनेवाला यह हीरा अमृत के समान है।।४२।।

हीरे की शुद्धि

कुलत्थक्वाथके स्विन्नं कोद्रवक्वथितेन वा । एकयामावधि स्विन्नं वज्रं शुद्धयति निश्चितम् ।।४३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कुलथी के क्वाथ में तथा कोदों के क्वाथ में एक प्रहर पर्यन्त स्वेदन करने से हीरा शुद्ध होता है इसमें सन्देह नहीं हैं।।४३।।

तथा च

व्याघ्रीकल्कगतं वज्रं दोलायन्त्रे विपाचयेत् ।। त्रिदिनं कोद्रवैः क्वाथैः कोलत्थैश्चामलं भवेत् ।।४४।।

(भाषापुस्त० प० कु० म०)

अर्थ–हीरे को कटेरी के फल के कल्क में रख तीन दिन तक कुलथी तथा कोदों के क्वाथ में दोलायंत्र द्वारा स्वेदन करे तो हीरा शुद्ध होगा।।४४।।

तथा च

व्याघ्रीकन्दगतं वज्रं दोलायन्त्रेण पाचयेत् । सप्ताहं कोद्रवक्वाथे कुलिशं विमलं भवेत् ।।४५।।

(बृ० यो०)

अर्थ–इसका अर्थ ४४ नं० श्लोक के समान है परन्तु इसका पाठ इसलिये लिखा गया है कि (दोलायंत्रेण पाचयेत्) के स्थान में (मृदा लिप्तं पुटे पचेत्) ऐसा पाठ है वह पाठ हमारी समझ में ठीक नहीं है।।४५।।

तथा च

व्याघ्रीकदगतं वज्रं मृदा लिप्तं पचेत् । अहोरात्रात्समुद्धृत्य हयमूत्रेण सेचयेत् । वज्रीक्षीरेण वा सिंच्यात्कुलिशं निर्मलं भवेत् ।।४६।।

(बृ० यो०)

अर्थ–कटेरी के फलों के कल्क में हीरे को रख और कपरौटी कर गजपुट में रख देवे, एक दिवस तक पीछे निकाल घोड़े के मूत्र में बुझावे अथवा सेहुंड

के दूध में बुझावे तो हीरे की शुद्धि हो जायेगी।।४६।।

हीरे का मारण और प्रयोग

मदनस्य फलोद्भूतरसेन क्षोणिनागकैः । कृतकल्केन संलिप्य पुटेद्विंशति–वारकम् ।।४७।। वज्रचूर्णं भवेद्वर्य योजयेच्च रसादिषु ।। तद्वज्रं चूर्णयित्वाथ किंचिट्टंकणसंयुतम् ।।४८।। खरभूनागसत्त्वेन विंशेनावर्तते ध्रुवम् । तुल्यस्वर्णेन तद् ध्मातं योजनीयं रसादिषु ।।४९।। त्रिगुणेन रसेनैव संमर्द्य गुटिकीकृतम् । मुखे धृतं करोत्याशु चलदंतविबन्धनम् ।।५०।।

(र० र० स०)

अर्थ–मैनफल के रस से कैंचुओं (भूनाग) को पीसकर कल्क कर लेवे उससे हीरे पर लेपकर (हमारी समझ में तो हीरे को उस कल्क में रख देवे) गजपुट में इस प्रकार बीस २० पुट देने से हीरे की भस्म हो जायेगी। इस भस्म को समस्त रसादिकों में वर्ते अथवा पूर्वोक्त भस्म में १२ बारहवां भाग सुहागा और २० भाग भूनागसत्व (कैंचुओं का सत्त) को मिलाकर गजपुट देवे फिर हीरे की भस्म के समान सुवर्णभस्म को मिलाकर मूषा द्वारा कोयलों की आंच में धोंककर तिगुने शुद्ध पारद के साथ गोली बनाकर मुख में रखे तो हिलते हुए दांत स्थिर होते हैं।।४७–५०।।

वज्रमारण

मेषश्रृंगभुजंगास्थि कूर्मपृष्ठाम्लवेतसम् ।। शशदंतसमं पिष्ट्वा वज्रीक्षीरेण गोलकम् ।। कृत्वा तन्मध्यगं वज्रं म्रियते ध्मातमेव हि ।।५१।।

(भावापुस्त० पं० कुलमणि)

अर्थ–मेढे का सींग, सांप की हड्डी, कछुवे की पीठ, अमलवेत, खरहा के दांत, इन सबको समान भाग लेकर थूहर के दूध से पीसकर गोला बनावे उसमें हीरे को रख कोयलों की अग्नि में धोंके तो हीरा शीघ्र ही भस्म हो जायगा।।५१।।

वज्रमारण

हिंगुसैंधवसंयुक्ते क्षिपेत्क्वाथे कुलत्थजे ।। तप्ततप्तं पुनर्वज्रं भवेद्भस्म त्रिसप्तधा ।।५२।।

(भा० पु०, पं० कुलमणि)

अर्थ–हींग और सैंधव से मिले हुए कुलथी के क्वाथ में हीरे को तपा के बुझावे तो इक्कीस बार में हीरा भस्म हो जायेगा।।५२।।

वज्रमारण

त्रिवर्षरूढकर्पासमूलमादाय पेषयेत् ।। त्रिवर्षनागवल्ल्या वा निजद्रावैः प्रपेषयेत् ।।५३।। तद्गोलके क्षिपेद्वज्रं रुद्ध्वा गजपुटे पचेत् ।। एवं सप्तपुटैर्नूनं कुलिशं मृतिमृच्छति ।।५४।।

(बृ० यो०)

अर्थ–तिवर्सी कपास के पेड़ की जड़ को लेकर तिवर्सी ही नागरबेल के रस से अथवा अपने ही रस से घोटकर गोला बनावे उसमें हीरे को रख गजपुट में फूंके। इस प्रकार सात बार पुट देने से हीरे की भस्म होगी।।५३।।५४।।

वज्रमारण

कांस्यपात्रस्थभेकस्य मूत्रे वज्रं सभावयेत् ।। त्रिःसप्तकृत्वः संतप्तं वज्रमेवं मृतं भवेत् ।।५५।।

(बृ० यो०)

अर्थ–कांसी के पात्र में मेढ़क को उलटा (चित्त) कर कुछ थोड़ा सा वजन रख देवे तो मेंढ़क मूत्र करेगा उसमें हीरे को तपा तपा कर इक्कीस बार बुझावे तो हीरे की भस्म होगी।।५५।।

तथा च

त्रिःसप्तकृत्वः संतप्तं खरमूत्रेण सेचितम् ।। मत्कुणैस्तालकं पिष्ट्वा तद्गोले कुलिशं क्षिपेत् ।।५६।। प्रध्मातं वाजिमूत्रेण सिक्तं पूर्वक्रमेर वै ।। भस्मीभवति तद्वज्रं शंखशीतांशुसुन्दरम् ।।५७।।

(बृ० यो०)

अर्थ–हीरे को तपा तपा कर गधे के मूत्र में बुझावे फिर खटमलों के संग पिसे हुए हरताल के गोले में हीरे को रखकर कोलयों में धोंके तदनन्तर घोड़े के मूत्र में बुझावे तो हीरे की भस्म चंद्रमा के समान श्वेत हो जायेगी।।५६।।५७।।

तथा च

नीलज्योतिर्लताकन्दे घृष्टं घर्मे विशोषितम् ।। वज्रं भस्मत्वमायाति कर्मवज्ज्ञानवह्निना ।।५८।।

(र० र० स०)

अर्थ–क्षीरकाकोली (नीलज्योतिर्लताकंद) के रस में हीरे को घिसकर तीव्र घाम में रख देवे तो जिस प्रकार ज्ञानाग्नि से कर्म भस्म होता है, उसी प्रकार हीरे की भस्म हो जायेगी।।५८।।

तथा च

विलिप्तं मत्कुणस्यास्रे सप्तवारं विशोषितम् ।। कासमर्दरसापूर्णे लोहपात्रे निवेशितम् ।।५९।। सप्तवारं परिध्मातं वज्रभस्म भवेत्खलु ।। ब्रह्मज्योतिमुनीन्द्रेण क्रमोयं परिकीर्तितः ।।६०।।

(र० र० स०)

अर्थ–हीरे पर खटमल के रक्त को लगाकर सुखावे इस प्रकार सात बार सुखा कर लेप करे उसको कोयलों में तपाकर लोहे के पात्र में रखे हुए कसौंदी के रस में बुझावे। इस प्रकार सात बार करने से हीरे की भस्म होगी। प्रत्येक बार सात सात खटमल के रक्त से सुखा सुखा कर लेप करना चाहिये।।५९।।६०।।

तथा च

कुलत्थक्वाथसंयुक्तलकुचद्रवपिष्टया । शिलया लिप्तमूषायां वज्रं क्षिप्त्वा निरुध्य च ।।६१।। अष्टवारं पुटेत्सम्यग्विशुष्यैश्च वनोपलैः । शतवारं ततोऽध्मात्वा निक्षिप्तं शुद्धपारदे । निश्चितं म्रियते वज्रं भस्मवारितरं भवेत् ।।६२।।

(र० र० स०)

अर्थ–मैनसिल को बढ़हर के रस से अथवा कुलथी के क्वाथ से पीसकर मिट्टी को घरिया में लेप कर देवे। उसमें हीरे को रखकर गजपुट देवे, इस प्रकार आठ पुट देवे। तदनन्तर उस भस्म को तपा तपा कर शुद्ध पारद भरे हुए पात्र में डालता जावे तो हीरे की भस्म जल पर तैरने वाली होगी।।६१।।६२।।

तथा च

वज्रं मत्कुणरक्तेन चतुर्वारं विभावितम् । सुगंधिमूषिकामांसैर्वेतितैः परिवेष्टयेत् ।।६३।। पुटेत्पुटैर्वराहाख्यैस्त्रिंशद्वारं ततः परम् । ध्मात्वा ध्मात्वा शतं वारान् कुलत्थक्वाथक क्षिपेत् ।।६४।। अन्यैरुक्तः शतं वारान् कर्तव्योऽयं विधिक्रमः । सत्यवाक् सोमसेनानीरेतद्वज्रस्य मारणम् ।।६५।। दृष्टप्रत्ययसंयुक्तमुक्तवान्रसकौतुकी ।।६६।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–हीरे को खटमलों के रक्त की चार भावना देवे फिर सुगन्धि मूषिका के मांस को लपेट वराहपुट देवे। इस प्रकार तीस पुट देवे फिर तपा तपा कर सौ बार कुलथी के क्वाथ में बुझावे। अन्य विद्वानों का यह सिद्धान्त है कि इसी रीति से (जो पूर्व कह चुके हैं) सौ बार करे तो हीरे की उत्तम भस्म होगी। सत्य भाषण करनेवाले सोमसेनानी ने इस विधि को अनुभूत कहा है।।६३।।६६।।

तथा च

काँसेके बासन विषै, मंडूक औंधे स्वाय ।
तिन के फेरे पेटपै, लोह सलाका लाय ॥१॥
ज्यों ज्यों लगै सुगिलगिली, त्योंत्यों सूतत जाय ।
तामें हीरा तप्तकरि, बारंबार बुझाय ॥२॥
याविधिते हीरा भस्म सुन्दर होय तयार ।
सब रोगन पै दीजिये, अनूपान अनुसार ॥३॥
(वैद्यादर्श)

तथा च

खटमल में हरिताल को, पीसि मिहीन बनाय ।
ऐसी कोमलको तवै, गाला तुरत बँधाय ॥१॥
गोला के बीच में, हीरा को धरि देइ ।
गोला कपरौटी सहित, सम्पुट दृढ़ करि लेई ॥२॥
ता गोला को आँच में, धौंकि लाल करवाय ।
तब घोड़ा के मूंत में, तुरतहि देय बुझाय ॥३॥
फिर हीरा हरताल के, धरिये गोला माँहि ।
पूरब बिधिते आँच में, लाल कीजिये ताहि ॥४॥
वैसे ही बुझवाइये, याविधि विरियां सात ।
करिबेते हीरा भसम, होइ निरुत्थ सुजात ॥५॥
ताको मिहीं पिसाय के वंटी में धरि लये ।
जथाजोग अनुपानते, सब रोगन पै वेय ॥६॥
(वैद्यादर्श)

हीरे का कुश्ता (उर्दू)

हीरे को रेजारेजा करके पान की जड के नुगदे में रखकर गजपुट आंच देता जावे जब तक नरम हाथ से पिसने के काविल हो जाने वास्ते तकवियत एजाइरीह और भडका ने हरारत गरीजी के अजवसनाफै है, खुराक एक खशखश है। तपेदिक वगैरः अमराज सख्त को भी मुफीद है। सुफहा १४ अखबार वैश्योपकारक लाहौर ३१/१०/१९०६)

हीरे की भस्म का प्रयोग

त्रिंशद्भागमितं हि वज्रभसितं स्वर्णं कलाभागिकं तारं चाष्टगुणं सितामृतवरं रुद्रांशकं चाभ्रकम् ॥ पादांशं खलु ताप्यकं वसुगुणं वैक्रांतकं षट्गुणं भागोऽप्युक्तरसै रसोयमुदितः षाड्गुण्यसंसिद्धये ॥६७॥ (र० र० स०)

अर्थ–हीरे की भस्म ३० भाग, सुवर्णभस्म १६ भाग, चांदी की भस्म ८ भाग, चन्द्रोदय ११ भाग, अभ्रक ४ भाग, सोनामाखी ८ भाग, वैक्रान्त (तर्मरी) भस्म ६ भाग इन सबको खरल में पीस सेवन करे तो षाड्गुण्य की प्राप्ति होती है॥६७॥

मृतवज्रसेवनफल

वज्रं समीरकफपित्तमदाम्निहन्याद्वज्रोपमं च कुरुते वपुरुत्तमश्रि ॥ शोषयज्वरभगंदरमेहदोषपांडूदरश्वयथुहारि च षड्रसाढ्यम् ॥६८॥
(वृ० यो०)

अर्थ–हीरा, बात, कफ, पित्त, मद को नाश करता है, शरीर को वज्र के समाद दृढ़ करता है। शोष, क्षय, ज्वर, भगंदर, प्रमेह, पांडु, उदररोग और शोथ को नाश करता है॥६८॥

वज्र के स्थान में वैक्रान्त का प्रयोग

भस्मीभूतं तु वैक्रान्तं वज्रस्थाने नियोजयेत् ॥६९॥
(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कच्चे हीरे की भस्म को वज्र की भस्म के स्थान में प्रयोग करना चाहिये॥६९॥

हीरे की द्रुति

वज्रवल्ल्यंतरस्थं च कृत्वा वज्रं निरोधयेत् ॥ अम्लभांडगतं स्वेद्यं सप्ताहाद्द्रवतां व्रजेत् ॥७०॥ (र० र० स०)

अर्थ–हडसंहारी की लकड़ी के बीच में हीरे को रखकर उसी से मुख को बंद कर देवे और कपड़ा (महीन) लपेट नींबू अथवा और किसी खट्टे पदार्थ में सात दिन रात स्वेदन करे तो हीरे की उत्तम द्रुति होगी॥७०॥

वैक्रान्त तथा अन्य रत्नों की द्रुति करने की विधि

केतकीस्वरसं ग्राह्यं सैन्धवं स्वर्णपुष्पिका ॥ इन्द्रगोपकसंयुक्तं सर्वं भांडे विनिक्षिपेत् ॥७१॥ सप्ताहं स्वेदयेत्तस्मिन्वैक्रान्तं द्रवतां व्रजेत् ॥ लोहाष्टके तथा वज्रे वापनात्स्वेदनाद्द्रुतिः ॥७२॥ जायते नात्र संदेहो यागस्यास्य प्रभावतः ॥ कुरुते योगराजोऽयं रत्नानां द्रवणं परम् ॥७३॥
(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अर्क केवड़ा, सैंधानोंन, कलहारी, बीरबहूटी इन सबको हांडी में भर सात दिवस तक तर्मरी को स्वेदन करे तो वैक्रान्त की द्रुति होगी। आठ प्रकार के धातुओं में जिसकी द्रुति करनी हो उसको गलावें और जब गल जावे तब थोड़ी सी वैक्रान्त की द्रुति डाल देवे तो उस धातु की द्रुति हो जायेगी अथवा इस द्रुति के साथ स्वेदन करने से भी द्रुति हो जायेगी॥७१–७३॥

नीलम के भेद और परीक्षा

जलनीलेन्द्रनीलं च शक्रनीलं तयोर्वरम् ॥ श्वैत्यगर्भितनीलाभं लघु तज्जलनीलकम् ॥७४॥ एकच्छायं गुरुं स्निग्धं स्वच्छं पिण्डितविग्रहम् ॥ मृदुमध्ये लसज्ज्योतिः सप्तधा नीलमुत्तमम् ॥७५॥ कामलमं विहितं रूक्षं निर्भारं रक्तगंधि च ॥ चिपिटाभं ससूक्ष्मं च जलनीलं च सप्तधा ॥७६॥
(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–नीलम दो प्रकार का होता है, जलनील और दूसरा इन्द्रनील, इन दोनों में इन्द्रनीली उत्तम है, जो सफेदाई के लिये नीलवर्णवाला और हलका हो उसको जलनील कहते हैं और केवल नीलवर्णवाला, भारी, चिकना, साफ, बीच में खरखरा न हो, चमकदार हो, इन सात लक्षणोंवाला नीलम उत्तम होता है, उसको इन्द्रनील कहते हैं तथा जो नीलम कोमल विहित रूक्ष हलका रक्तगंधि चिपटा सूक्ष्म ऐसे जलनील सात प्रकार का है॥४७–७६॥

नीलम के गुण

श्वासकासहरं वृष्यं त्रिदोषघ्नं सुदपिनम् ॥ विषमज्वरदुर्नामपापघ्नं नीलमारितम् ॥७७॥ (र० र० स०)

अर्थ–उत्तम नीलम श्वास, कास का नाश करनेवाला, वृष्य, त्रिदोष का नाशक और अत्यन्त दीपन है, विषमज्वर, बवासीर और पापों को नष्ट करता है॥७७॥

गोमेद की परीक्षा

गोमेदःसमरागत्वाद्गोमेदं रत्नमुच्यते ।। सुस्वच्छगोजलच्छायं स्वच्छं स्निग्धं समं गुरु ।।७८।। निर्दलं मसृणं दीप्तं गोमेदं शुभमष्टधा ।। विच्छायं लघु रूक्षाङ्गं चिपटं पटलान्वितम् ।।७९।। निष्प्रभं पीतकाचाभं गोमेदं न शुभावहम् ।।८०।। (र० र० स०)

अर्थ–बैल की चरबी के समान वर्णवाला होने से इस मणि को गोमेद कहते हैं। स्वच्छ गोमूत्र के सदृश वर्णवाला, साफ, चिकना, चौकोर, भारी, दलदार न हो, खरखरा न हो और चमकदार हो, इन आठ लक्षणोंवाला गोमेद शुभ है, तथा जो चमकदार न हो, हलका हो, रूखा हो, चिपटा हो और पीले कांच के समान हो वह गोमेद शुभकारी नहीं है।।७८–८०।।

गोमेद के गुण

गोमेदं कफपित्तघ्नं क्षयपांडुक्षयंकरम् ।। दीपनं पाचनं रुच्यं त्वच्यं बुद्धिप्रबोधनम् ।।८१।। (र० र० स०)

अर्थ–गोमेद, कफ, पित्त, क्षय, पांडु को नष्ट करता है, अग्नि को बढ़ाता है, पाचन है, रुचिकारक, त्वचा को हित और बुद्धि को बढ़ानेवाला है।।८१।।

वैदूर्य (लहसनिया) की परीक्षा

वैदूर्यं श्यामशुभ्राभं समं स्वच्छं गुरु स्फुटम् ।। भ्रमेच्छुभोत्तरीयेण गर्भितं शुभमीरितम् ।।८२।। श्यामतोयसमच्छायं चिपिटं लघु कर्कशम् ।। रक्तगर्भोत्तरीयं च वैदूर्य्यं नैव शस्यते ।।८३।।

(र० र० स०)

अर्थ–जो वैदूर्य स्वाभाविक श्यामता अथवा सफेदाई लिये हुये हो, चौकोन हो, साफ, भारी और उड़ते हुए सफेद दुपट्टे के समान झलकवाला हो, वह उत्तम है तथा जिसमें कालेजके समा वर्ण हो, चपटा हो, हलका और खरखरा हो और बीच में उड़ते हुए लालदुपट्टे की सी नाई हो ऐसा वैदूर्य त्यागन योग्य है।।८२।।८३।।

रत्नों की शुद्धि

शुद्ध्यत्यम्लेन माणिक्यं जयन्त्या मौक्तिकं तथा ।। विद्रुमं क्षारवर्गेण ताक्ष्यं गोदुग्धकैस्तथा ।।८४।। पुष्परागं च संधानैः कुलत्थक्वाथसंयुतैः ।। तंदुलीयजलैर्वज्रं नीलं नीलीरसेन च ।। रोचनाभिश्च गोमेदं वैदूर्य्यं त्रिफलाजलैः ।।८५।।

(र० र० स०)

अर्थ–खटाई से माणिक, जयन्ती के रस से मोती, क्षार वर्ग से मूंगा, गाय के दूध से ताक्ष्य (पन्ना), संधान (कांजी) से पुखराज, कुलथी के क्वाथ से युक्त कांजी से हीरा, नील के रस से नीलम, गोपित्त से गोमेद और त्रिफला के क्वाथ से वैदूर्य को स्वेदन करने से शुद्ध होता है।।८४।।८५।।

रेवटी का लक्षण

राजावर्तोऽल्परक्तोरुनीलिकामिश्रितप्रभः ।। गुरुत्वमसृणः श्रेष्ठस्तदन्यो मध्यमः स्मृतः ।।८६।।

(र० र० स०)

अर्थ–जिसमें कुछ सुर्खी और नीलाई लिये हुए चमक हो, भारी तथा चिकना हो वह राजावर्त (रेवटी) उत्तम होता है और उससे अन्य रेवटी मध्यम होता है।।८६।।

रेवटी के गुण

प्रमेहक्षयदुर्नापांडुश्लेष्मानिलापहः ।। दीपनः पाचनो वृष्यो राजावर्तो रसायनः ।।८७।।

(र० र० स०)

अर्थ–रेवटी प्रमेह, क्षय, बवासीर, पांडु, कफ और बातरोग को नाश करता है तथा रेवटी दीपन, पाचन वृष्य और रसायन है।।८७।।

रेवटी की शुद्धि

निम्बुद्रवैः सगोमूत्रैः सक्षारैः स्वेदिता खलु ।। द्वित्रिर्वारेण शुध्यन्ति राजावर्तादिधातवः ।।८८।।

(र० र० स०)

अर्थ–नींबू का रस, गोमूत्र, जवाखार और सज्जी इनके द्रव में दो तीन बार स्वेदन करने से रेवटी प्रभृति की शुद्धि होती है।।८८।।

अन्यच्च

शिरीषपुष्पार्द्ररसै राजवर्तं विशोधयेत् ।।८९।।

(र० र० स०)

अर्थ–अथवा रेवटी को तपाकर सिरस के फूलों के रस में बुझावे तो शुद्ध होगी।।८९।।

राजावर्त (रेवटी) का मारण

लुङ्गांबुगन्धकोपेतो राजावर्तो विचूर्णितः । पुटनात्सप्तवारेण राजावर्तो मृतो भवेत् ।।९०।।

(र० र० स०)

अर्थ–रेवटी के समान शुद्ध गंधक को खरल में रख बिजोरे के रस से घोट टिकिया बनाय गजपुट में फूंक देवे इस प्रकार सात पुट देने से रेवटी की भस्म होती है।।९०।।

रेवटी के सत्त्वपातन की विधि

राजावर्तस्य चूर्णं तु कुनटीघृतमिश्रितम् । विपचेदायसे पात्रे महिषीक्षीर–संयुतम् ।।९१।। सौभाग्यपंचगव्येन पिंडीबिद्धन्तु जारयेत् । ध्मापितं खदिरांगारैः सत्त्वं मुञ्चति शोभनम् ।।९२।। अनेन क्रमयोगेन गैरिकं विमलं भवेत् । क्रमात्पीतं च रक्तं च सत्त्वं पतति शोभनम् ।।९३।।

(र० र० स०)

अर्थ–रेवटी का चूर्ण और मैनसिल को समान भाग लेकर घृत में मिलावे उसको लोहे की कढ़ाई में डाल थोड़ा थोड़ा भैंस का दूध गेरता जावे और नीचे से आंच जलाता जावे तदनन्तर सुहागा और पंच गव्य से गोले बनाय खैरसार के कोयलों में धोंके तो सुन्दर पीला सत्त्व निकलेगा और इसी प्रकार गेरू का लाल सत्त्व निकलता है।।९१–९३।।

संगबसरी की किस्में शनाख्त व फवायद (उर्दू)

संगबसरी को अरबी में हिजरुलकाल और तूतियाई और किरमानी और खपरिया कहते हैं। सबसे बेहतर सफेद रंग का, बादहू जर्द, बादहू पस्ती होता है और बाजेकबरसी को अफजल जानते हैं। उमदगी की पहचान यह है कि अगर उसको सिरके में मिला दें तो उससे निहास की बू निकले इससे जस्त भी निकालते हैं। सुर्मे के वास्ते संगबसरी नरम पिसी हुई और धुली हुई मुस्तैमिल है, अमराज चश्म के वास्ते कुरहचश्म व दर्दचश्म के आग

अमराजचश्क को उसकी तरफ जाने से रोकती है और रतूबत को उसकी खुश्क करती है। धोने का तरीका यह है कि पोटली में बांधकर नतलूली को अफंशुर्दह में डोलजंतर गर्की करे यानी पोटली में बांधकर हांडी में शीरा तितलूली का डालकर इस तरह लटका दे कि पेंदे में न लगे और घंटे भर जोश देकर निकाल ले। (सुफ्हा ६३ किताब अलजवाहर)

हीरे के सिवाय अन्यरत्नों की भस्म की विधि

लकुचद्रावसंपिष्टैः शिलागन्धकतालकैः । वज्रं विन्यान्यरत्नानिः म्रियंतेऽष्ट-पुटैः खलु ॥९४॥

(र० र० स०)

अर्थ–समभाग लिये हुए मैनसिल, गंधक और हरताल को बड़हर के रस में रत्न (जिसकी भस्म करना हो उसको) के पीस गजपुट देवे। इस प्रकार आठ पुट देने से हीरे के बिना समस्त रत्नों की भस्म हो जायेगी॥९४॥

पारदकर्मोपयोगी रत्न बनाने की विधि

रत्नानि लोहानि वराटशुक्तिपाषाणजातं खुरभृंगतुल्यम् । महारसाद्येषु कठोरदेहं भस्मीकृतं तत्खलु सूतयोग्यम् ॥९५॥

(रं० र० स०)

अर्थ–रत्न, लोहा, कौड़ी, सीप, खुर और भौरें के समान काला गंधक बहुत कठिन भी हो तो (महारस) पारे आदि में, भस्म किया हुआ पारद कर्मोपयोगी बन जाता है॥९५॥

द्रुतियों के चिरस्थाई रखने की विधि

कुसुम्भतैलमध्ये तु संस्थाप्या द्रुतयः पृथक् ॥ तिष्ठन्ति चिरकालन्तु प्राप्ते कार्ये नियोजयेत् ॥९६॥

(र० र० स०)

अर्थ–जिन द्रुतियों को चिरस्थायी रखनी हो उनकी युक्ति को कहते हैं कि कसूम के तैल में द्रुतियों को रख देवे और आवश्यकता होने पर निकाल काम में लावे॥९६॥

रत्नों की द्रुति करने की विधि

रामठं पञ्चलवणं क्षाराणां त्रितयं तथा ॥ मांसद्रवोऽम्लवेतश्च चूलिका लवणं तथा ॥९७॥ स्थूलं कुम्भीफलंपक्वं तथा ज्वालामुखी शुभा ॥ द्रवंती च रुदन्ती च पयस्या चित्रमूलकम् ॥९८॥ दुग्धं स्नुह्यास्तथाऽर्कस्य सर्वं संमर्द्य यत्नतः ॥ गोलं विधाय तन्मध्ये प्रक्षिपेत्तदनंतरम् ॥९९॥ गुणवन्नवरत्नानि जातिमन्ति शुभानि च ॥ भूर्जे ते गोलकं कृत्वा सूत्रेणाऽऽवेष्टच यत्नतः ॥१००॥ पुनर्वस्त्रेण संवेष्टच दोलायंत्रे निधाय च ॥ सर्वाम्लयुक्तसंधानपरिपूर्णघटोदरे ॥१०१॥ अहोरात्रत्रयं यावत् स्वेदयेत्तीव्रवह्निना ॥ तस्मादाहृत्य संक्षाल्य रत्नजां द्रुतिमाहरेत् ॥ रत्नतुल्यप्रभा लघ्वी देहलोहकारी शुभा ॥१०२॥ (र० र० स०)

इति श्रीअग्रवालवैश्यवंशावतंसरायबद्रीप्रसादसूनुबाबूनिरंजनप्रसाद–संकलितायां रसराजसंहितायां रत्नवर्णनं नाम सप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥५७॥

अर्थ–हींग, पांचो नोंन, सज्जी, सुहागा, जवाखार, अमलवेत, नौसादर, कायफल, ज्वालामुखी, द्रवं, रुद्रदन्ती, क्षीरकाकोली और चीते की जड़ इनको अर्कदुग्ध, थूहर का दूध औरमांसरससे पीस गोला बनावे, उस गोले में जिस रत्न की भस्म बनानी हो उस शुद्ध रत्न को रखकर ऊपर से भोजपत्र लपेट देवे और भोजपत्र पर कच्चा सूत लपेट देवे। तदनन्तर सूक्ष्म कपडे में लपेटकर अनेक अम्ल (खट्टे) रसों से युक्त संधान में तीन दिन तीव्राग्नि से दोलायंत्र द्वारा स्वेदन करे फिर उसमें से निकाल और जल से धोकर रत्नों की द्रुतियों को निकाल लेवे॥९७–१०२॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठ–मल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां रत्नवर्णनं नाम सप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥५७॥

धातुभस्माध्यायः ५८

वैद्य प्रशंसनीय कब होता है

यावत्सूतो न शुद्धो न च मृतममृतं मूर्च्छितं गन्धबद्धं नो वज्रं मारितं स्यान्नच गगनवधो नोपसूताश्च शुद्धाः ॥ स्वर्णाद्यं सर्वलौहं विषमपि न मृतं तैलपाको न जातस्तावद्वैद्यः क्व सिद्धो भवति वसुभुजां मण्डले श्लाध्ययोग्यः ॥१॥

(रसरत्नसमुच्चय, र० रा० सु०)

अर्थ–जब तक पारद शुद्ध न किया हो, पारद की भस्म, पारद का मूर्च्छन और पारद को गन्धबद्ध न किया हो, वज्र की भस्म न की हो और अभ्रक की भस्म भी न की हो और उपरसों की शुद्धि न की हो, सुवर्ण से आदि लेकर समस्त धातुओं की भस्म तथा वत्सनाभ की शुद्धि न की हो और तैल का परिपाक भी न किया हो, तब तक वैद्य राजाओं की सभा में किस प्रकार प्रसिद्ध तथा प्रशंसनीय होता है अर्थात् नहीं होता॥१॥

धातुओं का वर्णन

शुद्धं लोहं कनकरजतं भानुलोहाश्मसारं पूतीलोहं द्वितयमुदितं नागवंगाभि–धानम् ॥ मिश्रं लोहं द्वितयमुदितं पिप्पलं कांस्यवर्तं धातुर्लोहे लुह इति मतः सोऽपि कर्षार्थवाची ॥२॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सोना और चांदी ये दोनों अशुद्ध (मैलरहित) धातु हैं, तांबा तथा लोहा ये अश्मलोह (पत्थरों से निकाले हुए) धातु हैं, नाग तथा वंग ये दोनों पूतीलोह, पीतल तथा कांसा मिश्रलोह कहाता है, लोहशब्द में लुह धातु माना गया है जिसका अर्थ खैंचना है अर्थात् जिसमें रोगों की खैंचने की शक्ति हो उसको लोह कहते हैं॥२॥

धातुमारण किससे उत्तम है

लोहानां मारणं श्रेष्ठ सर्वेषा रसभस्मना । मूलीभिर्मध्यमं प्राहुः कनिष्ठं गन्धकादिभिः ॥ अरिलोहेन लोहस्य मारणं दुर्गुणप्रदम् ॥३॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–समस्त धातुओं का रस भस्म के साथ भस्म करना उचित है, जडियों के साथ भस्म करना मध्यम, गंधक प्रभृति के साथ कनिष्ठ और अरिलोह से लोह का भस्म करना खराब है क्योंकि वह दुर्गुण का दाता है॥३॥

ग्रहों के योग से धातुओं की संख्या

ताम्रतारारनागाश्च हेमवंगौ च तीक्ष्णकम् । कांस्यकं कान्तलोहं च धातवो नव ये स्मृताः ॥४॥ सूर्यादीनां ग्रहाणां ते कथिता नामभिः क्रमात् । सूर्य्याचन्द्रमसौ भौमः शशिजो जीवभार्गवौ ॥५॥ सूर्यसूनुः सैंहिकेयः केतुश्चेति नव ग्रहाः ॥६॥

(शार्ङ्गधरसंहिता)

अर्थ–तांबा, चांदी, पीतल, सीसा, सुवर्ण, वंग, लोहा, कांसा, कांत लोह ये नव धातु है, सूर्यादि नवग्रहों के नामानुसार अनुक्रम से इनके नाम जानना। सूर्य चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नवग्रह कहे जाते हैं॥४–६॥

मन्सूबात (उर्दू)

नाम धातु सुर्ब कलई आहन तिला मिस सीमा व नुकरा जरेनेख किबरियत कवाकव मन्सूर जौहल मुश्तरी मरीख शमस जौहरा अतारद:कमर जनब रास यौम शंब: पंजशं ब:सहशंब: यकशंब: जुम्म: चहारशंब: दोशंब:

(सुफहा अलकीमियाँ १३५)

सब धातुओं की उत्पत्ति

शिवस्य तेजः प्रथितं रसायां देवीभवं गंधकमभ्रकाख्यम् । शुल्बं च सूर्यस्य सहस्ररश्मेश्चन्द्रस्य रौप्यं परमेश्वररस्य ।।७।। स्वर्णं तु विष्णुप्रभवं वदन्ति सीसं तु नागस्य च वासुकेश्च । लोह यमस्यैव हि कालमूर्तेर्वंगं च शुक्रस्य पुराविदो बुधाः ।।८।।

(टोडरानन्द)

अर्थ–श्रीमहादेव के वीर्य से पारद, पार्वती के रज से गन्धक और अभ्रक, सूर्य से तांबा, चन्द्रमा से चांदी, विष्णु से सुवर्ण, वासुकि नाग से सीसा, यमराज से लोहा और शुक्राचार्य से वंग उत्पन्न हुआ, ऐसा पुराने विद्वान कहते हैं।।७–८।।

सम्मति–हमारे विचार में तो ऐसा आता है कि ऊपर लिखा हुआ उत्पत्ति प्रकरण केवल रूपक है अर्थात् श्रीमहादेवजी ने वैद्यकशास्त्र पढ़कर अपनी बुद्धि से पारद का आविर्भाव किया अर्थात् पारा महादेवजी का नया निकाला हुआ है। इसी प्रकार जिन जिन देवताओं ने अपनी अपनी बुद्धि से जो रोगनाशक पदार्थ निकाले हैं उनको उन उन देवताओं से उत्पन्न हुआ कहते हैं।

(छप्पै) तथा

पारद शिवको तेज शक्ररूपी पहिचानौ । शिवातेज रजरूप अभ्र गंधक को जानौ ।। है परमेश्वरतेज स्वर्ण सो विष्णुरूप गनि । चांदी की उत्पत्ति चन्द्रमाते सु भई भनि ।। पुनि ताम्र भयो रवितेजते, वंग उपज भृगुतेसु लहि ।। भनि जस्त उपाधिक भेदते, सीसक वासुकिते सुलहि ।।
दोहा–कालरूप यमराजते, लोहा की उत्पत्ति ।
कही जु मुनि हारीतने, या प्रकार सब सत्ति ।।

(वैद्यादर्श)

तथा

सातों धात सातही खानि । तिनको कविजन कह्यो बखानि ।
बड़ी धात कवि कंचन कियो । ताकी समको और न बियो ।।
कहूँ कहूँ शैलन में खानि । गुनी करे अरु कृत्रिमवानि ।।
यही जुगति रूपे की कही । दुहूंभांतिके जानौं सही ।।
तांबो परबत खोदे होय । या बातै जाने सबकोय ।।
उपजै बंग रांग पुनि खानि । अरु सीसो रूपे संगजानि ।।
लोह खानि पृथिवी में जिती । बरनि सके को कविजन तिती ।।
कांसी पीतर कृत्रिम होय । इनकी जुगति सुने सबकोय ।।
सो सताईसवों तांबो रांगा । उत्तम होय न परई भांगा ।।
यह कांसको जानौ अंत । बेला थाली जेवें सन्त ।।
खपरात ते ले दूनो नाग । यह जाने तस्टी को भाग ।।
चौथो हिस्सा सीसो परै । तो भरिबे को तोरा करै ।।

(रससागर)

सातधातुओं की गुरुता का पारस्परिक संबन्ध

अब कहि है तिनकी मरजाद । गरई हरई जैसी खाद ।।
कुन्दन जैसो अंग बखानि । पुनि सीसे की चौंसठि जानि ।।
कहों तारके चोवन अंश । चार आगरी चालिस कंस ।।
लोह तोल पंचाचारीस । और रांग जानौ अठईस ।।
तस्टी छयाली सगति कही । पैंतालीस साल की सही ।।
अड़तालीस जु खपरसनी । पारो सत्तरमेक जु गनी ।।
यहै तोल मरजाद कही । रसरतनाकरते कर सही ।।

(रससागर)

यंत्र

सोना १०० सीसा ६४ चांदी ५४ लोहा ४५ कांसा ४४ रांग २८ पारा ७१ जश्त ४८ पीतल ४६ तांबा ४५वर्प का ४५

वजनमुतनासबः (उर्दू)

पानी १ जस्त ७ आहन ७५८ कलई ८५५ मिस ८५९ नुकरा १०५५ सुर्व ११५४ सीमाव १३५९५ तिला३५१९

वजन मुतनालिबः यानी (स्पेसिफिकग्रेवटी)

तिला १०० जीवक ७१ नुकरा ५४ असरव ४९ जस्त ४८ मिस ४५ आहन ४० कलई ३८
(सुफहा किताव अकलीमियाँ ५०)

मादनियातके पिघलाने के वास्ते फाइरनहीट (हरारत खारजी) का दर्जा

नामधातु–गंधक १९४ चांदी का महलूल ३८९ सीसा ६१७ जस्त ७०० चांदी १८७० सोना २००० तांवा २४०० लोहा २८०० फौलाद ३३००

सुफहा किताव अकलीमियां ३९)

अजसाद की नर्मी का सिलसिला (उर्दू)

अजसाद में नर्मी नंबरान जैल की तरतीब से होती है। (अलिफ) कलई (बे) जस्त (जीम) सुर्व (दाल) नुकरा (हे) तिला (वाउ) मिस (जे) आहन लिहाजा जब दो या तीन अजसाद बाहम गलाकर बुझा दिये जाते हैं तो नर्मी की तरतीब से उनकी खाकिस्तर होती है। (सुफहा किताव अकलीमियां २०)

लोहे व तांबे के शीघ्र गलाने की क्रिया

फिटकिरी और सोरा कलमी पीस कर लोहे अथवा तांबे पर लेप करके चरख देणा जल्दी गल जायेगा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

धातुओं के फल का वर्णन

मृत्यूपमृत्युनाशार्थं पारदं विशदं भजेत् ।। ये गुणाः पारदे देवि गन्धकाभ्रे च ते गुणाः ९।। आरोग्यं भास्करादिच्छेत्सोमो धातुसमृद्धये ।। रोगेशशान्तये सेव्यं देवदेवशमुत्तमम् ।।१०।।

(टोडरानन्द)

अर्थ–मृत्यु और उपमृत्यु के नाशार्थ उत्तम पारद का सेवन करे, हे पार्वती! जो गुण पारद में कहे गये हैं, वे ही गुण गंधक और अभ्रक में हैं, आरोग्य के अर्थ ताम्र का सेवन करे, धातु वृद्धि के लिये चांदी का सेवन, राजरोग की शान्ति के लिये सुवर्ण का सेवन करे।।९।।१०।।

सात धातुओं के अपगुण

स्वर्णं सम्यगशोधितं श्रमकरं स्वेदावहं दुःसहं रौप्यं जाठरजाड्यमान्द्यजननं ताम्रं वमिभ्रान्तिदम् ।। नागं च त्रपु चांगदोषदमथो गुल्मादिदोषप्रदं तीक्ष्णं-

शूलकर च कान्तमुदितं कार्श्यामयास्फोटकम् ।।११।। शुद्धो न चेन्मुण्डकतीक्ष्णकौ यदा क्षुधापहो गौरवगुल्मदायकौ ।। कान्तायसं क्लेदकतापकारकं रीत्यौ च संमोहनक्लेशदायिके।।१२।।

(रसराजसुन्दर)

अर्थ–बिना शुद्ध किया या कम शुद्ध किया सुवर्ण श्रम स्वेद और दुःख का देनेवाला है, अशुद्ध चांदी पेट का दर्द और मन्द अग्नि को करता है, तांबा वमन तथा शिरोभ्रम को करता है, अशुद्ध रांगा तथा सीसा शरीर का नाश तथा बायगोला रोग को करता है, अशुद्ध फौलाद शूल को करता है, अशुद्ध कान्त शरीर की कृशता रोग और फोड़ा फुन्सी को उत्पन्न करता है, मुण्ड और तीक्ष्ण यदि अशुद्ध हो तो शरीर का अहित करता है, क्षुधा का नाश जड़ता और गोला को करता है, अशुद्ध कान्त लोह क्लेद और ताप को उत्पन्न करता है, अशुद्ध पीतल तथा कांसा मोह और दुःखकारक जानना चाहिये।।११।।१२।।

धातुओं का साधारण शोधन

सर्वाभावे निषेक्तव्यं क्षीरतैलाज्यगोजलैः ।। शुद्धस्य शोधनं ह्येतद्गुणाधिक्याय सम्मतम् ।।१३।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–जहां सब शोधन पदार्थ नहीं मिलते हों वहां दूध तैल घृत और गोमूत्र इनमें बुझाव देने से सब धातु शुद्ध होते हैं। शुद्ध धातु को इनमें बुझाव देने से विशेष गुणकारी होता है।।१३।।

सब धातुओं के शोधक का सुगम उपाय

सर्वलोहानि तप्तानि कदलीमूलवारिणा ।। सप्तधाभिनिषिक्तानि शुद्धिमायां त्यथोत्तमम् ।।१४।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–सब धातुओं को तपा तपा कर केले की जड़ के रस में सात बार बुझाव देवे तो धातुओं की उत्तम शुद्धि होती है।।१४।।

तमाम अजसाद से मुसफ्फा करने की तरकीब (उर्दू)

सीमाव के सिवा मजकूरः बाला धातुएं यानी गंधक व हरताल तिलाव नुकसा व सुर्व व जस्त व कलई अगर गुंदाज करके आव केला में सात बार सर्द किये जावें तो पाक और मुसफ्फा हैं हो जाती है। (सुफ्हा अकलीमियां १८१)

किस रोग पर धातु का कैसा शोधन करना

अथैवं सामान्यं विशेषशोधनपरत्वेन झटिति गुणलब्ध्यर्थं निषेककर्माह नागार्जुनः । तत्तद्याध्युपयुक्तानामौषधानां जलेषु वै । प्रक्षेपं प्राह तत्त्वज्ञः सिद्धो नागार्जुनः पुनः ।।१५।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–प्रथम जो धातुओं का शोधन कहा है वह सामान्य शौधन है, विशेष शोधन करने से गुण की शीघ्र प्राप्ति के लिये नागार्जुन ने निषेक कर्म को कहा है। उन उन रोगों के उपयोगी औषधियों के स्वरस या क्वाथ में बुझाव देने को पदार्थवित्ता सिद्ध नागार्जुन ने प्रक्षेप कहा है।।१५।।

धातुमारण की प्रशंसा

सिद्धलक्ष्मीश्वरप्रोक्तप्रक्रियाकुशलो भिषक् । लोहानां सरसं भस्म सर्वोत्कृष्टं प्रकल्पयेत् ।।१६।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–सिद्ध लक्ष्मीश्वर की कही हुई प्रक्रियाओं में चतुर वैद्य पारदयुक्त धातुओं की भस्म करे तो वह सर्वोत्कृष्ठ होती है।।१६।।

पारे के बिना धातुमारण का दोष

चपलेन बिना लोहं यः करोति पुमानिह ।। उदरे तस्य किट्टानि जायन्ते नात्र संशयः ।।१७।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–जो वैद्यराज पारद के बिना धातुओं की भस्म करता है तो उस भस्मसेवन करनेवाले के उदर में कीड़े पैदा हो जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं है।।१७।।

पारद के बिना धातु शरीर में प्रवेश नहीं करता

न रसेन बिना लौहं न रसं चाभ्रकं विना ।। एकत्वेन शरीरस्य वेधो भवति देहिनः ।।१८।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–रस योग के बिना लोह (धातु) को नहीं मारना चाहिये और न उसका सेवन करना योग्य है तथा अभ्रक के बिना पारद का सेवन करना योग्य नहीं है। कारण इसका यह है कि पूर्वोक्त विधि से सेवन किया हुआ शरीर में प्रविष्ट हो जाता है।।१८।।

पुटज्ञान की आवश्यकता

रसादिद्रव्यपाकानां प्रमाणज्ञा नवं पुटम् ।। नेष्टो न्यूनाधिकः पाकः सुपाकं हितमौषधम् ।।१९।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–रसादि द्र यों के पाकों के जाननेवाले नवीन (द्र यानुसार) पुट को सिद्ध कर लेते हैं पदार्थों का न्यून और अधिक परिपाक करना योग्य नहीं है क्योंकि अच्छी प्रकार सिद्ध किया हुआ औषध हित होता है।।१९।।

धातुओं की भस्म में पुटनिर्णय

स्वर्णरूप्यवधे ज्ञेयं पुटं कुक्कुटकादिकम् । ताम्रे काष्ठादिजो बह्निर्लोहे गजपुटानि च ।।२०।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–सुवर्ण और चांदी की भस्म करने के लिये कुक्कुटादिपुट, तांबे की भस्म करने के लिये लकड़ी की आंच और लोहे की भस्म करने के लिये गजपुट हित है।।२०।।

पुट देने का फल

लोहानामपुनर्भावो यथोक्तगुणकारिका । सलिले तरणं वापि पुटनादेव जायते ।।२१।। पुटनात्स्याल्लघुत्वं च शीघ्रव्याप्तिश्च दीपनम् । जारितादपि सूतेन्द्राल्लोहनामधिको गुणः ।।२२।। (रससारपद्धति)

अर्थ–लोहों (धातुओं) का अपुनर्भाव अर्थात् अपने स्वरूप में फिर न आना और शास्त्रों में लिखे हुए के समान करना अथवा जल पर तैरना हलकापन शीघ्र ही शरीर में व्याप्त होना और अग्नि को बढ़ाना इत्यादि गुण पुट देने से ही उत्पन्न होते हैं, पारद भस्म करने से भस्म किये हुए धातुओं का गुण अधिक समझा गया है।।२१।।२२।।

धातुओं की भस्म का स्वरूप

स्वर्णं कपोतकंठाभमारमेवं सदा भवेत् ॥ शुल्वं मयूरकंठाभं तारवंगौ समोज्जवलौ ॥२३॥ कृष्णसर्पनिभं नागं तीक्ष्णं कज्जलसन्निभम् ॥ तदा शुद्धं विजानीयाद्वान्तिभ्रान्तिविवर्जितम् ॥२४॥

(रसराजसुन्दर)

अर्थ–सुवर्ण तथा पीतल की भस्म कबूतर के गले के समान और तांबे की भस्म मोर के कंठ के समान नीले रंग की, चांदी और वंग दोनों रंग के सफेद, सीसे की भस्म काले सर्प के समान और लोह भस्म काजल के समान काली होती है। इन सब धातुओं की ऐसी भस्म हो तो समझना चाहिये कि ये वमन तथा शिरोभ्रम को न करेंगी।।२३।।२४।।

भस्म की उत्तमता

कचकचिति न कुर्वंति दन्ताग्रे समानि केतकीरजसा । योज्यानि हि प्रयोगे रसोपरसलोहचूर्णानि ॥२५॥

(रसेन्द्रचिन्तामणि)

अर्थ–जो रस उपरस और धातुओं के चूर्ण के तरीके रज के समान महीन होकर दांतो के अगाड़ी खाने में कचकच नहीं करे तो उनको समस्त कामों में लावे।।३५।।

मृतधातुपरीक्षा

मध्वाज्यं मृतलोह च सरूपं संपुटे क्षिपेत् । रुद्ध्वा ध्माते च संग्राह्यं रूप्यं वै पूर्वमानकम् ॥ तदा लोहं मृतं विद्यादन्यथा मारयेत्पुनः ॥२६॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–शहद, घी और लोह (धातु) को समान भाग लेकर संपुट में रखकर बंदकर धोंके। यदि वह धातु अपने पूर्वरूप को प्राप्त हो जावे अर्थात् चांदी की भस्म की फिर चांदी हो जाय तो उसको चांदी की भस्म समझनी अन्यथा फिर धातु को भस्म करे।।२६।।

सम्मति–हमारी समझ में तो यह उस धातु भस्म के विषय में है जो जड़ी द्वारा सम्पादित होती है और जो रसभस्म के साथ भस्म किया अनुत्थ (अपने रूप में नहीं प्राप्त होनेवाला) भस्म होता है वह उत्तम होने के कारण अवश्य सेवनीय है।।

जुदागाना जांच इस अमरकी कि कुश्ता ठीक हो गया या नहीं (उर्दू)

अगर कुश्ता तिला को आब लैमूं में खरल करके रखे और वह बरंग सुर्ख हो जावे तो सही है वरने खाम, कुश्ता नुकरा को करनफल से मिलाकर खरल करें और अगर वह स्याह हो जावे तो सही है वरन खाम और कुश्ता अबरक को वर्ग मुबारिंद ताज के सात हाथ पर मलकर देखे और अगर इसमें चमक पैदा हो जावे और असली हालत पर आ जावे तो दुरस्त है वरनः खाम, कुश्ता तांबा को अगर दही से मिलाकर रखे और उसमें सबजी जाहर न है तो बिलकुल सही है वरनः कच्चा इस हालत में इसको हरगिज नहीं खाना चाहिये क्योंकि मुजिर व मुफस्सिद खून है और कुश्ता सुर्व को आग पर रखने से अगर सुर्ख हो जावे तो सही है वरनः खाम कुश्ता सीमाब को बकारात बलेला यानी भुर फिर जो कि मौसत बरसात में जमीन चरकीन पर खेती की तरह पैदा होता है उसको हाथ में ले और उस पर कुश्ता सीमाब डाले। अगर खाम है तो जिन्दा हो जावेगा वरनः कामिल है और ऐसे ही आग पर रखने से अगर धूआं न दे तो कामिल है और कुश्ता हरताल खून मंजमिद पर थोड़ा सा डाले अगर वह खून द रंग असली तहलील होकर बहने लग जावे तो दुरस्त है वरनः नाकिस और इसी तरह आग पर धुआं न देना कमालियत का सबूत है और कुश्ताशिंग्रफ अगर आग पर धुआं देनेवाला भी तजरुबतन बहुत मुफीद है और कुश्ता रुह तूतिया इसके खाने पर अगर इजाजत न हो तो कामिल है। (सुफहा २३ किताब मुजर्रिबात फीरोजी)

धातुओं की भस्म कैसी खाने योग्य है

सर्वमेव मृतं लोहं ध्मातव्यं मित्रपंचकैः । यद्येव स्यान्निरुत्थं तु सेव्यं वारितरं हि तत् ॥२७॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–समस्त धातुओं की भस्म को मित्रपंचक (घी, सहद, सुहागा, गूगल और चौंटनी) के साथ घोटकर कोयलों की आंच में धोंके इस प्रकार करने से यदि धातुभस्म अपने स्वरूप को प्राप्त न हो अर्थात् पुनर्जीवित न हो और जो जल पर तैरने लगे उसको सेवन करना चाहिये।।२७।।

मित्रपंचक

घृतमधुगुग्गुलुगुंजाटंकणमेतत्तु पंचकं मित्रम् ।
मेलयति सप्त धातूनगाराग्नौ तु धमनेन ॥२८॥

(रसराजसुंदर)

अर्थ–घृत, सहद, गूगल, चौंटनी और सुहागा इनको मित्रपंचक कहते है धातुओं की कच्ची या पक्की भस्म की परीक्षा करनी हो तो भस्म में ये पांचों वस्तु मिलाय घरिया में रखकर बंकनाल की धोंकनी से धोंके तो कच्ची धातु जी उठती है।।२८।।

तरीक जिंदाकर्दन कुश्तैहाइ अजसाद (फार्सी)

जुजान माइउलहियान खुर्द कि इबारत अदरोगन व सुहागा व शहद अस्त आँकदर दरखकिसतर जस्त अन्दाजन्द कि गिलोला बन्दद पस दर चमचा जाहनी निहन्द व वरआतिश गुजारन्द जिन्दाशबद । (सुफहा १२ किताव मुजरबात अकबरी)

धातुओं को जिलाने का उपाय

हयनखगजदन्तं माहिषं श्रृंगमूलमजशशनखकं वै मेषश्रृंगं प्रयुक्तम् । मधुघृतगुडगुंजाटंकणं भेदितैलमिति पटुसमकांगं सर्वलोहामृतित्वम् ॥२९॥ (रसराजसुंदर)

अर्थ–घोडे के नख, हाथीदांत, भैंस के सींग की जड, बकरी और शशा के नख, मेढा की सींग, शहद घृत, गुड चौंटनी, सुहागा तैल और नोंन इन सबको समान भाग लेकर भस्म के साथ घोट घरिया में रख आंच देवें तो समस्त कच्ची भस्म जीवित होती है।।२९।।

हरधातु के कुश्ते जिन्दा करने की तरकीब (उर्दू)

ऊन यानी भेड के बाल, माहीखुर्द, कन्द स्याह, गूगल, राई, एकएक हिस्सा शहद दो हिस्सा कुल अजजा को अव्वल कूट छान लें और शहद में बकदर जरूरत पानी मिलाकर और धातु का कुश्ता डालकर गोलियां बनावे बादहू मिट्टी की घरिया जिस्में पुरानी रुई पडी हो बनाकर गोलियां मजकूर उसमें रखकर बंकनाल से फूंके यहां तक कि चर्ख आ जावे हर धातु कुश्ता इस अमल से जिन्दा हो जाती है। (सुफहा अकलीमियां ११०)

कलई कुश्ता के जिन्दा करने की तरकीब (उर्दू)

कुश्ता कलई का पावभर लेकर जर्फ आहनी में रखकर चूल्हे पर चढा दे बादहू रोगन कुंजद दो दाम नौसादर एक सेर शाही उसमें इस तरह डाले कि अव्वल रोगन डालकर नौसादर उस पर छिड़क दे फिर तेल डाले फिर उस पर नौसादर छिडके और गुदाज करे कलई कुश्ता जिन्दा हो जावेगी।

मुतरज्जिम–एकदाम बीस माशे का और एक सेर शाही इक्कीस माशे का होता है। (सुफहा अकलीमियाँ ११०)

जिन्दाकर्दन कलई कुश्ता (फार्सी)

खाकिस्तर कलई दरचमचः आहनी अन्दाख्तः कदरेतेल कुंजद या रोगन तलखं व अन्दके नौसादर अन्दाजद व बरआतिश निहन्द जिन्दाकर्दद। (सुफ़हा १२ किताब मुजर्रबात अकबरी फार्सी)

मिस कुश्ता के जिन्दा करने की तरकीब (उर्दू)

मिसका कुश्ता पाव भर शहद जर्द, सुहागा एक एक दाम बोतें में डालकर कोयले की आग पर चर्ख दे जिंदा हो जायगा अगर एक बार में जिन्दा न हो फिर मुकर्रर अशियाइ मजकूर मिलाकर चर्ख दे इस्तरह से कि सुहागा निस्फ सेर शाही कुश्ता मजकूर में मिलाकर सहद सुहागे में खमीर करके गोला बनाकर चर्ख दे। (सुफ़हा अकलीमियां ११०)

फौलाद कुश्ता के जिन्दा करने की तरकीब (उर्दू)

कुश्ता फौलाद पाव भर सुहागा आध पाव संखिया छटांकभर जुमले अजजाइ को पीसकर पानी के जरिये से खुश्ता मजकूर में मिलावे और टिकियां बनाकर बोते में रखकर कोयलें की आग में चर्ख दे पानी की तरह होकर जिन्दा हो जायगा।

(सुफ़हा अकलीमियाँ १११)

जिन्दा कर्दन तिला (फार्सी)

कुश्ता तिला खाक शुदःरा दरबोतः दादः बर आतिश गरम कुनद व बाद गर्म शुद न अगर एक तोला तिला कुश्ता बाशद एक हुब्बा सुर्ब अन्दाजन्द तिला जिन्दा शवद (सुफ़हा १२ किताब मुजर्रबात अकबरी फार्सी)

हर धातु का कुश्ता व इस्तसनाइ आहन गजबेल के कुश्ता के जिन्दा करने की तरकीब (उर्दू)

ऊन यानी भेडी के बाल, छोटी मछली, गुड, गूगल, राई, घूंघची, सुहागा, रोगन कुंजद, नौसादर कुल हम वजन पीसकर आमेज करे और इन दवाओं के बराबर धातु का कुश्ता मिलाकर तोता मुअम्मा (अंधमूषा) में रखकर चर्ख दे। (सुफ़हा अकलीमियाँ १११)

समस्त धातुओं का निरुत्थीकरण

गंधकेन समं लोहं दत्त्वा खल्वे विमर्दयेत्। दिनैकं कन्यकाद्रावै रुद्ध्वा गजपुटे पचेत्। इत्येवं सर्वलोहानां कर्तव्येयं निरुत्थितिः ॥३०॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–गंधक के समान लोहभस्म को लेकर खरल में एक दिन तक घीगुवार के रस से खरल करे फिर संपुट रख गजपुट में पकावें तो लोह का फिर जीवित होना असम्भव है इसी प्रकार समस्त धातुओं का निरुत्थीकरण जानो ॥३०॥

धातु सेवन की मात्रा

एकां गुंजा समारभ्य यावत्स्युर्नवरक्तिकाः।
तावल्लोहं समश्नीयाद्यथादोषबलं नरः ॥३१॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–एक चौंटनी से लेकर नौ चौंटनी तक धातुओं की भस्म का सेवन करे अथवा दोषों के बलाबल का विचारकर मनुष्य धातु को सेवन करे॥३१॥

तथा च

यववृद्धया प्रयोक्तव्यं हेम गुंजाष्टकं रविः।
तारं तद्द्विगुणं लौहमन्यत्तु त्रिगुणाधिकम् ॥३२॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–एक जौ से लेकर आठ चौंटनी तक सुवर्ण तथा तांबे की भस्म का सेवन करें इससे दूना चांदी का सेवन और इससे तिगुना अन्य धातुओं का सेवन करना चाहिये॥३२॥

अकसीर और कुश्ता पुराना उमदा होता है (उर्दू)

खाने का अकसीर कुश्ता में यह महलूज रहे कि जितना पुराना कुश्ता होगा वह कवीउल अमल और बे जरर होगा इसी वास्ते जिस कुश्ते को कोठी गंदुम या जौ वगैरः में एक मुद्दत के वास्ते रख छोड़ते है वह मुकव्वी और उमदा हो जाता है और फौरन खाने का खास जरूरत पेश आवे तो कम से कम तीन रोज तक किसी तर जगह में दफन कर देना चाहिये। (सुफ़हा अकलीमियां २२)

कुश्ते को पेशाब के रास्ते खारिज करना (उर्दू)

आब बर्ग मकोइ सबज तोला, आबबर्ग रामतुलसी तोला, आध पाव पानी मिलाकर पिलाया करे सात हद दस रोज में बिलकुल सेहतः हो जावेगी, इम्तिहान करना हो तो पेशाब को किसी बर्तन में जमा करता जावे अखीर में नीचे बैठा हुआ नमक निकाल लें शहद सुहागा घी में यानी माउलहयात के जरियः चर्ख देकर जिन्दा करके देख लें। (सुफ़हा १९ रिसालः हिकमत १५/२/१९०७)

हरकिस्म का कुश्ता जिस्म से खारीज करने की तरकीब (उर्दू)

मुजरिबः अलामअ हकीम सय्यद गुलामहुसेन साहब कंतूरी प्रेसी डेन्ट कैमिकल सोसाइटी जिसके स्तैमाल से सात दिन से लेकर चौदह दिन के अन्दर कुश्ता सीमाब बीस बरस का खाया हुआ पेशाब के रास्ते से निकल गया शीराबर्ग मकोय सबज व शीरा बर्ग रामतुलसी हर एक तोला तोला भर लेकर आध पाव पानी में मिलाकर रोजाना पिलावे (सवानह उमरी अलमयः मौसूफ सुफ़हा २७२ मुलाहिज तलब) (सुफ़हा ३०३ किताब अलकीमियां)

सुवर्ण आदि के अभाव में प्रतिनिधि

सुवर्णमथा रूप्यं मृतं यत्र न विद्यते।
कान्तलोहेन कर्माणि तत्र कुर्याद्भिषग्वरः ॥३३॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–जहाँ सुवर्ण, अथवा चांदी की भस्म न मिलती हो वहां वैद्यराज कान्तिसार से काम चलावें॥३३॥

सर्वधातुमारण लाग

मीठा मौरा महीन कुतर के कमाद के सिरके में ४० दिन तक तर रखें फिर सुखा के महीन पीस के पास रखें जिस धातु को मारना हो उसके हेठ ऊपर दो दो रत्ती देकर दो पाथी (कण्डा) में आग देवे फुल हो जायगा यह एक लाग है॥ (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

सुवर्ण के भेद

प्राकृतं सहजं वह्निसंभूतं खनिसंभवम्। रसेन्द्रवेधसंजातं स्वर्णं पंचविधं स्मृतम् ॥३४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–प्राकृत सहज अग्नि से उत्पन्न, खान से पैदा हुआ और पारद से बनाया हुआ इस प्रकार सोने के पांच भेद है॥३४॥

अथ पंचविध सुवर्ण के लक्षण

ब्रह्माण्डं संवृतं येन रजोगुणभुवा खलु। तत्प्राकृतमिति प्रोक्तं देवानामपि

दुर्लभम् ॥३५॥ ब्रह्मा येनावृतो जातः सौवर्णेन जरायुणा । तन्मेरुरूपतां जातं सुवर्णं सहजं हि तत् ॥३६॥ विसृष्टमग्निनाशैवं तेजः पीतं सुदुःसहम् । अभूत्सर्वं समुद्दिष्टं सुवर्णं वह्निसंभवम् ॥३७॥ एवं स्वर्णत्रयं दिव्यं वर्णैः षोडशभिर्युतम् । धारणादेव तत्कुर्याच्छरीरमजरामरम् ॥३८॥ तत्रतत्र गिरीणां हि जातं खनिषु यद्भवेत् । तच्चतुर्दशवर्णाट्यं भक्षितं सर्वरोगहृत् ॥३९॥ रसेन्द्रवेधसम्भूतं तद्वेधजमुदाहृतम् । रसायनं महाश्रेष्ठं पवित्रं वेधजं हि तत् ॥४०॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–रजोगुण से उत्पन्न हुए जिस सुवर्ण से यह समस्त ब्रह्माण्ड व्याप्त हो रहा है उसको प्राकृत सुवर्ण कहते हैं वह देवताओं को भी दुर्लभ है। जिस सुवर्ण की बनी हुई जरायु से आवृत हुआ ब्रह्मा उत्पन्न हुआ वह जरायु मेरुरूप को प्राप्त हो गया उसको सहज सुवर्ण कहते हैं। पहले अग्नि ने जो श्रीमहादेवीजी के वीर्य (पारद) को पी लिया था उसको न पचाने के कारण वमन कर बाहर निकाल दिया उससे उत्पन्न हुए सुवर्ण को वह्निसम्भव कहते हैं। इस प्रकार उत्पन्न हुआ जो सुवर्ण दिव्य और सोलह वर्णों से युक्त अर्थात् पूर्ण रूपवाला होता है वह धारण करने से ही शरीर को अजर अमर करता है। और जो उन २ पर्वतों की खानों में जो सुवर्ण उत्पन्न होता है उसको खनिज सुवर्ण कहते हैं वह चौदह वर्णवाला होता है उसके खाने से समस्त रोग नाश हो जाते हैं। और जो पारद के वेध से सुवर्ण उत्पन्न होता है उसको वेधज सुवर्ण कहते हैं अर्थात् वह किमियाई सोना कहाता है वह रसायन गुणवाला पवित्र और महाश्रेष्ठ है॥३५–४०॥

तिला की किस्में (उर्दू)

तिला की पांच किस्में है अव्वल आवी जो रेग दरिया से हासिल होता है, दोयम कानी मादन से निकलता है, सोयम रावटी जो संग लाजवर्द से निकलता है, चहारम नवाती में जो एक दरख्त का गोंद है बाजे पहाड़ों पर होता है और उस गोंद को तांबे पर तरह करने से तिला करता है, पंजुम अमला तो एमाल कीमियाई से हासिल होता है और सबसे ज्यादा खरा होता है। (मुफ़हा अकलीमियां १७०)

अथ अशुद्ध सुवर्ण के दोष

बलं च वीर्यं हरते नराणां रोगव्रजं पोषयतीह काये । मृत्युं विदध्याद्विधिना न शुद्धं स्वर्णं तथा चामृतमप्यसम्यक् ॥४१॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–विधिपूर्वक शुद्ध नहीं किया हुआ सुवर्ण मनुष्यों के बल तथा वीर्य को हरता है और इस शरीर में अनेक प्रकार के रोगों को पालता है और मृत्यु को भी देता है इसी प्रकार सुवर्ण की कच्ची भस्म भी अपगुण करती है॥४१॥

तथा च

सौख्यं वीर्यं बलं हन्ति रोगवर्गं करोति च ॥
अशुद्धममृतं स्वर्णं तस्माच्छुद्धं च मारयेत् ॥४२॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अशुद्ध तथा अपक्व सुवर्ण सुख बल और वीर्य को नाश करता है, और अनेक प्रकार के रोगों को करता है इसलिये शुद्ध सुवर्ण को भस्म करें॥४२॥

सुवर्ण का शोधन

कर्षप्रमाणं तु सुवर्णपत्रं शरावरुद्धं पटुधातुयुक्तम् । अंगारसंस्थं प्रहरार्धमानं ध्मानेन तत्स्यात्खलु पूर्णवर्णम् ॥४३॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–एक तोले सुवर्ण के पत्रों को शरावसम्पुट में रख ऊपर नीचे लवण तथा गेरू को रख के डेढ़ घंटे तक कोयलों की आंच में धोंकने से शुद्ध तथा उत्तम वर्णवाला हो जाता है॥४३॥

सफाइतिला बजरियः सीसा (उर्दू)

१ सोने में अगर तांबा, लोहा, रांग, जस्त मिला होता है तो सीसा देकर राख यानी झारी की घरिया में गलाने से साफ हो जाता है और धातु जल जाती है सीसा झारी में मिल जाता है।

२ अगर चांदी मिली होगी तो तेजाब से साफ होगी क्योंकि जलाने में चांदी जलेगी तो सोना भी जलैगा।

३ तेजाब २/३ शोरा १/३ कसीस को खींचा जाया करता था, अब अँगरेजी से काम लेते हैं (अब्दुलसमद वल्द करमखां साकिन शहद कोल मुहल्ला वालाइ किला पीर अताउल्लाह नियारिया)

सुवर्ण की विशेष शुद्धि

वर्णमृत्तिकया लिप्त्वा मुनिशो ध्मापितं वसु ॥
विशुध्यति वरं किंच वर्णवृद्धिश्च जायते ॥४४॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–वर्णमृत्तिका (अर्थात् जिससे कुँभार घड़े रंगते हैं) उसे सोने को लपेटकर सात बार अग्नि में तपावे तो सुवर्ण शुद्ध होता है तथा सर्वोत्तम वर्ण होता है॥४४॥

खराब सोने के मैल को निकाल उत्तम करने की विधि

वल्मीकमृत्तिका धूम्रं गैरिकं चेष्टिका पटुः । इत्येता मृत्तिकाः पंच जम्बीरैश्चारनालकैः ॥४५॥ पिष्ट्वा कंटकवेध्यानि स्वर्णपत्राणि लेपयेत् । पुटेल्लघुपुटेनैव यावद्वर्णो विवर्धते ॥४६॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–बँमई की मिट्टी, घर का धूँआ, गैरू, ईंट का चूरा, और नोंन इन पांचों को जँभीरी के रस से पीस कंटकवेधी सोने के पत्रों पर लेपकर लघुपुट में रख देवे इस तरह जब तक वह उत्तम वर्ण का न हो तब तक पुट देता रहै॥४५॥४६॥

तथा च

इत्थमेव सुवर्णस्य शुद्धिर्नान्या हि विद्यते ।
तैलतक्रादिके या तु रूप्यादीनामुदाहृता ॥४७॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–पूर्वोक्त रीति जो वर्णन की गई है वही सुवर्ण की शुद्धि है और नहीं और तैल मठा आदि में जो शुद्धि है वह चांदी आदिकों की जाननी॥४७॥

सम्मति–इन पूर्वोक्त प्रकारों से जो सुवर्ण की शुद्धि लिखी है उससे वह सुवर्ण होता है जिसको कि भाषा में कुंदन कहते हैं।

तथा च

सुवर्णमुत्तमं वह्नौ विद्रुतं निक्षिपेत्त्रिशः । कांचनाररसे शुद्धं कांचनं जायते भृशम् ॥४८॥ (रससारपद्धति)

(रससारपद्धति)

अर्थ–उत्तम सुवर्ण को आंच में गलाकर कचनार के रस में तीन बार बुझावे तो सुवर्ण अत्यन्त शुद्ध होता है॥४८॥

सुवर्ण के गुण

स्वर्णं स्निग्धमथास्ति पीतमधुरं दोषत्रयध्वंसनं शीतं स्वादुरसायनं रुचिकरं चक्षुष्यमायुः प्रदम् ॥ प्रज्ञावीर्यबलस्मृतिस्वरकरं कान्तिं विधत्ते तनोः संधत्ते दुरितक्षयं श्रियमिदं धत्ते नृणां धारणात् ॥४९॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–सोना चिकना पीला मीठा और तीनों दोषों का नाशक है तथा ठंढा स्वादु रसायन रुचिकारक नेत्रों को हित, आयु का दाता, बुद्धि वीर्य बल स्मृति (याददास्त) और स्वर का करनेवाला शरीर की कान्ति को करता है, पापों को नाश करता है और सुवर्ण को शरीर पर धारण करने से मनुष्यों की शोभा को बढ़ाता है।।४९।।

तथा च

आयुर्लक्ष्मीप्रभाधीस्मृतिकरमखिलं व्याधिविध्वंसि पुण्यं भूतावेशप्रशान्तिस्मर भरसुखदं सौख्यपुष्टिप्रकाशि ।। गाङ्गेयं चाथ रूप्यं गदहरमजराकारि मेहापहारि क्षीणानां पुष्टिकारि स्फुटमतिकरणं वीर्यवृद्धिप्रकारि ।।५०।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सुवर्ण आयु लक्ष्मी कांति वृद्धि तथा स्मरण शक्ति को बढ़ाता है अनेक रोगों को नाश करता है पुण्यकारक है भूतबाधा को दूर करता है कामदेव के सुख को उत्पन्न करता है शरीर के सुख तथा आनन्द का प्रकाशक है, रोगों का नाशक बुढ़ापे को दूर करनेवाला प्रमेह का नाशक है दुर्बल मनुष्यों को पुष्ट करता है बुद्धि को प्रफुल्लित करता है और वीर्य की वृद्धि को करता है।।५०।।

तथा च

स्निग्धं मेध्यं विषगदहरं बृंहणं वृष्यमग्र्यं यक्ष्मोन्मादप्रशमनपरं देहरोगप्रमाथि।।मेधाबुद्धिस्मृतिसुखकरं सर्वदोषामयघ्नं रुच्यं दीपि प्रशमितरुजं स्वादुपाकं सुवर्णम् ।।५१।।

(र० र० स०)

अर्थ–सुवर्ण चिकना और पवित्र होता है विषजनित रोगों को दूर करता है बृहंण राजयक्ष्मा उन्माद और देह के अनेक रोगों को नाश करता है मेधा बुद्धि और स्मरणशक्ति को बढ़ाता है समस्त दोषों को दूर करता है रुचिकर्ता दीपन और परिपाक में स्वादु होता है।।५१।।

सुवर्णमारणप्रकार

स्वर्णस्य द्विगुणं सूतं समं वाम्लेन मर्दयेत् । तद्गोलकसमं गन्धं विदध्यादधरोत्तरम् ।।५२।। मृत्कर्पटैस्ततो रुद्ध्वा शरावदृढसम्पुटे । त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात्पुटान्येवं चतुर्दश ।।५३।। निरुत्थं जायते भस्म गन्धोः देयः पुनः पुनः ।। (रससारपद्धति)

अर्थ–सुवर्ण से दूना अथवा समभाग पारद लेकर अम्ल से अर्थात् बिजोरा या नींबू के रस से एकक प्रहर तक घोट गोला बनावे उस गोले के ऊपर नांचे गंधक देकर मिट्टी के शकोरे में रख और कपरौटी कर तीस जंगली कंडों में रखकर पुट देवे इस प्रकार चौदह पुट देवे प्रत्येक पुट में पारद के साथ घोट गंधक को ऊपर नीचे देना चाहिये। इस क्रिया करने से सुवर्ण की निरुत्थ भस्म होगी।५२।।५३।।

तथा च

सुवर्णेऽग्नौ द्रुते शुद्धं दद्यात्सीसं कलांशकम् । चूर्णयित्वा शनैः खल्वे मर्दयेदम्लयोगतः ।।५४।। पश्चात्तद्गोलकं कृत्वा तुल्यगन्धरजोगतम् । शरावसम्पुटे स्थाप्यं सन्धिरोधं विधाय च ।।५५।। त्रिंशद्वनोपलैः पच्यात्सप्तधैवं पुनः पुनः । निरुत्थं जायते भस्म सुवर्णस्य न संशयः ।।५६।। (रससारपद्धति)

अर्थ–सुवर्ण को घरिया में रख गलावे जब गल जावे तो तब उसमें सोलहवां भाग शुद्ध सीसा मिला देवे फिर दोनों को चूर्ण कर खरल में डाल धीरे धीरे नींबू के रस से घोटे फिर उसका गोला बना ऊपर नीचे सुवर्ण के समान भाग ली हुई गंधक का चूरा रखकर शकोरे में रख और कपरौटी कर तीस जंगली कंडों में फूंक देवे तो सात पुट में ही सुवर्ण की निरुत्थ भस्म हो जायगी इसमें सन्देह नहीं है।।५४–५६।।

तथा च

सिलासिन्दूरयोश्चूर्णं समयोरर्कदुग्धकैः सप्तधा भावयित्वा तु शोषयेच्च पुनः पुनः ।।५७।। ततस्तु गलिते हेम्नि कल्कोऽयं दीयते समः । पुनर्धमेदतितरां यथा कल्को विलीयते ।। एवं वेलात्रयं दद्यात्कल्कं हेम मृतिर्भवेत् ।।५८।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–मैनसिल और सिन्दूर के चूर्ण को समान भाग लेकर आक के दूध से सात बार सुखा २ कर भावना देवे फिर स्वर्ण के गलने पर उस कल्क को समान भाग लेकर सुवर्ण डाल देवे फिर गला कर कल्क डाल देवे एवं तीन बार करने से सुवर्ण की भस्म होगी।।५७।।५८।।

तथा च

कृत्वा कटकवेध्यानि स्वर्णपत्राणि लेपयेत् । लुङ्गाम्बुभस्मसूतेन म्रियते दशभिः पुटैः ।।५९।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सुवर्ण के ऐसे पत्र बनावे कि जिनमें कांटा छेदे तो छिद जावे उन पर बिजोरे के रस से घोटी हुई पारद की भस्म से लेपकर और शरावसम्पुट (सकोरे में बंद) मे रखकर दस बार गजपुट देवे तो सुवर्ण की भस्म होगी। (प्रत्येक पुट में सुवर्ण के समान पारदभस्म लेनी चाहिये)।।५९।।

सुवर्णभस्मविधि

द्रुते विनिक्षिपेत्स्वर्णे लोहमानं मृतं रसम् । विचूर्ण्य लुङ्गतोयेन दरदेन समन्वितम् । जायते कुंकुमच्छायं स्वर्णं द्वादशभिः पुटैः ।।६०।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सुवर्ण को अग्नि में गलाकर उसमें सुवर्ण की बराबर ही पारद की भस्म को डाल देवे फिर दोनों को चूर्ण कर खरल में डाल देवे और उसमें सुवर्ण के समान भाग शुद्ध सिंगरफ डाल एक दिवस तक बिजोरे के रस से घोटे और सम्पुट दे गजपुट में फूंके इस तरह बारह पुट देने से सुवर्ण की केसर के रंग के समान पीली भस्म होगी।।६०।।

तथा च

हेम्नः पादं मृतं सूतं पिष्टम्लेमम्लेन केनचित् । पत्रे लिप्त्वा पुटैः पच्यादष्टभिर्म्रियेत् ध्रुवम् ।।६१।। (रसरत्नसमुच्चय)

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सुवर्ण से चौथाई भाग पारदभस्म लेकर नींबू या और किसी खटाई से घोट सुवर्ण के पत्रों पर लेपकर गजपुट देवे इसी प्रकार आठ पुट देने से सुवर्ण की भस्म होगी।।६१।।

तरकीब कुस्ता तिला (उर्दू)

(शहंशाह नुसखा व मौसूम अकसीर अहमदी बिला दरेग बाद तजरुबा नाजरीन अलकीमियां की नजर है) बरसों की ताकतमेद जाइलशुदा को फिल और ऊद करनेवाला बाहका मुहर्रिक, एसाब मुर्दः का कामिल फाइदा बखश दूध घी हजम करके रंग बदन को अपने हमरंग कर देनेवाला और बेजरर दिलो दिमाग रूहो जिगर को कुव्वत बखशः जौफ मसानः का दाफै, मुमसिक और जईफों का असाइ हरारत गरीजी का रखवाला अगर दुनियां भर में है तो इससे बढ़कर कोई नहीं जो साहब इस सेना मौतकिद है उसी वक्त तक है कि जब तक इस शहंशाह नुसखे के जादू असर फाइदे को उन्होंने मशाहदा नहीं किया जिस रोज इसकी चंद खुराक स्तैमाल कर लेंगे बस फिर इसके गुलाम हैं, अब आपको मुनासिब है कि दिल लगाकर जरा इसरार आजम की तरकीब को मुलाहिजा फर्मावें।

अव्वल तिला खालिस उमदा तीन माशे का बुरादा करके चहार बूटियों के दस दस तोले पानी में तर तीन बार खरलकरे लेकिन यह खयाल रहे कि

खरल घिसनेवाला न हो, पहले आब पोस्तनीम दोयम आबबेख गुल अव्वासी, सोयम आबबर्ग तुलसी, चहारम आब गुलसुर्ख पहाडी आखिर नंबर पर स्याह रंग का बुरादा मजकूर नरम नरम हो जायगा, फिर इसका एक गिलोला बनाकर एक खुर्द प्याले गिली कोरे में रखकर दूसरा प्याला बतौर सरपोश मुँहपर देकर बाद गिलेहिकमत छह सेर उपले नीचे देकर बादहू प्याले के ऊपर छः सेर और उपले डालकर चारों तरफ आग लगावे जब सर्द हो जावे निकाल लै, बेचमक वह गिलोला मिस्ल खाक खिस्त कौहना कदरे रेग माइल व सुर्खी बरामद होगा पार्चाविज करके शीशी में निहायत हिफाजत से रखें इसका इश्तहार मुलाहिजा हो सुफहा ३१ पर (सुफहा १८–१९ किताब अखबार अलकीमियां)

कुश्तातिला पारा और गन्धक से (उर्दू)

सोने के वर्क २ तोले, पारा मुसफ्फा चार तोले खरल में डालकर एक सौ अदद अर्क लैमूं कागजी में सहक करे और फिर इसमें ६ तोले गंधक मुसफ्फा डालकर पचास अदद लैमूं का अर्क और डाले और खूब सहक करे और इसी का गोला बनाकर शकोरों में रखकर गिलेहिकमत करके तीस अदद उपलों में फूंक दे और फिर ६ तोले गन्धक मुसफ्फा डालकर और अर्कलैमूं कागजी बीस अदद सहक करे और तरीक मजकूर से फूंक दे इसी तरह चौदह मर्तबः फूंकने से सोने का कुश्ता तय्यार हो जायगा, जौफ बाह में चार चावल से एक रत्ती तक हमराह खावे। (सुफहा २४ किताब अखबार अलकीमिया १/५/१९०५)

कुश्ता तिला (फार्सी)

वर्क तिलाडबिरियां चस्पानीदः तहबतह दरजर्फ निहादह बआब वर्गपान यक अदद बाला बाशद कपरौटी साख्तः दर पंज आसार पाचकदस्ती आतिश दिहन्द अगर जरूरत बाशद दुबारा आब पान अन्दाख्तः आतिश दिहन्द। (अजकिताब तजरूबाव तुलसीप्रसाद साहब सिकंदराराऊ)

अभ्रस्वर्ण भस्म रसायन

अभ्रभस्म १००० आंच की ५ तोले, स्वर्णभस्म १०१ आंच की ४ तोले, लोहभस्म १०१ आंच की १ तोला, तीनों औषधियों को क्रम से निम्नलिखित औषधियों में खरल करके चौदह चौदह आंच दे लेनी प्रत्येक औषधि से अलग अलग चौदह चौदह आंच देनी चाहिये और हर आंच में १० तोले पारा खरल करते समय शामिल करना चाहिये हर बार तीन पहर खरल करना चाहिये और हर आंच ढाई सेर कंडों की होनी चाहिये।

तिधारे का दूध, आक का दूध, धतूरे का दूध, तुलसी का रस, घी ग्वार का रस, त्रिफला का क्वाथ, भांगरे का रस, चौलाई का रस, बथुआ का रस, शंखाहूली का रस, आकाशबेल का रस, अर्क गुलाब, नकछिकनी का रस, गाय का दूध (हकीम लाला बलदेवप्रसाद जी मुहल्ला नईबस्ती मुरादाबाद से)

उन्होंने कहा कि हकीम महमूदखां के यहां एक अकसीर बहुत पुराने जमाने की तय्यार रखी हुई है कि जिसको एक अस्सी बरस के बुड्ढे को खिलाया गया था ४० दिन में जिससे उसमें जवानों की सी ताकत आ गई और तीन सेर की भूख हो गई, सुबह को अकसीरी की एक खुराक देकर ऊपर से पाव भर घी और आध सेर दूध पिला दिया जाता था, थोड़ी देर नींद आ जाती थी और हालत नींद में बहुत सा पसीना बदन से निकल जाता था आंख खुलने पर फिर भूख मालूम होती थी और फिर घी दूध दिया जाता था इसी तरह दिन में कई दफे घी दूध पिलाया जाता था, ४० दिन में बहुत सा घी दूध खाकर बहुत सी ताकत आ गई, बाद को तबरीद खिलाकर मिजाज की गर्मी रफै कर दी गई।

सब प्रयोगों में सुवर्ण की श्रेष्ठता

सर्वौषधिप्रयोगेण व्याधयो न गता हि ये। कर्मभिः पचभिश्चापि सुवर्णं तेषु योजयेत् ॥६२॥ शिलाजतुप्रयोगैस्तु ताप्यसूतकयोस्तथा। अन्यै रसायनैश्चापि प्रयोगो हेम्न उत्तमः ॥६३॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–समस्त औषधियों के प्रयोग से अर्थात् अनेक औषधियों के देने से जो रोग नहीं गये हैं और आरोग पंचकर्मों के करने से नहीं गये हैं उन रोगों में सुवर्ण को देना चाहिये। शिलाजीत के प्रयोगों से अथवा सुवर्णमाक्षिक और पारद के प्रयोगों से अथवा अनेक रसायनों से भी सुवर्ण भस्म का प्रयोग उत्तम है।।६२।।६३।।

बिना भस्म किये हुए सुवर्ण के सेवन की विधि

अपक्वं सजलं हेम घृष्टं क्षौद्रयुतं पिबेत। अथवा नवकाख्यन्तु चूर्णितं मधुयुकूभजेत् ॥६४॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–विना भस्म किये हुए शुद्ध सुवर्ण के डेले का पानी में घिस और शहद मिलाकर पीवे अथवा सोने के वर्क को शहद मिलाकर चाटे।।६४।।

शुद्ध देह करने के बाद सुवर्ण का प्रयोग करना

विषमुक्ताय दद्याच्च शुद्धायोर्ध्वमधस्तथा। सूक्ष्मं ताम्ररजः काले सक्षौद्रं हृद्विशोधनम् ॥६५॥ शुद्धे हृदि ततः शाणं हेमचूर्णस्य दापयेत्। न सज्जते हेमयोगे पद्मपत्रेऽम्बुवद्विषम् ॥६६॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–जिस मनुष्य ने विष खा लिया हो उसको नीचे लिखे हुए प्रकार से सुवर्णभस्म खाने को देना चाहिये प्रथम वमन और विरेचन कराकर सूक्ष्म ताम्रभस्म को प्रातःकाल शहद के साथ देवे जिससे कि वमन और विरेचन होकर हृदय शुद्ध हो जायगा उसके बाद ४ माशे सुवर्णभस्म देनी चाहिये सुवर्ण के देने से विष का हृदय में योग नहीं होता।।६५।६६।।

सुवर्णभस्म के सेवन की विधि

एतद्भस्म सुवर्णजं कटुघृतोपेतं द्विगुञ्जोन्मितं लीढं हन्ति नृणां क्षयाग्निसदनं श्वासं च कासारुची। ओजोधातुविवर्धनं बलकरं पांड्वामयध्वंसनं पथ्यं सर्वविषापहं गरहरं दुष्टग्रहण्यदिनुत् ॥६७॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–यह सुवर्ण का भस्म दो रत्ती मिर्च और घी के साथ चाटा जावे तो मनुष्यों के क्षयरोग मन्दाग्नि श्वास खांसी और अरुचि को नाश करती है ओज और धातु के बढानेवाला बलकारक पाण्डुरोग का नाशक सब प्रकार के विषों का नाश करनेवाला और असाध्य संग्रहणी को भी दूर करनेवाला है।।६७।।

तथा च

बलं च वीर्यं हरते नराणां रोगव्रजं कोपयतीव काये। असौख्यकारं च सदैव पक्वं सदोषं मरणं करोति ॥६८॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कच्चा और अशुद्ध सुवर्ण मनुष्यों के बल और वीर्य को हरता है और अनेक रोगों को नाश करता है तथा सुख का नाश करनेवाला होकर मृत्यु को करता है।।६८।।

सुवर्ण के अनुपान

मध्वामलकचूर्णं तु सुवर्णं चेति तत्त्रयम्। प्राश्यारिष्टगृहीतोपि मुच्यते प्राणसंकटात् ।६९॥ मेधाकामस्तु वचया श्रीकामः पद्मकेसरैः ॥ खंडुपुष्प्या दयोर्थी च विदार्याथ प्रजार्थकः ॥७०॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–शहद और आमल का चूर्ण और सुवर्णभस्म इन तीनों को मिलाकर प्रातःकाल चाटे तो रोगों से पकड़ा हुआ भी मनुष्य प्राणसंकट से छूट जाता है (अर्थात् बच जाता है) बुद्धि की इच्छावाला मनुष्य दूधवच के साथ कांति की इच्छावाला कमल की केसर के साथ आयुवृद्धि इच्छावाला कंद के साथ

ओर संतान की इच्छावाला मनुष्य विदारी के साथ सुवर्ण भस्म को सेवन करे॥६९॥७०॥

सुवर्णभस्म के गुण

पक्वं हेम रसायनं विदुरथासद्यन्नपक्वं विषप्रध्वंसि क्षयिबृहणं बमिहरं बल्यां ज्वरिभ्यो हितम् । रूप्याद्येषु विमृश्य वादिभिरुपक्षिप्तोऽस्य पक्वे गुणस्ताम्रं कूपिविषार्तिहृन्निगदितं वैद्यैरपक्वं ध्रुवम् ॥७१॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–पके हुए सुवर्ण को रसायन कहते हैं क्योंकि पक्व सुवर्णभस्म विष और क्षय का नाश करनेवाला है, बलकारण है, ज्वर में जो वमन होता है उसको रोकनेवाला है, विना विचार किये हुए कितनेक वैद्यों के इसके गुण विना भस्म किये हुए सुवर्ण में लिखे हैं। कहीं कहीं वैद्यों ने पक्व ताम्र को भी विष का दूर करनेवाला कहा है॥७१॥

सुवर्ण की द्रुति

मण्डूकास्थिवसाटंकहयलालेन्द्रगोपकैः । प्रतिवापेन कनकं सुचिरं तिष्ठति द्रुतम् ॥७२॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–मेंडक की हड्डी और चरबी, सुहागा, घोड़े की लार व वीरबहूटी जो (वर्षात में लाल मखमल के समान जीव होता है) इनको पीस कर चूर्ण बना लेवे इसके बाद सुवर्ण को आंच में गलावे और पूर्वोक्त चूर्ण को थोड़ा २ प्रक्षेप करता रहे तो सुवर्ण के जल के समान पतला होकर बहुत दिन तक ठहरेगा॥७२॥

तथा च

चूर्णं सुरेन्द्रगोपानां देवदालीफलद्रवैः । भावितं सदृशं हेम करोति जलवद्द्रुतम् ॥७३॥

(रसरत्नसमुच्चय) (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–बीरबहूटियों के चूर्ण को देवदाली फलों के रस की सात भावना देवे और उस चूर्ण को गले हुए सुवर्ण में सात ही बार डाले तो सुवर्ण की द्रुति होगी॥७३॥

चांदी की उत्पत्ति

त्रिपूरस्य वधार्थाय निर्मिमेषैर्विलोचनैः । निरीक्षयामास शिवः क्रोधेन परिपूरितः ॥७४॥ ततः शुक्ला समभवत्तस्यैकस्माद्विलोचनात् । परस्मादभवद्रुद्रो गणो वह्निरिव ज्वलन् ॥७५॥ तृतीयादश्रुबिंदुस्तु लोचनादपतद्भुवि । तस्माद्रजतमुत्पन्नं नानाभूमिषु संस्थितम् । कृत्रिमं चापि भवति वंगादे सूतयोगतः ॥७६॥ मरणार्थं लोकसिद्धं ग्राह्यं लक्षणलक्षितम् ॥७७॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–महादेवजी ने त्रिपुर के मारने के लिये विना पलक मारे हुये नेत्रों से देखा तहां एक नेत्र से सफेदी पैदा हुई और दूसरी आंख से वीरभद्र हुआ और तीसरी आंख से जो आंसू की बून्द पृथ्वी पर गिरी उससे अनेक स्थानों पर चांदी पैदा हुई, यह चांदी रांग और शीश और पारद के योग से कृत्रिम भी पैदा होती है, चांदी की भस्म के लिये लोकप्रसिद्ध चांदी को लेना चाहिये॥७४–७७॥

चांदी के भेद और उनके लक्षण

सहजं खनिसंजातं कृत्रिमं त्रिविधं मतम् । रजतं पूर्वपूर्वं हि स्वगुणैरुत्तरोत्तरम् ॥७८॥ कैलासाद्यद्रिसंभूतं सहजं रजतं भवेत् । तत्सृष्टं हि सकृद्व्याधिनाशनं देहिनां भवेत् ॥७९॥ हिमाचलादिकूटेषु यद्रूप्यं जायते हि तत् । खनिजं कथ्यते तज्ज्ञैः परमं हि रसायनम् ॥८०॥ श्रीरामपादुकान्यस्तं वंगं यद्रूप्यतां गतम् । तत्पादरुप्यमित्युक्तं कृत्रिमं सर्वरोगनुत् ॥८१॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सहज खान से उत्पन्न हुआ और कृत्रिम भेद से रजत तीनप्रकार का है इनमें पूर्व २ सर्वोत्तम हैं, कैलासादि पहाडों में उत्पन्न हुआ रजत सहज कहाता है उसके एक बार देने से जीवो का रोग नाश होता है और हिमालयादि पहाड़ों पर जो चांदी उत्पन्न होती है वह परम रसायन और खनिज कहाती है और श्रीरामचन्द्रजीकी खडाऊं के लगने से जो रांग चांदी हो गया है उसको पादरूप्य या कृत्रिम कहते हैं वह सब रोगों को दूर करनेवाली है॥७८–८१॥

नुकरा की किस्में (उर्दू)

नुकरा की सात किस्में हैं क्योंकि सात तरह से हासिल होती है अव्वल मादन से, दोयम जस्त से, सोयम सीसा से, चहारम कलई से पंजम हरताल, शशम सिमसे, हफ्तम सीमाब से (मुफहा अकलीमियां १७०)

खराब चांदी का लक्षण

कृत्रिमं कठिनं रूक्षं रक्तपीतं दलं, लघु । दाहच्छेदघनैर्नष्टं रूप्यं दुष्टं प्रकीर्तितम् ॥८२॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–कृत्रिम चांदी कडी रूखी लाल पीली खिलनेवाली हलकी होती है यह चांदी खराब होती है॥८२॥

शुद्ध चांदी के लक्षण

गुरु स्निग्धं मृदु श्वेतं दाहे छेदे घनक्षमम् । वर्णाढ्यं चन्द्रवत्स्वच्छं रूप्यं नवगुणं भवेत् ॥८३॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–भारीपन अर्थात् भारी चिकनी कोमल तपाने और गलाने में सफेद घन (हथोड़े) को चोट को सहनेवाली, उत्तम, रंगवाली, चन्द्रमा के समान स्वच्छ ये चांदी के नव गुण है॥८३॥

तथा च

घनं स्वच्छं गुरु स्निग्धं दाहे छेदे सितं मृदु । शंखाभं मसृणं स्फोटरहितं रजतं शुभम् ॥८४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–घना साफ भारी चिकना तपाने तथा काटने से सफेद कोमल शंख के समान श्वेत और जो चोट लगाने से नहीं खिलता हो वह रजत (चांदी) अच्छी होती है॥८४॥

अशुद्धचांदी के दोष

तारं शरीरस्य करोति तापं विड्बन्धतां यच्छति शुक्रनाशम्[1] । वीर्यं बलं हन्ति तनोश्च पुष्टिं महागदान्पोषयति ह्यशुद्धम् ॥८५॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–अशुद्ध चांदी शरीर में ऊष्मा को करती है, कब्जी तथा वीर्य के नाश करती है तथा शरीर के बलपुरुषार्थ को नष्ट करती है और शरीर को दुर्बल करती है तथा अनेक रोगों को उत्पन्न करती है॥८५॥

शुद्ध चांदी के गुण

रूप्यं शीतं कषायाम्लं स्वादुपाकरसं सरम । वयसः स्थापनं स्निग्धं लेखनं वातपित्तजित् ॥८६॥ प्रमेहादिकरोगांश्च नाशयत्यचिराद् ध्रुवम् । गुटिकास्य धृता वक्त्रे तृप्ता शोषविनाशिनी ॥८७॥

(रससारपद्धति)

१–स्फुटनशीलम् ।

चांदी ठंढी, कषैली, खट्टी, परिपाक में मीठी, दस्तावर, आयु को स्थिर रखनेवाली, चिकनी और वातपित्त को जीतनेवाली है, प्रमेह आदि रोगों को शीघ्र ही नाश करती है। इसकी गोली को मुख में रखने से मुखाशोष को दूर करती है।।८६–८७।।

तथा च

रूप्यं विपाकमधुरं तुवराम्लसारं शीतं सरं परमलेखनकं च रुच्यम्। स्निग्धं च वातकफजिज्जठराग्निदीपि बल्यं परं स्थिरवयः करणं च मेध्यम् ॥८८॥ रौप्यं शीतं कषायाम्लं स्निग्ध वातहरं गुरु ॥ रसायनविधानेन सर्वरोगापहारकम् ॥८९॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–चांदी परिपाक में मीठी और भीतर से खट्टे रसवाली ठंढी, दस्तावर और अत्यन्त लेखन जठराग्नि को दीप्त करती हैं, रुचिकारक चिकनी वात पित्त को जीतनेवाली पवित्र और आयु को स्थिर रखती है। चांदी ठंढी कषैली खट्टी चिकनी वातहर और भारी होती है और रसायनविधि से समस्त रोगों का नाश करनेवाली है।।८८।।८९।।

अशुद्ध चांदी मारने के दोष

आयुः शुक्र बलं हन्ति तापविड्बन्दरोगकृत्। अशुद्धं च मृतं तारं शुद्धमार्यमतो बुधैः ॥९०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अशुद्ध मारी हुई चांदी आयु शुक्र तथा वल को नाश करती है। सन्ताप तथा कब्जियत को करती है इसलिये वैद्य को चाहिये कि चांदी को शुद्ध करके ही भस्म करनी चाहिये।।९०।।

चांदी की शुद्धि

समसीसं धमेद्वह्नौ रजतं मूषिकोदरे। यावत्सीसक्षयं तावद्रूप्यशुद्धिः परा भवेत् ॥९१॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–चांदी में चांदी के तुल्य सीसा मिलाकर और दोनों को घरिया में रख आंच में धोंके जब धोंकते धोंकते सीसा जल जाय तब चांदी की उत्तम शुद्धि हो जायगी।।९१।।

तथा च

पत्रीकृतं तु रजतं प्रतप्तं जातवेदसि। निर्वापितमगस्त्यस्य रसे वारत्रयं शुचि ॥९२॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–चांदी के पत्र बनाकर और अग्नि में तपा तपाकर अगस्त्य के पत्तों के रस में तीन बार बुझावे तो चांदी अत्यन्त शुद्ध होगी।।९२।।

तथा च

तैले तक्रे गवां मूत्रे ह्यारनाले कुलित्थजे। क्रमान्निषेचयेत्तप्तं द्रावेद्रावे तु सप्तधा ॥ स्वर्णादिलोहपत्राणां शुद्धिरेषा प्रशस्यते ॥९३॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सुवर्ण आदि धातुओं में जिसको शुद्ध करना हो उसके पत्र बनाकर तैल मठा गोमूत्र कांजी और कुलथी के काढे में तपा तपाकर क्रम से सात २ बार बुझावे तो स्वर्णादि धातुओं की उत्तम शुद्धि होगी।।९३।।

तथा च

नागेन टंकणेनैव वापितं शुद्धमिच्छति ॥ तारं त्रिवारं निक्षिप्तं तैले ज्योतिष्मतीभवे ॥९४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–गली हुई चांदी में समभाग शीसा तथा सुहागा डालकर तेज अग्नि में धोंके फिर मालकांगनी के तैल में सात बार बुझावे तो चांदी शुद्ध होगी।।९४।।

तथा च

खर्परे भस्मचूर्णाभ्यां परितः पालिकां चरेत्। तत्र रूप्यं विनिक्षिप्य समसीससमन्वितम् ॥९५॥ जातसीसमयं यावद्धमेत्तावत्पुनः पुनः। इत्थं संशोधितं रूप्यं योजनीयं रसादिषु ॥९६॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–खिपरे में चूने और राख की गोल क्यारी बनाकर उसमें सम भाग सीसा और चांदी मिलाकर रख देवे और कोयले पर चढा आंच लगावे, जब सीसा जलकर चांदीमात्र रह जावे तब उस शुद्ध चांदी को रसादिको में बर्ते ।।९५–९६।।

तथा च रजतभस्म

विधाय पिंडिं सूतेन रजतस्याथ मेलयेत्। तालं गंधसमं शुद्धं तन्मर्द्य निंबुकद्रवैः ॥९७॥ गोलकीकृत्य संरुद्धं मूषायां स्वर्णवद्दृढम्। द्वित्रैः पुटैर्भवेद्भस्म योज्यते तद्रसादिषु ॥९८॥ (रसराजपद्धति)

अर्थ–चांदी और पारे के समान भाग लेकर खरल में डाल कर घोटे फिर हरताल और गंधक को समान भाग लेकर खरल में डाल चारों पदार्थों को नींबू के रस से घोट गोला बनाय घरिया में रख और ऊपर से दूसरी घरिया रख मुद्रा करे, सुवर्ण के समान दो तीन ही पुट देने से चांदी के भस्म होती है। रसादिकों में उसका प्रयोग करना चाहिये।।९७––९८।।

तथा च

भागकै तालकं मर्द्य याममम्लेन केनचित्। तेन भागत्रयं तारपत्राणि परिलेपयेत् ॥९९॥ धृत्वा मूषापुटे रुद्ध्वा पुटेत्त्रिंशद्वनोपलैः। समुद्धृत्य पुनस्तालं धृत्वा रुद्ध्वा पुटे पचेत् ॥ एवं चतुर्दशपुटैस्तालं हेम प्रजायते ॥१००॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–एक भाग हरताल को किसी खटाई में घोट कर तीन भाग चांदी पर लेप कर दे फिर उसको घरिया में रख और कपरौटी कर तीस जंगली कंडों में फूंक देवे फिर निकालकर पूर्वोक्त रीति से लेप कर चौदह बार फूंके तो चांदी भस्म होगी।।९९।।१००।।

तथा च

लकुचद्रवसूताभ्यां तारपत्राणि लेपयेत्। ऊर्ध्वाधो गन्धकं दत्त्वा मूषामध्ये निरुध्य च ॥१०१॥ स्वेदयेद्वालुकायंत्रे दिनमेकं दृढाग्निना स्वाङ्गशीतां च तांपिष्टिं साम्लतालेन मर्दिताम्। पुटे द्वादशवाराणि भस्मी भवति रूप्यकम् ॥१०२॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पारद और चांदी को नींबू के रस में घोटे अथवा पारद भस्म को नींबू के रस में घोट चांदी के पत्रों पर लेप करे और उपर नीचे गंधक देकर घरिया में रख और कपरौटी कर बालुकायन्त्र में एक दिन तीव्राग्नि से स्वेदन करे, स्वांगशीतल होने पर उस पिट्ठी को खटाई और हरताल के साथ मर्दन करे इस प्रकार १२ पुट देने से चांदी की भस्म हो जायगी।।१०१।।१०२।।

तथा च

माक्षीकचूर्णलुङ्गाम्बमर्दितं पुटितं शनैः। त्रिंशद्वारेण तत्तारं भस्मसाज्जायतेत राम् ॥१०३॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–चांदी के रेत से चौथाई भाग सोनामक्खी का चूर्ण लेकर दोनों को बिजोरे के रस में घोट बारह पुट देवे इस प्रकार तीस बार करने से चांदी की भस्म होती है।।१०३।।

तथा च

भाव्यं ताप्यं स्नुहीक्षीरैस्तारपत्राणि लेपयेत्। मारयेत्पुटयोगेन निरुत्थं जायते

ध्रुवम् ।।१०४।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सोनामक्खी को थूहर के दूध से भावना देकर चांदी के पत्रों पर लेप करे फिर सम्पुट में रख गजपुट में रख गजपुट में फूंक देवे तो चाँदी की निरुत्थ (पक्की) भस्म होगी।।१०४।।

तथा च

तारपत्रं चतुर्भागं भागैकं शुद्धतालकम् । मर्द्य जम्बीरजद्रावैस्तारपत्राणि लेपयेत् ।।१०५।। शोषयेदातपे नूनं त्रिंशदुपलकैः पचेत् । चतुर्दशपुटैरेवं निरुत्थं जायते ध्रुवम् ।।१०६।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–चांदी के पत्रों से चौथाई भाग शुद्ध हरताल लेकर नींबू के रस में घोट और पत्रों पर लेप कर सुखा लेवे फिर सम्पुट में रख और कपरौटी कर तीस जंगली कंडों की आंच में फूके इस प्रकार चौदह पुट देने से चांदी की निरुत्थ भस्म होगी प्रत्येक पुट में चतुर्थांश हरताल डालनी चाहिये।।१०५।।१०६।।

तथा च

६ तोले लजवंती की लुगदी में रुपया रख कर पक्के पाव भर चीथडो को लपेट आग लगा दे तो भस्म होगी। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा च

६ तोले पीपल के छाल की लुगदी में रुपया रख के कच्चे पाव भर कपड़ा लपेट के ६ सेर पक्के ऊँट की मींगनी में आग देवें भस्म होगी। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता चांदी एकही आग में फली बबूल में (उर्दू)

चांदी का पत्तरा १ तोले, कच्चे तिकले कीकड़ के ४ तोले नुगदा बनाकर उसमें पत्रे रखकर १५ सेर उपलों की आग देवे एक ही आग में कुश्ता होगा मुजर्रिब है। (सुफहा ९ वैशोपकारक लाहौर १६/८/१९०५)

कुश्ता चांदी का एक आँच का (उर्दू)

कुश्ता चांदी का एक आंच का निहायत अजीब व गरीब इसरारी व सदरी नुसखा जिसको मैंने आज तक मुखफ्फी रखा था इसका अखबार अलकीमियां में दर्ज कराना बजिन्सई यह मसल है मिसरा कागज पै रख दिया है कलेजा निकाल कर, अगर अलकीमियाँ की बिरादरी अब भी एडीटर साहब की कदर अफजाई न फर्मावे और अलकीमियाँ की खरीदारी से इसे तकबियत न बखशे तो निहायत अफसोस का मुकाम होगा, गुलेनीम ४५ तोला, रोगन कुंजद ६ माशे, चांदी बशकल रुपया १ तोले, नीम के फूलों के घोटकर तेल मिलाकर गोला सा बना लो और रुपया दर्मियान देकर १५ सेर उपलों की आंच दे दो फूल जावगा और कौनेन की तरह मुलाइम कुश्ता होगा। (सुफहा १३ अखबार अलकीमियां २४/२/१९०९)

कुश्ता नुकरा एक आंच–जाफरान व सहंजने की लुबदी में (उर्दू)

खालिस सहंजने की जड का पानी निकालकर जाफरान एक तोले को पीसकर दो टिकियां बना लेवे चांदी तोला भर एक पत्र बनाकर हर दो टिकिया में देकर फिर सहँजने की पोस्त जड के सेर भर नुगदे में रखकर मजबूत कपरौटी और गिलेहिकमत करके गजपुट आंच दे इन्शा अल्लाह एक ही आंच में कुश्ता हो जायगा। (सुफहा १० अखबार अलकीमियां १५/१९०५)

कुश्ता नुकरा कटाई सफेद फूल में एक आंच (उर्दू)

चांदी को अगर कटाई खुर्द जिसको अरबी में हदक और फार्सी में बादंजानबरी और पंजाबी में खटली और सत्यनासी कहते हैं बशर्ते कि सफेद गुल की दस्तयाब हो, इल कदर लुबदी में कि अच्छी तरह पोशीदा हो जावे रखकर दो तीन सेर कंडों में सीतल पुट की तरह आग दे तो निहायत आला किस्म का कुश्ता तय्यार होता है, जो आजब अबा सीमाब भी है क्योंकि तनेतनहा अकसीरी है और इससे अकसीर कमरी बनाई गई है कई अझखास की तजरुबा हुआ है। (सुफ्हा २६ अखबार अकलीमियां १६/५/१९०५)

रुपये का कुश्ता एक आंच में (उर्दू)

बर्ग घुंघची स्याह ६ माशे, बर्ग भंगरा सफेद आध पाव पुख्त सुहागा डेढ माशे बर्ग हाईको पीसकर नुगदा तैय्यार करे और अन्दर नुगदे के कदरे सुहागा डालकर रुपया रख दे ऊपर से किसी कदर सुहागा और डाले, फिर गोला सा बना लें कि रुपया बिल्कुल गायब हो जाय, एक पार्चा चार पांच अंगुल चौड़ा पीली मिट्टी में लतपत करके गोले पर कपरौटी करे २२ सेर पुख्त: कंडे सहराई यानी आरने जंगली की आंच दे, सर्द होने पर निकाले, इन्शाअल्लाह कुश्ता होगा, (सय्यद निजामुद्दीन हकीम भोरावाला जिला अंबाला) (सुफ्हा १० अखबार अलकीमियां १/७/१९०५)

कुश्ता नुकरा एक आंच (उर्दू)

कुलिया इसका यह है कि अगर चांदी के औराक बाजारी को तोले भर लेकर शहद में इस कदर सहक करे कि अच्छी तरह औराक मजकूर हल हो जावे, बादहू पानी से धो डाले ताकि असर शहद का इसमें बाकी न रहे। बादहू जिस बूटी के नुगदे में मंजूर हो और जिनमें धातु के कुश्ता करने का खास्सा भी हो, मस्लन ब्रह्मीबूटी जिसको जरनब अरबी में कहते हैं या दूधी खुर्द उफ्लादह या बर्गसदाब यानी तितली या मेंढ़ासिंगी वगैरः के लुबदे में जिसका वजन आधसेर हो खूब बारीक बिला आमेजिश पानी के पीस कर चांदी मसहूका मज़कूर को उसमें रखकर ऊपर से गोला बनाकर गिलेहिकमत करके बाद तखफीद दस सेर पाचक खानगी ख्वाह सात सेर पाचक दश्ती की कर्सी यानी बुरादा में रखकर मिस्ल लखपुट के फूंक दे, उमदा किस्म का कुश्ता तैयार हो जायेगा और वजन बदस्तूर रहेगा, ब्रह्मीबूटी से बतरीक मजकूर कुश्ता मुकर्रमी जनाब मोलवी मुहम्मद अब्दुलरहमान डिपटी कलक्टर गोरखपुर ने तजरुबा किया है। (सुफ्हा २५–२६ अखबार अलकीमियां १६/५/१९०५)

रूप्यभस्म के सेवन की विधि

भस्मीभूतं रजतममलं तत्समौ व्योमभान् सर्वैस्तुल्यं त्रिकटुसवरं सारघाज्येन युक्तम् ।। लीढं प्रातः क्षपयतितरां यक्ष्मपांडूदरार्शः श्वासं कासं नयनजरुजः पित्तरोगानशेषान् ।।१०७।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–शुद्ध चांदी की भस्म दो भाग और दो ही भाग अभ्रक भस्म तथा ताम्रभस्म और इन सबके बराबर त्रिफला और त्रिकुटा इन सबका सूक्ष्म चूर्णकर प्रातःकाल घृत और शहद के साथ खावे तो क्षय पाण्डु उदररोग बवासीर श्वास खांसी नेत्र में उत्पन्न हुए रोग और समस्त पित्तज रोगों को नाश करती है।।१०७।।

कुश्ता नुकरा एक आंच (उर्दू)

(१) नुकरा का कर्स जिस कदर चाहे लेवे या रुपया कल्दार अर्क एक सटिया जिसको शागरमिया भी कहते हैं (बागों के अतराफ में)–

(२) बतौर बाढ के लगाया जाता है गर्म करके ग्यारह दफे बुझाव देने से नुकरा कुश्ता बरंग सफेद जो पबलिक के काबिल है हो जाता है, अगर बाद गोता के इसके अर्क में रखकर सात या आठ सेर आग दी जावे सफेद गुलाबी माइल (कुश्ता बरामद होगा) (सुफहा १६ किताब अखबार अलकीमियां १/४/१९०५)

नुकरा का ऐसा कुश्ता जो ७० तोला पारे को जज्ब करता है (उर्दू)

जो अमल कदरे दिक्कत तलब है मगर इसकी खूबी के आगे कुछ भी नहीं, कीचड़ की लकड़ी का बुरादा १० सेर, गाय का गोबर २० सेर, दोनों को मिलाकर १४ अदद थापिया बना लो, फिर एक रुपये को ४१ बार अर्क अदरख में बुझावे दो तब अढ़ाई तोला मीठा तेलिया बारीक पीस ले और पाव भर पोस्त सब्ज जामुन का नुगदा कर ले पस नुगदे के अन्दर रुपये के नीचे ऊपर सफूफ मीठा तेलिया देकर नुगदा की गोली बना ले और दो उपलों में गढ़ा खोदकर गोला इसके अन्दर देकर लवे बंद करके आग दे दे। यह एक आग हुई, इसी तरह सात बार करे यानी सात आंच दें। (सुफहा १३ अखबार अलकीमियां २४/२/१९०९)

कुश्ता चांदी, मुण्डी की लुगदी में (उर्दू)

आधसेर मुंडी आब कटहल बूटी में पीस कर नुगदा करे और दर्मियान एक तोला चांदी का पतरा देकर कपरौटी करके एक मन उपलों की आंच देवे कुश्ता होगा। (सुफहा अखबार वैशोपकारक लाहौर ३१/१०/१९०६)

नुसखा लासानी अआदह जवानी कुश्ता सिक्का (उर्दू)

गजुमलै नाजरीन एक दिन खाकसार ने अपने उस्ताद जनाब हकीम इमामुद्दीन साहब मरहूम पाकपटनी की जुबान फैजतरजुमान से इस तरह इरशाद पाया कि नुसखा जैल जरूर एक दफे बनाया, फिर उम्मीद है कि इसको हमेशह बनाते रहोगे, इसके फवायद यह है कि अगर बापरहेज बनाया और खिलाया जावे तो सफेद बाल से स्याह, रंग सुर्ख लागर बदन का मोटा हो जाना कुछ बड़ी बात नहीं है बल्कि और सदहा बीमारियों जौफ मैदा व जिगर गुदह व मसाना और सबुलकीना इस्तस्काइ और जियाबेतस वगैरः जो जड़ से उखाड़ देगा और भूख और हाजमा को पूरी तकवियत बख्शता है और बेऔलादों के औलाद हो जाती है, गरज कि कहां तक तारीफ लिखूं, असाइशेग्जवानों का सच्चा दस्तगीर है गोयावाह को तकवियत बख्शना इसका अदना करशमा है। सदरी नुसखे जात से है।

नुसखा यह है कि सिफत, सिक्का मुसफ्फा दो सेर पुख्तः को एक चाटी या माट सतीर तीन तरह कपरौटी शुदः में डाल और देगदान कलाँ पर जिसका मुंह तंग और अन्दर से फराख हो (जैसा कि जमीन में हलवाई बनाया करते हैं) गाड़कर हर तरफ मिट्टी से लिपाई कर दे, ताकि शोला आग बाहर न जा सके फिर तेज आग जलावे जब सिक्का पिघल जाय तो वर्ग सवास ताजा को खार अनगाफी दूर करके दरीचा के रास्ते से फेरता रहे पस ग्यारह दिन और रात तक बिला इनकताअ तहरीकवर्ग बाला तैयार करे बाद पिघलने सिक्का के मौनादिल आग जलाता रहे और आमिल का बावजू जिकर खुदा करना फर्ज ऐन है, अजीद बरां हिफाजत साया मस्तूरात हाइजः और नापाक जरूरी है और मकान महफूजुल हवायें तैयार किया जाय वरनः तमाम उड़ जायेगा, जब मुद्दत मौअय्यान के बाद शिंग्रफी रंगत पर तैयार हो जाय तो सर्द करके शीशी में डाल रखे। खुराक एक बिरंज से आधी रत्ती तक अनूपान मुनासिबः से अगर चालीस दिन तक खायेगे तो अआदह शवाब पायेगे, (सिक्के को कमीज (पेशाब) गाड़ में ६ बार पिघला कर बिछावे नीज हरबार कमीज जदीद लावे सिक्का मुसफ्फा हो जावेगा) (राकि हकीम अब्दुल्ला अजतिलोंडी चौधरियान) (सुफहा ११ व १२ अखबार अलकीमियां मालीरकोटला १६/११/१८०८)

(१) नोट—तजरुबा किया तो गलत साबित हुआ मुमकिन है कि चन्द आंच में कुछ नतीजा निकले। (५/१/१९०७)

कुश्ता नुकरा नमक आक और शीर थूहर में (उर्दू)

अगर आपके नमक को शीरथूहर में हल करके चांदी के पत्ते पर जमाद करे तो दो पाचकदस्ती की आग से कुश्ता हो जाता है। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां १/२/१९०७)

कुश्ता नुकर दुधीखुर्द की लुबदी में ७ आंच (उर्दू)

हजार दाना यानी दुधीखुर्द ५ तोले के नुगदे में रुपया रखकर संपुट करे। पन्द्रह सेर बड़ी बड़ी पाचक दस्तियों की आंच दे हर दफे इसी तरह अमल करने से सातवीं बार निहायत उमदा कुश्ता होगा, खुराक एक चावल से दो चावलतक,नामर्द के लिये जायफल, जावित्री और जाफरान के साथ, मरीज राशा को फिल फिलगिर्द, सुरंज तलख नड़ के साथ और मरीज सोजाक को खील फिटकिरी के साथ खिलावें। (सुपहा नं० ४ अखबार अकलीमियां १६/६/१९०५)

कुश्ता नुकरा सीमाव शामिल कर चूका के अर्क में घोट ७ आंच (उर्दू)

बुरादा सीम एक तोला सीमाव एक तोला हरदा एक पाव अर्क खट्टी बूटी यानी खटकल के पानी में खरल करें और गिलोला बांधकर कपरौटी करके पांच सेर उपले सहराई की आग दे बाद सर्द होने के निकाल लें और दुबारा एक तोले सीमाव मिलाकर एक पाव अर्क मजकूर में खरल करे और इसी तरह पांच सेर की आग दे। इसी तरह सात मर्तबः करे और हर मर्तबः एक तोला सीमाव नया मिलाकर बदस्तूर अर्क में खरल करके पांच सेर की आंच देता जावे। इन सात आंचो में सात तोला पारा और ३५ सेर उपला सर्फ होंगे और सात पाव अर्क बूटी खटकल यह कुश्ता ऐसा है कि दूसरा कोई कुश्ता इसका मुकाबला नहीं कर सकता। चालीस साल की उमर के बाद इसको इस्तेमाल करे अकसीर आजमसाबित होगा, खुराक एक चावल से एक रत्ती तक निहायत मुजरिब और महमूल राकि अतराफ है। (सुफहा ३० मुजमुर्जरिबात फीरोजी)

कुश्ता नुकरा सीमाव शामिल कर अर्कलैमूं व अर्क हिना में घोट नकछिकनी में आंच (उर्दू)

बुरादा सीम ३ माशे, सीमाव ५ माशे, अव्वल दोनों को थोड़े से आब लैमू में खरल करे। इसके बाद चार पहर तक आबहिना में खरल करे और टिकिया बनाकर साये में खुश्क करे। आरद नकछिनी वजनी पाव एक कूजे गिलि में इन टिकियों के नीचे ऊपर देकर बोता मुअम्मा में दो सेर उपला जंगली की आग दे। आग के सर्द होने पर निकालकर दो घड़ी आबदही से खरल करके थोड़ा सा भड़का देकर हिफाजत से रखे। खुराक एक रत्ती कुव्वत बाह में बेनजीर है और सदहा बार का तजरुबा किया हुआ है। (सुपहा २८ किताव मुजर्रिबात फीरोजी)

कुश्ता चाँदी सीमाब शामिल कर पोस्त जामुन में ३ आँच (उर्दू)

बुरादा चांदी १ तोले, पारा १ तोले, सीमाव यानी पारे को बुरादा चांदी में डालकर खरल करे जब गोली हो जावे पोस्त जामन पाव भर में रखकर जरा कपरौटी करके ५ सेर उपलों की आंच देवे। इसी तरह २ या ३ आंच में कुस्ता हो जावेगा। हर बार पारा ज्यादह करना चाहिये।
(सुफहा अखबार वैशोपकारक १४/११/१९०६)

सोने और चांदी की द्रुति करने की विधि

सप्तधा नरमूत्रेण भावयेद्देवदालिकाम् । तच्चूर्णं वापमात्रेण द्रुतिः स्यात्स्वर्णतारयोः ॥१०८॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–बंदाल को नरमूत्र से अर्थात् सोर के जल से सात बार भावना देवे उसके चूर्ण को गले हुए सुवर्ण तथा चांदी में डाले तो सोने और चांदी इन दोनों की द्रुति हो जायेगी॥१०८॥

केवल रौप्य भस्म के सेवन का निषेध

सर्वेषां मतमेतदेव भिषजां यत्तारसीसोद्भवम् । पार्थक्येन गुणावहं न भसितं युक्त्यापि संमारितम् ॥१०९॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–युक्तिपूर्वक भस्म किया हुआ रजत तथा नाग सीसा यदि अन्य रसादिकों के साथ सेवन किया जाय तो ठीक है परन्तु केवल इनका ही प्रयोग करना योग्य नहीं है, ऐसा समस्त वैद्यों (आधुनिक) का मत है॥१०९॥

तांबे की उत्पत्ति

वीर्य्यं यत्कार्त्तिकेयस्य पतितं धरणीतले । तस्मात्ताम्रं समुत्पन्नमिदमाहुः पुराविदः ॥११०॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–पौराणिकों का कहना है कि स्वामि कार्तिकेय का वीर्य भूमि में किसी कारणवश गिर गया उससे ताँबा उत्पन्न हो गया॥११०॥

ताम्र के भेद

ताम्रं तु द्विविधं चैकं नैपालं म्लेच्छसंज्ञकम् ॥१११॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–नैपालिया और म्लेच्छक भेद से ताम्र दो प्रकार का है॥१११॥

ताम्र के भेद और उनकी परीक्षा

म्लेच्छं नेपालकं चेति तयोर्नेपालमुत्तमम् । नेपालादन्यखन्युत्थं म्लेच्छमित्यभिधीयते ॥११२॥ सितकृष्णारुणच्छायमतिवामि कठोरकम् । क्षालितं च पुनः कृष्णमेतन्म्लेच्छकलक्षणम् ॥११३॥ सुस्निग्धं मृदुलं शोणं घनघातक्षमं गुरु । निर्विकारं गुणश्रेष्ठं ताम्रं नेपालमुच्यते ॥११४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–म्लेच्छ और नेपाल भेद से तांबा दो प्रकार का होता है। इन दोनों में नेपाल नाम का तांबा उत्तम है। नेपाल देश की खानों से अतिरिक्त उत्पन्न हुआ ताम्र म्लेच्छ संज्ञक है जिसमें लाल काला और सफेद रंग मिला हुआ दीखता है। अत्यन्त वमनकारक हो, कठोर हो बार बार धोने पर भी काला पड़ जावे उसको म्लेच्छक ताम्र कहते हैं तथा जो चिकना कोमल लाल रंग का घन की चोट से जो फटे नहीं, भारी हो, किसी तरह का जिसमें विकार न हो उसको नेपाल का ताम्र कहते हैं॥११२–११४॥

खराब तांबा

पाण्डुरं कृष्णशोणं च लघुस्फुटनसंयुतम् । रूक्षाङ्गं सदलं ताम्रं नेष्यते रसकर्मणि ॥११५॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–जिसमें सफेद लाल और काला ये तीनो रंग मिश्रित हों, हलका हो, घन की चोट लगने पर खिल जावे, रूखा हो जिसके पृथक् पृथक् पत्र हों ऐसा ताम्र रसकर्म के उपयोगी नहीं है॥११५॥

तांबे की किस्में (उर्दू)

निहास यानी ताँबा बीस किस्म का होता है और छः चीजों से हासिल होता है, अव्वल जैल की उपधातु से निकलता है और उन्हीं मे नाम से मंसूब है। (१) संग रासख (२) पितल (३) मिसकांसा, दोयम मुन्दर्जः जैल पाखरों से निकलता है (४) मिसतूतिया सवज (५) मारकशीशा (६) मिस हरताल (७) मिस सुहागा (८) मिस मन्सिल (९) मिसगुगर्द सोयम (१०) जसद आहन से, चहारम हैवानत से, (११) मिस सरगीन (१२) मिस खोक यानी सूर (१३) मिस खरातीन यानी केंचुए का (१४) मिस ताऊस (१५) मिसमार (१६) मिसमगस पंचम नवातात से (१७) मिससंखिया (१८) मिसगुले गुड़हल व बड़हल (१९) मिस हलैला व बलैला शशम (२०) गिलगेरू से (सुफहा अकलीमियां १७१)

नेपाल लक्षण

शुकचञ्चुहिंगुलाभं कोमलं भिद्यते लघु । खनिदोषविनिर्मुक्तं शुल्वं कालिकवर्जितम् ॥११६॥

(टोडरानन्द)

अर्थ–तोते की चोंच के समान या हिंगुल के समान लाल हो, कोमल हो खान के दोषों से रहित हो और जिसमें कालिमा न हो उसको शुद्ध ताम्र कहते हैं॥११६॥

म्लेच्छसंज्ञक ताम्रलक्षण

कृष्णं रूक्षमतिस्तब्धं श्वेतं चापि घनासहम् । लोहनागयुतं शुल्वं म्लेच्छं दुष्टं मृतौ त्यजेत् ॥११७॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–काला हो, रूखा हो, अत्यन्त कठिन हो, चोट को सहनेवाला न हो और जो ताम्र लोह तथा सीसे से युक्त हो अर्थात् जिसे ताम्र में लौह तथा सीसे से युक्त अर्थात् और सीसा मिला हुआ हो उसको म्लेच्छ कहते हैं। यह ताम्र त्यु को प्राप्त करता है। इसलिये आन्तरिक प्रयोगों में इसको न लावे॥११७॥

अशुद्ध ताम्र के दोष

भ्रमो मूर्च्छा विदाहश्च स्वेदक्लेदनवान्तयः । अरुचिश्चित्तसन्ताप एते दोषा विषाधिकाः ॥११८॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–चक्कर का आना अथवा मस्तक का घूमना, जलन, पसीने का आना, वमन अरुचि और चित्त में दुःख, ताम्र में ये दोष विष से भी अधिक हैं॥११८॥

तथा च

अशुद्धं ताम्रमायुर्घ्नं कान्तिवीर्यबलापहम् । वान्तिमूर्च्छाभ्रमोत्क्लेदं न मृतं कुष्ठशूलकृत् ॥११९॥ उत्क्लेदमोहभ्रमदाहभेदास्ताम्रस्य दोषाः खलु दुर्धरास्ते । विशोधनात्तद्विगतस्वदोषं सुधासमं स्याद्रसवीर्यपाके ॥१२०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अशुद्ध अर्थात् विधिपूर्वक नहीं शुद्ध किया हुआ ताम्र आयु कान्ति वीर्य और बल का नाश करता है। वमन मूर्च्छा (गश), चक्कर का आना और जी के मिचलाना को करता है। अच्छी प्रकार नहीं मरा हुआ भी ताम्र पूर्वोक्त दोष तथा कोढ और शूल रोग को करता है। अशुद्ध ताम्र में पूर्वोक्त दोष अत्यन्त भयानक हैं। जब ताम्र इन दोषों से शुद्धि द्वारा रहित हो जाता है तब वह अमृत के समान होता है॥११९॥१२०॥

ताम्रशोधन की आवश्यकता

अतः शोध्यं प्रयत्नेन क्षाराम्लक्वथनैर्मुहुः । यावन्निर्मलतोमेति तावत्ताम्रं विशोधयेत् ॥१२१॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–अशुद्ध तांबे में अनेक अपगुण हैं इसलिये क्षार अम्ल पदार्थों के साथ ताम्र को बार बार औटावे कि जिससे समस्त कालिमा दूर हो जावे। यदि कांजी और नीम्बू प्रभृति अम्ल पदार्थ न मिले तो अत्यन्त खट्ट तक (मठा) में तांबे को बार बार औटावे कि जिससे उसकी कालिमा (स्याही या कट) दूर हो, इस प्रक्रिया से तांबे को शुद्ध करना चाहिये॥१२१॥

तांबे का गुण

ताम्रं कषायं मधुरं च तिक्तमम्लं च पाके कटुसारकं च । पित्तहरं च शीतं तद्रोपणं स्याल्लघुलेखनं च ॥१२२॥ पाण्डूदरार्शोज्वरकष्टकासश्वासक्षयान्पी नसमम्लापित्तम् । शोथक्रिमिं शूलमपाकरोति प्राहुः परं बृहणमल्पमेतत् ॥१२३॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–ताँबार कषैला मीठा, चरपरा और परिपाक में खट्टा कडुआ और दस्तावर है तथा पित्त को हरता है। कफनाशक है, हलका और लेखन है, पांडु उदररोग अर्थात् पेट के रोग, ज्वर कठिन कास श्वास और क्षय को नाश करता है। पीनस और अम्लपित्त को जड़ से उखाड़ देता है, सूजन क्रमिरोग और पेट के दर्द को दूर करता है और यह थोड़ी मात्रा में देने से परम वृहण है॥१२२॥१२३॥

तथा च

ताम्रं तिक्तकषायकं च मधुरं पाकेऽथ वीर्योष्णकं साम्लं पित्तकफापहं जठररुक्कुष्ठामजन्त्वन्तकृत ॥ ऊर्ध्वाधः परिशोधनं विषयकृत्स्थौल्यापहं क्षुत्करं दुर्नामक्षयपाण्डुरोगशमनं नेत्र्यं परं लेखनम् ॥१२४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–तांबा कडुआ, कषैला, मीठा और परिपाक में उष्णवीर्य है। खट्टा है कफ पित्त का नाश करता है, उदर के रोग कोढ आम और क्रमि रोग को दूर करता है। वमन और विरेचन को करता है। रति के बढानेवाला स्थौल्य रोग अर्थात् मेदोवृद्धि को हटाता है और मन्दाग्नि को मिटाता है। बवासीर क्षय पांडु और नेत्र के रोगों को विध्वसं करता है और लेखन है॥१२४॥

ताम्रशुद्धि दलकर्मयोग्य

अर्कापामार्गकदलिक्षारसम्लेन लोडितम् । तेन लिप्तं ताम्रपत्र ध्येयमग्नौ गतं पुनः ॥१२५॥ पत्रं कृत्वा विलिप्याथ तद्ध्मेयं पुनः पुनः । इत्येवं सप्तधा कुर्यात्ताम्रं स्याद्दलयोग्यकम् ॥१२६॥

(जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

अर्थ–आक ओंगा और केले के क्षार को नींबू के रस में अथवा किसी अन्य अम्ल रस में घोले उससे ताम्रपत्रों को लेपकर अग्नि में रखकर तपावे। इस प्रकार सात बार तपाने से ताम्र दलकर्म के योग्य हो जायेगा॥१२५॥१२६॥

तथा च

अथवा ताम्रपत्राणि सुतप्तानि निषेचयेत् । लवणारनालमध्ये तु शतधा पूर्ववद्भवेत् ॥१२७॥

(जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

अर्थ–अथवा तांबे के पत्रों को तपा तपा कर लवणमिश्रित कांजी में सौ बार बुझाव दे तो पूर्व के समान ताम्र दलकर्म के योग्य हो जायेगा॥१२७॥

ताम्र का विशेष शोधन

स्नुह्यर्कक्षीरलवणैस्ताम्रपत्राणि लेपयेत् ॥ अग्नौ प्रताप्य निर्गुण्डीरस तु सेचयेत्त्रिशः ॥१२८॥ स्नुह्यर्कक्षीरसेकैर्वा शुल्वशुद्धिः प्रजायते ॥ गोमूत्रेण पचेद्यामं ताम्रपत्रं दृढाग्निना ॥ साम्लक्षारेण संशुद्धिं ताम्रपाप्नोति सर्वथा ॥१२९॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–नोंन को थूहर और आक के दूध से घोट तांबे के पत्रों पर लेपकर और आंच में तपाय निर्गुंडी के रस में बुझावे। इस प्रकार तीस बार बुझावे अथवा कवल थूहर और आक के दूध में बत्तीस बार बुझावे देवे अथवा क्षारसहित गोमूत्र में एक प्रहर तक औटावे तो ताम्र आवश्य शुद्ध होगा॥१२८॥१२९॥

मिसको मुसफ्फा करने की तरकीब (उर्दू)

मिस के बारीक पत्र बनाकर तुर्शी और नमक में आलूदह करके आग पर रख दे। मुतरज्जिम तजरुबे से मालूम हुआ कि इस अमल से सिर्फ मैल ताँबे का छूट जाता है। (सुफहा अलकीमियां ९६)

तांबे की शुद्धि

ताम्रं क्षाराम्लसंयुक्तं द्रावितं दत्तगैरिकम् ॥ निक्षिप्तं महिषीतके छगणे सप्तवारकम् ॥ पंचदोषविनिर्मुक्तं सप्तवारेण जायते ॥१३०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–जवाखार नीबू का रस और गेरू इन तीनों को पीस और तांबे के पत्रों पर लेप कर गलावे गलने पर भैंस के मठे में बुझा देवे इस प्रकार सात बार करने से तांबा पांच दोषों से रहित हो जाता है॥१३०॥

तथा च

ताम्रनिर्मलपत्राणि लिप्त्वा निम्ब्वम्बुसिंधुना ॥ ध्मात्वा सौवीरकक्षेण विशुद्धचत्यष्टवारतः ॥१३१॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–तांबे के उत्तम पत्रों को लेकर नींबू के रस में घुटे हुए सेंधो नोंन से लीप दे। उन पत्रों को अग्नि खूब धोंक कर काँजी में बुझावे। इस प्रकार आठ बार बुझाने से तांबा शुद्ध होता है॥१३१॥

तथा च

निम्ब्वम्बुपटुलिप्तानि तापितान्यष्टवारकम् ॥ विशुद्धचंत्यर्कपत्राणि निर्गुण्डी रसमज्जनात् ॥१३२॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–नीबू के रस में सेंधानोंन को घोटकर उसका ताम्र पत्तों पर लेप कर देवे और इनको आंच में तपाकर निर्गुंडी के रस में बुझावे। इस प्रकार आठ बार बुझाने से ताम्र शुद्ध होता है॥१३२॥

तथा च

गोमूत्रेण पचेद्यामं ताम्रपत्रं दृढाग्निना । शुद्धयते नात्र संदेहो मारणं चाप्ययोच्यते ॥१३३॥

अर्थ–ताम्र के कटंकवेधी (जिसमें कांटा छिद जावे) पत्र बनाकर गोमूत्र

में डाल फिर तीन घंटे तक उनको तीन आंच में औटावे तो ताम्र शुद्ध होता है।।१३३।।

तांबे की शुद्धि या तांबे चांदी से सोने का जोड़ा

लवण सैंधव का ताम्रपत्रों पर लेपकर आग देनी तांबे की भस्म हो जावेगी फिर ताम्रभस्म को जीवित कर उस ताम्र के समभाग चांदी मिलाकर सौ बार चरख देना फिर समभाग सोना मिलावे तो चौदह वर्ण का सोना होगा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा च

अथोत्तमस्य ताम्रस्य नागशुद्धस्य कारयेत् । निर्गुण्डिकारसेनैव पंचाशद्वारढालनम् ।। कूष्माण्डस्य रसे चैव सप्तवारं तु ढालनम् ।।१३४।। निशायुक्तेन तक्रेण सप्तवारं तु ढालनम् ।।१३५।। एवं ताम्रं द्रुतं ढाल्यं कालिमारहितं भवेत् । एतत्ताम्रं त्रिभागं स्याद्भागाः पञ्चैव हाटकम् ।।१३६।। रूप्यं भागद्वयं शुद्धं सर्वमावर्तयेत्तदा । जायते कनकं दिव्यं पुरा नागार्जुनोदितम् ।।१३७।। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

अर्थ–ताम्र और शीसे को गला गला कर पचास बार निर्गुंडी के रस में बुझावै और इसी प्रकार सात बार पेठे के रस में बुझावै, तदनंतर सात ही बार हलदी से मिले हुए तक्र में बुझावे। इस प्रकार तांबे और शीशे की कालिमा (यानी स्याही) रहित कर देवे। अब पूर्वोक्त प्रकार शुद्ध किये हुए ताम्र के तीन भाग और सोना पांच भाग चांदी शुद्ध दो भाग इन तीनों को एकत्र कर गलावे तो सुंदर सुवर्ण हो जाता है, ऐसा नागार्जुन ने कहा है।।१३४–१३७।।

ताम्ररंजन

ज्योतिष्मत्यास्तैलमध्ये शतवारं च शोधयेत् । अतसीतैलमध्य वा शुल्वं भवति कांचनम् ।।१३८।।

(काकचंडीश्वरीतंत्र)

अर्थ–मालकांगनी के तैल में तांबे को गला गलाकर सौ बार बुझावे अथवा अलसी के तैल में सौ बार बुझावे तो ताम्र सुनहरी रंग का होगा।।१३८।।

ताम्रधोवन विधि

चौपाई

लीजे साजी अरु हरताल ।
लीलकण्ठलै टंकणखार ।।

तोरझेर तांबे का चूर ।
मासो मासो तीन्यों मूर ।।

अंधमूसि में लेइ फिराइ ।
इह विधि ते उत्तम ह्वै जाइ ।।

एक धोवनी यह मैं भनी ।
याहि सराहैं पंडित गुनी।।

(रसरत्नाकर, बड़ासागर

तथा

चौपाई

तांबे के करि पत्र गढाय ।
कंटकवेधी करै बनाय ।।

पत्रनीर कांची आम्लिली ।
एक द्यौस जो चरुवागली ।।

पुन लीजे सीरे जल धोइ ।
रकती जाइ सु उज्जवल होइ ।।

पुन सुसूत्र बछिया को लेइ ।
ताको करके तामें देइ ।।

बार सात यों लेइ बुझाइ ।
रकती बदल शुद्ध हो जाइ ।।

पुनि कांजी में बिरियाँ सात ।
एक धोवने की यह बात ।।

(रसरत्नाकर, बड़ा रससागर)

तथा

चौपाई

तक्र मछेछी मांहि बुझाइ ।
पत्रनिबिरियां तीस बुझाइ ।।

एक धोवनी यह विधि कही ।
इह भांति के जाने सही ।।

कुश्ता मिस के चार रंग (उर्दू)

इसके मुतअद्दिद दरजात हैं, आलादर्जा जिसकी रंग भी आला होता है वह सफेद रंग का कुश्ता है, बाद इसके सुर्ख रंग का वादहू जर्द रंग का फिर स्याह रंग का और यह सबसे अदना दर्जा है, इन्हीं चारों रंग की कमी वेशी पर रंगतिलाई कमीबेशी का इनहिसार है। (अखबार अलकीमियां १६/३/१९०७)

ताम्रभस्म करने की विधि

गन्धाश्मना वा शिलया रविदुग्धेन पेषितम् । जम्भांभसापि पुटनैस्ताम्रं भस्मत्वमाप्नुयात् ।।१३९।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–ताम्र को गंधक के साथ अथवा मैनसिल के साथ आक के दूध से घोट गजपुठ देवे। इस प्रकार तीन पुट या जब तक भस्म न हो तब तक पुट देता रहे।।१३९।।

सम्मति–हमारी समझ में यह क्रिया भस्म किये हुए ताम्र के वमनादिकों की शान्ति के निमित्त है परन्तु किसी किसी ग्रन्थकार ने एक तरह का भस्म प्रकार माना है।।

तथा च

जम्बीररससम्पिष्टं रसगंधेन लेपितम् । ताम्रपत्रं शरावस्थं त्रिपुटैर्याति भस्मताम् ।।१४०।।

(रससारभस्म, र० र० स०)

अर्थ–ताम्र से समभाग गंधक लेकर जँभीरी के रस से घोटकर ताम्र पत्रों पर लेप कर देवे फिर उन पत्रों को शराब संपुट में रख गजपुट में फूंक देवे। इस प्रकार तीन पुट देने से ताम्र की भस्म हो जावेगी।।१४०।।

तथा च

ताम्रपत्राणि नागस्य पत्रिका कंटवेधिनी ।। गन्धयुक्तेन सूतेन लेपयेत्तानि सर्वतः ॥१४१॥ निम्बुकस्य द्रवं दत्त्वा शरावकृतसम्पुटे । मारयित्वा कृतं भस्म रसं कार्ये प्रयोजयेत् ॥१४२॥

(रसपारिजात)

अर्थ–तांबे के ऐसे पत्र बनावे कि जो सीसे की पत्रिका से बिंध जावे फिर पारद गंधक की कजली कर नींबू के रस में घोट उन पत्रों पर लेप कर देवे और उनको शराव संपुट में रख गजपुट में भस्म कर लेवे और उस भस्म को समस्त कामों में लावे, इसमें कोई सन्देह नहीं है।।१४१।।१४२।।

तथा च

सूक्ष्माणि ताम्रपत्राणि कृत्वा संशोधयेद्बुधः । बासरत्रयमम्लेन ततः खल्वे विनिक्षिपेत् ॥१४३॥ पादांशं सूतकं दत्त्वा यामम्लेन मर्दयेत् । भवन्ति तानि रूप्यस्य पत्राणीव यदा पुनः ॥१४४॥ तत उद्धत्य पत्राणि लेपयेद् द्विगुणानि च । गंधकेनाम्लघृष्टेन तस्य कुर्याच्च गोलकम् ॥१४५॥ ततः पिष्ट्वा च मीनाक्षीं चांगेरी वा विचक्षणः । तत्कल्केन बर्हिर्गोलें लेपयेद्द्वयंगुलोन्मितम् ॥१४६॥ धृत्वा तद्गोलकं भांडे शरावेणावरोधयेत् । तद्भाण्डं पटुना पूर्यमाकण्ठं भस्मनोपरि ॥१४७॥ क्रमवृद्धयाग्निना चुल्ल्या पक्त्वा यामचतुष्टयम् । स्वांगशीतं तु संग्राह्यं मृतं ताम्रं गुणावहम् ॥१४८॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–तांबे के कंटकवेधी पत्र बनाकर खटाई में तीन दिवस तक स्वेदन कर शोधन कर लेवे फिर खरल में डाल चौथाई पारद डाल देवे और खटाई से घोटे तो वे पत्र रजत पत्रों के समान हो जाते हैं फिर उन पत्रों को निकाल नींबू रस से घुटे हुए पारद गंधक के कल्क से द्विगुण ताम्र पर लेपकर गोला बना लेवे फिर उन पर मछेछी या चांगेरी (सांठ) के कल्क से गोले के बाहर दो दो अंगुल लेपकर और उस गोले को हांडी में रख और शकोरे से ढ़क ऊपर से पिसा हुआ नोंन भर ऊपर से राख दबा देवे। मन्द मध्य और तीव्र अग्नि से चार प्रहर तक पकावे। स्वांगशीतल होने पर मृत ताम्र को निकाले तो वह भस्म विशेष गुणकारक है।।१४३–१४८।।

तथा च

अथवा मारितं ताम्रम्लैनैकेन मर्दितम् । तद्गोलं सूरणस्यान्तो रुद्ध्वा सर्वत्र लेपयेत् ॥१४९॥ शुष्कं गजपुटे पच्यात्सर्वदोषहरं भवेत् । वान्तिं भ्रान्ति विरेकं च न करोति कदाचन ॥१५०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–तांबे की भस्म को केलव नींबू के रस से घोटकर और गोला बना कर जमीकन्द के बीच रख कपरौटी कर और सुखाकर गजपुट में पकावे तो वह वमन विरेचन शिरोभ्रमण प्रभृति को नहीं करता है, इसमें सन्देह नहीं है।।१४९–१५०।।

तथा च

ताम्रपत्राणि सूक्ष्माणि गोमूत्रे पञ्चयामकम् । क्षिप्त्वा रसेन भाण्डे तद्द्विगुणं देहि गन्धकम् ॥१५१॥ अम्लपर्णी प्रपिष्याय मर्दितं देहिं ताम्रके । लम्बङ्निरुध्य भाण्डे बसग्निं ज्वालय यामकम् ॥१५२॥ भस्मीभवति ताम्रं तद्यथेष्टं विनियोजयेत् ॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–तांबे के पत्रों को सूक्ष्म बनवाकर पांच प्रहर तक उनको गोमूत्र में रख स्वेदन करे, फिर निकाल जल से उनको धोवे, उनके समभाग पारद को लेकर खरल में डाल नींबू के रस से घोटे फिर इन दोनों से दूने गंधक को लेकर चूका के रस से घोट ताम्र और गंधक की कजली पर लेप कर देवे फिर उस गोले को लवण यंत्र में रखकर एक प्रहर की आंच देवे तो ताम्र की अवश्य भस्म होगी और उसको अपनी इच्छानुसार कार्य में लाना चाहिये।।१५१।।१५२।।

तथा च

सूताच्च द्विगुणं ताम्रपत्रं कन्यारसैः प्लुतम् । पिष्ट्वा तुल्येन बलिना भाण्डमध्ये विनिक्षिपेत् ॥१५३॥ छन्नं शरावकैरेतत् तदूर्ध्वं लवणं त्यजेत् ॥ मुखे शरावकं दत्त्वा बह्निं यामचतुष्टयम् ॥१५४॥ अवचूर्ण्यैव तच्छुल्वं वल्लमात्रं प्रयोजयेत् । पिप्पलीमधुना सार्धं सर्वरोगेषु योजयेत् ॥१५५॥ श्वासं कासं क्षयं पाण्डुमग्निमान्द्यमरोचकम् ॥ गुल्मप्लीहयकृन्मूर्छाशूलपक्त्यर्थ मृत्तम् ॥१५६॥ दोषत्रयसमुद्भूतानामयाञ्जयति ध्रुवम् । रोगानुपान–सहितं जयेद्धातुगतं ज्वर ॥१५७॥ रसे रसायने चैव योजयेद्युक्तमात्रया ॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पारे से दूने तामे के पत्रों को लेकर घीग्वार के रस से पीसे। कजली होने पर दूना गंधक डाल और पीसकर गोला बना लेवे, उस गोले को हांडी में रख ऊपर से सकोरा ढांक देवे। उस सकोरे के ऊपर हांडी से मुख तक पिसा हुआ नोंन धर देवे और उस हांडी के मुख को परीया से ढांक कपरौटी कर देवे। चार प्रहर की तेज आंच लगावे। स्वांगशीतल होने पर हांडी में से ताम्रभस्म को निकाल पीसकर तीन रत्ती की मात्रा देवे। पीपल और शहद के संग तो सब रोग दूर होता हैं। श्वास, कफ, क्षय, पाण्डु, अग्निमांद्य, अरुचि गुल्म (बायुगोला), प्लीहा यकृत मूर्च्छा, पेट का दर्द परिमाण शूल इनको और त्रिदोष से पैदा हुए रोगों को निश्चय नाश कर देता है और अनुपान के साथ देने से धातुगत अर्थात् असाध्य ज्वर को भी नाश कर देता है। यह रस रसायन में मात्रानुसार प्रयोग करने योग्य है।।१५३–१५७।।

तथा च

शोलर बूटीकानर का लुगदा अद्धसेर पक्का लेके उसमें एक डबल पैसा रखकर आठ प्रहर गोहे की आग देणी, श्वेत हो जायगा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा च

मटकण बिच ताम्रेश्वर बणता है मटकणदे फूला दे लुगदे बिच ढौआ रखकर लीरां लपेटकर मिट्टीके सम्पुट में रखकर सम्पुट देणी श्वेत भस्म हो जायगी। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा च

दुधल भत्तल के नुगदे में पैसा भस्म हो जाता है। ५ सेर पक्के कंडे की आग देने से (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा च

तामेश्वर को तैल में बुझाना २१ बार फिर नकछिकनीदा रस ८ तो० पाकर भावणा देणी ऐसी चार भावणा फिर काकमाची सर्वागलेके नुगदी करके उसमें रखके ऊपर रू तूलवाली मिट्टी के संपुट में रख के सुखा के गजपुट देणी। 'भस्म सन्निपातज्वरादौ देयम्' (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

कुश्ता मिस सफेद पीपल से (फार्सी)

बियारद एक दाम मिस दर आब पोस्त बेख पीपर चहल गोने नमूदह दर पती वर्ग मजकूर नीम आसार आनिश दिहंद हमचुनी पंच मर्तबः कुनद कुश्ता सफेद ख्वाहद बुबद एक माशा बरकलई कारगर बूद अगर बकदर यकबिरंज खुरद कुव्वतबाह पैदा शवद (अजबियाज हकीम मुहम्मदफतयाब खां सोहनपुरी)

कुश्ता तांबा (फार्सी)

दरवेख मदार कलांका वाके नमूदह खरतुह ऽ।। सेर नकछिकनी ऽ।। सेर सूदह दरआतिश जेरोवाला निहादह दर्मियां निशाफल्लस झाडशाही निहादहर सहमन उपला आतिश दिहन्द बाद सहरोज बरआरन्द कुश्ता

ख्वाहद । बुवद (अजवियाज हकीम मुहम्मद फतहयाव खा सोहनपुरी)

अथातः संप्रवक्ष्यामि लांगलीकल्पमुत्तमम् । लांगली नाम विख्याता औषधी चोत्तमोत्तमा ।।१५८।। तस्या मूलं तु संग्राह्यं गंधकं च तथैव च । रसेन सहितं चैव ताम्रपत्राणि लेपयेत् ।।१५९।। शुद्धभस्म तदा कुर्यात्प्रशस्तमिदमौषधम् ।। (औषधिकल्पलता)

अर्थ–अब उत्तम लांगली कल्प को कहता हूं, लांगली नाम की औषधि सर्वोत्तम प्रसिद्ध है उसकी जड़ को लेकर उसके समान गंधक और गंधक के समान पारद इन तीनों को पीस पारद के समान लिये हुए ताम्र के पत्रों पर लेप कर देवे। उनको शराव सम्पुट में रख गजपुट में फूंक देवे तो उत्तम औषधि बन जायेगी।।१५८।।१५९।।

तथा च

हजारदाणी दोधक जिसदे हेठ कक्वियां कीड़िया हुंदिय हनै उसकी नुगदी या कच्चा लेकर उसके बीच ढौआ पैसा रखकर ऊपर लीरां लपेटणियां यकच्चा फिर आग देणी, ऐसे ७ अगां देणिया, श्वेत हो जायेगा और भस्म हो जायेगी फिर कुचले छटांक भर दडर करके बड़ा गोहे में रखकर दो सेर पक्के की आग देणी। इसको पीसकर रख छोड़ना, सब रोग पर अनुपान से देणा, गोहे एरणे। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा च

कुचले आध सेर, हलदी आध सेर कच्ची, कौडातैल, मिट्टी दे भांडे बिच कुचले हल्दी समभाग पाके उपरो कटुतैल पाणा जो ऊपर तर जावे। दो दो अंगुल फिर लिद्दू में दाव छोड़ना, उसमें दोनों नरम हो जायगें। उबल उबल के फिर नुगदा बनाकर उसमें ढौए चार पांचर रखकर गजपुट अग्नि देणी, ताम्र शुद्ध हो जायेगा। उसको पारा पिलाना। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा

ढौआ (यानी पैसा) एक, कबीला १ तोले, अलसी का तैल आधपाव ऽ तिलों का तैल एक पाव ऽ।, चिथड़े और पोलेबांस की दो खपच्चे कबीला पीसकर थाली में रखना उसमें दोनों तैलों को खूब मिला चिथडों को सान लेना (यानी भिगो देना) उसको पैसे पर लपेट खपच में रख देना और दूसरे बाँस का परदा लेकर रस्सी लपेट देणी जिस्से कि दम बंद हो जाय और तमाम तैल बांस में ही भर देना और मुख को बांस के टुकडे से बंद कर देना फिर लकड़ी चार बड़ी लेकर हेठ ऊपर रख के आग देणी, स्वांगशीतल लेणी, श्वेत भस्म होगी। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

तथा च

जयपाल गिरी दो तोले सज्जी ४ रत्ती इन दोनों को कुट्ट के दो टिक्की बनाके पैसे के हेठ ऊपर रखकर ऊपर सिमार तोले ९ लपेट के नीलेदलियों से लपेट के मिट्टी लगा के और सुखा के बीस सेर पक्के गोही की आग देवे तो श्वेत हो जायगा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तथा

पुरानी चोबचीनी किस्म खुरद ४ सेर पक्के लेकर महीन कराके ढोए के हेठ ऊपर कुज्जी में रखकर ऊपरों कपरौटी करके १० सेर पक्के गोहे की आग देनी। ऐसे १०० अग्नि देनी फिर द्रवित ताम्र पर पाव रत्ती पाणी, एक आगे से ढोए से द्विगुण चोबचीनी का चूर्ण होवे। (जंबू से प्राप्त पुस्तक)

तथा

कतीरागुंद १ तोला, सिंग्रफ १ तोला, गुंद हेठ रखकर ऊपर सिंग्रफ रख फिर पैसा फिर सिंग्रफ फिर गुंद ऐसे कुज्जी में रख ५ सेर गोहे की आग देनी, फूल हो जायेगा। सन्निपात पर देना। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

सोमनाथी ताम्रभस्म

शुल्बतुल्येन सूतेन बलिना तत्समेन च । तदर्धांशेन तालेन शिलया च तदर्धया ।।१६०।। विधाय कज्जलीं स्निग्धां भिन्नकज्जलसंनिभाम् ।। यंत्राध्यायविनिर्दिष्टं गर्भयंत्रोदरांतरे ।।१६१।। कज्जलीं ताम्रपत्राणि पर्यायेण विनिक्षिपेत् । अथ चेद्यामपर्यंत स्वांगशीतं समुद्धरेत् ।।१६२।। तत्तद्रोगहरानुपानसहितं ताम्रं द्विवल्लोन्मितं स्वल्लीढं परिणामशूलमुदरशूलं च पाण्डुज्वरम् ।। गुल्मप्लीहयकृत क्षयाग्निसदनं मेहं च शूलामयं दुष्टां च ग्रहणीं हंरेद्ध्रुवमिदं श्रीसोमनाथाभिधम् ।।१६३।।

(रससारपद्धति) (र० र० स०)

अर्थ–तांबा १ तोले, पारद १ तोले, गंधक १ तोले, हरताल ६ माशे, मैंनसिल ३ माशे, इनमें से तांबे के पत्रों को छोड़ सब पदार्थों की कजली कर लेवे। एक कपड़े पर दो अंगुल कजली बिछावे फिर तांबे के पत्र रखे फिर कजली बिछावे, इस प्रकार क्रम से कजली और पत्रों को रख कर टिकिया बना लेवे उसको यन्त्राध्याय में कहे हुए गर्भयन्त्र में रख चार प्रहर तक पकावे। स्वांगशीतल होने पर निकाल और चूर्ण कर लेवे तो वह सोमनाथी नाम का ताम्र उन उन रोगनाशक अनुपानों के साथ ६ रत्ती देने से परिणामशूल उदरशूल पाण्डुज्वर, गुल्म, प्लीहा, यकृत, क्षय, मंदाग्नि, प्रमेह, बवासीर, कष्टसाध्य, संग्रहणी इनको नाश करता है, इसमें सन्देह नहीं, इस ताम्र भस्म का नाम सोमनाथी ताम्र है।।१६०–१६३।।

कुश्ता ताँबा (उर्दू)

बर्ग जमालगोटा को १ छ० पानी यानी बोंडा अरंग को १ छ० अर्क में खूब खरल करे यहां तक कि लुगदी बन जावे। बादह उस लुगदी के अन्दर मंसूरी एक पैसा रखकर मिट्टी के कुलाआ में रख देवे और गिलेहिकमत करके आग में १० सेर पाचकदस्ती में आग लगावे। आठ पहर के बाद निहायत सफेद रंग का कुश्ता तैयार हो जावेगा, इस कुश्ते को दो तोले रांग में गलाकर, बकदर दो सुर्ख डालने से चांदी तैयार हो जाती है, मगर यह नुकसा है कि चोट लगने से फूट जाती है। (अजकिताब तजरुबात लाला तुलसीप्रसादसाहब)

कुश्ता ताँबा बरंग शिंजर्फ स्याह तुलसी से (उर्दू)

स्याह तुलसी का अर्क निकाल ले। एक पैसा आग में गर्म कर कर १०१ बार बुझा ले फिर इसी तुलसी के फोक में यानी नुगदे में रखकर १२ सेर आग गढ़े में दे पैसा शिंग्रफ के मानिन्द सुर्ख रंग कुश्ता हो जावेगा। लेकिन बुझाव देने से इस बात की अहतियात रखे कि थोड़ा सा अर्क अलहदा बर्तन में डालकर इसमें बुझाव दिया करे। जब वह खर्च हो चुके तब और डालकर इसी तरह अमल करे। (सुफहा ९ अखबार अलकीमियां ८/२/१९०९)

कुश्ता ताँबा बरंग सफेद (उर्दू)

डबल पैसे को एकसौ पुट अर्क बेलपत्तरी में दो, उसी के नुगदे में रखकर जंगली उपलों की गजपुट देकर सर्द होने पर निकाल लो। सफेद रंग का कुश्ता सालिमुलहरूप हो जावेगा। अगर कुश्ता करने से पहले तांबे को शुद्ध कर लिया जावे तो निहायत बेहतर है, सहदेई के नुगदे में भी यह अमल हो सकता है। (जोतीसरूप शर्माएकौन्टेंट तहसील काशीपुर जिला नेनीताल)

(सुफहा न० २३ अखबार अलकीमिया १६/५/१९०५)

तरकीब कुश्तामिस सफेत अंकोल में (फार्सी)

मिस कि सफेद हमचूं कागज शवद बियारन्द पोस्त दरख्त अंकोल बखुश्क साजन्द व नीज बेख सतीर ओअजजमीन बरआरन्द बअजमियान कावाक

नुमायन्द बकदरे अजपोस्त खुश्क ओदरो अन्दाजन्द व बालाइ ओफल्लूस मिस या बर्क हाइमिस पुरकुनंद बालाइ आंदीगर पोस्त मजकूर अन्दाजन्द व जुमलैरा व गिलेहिकमत दरगीरन्द व बआतिश पुश्क बुजनर गजपुट दिहन्द तमाम मिस शिगुफ्तः ख्वाहद मांद बर आबुरन्द व बराइ हरमर्ज वा नूपान ओदिहन्द।

वायद दानिश्त कि अंकोल दरख्तकलां अस्त व दो किस्म मेवाशद यके कांटहा अंकोल यानी खारदार व मकसूद हमीअस्त दोयम बेखा में बाशद व ओबकार नियायद व नखतीन बायद कि मिसरा साफ नुमायन्द व साफ कर्दन मिस मशहूर अस्त अम्भा बहतर आंनस्त कि मिसरा मानिन्द कलई साप कुनन्द यानी बिगुजारन्द वसह किरतदर दोग वतेल सर्द नुमायन्द व आज आंकिमिस जोर अमेगुदाजद अगर कदरे सम्मुलफार व पारह आबगनिह आमेजन्द ताजूद गुदाख्त शबद। (सुफहा ७ किताब मुजर्रिबात अकबरी)

कुश्तामिस सफेद, सफेद कनेर की जड़ में (उर्दू)

सफेद कनेर की जड़ तकरीबन आध पाव के लेकर और पांच सेर पर्चा लपेटकर आग दी जावे। मिस बरंग सफेद होकर कुश्ता निकलेगा। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां १५/५/१९०७)

ताँबा लाजिल करने की तरकीब (उर्दू)

अगर तांबे को बजरियः गंधक के कुश्ता करे और कुश्ता को माइउल हयात से जिन्दा करे और जिन्दा मिस को फिर उसके हम वजन गंधक से कुश्ता करे और फिर माइउलहयात से जिन्दा करे तो अठारह अमल में तांबा लाजिल हो जाता है। तजरुबा हो चुका है। यह तांबा भी रंगता है। (सुफहा २३७ अकलीमियां हाशिया)

तांबा लाजिल की तरकीब (उर्दू)

तांबा लाजिल की तरकीब यह है फिटकिरी सफेद, शोरा कलमी, सुहागा सफेद, तावून इन सबको हम वजन पानी में पीसकर एक जान करके तांबे के पत्रे पर जमाद करे और इसको आग में डाल दे जब सुर्ख हो जावे चूने के तेजाब में बुझावे, इसी तरह पच्चीस दफे अमल करे बस यहां तांबा लाजिल है।

मिस लाजिल की उमदा तरकीब गन्धक से कुश्ता कर फिर जिन्दा कर नमक से स्लाह (उर्दू)

एक तोला पत्तर नहास लें और एक तोला गंधक आंवलासार पत्तर के ऊपर नीचे रखकर किसी जर्फ में खूब मजबूत गिलेहिकमत करके कि खुल न जावें। पांच सेर उपलों में फूंक दीजिये, कुश्ता हो जावेगा। यह सिर्फ एक दिन या आधे दिन का काम है, इस कुश्ते को माइउलहयूत देकर दो मनफहून से या न्यारिया से खूब चर्ख दिलवाले। एक माशे की एक टिकिया बरामद होगी। इसे पत्तर करके चन्द मर्तबः नमक लगाइये। लाजिल है यह एक माशा ऐसा लाजिल होगा कि बाद इम्तजाज भी स्याही न देगा। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां)

तांबा लाजिल के कुश्ते से जोड़ा तिलाई (उर्दू)

जब तांबा लाजिल हो जावे और दुचन्द गंधक से चर्ख देकर खाक कर लो उसी खाक से तोशक व लिहाफ देकर दुचन्द वजन चांदी को लांबा चर्ख दो चांदी जर्द मिस्ल सोने की होगी और बराबर हम्मिलान होगा और तपाउ और काट सब दुरस्त होगा। (सुफहा ९ अखबार अलकीमियां १/२/१९०९)

मिस लाजिल की सलीस तरकीब नमक से स्लाह (उर्दू)

एक तरीका बहुत ही आसान कि गलाने का झगड़ा भी न करना पड़े किसी कदर पत्तर निहास लेकर और नमक लाहौरी एक जुज और खिश्त पुख्तः दो जुज खूब बारीक पीसकर मिला रखिये। कुछ मुकद्दर की जरूरत नहीं, एक पाचक लेकर उस पर खिश्त व नमक मसहू का कदरे बिछाक उप पर पत्ते रखिये। उस पर और नमक डालकर दूसरा पाच रखकर आंच दीजिये और इसी तरह नये पाचक और नये नमक से चंद दफे रखिये, लाजिल है। (सुफहा ४ अखबार अलकीमियां)

मिस लाजिल के मुआनी शरह (उर्दू)

अगर नहासवी को लाजिल कर लो, उसके माने यह है कि चर्ख देने में जो जंगार है, लौ उठने से न रहे और चर्ख के बाद जो स्याही टिकिया पर आती है न रहे और इसी को उस्ताद कहता है कि जिल्ल अल्लाह व सवाद मगर यह सिफत तो सोने में भी नहीं होती इसलिये कि जिल सोने में भी है वही जिल और लो ऐसी चीज है कि जीरक चर्ख से पहचान लेते हैं कि सोना चर्ख खा रहा है। हां तांबा करीब लाजिल के हो सकता है। सिनात मीजान (जोड़ा) में इस कदर काफी है और लाजिल हकीकी बिदून अकसीरी के नहीं होता है। (सुफहा ९ अखबार अलकीमियां १/२/१९०७)

ताम्र के अनुपान

कृष्णापथ्यामधुमिश्रमनुपानं रवेर्मतम् । रससिंदूरवद्वापि युक्तियुक्तमतः परम् ॥१६४॥ (रससारपद्धति)

अर्थ—पीपल हरड शहद इन तीनों के साथ ताम्र भस्म को सेवन करे यही इसका अनुपान है अथवा रससिंदुर के समान भी अनुपान समझ लेना इसके अतिरिक्त वैद्य उक्तिपर और भी अनुपान उचित समझकर देवे।।१६४।।

केंचुओं से ताम्र निकालने की विधि

ताम्रभूभवभूनागान्निशि पिष्टे समेत्य: तान् ॥ गुडगुग्गुलुलाक्षोर्णा मत्स्यपिण्याकटंकणैः ॥१६५॥ दृढमेतांश्च संयोज्य मर्दयित्वा धमेत्सुखम् ॥ मुंचंति ताम्रवत्सत्त्वं तद्वत्पक्षोऽपि बर्हिणाम् ॥१६६॥ (रसराजसुंदर, बृ० यो०)

अर्थ—तामे की धरती में उत्पन्न हुए भूनाग (केंचुओं) को लेकर हलदी गुड गूगल लाख ऊन छोटी मछली खल और सुहागे को समान भाग मिलाकर घोटे पीछे बंकनाल में रखकर धोंके तो तांबे के समान सत्त्व निकले इसी प्रकार मोरपंख से भी तांबा निकले।।१६५।।१६६।।

तथा च

वर्षासु वृष्टिसंक्लिन्ने भूगर्भे संभवति हि ॥ जन्तवः कृमिरूपा ये ते भूनागा इति स्मृताः ॥१६७॥ चतुर्विधास्तु भूगाना स्वर्णादिखनिसंभवाः ॥ स्वर्णादिभूमिसंभूता दुर्लभास्ते प्रकीर्तिताः ॥ ताम्रभूमिभवाः प्रायः सुलभा गुणवत्तराः ॥१६८॥ (रसराजसुंदर)

अर्थ—वर्षा में जमीन में कीचड होने से जो सर्पाकार जानवर पैदा होते हैं वे केंचुए कहाते हैं वह स्वर्णादि पृथ्वी के भेद से चार प्रकार के हैं, उनमें

---

१ असली भित लाजिल की पहचान यह है कि सर्द होने और हवा लगने से उस पर स्याही न दौड़े।

२—गालिबन मुराद चूने के बुझे हुये पानी से है।

३—देखो रविणा वाताप्य गंधकहतेन।

४—क्या इस क्रिया में कुछ रसेन्द्रचिंतामणि के बीज का लक्ष होता है। रविणा वा ताप्य गंधकहतेन।

१—निशि पिष्ट्वा समेन तान् इत्यपि।

सुवर्ण की खान से प्रकट केंचुए दुर्लभ है विशेषकर तांबे की धरती में उत्पन्न हुए केंचुए मिलते हैं वे अधिक गुणवान हैं॥१६७॥१६८॥

तथा च

सद्यो भूनागमादाय क्षालयेच्छिथिलं बुधः ॥ अथवा कुक्कुटं वीर कृत्वा मंदिरमाश्रितम् ॥१६९॥ मलमूत्रं गृहीतेन सदम्बुप्रथमांशकम् ॥ आलोडच टंकं मध्वाज्यैर्धमेत्सर्वार्थमादरात् । मुंचेत्तु ताम्रवत्सत्त्वमेतद्भूनागसत्त्वकम् ॥१७०॥ (कामरत्न)

अर्थ–केंचुओं को लेकर उसी समय धीरे धीरे उनको निचोर ले अथवा मुर्गे को खिला देवे उस मुर्गे के मलमूत्र को इकट्ठाकर समान भाग सुहागा घी शहद इन तीनों के साथ पीस कोयलों की अग्नि में धोंके तो तांबे के समान सत्त्व निकलेगा इसीको भूनाग सत्त्व कहते हैं॥१६९॥१७०॥

भूनाग सत्त्व के गुण

भूनागसत्त्वं शिशिरं सर्वकुष्ठव्रणप्रणुत् । तत्स्पृष्टजलपानेन स्थावरं चापि जंगमम् ॥१७१॥ विषं नश्यति तत्पात्रं गतः सूतोग्नितो दृढः । एवं मयूरपक्षोत्थसत्त्वस्यापि गुणो मतः ॥१७२॥ (बृ० यो०)

अर्थ–भूनागसत्त्व ठंढा और सब प्रकार के कोढ और व्रण का नाश करता है और भूनागसत्त्व को पानी में घिसकर पीवे तो स्थावर जंगम विष दूर होता है और भूनागसत्त्व के पात्र में रखे हुए पारद को अग्नि भी नहीं उड़ा सकती है इसी प्रकार मयूरपंख के सत्त्व के गुण भी उत्तम है॥१७१॥१७२॥

खरातीन पैदा करने की तरकीब (उर्दू)

खिलाफ मौसम में अगर खरातीन पैदा करना मंजूर हो तो नारियल के पत्तों को गढा खोदकर दफन कर दे वहां चन्दरोज में खरातीन पैदा हो जावेंगे। (सुफहा किताब अलजवाहर १२९)

खरातीन की किस्में (उर्दू)

सुर्ख रंग की जमीन से जो खरातीन निकलते हैं उनसे तांबा और स्याह रंग की जमीन से जो निकलते हैं उनसे लोहा निकलता है (सुफहा अलजवाहर १२९)

मिस खरातीन की तरकीब तय्यारी व इस्तैमाल अकसीरी (फार्सी)

बियारद पंजआसार खरातीन दर गोवद मखलूत कर्दः दरयक सफाल आतिश दिहद कि खाकिस्तर गर्दद सुहागा यक दाम, शहद खालिस दस दाम, रोगन मादागाउ १० दाम अन्दाख्त कदरे, नार नमूदह बआबगोलीहा बस्तः दर बोतः गिली व मेदागुदाज नुमायन्द, यक तोला मिस अन्दाजन पेदा शवद प्याली दुरुस्त कर्दः बवक्त ख्वाहिश प्याली मजकूर में सीमाव भरकर से सद कतरा अर्क सहँजना अन्दाख्त बर आतिश बिदादर कि खुश्क शवद चांदी शवद अगर मिस मजकूर से यक माशा लेकर सीमाव में गोली बनाकर दो उपलों में रखकर कुश्ता करे यक सुर्ख पर यक तोला करे शमस आला ख्वाहद बूद (अजबियाज मुहम्मद फतहयाबखां सोहनपुरी)

मिस खरातीन से तांबा निकालने की तरकीब (उर्दू)

तरकीब यह है कि घडाभर केंचुए सुर्ख रंग की जमीन से लेकर दूध में मिलाकर जलावे और राख करे बादहू गूगल, सुहागा, घूंगची, सुर्ख, सरसों, कंद, कत्था, शहद, तिरफला, ऊंट के बाल, सुममेष, गाय का घी सब दवाएँ आध २ सेर लेकर राख मजकूर में मिलाकर गाय के गोबर में कंडे पाथे और बदस्तूर मुन्दर्जः किताब हाजा आग दे। (सुफहा किताब अलजवाहर १२९)

खरातीन से मिस निकालने की तरकीब जिसको नागताम्र कहते हैं (उर्दू)

जिस जमीन का रंग लाल हो वहां से खरातीन को निकाले और घडे में रखें और उसमें बकरी का दूध भरकर आग पर रख दे ताकि कुल जलकर राख हो जावे बादहू सुहाग, शदह व ऊंट या भेड के बाल व रोगन व हलैला व बलैला व आंवाला व गूगल व सहद हरेक माद्दे तीन तोला, मज्जी, दो तोला साढेसात माशे पीसकर खाक खरातीन मजकूर में मिला दे और उसमें गाय का गोबर मिलाकर कंडे पाथे और सुखलाकर एक गढा लंबा खोदकर फोक या सेमल या धामन की लकडी उसमें भर दे और कंडों की चारो तरफ आग दे और सर्द करे बाद उसके सबको इकट्ठा करके पानी से धोवे और रेजैहाइ मिस खरातीन को उससे निकाल ले और नगीना या छल्ला बनावे (सुफहा किताब अलजवाहर १२८–१२९)

खरातीन से मिस निकालने की तरकीब मयफवायद (उर्दू)

एक मन खरातीन लावे और बकरी के घी में खमीर करे और दो सेर चूना और दो सेर सुहागा और मवीज और सेर भर गाय का पित्ता और ६ सेर शहद उसमें मिलावे और गूंधे और उससे चंद रोटियां पकावे और भट्टी में कोयला रखकर चौदह पहर तक खूब धोंके तांबे के रेजे गिरकर राख में मिल जावेंगे सर्द होने के बाद बाहर निकाल धोवे और गुदाज करके नगीना बना ले तासीर यह है कि अगर सांप को पकडले तो कुछ गुजन्द नहीं पहुँचा सकता, जब तक मुँह में नगीना मजकूर है, अकसर बादशाहों के पास अंगूठी में इसका नगीना होता है और भी हर किस्म के जहरों के वास्ते अकसीर है असर नहीं करते अहल व साहब बसीरत से इसके मजीद फ़वायद पोशीदह नहीं होंगे। (सुफहा किताब अलजवाहर १२७–१२८)

नीलेथोथे से ताम्र निकालने की विधि

नीलाथोथा महीन पीसकर कढाई में बिछा देवो और उस पर महीन टांकी बिछा दो चारों कोण पर चार गीटी बिछा दो उस पर त्रिफला पीस के बिछा दो उस पर धीरे से पाणी पादो किनारे रख दो तांबा बैठ जायगा, नीलाथोथा बिच तांबा निकालकर उसको फिटकिरी की चुटकी देणी साफ हो जायगी। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

तूतिया से मिस निकालने की तरकीब (उर्दू)

तूतिया सबज को मैदा करके शीरा वर्ग रवास में तर करे बादहू बोता में सुहागा देकर चर्ख दे मिस निकल आवेगा (सुफहा अकलीमियां १९०)

तूतिया सबज से मिस निकालने की तरकीब (उर्दू)

नीलाथोथा लेकर रोगन कुजद में तीन चार रात दिन तर करके रखे सुबह को दुचन्द मूएसर आदम लपेटकर खूब तेज धोंके बादहू सुहागा मिलाकर ऊपर नीचे कोयला रखकर नर्ख दे। (सुफहा अकलीमियां १८९)

खरातीन से मिस निकालने की तरकीब (उर्दू)

खरातीन से मिस निकालना खरातीन एक मन को बकरी के घी में खमीर करके फिर उसमें चूना दो सेर, सुहागा दो सेर, मवीज एक सेर और रोगन जर्द मादागाउ एक सेर और सेर भर पित्ता बकरा, शहद ६ सेर सबको मिलाकर चन्द रोटियां पकावे और भट्टी कोयलो मे रख कर चौदह पहर तक धोंके तांबे के रेजा गिरकर राख में मिल जावेंगे सर्द होने के बाद निकाल ले और गुदाज करके तांबा बरामद कर लेवे अगर सांप को पकड़ ले तो इस तांबे के असर से काट नहीं सक्ता और हर किस्म के जहरों के वास्ते

अकसीर है। (मुफहा १३ अखबार अलकीमियां १ व १६/११/१९०६)

फवायद मिस खरातीन (उर्दू)

मिस खरातीन अफयून, बछनाग, वगैरः की सुम्मियत दफै करने में बेनजीर है और अमूमन मादनी जहरों के वास्ते तिरियाक आजम है चाहिये कि दो रत्ती पानी में घिसकर पिलावे अगर जहरदार खान में डाले तो जोश खाकर असर जहर का बातिल करता है और मुंह में रखने से सांप का जहर उतर जाता है अगर किसी शखस ने कुश्ता मिस खामका खाया हो और किसी दवा से सेहत न होती हो तो स्तैमाल निहायत मुफीद और मुजर्रिब है। (मुफहा किताब अलजवाहर १२९

मिस ताऊस निकालने की तरकीब (उर्दू)

मोर के परों को जलावे तो खाकिस्तर संगरेजा की तरह रहे उसको आग पर रखकर मैदापुरस्प छिडकता जावे तांबा निकल आवेगा मुतर्रज्जिम मिस ताऊस अमूमन परों से निकलता है पुरस्पसे अगले पैरों का सुम मुराद है मिस ताऊस से तिला बनता है मगर तजरुबा नहीं हुआ है। (सुफहा अकलीमियां १९४)

मिस ताऊस ब मिस खरातीन निकालने की तरकीब (उर्दू)

अव्वल दूध में डालकर जलावे बाद मूषाकर्नी और जो शांदह चोक जिसको कागठुठी भी कहते हैं ख्वाह शीराकाना कौआ में आठ आठ पुट आफ्ताबी दे बाद उसके बकदर निस्फ के उससे खाकिस्तर मूए सर आदमी के मिलावे और गुदाज करे ताकि कुल राख हो जावे बादहू शीरा केला और शीरा सूरन यानी जमीकन्द में तीन तीन पुट दे और खुश्क करे बादहू उस खाकिस्तर का चहारम हिस्सा सुहागा और सोल्हवां हिस्सा जवाखार और सोलहवां हिस्सा नमक सांभर और गुड शहद और रोगन तीनों चीजें हमवजन इस कदर कि उसमें खमीर हो जावे और तुख्म लबेद अंजीर गैर मुकश्शर यानी बगैर छिली हुई रेंडी चौथाई हिस्सा डालकर सबको खूब कुटे जिसमें लौंदा बन्ध जावे और नरम हो जावे बादहू अलसी की खली पीसकर इस कदर मिलावे और पीसे कि टिकिया या गोला बना सके और जब बिलकूल सुख जावे तब तक नाल से जिसको दमी कहते हैं फूंके मिस आला और नफीस और नरम और सुर्ख निकलेगा। (सुफहा अकलीमियां १९३)

नोट—गुलेगुड़हल ब बडहल्त हुलैला व बलैला सूअर के बाल बमगस ब मार इनसे भी मिस ब तरकीब बाला निकलता है।

मिस ताऊस किस कदर निकलता है और उसके फवायद (उर्दू)

शोदम ताऊस के कूजे में रखकर जलावे सो मिसकाल उसमें से करीब एक मिसकाल के फिलज मुशाबः सोने के हासिल होता है तिला और सुर्मा उसका वास्ते रफै होने सफेदी आंख के और अमराज आंख के मुजर्रिबात से है। (मुफहा ६ किताब मखजनुल अदविया जिल्द दोयम)

लोहकल्प की उत्तमता

सम्यगौषधकल्पानां लोहकल्पः प्रशस्यते । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन लोहमादौ बिमारयेत् ॥१७३॥

(र० र० स०)

अर्थ—जितने कल्प है उन समस्त कल्पों से लोह का कल्प उत्तम माना गया है इसलिये विद्वान वैद्य को उचित है कि प्रथम सब प्रकार के उपायों से लोह के भस्म करने का पूर्णरूप से उपाय करे॥१७३॥

लोहे की उत्पत्ति

पुरा लोमिलदैत्यस्य निहतस्य सुरैर्युधि । उत्पन्नानि शरीरेभ्यो लोहनि विविधानि वै ॥१७४॥

(रससारपद्धति)

अर्थ—प्राचीन काल में जब देवता और दैत्यों में युद्ध हुआ तब देवताओं से मारे हुए लोमिल दैत्य के शरीर से लोहे उत्पन्न हुए॥१७४॥

लोहे के १८ भेदों का वर्णन दोहा

नागार्जुनने लोहके, कहे अठारह भेद ।
तिन्हे परिखब में सुआते, हात बुद्धि को खेद ॥

अठारह भेदों के नाम

१ मण्डूर, २ सारलोह, ३ मध्यसारलोह, ४ स्थूल सारलोह, ५ चक्रमर्दलोहा, ६ बधलोहा, ७ वज्रार्कलोहा, ८ बज्रपाटचलोहा, ९ निरबलोह, १० अम्बुदकलोह, ११ सुराजस, १२ कलिंग, १३ भद्रलोह, १४ कुलिषलोह, १५ मुंडलोह, १६ तीक्ष्णलोह १७ गरलस्थलोह, १८ कान्तलोह ये अठारह भेद है इन सबमें कान्तलोह श्रेष्ठ है तीक्ष्णलोह भी श्रेष्ठ है॥

अठारह प्रकार के लोहों में आठ श्रेष्ठ हैं—दोहा

इन अष्टादशके विषे, केचितमत अनुसार ।
अष्ट जाति हैं लोहकी, अतिउत्कृष्ट विचार ॥२॥
इन आठनुहूके बिषे, मुख्य तीन पहिचान ।
मुंड लोह तीक्ष्ण तथा, कान्त अधिक गुणवान ॥३॥

(वैद्यादर्श)

तथा च

मुण्डं तीक्ष्णं च कांत च त्रिप्रकारमयः स्मृतम् ॥१७५॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ—मुंड तीक्ष्ण और कान्त इन भेदों से लोह तीन प्रकार का होता है॥१७५॥

कटाई खुर्द में ताँबे की मौजूदगी और वजन (उर्दू)

कटाई खुर्द हमने १८ सेर अर्क खटाईखुर्द में ९ तोले तांबा पाया एक फकीर ने हमारे दोस्त से कहा कि तोला बुरादा निहास को सेर सेर भर अर्क कटाई खुर्द में पीस कर १८ आँच दो जब १८ तोला हो जावे एक माशा महखाक तोलाभर चांदी को काबिल हम्मिलान जहब करेगी, चुनाँचः बमुकाम जैपूर यह अमल हमारे सामने हुआ। और पूरा हुआ और बेदाग जोडा दर्जे का था न स्याही न सख्ती ए बिरादरान तुमको लाजिम है कि उसूल से काम करो और इस्तकलाल और पामर्दी से और गुलामहुसेन को बुरा भला कह लो मगर मनहूसी को छोड दो वरनः व जुजतवाही के कोई नतीजा न होगा वस्लाम । (सुफहा १२ अखबार अलकीमियां १६/२/१९०७)

पीतल से मिस निकालने की तरकीब (उर्दू)

मिस और जस्त से मुरक्किब पीतल होता है इससे मिस अलहदा करने का यह तरीका है कि २१ मर्तबः गुदाज करके लाख और लोद उसमें डाले जिस तरह ऊपर तस्फिया निहास से बयान हुआ है बाद उसके आवशोरा व

सज्जी के पानी में इक्कीस बार पिघला कर बुझावे जस्त जल जावेगा और तांबा निकल आवेगा। (सुफहा अकलीमियां १८९)

लोहे के भेद तथा उनके गुणों की संख्या

मुण्डं तीक्ष्णं तथा कान्तमिति लोहं त्रिधा मतम्। मुण्डाच्छताधिकं तीक्ष्णं तीक्ष्णात्कान्तं शताधिकम् ॥ १७६॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–मुंड, तीक्ष्ण और कान्त भेद से लोह तीन प्रकार का है और मुंड से शतगुणाधिक तीक्ष्ण तथा तीक्ष्ण से शतगुणाधिक कान्त होता है॥१७६॥

लोहे के भेदों का लक्षण

मुंडात्कटाहपात्रादि जायते तीक्ष्णलोहतःखड्गादिशवस्त्रभेदाः स्युः कान्तलोहं तु दुर्लभम् ॥१७७॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–मुंडनाम के लोहे से कढाई और पात्र प्रभृति बनाये जाते हैं और तीक्ष्णलोह से तलवार आदि शस्त्र बनते हैं इन दोनों से भिन्न जो कान्त लोह है उसका मिलना कठिन है॥१७७॥

मुंड और तीक्ष्ण के नाम

खेडी लोह सकेला दोऊ। मुंड लोह कहियो सब कोऊ ॥
तीक्षण लोहा दोउ बताय। गजबेली पोलाद कहाय ॥
(वैद्यादर्श)

शनाख्त फौलाद व आहन (उर्दू)

अलामत लोहे और फोलाद की यह है कि लोहे पर तेजाब शोरा को डालकर देखे अगर स्याह दाग पडे तो फौलाद है और अगर सफ़ेद दाग पडे तो आहनखाम है। (सुफहा अकलीमियां ५४)

मुण्ड का लक्षण

मुण्डं मृदु च निः सारं समलं गुरुतायुतम्।
अस्निग्धमल्पगुणदं मृत्यवे तद्विवर्जितम् ॥१७८॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–मुण्ड (खेडीलोह) कोमल, हलका, मैला, रूखा अल्पगुणवान् और मृत्युकारक है॥१७८॥

मुंड के भेद और परीक्षा

मृदु कुण्ठं कडारं च त्रिविधिं मुंडमुच्यते। द्रुतद्रावमविस्फोटं चिक्कणं मृदु तच्छुभम् ॥१७९॥ हतं यत्प्रसरेद् दुःखात्तत्कुण्ठं मध्यमं स्मृतम्। यद्धतं भज्यते भङ्गे कृष्णं स्यात्तत्कडारकम् ॥१८०॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–मृदु, कुंठ और कडार भेद से मुण्डलोह तीन प्रकार का है. मृदुलोह को तपाने से शीघ्र ही गल जाता है घन की चोट लगने से फटता नही और चिकना होता है वह लोह उत्तम है, कुंठ लोह अत्यन्त कुटने पर भी बहुत कम बढता है वह मध्यम गुणकारी होता है और कडार नाम का लोहा वह है जो कि तोड़ने पर काली रंगत का होता है वह लोहा खराब होता है॥१७९॥१८०॥

तीक्ष्ण के लक्षण

कासीसामलकल्काक्ते लोहगं दृश्यते मुखम्।
तीक्ष्णलोहं तदुद्दिष्टं मारणोयात्तमं विदुः ॥१८१॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–कासीस और आमले के कल्क से चुपडे हुए लोहे में मुख दीखता है उसको तीक्ष्णलोह कहते हैं यह भस्म करने में अत्यन्त उपयोगी है॥१८१॥

तथा च

खरं सां च हृन्नालं तारावट्टं च बाजिरम्। काललोहाभिधानं च षड्विधं तीक्ष्णमुच्यते ॥१८२॥ पुरुषं पोगरोन्मुक्तं भङ्गे पारदच्छवि। नमने भङ्गुरं यत्तत्खरलोहमुदाहृतम् ॥१८३॥ अङ्गक्षया व बङ्गं च पोगरस्याभिधात्रयम्। चिकुरं भंगुरं लोहात्पोगरं तत्परं मतम् ॥१८४॥ बेगवं गुरुधारं यत्सारलोहं तदीरितम्। पोगराभासकं पाण्डु भूमिजं सारमीरितम् ॥१८५॥ कृष्णपाण्डुवपुश्चञ्चुबीजतुल्योरुपोगरम्। छेदने चाति परुषं हृन्नालमिति कथ्यते ॥१८६॥ पोगरैर्वज्रसंकाशैः सूक्ष्मरसखैश्च सान्द्रकैः। निचितं श्यामलाङ्गं च बाजिरं तत्प्रकीर्त्यते ॥१८७॥ नीलकृष्णप्रभं सान्द्रं मसृणं गुरुभासुरम्। लोहाघातेऽप्यभंगात्मधारं कालायसं मतम् ॥

अर्थ–खर, सार, हृन्नाल, तारापट्ट, बाजिर और काललोह इन नामों से तीक्ष्ण नामका लोहा छः प्रकार का होता है उनमें से खरलोह उसको कहते हैं जो कडा हो तोडने में पारद के समान चमकीला हो और दुल्लर करने से टूटनेवाला हो। नित्यप्रति काम में लाने से अथवा जोर से किसी पर घाव करने से जिसकी धार टूट जाती हो और जो पीली धरती पर उत्पन्न हुआ हो उसे सारलोह कहते हैं, काले पीले वर्ण के समान रंगवाला अथवा इमली के बीज के समान वर्णवाला काटने में अत्यन्त कठोर हो उसको हृन्नाल लोह कहते है और जो हीरे के तुल्य चमकीला तथा अत्यन्त सूक्ष्म चमकीली और मिली हुई रेखाओं से युक्त हो और अत्यन्त श्याम हो, उसको बाजिरलोह कहते है। जिसका रंग नीला और काला मिला हुआ है, चिकना, भारी और चमकदार हो और जिसकी धार अत्यन्त लोह पर मारने से टूटे नहीं उसको काल लोह कहते हैं॥१८२॥१८८॥

कान्त लोहे का लक्षण

यत्पात्रे न प्रसरति जले तैलबिन्दुः प्रतप्ते हिंगुर्गन्धं त्यजति च निजं तिक्ततां निम्बकल्कः। तप्तं दुग्धं भवति शिखराकारकं नैति भूमि कृष्णांगः, स्यात्सजलचणकः कान्तलोहं तदुक्तम् ॥१८९॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–जिसके पात्र में तप्तजल को भर तैल की बूंद रख देवे तो फैलती नहीं है और हींग को पानी में घिस पात्र पर लगावे तो उसकी गंध नहीं रहती, नीबू का कल्क पात्र पर चुपडे तो कडुआहट जाती रहती है और जिसमे तपाया हुआ दूध शिखर के आकारवाला होकर धरती पर नही गिरता है और जिसकी रंगत चमकदार काली हो उसको कान्तलोह कहते हैं॥१८९॥

कान्त लोहे के चार भेद

कान्तलोह चौविधि पहिचानो। भ्रामक पहिलो भेद बखानो ॥
शकट दूसरो चुंबक तीजौ। द्रावकको चौथो गनलीजौ ॥
(वैद्यादर्श)

कान्तलोह परीक्षा–चौपाई

कांतीलोह कढाई नीर। भरिके तेल बिन्दुदे थीर ॥
वहौ बिंदु फैलत नहिं होय। ज्यों की त्यों ही रहै सुजोय ॥
अथवा हींग धरै तामाहिं। ताकी गंध न आवै ताहि ॥
अथवा नीम पीसके धरै। तामें कटुता रंच न रहै ॥
ए लच्छन जामें लखिपावै। ताही कांती लोह बतावै ॥
(वैद्यादर्श)

कान्तलोह ग्रहण करने का उपाय

मदोन्मत्तगजः सूतः कान्तमंकुशमुच्यते । क्षेत्रं खात्वा ग्रहीतव्यं तत्प्रयत्नेन धीमता । मारुतातपविक्षिप्तं वर्जयेन्नात्र संशयः ॥१९०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पारद मस्त हाथी के समान है और कान्तलोह अंकुश के तुल्य है अर्थात् पारद को नियम में रखने के लिये कान्त ही समर्थ है इसलिये अच्छी खान देखकर अत्यन्त परिश्रम के साथ कांत लोहे को निकाले इस लोहे को वायु घाम और पानी में रखना चाहिये॥१९०॥

कान्तलोह के भेद और परीक्षा

भ्रामकं चुम्बकं कर्षकं द्रावकं तथा ॥ एकं चतुर्विधं कान्तं रोमकान्तं च पञ्चमम् ॥१९१॥ एकद्वित्रिचतुष्पञ्च सर्वतो मुखमेव तत् । पीतं रक्तं तथा कृष्णं त्रिवर्णं स्यात् पृथकपृथक् ॥१९२॥ क्रमेण देवतास्तत्र ब्रह्मविष्णुमहे–श्वराः । भ्रामकं तु कनिष्ठं स्याच्चुम्बकं मध्यमं तथा ॥१९३॥ उत्तमं कर्षकं चैव द्रावकं चोत्तमोत्तमम् । भ्रामयेल्लोहजातं तु तत्कान्तं भ्रामकं मतम् ॥१९४॥ चुम्बयेच्चुम्बकं कांतं कर्षयेत्कर्षकं तथा । साक्षाद्यद्द्रावयेल्लोहं तत्कान्तं द्रावकं भवेत् ॥१९५॥ तद्रोमकान्तं स्फुटिताद्यतो रोमोद्‌गमो भवेत् । भ्रामकं चुम्बकं चैव व्याधिनाशे प्रशस्यते ॥१९६॥ रसे रसायने चैव कर्षक द्रावकं हितम् । कनिष्ठं स्यादेकमुखं मध्यं द्वित्रिमुखं भवेत् ॥१९७॥ चतुष्पञ्चमुखं श्रेष्ठमुत्तमं सर्वतोमुखम् । स्पर्शवेधी भवेत्पीतं कृष्णं श्रेष्ठं रसायने ॥१९८॥ रक्तवर्णं तथा वापि रसबंन्धे प्रशस्यते ॥१९९॥ (र० र० स०)

अर्थ–भ्रामक, चुम्बक, कर्षक और द्रावक इन भेदों से कान्तलोह चार प्रकार का है और पांचवा भेद रोमकान्त भी है और वह एकमुख, दोमुख, तीनमुख, चारमुख, पांचमुख, और चारों तरफ मुखवाला होता है और प्रत्येक कान्त लोहे के पीला, काला और लाल रंग होता है इनके क्रम से ब्रह्मा, विष्णु, और महादेव देवता है, भ्रामक कनिष्ठ चुम्बक मध्यम, कर्षक उत्तम और द्रावक सबसे उत्तम होता है जो समस्त लोहों को चक्कड़ खिलावें उसको भ्रामक कहते हैं। अन्य किसी लोहे के साथ लगाने से जो जिपट जावे उसको चुम्बक कहते हैं। तथा दूरस्थित लोहे को अपनी तरफ खींच लेवे उसको कर्षक कहते हैं। और द्रावक लोह उसको कहते हैं जो अपने पास रखे हुए को गला देता है और जिसके तोड़ने से केश के समान खीलें हो जावें उसको रोमकान्त कहते हैं। इन लोहों में रोगनाश करनेवाले भ्रामक और चुम्बक लोह है। रसादिक रसायन के काम में कर्षक और द्रावक लोह हित है, एक मुखवाला कान्त लोह कनिष्ठ (हलका) होता है दो तथा तीन मुखवाला लोह मध्यम होता है और चारमुखवाला उत्तम और चौंरफा मुखवाला लोह सर्वोत्तम होता है। पीला लोह स्पर्शवेधी होता है और काली लोह रसायन के लिये श्रेष्ठ है॥१९१–१९९॥

खरस से निकाले हुए लोहचूर्ण की परीक्षा

शाणाकृष्टस्य सारस्य चूर्णं सूक्ष्मं प्रजायते । स्थूलमन्यस्य लोहस्येत्येवं ज्ञेयं परीक्षणम् ॥२००॥

(र० र० स०)

अर्थ–यदि शान से निकले हुए लोह चूर्ण की परीक्षा करनी हो तो इस प्रकार करनी चाहिये कि जो रेत महीन अर्थात् सूक्ष्म हो तो उसको कान्त लोह का रेत समझना चाहिये और यदि मोटा हो तो किसी अन्य लोह का रेत समझना चाहिये॥२००॥

अशुद्ध लोहे के अपगुण

षंढत्वकुष्ठामयमृत्युदं भवेद्धृद्रोगमेवं कुरुतेऽश्मरीं च ॥ नानारुजानां च तथा प्रकोपं करोति हृल्लासमशुद्धलोहम् ॥२०१॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–नहीं शुद्ध किया हुआ लोहा नपुंसकता, कोढ, मृत्यु को देता है हृदय के रोग और अश्मरी (पथरी) को करता है, हृल्लास और अनेक प्रकार के रोगों को करता है॥२०१॥

अशुद्ध लोहे के दोष

अशुद्धलोहं न हितं निषेणादायुर्बलं कान्तिविनाशि निश्चितम् । हृदि प्रपीड़ा तनुते ह्यपाटवं रुजं करोत्येव विशुध्य मारयेत् ॥२०२॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सेवन किया हुआ अशुद्ध लोहा हितकारी नहीं होता है, आयु बल, और कान्ति का निश्चय नाश करता है, हृदय में पीडा और अनेक प्रकार के रोगों को करता है इसलिये लोहे को शोध करके भस्म करना ठीक है॥२०२॥

लोहे के गुण

लोहं तिक्तं सरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु । रूक्ष्यं वयस्यं चक्षुष्यं लेखनं वातलं च यत् ॥२०३॥ पित्तं कफं गरं शूलं शोथार्शःप्लीहपाण्डुताम् । मेदोमेहं क्रमीन्कुष्ठं तत्किट्टं तद्गुणं स्मृतम् ॥२०४॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–लोहा कडुआ, दस्तावर, ठंढा मीठा, कसैला और भारी होता है, तथा रुखा आयु को बढानेवाला नेत्रों को हित कोष्ठ को शुद्ध करनेवाला और वातल है, कफ, पित्त, विष, शूल, सूजन, बवासीर, प्लीहा, पांडु, मेद (चर्बी का बढना) प्रमेह, क्रमिरोग और कुष्ठरोग को नाश करता है जिस लोहे का कीट हो उसमें भी उसी लोहे के से गुण होते हैं॥२०३॥२०४॥

लोहसार के गुण

लोहसाराद्वयं हन्याद्ग्रहणीमतिसारकम् । अर्द्धसर्वांगजं वातं शूलं च परिणामजम् ॥२०५॥ छर्दिं च पीनसं पित्तं श्वासमाशु व्यपोहति ॥२०६॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–लोहसार–संग्रहणी, अतीसार, अर्द्धांग, अथवा सर्वांग कुपित वातरोग, परिणामशूल, वमन, पीनस का रोग पित्त के रोग और श्वास को नाश करता है॥२०५॥२०६॥

मुण्डलोह के गुण

मुण्डं परं मृदुलकं कफवातशूलमेहाममूलगदकामलपाण्डुहारि । गुल्मामवातजठरार्तिहरं प्रदीपि शोफापहं रुधिरकृत्खलु कोष्ठशोधि ॥२०७॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–मुंडलोह–अत्यन्त कोमल, कफ, वात, दर्द, प्रमेह, आम, बवासीर, कामला और पांडुरोग को नाश करता है, वायगोला, आमवात और पेट के रोगों के हरनेवाला है अग्नि को दीप्त करनेवाला सूजन का नाशक रक्त का बनानेवाला और कोष्ठ को शोधनेवाला है॥२०७॥

कान्तिसार के गुण

कान्तायः कामलाशोथकुष्ठानि क्षयगुल्मकौ । शूलोदरार्शप्लीहानामामवातं भगंदरम् ॥२०८॥ अम्लपित्तं यकृच्चापि शिरोरोगं हरेद् ध्रुवम् । बलं वीर्य वपुः पुष्टिं कुरुतेऽग्निं विवर्द्धयेत् ॥२०९॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–कान्तिसार–कामला, शोथ, कोढ, क्षयरोग, वायगोला, दर्द पेट के रोग, बवासीर, प्लीहा, आमवात, भगंदर, अम्लपित्त, यकृत, और मस्तक के रोगों को हरता है बल, वीर्य और शरीर की पुष्टि को करता है तथा अग्नि को बढाता है॥२०८॥२०९॥

अन्यच्च

कान्तायोऽतिरसायनोत्तरतरं स्वस्थे चिरायुःप्रदं स्निग्धं मेहहरं त्रिदोषशमनं शूलाममूलापहम् ॥ गुल्मप्लीहयकृत्क्षयामयहरं पाण्डूदरव्याधिनुत्तिक्तोष्णं हिमवीर्यक किमपरं योगेन सर्वार्तिनुत् ॥२१०॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कान्तिसार सर्वोत्तम रसायन है और सावधान शरीर में आयु को बढाता है, चिकना, प्रमेह हरनेवाला त्रिदोष का नाशक, शूल आम के रोगों का नाश करता है, वायगोला, यकृत, क्षयरोग और उदररोगों को नाश करता है, तथा कान्तलोह, कडुआ, गरम वीर्य में ठंढा है इसके गुणों को कहां तक कहैं कि यह लोह अनुपान के द्वारा समस्त रोगों का नाशकर्ता है॥२१०॥

लोहे की शुद्धि

नाधः पंचपलात्त्रयोदशपलादूर्ध्वं न लोहं पचेत्तत्रायःपलपंचकस्य पचने निर्वापनादिक्रमें ॥ उद्दिश्य त्रिफलाफलानि शनकैर्निःक्वाथयेत्षोडश प्रक्षिप्याष्टगुणं जलं परिमितं पादेन तच्चोद्धरेत ॥२११॥ एवं प्रकुर्यादसकृन्मारणे शोधने तथा । न कर्मणि विधिं कुर्याद्विधिज्ञोऽप्यलसो भिषक् ॥२१२॥ (टोडरानं०)

अर्थ–पांच पल से कमती और तेरह पल से अधिक लोहे की भस्म न करै और जहां बुझाव देने के समय पांच पल लोहा लाया जाता है वहां पर सोलह पल त्रिफला ले और कूटकर आठ गुने जल में औटावे और चतुर्थांश शेष रहने पर उतारकर छान लेवे, यदि शोधना होवे तो लोहे को तपा तपा कर बुझावे और भस्म करना हो तो क्वाथ में घोट कर गजपुट में फूंके और विधि के जाननेवाला वैद्य यदि इस क्रिया को आलस से न करै तो अपगुण अवश्य करेगा॥२११॥२१२॥

अन्य प्रकार का शोधन

त्रिफलाष्टगुणे तोये त्रिफलाषोडशं पलम् । तत्क्वाथे पादशेषे तु लोहस्य पलपंचकम् ॥२१३॥ कृत्वा पत्राणि तप्तानि सप्तवारं निषेचयेत् । एवं प्रलीयते दोषो गिरिजो लोहसम्भवः ॥२१४॥ (रससारपद्धति र० र० स०)

अर्थ–सोलह पल त्रिफला में त्रिफला से आठ गुने अर्थात् १२८ एक सौ अठ्ठाईस पल जल गेरकर औटावे जब चतुर्थांश शेष रहै तब उतार कर छान लेवे तदनन्तर पांच पल लौहे के पत्रों को तपा तपा कर पूर्वोक्त त्रिफला के क्वाथ में बुझावे इस प्रकार सात बार बुझावे तो लोहे का गिरिज दोष नष्ट हो जायगा।२१३॥२१४॥

ती रा प्रकार

शशक्षतजसंलिप्तं त्रिवारं परितापितम् । मुण्डादिसकलं लोहं सर्वदोषन्वि–मुञ्चति ॥२१५॥ (र० र० स०)

अर्थ–लोहे को खरहे के रक्त से लीपकर अग्नि में तपावे इस प्रकार तीन बार करने से मुण्डादि समस्त प्रकार के लोह सम्पूर्ण दोषों से छूट जाते हैं॥२१५॥

चौथा प्रकार

सामुद्रलवणोपेतं तप्तं निर्वापितं खलु । त्रिफलाक्वथिते नूनं गिरिदोषमय–स्त्यजेत् ॥२१६॥ (र० र० स०)

अर्थ–लोहे के पत्रों को समुद्र नोंन का लेपकर अग्नि में तपावे फिर तपे हुए पत्रों को सात बार त्रिफला के क्वाथ में बुझावे तो लोहेका गिरिजदोष नष्ट होगा॥२१६॥

पाँचवाँ प्रकार

चिञ्चाफलजलक्वाथादयो दोषमुदस्यति । यद्वा फलत्रयोपेतं गोमूत्रे क्वथितं क्षणम् ॥२१७॥ (र० र० स०)

अर्थ–इमली के फलों के क्वाथ के साथ औटाने से अथवा गोमूत्र में त्रिफला का क्वाथ बनाकर उसमें लोहे को औटावे तो शीघ्र ही लोहा शुद्ध हो जायगा॥२१७॥

कान्तलोह का विशेष शोधन

शारक्तेन संलिप्तं बिम्बार्कपयसायसः ॥२१८॥ पत्रं हुताशने ध्मातं सिक्तं त्रैफलवारिणा ॥ त्रिशः कान्तस्य संशुद्धिरित्येवं परमा भवेत् ॥२१९॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–कान्त लोह के पत्रों को खरहा के रक्त से लीपकर बिम्बा (कन्दूरी अगर चिंचा पाठ हो तो इमली के फलों का क्वाथ) क्वाथ आक का दूध अथवा त्रिफला के क्वाथ में तीन बार बुझावै तो कान्त लोह की शुद्धि होगी॥२१८॥२१९॥

दूसरा प्रकार

तप्तं क्षाराम्लसंलिप्तं शशरक्तेन दापितम् । कान्तलोहं भवेच्छुद्धं सर्वदोषविवर्जितम् ॥२२०॥

(र० र० स०)

अर्थ–कान्तलोह के पत्रों पर नींबू या जंभीरी के रस से घुटे हुए जवाखार का लेपकर और अग्नि में तपाकर तीन बार खरहा के रक्त में बुझावे तो कान्त की विशेष शुद्धि होगी॥२२०॥

लोह भस्म करने की अवधि

नायः पचेत्पञ्चपलादर्वागूर्ध्वं त्रयोदशात् ॥२२१॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–लोहे को कम से कम पांच पल और अधिक से अधिक तेरह १३ पल लेकर भस्म करे॥२२१॥

लोहे के गुणों की संख्या

लक्षोत्तरगुणंसर्वं लौहं स्यादुत्तरोत्तरम् । कान्तं कोटिगुणं तत्र तदप्येवं गुणोत्तरम् ॥२२२॥

(र० र० स०)

अर्थ–समस्त प्रकार के लोहों में एक एक लक्ष गुण है और मुण्डादि लोहों के भेदों में भी उत्तरोत्तर अधिक गुण होता है यथा मुण्ड के तीन भेद हैं मृदु, कुण्ठ, और कडार इनमें मृदु से कुंठ और कुंठ से कडार उत्तम गुणवाला है इसी प्रकार तीक्ष्ण लोहमें भी खर.सर. हृन्नाल, तारावट्ट, वाजिर, और काललोह उत्तरोत्तर अधिक गुणवान् हैं पूर्वोक्त लोहे की अपेक्षा कान्त लोह में गुण कोटि गुना अधिक है तथा कान्त लोहे के भेदों में भी गुण उत्तरोत्तर अधिक है यथा भ्रामक, चुम्बक, कर्षक, द्रावक और रोमकान्त इनमें भ्रामक से चुम्बक, चुम्बक से कर्षक, कर्षक से द्रावक और द्रावक से रोमकान्त उत्तम है॥२२२॥

लोहभस्म के गुणों की तारतम्यता

किट्टाद्दशगुणं मुण्डं मुण्डात्तीक्ष्णं शतोन्मितम् । तीक्ष्णाल्लक्षगुणं कान्तं

भक्षणात्कुरुते नृणाम् ॥२२३॥ तस्मात्कान्तं सदा सेव्यं जरामृत्युहरं नृणाम् ॥२२४॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–लोहे की कीट से मुण्ड लोह दशगुना अधिक गुणवान् है मुण्ड से तीक्ष्ण लोह सौ गुना अधिक गुणवाला है और तीक्ष्ण से कान्तलोह लाखगुना उत्तम है इसलिये मनुष्य जरा और मृत्यु के नाश करनेवाले कान्त लोह को नित्यप्रति सेवन करे॥२२३॥२२४॥

लोहभस्म की विधि

सूतकाद्द्विगुणं गन्धं दत्त्वा कुर्याच्च कज्जलिम् । द्वयोः समं लोहचूर्णं मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥२२५॥ यामयुग्मं ततः पिण्डं कृत्वा ताम्रस्य पात्रके । घर्मे कृत्वा रुबूकस्य पत्रैराच्छादयेद्बुधः ॥२२६॥ यामद्वयाद्भवेदुष्णं धान्यराशौ न्यसेत्ततः । दत्त्वोपरि शरावं तु त्रिदिनान्ते समुद्धरेत ॥२२७॥ पिष्ट्वा च गालयेद्वस्त्राल्लोहं वारितरं भवेत् । एवं लोहानि सर्वाणि स्वर्णादीन्यपि मारयेत् ॥२२८॥ तद्रजो वस्त्रगलितं नीरे तरति हंसवत् । सोमामृताभिधमिदं लोहभस्म प्रकीर्तितम् ॥२२९॥ (रससार पद्धति)

अर्थ–पारद से दूना गंधक लेकर कजली कर लेवे और कजली के समान लोहे के चूरे को खरल में गेरकर घीगुवार के रस से दो प्रहर तक मर्दन करे। फिर उसका गोला बनाय अंड के पत्तों से ढक और उसको तांबे के पात्र में रख घाम में रख देवे इस प्रकार दो प्रहर तक रखने से जब वह (गोला) उष्ण हो जाय तब उसको सकोरे से ढक तीन दिवस तक अन्न के ढेर में गाड देवें। तदनन्तर उस गोले को निकालकर और खरल (लोहेकी) में पीसकर कपड़े में छान लेवे तो वह लोहसार वारितर (जल में तैरनेवाला) हो जायगा। इस प्रकार समस्त धातुओं को विशेषकर सुवर्णादिकों को भी भस्म करै। जिन जिन धातुओं को भस्म करना हो ऊपर लिखी हुई विधि से भस्म कर कपड़े से छान लेवे तो वारितर भस्म होगी इस भस्म को सोमामृत लोहभस्म कहते हैं॥२२५–२२९॥

सूर्यतापी लोहभस्म

शाणोद्वान्तमयस्तु कान्तमथवा क्षिप्त्वार्द्धलोलतिकं दत्त्वाप्यंशरसं विमर्द्य सलिलैर्भृङ्गाद्रिकर्णीरसैः ॥ पक्वं सूर्यपुटैश्चतुर्दशदिनैरेरण्डपत्रावृतं भस्म स्याद्गृहधूमधूसररुचि प्राग्धान्यराशिस्थितम् ॥२३०॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–सान (जिस पर चाकू वगैरह तेज किये जाते हैं) पर घिसने से जो लोहसार का अथवा कान्तिसार का चूरा मिट्टी में मिल जाता है उसको चुम्बक पत्थर से निकाल लेवें, उससे आधा गन्धक और चौथाई पारा डालकर सूखा ही घोटे फिर जलभंगरा और गिरिकर्णी (कोयल) के रस से यथाक्रम घोट गोला बनावे उसको एरंडों के पत्तों से लपेट तांबे के पात्र में रख देवे इस प्रकार चौदह दिवस तक सूर्यपुट में पकावे (प्रत्येक पुट में दोनों ही रसों की भावना देना आवश्यक है) फिर तीन दिन तक अन्न के ढेर में रखे तदनन्तर अन्न के ढेर में से निकाल लोहे के खरल में अथवा पत्थर की सिलपर पीसकर छान लेवे (मोटे गढवार कपड़े में छानना चाहिये) तो घर के धूएं के समान रंगवाला लोहभस्म होगा॥२३०॥

सम्मति–इस क्रिया में चौदह दिन को चौदह पुट समझना चाहिये और उन पुटों का प्रकार इस तरह जानना चाहिये कि रात्रि के समय लोहे के चूरे को नर कर देवे और प्रातःकाल से ही सूर्य के ताप में घोटे और प्रातःकाल से कुछ भी रस न डाले तात्पर्य इसका यह है कि घाम में सूखा मर्दन करना ही सूर्यपुट है।

लोहभस्म

अब जो सार आगि बिन होय । ऐसी जुगत सुनो रे लोय ॥
पारा गंधक समके लेय । सूकी कजरी बांटि करेय ॥
लोहा बहुरि दुहूँ सम लेय । रस ग्वारिके खररि करेय ॥
गोला करि तमेडमें धरै । सरवा मूंदै मुद्रा करै ॥
तम हड धरै मांहिले धान । बडी बुखारी होय सुजान ॥
तीन द्यौस लौं तामें रहै । तम हडकाढि पंच कवि कहै ॥
तमहडतें कूंडे में धरै । लागत वायु सारपर जरै ॥
सो जरि भरसम होय छिनमान । एक जुगत यह सुनो सुजान ॥
(रससागर बड़ा)

लोहभस्म

खाटीदारचों लेय मँगाय । पारौ तोला मैले आय ।
तीन द्यौसलों तामें रहै । पुनि ले काढि पंच कवि कहै ॥
पारो लुहँडा देय चढाइ । अलप आगि ता तरै जराइ ॥
मानसके बारन को तेल । वा पारे में चोवा मेल ॥
एक द्यौस ज्यों चोवा देव । ऐसी जुगति सिद्धि कै लेव ॥
पत्र लोह काचेके करै । पारौ चुपरि मूसमें धरै ॥
अंध मूसकै धौके गुनी । एक जुगति यह गुरुपै सुनी ॥
नाम याहि काठडंडको लोय । सूसि उधारे चेटक होय ॥
(रससागर, बड़ारससागर)

लोहभस्म

लोहचूर्णपलं खल्वे सोरकस्य पलं तथा । अच्छगंधपलं चापि सर्वमेकत्र मर्दयेत् ॥२३१॥ कुमार्यद्भिर्दिनं कुर्याद्गोलकं रुचिपत्रकैः । संवेष्टच च मृदा लिप्त्वा पुटेद्गजपुटे भिषक् ॥२३२॥ स्वांगशीतं समुद्धृत्य सिन्दूराभमयोरजः ॥ मृतं वारितरं ग्राह्यं सर्वकार्यकरं परम् ॥२३३॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–लोहे का बुरादा और सोरा एक २ पल और शुद्ध आमलासार गन्धक एक पल इन तीनों को खरल में डालकर घीगुवार के रस में एक दिन तक घोट गोला बनावे उसको एरंड के पत्तों से लपेट कर मिट्टी से लीप देवै फिर गजपुट में भस्म करै स्वांगशीतल होने पर निकाले लेवै तो सिंदूर के समान लोहे की भस्म होगी, यह जल पर तैरनेवाली लोहभस्म समस्त कामों में लाने योग्य है॥२३१–२३३॥

शतपुटी और सहस्रपुटी लोहभस्म

शाणाकृष्टरजोयसस्त्रिदिवसं पिष्टं वरावारिणा यद्वा रक्तपुनर्नवादलरसैर्य-द्वाद्रिकर्णीरसैः । चांगेरीसलिलैस्तथैव सलिलैर्वानीरजैरोषधैस्त्रिंशद्दन्तिपुटैर्वरं चलतरं स्याद्भस्म जम्बूप्रभम् ॥२३४॥ (रससारपद्धति)

अर्थ–शाण (जिस पर कैंची चाकू प्रभृति की धार चढाई जाती है) पर जो लोहा घिसा जाता है उस (सार या कान्त) को चुम्बक से संग्रहकर तीन दिन तक त्रिफला के क्वाथ की भावना देनी (यहां पर तीन दिन का अर्थ तीन भावना लेना चाहिये) फिर गजपुट में भस्म करना उचित है इसी तरह लाल सांठ के पत्तों का रस, अद्रिकर्णी (जिसे कोयल कहते हैं) का रस, चांगेरी (खट्टी लोनिया) का रस और जलबेत के रस की तीन २ भावना देकर पुट देवे तो तीस पुट में जामन के सदृश वर्णवाला लोह भस्म होगा॥२३४॥

सम्मति–यदि तीस ही पुट का भस्म बनाना हो तो प्रत्येक रस की छः २ पुट देवे और प्रत्येक पुट में तीन भावना देना योग्य है, अथवा शतपुटी बनाना हो तो बीस २ पुट देवे और यदि हजार पुट का लोह बनाना हो तो दो २ सौ पुट देना चाहिये। प्रत्येक पुट में तीन २ भावना देना योग्य है, रोगनाश करने के लिये लोहभस्म बनाना हो तो तीस पुट अथवा शतपुट का लोहभस्म बनाना चाहिये और यदि रसायन के लिये बनावे तो हजार पुट का बनाना ही उत्तम है यह सिद्धान्त हमारे पूर्वज वैद्यों का है इसमें सन्देह नही है॥

सारमारणविधि

सुफै सराई संपुट भरै । कपरौटी के गजपुट धरै ।।
सो मीर लोह भस्म अति होय । पुनि त्रिफला रस खरलै सोय ।।
एक पहर ज्यों है मरजाद । खरलत गुनीन की ज्यों दाद ।।
त्रिफला की ऐसी पुट तीस । तब निश्चन्द्र करै जगदीस ।।
नीर बाँटि दारचों के पात । पुनि याकी पुट दीजै सात ।।
तब सो सार वारितर होय । जो इह विधिकै जाने कोय ।।
भली जुगति यह कही बखानि । तब कहिजै राजनि के खानि ।।
बिन शोध्यो जो कहिये सोय । तो ताको गुन नहिं रंचक होय ।।
(रससागर बड़ा । रससागर छोटा)

तथा च

रेतितं घृतसंयुक्तं क्षिप्तवायः खर्परे पचेत् । चालयेल्लोहदंडेन यावत्क्षिप्तं तृणं दहेत् ।।२३५।। पिष्ट्वा पिष्ट्वा पचेदेवं पंचवारमतः परम् ।।२३६।। धात्रीफलरसैर्यद्वा त्रिफलाक्वथितोदकैः । पुटेल्लोहं चतुर्वारं भवेद्वारितरं खलु ।।२३७।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–शुद्ध किये हुए लोह को रितवाकर मिट्टी के खिपरे में रख और घृत से भिगोकर आंच पर चढावे और लोहे के ही घोटा से तब तक खूब घोटता जावे जब तक कि उसमें घासका तिनखा जल जावे फिर उसको पीस कर पूर्वोक्त विधि से घृतयुक्त करके चूल्हे पर पचावे इस प्रकार पांच बार करे फिर आमले और त्रिफला के क्वाथ की भावना देकर चार गजपुट देवे तो लोहे की भस्म जल पर तैरनेवाली हो जायगी इसमें सन्देह नहीं।।२३५–२३७।।

सम्मति–मेरी राय में तो प्रत्येक रस की चार २ भावना देकर आठ पुट देवे तो ठीक होगा।

तथा च

स्नेहाक्तं लोहरजो मूत्रे स्वरसेपि रात्रिधात्रीणाम् । पृथगेवं सप्त कृत्वा भर्जितमखिलामये योज्यम् ।।२३८।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–प्रथम शुद्ध लोह को गोमूत्र की भावना देकर सुखा लेवे फिर घृत में मिलाय चूल्हे पर भस्म कर लेवे इस प्रकार सात पुट देवे तथा हलदी और आमले के रस की भी सात २ भावना देकर चूल्हे पर भून लेवे तो लोह की भस्म होगी और उसको समस्त रोगों में वर्तना चाहिये।।२३८।।

तथा च

हिंगुलस्य पलाज्यञ्च नारीस्तन्येन पेषयेत् । तेन लोहस्य पत्राणि लेपयेत्पलपंचकम् ।।२३९।। रुद्ध्वा गजपुटे पच्यात्कषायैस्त्रैफलैः पुनः । जम्बीरैरारनालैर्वा विंशत्यंशेन हिंगुलम् ।।२४०।। पिष्ट्वा रुद्ध्वा पचेल्लोहं तद्द्रवैः पाचयेत्पुनः । चत्वारिंशत्पुटरेवं कान्तं तीक्ष्णं च मुंडकम् ।।२४१।। म्रियते नात्र संदेहो दत्त्वा दत्त्वैव हिंगुलम् ।।२४२।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सिंगरफ को पांच पल लेकर स्त्री के दूध से घोट लेवे फिर पांच ही पल लोहे के पत्रों पर लेपकर गजपुट में पकावे तदनन्तर उस लोह भस्म से बीसवाँ हिस्सा सिंगरफ डालकर त्रिफला का क्वाथ, जंभीरी का रस और कांजी इनमें से किसी एक के साथ पीसकर गजपुट में पकावे इस प्रकार चालीस पुट देने से लोहे की भस्म होगी चाहे वह लोहा कांत, तीक्ष्ण, अथवा मुंड इनमें से कोई सा क्यों न हो भस्म हो जाता है इसमें सन्देह नहीं है। और प्रत्येक पुट में (सिंगरफ) जो कि लोहे से बीसवाँ हिस्सा हो देकर भावना की औषधि के साथ घोट गजपुट देनी चाहिये।।२३९–२४२।।

तथा च

अथ पूर्वोदितं तीक्ष्णं वसुभल्लकवासयोः । पुटितं पत्रतोयेन त्रिंशद्वाराणि यत्नतः शोणितं जायते भस्म कृतसिन्दूरविभ्रमम् ।।२४३।।२४४।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अथवा हिंगुल के साथ भस्म किये हुए लोह को मौलसरी, भिलावे और अड़ूसे के पत्तों के रस की पुट देकर गजपुट में भस्म करै, अर्थात् प्रत्येक औषधि के पत्तों के रस की दस २ पुट देवे इस प्रकार तीस पुट देने से सिंदूर के समान लाल वर्ण ही लोहभस्म होगी।।२४३–२४४।।

तथा च

यद्वा तीक्ष्णदलोद्भूतं रजश्च त्रिफलाजलैः । पिष्ट्वा दत्त्वौदनं किंचिच्चक्रिकां प्रविधाय च ।।२४५।। शोषयित्वातियत्नेन प्रपचेत्पंचभिः पुटैः । रक्तवर्णं हि तद्भस्म योजनीयं यथायथम् ।।२४६।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अथवा तीक्ष्ण (फौलाद) लोह के पत्रों का चूरा करके त्रिफला के जल से घोटे फिर थोड़ा सा रंधा हुआ भात मिलाकर टिकिया बांध लेवे उस टिकिया को अच्छी तरह सुखाकर भस्म करै तो पांच पुट में लाल वर्ण की भस्म होगी उसको अनेक योगों के संग देना चाहिये।।२४५।।२४६।।

तथा च

मत्स्याक्षीगंधबाह्लीकैर्लकुचद्रवपेषितैः । विलिप्य सकलं लोहं मत्स्याक्षीकल्कपेषितम् ।।२४७।। भस्त्राभ्यां सुदृढं ध्मात्वा त्रिशूलीनिर्गमावधि । अथोद्धृत्य क्षिपेत्क्वाथे त्रिफलागोजलात्मके ।।२४८।। तस्मादाहृत्यसंताड्य मृतमादाय लोहकम् । ततश्च पूर्ववद् ध्मात्वा मारयेदखिलायसम् ।।२४९।। खण्डयित्वा ततो गंधं त्रिफलागुडवारिणा । पुटेत्तु त्रिंशद्वाराणि निरुत्थं भस्म जायते ।।२५०।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–मत्स्याक्षी (मछेछी) और हींग के समान भाग लेके बड़हर अथवा मछेछी के रस से घोटे फिर लोहे के पत्रों पर लेप कर और सुखाय धोंकनियों से खूब धोंके तदनन्तर आधा त्रिफला का क्वाथ और आधा ही गोमूत्र मिलाकर रख देवे उसमें उन तपे हुये पत्रों को बुझावें फिर उसमें से निकाल हथोड़े से कूट मृत लोहे की ले लेवे और इसी प्रकार लेपकर तपाय बुझा देवें जब तक समस्त लोहे का भस्म न हो तब तक यही क्रिया करता जावे फिर पूर्वोक्त रीति से जले हुए लोहे के समान गंधक और गुड़ (दोनों मिलाकर) लेकर त्रिफला के क्वाथ से घोटकर गजपुट देवे इस प्रकार तीस पुट देने से लोह की निरुत्थ भस्म हो जायगी।२४७–२५०।।

तथा च

समगन्धमयश्चूर्णं कुमारीवारिमर्दिततम् । पुञ्जीकृतं कियत्कालमवश्यं म्रियते ह्ययः ।।२५१।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–शुद्ध लोहचूर्ण एक भाग और शुद्ध गंधक एक भाग इन दोनों को घीगुवार के रस मे पीसकर गोला बनाकर कुछ समय तक अन्न की ऊष्मा में धर रखे तो उसकी भस्म हो जायेगी, इसमें सन्देह नहीं है।।२५१।।

तथा च

जम्बीररससंयुक्ते दरदे तप्तमायसम् । बहुवारं विनिक्षिप्तं म्रियते नात्र संशयः ।।२५२।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सिंग्रफ को नींबू के रस में घोटकर रख लेवे फिर लोहे के पत्रों को अग्नि में तपा तपाकर उस पूर्वोक्त घोटे हुए सिंग्रफ में बार बार बुझावे तो लोहे की भस्म होगी, इसमें सन्देह नहीं।।२५२।।

तथा च

गोमूत्रैस्त्रिफला क्वाथ्या तत्कषायेण भावयेत् । त्रिःसप्ताहं प्रयत्नेन दिनैकं मर्द्दयेत्पुनः ।।२५३।। रुद्ध्वा गजपुटे पच्योद्दिनं क्वाथेन मर्दयेत् । दिवा मर्द्यं

पुटेद्रात्रवेकविंशदिनावधि।। एकविंशपुटैश्चैव म्रियते त्रिविधं ह्ययः ।।२५४।।
(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–गोमूत्र में त्रिफला का क्वाथ बना लेवे उससे लोहचूर्ण को इक्कीस दिन तक भावना देवे फिर एक दिन मर्दन कर गजपुट में पकावे फिर एक दिन तक मर्दन करे। इस प्रकार दिन में घोटे और रात्रि में पुट लगावे। इस प्रकार इक्कीस दिवस तक बीस पुट लगावे तो तीनों प्रकार के ही लोहे की भस्म होगी, इसमें सन्देह नहीं है।।२५३।।२५४।।

सम्मति–प्रथम १ सेर त्रिफला में १६ सोलह सेर गोमूत्र भरकर औटावे तदनन्तर उससे लोहचूर्ण को इक्कीस दिन तक भिगोवे फिर घोटकर पुट देवे। प्रत्येक पुट में इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि लोहा सूखा हुआ हो नहीं तो श्यामवर्ण होगा। इस क्रिया को गरमी के दिनों में करना चाहिये।।२५३।।२५४।।

तथा च

अयसामुत्तमं सिंचेत्तप्ततप्तं वरे रस। एवं शुद्धानि लोहानि पिष्टान्यम्लेन केनचित् ।।२५५।। मृतसूतस्य पादेन प्रलिप्तानि पुटानले । पचेत्तुल्यस्य वा ताप्यगन्धाश्महरतेजसः ।।२५६।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–समस्त लोहों में उत्तम अर्थात् कान्त लोहे को लेवे और उसके सूक्ष्मपत्र बनवाय और अग्नि में तपाकर त्रिफला के काढ़े में २१ इक्कीस बार बुझावे तो वह कांतलोह शुद्ध होगा। इस शुद्ध किये हुए लोहे के पत्रों पर नींबू या अन्य किसी खट्टे पदार्थ के रस से पारद भस्म (जो कि लोहे से चौथाई) को घोट लेप कर देवे अथवा सोनामक्खी, गंधक और पारा इनमें से किसी एक को लोहे के समान लेकर घीगुवार के रस में घोट गजपुट में फूंक देवे तो लोह की भस्म होगी।।२५५।।२५६।।

तथा च

शुद्धं सूतं द्विधा गंधं खल्वे कृत्वा च कज्जलीम् । द्वयोः समं लोहचूर्णं मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ।।२५७।। यामद्वयात्समुद्धृत्य तद्गोलं कांस्यपात्रके । आच्छाद्येरण्डपत्रैश्च यामार्द्धेत्युष्णतां व्रजेत ।।२५८।। धान्यराशौ न्यसेत्पश्चात्त्रिदिनांते समुद्धरेत् । संपेष्य गालयेद्वस्त्रे सत्यं वारितरं भवेत् ।।२५९।। कान्तं तीक्ष्णं च मुण्डं च निरुत्थं जायते ध्रुवम् । स्वर्णादीन्मारयेदेवं चूर्णं कृत्वा च लोहवत् ।।२६०।। सिद्धयोगो ह्ययं ख्यातः सिद्धानां सुमुखागतः ।।२६०।। सिद्धयोगो ह्यं ख्यातः सिद्धानां सुमुखागतः । अनुभूतं मया सत्यं सर्वरोगजरापहम् ।। त्रिपलामधुसंयुक्तं सर्वरोगेषु योजयेत् ।।२६१।।

(र० र० स०)

अर्थ–शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग इन दोनों को खरल में डालकर कज्जली बना लेवे और इन दोनों के समान लोहे का चूरा मिलाय घीगुवार के रस से २ प्रहर तक घोटे फिर उसको गोला बनाय कांसी के पात्र में रख एरंड के पत्तों से ढ़क देवे तो दो ही पहर में वह गोला अत्यन्त उष्ण हो जायेगा। तदनन्तर उस गोले को धान के ढेर में तीन दिवस तक रख निकाल लेवे और पीसकर छान लेवे तो लोहे की जल पर तैरनेवाली भस्म होगी। इस क्रिया से तीन प्रकार के लोहों की निरुत्थ भस्म होगी, इसमें सन्देह नहीं, जिस प्रकार लोहे की भस्म होती है, उसी प्रकार अन्य सुवर्ण आदि धातुओं की भी भस्म हो जायेगी। यह सिद्धयोग सिद्धजनों के मुख से कहा गया है और ग्रंथकार कहता है कि मैंने भी इसका अनुभव किया है। यह लोहभस्म समस्त रोगों को नाश कर्ता है। सब रोगों में इस लोहभस्म को त्रिफला और शहद के साथ देना चाहिये।।२५७–२६१।।

कान्तिसार की विधि

तीक्ष्णलोहस्य पत्राणि निर्दलानि दृढेऽनले । ध्मात्वा क्षिप्त्वा जले सद्यः पाषाणेलूखलोदरे ।।२६२।। खण्डयेद्गाढनिर्घातैः स्थूलया लोहपारया । तन्मध्ये स्थूलखण्डानि रुध्वा मल्लद्वयान्तरे ।।२६३।। ध्मात्वा क्षिप्त्वा जले सम्यक् पूर्ववत्खंडयेत्खलु । तच्चूर्णं सूतगन्धाभ्यां पुटेद्विंशति वारकम् ।।२६४।। पुटे पुटे विधातव्यं पेषणं दृढवत्तरम् । एवं भस्मीकृतं लोहं तत्तद्रोगेषु योजयेत् ।।२६५।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–तीक्ष्ण लोहे के पतले पत्र बनवाकर तीक्ष्ण अग्नि में तपाय जल में बुझावे और उसी समय उनको (लोहे के पात्र में) पत्थर तथा लोहे की ऊखली में गेरकर लोहे के मूसले से कूटे उनमें से छोटे छोटे टुकड़ों की छोड़ बड़े टुकड़ों को सकोरा में रख और अग्नि में तपाय जल में बुझावे और पहिले की तरह लोहे के इमामदस्ते में कूटे। उस लोहचूर्ण के समान कजली मिलाय घीगुवार के रस में घोट गजपुट देवे। इस प्रकार २१ इक्कीस पुट देवे। प्रत्येक पुट में खूब घुटाई करे तो लोह भस्म सिद्धि होगी। इसको समस्त रोगों में वर्तना चाहिये।।२६२–२६५।।

तथा च

तँदू गुठली भांडेमेलि । जंत्रपताल काढिजे तेलि ।।
तब लीजै गजबेलि को रेत । पारे के सम जानो जेत ।।
सोलह पहर खरलिये तेल । सोले पिठी नारियल मेल ।।
ऐसो छेद जुगतसे करै । औषधि माहिं फुरहरी धरै ।।
मिगी नारियल बैठे एक । हंडी दीजै भलै विवेक ।।
ऊपर कपरौटी कर सात । सुकै सुकैके नीकी बात ।।
तब सुनारियर हांडी धरै । हाँडी पर कपरौटी करै ।।
तब गजपुट में धरै बनाय । ऊपर तरै आरने छाय ।।
सीतल भये लीजिये बीर । सोखे सही बंग को नीर ।।
खाये बल पौरुख अतिकरै । मन्दागिनी अरोचक हरै ।।
कान्तीरस है याको नाम । सो साधै जाके बहुकाम ।।
बल बीरज अरु थंमन होय । सो नर खावत जाके जोय ।।

(रससागर बड़ा)

लोहभस्म के अमृतीकरण की विधि

द्विगुणे त्रिफलाक्वाये तुल्ये पिष्ट्वाप्ययोरजः । विपचेन्मध्यपाकेन सर्वव्याधिजरापहम् ।।२६६।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–दुगने त्रिफला के क्वाथ में लोह भस्म को गेरि और पीसकर साधारण अग्नि से पकावे, जब उसमें से धुआं निकलना बन्द हो जाय तब उतार लेवे, स्वांगशीतल होने पर घोटकर रख लेवे तो यह भस्म बुढ़ापेरूप रोग को नाश करता है।।२६६।।

लोहभस्म की परीक्षा

अंगुष्ठतर्जनीदृष्टं यत्तद्रेखान्तरं विशेत् । भस्म वारितरं वा स्यात्तल्लोहं मृतमुच्यते ।।२६७।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–अँगूठा और उसके पासवाली अंगुलीसे लोह भस्म को लेकर मलने से लोहभस्म अँगूठे अंगुली की रेखाओं में धँस जाय अथवा जल में डूबे नहीं तो लोहे को भस्म हुआ समझना चाहिये।।२६७।।

तथा च

पक्वजम्बुफलच्छायं कान्तलोहं तदुत्तरम् ।।२६८।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–जिस कान्तिसार लोहे की भस्म वर्ण (रंग) पकी हुई जांबन के समान हो अर्थात् ललाई लिये हुए कुछ कालापन हो तो उत्तम समझनी चाहिये।।२६८।।

लोहानुपान

त्रिफलामधुसंयुक्तं सर्वरोगेषु योजयेत् । पथ्याशिनां लोहभस्म यथोक्तगुणदं

भवेत् ॥२६९॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–लोहभस्म को त्रिफला और शहद के साथ सब रोगों में देवे जो मनुष्य लोहभस्म के सेवन करने के समय पथ्य (हित) भोजन करने वाले हैं, उनको लोहभस्म ठीक गुण देता है।।२६९॥

लोहभस्मसेवन का गुण

एतत्स्यादपुनर्भवं हि भसितं लोहस्य दिव्यामृतं सम्यक् सिद्धरसायनं त्रिकटुकी वेल्लाज्यमध्वन्वितम् ॥ हन्यान्निष्कमितं जरामरणजव्याधींश्च सत्पुत्रदं दिष्टं श्रीगिरिशेन कालयवनोद्भूत्यै पुरा तत्पितुः ॥२७०॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–सिद्धरसायन अमृतरूप इस निरुत्थ लोहभस्म को त्रिकुटा, बायविडंग, घृत और शहद के साथ सेवन करे तो उसके जरा और मृत्युरूप व्याधियों का नाश होता है और सत्पात्र पुत्र उत्पन्न होगा। पहले श्रीमहादेवजी ने कालयवन के पैदा होने के लिये उसके पिता को इस लोहभस्म का सेवन कहा था।।२७०॥

तथा च

लोहं जन्तुविकारपाण्डुपवनक्षीणत्वपित्तामयस्थौल्यार्शोग्रहणी–ज्वरार्तिकफजिच्छोफप्रमेहप्रणुत् ॥ गुल्मप्लीहाविषापहं बलकरं कुष्ठाग्निमान्द्यप्रणुत्सौख्यालम्बिरसायनं मृतिहरं किट्टं च कान्ता–दिवत् ॥२७१॥ मृतानि लोहानि रसीभवन्ति निघ्नन्ति युक्तानि महामयांश्च ॥ अभ्यासयोगाद् दृढदेहसिद्धिं कुर्वन्ति रूग्जन्मजराविनाशम् ॥२७२॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–लोहभस्म, कृमिविकार, पाण्डु रोग, बातव्याधि, धातु, क्षीणता, पित्तरोग, स्थौल्य (मेदोवृद्धि), बवासीर, ज्वर कफ के रोग, सूजन, प्रमेह, वायगोला, तापतिल्ली, विषविकार, कोढ, मन्दाग्नि और मृत्यु को नाश करता है। बल का बढ़ानेवाला, सुख का दाता और रसायन है. कान्तादि लोहों की कीट भी उन्हीं के समान गुणवाली होती है। लोहभस्म रसायन होता है इसका निरन्तर सेवन करने से असाध्य रोग भी नाश को प्राप्त होते हैं। शरीर लोहे के समान दृढ़ होता है और रोगों का उत्पन्न होना तथा बुढ़ापे को नाश करता है, इसमें सन्देह नहीं है।।२७१॥२७२॥

तथा च

कान्तायः कमनीयकान्तिजननं पांड्वामयोन्मूलनं यक्ष्मव्याधिनिबर्हणं गरहरं दोषत्रयोन्मूलनम् । नानाकुष्ठनिबर्हणं बलकरं वृष्यं वयःस्तंभनं सर्वव्याधिहरं रसायनवरं भौमामृतं नापरम् ॥२७३॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कान्तलोह के सेवन करने से मनुष्य सुन्दर रूपवान् होता है तथा लोहभस्म पांडुरोग, राजयक्ष्मा, विषविकार, वातरोग, पित्तरोग और कफ के रोग और अनेक प्रकार के कोढ को नाश करता है। बल को बढ़ाता है, पुष्टिकारक है और बुढ़ापे को आने नहीं देता है और समस्त रोगों का नाश करता है, रसायन है और यह लोहभस्म इस संसार में अमृत के समान है।।२७३॥

तथा च

आयुःप्रदाता बलवीर्यकर्ता रोगप्रहर्ता मदनस्य कर्ता ॥ अयःसमानं नहि किंचिदन्यद्रसायनं श्रेष्ठतमं हि जन्तोः ॥२७४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-लोहभस्म-आयु का दाता, बल और वीर्य का करनेवाला, रोगनाशक और कामदेव का उत्पादक है, जीवमात्र के लिये लोहे के समान और कोई श्रेष्ठ रसायन नहीं है।।२७४॥

अशुद्ध भस्म के दोष

अशुद्धलोहं न हितं निषेवणादायुर्बलं कान्तिविनाशि निश्चितम् । हृदि ग्रपीड तनुते ह्यपाटवं रुजं करोत्येव विशोध्य मारयेत् ॥२७५॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-अशुद्ध अथवा विधिपूर्वक भस्म नहीं किये हुए लोहे के सेवन से आयु बल और कान्ति नाश होती है, हृदय में पीड़ा करता है, शरीर के तेज रहित तथा अनेक रोगों को कर्ता है, इसलिये लोहे को शुद्ध कर विधिपूर्वक भस्म करना चाहिये।।२७५॥

तथा च

जीवहारि मदकारि चायसं देहशुद्धिमदसंस्कृतं ध्रुवम् । पाटवं न तनुते शरीरके दारुणं हृदि रुजां च यच्छति ॥२७६॥

(रससारपद्धति)

अर्थ-अशुद्ध लोह जीव का नाश करनेवाला, मद का कर्ता, रेचक, शरीर के तेज का नाशक है और हृदय में पीड़ा को उत्पन्न करता है।।२७६॥

लोहसेवन में परहेज

कूष्माण्डं तिलतैलं च माषान्नं राजिका तथा । मद्यमम्लमसूरांश्च त्यजेल्लोहस्य सेवकः ॥२७७॥

(रससारपद्धति)

अर्थ-पेठा, तिल, तैल, उरद, राई, शराब, खटाई और मसूर, इन पदार्थों को लोहभस्म सेवन करनेवाला कभी न खाये।।२७७॥

मण्डूर का लक्षण

ध्मायमानस्य लोहस्य मलं मंडूरमुच्यते । स किट्टसंज्ञां लभते त्रिविधं तत्प्रजायते ॥ यस्य लोहस्य यत्किट्टं तत्किट्टमपि तद्गुणम् ॥२७८॥

(रससारपद्धति)

अर्थ-लोहे को धोंकने से जो मैल निकलता है उसको मंडूर कहते हैं और उसी को किट्ट कहते हैं, वह तीन प्रकार का है, जिस लोहे के जो किट्ट है उसमें उसी लोहे के समान गुण होते हैं।।२७८॥

तीक्ष्णलोहे की किट्ट का लक्षण

भिन्नांजनप्रभं किट्टं विशेषाद्गुरुनिर्व्रणम् । निःकोटरं च विज्ञेयं तीक्ष्णं किट्टं मनीषिभिः ॥२७९॥

(रससारपद्धति)

अर्थ-जो किट्ट पिसे हुए सुरमे के समान हो, अधिकतर भारी हो और ठोस हो उसको विद्वान् तीक्ष्ण किट्ट कहते हैं।।२७९॥

कांतकिट्ट के लक्षण

पिंगं रूक्षं गुरुतरं मन्दं दीर्घमकोटरम् । छिन्नेऽत्र रजतच्छायःस्यात्तत्किट्टं तु कान्तजम् ॥२८०॥

(रससारपद्धति)

अर्थ-जो किट्ट ठोस, लम्बा, छोटा, अत्यंत भारी, रूखा और पिलाई लिये हुए हो और जिसके तोड़ने पर चांदी के समान कांति हो उसको कांतिसार लोहे की किट्ट कहते हैं।।२८०॥

कितने वर्ष की कीट ग्रहण करनी चाहिये

शताब्दचमुत्तमं किट्टं मध्यं चाशीतिवार्षिकम् । अधमं षष्टिवर्षीयं ततो हीनं विषोपमम् ॥२८१॥

(रससारपद्धति)

अर्थ-एकसौ वर्ष की कीट सबसे उत्तम है, अस्सी वर्ष की मध्यम और साठ वर्ष की कीट निष्कृष्ट होती है, इससे कम वर्षों की कीट विष के समान होती है अर्थात् साठ बरस से जितनी पुरानी कीट हो उतनी उत्तम होगी और जितनी नवीन हो उतनी ही हानिकारक होगी।।२८१।।

लोहकिट्टमारण की विधि

अक्षाङ्गारैर्धमेत्किट्टमक्षपात्रस्थिते जले । निर्वापयेदष्टवारं ततः सूक्ष्म विचूर्णयेत् ।।२८२।। तच्चूर्णं मधुना लीढं पाण्डुं हन्ति सकामलम् ।।२८३।। लोहवन्मारणं प्रोक्तं बोध्यं तद्गुणवृद्धिदम् ।।२८४।।

(रसराजपद्धति)

अर्थ-लोहे की कीट को बहेड़े के कोयलों में तपाकर बहेड़े की लकड़ी के बनाए हुए पात्र में जल भरकर आठ बार बुझावे फिर उसका सूक्ष्म चूरन कर लेवे, इस कीट के भस्म करने की विधि लोहभस्म के समान जानना चाहिये इसको शहद के साथ सेवन करने से कामला और पांडुरोग नष्ट होते हैं।।२८२-२८४।।

किट्ट से लेकर कान्तभस्म पर्यन्त के गुणों का तारतम्य

किट्टाद्दशगुणं मुण्डं मुण्डात्तीक्ष्णं शताधिकम् । तीक्ष्णाल्लक्षगुणं कान्त भक्षणात्कुरुते नृणाम् ।।२८५।।

(रससारपद्धति)

अर्थ-कीट से मुण्डलोहा दशगुना अधिक गुणवान् और मुंड से तीक्ष्ण लोह सौ गुना अधिक गुणवान् तथा तीक्ष्ण से कांतलोह में गुण लाखगुना अधिक है।।२८५।।

मण्डूर के बनाने की विधि

अक्षाङ्गारैर्धमेत्किट्टं लोहजं तद्गवां जलैः । सेचयेदक्षपात्रान्तः सप्तवारं पुन पुनः ।।२८६।। मण्डूरोऽयं समाख्यातश्चूर्णं श्लक्ष्णं नियोजयेत् ।।२८७।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-बहेड़े के कोयलों में लोहे की कीट को तपाकर बहेड़े के पात्र में रखे हुए गोमूत्र में सात बार बुझावे तो यह मण्डूर सिद्ध होगा इसको पीसकर सब काम में लावे।।२८६।।२८७।।

तथा च

गोमूत्रैस्त्रिफला क्वाथ्या तत्क्वाथे सेचयेच्छनैः ।। लोहकिट्टं तु सतत यावज्जीर्यति तत्स्वयम् ।।२८८।। तच्चूर्णं जायते पेष्यं मण्डूरोऽयं प्रयोजयेत् ।।२८९।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-गोमूत्र में त्रिफला का क्वाथ करना चाहिये फिर लोहे की कीट को तपाकर उस क्वाथ में बुझाता जावे कि जिससे कीट की भस्म हो जावे फिर उसको पीसकर रख लेवे, इस मण्डूर को समस्त कामों में लावे।।२८८।।२८९।।

मुण्डकिट्ट के गुण

ये गुणा मारिते मुण्डे ते गुणा मुण्डकिट्टके । तस्मात्सर्वत्र मण्डूरं रोगशान्त्यै प्रयोजयेत् ।।२९०।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-जो गुण मुण्डनाम की भस्म में हैं वे गुण मुण्ड की किट्ट (मण्डूर) में भी हैं इस कारण रोगशान्ति के लिये मण्डूर का सर्वत्र प्रयोग करे।।२९०।।

लोहद्रुति करने की क्रिया

त्रिःसप्तकृत्वो गोमूत्रे जालिनी भस्मभावितम् । शोषयेत्तस्य वापेन तीक्ष्णं मूषागतं द्रवेत् ।।२९१।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-कड़वी तोरई को जलाकर गोमूत्र की इक्कीस भावना देकर सुखा लेवे फिर लोहे को मूषा में रख अग्नि में तपावे और जब वह गल जावे तब ऊपर से उसकी भुरकी देवे तो लोहे की द्रुति होगी अर्थात् लोहा द्रवरूप होकर रहेगा।।२९१।।

तथा च

सुरदालीभस्मगलितं त्रिःसप्तकृत्वोथ गोजले शुष्कम् । वापेन सलिलसदृशं करोति मूषागतं तीक्ष्णम् ।।२९२।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ-बंदाल की भस्म को इक्कीस बार गोमूत्र में भावना देकर सुखा लेवे फिर लोहे को मूषा में रख तपावे जब गल जावे तब ऊपर से उस भस्म को चुटकी भर डाल देवे तो लोहे की द्रुति होगी।।२९२।।

तथा च

गन्धकं कान्तपाषाणं चूर्णयित्वा समंसमम् । द्रुते लोहे प्रतीवापो देयो लोहाष्टकं द्रवेत् ।।२९३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–गन्धक और कान्तपाषाण को समान भाग लेकर पीस लेवे फिर लोहे की घरिया में रखकर गलावे जब लोह गल जावे तब उस चूर्ण को डाल देवे तो लोह की द्रुति होगी।।२९३।।

तथा च

देवदाल्या द्रवैर्भाव्यं गंधकं दिनसप्तकम् । तेन प्रवापमात्रेण लोहं तिष्ठति सूतवत् ।।२९४।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–बंदाल के रस की गंधक को सात दिन भावना देवे फिर तपे हुए लोहे में उस गंधक को डाल देवे तो लोहा पारद के समान द्रव होकर स्थायी रहेगा।।२९४।।

तथा च

सुरदालिभवं भस्म नरमूत्रेण गालितम् । त्रिःसप्तवारं तत्क्षारवापात् कान्तद्रुतिर्भवेत् ।।२९५।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–बंदाल की भस्म को २१ इक्कीस बार नरमूत्र की भावना देवे फिर तपे हुए लोह में उसको डाले तो लोहे की द्रुति हो जायगी।२९५।।

अथ बंगभेद

वंगन्तु द्विविधं प्रोक्तं खुरकं मिश्रकाभिधम् । खुरकं श्रेष्ठमुद्दिष्टं मिश्रकं त्ववरं मतम् ।।२९६।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–खुरक और मिश्रक भेद से बंग दो प्रकार का है उन दोनों में खुरक नामका वंग उत्तम होता है, मिश्रक नामका वंग हीन गुणवाला होता है।।२९६।।

कलई की किस्में (उर्दू)

कलई चार तरह की होती है अव्वल मादनी, दोयम तलकी जो अवरक सफेद से निकलती है, सोयम सदफी, चहारम आहनी जो लोहे से हासिल होती है। (सुफहा अकलीमियां १७०)

तथा च

खुरकं मिश्रकं चेति द्विविधं वंगमुच्यते। खुरं तत्र गुणैः श्रेष्ठं मिश्रकं न हितं मतम्।।

२९७॥ धवलं मृदुलं स्निग्धं द्रुतद्रावं सगौरवम् । निःशब्दं खुरवंगं स्यान्मिश्रकं श्यामशुभ्रकम् ॥२९८॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–खुरक और मिश्रक भेद से वंग दो प्रकार के हैं उन दोनों में मिश्रक वंग की अपेक्षा खुरक वंग में गुण अधिक है, जो बंग सफेद, कोमल, चिकना, शीघ्र गलनेवाला, भारी और पत्थर पर बजाने से शब्द न करता हो उसको खुरक वंग कहते हैं, और मिश्रक नामके वंग में स्वाभाविक कालिमा ली हुई सफेदी होती है॥२९७॥२९८॥

अथ खुरक और मिश्रक का लक्षण

खुरकं रूप्यचन्द्राभं खुराकारं च कीर्त्यते । एतल्लक्षणभिन्नन्तु वंगं मिश्रकनामकम् ॥२९९॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–खुरक नामका वंग चादी और चन्द्रमा के समान सफेद होता है। इससे भिन्न लक्षण मिश्रकवंग मे होते हैं॥२९९॥

अथ वंग के गुण

वंगं तिक्तोष्णकं रूक्षमीषद्वातप्रकोपनम् । मेहश्लेष्मामयघ्नं च मेदोघ्नं कृमिनाशनम् ॥३००॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–बंग कडुवा उष्ण रूखा और कुछ वात को कुपित करनेवाला है, प्रमेह कफ मेदोरोग और कृमिरोग को नाश करता है॥३००॥

तथा च

वङ्गं तिक्तोष्णरूक्षं कफकृमिवमिजिन्मेहमेदोऽनिलघ्नं कासश्वासक्षयारिप्रशमितहुतभुङ्मांद्यमाध्मानदारि ॥ बल्यंवृष्यं प्रभाकृन्मनसिजजनकं स्वप्नमेप्रणाशिश प्रजाकृद्व्रण्यमुच्चैरलघु रतिरसस्यास्पदं बृंहणं तत् ॥३०१॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–बंग कडुआ उष्ण रूखा कफ कृमिरोग और वमन को जीतनेवाला, प्रमेह मेदोवृद्धि (चर्बी का बढना) और वातरोग का नाशकर्ता है, कास श्वास क्षय मन्दाग्नि और अफरे को दूर करनेवाला है। बल और वीर्य का कर्ता कांति और कामदेव के उत्पन्न करनेवाला तथा स्वप्न प्रमेह को नष्ट करनेवाला है बुद्धि का बढानेवाला व्रण के लिये हित भारी रस का बढानेवाला और बृंहण है॥३०१॥

तथा च

बल्यं दीपनपाचनं रुचिकरं प्रज्ञाकरं शीतलं सौन्दर्यैकविवर्द्धनं हितकरं नीरोगताकारकम् ॥ धातुस्थौल्यकरं क्षयक्षयकरं सर्वप्रमेहापहं वंगं भक्षयतो नरस्य न भवेत्स्वप्नेपि वीर्यक्षयः ॥३०२॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–बलकारी दीपन और पाचन रुचिकर्ता बुद्धिवर्द्धक ठंढा शरीर की सुन्दरता का एक ही बढानेवाला हितकारी मनुष्य की तन्दुरुस्तीका करनेवाला वीर्य को पुष्ट करनेवाला क्षयनाशक समस्त प्रमेहों को उखाडनेवाला जो वंग है उसके खानेवाले मनुष्य का स्वप्न में भी वीर्यपात नहीं होता है अर्थात् इससे अधिक वीर्य को पुष्ट करनेवाली औषधि और दूसरी कोई नहीं है॥३०२॥

तथा च

सिंहो यथा हिस्तिगणं निहन्ति तथैव वङ्गोऽखिलमेहवर्गम् । देहस्य सौख्यं प्रबलेन्द्रियत्वं नरस्य पुष्टिं विदधाति नूनम् ॥३०३॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–जिस प्रकार सिंह हाथियों के झुंड को मारता है इसी प्रकार वंग भी समस्त प्रमेहों को नाश करता है और मनुष्य के शरीर को सुख इन्द्रियों की प्रबलता और शरीर की पुष्टता को करता है॥३०३॥

कलई के खवास (उर्दू)

कलई यह निहास में मिलने से मिल जाती है और इसको सफेद करती है मगर निहास शिकना हो जाता है बशर्ते कि ज्यादह मिला दी जावे क्योंकि कलई मिलाने से तांबे की यबूसत बढ जाती है तांबे और कलई मिली हुई को कांसा कहते हैं इसकी बूसे सीमाब बस्ता हो जाता है और चांदी को भी शिकनां और सोख्त कर देती है बजुज इसके कि थोडी ही यानी दस तोले चांदी हो तो एक तोला कलई हो लोहा इसके साथ जल्द पिघलता है और साफ हो जाता है और बाहम मिला हुआ तांबा व कलई सख्त आंच से अगर जुदा किया जावे तो जल जाते हैं। (सुफहा अकलीमियां ६०)

अशुद्धबंग के दोष

अशुद्धममृतं बङ्गं प्रमेहादिगदप्रदम् । गुल्महृद्रोगशूलार्शः कासश्वासवमिप्रदम् ॥३०४॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–अशुद्ध भस्म किया हुआ बंग प्रमेहादि रोगों को करता है वायगोला हृदयरोग, दर्द, बवासीर, कास श्वास और उलटी को करता है॥३०४॥

बंग की शुद्धि

द्रावयित्वा निशायुक्ते क्षिप्तं निर्गुडिण्डिकारसे । विशुध्यति त्रिवारेण खुरवंगं न संशयः ॥३०५॥ अम्लतक्रविनिक्षिप्तं वर्षाभूविषतिन्दुभिः । कटूलाम्बुगतं वंगं द्वितीयं परिशुध्यति ॥३०६॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–वंग को अग्नि में गलाकर हलदीयुक्त निरगुण्डी के रस में बुझावे इस प्रकार तीन बार करने से खरबंग शुद्ध होता है। खट्टे मठे में तथा सांठ के क्वाथ में अथवा विष तिंदु में अथवा कडवी तोंबी के रस में मिश्रक बंग शुद्ध होता है॥३०५॥३०६॥

तथा च

शुध्यति नागो वंगो घोषो रविरातपेऽपि मुनिसंख्यैः । निर्गुण्डीरससेकैस्तन्मूलरजः प्रवापैश्च ॥३०७॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–नाग (सीसे) और बंग को गलाकर तथा सीसा, कलई, कांसा तथा तांबा इनमें से जिसको शुद्ध करना हो उसके सूक्ष्मपत्र बनाकर तेज घाम में तपावे फिर उन पत्रों पर निर्गुण्डी की जड को उसीके रस से पीस तपे हुए पत्रों पर छिडके इस प्रकार सात बार करने से सीसा कलई कांसा और तांबा शुद्ध होता है॥३०७॥

नाग और बंग की शुद्धि

नागवङ्गौ प्रतप्तौ च गालितौ तौ निषेचयेत् । सच्छिद्रोपलपिहिते हिण्डिकास्थे द्रवे शनैः ॥३०८॥ सप्तधैवं विशुद्धिः स्याद्रविदुग्धे च सप्तधा ॥ अर्कपर्णादिपयसि स भवेत्तद्रसोत्तमः ॥३०९॥

(रससारपद्धति)

अर्थ–एक हांडी में आक का दूध अथवा आक के पत्तों का रस भर देवे ऊपर से छेदवाला पत्थर (घट्टी या चक्की के ऊपर का पाट) रख देवे फिर सीसे को तथा बंग को गलाकर धीरे धीरे उस पत्थर के छेद में से डाल देवे इस प्रकार सात बार करने से नाग और बंग शुद्ध हो जायेंगे॥३०८॥३०९॥

१–कट्फलाम्बित्यपि ।

अथ बंगभस्म की विधि

सतालेनार्कदुग्धेन लिप्त्वा बंगदलानि च । बोधिचिञ्चात्वचः क्षारैर्दद्याल्लघुपुटानि च ।। मर्दयित्वा चरेद्भस्म तद्रसादिषु कीर्तितम् ।।३१०।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–बंग के समान भाग हरताल को आक के दूध में पीसकर बंग के सूक्ष्म पत्रों पर लेप कर देवें फिर एक सकोरे में रख ऊपर नीचे पीपल और इमली का खार रख लघुपुट देनी चाहिये इस प्रकार सात बार करने से बंग की भस्म होगी और उस भस्म को पीस समस्त रसादिकों के काम में लावें।।३१०।।

तथा च

प्रद्राव्य खर्परे बङ्गं षोडशांशं रसं क्षिपेत् । स्वल्पस्वल्पालकं दत्त्वा भारद्वाजस्य काष्ठतः ।। मर्दयित्वा चरेद्भस्म तद्रसादिषु कीर्तितम् ।।३११।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–बंग को चूल्हे पर चढाये हुए खिपरे में गलाकर सोलह १६ तोले में १ एक तोला पारा डाल देवे फिर थोड़ी २ हरताल गेरकर वहेडे की लकडी से हिलाता रहै तदनन्तर सबको पीसकर भस्म बना लेवे और उसको समस्त रसादिकों के काम में लावें।।३११।।

तथा च

पलाशद्रवयुक्तेन बङ्गपत्राणि लेपयेत् । तालेन पुटितं पश्चान्म्रियते नात्र संशयः ।।३१२।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–ढाक के पत्तों के रस में घुटी हुई हरताल से बंग के पत्रों पर लेप कर देवे फिर गजपुट में रखकर फूंक देवे तो बंग की भस्म होगी इसमें संदेह नहीं है।।३१२।।

तथा च

भल्लाततैलसंलिप्तं बंगं वस्त्रेण वेष्टितम् । चिंचापिप्पलपालाशकाष्ठाग्नौ याति पञ्चताम् ।।३१३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–बंग के पत्रों को भिलावे के तैल से लेप कर ऊपर से कपड़ा लपेट देवे फिर इमली पीपल अथवा ढाक इनमें से किसी एक के कोयलों में भस्म करै तो बंगभस्म होगी।।३१३।।

तथा च

मृत्पात्रे द्राविते बङ्गे चिञ्चाश्वत्थत्वचो रजः क्षिप्त्वा वंगचतुर्थांशमयोदर्व्या प्रचालयेत् ।।३१४।। ततो द्वियाममात्रेण वंगभस्म प्रजायते । अथ भस्मसमं तालं क्षिप्त्वाम्लेन विमर्दयेत् ।।३१५।। ततो गजपुटे पक्त्वा पुनरम्लेन मर्दयेत् ।। तालेन दशमांशेन याममेकं ततः पुटेत् ।। एवं दशपुटैः पक्वं वंगभस्म प्रजायते ।।३१६।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–बीस तोले शुद्ध बंग को खिपरे में रखकर गलावे फिर बंग से चौथाई इमली और पीपल की छाल के चूरे को थोड़ा थोड़ा डालता जावे और लोहे की कडछी से घोटता जावे इस प्रकार करने से २ दो प्रहर में ही बंग की भस्म होगी अब भस्म के समान शुद्ध हरताल को खरल में घोट नीबू या अन्य किसी खट्टे पदार्थ के रस से घोट गजपुट देवे फिर दशमांश हरताल मिलाकर नीम्बू के रस से घोट गजपुट में फुंक देवे इस प्रकार १० दश बार करने से बंग की श्रेष्ठ भस्म होगी।।३१४–३१६।।

तथा च

मृत्पात्रे द्राविते वंगे यवानीरजनीरजः ।। अपामार्गरजो वापि चतुर्थांशं मुहुः क्षिपेत् ।।३१७।। पूर्ववद्भस्म संपाद्य सोरकं तत्र मेलयेत् । बंगतूर्याशमथ तच्छरावेण पिधापयेत् ।।३१८।। मन्दमाग्निं घटीमेकां दत्त्वाथ स्वांगशीतलम् । कुन्देन्दुधवलं बङ्गभस्मग्राह्यं स्वकार्यकृत् ।।३१९।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–खिपरे में बंग को गलावे फिर बंग से चौथाई अजवायन हलदी और ओंगा के चूरे को थोड़ा २ गेरता जावे और लोहे की कडछी से हलाता जावे भस्म होने पर खिपरे से निकाल लेवे और उसमें समान भाग सोरा मिलाय सकोरे में रख एक घडी तक मन्दाग्नि देवे और स्वांगशीतल होने पर निकाले तो कुंद के फूल के समान अथवा चन्द्रमा के समान श्वेत बंग की भस्म होगी।।३१७।।३१९।।

तथा च

यद्वा बङ्गदलानि विंशतिगुणे पिण्याकचूर्णेऽतसीसम्भूते शणपट्टवर्तिनि पुनस्तद्वद्यवानीमपि ।। कीर्णानि क्रमशो निबद्धसुदृढं रज्ज्वा गजाह्वे पुटे स्युर्भस्म त्रपुणि स्थिते तु पुटतोऽपक्वेऽयमेव क्रमः ।।३२०।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–बंग से बीस गुनी अलसी की खलका चूरा तथा अजवायन लेवे प्रथम सनके टाट पर अलसी की खल का चूरा बिछावे फिर अजवायन का चूरा और उस पर बंग के सूक्ष्म पत्र उन पत्रों पर फिर अजवायन का चूरा और उस पर अलसी का चूरा इस प्रकार जितना बंग हो उसकी तरह लगाकर और बिछाने के समान लंबा लपेटकर सूतली से बांध लेवे और मिट्टी से लपेट गजपुट में फूंक देवे स्वांगशीतल होने पर निकाल लेवे उसमें जो बंग कच्चा रह जावे उसको इसी क्रिया से भस्म कर लेवे तो यह बंगभस्म प्रस्तुत हो जायगा।।३२०।।

तथा च

वन्योपलोपरिस्थे तु गोणीखंडे क्षिपेद्रजः । तिन्तिडीबल्कलस्याथ तिलास्तत्र विनिक्षिपेत् ।।३२१।। अंगुल्यार्धप्रमाणेन तत्र वंगदलं न्यसेत् । खण्डीकृतं पुनस्तेन क्रमेणैवात्र विन्यसेत् ।।३२२। वायुना रहिते स्थाने सर्वास्तानग्निना दहेत् । स्वांगशीतं ततो ग्राह्यं युक्तं वंगस्य भस्म तत् । श्वेतं लाजकणाभासं सुसूक्ष्मं सर्वकार्यकृत् ।।३२३।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–निर्वात स्थान में एक हाथ लम्बे चौड़े जंगली कंडों को बिछा कर ऊपर से मिट्टी से लिपटे हुए गोन (बोरी) के टुकड़ो को बिछा देवे उस पर तिल और इमली की छाल के चूर्ण को आध अंगुल बिछा देवे फिर बंग के सूक्ष्म पत्रों को बिछा देवें और ऊपर आध अंगुल तिल और इमली के छाल का चूर्ण बिछा देवे इस प्रकार ५ तथा ४ परत लगाकर ऊपर से जंगली कंडों को लगाकर अग्नि लगा देवे स्वांग शीतल होने पर उस बंग भस्म को निकाल लेवे यह भस्म चावलों की खीलों के टुकडों के समान श्वेत हो जावेगी उसकी पीसकर कर रख लेवे तो वह भस्म समस्त कार्योपयोगी हो जायगी।।३२१–३२३।।

विशेष द्रष्टव्य

ऊपर लिखी हुई तीनों क्रियाओं से सिद्ध की गई बंग भस्म को मित्रपंचक के साथ घोटकर अग्नि में गलावे यदि इसमें से बंग फिर पूर्वावस्था को प्राप्त हो जावे तो उसको सजीव समझनी चाहिये इसलिये उसको निर्जीव अर्थात् निरुत्थ करने के लिये बंग के समान हरताल को मिलाकर आक के दूध से घोट और सुखाकर टिकिया बनावे फिर सकोरे में ऊपर नीचे सूखी हुई पीपली की छाल के चूर्ण को रखकर लघुपुट देवे फिर दूसरी बार बंग से दशमांश हरताल मिलाकर और आक के दूध से घोट पूर्वोक्त रीति से भस्म करे इस प्रकार सात बार करने से निरुत्थ वंग भस्म होगी इसमें सन्देह नहीं यह वृद्ध वैद्यों का सिद्धान्त है।।

जश्ता को बंग के समान समझना

यशदं बंगसदृशं तस्य हेतुरयं स्मृतः । गिरिजं तद्भवेतत्तस्य दोषाः शोधनमारणे । बंगस्येव हि बोद्धव्या गुणांस्तु प्रवदाम्यहम् ।।३२४।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–जश्ता बंग के समान होता है उसका यह कारण है कि जश्ता पर्वतो से उत्पन्न होता है इसलिये दोष तथा शोधन मारण बंग के समान ही होने चाहिये क्योंकि बंग भी पर्वतों से उत्पन्न हुआ है अब उसके गुणों को लिखते हैं।।३२४।।

जस्त की किस्में (उर्दू)

जस्त दो तरह से हासिल होता है अव्वल रसभी कानी, दोयम संगवसरी से निकलता है। (सुफ़हा अकलीमियां १७१)

अथ जस्त के गुण

यशदं तु वरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहृत् । चक्षुष्यं परमं मेहान् पांडुश्वासं च नाशयेत् ।।३२५।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–जश्ता कड़ुआ ठंढा और कफ पित्त का नाशक है नेत्रों के लिये परम हितकारी तथा प्रमेह पांडु और श्वास को नाश करता है।।३२५।।

जस्त के खवास (उर्दू)

(इसको रुएतूतिया और शह भी कहते हैं) तांबा इस्के हमराह जल्द पिघलता है और जर्द हो जाता है अगर निस्फा निस्फ दोनों मिलाए जावें तो पीतल बन जाता है (सुफ़हा अकलीमियां ५६)

सफाई जस्त बुझाव से (उर्दू)

जस्त को पहले आब इतरीफल में सात दफै फिर आब भुंगरा में साठ दफे फिर आबमिर्च स्याह, आबसोंठ, पीपल, दराज, आबसकोड, आब वर्ग बकायन, रोगन कुंजद, वगैरः पिघलाकर बुझाते जावे साफ हो जावेगा।। (सुफहा ९६ किताब नुसखेजातहजारी)

जस्त के कायम करनी की रीति

१ एक तोला जश्त १।। डेढ पाव हरमलदा पानी वा इन्द्राणीदा पाणी अथवा दोनों चोआ देणा चोआ देकर कुठाली (घरिया) में गालकर एक माशा पाणी मरुवेदा पा देणा तो जश्ता कायम होगा। (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

दूसरी रीति

हरताल बारीक पीसकर सीपी के अनबुझे चूने की तरह तह बतह जश्त को देकर उस पर भी जश्ते के तहबतह देकर अंधमूषा में ४० सेर अर्थात् १ मन गोहे (कंडे) की आग देणी जस्त कायम हो जायगा। फिर चांदी में गालने से शुद्ध रंजित होवेगा । (जम्बू से प्राप्त पुस्तक)

ब्रह्मखपरेश्वर रसविधि

अव्वो भैंसको गोबर आदि । ताको रस ले बस्तर छानि ।।
खपरा औटि औटिके ढारि । गोबरकेरस इकइस बारि ।।
बेली तीस टंकको करै । तामें इम पारो ले धरै ।।
इकइस टंक जोख भर दिये । निबुवा रससों बेली लेपिये ।।
हरद टंक नौ निंबुवा सानि । मांझ लेप करि ताहि सुजान ।।
खपरा में लै ओंधी धरै । गेरू पाखरि मुद्रा करै ।।
लै सौ टंक आमला सार । अरु कसीस लै तासम भार ।।
ढोकी यन्त्र चुवावै गुनी । शंखद्राव जो काढै दुनी ।।
पंच टंक लै न्यारो धरै । और द्राव बासों पोतन करै ।।
जब सुपोत रस सारो लेय । तो बैली के बैठन दोय ।।
बैठिगये रस राखै मेलि । बहुरि मेलिके छार सकेलि ।।
तासु उतारि खरर में धरै । सहदेवीं जु तीन पुट करै ।।
संखाहूली और बादरी । तीन तीन पुट येऊ करी ।।
बहुरि किलस ताकी समलेय । देऊ बांटि जु एक करेय ।।
पुनि माटी के सरवा भरै । पुनि मुद्रा कै खारिक करै ।।
हांडी लोन बांटिके भरै । उलटोके हांडी में धरै ।।
अगिन पहर दस दीपक देय । बहुरि दशो भांति अगिनि करेय ।।
पुनि बारह हठाग्नि करै । ऐसे पहर बत्तीसक करै ।।
बहुरि द्वौ सधौं सीतल होय । तबै उतारि लीजिये सोय ।।
ब्रह्मखपरेसुर याको नाम । या खाय बाढै अति काम ।।
जेते कुष्ठ जिते सनिपात । अनिकल जाय चौरासी बात ।।
कास श्वास परमेह नसाय । अपस्मार छिनमें सब जाय ।।
उदर राग संग्रहणी आदि । गुल्म शूल सो जैहै बादि ।।
मण्डल व्यौंची अरु गलगंड । जाय भगन्दर अति बलबण्ड ।।
पक्षाघात जाय कवि कहै । जो प्राणी संयमपथ रहै ।।
शुल्बवेधिके कुंदन करै । सब आपदा गुनीकी हरै ।।
जो विधि बंगसेन में आई । गुरु प्रसादते कवि जन गाई ।।
यह निहचैके जानो सही । आगे कृपा धनीकी रही ।।

(रससागर)

(बड़ा रससागर)

कुश्ता जस्त अर्क लैमू में बिला आंच (उर्दू)

दो तोले बुरादा बारीक प्याले में चीनी में रखकर एक लैमू सुबह और एक तीसरे पहर निचौडे और कांच की सींक से हिलाते रहै इस तौर सात यौम करे फूल फूल कर सफेद बुर्राक हो जावेगा। इससे उमदा कुश्ता बाजून मयकुव्वत जौहरियः शायद ही होगा। मुजर्रिब है। (सुफहा ९५ किताब कुश्तैजातहजारी)

कुश्ता जस्त बजरियः सीमाब और गोभी (उर्दू)

एक तोला सीमाब और एक तोला जस्त को बाहम बूटी भजकल यानी गोभी के पानी में आठ पहर खरल करने से गिलोला बनाकर उस पर सात तोला सूत खिदर लपेटकर हवा से बचाकर आग देने से उमदा कुश्ता हो जाता है। (सुपहा ९५ किताब कुश्तैजातहजारी)

नाग (सीसे) की उत्पत्ति

दृष्ट्वा भोगिसुतां रम्यां बासुकिर्यन्मुमोच वै । वीर्यं जातस्ततो नागः सर्वरोगापहो नृणाम् ।।३२६।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–वासुकि नाम के सर्प ने सुन्दर किसी नाग कन्या को देखकर अपने वीर्य को छोडा उस वीर्य से मनुष्यों के समस्त रोगों के नाशक नाग (सीसा) उत्पन्न हुआ।।३२६।।

सीसे की परीक्षा

द्रुतदावं महाभारं छेदे कृष्णं समुज्ज्वलम् । पूतिगन्धं बहिःकृष्णं शुद्धं सीसमतोन्यथा ।।३२७।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–अग्नि में शीघ्र पिघलनेवाला, अत्यंत भारी काटने पर काला चमकीला और बाहर से काले वर्ण का जो हो उसको शुद्ध सीसा कहते हैं।।३२७।।

सीसे के गुण

नागः समीरकफपित्तविकारहन्ता सर्वप्रमेहवनराजिकृपीटयोनिः । उष्णः सरो रजतरंजनकृद्दशार्णो गुल्मग्रहण्यतिसृतिक्षणदांशुमाली ।।३२८।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–सीसा, वात, पित्त और कफ के विकार, समस्त प्रकार के प्रमेह वायगोला, संग्रहणी, और अतिसार को नाशकर्ता है तथा सीसा उष्णा दस्तावर और चांदी को रंगनेवाला है।।३२८।।

तथा

नागस्तु नागशततुल्यबलं ददाति व्याधिं विनाशयति जीवनमातनोति । वह्निं प्रदीपयति कामबलं करोति मृत्युं च नाशयति संततसेवितः सः ।।३२९।। (रससारपद्धति)

अर्थ–सीसा सौ हाथी के समान बल को देता है, रोग को नाश करता है, जीवन को देता है, अग्नि तथा काम को बढ़ाता है, और निरंतर सेवन किया हुआ नाग (सीसा) मृत्यु को भी नाश करता है।।३२९।।

तथा च

अत्युष्णं सीसकं स्निग्धं तिक्तं वातकफापहम् । प्रमेहतोयदोषघ्नं दीपनं चामवातनुत् ।।३३०।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सीसा गरम, कडुआ, चिकना, वात और कफ का नाशक है, प्रमेह और आमवात को नाश करनेवाला है और दीपन है।।३३०।।

अशुद्ध नाग के दोष

अशुद्धः कुरुते नागः प्रमेहक्षयकामलान् । तस्मात्संशुद्ध एवासौ मारणीयो भिषग्वरैः ।।३३१।। पाकेन हीनौ किल नागवंगौ कुष्ठानि गुल्मांश्च तथातिकष्टान् । पाण्डुप्रमेहानलसादयोऽपि भगन्दरादीन्कुरुतः प्रभुक्तौ ।।३३२।। (रससारपद्धति)

अर्थ–अशुद्ध सीसा प्रमेह, क्षय, तथा कामला रोग को उत्पन्न करता है इसलिये वैद्यराज सीसे को शुद्ध करके मारै। अपक्व सीसा और वंग कोढ, वायगोला, तथा अन्य भी कष्टकरी पांडु प्रमेह मन्दाग्नि और भंगदर रूप रोगों को नष्ट करता है।।३३१।।३३२।।

सीसे का शोधन

सिन्धुवारजटाकौन्तीहरिद्राचूर्णकं क्षिपेत् । द्रुते नागेऽथ निर्गुण्डयास्त्रिवारं निक्षिपेद्रसे । नागः शुद्धो भवेदेवं मूर्च्छास्फोटादि नाचरेत् ।।३३३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–प्रथम निर्गुण्डी के रस में निर्गुडी की जड, रेणुका और पिसी हुई हलदी मिलाकर एक घड़े में भर देवे फिर सीसे को गलाकर तीन बार बुझावे, तो सीसा शुद्ध हो जायगा और फोड़ा वगैरह नहीं करेगा।।३३३।।

नागभस्मविधि

त्रिभिः कुंभीपुटैर्नागो वासारसविमार्दितः । सशिलो भस्मतामेति तद्रजः सर्वमेहनुत् ।।३३४।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–सीसा और मैनसिल को अडूसे के पत्तों के रस में घोट गजपुट में फूंक देवे इस प्रकार तीन पुट देने से सीसे की भस्म हो जायगी और वह भस्म समस्त प्रमेहों को नाश करती है।।३३४।।

सम्मति–प्रथम सीसे को इमलीकी छालके चूर्ण के साथ खिपरे में भस्म कर फिर नाग के तुल्य मैनसिल मिलाय अडूसे के रस में घोटना चाहिये, नहीं तो क्रिया सफल न होगी।।

तथा च

ताम्बूलरससंपिष्टशिलालेपात्पुनः पुनः । द्वात्रिंशद्भिः पुटैर्नागो निरुत्थं भस्म जायते ।।३३५।।

(रससारपद्धति)

अर्थ– मैनसिल को पान के रस में पीसकर सीसे के पत्रों पर लेप कर देवें फिर शराव संपुट में रख गजपुट में रोक देवे, इस प्रकार ३२ बत्तीस पुट देने से नाग (सीसे) की निरुत्थ भस्म होगी।।३३५।।

तथा च

अश्वत्थचिंचात्वक्चूर्णं चतुर्थांशेन निक्षिपेत् । मृत्पात्रे विद्रुते वंगे लोहदर्व्या प्रचालयेत् ।।३३६।। यामैकेन भवेद्भस्म तत्तुल्या स्यान्मनः शिला । कांजिकेन द्वयं पिष्ट्वा पुटेद्गजपुटेन च ।।३३७।। स्वांगशीतं पुनः पिष्ट्वा शिलया कांजिकेन च । पुनः पचेच्छरावाभ्यामेवं षष्टिपुटैर्मृतिः ।।३३८।।

(रससारपद्धति)

अर्थ–मिट्टी के पात्र में सीसे को गलावे, फिर सीसे से चौथाभाग इमली और पीपल की छाल के चूर्ण को थोड़ा थोड़ा डालता जावे और हलाता रहै, इस प्रकार करने से एक प्रहर में भस्म सिद्ध होगी, तदनन्तर उस भस्म मे समान मैनसिल को लेकर कांजी से घोट टिकिया बना लेवे फिर शराब संपुट में रख गजपुट में फूंक देवै इस प्रकार ६० साठ बार करने से सीसे की भस्म होगी।।३३६–३३८।।

तथा च

भूभुजंगागस्तिभ्यां वै लोहपात्रं विलेपयेत् । तच्च संविद्रुते नागे वासापामार्गसम्भवम् ।।३३९।। क्षारं विमिश्रयेन्नागाच्चातुर्थांशं शनैः शनैः । प्रहरं पाचयेच्चुल्ल्यां वासादर्व्या विघट्टयन् ।।३४०।। तत उद्धृत्य तच्चूर्णं वासानीरैर्विमर्दयेत् । एवं सप्तपुटैर्नागः सिंदूराभो भवेद्ध्रुवम् ।।३४१।। तारस्य रंजनः सोऽसौ वातपित्तकफापहः । ग्रहणीकुष्ठगुल्मार्शोव्रणशोथविषापहः ।।३४२।।

(रसमानस)

अर्थ–लोहे की कढाई में कैंचुओं के रस से अथवा अगस्ति के पत्रों के रस से लेप देवै उसमें सीसे को गलाकर अडूसे अथवा अपामार्ग (ओंगा) के खार को चौथाई भाग लेकर धीरे धीरे मिलाता जावै और अडूसे लकडी से घोटता जावे, इस प्रकार एक प्रहर भर करने से भस्म होगी उस भस्म को अडूसे के रस से घोट गजपुट में फूंक देवे इस प्रकार ७ सात बार करने से सीसे की सिन्दूर के समान लाल भस्म होगी यह भस्म चांदी को रंगने वाली वात, पित्त, और कफ के रोग, संग्रहणी, कोढ, वायगोला, बवासीर, व्रण, सूजन और विपरोग को नाश करती है।।३३९–३४२।।

नागअखै की विधि

मल भूनागतणौ ले आय । उहि घरिया ताको औटाय ।।
जब सुनाग नीको होय फिरै । तब घरिया सीरी के धरै ।।
घरिया में ही नाग सिराय । पुनि दूजी घरिया औटाय ।।
इह विधि शत घरिया में करै । ऐसे नाग अखै को धरै ।।
बहुरि ताहि देखिये राय । अखै होय सेर के तीन पाय ।।

(रससागर)

सम्मति–मेरी समझ में यह एक प्रकार नाग चपल सिद्ध हो जायगा देखो उपरसाध्याय पृष्ठ० श्लोक।

तथा च

तिर्यगाकारचुल्लयां तु तिर्यग्वक्रं घटं न्यसेत् । तं च वक्रं विना सर्वं गोपयेद्यत्नतो मृदा ।।३४३।। भ्राष्ट्रयन्त्राभिधे तस्मिन्यन्त्रे सीसं विनिक्षिपेत् । पलविंशतिकं नागमधस्तीव्रानलं क्षिपेत् ।।३४४।। द्रुते नागे क्षिपेत्सूतं शुद्धं

कर्षमितं शुभम् । धर्षयित्वा क्षिपेत्क्षारमेकैकं हि पलंपलम् ।।३४५।। अर्जुनस्याक्षवृक्षस्य महाराजगिरेरपि । दाडिमस्य समरस्य क्षिप्त्वा क्षारं पृथक् पृथक् ।।३४६।। एवं विंशतिरात्राणि पचेत्तीव्रेण बह्निना। विघट्टयन्दृढं दोर्भ्यां लोहदर्व्या प्रयत्नः ।।३४७।। रक्तं तज्जायते भस्म कपोतच्छायमेव वा । नागो दोषविनिर्मुक्तो जायतेऽतिरसायनः ।।३४८।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–तिरछे आकारवाले चूल्हे पर एक घड़े को तिरछा धरै उस घड़े के मुख को छोड़ कर चारों तरफ मिट्टी लगा देवे तो यह भ्राष्ट्र (भाड) नामका यंत्र बन जायगा। उस यन्त्र में २० बीस पल शुद्ध सीसा डाल कर नीचे से अग्नि लगावे सीसे के गलने पर एक तोला शुद्ध पारा मिला देवे फिर लोहे की कडछी से हिलाता जावे और नीचे लिखे हुए क्षारों में से थोड़ा थोड़ा डालता जावे, अर्जुन वृक्ष (कोह) का खार, बहेड़े का क्षार, हर्र का खार, अनार का खार और अपामार्ग (ओंगा आधाझाडा) का खार इन क्षारों को पृथक् २ एक २ पल लेवे इस प्रकार २० बीस दिन रात तीव्राग्नि से पकावै और लोहे की कडछी को दोनों हाथों से पकड़ कर खूब हिलावे तो सीसे की लाल तथा कबूतर के समान रंगवाली भस्म होगी इस प्रकार भस्म करने से नाग समस्त दोषों से मुक्त होकर अर्थात् निर्दोष होकर अत्यन्त रसायन होता है।।३४३–३४८।।

तथा च

हतमुत्थापितं सीसं दशवारेण सिध्यति । तन्मृतं सीसकं सर्वदोषमुक्तं रसायनम् ।।३४९।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सीसे को कडाई में डाल नीचे से तीव्राग्नि को देवे फिर पीपल और इमली की छाल का चूरा सीसे से चौथाई लेकर थोड़ा थोड़ा डालता जावे और हिलाता जावे इस प्रकार एक प्रहर में सीसे की भस्म हो जायगी उस भस्म को मित्रपंचक (गुड, गूगल, घी, शहद, सुहागा) के साथ मर्दन कर अग्नि में चरख देवे तो सीसा फिर अपने रूप को प्राप्त होता है, उस सीसे की पूर्वोक्त रीति से भस्मकर फिर जीवित करे अर्थात् मित्रपंचक से जिवावे, इस प्रकार दस बार करने से सीसा शुद्ध हो जायगा, उस सीसे का हुई भस्म समस्त दोषों से रहित और रसायन होती है।।३४९।।

तथा च

अश्वत्थचिंचात्वग्भस्म नागस्य चतुरंशतः । क्षिपेन्नागं पचेत्पात्रे लोहदर्व्या च चालयेत् ।।३५०।। यामाद्भस्म तदुद्धृत्य भस्मतुल्या मनः शिला । जम्बीरैरारनालैर्वा पिष्ट्वा रुद्ध्वा पुटे पचेत् ।।३५१।। स्वाङ्गशीतं पुनः पिष्ट्वा विंशत्यंशशिलायुतम् । अम्लेनैव तु यामैकं पूर्ववत्पाचयेत्पुटे ।। एवं षष्टिपुटैः पक्वो नागः स्यात्सुनिरुत्थितः ।।३५२।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सीसे से चौथाई पीपल और इमली की छाल की राख लेनी चाहिये, फिर सीसे को खिपरे में गलाकर लोहे की कलछी से चलाता जावे और थोड़ी २ पीपल तथा इमली की राख को डालता जावे, इस प्रकार एक प्रहर में भस्म हो जायगी। इस भस्म के समान शुद्ध मैनशिल को मिलाकर जंभीरी के रस से अथवा कांजी से घोट टिकिया बनाय और शरावसंपुट में रखकर गजपुट में फूंक देवे स्वांगशीतल होने पर निकाल उसमें २० बीसवाँ भाग मैनशिल मिलाकर १ एक प्रहर तक जँभीरी के रस से अथवा कांजी से घोटे फिर गजपुट में फूंक देवे, इस प्रकार ६० साठ बार करने से सीसे की निरुत्थ भस्म होगी इसमें सन्देह नहीं है।।३५०–३५२।।

तथा च

शिलया रविदुग्धेन नागपत्राणि लेपयेत् । मारयेत्पुटयोगेन निरुत्थं भस्म जायते ।।३५३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–सीसे के समान मैनशिल को आक के दूध से पीस सीसे के पत्रों पर लेप कर देवे, फिर शरावसंपुट में गजपुट में फूंक देवे, इस प्रकार सात बार करने से सीसे की निरुत्थ भस्म होगी।।३५३।।

सुर्ब का कुश्ता अकसीरी बजरियः मन्सिल (उर्दू)

एक शाहसाहब का नुसखा हमजामें जिसका एक नुसखा खालिस का मकबूल बाजार है, मगर इसका इम्तहान नहीं हुआ जब वह सही है तो जरूर यह भी सही होगा। सिफत सुर्बमुसफ्फा कि अस्सी मर्तबः गलाकर रोगन कुंजन में डाला जावे। पावआस्तर मन्सिल कनेरी अव्वल मन्सिल को नारंगी तुर्ण के अर्क में खूब सहक किया जावे और दुचन्द सह चन्दमें तस्किया कर दिया जावे और सहकही में तस्किया हो उसको हम वजन राख पीपल में आमजे करके सुर्ब के पत्तर बारीक करके उस पर इसी अर्क के जरियः तिला करे और खुश्क करके किसी जर्फ गिली में रखकर गजपुट की आंच दे कुश्ता हो जावेगा। शायद रंग गुलाबी रहेगा एक सुर्ब एक तोला कमर को बरंग जौहर करेगा।

(मुफहा १६ व १७ अखबार अलकीमियां १६/८/१९०७)

पीतल की उत्पत्ति

रीतिर्हि चोपधातुः स्यात्ताम्रस्य यशदस्य च । पित्तलस्य गुणाः प्रोक्ताः स्वयोनिसदृशा बुधैः ।।३५४।।

(रसराजसुन्दर)

अर्थ–पीतल को ताम्र तथा जश्त की उपधातु जाननी क्योंकि पीतल तांबा और जश्त से बना हुआ है इसलिये विद्वानों को पीतल में ताम्र और जश्त के समान गुण समझने चाहिये।।३५४।।

पीतल के भेद

रीति का द्विविधा प्रोक्ता तत्राद्या राजरीतिका । काकमुण्डी द्वितीया स्यात्तयोराद्या गुणाधिका ।।३५५।।

(रसराजसुन्दर)

अर्थ–राजरीति और काकमुण्डी के भेद से पीतल दो प्रकार की होती है, इन दोनों में राजनीति नाम की पीतल अधिक गुणवान होती है।।३५५।।

पीतल की परीक्षा

संतप्ता काञ्जिके क्षिप्त्वा ताम्रा स्याद्राजरीतिका । काकमुण्डी तु कृष्णा स्यान्नासौ सेव्यास्ति रीतिका ।।३५६।।

(रसराजसुन्दर)

अर्थ–पीतल को तपाकर कांजी में बुझाने से तांबे का जिसका रंग निकले उसको राजरीति कहते हैं और जिसका रंग काला निकले उसको काकमुण्डी कहते हैं, काकमुण्डी का सेवन वर्जित है।।३५६।।

पीतल के गुण

रीतिस्तिक्तरसा रूक्षा जन्तुघ्नी सास्रपित्तनुत् । कृमिकुष्ठहरा योगात्सोष्णवीर्या च शीतला ।।३५७।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पीतल (जिसको राजरीति कहते हैं) स्वाभाविक कड़वा, रूखा, कृमिनाशक, और रक्तपित्त को दूर करती है, कोढ को नष्ट करती है यह पीतल परिपाक में उष्ण अर्थात् खाने में गरम है और बाह्यप्रयोग करने में शीतल है।।३५७।।

काकतुण्डी के गुण

कांकतुण्डी गतस्नेहा तिक्तोष्णा कफपित्तनुत् । यकृत्प्लीहहरा शीतवीर्या च

परिकीर्तिता ।।३५८।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–काकतुण्डी नाम की पीतल विशेष रूखी है, गरम, कडुवी, कफ पित्त को दूर करती है, जिगर और तिल्ली को नष्ट करती है और दाह्य प्रयोग में शीतल है।।३५८।।

भस्मोपयोगी पीतल

गुर्वी मृद्वी च पीताभा साराङ्गी ताडनक्षमा । सुस्निग्धा मसृणाङ्गी च रीतिरीदृशी शुभा ।।३५९।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–वजन में भारी चिकीन तथा पीली हथोडे की चोट से जो फटे नहीं और जो खरखरी न हो वह पीतल उत्तम होती है इसको राजरीति कहते हैं।।३५९।।

भस्म के अयोग्य पीतल

पाण्डुपीता खरा रूक्षा वर्बुरा ताडनाक्षमा । पूतिगंधा तथा लघ्वी रीतिर्नेष्टा रसादिषु ।।३६०।।

(रससरत्नसमुच्चय)

जो पीतल हरयाई (सब्जी) लिये हुए पीले रंग की हो खरखरी हो, रूखी हो, शब्द मंदवाली हो, और चोट से फटनेवाली हो, तथा हलकी हो वह रसादिकों में लेने योग्य नहीं है।।३६०।।

पीतल की शुद्धि

तप्ता क्षिप्ता च निर्गुण्डीरसे श्यामारजोन्विते । पंचवारेण संशुद्धिं रीतिरायाति निश्चितम् ।।३६१।।

(रससरत्नसमुच्चय)

अर्थ–निर्गुडी के रस में हलदी को मिलाकर एक मिट्टी के पात्र में भर देवे फिर पीतल के पत्तों को तपाकर उस रस में बुझा देवें इस प्रकार पांच बार बुझाने से पीतल शुद्ध हो जायगी।।३६१।।

पीतल के भस्म की विधि

निम्बूरसशिलागन्धवेष्टिता पुटिताऽष्टधा । रीतिरायाति भस्मत्वं ततो योज्या यथाययम् ।।३६२।।

(रससरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पीतल के समान मैनसिल और शुद्ध गंधक को मिलाकर नींबू के रस से घोटे फिर पीतल के पत्रों पर लेप कर शराब संपुट में रख गजपुट देवे इस प्रकार ८ आठ बार पुट देने से पीतल की भस्म होगी उस भस्म को यथायोग्य देनी चाहिये।।३६२।।

पीतल की भस्म ताम्रभस्म के समान करने का उपदेश

ताम्रवन्मारणं तस्याः कृत्वा सर्वत्र योजयेत् ।।३६३।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–जिस प्रकार तांबे की भस्म की जाती है उसी प्रकार पीतल की भी भस्म करनी चाहिये, और उसको सर्वत्र काम में लावे।।३६३।।

पीतल भस्म का प्रयोग

मृतारकूटकं कान्तं व्योमसत्त्वं च मारितम् । त्रयं समांशकं तुल्यं व्योषजन्तुघ्नसंयुतम् ।।३६४।। ब्रह्मबीजाजमोदाग्निभल्लाततिलंयुतम् । सेवितं निष्कमात्रं हि जन्तुघ्नं कुष्ठनाशनम् । विशेषाच्छ्वेतकुष्ठघ्नं दीपनं पाचनं हितम् ।।३६५।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–पीतलभस्म, कांतिसार, अभ्रसत्त्व की भस्म इन तीनों को समान भाग लेकर पीसे फिर इनके समान भाग अर्थात् ये तीनों धातु एक एक तोला हो तो सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, ढाक के बीज, अजमोद, चित्रक, भिलावा और तिल इन सबको मिलाकर ३ तीन ही तोला चूर्ण किया हुआ लेना चाहिये इन सबको मिलाकर कांच के पात्र में रख देवे फिर इसमें से ३ तीन माशे नित्यप्रति प्रातःकाल सेवन करे तो उदर में जितने प्रकार के क्रमि हैं, वे सब नाश को प्राप्त होते हैं, तथा कुछ भी दूर होता है और विशेष कर यह श्वेत कुष्ठ को नाश करता है, यह प्रयोग दीपन अर्थात् भूख लगानेवाला तथा खाये हुए पदार्थ को पचानेवाला है और हित है।।३६४।।३६५।।

पीतल की द्रुति करने की विधि

सुवर्णरीतिकाचूर्णं भक्षितं विष्ठितं पुनः । छागेन कृष्णवर्णेन मत्तेन तरुणे च ।।३६६।। तल्लिप्तं खर्प्परे दग्धं द्रुतिं मुंचति शोभनाम् । चतुर्दशलसद्वर्णसुवर्ण सदृशच्छविः । देहलोहकारी प्रोक्त युक्ता रसरसायने ।।३६७।।

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–उत्तम पीतल के चूर्ण को कृष्णवर्ण, उन्मत्त, जवान बकरे को खिलावे, फिर उसकी मेंगनी को पानी में मैदे के समान सूक्ष्म पीसकर एक कूंडे में लेपकर सुखा देवे फिर उस कूंडे पर दूसरा कूंडा रख कपरौटी कर देवे जिसमें दवाई लगाई हो उसको ऊपर रख देवे और दूसरे को नीचे रखे तदनन्तर कंडों की आंच देवे तो नीचे के कूंडे में पीतल की द्रुति हो जायगी और उसका रंग सुवर्ण के समान होगा, इसको रस तथा रसायन में मिलाकर सेवन करना चाहिये।।३६६।।३६७।।

कांसे की उत्पत्ति का वर्णन

अष्टभागेन ताम्रेण द्विभागकुटिलेन च । विद्रु तेन भवेत्कांस्यं तत्सौराष्ट्रभव शुभम् ।।३६८।। (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–आठ भाग तांबा और दो भाग सीसा इन दोनों को मिलाकर गलावे तो कांसा बन जायगा सौराष्ट्र (सूरत) देश का बना हुआ कांसा उत्तम गिना जाता है।।३६८।।

सम्मति–इस श्लोक में कुहिलेन इस पद के स्थान में खुरकेण ऐसा भी किसी पुस्तक में पाठ है इसलिये यह सन्देह होता है कि कांसा, ताम्र, और सीसे को गलाने से होता है। अथवा तांबा और रागं को साथ मिलाने से होता है परन्तु शास्त्रकारों के प्रमाण से यह सिद्ध हो चुका है कि कांसा दोनों प्रकार से बन सकता है इसलिये दोनों पाठ संगत (ठीक) है यथा रसराजसुन्दरे– "अष्टभागेन ताम्रेण द्विभागकुटिलेन च । एकत्र द्रावितं तस्मात्कांस्यं स्याद्भोजने शुभम् ।।" इस श्लोक से ताम्र और सीसे को साथ गलाने से कांसे का बनना बताया है और " ताम्रत्रपुजमाख्यातं कांस्यं घोषं च कंसकम् । उपधातुर्भवेत्कांस्यं द्वयोस्तरणिरंगयोः ।।" ताम्र तथा रांग से कांसा बनता है इसको घोष और कंसक भी कहते हैं यह ताम्र और रांगका उपधातु है। इसी कारण कांसे के दो भेद शास्त्रकारों ने कहे हैं जो आगे वर्णन करते हैं।।

कांसे के भेद

कांस्यं च द्विविधं प्राक्तं पुष्पतैलकभेदतः । पुष्पं श्वेततमं तत्र तैलकं तु कफप्रदम् ।।३६९।।

(रसराजसुन्दर)

अर्थ–पुष्प (फूल) और तैलक (तैलिया) भेद से कांसा दो प्रकार का होता है, उनमें पुष्पनाम का कांसा अत्यन्त श्वेत होता है और तैलक कफ को उत्पन्न करता है।।३६९।।

सम्मति–इससे स्पष्ट विदित होता है कि, पुष्पनाम का कांसा, ताम्र और रांग का उपधातु है, तैलक नामका कांसा ताम्र और सीसे का उपधातु है।।

कांसे की परीक्षा

तीक्ष्णशब्दं मृदुस्निग्धमीषच्छ्यामलशुभ्रकम्। निर्मलं दाहरक्तं च षोढा कांस्यं प्रशस्यते ॥३७०॥ तत्पीतं दहने ताम्रं खरं रूक्षं घनासहम् ॥ मर्दनादातज्योतिः सप्तधा कांस्यमुत्सृजेत् ॥३७१॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–तेजशब्दवाला, कोमल, चिकना और कुछ स्याही लिये हुए सफेद हो, साफ हो, और तपाने पर लाल वर्ण का हो इस प्रकार छः ६ गुणवाला कांसा उत्तम कहाता है। अथवा जो कांसा पीत वर्ण का हो तपाने पर ताम्र वर्ण का हो खरखरा हो रूखा हो चोट को न सहता हो मर्दन करने से चमकने लगे इन सात गुणों से युक्त कांसा छोड़ने योग्य है॥३७०॥३७१॥

कांसे के गुण

कांस्यं लघु च तिक्तोष्णं लेखनं दृक्प्रसादनम्। कृमिकुष्ठहरं वातपित्तघ्नं दीपनं हितम् ॥३७२॥ (रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कांसा हलका, कडुआ, गरम, लेखन, नेत्रों को हितकारी, कृमि, कोढ, वात तथा पित्त के रोगों को नाश करता है और दीपन है॥३७२॥

कांसे की शुद्धि

तप्तं कांस्यं गवां मूत्रे वापितं परिशुध्यति ॥३७३॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कांसे को तपा २ कर गोमूत्र में बुझावे तो कांसा शुद्ध हो जायगा॥३७३॥

कांसे की भस्म

म्रियते गन्धतालाभ्यां निरुत्थं पंचभिः पुटैः ॥३७४॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–कांसे के समान गंधक और हरताल को नींबू के रस में पीस कांसे के पत्रों पर लेप कर देवे और शराबसम्पुट में रख गजपुट में फूंक देवे इस प्रकार पांच पुट देने से कांसे की निरुत्थ भस्म होगी।२७४॥

तथा च

त्रिक्षारं पञ्चलवणं सप्तधाम्लेन भावयेत्। कांस्यारघोषपत्राणि तेन कल्केन लेपयेत्। रुद्ध्वा गजपुटे पक्वं शुद्धिमायाति नान्यथा ॥३७५॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, और पांचों नोंन इन सबको नींबू के रस की सात भावना देवे फिर कांसा तथा तांबे के पत्रों पर लेपकर गजपुट देवे तो शुद्ध होगा, अन्यथा नहीं अर्थात् ताम्र और कांसे की यह विशेष शुद्धि है॥३७५॥

सम्मति–किसी २ पुस्तक में (शुद्धभस्मत्वमाप्नुयात्) ऐसा भी पाठ है वहां ऐसा समझना चाहिये कि जब तक भस्म न हो तब तक पुट देता ही जाय परन्तु वास्तव में यह विशेष शुद्धि का उदाहरण है।

कांस्यपात्र में घृत के भोजन का निषेध

घृतमेकं विना चान्यत्सर्वं कांस्यगतं नृणाम्। भुक्तमारोग्यसुखदं हितं सात्म्यकरं तथा ॥३७६॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–केवल घृत को छोड़कर अन्य सब पदार्थ कांसे के पात्र में खाये हुए मनुष्यों के आरोग्य तथा सुख के दाता हितकारी और अपनी अपनी आत्मा के अनुकूल होते हैं॥३७६॥

पंचलोह (वर्त) निर्माणविधि

कांस्यरीतिस्तथा ताम्रं नागो वंगश्च पंचमम्। एकत्र द्रावितैरेतैः पंचलोहं प्रजायते ॥३७७॥

(रसराजसुन्

अर्थ–कांसा, राजरीति (पीतल), ताम्र, सीसा, और बंग इन स समान भाग लेकर गलावे तो पंचलोह नामका उपधातु सिद्ध जायगा॥३७७॥

तथा च

कांस्यार्करीतिलोहाहिजातं तद्वर्तलोहकम्। तदेव पंचलोहाख्यं लोहविद्भि हृतम् ॥३७८॥

(रसरत्नसमुच्च

अर्थ–कांसा, ताम्र, पीतल, लोहा, और सीसा इन पांचों से बने हुए ध तो बर्तलोह कहते हैं और उसी को पांचलोह कहते है॥३७८॥

बर्तलोहे के पात्र की उपयोगिता

तद्भाण्डे साधितं सर्वमन्नव्यंजनसूपकम्। अम्लेन वर्जितं चातिदीपनं पाच हितम् ॥३७९॥

(र० र० स०

अर्थ–वर्तलोह के पात्र में सिद्ध किया हुआ खटाई को छोड़कर सब प्रक का अन्न और दाल अत्यन्त दीपन तथा पाचन होता है॥३७९॥

बर्तलोह की शुद्धि

द्रुतमश्वजले क्षिप्तं वर्तलोहं विशुध्यति ॥३८०॥

(र० र० स०

अर्थ–वर्तलोह को तपा तपा कर घोडे के मूत्र में बुझावे तो वर्तलो (भर्त्त) शुद्ध हो जायगा॥३८०॥

वर्तलोह की भस्म

म्रियते गंधतालाभ्यां पुटित बर्तलोहकम्। तेषु तेष्विह योगेषु योजनीय यथाविधि ॥३८१॥

(रसरत्नसमुच्चय)

अर्थ–एक तोले गंधक और हरताल को नींबू के रस से घोट एक तोले बर्तलोह के पत्रों पर लेप कर देवे, फिर शराबसम्पुट में रख, गजपुट में फूंक देवे इस प्रकार निरुत्थ भस्म होने पर पुट देना समाप्त करै और उसको यथाविधि सेवन करै॥३८१॥

वर्तलोह के गुण

हिमाम्लं कटुकं रूक्षं कफपित्तविनाशम्। रुच्यं त्वच्यं कृमिघ्नं च नेत्र्यं मलविशोधनम् ॥३८२॥

(र० र० स०)

इति श्रीपारदसंहितायां धातुभस्मवर्णनं नाम अष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥५८॥

अर्थ–वर्तलोह चर्परा रूखा कफपित्त का नाशक है, रुचि को उत्पन्न करनेवाला, चर्म के लिये उपयोगी, कृमिविकार का नाशक, नेत्रों का हितकारी तथा मल को शुद्ध करनेवाला है॥३८२॥

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यास
ज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां
धातुभस्मवर्णनं नामाष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥५८॥

स्वानुभूतधातुभस्माध्यायः ५९

अनुभव रजत भस्म

(देशोपकारक ३१/१०/०६ की क्रिया से)

हरी मुंडी को पहले कुटवाकर बसंती के रस के छीटे दे देकर पिसवाया और गोला बनाया, जो वजन में करीब ढाई पाव के था उसमें ॥) भर चांदी का पत्र जो रुपये से बडा था रख दिया और उस पर मोटी कपरौटी करके गजपुट में १ मन कंडों की आग दे दी, ठंढा हो जाने पर चांदी को निकाला तो कुछ ऐंठसी गई, आंच की गर्मी से कुछ एक तरफ को तै भी गई और कहीं कालापान और कहीं गुलाबी भी आ गई, मगर न तो उसका आकार घटा बढा और न उसको राख ही हुई। पत्र मुश्किल से टूटता था।

सम्मति–मेरी समझ में यह तमाम यूनानी तरकीब एक आंच में जडी से चांदी वा सोने के भस्म करने की गलत है १० वा २० आंच में हो सकता है॥

अनुभव रजतभस्म

(अलकीमियां १/२/०७ की क्रिया से)

ता० २०/२/०७ को ॥) भरके तीन अंगुल चौडे गोल चांदी के पत्र (जिसको पहल १ आँच जोड तोड बूटी में लग चुकी थी) ।=) भर अर्क क्षार को ॥) भर थूहर में दुग्ध में खूब घोटे बारीक कर सुबह ९ बजे लेप करके धूप में सूखने को रख दिया ३ बजे तक सूखता रहा, बाद को फिर एक दूसरा लेप ॥) कर अर्कक्षार को ॥=) भर थूहर दुग्ध में घोटकर ४ बजे के करीब कर दिया और सुखाने को रख दिया।

ता० २१ के दिनभर सूखा, शाम को ५ बजे तीसरा लेप ॥=)भर अर्कक्षार को ॥।) भर थूहर दुग्ध में घोटकर कर दिया।

ता० २२ को पत्र दिन भर सूखा किया बाद को कंडे न मिलने से पत्र कई दिन सूखा और फिर रखा रहा।

ता० ६/३ को लेप समेत २ रुपये भर पत्र को २ कंडों में जो तोल में ऽ१ सेर थे रख नीचे ऊपर १॥ सेर कंडे और लगा आंच दीगई शामके ३ बजे।

ता० ७ के सवेरे देखा तो पत्र ज्यों का त्यों मौजूद था सख्ती भी थी मगर बीच में उसमें कहीं २ छिद्र हो गये थे और तोले में २–१ रत्ती कम हो गया था।

सम्मति–पीसक हरगिज न था, पर कुछ कमजोर जरूर हो गया था, तोड़ने से टूट सकता था एक आंच में जडी से तो कुश्ता होना पहले से ही असंभव मान लिया गया था अब क्षारसे भी १ आंच में असंभव सिद्ध हुआ।

अनुभव रजतभस्म

(सींगियासे)

ता० ४/२/०८ को पूर्वोक्त २ रत्ती कम ५ माशे के रजत पत्रों पर ९ माशे सींगिया की पिष्टी का (जो सींगिये को सिरके में ४०–५० दिन भिगो तय्यार किया गया था) लेपकर धूप में सुखा छोटे दीवलों को संपुट में बंद कर सुखा दिया।

ता० ५ को सूखता रहा।

ता० ६ को गढे में ३ सेर की आंच दी गई।

ता० ७ को निकाला तो चाँदी के ऊपर के लेप की बिलकुल काली राख हो गई थी, चांदी के पत्र को निकाला तो ज्यों के त्यों मौजूद थे, तोड़ने पर पहले से ही चमचोड़ थे, तोल में ५ माशे ४ रत्ती थे २ रत्ती छीजन गई।

दूसरी आंच

ता० ७ को उक्त ५ माशे ४ रत्ती के रजत पत्रों पर उसी सींगिये की ८॥ माशे पिष्टि का फिर लेपकर उन्हीं दीवलों के संपुट में रख कपरौटी कर सुखा गढे में ५ सेर कंडों की आंच दी गई।

ता० ८ को निकाल खोल चांदी को देखी तो ज्यों की त्यों चमचोड़ ही रही, किसी प्रकार का अंतर न मालूम हुआ, तोलने पर ५ मा० ३ रत्ती रही, १ रत्ती छीजन गई।

अनुभव रजतभस्म

(पारदभस्मयोग से)

ता० १३/२/०८ को ७ माशे ६ रत्ती चाँदी चूर्ण और ७ माशे ६ रत्ती घर का बना मरक्युरिक औक्साइड दोनों को खरल में डाल जँभीरी के रस के साथ १ घंटे घोट टिकिया बना ली, जो तोल में १ तोले ३ माशे हुई इसको दीवलों के संपुट में बंद कर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १४ को गढे में ३ सेर की आंच दी गई।

ता० १५ को निकाल खोल देखा तो चांदी की पिघलकर डली बन गई थी, तोलने पर ७ माशे ६ रत्ती थी।

सम्मति–पारे के कुश्ते के साथ चांदी का चूर्ण ३ सेर की आंच में ही पिघल गया हालांकि अभी सींगिये के साथ ५ सेर की आंच अधजले पत्रों को दी जा चुकी है।

अनुभव ताम्रभस्म

ता० २५/२/०७ नैपाली असली शुद्ध ४ रत्ती कम ॥) भर के ताम्रपत्र को आक के वृक्ष में पटासी से शिगफा दे रख आक का दूसरा बक्कुल उस पर लगा सुतली से बाँध दिया।

ता० २४ मार्च को यानी एक मास के बाद पेड़ की शाखा काटी, बालिश्त भर से कुछ अधिक का टुकड़ा कर उस पर मिट्टी नामा पड़ी का लेप चढ़ा ता० २४ व २६ दो दिन सुखाया। मिट्टी चटक गई इसलिये २७ को थोड़ी मिट्टी और लगा दरज बंद कर दी गई। दिन भर सूखा।

ता० २७ की शाम को महागजपुट में आंच दे दी गई। निकालने पर पत्र ज्यों का त्यों निकला, केवल ऊपरी भाग से एक अंश जलकर कोयला सा हो गया था अर्थात् एक तरह यानी ऊपर की जिल्द कोयला हो गई थी।

सम्मति–पहले भी ताम्रजारण अनुभव में एक तह ही जली थी, इस क्रिया से कोई विशेष लाभ नहीं ज्ञात हुआ।

अनुभव ताम्रभस्म

(पं० कुलमणि शास्त्री की क्रिया से)

ता० ९/११/०७ को एक पैसा झाड़ साई लिया, जो तोल में १ तोले, ५ माशे, ३ रत्ती था। ३ छ० रांग के ढ़क्कनदार सम्पुट में ३ छटाँक भिलावों के चूर्ण को ठसाठस भर बीच में पैसे को रख संपुट बंद कर २ सेर ३ छटांक गूदड़ ऊपर लपेट गोला बना लिया।

ता० १० को उक्त गोले को निर्वात स्थान में रख उसके चारों तरफ दो चार आरने कंडे रख ४ बजे शाम के आंच लगा दी।

ता० ११ को ४ बजे शाम के देखा तो इसमें अब तक तीक्ष्ण गर्मी मौजूद थी। (क्योंकि रांग अब तक पिघलता मिला) कटोरी पिघल कर ढ़िम्मा रूप हो गई थी और कुछ हिस्सा उसका फूलकर श्वेत हो गया था जो ज्यादः फूल गया था वह खिलकर राख में मिल गया था और जो कम फूला था वह कच्चे रांग से चिपट रहा था, पैसा कटोरी के बीच में रखा मिला किंतु एक तरफ से कुछ हिस्सा इसका गलकर रांग में मिल गया था, रंग इसका जस्त का सा हो गया था, लोहे के मूसले से तोड़ा तो पिचक कर बढ़ गया और फटकर टूट गया, अंदर भी ऊपर का सा ही रंग निकला, तोल में

यह १ तोले ४ रत्ती हुआ। रांग का सा फूला हुआ हिस्सा तोल में ४ तोले ४ माशे मिला और कच्चा हिस्सा ११ तो० ३ माशे हाथ लगा। (जिसमें ९ तोले ६ माशे का कटोरी का ढ़िम्मा और १ तोले ९ माशे वह जो तै कर राख में मिल गया था। इस तरह कुल वजन १६ तोले ७ माशे ४ रत्ती मिला अर्थात् २ माशे १ रत्ती बढ़ा या यह तोल का अंतर होगा या यह आक्सीजन मिलने से बढ़ती हुई है।

अनुभव ताम्रभस्म

(पारदभस्म योग से)

ता० १/२/०८ को १ तोले ताम्रचूर्ण और १ तोले अंग्रेजी पीली पारद भस्म दोनों को खरल में डाल करीब ६ माशे के नीबू का रस डाल १ घंटे घोट टिकिया बना ली जो तोल में २ तोले ३ मा० थी, इसको छोटे दीवलों के संपुट में रख कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० २ को सूखता रहा।

ता० ३ को सवा हाथ चौड़े और सवा हाथ गहरे गजपुट में आंच दी।

ता० ४ को निकाल खोल देखा तो टिकिया की रंगत काली हो गई थी, टूटने में कठिन थी, तोड़ा गया तो अंदर भी ऊपर की सी ही रंगत थी किंतु बहुत थोड़ी ताम्र की सी झलक मारती थी, तोला गया तो १ तोले ६ रत्ती हुई, १ तोले २ माशे २ रत्ती कम हो गई। इसको फिर पीसा तो खरखरा चूर्ण बन गया उसको दही पर डाल थोड़ी देर रख देखा तो रंगत हरी पैदा न हुई।

दूसरी आँच

ता० ५ को इस चूर्ण में फिर १ तोले पूर्वोक्त पारद भस्म मिला सुखा कुटवाया तो तोल में ३ तोले २ र० रहा, ३ रत्ती छीजन गयी। बाद को इस चूर्ण को उन्ही दीवलों के संपुट मे रख कपरौटी कर सुखा पौन गजपुट में आंच लगा दी।

ता० ६ को निकाल खोल देखा तो उक्त चूर्ण का ढ़िम्मा सा बन गया था। रंग पहली आंच लगकर जैसा रहा था वैसा ही रहा। तोलने पर १ तोले ६ रत्ती रहा। ११ माशे ५ रत्ती घट गया। बाद को खरल में डाल ६ घंटे पीसा तो बहुत चिकना चूर्ण बैंगनी रंग का बन गया। इसको रेखापूर्ण कहते हैं।

ता० ७ को खट्टे दही पर डाल देखा तो प्रहर भर तक रखा रहने पर भी नाममात्र को हरियाली उत्पन्न नहीं हुई, किंतु ८ प्रहर रखे रहने के बाद बहुत थोड़ी हरियाली की झलक कहीं कहीं दीख पड़ी।

तीसरी आँच

ता० ११ को उक्त १ तोले ६ रत्ती ताम्रभस्म और १ तोले ६ रत्ती ही मरक्यूरिक ऑक्साइड (जो घर पर बनाया गया था) दोनों को १ घंटे खरल में पीस दीवलों के संपुट में बंद कर सुखा दिया।

ता० १२ को गढ़े में ११ सेर की आंच दी गई।

ता० १३ को निकाला तो रंगत इसकी करीब करीब पहलें की सी ही ती किंतु पीसने से नरम पिसा और बारीक हो गया।

ता० १४ को इसमें से थोड़ी सी भस्म को खट्टे दही पर डाल देखा तो शाम तक रक्खे रहने पर उसमें हरियाई न मालूम हुई, किन्तू दूसरे दिन–

ता० १५ को जब देखा तो भस्म के आसपास बहुत थोड़ी हरी झलक मारती थी। आज इस पर दो चार बून्द नीम्बू का रस और डाल दिया।

ता० १६ को देखा को कुछ नीली हरियाई और बढ़ गई थी जिससे सिद्ध हुआ कि ताम्रभस्म हुआ तो अवश्य किन्तु पूर्ण रीति से नहीं।

संगरासख अर्थात् ताम्र की कच्ची भस्म

ता० २०/६/०८ को ४। तोले ताम्र के छोटे छोटे टुकडों पर लेखानुसार ताम्र से १ अर्थात् १ तोले ६ रत्ती पारा उँगलियों से मल मल कर चढ़ाया तो पत्रों पर सफेदी आ गई किन्तु पत्रों के दुबारा तोलने पर उतनी ही तोल रही, बढ़ी नहीं जिससे सिद्ध हुआ कि ताम्र में पारे का अंश बहुत ही कम आया। अतएव उक्त पारे को (जो छीज कर १० माशे रह गया था) और ताम्र के समान ४। तोले गन्धक को (जो बेशुद्धी आंवलासार तुलायंत्र की निकली हुई थी) दोनों को खरल में पीस बारीक कजलीहोजान पर नीबूके रस से लेही सी कर उसमें उन पत्रों को खूब लपेट बची दवा नीचे ऊपर रख शराव संपुट में बन्द कर कपरौटी कर सुखा गजपुट में आरने कंडों की आंच दे दी।

ता० २१ को निकाल खोल देखा तो पत्र जलकर श्याम रंगत के हो गये थे अर्थात् संगरासख बन गया था, किन्तु पत्थर पर घिसने से काली लकीर बनती थी। (सुरख लकीर जिससे बने वह अच्छा समझा जाता है) अतएव इस शंका से कि इसमें गन्धक का अंश रह गया हो उसी प्रकार फिर संपुट कर गजपुट में एक आंच और दी किन्तु कुछ अन्तर न पड़ा। तोल इसकी इस समय ५ तोले ४ माशे है।

प्रश्न–यह तोल आक्सीजन मिल जाने से बढ़ी या गंधक पारे के अंश रह जाने से ?

संगरासख (उपरोक्त क्रिया का पुनः उद्योग)

ता० २३/१०/०८ को ५ तोले तांबे की चद्दर (जो रुपये की बराबर मोटी होगी) के टुकड़ों पर १। तोले पारा और ३।। तोले गंधक को नीबू के रस में घोट लेपकर संपुट कर कुछ कम गजपुट की आंच दी गई। निकालने पर मालूम हुआ कि गंधक पूरा नहीं जला इसलिये दूसरी फिर उतनी ही आंच दी गई तब भी गन्धक जली हुई अवशेष मिली और पत्र जलकर काले रंग के पीसक हो गये, लकीर काली देते थे।

सम्मति–अबकी बार भी पारे गंधक का प्रमाण अधिक और अग्नि का प्रमाण कम रहा। आगे ऐसे ही मोटे १ छटांक पत्रों पर ६ माशे पारा और २ तोले गंधक की पिष्टी का लेप कर पूरे गजपुट अर्थात् १। हाथ लंबे चौड़े गजपुट में आंच दी जावे।

संगरासख (उपरोक्त क्रिया का तीसरी बार उद्योग)

ता० ३/११/०९ को ५ तोले ताम्र की चद्दर के टुकड़ों पर २ तोले गंधक आँवलासार और ६ मा० पारद की जंभीरी रसयुक्त बनी पिष्टी का लेपकर बाकी पिष्टी नीचे रख शराव संपुट में बन्द कर १। हाथ लंबे चौड़े गजपुट में आंच दे दी।

ता० ४ को निकाला तो ताम्र के टुकड़े पीसक हो गये थे और कोई कोई फूलकर पीले भी होगये थे। रंग काला रहा किन्तु किसी पत्र पर थोड़ी २ ताम्र की सी रंगत थी। इस कारण लकीर किसी पत्र से ललाई लिये और किसी से काली बनती थी।

सम्मति–इस संगरासखन ने खिजाब में काम दिया। आगे से आँवलासार गंधक की जगह लौनिया ली जाय जो दाम में सस्ती हो और तेजी में कम हो जिससे अबकी बार से कुछ अधिक कचाई रहकर अधिक ललामी रहे।

ताम्रभस्म के अनुभव

ताम्र को जो नैपाली बतलाया गया और बनारस से आया तोल में ५ छटांक था।

शुद्धि

शुद्धि के लिये नीचेकी चीजों में ७–७ बुझाव दिये गये न्यारिये से धोंक

वाकर पक्के कोयलो में तपाकर ताम्र को बढ़वाकर पत्र करा लिये गये थे, जो अठन्नी वा चवन्नी की बराबर मोटे और १।। अंगुल चौड़े और ४ अंगुल लंबे थे।

एक दफे तेज आंच लगने से पिघलकर ३–४ पत्र कुछ आपस में चिपट भी गये थे वह छुटा दिये। इसलिये बहुत तेज आंच भी न होनी चाहिये।

एक बात का ध्यान और रखना चाहिये कि जब एक चीज में बुझाव लग चुके तो पत्र धो डाले जाया करें जिससे जो मैल ऊपर लग जाता है वह छूट जाया करे, शुद्धि की चीजें ये हैं–

१ गोमूत्र, २ तैल ३ आक का दूध, ४ नींबू और जंभीरी का रस, ५ इमली के पत्तोंका रस ६ ग्वार के पट्ठे का रस, ७ मठा, ८ शहद, ९ दूध और घी मिला हुआ सब चीजें आध आध सेर थीं। सब में ७–७ बुझाव लगे अर्थात् ६३ बुझाव १ दिन में लगे।

ताम्रभस्म

(१) मुजर्रिबात फीरोजी की पत्र ४३ वाली क्रिया से ३/३/०६–६ माशे ताम्र के पत्र को १ छटांक पतीस की लुगदी में रख संपुट कर १५ सेर की आंच दी गई तो कोई नतीजा नहीं हुआ। (गजपुट की आंच से कदाचित् कुछ फल होता)

(२) ४/३/०६-कीमियाई मशर की २२ पत्र की क्रिया से ६ माशे के ताम्रपत्र को २।। तोले जमालगोटे और २।। तोले भिलावें की लुगदी में रख संपुट कर २० सेर की आंच दी गई तो कोई नतीजा नहीं निकला। (गजपुट की आंच से कदाचित् कुछ फल होता)

(३) ५/३/०६–मुजर्रिबात फीरोजी की पत्र ४३ वाली क्रिया से ६ माशे के ताम्रपत्र को ३ दिन तक थूहर के दूध में भिगोकर (फिर थूहर के दूध के खुश्क होने से जो मलाई सी पड़ गई थी उसको घोटा तो चमचौड़ सी हो गई उसको पत्र पर लपेटकर) ३ छटांक प्याज की लुगदी में रख २ कपरौटी कर ३५ सेर की आंच दी गई तो तांबे के पत्र के दोनों तरफ से कागज की बराबर मोटा काला पत्र जला हुआ मिला, लेकिन यह समझकर कि यह लेप की हुई दवा है, उसे फेंक दिया किन्तु वास्तव में एक अंश ताम्र का फूंका हुआ था, अर्थात् इस क्रिया से १/४ भाग ताम्र को श्याम रंग की भस्म किया। यदि लुगदी का वजन और आंच का वजन अधिक हो तो अधिक काम निकालने की उम्मीद है।

(४) ६/३/६–किताब मजहूल उलइस्मकी ३४ नं० वाली तरकीबसे–से–

सेर भर गुलाबास की जड़ी की लुगदी में २ पत्र बराबर बराबर तांबे के रख कपरौटी कर मनभर की आंच दी गई तो दोनों पत्रों के दोनों तरफ से मोटे कागज की बराबर पत्र जलकर स्याह भस्म होकर जुदा हों गये तोलने से ६ माशे भस्म और ६ माशे तांबे का पत्र निकला, यह तांबे का पत्र भी इतना निर्बल हो गया था जो हाथ से टूट जाता था। (ऊपर की क्रिया से यह क्रिया अच्छी रही)

(५) ७/३/०६ किताब मशर की २१ पत्रवाली क्रिया से ६ माशे के पत्र पर १ तोला फिटकिरी आक के दूध में पीस लेपकर दोनों तरफ पत्र दे कपरौटी कर मनभर की आंच दी तो कुछ अंश की श्याम भस्म हो गई मगर फिटकिरी से चिपक गया और कोई विशेषता इस क्रिया में न थी।

(६) ८/३/०६ किताब मजहूलउल इस्म की २७ नं० वाली क्रिया से–

एक सेर आक के फूलों को कूट हांडी में तांबे के पत्रों के नीचे ऊपर रख ऽ। दूध आक का डाल ३ प्रहर वन की लोंदो की आंच लगी तो जितना असर नं० ३ की क्रिया से हुआ था उतना भी नहीं हुआ। यह तरकीब संखिये के लिये ठीक हो सकती है, ताम्र के लिये नहीं।

(७) १२/३/०६ पंडित श्रीनारायणजी काशीवाले तरकीब से तांबे के पैसे को और तांबे के पत्रों को और चांदी के टुकडों को तीन जगह जुदा जुदा एक ढ़ाक की लकड़ी में जो ७ अंगुल मोटी थी और जिसमें ३ जगह डाटदार छिद्र किये उन छिद्रों में घीग्वार का गूदा और दूधी रख यह चीजें रखी गई और महागजपुट की आंच दी गई तो कुछ भी फल न हुआ, पैसे का कुछ हिस्सा काला सा हो गया कुछ टेढ़ा मेढ़ा हो गया, चांदी पिघल कर रवे बन गई पत्र अलबत्ता कुछ ऊपर नीचे फुंके जैसे कि गुलवास (गुले अब्बास) में फूंके थे। (निश्चय एक आंच में ताम्र के पैसे का पकना अंसभव है–कंटकवेधी पत्र फुंके तो फुंके)

(८) १५/३/०६ अब तक जो शुद्ध ताम्र के पत्रों को आंच देने से भस्म हाथ लगी थी और जो काली रंगत का था उस सब ।।।) भर को खरल में पीसा गया तो सुखर रंगत निकली फिर उसको आक और सैहुंड कांटेदार के दूध में घोट कर टिकिया बना सुखा गुलवास की जड़ के बीच रख कपरौटी कर १ मन की आंच दी गई तो टिकिया बड़ी कड़ी हो गई। (उम्मीद नहीं कि जड़ी से कभी भी ताम्र एक आंच में फुंक जावे)

१८/३/०६ आज फिर उपरोक्त टिकिया को आक के पत्रों के रस में घोट टिकिया बना सुखा २ पत्तों में ही लपेट थोड़ी कपरौटी कर १० सेर की आंच दी गई तो भी बहुत कड़ी टिकिया निकली। (ताम्र बड़ी कठिन चीज है)

मुक्ताभस्म

ता० ३०/९/०८ को ६ माशे अनबिंधे मोतियों को छोटी सी कुलियां में भर करीब १ तोले गाय का कच्चा दूध डाल (कुलिया आधी खाली रखी) खपीरे के गोल घिसे ढक्कने से कुलिया का मुख बन्द कर कपरौटी कर सुखा ४।। बजे गर्त में ७।। सेर आरने कण्डों की आंच दे दी।

ता० १/१० को खोला तो कुल मोतियों की रंगत श्वेत साबूदाने की सी हो गई थी और कुछ नीचे चूर्ण सा था, वैसे ही कुलिया में बन्द रखे रहे।

ता० २ को देखा तो मोती बिलकुल फूल गये थे और बहुत से चूर्ण हो गये थे।

सम्मति–ठीक फूंके ।

लोहभस्म

तीक्ष्ण लोहे को अर्थात् एक तलवार को जो इतनी सख्त थी जो हाथ के नवाने से टूट गई और जिसको किसी लोहार ने फौलाद और किसी ने अच्छा खेड़ी बतलाया, शोधा गया।

शुद्धि

ऽ।≈तलवार के टुकड़ें के लोहे को सात सात बुझाव मीठे तेल गोमूत्र, कांजी, कुलथी में एक एक बुझाव सेहुँड और थूहर के दुग्ध में एक बुझाव आक के दूध का लेप कर त्रिफला के काढ़े में और तीन बुझाव, इमली के खटाई का लेपकर त्रिफला के काढ़े में तीन बुझाव, इमली और नीबू के रस में तीन और तीन तीन बुझाव सम्हालू और केला की जड़ के रस में और तीन तीन बुझाव घीग्वार आक और शहद में और पांच बुझाव घी, दूध में मिले हुए में दिये गये तो करीब ऽ। के तैयार रहा। पश्चात् उसका रेत से चूर्ण कर दिया गया तो १८ तोले तैयार रहा। इस १८ तोले बुरादे में ६ गुना गोमूत्र जला दिया तो २०।। तोले वजन रहा।

सिंग्रफ की शुद्धि

ऽ।=सिंग्रफ रूमी को दोलायंत्र से करीब दोपहर जयंती के रस में औटाया गया तो ऽ।=मौजूद रहा।

नक्शा लोहभस्म

तादात आंच	किस औषधिमें	आंच का प्रमाण	वजन जो रखा गया	वजन जो निकला	विशेष वार्ता
३	घीगुवार	गजपुट	२०तो० ६मा०	२२तो० ६मा०	टिकिया बना कर संपुट दी गई ।
६	वनतुलसी	गजपुट	२२तो० ६मा०	२५ तो०	नौ आंच लगने के बाद टिकिया में कुछ खस्तगी आ गई और लोहा पीसक हो गया।
३	पतालग डोडी यानी गरुड दूबी	गजपुट	२५तो०	२४॥तो०	इस बार आंचके खतम होनेपर अर्थात् एक तरकीब खतम होनेपर लोहा बारीक फुसफुसा जाहरा भस्मकी सूरत में तैयार हो गया।
८	घीग्वार प्रतिपुट १॥तो० सिंग्रफ	गजपुट	२४॥तो०	२३॥तो०	हरपुट मे १।तोला सिंग्रफ मिलाकर घीग्वारके रसमें घोटकर ८ आंच दीगई वजन हर आंचमें बराबर ही निकलता था १ बार संपुट फट जाने से १ तोला लोहा छीजगया टिकिया
२	मूशलीका काढ़ा	ऽ५से० कंडे ऽ७से० कंडे	२३॥तो०	२३॥तो०	खस्ता रंगत सुर्खीमाइल मामूली रीति की भस्म तैयार होगई जड़ियो का गुण पैदा करनेके लिये और पुट दिये गये।
३	त्रिकुटाका क्वाथ	ऽ७से० कंडे	२३॥तो०	२३॥तो०	टिकिया बहुत फुसफुसी सी रंगत उत्तम अरुण ।
३	त्रिफला क्वाथ	७से०+७से० १० सेर	२३॥तो०	२३॥तो०	त्रिफला के पुट से स्याही आ गई ।
३	हरिद्रा क्वाथ	१० सेर	२३॥तो०	२३॥तो०	
३	भांगरेका स्वरस	१०से०+१०से० गजपुट	२३।तो०	२३।तो०	बनिस्वत हलकी आंचोंके गजपुटकी आंचसे खस्तगी और सुरखी ज्यादा पैदा हुई अतएव जड़ियोंके पुटमें लोहेको गजपुटकी आंच देना मुनासिब मालूम होती है ।
४	वड़ की जटा	गजपुट	२३।तो०	२३॥तो०	इसके पुट देने से सुर्खी पैदा होती है ।
३	शतावर क्वाथ	गजपुट	२३॥तो०	२२॥तो०	इससे सख्ती और स्याही पैदा होती है ।
३	असगंध क्वाथ	आधा गजपुट	२२॥तो०	२२॥तो०	आखिरी दो आंच में टिकिया मुखाकर दी गई जिससे फुसफुसाहट और टिकिया अधिक मालूम हुई।
३	मुलहटी क्वाथ	गजपुट	२२॥तो०	२२॥तो०	
३	हरे गोखरूका रस	गजपुट	२२॥तो०	२६॥ तो०	इसके पुट से वजन बढ़ जाता है ।
३	गिलोय क्वाथ	गजपुट	२६॥तो०	२६।तो०	
३	खिरैटी यानी बलाका रस	गजपुट	२६।तो०	२५॥तो०	
३	पुनर्नवायानीसाठ	गजपुट	२५॥तो०	२६ तो०	
३	बेरकी जड़की छालका क्वाथ	गजपुट	२६तो०	२५॥तो०	
१	हरे आंवलेका रस	गजपुट	२५॥तो०	२५॥तो०	इस पुट से लोहा लोहे के खरल में घोटा गया ।
२	सहमलकी जड़की छाल का क्वाथ	गजपुट	२५तो०	२५तो०	
२	गायका दूध	३/४गजपुट	२५तो०	२५तो०	
३	मुनक्का क्वाथ	गजपुट+गजपुट १/३ गजपुट	२५ तो०	२४॥तो०	मुनक्काके पुटमें लोहा खरलमें चिमट जाता है ।
१	दही	१/२ गजपुट	२४॥तो०	२४॥तो०	
१	त्रिफला क्वाथ	१/२ गजपुट	२४॥तो०	२४॥तो०	
१	दही	१/२ गजपुट	२४॥तो०	२४॥तो०	
१	त्रिफला क्वाथ	१ मनकंडे	२४॥तो०	२४तो०५र०	
१	दही	१५० कंडे	२४तो०५र०	२४तो०३मा०	
१	त्रिफला क्वाथ	१७५ कंडे	२५तो०३मा०	२४तो=)आने	
१	+	+	२४तो=)आने	२४तो०७॥मा	बारीक करनेके कारण दो दिन घोट खाली आंच दीगई ।
१	त्रिफला क्वाथ	गजपुट	२४तो०७॥मा०	२४॥तो०	लोहा पहले सिंग्रफ के पुट देनेसे बारितर होगया था लेकिन
२	जामुनका रस	गजपुट	२४॥तो०	२४॥तो०	जड़ियोंके पुट देनेसे फिर वह खूबी जाती रही अब शायद बारित-योग से ३/५ वारितर होगा ।
३	ग्वारपट्ठेका गूदा	१०० कंडे	२४॥तो०	२६॥तो०	इसकी आंच से लोहे में चिकनाहट पैदा होती है ।

तादात आंच	किस औषधिमें	आंच का प्रमाण	वजन जो रखा गया	वजन जो निकला	विशेष वार्ता
१	गोंदीकी छाल का रस	१०० कंडे	२६॥तो०	२६तो०११मा०	
२	असंगध क्वाथ	१०० कंडे	२६तो०११मा०	२७तो०६मा०	
२	बेल्दार खिरैटी का रस	१०० कंडे १२५ कंडे	२७तो०६मा०	२८तो०९मा०	
२	असंगध,मूसली, सतावर,गिलोय गोखरूका क्वाथ	१५० कंडे	२८तो०९मा०	२९तो०२कम	
१	कंघीका रस	१५० कंडे	२८तो०१०मा०	२९तो०३मा०	
१	बड़ी खिरैटी का रस	१५० कंडे	२९तो०३मा०	२९तो०९मा०	
१	छोटी खिरैटी का रस	१५० कंडे	२९तो०९मा०	३० तो०	
३	वडकी जटा का क्वाथ	१५० कंडे	३० तो०	३० तो०	
१	घीग्वार	१५० कंडे	३०.तो०	३० तो०	

जोड़

९८ आंच १२/९/१९०२ को खतम हुआ।

अनुभव

(१) लोहे को खरल में घोटना जरूरी है नहीं तो पत्थर के खरल में घोटने में बहुत सा पत्थर का अंश मिल जाता है।

(२) सदैव भस्म जिस रस में घोटना हो उसमें यहां तक घोटे कि वह रस सूख कर फिर चूर्ण हो जाय और उस चूर्ण को संपुट कर पुट दे टिकिया बनाकर गीली टिकिया को संपुट कर पुट देने से कठिनता भली भांति विद्यमान रहती है और टिकिया को सुखा लेने से भी कठिनता बिलकुल नहीं जाती रहती कुछ कम हो जाती है।

(३) संपुट पर एक या दो कपरौटी मुलतानीकी होनी चाहिये, पश्चात् मोटी कपरौटी मिट्टी की होनी चाहिये। भारी कपरौटी से शकोरे आंच सह सकते हैं, वरनः फट जाते हैं।

(४) बाजारी हलके सौ कंडों की आंच के लिये एक कपरौटी मुलतानी और एक चिकनी मिट्टी की काफी होती है और दौ सो कंडों के लिये दो कपरौटी की आवश्यकता है।

(५) लोहे को जड़ियों के पुट में भी गजपुट की आंच की आवश्यकता है।

(६) पुस्तक में पहले पाताल गरुड के पुट देना लिखा था, इस समय उसके न मिलने के कारण बादर को उसके पुट दिये गये। लेकिन उसके पुट आदिहीमें दिये जाने चाहिये थे क्योंकि उसके पुटों में वजन भी नहीं बढ़ा और रंगत भी किसी कदर श्यामता लिये हो गई। बनतुलसी के पुट जो बीच में दिये गये वह अंत में ही चाहिये क्योंकि बनतुलसी का कोई अंश उसमें बाकी रह जाता था इसलिये उसमें वजन बढ़ जाता था और टिकिया में फुसफुसाहट और रंगत में सुरखी पैदा होती थी।

(७) लोहे में घीगुवार, बनतुलसी, मूसली, वड़ की जटा, हरे गोखरू, असगंध के अधिक पुट देना चाहिये।

(८) इस लोहे की भस्म की विधि में यदि कुछ त्रुटि रही हो तो यह हुआ कि किसी समय कपरौटी हलकी होने से संपुट टूट गये और तेज आंच लग जाने से कहीं कहीं कठिन हो जाता था।

बंगभस्म रांग की शुद्धि

१ सेर रांग को तेल, गोमूत्र, मठा, आक के दूध में तीन तीन बुझाव दिये गये जिसमें से (असावधानी और सामान दुरुस्त न होने के कारण) छीजकर १) भर शेष रहा, लेकिन कांजी और कुलथी न मिलने से दोनों चीजें रह गई। (वैद्यकल्पद्रुम पत्र ३२ के अनुसार)

हरताल की शुद्धि

ऽ।। सेर हरताल के पृथक् पृथक् पत्र करके दोलायंत्र से प्रथम कांजी फिर तिल के तैल फिर त्रिफला के क्वाथ में फिर पेठे के रस में.एक एक प्रहर औटाया गया पहले रंगत सुनहरी थी, औटाने भर से मैली पीली हो गई। (वैद्यकल्पद्रुम पृष्ठ ५९ के अनुसार)

रांगभस्म

उपरोक्त शुधे हुये रांग में से १४।।) भर को मिट्टी के कूंडे में इमली और पीपल की छाल डालकर (वैद्यकल्पद्रुम पत्र ३२ के अनुसार) भस्म किया उसमें से १२।।) भर तैयार हुआ, बाकी रांग के रवे रह गये।

नक्शा वंगभस्म

तादात	किस औषधिमें	किस रस में	कितनी आंच	वजन जो रखा गया	वजन जो निकाला गया	विशेष वार्ता
३	हरताल ३।।)	नींबूका रस	गाउदुम गढ़ा	७) भर	६) भर	दूसरी और तीसरी आंच में खराबी पड़ जाने के
२	७ माशे हरताल	"	"	६) भर	५) भर	कारण १। भर कम निकली यदि सावधानी से आंच दी जावे तो बराबर वजन निकलेगा ।
१	६ माशे हरताल	"	"	५) भर	४।।। भर	
१	५ माशे हरताल	"	"	४।।।) भर	४।।) भर	
२	–	"	"	४।।) भर	३।।।) भर	हरताल के समा जाने के कारण केवल नीबू के रस में
१	–	"	गजपुट	३।।।) भर	३।।) भर	घोटा गया।
१	३।। भर नींबू के रस में घोट टिकिया बना वैसे ही (बिना संपुट के) भाग ऊपर नीचे रख कंडो मे रख दिया। इस बार आधी स्याही रह गई और हरताल का बहुत ही न्यूनांश बाकी रहा ।					

१–फिर इसको नींबू के रस में घोटकर एक आंच भांग में रखकर दी गई । स्याही दूर होकर खाकी रंगत रह गई और हरताल बहुत उड़ गई. केवल संदेह बाकी रह गया ।

१–फिर नींबू के रस में घोटकर गजपुट की आंच दी गई। इस बार यह सफेद हो गई और तोल में २। तोले तैयार रहा ।

१–उक्त २। तोले की रंगत खाकी होने से सफेद करने की कांक्षा से नींबू के रस में घोट टिकिया बना नीम के पत्तों की लुगदी मे रख २० सेर कंडों की एक आंच और दी गई। इससे अब यह और कुछ सफेद हो गई।

मीजान १४ आंच

अनुभव

२४।।) भर रांग की भस्म को हरताल शोधी हुई में घोट कर साधारण संपुट मे बन्दकर कपरौटी कर गजपुट में फूंका गया तो संपुट निर्बल होने के कारण या कपरौटी ठीक न होवे या आंच अधिक लग जाने से हरताल के जोर से सब रांग उड़ गया, आगे से आंच और कपरौटी सावधानी से भली भांति की जावे।

अभ्रभस्म

शुधी हुई अभ्रक १/७/१८९३ से १/२/९६ सेर वज्राभक (जो मुम्बई से आया था) में से ऽ१। सेर अभ्रक जो श्वेततायुक्त कच्चा था, छांट कर अलग कर दिया गया। शेष ऽ३। सेर उत्तम अभ्रक के जिसकी रंगत श्वेतता और श्यामता लिये थी पृथक् पृथक् पत्र कर धो स्वच्छ कर लिया गया। उसमें २ सेर साबित पत्र और शेष चूर्ण रहा, चूर्ण में रेत का अंश अधिक समझ और बुझाव भी ठीक न लग सकने के कारण चूर्ण अलग कर केवल २ सेर की शुद्धि की गई।

उपरोक्त २ सेर अभ्रक को कढ़ाई में भरकर और ढ़क कर गर्म करकर निम्नलिखित औषधियों में बुझाव दिये गये–

२ बुझाव सम्हालू के रस में, २ बुझाव गाय के दूध में, २ बुझाव त्रिफला के काढे में, २ बुझाव गोमूत्र में दिये गये। फिर एक रात गोमूत्र में और एक रात चूका के रस में भिगोकर पानी से धो डाला गया। पश्चात् उक्त अभ्रक को बेर की जड़ के क्वाथ में २ बुझाव दिये गये, इस बुझाव से अभ्रक में सफाई और सुरखी आ गई। बेर के बुझाव सदा अंत में देने चाहिये क्योंकि इसका काढ़ा अरुण होता है जिससे अभ्रक की रंगत प्यारी हो जाती है। पश्चात् हाथों से मीड चलनी से छान मोटे मोटे पत्र पृथक् कर उनको फिर उपरोक्त बेर के काढ़े में दो बुझाव दिये गये। करीब ऽ।।।– के बारीक निकला और इतना ही मोटा पृथक् रह गया।

संक्षिप्त–सब अभ्रक ऽ४।। सेर जिसमें से १। सेर कच्चा अलग कर दिया गया। बाकी के पत्र खोले गये उसमें से १। सेर चूर्ण रेत मिला होने से अलग कर दिया गया। शेष २ सेर को शुद्ध किया गया जिसमें से ऽ।।।–मोटा अलग है और ऽ।।। बारीक चूर्ण भस्मयोग्य अलग है।

अभ्रभस्म के लिये सावधानी

मिट्टी के गोंलसंपुट ढ़कनेदार बनवाकर अभ्रक भरा गया और उस पर प्रथम मुलतानी और कपड़े से कपरौटी कर दी। फिर सन और चिकनी मिट्टी से कपरौटी कर १। हाथ लंबे चौड़े गढ़े में आरने कंडों की आंच दी गई। इतनी आंच से कभी कभी कपरौटी या संपुट में किसी किसी जगह खंगर हो जाता था। (अच्छा हो आगे इससे कम आंच दी जावे और अंत में तैयारी के समय केवल १ एक हाथ लंबे चौड़े गढ़े की आंच देनी ठीक होगी) और उसकी वजह से अभ्रक उस तरफ स्याह और कठिन पड़ जाता था और कम आंच में अभ्र की रंगत प्राय: अरुण रहती थी।

अभ्रक अधिक होने की वजह से पांच आंच तक एक भाग में बाद को ८४ आंच तक दो भागों में रखा गया। मिट्टी के संपुटों में रखने से मिट्टी को मेल और तेज चमकदार परिमाणुओं का मेल जो संपुटें में होते हैं, अवश्य हो जाते हैं अतएव और किसी प्रकार के संपुट मिल सकें तो वह काम में लायें जावें।

नक्शा अभ्रकभस्म

तादात आंच	चीज जिसमें पुट दिये गये	वजन जो रखा गया	वजन जो निकला	विशेष वार्ता
५	आक का दूध	तोले ६५	तोले ७३	चूंकि आदि में फूला हुआ था और खरल में न आ सकता था इस कारण दो दो भागों में पृथक् कर घोट पृथक् पृथक् आंच दे परस्पर मिला दिया गया
५	कटेरी क्वाथ	तोले ७३	तोले ६८	रंगत अरुणतायुक्त
५	कुटकी क्वाथ	तोले ६८	तोले ६६	
५	अरंडकीजड़काक्वाथ	तोले ६६॥	तोले ६६॥	रंगत अरुणतायुक्त
५	प्याज का रस	तोले ६६॥	तोले ६६॥	श्यामतायुक्त
५	गोमूत्र	तोले ३६॥	तोले ६७	
५	सांठ का रस	तोले ६७	तो०६८ मा०२	
५	लहसन का रस	तो० मा	तो० मा०	
		६८–२	७२–३	रंगत श्यामता
५	बिंदालफलका क्वाथ	७२–३	६९–११	सुरखी माइल
५	केले का रस	६९–११	तो० ६९	
५	वसंती अर्थात्	तो० ६९	तो० मा०	
	चूकाका रस		६८–१०	
६	कपित्थक्वाथ	तो० मा०	तो० मा०	
		६८–१०	७०–८	
४	नागरमोथेका रस	७०–८	७०–५	श्वेततायुक्त
५	ककरोंदेका रस	७०–५	६०–१०	
५	अमरवेलका रस	६०–१०	६९–७	
५	मछैछीका रस	६९–७	६९–३	
३	मकोयका रस	६९–३	६९–३	
३	चौलाईका रस	६९–३	६९–४॥	
४	चमेलीकेपत्तोंकारस	६९–४॥	तो० ६९	
३	अडूसेका रस	तो०	तो० मा०	
		६९	६८–११	
३	लोधपठानीकाक्वाथ	६८–११	तो० ६९	
३	काकड़ा श्रृंगी	तो० ६९	६८–११	
	का क्वाथ			
३	भारंगी क्वाथ	६८–११	६८–११	
३	मजीठ क्वाथ	६८–१०	६८–९॥	अरुणतायुक्त
३	सौंफका क्वाथ	६८–९॥	६९–९॥	
३	शीतलचीनीका क्वाथ	६८–९॥	६८–९॥	
३	तगरका क्वाथ	६८–९॥	६८–९॥	श्यामतायुक्त
३	मकोयका रस	६८–९	६८–१०	
३	हरिद्रा क्वाथ	६८–१०	६८–१०॥	
३	चित्रक क्वाथ	६८–१०	६८–९	
३	त्रिकुटा क्वाथ	६९–९	६८–७॥	
३	सब प्रकार की			
	हरोंका क्वाथ	६८–८	६८–७॥	
३	बचका क्वाथ	६८–७॥	६८–९	अरुणतायुक्त
२	इन्द्रायन के			
	फलोंका रस	६८–९	६८–१०	
४	इमलीकेपत्रोंकारस	६८–१०	तो० ६९	
२	हरिद्रा क्वाथ	तो० ६९	६८–१०	

तादात आंच	चीज जिसमें पुट दिये गये	वजन जो रखा गया	वजन जो निकला	विशेष वार्ता
२	चीतेका क्वाथ	६८–१०॥	६८–१०॥	अरुणतायुक्त
३	फरफेंदुआका फल क्वाथ	६८–११॥	६९–२	
२	त्रिकुटा क्वाथ	६९–२	६९–१	
२	सब प्रकारकी हरोंका क्वाथ	६९–१	तों० ६९	
५	तुलसीपत्रका क्वाथ	तों० ६९	६८–११	सुरखी माइल
५	गोभीका रस	६८–११	६८–१०	
५	नीबूका रस	६८–१०	६८–८	
१	इमलीका पन्ना	६८–८	६८–८	
५	कालीदूबका रस	६८–८	६८–८	रंगत फीकी
५	जवासेका क्वाथ	६८–८	६८–१०	अरुणतायुक्त
५	पदमाखका क्वाथ	६८–१०	तों० ६९	अरुणतायुक्त
४	खट्टे अनारका रस	तों० ६९	६८–११	श्यामतायुक्त
५	ओंगेका रस	६८–११	६८–१०	उत्तम अरुणता
४	पानका रस	६८–१०	तों० ६९	
५	भंगका रस	तों० ६९	६८–११	अरुणतायुक्त
३	खालिस कोयले का रस	तों० मा० ६८–११	तों० मा० ६८–११	विष्णुक्रान्ता अर्थात् कोयल
३	ढाककी जड़की छालका क्वाथ	तों० ११ ६८–११	तों० ६९	
१	पट्टाघीग्वार	तों० ६९	६९–२	
२	ढाककीजड़की छालका क्वाथ	६९–२	६९–३	
२	पट्टाघीग्वार	६९–३	६९–५	
१	गोरखमुंडी का क्वाथ	६९–५	६९–४॥	
५	त्रिफला क्वाथ	६९–४॥	६९–८	रंगत स्याह
५	भांगरेका रस	६९–८	६९–६	
४	ब्राह्मी का रस	६९–६	६९–६	
५	आंवले का रस	६९–६	६९–६	
३	पेठे का रस	६९–६	६९–६॥	
१	ग्वारपट्ठे का रस	६९–६॥	६९–७	
६	मुंडीका रस	६९–७	६९–८॥	
४	बेल की जड़ की छालका काढ़ा	६९–८॥	६९–८	
१	घीग्वार के पट्ठे का रस	६९–८	६९–७	
२	बेल की जड़की छाल का क्वाथ	६९–७	६९–७	
५	वालछड़ का क्वाथ	६९–७	६९–६॥	
१	पातालगरुड़ी क्वाथ	६९–६॥	६९–७॥	
४	असगंध क्वाथ	६९–७॥	६९–७	
३	पृष्ठपर्णी	६९–७	६९–६	
४	सालपर्णी	६९–६	६९–७	
२	पट्ठा घीग्वार	६९–७	६९–८	
४	असगंध क्वाथ	६९–८	६९–७	
७	मेथी का क्वाथ	६९–७	६९–७	
८	गाजर का रस	६९–७	६९–६	

तादात आंच	चीज जिसमें पुट दिये गये	वजन जो रखा गया	वजन जो निकला	विशेष वार्ता
५	पीपल की जड़की छाल का क्वाथ	६९–६	६९–५	
९	गिलोय का रस	६९–५	६९–४	अबतक ३०४ आंच लग चुकी किन्तु अब तक चमक बाकी है
७	बड़ की जटा का क्वाथ	६९–४	तो० ६९	
७	कौंच के बीज की मीग का क्वाथ	तो० ६९	६८–११	
६	काढ़ा चिरवा उटंगन	६८–११	६९–१	
१	नारियल का पानी	६९–१	६९–१	
५	विदारीकंदका क्वाथ	६९–१	६९–३	
१	काढाचिरवा उटंगन	६९–३	६९–३	
३	तालमखाने का रस	६९–३	६९–२	तालमखाना भिगोकर ल्याब अलग नहीं निकल सकता
९	मूशली क्वाथ	६९–२	६९–४	
७	शंखाहूली का रस	६९–४	६९–४	
५	मूषाकर्णी का रस	६९–४	६९–५	
१	बला का रस	६९–५	६९–५॥	
२	पातालगरुड़ीका रस	६९–५	६९–५	
९	सहमल की जड़की छाल का क्वाथ	६९–५	६९–८	
७	छोटी खरैंटीका रस	६९–८	६९–८	
४	घीग्वारका रस	६९–८	६९–७॥	
१	१तो० सुहागा पानी में घोलकर	६९–७॥	६९–६	चूंकि इस वक्त तक ३७आंच लगचुकी और चमकअभी बाकी है इस वास्तेचमक दूर करनेके लिये सुहागेका पुटदिया लेकिन
२	घीग्वारका रस	६९–६	६९–८	
२	कंगनी का रस	६९–८	६९–८॥	
१	घीग्वारका रस	६९–८॥	६९–८	
६	कंघीका रस	६९–८	६९–७॥	अरुणतायुक्त
१	बड़ी खिरैंटीका रस	६९–७॥	६९–६।	बड़ी खिरैंटी अर्थात् जिसका पत्ताकुछ भारी होता है
४	आक का दूध	६९–६॥	तो० ६९	यद्यपि ३९१ आंच लग चुकी और अबतक चमकबाकी है इसलिये इस खय़ालसे कि आक थूहर और सेहुंडके अतिरिक्त और कोई जड़ी मारक नहीं है और आदि में यह ध्यान न था इसलिये अबके पुटोंमें कमी रहगई है फिर आगके पुट देना आरंभ कियागया बड़े संपुटमें आंच कम लगनेके ख्यालसे दो संपुट रखेगये मौसम गर्मी का था दो जगह संपुट रखनेसे आंच ज्यादा तेज होगई इस कारण कोठरी जिसमें कर्म होता था उसकी सोटोंमें उरांच पड़ गई और छत गिरकर १ संपुट टूटगया साबित संपुटमें ३५ तो० ४ मा० अभ्रक निकला और टूटे संपुटसे जो अच्छी और बड़ी डेलियां निकली और बाकी थोड़ा २ तीन शीशियोंमें नं० २ व ३व ४ डालकर राख मिली होनेके कारण अलग २ रखागया बाकी राखमें मिलजानेसे हाथ न लग सका
		तो० मा०	तो० मा०	
१	घीग्वारका रस	४३–१	४४–५	
३	आकका दूध	४४–५	४३–७	
२	चौलाईका रस–	४३–७	४३–७	–मारक समझकर चौलाईके पुट दिये
१	छोटे गोखरूका रस	४३–७	४३–५	
२	थूहर का दूध	४३–५	४३–५॥	
१	ककरोंदे का रस	४३–५॥	४३–५	
७	बड़े हरेगोखरू का रस	४३–५	४३–६	अरुणतायुक्त

३	गिलोयकारस	४३–६	४३–७	
७	कंघी छोटी जिसका खुरखुरा पत्ता होता है	४३–७	४५–६	रंगत लाल
७	बेलखिरैंटी का रस	४५–६	तो० ४५	रंगत लाल महापुट दिये गये निश्चन्द करनेकी कांक्षासे यह सातों पुट महापुटकी आंच के दिये गये लेकिन अकसर तीक्ष्णाग्निके लगने संपुट और अभ्रकको हानि पंहुचनेके कारण आगे से गजपुट ही देना मुनासिब समझा–
७	ककरोंदे का रस	तोले ४५	४५–१०	
८	शतावर का क्वाथ	४५–१०	४४–८	
१	शिवलिंगीके पंचागका रस	४४–८	४४–७	
३	काढ़ा शतावर	४४–७	४३–६	
२	घीग्वार	४३–६	४४–२	रंगत निहायत लाल
२	लहसनका रस	४४–२	४४–६	रंगत काली तोलमें कुछ गड़बड़ होगई
२	प्याज का रस	४४–६	४३–१०	
३	आंवले का रस	४३–१०	४३–७।।	
२	भांगरे का रस	४३–७।।	४३–७।।	
४	भांग का क्वाथ	४३–७।।	४४–३	
१	विदारीकंदका रस	४४–३	४३–१०	
२	सालिब मिश्रीरस	४४–१०	४३–१०	
५	भंग का क्वाथ	४३–१०	४४–१०	
१	किसमिस का रस	४४–१०	४२–६	
२	कंग का क्वाथ	४२–६	४३–३	
४७४	जोड़ आंच	तैयार हो गया		

स्वर्णभस्म का नकशा

तादात आंच	नामऔषधिजिस्में घोटा गया	तोल कंडा	वजन जो रखा गया	वजन जो निकला	शकल जो निकली	विशेष वार्ता
१	गुलाब का अर्क	५ सेर	२ तो० वर्क		खस्ता	गुलाबके फूलों की लुगदीमें रखकर संपुट किया गया था इसवास्ते लुगदीकी राख मुश्किलसे अलग हुईकुछ फूंकसे उड़ाई गई कुछ पानीसे धोदीगई वजनी होनेसे सोनेकी राख नीचे बैठ गई थी–
२	गुलाब का अरक	५ सेर				
३	गुलेअव्वासकीजड़ का रस	१० सेर			कठिन	
४	किसी औषधिमें न घोटा गया	१० सेर			अति कठिन	नोट–ऐसा समझकि आंच कमलगी बिना किसी औषधिमें घोटे फिरआंच दीगई तो आंचपर और कठिनता और बढ़ गई और कम आंच लगनेका ख्याल गलत रहा।
५	गुलावकाअर्क	५सेर			फुसफुसी	
६	गुलाबकाअर्क	६ सेर	२तो०वरकऔर मिला दियेगये		थोड़ीफुसफुसी	
७	गुलेअव्वासकी जड़ का रस	६ सेर	३।।तो०	तो०३।।।	थोड़ा कठिन	दोदिनघोटागया दो दिन सुखायागया
८	गुलावकेअर्कमेंभिगोये हुये गुलाबकेफूलोंकारस	६सेर				३दिनघोटागया और १ दिन खुश्क कियागया
९	नीमकीजड़की छालकारस	६ सेर	तो०३।।–०	तो०३।।	थोड़ाकठिन औरस्याहीयुक्त	दो दिन खूब घोटागया फिर
१०	गुलाबकाअर्क	६सेर	तो० ३।।	तो०३।।	अतिफुसफुसी	
११	कचनारकीछाल क्वाथ	६ सेर	तो०३।।	तो०३।।।	थोड़ाकठिन श्यामतायुक्त	ऽ।। सेर क्वाथमें कुछदिन घोटकर खूब सुखाकर आंच दी गई–
१२	गुलाबकाअर्क	६सेर	तो०३।।।	तो०३।।	श्यामताजातीरही	
१३	”	”	”			

१४	गुलाबकेअर्कमें भिगोयेगुलाबके फूलोंका रस	६ सेर	''	''	''	
१५	''	६ सेर	''	''	''	
१६	तुलसीकारसऔर गुलाबका अरक	६ सेर	''	तो०३।।		कुछ दिन घोटा गया–
१७	गुलेअव्वासकीजड़ कारस१०तो०नीम कीजड़कारस१०तो०	८ सेर			श्यामतायुक्त	
१८	कचनारकीजड का क्वाथ	९ सेर	३।।–)		किंचित्श्यामता	
१९	तुलसीकारस	१०सेर	तो०३।।।		श्यामताजातीरही१०सेरसे कम आंचदेना अनुभवसे ठीकनहीं मालूमहुआ–	
२०	गुलाबकेफूलों का रस	१०सेर	३।।–)		पीलीमिट्टी का रंग	
२१	''	१०सेर	३।।–)		रंगतउत्तमगुलाबी	
२२	''	१०सेर	३।।–)			
२३	''	१०सेर	३।।–)			
२४	गुलाबकेमाजी फूलोंकारस	१०सेर				
२५	''	१०सेर	३।।)			
२६	गुलाबकेअर्ककेयोग सेनिकलागुलाबके फूलोंकारस	१०सेर	तो०३।।	३।।–)	अरुणतायुक्त	५–७दिन लगातार घोटकर सुखायागया परन्तु गुलाबकेफूलकेयोग होनेसे ठीक नसूख सका बल्कि चीठसारह गया लाचार आंद देदी गई–
२७	गुलाबकाअरक	१०सेर	३।।–)	३।।–)	फुसफुसीअरुणतायुक्त खतम	

अनुभव

(१) गुलाब के अर्क में घोटने से फुसफुसी भस्म निकलती थी, गुलाब के फूलों के रस में घोटने से एक प्रकार की चिपक पैदा होती थी और आंच के बाद थोड़ी कठिनता रहती थी गुलेअव्वास की जड़ के रस में घोटने से भी चिपक पैदा होती थीं और अधिक कठिनता के साथ निकलता था नींबू के रस में थोड़ी कठिनता रहती थी और गुलाब के अर्क और तुलसी के रस में फुसफुसी रहती थी।

(२) आंच १० सेर से कम देना ठीक नहीं इसके कम देने से स्याही बाकी रहती थी १० सेर आंच देने से जड़ी का अंश जलकर उत्तम रंग का निकलता है।

(३) यह भस्म यूनानी विधि से की गई जो गुलदिस्ते तिजावर में दी है और अखबार अलकीमियां में दो बार जिकर आया है यूनानी इस भस्म को पुनः जीवित होने वाली मानते हैं और मेरी समझ में तौ यह भस्म नहीं बल्कि जीवित ही है क्योंकि निर्मल रस में खरल करते समय अधिक पतला कर देनें से सोने के रंग के परिमाणु खरल की तह में २५ आंच तक नजर आते रहे इस भस्म के अनुभव से यह बात अवश्य सिद्ध हो गई कि पूरी अशर्फी या रुपये की भस्म जड़ी से एक आंच में कदापि नहीं हो सकता।

स्वर्णभस्म के पुट के निमित्त तुलायंत्र के १४ वें अनुभव से निकले पारद की विशेषशुद्धि

"गृहधूमेष्टिकाचूर्णं तथा दधिगुडान्वितम् । लवणासुरिसंयुक्तं क्षिप्त्वा सूतं विमर्दयेत् ।। षोडशांशं तु तद्द्रव्यं सूतमानान्नियोजयेत् ।। सूतं क्षिप्त्वा समं तेन दिनानि त्रीणि मर्दयेत् ।।"

अर्थ–घर का धूंआ, ईंट का चूर्ण, दही, गुड, सेंधा नमक, राई, ये औषधियें डालकर पारे को तीन दिन पर्यंत खरल में मर्दन करे और ये औषधि में पारे से ६ गुनी डाले पीछे नीचे लिखी क्रियाए करे।

ता० २४ को १३ तोले ७ माशे ४ रत्ती पारद को (जिसमें कुछ कैन का साधारण शुद्ध था और कुछ चक्रवृती औषधालय से आया हिंगुलोत्थ या और जिस पर तुलायंत्र के १४ अनुभव हो चुके थे) मृदु तप्त खल्व में डाल १ तोला ईटा खोया, १ तोला राई, १ तोला लवण, १ तोला गुड, (जो दही में घोल डाला गया था) और थोड़ा २ दही डाल ८ बजे से निरंतर मर्दन करना आरम्भ किया। दवा के गाढे हो जाने पर थोड़ा २ दहीं और डालते गये जब तक दवा पतली रही तब तक पारद पृथक् रहा जब दवा गाढी और खुश्क होने लगी पारद दवा में मिलने लगा। शाम के ७ बजे तक ११ घंटे घुटाई हो चुकने और ११ छ० दही पड़ चुकने के बाद घुटाई बंद कर खरल का ज्यों का त्यों उठा रख दिया।

ता० २५ को जो पारद दवा से पृथक् था उसे निकाल लिया जो तोल में ९ तोले १० माशे हुआ। बाकी पारे को जिसके दवा में बड़े २ रवे दीखते थे उसी प्रकार मृदु तप्त खल्व में ७ बजे से घोटना आरम्भ किया। ११ बजे तक दवा और खुश्क हो गई और चिकनापन आ गया जिससे पारा और मिल गया। अतएव घुटाई बंद कर गर्म जल से सब दवा को धो पारद को निकाला तो २ तोले ८ माशे पारा और निकला अर्थात् सब १२ तोले ६ माशे निकल आया बाकी १ तोले १।। माशे दवा में मिला रह गया। उस पारद मिश्रित दवा का पानी नितार धूप में सुखा दिया। सूखजाने पर ५ तोले ५ माशे चूर्ण हाथ आया किन्तु पारद कुछ भी पृथक् न हुआ। पातन से कुछ पारद निकले तो निकले।

ता० १८/८ को उक्त ५ तो० ५ माशे चूर्ण को जौनपुरी छोटे डौरू में भर भस्ममुद्रा से संधि बंध कर सुखा दिया।

ता० १९ को ७ बजे से ७ बजे सांयकाल तक १२ घंटे मध्यमाग्नि दी गई ऊपर भीगा कपड़ा डाला गया, बाद को जैसे का तैसा रखा छोड़ दिया।

ता० २० को खोला तो पारद ऊपर के डौरू में मौजूद था नीचे की दवा जलकर संगस सी हो गई थी, पारद ६ माशे ४ रत्ती निकला। राख २।। तोले रह गई।

सम्मति–उपरोक्त श्लोक में पारद से षोडशांश दधि लिखा है किन्तु इस बार हमने ११ छटांक दही डाला जिससे दवा पतली कढीसी घुटती रही। इतना दही डालना ठीक नहीं हुआ क्योंकि एक तो जब तक दवा पतली रही पारद दवा में कम मिला और जब कड़ी हुई तब अधिक मिला। दूसरी बात यह कि अधिक दही पड़ने से चिकनाई का अधिक अंश आ गया जो मर्दन के लिये किसी तरह लाभदाई नहीं समझा जा सकता। इससे ज्ञात होता है कि, शास्त्रकार का आशय षोडशांश दही डालने से केवल थोड़ी आर्द्रता उत्पन्न करने का है। आगे से इस प्रकार के मर्दन में और वस्तुओं के समान ही दही डाला जाय किन्तु इस श्लोक में, 'सूतं क्षिप्त्वा समं तेन' के पाठ से ऐसा अर्थ निकलता है कि मर्दन की सब चीजों के समान पारद लेना और मर्दन की चीजें सब ६ है अतएव षोडशांश पाठ की जगह षष्ठांश पाठ रखा जाना चाहिये और सब चीजें पारे से छठा छठा हिस्सा लेनी चाहिये।

छठा हिस्सा ही लेना चाहिये इसका समाधान इस बार के अनुभव से भी इस प्रकार होता है कि अबकी बार दही को छोड़ ४ तोले दवा थी और उसमें ४ तोले ही पारा लीन हुआ अतएव उत्तम मर्दन के लिये पारे के समान ही औषधी होनी चाहिये कि जिससे समस्त पारा लीनप्राय हो जावे।

स्वर्णभस्म

(यूनानी विधि से बनाई हुई उक्त भस्म को कच्चा समझ निम्नलिखित प्रकार से पुनः पुट दिये गये)

पहला पुट

ता० २७/७/०८ को २ तोले उपरोक्त स्वर्णभस्म और ६ माशे उपरोक्त विधि से शुद्ध पारद दोनों को शीत लोह खल्व में डाल थोड़ा २ रस कांटेदार चौलाई का डाल ५ बजे से शाम से घोटना आरम्भ किया। प्रथम थोड़ी थोड़ी भस्म डाली तो पारा न मिला जब करीब १ तोले के भस्म पड़ गई तब पारा मिल गया १/२ घंटे बाद बाकी भस्म को भी डाल दिया और करीब १ घंटे और घोटा ६।। बजे खरल को उठा ज्यों का त्यों रख दिया। आज १।। घंटे घुटाई हुई और करीब १ तो० चौलाई का रस पड़ा।

ता० २९ को ७ बजे से ११ बजे तक और २।। से ७ तक ८।। घंटे घुटाई हुई। २ तोले रस पड़ा।

ता० ३० को ६।। से १०।। तक २।। से ७ तक ८।। घंटे घुटाई हुई १।। तोले रस पड़ा।

ता० ३१ को ६।। से ११ तक और २।। से ५ तक मृदु तप्तखल्व में ७ घंटे घुटाई हुई ५।। तोले रस पड़ा अर्थात् कुल १० तोले रस पड़ चुकने पर दवा की टिकिया बना सुखा दी सूख जाने पर–

ता० ६ को तोला तो ३ तोले २ माशे हुई उसको गेरू से रंग दीवलों के संपुट में रख कपरौटी कर सुखा २।। सेर कंडों की आंच गर्त में दे दी।

ता० ७ को निकाल रख लिया।

ता० ९ को खोला तो टिकिया की रंगत ऊपर से कत्थई रंग की थी किन्तु तोड़ने पर अन्दर से काली थी कारण यह कि टिकिया मोटी थी इस वास्ते टिकिया के ऊपर की अपेक्षा अन्दर अग्नि का प्रभाव कम पड़ा और कुछ टिकिया गीली भी रह गई थी, तोल में इस समय २ तोले २ माशे ३ रत्ती थी।

दूसरा पुट

ता० १०/८/०८ को उक्त टिकिया को लोहे के शीत खल्व में डाल बारीक पीस उसमें उक्त विधि से शुद्ध ६ माशे पारद डाल दोनों को ८ बजे से सूखा घोटना आरम्भ किया। पहले पारद दवा से पृथक् रहा १ घंटे घोटने से भस्म में मिल गया दोनों चीजों के मिल जाने पर फिर चौलाई का रस डाल घोटना आरम्भ किया। ११ बजे तक ३ घंटे घुटाई हुई १ तो० रस पड़ा।

ता० ११ को १ घंटे शीत खल्व में और ४ घंटे मृदु तप्त खल्व में कुल ५ घंटे घुटाई हुई+३ तोले रस पड़ा अर्थात् कुल ४ तोले रस पड़ चुकने के बाद गाढी हो जाने पर पहली बार से बड़ी टिकिया बना सुखा दी।

ता० १९ को सूखी टिकिया को तोला तो २ तोले ११ माशे थी उसको छोटी चिपियों के संपुट में रख कपरौटी कर सुखा २।। सेर की आंच गर्त में दे दी।

ता० २० को खोला तो टिकिया का रंग कत्थई था, तोड कर देखा तो अन्दर भी वैसी ही रंगत थी अर्थात् इस बार अग्नि ठीक लगी टिकिया का रंग अन्दर बाहर एक सा रहा तोल में २ तोले ५ मा० रही।

तीसरा पुट

ता० २१/८/०८ को उक्त २ तोले ५ माशे की टिकियों को शीत लोह खल्व में पीस उक्त शुद्ध ६ माशे पारद डाल ७ बजे से घोटना आरंभ किया पहले पारद दवा से पृथक् रहा १/२ घंटे घोटने से दवा में मिला। पारद के मिल जाने पर थोड़ा २ रस चौलाई डाल घोटते रहे शाम के ६ बजे से घुटाई बन्द कर दी। आज ६ घंटे घुटाई हुई ३ तोले रस पड़ा।

ता० २२ को ४ घंटे घुटाई हुई १ तोले रस पड़ा बाद को टिकिया बना शीशे के बकस में सुखाने को रख दी।

ता० ३१ को टिकिया को सूख जाने पर तोला तो ३ तोले १।। माशे हुई। बाद को उन्हीं छोटी चिपियों के संपुट में रख कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १/९ को ꣸२।।कंडों की आंच गर्त में दे दी गई।

ता० २ को निकाला तो टिकिया में रंगत इस बार भी और भी उत्तम कत्थई रंग की ऊपर भीतर एकसी निकलीं तोल में २ तो० ६ मा० २ र० हुई।

चौथा पुट

ता० २/९/०८ को उक्त २ तोले ६ माशे रत्ती की टिकियाको शीत लोह खल्व में पीस उक्त शुद्ध ६ माशे पारद डाल घोटना आरंभ किया १५ वा० २० मिनट घोटने से पारद दवा में मिला दोनों के मिल जाने पर चौलाई का रस डाल घोटते रहे आज ३ घंटे घुटाई हुई १ तो० रस पड़ा।

ता० ३ को ७।। घंटे घुटाई हुई २।। तोले रस पड़ा।

ता० ४ को ५ घंटे घुटाई हुई ६ माशे रस पडा कुल ४ तोले रस पड़ चुकने पर घुटाई बंद कर खरल को रख दिया। अवकाश न मिलने से टिकियां न बन सकीं।

ता० ६ को देखा तो दवा खुश्क हो गई थी अतएव उसमें करीब ६ माशे के चौलाई का रस और डाल टिकियां बना सुखा दी।

ता० १० को सूखी टिकिया को तोला तो ३ तोले ७ माशे हुई इसे उन्हीं चिपियों के संपुट में बंदकर कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० ११ को २।। सेर आरने कंडों की आंच गर्त में दे दी गई।

ता० १२ को निकाला तो टिकिया की रंगत ऊपर भीतर एकसी निकली तोल में २ तो० ९ मा० ६ रत्ती हुई किन्तु टिकिया कड़ी निकलती है खास्ता नहीं।

पांचवां पुट

ता० १६/९/०८ को उक्त २ तोले ९ मा० ६ रत्ती की टिकियां को पत्थर के खरल में पीस ६ माशे पारा डाल घोटा थोड़ी देर में पारा मिल जाने पर कांटेदार चौलाई का रस डाल घोटा आज १–१/२ डेढ घण्टे घुटाई हुई।

ता० १७ को फिर चौलाई का रस डाल घोटते रहे ४ तोले रस पड़ चुकने और गाढा होने पर शाम को टिकिया बना ली आज ६ घंटे घुटाई हुई।

ता० १८ को और १९ के ३ बजे तक सूखती रही।

ता० १९ के ३ बजे तोला तो ३ तोले ८ माशे हुई संपुट में बंद कर सुखा दिया।

ता० २० को ९ बजे दिन के गढे में २।। सेर आंच दे दी शाम को निकाल लिया।

ता० २१ को खोल तोला तो २ तोले १० माशे हुई अबकी बार तोल सिर्फ २ रत्ती बढ़ी कुछ पत्थर को खरल में पहली ही दफे घुटी थी उसमें लगी रह गई होगी फिर भी तोल उतनी न बढ़ी जितनी लोहे के खरल में बढ़ती थी इससे सिद्ध हुआ कि लोहे के खल्व से का ही रूप में लोहा स्वर्ण में मिल जाता था और ४ बार में लगभग ६ माशे लोहा मिल गया होगा। अबकी बार टिकिया कुछ फूल भी गई थी जिसके कारण अन्दर परत से दिखलाई पडे।

छठा पुट

ता० २२/९/०८ को ४ बजे उक्त २ तोले १० माशे की टिकिया को खल्व में डाल पीसा तो टिकिया पहले से नरम पिसी १५ मिनट पीस ६ माशे उपरोक्त पारा डाल घोटा तो ठीक २५ मिनट में पूरा अदृश्य हो गया फिर चौलाई का रस डाल घंटे भर और घोटा।

ता० २३ को रस डाल घोटा ६ घण्टे ४ तोले रस पड़ चुकने पर।

ता० २५ को सबेर टिकियां बना सुखा दी।

ता० २६ की शाम को सूख जाने पर तोला तो ३ तोले ९ माशे हुई संपुट कर दिया।

ता० २७ को १० बजे २।। सेर की आंच दे दी।

ता० २८ को खोला तो २ तोले ११ माशे हुई १ माशे बढ़ी।

सातवां पुट

ता० २८/९/०८ को ८ बजे उक्त तोले ११ माशे की टिकियां को खल्व में डाल पीस ६ माशे उपरोक्त पारा डाल १० मिनट घोटा तो करीब आधा पारा दवा में मिल गयी फिर चौलाई का रस डाल ५ घंटे और घुटाई की २ तोले रस पड़ा।

ता० २९ को रस डाल ७ घंटे घुटाई की १।। तोले रस पड़ा।

ता० ३० को ३ माशे रस डाल १ घंटे घोट टिकिया बना सुखा दी सब ३।।। तोले रस पड़ा और १३ घंटे घुटाई हुई।

ता० १ व २/१० के दो पहर तक सूखती रही ३ बजे सूखी टिकिया को तोला तो ३ तोले ९ माशे हुई बाद को संपुट कर दिया।

ता० ३ के ११ बजे २।। सेर की आंच दे ७ बजे संपुट निकाल लिया।

ता० ४ को खोल तोला तो २ तोले ११ माशे ४ रत्ती हुई ४ रत्ती बढ़ी।

आठवाँ पुट

ता० ७/१०/०८ को उक्त २ तोले ११ माशे ४ रत्ती की टिकिया को खल्व में पीस बारीक हो जाने पर ६ माशे उपरोक्त पारा डाल थोड़ी देर घोटा बाद को चौलाई का रस डाल ९।। बजे से घोटना आरम्भ किया ११ बजे खरल को शीशे के बकस में रख धूप में रख दिया २।। बजे तक उसका पहला पड़ा करीब २ तोले के सब रस सूख गया बाद को फिर रस डाल ५।। बजे तक घुटाई और की अर्थात् आज ४।। घंटे घुटाई हुई ४ तोले रस पड़ा पतला रहने के कारण टिकिया न बन सकी।

ता० ८ को देखा तो दवा खुश्क हो गई थी अतएव तोले रस और डाल ३ घंटे टिकिया बना सुखा दी सब ५ तोले रस पड़ा ७।। घंटे घुटाई हुई।

ता० १० तक सूखती रही सूख जाने पर तोला तो ३ तो० ८ मा० ६ रत्ती हुई संपुट कर धूप में सुखा दिया।

ता० ११ को १० बजे २।। सेर की आंच दे ६ बजे संपुट को निकाल लिया।

ता० १२ को टिकिया को निकाल तोड देखा तो अब इसमें किसी प्रकार की चमक नहीं दीखती तोल में ३ तोले हुई ४ रत्ती बढ़ी।

नववां पुट

ता० १२/१०/०८ को उक्त ३ तोले को खल्व मे पीस उपरोक ६ माशे पारा डाल घोट श्यामा तुलसीका रस डाल ९ बजे से घोटना आरभ किया शाम तक ५ घंटे घुटाई हुई ३ तोले रस पड़ा।

ता० १३ को १ तोले रस डाल ४।। घंटे घोट ४ बजे टिकिया बना सुखा दी।

ता० १४–१५ को सूखती रही सूख जाने पर तोला तो ३ तो० ८ मा० ४ रत्ती हुई।

ता० १६ को कपरौटी कर सुखा दिया।

ता० १७ को खोल टिकिया को तोड़ देखा तो टिकिया के गर्भ में कुछ श्यामता थी सूर्य्य के सम्मुख देखने से उसमें कहीं २ स्वर्ण के परमाणु स्पष्ट चमकते थे तोल में ३ तोले ४ रत्ती हुई ४ रत्ती बढ़ी।

दशवां पुट

ता० १८/१०/०८ को उक्त ३ तोले ४ रत्ती को खल्व में पीस उपरोक्त ६ माशे पारा डाल थोडी देर घोट श्यामा तुलसी का रस डाल ३ बजे से घोटना आरम्भ किया शाम तक २।। घंटे घुटाई हुई २ तोले रस पड़ा।

ता० १९ को रस डाल ५ घंटे घुटाई की २ तोले रस पड़ा।

ता० २० को दवा में थोड़ी खुश्की आ गई अत एव ६ माशे रस और डाल टिकिया बना सुखा दी सब ४।। तोले रस पड़ा ७।। घंटे घुटाई हुई।

ता० २१/२२ को सूखनेपर ३ तो० १० माशे ४ रत्ती हुई।

ता० २३ को और सूखने पर ३ तोले १० माशे २ रत्ती रह गई सम्पुट कर दिया गया।

ता० २४ को ऽ२।। सेर कण्डों की आंच दे दी।

ता० २५ को निकाल देखा तो टिकियां की रंगत बहुत उत्तम ऊपर नीचे एक सी अरुण निकली तोल में ३ तोले १ माशे हुई।

नकशा स्वर्णभस्म पुट २८/७/०८

नं०पुट	तारीख	तोलस्वर्णभस्म	तोलपारद	नामजड़ी	तोलरस	खल्वप्रकार	समय घुटाई शीतखल्व	समय घुटाई शीतखल्व	तोलटिकिया सूखी	पुटकी अग्नि का प्रमाण	तोल पुटान्तर	तोल की अधिकता	विशेष वार्ता
		तो०मा०र०			तोला				तो०मा०र०		तो०मा०र०	मा०र०	
१	[illegible]	२ तो०	६ मा०	चौलाई	१० तो०	लोहखल्व	१८॥घंटे	७ घंटे	३–२	ऽ२॥ सेर	२–२–३	२–३	टिकिया भीतर कुछ काली रह गई कारण यह कि पूरी तौरपर सूखी न थी।
२	१०/८	२–२–३	६ मा०	चौलाई	४ तो०	लोहखल्व	४ घंटे	४ घंटे	२–११	ऽ२॥सेर	२–५–०	२–५	टिकियाकी रंगत उत्तम ऊपर भीतर एकसी
३	२१/८	२–५	६ मा०	चौलाई	४ तो०	लोहखल्व	१० घंटे	–	३–१–४	ऽ२॥ सेर	२–६–२	१–२	इस बार टिकिया की रंगत और भी उत्तम रही
४	२/९	२–६–२	६ मा०	चौलाई	४॥तो०	लोहखल्व	१५॥घंटे	–	३–७	ऽ२॥ सेर	२–९–६	३–४	इस बार सूखी टिकियाकी तोल अधिक बैठी शंकास्पद अवश्य लोहखल्वमें लोहमिलतागया
५	१६/९	२–९–६	६ मा०	चौलाई	४ तो०	पाषाणखल्व	७॥घंटे	–	३–८	ऽ२॥ सेर	२–१०	–२र०	टिकिया खस्ता (फुसफुसी)
६	२२/९	२–१०	६ मा०	चौलाई	४ तो०	पाषाणखल्व	१०॥घंटे	–	३–९	ऽ२॥ सेर	२–११	१० मा०	
७	२८/९	२–११	६ मा०	चौलाई	३॥तो०	पाषाणखल्व	१३ घंटे	–	३–९	ऽ२॥ सेर	२–११–४	४ र०	
८	७/१०	२–११–४	६मा०	चौलाई ८ पुट	५ तो०	पाषाणखल्व	७॥घंटे	–	३–८–६	ऽ२॥ सेर	३ तोला	४ रत्ती	अब इस टिकिया को तोड़कर देखनेसे किसी प्रकारकी चमक नहीं मालूम होती।
९	१२/१०	३ तोले	६ मा०	तुलसी	४ तो०	पाषाणखल्व	९॥ घंटे	–	३–८–४	ऽ२॥ सेर	३–०–४	४ रत्ती	आज देखा तो चमकदार जर्रे स्वर्ण के स्पष्ट दिखते थे।
१०	१८/१०	तो० ३	६ मा०	तुलसी	४॥तो०	पाषाणखल्व	७॥घंटे	–	३–१०–२	ऽ२॥ सेर	३–१	४ रत्ती	टिकियाकी रंगत बहुत उत्तम रही।
११	२६/१०	३तो१मा	६मा०	तुलसी	४॥तो०	पाषाणखल्व	९॥घंटे	–	तो० ४	ऽ२॥ सेर	३–१–६	६ रत्ती	
		तो०मा०र०			तोले				तो०मा०र०		तो०मा०र०	रत्ती	
१२	१/११	३–१–६	६ मा०	तुलसी	४ तो०	पाषाणखल्व	६॥घंटे	–	३–११–२	ऽ२॥ सेर	३–२–३	५ रत्ती	
१३	७/११	३–२–३	६ मा०	क०क्वाथ	५तो०	पाषाणखल्व	१०॥घंटे	–	३–१०	ऽ२॥ सेर	३–२–२ (६र० कमी)		
१४	१३/११	३–२–२	६ मा०	"	३ तो०	"	५ घंटे	–	३–११	ऽ२॥ सेर	३–१–५ (५र० कमी)		
१५	१९/११	३–१–५	६ मा०	"	४॥तो०	"	–	–	३–१०–४	ऽ२॥ सेर	३–१–६	१ रत्ती	
१६	२५/११	३–१–६	६ मा०	"	५ तो०	"	७ घंटे	–	–	ऽ२॥ सेर	३–२	२ रत्ती	अबभी धूपमें देखनेसे टिकियाके नीचे भाग में स्वर्ण के रवे दीखते थे।

३७

नकशा स्वर्णभस्म पुट २८/७/०८

नं०पुट	तारीख	तोलस्वर्णभस्म	तोलपारद	नामजड़ी	तोलरस	खल्वप्रकार	समय घुटाई शीतखल्व	समय घुटाई शीवखल्व	तोलटिकिया सूखी	पुटकी अग्नि प्रमाण	तोल पुटान्तर	तोल की अधिकता	विशेष वार्ता
१७	१/१२	३–२	६ मा०	तुलसी (५ पुट)	४ तो०	"	७घंटे	–	४–३	ऽ२।। सेर	३–२–५	५ रत्ती	अबकी बार घुटनेके मध्यमें जो रात को रखे रहनेपर सवेरे देखा तो मूसली पर जो दवा सूखगई थी उसमें क्रिस्टल बनगये थे और टिकियाके सूखनेपर धूपमें देखनेसे कांचकेसे कण चमकते थे जिससे जानपड़ता था कि अवइस सोनेका सालबन चला।
१८	८/१२	३–२–५	६ मा०	क०क्वाथ	६ तो०	"	–	–	४–१	ऽ२।। सेर	३–२–३ (२२० कमी)		
१९	१६/१२	३–२–३	६ मा०	(६पुट)	८ तो०	"	१।।घंटे	–	४–०–७				
२०	२२/१२	३–२–३	६ मा०	कचनार तुलसी	१०–५	"	१७ घंटे	–	४–७–७	ऽ२।। सेर ऽ५ सेर	३–२–३ ३–३	१–५	टिकियाकी रंगत अबकी बार कत्थई निकली ५। १को सूखी टिकियाको धूपमें देखा तोउसमें बहुत बारीक परमाणु काचकेसे क्या यह कोई साल्ट है
२१	१/१/०९	३–३	–	अर्कगुलाब	१।।तो०	"	८ घंटे	–	३–३–४	ऽ२ सेर	३–३		टिकिया की रंगत पुटान्तरसे अच्छी निकली।

सम्मति–मेरे विचार में अब ये स्वर्णभस्म ठीक बन गई सोने के कण अब इसमें चमकते दिखाई नहीं देते किसी रस की भावना के अनन्तर सूखने पर सफेद चमकदार परमाणु चमकने लगते हैं जो किसी प्रकार का साल्ट हो सकता है रंगत भी अच्छी है जिसका कत्थई कह सकते हैं।

तोल ३ तो० ३ मा० है जिसमें २ तो० स्वर्ण ६ मा० कान्तीसार जो खल्व से मिल गया ९ मा० जडी और पारद का अंश समझना चाहिये।

अभ्रपारद पातन से अवशेष अभ्रभस्म को गजपुट की आंच

ता० १३/२/०९ को अभ्रपारद पातन से अवशेष भस्म ३५।। तोले (जिसमें दूसरे और तीसरे पातन की अवशेष १६।। तोल और चौथे और पांचवें पातन की ११ तोले और छठे और सातवें पातन की ९ तोले (जो कांजी में घोट एक बार गजपुट की आंच देने से ८ तोले रह गई) भस्म थी को श्वेत अर्कपत्र के ८ छटांक स्वरस से लोह खल्व में घोट टिकिया बना सुखा दी।

ता० २७ को सूखी टिकिया को तोला तो ४० तोले हुई बादको मुलतानी सने मोटे कपड़े पर आक के पत्ते बिछा पत्र सहित उस कपड़े को टिकिया पर लपेट सुखा दिया।

ता० २८ को उस पर दो रुपये बराबर मोटा मिट्टी का एक लेप और भी कर सुखा दिया।

ता० ३/३ को गजपुट की आंच दे दी गई।

ता० ४ को निकाला तो ऊपर से और भीतर से उत्तम कत्थई रंग की निकली बीच में बहुत थोड़े भाग में खाकी रंग था तोल में टिकिया ३२ तोले थी।

सम्मति–यह क्रिया उत्तम रही आगे से इसी प्रकार पुट दिये जायँ, किन्तु गजपुट का प्रमाण कुछ बढ़ा दिया जाय।

सर्वधातुमारक उद्योग

ता० ५/१२/०७ को २ तोले ९।। माशे मीठे तेलिये को सरोते से कतरकर सुपारियों के से टुकड़े कर कांच के गिलास में १ छटंक सिरके में (जिसमें आधी छटांक सेर के हिसाब से बढिया चाँवल डाल औटा छान ४० दिन तक धूप में रखा था) भिगो रख दिया, ये हररोज धूप में रखा जाता है और जब सिरका कम होता है तब और डाल दिया जाता है, जिसका नकशा नीचे दिया गया है।

नक्शा

तारीख	तोल सिरका	विशेष वार्ता
५/१२/०७	५ तोले	
६/१२	२ तो०६माशे	
९/१२	१ तो०५माशे	
११/१२	२ तो०६माशे	
१५/१२	२ तो०६मा०	
१८/१२	२ तो०६मा०	
२३/१२	२ तो०६मा०	
२६/१२	२ तो०६मा०	
३१/१२	२ तो०६मा०	अब यह गाढा कढीसा होगया है और शीत अधिक होनेसे सूखता नहीं।
३/१	३ तो०७मा०	
१९/१	५ तो०	
	जोड ६।।छटांक	

ता० १५ जनवरी तक ४० दिन हो गये, एक सप्ताह से बादल रहने के कारण यह सूखता नहीं है धूप निकलने पर निरन्तर धूप में रखा जावें।

ता० १६ अभीतक खूब तर गाढा है आज उक्त तेलिये के दो चार टुकड़ों को खरल में डाल पीसा तो उनमें कुछ सख्ती और अन्दरसे कुछ सफेदी मालूम हुई अतएव उसमें कुछ कच्चापन समझ सबको खरल में पीस १ छ० सिरका उसमें और डाल उसी गिलास में भर धूप में रखना आरम्भ किया।

ता० १७ को इसके योग से चांदी को अग्नि दी गई (देखो रजतभस्म) किन्तु कोई नतीजा न निकला।

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्लकृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां स्वानुभूतधातुभस्मवर्णनं नामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ।।५९।।

अवशिष्टाऽध्यायः ६०

अङ्गरेजी क्रियाओं द्वारा पारद की शुद्धि के अनुभव

उस पारे पर जो सरवंदकंन का (बाजारी शुद्ध) था और ३ मर्दन की क्रिया से साधारण प्रकार से शुद्ध भी हो चुका था यह पारा यद्यपि चीनी की रकाबी में चक्कर देने से पूँछ न छोडता था किन्तु कागज की रकाबी में चक्कर देने से खूब पूँछ छोड़ता था जो रंग में मैली होती थी।

शोरे के तेजाब से शुद्धि नं० १

ता० १८/१/०८ को १/२ छटांक शोरे के तेजाब के हलके सोल्यूशन में (जिसमें १/१० तेजाब और १/१० पानी था) १२ तोले के करीब पारा डाल रख दिया और कभी कभी हिलाते रहे ता० २० तक ऐसा ही किया।

ता० २० के २ बजे पारे को निकाल धो चक्कर दे देखा, तो खासी पूँछ छोड़ता था दुबारा फिर १/२ छटांक सोल्यूशन में (जिसमें १/४ शोरे के तेजाब और ३/४ पानी था) डाल रख दिया और कभी कभी हिलाते रहे।

ता० २१ के २ बजे देखा तो सोल्यूशन थोड़ा सफेद हो गया था पारे को निकाल धो चक्कर दे देखा तो खासी पूँछ छोड़ता था। तोला गया तो ५ रत्ती कम ११–१/२ साढे ग्यारह तोले हुआ। बाद को फिर वैसे ही नये सोल्यूशन में डाल रख दिया।

ता० २२ को ४ घंटे हिलाया २ बजे पारे को तेजाब से निकाल धो तोला १० तोले १० माशे २ रत्ती हुआ। (७ मा० १ रत्ती घटा)

सम्मति–अब इस पारे को भलीभांति धो सुखा छान चीनी की रकाबी और कागज की रकाबी में चक्कर दे देखा तो बहुत ज्यादा और मोटी मोटी पूंछ छोडता था जिससे सिद्ध हुआ कि यह क्रिया शुद्धि की ठीक नहीं, पूँछ छोडना भी कम नहीं हुआ और पारद क्षय भी हो गया।

फेरिक क्लोराइड से शुद्धि नं० २

ता० २० को ऽ– नमक के तेजाब में ६ माशे का लोहे का पत्र डाल रख दिया इसके डालने से तेजाब में से बबूले उठते रहे।

ता० २१ को १३ तोले २ मा० पारे को उक्त बने फेरिक क्लोराइड के तेजाब में डाल थोड़ा २ हिला रख दिया।

ता० २२ को ४ घण्टे हिलाया, २ बजे पारे को पृथक् कर धो तोला तो १३ तो० १ मा० ३ रत्ती हुआ ५ रत्ती घट गया।

सम्मति–यह पारा भी चीनी की रकाबी में दौडाने से कम और कागज की रकाबी में दौड़ाने से ज्याद: पूँछ छोड़ता था, कोई उन्मत्ता इस शुद्धि में नहीं पाई गई।

बूहल से शुद्धि नं० ३

ता० १८/१/०८ को ऽ।। सेर पानी में २।। माशे पुटेशियम बाईक्रोमेट मिलाकर अनकरीब ३० बूँदे गन्धक के तेजाब की डाल दीं और ये सोल्यूशन बना रख लिया जिसका रंग गेंदई हुआ। १५१६ तोले पारा लेकर उसमें उतना ही (नाप में समान) सोल्यूशन डालकर १२।। बजे से निरन्तर हिलाया गया। करीब २ मिनट में उस सोल्यूशन का रंग भद्दा मैला सुर्ख हो गया इसको कभी कभी हिलाते रहे। कुछ देर बाद से इसकी यह हालत हुई कि जब इसको रख देते थे तो ऊपर हरासा पानी नितर आता था और नीचे पीली गाद पारे पर बैठ जाती थी।

ता० १९ को भी कभी कभी हिलाया और रखा रहने दिया। आज पानी की रंगत में कुछ हरियाई बढ़ गई थी लेकिन गाद का रंग पीला ही होता था।

ता० २० को २ बजे तक रखा रहा। आज पानी की हरिआई तो न बढ़ी किन्तु गाद का रंग मटमैला हो गया था। २ बजे पर इसको साफ पानी से धो डाला फिर और सोल्यूशन मिला हिलाना आरम्भ किया। थोड़ा हिलाकर आंच पर रख दिया।

ता० २१ को २ घण्टे खूब हिलाया। बाद को ठहराया तो ऊपर हरा पानी और नीचे पीली गाद ता० १९ की सी ही बैठी। २ बजे पारे को सोल्यूशन से निकाल तोला तो १५।। तोले हुआ। बाद को नया सोल्यूशन डाल थोड़ी देर हिला रख दिया।

ता० २२ को ८ बजे से १२ बजे तक ४ घंटे हिलाया फिर ठहराने से सोल्यूशन की रंगत पहली सी ही हरी और गादी रंगत पहली सी ही पीली हो गई। २ बजे पारे को निकाल धो तोला तो पूरा १५।। तोले हुआ।

(१) सम्मति–इस पारे को धो सुखा छान चक्कर दे देखा तो चीनी की रकाबी में थोड़ी और कागज की रकाबी में बहुत पूंछ छोड़ता था। इस क्रिया में भी कुछ उत्तमता न दीख पड़ीं।

(२) सम्मति–इस सोल्यूशन में रांग, सीसे और जस्त के टुकड़े पृथक् पृथक् डाल २ दिन रखे तो रांग और सीसे पर इनका नाममात्र को भी असर न हुआ। जसद पर अलबत्ता थोड़ा असर दीख पड़ा।

गंधक के तेजाब से शुद्धि नं० ४

ता० १८ को १८ तोले के करीब पारे को एक शीशी में भर नाप में समान गंधक का खालिस तेजाब डाल रख दिया। कभी कभी थोड़ा हिला भी दिया, ता० २१ तक रखा रहा।

ता० २१ को निकाल तोला तो ५ रत्ती कम १८ तोले हुआ, उसे फिर नये तेजाब में डाल थोड़ा हिला रख दिया।

ता० २२ को पारे को ४ घंटे हिलाया, २ बजे से तेजाब से पारे को निकाल धो तोला तो ६ रत्ती कम १८ तोले हुआ। (१ रत्ती घट गया)

सम्मति–इस पारे को चीनी की रकाबी में चक्कर दे देखा तो पूंछ न थी किन्तु कागज की रकाबी में दौड़ाने से पूंछ यह भी छोड़ता था।

दूषित पारद की शुद्धि शोरे के तेजाब से

ता० २०/१/०८ को दूषित पारद को जो बगैर छना ११ तोले ८ माशे था और ६ बार छन कर जो ११ तोले ६ माशे रह गया था, शीशी में भर १ औंस शोरे के तेजाब के सोल्यूशन में जिसमें १/४ तेजाब और ३/४ पानी था, डालकर हिलाया और रख दिया।

ता० २१ को २ घंटे के करीब खूब हिलाया बाद को निकाल धो तोला तो ११ तो० ५ माशे ४ रत्ती हुआ। कुछ पारा इसमें से गिर गया। अब ११ तोले ३ माशे ६ रत्ती है। इसको फिर वैसे ही (१/४ तेजाब और ३/४ पानी से बने) सोल्यूशन में डाल रख दिया।

ता० २२ को ४ घंटे हिला रख दिया। २ बजे पारे को निकाल धो तोला तो १० तोले ११ माशे ३ रत्ती हुआ। (४ माशे ३ रत्ती घट गया)

(१) सम्मति–इस पारे को सुखा छान कर दौड़ाकर देखा तो चीनी की रकाबी में बारीक और कागज की रकाबी में मोटी पूंछ छोड़ता था किन्तु शोरे के तेजाब से शुद्ध हुये साधारण पारद और इस पारद की पूंछ में कुछ विशेष अंतर न था।

(२) सम्मति–यह भी जान पड़ा कि पटसारन से भी बहुत सा मैल पारद का पृथक् हो जाता है।

मरक्यूरिकसल्फेट

ता० २७/१/०८ को २ तोले पारे को १/२ औंस गंधक के तेज तेजाब में डाल आतिशी गिलास में भर हलकी गर्मी स्प्रिट लैम्प से देते रहे और दो बार आधा औंस तेजाब और डाला और गिलास को ढ़का रखा और हिलाते रहे तो सल्फेट बनता रहा। सफेद रंग चूना सा करीब ५ घंटे तक आंच लगी। बाद को जैसे का तैसा रखा छोड़ दिया।

ता० २८ को सुबह देखने से मालूम हुआ कि ऊपर कुछ कलमें हैं और नीचे कुछ बुरादा सा है, सबसे नीचे थोड़ा सा पारा भी बाकी है। इन सफेद कलमों और बुरादे को निकालकर बाकी पारा उसी बचे हुये तेजाब में डालकर बालू भरे तवे पर रख नीचे हलकी आंच दी तो पारा बुलबुलाने लगा और फिर सफेद चूना सा बनने लगा। १।। बजे तक सब पारा खतम हो गया फिर ठंडा होने के लिये रख दिया।

ता० २९ को देखा तो ऊपर पानी था और नीचे सफेद चूना सा बैठ गया था। ऊपर के पानी को नितार दिया और नीचे को सल्फेड को पानी से धोया। इस धोवन को नितरे हुये तेजाब में मिला दिया, इसके मिलाने से तेजाब में जो सल्फेड था सो भी सफेद बुरादा सा बन गया और थोड़ी देर ठहरने से नीचे बैठ गया। ऊपर के पानी को फेंक नीचे बैठे हुये सल्फेड को असली सल्फेड में मिलाकर सुखा दिया। धूप में रखने से ऊपर की रंगत मटमैली सी हो जाती थी, इसलिये साया में सूखने को रख दिया।

ता० ३० और ३१ को साये में सूखता रहा।

ता० १/२ को देखा तो फिर अधिक गीला मालूम हुआ। इसका कारण यह होगा कि आज बादल होने से हवा की सील से गीला हो गया था।

ता० २ को इसको सोख्ते से सुखा लिया।

ता० ३ को चीनी की थाली में रख बालू भरे तवे पर रख अँगीठी पर रखा। जब धुआं निकलना बंद हो गया, उतार कर पुड़िया में बांध रख लिया।

परीक्षा

इसमें थोड़ी सी कलमें लेकर प्लेडीनम (एक सफेद धातु का नाम) की घरिया में रख स्प्रिट–लैम्प की आंच दी तो कुछ असर न हुआ, जब ब्लोपाइप से फूंका तो किसी कदर कहीं कही सुर्खी आ गई थी लेकिन इससे आगे और कुछ न हुआ। फिर कौलाके अंगारों पर रखा तो उससे भी कुछ न हुआ, मगर जरा धोंकने से धोंकते तेल सा होकर खटकने लगा और स्याही माइल सुर्ख होकर उड़ने लगा। बीच में निकाल कर ठंडा किया तो पीला होकर जम गया। फिर आग पर रखने से पहले की ही तरह खटक कर उड़ना आरम्भ हो गया और अखीर तक सब उड़ गया, जरा सी राख रह गई।

मरक्यूरससल्फेट

सम्मति–गंधक के तेजाब में पानी मिलाने से बहुत बड़ी गर्मी पैदा होती है, यहां तक कि शीशे के बर्तन को तोड़ देता है, अतएव बहुत थोड़ा थोड़ा पानी मिलाना चाहिये।

ता० २७ को २ तोले पारे को १/२ औंस हलके (२५ फीसदी के) गंधक के तेजाब सहित आतिशी गिलास में भर बालू भरे तवे पर रख नीचे आंच दी तो पारा तेजाब में हल होता गया। ३ घंटे बाद १ औंस हलका (२५ फ़ीसदी का) तेजाब और डाल दिया और उसी तरह आंच देते रहे। शाम के ६ बजे तक आंच दी। बाद को ज्यों का त्यों रखा छोड़ दिया। इस समय कुछ सफेद कलमें बननी शुरू हो गई थीं।

ता० २८ को भी १० बजे से बालू भरे तवे पर आंच दी गई तो कलमें बढ़ती गईं। ३ बजे पर इसमें से बचा पारा जुदा कर उसको बाकी रहे तेजाब में डाल थोड़ा पानी और मिला गरम करना आरम्भ किया। शाम के ६ बजे तक गर्म किया मगर कुछ हल नहीं हुआ।

ता० २९ उसमें से थोड़ा पानी और मिला फिर गर्म करने को रख दिया मगर और ज्यादा हल न हुआ।

ता० ३० को ऐसे ही रखा रहा।

ता० ३१ को सोल्यूशन को नितार कर फेंक दिया और तहनशीन (नीचे बैठे) हुए सल्फेट को अलग कर लिया और बचे पारे को अलग कर लिया, इस सल्फेट में पहली बनी कलमें मिला साये में सूखने रख दिया।

ता० १ को खुश्क नहीं हुआ था, इसलिये सोख्ते से सुखा लिया।

ता० ३ को चीनी की प्याली में बालू भरे तवे पर रख अँगीठी पर रख दिया। जब धुआं देना बन्द हो गया, उतार पुड़िया बांध रख दिया।

सम्मति–इसको फिर आंच तवे पर रख दी तो रंग का मैलापन दूर होकर सफेद हो गया।

परीक्षा

९ माशे ५ रत्ती मरक्यूरस सल्फेट की तामचीनी की तश्तरी में रख शीशे के ढ़क्कन से ढ़क स्प्रिटलैम्प की हलकी आंच दी तो १०/१५ मिनट में ऊपर के ढ़क्कन का रंग काला सा पड़ गया किन्तु खोल देखा तो कल में जैसी की तैसी रखी थीं। १/२ घंटे तक और अग्नि दी तो शीशे के ढ़क्कन पर उड़कर थोड़ा जम गया था जिसे खुरचा तो १ रत्ती के करीब पारा निज रूप में निकल आया, मरक्यूरस सल्फेट को तोला तो ९ मा० १ र० हुआ।

पुनः परीक्षा

६ माशे मरक्यूरस सल्फेट को लोहे की रकाबी से ढ़के जौनपुरी डौरू यन्त्र में रख १ प्रहर मृदु, मध्य, तीव्राग्नि दी तो बिना किसी विकृति के २ भाग उड़कर १ भाग अर्थात् २ माशे रह गया जो लोहे की रकाबी ऊपर ढ़की थी उस पर कुछ काली सी राख दीख पड़ती थी, उसको धोया तो माशे भर के करीब पारा निकल आया, इससे सिद्ध हुआ कि ये पातन हो सकता है।

मरक्यूरिक नाईट्रेट

ता० २७/१/०८ को २ तोले पारे को १ औन्स तेज शोरे के तेजाब (जो बाजार से खरीदा) सहित आतिशी गिलास में भर वाटरबाथ पर गर्म किया तो बहुत तेजी से तेजाब पारे को खाने लगा अर्थात् पारे पर उबाल आते रहे और गिलास में पीला धुआं (नाइट्रस फ्यूमस) निकलता रहा। १/२ घंटे के करीब में सब पारा तेजाबल में हल हो गया, थोड़े में नमक का पानी डाल देखा तो तहनशीन होने लगा जिससे जाना गया कि यह मरक्यूरस है अतएव १/२ औन्स तेजाब और डाल १/२ घंटे स्प्रिट लैम्प पर और उबाला। बाद को उपरोक्त प्रकार से जाचा तो कुछ भी तहनशीन न हुआ जिससे सिद्ध हुआ कि यह मरक्यूरिक हो गया। फिर रख दिया।

ता० २८ को देखा तो उसमें नीचे कुछ सफेद कलमें बनकर जमा हो गई थीं जिनको निकाल लिया।

ता० २९/३० को यह कलमें रखी रहीं।

ता० ३१ को इनकी तरीके से सोख्ते कागज से सुखा साये में सूखने को रख दिया। पानी में डाल देखा तो मरक्यूरस बना जो पानी बाकी था उसको गरमी देकर उड़ाया, यहां तक कि उसमें बिलकुल पानी न रहा, रंग उसका पीला पड़ गया, पानी डालने से मालूम हुआ कि यह पीला साल्ट पानी में न घुलनेवाला मरक्यूरस नाईट्रेट बन गया इसलिये तेज शोरे के तेजाब में उबाला और फिर वाटरबाथ (यह कढ़ाईनुमा एक ताम्र का यन्त्र होता है इसमें पानी भर ऊपर औषधि का पात्र रख देते हैं और नीचे स्प्रिटलैम्प वा गर्म रेत की गर्मी दी जाती है) पर सुखाया तो जब पानी घट गया तो फिर मरक्यूरस ही बना इसलिये मरक्यूरिक बनाने की कोशिश छोड़ दी।

मरक्यूरस नाईट्रेट

ता० २६/१/०८ की शाम को ३ तोले पारे में २ औन्स हलका (२० फीसदी का शोरे) शोरे का तेजाब डाल रख दिया।

ता० २७ को अकसर हिलाते रहे।

ता० २८ को १० बजे बालू भरे तवे पर रख नीचे आंच दी तो थोड़ी देर के बाद से बबूले उठने शुरु हो गये, तेजाब का रंग साफ रह बहुत सा पारा बाकी देख २॥ बजे १/२ औन्स तेज तेजाब और डाल दिया और उसको ठंडा कर शाम तक हिलाते रहे तो बहुत सी कलमें बन गईं।

ता० २९ को जितनी सफेद कलमें उसमें बन गई वह सब निकाल लीं, बाकी पारे को उसी तेजाब में डाल हिलाना आरम्भ किया। ३ बजे के करीब देखा तो बहुत थोड़ी कलमें बनी थीं। पारा करीब करीब मौजूद था, इसलिये सोल्यूशन को नितार कर अलग कर लिया और बचा पारा भी निकाल लिया। सोल्यूशन में ८/१० गुना पानी मिलाया तो उसमें सफेद तलछट बैठ गई। पानी नितार कर तलछट को दुबारा बनी हुई कलमों में जिनको धो लिया था, मिला दिया। इनका रंग उन कलमों से जो पहले ता० २८ को बनी थी और निहायत सफेद थीं, बहुत मैला रहा। (पानी से धोने और तलछट मिलाने से रंग खराब हुआ)

ता० ३० को यह साये में सूखते रहे।

ता० ३१ को रंग साफ करने के लिये इसका १/२ औन्स हलके (१/४ तेजाब १/४ पानी) तेजाब में गर्मी देकर हल किया चूंकि इसमें तेजाब और मिल गया था इसलिये कलमें बनाने में देर होती इसलिये इस सोल्यूशन को मरक्यूरिक औक्साइड बनाने के काम मे ले लिया और कुश्तजात बनाने के लिये जो मरक्यूरस नाइट्रेट बनाया था, उसमें थोड़ी कलमें निकाल लीं और सोख्ते से सुखा इसकी जगह रख लीं। इनका रंग पहले सफेद था फिर बसंती हो गया फिर वाटरबाथ पर सुखाया तो पिघलने का डर लगा इसलिये फिर धूप में प्रहर भर बाद सूख जाने पर हाथ से तोड़कर बुरादा कर दिया तो अन्दर से सफेद निकला थोड़ा और सुखा पुड़िया बांध रख दिया।

परीक्षा

इन कलमों में से थोड़े से कोप्लेटीनम की घरिया में रखकर स्प्रिटलैम्प की गर्मी दी और ब्लोपाइप से फूंका भी मगर कुछ असर न हुआ फिर कोयलों की आंच के ऊपर रखा तो खूब खदका और थोड़ी देर के बाद सुर्ख धुआं निकलने लगा, जब धुंआ निकल चुका तो सुर्खी माइल काले रंग का चूर्ण दीख पड़ा। आंच से उतारा रंग उसका माइल पीला हो गया जो फिर आंच पर रखने से काला हो जाता था और आग से उतारने से पीला हो जाता था, इसको पारे का कुश्ता बताया गया।

मरक्यूरसक्लोराइड

ता० ३०/१/०८ को १ औन्स शोरे के तेजाब में २ तोले ११ माशे पारा

डाल कर रख दिया, पारे के डालते ही तेजाब उसे खाने लगा और सुर्ख धुआं बहुत जोर से निकलने लगा। ४/५ मिनट में सब पारा खा चुकने पर १ तोला पारा और डाला तो इसके डालने से धुआं तो निकला किन्तु बहुत हलका, ये पिछला डाला हुआ १ तोला पारा भी करीब १५ मिनट में हल हो गया। इसके बाद ७ माशे पारा और डाल दिया, थोड़ी देर के बाद इसमें कुछ सफेद तलछट बनना आरम्भ हुआ, इससे मालूम हुआ कि सोल्यूशन से च्युरेटेड से ज्यादा हो गया, मगर अवशेष पारा अब भी बुलबुलाता था, बाद को स्प्रिटलैम्प की आंच दी तो इसमें कुछ सफेद चूना सा नीचे बैठ गया, इसको अलग कर लिया, इस चूने में से थोड़ा सा तेज तेजाब और डाल उबाला तो सब चूना मिल गया और अवशेष पारा भी मिल गया जिससे सिद्ध हुआ कि जब तेजाब बहुत सा पारा खा लेता है तो तलछट छोड़ता है, इस पारे के मिल जाने के बाद ६ माशे पारा और डाल दिया जिसके डालते ही पारा बुलबुलाने लगा और पहले सा ही लाल रंग का धुआं देने लगा जिससे जान पड़ा कि तेजाब में खादक शक्ति विद्यमान है, गिलास को उतार थोड़ी देर ठंडाकर देखा तो करीब ४ रत्ती के पारा हल होने से बच रहा था, उसको निकाल लिया और पहले निकले तेजाब को भी इसी में मिला दिया और गर्म करने को रख दिया तो १०–१५ मिनट बाद से फिर चूना सा बनने लगा। इसमें थोड़ा सा तेजाब डाला मगर कोई खास असर नहीं दिखाई दिया तब ६ माशे पारा और डाल दिया तो एकदम पारा बुलबुलाने लगा और नीचे कुछ सुर्ख सा बैठ गया जो कि पारे का कुश्ता मालूम हुआ। इससे सिद्ध होता है कि जो सफेद चूना सा बनना शुरू हुआ था वह तेजाब की कमी के कारण नहीं था बल्कि और न घुलनेवाले, सब नाइट्रेट बन गये थे, जब नया पारा डाले हुए का घुलना बंद हो गया तो इस सोल्यूशन को उबलते हुए दूसरे सोल्यूशन में (जो ५॥ तोला नमक और ९ छ० पानी और १०/१५ बूंदे नमक के तेजाब की डाल छानकर तैयार किया गया था) आहिस्ता आहिस्ता कुल डाल दिया और बराबर चलाते रहे। इससे मरक्यूरस क्लोराइड बन गया इसको उठाकर एक जगह आध घंटे तक रख दिया, जिससे पानी नितर आया और चूना सा नीचे बैठ गया। इस पानी को नितार छान फेंक दिया और पानी डाल गर्म किया और आध घंटे ठहरा नितार छान यह पानी भी फेंक दिया।

ता० ३१ को फिर करीब १ सेर पानी में खूब उबालकर छान लिया और सुखाने को रख दिया।

ता० १ को साये में सूखता रहा।

ता० २ को सोख्ते को निकाल तामचीनी की तश्तरी में सूखने को धूप में रख दिया।

ता० ३–४ को धूप में सूखता रहा।

ता० ५ को देखा तो करीब करीब सूख गया था लेकिन और भी सूखता रहा।

ता० ७ को खूब सूख जाने पर पुड़ियां बांध हवाले कर दिया।

परीक्षा

३ माशे मरक्यूरस क्लोराइड को तामचीनी की तश्तरी में रख स्प्रिटलैम्प की आंच दी तो शीघ्र ही तश्तरी पर ढके हुए शीशे के ढक्कन पर रसकपूर अपने ही रूप में उड़कर जमने लगा। जिसके खुरचने से अच्छा श्वेतचूर्ण मिला।

मरक्यूरिक क्लोराइड

ता० २/२/०८ को १ हिस्सा शोरे का तेजाब और ३ हिस्से नमक का तेजाब मिलाकर बने हुए डेढ़ औन्स तेजाब में २ तोले पारा डाल दिया। डालने के बाद पारा स्याह हो गया और कुछ चिकट सा गया। बाद इसके गर्म करने से आहिस्ता आहिस्ता २ घंटे में सब पारा हल होकर तेजाब में गायब हो गया।

ता० ३ को बालू भरे तवे पर चीनी की प्याली में रख गर्म किया तो धीरे धीरे उसका पानी उड़ने लगा। यहां तक कि खुश्क होकर पीला सफूफ बन गया फिर भी गर्मी देना जारी रखा। यहां तक कि तमाम तेजाब निकल गया और सफूफ सफेद रह गया।

ता० ४ को कलमें बनाने की गरज से करीब १॥ छ० पानी में डाल गर्मी दे हल होने पर चीनी की प्याली में कलमें बनने को रख दिया। रात को कुछ कलमें बन गई थीं उनको ता० ५ को अलग करने के लिये उनके ऊपर से सब पानी नितार लिया और कलमों को बदस्तूर प्याली में सूखने को रख दिया और नितरे हुए पानी को दूसरे प्याले में भर स्प्रिट लैम्प पर करीब आधा घंटे गर्म कर कलमें बनने को फिर रख दिया। शाम को देखा तो कलमें बनकर नीचे बैठ गई थी और ऊपर पानी नितर आया था।

ता० ६ को ऊपर से पानी नितार दूसरी थाली में कर लिया और नीचे की कलमों को धूप में सुखा लिया। इसके ऊपर के नितरे हुए पानी को स्प्रिटलैम्प की गर्मी दे आधा रह जाने पर उतार ठंडा कर रख दिया, थोड़ी देर बाद इसमें भी कुछ लाल रंग की सी कलमें बनकर नीचे बैठ गई और ऊपर जरा सा पानी रह गया।

ता० ७ को इनके ऊपर का पानी फेंक दिया और कलमें सुखाने को रख दीं। कलमें सूख जाने पर सफेद मैले रंग की थीं। इनको तामचीनी की रकाबी में रख और ऊपर शीशे का ढक्कन ढक स्प्रिटलैम्प की हलकी आंच दी तो १०/१५ मिनट में ही उड़कर बहुत सफेद बालबाल सी पतली कलमें बनकर ढक्कन भर गया था, जितने पारे के साल्ट बने उनमें यह सबसे जल्द उड़ता है।

परीक्षा

१ माशे मरक्यूरिक क्लोराइड की कलमों को जो बहुत मैली थीं, तामचीनी के प्याली में रख शीशे के ढक्कन से ढक स्प्रिटलैम्प की हल्की आंच दी तो १५ मिनट में ही यह अपनी जगह से उड़कर बहुत थोड़ा ऊपर ढके शीशे के ढक्कन से और बहुत ज्यादा शीशे के ढक्कन के सहारे तश्तरी में ही घेरा बांधकर जमा हो गया था और इसकी असली जगह पर काले रंग का मैल रह गया था। ये निहायत सफेद और निहायत बारीक कलमें बनी थीं और तोल में ५ रत्ती रह गई थीं।

मरक्यूरिक औक्साइड

३१/१/०८ को ८ तोले पारे को डेढ़ औंस शोरे के तेजाब में २ बजे डाल दिया। पारा पड़ते ही खूब बुलबुलाने लगा और सुर्ख रंग का धुआं उठने लगा। शाम तक कुछ थोड़ा पारा रह गया, बाकी सब घुल गया।

ता०१/२ के सुबह को सफेद कलमें मरक्यूरस नाइट्रेट की बन गई थीं और नीचे का पारा ज्यों का त्यों मौजूद था उसके ऊपर कुछ पीलापन आ गया था (साफ साफ कलमों को निकाल कर सोख्ते से सुखा अलग रख दिया और पहले मरक्यूरस नाईट्रेट बनाने के कर्म में वे पत्र पर बना मरक्यूरस नाइट्रिट साल्ट जिसका रंग बदमैला हो गया था, थोड़े से तेज शोरे के तेजाब में हल करके बाकी बची कलमों में मिला दिया और सबको उबाला अब भी पारा थोड़ा सा और बाकी रह गया)

ता० २ को देखा तो तमाम की कलमें बन गई थीं। इन कलमों को निकाल चीनी की रकाबी में रख बालूभरे तवे पर गर्म किया तो थोडी देर बाद सब पिघल गया और सुर्ख धुआं निकलने लगा, थोड़ी देरमें तमाम खुश्क हो गया और रंग बसंती हो गया, इस तमाम को खुर्च निकाल लिया फिर बारीक पीसकर चीनी की रकाबी में रख बालू भरे तवे पर रख गर्म करने को रख दिया तो रंग स्याह होता गया। ३ बजे उतार लिया तो कुछ जर्र पीले पीले मौजूद थे और बाकी का रंग गेंदई हो गया था। इसको खरल में घुटवाया और फिर बालू भरे तवे पर गर्म किया। यहां तक कि तमाम काले रंग का हो गया, उतारने पर सबका गेंदई रंग हो गया, इसकी पुड़िया

बांध रख दिया, अनुभव हुआ कि बसंती रंग के कुश्ते को किसी प्रकार से आंच देने पर रंग गेंदई सुर्ख हो जाता है।

मरक्यूरस और मरक्यूरिक औक्साइड

३ छटांक पारे को ३ औन्स शोरे के तेजाब में हल करने को रख दिया, पारा डालते ही खूब जोर से बुलबुलाने लगा। आध घंटे बाद मालूम हुआ कि पारे का बुलबुलाना बंद हो गया। थोड़ी सी स्प्रिट की गर्मी दी। उस वक्त थोड़ी देर बुलबुला कर बंद हो गया, इस बचे पारे को निकाल लिया जो तोल में ९।। माशे था, इस तरह बने मरक्यूरस सोल्यूशन में से थोड़ा निकाल लिया और इसमें सोडियम हाईड्रेट का सोल्यूशन (जिसके बनाने की विधि दूसरी जगह लिखी है), डाला तो काली तलछट बनना शुरू हुई। सोल्यूशन उस वक्त तक थोड़ा थोड़ा डालते रहे जब तक कि तलछट का बनना बंद हो गया। यह तलछट थोड़ी देर रखने से सब नीचे बैठ गई और ऊपर का पानी नितर आया था। पानी को नितार फेंक दिया। तलछट को दूसरे साफ पानी से खूब अच्छी तरह धो डाला और फिर पानी को नितार फेंक दिया और तलछट को सोख्ते में छान सुखा लिये तो भद्दी काली रंगत हो गई। यह मरक्यूरस औक्साइड बन गया, उक्त बचे हुए सोल्यूशन को मरक्यूरिक बनाने के लिये उसमें अनकरीब १। औंस शोरे का तेजाब और डाल कर स्प्रिटलैम्प पर उबाला। यहां तक कि इस सोल्यूशन की १ बूंद पानी में डालने से सब हल हो जाती थी। सफेद रंग जरा भी न देती थी जिससे सिद्ध हुआ कि यह मरक्यूरिक बन गया था, इस वक्त सोडियम हाइड्रेट डाला जिससे पीली तलछट बनना शुरू हुई। इस सोडियम हाइड्रेट को उक्त वक्त डालते रहे कि और तलछट बनना बंद हो गया, थोड़ी देर ठहराने के बाद तलछट तमाम नीचे बैठ गई। इसको गर्म पानी से धो डाला और सोख्ते कागजे में छान सुखाने को रख दिया (यह मरक्यूरिक औक्साइड पीले रंग का बना) जब थोड़ा सूख गया तब बालू भरे तवे पर चीनी की रकाबी में रख गर्म किया जब खूब अच्छी तरह सूख गया तब पुड़िया बांधकर रख दिया।

परीक्षा

६ माशे मरक्यूरिक औक्साइड तामचीनी की तश्तरी में रख शीशे के ढ़क्कन से ढक १ घंटे स्प्रिटलैम्प की आंच दी तो शीशे के ढ़क्कन पर बहुत थोड़ी वसंती रंगत छा गई थी और मरक्यूरिक औक्साइड की रंगत गहरी पीली हो गई थी, तोल में ३ रत्ती कम हो गई।

पुनः परीक्षा

ता० ९/२/०८ को १ तोले मरक्यूरिक औक्साइड को लोहे की रकाबी से ढ़के जौनपुरी डौरू में रख १ घंटे मृदु, मध्य अग्नि दी तो इसका रंग गहरा पीला हो गया था, निकाल तोला तो ९ माशे ४ रत्ती रह गया। ऊपर ढ़की हुई तश्तरी में सफेदी छा गई थी। उसे खुरचा तो करीब ४ रत्ती के पारा निकला।

ता० १० को उक्त ९ माशे ४ रत्ती मरक्यूरिक औक्साइड को उसी प्रकार जौनपुरी डौरू में रख पुनः ४ घंटे आंच दी तो पीलाई कुछ और बढ़ गई और तोल में केवल ३ माशे रह गया। ऊपर ढ़की हुई लोहे की रकाबी पर जो सफेदी जम गई थी उसको पोंछा गया तो ३ माशे पारा और कुछ राख सी निकली।

सम्मति—यद्यपि यह औरों से अधिक अग्नि चाहता है परन्तु डौरू में पातन हो जाता है अतएव इसको कहां तक भस्म कह सकते हैं, इसमें शंका है।

पारदसिन्दूर

ता० ३/२/०८ को ५ तोले पारद और २ तोले गन्धक वगैर शुधी को थोड़ा चुटकी से डाल मृदु तप्त खल्व में ११ बजे से २ बजे तक मर्दन किया। २ बजे से शीत खल्व में ५ बजे तक घोटा सब पारे की कज्जली हो गई। अब रवे नहीं दीखते थे।

ता० ४ को २ तोले अंग्रेजी जवाखार को ३ छटांक पानी में घोल लिया और २ तोले बेबुझे नये चूने का २ छ० पानी में घोल लिया और दोनों पानियों को मिला लिया। मिलाते ही कुछ सफेद तलछट बनी जो थोड़ी देर ठहराने के बाद नीचे बैठ गई, इसको सोख्ते कागज में बतौरा रैनी के चुआ साफ पानी नितार लिया जो पोटेशियम हाइड्रेट बन गया, इसमें से ३ छ० शीशे के गिलास में डाल उसमें उपरोक्त कज्जली डाल घोल दी और उसको वाटरबाथ पर रख १।। बजे से ५०–४५ नं० की गर्मी देना आरम्भ किया और कभी कभी शीशे की कलम से चलाते रहे। इसी तरह ५ बजे तक आंच दी जिस वक्त उसका हिलना बंद कर देते थे और पानी नितर आता था तो पानी का रंग सुर्खी माइल पीला हो जाता था। ता० ५ को ११ बजे से फिर इसी तरह आंच पर गर्मी देना और चलाना आरम्भ किया। ३ बजे पर पानी का रंग सुर्ख हो गया था। ५ बजे तक गर्मी थी। बाद को उतार रख दिया।

ता० ६ को ८ बजे से फिर उसी तरह वाटर बाथ पर गर्मी देना शुरू किया, घंटे दो बाद गिलास में पानी जब अन्दाज से कम हो जाता था तब १०–२० बूंद पानी और डालते थे और जब तब शीशे की कलम से चला देते थे। शाम के ५ बजे तक इसी तरह किया बाद को उतार रख दिया।

ता० ७ को वाटरबाथ पर ९ घंटे आंच दी गई।

ता० ८ को रखा रहा।

ता० ९ को सवेरे ऊपर का पानी नितार परीक्षा के लिये शीशे में भर लिया और २ छ० नया बना पुटेशियम हाईड्रेट डाल ४ घंटे ४०–५० दर्जे की आंच दी।

ता० १० को भी ११ बजे से शाम के ५ बजे तक आंच दी किन्तु नीचे बैठी कज्जली का रंग सुर्ख न हुआ, लाचार छोड़ दिया और ऊपर का पानी फेंक कज्जली को ३/४ दिन धूप में रख सुखा लिया, अब कज्जली का रंग काला कत्थई है और तोल ५ तोले ९ माशे है।

ता० ९ को नितरे हुए पानी को जो पाव भर के करीब होगा, तामचीनी के कटोरे में भर चूल्हे पर १ घंटे मंदाग्नि दी। खुश्क हो जाने पर कटोरे से खुरच तोला। ३ रत्ती कम ११ माशे गंधक पीले रंग का निकला जो आग पर डालने से गंधक की ही तरह पिघलकर जलता था, बाद को फिर इसे लोहे के खरल में बारीक पीसकर करीब पाव भर के पानी डाल रख दिया, रात भर रखे रहने के बाद सवेरे देखा तो पानी के ऊपर सफेद मलाई सी जम रही थी, अन्दर पीला पानी था, नितारने पर नीचे कोई चीज बैठी न दीख पड़ी, जिससे सिद्ध हुआ कि पुटेशियम हाइड्रेट में औटाने से गंधक घुल जाता है और फिर पानी में जलाने से गंधक और पुटेशियम का साल्ट बन जाता है जो ठंडे ही पानी में घुल जाता है।

बाबू ईश्वरदास के चले जाने के बाद उपरोक्त क्रिया का पुनः उद्योग

ता० २२/२/०८ को पूर्वोक्त ५ तोले ९ माशे कज्जली को (जिसमें ५ तोले पारा था) ४ छ० पुटेशियम हाईड्रेट में घोल तामचीनी के कटोरे में भर बालू भरे तवे पर ८ बजे से १० बजे तक २ घंटे गर्मी दी। बाद को ३ बजे तक धूप में रखा रहा फिर १।। घंटे आंच पर गर्मी और दी और रख दिया।

ता० २३ को सवेरे देखा तो कुछ सुर्खी की झलक दीख पड़ी और पानी जल कर तिहाई रह गया होगा उसमें ऽ– आध पाव पुटेशियम हाईड्रेट ऽ– पानी डालकर तवे पर फिर ८ बजे से गर्मी देना आरम्भ किया, इतनी गर्मी दी जिससे बबूले से उठते थे। १० बजे १ छ० पानी और डाल दिया। ११

बजे देखा तो रंग खूब सुर्ख हो गया फिर धूप में रख दिया, शाम को नितारने को रख दिया।

ता० २४ को सवेरे देखा तो ऊपर गाढ़ा पानी जो करीब आध पाव के होगा, नितर आया था और सुर्ख गाद नीचे बैठ गई थी, पानी फेंक दिया और पानी डाल घोल बिठाल नितार फेंक दिया, इसी तरह दूसरा पानी दोपहर को बदल दिया।

ता० २५ को भी दो पानी बदले, अभी पानी में थोड़ी चिकनाहट थी।

ता० २६ को भी दो पानी बदले।

ता० २७ को पानी में चिकनाहट न पायी गयी। इस वास्ते पानी को नितार धूप में सूखने को रख दिया।

ता० १ से ३ तक सूखा।

ता० ४ को कटोरे से निकाल चीनी के खरल में पीस तोला तो ५ तोले ५ माशे ४ रत्ती रससिंदूर लाल रंग का तैयार हुआ।

सोडियम हाइड्रेट बनाने की क्रिया

ता० ५/२/०८ को ऽ।। सोडे को १।। सेर पानी मे डाल उबाला तो घंटे भर में घुल गया और करीब ऽ।। सेर बुझे चूने को २ सेर के करीब पानी में भिगो घोल छान लिया। ऊपर बने सोडे के पानी को और इस चूने के दूध को दोनों को मिला दिया, पानी थोड़ा समझ करीब १।। सेर के पानी और डाल १/२ घंटे औटाया गया। इस पानी में से करीब ६ माशे पानी ले उसमें दो चार बून्द नमक के तेजाब की डालीं तो बबूल न दिये अतएव उसे ठीक समझ अँगीठी से उतार रख दिया। रात भर रखे रहने के बाद–

ता० ६ को उतार नितरे हुए पानी का सोस्ते कागज में छान डाला और तामचीनी के बड़े कटोरे में उबाल आधा रह जाने पर दो बोतलों में भर रख दिया।

सम्मति–इस तैयार हुये सोडियम हाइड्रेट में से ६ माशे में दो एक बूंद शोरे के तेजाब की (चाहे गंधक या नमक के तेजाब की डालते) डाल देखा तो अपने आप बबूले न उठे (किन्तु हिलाने से कुछ बबूले बहुत छोटे छोटे अंदर दीख पड़े, इसलिये समझा गया कि यह ठीक बन गया (जो बबूले देता तो ठीक न होता और उसको और चूना डाल ठीक करना पड़ता)

पुटेशियम हाईड्रेट बनाने की क्रिया

ता० ९/२/०८ को साढ़े पांच छ० अंग्रेजी जवाखार को ४ सेर पानी में घोल चीनी के ताश में भर कौलों की आंच दी। जब खूब गर्म हो गया और जवाखार पानी में घुल गया तब ५।। छ० चूना बगैर बुझा डाल दिया और थोड़ी देर और उबाला। इसमें से थोड़ा पानी ले उसमें दो चार बूंद गंधक के तेजाब की डाली तो बबूल न उठे। अतएव उसे ठीक समझ उतार लिया और थोड़ी देर ठहरा ऊपर नितरे हुए पानी को सोस्ते में छान तामचीनी के कटोरे में उबाल पौन बोतल यानी करीब ऽ।।। के रह जाने पर उतार बोतल में भर रख दिया।

तूतिये से बनी पारद गुटिका से ताम्र के पृथक् करने का उद्योग शोरे के तेजाब से

ता० २३/२/०८ को १० बजे के करीब ८ माशे २ रत्ती की ताम्र से बनी पारद की गोली को पीस २० फीसदी तेज शोरे के तेजाब और ८० फीसदी पानी से बने २ औंस सोल्यूशन में भिगो दी और धूप में रख दी। ३ बजे देखा तो पारा जिस पर जाली सी पड़ी थी, दीख पड़ा और तेजाब का रंग नीला और हरा हो गया था। तेजाब को निकाल लिया और नया १ औंस तेजाब और डाल दिया।

ता० २४ को सवेरे देखा तो यह भी कुछ हलकी रंगत का हरा नीला हो गया था और पारा कुछ ज्यादा साफ हो गया था। इसको भी बदल दिया और पारे को जो जमीन पर गिर पड़ा था, धो डाला। १ बजे और नया १ औंस तेजाब डाल धूप में रख दिया। ३ बजे देखा तो यह भी ज्यादा हलके रंग का हरा हो गया था, इसे भी निकाल पारे को धोया तो पारा खूब चमकदार था पर कुछ घट गया था और उसमें हाथ से दबाने से करकराट जान पड़ता था और पीठी सी जुदा होती है जिससे सिद्ध हुआ कि अभी ताम्र का अंश विद्यमान है। ४ बजे इसमें और नया १।। औंस सोल्यूशन डाल दिया।

ता० २५ को यह सोल्यूशन भी बहुत हलका हरा हो गया था, इसे भी निकाल पारा धो डाला, तेजाब और न होने से काम बन्द रहा।

ता० २६ को उपरोक्त पारे में जो ४ माशे ५ रत्ती इस वक्त रह गया था, २० फीसदी का ही १ औंस सोल्यूशन और डाल १ घंटे हिलाया, रंग हरा न हुआ।

ता० २७ आज कुछ हिलाया, कुछ धूप में रखा तो बहुत हल्का हरे रंग का फिर हो गया, शाम को निकाल धो तोला तो ३ माशे ३ रत्ती हुआ। अब इसमें उंगली से दबाने से करकराट नहीं दीखता, कपड़े में छानने से भी कुछ पृथक् न हुआ।

सम्मति–यद्यपि इस क्रिया से ताम्र का पृथक् होना संभव सिद्ध हुआ परन्तु पारे का अधिक अंश क्षय हो गया अतएव इस क्रिया में दुबारा अनुभव करने के समय १० फीसदी के सोल्यूशन से या इससे भी और हलके सोल्यूशन से काम लिया जाय।

पारदगुटिका अनुभव सोडियम से

ता० ८/३/०८ को २।। तोले शंकित पारद को तप्तखल्व में करीब १५ मिनट मर्दन कर ४ रत्ती सोडियम धातु (जो नागढ़ के डी० बालडी की दूकान से आई थी और जो कोशीशी की डाटदार बोतल में स्प्रिट के अन्दर डूबी हुई थी। इसके मटैली रंगत के हलके टुकड़े थे जो स्प्रिट पर तैरते थे, ऊपर से चाकू के छीलने से मोम सी मुलाइम रोग की सी रंगत की धातु निकलती थी। गीले हाथ से छूने से हाथ में गर्म मालूम होती थी। पानी पर डालने से इधर उधर दौड़ती और अन्त में जल जाती थी और पानी को सोडियम हाइड्रेट बना देती थी, हवा में रखने से ऊपर की रंगत मटैली होती जाती थी, अन्त में सोडियम ऑक्साइड बन जाती थी) के चाकू से चांवल के टुकड़े कर एक एक टुकड़ा डाल घोटना आरम्भ किया तो दो एक दफे पारे में चिंगारी और ५/७ दफे फुसफुस की आवाज हुई। पहले पारे में कुछ गांठे सी पड़ गई फिर घंटे भर घोटने से ३ रत्ती कम २।। तोले पारा रह गया और ७ रत्ती राख सी रह गई। पारे की गोली नहीं बंधी।

सम्मति–आगे से पारे को अधिक गर्म करकर सोडियम मिलाई जाये।

पारदगुटिका का अनुभव पुटेशियम से

ता० १४/३/०८ को १ तोले शंकित पारद को शीत खल्व में डाल २ रत्ती पुटेशियम धातु (जो कौनागढ़ के डी० बालडी की दूकान से आई थी और जो शीशे की डाटदार बोतल में स्प्रिट के अन्दर डूबी हुई थी, इसके मटैली रंगत के गोल टुकड़े थे, ऊपर से छीलने से यह भी सोडियम के माफिक मोम सी मुलायम थी। छीलने पर अन्दर से यह भी रांग की सी रंगत निकलती थी किन्तु सोडियम से अधिक चमकदार थी, हाथ से छूने से गर्म नहीं मालूम होती थी। पानी में डालने से तुरन्त गुलाबी रंग की लौ देकर जलने लगती थी और इधर उधर दौड़ती थी और पानी को पोटेशियम हाईड्रेट बना देती थी, हवा में रखने से हवा का असर जल्द होता था, ऊपर की रंगत की चमक दूर होकर सफेद हो जाती थी और अन्त में पोटेशियम ऑक्साइड बन जाती थी) के चाकू से छोटे छोटे टुकड़े कर एक एक टुकड़ा खरल में डाल घोटना आरम्भ किया। सोडियम की तरह इससे भी एक दफे पारे में से चिनगारी और फुस की आवाज हुई। थोड़ी देर घोटने के बाद पोटेशियम बारीक होकर खरल में और मूसली से चिपट गई। घोटने से हाथ रुकने लगा

(इसको चाकू से खुरचने से चिनगारी निकली और कुछ धुआं सा मालूम हुआ) और पारा पृथक् रहा। १५ मिनट और घोटने के बाद करीब १ रत्ती के पुटेशियम का टुकड़ा और डाल दिया जिससे पारा खरल में फैल गया और १५ मिनट घुटने के बाद फिर इकट्ठा हो गया, थोड़ी देर और घोटने के बाद खरल की खुश्क दवा तो तर हो गई जिससे घुटाई ठीक होने लगी। १ घंटे बाद फिर खुश्क हो जाने पर पारद और दवा को पृथक् कर तोला तो २ रत्ती कम १ तोले पारा और २ रत्ती दवा की राख सी रह गई। पारे की गोली न बंधी।

अजवियाह हकीम मुहम्मद फतहयाबखांकयाम सीमाब (उर्दू)

अब हम इस मजमून को यहां छोड़कर उसके कायमुल्नार मुतहरिक लरजां करने का तरीका जो हमारे हम असर दोस्त कीमियागर का और अपना अम्बी मुशाहदा है (जो बिलकुल किताबी नहीं) बियान करते हैं, शायकीन बेधड़क इसको अमल में लाएँ, आध सेर सीमाब बाजारी हो या शिंग्रफी हो क्योंकि खोवा खिश स्याह हो जावे, पारा साफ करे और खोवालिश्त दीगर डालकर खरल करे। गरज सात आठ बार इसी तरह साफ करें और सौदे के नीले रंग के गाढ़े कपड़े में छान लें। बादहू एक कूंडे जर्फ गिली कला में पारा डालकर सफेद और शक्काफ रुई से पारा हाथ से इस तरह साफ करे (जैसे कोई जख्म धोता है) जब रुई स्याह न होवे पारा साफ उठाकर एक गफ कपड़े में मुतखल्लिक (ढ़ीली) पोटली बांधना चाहिये। बाद अजां पांच सेर दही (जुगरात) मादह गाड़ किसी जर्फ आतिश आशना में गरकी जंतर करके नरम नरम आग पर पकावे जब दही बिलकुल खुश्क हो जावे और सुर्ख होने लगे तो पोटली पारे की बा आहतियात अलहदा करें। (पारा नीमकायम तो अभी हो जायेगा) फिर एक बड़ी कड़ाही (टटदीं) जैसी कि हलवाइयों की होती है, जिसमें चार पांच मुश्क पानी आ जावे और पारे में दो तोला रोगन कुंजद डालकर खूब मिलावें बाद अजां कढाई के वसत में रखकर आध पाव बर्ग छुईमुई यानी शरमलंगीन (लजालू आबी) नीमकोब करके ऊपर पारे के रख दे और एक कटोरा आहनी इतना बडा कि पारे को मयबर्ग छुईमुई ढ़क लेवे व अजगूं रखकर गंधावैजोरा लगाकर तीन पाव सीसी (असरव) पकाकर जलमुद्राबनावे। गोया टांका लगावे (हालवहाड कटोरा और वसत कड़ाही हमवारहो) खूब लिहाज रखना चाहिये कि सूराक न रह जावे। अब इस कड़ाही में दो चार घड़ी लोहे की कीलें छोटी मोटी डालकर पानी छोड़ दे कि कड़ाही खूब लबालब पूर हो जावे और मट्टी कलां पर यह कड़ाही सवार करके चार पहर नीचे आग नरम गरम जलानी चाहिये। अजां खूब तेज आंच जलानी चाहिये। बाद अजां खूब तेज आग जलाई जावे। गरज तीन शबानः रोज तक जलाते रहें, बाद सर्द हो जावे। भट्टी के सत आहनी में दूर करे जलमुद्रा खोल कर पारा निकाल ले और कुठाली में रखकर बतौर जरा गरां चार घंटे तक धोंके। पारा मानिन्द अंगारे की तरह हो जावेगा और आग से नहीं उड़ेगा। अगर अहतियात जुंबिश पाई जावे तो दही (जुगरात) में फिर से पकाकर काम में लाना चाहिये, यह पारा किसी कदर गलीज भी हो जाता है। कफे दस्तर पर मिस्ल चक्का दही के उठ आता है जिस जरूरततेह नुखसे में काम में लाना चाहिये वाफिककार इसको हर तरह इस्तैमाल में ला सकता है। यह अकसीर शमसी में करामद है। अब हम पारे को अकद तराशीब वा बूटी कायमुल्नार हदियाना जरीन करेंगे जो खुद अपना आप मुजर्रिब है। सुफ्हा ८ अखबार अलकीमियां ८/४/१९०९ अजजनाब मौलवी मुहम्मदफतहयाबखां साहब इदराक सोहनपुरा डाकखाना गुलावटी जिला बुलंदशहर)

पारे को गुर्सिना कर्दन (उर्दू)

गुर्सिना कर्दन नौसादर कहमिल बराबर–सीमाब बराबर कर ले, चन्द बार ऐसी ही करें, गुर्सिना हो जावेगा। (अजमियाज हकीम मुहम्मद फतहयाब खां)

पारा कायम् (उर्दू)

पारा एक तोला अर्क बिछुआ बूटी भर सेर भर का चोया ख्वाह खरल और नरम तश्विया से ७०० हफ्ते तक कायम हो जाता है।

सिफत अकद सीमाब कायमुल्नार (उर्दू)

चूना आवना रसीदः, नौसादर, आंवलासार, जाज यानी फिटकिरी (जिसको मुसन्निफ नेजाज व सनत मललूर्बी लिखा है) मूए इन्सान जवान हर एक बराबर वजन और इन सबके हम वजन साबून मगरवी और साबून के बराबर उमदा जैत (जिसको अंग्रेजी में ओलियो आइल और पंजाबी में कोडकातल कहते हैं), इन सबको मिलाकर मुकत्तिर करे और इस मुकत्तिर से सीमाब को आहनी बरतन (करछी) में ढांक कर दो दिन और दो रात सोलह पहर या अड़तालीस घंटे नरम आंच पर रखें तो अकद सीमाब साबित यानी कायम होगा। सबात व कयाम की यह अलाम है कि इसको आंच पर चर्ख देकर फिर बजन करें। अगर बराबर निकला तो साबित व कायम है बरनः फिर करछी में डालकर आंच पर रखकर उस पर मूए इन्सान मिलाकर डालते रहे। यहां तक के वह कायमुल्नार हो जावे यह तो खुलासा तरकीब अव्वल का है।

हिजर ४ दिरम, जाज ४ दिरम, मलख इन्दरानी ४ दिरम, नसरमशवी (नौसादर) विरियाकर्दः सहूकातिब से नून रह गया है। ४ दिरम, कराज ४ दिरम यह सब बीस दिरम अदबिया है इनको बारीक सहक करके बोते में रखकर उतार कर सर्द करके निकाल ले तो सीमाब मकसूद साबित व कायमुल्नार मिलेगा। असल मनकूल अनःका बयान है कि यह मुजर्रिब सही है। एजन में रातहरीर कर्दः तरकीब से सिर्फ सफेद सम्मुलफार सफेद शुद्ध होता है सुर्ख नहीं। सुहागा तेलिया आग पर रखने से तेल के मानिन्द नरम हो जाता है और फूलता बिलकुल नहीं, यह कीमियाई तरकीब से बनाया जाता है। (गुलाम नवी सफरी डाकखाना लाहौर)

एक मुफीद मतलब नुसखा (उर्दू)

बिरादरान अलकीमिया के वास्ते केले के बहुत से फूलों को रेजः रेजः करके साये में खुश्क कर ले फिर इसको जलाकर खाक कर ले। कम से कम खाक एक सेर पुख्तः हो फिर इस खाक को किसी गीली हांडी आबखुर्दः में रखकर दस सेर पानी डाल दे और हर रोज दस पांच मर्तबः किसी हेजम से जुंविश दे दिया करे। बाद एक हफ्ते के साफ मुकतिर कर ले, बल्कि चन्द मर्तबः मुकलिर करे कि खूब साफ हो जावे। फिर किसी कलईदार देग में देगदान पर रखकर नीचे नरम आंच जलावे जब सब पानी खुश्क हो जावेगा नमक तहनशीन हो जावेगा। अगर नमक साफ सफेद न हो तो फिर थोड़े पानी में नमक को हल करके व साफ मुकत्तर लेकर बदस्तूर नमक मुंजरिद कर ले। यह नमक मिंस को गुदाज करने में व अकील है। मिस को सुर्ख करके खटाई में इस नमक की चुटकी देने से फौरन मिस गुदाज हो जाता है। अगर कुठाली को आग से अलहदा कर ले जब भी दो मिनट तक मिस गुदाज रहता है जब इसको तैयार करके इस कदर काम लेंगे तो फिर बाकी औसाफ तहरीर होंगे, चूंकि यहां तक मेरा तजरुबा है।

गंधक के मुतअल्लिक और मालूमात (उर्दू)

गंधक चांदी और तांबे को खाती है, यानी अगर तांबे को आग पर गलाकर गंधक की चुटकियां दे तो आंबा सड जाता है लेकिन जस्त को कायम करती है, नौसादर को पकाती है और लहसन के शीरे में खुर्द कायम हो जाती है। शहद भी इसको कायम करता है। खजूर का अर्क और गधे का पेशाब इसको स्लाह करता है। कूजा मिसरी और काफूर इसका छोड है।

गन्धक को कीचड़ की तरह मसका बना लेना (उर्दू)

तुख्म अस्पन्द जलाकर राख कर ले और राख को पानी में हल करके

जुलाल ले ले। इस मुकत्तर का चोया गन्धक पर आग पै दे वह मक्खन की तरह हो जावेगी। आजमूदह है ।

गंधक को (द्रव) पतला करना (उर्दू)

मुर्गे के अंडों के छिलके सवा सेर लेकर नमक के पानी से खूब धोवे कि अन्दर की झिल्ली दूर हो जावे फिर बारीक करके इनमें पाव भर नौसादर मिलाकर पीसकर हांडी में बन्द करके चूने के भट्टे में रख दे। जब आग सर्द हो तब निकाल कर दो बार १५ तोले नौसादर मिलाकर आग दे फिर सर के बाल स्याह पाव भर लेकर सज्जी के पानी से धोकर कतर कर मिलाकर मय ५ तोले नौसादर के मिलाकर आग देवे फिर निकालकर एक तोला आंवलासार गंधक गलाकर अर्क लैमूं में बुझाकर उसमें मिलाकर आग देवे तो यह तमाम गन्धक तेल हो जावेगी और गव्वास होगी।

गन्धक के तेल की तरकीब (उर्दू)

गन्धक आँवलासार के हमवजन शीरा सफेद गुलपलास मिलाकर खरल करे और खुश्क करके कर्छी में एक तरफ रखकर नरम आग पर रख दे तेल अकसीरी निकल आवेगा।

गन्धक को सफेद करने की तरकीब (उर्दू)

सज्जी एक हिस्सा, दो हिस्सा चूना पानी, एक हिस्सा मिलाकर तीन रोज के बाद मुकत्तर कर ले। इस मुकत्तर गंधक खरल करक नितार जावे। चन्दवार के अमल से गन्धक सफेद हो जावेगी। आजमूदह है।

गन्धक को सफेद करने की तरकीब (उर्दू)

लाहौरी नमक बारीक पीसकर गन्धक के हमवजन खरल में डाल सिरके से दिन भर खरल करे और रात को लटका कर सुबह तमाम पानी ऊपर से गिरा दे फिर सादा पानी डालकर इस कदर खरल करे और नितारे कि नमक की शोरियत बिलकुल जाइल हो जावे फिर और नमक मिलाकर खरल करे और पानी डालकर हल करे और रात को लटका कर सुबह पानी नितार दे। इसी तरह यह अमल करते जावें हत्ता कि चन्दरोज मे गूगर्द सफेद हो जावेगी। अगर यह अमल कुछ जियादह मुद्दत तक करे तो गन्धक का शोला बिलकुल बन्द हो जावेगा। अगर बजाइ सादा पानी के हर बार नमक के सात सिरका डालकर खरल करे तो बेहतर रहे कि जल्द साफ और सफेद हो जाती है। आजमूद: है। दीगर गन्धक और अवरक महलूब हर दो वजन खरल में सिरका डालकर खरल करे और तीन पहर के बाद सिरका ऊपर से नितार डाले फिर खुश्क करके बर्तन में बंद करके जौहर उड़ावे, जो गन्धक उड़कर ऊपर जा लगे और हम वजन तलक धनाव से मिलकर सिर के साथ खरल करे और फिर तीन प्रहर के बाद मुकत्तर करके तसईद करे। इसी तरह चन्दवार करने से सफेद हो जावेगी, दीगर।

गन्धक बारीक पीसकर खरल में डाले और हड्डियों का चूना बराबर वजन मिलाकर नमक के पानी में तीन पहर खरल करे फिर निकाल कर ऊपर से पानी मुकत्तर कर डाले और सफूफ को खुश्क करके तसईद कर ले, गन्धक ऊपर जा लगेगी और चन्दवार के अमल से सफेद हो जावेगी।

गन्धक गलाने की तरकीब (उर्दू)

गंधक को घी से चिकनाकर करछी में गलावे गन्धक उम्दतरह से हल हो जावेगी और जलने न पावेगी नीज जल्द पिघल भी जावेगी आजमूदह है।

दीगर (उर्दू)

बजाइ दूध के अगर अलसी के तेल में बुझावे और ११ बार ऐसा करे तो यही साफ हो जाती है।

गन्धक का बयान (उर्दू)

सफेद गन्धक जो चन्द तदबीर से सफेद और मुशम्मा (बहती हुई कर ली जावे वह पारे को बस्ता कर देती है सफेद और मसअद गन्धक वातों को खराब नहीं करती। गन्धक का वजूद कानों और चश्मों में बकसरत मौजूद ही है और वहीं से निकाल कर तिजारत में लाई जाती है मगर अलावह अजी मुख्तलिफ हैवानात नबातात और जमादात में भी मौजूद है। मस्लन (हैवानात) अंडे की जर्दी, मोर का गोश्त, रोहू मछली और हर किस्म की मछली (जौहरा हैवानात), जुगनू, घोडे की साक का मगज, फार्स फोरस तरके बाल, गिरगट चिमगादर, (निवातात) कंघी, नकछिकनी, ढाक का फूल, गुले अब्बासी की जड़ ओर फूल, करीर, केला अमरबेल, प्याज, बैंगन, तेलियाकंद जलपीपल, ब्रह्मदंडी जहर हल्दिया, धतूरा स्याह, थूहर, सूरजमुखी, रामपत्री, जावित्री, घीग्वार का गूदा, भिलावा, हल्दी, आक का दूध (जमादात) हरताल, मन्सिल, हसनधूप, सुरमा, पत्थर का कोइला सोनामक्खी, तांबा, सुहागा, चूना।

गन्धक की मुख्तलिफ तदबीर

गन्धक का मुदब्बिर करना किसी बर्तन में गाय का दूध निस्फ तक भरकर इसके मुंह पर बारीक कपड़ा बांध दे और गन्धक आग पर गलाकर इस पर डाल दे ताकि कपड़े के अन्दर से छनकर दूध में जाकर सर्द हो जावे ३ बार ऐसा करने से गन्धक साफ हो जाती है अगर कपड़ा न बांधे और यों ही दूध में डाल दिया करे तो भी एक ही बात है आजमूदा है।

लैंमू को अर्सेदराज तक महफूज रखने की तरकीब (उर्दू)

कायदा यह है कि संदूक में रेत की तह जमाकर फासिला फासिला पर लैंमू जमाते जाते हैं और फिर इन पर बालिश्त बालिश्त भर रेत डाल देते हैं इसी तरह तीन चार तह जमाकर सन्दूक को रेत से भर देते हैं और वक्तनफवक्तन इस पर पानी छिडकते रहते हैं जिससे वह लैंमू खुश्क नहीं होते जब जरूरत हो निकाल कर इसका रस निकाल कर इस्तैमाल करते हैं दूसरा तरीका यह है कि जिस कदर लैंमू अर्सेदराज तक महफूज रखते हों, इनको खालिस शहद में डालकर रखें जब निकालेंगे मिश्लताजा लैंमू के होंगे।

अर्कलैंमू को दुरुस्त रखने की तरकीब (उर्दू)

अर्कलैंमू को साफ बोतल में भर ऊपर से मोंम को गुदाख्त करके डालने से उसकी उमदा हिफाजत हो जाती है बल्कि रोगन सरशफ व रोगन गाड या दीगर रोगन डालने से यह अमल बहतर है।

इसकी सिफत

जौहर रसकपूर एक तोला सीमाव एक तोला दोनों को पानी की जड़ ताजा के पानी में जो एक पाव के मुवाफिक हों, इसमें अदबिया मौसूफ खरल करे हत्ता कि गोली बँधस की गोली बांधे फिर तहाम (काली तुलसी) के पत्तों के डेढ पाव नुगदे में गोली मजकूर को देकर कपरौटी करके खुश्क करे फिर पांच सेर पाचक दस्ती में आग लगावे जिससे रक्त ठंढा हो जावे निकाल कर बारीक करके एक सेर दूध में एक रत्ती दवाई (अकसीर) डाले दूध खुश्क होकर चांदी बन जावेगा (वल्लाह अलम बिलसबाब)

जनाब शाह अहमदहुसेनसाहब मुकाम बुढनपुरा मिनजुमलाज जिला तिरहुत मुजफ्फरपुर तहरीर फमति हैं–

गयाह जर्रीन–एवरुजुलसनम इस अतराफ में बकसरत है इल्लादरख्त कोहना दस्तयाब नहीं सहराई व बरतानी दोनों किस्म है और दोनों हम सिफत है। अहल हिनूद इसको तरकारियां बहुत शौक से खाते हैं और काश्त करते हैं मगर दो चार साल के बाद खोदकर फेंक देते हैं। ज्यादा कौहना होना मनहूस समझते हैं और इस सिफत से हर अवाम वाकिफ है। कि बाद

दवाजदह साल इसका खोदनेवाला हलाक हो जाता है। इस वजह से दो चार साल से जियादा नहीं रखते हैं। बाज जगह ऐसा इत्तफाक हुआ कि रकुसाइ के बागोंमें कहीं रह गया है और कोहना हो गया है बाइस तावा कैफियत माली खोदा और फौरन हिलाक हो गया। अर्सा कई साल का हुआ एक बाग में दरख्त कोहना था बागवानने ब वजह ना वाकैफियत उसको उखाड डाला फौरन हिलाक हो गया। इसीके जेर जमीन दो सूरते इन्सान की पैदा हो गई थीं।

अगर मुसफ्फा और कायम व मुकल्लिस अजजाड से इप्तदा अनअमल किया है तो पहले ही मर्तबः मुतवसत आग देनी जरूरी है जैसा कि साइलवाले अकसीर में ईरानी सय्याह ने दी। हकीम सरवरशाह मुकाम काबिललाड डाकखाना खानपुर रियासत भावलपुर तहरीर फर्माते हैं कि–उसूली तरीका यह है।

अकसीर सुर्ख हो, ख्वाह सफेद दोनों के लिये रूह, नफस, हवद और एक मुखमिर स्याल (तेजाब या रूह वगैरः) की जरूरत है पस सब मादनियता अबीतमें से जिस चीज पर रूह होने का तलाक किया जा सकता है वह सिर्फ एक ही चीज यानी सीमाव ही है। लिहाजा अकसीर अहमर अबीज दोनों के लिये इसकी सख्त जरूरत है बाकी रहे जसद और नफस सो वह सुर्ख के लिये अलहदा हैं और सफेद के लिये अलहदा मगर जसद हो। ख्वाह नफस दोनों तरीकों में इनकी तादात हिन्दमिया बाहदतक मशहूर नहीं है, यानी वह एक से जायद है अगर्चः इनमें से बाज अफजल व अकमल और बाज अदना व नाकिस ही क्यों न हो इल्ला जरूरतन अगर एक का बदल दूसरे ले लिया जावे तो भी काम चल सकता है। मस्लन सुर्ख के लिये अजसादे में से जौहव और अनफास में से किबरियत अहमर अजजा कामला व तामः है। और सफेद के लिये जसद फजः और नुकस सम्मुल्फार अकमल हैं इल्ला अगर अमदन ख्वाह जरूरत न तरीका सुर्ख में जहब के एवज दूसरे अजसाद शमसी नाकिस मिस्ल निहास या मुरक्लिबात निहासी (जंगार, धूनियां, संगरासख, तूतिया वगैरः) या सीसा या आहन खाम और किबरियत के एवज दूसरे अनफास शमसी मिसकल सुम जर्द व सुर्ख व स्याह, व मन्सिल व जंजफर, व नमक सुर्ख वगैरः मुबदिल कर दिये जावें और ऐसा ही सफेद में फजः के एवज क़लई, फौलाद वगैरः अजसाद फजी और सम्मुलफार के एवज जरनेख नमक सफेदः वगैरः अनफासफजी में से कोई तबदील कर लिया जावे तो भी काम चल जावेगा गोबवजह अजजाइ नाकिसः कमकुव्वत के मर्तबः तरहका कमी पर आ जावे। इल्लामायूसी नहीं होगी। बाकी रहे मखमरात जिनका खारसा इमजाज अरकान सुल्सः बजरियः तहनशीनी व सवात व मुशम्मा और गवासी और नफूजः वगैरः है सो इनमें बाज कवी है मिस्ल दहन लायहर्क व दहन उलअशर वगैरः और बाज अजौफ है मिस्ल मियाह वारदह यानी सिरका, आवअनार तुर्श, आबलैमू वगैरः लिहाजा इनकी तकवियत के लिये अमलाहया शहवत में से कोई जुज व मिस्ल नौसादर वगैरः मिलाने की जरूरत होती है और नीज इनमें से बाज अकसीर शमसी के लिये मखसूस है मिस्ल दहन मुकत्तिर अहमर व अफसर बैजा और बाज अकासीर कमरी के लिये खास है मिस्लन मुकत्तर अबीज मुशम्मा और बाज दोनों तरीको सुर्ख व सपेद में यकसा मुफीद है, मिस्ल दहन लायजर्क और रोगन बैजा अहराकी तरकीब अखज अज जाई अकसीर–

अब हम अकसीर सुर्ख बनाना चाहें ख्वाह सफेद–बेहतर यह है कि इरकान् सुल्सः और मखमतरा में से जो अकवी व अकमल हो व वेखलल हो, इसी को अख्तियार करे ताकि कोई रुकावट पेश न आवे वरनः जिसको लेंगे उसी से कामयाबी मुमकिन है कि अमरपस हम अकसीर सफेद के लिये मस्लनरूहु (सीमाव) और जसद अकमल यानी चांदी और नफस अकमल यानी सम्मुल फार ख्वाह हड़ताल ख्वाह नमक लाहौरी लें या अगर अकसीर सुर्ख बनाना चाहते हैं तो रूह (सीमाव) और जसद अकमल यानी (सोना) और नफस अकमल (किबरियत) लें और दोनों के लिये मुखमरात में से ऐसा स्याल कवीव अकमललन जो दोनों में मुस्तैमिल और यकसा हो, मस्लन रोगन नौसादर कायमुल्नार, ख्वाह् रोगन जदी बैजा अहरा की और तस्किया का अमल जारी करके मिनजुमलै कवाइद अरवातकमील अकासीरक एक तरीके पर कारबंद हूं तो इन्शाअल्लाहताला कामयाबी होगी. तशरीह कवाइद अरवातकमील अकासीर कायदा अव्वल अरकान अकासी को माह् महरका तसकिया तमाम दिन या कम से कम एक घंटे तक दीगर रात को कम से कम एक घंटे नरम भूभल का तश्विया दे और यह ही अमल मुकर्रर करता रहे हत्ताकि अकसीर मूमिया बेदूद हो जाए तो यह खुद खवास व सवाग होगा। कायदा दोम अरकान को मुखमिरका का तस्किया देकर सहक बलेग करे फिर इसका जौहर उड़ावे फिर आला बासफल को मिलाकर तख्म मजकूर का तश्किया दे और सहक बाद तसहीर करे, इसी अमल को यहां तक मुकर्रर बार बार करे कि सब अकसीर तहनशीन और साबित बेदूद हो जाय। यह भी खुदगवास व सयाग होगा। कायदा सोम–बमूजिब कायदा अव्वल या दोयम मूमिया ख्वाह तहनशीन करके हल व अकद करे तो इस वक्त मर्तबः तरह का साबिक से बढ़ जायेगा फिर हल व अकद करे अल्हाजुलकयास हत्ता कि मर्तबः रफीअपर पहुंचे। कायदा चहाराम अरकान को तस्किया मुख्रमिर व सहक बलेग के बाद शीशी आतिश में बन्द और गिलेहिकमत करके बालू जन्तर की आग दे तो काबिल तरह हो जायेगा फिर दुबारा सिबारा तस्किया व सहक के बाद बालू जन्तर का तकरार तो मर्तबा तरह का बढ़ता जाई और चन्द मर्तबः के बाद मुगलग आला पर फातिर होगा इन्शा अल्लाहताला यही चार कायदे आला तरी हैं अकसीर हक की तकमील है कि अब रहा ताकत अकसीर और मर्तबः तरह का इल्म पहले आग में पस अगर अजजाइ नासाफ बाजारी और अजसाद गैर मुकल्लस हैं तो पहले आग में हम्मलान ही तक मर्तबा तरह का महदूद होगा या शायद कि कुछ भी असर पैदा न कर सके इल्ला चन्द मर्तबः तकरार अमल के बाद और अगर अजजाड मुसफ्फा गैर कायम और अजसाद गैर मुकल्लिस होंगे तो अदना दरजे की अकसीर या जहां आला हासिल हो सकता है, अगर रूह व नफस मुसफ्फा मसअद और हवद मुकल्लिस ख्वाह गैर मुकल्लिस से तैयार करेंगे तो अकसीर का मर्तबा किसी कदर जियादा होगा, अम्मा अगर रूह व नस्फ को कायम व गवास और जसद को मुकल्लस जाजब करके इफ्तदाइ अमल करेंगे तो अकसीर की ताकत कवी और मर्तबः तरह का बहुत बढ़ा हुआ होगा, यह तो पहली आग का हाल है, खुसूसन कायदा सोम व चहारमकी रूसे फिर अकसीर मामूला पर जितनी मर्तबः अआदह अमल का करते जायेंगे, उसी कदर दर्जा बर्दजा ताकत बढती जावेगी, अब मीजानुलनार मालूम करना यही अशंद जरूरी है, सब एमाल में ज्यादह अहतियात आग के बजन की है। पस मिनजुमतन इसका बयान यह है कि अव्वल अव्वल नरम आग देनी चाहिये और रफ्तः तदरीजन और मर्तबः बाद आखरी ज्यादह करता जावे लेकिन किसी कदर मुफस्सिलन इसका बयान यह है कि अगर इप्तदाई अमल ना साफ और गैर कायम और हारब व जाइब अजजाइ से है तो आग इप्तदाई बहुत नरम होनी चाहिये।

जनाब गुलामहुसेन साहब कंतूरी से दरियाफ्त तलब (उर्दू)

दूसरा मसला व मंजिला होल के हैं जिस धातु की राइहः से पारा बस्ता और कायमुल्नार किया जाए वही धातु बन जाता है। इस मसले का तजरुबा हमने और हमारे तलान्दह ने कर लिया है तांबा और पीतल (शदादीबूना) और लोहा और चांदी मगर फूटक यह सब पारे से बनचुके अब फूटक दूर करने का तजरुबा हो रहा है उसके बाद सोना भी उसी काइदे से बनाया जायेगा (राकिम गुलामहुसेन, कन्तूरी सुफहा ११ किताब अखबार अलकीमियां १६/४/१९०५)

शनाख्त काजीदिस्तार (जो कश्मीर में बकसरत देखी गई) (उर्दू)

काजीदिस्तार मारूफ दूधकबूटी छतरीवाली फार्सी शीकर इसको जुमला

बूटी भी कहते हैं, जमीन से हाथ भर तक ऊंची होती है। नीचे से एक शाख टोपी बतौर नाली ऊपर से तीन चार शाख सर पर बर्ग बहुत ज्यादह और जर्दान फूल छाते की तरह वर्ग या शाख को तोड़ो तो दूध सफेद निकलता है, कभी एक बालिश्त भर जमीन से ऊंची होती है, कभी कमोवेश हो वेख व शाख व बर्ग इसके मदव्विर होते हैं और शाख का रंग सुर्ख और दूध से पूर होता है और जब बदन पर उसका शीर लग जावे तो आबला पड़ जाता है। यह दाद को और चंबल को जो किसी दवा से न जाती हो, जड़ से उखाड़ देती है और कुश्ता चांदी भी इससे बहुत उमदा होता है। (सुफहा १७ अखबार अलकीमियां ८/४/१९०९)

अज खुर शैद हिदायत (उर्दू)
कैफियत अतारद यानी सीमाब

मौ आल्लिफ किताब खुरशद हिदायत लिखता है कि मैं एक बार जजीरा खलकान में था, जिस जगह मैं खड़ा हुआ था, इस जगह दरख्तों की बहुत कसरत थी (गरजे कि एक अजीब व गरीब बाग का नक्शा खींचकर दिया गया है) वगैरः वगैरः इस जगह आदमी भी कसरत से थे। इतने में एक गिरोह एक मेजे लाया जो कमरुल वैज से बना हुआ था, इसे रखा गया बाद अजां एक माशूक सिफत मियानः कद आदमी आया जिसकी कमर में जिन्नार सुर्ख रंग काथा और शवस अहमर का ताज सरदार रखा हुआ था आकर मेज पर बैठ गया, अव्वल खुदावन्द ताला की हम्दकही और फिर अतारद की तारीफ करके हाजरी को इस तरह मुखातिब हुआ कि एमुआशर हुकमाइ तुमसे में कोई भी मेरी बुजुर्गी कुदरता और कुव्वत रुहानी से मुनकिर नहीं है, जो मुझमें खुसूसन अजसाद एजाज और अशखार के पिघलाने की चीज है, मैं वह बजूद हूं जो कि पारद को फाड़ कर तमाम चीजों से गुजर जाता हूं और दुश्वार गुजार रास्ता भी मेरे वास्ते मामूल बात है और मेरे सिवाइ और कोई भी इस सिफत का वजूद नहीं हो सकता, मैं जिस्मानी लिहाज से वेशक जईफ हूं मगर मेरे कवाइ बहुत कवी हैं और अपने फेल में पुरतासीर है और यह सब ताकत सय्यारह अतारद की अताशुदः है जो मेरा खुदावन्द और बुजुर्ग है जिसका मददगार और जिस बर अहसार करनेवाला खुद आफ्ताव है क्योंकि वह आफ्ताव का एक चमकीला सितारह है और उस पर इसका अहसान करना इस अमर पर दलालत करता है कि अतारद अफ्ताब का फर्मावरदार है, अतारद हरनातिक और नाहव तमीज का खुदावन्द है और मैं इसका पिसर हूं बल्कि उसका बन्दा खिदमतगार, दोस्त, फर्मावरदार वगैरः वगैरः अतारद हमेशह मेरी मदद करता है जिस तरह कि आफ्ताव आलमताव इसकी क्योंकि हरेक की खासियत अख्तियार कर लेता है, गरम के हमराह गरम है और सर्द के साथ सर्द, वकस, अलहाजा हत्ता कि सुर्ख, जर्द, सवज, स्याह जिस किसी के साथ मिलता है, ऐसी ही बन जाता है। चुनाचः वह हरेक रंग अख्तियार कर सकता है और हर तवियत और शकल पर तसर्रुफ रखता है, बेशक मैं इसका फरजन्द हूं इस वास्ते कि मेरी तवियत खूबी तसर्रुफ वगैरः इसी के मुशावः है चुनांचः जो शखस मुझे खुश्की के वास्ते चाहता है मैं खुश्की की सिफत ही पैदा कर देता हूं और जो तरीके वास्ते चाहता है तो तर कर दिया, जो चाहता है कि मुझे अशियाई के साथ मिलावे तो मैं हर चीज से मिल जाता हूं और इसी की शकल सूरत वगैरः अख्तियार कर लेता हूं, एमआशर हुकमाइ मेरे इसरार इतबार वगैरः से आप को वाकैफियत हासिल करना जरूरियात से है, मैं बनफसा दोफनून हूं और मुख्तलिफ रंगों का मालिक हूं, चुनांचः जिस शखस ने मेरे इसरार से वाकफियत हासिल करनी चाहिये और मेरे इतबार पर मुतले हो गया और बिरहानी एमाल से वाकिफ हो गया और मेरी रतूवत को यबूसत से बदल दिया। (जैसे कि कंजनार हायल में मशरूहन मजकूर है) मुझे सचाई की किस्म कि मैं आमिल के लिये इसकी तवंगरी और बहतरीका वसीला बन जाता हूं और अब से वाइकवाला बना देता हूं, एम आशर हुकमाइ, मुझे हक की किस्म मैं सच्ची बात बताता हूं और मुबालगा नहीं करता कि जो शखस चाहे कि मेरे वजूद से फायदा उठावे तो उन्हें चाहिये मुझसे सख्ती से न पेश आवें बल्कि रफक और मुलाइमत से काम में लावें और मेरे साथ हकीमाने और सनती तदबीर से मुआमिला करना चाहिये, मेरे इसरार नरमी में मरकूज हैं मेरे इतबार हिकमत में और वरहान सनत में सचाई की किस्म अगर हकीमानः तदवीर से मुझे मेरी मादर से मिलाया जावे तो बेशुमार अजायबात नजर आते हैं जो मुझमें मुखक्की है और मेरे गुस्से से सख्त परहेज करना चाहिये, इस वास्ते कि जब मैं गुस्से में आ जाता हूं तो यकीनन में आमिल के लिये बला जाता हूं और फिर मुझे कोई हासिल नहीं कर सकता, मेरे साथ हमेशह रफक और नरमी से पेश आना चाहिये कि मैं साबित हो जाऊं, ऐसा करनेवाले के लिये बेहतरीन काबिल है क्योंकि जो कोई शखस मेरे करामद सरार व इतबार से कमाहू का वाकिफ हो गया और मेरे और मेरे माइ कमर और मेरे आका शमससे मुझे दो वजन करने के तरीकेसे मुझे मिला दिया (जैसे कि कबज मुफ्ताह राज में मुफस्सिलन मजकूर है) और उरूस असकर मुदव्बिर को वास्ता बनावे। (जैसे कि कंजनार हायल में मशर्रह है) और उकाब मसअद मौहमिर महलूल तश्मीअ करे (जैसे कि कनज हवाई राकद में मजकूर है) मैं यकीनन उस शखस के लिये जखीरा बन जाता हूं और उसे ताज और लिबास सलतनत पहना देता हूं और उसे सबसे बुजुर्ग बना देता हूं, एम आशर हुकमा, जो शखस चाहता है कि मेरे अजाइबात देखे उसे चाहिये कि कमर, जौहरा, अरज, मुश्तरी, जौहल में मीजान हक से मुझे मिलावे मगर एमाल हकीमानः के जरियः (जैसे कि आयन्दः तजकरा होगा) इस तरह कि मैं इनमें से हर एक के साथ (जिससे मिलाया जावे) पूरी तरह मिल जाऊं क्योंकि वह मुझ पर आसक्त है तो यकीनन इससे ऐसी चीज पैदा होगी कि इनके दिल खुश हो जावेंगे और आँखे रोशन (अखबार अलकीमियां ८/४/१९०९)

उसूलकैमिस्टी (उर्दू)

खालिस अनसर यानी मुफरिद चीजें दुनिया में यह है, आविसजन, हाईड्रोजन, नाईट्रोजन, कारबन, क्लोराइन, गंधक, फासफर्स, सलीका लोहा, एलोनियम्, कैलसियम, मेगनीसीयम, सोडियम, पोटेशियम, ताँबा, जस्ता, राँग, सीसा, पारा चाँदी, सोना वगैरः ।

क्लोराइन नमक में होता है, नाइट्रोजन शोरा में, फासफोरस हड्डियों में होता है जिसको दियासलाई की नोक पर लगाते हैं, सलीका ईंट, रेत व कांच में होता है, एलोनियम चिकनी मिट्टी और चट्टानों में से निकलता है और फिटकिरी में होता है, कैल्सियम संगमरमर खरिया और चूना में होता है, मेगनीसम का तार होता है जिसको जलाने से वर की रोशनी होती है, सोडियम खारी चीजों में होता है, हवा में खुला रखने से उसमें आग लग जाती है इसलिये हर वक्त पानी में (पानी में डालने से आग लग जाती है किन्तु स्प्रिट में पड़ा रखने से कायम रहता है, अनुभव से सिद्ध है) पुटेशियम राख में होता है और मिस्ल सोडियम के जलता है। (पानी में डालने से जलता है)। लोहे पर जस्त लगाने से मोरचः नहीं लगता, जस्ता ताँबा मिलाने से पीतल बती है। (सुफहा ९८ किताब इल्ममौजूदात)

वजन मखसूस यानी हरेक चीज का वजन

(जो उस निस्तब से होता है जबकि मुसावी उलहज्म मुकत्तर पानी का वजन एक फर्ज किया जावे इससे यह मालूम होता है कि हरेक चीज पानी के वनिस्बत इस कदर भारी है। (उर्दू)

प्लेटिनम २२५७, लोहा ७५७८, लकड़ी ५४० सोना १९५३६, हीरा ३५५३ काग ५२४, पारा १३५६, शीशा २५४८, दूध १५३, चांदी १०५४७, कोइला १५३२, आबमुकत्तर १५

(सुफहा ५२ व ५३ किताब इल्ममौजदात्)

हरारत मखसूस (उर्दू)

आलिमोंनें पानी में एक दर्जे की गर्मी फर्ज करके फिर दूसरे अजसाम की गर्मी जो मालूम की है वह हरारत मखसूस कहलाती है–
पारा, सोना व सीसा ऽ३, जस्त वा तांबा ऽ८, गंधक ऽ२०, चांदी ऽ५, लोहा ऽ११, कोइला ऽ२४, हीरा ऽ१४, तारपीन ऽ२२ (सुफहा ६० किताब इल्ममौजूदात्)

उबलने की हरारत के दर्जे (उर्दू)

एक दर्जे हवा के दबाउ में हर चीज के उबलने के लिये जितनी गर्मी दर्कार है वह नीचे लिखते हैं–
तेजाब १० तारपीन १६०, गंधक ४४७, आबमुकत्तर १००, पारा ३५०, जस्त १०४०

३६० गज की बलंदी पर हरारत में एक दर्जे का फर्क पड़ जाता है, पहाड़ पर थोड़ी गर्मी से पानी उबलने लगता है मगर कान के अन्दर ज्यादह से पहाड़ पर दाल वगैरः उबालने से इसलिये ज्यादह दिक्कत होतीहै कि पानी थोड़ी हरारत से उबलने लगता है पस उसकी हरारत कायम हो जाती है। ज्यादह नहीं बढ़ सकती, (सुफहा ६१ किताब इल्म मौजूदात्)

दर्जे हरारत जिस्म पर अशियाई जैल पिघल जाती है (उर्दू)

बर्फ ०, मोंम ६५, सुरमा ४५०, पारा ऽ३८, गंधक ११४, चांदी १०००, मक्खन ३३, सीसा ३३५, सोना १२५०, फासफोरस ४४, जस्त ४२२, लोहा १५००।

प्लेटीनम अब तक नहीं पिघला सके। (सुफहा ६१ किताब इल्ममौजूदात्)

गैसों का बयान (उर्दू)

इनकी न कोई सूरत होती है न जिसामत जैसे बर्तन में रखी जावें वैसी ही सूरत औ ख्वाह कितनी ही कम गैसे कितने ही बड़े बर्तन में रकी जावे। सारे में भर जावेगी। रकीक की तरह यह न होगा कि आधा गिलास पानी से भर गया आधा खाली रहा। इनके दरून में कशिश अतसाली बिलकुल नहीं होती, वह एक दूसरे कोठा कर फैलना चाहते हैं, (सुफहा ५५ किताब इल्ममौजूदात्)

गैसों का बयान

घड़े का पानी नीचे से गर्म करे तो सारा गर्म हो जावेगा। ऊपर से करे तो सिर्फ थोड़े से पर असर पहुंचेगा (सुफहा ११३ किताब इल्म मौजूदात्)

और भी

पानी अपने वजन से २/५ नमक को जज्ब कर सकता है ज्यादह नहीं चूना अपने वजन से १/२ पानी मिलाने से भीगेगा (सुफहा ११२ किताब इल्ममौजूदात)

हवा को दबा उसे पारा तीन इंच बुलंद चढ़ता है और पानी तीस फुट से भी ज्यादह। (सुफहा ११३ किताब इल्ममौजूदात्)

मसनूई मकनातीस (उर्दू)

मसनूई मकनातीस लोहे से बनाया जाता है, पहले उसको खूब गर्म करके दफेतन ठंडे पानी में बुझाते हैं, जिससे वह सख्त हो जाती है तब उसको किसी मजबूत मकनातीस से छुलाने से वह भी मकनातीस की खासियत हासिल करता है बल्कि उससे भी ज्यादा कवी होजाता है, मकनातीस में यह कुव्वत दोनों सरों पर ज्यादह होती है, बीच में दर्जे दर्जे कम होता है जिस तरह मनकातीस लोहे हो खीचता है, उसी तरह लोहा भी मकनातीस को खीचता है। अगर ज्यादह भिकदार में हो नरम लोहा भी मकनातीस से छूने पर मकनातीस बन जाता है, मगर ठाने से फिर नहीं रहता अगर मकनातीस से लोहा रिगड़ा जावे तो यह असर कायम रहता है, बिजली की बैटरी से भी मकनाती कुव्वत पैदा होती है। मगर आरजी और जमीन के असर से भी मगर निहायत सुस्त ढला हुआ लोहा भी मकनातीसी कुव्वत हासिल कर सकता है। (सुफहा ९१ किताब इल्ममौजूदात्)

इति श्रीजैसलमेरनिवासिपण्डितमनसुखदासात्मजव्यासज्येष्ठमल्ल-कृतायां रसराजसंहितायां हिन्दीटीकायां वशिष्टवर्णनं नाम षष्टितमोऽध्यायः ॥६०॥

॥इति पारदसंहिता हिन्दीटीकासमेता समाप्ता॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स- ०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-६८७१०२५,
फैक्स -०२०-६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.

खेमराज श्रीकृष्णदास
खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई